पवित्र शास्त्र

पवित्र शास्त्र

पुराने नियम का पहिला भाग ।

इब्रानी भाषा से हिंदी में उतारा गया ।

THE

HOLY BIBLE

IN THE

HINDI LANGUAGE.

TRANSLATED FROM THE HEBREW.

VOL. I.

1866

पुराने नियम के पहिले भाग की पुस्तक।

उत्पत्ति की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ आरंभ में ईश्वर ने आकाश और पृथिवी को सिरजा।
२ और पृथिवी बेडौल और सूनी थी और गहिराव पर अंधियारा था
और ईश्वर का आत्मा जल के ऊपर डोलता था॥
३ और ईश्वर ने कहा कि उंजियाला होवे और उंजियाला हो
४ गया। और ईश्वर ने उंजियाले को देखा कि अच्छा है और ईश्वर
५ ने उंजियाले को अंधियारे से बिभाग किया। और ईश्वर ने
उंजियाले को दिन और अंधियारे को रात कहा और सांझ और
बिहान पहिला दिन हुआ॥
६ और ईश्वर ने कहा कि पानियों के मध्य में आकाश होवे
७ और पानियों को पानियों से बिभाग करे। तब ईश्वर ने आकाश
को बनाया और आकाश के नीचे के पानियों को आकाश के
८ ऊपर के पानियों से बिभाग किया और ऐसा हो गया। और
ईश्वर ने आकाश को स्वर्ग कहा और सांझ और बिहान दूसरा
दिन हुआ॥
९ और ईश्वर ने कहा कि स्वर्ग के तले के पानी एकही स्थान
१० में एकट्ठे होवें और सूखी दिखाई देवे और ऐसा हो गया। और
ईश्वर ने सूखी को भूमि कहा और एकट्ठे किये गये पानियों को
११ समुद्र कहा और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है। और ईश्वर ने

कहा कि भूमि घास को और साग पात को जिन में बीज होवें
और फलवंत पेड़ को जो अपनी अपनी भांति के समान फलें
जिन के बीज भूमि पर उन में होवें उगावे और ऐसा हो गया।
१२ और भूमि ने घास और साग पात को अपनी अपनी भांति के
समान जिन में बीज होवें और फलवंत पेड़ को जिस का बीज
उस में होवे उस की भांति के समान उगाया और ईश्वर ने
१३ देखा कि अच्छा है। और सांझ और बिहान तीसरा दिन हुआ॥
१४ और ईश्वर ने कहा कि दिन और रात में बिभाग करने को
स्वर्ग के आकाश में ज्योति होवें और वे चिन्हों और ऋतुन और
१५ दिनों और बर्षों के कारण होवें। और वे पृथिवी को उंजियाली
करने को स्वर्ग के आकाश में ज्योति के लिये होवें और ऐसा हो
१६ गया। और ईश्वर ने दो बड़ी ज्योति बनाई एक बड़ी ज्योति
दिन पर प्रभुता के लिये और उस्से छोटी ज्योति रात पर प्रभुता
१७ के लिये और तारों को भी। और ईश्वर ने उन्हें स्वर्ग के आकाश
१८ में रक्खा कि पृथिवी पर उंजियाला करें। और दिन पर और
रात पर प्रभुता करें और उंजियाले को अंधियारे से बिभाग करें
१९ और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है। और सांझ और बिहान चौथा
दिन हुआ॥
२० और ईश्वर ने कहा कि पानी जीवधारी रेंगवैयों की बहुताई
से भर जाय और पक्षी पृथिवी के ऊपर स्वर्ग के आकाश पर उड़ें।
२१ सो ईश्वर ने बड़ी बड़ी मछलियों और हर एक रेंगवैये जीवधारी
को जिन से पानी भरा है उन की भांति भांति के समान और
हर एक पक्षी को उस की भांति के समान बहुताई से उत्पन्न
२२ किया और ईश्वर ने देखा कि अच्छा है। और ईश्वर ने उन को
आशीष देके कहा कि फलमान होओ और बढ़ो और समुद्रों के
२३ पानियों में भर जाओ और पक्षी पृथिवी पर बढ़ें। और सांझ और
बिहान पांचवां दिन हुआ॥

२४ और ईश्वर ने कहा कि पृथिवी हर एक जीवधारी को उस की
भांति भांति के समान अर्थात् ढोर और रेंगवैये जंतु को और
बनैले पशु को उस की भांति के समान उपजावे और ऐसा हो
२५ गया । और ईश्वर ने बनैले पशु को उस की भांति के समान
और ढोर को उस की भांति के समान और पृथिवी के हर एक रेंगवैये
जंतु को उस की भांति के समान बनाया और ईश्वर ने देखा
कि अच्छा है ॥
२६ तब ईश्वर ने कहा कि हम आदम को अपने स्वरूप में
अपने समान बनावें और वे समुद्र की मछलियों और आकाश
के पक्षियों और ढोर और सारी पृथिवी पर और पृथिवी पर के
२७ हर एक रेंगवैये जंतु पर प्रधान होवें । तब ईश्वर ने आदम को
अपने स्वरूप में उत्पन्न किया उस ने उसे ईश्वर के स्वरूप में
२८ उत्पन्न किया उस ने उन्हें नर और नारी बनाया । और ईश्वर
ने उन्हें आशीष दिया और ईश्वर ने उन्हें कहा कि फलवान
होओ और बढ़ो और पृथिवी में भर जाओ और उसे बश में
करो और समुद्र की मछलियों और आकाश के पक्षियों और
पृथिवी के हर एक रेंगवैये जीवधारी पर प्रभुता करो ॥
२९ और ईश्वर ने कहा लो मैं ने हर एक बीजधारी साग पात
को जो सारी पृथिवी पर है और हर एक पेड़ को जिस में फल
है जो बीज उपजावता है तुम्हें दिया यह तुम्हारे खाने के
३० लिये होगा । और पृथिवी के हर एक पशु को और आकाश के
हर एक पक्षी को और पृथिवी के हर एक रेंगवैये जीवधारी को
हर एक प्रकार की हरियाली भी खाने को दिई और ऐसा हुआ ।
३१ फिर परमेश्वर ने हर एक बस्तु पर जिसे उस ने बनाया था दृष्टि
किई और देखा कि बहुत अच्छी है और सांझ और बिहान
छठवां दिन हुआ ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ यों स्वर्ग और पृथिवी और उन की सारी सेना बन गई।
२ और ईश्वर ने अपने कार्य्य को जो वुह करता था सातवें दिन
समाप्त किया और उस ने सातवें दिन में अपने सारे कार्य्य से
३ जो उस ने किया था बिश्राम किया। और ईश्वर ने सातवें दिन
को आशीष दिई और उसे पवित्र ठहराया इस कारण कि उसी
में उस ने अपने सारे कार्य्य से जो ईश्वर ने उत्पन्न किया और
बनाया बिश्राम किया॥

४ यह स्वर्ग और पृथिवी की उत्पत्ति है जब वे उत्पन्न हुए
५ जिस दिन परमेश्वर ईश्वर ने स्वर्ग और पृथिवी को बनाया। और
खेत का कोई साग पात अब लों पृथिवी पर न था और खेत
की कोई हरियाली अब लों न उगी थी क्योंकि परमेश्वर ईश्वर ने
पृथिवी पर मेंह न बर्साया था और आदम न था कि भूमि
६ की खेती करे। और पृथिवी से कुहासा उठता था और समस्त
भूमि को सींचता था॥

७ तब परमेश्वर ईश्वर ने भूमि की धूल से आदम को बनाया
और उस के नथुनें में जीवन का श्वास फूंका और आदम जीवता
प्राण हुआ॥

८ और परमेश्वर ईश्वर ने अ़दन में पूरब की ओर एक बारी
लगाई और उस आदम को जिसे उस ने बनाया था उस में रक्खा।
९ और परमेश्वर ईश्वर ने हर एक पेड़ को जो देखने में सुन्दर और
खाने में अच्छा है और उस बारी के मध्य में जीवन का पेड़
१० और भले बुरे के ज्ञान का पेड़ भूमि से उगाया। और उस बारी
को सींचने के लिये अ़दन से एक नदी निकली और वहां से
११ बिभाग होके चार मोहाने हुए। पहिली का नाम फ़ेसून जो
१२ हवील: की सारी भूमि को घेरती है जहां सोना होता है। और

उस भूमि का सोना चोखा है वहां मोती और बिल्लोर होता है।
१३ और दूसरी नदी का नाम जेहून है जो कूश की सारी भूमि को
१४ घेरती है। और तीसरी नदी का नाम दिजल: है जो असूर की
पूरब ओर जाती है और चौथी नदी फ़ुरात है॥
१५ और परमेश्वर ईश्वर ने उस आदम को लेके अ़दन की बारी में
१६ रक्खा जिसतें उसे सुधारे और उस की रखवाली करे। और परमेश्वर
ईश्वर ने आदम को आज्ञा देके कहा कि तू इस बारी के हर एक
१७ पेड़ का फल खाया कर। परन्तु भले और बुरे के ज्ञान के पेड़ से
मत खाना क्योंकि जिस दिन तू उस्से खायगा तू निश्चय
मरेगा॥
१८ और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि आदम को अकेला रहना
अच्छा नहीं मैं उस के लिये एक उपकारिणी उस के समान
१९ बनाऊंगा। और परमेश्वर ईश्वर भूमि से हर एक बनैले पशु और
आकाश के सारे पक्षी बनाकर उन को आदम के पास लाया कि
देखे कि उन के क्या क्या नाम रखता है और जो कुछ कि आदम
२० ने हर एक जीते जंतु को कहा वही उस का नाम हुआ। और
आदम ने हर एक ढोर और आकाश के पक्षी और हर एक बनैले
पशु का नाम रक्खा पर आदम के लिये उस के समान कोई
उपकारिणी न मिली॥
२१ और परमेश्वर ईश्वर ने आदम को बड़ी नींद में डाला और
वुह सो गया तब उस ने उस की पसुलियों में से एक निकाली
२२ और उस की संती मांस भर दिया। और परमेश्वर ईश्वर ने
आदम की उस पसुली से जो उस ने लिई थी एक नारी बनाई
२३ और उसे आदम पास लाया। तब आदम बोला यह तो मेरी हड्डियों
में की हड्डी और मेरे मांस में का मांस है वुह नारी कहलावेगी
२४ क्योंकि वुह नर से निकाली गई। इस लिये मनुष्य अपने माता
पिता को छोड़ेगा और अपनी पत्नी से मिला रहेगा और वे एक

२५ मांस होंगे। और आदम और उस की पत्नी दोनों के दोनों नग्न
थे और लज्जित न थे॥

तीसरा पर्व्व।

१ अब सर्प्प भूमि के हर एक पशु से जिसे परमेश्वर ईश्वर
ने बनाया था धूर्त्त था और उस ने स्त्री से कहा क्या निश्चय
ईश्वर ने कहा है कि तुम इस बारी के हर एक पेड़ से न खाना।
२ और स्त्री ने सर्प्प से कहा कि हम तो इस बारी के पेड़ों का
३ फल खाते हैं। परन्तु उस पेड़ का फल जो बारी के बीच में
है ईश्वर ने कहा है कि तुम उस्से न खाना और न छूना न
४ हो कि मर जाओ। तब सर्प्प ने स्त्री से कहा कि तुम निश्चय न
५ मरोगे। क्योंकि ईश्वर जानता है कि जिस दिन तुम उस्से
खाओगे तुम्हारी आंखें खुल जायेंगी और तुम भले और बुरे की
पहिचान में ईश्वर के समान हो जाओगे॥
६ और जब स्त्री ने देखा कि वुह पेड़ खाने में सुस्वाद और
दृष्टि में सुन्दर और बुद्धि देने के योग्य है तो उस के फल में से
लिया और खाया और अपने पति को भी दिया और उस ने
७ खाया। तब उन दोनों की आंखें खुल गईं और वे जान गये
कि हम नंगे हैं सो उन्हों ने गूलर के पत्तों को मिलाके सीआ
और अपने लिये ओढ़ना बनाया॥
८ और दिन के ठंढे में उन्हों ने परमेश्वर ईश्वर का शब्द जो
बारी में चलता था सुना तब आदम और उस की पत्नी ने अपने
९ को परमेश्वर ईश्वर के आगे से बारी के पेड़ों में छिपाया। तब
परमेश्वर ईश्वर ने आदम को पुकारा और कहा कि तू कहां है।
१० और वुह बोला कि मैं ने तेरा शब्द बारी में सुना और डरा
११ क्योंकि मैं नंगा था इस कारण मैं ने अपने को छिपाया। और
उस ने कहा कि किस ने तुझे जताया कि तू नंगा है क्या तू

१२ ने उस पेड़ से खाया जो मैं ने तुझे खाने से बरजा था। और
आदम ने कहा कि इस स्त्री ने जो तू ने मेरे संग रक्खी मुझे
१३ उस पेड़ से दिया और मैं ने खाया। तब परमेश्वर ईश्वर ने उस
स्त्री से कहा कि यह तू ने क्या किया है और स्त्री बोली कि सर्प्प
ने मुझे बहकाया और मैं ने खाया ॥
१४ तब परमेश्वर ईश्वर ने सर्प्प से कहा कि जो तू ने यह किया
है इस कारण तू सारे ढोर और हर एक बन के पशुन से अधिक
स्रापित होगा तू अपने पेट के बल चलेगा और अपने जीवन
१५ भर धूल खाया करेगा। और मैं तुझ में और स्त्री में और तेरे
बंश और उस के बंश में बैर डालूंगा वुह तेरे सिर को कुचलेगा
और तू उस की एड़ी को काटेगा ॥
१६ और उस ने स्त्री को कहा कि मैं तेरी पीड़ा और गर्भधारण
को बहुत बढ़ाऊंगा तू पीड़ा से बालक जनेगी और तेरी इच्छा
तेरे पति पर होगी और वुह तुझ पर प्रभुता करेगा ॥
१७ और उस ने आदम से कहा कि तू ने जो अपनी पत्नी का
शब्द माना है और जिस पेड़ का मैं ने तुझे खाने से बरजा था तू
ने खाया है इस कारण भूमि तेरे लिये स्रापित है अपने जीवन
१८ भर तू उस्से पीड़ा के साथ खायगा। और वुह कांटे और ऊंटकटारे
१९ तेरे लिये उगायेगी और तू खेत का साग पात खायगा। अपने
मुंह के पसीने से तू रोटी खायगा जब लों तू भूमि में फिर न
मिल जाय क्योंकि तू उस्से निकाला गया इस लिये कि तू धूल
है और धूल में फिर जायगा ॥
२० और आदम ने अपनी पत्नी का नाम हव्वा रक्खा इस कारण कि
२१ वुह समस्त जीवतों की माता थी। और परमेश्वर ईश्वर ने आदम
और उस की पत्नी के लिये चमड़े के ओढ़ने बनाये और उन्हें
पहिनाये ॥
२२ और परमेश्वर ईश्वर ने कहा कि देखो आदम भले बुरे के

जान्ने में हम में से एक की नाईं हुआ और अब ऐसा न होवे
कि वुह अपना हाथ डाले और जीवन के पेड़ में से भी लेकर
२३ खावे और अमर हो जाय। इस लिये परमेश्वर ईश्वर ने उस
को अदन की बारी से बाहर किया जिसतें वुह भूमि की किसनई
२४ करे जिस्से वुह लिया गया था। सो उस ने आदम को निकाल
दिया और अदन की बारी की पूरब ओर करोबीम ठहराये और
चमकते हुए खड्ग को जो चारों ओर घूमता था जिसतें जीवन
के पेड़ के मार्ग की रखवाली करें॥

चौथा पर्व्व।

१ और आदम ने अपनी पत्नी हव्वा को ग्रहण किया और वुह
गर्भिणी हुई और उस्से क़ाइन उत्पन्न हुआ और बोली कि मैं
२ ने परमेश्वर से एक पुरुष पाया। और फिर वुह उस के भाई
हाबील को जनी और हाबील भेड़ों का चरवाहा हुआ परन्तु
क़ाइन किसनई करता था॥

३ और कितने दिनों के पीछे यों हुआ कि क़ाइन भूमि के फलों
४ में से परमेश्वर के लिये भेंट लाया। और हाबील भी अपनी झुंड
में से पहिलौंठी और मोटी मोटी लाया और परमेश्वर ने हाबील
५ का और उस की भेंट का आदर किया। परन्तु क़ाइन का और
उस की भेंट का आदर न किया इस लिये क़ाइन अति कोपित
६ हुआ और अपना मुंह फुलाया। तब परमेश्वर ने क़ाइन से कहा
७ तू क्यों क्रुद्ध है और तेरा मुंह क्यों फूल गया। यदि तू भला करे
तो क्या तू ग्राह्य न होगा और यदि तू भला न करे तो पाप
द्वार पर दबकता है और उस की इच्छा तेरी ओर है पर तू उस
पर प्रभुता कर॥

८ तब क़ाइन ने अपने भाई हाबील से बातें किईं और यों
हुआ कि जब वे खेत में थे तब क़ाइन अपने भाई हाबील पर

९ झपटा और उसे घात किया। तब परमेश्वर ने क़ाइन से कहा
तेरा भाई हाबील कहां है और वुह बोला मैं नहीं जानता क्या मैं
१० अपने भाई का रखवाल हूं। तब उस ने कहा तू ने क्या किया
११ तेरे भाई के लोहू का शब्द भूमि से मुझे पुकारता है। और
अब तू पृथिवी से स्रापित है जिस ने तेरे भाई का लोहू तेरे
१२ हाथ से लेने को अपना मुंह खोला है। जब तू किसनई करेगा
तो वुह तेरे बश में न होगी तू पृथिवी पर भगोड़ा और बहेतू
१३ रहेगा। तब क़ाइन ने परमेश्वर से कहा कि मेरा दण्ड मेरे
१४ सहाव से अधिक है। देख तू ने आज देश में से मुझे खदेड़
दिया है और मैं तेरे आगे से गुप्त होऊंगा और मैं पृथिवी पर
भगोड़ा और बहेतू होऊंगा और ऐसा होगा कि जो कोई मुझे
१५ पावेगा मार डालेगा। तब परमेश्वर ने उसे कहा इस लिये जो
कोई क़ाइन को मार डालेगा तो उस्से सात गुन पलटा लिया
जायगा और परमेश्वर ने क़ाइन पर एक चिन्ह रक्खा न हो
१६ कि कोई उसे पाके मार डाले। तब क़ाइन परमेश्वर के आगे
से निकल गया और अ़दन की पूरब और नूद की भूमि में जा
रहा॥

१७ और क़ाइन ने अपनी पत्नी को ग्रहण किया और वुह गर्भिणी
हुई और उस्से हनूक उत्पन्न हुआ तब उस ने एक नगर बनाया
१८ और अपने बेटे हनूक का नाम उस पर रक्खा। और हनूक
से ईराद उत्पन्न हुआ और ईराद से महूयाएल और महूयाएल
से मतूसाएल और मतूसाएल से लमक उत्पन्न हुआ॥

१९ और लमक ने दो पत्नियां किईं पहिली का नाम अ़द: और
२० दूसरी का नाम ज़िल्ल: था। और अ़द: से याबल उत्पन्न हुआ
जो तंबुओं के निवासियों और ढोर के चरवाहों का पिता था।
२१ और उस के भाई का नाम यूबल था वुह बीन और बांसली
२२ के सारे बजनियों का पिता था। और ज़िल्ल: से भी तूबलक़ाइन

उत्पन्न हुआ जो ठठेरों और लोहारों का शिक्षक था और तूबलक़ाइन
२३ की बहिन नअ़मः थी। और लमक ने अपनी पत्नियों अ़दः और
ज़िल्लः से कहा कि हे लमक की पत्नियो मेरा शब्द सुनो और मेरे
बचन पर कान धरो क्योंकि मैं ने एक पुरुष को अपने घाव के
२४ लिये और एक तरुण को अपने दुःख के लिये मार डाला। यदि
क़ाइन सात गुन प्रतिफल लेवे तो लमक सतहत्तर गुन ॥
२५ और आदम ने अपनी पत्नी को फिर ग्रहण किया और वुह
बेटा जनी और उस का नाम सेत रक्खा क्योंकि ईश्वर ने हाबील की
संती जिस को क़ाइन ने मार डाला मेरे लिये दूसरा बंश
२६ ठहराया। और सेत को भी एक बेटा उत्पन्न हुआ और उस
ने उस का नाम अनूस रक्खा उस समय से लोग परमेश्वर का
नाम लेने लगे ॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ आदम की बंशावली का पत्र यह है जिस दिन में ईश्वर ने
आदम को उत्पन्न किया उस ने उसे ईश्वर के स्वरूप में बनाया।
२ उस ने उन्हें नर और नारी बनाया और जिस दिन वे सिरजे
गये उस ने उन्हें आशीष दिया और उन का नाम आदम
रक्खा ॥
३ और एक सौ तीस बरस की बय में आदम से उसी के स्वरूप
और रूप में एक बेटा उत्पन्न हुआ और उस का नाम सेत
४ रक्खा। और सेत की उत्पत्ति के पीछे आदम की बय आठ सौ
५ बरस की हुई और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और आदम
की सारी बय नव सौ तीस बरस की हुई और वुह मर गया ॥
६ और सेत जब एक सौ पांच बरस का हुआ तब उस्से अनूस
७ उत्पन्न हुआ। और अनूस की उत्पत्ति के पीछे सेत आठ सौ
८ सात बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और

सेत की सारी बय नव सौ बारह बरस की हुई और वुह मर
गया ॥
९ और अनूस जब नव्वे बरस का हुआ तब उस्से क़ीनान
१० उत्पन्न हुआ । और क़ीनान की उत्पत्ति के पीछे अनूस आठ सौ
११ पंदरह बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं । और
अनूस की सारी बय नव सौ पांच बरस की हुई और वुह मर
गया ॥
१२ और क़ीनान सत्तर बरस का हुआ और उस्से महललिएल
१३ उत्पन्न हुआ । और महललिएल की उत्पत्ति के पीछे क़ीनान
आठ सौ चालीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
१४ और क़ीनान की सारी बय नव सौ दस बरस की हुई और वुह
मर गया ॥
१५ और महललिएल जब पैंसठ बरस का हुआ तब उस्से यिरद
१६ उत्पन्न हुआ । और महललिएल यिरद की उत्पत्ति के पीछे आठ
१७ सौ तीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं । और
महललिएल की सारी बय आठ सौ पंचानवे बरस की हुई और
वुह मर गया ॥
१८ जब यिरद एक सौ बासठ बरस का हुआ तब उस्से हनूक
१९ उत्पन्न हुआ । और हनूक की उत्पत्ति के पीछे यिरद आठ सौ
२० बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं । और यिरद की
सारी बय नव सौ बासठ बरस की हुई और वुह मर गया ॥
२१ जब हनूक पैंसठ बरस का हुआ तो उस्से मतूसिलह उत्पन्न
२२ हुआ । और हनूक मतूसिलह की उत्पत्ति के पीछे तीन सौ बरस
लों ईश्वर के साथ साथ चलता था और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
२३ । २४ और हनूक की सारी बय तीन सौ पैंसठ बरस की हुई । और
हनूक ईश्वर के साथ साथ चलता था और वुह न मिला क्योंकि
ईश्वर ने उसे ले लिया ॥

२५ और जब मतूसिलह एक सौ सतासी बरस का हुआ तब उस्से
२६ लमक उत्पन्न हुआ। और लमक की उत्पत्ति के पीछे मतूसिलह
सात सौ बयासी बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं।
२७ और मतूसिलह की सारी बय नव सौ उनहत्तर बरस की हुई
और वुह मर गया॥

२८ और लमक जब एक सौ बयासी बरस का हुआ तब उस
२९ का एक बेटा उत्पन्न हुआ। और उस ने उस का नाम नूह
रक्खा और कहा कि यह हमारे हाथों के परिश्रम और कार्य्य
के बिषय में जो पृथिवी के कारण से हैं जिस पर परमेश्वर ने
३० स्राप दिया है हमें शान्ति देगा। और नूह की उत्पत्ति के पीछे
लमक पांच सौ पंचानवे बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां
३१ उत्पन्न हुईं। और लमक की सारी बय सात सौ सतहत्तर बरस
की हुई और वुह मर गया॥

३२ और नूह जब पांच सौ बरस का हुआ तब नूह से सिम और
हाम और याफ़त उत्पन्न हुए॥

छठवां पर्व्व।

१ और यों हुआ कि जब आदमी पृथिवी पर बढ़ने लगे और
२ उन से बेटियां उत्पन्न हुईं। तो ईश्वर के पुत्रों ने आदम की
पुत्रियों को देखा कि वे सुंदरी हैं और उन में से जिन्हें उन्हों ने
चाहा उन्हें ब्याहा॥

३ और परमेश्वर ने कहा कि मेरा आत्मा आदमी में उन के
अपराध के कारण सदा लों न्याय न करेगा वुह मांस है और
उस के दिन एक सौ बीस बरस के होंगे॥

४ और उन दिनों में पृथिवी पर दानव थे और उस के पीछे भी
जब ईश्वर के पुत्र आदम की पुत्रियों से मिले तो उन से बालक
उत्पन्न हुए जो बलवान हुए जो आगे से नामी थे॥

५ और ईश्वर ने देखा कि आदम की दुष्टता पृथिवी पर बहुत
हुई और उन के मन की चिंता और भावना प्रति दिन केवल
६ बुरी होती हैं। तब आदमी को पृथिवी पर उत्पन्न करने से
७ परमेश्वर पछताया और उसे अति शोक हुआ। तब परमेश्वर ने
कहा कि आदमी को जिसे मैं ने उत्पन्न किया आदमी से लेके पशु
लों और रेंगवैयों को और आकाश के पच्छियों को पृथिवी पर से
नष्ट करूंगा क्योंकि उन्हें बनाने से मैं पछताता हूं ॥
८। ६ पर नूह ने परमेश्वर की दृष्टि में अनुग्रह पाया। नूह की
बंशावली यह है कि नूह अपने समय में धर्म्मी और सिद्ध पुरुष
१० था नूह ईश्वर के साथ साथ चलता था। और नूह से
११ तीन बेटे सिम हाम और याफ़त उत्पन्न हुए। और पृथिवी
ईश्वर के आगे बिगड़ गई थी और पृथिवी अंधेर से भरपूर
१२ हुई। और ईश्वर ने पृथिवी पर दृष्टि किई और देखो वुह बिगड़
गई थी क्योंकि सारे शरीर ने पृथिवी पर अपनी चाल को बिगाड़
दिया था ॥
१३ और ईश्वर ने नूह से कहा कि सारे शरीर का अंत मेरे आगे
आ पहुंचा है क्योंकि उन के कारण पृथिवी अंधेर से भर गई है और
१४ देख मैं उन्हें पृथिवी समेत नष्ट करूंगा। तू गोफ़र लकड़ी की
अपने लिये एक नाव बना और उस नाव में कोठरियां बना और
१५ उस के बाहर भीतर राल लगा। और उसे इस डौल की बना
उस नाव की लंबाई तीन सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ
१६ और ऊंचाई तीस हाथ की होवे। उस नाव में एक खिड़की
बना और ऊपर ऊपर उसे हाथ भर में समाप्त कर और उस के
अलंग में द्वार बना और उस में नीचे की और दूसरी और
१७ तीसरी अटारी बना। और देख कि सारे शरीर को जिन में
जीवन का श्वास है आकाश के तले से नाश करने को मैं अर्थात्
मैं ही बाढ़ के पानी पृथिवी पर लाता हूं और पृथिवी पर हर

१८ एक वस्तु नष्ट हो जायगी। परन्तु मैं तुम्से अपनी बाचा स्थिर
करूंगा तू नाव में जाना तू और तेरे बेटे और तेरी पत्नी और
१९ तेरे बेटों की पत्नियां तेरे साथ। और सारे शरीरों में से जीवता
जंतु दो दो अपने साथ नाव में लेना जिसतें वे तेरे साथ जीते
२० रहें वे नर और नारी होवें। पंछी में से उस के भांति भांति
के और ढोर में से उस के भांति भांति के और पृथिवी के हर
एक रेंगवैये में से भांति भांति के हर एक में से दो दो तुझ
२१ पास आवें जिसतें जीते रहें। और तू अपने लिये खाने को सब
सामग्री अपने पास एकट्ठा कर वुह तुम्हारे और उन के लिये
भोजन होगा सो ईश्वर की सारी आज्ञा के समान नूह ने
किया॥

सातवां पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर ने नूह से कहा कि तू अपने सारे घराने समेत
नाव में प्रवेश कर क्योंकि इस पीढ़ी में मैं ने अपने आगे तुझे
२ धर्मी देखा है। हर एक पवित्र पशु में से सात सात नर और
उस की जोड़ी और पशु में से जो पवित्र नहीं दो दो नर और
३ उस की जोड़ी अपने साथ लेना। आकाश के पक्षियों से
भी सात सात नर और उस की जोड़ी जिसतें सारी पृथिवी पर
४ बंश जीता रहे। क्योंकि मैं सात दिन के पीछे पृथिवी पर
चालीस रात दिन मेंह बरसाऊंगा और हर एक जीवते जंतु को
५ जिसे मैं ने बनाया है पृथिवी पर से मिटा देऊंगा। और नूह
ने परमेश्वर की सारी आज्ञा के समान किया॥
६ और जब पानियों का बाढ़ पृथिवी पर हुआ तब नूह छः सौ
७ बरस का था। तब नूह और उस के बेटे और उस की पत्नी
और उस के बेटों की पत्नियां पानियों के बाढ़ के कारण से उस
८ के संग नाव पर चढ़ीं। पवित्र पशुन से और उन में से जो पवित्र

नहीं हैं और पंछियों से और पृथिवी के हर एक रेंगवैयों में
९ से । दो दो नर और उस की जोड़ी जैसा ईश्वर ने नूह को
१० आज्ञा किई थी नाव में गये । और जब सात दिन बीत गये
तो यों हुआ कि बाढ़ के पानी पृथिवी पर हुए ॥
११ और नूह की बय के छः सौ बरस के दूसरे मास की
सत्तरहवीं तिथि में उसी दिन महा गहिराये के सारे सोते फूट
१२ निकले और स्वर्ग के द्वार खुल गये । और पृथिवी पर चालीस
१३ रात दिन मेंह बरसा । उसी दिन नूह और नूह के बेटे सिम
और हाम और याफ़त और नूह की पत्नी और उस के बेटों की
१४ तीनों पत्नियां उस के साथ नाव में गईं । वे और हर एक पशु
अपनी अपनी भांति के समान और सारे ढोर और भूमि पर के
हर एक रेंगवैये जंतु अपनी अपनी भांति के समान और हर
एक पंछी अपनी अपनी भांति के समान हर एक भांति की हर
१५ एक चिड़ियां । और वे नूह के पास सारे शरीरों में से दो दो
१६ जिन में जीवन का श्वास था नाव में गये । और जिन्हों ने
प्रवेश किया सो सारे शरीरों में से जोड़ा जोड़ा थे जैसा कि ईश्वर
ने उसे आज्ञा किई थी और परमेश्वर ने उस के पीछे बंद किया ॥
१७ और बाढ़ का पानी चालीस दिन ताईं पृथिवी पर हुआ
और पानी बढ़ गया और नाव को उभार लिया और वुह भूमि
१८ पर से ऊपर उठ गई । और जब पानी बढ़े और पृथिवी पर
बहुताई से बढ़ गए तब नौका पानी के ऊपर उतराने लगी ।
१९ और जब कि पानी पृथिवी पर अत्यंत बढ़ गये तो सारे ऊंचे
२० पहाड़ जो सारे आकाश के नीचे थे ढंप गये । ढंपे हुए पहाड़ों
पर पानी पंदरह हाथ बढ़ गये ॥
२१ और सारे शरीर जो पृथिवी पर चलते थे पंछी और ढोर और
पशु और भूमि पर के हर एक रेंगवैये जंतु और हर एक मनुष्य
२२ मर गये । सब जिन के नथुनों में जीवन का श्वास था और

२३ सब जो सूखी पर थे मर गये। और हर एक जीवता
जंतु जो पृथिवी पर था आदमी से लेके ढोर और कीड़े मकोड़े
और आकाश के पंछियों लों नष्ट हुए केवल नूह और जो उस
२४ के साथ नौका में थे बच रहे। और पानी डेढ़ सौ दिन लों
पृथिवी पर बढ़ते गये॥

आठवां पर्व्व।

१ और ईश्वर ने नूह को और हर एक जीवते जंतु को और
सारे ढोर को जो उस के संग नाव में थे स्मरण किया और
ईश्वर ने पृथिवी पर एक पवन बहाया और जल ठहर गये।
२ और गहिराव के सोते भी और आकाश के झरोखे बंद हो गये
३ और आकाश से मेंह थम गया। और जल पृथिवी पर से घटे
चले जाते थे और डेढ़ सौ दिनों के बीते पर जल घट गये॥

४ और सातवें मास की सत्तरह तिथि में नौका अरारात के
५ पहाड़ों पर टिक गई। और जल दसवें मास लों घटते गये
और दसवें मास के पहिले दिन पहाड़ों की चोटियां दिखाई
दिईं॥

६ और चालीस दिन के पीछे यों हुआ की नूह ने अपने बनाये
७ हुए नाव के झरोखे को खोला। और उस ने एक काग को
उड़ा दिया और जब लों पृथिवी पर के जल सूख न गये वुह
८ आया जाया करता था। फेर उस ने अपने पास से एक पंडुकी
को छोड़ दिया जिसतें देख ले कि पानी भूमि पर से घट गये
९ अथवा नहीं। परन्तु उस पंडुकी ने अपना चंगुल टिकने को
ठिकाना न पाया और वुह उस के पास नौका पर फिर आई
क्योंकि जल सारी पृथिवी पर था तब उस ने अपना हाथ
१० बढ़ाके उसे ले लिया और अपने पास नाव में ले लिया। फिर
वुह और सात दिन ठहर गया और फिर उस ने उस पंडुकी

११ को नाव से उड़ा दिया। और वुह पंडुकी सांझ को उस
पास फिर आई और क्या देखता है कि जलपाई की एक पत्ती
उस के मुंह में है तब नूह ने जाना कि अब जल पृथिवी
१२ पर से घट गया। और वुह और भी सात दिन ठहरा
और उस पंडुकी को छोड़ दिया और वुह उस के पास फिर न
आई ॥

१३ और छः सौ एक बरस के पहिले मास की पहिली तिथि में
यों हुआ कि जल पृथिवी पर से सूख गया और नूह ने नाव
की छत उठा दिई और क्या देखता है कि पृथिवी ऊपर से
१४ सूखी है। और दूसरे मास की सत्ताईसवीं तिथि में पृथिवी
सूखी थी ॥

१५। १६ तब ईश्वर नूह को यह कहके बोला। कि नौका
से निकल आ तू और तेरी पत्नी और तेरे बेटे और तेरे
१७ बेटों की पत्नियां तेरे संग। हर एक जीवते जंतु सारे शरीर
में से क्या पंछी क्या ढोर और क्या कीड़े मकोड़े जो भूमि
पर रेंगते चलते हैं सब को अपने संग ले निकल जिसतें
उन के बंश पृथिवी पर बहुत बढ़ें और फलवंत हों और
१८ पृथिवी पर फैलें। तब नूह निकला और उस के बेटे और
उस की पत्नी और उस के बेटों की पत्नियां उस के संग।
१९ हर एक पशु हर एक रेंगवैये जंतु और हर एक पंछी जो कुछ
कि पृथिवी पर रेंगते हैं सब अपने अपने भांति के समान नाव
से निकल गये ॥

२० और नूह ने परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई और सारे
पवित्र पशु और हर एक पवित्र पंछियों में से लिये और होम
२१ की भेंट उस बेदी पर चढ़ाई। और परमेश्वर ने सुगंध सूंघा
और परमेश्वर ने अपने मन में कहा कि आदमी के लिये मैं
पृथिवी को फिर कधी स्राप न देऊंगा इस कारण कि आदमी के

मन की भावना उस की लड़काई से बुरी है और जिस रीति से
२२ मैं ने सारे जीवधारियों को मारा फिर कभी न मारूंगा। जब
लों पृथिवी है बोना और काटना और ठंड और तपन और ग्रीष्म
और शीत और दिन और रात थम न जायेंगे॥

नवां पर्व्व।

१ और ईश्वर ने नूह को और उस के बेटों को आशीष दिया
और उन्हें कहा कि फलो और बढ़ो और पृथिवी को भरो।
२ और तुम्हारा डर और तुम्हारा भय पृथिवी के हर एक पशु पर और
आकाश के हर एक पंछियों पर उन सभों पर जो पृथिवी पर
चलते हैं और समुद्र की सारी मछलियों पर पड़ेगा वे तुम्हारे
३ हाथ में सौंपे गये। हर एक जीता चलता जंतु तुम्हारे भोजन
के लिये होगा मैं ने हरी तरकारी के समान सारी बस्तु तुम्हें
४ दिई। केवल मांस उस के जीव अर्थात् उस के लोहू समेत
५ मत खाना। और केवल तुम्हारे लोहू का तुम्हारे शरीरों के
लिये मैं पलटा लेऊंगा हर एक पशु से और आदमी के हाथ से मैं
पलटा लेऊंगा मनुष्य के भाई के हाथ से आदमी के प्राण का
६ मैं पलटा लेऊंगा। जो कोई आदमी का लोहू बहावेगा आदमी
से उस का लोहू बहाया जायगा क्योंकि ईश्वर के रूप में आदम
७ बनाया गया है। और तुम फलो और बढ़ो और पृथिवी पर
बहुताई से जन्मो और उस में बढ़ो॥

८ और ईश्वर ने नूह को और उस के साथ उस के बेटों को कहा।
९ कि देखो मैं अपना नियम स्थिर करता हूं तुम से और तुम्हारे
१० बंश से तुम्हारे पीछे। और हर एक जीवते जंतु से जो तुम्हारे
संग है क्या पंछी और क्या ढोर और पृथिवी के सारे चौपायों से
और सभों से जो नाव से बाहर जाते हैं पृथिवी के हर एक
११ पशु लों। और मैं अपना नियम तुम से स्थिर करूंगा और

सारे शरीर बाढ़ के पानियों से फिर नष्ट न किये जायेंगे और फिर
१२ पृथिवी को नष्ट करने के लिये जलमय न होगा। और ईश्वर
ने कहा कि यह उस नियम का चिन्ह है जो मैं अपने और
तुम्हारे और हर एक जीवते जंतु के मध्य में जो तुम्हारे संग
१३ है परंपरा की पीढ़ी लों बांधता हूं। मैं अपने धनुष को मेघ
पर रखता हूं और वुह मेरे और पृथिवी के मध्य में नियम का
१४ चिन्ह होगा। और जब मैं मेघ को पृथिवी के ऊपर फैलाऊंगा
१५ तो धनुष मेघ में दिखाई देगा। और मैं अपने नियम को जो
मेरे और तुम्हारे और सारे शरीर के हर एक जीवधारी के
मध्य में है स्मरण करूंगा और फिर सारे शरीर को नष्ट करने
१६ को जलमय न होगा। और धनुष मेघ में होगा और मैं उसे
देखूंगा जिसतें मैं उस सनातन के नियम को जो ईश्वर के और
पृथिवी के सारे शरीर के हर एक जीवधारी के मध्य में है
१७ स्मरण करूं। और ईश्वर ने नूह से कहा कि जो नियम मैं ने
अपने और पृथिवी पर के सारे शरीरों से स्थिर किया है उस
का यह चिन्ह है॥

१८ और नूह के बेटे जो नौका से उतरे सिम और हाम और
१९ याफ़त थे और हाम कनआन का पिता था। नूह के यही
तीन बेटे थे और उन्हीं से सारी पृथिवी बस गई॥

२० और नूह खेती बारी करने लगा और उस ने एक दाख की
२१ बाटिका लगाई। और उस ने उस का रस पीया और उसे
२२ अमल हुआ और अपने तंबू में नग्न रहा। और कनआन के
पिता हाम ने अपने पिता की नंगापन देखी और बाहर अपने
२३ भाइयों को जनाया। तब सिम और याफ़त ने एक ओढ़ना
लिया और अपने दोनों कंधों पर धरा और पीठ के बल जाके
अपने पिता की नंगापन ढांपी और उन के मुंह पीछे थे सो
२४ उन्हों ने अपने पिता की नंगापन न देखी। जब नूह अपने

अमल से जागा तो जो उस के छोटे बेटे ने उस्से किया था
२५ उसे जान पड़ा। और उस ने कहा कि कनआन स्रापित होगा
२६ वुह अपने भाइयों के दासों का दास होगा। और उस ने कहा
कि सिम का परमेश्वर ईश्वर धन्य होवे और कनआन उस का
२७ दास होगा। ईश्वर याफ़त को फैलाये और वुह सिम के
२८ तंबुओं में बास करे और कनआन उस का दास हो। और
२९ जलमय के पीछे नूह साढ़े तीन सौ बरस जीआ। और नूह
की सारी बय नव सौ पचास बरस की हुई और वुह मर गया॥

दसवां पर्ब्ब ।

१ अब नूह के बेटों की बंशावली यही है सिम हाम
और याफ़त और जलमय के पीछे उन से बेटे उत्पन्न हुए।
२ याफ़त के बेटे जुम्र और माजूज और मादी और यूनान और तूबल
३ और मसक और तीरास। और जुम्र के बेटे अशकनाज़ और
४ रिफ़त और तजरमः। और यूनान के बेटे इलीसः और तरशीश
५ कित्ती और दूदानी। इन्हीं से अन्यदेशियों के टापू हर
एक अपनी अपनी भाषा के और अपने अपने परिवार के समान
अपनी अपनी जाति में बंट गये॥

६ और हाम के बेटे कूश और मिस्र और फूत और कनआन।
७ और कूश के बेटे सबा और हवीलः और सबतः और रग़मः
और सबतिका और रग़मः के बेटे सिबा और ददान॥

८ और कूश से निमरूद उत्पन्न हुआ वुह पृथिवी पर एक
९ महाबीर होने लगा। वुह ईश्वर के आगे बलवान ब्याधा हुआ
इसी लिये कहा जाता है जैसा कि परमेश्वर के आगे निमरूद
१० बलवंत ब्याधा। और उस के राज्य का आरंभ बाबुल और
अरक और अक्कद और कलनः सिनआर देश में हुआ।
उसी देश में से असूर निकला और नीनवः और रिहाबात नगर

१२ और कल: बनाये। और नीनव: और कल: के मध्य में रसन
बनाया जो बड़ा नगर है॥
१३ और मिस्र से लोदी और अनामी और लिहाबी और
१४ नफ़तूही उत्पन्न हुए। और फतरूसी और कसलूही जिन से
फ़िलिस्ती और कफ़तूरी निकले॥
१५ और कनअ़ान से उस का पहिलौंठा सैदा और हित्त उत्पन्न हुए।
१६। १७ और यबूसी और अमूरी और जिरजाशी। और हवी और
१८ अरक़ी और सीनी। और अरवादी और ज़मारी और हमाती और
१९ उस के पीछे कनअ़ान के घराने फैल गये। और कनअ़ान के
सिवाने सैदा से जिरार के मार्ग में ग़ज़्ज़: लों सदूम और अ़मूर:
२० और अदमा और ज़िबियान और लसअ़ लों हुए। हाम के बेटे
अपने घरानों और अपनी भाषाओं के समान अपने देशों और
अपनी जातिगणों में ये हैं॥
२१ और सिम से भी बालक उत्पन्न हुए वुह सारे इब्र के बंश
२२ का पिता था और याफ़त उस का बड़ा भाई था। और सिम के
बंश ऐ़लाम और असूर और अरफ़कसद और लूद और अराम
२३ थे। और अराम के बंश ऊ़ज़ और हूल और जतर और मश
२४ थे। और अरफ़कसद से सिलह उत्पन्न हुआ और सिलह से
२५ इब्र। और इब्र से दो बेटे उत्पन्न हुए एक का नाम फ़लज
था क्योंकि उस के दिनों में पृथिवी बांटी गई और उस के
२६ भाई का नाम युक़तान था। और युक़तान से अलमूदाद और
२७ सलफ़ और हसरिमौत और इरख़। और हदूराम और ऊज़ाल
२८ और दिक़लह। और ऊबल और अबीमायल और सिबा।
२९ और ओफ़ीर और हवील: और यूबाब उत्पन्न हुए ये सब
३० युक़तान के बेटे थे। और उन के निवास मेसा के मार्ग से जो पूरब के
३१ पहाड़ सिफ़ार लों था। सिम के बेटे अपने घरानों और अपनी
भाषाओं के समान अपने अपने देशों और अपने अपने जातिगणों

३२ में ये थे। नूह के बेटों के घराने उन की पीढ़ी और उन के
जातिगणों के समान ये हैं और जलमय के पीछे पृथिवी में
जातिगण इन्हीं से बांटे गये।

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ और सारी पृथिवी पर एकही बोली और एकही भाषा थी।
२ और ज्यों उन्हों ने पूरब से यात्रा किई तो ऐसा हुआ कि उन्हों
ने सिनआर देश में एक चौगान पाया और वहां ठहरे॥
३ तब उन्हों ने आपुस में कहा कि चलो हम ईंटें बनावें
और आग में पकावें सो उन के लिये ईंट पत्थर की संती और
४ गारा की संती शिलाजतु था। फिर उन्हों ने कहा कि आओ
हम एक नगर और एक गुम्मट जिस की चोटी स्वर्ग लों पहुंचे
अपने लिये बनावें और अपना नाम करें न हो कि हम सारी
५ पृथिवी पर छिन्न भिन्न हो जायें। तब परमेश्वर उस नगर और
उस गुम्मट को जिसे आदम के संतान बनाते थे देखने को उतरा।
६ तब परमेश्वर ने कहा कि देखो लोग एक ही हैं और उन सब
की एक ही बोली है अब वे ऐसा ऐसा कुछ करने लगे सो वे
७ जिस पर मन लगावेंगे उस्से अलग न किये जायेंगे। आओ
हम उतरें और वहां उन की भाषा को गड़बड़ावें जिसतें एक
८ दूसरे की बोली न समझे। तब परमेश्वर ने उन्हें वहां से सारी
पृथिवी पर छिन्न भिन्न किया और वे उस नगर के बनाने से
९ अलग रहे। इस लिये उस का नाम बाबुल कहावता है
क्योंकि परमेश्वर ने वहां सारे जगत की भाषा को गड़बड़ किया
और परमेश्वर ने वहां से उन को सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न
किया॥
१० सिम की बंशावली यह है कि सिम सौ बरस का होके
११ जलमय के दो बरस पीछे उस्से अरफ़कसद उत्पन्न हुआ। और

अरफ़कसद की उत्पत्ति के पीछे सिम पांच सौ बरस जीआ और
१२ उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और जब अरफ़कसद पैंतीस
१३ बरस का हुआ तब उस्से सिलह उत्पन्न हुआ। और सिलह की
उत्पत्ति के पीछे अरफ़कसद चार सौ तीस बरस जीआ और
१४ उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और सिलह जब तीस बरस का
१५ हुआ तब उस्से इब्र उत्पन्न हुआ। और सिलह इब्र की उत्पत्ति के
पीछे चार सौ तीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न
१६ हुईं। और इब्र से चौंतीस बरस की बय में फ़लज उत्पन्न
१७ हुआ। और फ़लज की उत्पत्ति के पीछे इब्र चार सौ तीस
१८ बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और तीस बरस की
१९ बय में फ़लज से रऊ उत्पन्न हुआ। और रऊ की उत्पत्ति के
पीछे फ़लज दो सौ नव बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां
२० उत्पन्न हुईं। और बत्तीस बरस की बय में रऊ से सरूज उत्पन्न
२१ हुआ। और सरूज की उत्पत्ति के पीछे रऊ दो सौ सात बरस
२२ जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और सरूज जब तीस
२३ बरस का हुआ तब उस्से नहूर उत्पन्न हुआ। और नहूर की उत्पत्ति
के पीछे सरूज दो सौ बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां
२४ उत्पन्न हुईं। और नहूर जब उंतीस बरस का हुआ तब उस्से तारह
२५ उत्पन्न हुआ। और तारह की उत्पत्ति के पीछे नहूर एक सौ
२६ उंतीस बरस जीआ और उस्से बेटे बेटियां उत्पन्न हुईं। और तारह
जब सत्तर बरस का हुआ तब उस्से अबिराम और नहूर और हारन
उत्पन्न हुए॥

२७ और तारह की बंशावली यह है कि तारह से अबिराम और
नहूर और हारन उत्पन्न हुए और हारन से लूत उत्पन्न हुआ।
२८ और हारन अपने पिता तारह के आगे अपनी जन्म भूमि
२९ अर्थात् कलदानियों के ऊर में मर गया। और अबिराम और
नहूर ने पत्नियां किईं अबिराम की पत्नी का नाम सरी था और

नहूर को पत्नी का नाम मिलक: जो हारन की बेटी थी वही
३० मिलक: और इसकाह का पिता था। परन्तु सरी बांझ थी
३१ उस का कोई संतान न था। और तारह ने अपने बेटे अबिराम
को और अपने पोते हारन के बेटे लूत को और अपनी बहू
अबिराम की पत्नी सरी को लिया और उन्हें अपने साथ कलदानियों
के ऊर से कनआन देश में ले चला और वे हारन में आये
३२ और वहां रहे। और तारह दो सौ पांच बरस का होके हारन
में मर गया॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर ने अबिराम से कहा था कि तू अपने देश
और अपने कुनबे से और अपने पिता के घर से उस देश को
२ जा जो मैं तुझे दिखाऊंगा। और मैं तुझसे एक बड़ी जाति
बनाऊंगा और तुझे आशीष देऊंगा और तेरा नाम बड़ा करूंगा
३ और तू एक आशीर्वाद होगा। और जो तुझे आशीष देंगे मैं
उन्हें आशीष देऊंगा और जो तुझे धिक्कारेगा मैं उसे धिक्कारूंगा
और पृथिवी के सारे घराने तुझसे आशीष पावेंगे॥
४ सो परमेश्वर के कहने के समान अबिराम चला गया और
लूत भी उस के संग गया और जब अबिराम हारन से निकला
५ तब वुह पचहत्तर बरस का था। फिर अबिराम ने अपनी पत्नी
सरी को और अपने भतीजे लूत को और उन की सारी संपत्ति
को जो उन्हों ने प्राप्त किई थी और उन के सारे प्राणियों को
जो हारन में मिले थे साथ लिया और कनआन देश को जाने
के लिये चल निकले सो वे कनआन देश में आये॥
६ और अबिराम उस देश में होके सिकम के स्थान लों चला
गया मोरि: के बलूत लों तब कनआनी उस देश में थे।
७ फिर परमेश्वर ने अबिराम को दर्शन देके कहा कि यह देश मैं

तेरे बंश को देऊंगा तब उस ने परमेश्वर के लिये जिस ने उसे
दर्शन दिया था वहां एक बेदी बनाई ॥
८ फिर वुह वहां से बैतएल की पूरब एक पहाड़ की ओर गया
और अपना तंबू बैतएल की पच्छिम ओर खड़ा किया और अई
पूरब ओर था और वहां उस ने परमेश्वर के लिये एक बेदी
९ बनाई और परमेश्वर का नाम लिया। और अबिराम ने जाते जाते
दक्खिन की ओर याचा किई ॥
१० और उस देश में अकाल पड़ा और अबिराम बास करने के लिये
मिस्र को उतर गया क्योंकि उस देश में बड़ा अकाल था।
११ और यों हुआ कि जब वुह मिस्र के निकट पहुंचा तब उस ने अपनी
पत्नी सरी से कहा कि देख मैं जानता हूं कि तू देखने में
१२ सुन्दर स्त्री है। इस लिये यों होगा कि जब मिस्री तुझे देखें तो
वे कहेंगे कि यह उस की पत्नी है और मुझे मार डालेंगे परन्तु
१३ तुझे जीती रक्खेंगे। तू कहियो कि मैं उस की बहिन हूं जिसतें
तेरे कारण मेरा भला होय और मेरा प्राण तेरे हेतु से जीता रहे॥
१४ और जब अबिराम मिस्र में जा पहुंचा तब मिस्रियों ने उस
१५ स्त्री को देखा कि अत्यंत सुन्दरी है। और फिरऊन के
अध्यक्षों ने उसे देखा और फिरऊन के आगे उस का सराहना
१६ किया सो उस स्त्री को फिरऊन के घर में ले गये। और उस
ने उस के कारण अबिराम का उपकार किया और भेड़ बकरी
और बैल और गदहे और दास और दासी और गदहियां और
१७ ऊंट उस को मिले। तब परमेश्वर ने फिरऊन पर और उस के
घराने पर अबिराम की पत्नी सरी के कारण बड़ी बड़ी मरियां
१८ डालीं। तब फिरऊन ने अबिराम को बुलाके कहा कि तू ने
मुझ्से यह क्या किया तू ने मुझे क्यों न जताया कि वुह मेरी
१९ पत्नी है। क्यों कहा कि वुह मेरी बहिन है यहां लों कि मैं ने
उसे अपनी पत्नी कर लिया होता सो अब देख यह तेरी पत्नी है

२० तू उसे ले और चला जा। तब फिरऊन ने अपने लोगों को उस
के विषय में आज्ञा किई और उन्हों ने उसे और उस की पत्नी को
उस सब समेत जो उस का था जाने दिया॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ और अबिराम मिस्र से अपनी पत्नी और सारी सामग्री समेत
२ और लूत को अपने संग लिये हुये दक्खिन को चला। और
३ अबिराम ढोर और सोना चांदी में बड़ा धनी था। और वुह
यात्रा करते दक्खिन से बैतएल लों उसी स्थान को आया जहां
४ आरंभ में उस का तंबू था बैतएल और अई के मध्य में। उस
बेदी के स्थान में जिसे उस ने पहिले वहां बनाया था और वहां
अबिराम ने परमेश्वर का नाम लिया॥

५ और अबिराम के संगी लूत के भी झुंड और गाय बैल और
६ तंबू थे। और साथ रहने के लिये उस देश में उन की समाई न
हुई क्योंकि उन की सामग्री बहुत थी और वे एकट्ठे निवास
७ न कर सके। और अबिराम के ढोर के चरवाहों में और लूत
के ढोर के चरवाहों में झगड़ा हुआ और कनआनी और फरिज़ी
८ उस भूमि में रहते थे। तब अबिराम ने लूत से कहा कि मेरे
और तेरे बीच और मेरे चरवाहों में और तेरे चरवाहों में झगड़ा
९ न होने पावे क्योंकि हम भाई हैं। क्या सारा देश तेरे आगे
नहीं मुझ से अलग हो जो तू बाईं ओर जाय तो मैं दहिनी ओर
जाऊंगा अथवा जो तू दहिनी ओर जाय तो मैं बाईं ओर
जाऊंगा॥

१० तब लूत ने अपनी आंख उठाके यर्दन के सारे चौगान को
देखा कि ईश्वर के सदूम और अमूरः को नष्ट करने से पहिले वुह
सर्बत्र अच्छी रीति से सींचा हुआ था परमेश्वर की बारी के
११ समान सुग़र के मार्ग में मिस्र की नाईं था। तब लूत ने

यर्दन का सारा चौगान अपने लिये चुना और लूत पूरब की ओर
१२ चला और वे एक दूसरे से अलग हुए। अबिराम कनआन देश
में रहा और लूत ने चौगान के नगरों में बास किया और सदूम
१३ लों तंबू खड़ा किया। पर सदूम के लोग परमेश्वर के आगे अत्यंत
दुष्ट और पापी थे॥
१४ तब लूत के उस्से अलग होने के पीछे परमेश्वर ने अबिराम
से कहा कि अब अपनी आंखें उठा और उस स्थान से जहां तू
है उत्तर और दक्खिन और पूरब और पच्छिम की ओर देख।
१५ क्योंकि मैं यह सारा देश जिसे तू देखता है तुझे और तेरे बंश
१६ को सदा के लिये देऊंगा। और मैं तेरे बंश को पृथिवी की
धूल के तुल्य करूंगा यहां लों कि यदि कोई पृथिवी की धूल
१७ को गिन सके तो तेरा बंश भी गिना जायगा। उठके देश की
लंबाई और चौड़ाई में होके फिर क्योंकि मैं उसे तुझे देऊंगा।
१८ तब अबिराम ने तंबू उठाया और ममरे के बलूतों में जो हबरून
में है आ रहा और वहां परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाई॥

चौदहवां पर्व्व।

१ और सिनआर के राजा अमराफिल के इल्लासर के राजा
अरयूक के ऐलाम के राजा किदरलाउमर के और जातिगणों
२ के राजा तिदआल के दिनों में यों हुआ। कि उन्हों ने सदूम
के राजा बरअ से और अमूरः के राजा बिरशअ से अदमः
के राजा सिन्निअब से और जिबोईम के राजा शिमिबर से और
३ बालिग़ के राजा से जो सुग़र है संग्राम किया। ये सब सिद्दीम
४ की तराई में जो खारी समुद्र है एकट्ठे हुए। उन्हों ने बारह
बरस लों किदरलाउमर की सेवा किई और तेरहवें बरस उस्से
५ फिर गये। और चौदहवें बरस में किदरलाउमर और उस के
साथी राजा आये और इसतारात क़रनैन में रिफाइम को और

६ हाम में ज़ज़ीयों को और सवी क़र्यातैन में ऐमियों को। और
उन के सईर पर्वत में हूरियों को फ़ारान के चौगान लों जो
७ बन के पास है मारा। और फिरे और ऐनमिशपात को जो
क़ादिस है फिरे और अमालीक़ के सारे देश को और अमूरी
८ को भी जो हस्सुनतमर में रहते थे मार लिया। और सदूम
का राजा और अमूरः का राजा और अदमः का राजा और
ज़िबिआन का राजा और बालिग़ का राजा जो सुग़ है निकले
९ और सिद्दीम की तराई में उन के संग युद्ध किया। ऐलाम
के राजा किदरलाउमर के संग और जातिगणों के राजा तिदआल
के संग और शिनआर के राजा अमराफ़िल और इल्लासर के
१० राजा अरयूक अर्थात् चार राजा पांच के संग। और सिद्दीम
की तराई में चहले के गढ़हे थे और सदूम और अमूरः के
राजा भागे और वहां गिरे और बचे हुए लोग भागके पहाड़
११ पर गये। और उन्हों ने सदूम और अमूरः की सारी संपत्ति
और उन के सारे भोजन लूट लिये और अपने मार्ग पकड़े।
१२ और अबिराम के भतीजे लूत को जो सदूम में रहता था और
उस की संपत्ति को लेके चले गये॥

१३ तब किसी ने बचके इबरानी अबिराम को संदेश दिया और
वुह इसकाल और अनेर के भाई अमूरी ममरे के बलूतों के
१४ नीचे रहता था और वे अबिराम के सहायक थे। और अबिराम
ने अपने भाई के ले जाने की बात सुनके अपने घर के तीन
सौ अठारह दासों को लिया और दान लों उन का पीछा किया।
१५ और उस ने और उस के सेवकों ने आप को रात को बिभाग
किया और उन्हें मारा और खूबः लों जो दमिशक़ की बाईं
१६ ओर है उन्हें रगेदे चले गये। और वुह सारी संपत्ति को और
अपने भाई लूत को भी और उस की संपत्ति को और स्त्रियों
को भी और लोगों को फेर लाया॥

१७ और किदरलाउमर को और उस के संगी राजाओं को मारके फिर
आने के पीछे सदूम का राजा उस्से भेंट करने को सवी की तराई
१८ लों जो राजा की तराई है निकला। और सालिम का राजा
मलिकिसिदक़ रोटी और दाखरस लाया और वुह अति महान
१९ ईश्वर का याजक था। और उस ने उसे आशीष दिया और
बोला कि आकाश और पृथिवी के प्रभु अति महान सर्ब्बशक्तिमान
२० से अबिराम धन्य होवे। और अति महान सर्ब्बशक्तिमान को
धन्य जिस ने तेरे बैरियों को तेरे हाथ में सौंप दिया और उस
ने सब का दसवां भाग उसे दिया॥
२१ और सदूम के राजा ने अबिराम से कहा कि प्राणियों को
२२ मुझे दीजिये और संपत्ति आप रखिये। तब अबिराम ने सदूम
के राजा से कहा कि मैं ने अपना हाथ अति महान सर्ब्बशक्तिमान
परमेश्वर के आगे जो स्वर्ग और पृथिवी का प्रभु है उठाया है।
२३ कि मैं एक तागे से लेके जूते के बंद लों आप का कुछ न
लेऊंगा सो मत कहियो कि मैं ने अबिराम को धनमान किया।
२४ परन्तु केवल वुह जो तरुणों ने खाया और उन मनुष्यों के
भाग जो मेरे संग अर्थात् अनेर और इसकाल और ममरे के
वे अपने भाग लेवें॥

पंदरहवां पर्ब्ब।

१ इन बातों के पीछे परमेश्वर का वचन यह कहते हुए दर्शन
में अबिराम पर पहुंचा कि हे अबिराम मत डर मैं तेरी ढाल
२ और तेरा बड़ा प्रतिफल हूं। तब अबिराम ने कहा कि हे
प्रभु ईश्वर तू मुझे क्या देगा मैं तो निर्बंश जाता हूं और मेरे
३ घर का भंडारी दमिशक़ी इलिअज़र है। और अबिराम ने कहा
कि देख तू ने मुझे कोई बंश न दिया और देख जो मेरे घर
४ में उत्पन्न हुआ वही मेरा अधिकारी है। और देखो परमेश्वर

का बचन उस्से यों कहते हुए पहुंचा कि यह तेरा अधिकारी
न होगा परन्तु जो तुझी से उत्पन्न होगा सो तेरा अधिकारी
५ होगा। फिर उस ने उसे बाहर ले जाके कहा अब स्वर्ग की
ओर देख और जो तारों को तू गिन सके तो उन्हें गिन फिर
६ उस ने उसे कहा कि तेरा बंश ऐसा ही होगा। तब वुह
परमेश्वर पर बिश्वास लाया और यह उस के लिये धर्म गिना
गया॥

७ फिर उस ने उसे कहा कि मैं परमेश्वर हूं जो तुझे यह भूमि
अधिकार में देने को कलदानियों के ऊर से निकाल लाया।
८ तब उस ने कहा कि हे प्रभु परमेश्वर मैं क्योंकर जानूं कि मैं
९ उस का अधिकारी होऊंगा। तब उस ने उसे कहा कि तू तीन
बरस की एक कलोर और तीन बरस की एक बकरी और तीन
बरस का एक मेढ़ा और एक पंडुक और कपोत का एक बच्चा
१० मेरे लिये ले। सो उस ने यह सब अपने लिये लिया और
उन्हें मध्य से दो दो भाग किये और हर एक भाग को उस
के दूसरे भाग के साम्ने धरा परन्तु पंछियों का भाग न किया।
११ और जब हिंसक पंछी उन लोथों पर उतरे तब अबिराम ने
१२ उन्हें हांक दिया। और सूर्य्य अस्त होते हुए अबिराम पर
भारी नींद पड़ी और क्या देखता है कि बड़ा भयंकर अंधकार
१३ उस पर पड़ा। तब उस ने अबिराम को कहा निश्चय जान
कि तेरे बंश औरों के देश में परदेशी होंगे और उन की सेवा
१४ करेंगे और वे उन्हें चार सौ बरस लों सतावेंगे। परन्तु जिन
की वे सेवा करेंगे मैं उस जाति का भी बिचार करूंगा और
१५ वे पीछे बड़ी संपत्ति लेके निकलेंगे। और तू अपने पितरों में कुशल
१६ से जायगा और बहुत पुरनिया होके गाड़ा जायगा। परन्तु चौथी
पीढ़ी में वे इधर फिर आवेंगे क्योंकि अमूरियों का अधर्म अब
१७ लों भरपूर नहीं हुआ। और जब सूर्य्य अस्त हुआ तो यों

हुआ कि अंधियारा हुआ कि देखो एक धूआं उठता भट्ठा
और एक आग का दीपक उन टुकड़ों के मध्य में से होके
१८ चला गया । उसी दिन परमेश्वर ने अबिराम से नियम करके
कहा कि मैं ने मिस्र की नदी से फ़ुरात की बड़ी नदी लों यह
१९ देश तेरे बंश को दिया है । अर्थात् क़ैनी और क़नज़ी और
२० कदमूनी । और हित्ती और फ़रिज़्ज़ी और रिफाइमी ।
२१ और अमूरी और कनआनी और जिर्जाशी और यबूसी का
देश ॥

सोलहवां पर्व्व ।

१ अब अबिराम की पत्नी सरी कोई लड़का उस के लिये न
जनी और उस की एक मिस्री लौंड़ी थी और उस का नाम हाजिर:
२ था । तब सरी ने अबिराम से कहा कि देख परमेश्वर ने मुझे
जन्ने से रोका है मैं तेरी बिनती करती हूं कि मेरी लौंड़ी
पास जाइये क्या जाने मेरा घर उस्से बस जाय और अबिराम
३ ने सरी की बात मानी । सो अबिराम के कनआन देश में दस
बरस निवास करने के पीछे उस की पत्नी सरी ने अपनी लौंड़ी
मिस्री हाजिर: को लिया और अपने पति अबिराम को उस
४ की पत्नी होने को दिया । और उस ने हाजिर: को ग्रहण
किया और वुह गर्भिणी हुई और जब उस ने आप को गर्भिणी
५ देखा तो उस की स्वामिनी उस की दृष्टि में निंदित हुई । तब
सरी ने अबिराम से कहा कि मेरा दोष आप पर मैं ने अपनी
लौंड़ी आप की गोद में दिई और जब उस ने अपने को गर्भिणी देखा
तो मैं उस की दृष्टि में निंदित हुई मेरे और आप के बीच
६ परमेश्वर न्याय करे । तब अबिराम ने सरी से कहा कि देख
तेरी लौंड़ी तेरे हाथ में है जो तुझे अच्छा लगे सो उस्से कर और
जब सरी ने उस्से कठिनता किई तब वुह उस के आगे से भाग गई ॥

७ और परमेश्वर के दूत ने एक पानी के सोते के पास बन में
८ उस सोते के पास जो सूर के मार्ग में है उसे पाया। और कहा
कि हे सरी की लैांड़ी हाजिर: तू कहां से आई है और किधर
जायेगी और वुह बोली कि मैं अपनी स्वामिनी सरी के आगे से
९ भागती हूं। और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि अपनी
१० स्वामिनी के पास फिर जा और उस के बश में रह। फिर
परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि मैं तेरा बंश अत्यंत बढ़ाऊंगा
११ ऐसा कि वुह बहुताई के मारे गिना न जायगा। और परमेश्वर
के दूत ने उसे कहा कि देख तू गर्भिणी है और एक बेटा
जनेगी और उस का नाम इसमअएेल रखना क्योंकि परमेश्वर
१२ ने तेरा दु:ख सुना। और वुह एक बन मनुष्य होगा उस का
हाथ हर एक मनुष्य के बिरुद्ध और हर एक का हाथ उस के
बिरुद्ध होगा और वुह अपने सारे भाइयों के साम्ने निवास
१३ करेगा। तब उस ने उस परमेश्वर का नाम जिस ने उस्से बातें
किईं यों लिया कि हे सर्बशक्तिमान तू मुझे देखता है क्योंकि
उस ने कहा कि क्या मैं ने अपने दर्शी का पीछा यहां भी देखा
१४ है। इस लिये उस कूएं का नाम मेरेजीवतेदर्शी का कुआ रक्खा
१५ देखो वुह कादिस और बिरद के मध्य में है। सो हाजिर:
अबिराम के लिये एक बेटा जनी और अबिराम ने अपने बेटे
१६ का नाम जिसे हाजिर: जनी इसमअएेल रक्खा। और जब
हाजिर: से अबिराम के लिये इसमअएेल उत्पन्न हुआ तब
अबिराम छियासी बरस का था॥

सत्तहवां पर्ब्ब।

१ और जब अबिराम निन्नानवे बरस का हुआ तब परमेश्वर ने
अबिराम को दर्शन दिया और कहा कि मैं सर्बसामर्थी सर्बशक्तिमान
२ हूं तू मेरे आगे चल और सिद्ध हो। और मैं अपने और तेरे मध्य

३ में अपना नियम बांधूंगा और मैं तुझे अत्यंत बढ़ाऊंगा। तब
अबिराम औंधा गिरा और ईश्वर ने उस्से बातें करके कहा।
४ कि मैं जो हूं देख मेरा नियम तेरे संग होगा और तू बहुत सी
५ जातिगणों का पिता होगा। और तेरा नाम फिर अबिराम न
होगा परन्तु तेरा नाम अबिरहाम होगा क्योंकि मैं ने तुझे बहुत
६ सी जातिगणों का पिता बनाया है। और मैं तुझे अत्यंत
फलमान करूंगा और तुस्से जातिगण बनाऊंगा और राजा तुस्से
७ निकलेंगे। और मैं अपना नियम अपने और तेरे मध्य में और
तेरे पीछे तेरे बंश के उन की पीढ़ियों में सदा के लिये एक
नियम जो उन के साथ सदा लों रहे ठहराऊंगा कि मैं तेरा
८ और तेरे पीछे तेरे बंश का ईश्वर हूंगा। और मैं तुझे और तेरे
पीछे सर्व्वदा अधिकार के लिये तेरे बंश को तेरे टिकाव का देश
देऊंगा अर्थात् कनआन का सारा देश और मैं उन का ईश्वर हूंगा॥
९ और ईश्वर ने अबिरहाम से कहा कि तू और तेरे पीछे तेरा
१० बंश उन की पीढ़ियों में मेरे नियम को मानें। तुम मेरा नियम
जो मुस्से और तुम से और तेरे पीछे तेरे बंश से है जिसे तुम
मानोगे सो यह है कि तुम में से हर एक पुरुष का ख़तनः
११ किया जाय। और तुम अपने शरीर की खलड़ी काटो और वुह
१२ मेरे और तुम्हारे मध्य में नियम का चिन्ह होगा। और तुम्हारी
पीढ़ियों में हर एक आठ दिन के पुरुष का ख़तनः किया जाय
जो घर में उत्पन्न होय अथवा जो किसी परदेशी से जो तेरे
१३ बंश का न हो रूपे से मोल लिया जाय। जो तेरे घर में उत्पन्न
हुआ हो और जो तेरे रूपे से मोल लिया गया हो अवश्य उस
का ख़तनः किया जाय और मेरा नियम तुम्हारे मांस में सर्व्वदा
१४ नियम के लिये होगा। और जो अख़तनः बालक जिस की
खलड़ी का ख़तनः न हुआ हो सो प्राणी अपने लोग से कट जाय
कि उस ने मेरा नियम तोड़ा है॥

१५ फिर ईश्वर ने अबिरहाम से कहा तेरी पत्नी सरी जो है तू
१६ उसे सरी न कह परन्तु उस का नाम सर: रख। और मैं उसे
आशीष देऊंगा और तुझे एक बेटा उस्से भी देऊंगा निश्चय मैं
उसे आशीष देऊंगा और वुह जातिगण होगी और लोगों के राजा
१७ उस्से होंगे। तब अबिरहाम औंधे मुंह गिरा और हंसा और
अपने मन में कहा क्या सौ बरस के बृद्ध से लड़का उत्पन्न
१८ होगा और क्या सर: जो नब्बे बरस की है जनेगी। फिर
अबिरहाम ने ईश्वर से कहा कि हाय कि इसमअएल तेरे आगे
१९ जीता रहे। तब ईश्वर ने कहा कि तेरी पत्नी सर: तेरे लिये
निश्चय एक बेटा जनेगी और तू उस का नाम इज़हाक रखना
और मैं सर्बदा नियम के लिये अपना नियम उस्से और उस के
२० पीछे उस के बंश से स्थिर करूंगा। और इसमअएल जो है मैं
ने उस के बिषय में तेरी सुनी है देख मैं ने उसे आशीष दिया
और उसे फलमान करूंगा और उसे अत्यंत बढ़ाऊंगा उस्से बारह
२१ अध्यक्ष उत्पन्न होंगे और उसे बड़ी मंडली बनाऊंगा। परन्तु
इज़हाक के साथ जिसे सर: तेरे लिये दूसरे बरस इसी ठहराये
हुए समय में जनेगी मैं अपना नियम स्थिर करूंगा॥

२२ तब उस्से बात करने से रह गया और अबिरहाम के पास
२३ से ईश्वर ऊपर जाता रहा। तब अबिरहाम ने अपने बेटे
इसमअएल को और सब जो उस के घर में उत्पन्न हुए थे और
सब जो उस के रूपे से मोल लिये गये थे अर्थात् अबिरहाम के
घराने के हर एक पुरुष को लेके उसी दिन उन की खलड़ी का
२४ ख़तन: किया जैसा कि ईश्वर ने उसे कहा था। और जब उस
की खलड़ी का ख़तन: हुआ तब अबिरहाम निन्नानबे बरस का
२५ था। और जब उस के बेटे इसमअएल की खलड़ी का ख़तन:
२६ हुआ तब वुह तेरह बरस का था। उसी दिन अबिरहाम और
२७ उस के बेटे इसमअएल का ख़तन: किया गया। और उस के

घराने के सारे पुरुषों का जो घर में उत्पन्न हुए और जो परदेशियों
से मोल लिये गये उस के साथ ख़तनः किये गये ॥

अठारहवां पर्व्व ।

१ फिर परमेश्वर उसे ममरे के बलूतों में दिखाई दिया और
वुह दिन को घाम के समय में अपने तंबू के द्वार पर बैठा
२ था । और उस ने अपनी आंखें उठाईं और देखा और देखो कि तीन
मनुष्य उस के पास खड़े हैं और उन्हें देखके वुह तंबू के द्वार पर से
३ उन की भेंट को दौड़ा और भूमि लों दंडवत किई । और कहा
हे मेरे स्वामी यदि मैं ने अब आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है
तो मैं आप की बिनती करता हूं कि अपने दास के पास से चले
४ न जाइये । इच्छा होय तो थोड़ा जल लाया जाय और अपने
५ चरण धोइये और पेड़ तले बिश्राम कीजिये । और मैं एक कौर
रोटी लाऊं और आप तृप्त हूजिये उस के पीछे आगे बढ़िये
क्योंकि आप इसी लिये अपने दास के पास आये हैं तब वे
६ बोले कि जैसा तू ने कहा तैसा कर । और अबिरहाम तंबू में
सरः पास उतावली से गया और उसे कहा कि फुरती कर और
तीन नपुआ चोखा पिसान लेके गूंध और उस के फुलके पका ।
७ और अबिरहाम झुंड की ओर दौड़ा गया और एक अच्छा
कोमल बछड़ा लेके दास को दिया उस ने भी उसे सिद्ध करने
८ में चटक किया । और उस ने मक्खन और दूध और वुह
बछड़ा जो पकाया था लिया और उन के आगे धरा और आप
उन के पास पेड़ तले खड़ा रहा और उन्हों ने खाया ॥

९ और उन्हों ने उस्से पूछा कि तेरी पत्नी सरः कहां है और वुह
१० बोला कि देखिये तंबू में है । और उस ने कहा कि जीवन के
समय के समान निश्चय मैं तुझ पास फिर आऊंगा और देख
तेरी पत्नी सरः एक बेटा जनेगी और सरः उस के पीछे तंबू के

११ द्वार पर सुनती थी। और अबिरहाम और सरः बूढ़े और
१२ पुरनिये थे और सरः से स्त्री का व्यवहार जाता रहा। और
सरः हंसके अपने मन में बोली कि क्या अब मुझे बुढ़ापे में
१३ और मेरा स्वामी भी पुरनिया है फिर आनंद होगा। और
परमेश्वर ने अबिरहाम से कहा कि सरः क्यों यह कहके मुसकुराई
१४ कि मैं जो बुढ़िया हूं सच मुच बालक जनूंगी। क्या परमेश्वर
के लिये कोई बात असाध्य है जीवन के समय के समान में
ठहराये हुए समय में तुझ पास फिर आऊंगा और सरः को
१५ बेटा होगा। और सरः यह कहके मुकर गई कि मैं तो नहीं
हंसी क्योंकि वुह डर गई थी तब उस ने कहा नहीं परन्तु तू
हंसी है॥

१६ और वे मनुष्य वहां से उठके सदूम की ओर देखने लगे
और अबिरहाम उन्हें बिदा करने को उन के साथ साथ चला।
१७ और परमेश्वर ने कहा कि जो मैं करता हूं सो क्या अबिरहाम
१८ से छिपाऊं। अबिरहाम तो निश्चय एक बड़ा और बलवान
जाति होगा और पृथिवी के सारे जातिगण उस में आशीष
१९ पावेंगे। क्योंकि मैं उसे जानता हूं कि वुह अपने पीछे अपने
बालकों और अपने घराने को आज्ञा करेगा और वे न्याय और
बिचार करने को परमेश्वर का मार्ग पालन करेंगे जिसतें जो कुछ
परमेश्वर ने अबिरहाम के विषय में कहा है सो उस पर
२० पहुंचावे। और परमेश्वर ने कहा इस कारण कि सदूम और
अमूरः का चिल्लाना बड़ा है और इस कारण कि उन के पाप
२१ अत्यंत गरू हुए। मैं उतरूंगा और देखूंगा कि उस के चिल्लाने
के समान जो मुझ लों पहुंची है उन्हों ने पूरा किया है और
२२ यदि नहीं तो मैं जानूंगा। और उन मनुष्यों ने वहां से अपने
मुंह फेरे और सदूम की ओर गये परन्तु अबिरहाम तब भी
परमेश्वर के आगे खड़ा रहा॥

२३ और अबिरहाम पास गया और कहा कि क्या तू दुष्ट के
२४ संग धर्मी को भी नष्ट करेगा। यदि नगर में पचास धर्मी होयें
क्या तद भी नष्ट करेगा और उस के पचास धर्मियों के लिये
२५ जो उस में हैं उस स्थान को न छोड़ेगा। दुष्ट के संग धर्मी
को मारना ऐसी बात तुस्से परे होय और कि धर्मी दुष्ट के
समान हो जाय तुस्से दूर होय क्या सारी पृथिवी का न्यायी न्याय
२६ न करेगा। और परमेश्वर ने कहा यदि मैं सदूम नगर में पचास
धर्मी पाऊं तो मैं उन के लिये सारे स्थान को छोड़ देऊंगा।
२७ फिर अबिरहाम ने उत्तर देके कहा कि देख मैं ने परमेश्वर के
आगे बोलने में ढिठाई किई यद्यपि मैं धूल और राख हूं।
२८ यदि पचास धर्मियों से पांच घट होवें तो क्या पांच के लिये
सारे नगर को नाश करेगा तब उस ने कहा यदि मैं वहां
२९ पैंतालीस पाऊं तो नाश न करूंगा। और उस ने उस्से फिर बातें
किईं और कहा यदि चालीस वहां पाये जावें तब उस ने कहा मैं
३० चालीस के कारण ऐसा न करूंगा। और उस ने कहा हाय कि प्रभु
क्रुद्ध न होवे तो मैं कहूं यदि वहां तीस पाये जायें तब उस ने
३१ कहा यदि मैं वहां तीस पाऊं तो ऐसा न करूंगा। और उस
ने कहा कि देख मैं ने प्रभु के आगे बोलने में ढिठाई किई
यदि बीस ही वहां पाये जायें तब उस ने कहा मैं बीस के
३२ कारण नाश न करूंगा। फिर उस ने कहा हाय कि प्रभु
क्रुद्ध न होवे तो मैं अब की बार फिर कहूं यदि वहां दस ही
पाये जावें तब उस ने कहा मैं दस के कारण नाश न
३३ करूंगा। तब परमेश्वर अबिरहाम से बात चीत समाप्त करके
चला गया और अबिरहाम अपने स्थान को फिरा॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ और सांझ को दो दूत सदूम में आये और लूत सदूम के

फाटक पर बैठा था और लूत उन्हें देखकर उन से भेंट करने
२ को उठा और भूमि लों दंडवत किई। और कहा हे मेरे स्वामी
अपने दास के घर की ओर चलिये और रात भर ठहरिये और
अपने चरण धोइये और तड़के उठके अपने मार्ग लीजिये तब
उन्हों ने कहा कि नहीं परन्तु हम रात भर सड़क में रहेंगे।
३ पर जब उस ने उन्हें बहुत दबाया तब वे उस की ओर फिरे
और उस के घर में आये तब उस ने उन के लिये जेवनार
किया और अख़मीरी रोटी उन के लिये पकाई और उन्हों ने खाई॥
४ उन के लेटने से आगे नगर के मनुष्यों अर्थात् सदूम के
मनुष्यों ने तरुण से बूढ़े लों सब लोगों ने चारों ओर से आके
५ उस घर को घेरा। और लूत को पुकारके कहा कि जो पुरुष
तेरे यहां आज रात आये हैं सो कहां हैं हमारे पास उन्हें
६ बाहर ला और हम उन से संगम करें। और लूत द्वार से उन
७ पास बाहर गया और अपने पीछे किवाड़ बंद किया। और कहा
८ कि हे भाइयो ऐसी दुष्टता न करना। देखो मेरी दो बेटियां
हैं जो पुरुष से अज्ञान हैं कहो तो मैं उन्हें तुम्हारे पास बाहर
लाऊं और जो तुम्हारी दृष्टि में भला लगे सो उन से करो
केवल उन मनुष्यों से कुछ न करो क्योंकि वे इस लिये मेरी
९ छत की छाया तले आये हैं। और उन्हों ने कहा कि हट जा और
कहा कि यह एक जन हम्में टिकने को आया सो अब न्यायी
होने चाहता है अब हम तेरे साथ उन से अधिक बुराई करेंगे
तब वे उस पुरुष पर अर्थात् लूत पर हुल्लर करके आये और
१० किवाड़ तोड़ने को झपटे। परन्तु उन पुरुषों ने अपने हाथ
बढ़ाके लूत को घर में अपने पास खींच लिया और किवाड़
११ बंद किया। और छोटे से बड़े लों उन मनुष्यों को जो घर के
द्वार पर थे अंधापन से मारा यहां लों कि वे द्वार ढूंढते ढूंढते
थक गये॥

१२ तब उन पुरुषों ने लूत से कहा कि तेरा कोई और यहां
है जवाई अथवा तेरे बेटे अथवा तेरी बेटियां जो कोई इस
१३ नगर में तेरा है उन्हें लेकर इस स्थान से निकल जा । क्योंकि
हम इस स्थान को नाश करते हैं क्योंकि इन का चिल्लाना
परमेश्वर के आगे बड़ा है और परमेश्वर ने हमें इसे नाश करने
१४ को भेजा है । तब लूत निकला और अपने जवाइयों से जिन्हों
से उस की बेटियां ब्याही थीं बोला और कहा कि उठो इस
स्थान से निकलो क्योंकि परमेश्वर इस नगर को नष्ट करता है
परन्तु वुह अपने जवाइयों की दृष्टि में जैसा कोई ठठेलू
दिखाई दिया ॥

१५ और जब बिहान हुआ तब दूतों ने लूत को शीघ्र करवाके कहा
कि उठ अपनी पत्नी और अपनी दो बेटियां जो यहां हैं ले जा
१६ न हो कि तू इस नगर के दंड में भस्म हो जाय । और जब
वुह विलंब करता था तब उन पुरुषों ने उस का और उस की
पत्नी का और उस की दोनों बेटियों का हाथ पकड़ा क्योंकि
परमेश्वर की कृपा उस पर थी और उसे निकालकर नगर के
१७ बाहर डाल दिया । और जब उन्हें बाहर निकाला तो कहा
कि अपने प्राण के लिये भाग और पीछे मत देखना और सारे
चोगान में न ठहरना पहाड़ पर भाग जा न होवे कि तू भस्म
१८ होवे । तब लूत ने उन्हें कहा कि हे मेरे प्रभु ऐसा नहीं ।
१९ देखिये आप के दास ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया है और तू
ने अपनी दया बढ़ाई है जो तू ने मेरे प्राण बचाने में मेरे
साथ किई है मैं तो पहाड़ पर नहीं भाग सक्ता न होवे कि
२० कोई बिपत्ति मुझ पर पड़े और मैं मर जाऊं । देखिये कि
यह नगर वहां भागने को समीप है और वुह छोटा है मुझे
उधर जाने दीजिये वुह क्या छोटा नहीं सो मेरा प्राण बच
२१ जायगा । और उस ने उसे कहा कि देख इस बात के बिषय

में भी में ने तेरे मुंह को ग्रहण किया है कि मैं इस नगर को जिस
२२ की तू ने कही उलट न देऊंगा। शीघ्र कर और उधर भाग
क्योंकि जब लों तू वहां न पहुंचे मैं कुछ कर नहीं सक्ता इस
२३ लिये उस नगर का नाम सुग़र रक्खा। सूर्य्य पृथिवी पर उदय
हुआ था जब लूत सुग़र में पहुंचा॥
२४ तब परमेश्वर ने सदूम और अमूरः पर गंधक और आग
२५ परमेश्वर की ओर से स्वर्ग से बरसाया। और उन नगरों को
और सारे चौगान को और नगरों के सारे निवासियों को और
२६ जो कुछ भूमि पर उगता था उलट दिया। परन्तु उस की पत्नी
ने उस के पीछे से फिरके देखा और वुह लोन का खंभा बन
२७ गई। और अबिरहाम उठके बिहान को तड़के उस स्थान में
२८ जहां वुह परमेश्वर के आगे खड़ा था आ पहुंचा। और उस ने
सदूम और अमूरः और चौगान की सारी भूमि पर दृष्टि किई
और देखा कि उस भूमि से भट्ठी का सा धुआं उठ रहा है॥
२९ और यों हुआ कि जब ईश्वर ने चौगान के नगरों को नष्ट
किया तब ईश्वर ने अबिरहाम को स्मरण किया और उन नगरों
को जहां लूत रहता था नष्ट करते हुए लूत को उस बिपत्ति से
३० छुड़ाया। और लूत अपनी बेटियों समेत सुग़र से पहाड़ पर जा
रहा क्योंकि वुह सुग़र में रहने को डरा तब वुह और उस की दो
३१ बेटियां एक कंदला में जा रहे। और पहिलौंठी ने छुटकी से
कहा कि हमारा पिता बृद्ध है और पृथिवी पर कोई पुरुष नहीं
३२ रहा जो जगत की रीति के समान हमें ग्रहण करे। आओ
हम अपने पिता को दाखरस पिलावें और हम उस के साथ
३३ शयन करें कि हम अपने पिता से बंश जुगावें। तब उन्हों ने
उस रात अपने पिता को दाखरस पिलाया और पहिलौंठी गई
और अपने पिता के साथ शयन किया और उस ने उस के शयन
३४ करते और उठते सुरत न किई। और जब दूसरा दिन हुआ

तब पहिलौंठी ने छुटकी से कहा कि देख मैं ने कल रात अपने
पिता के साथ शयन किया हम उसे आज रात भी दाखरस
पिलावें और तू जाके उस के साथ शयन कर जिसतें हम अपने
३५ पिता का बंश जुगावें। तब उन्हों ने अपने पिता को उस रात
भी दाखरस पिलाया और छुटकी ने उठके उस के साथ शयन
किया और उस ने उस के न शयन करते न उठते हुए सुरत किई।
३६। ३७ सो लूत की दोनों बेटियां अपने पिता से गर्भिणी हुईं। और
पहिलौंठी एक बेटा जनी और उस का नाम मोआब रक्खा वही
३८ आज लों मोआबियों का पिता है। और छुटकी वुह भी एक
बेटा जनी और उस का नाम बिनअम्मी रक्खा वही आज लों
अम्मून के बंश का पिता है॥

बीसवां पर्व्व।

१ फिर अबिरहाम ने वहां से दक्खिन के देश को याचा किई
और क़ादिस और सूर के बीच ठहरा और जिरार में टिका।
२ और अबिरहाम अपनी पत्नी सरः के बिषय में बोला कि वुह
मेरी बहिन है सो जिरार के राजा अबिमलिक ने भेजके सरः
को ले लिया॥

३ परन्तु रात को ईश्वर ने अबिमलिक पास स्वप्न में आके उसे
कहा कि देख तू इस स्त्री के कारण जिसे तू ने लिया है मरेगा
४ क्योंकि वुह ब्याही स्त्री है। परन्तु अबिमलिक उस पास न
आया था तब उस ने कहा कि हे प्रभु क्या तू धर्मी जाति
५ को भी मार डालेगा। क्या उस ने मुझे नहीं कहा कि वुह मेरी
बहिन है और वुह आपही बोली कि वुह मेरा भाई है मैं ने
अपने मन की सच्चाई और हाथों की निर्दोषता से यह किया है।
६ तब ईश्वर ने उसे स्वप्न में कहा कि मैं भी जानता हूं कि तू ने
अपने मन की सच्चाई से यह किया है और मैं ने भी तुझे

मेरे विरुद्ध पाप करने से रोका इस लिये मैं ने तुझे उसे छूने न
७ दिया। सो अब उस पुरुष को उस की पत्नी फेर दे क्योंकि वुह
भविष्यद्वक्ता है और वुह तेरे लिये प्रार्थना करेगा और तू जीता
रहेगा परन्तु यदि तू उसे फेर न देगा तो यह जान कि तू
और तेरे सारे जन निश्चय मरेंगे॥

८ तब अबिमलिक ने बिहान को तड़के उठकर अपने सारे
सेवकों को बुलाया और ये सारी बातें उन्हें सुनाईं तब वे जन
९ बहुत डर गये। तब अबिमलिक ने अबिरहाम को बुलाया
और उसे कहा कि तू ने हम से क्या किया है और मैं ने तेरा क्या
अपराध किया कि तू मुझ पर और मेरे राज्य पर एक बड़ा पाप लाया
१० है तू ने मुस्से ऐसे काम किये जिन का करना उचित्त नहीं। और
अबिमलिक ने अबिरहाम से कहा कि तू ने क्या देखा जो तू ने यह
११ काम किया है। और अबिरहाम बोला कि मैं ने कहा कि निश्चय
ईश्वर का भय इस स्थान में नहीं है और मेरी पत्नी के लिये वे
१२ मुझे मार डालेंगे। और वुह तो निश्चय मेरी बहिन भी है वुह
मेरे पिता की पुत्री है परन्तु मेरी माता की पुत्री नहीं सो मेरी
१३ पत्नी हो गई। और यों हुआ कि जब ईश्वर ने मेरे पिता के घर
से मुझे भ्रमाया तो मैं ने उसे कहा कि मुझ पर तू यही अनुग्रह
करियो कि सब स्थान में जहां कहीं हम जायें मेरे बिषय में
१४ कहियो कि वुह मेरा भाई है। तब अबिमलिक ने भेड़ बकरी
और गाय बैल और दास और दासियां लेकर अबिरहाम को दिया
१५ और उस की पत्नी सरः को भी उसे फेर दिया। फिर अबिमलिक ने
कहा कि देख मेरा देश तेरे आगे है जहां तेरी दृष्टि में भावे
१६ तहां रह। और सरः से कहा कि देख मैं ने तेरे भाई को
सहस्र टुकड़ा चांदी दिई है देख तेरे सारे संगियों के लिये
और सभों के लिये वुह तेरी आंखों की ओट होगी सो वुह यों
१७ डपटी गई। तब अबिरहाम ने ईश्वर की प्रार्थना किई और

ईश्वर ने अबिमलिक और उस की पत्नी और उस की दासियों
१८ को चंगा किया और वे जन्ने लगीं। क्योंकि परमेश्वर ने अबिरहाम
की पत्नी सर: के कारण अबिमलिक की सारी कोखों को बंद कर
दिया था ॥

इक्कीसवां पर्ब्ब ।

१ और अपने कहने के समान परमेश्वर ने सर: से भेंट किया
और अपने बचन के समान परमेश्वर ने सर: के विषय में किया।
२ और सर: गर्भिणी हुई और अबिरहाम के लिये उस के बुढ़ापे
में उसी समय में जो ईश्वर ने उसे कहा था एक बेटा जनी।
३ और अबिरहाम ने अपने बेटे का नाम जो उस के लिये उत्पन्न
४ हुआ जिसे सर: उस के लिये जनी थी इज़हाक रक्खा। और
ईश्वर की आज्ञा के समान अबिरहाम ने आठवें दिन अपने बेटे
५ इज़हाक का ख़तन: किया। जब उस का बेटा इज़हाक उस
के लिये उत्पन्न हुआ तब अबिरहाम सौ बरस का बृद्ध था।
६ तब सर: बोली कि ईश्वर ने मुझे हंसाया सारे सुनवैये मेरे लिये
७ हंसेंगे। और वुह बोली कि कौन अबिरहाम से कहता कि सर:
बालक को दूध पिलावेगी क्योंकि उस के बुढ़ापे में मैं बेटा
जनी ॥

८ और वुह लड़का बढ़ा और उस का दूध छुड़ाया गया और
इज़हाक के दूध छुड़ाने के दिन अबिरहाम ने बड़ा जेवनार
९ किया। और सर: ने मिस्री हाजिर: के बेटे को जिसे वुह
१० अबिरहाम के लिये जनी थी चिढ़ाते देखा। तब उस ने
अबिरहाम से कहा कि आप इस लौंड़ी को और उस के बेटे को
निकाल दीजिये क्योंकि यह लौंड़ी का बेटा मेरे बेटे इज़हाक
११ के साथ अधिकारी न होगा। और अपने बेटे के लिये यह
१२ बात अबिरहाम को बड़ी कड़वी लगी। तब ईश्वर ने अबिरहाम

से कहा कि लड़के के और तेरी लौंड़ी के बिषय में तुझे कड़वी
न लगे सब जो सर: ने तुझे कहा मान ले क्योंकि तेरा बंश
१३ इज़हाक से गिना जायगा। और मैं उस लौंड़ी के बेटे से भी
१४ एक जाति बनाऊंगा क्योंकि वुह तेरा बंश है। तब अबिरहाम
ने बड़े तड़के उठके रोटी और एक पखाल में जल लिया और
हाजिर: के कंधे पर धर दिया और लड़के को भी उसे सौंप
के उसे बिदा किया॥

और वुह चल निकली और बीअरसबअ के बन में भ्रमती फिरी।
१५ और जब पखाल का जल चुक गया तब उस ने उस लड़के को
१६ एक झाड़ी के तले डाल दिया। और आप उस के सन्मुख एक
तीर के टप्पे पर दूर जा बैठी क्योंकि वुह बोली कि मैं इस
बालक की मृत्यु को न देखूं और वुह उस के सन्मुख बैठके
१७ चिल्ला चिल्ला रोई। तब ईश्वर ने उस बालक का शब्द सुना
और ईश्वर के दूत ने स्वर्ग में से हाजिर: को पुकारा और उसे
कहा कि हे हाजिर: तुझे क्या हुआ मत डर क्योंकि जहां वुह
१८ बालक है तहां ईश्वर ने उस के शब्द को सुना है। उठ और
उस लड़के को उठा और उसे अपने हाथ से धर ले कि मैं उस्से
१९ एक बड़ी जाति बनाऊंगा। और ईश्वर ने उस की आंखें खोल
दिईं तब उस ने पानी का एक कुआ देखा और उस ने जाके
२० उस पखाल को जल से भरा और उस लड़के को पिलाया। और
ईश्वर उस लड़के के साथ था और वुह बढ़ा और बन में रहा
२१ किया और धनुषधारी हुआ। और उस ने फ़ारान के बन में
निवास किया और उस की माता ने मिस्र देश से उस के लिये
एक पत्नी लिई॥

२२ और उस समय में यों हुआ कि अबिमलिक और उस की
सेना के प्रधान फीकुल्ल ने अबिरहाम को कहा कि सब कार्य्यों
२३ में जो तू करता है ईश्वर तेरे संग है। और अब यहां मुस्से ईश्वर

की किरिया खा कि मैं तुस्से और तेरे बंश और संतान से छल न
करूंगा उस अनुग्रह के समान जो मैं ने तुझ पर किया है तुस्से और
२४ उस भूमि से जिस में तू टिका है करे । तब अबिरहाम बोला कि
२५ मैं किरिया खाऊंगा । और अबिरहाम ने पानी के एक कुए के लिये
जिसे अबिमलिक के सेवकों ने बरबस्ती से ले लिया था अबिमलिक
२६ को डपटा । तब अबिमलिक ने कहा कि मैं नहीं जानता किस
ने यह काम किया है और आप ने भी तो मुस्से न कहा और
२७ मैं ने भी तो आज ही सुना । और अबिरहाम ने भेड़ और गाय
बैल लेके अबिमलिक को दिये और उन दोनों ने नियम बांधा ।
२८ । २९ तब अबिरहाम ने झुंड में से सात मेम्ने अलग रक्खे । और
अबिमलिक ने अबिरहाम से कहा कि आप ने भेड़ के सात मेम्ने
३० क्यों अलग रक्खे हैं । और उस ने कहा इस कारण कि तू उन
भेड़ के सात मेम्नों को मेरे हाथ से ले कि वे मेरी साक्षी होवें
३१ कि मैं ने यह कुआ खोदा है । इस कारण उस ने उस स्थान
का नाम बीअरसबअ़ रक्खा क्योंकि उन दोनों ने वहां आपुस में
३२ किरिया खाई । सो उन्हों ने बीअरसबअ़ में नियम बांधा तब
अबिमलिक और उस का प्रधान सेनापति फीकुल्ल उठे और
फिलिस्तियों के देश में फिर गये ॥
३३ तब उस ने बीअरसबअ़ में कुंज लगाया और वहां सनातन
३४ के ईश्वर परमेश्वर का नाम लिया । और अबिरहाम फिलिस्तों
के देश में बहुत दिन लों टिका ॥

बाईसवां पर्ब्ब ।

१ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि ईश्वर ने अबिरहाम की
परीक्षा किई और उसे कहा हे अबिरहाम और वुह बोला कि
२ देख यहां हूं । और उस ने कहा कि तू अपने बेटे को अपने
एकलौते इज़हाक को जिसे तू प्यार करता है ले और मोरियाह

के देश में जा और वहां पहाड़ों में से एक पहाड़ पर जो मैं
३ तुझे बताऊंगा उसे होम की भेंट के लिये चढ़ा। तब अबिरहाम
ने तड़के उठकर अपने गदहे पर काठी बांधी और अपने तरुणों
में से दो को और अपने बेटे इज़हाक को अपने साथ लिया और
होम की भेंट के लिये लकड़ियां चीरीं और उठके उस स्थान को
४ जो ईश्वर ने उसे आज्ञा किई थी चला गया। तीसरे दिन अबिरहाम
ने अपनी आंखें ऊपर किईं और उस स्थान को दूर से देखा।
५ तब अबिरहाम ने अपने तरुणों से कहा कि गदहे के साथ यहीं
ठहरो और मैं इस लड़के के साथ वहां लों जाता हूं और सेवा
६ करके फिर तुम्हारे पास आऊंगा। तब अबिरहाम ने होम की
भेंट की लकड़ियां लेकर अपने बेटे इज़हाक पर लादीं और आग
७ और छुरी अपने हाथ में लिई और दोनों साथ साथ गये। और
इज़हाक अपने पिता अबिरहाम से बोला कि हे मेरे पिता और
वुह बोला हे मेरे बेटे मैं यहीं हूं तब उस ने कहा कि देखिये
आग और लकड़ियां तो हैं पर होम की भेंट के लिये भेड़ कहां है।
८ और अबिरहाम बोला कि हे मेरे बेटे ईश्वर होम की भेंट के
लिये भेड़ आपही सिद्ध करेगा सो वे दोनों साथ साथ चले गये॥
९ और उस स्थान में जहां ईश्वर ने कहा था आये तब
अबिरहाम ने वहां एक बेदी बनाई और उन लकड़ियों को
वहां चुना और अपने बेटे इज़हाक को बांधके उस बेदी में
१० लकड़ियों पर धरा। और अबिरहाम ने छुरी लेके अपने बेटे को
११ घात करने के लिये अपना हाथ बढ़ाया। तब परमेश्वर के
दूत ने स्वर्ग पर से उसे पुकारा कि अबिरहाम अबिरहाम और
१२ वुह बोला यहीं हूं। तब उस ने कहा कि अपना हाथ लड़के
पर मत बढ़ा और उसे कुछ मत कर क्योंकि अब मैं जानता
हूं कि तू ईश्वर से डरता है और तू ने अपने बेटे अपने एकलौते
१३ को मुझसे न रख छोड़ा। तब अबिरहाम ने अपनी आंखें ऊपर

करके देखा और क्या देखता है कि अपने पीछे एक मेंढ़ा झाड़ी
में सींगों से अटका हुआ है तब अबिरहाम ने जाके उस मेंढ़े
को लिया और होम की भेंट के लिये अपने बेटे की संती
१४ चढ़ाया। और अबिरहाम ने उस स्थान का यह नाम रक्खा कि
परमेश्वर देखेगा जैसा कि आज लों कहा जाता है कि पहाड़
१५ पर परमेश्वर देखा जायगा । फिर परमेश्वर के दूत ने दोहराके
१६ स्वर्ग में से अबिरहाम को पुकारा । और कहा कि परमेश्वर
कहता है कि मैं ने अपनी ही किरिया खाई है इस कारण कि
तू ने यह कार्य्य किया और अपने बेटे अपने एकलौते को न
१७ रख छोड़ा। कि मैं तुझे आशीष पर आशीष देऊंगा और आकाश के
तारों और समुद्र के तीर के बालू के समान तेरे बंश को
बढ़ाऊंगा और तेरे बंश अपने बैरी के फाटक के अधिकारी
१८ होंगे । और तेरे बंश में पृथिवी के सारे जातिगण आशीष
१९ पावेंगे इस कारण कि तू ने मेरा शब्द माना है। और अबिरहाम
अपने तरुणों के पास फिर आया और वे उठके एकट्ठे बीअरसबअ
को गये और अबिरहाम बीअरसबअ में रहा ॥
२०　और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि अबिरहाम को संदेश
पहुंचा कि मिलकः भी तेरे भाई नहूर के लिये बालक जनी ।
२१ अर्थात् ऊज़ उस का पहिलौंठा और उस का भाई बूज़ और
२२ क़मूएल अराम का पिता । और कसद और हज़ू और फिल्दास
२३ और इदलाफ और बतूएल । और बतूएल से रिबकः उत्पन्न
हुई मिल्कः अबिरहाम के भाई नहूर के लिये ये आठ जनी ।
२४ और उस की सुरैतिन जिस का नाम रूमह था वुह भी तिबख़
और जहम और ताहाश और मअ़कः जनी ॥

तेईसवां पर्ब्ब ।

१　और सरः की वय एक सौ सताईस बरस की हुई सरः के

२ जीवन के बरस इतने थे। और सरः करयतअरबअ में जो
कनआन देश में हबरून है मर गई तब अबिरहाम सरः के
लिये बिलाप करने और रोने को आया॥
३ और अबिरहाम अपने मृतक से उठ खड़ा हुआ और हित्त
४ के बेटों से यह कहिके बोला। कि मैं तुम में परदेशी और
टिकवैया हूं तुम अपने यहां मुझे एक समाधि का स्थान
अधिकार में दो जिसतें मैं अपने मृतक को अपनी दृष्टि से
गाड़ूं॥
५ और हित्त के संतान ने अबिरहाम को उत्तर देके कहा।
६ कि हे हमारे स्वामी हमारी सुनिये आप हम्में ईश्वर के अध्यक्ष हैं सो
आप हमारी समाधिन में से चुनके एक में अपने मृतक को
गाड़िये हम्में कोई अपनी समाधि आप से न रख छोड़ेगा जिसतें
आप अपने मृतक को गाड़ें॥
७ तब अबिरहाम खड़ा हुआ और उस देश के लोगों अर्थात्
८ हित्त के संतान को प्रणाम किया। और उन से बात चीत करके
कहा कि यदि तुम्हारा मन होवे कि मैं अपने मृतक को अपनी
दृष्टि से अलग गाड़ूं तो मेरी सुनो और मेरे लिये सुहर के बेटे
९ इफ़रून से बिनती करो। जिसतें वुह मकफील: की कंदला
मुझे देवे जो उस खेत के सिवाने पर है उस का पूरा मोल
लेके मेरे बश में कर दे जिसतें मैं तुम्हों में एक समाधि का
अधिकार रक्खूं॥
१० और इफ़रून हित्त के संतान के मध्य में बास करता था और
इफ़रून हित्ती ने हित्त के संतान के और सब के सुन्ने में जो
नगर के फाटक में जाते थे अबिरहाम को उत्तर में कहा।
११ नहीं मेरे स्वामी मेरी सुनिये मैं ने यह खेत आप को दिया है
और वुह कंदला जो उस में है आप को दिया है मैं ने अपने
लोगों के बेटों के आगे आप को दिया है अपना मृतक गाड़िये॥

१२ तब अबिरहाम ने उस देश के लोगों के प्रणाम किया।
१३ और उस देश के लोगों के सुन्ने में वुह इफरून से यों कहिके
बोला कि यदि तू देगा तो मेरी सुन ले मैं ने तुझे उस खेत के
लिये रोकड़ दिया है मुस्से ले और मैं अपने मृतक को वहां
गाड़ूंगा ॥
१४ तब इफरून ने अबिरहाम को उत्तर देके कहा।
१५ मेरे स्वामी मेरी सुनिये उस भूमि का मोल चार सौ शेकल
चांदी है यह मेरे और आप के आगे क्या वस्तु है सो आप
अपने मृतक को गाड़िये ॥
१६ और अबिरहाम ने इफरून की मान लिई और अबिरहाम
ने उस चांदी को इफरून के लिये तौल दिया जो उस ने हित्त
के बेटों के सुन्ने में कही थी अर्थात् चार सौ शेकल चांदी जिन
१७ की चलन बेपारियों में थी। सो इफरून का खेत जो मकफील:
में ममरी के आगे है वुह खेत और कंदला जो उस में है और
उस खेत में के सारे पेड़ जो चारों ओर उस के सिवाने में हैं।
१८ हित्त के संतान के आगे और सभों के आगे जो नगर के फाटक
में से भीतर जाते थे अबिरहाम के अधिकार के लिये दृढ़ किये
गये ॥
१९ और इस के पीछे अबिरहाम ने अपनी पत्नी सर: को मकफील:
के खेत की कंदला में जो ममरी के आगे है गाड़ा वही हबरून
२० कनआन देश में है। और वुह खेत और उस में की कंदला
हित्त के संतान से अबिरहाम के हाथ में समाधि स्थान के
लिये दृढ़ किये गये ॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ और अबिरहाम बृद्ध और दिनी हुआ और परमेश्वर ने सब
२ बातों में अबिरहाम को बर दिया था। और अबिरहाम ने

अपने घर के पुराने सेवक को जो उस की सारी संपत्ति का प्रधान
३ था कहा कि अपना हाथ मेरी जांघ तले रख। और मैं तुझ
से परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर और पृथिवी के ईश्वर की किरिया
लेऊंगा कि तू कनआनियों की लड़कियों में से जिन के मध्य
४ में मैं रहता हूं मेरे बेटे के लिये पत्नी न लेना। परन्तु तू मेरे
देश और मेरे कुटुम्ब में जाइयो और मेरे बेटे इज़हाक के लिये
पत्नी लीजियो॥
५ और उस सेवक ने उसे कहा कि क्या जाने वुह स्त्री इस
देश में मेरे संग आने को न चाहे तो क्या अवश्य मैं आप के
बेटे को उस देश में जहां से आप आये हैं फिर लेजाऊं॥
६ तब अबिरहाम ने उसे कहा चौकस रह तू मेरे बेटे को
७ उधर फिर मत ले जाना। परमेश्वर स्वर्ग का ईश्वर जो मेरे
पिता के घर से और मेरे जन्म भूमि से मुझे निकाल लाया और
जिस ने मुझे कहा और मुझ से किरिया खाके बोला कि मैं तेरे
बंश को यह देश देऊंगा वही तेरे आगे अपना दूत भेजेगा
८ और वहीं से तू मेरे बेटे के लिये पत्नी लेना। और यदि वुह
स्त्री तेरे साथ आने को न चाहे तो तू मेरी इस किरिया से छूट
९ जायगा केवल मेरे बेटे को उधर फिर मत ले जा। तब उस
सेवक ने अपना हाथ अपने स्वामी अबिरहाम की जांघ तले
रक्खा और उस बात के बिषय में उस के आगे किरिया खाई॥
१० और उस सेवक ने अपने स्वामी के ऊंटों में से दस ऊंट
लिये और चल निकला क्योंकि उस के स्वामी की सारी संपत्ति
उस के हाथ में थी सो वुह उठा और अरामनहरइम में नहूर
११ के नगर को गया। और उस ने अपने ऊंटों को नगर के बाहर
पानी के कुए के पास सांझ के समय में जब कि स्त्रियां पानी
भरने को बाहर जाती थीं बैठाया॥
१२ और कहा कि हे परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम के ईश्वर

में आप की विनती करता हूं आज मेरा कार्य्य सिद्ध कीजिये
१३ और मेरे स्वामी अबिरहाम पर दया कीजिये। देख मैं पानी
के कूए पर खड़ा हूं और नगर के पुरुषों की बेटियां पानी भरने
१४ आती हैं। तो ऐसा होवे कि वुह कन्या जिसे मैं कहूं कि
अपना घड़ा उतार जिसतें मैं पीऊं और वुह कहे कि पी और
मैं तेरे ऊंटों को भी पिलाऊंगी वही हो जिसे तू ने अपने दास
इज़हाक के लिये ठहराया है और इसी से मैं जानूंगा कि तू ने
मेरे स्वामी पर दया किई है॥
१५ और इतनी बात समाप्त न करते ही ऐसा हुआ कि देखो रिबक:
जो अबिरहाम के भाई नहूर की पत्नी मिलक: के बेटे बतूएल से
उत्पन्न हुई थी अपना घड़ा अपने कांधे पर धरे हुए बाहर निकली।
१६ और वुह कन्या बहुत रूपवती और कुमारी थी और उस्से पुरुष
अज्ञान था और वुह उस कुए पर गई और अपना घड़ा भरके ऊपर
१७ आई। तब वुह सेवक उस की भेंट को दौड़ा और बोला मैं तेरी
१८ बिनती करता हूं अपने घड़े से थोड़ा पानी पिला। और वुह बोली
कि पीजिये मेरे प्रभु और उस ने फुरती करके घड़ा हाथ पर उतारके
१९ उसे पिलाया। जब उसे पिला चुकी तो बोली मैं तेरे ऊंटों के लिये
२० भी जब लों वे जल से तृप्त हों खींचती जाऊंगी। और उस ने
फुरती करके अपना घड़ा कठरे में उंडेला और फिर कुए पर भरने
२१ को दौड़ी और उस के सब ऊंटों के लिये खींचा। और वुह पुरुष
आश्चर्य्य करके देख रहा कि परमेश्वर ने मेरी याचा सुफल किई
है कि नहीं॥
२२ और यों हुआ कि जब ऊंट पी चुके तो उस पुरुष ने आधे
शेकल भर सोने की एक नथ और दस भर सोने के दो खड़वे
२३ उस के हाथों के लिये निकाले। और कहा कि तू किसकी बेटी
है मुझे बता मैं तेरी विनती करता हूं क्या तेरे पिता के घर
२४ में हमारे लिये रात भर टिकने का स्थान है। और उस ने

उसे कहा कि मैं मिलक: के बेटे बतूएल की कन्या हूं जिसे
२५ वुह नहूर के लिये जनी। और उस ने उसे कहा कि हमारे
यहां भूसा चारा भी बहुत है रात भर टिकने का स्थान भी।
२६ तब उस पुरुष ने अपना सिर झुकाया और परमेश्वर की दंडवत
२७ किई। और कहा कि परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम का ईश्वर
धन्य है जिस ने मेरे स्वामी को अपनी दया और अपनी सच्चाई
बिना न छोड़ा मार्ग में परमेश्वर ने मेरे स्वामी के भाइयों के
घर की ओर मेरी अगुआई किई॥
२८ तब वुह लड़की दौड़ी और अपनी माता के घर में इन
२९ बातों के समान संदेश कहा। और लाबन नाम रिबक: का
एक भाई था और लाबन बाहर कुए पर उस मनुष्य कने
३० दौड़ा। और यों हुआ कि जब उस ने वुह नथ और खड़वे
अपनी बहिन के हाथों में देखे और जब उस ने अपनी बहिन
रिबक: से ये बातें कहते सुनी कि इस मनुष्य ने मुझे यों कहा
तब वुह उस पुरुष पास आया और क्या देखता है कि वुह
३१ ऊंटों के पास कुए पर खड़ा है। और कहा कि हे परमेश्वर के
आशीषित तू भीतर आ तू किस लिये बाहर खड़ा है क्योंकि मैं
३२ ने घर सिद्ध किया है और ऊंटों के लिये स्थान है। और वुह
पुरुष घर में आया और उस ने अपने ऊंटों के पलान खोले
और ऊंटों के लिये भूसा चारा और उस के और लोगों के जो
३३ उस के साथ थे चरण धोने को जल दिया। और भोजन उस
के आगे रक्खा गया पर वुह बोला कि जब लों मैं अपना संदेश
न पहुंचाऊं मैं न खाऊंगा तब वुह बोला कहिये॥
३४ तब उस ने कहा कि मैं अबिरहाम का सेवक हूं।
३५ और परमेश्वर ने मेरे स्वामी को बहुत सा वर दिया है और
वुह महान हुआ है और उस ने उसे झुंड और ढोर और
सोना चांदी और दास और दासियां और ऊंट और गदहे दिये

३६ हैं। और मेरे स्वामी की पत्नी सरः बुढ़ापे में उस के लिये
३७ बेटा जनी और उस ने अपना सब कुछ उसे दिया है। और
मेरे स्वामी ने यह कहके मुझ से किरिया लिई कि तू कनआनियों
की बेटियों में से जिन के देश में मैं रहता हूं मेरे बेटे के
३८ लिये पत्नी मत लीजियो। परन्तु मेरे पिता के घराने और मेरे
३९ कुटुम्ब में जाइयो और मेरे बेटे के लिये पत्नी लाइयो। और
मैं ने अपने स्वामी से कहा क्या जाने वुह स्त्री मेरे साथ न
४० आवे। तब उस ने मुझे कहा कि परमेश्वर जिस के आगे मैं
चलता हूं अपना दूत तेरे संग भेजेगा और तेरी याचा सुफल
करेगा और तू मेरे कुटुम्ब और मेरे पिता के घराने से मेरे बेटे के
४१ लिये पत्नी लिजीयो। और जब तू मेरे कुटुम्ब में आवे तब तू
मेरी किरिया से बाहर होगा और यदि वे तुझे न देवें तो तू
४२ मेरी किरिया से बाहर हो जायगा। सो मैं आज के दिन कुए
पर आया और कहा कि हे परमेश्वर मेरे स्वामी अबिरहाम के
४३ ईश्वर यदि तू अब मेरी याचा सुफल करे। देख मैं जलके कुए
पर खड़ा हूं और यों होगा कि जो कुमारी जल भरने निकले
और मैं उसे कहूं कि मैं तेरी विनती करता हूं कि अपने घड़े से
४४ मुझे थोड़ा पानी पिला। और वुह मुझे कहे कि तू भी पी और मैं
तेरे ऊंटों के लिये भी भरूंगी तो वही वुह स्त्री होवे जिसे परमेश्वर ने
४५ मेरे स्वामी के बेटे के लिये ठहराया है। इतनी बात मेरे मन
में समाप्त न होते ही देखो रिबकः अपने कांधे पर घड़ा लेके
बाहर निकली और वुह कुए पर उतरी और खींचा और मैं ने
४६ उसे कहा कि मुझे पिला। तब उस ने फुरती करके अपना
घड़ा उतारा और बोली कि पी और मैं तेरे ऊंटों को भी
पिलाऊंगी सो मैं ने पिया और उस ने ऊंटों को भी पिलाया।
४७ फिर मैं ने उस्से पूछा और कहा कि तू किस की बेटी है और
वुह बोली कि नहूर के बेटे बतूएल की लड़की जिसे मिलकः

उस के लिये जनी श्रीर मैं ने नथ उस की नाक में श्रीर खड़वे
४८ उस के हाथों में डाले। श्रीर मैं ने अपना सिर भुकाया श्रीर
परमेश्वर की स्तुति किई श्रीर अपने स्वामी अविरहाम के ईश्वर
परमेश्वर का धन्य माना जिस ने मुझे ठीक मार्ग में मेरी
अगुआई किई कि अपने स्वामी के भाई की बेटी उस के बेटे
४९ के लिये लेऊं। सो अब यदि तुम कृपा श्रीर सच्चाई से मेरे
स्वामी के साथ व्यवहार किया चाहो तो मुझ से कहो श्रीर
यदि नहीं तो मुझ से कहो कि मैं दहिने अथवा बायें हाथ
फिरूं॥
५० तब लाबन श्रीर बतूएल ने उत्तर दिया श्रीर कहा कि यह
बात परमेश्वर की श्रीर से है हम तुझे बुरा अथवा भला नहीं
५१ कहि सक्ते। देख रिबकः तेरे आगे है इसे ले श्रीर जा श्रीर
जैसा परमेश्वर ने कहा है वुह तेरे स्वामी के बेटे की पत्नी हो।
५२ श्रीर ऐसा हुश्रा कि जब अबिरहाम के सेवक ने ये बातें सुनीं
५३ तब भूमि लों परमेश्वर के आगे दंडवत किई। श्रीर सेवक ने
चांदी श्रीर सोने के गहने श्रीर पहिरावा निकाला श्रीर रिबकः
को दिया श्रीर उस ने उस के भाई श्रीर उस की माता को भी
५४ बहुमुल्य बस्तु दिई। श्रीर उस ने श्रीर उस के साथी मनुष्यों
ने खाया श्रीर पीया श्रीर रात भर ठहरे श्रीर वे बिहान को
५५ उठे श्रीर उस ने कहा कि मुझे मेरे स्वामी पास भेजिये। श्रीर
उस के भाई श्रीर उस की माता ने कहा कि कन्या को हमारे
संग एक दस दिन रहने दीजिये उस के पीछे वुह जायगी।
५६ श्रीर उस ने उन्हें कहा कि मुझे मत रोको कि परमेश्वर ने मेरी
याचा सुफल किई है मुझे बिदा करो कि मैं अपने स्वामी पास
५७ जाऊं। श्रीर वे बोले हम उस कन्या को बुलायें श्रीर उसी से पूछें।
५८ तब उन्हें ने रिबकः को बुलाया श्रीर उसे कहा कि तू इस
५९ पुरुष के साथ जायगी श्रीर वुह बोली कि जाऊंगी। सो उन्हें

ने अपनी बहिन रिबक: और उस की दाई और अबिरहाम के
६० सेवक और उस के लोगों को विदा किया। और उन्हों ने
रिबक: को आशीष दिया और उसे कहा कि तू हमारी बहिन
है करोड़ों की माता हो और तेरा बंश उन के द्वारों का जो
उस्से बैर रखते हैं अधिकारी होवे ॥
६१ और रिबक: और उस की सहेलियां उठीं और ऊंटों पर
चढ़के उस मनुष्य के पीछे हुईं और उस सेवक ने रिबक: को
६२ लिया और अपना मार्ग पकड़ा। और इज़हाक़ सजीवन देखनेवाले
के कुए पर मार्ग में आ निकला था क्योंकि वुह दक्खिन देश
६३ में रहता था। और इज़हाक़ संध्याकाल को ध्यान करने के
लिये खेत को निकला और उस ने अपनी आंखें ऊपर किईं और
६४ क्या देखता है कि ऊंट चले आते हैं। और रिबक: ने अपनी
आंखें उठाईं और जब उस ने इज़हाक़ को देखा तो ऊंट पर
६५ से उतर पड़ी। और उस ने सेवक से पूछा कि यह जन जो
खेत से हमारी भेंट को चला आता है कौन है और सेवक ने
कहा कि वुह मेरा स्वामी है और उस ने घूंघट लेके अपने तईं
६६ ढांपा। तब सेवक ने सब कुछ जो उस ने किया था इज़हाक़
६७ से कहा। और इज़हाक़ उसे अपनी माता सर: के तंबू में
लाया और रिबक: को लिया और वुह उस की पत्नी हो गई
और उस ने उसे प्यार किया और इज़हाक़ ने अपनी माता के मरने
के पीछे शान्ति पाई ॥

पचीसवां पर्व्व ।

१ तब अबिरहाम ने एक पत्नी लिई और उस का नाम क़तूर:
२ था। और वुह उस के लिये ज़िमरान और युक़सान और मिदान और
३ मिदयान और इसबाक़ और सूख़ को जनी। और युक़सान से
सिबा और ददान उत्पन्न हुए और ददान के बेटे असूर और

४ लतूसी और लौमी थे। और मिदयान के बेटे ऐफ़: और एफ़्र
और हनूक और अबिदा और इल्दाआ थे ये सब क़तूर: के
५ बेटे थे। और अबिरहाम ने अपना सब कुछ इज़हाक को
६ दिया। परन्तु उन सुरैतिनों के बेटों को जो अबिरहाम की थीं
अबिरहाम ने दान दिये और अपने जीते जी उन्हें अपने बेटे
इज़हाक पास से पूरब देश में भेज दिया॥
७ और अबिरहाम के जीवन के दिन जिन में वुह जीता
८ रहा एक सौ पचहत्तर बरस थे। तब अबिरहाम ने अच्छे बृद्ध
वय में परिपूर्ण और बृद्ध मनुष्य होके प्राण त्यागा और अपने
९ लोगों में बटोरा गया। और उस के बेटे इज़हाक और
इसमअएल ने मकफील: की कंदला में हित्ती सुहर के बेटे
१० इफ़रून के खेत में जो ममरी के आगे है उसे गाड़ा। यही
खेत अबिरहाम ने हित्त के बेटों से मोल लिया था अबिरहाम
११ और उस की पत्नी सर: वहीं गाड़े गये। और अबिरहाम के
मरने के पीछे यों हुआ कि ईश्वर ने उस के बेटे इज़हाक को
आशीष दिया और इज़हाक सजीवन देखवैया के कुए के पास
रहता था॥
१२ और अबिरहाम के बेटे इसमअएल की बंशावली जिसे सर:
की लौंड़ी मिस्री हाजिर: अबिरहाम के लिये जनी थी ये हैं।
१३ और उन की बंशावली की रीति के समान इसमअएल के बेटों
के नाम ये हैं इसमअएल का पहिलौंठा नबीत और क़ीदार
१४ और अदबिएल और मिबसाम। और मिसमाअ और दूम: और
१५ मस्सा। हदर और तैमा इतूर नफ़ीस और क़िदिम:।
१६ ये इसमअएल के बेटे हैं और उन के नाम उन की बसतियों
और उन की गढ़ियों में ये हैं ये अपनी जातिगणों के बारह
१७ अध्यक्ष थे। और इसमअएल के जीवन के बरस एक सौ सैंतीस
थे कि उस ने अपना प्राण त्यागा और मर गया और अपने

१८ लोगों में बट्टर गया। और वे हवील: से सूर लों जो असूर के
मार्ग में मिस्र के आगे है बसते थे उस ने अपने सारे भाइयों
के आगे बास किया ॥
१९ और अविरहाम के बेटे इज़हाक की बंशावली यह है कि
२० अविरहाम से इज़हाक उत्पन्न हुआ। और इज़हाक ने चालीस
बरस की बय में रिबक: से विवाह किया वुह फट्टानअराम के
सुरियानी बतूएल की बेटी और सुरियानी लाबन की बहिन
२१ थी। और इज़हाक ने अपनी पत्नी के लिये परमेश्वर से बिनती
किई क्योंकि वुह बांझ थी और परमेश्वर ने उस की बिनती मानी
२२ और उस की पत्नी रिबक: गर्भिणी हुई। और उस के पेट में
बालक आपुस में छेड़ा छेड़ी करने लगे तब उस ने कहा यदि
२३ यों तो ऐसी क्यों हों और वुह परमेश्वर से बूझने को गई। तब
परमेश्वर ने उसे कहा कि तेरे गर्भ में दो जातिगण हैं और तेरी
कोख से दो रीति के लोग अलग होंगे और एक लोग दूसरे
२४ लोग से बलवंत होगा और जेष्ठ कनिष्ठ की सेवा करेगा। और
जब उस के जन्ने के दिन पूरे हुए तो देखो कि उस के गर्भ में
२५ जमल थे। सो पहिला ऐसा जैसा रोम का पहिरावा होता है
बालों में छिपा हुआ लाल रंग का निकला और उन्हों ने उस
२६ का नाम एसौ रक्खा। और उस के पीछे उस का भाई निकला
और उस का हाथ एसौ की एड़ी से लगा हुआ था और उस
का नाम यअक़ूब रक्खा गया जब वुह उन्हें जनी तो इज़हाक
की बय साठ बरस की थी ॥
२७ और लड़के बढ़े और एसौ चतुर अहेरी और खेत का रहवैया
२८ था और यअक़ूब सूधा मनुष्य तंबू में रहा करता था। और
इज़हाक एसौ को प्यार करता था क्योंकि वुह उस के अहेर से
२९ खाता था परन्तु रिबक: यअक़ूब को प्यार करती थी। और
यअक़ूब ने लपसी पकाई और एसौ खेत से आया और वुह थक

३० गया था। और एसौ ने यअ़कूब से कहा मैं तेरी बिनती करता
हूं कि इस लाल लाल में से मुझे खिला क्योंकि मैं मूर्छित हूं
३१ इस लिये उस का नाम अदूम कहा गया। तब यअ़कूब ने
३२ कहा कि आज अपना जन्म पद मेरे हाथ बेच। तब एसौ ने
कहा देख मैं मरने पर हूं और इस जन्म पद से मुझे क्या
३३ लाभ होगा। तब यअ़कूब ने कहा कि आज मुझ से किरिया
खा और उस ने उस्से किरिया खाई और अपना जन्म पद
३४ यअ़कूब के हाथ बेचा। तब यअ़कूब ने रोटी और मसूर की
दाल की लपसी एसौ को दिई और उस ने खाया और पीया और
उठके चला गया यों एसौ ने अपने जन्म पद की निन्दा किई॥

छब्बीसवां पर्व्व।

१ और उस देश में पहिले अकाल को छोड़ जो अबिरहाम के
दिनों में पड़ा था फिर अकाल पड़ा तब इज़हाक अबिमलिक
पास जो फिलिस्तियों का राजा था जिरार को गया॥
२ और परमेश्वर ने उस पर प्रगट होके कहा मिस्र को मत
३ उतर जा जहां मैं तुझे कहूं उस देश में निवास कर। तू इस
देश में टिक और मैं तेरे साथ होऊंगा और तुझे आशीष देऊंगा
क्योंकि मैं तुझे और तेरे बंश को इन सारे देशों को देऊंगा और
मैं उस किरिया को जो मैं ने तेरे पिता अबिरहाम से खाई है
४ पूरी करूंगा। और मैं तेरे बंश को आकाश के तारों की नाईं
बढ़ाऊंगा और ये समस्त देश तेरे बंश को देऊंगा और पृथिवी
५ के सारे जातिगण तेरे बंश से आशीष पावेंगे। इस लिये कि
अबिरहाम ने मेरे शब्द को माना और मेरी आज्ञाओं और मेरी
बातों और मेरी बिधिन और मेरी ब्यवस्था को पालन किया॥
६। ७ सो इज़हाक जिरार में रहा। और वहां के बासियों ने
उस्से उस की पत्नी के बिषय में पूछा तब वुह बोला कि वुह

मेरी वहिन है क्योंकि वुह उसे अपनी पत्नी कहते हुए डरा न
हो कि वहां के लोग रिवक: के लिये उसे मार डालें क्योंकि
८ वुह देखने में सुंदरी थी। और यों हुआ कि जब वुह वहां
बहुत दिन लों रहा तो फिलिस्तियों के राजा अबिमलिक ने
झरोखे से दृष्टि किई और देखा तो क्या देखता है कि इज़हाक
९ अपनी पत्नी रिवक: से कलोल करता है। तब अबिमलिक ने
इज़हाक को बुलाके कहा देख वुह निश्चय तेरी पत्नी है
फिर तू ने क्योंकर कहा कि वुह मेरी बहिन है तब इज़हाक
ने उस्से कहा इस लिये कि मैं ने कहा न हो कि मैं उस के
१० कारण मारा जाऊं। और अबिमलिक बोला यह क्या है जो तू
ने हम से किया है होने ही पर था कि लोगों में से कोई तेरी
११ पत्नी के साथ अकर्म्म करता और तू दोष हम पर लाता। तब
अबिमलिक ने अपने सब लोगों को यह आज्ञा किई कि जो
कोई इस पुरुष को अथवा उस की पत्नी को छूयेगा निश्चय
घात किया जायगा॥

१२ तब इज़हाक ने उस देश में खेती किई और उस बरस सौ
१३ गुना प्राप्त किया और परमेश्वर ने उसे आशीष दिया। और वुह
मनुष्य बढ़ गया और उस की बढ़ती होती चली जाती थी
१४ यहां लों कि वुह अत्यंत बड़ा हो गया। और वुह झुंड और
ढोर और बहुत से सेवकों का स्वामी हुआ और फिलिस्तियों ने
१५ उस्से डाह किया। और सारे कुए जो उस के पिता के सेवकों
ने उस के पिता अबिरहाम के समय में खोदे थे फिलिस्तियों ने
१६ ढांप दिये और उन्हें मट्टी से भर दिये। सो अबिमलिक ने
इज़हाक से कहा कि हमारे पास से जा क्योंकि तू हम से अति
सामर्थी है॥

१७ और इज़हाक वहां से गया और अपना तंबू जिरार की
१८ तराई में खड़ा किया और वहीं रहा। और इज़हाक ने जल

के उन कुओं को जो उन्हों ने उस के पिता अबिरहाम के
दिनों में खोदे थे फिर खोदा क्योंकि फिलिस्तियों ने अबिरहाम
के मरने के पीछे उन्हें ढांप दिया था और उस ने उन के वही
१९ नाम रक्खे जो उस के पिता ने रक्खे थे। और इज़हाक के
सेवकों ने तराई में खोदा और वहां एक कुआ जिस में जल
२० का सोता था पाया। और जिरार के चरवाहों ने इज़हाक के
चरवाहों से यह कहके झगड़ा किया कि यह जल हमारा है
और उन के झगड़ा करने के कारण उस ने उस कुए का नाम
२१ झगड़ रक्खा। और उन्हों ने दूसरा कुआ खोदा और उस के
लिये भी झगड़ा हुआ और उस ने उस का नाम विरोध रक्खा॥
२२ और वुह वहां से आगे चला और दूसरा कुआ खोदा और
उन्हों ने उस के लिये झगड़ा न किया और उस ने उस का
नाम फैलाव रक्खा और उस ने कहा कि अब परमेश्वर ने
हम को फैलाया है और हम इस भूमि में फलवंत होंगे॥
२३। २४ और वुह वहां से बीअरसबअ को गया। और परमेश्वर
ने उसी रात उसे दर्शन देके कहा कि मैं तेरे पिता अबिरहाम
का ईश्वर हूं मत डर क्योंकि मैं तेरे संग हूं और तुझे आशीष
देऊंगा और अपने दास अबिरहाम के लिये तेरा बंश बढ़ाऊंगा।
२५ और उस ने वहां एक वेदी बनाई और परमेश्वर का नाम लिया
और वहां अपना तंबू खड़ा किया और इज़हाक के सेवकों ने
वहां एक कुआ खोदा॥
२६ तब जिरार से अबिमलिक और एक उस के मित्रों में से
२७ अखूजत और उस के सेनापति फीकुल्ल उस पास गये। और
इज़हाक ने उन्हें कहा कि तुम किस लिये मुझ पास आये हो
यद्यपि तुम मुझ से बैर रखते हो और तुम ने मुझे अपने पास
२८ से निकाल दिया है। और वे बोले कि देखते हुए हम ने
देखा कि परमेश्वर तेरे संग है सो हम ने कहा कि हम और

२९ तू आपुस में किरिया खावें और तेरे साथ बाचा बांधें। जैसा
हम ने तुझे नहीं छुआ और तुझ से भलाई छोड़ कुछ नहीं
किया और तुझे कुशल से भेजा तू भी हमें न सता तू अब
३० परमेश्वर का आशीषित है। और उस ने उन के लिये जेवनार
३१ बनाया और उन्हों ने खाया पीया। और बिहान को तड़के
उठे और आपुस में किरिया खाई और इज़हाक़ ने उन्हें बिदा
३२ किया और वे उस पास से कुशल से गये। और उसी दिन यों
हुआ कि इज़हाक़ के सेवक आये और अपने खोदे हुए कुए के
३३ बिषय में कहा और बोले कि हम ने जल पाया। सो उस ने
उस का नाम सबअ़ रक्खा इस लिये उस नगर का नाम आज
लों बीअरसबअ़ है॥

३४ और एसौ जब चालीस बरस का हुआ तब उस ने
हत्ती बीअरी की बेटी यहूदियत को और हत्ती एलून की बेटी
३५ बशामत को पत्नी किया। और वुह इज़हाक़ और रिबक़: के
लिये मन के कड़वाहट का कारण हुईं॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब ।

१ और यों हुआ कि जब इज़हाक़ बूढ़ा हुआ और उस की
आंखें धुन्धला गईं ऐसा कि वुह देख न सक्ता था तो उस ने
अपने जेठे बेटे एसौ को बुलाया और उस्से कहा कि हे मेरे
२ बेटे और वुह उस्से बोला देखो यहीं हूं। तब उस ने कहा कि
देखिये मैं बूढ़ा हूं और मैं अपने मरने का दिन नहीं जानता।
३ सो अब तू अपना हथियार अर्थात् अपनी निखंग और अपना
धनुष लीजिये और बन को जाइये और मेरे लिये अहेर कर।
४ और मेरी रुचि के समान स्वादित भोजन पकाके मेरे पास ला
और मैं खाऊंगा जिसतें अपने मरने के आगे मेरा प्राण तुझे
५ आशीष देवे। और जब इज़हाक़ अपने बेटे एसौ से बातें

करता था तब रिबक: ने सुना और जब एसौ बन में गया
कि अहेर करे और लाये ॥
६ तब रिबक: ने अपने बेटे यअकूब से कहा कि देख मैं ने
७ तेरे भाई एसौ से तेरे पिता को यह कहते सुना। कि मेरे
लिये अहेर का मांस ला और मेरे लिये स्वादित भोजन
पका और मैं खाऊंगा और अपने मरने से पहिले परमेश्वर के
८ आगे तुझे आशीष देऊंगा। सो अब हे मेरे बेटे मेरी आज्ञा
९ के समान मेरी बात को मान। अब झुंड में जाइये और वहां
से बकरी के दो अच्छे मेम्ने मेरे लिये लीजिये और मैं तेरे
१० पिता की रुचि के समान उन से स्वादित भोजन बनाऊंगी। और तू
अपने पिता के पास ले जाइयो जिसतें वुह खाय और अपने
मरने से आगे तुझे आशीष देवे ॥
११ तब यअकूब ने अपनी माता रिबक: से कहा देख मेरा
भाई एसौ रोंआर मनुष्य है और मैं चिकना मनुष्य हूं।
१२ कदाचित्त मेरा पिता मुझे टटोले और मैं उस की दृष्टि में निन्दक
की नाईं ठहरूं और आशीष नहीं परन्तु अपने ऊपर स्राप लाऊं।
१३ तब उस की माता ने उसे कहा कि तेरा स्राप मुझ पर होवे हे
मेरे बेटे तू केवल मेरी बात मान और जाके मेरे लिये ले।
१४ सो वुह गया और लिया और अपनी माता पास लाया और उस
की माता ने उस के पिता की रुचि के समान स्वादित भोजन बनाया॥
१५ और रिबक: ने घर में से अपने जेठे बेटे एसौ का अच्छा
पहिरावा लिया और अपने छोटे बेटे यअकूब को पहिनाया।
१६ और बकरी के मेम्नों का चमड़ा उस के हाथों और उस के
१७ गले की चिकनाई पर लपेटा। और अपना बनाया हुआ स्वादित
भोजन और रोटी अपने बेटे यअकूब के हाथ दिई ॥
१८ और वुह अपने पिता के पास जाके बोला हे मेरे पिता और
१९ वुह बोला मैं यहां हूं तू कौन है हे मेरे बेटे। तब यअकूब

अपने पिता से बोला कि मैं आप का पहिलौंठा एसौ हूं आप
के कहने के समान मैं ने किया है उठ बैठिये और मेरे अहेर
के मांस में से खाइये जिसतें आप का प्राण मुझे आशीष देवे ।
२० तब इज़हाक ने अपने बेटे से कहा कि यह क्योंकर है कि तू
ने ऐसा बेग पाया हे मेरे बेटे और वुह बोला इस लिये कि
२१ परमेश्वर आप का ईश्वर मेरे आगे लाया । तब इज़हाक ने
यअकूब से कहा कि हे मेरे बेटे मेरे पास आइये जिसतें मैं
२२ तुझे टटोलूं कि निश्चय तू मेरा बेटा एसौ है कि नहीं । तब
यअकूब अपने पिता इज़हाक पास गया और उस ने उसे
टटोलके कहा कि शब्द तो यअकूब का शब्द है पर हाथ
२३ एसौ के हाथ हैं । और उस ने उसे न पहिचाना इस लिये कि उस
के हाथ उस के भाई एसौ के हाथों की नाईं रोंआर थे सो उस
२४ ने उसे आशीष दिया । और कहा कि तू मेरा वही बेटा एसौ
२५ ही है और वुह बोला कि मैं वही हूं । और उस ने कहा कि
तू मेरे पास ला कि मैं अपने बेटे के अहेर के मांस से खाऊं
जिसतें मेरा प्राण तुझे आशीष दे सो वुह उस पास लाया और
उस ने खाया और वुह उस के लिये दाखरस लाया और उस
२६ ने पीया । तब उस के पिता इज़हाक ने उसे कहा कि हे मेरे
२७ बेटे अब पास आ और मुझे चूम । और वुह पास आया और
उसे चूमा और उस ने उस के पहिरावा की बास पाई और उसे
आशीष दिया और कहा कि देख मेरे बेटे का गंध उस खेत
२८ के गंध की नाईं है जिस पर परमेश्वर ने आशीष दिया है । और
ईश्वर तुझे आकाश की ओस और पृथिवी की चिकनाई और
२९ बहुत से अन्न और दाखरस देवे । लोग तेरी सेवा करें और
जातिगण तेरे आगे झुकें तू अपने भाइयों का प्रभु हो और तेरी
मा के बेटे तेरे आगे झुकें जो तुझे स्रापे सो स्रापित और जो
तुझे आशीर्वाद देवे सो आशीषित होवे ॥

३० और यों हुआ कि ज्योंहीं इज़हाक यअक़ूब को आशीष दे
चुका और यअक़ूब के अपने पिता इज़हाक के आगे से बाहर
३१ जाते ही उस का भाई एसौ अपनी अहेर से फिरा। और उस
ने भी स्वादित भोजन बनाया और अपने पिता पास लाया और
अपने पिता से कहा मेरा पिता उठे और अपने बेटे के अहेर के
३२ मांस में से खाये जिसतें आप का प्राण मुझे आशीष देवे। तब
उस के पिता इज़हाक ने उसे कहा कि तू कौन है और वुह
३३ बोला कि मैं आप का बेटा आप का पहिलौंठा एसौ हूं। तब
इज़हाक बड़ी कंपकंपी से कांपा और बोला वुह तो कौन था
और कहां है जो अहेर करके मुझ पास अहेर का मांस लाया
और मैं ने सब में से तेरे आने के आगे खाया है और उसे
३४ आशीष दिया है हां वुह आशीषित होगा। एसौ अपने पिता
की ये बातें सुनके बहुत चिल्लाया और फूट फूटके रोया और
अपने पिता से कहा मुझे भी मुझे हे मेरे पिता आशीष दीजिये।
३५ और वुह बोला कि तेरा भाई छल से आया और तेरा आशीष
३६ ले गया। तब उस ने कहा क्या उस का नाम ठीक यअक़ूब
नहीं कहावता क्योंकि उस ने दोहराके मुझे अड़ंगा मारा उस
ने मेरा जन्म पद ले लिया और देखो अब उस ने मेरा आशीष
लिया है और उस ने कहा क्या तू ने मेरे लिये कोई आशीष
३७ नहीं रख छोड़ा। तब इज़हाक ने एसौ को उत्तर देके कहा कि
देख मैं ने उसे तेरा प्रभु किया और उस के सारे भाइयों को
उस की सेवकाई में दिया और अन्न और दाखरस से उस का
३८ सहारा किया अब हे मेरे बेटे तेरे लिये मैं क्या करूं। तब
एसौ ने अपने पिता से कहा हे मेरे पिता क्या आप पास एक ही
आशीष है हे मेरे पिता मुझे मुझे भी आशीष दीजिये और एसौ
३९ चिल्ला चिल्ला रोया। तब उस के पिता इज़हाक ने उत्तर दिया
और उसे कहा कि देख भूमि की चिकनाई और ऊपर से आकाश

४० की ओस में तेरा तंबू होगा। और तू अपने खड्ग से जीयेगा
और अपने भाई की सेवा करेगा और यों होगा कि जब तू घूमता
फिरता रहेगा तो उस का जूआ अपने कांधे पर से तोड़ फेंकेगा॥
४१ सो उस आशीष के कारण जिसे उस के पिता ने उसे दिया
था एसौ ने यअ़कूब का वैर रक्खा और एसौ ने अपने मन में
कहा कि मेरे पिता के शोक के दिन आते हैं और मैं अपने भाई
४२ यअ़कूब को मार डालूंगा। और रिबक: को उस के जेठे बेटे
एसौ की ये बातें कही गईं तब उस ने अपने छुटके बेटे यअ़कूब
को बुला भेजा और उसे कहा कि देख तेरा भाई एसौ तुझे
४३ घात करने को तेरे विषय में अपने को शान्ति देता है। सो
अब हे मेरे बेटे तू मेरा कहा मान और उठ मेरे भाई लाबन
४४ पास हरान को भाग जा। और थोड़े दिन उस के साथ रह
४५ जब लों तेरे भाई का कोप जाता रहे। जब लों तेरे भाई का
क्रोध तुझ से न फिरे और जो तू ने उस्से किया है सो भूल
जाय तब मैं तुझे वहां से बुला भेजूंगी किस लिये एकही दिन
में तुम दोनों को खोऊं॥
४६ तब रिबक: ने इज़हाक़ से कहा कि मैं हित्त की बेटियों के
कारण अपने जीवन से सकेत हूं सो यदि यअ़कूब हित्त की
बेटियों में से जैसी इस देश की लड़कियां हैं लेवे तो मेरे जीवन
से क्या फल है॥

अठाईसवां पर्व्व।

१ और इज़हाक़ ने यअ़कूब को बुलाया और उसे आशीष दिया
और उसे आज्ञा दिई और उसे कहा कि तू कनआ़नी लड़कियों
२ में से पत्नी न लेना। उठ फ़द्दानअराम में अपने नाना बतूएल
के घर जा और वहां से अपने मामू लाबन की लड़कियों में से
३ पत्नी ले। और सर्बसामर्थी सर्व्वशक्तिमान तुझे आशीष देवे और

तुझे फलमान करे और तुझे बढ़ावे जिसतें तू लोगों की मंडली
४ होवे । और अबिरहाम का आशीष तुझे और तेरे संग तेरे बंश
को देवे जिसतें तू अपनी टिकाव की भूमि को जो ईश्वर ने
५ अबिरहाम को दिई अधिकार में पावे । तब इज़हाक ने यअकूब
को बिदा किया और वुह फ़द्दानअराम में सूरियानी बतूएल के
बेटे लाबन पास गया जो यअकूब और एसौ की माता रिबक:
का भाई था ॥
६ और एसौ ने जब देखा कि इज़हाक ने यअकूब को आशीष
दिया और उसे फ़द्दानअराम से पत्नी लेने को वहां भेजा और
उस ने उसे आशीष देके और आज्ञा देके कहा कि तू कनआन
७ की लड़कियों में से पत्नी न लेना । और यअकूब ने अपने
८ पिता माता की बात मानी और फ़द्दानअराम को गया । और
एसौ ने यह भी देखा कि कनआनी लड़कियां मेरे पिता की दृष्टि
९ में बुरी हैं । तब एसौ इसमअएल कने गया और अबिरहाम के
बेटे इसमअएल की बेटी महलत को जो नबीत की बहिन थी
अपनी पत्नियों में लिया ॥
१० और यअकूब बीअरसबअ से निकलके हरान की ओर गया ।
११ और एक स्थान में टिका और रात भर रहा क्योंकि सूर्य्य अस्त
हुआ था और उस ने उस स्थान के पत्थरों में से लिया और
१२ अपना उसीसा किया और वहां सोने को लेट गया । और उस
ने स्वप्न देखा और देखो कि एक सीढ़ी पृथिवी पर धरी है और
उस की टोंक स्वर्ग से लगी थी और क्या देखता है कि ईश्वर
१३ के दूत उस पर से चढ़ते उतरते हैं । और देखो कि परमेश्वर
उस के ऊपर खड़ा है और बोला कि मैं परमेश्वर तेरे पिता
अबिरहाम का ईश्वर और इज़हाक का ईश्वर हूं मैं यह भूमि
१४ जिस पर तू लेटा है तुझे और तेरे बंश को देऊंगा । और तेरे
बंश पृथिवी की धूल की नाईं होंगे और तू पश्चिम और पूरब

और उत्तर और दक्षिण को फूट निकलेगा और तुझ में और तेरे
१५ बंश में पृथिवी के सारे घराने आशीष पावेंगे । और देख मैं तेरे
साथ हूं और सर्बत्र जहां कहीं तू जायगा तेरी रखवाली करूंगा
और तुझे इस देश में फिर लाऊंगा क्योंकि जब लों मैं तुझ से
अपना कहा हुआ पूरा न कर लेऊं तुझे न छोड़ूंगा ॥
१६ तब यअ़क़ूब अपनी नींद से जागा और कहा कि निश्चय
१७ परमेश्वर इस स्थान में है और मैं न जानता था । तब वुह
डर गया और बोला कि यह क्या ही भयानक स्थान है ईश्वर के
घर को छोड़ यह और कुछ नहीं है और यह स्वर्ग का फाटक
१८ है । और यअ़क़ूब बिहान को तड़के उठा और उस पत्थर को
जिसे उस ने अपना उसीसा किया था खंभा खड़ा किया और
१९ उस पर तेल ढाला । और उस स्थान का नाम बैतएल रक्खा
२० पर उस्से पहिले उस नगर का नाम लौज़ था । और यअ़क़ूब
ने मनौती मानी और कहा कि यदि ईश्वर मेरे साथ रहे और
मेरे जाने के मार्ग में मेरा रखवाल हो और मुझे खाने को रोटी
२१ और पहिन्ने को कपड़ा देवे । ऐसा कि मैं अपने पिता के घर
२२ कुशल से फिर आऊं तब परमेश्वर मेरा ईश्वर होगा । और यह
पत्थर जो मैं ने खंभा सा खड़ा किया ईश्वर का घर होगा और
सब में से जो तू मुझे देगा उस्से दसवां भाग अवश्य तुझे
देऊंगा ॥

उन्तीसवां पर्ब्ब ।

१ तब यअ़क़ूब ने अपने पांव उठाये और पूरबी पुत्रों के देश
२ में आया । और उस ने दृष्टि किई और देखो खेत में एक कुआ
है और देखो वहां उस के लग भेड़ बकरी के तीन झुंड बैठे
हुए हैं क्योंकि वे उसी कुए से झुंडों को पानी पिलाते थे और
३ उस कुए के मुंह पर बड़ा पत्थर धरा था । और वहां सारी झुंड

एकट्ठी होती थीं और वे उस पत्थर को कुए के मुंह पर से
ढुलका देते थे और भेड़ बकरियों को पानी पिलाके पत्थर को
४ कुए के मुंह पर उस के स्थान में फिर रखते थे। तब यअ़क़ूब
ने उन से कहा कि मेरे भाइयो तुम कहां के हो और वे बोले
५ कि हम हरान के हैं। और उस ने उन से कहा क्या तुम नहूर
६ के बेटे लाबन को जानते हो और वे बोले जानते हैं। और
उस ने उन से कहा क्या वुह कुशल से है और वे बोले कि
कुशल से है और देख उस की बेटी राख़िल झुंडों के साथ आती
७ है। तब वुह बोला देखो दिन अभी बहुत है ढोरों के एकट्ठे
करने का समय नहीं तुम झुंडों को पानी पिलाके चराई पर ले
८ जाओ। और वे बोले हम नहीं सक्ते जब लों कि सारे झुंड
एकट्ठे न होवें और पत्थर को कुए के मुंह पर से न ढुलकावें
तब हम झुंडों को पानी पिलाते हैं॥

९ वुह उन से यह कह रहा था कि राख़िल अपने पिता की
१० झुंडों को लेके आई। क्योंकि वुह उन की रखवालनी थी और
यों हुआ कि यअ़क़ूब अपने मामू लाबन की बेटी राख़िल को
और अपने मामू लाबन की झुंडों को देखके पास गया और
पत्थर को कुए के मुंह पर से ढुलकाया और अपने मामू लाबन की
११ झुंडों को पानी पिलाया। और यअ़क़ूब ने राख़िल को चूमा
१२ और चिल्लाके रोया। और यअ़क़ूब ने राख़िल से कहा कि मैं
तेरे पिता का कुटुम्ब और रिबक़: का बेटा हूं और उस ने
१३ दौड़के अपने पिता से कहा। और यों हुआ कि जब लाबन
ने अपने भांजे यअ़क़ूब का समाचार सुना तो उस्से मिलने को
दौड़ा और उसे गले लगाया और उसे चूमा और उसे अपने घर
१४ लाया और उस ने ये सारी बातें लाबन से कहीं। तब लाबन
ने उसे कहा कि निश्चय तू मेरी हड्डी और मेरा मांस है और
वुह एक मांस भर उस के यहां रहा॥

१५ तब लाबन ने यअ़क़ूब से कहा कि मेरा भाई होने के
कारण क्या तू सेंत से मेरी सेवा करेगा मुझ से कह मैं तुझे
१६ क्या देऊं। और लाबन की दो बेटियां थीं जेठी का नाम
१७ लियाह और लहुरी का नाम राख़िल था। और लियाह की
आंखें धुन्धली थीं परन्तु राख़िल सुन्दरी और रूपवती थी।
१८ और यअ़क़ूब राख़िल को प्यार करता था और उस ने कहा कि
तेरी लहुरी बेटी राख़िल के लिये मैं सात बरस तेरी सेवा करूंगा।
१९ तब लाबन बोला कि उसे दूसरे के देने से तुझी को देना भला
२० है मेरे साथ रह। और यअ़क़ूब ने सात बरस लों राख़िल
के लिये सेवा किई और उस प्रीति के मारे जो वुह उस्से रखता
था थोड़े दिन की नाईं समझ पड़े॥
२१ और यअ़क़ूब ने लाबन से कहा कि मेरी पत्नी मुझे दीजिये
२२ क्योंकि मेरे दिन पूरे हुए और मैं उसे ग्रहण करूंगा। तब
लाबन ने वहां के सारे मनुष्यों को एकट्ठा करके जेवनार किया।
२३ और सांझ को यों हुआ कि वुह अपनी बेटी लियाह को उस
२४ पास लाया और उस ने उसे ग्रहण किया। और दासी के लिये
लाबन ने अपनी दासी ज़िलफ़ः को अपनी बेटी लियाह को
२५ दिया। और ऐसा हुआ कि बिहान को क्या देखता है कि
लियाह है तब उस ने लाबन को कहा कि आप ने यह मुझ
से क्या किया क्या मैं ने आप की सेवा राख़िल के लिये नहीं
२६ किई सो आप ने किस लिये मुझे छला। तब लाबन ने कहा
कि हमारे देश का यह व्यवहार नहीं कि लहुरी को जेठी से
२७ पहिले व्याह देवें। इस का अठवारा पूरा कर और तेरी और
भी सात बरस की सेवा के लिये हम इसे भी तुझे देंगे॥
२८ और यअ़क़ूब ने ऐसा ही किया और इस का अठवारा पूरा
किया तब उस ने अपनी बेटी राख़िल को उसे पत्नी में दिया।
२९ और लाबन ने अपनी दासी बिलहः को अपनी बेटी राख़िल

३० की दासी होने के लिये दिया। तब यअ़क़ूब ने राख़िल को
भी ग्रहण किया और वुह राख़िल को लियाह से अधिक
प्यार करता था और सात बरस अधिक उस ने उस की सेवा
किई॥
३१ और जब परमेश्वर ने देखा कि लियाह घिनित हुई तव
३२ उस ने उस की कोख खोली और राख़िल बांझ रही। और
लियाह गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस ने उस का नाम
रूबिन रक्खा क्योंकि उस ने कहा कि निश्चय परमेश्वर ने मेरे
३३ दु:ख पर दृष्टि किई है कि अब मेरा पति मुझे प्यार करेगा। और
वुह फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और बोली इस लिये
कि परमेश्वर ने मेरा घिनित होना सुनके मुझे इसे भी दिया
३४ सो उस ने उस का नाम समऊन रक्खा। और फिर वुह गर्भिणी
हुई और बेटा जनी और बोली कि इस बार मेरा पति मुझ से
मिल जायगा क्योंकि मैं उस के लिये तीन बेटे जनी इस लिये
३५ उस का नाम लेवी रक्खा गया। और वुह फिर गर्भिणी हुई
और बेटा जनी और बोली कि अब मैं परमेश्वर की स्तुति
करूंगी इस लिये उस ने उस का नाम यहूदाह रक्खा और
जन्ने से रह गई॥

तीसवां पर्व्व।

१ और जब राख़िल ने देखा कि यअ़क़ूब का बंश मुझ से
नहीं होता तो उस ने अपनी बहिन से डाह किया और
यअ़क़ूब को कहा कि मुझे बालक दे नहीं तो मैं मर जाऊंगी।
२ तब राख़िल पर यअ़क़ूब का क्रोध भड़का और उस ने कहा
क्या मैं ईश्वर की संती हूं जिस ने तुझे कोख के फल से अलग
३ रक्खा। और वुह बोली देख मेरी दासी बिलहः है उसे ग्रहण
कर और वुह मेरे घुठनों पर जनेगी और मैं भी उस्से बन

४ जाऊंगी। और उस ने उसे अपनी दासी बिलह: को पत्नी के
लिये दिया और यअ़कूब ने उसे ग्रहण किया ॥
५ और बिलह: गर्भिणी हुई और यअ़कूब के लिये बेटा जनी।
६ तब राख़िल बोली कि ईश्वर ने मेरा बिचार किया है और मेरा
शब्द भी सुना और मुझे एक बेटा दिया इस लिये उस ने उस
७ का नाम दान रक्खा। और राख़िल की दासी बिलह: फिर
८ गर्भिणी हुई और यअ़कूब के लिये दूसरा बेटा जनी। और
राख़िल बोली कि मैं ने अपनी बहिन से ईश्वरीय मलयुद्ध किया
और जीता और उस ने उस का नाम नफ़ताली रक्खा ॥
९ और जब लियाह ने देखा कि मैं जन्ने से रह गई तो उस
ने अपनी दासी ज़िलफ़: को लेके यअ़कूब को पत्नी के लिये
१० दिया। सो लियाह की दासी ज़िलफ़: भी यअ़कूब के लिये
११ एक बेटा जनी। तब लियाह बोली कि जथा आती है और
१२ उस ने उस का नाम जद रक्खा। फिर लियाह की दासी
१३ ज़िलफ़: यअ़कूब के लिये एक दूसरा बेटा जनी। और लियाह
बोली कि मैं धन्य हूं क्योंकि पुत्रियां मुझे धन्य कहेंगी और
उस ने उस का नाम यशर रक्खा ॥
१४ और गेहूं के लवने के समय में रूबिन गया और खेत में
दूदाफल पाया और उन्हें अपनी माता लियाह के पास लाया
तब राख़िल ने लियाह से कहा कि अपने बेटे का दूदाफल
१५ मुझे दे। तब उस ने उस्से कहा क्या यह छोटी बात है जो
तू ने मेरे पति को ले लिया और मेरे पुत्र के दूदाफल को भी
लिया चाहती है और राख़िल बोली इस लिये वुह आज रात
१६ तेरे बेटे के दूदाफल की संती तेरे साथ रहेगा। और जब
यअ़कूब सांझ को खेत से आया तब लियाह उसे आगे
से मिलने को गई और कहा कि आज आप को मुझ पास
आना होगा क्योंकि निश्चय मैं ने अपने बेटे का दूदाफल

देके आप को भाड़े में लिया है सो वुह उस रात उस के साथ
रहा ॥
१७ और ईश्वर ने लियाह की सुनी और वुह गर्भिणी हुई और
१८ यअ़कूब के लिये पांचवां बेटा जनी। और लियाह बोली कि
ईश्वर ने मेरी बनी मुझे दिई क्योंकि मैं ने अपने पति को
अपनी दासी दिई है और उस ने उस का नाम इशकार रक्खा।
१९ और लियाह फिर गर्भिणी हुई और यअ़कूब के लिये छठवां
२० बेटा जनी। और बोली कि ईश्वर ने मुझे अच्छा दैजा दिया
है अब मेरा पति मेरे संग रहेगा क्योंकि मैं उस के लिये छः
२१ बेटे जनी और उस ने उस का नाम ज़बूलून रक्खा। और अंत
में वुह बेटी जनी और उस का नाम दीनाह रक्खा॥
२२ और ईश्वर ने राख़िल को स्मरण किया और ईश्वर ने उस
२३ की सुनी और उस की कोख को खोला। और वुह गर्भिणी हुई
और बेटा जनी और बोली कि ईश्वर ने मेरी निन्दा दूर किई।
२४ और उस ने उस का नाम यूसुफ़ रक्खा और बोली कि परमेश्वर
मुझे दूसरा बेटा भी देवेगा॥
२५ और जब राख़िल से यूसुफ़ उत्पन्न हुआ तो यों हुआ कि
यअ़कूब ने लाबन से कहा कि मुझे बिदा कीजिये और मैं
२६ अपने स्थान और अपने देश को जाऊंगा। मेरी स्त्रियां और
मेरे लड़के जिन के लिये मैं ने आप की सेवा किई है मुझे
दीजिये और मैं जाऊंगा क्योंकि आप जानते हैं कि मैं ने आप
की कैसी सेवा किई है॥
२७ तब लाबन ने उसे कहा कि जो मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह
पाया है तो रह जा मैं ने देख लिया है कि परमेश्वर ने तेरे
२८ कारण से मुझे आशीष दिया है। और उस ने कहा कि अब
२९ तू अपनी बनी मुझ से ठहरा ले और मैं तुझे देऊंगा। तब
उस ने उसे कहा आप जानते हैं कि मैं ने क्योंकर आप की

३० सेवा किई है और आप के ढोर कैसे मेरे साथ थे। क्योंकि
मेरे आने से आगे तेरा थोड़ा सा था पर झुंड के झुंड हो गये
हैं और मेरे आने से परमेश्वर ने आप को आशीष दिया है और
अब मैं भी अपने घर के लिये कब ठिकाना करूंगा॥
३१ और वुह बोला कि मैं तुझे क्या देऊं और यअ़क़ूब ने कहा
कि आप मुझे कुछ न दीजिये जो आप मेरे लिये ऐसा करेंगे तो
३२ मैं आप के झुंड को फिर चराऊंगा और रखवाली करूंगा। मैं
आज आप के सारे झुंड में से चल निकलूंगा और भेड़ों में से
सारी फुटफुटियां और चितकबरियों और भूरियों को और
बकरियों में से फुटफुटियों और चितकबरियों को अलग करूंगा
३३ और मेरी बनी वैसी होगी। और कल को मेरा धर्म्म मेरा
उत्तर देगा जब कि मेरी बनी आप के आगे आवे तो वुह जो
बकरियों में चितकबरी और फुटफुटिया और भेड़ों में भूरी न
हो तो वुह मेरे पास चोरी की गिनी जाय॥
३४ तब लाबन बोला देख मैं चाहता हूं कि जैसा तू ने कहा
तैसा ही होवे॥
३५ और उस ने उस दिन पट्टेवाले और फुटफुटिया बकरे और
सब चितकबरी और फुटफुटिया बकरियां अर्थात् हर एक जिस
में कुछ उजलाई थी और भेड़ों में से भूरी अलग किई और
३६ उन्हें अपने बेटों के हाथ सौंप दिया। और उस ने अपने और
यअ़क़ूब के मध्य में तीन दिन की यात्रा का बीच ठहराया और
यअ़क़ूब लाबन के उबरे हुए झुंडों को चराया किया॥
३७ और यअ़क़ूब ने हरे लुबने और बादाम और अरमन की
हरी छड़ियां ले ले उन्हें गंडेवाल किया ऐसा कि छड़ियों की
३८ उजलाई प्रगट हुई। और जब झुंड पानी पीने को आती थीं
तब वुह उन छड़ियों को जिन पर गंडे बनाये थे झुंडों के आगे
कठरों और नालियों में धरता था कि जब वे सब पीने आवें

३६ तो गर्भिणी होवें। और छड़ियों के आगे झुंड गर्भिणी हुई और
४० झुंड पट्टेवाले और फुटफुटियां और चितकबरे बच्चे जनीं। और
यअ़क़ूब ने मेम्नों को अलग किया और झुंड के मुंह को चितकबरों
के और भूरों के जो लाबन की झुंड में थे किया और उस ने
अपने झुंड को अलग किया और लाबन के झुंड में न मिलाया।
४१ और यों हुआ कि जब पुष्ट ढोर गर्भिणी होती थी तो यअ़क़ूब
छड़ियों को नालियों में उन के आगे रखता था कि वे उन
४२ छड़ियों के आगे गर्भिणी होवें। पर जब दुर्बल ढोर आते थे
वुह उन्हें वहां न रखता था सो दुर्बल दुर्बल लाबन की और
मोटी मोटा यअ़क़ूब की हुईं और उस पुरुष की अत्यंत बढ़ती
हुई और वुह बहुत पशु और दास और दासियों और ऊंटों और
गदहों का स्वामी हुआ॥

एकतीसवां पर्ब्ब।

१ और उस ने लाबन के बेटों को ये बातें कहते सुना कि
यअ़क़ूब ने हमारे पिता का सब कुछ ले लिया और हमारे पिता
२ की संपत्ति से यह सब विभव प्राप्त किया। और यअ़क़ूब ने
लाबन का रूप देखा और क्या देखता है कि कल परसों की
नाईं वुह मेरी ओर नहीं है॥

३ और परमेश्वर ने यअ़क़ूब से कहा कि तू अपने पितरों और
अपने कुटुम्बों के देश को फिर जा और मैं तेरे संग होऊंगा।
४ तब यअ़क़ूब ने राख़िल और लियाह को अपनी झुंड पास खेत
५ में बुला भेजा। और उन्हें कहा कि मैं देखता हूं कि तुम्हारे
पिता का रूप आगे की नाईं मेरी ओर नहीं है परन्तु मेरे पिता
६ का ईश्वर मुझ पर प्रगट हुआ। और तुम जानती हो कि मैं
७ ने अपने सारे बल से तुम्हारे पिता की सेवा किई है। और
तुम्हारे पिता ने मुझे छला है और दस बार मेरी बनी बदल

८ दिई पर ईश्वर ने मुझे दुःख देने को उसे न छोड़ा। यदि वुह
यों बोला कि फुटफुटियां तेरी बनी होंगी तो सारे ढोर फुटफुटियां
जने और यदि उस ने यों कहा कि पट्टेवाली तेरी बनी में
९ होंगी तो ढोर पट्टेवाले जने। यों ईश्वर ने तुम्हारे पिता के ढोर
१० लिये और मुझे दिये। और यों हुआ कि जब ढोर गर्भिणी होते
थे तो मैं ने स्वप्न में अपनी आंख उठाके देखा और क्या देखता
हूं कि मेढ़े जो ढोर पर चढ़ते हैं सो पट्टेवाले और फुटफुटिये
११ और चितकबरे थे। और ईश्वर के दूत ने स्वप्न में मुझे कहा
१२ कि हे यअक़ूब और मैं बोला कि यहीं हूं। तब उस ने कहा
कि अपनी आखें उठाइये और देख कि सारे मेंढे जो भेड़ों पर
चढ़ते हैं पट्टेवाले और फुटफुटिये और चितकबरे हैं क्योंकि जो
१३ कुछ लाबन ने तुझ से किया मैं ने सब देखा है। बैतएल का
सर्बशक्तिमान जहां तू ने खंभे पर तेल डाला जहां तू ने मेरे
लिये मनौती मानी मैं हूं अब उठ इस देश से निकल जा और
अपने कुटुम्ब के देश को फिर जा॥

१४ तब राख़िल और लियाह ने उत्तर देके उसे कहा क्या अब
लों हमारे पिता के घर में हमारा कुछ भाग अथवा अधिकार
१५ है। क्या हम उस के लेखे पराये नहीं गिने जाते हैं क्योंकि
उस ने तो हमें बेच डाला है और हमारी रोकड़ भी खा बैठा
१६ है। परन्तु ईश्वर ने जो धन कि हमारे पिता से लिया और
हमें दिया वही हमारा और हमारे बालकों का है सो अब जो
कुछ कि ईश्वर ने आप से कहा है सो करिये॥

१७ तब यअक़ूब ने उठके अपने बेटों और अपनी पत्नियों को
१८ ऊंटों पर बैठाया। और अपने सब चैापाए और अपनी सब
सामग्री जो उस ने पाई थी अपनी कमाई के चैापाए जो उस ने
फ़द्दानअराम में पाए थे ले निकला जिसतें कनआन देश में
१९ अपने पिता इज़हाक़ पास जावे। और लाबन अपने भेड़ों का

रोम कतरने को गया और राख़िल ने अपने पिता की मूर्त्तें चुरा
२० लिईं। और यअ़कूब अरामी लाबन से अचानक चुराके भागा
२१ यहां लों कि वुह उस्से न कहिके भागा। सो वुह अपना सब
कुछ लेके भागा और उठके नदी पार उतर गया और अपना
मुंह जिलिअ़द पहाड़ की ओर किया॥

२२ और यअ़कूब के भागने का संदेश लाबन को तीसरे दिन
२३ पहुंचा। सो वुह अपने भाइयों को अपने संग लेके सात दिन
के मार्ग लों उस के पीछे गया और जिलिअ़द पहाड़ पर उसे
२४ जा लिया। परन्तु ईश्वर अरामी लाबन कने स्वप्न में रात को
आया और उसे कहा कि चौकस रह तू यअ़कूब को भला बुरा
२५ मत कहना। तब लाबन ने यअ़कूब को जा लिया और
यअ़कूब ने अपना डेरा पहाड़ पर किया था और लाबन ने
अपने भाइयों के साथ जिलिअ़द पहाड़ पर डेरा खड़ा किया॥

२६ तब लाबन ने यअ़कूब से कहा कि तू ने क्या किया जो तू
एका एक मुझ से चुरा निकला और मेरी पुत्रियों को खड्ग में की
२७ बंधुआई की नाईं ले चला। तू किस लिये चुपके से भागा और
चोरी से मुझ से निकल आया और मुझे नहीं कहा जिसतें मैं
तुझे आनंद मंगल ढोल और रागों और बीणा के साथ बिदा
२८ करता। और तू ने मुझे अपने बेटों और अपनी बेटियों को
२९ चूमने न दिया अब तू ने मूर्खता से यह किया है। तुम्हें दुःख
देने को मेरे बश में है परन्तु तुम्हारे पिता के ईश्वर ने कल
रात मुझे यों कहा कि चौकस रह तू यअ़कूब को भला बुरा
३० मत कहना। और अब तो तुझे निश्चय जाना है क्योंकि तू
अपने पिता के घर का निपट अभिलाषी है तू ने किस लिये
मेरे देवों को चुराया है॥

३१ और यअ़कूब ने उत्तर दिया और लाबन से कहा क्योंकि मैं
डरता था क्योंकि मैं ने कहा क्या जाने आप अपनी पुत्रियां

३२ वरवस मुझ से छीन लेंगे। जिस किसी के पास आप अपने
देवों को पावें उसे जीता मत छोड़िये हमारे भाइयों के आगे
देख लीजिये कि आप का मेरे पास क्या क्या है और अपना
लीजिये क्योंकि यअ़क़ूब न जानता था कि राख़िल ने उन्हें
चुराया था॥
३३ और लाबन यअ़क़ूब के तंबू में गया और लियाह के तंबू
में और दोनों दासियों के तंबू में परन्तु न पाया तब वुह
३४ लियाह के तंबू से बाहर जाके राख़िल के तंबू में गया। और
राख़िल मूर्त्तिन को लेकर ऊंट की पलान में रखके उन पर बैठी
थी और लाबन ने सारे तंबू को देख लिया और न पाया।
३५ तब उस ने अपने पिता से कहा कि मेरे प्रभु इस्से अप्रसन्न न
होवें कि मैं आप के आगे उठ नहीं सक्ती क्योंकि मुझ पर
स्त्रियों की रीति है सो उस ने ढूंढ़ा पर मूर्त्तिन को न पाया॥
३६ और यअ़क़ूब क्रुद्ध हुआ और लाबन से बिवाद करके उत्तर
दिया और लाबन को कहा कि मेरा क्या पाप और क्या अपराध
३७ है कि आप इस रीति से मेरे पीछे झपटे। आप ने जो मेरी
सारी सामग्री ढूंढ़ी आप ने अपने घर की सामग्री से क्या पाई
मेरे भाइयों और अपने भाइयों के आगे रखिये जिसतें वे हम
३८ दोनों के मध्य में बिचार करें। यह बीस बरस जो मैं आप
के साथ था आप की भेड़ों और बकरियों का गर्भ न गिरा और
३९ मैं ने आप की झुंड के मेंढे नहीं खाये। वुह जो फाड़ा गया
मैं आप पास न लाया उस की घटी मैं ने उठाई तू ने मेरे
हाथ से उसे मांगा जो दिन को अथवा रात को चोरी गया।
४० मेरी यह दशा थी कि दिन को घाम से भस्म हुआ और रात
४१ को पाला से और मेरी आंखों से मेरी नींद जाती रही। यों
मुझे आप के घर में बीस बरस बीते मैं ने चौदह बरस आप
की दोनों बेटियों के लिये और छः बरस आप के पशु के लिये

आप की सेवा किई और आप ने दस बार मेरी बनी बदल
४२ डाली। यदि मेरे पिता का ईश्वर अबिरहाम का ईश्वर और
इज़हाक का भय मेरे साथ न होता तो आप निश्चय मुझे अब
छूंछे हाथ निकाल देते ईश्वर ने मेरी बिपत्ति और मेरे हाथों के
परिश्रम को देखा है और कल रात आप को डांटा॥
४३ तब लाबन ने उत्तर दिया और यअ़कूब से कहा कि ये
बेटियां मेरी बेटियां और ये बालक मेरे बालक और ये चौपाए
मेरे चौपाए और सब जो तू देखता है मेरे हैं और आज के
दिन अपनी इन बेटियों अथवा इन के लड़कों से जो वे जनी
४४ हैं क्या कर सक्ता हूं। सो अब आ मैं और तू आपुस में एक
बाचा बांधें और वही मेरे और तेरे मध्य में साक्षी रहे॥
४५ तब यअ़कूब ने एक पत्थर लेके खंभा सा खड़ा किया।
४६ और यअ़कूब ने अपने भाइयों से कहा कि पत्थर एकट्ठा करो
तब उन्हों ने पत्थर एकट्ठा करके एक ढेर किया और उन्हों
४७ ने उसी ढेर पर खाया। और लाबन ने उस का नाम
यग्रसहदुता रक्खा परन्तु यअ़कूब ने उस का नाम जिलिअ़द
रक्खा॥
४८ और लाबन बोला कि यह ढेर आज के दिन मुझ में
और तुझ में साक्षी है इस लिये उस का नाम जिलिअ़द
४९ रक्खा। और मिसपा क्योंकि उस ने कहा कि जब हम आपुस
से अलग होवें तो परमेश्वर मेरे तेरे मध्य में चौकसी करे।
५० जो तू मेरी बेटियों को दुःख देवे अथवा जो तू मेरी बेटियों
से अधिक स्त्रियां करे तो हमारे साथ कोई दूसरा नहीं देख
५१ ईश्वर मेरे और तेरे मध्य में साक्षी है। और लाबन ने यअ़कूब
से कहा देख यह ढेर और देख यह खंभा जो मैं ने अपने
५२ और आप के मध्य में रक्खा है। यही ढेर साक्षी और यह
खंभा साक्षी है कि मैं इस ढेर से पार तुझे और तू इस ढेर

५३ और इस खंभे से पार मुझे दुःख देने को न आवेगा। अबिरहाम
का ईश्वर और नहूर का ईश्वर उन के पिता का ईश्वर हमारे
मध्य में विचार करे और यऋकूब ने अपने पिता इज़हाक के
भय की किरिया खाई ॥
५४ तब यऋकूब ने उस पहाड़ पर बलि चढ़ाया और अपने भाइयों
को रोटी खाने को बुलाया और उन्हों ने रोटी खाई और सारी
५५ रात पहाड़ पर रहे। और भोर को तड़के लाबन उठा और
अपने बेटों और अपनी बेटियों को चूमा और उन्हें आशीष दिया
और लाबन बिदा हुआ और अपने स्थान को फिरा ॥

बत्तीसवां पर्व्व ।

१ और यऋकूब अपने मार्ग चला गया और ईश्वर के दूत उसे
२ आ मिले। और यऋकूब ने उन्हें देखके कहा कि यह ईश्वर
की सेना है और उस ने उस स्थान का नाम दो सेना रक्खा ॥
३ और यऋकूब ने अपने आगे अदूम के देश और शअ़ीर की
४ भूमि में अपने भाई एसौ पास दूतों को भेजा। और उस ने
यह कहिके उन्हें आज्ञा किई कि मेरे प्रभु एसौ को यों कहियो
कि आप का दास यऋकूब यों कहता है कि मैं लाबन कने
५ टिका और अब लों वहीं रहा। और मेरे बैल और गदहे
झुंड और दास और दासियां हैं और मैं ने अपने प्रभु को कहला
भेजा है जिसतें मैं आप की दृष्टि में अनुग्रह पाऊं ॥
६ और दूतों ने यऋकूब पास फिर आके कहा कि हम आप के
भाई एसौ पास गये और वुह और उस के साथ चार सौ मनुष्य
आप की भेंट को भी आते हैं ॥
७ तब यऋकूब निपट डर गया और व्याकुल हुआ और उस ने अपने
८ साथ के लोगों और झुंडों और ढोरों और ऊंटों के दो जथा किये। और
कहा कि यदि एसौ एक जथा पर आवे और उसे मारे तो दूसरा जथा

९ जो बच रहा है भागेगा। फिर यअ़क़ूब ने कहा कि हे मेरे पिता
अबिरहाम के ईश्वर और मेरे पिता इज़हाक के ईश्वर वुह
परमेश्वर जिस ने मुझे कहा कि अपने देश और अपने कुनबे में
१० फिर जा और मैं तेरा भला करूंगा। मैं तो उन सब दया और
उस सब सत्यता से जो तू ने अपने दास के संग किई तुच्छ हूं
क्योंकि मैं अपने डंडे से इस यरदन पार गया और अब मैं दो
११ जथा बना हूं। मैं तेरी बिनती करता हूं मुझे मेरे भाई के
हाथ अर्थात् एसौ के हाथ से बचा ले क्योंकि मैं उस्से डरता
हूं न होवे कि वुह आके मुझे और लड़कों को माता समेत
१२ मार लेवे। और तू ने कहा कि मैं निश्चय तुझ से भलाई
करूंगा और तेरे बंश को समुद्र के बालू की नाईं बनाऊंगा जो
बहुताई के मारे गिना नहीं जायगा॥
१३ और वुह उस रात वहीं टिका और जो उस के हाथ लगा
१४ अपने भाई एसौ के भेंट के लिये लिया। दो सौ बकरियां और
१५ बीस बकरे दो सौ भेड़ें और बीस मेंढे। तीस दूधवाली
ऊंटनियां उन के बच्चे समेत चालीस गाय और दस बैल बीस
१६ गदहियां और दस बच्चे। और उस ने उन्हें अपने सेवकों के
हाथ हर जथा को अलग अलग सौंपा और अपने सेवकों को
कहा कि मेरे आगे पार उतरो और जथा को जथा से अलग
१७ रक्खो। और पहिले को उस ने आज्ञा दिई कि जब मेरा भाई
एसौ तुझे मिले और पूछे कि तू किस का है और किधर जाता
१८ और ये जो तेरे आगे हैं किस के हैं। तो कहियो कि आप के
सेवक यअ़क़ूब के हैं यह मेरे प्रभु एसौ के लिये भेंट है और
१९ देखिये वुह आप भी हमारे पीछे है। और वैसा उस ने दूसरे
और तीसरे को और उन सब को जो जथा के पीछे जाते थे
यह कहिके आज्ञा किई कि जब तुम एसौ को पाओ तो इस
२० रीति से कहियो। और अधिक यह कहियो कि देखिये आप

का सेवक यअ़क़ूब हमारे पीछे आता है क्योंकि उस ने कहा
है कि मैं उस भेंट से जो मुझ से आगे जाती है उस्से मिलाप
कर लेऊंगा तब उस का मुंह देखूंगा क्या जाने वुह मुझे ग्रहण
करे ॥
२१ सो वुह भेंट उस के आगे आगे पार गई और वुह आप उस
२२ रात जथा में टिका। और उसी रात उठा और अपनी दो पत्नियों
और अपनी दो सहेलियों और अपने ग्यारह बेटों को लेके याह
२३ यवूक से पार उतरा। और उस ने उन्हें लेके नाली पार करवाया
और अपना सब कुछ पार भेजा ॥
२४ और यअ़क़ूब अकेला रह गया और वहां पौ फटे लों एक जन
२५ उस्से मल्लयुद्ध करता रहा। और जब उस ने देखा कि वुह
उस पर प्रबल न हुआ तो उस की जांघ को भीतर से छूआ
तब यअ़क़ूब के जांघ की नस उस के संग मल्लयुद्ध करने में
२६ चढ़ गई। तब वुह बोला कि मुझे जाने दे क्योंकि पौ फटती
है और वुह बोला कि मैं तुझे जाने न देऊंगा जब लों तू
२७ मुझे आशीष न देवे। तब उस ने उसे कहा कि तेरा नाम
२८ क्या और वुह बोला कि यअ़क़ूब। तब उस ने कहा कि तेरा
नाम आगे को यअ़क़ूब न होगा परन्तु इसराएल क्योंकि तू ने
ईश्वर के और मनुष्यों के आगे राजा की नाईं मल्लयुद्ध किया
२९ और जीता। तब यअ़क़ूब ने यह कहिके उस्से पूछा कि अपना
नाम बताइये और वुह बोला कि तू मेरा नाम क्यों पूछता है
३० और उस ने उसे वहां आशीष दिया। और यअ़क़ूब ने उस
स्थान का नाम फ़नुएल रक्खा क्योंकि मैं ने ईश्वर को प्रत्यक्ष
देखा और मेरा प्राण बचा है ॥
३१ और जब वुह फ़नुएल से पार चला तो सूर्य्य की ज्योति
३२ उस पर पड़ी और वुह अपनी जांघ से लंगड़ाता था। इस लिये
इसराएल के वंश उस जांघ की नस को जो चढ़ गई थी

आज लों नहीं खाते क्योंकि उस ने यअ़कूब के जांघ की नस
को जो चढ़ गई थी छूआ था॥

तैंतीसवां पर्ब्ब।

१ और यअ़कूब ने अपनी आंखें ऊपर उठाईं और क्या देखता है
कि एसौ और उस के साथ चार सौ मनुष्य आते हैं तब उस ने
लियाह को और राख़िल को और दो सहेलियों को लड़के बाले
२ बांट दिये। और उस ने सहेलियों और उन के लड़कों को
सब से आगे रक्खा और लियाह और उस के लड़कों को पीछे
३ और राख़िल और यूसुफ़ को सब के पीछे। और वुह आप उन
के आगे पार उतरा और अपने भाई पास पहुंचते पहुंचते सात
४ बार भूमि लों दंडवत किई। और एसौ उसे मिलने को दौड़ा
और उसे गले लगाया और उस के गले से लिपटा और उसे
५ चूमा और वे रोये। फिर उस ने अपनी आंखें उठाईं और स्त्रियों को
और लड़कों को देखा और कहा कि ये तेरे साथ कौन हैं और
वुह बोला वुह लड़के जो ईश्वर ने अपनी कृपा से आप के
६ सेवक को दिये। तब सहेलियां और उन के लड़के पास आये
७ और दंडवत किई। और लियाह ने भी अपने लड़के समेत
पास आके दंडवत किई और अंत को यूसुफ़ और राख़िल पास
८ आये और दंडवत किई। और उस ने कहा कि इस जथा से
जो मुझ को मिली तुझे क्या और वुह बोला कि अपने प्रभु की
९ दृष्टि में अनुग्रह पाने के लिये। तब एसौ बोला कि हे मेरे
१० भाई मुझ पास बहुत हैं तेरे तेरे ही लिये होवें। तब यअ़कूब
बोला कि मैं आप की बिनती करता हूं यदि मैं ने आप की
दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मेरी भेंट मेरे हाथ से ग्रहण
कीजिये क्योंकि मैं ने जो आप का मुंह देखा है जानों मैं ने
११ ईश्वर का मुंह देखा और आप मुझ से प्रसन्न हुए। मेरे आशीष

को जो आप के आगे लाया गया है ग्रहण कीजिये क्योंकि ईश्वर
ने मुझ पर अनुग्रह किया है और इस लिये कि मुझ पास सब
कुछ है सो वुह यहां लों गिड़गिड़ाया कि उस ने ले लिया ।
१२ और कहा कि आओ कूंच करें और चलें और मैं तेरे आगे आगे
१३ चलूंगा । तब उस ने उसे कहा कि मेरे प्रभु जानते हैं कि
बालक कोमल हैं और झुंड और ढोर दूध पिलानेवालियां मेरे
साथ हैं और जो वे दिन भर हांके जायें तो सारे झुंड मर
१४ जायेंगे । मेरे प्रभु अपने सेवक से पहिले पार जाइये और मैं
धीरे धीरे जैसा कि ढोर आगे चलेंगे और बालक सह सकेंगे
चलूंगा यहां लों कि शअीर को अपने प्रभु पास आ पहुंचूं ।
१५ तब एसौ बोला अपने संग के लोगों में से कई एक आप के साथ
छोड़ जाऊं और वुह बोला कि यह किस लिये मैं अपने प्रभु की
दृष्टि में अनुग्रह पाऊं ॥
१६ तब एसौ उसी दिन अपने मार्ग पर शअीर को लौटा ।
१७ और यअ़कूब चलते चलते सुक्कात को आया और अपने लिये
एक घर बनाया और अपने ढोर के लिये पतछप्पर बनाये इसी
लिये उस स्थान का नाम सुक्कात हुआ ॥
१८ और यअ़कूब फद्दानअराम से बाहर होके कनआ़न देश के
सालिम के नगर सिकम में आया और नगर के बाहर अपना
१९ तंबू खड़ा किया । और जिस पर उस का तंबू खड़ा था उस
ने उस खेत को हमूर के पिता सिकम के सन्तान से सौ टुकड़े
२० रोकड़ पर मोल लिया । और उस ने वहां एक बेदी बनाई
और उस का नाम सर्वशक्तिमान इसराएल का ईश्वर रक्खा ।

चौंतीसवां पर्व्व ।

१ और लियाह की बेटी दीनः जिसे वुह यअ़कूब के लिये
जनी थी उस देश की लड़कियों के देखने को बाहर गई ।

२ और जब उस देश के अध्यक्ष हवी हमूर के बेटे सिकम ने
उसे देखा तो उसे ले गया और उस्से मिल बैठा और उसे
३ अशुद्ध किया। और उस का मन यअ़कूब की बेटी दीनः से
अटका और उस ने उस लड़की को प्यार किया और उस लड़की
४ के मन को मनाया। और सिकम ने अपने पिता हमूर से कहा
५ कि इस लड़की को मुझे पत्नी में दिलाइये। और यअ़कूब ने
सुना कि उस ने मेरी बेटी दीनः को अशुद्ध किया और उस के
बेटे उस के ढोर के साथ खेत में थे और उन के आने लों
यअ़कूब चुप रहा ॥

६ और सिकम का पिता हमूर बातचीत करने को यअ़कूब पास
७ आया। और सुनते ही यअ़कूब के बेटे खेत से आ पहुंचे और
वे मनुष्य उदास होके बड़े कोपित हुए क्योंकि उस ने इसराएल
में अपमान किया कि यअ़कूब की बेटी के साथ अनुचित रीति
से मिल बैठा ॥

८ और हमूर ने उन के साथ यों बातचीत किई कि मेरे बेटे
सिकम का मन तुम्हारी बेटी से लालसित है सो उसे उस को
९ पत्नी में दीजिये। और हमारे साथ समधियाना कीजिये अपनी
१० बेटियां हमें दीजिये और हमारी बेटियां आप लीजिये। और
तुम हमारे साथ बास करोगे और यह भूमि तुम्हारे आगे होगी
उस में रहो और ब्यापार करो और इस में अधिकार प्राप्त करो।
११ और सिकम ने उस के पिता और उस के भाइयों से कहा कि
तुम्हारी दृष्टि में मैं अनुग्रह पाऊं और जो कुछ तुम मुझे
१२ कहोगे मैं देऊंगा। जितना दैजा और भेंट चाहो मैं तुम्हारे
कहने के समान देऊंगा पर लड़की को मुझे पत्नी में देओ ॥

१३ तब यअ़कूब के बेटों ने सिकम और उस के पिता हमूर
को छल से उत्तर दिया क्योंकि उस ने उन की बहिन दीनः
१४ को अशुद्ध किया था। और उन से कहा कि हम यह बात नहीं कर

सक्ते कि एक अख़तनः पुरुष को अपनी बहिन देवें क्योंकि इस्से
१५ हमारी निन्दा होगी। केवल इस में हम तुम्हारी बात मानेंगे यदि
तुम हमारे समान होओ कि तुम्हारे हर एक पुरुष का ख़तनः
१६ किया जाय। तब हम अपनी बेटियां तुम्हें देंगे और तुम्हारी
बेटियां लेंगे और हम तुम में निवास करेंगे और हम एक
१७ लोग हो जायेंगे। परन्तु जो ख़तनः कराने में तुम हमारी न
सुनोगे तो हम अपनी लड़की ले लेंगे और चले जायेंगे॥
१८ और उन की बातें हमूर और हमूर के पुत्र सिकम की दृष्टि
१९ में प्रसन्न हुईं। और उस तरुण ने उस बात में अबेर न किया
क्योंकि वुह यअ़क़ूब की बेटी से प्रसन्न था और वुह अपने पिता
२० के सारे घराने से अधिक कुलीन था। और हमूर और उस का
बेटा सिकम अपने नगर के फाटक पर आये और उन्हों ने
२१ अपने नगर के लोगों से यों बातचीत किई। कि इन मनुष्यों
से हम से मेल है सो उन्हें इस देश में रहने देओ और इस
में व्यापार करें क्योंकि देखो यह देश उन के लिये बड़ा है
सो आओ हम उन की बेटियों को पत्नियों के लिये लेवें और
२२ अपनी बेटियां उन्हें देवें। परन्तु हमारे साथ रहने को और
एक लोग हो जाने को केवल यह लोग इसी बात से मानेंगे
कि ख़तनः जैसा उन का किया गया है हम में हर पुरुष
२३ ख़तनः करावे। क्या उन के ढोर और उन की संपत्ति और उन
का हर एक चौपाया हमारा न होगा केवल हम उन की मान
२४ लेवें और वे हम में निवास करेंगे। और सभों ने जो नगर के
फाटक से आते जाते थे हमूर और उस के बेटे सिकम की
बात को माना और उस के नगर के फाटक से सब जो बाहर
जाते थे उन में से हर पुरुष ने ख़तनः करवाया॥
२५ और तीसरे दिन जब लों वे घाव में पड़े थे यों हुआ कि
यअ़क़ूब के बेटों में से दीनः के दो भाई समऊ़न और लावी

हर एक ने अपना अपना खड्ग लिया और साहस से नगर
२६ पर आ पड़े और सारे पुरुषों को मार डाला। और उन्हों ने
हमूर और उस के बेटे सिकम को खड्ग की धार से मार
डाला और सिकम के घर से दीनः को लेके निकल गये।
२७ यअ़कूब के बेटे जूझे हुओं पर आये और नगर को लूट लिया
२८ क्योंकि उन्हों ने उन की बहिन को अशुद्ध किया था। उन्हों
ने उन की भेड़ बकरी और उन की गाय बैल और उन के गदहे
२६ और जो कुछ कि नगर में और खेत में था लूट लिया। और
उन के सब धन और उन के सारे बालक और उन की पत्नियां
३० और घर में का सब कुछ वे बन्धुआई में लाये और लूट लिया। और
यअ़कूब ने समऊन और लावी से कहा कि तुम ने मुझे दुःख
दिया कि इस भूमि के बासियों में कनआ़नियों और फ़रिज़्ज़ीयों
के मध्य में मुझे घिनौना कर दिया और मैं गिनती में थोड़ा
हूं और वे मेरे सन्मुख एकट्ठे होंगे और मुझे मार डालेंगे और
३१ मैं और मेरा घराना नष्ट होवेगा। तब वे बोले क्या उचित
था कि वुह हमारी बहिन के साथ बेश्या की नाईं ब्यवहार
करे॥

पैंतीसवां पर्ब्ब।

१ और ईश्वर ने यअ़कूब से कहा कि उठ बैतएल को जा
और वहीं रह और उस सर्बशक्तिमान के लिये जिस ने तुझे
दर्शन दिया था जब तू अपने भाई एसौ के आगे से भागा था
२ वहां एक बेदी बना। तब यअ़कूब ने अपने घराने से और अपने
सब संगियों से कहा कि उपरी देवों को जो तुम में हैं दूर करो
३ और अपने तईं शुद्ध करो और अपने कपड़े बदलो। और आओ
हम उठें और बैतएल को जायें और मैं वहां उस सर्बशक्तिमान
के लिये बेदी बनाऊंगा जिस ने मेरी सकेती के दिन मुझे

उत्तर दिया और जिस मार्ग में मैं चला वुह मेरे साथ साथ
४ था। और उन्हों ने सारे ऊपरी देवों को जो उन के हाथों में
थे और कुंडल जो उन के कानों में थे यअ़क़ूब को दिये और
यअ़क़ूब ने उन्हें बलूत पेड़ तले सिकम के लग गाड़ दिया।
५ और उन्हों ने कूंच किया और उन के आस पास के नगरों पर
ईश्वर की डर पड़ी और उन्हों ने यअ़क़ूब के बेटों का पीछा
न किया॥

६ सो यअ़क़ूब और जितने लोग उस के साथ थे कनआ़न की
७ भूमि में लोज़ को जो बैतएल है आये। और उस ने वहां
एक बेदी बनाई और इस लिये कि जब वुह अपने भाई के
पास से भागा तो वहां उसे ईश्वर दिखाई दिया उस ने उस का
नाम बैतएल का सर्बशक्तिमान रक्खा॥

८ और रिबक: की दाई दबूर: मर गई और बैतएल के लग
बलूत पेड़ तले गाड़ी गाई और उस का नाम रोने का बलूत
रक्खा॥

९ और जब कि यअ़क़ूब फद्दानअराम से निकला ईश्वर ने उसे
१० फेर दर्शन दिया और उसे आशीष दिया। और ईश्वर ने उसे
कहा कि तेरा नाम यअ़क़ूब है तेरा नाम आगे को यअ़क़ूब न
होगा परन्तु तेरा नाम इसराएल होगा सो उस ने उस का
११ नाम इसराएल रक्खा। फिर ईश्वर ने उसे कहा कि मैं
सर्वशक्तिमान सर्वसामर्थी हूं तू फलमान हो और बढ़ तुझ से
एक जातिगण और जातिगण की मंडली होगी और तेरी कटि
१२ से राजा निकलेंगे। और यह भूमि जो मैं ने अबिरहाम और
इज़हाक को दिई है तुझे और तेरे पीछे तेरे बंश को देऊंगा।
१३ और ईश्वर उस स्थान से जहां उस ने उस्से बातें किई थीं उस
१४ पास से उठ गया। और यअ़क़ूब ने उस स्थान में जहां उस
ने उस्से बातें किईं पत्थर का एक खंभा खड़ा किया और उस

१५ पर तपावन तपाया और उस पर तेल डाला। और यअ़क़ूब ने
उस स्थान का नाम जहां ईश्वर उस्से बोला था बैतएल रक्खा॥
१६ और उन्हों ने बैतएल से कूंच किया और वहां से इफ़रात:
बहुत दूर न था और राख़िल को पीर लगी और उस पर बड़ी
१७ पीड़ा हुई। और उस पीड़ा की दशा में जनाई दाई ने उसे
१८ कहा कि मत डर अबकी भी तेरे बेटा होगा। और यों हुआ
कि जब उस का प्राण जाने पर था क्योंकि वुह मर ही गई तो
उस ने उस का नाम बिनऔनी रक्खा पर उस के पिता ने उस
१९ का नाम बिनयमीन रक्खा। सो राख़िल मर गई और इफ़रात:
२० के मार्ग में जो बैतलहम है गाड़ी गई। और यअ़क़ूब ने उस
के समाधि पर एक खंभा खड़ा किया वही खंभा राख़िल के
समाधि का खंभा आज लों है॥
२१ फिर इसराएल ने कूंच किया और अपना तंबू अद्र के गुम्मट
२२ के उस पार खड़ा किया। और जब इसराएल उस देश में जा
रहा तो यों हुआ कि रूबिन गया और अपने पिता की सुरैतिन
के संग अकर्म्म किया और इसराएल ने सुना अब यअ़क़ूब के
बारह बेटे थे॥
२३ लियाह के बेटे रूबिन यअ़क़ूब का पहिलौंठा और समऊन
२४ और लावी और यहूदाह और इशकार और ज़बूलून। और
२५ राख़िल के बेटे यूसुफ़ और बिनयमीन। और राख़िल की सहेली
२६ बिलह: के बेटे दान और नफ़ताली। और लियाह की सहेली
ज़िलफ़: के बेटे जद और यसर यअ़क़ूब के बेटे जो फद्दानअराम
में उस के लिये उत्पन्न हुए ये हैं॥
२७ और यअ़क़ूब अरब: के नगर में जो हबरून है ममरी के
बीच अपने पिता इज़हाक़ पास जहां अबिरहाम और इज़हाक़ ने
२८ निवास किया था आया। और इज़हाक़ एक सौ अस्सी बरस
२९ का हुआ। और इज़हाक़ ने प्राण त्यागा और बूढ़ा और दिनी

होके अपने लोगों में जा मिला और उस के बेटे एसौ और
यअकूब ने उसे गाड़ा॥

छतीसवां पर्व्व।

१।२ और एसौ की जो अदूम है वंशावली यह है। एसौ ने
कनआन की लड़कियों में से पत्नियां किईं ऐलून हत्ती की
बेटी आद: को और अहलिबामः को जो अनाह की बेटी
३ हवी सबऊन की बेटी थी। और इसमअएल की बेटी बशामत
४ को जो नबायोत की बहिनों में से थी। और एसौ के लिये
आदः इलीफ़ज़ को जनी और बशामत से रऊएल उत्पन्न हुआ।
५ और अहलिबामः से यऊश और यअलाम और क़रह उत्पन्न
हुए ये एसौ के बेटे हैं जो उस के लिये कनआन की भूमि में
उत्पन्न हुए॥

६ और एसौ अपनी पत्नियों और अपने बेटों और अपनी बेटियों
और अपने घर के हर एक प्राणी और अपने ढोर को और अपने
सारे पशु को और अपनी सारी संपत्ति को जो उस ने कनआन देश में
प्राप्त किई थी लेके अपने भाई यअकूब पास से परदेश को निकल
७ गया। क्योंकि उन का धन ऐसा बढ़ गया था कि वे एकट्ठे न रह
सक्ते थे और उन के पशु के कारण से उन के टिकने की भूमि उन
८ का भार न उठा सक्ती थी। और एसौ जो अदूम है शईर
पहाड़ पर जा रहा॥

९ सो एसौ की वंशावली जो शईर पहाड़ के मनुष्यों का पिता
१० है यह है। एसौ के बेटों के नाम यह हैं एसौ की पत्नी आदः
का बेटा इलीफ़ज़ एसौ की पत्नी बशामत का बेटा रऊएल।
११ और इलीफ़ज़ के बेटे तैमन ओमर सफ़ू और जअताम और
१२ क़नज़ थे। और एसौ के बेटे इलीफ़ज़ की सहेली तिमनअ
थी सो वुह इलीफ़ज़ के लिये अमालीक़ को जनी एसौ की

१३ पत्नी आद: के बेटे ये थे। और रऊएल के बेटे ये हैं नहत
और ज़रह सम्माह और मिज़्ज़: ये एसौ की पत्नी बशामत
१४ के बेटे थे। और एसौ की पत्नी सबऊन की बेटी अनाह की बेटी
अहलिबाम: के बेटे ये थे और वुह एसौ के लिये यऊस और
यअलाम और क़ूरह जनी॥

१५ एसौ के बेटों में जो अध्यक्ष हुए ये हैं एसौ के पहिलौंठे
इलीफ़ज़ के बेटे अध्यक्ष तैमन अध्यक्ष ओमर अध्यक्ष सफ़ू
१६ अध्यक्ष क़नज़। अध्यक्ष क़ोरह अध्यक्ष जअताम अध्यक्ष
१७ अमालीक़ अदूम के देश में ये आद: के बेटे थे। और एसौ
के बेटे रऊएल के बेटे ये हैं अध्यक्ष नहत अध्यक्ष ज़रह
अध्यक्ष सम्माह अध्यक्ष मिज़्ज़: ये अदूम देश में हुए एसौ की
१८ पत्नी बशामत के बेटे थे। और एसौ की पत्नी अहलिबाम: के
ये बेटे हैं अध्यक्ष यऊस अध्यक्ष यअलाम अध्यक्ष क़ूरह ये वे
अध्यक्ष हैं जो एसौ की पत्नी अनाह की बेटी अहलिबाम: से
१९ थे। सो एसौ के जो अदूम है ये बेटे हैं ये उन के अध्यक्ष
हैं॥

२० शईर के बेटे हूरी जो इस भूमि के बासी थे ये हैं लौतान
२१ और सोबल और सबऊन और अनाह। और दैसून और असर
और दैसान ये हूरियों के अध्यक्ष हैं और अदूम की भूमि में
२२ शईर के बेटे हैं। और लौतान के सन्तान हूरी और हैमान
२३ और लौतान की बहिन तिमनअ थी। और सोबल के सन्तान
ये हैं अलवान और मनहत और ऐबाल सफ़ और ओनाम।
२४ और सबऊन के बेटे ये हैं ऐयाह और अनाह यह वुह अनाह
है जिस ने बन में जब वुह अपने पिता सबऊन के गदहों को
२५ चराता था तातकुंड पाये। और अनाह के सन्तान ये हैं
२६ दैसून और अहलिबाम: अनाह की बेटी। और दैसून के
सन्तान हमदान और इशबान और यथरान और करान।

२७ असर के सन्तान ये हैं बिलहान और ज़अवान और अक़ान ।
२८ । २६ दैसून के सन्तान ये हैं ऊज़ और अरान । जो अध्यक्ष
हूरियों में के थे सो ये हैं अध्यक्ष लोतान अध्यक्ष सोबल अध्यक्ष
३० सबऊन अध्यक्ष अनाह । अध्यक्ष दैसून अध्यक्ष असर अध्यक्ष
दैसान ये उन हूरियों के अध्यक्ष हैं जो शऔर की भूमि
में थे ॥

३१ और जो राजा अदूम देश पर राज्य करता था उस्से पहिले
३२ कि इसराएल के बंश का कोई राजा हुआ सो ये हैं। और बऊर
का बेटा बालिग अदूम में राज्य करता था और उस के नगर
३३ का नाम दिनहबः था । और बालिग मर गया और ज़रह के
बेटे यूबाब ने जो बूसरः का था उस की संती राज्य किया ।
३४ और यूबाब मर गया और हूशाम ने जो तमन्नी की भूमि का
३५ था उस की संती राज्य किया । और हूशाम मर गया और
बिदद का बेटा हदद जिस ने मोअब के चौगान में मिदयान
को मारा उस की संती राज्य किया और उस के नगर का
३६ नाम ग़वीत था । और हदद मर गया और मसरीकः के समलः
३७ ने उस की संती राज्य किया । और समलः मर गया और नदी
के लग के रहूबात के साऊल ने उस की संती राज्य किया ।
३८ और साऊल मर गया और अक़बूर के बेटे बअलहनान ने उस
३९ की संती राज्य किया । और अक़बूर का बेटा बअलहनान मर
गया और हदर ने उस की संती राज्य किया और उस के नगर
का नाम फ़ागू था और उस की पत्नी का नाम मुहेतबिएल था
जो मतरिद की बेटी मेज़हब की बेटी थी ॥

४० सो उन के घरानों उन के स्थानों उन के नाम के
समान एसौ के अध्यक्षों के ये नाम हैं अध्यक्ष तिमनः अध्यक्ष
४१ अलियाह अध्यक्ष यतीत । अध्यक्ष अहलिबामः अध्यक्ष इलाह
४२ अध्यक्ष फ़ीनून । अध्यक्ष क़नज़ अध्यक्ष तीमान अध्यक्ष मिबसार ।

४३ अध्यक्ष मजदिएल अध्यक्ष ईराम ये अपने अपने स्थान में अपने
अपने निवास के समान अदूम के अध्यक्ष थे जो अदूमियों का
पिता एसौ है ॥

सैंतीसवां पर्व्व ।

१ और यअकूब ने कनआन देश में अपने पिता के टिकने की
२ भूमि में वास किया । यअकूब की बंशावली यह है ॥
यूसुफ़ सत्रह बरस का होके अपने भाइयों के साथ झुंड चराता
था और वुह तरुण अपने पिता की पत्नी बिलह: और ज़िलफ़: के
बेटों के संग था और यूसुफ़ ने उन के पिता के पास उन के
३ बुरे कामों का संदेश पहुंचाया । अब इसराएल यूसुफ़ को अपने
सारे पुत्रों से अधिक प्यार करता था क्योंकि वुह उस के बुढ़ापे
का बेटा था और उस ने उस के लिये बहुरंग का पहिरावा
४ बनाया । जब उस के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता हमारे
सब भाइयों से उसे अधिक प्यार करता है तो उन्हों ने उस्से
बैर किया और उस्से कुशल से न कह सक्ते थे ॥
५ और यूसुफ़ ने एक स्वप्न देखा और अपने भाइयों से कहा
६ और उन्हों ने उस्से अधिक बैर रक्खा । और उस ने उन्हें यों
७ कहा कि जो स्वप्न मैं ने देखा है सो सुनिये । क्योंकि देखिये
कि हम खेत में गट्ठियां बांधते थे और देखो मेरी गट्ठी उठी
और सीधी भी खड़ी हुई और देखो तुम्हारी गट्ठियां आस पास
८ खड़ी हुईं और मेरी गट्ठी को दंडवत किईं । तब उस के
भाइयों ने उसे कहा क्या तू सच मुच हम पर राज्य करेगा
अथवा तू हम पर प्रभुता करेगा और उन्हों ने उस के स्वप्नों
९ और उस की बातों के कारण उस्से अधिक बैर किया । फिर
उस ने दूसरा स्वप्न देखा और उसे अपने भाइयों से कहा कि
देखो मैं ने एक और स्वप्न देखा और देखो सूर्य्य और चन्द्रमा

१० और ग्यारह तारे मुझे दंडवत करते थे। और उस ने अपने
पिता और भाइयों से वर्णन किया पर उस के पिता ने उसे
डपटा और उस्से कहा कि यह क्या स्वप्न है जो तू ने
देखा है क्या मैं और तेरी माता और तेरे भाई सच मुच तेरे
११ आगे भूमि पर झुकके तुझे दंडवत करेंगे। और उस के भाइयों
ने उस्से डाह किया परन्तु उस के पिता ने उस बात को सोच
रक्खा ॥
१२ फिर उस के भाई अपने पिता की झुंड चराने सिकम को
१३ गये। तब इसराएल ने यूसुफ़ से कहा क्या तेरे भाई सिकम में
नहीं चराते आ मैं तुझे उन के पास भेजूं और उस ने उसे
१४ कहा कि मैं यहीं हूं। और उस ने उसे कहा कि जाइये अपने
भाइयों की कुशलता और झुंड की कुशलता देख और मुझ पास
संदेश ला सो उस ने उसे हबरून की तराई से भेजा और
१५ वुह सिकम की ओर गया। तब किसी जन ने उसे पाया और
देखो वुह खेत में भ्रमता था तब उस पुरुष ने उस्से पूछा
१६ कि तू क्या ढूंढ़ता है। तब वुह बोला मैं अपने भाइयों को
१७ ढूंढता हूं मुझे बताइये कि वे कहां चराते हैं। और वुह पुरुष
बोला वे यहां से चले गये क्योंकि मैं ने उन्हें यह कहते सुना
कि आओ दूतैन को जावें तब यूसुफ़ अपने भाइयों के पीछे
चला और उन्हें दूतैन में पाया ॥
१८ और ज्योंहीं उन्हों ने उसे दूर से देखा तो अपने पास
१९ आने से पहिले उस के मार डालने को जुगत किई। और वे
२० आपुस में बोले देखो यह स्वप्नदर्शी आता है। सो आओ अब
हम उसे मार डालें और किसी कुए में उसे डाल देवें और कहें कि
कोई वन पशु ने उसे भक्षन किया और देखेंगे कि उस के स्वप्नों
२१ का क्या होगा। तब रूबिन ने सुनके उसे उन के हाथ से
२२ छुड़ाने चाहा और बोला कि हम उसे मार न डालें। और रूबिन ने

उन्हें कहा कि लोहू मत बहाओ उसे बन के इस कुए में डाल
देओ और उस पर हाथ न डालो जिसतें वुह उसे उन के हाथ
से छुड़ाके उसे उस के पिता पास फिर पहुंचावे ॥
२३ और यों हुआ कि जब यूसुफ़ अपने भाइयों पास आया तो
उन्हों ने उस का वस्त्र यूसुफ़ से उतार लिया अर्थात् वुह
२४ बहुरंगी वस्त्र जो वुह पहिने था। और उन्हों ने उसे लेके
उसे उस कुए में डाल दिया और वुह कुआ अंधा था उस में
२५ कुछ पानी न था। तब वे रोटी खाने बैठे और अपनी आंखें
उठाईं और क्या देखते हैं कि इसमअ़एलियों का एक जथा जिलिअ़द
से सुगंध द्रव्य और बलसाम और मुर ऊंटों पर लादे हुए मिस्र
२६ को उतर जाते हैं। और यहूदाह ने अपने भाइयों से कहा
क्या लाभ कि हम अपने भाई को मार डालें और उस का लोहू
२७ छिपावें। आओ उसे इसमअ़एलियों के हाथ बेचें और उस पर
अपने हाथ न डालें क्योंकि वुह हमारा भाई और हमारा मांस
२८ है और उस के भाइयों ने मान लिया। और जब मिदयानी ब्यापारी
उधर से जाते थे तो उन्हों ने यूसुफ़ को उस कुए से बाहर
निकालके इसमअ़एलियों के हाथ बीस टुकड़े चांदी पर बेचा
२९ और वे यूसुफ़ को मिस्र में लाये। तब रूबिन कुए पर फिर
आया और देखा यूसुफ़ कुए में नहीं है तब उस ने अपने
३० कपड़े फाड़े। और अपने भाइयों के पास फिर आया और कहा
कि लड़का तो नहीं अब मैं कहां जाऊं ॥
३१ फिर उन्हों ने यूसुफ़ का पहिरावा लिया और एक बकरी
का मेम्ना मारा और उस पहिरावे को उस के लोहू में चुभोड़ा।
३२ और उन्हों ने उस बहुरंगी पहिरावे को भेजा और अपने पिता
के पास पहुंचाया और कहा कि हम ने इसे पाया आप
पहिचानिये कि यह आप के बेटे का पहिरावा है कि नहीं।
३३ और उस ने उसे पहिचाना और कहा कि यह तो मेरे बेटे का

पहिरावा है किसी बन पशु ने उसे खा लिया है यूसुफ़
३४ निःसन्देह फाड़ा गया। तब यअक़ूब ने अपने कपड़े फाड़े
और टाट बस्त्र अपनी कटि पर डाला और बहुत दिन लों
३५ अपने बेटे के लिये शोक किया। और उस के सारे बेटे उस
की सारी बेटियां उसे शान्ति देने उठीं पर उस ने शान्ति ग्रहण
न किई पर बोला कि मैं अपने बेटे के पास रोता हुआ समाधि
३६ में उतरूंगा सो उस का पिता उस के लिये रोया किया। और
मिदयानियों ने उसे मिस्र में फ़िरऊन के एक प्रधान सेनापति
फ़ूतिफ़र के हाथ बेचा ॥

अठतीसवां पर्ब्व ।

१ और उस समय में यों हुआ कि यहूदाह अपने भाइयों से
२ अलग होकर हीरः नाम एक अदूलामी के पास गया। और
यहूदाह ने वहां एक क़नआनी की लड़की को देखा जिस का
नाम सूआ था और उस ने उसे लिया और उस के साथ संगम
३ किया। और वुह गर्भिणी हुई और एक बेटा जनी और उस ने
४ उस का नाम एर रक्खा। और वुह फिर गर्भिणी हुई और
५ बेटा जनी और उस ने उस का नाम ओनान रक्खा। और वुह
फिर गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस का नाम सेलः
रक्खा और जब वुह उसे जनी तो वुह कज़ीब में था ॥

६ और यहूदाह अपने पहिलौंठे एर के लिये एक स्त्री ब्याह
७ लाया जिस का नाम तमर था। और यहूदाह का पहिलौंठा
एर परमेश्वर की दृष्टि में दुष्ट था सो परमेश्वर ने उसे मार डाला।
८ तब यहूदाह ने ओनान को कहा कि अपने भाई की पत्नी पास
जा और उस्से ब्याह कर और अपने भाई के लिये बंश चला।
९ और ओनान ने जाना कि यह बंश मेरा न होगा और यों
हुआ कि जब वुह अपने भाई की पत्नी पास गया तो वीर्य को

भूमि पर गिरा दिया न होवे कि उस का भाई उस्से बंश पावे।
१० और उस का वुह कार्य्य परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था इस लिये
११ उस ने उसे भी मार डाला। तब यहूदाह ने अपनी पतोह
तमर को कहा कि अपने पिता के घर में रांड बैठी रह जब
लों कि मेरा बेटा सेलः बढ़ जाय क्योंकि उस ने कहा न होवे
कि वुह भी अपने भाइयों की नाईं मर जाय सो तमर अपने
पिता के घर जा रही॥
१२ और बहुत दिन बीते और सूआ की बेटी यहूदाह की पत्नी
मर गई और यहूदाह उस के शोक को भूला तब वुह और उस
का मित्र अदूलामी हीरः अपनी भेड़ों के रोम कतरने तिमनास
१३ को गया। और तमर से यह कहा गया कि देख तेरा ससुर
१४ अपनी भेड़ों के रोम कतरने तिमनास को जाता है। तब उस
ने अपने रंडसाले के कपड़ों को अपने ऊपर से उतार फेंका और
घूंघट ओढ़ा और अपने को लपेटा और एनाइम के द्वार में जो
तिमनास के मार्ग पर है जा बैठी क्योंकि उस ने देखा था कि
१५ सेलः सयाना हुआ और मुझे उस की पत्नी न कर दिया। जब
यहूदाह ने उसे देखा तो समझा कि कोई बेश्या है क्योंकि वुह
१६ अपना मुंह छिपाये हुए थी। और मार्ग से उस की ओर फिरा
और उसे कहा कि मुझे अपने पास आने दे क्योंकि न जाना कि
वुह मेरी पतोह है और वुह बोली कि मेरे पास आने में तू मुझे
१७ क्या देगा। तब वुह बोला मैं झुंड में से एक मेम्ना भेजूंगा और उस
१८ ने कहा कि तू उसे भेजने लों मुझे कुछ बंधक दे। और वुह
बोला मैं तुझे क्या बंधक देऊं सो वुह बोली अपनी छाप और
अपने बिजायठ और अपनी लाठी जो तेरे हाथ में है और उस
ने उस को दिया और उस के पास गया और वुह उस्से गर्भिणी
१९ हुई। तब वुह उठी और चली गई और अपना घूंघट अपने
ऊपर से उतार रक्खा और अपने रंडसाले का बस्त्र पहिन

२० लिया । और यहूदाह ने अपने मित्र अदूलामी के हाथ मेम्ना
भेजा कि उस स्त्री के हाथ से वुह बंधक फेर लेवे परन्तु उस
२१ ने उसे न पाया । तब उस ने उस स्थान के लोगों से पूछा कि
जो वेश्या मार्ग में बैठी थी सो कहां है और वे बोले कि यहां
२२ वेश्या न थी । तब वुह यहूदाह के पास फिर आया और कहा
कि मैं ने उसे नहीं पाया और उस स्थान के लोगों ने भी कहा
२३ कि वेश्या वहां न थी । और यहूदाह बोला कि उसे लेने दे
न हो कि हम निन्दित होवें देख मैं ने यह मेम्ना भेजा और
२४ तू ने उसे न पाया । और तीन मास के पीछे यों हुआ कि
यहूदाह से कहा गया कि तेरी पतोह तमर ने वेश्याई किई
और देख कि उसे छिनाले का गर्भ भी है और यहूदाह बोला
२५ कि उसे बाहर लाओ और वुह जला दिई जाय । जब वुह
निकाली गई तो उस ने अपने ससुर को कहला भेजा कि मुझे
उस जन का पेट है जिस की ये बस्तें हैं और कहा कि
पहिचानिये यह छाप और बिजायठ और लाठी किस की है ।
२६ तब यहूदाह ने पहिचाना और कहा कि वुह मुझ से अधिक
धर्म्मी है इस लिये कि मैं ने उसे अपने बेटे सेलः को न दिया
पर वुह आगे को उस्से अज्ञान रहा ॥
२७ और उस के जन्ने के समय में यों हुआ कि देखो उस की
२८ कोख में जमल थे । और जब वुह पीड़ में हुई तो एक का
हाथ निकला और जनाई दाई ने उस के हाथों में नारा बांध
२९ के कहा कि यह पहिले निकला । और यों हुआ कि उस ने
अपना हाथ फिर खींच लिया और देखो उस का भाई निकल
पड़ा तब वुह बोली कि तू ने यह दरार क्यों किया इस लिये
३० उस का नाम फ़ारस हुआ । और उस के पीछे उस का भाई
जिस के हाथ में नारा बंधा था निकला और उस का नाम
ज़रह रक्खा ॥

उन्तालीसवां पर्व्व ।

१ और यूसुफ़ मिस्र में लाया गया और फ़ूतीफ़र मिस्री ने जो
फ़िरऊ़न का एक प्रधान और राजा का सेनापति था उस को
इसमअ़एलियों के हाथ से जो उसे वहां लाये थे मोल लिया ।
२ परन्तु परमेश्वर यूसुफ़ के साथ था और वुह भाग्यमान हुआ और
३ वुह अपने मिस्री स्वामी के घर में रहा किया । और उस के
स्वामी ने यह देखा कि परमेश्वर उस के साथ है और कि
४ परमेश्वर ने उस के सारे कार्य्यों में उसे भाग्यमान किया । और
यूसुफ़ ने उस की दृष्टि में अनुग्रह पाया और उस ने उस की
सेवा किई और उस ने उसे अपने घर पर करोड़ा किया और
५ सब जो कुछ कि उस का था उस के हाथ में कर दिया । और
यों हुआ कि जब से उस ने उसे अपने घर पर और अपनी सब
बस्तुन पर करोड़ा किया तब से परमेश्वर ने उस मिस्री के घर
पर यूसुफ़ के कारण बढ़ती दिई और उस की सारी बस्तुन में जो
६ घर में और खेत में थीं परमेश्वर की ओर से बढ़ती हुई । और
उस ने अपना सब कुछ यूसुफ़ के हाथ में कर दिया और वुह
रोटी से अधिक जिसे खा लेता था कुछ न जानता था और
यूसुफ़ रूपमान और देखने में सुंदर था ॥
७ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि उस के स्वामी की
पत्नी ने अपनी आंखें यूसुफ़ पर लगाईं और वुह बोली कि मेरे साथ
८ शयन कर । परन्तु उस ने न माना और अपने स्वामी की पत्नी
से कहा कि देख मेरा स्वामी अपनी रोटी से अधिक जिसे खा
लेता है किसी बस्तु को नहीं जानता और उस ने अपना सब
९ कुछ मेरे हाथ में सैांप दिया । इस घर में मुझ से बड़ा कोई
नहीं और उस ने तुझ को छोड़ कोई बस्तु मुझ से अलग नहीं
रक्खी क्योंकि तू उस की पत्नी है तो मैं ऐसी महा दुष्टता क्यों

१० करूं और ईश्वर का अपराधी होऊं। और ऐसा हुआ कि वुह
यूसुफ़ को प्रति दिन कहती रही पर वुह उस के साथ शयन करने
११ को अथवा उस के पास रहने को उस की न मानता था। और
उस समय के लग भग ऐसा हुआ कि वुह अपने कार्य्य के लिये
१२ घर में गया और घर के लोगों में से वहां कोई न था। तब उस
ने उस का पहिरावा पकड़के कहा कि मेरे साथ शयन कर तब वुह
अपना पहिरावा उस के हाथ में छोड़कर भागा और बाहर
१३ निकल गया। और यों हुआ कि जब उस ने देखा कि वुह
अपना पहिरावा मेरे हाथ में छोड़ गया और भाग निकला।
१४ तो उस ने अपने घर के लोगों को बुलाया और उन से कहा
कि देखो वुह एक इबरानी को हमारे घर में लाया कि हम से
ठठोली करे वुह मेरे साथ शयन करने को मेरे पास आया और
१५ मैं चिल्ला उठी। और यों हुआ कि जब उस ने सुना कि मैं
अपना शब्द उठाके चिल्लाई तो अपना पहिरावा मेरे पास छोड़
१६ भागा और बाहर निकल गया। सो जब लों उस का पति घर
में न आया उस ने उस का पहिरावा अपने पास रख छोड़ा।
१७ तब उस ने ऐसी ही बातें उस्से कहीं कि यह इबरी दास जो
तू ने हम पास ला रक्खा मेरे पास आया कि मुझ से ठट्ठा करे।
१८ और जब मैं चिल्ला उठी तो वुह अपना पहिरावा मेरे पास
१९ छोड़कर बाहर निकल भागा। और यों हुआ कि जब उस के
स्वामी ने अपनी पत्नी की बातें सुनीं जो उस ने उस्से कहीं कि
२० तेरे दास ने मुझ से यों किया तो उस का क्रोध भड़का। और
यूसुफ़ के स्वामी ने उसे लेके बंदीगृह में जहां राजा के बंधुए
२१ बंद थे बंधन में डाला और वुह वहां बंदीगृह में था। परन्तु
परमेश्वर यूसुफ़ के साथ था और उस पर कृपा किई और बंदीगृह
२२ के प्रधान को उस पर दयाल किया। और उस बंदीगृह के प्रधान
ने बंदीगृह के सारे बंधुओं को यूसुफ़ के हाथ में सौंपा और

२३ जो कुछ वे करते थे उस का कर्त्ता वही था। उस बंदीगृह
का प्रधान कार्य्यों से निश्चिंत था इस लिये कि परमेश्वर उस के
साथ था और उस के कार्य्यों में जो उस ने किये ईश्वर ने
भाग्यमान किया॥

चालीसवां पर्ब्ब।

१ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि मिस्र के राजा के
पियाऊ ने और रसोइया ने अपने प्रभु मिस्र के राजा का अपराध
२ किया। और फ़िरऊ़न अपने दो प्रधानों पर अर्थात् प्रधान
३ पियाऊ पर और प्रधान रसोइया पर क्रुद्ध हुआ। और उस ने
उन्हें पहरू के प्रधान के घर में जहां यूसुफ़ बंद था बंदीगृह
४ में डाला। और पहरू के प्रधान ने उन्हें यूसुफ़ को सौंप दिया
और उस ने उन की सेवा किई और वे कितने दिन लों बंद
रहे॥

५ और हर एक ने उन दोनों में से बंदीगृह में अर्थात्
मिस्र के राजा के पियाऊ और रसोइया ने एक ही रात एक
६ एक स्वप्न अपने अपने अर्थ के समान देखा। और बिहान को
यूसुफ़ उन पास आया और उन पर दृष्टि किई और देखो वे
७ उदास थे। तब उस ने फ़िरऊ़न के प्रधानों से जो उस के
साथ उस के प्रभु के घर में बंद थे पूछा कि आज तुम क्यों
८ कुरूप हो। और वे उस्से बोले कि हम ने स्वप्न देखा है जिस
का अर्थ करवैया नहीं तब यूसुफ़ ने उन्हें कहा क्या अर्थ करना
ईश्वर का कार्य्य नहीं मुझ से कहो॥

९ तब पियाऊ के प्रधान ने अपना स्वप्न यूसुफ़ से कहा और
उसे बोला कि अपने स्वप्न में क्या देखता हूं कि एक लता मेरे
१० आगे है। और उस लता में तीन डालियां थीं और मानों उस में
कलियां निकलीं और उस में फूल लगे और उस के गुच्छों में पक्के दाख

११ निकले। और फ़िरऊन का कटोरा मेरे हाथ में था और मैं ने
दाखों को लेके उन्हें फ़िरऊन के कटोरे में निचोड़ा और मैं ने उस
१२ कटोरे को फ़िरऊन के हाथ में दिया। तब यूसुफ़ ने उसे कहा
कि इस का यह अर्थ है कि ये तीन डालियां तीन दिन हैं।
१३ फ़िरऊन अब से तीन दिन में तेरा सिर उभाड़ेगा और तुझे
अपना पद फिर देगा और तू आगे की नाईं जब तू फ़िरऊन का
१४ पियाऊ था उस के हाथ में फिर कटोरा देगा। परन्तु जब तेरा
भला होय तो मुझे स्मरण कीजियो और मुझ पर दयाल
हूजियो और फ़िरऊन से मेरी चर्चा करियो और मुझे इस घर से
१५ छुड़वाइयो। क्योंकि निश्चय मैं इबरानियों के देश से चुराया
गया था और यहां भी मैं ने ऐसा काम नहीं किया कि वे मुझे
इस बंदीगृह में रक्खें॥

१६ जब रसोइयों के प्रधान ने देखा कि अर्थ अच्छा हुआ
तो यूसुफ़ से कहा कि मैं भी स्वप्न में था और क्या देखता हूं
१७ कि मेरे सिर पर श्वेत रोटी की तीन टोकरियां हैं। और ऊपर
की टोकरी में फ़िरऊन के लिये समस्त रीति का भोजन था
१८ और पंछी मेरे सिर पर उस टोकरी में से खाते थे। तब यूसुफ़
ने उत्तर दिया और कहा उस का अर्थ यह है कि ये तीन
१९ टोकरियां तीन दिन हैं। फ़िरऊन अब से तीन दिन में तेरा
सिर तेरी देह से अलग करेगा और एक पेड़ पर तुझे टांग देगा
और पंछी तेरा मांस नोच नोच खायेंगे॥

२० और यों हुआ कि तीसरे दिन फ़िरऊन के जन्म गांठ का
दिन था और उस ने अपने सारे सेवकों का नेउता किया और
उस ने अपने सेवकों में पियाऊ के प्रधान और रसोइयों के
२१ प्रधान को उभाड़ा। और उस ने पियाऊ के प्रधान को पियाऊ
का पद फिर दिया और उस ने फ़िरऊन के हाथ में कटोरा
२२ दिया। परन्तु उस ने यूसुफ़ के अर्थ करने के समान रसोइयों

२३ के प्रधान को फांसी दिई। तथापि पियाऊ के प्रधान ने यूसुफ़
को स्मरण न किया परन्तु उसे भूल गया॥

एकतालीसवां पर्ब्ब।

१ फिर दो बरस बीते यों हुआ कि फ़िरऊ़न ने स्वप्न देखा
२ और देखो कि आप नदी के तीर पर खड़ा है। और देखो कि
नदी से सात सुंदर और मोटी मोटी गायें निकलीं और चराव
३ पर चरने लगीं। और देखो कि उन के पीछे और सात गायें
कुरूप और डांगर नदी से निकलीं और नदी के तीर पर उन
४ सात गायों के पास खड़ी हुईं। और उन कुरूप और डांगर
गायों ने उन सुंदर और मोटी सात गायों को खा लिया तब
५ फ़िरऊ़न जागा। फिर सो गया और दुहराके स्वप्न देखा कि अन्न से
६ भरी हुई और अच्छी सात बालें एक डांठी में निकलीं। और
देखो कि और सात बालें छितरी और पुरबी पवन से मुरझाई हुईं
७ उन के पीछे निकलीं। और वे छितरी सात बालें उन अच्छी
भरी हुई सात बालों को निगल गईं और फ़िरऊ़न जागा और
देखो कि स्वप्न है॥

८ और बिहान को यों हुआ कि उस का जीव व्याकुल हुआ
तब उस ने मिस्र के सारे टोनहों और बुद्धिमानों को बुला
भेजा और अपना स्वप्न उन से कहा परन्तु उन में से कोई
फ़िरऊ़न के स्वप्न का अर्थ न कर सका॥

९ तब प्रधान पियाऊ ने फ़िरऊ़न से कहा कि मेरे अपराध
१० आज मुझे चेत आते हैं। फ़िरऊ़न अपने दासों पर क्रुद्ध था
और मुझे और रसोइयों के प्रधान को बंदीगृह के पहरू के घर
११ में बंद किया था। और एक ही रात हम ने अर्थात् मैं ने और
उस ने एक एक स्वप्न देखा हम में से हर एक ने अपने स्वप्न
१२ के अर्थ समान स्वप्न देखा। और एक इबरानी तरुण पहरू

के प्रधान का सेवक हमारे साथ था और हम ने उस्से कहा
और उस ने हमारे स्वप्न का अर्थ किया और उस ने हर एक
१३ के स्वप्न सामन अर्थ किया। और जैसा उस ने हमारे लिये
अर्थ किया तैसा हुआ मुझे आप ने पद फिर दिया और उसे
फांसी दिई॥

१४ तब फ़िरऊन ने यूसुफ़ को बुलवा भेजा और उन्हों ने उसे
बंदीगृह से दौड़ाया और उस ने बाल बनवाया और अपने कपड़े
१५ बदल फ़िरऊन के आगे आया। तब फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा
कि मैं ने एक स्वप्न देखा जिस का अर्थ कोई नहीं कर सक्ता
और मैं ने तेरे बिषय में सुना है कि तू स्वप्न को समुझके अर्थ
कर सक्ता है॥

१६ और यूसुफ़ ने उत्तर में फ़िरऊन से कहा कि मुझ से नहीं
ईश्वर ही फ़िरऊन को कुशल का उत्तर देगा॥

१७ तब फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा कि मैं ने स्वप्न देखा कि मैं
१८ नदी के तीर पर खड़ा हूं। और क्या देखता हूं कि मोटी
और सुंदर सात गायें नदी से निकलीं और चराई पर चरने
१९ लगीं। और क्या देखता हूं कि उन के पीछे अत्यंत कुरूप
और बुरी और डांगर और सात गायें निकलीं ऐसी बुरी जो मैं
२० ने मिस्र के सारे देश में कभी न देखा। और वे डांगर और
२१ कुरूप गायें अगिली मोटी सात गायों को खा गईं। और जब
वे उन के उद्र में पड़ीं तब समुझ न पड़ा कि वे उन्हें खा
गईं और वे वैसी ही कुरूप थीं जैसी पहिले थीं तब मैं जागा।
२२ और फिर स्वप्न में देखा कि अच्छी घनी सात बालें एक डांठी
२३ में निकलीं। और क्या देखता हूं कि और सात बालें मुरझाई
हुईं और पतली पुरबी पवन से कुम्हलाई हुईं उन के पीछे उगीं।
२४ और उन पतली बालों ने उन अच्छी सात बालों को निगल लिया
और मैं ने यह टोनहों से कहा परन्तु कोई अर्थ न कर सका॥

२५ तब यूसुफ़ ने फ़िरऊन से कहा कि फ़िरऊन का स्वप्न एक
ही है जो कुछ ईश्वर को करना है सो उस ने फ़िरऊन को
२६ दिखाया है। वे सात अच्छी गायें सात बरस हैं और वे अच्छी
२७ सात बालें सात बरस हैं स्वप्न एक ही है। और वे डांगर और
कुरूप सात गायें जो उन के पीछे निकलीं सात बरस हैं और
वे सात छूछी बालें जो पुरबी पवन से कुम्हलाई हुईं हैं सो
२८ अकाल के सात बरस हैं। यही बात है जो मैं ने फ़िरऊन से
कही ईश्वर जो कुछ किया चाहता है फ़िरऊन को दिखाया।
२९ देखिये कि सात बरस लों मिस्र के सारे देश में बड़ी बढ़ती
३० होगी। और उन के पीछे सात बरस का अकाल होगा और
मिस्र देश की सारी बढ़ती भुला जायगी और अकाल देश को
३१ नष्ट करेगा। और उस अकाल के मारे वुह बढ़ती देश में
३२ जानी न जायगी क्योंकि वुह बड़ा भारी अकाल होगा। और
फ़िरऊन पर जो स्वप्न दोहराया गया सो इस लिये है कि वुह
ईश्वर से ठहराया गया है और ईश्वर थोड़े दिन में उसे करेगा।
३३ सो अब फ़िरऊन एक चतुर और बुद्धिमान मनुष्य ढूंढे और
३४ उसे मिस्र देश पर ठहरावे। फ़िरऊन यही करे और देश पर
करोड़ा ठहरावे और सात बढ़ती के बरसों में मिस्र देश का
३५ पांचवां भाग लिया करे। और वे अवैये अच्छे बरसों का सारा
भोजन एकट्ठा करें और फ़िरऊन के बश में अन्न धर रक्खें
३६ और वे अन्न नगरों में धर रक्खें। और वही भोजन मिस्र के
देश में अकाल के अवैये सात बरसों के लिये देश के भंडार
के लिये होगा जिसतें अकाल के मारे देश नष्ट न हो॥

३७ तब यह बात फ़िरऊन की दृष्टि में और उस के सारे सेवकों
३८ की दृष्टि में अच्छी लगी। तब फ़िरऊन ने अपने सेवकों से
कहा क्या हम इस जन के समान पा सक्ते हैं जिस में ईश्वर
३९ का आत्मा है। और फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा जैसा कि

ईश्वर ने ये सारी बातें तुझे दिखाई हैं सो तेरे तुल्य बुद्धिमान
४० और चतुर कोई नहीं है । तू मेरे घर का करोड़ा हो और
मेरी सारी प्रजा तेरी आज्ञा में होगी केवल सिंहासन पर मैं
४१ तुझ से बड़ा हूंगा । फिर फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा कि देख
४२ मैं ने तुझे मिस्र के सारे देश पर करोड़ा किया । और फ़िरऊन
ने अपनी अंगूठी अपने हाथ से निकालके उसे यूसुफ़ के हाथ में
पहिना दिई और उसे झीना वस्त्र से विभूषित किया और सोने
४३ की सिकरी उस के गले में डाली । और उस ने उसे अपने
दूसरे रथ में चढ़ाया और उस के आगे प्रचारा गया कि सन्मान
करो और उस ने उसे मिस्र के सारे देश पर अध्यक्ष किया ।
४४ और फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा कि मैं फ़िरऊन हूं और तुझ
बिना मिस्र के सारे देश में कोई मनुष्य अपना हाथ पांव न
४५ उठावेगा । और फ़िरऊन ने यूसुफ़ का नाम सफ़नथफ़ानिअख़
रक्खा और उस ने ओन के नगर के याजक फ़ूतीफ़रअ की
बेटी आसनाथ को उस्से ब्याह दिया ॥

४६ और यूसुफ़ मिस्र देश में सर्व्वत्र फिरा और जब यूसुफ़
मिस्र के राजा फ़िरऊन के आगे खड़ा हुआ तब वुह तीस बरस
का था और यूसुफ़ फ़िरऊन के आगे से निकलके मिस्र के सारे देश
४७ में सर्व्वत्र फिरा । और बढ़ती के सात बरसों में भूमि से मुट्ठी
४८ भर भर उत्पन्न हुआ । तब उस ने उन सात बरसों का सारा
भोजन जो मिस्र देश में हुआ एकट्ठे किया और भोजन को
नगरों में धर रक्खा हर नगर के आस पास के खेतों का अन्न
४९ उसी बस्ती में रक्खा । और यूसुफ़ ने समुद्र के बालू की नाईं
बहुत अन्न बटोरा यहां लों कि गिन्ना छोड़ दिया क्योंकि
अगणित था ॥

५० और अकाल के बरसों से आगे यूसुफ़ के दो बेटे उत्पन्न
हुए जो ओन के याजक फ़ूतीफ़रअ की बेटी आसनाथ उस के

५१ लिये जनी। सो यूसुफ़ ने पहिले का नाम मुनस्सी रक्खा इस
लिये कि उस ने कहा ईश्वर ने मेरा और मेरे पिता के घर का
५२ सब परिश्रम भुलाया। और दूसरे का नाम इफ़रायम रक्खा इस
लिये कि ईश्वर ने मुझे मेरे दुःख के देश में फलमान किया॥
५३ और मिस्र देश के बढ़ती के सात बरस बीत गये।
५४ और यूसुफ़ के कहने के समान अकाल के सात बरस आने लगे
और सारे देशों में अकाल पड़ा परन्तु मिस्र के सारे देश में अन्न
५५ था। और जब कि मिस्र के सारे देश भूख से मरने लगे तो लोग रोटी
के लिये फ़िरऊन के आगे चिल्लाये तब फ़िरऊन ने सारे मिस्रियों
५६ से कहा कि यूसुफ़ पास जाओ और उस का कहा मानो। और
सारी भूमि पर अकाल था और यूसुफ़ ने खत्ते खोल खोल मिस्रियों
के हाथ बेचा और मिस्र के देश में कठिन अकाल पड़ा था।
५७ और सारे देशगण मिस्र में यूसुफ़ से मोल लेने आये क्योंकि
सारे देशों में बड़ा अकाल था॥

बायालीसवां पर्व्व।

१ और जब यअक़ूब ने देखा कि मिस्र में अन्न है तब उस ने
२ अपने बेटों से कहा कि क्यों एक एक को ताकते हो। तब
उस ने कहा देखो मैं सुनता हूं कि मिस्र में अन्न है उधर
जाओ और वहां से हमारे लिये मोल लेओ जिसतें हम जीवें
३ और न मरें। सो यूसुफ़ के दस भाई अन्न मोल लेने को मिस्र
४ में आये। पर यअक़ूब ने यूसुफ़ के भाई बिनयमीन को उस
के भाइयों के साथ न भेजा क्योंकि उस ने कहा कहीं ऐसा न
हो कि उस पर कुछ बिपत्ति पड़े॥
५ और इसराएल के बेटे और आनेवालों के साथ मोल लेने
६ आये क्योंकि कनआन देश में अकाल था। और यूसुफ़ तो
देश का अध्यक्ष था और वुह देश के सारे लोगों के हाथ बेचा

करता था सो यूसुफ़ के भाई आये और उन्हों ने उस के आगे
७ भूमि लों प्रणाम किया। और यूसुफ़ ने अपने भाइयों को देखके
उन्हें पहिचाना पर उस ने आप को अनपहिचान किया और उन
से कठोरता से बोला और उस ने उन्हें पूछा कि तुम कहां से
८ आये हो और वे बोले अन्न लेने को कनआन देश से। युसुफ़
ने तो अपने भाइयों को पहिचाना पर उन्हों ने उसे न
९ पहिचाना। और यूसुफ़ ने उन के विषय के स्वप्नों को जो उस
ने देखे थे स्मरण किया और उन्हें कहा कि देश की कुदशा
१० देखने को तुम भेदिये होकर आये हो। तब उन्हों ने उसे
कहा नहीं मेरे प्रभु परन्तु आप के सेवक अन्न लेने आये हैं।
११ हम सब एक ही जन के बेटे हैं हम सच्चे हैं आप के सेवक
१२ भेदिये नहीं हैं। तब वुह उन से बोला कि नहीं परन्तु देश
१३ की कुदशा देखने आये हो। तब उन्हों ने कहा कि हम आप
के सेवक बारह भाई कनआन देश में एक ही जन के बेटे हैं
और देखिये छुटका आज के दिन हमारे पिता पास है और
१४ एक नहीं है। तब यूसुफ़ ने उन्हें कहा सोई जो मैं ने तुम्हें
१५ कहा कि तुम लोग भेदिये हो। इसी से तुम जांचे जाओगे
फ़िरऊन के जीवन की किरिया जब लों तुम्हारा छोटा भाई न
१६ आवे तुम जाने न पाओगे। अपना भाई लाने को अपने में से
एक को भेजो और तुम बंदीगृह में रहोगे जिसतें तुम्हारी
बातें जांची जावें कि तुम सच्चे हो कि नहीं नहीं तो फ़िरऊन
१७ के जीवन की किरिया तुम निश्चय भेदिये हो। फिर उस ने
१८ उन को तीन दिन लों बंधन में रक्खा। और तीसरे दिन
यूसुफ़ ने उन्हें कहा यों करके जीते रहो मैं ईश्वर से डरता
१९ हूं। जो सच्चे हो तो एक को अपने भाइयों में से बंदीगृह में
बंद रहने देओ और तुम अकाल के लिये अपने घर में अन्न
२० ले जाओ। परन्तु अपने छोटे भाई को मुझ पास लाओ सो

तुम्हारी बातें ठहर जायेंगी और तुम न मरोगे सो उन्हों ने
२१ ऐसा ही किया। तब उन्हों ने आपुस में कहा कि हम निश्चय
अपने भाई के विषय में दोषी हैं क्योंकि जब उस ने हम से
बिनती किई और हम ने नहीं सुना हम ने उस के प्राण के
२२ कष्ट को देखा इस लिये यह बिपत्ति हम पर पड़ी है। तब
रूबिन ने उत्तर में उन्हें कहा क्या मैं ने तुम्हें नहीं कहा कि
इस लड़के के बिरुद्ध पाप न करो और तुम ने न सुना इस लिये
२३ देखो उस के लोहू का यही पलटा है। और वे न जानते थे
कि यूसुफ़ समुझता है क्योंकि उन के मध्य में एक दोभाषिया
२४ था। तब वुह उन में से अलग गया और रोया और फिर उन
पास आया और उन से बात चीत किई और उन में से समऊन
को लेके उन की आंखों के आगे बांधा॥

२५ तब यूसुफ़ ने उन के बोरों को अन्न से भरने की और हर
जन का रोकड़ उस के बोरे में फेरने की और मार्ग के लिये
उन्हें भोजन देने की आज्ञा किई और उस ने उन्हें ऐसा ही
२६ किया। और वे अपने गदहों पर अपना अन्न लादके वहां से चल
२७ निकले। और जब उन में से एक ने टिकान में अपने गदहे
को दाना घास देने को अपना बोरा खोला तो उस ने अपना
२८ रोकड़ देखा और देखो वुह उस के बोरे के मुंह पर था। तब
उस ने अपने भाइयों से कहा कि मेरा रोकड़ फेरा गया है
और देखो कि वुह मेरे बोरे में है सो उन के जी में जी न
रहा और वे डरके एक दूसरे को कहने लगे कि ईश्वर ने हम
से यह क्या किया॥

२९ और वे कनआन देश में अपने पिता यअकूब पास पहुंचे
३० और सब जो उन पर बीता था उस के आगे दोहराया। कि जो
जन उस देश का स्वामी है सो हम से कठोरता से बोला और
३१ हमें देश का भेदिया ठहराया। और हम ने उसे कहा कि

३२ हम तो सच्चे हैं हम भेदिये नहीं हैं। हम बारह भाई एक
पिता के बेटे हैं एक नहीं है और सब से छोटा आज
३३ अपने पिता के पास कनआन देश में है। तब उस जन ने
अर्थात् उस देश के स्वामी ने हम से कहा इस्से मैं जानूंगा
कि सच्चे हो अपना एक भाई मुझ पास छोड़ो और अपने
३४ घराने के लिये अकाल का भोजन ले जाओ। और अपने छुटके
भाई को मेरे पास ले आओ तब मैं जानूंगा कि तुम भेदिये
नहीं परन्तु तुम सच्चे हो फिर मैं तुम्हारे भाई को तुम्हें सौंपूंगा
३५ और तुम देश में व्यापार कीजियो। और यों हुआ कि जब
उन्हों ने अपना अपना बोरा छूछा किया तो देखो कि हर जन
का रोकड़ उस के बोरे में है और जब उन्हों ने और उन के
३६ पिता ने रोकड़ की थैलियां देखीं तो डर गये। और उन के
पिता यअक़ूब ने उन्हें कहा कि तुम ने मुझे निःसंतान किया
यूसुफ़ तो नहीं है और समऊन नहीं और तुम लोग बिनयमीन
३७ को ले जाने चाहते हो ये सब बातें मुझ से विरुद्ध हैं। तब
रूबिन अपने पिता से कहके बोला जो मैं उसे आप पास न लाऊं
तो मेरे दोनों बेटों को मार डालियो उसे मेरे हाथ में सौंपिये
३८ और मैं उसे फिर आप पास पहुंचाऊंगा। और उस ने कहा मेरा
बेटा तुम्हारे संग न जायगा क्योंकि उस का भाई मर गया है
और यह अकेला रह गया जो जाते जाते मार्ग में उस पर कुछ
विपत्ति पड़े तो तुम मेरे पक्के बालों को शोक के साथ समाधि में
उतारोगे॥

तेंतालीसवां पर्व्व ।

१।२ और देश में बड़ा अकाल था। और यों हुआ कि जब
वे मिस्र से लाये हुए अन्न को खा चुके तो उन के पिता ने
उन्हें कहा कि फिर जाओ और हमारे लिये थोड़ा अन्न मोल

३ लेओ। तब यहूदाह ने उसे कहा कि उस पुरुष ने हमें चिता
चिता कहा कि जब लों तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो मेरा
४ मुंह न देखोगे। जो आप हमारे भाई को हमारे साथ भेजियेगा
५ तो हम जायेंगे और आप के लिये अन्न मोल लेंगे। परन्तु जो
आप न भेजेंगे तो हम न जायेंगे क्योंकि उस पुरुष ने हम से
कहा कि जब लों तुम्हारा भाई तुम्हारे साथ न हो तुम मेरा
६ मुंह न देखोगे। तब इसराएल ने कहा कि तुम ने मुझ से
क्यों ऐसा बुरा ब्यवहार किया कि उस पुरुष से कहा कि हमारा
७ और एक भाई है। तब वे बोले कि उस पुरुष ने हमें संकेतो
से हमारा और हमारे कुटुम्ब का समाचार पूछा कि क्या तुम्हारा
पिता अब लों जीता है क्या तुम्हारा और कोई भाई है सो हम
ने इन बातों के ब्यवहार के समान उसे कहा क्या हम निश्चय
जान सक्ते थे कि वुह कहेगा कि अपने भाई को ले आओ।
८ तब यहूदाह ने अपने पिता इसराएल से कहा कि इस तरुण
को मेरे साथ कर दीजिये और हम उठ चलेंगे जिसतें हम
९ और आप और हमारे बालक जीवें और न मरें। मैं उस का
बिचवई हूंगा आप मेरे हाथ से उसे लीजियो जो मैं उसे आप
पास न लाऊं और आप के आगे न धरूं तो आप यह दोष
१० मुझ पर सदा धरिये। क्योंकि जो हम बिलंब न करते तो
११ निश्चय अब लों दोहराके फिर आये होते। तब उन के पिता
इसराएल ने उन्हें कहा कि जो अब योंहीं है तो यों करो कि
इस देश के अच्छे से अच्छे फल अपने पात्रों में रख लेओ और
उस पुरुष के लिये भेंट ले जाओ थोड़ा मियास और थोड़ा मधु
१२ कुछ सुगंध द्रब्य और बोल बतम और बदाम। और दूना
रोकड़ अपने हाथ में लेओ और वुह रोकड़ जो तुम्हारे बोरों
में फेर लाया गया है अपने हाथ में फेर ले जाओ क्या जाने
१३ वुह भूल से हुआ हो। अपने भाई को भी लेओ उठो और उस

१४ पुरुष पास जाओ। और सर्बशक्तिमान सर्बसामर्थी उस पुरुष को
तुम पर दयाल करे जिसतें वुह तुम्हारे दूसरे भाई और
बिनयमीन को छोड़ देवे और जो मैं निर्बंश हुआ तो
हुआ॥
१५ तब उन मनुष्यों ने वुह भेंट लिया और दूने रोकड़ को
अपने हाथ में बिनयमीन समेत लिया और उठे और मिस्र को
१६ उतर चले और यूसुफ़ के आगे जा खड़े हुए। जब यूसुफ़ ने
बिनयमीन को उन के संग देखा तो उस ने अपने घर के प्रधान
को कहा कि इन मनुष्यों को घर में ले जा और कुछ मारके
सिद्ध कर क्योंकि ये मनुष्य दोपहर को मेरे संग खायेंगे।
१७ सो जैसा कि यूसुफ़ ने कहा था उस पुरुष ने वैसा ही किया और
१८ वुह उन मनुष्यों को यूसुफ़ के घर में लाया। तब वे मनुष्य यूसुफ़
के घर में पहुंचाये जाने से डर गये और उन्हों ने कहा कि
उस रोकड़ के कारण जो पहिले बार हमारे बोरों में फिर गया
हम यहां पहुंचाये गये हैं जिसतें वुह हमारे बिरुद्ध एक कारण
ढूंढ़े और हम पर लपके और हमें पकड़के दास बनावे और
१९ हमारे गदहों को छीन लेवे। तब उन्हों ने यूसुफ़ के घर
के प्रधान पास आके घर के द्वार पर उस्से बात चीत किई।
२० और कहा कि महाशय हम निश्चय पहिले बेर अन्न मोल लेने
२१ आये थे। तो यों हुआ कि जब हम ने टिकाश्रय पर उतरके
अपने बोरों को खोला तो क्या देखते हैं कि हर जन का रोकड़
उस के बोरे के मुंह पर है हमारा रोकड़ सब पूरा था सो हम
२२ उसे अपने हाथ में फिर लाये हैं। और अन्न लेने को हम और
रोकड़ अपने हाथों में लाये हैं हम नहीं जानते कि हमारा
२३ रोकड़ किस ने हमारे बोरों में रख दिया। तब उस ने कहा कि
तुम्हारा कुशल होवे मत डरो तुम्हारे ईश्वर और तुम्हारे पिता
के ईश्वर ने तुम्हारे बोरों में तुम्हें धन दिया है तुम्हारा रोकड़

मुझे मिल चुका फिर वुह समऊन को उन पास निकाल
लाया ॥
२४ और उस जन ने उन मनुष्यों को यूसुफ़ के घर में लाके
पानी दिया और उन्हों ने अपने चरण धोये और उस ने उन
२५ के गदहों को दाना घास दिया। फिर उन्हों ने दोपहर को
यूसुफ़ के आने पर भेंट सिद्ध किया क्योंकि उन्हों ने सुना था कि
२६ हमें भोजन यहीं खाना है। और जब यूसुफ़ घर आया तो वे
अपने हाथ की उस भेंट को भीतर लाये और उस के आगे
२७ भूमि लों दंडवत किई। और उस ने उन से कुशल क्षेम पूछा
और कहा कि तुम्हारा पिता कुशल से है वुह बृद्ध जिस की
२८ चर्च्चा तुम ने किई थी अब लों जीता है। और उन्हों ने उत्तर
दिया कि आप का सेवक हमारा पिता कुशल से है वुह अब
२९ लों जीता है फिर उन्हों ने सिर झुकाके दंडवत किई। फिर
उस ने अपनी आंखें उठाईं और अपनी माता के बेटे अपने भाई
बिनयमीन को देखा और कहा कि तुम्हारा छुटका भाई जिस
की चर्च्चा तुम ने मुझ से किई थी यही है फिर कहा कि हे
३० मेरे बेटे ईश्वर तुझ पर दयाल रहे। तब यूसुफ़ ने उतावली
किई क्योंकि उस का जी अपने भाई के लिये भर आया और
३१ रोने चाहा और वुह कोठरी में गया और वहां रोया। फिर
उस ने अपना मुंह धोया और बाहर निकला और आप को
३२ रोका और आज्ञा किई कि भोजन परोसो। तब उन्हों ने उस
के लिये अलग और उन के लिये अलग और मिस्रियों के लिये
जो उस के संग खाते थे अलग परोसा इस लिये कि मिस्री
इबरानियों के संग भोजन नहीं खा सक्ते क्योंकि वुह मिस्रियों
३३ के लिये घिन है। और पहिलौंठा अपनी पहिलौंठाई के और
छुटका अपनी छुटाई के समान वे उस के आगे बैठ गये तब
३४ वे मनुष्य आश्चर्य्य से एक दूसरे को देखने लगे। और उस ने

अपने आगे से भोजन उन पास भेजा परन्तु बिनयमीन का
भोजन हर एक के भोजन से पंचगुन था और उन्हों ने उस
के साथ जी भरके पीया॥

चौंतालीसवां पर्ब्ब।

१ और उस ने अपने घर के प्रधान को यह कहके आज्ञा किई
कि उन मनुष्यों के बोरों को जितना वे ले जा सकें अन्न से भर
दे और हर एक जन का रोकड़ उस के बोरे के मुंह में डाल दे।
२ और मेरा रूपे का कटोरा छुटके के बोरे के मुंह में उस के अन्न
के दाम समेत रख दे सो उस ने यूसुफ़ की आज्ञा के समान
किया॥
३ ज्योंहीं दिन निकला वे मनुष्य अपने गदहे समेत बिदा किये
४ गये। जब वे नगर से थोड़ी दूर बाहर गये तब यूसुफ़ ने अपने घर
के प्रधान को कहा कि उठ उन मनुष्यों का पीछा कर और जब
तू उन्हें जा लेवे तो उन्हें कह कि किस लिये तुम लोगों ने
५ भलाई की संती बुराई किई है। क्या यह वुह नहीं जिस
में मेरा प्रभु पीता है और जिस्से वुह आगम का सत्य संदेश
६ देता है तुम ने इस में बुरा किया है। और उस ने उन्हें जा
७ लिया और ये बातें उन्हें कहीं। तब उन्हों ने उसे कहा कि
हमारा प्रभु ऐसी बातें क्यों कहता है ईश्वर न करे कि आप के
८ सेवक ऐसा काम करें। देखिये यह रोकड़ जो हम ने अपने
थैलों में ऊपर पाया सो हम कनआन देश से आप पास फिर
लाये थे सो क्योंकर होगा कि हम ने आप के प्रभु के घर
९ से रूपा अथवा सोना चुराया हो। आप के सेवकों में से
जिस के पास निकले वुह मार डाला जाय और हम भी अपने
१० प्रभु के दास होंगे। तब उस ने कहा कि तुम्हारी बातों के समान
हो जाय जिस के पास वुह निकले सो मेरा दास होगा और तुम

११ निर्दोष ठहरोगे। तब हर एक पुरुष ने तुरंत अपना अपना
बोरा भूमि पर उतारा और हर एक ने अपना बोरा खोला।
१२ और वुह बड़के से आरंभ करके छुटके लों ढूंढ़ने लगा और कटोरा
बिनयमीन के थैले में पाया गया॥
१३ तब उन्हों ने अपने कपड़े फाड़े और हर एक पुरुष ने अपना
१४ गदहा लादा और नगर को फिरा। और यहूदाह और उस के
भाई यूसुफ़ के घर आये क्योंकि वुह अब लों वहीं था और वे
१५ उस के आगे भूमि पर गिरे। तब यूसुफ़ ने उन्हें कहा कि तुम
ने यह कैसा काम किया क्या तुम न जानते थे कि मेरे ऐसा
१६ जन आगम का संदेश दे सक्ता है। तब यहूदाह बोला कि
हम अपने प्रभु से क्या कहें क्या बोलें अथवा क्योंकर अपने
को निर्दोष ठहरावें ईश्वर ने आप के सेवकों की बुराई प्रगट
किई देखिये कि हम और वुह भी जिस पास कटोरा निकला
१७ अपने प्रभु के दास हैं। तब वुह बोला ईश्वर न करे कि मैं ऐसा
करूं जिस जन के पास कटोरा निकला वही मेरा दास होगा
और तुम अपने पिता पास कुशल से जाओ॥
१८ तब यहूदाह उस पास आके बोला कि हे मेरे प्रभु आप
का सेवक अपने प्रभु के कान में एक बात कहने की आज्ञा पावे
और अपने सेवक पर आप का कोप भड़कने न पावे क्योंकि
१९ आप फ़िरऊन के समान हैं। मेरे प्रभु ने अपने सेवकों से यों
२० कहके प्रश्न किया कि तुम्हरा पिता अथवा भाई है। और हम
ने अपने प्रभु से कहा कि हमारा एक बृद्ध पिता है और उस का
बुढ़ापे का एक छोटा पुत्र है और उस का भाई मर गया और
वुह अपनी माता का एक ही रह गया और वुह अपने पिता का
२१ अति प्रिय है। तब आप ने अपने सेवकों से कहा कि उसे मेरे पास
२२ लाओ जिसतें मेरी दृष्टि उस पर पड़े। तब हम ने अपने प्रभु से
कहा कि वुह तरुण अपने पिता को छोड़ नहीं सक्ता क्योंकि

जो वुह अपने पिता को छोड़ेगा तो उस का पिता मर जायगा।
२३ फिर आप ने अपने सेवकों से कहा कि जब लों तुम्हारा छुटका
भाई तुम्हारे साथ न आवे तुम मेरा मुंह फिर न देखोगे।
२४ और यों हुआ कि जब हम आप के सेवक अपने पिता पास
२५ गये तो हम ने अपने प्रभु की बातें उस्से कहीं। तब हमारा पिता
२६ बोला फिर जाओ हमारे लिये थोड़ा अन्न मोल लेओ। तब
हम बोले कि हम नहीं जा सक्ते जो हमारा छुटका भाई
हमारे साथ होवे तो हम जायेंगे क्योंकि जब लों हमारा छुटका
भाई हमारे साथ न हो हम उस जन का मुंह न देखने
२७ पावेंगे। और आप के सेवक मेरे पिता ने हमें कहा कि तुम
२८ जानते हो कि मेरी पत्नी मुझ से दो बेटे जनी। और एक मुझ
से अलग हुआ और मैं ने कहा निश्चय वुह फाड़ा गया और
२९ मैं ने उसे अब लों न देखा। अब जो तुम इसे भी मुझ से
अलग करते हो और इस पर कुछ बिपत्ति पड़े तो तुम मेरे पक्के
३० बालों को शोक से समाधि में उतारोगे। अब इस लिये जब
मैं आप का सेवक अपने पिता पास पहुचूं और वुह तरुण हमारे
साथ न हो और इस कारण से कि उस का जीव इस के
३१ जीव से बंधा है। तो यही होगा कि वुह यह देखकर
कि तरुण नहीं है मरही जायगा और आप के सेवक अपने
३२ पिता के पक्के बालों को शोक से समाधि में उतारेंगे। क्योंकि
आप के सेवक ने अपने पिता पास इस तरुण का बिचवई होके
कहा कि यदि मैं इसे आप पास न पहुंचाऊं तो मैं सर्बदा लों
३३ अपने पिता का अपराधी हूंगा। अब मेरी बिनती सुनिये कि
आप का सेवक तरुण की संती अपने प्रभु का दास होके रहे
३४ और तरुण को उस के भाइयों के संग जाने दीजिये। क्योंकि
जो तरुण मेरे साथ न होवे मैं अपने पिता पास कैसे जाऊं
ऐसा न होवे कि जो बिपत्ति मेरे पिता पर पड़े मैं उसे देखूं॥

पैंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ तब यूसुफ़ उन सब के आगे जो उस पास खड़े थे अपने
को रोक न सका और चिल्लाया कि हर एक को मुझ पास से
बाहर करो सो जब यूसुफ़ ने अपने को अपने भाइयों पर प्रगट
२ किया तब कोई उस के संग न था। और वुह चिल्लाके रोया
३ और मिस्रियों और फ़िरऊन के घराने ने सुना। और यूसुफ़ ने
अपने भाइयों को कहा कि मैं यूसुफ़ हूं क्या मेरा पिता अब
लों जीता है तब उस के भाई उसे उत्तर न दे सके क्योंकि वे
४ उस के आगे घबरा गये। और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा
कि मेरे पास आइये तब वे पास आये और वुह बोला मैं तुम्हारा
५ भाई यूसुफ़ हूं जिसे तुम ने मिस्र में बेचा। सो इस लिये कि
तुम ने मुझे यहां बेचा उदास न होओ और व्याकुल मत
होओ क्योंकि ईश्वर ने तुम से आगे मुझे प्राण बचाने को भेजा।
६ क्योंकि दो बरस से भूमि पर अकाल है और अभी और पांच
७ बरस लों बोना लवना न होगा। और तुम्हारे बंश की पृथिवी
पर रक्षा करने को और बड़े उद्धार से तुम्हारे प्राण बचाने को
८ ईश्वर ने मुझे तुम्हारे आगे भेजा। सो अब तुम ने नहीं परन्तु
ईश्वर ने मुझे यहां भेजा और उस ने मुझे फ़िरऊन के पिता के
तुल्य बनाया और उस के सारे घर का प्रभु और सारे मिस्र
९ देश का अध्यक्ष बनाया। फुरती करो और मेरे पिता पास
जाओ और उसे कहियो कि आप का बेटा यूसुफ़ यों कहता है
कि ईश्वर ने मुझे सारे मिस्र का स्वामी किया मुझ पास चले
१० आइये ठहरिये मत। और आप जश्न की भूमि में रहियेगा
और आप और आप के लड़के और आप के लड़कों के लड़के
और आप के झुंड और आप के ढोर और जो कुछ आप का है
११ मेरे पास रहेंगे। और वहां मैं आप का प्रतिपाल करूंगा क्योंकि

अब भी अकाल के पांच बरस हैं न हो कि आप और आप का
१२ घराना और सब जो आप के हैं कंगाल हो जायें। और देखो
तुम्हारी आंखें और मेरे भाई बिनयमीन की आंखें देखती हैं
१३ कि मेरा मुंह आप लोगों से बोलता है। और तुम मेरे पिता
से मेरे बिभव की जो मिस्र में है और सब कुछ कि जो तुम
ने देखा है चर्चा कीजियो और फ़ुरती करो और मेरे पिता को यहां
१४ ले आओ। और वुह अपने भाई बिनयमीन के गले लगके रोया
१५ और बिनयमीन उस के गले लगके रोया। और उस ने अपने
सब भाइयों को चूमा और उन से मिलके रोया और उस
के पीछे उस के भाइयों ने उस्से बातें किईं॥
१६ और इस बात की कीर्ति फ़िरऊन के घर में सुनी गई कि
यूसुफ़ के भाई आये हैं और उस्से फ़िरऊन और उस के सेवक
१७ बहुत आनन्दित हुए। और फ़िरऊन ने यूसुफ़ से कहा कि
अपने भाइयों से कह कि यह करो अपने पशुन को लादो और
१८ कनआन देश में जा पहुंचो। और अपने पिता और अपने
घरानों को ले आओ और मुझ पास आओ और मैं तुम्हें मिस्र देश
की अच्छी बस्तें दूंगा और तुम इस देश का पदारथ खाओगे।
१९ सो अब तुझे यह आज्ञा है यह करो कि मिस्र देश से अपने
लड़के बालों और अपनी पत्नियों के लिये गाड़ियां ले जाओ और
२० अपने पिता को ले आओ। और अपनी सामग्री की कुछ चिंता
न करो क्योंकि मिस्र देश के सारे पदारथ तम्हारे हैं॥
२१ और इसराएल के संतानों ने वैसा ही किया और यूसुफ़ ने
फ़िरऊन के कहे के समान उन्हें गाड़ियां दिईं और मार्ग के
२२ लिये उन्हें भोजन दिया। और उस ने उन सब में से हर एक को
बस्त्र दिये परन्तु उस ने बिनयमीन को तीन सौ टुकड़े चांदी
२३ और पांच जोड़े बस्त्र दिये। और अपने पिता के लिये इस
रीति से भेजा दस गदहे मिस्र की अच्छी बस्तुन से लदे हुए

और दस गदहियां अनाज और रोटी और भोजन से लदी हुईं
२४ अपने पिता की याचा के लिये। सो उस ने अपने भाइयों को
बिदा किया और वे चल निकले तब उस ने उन्हें कहा कि
देखो मार्ग में कहीं आपुस में बिगड़ो मत॥
२५ और वे मिस्र से सिधारे और अपने पिता यअ़्क़ूब पास
२६ कनअ़ान देश में पहुंचे। और यह कहके उसे बोले कि यूसुफ़
तो अब लों जीता है और वुह सारे मिस्र देश का अध्यक्ष है
और उस का मन सनसना गया क्योंकि उस ने उन की प्रतीति न
२७ किई। और उन्हों ने यूसुफ़ की कही हुई सारी बातें उस्से
दुहराईं और जब उस ने गाड़ियां जो यूसुफ़ ने उसे ले जाने
के लिये भेजी थीं देखीं तो उन के पिता यअ़्क़ूब का नया
२८ जीवन हुआ। और इसराएल बोला यह बस है कि मेरा बेटा
यूसुफ़ अब लों जीता है मैं जाऊंगा और अपने मरने से आगे
उसे देखूंगा॥

छियालीसवां पर्व्व।

१ और इसराएल ने अपना सब कुछ लेके याचा किई और
बीअरसबअ़ में आके अपने पिता इज़हाक के ईश्वर के लिये
२ बलिदान चढ़ाया। और ईश्वर ने रात को स्वप्न में इसराएल से
बातें करके कहा कि हे यअ़्क़ूब यअ़्क़ूब और वुह बोला मैं
३ यहां हूं। तब उस ने कहा कि मैं सर्वशक्तिमान तेरे पिता का
ईश्वर हूं मिस्र में जाते हुए मत डर क्योंकि मैं तुझे वहां बड़ी
४ जाति बनाऊंगा। मैं तेरे साथ मिस्र को जाऊंगा और मैं तुझे
भी अवश्य फिर ले आऊंगा और यूसुफ़ तेरी आंखें मूंदेगा।
५ तब यअ़्क़ूब बीअरसबअ़ से उठा और इसराएल के बेटे अपने
पिता यअ़्क़ूब को और अपने लड़कों और अपनी स्त्रियों को
गाड़ियों पर जो फ़िरऊ़न ने उस के पहुंचाने को भेजी थीं ले

६ चले । और उन्हों ने अपना ढोर और अपनी सामग्री जो उन्हों
ने कनआन देश में पाई थी ले लिई और यअक़ूब अपने सारे
७ वंश समेत मिस्र में आया । वुह अपने बेटों और बेटों के बेटों
और बेटियों और अपने बेटों की बेटियों और अपने सारे वंश
को मिस्र में लाया ॥
८ और इसराएल के बेटों के नाम जो मिस्र में आये अर्थात्
९ यअक़ूब के बेटे ये हैं यअक़ूब का पहिलौंठा रूबिन । और
रूबिन के बेटे हनूक और फ़लू और हसरून और करमी ।
१० और समऊन के बेटे यमूएल और यमीन और ओहद और
११ यकान और सुहर और कनआनी स्त्री का बेटा साऊल । और
१२ लावी के बेटे जेरसुन क़िहात और मिरारी । और यहूदाह के
बेटे एर और ओनान और सेलः और फारस और ज़रह परन्तु
एर और ओनान कनआन देश में मर गये और फारस के बेटे
१३ हसरून और हमूल हुए । और इशकार के बेटे तोलअ और
१४ फ़वः और यूब और समरून । और ज़बूलून के बेटे सरद और
१५ अलून और यहहिएल । ये लियाह के बेटे हैं जिन्हें वुह
फद्दानअराम में यअक़ूब के लिये जनी उस के सारे बेटे बेटियां
१६ तेंतीस प्राणी उस की बेटी दीनः के संग थे । और जद के बेटे
सिफयून और हज्जी शूनी और इसबून एरी और अरूदी और
१७ अरेली । और यसर के बेटे यिमनः और इसवाह और इसवी
और बरीअः और उन की बहिन सिरह और बरीअः के बेटे
१८ हिब्र और मलकिएल । ये उस ज़िलफ़ः के बेटे हैं जिसे लाबन
ने अपनी बेटी लियाह को दिया था और इन्हें वुह यअक़ूब के
१९ लिये जनी अर्थात् सोलह प्राणी । और यअक़ूब की पत्नी राख़िल
२० से यूसुफ़ और बिनयमीन । और मिस्र देश में यूसुफ़ के लिये
मुनस्सी और इफरायम उत्पन्न हुए जिन्हें ऊन के अध्यक्ष
२१ फूतीफ़र की बेटी आसनाथ जनी । और बिनयमीन के बेटे

बालिग और बकर और असबील जेरा और नअमान अख़ी और
२२ रूस मुप्पिम और हुफ़्फ़ीम और अरद। इन्हें राख़िल यअक़ूब
२३ के लिये जनी सब चौदह प्राणी। और दान का बेटा होशीम।
२४ और नफ़ताली के बेटे यहलिएल और जूनी और यिस्र और
२५ सलीम। ये बिलहः के बेटे हैं जिसे लाबन ने अपनी बेटी
राख़िल को दिया सो ये सब सात प्राणी हैं जिन्हें वुह यअक़ूब
के लिये जनी॥
२६ सारे प्राणी जो यअक़ूब के साथ मिस्र में आये और उस की
कटि से उत्पन्न हुए उन से अधिक जो यअक़ूब के बेटों की
२७ स्त्रियां थीं छियासठ प्राणी थे। और यूसुफ़ के बेटे जो मिस्र
में उत्पन्न हुए दो थे सो सारे प्राणी जो यअक़ूब के घराने के
थे और मिस्र में आये सत्तर थे॥
२८ और उस ने यहूदाह को अपने आगे आगे जश्न लों अपनी
अगुआई करने को यूसुफ़ कने भेजा और वे जश्न की भूमि में
२९ आये। और यूसुफ़ ने अपना रथ सिद्ध किया और अपने पिता
इसराएल से भेंट करने के लिये जश्न को गया और उस पास
३० पहुंचा और उस के गले पर गिरके अबेर लों रोया किया। और
इसराएल ने यूसुफ़ से कहा कि अब मैं मरने को सिद्ध हूं कि
३१ मैं ने तेरा मुंह देखा क्योंकि तू अब भी जीता है। और यूसुफ़
ने अपने भाइयों और अपने पिता के घराने से कहा कि मैं
संदेश देने को फ़िरऊन पास जाता हूं और उसे कहता हूं कि
मेरे भाई और मेरे पिता का घराना जो कनआन देश में थे
३२ मेरे पास आये हैं। और वे मनुष्य गड़रिये हैं क्योंकि ढोर चराना
उन का उद्यम है और वे अपनी भुंड और ढोर और सब कुछ जो
३३ उन का है ले आये हैं। और यों होगा कि जब फ़िरऊन तुम्हें
३४ बुलाके तुम्हारा उद्यम पूछे। तो कहियो कि आप के दास
लड़काई से अब लों चरवाही करते रहे हैं क्या हम और क्या

हमारे बाप दादे जिसतें तुम लोग जश्न की भूमि में रहो क्योंकि
मिस्रियों को हर एक गड़रिये से घिन है ॥

सैंतालीसवां पर्ब्ब।

१ तब यूसुफ़ आया और फ़िरऊ़न से कहके बोला कि मेरा
पिता और मेरे भाई और उन की झुंड और उन के ढोर और
सब जो उन के हैं कनआ़न देश से निकल आये और देखिये
२ कि जश्न की भूमि में हैं। और उस ने अपने भाइयों में से
३ पांच जन लेके उन्हें फ़िरऊ़न के आगे किया। और फ़िरऊ़न ने
उस के भाइयों से कहा कि तुम्हारा उद्यम क्या तब उन्हों ने
फ़िरऊ़न को कहा कि आप के सेवक क्या हम और क्या हमारे
४ बाप दादे गड़रिये हैं। और उन्हों ने फ़िरऊ़न से कहा कि हम
इस देश में रहने को आये हैं क्योंकि कनआ़न देश में अकाल
के मारे आप के सेवकों की झुंड के लिये चराई नहीं है तो
अब अपने सेवकों को जश्न की भूमि में रहने दीजिये।
५ तब फ़िरऊ़न ने यूसुफ़ से कहा कि तेरा पिता और तेरे भाई
६ तुझ पास आये हैं। मिस्र देश तेरे आगे है अपने पिता और
अपने भाइयों को सब से अच्छी भूमि में बसा जश्न की भूमि
में रहें और जो तू उन में चालाक मनुष्य जानता है तो उन्हें
मेरे ढोरों पर प्रधान कर ॥

७ तब यूसुफ़ अपने पिता यआ़क़ूब को भीतर लाया और उसे
फ़िरऊ़न के आगे खड़ा किया और यआ़क़ूब ने फ़िरऊ़न को
८ आशीस दिया। और फ़िरऊ़न ने यआ़क़ूब से पूछा कि तेरे
९ जीवन के वय के बरसों के दिन कितने हैं। तब यआ़क़ूब ने
फ़िरऊ़न से कहा कि मेरी यात्रा के दिनों के बरस एक सौ तीस
हैं मेरे जीवन के बरसों के दिन थोड़े और बुरे हुए हैं और
मेरे पितरों के जीवन के बरसों के दिनों को जब वे यात्रा करते

१० थे नहीं पहुंचे। और यअक़ूब ने फ़िरऊन को आशीस दिया
और फ़िरऊन के आगे से बाहर गया॥
११ और यूसुफ़ ने अपने पिता और भाइयों को मिस्र देश में
सब से अच्छी भूमि में रामसीस की भूमि में जैसा फ़िरऊन ने
१२ कहा था रक्खा और अधिकारी किया। और यूसुफ़ ने अपने
पिता और अपने भाइयों और अपने पिता के सारे घराने का
उन के लड़के बालों के समान प्रतिपाल किया॥
१३ और सारे देश में रोटी न थी क्योंकि ऐसा बड़ा कठिन
अकाल था कि मिस्र देश और कनआन देश अकाल के मारे
१४ झोंस गया था। और यूसुफ़ ने सारे रोकड़ को जो मिस्र देश
और कनआन देश में था उस अन्न की संती जो लोगों ने मोल
लिया बटोरा और यूसुफ़ उस रोकड़ को फ़िरऊन के घर में
१५ लाया। और जब मिस्र देश और कनआन देश में रोकड़ हो
चुका तो सारे मिस्रियों ने आके यूसुफ़ से कहा कि हमें रोटी
दीजिये कि आप के होते हुए हम क्यों मरें क्योंकि रोकड़ हो
१६ चुका है। तब यूसुफ़ ने कहा कि जो रोकड़ न होय तो अपने
१७ ढोर देओ और मैं तुम्हारे ढोर की संती दूंगा। तब वे अपने
ढोर यूसुफ़ के पास लाये और यूसुफ़ ने उन्हें घोड़ों और झुंडों
और ढोरों के चौपाये और गदहों की संती रोटी दिई और
उस ने उन के ढोर की संती उन्हें उस बरस पाला॥
१८ और जब वुह बरस बीत गया तब वे दूसरे बरस उस पास
आये और उसे कहा कि हम अपने प्रभु से नहीं छिपावेंगे कि
हमारा रोकड़ उठ गया हमारे प्रभु ने हमारे ढोरों की झुंड भी
लिई सो हमारे प्रभु की दृष्टि में हमारी देह और भूमि से अधिक
१९ कुछ न बचा। हम अपनी भूमि समेत आप की आंखों के
आगे क्यों नष्ट होवें हमें और हमारी भूमि को रोटी पर मोल
लीजिये और हम अपनी भूमि समेत फ़िरऊन के दास होंगे

ओर अन्न दीजिये जिसतें हम जीवें और न मरें और देश
२० उजड़ न जाय । और यूसुफ़ ने मिस्र की सारी भूमि फ़िरऊन
के लिये मोल लिई क्योंकि मिस्रियों में से हर एक ने अपना
अपना खेत बेचा क्योंकि अकाल ने उन्हें निपट सकेत किया
२१ था सो वुह भूमि फ़िरऊन की हो गई । और रहे लोग सो उस
ने उन्हें नगरों में मिस्र के एक सिवाने से दूसरे सिवाने लों भेजा।
२२ उस ने केवल याजकों की भूमि मोल न लिई क्योंकि याजकों
ने फ़िरऊन से एक भाग पाया था और फ़िरऊन के दिये हुए
भाग से खाते थे इस लिये उन्हों ने अपनी भूमि को न बेचा ।
२३ तब यूसुफ़ ने लोगों से कहा कि देखो मैं ने आज के दिन
तुम्हें और तुम्हारी भूमि को फ़िरऊन के लिये मोल लिया है
२४ यह बीज तुम्हारे लिये है खेत में बोओ । और उस की
बढ़ती में ऐसा होगा कि तुम पांचवां भाग फ़िरऊन को देना
और चार भाग खेत के बीज के लिये और तुम्हारे और तुम्हारे
२५ घराने के और तुम्हारे बालकों के भोजन के लिये होंगे । तब
वे बोले कि आप ने हमारे प्राण बचाये हैं हम अपने प्रभु की
२६ दृष्टि में अनुग्रह पावें और हम फ़िरऊन के दास होंगे । और
यूसुफ़ ने मिस्र देश के लिये आज लों यह व्यवस्था बांधी कि
फ़िरऊन पांचवां भाग पावे परन्तु केवल याजकों की भूमि
फ़िरऊन की न हुई ॥

२७ और इसराएल ने मिस्र की भूमि में जश्न के देश में निवास
किया और वे वहां अधिकारी थे और वे बढ़े और बहुत अधिक
२८ हुए । और यअ़क़ूब मिस्र देश में सत्रह बरस जीया सो यअ़क़ूब
२९ के जीवन के बरसों के दिन एक सो सैंतालीस हुए । और
इसराएल के मरने का समय आ पहुंचा तब उस ने अपने बेटे
यूसुफ़ को बुलाके कहा कि अब जो मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह
पाया है अपना हाथ मेरी जांघ तले रखिये और दया और सच्चाई

३० से मेरे संग व्यवहार कर मुझे मिस्र में मत गाड़ियो। परन्तु
मैं अपने पितरों में पड़ रहूंगा और तू मुझे मिस्र से बाहर ले
जाइयो और उन के समाधि स्थान में गाड़ियो तब वुह बोला
३१ कि आप के कहने के समान मैं करूंगा। और उस ने कहा
कि मेरे आगे किरिया खा और उस ने उस के आगे किरिया
खाई और इसराएल खाट के सिरहाने पर झुक गया॥

अठतालीसवां पर्व्व।

१ और इन बातों के पीछे यों हुआ कि किसी ने यूसुफ़ से
कहा कि देखिये आप का पिता रोगी है तब उस ने अपने दो
२ बेटे मुनस्सी और इफ़रायम को अपने साथ लिया। और यअ़क़ूब
को संदेश दिया गया कि देख तेरा बेटा यूसुफ़ तुझ पास आता
३ है और इसराएल खाट पर संभल बैठा। और यअ़क़ूब ने
यूसुफ़ से कहा कि सर्वशक्तिमान सर्वसामर्थी ने कनआन देश
४ के लौज़ में मुझे दर्शन दिया और मुझे आशीष दिया। और
मुझे कहा कि देख मैं तुझे फलमान करूंगा और बढ़ाऊंगा और
तुझ से बहुत सी जाति उत्पन्न करूंगा और तेरे पीछे इस देश
५ को तेरे बंश के लिये सर्वदा का अधिकार करूंगा। और अब
तेरे दो बेटे इफ़रायम और मुनस्सी जो मिस्र में मेरे आने से
आगे तुझ से मिस्र देश में उत्पन्न हुए हैं मेरे हैं रूबिन और
६ समऊन की नाईं वे मेरे होंगे। और तेरा बंश जो उन के
पीछे उत्पन्न होगा तेरा होगा और अपने अधिकार में वे अपने
७ भाइयों के नाम पावेंगे। और मैं जो हूं सो जब फ़द्दान से
आया और इफ़रातः थोड़ी दूर रह गया था तब कनआन देश
के मार्ग में राख़िल मेरे पास मर गई और मैं ने इफ़रातः के
मार्ग में उसे वहीं गाड़ा वही बैतलहम है॥
८ तब इसराएल ने यूसुफ़ के बेटों को देखके कहा ये कौन

९ हैं। और यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा कि ये मेरे बेटे हैं
जिन्हें ईश्वर ने मुझे यहां दिया है और वुह बोला उन्हें मुझ
१० पास लाइये और मैं उन्हें आशीष दूंगा। अब इसराएल की आंखें
बुढ़ापे के मारे धुंधली हुई थीं कि वुह न देख सका और वुह
उन्हें उस के पास लाया और उस ने उन्हें चूमा और उन्हें गले
११ लगाया। और इसराएल ने यूसुफ़ से कहा कि मुझे तो तेरे
मुंह देखने की आशा न थी और देख ईश्वर ने तेरा बंश भी
१२ मुझे दिखाया। और यूसुफ़ ने उन्हें अपने घुठनों में से निकाला
१३ और अपने को भूमि पर झुकाया। और यूसुफ़ ने उन दोनों
को लिया इफ़रायम को अपने दहिने हाथ में इसराएल के बायें
हाथ की ओर और मुनस्सी को अपने बायें हाथ में इसराएल
१४ के दहिने हाथ की ओर और उस के पास लाया। तब इसराएल
ने अपना दहिना हाथ लंबा किया और इफ़रायम के सिर पर
जो छुटका था रक्खा और अपना बायां हाथ मुनस्सी के सिर
पर जान बूझके अपने हाथ को यों रक्खा क्योंकि मुनस्सी
पहिलौंठा था॥

१५ और उस ने यूसुफ़ को बर दिया और कहा कि वुह ईश्वर
जिस के आगे मेरे पिता अबिरहाम और इज़हाक़ चलते थे वुह
१६ ईश्वर जिस ने जीवन भर आज लों मेरी रखवाली किई। वुह दूत
जिस ने मुझे सारी बुराई से बचाया इन लड़कों को आशीष देवे
और मेरा नाम और मेरे पिता अबिरहाम और इज़हाक़ का नाम
उन पर होवे और उन्हें पृथिवी पर मछलियों की नाईं बढ़ावे।
१७ और जब यूसुफ़ ने अपने पिता को अपना दहिना हाथ इफ़रायम
के सिर पर रखते देखा तो उसे बुरा लगा और उस ने अपने
पिता का हाथ उठा लिया जिसतें उसे इफ़रायम के सिर पर से
१८ मुनस्सी के सिर पर रखे। और यूसुफ़ ने अपने पिता से कहा
कि हे मेरे पिता ऐसा नहीं क्योंकि यह पहिलौंठा है अपना

१९ दहिना हाथ उस के सिर पर रखिये । पर उस के पिता ने न
माना और कहा कि मैं जानता हूं हे मेरे बेटे मैं जानता हूं
वुह भी एक जातिगण बन जायगा और वुह भी बड़ा होगा
परन्तु निश्चय उस का छुटका भाई उस्से भी बड़ा होगा और
२० उस के बंश भरपूर जातिगण बन जायेंगे । और उस ने उन्हें
उस दिन यह कहके आशीष दिया कि इसराएल तेरा नाम लेके
यह आशीष देंगे कि ईश्वर तुझे इफ़रायम और मुनस्सी की नाईं
बनावे सो उस ने इफ़रायम को मुनस्सी से आगे किया ॥
२१ और इसराएल ने यूसुफ़ को कहा कि देख मैं मरता हूं
परन्तु ईश्वर तुम्हारे साथ होगा और तुम्हें तुम्हारे पितरों के
२२ देश में फिर ले जायगा । और मैं ने तुझे तेरे भाइयों से एक
भाग जो मैं ने अमूरियों के हाथ से अपनी तलवार और अपनी
धनुष से निकाल दिया है ॥

उंचासवां पर्ब्ब ।

१ और यअ़क़ूब ने अपने बेटों को बुलाया और कहा कि एकट्ठे
होओ जिसतें जो तुम पर पिछले दिनों में बीतेगा मैं तुम से
कहूं ॥

२ हे यअ़क़ूब के बेटो बटुर जाओ और सुनो और अपने पिता
इसराएल की ओर कान धरो ॥

३ हे रूबिन तू मेरा पहिलौंठा मेरा बूता और मेरे सामर्थ्य
का आरंभ महिमा की उत्तमता और पराक्रम की उत्तमता ।
४ जल की नाईं अस्थिर तू श्रेष्ठ न होगा इस कारण कि तू अपने
पिता की खाट पर चढ़ा तब मेरे बिछौने पर चढ़के उसे अशुद्ध
किया ॥

५ समऊ़न और लावी भाई हैं अंधेर के हथियार उन की
६ तलवारें हैं। हे मेरे प्राण तू उन के भेद में मत जा मेरी प्रतिष्ठा

तू उन की सभा में मत मिल क्योंकि उन्हों ने अपने क्रोध से
एक मनुष्य को घात किया और अपनी ही इच्छा से बैल की
७ खूंच मारी। धिक्कार उन की रिस पर क्योंकि वुह प्रचंड था और
उन के कोप पर क्योंकि वुह क्रूर था मैं उन्हें यअ़कूब में अलग
करूंगा और इसराएल में उन्हें छिन्न भिन्न करूंगा॥
८ यहूदाह तेरे भाई तेरी स्तुति करेंगे तेरा हाथ तेरे बैरियों
की गरदन पर होगा तेरे पिता के बंश तेरे आगे दंडवत करेंगे।
९ यहूदाह सिंह का बच्चा मेरे बेटे तू अहेर पर से उठ चला वुह
सिंह की हां बड़े सिंह की नाईं झुका और बैठा उसे कौन
१० छेड़ेगा। यहूदाह से राजदंड अलग न होगा और न व्यवस्थादायक
उस के चर्णों के मध्य में से जब लों सैला न आवे और जातिगण
११ उस के आधीन होंगे। उस ने अपना गदहा दाख से और अपनी
गदही का बच्चा चुने हुए दाख से बांधके अपने कपड़े दाखरस
१२ में और अपना पहिरावा दाख के लोहू में धोया। उस की
आंखें दाखरस से लाल और उस के दांत दूध से श्वेत होंगे॥
१३ ज़बूलून समुद्र के घाट पर निवास करेगा और जहाज़ों के
लिये घाट होगा और उस का सिवाना सैदा लों॥
१४ इशकार बली गदहा है जो दो बोझ तले झुका है।
१५ और उस ने बिश्राम को देखा कि अच्छा है और भूमि को कि
सुदृश्य है और उस ने अपना कांधा बोझ उठाने को झुकाया
और कर देने का दास हुआ॥
१६ दान इसराएल की गोष्ठियों में के एक की नाईं अपने लोगों
१७ का न्याय करेगा। दान मार्ग का सर्प और पथ का नाग होगा
जो घोड़े की नलियों को ऐसा डसेगा कि उस का चढ़वैया
पिछाड़ी गिर पड़ेगा॥
१८ हे परमेश्वर मैं ने तेरी मुक्ति की बाट जोही है॥
१९ एक सेना जद को जीतेगी परन्तु वुह अंत को आप जीतेगा॥

२० यसर की रोटी चिकनी होगी और वुह राज्य पदारथ
देगा ॥
२१ नफ़ताली एक छोड़ा हुआ हरिन है जो सुबचन कहता है॥
२२ यूसुफ़ एक फलमय डाल है वुह फलदायक डाल जो सोते
२३ के लग है जिस की डालियां भीत पर फैलती हैं। और
धनुषधारियों ने उसे निपट सताया और मारा और उस्से डाह
२४ रक्खा। और उस का धनुष बल में दृढ़ रहा और उस के
हाथों की भुजाओं ने यअ़क़ूब के सर्बशक्तिमान के हाथों से बल
२५ पाया वहां से गड़रिया इसराएल की चटान है। तेरे पिता का
सर्बशक्तिमान तेरी सहाय करेगा और सर्बसामर्थी जो तुझे ऊपर
से स्वर्गीय आशीष और नीचे गहिराव के आशीष और स्तनों
२६ का और कोख का आशीष देगा। तेरे पिता के आशीष मेरे
माता पिता के आशीषों से इतने अधिक हैं कि सनातन पर्बतों
के अंत लों बढ़ गये ये यूसुफ़ के सिर पर और उस के सिर
के मुकुट पर होंगे जो अपने भाइयों से अलग था॥
२७ बिनयमीन फड़वैया हुंडार होगा बिहान को अहेर भक्षेगा
और सांझ को लूट बांटेगा॥
२८ ये सब इसराएल की बारह गोष्ठी हैं और उन के पिता ने
उन्हें यह कहके आशीष दिया और अपने आशीष के समान
२९ हर एक को बर दिया। फिर उस ने उन्हें आज्ञा किई और
कहा कि मैं अपने लोगों में एकट्ठे होने पर हूं मुझे अपने पितरों
में उस कंदला में जो हित्ती इफ़रून के खेत में है गाड़ियो।
३० उस कंदला में जो मकफ़ील: के खेत में ममरी के आगे कनआ़न
देश में है जिसे अबिरहाम ने समाधि स्थान के अधिकार के
३१ लिये खेत समेत इफ़रून हित्ती से मोल लिया था। वहां उन्हों
ने अबिरहाम को और उस की पत्नी सर: को गाड़ा वहां उन्हों
ने इज़हाक़ को और उस की पत्नी रिबक़: को गाड़ा और वहां

३२ में ने लियाह को गाड़ा । उन्हों ने वुह खेत उस कंदला समेत
जो उस में था हित्त के बेटों से मोल लिया ॥
३३ और जब यअ़कूब अपने बेटों को आज्ञा कर चुका तो उस
ने बिछौने पर अपने पांव को समेट लिया और प्राण त्यागा
और अपने लोगों में जा मिला ॥

पचासवां पर्ब्ब ।

१ तब यूसुफ़ अपने पिता के मुंह पर गिर पड़ा और उस पर
२ रोया और उसे चूमा । तब यूसुफ़ ने अपने पिता में सुगंध
भरने के लिये अपने वैद्य सेवकों को आज्ञा किई और वैद्यों ने
३ इसराएल में सुगंध भरा । और उस के लिये चालीस दिन बीत
गये क्योंकि जिस में सुगंध भरा जाता है उतने दिन बीत्ते हैं
और मिस्रियों ने उस के लिये सत्तर दिन लों बिलाप किया ।
४ और जब रोने के दिन उस के लिये बीत गये तो यूसुफ़ ने
फ़िरऊ़न के घराने से कहा कि जो मैं ने तुम्हारी दृष्टि में अनुग्रह
५ पाया है तो फ़िरऊ़न के कानों में कह दीजिये । कि मेरे पिता ने
मुझ से किरिया लिई कि देख मैं मरता हूं तू मुझे मेरी समाधि
में जो मैं ने कनआ़न देश में अपने लिये खोदी है गाड़ियो सो
मेरे पिता के गाड़ने को मुझे छुट्टी दीजिये और मैं फिर आऊंगा।
६ और फ़िरऊ़न ने कहा कि जा और तुझ से किरिया लेने के
समान अपने पिता को गाड़ ॥
७ सो यूसुफ़ अपने पिता को गाड़ने गया और फ़िरऊ़न के सारे
सेवक और उस के घर के प्राचीन और मिस्र देश के सारे प्राचीन
८ उस के संग गये । और यूसुफ़ का सारा घराना और उस के
भाई और उस के पिता का घराना सब उस के संग गये उन्हों
ने केवल अपने बालक और झुंड और ढोर जश्न की भूमि में
९ छोड़ दिये । और रथ और घोड़चढ़े उस के साथ गये और

१० वुह एक अति बड़ी सेना थी। और वे अतद के खलिहान
पर जो यरदन पार है आये और वहां उन्हों ने अति बड़े
बिलाप से बिलाप किया और उस ने अपने पिता के लिये सात
११ दिन लों शोक किया। जब उस देश के बासी कनआनियों ने अतद
के खलिहान का बिलाप देखा तो बोले कि यह मिस्रियों के
लिये बड़ा बिलाप है इस लिये उस का नाम मिस्रियों का बिलाप
१२ कहलाया और वुह यरदन के पार है। और उस की आज्ञा के
१३ समान उस के बेटों ने उस्से किया। क्योंकि उस के बेटे उसे
कनआन देश में ले गये और उसे उस मकफील: के खेत की
कंदला में जिसे अबिरहाम ने समाधि स्थान के अधिकार के
लिये इफ़रून हित्ती से ममरी के साम्ने मोल लिया था गाड़ा।
१४ और यूसुफ़ आप और उस के भाई और सब जो उस के साथ
उस के पिता को गाड़ने गये थे उस के पिता को गाड़के मिस्र
को फिरे॥

१५ और जब यूसुफ़ के भाइयों ने देखा कि हमारा पिता मर
गया तो उन्हों ने कहा क्या जाने यूसुफ़ हम से बैर करेगा और
उस सारी बुराई का जो हम ने उस्से किई है निश्चय पलटा लेगा।
१६ तब उन्हों ने यूसुफ़ को यों कहला भेजा आप के पिता ने मरने
१७ से पहिले आज्ञा किई। कि यूसुफ़ से कहियो कि अपने भाइयों के
पाप और उन के अपराध क्षमा कीजिये क्योंकि उन्हों ने तुझ से
बुराई किई सो अब अपने पिता के ईश्वर के दासों के पाप क्षमा
१८ कीजिये और जब उन्हों ने यह कहा तो यूसुफ़ रोया। और उस
के भाई भी गये और उस के आगे गिर पड़े और उन्हों ने कहा
१९ कि देखिये हम आप के सेवक हैं। तब यूसुफ़ ने उन्हें कहा
२० कि मत डरो कि क्या मैं ईश्वर की संती हूं। पर तुम जो हो
तुम ने मुझ से बुराई करने की इच्छा किई परन्तु ईश्वर ने उसे
भलाई कर दिई कि बहुत से लोगों का प्राण बचावे जैसा कि

२१ आज है । तो अब मत डरो मैं तुम्हारा और तुम्हारे बालकों
का प्रतिपाल करूंगा और उस ने उन्हें धीरज दिया और उन से
शान्ति की बातें कहीं ॥

२२ और यूसुफ़ और उस के पिता के घराने ने मिस्र में निवास
२३ किया और यूसुफ़ एक सौ दस बरस जीया । और यूसुफ़ ने
इफ़रायम की तीसरी पीढ़ी देखी और मुनस्सी के बेटे मकीर के
भी लड़के यूसुफ़ के घुठनों पर जनाये गये ॥

२४ और यूसुफ़ ने अपने भाइयों से कहा कि मैं मरता हूं और
ईश्वर तुम से निश्चय भेंट करेगा और तुम्हें इस देश से बाहर
उस देश में जिस के बिषय में उस ने अबिरहाम इज़हाक
२५ और यअ़कूब से किरिया खाई थी ले जायगा । और यूसुफ़ ने
इसराएल के संतानों से यह किरिया लेके कहा कि ईश्वर निश्चय
तुम से भेंट करेगा और तुम मेरी हड्डियों को यहां से ले जाइयो ।
२६ सो यूसुफ़ एक सौ दस बरस का होके मर गया और उन्हों ने
उस में सुगंध भरा और उसे मिस्र में मंजूषा में रक्खा ॥

यात्रा की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ अब इसराएल के संतानों के नाम ये हैं हर एक जो अपने
२ घराने को लेके यअ़क़ूब के साथ मिस्र में आया। रूबिन समऊ़न
३ । ४ लावी और यहूदाह। इशकार ज़बूलून और बिनयमीन। दान
५ और नफ़ताली जद और यसर। और समस्त प्राणी जो यअ़क़ूब की
जांघ से उत्पन्न हुए सत्तर प्राणी थे और यूसुफ़ तो मिस्र में
६ था। और यूसुफ़ और उस के सारे भाई और वुह समस्त पीढ़ी
७ मर गई। परन्तु इसराएल के संतान फलमान हुए और बहुताई
से अधिक हुए और बढ़ गये और अत्यंत सामर्थी हुए और
देश उन से भर गया॥
८ तब मिस्र में एक नया राजा उठा जो यूसुफ़ को न जानता
९ था। और उस ने अपने लोगों से कहा कि देखो इसराएल के
१० संतानों के लोग हम से अधिक और बलवंत हैं। आओ हम
उन से चतुराई से व्यवहार करें न हो कि वे बढ़ जायें और
ऐसा होय कि जब युद्ध पड़े तो वे हमारे बैरियों से मिल जावें
११ और हम से लड़ें और देश से निकल जायें। इस लिये
उन्हों ने उन पर करोड़ों को बैठाया कि उन्हें अपने बोझों से
सतावें और उन्हों ने फ़िरऊ़न के लिये भंडार नगरों को अर्थात्
१२ पितोम और रामसीस को बनाया। परन्तु ज्यों ज्यों वे उन्हें

दुःख देते थे त्यों त्यों वे बढ़ते गये और बहुत हुए और वे
१३ इसराएल के संतान के कारण से दुखी थे। और इसराएल के
१४ संतानों से मिस्रियों ने क्लेश से सेवा कराई। और उन्हों ने
कठिन सेवा से गारा और ईंट का कार्य्य और खेत की भांति
भांति की सेवा कराके उन के जीवन को कड़ुआ कर डाला उन
की सारी सेवा जो वे कराते थे क्लेश के साथ थी॥
१५ तब मिस्र के राजा ने इबरानी जनाई दाइयों को जिन में
एक का नाम सिफ़रः और दूसरी का नाम फूअः था यों कहा।
१६ कि जब इबरानी स्त्री तुम से जनाई दाई का कार्य्य करावें
और तुम उन्हें पत्थरों पर देखो यद्यपि पुत्र होय तो उसे मार
१७ डालो और यदि पुत्री होय तो जीने दो। परन्तु जनाई दाई
ईश्वर से डरती थीं और जैसा कि मिस्र के राजा ने उन्हें आज्ञा
१८ किई थी वैसा न किया परन्तु पुत्रों को जीता छोड़ा। फिर
मिस्र के राजा ने जनाई दाइयों को बुलवाया और उन्हें कहा
कि तुम ने ऐसा क्यों किया और पुत्रों को क्यों जीता छोड़ा।
१९ तब जनाई दाइयों ने फ़िरऊन से कहा इस कारण कि इबरानी
स्त्री मिस्र की स्त्रियों के समान नहीं क्योंकि वे फुरतीली हैं
और उस्से पहिले कि जनाई दाई उन पास पहुंचे वे जन
२० बैठती हैं। इस लिये ईश्वर ने जनाई दाइयों से सुव्यवहार
२१ किया और लोग बढ़ गये और अत्यंत बलवंत हुए। और इस
कारण कि जनाई दाई ईश्वर से डरती थीं यों हुआ कि उस ने
२२ उन को बसाया। और फ़िरऊन ने अपने समस्त लोगों को
आज्ञा किई कि हर एक पुत्र जो उत्पन्न होय तुम उसे नील
नदी में डाल देओ और हर एक पुत्री को जीती छोड़ो॥

दूसरा पर्व्व।

१ और लावी के घराने के एक मनुष्य ने जाकर लावी की एक

२ पुत्री ग्रहण किई। और वुह स्त्री गर्भिणी हुई और बेटा जनी
और उस ने उसे सुन्दर देखके तीन मास लों छिपा रक्खा।
३ और जब आगे को उसे छिपा न सकी तो उस ने सरकंडों का
एक टोकरा बनाया और उस पर लासा और राल लगाया और
उस बालक को उस में रक्खा और उस ने उसे नील नदी के
४ तीर पर झाऊ में रख दिया। और उस की बहिन दूर से खड़ी
देखती थी कि उस का क्या होगा॥
५ तब फ़िरऊन की पुत्री स्नान करने को नदी पर उतरी और
उस की सहेलियां नदी के तीर पर फिरती थीं और उस ने झाऊ
के मध्य में टोकरा देखकर अपनी सहेली को भेजा और उसे ले
६ लिया। जब उस ने उसे खोला तो बालक को देखा और देखो
कि बालक रोता है और वुह उस पर दया करके बोली कि यह
७ किसी इबरानियों के बालकों में से है। तब उस की बहिन ने
फ़िरऊन की पुत्री को कहा क्या मैं जाके इबरानी स्त्रियों में से
एक दाई तुझ पास ले आऊं जिसतें वुह तेरे लिये इस बालक
८ को दूध पिलावे। और फ़िरऊन की पुत्री ने उसे कहा कि जा
९ तब वुह कन्या गई और बालक की माता को बुलाया। और
फ़िरऊन की पुत्री ने उसे कहा कि इस बालक को ले जा और मेरे
लिये उसे दूध पिला और मैं तुझे महिनवारी दूंगी और उस स्त्री
१० ने उस लड़के को लिया और उसे दूध पिलाया। और जब बालक
बढ़ा तब वुह उसे फ़िरऊन की पुत्री पास लाई और वुह उस का
पुत्र हुआ तब उस ने उस का नाम मूसा रक्खा और कहा कि मैं
ने उसे पानी से निकाला॥
११ और उन दिनों में यों हुआ कि जब मूसा सयाना हुआ
तब वुह अपने भाइयों पास बाहर गया और उन के बोझों को
देखा और अपने भाइयों में से एक इबरानी को देखा कि मिस्री
१२ उसे मार रहा है। तब उस ने इधर उधर दृष्टि किई और

देखा कि कोई नहीं तब उस ने उस मिस्री को मार डाला और
१३ बालू में उसे छिपा दिया । जब वुह दूसरे दिन बाहर गया तो
देखा कि दो इबरानी आपुस में झगड़ रहे हैं तब उस ने उस
१४ अंधेरी को कहा कि तू अपने परोसी को क्यों मारता है । तब
उस ने कहा कि किस ने तुझे हम पर अध्यक्ष अथवा न्यायी
ठहराया क्या तू चाहता है कि जिस रीति से तू ने मिस्री को
मार डाला मुझे भी मार डाले तब मूसा डरा और कहा कि
१५ निश्चय यह बात खुल गई । जब फ़िरऊन ने यह बात सुनी
तो चाहा कि मूसा को मार डाले ।

परन्तु मूसा फ़िरऊन के आगे से भाग निकला और मदियान
१६ के देश में जा रहा और एक कुए के निकट बैठ गया । और
मदियान के याजक की सात पुत्री थीं और वे आईं और खींचने
लगीं और कठरों को भरा कि अपने बाप के झुंड को पानी
१७ पिलावें । तब गड़रियों ने आके उन्हें हांक दिया परन्तु मूसा
ने खड़े होके उन की सहाय किई और उन की झुंड को पिलाया।
१८ और जब वे अपने पिता रऊएल पास आईं तब उस ने कहा
१९ कि आज तुम क्योंकर सवेरे फिरीं । और वे बोलीं कि एक
मिस्री ने हमें गड़रियों के हाथ से बचाया और हमारे लिये जितना
२० प्रयोजन था पानी भरा और झुंड को पिलाया। तब उस ने
अपनी पुत्रियों से कहा कि वुह कहां है उस मनुष्य को क्यों
२१ छोड़ा उसे बुलाओ कि रोटी खावे । तब मूसा उस जन के
घर में रहने पर प्रसन्न हुआ और उस ने अपनी बेटी सफ़ूरः
२२ मूसा को दिई । और वुह पुत्र जनी और उस ने उस का नाम
गैरसुम रक्खा क्योंकि उस ने कहा कि मैं परदेश में परदेशी
हूं ॥

२३ और कितने दिन के पीछे मिस्र का राजा मर गया और इसराएल
के वंश सेवा के कारण आह भरने लगे और रोये और उन का

रोना जो उस सेवा के कारण से था ईश्वर लों पहुंचा।
२४ और ईश्वर ने उन का कहरना सुना और ईश्वर ने अपनी बाचा
को जो अबिरहाम इज़हाक और यअ़क़ूब के साथ किई थी
२५ स्मरण किया। और ईश्वर ने इसराएल के संतान पर दृष्टि किई
और ईश्वर ने बूझा॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ और मूसा अपने ससुर यितरू की जो मदियान का याजक था
झुंड को चराता था तब वुह झुंड को बन की पछी ओर ले
२ गया और ईश्वर के पहाड़ होरेब के पास आया। तब परमेश्वर
का दूत झाड़ी के मध्य में से आग की लौर में उस पर प्रगट
हुआ और उस ने दृष्टि किई और देखा कि झाड़ी आग से जलती
३ है और झाड़ी भस्म नहीं होती। तब मूसा ने कहा कि मैं
अब एक अलंग फिरूंगा और यह महा दर्शन देखूंगा कि वुह
४ झाड़ी क्यों नहीं जल जाती। जब परमेश्वर ने देखा कि वुह
देखने को एक अलंग फिरा तो ईश्वर ने उसे झाड़ी के मध्य में से
उसे पुकारके कहा कि हे मूसा हे मूसा तब वुह बोला मैं यहां हूं।
५ तब उस ने कहा कि इधर पास मत आ अपने पाओं से जूता
उतार क्योंकि यह स्थान जिस पर तू खड़ा है पवित्र भूमि है।
६ और उस ने कहा कि मैं तेरे पिता का ईश्वर अबिरहाम का
ईश्वर इज़हाक का ईश्वर और यअ़क़ूब का ईश्वर हूं तब मूसा ने
अपना मुंह छिपाया क्योंकि वुह ईश्वर पर दृष्टि करने से डरा॥
७ और परमेश्वर ने कहा कि मैं ने अपने लोगों के कष्ट को जो
मिस्र में हैं निश्चय देखा और उन का चिल्लाना जो उन के करोड़ों
के कारण से है सुना क्योंकि मैं उन के दुखों को जानता हूं।
८ और मैं उतरा हूं कि उन्हें मिस्रियों के हाथ से छुड़ाऊं और
उस भूमि से निकालके अच्छी बड़ी भूमि में जहां दूध और

मधु बहता है कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों और
९ फ़रज़ियों और हवियों और यबूसियों के स्थान में लाऊं। और
अब देख इसराएल के संतान का चिल्लाना मुझ लों आया और
में ने उस अंधेर को भी जो मिस्री उन पर करते हैं देखा है।
१० सो अब तू आ और में तुझे फ़िरऊन पास भेजूंगा और तू मेरे
लोग इसराएल के संतान को मिस्र से निकाल ला॥
११ तब मूसा ने ईश्वर से कहा कि में कौन हूं कि फ़िरऊन पास
१२ जाऊं और इसराएल के संतानों को मिस्र से निकालूं। और
वुह बोला कि में तेरे संग हूंगा और यह तेरे लिये चिन्ह होगा
कि में ने तुझे भेजा है जब तू उन लोगों को मिस्र से निकाले
तो तुम इस पहाड़ पर ईश्वर की सेवा करोगे॥
१३ तब मूसा ने ईश्वर से कहा कि देख जब में इसराएल के
संतान पास पहुंचूं और उन्हें कहूं कि तुम्हारे पितरों के ईश्वर
ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और वे मुझे कहें कि उस का
क्या नाम है तो में उन्हें क्या बताऊं॥
१४ तब ईश्वर ने मूसा को कहा कि में हूं जो हूं और उस ने
कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कहियो कि वुह जो है
१५ उस ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। और ईश्वर ने मूसा से फिर
कहा कि तू इसराएल के संतान से यों कहियो कि परमेश्वर
तुम्हारे पितरों के ईश्वर अबिरहाम के ईश्वर इज़हाक के ईश्वर
और यअक़ूब के ईश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है सनातन लों
मेरा यही नाम है और समस्त पीढ़ियों में यही मेरा स्मरण
१६ है। जा और इसराएलियों के प्राचीनों को एकट्ठा कर और उन्हें
कह कि परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर अबिरहाम इज़हाक
और यअक़ूब का ईश्वर यों कहता हुआ मुझे दिखाई दिया कि
में ने निश्चय तुम्हारी सुधि लिई और जो कुछ तुम पर मिस्र
१७ में हुआ सो देखा। और में ने कहा है कि में तुम्हें मिस्रियों

के दुखों से निकालके कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों और
फ़रज़ियों और हवियों और यबूसियों के देश में जहां दूध और
१८ मधु बहता है लाऊंगा। और वे तेरा शब्द मानेंगे और तू
और इसराएलियों के प्राचीन मिस्र के राजा पास आओगे और
उसे कहोगे कि परमेश्वर इबरानियों के ईश्वर ने हम से भेंट
किई और अब हम तेरी बिनती करते हैं कि हमें बन में तीन
दिन के मार्ग जाने दे जिसतें हम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये
१९ बलिदान करें। और मैं जानता हूं कि मिस्र का राजा तुम्हें
२० जाने न देगा हां बड़े बल से नहीं। और मैं अपना हाथ
बढ़ाऊंगा और अपने समस्त आश्चर्य्यों से जो मैं उन के बीच
दिखाऊंगा मिस्रियों को मारूंगा तब उस के पीछे वुह तुम्हें जाने
२१ देगा। और मैं इन लोगों को मिस्रियों की दृष्टि में अनुग्रह दूंगा
और यों होगा कि जब तुम जाओगे तो छूछे न जाओगे।
२२ परन्तु हर एक स्त्री अपनी परोसिन से और उससे जो उस के
घर में रहती है रूपे के गहने और सोने के गहने और बस्त्र
मांग लेगी और तुम अपने पुत्रों और अपनी पुत्रियों को
पहिनाओगे और मिस्रियों को लूटोगे॥

चौथा पर्ब्ब।

१ तब मूसा ने उत्तर दिया और कहा कि देख वे मेरी प्रतीति
न करेंगे और मेरा शब्द न मानेंगे क्योंकि वे कहेंगे कि परमेश्वर
तुझ पर प्रगट न हुआ॥

२ तब परमेश्वर ने उसे कहा कि तेरे हाथ में यह क्या है और
३ वुह बोला कि छड़ी। तब उस ने कहा कि उसे भूमि पर
डाल दे और उस ने उसे भूमि पर डाल दिया और वुह सर्प्प बन
४ गई और मूसा उस के आगे से भागा। तब परमेश्वर ने मूसा
से कहा कि अपना हाथ बढ़ा और उस की पूंछ पकड़ ले तब

उस ने अपना हाथ बढ़ाया और उसे पकड़ लिया और वुह उस
५ के हाथ में छड़ी हो गई । जिसतें वे बिश्वास करें कि परमेश्वर
उन के पितरों का ईश्वर अबिरहाम का ईश्वर इज़हाक़ का ईश्वर
और यअ़क़ूब का ईश्वर तुझ पर प्रगट हुआ ॥
६ तब परमेश्वर ने उसे कहा कि फिर तू अपना हाथ अपनी गोद
में कर और उस ने अपना हाथ अपनी गोद में किया और जब
उस ने उसे निकाला तो देखो कि उस का हाथ हिम के समान
७ कोढ़ी था । और उस ने कहा कि अपना हाथ फिर अपनी
गोद में कर उस ने फिर अपने हाथ को अपनी गोद में किया
और अपनी गोद से उसे निकाला तो देखा कि जैसी उस की
८ सारी देह थी वुह वैसा फिर हो गया । और ऐसा होगा कि
यदि वे तेरी प्रतीति न करें और पहिले आश्चर्य्य को न मानें
९ तो वे दूसरे आश्चर्य्य के बिश्वासी होंगे । और ऐसा होगा कि
यदि वे इन दोनों आश्चर्य्यों पर भी बिश्वास न लावें और तेरे
शब्द के श्रोता न हों तो तू नील नदी का जल लेके सूखी पर
ढालियो और वुह जल जो तू नदी से निकालेगा सो सूखी पर
लोहू हो जायगा ॥
१० तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि हे मेरे प्रभु मैं सुबक्ता
मनुष्य नहीं न तो आगे से और न जब से कि तू ने अपने दास
से बात चीत किई परन्तु मैं भारी मुंह और भारी जीभ का हूं ॥
११ तब परमेश्वर ने उसे कहा कि मनुष्य के मुंह को किस ने
बनाया और कौन गूंगा अथवा बहिरा अथवा दर्शी अथवा
१२ अंधा बनाता है क्या मैं परमेश्वर नहीं । अब तू जा और मैं
तेरे मुंह के साथ हूंगा और जो कुछ तुझे कहना है तुझे
सिखाऊंगा ॥
१३ तब उस ने कहा कि हे मेरे प्रभु मैं तेरी बिनती करता हूं
कि जिसे चाहे तू उस के हाथ से भेज ॥

१४ तब परमेश्वर का क्रोध मूसा पर भड़का और उस ने कहा
कि क्या तेरा भाई हारून लावी नहीं है मैं जानता हूं कि वुह
सुवक्ता है और देख कि वुह भी तेरी भेंट को आता है
१५ और तुझे देखके अपने मन में हर्षित होगा। और तू उसे
कहेगा और उस के मुंह में बातें डालेगा और मैं तेरे और
उस के मुंह के संग हूंगा और जो कुछ तुम्हें करना है सो
१६ तुम्हें सिखाऊंगा। और लोगों पर वुह तेरा बक्ता होगा और
वुह तेरे मुंह की संती होगा और तू उस के लिये ईश्वर के
१७ स्थान होगा। और यह छड़ी जिस्से तू लक्षण दिखावेगा
अपने हाथ में रखियो॥

१८ तब मूसा अपने ससुर यितरू के पास फिर आया और उसे
कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे छुट्टी दे कि मिस्र
में अपने भाइयों पास फिर जाऊं और देखूं कि वे अब लों
जीते हैं कि नहीं तब यितरू ने मूसा को कहा कि कुशल से
१९ जा। तब परमेश्वर ने मदियान में मूसा को कहा कि मिस्र में
फिर जा क्योंकि वे सब मनुष्य जो तेरे प्राण के गाहक थे सो
२० मर गये। तब मूसा ने अपनी पत्नी को और अपने पुत्रों को
लिया और उन्हें गदहे पर बैठाया और मिस्र देश में फिर
२१ आया और मूसा ने ईश्वर की छड़ी अपने हाथ में लिई। और
परमेश्वर ने मूसा को कहा कि जब तू मिस्र में फिर जाय तो
देख कि सब आश्चर्य्य जो मैं ने तेरे हाथ में रक्खे हैं तू उन्हें
फ़िरऊन के आगे दिखा परन्तु मैं उस के मन को कठोर करूंगा कि
२२ वुह उन लोगों को जाने न देगा। तब फ़िरऊन को कहियो
कि परमेश्वर ने यों कहा है कि इसराएल मेरा पुत्र मेरा पहिलौठा
२३ है। सो मैं तुझे कहता हूं कि मेरे पुत्र को जाने दे कि वुह
मेरी सेवा करे और यदि तू उसे रोकेगा तो देख मैं तेरे
पहिलौठे पुत्र को मार डालूंगा॥

२४ और मार्ग के एक टिकाव में यों हुआ कि परमेश्वर उसे
२५ मिला और चाहा कि उसे मार डाले। तब सफ़ूर: ने एक चोखा
पत्थर उठाया और अपने बेटे की खलड़ी काट डाली और उसे
उस के पाओं पर फेंका और कहा कि तू निश्चय मेरे लिये
२६ रक्तपति है। तब उस ने उसे छोड़ दिया और तब वुह
बोली कि ख़तने के कारण तू रक्तपति है॥

२७ और परमेश्वर ने हारून को कहा कि बन में जाके मूसा
से मिल तब वुह गया और उसे ईश्वर के पहाड़ पर मिला
२८ और उसे चूमा। और ईश्वर ने जो उसे भेजा था मूसा ने उस
की सारी बातें और लक्षण जो उस ने उसे आज्ञा किई थी
हारून से कह सुनाये॥

२९ तब मूसा और हारून गये और इसराएल के संतानों के
३० प्राचीनों को एकट्ठा किया। और जो सारी बातें परमेश्वर ने
मूसा को कही थीं हारून से कहीं और लोगों के आगे प्रत्यक्ष
३१ लक्षण दिखाये। तब लोग बिश्वास लाये और सुनके कि परमेश्वर
ने इसराएल के संतान की सुधि लिई और उन के दुःख पर
दृष्टि किई झुके और दंडवत किई॥

पांचवां पर्व्व।

१ और उस के पीछे मूसा और हारून ने जाके फ़िरऊ़न से
कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मेरे
२ लोगों को जाने दे कि वे अरण्य में मेरे लिये पर्व्व करें। तब
फ़िरऊ़न ने कहा कि परमेश्वर कौन है कि मैं उस के शब्द को
मानके इसराएल को जाने दूं मैं परमेश्वर को नहीं जानता
३ और मैं इसराएल को भी जाने न दूंगा। तब उन्हों ने कहा कि
इबरानियों के ईश्वर ने हम से भेंट किई है हमें छुट्टी दीजिये
कि हम तीन दिन के पथ अरण्य में जायें और परमेश्वर अपने

ईश्वर के लिये बलिदान करें ऐसा न हो कि वुह हमें मरी
४ अथवा खड्ग से मारे। तब मिस्र के राजा ने उन्हें कहा कि हे
मूसा और हारून तुम लोगों को उन के कार्य्य से क्यों रोकते
५ हो तुम अपने बोझों को जाओ। और फ़िरऊ़न ने कहा कि
देखो देश के लोग अब बहुत हैं और तुम उन्हें उन के बोझों
से रोकते हो॥

६ और उसी दिन फ़िरऊ़न ने लोगों के करोड़ों को और अपने
७ अध्यक्षों को आज्ञा किई। कि अब आगे की नाईं उन लोगों
को ईंटें बनाने के लिये पुआल मत देओ वे जाके अपने लिये
८ पुआल बटोरें। और आगे की नाईं ईंटें उन से लिया करो उस
में से कुछ मत घटाओ क्योंकि वे आलसी हैं इसी लिये वे चिल्ला
चिल्लाके कहते हैं हमें जाने देओ कि हम अपने ईश्वर के लिये
९ बलिदान चढ़ावें। उन मनुष्यों का काम बढ़ाया जाय कि वे
उस में परिश्रम करें और बृथा बातों की ओर मन न लगावें॥

१० तब लोगों के करोड़े और उन के अध्यक्ष निकले और
लोगों से कहा कि फ़िरऊ़न यों कहता है कि मैं तुम्हें पुआल
११ न दूंगा। तुम जाओ जहां से मिले तहां से पुआल लाओ
१२ क्योंकि तुम्हारा कार्य्य कुछ न घटेगा। सो लोग मिस्र के सारे
देश में छिन्न भिन्न हुए कि पुआल की संती खूंटी एकट्ठी करें।
१३ और करोड़ों ने शीघ्रता करके कहा कि जैसा पुआल पाते हुए
करते थे वैसा अपने प्रति दिन के कार्य्य उसी दिन देओ।
१४ और इसराएल के संतानों के प्रधान जिन्हें फ़िरऊ़न के करोड़ों
ने उन पर करोड़े किये थे मारे गये और पूछे गये कि अपनी
ठहराई हुई सेवा को जो ईंटें बनाने की है कल और आज
आगे की नाईं क्यों नहीं पूरा किया॥

१५ तब इसराएल के संतानों के प्रधान फ़िरऊ़न के आगे आके
चिल्लाये और कहा कि अपने दासों से ऐसा व्यवहार क्यों करता

१६ हे। तेरे दासों को पुआल नहीं मिला है और वे हमें कहते
हैं कि ईंटें बनाओ और देख कि तेरे सेवकों ने मार खाई है
१७ परन्तु अपराध तेरे लोगों का है। तब उस ने कहा कि तुम
आलसी हो आलसी हो इस लिये तुम कहते हो कि हमें जाने
१८ दे कि परमेश्वर के लिये बलिदान करें। सो अब तुम जाओ
काम करो और पुआल तुम को न दिया जायगा तथापि तुम
१९ गिनती की ईंटें दोगे। और इस कहने से कि तुम अपनी प्रति दिन
की ईंटों में से न घटाओगे इसराएल के संतान के प्रधानों ने
देखा कि उन की दुर्दशा है॥
२० और वे फ़िरऊन पास से निकलके मूसा और हारून को जो
२१ मार्ग में खड़े थे मिले। और उन्हें कहा कि परमेश्वर तुम्हें
देखे और न्याय करे इस लिये कि तुम ने हमें फ़िरऊन की
और उस के सेवकों की दृष्टि में ऐसा घिनोंना किया है कि
हमारे मारने के कारण उन के हाथ में खड्ग दिया है॥
२२ तब मूसा परमेश्वर पास फिर गया और कहा कि हे प्रभु तू
ने इन लोगों को क्यों क्लेश में डाला और मुझे क्यों भेजा।
२३ इस लिये कि जब से तेरे नाम से मैं फ़िरऊन को कहने आया
उस ने उन लोगों पर बुराई किई और तू ने अपने लोगों को
न बचाया॥

छठवां पर्व्व।

१ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अब तू देखेगा मैं फ़िरऊन
से क्या करूंगा क्योंकि वुह बलवंत भुजा से उन्हें जाने देगा
और बलवंत भुजा से उन्हें अपने देश से निकालेगा॥
२ और ईश्वर मूसा से कहके बोला कि मैं परमेश्वर हूं।
३ और मैं अबिरहाम इज़हाक और यअ़कूब को सर्वशक्तिमान
सर्वसामर्थी के नाम से प्रगट हुआ परन्तु अपने नाम यहोवा से

४ उन पर प्रगट न हुआ। और मैं ने उन के साथ अपना नियम
भी बांधा है कि मैं उन को कनआन का देश जो उन के प्रवास का
५ देश है जिस में वे परदेशी थे दूंगा। और मैं ने इसराएल के
संतानों का कुढ़ना भी सुना है जिन्हें मिस्री बंधुआई में रखते
६ हैं और अपने नियम को स्मरण किया है। इस लिये तू
इसराएल के संतानों से कह कि मैं परमेश्वर हूं और मैं तुम्हें
मिस्रियों के बोझों के तले से निकालूंगा और मैं तुम्हें उन की
दासता से छुड़ाऊंगा और मैं अपना हाथ बढ़ाके बड़े बड़े न्याय
७ से तुम्हें मोक्ष दूंगा। और तुम्हें अपने लोग बनाऊंगा और
मैं तुम्हारा ईश्वर हो जाऊंगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर
तुम्हारा ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्रियों के बोझों के तले से
८ निकालता हूं। और मैं तुम्हें उस देश में लाऊंगा जिस के
विषय में मैं ने अपना हाथ उठाया है कि उसे अबिरहाम
इज़हाक और यअकूब को दूं और मैं उसे तुम्हारा अधिकार
९ करूंगा परमेश्वर मैं हूं। तब मूसा ने इसराएल के संतानों को
योंहीं कहा परन्तु उन्हों ने मन के क्लेश के मारे और परिश्रम
के कष्ट से मूसा की न सुनी॥

१०।११ फिर परमेश्वर ने मूसा को कहा। जा और मिस्र के राजा
फ़िरऊन से कह कि इसराएल के संतानों को अपने देश से जाने
१२ दे। तब मूसा ने परमेश्वर के आगे कहा कि देख इसराएल के
संतानों ने तो मेरी बात नहीं मानी है तो मैं जो होंठ का
१३ अख़तनः हूं फ़िरऊन मेरी क्योंकर सुनेगा। तब परमेश्वर ने
मूसा और हारून को कहा और उन्हें इसराएल के संतान और
मिस्र के राजा फ़िरऊन के विषय में आज्ञा किई कि इसराएल
के संतान को मिस्र के देश से बाहर ले जावें॥

१४ उन के पितरों के घराने के प्रधान ये थे इसराएल के
पहिलौठे रूबिन के पुत्र हनूख़ और पल्लू हज़रून और करमी

१५ ये रूबिन के घराने थे । और शमऊन के पुत्र जमुएल और
यामीन और ओहाद और याकीन और ज़ोहर और शाऊल
१६ कनआनी स्त्री का पुत्र ये शमऊन के घराने थे । और लावी के
पुत्रों के नाम उन की पीढ़ियों के समान ये थे जीरशून और
केहाथ और मरारी और लावी के जीवन के बरस एक सौ सैंतीस
१७ थे । जीरशून के पुत्र उन के घराने के समान लबनी और
१८ शमई थे । और केहाथ के पुत्र अमराम और इज़हार और
हिबरून और उज्ज़ीएल और केहाथ के जीवन के बरस एक सौ
१९ सैंतीस थे । और मरारी के पुत्र महली और मुशी उन की
२० पीढ़ियों के समान लावी के घराने ये थे । और अमराम ने
अपने पिता की बहिन युकबिद से ब्याह किया और वुह उस
के लिये हारून और मूसा को जनी और अमराम के जीवन के
२१ बरस एक सौ सैंतीस थे । और इज़हार के पुत्र क़ूरह और
२२ नफग़ और ज़करी थे । और उज्ज़ीएल के पुत्र मीसाएल और
२३ इलज़ाफ़ान और सिथरी थे । और हारून ने नख़शन की बहिन
अमीनादाब की पुत्री अलीशबा को पत्नी किया और उस्से नादाब
और अबीहू इलिअज़र और ऐतामार उस के लिये उत्पन्न हुए ।
२४ और क़ूरह के पुत्र असीर और इलक़ाना और अबियासाफ़ ये
२५ क़ूरह के घराने थे । और हारून के पुत्र इलिअज़र ने पुतिएल
की पुत्रियों में से पत्नी किई और उस्से उस के लिये फ़ीनीहास
उत्पन्न हुआ लावियों के बाप दादों के घरानों में ये प्रधान
२६ थे । ये वे हारून और मूसा हैं जिन्हें परमेश्वर ने कहा कि
इसराएल के संतानों को उन की सेनाओं की रीति मिस्र के
२७ देश से निकाल लाओ । ये वे हैं जिन्हों ने मिस्र के राजा
फ़िरऊन से इसराएल के संतानों को मिस्र से निकाल ले जाने
को कहा ये वे ही मूसा और हारून हैं ॥
२८ और यों हुआ कि जिस दिन परमेश्वर ने मिस्र देश में मूसा

२६ को कहा। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा और बोला कि मैं
परमेश्वर हूं सब जो मैं तुझे कहता हूं मिस्र के राजा फ़िरऊन
३० से कह। और मूसा ने परमेश्वर के साम्ने कहा कि देख मैं
होंठ का अख़तनः हूं और फ़िरऊन मेरी क्योंकर सुनेगा॥

सातवां पर्व्व।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं ने तुझे फ़िरऊन
के लिये ईश्वर बनाया और तेरा भाई हारून तेरा भविष्यद्वक्ता
२ होगा। सब कुछ जो मैं तुझे आज्ञा करूंगा तू कहेगा और
तेरा भाई हारून फ़िरऊन से कहेगा कि इसराएल के संतानों
३ को अपने देश से जाने दे। और मैं फ़िरऊन के मन को
कठोर करूंगा और अपने लक्षण और आश्चर्य्य को मिस्र के
४ देश में अधिक करूंगा। परन्तु फ़िरऊन तुम्हारी न सुनेगा
और मैं अपना हाथ मिस्र पर धरूंगा और अपनी सेनाओं को
अर्थात् अपने लोग इसराएल के संतान को बड़े न्याय दिखाके
५ मिस्र देश से निकाल लाऊंगा। और जब मैं मिस्र पर हाथ
चलाऊंगा और इसराएल के संतानों को उन में से निकालूंगा
६ तब मिस्री जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं। और जैसा परमेश्वर ने
७ उन्हें आज्ञा किई मूसा और हारून ने वैसा ही किया। और जिस
समय में उन्हों ने फ़िरऊन से बात चीत किई मूसा अस्सी बरस
का और हारून तिरासी बरस का था॥
८। ६ और परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा। कि जब
फ़िरऊन तुम्हें कहे कि अपने लिये आश्चर्य्य दिखाओ तो हारून
को कहियो कि अपनी छड़ी ले और फ़िरऊन के आगे डाल दे
१० वुह एक सर्प्प बन जायगी। तब मूसा और हारून फ़िरऊन
कने गये और जैसा परमेश्वर ने आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसा
ही किया और हारून ने अपनी छड़ी फ़िरऊन के और उस के

११ सेवकों के आगे डाल दिई और वुह सर्प्प हो गई । तब फ़िरऊन
ने भी पण्डितों और टोन्हों को बुलवाया सो मिस्र के टोन्हों
१२ ने भी अपने टोनों से ऐसा ही किया । क्योंकि उन में से हर
एक ने अपनी अपनी छड़ी डाल दिई और वे सर्प्प हो गई
१३ परन्तु हारून की छड़ी उन की छड़ियों को निंगल गई । और
फ़िरऊन का मन कठोर रहा और जैसा परमेश्वर ने कहा था
उस ने उन की न सुनी ॥
१४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़िरऊन का अंतःकरण कठोर
१५ है वुह उन लोगों को जाने नहीं देता । तू बिहान फ़िरऊन
के पास जा देख कि वुह जल की ओर जाता है और तू नील
नदी के तट पर जिधर से वुह आवे उस के सन्मुख खड़ा
हूजियो और वुह छड़ी जो सर्प्प हुई थी अपने हाथ में लीजियो।
१६ और उसे कहियो कि परमेश्वर इबरानियों के ईश्वर ने मुझे तेरे
पास भेजा है और कहा है कि मेरे लोगों को जाने दे जिसतें
वे अरण्य में मेरी सेवा करें और देख कि तू ने अब लों न
१७ सुना । परमेश्वर ने यों कहा है कि इस्से तू जानेगा कि मैं
परमेश्वर हूं देख कि मैं यह छड़ी जो मेरे हाथ में है नदी के
१८ पानियों पर मारूंगा और वे लोहू हो जायेंगे । और मछलियां
जो नदी में हैं मर जायेंगी और नदी बसाने लगेगी और मिस्र
के लोग नदी का पानी पीने को घिन करेंगे ॥
१९ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि अपनी
छड़ी ले और अपना हाथ मिस्र के पानियों पर उन की धारों
उन की नदियों और उन के कुण्डों और उन के पानियों के हर एक
पोखरों पर चला कि वे लोहू बन जायें और मिस्र के सारे देश में
२० हर एक काठ और पत्थर के पात्र में लोहू हो जाय। और जैसा
कि परमेश्वर ने आज्ञा किई थी मूसा और हारून ने वैसा ही
किया और उस ने छड़ी उठाई और नदी के पानी पर फ़िरऊन

के और उस के सेवकों के साम्ने मारी और नदी के सब पानी
२१ लोहू हो गये। और नदी की मछलियां मर गईं और नदी
बसाने लगी और मिस्र के लोग नदी का पानी पी न सके और
२२ मिस्र के सारे देश में लोहू हुआ। तब मिस्र के टोन्हों ने भी
अपने टोना से ऐसा ही किया और फ़िरऊ़न का मन कठोर रहा
और जैसा कि परमेश्वर ने कहा था वैसा उस ने उन की न
२३ सुनी। तब फ़िरऊ़न फिरा और अपने घर को गया और उस ने
२४ अपना मन इस बात पर भी न लगाया। और सारे मिस्रियों ने
नदी के आस पास खोदा कि पानी पीवें क्योंकि वे नदी का
२५ पानी पी न सके। और परमेश्वर के नदी को मारने से पीछे सात
दिन बीत गये॥

आठवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़िरऊ़न पास जा और उसे
यह कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे
२ जिसतें वे मेरी सेवा करें। और यदि तू उन्हें जाने न देगा
३ तो देख मैं तेरे समस्त सिवानों को मेंडुकों से मारूंगा। और
नदी बहुताई से मेंडुकों को उत्पन्न करेगी और वे निकलके
तेरे घर में और तेरे शयनस्थान में और तेरे बिछौनों
पर और तेरे सेवकों के घरों में और तेरी प्रजा पर और तेरी
४ भट्ठियों में और तेरे आटे गूंधने के कठरों में जायेंगे। और
मेंडुक तुझ पर और तेरी प्रजा पर और तेरे समस्त सेवकों पर
चढ़ेंगे॥

५ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि अपनी
छड़ी से अपना हाथ धारों पर नदियों पर और कुण्डों पर बढ़ा
६ और मेंडुकों को मिस्र के देश पर चढ़ा। तब हारून ने मिस्र
के पानियों पर अपना हाथ बढ़ाया और मेंडुकों ने निकलके

७ मिस्र के देश को ढांप लिया । और टोन्हों ने भी अपने टोना
से ऐसा ही किया और मिस्र के देश पर मेंडुक चढ़ाये ॥
८ तब फ़िरऊन ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा
कि परमेश्वर से बिनती करो कि मेंडुकों को मुझ से और मेरी
प्रजा से दूर करे और मैं उन लोगों को जाने देऊंगा कि वे
९ परमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ावें । और मूसा ने फ़िरऊन को
कहा कि मुझे बतलाइये कि कब मैं तेरे और तेरे सेवकों के और
तेरी प्रजा के लिये बिनती करूं कि मेंडुक तुझ से और तेरे घरों से
१० दूर किये जावें और नदी ही में रहें । और वुह बोला कि कल
तब उस ने कहा कि तेरे बचन के अनुसार जिसतें तू जाने
११ कि परमेश्वर हमारे ईश्वर के तुल्य कोई नहीं । और मेंडुक तुझ
से और तेरे घरों से और तेरे दासों और तेरी प्रजा सें जाते
रहेंगे वे केवल नदी में रहेंगे ॥
१२ फिर मूसा और हारून फ़िरऊन पास से निकल गये और
मूसा ने परमेश्वर के आगे मेंडुकों के लिये जो उस ने फ़िरऊन
१३ के कारण भेजे थे प्रार्थना किई । और परमेश्वर ने मूसा की
प्रार्थना के अनुसार किया और मेंडुक घरों और गांओं और
१४ खेतों में से मर गये । और उन्हों ने उन्हें जहां तहां एकट्ठे
१५ कर कर ढेर कर दिये और देश बसाने लगा । जब फ़िरऊन
ने देखा कि सावकाश मिला तो उस ने अपना मन कठोर किया
और जैसा परमेश्वर ने कहा था वैसा उन की न सुनी ॥
१६ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून से कह कि अपनी
छड़ी बढ़ा और देश की धूल पर मार जिसतें वुह मिस्र के
१७ समस्त देश में मच्छड़ बन जायें । और उन्हों ने वैसा ही
किया और हारून ने अपना हाथ अपनी छड़ी के साथ बढ़ाया
और पृथिवी की धूल को मारा और वहीं मनुष्य पर और पशु
पर मच्छड़ बन गये समस्त धूल मिस्र के सारे देश में मच्छड़

१८ बन गये। और टोन्हों ने भी चाहा कि अपने टोनों से मच्छड़
निकालें पर निकाल न सके से मनुष्य पर और पशु पर मच्छड़
१९ थे। तब टोन्हों ने फ़िरऊ़न से कहा कि यह ईश्वर की अंगुली
है और फ़िरऊ़न का मन कठोर रहा और जैसा परमेश्वर ने कहा
था उस ने उन की न सुनी॥

२० तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि बिहान को उठ और
फ़िरऊ़न के आगे खड़ा हो देख वुह जल पर आता है और तू
उसे कह कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने
२१ दे कि वे मेरी सेवा करें। क्योंकि यदि तू मेरे लोगों को जाने
न देगा तो देख मैं तुझ पर और तेरे सेवकों पर और तेरी
प्रजा पर और तेरे घरों में बड़ी बड़ी माखी भेजूंगा और
मिस्रियों के घर में और समस्त भूमि में जहां जहां वे हैं
२२ उन माखियों से भर जायेंगे। और मैं उस दिन जश्न की
भूमि को जिस में मेरे लोग बास करते हैं अलग करूंगा कि
माखी वहां न हों जिसतें तू जाने कि पृथिवी के मध्य में
२३ परमेश्वर मैं हूं। और मैं अपने लोगों में और तेरे लोगों में
२४ बिभाग करूंगा और यह आश्चर्य्य कल होगा। तब परमेश्वर
ने योंहीं किया और फ़िरऊ़न के घर में और उस के सेवकों के
घरों में और मिस्र के समस्त देश में माखी आईं और माखियों
के मारे देश नाश हुआ॥

२५ तब फ़िरऊ़न ने मूसा और हारून को बुलाया और कहा
२६ कि जाओ अपने ईश्वर के लिये देश में बलि चढ़ाओ। और
मूसा ने कहा कि यों करना उचित नहीं क्योंकि हम परमेश्वर
अपने ईश्वर के लिये वुह बलि चढ़ावेंगे जिस्से मिस्री घिन रखते
हैं क्या हम मिस्रियों के घिन का बलि उन की दृष्टि के आगे
२७ चढ़ावें और वे हमें पत्थरवाह न करेंगे। हम बन में तीन
दिन के पथ में जायेंगे और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये जैसा

२८ वुह हमें आज्ञा करेगा बलिदान करेंगे । और फ़िरऊ़न बोला
कि मैं तुम्हें जाने दूंगा जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के
लिये बन में बलि चढ़ाओ केवल बहुत दूर मत जाओ मेरे
२६ लिये बिनती करो । तब मूसा बोला देख मैं तेरे पास से बाहर
जाता हूं और मैं परमेश्वर के आगे बिनती करूंगा कि माखी
फ़िरऊ़न से उस के सेवकों से और उस की प्रजा से कल जाती
रहें परन्तु ऐसा न हो कि फ़िरऊ़न फिर छल करके लोगों को
परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाने को जाने न देवे ॥
३० तब मूसा फ़िरऊ़न पास से बाहर गया और परमेश्वर से
३१ बिनती किई । और परमेश्वर ने मूसा की बिनती के समान
किया और माखियों को फ़िरऊ़न से उस के सेवकों से और उस
३२ की प्रजा पर से दूर किया एक भी न रही । तब फ़िरऊ़न ने उस
बार भी अपना मन कठोर किया और उन लोगों को जाने
न दिया ॥

नवां पर्ब्ब ।

१ तब परमेश्वर ने मूसा को कहा कि फ़िरऊ़न पास जा और
उसे कह कि परमेश्वर इबरानियों का ईश्वर यों कहता है कि
२ मेरे लोगों को जाने दे जिसतें वे मेरी सेवा करें । क्योंकि यदि
३ तू जाने न देगा और अब की भी उन्हें रोकेगा । तो देख
परमेश्वर का हाथ तेरे खेत के पशुन पर घोड़ों पर गदहों पर
ऊंटों पर गाय बैलों पर और भेड़ बकरियों पर अत्यंत भारी
४ मरी पड़ेगी । और परमेश्वर इसराएल के और मिस्रियों के पशुन
में बिभाग करेगा और उन में से जो इसराएल के संतानों के
५ हैं कोई न मरेगा । और परमेश्वर ने एक समय ठहराया और
६ कहा कि परमेश्वर यह कार्य्य देश में कल करेगा । और दूसरे
दिन परमेश्वर ने वैसा ही किया और मिस्र के समस्त पशु मर गये

परन्तु इसराएल के संतानों के पशुन में से एक भी न मरा।
७ तब फ़िरऊन ने भेजा और देखो कि इसराएलियों के पशुन में
से एक न मरा और फ़िरऊन का मन कठोर रहा और उस ने
लोगों को जाने न दिया॥
८ और परमेश्वर ने मूसा और हारून से कहा कि भट्ठी में से
अपनी मुट्ठी भरके राख लो और मूसा उसे फ़िरऊन के साम्ने
९ आकाश की ओर उड़ा दे। और वुह मिस्र की समस्त भूमि
में सूक्ष्म धूल हो जायगी और मिस्र के समस्त देश में मनुष्यों
१० पर और पशुन पर फोड़े और फफोले फूट निकलेंगे। और
उन्हों ने भट्ठी की राख लिई और फ़िरऊन के आगे खड़े हुए
और मूसा ने उसे स्वर्ग की ओर उड़ाया और मनुष्यों पर और
११ पशुन पर फोड़े और फफोले फूट निकले। और फोड़ों के मारे
टोन्हे मूसा के आगे खड़े न रह सके क्योंकि टोन्हों पर और
१२ सारे मिस्रियों पर फोड़े थे। और परमेश्वर ने फ़िरऊन के मन को
कठोर कर दिया और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा से कहा था
वैसा उस ने उन की बात न मानी॥
१३ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि कल तड़के उठ और
फ़िरऊन के आगे खड़ा हो और उसे कह कि परमेश्वर इब्रानियों
का ईश्वर यों कहता है कि मेरे लोगों को जाने दे कि वे मेरी
१४ सेवा करें। क्योंकि मैं अब की अपनी सारी विपत्ति तेरे मन
पर और तेरे सेवकों पर और तेरी प्रजा पर डालूंगा जिसतें तू
१५ जाने कि समस्त पृथिवी पर मेरे तुल्य कोई नहीं। क्योंकि
अब मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा जिसतें मैं तुझे और तेरी प्रजा
१६ को मरी से मारूं और तू पृथिवी पर से नष्ट हो जायगा। और
निश्चय मैं ने तुझे इस लिये उठाया है कि अपना पराक्रम
तुझ पर दिखाऊं और अपना नाम सारे संसार में प्रगट करूं।
१७ अब लों तू मेरे लोगों पर अहंकार करता जाता है जिसतें

१८ उन्हें जाने न दे। देख में कल इसी समय में अत्यंत बड़े
बड़े ओले बरसाऊंगा जो मिस्र में उस के आरंभ से अब लों न पड़े
१९ थे। सो अभी भेज अपने पशु और जो कुछ कि खेत में तेरा
है सभों को एकट्ठे कर क्योंकि हर एक मनुष्य पर और पशु पर
जो खेत में होगा और घर में लाया न जायगा ओले पड़ेंगे
और वे मर जायेंगे॥

२० जो परमेश्वर के बचन से डरता था फ़िरऊ़न के सेवकों में
से हर एक ने अपने सेवकों को और अपने पशुन को घर में
२१ भगाया। और जिस ने परमेश्वर के बचन को न माना उस ने
अपने सेवकों और अपने पशुन को खेत में रहने दिया॥

२२ और परमेश्वर ने मूसा को कहा कि अपना हाथ स्वर्ग की
ओर बढ़ा जिसतें मिस्र के सारे देश में मनुष्य पर और पशु पर
और खेत के हर एक साग पात पर मिस्र देश में ओले पड़ें।
२३ और मूसा ने अपनी छड़ी स्वर्ग की ओर बढ़ाई और परमेश्वर ने
गर्ज्जन और ओले भेजे और आग भूमि पर चलती थी और
२४ ईश्वर ने मिस्र की भूमि पर ओले बरसाये। सो ओले बरसे
और ओले अत्यंत भारी आग के मध्य में अपने से लिपटी हुई
चलती थी यहां लों कि मिस्र के समस्त देश में जब से कि
२५ वुह देश हुआ था ऐसा न पड़ा था। और ओलों ने मिस्र के
समस्त देश में क्या मनुष्य को और क्या पशु सब को जो खेत
में थे मारा और ओलों ने खेत के सब साग पात को मारा और
२६ खेत के सारे बृक्ष को तोड़ डाला। केवल जश्न की भूमि में
जहां इसराएल के संतान थे ओले न पड़े॥

२७ तब फ़िरऊ़न ने भेजा और मूसा और हारून को बुलवाया
और उन्हें कहा कि मैं ने इस बार अपराध किया परमेश्वर
२८ न्याई है और मैं और मेरे लोग दुष्ट हैं। परमेश्वर से बिनती
करो कि अब आगे को परमेश्वर का शब्द और ओला न हो

२९ और मैं तुम्हें जाने दूंगा और आगे न रहोगे। तब मूसा ने
उसे कहा कि मैं नगर से बाहर निकलते हुए परमेश्वर के आगे
अपने हाथ फैलाऊंगा गर्ज्जे थम जायेंगे और ओले न बरसेंगे
३० जिसतें तू जाने कि पृथिवी परमेश्वर ही की है। परन्तु मैं
जानता हूं कि तू और तेरे सेवक अब भी परमेश्वर ईश्वर से न
डरेंगे॥
३१ और सन और जव मारे पड़े क्योंकि जव की बालें आ चुकी
३२ थीं और सन बढ़ चुका था। पर गोहूं और मुंडला गोहूं मारे
न पड़े क्योंकि वे बढ़े न थे॥
३३ और मूसा ने फ़िरऊन पास से नगर के बाहर जाके परमेश्वर
के आगे हाथ फैलाये और गर्ज्जना और ओले थम गये और भूमि
३४ पर वृष्टि थम गई। जब फ़िरऊन ने देखा कि मेंह और ओले
और गर्ज्जना थम गया तो फेर दुष्टता किई और उस ने और
३५ उस के सेवकों ने अपना मन कठोर किया। और जैसा कि
परमेश्वर ने मूसा की ओर से कहा था वैसा फ़िरऊन का
अंतःकरण कठोर रहा और उस ने इसराएल के संतानों को
जाने न दिया॥

दसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़िरऊन पास जा क्योंकि
मैं ने उस के अंतःकरण को और उस के सेवकों के अंतःकरण
को कठोर कर दिया है जिसतें मैं अपने ये लक्षण उन के मध्य
२ में प्रगट करूं। और जिसतें तू अपने पुत्र और अपने पोत्र के
सुन्ने में बर्णन करे जो जो मैं ने मिस्र में किया और मेरे लक्षण जो
मैं ने उन में दिखलाये और तुम जानो कि परमेश्वर मैं ही हूं॥
३ सो मूसा और हारून ने फ़िरऊन पास आके उसे कहा कि
परमेश्वर इबरानियों का ईश्वर यों कहता है कि कब लों तू

मेरे आगे आप को नम्र करने से अलग रहेगा मेरे लोगों को
४ जाने दे कि वे मेरी सेवा करें। क्योंकि यदि तू मेरे लोगों के
जाने से नाह करेगा तो देख कल मैं तेरे सिवानों में टिड्डी
५ भेजूंगा। और वे पृथिवी को ढांप लेंगी कि कोई पृथिवी को
देख न सकेगा और वे उस बचे हुए को जो ओलों से तेरे
लिये बच रहे हैं खा जायेंगी और हर एक वृक्ष को जो तुम्हारे
६ लिये खेत में उगता है चट करेंगी। और वे तेरे घर में और
तेरे सेवकों के घर में और समस्त मिस्र के घरों में भर जायेंगी
जिन्हें तेरे पितरों ने और तेरे पितरों के पितरों ने जिस दिन
से कि वे पृथिवी पर आये आज लों नहीं देखा तब वुह फिरा
और फ़िरऊ़न पास से निकल गया॥
७ तब फ़िरऊ़न के सेवकों ने उसे कहा कि यह पुरुष कब लों
हमारे लिये फंदा होगा उन लोगों को जाने दे जिसतें वे
परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करें अब ताईं तू नहीं जानता कि
८ मिस्र नष्ट हुआ। तब मूसा और हारून फ़िरऊ़न पास फिर
पहुंचाये गये और उस ने उन्हें कहा कि जाओ परमेश्वर अपने
९ ईश्वर की सेवा करो परन्तु वे कौन से लोग हैं जो जायेंगे। तब
मूसा बोला कि हम अपने तरुणों और अपने बृद्ध अपने
पुत्रों और अपनी पुत्रियों अपनी भेड़ बकरियों और अपने
गाय बैल समेत जायेंगे क्योंकि हमें आवश्यक है कि अपने
१० ईश्वर का पर्ब्ब मानें। तब उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर यों
हीं तुम्हारे संग रहे जो मैं तुम्हें और तुम्हारे बालकों को
११ जाने दूं देखो कि बुराई तुम्हारे आगे है। ऐसा नहीं तुम पुरुषगण
जाइयो और परमेश्वर की सेवा करो क्योंकि तुम ने यही चाहा
सो वे फ़िरऊ़न के आगे से निकाले गये॥
१२ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ टिड्डी के
लिये मिस्र की भूमि पर बढ़ा जिसतें वे मिस्र के देश पर आवें

और देश के हर एक साग पात जो ओलें से बच रहा है खा
१३ लेवें। सो मूसा ने मिस्र के देश पर अपनी छड़ी बढ़ाई और
परमेश्वर ने उस सारे दिन और सारी रात पुरबी पवन चलाई
१४ जब बिहान हुआ तो वुह पुरबी पवन टिड्डी लाई। और
टिड्डी मिस्र के सारे देश पर आईं और मिस्र के समस्त सिवाने
पर उतरीं वे अति बहुत थीं उन के आगे ऐसी टिड्डी न
१५ आई थीं और न उन के पीछे फिर आवेंगी। क्योंकि उन्हों ने
समस्त पृथिवी को छा लिया यहां लों कि देश अंधियारा हो
गया और उन्हों ने देश की हर एक हरियाली को और बृक्षों
के फलों को जो ओलें से बच गये थे चाट लिया और मिस्र
के समस्त देश में किसी बृक्ष पर अथवा खेत के साग पात में
हरियाली न बची॥
१६ तब फ़िरऊन ने मूसा और हारून को वेग बुलाया और कहा कि
१७ मैं परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर का और तुम्हारा अपराधी हूं। सो अब
मैं बिनती करता हूं केवल इस बार मेरा अपराध क्षमा कर
और परमेश्वर अपने ईश्वर से बिनती करो कि केवल इसी मरी
१८ को मेरे ऊपर से दूर करे। सो वुह फ़िरऊन के पास से निकल
१९ गया और परमेश्वर से बिनती किई। और परमेश्वर ने बड़ी
पच्छवां भेजी और वुह टिड्डी को ले गई और उन्हें लाल समुद्र
में डाल दिया और मिस्र के समस्त सिवानों में एक टिड्डी न
२० रही। परन्तु परमेश्वर ने फ़िरऊन के मन को कठोर कर दिया
और उस ने इसराएल के संतान को जाने न दिया॥
२१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ स्वर्ग की
ओर बढ़ा जिसतें मिस्र के देश पर अंधकार छा जाय ऐसा
२२ अंधकार जो टटोला जावे। तब मूसा ने अपना हाथ स्वर्ग
की ओर बढ़ाया और तीन दिन लों सारे मिस्र के देश में गाढ़ा
२३ अंधियारा रहा। उन्हों ने एक दूसरे को न देखा और कोई

तीन दिन भर के अपने स्थान से न उठा परन्तु इसराएल
के समस्त संतान के लिये उन के निवासों में उंजियाला था॥
२४ तब फ़िरऊ़न ने मूसा को बुलाया और कहा कि जाओ
परमेश्वर की सेवा करो केवल तुम्हारे झुंड और तुम्हारे ढोर
२५ यहीं रहें तुम्हारे बालक भी तुम्हारे संग जायें। तब मूसा ने
कहा कि तुझे आवश्यक है कि हमें बलिदान और चढ़ावे की भेंट
देवे जिसतें हम परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बलि चढ़ावें।
२६ और हमारे पशु भी हमारे संग जायेंगे एक खुर छोड़ा न जायगा
क्योंकि हम उन में से परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा के लिये
लेंगे और जब लों उधर न जावें हम नहीं जानते कि कौन सी
वस्तुन से परमेश्वर की सेवा करें॥
२७ परन्तु परमेश्वर ने फ़िरऊ़न के अंतःकरण को कठोर कर
२८ दिया और उस ने उन्हें जाने न दिया। और फ़िरऊ़न ने उसे
कहा कि मेरे आगे से जा आप को चौकस रख फिर मेरा
मुंह मत देख क्योंकि जिस दिन मेरा मुंह देखेगा तू मर जायगा।
२९ तब मूसा ने कहा कि तू ने अच्छा कहा मैं फिर तेरा मुंह न देखूंगा॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं फ़िरऊ़न पर और
मिस्रियों पर एक मरी और लाऊंगा उस के पीछे वुह तुम्हें यहां
से जाने देगा जब वुह तुम्हें जाने दे तो निश्चय तुम्हें सर्व्वथा
२ यहां से धकिआवेगा। सो अब लोगों के कानों कान कह कि हर
एक पुरुष अपने परोसी से और हर एक स्त्री अपनी परोसिन से
३ रूपे के और सोने के गहने मांग लेवे। और परमेश्वर ने उन
लोगों को मिस्रियों की दृष्टि में प्रतिष्ठा दिई वुह जन मूसा भी
मिस्र की भूमि में फ़िरऊ़न के सेवकों की और लोगों की दृष्टि में
महान था॥

४ और मूसा ने कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं आधी
५ रात को निकलके मिस्र के बीचोंबीच जाऊंगा। और मिस्र के
देश में सारे पहिलौंठे फ़िरऊन के पहिलौंठे से लेके जो अपने
सिंहासन पर बैठा है उस सहेली के पहिलौंठे लों जो चक्की के
६ पीछे है और सारे पशु के पहिलौंठे मर जायेंगे। और मिस्र के
समस्त देश में ऐसा बड़ा रोना पीटना होगा जैसा कि कभी न
७ हुआ था न कभी फिर होगा। परन्तु सारे इसराएल के संतान
पर एक कूकर भी अपनी जीभ न हिलावेगा न तो मनुष्य पर
और न पशु पर जिसतें तुम जानो कि परमेश्वर क्योंकर मिस्रियों
८ में और इसराएलियों में बिभाग करता है। और यह तेरे
समस्त सेवक मुझ पास आवेंगे और मुझे प्रणाम करके कहेंगे
कि तू निकल जा अपने समस्त पश्चाद्गामी समेत और उस के
पीछे मैं निकल जाऊंगा। और वुह फ़िरऊन के पास से निपट
रिसियाके निकल गया॥

९ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि फ़िरऊन तुम्हारी न
१० सुनेगा जिसतें मेरे आश्चर्य्य मिस्र देश में बढ़ जायें। और मूसा
और हारून ने ये सब आश्चर्य्य फ़िरऊन के आगे दिखाये और
परमेश्वर ने फ़िरऊन के मन को कठोर कर दिया और उस ने
अपने देश से इसराएल के संतान को जाने न दिया॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ तब परमेश्वर ने मिस्र के देश में मूसा और हारून को
२ कहा। कि यह मास तुम्हारे लिये मासों का आरंभ होगा यह
तुम्हारे बरस का पहिला मास होगा॥

३ इसराएलियों की सारी मंडली से कहो कि इस मास के
दसवें में हर एक पुरुष से अपने पितरों के घर के समान एक
४ मेम्ना घर पीछे मेम्ना अपने लिये लेवें। और यदि वुह घर

मेम्ना के लिये छोटा हो तो वुह और उस का परोसी जो उस
के घर से लगा हुआ हो प्राणियों की गिनती के समान लेवे
तुम एक एक अपने खाने के समान मेम्ने के लिये लेखा
ठहराओ॥
५ तुम्हारा मेम्ना निष्खोट होवे पहिले बरस का नरुख भेड़ों
६ से अथवा बकरियों से लीजियो। और तुम उसे मास के
चौदहवें दिन लों रख छोड़ियो और इसराएलियों की समस्त
मंडली सांझ को उसे मारें॥
७ और वे लोहू में से लेवें और उन घरों के जहां वे खायेंगे
द्वार की दोनों ओर और ऊपर की चौखट पर छापा देवें॥
८ और वे उसी रात को आग में भुना हुआ उस का मांस
९ और ख़मीरी रोटी कड़वी तरकारी के साथ खावें। उसे कच्चा
और पानी में उसनके न खावें परन्तु उस के सिर पांव और
१० उद्र समेत आग पर भूनके खावें। और उस में से बिहान
लों कुछ न रहने दीजियो और जो कुछ उस में से बिहान लों
११ रह जायेगा तुम आग से जला दीजियो। और उसे यों खाइयो
अपनी कटि बांधे हुए अपनी जूतियां अपने पाओं में पहिने हुए और
अपना लठ अपने हाथों में लिये हुए और उसे बेग खा लीजियो
वुह परमेश्वर का फसह है॥
१२ इस लिये कि मैं आज रात मिस्र के देश में होके निकलूंगा
और सब पहिलौंठे मनुष्य के और पशुन के जो उस में हैं
मारूंगा और मिस्र के समस्त देवताओं पर न्याय करूंगा मैं
१३ परमेश्वर हूं। और वुह लोहू तुम्हारे घरों पर जहां जहां तुम
हो तुम्हारे लिये एक चिन्ह होगा और मैं वुह लोहू देखके
तुम पर से बीत जाऊंगा और जब मिस्र के देश को मारूंगा
तब मरी तुम पर नाश करने को न आवेगी॥
१४ और यह दिन तुम्हारे लिये एक स्मरण के लिये होगा

और तुम अपनी समस्त पीढ़ियों के लिये उसे परमेश्वर के लिये
पर्ब्ब रखियो तुम नित्य उस बिधि से पर्ब्ब रखियो ॥
१५ सात दिन लों अख़मीरी रोटी खाइयो पहिले ही दिन ख़मीर
अपने घरों से उठा डालियो इस लिये कि जो कोई पहिले दिन
से लेके सातवें दिन लों ख़मीरी रोटी खायगा सो प्राणी इसराएल से
१६ काटा जायगा। और पहिले दिन पवित्र बुलावा होगा और सातवें
दिन तुम्हारे लिये पवित्र बुलावा होगा उन में कोई कार्य्य न किया
जायगा केवल भोजन ही का कार्य्य हर एक मनुष्य से किया जाय।
१७ और इस अख़मीरी रोटी के पर्ब्ब को मानोगे क्योंकि उसी दिन मैं
तुम्हारी सेनाओं को मिस्र देश से निकाल लाया हूं इस लिये
१८ इस दिन को अपनी पीढ़ियों में बिधि से नित्य मानो। पहिले
मास की चौदहवीं तिथि से सांझ को इक्कीसवीं तिथि लों अख़मीरी
१९ रोटी खाइयो। सात दिन लों तुम्हारे घरों में ख़मीर न पाया
जावे क्योंकि जो कोई ख़मीरी बस्तु खायेगा वही प्राणी इसराएल की
२० मंडली से काटा जायगा चाहे परदेशी हो चाहे देशी। तुम
कोई बस्तु ख़मीरी मत खाइयो तुम अपने समस्त बस्तियों में
अख़मीरी रोटी खाइयो ॥
२१ तब मूसा ने इसराएल के समस्त प्राचीनों को बुलाया और
उन्हें कहा कि अपने अपने घर के समान एक एक मेम्ना लेओ
२२ और फसह का मेम्ना मारो। और एक मुट्ठी जूफा लेओ और
उसे उस लोहू में जो बासन में है बोरके ऊपर की चौखट के
और द्वार की दोनों ओर उस्से छापो और तुम में से कोई बिहान
२३ लों अपने घर के द्वार से बाहर न जावे। क्योंकि परमेश्वर
मिस्र को मारने के लिये आरपार जायगा और जब वुह ऊपर
की चौखट पर और द्वार की दोनों ओर लोहू को देखे तब
परमेश्वर द्वार पर से बीत जायगा और नाशक तुम्हारे घरों में
२४ जाने न देगा कि मारे। और अपने और अपने संतानों के

२५ लिये बिधि करके इस बचन को नित्य मानियो। और ऐसा
होगा कि जब तुम उस देश में जो परमेश्वर तुम्हें अपनी बाचा
२६ के समान देगा प्रवेश करोगे तब इस सेवा का पालन करियो। और
ऐसा होगा कि जब तुम्हारे संतान तुम से कहें कि इस सेवा से
२७ तुम्हारा क्या अर्थ है। तब कहियो कि यह परमेश्वर के फ़सह का
बलिदान है जो मिस्र में इसराएल के संतानों के घरों पर से
बीत गया जब उस ने मिस्र को मारा और हमारे घरों को
२८ बचाया तब लोगों ने सिर झुकाये और प्रणाम किये। और
इसराएल के संतान चले गये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा और
हारून को आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसा ही किया॥
२९ और यों हुआ कि परमेश्वर ने आधी रात को मिस्र के देश
में सारे पहिलौठे को फ़िरऊन के पहिलौठे से लेके जो अपने
सिंहासन पर बैठता था उस बंधुआ के पहिलौठे लों जो
३० बंदीगृह में था पशुन के पहिलौठों समेत नाश किये। और
रात को फ़िरऊन उठा वुह और उस के सब सेवक और सारे
मिस्री उठे और मिस्र में बड़ा बिलाप था क्योंकि कोई घर न
रहा जिस में एक न मरा॥
३१ तब उस ने मूसा और हारून को रात ही को बुलाया
और कहा कि उठो मेरे लोगों में से निकल जाओ तुम और
इसराएल के संतान जाओ और अपने कहे के समान परमेश्वर
३२ की सेवा करो। जैसा तुम ने कहा है अपना झुंड और बैल
भी लेओ और बिदा होओ और मेरे लिये भी आशीष चाहो॥
३३ और मिस्री उन लोगों पर शीघ्रता करते थे कि वे मिस्र के
देश से बेग निकाले जायें क्योंकि उन्हों ने कहा कि हम सब
३४ मरे। और उन लोगों ने आटा गूंधा हुआ उस्से आगे कि वुह
ख़मीर हो गूंधने के कठरे समेत अपने कपड़ों में बांधके अपने
३५ कांधों पर उठा लिया। और इसराएल के संतानों ने मूसा के

कहने के समान किया और उन्हों ने मिस्रियों से रूपे के और
३६ सोने के गहने और वस्त्र मांग लिये। और परमेश्वर ने उन
लोगों को मिस्रियों की दृष्टि में ऐसा अनुग्रह दिया कि उन्हों ने
उन्हें दिया और उन्हों ने मिस्रियों को लूट लिया॥
३७ और इसराएल के संतान ने रामसीस से सुक्कात लों कूच किया
३८ जो बालकों को छोड़ छः लाख पुरुष थे। और एक मिली जुली
बड़ी मंडली भी और झुंड और बैल और बहुत पशु उन के
३९ साथ गये। और उन्हों ने उस गूंधे हुए आटे के जो वे मिस्र
से ले निकले थे अख़मीरी फुलके पकाये क्योंकि वुह ख़मीर न
हुआ था इस कारण कि वे मिस्र से खदेड़े गये थे और ठहर न
सके और अपने लिये कुछ भोजन सिद्ध न किया॥
४० अब इसराएल के संतानों का निवास जो मिस्र में रहते थे
४१ चार सौ तीस बरस था। और चार सौ तीस बरस के अंत में
यों हुआ कि ठीक उसी दिन परमेश्वर की समस्त सेना मिस्र के
देश से निकल गई॥
४२ उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाने के कारण वुह रात
परमेश्वर के लिये पालन करने के योग्य है यह परमेश्वर की वुह
रात है जिसे चाहिये कि इसराएल के संतान अपनी पीढ़ी पीढ़ी
पालन करें॥
४३ और परमेश्वर ने मूसा और हारून को कहा कि फसह की
४४ विधि यह है कि उस्से कोई परदेशी न खावे। परन्तु हर एक
का मोल लिया हुआ दास जब तू ने उस का ख़तनः किया
४५ तब वुह उस्से खावे। बिदेशी और बनिहार सेवक उस्से न
४६ खावें। यह एक ही घर में खाया जावे उस का मांस कुछ
घर से बाहर न निकाला जावे और न उस की हड्डी तोड़ी
४७ जावे। इसराएल के संतान की समस्त मंडली उसे पालन करें।
४८ और जब कोई परदेशी तुम्में बास करे और परमेश्वर के लिये

फसह किया चाहे तो उस के सब पुरुष ख़तनः करावें तब
वुह उसे पालन करने के लिये समीप आवे और वुह ऐसा होगा
जैसा कि देश में जन्म पाया हो और कोई अख़तनः जन उससे
४९ न खावे। देश के उत्पन्न हुओं के और देशी और बिदेशी के
५० लिये तुम्हारे मध्य में एक ही व्यवस्था होगी। और सारे
इसराएल के संतानों ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा और हारून
को आज्ञा किई वैसा ही किया॥
५१ और यों हुआ कि ठीक उसी दिन परमेश्वर ने इसराएल के
संतानों को उन की सेनाओं के समान मिस्र देश से बाहर निकाला॥

तेरहवां पर्व्व।

१। २ और परमेश्वर ने मूसा से कहा। कि सब पहिलौठे मेरे
लिये पवित्र कर जो कुछ कि इसराएल के संतानों में गर्भ को
खोले क्या मनुष्य और क्या पशु सो मेरा है॥
३ और मूसा ने लोगों से कहा कि इस दिन को जिस में तुम
मिस्र से बाहर आये और बंधुआई के घर से निकले स्मरण
करियो क्योंकि परमेश्वर तुम्हें बाहु बल से निकाल लाया और
४ ख़मीरी रोटी खाई न जावे। तुम अबिब के मास में आज के
५ दिन बाहर निकले। और यों होगा कि जब परमेश्वर तुझे
कनआनियों और हित्तियों और अमूरियों और हवियों और
यबूसियों के देश में लावे जिसे उस ने तेरे पितरों से किरिया
खाई कि तुझे देगा जहां दूध और मधु बहता है तब तू इस
६ मास में इस सेवा को पालन करियो। सात दिन ताईं तू
अख़मीरी रोटी खाइयो और सातवें दिन परमेश्वर के लिये पर्व्व
७ होगा। अख़मीरी रोटी सात दिन खाई जावे और कोई ख़मीरी
रोटी तुझ पास दिखाई न देवे और न ख़मीर तेरे समस्त
८ सिवाने में तेरे आगे दिखाई देवे। और तू उसी दिन अपने

पुत्र को समुझाइयो कि यह इस कारण है कि जब हम मिस्र
९ से बाहर निकले तब परमेश्वर ने हम से यह किया। और
यह एक लक्षण तुझ पास तेरे हाथ में और तेरी दोनों आंखों
के बीच स्मरण के लिये होगा जिसतें परमेश्वर की व्यवस्था
तेरे मुंह में हो क्योंकि परमेश्वर तुझे भुजा के बल से मिस्र से
१० निकाल लाया। इस लिये तू यह विधि इस रितु में बरस
बरस पालन करियो॥
११ और ऐसा होगा कि जब परमेश्वर तुझे कनआनियों के देश
में लावे जैसा उस ने तुझ से और तेरे पितरों से किरिया खाई
१२ है और उसे तुझे देवे। तब तू परमेश्वर के लिये सभों को
जो कि गर्भ को खोलते हैं और पशु के सब पहिलौठों को जो
१३ तेरे होंगे अलग कीजियो नर परमेश्वर के होंगे। और गधे के
हर एक पहिलौठे को एक मेम्ना से छुड़ाइयो और यदि तू उसे
न छुड़ावे तो उस की गरदन तोड़ दीजियो और अपने संतानों
में से मनुष्य के सारे पहिलौठों को छुड़ा लीजियो॥
१४ और यों होगा कि जब तेरा पुत्र कल को तुझ से पूछे कि यह
क्या है तब उसे कहियो कि परमेश्वर हमें अपनी भुजा के बल
१५ से मिस्र से और बंधुआई के घर से निकाल लाया। और यों
हुआ कि जब फ़िरऊन ने हमें कठिनता से छोड़ा तब परमेश्वर
ने मिस्र देश में सब पहिलौठे मनुष्य के पहिलौठों से लेके पशुन
के पहिलौठों लों मार डाला इस कारण मैं उन सब नरों को जो
गर्भ खोलते हैं परमेश्वर के लिये बलि करता हूं परन्तु अपने संतानों
१६ के सब पहिलौठों को छुड़ाता हूं। और यह तेरे हाथ में और तेरी
आंखों के बीच में एक चिन्हानी होगी क्योंकि परमेश्वर अपने
बाहु बल से हमें मिस्र से निकाल लाया॥
१७ और यों हुआ कि जब फ़िरऊन ने उन लोगों को जाने दिया
तब ईश्वर उन्हें फ़िलिस्तियों के देश के मार्ग से ले न गया

यद्यपि वुह समीप था क्योंकि ईश्वर ने कहा कि न हो कि लोग
१८ लड़ाई देखके पछतावें और मिस्र को फिर जावें। परन्तु ईश्वर
उन लोगों को लाल समुद्र के बन की ओर ले गया और इसराएल
१९ के संतान पांती पांती मिस्र के देश से निकले चले गये। और
मूसा ने यूसुफ़ की हड्डियां अपने साथ ले लिईं क्योंकि उस ने
इसराएल के संतान को क्रिरिया देके कहा था कि निश्चय ईश्वर
तुम से भेंट करेगा और तुम यहां से मेरी हड्डियां अपने साथ
लेजाइयो॥

२० फिर वे सुक्कात से चल निकले और बन के छोर पर छावनी
२१ किई। और परमेश्वर उन के आगे आगे दिन को मेघ के खंभे
में उन्हें मार्ग दिखाने के लिये जाता था और रात को आग के
खंभे में होके कि उन्हें प्रकाश करे जिसतें रात दिन चले
२२ जावें। वुह दिन में मेघ के खंभे को और रात में आग के
खंभे को उन लोगों के आगे से न उठाता था॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१।२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा। कि इसराएल के संतान
से कह कि फिरें और फ़ीउलहीरात के आगे मिजदाल और
समुद्र के मध्य में छावनी करें तुम बअलसफ़ून के आगे उस के
३ सन्मुख समुद्र के तीर पर डेरा खड़ा करो। क्योंकि फ़िरऊन
इसराएल के संतानों के बिषय में कहेगा कि वे इस देश में
४ बझे हैं बन ने उन्हें छेंक लिया है। और मैं फ़िरऊन के मन
को कठोर करूंगा कि वुह उन का पीछा करेगा और मैं फ़िरऊन
और उस की समस्त सेना पर प्रतिष्ठित होऊंगा जिसतें मिस्री
जानें कि परमेश्वर मैं हूं और उन्हों ने ऐसाही किया॥

५ और मिस्र के राजा को कहा गया कि लोग भाग गये तब
फ़िरऊन का और उस के सेवकों का मन लोगों के बिरोध में

फिर गया और वे बोले कि हम ने यह क्या किया कि इसराएल
६ को अपनी सेवा से जाने दिया। तब उस ने अपना रथ जोता
७ और अपने लोग साथ लिये। और उस ने छः सौ चुने हुए
रथ और मिस्र के समस्त रथ साथ लिये और उन सभों पर
८ प्रधान बैठाये। और परमेश्वर ने मिस्र के राजा फ़िरऊन के
मन को कठोर कर दिया और उस ने इसराएल के संतानों का
पीछा किया पर इसराएल के संतान हाथ बढ़ाये हुए निकले।
९ परन्तु मिस्री उन का पीछा किये चले गये और फ़िरऊन के सारे
घोड़ों और रथों और उस के घोड़ चढ़ों और उस की सेना ने
समुद्र के तीर फ़ीउलहीरात के समीप बअलसफ़ून के सन्मुख
उन्हें छावनी खड़ी करते जाही लिया॥

१० जब फ़िरऊन पास आया तब इसराएल के संतानों ने आंखें
ऊपर किईं और मिस्रियों को अपने पीछे आते हुए देखा और
अत्यंत डर गये तब इसराएल के संतानों ने परमेश्वर की
११ दोहाई दिई। और मूसा से कहा कि क्या मिस्र में समाधें न
थीं कि तू हमें मरने के लिये वहां से बन में लाया तू ने हम
से यह क्या व्यावहार किया कि हमें मिस्र से निकाल लाया।
१२ क्या यह वही बात नहीं जो हम ने मिस्र में तुझ से कही थी
कि हम से हाथ उठा जिसतें हम मिस्रियों की सेवा करें कि
हमारे लिये मिस्रियों की सेवा करनी बन में मरने से अच्छी
थी॥

१३ तब मूसा ने लोगों को कहा कि मत डरो खड़े रहो और
परमेश्वर की मोक्ष देखो जो आज के दिन वुह तुम्हें दिखावेगा
क्योंकि उन मिस्रियों को जिन्हें तुम आज देखते हो उन्हें फिर
१४ कधी न देखोगे। परमेश्वर तुम्हारे लिये युद्ध करेगा और तुम
चुप चाप रहोगे॥

१५ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू क्यों मेरी ओर बिलाप

१६ करता है इसराएल के संतान से कह कि वे आगे बढ़ें। परन्तु
तू अपनी छड़ी उठा और समुद्र पर अपना हाथ बढ़ा और उसे
दो भाग कर और इसराएल के संतान समुद्र के बीचोंबीच में
१७ से सूखी भूमि पर होके चले जायेंगे। और देख कि मैं मिस्रियों
के अंत:करण को कठोर कर दूंगा और वे उन का पीछा करेंगे
और मैं फ़िरऊन और उस की समस्त सेना उस के रथ और उस के
१८ घोड़ चढ़ों पर अपनी महिमा प्रगट करूंगा। और जब मैं
फ़िरऊन उस के रथों और उस के घोड़ चढ़ों पर अपनी महिमा
प्रगट करूंगा तब मिस्री जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥
१६ और ईश्वर का दूत जो इसराएल की छावनी के आगे चला
जाता था सो फिरा और उन के पीछे चला और मेघ का
खंभा उन के सन्मुख से गया और उन के पीछे जा ठहरा।
२० और मिस्रियों की छावनी और इसराएल की छावनी के मध्य में
आया और वुह एक अंधियारा मेघ मिस्रियों के लिये हो गया
परन्तु रात को इसराएल को उंजियाला देता था सो रात भर
एक दूसरे के पास न आया ॥
२१ फिर मूसा ने समुद्र पर अपना हाथ बढ़ाया और परमेश्वर
ने बड़ी प्रचंड पुरबी आंधी से रात भर समुद्र को चलाया और
२२ समुद्र को सुखा दिया और पानी दो भाग हो गये। और
इसराएल के संतान समुद्र के बीच में से सूखे पर होके चले
गये और पानी की भीत उन के दहिने और बायें और थी ॥
२३ और मिस्रियों ने पीछा किया और फ़िरऊन के सब घोड़े उस
के रथ और उस के घोड़ चढ़े उन का पीछा किये हुए समुद्र
२४ के मध्य लों आये। और यों हुआ कि परमेश्वर ने पिछले पहर
उस आग और मेघ के खंभे में से मिस्रियों की सेना पर दृष्टि
२५ किई और मिस्रियों की सेना को घबराया। और उन के रथों
के पहियों को निकाल डाला कि वे भारी से हांके जाते थे सो

मिस्रियों ने कहा कि आओ इसराएलियों के सन्मुख से भागें
२६ क्योंकि परमेश्वर उन के लिये मिस्रियों से लड़ता है। और
परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपना हाथ समुद्र पर बढ़ा जिसतें
पानी मिस्रियों पर उन के रथों और उन के घोड़ चढ़ों पर फिर
२७ आवे। तब मूसा ने अपना हाथ समुद्र पर बढ़ाया और समुद्र
बिहान होते अपनी सामर्थ्य पर फिरा और मिस्री उस के आगे
२८ भागे और परमेश्वर ने मिस्रियों को समुद्र में नाश किया। और
पानी फिरा और रथों और घोड़ चढ़ों फ़िरऊन की सब सेना
को जो उन के पीछे समुद्र के बीच में आई थी छिपा लिया
२९ एक भी उन में से न बचा। परन्तु इसराएल के संतान सूखी
से समुद्र के बीच में से चले गये और पानी की भीत उन के
बायें और दहिने थी॥
३० सो परमेश्वर ने उस दिन इसराएलियों को मिस्रियों के हाथ
से बचाया और इसराएलियों ने मिस्रियों की लोथें समुद्र के
३१ तीर पर देखीं। और जो बड़ा भुजा परमेश्वर ने मिस्रियों पर
प्रगट किया इसराएलियों ने देखा और लोग परमेश्वर से डरे तब
परमेश्वर पर और उस के दास मूसा पर बिश्वास लाये॥

पंद्रहवां पर्ब्ब।

१ तब मूसा और इसराएल के संतान ने परमेश्वर का धन्यबाद
और स्तुति इस रीति से गाया
और कहके बोला कि मैं परमेश्वर का भजन करूंगा क्योंकि
वुह बड़े बिभव से बिभूशित हुआ उस ने घोड़े को उस के
२ चढ़वैये समेत समुद्र में फेंक दिया है। परमेश्वर मेरी सामर्थ्य
और गान है और वुह मेरी मुक्ति हुआ यह मेरा सर्बशक्तिमान
है और मैं उस के लिये निवास सिद्ध करूंगा मेरे पिता का ईश्वर
३ है और मैं उस की महिमा करूंगा। परमेश्वर योद्धा है परमेश्वर

४ उस का नाम है । उस ने फ़िरऊन के रथों और उस की सेना
को समुद्र में डाल दिया है और उस के चुने हुए प्रधान लाल
५ समुद्र में डूबे हैं । गहिराओं ने उन्हें ढांप लिया वे पत्थर के
६ समान गहिरापों में डूब गये । हे परमेश्वर तेरा दहिना हाथ
सामर्थ्य में महान हुआ है परमेश्वर तेरे दहिने हाथ ने बैरी
७ को टुकड़ा टुकड़ा किया । और तू ने अपनी महिमा के महत्व
से अपने विरोधियों को उलट डाला तू ने अपने कोप को भेजके
८ उन्हें खूंटी की नाईं भस्म किया । और तेरे नथुनों के स्वास
से जल एकट्ठे हुए बाढ़ ढेर होके खड़े हो गये समुद्र के
९ अंत:करण में गहिरापे जम गये । बैरी बोला कि मैं पीछा करूंगा
जा ही लूंगा लूट को बांट लूंगा उन से मेरी लालसा सन्तुष्ट
होगी मैं अपना खड्ग खींचूंगा मेरा हाथ उन्हें बस में कर लेगा ।
१० तू ने अपनी पवन से फूंक मारी समुद्र ने उन्हें छिपा लिया वे
११ सीसे की नाईं महा जलों में डूब गये । हे परमेश्वर सक्तिमानों
में तेरे तुल्य कौन है पवित्रता में तेरे तुल्य तेजोमय कौन है
१२ स्तुति में भयंकर आश्चर्य्यकरता । तू ने अपना दहिना हाथ
१३ बढ़ाया पृथिवी उन्हें निगल गई । तू ने अपनी दया से अपने
छुड़ाये हुए लोगों की अगुआई किई तू ने अपनी सामर्थ्य से
१४ उन्हें अपने पवित्र निवास लों पहुंचाया । लोग सुनके डरेंगे
१५ फ़िलिस्तिया के निवासियों को भय ने पकड़ लिया है । तब
अदूम के प्रधान विस्मित हुए मोअब के बलवंतों को थर्थराहट
१६ पकड़ेगी कनआन के समस्त वासी गल गये हैं । उन पर भय
और डर पड़ेगा तेरी भुजा के महत्व से वे पत्थर की नाईं चुप
रह जायेंगे जब लों तेरे लोग पार न जावें हे परमेश्वर जब लों
१७ तेरे लोग जिन्हें तू ने मोल लिया पार न जावें । तू उन्हें
भीतर लावेगा और अपने अधिकार के पहाड़ पर उस स्थान पर
जो हे परमेश्वर तू ने अपने निवास के लिये बनाया है उस

पवित्र स्थान पर हे प्रभु जिसे तेरे हाथों ने स्थापा है तू उन्हें
१८ लगायेगा । परमेश्वर सनातन सनातन राज्य करेगा ॥
१९ क्योंकि फ़िरऊन का घोड़ा उस के रथों और उस के घोड़चढ़े
समेत समुद्र में पैठा और परमेश्वर ने समुद्र का पानी उन पर
पलटाया परन्तु इसराएल के संतान समुद्र के मध्य से सूखे सूखे
चले गये ॥
२० तब हारून की बहिन मिरयम आगमज्ञानिनी ने ढोल अपने
हाथ में लिया और सब स्त्री ढोलों के साथ नाचती हुई उस
२१ के पीछे चलीं । और मिरयम ने उन्हें उत्तर दिया
कि परमेश्वर का गान करो क्योंकि वुह अति महान है उस
ने घोड़े को उस के चढ़वैये समेत समुद्र में नष्ट किया ॥
२२ और मूसा इसराएल को लाल समुद्र से ले गया और वे सूर
के बन में गये और वे तीन दिन लों बन में चले गये और
२३ पानी न पाया । और जब वे मार: में आये तब मार: का पानी
पी न सके क्योंकि वुह कड़ुआ था इस कारण वुह मार:
२४ कहाया । तब लोग यह कहिके मूसा के बिरोध में कुड़कुड़ाने
२५ लगे कि हम क्या पीयें । तब उस ने परमेश्वर की दोहाई दिई
और परमेश्वर ने उसे एक पेड़ दिखाया जब उस ने उसे पानियों
में डाला तब पानी मीठे हो गये वहां उस ने उन के लिये
एक विधि और व्यवस्था बनाई और वहां उस ने उन्हें परखा ।
२६ और कहा कि यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द ध्यान से
सुने और जो उस की दृष्टि में अच्छा है उसे करे और उस की
आज्ञाओं पर कान धरे और उस की बिधिन को चेत में रक्खे
तो मैं उन रोगों को जो मिस्रियों पर लाया तुझ पर न देऊंगा
क्योंकि मैं वुह परमेश्वर हूं जो तुझे चंगा करता है ॥
२७ तब वे एलीम को जहां जल के बारह कुए और खजूर
के सत्तर बृक्ष थे आये और उन्हों ने जल के तीर डेरा किया ॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

१ फिर उन्हों ने ऐलीम से यात्रा किई और इसराएल के संतानों
की समस्त मंडली मिस्र देश से निकलने के पीछे दूसरे मास की
पंदरहवीं तिथि को सीन के बन में जो ऐलीम और सीना के
२ मध्य में है पहुंची। और इसराएल के संतानों की सारी मंडली
३ मूसा और हारून पर बन में कुड़कुड़ाई। और इसराएल के
संतानों ने उन्हें कहा कि हाय कि हम परमेश्वर के हाथ से
मिस्र के देश में मारे जाते जब हम मांस की हांड़ियों के लग
बैठते थे और रोटी मन मनती खाते थे क्योंकि तुम हमें इस
बन में निकाल लाये हो जिसतें इस सारी मंडली को भूख से
मार डालो॥

४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख मैं स्वर्ग से तुम्हारे
लिये भोजन बरसाऊंगा और लोग प्रति दिन बंधेज से जाके
बटोरेंगे जिसतें मैं उन्हें जांचूं कि वे मेरी व्यवस्था पर चलेंगे
५ अथवा नहीं। और यों होगा कि वे छठवें दिन और दिन से
दूना बटोरेंगे और भीतर लाके पकावेंगे॥

६ सो मूसा और हारून ने इसराएल के समस्त संतानों से
कहा कि सांझ को तुम जानोगे कि परमेश्वर तुम्हें मिस्र देश से
७ बाहर लाया। और बिहान को परमेश्वर का बिभव देखोगे
क्योंकि परमेश्वर के विरोध में वुह तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुनता
८ है और हम कौन कि तुम हम पर कुड़कुड़ाते हो। और मूसा ने
कहा कि यों होगा कि संध्याकाल को परमेश्वर तुम्हें खाने को
मांस और बिहान को रोटी मनमनती देगा क्योंकि तुम्हारा
झुंझलाना जो तुम उस पर झुंझलाते हो परमेश्वर सुनता है
और हम क्या हैं तुम्हारी झुंझलाहट हम पर नहीं परन्तु
९ परमेश्वर पर है। तब मूसा ने हारून से कहा कि इसराएल के

संतान की सारी मंडली से कह कि परमेश्वर के समीप आओ
क्योंकि उस ने तुम्हारा कुड़कुड़ाना सुना है ॥
१० और यों हुआ कि जब हारून इसराएल के संतान की सारी
मंडली को कह रहा था तब उन्हों ने बन की ओर दृष्टि किई
११ और देखो परमेश्वर का बिभव मेघ में प्रगट हुआ। और परमेश्वर
१२ ने मूसा से कहा। कि मैं ने इसराएल के संतानों का कुड़कुड़ाना
सुना है उन्हें कह कि तुम सांझ को मांस खाओगे और बिहान
को रोटी से तृप्त होओगे और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर
तुम्हारा ईश्वर हूं ॥
१३ और यों हुआ कि सांझ को बटेरें ऊपर आईं और छावनी
को ढांप लिया और बिहान को सेना के आस पास ओस पड़ी।
१४ और जब ओस पड़के ऊपर गई तो देखो बन पर छोटी छोटी
१५ गोल बस्तु पाला के टुकड़े की नाईं भूमि पर पड़ी है। और
इसराएल के संतानों ने देखके आपुस में कहा कि यह क्या है
क्योंकि उन्हों ने न जाना कि वुह क्या है तब मूसा ने उन्हें
कहा कि यह वुह रोटी जिसे परमेश्वर ने तुम्हें खाने को दिया
१६ है। यह वुह बात है जो परमेश्वर ने आज्ञा किई है कि
हर एक उस में से अपने खाने के समान मनुष्य पीछे एक
ऊमर एकट्ठे करे अपने प्राणियों की गिनती के समान उन के
१७ लिये जो उस के तंबू में हैं लेओ। तब इसराएल के संतानों
ने यों हीं किया और किसी ने थोड़ा और किसी ने बहुत एकट्ठा
१८ किया। और जब हर एक ने अपने को दूसरे से तौला तो जिस
ने बहुत एकट्ठा किया था कुछ अधिक न पाया और उस का
जिस ने थोड़ा एकट्ठा किया था कुछ न घटा हर एक ने उन
१९ में से अपने खाने भर बटोरा। और मूसा ने उन से कहा कि
२० कोई उस में से बिहान लों रख न छोड़े। तथापि उन्हों ने
मूसा की बात को न माना परन्तु कितनों ने बिहान लों उस

में से कुछ रख छोड़ा और उस में कीड़े पड़ गये और बसाने
२१ लगा और मूसा उन पर क्रुद्ध हुआ। और उन में से हर एक
ने हर बिहान को अपने खाने के समान बटोरा और जब सूर्य्य
की घाम पड़ी तब वुह पिघल गया॥
२२ और यों हुआ कि छटवें दिन उन्हों ने दूना भोजन बटोरा
जन पीछे दो ऊमर और मंडली के समस्त अध्यक्षों ने आके
२३ मूसा को जनाया। तब उस ने उन्हें कहा कि यह वही है
जो परमेश्वर ने कहा है कि कल बिश्राम परमेश्वर का पवित्र
बिश्राम है तुम्हें जो भूंजना हो सो भूंज लेओ और जो पकाना
हो सो पका लेओ और जो बच रहे सो अपने लिये बिहान लों
२४ यत्न से रक्खो। सो जैसा मूसा ने आज्ञा किई थी वैसा उन्हों
ने बिहान लों उसे रहने दिया और वुह न सड़ा और न उस
२५ में कीड़े पड़े। और मूसा ने कहा कि उसे आज खाओ क्योंकि
आज परमेश्वर का बिश्राम है आज तुम उसे खेत में न पाओगे।
२६ छः दिन लों उसे बटोरो परन्तु सातवां दिन बिश्राम है उस में
२७ कुछ न होगा। और ऐसा हुआ कि कोई कोई उन लोगों में से
२८ सातवें दिन बटोरने को गये और कुछ न पाया। तब परमेश्वर
ने मूसा से कहा कि कब लों तुम मेरी आज्ञाओं को और मेरी
२९ व्यवस्था को पालन न करोगे। देखो कि परमेश्वर ने तुम्हें
बिश्राम दिया इस लिये वुह तुम्हें छठवें दिन में दो दिन का
भोजन देता है हर एक तुम्में से अपने स्थान से बाहर न
३० । ३१ जावे। तब लोगों ने सातवें दिन बिश्राम किया। और
इसराएल के घराने ने उस का नाम मन्न रक्खा और वुह
धनिआं की नाईं स्वेत और उस का स्वाद मधु सहित टिकिया
की नाईं था॥
३२ और मूसा ने कहा कि यह वुह बात है जो परमेश्वर ने आज्ञा
किई है कि उस में से एक ऊमर भर अपनी पीढ़ियों के लिये

घर रक्खो जिसतें वे उस रोटी को देखें जो मैं ने तुम्हें बन
३३ में खिलाई जब मैं तुम्हें मिस्र के देश से बहार लाया। और
मूसा ने हारून को कहा कि एक हांड़ी ले और एक ऊमर मन्न
उस में भर और उसे परमेश्वर के आगे रख छोड़ जिसतें वुह
३४ तुम्हारी पीढ़ियों के लिये धरा जाय। सो जैसा कि परमेश्वर ने
मूसा को आज्ञा किई थी वैसा हारून ने साक्षी के आगे उसे
३५ धर रक्खा। और इसराएल के संतान चालीस बरस जब लों
कि वे बस्ती में न आये मन्न खाते रहे जब लों कि वे कनआन
३६ की भूमि के सिवाने में न आये मन्न खाते रहे। अब एक
ऊमर ईफा का दसवां भाग है॥

सत्तरहवां पर्ब्ब।

१ तब इसराएल के संतान की समस्त मंडली ने अपने यात्रों
के लिये परमेश्वर की आज्ञा के समान सीन के बन से यात्रा
किई और रफ़ीदीम में डेरा किया और लोगों के पीने को पानी
२ न था। सो लोग मूसा से झगड़ने लगे और कहा कि हमें
पानी दे कि पीयें तब मूसा ने उन्हें कहा कि मुझ से क्यों
३ झगड़ते हो परमेश्वर की क्यों परीक्षा करते हो। और लोग
पानी के पियासे थे तब वुह लोग मूसा पर कुड़कुड़ाये और कहा
कि तू हमें मिस्र से क्यों निकाल लाया कि हमें और हमारे
लड़कों को और हमारे पशुन को पियास से मारे॥
४ और मूसा ने पुकारके परमेश्वर से कहा कि मैं इन लोगों से
५ क्या करूं वे मुझ पर पत्थरवाह करने को सिद्ध हैं। और
परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों के आगे जा और इसराएल
के संतान के प्राचीनों को अपने साथ ले और अपनी छड़ी
जिस्से तू ने नील नदी को मारा था अपने हाथ में ले और
६ जा। देख मैं वहां होरेब के पहाड़ पर तेरे आगे खड़ा हूंगा

और तू उस पहाड़ को मारेगा और उस्से जल निकलेगा कि
लोग पीयें और मूसा ने इसराएल के प्राचीनों की दृष्टि में
७ ऐसा ही किया। और इसराएल के संतानों के बिबाद के कारण
और इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर की परीक्षा करके कहा
था कि परमेश्वर हमारे मध्य में है कि नहीं उस ने उस स्थान
का नाम मस्स: और मरीब: रक्खा ॥
८ तब अमालीक़ चढ़ आये और रफ़ीदीम में इसराएल से
९ लड़े। तब मूसा ने यहूसूअ से कहा कि हमारे लिये मनुष्य
चुन और निकलकर अमालीक़ से लड़ कल मैं ईश्वर की छड़ी
१० अपने हाथ में लेके पहाड़ की चोटी पर खड़ा हूंगा। सो जैसा
मूसा ने उसे कहा था यहूसूअ ने वैसा किया और अमालीक़
से लड़ा मूसा हारून और हूर पहाड़ की चोटी पर
११ चढ़े। और यों हुआ कि जब मूसा अपना हाथ उठाता था
तब इसराएल जय पाता था और जब अपना हाथ लटका
१२ देता था तब अमालीक़ जय पाता था। और मूसा के हाथ
भारी हो रहे थे तब उन्हों ने एक पत्थर लेके उस के नीचे
रक्खा और वुह उस पर बैठा और हारून और हूर एक एक
ओर और दूसरा दूसरी ओर उस के हाथों को संभाले रहे
१३ और उस के हाथ सूर्य्य के अस्त लों स्थिर रहे। और यहूसूअ
ने अमालीक़ और उस के लोगों को खड्ग की धार से जीत लिया।
१४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि स्मरण के लिये पुस्तक
में इसे लिख रख और यहूसूअ के कान में कह दे कि
मैं अमालीक़ के समरण को स्वर्ग के नीचे से सर्वथा मिटा
१५ देऊंगा। और मूसा ने यज्ञबेदी बनाई और उस का नाम यह
१६ रक्खा कि परमेश्वर मेरी ध्वजा। और कहा कि परमेश्वर ने
किरिया खाके कहा है कि मैं अमालीक़ के साथ पीढ़ी से पीढ़ी
लों लड़ता रहूंगा ॥

अठारहवां पर्ब्ब ।

१ जब मिदयान के याजक मूसा के ससुर यितरू ने यह सब
सुना कि ईश्वर ने मूसा और अपने लोग इसराएल के लिये क्या
२ किया कि परमेश्वर इसराएल को मिस्र से बाहर लाया । तो
यितरू मूसा के ससुरे ने सफ़ूर: मूसा की पत्नी को उस के पीछे
३ कि उस ने उसे फिर भेजा था लिया । और उस के दो बेटों
को जिन में से एक का नाम ग़ैरसुम इस लिये कि उस ने कहा
४ कि मैं परदेश में परदेशी हूं । और दूसरे का नाम इलिअज़र
क्योंकि मेरे पिता का ईश्वर मेरा सहायक है और उस ने मुझे
५ फ़िरऊन के खड्ग से बचाया है । और मूसा का ससुर यितरू
उस के पुत्र और उस की पत्नी को लेके मूसा पास बन में आया
६ जहां उस ने ईश्वर के पहाड़ पर डेरा किया था । और मूसा
से कहा कि मैं तेरा ससुर यितरू तेरी पत्नी और उस के दो
७ पुत्र उस के संग तुझ पास आये हैं । तब मूसा अपने ससुर
की भेंट को निकला और उसे प्रणाम किया और उसे चूमा
और आपुस में एक ने दूसरे का क्षेम कुशल पूछा और तंबू में
८ आये । और सब जो परमेश्वर ने इसराएल के लिये फ़िरऊन
और मिस्रियों से किया था उस समस्त कष्ट को जो मार्ग में उन पर
पड़े थे और कि परमेश्वर ने उन्हें बचाया मूसा ने अपने ससुर
९ यितरू से वर्णन किया । और यितरू उस सब भलाई पर जिसे
परमेश्वर ने इसराएल के लिये किया था कि उस ने उसे मिस्र के
१० हाथ से बचाया आनंदित हुआ । और यितरू बोला कि परमेश्वर
धन्य है जिस ने तुम्हें मिस्रियों के हाथ और फ़िरऊन के हाथ
से बचाया जिस ने लोगों को मिस्रियों के वश से छुड़ाया ।
११ अब मैं जानता हूं कि परमेश्वर सब देवों से बड़ा है क्योंकि
जिस बात में वुह अहंकार करते थे उस में वुह उन पर प्रबल

१२ हुआ। और मूसा का ससुर यितरू चढ़ावा और बलिदान
ईश्वर के लिये लाया और हारून और इसराएल के समस्त
प्राचीन मूसा के ससुर के साथ रोटी खाने के लिये ईश्वर के
आगे आये॥
१३ और दूसरे दिन यों हुआ कि मूसा लोगों का न्याय करने
को बैठा और लोग मूसा के आगे बिहान से सांझ लों खड़े
१४ रहे। जब मूसा के ससुर ने सब कुछ जो वुह लोगों के लिये
करता था देखा तब उस ने कहा कि यह तू लोगों से क्या करता
है तू क्यों आप अकेला बैठा है और सब लोग बिहान से सांझ
१५ लों तेरे आगे खड़े हैं। तब मूसा ने अपने ससुर से कहा कि
यह इस लिये है कि लोग ईश्वर को ढूंढ़ने के लिये मुझ पास
१६ आते हैं। जब उन में कुछ बिवाद होता है तब वे मेरे पास
आते हैं और मैं मनुष्य में और उस के संगी के मध्य में
न्याय करता हूं और मैं उन्हें ईश्वर की विधि और उस की
१७ व्यवस्था से चिता देता हूं। तब मूसा के ससुर ने उस्से कहा
१८ कि तू अच्छा काम नहीं करता। तू निश्चय क्षीण हो जायगा
तू और यह मंडली भी जो तेरे साथ है क्योंकि यह काम तुझ
१९ पर निपट भारी है यह तुझ से अकेले न बन पड़ेगा। अब
मेरा कहा मान मैं तुझे मंच दूंगा और ईश्वर तेरे साथ रहे तू
उन लोगों के पास ईश्वर के आगे हो और ईश्वर के पास
२० उन के बचन लाया कर। और तू व्यवहार और व्यवस्था की
बातें उन्हें सिखा और वुह मार्ग जिस पर चलना और वुह
२१ काम जिसे करना उन्हें उचित है उन्हें बता। सो तू समस्त
लोगों में से योग्य मनुष्य चुन ले जो ईश्वर से डरते हैं और
सत्यवादी हों और लोभी न होवें और उन्हें सहस्रों और सैकड़ों
२२ और पचास पचास और दस दस पर आज्ञाकारी कर। कि हर
समय में उन लोगों का न्याय करें और ऐसा होगा कि वे हर

एक बड़ा कार्य्य तुझ पास लावेंगे पर हर एक छोटे कार्य्य का
बिचार वुह आप करेंगे यों तेरे लिये सहज हो जायगा और वे
२३ बोझ उठाने में तेरे साथी रहेंगे। यदि तू यह काम करे और
ईश्वर तुझे आज्ञा करे तो तू सहि सकेगा और ये लोग भी
अपने अपने स्थान पर कुशल से जायेंगे॥
२४ सो मूसा ने अपने ससुर का कहा सुना और जो उस ने
कहा था उस ने सब किया और मूसा ने समस्त इसराएलियों
में से योग्य मनुष्य चुने और उन्हें लोगों का प्रधान किया
सहस्रों का प्रधान सैकड़ों का प्रधान पचास का प्रधान और दस
२५ दस का प्रधान। और वे हर समय में लोगों का न्याय करते
२६ थे कठिन कार्य्य मूसा पास लाते थे। परन्तु हर एक छोटी
२७ बात आप ही चुका लेते थे। फिर मूसा ने अपने ससुर को
बिदा किया और वुह अपने देश को चला गया।

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ इसराएल के संतान मिस्र की भूमि से बाहर होके तीसरे
२ मास के उसी दिन सीना के बन में आये। और रफ़ीदीम
से चलके सीना के बन में आये और बन में डेरा किया और
३ वहां इसराएल ने पहाड़ के आगे तंबू खड़ा किया। तब मूसा
ईश्वर पास चढ़ गया और परमेश्वर ने उसे पहाड़ पर से
बुलाया और कहा कि तू यअ़कूब के घराने को यों कहियो
४ और इसराएल के संतानों से यों बोलियो। कि तुम ने देखा
कि मैं ने मिस्रियों से क्या किया और तुम्हें गिद्ध के डैनों पर
५ बैठाके तुम्हें अपने पास ले आया। और अब यदि मेरे शब्द
को निश्चय मानोगे और मेरी बाचा का पालन करोगे तो तुम
समस्त लोगों से विशेष धनिक होओगे क्योंकि सारी पृथिवी
६ मेरी है। और तुम मेरे लिये याजकमय राज्य और एक

पवित्र जाति होश्रोगे ये वुह बातें हैं जो तू इसराएल के संतान
से कहेगा ॥
७ तब मूसा आया और लोगों के प्राचीनों को बुलाया और
उन के सन्मुख ये सारी बातें जो परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई
८ थीं कह सुनाईं। और सब लोगों ने एक साथ उत्तर देके कहा
कि जो कुछ परमेश्वर ने कहा है सो हम करेंगे और मूसा ने
लोगों का उत्तर परमेश्वर कने ले पहुंचाया ॥
९ और परमेश्वर ने मूसा से कहा देख मैं अंधियारे मेघ में
तुझ पास आता हूं कि जब मैं तुझ से बातें करूं लोग सुनें और
सदा लों तेरी प्रतीति करें और मूसा ने लोगों की बातें परमेश्वर
१० से कहीं। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों पास जा
और आज कल में उन्हें पवित्र कर और उन के कपड़े धुलवा।
११ और तीसरे दिन सिद्ध रहें कि परमेश्वर तीसरे दिन सारे लोगों
१२ की दृष्टि में सीना के पहाड़ पर उतरेगा। और तू लोगों के
लिये चारों ओर बाड़ा बांधियो और कहियो कि आप से चौकस
रहो पहाड़ पर न चढ़ो और उस के खूंट को न छूओ जो कोई
१३ पहाड़ को छूयेगा सो निश्चय प्राण से मारा जायगा। कोई
हाथ उसे न छूये नहीं तो वुह निश्चय पत्थरवाह किया जायगा
अथवा बाण से मारा जायगा चाहे पशु चाहे मनुष्य हो जीता
न बचेगा जब तुरही अबेर लों बजा करे तो ये पहाड़ पर चढ़ें॥
१४ तब मूसा पहाड़ पर से लोगों के पास उतरा और लोगों
१५ को पवित्र किया और उन्हों ने अपने कपड़े धोये। और उस
ने लोगों से कहा कि तीसरे दिन सिद्ध रहो स्त्रियों से अलग
रहियो ॥
१६ और यों हुआ कि तीसरे दिन बिहान को मेघ गर्ज्जने लगे
और बिजलियां चमकीं और पहाड़ पर काली घटा उमड़ी और
तुरही का अति बड़ा शब्द हुआ यहां लों कि सब लोग छावनी

१७ में थर्थरा उठे। और मूसा लागों को तंबू के भीतर से बाहर
लाया कि ईश्वर से भेंट करावे और वे पहाड़ की नीचाई में
१८ जा खड़े हुए। और समस्त सीना पहाड़ धूआं से भर गया
क्योंकि परमेश्वर लौर में होके उस पर उतरा और भट्ठी का सा
१९ धूआं उस पर से उठा और सारा पहाड़ अति कांप गया। और
जब तुरही का शब्द बढ़ता जाता था तब मूसा ने कहा और
२० ईश्वर ने उसे शब्द से उत्तर दिया। और परमेश्वर सीना पहाड़
पर उतरा पहाड़ की चोटी पर और परमेश्वर ने पहाड़ की चोटी
२१ पर मूसा को बुलाया और मूसा चढ़ गया। तब परमेश्वर ने
मूसा से कहा कि उतर जा लागों को चिता ऐसा न हो कि वे
मेड़ तोड़के परमेश्वर को देखने आवें और बहुतेरे उन में नाश
२२ हो जावें। और याजक भी जो परमेश्वर के पास आये हैं अपने
को पवित्र करें कहीं ऐसा न हो कि परमेश्वर उन पर चपेट
२३ करे। तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि लाग सीना पहाड़ पर
आ नहीं सक्ते क्योंकि तू ने तो हमें चिता दिया है कि पहाड़
२४ के आस पास बाड़ा बांधें और उसे पवित्र करें। तब परमेश्वर
ने उसे कहा कि चल नीचे जा और तू हारून समेत फिर
ऊपर आ परन्तु याजक और लोग मेड़ तोड़के परमेश्वर पास
२५ ऊपर न आवें न होवे कि वुह उन पर चपेट करे। सो मूसा
लोगों के पास नीचे उतरा और उन से कहा॥

बीसवां पर्ब्ब।

१ और ईश्वर ने ये सब बातें यह कहते हुये कहीं॥
२ कि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र की भूमि से बंधुआई
३ के घर से निकाल लाया मैं हूं। मेरे सन्मुख तेरे लिये दूसरा
ईश्वर न होगा॥
४ तू अपने लिये खोदके किसी की मूर्त्ति और किसी वस्तु की

प्रतिमा जो ऊपर स्वर्ग पर और जो नीचे पृथिवी पर और जो
५ जल में जो पृथिवी के नीचे है मत बना। तू उन को प्रणाम मत
कर और न उन की सेवा कर क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर
ज्वलित सर्व्वशक्तिमान हूं पितरों के अपराध का दण्ड उन के पुत्रों
को जो मेरा बैर रखते हैं उन की तीसरी और चौथी पीढ़ी लों
६ देवैया हूं। और उन में से सहस्रों पर जो मुझे प्यार करते हैं
और मेरी आज्ञाओं को पालन करते हैं दया करता हूं ॥
७ परमेश्वर अपने ईश्वर का नाम अकारथ मत ले क्योंकि परमेश्वर
उसे जो उस का नाम अकारथ लेता है निष्पाप न ठहरावेगा ॥
८ विश्राम के दिन को उसे पवित्र रखने के लिये स्मरण कर
९ छः दिन लों तू परिश्रम कर और अपना समस्त कार्य्य कर।
१० परन्तु सातवां दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर का विश्राम है उस में
तू कुछ कार्य्य न करेगा न तू न तेरा पुत्र न तेरी पुत्री न तेरा
दास न तेरी दासी न तेरे पशु न तेरा पाहुन जो तेरे फाटकों
११ के भीतर है। क्योंकि परमेश्वर ने छः दिन में स्वर्ग और
पृथिवी और समुद्र और सब कुछ जो उन में है बनाया और
सातवें दिन विश्राम किया इस कारण परमेश्वर ने विश्राम दिन
को आशीष दिई और उसे पवित्र ठहराया ॥
१२ अपने पिता और अपनी माता का आदर कर जिसतें तेरी
वय उस भूमि पर जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है अधिक
होवे ॥
१३ हत्या मत कर ॥
१४ परस्त्री गमन मत कर ॥
१५ चोरी मत कर ॥
१६ अपने परोसी पर झूठी साक्षी मत दे ॥
१७ अपने परोसी के घर का लालच मत कर अपने परोसी की
स्त्री और उस के दास और उस की दासी और उस के बैल

श्रीर उस के गदहे श्रीर किसी बस्तु का जो तेरे परोसी की है
लालच मत कर ॥

१८ श्रीर सब लोग गर्ज्जना श्रीर बिजली का चमकना श्रीर तुरही
का शब्द श्रीर पर्बत से धूश्रां उठना देखते थे श्रीर जब लोगों
१९ ने देखा तो हटे श्रीर दूर जा खड़े रहे । तब उन्हों ने
मूसा से कहा कि तू ही हम से बोल श्रीर हम सुनें परन्तु ईश्वर
२० हम से न बोले न हो कि हम मर जायें । तब मूसा ने लोगों
से कहा कि भय मत करो इस लिये कि ईश्वर श्राया है कि
तुम्हें परखे श्रीर जिसतें उस का भय तुम्हारे सन्मुख प्रगट
होय जिसतें तुम पाप न करो ॥

२१ तब लोग दूर खड़े रहे श्रीर मूसा उस गाढ़े श्रंधकार के
समीप गया जहां ईश्वर था ॥

२२ श्रीर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू इसराएल के संतान
से यों कह कि तुम ने देखा कि मैं ने स्वर्ग से तुम्हारे संग
२३ बातें किईं । तुम मेरे सन्मुख चांदी का ईश्वर श्रीर सोने का
२४ ईश्वर मत बनाश्रो श्रपने लिये उन्हें मत बनाश्रो। तू मेरे
लिये मट्टी की यज्ञबेदी बना श्रीर उस पर श्रपने चढ़ावे श्रीर
श्रपनी कुशल की भेंटें श्रर्थात् श्रपनी भेड़ बकरी श्रीर श्रपनी
गाय बैल चढ़ा हर स्थान में जहां श्रपना नाम प्रगट करूंगा
२५ वहां मैं तुझ पास श्राऊंगा श्रीर तुझे श्राशीष दूंगा । श्रीर यदि
तू मेरे लिये पत्थर की यज्ञबेदी बनावे तो गढ़े हुए पत्थर से
मत बना क्योंकि यदि तू उस पर श्रपना हथियार उठावे तो
२६ उसे श्रपवित्र करेगा । श्रीर तू मेरी यज्ञबेदी पर सीढ़ी से मत
चढ़ जिसतें तेरा नंगापन उस पर प्रगट न होवे ॥

एकीसवां पर्ब्ब।

१ अब बिचार जिन्हें तू उन के आगे धरेगा ये हैं॥
२ कि यदि तू इब्री दास को मोल लेवे तो वुह छः बरस सेवा
३ करेगा और सातवें में संत से छोड़ दिया जायगा। यदि वुह
अकेला आया तो अकेला जायगा यदि वुह बिवाहित था तो
४ उस की पत्नी उस के साथ जायगी। यदि उस के स्वामी ने
उसे पत्नी दिई है और उस की पत्नी उस्से बेटे और बेटियां जनी
तो उस की पत्नी और उस के बालक उस के स्वामी के होंगे और
५ वुह अकेला चला जायगा। और यदि वुह दास खोलके कहे
कि मैं अपने स्वामी अपनी पत्नी को और अपने बालकों को प्यार
६ करता हूं मैं निर्बंध न हूंगा। तो उस का स्वामी उसे न्यायियों
के पास ले जायगा और उसे द्वार पर अथवा द्वार की चौखट पर
लावेगा और उस का स्वामी सुतारी से उस का कान छेदेगा और
वुह सदा उस की सेवा करेगा॥
७ और यदि कोई मनुष्य अपनी कन्या को बेचे जिसतें वुह
८ दासी होवे तो वुह दासों की नाईं बाहर न जा सकेगी। यदि
वुह अपने स्वामी की दृष्टि में जिस ने उस्से बिवाह किया बुरी
होय तब वुह उसे छुड़वावे परन्तु उसे सामर्थ्य न होगा कि
किसी अन्यदेशी के हाथ बेच डाले क्योंकि उस ने उस्से छल
९ किया। और यदि वुह उसे अपने बेटे से ब्याह देवे तो वुह
१० उस्से बेटियों का व्यवहार करे। यदि वुह अपने लिये दूसरी
को लेवे तो उस का अन्न उस का वस्त्र और उस के बिवाह का
११ व्यवहार न घटावे। और यदि वुह ये तीन उस्से न करे तो वुह
संत से बिना दाम दिये चली जाय॥
१२ जो कोई किसी मनुष्य को मारे और वुह मर जाय वुह
१३ निश्चय घात किया जाय। और यदि वुह मनुष्य घात में न

लगा हो परन्तु ईश्वर ने उस के हाथ में सौंप दिया हो तब
१४ मैं तुझे उस के भागने का स्थान बता दूंगा। परन्तु यदि कोई
मनुष्य अपने परोसी पर साहस से चढ़ आवे जिसतें उसे छल
से मारे तो उसे तू मेरी यज्ञवेदी से ले जिसतें वुह मारा जाय।
१५ और जो अपने पिता अथवा अपनी माता को मारे वुह निश्चय
घात किया जायगा॥

१६ और जो मनुष्य को चुरावे और उसे बेच डाले अथवा वुह उस
के हाथ में पाया जाय तो वुह निश्चय घात किया जायगा॥

१७ और वुह जो अपने पिता अथवा अपनी माता पर धिक्कार
करे निश्चय घात किया जायगा॥

१८ और यदि दो मनुष्य झगड़ें और एक दूसरे को पत्थर से
अथवा मुक्का मारे और वुह न मरे परन्तु बिछौने पर पड़ा
१९ रहे। तो यदि वुह उठ खड़ा होय और लाठी लेके चले तो
जिस ने मारा सो निर्दोष ठहरेगा केवल उस के समय की घटी
के लिये भर देवे और चंगा करावे॥

२० और यदि कोई अपने दास अथवा अपनी दासी को छड़ी
मारे और वुह मार खाती हुई मर जाय तो निश्चय उस का
२१ पलटा लिया जायगा। तथापि यदि वुह एक दिन अथवा दो
दिन जीवे तो उसे दण्ड न दिया जावे इस लिये कि वुह उस
का धन है॥

२२ और यदि मनुष्य झगड़ें और गर्भिणी को दुःख पहुंचावें ऐसा कि
उस का गर्भपात हो जाय परन्तु वुह आप न मरे तो जिस
रीति का दण्ड उस पत्नी का पति कहे दिया जावे और न्यायियों
२३ के बिचार के समान उसे डांड़ देवे। और यदि उसे कुछ हानि
२४ होवे तो तू प्राण की संती प्राण दे। आंख की संती आंख दांत
२५ की संती दांत हाथ की संती हाथ पांव की संती पांव। जलाने
की संती जलाना घाव की संती घाव चोट की संती चोट॥

२६ और यदि कोई अपने दास अथवा अपनी दासी की आंख
में मारे कि उस की आंख फूट जाय तो उस की आंख की संती
२७ में उसे छोड़ देवे। और यदि वुह अपने दास का अथवा अपनी
दासी का दांत तोड़े तो उस के दांत की संती उसे छोड़ देवे ॥
२८ और यदि मनुष्य को अथवा स्त्री को बैल सींग मारे ऐसा कि
वुह मर जाय तो वुह बैल पत्थरवाह किया जाय और उस
का मांस खाया न जावे परन्तु बैल का स्वामी निर्दोष है।
२९ और यदि वुह बैल आगे से सींग मारने की बान रखता था
और उस के स्वामी को संदेश दिया गया और उस ने उसे बांध
न रक्खा परन्तु उस ने पुरुष अथवा स्त्री को मार डाला तो
बैल पत्थरवाह किया जाय और उस का स्वामी भी घात किया
३० जाय। यदि उस पर डांड़ ठहराया जाय तो अपने प्राण
के प्रायश्चित्त के लिये जो उस के लिये ठहराया गया हो वुह
३१ देवे। चाहे उस ने सींग से पुत्र को मारा हो अथवा पुत्री को
३२ इसी आज्ञा के समान उस के लिये बिचार किया जावे। यदि
किसी के दास अथवा दासी को बैल सींग मार बैठे तो वुह
उस के स्वामी को तीस शेकल रूपा देवे और वुह बैल पत्थरवाह
किया जाय ॥
३३ और यदि कोई गड़हा खोले अथवा खोदे और उस का मुंह
३४ न ढांपे और बैल अथवा गदहा उस में गिरे। तो उस गड़हे
का स्वामी उसे भर देवे और उन के स्वामी को दाम दे और
लोथ उसी की होगी ॥
३५ और यदि किसी का बैल दूसरे के बैल को सतावे ऐसा कि
वुह मर जाय तो वुह जीते बैल को बेचें और उस के दाम
को आधो आध आपुस में बांट लेवें और वुह मरा हुआ भी
३६ उन में आधो आध बांटा जाय। और यदि जाना जाय कि
उस बैल को सींग मार बैठने की बान थी और उस के स्वामी

ने उसे बांध न रक्खा तो वुह निश्चय बैल की संती बैल देवे
और मरा हुआ उस का होगा ॥
३१ यदि कोई बैल अथवा भेड़ चुरावे और उसे मारे अथवा
बेचे तो वुह एक बैल के पांच बैल और एक भेड़ की चार भेड़ें
देगा ॥

बाईसवां पर्व्व ।

१ यदि चोर सेंध मारते हुए पाया जाय और कोई उसे मार
२ डाले तो उस की संती लोहू न बहाया जायगा । यदि सूर्य्य
उस पर उदय होवे तो उस की संती लोहू बहाया जायगा
उचित था कि वुह उसे भर देता यदि वुह कंगाल हो तो
३ अपनी चोरी के लिये बेचा जायगा । यदि चोरी की बस्तु निश्चय
उस के हाथ में जीवत पाई जाय चाहे बैल हो चाहे गदहा
चाहे भेड़ बकरी तो वुह दूना देगा ॥
४ यदि कोई खेत अथवा दाख की बारी खिलावे और अपने
पशु उस में छोड़े और दूसरे के खेत में चरावे तो अपना अच्छे
से अच्छा खेत और सुंदर से सुंदर दाख की बारी उस की संती
५ देगा । यदि आग फूट निकले और कांटों में जा लगे ऐसा कि
अनाज के ढेर अथवा बढ़ा हुआ अन्न अथवा खेत जल जाय
तो जिस ने आग बारी निश्चय वुह भर देगा ॥
६ यदि कोई अपने परोसी को रूपा अथवा पात्र रखने को
सेंपे और उस के घर से चोरी जाय तो जब वुह चोर हाथ लगे
७ तो वुह दूना भर देगा । यदि चोर पकड़ा न जाय तो उस घर
का स्वामी न्यायियों के आगे लाया जाय जिसतें जाना जाय कि उस
ने अपने परोसी की संपत्ति पर अपना हाथ बढ़ाया कि नहीं ।
८ समस्त प्रकार के अपराध में चाहे बैल चाहे गदहे चाहे भेड़
चाहे कपड़े चाहे किसी खोई हुई बस्तु को जिसे दूसरा अपनी

कहता है दोनों की बात न्यायियों के पास लाई जावे और
जिस को न्यायी दोषी ठहरावे वुह अपने परोसी को दूना देगा॥
९ यदि कोई अपने परोसी पास गदहा अथवा बैल अथवा भेड़
अथवा कोई पशु थाती रक्खे और वुह मर जाय अथवा अंग
१० भंग हो जाय अथवा हांका जाय और कोई न देखे। तो उन
दोनों के मध्य में परमेश्वर की किरिया लिई जाय कि उस ने
अपने परोसी की संपत्ति में अपना हाथ नहीं बढ़ाया और उस का
११ स्वामी मान ले तब वुह उसे भर न देगा। और यदि वुह उस
के पास से चुराया जाय तो वुह उस के स्वामी को भर दे।
१२ यदि वुह फाड़ा जाय तो वुह उसे साक्षी के लिये लावे और
भर न देगा॥
१३ और यदि कोई मनुष्य अपने परोसी से कुछ भाड़ा लेवे और
वुह अंग भंग हो जाय अथवा मर जाय और स्वामी उस के
१४ साथ न था तो वुह निश्चय उसे भर देगा। यदि उस का
स्वामी उस के साथ था तो वुह भर न देगा यदि भाड़े का
होय तो उस के भाड़े के लिये जायगा॥
१५ और यदि कोई किसी कन्या को फुसलावे जिस की बचनदत्त
न हुई और उस के संग शयन करे वुह अवश्य उसे दैजा देके
१६ पत्नी करे। यदि उस का पिता उस के देने में सर्बथा नाह
करे तो वुह कुआरियों के दान के समान उसे दैजा देगा॥
१७ तू टोनहिन को जीने मत दे॥
१८ जो कोई पशु से रति करे निश्चय घात किया जायगा॥
१९ जो कोई परमेश्वर को छोड़ किसी देवता को बलिदान देगा
वुह निश्चय नाश किया जायगा॥
२० और परदेशी को मत खिजा और उसे मत सता इस लिये
२१ कि तुम मिस्र के देश में परदेशी थे। किसी बिधवा को अथवा
२२ अनाथ लड़के को दुःख मत देओ। यदि तू उसे किसी रीति

से दुःख देवे और वुह मेरी दोहाई देवे तो मैं निश्चय उस का
२३ चिल्लाना सुनूंगा। और मेरा क्रोध भड़केगा और मैं तुम्हें खड्ग से
मारूंगा और तुम्हारी पत्नियां बिधवा और तुम्हारे पुत्र अनाथ
हो जायेंगे॥
२४ यदि तू मेरे लोग में के कंगाल को कुछ ऋण देवे तो उस
पर ब्याजग्राहक के समान मत हो उस्से ब्याज मत ले।
२५ यदि तू अपने परोसी का बस्त्र बंधक रक्खे तो चाहिये कि तू
२६ सूर्य्य अस्त होते हुए उसे पहुंचा दे। क्योंकि उस का केवल
वही ओढ़ना है वुह उस की देह का बस्त्र है जिस में वुह सो
रहता है और यों होगा कि जब वुह मेरे आगे दोहाई देगा
तब मैं सुनूंगा क्योंकि मैं दयाल हूं॥
२७ तू अध्यक्षों को दुर्बचन मत कह और अपने लोग के
प्राचीन को स्राप मत दे॥
२८ अपने पक्के फलों की बढ़ती में से और अपने दाखरस में से
देने में बिलंब मत कर अपने पुत्रों में से पहिलौठा मुझे दे।
२९ ऐसा ही तू अपने बैलों से और अपने भेड़ों से कीजियो सात
दिन लों वुह अपनी मा के साथ रहे आठवें दिन उसे मुझे
दीजियो॥
३० और तुम मेरे लिये पवित्र मनुष्य होओगे और जो पशु खेत
में फाड़ा जाय उस का मांस मत खाइयो तुम उसे कुत्तों को
दीजियो॥

तेईसवां पर्ब्ब।

१ तू मिथ्या संदेश मत फैलाइयो अधर्म की साक्षी में दुष्टों का
२ साथी मत हो। बुराई करने के लिये मंडली का पीछा मत कर
और तू किसी झगड़े में बहुतों की ओर होके अन्याय का उत्तर मत
३ दीजियो। और न कंगाल पर उस के ब्यवहार पद में दृष्टि कीजियो॥

४ यदि तू अपने बैरी के बैल अथवा उस के गदहे को बहकते
५ देखे तो उसे आवश्यक उस पास पहुंचाइयो । यदि तू अपने
बैरी के गदहे को देखे कि अपने बोझ के नीचे बैठ गया क्या
उस की सहाय न करेगा तू निश्चय उस की सहाय कीजियो ॥
६ तू अपने कंगाल के व्यवहार पद में न्याय से अलग मत
७ रहियो । झूठी बात से दूर रहियो और निर्दोषी और धर्मी को
घात मत कीजियो क्योंकि मैं दुष्ट को निर्दोष न ठहराऊंगा ॥
८ और तू अकोर मत लेना क्योंकि अकोर दृष्टिमानों को अंधा
करता है और धर्मियों के बचन को फेर देता है ॥
९ और बिदेशी पर अंधेर मत कीजियो क्योंकि तुम परदेशी
के मन को जानते हो इस लिये कि तुम आप भी मिस्र के
देश में परदेशी थे ॥
१० और अपनी भूमि में छः बरस बो और उस के फल एकट्ठे
११ कर। पर सातवें में उसे पड़ी रहने दे और छोड़ दे जिसतें तेरे लोग
के कंगाल उसे खावें और जो उन से बचे खेत के पशु चरें इसी
रीति अपनी दाख और जलपाई की बारी से व्यवहार कीजियो ॥
१२ छः दिन अपना काम काज करना और सातवें दिन बिश्राम
कीजियो जिसतें तेरे बैल और तेरे गदहे चैन करें और तेरी
१३ दासियों के बेटे और परदेशी सुस्तावें । और सब बात में जो
मैं ने तुम्हें आज्ञा दिई है चौकस रहो और उपरी देवतों का
नाम लों मत लो वुह तेरे मुंह से सुना न जाय ॥
१४ तू बरस दिन में तीन बार मेरे लिये पर्ब्ब मान तू अख़मीरी
१५ रोटी का पर्ब्ब मान । सात दिन लों जैसा मैं ने तुझे आज्ञा
किई है अख़मीरी रोटी खा आबिब के मास में क्योंकि उस में
१६ तू मिस्र से निकला और कोई मेरे आगे छूंछा न आवे । और
लवने का पर्ब्ब तेरे परिश्रम के प्रथम ही फल जो तू खेत में
बोवेगा और एकट्ठा करने का पर्ब्ब बरस के अंत जब तू खेत

१७ से अपने परिश्रम के फल एकट्ठा कर ले। तेरे समस्त पुरुष
बरस बरस तीन बार प्रभु परमेश्वर के सन्मुख होवें॥
१८ तू मेरे बलिदान का लोहू ख़मीरी रोटी के साथ मत चढ़ा
१९ और मेरे बलि की चिकनाई बिहान लों रहने न पावे। अपनी
भूमि के पहिले फलों के पहिले को परमेश्वर अपने ईश्वर के घर
में ला तू बकरी का मेम्ना उस की माता के दूध में मत
सिझा॥
२० देख मैं एक दूत तेरे आगे भेजता हूं कि मार्ग में तेरी रक्षा
करे और तुझे उस स्थान में जो मैं ने सिद्ध किया है ले जाय।
२१ उस्से चौकस रह और उस का कहा मान उसे मत खिजा
क्योंकि वुह तुम्हारे अपराध को क्षमा न करेगा क्योंकि मेरा
२२ नाम उस में है। क्योंकि यदि तू सच मुच उस का कहा माने
और सब जो मैं कहता हूं करे तो मैं तेरे शत्रुन का शत्रु
२३ और तेरे बैरियों का बैरी हूंगा। क्योंकि मेरा दूत तेरे आगे
आगे चलेगा और तुझे अमूरियों और हित्तियों और फ़रज़ियों
और कनआनियों हव्वियों और यबूसियों के देश में लावेगा
२४ और मैं उन्हें नाश करूंगा। तू उन के देवतों के आगे मत
झुकियो और न उन की सेवा करना और न उन के ऐसा कार्य्य करना
२५ परन्तु उन्हें ढा दे और उन की मूर्त्तिन को तोड़ डाल। और
परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा करो और वुह तुम्हारे अन्न जल
में आशीष देगा और मैं तुम्हारे बीच में से रोग उठा लूंगा।
२६ तेरे देश में कोई गर्भपात और बांझ न रहेगी मैं तेरे दिनों
२७ की गिनती को पूरा करूंगा। मैं अपने भय को तेरे आगे
भेजूंगा और मैं उन समस्त लोगों को जिन पास तू आवेगा नाश
करूंगा और मैं ऐसा करूंगा कि तेरे बैरी तेरे आगे पीठ फेर देंगे।
२८ और मैं तेरे आगे बर्रै को भेजूंगा और वुह हव्वी और कनआनी
२९ और हित्ती को तेरे साम्ने से भगावेगी। मैं उन्हें एक ही बरस

में तेरे आगे से दूर न करूंगा ऐसा न हो कि देश उजाड़
३० होवे और बन के पशु तेरे बिरोध में बढ़ जायें। मैं उन्हें
थोड़े थोड़े करके तेरे आगे से दूर करूंगा यहां लों कि तू बढ़
जाय और देश का अधिकारी हो जाय॥
३१ और लाल समुद्र से लेके फ़िलिस्तियों के समुद्र लों और
बन से नदी लों तेरा सिवाना बांधूंगा क्योंकि मैं देश के बासियों
को तेरे बश में करूंगा और तू उन्हें अपने आगे से निकाल
३२ देगा। तू न उन से न उन के देवतों से बाचा बांधना।
३३ वे तेरे देश में न रहेंगे ऐसा न हो कि वे मेरे बिरोध में तुझ
से पाप करावें क्योंकि यदि तू उन के देवों की सेवा करे तो
यह तेरे लिये फंदा होगा॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ और उस ने मूसा से कहा कि परमेश्वर पास चढ़ आ तू
और हारून नदब और अबिहू और इसराएल के प्राचीनों में से
२ सत्तर मनुष्य और तुम दूर से दण्डवत करो। और मूसा
अकेला परमेश्वर के पास जायगा पर वे पास न आवें और लोग
उस के साथ न चढ़ जायें॥
३ और मूसा ने आके परमेश्वर की सारी बातें और न्याय लोगों
से कहे और सारे लोगों ने एक शब्द से उत्तर देके कहा कि
४ सारी बातें जो परमेश्वर ने कही हैं हम करेंगे। और मूसा ने
परमेश्वर की सारी बातें लिखीं और बिहान को तड़के उठा
और पहाड़ के नीचे एक बेदी बनाई और इसराएल की बारह
५ गोष्ठी के समान बारह खंभे खड़े किये। और उस ने इसराएल
के संतानों के तरुण मनुष्यों को भेजा और उन्हों ने होम का
और कुशल का बलिदान बैलों से परमेश्वर के लिये चढ़ाया।
६ और मूसा ने आधा लोहू लेके पाचों में रक्खा और आधा

७ लोहू बेदी पर छिड़का। फिर उस ने नियम की पत्री लिई
और लोगों को पढ़ सुनाई और वे बोले कि सब कुछ जो
८ परमेश्वर ने कहा है हम करेंगे और आधीन रहेंगे। और मूसा
ने उस लोहू को लेके लोगों पर छिड़का और कहा कि यह
लोहू उस नियम का है जिसे परमेश्वर ने इन बातों के कारण
तुम्हारे साथ किया है॥

९ तब मूसा और हारून नदब और अबिहू और इसराएल के
१० सत्तर प्राचीन ऊपर गये। और उन्हों ने इसराएल के ईश्वर को
देखा और उस के चरणों के नीचे जैसे नीलमणि की गच के
११ कार्य्य स्वर्ग की आकृति की नाईं थे। और इसराएल के संतानों
के अध्यक्षों पर उस ने अपना हाथ न रक्खा और उन्हों ने ईश्वर
को देखा और खाया पीया॥

१२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि पहाड़ पर मुझ पास आ
और वहां रह और मैं तुझे पत्थर की पटियां और व्यवस्था
और आज्ञा जो मैं ने लिखी है दूंगा जिसतें तू उन्हें सिखावे।
१३ और मूसा और उस का सेवक यहूसूअ उठे और मूसा ईश्वर के
१४ पहाड़ पर गया। और उस ने प्राचीनों से कहा कि हमारे लिये
यहां ठहरो जब लों तुम पास हम फिर न आवें और देखो
कि हारून और हूर तुम्हारे साथ हैं यदि किसी को कुछ काम
होवे तो उन पास जाय॥

१५ तब मूसा पहाड़ पर गया और एक मेघ ने पहाड़ को ढांप
१६ लिया। और परमेश्वर का विभव सीना के पहाड़ पर ठहरा
और मेघ उसे छः दिन लों ढांपे रहा और सातवें दिन उस ने
१७ मेघ के मध्य में से मूसा को बुलाया। और परमेश्वर का बिभव
इसराएल के संतान की दृष्टि में पहाड़ की चोटी पर धधकती हुई
१८ आग की नाईं देख पड़ता था। और मूसा मेघ के मध्य में चला गया
और पहाड़ पर चढ़ गया और मूसा पहाड़ पर चालीस दिन रात रहा॥

पचीसवां पर्ब्ब ।

१। २ और परमेश्वर ने मूसा से कहा । कि इसराएल के संतान
से कह कि वे मेरे लिये भेंट लेवें हर एक से जो अपनी इच्छा
३ और अपने मन से मुझे देवे तुम मेरी भेंट ले लीजियो । और
भेंट जो तुम उन से लेओगे सो ये हैं सोना और रूपा और
४ पीतल । और नीला और बैंजनी और लाल और झीना कपड़ा और
५ बकरी के रोम । और मेढ़ों का रंगा हुआ लाल चमड़ा और
६ तुख़स की खालें और शमशाद की लकड़ी । दीपक के लिये
तेल मलने के तेल के लिये और सुगंध धूप के लिये सुगंध
७ द्रव्य । एफ़ोद के लिये और चपरास के लिये सूर्य्यकांत मणि
८ और जड़ने के मणि । और वे मेरे लिये एक पवित्र स्थान
९ बनावें और मैं उन के मध्य में बास करूंगा । तंबू और उस
के समस्त पात्रों को जैसा मैं तुझे दिखाऊं वैसा ही बनाइयो ॥
१० और शमशाद की लकड़ी की एक मंजूषा बनावें जिस की
लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ और ऊंचाई डेढ़ हाथ
११ होवे । और तू उस के भीतर और बाहर निर्मल सोना मढ़ियो
१२ और उस के ऊपर आस पास सोने के कलस बनाइयो । और
उस के लिये सोने के चार कड़े ढालके उस के चारों कोनों पर
१३ दो कड़े एक अलंग और दो कड़े दूसरी अलंग लगाइयो । और
शमशाद की लकड़ी के बहंगर बनाइयो और उन पर सोना
१४ मढ़ियो । उस मंजूषा के अलंग अलंग के कड़े में उन बहंगरों
१५ को डाल दीजियो जिसतें उन से मंजूषा उठाई जाय । मंजूषा
१६ के कड़ों में बहंगर डाले जायें वे उस्से अलग न हों । और
तू उस साक्षी को जो मैं तुझे देऊंगा उस मंजूषा में रखियो ॥
१७ और तू निर्मल सोने का एक ढकना बनाइयो जिस की
१८ लंबाई अढ़ाई हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ होवे । और पीटे

हुए सोने के दो करोबी उस के ढकने के दोनों खूंटों में बनाइयो।
१९ और एक करोबी एक खूंट में और दूसरा करोबी दूसरे खूंट में
२० ढकने से उस के दोनों खूंट में करोबियों को बनाइयो। और
वे करोबी पर फैलाये हुए हों ऐसे कि ढकना उन के पंखों के
नीचे ढंप जाय और उन के मुंह आम्ने साम्ने ढकने की ओर
२१ होवें। और तू उस ढकने को उस मंजूषा के ऊपर रखियो
२२ और वुह साक्षी जो मैं तुझे देऊं उस मंजूषा में रखियो। और
वहां मैं तुझ से भेंट करूंगा और मैं ढकने के ऊपर से दोनों
करोबियों के मध्य में से जो साक्षी की मंजूषा के ऊपर होंगे
उन सब वस्तुन के कारण जो मैं इसराएल के संतानों के लिये
तुझे आज्ञा करूंगा तुझ से बातचीत करूंगा॥
२३ और तू शमशाद की लकड़ी का दो हाथ लंबा और एक
२४ हाथ चौड़ा और डेढ़ हाथ ऊंचा मंच बनाइयो। और उसे
निर्मल सोने से मढ़ियो और उस पर चारों ओर सोने का एक
२५ कलस बनाइयो। और उस के लिये चार अंगुल झालर चारों
ओर बनाइयो और उस झालर के चारों ओर सोने के मुकुट
२६ बनाइयो। और उस के लिये सोने के चार कड़े बनाइयो और
२७ उस के चार पायों के चार कोनों में लगाइयो। झालर के आगे
२८ कड़े बहंगर के कारण हों कि मंच उठाया जाय। और तू
बहंगर शमशाद की लकड़ी का बनाना और उन्हें सोने से
२९ मढ़ना कि मंच उन से उठाया जाय। और तू उस के बरतन
और उस के करछुल और उस के पाच ढकने और उस के
उंडेलने के कटोरे जिन से उंडेला जाय बना तू उन्हें निर्मल
३० सोने से बना। और मंच पर भेंट की रोटियां मेरे सन्मुख सदा
रखियो॥
३१ और तू दीपक का एक झाड़ निर्मल सोने का बना पीटे
हुए कार्य्य का झाड़ बने और उस की डंडी और उस की

डालियां उस की कली उस के फल और उस के फूल एक ही
३२ के होवें। और छः डालियां उस की अलंगों से निकलें एक
३३ अलंग से तीन दूसरी अलंग से तीन हों। तीन कली बदामी
एक डाली में फूल फल के साथ हों और तीन कली बदामी
दूसरी डाली में अपने फूल फल के साथ हों इसी रीति से
३४ छः डालियों में जो दीअट से निकली हुई हों। और दीअट
३५ में चार कली बदामी उन के फूल फल के साथ हों। और एक
एक फल उस की दो दो डालियों के नीचे होवें और छः डालियां
३६ जो दीअट से निकली हैं उन के नीचे ऐसी ही हों। उन के
फल और उन की डालियां उसी से हों वुह सब के सब गढ़े
३७ हुए निर्मल सोने के हों। और तू उस के सात दीपक बना
और उस के दीपक जला जिसतें उस के सन्मुख उंजियाला
३८ होवे। और तू उस की कतरनी और उस के चिमटा निर्मल
३९ सोने के बना। वुह उसे इन समस्त पाच समेत मन सवा
४० एक निर्मल सोने के बनावे। और चौकस हो कि जैसा तुझे
पहाड़ पर दिखाया गया तू उसी डौल का बना॥

छब्बीसवां पर्ब्ब।

१ और तू बटे हुए झीने सूती और नीले और बैंजनी और
लाल कपड़े के दस ओटों का तंबू बना तू उन्हें चित्रकारी के
२ कार्य्य से करोबियों के साथ बना। हर एक ओट की लंबाई
अट्ठाईस हाथ और हर एक ओट की चौड़ाई चार हाथ की
३ हो हर एक ओट एक ही नाप की हो। पांचों ओट एक दूसरे
४ से जोड़ी हुई हो और पांच एक दूसरे से जोड़ी हुई हो। और
एक ओट के अंचल में मिलाने के खूंट में नीले तुकमे बना
और ऐसे ही दूसरी ओट के अंत खूंट में मिलाने की ओर बना।
५ एक ओट में पचास तुकमे बना और पचास तुकमे दूसरी ओट

के मिलाने के खूंट में बना जिसतें तुकमे एक दूसरे में जुट
६ जावें। और सोने की पचास घुण्डी बना और उन्हीं घुण्डियों
से ओट को जोड़ जिसतें एक तंबू हो जाय॥
७ और बकरी के बालों की ओट बना जिसतें तंबू के लिये
८ ढांपन हो ग्यारह ओटें तू बना। एक ओट की लंबाई तीस
हाथ और एक ओट की चौड़ाई चार हाथ होय ग्यारहों ओट
९ एक ही नाप की हों। और पांच ओट को अलग जोड़ और
छ: ओट को अलग और छठवीं ओट को तंबू के साम्ने
१० दोहराव। और पचास तुकमे एक ओट के खूंट में जो अंत के
जोड़ में है और पचास तुकमे दूसरी ओट के जोड़ में बना।
११ और पीतल की पचास घुण्डियां बना और घुण्डियों को तुकमों में
१२ डाल और तंबू को मिला जिसतें एक होवे। और तंबू की ओटों
के बचे हुए को आधी ओट जो बची हुई है तंबू के पिछली ओर
१३ लटकी रहे। और तंबू के ओटों की लंबाई में जो बचा हुआ हाथ
भर इधर और हाथ भर उधर है वुह तंबू के अलंगों पर इधर
उधर लटकाया जायगा जिसतें उसे ढांपें॥
१४ और तंबू के लिये एक घटाटोप मेढ़ों के लाल रंगे हुए
चमड़ों से और एक घटाटोप सब के ऊपर तुख़स के चमड़ों का
बना॥
१५ और तंबू के लिये शमशाद की लकड़ी से खड़े पाट बना।
१६ हर एक पाट की लंबाई दस हाथ और चौड़ाई डेढ़ हाथ होवे।
१७ और हर एक पाट में दो दो चूल हों कि एक दूसरे में किया
जाय और यों तंबू के समस्त पाटों में कर॥
१८ और तंबू के लिये दक्षिण की ओर बीस पाट बना।
१९ और बीस पाटों के नीचे चांदी के चालीस पाए दो दो पाए हर
एक पाट के नीचे उस की दोनों चूलों के लिये बना॥
२० और तंबू की दूसरी ओर के लिये जो उत्तर की ओर है

२१ बीस पाट । और उन के लिये चांदी के चालीस पाए एक पाट
के नीचे दो पाए और दूसरे पाट के लिये दो पाए बना ॥
२२ । २३ और तंबू की पश्चिम ओर छः पाट बना । और दो
२४ पाट तंबू के कोनों के लिये दोनों ओर बना । और वे नीचे
में मिलाये जावें और ऊपर से एक कड़ी में जोड़े जावें ऐसा ही
२५ दोनों कोनों के लिये होय । सो आठ पाट और उन के सोलह
चांदी के पाए होंगे दो पाए एक पाट के नीचे और दो पाए
दूसरे पाट के नीचे ॥
२६ और तू शमशाद की लकड़ी के अड़ंगे बना तंबू के एक
२७ अलंग के पाट के लिये पांच । और पांच अड़ंगे तंबू की दूसरी
ओर के पाट के लिये और पांच अड़ंगे तंबू के अलंग के पाटों
२८ के लिये पश्चिम के दोनों अलंग के लिये । और पाटों के मध्य
२९ के बीच का अड़ंगा एक ओर से दूसरी ओर लों पहुंचे । और
पाटों को सोने से मढ़ और अड़ंगों के लिये सोने के कड़े बना
और अड़ंगों को सोने से मढ़ ॥
३० और तंबू को जैसा कि मैं ने तुझे पहाड़ पर दिखाया है
वैसा ही खड़ा कर ॥
३१ और बटे हुए झीने बूटे काढ़े हुए सूती कपड़े से नीला
३२ और बैंजनी और लाल घूंघट करोबी समेत बना । और उसे
सोने से मढ़े हुए शमशाद की लकड़ी के चार खंभे पर लटका
३३ उन के सोने के अंकुरे चांदी की चार चूलों पर होवें । और
घूंघट को घुण्डी के नीचे लटका जिसतें तू घूंघट के भीतर
साक्षी की मंजूषा लावे और वुह घूंघट पवित्र और महा पवित्र
३४ स्थान में विभाग करेगा । और ढकना साक्षी की मंजूषा पर
३५ महा पवित्र स्थान में रख । और मंच को घूंघट के बाहर रख
और दीअट को मंच के सन्मुख तंबू की एक ओर दक्षिण अलंग
और मंच को उत्तर अलंग रख ॥

३६ और तंबू के द्वार के लिये नीला और बैंजनी और लाल
और बटे हुए झीने वस्त्र से बूटा काढ़ी हुई एक ओट बना।
३७ और ओट के लिये शमशाद के पांच खंभे बना और उन्हें सोने
से मढ़ उन के अंकुरे सोने के हों और तू उन के लिये पीतल
के पांच पाए ढालके बना॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब।

१ और तू शमशाद की लकड़ी की एक यज्ञबेदी पांच हाथ
लंबी और पांच हाथ चौड़ी बना यज्ञबेदी चौकोर होवे और
२ उस की ऊंचाई तीन हाथ हो। और उस के चारों कोनों के
लिये सींग बना उस की सींगें उसी से हों और उसे पीतल से
३ मढ़। और उस की राख के लिये पात्र बना और उस की
फावड़ियां और उस के कटोरे और उस के कांटे और उस की
४ अंगेठियां बना उस के समस्त पात्र पीतल के बना। और उस
के लिये पीतल के जाल की एक झंझरी बना और उस जाल
५ में पीतल के चार कड़े उस के चारों कोनों में बना। और उसे
बेदी के घेरा के नीचे रख जिसतें बेदी के मध्य लों पहुंचे।
६ और यज्ञबेदी के लिये शमशाद की लकड़ी का बहंगर बना
७ और उन्हें पीतल से मढ़। और उन बहंगरों को कड़ों में डाल
और बहंगर यज्ञबेदी के उठाने के लिये दोनों अलंग में होवें।
८ उस के पाट यों पोले बना जैसा कि तुझे पहाड़ में दिखाया
गया वैसा ही उन्हें बना॥

९ और तंबू के लिये आंगन बना दक्षिण दिशा के आंगन के
लिये बटे हुए झीने सूती कपड़े से सौ हाथ लंबा एक अलंग
१० के लिये ओट बना। और उस के बीस खंभे और उन के बीस
पाए पीतल के हों खंभों के अंकुरे और उन के डंडे रूपे
११ के हों। और ऐसे ही उत्तर की ओर की लंबाई के लिये सौ

हाथ की लंबी ओट ओर उस के बीस खंभे ओर उन के पीतल
के बीस पाए खंभों के अंकुरे ओर उन के डंडे रूपे के हों।
१२ ओर पश्चिम अलंग के आंगन की चोड़ाई में पचास हाथ की
ओट हों उन के दस खंभे ओर उन के दस पाए हों।
१३ ओर पूरब अलंग के आंगन की चोड़ाई पचास हाथ हो।
१४ ओर एक ओर की ओट पंद्रह हाथ होय उन के तीन खंभे
१५ ओर उन के तीन पाए हों। ओर दूसरी ओर की ओट पंद्रह
१६ हाथ उन के तीन खंभे ओर उन के तीन पाए। ओर आंगन
के फाटक के लिये नीला ओर बैंजनी ओर लाल रंग का बटे
हुए झीने सूती कपड़े से बूटे काढ़े हुए का बीस हाथ की
एक ओट बना उन के खंभे चार ओर उन के पाए चार।
१७ आंगन के चारों ओर के समस्त खंभे रूपे के डंडों से हों उन
१८ के अंकुरे रूपे के ओर उन के पाए पीतल के। आंगन की
लंबाई सो हाथ ओर चोड़ाई पचास हाथ ओर ऊंचाई पांच हाथ
१९ झीने बटे हुए सूती कपड़े से ओर उन के पाए पीतल के। तंबू
की समस्त सेवा के लिये समस्त पाच ओर उस के सब खूंटे उस
के ओर आंगन के समस्त खूंटे पीतल के हों॥

२० ओर इसराएल के संतान को आज्ञा कर कि तेरे पास कूटे
हुए जलपाई का निर्मल तेल लावें जिसतें दीपक सदा बरा करे।
२१ घूंघट के बाहर जो साक्षी के आगे है मंडली के तंबू में हारून
ओर उस के बेटे सांझ से लेके बिहान ताईं परमेश्वर के आगे
नित्य उन की पीढ़ी से पीढ़ी लों इसराएल के संतानों के लिये
यह बिधि है॥

अठाईसवां पर्ब्ब।

१ ओर इसराएल के संतानों में से अपने भाई हारून ओर
उस के पुत्रों को अपने पास ले जिसतें वे याजक के पद में मेरी

सेवा करें अर्थात् हारून और हारून के पुत्र नदब और अबिहू
२ इलिअज़र और ईतमर को। और अपने भाई हारून के लिये
३ जिसतें बिभव और सोभा हो पवित्र वस्त्र बना। और उन समस्त
बुद्धिमानों से जिन्हें मैं ने बुद्धि का आत्मा दिया है कह कि
वे हारून को पवित्र करने के लिये वस्त्र बनावें जिसतें वुह मेरे
४ लिये याजक हो। और ये वे वस्त्र हैं जो वे बनायेंगे चपरास
और एफ़ोद और बागा और बूटा काढ़ी हुई कुरती और मुकुट
और कटिबंध और वे पवित्र वस्त्र तेरे भाई हारून और उस के
५ बेटों के लिये बनावें कि मेरे लिये याजक होवें। और वे सोना
और नीला और बैंजनी और लाल और भीना कपड़ा लेंगे॥
६ और वे एफ़ोद को सोने नीले और बैंजनी लाल और बटे
७ हुए भीने कपड़े से बूटा काढ़ा हुआ बनावें। दो कंधे का जोड़ा
उस की दोनों ओरों से मिले हुए हों जिसतें यों मिलाया जाय।
८ और बूटा काढ़ा हुआ एफ़ोद का पटुका जो उस पर है उसी
के कार्य्य के समान उसी से हो सोने नीले और बैंजनी और
९ लाल और भीने बटे हुए सूती कपड़े से हो। और दो बैदूर्यमणि
१० ले और उन पर इसराएल के संतानों के नाम खोद। उन में
से छः के नाम एक मणि पर और शेष के छः नाम दूसरे मणि
११ पर उन की उत्पत्ति के विधि से होवें। मणि के खोदवैये के
कार्य्य से छापा के खोदने के समान दोनों मणि पर इसराएल
१२ के संतानों के नाम खोद उन्हें सोने के टिकानों में जड़। और
दोनों मणि को एफ़ोद के दोनों मोंढ़ों पर रख कि इसराएल के
संतानों के स्मरण के लिये होवें और हारून उन के नाम
परमेश्वर के आगे अपने दोनों कंधों पर स्मरण के लिये उठावेगा।
१३ । १४ और सोने के टिकाने बना। और दोनों सीकरें निर्मल
सोने से खूंटों में गूथने के कार्य्य से उन्हें बना और गुथी हुई
सीकरों को उन टिकानों में जड़॥

१५ और चित्रकारी से न्याय के लिये एक चपरास बना एफोद
के कार्य्य के समान सोने नीले बैंजनी और लाल और झीने
१६ बटे हुए सूती कपड़े से बना। यह चौकोर दोहरा होवे उस
१७ की लंबाई एक बित्ता और उस की चौड़ाई एक बित्ता। और
मणि की चार पांती उस में भर दे पहिली पांती में मणिका
१८ पद्मराग और लालड़ी। और दूसरी पांती में मर्कत नीलमणि
१९ और हीरा। और तीसरी पांती में लशम सूर्यकांत और नीलम।
२० और चौथी पांती में बैदूर्य फीरोज़ा और चंद्रकांत वे सोने के
२१ ठिकाने में जड़े जावें। और वे मणि इसराएल के बंश के
नामों के समान होंगे उन के नामों के समान बारह वे
बारह गोष्ठी लों छापे के खोदे हुए हर एक अपने अपने
२२ नाम के समान होंगे। और चपरास के ऊपर निर्मल सोने की
२३ गुथी हुई सीकरें खूंट में बना। और चपरास पर सोने की
दो कड़ियां बना और उन्हें चपरास के दोनों खूंटों में लगा।
२४ और सोने की गुथी हुई सीकर उन दोनों कड़ियों में जो चपरास
२५ के दोनों खूंटों में हैं लगा। और गुथे हुए दोनों के दोनों
खूंट उन के दो ठिकाने में जड़ और उन्हें एफोद के कंधों पर
२६ आगे रख। और सोने की दो कड़ियां बना और उन्हें चपरास
के दोनों अंतों पर उस के कोर पर जो भीतर एफोद के साम्ने
२७ है रख। और सोने की दो कड़ियां बना और उन्हें एफोद के
नीचे दोनों अलंग में उस के आगे की ओर जोड़के साम्ने
२८ चित्रकारी के एफोद के ऊपर रख। और वे चपरास को उस
की कड़ियों से एफोद की कड़ियों में नीले गोटे से बांधें कि
एफोद के पटुके के ऊपर हों जिसतें चपरास एफोद से न हटे।
२९ और हारून नित्य परमेश्वर के आगे स्मरण के लिये जब वुह
पवित्र स्थान में जावे इसराएल के संतानों के नाम न्याय की
चपरास पर अपनी छाती पर उठावे॥

३० और तू ऊरीम और तुम्मीम को न्याय की चपरास में रख
वुह हारून की छाती पर होंगे जब वुह परमेश्वर के आगे
जायगा और हारून इसराएल के संतानों के न्याय को अपनी
छाती पर परमेश्वर के आगे सदा लिये रहे ॥
३१ । ३२ और एफोद का बागा सर्बच नीला बना। और उस के
ऊपर उस के मध्य में एक छेद होवे और उस छेद की चारों
ओर बिने हुए कार्य्य के गोटे हों जैसा झिलम का मुंह होता
३३ है जिसतें फटने न पावे। और उस के खूंट के घेरे में नीले
और बैंजनी और लाल रंग के अनार बना और घेरे में सोने
३४ के घंटे उन के मध्य में बना। सोने का घंटा और अनार
३५ सोने का घंटा और अनार बागे के खूंटों के घेरे में। और
सेवा के समय हारून उसे पहिने और जब वुह पवित्र स्थान
में परमेश्वर के आगे जावे और जब निकले तब उस का शब्द
सुना जायगा जिसतें वुह मर न जाय ॥
३६ और निर्मल सोने की एक पटरी बना और उस पर खोदे
३७ हुए छाप की नाईं खोद कि परमेश्वर के लिये पवित्रमय। और
उसे नीले गोटे पर लगा जिसतें वुह मुकुट पर होवे वुह मुकुट
३८ पर आगे की ओर होगा। और वुह हारून के ललाट पर होय
कि हारून पवित्र बस्तुन के पापों को जिन्हें इसराएल के संतान
अपनी समस्त पवित्र भेंटों में पवित्र करेंगे और वही उस के
ललाट पर सदा हो जिसतें वे परमेश्वर के आगे ग्राह्य होवें ॥
३९ और बागे पर झीने सूती कपड़े से बूटा काढ़ और मुकुट
को झीने बस्त्र से बना और कटिबंध को चित्रकारी से बना॥
४० और हारून के बेटों के लिये बागे बना और उन के लिये
कटिबंध बना और उन के लिये पगड़ी बिभव और शोभा के लिये
४१ बना। और उन्हें अपने भाई हारून पर और उस के संग उस के
बेटों पर पहिना और उन्हें अभिषेक कर और उन्हें स्थापित और

४२ पवित्र कर जिसतें कि वे मेरे लिये याजक होवें। और उन के
लिये सूती जांघिया बना कि उन की नग्नता ढांपी जाय और
४३ चाहिये कि यह कटि से जांघ लों हो। और वे हारून और
उस के बेटों पर होवें जब वे मंडली के मंदिर में प्रवेश करें
अथवा जब वे पवित्र स्थान में यज्ञवेदी के पास सेवा को आवें
कि वे पाप न उठावें और मर जायें यह विधि उस के और
उस के पीछे उस के बंश के लिये सदा को है॥

उंतीसवां पर्ब्ब।

१ और जो तू उन के लिये करेगा जिसतें उन्हें पवित्र करे
कि वे मेरे लिये याजक होवें सो यह है कि तू एक बछड़ा
२ और दो निष्कलंक मेंढ़े ले। और अख़मीरी रोटी और फुलके
और अख़मीरी फुलके तेल से चुपड़े हुए और अख़मीरी
टिकरी तेल में चुपड़ी हुई स्वेत गेहूं के पिसान की बना।
३ और उन्हें एक टोकरी में रख और उन्हें टोकरी में बछड़े
४ और दोनों मेंढ़ों समेत आगे ला। और हारून और उस के
बेटों को मंडली के तंबू के द्वार पर ला और उन्हें जल से
५ नहला। और वस्त्र ले और हारून को कुरते और एफोद का
बागा और एफोद और चपरास पहिना और एफोद का पटुका उस
६ पर बांध। और मुकुट को उस के सिर पर रख और पवित्र किरीट
७ मुकुट पर धर। तब अभिषेक करने का तेल ले और उस के
सिर पर ढाल और उसे अभिषेक कर॥

८ और उस के बेटों को आगे ला और उन्हें कुरते पहिना।
९ और उन पर अर्थात् हारून और उस के बेटों पर कटिबंध लपेट और
उन पर पगड़ी बांध जिसतें याजक का पद सनातन की बिधि के
लिये उन्हीं का होवे और हारून और उस के बेटों को स्थापित कर॥

१० और उस बैल को मंडली के तंबू के आगे ला और हारून

११ और उस के बेटे अपने हाथ उस बैल के सिर पर रक्खें। और
उस बैल को मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे बलिदान
१२ कर। और उस बैल के लोहू में से कुछ ले और अपनी अंगुली
से यज्ञबेदी के सींगों पर लगा और समस्त लोहू यज्ञबेदी के
१३ नीचे ढाल। और उस की समस्त चिकनाई जो उस के अंतर
को ढांपती है और जो कलेजे के ऊपर है और दोनों गुर्दे और
१४ जो चिकनाई उन पर है ले और यज्ञबेदी पर जला। और
उस बैल का मांस और उस की खाल और उस का गोबर छावनी
के बाहर आग से जला यह पापों का बलिदान है॥

१५ और एक मेंढ़े को ले और हारून और उस के बेटे अपने हाथ
१६ उस मेंढ़े के सिर पर रक्खें। और उस मेंढ़े को बलिदान कर
और तू उस का लोहू ले और यज्ञबेदी पर उस के चारों ओर
१७ छिड़क। और उस मेंढ़े को टुकड़ा टुकड़ा कर और उस के
अंतर और उस के पांव को धो और उन्हें उस के टुकड़ों पर
१८ और उस के सिर पर रख। और उस समस्त मेंढ़े को यज्ञबेदी
पर जला वुह बलिदान की भेंट परमेश्वर के लिये अग्नीय सुगंध
बास परमेश्वर के लिये है॥

१९ और दूसरा मेंढ़ा ले और हारून और उस के बेटे अपने
२० हाथ उस मेंढ़े के सिर पर रक्खें। तब तू उस मेंढ़े को बलिदान
कर और उस के लोहू में से ले और हारून के और उस के
बेटों के दहिने कान की लहर पर और उन के दहिने हाथ के
अंगूठे पर और दहिने पांव के अंगूठे पर लगा और लोहू को
२१ यज्ञबेदी पर चारों ओर छिड़क। और उस लोहू में से जो
यज्ञबेदी पर है और अभिषेक का तेल ले और हारून पर और
उस के वस्त्रों पर और उस के बेटों पर और उस के बेटों के
बस्त्रों पर उस के साथ छिड़क तब वुह और उस के बस्त्र और
उस के बेटे और उस के बेटों के बस्त्र उस के संग पवित्र

२२ होंगे। और मेंढ़े की चिकनाई और पूंछ और वुह चिकनाई जो ओझ
को ढांपती है और जो कलेजे को ढांपती है और दोनों गुर्दों
को और वुह चिकनाई जो उन पर है और दहिना मोंढा ले
२३ इस लिये कि वुह स्थापने का मेंढ़ा है। और एक रोटी और
तेल में चुपड़ी हुई रोटी का एक फुलका और एक टिकरी उस
अख़मीरी रोटी के टोकरे में से जो परमेश्वर के सन्मुख है।
२४ और यह सब हारून के और उस के बेटों के हाथ पर रख
और उन्हें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के लिये हिला।
२५ और उन्हें उन के हाथ से ले और यज्ञबेदी पर बलिदान
की भेंट के लिये जला कि परमेश्वर के आगे सुगंध के लिये
२६ हो यह आग का बलिदान परमेश्वर के लिये है। और तू
हारून के स्थापित मेंढ़े की छाती ले और उसे परमेश्वर के आगे
हिलाने के बलिदान के लिये हिला और वुह तेरा भाग होगा।
२७ और तू हिलाने की छाती को और उठाने के मोंढ़े को जो
हारून और उस के बेटों को स्थापित करने का मेंढ़ा हिलाया
२८ और उठाया गया है पवित्र कर। और हारून और उस के
बेटों के लिये इसराएल के संतानों में से यह बिधि सदा
होगी क्योंकि वुह उठाई हुई भेंट है और सदा इसराएल
के संतानों से उन के कुशल के बलिदानों में से उठाई हुई
भेंट होगी यह उन की उठाई हुई भेंट परमेश्वर के लिये
है॥

२९ और हारून के पवित्र बस्त्र उस के पीछे उस के बेटों के
लिये उन के अभिषेक के लिये हों कि वे उन में स्थापित
३० होवें। जो बेटा उस की संती याजक होवे जब वुह मंडली
के तंबू में पवित्र सेवा करने को आवे तब वुह उन्हें सात दिन
३१ पहिने। और स्थापने का मेंढ़ा ले और उस का मांस पवित्र
३२ स्थान में उसिन। और हारून और उस के बेटे मेंढ़े का मांस

और वुह रोटी जो टोकरी में मंडली के तंबू के द्वार पर है
३३ खावें। और जिन बस्तुन से प्रायश्चित्त हुआ कि उन्हें स्थापित
और पवित्र करें वे खावें परन्तु परदेशी न खावे क्योंकि वे पवित्र
३४ हैं। और यदि स्थापित के मांस में से और रोटी में से बिहान
लों कुछ रह जाय तो तू उस बचे हुए को आग में जला दे वुह
खाया न जाय क्योंकि वुह पवित्र है॥
३५ और तू हारून और उस के बेटों को यों कर उस समस्त
के समान जो मैं ने तुझे आज्ञा किई है सात दिन लों उन्हें
३६ स्थापित करेगा। और तू प्रतिदिन पाप के प्रायश्चित्त के कारण
एक बैल को चढ़ाइयो और यज्ञबेदी को पवित्र करने को जब
तू उस के लिये प्रायश्चित्त करे तो उसे पावन करने को अभिषेक
३७ कर। तू बेदी के लिये सात दिन प्रायश्चित्त करके उसे पवित्र
कर और वुह बेदी अत्यंत पवित्र हो जायगी जो कोई उस
बेदी को छूये सो पवित्र हो॥
३८ और यह तू यज्ञबेदी पर कीजियो पहिले बरस का दो
३९ मेम्ना प्रतिदिन नित्य चढ़ाइयो। एक मेम्ना बिहान को और
४० दूसरा मेम्ना सांझ को बलिदान कीजियो। और गेंहूं के पिसान
का दसवां भाग जो जलपाई के कूटे हुए एक पाव हीन
तेल से मिला हुआ हो और एक पाव हीन दाखरस एक मेम्ना के
४१ साथ तपावन के लिये होय। और दूसरा मेम्ना सांझ को
चढ़ाइयो बिहान की भेंट के समान और उस के तपावन के
समान उस्से कीजियो जिसतें परमेश्वर के लिये आग की सुगंध
४२ बासना की भेंट हो। बलिदान की भेंट तुम्हारी पीढ़ी से पीढ़ी
लों मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे नित्य होगी
४३ जहां मैं तुम से बात्तो करने के लिये भेंट करूंगा। और मैं
इसराएल के संतान से वहां भेंट करूंगा और वुह मेरी बिभव
४४ में पवित्र होगा। और मैं मंडली के तंबू को और यज्ञबेदी को

पवित्र करूंगा और हारून और उस के बेटों को पवित्र करूंगा
४५ कि वे मेरे लिये याजक होवें। और मैं इसराएल के संतानों
४६ में बास करूंगा और मैं उन का ईश्वर हूंगा। और वे जानेंगे
कि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूं जो उन्हें मिस्र की भूमि से
निकाल लाया जिसतें मैं उन के मध्य में बास करूं मैं परमेश्वर
उन का ईश्वर हूं॥

तीसवां पर्ब्ब।

१ और तू शमशाद की लकड़ी से धूप जलाने के लिये एक
२ यज्ञबेदी बना। उस की लंबाई और चौड़ाई एक एक हाथ
चौकोर होवे और उस की ऊंचाई दो हाथ उस के सींग उसी से
३ हों। और उसे निर्मल सोने से मढ़ उस की छत और उस के चारों
ओर के मुकुट और उस के सींगों को और उस के चारों ओर
४ सोने का मुकुट बना। और सोने के दो कड़े उस के मुकुट के
नीचे उस के दोनों कोनों के पास उस की दोनों अलंग पर बना
५ और वे उठाने के बहंगर के स्थान होंगे। और बहंगर को
६ शमशाद की लकड़ी से बना और उन्हें सोने से मढ़। और
उसे ओभल के आगे जो साक्षी की मंजूषा के ऊपर है रख उस
ढंकने के साम्ने जो साक्षी के ऊपर है जहां मैं तुझ से भेंट
७ करूंगा। और हर बिहान को हारून उस पर सुगंध द्रब्य का
धूप जलावे जब वुह दीपकों को सुधारे वुह उस पर धूप
८ जलावे। और जब हारून संध्या के समय में दीपक को बारे
तो वुह उस पर तुम्हारी समस्त पीढ़ियों में परमेश्वर के आगे धूप
९ जलावे। तुम उस पर उपरी धूप और भेंट का बलिदान और
भोजन की भेंट न चढ़ाइयो और उस पर तपावन न तपाइयो।
१० और हारून बरस भर में एक बार उस के सींगों पर पाप की
भेंट के प्रायश्चित्त के लोहू से प्रायश्चित्त करे तुम्हारी

पीढ़ियों में बरस में एक बार उस पर प्रायश्चित्त करे यह
परमेश्वर के लिये अति पवित्र है ॥
११ । १२ और परमेश्वर मूसा से यह करके बोला । कि जब तू
इसराएल के संतानों को गिने तब उन में से हर मनुष्य अपने
प्राण के छुड़ाने के लिये परमेश्वर को देवे जब तू उन की
गिनती करे जिसतें गिनती करने में उन पर मरी न आवे ।
१३ जो कोई गिनती किये गये होवें सो पवित्र स्थान के शेकलों के
समान आधा शेकल देवे एक शेकल बीस गिरह सो आधा शेकल
१४ परमेश्वर की भेंट है । जो कोई गिनती किये गये में होवें बीस
बरस का और जो ऊपर होवे सो परमेश्वर के लिये भेंट देवे ।
१५ अपने प्राण का प्रायश्चित्त करने को परमेश्वर की भेंट देने में
धनी कंगाल से अधिक न देवे और कंगाल आधे शेकल से न
१६ घटावे । और तू इसराएल के संतानों के प्रायश्चित्त का दाम
ले और उसे मंडली के तंबू के कार्य्य की सेवा के लिये ठहरा
और यह इसराएल के संतानों के लिये परमेश्वर के आगे स्मरण
होगा जिसतें उन के प्राणों के लिये प्रायश्चित्त करे ॥
१७ । १८ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि पीतल का
एक स्नान पात्र बना और उस का पाया स्नान करने के लिये
पीतल का बना और उस को मंडली के तंबू और यज्ञबेदी के
१९ मध्य में रख और उस में जल डाल । और हारून और उस
२० के बेटे अपने हाथ पांव उस्से धोवें । जब वे मंडली के तंबू में
जावें तब वे जल से धोवें जिसतें न मरें अथवा जब वे सेवा के
लिये यज्ञबेदी के पास जावें कि परमेश्वर के लिये आग की
२१ भेंट जलावें । तब वे अपने हाथ पांव धोवें जिसतें वे न मरें
और यह व्यवहार उन के लिये अर्थात् उस के और उस के बंश
की समस्त पीढ़ी लों सदा के लिये होवे ॥
२२ । २३ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि तू अपने लिये

प्रधान सुगंध द्रव्य अर्थात् पांच सौ शेकल के चोखे गंधरस और
उस की आधी अर्थात् अढ़ाई सौ की मीठी दारचीनी और अढ़ाई
२४ सौ का सुगंध बच अपने लिये ले। और पवित्र स्थान की
शेकल के तौल पांच सौ शेकल भर तज ले और जलपाई का
२५ तेल एक हीन। और इन्हें पवित्र मलने का तेल बना गंधी
की रीति के समान मिलाके लेपन बना यही पवित्र अभिषेक का
२६ तेल होगा। और उस्से मंडली के तंबू को और साक्षी की
२७ मंजूषा को अभिषेक कर। और मंच और उस के समस्त पात्र
२८ और दीअट और उस के पात्र और धूप की बेदी। और बलिदान की
भेंट की बेदी उस के समस्त पात्र सहित और स्नान पात्र और उस
२९ का पाया। और उन्हें पवित्र कर कि वे अति पवित्र हो जायें
३० जो उन्हें छूवे सो पवित्र होवे। और हारून और उस के बेटों
को अभिषेक करके उन्हें पवित्र कर कि मेरे लिये याजक
३१ होवें। और इसराएल के संतान को यह कहके बोल कि
यह पवित्र अभिषेक का तेल मेरे लिये तुम्हारी पीढ़ियों में
३२ होय। किसी मनुष्य के शरीर पर न डाला जाय और तुम
वैसा और उसी के मेल में न बनाइयो वुह पवित्र है तुम्हारे
३३ लिये पवित्र होगा। जो कोई उस के समान बनावे अथवा जो
कोई उसे किसी परदेशी पर लगावे सो अपने लोगों से कट
जायगा॥

३४ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू अपने लिये सुगंध
द्रव्य अर्थात् बोल और नखी और शुद्ध कुंदुरू यह सुगंध द्रव्य
३५ और चोखा लोबान लीजियो हर एक समान समान होगा। और
उन का सुगंध बनाइयो गंधी के कार्य्य के समान मिलाया हुआ
३६ पवित्र और शुद्ध होवे। और उस में से कुछ बुकनी कर और
उस में से कुछ मंडली के तंबू की साक्षी के आगे रख जहां मैं
३७ तुझ से भेंट करूंगा वुह तुम्हारे लिये अति पवित्र होगा। और

वुह धूप जो तू बनायेगा तुम उस की मिलावट के समान
अपने लिये मत बनाओ वुह तुम्हारे पास परमेश्वर के लिये
३८ पवित्र होगा। जो कोई सूंघने के लिये उस के समान बनावेगा
सो अपने लोगों में से कट जायगा॥

एकतीसवां पर्ब्ब।

१। २ और परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला। कि देख मैं
ने ऊरी के पुत्र बज़िल्लिएल को जो हूर का पोता यहूदाह के
३ कुल में का है नाम लेके बुलाया। और मैं ने उसे बुद्धि में
और समझ में और ज्ञान में और समस्त प्रकार की हथौटी में
४ ईश्वर के आत्मा से भर दिया। कि सोने और रूपे और
पीतल के कार्य्य करने में अपनी बुद्धि से हथौटी का कार्य्य
५ निकाले। और मणि के खोदने में जड़ने के लिये और काष्ठ
के खोदने में जिसतें समस्त प्रकार की हथौटी का कार्य्य करे।
६ और देख मैं ने उस के संग अहलिअब को जो अख़िसमक का
पुत्र और दान के कुल में का है दिया और मैं ने समस्त
बुद्धिमानों के अंत:करणों में बुद्धि दिई कि सब जो मैं ने तुझे
७ आज्ञा किई है बनावें। अर्थात् मंडली का तंबू और साक्षी की
मंजूषा और वुह ढकना जो उस पर है और तंबू के समस्त
८ पात्र। और मंच और उस के पात्र और पवित्र दीअट उस के
९ पात्र सहित और धूप की बेदी। और बलिदान की भेंट की बेदी उस
१० के समस्त पात्र समेत और स्नान पात्र और उस का पाया। और
सेवा के बस्त्र और हारून याजक के लिये पवित्र बस्त्र और
उस के बेटों के बस्त्र जिसतें याजक की सेवा में सेवा करें।
११ और अभिषेक का तेल और पवित्र स्थान के लिये सुगंध धूप
उस समस्त आज्ञा के समान जो मैं ने तुझ से किई है वे
करें॥

१२।१३ और परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला। कि तू
इसराएल के संतानों को यह कहके बोल कि निश्चय तुम
मेरे बिश्रामों का पालन करो क्योंकि वुह मेरे और तुम्हारे मध्य
में तुम्हारी पीढ़ियों में एक चिन्ह है जिसतें तुम जानो
१४ कि मैं परमेश्वर तुम्हें पवित्र करता हूं। सो बिश्राम का पालन
करो क्योंकि वुह तुम्हारे लिये पवित्र है हर एक जो उसे
अशुद्ध करेगा निश्चय बध किया जायगा क्योंकि जो कोई उस
में कार्य्य करे वुह प्राणी अपने लोगों में से काट डाला जायगा।
१५ छः दिन कार्य्य किया जावे परन्तु सातवां चैन का बिश्राम
परमेश्वर के लिये पवित्र है जो कोई बिश्राम के दिन में कार्य्य
१६ करे वुह निश्चय बध किया जायगा। सो इसराएल के संतान
बिश्राम का पालन करें कि सनातन नियम के लिये उन की
१७ पीढ़ियों में बिश्राम का पालन होवे। मेरे और इसराएल के
संतानों के मध्य में यह सदा के लिये चिन्ह है क्योंकि परमेश्वर
ने छः दिन में स्वर्ग और पृथिवी उत्पन्न किये और सातवें दिन
अवकाश पाया और तृप्त हुआ॥
१८ और जब वुह मूसा से सीना के पहाड़ पर बार्त्ता कर चुका
तब साक्षी के पत्थर की दो पटियां ईश्वर की अंगुलियों से लिखी
हुईं उस ने उसे दिईं॥

बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ जब लोगों ने देखा कि मूसा ने पहाड़ से उतरने में बिलंब
किया तब वे लोग हारून के पास एकट्ठे हुए और उसे कहा
कि उठ हमारे लिये ईश्वर बना जो हमारे आगे चलेंगे क्योंकि
यह मूसा वुह पुरुष जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया हम
२ नहीं जानते कि उसे क्या हुआ। तब हारून ने उन्हें कहा
कि सोने की उन बालियों को जो तुम्हारी पत्नियों के तुम्हारे

बेटों के और तुम्हारी बेटियों के कानों में हैं तोड़ तोड़के
३ मुझ पास लाओ। सो समस्त लोग सोने की बालियां तोड़
४ तोड़के जो उन के कानों में थीं हारून के पास लाये। और
उस ने उन के हाथों से लिया और ढाला हुआ एक बछड़ा
बनाके टांकी से उस का डौल किया और उन्हें कहा कि हे
इसराएल यह तेरा ईश्वर है जो तुझे मिस्र के देश से निकाल
५ लाया। और जब हारून ने देखा तो उस के आगे बेदी बनाई
और यह कहके प्रचार कराया कि कल परमेश्वर के लिये पर्व्व
६ है। और वे बिहान को तड़के उठे और बलिदान की भेंटें
चढ़ाईं और कुशल की भेंटें लाये और लोग खाने पीने को बैठे
और लीला करने को उठे॥

७ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि उतर जा क्योंकि तेरे
लोगों ने जिन्हें तू मिस्र के देश से निकाल लाया आप को भ्रष्ट
८ किया है। वे उस मार्ग से जिस की मैं ने उन्हें आज्ञा किई
थी शीघ्र फिर गये उन्हों ने अपने लिये ढाला हुआ बछड़ा
बनाया और उसे पूजा और उस के लिये बलिदान चढ़ाके
कहा कि हे इसराएल यह तेरे ईश्वर हैं जो तुझे मिस्र देश से
९ निकाल लाये। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि मैं ने इन
लोगों को देखा और देखो कि वुह कठोर गरदन के लोग
१० हैं। सो अब तू मुझे छोड़ कि मेरा क्रोध उन पर भड़के
और मैं उन्हें भस्म करूं और मैं तुझ से एक बड़ी जाति
बनाऊंगा॥

११ तब मूसा ने परमेश्वर अपने ईश्वर की बिनती किई और
कहा कि हे परमेश्वर किस लिये तेरा क्रोध अपने लोगों पर
भड़केगा जिन्हें तू मिस्र देश से महा पराक्रम और सामर्थी हाथ
१२ से निकाल लाया। किस लिये मिस्री कहके बोलें कि वुह बुराई
के लिये उन्हें निकाल ले गया जिसतें उन्हें पहाड़ों में नाश

करे और उन्हें पृथिवी पर से भस्म करे अपने अत्यंत क्रोध से फिर
१३ जा और अपने लोगों पर बुराई पहुंचाने से फिर जा। अपने
दासों अबिरहाम इज़हाक और इसराएल को स्मरण कर जिन
से तू ने अपनी ही किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हारे बंश को
स्वर्ग के तारों के समान बढ़ाऊंगा और यह समस्त देश जिस
के बिषय में मैं ने कहा है कि मैं तुम्हारे बंश को देऊंगा और
१४ वे उस के सनातन के अधिकारी होंगे। तब परमेश्वर उस बुराई
से जो चाही थी कि अपने लोगों पर करे फिरा॥
१५ और मूसा फिरा और पहाड़ से उतरा और साक्षी की दोनों
पटियां उस के हाथ में थीं पटियां दोनों ओर लिखी हुई थीं।
१६ और वे पटियां ईश्वर के कार्य्य थीं और जो लिखा हुआ सो
१७ ईश्वर का लिखा पटियों पर खोदा हुआ। जब यहूसूअ ने लोगों
के कोलाहल का शब्द सुना तो मूसा से कहा कि छावनी में
१८ लड़ाई का शब्द है। और कहा कि यह आपुस में जो शब्द
होता है सो न हार का शब्द है और न जीत का शब्द है
१९ परन्तु गीत का शब्द मैं सुनता हूं। और यों हुआ कि जब
वुह छावनी के पास आया तब उस ने उस बछड़े को और
नाचना देखा तब मूसा का क्रोध भड़का और उस ने वुह पटियां
अपने हाथों से फेंक दिईं और उन्हें पहाड़ के नीचे तोड़ डाला।
२० तब उस ने उस बछड़े को जिसे उन्हों ने बनाया था लिया
और उसे आग में जलाया और उसे बुकनी किया और पानी पर
बियराया और इसराएल के संतानों को पिलाया॥
२१ और मूसा ने हारून को कहा कि इन लोगों ने तुझ से क्या
२२ किया कि तू उन पर ऐसा महा पाप लाया। और हारून ने
कहा कि मेरे प्रभु का क्रोध न भड़के तू लोगों को जानता है
२३ कि वे बुराई पर हैं। और उन्हों ने मुझे कहा कि हमारे लिये
ईश्वर बना जो हमारे आगे चलेंगे क्योंकि यह मूसा वुह पुरुष

जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया हम नहीं जानते कि उसे
२४ क्या हुआ। तब मैं ने उन्हें कहा कि जिस किसी के पास सोना
हो तोड़ डाले सो उन्हों ने मुझे दिया तब मैं ने उसे आग में
डाला और यह बछड़ा निकला॥
२५ और मूसा ने लोगों को देखा कि वुह निरङ्कुश हैं क्योंकि
हारून ने उन के शत्रुन के सन्मुख उन की लाज के लिये
२६ उन्हें निरङ्कुश किया था। तब मूसा छावनी के निकास पर
खड़ा हुआ और कहा कि जो परमेश्वर की ओर है सो मेरे पास
२७ आवे तब लावी के समस्त संतान उस पास एकट्ठे हुए। और
उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने यह कहा
है कि हर मनुष्य अपना खड्ग अपनी जांघ पर बांधे और
छावनी में एक फाटक से दूसरे फाटक लों चला फिरो और
हर एक मनुष्य अपने भाई को और अपने मित्र को और
२८ अपने परोसी को घात करे। और लावी के संतान ने मूसा
के बचन के समान किया और उस दिन लोगों में से तीन
२९ सहस्र मनुष्य के लग भग मारे पड़े। और मूसा ने कहा
कि आज परमेश्वर के लिये अपने हाथ भरो हर एक मनुष्य
अपने पुत्र और अपने भाई से जिसतें आज अपने ऊपर आशीष
लाओ॥
३० और दूसरे दिन सवेरे यों हुआ कि मूसा ने लोगों से कहा
कि तुम ने महा पाप किया और अब मैं परमेश्वर के पास ऊपर
जाता हूं क्या जाने मैं तुम्हारे पाप के लिये प्रायश्चित्त करूं।
३१ और मूसा परमेश्वर की ओर फिर गया और कहा कि हाय इन
लोगों ने महा पाप किया और अपने लिये सोने का देवता
३२ बनाया। और अब यदि तू उन के पाप क्षमा करे और यदि
नहीं तो मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे अपनी उस पुस्तक
३३ से जो तू ने लिखी है मेट दे। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा

कि जिस ने मेरा अपराध किया है मैं उसी को अपनी पुस्तक
३४ से मेट देऊंगा । और अब तू लोगों को उस स्थान को जो मैं
ने तुझे बताया है ले जा देख मेरा दूत तेरे आगे आगे चलेगा
और मैं अपने बिचार के दिन में उन से उन के पाप का
३५ बिचार करूंगा । और परमेश्वर ने लोगों पर मरी भेजी इस लिये
कि उन्हों ने उस बछड़े को बनाया जिसे हारून ने बनाया ॥

तेंतीसवां पर्ब्ब ।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा को कहा कि यहां से जा तू और
वुह लोग जिन्हें तू मिस्र देश से निकाल लाया उस देश को
जिस के बिषय में अबिरहाम और इज़हाक और यअ़कूब से यह
कहके मैं ने किरिया खाई है कि मैं उसे तेरे बंश को देऊंगा ।
२ और मैं तेरे साम्ने दूत भेजूंगा और कनआ़नियों अमूरियों और
हित्तियों और फरज़ियों हवियों और यबूसियों को हांक देऊंगा ।
३ एक देश में जहां दूध और मधु बहता है क्योंकि मैं तेरे मध्य
में न जाऊंगा इस लिये कि तुम कठोर गरदन लोग हो कि मैं
तुम्हें मार्ग में भस्म कर डालूं ॥
४ और जब लोगों ने यह बुरा समाचार सुना तो बिलाप किया
५ और किसी ने अपना आभूषण न पहिना । क्योंकि परमेश्वर ने
मूसा से कहा कि इसराएल के संतान से कह कि तुम एक
कठोर लोग हो मैं तेरे मध्य एक पलमात्र में आके तुझे भस्म
करूंगा तो अब अपना आभूषण अपने ऊपर से उतारो और मैं
६ जानूंगा कि तुम से क्या करूंगा । तब इसराएल के संतानों ने
होरेब के पहाड़ पर अपना आभूषण उतार डाला ॥
७ और मूसा ने तंबू लेके छावनी के बाहर अपने लिये छावनी
से दूर खड़ा किया और उस का नाम मंडली का तंबू रक्खा
और यों हुआ कि हर एक जो परमेश्वर का खोजी था सो मंडली

८ के तंबू के पास जो छावनी के बाहर था जाता था। और यों
हुआ कि जब मूसा बाहर तंबू के पास गया तो सब लोग खड़े
हुए और हर एक पुरुष अपने तंबू के द्वार पर खड़ा होके मूसा
के पीछे देखता था यहां लों कि वुह तंबू में गया॥
९ और जब मूसा ने तंबू में प्रवेश किया तो मेघ का खंभा
उतरा और तंबू के द्वार पर ठहरा और उस ने मूसा से बार्त्ता
१० किई। और समस्त लोगों ने मेघ का खंभा तंबू के द्वार पर
ठहरा हुआ देखा और सब लोग अपने अपने तंबू के द्वार
११ पर उठे और दंडवत किई। और परमेश्वर ने मूसा से आम्ने
साम्ने बार्त्ता किई जैसे कोई अपने मित्र से बार्त्ता करता है और
वुह छावनी को फिरा परन्तु उस का सेवक नून का बेटा
यहूसूअ एक तरुण मनुष्य तंबू के मध्य में से न निकला॥
१२ और मूसा ने परमेश्वर से कहा कि देख तू मुझ से कहता
है कि उन लोगों को ले जा और तू ने मुझे नहीं बताया कि किसे
मेरे साथ भेजेगा तथापि तू ने कहा है कि मैं नाम सहित
तुझे जानता हूं और तू ने मेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है।
१३ सो यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मैं तेरी बिनती
करता हूं कि अपना मार्ग मुझे बता जिसतें मुझे निश्चय होवे
कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और देख कि ये जाति
१४ तेरे लोग हैं। तब उस ने कहा कि मेरा रूप जायगा और
१५ मैं तुझे बिश्राम देऊंगा। और उस ने उसे कहा कि यदि तेरा रूप
१६ न जाय तो हमें यहां से मत ले जाइये। और अब किस
रीति से जाना जायगा कि मैं ने और तेरे लोगों ने तुझ से
अनुग्रह पाया है क्या इस में नहीं कि तू हमारे साथ जाता
है सो मैं और तेरे लोग समस्त लोगों से जो पृथिवी पर हैं
अलग किये जायेंगे॥
१७ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि जो बात तू ने कही है

मैं ने उसे भी मान लिया क्योंकि तू ने मेरी दृष्टि में अनुग्रह
१८ पाया है और मैं तुझे नाम सहित जानता हूं। तब उस ने
कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे अपना बिभव दिखा।
१९ तब उस ने कहा कि मैं अपनी सब भलाई को तेरे आगे
चलाऊंगा और मैं परमेश्वर के नाम का प्रचार तेरे आगे करूंगा
और जिस पर कृपाल हूं उसी पर कृपा करूंगा और जिस पर
२० दयाल हूं उसी पर दया करूंगा। और बोला कि तू मेरा रूप
नहीं देख सक्ता क्योंकि मुझे देखके कोई मनुष्य न जीयेगा।
२१ और परमेश्वर ने कहा कि देख एक स्थान मेरे पास है और तू
२२ उस टीले पर खड़ा रह। और यों होगा कि जब मेरा बिभव
चल निकलेगा तो मैं तुझे पहाड़ के दरार में रक्खूंगा और जब
२३ लों जा निकलूं तुझे अपने हाथ से ढांपूंगा। और अपना हाथ
उठा लूंगा और तू मेरा पीछा देखेगा परन्तु मेरा रूप दिखाई
न देगा॥

चौंतीसवां पर्व्व।

१ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने लिये पहिली
पटियों के समान पत्थर की दो पटियां चीर और मैं उन पटियों
पर वे बातें लिखूंगा जो पहिली पटियों पर थीं जिन्हें तू ने
२ तोड़ डाला। और तड़के सिद्ध हो और बिहान को सीना के
पहाड़ पर चढ़ आ और वहां पहाड़ की चोटी पर मेरे लिये
३ खड़ा हो। और कोई मनुष्य तेरे साथ न चढ़े और समस्त
पहाड़ पर कोई देखा न जावे झुंड और लेंढा पहाड़ के आगे
चराई भी न करें॥

४ तब अगिले पत्थरों के समान उस ने दो पटियां चीरीं
और जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी बिहान को मूसा
पत्थर की दोनों पटियां अपने हाथ में लिये हुए सीना के

५ पहाड़ पर चढ़ गया। और परमेश्वर मेघ में उतरा और उस के
साथ वहां खड़ा रहा और परमेश्वर के नाम का प्रचार किया।
६ और परमेश्वर उस के आगे से चला और प्रचार किया कि परमेश्वर
परमेश्वर सर्व्वशक्तिमान दयाल और कृपाल धीर और भलाई
७ और सच्चाई में भरपूर है। सहस्रों के लिये दया रखनेवाला है
पाप और अपराध और चूक का क्षमा करनेवाला और वुह किसी
भांति से अपराधी को निर्दोष न ठहरावेगा और पितरों के
पाप का उन के पुत्रों और पोत्रों पर तीसरी और चौथी पीढ़ी लों
८ प्रतिफलदायक है। तब मूसा ने शीघ्रता से भूमि की ओर सिर
९ झुकाके दंडवत किई। और बोला कि हे प्रभु यदि मैं ने तेरी
दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो मैं तेरी बिनती करता हूं कि प्रभु
हमारे मध्य में होके चले क्योंकि वुह कठोर गरदन लोग हैं
और हमारे अपराध और पाप क्षमा कर और हमें अपना
अधिकार ठहरा॥

१० तब वुह बोला कि देख मैं तेरे समस्त लोगों के आगे एक
वाचा बांधता हूं कि मैं ऐसा आश्चर्य्य करूंगा जैसा कि समस्त
पृथिवी पर और किसी जातिगण में न उतना हुआ है और सब
लोग जिन के मध्य में तू है परमेश्वर के कार्य्य देखेंगे क्योंकि वुह
११ भयंकर कार्य्य है जो मैं तुझ से करता हूं। जो आज के दिन
मैं तुझे आज्ञा करता हूं उसे मानियो देख मैं अमूरियों और
कनआनियों और हित्तियों और फ़रज़ियों और हवियों और यबूसियों
१२ को तेरे आगे से हांकता हूं। आप से चौकस रह ऐसा न हो
कि तू उस भूमि के बासियों के साथ जिस में तू जाता है कुछ
१३ वाचा बांधे और तेरे मध्य में फंदा होवे। क्योंकि तुम उन
की यज्ञबेदियों को नाश करोगे और उन की मूर्त्तिन को तोड़
१४ डालोगे और उन की पुतलियों को काट डालोगे। क्योंकि तू
किसी उपरी देव की पूजा न करेगा क्योंकि परमेश्वर जिस का

१५ नाम ज्वलन है वुह ज्वलित सर्बशक्तिमान है । ऐसा न होवे कि
तू उस देश के बासियों से कुछ बाचा बांधे और वे अपने देवों
के पीछे व्यभिचार करें और अपने देवों के लिये बलिदान करें और
१६ तुझे बुलावें और तू उस के बलिदान से खा लेवे । और तू उन
की बेटियां अपने बेटों के लिये लावे और उन की बेटियां अपने
देवों के पीछे व्यभिचार करें और तेरे बेटों को भी अपने देवों के
१७ पीछे व्यभिचार करावें । तू अपने लिये ढाले हुए देव मत
बनाइयो ॥

१८ अख़मीरी रोटी के पर्व्व का पालन कीजियो सात दिन लों
जैसा मैं ने तुझे आज्ञा किई है आबिब के मास के समय में
ठहराके अख़मीरी रोटी खाइयो क्योंकि तू आबिब के मास में
१९ मिस्र से बाहर आया । सब जो गर्भ को खोलते हैं और तेरे
पशुन के समस्त पहिलौंठे नर बैल अथवा भेड़ के हों मेरे हैं ।
२० परन्तु गदहे के पहिलौंठे को मेम्ना देके छुड़ाइयो और यदि न
छुड़ावे तो उस का गला तोड़ डालियो अपने पुत्रों के समस्त
पहिलौंठों को छुड़ाइयो और मेरे आगे कोई छूछे हाथ न आवे ॥

२१ छः दिन लों कार्य्य करना परन्तु सातवें दिन बिश्राम करना
हल जोतने और लवने का समय हो बिश्राम करना ॥

२२ और अठवारों का पर्व्व गोहूं के पहिले फल लवने के समय
और संवत के अंत में एकट्ठा करने का पर्व्व करना ॥

२३ तुम्हारे समस्त पुत्र बरस में तीन बार प्रभु परमेश्वर
२४ इसराएल के ईश्वर के आगे आवें । इस लिये कि मैं जातिगणों
को तेरे आगे से बाहर निकालूंगा और तेरे सिवाने को बढ़ाऊंगा
और जब कि तू बरस में तीन बार अपने परमेश्वर ईश्वर के
आगे जायगा तब कोई तेरे देश की बांछा न करेगा ॥

२५ तू मेरी यज्ञबेदी पर लोहू ख़मीर के साथ बलिदान मत
चढ़ाना और फसह के पर्व्व का बलिदान कभी बिहान लों रहने

२६ न पावे। तू अपनी भूमि के पहिले फलों का पहिला अपने
परमेश्वर ईश्वर के घर में लाना मेम्ना को उस की माता के
दूध में मत सिझाना॥
२७ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि तू ये बातें लिख क्योंकि
इन बातों के समान मैं ने तुझ से और इसराएल से बाचा बांधी
२८ है। और मूसा चालीस दिन रात वहां परमेश्वर के पास था उस
ने न रोटी खाई और न पानी पीया और उस ने उस नियम की
बातें वे दस आज्ञा पटियों पर लिखीं॥
२९ और ऐसा हुआ कि जब मूसा सीना पहाड़ से उतरा और
जब वुह पहाड़ से उतरा तब साक्षी की दोनों पटियां मूसा के
हाथ में थीं तो मूसा न जानता था कि जब वुह उस के साथ
बातें करता था तब उस के मुंह का चमड़ा चमकता था।
३० और जब हारून और इसराएल के समस्त संतानों ने मूसा को
देखा तो देखो कि उस के मुंह का चमड़ा चमकता था और
३१ वे उस के पास आने से डरते थे। तब मूसा ने उन्हें बुलाया
और हारून और मंडली के समस्त प्रधान उस पास फिर
३२ आये और मूसा ने उन से बातें किईं। और अंत को इसराएल
के समस्त संतान पास आये और उस ने उन सब बातों की
जो परमेश्वर ने उसे सीना के पहाड़ पर कही थीं उन्हें आज्ञा
३३ किईं। और जब मूसा उन से बातें कर चुका तो उस ने अपने
३४ मुंह पर घूंघट डाला। पर जब मूसा परमेश्वर के आगे उस्से
वार्त्ता करने जाता था तो जब लों बाहर न आता था घूंघट
को उतार देता था और जो आज्ञा होती थी वुह बाहर आके
३५ इसराएल के संतानों को कहता था। और इसराएल के संतानों
ने मूसा का मुंह देखा कि मूसा के मुंह का चमड़ा चमकता था
और मूसा ने अपने मुंह पर घूंघट डाला जब लों कि ईश्वर से
बातें करने गया॥

पैंतीसवां पर्ब्ब।

१ और मूसा ने इसराएल के संतानों की समस्त मंडली को
एकट्ठा करके उन से कहा कि परमेश्वर ने इन बातों की आज्ञा किई
२ है कि तुम उन्हें पालन करो। छः दिन लों कार्य्य किया जावे
परन्तु सातवां दिन तुम्हारे लिये पवित्र बिश्राम होवे परमेश्वर
का बिश्राम जो कोई उस में कार्य्य करेगा सो मार डाला जायगा।
३ बिश्राम के दिन अपने समस्त निवासों में आग मत बारियो॥
४ और मूसा ने इसराएल के संतानों की समस्त मंडली को
५ कहा वुह आज्ञा जो परमेश्वर ने किई यह है। तुम अपने में
से परमेश्वर के लिये भेंट लाओ जो कोई मन से चाहे सो
६ परमेश्वर के लिये भेंट लावे सोना और रूपा और पीतल। और
नीला और बैंजनी और लाल और झीने सूती वस्त्र और बकरियों
७ के बाल। और लाल रंगे हुए मेंढ़ों के चमड़े और तख़सों के चमड़े
८ और शमशाद की लकड़ी। और जलाने का तेल और अभिषेक
९ के तेल के लिये और धूप के लिये सुगंध द्रब्य। और
सूर्य्यकांतमणि और एफ़ोद और चपरास पर जड़ने के लिये
१० मणि। और तुम में से जो बुद्धिमान है आवे और जो कुछ परमेश्वर
११ ने आज्ञा किई है बनावे। निवास उस का तंबू और उस का
घटाटोप उस की घुंडियां और उस के पाट उस के अड़ंगे उस
१२ के खंभे और उस के पाए। मंजूषा और उस के बहंगर ढकना
१३ और ढांपने का घूंघट। मंच और उस के बहंगर और उस के
१४ समस्त पात्र और भेंट की रोटी। और ज्योति के लिये दीअट
और उस की सामग्री और उस के दीपक और प्रकाश के लिये तेल।
१५ और धूप की बेदी और उस के बहंगर और अभिषेक का तेल
और सुगंध द्रब्य का धूप और तंबू में प्रवेश करने के द्वार की
१६ ओट। बलिदान के भेंट की यज्ञबेदी और उस के पीतल की

झरनी उस के बहंगर और उस के समस्त पात्र स्नानपात्र उस
१७ के पाए समेत। आंगन की ओट उस के खंभे और उस के
१८ पाए और आंगन के द्वार की ओट। तंबू के खूंटे और आंगन
१९ के खूंटे और उन की डोरियां। सेवा के वस्त्र जिसतें पवित्र
स्थान में सेवा करें हारून याजक के लिये पवित्र वस्त्र और
उस के बेटों के पवित्र वस्त्र जिसतें याजक के पद में सेवा
करें।

२० तब इसराएल के संतानों की समस्त मंडली मूसा के आगे
२१ से चली गई। और हर एक जिस के मन ने उसे उभाड़ा और
हर एक अपने मन के अभिलाष से जिस ने जो चाहा मंडली के
तंबू के कार्य्य के लिये और उस की समस्त सेवा और पवित्र वस्त्र
२२ के लिये परमेश्वर की भेंट लाया। और वे आये क्या स्त्री क्या
पुरुष जितनों को वांछा हुई और खड़वे और बालियां और
कुंडल और अंगूठियां ये सब सोने के गहने थे और हर एक
२३ मनुष्य जिस ने परमेश्वर के लिये सोने की भेंट दिई। और हर
एक मनुष्य जिस के पास नीला और बैंजनी और लाल और सूत
के झीने बस्त्र और बकरियों के रोम और मेंढ़ों के लाल चमड़े
२४ और तख़सों के चमड़े थे लाया। हर एक जिस ने कि परमेश्वर
को रूपे की अथवा पीतल की भेंट दिई अपनी भेंट परमेश्वर के लिये
लाया और जिस किसी के पास शमशाद की लकड़ी थी सो उसे सेवा
२५ के समस्त कार्य्य के लिये लाया। और समस्त स्त्रियों ने जो
बुद्धिमान थीं अपने अपने हाथों से काता और अपना काता
हुआ नीला और बैंजनी और लाल और झीने सूत का वस्त्र
२६ लाई। और समस्त स्त्रियों ने जिन के मनों ने उन्हें बुद्धि में
२७ उभाड़ा बकरियों के रोम काते। और प्रधान एफोद और चपरास
२८ के लिये सूर्य्यकांत और जड़ने के मणि लाये। और सुगंध
द्रव्य और तेल दीअट के लिये और अभिषेक के तेल के लिये

२९ और जलाने के सुगंध द्रव्य के लिये । क्या पुरुष और क्या
स्त्री जिस का मन चाहा सो समस्त कार्य्य के लिये जो परमेश्वर
ने बनाने का मूसा के द्वारा कहा था इसराएल के संतान
परमेश्वर के लिये वांछित भेंट लाये ॥
३० तब मूसा ने इसराएल के संतानों से कहा कि देखो परमेश्वर
ने ऊरी के पुत्र बज़िल्लिएल को जो हूर का पोता और यहूदाह
३१ के कुल का है नाम लेके बुलाया । और उस ने उसे बुद्धि
और समझ और ज्ञान में और समस्त प्रकार की हथौटी में
३२ परमेश्वर के आत्मा से भर दिया । कि अपनी बुद्धि से हथौटी
का कार्य्य निकाले जिसतें सोने और रूपे और पीतल के कार्य्य
३३ करे । और मणि के खोदने में जड़ने के लिये और काष्ठ के
खोदने में जिसतें समस्त प्रकार की हथौटी के कार्य्य करे ।
३४ और उस ने उस के और अख़िसमक के बेटे अहलिअब के जो
३५ दान के कुल से है मन में डाला कि सिखलावें । उस ने उन
के अंतःकरणों में ऐसा ज्ञान दिया कि खोदक के और हथौटक
के और बूटाकाढ़क के समस्त कार्य्य करें नीला और बैंजनी
लाल और झीने वस्त्र में और जोलाहे के कार्य्य में और हथौटी
के कार्य्य में जो बुद्धि से निकालते हैं ॥

छतीसवां पर्ब्ब ।

१ तब बज़िल्लिएल और अहलिअब और सब बुद्धिमानों ने
जिन में परमेश्वर ने बुद्धि और समुझ रक्खी थी कि पवित्र स्थान
की सेवा के समस्त प्रकार के कार्य्य जैसा कि परमेश्वर ने समस्त
२ आज्ञा दिई वैसा उन्हों ने किया । सो मूसा ने बज़िल्लिएल
और अहलिअब और हर एक बुद्धिमान को जिस के हृदय में
परमेश्वर ने बुद्धि और समुझ डाली थी हर एक जिस के मन
३ ने उसे उभाड़ा था कि कार्य्य करने के लिये पास आवे । और

उन्हों ने मूसा के साम्हने से समस्त भेंट जिसे इसराएल के संतान
पवित्र स्थान की सेवा के कार्य्य के लिये लाये थे पाईं और वे
हर बिहान उस के पास मन मनती भेंट लाते थे ॥
४ और सब बिद्यामान जो पवित्र स्थान का समस्त कार्य्य
करते थे हर एक मनुष्य अपने अपने कार्य्य से जो वुह करते
५ थे आये। और मूसा को कहके बोले कि कार्य्य की सेवा से जो
६ परमेश्वर ने आज्ञा किई है लोग अधिक लाते हैं। तब मूसा
ने आज्ञा किई और समस्त छावनी में प्रचार कराया कि क्या
पुरुष और क्या स्त्री अब कोई पवित्र स्थान की भेंट के कार्य्य
७ के लिये और न बनावे सो लोग लाने से रोके गये। और
जो सामग्री उन के पास थी समस्त कार्य्य बनाने के लिये बहुत
और अधिक थी ॥
८ और तंबू के कार्य्यकारियों में से हर एक ने जो बुद्धिमान
था बटे हुए सूती वस्त्र और नीले और बैंजनी और लाल
९ हथौटी के कार्य्य से करोबीम के साथ दस ओट बनाईं। हर
ओट की लंबाई अठाइस हाथ और उस की चौड़ाई चार हाथ
१० सब ओट एक नाप की। और पांच ओट को एक दूसरे में
११ मिलाया और पांच ओट एक दूसरे में मिलाया। और उस ने
एक ओट के कोर पर अनवट से लेके जोड़ पर नीले तुकमे
बनाये इसी रीति से दूसरी ओट के अत्यंत अलंग में दूसरे के
१२ जोड़ पर बनाये। उस ने एक ओट के अंचल में पचास तुकमे
बनाये और पचास तुकमे दूसरी ओट के मिलाने के खूंट में
१३ बनाये जिसतें तुकमे एक दूसरे में जुट जायें। और उस ने
सोने की पचास घुण्डियां बनाईं और उन घुण्डियों से ओट को
जोड़ा जिसतें एक तंबू हो जावे ॥
१४ और उस ने बकरी के रोम के ग्यारह ओट बनाये जिसतें
१५ तंबू के लिये ढपना हो। एक ओट की लंबाई तीस हाथ और

चाेड़ाई चार हाथ ग्यारहों ओट एकही परिमाण की बनाई ।
१६ और उस ने पांच ओट को अलग जोड़ा और छः ओट को
१७ अलग । और उस में पचास तुकमे एक ओट के खूंट में जो
अंत के खूंट के जोड़ में है और पचास तुकमे दूसरी ओट के
१८ खूंट में बनाये । और उस ने तंबू को जोड़ने के लिये जिसतें
एक हो जावे पीतल की पचास घुण्डियां बनाईं ॥
१९ और उस ने मेंढ़ों के रंगे हुए लाल चमड़ों से और तख़सों
के चमड़ों से तंबू के लिये ढांपन बनाया ॥
२० और उस ने तंबू के लिये शमशाद की लकड़ी से खड़े पाट
२१ बनाये । हर पाट की लंबाई दस हाथ और उस की चोड़ाई
२२ डेढ़ हाथ । हर पाट में दो दो पाए जो एक दूसरे के समान
अंतर में थे उस ने तंबू के समस्त पाटों के लिये योंहीं बनाया ।
२३ और उस ने तंबू के लिये पाट बनाये बीस पाट दक्षिण की
२४ ओर के लिये । और उस ने उन बीस पाटों के नीचे के लिये
रूपे के चालीस पाए बनाये हर पाट के नीचे के लिये दो दो
२५ उस के चूलों के समान । और तंबू की दूसरी अलंग के लिये
२६ जो उत्तर की ओर है बीस पाट बनाये । और उन के चालीस
२७ रूपे के पाए हर एक पाट के नीचे दो पाए । और उस में तंबू
२८ की पश्चिम अलंग के लिये छः पाट बनाये । और तंबू की दोनों
२९ अलंग में कोने के लिये दो पाट बनाये । और वे नीचे जोड़े
गये और एक कड़ी में ऊपर से जोड़े गये इसी रीति से
३० उस ने दोनों के दोनों कोनों में जोड़ा । और आठ पाट
और उन के चांदी के सोलह पाए थे एक पाट के नीचे दो
दो पाए ॥
३१ और शमशाद काष्ठ से अड़ंगे बनाये तंबू की एक अलंग के
३२ पाटों के लिये पांच । और तंबू की दूसरी अलंग के पाटों के
लिये पांच अड़ंगे और तंबू की पश्चिम अलंगों के लिये पांच ।

३३ और उस ने मध्य का अड़ंगा ऐसा बनाया कि एक सिरे से
३४ दूसरे सिरे के पाटों में प्रवेश होवे। और पाटों को सोने से
मढ़ा और उन के कड़े सोने के बनाये अड़ंगों के लिये स्थान
और अड़ंगों को सोने से मढ़ा ॥
३५ और नीला और बैंजनी और लाल रंग और बटे हुए झीने
सूती बस्त्र से एक घूंघट बनाया हथौटी के कार्य्य से उसे
३६ करोबीम के साथ बनाया। और उस के लिये शमशाद के
चार खंभे बनाये और उन्हें सोने से मढ़ा उन के आंकड़े
सोने के और उन के लिये चार पाए चांदी के ढालकर बनाये॥
३७ और वुह नीला और बैंजनी और लाल और बटा हुआ
झीने सूत से बूटा काढ़ी हुई तंबू के द्वार के लिये एक ओट
३८ बनाई। और उस के पांच खंभे उन के आंकड़े सहित बनाये
और उन के सिरे उन की कंगनी समेत सोने से मढ़े और उन
के पांच पाए पीतल के थे ॥

सैंतीसवां पर्व्व।

१ और बज़िल्लिएल ने शमशाद काष्ठ से मंजूषा को बनाया
उस की लंबाई अढ़ाई हाथ और उस की चौड़ाई डेढ़ हाथ और
२ उस की ऊंचाई डेढ़ हाथ की। और उसे चोखे सोने से भीतर बाहर
मढ़ा और उस की चारों ओर के लिये एक सोने की कंगनी बनाई।
३ और उस ने उस के चार कोनों के लिये सोने के चार कड़े
ढाले और दो कड़े उस की एक अलंग और दो कड़े उस की
४ दूसरी अलंग। और शमशाद की लकड़ी के बहंगर बनाये और
५ उन्हें सोने से मढ़ा। और उस ने बहंगरों को मंजूषा की अलंग
के कड़ों में डाला कि मंजूषा को उठावें ॥
६ और उस ने ढकने को चोखे सोने से बनाया उस की लंबाई
७ अढ़ाई हाथ और उस की चौड़ाई डेढ़ हाथ। और सोने के

दो करोबी बनाये एक टुकड़े से पीटके ढकने के दोनों खूंट
८ में उन्हें बनाया । एक करोबी इस खूंट में और एक करोबी
उस खूंट में ढकने में से उस ने करोबियों को उस के दोनों
९ खूंट में बनाया । और करोबियों ने अपने पंख ऊपर फैलाये
और अपने पंख से ढकने को ढांप लिया और उन के मुंह एक
दूसरे की ओर थे करोबी के मुंह ढकने की ओर थे ॥
१० और उस ने मंच को शमशाद की लकड़ी से बनाया उस
की लंबाई दो हाथ और उस की चौड़ाई एक हाथ और उस
११ की ऊंचाई डेढ़ हाथ । और उसे चोखे सोने से मढ़ा और उस के
१२ लिये चारों ओर सोने का एक कलस बनाया । और उस ने
उस के लिये चार अंगुल की एक कंगनी बनाई और उस की
१३ कंगनी के लिये चारों ओर सोने के कलस बनाये । और उस
ने उस के लिये सोने के चार कड़े ढाले और उन कड़ों को उस के
१४ चारों पायों के चारों कोनों में लगाया । कंगनी के सन्मुख कड़े
१५ थे बहंगर के स्थान मंच उठाने के लिये । और उस ने बहंगरों
को शमशाद की लकड़ी का बनाया और उन्हें सोने से मढ़ा
१६ मंच उठाने के लिये । और मंच पर के पात्र उस के थाल और
उस के कटोरे और उस की थालियां और उस की कटोरियां
ढपने के लिये निर्मल सोने के बनाये ॥
१७ और उस ने दीअट को निर्मल सोने से बनाया गढ़के उस ने
दीअट को बनाया उस की डंडी और उस की डाली उस की
कटोरियां उस की कलियां और उस के फूल उस ही में से थे ।
१८ और उस के अलंगों से छः डालियां निकलती थीं दीअट की एक
अलंग से तीन डालियां और दीअट की दूसरी अलंग से तीन
१९ डालियां । तीन कटोरियां बदाम की नाईं एक डाली में थीं कली
और फूल और तीन कटोरियां बदाम की नाईं एक एक डाली में
२० यों छओं डालियों में जो दीअट से निकलती थीं । और दीअट

में चार कटोरियां बदाम की नाईं बनी हुई थीं उस की कलियां
२१ और उस के फूल। और उस की दो दो डालियों के नीचे एक
एक कली थी छः डालियों के समान जो उस्से निकलती थीं।
२२ उन की कलियां और उन की डालियां उसी में से थीं वुह सब
२३ के सब निर्मल सोने से गढ़े हुए थे। और उस के सात
दीपक और उस के फूल की कतरनियां और उस के पात्र निर्मल
२४ सोने से बनाये। उस ने उसे और उस के समस्त पात्रों को एक
तोड़ा निर्मल सोने का बनाया॥
२५ और धूपबेदी को शमशाद की लकड़ी से बनाया उस की
लंबाई एक हाथ और उस की चौड़ाई एक हाथ चौकोर बनाया और
२६ उस की ऊंचाई दो हाथ उस के सींग उसी से थे। और उस
का ढपना और उस की चारों ओर की अलंग और उस के सींग
निर्मल सोने से मढ़े और उस के लिये सोने के चारों ओर कलस
२७ बनाये। और उस ने उस के कलस के नीचे के लिये उस के
दोनों कोनों के पास उस की दोनों अलंगों पर जिसतें उस के
उठाने के बहंगर के स्थान होवें सोने के दो कड़े बनाये।
२८ और उस ने बहंगरों को शमशाद की लकड़ी से बनाया और
२९ उन्हें सोने से मढ़ा। और अभिषेक का पवित्र तेल और गंधी
के कार्य्य के समान सुगंध द्रब्य से चोखी धूप बनाई॥

अठतीसवां पर्ब्ब।

१ और उस ने बलिदान की भेंट की यज्ञबेदी को शमशाद की
लकड़ी से बनाया उस की लंबाई पांच हाथ और उस की चौड़ाई
२ पांच हाथ चौखूंटी और उस की ऊंचाई तीन हाथ। और उस
के चारों कोनों पर सींग बनाये उस के सींग उस में से थे और
३ उस ने उसे पीतल से मढ़ा। और उस ने यज्ञबेदी के समस्त पात्र
बटलोही और फावड़ियां और कटोरे और मांस के कांटे और

४ अङ्गेठियां उस के समस्त पात्र पीतल से बनाये । और उस ने
यज्ञबेदी के लिये पीतल की जाली से उस के कोर के नीचे उस
५ की आधी दूर लों एक झंझरी बनाई । और उस ने पीतल की
झंझरी के चारों कोनों के लिये बहंगर के स्थान पर चार कड़े
६ बनाये । और उस ने बहंगरों को शमशाद की लकड़ी से बनाया
७ और उन्हें पीतल से मढ़ा । और उस ने बहंगरों को यज्ञबेदी के
उठाने के लिये अलंगों के कड़ों में डाला उस ने उसे पटियों
से पोला बनाया ॥

८ और उस ने स्नानपात्र और उस की चौकी पीतल से बनाई
उन स्त्रियों के दर्पण से जो मंडली के तंबू के द्वार पर एकट्ठी
होती थीं ॥

९ और उस ने आंगन बनाया दक्षिण दिशा के दक्षिण ओर
आंगन के ओट झीने बटे हुए सूती बस्त्र से एक सौ हाथ थे ।
१० उन के बीस खंभे और उन के पीतल के बीस पाए खंभों
११ के आंकड़े और उन की सामी चांदी की । और उत्तर दिशा के
लिये सौ हाथ उन के बीस खंभे और उन के पीतल के बीस
१२ पाए खंभों के आंकड़े और उन की सामी चांदी की । और
पश्चिम की ओर पचास हाथ की ओट उन के दस खंभे और
उन के दस पाए खंभों के आंकड़े और सामी उन की चांदी
१३ की । और पूरब दिशा की पूरब ओर के लिये पचास हाथ ।
१४ ओट पंदरह हाथ की आंगन पर उन के खंभे तीन और उन
१५ के पाए तीन । और आंगन के द्वार की दूसरी अलंग के लिये
इधर उधर पंदरह हाथ की ओट उन के तीन खंभे और उन
१६ के तीन पाए । आंगन की चारों ओर की समस्त ओट बटे
१७ हुए झीने सूती बस्त्र की थी । और खंभों के पाए पीतल के
खंभों के आंकड़े और उन की सामी चांदी की और उन के माथे
चांदी से मढ़े हुए और आंगन के सब खंभे चांदी से जोड़े हुए

१८ थे। और आंगन के द्वार की ओट बूटा कढ़े हुए नीले और
बैंजनी और लाल और बटे हुए झीने सूती वस्त्र की थी और
उस की लंबाई बीस हाथ और चौड़ाई पांच हाथ आंगन की
१९ ओट से मिलती थी। और उन के चार खंभे और उन के चार
पाए पीतल के उन के आंकड़े चांदी के और उन के माथे और
२० उन की सामी चांदी से मढ़े हुए थे। और तंबू की और आंगन
की चारों ओर के सब खूंटे पीतल के॥

२१ हारून याजक के पुत्र ईतमर के हाथ से लावियों की सेवा
के लिये मूसा की आज्ञा के समान साक्षी के तंबू का लेखा यह
२२ है। यहूदा के कुल से हूर के नाती ऊरी के बेटे बज़िल्लिएल
ने सब कुछ जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी बनाया।
२३ और उस के साथ दान के कुल का अख़िसमक का बेटा
अहलिअब था जो खोदने के और हथौटी के कार्य्य में और
नीला और बैंजनी और लाल बूटा काढ़ने में और झीने वस्त्र में
बुद्धिमान था॥

२४ समस्त सोना जो पवित्र कार्य्य में उठा था अर्थात् भेंट का सोना
सो उंतीस तोड़े और सात सौ तीस शेकल पवित्र स्थान के शेकल से था॥

२५ और मंडली की गिनती में की चांदी एक सौ तोड़े और एक
सहस्र सात सौ पछहत्तर शेकल पवित्र स्थान के शेकल के
२६ समान था। हर मनुष्य के लिये एक बीका अर्थात् आधा
शेकल पवित्र स्थान के शेकल के समान हर एक के लिये बीस
बरस से और ऊपर जिस की गिनती हुई छः लाख तीन सहस्र
२७ साढ़े पांच सौ थे। और चांदी के सौ तोड़े से पवित्र स्थान के
पाए और घूंघट के पाए ढाले गये सौ तोड़े के सौ पाए एक
२८ तोड़े का एक पाया। और एक सहस्र सात सौ पचहत्तर शेकल
से उस ने खंभों के आंकड़े बनाये और उन के माथे मढ़े और
उन में सामी लगाई॥

२६ और भेंट का पीतल जो सत्तर तोड़े और दो सहस्र चार सौ
३० शेकल थे। और उस ने उस्से मंडली के तंबू के द्वार के लिये
पाए और पीतल की यज्ञबेदी और उस की पीतल की झंझरी
३१ और यज्ञबेदी के समस्त पात्र बनाये। और आंगन की चारों
ओर के पाए और आंगन के द्वार के पाए और तंबू के सब खूंटे
और आंगन की चारों ओर के सब खूंटे॥

उंतालीसवां पर्ब्ब।

१ और नीले और बैंजनी और लाल से उन्हों ने पवित्र सेवा
के लिये सेवा के कपड़े बनाये और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा
को आज्ञा किई थी हारून के लिये पवित्र बस्त्र बनाये॥
२ और उस ने एफ़ोद को सोने नीले और बैंजनी और
३ लाल और झीने बटे हुए सूत से बनाया। और उन्हों ने सोने
के पतील पतील पत्तर गढ़े और तार खींचे जिसतें उन्हें नीले
में और बैंजनी में और लाल में और झीने सूती बस्त्र में
४ चित्रकारी के क्रिया से बनावें। उस के लिये कंधों के टुकड़े
५ बनाये कि जोड़े वुह दोनों खूंट से जोड़ा हुआ था। और उस
के एफ़ोद का पटुका जो उस के कार्य्य के समान सोने का और
नीले और बैंजनी और लाल और बटे हुए झीने सूत से जैसा
कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उसी में से था॥
६ और उन्हों ने बैदूर्यमणि को सोने के ठिकानों में जड़े
हुए बनाये और वुह इसराएल के संतानों के नाम के समान
७ खोदे गये जैसा कि अंगूठी खोदी जाती है। और उस ने उन्हें
एफ़ोद के कांधों पर रक्खा जिसतें इसराएल के संतानों के लिये
स्मरण के मणि हों जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई
थी॥
८ और चपरास को हथौटी के कार्य्य से एफ़ोद की नाईं सोने

नीले और बैंजनी और लाल और बटे हुए झीने सूती वस्त्र
९ से बनाया। वुह चौकोर थी उन्हों ने चपरास को दोहरा बनाया
१० उस की लंबाई और उस की चौड़ाई बित्ता भर की दोहरी थी। और
उन्हों ने उस में मणि की चार पांती जड़ीं पहिली पांती में
११ माणिक्य पद्मराग और पन्ना। और दूसरी पांती में लालड़ी
१२ नीलम और हीरा। और तीसरी पांती में लशम सूर्यकांत और
१३ नीलमणि। और चौथी पांती में फ़ीरोज़ा वैदूर्य और चंद्रकांत
१४ सोने के घरों में जड़े हुए थे। इन मणिन में इसराएल के
संतानों के नाम के समान बारहों के नाम के समान बारह
भेद के समान हर एक का नाम खोदा हुआ था जैसी अंगूठी
१५ खोदी जाती है। और चपरास की कोरों में निर्मल सोने की
१६ गुथी हुई सीकरें बनाईं। और उन्हों ने सोने के दो घर और
सोने के दो कड़े बनाये और दोनों कड़ों को चपरास के दोनों
१७ कड़ों में लगाया। और उन्हों ने गुथी हुई सोने की दो सीकरें
१८ चपरास की कोरों के दोनों कड़ों में लटकाईं। और गुथी हुई
दो सीकरों के दोनों खूंट को उन्हों ने दोनों घरों में दृढ़
किया और उन्हें एफ़ोद के दोनों पुट्ठों के टुकड़ों के आगे
१९ लगाया। और उन्हों ने सोने के दो कड़े बनाये और उन्हें
चपरास की दो कोरों में लगाया उस खूंट पर जो एफ़ोद के
२० भीतर की ओर था। और उन्हों ने सोने के दो कड़े बनाये
और उन्हें एफ़ोद के नीचे की दो अलंग में उस के आगे की ओर
उस के जोड़ के सन्मुख एफ़ोद के पटुके के ऊपर लगाये।
२१ और उन्हों ने चपरास को उस के कड़ों से एफ़ोद के कड़ों में
नीले गोटों से बांधा॥
२२ जिसतें वुह एफ़ोद के पटुके के ऊपर होवे और जिसतें
एफ़ोद से चपरास खुल न जाय जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को
आज्ञा किई थी और उस ने एफ़ोद के बस्त्र को बिना बटे

२३ नीले कार्य्य से बनाया । और उसी वस्त्र के मध्य में एक छेद
हो जैसा कि झिलम का मुंह होता है और उस छेद की चारों
२४ ओर बिने हुए कार्य्य के गोटे जिसतें फटने न पावे । और
उन्हों ने उस वस्त्र के खूंट के घेरे में नीले और बैंजनी और
२५ लाल रंग और बटे हुए सूत के अनार बनाये । और उन्हों ने
चोखे सोने की घंटियां बनाईं और घंटियों को उस वस्त्र के
अनार के मध्य में लगाया अनार के मध्य में चारों ओर लगाया।
२६ घंटी और अनार घंटी और अनार बागे के अंचल की चारों
ओर सेवा के लिये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई
थी ॥
२७ और झीने सूत की कुरतियां हारून और उस के बेटों के
२८ लिये बिने हुए कार्य्य से बनाईं । और झीने सूती पगड़ी और
२९ मुकुट और बटे हुए झीने सूती सुरुवार । और बटे हुए झीने
सूती वस्त्र का पटुका और नीला और बैंजनी और लाल बूटा
काढ़ा हुआ जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी
बनाया ॥
३० और पवित्र मुकुट के पत्र को निर्मल सोने से बनाया और
उस में खोदी हुई अंगूठी की नाईं यह खोदा परमेश्वर के लिये
३१ पवित्रता । और उस में एक नीला गोटा बांधा जिसतें मुकुट
के ऊपर हो जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी ॥
३२ इस रीति से मंडली के तंबू का कार्य्य बन गया और
इसराएल के संतानों ने जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
किई थी वैसा ही किया ॥
३३ और वे तंबू मूसा पास लाये अर्थात् डेरा और उस की
समस्त सामग्री उस की घुण्डियां उस की पटियां उस के अड़ंगे
३४ और उस के खंभे और उस के पाए । और मेंढ़ों के रंगे हुए
लाल चमड़े का घटाटोप और तख़सों के चमड़े का घटाटोप

३५ श्रार घटाटोप का घूंघट। साक्षी की मंजूषा श्रार उस के बहंगर
३६ श्रार ढकना। मंच श्रार उस के समस्त पात्र श्रार भेंट की
३७ रोटी। पवित्र दीअट उस के दीपक समेत श्रार दीपक जो
विधि से रक्खे जायें श्रार उस के समस्त पात्र श्रार जलाने का
३८ तेल। श्रार सोने की वेदी श्रार अभिषेक का तेल श्रार सुगंध
३९ धूप श्रार तंबू के द्वार की श्रोट। पीतल की यज्ञवेदी श्रार उस की
पीतल की झंझरी उस के बहंगर श्रार उस के समस्त पात्र
४० स्नानपात्र श्रार उस के पाए। श्रांगन की श्रोट उस के खंभे श्रार
उस के पाए समेत श्रार श्रांगन के द्वार की श्रोट उस की रस्सियां
श्रार उस के खूंटे श्रार मंडली के तंबू के लिये तंबू की सेवा के
४१ समस्त पात्र। पवित्र स्थान में सेवा के लिये सेवा के वस्त्र
श्रार हारून याजक के लिये पवित्र वस्त्र श्रार उस के बेटों के
४२ वस्त्र कि याजक के पद में सेवा करें। जैसा कि परमेश्वर ने
मूसा को श्राज्ञा किई थी वैसे ही इसराएल के संतानों ने सब
४३ काम किये। श्रार मूसा ने सब काम को देखा श्रार देखा कि
जैसा परमेश्वर ने श्राज्ञा किई थी वैसा ही उन्हों ने किया तब
मूसा ने उन्हें आशीष दिई॥

चालीसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि पहिले मास
के पहिले दिन तंबू को जो मंडली का तंबू है खड़ा कर।
३ श्रार उस में साक्षी की मंजूषा रख श्रार मंजूषा पर घूंघट डाल।
४ श्रार मंच को भीतर ले जा श्रार उस पर की वस्तु उस पर विधि से
५ रख श्रार दीअट भीतर ले जा श्रार उस के दीपक बार। श्रार धूप
के लिये सोने की वेदी को साक्षी की मंजूषा के आगे रख श्रार
६ तंबू के द्वार पर श्रोट रख। श्रार यज्ञवेदी को तंबू के द्वार के
७ आगे रख मंडली के तंबू के आगे। श्रार स्नानपात्र मंडली के

८ तंबू और यज्ञवेदी के बीच में रख और उस में पानी डाल। और
आंगन की चारों ओर खड़ा कर और ओट को आंगन के द्वार
९ पर टांग। और अभिषेक का तेल ले और तंबू को और सब
जो उस में है अभिषेक कर और उसे और उस के समस्त पात्रों
१० को पवित्र कर और वुह पवित्र हो जायगा। और बलिदान की
यज्ञबेदी को और उस के समस्त पात्रों को अभिषेक कर और
११ यज्ञवेदी को पवित्र कर तब यज्ञबेदी अति पवित्र होगी। और स्नान
पात्र और उस के पाए को भी अभिषेक कर और उसे पवित्र
१२ कर। और हारून और उस के बेटों को मंडली के तंबू के
१३ द्वार के समीप ला और उन को पानी से नहला। और हारून
को पवित्र बस्त्र पहिना और उसे अभिषेक कर और उसे पवित्र
ठहरा जिसतें वुह मेरे लिये याजक के पद में सेवा करे।
१४ और उस के बेटों को समीप ला और उन्हें कुरतियां पहिना।
१५ और उन्हें अभिषेक कर जैसे उन के पिता को अभिषेक किया
जिसतें वे मेरे लिये याजक होवें और उन के अभिषेक का
होना निश्चय सनातन की याजकता उन की समस्त पीढ़ियों
में होगी॥

१६ और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने
१७ वैसा ही किया। और दूसरे बरस के पहिले मास की पहिली
१८ तिथि में तंबू खड़ा हो गया। और मूसा ने तंबू को खड़ा
किया और उस के पाए दृढ़ किये और उस के पाट खड़े किये
और उस के अड़ंगे प्रवेश किये और उस के खंभे खड़े किये।
१९ और उस ने तंबू को डेरे पर फैलाया और जैसा कि परमेश्वर
ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने तंबू के घटाटोप को उस
के ऊपर रक्खा॥

२० और उस ने साक्षी को मंजूषा में रक्खा और बहंगर को
मंजूषा के ऊपर रक्खा और ढकने को मंजूषा के ऊपर

२१ रक्खा। और वुह मंजूषा को तंबू के भीतर लाया और घूंघट
टांग दिये और साची की मंजूषा को ढांप दिया जैसा कि
परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥
२२ और घूंघट के बाहर तंबू की उत्तर अलंग उस ने मंडली
२३ के तंबू में मंच को रक्खा। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा
को आज्ञा किई थी वैसा ही उस ने रोटी को विधि से उस पर
परमेश्वर के आगे रक्खा॥
२४ और उस ने दीअट को मंडली के तंबू में मंच के सन्मुख
२५ तंबू की दक्षिण अलंग रक्खा। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा
को आज्ञा किई थी उस ने परमेश्वर के आगे दीपक को बारा॥
२६ और उस ने सोने की वेदी को मंडली के तंबू में घूंघट के
२७ आगे रक्खा। और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई
थी उस ने उस पर सुगंध धूप जलाया॥
२८। २९ और तंबू के द्वार पर ओट को टांगा। और बलिदान की
यज्ञबेदी को तंबू के द्वार पर मंडली के तंबू के पास खड़ा किया
और जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने उस
पर बलिदान की भेंट और होम की भेंट चढ़ाई॥
३० और उस ने स्नानपात्र को मंडली के तंबू के और यज्ञबेदी के
३१ मध्य में रक्खा और नहाने के लिये उस में पानी डाला। तब
उस्से मूसा और हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ पांव
३२ धोये। जब वे मंडली के तंबू में प्रवेश करते और यज्ञबेदी के
पास आते तब नहाते जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
किई थी॥
३३ और उस ने तंबू की और यज्ञबेदी की चारों ओर आंगन पर
और आंगन के द्वार पर ओट टांगी सो मूसा ने सब कार्य्य पूरा
किया॥
३४ तब मेघ ने मंडली के तंबू को ढांपा और तंबू में परमेश्वर

३५ का तेज भर गया । और मूसा मंडली के तंबू में प्रवेश न कर
सका इस लिये कि मेघ उस पर ठहरा था और तंबू परमेश्वर
३६ के तेज से भरा था । और जब मेघ तंबू पर से ऊपर उठाया
जाता था तब इसराएल के संतान अपनी समस्त याचों में बढ़े
३७ जाते थे । परन्तु जब मेघ ऊपर उठाया न जाता था तब वे
३८ उस के उठाये जाने लों याचा न करते थे । क्योंकि दिन को
परमेश्वर का मेघ और रात को आग तंबू पर इसराएल के सारे
घरानों की दृष्टि में उन की समस्त याचों में ठहरता था ॥

लैव्यव्यवस्था की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और मंडली के तंबू में
२ से यह बचन उसे कहा। कि इसराएल के संतानों से बोल
और उन्हें कह कि यदि कोई तुम्में से परमेश्वर के लिये भेंट
लावे तो तुम ढोर में से अर्थात् गाय बैल और भेड़ बकरी में
से अपनी भेंट लाओ॥
३ यदि उस की भेंट गाय बैल में से बलिदान की भेंट होवे
तो निष्खोट नर लावे वुह मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर
४ के आगे अपनी प्रसन्नता के लिये लावे। और वुह बलिदान की
भेंट के सिर पर अपना हाथ रक्खे और वुह उस के प्रायश्चित्त
५ के लिये ग्रहण किया जायगा। और वुह उस बैल को परमेश्वर
के आगे बलि करे और हारून के बेटे याजक लोहू को निकट
लावें और उस लोहू को यज्ञबेदी के चारों ओर जो मंडली के
६ तंबू के द्वार पर है छिड़कें। तब वुह उस भेंट के बलिदान की
७ खाल निकाले और उसे टुकड़ा टुकड़ा करे। और हारून के
बेटे याजक यज्ञबेदी पर आग रक्खें और उस पर लकड़ी चुनें।
८ और हारून के बेटे याजक उस के टुकड़ों को और सिर और
चिकनाई को उन लकड़ियों पर जो यज्ञबेदी की आग पर हैं विधि
९ से धरें। परन्तु उस का ओझ और उस के पगों को पानी से
धोवे और याजक सभों को यज्ञबेदी पर जलावे जिसतें बलिदान
की भेंट होवे जो आग से परमेश्वर के सुगंध के लिये भेंट
किया गया॥

१० और यदि उस की भेंट झुंड में से अर्थात् भेड़ बकरी के
बच्चों में से बलिदान की भेंट के लिये होवे तो वुह निष्खोट
११ नरख लावे। और उसे परमेश्वर के आगे यज्ञबेदी की उत्तर दिशा
में बलि करे और हारून के बेटे याजक उस के लोहू को यज्ञबेदी
१२ पर चारों ओर छिड़कें। और वुह उस के टुकड़ों और उस के
सिर और उस की चिकनाई को अलग अलग करे और याजक
१३ उन्हें उन लकड़ियों पर जो यज्ञबेदी की आग पर हैं चुने। परन्तु
ओझ और पगों को पानी में धोवे और याजक सभों को लेके
यज्ञबेदी पर जलावे वुह बलिदान की भेंट जो परमेश्वर के
सुगंध के लिये भेंट आग से किया गया॥

१४ और यदि उस के बलिदान की भेंट परमेश्वर की भेंट के
लिये पक्षियों में से होवे तो वुह पिण्डुकी अथवा कपोत के बच्चों
१५ में से अपनी भेंट लावे। और याजक उसे यज्ञबेदी पर लाके उस
का सिर मरोड़ डाले और उसे यज्ञबेदी पर जला दे और उस के
१६ लोहू को यज्ञबेदी की अलंग पर निचोड़े। और उस के झोझ को
उस के मल सहित निकालके यज्ञबेदी की पूरब अलंग राख के
१७ स्थान में फेंक दे। और वुह उसे उस के डैनों सहित काटे परन्तु
अलग न कर डाले तब याजक यज्ञबेदी की आग पर की लकड़ियों
पर उसे जलावे वुह बलिदान की भेंट है जो परमेश्वर के सुगंध
के लिये आग से भेंट किया गया॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ और जब कोई भोजन की भेंट परमेश्वर के लिये लावे तो
उस की भेंट चोखा पिसान हो और वुह उस पर तेल डालके
२ उस के ऊपर गंधरस रक्खे। और वुह उसे हारून के बेटों के
पास जो याजक हैं लावे और वुह उस पिसान में से और तेल
में से और समस्त गंधरस सहित मुट्ठी भर लेवे और याजक

उस के स्मरण को यज्ञबेदी पर जलावे यह आनंद का सुगंध
३ परमेश्वर के आग की भेंट के लिये है। और भोजन की भेंट का
उबरा हुआ हारून और उस के बेटों का होगा यह होम की
भेंट में से परमेश्वर के लिये अत्यंत पवित्र है॥
४ और यदि तुम्हारी भेंट भोजन की भेंट तनूर में की पक्की
हुई होवे तो अख़मीरी पिसान अथवा अख़मीरी चपातियां तेल
से चुपड़ी हुई होवें॥
५ और यदि तेरी भेंट भोजन की भेंट तवे की होवे अख़मीरी
६ तेल से मिली हुई चोखे पिसान की होवे। उसे टुकड़ा टुकड़ा
करना और उस पर तेल डालना वुह भोजन की भेंट है॥
७ और यदि तेरी भेंट भोजन की भेंट कराही में की होवे
८ तो चोखा पिसान तेल सहित बने। और तू भोजन की भेंट
को जो परमेश्वर के लिये इन वस्तुन से बनी है ला और उसे याजक
९ के आगे धर दे और वुह उसे यज्ञबेदी के आगे लावे। और याजक
उस भोजन की भेंट में से उस के स्मरण के लिये कुछ लेवे
और यज्ञबेदी पर जलावे यह परमेश्वर के लिये सुगंध की भेंट
१० आग से बनी है। और जो कुछ भोजन की भेंट में से बच
रहा है सो हारून और उस के बेटों का है यह भेंट अत्यंत
पवित्र परमेश्वर के लिये आग से बनी है॥
११ कोई भोजन की भेंट जो तुम परमेश्वर के लिये लाओ
ख़मीर से न बने क्योंकि ख़मीर और नई मधु परमेश्वर के लिये
१२ किसी भेंट में न जलाया जावे। पहिले फलों की भेंट जो है
तुम उन्हें परमेश्वर के आगे लाओ परन्तु सुगंध के लिये यज्ञबेदी
१३ पर जलाई न जावे। और तू अपने भोजन की हर एक भेंट
को नोन से लोनी कीजियो और तेरे भोजन की भेंट अपने
ईश्वर के नियम के नोन से रहित न होने पावे अपनी समस्त
भेंटों में नोन की भेंट लाइयो॥

१४ और यदि तू पहिले फलों से परमेश्वर के लिये भोजन की
भेंट लावे तो अपने पहिले फलों के भोजन की भेंट अन्न की
हरी बालें भुनी हुई अर्थात् भरी बालों में से अन्न पीटा हुआ।
१५ और उस पर तेल डालियो और गंधरस उस के ऊपर रखियो
१६ यह भोजन की भेंट है। और उस के स्मरण की भेंट पीटे हुए
अन्न में से और उस के तेल में से उस के समस्त गंधरस सहित
याजक जलावे यह आग से परमेश्वर के लिये भेंट है॥

तीसरा पर्व्व।

१ और यदि उस की भेंट कुशल का बलिदान होवे और वुह
गाय बैल में से लावे चाहे नर अथवा स्त्रीवर्ग होवे परमेश्वर
२ के आगे उसे निष्खोट लावे। और वुह अपना हाथ अपनी
भेंट के सिर पर रक्खे और मंडली के तंबू के द्वार पर उसे बलि करे
और हारून के बेटे जो याजक हैं उस के लोहू को यज्ञबेदी पर
३ चारों ओर छिड़कें। और वुह कुशल की भेंट के बलिदान में
से परमेश्वर के लिये आग की भेंट लावे चिकनाई जो ओझ को
४ ढांपती है और सारी चिकनाई जो ओझ पर है। और दोनों
गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है और कलेजे
५ पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे। और हारून के बेटे
उन्हें यज्ञबेदी के ऊपर बलिदान की भेंट पर आग की लकड़ियों
पर जलावें यह परमेश्वर के लिये सुगंध जो आग से भेंट किया
गया॥

६ और यदि उस की भेंट कुशल की भेंट का बलिदान परमेश्वर
के लिये भेड़ बकरी से नरख अथवा स्त्रीवर्ग से होवे तो वुह
७ उसे निष्खोट लावे। यदि वुह अपनी भेंट के लिये मेम्ना
८ लावे तो वुह उसे परमेश्वर के आगे भेंट देवे। और वुह
अपना हाथ अपनी भेंट के सिर पर रक्खे और उसे मंडली के

तंबू के आगे बलि करे और हारून के बेटे उस के लोहू को
९ यज्ञबेदी पर चारों ओर छिड़कें। और वुह कुशल के बलिदानों
में से कुछ होम का बलिदान परमेश्वर के लिये लावे उस की
चिकनाई और समस्त पूंछ रीड़ से अलग करके और चिकनाई
जो ओझों को ढांपती है और सारी चिकनाई जो ओझों पर
१० है। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों के
पास है और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे।
११ और याजक उसे बेदी पर जलावे यह भेंट का भोजन आग
से बना हुआ परमेश्वर के लिये है॥
१२ और यदि उस का बलिदान बकरी होय तो उसे परमेश्वर
१३ के आगे लावे। और वुह अपना हाथ उस के सिर पर रक्खे
और उसे मंडली के तंबू के आगे बलि करे और हारून के बेटे
१४ उस के लोहू को यज्ञबेदी पर चारों ओर छिड़कें। तब वुह उस
में से अपनी भेंट लावे परमेश्वर के लिये होम चिकनाई जो
ओझ को ढांपती है और सारी चिकनाई जो ओझ पर है।
१५ और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो पांजरों पास है
१६ और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे समेत अलग करे। और
याजक उन्हें यज्ञबेदी पर जलावे वुह भेंट का भोजन आग
से परमेश्वर के सुगंध के लिये बना है सारी चिकनाई परमेश्वर
१७ की है। यह तुम्हारी बस्तियों में तुम्हारी पीढ़ियों के लिये
सनातन की बिधि है जिसतें तुम कुछ चिकनाई और लोहू न
खाओ॥

चौथा पर्व्व।

१। २ फिर परमेश्वर मूसा से यह कहके बोला। कि इसराएल
के संतानों से कह कि यदि कोई प्राणी परमेश्वर की आज्ञाओं
के विरोध में अज्ञानता से पाप करे जिस का होना अनुचित

३ था । यदि वुह अभिषेक किया हुआ याजक लोगों के पाप के
समान पाप करे तो वुह अपने पाप के कारण जो उस ने किया
है अपने पाप की भेंट के लिये निष्खोट एक बछिया परमेश्वर
४ के लिये लावे । और वुह उस बछिया को मंडली के तंबू के
द्वार पर परमेश्वर के आगे लावे और बछिया के सिर पर अपना
५ हाथ रक्खे और बछिया को परमेश्वर के आगे बलि करे । और
वुह याजक जो अभिषेक किया हुआ है उस बछिया के लोहू
६ से कुछ लेवे और उसे मंडली के तंबू में लावे । और याजक
अपनी अंगुली लोहू में डुबोके परमेश्वर के आगे पवित्र स्थान
७ के घूंघट के साम्ने उस लोहू से सात वार छिड़के । और याजक
लोहू से सुगंधबेदी के सींगों पर जो मंडली के तंबू में है
परमेश्वर के आगे लगावे और उस बछिया के उबरे हुए लोहू
को बलिदान की भेंट की यज्ञबेदी की जड़ पर जो मंडली के
८ तंबू के द्वार पर है ढाले । और सारी चिकनाई को पाप की भेंट के
बछड़े से अलग करे जो चिकनाई ओझ को ढांपती है और सब
९ चिकनाई जो ओझ पर है । और दोनों गुर्दे और उन पर की
चिकनाई जो पांजरों पास है और कलेजे पर की झिल्ली गुर्दे
१० समेत अलग करे । जिस रीति से कुशल के बलिदान की भेंट
के बछड़े से अलग किया जाता है और याजक उन्हें बलिदान की
११ भेंट की यज्ञबेदी पर जलावे । और उस बछड़े की खाल और उस
का समस्त मांस उस के सिर पांव समेत और उस के ओझ
१२ और उस का गोबर । और समस्त बछड़ा तंबू के बाहर निर्म्मल
स्थान में जहां राख डाली जाती है ले जावे और उसे लकड़ियों
पर आग से जलावे राख डालने के स्थान पर जलाया जावे ॥
१३ और यदि इसराएल की सारी मंडली अज्ञानता से ऐसा
पाप करें जो मंडली की दृष्टि से छिप जावे और वे परमेश्वर
की आज्ञाओं में से ऐसा कुछ करें जो बिपरीत है और

१४ अपराधी हो जायें। तो जब वुह पाप जो उन्हों ने किया
जाना जावे तब मंडली एक बछड़ा पाप के बलिदान के लिये
१५ लेवे और उसे मंडली के तंबू के साम्ने लावे। और मंडली के
प्राचीन अपने हाथ परमेश्वर के आगे उस बछड़े के सिर पर
१६ रक्खें और बछड़ा परमेश्वर के आगे बलि किया जावे। और
याजक जो अभिषेक किया हुआ है उस बछड़े के लोहू में से
१७ मंडली के तंबू में लावे। और याजक अपनी अंगुली लोहू में
डुबोके परमेश्वर के आगे घूंघट के साम्ने सात बार छिड़के।
१८ और लोहू से यज्ञवेदी के सींगों पर जो परमेश्वर के आगे मंडली
के तंबू में है लगावे और उबरा हुआ लोहू भेंट के बलिदान
की भेंट की यज्ञवेदी की जड़ पर जो मंडली के तंबू के द्वार
१९ पर है ढाल दे। और उस की सारी चिकनाई उस में से निकालके
२० यज्ञबेदी पर जलावे। और जैसे अपराध के बलिदान के बछड़े
से किया था वैसा ही इस बछड़े से करे और याजक उन के लिये
२१ प्रायश्चित्त करे और वुह उन के लिये क्षमा किया जायगा। और
उस बछड़े को छावनी से बाहर ले जाय और जैसा उस ने
पहिली बछिया को जलाया था वैसा इसे भी जलावे यह मंडली
के लिये पाप की भेंट है॥

२२ जब कोई अध्यक्ष पाप करे और अज्ञानता से परमेश्वर अपने
ईश्वर की किसी आज्ञा में से कोई ऐसा कार्य्य करे जो उचित
२३ न था और अपराधी होवे। अथवा यदि उस का पाप जिसे उस
ने किया जाना जावे तब वुह बकरी का निष्खोट नर मेम्ना
२४ अपनी भेंट के लिये लावे। और अपना हाथ उस बकरे के
सिर पर रक्खे और उसे उस स्थान में जहां बलिदान की भेंट
बलि होती है परमेश्वर के आगे बलि करे यह पाप की भेंट है।
२५ और याजक पाप की भेंट के लोहू में से अपनी अंगुली पर लेके
बलिदान की भेंट की यज्ञवेदी के सींगों पर लगावे और उस का लोहू

२६ बलिदान की भेंट की यज्ञबेदी की जड़ पर ढाले। और उस की
सब चिकनाई कुशल की भेंट के बलिदान की चिकनाई की नाईं
यज्ञबेदी पर जलावे और याजक उस के पाप के कारण उस के
लिये प्रायश्चित्त करे और उस के लिये क्षमा किया जायगा॥

२७ और यदि उस देश के लोगों में से अज्ञानता से कोई पाप
करे और परमेश्वर की आज्ञा के बिरुद्ध अनुचित करे और दोषी
२८ होवे। अथवा यदि उस का पाप जो उस ने किया है उसे
ज्ञान पड़े तब वुह अपने पाप के लिये जो उस ने किया है
अपनी भेंट के लिये एक स्त्रीवर्ग निष्खोट बकरी का एक मेम्ना
२९ लावे। और अपना हाथ पाप की भेंट के सिर पर रक्खे और
पाप की भेंट को बलिदान की भेंट के स्थान में बलि करे।
३० और याजक उस के लोहू में से अपनी अंगुली पर लेवे और
बलिदान की भेंट की यज्ञबेदी के सींगों पर लगावे और उस का
३१ समस्त लोहू यज्ञबेदी की जड़ पर ढाले। और उस की सब
चिकनाई जिस रीति से कुशल की भेंट के बलिदान की
चिकनाई अलग किई जाती है अलग करे और याजक उसे
परमेश्वर के सुगंध के लिये यज्ञबेदी पर जलावे और याजक उस
के लिये प्रायश्चित्त करे और वुह उस के लिये क्षमा किया
जायगा॥

३२ और यदि वुह अपने पाप की भेंट के लिये मेम्ना लावे तो
३३ वुह एक स्त्रीवर्ग निष्खोट लावे। और वुह अपना हाथ अपने
पाप की भेंट के सिर पर रक्खे और उसे जहां बलिदान की
भेंट बलि किई जाती है वहां पाप के लिये बलिदान करे।
३४ और याजक पाप की भेंट के लोहू से अपनी अंगुली पर लेके
बलिदान की भेंट की यज्ञबेदी के सींगों पर लगावे और उस का
३५ समस्त लोहू यज्ञबेदी की जड़ पर ढाले। और उस की समस्त
चिकनाई जिस रीति से कि कुशल की भेंट के बलिदानों की

मेम्ना की चिकनाई अलग किई जाती है अलग करे और याजक
उन्हें परमेश्वर की होम की भेंटों के साथ यज्ञवेदी पर जलावे
और याजक उस के पाप के लिये जो उस ने किया है प्रायश्चित्त
करे और वुह उस के लिये क्षमा किया जायगा॥

पांचवां पर्व्व ।

१ और यदि कोई प्राणी पाप करे और क्रिरिया का शब्द सुने
और साक्षी होवे चाहे देखा अथवा जाना हो यदि वुह न
२ बतावे तो वुह अपना पाप भोगेगा। अथवा यदि कोई प्राणी
कोई अपवित्र बस्तु छूवे चाहे अपवित्र पशु की लोथ अथवा
अपवित्र ढोर की लोथ अथवा अपवित्र रेंगवैया जंतु की लोथ
छूवे और उस्से अज्ञान होवे तो वुह अपवित्र और दोषी होगा।
३ अथवा यदि वुह मनुष्य की अपवित्रता को छूये हो जिस्से
मनुष्य अशुद्ध होता है और वुह उस्से गुप्त हो जब उसे जान
४ पड़े तब वुह दोषी होगा। अथवा यदि कोई प्राणी क्रिरिया खाके
मुंह से बुरा अथवा भला करने को उच्चारे जो कुछ वुह क्रिरिया
खाके उच्चारण करे और वुह उस्से गुप्त हो जब उसे जान पड़े
५ और वुह इन में से एक के लिये दोषी होगा। और यों होगा
कि जब वुह इन में से एक के लिये दोषी होवे तो वुह मान
६ लेवे कि मैं ने यह पाप किया है। तब वुह अपने अपराध की
भेंट अपने पाप के लिये जो उस ने किया है झुंड में से स्त्रीबर्ग
एक भेड़ अथवा बकरी में से एक मेम्ना अपने पाप की भेंट के
लिये परमेश्वर के आगे लावे और याजक उस के पाप की भेंट से
उस के लिये प्रायश्चित्त करे॥

७ और यदि उसे भेड़ लाने की पूंजी न हो तो वुह अपने
किये हुए अपराध के लिये दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो
बच्चे परमेश्वर के लिये लावे एक पाप की भेंट के लिये और

८ दूसरा बलिदान की भेंट के लिये । फिर वुह उन्हें याजक पास
लावे और वुह पहिले पाप की भेंट चढ़ावे और उस का सिर
९ उस के गले के पास से मरोड़ डाले परन्तु अलग न करे। और पाप
की भेंट के लोहू को यज्ञबेदी के अलंग पर छिड़के और उवरा
हुआ लोहू यज्ञबेदी की जड़ पर निचोड़ा जाय वुह पाप की भेंट
१० है । और दूसरे को व्यवहार के समान बलिदान की भेंट के
लिये चढ़ावे और याजक उस के किये हुए पाप का प्रायश्चित्त
करे और उस के लिये क्षमा किया जायगा ॥

११ पर यदि उसे दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे
लाने की पूंजी न हो तो वुह अपने पाप की भेंट के लिये सेर
भर चोखा पिसान पाप की भेंट के लिये लावे उस पर तेल न
डाले और न उस पर गंधरस रक्खे क्योंकि वुह पाप की भेंट है ।
१२ तब वुह उसे याजक पास लावे और याजक उस में से स्मरण
के लिये अपनी मुट्ठी भरके उस भेंट के समान जो परमेश्वर के
लिये आग से होती है यज्ञबेदी पर जलावे वुह पाप की भेंट है।
१३ और याजक उस पाप के कारण जो उस ने किया इन बातों में
से प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा किया जायगा और भोजन की
भेंट के समान याजक का होगा ॥

१४ । १५ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि यदि कोई प्राणी
अपराध करे और परमेश्वर की पवित्र बस्तुन में से अज्ञानता
से पाप करे तो वुह अपने अपराध के लिये झुंड में से एक
निष्खोट मेढ़ा पवित्र स्थान के शेकल के समान चांदी के शेकल
तेरे मोल के ठहराने के समान अपने अपराध की भेंट परमेश्वर
१६ के आगे लावे । और वुह उस पाप के कारण जो उस ने
पवित्र वस्तु में किया है पलटा देवे और उस में से पांचवां
भाग मिलाके याजक को देवे और याजक उस अपराध की भेंट के
मेंढ़े से उस का प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा किया जायगा ॥

१७ और यदि कोई प्राणी पाप करे और वही करे जो परमेश्वर
की आज्ञाओं से बर्जित है और यद्यपि वुह नहीं जानता था
१८ तथापि वुह अपराधी है और अपने पाप को भोगेगा। और
तेरे ठहराये हुए मोल के समान अपराध की भेंट के लिये एक
निष्खोट मेढ़ा झुंड में से याजक पास लावे और याजक उस
की अज्ञानता के कारण जिस में उस ने अनजान की चूक किई
और न जाना उस के लिये प्रायश्चित्त करे और वुह क्षमा किया
१९ जायगा। वुह अपराध की भेंट है उस ने निश्चय परमेश्वर के
बिरुद्ध अपराध किया है॥

छठवां पर्व्व।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि यदि कोई
प्राणी पाप करे और परमेश्वर के बिरुद्ध में अपराध करे और
अपने परोसी की थाती में जो उस पास रक्खी गई थी अथवा
साझे में अथवा किसी बस्तु में जो बरबस लिई जाय अथवा
३ अपने परोसी को छल दिया है। अथवा कोई बस्तु जो खोई
गई थी पावे और उस के बिषय में झूठ बोले और झूठी किरिया
४ खाय इन सारी बातों से जो मनुष्य करके पापी होता है। सो
इस कारण कि उस ने पाप किया है और दोषी है तब वुह
उसे जिसे उस ने बरबस लिया है अथवा जो उस ने छल से
पाया है अथवा वुह जो उस पास थाती थी अथवा खोई हुई
५ जो उस ने पाई है फेर दे। अथवा सब जिस के कारण उस
ने झूठी किरिया खाई है तो वुह मूल को भर देवे और उस का पांचवां
भाग उस में मिलावे और जिस का आता हो वुह अपने अपराध
६ की भेंट के दिन में उस को फेर देवे। और परमेश्वर के लिये
वुह अपने अपराध की भेंट झुंड में से एक निष्खोट मेढ़ा तेरे
ठहराये हुए मोल के समान अपराध की भेंट के लिये याजक

७ पास लावे। और याजक उस के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त
करे और उस बात में उस ने जो कोई अपराध किया है उस
के लिये क्षमा किया जायगा॥
८।६ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि हारून और
उस के बेटों को आज्ञा कर कि यह बलिदान की भेंट की
व्यवस्था है वुह बलिदान की भेंट जलाने के स्थान पर बेदी
पर रात भर बिहान लों रहे और बेदी की आग उस्से सुलगती
१० रहे। और याजक अपने सूती वस्त्र पहिने और सूती जांघिया
से अपना शरीर ढांपे और राख को उठा लेवे जिसे आग बेदी
पर बलिदान की भेंट में भस्म करेगी और उसे बेदी के पास
११ रक्खे। और वुह अपने वस्त्र उतारके दूसरे वस्त्र पहिने
और उस राख को छावनी के बाहर एक पावन स्थान पर ले
१२ जावे। और बेदी की आग उस में जलती रहे वुह बुझने न
पावे और याजक उस पर लकड़ी हर बिहान जलाया करे
और उस पर बलिदान की भेंट चुने और उस पर कुशल की
१३ भेंट की चिकनाई जलावे। आग बेदी पर सदा जलती रहे
बुझने न पावे॥
१४ और भोजन की भेंट की व्यवस्था यह है कि उसे हारून
१५ के बेटे बेदी के आगे परमेश्वर के लिये चढ़ावें। और भोजन
की भेंट में से एक मुट्ठी भर पिसान और कुछ तेल में से और
सब गंधरस जो उस भोजन की भेंट पर है उठा लेवे और
उन्हें स्मरण के कारण परमेश्वर के आनंद के सुगंध के लिये
१६ बेदी पर जलावे। और उस का उबरा हुआ हारून और उस
के बेटे खावें वुह अख़मीरी रोटी के साथ पवित्र स्थान में खाया
१७ जावे मंडली के तंबू के आंगन में उसे खावें। वुह ख़मीर के
साथ न पकाया जावे मैं ने अपनी भेंटों से जो आग से बनी
हैं उन का भाग कर दिया है वुह अत्यंत पवित्र है पाप की

१८ भेंट की नाईं और अपराध की भेंट की नाईं। हारून के संतान
में से हर एक पुरुष उसे खावे यह परमेश्वर की उन भेंटों में
से जो आग से बनी हैं तुम्हारी पीढ़ियों के लिये सदा की
विधि है हर एक जो उन्हें छूये सो पवित्र होवे॥
१९। २० फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि हारून और
उस के बेटों की भेंट जिसे वे अपने अभिषेक होने के दिन
परमेश्वर के आगे भेंट लावें सो यह है ईफा का दसवां भाग
चोखा पिसान भोजन की नित्य की भेंट उस का आधा बिहान
२१ को और उस का आधा सांझ को। यह तेल से बनके तवे पर
पकाया जावे उसे चुपड़के लाओ भोजन की भेंट पक्के हुए
२२ टुकड़े टुकड़े परमेश्वर के सुगंध के लिये चढ़ाओ। और उस के
बेटों में का याजक जो उस के स्थान पर अभिषेक हो वुह
उसे चढ़ावे यह विधि परमेश्वर के कारण सदा होवे वुह संपूर्ण
२३ जलाया जावे। और याजक के हर एक भोजन की भेंट सब की
सब जलाई जावे और कभी खाई न जावे॥
२४। २५ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि हारून और
उस के बेटों से कह पाप की भेंट की व्यवस्था यह है कि जिस
स्थान में बलिदान की भेंट बलि किई जाती है वहीं पाप की भेंट
२६ भी परमेश्वर के आगे बलि किई जाय वुह अत्यंत पवित्र है। जो
याजक पाप के लिये उसे चढ़ावे सो उसे खाय वुह पवित्र स्थान
२७ में मंडली के तंबू के आंगन में खाया जावे। जो कोई उस के
मांस को छूये सो पवित्र हो और जब उस का लोहू किसी वस्त्र
पर छिड़का जाय जिस पर वुह छिड़का जाय उसे पवित्र स्थान में
२८ धोवे। परन्तु जिस मिट्टी के पात्र में वुह सिझाया जावे सो तोड़ा
जाय और यदि वुह पीतल के पात्र में सिझाया जावे तब वुह
२९ मांजा जाके पानी में खंघारा जाय। याजकों में से समस्त पुरुष
३० उसे खावें वुह अत्यंत पवित्र है। और पाप की कोई भेंट जिस

का कुछ भी लोहू मंडली के तंबू में मिलाप के कारण लाया
जाय सो खाया न जायगा आग से जलाया जावे ॥

सातवां पर्व्व ।

१ और अपराध की भेंट की व्यवस्था भी यह है वुह अत्यंत
२ पवित्र है। जिस स्थान में वे बलिदान की भेंट को बलि करें
उसी स्थान में अपराध की भेंट को बलि करें और उस के
३ लोहू को वेदी के चारों ओर पर छिड़कें। और वुह उस की सारी
चिकनाई को चढ़ावे उस की पूंछ और वुह चिकनाई जो ओझ
४ को ढांपती है। और दोनों गुर्दे और उन पर की चिकनाई जो
पांजरों के पास है और कलेजी पर की झिल्ली गुर्दों समेत अलग
५ करे। और याजक उन्हें परमेश्वर की आग की भेंट के लिये
६ वेदी पर जलावे वुह अपराध की भेंट है। याजकों में से हर
एक पुरुष उस्से खावे वुह पवित्र स्थान में खाई जावे वुह अत्यंत
पवित्र है ॥

७ जैसे पाप की भेंट वैसे ही अपराध की भेंट की एक ही
व्यवस्था है जो याजक उस्से प्रायश्चित्त करता है उसी की
८ होगी। और जो याजक किसी मनुष्य के बलिदान की भेंट
चढ़ाता है सो उसी बलिदान की खाल उसी याजक की होगी
९ जिस ने उसे चढ़ाया। और समस्त भोजन की भेंट जो तनूर
में पकाई जावें और सब जो कड़ाही में अथवा तवे पर सो
१० उसी याजक की होगी जो उसे चढ़ाता है। और हर एक भोजन
की भेंट जो तेल से मिली हुई हो अथवा सूखी हो सो सब
हारून के बेटों के लिये एक एक के समान होगी ॥

११ और कुशल की भेंट के बलिदान जो वुह परमेश्वर के लिये
१२ चढ़ावे उस की यह व्यवस्था है। यदि वुह धन्यवाद के लिये
उसे चढ़ावे तो उस के साथ तेल से मिले हुए अख़मीरी फुलके और

अख़मीरी तेल से चुपड़ी हुई और तेल में पकी हुई चोखे पिसान
१३ की पूरी धन्यबाद के बलिदान के लिये चढ़ावे। फुलके से अधिक
वुह ख़मीरी रोटी की अपनी भेंट धन्यबाद के बलिदान के
१४ और अपनी कुशल की भेंट के साथ लावे। और वुह समस्त
नैबेद्य में से एक को परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट चढ़ावे
और यह उस याजक का होगा जो कुशल की भेंट के लोहू
१५ को छिड़कता है। और कुशल की भेंट और बलिदान का मांस
जो धन्यबाद के लिये है उसे चढ़ाये जाने के दिन में खाया
१६ जावे वुह उस में से बिहान लों कुछ न छोड़े। परन्तु
यदि भेंट का बलिदान मनौती का अथवा उस के वांछित का
हो तो वुह चढ़ाने के दिन खाया जाय और उबरे हुए से
१७ दूसरे दिन भी खाया जाय। परन्तु बलिदान का उबरा हुआ
१८ मांस तीसरे दिन आग से जला दिया जाय। और यदि कुशल
के बलिदान के मांस में से कुछ तीसरे दिन खाया जाय तो
वुह ग्रहण न किया जायगा न भेंटदायक के लिये लेखा किया
जायगा वुह घिनित होगा जो प्राणी उस में से खावे सो अपने
१९ पाप को भोगेगा। और वुह मांस जो किसी अशुद्ध बस्तु को
छूये सो खाया न जावे वुह जलाया जावे और मांस जो है
२० हर एक जो पवित्र हो सो मांस में से खावे। परन्तु जो अशुद्ध
प्राणी परमेश्वर के कुशल की भेंट के बलिदान का मांस खावे
२१ सोई प्राणी अपने लोगों में से काट डाला जायगा। और जो
प्राणी किसी अशुद्ध बस्तु को छूये चाहे मनुष्य की अथवा पशु
की अथवा किसी घिनित अशुद्धता बस्तु को छूवे और परमेश्वर
के कुशल की भेंट के बलिदान से मांस खावे वही प्राणी अपने
लोगों में से काटा जायगा॥

२२। २३ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के
संतानों से कह कि बैल और भेड़ और बकरी की कोई चिकनाई

२४ न खावें । और उस लोथ की चिकनाई जो आप से आप मर
गया हो अथवा उस की चिकनाई जो पशुन से फाड़ा गया हो
वुह किसी कार्य्य में लाई जाय परन्तु उस में से किसी भांति
२५ से मत खाइयो । क्योंकि जो मनुष्य ऐसे पशु की चिकनाई
खावे जिस्से आग के बलिदान परमेश्वर के आगे चढ़ाये जाते
२६ हैं सोई प्राणी अपने लोगों में से काटा जायगा । और तुम
किसी पक्षी का अथवा पशु का किसी भांति का लोहू अपने सब
२७ स्थानों में मत खाइयो । जो प्राणी किसी भांति का लोहू खावे
सोई प्राणी अपने लोगों में से काटा जायगा ॥

२८ । २९ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के
संतानों से कह कि जो कोई अपने कुशल के बलिदान परमेश्वर
के लिये चढ़ावे सो अपने कुशल के बलिदान में से परमेश्वर के
३० आगे अपने नैवेद्य लावे । वुह उस बलिदान को जो परमेश्वर के
लिये जलाया जाता है और छाती की चिकनाई को अपने हाथों
में लावे जिसतें छाती के हिलाने के बलिदान के लिये परमेश्वर
३१ के आगे हिलाया जावे । और याजक चिकनाई को यज्ञबेदी
पर जलावे परन्तु छाती हारून की और उस के बेटों की होगी।
३२ और तुम कुशल की भेंट के बलिदानों से दहिना कांधा याजक
३३ को हिलाने की भेंट के लिये दीजियो । हारून के बेटों में से
जो कुशल के बलिदान का लोहू और चिकनाई चढ़ाता है सो
३४ दहिना कांधा अपने भाग के लिये लेवे । क्योंकि कुशल की
भेंटों के बलिदानों में से हिलाने की छाती और उठाने का
कांधा मैं ने इसराएल के संतानों से लिया और हारून याजक
और उस के बेटों को सनातन की विधि के लिये दिया ।
३५ हारून और उस के बेटों के अभिषेक का जिस दिन में वुह
उन्हें आगे धरे कि याजक के पद में परमेश्वर की सेवा करे
३६ परमेश्वर के लिये आग की भेंटों में का वुह भाग होगा । जिसे

परमेश्वर ने इसराएल के संतान को जिस दिन में उस ने उन्हें
अभिषेक किया उन्हें देने को आज्ञा किई कि उन की पीढ़ियों
में सनातन के लिये बिधि होवे ॥
३७ बलिदान की भेंट और भोजन की भेंट और पाप की भेंट
और अपराध की भेंट और स्थापित करने की भेंट और कुशल
३८ की भेंट के बलिदान की यह व्यवस्था है। जिसे परमेश्वर ने
सीना के पहाड़ में मूसा को आज्ञा किई जिस दिन उस ने
सीना के बन में इसराएल के संतान को आज्ञा किई कि अपनी
भेंटें परमेश्वर के आगे लावें ॥

आठवां पर्व्व ।

१ । २ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि हारून और
उस के साथ उस के बेटों को और वस्त्रों को और अभिषेक का
तेल और पाप की भेंट का एक बैल और दो मेंढ़े और एक
३ टोकरी अख़मीरी रोटी ले। और तू सारी मंडली को मंडली के
४ तंबू के द्वार पर एकट्ठा कर। सो जैसा कि परमेश्वर ने उसे आज्ञा
किई थी मूसा ने वैसा ही किया और सारी मंडली मंडली के तंबू
के द्वार पर एकट्ठी हुई ॥
५ तब मूसा ने मंडली से कहा कि यह वुह बात है जो
६ परमेश्वर ने पालन करने को आज्ञा किई है। और मूसा हारून
को और उस के बेटों को आगे लाया और उन्हें पानी से
७ नहलाया। और उसे कुरता पहिनाया और उसे पटुका बांधा
और उसे बागा पहिनाया और उस पर एफ़ोद रक्खा और
एफ़ोद के अनोखे पटुके से उसे बांधा और एफ़ोद उस पर
८ पहिनाया। और उस पर चपरास रक्खी और उसी चपरास पर
९ उरीम और तुम्मीम जड़े। और उस के सिर पर मुकुट रक्खा
और मुकुट पर और ललाट की ओर सोने का पत्तर पवित्र

मुकुट पर लगाया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई
थी॥
१० और मूसा ने अभिषेक का तेल लिया और तंबू को और उस
११ के समस्त पात्रों को अभिषिक्त करके उन्हें पवित्र किया। और
उस में से कुछ यज्ञबेदी पर सात बार छिड़का और यज्ञबेदी
और उस के सारे पात्रों और स्नानपात्र और उस की चौकी को
१२ अभिषेक करके उन्हें शुद्ध किया। और अभिषेक के तेल में से
हारून के सिर पर ढाला और उस को अभिषेक करके पवित्र
१३ किया। और मूसा हारून के बेटों को आगे लाया और उन्हें
कुरते पहिनाये और उन पर पटुके बांधे और उन के सिर पर
पगड़ी रक्खी जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥
१४ और पाप की भेंट के लिये बैल लाया और हारून और
उस के बेटों ने अपने हाथ पाप की भेंट के बैल के सिर पर
१५ रक्खे। और उसे बलि किया और मूसा ने उस के लोहू को
लिया और अपनी अंगुली से यज्ञबेदी के सींगों पर चारों ओर
लगाया और यज्ञबेदी को पवित्र किया और लोहू को यज्ञबेदी
की जड़ पर ढाला और उसे पवित्र किया जिसतें उस के लिये
१६ प्रायश्चित्त करे। और उस ने सब चिकनाई जो ओझ पर और
कलेजे पर की झिल्ली और दोनों गुर्दे और उन की चिकनाई
१७ लिई और मूसा ने यज्ञबेदी पर जलाई। परन्तु बैल को और
उस की खाल को और उस के मांस को और उस के गोबर को
छावनी के बाहर आग से जलाया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा
को आज्ञा किई थी॥
१८ और बलिदान की भेंट का मेंढ़ा आगे लाया और हारून
और उस के बेटों ने अपने हाथ उस मेंढ़े के सिर पर रक्खे।
१९ और उस ने उसे बलि किया और मूसा ने यज्ञबेदी के चारों
२० ओर लोहू छिड़का। और उस ने मेंढ़े को टुकड़ा टुकड़ा किया

और मूसा ने सिर को और टुकड़ों को और चिकनाई को जलाया।
२१ और उस ने ओझ और पांव को पानी से धोया और मूसा ने
सारे मेंढ़े को यज्ञबेदी पर जलाया वुह बलिदान की भेंट
परमेश्वर के सुगंध के लिये वुह आग की भेंट परमेश्वर के लिये
है जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी॥
२२ और वुह दूसरा मेंढ़ा अर्थात् स्थापित का मेंढ़ा लाया और
हारून और उस के बेटों ने अपने हाथ उस मेंढ़े के सिर पर
२३ रक्खे। और उसे बलि किया और मूसा ने उस के लोहू में से
लिया और हारून के दहिने कान की लहर पर और उस के दहिने
२४ हाथ के अंगूठे और उस के दहिने पांव के अंगूठे पर लगाया। और
वुह हारून के बेटों को लाया और लोहू में से उन के दहिने कानों
की लहर पर और उन के दहिने हाथों के अंगूठों पर और उन
के दहिने पांव के अंगूठों पर मूसा ने लगाया और मूसा ने लोहू
२५ को यज्ञबेदी के चारों ओर छिड़का। और चिकनाई और पूंछ
और सब चिकनाई जो ओझ पर और कलेजे पर की झिल्ली और
२६ दोनों गुर्दे और उन की चिकनाई और दहिना कांधा लिया। और
उस अख़मीरी रोटी की टोकरी में से जो परमेश्वर के सन्मुख थी
एक अख़मीरी फुलका और एक फुलका तेल में चुपड़ा हुआ और
एक लिट्टी निकाली और उन्हें चिकनाई पर और दहिने कांधे
२७ पर रक्खा। और उस ने सब को हारून और उस के बेटों के
हाथों पर रक्खा और उन को परमेश्वर के सन्मुख हिलाने की
२८ भेंट के लिये हिलाया। तब मूसा ने उन्हें उन के हाथों से
लिया और यज्ञबेदी पर बलिदान की भेंट के लिये जलाया वुह
स्थापना की भेंट सुगंध के लिये हैं वुह परमेश्वर के लिये आग
२९ की भेंट है। और मूसा ने छाती लिई और उसे हिलाने की
भेंट के लिये परमेश्वर के आगे हिलाया स्थापित करने के मेंढ़े से
मूसा का भाग था जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥

३० तब मूसा ने अभिषेक का तेल और यज्ञवेदी पर के लोहू
में से लिया और हारून पर और उस के बस्त्रों पर और उस
के साथ उस के बेटों पर और उस के बेटों के बस्त्रों पर छिड़का और
हारून को और उस के बस्त्रों को और उस के साथ उस के
बेटों को और उस के बेटों के बस्त्रों को पवित्र किया॥
३१ और मूसा ने हारून से और उस के बेटों से कहा कि मांस
को मंडली के तंबू के द्वार पर उसिन और उसे वहां उस रोटी
के साथ जो स्थापित करने की टोकरी में है खाओ जैसे मैं ने
यह कहके आज्ञा किई कि हारून और उस के बेटे उसे खावें।
३२ और मांस और रोटी में से जो उबरे उसे आग से जलाओ।
३३ और तुम मंडली के तंबू के द्वार से सात दिन लों बाहर न
जाओ जब लों तुम्हारे स्थापित करने के दिन पूरे न होवें क्योंकि
३४ वुह तुम्हें सात दिन में स्थापित करेगा। जैसा उस ने आज के
दिन किया है परमेश्वर ने ऐसा करने की आज्ञा किई है कि
३५ तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त होवे। इस कारण मंडली के तंबू के
द्वार पर सात रात दिन ठहरो और परमेश्वर की आज्ञाओं को
पालन करो जिसतें न मरो क्योंकि मुझे योंही आज्ञा है।
३६ सो सब कुछ जो परमेश्वर ने मूसा के हसते आज्ञा किई था
हारून और उस के बेटों ने किया॥

नवां पर्ब्ब।

१ और जब आठवां दिन हुआ तब मूसा ने हारून को और
२ उस के बेटों को और इसराएल के प्राचीनों को बुलाया। और
हारून से कहा कि तू एक निष्खोट बछड़ा पाप की भेंट के
लिये और एक निष्खोट मेंढ़ा बलिदान की भेंट के लिये ले
३ और परमेश्वर के आगे ला। और इसराएल के संतान को यह
कहके बोल कि एक बकरा पाप की भेंट के लिये और एक

बछड़ा और पहिले बरस का एक मेम्ना सब निष्खोट बलिदान
४ की भेंट के लिये लेओ। और एक बैल और एक मेंढ़ा कुशल
की भेंटों के लिये लाओ जिसतें परमेश्वर के आगे बलि किये
जावें और तेल से मिली हुई भोजन की भेंट क्योंकि आज के
दिन परमेश्वर तुम पर प्रगट होगा॥
५ और जैसा कि मूसा ने आज्ञा किई थी वे मंडली के तंबू
के आगे लाये और सारी मंडली निकट आके परमेश्वर के आगे
६ खड़ी हुई। और मूसा ने कहा कि यह वुह बात है जिस की
आज्ञा परमेश्वर ने दिई तुम उसे पालन करो और परमेश्वर की
महिमा तुम पर प्रगट होगी॥
७ और मूसा ने हारून से कहा कि बेदी पास जा और अपने
पाप की भेंट और अपने बलिदान की भेंट चढ़ा और अपने
और लोगों के लिये प्रायश्चित्त कर और लोगों की भेंट चढ़ा
और उन के लिये प्रायश्चित्त कर जैसा कि परमेश्वर ने आज्ञा किई॥
८ तब हारून बेदी पास गया और पाप की भेंट का बछड़ा
९ जो अपने लिये था बलि किया। और हारून के बेटे उस पास
लोहू लाये और उस ने अपनी अंगुली लोहू में डुबोई और बेदी
के सींगों पर लगाया और लोहू को बेदी की जड़ पर ढाला।
१० और चिकनाई और गुर्दे और कलेजे पर की झिल्ली अपराध की
भेंट से लेके बेदी पर जलाये जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को
११ आज्ञा किई। और मांस और खाल को छावनी के बाहर आग
१२ से जलाया। और उस ने बलिदान की भेंट को बलि किया
और हारून के बेटों ने उसे लोहू दिया और उस ने बेदी के
१३ चारों ओर छिड़का। और उन्हों ने बलिदान की भेंट को उस
के टुकड़े और सिर समेत उसे दिये और उस ने बेदी पर जलाये।
१४ और उस ने ओझ को और पांव को धोया और बलिदान की
भेंट के साथ यज्ञबेदी के ऊपर जलाया॥

१५ और वुह लोगों की भेंट को लाया और लोगों के पाप की
भेंट के लिये बकरे को लिया और उसे बलि किया और उसे
१६ पहिले के समान पाप के लिये चढ़ाया। और उस ने बलिदान
१७ की भेंट को लाके उसी रीति के समान चढ़ाया। और बिहान
के बलिदान की भेंट से अधिक वुह भोजन की भेंट लाया और
१८ उस्से एक मुट्ठी भर लिया और यज्ञबेदी पर जलाया। और
उस ने बैल और मेंढ़ा लोगों के कुशल की भेंटों के लिये बलि
किया और हारून के बेटे उस के पास लोहू ले आये जिसे
१९ उस ने यज्ञबेदी की चारों ओर छिड़का। और बैल की और
मेंढ़े की चिकनाई और पूंछ और जो ओझ को ढांपती है और
२० गुर्दों को और कलेजे पर की झिल्ली को। और उन्हों ने
चिकनाई को छातियों पर रक्खा और उस ने चिकनाई को
२१ यज्ञबेदी पर जलाया। और छातियों को और दहिने कांधे को
जैसे परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई हारून ने परमेश्वर के
आगे हिलाने की भेंट के लिये हिलाया॥

२२ और हारून ने लोगों की ओर अपने हाथ उठाये और उन्हें
आशीष दिई और पाप की भेंट और बलिदान की भेंट और
२३ कुशल की भेंट चढ़ाके नीचे उतरा। तब मूसा और हारून
मंडली के तंबू में गये और बाहर निकलके लोगों को आशीष
दिई और सारे लोगों पर परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई॥

२४ और परमेश्वर के आगे से आग निकली और यज्ञबेदी पर
बलिदान की भेंट और चिकनाई को भस्म किया जब सारे
लोगों ने देखा तब वे चिल्लाके औंधे मुंह गिरे॥

दसवां पर्ब्ब ।

१ और नदब और अबिहू हारून के बेटों ने अपना अपना
धूपपात्र लिया और उस में आग भरके उस पर धूप रक्खा

और परमेश्वर के आगे उपरी आग चढ़ाई जिसे परमेश्वर ने उन्हें
२ आज्ञा नहीं दिई थी। तब परमेश्वर की ओर से आग निकली
और उन्हें भस्म किया और वे परमेश्वर के आगे मर गये।
३ तब मूसा ने हारून से कहा कि यह वुह है जो परमेश्वर ने
कहा था कि जो जो मेरे पास आवें मैं उन में पवित्र किया
जाऊंगा और मैं सारे लोगों के आगे महिमा पाऊंगा तब हारून
४ चुप हो रहा। तब मूसा ने हारून के चाचा उज्ज़िएल के बेटों
मीसाएल और इलज़ाफ़ान को बुलाया और उन से कहा कि
पास आओ अपने भाइयों को पवित्र स्थान के साम्ने से छावनी
५ के बाहर उठा ले जाओ। सो वे पास आये और उन्हें उन के
सूती कपड़ों में उठाके छावनी के बाहर ले गये जैसा मूसा ने
कहा था॥

६ फिर मूसा ने हारून और उस के बेटों इलिअज़र और
ईतमर को कहा कि अपने सिर को मत उघारो और अपने
कपड़े मत फाड़ो न हो कि मर जाओ और सारी मंडली पर
कोप पड़े परन्तु तुम्हारे भाई इसराएल के घराने उस ज्वलन
७ के लिये बिलाप करें जिसे परमेश्वर ने बारा है। और तुम
मंडली के तंबू के द्वार से बाहर न जाओ जिसतें न हो कि
मर जाओ क्योंकि परमेश्वर के अभिषेक का तेल तुम पर है सो
उन्हों ने मूसा के कहने के समान किया॥

८।९ फिर परमेश्वर कहके हारून से बोला। कि जब तुम
मंडली के तंबू में प्रवेश करो तो न तू न तेरे संग तेरे बेटे
दाखरस अथवा तीक्ष्ण मदिरा पीजियो जिस में नाश न हो
१० यह सनातन के लिये तुम्हारी पीढ़ियों में बिधि है। और
जिसतें तुम पावन और अपावन और शुद्ध और अशुद्ध में
११ ब्यवरा करो। और जिसतें तुम सारी बिधि जो परमेश्वर ने मूसा
के द्वारा उन्हें आज्ञा किई है इसराएल के संतानों को सिखाओ॥

१२ और मूसा ने हारून और उस के बेटों इलिअज़र और
ईतमर से जो बचे थे कहा कि वुह भोजन की भेंट जो
परमेश्वर की आग की भेंटों में से बच रही है लेओ और उसे
यज्ञबेदी के पास बिना ख़मीर से खाओ क्योंकि वुह अत्यंत
१३ पवित्र है। और उसे पवित्र स्थान में खाओ क्योंकि परमेश्वर
की आग की भेंटों में से तेरा और तेरे बेटों का यह भाग है
१४ क्योंकि मुझे योंही आज्ञा हुई है। और हिलाने की छाती और
उठाने के कांधे को किसी पवित्र स्थान में तू और तेरे पुत्र
और तेरी पुत्रियां तेरे साथ खावें क्योंकि यह तेरा और तेरे
पुत्रों का भाग है जो इसराएल के संतानों के कुशल के बलिदानों
१५ में से दिया जाता है। वे उठाने का कांधा और हिलाने की
छाती उन चिकनाई की भेंटों के साथ जो आग से चढ़ाई जाती
हैं लावें जिसतें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट हिलाई जावे
और यह तेरे और तेरे बेटों के लिये तेरे संग सनातन की
बिधि होगी जैसा कि परमेश्वर ने कहा है।

१६ और मूसा ने पाप की भेंट की बकरी को बहुत ढूंढ़ा तो
क्या देखता है कि वुह जल गई तब उस ने हारून के बचे
१७ हुए बेटों इलिअज़र और ईतमर पर रिसियाके कहा। कि तुम
ने पाप की भेंट को क्यों नहीं पवित्र स्थान में खाया है क्योंकि
वुह अत्यंत पवित्र है और तुम्हें दिया गया है जिसतें तुम मंडली
का पाप उठा लेओ और उन के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित
१८ करो। देखो उस का लोहू पवित्र स्थान के भीतर न पहुंचाया
गया अवश्य था तुम उसे पवित्र स्थान में खाते जैसा मैं ने
१९ आज्ञा किई है। तब हारून ने मूसा से कहा कि देख आज
ही उन्हों ने अपने पाप की भेंट और अपने बलिदान की
भेंट परमेश्वर के आगे चढ़ाई है और मुझ पर ऐसी बातें
बीतीं यदि मैं पाप की भेंट आज खाता तो क्या परमेश्वर

२० की दृष्टि में ग्राह्य होता। और मूसा ने यह सुनके मान
लिया॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१। २ और परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला। कि तुम
इसराएल के संतानों से कहो कि समस्त पशुन में से जो पृथिवी
३ पर हैं इन पशुन को खाइयो। पशुन में से जिन का खुर
विभाग हो और जिन का पांव चीरा हुआ हो और जो पागुर
४ करते हों उन्हें खाइयो। तथापि उन में से इन्हें न खाइयो
जो पागुर करते हैं अथवा जिन का खुर विभाग हो ऊंट को
क्योंकि वुह पागुर करता है परन्तु उस का खुर विभाग नहीं
५ है वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध है। और साफन क्योंकि वुह पागुर
करता है परन्तु उस का खुर विभाग नहीं वुह तुम्हारे
६ लिये अशुद्ध है। और खरहा इस कारण कि वुह पागुर
करता है परन्तु उस का खुर विभाग नहीं है वुह तुम्हारे लिये
७ अशुद्ध है। और सूअर यद्यपि उस का खुर विभाग है और उस
का पांव चीरा तथापि वुह पागुर नहीं करता वुह तुम्हारे
८ लिये अशुद्ध है। तुम उन के मांस में से न खाइयो
और उन की लोथों को न छूइयो वे तुम्हारे लिये अशुद्ध
हैं॥

९ सभों में से जो पानियों में हैं ये खाइयो पानियों में जिस
किसी के पंख और छिलके हों समुद्रों में और नदियों में
१० तुम उन्हें खाइयो। और समुद्रों में और नदियों में के सब
जिन के पंख और छिलके नहीं हैं उन सभों में से जो पानियों
में चलते हैं और सब जीवधारियों में से जो पानियों में हैं
११ वुह तुम्हारे लिये घिनित होंगे। और वे तुम्हारे लिये घिनित
होंगे तुम उन के मांस में से न खाओ परन्तु उन की लोथ

१२ को घिनित समुझो। पानियों में जिन के पंख और छिलके
नहीं हैं वे सब तुम्हारे लिये घिनित होंगे॥
१३ और पक्षियों में से तुम इन्हें घिनित समुझो वे खाये न जायें
१४ वे घिनित हैं गरुल और हड़फोड़ और कुरुल। और गिद्ध
१५ और भांति भांति की चील्ह। भांति भांति के काग।
१६ और शुतुरमुर्ग और तख़मस और कोकिल और भांति भांति की
१७ तुरमती। और हवासिल और हाड़गील और बड़ा उल्लू।
१८। १९ और राजहंस और पनिबुड्डी और रखम। और सारस और
भांति भांति के बगुला और टिटिहिरी और चमगुदड़ी॥
२० सारे कीट जो उड़ते और चार पांव से रेंगते हैं तुम्हारे
२१ लिये वे घिनित हैं। तथापि तुम सब पक्षियों में से जो चारों
पांव से रेंगते हैं जिन की पिछली टांगें अगले पांव से
लपटी हुई हैं जिस्से वे फांद कर पृथिवी पर चलें तुम इन्हें
२२ खाइयो। तुम उन्हों में से इन्हें खाइयो जैसे भांति भांति की
टिड्डी और भांति भांति के फनगे और भांति भांति के
२३ ख़रगोल और भांति भांति के हागाव। परन्तु सब रेंगवैये
पक्षियों में से जिन के चार पांव हैं वे तुम्हारे लिये घिनित
२४ हैं। और इन से तुम अशुद्ध होगे जो कोई उन की लोथ
२५ को छूयेगा सो सांझ लों अपवित्र रहेगा। और जो कोई उन
में से किसी की लोथ को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और
सांझ लों अपवित्र रहेगा॥
२६ हर एक पशु जिन के खुर विभाग हों और पांव चीरा न
हो और पागुर करता न हो सो तुम्हारे लिये अशुद्ध है जो
२७ कोई उन्हें छूयेगा सो अशुद्ध होगा। और समस्त प्रकार के
पशु जो अपने हाथों पर और चार पांव पर चलते हैं तुम्हारे
लिये अशुद्ध हैं जो कोई उन की लोथ को छूयेगा सो सांझ लों
२८ अशुद्ध रहेगा। और जो कोई उन की लोथ को उठावे सो

अपने कपड़े धोवे और वुह सांझ लों अशुद्ध रहेगा वे तुम्हारे
लिये अशुद्ध हैं ॥
२९ और पृथिवी पर के रेंगवैयों में से ये तुम्हारे लिये अपवित्र
३० हैं छछूंदर और चूहा और भांति भांति का गोह। और
टिक्टिकी और गिरगिटान और बम्हनी और सांड़ा और गोहटा।
३१ सब रेंगवैयों में से ये तुम्हारे लिये अपवित्र हैं जो कोई उन
३२ की लोथ को छूये सो सांझ लों अशुद्ध होगा। और जिस
किसी पर इन्हों में से मरके गिर पड़े सो अशुद्ध होगा चाहे
लकड़ी का पात्र अथवा वस्त्र अथवा खाल अथवा टाट जो
पात्र होवे जिस्से काम होता हो सो अवश्य जल में डाला
जावे और सांझ लों अपवित्र रहेगा और इसी रीति से पवित्र
३३ होगा। और सब मिट्टी के पात्र जिन में उन में से गिरे जो
३४ उस में होवे सो अशुद्ध होगा और तुम उसे तोड़ डालियो। समस्त
भोजन जो खाया जाता है जो उस पर उन से पानी पड़े सो
अशुद्ध होगा और जो कुछ ऐसे पात्रों में पीया जाता है सो
३५ अशुद्ध होगा। और जिस पर उन की लोथ पड़े सो अपवित्र
होगा चाहे तनूर चाहे चूल्हा होय तोड़ा जायगा वे अपवित्र
३६ हैं और तुम्हारे लिये अशुद्ध होंगे। तथापि सोता और कूआ
जिस में बहुत जल होवे वुह शुद्ध होगा परन्तु जो कोई उन
३७ की लोथ को छूवेगा सो अशुद्ध होगा। और यदि उन
की लोथ से कुछ किसी बोने के बीज पर गिरे सो पवित्र
३८ रहेगा। परन्तु यदि उस बीज पर पानी पड़ा हो और
उन की लोथ से कुछ उस पर गिरे सो तुम्हारे लिये अशुद्ध
होगा ॥
३९ और यदि तुम्हारे खाने के पशुन में से कोई मरे जो कोई
४० उस की लोथ को छूये सो सांझ लों अशुद्ध होगा। और जो
कोई उस की लोथ में से खावे सो अपने कपड़े धोवे और सांझ

लों अशुद्ध होगा और जो उस की लोथ को उठाता है सो
भी अपने कपड़े धोवे और सांझ लों अशुद्ध होगा ॥
४१ और हर एक जो पृथिवी पर रेंगता है सो घिनित है
४२ वुह खाया न जायगा। जो पेट के बल चलता है और
जो चार पाओं पर चलते हैं और रेंगवैये में से जो अधिक
पांव रखते हैं और पृथिवी पर रेंगते हैं तुम उन्हें न खाइयो
४३ क्योंकि वे घिनित हैं। तुम किसी रेंगवैये से जो पृथिवी पर
रेंगता है अपने को घिनित मत करो और न आप को उन
के कारण से अपवित्र करो यहां लों कि तुम उस्से अशुद्ध हो
४४ जाओ। क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं इस लिये तुम
आप को शुद्ध करो और तुम पवित्र होगे क्योंकि मैं पवित्र हूं
और अपने को किसी रेंगवैये जन्तु से जो पृथिवी पर रेंगता
४५ है अशुद्ध न करो। क्योंकि मैं परमेश्वर हूं जो मिस्र के देश से
तुम्हें ले जाता हूं जिसतें तुम्हारा ईश्वर हूं सो तुम शुद्ध होओ
क्योंकि मैं पवित्र हूं ॥
४६ चारपाये और पक्षी और सब जीवधारी जो पानी में चलते
हैं और हर एक जन्तु जो पृथिवी पर रेंगते हैं उन की यही
४७ व्यवस्था है। कि अशुद्ध और शुद्ध में और उन पशुन में जो
खाये जावें और उन में जो न खाये जावें तुम बिभेद करो ॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के
संतानों से कह कि जब स्त्री गर्भिणी होवे और बेटा जने तब
वुह सात दिन अशुद्ध होगी जैसे दुर्बलता के कारण अलग
३ होने के दिनों में होती है। और आठवें दिन लड़के का
४ ख़तनः किया जावे। और वुह रुधिर से पवित्र होने के लिये
तेंतीस दिन पड़ी रहे वुह किसी पवित्र वस्तु को न छूवे और

जब लों उस के पवित्र होने के दिन पूर्ण न होवें तब लों वुह
५ पवित्र स्थान में न जावे। और यदि लड़की जने तो वुह दो
अठवारे अशुद्ध होगी जैसे अपने अलग किये जाने के दिनों
में थी और वुह अपने रुधिर की पवित्रता के लिये छियासठ
दिन पड़ी रहेगी॥
६ और जब उस के पवित्र होने के दिन पुत्र के अथवा पुत्री के
पूर्ण होवें तब वुह पहिले बरस का एक मेम्ना बलिदान की भेंट
के लिये लेवे और एक कपोत का बच्चा अथवा पिण्डुकी पाप की
भेंट के लिये मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावे।
७ और वुह उसे परमेश्वर के आगे लावे और उस के लिये
प्रायश्चित्त करे और वुह अपने रुधिर बहने से पवित्र होगी
८ यह पुत्र और पुत्री जन्ने के लिये व्यवस्था है। और यदि उसे
मेम्ना लाने की पूंजी न हो तो दो पिण्डुकियां अथवा कपोत
के दो बच्चे लावे एक बलिदान की भेंट के लिये और दूसरा
पाप की भेंट के लिये और याजक उस के लिये प्रायश्चित्त करे
तब वुह पवित्र हो जायगी॥

तेरहवां पर्व्व।

१। २ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला। जब
किसी मनुष्य के शरीर में सूज अथवा खजुली अथवा चकचकिया
बिंदु हो और उस के शरीर के चमड़े में कोढ़ की मरी सी हो
तब उसे हारून याजक के पास अथवा उस के किसी पुत्र
३ याजक पास लावें। और वुह याजक उस के शरीर के चमड़े
की मरी को देखे यदि मरी के स्थान का बाल उजला हो गया
हो और वुह मरी देखने में चमड़े से गहिरी हो तो वुह
कोढ़ की मरी है और याजक उसे देखके उस को अशुद्ध
४ ठहरावे। और यदि उस के शरीर के चमड़े पर चकचकिया

बिंदु देखने में चमड़े से गहिरा न हो और उस पर के बाल
उजले न हुए हों तो याजक उस मरीवाले को सात दिन लों
५ बंद करे । और सातवें दिन याजक उसे देखे और यदि मरी
उस के देखने में वैसी ही हो और मरी चमड़े पर फैली न
६ हो तो याजक उसे और सात दिन लों बंद करे । और सातवें
दिन याजक दूसरी बार उसे देखे और यदि मरी कुछ मुरझाई
हो और चमड़े पर फैली न हो तो याजक उसे पवित्र ठहरावे
वुह खाज है और वुह अपने कपड़े धोवे और पवित्र होवे ।
७ परन्तु यदि वुह खाज याजक के देखने और पवित्र करने के
पीछे चमड़े पर बहुत फैल जावे तो वुह मनुष्य याजक को
८ फिर दिखाया जावे । और याजक देखे कि वुह खाज चमड़े
पर बढ़ गई हो तो याजक उसे अपवित्र ठहरावे वुह कोढ़
है ॥

९ जब किसी मनुष्य को कोढ़ की मरी होवे तब उसे याजक
१० पास लावें । और याजक उसे देखे और यदि वुह सूज चमड़े
पर उजला हो और उस ने बालों को उजला कर दिया हो
११ और उभरे हुए में मूत्रा मांस हो । तो यह उस के शरीर के
चमड़े में पुराना कोढ़ है और याजक उसे अशुद्ध ठहरावे
१२ उसे बंद न करे क्योंकि वुह अशुद्ध है । और यदि कोढ़ चमड़े
पर फैल जावे और जहां कहीं याजक देखे तहां उस के चमड़े
१३ पर कोढ़ उस के सिर से उस के पांव लों छा ले । तब याजक
देखे और यदि कोढ़ ने उस के समस्त शरीर को छिपा लिया
हो तो वुह उस मरीवाले को पवित्र ठहरावे वुह सब उजला
१४ हो गया है वुह पवित्र है। और जिस दिन मूत्रा मांस उस में
१५ दिखाई देवे तब वुह अपवित्र होगा । और याजक उस मूए
मांस को देखे और उसे अपवित्र ठहरावे वुह सड़ा मांस अपवित्र
१६ है वुह कोढ़ है । अथवा यदि मुत्रा हुआ मांस फिर कर

१७ उजला हो जावे तो वुह याजक पास आवे। और याजक उसे
देखे और यदि वुह मरी उजली हो गई हो तो याजक उस
मरीवाले को पवित्र ठहरावे वुह पवित्र है॥
१८ और जिस के शरीर के चमड़े पर फुड़िया होवे और चंगी हो
१९ जावे। और फुड़िया के स्थान पर उजला उभरा हो अथवा
चकचकिया बिंदु उजला और तनिक लाल होवे तो वुह याजक
२० को दिखाया जावे। और यदि याजक की दृष्टि में वुह चमड़े
से कुछ दबा हुआ हो और उस पर के बाल भी उजले हो
गये हों तो याजक उसे अपवित्र ठहरावे वुह कोढ़ की मरी है
२१ जो फुड़िया से फूट निकली है। परन्तु यदि याजक उसे देखे
कि उस पर श्वेत बाल नहीं है और वुह चमड़े से दबा नहीं
है परन्तु कुछ कुछ मुरझाया सा है तो याजक उसे सात दिन
२२ बंद करे। और यदि वुह चमड़े पर बहुत फैल गया हो तो
२३ याजक उसे अपवित्र ठहरावे वुह मरी है। परन्तु यदि चकचकिया
बिंदु अपने स्थान ही पर रहे और फैल न जावे तो वुह
ज्वलित फुड़िया है और याजक उसे पवित्र ठहरावे॥
२४ यदि उस के मांस के चमड़े में आग की जलन हो और उस
जलन का अथवा मूआ मांस चकचकिया बिंदु कुछ लाल अथवा
२५ उजला हो। तो याजक उसे देखे और यदि उस चकचकिया
बिंदु पर के बाल उजले हो गये हों और वुह देखने में चमड़े
से दबा हो तब जलन से वुह फूटा हुआ कोढ़ है और याजक
२६ उसे अशुद्ध ठहरावे वुह कोढ़ की मरी है। परन्तु यदि याजक
उसे देखे और उस पर और उस चकचकिया बिंदु पर उजला
बाल न सूझ पड़े और यदि चमड़े से गहिरा दिखाई न देवे
और वुह मुरझाया होवे तो याजक उसे सात दिन लों बंद
२७ करे। और सातवें दिन याजक उसे देखे यदि वुह चमड़े पर
बहुत फैल गया हो तब याजक उसे अपवित्र ठहरावे वुह

२८ कोढ़ की मरी है। और यदि वुह चकचाकिया बिंदु अपने स्थान
पर हो और चमड़े पर न फैले परन्तु वुह मुरझाया होवे तो
वुह जलने का उभरना है और याजक उसे शुद्ध ठहरावे
क्योंकि वुह जलने की जलन है॥

२९ यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री के सिर अथवा डाढ़ी में मरी
३० होवे। तब याजक उस मरी को देखे और यदि वुह देखने
में चमड़े से गहिरी देख पड़े और उस पर पतले पीले बाल हों
तो याजक उसे अपवित्र ठहरावे वुह सेहुआं सिर अथवा डाढ़ी
३१ का कोढ़ है। और यदि याजक उस सेहुआं की मरी को देखे
और चमड़े से गहिरी न सूझ पड़े और उस पर काला बाल न
हो तो याजक उस सेहुआं मरी जन को सात दिन लों बंद
३२ करे। और सातवें दिन याजक उस मरी को देखे और यदि
सेहुआं को फैला न देखे और उस पर पीला बाल न हो और
३३ सेहुआं देखने में चमड़े से गहिरा न हो। तब वुह अपने तईं
मुंड़ावे परन्तु सेहुआं को न मुंड़ावे और जिस पर सेहुआं
३४ है याजक उस को और सात दिन बंद करे। और सातवें
दिन याजक उस सेहुआं को देखे और यदि चमड़े पर फैलते
न देखे और वुह चमड़े से गहिरा न देख पड़े तो याजक उसे
३५ पवित्र ठहरावे और वुह अपने कपड़े धोवे और पवित्र होवे। और
यदि उस के पवित्र होने के पीछे वुह सेहुआं चमड़े पर बहुत
३६ फैल जावे। तो याजक उसे देखे और यदि सेहुआं चमड़े पर
फैला देखे तो याजक पीले बाल को न ढूंढ़े वुह अपवित्र है।
३७ परन्तु यदि उस के देखने में सेहुआं वैसा ही है और उस में
काला बाल निकला हो तो वुह सेहुआं चंगा हुआ वुह पवित्र
है याजक उसे पवित्र ठहरावे॥

३८ और यदि किसी पुरुष अथवा स्त्री के शरीर के चमड़े पर
३९ चकचाकिया बिंदु अथवा उजला होवे। तब याजक देखे और

यदि उस के शरीर के चमड़े पर के चकचकिया बिंदु मुरझाया
हुआ उजला सूझ पड़े वुह छीप है जो चमड़े से निकलती है
वुह पवित्र है ॥
४० और जिस मनुष्य के सिर के बाल गिर गये हों वुह चंदुला
४१ है वुह पवित्र है। और जिस मनुष्य के सिर के बाल मुंह की
४२ ओर से गिर गये हों वुह चंदुला है वुह पवित्र है। और यदि
उस चंदुले सिर अथवा माथे में उजला लाल सा घाव होवे
वुह कोढ़ है जो उस के चंदले सिर अथवा माथे में फैला हुआ
४३ है। सो याजक उसे देखे और यदि घाव के ऊपर उजला
लाल सा उस के चंदुले सिर अथवा उस के चंदुले माथे में
दिखाई देवे जैसा कि शरीर के चमड़े में कोढ़ दिखाई देता
४४ है। तो वुह मनुष्य कोढ़ी है वुह अपवित्र है याजक उसे सर्व्वथा
अपवित्र ठहरावे उस की मरी उस के सिर पर है ॥
४५ और जिस कोढ़ी पर मरी है उस के कपड़े फाड़े जावें और
उस का सिर नंगा किया जावे तब वुह अपनी दाढ़ी को
४६ छिपावे और चिल्ला चिल्लाके कहे कि अपवित्र अपवित्र। जितने
दिन लों मरी उस पर रहे वुह अशुद्ध रहेगा वुह अपावन है
वुह अकेला रहा करे उस का निवास छावनी के बाहर होवे ॥
४७ और वुह बस्त्र कि जिस में कोढ़ की मरी हो ऊन का
४८ अथवा सूत का वस्त्र हो। उस बस्त्र के ताने में अथवा बाने
में सूत का हो अथवा ऊन का और चाहे चमड़े पर हो चाहे
४९ किसी वस्तु पर जो चमड़े की हो। और यदि वुह मरी वस्त्र
में हरी सी अथवा लाल सी हो अथवा चमड़े में अथवा ताने
में अथवा बाने में हो अथवा किसी चमड़े की वस्तु में हो वुह
५० मरी का कोढ़ है और याजक को दिखाया जावे। और याजक
उस मरी को देखे और उस मरीवाले को सात दिन बंद करे।
५१ और सातवें दिन याजक उस मरी को देखे यदि वुह मरी

कपड़े पर अथवा ताने बाने में अथवा चमड़े पर अथवा किसी
वस्तु पर जो चमड़े से बनी हुई है फैल जावे वुह मरी कटाव
५२ का कोढ़ है वुह अपविच है । सो वुह उस बस्त्र को जो ऊन
का अथवा सूत का हो जिस के ताने में है अथवा बाने में
अथवा चमड़े की कोई वस्तु जिस में मरी है उसे जला
देवे क्योंकि वुह कटाव का कोढ़ है वुह आग से जलाया
जावे ॥
५३ और यदि याजक देखे कि वुह मरी जो बस्त्र में अथवा
ताने में अथवा बाने में अथवा चमड़े की किसी वस्तु में है
५४ फैली नहीं । तो याजक आज्ञा करे और उस वस्तु को जिस
में मरी होवे बंद करे और फिर उसे सात दिन लों धोवे ।
५५ और याजक धोने के पीछे उस मरी को देखे और यदि उस
मरी का रंग बदला न देखे और मरी न फैली हो तो वुह
अपविच है उसे आग में जलावे कि वुह कटाव चाहे भीतर
५६ चाहे बाहर हो । और यदि याजक दृष्टि करे और देखे कि मरी
धोने के पीछे कुछ मुरझाई हो तो वुह उस बस्त्र से और चमड़े
५७ से ताने से अथवा बाने से फाड़ फेंके । और यदि वुह मरी बस्त्र
में ताने में अथवा बाने में अथवा किसी चमड़े की वस्तु में
प्रगट बनी रहे तो वुह फैलती है तू उसे जिस में मरी है
५८ आग से जला देना । और यदि मरी उस बस्त्र से ताने से
अथवा बाने से अथवा चमड़े की वस्तु से जिसे तू धोवेगा
यदि मरी उन से जाती रहे तो वुह दूसरी बेर धोया जावे
और पविच हो जायगा ॥
५९ यह कोढ़ की मरी की व्यवस्था है जो ऊन अथवा सूत के
वस्त्र में अथवा ताने अथवा बाने में अथवा किसी चमड़े की
वस्तु में है जिसतें उसे पविच अथवा अपविच ठहरावे ॥

चौदहवां पर्व्व ।

१ । २ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि कोढ़ी के लिये
यह व्यवस्था होगी जिस दिन वुह पवित्र किया जावे कि वुह
३ याजक के पास लाया जावे । और याजक छावनी से बाहर
जाके देखे और यदि वुह कोढ़ी कोढ़ की मरी से चंगा हो गया
४ हो । तो याजक आज्ञा करे कि जो पवित्र किया जाता है सो
अपने लिये दो पवित्र जीते पक्षी और शमशाद की लकड़ी और
५ लाल और ज़ूफ़ा लेवे । और याजक आज्ञा करे कि उन पक्षियों
६ में से एक मिट्टी के पात्र में बहते पानी पर मारी जावे । और
वुह जीते पक्षी को और शमशाद की लकड़ी और लाल और
ज़ूफ़ा समेत लेके उस पक्षी के लोहू में जो बहते पानी पर
७ मारी गई है चभोरे । और जो कोढ़ से पवित्र किया जाता है
उस पर सात बार छिड़के और उसे पवित्र ठहरावे और उस
जीते पक्षी को खुले चौगान की ओर उड़ा देवे ॥

८ और जो पवित्र किया जाता है सो अपने कपड़े धोवे और
अपने सारे बाल मुंड़ावे और पानी में स्नान करे जिसतें पवित्र
होवे और उस के पीछे वुह छावनी में आवे और सात दिन
९ लों अपने तंबू के बाहर ठहरे । और ऐसा होगा कि सातवें
दिन अपने सिर के सब बाल और अपनी डाढ़ी और अपनी
भौंहें अर्थात् अपने सारे बाल मुंड़ावे और अपने कपड़े धोवे
और अपना शरीर पानी से धोवे तब वुह पवित्र होगा ॥

१० और आठवें दिन दो निष्खोट मेम्ना और पहिले बरस की
एक निष्खोट मेम्नी और चोखा पिसान तीन दसवें भाग तेल
से मिला हुआ और एक नपुआ तेल भोजन की भेंट के लिये
११ लेवे । तब याजक जो पवित्र करता है उस मनुष्य को जो
पवित्र किया जाता है उन वस्तुन सहित परमेश्वर के आगे

१२ मंडली के तंबू के द्वार पर ले आवे । और याजक एक मेम्ना
अपराध के बलिदान के लिये उस नपुआ तेल समेत पास
लावे और उन्हें हिलाने की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे
१३ हिलावे । और उस मेम्ने को उस स्थान पर जहां पाप की भेंट
और बलिदान की भेंट बलि किई जाती है पवित्र स्थान में
बलि करे क्योंकि जैसी पाप की भेंट याजक की है वैसी अपराध
१४ की भेंट है वुह अत्यंत पवित्र है । और याजक अपराध की
भेंट का कुछ लोहू लेके उस के जो पवित्र किया जाता है
दहिने कान की लहर पर और उस के दहिने हाथ के अंगूठे
१५ पर और उस के दहिने पांव के अंगूठे पर लगावे । और
याजक उस नपुआ का कुछ तेल लेके अपने बांएं हाथ की
१६ हथेली पर डाले । और याजक अपनी दहिनी अंगुली उस
तेल में जो उस की बांईं हथेली पर है डुबोवे और परमेश्वर
१७ के आगे सात बार अपनी अंगुली से कुछ तेल छिड़के । और
उस तेल में से जो उस की हथेली पर उबरा है उस मनुष्य
के दहिने कान की लहर पर जो पवित्र किया जाता है और
उस के दहिने हाथ के अंगूठे पर और उस के दहिने पांव के
१८ अंगूठे पर अपराध की भेंट के लोहू को लगावे । और याजक
उस उबरे हुए तेल को जो उस की हथेली पर है उस मनुष्य
के सिर पर जो पवित्र किया जाता है डाल दे और याजक
१९ उन के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे । और याजक
पाप की भेंट चढ़ावे और उस के लिये जो अपनी अपवित्रता
से पवित्र किया जाता है प्रायश्चित्त करे और उस के पीछे
२० बलिदान की भेंट को बलि करे । और बलिदान की भेंट और
भोजन की भेंट याजक बेदी पर चढ़ावे और याजक उस के
लिये प्रायश्चित्त करे और वुह पवित्र होगा ॥

२१ और यदि वुह कंगाल होवे और इतना ला न सके तो वुह

35

अपराध की भेंट हिलाने के लिये एक मेम्ना लेवे जिसतें उस
के लिये प्रायश्चित्त दिया जावे और एक दसवां भाग चोखा
पिसान तेल से मिला हुआ भेंट के बलिदान के लिये और
२२ एक चोंगी तेल। और दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो
बच्चे जैसा वुह पा सके लेवे और एक पाप की भेंट और
२३ दूसरा बलिदान की भेंट का होगा। और वुह उन्हें आठवें
दिन अपने पवित्र होने के लिये मंडली के तंबू के द्वार पर
२४ परमेश्वर के आगे याजक पास लावे। और याजक अपराध की
भेंट का मेम्ना और एक चोंगी तेल लेवे और वुह उन्हें परमेश्वर
२५ के आगे हिलाने की भेंट के लिये हिलावे। और वुह अपराध
की भेंट के मेम्ने को बलि करे और याजक अपराध की भेंट
के लोहू में से कुछ लेके उस के जो पवित्र किया जाता है
दहिने कान की लहर पर और उस के दहिने हाथ के अंगूठे
२६ और उस के दहिने पांव के अंगूठे पर लगावे। और उस तेल
२७ में से याजक कुछ अपनी बांईं हथेली पर डाले। और याजक
उस तेल में से जो उस की बांईं हथेली पर है थोड़ा सा
अपनी दहिनी अंगुली से परमेश्वर के आगे सात बार छिड़के।
२८ और याजक उस तेल में से जो उस की हथेली पर है उस के
जो पवित्र किया जाता है दहिने कान की लहर पर और उस
के दहिने हाथ के अंगूठे और उस के दहिने पांव के अंगूठे
२९ पर अपराध की भेंट के लोहू के स्थान पर लगावे। और
याजक उबरे हुए तेल को जो उस की हथेली पर है उस के
सिर पर जो पवित्र किया जाता है डाले कि जिसतें उस के लिये
३० परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त करे। और वुह उन पिण्डुकियों
में से अथवा कपोत के बच्चों में से जो उस के हाथ लगे।
३१ एक तो पाप की भेंट के लिये और दूसरा बलिदान की भेंट
के लिये भोजन की भेंट के साथ चढ़ावे और याजक उस के

लिये जो पवित्र किया जाता है परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त
करे ॥
३२ यह उस कोढ़ी की मरी की व्यवस्था है जो अपने पवित्र
करने की पूंजी न रखता हो ॥
३३ । ३४ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला । कि
जब तुम कनआन देश में पहुंचो जो मैं तुम्हें अधिकार के
लिये देता हूं और मैं तुम्हारे अधिकार के देश के किसी घर
३५ में कोढ़ की मरी लाओं । तब उस घर का स्वामी याजक
पास आके कहे कि मुझे ऐसा दिखाई देता है कि घर में कुछ
३६ मरी सी है । तब याजक आज्ञा करे कि वे उस घर को उस्से आगे
कि याजक मरी को देखने जावे छूछा करें जिसतें घर की समस्त
सामग्री अपवित्र न हो जावे और उस के पीछे याजक घर के भीतर
३७ देखने जावे । और वुह उस मरी पर दृष्टि करे और यदि वुह
मरी उस घर की भीतों पर हरी सी अथवा लाल सी लकीरें दिखाई
३८ देवे और वुह देखने में भीत से गहिरी दिखाई देवे । तो याजक
उस घर के द्वार से बाहर निकलके घर को सात दिन लों बंद
३९ करे । और याजक सातवें दिन फिर आके देखे और यदि वुह
४० मरी घर की भीतों पर फैली दिखाई देवे । तो याजक आज्ञा
करे कि उन पत्थरों को जिन में मरी है निकाल डालें और
४१ उन्हें नगर के बाहर अपवित्र स्थान पर फेंक देवें । और वुह
घर के भीतर चारों ओर खुरचवावे और वे उस खुरची धूल
४२ को नगर के बाहर अपवित्र स्थान में फेंक देवें । और वे और
पत्थर लेके उन पत्थरों के स्थान पर जोड़ें और वुह दूसरा
४३ खोआ लेकर घर की गच करे । और यदि पत्थर निकालने के
और घर खुरचाने के पीछे और गच करने के पीछे मरी फिर
४४ आवे और उस घर में फूट निकले । तब याजक आके देखे
और यदि वुह मरी घर में फैली देखे तो उस घर में कटाव

४५ का कोढ़ है वुह अशुद्ध है। तब वुह उस घर को उस के
पत्थरों को और उस की लकड़ियों को और उस के सब खोये
को गिरा देवे और वुह उन्हें नगर के बाहर अपवित्र स्थान में ले
४६ जावे। और जब लों वुह घर बंद होवे जो कोई उस में जावे
४७ सो सांझ लों अशुद्ध होगा। और जो कोई उस घर में सोवे
सो अपने कपड़े धोवे और जो कोई उस घर में कुछ खावे सो
अपने कपड़े धोवे॥

४८ और यदि घर के गच होने के पीछे याजक आते आते
उस घर में आवे और देखे कि वुह मरी घर पर नहीं फैली तो
याजक उस घर को पवित्र ठहरावे क्योंकि वुह मरी से चंगा
४९ हो गया। तब उस घर को पवित्र करने के लिये दो चिड़ियां
५० और शमशाद की लकड़ी और लाल और जूफा लेवे। और उन
चिड़ियों में से एक को मिट्टी के पात्र में बहते पानी पर बलि
५१ करे। फिर वुह शमशाद की लकड़ी और जूफा और लाल और
उस जीती चिड़िया को लेके उन्हें बलि किई हुई चिड़िया के
लोहू में और उस बहते पानी में चभोरे और सात बेर उस घर
५२ पर छिड़के। और चिड़िया के लोहू और बहते पानी और
जीती चिड़िया और शमशाद की लकड़ी और जूफा और लाल
५३ से उस घर को पवित्र करे। परन्तु वुह उस जीती चिड़िया को
नगर के बाहर चौगान की ओर छोड़े और उस घर के लिये
प्रायश्चित्त करे और वुह पवित्र हो जायगा॥

५४।५५ हर भांति के कोढ़ की मरी और सेहुआं के। और
५६ वस्त्र और घर के कोढ़ के लिये। और उभरना और घाव और
५७ चकचकिया बिंदु के लिये यह व्यवस्था है। कि अपवित्र और
पवित्र होने के दिन सिखलावे कोढ़ के लिये यही व्यवस्था
है॥

पंदरहवां पर्व्व ।

१ । २ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला । कि
इसराएल के संतानों से कहके बोला कि यदि किसी मनुष्य के
प्रमेह का रोग होवे तो वुह प्रमेह के कारण से अशुद्ध है ।
३ और यदि उस का प्रमेह थम जावे अथवा बना रहे वुह
४ अशुद्ध है । हर एक बिछौना जिस पर प्रमेही लेटता है सो अशुद्ध
होगा हर एक वस्तु जिस पर वुह बैठता है अशुद्ध होगी ।
५ और जो कोई उस के बिछौने को छूवे सो अपने कपड़े धोवे
६ और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा । और
जो कोई उस वस्तु पर जिस पर प्रमेही बैठता है बैठे सो
अपने कपड़े धोवे और पानी में नहावे और सांझ लों अशुद्ध
७ रहेगा । और जो कोई उस के शरीर को जिसे प्रमेह है छूवे
सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों
८ अशुद्ध रहेगा । और यदि प्रमेही किसी पवित्र मनुष्य पर थूके
तो वुह मनुष्य अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और
९ सांझ लों अपवित्र रहेगा । और जिस आसन पर वुह बैठे सो
१० अपवित्र होगा । और जो कोई उस वस्तु को जो उस प्रमेही
के नीचे है छूवे सो सांझ लों अपवित्र रहेगा और जो कोई उन
वस्तुन को उठावे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे
११ और सांझ लों अपवित्र रहेगा । और बिन हाथ धोये जिस
किसी को प्रमेही छूवे सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान
१२ करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा । और जिस मिट्टी के पात्र
को प्रमेही छूवे सो तोड़ा जावे और यदि काष्ठ का पात्र होवे
१३ तो पानी से धोया जावे । और जब प्रमेही चंगा हो जावे
तब वुह अपने पवित्र होने के लिये सात दिन गिने तब वुह
अपने कपड़े धोवे और अपना शरीर बहते पानी से धोवे तब

१४ वुह पवित्र होगा। और आठवें दिन दो पिण्डुकी अथवा कपोत
के दो बच्चे लेके परमेश्वर के आगे मंडली के तंबू के द्वार पर
१५ आवे और उन्हें याजक को सोंपे। और याजक उन्हें चढ़ावे
एक पाप की भेंट के लिये और दूसरी बलिदान की भेंट के लिये
और याजक उस प्रमेही के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त
करे॥

१६ और यदि किसी मनुष्य से रात को वीर्य्य जावे तब वुह
अपना समस्त शरीर पानी से धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा।
१७ और जिस कपड़े अथवा चमड़े पर रति का वीर्य्य पड़े सो पानी
१८ से धोया जावे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। और स्त्री भी
जिस्से पुरुष रति करे दोनों पानी से स्नान करें और सांझ लों
अपवित्र रहेंगे॥

१९ और यदि स्त्री रजस्वला हो तो वुह सात दिन अलग
किई जावे जो कोई उसे छूयेगा सो सांझ लों अपवित्र रहेगा।
२० और सब वस्तें जिस पर वुह अपने अलग होने के दिन में
लेटे अपवित्र होंगी और हर एक वस्तु जिस पर वुह बैठे सो
२१ अपवित्र होगी। और जो कोई उस के बिछौने को छूवे सो
अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र
२२ रहेगा। और जो कोई किसी वस्तु को छूवे जिस पर वुह बैठी
थी सो अपने कपड़े धोवे और पानी से स्नान करे और सांझ लों
२३ अपवित्र रहेगा। और यदि कोई वस्तु उस के बिछौनों पर
अथवा किस पर हो जिस पर वुह बैठती है और उस समय
कोई उस वस्तु को छूवे तो वुह सांझ लों अपवित्र रहेगा।
२४ और यदि पुरुष उस के साथ लेटे और वुह रजस्वला में होवे
तो वुह सात दिन लों अपवित्र रहेगा और हर एक बिछौना
जिस पर वुह पुरुष लेटता है सो अपवित्र होगा॥

२५ और यदि स्त्री का रजोधर्म्म उस के ठहराये हुए दिनों से

अधिक होवे अथवा यदि उस के अलग होने के समय से
अधिक बहे तो उस की अपवित्रता के बहने से सब दिन उस
२६ के अलग होने के दिनों के समान होवें वुह अपवित्र है। उस
के बहने के सब दिनों में हर एक बिछौना जिस पर वुह
लेटती है और जिस पर वुह बैठती है सो उस के अलग होने
२७ की अपवित्रता के समान अपवित्र होगा। और जो कोई उन
वस्तुन को छूवे सो अपवित्र होगा और अपने कपड़े धोवे और
२८ पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहेगा। और जब वुह
अपने रज से पवित्र होवे तब सात दिन अपने लिये गिने और
२६ उस के पीछे वुह पवित्र होगी। और आठवें दिन वुह अपने
लिये दो पिण्डुकियां अथवा कपोत के दो बच्चे लेवे और उन्हें
३० मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावे। और याजक
एक को पाप की भेंट और दूसरे को बलिदान की भेंट के लिये
चढ़ावे और याजक उस के रज की अपवित्रता के लिये परमेश्वर
के आगे उस के लिये प्रायश्चित्त करे॥

३१ यों तुम इसराएल के संतानों को उन की अपवित्रता से
अलग करो जिसतें वे अपनी अपवित्रता से मर न जावें जब वे
मेरे तंबू को जो उन के मध्य में है अपवित्र करें॥

३२ उस के लिये जिसे प्रमेह का रोग होवे और उस के लिये
३३ जो रति करने से अपवित्र होवे। और उस के लिये जो
रजस्वला होवे और उस पुरुष और स्त्री के लिये जिसे प्रमेह
का रोग होवे और उस पुरुष के लिये जो रजस्वला के साथ
लेटता हो यही व्यवस्था है॥

सोलहवां पर्ब्ब।

१ और हारून के दो बेटों के मरने के पीछे जब वे परमेश्वर
के निकट आये और मर गये परमेश्वर ने मूसा से बार्त्ता किई।

२ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने भाई हारून को कह
कि वुह हर समय पवित्र स्थान के घूंघट के भीतर उस ढकना
के आगे जो मंजूषा पर है न आया करे न हो कि मर जावे
३ क्योंकि मैं मेघ में उस ढकना के ऊपर दिखाई दूंगा। पवित्र
स्थान में हारून यों आवे पाप की भेंट के लिये एक बछड़ा
४ और बलिदान की भेंट के लिये एक मेंढ़ा लावे। पवित्र सूती
कुरता पहिने और उस के शरीर पर सूती सूथनी हो और सूती
पटुके से उस की कटि बंधी हो और अपने सिर पर सूती पगड़ी
रक्खे ये पवित्र वस्त्र हैं और वुह अपना शरीर पानी से धोवे
५ और उन्हें पहिने। और इसराएल के संतानों की मंडली से
बकरी के दो मेम्ने पाप की भेंट के लिये और एक मेंढ़ा बलिदान
की भेंट के लिये लेवे॥

६ और हारून पाप की भेंट के उस बछड़े को जो उस के
लिये है आगे लावे और अपने लिये और अपने घर के लिये
७ प्रायश्चित्त करे। और उन दोनों बकरों को लेके मंडली के
८ तंबू के द्वार पर परमेश्वर के आगे ले आवे। और हारून उन
दोनों बकरों पर चिट्ठी डाले एक चिट्ठी परमेश्वर के लिये और
९ दूसरी चिट्ठी बकरा छुड़ाने के लिये। और हारून उस बकरे
को लावे जिस पर परमेश्वर के नाम की चिट्ठी पड़े और उसे
१० पाप की भेंट के लिये बलि चढ़ावे। परन्तु छुड़ाने के लिये
जिस बकरे पर चिट्ठी पड़े उसे परमेश्वर के आगे जीता लावे
कि उस्से प्रायश्चित्त किया जावे और उस को छुड़ावन के लिये
वन में छोड़ दे॥

११ तब हारून अपने लिये पाप की भेंट के बछड़े को लावे
और अपने और अपने घर के लिये प्रायश्चित्त करे और पाप
१२ की भेंट के बछड़े को जो अपने लिये है बलि करे। और वुह
परमेश्वर के आगे वेदी पर से एक धूपावरी अंगारों से भरी हुई

और अपनी मुट्ठी भर सुगंध लेवे और घूंघट के भीतर लावे ।
१३ और उस धूप को परमेश्वर के आगे आग में डाल देवे जिस में
धूप का मेघ उस ढंकने को जो साक्षी पर है छिपावे और आप
१४ न मरे । और वुह बछड़े का लोहू लेके अपनी अंगुली से ढंकने
की पूरब और छिड़के और ढंकने के आगे अपनी अंगुली से सात
१५ वेर लोहू छिड़के । फिर वुह लोगों के लिये पाप की भेंट की
बकरी को बलि करे और उस के लोहू को घूंघट के भीतर
लाके जैसा उस ने बछड़े के लोहू से किया था वैसा ही उस्से
१६ करे और उसे ढंकने के ऊपर और ढंकने के आगे छिड़के । और
पवित्र स्थान के लिये इसराएल के संतानों की अपवित्रता के
कारण से और उन के पापों और उन के समस्त अपराधों के
कारण से प्रायश्चित्त करे और वुह मंडली के तंबू के लिये भी
जो उन के साथ उन की अपवित्रता के मध्य में है ऐसा ही
१७ करे । और जब वुह प्रायश्चित्त करने के लिये पवित्र स्थान में
जावे तो जब लों वुह बाहर न आवे तब लों कोई मनुष्य
मंडली के तंबू में न आवे और वुह अपने लिये और अपने
घराने के लिये और इसराएल की समस्त मंडली के लिये
१८ प्रायश्चित्त करेगा । फिर वुह निकलके उस यज्ञवेदी पर आवे
जो परमेश्वर के आगे है और उस के लिये प्रायश्चित्त करे और
उस बछड़े और उस बकरे के लोहू में से लेके वेदी के सींगों
१९ की चारों ओर लगावे । और अपनी अंगुली से उस पर सात
वेर लोहू छिड़के और उसे इसराएल के संतानों की अपवित्रता
से पावन और शुद्ध करे ॥
२० और जब वुह पवित्र स्थान के और मंडली के तंबू के और
यज्ञवेदी के लिये प्रायश्चित्त कर चुका तब उस जीते बकरे को
२१ लावे । और हारून अपने दोनों हाथ उस जीते बकरे के सिर
पर रक्खे और इसराएल के संतानों की बुराइयों और उन के

सारे पापों के समस्त अपराधों को मान लेके उन्हें इस बकरे के
सिर पर धरे और उसे किसी मनुष्य के हाथ जो उस के लिये
२२ ठहराया गया हो बन को भिजवा दे। और वुह बकरा उन की
सारी बुराइयां अपने ऊपर उठाके दूर देश में ले जायगा और
वुह उस बकरे को बन में छोड़ देवे॥
२३ और हारून मंडली के तंबू में आवे और सूती वस्त्रों को
जो उस ने पवित्र स्थान में जाने के समय पहिने थे उतारे
२४ और उन्हें वहां रख देवे। और वुह पवित्र स्थान में अपना
शरीर पानी से धोवे और अपने वस्त्र पहिनके बाहर आवे और
अपने बलिदान की भेंट और लोगों के बलिदान की भेंट चढ़ावे
२५ और अपने लिये और लोगों के लिये प्रायश्चित्त करे। और पाप
की भेंट की चिकनाई यज्ञवेदी पर जलावे॥
२६ और जिस ने छुड़ाया हुआ बकरा छोड़ दिया सो अपने
कपड़े धोवे और पानी से नहावे और उस के पीछे छावनी में
२७ प्रवेश करे। और पाप की भेंट के बछड़े को और पाप की भेंट
के बकरे को जिन का लोहू पवित्र स्थान में प्रायश्चित्त के लिये
पहुंचाया गया छावनी से बाहर ले जावें और उन की खालें
और उन का मांस और उन का गोबर आग में जला देवें।
२८ और जिस ने उन्हें जलाया सो अपने कपड़े धोवे और पानी से
स्नान करे और उस के पीछे छावनी में आवे॥
२९ और यह तुम्हारे लिये सनातन की विधि होगी सातवें
मास की दसवीं तिथि को तुम अपने प्राण को कष्ट देओ और
कुछ कार्य्य न करो चाहे देशी चाहे परदेशी जो तुम्हों में बास
३० करता है। क्योंकि उस दिन तुम्हारे कारण तुम्हें पवित्र करने
के लिये प्रायश्चित्त किया जायगा जिसतें तुम अपने समस्त
३१ पापों से परमेश्वर के आगे पवित्र हो जाओ। वुह तुम्हारे
लिये स्मरण का विश्राम होगा और तुम अपने प्राण को कष्ट

३२ दीजियो यह तुम्हारे लिये सदा की बिधि है। और वुह
याजक जो अभिषेक किया जायगा और जो याजक के पद में
सेवा करने के लिये अपने पिता की संती स्थापित होगा सोई
३३ प्रायश्चित्त करे और पवित्र सूती बस्त्र को पहिने। और पवित्र
स्थान के लिये और मंडली के तंबू के लिये और यज्ञबेदी के
लिये और याजकों के लिये और मंडली के सब लोगों के लिये
३४ प्रायश्चित्त करे। और यह तुम्हारे लिये सनातन की विधि है
जिसतें तुम इसराएल के संतानों के लिये उन के सब पापों के
कारण बरस में एक बार प्रायश्चित्त करो सो जैसा परमेश्वर ने
मूसा को आज्ञा किई थी उस ने वैसा ही किया॥

सतरहवां पर्व्व ।

१। २ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि हारून और
उस के बेटों और इसराएल के समस्त संतानों से कहके बोल
३ कि यह वुह बात है जिसे परमेश्वर ने आज्ञा किई है। जो
मनुष्य इसराएल के घरानों में से बैल अथवा मेम्ना अथवा
४ बकरी छावनी में अथवा छावनी के बाहर बलि करे। और
मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर के तंबू के आगे भेंट चढ़ाने
के लिये उसे न लावे तो उस मनुष्य पर लोहू का दोष होगा
उस ने लोहू बहाया और वुह मनुष्य अपने लोगों में से कट
५ जायगा। यह इस लिये है कि इसराएल के संतान अपने
बलिदानों को जिन्हें वे चौगान में बलि करते हैं परमेश्वर के
आगे मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावें और उन्हें
६ परमेश्वर के आगे कुशल की भेंट के लिये बलि करें। और
याजक वुह लोहू मंडली के तंबू के द्वार पर परमेश्वर की यज्ञबेदी
पर छिड़के और परमेश्वर के सुगंध के लिये चिकनाई को
७ जलावे। और आगे को पिशाचों के लिये जिन के पीछे वे बेश्या

गामी थे न चढ़ावें उन की पीढ़ियों में यह सनातन की विधि
होगी ॥
८ और तू उन्हें कह कि इसराएल के घराने में अथवा परदेशी
में जो तुम्हों में बास करता है जो कोई चढ़ावे की भेंट अथवा
९ बलि की भेंट चढ़ावे। और उसे मंडली के तंबू के द्वार पर
परमेश्वर को चढ़ाने के लिये उसे न लावे वही मनुष्य अपने
लोगों में से काट डाला जायगा ॥
१० और इसराएल के घरानों में से अथवा परदेशियों में से जो
उन में वास करता है जो कोई किसी रीति का लोहू खावे तो
निश्चय मैं उसी लोहू के भक्षक का विरोधी हूंगा और उसे
११ उस के लोगों में से काट डालूंगा। क्योंकि शरीर का जीवन
लोहू में है सो मैं ने उसे यज्ञवेदी पर तुम्हें दिया है कि
तुम्हारे प्राणों के लिये प्रायश्चित्त होवे क्योंकि लोहू से प्राण के
१२ लिये प्रायश्चित्त होता है। इस लिये मैं ने इसराएल के
संतानों से कहा कि तुम्में से कोई प्राणी लोहू न खावे और
कोई परदेशी जिस का वास तुम्में है लोहू न खावे ॥
१३ और इसराएल के संतानों में से अथवा परदेशियों में से
जिन का वास उन में है जो कोई खाने के योग्य पशु अथवा
पक्षी अहेर करके पकड़े सो उस के लोहू को बहा देवे और
१४ उसे धूल से ढांप देवे। क्योंकि यह समस्त शरीर का जीव
उस का लोहू है वुह उस के जीव के लिये है इस लिये मैं ने
इसराएल के संतानों को आज्ञा किई कि किसी रीति के मांस
का लोहू मत खाओ क्योंकि समस्त मांस का जीव उस का
लोहू है जो कोई उसे खायेगा सो अपने लोगों में से कट
जायगा ॥
१५ और जो कुछ मर जावे अथवा फाड़ा जावे चाहे देशी
होवे चाहे परदेशी जो प्राणी उसे खावे सो अपने कपड़े धोवे

ओर पानी से स्नान करे और सांझ लों अपवित्र रहे तब वुह
१६ पवित्र होगा । पर यदि वुह न धोवे और स्नान न करे तो
वुह दोषी होगा ॥

अठारहवां पर्व्व ।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के
३ संतानों से कहके बोल कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं । तुम
मिस्र के देश के कार्य्य के समान जिस में तुम रहते थे न
करियो और कनआन के देश के से काम न करो जहां मैं
४ तुम्हें ले जाता हूं और उन की विधिन पर न चलियो । मेरे
विचारों पर चलो और मेरी विधिन को पालन करो जिसतें तुम
५ उन पर चलो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं । सो मेरी विधिन
और मेरे विचारों को पालन करो जिन पर यदि मनुष्य चले
तो वुह उन से जीवेगा मैं परमेश्वर हूं ॥

६ उन का नंगापन उघारने के लिये तुम्में से कोई अपने
७ कुटुम्ब के पास न जावे मैं परमेश्वर हूं । अपने पिता का
नंगापन अथवा अपनी माता का नंगापन मत उघार वुह तेरी
८ माता है तू उस का नंगापन मत उघार । अपने पिता की
पत्नी का नंगापन मत उघार वुह तेरे पिता का नंगापन है ।
९ अपनी बहिन का नंगापन अपने पिता की बेटी का अथवा
अपनी माता की बेटी का जो घर में अथवा बाहर उत्पन्न हुई
१० हो उन का नंगापन मत उघार । अपने पुत्र की बेटी का अथवा
अपनी बेटी का नंगापन मत उघार क्योंकि उन का नंगापन
११ तेरा ही है । तेरे पिता की पत्नी की बेटी जो तेरे पिता की
जन्मी है वुह तेरी बहिन है तू उस का नंगापन मत उघार ।
१२ अपने पिता की बहिन का नंगापन मत उघार वुह तेरे पिता
१३ की समीपी कुटुम्ब है । अपनी माता की बहिन का नंगापन

मत उघार क्योंकि वुह तेरी माता की समीपी कुटुम्ब है ।
१४ अपने पिता के भाई का नंगापन मत उघार उस की पत्नी पास
१५ मत जा वुह तेरी चाची है। अपनी बहू का नंगापन मत
उघार वुह तेरे बेटे की पत्नी है उस का नंगापन मत उघार ।
१६ अपने भाई की पत्नी का नंगापन मत उघार वुह तेरे भाई का
१७ नंगापन है । किसी स्त्री का और उस की बेटी का नंगापन मत
उघार उस के बेटे की बेटी को और उस की बेटी की बेटी
को उस का नंगापन उघारने के लिये न ले वुह उस की समीपी
१८ कुटुम्ब हैं यह बड़ी दुष्टता है । और तू किसी स्त्री को खिजाने
के लिये उस के जीते जी उस की बहिन समेत मत ले जिसतें
उस का नंगापन उघारे ॥

१९ और जब लों स्त्री अपवित्रता के लिये अलग किई गई हो
२० उस का नंगापन उघारने के लिये उस के पास मत जा । और
अपने परोसी की पत्नी के संग कुकर्म्म मत कर जिसतें आप को
२१ उस्से अपवित्र करे । और अपने वंश में से मोलक को मत
चढ़ा और अपने परमेश्वर के नाम को अनरीति से मत ले मैं
२२ परमेश्वर हूं । और तू पुरुषगमन मत कर वुह घिनित है ।
२३ और पशुगामी होके आप को अशुद्ध मत कर और कोई स्त्री
पशुगामिनी न हो वुह घिनौनी बात है॥

२४ इन बातों में आप को अशुद्ध मत कर क्योंकि जिन
जातिगणों को मैं तुम्हारे आगे निकालता हूं वे इन बातों में
२५ अशुद्ध हैं । और देश अशुद्ध है इस कारण मैं उस के अपराध
का पलटा लेता हूं और देश भी अपने बासियों को उगलता है ।
२६ सो तुम मेरी बिधिन और मेरे बिचारों को पालन करो और
इन घिनितों में से किसी को न करो न देशी और न परदेशी
२७ जो तुम्में बास करता है । क्योंकि उस देश के लोगों ने जो
तुम से आगे थे ये समस्त घिनित कार्य्य किये और देश अशुद्ध

२८ हुआ है । जिसतें जब तुम देश को अशुद्ध करो वुह तुम्हें
भी उगल न देवे जिस रीति से उन जातिगणों को जो तुम से
२९ आगे थे उगला । क्योंकि जो कोई उन घिनैानी क्रियों में से
कुछ करेगा ऐसे कुकर्म्मी प्राणी अपने लोगों में से कट जायेंगे ।
३० सो तुम मेरी व्यवस्थों को पालन करो जिसतें उन घिनैानी
क्रियों में से जो तुम से आगे किई गईं कोई क्रिया न करो
और अपने को उन से अशुद्ध न करो मैं परमेश्वर तुम्हारा
ईश्वर हूं ॥

उन्नीसवां पर्ब्ब ।

१ । २ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । इसराएल के संतानों
को सारी मंडली से कहके बोल कि पवित्र होओ क्योंकि मैं परमेश्वर
तुम्हारा ईश्वर पवित्र हूं ॥
३ तुम अपने अपने माता पिता से डरते रहो और मेरे विश्राम
के दिनों को पालन करो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं ॥
४ तुम मूर्तिन की ओर मत फिरो और न ढालके अपने लिये
देवता बनाओ मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं ॥
५ और यदि तुम कुशल की भेंटों का बलिदान परमेश्वर के
६ लिये चढ़ाओ तो अपनी प्रसन्नता के लिये उसे चढ़ाओ । चाहिये
कि जब उसे चढ़ाओ वुह उसी दिन और दूसरे दिन खाया
जावे और यदि तीसरे दिन लों कुछ बच रहे तो आग में जला
७ दिया जावे । और यदि वुह तनिक भी तीसरे दिन खाया
८ जावे तो घिनित है वुह ग्राह्य न होगा । सो जो कोई उसे
खायगा सो अपराधी होगा क्योंकि उस ने परमेश्वर की पवित्र
वस्तु को अशुद्ध किया और वुह मनुष्य अपने लोगों में से
काटा जायगा ॥
९ और जब तू अपना खेत काटे तब खेत के कोने को सर्बथ

१० मत काट ले और न अपने खेत का बिन्ना कर। और तू अपने
दाख को मत बिन और न अपने हर एक अंगूर को बटोर
उन्हें कंगालों और परदेशी के लिये छोड़ मैं परमेश्वर तुम्हारा
ईश्वर हूं॥
११ तुम चोरी मत करो और झूठाई से व्यवहार न करो एक
१२ दूसरे से झूठ मत बोलो। और मेरा नाम लेके झूठी किरिया
मत खाओ और तू अपने ईश्वर के नाम को अपवित्र मत
१३ कर मैं परमेश्वर हूं। अपने परोसी से छल मत कर और उस्से
कुछ मत चुरा बनिहारों की बनी रात भर बिहान लों तेरे पास
न रह जावे॥
१४ बहिरे को दुर्बचन मत कह और तू अंधे के आगे ठोकर
खाने की बस्तु मत रख परन्तु अपने ईश्वर से डरता रह मैं
परमेश्वर हूं॥
१५ तुम न्याय में अधर्म्म मत करो तू कंगाल का पक्ष मत कर
और बड़े को बड़ाई के लिये प्रतिष्ठा मत दे धर्म्म से अपने
परोसी का न्याय कर॥
१६ अपने लोगों में लुतड़ा बनके मत आया जाया कर अपने
परोसी के लोहू के बिरोध में मत खड़ा हो मैं परमेश्वर हूं।
१७ अपने मन में अपने भाई से बैर मत रख तू अपने परोसी को
१८ किसी भांति से दपट दे और उस पर पाप मत छोड़। तू अपने
लोगों के संतानों से बैर मत रख और अपना पलटा मत ले
परन्तु अपने परोसी को अपने समान प्यार कर मैं परमेश्वर
हूं॥
१९ तुम मेरी विधिन का पालन करो तू अपने ढोरों को और
जातों से मत मिलने दे तू अपने खेत में मिले हुए बीज मत
बो और सूत का मिला हुआ वस्त्र मत पहिन॥
२० जो कोई किसी स्त्री से जो वचनदत्त दासी हो और

छुड़ाई न गई हो और निर्बंध न हुई हो व्यभिचार करता है
सो ताड़ना पावेगा वे मार डाले न जावेंगे इस लिये कि वुह
२१ निर्बंध न थी। सो वुह परमेश्वर के लिये मंडली के तंबू के
द्वार पर अपने अपराध की भेंट लावे अपराध की भेंट एक मेढ़ा
२२ होवे। और याजक उस के लिये अपराध की भेंट के मेढ़े को
परमेश्वर के आगे उस के पाप के लिये प्रायश्चित्त करे तब वुह
अपराध जो उस ने किया है क्षमा किया जायगा॥

२३ और जब तुम उस देश में पहुंचो और खाने के लिये भांति
भांति के पेड़ लगाओ तो तुम उस के फल को अख़तन: समझो
तीन बरस लों तुम्हारे लिये अख़तन: के तुल्य रहे वुह खाया
२४ न जायगा। परन्तु चौथे बरस उस के सारे फल परमेश्वर की
२५ स्तुति के लिये पवित्र होंगे। और पांचवें बरस तुम उस का
फल खाओ जिसतें तुम्हारे लिये अपनी बढ़ती देवे मैं परमेश्वर
तुम्हारा ईश्वर हूं॥

२६ तुम लोहू सहित मत खाओ टोना मत करो और समयों
२७ को न मानो। तुम अपने सिरों के बालों को गोलाई से मत
२८ मुड़ाओ और अपनी दाढ़ी के कोनों को मत बिगाड़ो। मृतकों
के लिये अपने मांस को मत काटो और अपने ऊपर गोदने से
चिन्ह मत करो मैं परमेश्वर हूं॥

२९ वेश्या बनाने के लिये अपनी कन्या से व्यभिचार मत कराओ ऐसा
न होवे कि देश वेश्यागामी में पड़े और देश दुष्टता से परिपूर्ण होवे॥

३० मेरे बिश्राम के दिनों का पालन करो और मेरे पवित्र स्थान
३१ की प्रतिष्ठा करो मैं परमेश्वर हूं। ओझा को मत मानो और
टोन्हों का पीछा करके उन से आप को अशुद्ध मत करो मैं
परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

३२ पक्के बालों के आगे उठ खड़ा हो और पुरनिया के रूप को
प्रतिष्ठा दे और अपने ईश्वर से डर मैं परमेश्वर हूं॥

३३ और यदि तुम्हारे देश में परदेशी टिके तो तुम उस को
मत खिजाओ परदेशी को जो तुम्में बास करता है ऐसा जानो
जैसा कि वुह तुम्में जन्मा और उसे अपने तुल्य प्यार करो
क्योंकि तुम मिस्र की भूमि में परदेशी थे मैं परमेश्वर तुम्हारा
ईश्वर हूं ॥
३५ बिचार में परिमाण में तौल में और मापने में अधर्म्म मत
३६ करो। धर्म्म का तुला धर्म्म का बांट धर्म्म की दससेरियां
और धर्म्म की पसेरी तुम्में होवे मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं
३७ जो तुम्हें मिस्र की भूमि से निकाल लाया। सो तुम मेरी
समस्त बिधिन और मेरे बिचारों को पालन करो और उन्हें
मानो मैं परमेश्वर हूं ॥

बीसवां पर्ब्ब ।

१। २ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि तू इसराएल के
संतानों को कह कि जो कोई इसराएल के संतानों में से अथवा
परदेशी जो इसराएल में टिका है अपने बंश में से मोलक को दे
वुह निश्चय घात किया जायगा देश के लोग उस पर पत्थरवाह
३ करें। और मैं उस मनुष्य पर बैर की रुखाई करूंगा और उस
के लोगों में से उसे काट दूंगा इस लिये कि उस ने अपने बंश
में से मोलक को दिया जिसतें मेरे पवित्र स्थान को अपवित्र
४ और मेरे पवित्र नाम का अपमान करे। और यदि देश के
लोग किसी भांति से उस मनुष्य से आंख छिपावें जब उस ने अपने
५ बंश में से मोलक को दिया है कि उसे घात न करें। तो मैं
उस मनुष्य पर और उस के घराने पर बैर की रुखाई करूंगा
और उसे उन सब समेत जो उस के पीछे मोलक से ब्यभिचार
६ करते हैं उन्हें अपने लोगों में से काट डालूंगा। और उस
मनुष्य पर जो ओझाओं और टोन्हों की ओर जाता है जिसतें

उन के पीछे व्यभिचार करे मैं उस मनुष्य पर अपना क्रोध
७ भड़काऊंगा और उसे उस के लोगों में से काट डालूंगा । सो
आप को पवित्र करो और पावन होओ क्योंकि मैं परमेश्वर
८ तुम्हारा ईश्वर हूं । और मेरी बिधिन को स्मरण करो
और उन्हें मानो मैं वुह परमेश्वर हूं जो तुम्हें पवित्र करता
है ॥

९ जो कोई अपनी माता अथवा पिता को धिक्कारे सो निश्चय
मार डाला जायगा उस ने अपने माता पिता को धिक्कारा है
उस का लोहू उसी पर है ॥

१० और जो मनुष्य किसी की पत्नी से अथवा अपने परोसी की
पत्नी से कुकर्म्म करे कुकर्म्मी और कुकर्म्मिणी दोनों निश्चय मार
डाले जायेंगे ॥

११ और जो मनुष्य अपने पिता की पत्नी से व्यभिचार करे उस
ने अपने पिता की नंगापन को उघारा है वे दोनों निश्चय मार
डाले जायेंगे उन का लोहू उन्हीं पर है ॥

१२ और जो मनुष्य अपनी बहू से कुकर्म्म करे वे दोनों निश्चय
मार डाले जायेंगे उन्हों ने घिनौनी बात किई है उन का लोहू
उन्हीं पर है ॥

१३ और यदि कोई मनुष्य पुरुषगामी होवे तो उन दोनों ने
घिनित कार्य्य किया है वे अवश्य मार डाले जायेंगे उन का
लोहू उन्हीं पर है ॥

१४ और यदि कोई स्त्री को और उस की माता को भी रक्खे
वुह दुष्टता है वे तीनों के तीनों जलाये जायेंगे जिसतें तुम्हों
में दुष्टता न रहे ॥

१५ और यदि कोई मनुष्य पशु से कुकर्म्म करे वुह निश्चय
१६ मार डाला जायगा और उस पशु को घात करो । और यदि
स्त्री पशु से कुकर्म्म करे कि उस के तले होवे तो उस स्त्री

को और उस पशु को मार डालो वे निश्चय प्राण से मारे जावें
उन का लोहू उन्हीं पर है ॥
१७ और यदि कोई मनुष्य अपनी बहिन को अपने पिता की
बेटी को अथवा अपनी माता की बेटी को लेके आपुस में एक
दूसरे की नग्नता देखे वुह दुष्ट कर्म्म है वे दोनों अपने लोगों
के आगे मार डाले जायेंगे उस ने अपनी वहिन का नंगापन
१८ प्रगट किया वुह दोषी होगा। और यदि मनुष्य रजस्वला स्त्री
के साथ सोवे और उस की नग्नता उघारे तो उस ने उस का
सोता उघारा है और उस ने अपने लोहू का सोता खुलवाया
और वे दोनों अपने लोगों से काटे जायेंगे ॥
१९ और तू अपनी मौसी और अपनी फूफू की नग्नता मत उघार
क्योंकि उस ने अपने समीपी कुटुम्ब की नग्नता उघारी है वे
२० दोषी होंगे। और यदि कोई अपनी चाची के साथ कुकर्म्म करे
उस ने अपने चाचा की नग्नता को उघारा है वे अपने पाप को
२१ भोगेंगे वे निर्बंश मरेंगे। और यदि मनुष्य अपने भाई की पत्नी
को लेवे वुह अशुद्ध कर्म्म है उस ने अपने भाई की नग्नता
उघारी है वे निर्बंश होंगे ॥
२२ सो तुम मेरी समस्त बिधिन को और मेरे न्यायों को पालन
करो और उन पर चलो जिसतें जिस देश में मैं तुम्हें बसाने
२३ को ले जाता हूं सो तुम्हें उगल न देवे। और तुम उस जातिगण
की बिधिन पर जिसे मैं तुम्हारे आगे से हांकता हूं मत चलो
क्योंकि उन्हों ने ऐसे ही सब काम किये इसी लिये मैं ने उन
२४ से घिन किई। परन्तु मैं ने तुम्हें कहा कि तुम उन के देश
के अधिकारी होओगे और मैं उस देश को अधिकार के लिये
तुम्हें दूंगा जहां दूध और मधु बहि रहा है मैं परमेश्वर तुम्हारा
ईश्वर हूं जिस ने तुम्हें लोगों में से अलग कर लिया है ॥
२५ सो तुम पवित्र और अपवित्र पशुन में और अपवित्र और

पवित्र पक्षियों में ब्योरा करो और तुम पशुन और पक्षियों और
किसी जीवधारी के कारण से जो भूमि पर रेंगता है जिन्हें मैं ने
तुम्हारे लिये अपवित्र ठहराया है आप को अपवित्र न करो।
२६ और मेरे लिये पवित्र हो जाओ क्योंकि मैं परमेश्वर पवित्र हूं
और मैं ने तुम्हें लोगों में से अलग कर लिया है जिसतें तुम
मेरे होओ ॥
२७ और जो मनुष्य अथवा स्त्री ओझा अथवा टोन्हा हो सो
निश्चय मार डाला जावे वे पत्थरवाह किये जायेंगे उन का लोहू
उन्हीं पर होवे ॥

एक्कीसवां पर्ब्ब ।

१ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला कि हारून के बेटे
याजकों से कह और उन्हें बोल कि अपने लोगों की मृत्यु के
२ कारण कोई अशुद्ध न होवे। परन्तु अपने समीपी कुटुम्ब के
लिये अपनी माता और अपने पिता और अपने पुत्र और अपनी
३ पुत्री और अपने भाई के लिये। और अपनी कुंआरी बहिन के लिये
४ जो अनब्याही है उस के कारण वुह अशुद्ध होवे। जो अपने लोगों
में प्रधान है सो आप को अशुद्ध न करे जिसतें आप को हलुक
५ करे। वे अपने सिरों के बाल न मुड़ावें और अपनी दाढ़ी के
६ कोनों को न मुड़ावें और अपने मांस को न काटें। वे अपने
ईश्वर के लिये पवित्र बनें और अपने ईश्वर के नाम को हलुक
न करें क्योंकि वे परमेश्वर के लिये आग की भेंट ईश्वर को भोग
७ लगाते हैं सो वे पवित्र होंगे। वे बेश्या को अथवा तुच्छ को
पत्नी न करें और न उस स्त्री को जो अपने पति से त्यागी गई
८ है पत्नी करें क्योंकि वे अपने ईश्वर के लिये पवित्र हैं। इस लिये
तू उसे पवित्र कर क्योंकि वुह तेरे ईश्वर का भोजन चढ़ाता है
वुह तेरे लिये पवित्र होवे क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा शुद्धकर्त्ता।

९ पवित्र हूं। और यदि किसी याजक की पुत्री बेश्या का कर्म्म
करके आप को तुच्छ करे वुह अपने पिता को तुच्छ करती है
वुह आग से जलाई जायगी॥
१० और वुह जो अपने भाइयों में प्रधान याजक है जिस के
सिर पर अभिषेक का तेल डाला गया और जो स्थापित किया
गया कि वस्त्र पहिने सो अपना सिर नंगा न करे और अपने
११ कपड़े न फाड़े। और वुह किसी लोथ के पास न जावे न
अपने पिता और न अपनी माता के लिये आप को अशुद्ध करे।
१२ और कधी पवित्र स्थान से बाहर न जावे और अपने ईश्वर के
पवित्र स्थान को तुच्छ न करे क्योंकि उस के ईश्वर के अभिषेक
१३ के तेल का मुकुट उस पर है मैं परमेश्वर हूं। और वुह कुंआरी
१४ को पत्नी करे। बिधवा अथवा त्यागी गई अथवा तुच्छ बेश्या
को इन्हें न लेवे परन्तु वुह अपने ही लोगों के बीच में की
१५ कुंआरी से बिवाह करे। और अपने बंश को अपने लोगों में
तुच्छ न करे क्योंकि मैं परमेश्वर उसे पवित्र करता हूं॥
१६। १७ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि हारून से
कह कि जो कोई तेरे बंश में से अपनी अपनी पीढ़ियों में खोट
होवे सो अपने ईश्वर को नैवेद्य चढ़ाने को समीप न आवे।
१८ क्योंकि वुह पुरुष जिस में कुछ खोट होवे सो समीप न आवे
जैसे अंधा अथवा लंगड़ा अथवा वुह जिस की नाक चिपटी हो
१९ अथवा जिस पर कुछ उभड़ा है। अथवा वुह जिस का पांव
२० अथवा हाथ टूटा हो। अथवा कुबड़ा अथवा बावना अथवा
उस की आंख में कुछ खोट हो अथवा दाद अथवा खजुली
२१ अथवा अंड पिचके हों। हारून याजक के बंश में से कोई
मनुष्य जिस में खोट है निकट न आवे कि परमेश्वर की आग की
भेंट चढ़ावे उस में खोट है वुह अपने ईश्वर को नैवेद्य चढ़ाने
२२ को पास न आवे। वुह अपने ईश्वर का नैवेद्य अति पावन

२३ और पवित्र खावे । केवल वुह घूंघट के भीतर न जावे और
यज्ञवेदी के पास न आवे इस लिये कि उस में खोट है और
मेरे पवित्र स्थान को तुच्छ न करे क्योंकि मैं परमेश्वर उन्हें शुद्ध
करता हूं ॥
२४ तब मूसा ने हारून और उस के बेटों और समस्त इसराएल
के संतानों को यह सब कहा ॥

बाईसवां पर्व्व ।

१ । २ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि हारून और
उस के बेटों से कह कि वे इसराएल के संतान की पवित्र बस्तुन
से आप को अलग रक्खें और मेरे पवित्र नाम की उन बस्तुन
के कारण जिन्हें वे मेरे लिये पवित्र करते हैं निंदा न करें मैं
३ परमेश्वर हूं । उन्हें कह कि तुम्हारी पीढ़ियों में तुम्हारे समस्त
बंश में जो कोई उन पवित्र बस्तुन के पास जो इसराएल के
संतान परमेश्वर के लिये पवित्र करते हैं अपनी अपवित्रता रखके
जावे तो वुह जन मेरे पास से काटा जावेगा मैं परमेश्वर
४ हूं । जो कोई हारून के बंश में से कोढ़ी अथवा प्रमेही हो
और जो मृतक के कारण से अपवित्र है और उसे जिस को
प्रमेह है जब लों वुह पवित्र न हो ले तब लों पवित्र बस्तुन
५ में से कुछ न खावे । और जो कोई किसी रेंगवैया जंतु को
छूवे जिस्से वुह अपवित्र होवे अथवा किसी मनुष्य को जिस्से
६ वुह अपवित्र हो सके जो अपवित्रता उस में होवे । वुह प्राणी
जिस ने ऐसा कुछ छूआ सो सांझ लों अपवित्र रहेगा और जब
लों अपना शरीर पानी से धो न ले पवित्र बस्तु में से कुछ न
७ खावे । और जब सूर्य्य अस्त होवे तब वुह पवित्र होगा और
उस के पीछे वुह पवित्र बस्तें खावे क्योंकि वुह उस का आहार
८ है । जो कुछ आप से मरे अथवा फाड़ा जावे वुह उसे खाके

९ आप को अशुद्ध न करे मैं परमेश्वर हूं। इस लिये वे मेरी
व्यवस्थों का पालन करें ऐसा न होवे कि उस के लिये पापी
होवें और मरें यदि वे उसे तुच्छ करें मैं परमेश्वर उन्हें पवित्र
करता हूं॥
१० और कोई परदेशी पवित्र वस्तु न खावे और न याजक का
११ पाहुन और न बनिहार पवित्र वस्तु को खावे। परन्तु जिसे
याजक ने अपने दाम से मोल लिया हो सो उसे खावे और वुह
जो उस के घर में उत्पन्न हुआ है सो उस के भोजन में से खावे।
१२ यदि याजक की कन्या किसी परदेशी से ब्याही जावे तो वुह भी
१३ चढ़ाई हुई पवित्र वस्तुन में से न खावे। पर यदि याजक
की कन्या बिधवा हो जावे अथवा त्यक्त होवे और निर्बंश हो
और युवावस्था के समान अपने पिता के घर में फिर आवे तो
वुह अपने पिता के भोजन में से खावे परन्तु परदेशी उसे न
१४ खावे। और यदि पवित्र बस्तुन में से कोई अनजान खा जावे
तो वुह उस के पांचवें भाग को मिलावे और उसे उस पवित्र
१५ वस्तु सहित याजक को देवे। और इसराएल के संतान की
पवित्र वस्तुन की जो उन्हों ने परमेश्वर के लिये चढ़ाया है वे
१६ निंदा न करें। और आप पवित्र वस्तुन के खाने से पाप का
बोझ उन मे न उठवावें क्योंकि मैं परमेश्वर उन्हें पवित्र करता
१७। १८ हूं। फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि हारून
को और उस के बेटों को और इसराएल के समस्त संतान को
कहके बोल कि इसराएल के घराने में से अथवा इसराएल के
परदेशियों में से जो कोई अपनी समस्त मनौती के लिये भेंट
और अपनी समस्त मनमंता की भेंट जो वे परमेश्वर के लिये
१९ बलिदान की भेंट के लिये चढ़ावें। सो अपनी ग्राह्यता के लिये
ढोरों में से अथवा भेड़ बकरी में से निष्खोट नरख होवे।
२० जिस पर दोष है उसे मत चढ़ाइयो क्योंकि तुम्हारे लिये ग्राह्य

२१ न होगा। और जो कोई अपनी मनौती पूरी करने को अथवा
बांछित भेंट ढोरों में से अथवा भेड़ में से कुशल की भेंट
परमेश्वर के लिये चढ़ावे सो ग्राह्य होने के लिये निर्दोष होवे
२२ उस में कुछ खोट न होवे। अंधा अथवा टूटा अथवा लंगड़ा
अथवा लूला अथवा जिस पर मसा अथवा दाद अथवा खुजली होवे
परमेश्वर के लिये भेंट मत चढ़ाइयो उन में से आग की भेंटों
२३ को परमेश्वर की यज्ञवेदी पर मत चढ़ाइयो। और बैल और
मेम्ना जिस का कोई अंग अधिक अथवा घटा होवे उसे बांछित
भेंट के लिये चढ़ावे परन्तु मनौती के लिये ग्राह्य न होगा।
२४ और अंड कुचला हुआ अथवा दबा हुआ अथवा टुंडा अथवा काटा
हुआ परमेश्वर के लिये मत चढ़ाइयो और अपने देश में ऐसों को मत
२५ बनाइयो। और इन सब में से अपने ईश्वर को नैबेद्य किसी परदेशी
की ओर से मत चढ़ाइयो क्योंकि उन की सड़ाहट उन में है
वे खोटे हैं वे तुम्हारे लिये ग्राह्य न होंगे॥

२६। २७ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि जब बैल
अथवा भेड़ बकरी उत्पन्न होवे तब सात दिन लों अपनी माता
के साथ रहे और आठवें दिन से और उस्से आगे परमेश्वर की
२८ आग की भेंट के लिये ग्राह्य होगा। और गाय अथवा भेड़
को बच्चे समेत एक ही दिन मत मारियो॥

२९ और जब तुम परमेश्वर के लिये धन्यवाद के बलिदान भेंट
३० चढ़ाओ तब अपनी ग्राह्यता के लिये उसे चढ़ाओ। उसी दिन खाया
जावे तुम उस में से दूसरे दिन लों तनिक भी न छोड़ियो मैं परमेश्वर हूं॥

३१ और मेरी आज्ञाओं को धारण करो और उन्हें पालन करो मैं
३२ परमेश्वर हूं। और मेरे पवित्र नाम को हलुक न करो परन्तु
मैं इसराएल के संतानों में पवित्र हूंगा मैं परमेश्वर तुम्हें पवित्र
३३ करता हूं। जो तुम्हें मिस्र की भूमि से निकाल लाया कि
तुम्हारा ईश्वर होऊं मैं परमेश्वर हूं॥

तेईसवां पर्व्व ।

१ । २ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के
संतानों से कहके बोल कि परमेश्वर के पर्व्व जिन्हें तुम पवित्र
बुलावा सभा के लिये प्रचारोगे ये मेरे पर्व्व हैं ॥
३ छः दिन काम काज किया जावे परन्तु सातवां दिन जो
विश्राम का है उस में पवित्र सभा होगी कोई कार्य्य न करो
वुह तुम्हारे समस्त निवासों में परमेश्वर के विश्राम का दिन
है ॥
४ ये परमेश्वर के पर्व्व और पवित्र सभा जिन्हें तुम उन के समय
५ में प्रचारोगे । पहिले मास की चौदहवीं तिथि की सांझ को
६ परमेश्वर का फसह है । और उसी मास की पंदरहवीं तिथि को
परमेश्वर के अख़मीरी रोटी का पर्व्व है सात दिन लों अवश्य
७ अख़मीरी रोटी खाइयो । पहिले दिन तुम्हारे लिये पवित्र बुलावा
८ होगा कोई संसारिक कार्य्य मत करियो । परन्तु सात दिन लों
परमेश्वर के लिये होम की भेंट चढ़ाइयो सातवें दिन पवित्र
सभा होगी कोई संसारिक कार्य्य मत कीजियो ॥
९ । १० फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के
संतानों से कहके बोल कि जब तुम उस देश में पहुंचो जो मैं
तुम्हें देता हूं और उस का अन्न लवो तब तुम अपनी वालों
११ में से एक गट्ठा पहिले फल याजक पास लाओ । और वुह उस
गट्ठे को परमेश्वर के आगे हिलावे कि तुम्हारी ओर से ग्राह्य
होवे बिश्राम के दूसरे दिन बिहान को याजक उसे हिलावे ।
१२ और उस दिन जिस समय वुह गट्ठा हिलाया जावे पहिले बरस
का एक निष्खोट मेम्ना बलिदान की भेंट परमेश्वर के लिये
१३ चढ़ाओ । और उस के भोजन की भेंट दो दसवां भाग चोखा
पिसान तेल मिलाके होम की भेंट परमेश्वर के सुगंध के लिये

१४ होवे और उस के तपावन की भेंट सेर भर दाखरस होवे। और
जिस दिन लों अपने ईश्वर के लिये भेंट चढ़ाओ रोटी और
भूना हुआ अन्न अथवा हरी बालें मत खाइयो तुम्हारे समस्त
निवासों में तुम्हारी पीढ़ियों में यह सनातन की बिधि है॥
१५ और विश्राम दिन के बिहान से जब से हिलाने की भेंट के
लिये तुम ने गट्ठा चढ़ाया है सात अठवारे गिनके पूरा करियो।
१६ सातवें बिश्राम के दिन के पीछे बिहान से पचास दिन गिन
१७ लो और परमेश्वर के लिये नये भोजन की भेंट चढ़ाओ। अपने
निवासों में से दो दसवें भाग की दो रोटी लाइयो ये चोखे
पिसान की होवें वुह ख़मीर के साथ पकाई जावें पहिले फल
१८ परमेश्वर के लिये हैं। और पहिले बरस के निष्खोट सात मेम्ने
और एक बछड़ा और दो मेंढ़े अन्न के साथ लाइयो वुह परमेश्वर
के बलिदान की भेंट होंगे और उन के भोजन की और उन के तपावन
१९ की भेंट सहित परमेश्वर के सुगंध के लिये होम की भेंट है। और
पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना और कुशल की भेंट
२० के लिये पहिले बरस के दो मेम्ने बलि कीजियो। और याजक
उन्हें पहिले फल की रोटी के संग परमेश्वर के आगे हिलाने की
भेंट के लिये दो मेम्ना समेत हिलावे याजक के लिये वे
२१ परमेश्वर के आगे पवित्र होंगे। और उसी दिन प्रचारियो वुह
तुम्हारे पवित्र बुलावा के लिये होवे कोई संसारिक कार्य्य मत
करियो यह तुम्हारे समस्त निवासों में तुम्हारी पीढ़ियों के अंत
लों बिधि होगी॥
२२ और जब अपने खेत लवो तब तू अपने खेत के कोनों को
झाड़के मत काटियो और लवने के पीछे मत बीनियो तू उन्हें
कंगाल और परदेशी के लिये छोड़ियो मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर
हूं॥
२३ । २४ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के

संतान से कह कि सातवें मास की पहिली तिथि तुम्हारे लिये
एक बिश्राम का दिन और नरसिंगे के शब्द से समरण पवित्र
२५ बुलावा है। कोई संसारिक कार्य्य मत कीजियो परन्तु परमेश्वर
के लिये बलिदान की भेंट लाइयो॥
२६। २७ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। सातवें मास की
दसवीं तिथि प्रायश्चित्त देने का दिन है तुम्हारे लिये पवित्र
बुलावा होगा और तुम अपने प्राणों को शोकित करोगे और
२८ परमेश्वर के लिये होम की भेंट लाओ। और उसी दिन कोई काम
मत करियो क्योंकि वुह प्रायश्चित्त का दिन है तुम परमेश्वर
२९ अपने ईश्वर के आगे अपने लिये प्रायश्चित्त करो। क्योंकि जो
प्राणी उस दिन में शोकित न होगा वुह अपने लोगों में से
३० काटा जायगा। और जो प्राणी उस दिन में कोई काम करेगा
३१ मैं उसी प्राणी को उस के लोगों में से नाश करूंगा। किसी
रीति का काम मत करना यह तुम्हारे समस्त निवासों में
तुम्हारी पीढ़ियों के अंत लों सनातन के लिये बिधि होगी।
३२ वुह तुम्हारे लिये एक बिश्राम का दिन होगा और अपने
प्राण को शोकित करियो तुम उस मास की नवीं तिथि को
सांझ से सांझ लों अपने बिश्राम के लिये पालियो॥
३३। ३४ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। इसराएल के
संतानों से कह कि सातवें मास की पंदरहवीं तिथि से सात
३५ दिन लों परमेश्वर के तंबू का पर्व्व है। पहिले दिन पवित्र
३६ बुलावा होवे कोई संसारिक कार्य्य न करना। सात दिन लों
परमेश्वर के लिये होम की भेंट लाओ आठवें दिन तुम्हारा पवित्र
बुलावा होगा सो तुम परमेश्वर के लिये होम की भेंट लाइयो
वुह सभा का दिन है कुछ संसारिक कार्य्य मत कीजियो।
३७ परमेश्वर के ये पर्व्व हैं जिन में तुम पवित्र बुलावा प्रचारियो जिसतें
परमेश्वर के लिये होम की भेंट बलिदान की भेंट और बलि

की भेंट और तपावन की भेंट हर एक वस्तु अपने दिन में
३८ लाइयो । परमेश्वर के बिश्राम के दिनों के और अपनी भेंटों
से अधिक और तुम्हारी समस्त मनौती से अधिक और तुम्हारे
समस्त मनमंता भेंटों से अधिक जिन्हें तुम परमेश्वर के लिये
३९ चढ़ाते हो । सातवें मास की पंदरहवीं तिथि जब खेतों का
अनाज एकट्ठा कर लो तब तुम सात दिन लों परमेश्वर के लिये
पर्व्व मानियो पहिला दिन बिश्राम का होगा और आठवां दिन
४० बिश्राम का होगा । सो तुम पहिले दिन सुंदर बृक्षों का फल
खजूर की डाली और घने बृक्षों की डालियां और नालियों
के बेंत लीजियो और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे सात दिन
४१ लों आनंद कीजियो । और बरस में परमेश्वर के लिये सात दिन
भर पर्व्व के लिये पालन करियो यह तुम्हारी पीढ़ियों में
सनातन की बिधि होगी सातवें मास यों ही स्मरण कीजियो ।
४२ सात दिन लों डालियों की छान में रहियो जितने इसराएली
४३ हें सब के सब डालियों की छान में रहें । जिसतें तुम्हारी
पीढ़ी जाने कि जब में इसराएल के संतानों को मिस्र के देश
से निकाल लाया में ने उन्हें डालियों की छान में बसाया में
परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं ॥
४४ सो मूसा ने इसराएल के संतानों से परमेश्वर के पर्व्वों को
कह सुनाया ॥

चौबीसवां पर्व्व ।

१ । २ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के
संतानों को आज्ञा कर कि दीपक को नित्य जलाने के लिये
३ कूटे हुए जलपाई का निर्म्मल तेल तुझ पास लावें । हारून
उसे मंडली के तंबू में साक्षी के ओट के बाहर सांझ से बिहान
लों परमेश्वर के आगे रीति से नित्य रक्खा करे तुम्हारी पीढ़ियों

४ के लिये यह बिधि सनातन की होगी। वही दीपकों को पवित्र
दीअट पर परमेश्वर के आगे रीति से सदा रक्खा करे॥
५ और चोखे पिसान लेके उस्से बारह फुलके पका एक एक
६ फुलका दो दसवें अंश का होवे। और तू उन्हें परमेश्वर के
७ आगे पवित्र मंच पर छः छः करके दो पांती में रख। और
हर एक पांती पर निराला गंधरस रखना जिसतें वुह रोटी
स्मरण के लिये होवे अर्थात् होम की भेंट परमेश्वर के लिये।
८ यह सनातन की बाचा के लिये इसराएल के संतान से लेके
हर बिश्राम दिन को परमेश्वर के आगे रीति से नित्य रक्खा
९ करे। और वुह हारून की और उस के बेटों की होंगी और
वे उन्हें पवित्र स्थान में खावें क्योंकि वुह उस के लिये परमेश्वर
के होम की भेंटों में से अत्यंत पवित्र बिधि नित्य के लिये
है॥
१० तब एक इसराएली स्त्री का बेटा जिसा का पिता मिस्री था
निकलके इसराएलियों में गया और उस इसराएली स्त्री का बेटा
११ और इसराएल का एक जन छावनी में झगड़ रहे थे। और
इसराएली स्त्री के बेटे ने परमेश्वर के नाम की अपनिंदा किई
और धिक्कारा तब वे उसे मूसा पास लाये और उस की माता
का नाम सलूमियत था जो दिबरी के पुत्र दान के कुल से
१२ थी। और वुह बंधन में रक्खा गया जिसतें उन पर प्रगट करे
१३ कि परमेश्वर क्या आज्ञा करता है। फिर परमेश्वर मूसा से कहके
१४ बोला। जिस ने अपनिंदा किई है उसे छावनी के बाहर निकाल
ले जा और जितनों ने सुना वे अपने हाथ उस के सिर पर
१५ रक्खें और सारी मंडली उसे पत्थरवाह करे। और इसराएल
के संतानों से कह कि जो कोई अपने ईश्वर को धिक्कारेगा
१६ सो अपना पाप भोगेगा। और जो परमेश्वर के नाम की अपनिंदा
करे सो निश्चय प्राण से मारा जायगा समस्त मंडली उसे निश्चय

पत्थरवाह करे चाहे वुह परदेशी होवे चाहे देशी जब उस ने
परमेश्वर के नाम की अपनिंदा किई वुह प्राण से मारा जायगा।
१७ और जो दूसरे आदमी को मार डालेगा सो निश्चय घात किया
१८ जायगा। और जो कोई पशु को मार डाले सो उस की संती पशु
१९ देवे। और यदि कोई अपने परोसी को खोटा करे जैसा करेगा वैसा
२० ही उस पर किया जायगा। तोड़ने की संती तोड़ना आंख की संती
आंख दांत की संती दांत जैसा उस ने मनुष्य को खोटा किया
२१ है उस्से वैसा ही किया जावे। और जो पशु को मार डाले
वुह उस का पलटा देवे और जो मनुष्य को मार डाले वुह प्राण
२२ से मारा जावे। तुम्हारी एक ही रीति की व्यवस्था होवे जैसी
परदेशी की वैसी ही देशी के विषय में होवे क्योंकि मैं परमेश्वर
२३ तुम्हारा ईश्वर हूं। तब मूसा ने इसराएल के संतान से कहा
कि उस जन को जिस ने धिक्कारा तंबू के बाहर निकाल ले
जावें और उस पर पत्थरवाह करें सो इसराएल के संतानों ने
जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी वैसा ही किया॥

पचीसवां पर्ब्ब ।

१ फिर परमेश्वर सीना के पहाड़ पर मूसा से कहके बोला।
२ कि इसराएल के संतानों को कहके बोल कि जब तुम उस
देश में जो मैं तुम्हें देता हूं पहुंचो तब वुह भूमि परमेश्वर के
३ लिये विश्राम को विश्राम करे। छः बरस अपने खेतों को
बोओ और छः बरस अपने दाखों को सवांर और उस का फल
४ बटोर। परन्तु सातवां बरस देश के लिये चैन का विश्राम
होगा परमेश्वर के लिये विश्राम न तो अपने खेत को बोना
५ और न अपने दाखों को सवांरना। जो कुछ आप से आप उगे
तू उसे मत लव और बिन सवांरी हुई लता के दाखों को मत
६ बटोर कि देश के लिये चैन का बरस है। सो भूमि का विश्राम

तुम्हारे और तुम्हारे दास और दासी और तुम्हारे बनिहार और
तुम्हारे परदेशियों के जो तुम्में टिकते हैं खाने के लिये होगा।
७ और तुम्हारे ढोर और जो पशु तुम्हारे देश में है उस का सब
प्राप्त उन के खाने के लिये होगा॥
८ और तू सात बिश्राम के बरसें को अपने लिये गिन सात
गुने सात बरस और सात बरसें के बिश्राम के समय तुम्हारे
९ लिये उंचास बरस होंगे। तब तू सातवें मास की दसवीं तिथि
में आनंद का नरसिंगा फुंकवा प्रायश्चित्त के दिन अपने सारे
१० देश में नरसिंगा फुंकवा। सो तुम पचासवें बरस को पवित्र
जानो और देश में उस के सारे बासियों में मुक्ति प्रचारो वुह
तुम्हारे लिये आनंद है और तुम्में से हर एक मनुष्य अपने
११ अपने अधिकार को और अपने घराने को फिर जावे। पचासवां
बरस तुम्हारे लिये आनंद है तुम कुछ मत बोइयो न उसे जो
उस में आप से उगे काटियो और बिन सवांरी हुई दाख की
१२ लता के दाखें को मत बटोरो। क्योंकि वुह आनंद है यह तुम्हारे
१३ लिये पवित्र होगा खेतों में जो बढ़े तुम उसे खाओ। इस
आनंद के बरस तुम्में से हर एक अपने अपने अधिकार को
१४ फिर जावे। और यदि तू अपने परोसी के हाथ बेचे अथवा
अपने परोसी से मोल ले तो एक दूसरे पर अंधेर मत कीजियो।
१५ आनंद के बरसें के पीछे के समान गिनके अपने परोसी से मोल
लेना और बरसें के प्राप्त की गिनती के समान तेरे हाथ बेचे।
१६ बरसें की बहुताई के समान उस का मोल बढ़ाइयो और बरसें
की घटी के समान उस का मोल घटाइयो क्योंकि प्राप्त की
१७ गिनती के समान वुह तेरे हाथ बेचता है। इस लिये एक दूसरे
पर अंधेर मत करो परन्तु अपने ईश्वर से डरियो क्योंकि मैं
परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥
१८ सो तुम मेरी विधिन को मानो और मेरे न्याय को धारण

१९ और पालन करियो और देश में कुशल से बास करोगे। और
भूमि तुम्हें अपने फल देगी और तुम खाके तृप्त होओगे और
२० उस पर कुशल से रहा करोगे। और यदि तुम कहो कि हम
२१ सातवें बरस क्या खायेंगे क्योंकि न बोवेंगे न बटोरेंगे। तब मैं
छठवें बरस अपना आशीष तुम्हें देऊंगा और उस में तीन बरस
२२ का प्राप्त होगा। और तुम आठवें बरस बोओगे और नवें बरस लों
पुराना अनाज खाओगे जब लों उस में अन्न फेर न होवे तब लों
पुराना अन्न खाओगे॥
२३ और भूमि सदा के लिये बेची न जावे क्योंकि भूमि मेरी है
२४ और तुम मेरे संग परदेशी और निवासी हो। और तुम अपने
२५ अधिकार की समस्त भूमि के लिये छुटकारा देना। यदि तेरा भाई
कंगाल होवे और कुछ अपने अधिकार में से बेचे और कोई
उसे छुड़ाने आवे तब वुह अपने भाई की बेची हुई छुड़ा ले। और
२६ यदि उस मनुष्य के छुड़ाने को कोई न होवे और आप से छुड़ा
२७ सके। तब उस के बेचने के बरस गिने जावें और जिस पास बेचा
है उस को बढ़ती फेर देवे जिसतें वुह अपने अधिकार पर फिर
२८ जावे। परन्तु यदि वुह फेर देने पर खड़ा न हो तब जो बेचा
हुआ है सो आनंद के बरस लों उसी के हाथ में रहे जिस ने
उसे मोल लिया और आनंद में वुह छूट जायगी तब वुह
अपने अधिकार पर फिर जावे॥
२९ और यदि कोई घर को जो भीतनगर में है बेचने के पीछे
३० बरस भर में उसे छुड़ावे पूरे बरस में वुह उसे छुड़ावे। और
यदि बरस भर में छुड़ाया न जावे तो वुह घर जो भीतनगर
में है सो उस के लिये जिस ने मोल लिया है उस की पीढ़ियों में
३१ दृढ़ रहेगा वुह आनंद के बरस में बाहर न जायगा। परन्तु
गांव के घर जिन के आस पास भीत न होवे देश के खेतों के
समान गिने जावें वे छुड़ा सकें और आनंद में छूट जावेंगे।

३२ और लावियों के नगर और उन के अधिकार के नगरों के घर
३३ जब चाहें तब लावी छुड़ावें। और यदि कोई मनुष्य लावियों
से मोल लेवे तब जो घर बेचा गया और उस के अधिकार का
नगर फिर आनंद के बरस में छूट जायगा क्योंकि लावियों के
नगर के घर इसराएल के संतानों में उन के अधिकार हैं।
३४ परन्तु वे खेत जो उन के नगरों के सिवानों में हैं बेचे न जावें
क्योंकि वुह उन के सनातन का अधिकार है॥
३५ और यदि तेरा भाई दुःखी और कंगाल हो जावे तो
तुम उस की सहाय करो चाहे वुह परदेशी होवे चाहे पाहुन
३६ जिसतें वुह तुम्हारे साथ जीवन काटे। तू उस्से ब्याज और बढ़ती
मत ले परन्तु अपने ईश्वर से डर जिसतें तेरा भाई तेरे साथ
३७ जीवन काटे। तू उसे ब्याज पर ऋण मत दे और बढ़ती के
३८ लिये अपने भोजन का ऋण मत दे। मैं परमेश्वर तुम्हारा
ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र के देश से निकाल लाया जिसतें तुम्हें
कनआन का देश देऊं और तुम्हारा ईश्वर होऊं॥
३९ और यदि तेरा भाई तुझ पास कंगाल हो जावे और तुझ
पास बेचा जावे तो तू उस्से दास की नाईं सेवा मत करवा।
४० वुह बनिहार और पाहुन की नाईं तेरे साथ रहे आनंद के बरस
४१ लों तेरी सेवा करे। और उस के पीछे वुह अपने लड़कों समेत
तुझ से अलग हो जायगा और अपने घराने और अपने पिता
४२ के अधिकार को फिर जावे। क्योंकि वे मेरे सेवक हैं जिन्हें मैं
मिस्र की भूमि से बाहर ले आया वे दासों की नाईं बेचे न
४३ जावें। तू कठोरता से उन से सेवा मत ले परन्तु अपने ईश्वर
४४ से डर। तेरा दास और तेरी दासियां जिन्हें तू अन्य
देशियों में से जो तुम्हारे आस पास हैं रक्खेगा उन्हीं में से
४५ दास और दासियां मोल लेओ। और उन परदेशियों के लड़कों
में से भी जो तुम्में वास करते हैं और उन के घराने में से जो

तुम्हारी भूमि में उत्पन्न हुए हैं मोल लीजियो और वे तुम्हारे
४६ अधिकार होंगे। और तुम उन्हें अपने पीछे अपने लड़कों के
लिये अधिकार में लेओ वे सदा लों तुम्हारे दास हैं परन्तु तुम
अपने भाइयों पर जो इसराएल के संतान हैं एक दूसरे पर
कठोरता से सेवा मत लेओ॥
४७ और यदि कोई पाहुन अथवा परदेशी तेरे पास धनी होवे
और तेरा भाई जो उस के साथ है कंगाल हो जावे और उस
परदेशी अथवा पाहुन के हाथ जो तेरे साथ है अथवा उस के
हाथ जो परदेशी के घरानों में से होवे किसी के हाथ आप को
४८ बेच डाले। उस के बेचे जाने के पीछे वुह फेर छुड़ाया जा
४९ सके उस के भाइयों में से एक उसे छुड़ा सकेगा। चाहे उस
का चाचा चाहे उस के चाचा का पुत्र अथवा जो कोई उस के
घराने में उस का गोती हो उस को छुड़ा सकेगा यदि उस्से
५० हो सके तो वुह आप को छुड़ावे। और वुह अपने बेचे जाने
के बरस से लेके आनंद के बरस लों गिने और उस के बेचे
जाने का मोल बरसों की गिनती के समान होवे वुह बनिहार
५१ के समय के समान उस के साथ रहेगा। यदि बहुत बरस
रहे तो वुह अपने छुड़ाने को उस मोल से जिस्से वुह बेचा
५२ गया उन बरसों के समान फेर दे। और यदि आनंद के थोड़े
बरस रह जावें तो वुह लेखा करे और अपने छुटकारे का
५३ मोल अपने बरसों के समान उसे फेर दे। वुह बरस बरस के
बनिहार के समान उस के साथ रहे उस पर कठोरता से सेवा
५४ न करवावे। और यदि वुह इन में छुड़ाया न जावे तो आनंद
५५ के बरस में वुह अपने लड़कों समेत छूट जायगा। क्योंकि
इसराएल के संतान मेरे सेवक हैं वे मेरे सेवक जिन्हें मैं मिस्र
के देश से निकाल लाया मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

छबीसवां पर्ब्ब ।

१ अपने लिये मूर्त्ति अथवा खोदी हुई प्रतिमा मत बनाइयो
और पूजित मूर्त्ति तुम अपने लिये मत खड़ी कीजियो और
दंडवत करने के लिये पत्थर की मूर्त्ति अपनी भूमि में स्थापित
२ मत करियो क्योंकि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं। तुम मेरे
बिश्राम के दिनों का पालन करो और मेरे पवित्र स्थान को प्रतिष्ठा
देओ मैं परमेश्वर हूं ॥
३ यदि तुम मेरी बिधिन पर चलोगे और मेरी आज्ञाओं को
४ धारण करके उन पर चलोगे। तो मैं तुम्हारे लिये समय पर
मेंह बरसाऊंगा और देश अपनी बढ़ती उगावेगा और खेत के
५ वृक्ष अपने फल देंगे। यहां लों कि अन्न झाड़ने का समय
दाख तोड़ने के समय लों पहुंचेगा और दाख तोड़ने के समय
लों बोने का समय पहुंचेगा और तुम खाके संतुष्ट होओगे और
६ अपने देश में चैन से रहोगे। और मैं देश में कुशल देऊंगा
और तुम लेट जाओगे और कोई तुम्हें न डरावेगा और मैं
बुरे पशुओं को देश से दूर करूंगा और तुम्हारे देश में तलवार
७ न चलेगी। और तुम अपने बैरियों को खदेड़ोगे और वे तुम्हारे
८ आगे तलवार से गिर जायेंगे। और पांच तुम्में से सौ को
खदेड़ेंगे और सौ तुम्में से दस सहस्र को भगावेंगे और तुम्हारे
९ बैरी तुम्हारे आगे तलवार से गिर जायेंगे। और मैं तुम्हारा
पक्ष करूंगा और तुम्हें फलवंत करूंगा और मैं तुम्हें बढ़ाऊंगा
१० और अपनी बाचा को तुम से पूरी करूंगा। और तुम पुराना
११ अन्न खाओगे और नये के कारण पुराना लाओगे। और मैं
अपना तंबू तुम्में खड़ा करूंगा और मेरा प्राण तुम से घिन न
१२ करेगा। और मैं तुम्हों में फिरा करूंगा और तुम्हारा ईश्वर
१३ होऊंगा और तुम मेरे लोग होओगे। मैं परमेश्वर तुम्हारा

ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र के देश से निकाल लाया जिसतें तुम
उन के दास न बनो और मैं ने तुम्हारे कांधों के जूओं की
लकड़ियों को तोड़ा और तुम्हें खड़ा चलाया॥
१४ परन्तु यदि तुम मेरी न सुनोगे और इन सब आज्ञाओं को
१५ पालन न करोगे। और यदि मेरी बिधिन की निंदा करोगे अथवा
तुम्हारे मन मेरे न्यायों को घिन करें ऐसा कि तुम मेरी आज्ञाओं
१६ को पालन न करो पर मेरी बाचा तोड़ दो। तो मैं भी तुम
से यह करूंगा कि भय और क्षयरोग और तप्तज्वर जो तेरी
आंखों को नाश करेगा और मन को उदास और तुम अपने
१७ बीज अकारथ बोओगे क्योंकि तुम्हारे बैरी उसे खायेंगे। और
मैं तेरा साम्ना करूंगा और तुम अपने बैरियों के साम्ने जूझ
जाओगे जो तुम्हारे बैरी हैं सो तुम पर राज्य करेंगे और कोई
१८ तुम्हारा पीछा न करते ही तुम भागे जाओगे। और इन सभों
पर भी यदि तुम मेरी न सुनोगे तो मैं तुम्हारे पापों के कारण
१९ सतगुण तुम्हें दंड देऊंगा। और तुम्हारे घमंड के बल को
तोड़ूंगा और तुम्हारा आकाश लोहा के समान और तुम्हारी
२० पृथिवी पीतल की नाईं कर देऊंगा। और तुम्हारा बल संत से
जाता रहेगा क्योंकि तुम्हारी भूमि अपनी बढ़ती न देगी और
२१ देश के पेड़ फल न पहुंचावेंगे। और यदि तुम मेरे बिपरीत
चलोगे और मेरी न सुनोगे तो मैं तुम्हारे पापों के समान तुम
२२ पर सतगुण मरी लाऊंगा। और मैं बनैले पशु भी तुम्में भेजूंगा
और वे तुम्हारे बंश को भक्षण करेंगे और तुम्हारे पशुन को
नाश करेंगे और तुम्हें गिनती में घटा देंगे और तुम्हारे मार्ग
२३ सूने पड़े रहेंगे। और यदि मेरी इन बातों से न सुधरोगे परन्तु
२४ मुझ से बिपरीत चलोगे। तो मैं भी तुम्हारे बिपरीत चलूंगा
२५ और तुम्हारे पापों के लिये तुम्हें सतगुण दंड देऊंगा। और
मैं तुम पर तलवार लाऊंगा जो मेरी बाचा के झगड़े का पलटा

लेनेवाला है और जब तुम अपने नगरों में एकट्ठे होओगे तब
मैं तुम्हों में मरी भेजूंगा और तुम बैरियों के हाथ में सौंपे
२६ जाओगे। जब मैं तुम्हारी रोटी की लाठी तोड़ डालूंगा तब
दस स्त्री तुम्हारी रोटियां एक तनूर में पकावेंगी और तुम्हारी
रोटियां तोलके तुम्हे देंगी और तुम खाओगे परन्तु तृप्त न
होओगे॥
२७ और यदि तुम इस पर भी न सुनोगे परन्तु मुझ से बिपरीत
२८ चलोगे। तो मैं भी कोप से तुम्हारे बिपरीत चलूंगा और मैं हां मैं
२९ ही तुम्हारे पापों के कारण तुम्हें सतगुण ताड़ना करूंगा। और
तुम अपने बेटों का और अपनी बेटियों का मांस खाओगे।
३० और मैं तुम्हारे ऊंचे स्थानों को ढा दूंगा और तुम्हारी मूर्त्तियों
को काट देऊंगा और तुम्हारी लोथ तुम्हारी मूर्त्तियों की लोथों
३१ पर फेंकूंगा और मेरा प्राण तुम से घिन करेगा। और तुम्हारे
नगरों को उजाड़ करूंगा और तुम्हारे पवित्र स्थानों को सूना
३२ करूंगा और मैं तुम्हारे सुगंध को न सूंघूंगा। और मैं तुम्हारी
भूमि को उजाड़ूंगा और तुम्हारे शत्रु उस के कारण आश्चर्य्य
३३ मानेंगे। और मैं तुम्हें अन्यदेशियों में छिन्न भिन्न करूंगा और
तुम्हारे पीछे से तलवार निकालूंगा और तुम्हारी भूमि उजाड़
३४ होगी और तुम्हारे नगर उजड़ जायेंगे॥ तब देश अपने बिश्रामों
को भोग करेगा अपने समस्त उजाड़ के दिनों में जब तुम अपने
शत्रुन के देश में रहोगे तब देश चैन करेगा और अपने बिश्रामों
३५ को भोग करेगा। जब लों वुह उजाड़ रहेगा तब लों चैन
करेगा इस कारण कि जब तुम उस में बास करते थे तुम्हारे
३६ बिश्रामों में चैन न किया। और तुम्में जो बच रहे हैं मैं उन
के बैरियों के देश में उन के मन में दुर्बलता डालूंगा और
पात खड़कने का शब्द उन्हें खदेड़ेगा और वे ऐसे भागेंगे जैसे
तलवार से भागते हैं और बिना किसी के पीछा करने से वे

३७ गिर पड़ेंगे । और वे ऐसे एक पर एक गिरेंगे जैसे तलवार के
आगे और कोई उन का पीछा न करेगा और तुम अपने बैरी के
३८ आगे ठहर न सकोगे । और तुम अन्यदेशियों में नष्ट होओगे
३९ और तुम्हारे बैरियों का देश तुम्हें खा जायगा । और वे जो
तुम्में से बच जायेंगे सो तुम्हारे बैरियों के देश में और अपने
४० पाप में और अपने पितरों के पाप में क्षीण हो जायेंगे । यदि
वुह अपने पापों को और अपने पितरों के पापों को अपने
अपराधों के संग जो उन्हों ने मेरा अपराध किया और यह
४१ कि वे मेरे बिपरीत चले हैं मान लेंगे । मैं भी उन के
बिपरीत चलता था और उन के बैरियों के देश में उन्हें ला गा यदि
उन के अख़तनः मन दीन हो जायेंगे और अपने दंड को अपने
४२ अपराध के योग्य समझेंगे । तब मैं यअक़ूब के संग अपनी बाचा
को स्मरण करूंगा और अपनी बाचा इज़हाक़ के साथ और
अपनी बाचा अबिरहाम के साथ स्मरण करूंगा और उस देश
को स्मरण करूंगा ॥

४३ और वुह देश उन से छोड़ा जायगा और जब लों वुह उन
दिनों में उजाड़ पड़ा रहा अपने बिश्रामों को भोग करेगा और
वे अपने पाप के दंड को मान लेंगे इसी कारण कि उन्हों ने
मेरी नियाओं को तुच्छ जाना और उन के अंतःकरण ने मेरी
४४ बिधिन से घिन किया । और इन सभों से अधिक जब वे
अपने बैरी के देश में होंगे मैं उन्हें दूर न करूंगा और मैं
उन से घिन न करूंगा कि उन्हें सर्वथा नाश कर देऊं और
उन से बाचा तोड़ डालूं क्योंकि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूं ।
४५ परन्तु उन के कारण मैं उन के पितरों की बाचा को जिन्हें मैं
ने मिस्र के देश से अन्यदेशियों के आगे निकाल लाया स्मरण
करूंगा कि मैं उन का ईश्वर परमेश्वर हूं ॥

४६ ये बिधि और न्याय और व्यवस्था जो परमेश्वर ने सीना

पहाड़ पर आप में और इसराएल के संतानों में मूसा के द्वारा
से ठहराये ॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब ।

१ । २ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के
संतानों को कहके बोल जब मनुष्य विशेष मनौती माने तेरे
३ ठहराने के समान जन परमेश्वर के होंगे । और तेरा मोल बीस
बरस से साठ बरस लों पुरुष के लिये तेरा मोल पवित्र स्थान
४ के शेकल के समान पचास शेकल रूपा होंगे । और यदि स्त्री
५ होवे तो तेरा मोल तीस शेकल होंगे । और यदि पांच से बीस
बरस की बय होवे तो तेरा मोल पुरुष के लिये बीस शेकल
६ और स्त्री के लिये दस शेकल । और यदि एक मास से पांच
बरस की बय होवे तो तेरा मोल पुरुष के लिये चांदी के पांच
शेकल और स्त्री के लिये तेरा मोल चांदी के तीन शेकल ।
७ और यदि वुह साठ बरस से ऊपर का होवे तो पुरुष के लिये
८ तेरा मोल पंदरह शेकल और स्त्री के लिये दस शेकल । परन्तु
यदि तेरे मोल से वुह कंगाल ठहरे तो वुह याजक के आगे
आवे और याजक उस का मोल उस की सामर्थ्य के समान
ठहरावे जिस ने मनौती किई है याजक उस का मोल ठहरावे ॥

९ और यदि पशु होवे जिसे मनुष्य परमेश्वर के लिये भेंट
लाते हैं तो वुह सब जो परमेश्वर के लिये चढ़ाया गया सो
१० पवित्र होगा । वुह उसे न फेरे और भले के लिये बुरा और
बुरे के लिये भला न पलटे और यदि वुह किसी भांति से पशु
को संती पशु दे तो वुह और उस का पलटा पवित्र होंगे ।
११ और यदि वुह अपवित्र पशु होवे जो परमेश्वर का बलिदान
१२ नहीं चढ़ाते तो वुह पशु को याजक के आगे लावे । और
याजक उस का मोल करे चाहे भला होवे चाहे बुरा जैसा

१३ याजक उस का मोल ठहरावे वैसा ही होवे। परन्तु यदि वुह
किसी भांति से उसे छुड़ावे तो वुह उस मोल में पांचवां भाग मिलावे॥
१४ और जब मनुष्य अपने घर को परमेश्वर के लिये पवित्र
करे तो याजक उस का मोल ठहरावे चाहे भला होवे चाहे
१५ बुरा याजक के ठहराने के समान उस का मोल होगा। और
जिस ने उस घर को पवित्र किया है यदि वुह उसे छुड़ाया
चाहे तो तेरे मोल का पांचवां भाग उस में मिलाके देवे और
घर उस का होगा॥
१६ यदि कोई अपने अधिकार से कुछ खेत परमेश्वर के लिये
पवित्र करे तो तेरा मोल उस के अन्न के समान हो एक होमर
१७ जव का मोल पचास शैकल चांदी होगा। यदि वुह आनंद
के बरस से अपना खेत पवित्र करे तो तेरे मोल के समान
१८ ठहरेगा। परन्तु यदि वुह आनंद के पीछे अपने खेत को पवित्र
करे तो याजक उन बरसों के समान जो आनंद के बरस लों
बचे हैं मोल का लेखा करे और तेरे मोल से उतना घटाया
१९ जावे। और जिस ने खेत को पवित्र किया है यदि वुह उसे
किसी भांति से छुड़ाया चाहे तो वुह तेरे मोल का पांचवां भाग
२० उस में मिलावे तब वुह उस का हो जायगा। और यदि वुह
उस खेत को न छुड़ावे अथवा यदि उस ने उस खेत को दूसरे के
२१ पास बेचा हो तो वुह फिर कभी छुड़ाया न जायगा। परन्तु
जब वुह खेत आनंद के बरस में छूटे तब जैसा सङ्कलप किया
गया खेत वैसा परमेश्वर के लिये पावन होगा और वुह याजक
का अधिकार होगा॥
२२ और कोई खेत जो उस ने मोल लिया है और उस के
अधिकार के खेतों में का नहीं है परमेश्वर के लिये पवित्र करे।
२३ तो याजक आनंद के बरसों के समान गिनके मोल ठहरावे
और वुह तेरे ठहराने के समान उस दिन उस का मोल परमेश्वर

२४ के लिये पवित्र वस्तु के समान देवे। खेत आनंद के बरस में
उस के पास फिर जायगा जिस्से मोल लिया गया जिस का
२५ वुह भूमि का अधिकार था। और तेरा मोल पवित्र स्थान के
शेकल के समान होगा बीस गिरह का एक शेकल होगा॥

२६ केवल पशुन में का पहिलौठा जो परमेश्वर का पहिलौठा
हुआ चाहे उसे कोई पवित्र न करे चाहे वुह गाय बैल से होवे
२७ चाहे भेड़ से वुह तो परमेश्वर का है। और यदि वुह अपावन
पशु का होवे तो वुह तेरे मोल के समान उसे छुड़ावे और उस
में पांचवां भाग मिलावे अथवा यदि वुह छुड़ाय न जावे तो
वुह तेरे मोल के समान बेचा जावे॥

२८ तिस पर भी कोई सङ्कलप किई हुई वस्तु जिसे मनुष्य अपने
समस्त वस्तुन में से परमेश्वर के लिये सङ्कलप करता है मनुष्य का
अथवा पशु का अथवा अपने अधिकार के खेत का वुह बेचा न
जावे और न छुड़ाया जावे हर एक सङ्कलप किई हुई वस्तु
२९ परमेश्वर के लिये अत्यंत पवित्र है। जो वस्तु मनुष्य सङ्कलप
करता है सो छुड़ाई न जायगी निश्चय मार डाली जायगी॥

३० और देश का समस्त दसवां भाग चाहे खेत का बीज चाहे
३१ पेड़ का फल परमेश्वर का वुह परमेश्वर के लिये पवित्र है। और
यदि मनुष्य किसी भांति से अपने दसवें भाग को छुड़ाया चाहे
३२ तो पांचवां भाग उस में मिलावे। और लेहंड़े का अथवा झुंड
का दसवां भाग जो कुछ लाठी के नीचे जाता है सो परमेश्वर के
३३ लिये सब दसवां भाग पवित्र होगा। वुह उस की खोज न
करे चाहे भला अथवा बुरा और वुह उसे न पलटे और यदि
वुह किसी भांति से उसे पलटे तो वुह और उस का पलटा दोनों
के दोनों पवित्र हो जायेंगे और वुह छुड़ाया न जायगा॥

३४ वे आज्ञा जो परमेश्वर ने इसराएल के संतानों के लिये सीना
के पहाड़ पर मूसा को किईं ये हैं॥

गिनती की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ और मिस्र की भूमि से उन के निकलने के पीछे दूसरे बरस दूसरे
मास की पहिली तिथि को सीना के पहाड़ के बन में मंडली के
२ तंबू में परमेश्वर मूसा से कहके बोला। उन के पितरों के घराने
के समान इसराएल के संतानों की समस्त मंडली के घराने के
३ समान हर एक पुरुष के नामों का लेखा करे। बीस बरस से
ऊपर सब जो इसराएल में लड़ाई के योग्य होवें तू और हारून
४ उन की सेना सेना गिन। और हर एक गोष्ठी में से एक एक
मनुष्य जो अपने अपने पितरों के घराने का प्रधान है तुम्हारे
साथ होवे॥

५ और जो जन तुम्हारे साथ खड़े होंगे उन के ये नाम हैं
६ रूबिन में से शदेऊर का बेटा इलिसूर। शमऊन में से सूरिसट्टी
७ का बेटा सलूमिएल। यहूदाह में से अम्मिनदब का बेटा
८। ९ नहशून। इशकार में से सुग्र का बेटा नतनिएल। ज़बुलून
१० में से हेलून का बेटा इलिअब। यूसुफ़ के संतान इफ़रायम में
से अम्मिहूद का बेटा इलिसम: मुनस्सी में से फ़िदाहसूर का बेटा
११ जमलीएल। बिनयमीन में से जिदःअनी का बेटा अबिदान।
१२। १३ दान में से अम्मिशट्टी का बेटा अखिअज़र। यसर में से
१४ अकरून का बेटा फ़जिएल। जद में से दऊएल का बेटा
१५ इलयासफ़। नफ़ताली में से ऐनान का बेटा अखिरअ:।
१६ अपने अपने पितरों की गोष्ठियों के अध्यक्ष मंडली में ये नामी
थे इसराएल में सहस्रों के प्रधान ये थे॥

१७ सो मूसा और हारून ने उन मनुष्यों को लिया जिन के
१८ नाम लिखे हैं। और उन्हों ने दूसरे मास की पहिली तिथि
में सारी मंडली एकट्ठी किई और उन्हों ने अपने अपने पितरों
के घराने के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों अपनी अपनी
१९ पीढ़ी उन के नामों की गिनती के समान लिखाया। जैसा कि
परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उस ने उन को सीना के
बन में गिना॥

२० सो रूबिन के संतान में वुह जो इसराएल का पहिलौठा
बेटा था अपने घराने और अपने पितरों के घराने के समान
उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान हर एक
२१ पुरुष सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो रूबिन की गोष्ठी में से
गिने गये छियालीस सहस्र और पांच सौ थे।

२२ समऊन के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने
के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान
हर एक पुरुष बीस बरस से ऊपर लों जो सब लड़ाई के योग्य
२३ थे। जो समऊन की गोष्ठी में से गिने गये सो उनहत्तर सहस्र
और तीन सौ थे॥

२४ जद के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के
समान उन की पीढ़ियों में और नामों के समान बीस बरस से
२५ ऊपर लों जो लड़ाई के योग्य थे। जो जद की गोष्ठी में से
गिने गये सो पैंतालीस सहस्र और छः सौ पचास थे॥

२६ यहूदाह के संतान अपने घराने और अपने पितरों के
घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के
समान बीस बरस से ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे।
२७ जो यहूदाह के घराने में से गिने गये सो चौहत्तर सहस्र
और छः सौ थे॥

२८ इशकार के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने

के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान
२९ बीस बरस से उपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो
इशकार की गोष्ठी में से गिने गये सो चौवन सहस्र और चार
सौ थे ॥
३० ज़बुलून के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने
के समान उन की पीढ़ियों में की गिनती के समान बीस बरस
३१ से ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो ज़बुलून की
गोष्ठी में से गिने गये सत्तावन सहस्र और चार सौ थे ॥
३२ यूसुफ़ के संतान में से इफ़रायम के संतान में से अपने
घराने और अपने पितरों के घराने के समान उन की पीढ़ियों
में और नामों की गिनती के समान बीस बरस से लेके ऊपर
३३ लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो इफ़रायम की गोष्ठी में
से गिने गये सो चालीस सहस्र और पांच सौ थे ॥
३४ मुनस्सी के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने
के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान
३५ बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो
मुनस्सी की गोष्ठी में से गिने गये बत्तीस सहस्र और दो सौ थे॥
३६ बिनयमीन के संतान अपने घराने और अपने पितरों के
घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के
समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे।
३७ जो बिनयमीन की गोष्ठी में से गिने गये पैंतीस सहस्र और चार
सौ थे ॥
३८ दान के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने
के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान
३९ बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे। जो
दान की गोष्ठी में से गिने गये बासठ सहस्र और सात सौ थे ॥
४० यसर के संतान अपने घराने और अपने पितरों के घराने के

समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के समान
बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य थे।
४१ जो यसर की गोष्ठी में से गिने गये एकतालीस सहस्र और पांच
सौ थे॥

४२ नफ़ताली के संतान अपने घराने और अपने पितरों के
घराने के समान उन की पीढ़ियों में और नामों की गिनती के
समान बीस बरस से लेके ऊपर लों सब जो लड़ाई के योग्य
४३ थे। जो नफ़ताली की गोष्ठी में से गिने गये तिरपन सहस्र और
चार सौ थे॥

४४ सो सब जो गिने गये थे जिन्हें मूसा और हारून ने गिना
ये हैं और इसराएल के संतानों के प्रधान हर एक अपने अपने
४५ पितरों के घरानों में प्रधान था बारह थे। सो वे सब जो
इसराएल के संतानों में से अपने पितरों के घरानों में से बीस
बरस से लेके ऊपर लों गिने गये सब जो इसराएल में लड़ाई
४६ के योग्य थे। अर्थात् सब जो गिने गये थे सो छः लाख तीन
सहस्र और पांच सौ पचास थे॥

४७ परन्तु लावी अपने पितरों की गोष्ठी के समान उन्हों में गिने
४८। ४९ नहीं गये। और परमेश्वर मूसा से कहके बोला। केवल
लावी की गोष्ठी को मत गिन और उन्हें इसराएल के संतानों
५० की गिनती में मत मिला। परन्तु लावियों को साक्षी के तंबू
और उस की समस्त बस्तु पर ठहरा वे तंबू को और उस के
पात्रों को उठाया करें और उस की सेवा करें और तंबू के आस
५१ पास छावनी करें। और जब तंबू आगे बढ़े तब लावी उसे
गिरावें और जब तंबू को खड़ा करना हो तब लावी उसे खड़ा
करें और जो परदेशी उस के पास आवे सो प्राण से मारा जावे।
५२ और इसराएल के संतानों में हर एक अपनी अपनी छावनी में
हर एक मनुष्य अपनी समस्त सेना में अपने ही झंडे के पास

५३ अपना अपना तंबू खड़ा करे। परन्तु लावी साक्षी के तंबू के
आस पास डेरा करें जिसतें इसराएल के संतानों की मंडली पर
५४ कोप न पड़े और लावी साक्षी के तंबू की रखवाली करें। सो
जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी इसराएल के संतानों
ने उन सभों के समान किया॥

दूसरा पर्ब्ब।

१। २ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला। कि
इसराएल के संतानों में से हर एक जन अपना झंडा अपने
पितरों के घराने की ध्वजा के संग मंडली के तंबू के आस पास
दूर डेरा करे॥
३ और पूरब दिशा में सूर्य्य के उदय की ओर यहूदाह की
छावनी अपनी समस्त सेना में झंडा गाड़े और अम्मिनदब का
४ बेटा नहशून यहूदाह के संतान का प्रधान होवे। और उस
की सेना और जो उन में गिने गये सो चौहत्तर सहस्र छः सौ
५ थे। और उन के पास इशकार की गोष्ठी डेरा करे और सुग्र
६ का बेटा नतनिएल इशकार के संतान का प्रधान होवे। और
उस की सेना और वे जो उन में गिने गये सो चौवन सहस्र
७ चार सौ थे। फिर ज़बुलून की गोष्ठी और हेलून का पुत्र
८ अलीयाब ज़बुलून के संतान का प्रधान होवे। और उस की
सेना और सब जो उन में गिने गये सो सत्तावन सहस्र चार
९ सौ थे। सब जो यहूदाह की छावनी में गिने गये उन की
समस्त सेनों में एक लाख छियासी सहस्र चार सौ थे ये पहिले
बढ़े॥
१० और दक्खिन दिशा की ओर रूबिन की छावनी के झंडे
उन की सेना के समान होवें और शदेऊर का पुत्र इलिसूर
११ रूबिन के संतान का प्रधान होवे। और उस की सेना और

१२ जो उन में गिने गये सो छियालीस सहस्र पांच सौ थे। और
उस के पास समऊन के संतान की गोष्ठी डेरा करे और सूरिशट्टी
१३ का बेटा सलूमिएल समऊन के संतान का प्रधान होवे। और
उस की सेना और जो उन में गिने गये सो उनसठ सहस्र तीन
१४ सौ थे। और जद की गोष्ठी और रऊएल का बेटा इलियासफ़ जद
१५ के संतान का प्रधान होवे। और उस की सेना और जो उन
१६ में गिने गये सो पैंतालीस सहस्र छ: सौ पचास थे। सब
जो रूबिन की छावनी में गिने गये उन की समस्त सेनाओं में
एक लाख एकावन सहस्र चार सौ पचास थे और वे दूसरी
पांती में बढ़े॥

१७ तब मंडली के तंबू लावी की छावनी के मध्य में आगे बढ़े
जैसा वे डेरा करें वैसा आगे बढ़ें हर एक मनुष्य अपने स्थान
में अपने अपने झंडे के पास॥

१८ पश्चिम दिशा में इफ़रायम की छावनी उन की सेनों के
समान झंडा खड़ा होवे और अम्मिहूद का बेटा इलिसमः
१९ इफ़रायम के बेटों का प्रधान होवे। और उस की सेना और
२० जो उन में गिने गये सो चालीस सहस्र पांच सौ थे। और उस
के पास मुनस्सी की गोष्ठी और फ़िदाहसूर का बेटा जमलीएल
२१ मुनस्सी के संतान का प्रधान होवे। और उस की सेना और
२२ जो उन में गिने गये सो बत्तीस सहस्र दो सौ थे। और बिनयमीन
की गोष्ठी और जिद:ऊनी का बेटा अबिदान बिनयमीन के संतान
२३ का प्रधान होवे। और उस की सेना और जो उन में गिने गये
२४ सो पैंतीस सहस्र चार सौ थे। सब जो इफ़रायाम की छावनी
में गिने गये उन की समस्त सेनाओं में एक लाख आठ सहस्र
एक सौ थे और वे तीसरी पांती में बढ़े॥

२५ दान की छावनी का झंडा उन की सेना की उत्तर
दिशा में होवे और अम्मिशट्टी का बेटा अख़िअज़र दान के

२६ संतान का प्रधान होवे । और उस की सेना और जो उन में
२७ गिने गये सो बासठ सहस्र सात सौ थे । और उस के पास
यसर की गोष्ठी डेरा करे और अकरान का बेटा फ़जिऋएल
२८ यसर के संतान का प्रधान होवे । और उस की सेना और जो
२९ उन में गिने गये सो एकतालीस सहस्र पांच सौ थे । और
नफ़ताली की गोष्ठी और ऐनान का बेटा अख़िरअ: नफ़ताली
३० के संतान का प्रधान होवे । और उस की सेना और जो उन
३१ में गिने गये सो तिरपन सहस्र चार सौ थे । सब जो दान
की छावनी में गिने गये सो एक लाख सत्तावन सहस्र छ: सौ
थे वे अपने झंडों को लेके पीछे पीछे बढ़ें ॥

३२ इसराएल के संतानों में जो उन के पितरों के घरानों में
गिने गये थे ये हैं वे सब जो तंबू में उन की छावनियों की
समस्त सेनों में जो गिने गये थे छ: लाख तीन सहस्र पांच
३३ सौ पचास थे । परन्तु जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई
३४ थी लावी इसराएल के संतानों में न गिने गये । और इसराएल
के संतानों ने उन सब आज्ञाओं को जो परमेश्वर ने मूसा से
कही थीं वैसा ही किया हर एक अपने कुल के समान अपने
पितरों के घरानों के समान उन्हों ने अपने अपने झंडों के पास
डेरा किया और वैसा ही आगे बढ़े ॥

तीसरा पर्व्व ।

१ और जिस दिन परमेश्वर ने सीना पहाड़ पर मूसा से बातें
२ किईं हारून और मूसा की पीढ़ी ये हैं । और हारून के बेटों
के ये नाम हैं नदब पहिलौठा और अबिहू इलिअज़र और
३ ईतमर । हारून याजक के बेटों के ये नाम हैं जिन्हें उस ने
याजक के पद की सेवा के लिये स्थापा और अभिषेक किया ।
४ और नदब और अबिहू जब उन्हों ने सीना के अरण्य में

परमेश्वर के आगे उपरी आग चढ़ाई तब परमेश्वर के आगे
निर्बंश मर गये और इलिअज़र और ईतमर अपने पिता हारून
के समीप याजक के पद में सेवा करते थे ॥
५ । ६ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि लावी की गोष्ठी
को समीप ला और उन्हें हारून याजक के आगे कर जिसतें
७ वे उस की सेवा करें। और वे उस की आज्ञा की और मंडली के
तंबू के आगे समस्त मंडली की रक्षा करें जिसतें तंबू की सेवा
८ करें। और वे मंडली के तंबू के सब पात्र और इसराएल के
९ संतानों का पालन करें जिसतें तंबू की सेवा करें। और तू
लावियों को हारून और हारून के बेटों को सौंप दे इसराएल
१० के संतानों में से ये उसे सर्वथा दिये गये। और हारून को
और उस के बेटों को ठहरा कि याजक के पद में सिद्ध रहें और
जो अन्यदेशी पास आवे सो मार डाला जावे ॥
११ । १२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। देख मैं ने इसराएल
के संतानों में से उन सब पहिलौठों की संती जो इसराएल के
संतानों में उत्पन्न होते हैं लावियों को ले लिया सो लावी मेरे
१३ पहिलौठे होंगे। क्योंकि सारे लावी मेरे हैं कि जिस दिन
मैं ने मिस्र की भूमि में सारे पहिलौठे मारे मैं ने इसराएल के
संतानों के सब पहिलौठे क्या मनुष्य के क्या पशु के अपने लिये
पवित्र किये वे मेरे होंगे मैं परमेश्वर हूं ॥
१४ फिर परमेश्वर सीना के अरण्य में मूसा से कहके बोला।
१५ कि लावी के संतानों को उन के पितरों के घराने और उन के
कुल में गिन हर एक पुरुष एक मास से लेके ऊपर लों गिन।
१६ सो परमेश्वर के बचन के समान जैसा उस ने आज्ञा किई थी
१७ मूसा ने उन्हें गिना। सो लावी के पुत्रों के नाम ये हैं जेरसुन
१८ और क़िहात और मिरारी। और जेरसुन के बेटों के नाम उन
१९ के कुल में ये हैं लिबनी और शमई। और क़िहात के बेटे

अपने घराने में अमराम और इज़हार हबरून और उज्ज़िएल
२० हैं । और मिरारी के बेटे अपने घराने में मुहली और मूसी हैं
सो लावी के कुल उन के पितरों के घरानों के समान ये हैं ॥
२१ जेरसुन से लिबनी का घराना और शमई का घराना ये
२२ जेरसुनियों के घराने हैं । जैसा सारे पुरुषों के गिनने के समान
जो उन से गिने गये एक मास से लेके ऊपर लों सात सहस्र
२३ पांच सौ थे । जेरसुनियों के घराने तंबू के पीछे पश्चिम दिशा
२४ में अपना डेरा खड़ा करें । और लएल का बेटा इलियासफ
२५ जेरसुनियों के पितरों के घराने का प्रधान होवे । और मंडली
के तंबू में जेरसुन के बेटों की रखवाली में तंबू और उस के
२६ ओहार और मंडली के तंबू के द्वार के ओहार । और आंगन
के ओहार और उस के द्वार के ओहार जो तंबू और यज्ञवेदी
की चारों ओर है और उस की रस्सियां और उस की सब सेवा
उन की होगी ॥
२७ और क़िहात से अमरामियों का घराना और इसहारियों का
घराना और हबरूनियों का घराना और अज़िएलियों का घराना
२८ ये सब क़िहातियों के घराने हैं । उन के सारे पुरुष अपनी
गिनती के समान एक मास से लेके ऊपर लों सब आठ सहस्र
२९ छः सौ थे पवित्र स्थान की रखवाली करते थे । क़िहात के
३० बेटों के घराने तंबू की दक्खिन दिशा में डेरा खड़ा करें । और
अजिएल का बेटा इलिसफ़न क़िहात के घरानों का प्रधान
हो ॥
३१ और मंजूषा और मंच और दीअट और बेदियां और पवित्र
स्थान के पात्र जिन से सेवा करते हैं ओहार और उन की
३२ समस्त सेवा की सामग्री उन की रखवाली में रहें । और हारून
याजक का बेटा इलिअज़र लावी के प्रधानों का प्रधान सो
पवित्र स्थान की रखवाली करे ॥

३३ मिरारी से मुहलियों का घराना और मूसियों का घराना ये
३४ मिरारी के घराने हैं। और उन के पुरुषों की जो गिनती के समान
एक मास से लेके ऊपर लों सब जो गिने गये थे छः सहस्र
३५ दो सौ थे। और अबिख़ैल का पुत्र सूरिएल मिरारियों के घराने
का प्रधान हो और ये तंबू की उत्तर दिशा में डेरा खड़ा करें।
३६ ये तंबू का पाट और उस के अड़ंगे और उस के खंभे और
उस की चुरगहनी और सब जो उस की सेवा में लगते हैं मिरारी
३७ के बेटों की रखवाली में होवें। और आंगन की चारों ओर के
खंभे और उन की चुरगहनी और उन के खूंटे और उन की
डोरियां॥

३८ परन्तु वे जो तंबू की पूरब ओर मंडली के तंबू के आगे
पूरब दिशा को मूसा और हारून और उस के बेटे वे पवित्र स्थान
की और इसराएल के संतानों की रखवाली करें और जो परदेशी
३९ पास आवे सो मार डाला जावे। लावियों में से सब जो गिने
गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा से उन के
घरानों में गिना सब पुरुष एक मास से लेके ऊपर लों बाईस
सहस्र थे॥

४० फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इसराएल के संतानों के
सारे पहिलौठे पुत्रों को एक मास से लेके ऊपर लों गिने और
४१ उन के नामों की गिनती ले। और मेरे लिये जो परमेश्वर हूं
लावियों को इसराएल के संतानों के सब पहिलौठे बेटों की
संती और लावियों के पशुओं को इसराएल के संतानों के सब
४२ पशुओं की संती जो पहिले उत्पन्न हुए हों ले। और जैसा
परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी मूसा ने इसराएल के संतानों
४३ के समस्त पहिलौठों को गिना। सो सारे पहिलौठे पुरुष
वर्ग उन के नामों की गिनती के समान एक मास से लेके ऊपर
लों जो गिने गये बाईस सहस्र दो सौ तिहत्तर थे॥

४४ । ४५　फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के
संतानों के सारे पहिलौठों की संती लावियों को और उन के
पशुओं की संती लावियों के पशुओं को ले और लावी मेरे
४६ होंगे मैं परमेश्वर हूं । और दो सौ तिहत्तर इसराएल के संतानों
के पहिलौठे जो छुड़ाया जाना है लावियों से अधिक हैं ।
४७ और पवित्र स्थान के शेकल के समान मनुष्य पीछे पांच
४८ शेकल ले एक शेकल बीस गिरह है । और तू उस का मोल
जो गिनती से ऊपर छुड़ाया जाना है हारून और उस के बेटों
४९ को दे । सो मूसा ने उन के छुड़ाने का रोकड़ लिया जो
५० लावियों से छूड़ाये जाने से उबरा था । इसराएल के संतानों
के पहिलौठे में से एक सहस्र तीन सौ पैंसठ पवित्र स्थान के
५१ शेकल से रोकड़ लिया । और मूसा ने उन के रोकड़ को जो
छूड़ाये गये थे परमेश्वर की आज्ञा से हारून और उस के बेटों
को दिया ॥

चौथा पर्व्व ।

१ । २　फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला । क़िहात
के बेटों को लावी के बेटों में उन के पितरों के घराने की ओर
३ उन के कुल की गिनती ले । तीस बरस से लेके पचास बरस
लों सब जो सेना में पैठते हैं कि मंडली के तंबू में सेवा
करें ॥

४　मंडली के तंबू में और उन बस्तुन में जो अति पवित्र हैं
५ क़िहात के बेटों की सेवा यह है । और जब छावनी आगे बढ़े
तब हारून और उस के बेटे आवें और ढांपने के घटाटोप
६ उतारें और उस्से साक्षी की मंजूषा को ढांपें । और उस पर
तुख़स की खालों का घटाटोप डालें और उस के ऊपर नीला
७ कपड़ा बिछावें और उस के बहंगर उस में डालें । और भेंट

की रोटी के मंच पर नीला कपड़ा बिछावें और उस पर पाच
और करछुल और कटोरा और ढांपने के लिये ढपने उस पर
८ रक्खें और नित्य की रोटी उस पर होवे। और उन पर लाल
कपड़ा बिछावें और उसे तुख़स की खालों से ढांपें और उस में
९ बहंगर डालें। फिर नीला कपड़ा लेके प्रकाश की दीअट और
उस के दीपकों को और उस के फूल कतरनियों और उस के
पाच और उस के सब तेल के पाचों पर जिस्से सेवा करते हैं
१० ढांपें। और उसे और उस के सब पाचों को तुख़स की खालों
११ के आड़ में रक्खें और उसे अड़ंगा पर रक्खें। और सोनहली
यज्ञबेदी पर नीला बस्त्र बिछावें और उसे तुख़स की खालों के
१२ ढपने से ढांपें और उस में उस के बहंगर डालें। और समस्त
पाचों को जो पवित्र स्थान की सेवा में आते हैं लेके नीले कपड़ों
में लपेटें और उन्हें तुख़स की खालों से ढांपें और बहंगर पर
१३ रक्खें। और बेदी में से राख निकाल फेंकें और लाल कपड़ा
१४ उस पर बिछावें। और उस के सारे पाच जिस्से वे उस की
सेवा करते हैं अर्थात् धूपावरो मांस के कांटे और फावड़ियां
और कटोरे बेदी के समस्त पाच उस पर रक्खें और उन्हें
तुख़स की खालों से ढांपें और उस में उस के बहंगर डालें।
१५ और जब हारून और उस के बेटे पवित्र स्थान को और उस
की सामग्री को ढांप चुकें तब छावनी के आगे बढ़ने के समय
में क़िहात के संतान उस के उठाने के लिये आवें परन्तु वे
पवित्र बस्तु को न छूवें न हो कि मर जावें मंडली के तंबू
की बस्तें क़िहात के संतानों को उठाने पड़ेंगी॥
१६ और दीपकों के लिये तेल और सुगंध धूप और समस्त तंबू
और सब जो उस में है और उस के पाच हारून याजक का
बेटा इलिअज़र देखा करे॥
१७।१८ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला। कि

लावियों में से क़िहात के घराने की गोष्ठी को काट न डालियो ।
१९ परन्तु उन से ऐसा करो कि वे जीवें और अति पवित्र वस्तुन
के समीप आने से न मरें हारून और उस के बेटे भीतर जावें
और उन में से हर एक को उस की सेवा पर और बोझ उठाने
२० पर ठहरावें । परन्तु जब कि पवित्र वस्तें ढांपी जावें तो वे
उन्हें देखने न आवें जिसतें मर न जावें ॥
२१ । २२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि जैरसुन के
बेटों को भी उन के पितरों के समस्त घराने उन के कुलों
२३ के समान गिनती करो । तीस बरस से लेके पचास बरस लों
सब जो सेवा के लिये भीतर जाते हैं कि मंडली के तंबू की
२४ सेवा करें उन की गिनती करो । जैरसुनियों के कुलों की सेवा
२५ और बोझ उठाने के लिये यही कार्य्य है । और वे तंबू के
ओझल और उस का घटाटोप और तुख़स की खालों का घटाटोप
जो उस पर है और मंडली के तंबू के द्वार का ओट उठावें ।
२६ और आंगन के ओट और आंगन के द्वार का ओट जो तंबू
और वेदी के चारों ओर हैं और उन की रस्सियां और सब
पात्र जो उन की सेवा के कारण हैं और सब कार्य्य जो उन से
२७ किया जाय अवश्य है कि वे करें । जैरसुन के बेटों की सारी सेवा
बोझ उठाने में और सब काम करने में हारून और उस के
बेटों की आज्ञा के समान होवे और तुम उन में से हर एक
२८ का बोझ ठहरा दीजियो । जैरसुन के संतान के कुलों की सेवा
मंडली के तंबू में यह है और वे हारून याजक के बेटे
ईतमर की आज्ञा में हैं ॥
२९ मिरारी के बेटे उन के पितरों के घरानों और उन के कुलों
३० के समान उन की गिनती कर । तीस बरस से लेके पचास
बरस लों उन सब को जो सेना में पहुंचते हैं जिसतें मंडली
३१ के तंबू की सेवा करें गिन । और उस सेना के समान जो मंडली

के तंबू में उन के लिये है उन के बोझ ये ठहरें तंबू के पाट
और उस के अड़ंगे और उस के खंभे और उस की चुरगहनी ।
३२ और आंगन के खंभे जो चारों ओर हैं और उन की चुरगहनी
और उन के खूंटे और उन की रस्सियां और उन की समस्त सामग्री
सेवा समेत और उन की सामग्री के बोझे का नाम ले लेके
३३ गिन । मिरारी के बेटे के कुलों की सेवा जो मंडली के तंबू की
समस्त सेवा के समान यह है वे हारून याजक के बेटे ईतमर
के अधीन रहें ॥
३४ सो मूसा और हारून और मंडली के प्रधानों ने क़िहातियों
के बेटों को उन के पितरों के घरानों के और उन के कुलों के
३५ समान गिना । तीस बरस से लेके पचास बरस लों उन सब
को जो सेना के लिये पहुंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की
३६ सेवा करें एक एक करके गिना । सो वे जो अपने घराने के
३७ समान गिने गये दो सहस्र सात सौ पचास थे । वे सब ये हैं
जो क़िहात के घरानों में से मंडली के तंबू की सेवा के लिये
गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की आज्ञा के
समान जो मूसा के हसते कही थी गिना ॥
३८ और जैरसुन के बेटे जो अपने पितरों के घरानों के समस्त
३९ कुलों के समान गिने गये । तीस बरस से लेके पचास बरस लों
सब जो सेना के लिये पहुंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू की
४० सेवा करें । और वे सब जो उन के पितरों के घरानों और उन
के कुलों के समान गिने गये दो सहस्र छः सौ तीस हुए ।
४१ वे सब ये हैं जो जैरसुन के बेटों के घरानों में से मंडली के
तंबू की सेवा के लिये गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने
परमेश्वर की आज्ञा से गिना ॥
४२ और मिरारी के बेटे के पितरों के घराने और उन के समस्त
४३ कुल जो गिने गये थे । तीस बरस से लेके पचास बरस लों

हर एक जो सेना के लिये पहुंचते हैं जिसतें मंडली के तंबू
४४ की सेवा करें। अर्थात् वे जो उन के कुल में गिने गये थे तीन
४५ सहस्र दो सौ थे। वे सब ये हैं जो मिरारी के बेटे के कुल
में से जो गिने गये जिन्हें मूसा और हारून ने परमेश्वर की
आज्ञा के समान जो मूसा के हसते कही थी गिना॥
४६ सब जो लावियों में से गिने गये थे जिन्हें मूसा और हारून
और इसराएल के प्रधानों ने उन के पितरों के घराने और उन
४७ के कुल के समान गिना। तीस बरस से लेके पचास बरस लों
गिना जो सेवा के लिये पहुंचते हैं जिस में मंडली के तंबू
४८ की सेवा करें और बोझ उठावें। अर्थात् वे जो उन में गिने
४९ गये थे आठ सहस्र पांच सौ अस्सी थे। मूसा के हसते परमेश्वर
की आज्ञा के समान वे गिने गये हर एक अपनी सेवा और
बोझ उठाने के समान जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई
थी वैसा ही वे मूसा से गिने गये॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१। २ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के
संतान को आज्ञा कर कि हर एक कोढ़ी और प्रमेही को और
जो मृत्यु से अशुद्ध है उन को छावनी से बाहर कर देवें।
३ क्या स्त्री और क्या पुरुष तुम उन्हें छावनी से बाहर करो
जिसतें अपनी छावनियों को जिन के मध्य में मैं रहता हूं वे
४ अशुद्ध न करें। सो इसराएल के संतानों ने ऐसा ही किया
और उन्हें छावनी से बाहर कर दिया जैसा परमेश्वर ने मूसा
को आज्ञा किई थी वैसा ही इसराएल के संतानों ने किया॥
५। ६ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के
संतानों को कह कि जब कोई पुरुष अथवा स्त्री परमेश्वर से
विरुद्ध होके ऐसा कोई पाप करे जो मनुष्य करते हैं और वुह

७ प्राणी दोषी ठहरे। तब अपने पाप को जो उन्हों ने किया है मान
लेवें और वुह मूल के संग पांचवां अंश मिलावे और अपने
अपराध के पलटा के लिये उसे देवे जिस का उस ने अपराध
८ किया है। परन्तु यदि अपराध के पलटा देने को उस मनुष्य
का कोई कुटुम्ब न होवे तो प्रायश्चित्त के मेढ़े से अधिक
जिस्से उस के लिये प्रायश्चित्त होवे वुह अपराध की भेंट
परमेश्वर को अर्थात् काहिन को दिई जायगी॥
९ और इसराएल के संतानों की सारी पवित्र वस्तुन की सब
१० भेंटें जो वे चढ़ाते हैं याजक की होंगी। और हर एक मनुष्य
की पवित्र वस्तें उस की होंगी जो कुछ याजक को देगा उस
की होगी॥
११। १२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के
संतानों को कहके बोल कि यदि किसी की पत्नी अलग होके
१३ उस के विरुद्ध कोई अपराध करे। और कोई उस्से व्यभिचार
करे और यह उस के पति से छिपा हो और ढंपा हो और वुह
अशुद्ध हो जावे और उस पर साक्षी न होवे और वुह पकड़ी न जावे।
१४ और उस के पति के मन में झल आवे और वुह अपनी पत्नी
से झल रक्खे और वुह अशुद्ध हो अथवा यदि उस के पति के
मन में झल आवे और वुह अपनी पत्नी से झल रक्खे और वुह
१५ स्त्री अशुद्ध न होवे। तब वुह मनुष्य अपनी पत्नी को याजक
पास लावे और वुह उस के लिये एक ईफ़ा का दसवां भाग जव
का पिसान उस की भेंट के लिये लावे वुह उस पर तेल और
लुबान न डाले क्योंकि वुह झल की भेंट पाप को चेत में लाने
के लिये स्मरण की भेंट है॥
१६ तब याजक उस स्त्री को निकट लावे और परमेश्वर के आगे
१७ उसे खड़ी करे। और याजक मट्टी के एक पात्र में शुद्ध जल
लेवे और तंबू के आंगन की धूल लेके उस पानी में मिलावे।

१८ फिर याजक उस स्त्री को परमेश्वर के आगे खड़ी करे और उस
का सिर उघारे और स्मरण की भेंट जो झल की भेंट है उस
के हाथों पर रक्खे और याजक उस कडुवे पानी को जो धिक्कार
१९ के लिये है अपने हाथ में लेवे। और उस स्त्री को किरिया
देके कहे कि यदि किसी ने तुझ से कुकर्म्म नहीं किया और
तू केवल अपने पति को छोड़ अशुद्ध मार्ग में नहीं गई तो तू
इस कडुवे पानी के गुण से जो धिक्कार के लिये है बची रहे।
२० परन्तु यदि तू अपने पति को छोड़के भटक गई हो और
अशुद्ध हुई हो और अपने पति को छोड़ किसी दूसरे से कुकर्म्म
२१ किया हो। और याजक उस स्त्री को स्राप की किरिया देवे
और याजक उस स्त्री से कहे कि परमेश्वर तेरे लोगों के मध्य
में तुझे स्राप देवे कि परमेश्वर तेरी जांघ को सड़ावे और तेरे
२२ पेट को फुलावे। और यह पानी जो स्राप का कारण होता है
तेरी अंतड़ियों में जाके तेरा पेट फुलावे और तेरी जांघ को
२३ सड़ावे और वुह स्त्री कहे कि आमीन आमीन। तब याजक
इन धिक्कारों को एक पुस्तक में लिखे और कडुवे पानी से उसे
२४ मिटा दे। और याजक वुह कडुवा पानी जो स्राप का कारण
होता है उस स्त्री को पिलावे तब वुह पानी जो स्राप का कारण
होता है उस में कडुवा पैठेगा॥

२५ तब याजक उस स्त्री के हाथ से झल की भेंट लेके परमेश्वर
२६ के आगे उसे हिलावे और यज्ञबेदी पर चढ़ावे। और उस भेंट
के स्मरण के लिये एक मुट्ठी लेके याजक बेदी पर जलावे और
उस के पीछे वुह पानी उस स्त्री को पिलावे॥

२७ और जब वुह पानी उसे पिलावेगा तब ऐसा होगा कि यदि
वुह अशुद्ध होवे और वुह अपने पति के विरुद्ध कुछ अपराध
किया हो तो वुह पानी जो स्राप का कारण होता है उस के
शरीर में पहुंचके कडवा हो जायगा और उस का पेट फूलेगा

और उस की जांघ सड़ जायगी और वुह स्त्री अपने लोगों में
२८ धिक्कारित होगी। परन्तु यदि वुह स्त्री अशुद्ध न हो परन्तु
शुद्ध होवे तो वुह निर्दोष होगी और गर्भिणी होगी॥
२९ उस स्त्री के कारण जो अपने पति को छोड़के भटकती है
३० और अशुद्ध है झल के लिये यह व्यवस्था है। अथवा जब
पुरुष के मन में झल आवे और वुह अपनी पत्नी से संदेह रक्खे
और स्त्री को परमेश्वर के आगे खड़ी करे और याजक उस पर
३१ ये सब व्यवस्था पूरी करे। तो वुह पुरुष पाप से पवित्र होगा
और वुह स्त्री अपना पाप भोगेगी॥

छठवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के
संतानों को कहके बोल कि जब कोई पुरुष अथवा स्त्री आप
को अलग करने के लिये नसरानी की मनौती ईश्वर के लिये
३ माने। तो वुह दाखरस से और तीक्ष्ण मदिरा से अलग रहे
दाखरस का सिरका अथवा तीक्ष्ण मदिरा का सिरका न पीवे
और अंगूर का कोई रस न पीवे और न हरे न सूखे अंगूर
४ खावे। अपने अलग होने के सब दिनों में कोई बस्तु जो
दाखों से उत्पन्न होती है बीज से लेके उस के छिलके लों न
५ खावे। अपने अलग होने की मनौती के सब दिनों में सिर
पर छुरा न फिरावे जब लों उस के अलग किये गये दिन बीत
न जावें वुह ईश्वर के लिये पवित्र है अपने सिर के बालों को
६ बढ़ने देवे। वुह परमेश्वर के लिये अपने सारे अलग होने के
७ दिनों में लोथ के पास न जावे। वुह अपने माता पिता
अथवा अपने भाई बहिन के लिये जब वे मर जावें आप को
अशुद्ध न करे क्योंकि उस के ईश्वर की स्थापना उस के सिर पर
८ है। वुह अपने अलग होने के सब दिनों में परमेश्वर के लिये

९ पवित्र है । और यदि कोई मनुष्य अकस्मात् उस के पास मर
जावे और उस के सिर के स्थापित को अपवित्र करे तो वुह
अपने पवित्र होने के दिन अपना सिर मुड़ावे सातवें दिन सिर
१० मुड़ावे । और आठवें दिन दो पिण्डुकी अथवा कपोत के दो
११ बच्चे मंडली के तंबू के द्वार पर याजक पास लावे । और याजक
एक को पाप की भेंट के लिये और दूसरे को बलिदान की भेंट
के लिये चढ़ावे और उस अपराध का जो मृतक के कारण से
हुआ प्रायश्चित्त देवे और अपने सिर को उसी दिन पवित्र करे।
१२ और अपने अलग होने के दिनों को परमेश्वर के लिये स्थापित
करे और पहिले बरस का एक मेम्ना अपराध की भेंट के लिये
लावे परन्तु उस के आगे के दिन गिने न जायेंगे क्योंकि उस
की भेंट अपवित्र हो गई ॥
१३ सो नसरानी होने के लिये यह व्यवस्था है जब उस के अलग
होने के दिन पूरे हों तब वुह मंडली के तंबू के द्वार पर लाया
१४ जावे । और वुह परमेश्वर के लिये अपनी भेंट पहिले बरस का
एक निर्दोष मेम्ना बलिदान की भेंट के लिये और पाप की भेंट
के लिये पहिले बरस की एक भेड़ी और कुशल की भेंट के लिये
१५ एक निर्दोष मेढ़ा । और एक टोकरी अख़मीरी रोटियां और
चोखे पिसान की पूरी और अख़मीरी लिट्टी तेल में चुपड़ी हुई
१६ उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन । और याजक उन्हें
परमेश्वर के आगे लाके उस के पाप की भेंट को और उस के
१७ बलिदान की भेंट को चढ़ावे । और परमेश्वर के कारण एक
टोकरा अख़मीरी रोटी के साथ उस मेढ़े को चढ़ावे और याजक
१८ उस के भोजन की भेंट और उस का तपावन चढ़ावे । तब वुह
नसरानी मंडली के तंबू के द्वार पर अपने अलग होने के लिये
सिर मुड़ावे और उस के अलग होने के सिर के बालों को लेवे
और उस आग में जो कुशल की भेंट के बलिदान के तले है

१९ डाल देवे। जब अलग होने के लिये मुड़ाया जावे तब याजक
उस मेढ़े का सिझाया हुआ कांधा और टोकरी में से एक
अख़मीरी फुलका और एक अख़मीरी लिट्टी लेके उस नसरानी
२० के हाथों पर रक्खे। फिर याजक उन्हें हिलाने की भेंट के
लिये परमेश्वर के आगे हिलावे यह हिलाने की छाती और
उठाने का कांधा याजक के लिये पवित्र है उस के पीछे नसरानी
२१ दाखरस पी सके। नसरानी की मनौती की व्यवस्था यह है
कि परमेश्वर के लिये उस के अलग होने की भेंट जो उस के
हाथ पहुंचने से अधिक उस की मनौती के समान अपने अलग
होने की व्यवस्था के पीछे अवश्य यों करे॥
२२। २३ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि हारून को
और उस के बेटों को कह कि इसराएल के संतानों को यों
आशीष देके उन्हें कहियो॥
२४ कि परमेश्वर तुझे आशीष देवे और तेरी रक्षा करे॥
२५ परमेश्वर अपना रूप तुझ पर प्रकाश करे और तुझ पर
अनुग्रह करे॥
२६ परमेश्वर अपना रूप तुझ पर प्रकाश करे और तुझे कुशल
देवे॥
२७ और वे मेरा नाम इसराएल के संतानों पर रक्खें और मैं
उन्हें आशीष देऊंगा॥

सातवां पर्व्व।

१ और ऐसा हुआ कि जिस दिन मूसा तंबू खड़ा कर चुका
और उसे और उस की समस्त सामग्री को अभिषेक करके पवित्र
किया और यज्ञवेदी को उस के समस्त पात्र सहित अभिषेक
२ करके पवित्र किया। तब इसराएल के अध्यक्ष जो अपने पितरों
के घरानों में प्रधान और गोष्ठियों के अध्यक्ष और उन में जो

३ गिने गये उन के ऊपर थे भेंट लाये। और ढांपी हुई छः
गाड़ियां और बारह बधिया बैल अपनी भेंट परमेश्वर के आगे
लाये दो दो अध्यक्षों के लिये एक एक गाड़ी और हर एक की
४ ओर से एक एक बैल सो वे उन्हें तंबू के आगे लाये। तब
५ परमेश्वर ने मूसा से कहा। कि यह उन से ले जिसतें वे
मंडली के तंबू की सेवा में आवें और उन्हें लावियों को दे हर
६ एक को उस की सेवा के समान। सो मूसा ने गाड़ियां और
७ बैल लेके उन्हें लावियों को दिया। दो गाड़ियां और चार बैल
८ उस ने जेरसुन के बेटों को उन की सेवा के समान दिये। और
चार गाड़ियां और आठ बैल मिरारी के संतान को जो हारून
याजक के पुत्र ईतमर के अधीन थे उन की सेवा के समान
९ दिये। परन्तु उस ने क़िहात के बेटों को कुछ न दिया क्योंकि
पवित्र स्थान की सेवा जो उन के लिये ठहराई गई यह थी
कि वे अपने कांधों पर उठाके ले चलें॥

१० और जिस दिन कि यज्ञबेदी अभिषेक किई गई अध्यक्षों ने
उस के स्थापित के लिये चढ़ाई अर्थात् अध्यक्षों ने यज्ञबेदी के
११ आगे अपनी भेंट चढ़ाई। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि
हर एक अध्यक्ष यज्ञबेदी को स्थापित करने के लिये एक एक
दिन अपनी अपनी भेंट चढ़ावे॥

१२ सो पहिले दिन यहूदाह की गोष्ठी में से अम्मिनदब के पुत्र
१३ नहशून ने अपनी भेंट चढ़ाई। और उस की भेंट एक सौ
तीस शेक़ल एक चांदी का थाल जिस की तौल सत्तर शेक़ल
थी चांदी का एक कटोरा पवित्र स्थान के शेक़ल से ये दोनों
के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे
१४ पिसान से भरे हुए। एक करछुल दस शेकल सोने की धूप से
१५ भरी हुई। बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा
१६ पहिले बरस का एक मेम्ना। पाप की भेंट के लिये एक बकरी

१७ का मेम्ना । और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल
पांच मेढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने वुह अम्मिनदब
के बेटे नहशून की भेंट ॥

१८ दूसरे दिन सुग्र के बेटे ननिएल ने जो इशकार का
१९ अध्यक्ष था अपनी भेंट चढ़ाई । और उस की भेंट एक सौ
तीस शेकल भर चांदी का एक थाल चांदी का एक कटोरा सत्तर
शेकल का पवित्र स्थान की तौल से ये दोनों के दोनों भोजन
की भेंट के लिये तेल से मले हुए चोखे पिसान से भरे हुए ।
२० सोने की एक करछुल दस शेकल भर धूप से भरी हुई ।
२१ एक बछड़ा एक मेढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना बलिदान की
२२ भेंट के लिये । पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना ।
२३ और कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेढ़े
पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने सुग्र के बेटे ननिएल
की भेंट यह थी ॥

२४ तीसरे दिन हैलून के पुत्र इलिअब ने चढ़ाई जो ज़बुलून
२५ के वंश का अध्यक्ष था । उस की भेंट एक सौ तीस शेकल
चांदी का एक थाल सत्तर शेकल का चांदी का कटोरा पवित्र
स्थान की शेकल से दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये
२६ तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए । सोने की एक
२७ करछुल दस शेकल भर धूप से भरी हुई । एक बछड़ा एक
मेढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना बलिदान की भेंट के लिये ।
२८ । २९ बकरी का एक मेम्ना पाप की भेंट के लिये । और कुशल
की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे
पहिले बरस के पांच मेम्ने हैलून के पुत्र इलिअब की भेंट यह
थी ॥

३० चौथे दिन शदेऊर के बेटे इलिसूर ने चढ़ाई जो रूबिन के
३१ वंश का अध्यक्ष था । उस की भेंट यह थी चांदी का एक

थाल एक सौ तीस शेकल का चांदी का एक कटोरा सत्तर शेकल
का पवित्र स्थान के शेकल से वुह दोनों के दोनों भोजन
की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए।
३२ सोने की एक करछुल दस शेकल भर धूप से भरी हुई।
३३ बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा पहिले बरस
३४ का एक मेम्ना। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना।
३५ और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेढ़े
पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने शदेऊर के बेटे इलिसूर
की भेंट यह थी॥

३६ पांचवें दिन सूरिसद्दी के बेटे सलूमिएल ने जो शमऊन के
३७ वंश का अध्यक्ष था अपनी भेंट चढ़ाई। उस की भेंट चांदी
का एक थाल एक सौ तीस शेकल का चांदी का एक कटोरा
सत्तर शेकल का पवित्र स्थान के शेकल से वुह दोनों के दोनों
भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे
३८ हुए। सोने की एक करछुल दस शेकल भर की धूप से भरी
३९ हुई। बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा पहिले
४० बरस का एक मेम्ना। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक
४१ मेम्ना। और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल
पांच मेढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने सूरिसद्दी के बेटे
सलूमिएल की भेंट यह थी॥

४२ छठवें दिन दऊएल के बेटे इलियासफ ने चढ़ाई जो जद
४३ के वंश का अध्यक्ष था। उस की भेंट चांदी का एक थाल
एक सौ तीस शेकल का चांदी का एक कटोरा सत्तर शेकल
का पवित्र स्थान के शेकल से वुह दोनों के दोनों भोजन की
भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए।
४४ सोने की एक करछुल दस शेकल भर की धूप से भरी हुई।
४५ बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा पहिले बरस

४६ का एक मेम्ना। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना।
४७ और कुशल की भेंट के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे
पहिले बरस के पांच मेम्ने दऊएल के बेटे इलियासफ की भेंट
यह थी॥

४८ सातवें दिन अम्मिहूद के बेटे इलिसमः ने जो इफ़रायम
४९ के बंश का अध्यक्ष था। उस की भेंट एक सौ तीस शेकल
चांदी का एक कटोरा सत्तर शेकल का पवित्र स्थान के शेकल
से यह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये तेल से मिले
५० हुए चोखे पिसान से भरे हुए। सोने की एक करछुल दस शेकल
५१ भर की धूप से भरी हुई। बलिदान की भेंट के लिये एक
५२ बछड़ा एक मेढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना। पाप की भेंट के
५३ लिये एक बकरी का मेम्ना। और कुशल की भेंटों के बलिदान
के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे पहिले बरस के पांच
मेम्ने अम्मिहूद के बेटे इलिसमः की भेंट यह थी॥

५४ आठवें दिन फिदाहसूर के बेटे जमलिएल ने जो मुनस्सी
५५ के बंश का अध्यक्ष था। उस की भेंट चांदी का एक थाल
एक सौ तीस शेकल का चांदी का एक कटोरा सत्तर शेकल
का पवित्र स्थान के शेकल से वुह दोनों के दोनों भोजन की भेंट
५६ के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए। सोने की
५७ एक करछुल दस शेकल भर की धूप से भरी हुई। बलिदान
की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा पहिले बरस का एक
५८ । ५९ मेम्ना। पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना। और
कुशल की भेंट के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच
बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने फ़िदाहसूर के बेटे जमलिएल
की भेंट यह थी॥

६० नवें दिन जिद्‌ऊनी के बेटे अबिदान ने जो बिनयमीन
६१ के बंश का अध्यक्ष था। उस की भेंट चांदी का एक थाल

एक सौ तीस शेकल का चांदी का एक कटोरा सत्तर शेकल का
पवित्र स्थान के शेकल से यह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के
६२ लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए। सोने की एक
६३ करछुल दस शेकल भर की धूप से भरी हुई। बलिदान की
भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना।
६४ । ६५ पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना। और कुशल
की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे
पहिले बरस के पांच मेम्ने जिदःऊनी के बेटे अबिदान की
भेंट यह थी॥

६६ दसवें दिन अम्मिसट्टाय के बेटे अख़िअज़र ने जो दान के
६७ बंश का अध्यक्ष था। उस की भेंट चांदी का एक थाल एक
सौ तीस शेकल का चांदी का एक कटोरा सत्तर शेकल का पवित्र
स्थान के शेकल से वुह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये
६८ तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए। सोने की एक
६९ करछुल दस शेकल भर की धूप से भरी हुई। बलिदान की भेंट
के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना।
७० । ७१ पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना। और कुशल
की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे
पहिले बरस के पांच मेम्ने अम्मिसट्टाय के बेटे अख़िअज़र की
भेंट यह थी॥

७२ ग्यारहवें दिन अक़रून के बेटे फ़ज़िअिएल ने जो यसर के
७३ बंश का अध्यक्ष था। उस की भेंट चांदी का एक थाल एक
सौ तीस शेकल का चांदी का एक कटोरा सत्तर शेकल का पवित्र
स्थान के शेकल से वुह दोनों के दोनों भोजन की भेंट के लिये
७४ तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए। सोने की एक
७५ करछुल दस शेकल भर की धूप से भरी हुई। बलिदान की
भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा पहिले बरस का एक मेम्ना।

७६ । ७७ पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना । और कुशल
की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेढ़े पांच बकरे
पहिले बरस के पांच मेम्ने अक़रून के बेटे फ़ज़िअिएल की भेंट
यह थी ॥

७८ बारहवें दिन अेनान के बेटे अख़िरअ: ने जो नफ़ताली के
७९ संतान के बंश का अध्यक्ष था । उस की भेंट चांदी का एक
थाल एक सौ तीस शेकल का और चांदी का एक कटोरा सत्तर
शेकल का पवित्र स्थान के शेकल से वुह दोनों के दोनों भोजन
की भेंट के लिये तेल से मिले हुए चोखे पिसान से भरे हुए ।
८० सोने की एक करछुल दस शेकल भर की धूप से भरी हुई ।
८१ बलिदान की भेंट के लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा पहिले बरस
८२ का एक मेम्ना । पाप की भेंट के लिये एक बकरी का मेम्ना ।
८३ और कुशल की भेंटों के बलिदान के लिये दो बैल पांच मेढ़े
पांच बकरे पहिले बरस के पांच मेम्ने अेनान के बेटे अख़िरअ:
की भेंट यह थी ॥

८४ जिस दिन यज्ञवेदी इसराएल के अध्यक्षों से अभिषेक किई
गई उस की स्थापित यह चांदी के बारह थाल और चांदी के
८५ बारह कटोरे और सोने की बारह करछुल थीं । चांदी का हर
एक थाल तौल में एक सौ तीस शेकल का और हर एक कटोरा
सत्तर शेकल भर का सब चांदी के पात्र पवित्र स्थान के तौल से
८६ दो हज़ार चार सौ शेकल थे । सोने की बारह करछुल धूप से
भरी हुई एक करछुल दस शेकल भर की पवित्र स्थान के शेकल से
८७ करछुलों का सब सोना एक सौ बीस शेकल था । बलिदान की
भेंट के लिये बारह बैल बारह मेढ़े पहिले बरस के बारह
मेम्ने उन की भोजन की भेंट सहित और पाप की भेंट के
८८ लिये बकरी के बारह मेम्ने । और कुशल की भेंटों के
बलिदान के लिये चौबीस बैल साठ मेढ़े साठ बकरियां पहिले

बरस के साठ मेम्ने बेदी के अभिषेक करने के पीछे उस के
स्थापित के लिये यह था ॥
८६ और जब मूसा ने उस्से बात करने के लिये मंडली के तंबू
में प्रवेश किया तब उस ने उस ढकने के ऊपर से जो साक्षी
की मंजूषा पर था दोनों करोबियों के मध्य में से वुह शब्द
सुना जो उस्से कहता था ॥

आठवां पर्व्व ।

१ । २ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा । हारून से कह और
उसे बोल जब तू दीपकों को बारे तो सातों दीपक का
३ उंजियाला दीअट के झाड़ के सन्मुख होवे । सो हारून ने
ऐसा ही किया उस ने दीअट के झाड़ के सन्मुख उस के दीपकों
४ को बारा जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी । और
दीअट के झाड़ की बनावट पीटे हुए सोने से थी उस के खंभे
से उस के फूल लों पीटे हुए सोने का था उस नमूने के समान
जो परमेश्वर ने मूसा को दिखाया था उस ने वैसा ही उस झाड़
को बनाया ॥
५ । ६ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा । कि लावियों को
इसराएल के संतानों में से अलग कर और उन्हें पवित्र कर ।
७ और उन्हें पवित्र करने के लिये तू उन से यों कीजियो कि शुद्ध
करने का जल उन पर छिड़क और वे अपने समस्त देह को
८ मुड़ावें और अपने कपड़े धोवें और आप को पावन करें । तब
वे एक बछड़ा उस के भोजन की भेंट के साथ तेल से मिला
हुआ चोखा पिसान लेवें और तू पाप की भेंट के लिये दूसरा
९ बछड़ा लीजियो । और लावियों को मंडली के तंबू के आगे
लाइयो और इसराएल के संतानों की समस्त मंडली को एकट्ठी
१० करियो । और लावियों को परमेश्वर के आगे लाना और

११ इसराएल के संतान अपने हाथ लावियों पर रक्खें। और हारून
लावियों को इसराएल के संतानों में से हिलाने की भेंट के लिये
परमेश्वर के आगे चढ़ावे जिसतें वे परमेश्वर की सेवा करें।
१२ और लावी अपने हाथ बैलों के सिरों पर रक्खें और तू एक
को पाप की भेंट और दूसरे को बलिदान की भेंट के लिये
जिसतें लावियों के लिये प्रायश्चित्त होवे परमेश्वर के लिये
चढ़ाइयो॥
१३ फिर तू लावियों को हारून और उस के बेटों के आगे खड़ा
कर दीजियो और उन्हें परमेश्वर के आगे हिलाने की भेंट के
१४ लिये चढ़ाइयो। और तू लावियों को इसराएल के संतानों में
१५ से अलग करियो और लावी मेरे होंगे। और उस के पीछे लावी
मंडली के तंबू में सेवा के निमित्त पहुंचें और तू उन्हें पवित्र
१६ करियो और उन्हें हिलाने की भेंट के लिये चढ़ाइयो। क्योंकि
वे सब के सब इसराएल के संतानों में से मुझे दिये गये
इसराएल के संतानों के सब पहिलौठों की संती हर एक की संती
१७ जो पहिले उत्पन्न होता है मैं ने उन्हें ले लिया है। क्योंकि
इसराएल के संतानों के सारे पहिलौठे क्या मनुष्य के क्या पशु
के मेरे हैं जिस दिन मैं ने मिस्र देश के हर एक पहिलौठे को
१८ मारा मैं ने उन को अपने लिये पवित्र किया। और इसराएल
के संतानों के सारे पहिलौठों की संती मैं ने लावियों को ले
१९ लिया है। और मैं ने इसराएल के संतानों में से सब लावियों
को हारून और उस के बेटों को दिया जिसतें मंडली के तंबू
में इसराएल के संतानों की संती सेवा करें और इसराएल के
संतानों के लिये प्रायश्चित्त देवें जिसतें इसराएल के संतानों
पर जब वे पवित्र स्थान के पास आवें मरी न पड़े॥
२० सो जैसा कि परमेश्वर ने लावियों के विषय में मूसा को
आज्ञा किई थी मूसा और हारून और इसराएल के संतानों की

सारी मंडली ने लावियों से वैसा ही किया इसराएल के
२१ संतानों ने उन से वैसा ही किया। और लावी पवित्र किये गये
और उन्हों ने अपने कपड़े धोये और हारून ने उन्हें हिलाने
की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे चढ़ाया और हारून ने उन
२२ के लिये प्रायश्चित्त दिया जिसतें उन्हें पवित्र करे। और उस
के पीछे लावी अपनी सेवा करने को हारून और उस के संतानों
के आगे मंडली के तंबू में गये जैसा कि परमेश्वर ने लावियों के
विषय में मूसा को आज्ञा किई थी उन्हों ने वैसा ही उन से किया॥
२३ । २४ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। लावियों का
व्यवहार यह रहे कि वे पचीस बरस से लेकर ऊपर लों मंडली
२५ के तंबू में जाके सेवा में रहें। और जब पचास बरस के हों
२६ तो सेवकाई से रहि जावें और फिर सेवा न करें। परन्तु
मंडली के तंबू में अपने भाइयों के साथ रखवाली किया करें
और सेवा न करें तू लावियों से रक्षा के विषय में योंहीं
कीजियो॥

नवां पर्व्व।

१ और मिस्र के देश से निकलने के दूसरे बरस के पहिले मास
२ में परमेश्वर ने सीना के अरण्य में मूसा से कहा। कि इसराएल
के संतान उस के ठहराये हुए समय में फ़सह का पर्व्व करें।
३ इस मास की चौदहवीं तिथि की सांझ के ठहराये हुए समय
में उसे करियो उस की समस्त विधिन और उस की समस्त आचारों
४ के समान उसे करियो। सो मूसा ने इसराएल के संतानों को
५ कहा कि वे फ़सह का पर्व्व करें। और उन्हों ने पहिले मास की
चौदहवीं तिथि की सांझ को सीना के अरण्य में फ़सह का पर्व्व
किया जैसा कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी इसराएल
के संतानों ने वैसा ही किया॥

६ और वहां कितने जन थे जो किसी मनुष्य की लोथ के
कारण से अपवित्र हुए थे और वे उस दिन फ़सह का पर्व्व न कर
७ सके और वे उस दिन मूसा और हारून के पास आये। और
उन मनुष्यों ने उस्से कहा कि हम मनुष्य की लोथ के कारण
से अपवित्र हैं किस लिये हम रोके जावें कि इसराएल के
संतानों में ठहराये हुए समय में परमेश्वर के लिये भेंट न
८ लावें। तब मूसा ने उन्हें कहा कि ठहर जाओ और मैं सुनूंगा
९ कि परमेश्वर तुम्हारे विषय में क्या आज्ञा करेगा। तब
१० परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के संतानों से
कहके बोल कि यदि कोई तुम्में से अथवा तुम्हारे बंश में से
किसी लोथ के कारण से अशुद्ध होवे अथवा यात्रा में दूर होवे
११ तथापि वुह परमेश्वर के लिये फ़सह का पर्व्व करे। दूसरे मास
की चौदहवीं तिथि की सांझ को वे उसे करें अख़मीरी रोटी
१२ और कड़वी तरकारी के साथ उसे खावें। वे बिहान लों उस
में से कुछ रख न छोड़ें और न उस की कोई हड्डी तोड़ी जावे
१३ फ़सह की समस्त विधि के समान उसे करें। परन्तु जो मनुष्य
शुद्ध है और यात्रा में नहीं है और यदि फ़सह का पर्व्व न करे
तो वही प्राणी अपने लोगों में से काट डाला जायगा क्योंकि
वुह ठहराये हुए समय में परमेश्वर की भेंट न लाया वुह जन
१४ अपना पाप भोगेगा। और यदि कोई परदेशी तुम्में टिके और
फ़सह का पर्व्व परमेश्वर के लिये किया चाहे तो वुह फ़सह
के पर्व्व को उस विधि और रीति के समान करे तुम्हारे लिये
क्या परदेशी और क्या देशी की एक ही विधि होगी॥

१५ और जिस दिन तंबू खड़ा किया गया मेघ ने साक्षी के
तंबू को ढांप लिया और सांझ से लेके बिहान लों तंबू पर
१६ आग सी दिखाई देती थी। सो सदा ऐसा ही था कि मेघ उसे
१७ ढांपता था और रात को आग सी दिखाई देती थी। और जब

तंबू पर से मेघ उठाया जाता था तब उस के पीछे इसराएल
के संतान कूच करते थे और जहां मेघ आके ठहरता था तहां
१८ इसराएल के संतान डेरा करते थे। इसराएल के संतान
परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते थे और परमेश्वर की आज्ञा से
डेरा करते थे जब लों तंबू पर मेघ रहता था वे डेरे में चैन
१९ करते थे। और जब बहुत दिन लों तंबू पर मेघ ठहरता था
तब इसराएल के संतान परमेश्वर की आज्ञा मानते और कूच
२० न करते थे। और ऐसे ही जब मेघ थोड़े दिन लों तंबू पर
ठहरता था वे परमेश्वर की आज्ञा के समान अपने डेरे में रहते
२१ थे और परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते थे। और यों होता
था कि जब सांझ से बिहान लों मेघ ठहरता था और बिहान
को उठाया जाता था तब वे कूच करते थे चाहे दिन चाहे
२२ रात जब मेघ उठाया जाता था वे कूच करते थे। अथवा दो
दिन अथवा एक मास अथवा एक बरस मेघ तंबू पर रहता
था तब इसराएल के संतान अपने डेरों में रहते थे और कूच
न करते थे परन्तु जब वुह ऊपर उठाया जाता था तब वे
२३ कूच करते थे। परमेश्वर की आज्ञा से वे तंबू में चैन करते थे
और परमेश्वर की आज्ञा से कूच करते थे परमेश्वर की आज्ञा जो
मूसा के हसते होती थी वे परमेश्वर की आज्ञा को पालन करते
थे॥

दसवां पर्ब्ब ।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि अपने लिये
चांदी के दो नरसिंगे एक ही टुकड़े से बना कि मंडली के
बुलाने के और छावनी के कूच करने के कार्य्य के लिये होवें।
३ और जब वे उन्हें फूंकें तब सारी मंडली तेरे पास मंडली के तंबू
४ के द्वार पर आप को एकट्ठी करे। और यदि एक ही फूंका जावे

तब अध्यक्ष जो इसराएलियों के सहस्रों के प्रधान हैं तेरे पास
५ एकट्ठे होवें। और जब तुम छोटे बड़े शब्द से फूंको तो पूरब
६ दिशा की छावनी आगे बढ़े। और जब तुम दूसरी बेर छोटे
बड़े शब्द से फूंको तो दक्खिन दिशा की छावनी कूच करे
७ वे अपने कूच के लिये छोटे बड़े शब्द से फूंकें। और जब
कि मंडली को एकट्ठी करना होवे तब फूंको परन्तु छोटे बड़े
८ शब्द मत करो। और हारून याजक के बेटे नरसिंगे फूंका
करें और तुम्हारे लिये तुम्हारे समस्त बंशों में यह बिधि
९ सनातन लों रहे। और यदि तुम बैरियों से जो तुम्हें सताते
हैं अपने देश से लड़ने को निकलो तो तुम नरसिंगे से छोटे
बड़े शब्द फूंको और अपने ईश्वर परमेश्वर के आगे स्मरण किये
१० जाओगे और तुम अपने शत्रुन से बच जाओगे। और अपने
आनंद के दिन और अपने पर्व्वों में और अपने मासों के
आरंभों में अपनी बलिदान की भेंटों और अपने कुशल की
बलिदानों पर नरसिंगे फूंको जिसतें तुम्हारे कारण तुम्हारे
ईश्वर के आगे तुम्हारे स्मरण के लिये होवे मैं परमेश्वर तुम्हारा
ईश्वर हूं॥

११ फिर यों हुआ कि दूसरे बरस के दूसरे मास की बीसवीं
१२ तिथि को मेघ साक्षी के तंबू से ऊपर उठाया गया। तब
इसराएल के संतानों ने सीना के अरण्य से कूच किया और फ़ारान
१३ के अरण्य में मेघ ठहर गया। सो मूसा के द्वारा से परमेश्वर
की आज्ञा के समान उन्हों ने पहिले यात्रा किई॥

१४ और पहिले यहूदाह के संतान की छावनी के झंडे उन के कटकों
के समान चले और उस के कटक पर अम्मिनदब का बेटा
१५ नहसून था। और इशकार के संतान की गोष्ठी की सेना पर
१६ सुग़र का बेटा नतनिएल था। और ज़बुलून के संतान की गोष्ठी
१७ की सेना पर हेलून का बेटा इलिअब था। और जब तंबू

उतारा गया तब जेरसुन के बेटे और मिरारी के बेटों ने तंबू
१८ को उठाके यात्रा किई। फिर रूबिन का झंडा उन की सेनों
के समान आगे बढ़ा और शदेऊर का बेटा इलिसूर उस के
१९ कटक का प्रधान था। और शमऊन के वंश की गोष्ठी की
२० सेना पर सूरिसद्दी का बेटा सलूमिएल था। और जद के वंश
२१ की गोष्ठी की सेना पर दऊएल का बेटा इलियासफ था। फिर
क़िहातियों ने पवित्र स्थान उठाके यात्रा किई और उन के
२२ पहुंचने लों तंबू खड़ा किया जाता था। और इफ़रायम की
छावनी का झंडा उन की सेनों के समान आगे बढ़ा और
अम्मिहूद का बेटा इलिसमः उस के कटक का प्रधान था।
२३ और मुनस्सी के वंश की गोष्ठी की सेनों पर फिदाहसूर का बेटा
२४ जमलिएल था। और बिनयमीन के वंश की गोष्ठी की सेना
२५ पर जिदृःऊनी का बेटा अबिदान था। और सब छावनी के
पीछे दान के संतान की छावनी का झंडा उन की सेनों के समान
आगे बढ़ा और उन की सेना पर अम्मिसट्टाय का बेटा अख़िअज़र
२६ था। और यसर के वंश की गोष्ठी की सेना पर अक़रून का
२७ बेटा फ़ज़िअिएल था। और नफ़ताली के वंश की गोष्ठी की सेना पर
२८ ऐनान का बेटा अख़िरअः था। इसराएल के संतान की यात्रा
जब वे आगे बढ़ते थे अपनी सेनाओं के समान ऐसी ही थी॥
२९ तब मूसा ने मिदयानी रऊएल के बेटे हूबाब को जो मूसा
का ससुर था कहा कि हम उस स्थान को जाते हैं जिस के
बिषय में परमेश्वर ने कहा है कि मैं तुम्हें देऊंगा सो तू हमारे
साथ आ और हम तुझ से भलाई करेंगे क्योंकि परमेश्वर ने
३० इसराएल के बिषय में अच्छा कहा है। और उस ने उसे कहा
कि मैं न जाऊंगा परन्तु मैं अपने देश को और अपने कुटुम्बों
३१ में जाऊंगा। तब उस ने कहा कि हमें न छोड़िये क्योंकि आप
जानते हैं कि अरण्य में हमें क्योंकर डेरा किया चाहिये सो

३२ आप हमारी आंखें की संती होंगे। और यों होगा कि यदि
आप हमारे साथ चलें तो जो भलाई परमेश्वर हम से करेगा
सो हम आप से करेंगे ॥
३३ फिर उन्हों ने परमेश्वर के पहाड़ से तीन दिन की यात्रा
किई और परमेश्वर की बाचा की मंजूषा उन तीन दिन के मार्ग
से आगे गई जिसतें उन के लिये बिश्राम का स्थान ढूंढे।
३४ और जब वे छावनी से बाहर जाते थे तब परमेश्वर का मेघ
दिन को उन के ऊपर ठहरता था ॥
३५ और जब मंजूषा आगे बढ़ती थी तब यों होता था कि
मूसा कहता था कि उठ हे परमेश्वर और तेरे शत्रु छिन्न भिन्न
होवें और जो तुझ से बैर रखते हैं सो तेरे आगे से भागें और
जब वुह ठहरती थी तब वुह कहता था कि हे परमेश्वर सहस्रों
इसराएलियों में फिर आ ॥

ग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ और जब लोग कुड़कुड़ाने लगे तो परमेश्वर के सुन्ने में बुरा
लगा और जब परमेश्वर ने सुना तो उस का क्रोध भड़का और
परमेश्वर की आग उन में फूट निकली और छावनी के एक अंत
२ को भस्म किया। तब लोग मूसा के पास चिल्लाये और जब
३ मूसा ने परमेश्वर से प्रार्थना किई तब आग बुझ गई। और
इस लिये कि परमेश्वर की आग ने उन में ज्वलन किया उस
ने उस स्थान का नाम ज्वलन रक्खा ॥
४ और मिली जुली मंडली जो उन में थी कुइच्छा करने लगी
और इसराएल के संतान भी बिलाप करके कहने लगे कि
५ कौन हमें मांस का भोजन देगा। हमें वुह मछली की सुधि
आती है जो हम सेंत से मिस्र में खाते थे खीरे और ख़रबूजे
६ और गंदना और पियाज़ और लहसुन। परन्तु अब तो हमारा

प्राण सूख गया यहां तो हम मन्न को छोड़ कुछ भी नहीं
७ देखते । और मन्न धनिये की नाईं और उस का रंग मोती का
८ सा था । लोग इधर उधर जाके उसे एकट्ठा करते थे और
चक्की में पीसते थे अथवा उखली में कूटते थे और फुलका
बनाके तवे पर पकाते थे और उस का स्वाद टटके तेल की
६ नाईं था । और रात को जब छावनी पर ओस पड़ती थी तब
मन्न उस पर पड़ता था ॥
१० तब मूसा ने सुना कि लोगों के हर एक घराने का हर एक
मनुष्य अपने अपने तंबू के द्वार पर बिलाप कर रहा है तो
परमेश्वर का क्रोध अत्यंत भड़का और मूसा भी उदास हुआ ।
११ तब मूसा ने परमेश्वर से कहा कि तू अपने दास को क्यों दुःख
दे रहा है और तेरी दृष्टि में मैं ने क्यों नहीं अनुग्रह पाया कि
१२ तू ने इन सब लोगों का बोझ मुझ पर डाला है । क्या मैं ने
इन सारे लोगों को गर्भ में रक्खा क्या मैं ने उन्हें जना है कि
तू मुझे कहता है कि उन्हें उस देश में जिस की तू ने उन के
पितरों से किरिया खाई है अपनी गोद में ले जिस रीति से
१३ पिता दूधपीवक बालक को गोद में लेता है । मैं कहां से
मांस लाऊं कि इन सब लोगों को देऊं क्योंकि वे मुझे रो रोके
१४ कहते हैं कि हमें खाने को मांस दे । मैं अकेला इन सब
लोगों का भार उठा नहीं सक्ता क्योंकि मेरे लिये बहुत भारी
१५ है । और यदि तू मुझ से यों हीं करता है तो मुझे मारके अलग
कर और यदि मैं तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाये हूं तो मैं अपनी
बिपत्ति न देखूं ॥
१६ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि इसराएल के प्राचीनों में
से सत्तर पुरुष जिन्हें तू प्राचीन और प्रधान जानता है मेरे
लिये बटोर और उन्हें मंडली के तंबू पास ला और वे तेरे संग
१७ वहां खड़े रहें । और मैं उतरूंगा और वहां तेरे साथ बातें

करूंगा और मैं उस आत्मा में से जो तुझ पर है लेकर उन
पर डालूंगा कि तेरे साथ लोगों का बोझ उठावें जिसतें तू
१८ अकेला उसे न उठावे। और लोगों से कह कि कल आप को
पवित्र करो और तुम मांस खाओगे क्योंकि रो रोके तुम्हारा
यह कहना परमेश्वर के कानों में पहुंचा कि कौन हमें मांस
खाने को देगा क्योंकि हम तो मिस्र ही में भले थे सो परमेश्वर
१९ तुम्हें मांस देगा और तुम खाओगे। तुम एक ही दिन न
खाओगे और न दो दिन और न पांच दिन न दस दिन न
२० बीस दिन। परन्तु एक मास भर खाओगे जब लों कि वुह
तुम्हारे नथुनों से न निकले और तुम उस्से घिन न करो क्योंकि
तुम ने ईश्वर की निन्दा किई जो तुम्हों में है और उस के आगे
यों कहके रोये कि हम मिस्र से क्यों बाहर आये॥
२१ तब मूसा ने कहा कि ये लोग जिन में मैं हूं छः लाख
पगयत हैं और तू ने कहा है कि मैं उन्हें इतना मांस देऊंगा
२२ कि वे एक मांस भर खावें। क्या झुंड और लेहंड़े उन्हें तृप्त
करने के लिये बधन किये जायेंगे अथवा समुद्र की सारी
मछलियां उन के लिये एकट्ठी किई जायेंगी जिसतें वे तृप्त
२३ होवें। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि क्या परमेश्वर का
हाथ घट गया अब तू देखेगा कि मैं वचन का पूरा हूं कि
नहीं॥
२४ तब मूसा ने बाहर जाके परमेश्वर की बातें लोगों से कहीं
और लोगों के प्राचीनों में से सत्तर मनुष्य एकट्ठे किये और
२५ उन्हें तंबू के आस पास खड़े किये। तब परमेश्वर मेघ में
उतरा और उस्से बोला और उस आत्मा में से जो उस पर थी
लेके उन सत्तर प्राचीनों को दिया और जब आत्मा उन पर ठहरा
२६ तब वे भविष्य कहने लगे और न थमे। परन्तु दो मनुष्य
छावनी में रह गये थे जिन में से एक का नाम इल्दाद और

दूसरे का मेदाद सो आत्मा उन पर ठहरा और वे उन में
लिखे गये थे परन्तु तंबू के पास बाहर नहीं गये और वे तंबू
२७ ही में भविष्य कहने लगे। तब एक तरुण ने दौड़के मूसा को
संदेश दिया कि इल्दाद और मेदाद तंबू में भविष्य कहते हैं।
२८ सो मूसा के सेवक नून के बेटे यहूशूअ ने जो उस के तरुणों
में से था मूसा से कहा कि हे मेरे स्वामी मूसा उन्हें बरज दे।
२९ तब मूसा ने उसे कहा कि क्या तू मेरे कारण डाह रखता
है हाय कि परमेश्वर के सारे लोग भविष्यवक्ता होते और
३० परमेश्वर अपना आत्मा उन सभों पर डालता। और मूसा और
इसराएल के प्राचीन छावनी में गये॥

३१ तब परमेश्वर की ओर से एक पवन निकली और बटेर को
समुद्र से लाई और छावनी पर ऐसा गिराया जैसा कि एक
दिन के मार्ग इधर उधर छावनी की चारों ओर और जैसा कि
३२ दो हाथ भूमि के ऊपर। और लोग उस दिन और रात भर
और उस के दूसरे दिन भी खड़े रहे और बटेर बटोरे जिस ने
थोड़े से थोड़ा बटोरा उस ने दस होमर के अटकल बटोरा
३३ और उन्हों ने अपने लिये तंबू के आस पास फैलाये। और
जब लों उन के दांत तले मांस था चावने से पहिले परमेश्वर
का क्रोध लोगों पर भड़का और परमेश्वर ने उन लोगों को बड़ी
३४ मरी से मारा। और उस ने उस स्थान का नाम कुइच्छा की
समाधि रक्खा क्योंकि उन्हों ने उन लोगों को जिन्हों ने कुइच्छा
किई थी वहीं गाड़ा॥

३५ फिर उन लोगों ने कुइच्छा की समाधि से हसीरात को
यात्रा किई सो वे हसीरात में रहे॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ तब मूसा की उस हबशी स्त्री से ब्याह करने के कारण

मिरयम श्रीर हारून ने उस पर अपबाद किया क्योंकि उस ने
२ एक हबशी स्त्री से ब्याह किया था। और बाले क्या परमेश्वर
ने केवल मूसा ही से बातें किई हैं क्या उस ने हम से भी
३ बातें न किईं और परमेश्वर ने सुना। और मूसा समस्त लोगों से
४ जो पृथिवी पर थे अधिक कोमल था। सो परमेश्वर ने तत्काल
मूसा और हारून और मिरयम को कहा कि तुम तीनों मंडली
५ के तंबू पास आओ सो वे तीनों आये। तब परमेश्वर मेघ के
खंभे में उतरा और तंबू के द्वार पर खड़ा हुआ और हारून
६ और मिरयम को बुलाया तब वे दोनों गये। तब उस ने
कहा कि मेरी बातें सुनो यदि तुम्में कोई भविष्यद्वक्ता होवे
तो मैं परमेश्वर आप को दर्शन में उस पर प्रगट करूंगा और
७ उस्से स्वप्न में बातें करूंगा। मेरा दास मूसा ऐसा नहीं वुह
८ मेरे सारे घर में विश्वासी है। मैं उस्से आम्ने साम्ने अर्थात्
प्रत्यक्ष बातें करूंगा और गुप्त बातों से नहीं और वुह परमेश्वर
के आकार को देखेगा सो तुम मेरे सेवक मूसा पर अपबाद
९ करते हुए क्यों न डरे। और परमेश्वर का क्रोध उन पर भड़का
१० और चला गया। तब मेघ तंबू पर से जाता रहा और क्या
देखता है कि मिरयम हिम की नाईं कोढ़ी हो गई और हारून
ने मिरयम की ओर दृष्टि किई और देखो वुह कोढ़ी थी।
११ तब हारून ने मूसा से कहा कि हे मेरे स्वामी मैं तेरी बिनती
करता हूं यह पाप हम पर मत लगा इस में हम ने मूर्खता
१२ किई और पापी हुए। वुह उस मृतक के समान न हो जिस
का आधा मांस अपनी माता के गर्भ से उत्पन्न होते ही गल
१३ जावे। तब मूसा ने परमेश्वर के आगे बिनती करके कहा कि
हे सर्वशक्तिमान मैं तेरी बिनती करता हूं अब उसे चंगा कर।
१४ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि यदि उस का पिता उस के
मुंह पर थूकता तो क्या वुह सात दिन लों लज्जित न रहती

सो सात दिन लों उसे छावनी से बाहर बंद कर और उस के
१५ पीछे उसे मिला ले। सो मिरयम छावनी के बाहर सात दिन
लों बंद हुई और जब लों मिरयम बाहर रही लोगों ने याचा
न किई ॥
१६ और उस के पीछे लोगों ने हसीरात से याचा किई और
फ़ारान के अरण्य में डेरा किया ॥

तेरहवां पर्ब्ब ।

१।२ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा। कि लोगों को भेज
जिसतें वे कनआन के देश का भेद लेवें जो मैं इसराएल के
संतानों को देता हूं एक एक मनुष्य उन के पितरों की हर एक
३ गोष्ठी में से भेजो उन में से हर एक प्रधान होवे। और परमेश्वर
की आज्ञा से मूसा ने फ़ारान के अरण्य से उन्हें भेजा वे सारे
४ मनुष्य इसराएल के संतानों के प्रधान थे। और उन के ये
५ नाम रूबिन की गोष्ठी में से ज़कूर का बेटा शमूअ। शमऊन
६ की गोष्ठी में से हूरी का बेटा सफ़त। यहूदाह की गोष्ठी में से
७ यफ़ुन्नः का बेटा कालिब। इशकार की गोष्ठी में से यूसुफ़ का
८ बेटा इजाल। इफ़रायम की गोष्ठी में से नून का बेटा हूसीअ।
९।१० बिनयमीन की गोष्ठी में से रफ़ू का बेटा फ़िलती। ज़बुलून
११ की गोष्ठी में से सूदी का बेटा जदिएल। यूसुफ़ की गोष्ठी में
१२ से अर्थात् मुनस्सी की गोष्ठी में से सूसी का बेटा जदी। दान
१३ की गोष्ठी में से जमली का बेटा अमिएल। यसर की गोष्ठी में
१४ से मीकाएल का बेटा शितूर। नफ़ताली की गोष्ठी में से बफ़सी
१५ का बेटा नख़बी। जद की गोष्ठी में से माकी का बेटा जियूएल।
१६ उन मनुष्यों के नाम जिन्हें मूसा ने देश का भेद लेने के लिये
भेजा ये हैं और मूसा ने नून के बेटे हूसीअ का नाम यहूशूअ
रक्खा ॥

१७ और मूसा ने उन्हें भेजा कि कनआन के देश का भेद लेवें
और उन्हें कहा कि तुम दक्षिण दिशा से चढ़ जाओ और पहाड़
१८ के ऊपर चले जाओ। और देश को और उन लोगों को जो
उस में बसते हैं देखिये कि वे कैसे हैं प्रबल अथवा निर्बल
१९ थोड़े हैं अथवा बहुत। और वुह देश जिस में वे रहते हैं
कैसा है भला अथवा बुरा और कैसे कैसे नगर जिन में वे
२० बसते हैं तंबुओं में हैं अथवा गढ़ों में। और देश कैसा है
फलवंत है अथवा निष्फल उस में पेड़ है अथवा नहीं और तुम
हियाव करो और उस देश का कुछ फल ले आओ और वुह
२१ समय दाख के पहिले फलों का था। सो वे चढ़ गये और
भूमि के भेद को सीन के अरण्य में से रहूब लों जो हमात के
२२ मार्ग में है लिया। और वे दक्षिण की ओर से चढ़े और
हबरून को आये जहां अनाक़ के बंश अख़िमान और सीसी
और तलमी थे और मिस्र का ज़ुअन हबरून से सात बरस
आगे बना था॥

२३ सो वे इसकाल की नाली में आये और वहां से उन्हों ने
दाख का एक गुच्छा काटा और उसे एक लट्ठ पर रखकर दो
मनुष्यों ने उठाया और कुछ अनार और गूलर भी लिये।
२४ उस स्थान का नाम उस गुच्छे के लिये जिसे इसराएल के
२५ संतान वहां से काट लाये थे नहलइसकाल रक्खा। सो वे
चालीस दिन के पीछे देश का भेद लेके फिर आये॥

२६ और फिरके मूसा और हारून और इसराएल के संतानों
की सारी मंडली के पास फ़ारान के अरण्य में क़ादिस में आये
और उन्हें और सारी मंडली के आगे संदेश दिया और उस
२७ भूमि का फल उन्हें दिखाया। और उस्से यह कहके वर्णन
किया कि हम उस देश में जिधर तू ने हमें भेजा था गये
और उस में सच मुच दूध और मधु बहता है और यह वहां

२८ का फल है। तथापि उस देश के वासी बलवंत हैं और उस
के नगरों की भीतें अति ऊंची हैं और हम ने अनाक़ के संतान
२९ को भी वहां देखा। उस भूमि में दक्षिण की ओर अमालीक़
बसते हैं और हत्ती और यबूसी और अमूरी पहाड़ों पर रहते
हैं और समुद्र के तीर और यरदन के तीर पर कनआनी
३० रहते हैं। तब कालिब ने मूसा के आगे लोगों को थोमा
करके कहा कि आओ एक साथ चढ़ जावें और उसे बश में
३१ करें क्योंकि उस पर प्रबल होने की हम में शक्ति है। परन्तु
उस के संगियों ने कहा कि हम उन लोगों का साम्ना करने
३२ में दुर्बल हैं क्योंकि वे हम से अधिक बलवंत हैं। और वे
इसराएल के संतानों के पास उस भूमि का जिस का भेद लेने
को गये थे बुरा संदेश लाये और बोले कि वुह भूमि जिस का
भेद लेने हम गये थे ऐसी भूमि है जो अपने वासियों को खा
जाती है और सब लोग जिन्हें हम ने उस में देखा है बड़े डील
३३ के हैं। और हम ने वहां दानव अनाक़ के बेटे दानवों को
देखा और हम अपनी और उन की दृष्टि में फनगे की नाईं थे॥

चौदहवां पर्व्व।

१ तब सारी मंडली चिल्लाके रोई और लोग उस रात भर
२ रोया किये। फिर सारे इसराएल के संतान मूसा और हारून
पर कुड़कुड़ाये और समस्त मंडली ने उन्हें कहा हाय कि हम
मिस्र में मर जाते और हाय कि हम इसी अरण्य में नष्ट
३ होते। हमें किस लिये परमेश्वर इस देश में लाया कि खड्ग
से मारे जावें हमारी स्त्रियां और हमारे बालक पकड़े जावें
४ क्या हमारे लिये अच्छा नहीं कि मिस्र को फिर जावें। तब
उन्हों ने आपुस में कहा कि आओ एक को अपना प्रधान बनावें
और मिस्र को फिर चलें॥

५ तब मूसा और हारून इसराएल के संतानों की सारी मंडली
६ के साम्ने ओंधे मुंह गिरे। और नून के बेटे यहूशूअ और
यफुन्न: के बेटे कालिब ने जो उन में थे जो देश का भेद लेने
७ गये थे अपने कपड़े फाड़े। और उन्हों ने इसराएल के संतानों
की सारी मंडली से कहा कि जिस देश का भेद लेने को हम
८ आरंपार गये अति अच्छी भूमि है। यदि ईश्वर हम से प्रसन्न
होवे तो हमें उस देश में ले जायगा और बुह भूमि जिस पर
९ दूध और मधु बह रहा है हमें देगा। अब तुम केवल परमेश्वर से
छल न करो और उस देश के लोगों से मत डरो क्योंकि वे
तो हमारे लिये भोजन हैं उन के आड़ उन से जा चुके हैं
और परमेश्वर हमारे साथ है उन को भय मत करो॥
१० परन्तु सारी मंडली ने कहा कि उन पर पत्थरवाह करो
तब मंडली के तंबू में सारे इसराएल के संतानों के साम्ने
परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई॥
११ और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि ये लोग कब लों मुझे
खिझावेंगे और उन आश्चर्य्यों के कारण जो मैं ने उन में
१२ दिखाये हैं वे कब लों मुझ पर बिश्वास न करेंगे। मैं उन्हें
मरी से मारूंगा और उन्हें अधिकार रहित करूंगा और तुझे
१३ इन से एक बड़ी और बलवंत जाति बनाऊंगा। तब मूसा ने
परमेश्वर से कहा कि मिस्र के लोग सुनेंगे क्योंकि तू अपनी
१४ सामर्थ्य से इन लोगों को उन के मध्य से निकाल लाया। और
वे इस देश के बासी से कहेंगे क्योंकि उन्हों ने तो सुना है
कि तू परमेश्वर इन लोगों के बीच है कि तू हे परमेश्वर आम्ने
साम्ने देखा जाता है और कि तेरा मेघ उन पर रहता है
और कि तू दिन को मेघ के खंभे में और रात को आग के खंभे
१५ में उन के आगे आगे चलता है। सो यदि तू इन लोगों को
एक मनुष्य के समान मार डाले तब जातिगण जिन्हों ने तेरी

१६ कीर्ति सुनी हैं कहेंगे । इस कारण कि परमेश्वर इन लोगों को
उस देश में पहुंचा न सका जिस के बिषय में उन से किरिया
खाई थी इस लिये उस ने उन्हें अरण्य में घात किया ।
१७ सो मैं तेरी बिनती करता हूं हे मेरे प्रभु अपनी समार्थ्य को
१८ प्रगट कर जैसा तू ने कहा है । कि परमेश्वर बड़ा धीर और
महा दयाल है पाप और अपराध को क्षमा करता है और
किसी भांति से न छोड़ेगा पितरों के पापों को उन के लड़कों
से जो उन की तीसरी और चौथी पीढ़ी है प्रतिफल देता है ।
१९ अब तू अपनी दया की अधिकाई से इन लोगों का पाप क्षमा
कर जैसा तू मिस्र से लेके यहां लों क्षमा करता आया है ॥
२० तब परमेश्वर ने कहा कि मैं ने तेरे कहे के समान क्षमा
२१ किया है । परन्तु अपने जीवन सों समस्त पृथिवी परमेश्वर की
२२ महिमा से भर जायगी । क्योंकि उन सब लोगों ने जिन्हों ने
मेरा विभव और मेरे अचंभे जो मैं ने मिस्र में और उस
अरण्य में प्रगट किया देखा अब लों मुझे दस बार परखा और
२३ मेरा शब्द न माना । सो वे उस देश को जिस के कारण मैं
ने उन के पितरों से किरिया खाई थी न देखेंगे और जितनों
२४ ने मुझे खिझाया उन में से कोई उसे न देखेगा । परन्तु मेरा
दास कालिब क्योंकि और ही आत्मा उस के साथ थी और
उस ने मेरी बात पूरी मानी है सो मैं उसे उस देश में जहां वुह
गया था ले जाऊंगा और वे जो उस के बंश से होंगे उस के
२५ अधिकारी बनेंगे । अब अमालीकी और कनआनी तराई में बास
करते थे सो कल फिरो और लाल समुद्र के मार्ग से अरण्य में
जाओ ॥
२६ । २७ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला । कि
मैं कब लों इस दुष्ट मंडली की कुड़कुड़ाहट सहूं इसराएल के
संतान जो मुझ पर कुड़कुड़ाते हैं मैं ने उन का कुड़कुड़ाना

२८ सुना। उन से कह कि परमेश्वर कहता है मुझे अपने जीवन
सों जैसा तुम ने मेरे सुन्ने में कहा है मैं तुम से वैसा ही
२९ करूंगा। तुम्हारी और उन सभों की लोथ तुम्हारी समस्त
गिनतियों के समान बीस बरस से लेके ऊपर लों जो मुझ पर
३० कुड़कुड़ाये इस अरण्य में गिरेंगी। यफुन्नः के बेटे कालिब और
नून के बेटे यहूशूअ को छोड़ तुम निःसंदेह उस देश में न
पहुंचोगे जिस में मैं ने तुम्हें बसाने की किरिया खाई है कि तुम्हें
३१ वहां बसाऊंगा। परन्तु तुम्हारे बालकों को जिन के विषय में
तुम ने कहा है कि वे लुट जायेंगे मैं उन्हें पहुंचाऊंगा और वे
३२ उस देश को जानेंगे जिसे तुम ने तुच्छ जाना है। पर तुम्हारी
३३ लोथें इस ही बन में गिरेंगी। और तुम्हारे लड़के उस अरण्य
में चालीस बरस लों भ्रमते फिरेंगे और तुम्हारे ब्यभिचारों को
उठाया करेंगे जब लों कि तुम्हारी लोथें इस बन में क्षीण न
३४ होवें। उन दिनों की गिनती के समान जिन में तुम उस भूमि
का भेद लेते थे जो चालीस दिन हैं दिन पीछे एक बरस सो
तुम चालीस बरस लों अपने पाप को भोगा करोगे तब तुम
३५ मेरे बिरोध को जानोगे। मैं परमेश्वर ने कहा है और इस दुष्ट
मंडली के लिये जो मेरे विरुद्ध में एकट्ठी है निश्चय पूरा
करूंगा इसी बन में नष्ट किई जायगी और यहीं मरेगी॥
३६ और जिन मनुष्यों को मूसा ने देश के भेद लेने को भेजा
था जिन्हों ने उस देश पर बात बना बनाके कहा है और
३७ सारी मंडलियों को उस पर कुड़कुड़ाया है। हां वे मनुष्य
जो उस देश का बुरा संदेश लाये हैं परमेश्वर के आगे मरी से
३८ मरेंगे। पर नून का बेटा यहूशूअ और यफुन्नः का बेटा कालिब
उन में से जो देश का भेद लेने गये थे जीते रहेंगे॥
३९ सो मूसा ने इन बातों को इसराएल के समस्त संतानों को
४० सुनाया और लोग बहुत बिलाप करने लगे। और बिहान को

तड़के वे उठे और यह कहते हुए पहाड़ पर चढ़ गये देख
हम उस स्थान पर चढ़ जायेंगे जिस की परमेश्वर ने बाचा
४१ दिई है क्योंकि हम ने पाप किया है। तब मूसा ने कहा
अब तुम लोग क्यों परमेश्वर की आज्ञा को भंग करते हो यह
४२ शुभ न होगा। ऊपर मत जाओ क्योंकि परमेश्वर तुम्हों में
४३ नहीं जिसतें तुम अपने वैरियों के आगे मारे न पड़ो। क्योंकि
अमालीकी और कनआनी वहां तुम्हारे आगे हैं और तुम
तलवार से बिछ जाओगे क्योंकि तुम परमेश्वर से फिर गये हो
४४ सो परमेश्वर तुम्हारे साथ न होगा। परन्तु वे ढिठाई से पहाड़
की चोटी पर चढ़ गये तथापि परमेश्वर के बाचा की मंजूषा
और मूसा छावनी के बाहर न गये॥
४५ तब अमालीकी और कनआनी जो उस पहाड़ पर रहते थे
उतरे और उन्हें हुरमः लों मारते गये॥

पंद्रहवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के
संतानों को कहके बोल कि जब तुम अपने निवास के देश में
३ जो मैं तुम्हें देता हूं पहुंचो। और आग से परमेश्वर के लिये
बलिदान की भेंट चढ़ाओ अथवा मनौती पूरी करने का बलिदान
अथवा वांछित भेंट अथवा ठहराये हुए पर्ब्ब की भेंट परमेश्वर
४ के लिये आनन्द का सुगंध लेहंड़े अथवा झुंड से चढ़ाओ। तब
वुह जो अपनी भेंट परमेश्वर के लिये चढ़ाता है भोजन की
भेंट पिसान का दसवां भाग हीन के चौथे भाग तेल से मिला
५ हुआ भेंट का बलिदान लावे। एक मेम्ना के लिये बलिदान
की भेंट अथवा बलिदान तपावन के लिये हीन का दाखरस
६ सिद्ध कीजियो। अथवा मेढ़े के लिये भोजन की भेंट को दो
दसवां भाग पिसान हीन के तीसरे भाग तेल से मिला

७ हुआ सिद्ध कीजियो। और तपावन के लिये हीन के
तीसरे भाग दाखरस परमेश्वर के सुगंध के लिये चढ़ाइयो।
८ और जब तू बलिदान की भेंट के लिये अथवा मनौती पूरी
करने को बलिदान के लिये अथवा कुशल की भेंट परमेश्वर के
९ लिये बैल सिद्ध करे। तब वुह बैल के साथ भोजन की भेंट
तीन दसवां भाग पिसान हीन के आधे भाग तेल से मिला
१० हुआ लावे। और तपावन के लिये दाखरस हीन का
आधा भाग आग से परमेश्वर के आनन्द की सुगंध के लिये
११ लाइयो। एक एक बैल अथवा एक एक मेढ़ा अथवा एक एक
मेम्ना अथवा एक एक बकरी का मेम्ना योंही किया जावे।
१२ गिनती के समान सिद्ध कीजियो हर एक उन की गिनती के
१३ समान ऐसा ही कीजियो। सब जिन का जन्म देश में हुआ
आग से परमेश्वर के आनन्द के सुगंध के लिये भेंट चढ़ावें तो
१४ उसी रीति से इन बातों को मानें। और यदि परदेशी तुम्में
बास करे अथवा वुह जो तुम्हारी पीढ़ियों से होवे परमेश्वर के
आगे सुगंध के लिये आग से भेंट चढ़ावे तो जिस रीति से तुम
१५ करते हो वैसा वुह भी करे। मंडली के लिये और उस परदेशी
के लिये जो तुम्में बास करता है तुम्हारी पीढ़ियों में सदा एक
ही बिधि होवे परमेश्वर के आगे जैसे तुम वैसे परदेशी भी हैं।
१६ तुम्हारे और परदेशियों के लिये जो तुम्में रहते हैं एक ही
व्यवस्था और एक ही रीति होवे॥

१७ । १८ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के
संतानों से कहके बोल कि जब तुम उस देश में पहुंचो जहां मैं
१९ तुम्हें ले जाता हूं। तब ऐसा होगा कि जब तुम उस भूमि
पर की रोटी खाओ तो परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट
२० चढ़ाइयो। तुम अपने पहिले गूंदे हुए आटे से एक फुलका
उठाने की भेंट के लिये लेओ जैसी खलिहान की भेंट को

२१ उठाते हो वैसा ही उसे उठाइयो। तुम अपने गूंदे हुए पिसान से
पहिले अपनी पीढ़ियों में परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट चढ़ाइयो॥
२२ और यदि तुम ने चूक किया हो और इन सब आज्ञाओं को
२३ जो परमेश्वर ने मूसा से कहीं पालन न करो। जिस दिन से
परमेश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई है और अब से आगे लों अपनी
पीढ़ियों में समस्त आज्ञा जिन्हें परमेश्वर ने मूसा के हसते से
२४ तुम्हें दिई है। तब यों होगा कि यदि कुछ अज्ञानता हो
जावे और मंडली न जाने तब समस्त मंडली बलिदान की भेंट के
लिये परमेश्वर के सुगंध के लिये एक बछड़ा चढ़ावे उस के भोजन
की और उस के तपावन की भेंट के साथ रीति के समान और
२५ अपराध की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना। और याजक
इसराएल के संतानों की सारी मंडली के लिये प्रायश्चित्त देवे
और वुह उन्हें क्षमा किया जायगा क्योंकि वुह अज्ञानता है और
वे परमेश्वर के लिये अपनी भेंट आग के बलिदान से लावें और
अपनी अज्ञानता के लिये अपने पाप की भेंट परमेश्वर के आगे
२६ लावें। और इसराएल के संतानों की सारी मंडली और परदेशी
जो उन में रहते हैं क्षमा किये जावेंगे इस लिये कि सारे लोग
अज्ञानता में थे॥
२७ और यदि कोई प्राणी अज्ञानता से पाप करे तो वुह पाप
२८ की भेंट के लिये पहिले बरस की एक बकरी लावे। और उस
प्राणी के लिये जो अज्ञानता से परमेश्वर के आगे पाप करे उस
के लिये याजक प्रायश्चित्त करे और वुह उसे क्षमा किया जायगा।
२९ तुम अज्ञानता की अपराध के कारण उस के लिये जो इसराएल
के संतानों में उत्पन्न हुआ हो और परदेशी के लिये जो उन
में रहता हो एक ही व्यवस्था रक्खो॥
३० परन्तु जो प्राणी ढिठाई करे चाहे देशी चाहे परदेशी होवे
वही परमेश्वर की निन्दा करता है और वही प्राणी अपने लोगों

३१ में से कट जावेगा। क्योंकि उस ने परमेश्वर के वचन की निन्दा
किई और उस की आज्ञा को भंग किया वही प्राणी सर्बथा कट
जायगा उस का पाप उसी पर होगा॥
३२ और जब इसराएल के संतान बन में थे तब उन्हों ने एक
३३ मनुष्य को विश्राम के दिन लकड़ियां बटोरते पाया। और
जिन्हों ने उसे लकड़ियां एकट्ठी करते पाया वे उसे मूसा और
३४ हारून और सारी मंडली के पास लाये। तब उन्हों ने उसे
बंद रक्खा इस कारण कि प्रगट न हुआ था कि उस्से क्या
३५ किया जावे। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि वुह मनुष्य
निश्चय मारा जायगा सारी मंडली छावनी के बाहर उस पर
३६ पत्थरवाह करे। सो जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई
थी सारी मंडली उसे तंबू के बाहर ले गई और उन्हों ने उस
पर पत्थरवाह करके मार डाला॥
३७। ३८ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के
संतानों से कह और उन्हें आज्ञा कर कि वे अपनी पीढ़ियों
में अपने बस्त्रों के खूंट की झालर पर नीली चेवली लगावें।
३९ यह तुम्हारे लिये झालर होगी जिसतें तुम उसे देखके परमेश्वर
की सारी आज्ञाओं को स्मरण करो और उन्हें पालन करो
और जिसतें तुम अपने मन का और अपनी आंखों का पीछा
४० न करो जैसे तुम आगे व्यभिचार करते थे। जिसतें तुम
मेरी सब आज्ञाओं को स्मरण करो और उन का पालन करो
४१ और अपने ईश्वर के लिये पवित्र होओ। मैं परमेश्वर तुम्हारा
ईश्वर हूं जो तुम्हें मिस्र की भूमि से बाहर लाया कि तुम्हारा
ईश्वर होऊं मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥

सोलहवां पर्ब्ब।

१ और लावी के बेटे क़िहात के बेटे इज़हार के बेटे क़ुरह

और इलिअब के बेटे दातन और अबिराम और रूबिन के बेटे
२ फ़लत के बेटे ओन ने लोगों को गांठा। और वे इसराएल के
संतानों में से अढ़ाई सौ सभा के प्रधान जो मंडली में नामी
और लोगों में कीर्तिमान थे उन्हें लेके मूसा के सन्मुख खड़े
३ हुये। तब मूसा और हारून के बिरोध में एकट्ठे होके उन्हें
बोले कि तुम आप को बहुत बढ़ाते हो क्योंकि समस्त मंडली
में तो हर एक मनुष्य पवित्र है और परमेश्वर उन में है सो
किस लिये परमेश्वर की मंडली से आप को बढ़ाते हो॥
४।५ तब मूसा यह सुनके औंधे मुंह गिरा। और उस ने
कुरह और उस की सारी जथा को कहा कि कलही परमेश्वर
दिखावेगा कि कौन उस का है और कौन पवित्र है और अपने
पास पहुंचावेगा अर्थात् उसी को जिसे उस ने चुन लिया है
६ अपने पास पहुंचावेगा। सो हे कुरह और उस की सारी जथा
७ तुम यह करो अपनी अपनी धूपावरी लेओ। और उन में आग
रक्खो और कल परमेश्वर के आगे उन में धूप जलाओ और
यों होगा कि जिस मनुष्य को परमेश्वर चुनता है वही पवित्र
८ होगा हे लावी के बेटो तुम आप को बढ़ाते हो। फिर मूसा
९ ने कुरह से कहा कि हे लावी के बेटो सुन रक्खो। तुम क्या
उसे छोटा जानते हो कि इसराएल के ईश्वर ने तुम्हें इसराएल
की मंडली में से अलग किया कि अपने पास लाके परमेश्वर के
तंबू की सेवा करावे और मंडली की सेवा के लिये खड़े रहो।
१० और उस ने तुझे और तेरे समस्त भाई लावी के बेटे तेरे संग
११ अपने पास किया अब तुम याजकता भी ढूंढ़ते हो। इस
कारण तू और तेरी सारी जथा परमेश्वर के बिरोध पर एकट्ठी
हुई है और हारून वुह कौन है जो तुम उस के बिरोध में
कुड़कुड़ाते हो॥
१२ तब मूसा ने इलिअब के बेटे दातन और अबिराम को

१३ बुलवाया और वे बोले कि हम न आवेंगे। क्या यह छोटी
बात है कि तू हमें उस भूमि में से जिस में दूध और मधु
बहता है चढ़ा लाया कि हमें अरण्य में नाश करे और अब
१४ आप को हमारे ऊपर सर्वथा अध्यक्ष बनाता है। और तू हमें
ऐसी भूमि में न लाया जहां दूध और मधु बहे तू ने हमें खेत
और दाख की बारी का अधिकारी नहीं कर दिया क्या तू इन
१५ लोगों की आखें निकाल डालेगा हम तो न आवेंगे। तब मूसा
का क्रोध अत्यंत भड़का और परमेश्वर से यों बोला कि तू उन
की भेंट की ओर मत ताक मैं ने उन से एक गधा भी नहीं लिया
१६ न उन में से किसी को दुःख दिया। फिर मूसा ने कुरह से कहा
कि तू और तेरी सारी जथा और हारून सहित परमेश्वर
१७ के आगे कल के दिन आओ। और हर एक मनुष्य अपनी
अपनी धूपावरी लेवे और उन में धूप डाले और तुम्में से
हर एक अपनी अपनी धूपावरी परमेश्वर के आगे लावे सब
अढ़ाई सौ धूपावरी होवें और तू और हारून अपनी धूपावरी
लावे॥

१८ सो हर एक ने अपनी अपनी धूपावरी लिई और उन में
आग रक्खी और उन पर धूप डाला और मंडली के तंबू के
१९ द्वार पर मूसा और हारून सहित आ खड़े हुए। और कुरह ने
सारी मंडली को मंडली के तंबू के द्वार पर उन के बिरोध
पर एकट्ठी किया तब परमेश्वर की महिमा सारी मंडली के साम्ने
प्रगट हुई॥

२०।२१ और परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला। कि
इस मंडली में से आप को अलग करो कि मैं उन्हें पल भर में
२२ नाश करूं। तब वे औंधे मुंह गिरे और बोले कि हे सर्वशक्तिमान
सारे शरीरों के आत्मा का ईश्वर पाप एक करे और क्या तू
२३ सारी मंडली पर क्रुद्ध होवे। तब परमेश्वर मूसा से कहके

२४ बोला । कि तू मंडली से कह कि कुरह और दातन और
अबिराम के तंबुओं में से निकल आओ ॥
२५ सो मूसा उठा और दातन और अबिराम के यहां गया
२६ और इसराएल के प्राचीन उस के पीछे हो लिये । और उस ने
मंडली से कहा कि इन दुष्ट जनों के तंबुओं से निकल जाओ
और उन की किसी वस्तु को मत छुओ न होवे कि तुम भी
२७ उन के सब पापों में नाश हो जाओ । सो वे कुरह और दातन
और अबिराम के तंबुओं में से निकल गये और दातन और
अबिराम और उन की पत्नियां और उन के बेटे और उन के बालक
२८ निकलके अपने तंबुओं के द्वार पर खड़े हुए। तब मूसा ने कहा
कि तुम इस में जानोगे कि परमेश्वर ने यह कार्य्य करने को मुझे
२९ भेजा है और मैं ने कुछ अपनी इच्छा से नहीं किया । यदि ये
मनुष्य उस मृत्यु से मरें जिस मृत्यु से सब मरते हैं अथवा उन
पर कोई बिपत्ति ऐसी होवे जो सब पर होती है तो मैं ईश्वर का
३० भेजा हुआ नहीं । पर यदि परमेश्वर कोई नई बात करे और
पृथिवी अपना मुंह फैलावे और उन्हें सब समेत निगल जावे
और वे जीते जी पाताल में जा पड़ें तो तुम जानियो कि इन
लोगों ने परमेश्वर को खिझाया है ॥
३१ और यों हुआ कि ज्योंहीं वुह ये सब बातें कह चुका तो
३२ उन के नीचे की भूमि फट गई । और पृथिवी ने अपना मुंह
खोला और उन्हें और उन के घर और उन सब मनुष्यों को
जो कुरह के थे और उन की सब संपत्ति को निगल गई ।
३३ सो वे और सब जो उन के थे जीते जी पाताल में गये और
भूमि ने उन्हें छिपा लिया और मंडली के मध्य से नष्ट हो
३४ गये । और सारे इसराएल जो उन के आस पास थे उन का
चिल्लाना सुनके भागे क्योंकि उन्हों ने कहा न हो कि भूमि
३५ हमें भी निगल जावे । फिर परमेश्वर के आगे से एक आग

निकली और उन अढ़ाई सौ को जिन्हों ने धूप जलाया था खा
गई ॥
३६ । ३७ और परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि हारून याजक
के बेटे इलिअज़र से कह कि धूपावरी को आग में से उठा
३८ और आग वहीं बखेर दे क्योंकि वे तो पवित्र हैं। जिन्हों ने
अपने प्राण के बिरोध पाप किया उन की धूपावरियों से चौड़े
चौड़े पत्र बेदी के ढांपने के लिये बना क्योंकि उन्हों ने उन्हें
परमेश्वर के आगे चढ़ाया इस लिये वे पवित्र हैं और वे
३९ इसराएल के संतानों के लिये एक चिन्ह होंगे। तब इलिअज़र
याजक ने उन पीतल की धूपावरियों को जिन्हें उन्हों ने जलाया
था जो जल गये थे लिया और बेदी के लिये चौड़े पत्र
४० ढांपने के लिये बनाये। कि इसराएल के संतानों के लिये
चेत होवे कि कोई परदेशी जो हारून के बंश से नहीं परमेश्वर
के आगे धूप जलाने को पास न आवे जिसतें क़ुरह और उस
की जथा के समान न होवे जैसा परमेश्वर ने मूसा के द्वारा
से उसे कहा था ॥
४१ परन्तु बिहान को इसराएल के संतानों की सारी मंडली
मूसा और हारून के बिरोध में कुड़कुड़ाके बोली कि तुम ने
४२ परमेश्वर के लोगों को मार डाला। और यों हुआ कि जब मूसा
और हारून के बिरोध में मंडली एकट्ठी हुई तब उन्हों ने
मंडली के तंबू की ओर ताका और क्या देखते हैं कि मेघ ने
४३ उसे ढांप लिया और परमेश्वर की महिमा प्रगट हुई। तब
४४ मूसा और हारून मंडली के तंबू के आगे आये। और परमेश्वर
४५ मूसा से कहके बोला। कि तुम इस मंडली में से अलग होओ
जिसतें मैं उन्हें एक पल में नाश कर डालूं तब वे औंधे मुंह
४६ गिर पड़े। और मूसा ने हारून से कहा कि धूपावरी ले और
उस में बेदी पर की आग रख और धूप डाल और मंडली में

शीघ्र जाके उन के लिये प्रायश्चित्त दे क्योंकि परमेश्वर के आगे
४७ से कोप निकला और मरी आरंभ हुई । तब जैसी मूसा ने
आज्ञा किई थी हारून मंडली के मध्य में दौड़ गया और क्या
देखता है कि मरी लोगों में आरंभ हुई सो उस ने धूप रखके
४८ उन लोगों के लिये प्रायश्चित्त किया । और वुह जीवतों और
४९ मृतकों के बीच में खड़ा हुआ तब मरी थम गई । सो जितने
उस मरी से मरे उन्हें छोड़के जो कुरह के बिषय में नष्ट हुए
५० चौदह सहस्र सात सौ थे । फिर हारून मंडली के तंबू के
द्वार पर मूसा पास फिर आया और मरी थम गई ॥

सत्तरहवां पर्व्व ।

१ । २　फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के
संतानों से कह और उन में से उन के पितरों के घराने के
समान हर घराने पीछे उन के सब प्रधानों से एक एक छड़ी
ले और उन के पितरों के समान बारह छड़ी और हर एक का
३ नाम उस की छड़ी पर लिख । और लावी की छड़ी पर हारून
का नाम लिख क्योंकि हर एक प्रधान के कारण उन के पितरों
४ के घरानों के लिये एक एक छड़ी होगी । और उन्हें मंडली
के तंबू में साक्षी के आगे रख दे जहां मैं तुम से भेंट करूंगा ।
५ और यों होगा कि जिसे मैं चुनूंगा उस की छड़ी में फूल लगेगा
और मैं इसराएल के संतानों का कुड़कुड़ाना जो वे बिरोध से
कुड़कुड़ाते हैं दूर करूंगा ॥

६　सो मूसा ने इसराएल के संतानों से कहा और हर एक ने
उन के प्रधानों में से एक एक प्रधान के लिये उन के पितरों
के घरानों के समान एक एक छड़ी अर्थात् बारह छड़ी दिई
७ और हारून की छड़ी उन की छड़ियों में थी । और मूसा ने
उन छड़ियों को साक्षी के तंबू में परमेश्वर के आगे रक्खा ॥

८ और ऐसा हुआ कि बिहान को मूसा साक्षी के तंबू में गया
तो क्या देखता है कि लावी के घराने के लिये हारून की
छड़ी में कली लगीं और कली निकलीं और फूल फूले और
९ बादाम लगे। तब मूसा सब छड़ियों को परमेश्वर के आगे से
सब इसराएल के संतानों के पास निकाल लाया और उन्हों ने
देखा और हर एक ने अपनी अपनी छड़ी फेर लिई॥
१० फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि हारून की छड़ी साक्षी
के आगे रख कि दंगइत के बिरोध के लिये एक चिन्ह रहे
और तू उन का कुड़कुड़ाना मुझ से दूर करे जिसतें वे मर न
११ जावें। और मूसा ने ऐसा ही किया जैसा परमेश्वर ने उसे
आज्ञा किई॥
१२ तब इसराएल के संतानों ने मूसा से कहा कि हम मरे
१३ हम नाश हुए हम सब के सब बिनाश हुए। जो कोई
परमेश्वर के तंबू पास आवेगा सो मरेगा क्या हम सब मर मरके
मिट जावेंगे॥

अठारहवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि पवित्र स्थान का पाप
तुझ पर और तेरे बेटों और तेरे संग तेरे पिता के घराने पर
होगा और तेरे संग तेरे बेटे तुम्हारी याजकता का पाप भोगेंगे।
२ और तेरे भाई की गोष्ठी भी जो तेरे पिता लावी की गोष्ठी है
अपने साथ ला जिसतें वे तेरे साथ मिलाये जावें और तेरी
सेवा करें पर तू अपने बेटों समेत साक्षी के तंबू के आगे रह।
३ और वे तेरी और सारे तंबू की रक्षा करें केवल वे पवित्र पात्रों
और बेदी के पास न जावें न होवे कि वे भी और तुम भी
४ नाश हो जाओ। और तंबू की सारी सेवा के लिये तेरे संग
होके मंडली के तंबू की रक्षा करें और कोई परदेशी तुम्हारे

५ पास आने न पावे। और तुम पवित्र स्थान को और बेदी को
अगोार रक्खो जिसतें आगे को फिर इसराएल के संतानों पर
६ कोप न पड़ें। और देखो मैं ने तुम्हारे भाई लावियों को
इसराएल के संतानों में से लेके परमेश्वर की भेंट के लिये तुम्हें
७ दिया जिसतें मंडली के तंबू की सेवा करें। सो तू और तेरे
संग तेरे बेटे बेदी की हर एक बात के और घूंघट के भीतर की
सेवा के लिये अपने याजक के पद को पालन करो और सेवा
करो मैं ने याजक के पद में तुम्हें भेंट की सेवा दिई और जो
परदेशी पास आवे सो मारा जायगा॥
८ फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि देख मैं ने इसराएल के
संतानों की समस्त पवित्र किई हुई उठाने की भेंटों की रक्षा
करना तुझे दिया मैं ने उन्हें तेरे अभिषिक्त होने के कारण
९ तुझे और तेरे बेटों को सदा की बिधि के निमित्त दिया। उन
पवित्र बस्तुन में से जो आग से बच रही हैं ये तेरे लिये होंगी
उन के सब बलिदान उन के हर एक भोजन की भेंट और
उन के हर एक पाप की भेंट और उन के हर एक अपराध
की भेंट जो वे मेरे लिये चढ़ावेंगे तेरे और तेरे पुत्रों के लिये
१० अत्यंत पवित्र होंगी। तू उसे अत्यंत पवित्र स्थान में खाइयो
११ हर एक पुरुष उसे खाय यह तेरे लिये पवित्र है। और यह
तेरी है इसराएल के संतानों की भेंट के उठाने के बलिदान
उन के सब हिलाये हुए बलिदान सहित मैं ने तुझे और तेरे
संग तेरे बेटों को और तेरी बेटियों को सदा के ब्यवहार के
लिये दिया जो कोई तेरे घर में पवित्र होवे सो उसे खावे।
१२ सब अच्छे से अच्छा तेल और अच्छे से अच्छा दाखरस और
गोहूं का और इन सभों का पहिला फल जिन्हें वे परमेश्वर की
१३ भेंट के लिये लावेंगे मैं ने तुझे दिया। उन के देश में जो पहिले
पकता है जिन्हें वे परमेश्वर के आगे लावें तेरे होंगे तेरे घर में

१४ जो कोई पवित्र होवे सो उसे खावे। इसराएल के संतानों के
१५ हर एक नैवेद्य की वस्तु तेरी होगी। समस्त प्राणी में से हर
एक जो गर्भ खोलता है चाहे मनुष्य होवे चाहे पशु जिसे वे
परमेश्वर के लिये लाते हैं तेरा होगा तथापि तू मनुष्यों के और
१६ अपवित्र पशुन के पहिलोठों को निश्चय छुड़ाइयो। और जो
एक मास के बय से छुड़ाये जाने को होय पांच शेकल दाम
जो पवित्र स्थान के शेकल के समान होवे जो बीस गिरह है
१७ अपने ठहराने के समान उसे छुड़ाइयो। परन्तु गाय के पहिलोठे
अथवा भेड़ के पहिलोठे अथवा बकरी के पहिलोठे को मत
छुड़ाना वे पवित्र हैं तू उन का लोहू वेदी पर छिड़कियो और
उन की चिकनाई आग से परमेश्वर की सुगंध की भेंट के लिये
१८ जलाइयो। जैसे हिलाई हुई छाती और दहिना कांधा तेरे हैं
१९ वैसा उन का मांस तेरा होगा। पवित्र वस्तुन के हिलाने के
बलिदान जिन्हें इसराएल के संतान परमेश्वर के लिये चढ़ाते
हैं मैं ने तुझे और तेरे संग तेरे बेटों को और तेरी बेटियों
को सदा की बिधि के लिये दिया परमेश्वर के आगे तेरे और
तेरे संग तेरे बंश के लिये लोन की बाचा सदा के लिये है॥
२० फिर परमेश्वर ने हारून से कहा कि तू उन के देश में कुछ
अधिकार न रखना और उन में कुछ भाग न रखना इसराएल
२१ के संतानों में तेरा भाग और तेरा अधिकार मैं हूं। देख मैं
ने लावी के संतान को उन की सेवा के लिये जो वे सेवा
करते हैं अर्थात् मंडली के तंबू की सेवा के लिये इसराएल में
२२ सारा दसवां भाग दिया। और आगे को इसराएल के संतान
मंडली के तंबू के पास न आवें न हो कि वे पापी होवें और
२३ मर जावें। परन्तु लावी मंडली के तंबू की सेवा करें और वे
अपने पाप भोगेंगे तुम्हारी पीढ़ियों में यह सदा की बिधि होगी
२४ कि वे इसराएल के संतानों में अधिकार नहीं रखते हैं। परन्तु

इसराएल के संतान का दसवां भाग जिन्हें वे परमेश्वर के लिये
हिलाने की भेंट के लिये चढ़ावें मैं ने लावियों के अधिकार में
दिया इस कारण मैं ने उन्हें कहा कि इसराएल के संतानों
में वे अधिकार न पावेंगे ॥
२५ । २६ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि लावियों को
यों कह और उन्हें बोल कि जब तुम इसराएल के संतानों से
दसवां भाग लेओ जो मैं ने उन से तुम्हारे अधिकार के लिये
तुम्हें दिया है तब तुम दसवें का दसवां भाग उठाने की
२७ बलिदान के कारण परमेश्वर के आगे चढ़ाइयो । जैसा कि
खलिहान का अन्न और कोल्हू की भरपूरी तुम्हारे उठाने की
२८ भेंटें गिनी जायेंगी । इस भांति से तुम भी उठाने की भेंट
परमेश्वर के लिये अपने सारे दसवें भागों से चढ़ाओ जिन्हें तुम
इसराएल के संतानों से पाओगे और तुम उस में से परमेश्वर
२९ की उठाने की भेंटें हारून याजक को दीजियो । अपनी समस्त
भेंटों में से उस अच्छे से अच्छे अर्थात् उस में का पवित्र किया
३० हुआ भाग परमेश्वर के हिलाने की भेंट चढ़ाइयो । इस लिये
उन्हें कह कि जब तुम उन में से अच्छे से अच्छे को उठाओ
तब लावियों के लिये खलिहान की बढ़ती और कोल्हू की
३१ बढ़ती की नाईं गिना जायगा । और तुम और तुम्हारा घराना
हर एक स्थान में उसे खावे क्योंकि यह तुम्हारी उस सेवा का
३२ प्रतिफल है जो तुम मंडली के तंबू में करते हो । और जब
तुम उस में से अच्छे से अच्छा उठाओगे तब तुम उस के कारण
पापी न ठहरोगे और इसराएल के संतानों की पवित्र वस्तुन को
अशुद्ध न करोगे और नाश न होओगे ॥

उन्नीसवां पर्ब्ब ।

१ । २ फिर परमेश्वर मूसा और हारून से कहके बोला । यह

व्यवस्था की रीति है जो परमेश्वर ने आज्ञा करके कहा कि
इसराएल के संतानों से कह कि एक निष्खोट और निर्दोष लाल
कलोर जिस पर कभी जूआ न रक्खा गया हो तुझ पास लावें।
३ और तुम उसे इलिअज़र याजक को देओ कि उसे छावनी से
४ बाहर ले जावे और वुह उस के आगे बलि किई जावे। और
इलिअज़र याजक अपनी अंगुली पर उस का लोहू लेके मंडली
५ के तंबू के आगे सात बार छिड़के। फिर उस के आगे कलोर
जलाई जावे उस की खाल और उस का मांस और उस का
६ लोहू उस के गोबर सहित सब जलाये जावें। तब याजक
संत की लकड़ी और ज़ूफ़ा और लाल लेके उस जलती हुई
७ कलोर के ऊपर डाल देवे। तब याजक अपने कपड़े धोवे और
पानी में स्नान करे और उस के पीछे छावनी में प्रवेश करे और
८ याजक सांझ लों अशुद्ध रहेगा। और वुह जो उसे जलाता है
अपने कपड़े पानी से धोवे और अपना अंग धोवे और सांझ लों
९ अपवित्र रहेगा। और कोई पावन मनुष्य उस कलोर की राख
को एकट्ठी करे और छावनी के बाहर पवित्र स्थान पर उठा
रक्खे और वुह इसराएल के संतानों की मंडली के लिये अलग
करने के पानी के लिये होवे वुह पाप की पवित्रता के लिये है।
१० और जो उस कलोर की राख को समेटता है सो अपने कपड़े
धोवे और सांझ लों अपवित्र रहेगा और यह इसराएल के संतानों
के और उन परदेशियों के लिये जो उन में बसते हैं एक विधि
सदा के लिये होवे॥

११ जो कोई मनुष्य की लोथ को छूवे सो सात दिन लों अपवित्र
१२ रहेगा। वुह आप को तीसरे दिन उस्से पवित्र करे और सातवें
दिन पवित्र होगा पर यदि वुह आप को तीसरे दिन पवित्र न
१३ करे तो सातवें दिन पवित्र न होगा। जो कोई किसी मनुष्य
की लोथ को छूवे और आप को पवित्र न करे उस ने परमेश्वर

के तंबू को अशुद्ध किया वुह प्राणी इसराएल के संतानों में से
कट जायगा क्योंकि अलग करने का पानी उस पर छिड़का नहीं
गया वुह अपवित्र है उस की अपवित्रता अब लों उस पर है।
१४ जब मनुष्य तंबू में मरे तब उस की यही व्यवस्था है सब जो
तंबू में आवें और सब जो तंबू में हैं सात दिन लों अशुद्ध
१५ होंगे। और हर एक खुला पात्र जिस पर ढंपना बंधा न होवे
१६ अशुद्ध है। और जो कोई तलवार से अरण्य में मारे हुए को
अथवा लोथ को अथवा मनुष्य के हाड़ को अथवा समाधि को
छूवे सो सात दिन लों अशुद्ध होवेगा॥
१७ और अशुद्ध को पाप से पवित्र करने के लिये जली हुई
कलोर की राख लेवे और एक वासन में बहता हुआ पानी उस
१८ पर डाले। और एक पवित्र मनुष्य ज़ूफ़ा लेवे और पानी में
डुबोके तंबू पर और सारे पात्रों पर और उन मनुष्यों पर जो
वहां थे और उस पर जिस ने हाड़ को अथवा जूझे हुए को
१९ अथवा मृतक को अथवा समाधि को छूआ हो छिड़के। और
पवित्र जन तीसरे दिन और सातवें दिन अपवित्र पर छिड़के
और फिर सातवें दिन अपने को पवित्र करे और अपने कपड़े
२० धोवे और पानी में नहावे तब सांझ को पवित्र होगा। परन्तु
वुह मनुष्य जो अपवित्र होवे और आप को पवित्र न करे वही
मनुष्य मंडली में से कट जायगा क्योंकि उस ने परमेश्वर के
पवित्र स्थान को अशुद्ध किया इस लिये कि अलग करने का
२१ पानी उस पर छिड़का न गया वुह अशुद्ध है। और यह उन
के लिये नित्य की विधि होगी जो कोई अलग करने के पानी
को छिड़के सो अपने कपड़े धोवे और जो कोई अलग करने के
२२ पानी को छूवे सो सांझ लों अशुद्ध रहेगा। और जो कुछ अपवित्र
मनुष्य छूवे सो अपवित्र होगा और जो प्राणी उसे छूवेगा सो
सांझ लों अशुद्ध होगा॥

बीसवां पर्ब्ब ।

१ तब इसराएल के संतानों की सारी मंडली पहिले मास सीना
के अरण्य में आई और क़ादिस में उतर पड़ी और मिरयम
वहां मर गई और वहां गाड़ी गई ॥
२ और वहां मंडली के लिये पानी न था तब वे मूसा और
३ हारून के विरोध पर एकट्ठा हुए। और लोगों ने मूसा से झगड़के
कहा हाय कि जब हमारे भाई परमेश्वर के आगे मर गये
४ हम भी मर जाते। तुम परमेश्वर की मंडली को इस अरण्य
५ में क्यों लाये कि हम और हमारे ढोर यहां मर जावें। और
तुम हमें मिस्र से इस बुरे स्थान में क्यों चढ़ा लाये यहां तो
खेत और गूलर और दाख और अनार नहीं हैं और पीने को
पानी नहीं ॥
६ तब मूसा और हारून सभा के आगे से मंडली के तंबू के
द्वार पर गये और औंधे मुंह गिरे तब परमेश्वर की महिमा
७ उन पर प्रगट हुई। और परमेश्वर मूसा से कहके बोला।
८ कि छड़ी ले और तू और तेरा भाई हारून मंडली को एकट्ठी
करो और उन की आंखों के आगे चटान को कहो और वुह
अपना पानी देगा और तू उन के लिये चटान से पानी निकाल
और उस्से तू मंडली को और उन के पशुन को पिला ॥
९ सो मूसा ने छड़ी को परमेश्वर के आगे से लिया जैसी उस
१० ने उसे आज्ञा किई थी। और मूसा और हारून ने मंडली को
उस चटान के आगे एकट्ठी किया और उस ने उन्हें कहा कि
सुनो हे दंगइतो क्या हम तुम्हारे लिये इस चटान से पानी
११ निकालें। तब मूसा ने अपना हाथ उठाया और उस चटान
को दो बार अपनी छड़ी से मारा तब बहुताई से पानी निकला
और मंडली और उन के पशुन ने पीया ॥

१२ तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को इस कारण कहा कि
तुम ने मेरी प्रतीति न किई कि इसराएल के संतानों की दृष्टि
में मुझे पवित्र करो इस लिये तुम इस मंडली को उस देश में
१३ जो मैं ने उन्हें दिया है न लाओगे। यह झगड़े का पानी है
क्योंकि इसराएल के संतानों ने परमेश्वर से झगड़ा किया और
उस ने उन के मध्य आप को पवित्र किया॥
१४ और क़ादिस से मूसा ने अदूम के राजा के पास दूतों को भेजा
कि तेरा भाई इसराएल कहता है कि जो जो दुःख हम पर
१५ बीता है तू जानता है। कि किस भांति से हमारे पितर मिस्र
में उतर गये और हम मिस्र में बहुत दिन रहे और मिस्रियों
१६ ने हमें और हमारे पितरों को दुःख दिया। और जब हम
परमेश्वर के आगे चिल्लाये तब उस ने हमारा शब्द सुना और
एक दूत को भेजके हमें मिस्र में से निकाल लाया और देख
१७ हम तेरे अत्यंत सिवाने के नगर क़ादिस में हैं। सो हमें
अपने देश में होके जाने दीजिये कि हम खेतों और दाखों
की बाटिकों में न जावेंगे और न कूओं का पानी पीवेंगे हम
राजमार्ग से होके निकले चले जावेंगे हम दहिने अथवा बायें
हाथ न मुड़ेंगे जब लों कि तेरे सिवाने से बाहर न निकल
१८ जावें। तब अदूम ने उसे कहा कि तू मेरे सिवाने में होके
१९ न जाना नहीं तो मैं तलवार से तुझ पर निकलूंगा। तब
इसराएल के संतानों ने उसे कहा कि हम राजमार्ग से होके
चले जावेंगे और यदि मैं अथवा मेरे ढोर तेरा पानी पीवें तो मैं
उस का दाम देऊंगा कुछ न करूंगा केवल मैं अपने पाओं से
२० चला जाऊंगा। तब उस ने कहा कि तू कधी जाने न पावेगा तब
अदूम बहुत लोगों के साथ और बड़े बल से उस पर चढ़ आया।
२१ सो अदूम ने इसराएल को अपने सिवाने में से जाने न दिया
इस कारण इसराएल उस्से फिर गये॥

२२ और इसराएल के संतानों की सारी मंडली क़ादिस से कूच
करके हूर पहाड़ पर आई ॥
२३ और परमेश्वर ने अदूम देश के सिवाने के लग हूर पहाड़ पर
२४ मूसा और हारून से कहा। कि हारून अपने लोगों में एकट्ठा
किया जायगा क्योंकि वुह उस देश में जिसे मैं ने इसराएल के
संतानों को दिया है न पहुंचेगा इस लिये कि तुम झगड़े के पानी
२५ पर मेरे बचन से फिर गये। हारून और उस के बेटे इलिअज़र
२६ को ले और उन्हें हूर पहाड़ पर ला। और हारून के वस्त्र उतार
और उन्हें उस के बेटे इलिअज़र को पहिना कि हारून समेटा
२७ जायगा और वहां मर जायगा। सो जैसा परमेश्वर ने आज्ञा
किई थी मूसा ने वैसा ही किया और वे मंडली के आगे हूर
२८ पहाड़ पर चढ़ गये। और मूसा ने हारून के वस्त्र उतारे
और उन्हें उस के बेटे इलिअज़र को पहिनाया और हारून
वहां पहाड़ की चोटी पर मर गया और मूसा और इलिअज़र
२९ पहाड़ से उतर आये। और जब सारी मंडली ने देखा कि
हारून मर गया तब इसराएल के सारे घराने ने हारून के
कारण तीस दिन लों बिलाप किया ॥

एक्कीसवां पर्व्व।

१ और जब राजा अराद कनआनी ने जो दक्षिण में बास करता
था सुना कि इसराएल भेदियों के मार्ग से आये तो इसराएल
२ से लड़ा और उन में से बंधुआई किया। तब इसराएल ने परमेश्वर
की मनौती मानी और बोला कि यदि तू सच मुच इन लोगों को
मेरे बश में कर देगा तो मैं उन के नगरों को सर्बथा नाश कर
३ देऊंगा। सो परमेश्वर ने इसराएल का शब्द सुना और कनआनियों
को उन के हाथ में सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें और उन के नगरों
को सर्बथा नष्ट कर दिया और उस ने उस स्थान का नाम हुरमः रक्खा॥

४ फिर उन्हों ने हूर पहाड़ से लाल समुद्र की ओर कूच किया
जिसतें अदूम के देश को घेर लेवें परन्तु मार्ग के कारण लोगों
५ का प्राण बहुत उदास हुआ। और लोग ईश्वर के और मूसा के
विरोध में बोले कि तुम क्यों हमें मिस्र से चढ़ा लाये कि हम
अरण्य में मरें क्योंकि अन्न जल कुछ नहीं है और हमें तो इस
६ हलकी रोटी से घिन आती है। तब परमेश्वर ने उन लोगों
में अग्नि सर्प भेजे और उन्हों ने लोगों को काटा और इसराएल
७ के बहुत लोग मर गये। तब लोग मूसा पास आये और
बोले कि हम ने पाप किया है क्योंकि हम ने परमेश्वर के और
तेरे विरोध में कहा है सो तू परमेश्वर से प्रार्थना कर कि हम्में
से उन सांपों को उठा लेवे सो मूसा ने लोगों के लिये प्रार्थना
८ किई। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि अपने लिये एक अग्नि
सर्प बना और उसे एक लट्ठ पर लटका और यों होगा कि हर
९ एक डसा हुआ जब उस पर दृष्टि करेगा तो जीवेगा। सो मूसा
ने पीतल का एक सर्प बनाके उसे लट्ठ पर रक्खा और यों हुआ
कि यदि सर्प ने किसी को डसा तो जब उस ने उस पीतल
के सर्प पर दृष्टि किई तब वुह जीया॥

१० तब इसराएल के संतान आगे बढ़े और ओबात में डेरा
किया॥

११ फिर ओबात से कूच किया और अजीअबरीम के बन में जो
मोअब के आगे पूरब ओर है डेरा किया॥

१२ वहां से कूच करके जरद की तराई में डेरा किया।
१३ वहां से जो चले तो अरनून के पार उस बन में जो अमूरियों के
सिवाने का अंत है आके डेरा किया क्योंकि अरनून मोअब का
१४ सिवाना है मोअब और अमूरियों के मध्य। इसी लिये परमेश्वर
के संग्राम की पुस्तक में लिखा है कि

उस ने लाल समुद्र में और अरनून के नालों में क्या क्या

१५ कुछ किया। और नालों के धारे के पास जो आर की बस्तियों
के नीचे जाता है और मोअबियों के सिवानों पर है॥
१६ और वहां से बिअर: को जो कूआ है जिस के कारण
परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों को एकट्ठे कर कि मैं उन्हें
१७ पानी देऊंगा। उस समय इसराएल ने यह भजन गाया
कि
१८ हे कूए उबल उस के लिये गाओ। अध्यक्षों ने उसे खोदा
लोगों के महानों ने उसे खोदा व्यवस्थादायक के समान अपनी
लाठियों से
१९ और बन से मत्तन: को गये। और मत्तन: से नहलिएल
२० को और नहलिएल से बामात को। और बामात की तराई से
जो मोअब के देश में है पिसग: की चोटी लों जहां से जसमन
का ओर दिखाता था॥
२१ और इसराएल ने अमूरियों के राजा सेहून के पास यह
२२ कहके दूत भेजे। कि हमें अपने देश से निकल जाने दे हम
खेतों और दाखों की बारियों में न पैठेंगे न हम कूए का पानी
पीवेंगे परन्तु राजमार्ग से चले जायेंगे यहां लों कि तेरे सिवानों
२३ से बाहर हो जावें। पर सेहून ने इसराएल को अपने सिवानों
से जाने न दिया परन्तु सेहून अपने लोगों को एकट्ठे करके इसराएल
का साम्ना करने को अरण्य में निकला और जहाज़ में पहुंचके
२४ इसराएल से संग्राम किया। और इसराएल ने उन्हें खड्ग की
धार से मार लिया और उन के देश पर अरनून से लेके यबूक़
लों अर्थात् अम्मून के संतान लों बश में किया क्योंकि अम्मून
२५ के संतानों का सिवाना दृढ़ था। सो इसराएल ने ये सब नगर
ले लिये और अमूरियों के सब नगरों में और हसबून में और
२६ उस के सारे गांओं में बास किया। क्योंकि हसबून अमूरियों
के राजा सेहून का नगर था जो मोअब के अगले राजा से लड़ा

और उस का समस्त देश अरनून लों उस के हाथ से ले लिया।
२७ इसी लिये दृष्टांतवक्ते कहते हैं कि
हसबून में आओ सैहून का नगर बस जावे और सिद्ध
२८ होवे। क्योंकि आग हसबून से निकली लवर सैहून के नगर से
जिस ने मोअब के आर को और अरनून के ऊंचे स्थान के प्रधानों
२९ को भस्म किया। हे मोअब तुझ पर संताप है कमूस के लोगो
तुम नाश हुए उस ने अपने बचे हुए बेटों को दे दिया और
अपनी बेटियां अमूरियों के राजा सैहून की बंधुआई में कर
३० दिईं। और उन का दिया हसबून से लेके दैबून लों बुझ गया
और नफ़ह लों जो मेदिबा के पास है उजाड़ दिया॥
३१ यों इसराएलियों ने अमूरियों के देश में बास किया।
३२ तब मूसा ने यअज़ीर का भेद लेने को भेजा और उन्हों ने उस के
गांओं को लिया और अमूरियों को जो वहां थे हांक दिया॥
३३ तब वे फिरे और बसन की ओर चढ़े और बसन के राजा
ऊज़ ने अपने सब लोग लेके युद्ध के लिये अद्रिअई में संग्राम
३४ के लिये उन का साम्ना किया। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा
कि उस्से मत डर क्योंकि मैं ने उसे और उस के समस्त लोगों
को और उस के देश को तेरे हाथ में सौंप दिया सो तू उस्से
वैसा कर जैसा तू ने अमूरियों के राजा सैहून से किया जो
३५ हसबून में रहता था। सो उन्हों ने उसे और उस के बेटों
और उस के सारे लोगों को यहां लों मारा कि कोई जीता न
छूटा और उस के देश में बास किया॥

बाईसवां पर्व्व।

१ फ़िर इसराएल के संतान आगे बढ़े और यरीहू के लग
यरदन के इसी पार मोअब के चौगानों में डेरा किया॥
२ और जब सफ़ूर के बेटे बलक़ ने सब देखा जो इसराएल

३ ने अमूरियों से किया। तो मोअब उन लोगों से निपट डरा
इस कारण कि वे बहुत थे और मोअब इसराएल के संतानों
४ के कारण से दुःखित हुआ। तब मोअब ने मिदयान के प्राचीनों
से कहा कि अब ये जथा उन सब को जो हमारे आस पास हैं
यों चाट जावेंगी जैसे कि बैल चौगान की घास को चट कर
लेता है और उस समय सफ़ूर का बेटा बलक़ मोअबियों का राजा
५ था। सो उस ने बऊर के बेटे बलआम पास फ़तूरः को जो उस के
लोगों के संतान के देश की नदी पास थे दूत भेजे जिसतें उसे
यह कहके बुला लावें कि देख लोग मिस्र से बाहर आये हैं
६ देख उन से पृथिवी छिप गई है और वुह मेरे साम्ने ठहरे हैं। सो
अब आइये इन लोगों को मेरे लिये स्राप दीजिये क्योंकि वे
मुझ से बली हैं क्या जाने मैं उन्हें मार सकूं और उन्हें इस
देश में से खदेड़ देऊं क्योंकि मैं जानता हूं कि जिसे तू आशीष
देता है सो आशीष प्राप्त करता है और जिसे तू स्राप देता है
७ वुह स्रापित है। तब मोअब के प्राचीन और मिदयान के प्राचीन
टोने का प्रतिफल हाथ में लेके चले और बलआम पास आये
८ और बलक़ का बचन उसे कहा। और उस ने उन्हें कहा कि
आज रात यहां रहो और जैसा परमेश्वर मुझे कहेगा मैं तुम्हें
कहूंगा सो मोअब के प्रधान बलआम के संग रहे॥
९ तब ईश्वर बलआम पास आया और कहा कि तेरे संग
१० ये कौन मनुष्य हैं। और बलआम ने ईश्वर से कहा कि मोअब
के राजा सफ़ूर के बेटे बलक़ ने उन्हें मुझ पास भेजा और कहा।
११ कि देख लोग मिस्र से निकल आये हैं और वुह पृथिवी को ढांप रहे
हैं अब आ मेरे कारण उन्हें स्राप दे क्या जाने मैं उन से जय
१२ पाऊं और उन्हें खदेड़ देऊं। तब ईश्वर ने बलआम से कहा
कि तू उन के साथ मत जा उन लोगों को स्राप मत दे क्योंकि
वे आशीष प्राप्त किये हैं॥

१३ और बलआम ने बिहान को उठके बलक़ के अध्यक्षों से
कहा कि अपने देश को जाओ क्योंकि परमेश्वर मुझे तुम्हारे
१४ साथ जाने नहीं देता। सो मोअब के अध्यक्ष उठे और बलक़
पास आये और बोले कि बलआम ने हमारे साथ आने को नाह
किया है॥

१५ तब बलक़ ने इन से अधिक और प्रतिष्ठित अध्यक्षों को
१६ फिर भेजा। और उन्हों ने आके बलआम से कहा कि सफ़ूर
के बेटे बलक़ ने यों कहा है कि मुझ पास आने में आप को
१७ कोई रोकने न पावे। क्योंकि मैं आप की अति बड़ी प्रतिष्ठा
करूंगा और जो कुछ आप मुझे कहेंगे मैं करूंगा मैं आप की
बिनती करता हूं कि आइये इन लोगों को मेरे निमित्त स्राप
१८ दीजिये। तब बलआम ने बलक़ के सेवकों से उत्तर देके कहा
कि यदि बलक़ अपना घर भरके चांदी सोना देवे तो मैं परमेश्वर
अपने ईश्वर के बचन को उल्लंघन करके घट बढ़ नहीं कर
१९ सक्ता। सो अब तुम लोग भी यहां रात भर रहो जिसतें मैं
देखूं कि परमेश्वर मुझे अधिक क्या कहेगा॥

२० फिर ईश्वर रात को बलआम के पास आया और उसे कहा
कि यदि ये मनुष्य तुझे बुलाने आवें तो उठके उन के साथ
जा पर जो बचन मैं तुझे कहूं सोई कहियो॥

२१ सो बलआम बिहान को उठा और अपनी गदही पर काठी
२२ रक्खी और मोअब के प्रधानों के साथ गया। और उस के
जाने के कारण ईश्वर का क्रोध भड़का और परमेश्वर का दूत
बैर लेने को उस के सन्मुख मार्ग में खड़ा हुआ सो वुह अपनी
गदही पर चढ़ा हुआ जाता था और उस के दो सेवक उस
२३ के साथ थे। सो गदही ने परमेश्वर के दूत को अपने हाथ
में तलवार खींचे हुए मार्ग में खड़ा देखा तब गदही मार्ग से
अलग खेत में फिर गई तब उसे मार्ग में फिरने के लिये बलआम

२४ ने गदही को मारा। तब परमेश्वर का दूत दाख की बारियों
२५ के पथ में खड़ा हुआ था जिस के इधर उधर भीत थी। और
जब परमेश्वर के दूत को गदही ने देखा तब उस ने भीत में
जा रगड़ा और बलआम का पांव भीत से दबाया और उस ने
२६ उसे फिर मारा। तब परमेश्वर का दूत आगे बढ़के एक सकेत
स्थान में खड़ा हुआ जहां दहिने बायें फिरने का मार्ग न था।
२७ और गदही परमेश्वर के दूत को देखके बलआम के नीचे बैठ
गई तब बलआम का क्रोध भड़का और उस ने गदही को
२८ लाठी से मारा। तब परमेश्वर ने गदही का मुंह खोला और
उस ने बलआम से कहा कि मैं ने तेरा क्या किया है कि तू
२९ ने मुझे अब तीन बार मारा। और बलआम ने गदही से कहा
कि तू ने मुझे बौड़हा बनाया मैं चाहता कि मेरे हाथ में
३० तलवार होती तो मैं अब तुझे मार डालता। पर गदही ने बलआम
से कहा कि क्या मैं आप की गदही नहीं हूं जिस पर आप आज
के दिन लों चढ़ते हैं क्या मैं और ऐसा कधी करती आई हूं वुह
३१ बोला कि नहीं। तब परमेश्वर ने बलआम की आंखें खोलीं और
उस ने परमेश्वर के दूत को मार्ग में खड़े हुए देखा और उस के
हाथ में खींची हुई तलवार है तब उस ने अपना सिर झुकाया
३२ और औंधा गिरा। तब परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि तू
ने अपनी गदही को यह तीन बार क्यों मारा देख मैं तेरे बिरुद्ध
में निकला हूं इस लिये कि तेरी चाल मेरे आगे हठीली है।
३३ और गदही मुझे देखके यह तीन बार मुझ से फिर गई यदि वुह मुझ
से न फिरती तो निश्चय अब मैं तुझे मार ही डालता और उसे
३४ जीती छोड़ता। तब बलआम ने परमेश्वर के दूत से कहा कि
मुझ से पाप हुआ क्योंकि मैं ने न जाना कि तू मेरे बिरुद्ध
मार्ग में खड़ा है सो अब यदि तू अप्रसन्न है तो मैं फिर
३५ जाऊंगा। पर परमेश्वर के दूत ने बलआम से कहा कि इन

मनुष्यों के साथ जा परन्तु केवल जो वचन मैं तुझे कहूं सोई
कहियो सो बलआम बलक़ के प्रधानों के साथ गया ॥
३६ जब बलक़ ने सुना कि बलआम पहुंचा तो उस ने अत्यंत
तीर को अरनून के सिवाने में मोअब के एक नगर लों उस की
३७ अगुआई को निकला । तब बलक़ ने बलआम से कहा कि
क्या मैं ने बड़ी बिनती करके तुझे नहीं बुलाया तू मुझ पास
क्यों चला न आया क्या निश्चय मैं तेरी महात्म्य नहीं बढ़ा
३८ सक्ता । तब बलआम ने बलक़ से कहा देख मैं तेरे पास आया
क्या मुझ में कुछ शक्ति है कि मैं कहूं जो बात ईश्वर मेरे मुंह
में डालेगा सोई कहूंगा ॥
३९ और बलआम और बलक़ साथ साथ गये और क़रियासहसूस
४० में पहुंचे । तब बलक़ ने बैल और भेड़ चढ़ाये और बलआम
के और उन अध्यक्षों के पास जो उस के साथ थे भेजा ॥
४१ और बिहान को यों हुआ कि बलक़ ने बलआम को साथ
लिया और उसे बआल के ऊंचे स्थानों में लाया जिसतें वुह
वहां से लोगों को बाहर बाहर देखे ॥

तेईसवां पर्ब्ब ।

१ तब बलआम ने बलक़ से कहा कि मेरे लिये यहां सात
वेदी बना और मेरे लिये यहां सात बैल और सात मेढ़े सिद्ध
२ कर । और जैसा बलआम ने कहा था बलक़ ने वैसा किया
और बलक़ और बलआम ने हर वेदी पर एक बैल और एक
३ मेढ़ा चढ़ाया । फिर बलआम ने बलक़ से कहा कि अपने
बलिदान की भेंट के पास खड़ा रह और मैं जाऊंगा कदाचित्
परमेश्वर मुझ से भेंट करे और जो कुछ वुह मुझे दिखावेगा मैं
४ तुझे कहूंगा सो वुह ऊंचे स्थान को चला । और ईश्वर बलआम
को मिला और उस ने उसे कहा कि मैं ने सात बेदी सिद्ध

क्रिया और एक एक बैल और एक एक मेढ़ा हर एक पर
५ चढ़ाया। तब परमेश्वर ने बलग्राम के मुंह में वचन डाला
और उसे कहा कि बलक़ पास फिर जा और उसे यों कह।
६ सो वुह उस पास फिर आया और क्या देखता है कि वुह अपने
बलिदान की भेंट के पास मोअब के सब प्रधानों समेत खड़ा
७ है। तब उस ने अपने दृष्टान्त में कहा कि
पूरब के पहाड़ों से अराम से मोअब के राजा बलक़ ने
मुझे बुलाया कि मेरे निमित्त यअक़ूब को स्राप दीजिये और
८ इसराएल को धिक्कारिये। मैं उसे क्योंकर स्रापूं जिसे सर्बशक्तिमान
ने नहीं स्रापा अथवा उसे धिक्कारूं जिसे परमेश्वर ने नहीं धिक्कारा।
९ क्योंकि पहाड़ों की चोटी पर से मैं उसे देखता हूं और पहाड़ियों
पर से उसे ताकता हूं देखो ये लोग अकेले रहेंगे और जातिगणों
१० के मध्य गिने न जावेंगे। यअक़ूब की धूल को कौन गिन
सक्ता है और इसराएल की चौथाई का लेखा कौन ले सक्ता है
हाय कि मैं धर्मी की मृत्यु मरूं और मेरा अंत उस का सा
हो॥
११ तब बलक़ ने बलग्राम से कहा कि तू ने मुझ से क्या
क्रिया मैं ने तुझे अपने शत्रुन को स्राप देने को लिया और
१२ देख तू ने उन्हें सर्बथा आशीष दिया। और उस ने उत्तर दिया
और कहा कि क्या मुझे उचित नहीं कि वही बात कहूं जो
परमेश्वर ने मेरे मुंह में डाली है॥
१३ और बलक़ ने उसे कहा कि अब मेरे साथ और ही स्थान
पर चलिये वहां से आप उन्हें देखिये आप केवल उन को
बाहर बाहर देखियेगा और उन्हें सब के सब न देखियेगा
१४ और मेरे लिये वहां से उन पर स्राप दीजिये। और वुह उसे
वहां से सोफ़ीम के खेत में पिसगः की चोटी पर ले गया
और सात बेदी बनाईं और हर बेदी पर एक बैल और एक

१५ मेढ़ा चढ़ाया। तब उस ने बलक़ से कहा कि जब लों मैं
वहां जाऊं और ईश्वर से मिल आऊं तू यहां अपने बलिदान
१६ की भेंट पास खड़ा रह। सो परमेश्वर बलआम को मिला
और उस के मुंह में वचन डाला और कहा कि बलक़ पास
१७ फिर जा और यों कह। और जब वुह उस पास पहुंचा तो
क्या देखता है कि वुह अपने बलिदान की भेंट के पास मोअब
के प्रधानों समेत खड़ा है तब बलक़ ने उस्से कहा कि परमेश्वर
१८ ने क्या कहा है। तब उस ने अपने दृष्टांत उठाके कहा कि
उठ हे बलक़ और सुन हे सफ़ूर के बेटे मेरी ओर कान
१९ धर। सर्वशक्तिमान मनुष्य नहीं कि झूठ बोले न मनुष्य का
पुत्र कि वुह पछतावे क्या वुह कहे और न करे अथवा बोले
२० और उसे पूरा न करे। देख मैं ने आशीष के निमित्त पाया
है और उस ने आशीष दिया है और मैं उसे पलट नहीं सक्ता।
२१ उस ने यअ़क़ूब में बुराई नहीं देखी और न उस ने इसराएल में
हठ देखा परमेश्वर उस का ईश्वर उस के साथ है और एक राजा
२२ का ललकार उन के मध्य में है। सर्वशक्तिमान उन्हें मिस्र से निकाल
२३ लाया वुह अरने का सा बल रखता है। निश्चय यअ़क़ूब के
बिरोध टोना नहीं और इसराएल के विरुद्ध कोई प्रश्न नहीं
इस समय के समान यअ़क़ूब के और इसराएल के बिषय में
२४ कहा जायगा कि सर्वशक्तिमान ने क्या किया। देखो ये लोग
महा सिंह की नाईं उठेंगे और आप को युवा सिंह के समान
उठावेंगे वुह न सोवेगा जब लों अहेर न खा ले और जब लों
जूझे का लोहू न पी ले॥
२५ तब बलक़ ने बलआम से कहा कि न तो उन्हें स्राप न
२६ आशीष दीजिये। परन्तु बलआम ने उत्तर दिया और बलक़
से कहा क्या मैं ने तुझे नहीं कहा कि जो कुछ परमेश्वर कहेगा
मैं उसे अवश्य करूंगा॥

२७ तब बलक़ ने बलआ़ाम से कहा कि आइये मैं आप को
दूसरे स्थान पर ले जाऊं कदाचित् ईश्वर की इच्छा होवे कि
२८ वहां से आप मेरे लिये उन्हें स्राप दीजिये। तब बलक़
बलआ़ाम को फ़गुर की चोटी पर जो जसमन के सन्मुख है
२९ लाया। और बलआ़ाम ने बलक़ से कहा कि मेरे लिये यहां
सात बेदी बना और यहां मेरे लिये सात बैल और सात मेढ़े
३० सिद्ध कर। और जैसा बलआ़ाम ने कहा था बलक़ ने वैसा किया
और हर एक बेदी पर एक बैल और एक मेढ़ा चढ़ाया॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ जब बलआ़ाम ने देखा कि इसराएल को आशीष देना ईश्वर
को अच्छा लगा तब वुह अब की आगे की नाईं नहीं गया कि
टोना करे परन्तु उस ने अपने मुंह को बन की ओर किया।
२ और बलआ़ाम ने अपनी आंखें उठाईं और इसराएल को देखा
कि अपनी अपनी गोष्ठियों के समान बसे हैं तब ईश्वर का आत्मा
३ उस पर उतरा। और उस ने अपने दृष्टांत उठाके कहा कि
बऊ़र के बेटे बलआ़ाम ने कहा है और वुह मनुष्य जिस
४ की आंखें खुली हैं बोला है। जिस ने ईश्वर के बचन को सुना
है और सर्बशक्तिमान ईश्वर का दर्शन पाया है सो पड़ा है
५ परन्तु आंखें खुली हैं उस ने कहा है। क्याही सुन्दर हैं तेरे
६ तंबू हे यअ़क़ूब और तेरे निवासस्थान हे इसराएल। वे तराई
की नाईं और नदी के निकट की बारियों की नाईं और जैसे
अगर के बृक्ष जिसे परमेश्वर ने लगाया है और जैसे पानी के
७ निकट के अरज बृक्ष होवें फैले हुए हैं। वुह अपनी मोट से
पानी बहावेगा और उस का बीज बहुत से पानियों में होगा
उस का राजा अगाग से बड़ा होगा और उस का राज्य बढ़
८ जावेगा। सर्बशक्तिमान उसे मिस्र से बाहर निकाल लाया उस

में अरने का सा बल है वुह अपने शत्रु के देशियों का भक्षण
करेगा और उन की हड्डियों को चूर करेगा और अपने बाणों
९ से उन्हें छेदेगा। वुह झुकता है और सिंह की नाईं हां महासिंह
की नाईं लेटा है उसे कौन छेड़ सक्ता है धन्य है वुह जो
तुझे आशीष देवे और स्रापित है वुह जो तुझे स्राप देवे॥
१० तब बलक़ का क्रोध बलआम पर भड़का और उस ने अपने
दोनों हाथों से थपोली पीटी और बलक़ ने बलआम से कहा
कि मैं ने तो तुझे अपने वैरियों को स्राप देने को बुलाया और
११ देख तू ने तीन बार उन्हें सर्वथा आशीष दिया है। चल
अपने स्थान को भाग मैं ने तेरी बड़ी प्रतिष्ठा करने चाहा था
१२ पर देख परमेश्वर ने तुझे प्रतिष्ठा से रोक रक्खा। तब बलआम
ने बलक़ से कहा कि मैं ने तेरे दूतों को जिन्हें तू ने मेरे पास
१३ भेजा था नहीं कहा। कि यदि बलक़ अपना घर भर चांदी
सोना मुझे देवे मैं भला अथवा बुरा करने में परमेश्वर की आज्ञा
को उल्लंघन नहीं कर सक्ता परन्तु जो कुछ परमेश्वर कहे मैं वही
१४ कहूंगा। और अब देख मैं अपने लोगों में जाता हूं आ मैं
तुझे संदेश देऊंगा कि ये लोग तेरे लोगों से पिछले दिनों में
१५ क्या करेंगे। तब उस ने अपने दृष्टांत उठाके कहा और बोला कि
बअर का पुत्र बलआम कहता है और वुह मनुष्य जिस की
१६ आंखें खुली हैं कहता है। वही जिस ने सर्वशक्तिमान के वचन
को सुना है और अत्यंत महान के ज्ञान को जाना है जिस ने
सर्वशक्तिमान का दर्शन पाया है जो पड़ा है परन्तु उस की
१७ आंखें खुली हैं। मैं उसे देखूंगा पर अभी नहीं मेरी दृष्टि उस
पर पड़ेगी पर निकट से नहीं यअक़ूब से एक तारा निकलेगा
और इसराएल से एक राजदंड उठेगा और मोअब के कोनों को
१८ मार लेगा और सेत के सारे संतान को नाश करेगा। और अदूम
अधिकार होगा और शईर भी अपने शत्रुन के लिये अधिकार

१९ होगा और इसराएल बीरता करेगा। और वुह जो राज्य पावेगा
सो यअ़क़ूब से निकलेगा और जो नगर में बच रहेगा उसे नाश
करेगा॥

२० तब उस ने अ़मालीक़ को देखा और अपना दृष्टांत उठाया
और कहा कि

अ़मालीक़ लोगों में पहिला था परन्तु अंत में वुह नाश
होगा॥

२१ फिर उस ने क़ैनियों पर दृष्टि किई और अपना दृष्टांत उठाया
और कहा कि

तेरा निवास दृढ़ है और तू पहाड़ पर अपना खोंता बनाता
२२ है। तथापि क़ैनी उजाड़ किये जावेंगे यहां लों कि असूर तुझे
बंधुआई में ले जावेगा॥

२३ तब उस ने अपना दृष्टांत उठाया और कहा कि

हाय कौन जीता रहेगा जब सर्वशक्तिमान योंहीं करेगा।
२४ और कित्ती के तीर से जहाज़ आवेंगे और असूर को और इब्र
को सतावेंगे और वुह भी सर्वथा नाश होवेगा॥

२५ तब बलआ़म उठा और चला और अपने स्थान को फिर
गया और बलक़ ने भी अपना मार्ग लिया॥

पचीसवां पर्व्व।

१ सो इसराएल सित्तीम में रहा और लोगों ने मोअ़बियों की
२ बेटियों से व्यभिचार करना आरंभ किया। और उन्हों ने अपने
देवतों के बलिदानों में उन लोगों को नेउता दिया और लोगों
३ ने खाया और उन के देवतों को दण्डवत् किई। और इसराएल
बअ़लफ़ग़ूर से मिले तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर
४ भड़का। और परमेश्वर ने मूसा से कहा कि लोगों के सारे
प्रधानों को पकड़ और उन्हें परमेश्वर के आगे सूर्य्य के सन्मुख

टांग दे जिसतें परमेश्वर के क्रोध का भड़कना इसराएल पर
५ से टल जावे । सो मूसा ने इसराएल के न्याइयों से कहा कि
तुम्में में से हर एक अपने लोगों को जो बअलफ़ग़ूर से मिल
गये थे मार डालो ॥
६ और देखो एक इसराएली आया और अपने भाइयों के पास
एक मिदयानी स्त्री को मूसा और इसराएल के संतानों की
सारी मंडली के साम्ने लाया और वे मंडली के तंबू के द्वार पर
७ बिलाप करते थे । और जब हारून याजक के बेटे इलिअज़र
के बेटे फ़ीनिहास ने यह देखा तब वुह मंडली में से उठा
८ और बरछी अपने हाथ में लिई । और उस मनुष्य के पीछे तंबू में
घुसा और उन दोनों को इसराएली पुरुष और स्त्री के पेट को
९ गोदा तब इसराएल के संतानों में से मरी थम गई । और वे
जो उस मरी से मरे सो चौबीस सहस्र थे ॥
१० । ११ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि हारून याजक
के बेटे इलिअज़र के बेटे फ़ीनिहास ने मेरे कोप को इसराएल
के संतानों पर से फेरा जब वुह उन में मेरे निमित्त ज्वलित
था जिसतें मैं ने इसराएल के संतानों को अपने झल से भस्म
१२ न किया । सो कह कि देख मैं उसे अपने कुशल की बाचा
१३ देता हूं । सो वुह उस के और उस के पीछे उस के बंश के
लिये होगा अर्थात् सनातन की याजकता की बाचा इस कारण
कि वुह अपने ईश्वर के लिये ज्वलित था और उस ने इसराएल
१४ के संतानों के लिये प्रायश्चित्त दिया । और उस इसराएली मनुष्य
का नाम जो उस मिदयानी स्त्री के साथ मारा गया ज़िमरी था
सलू का बेटा जो शमऊनियों के एक श्रेष्ठ घर का अध्यक्ष था ।
१५ और उस मिदयानी स्त्री का नाम जो मारी गई कज़बी था सूर
की बेटी जो लोगों का प्रधान और मिदयान के संतानों में श्रेष्ठ
घर का था ॥

१६ । १७ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि मिदयानियों
१८ को खिझाओ और उन्हें मारो। क्योंकि उन्हों ने अपने छल से
जिस्से उन्हों ने फ़ग़ूर के विषय में तुम्हें छल दिया और
कज़बी के विषय में जो मिदयानी के प्रधान की बेटी और
उन की बहिन थी जो उस मरी के दिन जो फ़ग़ूर के कारण
से हुई मारी गई उन्हों ने तुम्हें खिझाया॥

छब्बीसवां पर्व्व।

१ और ऐसा हुआ कि उस मरी के पीछे परमेश्वर ने मूसा से और
२ हारून याजक के बेटे इलिअज़र से कहा। कि इसराएल के
संतानों की समस्त मंडली की बीस बरस से लेके ऊपर लों
उन के पितरों के समस्त घरानों की सब जो इसराएल में
३ संग्राम के योग्य हैं गिनती लेओ। सो मूसा और इलिअज़र
याजक ने मोअब के चौगानों में यरदन नदी और यरीहू के
४ लग उन से कहा। कि बीस बरस से लेके ऊपर लों गिनो
जैसे परमेश्वर ने मूसा और इसराएल के संतानों को जो मिस्र
की भूमि से निकले थे आज्ञा किई थी॥
५ रूबिन इसराएल का पहिलौठा बेटा रूबिन का संतान
हनूक जिस्से हनूकियों का घराना है और फ़लू जिस्से फ़लूइयों
६ का घराना है। हसरून जिस्से हसरूनियों का घराना है करमी
७ जिस्से करमियों का घराना है। ये रूबिनियों के घराने और
जो उन में गिने गये सो तेंतालीस सहस्र सात सौ तीस थे।
८ । ९ और फ़लू के बेटे इलिअब। और इलिअब के बेटे नमूएल
और दातन और अबिराम ये वुह दातन और अबिराम जो
मंडली में नामी जो क़ुरह की जथा में मूसा और हारून के
बिरोध में झगड़ा जब उन्हों ने परमेश्वर के बिरोध में झगड़ा।
१० और भूमि ने अपना मुंह खोला और उन्हें क़ुरह सहित निंगल

गई जिस समय वुह जथा मर गई जब कि उस आग ने अढ़ाई
११ सौ मनुष्यों को खा लिया और वे एक चिन्ह हुए। तथापि
कुरह के संतान न मरे ॥

१२ शमऊन के बेटे अपने घराने के समान नमूएल से नमूएलियों
का घराना यमीन से यमीनियों का घराना याकीन से याकीनियों
१३ का घराना। ज़िरह से ज़िरहियों का घराना साऊल से
१४ साऊलियों का घराना। ये शमऊनियों के घराने बाईस सहस्र
दो सौ थे ॥

१५ जद के संतान अपने घरानों के समान सफ़न से सफ़ूनियों का
घराना हाजी से हाजियों का घराना सूनी से सूनियों का
१६ घराना। उज़नी से उज़नियों का घराना एरी से एरियों का घराना।
१७ अरूद से अरूदियों का घराना अरेली से अरेलियों का घराना।
१८ ये जद के संतान के घराने उन की गिनती के समान चालीस
सहस्र पांच सौ थे ॥

१९ यहूदाह के बेटे एर और ओनान और एर और ओनान
२० कनआन के देश में मर गये। और यहूदाह के बेटे अपने
घरानों के समान ये हैं सेला से सेलानियों का घराना फ़ारस से
२१ फ़ारसियों का घराना ज़िरह से ज़िरहियों का घराना। और
फ़ारस के बेटे हसरून से हसरूनियों का घराना हमूल से
२२ हमूलियों का घराना। ये यहूदाह के घराने उन की गिनती
के समान छिहत्तर सहस्र पांच सौ थे ॥

२३ इशकार के बेटे उन के अपने घरानों के समान तोलअ से
२४ तोलियों का घराना फव: से फूवियों का घराना। यसूब से
२५ यसूबियों का घराना सिमरून से सिमरूनियों का घराना। ये
इशकार के घराने उन की गिनती के समान चौंसठ सहस्र
तीन सौ थे ॥

२६ ज़बुलून के बेटे अपने घरानों के समान सरद से सरदियों का

घराना एलून से एलूनियों का घराना यहलिएल से यहलिएलियों
२७ का घराना। ये ज़बुलूनियों के घराने उन की गिनती के समान
साठ सहस्र पांच सौ थे॥

२८ यूसुफ़ के बेटे अपने घरानों के समान मुनस्सी और इफ़रायम।
२९ मुनस्सी के बेटे मकीर से मकीरियों का घराना और मकीर से
जिलिअद उत्पन्न हुआ जिलिअद से जिलिआदियों का घराना।
३० ये जिलिअद के बेटे ईअज़र से ईअज़रियों का घराना ख़लक़
३१ से ख़लक़ियों का घराना। और असरिएल से असरिएलयों का
३२ घराना और सिकम से सिकमियों का घराना। और सिमीदा
से सिमीदाइयों का घराना और हिफ़्र से हिफ़्रियों का घराना।
३३ और हिफ़्र के बेटे सिलाफ़िहाद के बेटे न थे परन्तु बेटियां
जिन के ये नाम महलः और नूअः हजलः मिलकः और
३४ तिरजः। ये मुनस्सी के घराने उन की गिनती के समान बावन
सहस्र सात सौ थे॥

३५ ये इफ़रायम के बेटे अपने घरानों के समान सूतलह से
सूतलहियों का घराना बकर से बकरियों का घराना तहन से
३६ तहनियों का घराना। और ये सूतलह के बेटे ऐरान से
३७ ऐरानियों का घराना। ये इफ़रायम के बेटों के घराने उन की
गिनती के समान बत्तीस सहस्र पांच सौ थे सो यूसुफ़ के बेटे
अपने घरानों के समान ये थे॥

३८ बिनयमीन के बेटे अपने घरानों के समान बलअ से
बलअियों का घराना असबील से असबीलियों का घराना
३९ अख़िराम से अख़िरामियों का घराना। सफ़ूफ़ाम से सफ़ूफ़ामियों
४० का घराना हूफ़ाम से हूफ़ामियों का घराना। और बेला के
बेटे अरद और नअमान अरदियों का घराना नअमान से
४१ नअमानियों का घराना। ये बिनयमीन के बेटे उन के घरानों के
समान और वे जो उन में से गिने गये सो पैंतालीस सहस्र छः सौ थे॥

४२ दान के बेटे अपने घरानें के समान सूहाम से सूहामियें
का घराना दान के घराने उन के घरानें के समान ये हैं ।
४३ सूहामियें के सारे घराने उन की गिनती के समान चोंसठ
सहस्र चार सा थे ॥

४४ यसर के संतान अपने घरानें के समान यिमनः से यिमनियें
का घराना यसवी से यसवियें का घराना बरीत्र: से बरियें
४५ का घराना । बरीत्र: के बेटों से हिब्र से हिब्रियें का घराना
४६ मलकिएल से मलकिएलियें का घराना है । और यसर की
४७ बेटी का नाम सारह था । यसर के संतान के घराने उन की
गिनती के समान ये हैं तिरपन सहस्र चार सा ॥

४८ नफ़ताली के बेटे अपने घरानें के समान यहसिएल से
४९ यहसिएलियें का घराना जुनी से जुनियें का घराना । यिसर
से यिसरियें का घराना सिलीम से सिलीमियें का घराना ।
५० उन के घरानें के समान ये नफ़ताली के घराने थे और उन
में से जो गिने गये पैंतालीस सहस्र चार सा थे ॥

५१ सब इसराएल के संतान जो गिने गये छ: लाख एक सहस्र
सात सा तीस थे ॥

५२ । ५३ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बाेला । कि यह देश उन
के नाम की गिनती के समान इन के लिये अधिकार में भाग
५४ किया जावे । तू बहुतों का बहुत सा अधिकार दीजियो और
थोड़ों का थोड़ा अधिकार हर एक का उस के गिने गये के समान
५५ उस का दिया जावे । तिस पर भी देश चिट्ठी से बांटा जावे वे
अपने पितरों की गोष्ठियें के नाम के समान अधिकार पावें ।
५६ बहुतों और थोड़ों में चिट्ठी से उन का अधिकार बांट दिया
जावे ॥

५७ और वे जो लावियें में से गिने गये उन के घरानें के
समान ये हैं जेरसुन से जेरसुनियें का घराना क़िहात से

५८ क़िहातियों का घराना मिरारी से मिरारियों का घराना। लावी
के घराने ये हैं लबनियों का घराना हबरूनियों का घराना
मुहली का घराना मूसी का घराना क़ुरह का घराना और क़िहात
५६ से अमराम उत्पन्न हुआ। और अमराम की पत्नी का नाम
यूकबिद था लावी की कन्या जिसे उस की माता लावी से
मिस्र में जनी सो वुह अमराम से हारून और मूसा और उन
६० की बहिन मिरयम को जनी। और हारून से नदब और
६१ अबिहू इलिअज़र और ईतमर उत्पन्न हुए। सो नदब और
अबिहू जब कि वे ऊपरी आग परमेश्वर के आगे लाये मर गये।
६२ और वे जो उन में गिने गये एक मास से लेके ऊपर लों तेईस
सहस्र पुरुष थे ये इसराएल के संतानों में गिने नहीं गये
क्योंकि उन्हें इसराएल के संतान के मध्य में अधिकार नहीं
दिया गया॥
६३ ये वे इसराएल के संतान हैं जिन्हें मूसा और इलिअज़र
याजक ने मोअब के चौगानों में यरदन नदी यरीहू के साम्ने
६४ गिना। परन्तु मूसा और हारून याजक के गिने हुओं में से
जिस समय कि इसराएल के संतान को सीना के बन में गिना
६५ था एक मनुष्य भी उन में न था। क्योंकि परमेश्वर ने उन के
विषय में कहा था कि वे निश्चय अरण्य में मर जावेंगे सो
उन में से केवल यफ़ुन्नः के बेटे कालिब और नून के बेटे
यहूशूअ को छोड़ एक भी न बचा॥

सत्ताईसवां पर्व्व।

१ तब यूसुफ़ के बेटे मुनस्सी के घराने से मुनस्सी के बेटे
मकीर के बेटे जिलिअद के बेटे हिफ़्र के बेटे सिलाफ़िहाद की
बेटियां निकट आईं और उस की बेटियों के नाम ये हैं महलः
२ नूअः और हजलः और मिलकः और तिरज़ः। और मूसा और

इलिअज़र याजक और अध्यक्षों और सब मंडली के आगे
३ मंडली के तंबू के द्वार के निकट खड़ी हुईं और बोलीं। कि
हमारा पिता बन में मर गया और वुह उन की जथा में न
था जो परमेश्वर के विरुद्ध होके एकट्ठे हुए थे अर्थात् क़ुरह की
जथा में परन्तु अपने पाप के कारण मर गया और उस के बेटे
४ न थे। सो हमारे पिता का नाम उस के घराने से क्यों निकाला
जावे क्या इस लिये कि उस के कोई बेटा न था हमें हमारे
पिता के भाइयों में मिलके भाग देओ॥
५। ६ तब मूसा उन का पद परमेश्वर के निकट ले गया। और
७ परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि सिलाफ़िहाद की बेटियां
सच कहती हैं तू उन्हें उन के पिता के भाइयों में भागी
करके अवश्य अधिकार दे और ऐसा कर कि उन के पिता का
८ अधिकार उन्हीं को पहुंचे। और इसराएल के संतानों से कह
यदि कोई पुरुष मर जावे और उस के कोई बेटा न हो तो
९ उस का अधिकार उस की बेटी को पहुंचे। और यदि उस की
बेटी भी न हो तो उस के भाइयों को उस का अधिकार
१० दीजियो। और यदि उस के भाई न हों तो तुम उस का
११ अधिकार उस के पिता के भाइयों को देओ। और यदि उस
के पिता के भाई भी न हों तो तुम उस का अधिकार उस के
घराने के समीपी कुटुम्ब को देओ और वुह उस का अधिकारी
होगा और यह आज्ञा इसराएल के संतानों के लिये जैसा
परमेश्वर ने मूसा से कहा यह सदा के लिये बिधि होगी॥
१२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला कि अब तू अ़बरीम के
इस पहाड़ पर चढ़ जा और उस देश को जो मैं ने इसराएल के
१३ संतानों को दिया है देख। और जब तू उसे देख लेगा तू भी
अपने लोगों में मिल जावेगा जिस रीति से तेरा भाई हारून
१४ मिल गया। क्योंकि मंडली के झगड़े में ज़ीन के अरण्य में

तुम मेरी आज्ञा के बिरोध में फिर गये और उन की आंखों के
आगे पानी पास जो मरीब: के पानी क़ादिस में ज़ीन के अरण्य
में मुझे पवित्र न किया ॥
१५ । १६ तब मूसा परमेश्वर के आगे कहके बोला । कि हे
परमेश्वर सब शरीरों के प्राणों का ईश्वर किसी को मंडली का
१७ प्रधान बना । जो बाहर भीतर उन के आगे आगे आया जाया
करे और जो बाहर भीतर उन की अगुआई करे जिसतें
परमेश्वर की मंडली उन भेड़ों की नाईं न हो जावे जिन का
कोई रखवाल न हो ॥
१८ तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि नून के बेटे यहूशूअ को
१६ ले जिस पर आत्मा है और उस पर अपना हाथ रख । और
उसे इलिअज़र याजक और सारी मंडली के आगे खड़ा कर
२० और उन के आगे उसे आज्ञा कर । और अपनी प्रतिष्ठा में से
उस पर कुछ रख जिसतें इसराएल के संतानों की सारी मंडली
२१ बश में होवे । और वुह इलिअज़र याजक के आगे खड़ा होवे
जो उस के लिये उरिम के न्याय के समान परमेश्वर के
आगे पूछे वुह और सारे इसराएल के संतानों की सारी मंडली
उस के कहने से बाहर जावें और उस के कहने से भीतर
आवें ॥
२२ सो जैसा परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई थी मूसा ने यहूशूअ को
लेके उसे इलिअज़र याजक और सारी मंडली के साम्ने खड़ा
२३ किया । और उस ने अपने हाथ उस पर रक्खे और जैसा कि
परमेश्वर ने मूसा की ओर से कहा था उसे आज्ञा दिई ॥

अट्ठाईसवां पर्व्व ।

१ । २ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला । कि इसराएल के
संतानों को आज्ञा करके उन्हें बोल कि मेरी भेंट और होम के

बलिदानों की रोटी मेरे सुगंध के लिये उन के समय में पालन
करके चढ़ाओ ॥
३ और तू उन्हें कह कि होम की भेंट जो तुम परमेश्वर के
लिये चढ़ाइयो सो यह है कि पहिले बरस के दो निष्खोट
४ मेम्ने प्रति दिन नित्य के बलिदान की भेंट के लिये। एक
५ मेम्ना बिहान को और एक मेम्ना सांझ को। और ऐफ़ा का
दसवां भाग पिसान और हीन का चौथा भाग कूटा हुआ तेल
६ भोजन की भेंट के लिये। यह बलिदान की भेंट नित्य के
लिये है जो सीना के पहाड़ पर होम का बलिदान परमेश्वर के
७ सुगंध के लिये ठहराया गया है। और उस का तपावन
हीन का चौथा भाग एक मेम्ना के लिये तीक्ष्ण दाखरस
को परमेश्वर के आगे तपावन के लिये पवित्र स्थान में
८ तपावे। और तू दूसरा मेम्ना सांझ को चढ़ाना तू बिहान के
भोजन की भेंट की नाईं और उस के तपावन की नाईं परमेश्वर
के सुगंध के लिये होम की भेंट चढ़ा ॥
९ और बिश्राम के दिन पहिले बरस के दो निष्खोट मेम्ने
दो दसवां भाग पिसान भोजन की भेंट के लिये तेल से मिला
१० हुआ और उस का तपावन। हर एक बिश्राम के बलिदान की
भेंट नित्य के बलिदान की भेंट को छोड़के और उस का तपावन
यही है ॥
११ और तुम्हारे मास के आरंभ में बलिदान की भेंट के लिये
परमेश्वर के आगे दो बछड़े एक मेढ़ा पहिले बरस के निष्खोट
१२ सात मेम्ने चढ़ाओ। और एक बछड़े के लिये तेल से मिला
हुआ तीन दसवां भाग पिसान भोजन की भेंट के लिये और
एक मेढ़े के लिये तेल से मिला हुआ दो दसवां भाग पिसान
१३ भोजन की भेंट के लिये। और एक मेम्ने के भोजन की भेंट
के लिये तेल से मिला हुआ दसवां भाग पिसान सुगंध के

बलिदान की भेंट के लिये आग से बनाया हुआ परमेश्वर के
१४ लिये भेंट। और उन के तपावन एक बछड़े पीछे आधा हीन
दाखरस और मेढ़े पीछे तिहाई हीन है और मेम्ना पीछे चौथाई
१५ हीन बरस के हर मास के बलिदान की भेंट यह है। और
नित्य के बलिदान की भेंट और उस के तपावन के बलिदान
को छोड़ पाप की भेंट के लिये परमेश्वर के आगे बकरी का एक
मेम्ना चढ़ाया जावे॥

१६ और पहिले मास की चौदहवीं तिथि परमेश्वर की फ़सह का
१७ पर्व्व है। और इस मास की पन्द्रहवीं तिथि को पर्व्व होगा
१८ सात दिन लों अख़मीरी रोटी खाई जावे। पहिले दिन पवित्र
बुलावा होगा उस दिन तुम कोई संसारिक कार्य्य न करना।
१९ और बलिदान की भेंट आग से परमेश्वर के लिये चढ़ाइयो दो
बछड़े और एक मेढ़ा और पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने।
२० और उन के साथ भोजन की भेंट तीन दसवां भाग पिसान
तेल से मिला हुआ हर बछड़े पीछे और हर मेढ़े पीछे दो
२१ दसवां भाग चढ़ाइयो। सातों मेम्नों में से हर मेम्ने पीछे
२२ दसवां भाग चढ़ाइयो। और अपने प्रायश्चित्त के निमित्त
२३ पाप की भेंट के लिये एक बकरी। तुम बिहान के बलिदान
की भेंट से अधिक जो सदा जलाया जाता है चढ़ाया करो।
२४ परमेश्वर के सुगंध के लिये होम के बलिदान के मांस को सात
दिन भर प्रति दिन इस रीति से चढ़ाइयो नित्य के बलिदान
२५ की भेंट और उस के तपावन को छोड़के इसे चढ़ाइयो। और
सातवें दिन तुम्हारा पवित्र बुलावा होगा उस में तुम कोई
संसारिक कार्य्य न करना॥

२६ और पहिले फल के दिन में भी जब तुम भोजन की भेंट
अपने अठवारों के पीछे परमेश्वर के आगे चढ़ाइयो तो तुम्हारे
लिये पवित्र बुलावा होगा कोई संसारिक कार्य्य न कीजियो।

२७ और तुम परमेश्वर के सुगंध के लिये बलिदान की भेंट चढ़ाइयो
दो बछड़े एक मेढ़ा पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने चढ़ाइयो।
२८ और उन के भोजन की भेंट तीन दसवां भाग पिसान तेल से
मिला हुआ हर बछड़े पीछे और दो दसवां भाग हर मेढ़े पीछे।
२९ दसवां भाग सातों मेम्नों में से हर एक मेम्ना पीछे।
३० एक बकरी का मेम्ना जिसतें तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त में दिया
३१ जावे। नित्य के बलिदान की भेंट और उस के भोजन की
भेंट जो तुम्हारे लिये निष्खोट होवे और उन के तपावन
छोड़के उसे जो निष्खोट होवे चढ़ाइयो॥

उंतीसवां पर्ब्ब ।

१ और सातवें मास की पहिली तिथि में तुम्हारा पवित्र बुलावा
होगा तुम कोई सेवा का कार्य्य न कीजियो यह तुम्हारे नरसिंगे
२ फूंकने का दिन है। और तुम परमेश्वर के सुगंध के लिये एक
बछड़ा एक मेढ़ा और पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने
३ बलिदान की भेंट चढ़ाइयो। और उन के भोजन की भेंट हर
बछड़े पीछे तीन दसवां भाग पिसान तेल से मिला हुआ और
४ हर मेढ़े पीछे दो दसवां भाग। और सातों मेम्नों के लिये हर
५ मेम्ने पीछे एक दसवां भाग। और बकरी का एक मेम्ना पाप
की भेंट के लिये जिसतें तुम्हारे लिये प्रायश्चित्त किया जावे।
६ मास के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के
अधिक और प्रति दिन के बलिदान की भेंट के और उन के भोजन
की भेंट के और उन के तपावनों के उन की रीति के समान
आग से किये हुए भेंट परमेश्वर के सुगंध के लिये चढ़ाइयो॥
७ और इस सातवें मास की दसवीं तिथि में तुम्हारे लिये पवित्र
बुलावा होगा और तुम अपने प्राण को क्लेश दीजियो कोई कार्य्य
८ न करियो। परन्तु परमेश्वर के सुगंध के बलिदान की भेंट के

लिये एक बछड़ा एक मेढ़ा पहिले बरस के सात मेम्ने चढ़ाइयो
९ तुम्हारे लिये निष्खोट होवें। और उन के भोजन की भेंट
तीन दसवां भाग पिसान तेल से मिला हुआ बछड़ा पीछे और
१० हर मेढ़ा पीछे दो दसवां भाग। सातों मेम्नों के लिये हर
११ मेम्ना पीछे एक दसवां भाग। पाप के प्रायश्चित्त की भेंट के
और नित्य के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की
भेंट के और उन के तपावनों के अधिक पाप की भेंट के लिये
बकरी का एक मेम्ना॥

१२ और सातवें मास की पन्दरहवीं तिथि में तुम्हारा पवित्र
बुलावा होगा उस दिन तुम सेवा का कोई कार्य्य न करो और
१३ सात दिन तक परमेश्वर के लिये पर्ब्ब करो। और तुम बलिदान
की भेंट के लिये परमेश्वर के सुगंध के लिये तेरह बछड़े दो
मेढ़े और पहिले बरस के चौदह मेम्ने आग से किये हुए बलिदान
१४ चढ़ाइयो वे निष्खोट होवें। और उन के भोजन की भेंट तेल
से मिला हुआ तीन दसवां भाग पिसान तेरह बछड़ों में से हर
१५ बछड़े के लिये दो मेढ़ों में से हर मेढ़े पीछे। और चौदह
१६ मेम्नों में से हर मेम्ने पीछे एक दसवां भाग। और नित्य के
बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उस
के तपावन के अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक
मेम्ना चढ़ाइयो॥

१७ और दूसरे दिन बारह बछड़े दो मेढ़े पहिले बरस के
१८ चौदह निष्खोट मेम्ने चढ़ाइयो। और उन के भोजन की भेंट
और उन के तपावन बछड़ों और मेढ़ों और मेम्नों के लिये उन
१९ की गिनती के और रीति के समान होवें। और नित्य के
बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की भेंट के और उन
के तपावनों के अधिक पाप की भेंट के लिये बकरी का एक
मेम्ना॥

२० और तीसरे दिन ग्यारह बछड़े दो मेढ़े और पहिले बरस
२१ के चौदह निष्खोट मेम्ने। और उन के भोजन की भेंट और
उन के तपावन बछड़ों और मेढ़ों और मेम्नों उन की गिनती
२२ के और रीति के समान होवें। और नित्य के बलिदान की भेंट के
और उस के भोजन की भेंट के और उस के तपावन के अधिक
पाप की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना चढ़ाइयो॥

२३ और चौथे दिन दस बछड़े दो मेढ़े पहिले बरस के चौदह
२४ निष्खोट मेम्ने। उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन
बछड़ों और मेढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती के और
२५ रीति के समान होवें। और नित्य के बलिदान की भेंट के और
उस के भोजन की भेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप
की भेंट के लिये बकरी का एक मेम्ना होवे॥

२६ और पांचवें दिन नव बछड़े दो मेढ़े पहिले बरस के चौदह
२७ निष्खोट मेम्ने। और उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन
बछड़ों मेढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती के और रीति
२८ के समान होवें। और नित्य के बलिदान की भेंट और उस के
भोजन की भेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की भेंट
के लिये एक बकरी होवे॥

२९ और छठवें दिन आठ बछड़े दो मेढ़े पहिले बरस के
३० चौदह निष्खोट मेम्ने। और उन के भोजन की भेंट और
उन के तपावन बछड़ों मेढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती
३१ के और रीति के समान होवें। और नित्य के बलिदान की भेंट
के और उस के भोजन की भेंट के और उस के तपावनों के
अधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे॥

३२ और सातवें दिन सात बछड़े दो मेढ़े पहिले बरस के
३३ चौदह निष्खोट मेम्ने। और उन के भोजन की भेंट और उन
के तपावन बछड़ों मेढ़ों और मेम्नों के लिये उन की गिनती

३४ के और उस की रीति के समान होवें। और नित्य के बलिदान की
भेंट के उस के भोजन की भेंट के और उस के तपावन के
अधिक पाप की भेंट के लिये एक बकरी होवे ॥
३५ आठवें दिन तुम्हारी पवित्र सभा होगी तुम उस दिन सेवा
३६ का कोई कार्य्य न कीजियो। और तुम एक बछड़ा एक मेढ़ा
पहिले बरस के सात निष्खोट मेम्ने बलिदान की भेंट के लिये
परमेश्वर के सुगंध के लिये आग से बनाई हुई भेंट चढ़ाइयो।
३७ उन के भोजन की भेंट और उन के तपावन बछड़े और मेढ़े और
मेम्नों के लिये उन की गिनती के और रीति के समान होवें।
३८ और नित्य के बलिदान की भेंट के और उस के भोजन की
भेंट के और उस के तपावन के अधिक पाप की भेंट के लिये
एक बकरी होवे ॥
३९ अपनी मनौतियों के और अपनी बांछित भेंटों के अपने
बलिदान की भेंटों के और अपने भोजन की भेंटों के और
अपने तपावनों के और अपने कुशल की भेंटों के अधिक तुम
४० इन्हें अपने ठहराये हुए पर्ब्बों में कीजियो। और मूसा ने
परमेश्वर की समस्त आज्ञा के समान इसराएल के संतानों से
कहा ॥

तीसवां पर्व्व।

१ और मूसा ने इसराएल के संतान की गोष्ठियों के प्रधानों से
कहा कि यह वुह बात है जो परमेश्वर ने आज्ञा किई है।
२ यदि कोई पुरुष परमेश्वर की मनौती माने अथवा किरिया खाके
अपने प्राण को बंधन में करे तो वुह अपनी बाचा को न तोड़े
जो कुछ उस ने अपने मुंह से कहा है संपूर्ण करे ॥
३ और यदि कोई स्त्री परमेश्वर की मनौती माने और अपनी
लड़काई में अपने पिता के घर में होते हुए आप को बाचा में

४ बांधे। और उस का पिता उस की मनौती और उस की बाचा
जिस्से उस ने अपने प्राण को बांधा है सुनके चुप हो रहे
तो उस की सब मनौतियां और हर एक बाचा जिस्से उस ने
५ अपने प्राण को बांधा है स्थिर रहेगी। परन्तु यदि उस का
पिता सुनते हुए उसे मान्ने न देवे तो उस की कोई मनौती
और कोई बाचा जो उस ने अपने प्राण को उस्से बांधा न
ठहरेगी और परमेश्वर उसे क्षमा करेगा क्योंकि उस के पिता ने
उसे मान्ने न दिया॥

६ और जब उस ने मनौती मानी अथवा अपने मुंह से अपने
प्राण को किसी बाचा से बांधा और यदि उस का पति होवे।
७ और उस का पति सुनके उस दिन चुपका हो रहा तो उस
की मनौतियां ठहरेंगी और उस की बाचा जिन से उस ने
८ अपने प्राण को बांधा ठहरेगी। परन्तु यदि उस का पति
सुनके उसी दिन उस ने उसे मान्ने न दिया हो तो उस ने उस
की मनौती को जो उस ने मानी और उस की बाचा को जो
उस ने अपने मुंह से अपने प्राण को उस्से बांधा बृथा किया
तो परमेश्वर उसे क्षमा करेगा॥

९ परन्तु बिधवा और त्यक्त स्त्री अपनी हर एक मनौती जिस्से
उन्हों ने अपने प्राण को बांधा उन पर बनी रहेगी॥

१० और यदि उस ने अपने पति के घर होते हुए कुछ मनौती
मानी हो और किरिया करके किसी बाचा में आप को बांधे हो।
११ और उस का पति सुनके चुप हो रहे और उसे न रोके तो
उस की मनौतियां ठहरेंगी और उस की हर एक बाचा जिस्से
१२ उस ने अपने प्राण को बांधा ठहरेगी। परन्तु यदि सुनके
उसी दिन उस का पति उसे बृथा करे तो जो कुछ मनौतियां
और अपने प्राण के बंधन के विषय में उस के मुंह से निकला
सो न ठहरेगी उस के पति ने उन्हें बृथा किया और परमेश्वर

१३ उसे क्षमा करेगा। सब मनौतियां और सब किरिया जिस्से उस ने
अपने प्राण को दुःख देने के लिये बांधा उस का पति चाहे
१४ तो उसे ठहरावे और चाहे उसे मिटावे। परन्तु यदि उस का पति
प्रतिदिन चुप रहे तो उस ने उस की समस्त मनौतियें और
बाचों को जो उस पर हैं स्थिर किया क्योंकि सुनके उस ने
१५ अपने चुप रहने से उन्हें स्थिर किया। परन्तु यदि उस ने
सुन लिया और उस के पीछे उन्हें बृथा किया तो वुह उस का
पाप भोगेगा॥

१६ पति और उस की पत्नी के मध्य में पिता उस की पुत्री के
मध्य में जब पुत्री लड़काई के समय में अपने पिता के घर होवे
ये विधिन हैं जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥

एकतीसवां पर्व्व।

१। २ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के
संतानों का पलटा मिदयानियों से ले इस के पीछे तू अपने
लोगों में मिल जावेगा॥

३ तब मूसा ने लोगों से कहा कि आपुस में कितनों को संग्राम
के लिये लैस करो और मिदयान का साम्ना करो जिसतें परमेश्वर
४ का पलटा मिदयान से लेओ। इसराएल की समस्त गोष्ठियों में
से हर एक गोष्ठी से एक एक सहस्र संग्राम करने को भेजो।
५ सो इसराएल के सहस्रों में से हर गोष्ठी पीछे एक सहस्र बारह
६ सहस्र हथियारबंद युद्ध के लिये सौंपे गये। तब मूसा ने
उन्हें इलिअज़र याजक के बेटे फ़ीनिहास के साथ करके लड़ाई
पर भेजा और पवित्र पात्र और फूंकने के नरसिंगे उस के हाथ
७ में थे। और जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी उन्हों
ने मिदयान से युद्ध किया और सारे पुरुषों को मार डाला।
८ और उन्हों ने उन जूझे हुओं से अधिक मिदयान के राजाओं

अवी और रक़म और सूर और हूर और रबअ को जो मिदयान
के पांच राजा थे प्राण से मारा और बअूर के बेटे बलआम को
९ भी खड्ग से मार डाला। और इसराएल के संतानों ने मिदयान
की स्त्रियों को और उन के लड़कों को बंधुआई में लिया और
उन के समस्त पशु और उन के समस्त चौपाये और उन की संपत्ति
१० समस्त लूट लिया। और उन की सारी बस्तियों जिन में वे रहते
११ थे और उन के सुन्दर गढ़ों को फूंक दिया। और उन्हों ने सारी
१२ लूट और समस्त मनुष्य और पशु को अहेर किया। और मूसा
और इलिअज़र याजक और इसराएल के समस्त संतानों की
मंडली छावनी में मोअब के चौगानों में जो यरदन के लग
यरीहू है बंधुए और लूट और अहेर को लाये॥
१३ तब मूसा और इलिअज़र याजक और मंडली के समस्त
प्रधान उन्हें आगे से मिलने के लिये छावनी में से बाहर गये।
१४ और मूसा सेना के प्रधानों से और सहस्रों के पतिन से और
१५ सैकड़ों के पतिन से जो लड़ाई से आये क्रुद्ध हुआ। और
मूसा ने उन्हें कहा कि तुम ने सब स्त्रियों को जीती रक्खा।
१६ देखो इन्हों ने बलआम के मंत्र से इसराएल के बंश को फ़ग़ूर
के विषय में परमेश्वर के विरोध में अपराध करवाया सो परमेश्वर
१७ की मंडली में मरी पड़ी। सो अब लड़कों में से हर एक बेटे
को और हर एक स्त्री को जो पुरुष से संयुक्त हुई हो प्राण से
१८ मारो। परन्तु वे बेटियां जो पुरुष से संयुक्त न हुई हैं उन्हें
१९ अपने लिये जीती रक्खो। और तुम सारे दिन लों छावनी से
बाहर रहो जिस किसी ने मनुष्य को मारा हो और जिस किसी
ने लोथ को छुआ हो वुह आप को और अपने बंधुओं को
२० तीसरे दिन और सातवें दिन पवित्र करे। और तुम अपने समस्त
वस्त्र और सब जो चमड़े के बने हुए हैं और सब बकरी के
रोम के कार्य्य और काष्ठ के पात्र शुद्ध करो॥

२१ तब इलिअज़र याजक ने उन योद्धाओं को जो लड़ाई में
गये थे कहा कि यह व्यवस्था की विधि है जो परमेश्वर ने
२२ मूसा से आज्ञा किई। केवल सोना और रूपा पीतल लोहा रांगा
२३ और सीसा। समस्त वस्तें जो आग में ठहरें तुम उन्हें आग
में डालो और वुह पवित्र होगा केवल वुह अलग किये हुए जल से
पवित्र किया जावेगा और सब वस्तें जो आग में नहीं ठहरतीं
२४ तुम उन्हें जल में डालो। और सातवें दिन अपने कपड़े धोके
पवित्र होओगे और उस के पीछे छावनी में आओ॥
२५। २६ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि तू और
इलिअज़र याजक और मंडली के सब प्रधान मिलके मनुष्य
२७ की और पशुन की जो लूट में आये हैं गिनती करो। और
लूट को दो भाग करो एक उन को जो संग्राम में लड़े और
२८ एक समस्त मंडली को देओ। और योद्धा से जो लड़ाई में
चढ़ गये थे परमेश्वर के लिये कर लेओ पांच सौ में एक प्राणी
चाहे मनुष्य हों चाहे गाय बैल चाहे गदहे हों चाहे भेड़ बकरी।
२९ और उन के आधे भाग में से लेके इलिअज़र याजक को दे जिसतें
३० परमेश्वर के लिये उठाने की भेंट होवे। और इसराएल के संतानों
के भाग में से क्या मनुष्य क्या गाय बैल क्या गदहे क्या भेड़ बकरी
पचास पचास पीछे एक एक ले और उन्हें लावियों को जो परमेश्वर
३१ की छावनी की रक्षा करते हैं दे। सो मूसा और इलिअज़र याजक
ने वैसाही किया जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई॥
३२ और लूट का बचा हुआ जो योद्धा लोगों के पास था यह था
३३ छः लाख पचहत्तर सहस्र भेड़ बकरी। और बहत्तर सहस्र
३४। ३५ गाय बैल। और एकसठ सहस्र गदहे। और वे लड़कियां
जो पुरुष से संयुक्त न थीं बत्तीस सहस्र थीं॥
३६ सो आधा जो योद्धा लोगों का भाग ठहरा यह था तीन
३७ लाख सैंतीस सहस्र पांच सौ भेड़ बकरी। और परमेश्वर का कर

३८ भेड़ बकरी में से छः सौ पचहत्तर थीं। और गाय बैल छत्तीस
३९ सहस्र थे जिन में से परमेश्वर का कर बहत्तर थे। और गदहों
में से जो तीस सहस्र पांच सौ थे परमेश्वर का भाग एकसठ थे।
४० और मनुष्य में से जो सोलह सहस्र थे परमेश्वर का कर बत्तीस
४१ जन हुए। सो मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के समान उस कर
को जो परमेश्वर की उठाने की भेंट थी इलिअज़र याजक को
दिया॥

४२ और इसराएल के संतानों का भाग जो मूसा ने योद्धा लोगों
४३ से लिया। सो वुह आधा जो मंडली का भाग हुआ यह था
४४ तीन लाख सैंतीस सहस्र पांच सौ भेड़ बकरी। और छत्तीस
४५ । ४६ सहस्र ढोर। और तीस सहस्र पांच सौ गदहे। और
४७ सोलह सहस्र जन। और जैसी परमेश्वर ने आज्ञा किई थी
मूसा ने इसराएल के संतानों के भाग में से हर पचास जीवधारी
पीछे मनुष्य और पशु से एक एक लिया और उन्हें और लावियों
को जो परमेश्वर के तंबू की रक्षा करते थे दिया॥

४८ तब सेना के सहस्र पति और शत पति मूसा के पास आये।
४९ और उन्हों ने मूसा से कहा कि तेरे सेवकों ने समस्त योद्धाओं
को जो हमारी आज्ञा में हैं गिना और उन में से एक पुरुष भी
५० न घटा। सो हम हर एक वस्तु में से जो हर एक ने पाई
परमेश्वर के लिये भेंट लाये हैं सोने के गहने और सीकरें और
कड़े और अंगूठियां और बालियां और जंच जिसतें हमारे प्राणों
५१ के लिये परमेश्वर के आगे प्रायश्चित्त होवे। सो मूसा और इलिअज़र
५२ याजक ने सोने के बनाये हुए समस्त गहने उन से लिये। और
भेंट का सब सोना जो सहस्र पति और शत पतिन ने परमेश्वर के
५३ लिये चढ़ाया सो सात सौ पचास शेकल था। योद्धों में
५४ से हर एक जन अपने अपने लिये लूट लाया था। सो मूसा
और इलिअज़र याजक उस सोने को जो उन्हों ने सहस्रों और

सैकड़ों के प्रधानों से लिया मंडली के तंबू में लाये जिसतें
परमेश्वर के आगे इसराएल के संतानों का स्मरण हो।

बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ अब रूबिन और जद के संतानों के ढोर अति बहुत थे
सो जब उन्हों ने यअज़ीर और जिलिअद के देश को देखा
२ कि ढोर के लिये बहुत अच्छा है। तब जद के संतान और
रूबिन के संतान ने आके मूसा और इलिअज़र याजक और
३ मंडली के अध्यक्षों से कहा। कि अतरात और देबून और
यअज़ीर और निमर: और हसबून और इलआली और शबाम
४ और नबू और बऊन का देश। जिसे परमेश्वर ने इसराएल की
मंडली के आगे मारा वुह ढोर का देश और तेरे दासों के
५ ढोर हैं। इस कारण उन्हों ने कहा यदि आप की दृष्टि में
हम लोगों ने अनुग्रह पाया है तो यह देश तेरे सेवकों के
अधिकार में दिया जावे हमें यरदन पार न ले जाइये॥

६ तब मूसा ने जद के संतान और रूबिन के संतान से कहा
कि क्या तुम्हारे भाई लड़ाई करने जावें और तुम यहीं बैठे
७ रहोगे। और जिस देश को परमेश्वर ने उन्हें दिया है उस में जाने
८ से इसराएल के संतानों के मन को क्यों घटाते हो। जब मैं
ने तुम्हारे पितरों को क़ादिसबरनीअ से उस देश को देखने
९ भेजा उन्हों ने भी ऐसा ही किया। और जब वे इसकाल की
तराई को पहुंचे और उस देश को देखा तो उन्हों ने इसराएल
के संतानों के मन को घटा दिया जिसतें वे उस देश को जो
१० परमेश्वर ने उन्हें दिया था न जावें। और उसी दिन परमेश्वर
११ का क्रोध भड़का और उस ने किरिया खाके कहा। कि निश्चय
लोगों में से जो मिस्र से निकले बीस बरस से लेके ऊपर लों
कोई उस देश को जिस के विषय में मैं ने अबिरहाम इज़हाक

ओर यअक़ूब से किरिया खाई है न देखेगा इस कारण कि वे
१२ निरधार मेरी बात पर न चले। केवल क़नीज़ी यफ़ुन्नः का
बेटा कालिब ओर नून का बेटा यहूशूअ क्योंकि वे परमेश्वर की
१३ ओर निरधार चले। तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का
ओर उस ने उन्हें बन में चालीस बरस लों भरमाया यहां लों
कि वुह समस्त पीढ़ी जो परमेश्वर के आगे बुराई करती थी
१४ नष्ट हुई। ओर देखो तुम लोग अपने पितरों की संती पापमय
जन बढ़ गये हो जिसतें परमेश्वर के क्रोध को इसराएलियों की
१५ ओर बढ़ाओ। यदि तुम उस्से फिर जाओगे तो वुह उन्हें
फिर बन में छोड़ देगा ओर तुम इन सब लोगों को नाश
करोगे॥

१६ तब वे उस के पास आये ओर बोले कि हम अपने ढोर के
लिये यहां भेड़शाले ओर अपने बालकों के कारण नगर बनावेंगे।
१७ पर हम हथियार बांधे हुए लेस होके इसराएल के संतानों के
आगे आगे जावेंगे यहां लों कि उन्हें उन के स्थान लों पहुंचावें
ओर देश के बासियों के कारण हमारे बालक घेरित नगरों में
१८ रहेंगे। हम अपने घरों को न फिरेंगे जब लों इसराएल के
संतानों में से हर एक अपना अपना अधिकार न पा लेवें।
१९ क्योंकि हम उन के संग यरदन के उस पार अथवा आगे
अधिकार न लेंगे क्योंकि हमारा अधिकार पूरब को यरदन के
इस पार मिला है॥

२० तब मूसा ने उन्हें कहा कि यदि तुम यह करो ओर
२१ परमेश्वर के आगे हथियार बांधे हुए जाओगे। ओर हथियार
बांधके परमेश्वर के आगे यरदन के उस पार जाओ यहां लों
२२ कि वुह अपने बैरियों को अपने आगे से दूर करे। ओर वुह
देश परमेश्वर के आगे बश में होवे तो उस के पीछे तुम फिर
आओगे ओर परमेश्वर के ओर इसराएल के आगे निर्दोष

२३ ठहरोगे तब परमेश्वर के आगे तुम्हारा अधिकार होगा। परन्तु
यदि तुम यों न करोगे तो देखो कि तुम परमेश्वर के आगे
पापी हुए और निश्चय जानो कि तुम्हारा पाप तुम्हें पकड़ेगा।
२४ तुम अपने बालकों के लिये नगर बनाओ और अपनी भेड़ों के
लिये भेड़शाले और जो तुम्हारे मुंह से निकला है सो करो॥
२५ तब जद के संतान और रूबिन के संतान मूसा से कहके
बोले कि जैसी मेरा स्वामी आज्ञा करता है वैसा ही तेरे
२६ सेवक करेंगे। हमारे बालक हमारी पत्नियां हमारी झुंड और
२७ हमारे समस्त ढोर वहां जिलिअद के नगरों में रहेंगे। परन्तु
जैसा मेरा प्रभु कहता है तेरे सेवक हर एक हथियार बांधे हुए
२८ संग्राम के लिये परमेश्वर के आगे पार जावेंगे। तब मूसा ने
उन के विषय में इलिअज़र याजक को और नून के बेटे
यहूशूअ को और इसराएल के संतानों की गोष्ठी के प्रधान के
२९ पितरों को कहा। और मूसा ने उन्हें कहा कि यदि जद के
संतान और रूबिन के संतान परमेश्वर के आगे तुम्हारे साथ
यरदन के पार हथियार बांधके जावें और लड़ें और देश
तुम्हारे बश में आवे तो तुम जिलिअद का देश उन को
३० अधिकार कर दीजियो। परन्तु यदि वे हथियार बांधके तुम्हारे
साथ पार न जावें तो वे तुम्हारे मध्य में कनआन के देश में
३१ अधिकार पावें। तब जद के संतान और रूबिन के संतान
उत्तर में बोले कि जैसा परमेश्वर ने तेरे सेवकों को कहा हम
३२ वैसा ही करेंगे। हम हथियार बांधके परमेश्वर के आगे उस
पार कनआन के देश को जावेंगे जिसतें यरदन के इधर का
देश हमारा अधिकार होवे॥
३३ तब मूसा ने अमूरियों के राजा सेहून का राज्य और बसन
के राजा ऊज का राज्य वुह देश उन के नगर समेत जो उस
सिवाने में है और देश के चारों ओर के नगरों को जद के

संतान और रूबिन के संतान और यूसुफ़ के पुत्र मुनस्सी की
आधी गोष्ठी को दिया ॥
३४ तब जद के संतान ने देबून और अतरात और अरआयर।
३५ । ३६ और अतरात शूफ़ान और यअज़ीर और युगबिहाह। और
बेतनिमर: और बेतहारान घेरे हुए नगर और भेड़ों के लिये
भेड़शाले बनाये ॥
३७ और रूबिन के संतान ने हसबून और इलआली और
३८ क़रयतैन बनाये। और नबू और बअलमऊन उन के नाम फेरे
गये और शिबम: और उन नगरों के जो उन्हों ने बनाये और
ही नाम रक्खे ॥
३९ तब मकीर के संतान मुनस्सी के बेटे जिलिअद को गये
और उसे ले लिया और उस में के अमूरियों को उठा दिया।
४० और मूसा ने जिलिअद को मकीर मुनस्सी के बेटे को दिया
४१ और वुह उस में बसा। और मुनस्सी का बेटा याइर निकला
और उस के छोटे छोटे नगरों को ले लिया और उन का नाम
४२ याइर गांव रक्खा। और नूबह गया और क़िनात और उस के
गांओं को ले लिया और उस का नाम अपने नाम के समान
नूबह रक्खा ॥

तैंतीसवां पर्ब्ब।

१ मूसा और हारून के बश में होके मिस्र देश से अपनी
अपनी सेना समेत इसराएल के संतान बाहर निकल आये
२ उन की यात्रा ये हैं। और मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा के
समान उन की यात्रा के अनुसार उन का कूच लिख रक्खा
और उन की यात्रा के अनुसार उन का कूच यह है ॥
३ और इसराएल के संतान पहिले मास की पंदरहवीं तिथि में
फ़सह के पर्ब के दूसरे दिन रामसीस से बड़े बल के साथ

४ यात्रा करके समस्त मिस्रियों की दृष्टि में सिधारे। क्योंकि
मिस्रियों ने अपने समस्त पहिलौठों को जिन्हें परमेश्वर ने उन
में नाश किया था गाड़ा और परमेश्वर ने उन के देवतों को भी
५ न्याय का दण्ड दिया। सो इसराएल के संतानों ने रामसीस
६ से उठके सुक्कात में डेरे किये। और सुक्कात से चलके ऐताम
७ में जो बन के सिवाने में है डेरा किया। फिर ऐताम से कूच
करके फ़ीउलहीरात को जो बअलसफ़ून के सन्मुख है फिर गये
८ और मिजदाल के आगे डेरा किया। और फ़ीउलहीरात से चले
और समुद्र के मध्य में से निकलके बन में आये और ऐताम
के बन में तीन दिन के टप्पे पर गये और मरः में डेरा किया।
९ और मरः से चलके ऐलीम में आये जहां पानी के बारह सोते
१० और छोहारे के सत्तर पेड़ थे और वहां डेरा किया। और
११ ऐलीम से यात्रा करके लाल समुद्र के लग डेरा किया। और
१२ लाल समुद्र से चलके सीन के बन में डेरा किया। और सीन
१३ के बन से यात्रा करके दफ़कः में डेरा किया। और दफ़कः से
१४ चलके अलूस में डेरा किया। और अलूस से चलके रफ़ीदीम
में डेरा किया और वहां लोगों के पीने के लिये पानी न था।
१५। १६ और रफ़ीदीम से चलके सीना के अरण्य में आये। और
सीना के अरण्य से चलके क़िबरातुलताबः में डेरा किया।
१७ और क़िबरातुलताबः से यात्रा करके हसीरात में डेरा किया।
१८। १९ और हसीरात से चलके रितमः में डेरा किया। और
२० रितमः से चलके रुम्मानफ़रस में डेरा किया। और रुम्मानफ़रस
२१ से चलके लिबनः में डेरा किया। और लिबनः से चलके
२२ रिस्सह में डेरा किया। और रिस्सह से चलके क़हीलाथा में
२३ डेरा किया। और क़हीलाथा से चलके सफ़र पहाड़ में डेरा
२४ किया। और सफ़र पहाड़ से चलके हरादः में डेरा किया।
२५। २६ और हरादः से चलके मक़हीलात में डेरा किया। और

२७ मक़हीलात से चलके तहत में डेरा किया। और तहत से
२८ चलके तारह में डेरा किया। और तारह से याचा करके मितक:
२९ में डेरा किया। और मितक: से चलके हश्मूना में डेरा किया।
३० । ३१ और हश्मूना से चलके मूसीरूस में डेरा किया। और
३२ मूसीरूस से चलके यअ़कान में डेरा किया। और यअ़कान से
३३ चलके जिदजाद में डेरा किया। और जिदजाद से चलके
३४ युतबता में डेरा किया। और युतबता से चलके अब्रून: में
३५ डेरा किया। और अब्रून: से चलके असयूनजब्र में डेरा किया।
३६ और असयूनजब्र से चलके सिन के अरण्य में जो क़ादिस है डेरा
३७ किया। और क़ादिस से चलके हूर पर्बत के बन में जो अदूम
के देश का सिवाना है डेरा किया॥

३८ और हारून याजक परमेश्वर की आज्ञा से हूर पर्बत पर चढ़
गया और वहां मर गया यह इसराएल के संतानों के मिस्र से
बाहर निकलने के चालीसवें बरस के पांचवें मास की पहिली
३९ तिथि थी। और हारून एक सौ तेईस बरस का था जब वुह
हूर पर्बत पर मर गया॥

४० और अराद राजा कनआ़नी ने जो कनआ़न देश की दक्षिण
ओर रहता था सुना कि इसराएल के संतान आ पहुंचे॥

४१ और हूर पर्बत से याचा करके ज़लमून: में डेरा किया।
४२ । ४३ और ज़लमून: से चलके फ़ूनोन में डेरा किया। और
४४ फ़ूनोन से चलके ऐबात में डेरा किया। और ऐबात से चलके
ऐयेउलअबारीम में जो मोअब का सिवाना है डेरा किया।
४५ । ४६ और ऐयीम से चलके देबूनजट्ठ में डेरा किया। और
४७ देबूनजट्ठ से चलके अलमूनदिबलतेम: में डेरा किया। और
अलमूनदिबलतेम: से याचा करके अ़बरीम पर्बतों पर नबू के
४८ आगे डेरा किया। और अ़बरीम पर्बतों से चलके मोअब के
चौगानों में यरदन के तीर पर जो अरीहू के लग है डेरा किया।

४९ और यरदन के तीर बेतुलयसीमात से यात्रा करके अबीलसन्तीन
से होके मोअब के चौगानों में डेरा किया ॥
५० और परमेश्वर मोअब के चौगानों में अबीलसन्तीन के तीर
५१ अरीहू के लग मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के संतानों
को आज्ञा कर और कह कि जब तुम यरदन से पार होके
५२ कनआन के देश में पहुंचो। तब तुम उन सब को जो उस
देश के बासी हैं अपने सन्मुख से दूर करो और उन की सारी
प्रतिमा को नाश करो और उन की ढाली हुई मूर्त्तियों को नष्ट
५३ करो और उन के सब ऊंचे स्थानों को ढा देओ। और उन्हें
देश से बिदेश करके उस में बास करो क्योंकि मैं ने वुह देश
५४ तुम्हें तुम्हारे अधिकार के लिये दिया है। और तुम चिट्ठी
डालके उस देश को आपुस में अपने घराने के समान बांट
लेओ बहुतों को बहुत अधिकार देओ और थोड़ों को थोड़ा
हर एक का उसी में स्थान होगा जहां उस की चिट्ठी पड़े
अपने पितरों की गोष्ठियों के समान तुम अधिकार लेओ।
५५ परन्तु यदि तुम उस देश के बासियों को अपने आगे से दूर
न करोगे तो यों होगा कि जिन्हें तुम रहने देओगे वे तुम्हारी
आंखों में कांटे और तुम्हारे पांजरों में कील होंगे और उस देश
५६ में जहां तुम बसोगे तुम्हें सतावेंगे। परन्तु अंत को यह होगा
कि जो कुछ मैं उन से किया चाहता हूं सो तुम से करूंगा ॥

चौंतीसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के
संतानों को आज्ञा कर और उन से कह कि जब तुम कनआन
के देश में पहुंचो वुह देश जो तुम्हारे अधिकार में पड़ेगा
अर्थात् कनआन का देश उस के सिवाने सहित ॥
३ तब सीन के बन से अदूम के सिवाने लों तुम्हारी दक्षिण

दिशा होगी और तुम्हारा दक्षिण सिवाना खारी समुद्र के अंत तीर
४ पूरब दिशा होगी। और तुम्हारा दक्षिण सिवाना अक़राबीम
के चढ़ाव के मार्ग लों घेरेगा और सीन लों पहुंचेगा और उस का
निकास क़ादिशबरनीअ की दक्षिण की ओर होगा और हसरअद्दार
५ लों जावेगा और अज़मून लों चला जावेगा। और यह सिवाना
अज़मून से घूमके मिस्र की नदी लों पहुंचेगा और उस का
निकास समुद्र की ओर होगा॥
६ और तुम्हारा पश्चिम का सिवाना महासमुद्र होगा यही
तुम्हारा पश्चिम सिवाना होगा॥
७ और यह तुम्हारा उत्तर सिवाना होगा महासमुद्र से हूर
८ पर्बत लों। और हूर पहाड़ से हमात के पैठ लों और वुह
९ सिवाना सीदाद लों जावेगा। और वुह सिवाना ज़िफ़रून को
और उस का निकास हसरऐनान से हो जावेगा यही तुम्हारी
उत्तर दिशा है॥
१० और तुम अपने लिये पूरब दिशा हसरऐनान से लेके सफ़ाम
११ लों ठहराइयो। और उस का सिवाना सफ़ाम से लेके रिबल:
लों आईन के पूरब ओर होगा और सिवाना वहां से उतरके
१२ किन्नारात के समुद्र की पूरब दिशा में मिलेगा। और उस का
सिवाना यरदन को उतरेगा और उस का निकास खारी समुद्र
लों होगा यही तुम्हारे देश उस के तीर समेत चौदिशा में
होंगे॥
१३ फिर मूसा ने इसराएल के संतानों को आज्ञा किई कि यह वुह
देश है जिस के अधिकारी तुम चिट्ठी से होओगे जिस के बिषय
में परमेश्वर ने कहा कि तू साढ़े नव गोष्ठियों को बांट दीजियो।
१४ क्योंकि रूबिन की गोष्ठी ने अपने पितरों के घराने के समान
और जद के संतान ने अपनी गोष्ठी के घराने के समान और
१५ मुनस्सी की आधी गोष्ठी ने अपने घराने के समान पाया। उन

अढ़ाई गोष्ठियों ने यरदन के इस पार अरीहू के लग पूरब दिशा
को अपना अधिकार पाया ॥
१६ । १७ फिर परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा करके कहा। वे लोग
जो तुम्हारे देश को बांटेंगे उन के ये नाम हैं इलिअज़र
१८ याजक और नून का बेटा यहूशूअ। और तुम अपने लिये हर
गोष्ठी का एक प्रधान लेओ जिसतें उस देश को भाग करे।
१९ और उन प्रधानों के नाम ये हैं यफुन्नः का बेटा कालिब यहूदाह
२० की गोष्ठी का। और अम्मिहूद का बेटा समूएल शमऊन की
२१ गोष्ठी के घराने का। किसलून का बेटा इलिदाद बिनयमीन
२२ के घराने का। और दान के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष
२३ युगली का बेटा बूक्की। यूसुफ़ के संतान के प्रधान मुनस्सी के
२४ संतानों की गोष्ठी के लिये अफ़ूद का बेटा हन्निएल। और
इफ़रायम के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष सिफ़तान का बेटा
२५ कमूएल। और ज़बुलून के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष फ़रनाक
२६ का बेटा इलीसफन। और इशकार के संतान की गोष्ठी का
२७ अध्यक्ष अज़ान का बेटा फ़लतिएल। और यसर के संतान
२८ की गोष्ठी का अध्यक्ष सलूमी का बेटा अख़िहूद। और नफ़ताली
के संतान की गोष्ठी का अध्यक्ष अम्मिहूद का बेटा फिदहिएल॥
२९ ये वे लोग हैं जिन्हें परमेश्वर ने आज्ञा किई कि कनआन
का देश इसराएल के संतान को अधिकार में बांट देवें॥

पैंतीसवां पर्ब्ब।

१ फिर परमेश्वर मोअब के चौगान में यरदन के तीर पर
२ अरीहू के लग मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के संतानों
को आज्ञा कर कि लावियों को अपने अधिकार में से अधिकार
के लिये नगर बसने को देवें और नगरों के चारों ओर के उप
३ नगर उन्हें देओ। और नगरों को उन के रहने के कारण और

आस पास उन के गाय बैल के कारण और उन की संपत्ति
४ और उन समस्त पशुन के लिये हों। और नगरों के आस पास
जो तुम लावियों को देओगे चाहिये कि नगर की भीत से
५ सहस्र हाथ बाहर होवे। और तुम नगर से लेके बाहर पूरब
की ओर दो सहस्र हाथ नापो और दक्षिण की ओर दो सहस्र
हाथ और पश्चिम की ओर दो सहस्र हाथ और उत्तर की ओर
दो सहस्र हाथ और उन के मध्य में उन के लिये नगरों के
६ उपनगर होंगे। और उन नगरों के मध्य में जो तुम लावियों
को देओगे छः नगर शरण के लिये होवें जिसे तुम घातक के
लिये ठहराओ और उन में बयालीस नगर और भी मिला देओ।
७ सारे नगर जो तुम लावियों को देओगे अठतालीस नगर उन
८ के उपनगर सहित। और जो नगर तुम देओगे सो इसराएल
के संतानों के अधिकार में से बहुत में से बहुत दीजियो और
थोड़े में से थोड़ा सब कोई अपने अधिकार के समान अपने
नगरों में से जो उस के अधिकार में है लावियों को दीजियो॥
९ । १० फिर परमेश्वर मूसा से कहके बोला। कि इसराएल के
संतानों को आज्ञा कर और उन्हें कह कि जब तुम यरदन पार
११ कनआन के देश में पहुंचो। तब तुम अपने लिये नगरों को शरण
नगर के कारण ठहराओ जिसतें वुह घातक जिस्से अनजाने घात
१२ हो जाय भागके वहां जा रहे। और वुह तुम्हारे लिये पलटा
दायक से शरण नगर होगा और घातक जब लों बिचार के लिये
१३ मंडली के आगे खड़ा न होवे मारा न जावे। सो जो जो नगर
१४ तुम देओगे उन में छः नगर शरण के लिये होंगे। यरदन के इस
पार तीन नगर दीजियो और कनआन के देश में तीन नगर दीजियो
१५ ये शरण नगर होंगे। ये छः नगर इसराएल के संतानों और
परदेशी और उन के कारण जो तुम्में रहते हैं शरण के लिये होंगे
कि जो कोई अनजाने किसी को मारे उधर भाग जावे॥

१६ और यदि कोई किसी को लोहे के हथियार से मारे ऐसा
कि वुह मर जावे तो वुह घातक है घातक अवश्य घात किया
१७ जायगा। और यदि कोई किसी को ऐसा पत्थर फेंक मारे कि
वुह मर जावे तो वुह घातक है घातक अवश्य मार डाला जावे।
१८ अथवा कोई किसी को ऐसा लठ मारे कि वुह मर जावे तो
१९ वुह घातक है घातक अवश्य घात किया जावे। लोहू का
पलटादायक वही घातक को आप ही उसे घात करे जब वही
२० उसे पावे उसे मार डाले। और यदि कोई किसी को डाह से
ढकेल देवे अथवा दांवघात से उसे पटक देवे कि वुह मर जावे।
२१ अथवा बैर से उसे हाथ से मारे कि वुह मर जावे तो जिस ने
उसे मारा वुह निश्चय मारा जायगा मारे हुए का कुटुम्ब जब
उस घातक को पावे उसे घात करे॥

२२ और यदि कोई किसी को बिना बैर के अकस्मात् उसे
ढकेल देवे अथवा बिना दांवघात उस पर कोई बस्तु डाल
२३ देवे। अथवा उसे बिन देखे ऐसा पत्थर फेंके कि उस पर गिरे
और वुह मर जावे और वुह उस का बैरी न था और न उस
२४ की बुराई चाहता था। तब मंडली उस घातक और लोहू के
पलटादायक के मध्य इन न्यायों के समान बिचार करे।
२५ कि मंडली उस घातक को लोहू के पलटादायक के हाथ से
छुड़ाके उस शरण नगर में जहां वुह भागके गया था फिर
भेज देवे और वुह प्रधान याजक के जो पवित्र तेल से अभिषिक्त
हुआ था मरने लों वहीं रहे॥

२६ परन्तु यदि घातक उस शरण नगर के सिवाने से जहां
२७ वुह भागके गया था बाहर आवे। और लोहू का पलटादायक
उसे शरण नगर के सिवाने से बाहर पावे और घातक को मार
२८ डाले तो उस पर घात का अपराध नहीं। क्योंकि उस घातक
को उचित था कि प्रधान याजक की मृत्यु लों शरण नगर में

रहता और उस के मरने के पीछे अपने अधिकार के देश में
२६ आता । सो तुम्हारी पीढ़ियों में तुम्हारी समस्त बस्तियों में न्याय
के लिये यह व्यवस्था होगी ॥
३० जो किसी को मार डाले तो घातक साक्षियों की साखी के समान
घात किया जावे परन्तु एक साक्षी की साखी से किसी को घात न
३१ करना । और तुम घातक के प्राण की संती जो घात के योग्य है
३२ मोल मत लेओ परन्तु वुह अवश्य मारा जावे । और तुम उस्से
भी जो अपने शरण के नगर को भाग गया हो घात का मोल मत
लेओ जिसतें वुह याजक की मृत्यु लों अपने देश में आ बसे ॥
३३ सो जहां हो उस देश को अशुद्ध मत कीजियो क्योंकि घात
ही से देश अशुद्ध होता है और देश उस लोहू से जो उस में
बहाया गया है शुद्ध नहीं होता परन्तु केवल उसी के लोहू
३४ से जिस ने उसे बहाया है । सो तुम अपने निवास के देश को
जिस के मध्य में मैं रहता हूं अशुद्ध न करो क्योंकि मैं परमेश्वर
इसराएल के संतानों के मध्य में रहता हूं ॥

छत्तीसवां पर्ब्ब ।

१ तब यूसुफ़ के संतान के घराने में से मुनस्सी के बेटे माखीर के
बेटे जलआद के संतान के घराने के पितरों के प्रधान आके मूसा
के आगे और इसराएल के संतानों के पितरों के आगे बोले और कहा ।
२ कि परमेश्वर ने मेरे प्रभु को आज्ञा किई कि चिट्ठी डालके देश को
इसराएल के संतानों को अधिकार के लिये देवे और हमारे
प्रभु ने परमेश्वर की आज्ञा से कहा कि हमारे भाई सिलाफ़िहाद
३ का अधिकार उस की बेटियों को दिया जावे । सो यदि वे
इसराएल के संतानों की और गोष्ठियों के बेटों में से किसी के
साथ ब्याही जावें तो उन का अधिकार हमारे पितरों के
अधिकार से निकल जावेगा और उस गोष्ठी के अधिकार में

जहां वे ब्याही गाईं मिल जावेगा सो हमारा चिट्ठी का अधिकार
४ घट जावेगा। और जब इसराएल के संतानों के आनन्द का
बरस आवे तब उन का अधिकार उस घराने के अधिकार में
जहां वे ब्याही गईं मिल जावेगा और उन का अधिकार हमारे
पितरों की गोष्ठी के अधिकार में से निकल जावेगा॥
५ तब मूसा ने परमेश्वर की आज्ञा से इसराएल के संतानों से
६ कहा कि यूसुफ़ के संतान की गोष्ठी अच्छा कहती है। सो
परमेश्वर सिलाफ़िहाद की बेटियों के विषय में यों आज्ञा करता
है कि वे जिस्से चाहें उस्से ब्याह करें केवल अपने पिता की
७ गोष्ठी में ब्याह करें। जिसतें इसराएल के संतानों का अधिकार
एक गोष्ठी से दूसरी गोष्ठी में न जावे और इसराएल के संतान में से
हर जन आप को अपने ही पितरों की गोष्ठी के अधिकार में रक्खे।
८ और हर एक बेटी इसराएल के संतानों की किसी गोष्ठी में
अधिकार रक्खे अपने बाप ही के घराने की गोष्ठी में से एक
की पत्नी होवे जिसतें इसराएल के संतान में हर जन अपने
९ पिता के अधिकार पर स्थिर रहे। और अधिकार एक गोष्ठी में
से दूसरी गोष्ठी में न जावे परन्तु इसराएल के संतान के घरानों
में हर एक जन अपने अधिकार में आप को रक्खे॥
१० सो सिलाफ़िहाद की बेटियों ने वैसा ही किया जैसी
११ परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी। क्योंकि महल: तिरज:
और हजल: और मिलक: और नुअ: सिलाफ़िहाद की बेटियां
१२ अपने चचेरे भाइयों के साथ ब्याही गईं। यूसुफ़ के बेटे मुनस्सी
के घरानों में ब्याही गईं और उन का अधिकार उन के पिता
की गोष्ठी में बना रहा॥
१३ ये वे आज्ञा और विचार हैं जो परमेश्वर ने मूसा के हसते
मोअब के चौगानों में यरदन के तीर पर यरीहू के सन्मुख
इसराएल के संतानों को आज्ञा किई॥

बिवाद की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ ये वे बातें हैं जिन्हें मूसा ने यरदन के इस पार अरण्य
में लाल समुद्र के सन्मुख चौगान में फ़ारान और तोफ़ल और
लाबन और हसीरात और दीज़ाहब के मध्य में इसराएल के
२ संतानों से कहा। होरिब से क़ादिसबरनीअ लों शईर पर्बत
३ के पथ से ग्यारह दिन का मार्ग है। और ऐसा हुआ कि
चालीसवें बरस के ग्यारहवें मास की पहिली तिथि में उन
समस्त आज्ञाओं के समान जिन्हें परमेश्वर ने उसे दिईं थीं
जिसतें इसराएल के संतानों से कही जावें मूसा ने उन्हें कहा।
४ उस के पीछे कि उस ने अमूरियों के राजा सैहून को जो
हसबून में रहता था और बासान के राजा ऊज को जो
इसतारात और अद्रिअई में रहता था बधन किया॥

५ यरदन के इस पार मोअब के चौगान में इस व्यवस्था को
६ बर्णन करना आरंभ किया और कहा। कि परमेश्वर हमारा ईश्वर
होरिब में हमें यह कहके बोला कि तुम इस पहाड़ पर बहुत
७ रहे। फिरो और यात्रा करो और अमूरियों के पहाड़ को और
उस के समस्त परोसियों में जाओ चौगान में पहाड़ों में और
तराई में और दक्षिण में और समुद्र के तीर कनआनियों के
८ देश को और लुबनान को महा नदी फ़ुरात लों जाओ। देखो
मैं ने आगे का देश तुम्हें दिया प्रवेश करो और उस देश पर
जिस के विषय में परमेश्वर ने तुम्हारे पितरों अबिरहाम इज़हाक़

और यअ़कूब से किरिया खाई कि तुम्हें और तुम्हारे पीछे
तुम्हारे बंश को देऊंगा अधिकार में लेओ ॥
९ और उसी समय में ने तुम्हें कहा कि मैं अकेला तुम्हारा
१० बोझ नहीं उठा सक्ता । परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें बढ़ाया
और देखो तुम आज के दिन आकाश के तारों की नाईं मंडली
११ हो । परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें इस्से भी सहस्र
गुण अधिक बढ़ावे और जैसा उस ने तुम से कहा है तुम्हें
१२ आशीष देवे । मैं तुम्हारे परिश्रम और तुम्हारे बोझ और तुम्हारे
१३ झगड़ों को अकेला क्योंकर उठा सकूं । तुम बुद्धिमान और ज्ञानी
और अपनी गोष्ठियों में से प्रसिद्ध लोगों को लाओ और मैं उन्हें तुम
१४ पर आज्ञाकारी करूंगा । और तुम ने मुझे उत्तर देके कहा कि
१५ जो कुछ तू ने कहा है सो पालन करने को भला है । सो मैं
ने तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधानों को बुद्धिमान और प्रसिद्धों को
लिया और उन्हें तुम्हारा प्रधान सहस्रों का प्रधान और सैकड़ों
का प्रधान और पचास पचास का प्राधन और दस दस का
१६ प्रधान तुम्हारी गोष्ठियों में करोड़ा किया । और उस समय में
ने तुम्हारे न्याइयों को आज्ञा करके कहा कि अपने भाइयों
का बिवाद सुनो मनुष्य में और उस के भाइयों में और उस के
१७ साथ के परदेशियों में धर्म्म से न्याय करो । तुम मुंह देखा
न्याय न करो तुम न्याय में किसी के रूप को मत मानो बड़े
के समान छोटे की भी सुनियो तुम मनुष्य के रूप से न डरो
क्योंकि न्याय ईश्वर का है और जो बिषय तुम्हारे लिये कठिन
१८ होवे मेरे पास लाओ और मैं उसे सुनूंगा । सब जो तुम्हें
करना था मैं ने उसी समय में तुम्हें आज्ञा किई ॥
१९ और हम ने होरिब से यात्रा किई तो जैसी परमेश्वर हमारे
ईश्वर ने हमें आज्ञा किई थी उस समस्त महा भयंकर बन में
गये जिसे तुम ने अमूरियों के पहाड़ को जाते हुए देखा और

२० क़ादिसबर्नीअ में आये । और मैं ने तुम्हें कहा कि तुम
अमूरियों के पहाड़ को पहुंचे हो जो परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें
२१ देता है । देख परमेश्वर तेरे ईश्वर ने यह देश तेरे आगे
धरा है चढ़ उसे बश में कर जैसा परमेश्वर तेरे पितरों के
ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है मत डर और हियाव न छोड़ ।
२२ तब हर एक तुम्में से मुझ पास आया और बोला कि हम
अपने आगे लोग भेजेंगे और वे हमारे लिये उस देश का भेद
लेवें और आके हम से कहें कि हम किस मार्ग से वहां जावें
२३ और कौन कौन नगरों में प्रवेश करें । और वुह कहना मुझे
भाया और मैं ने तुम्में से गोष्ठी पीछे एक एक मनुष्य करके
२४ बारह मनुष्य लिये। और वे चल निकले और पहाड़ पर गये और
२५ इसकाल की तराई में आये और उस का भेद लिया । और वे
उस देश का फल अपने हाथों में लेके हमारे पास उतर आये
और संदेश ले आये और बोले कि परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें
उत्तम देश देता है ॥

२६ तथापि तुम चढ़ न गये परन्तु परमेश्वर अपने ईश्वर की
२७ आज्ञा से फिर गये । और तुम अपने तंबुओं में कुड़कुड़ाके
बोले इस कारण कि परमेश्वर हम से डाह रखता था हमें मिस्र
के देश से निकाल लाया कि हमें अमूरियों के हाथ में करके
२८ नाश करे । हम कहां चढ़ें हमारे भाइयों ने तो यों कहके
हमारे मन को घटा दिया कि वे लोग तो हम से बड़े और
लम्बे हैं और उन के नगर बड़े हैं जिन की भीतें स्वर्ग लों हैं
और इस्से अधिक हम ने अनाक़ियों के बेटों को वहां देखा ।
२९ तब मैं ने तुम्हें कहा कि मत डरो और उन से भय मत करो।
३० परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर जो तुम्हारे आगे आगे जाता है वही
तुम्हारे लिये लड़ेगा जैसा कि उस ने तुम्हारी दृष्टि में तुम्हारे
३१ लिये मिस्र में किया । और अरण्य में जहां तू ने देखा कि

जैसा मनुष्य अपने बेटे को उठाता है वैसा परमेश्वर तेरे ईश्वर
ने उस सारे मार्ग में जहां जहां तुम गये तुम्हें उठाया है
३२ जब लों तुम इस स्थान में आये। तथापि इस बात में तुम
३३ ने परमेश्वर अपने ईश्वर की प्रतीति न किई। वुह रात को
आग में और दिन को मेघ में जिसतें तुम्हें जाने का मार्ग
बतावे मार्ग में तुम से आगे आगे गया जिसतें तुम्हारे लिये
स्थान ठहरावे जहां अपने तंबू खड़े करो॥

३४ तब परमेश्वर ने तुम्हारी बातें सुनीं और क्रुद्ध हुआ और
३५ किरिया खाके बोला। कि निश्चय इस दुष्ट पीढ़ी के मनुष्यों में से
एक भी उस अच्छे देश को जिस के देने को मैं ने तुम्हारे पितरों
३६ से किरिया खाई है न देखेगा। केवल यफुन्नः का बेटा कालिब
वुह उसे देखेगा और मैं वुह देश जिस पर उस का पांव पड़ा उसे
और उस के बंश को देऊंगा इस कारण कि वुह पूर्णता से
३७ परमेश्वर के मार्ग पर चला। और तुम्हारे कारण से परमेश्वर ने
मुझ पर भी क्रुद्ध होके कहा कि तू भी उस में प्रवेश न करेगा।
३८ नून का बेटा यहूशूअ जो तेरे आगे खड़ा रहता है वुह उस
में प्रवेश करेगा तू उसे उभाड़ क्योंकि वुह इसराएल को उस
३९ का अधिकारी करेगा। और तुम्हारे बालक जिन्हें तुम ने कहा
था कि अहेर हो जावेंगे और तुम्हारे लड़के जिन्हें भले बुरे
का ज्ञान तब न था वहां प्रवेश करेंगे और मैं उसे उन्हें देऊंगा
४० और वे उस के अधिकारी होंगे। परन्तु तुम फिरो और लाल
समुद्र के मार्ग से बन में यात्रा करो॥

४१ तब तुम ने मुझे उत्तर देके कहा कि हम ने परमेश्वर का
अपराध किया है सो हम चढ़ जावेंगे और जैसी कि परमेश्वर
हमारे ईश्वर ने हमें आज्ञा किई है हम लड़ेंगे और तुम सब
के सब हथियार बांधके सिद्ध हुए कि पहाड़ पर चढ़ जाओ।
४२ तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि तू उन्हें कह कि मत चढ़ो

और युद्ध न करो क्योंकि में तुम्में नहीं हूं न हो कि तुम
४३ अपने बेरियों के आगे मारे जाओ। सो में ने तुम्हें कह दिया
और तुम ने न सुना परन्तु परमेश्वर की आज्ञा से फिर गये
४४ और मगराई से पहाड़ पर चढ़ गये। तब अमूरियों ने जो
उस पहाड़ पर रहते थे तुम्हारा साम्ना किया और मधु माखियों
४५ की नाईं तुम्हें रगेदा और शईर में हुरमः लों तुम्हें मारा। तब
तुम फिरे और परमेश्वर के आगे रोये परन्तु परमेश्वर ने तुम्हारा
शब्द न सुना और न तुम्हारी ओर कान धरा तब तुम क़ादिस
में बहुत दिन लों रहे उन दिनों के समान जो तुम रहे॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ तब जैसी परमेश्वर ने मुझे आज्ञा किई थी हम फिरे और
लाल समुद्र के मार्ग से बन में यात्रा किई और बहुत दिन
२ लों शईर पर्बत को घेरा। तब परमेश्वर मुझे कहके बोला।
३ कि तुम ने इस पर्बत को बहुत दिन लों घेरा फिरो उत्तर की ओर
४ जाओ। और लोगों को आज्ञा कर कि तुम अपने भाई ऐसौ
के संतान के सिवाने से चलते हो वे शईर में रहते हैं और
५ वे तुम से डरेंगे सो तुम आप से चौकस रहो। उन्हें मत छेड़ो
क्योंकि में उन की भूमि से एक पैर भर भी तुम्हें न देऊंगा
इस कारण कि में ने शईर पर्बत ऐसौ के अधिकार में दिया है।
६ तुम खाने के लिये उन से भोजन मोल लीजियो और पीने के
७ लिये दाम देके जल भी मोल लीजियो। क्योंकि परमेश्वर तेरे
ईश्वर ने तेरे हाथ के सब कार्य्यों में तुझे आशीष दिया है वुह
इस महा बन में तेरा जाना जानता है इन चालीस बरस भर
परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे साथ है तुझे किसी बात की घटी न
हुई॥
८ और जब हम अपने भाई ऐसौ के संतान से जो शईर में

रहते थे चैागान के मार्ग में से ग़लत से श्रार असयूनजब्र से हाके चले
गये तो हम फिरे श्रार माश्रब के बन के मार्ग में से आये।
९ तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि माश्रबियों का मत छेड़ श्रार उन
से मत झगड़ क्योंकि उन के देश का अधिकारी तुझे न करूंगा
इस कारण कि मैं ने आर का लूत के संतान के अधिकार में
१० दिया है। वहां आगे श्रमीम रहते थे वे बड़े बड़े श्रार बहुत
११ श्रार लम्बे लम्बे अनाक़ियों के समान थे। वे भी अनाक़ के
संतान के समान दानव में गिने जाते थे परन्तु माश्रबी उन
१२ का श्रमीम कहते हैं। परन्तु आगे शश्रीर में हूरीम रहते थे
श्रार ऐसा के संतान उन के अधिकारी हुए श्रार उन्हें अपने
आगे मिटा डाला श्रार उन के स्थान पर बसे जैसा इसराएल
के संतान ने अपने अधिकार के देश में किया जा परमेश्वर ने
१३ उन्हें दिया था। अब उठा श्रार ज़रद की नाली पार होश्रो
सा हम ज़रद की नाली के पार उतर गये॥
१४ श्रार जब से हम ने क़ादिसबरनीश्र का छाड़ा श्रार ज़रद
की नाली के पार उतरे अठतीस बरस हुए जब लों कि लड़ांक
की समस्त पीढ़ी सेना में से घट गई जैसी परमेश्वर ने उन से
१५ किरिया खाई थी। क्योंकि निश्चय परमेश्वर का हाथ उन की
बिरुद्धता में था कि सेना में से उन्हें नाश करे यहां लों कि वे
भस्म हो गये॥
१६ सो ऐसा हुश्रा कि जब समस्त लड़ांके मिटके लोगों में से
१७। १८ मर गये। तब परमेश्वर मुझे कहके बोला। कि तू
आज आर में होके जो माश्रब का सिवाना है चला जावेगा।
१९ श्रार जब तू अम्मून के संतान के आम्ने साम्ने आ पहुंचे तो
उन्हें दुःख न दे श्रार न उन्हें छेड़ क्योंकि मैं अम्मून के संतान
के देश में तुझे अधिकार नहीं देने का इस कारण कि मैं ने
२० उसे लूत के संतान के अधिकार में दिया है। वुह भी दानव

का देश कहाता था आगे वहां दानव रहते थे और अम्मूनी
२१ उन्हें ज़मज़ुम्मीम कहते थे। वे बहुत और लम्बे लम्बे
अनाक़ियों के समान थे और परमेश्वर ने उन्हें उन के आगे
नाश किया सो उन्हों ने उन्हें निकाल दिया और उन के स्थान
२२ पर बसे। जैसा उस ने ऐसौ के संतानों से किया जो शईर
में रहते थे जब उस ने हुरियों को उन के आगे से नाश किया
सो उन्हों ने उन्हें निकाल दिया और उन के स्थान पर आज
२३ लों बसे हैं। और अवियों को भी जो हसरैम में अज़्ज़ः लों
रहते थे और कफ़तूरी जो कफ़तूर से आये उन्हें नाश किया
२४ और उन के स्थान में बसे। तुम उठो चलो और अरनून के
पार जाओ देखो मैं ने हसबून के राजा अमूरी सैहून को उस
की भूमि सहित तुम्हारे हाथ में दिया है सो अधिकार लेने
२५ को आरंभ करो और लड़ाई में उन का साम्ना करो। आज के
दिन से मैं तेरा डर और भय उन जातिगणों पर डालूंगा
जो सारे आकाश के नीचे हैं वे तेरी सुधि पावेंगे और घबरावेंगे
और तेरे आगे थर्थरा जावेंगे॥

२६ तब मैं ने क़दीमात के बन से हसबून के राजा सैहून पास दूतों
२७ से मिलाप का यह बचन कहला भेजा। कि तू अपने देश में
से मुझे जाने दे मैं राजमार्ग में होके जाऊंगा और मैं दहिने
२८ बायें हाथ न मुड़ूंगा। खाने के लिये दाम लेके मुझे अन्न जल
२९ दीजियो केवल मैं पांव पांव चला जाऊंगा। जिस रीति से कि
ऐसौ के संतान ने जो शईर में रहते हैं और मोआबियों ने जो
आर में बसते हैं मुझ से किया जिसतें हम यरदन के पार उस भूमि
३० में पहुंचें जो परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें देता है। परन्तु हसबून
के राजा सैहून ने हमें अपने पास से जाने न दिया क्योंकि परमेश्वर
तेरे ईश्वर ने उस के आत्मा को कठोर और उस के मन को ढीठ
कर दिया जिसतें उसे आज के समान तेरे हाथ में देवे॥

३१ तब परमेश्वर ने मुझे कहा कि देख मैं ने सैहून को उस के
देश सहित तुझे देना आरंभ किया तू अधिकार लेना आरंभ
३२ कर जिसतें तू उस के देश का अधिकारी होवे। तब सैहून
अपने सारे लोग लेके यहस में लड़ने को निकल आया।
३३ सो परमेश्वर हमारे ईश्वर ने उसे हमें सौंप दिया और हम ने
उसे और उस के बेटे और उस के सब लोगों को मारा।
३४ और हम ने उसी समय उस के समस्त नगरों को ले लिया
और हर एक नगर के पुरुष और स्त्री और लड़कों को नाश
३५ किया किसी को न छोड़ा। केवल ढोर हम ने अपने लिये
अहेर में लिया और नगरों की लूट जिसे हम ने लिया।
३६ अरूईर से लेके जो अरनून की नदी के तीर पर है और उस
नगर से लेके जो नदी के तीर पर है अर्थात् जिलिअद लों
ऐसा कोई नगर हमारे लिये दृढ़ न था जिसे परमेश्वर हमारे
३७ ईश्वर ने हमें न सौंप दिया। केवल अम्मून के संतान के देश
जिस के निकट तू न गया और नदी यबूक के किसी स्थान में
न पहाड़ के नगरों में और जहां जहां परमेश्वर हमारे ईश्वर ने
हमें बरजा॥

तीसरा पर्व्व।

१ तब हम फिरे और बसन की ओर चढ़ गये और बसन
का राजा ऊज अद्रिअई में अपने सारे लोग लेके हमारे सन्मुख
२ लड़ने को निकला। और परमेश्वर ने मुझे कहा कि उस्से मत
डर क्योंकि मैं ने उसे और उस के सारे लोगों को उस के देश
सहित तेरे हाथ में सौंपा है और तू उस्से वैसा कर जैसा तू ने
३ अमूरियों के राजा सैहून से जो हसबून में रहता था किया। सो
परमेश्वर हमारे ईश्वर ने बसन के राजा ऊज को भी और उस के
समस्त लोग को हमारे बश में कर दिया और हम ने उन्हें यहां लों

४ मारा कि उन में से कोई न बचा। और हम ने उस समय
उस के समस्त नगर ले लिये अरजूब का सारा देश ऊ़ज का
राज्य बसन का एक नगर भी न रहा जो हम ने उन से न
५ लिया साठ नगर ले लिये। ये सब नगर ऊंची ऊंची भीतों
और फाटकों और अड़ंगों से दृढ़ थे और बहुत बिन भीत
६ से घेरे हुए नगर भी ले लिये। और हम ने उन्हें उन के
पुरुषों और स्त्रियों और बालकों को हर एक नगर से नाश
किया जैसा कि हम ने हसबून के राजा सेहून से किया।
७ परन्तु नगरों के समस्त ढोर और लूट हम ने अपने ही
८ लिये लिया। और हम ने उस समय अमूरियों के दोनों
राजाओं से यरदन के उस ही पार का देश अरनून की
९ नदी से हरमून पर्बत लों ले लिये। हरमून को सैदूनी सरियून
१० कहते हैं और अमूरी उसे सनीर कहते हैं। चौगान के
समस्त नगर और सारा जिलिअ़द और सारा बसन सलक:
और अद्रिअई लों जो बसन में ऊ़ज के राज्य के नगर हैं।
११ क्योंकि केवल बसन का राजा ऊ़ज रह गया जो दानव में
का था देखो उस की खाट लोहे की थी क्या वुह अम्मून
के संतान रबाह में नहीं है मनुष्य के हाथों से नौ हाथ लम्बी
चार हाथ की चौड़ी॥
१२ और यह देश हम ने उसी समय बश में किया अरूईर से
जो अरनून की नदी के पास और आधा पहाड़ जिलिअ़द और
१३ उस के नगर मैं ने रूबिनियों और जद्दियों को दिये। और
जिलिअ़द का उबरा हुआ और समस्त बसन जो ऊ़ज का
राज्य था मैं ने मुनस्सी की आधी गोष्ठी को दिया अरजूब का
सारा देश बसन सहित जो दानव का देश कहाता था।
१४ मुनस्सी के बेटे याईर ने अरजूब का समस्त देश जसूरियों
और माकासियों के सिवाने लों ले लिये और उस ने बसन

हवसयाईर अपने नाम के समान उस का नाम आज लों
१५ । १६ रक्खा । और मैं ने जिलिअद माकीर को दिया । और
जिलिअद से अरनून की नदी लों और आधी तराई और सिवाना
याबूक़ की नदी लों जो अम्मून के संतान का सिवाना है मैं
१७ ने रूबिनियों को और जद्दियों को दिया । और चौगान भी
और यरदन और उस के सिवाने क़िन्नारात से लेके चौगान
के समुद्र लों अर्थात् खारी समुद्र जो पिसग: के नालों के नीचे
१८ है पूरब की ओर भी । और मैं ने उसी समय तुम्हें आज्ञा
करके कहा कि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने इस भूमि का तुम्हें
अधिकारी किया तुम अपने भाई इसराएल के संतानों के आगे
हथियार बांधके सब जितने लड़ाई के योग्य हो पार उतरो ।
१९ केवल तुम्हारी पत्नियां और तुम्हारे बालक और तुम्हारे ढोर
तुम्हारे उन नगरों में रहें जो मैं ने तुम्हें दिये हैं क्योंकि मैं
२० जानता हूं कि तुम्हारे ढोर बहुत हैं । जब लों कि परमेश्वर
तुम्हारे भाइयों को चैन देवे जैसा तुम्हें दिया जिस में वे भी
उस देश के जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने यरदन के पार उन्हें
दिया है अधिकारी होवें तब हर एक पुरुष अपने अपने
अधिकार में फिर जाय जो मैं ने तुम्हें दिया है ॥

२१ और उसी समय मैं ने यहूशूअ को आज्ञा किई और कहा
कि तेरी आंखें सब कुछ देखती हैं जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने
इन दोनों राजाओं से किया परमेश्वर उन सब राजों से जहां
२२ जहां तू जायगा वैसा करेगा । तुम उन से मत डरियो क्योंकि
परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही तुम्हारे लिये लड़ेगा ॥

२३ और उस समय मैं परमेश्वर के आगे गिड़गिड़ाया और बोला।
२४ कि हे प्रभु परमेश्वर तू ने अपनी बड़ाई और अपना सामर्थी
हाथ अपने दास को दिखाने को आरंभ किया है क्योंकि स्वर्ग
में अथवा पृथिवी में कौन सा सर्वशक्तिमान है जो तेरे कार्य्य और

२५ तेरी सामर्थ्य के समान कर सके । मैं तेरी बिनती करता हूं कि
मुझे पार जाके उस अच्छे देश को देखने दे जो यरदन के
२६ पार है वुह सुन्दर पर्बत और लुबनान । परन्तु परमेश्वर
तुम्हारे कारण मुझ से क्रुद्ध हुआ और उस ने मेरी न सुनी
और परमेश्वर ने मुझे कहा कि यही बस है इस बिषय में फेर
२७ मुझ से मत कह । पिसगः की चोटी पर चढ़ जा और अपनी
आंखें पश्चिम और उत्तर और दक्षिण और पूरब की ओर उठा
और अपनी आंखों से देख क्योंकि तू इस यरदन के पार न
२८ जायगा । पर यहूशूअ को आज्ञा कर और उसे हियाव दे और
उसे दृढ़ कर क्योंकि वुह इन लोगों के आगे पार जायगा और
वही उन्हें उस देश का जो तू देखता है अधिकारी करेगा ।
२९ सो हम तराई में फ़ागूर के सन्मुख रहे ।

चौथा पर्व्व ।

१ सो अब हे इसराएल जो बिधि और बिचार मैं तुम्हें
सिखाता हूं सुनो और उन पर ध्यान करो जिसतें तुम जीयो
और उस देश में जो परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें
२ देता है पहुंचके उस के अधिकारी होओ । तुम उस बात में
जो मैं तुम्हें कहता हूं कुछ मत मिलाइयो और न उस्से
घटाइयो जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को जो
३ मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं पालन करो । जो कुछ कि परमेश्वर
ने बअलफ़ग़ूर से किया तुम्हारी आंखें देखती हैं क्योंकि
उन सब पुरुषों को जिन्हों ने बअलफ़ग़ूर का पीछा किया
४ परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम में से नष्ट किया । परन्तु
तुम जो परमेश्वर अपने ईश्वर से लवलीन हो रहे हो सो तुम
५ में से हर एक आज लों जीता है । देखो मैं ने बिधि और
बिचार जिस रीति से परमेश्वर मेरे ईश्वर ने मुझे आज्ञा किई

तुम्हें सिखलाये जिसतें तुम उस देश में जाके जिस के अधिकारी
६ होओगे उन का पालन करो। सो उन्हें धारण करो और
मानो क्योंकि जातिगणों के आगे यही तुम्हारी बुद्धि और समुझ
है कि वे इन समस्त बिधिन को सुनके कहेंगे कि निश्चय यह
७ जाति बुद्धिमान और ज्ञानमान है। क्योंकि कौन जातिगण
ऐसी बड़ी है जिस के पास ईश्वर ऐसा समीप होवे जैसा परमेश्वर
हमारा ईश्वर सब में जो हम उस्से मांगते हैं हमारे समीप है।
८ और कौन ऐसी बड़ी जाति है जिस की बिधि और बिचार
ऐसा धर्म्म का हो जैसी यह समस्त व्यवस्था जो मैं आज
९ तुम्हारे आगे धरता हूं। केवल आप से चौकस रह और
अपने प्राण को यत्न से रख ऐसा न हो कि तू उन बस्तुन
को जिन्हें तेरी आंखों ने देखा भूल जाय और ऐसा न हो
कि वे बातें जीवन भर में कभी तेरे अंतःकरणों से जाती
१० रहें परन्तु तू उन्हें अपने बेटों और पोतों को सिखा। जिस
दिन तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे होरिब में खड़ा हुआ
और परमेश्वर ने मुझे कहा कि लोगों को मेरे आगे एकट्ठा
कर और मैं उन्हें अपने बचन सुनाऊंगा जिसतें वे मेरा डर
सीखें जब लों वे भूमि पर जीते रहें और वे अपने लड़कों को
११ सिखावें। सो तुम पास आये और पहाड़ के नीचे खड़े रहे
और पहाड़ स्वर्ग के मध्य लों अंधकार और मेघ और गाढ़ा
१२ अंधकार आग से जल रहा था। और परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर
ने उस आग के मध्य में से तुम्हारे साथ बातें किईं तुम ने
१३ बातों का शब्द सुना परन्तु मूर्त्ति न देखी केवल शब्द। और
उस ने अपनी बाचा तुम्हारे आगे बर्णन किई जिसे उस ने
तुम्हें पालन करने को आज्ञा किई दस आज्ञा और उस ने उन्हें
१४ पत्थर की दो पटियों पर लिखीं। और परमेश्वर ने उस समय
मुझे आज्ञा किई कि तुम्हें बिधि और बिचार सिखाऊं जिसतें

तुम उस देश में जाके जिस के तुम अधिकारी होओगे उन पर
चलो ॥
१५ सो तुम आप से बहुत चौकस रहो क्योंकि जिस दिन
परमेश्वर ने होरिब में आग के मध्य में से तुम्हारे साथ बातें
१६ कहीं तुम ने किसी प्रकार का रूप न देखा। ऐसा न हो कि
तुम बिगड़ जाओ और अपने लिये खोदी हुई मूर्त्ति किसी
१७ पुरुष अथवा स्त्री की प्रतिमा बनाओ। किसी पशु की प्रतिमा
जो पृथिवी पर है अथवा किसी पंछी का रूप जो आकाश में
१८ उड़ते हैं। अथवा किसी जंतु का रूप जो भूमि पर रेंगते हैं
अथवा किसी मछली का रूप जो पृथिवी के नीचे पानियों में
१९ हैं। ऐसा न हो कि तू स्वर्ग की ओर आंखें उठावे और सूर्य्य
और चंद्रमा और तारों को आकाश की समस्त सेनों को देखे
तब उन्हें पूजने को बगदाया जावे और उन की सेवा करे
जिन्हें परमेश्वर तेरे ईश्वर ने स्वर्ग के तले समस्त जातिगणों
२० के लिये विभाग किया है। परन्तु परमेश्वर ने तुम्हें लिया और
वुह तुम्हें लोहे के भट्ठे से अर्थात् मिस्र में से निकाल लाया
जिसतें तुम उस की ओर से अधिकार के लोग होओ जैसा कि
आज के दिन ॥
२१ और परमेश्वर ने तुम्हारे कारण से मुझ पर रिसियाके किरिया
खाई कि तू यरदन पार न जावेगा और उस अच्छे देश में
जिस का परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे अधिकारी करता है न
२२ पहुंचेगा। परन्तु मैं अवश्य इसी देश में मरूंगा निश्चय मैं
यरदन पार उतरने न पाऊंगा परन्तु तुम पार उतरोगे और
२३ इस अच्छी भूमि के अधिकारी होओगे। आप से चौकस रहो
ऐसा न हो कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की बाचा को जो
उस ने तुम से किई भूल जाओ और अपने लिये खोदी हुई
मूर्त्ति अथवा किसी वस्तु का रूप बनाओ जिस के बनाने से

२४ परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे बर्जा है। क्योंकि परमेश्वर तेरा
ईश्वर एक भस्मक अग्नि ज्वलित सर्बशक्तिमान है॥
२५ जब तुझ से लड़के और लड़कों के लड़के उत्पन्न होंगे और
तुम अनेक दिन लों उस देश में रहोगे और बिगड़ जाओगे
और खोदी हुई मूर्त्ति और किसी का रूप बनाओगे और परमेश्वर
अपने ईश्वर के आगे बुराई करके उस के कोप को भड़काओगे।
२६ तो मैं आज के दिन तुम पर स्वर्ग और पृथिवी को साक्षी
धरता हूं कि तुम उस देश पर से जहां तुम यरदन पार जाते
हो कि अधिकारी बनो शीघ्र नाश हो जाओगे तुम वहां अपने
२७ दिन को न बढ़ाओगे परन्तु सर्बथा नष्ट हो जाओगे। और
परमेश्वर तुम्हें जातिगणों में छिन्न भिन्न करेगा और अन्यदेशियों
के मध्य में जिधर तुम्हें परमेश्वर ले जावेगा थोड़े से रह
२८ जाओगे। और वहां उन देवतों की सेवा करोगे जो मनुष्यों के
हाथों से बने हैं लकड़ी के और पत्थर के जो न देखते न
२९ सुनते न खाते न सूंघते हैं। पर वहां भी जब तू परमेश्वर
अपने ईश्वर को खोज करेगा यदि तू अपने सारे मन से और
३० अपने सारे प्राण से उसे ढूंढ़ेगा तो उसे पावेगा। जब तू कष्ट
में होगा और ये सब अंत्य के दिनों में तुझ पर आ पड़ें
यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरेगा और उस का
३१ शब्द मानेगा। क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर दयाल सर्बशक्तिमान
है वुह तुझे न छोड़ेगा न तुझे नष्ट करेगा और तेरे पितरों की
बाचा को जो उस ने उन से किरिया खाई है न भूलेगा॥
३२ क्योंकि अगले दिनों से जो तुझ से आगे हो गये उस दिन
से जब आदम को ईश्वर ने पृथिवी पर उत्पन्न किया और स्वर्ग
की एक अलंग से लेके दूसरी लों पूछो यदि ऐसी बड़ी बात
३३ कभी हुई अथवा उस के समान सुनी गई। कि कभी लोगों ने
परमेश्वर का शब्द सुना था कि आग में से बोले जैसा तू ने

३४ सुना और जीता है। अथवा कभी ईश्वर ने इच्छा किई कि
जाके एक जातिगण को जातिगण के मध्य में से परीक्षा से
लक्षण से और आश्चर्य्य से और लड़ाई से और सामर्थी हाथ
से और बढ़ाई हुई भुजों से और बड़े बड़े भय से अपने लिये
लेवे जिस रीति से परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारी आंखों के
३५ साम्ने मिस्र में तुम्हारे लिये किया। यह सब तुझे दिखाया
गया जिसतें तू जाने कि परमेश्वर वही ईश्वर है उसे छोड़ कोई
३६ नहीं है। उस ने अपना शब्द स्वर्ग में से तुझे सुनाया जिसतें
तुझे सिखावे और पृथिवी पर उस ने तुझे अपनी बड़ी आग
३७ दिखाई और तू ने उस के वचन आग में से सुने। और इस
कारण कि उस ने तेरे पितरों से प्रेम किया उस ने उन के
पीछे उन के बंश को इस कारण चुन लिया और अपनी बड़ी
सामर्थ्य से तुझे मिस्र से अपनी दृष्टि के आगे निकाल लाया।
३८ जिसतें तेरे आगे से जातिगणों को जो तुझ से बड़े और बलवंत
हैं दूर करे और तुझे लावे और उन के देश का अधिकारी करे
जैसा आज के दिन है॥

३९ सो आज के दिन जान और अपने मन में सोच कि परमेश्वर
ऊपर स्वर्ग में और नीचे पृथिवी में वही ईश्वर है और कोई
४० नहीं है। सो तू उस की विधिन और उस की आज्ञाओं को जो
आज मैं तुझे आज्ञा करता हूं पालन कर जिसतें तेरे और
तेरे पीछे तेरे बंश के लिये भला होवे और तेरी बय उस देश
पर जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है बढ़ जावे॥

४१ तब मूसा ने सूर्य्य के उदय की ओर यरदन के इसी पार
४२ तीन बस्तियां अलग किईं। जिसतें घातक जो अचानक अपने
परोसी को घात करे और आगे से उस्से बैर न रखता था और
जब उन नगरों में से एक में भागके प्रवेश करे तो जीता रहे।
४३ अर्थात् बुस्र बन में रूबिनियों के चौगान के देश में और

नट्टियों में रामात जिलिअद में और मुनस्सी के जौलान
बसन में ॥
४४ और यह वुह व्यवस्था है जिसे मूसा ने वहां इसराएल के
४५ संतानों के आगे धरी। ये हैं वे साक्षियां और बिधिन और बिचार
जिन्हें मूसा ने इसराएल के संतानों के लिये जब वे मिस्र से निकल
४६ आये उन से कहा। यरदन के इसी पार बैतफ़गूर के सन्मुख
की तराई में अमूरियों के राजा सैहून के देश में जो हसबून
में रहता था जिसे मूसा और इसराएल के संतानों ने मिस्र से
४७ निकलके मारा। और वे उस के और बसन के राजा ऊज के
राज्य के अधिकारी हुए ये अमूरियों के दो राजा थे जो यरदन
४८ के इस पार सूर्य्य के उदय की ओर रहते थे। अरूआयर से
लेके जो अरनून की नदी के तीर पर है सिओन के पहाड़ लों
४९ जो हरमुन है। और समस्त चौगान इसी पार यरदन की
पूरब ओर चौगान के समुद्र लों जो पिसग: के नालों के
नीचे है ॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ फिर मूसा ने समस्त इसराएल को बुलाके उन से कहा कि
हे इसराएल यह बिधिन और बिचार सुन रक्खो जिन्हें मैं
आज तुम्हारे कानों में कहता हूं जिसतें तुम उन्हें सीखो और
२ धारण करके मानो। परमेश्वर हमारे ईश्वर ने होरिब में हम
३ से एक बाचा बांधी। परमेश्वर ने यह बाचा हमारे पितरों से
नहीं बांधी परन्तु हम से हम ही से जो सब आज के दिन जीते
४ हैं। पर्बत पर आग के मध्य में से परमेश्वर ने तुम्हारे साथ आम्ने
५ साम्ने बार्त्ता किई। मैं ने उस समय तुम्हारे और परमेश्वर के
मध्य में खड़े होके परमेश्वर का बचन तुम्हें सुनाया क्योंकि
तुम आग के कारण से डर गये और पहाड़ पर न चढ़े ॥

६ मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुझे मिस्र के देश से सेवकाई
७ के घर से बाहर लाया। मेरे आगे तेरा कोई दूसरा ईश्वर न
होवे ॥
८ अपने लिये खादी हुई मूर्त्ति किसी का रूप जो ऊपर स्वर्ग
में अथवा नीचे पृथिवी पर अथवा पृथिवी के नीचे पानियों में
९ है मत बना। तू उन्हें दण्डवत न करना और न उन की सेवा
करना क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर ज्वलित सर्वशक्तिमान हूं
जो पितरों के अपराध का प्रतिफल बालकों पर तीसरी चौथी
१० पीढ़ी लों जो मुझ से बैर रखते हैं देता हूं। और सहस्रों पर
जो मुझ से प्रेम रखते हैं और मेरी आज्ञाओं को पालन करते
हैं दया करता हूं ॥
११ तू परमेश्वर अपने ईश्वर का नाम अकारथ मत लेना क्योंकि
जो उस का नाम अकारथ लेता है परमेश्वर उसे निर्दोष न
ठहरावेगा ॥
१२ बिश्राम दिन को उसे पवित्र करने के लिये धारण कर जैसी
१३ परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है। छः दिन लों परिश्रम
१४ करना और अपने समस्त कार्य्य करना। परन्तु सातवां दिन
परमेश्वर तेरे ईश्वर का बिश्राम है कोई कार्य्य न करना न तू न
तेरा पुत्र न तेरी पुत्री न तेरा दास न तेरी दासी न तेरा बैल
न तेरा गदहा न तेरे ढोर न तेरा पाहुन जो तेरे फाटकों के
भीतर हैं जिसतें तेरा दास और तेरी दासी तेरी नाईं चैन
१५ करें। और चेत कर कि तू मिस्र के देश में सेवक था
और परमेश्वर तेरा ईश्वर अपने सामर्थी हाथ और बढ़ाई हुई
भुजा से तुझे वहां से निकाल लाया इस लिये परमेश्वर तेरे
ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई कि तू बिश्राम दिन का पालन
करे ॥
१६ अपने माता पिता को प्रतिष्ठा दे जैसी परमेश्वर तेरे ईश्वर ने

आज्ञा किई है जिसतें तेरा जीवन बढ़ जावे और उस देश में
जिसे तेरा ईश्वर तुझे देता है तेरा भला होवे॥

१७ हत्या मत कर॥

१८ और परस्त्री गमन मत कर॥

१९ और चोरी मत कर॥

२० और अपने परोसी पर झूठी साक्षी मत दे॥

२१ और अपने परोसी की पत्नी की इच्छा मत कर और अपने
परोसी के घर की उस के खेत की अथवा उस के दास और
उस की दासी की उस के बैल और उस के गदहे की और
अपने परोसी की किसी बस्तु की लालच मत कर॥

२२ परमेश्वर ने पहाड़ पर मेघ और गाढ़े अंधकार की आग में
से तुम्हारी समस्त मंडली से महा शब्द से बातें किईं और
उस्से अधिक कुछ न कहा और उस ने उन्हें पत्थर की दो
२३ पटियों पर लिखा और उन्हें मुझे सौंपा। और यों हुआ कि
जब तुम ने अंधकार में से यह शब्द सुना क्योंकि पहाड़
आग से जल रहा था तब तुम और तुम्हारी गोष्ठियों के प्रधान
२४ और तुम्हारे प्राचीन मेरे पास आये। और तुम ने कहा कि
देख परमेश्वर हमारे ईश्वर ने अपना ऐश्वर्य्य और अपनी महिमा
दिखाई और हम ने आग के मध्य में से उस का शब्द सुना
हम ने आज के दिन देखा कि ईश्वर मनुष्य से बात्तो करता
२५ है और मनुष्य जीता है। सो अब हम किस लिये मरें कि
यह ऐसी बड़ी आग हमें भस्म करेगी यदि हम परमेश्वर अपने
ईश्वर का शब्द अब के फिर सुनेंगे तो हम मर ही जावेंगे।
२६ क्योंकि समस्त शरीरों में से ऐसा कौन है जिस ने हमारे
समान आग के बीच में से जीवत ईश्वर का शब्द सुना
२७ और जीता रहा। तू आप ही समीप जा और सब जो
कुछ कि परमेश्वर हमारा ईश्वर कहे सुन और जो कुछ

परमेश्वर हमारा ईश्वर हमें कहे तू हम से कह और हम सुनके
मानेंगे ॥
२८ और जब तुम ने मुझ से कहा तब परमेश्वर ने तुम्हारी बातों
का शब्द सुना और परमेश्वर ने मुझे कहा कि मैं ने इन लोगों
की बातों का शब्द जो उन्हों ने तुझ से कहीं सुना जो कुछ
२९ उन्हों ने कहा अच्छा कहा । हाय कि उन के ऐसे मन होते
कि वे मुझ से डरते और सदा मेरी समस्त आज्ञाओं को पालन
करते जिसतें उन के लिये और उन के बंश के लिये सनातन
३० लों भला होवे । जा उन्हें कह कि अपने अपने तंबू को फिर
३१ जाओ । परन्तु तू जो है यहां मुझ पास खड़ा रह और मैं
समस्त आज्ञा और बिधिन और बिचार तुझे बताऊंगा तू उन्हें
सिखाना जिसतें वे उस देश में जिस का अधिकारी मैं ने उन्हें
३२ किया है उन पर चलें । सो तुम चौकस होके जैसी परमेश्वर
तुम्हारे ईश्वर ने आज्ञा किई है पालन करो दहिने बायें न
३३ मुड़ो । तुम उस सब मार्ग पर चलो जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने
तुम्हें आज्ञा किई जिसतें तुम जीते रहो और तुम्हारा भला
होवे और उस देश में जिस के तुम अधिकारी होओगे तुम्हारे
जीवन बढ़ें ॥

छठवां पर्ब्ब ।

१ और ये वुह आज्ञा वे बिधिन और वे बिचार हैं जो परमेश्वर
तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें सिखाने को मुझे आज्ञा किई जिसतें तुम
उस देश में जिस के अधिकारी होने पार जाते हो उन पर चलो ।
२ जिसतें तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरके उस की सब बिधिन
और आज्ञाओं को जो मैं तुझे आज्ञा करता हूं चेत में रक्खे
तू और तेरा पुत्र और तेरा पौत्र जीवन भर जिसतें तेरा जीवन
३ बढ़ जावे । सो हे इसराएल सुन ले और उसे सोचके मान

जिसतें तेरा भला होवे और तुम उस देश में अत्यंत बढ़
जाओ जिस में दूध और मधु बहता है जैसा परमेश्वर तुम्हारे
पितरों के ईश्वर ने तुझ से प्रण किया है॥
४ सुन ले हे इसराएल परमेश्वर हमारा ईश्वर एक परमेश्वर है।
५ और अपने सारे मन से और अपने सारे जीव से और अपने
६ सारे पराक्रम से परमेश्वर अपने ईश्वर से हित रख। और ये
बातें जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं तेरे अंत:करण में
७ रहें। और ये बातें अपने लड़कों को यत्न से सिखा और अपने
घर में बैठते हुए और मार्ग में चलते हुए और लेटते और
८ उठते उन की चर्चा कर। और उन्हें चिन्ह के लिये अपने
हाथ पर बांध और वे तेरी आंखों के मध्य में टीकों की नाईं
९ होंगे। और उन्हें अपने घर के खंभों पर और अपने द्वारों पर
लिख॥
१० और यों होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे उस देश
में ले जावेगा जिस के विषय में उस ने तेरे पितरों
अबिरहाम इज़हाक और यअ़क़ूब से किरिया खाई है कि बड़ी
११ और उत्तम बस्तियां जो तू ने नहीं बनाईं तुझे देवे। और
घर समस्त उत्तमों से भरे हुए जिन्हें तू ने नहीं भरा और खोदे
खोदाये कुए जो तू ने नहीं खोदे दाख की बारी और जलपाई
के पेड़ जो तू ने नहीं लगाये तुझे देगा और तू खावेगा और
१२ संतुष्ट होगा। चौकस रह न हो कि तू परमेश्वर को भूल जावे
जो तुझे मिस्र के देश से दासों के घर से निकाल लाया।
१३ तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरियो और उस की सेवा कीजियो
१४ और उस के नाम की किरिया खाइयो। तुम आन आन देवतों
के पीछे लोगों के देवतों के जो तुम्हारे आस पास हैं मत
१५ जाइयो। क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुम्हारे मध्य में
है ज्वलित सर्वशक्तिमान है न हो कि परमेश्वर तेरे ईश्वर के

कोप की आग तुझ पर भड़के और तुझे पृथिवी पर से मिटा
डाले ॥
१६ तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की परीक्षा मत कीजियो जैसी
१७ तुम ने मस्सः में उस की परीक्षा किई । तुम यत्न से परमेश्वर
अपने ईश्वर की आज्ञाओं को और उस की साक्षियों को और
उस की बिधिन को जो उस ने तुझे आज्ञा किई है स्मरण
१८ करियो । और वही कीजियो जो परमेश्वर की दृष्टि में ठीक
और भला है जिसतें तेरा भला होवे और तू उस सुथरी भूमि
में जिस के बिषय में परमेश्वर ने तेरे पितरों से किरिया खाई
१९ है प्रवेश करके अधिकारी होवे । कि तुम्हारे आगे से तुम्हारे
सारे बैरियों को दूर करे जैसा परमेश्वर ने कहा है ॥
२० जब कल को तेरा बेटा तुझ से यह कहके पूछे कि ये
कैसी साक्षियां और बिधिन और बिचार हैं जो परमेश्वर हमारे
२१ ईश्वर ने तुम्हें आज्ञा किई है । तब अपने बेटे से कहियो कि
हम मिस्र में फ़िरऊन के बंधुए थे तब परमेश्वर सामर्थी हाथ
२२ से हमें मिस्र से निकाल लाया । और परमेश्वर ने चिन्ह और
बड़े बड़े दुःख और पीड़ा के आश्चर्य्य मिस्र में फ़िरऊन पर
और उस के सारे घराने पर हमारी आंखों के आगे दिखाये ।
२३ और वुह हमें वहां से निकाल लाया जिसतें हमें उस देश में
पहुंचावे जिस के बिषय में उस ने हमारे पितरों से किरिया
२४ खाई हमें देवे । सो परमेश्वर ने हमें आज्ञा किई कि हम इन
सब बिधिन पर चलें और परमेश्वर अपने ईश्वर से अपने भले
के लिये सर्व्वदा डरें जिसतें वुह हमें जीता रक्खे जैसा आज
२५ के दिन है । और यही हमारा धर्म्म होगा यदि हम इस
सब आज्ञा को परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे जैसी उस ने आज्ञा
किई पालन करें ॥

सातवां पर्व्व ।

१ जब कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का अधिकारी
होने जाता है तुझे पहुंचावे और तेरे आगे से बहुत जातिगणों
को दूर करे अर्थात् हित्तियों को और जिरजाशियों को और
अमूरियों को और कनआनियों को और फ़रिज्जियों और हवियों
को और यबूसियों सात जातिगणों को जो तुझ से बड़े और
२ सामर्थी हैं । और जब कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तुझे सौंप
देवे तो तू उन्हें मारके सर्बथा नाश करियो उन से कोई बाचा
३ न बांधियो न उन पर दया कीजियो । न उन से बिवाह
करियो न उस के बेटे को अपनी बेटी दीजियो न अपने बेटे
४ के लिये उस की बेटी लीजियो । क्योंकि वे तेरे बेटे को मुझ
से फिरावेंगी जिसतें वे आन देवतों की सेवा करें सो परमेश्वर
का क्रोध तुम पर भड़केगा और वुह तुझे अचानक नाश कर देगा ।
५ परन्तु तुम उन से यह व्यवहार करियो उन की बेदियों को
ढाइयो और उन की मूर्त्तिन को तोड़ियो और उन के कुंजों को
काट डालियो और उन की खोदी हुई मूर्त्तियों को आग से
६ जलाइयो । क्योंकि तू तो परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र
लोग है परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे चुना कि तू सब लोगों में
७ से जो पृथिवी पर हैं उस के निज लोग होओ । परमेश्वर ने
तुम से इस लिये प्रीति करके तुम्हें नहीं चुना कि तुम सारे
लोगों से गिनती में अधिक थे क्योंकि तुम समस्त लोगों से
८ थोड़े थे । परन्तु इस कारण कि परमेश्वर तुम से प्रीति रखता
था और इस कारण कि उसे उस किरिया को पालन करना था
जो उस ने तुम्हारे पितरों से खाई थी परमेश्वर तुम्हें अपनी
फैलाई हुई भुजा से निकाल लाया और दासों के घर से मिस्र के
९ राजा फ़िरऊन के हाथ से तुझे छुड़ाया । सो जान रखना कि

परमेश्वर तेरा ईश्वर वही ईश्वर वुह बिश्वस्त सर्वशक्तिमान है जो
उन से जो उस्से प्रेम रखते हैं और उस की आज्ञाओं को पालन
१० करते हैं सहस्र पीढ़ी लों बाचा और दया रखता है। और
जो उस्से बैर रखते हैं उन के मुंह पर पलटा देता है कि
उन्हें नाश करे जो उस्से बैर रखता है वुह उस के लिये
बिलंब न करेगा वुह उस के मुंह पर पलटा देगा॥
११ सो तू उस आज्ञा और उन बिधिन और उन बिचारों को जो
मैं तुझे आज के दिन पालन करने को आज्ञा करता हूं धारण
१२ करियो। सो यदि तुम इन बिचारों को सुनोगे और धारण
करके उन्हें मानोगे तो यों होगा कि परमेश्वर तेरा ईश्वर उस
प्रण और दया को जिस के बिषय में उस ने तेरे पितरों से
१३ किरिया खाई है तेरे लिये धारण करेगा। और वुह तुझे प्यार
करेगा और तुझे आशीष देगा और तुझे बढ़ावेगा और वुह तेरे
गर्भ के फल और तेरी भूमि के फल में तेरा अन्न और तेरी मदिरा
और तेरे तेल और तेरे ढोर की बढ़ती और तेरी झुंड की भेड़
उस देश में जिस के बिषय में उस ने देने को तेरे पितरों से
१४ किरिया खाई आशीष देगा। तू समस्त लोगों से अधिक
आशीष पावेगा तुझ में और तेरे ढोर में नर अथवा स्त्रीवर्ग
१५ बांझ न होंगे। और परमेश्वर तुझ में से समस्त रोग दूर
करेगा और मिस्र के सब बुरे रोगों में से जिन्हें तू जानता है
तुझ पर न लावेगा परन्तु उन पर डालेगा जो तुझ से बैर
रखते हैं॥
१६ और सब लोगों को जिन्हें परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे सौंप
देता है तू खा जावेगा तेरी आंख उन पर दया न करेगी और
तू उन के देवों की पूजा न करना क्योंकि वुह तेरे लिये फंदा
१७ है। यदि तू अपने मन में कहे कि ये जातिगण मुझ से
१८ अधिक हैं मैं उन्हें क्योंकर निकाल सकूंगा। तू उन से मत

डरना जो कुछ परमेश्वर तेरे ईश्वर ने फ़िरऊन और समस्त
१९ मिस्र से किया अच्छी रीति से स्मरण करना। वुह बड़ी बड़ी
परीक्षा जिन्हें तेरी आंखों ने देखा और वुह चिन्ह और
आश्चर्य्य और सामर्थी हाथ और फैलाई हुई भुजा जिन से
परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे निकाल लाया जिन लोगों से तू डरता
२० है परमेश्वर तेरा ईश्वर उन से वैसा ही करेगा। और परमेश्वर
तेरा ईश्वर उन पर बर्रे को भी भेजेगा जब लों वे जो बचे हुए
२१ और तुम से छिपते हैं नाश हो जावें। तू उन से मत डरना
क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझ में है बड़ा और भयानक
२२ सर्बशक्तिमान। और परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों को
तेरे आगे थोड़ा थोड़ा करके उखाड़ेगा तू एक बार उन्हें नाश न
२३ करना न होवे कि बनैले पशु तुझ पर बढ़ जावें। परन्तु
परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तेरे आगे सौंप देगा और महानाश
२४ से उन्हें नाश करेगा यहां लों कि वे नाश हो जावें। और वुह
उन के राजाओं को तेरे हाथ में सौंपेगा और तू उन के नाम
को स्वर्ग के तले से मिटा देगा कोई मनुष्य तेरे आगे ठहर
२५ न सकेगा जब लों तू उन्हें नाश न कर ले। तुम उन की
खोदी हुई देवतों की मूर्त्तिन को आग से जला देना तू उन
पर के रूपे सोने का लोभ न करना और उसे अपने लिये मत
लेना न हो कि तू उन में बझ जावे क्योंकि परमेश्वर तेरे
२६ ईश्वर के आगे वुह घिनित है। और तू कोई घिनित अपने
घर में मत लाइयो न हो कि तू उस की नाईं स्रापित हो
जावे तू उन से सर्बथा घिन कीजियो और उसे सर्बथा तुच्छ
जानियो क्योंकि वुह स्रापित वस्तु है॥

आठवां पर्व्व।

१ समस्त आज्ञा को जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं

मानियो और उन्हें पालन कीजियो जिसतें तुम जीओ और
बढ़ जाओ और उस देश में जाओ जिस के बिषय में परमेश्वर
२ ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है अधिकारी होओ । और
उस समस्त मार्ग को स्मरण करियो जिस में परमेश्वर तेरा ईश्वर
बन में इन चालीस बरस से तुझे लिये फिरा जिसतें तुझे दीन
करे और तुझे परखे और तेरे मन की बात जांचे कि तू उस
३ की आज्ञाओं को पालन करेगा कि नहीं । और उस ने तुझे
दीन किया और तुझे भूखा रक्खा और वुह मन्न जिसे तू जानता
न था और न तेरे पितर जानते थे तुझे खिलाया जिसतें तुझे
सिखावे कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं जीता रहता परन्तु
हर एक बात से जो परमेश्वर के मुंह से निकलती है जीता
४ रहता है । इन चालीस बरस लों तेरे कपड़े तुझ पर पुराने न
५ हुए और तेरे पांव न सूजे । और तू अपने मन में सोचियो कि
जिस रीति से मनुष्य अपने बेटे को ताड़ना करता है परमेश्वर
६ तेरा ईश्वर तुझे ताड़ता है । सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर की
आज्ञाओं को पालन कर कि उस के मार्गों पर चल और उस्से
डर ॥

७ क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे एक उत्तम भूमि में पहुंचाता
है जहां पानी के नाले और सोते और झील तराई और पहाड़ों
८ से बहती है । गेहूं और जव और दाख और गूलर और अनार
९ का और जलपाई के पेड़ का और मधु का देश। वुह देश जहां
तू बिन महंगी से रोटी खायगा जहां तेरे लिये किसी बात की
घटती न होगी जिस के पत्थर लोहे हैं और उस के पहाड़ों
से तू तांबा खोदे ॥

१० और जब तू खावे और तृप्त होवे तब तू परमेश्वर अपने
ईश्वर को उस अच्छे देश के लिये जो उस ने तुझे दिया है धन्य
११ मानियो । चौकस रह कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को भूल न जाय

कि उस की आज्ञाओं और उस के बिचार और उस की बिधिन पर
१२ जो आज मैं तुझे आज्ञा करता हूं न चले। ऐसा न हो कि जब
तू खाके तृप्त होवे और सुथरे सुथरे घर बनावे और उन में रहे।
१३ और तेरे लेहंड़े और तेरे झुंड बढ़ जावें और तेरी चांदी और
१४ तेरा सोना बढ़ जावे और तेरा सब कुछ अधिक होवे। तब
तेरा मन उभड़ जावे और तू परमेश्वर अपने ईश्वर को जो तुझे
मिस्र देश से और बंधुआई के घर से निकाल लाया भूल जावे।
१५ जो उस बड़े भयानक बन में तुझे लिये फिरा जहां आग के
सर्प और बिच्छू थे और सूखा जहां पानी न था जिस ने तेरे
१६ लिये पथरी के चटान से पानी निकाला। जिस ने बन में तुझे
मन्न खिलाया जिसे तेरे पितर न जानते थे जिसतें तुझे दीन
करे और तुझे परखे जिसतें अंत्य समय में तेरा भला करे।
१७ और तू अपने मन में कहे कि मैं ने अपने पराक्रम और भुजा
१८ के बल से यह संपत्ति प्राप्त किई। परन्तु तू परमेश्वर अपने
ईश्वर को स्मरण करियो क्योंकि वही तुझे संपत्ति प्राप्त करने को
बल देता है जिसतें वुह अपनी बाचा को जो उस ने किरिया
खाके तेरे पितरों से किया दृढ़ करे जैसा आज के दिन है॥
१९ और यों होगा कि यदि तू कभी परमेश्वर अपने ईश्वर को
भूलेगा और और ही देवों का पीछा करेगा और उन की सेवा
और दण्डवत करेगा तो मैं आज के दिन तुम पर साक्षी देता
२० हूं कि तुम निश्चय नष्ट हो जाओगे। उन जातिगणों के समान
जिन्हें परमेश्वर तुम्हारे सन्मुख नष्ट करता है तुम भी वैसे ही
नष्ट हो जाओगे इस कारण कि तुम ने अपने ईश्वर परमेश्वर
के शब्द को न माना॥

नवां पर्ब्ब।

१ हे इसराएल सुन ले तुझे आज के दिन यरदन पार जाना

है जिसतें तू उन जातिगणों का जो तुझ से बड़ी और पराक्रमी
है और उन नगरों को जो बड़े और स्वर्ग लों घेरे हैं अधिकारी
२ होवे । वहां के लोग बड़े और लम्बे हैं जो अनाक़ियों के
संतान हैं जिन्हें तू जानता है और कहते हुए सुना है कि
३ कौन है जो अनाक़ के संतान के आगे ठहर सक्ता है । सो तू
आज के दिन समुझ ले कि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तेरे आगे
आगे पार जाता है भस्मक अग्नि के तुल्य वुह उन्हें नाश
करेगा और वुह उन्हें तेरे आगे ध्वस्त करेगा और तू उन्हें
हांक देगा और उन्हें शीघ्र नष्ट करेगा जैसा परमेश्वर ने तुझे कहा
४ है । जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन्हें तेरे आगे से दूर कर देवे
तब अपने मन में मत कहना कि परमेश्वर ने मेरे धर्म्म के
कारण मुझे इस देश का अधिकारी किया परन्तु परमेश्वर उन
जातिगणों की दुष्टता के कारण उन्हें तेरे आगे से हांक देता
५ है । तू अपने धर्म्म से और अपने मन की खराई से उन के देश
का अधिकारी होने नहीं जाता परन्तु परमेश्वर तेरा ईश्वर उन
जातिगणों की दुष्टता के कारण उन्हें तेरे आगे से हांक देता
है जिसतें उस बचन को जो परमेश्वर ने किरिया खाके
तेरे पितरों अबिरहाम इज़हाक़ और यअ़क़ूब से कहा पूरा
करे ॥

६ सो समुझ ले कि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे धर्म्म के कारण तुझे
इस अच्छे देश का अधिकारी नहीं करता क्योंकि तू तो कठोर
७ लोग है । चेत कर भूल न जा कि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर
के कोप को बन में क्योंकर भड़काया जिस दिन से कि तू
मिस्र के देश से बाहर निकला जब लों तुम इस स्थान में आये
८ तुम परमेश्वर से फिर गये हो । और तुम ने होरिब में परमेश्वर
के क्रोध को भड़काया सो परमेश्वर तुम्हें नाश करने के लिये
क्रुध हुआ ॥

९ जब मैं दो पत्थर की पटियां लेने को पहाड़ पर चढ़ा
अर्थात् नियम की पटियां जो परमेश्वर ने तुम से किया तब
मैं चालीस रात दिन उस पहाड़ पर रहा मैं ने रोटी न खाई
१० और न पानी पीया। तब परमेश्वर ने पत्थर की दो पटियां मुझे
सैांपीं जिन पर परमेश्वर ने अपनी अंगुली से लिखा था उन सब
बातों के समान जो परमेश्वर ने पहाड़ पर आग में से तुम्हारे
११ एकट्ठे होने के दिन तुम से कही थीं। और ऐसा हुआ कि
चालीस दिन रात के पीछे परमेश्वर ने पत्थर की वे दोनों
१२ पटियां अर्थात् नियम की पटियां मुझे दिईं। और परमेश्वर
ने मुझे कहा कि उठ चल यहां से शीघ्र नीचे जा क्योंकि तेरे
लोगों ने जिन्हें तू मिस्र से निकाल लाया आप को बिगाड़ दिया
वे झट पट उस मार्ग से जो मैं ने उन्हें बताया फिर गये
उन्हों ने अपने लिये एक ढाली हुई मूर्त्ति बनाई॥

१३ और परमेश्वर मुझे कहके बोला कि मैं ने इन लोगों को
१४ देखा है और देख वे कठोर लोग हैं। मुझे छोड़ कि मैं उन्हें
नाश करूं और उन का नाम स्वर्ग के तले से मिटा डालूं और
मैं तुझ से एक जाति जो उस्से बली और बहुत है बनाऊंगा।
१५ सो मैं फिरा और पहाड़ पर से उतरा और पर्बत आग से जल
रहा था और नियम की दोनों पटियां मेरे दोनों हाथ में थीं।
१६ तब मैं ने दृष्टि किई और क्या देखाता हूं कि तुम ने परमेश्वर
अपने ईश्वर का पाप किया था तुम ने अपने लिये ढाला हुआ
बछड़ा बनाया तुम शीघ्र उस मार्ग से जो परमेश्वर ने तुम्हें
१७ बताया फिर गये। तब मैं ने दोनों पटियां लेके अपने दोनों
हाथों से पटक दिईं और उन्हें तुम्हारी आंखों के आगे तोड़ डाला।
१८ और तुम्हारे उन सब पापों के कारण जो तुम ने किये जब तुम ने
परमेश्वर की दृष्टि में बुराई करके उसे रिस दिलाई मैं आगे की
नाईं चालीस रात दिन परमेश्वर के आगे गिरा पड़ा रहा मैं ने

१६ रोटी न खाई न पानी पीया । क्योंकि मैं परमेश्वर के कोप और
क्रोध से डरा कि वुह तुम्हें नाश करने के लिये कोपित था
२० परन्तु परमेश्वर ने उस समय में भी मेरी सुनी । तब हारून
को नाश करने के लिये परमेश्वर का क्रोध भड़का और मैं ने
२१ उस समय में हारून के लिये भी प्रार्थना किई । और मैं ने
तुम्हारे पाप को अर्थात् उस बछड़े को जो तुम ने बनाया था
लिया और उसे आग में जलाया फिर उसे कूटा और बुकनी
किया ऐसा कि वुह धूल सा हो गया और मैं ने उस धूल को
नाली में जो पर्बत से बहती थी डाल दिया ॥
२२ और तबअ़र: में और मस्स: में और क़बरातुत्ताब: में तुम
२३ ने परमेश्वर को कोपित किया । और उसी ढब से उस समय
में जब परमेश्वर ने तुम्हें कादिशबरनीअ़ से यह कहके भेजा
कि चढ़ जाओ और उस देश के जो मैं ने तुम्हें दिया है
अधिकारी होओ तब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा से
फिर गये और तुम उस पर बिश्वास न लाये और उस के शब्द
२४ को न सुना । तिस दिन से मैं ने तुम्हें जाना तुम परमेश्वर से
फिर गये हो ॥
२५ सो मैं परमेश्वर के आगे चालीस रात दिन पड़ा रहा क्योंकि
२६ परमेश्वर ने कहा था कि मैं इन्हें नाश करूंगा । सो मैं ने
परमेश्वर की बिनती किई और कहा कि हे प्रभु परमेश्वर अपने
लोग को और अपने अधिकार को जिन्हें तू अपने महत्व से
छुड़ा लाया तू अपनी भुजा के पराक्रम से मिस्र से निकाल
२७ लाया नाश न कर । अपने सेवकों अबिरहाम इज़हाक़ और
यअ़क़ूब को स्मरण कर इस लोग की ढिठाई और उस की
२८ दुष्टता और पापों पर दृष्टि न कर । न होवे कि वुह देश
जहां से तू हमें निकाल लाया कहे कि परमेश्वर सामर्थी न था
कि उन्हें उस देश में जिस के बिषय में उन से बाचा किई

पहुंचावे और इस लिये कि वुह उन से डाह रखता था वुह
२६ उन्हें निकाल ले गया कि उन्हें बन में नाश करे। तथापि वे
तेरे लोग और तेरे अधिकार हैं जिन्हें तू अपने बड़े पराक्रम
और अपनी बढ़ाई हुई भुजा से निकाल लाया है॥

दसवां पर्ब्ब।

१ उस समय परमेश्वर ने मुझे कहा कि अपने लिये पत्थर की
दो पटियां अगली के समान चीर और पहाड़ पर मुझ पास आ
२ और अपने लिये लकड़ी की एक मंजूषा बना। और मैं उन
पटियों पर वे बातें लिखूंगा जो अगली पटियों पर थीं जिन्हें
३ तू ने तोड़ डाला और तू उन्हें मंजूषा में रखियो। तब मैं ने
शमशाद लकड़ी की मंजूषा बनाई और पत्थर की दो पटियां
अगली के समान चीरीं और उन दोनों पटियों को अपने हाथ
४ में लिये हुए पहाड़ पर चढ़ गया। और उस ने पटियों पर
अगले लिखे हुए के समान वे दस बचन लिखे जो परमेश्वर
ने पहाड़ पर आग के मध्य से सभा के दिन तुम्हें कहा था
५ और परमेश्वर ने उन्हें मुझे दिया। तब मैं फिरा और पहाड़
पर से उतरा और उन पटियों को उस मंजूषा में जिसे मैं ने
बनाया था रक्खा सो वे परमेश्वर की आज्ञा के समान अब लों
वहां हैं॥

६ तब इसराएल के संतान ने यअक़ान के संतान बिअरात
से मोसीर: को याचा किई वहां हारून मर गया और वहीं
गाड़ा गया और उस के बेटे इलिअज़र ने याजक के पद पर
७ उस के स्थान में सेवा किई। वहां से उन्हों ने जिदजाद को
याचा किई और जिदजाद से युतबत: को जो पानियों के
नदियों का देश है॥

८ उस समय परमेश्वर ने लावी की गोष्ठी को इस लिये अलग

क्रिया कि परमेश्वर के नियम की मंजूषा को उठावें और
परमेश्वर के आगे खड़े होके उस की सेवा करें और उस के
९ नाम से आशीष देवें सो आज के दिन लों यों ही है। इस
लिये लावी का अंश और अधिकार उस के भाइयों के साथ
नहीं परमेश्वर उस का अधिकार है जैसा परमेश्वर तेरे ईश्वर ने
उसे बचन दिया ॥

१० और मैं अगले दिनों के समान फिर चालीस रात दिन
पहाड़ पर रहा और उस समय भी परमेश्वर ने मेरी सुनी और
११ परमेश्वर ने न चाहा कि तुझे विनाश करे। फिर परमेश्वर ने
मुझे कहा कि उठ लोगों के आगे आगे चल और वे जावें
जिसतें वे उस देश में बसें जो मैं ने उन के पितरों से किरिया
खाके कहा था कि उन्हें देऊंगा ॥

१२ और अब हे इसराएल परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझ से क्या
चाहता है केवल यही कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर से डरे और
उस के सारे मार्गों पर चले और उस्से प्रेम रक्खे और अपने
सारे मन से और अपने सारे प्राण से परमेश्वर अपने ईश्वर की
१३ सेवा करे। परमेश्वर की आज्ञाओं को और उस की विधिन को
जो आज के दिन तेरी भलाई के लिये तुझे आज्ञा करता हूं पालन
१४ करे जिसतें तेरी भलाई होवे। देख कि स्वर्ग और स्वर्गों के
स्वर्ग और पृथिवी उस सब समेत जो उस में है परमेश्वर तेरे
१५ ईश्वर का है। केवल परमेश्वर ने चाहा कि तेरे पितरों से प्रेम
रक्खे इस लिये उन के पीछे उन के वंश को अर्थात् तुम्हें
१६ समस्त लोगों से अधिक चुन लिया जैसा कि आज है। सो
अपने मन का ख़तनः करो और आगे को कठोर मत होओ।
१७ क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही ईश्वरों का ईश्वर और प्रभुओं
का प्रभु महाशक्तिमान ईश्वर और भयंकर है जो मनुष्यत्व
१८ पर दृष्टि नहीं करता और अकोर नहीं लेता। वुह अनाथों

और बिधवों का न्याय करता है और परदेशियों से प्रेम रखके
१९ उन्हें भोजन बस्त्र देता है। सो तुम भी परदेशी को प्यार
२० करो क्योंकि तुम मिस्र के देश में परदेशी थे। परमेश्वर अपने
ईश्वर से डरता रह उस की सेवा कर और उसी से लवलीन रह
२१ और उसी के नाम की किरिया खा। वही तेरी स्तुति और वही
तेरा ईश्वर है जिस ने तेरे लिये ऐसे ऐसे बड़े और भयंकर
२२ कार्य्य किये जिन्हें तू ने अपनी आंखों से देखा। तेरे पितर
सत्तर जन लेके मिस्र में उतरे और अब परमेश्वर तेरे ईश्वर ने
आकाश के तारों के समान तुझे बढ़ाया॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ सो तू परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रख और उस की व्यवस्था
और उस की बिधिन और उस के न्याय और उस की आज्ञा
सदा पालन कर॥

२ और तुम आज के दिन जान लेओ क्योंकि मैं तुम्हारे बंश
से नहीं बोलता जिन्हों ने तुम्हारे ईश्वर की ताड़ना और उस
की महिमा और उस के हाथ का बल और उस की बढ़ाई
३ हुई भुजा न जाना है न देखा है। और उस के आश्चर्य्य
और उस के कार्य्य जो उस ने मिस्र के मध्य में मिस्र के राजा
४ फ़िरऊन से और उस के समस्त देश से किया। और जो कुछ
उस ने मिस्र की सेना के साथ उन के घोड़ों और उन की
गाड़ियों के साथ किये किस रीति से उस ने लाल समुद्र का
पानी उन पर उभाड़ा जब उन्हों ने तुम्हारा पीछा किया सो
५ परमेश्वर ने उन्हें नष्ट किया आज के दिन लों। और जो कुछ
उस ने अरण्य में जब लों कि तुम इस स्थान लों पहुंचे तुम्हारे
६ साथ किया। और जो उस ने दातन और अबिराम के साथ
किया जो रूबिन के बेटे इलिअब के बेटे थे किस रीति से पृथिवी

ने अपना मुंह खोला और उन्हें और उन के घरानें और उन के
तंबुओं को और समस्त जीवधारियों को जो उन के बश में थे
७ समस्त इसराएल के मध्य में निगल गई। क्योंकि तुम्हारी
आंखों ने परमेश्वर के समस्त महान कार्य्य जो उस ने किये
८ देखे। सो तुम उस समस्त आज्ञा को जो आज मैं तुम्हें कहता
हूं पालन करो जिसतें तुम बली होओ और जाके उस देश के
जिस के अधिकारी होने के लिये पार जाते हो अधिकारी
९ होओ। और जिसतें तुम उस देश पर अपना जीवन बढ़ाओ
जिस के कारण परमेश्वर ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाके
कहा कि मैं उन्हें और उन के बंश को देऊंगा वुह देश जिस
में दूध और मधु बहता है॥
१० क्योंकि वुह देश जिस का तू अधिकारी होने जाता है
मिस्र के समान नहीं जहां से तुम निकल आये जहां तू अपना
बीहन बोता था और उसे अपनी तरकारी की बारी की नाईं
११ पांव से पानी सींचता था। परन्तु वुह भूमि जिस के अधिकारी
होने को जाते हो पहाड़ों और तराइयों का देश है जो आकाश
१२ के मेघ से सींचा जाता है। यह वुह देश है जिसे परमेश्वर
तेरा ईश्वर चाहता है और बरस के आरंभ से लेके बरस के
अंत लों सदा परमेश्वर तेरे ईश्वर की आंखें उस पर लगी हैं॥
१३ और यों होगा कि यदि तुम ध्यान से मेरी आज्ञाओं को
सुनोगे जो मैं तुम्हें आज के दिन आज्ञा करता हूं कि परमेश्वर
अपने ईश्वर से प्रेम करो कि अपने समस्त मन से और अपने
१४ सारे प्राण से उस की सेवा करो। तो मैं तुम्हारी भूमि में समय
पर मेंह बरसाऊंगा आरंभ के मेंह और अंत के मेंह मैं तुम्हें
देऊंगा जिसतें तू अपना अन्न और अपना दाखरस और अपना
१५ तेल एकट्ठा करे। और तेरे खेत में तेरे पशु के लिये घास
उगाऊंगा जिसतें तू खाय और तृप्त होवे॥

१६ तुम आप से चौकस रहो जिसतें तुम्हारे मन छल न खावें
और तुम फिर जाओ अरु और देवतों की सेवा करो और उन
१७ की दंडवत करो। और परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़के और
वुह स्वर्ग को बंद करे जिसतें मेंह न बरसे और भूमि अपना
फल न देवे और तुम उस अच्छी भूमि से जो परमेश्वर तुम्हें
देता है शीघ्र नष्ट हो जाओ॥

१८ सो मेरी इन बातों को अपने अंतःकरण में और अपने मन
में रख छोड़ो और उन्हें चिन्ह के लिये अपने बांह भुजा पर
बांधो जिसतें वे तुम्हारी दोनों आंखों के मध्य में टीके की
१६ नाईं रहें। और तुम उन्हें अपने घर में बैठे हुए और मार्ग
चलते हुए और लेटते हुए और उठने के समय अपने लड़कों
२० को सिखाओ। और तू उन्हें अपने घर के फाटकों पर और
२१ अपने द्वारों पर लिख। जिसतें तुम्हारे और तुम्हारे बंश के
दिन जैसा कि स्वर्ग के दिन पृथिवी पर बढ़ते हैं वैसे ही
तुम्हारे दिन उस देश में जिस के कारण परमेश्वर ने तेरे
पितरों से किरिया खाके कहा कि मैं तुम्हें देऊंगा बढ़
जाय॥

२२ क्योंकि यदि तुम इस सब आज्ञा को जो मैं तुम्हें आज्ञा
करता हूं पालन करोगे और उसे मानोगे कि परमेश्वर अपने
ईश्वर से प्रेम रक्खो कि उस के समस्त मार्गों पर चलो और
२३ उस्से लवलीन रहो। तब परमेश्वर इन सब जातिगणों को
तुम्हारे आगे से हांक देगा और तुम जातिगणों के जो बड़े
२४ बली और तुम से अधिक सामर्थी हैं अधिकारी होओगे। जिस
जिस स्थान पर तुम्हारे पांओं का तलवा पड़ेगा सो सो तुम्हारा
हो जावेगा बन और लुबनान से नदी से फ़ुरात नदी से लेके
२५ अत्यंत समुद्र लों तुम्हारा सिवाना होगा। किसी की सामर्थ्य
न होगी कि तुम्हारे आगे ठहर सके परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर

तुम्हारा भय और तुम्हारा डर समस्त देश में जिस पर तुम्हारा
पैर पड़ेगा डालेगा जैसा उस ने तुम से कहा है ॥
२६ देखो मैं आज के दिन तुम्हारे आगे आशीष और स्राप धर
२७ देता हूं । आशीष यदि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं
२८ को जो आज मैं तुम्हें देता हूं पालन करोगे । और स्राप यदि
तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को पालन न करोगे
परन्तु उस मार्ग से फिरके जो आज मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं
अन्य और देवतों का पीछा करोगे जिन्हें तुम ने नहीं जाना ॥
२९ और यों होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे उस देश
में जहां तू अधिकारी होने को जाता है पहुंचावे तो तू आशीष
को जरिज़ीम के पहाड़ पर रखियो और स्राप को ऐबाल के
३० पहाड़ पर । क्या वे यरदन पार नहीं उसी मार्ग में जिधर
सूर्य्य अस्त होता है कनआनी के देश में जो जिलजाल के
३१ साम्ने चौगान में रहते हैं और चौगानों के लग है । क्योंकि
तुम यरदन पार जाते हो जिसतें उस देश के जो परमेश्वर
तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देता है अधिकारी होओ और तुम उस के
३२ अधिकारी होगे और उस में बसोगे। सो तुम उन समस्त बिधिन
और बिचारों को जो आज मैं तुम्हारे आगे धरता हूं सोच रखियो॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ ये वे बिधिन और बिचार हैं जिन्हें तुम उस देश में जो
परमेश्वर तुम्हारे पितरों का ईश्वर तुम्हें अधिकार में देता है
जब लों तुम पृथिवी पर जीते रहो उन्हें सोचके मानियो ॥
२ तुम उन स्थानों को सर्वथा नाश कीजियो जहां उन
जातिगणों ने जिन के तुम अधिकारी होओगे अपने देवतों की
सेवा किई है ऊंचे पहाड़ों पर और टीलों पर और हर एक हरे
३ पेड़ तले । और उन की यज्ञबेदियों को ढा दीजियो और उन

के खंभों को तोड़ियो और उन के कुंजों को आग से जलाइयो
और उन के देवतों की खोदी हुई मूर्त्तियों को ढा दीजियो और
उन के नाम को उस स्थान से मिटा दीजियो ॥
४ तुम ऐसा कुछ परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मत कीजियो।
५ परन्तु वुह स्थान जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारी समस्त
गोष्ठियों में से चुनेगा कि वहां अपना नाम रक्खे और उसी
६ के निवास को ढूंढ़ो और तुम वहीं आओ। और वहीं अपने
बलिदान की भेंटें और अपने बलि और अपने अंश और
अपने हाथ की हिलाई हुई भेंट और अपनी मनौतियां और
अपनी बांछा की भेंटें और अपने ढोर और अपने झुंड के
७ पहिलौठे लाइयो। और वहां परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे
खाओगे और अपने सारे घराने समेत अपने हाथ के सब कामों
में जिन में परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुम्हें आशीष दिया आनन्द
करोगे ॥
८ तुम ऐसे कार्य्य जैसे हम यहां करते हैं हर एक जो अपनी
९ अपनी दृष्टि में ठीक है वहां मत कीजियो। क्योंकि तुम उस
विश्राम और अधिकार को जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें
१० देता है अब लों नहीं पहुंचे। परन्तु जब तुम यरदन पार
जाओ और उस देश में बसो जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर
तुम्हारा अधिकार कर देता है और तुम्हें तुम्हारे सब शत्रुन
११ से जो चारों ओर हैं चैन देगा ऐसा कि तुम चैन से बसो। तब
वहां एक स्थान होगा जिसे परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर चुनके
अपना नाम वहां रक्खे तुम सब कुछ जो मैं तुम्हें आज्ञा
करता हूं वहीं ले जाइयो अर्थात् अपनी बलिदान की भेंटें
और अपने बलि अपने अंश और अपने हाथ की हिलाई हुई
भेंट और अपनी बांछा की मनौती जो तुम परमेश्वर के लिये
१२ मानते हो। और अपने बेटों और अपनी बेटियों और अपने

दासों और अपनी दासियों और उस लावी सहित जो तुम्हारे
फाटकों में हो क्योंकि उस का अंश और अधिकार तुम्हारे
साथ नहीं परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे आनन्द कीजियो॥
१३ अपने से सुचेत रहो और अपने बलिदान की भेंट हर एक
१४ स्थान पर जहां संयोग मिले मत चढ़ाइयो। परन्तु उसी स्थान
में जिसे परमेश्वर तेरी गोष्ठियों में से चुन लेगा वहां तू अपने
बलिदान की भेंट चढ़ाइयो और वहां सब कुछ जो मैं तुझे
आज्ञा करता हूं वही कीजियो॥
१५ और जिस वस्तु को तेरा मन चाहे मार खाइयो परमेश्वर
अपने ईश्वर के आशीष के समान जो उस ने तेरे समस्त फाटकों
में तुझे दिया है चाहे पावन हो चाहे अपावन हर एक उसे
१६ खावे जैसे हरिण और बारहसिंगा। केवल लोहू मत खाइयो
परन्तु उसे पानी की नाईं भूमि पर ढाल दीजियो॥
१७ अपना अनाज और दाखरस और तेल का दसवां अंश
और अपने ढोर अथवा अपने झुंड के पहिलौठे और अपनी
समस्त मानी हुई मनौती और अपनी बांछा की भेंटें और
अपने हाथ के हिलाने की भेंट अपने फाटकों में मत खाइयो।
१८ परन्तु तुझ पर और तेरे बेटा बेटी और तेरे दास और तेरी
दासी पर और लावी पर जो तेरे फाटकों में हैं उचित है कि
उन वस्तुन को परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उस स्थान में जिसे
परमेश्वर तेरा ईश्वर चुनेगा खाइयो और तू परमेश्वर अपने ईश्वर
१९ के आगे अपने सब कामों में आनन्द करियो। आप से चौकस
रहियो जब लों तू जीता रहे लावी को मत त्यागियो॥
२० जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे सिवानों को बढ़ावे जैसा उस
ने तुझ से प्रतिज्ञा किई है और तू कहे कि मैं मांस खाऊंगा
इस कारण कि तेरा जीव मांस खाने का अभिलाषी है तो तू
२१ मांस और हर एक वस्तु जिसे तेरा जीव चाहे खाइयो। यदि

वुह स्थान जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपना नाम वहां रखने
को चुन लिया तुझ से बहुत दूर होवे तो तू अपने ढोर और
अपने झुंड में से जो परमेश्वर ने तुझे दिये हैं जैसा मैं ने तुझे
आज्ञा किई है मारियो और अपने फाटकों में जो कुछ तेरा
२२ जीव चाहे सो खाइयो। जैसा कि हरिण और बारहसिंगे खाये
जाते हैं तू उन्हें खाइयो पवित्र और अपवित्र उन्हें समान
२३ खावे। केवल चौकस होके लोहू मत खाइयो क्योंकि लोहू
जीव है और तुझे उचित नहीं कि मांस के साथ जीव खावे।
२४ तू उसे मत खाइयो उसे पानी की नाईं भूमि पर डाल दीजियो।
२५ तू उसे मत खाइयो जिस में तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का
भला होवे जब कि तू वुह जो ईश्वर की दृष्टि में ठीक है
करे॥

२६ परन्तु तू अपने पवित्र बस्तुन को और अपनी मनौतियों को
२७ उस स्थान में जिसे ईश्वर चुनेगा ले जाइयो। और तू अपने
बलिदान की भेंट मांस और लोहू परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी
पर चढ़ाइयो और तेरे बलिदानों का लोहू परमेश्वर तेरे ईश्वर की
बेदी पर ढाला जावेगा और तू मांस को खाइयो॥

२८ चौकस हो और इन सब बातों को सोचो जो मैं तुझे आज्ञा
करता हूं सुनो जिस में तेरा और तेरे पीछे तेरे वंश का सनातन
लों भला होवे जब कि तुम वुह जो भला और ठीक है
परमेश्वर अपने ईश्वर की दृष्टि में करो॥

२९ जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों को तेरे आगे से
काट डाले जहां तू जाता है कि अधिकारी बने और तू उन
३० का अधिकारी होवे और उन के देश में बास करे। अपने से
चौकस रहियो न हो कि जब वे तेरे आगे से बिनाश होवें तू
उन के पीछे बझ जावे और न हो कि तू उन के देवतों को
खोज करके कहे कि इन जातिगणों ने अपने देवतों की सेवा

३१ किस रीति से किई थी मैं भी वैसी करूंगा । तू परमेश्वर अपने
ईश्वर से ऐसा मत कीजियो क्योंकि उन्हों ने हर एक कार्य्य
जिस्से परमेश्वर को घिन है जिस्से वुह बैर रखता है अपने देवतों
के लिये किया यहां लों कि अपने बेटों और बेटियों को भी
३२ अपने देवतों के लिये आग में जला दिया । तुम हर एक बात
को जो मैं तुम्हें कहता हूं सोचके मानियो उस में न बढ़ाइयो
न उस में घटाइयो ॥

तेरहवां पर्व्व ।

१ यदि तेरे मध्य में कोई आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी खड़ा
२ होवे और तुझे कोई लक्षण अथवा आश्चर्य्य दिखावे । और वुह
लक्षण अथवा आश्चर्य्य जो उस ने तुझ से कहा था पूरा होवे
और वुह तुम्हें कहे कि आओ हम आन देवतों का पीछा करें
३ जिन्हें तू ने नहीं जाना और उन की सेवा करें । तो कधी उस
आगमज्ञानी अथवा स्वप्नदर्शी के बचन मत सुनियो क्योंकि
परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हें परखता है जिसतें देखे कि तुम
परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने सारे जीव से और अपने सारे
४ प्राण से मित्र रखते हो कि नहीं । तुम परमेश्वर अपने ईश्वर का
पीछा करो और उस्से डरो और उस की आज्ञाओं को धारण
करो और उस का शब्द मानो और तुम उस की सेवा करो
५ और उसी से लवलीन रहो । और वुह आगमज्ञानी अथवा
स्वप्नदर्शी घात किया जावेगा क्योंकि उस ने तुम्हें परमेश्वर
अपने ईश्वर से फिरावने की बात कही जो तुम्हें मिस्र देश से
बाहर निकाल लाया और तुझे बंधुआई के घर से छुड़ाया
जिसतें तुझे उस मार्ग में से जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा
किई है बगदा देवे सो तुझे उचित है कि तू उस बुराई को
अपने मध्य से निकाल डाले ॥

६ यदि तेरा सगा भाई अथवा तेरा बेटा अथवा तेरी बेटी
अथवा तेरी गोद की पत्नी अथवा तेरा मित्र जो तेरे प्राण के
समान होवे तुझे चुपके से फुसलावे और कहे कि चल दूसरे
देवतों की सेवा करें जिन्हें तू और तेरे पितर नहीं जानते हैं।
७ उन लोगों के देवतों में से जो तुम्हारे आस पास तेरे चारों
ओर हैं अथवा तुझ से दूर भूमि के इस खूंट से उस खूंट लों।
८ तू उस की बात न मानियो न उस की सुनियो न उस पर
दया की दृष्टि कीजियो और तू उसे मत छोड़ न उस को छिपा।
९ परन्तु उसे अवश्य मार डालियो उस के बधन में पहिले तेरा
१० हाथ उस पर पड़े और पीछे सब लोगों के हाथ। और तू उस
पर पथरवाह कीजियो जिसतें वुह मर जावे क्योंकि उस ने
चाहा कि परमेश्वर तेरे ईश्वर से तुझे भटकावे जो तुझे मिस्र के
११ देश बंधुआई के घर से निकाल लाया। और सारे
इसराएल सुनके डरेंगे और तेरे मध्य में फिर ऐसी दुष्टता न
करेंगे॥

१२ यदि तू उन नगरों में जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे बसने
१३ के लिये दिये हैं यह कहते सुने। कि कितने दुष्ट लोग तुम्में से
निकल गये और अपने नगर के बासियों को यों कहके भटकाया
कि आओ चलें और आन देवतों की सेवा करें जिन्हें तुम ने
१४ नहीं जाना है। सो खोजियो और यत्न से पूछियो और देख
यदि वुह बचन सत्य होवे और निःसंदेह कि ऐसा घिनित
१५ कार्य्य तेरे मध्य में किया गया। तो उस नगर के बासियों को
खड्ग की धार से निश्चय मार डालियो उसे और जो कुछ उस
में है और वहां के ढोर को खड्ग की धार से सर्वथा नाश
१६ कीजियो। और तू वहां की सारी लूट को वहां की सड़क के
मध्य में एकट्ठे कीजियो और उस नगर को और वहां की सारी
लूट को परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये आग से जला दीजियो

और वुह सनातन लों एक ढेर रहेगा फिर बनाया न जाविगा।
१७ और उस स्नापित वस्तु में से कुछ तेरे हाथ में सटी न रहे
जिसतें परमेश्वर अपने क्रोध के जलजलाहट से फिर जावे और
तुझ पर अनुग्रह करे और तुझ पर दयाल होवे और तुझे
बढ़ावे जैसा कि उस ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाई है।
१८ जब तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुने कि उस की सारी
आज्ञाओं को जो आज मैं तुझे आज्ञा करता हूं जो परमेश्वर तेरे
ईश्वर के आगे ठीक है उसे पालन करे॥

चौदहवां पर्व्व ।

१ तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के पुत्र हो तुम मृतक के लिये अपने
को काटकूट न करियो न अपने माथे को मुड़ाइयो॥
२ क्योंकि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पवित्र लोग हो
और परमेश्वर ने समस्त जातिगणों में से जो पृथिवी पर हैं तुझे
३ चुन लिया कि अपने निज लोग बनावे। तू किसी घिनित
४ वस्तु को मत खाइयो। इन पशुन को खाइयो बैल भेड़ बकरी।
५ और हरिण और हरिणी कंदली और बनैली बकरी और
६ गवय और बनैला बैल और अरना। और हर एक चौपाया
जिस के खुर चिरे हुए हों और उस के खुर में बिभाग हो
७ और पागुर करता हो तुम उसे खाइयो। तथापि उन में से जो
पागुर करते हैं अथवा उन के खुर चिरे हुए हैं जैसे ऊंट
और खरहा और शफन तुम इन्हें मत खाइयो इस लिये
कि ये पागुर नहीं करते परन्तु उन के खुर चिरे हुए हैं सो ये
८ तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं। और सूअर इस कारण कि उस के
खुर चिरे हुए हैं तथापि पागुर नहीं करता वुह तुम्हारे लिये
अशुद्ध है तुम उन का मांस न खाइयो न उन की लोथों को
छुइयो॥

९ सब में से जो पानियों में रहते हैं इन्हें खाइयो जिन के
१० पंख और छिलके हों। और जिस किसी के पंख और छिलके
न हों तुम उन्हें न खाइयो वुह तुम्हारे लिये अशुद्ध हैं॥
११।१२ समस्त पावन पक्षी को खाइयो। परन्तु उन में इन्हें
१३ न खाइयो गिद्ध और हाड़गिल और कुरर। और शंकरचील्ह
१४ और चील्ह और भांति भांति के गिद्ध। और भांति भांति के
१५ कव्वे। और पेंचा और लक्ष्मीपेंचा और कोइल और भांति भांति
१६ के सिकरा। और छोटा पेंचा और उल्लू और राजहंस।
१७।१८ और गरुड़ और बासा और मछरंग। और सारस और
१९ भांति भांति के बगुले और टिटिहरी और चमगूदर। और हर
एक रेंगवैया जो उड़ता है तुम्हारे लिये अशुद्ध है वे खाये न
२० जावें। समस्त पवित्र पक्षी खाइयो॥
२१ जो कुछ आप से मर जावे उसे मत खाइयो तू उसे किसी
परदेशी को जो तेरे फाटकों में है खाने को दीजियो अथवा
किसी बिदेशी के हाथ बेच डालियो क्योंकि तू परमेश्वर अपने
ईश्वर का पवित्र लोग है तू मेम्ना को उस की माता के दूध में
मत उसिन्ना॥
२२ बरस बरस जो बीज तेरे खेतों में उगे तू निश्चय उस का
२३ अंश दिया कर। तू परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे उस स्थान
में जिसे वुह अपने नाम के लिये चुनेगा अपने अन्न का अपनी
मदिरा का और अपने तेल का और अपने ढोर और अपनी झुंड
के पहिलौठों के अंश को खाइयो जिसतें तू सर्वदा परमेश्वर
अपने ईश्वर से डरना सीखे॥
२४ और यदि मार्ग तेरे लिये अति दूर होवे यहां लों कि तू
उसे न ले जा सके यदि वुह स्थान जिसे परमेश्वर तेरे ईश्वर ने
चुना जिसतें अपना नाम वहां स्थिर करे बहुत दूर होवे तो
२५ जब परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे आशीष देवे। तब तू उन्हें बेचके

उन का रोकड़ अपने हाथ में लेके उस स्थान को जा जो
२६ परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना है। और उस रोकड़ से जिस वस्तु
को तेरा मन चाहे मोल ले गाय बैल अथवा भेड़ अथवा
दाखरस अथवा मद्य अथवा जो वस्तु तेरा जीव चाहे तू और
तेरा घराना परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे खावे और आनन्द
२७ करे। और जो लावी तेरे फाटकों में है उसे त्याग मत करियो
क्योंकि उस का भाग और अधिकार तेरे साथ नहीं है॥
२८ तीन बरस के पीछे अपनी बढ़ती का समस्त दसवां भाग
उसी बरस लाइयो और अपने फाटकों के भीतर धरियो।
२९ और इस कारण कि लावी तेरे संग भाग और अंश नहीं रखता
है और परदेशी और अनाथ और बिधवा जो तेरे फाटकों में
हैं आवें और खावें और तृप्त होवें जिसतें परमेश्वर तेरा
ईश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्य्यों में जो तू करता है आशीष
देवे॥

पंद्रहवां पर्व्व।

१।२ सात बरसों के पीछे तू छुटकारा ठहराइयो। और
छुटकारे की रीति यह है कि हर एक धनिक जो अपने परोसी
को ऋण देता है सो उसे छोड़ देवे और अपने परोसी से अथवा
अपने भाई से न लेवे इस कारण कि यह परमेश्वर का छुटकारा
३ कहाता है। परदेशी से तू ले सके परन्तु यदि तेरा कुछ तेरे
४ भाई पर है तो उसे छोड़ दे। जिसतें तुम्में कोई कंगाल न
होवे क्योंकि परमेश्वर उस देश में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे
५ अधिकार में देता है तुझे आशीष देगा। यदि तू केवल
परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुने और ध्यान से इस समस्त
६ आज्ञा पर चले जो आज मैं तुझे आज्ञा करता हूं। क्योंकि
परमेश्वर तेरा ईश्वर जैसा उस ने तुझ से प्रण किया है तुझे

आशीष देगा और तू बहुत जातिगणों को उधार देगा परन्तु
तू उधार न लेगा और तू बहुत से जातिगणों पर राज्य करेगा
परन्तु वे तुझ पर राज्य न करेंगे॥
७ यदि तुम्हारे बीच तुम्हारे भाइयों में से तेरे किसी नगर
में उस देश का जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है कोई
कंगाल होवे तो उस्से अपने मन को कठोर मत करियो और
अपने कंगाल भाई की ओर से अपना हाथ न खींचियो।
८ परन्तु अवश्य उस की सहाय के लिये अपना हाथ खोलियो
और निश्चय उस के आवश्यक के समान उसे उधार
९ देना। सावधान हो कि तेरे दुष्ट मन में कोई बुरी चिन्ता
न हो कि सातवां बरस तेरे छुटकारे का बरस समीप है
और तेरी आंख तेरे कंगाल भाई की ओर बुरी होवे और तू
उसे कुछ न देवे और वुह तुझ पर परमेश्वर के आगे बिलाप
१० करे और तेरे लिये पाप होवे। अवश्य उसे दीजियो और जब
तू उसे देवे तो तेरा मन उदास न होवे क्योंकि इस कारण
परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे समस्त कार्य्यों में जिन में तू हाथ
११ लगावे बढ़ती देगा। क्योंकि देश में से कंगाल न मिटेंगे इस
लिये मैं तुझे आज्ञा करता हूं कि अपने भाई के लिये जो तेरे
सन्मुख और अपने कंगाल और अपने दरिद्र के लिये जो तेरे
देश में है अपना हाथ खोलियो॥
१२ यदि तेरा इबरानी भाई पुरुष हो अथवा स्त्री तेरे हाथ
बेचा जावे और छः बरस लों तेरी सेवा करे तब सातवें बरस
१३ सेंत से उसे जाने दीजियो। और जब तू उसे अपने पास से
१४ जाने देवे तो उसे छूछे हाथ मत जाने दीजियो। अपनी झुंड
और अपने खत्ते और अपने कोल्हू में से उस बढ़ती में से जो
परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिई है उसे मन खोलके दीजियो।
१५ और स्मरण कीजियो कि मिस्र देश में तू बंधुआ था और

परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे छुड़ाया इस लिये आज मैं तुझे यह
आज्ञा करता हूं ॥
१६ और यदि वुह तुझे कहे कि मैं तुझ पास से न जाऊंगा
इस कारण कि वुह तुझ से और तेरे घर से प्रीति रखता है
१७ क्योंकि वुह तेरे संग कुशल से है। तो तू एक सुतारी लेके
अपने द्वार पर उस का कान छेदियो जिसतें वुह सदा को तेरा
१८ सेवक हो और अपनी दासी से भी तू ऐसा ही करियो। जब
तू उसे छोड़ देवे तो तुझे कठिन न समुझ पड़े क्योंकि उस ने
दो बनिहारों के तुल्य छः बरस लों तेरी सेवा किई सो परमेश्वर
तेरा ईश्वर तेरे हर एक कार्य्य में तुझे आशीष देगा ॥
१९ अपने ढोर के और अपने झुंड के सारे पहिलौठे नर परमेश्वर
अपने ईश्वर के लिये पवित्र करियो तू अपने बैलों के पहिलौठों
से कुछ कार्य्य मत लीजियो और अपनी भेड़ के पहिलौठों
२० को मत कतरना। परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे बरस
बरस उस स्थान में जो परमेश्वर चुनेगा अपने घराने सहित
खाइयो ॥
२१ परन्तु यदि उस में कोई खोट होवे लंगड़ा अथवा अंधा
अथवा कोई भारी खोट होवे तो उसे परमेश्वर अपने ईश्वर के
२२ लिये बलिदान मत करियो। तुम उसे अपने द्वारों पर खाइयो
पवित्र हो अथवा अपवित्र दोनों समान जैसे हरिण और
२३ बारहसिंगा। केवल उस का लोहू मत खाइयो तू उसे पानी की
नाईं भूमि पर ढाल दीजियो ॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

१ अबिब मास का पालन करियो और परमेश्वर अपने ईश्वर के
फ़सह का पर्ब्ब मानियो क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर अबिब के
२ मास में रात को तुझे मिस्र से निकाल लाया। और उस स्थान

में जिसे परमेश्वर अपना नाम वहां स्थापन करने के लिये चुनेगा
अपने परमेश्वर ईश्वर के लिये तू अपने ढोर में से फ़सह के
३ पर्ब्ब के लिये बलि करियो। तू उस के साथ ख़मीरी रोटी मत
खाना सात दिन उस के साथ अख़मीरी रोटी अर्थात् कष्ट की
रोटी खाइयो क्योंकि तू मिस्र देश से उतावली से निकला
जिसतें तू उस दिन को जिस में तू मिस्र से निकला अपने
४ जीवन भर स्मरण करे। और तेरे सारे सिवाने में सात दिन लों
ख़मीरी रोटी दिखाई न देवे और न उस मांस में से जिसे तू
ने पहिले दिन सांझ को बलि किया रात भर विहान लों बच
५ रहे। तू अपने किसी फाटकों के भीतर जो परमेश्वर तेरा ईश्वर
६ तुझे देता है फ़सह बलि मत करियो। परन्तु उसी स्थान में
जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर अपना नाम स्थापन करने के लिये
चुनेगा सांझ को सूर्य्य अस्त होते उसी समय में जब तू मिस्र
७ से निकला फ़सह बलि करियो। और उस स्थान में जो परमेश्वर
तेरा ईश्वर चुनेगा तू उसे भूनके खाइयो और विहान को फिर
८ के अपने तंबुओं को चले जाइयो। छः दिन लों अख़मीरी
रोटी खाइयो और सातवें दिन जो तेरे ईश्वर के रोक का दिन
है कुछ काम काज न करना॥
९ अपने लिये सात अठवारे गिन और खेती में हंसुआ लगाने
१० से गिन्ने को आरंभ करियो। और परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये
अठवारों का पर्ब्ब रखियो उस में तू अपने ईश्वर के आशीष के
११ समान अपने हाथ के मनमंता दान दीजियो। और परमेश्वर
अपने ईश्वर के आगे तू और तेरा बेटा और तेरी बेटी और तेरा
दास और तेरी दासी और वुह लावी जो तेरे फाटकों के भीतर
हैं और परदेशी और अनाथ और बिधवा जो तेरे मध्य में हैं उस
स्थान में आनन्द करियो जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुन लेगा
१२ कि अपना नाम वहां स्थापन करे। और सुधि रखियो कि तू

मिस्र में दास था सो चौकस रह कि इन बिधिन को पालन
कर और मान ॥
१३　जब तू अपने खरिहान और अपने कोल्हू को एकट्ठा कर चुके
१४ तो सात दिन लों तंबुओं का पर्ब्ब मानियो। और अपने बेटा
और अपनी बेटी और अपने दास और अपनी दासी और लावी
और परदेशी और अनाथ और बिधवा समेत जो तेरे फाटकों
१५ के भीतर हैं आनन्द करियो। सात दिन लों अपने ईश्वर
परमेश्वर के लिये उसी स्थान में जिसे परमेश्वर चुनेगा पर्ब्ब
मानियो क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी सारी बढ़तियों में और
तेरे हाथों के समस्त कार्य्यों में तुझे बर देगा सो तू निश्चय
आनन्द करियो ॥
१६　बरस में तेरे समस्त पुरुष तीन बार अर्थात् अख़मीरी रोटी
के पर्ब्ब में और अठवारों के पर्ब्ब में और तंबुओं के पर्ब्ब में
परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस स्थान में जिसे वुह चुनेगा
१७ एकट्ठे होवें और वे परमेश्वर के आगे छूछे न आवें। हर एक
पुरुष अपनी पूंजी के समान परमेश्वर तेरे ईश्वर के आशीष के
समान जो उस ने तुझे दिया है देवे ॥
१८　अपने समस्त फाटकों में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे तेरी
गोष्ठियों के लिये देता है अपने लिये न्यायी और प्रधान ठहराइयो
१९ और वे यथार्थ से लोगों का न्याय करें। तू अन्याय बिचार मत
करियो तू पक्ष न करियो और घूस मत लीजियो क्योंकि घूस
बुद्धिमानों को अंधा कर देता है और धर्म्मियों की बातों को
२० फेर देता है। जो हर प्रकार से यथार्थ है तू उस का पीछा
करियो जिसतें तू जीवे और उस देश का जो परमेश्वर तेरा
ईश्वर तुझे देता है अधिकारी होवे ॥
२१　परमेश्वर अपने ईश्वर की बेदी के लग अपने लिये पेड़ों का
२२ कुंज जिसे तू लगाता है न लगाइयो। और न अपने लिये

किसी भांति की मूर्त्ति स्थापित करियो जिस्से परमेश्वर तेरे ईश्वर को घिन है॥

सतरहवां पर्ब्ब ।

१ तू परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बेल अथवा भेड़ जिस में
कोई खोट अथवा बुराई होवे बलि मत चढ़ाइयो क्योंकि
परमेश्वर तेरे ईश्वर को उस्से घिन है॥

२ यदि तुम्हारे किसी फाटकों के भीतर जिसे परमेश्वर तेरा
ईश्वर तुझे देता है तुम्हों में कोई पुरुष अथवा स्त्री होवे जिस
ने परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस की बाचा को भंग करके
३ दुष्टता किई होवे। और जाके दूसरे देवों की पूजा किई हो
और उन्हें दण्डवत किई हो जैसे सूर्य्य अथवा चंद्रमा अथवा
४ आकाश की कोई सेना जिन की मैं ने आज्ञा नहीं दिई। और
तुझ से कहा जावे और तू ने सुना है और यत्न से खोजा और
सत्य पाया और निश्चय किया जावे कि इसराएल में ऐसा
५ घिनित कार्य्य हुआ है। तब तू उस पुरुष अथवा उस स्त्री
को जिस ने तेरे फाटकों में यह दुष्ट कार्य्य किया है उसी
पुरुष अथवा उसी स्त्री को बाहर लाइयो और उन पर यहां
लों पथरवाह कीजियो कि वे मर जावें॥

६ दो अथवा तीन की साक्षी से जो मार डालने के योग्य है
मार डाला जावे परन्तु एक साक्षी से वुह मारा न जावे।
७ पहिले साक्षियों के हाथ उस के मारने के लिये उठें और पीछे
सब लोगों के हाथ और तू अपने में से बुराई को यों मिटा
डालियो॥

८ यदि आपुस के लोहू बहाने में और आपुस के बिवाद में
और आपुस की मार पीट में तेरे फाटकों के भीतर अपवाद के
बिषय में तेरे बिचार के लिये कठिन होवे तो तू उठ और

९ उस स्थान को जा जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने चुना है। और
याजकों अर्थात् लावियों पास और उस न्यायी के पास जो
उन दिनों में हो जा और उस्से पूछ और वे तुझे न्याय की
१० आज्ञा बतावेंगे। और तू उस आज्ञा के समान करना जो वे
तुझे उस स्थान से जिसे परमेश्वर चुनेगा बतावे और तू सोचके
११ उन सभों के समान जो वे तुझे बतावें मान्ना। उस व्यवस्था
की आज्ञा के समान जो वे तुझे सिखावें और उस बिचार के
तुल्य जो तुझे कहें करियो उस बात से जो वे तुझे बतावें
१२ दहिने बायें मत मुड़ियो। और जो मनुष्य ढिठाई करे कि
उस याजक की बात जो वहां परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे सेवा
करने के लिये खड़ा है अथवा उस न्यायी का वचन न सुने
तो वही मनुष्य मार डाला जावे और तू इसराएल में से उस
१३ बुराई को मिटा दीजियो। और समस्त लोग सुनेंगे और डरेंगे
और फेर ढिठाई से अपराध न करेंगे॥

१४ जब तू उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है
पहुंचे और उसे अपने वश में करे और उस में बसे और कहे
कि उन सब जातिगण के समान जो मेरे आस पास हैं मैं भी
१५ अपने लिये एक राजा बनाऊंगा। जो तू किसी रीति से अपने
ऊपर राजा ठहराना जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर चुने तू अपने
भाइयों में से एक को अपना राजा बनाना और किसी परदेशी
१६ को जो तेरा भाई नहीं है अपने ऊपर न ठहराना। केवल
वुह अपने लिये घोड़े न बटोरे और न लोगों को मिस्र में फेर
लेवा जावे जिसतें वुह घोड़े बटोरे कि परमेश्वर ने तुम्हें कहा
१७ है कि तुम इस मार्ग में फेर कधी न जाना। और वुह अपने
लिये पत्नियां न बटोरे ऐसा न हो कि उस का मन फिर जावे
१८ और वुह अपने लिये बहुत रूपा और सोना बटोरे। और यों
होगा कि जब वुह अपने राज्य के सिंहासन पर बैठे तो इस

व्यवस्था की पुस्तक में अपने लिये लिखे जो लावी याजकों के
१९ आगे है। और वुह उस के साथ रहा करे और अपने जीवन
भर उसे पढ़ा करे जिसतें वुह परमेश्वर अपने ईश्वर का डर
सीखे और इस व्यवस्था के समस्त बचन और इन विधिन को
२० पालन करे और माने। जिसतें उस का अंतःकरण अपने
भाइयों के ऊपर न उभड़े और कि वुह आज्ञा से दहिने अथवा
बायें न मुड़े जिसतें उस के राज्य में उस के और उस के बंश
के इसराएल के मध्य में जीवन बढ़ जावें॥

अठारहवां पर्ब्ब।

१ याजकों लावियों लावी की समस्त गोष्ठी का भाग और
अधिकार इसराएल के साथ न होगा वे परमेश्वर के होम की
२ भेंट और उस के अधिकार खावें। और वे अपने भाइयों के
मध्य में अधिकार न पावेंगे परमेश्वर उन का अधिकार है जैसा
उस ने उन्हें कहा है॥

३ और लोगों में से जो बलिदान चढ़ाते हैं चाहे बैल अथवा
भेड़ याजक का भाग यह होगा कि वे याजक को कांधा और
४ दोनों गाल और झोझ देवें। तू अपने अन्न अपनी मदिरा और
अपने तेल में का पहिला भाग और अपनी भेड़ों के रोम में
५ का पहिला उसे देना। क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरी
समस्त गोष्ठियों में से उसे चुना है कि वुह और उस के बेटे
परमेश्वर के नाम की सदा सेवा करें॥

६ और यदि कोई लावी समस्त इसराएल में से तेरे किसी
फाटकों से आवे जहां वुह बास करता था और उस स्थान में
७ जिसे परमेश्वर चुनेगा बड़ी लालसा से आ पहुंचे। तो वुह
परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम से सेवा करे जैसे उस के समस्त
८ लावी भाई जो परमेश्वर के आगे वहां खड़े रहते हैं। अपने

पितरों की बेची हुई वस्तुन के मोल को छोड़के वे उन के
भाग के समान खाने को पावें ॥
९ जब तू उस देश में पहुंचे जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता
१० है तो उन जातिगणों के घिनित कार्य्य न सीखियो। तुझमें
कोई ऐसा न हो कि अपने बेटे अथवा अपनी बेटी को आग में से
चलावे अथवा दैवज्ञ कार्य्य करे अथवा मुहूर्त्त माने अथवा
११ मायावी अथवा टोनहिन। अथवा तांत्रिक अथवा वशकारी
१२ अथवा गणक अथवा टोनहा। क्योंकि सब लोग जो ऐसे कार्य्य
करते हैं परमेश्वर से घिनित हैं और ऐसे घिन के कारण से
१३ उन को परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे आगे से दूर करता है। तू
१४ परमेश्वर अपने ईश्वर से निष्कपट हो। क्योंकि ये जातिगण जिन
का तू अधिकारी होगा मुहूर्त्त के मनवैये को और दैवज्ञ को
सुनते थे परन्तु तू जो है परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे रोक
रक्खा है ॥
१५ परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे कारण तेरे ही मध्य में से तेरे ही
भाइयों में से एक आगमज्ञानी मेरे तुल्य उदय करेगा तुम उस
१६ की सुनियो। इन सभों की नाईं जो तू ने परमेश्वर अपने
ईश्वर से होरिब में सभा के दिन मांगा और कहा ऐसा न हो
कि मैं परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द सुनूं और ऐसी बड़ी आग
१७ मैं फेर देखूं जिसतें कि मैं मर न जाऊं। और परमेश्वर ने
१८ मुझे कहा कि उन्हों ने जो कुछ कहा सो अच्छा कहा। मैं
उन के लिये उन के भाइयों में से तेरे तुल्य एक आगमज्ञानी
उदय करूंगा और अपने बचन उस के मुंह में डालूंगा और
१९ जो कुछ मैं उसे कहूंगा वुह उन से कहेगा। और ऐसा होगा
कि जो कोई मेरी बातों को जिन्हें वुह मेरे नाम से कहेगा न
सुनेगा मैं उस्से लेखा लेऊंगा ॥
२० परन्तु जो आगमज्ञानी ऐसी ढिठाई करे कि कोई बात जो

में ने उसे आज्ञा नहीं किई मेरे नाम से कहे अथवा जो और
२१ देवों के नाम से कहे तो वुह आगमज्ञानी मार डाला जावे। और
यदि तू अपने मन में कहे कि हम उस बचन को क्योंकर
२२ जानें जिसे परमेश्वर ने न कहा। जब आगमज्ञानी परमेश्वर के
नाम से कुछ कहे और वुह जो उस ने कही है न होवे
अथवा पूरी न हो तो वुह बात परमेश्वर ने नहीं कही परन्तु
उस आगमज्ञानी ने ढिठाई से कही है तू उस्से मत डर॥

उन्नीसवां पर्व्व।

१ जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उन जातिगणों को जिन का देश
परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है काट डाले और तू उन का
अधिकारी होवे और उन के नगरों में और उन के घरों में
२ बसे। तो तू अपने उस देश के मध्य में जिसे परमेश्वर तेरा
ईश्वर तेरे बश में करता है अपने लिये तीन नगर अलग
३ करना। तू अपने लिये एक मार्ग सिद्ध करना और अपने देश
के सिवानों को जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार में देता
४ है तीन भाग करना जिसतें हर एक घाती उधर भागे। और
घाती की व्यवस्था जो वहां भागे जिसतें वुह जीता रहे यह
है जो कोई अपने परोसी को जो उस्से आगे बैर न रखता था
५ अजान में मार डाले। अथवा कोई मनुष्य अपने परोसी के
साथ लकड़ी काटने को बन में जावे और कुल्हाड़ा हाथ में
उठावे कि लकड़ी काटे और कुल्हाड़ा बेंट से निकल जावे
और उस के परोसी को ऐसा लगे कि वुह मर जावे तो वुह
६ इन में से एक नगर में भागके बचे। न हो कि मार्ग के दूर
होने के कारण लोहू का प्रतिफलदायक अपने मन के कोप
से घाती का पीछा करे और उसे पकड़ लेवे और उसे मार डाले
यद्यपि वुह मार डालने के योग्य नहीं क्योंकि वुह आगे से

७ उस की डाह न रखता था। इस लिये मैं तुझे आज्ञा करके
कहता हूं कि तू अपने कारण तीन नगर अलग करना॥
८ और यदि परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा सिवाना बढ़ावे जैसा
उस ने तेरे पितरों से किरिया खाके कहा है और वुह समस्त
९ देश जो तेरे पितरों को देने को बाचा किई तुझे देवे। यदि
तू इस समस्त आज्ञा को पालन करे और उसे माने जो आजके
दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं कि परमेश्वर अपने ईश्वर
से प्रेम रखके सर्बदा उस के मार्ग पर चले तो तू इन तीन
१० नगरों से अधिक अपने लिये तीन नगर बढ़ाना। जिसतें
तेरे देश के मध्य में जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरा अधिकार
कर देता है निर्दोष लोहू बहाया न जावे कि हत्या तुझ पर
होवे॥
११ परन्तु यदि कोई जन जो अपने परोसी से बैर रखता हो
और उस की घात में लगा हो और उस के बिरोध में उठके
उसे ऐसा मारे कि वुह मर जावे और इन में से एक नगर में
१२ भाग जावे। तो उस के नगर के प्राचीन भेजके उसे वहां से
मगावें और लोहू के प्रतिफलदाता के हाथ में सौंप देवें कि
१३ वुह घात किया जावे। तेरी आंख उस पर दया न करे परन्तु
तू निर्दोष लोहू के पाप को इसराएल से यों दूर करना कि
तेरा भला हो॥
१४ तू अपने अधिकार में उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर
तेरे अधिकार में कर देता है अपने परोसी के सिवाने को मत
हटा जिसे अगिले लोगों ने ठहराया है॥
१५ किसी मनुष्य के अपराध और पाप पर कोई पाप क्यों न हो
एक साक्षी ठीक नहीं है परन्तु दो अथवा तीन साक्षियों के
१६ मुंह से हर एक बात ठहराई जावेगी। यदि कोई झूठा साक्षी
१७ उठके किसी मनुष्य पर साक्षी देवे। तो वे दोनों जिन में

विवाद है परमेश्वर के आगे याजकों और न्याइयों के सन्मुख
१८ जो उन दिनों में हों खड़े किये जावें। और न्यायी यत्न
से विचार करें सो यदि वुह साक्षी झूठा ठहरे और उस ने
१९ अपने भाई पर झूठी साक्षी दिई हो। तब तुम उस्से ऐसा
करना जो उस ने चाहा था कि अपने भाई से करे इस रीति
२० से बुराई को अपने में से दूर करना। अरु और जो हैं सुनके
२१ डरेंगे और आगे को तुम्में ऐसी बुराई फिर न करेंगे। और
तेरी आंख दया न करे कि प्राण की संती प्राण आंख की संती
आंख दांत की संती दांत हाथ की संती हाथ पांव की संती
पांव होगा॥

बीसवां पर्व्व।

१ जब तू लड़ाई के लिये अपने बैरियों पर चढ़ जावे और
देखे कि उन के घोड़े और गाड़ियां और लोग तुझ से बहुत
हैं तो तू उन से मत डर क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जो तुझे
२ मिस्र देश से निकाल लाया तेरे साथ है। और यों होगा कि
जब तुम संग्राम के निकट पहुंचो तो याजक आगे होके लोगों
३ को कहे। और उन से बोले कि हे इसराएलियो सुनो तुम
आजके दिन अपने बैरियों से लड़ाई करने को जाते हो सो
तुम्हारा मन न घटे डरो मत और मत घबराओ और उन से
४ मत थर्थराओ। क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारे साथ
जाता है कि तुम्हारे लिये तुम्हारे बैरियों से लड़के तुम्हें
बचावे॥

५ और प्रधान लोगों से कहें और बोलें कि तुम्में कौन मनुष्य
है जिस ने नया घर बनाया हो और उसे नहीं स्थापा है वुह
अपने घर को फिर जावे ऐसा न हो कि वुह लड़ाई में मारा
६ जावे और दूसरा मनुष्य उसे स्थापे। और कौन मनुष्य है जिस

ने दाख की बारी लगाई हो और उस का फल न खाया हो
वुह अपने घर को फिर जावे ऐसा न हो कि वुह लड़ाई में
७ मारा जावे और दूसरा उसे खावे। और कौन मनुष्य है जो
किसी स्त्री से वचनदत्त हुआ है और वुह उसे घर न लाया
हो वुह अपने घर को फिर जावे ऐसा न हो कि वुह लड़ाई में
८ मारा जावे और दूसरा उसे लेवे। और प्रधान लोगों से यह
भी कहें कि कौन मनुष्य है जो डरपोकना और असाहसी है
अपने घर को फिर जावे न हो कि उस के भाइयों के मन
९ उस के मन की नाईं बोदे हो जावें। और यों हो कि जब
प्रधान लोगों से कह चुकें तो वे सेना के प्रधानों को ठहरावें कि
लोगों की अगुआई करें॥
१० जब तू लड़ाई के लिये किसी नगर के निकट पहुंचे तो
पहिले उस्से मिलाप का प्रचार कर और यदि वुह तुझे मिलाप का
११ उत्तर देवे और तेरे लिये द्वार खोले। तब यों होगा कि सब
लोग जो उस नगर में हैं तेरे करदायक होंगे और तेरी सेवा
१२ करेंगे। और यदि वुह तुझ से मिलाप न करे परन्तु तुझ से
१३ लड़ाई करे तो तू उसे घेर ले। और जब परमेश्वर तेरा ईश्वर
उसे तेरे हाथ में कर देवे तो तू वहां के हर एक पुरुष को
१४ तलवार की धार से मार डालियो। केवल स्त्रियों और लड़कों
और पशुन को उन सब समेत जो उस नगर में हों लूट ले
और तू अपने बैरियों की लूट को जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने
१५ तुझे दिई हैं खा। तू उन सब नगरों से जो तुझ से बहुत
दूर हैं और इन जातिगणों के नगरों में से नहीं हैं ऐसा
१६ करना। परन्तु इन लोगों के नगरों को जिन्हें परमेश्वर तेरा
ईश्वर तेरा अधिकार कर देता है किसी को जो सांस लेता हो
१७ जीता न छोड़ना। परन्तु उन्हें सर्व्वथा नाश कर डालना हित्ती
और अमूरी कनआनी और फरिज्जी हवी और यबूसी को

१८ जैसी परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे आज्ञा किई है। जिसतें वे
समस्त घिनौने कार्य्य जो उन्हों ने अपने देवों से किये तुम्हें
न सिखावें कि तुम परमेश्वर अपने ईश्वर के अपराधी हो जाओ॥
१९ जब तू किसी नगर के लेने के लिये लड़ाई में बहुत दिन
ताईं घेरे रहे तो तू कुल्हाड़ी चलायके उन के बृक्ष नाश मत
करियो परन्तु तू उन के फल खाइयो सो तू उन्हें काट न
डालियो कि तेरे लिये घेरने के काम में आवें क्योंकि खेत के
२० पेड़ मनुष्य के लिये हैं। केवल वे बृक्ष जो खाने के काम के
न हों उन्हें काटके नाश करियो और उस नगर के आगे
जो तुझ से लड़ता है गढ़ बना जब ताईं वुह तेरे बश में
होवे॥

इक्कीसवां पर्ब्ब।

१ यदि उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे बश में करता
है किसी की लोथ खेत में पड़ी मिले और जाना न जावे कि
२ किस ने उसे मारा। तब तेरे प्राचीन और तेरे न्यायी बाहर
निकलें और उन नगरों को जो घातित के चारों ओर हैं नापें।
३ और यों होगा कि जो नगर घातित के समीप है उसी नगर के
प्राचीन एक कलोर लेवें जिस्से कार्य्य न किया गया हो और
४ जूये तले न आई हो। और उस नगर के प्राचीन उस कलोर को
खड़बिड़ तराई में जो न जोती गई हो न उस में कुछ बोया
गया हो ले जावें और वहां उस तराई में उस कलोर के सिर को
५ उतारें। तब याजक जो लावी के संतान हैं पास आवें क्योंकि
परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपनी सेवा के लिये और परमेश्वर के
नाम से आशीष देने के लिये उन्हीं को चुना है और उन्हीं के
बचन से हर एक झगड़ा और हर एक बिपत्ति का निर्णय
६ किया जावेगा। और उस नगर के समस्त प्राचीन जो घातित

के पास हैं उस कलोर के ऊपर जो तराई में बलि किई गई
७ अपने हाथ धोवें। और उत्तर देके कहें कि हमारे हाथों ने
यह लाहू नहीं बहाया है न हमारी आंखों ने देखा है।
८ हे परमेश्वर अब अपने इसराएली लोगों पर दया कर जिन्हें तू
ने छुड़ाया है और वृथा हत्या अपने इसराएली लोगों पर मत
९ रख तब वुह हत्या क्षमा किई जावेगी। सो जब तू इसी
रीति से वुह करे जो परमेश्वर के आगे ठीक है तब तू हत्या
को अपने में से दूर करेगा॥

१० जब तू युद्ध के लिये अपने बैरियों पर चढ़े और परमेश्वर
तेरा ईश्वर उन्हें तेरे हाथ में कर देवे और तू उन्हें बंधुआ
११ करे। और उन बंधुओं में सुन्दर स्त्री देखे और तेरा
१२ मन उस पर चले कि उसे अपनी पत्नी करे। तब तू उसे अपने
घर में ला और उस का सिर मुड़वा और उस के नंह कटवा।
१३ तब वुह अपनी बंधुआई का वस्त्र उतारे और तेरे घर में रहे
और पूरा एक मास भर अपने मा बाप के लिये शोक करे उस
के पीछे तू उसे ग्रहण करना और उस का पति होना और वुह
१४ तेरी पत्नी हो। और यदि तू उस्से प्रसन्न न हो तो
जिधर वुह चाहे उसे जाने दे पर तू उसे रोकड़ पर मत
बेचना तू उस्से कुछ बाणिज्य न करना क्योंकि तू ने उस की
पति लिई॥

१५ यदि किसी की दो पत्नियां हों एक प्रिया और दूसरी
अप्रिया और प्रिया और अप्रिया दोनों से लड़के हों और पहिलौठा
१६ अप्रिया से हो। तो यों होगा कि जब वुह अपने पुत्रों को
अधिकारी करे तब वुह प्रिया के बेटे को अप्रिया के बेटे पर
१७ पहिलौठा न करे। परन्तु वुह अप्रिया के बेटे को अपनी समस्त
संपत्ति से दूना भाग देके पहिलौठा ठहरावे क्योंकि वुह उस
के बल का आरंभ है पहिलौठे होने का भाग उसी का है॥

१८ यदि किसी का पुत्र ढीठ और मगरा होवे जो अपने माता
पिता की आज्ञा न माने और जब वे उसे ताड़ना करें और
१९ वुह उन्हें न माने। तब उस के माता पिता उसे पकड़के उस
२० नगर के प्राचीनों पास उस स्थान के फाटक पर लावें। और
उस नगर के प्राचीनों से कहें कि हमारा यह बेटा ढीठ और
मगरा है हमारी बात नहीं मानता बड़ा ही खाऊ और
२१ पिअक्कड़ है। और उस नगर के सब लोग उस पर पथरवाह
करें कि वुह मर जावे और तू दुष्ट को अपने मध्य में से दूर
करना जिसतें समस्त इसराएल सुनके डरें॥
२२ और यदि किसी ने मार डालने के योग्य पाप किया हो
२३ और वुह मारा जावे तो तू उसे पेड़ पर लटका दे। उस की
लोथ रात भर पेड़ पर लटकी न रहे परन्तु तू उसी दिन उसे
गाड़ियो क्योंकि जो लटकाया गया है सो ईश्वर का धिक्कारित
है इस कारण चाहिये कि तेरी भूमि जिस का अधिकारी
परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करता है अशुद्ध न हो जावे॥

बाईसवां पर्व्व।

१ तू अपने भाई के बैल अथवा उस की भेड़ को भटकी हुई
देखके अपनी आंख उन से मत छिपा परन्तु किसी न किसी
२ भांति से उन्हें अपने भाई पास फेर ला। और यदि तेरा भाई
तेरे परोस में न हो अथवा तू उसे पहिचानता न हो तब
उसे अपने ही घर के मध्य में ला और वुह तेरे पास रहे जब लों तेरा
३ भाई उस की खोज करे और तू उसे फेर देना। और इसी
रीति तू उस के गदहे और उस के बस्त्र और सब कुछ से जो
तेरे भाई की खोई हुई हो और तू ने पाई है ऐसा हो
४ कर तू आप को उन से मत छिपाना। अपने भाई का
गदहा अथवा उस के बैल को मार्ग में गिरा हुआ देखके आप

को उन से मत छिपा निश्चय उस का सहाय करके उठा
देना ॥
५ पुरुष का बस्त्र स्त्री न पहिने और न पुरुष स्त्री का पहिने
क्योंकि सब जो ऐसा करते हैं परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे
घिनित हैं ॥
६ यदि पथ में चलते किसी पची का खोंता पेड़ पर अथवा
भूमि पर तुझे दिखाई देवे चाहे उस में गेदे अथवा अंडे हों
और मां गेदों पर अथवा अंडों पर बैठी हुई हो तो तू गेदों
७ को मां समेत मत पकड़ना । माता को निश्चय छोड़ देना और
गेदों को अपने लिये लेना जिसतें तेरा भला होवे और तेरा
जीवन बढ़ जावे ॥
८ जब तू नया घर बनावे तब अपनी छत पर आड़ के लिये
मुंड़ेरा बना ऐसा न हो कि कोई ऊपर से गिरे और तू अपने
घर में हत्या का कारण हो ॥
९ अपने दाख की बारी में नाना प्रकार के बीज मत बोना
ऐसा न हो कि बीज की भरपूरी जिसे तू ने बोया है और तेरी
१० दाख की बारी का फल अशुद्ध हो जावे । तू गदहे को बैल
११ के साथ मत जोतना । नाना भांति का बस्त्र जैसा कि ऊन
और सूत का मत पहिनियो ॥
१२ अपने ओढ़ने की चारों ओर झालर लगाना ॥
१३ यदि कोई पत्नी करे और उसे ग्रहण करे और उस्से घिन
१४ करे। और उस पर कलंक लगावे और कहे कि मैं ने इस स्त्री
से ब्याह किया और जब मैं उस पास गया तब मैं ने उसे
१५ कुमारी न पाया । तब उस कन्या के माता पिता उस के
कुमारीपन का चिन्ह लेके उस नगर के फाटक पर प्राचीनों के
१६ आगे लावें । और उस लड़की का पिता प्राचीनों से कहे कि
मैं ने अपनी पुत्री इस पुरुष को ब्याह दिई है अब यह उस्से

१७ घिन करता है। और देखो वुह उस पर कलंक की बात
लगाता है कि मैं ने तेरी पुची को कुमारी न पाया तथापि ये
मेरी पुची की कुमारीपन के चिन्ह हैं और वुह कपड़ा नगर के
१८ प्राचीनों के आगे फैलावे। तब उस नगर के प्राचीन उस पुरुष
१९ को पकड़के उसे दंड देवें। और वे उस्से सो टुकड़ा चांदी डांड़
लेवें और लड़की के पिता को देवें इस लिये कि उस ने इसराएल
की एक कुमारी पर कलंक लगाया और वुह उस की पत्नी बनी
२० रहेगी वुह जीवन भर उसे त्याग न करे। परन्तु यदि यह
बात ठीक ठहरे और लड़की की कुमारीपन का चिन्ह न
२१ पाया जावे। तब वुह उस लड़की को उस के पिता के घर के
द्वार पर निकाल लावें और उस नगर के लोग उस पर पथरवाह
करके मार डालें क्योंकि उस ने अपने पिता के घर में छिनाला
करके इसराएल में मूर्खता किई इस रीति से तू बुराई को
अपने में से दूर करना॥

२२ यदि कोई पुरुष विवाहिता स्त्री से पकड़ा जावे तब वे
दोनों व्यभिचारी पुरुष और स्त्री मार डाले जावें इस रीति से
२३ तू इसराएल में से बुराई को दूर करना। यदि कुमारी लड़की
किसी से वचनदत्त होवे और कोई दूसरा पुरुष उसे नगर में
२४ पावे और उस्से कुकर्म्म करे। तब तुम उन दोनों को उस
नगर के फाटक पर निकाल लाओ और उन पर पथरवाह
करके उन दोनों को मार डालो कन्या को इस लिये कि वुह
नगर में होते हुए न चिल्लाई और पुरुष को इस कारण कि
उस ने अपने परोसी की पत्नी की पति लिई इस रीति से तू
बुराई को अपने में से दूर करना॥

२५ और यदि कोई पुरुष किसी वचनदत्त कन्या को खेत में
पावे और पुरुष बरबस उस्से कुकर्म्म करे तो केवल वुह पुरुष
२६ जिस ने उस्से कुकर्म्म किया है मार डाला जावे। परन्तु उस

लड़की को कुछ न कर लड़की को घात का पाप नहीं है
क्योंकि यह ऐसा है जैसे कोई अपने परोसी पर हुल्लड़ करे
२७ और उसे मार डाले। क्योंकि उस ने उसे खेत में पाया और
वुह बचनदत्त लड़की चिल्लाई और छुड़ाने को कोई न था॥
२८ यदि कोई कुमारी कन्या को जो किसी से बचनदत्त न
२९ हो पकड़के उस्से कुकर्म्म करे और वे पकड़े जावें। तब वुह
पुरुष जिस ने उस्से कुकर्म्म किया लड़की के पिता को पचास
टुकड़ा चांदी देवे और वुह उस की पत्नी होगी इस कारण कि
उस ने उसे अपत किया वुह उसे जीवन भर त्याग न करे॥
३० कोई अपने पिता की पत्नी को न ले और अपने पिता की
नग्नता को न उघारे॥

तेईसवां पर्ब्ब।

१ जिस के अंडकोश पिचकाये गये हों अथवा लिंग कट गया
२ हो वुह परमेश्वर की मंडली में प्रवेश न करे। जारज अपनी
दसवीं पीढ़ी लों परमेश्वर की मंडली में प्रवेश न करे।
३ अम्मूनी और मोअबी परमेश्वर की मंडली में दसवीं पीढ़ी
लों प्रवेश न करे कोई उन में से सनातन लों परमेश्वर की
४ मंडली में प्रवेश न करेगा। इस कारण कि जब तुम मिस्र से
निकले उन्हों ने पंथ में अन्न जल लेके तुम से भेंट न किई
और इस कारण कि उन्हों ने बऊर के पुत्र बलआम को अरम
५ नहरैन के फ़तूर से बुलाया जिसतें तुझे स्राप देवे। तथापि
परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तेरे लिये श्राप को आशीष की संती पलट
६ दिया क्योंकि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझ पर प्रेम किया। जीवन
भर सदा लों तू उन का कुशल और उन की भलाई न चाहना।
७ किसी अदूमी से घिन न करना क्योंकि वुह तेरा भाई है किसी
मिस्री से घिन न करना क्योंकि तू उस के देश में परदेशी

८ था। उन की तीसरी पीढ़ी के जो लड़के उत्पन्न हों परमेश्वर
की मंडली में प्रवेश करें॥

९ जब तू सेना में अपने बैरियों पर चढ़े तब हर एक पाप
१० से आप को बचा रखना। यदि तुझ में कोई पुरुष रात्री की
अशुद्धता के कारण अशुद्ध होवे तो वुह छावनी से बाहर निकल
११ जावे वुह छावनी के भीतर न आवे। परन्तु संध्या के समय
में जल से स्नान करे और जब सूर्य्य अस्त हो चुके तब छावनी
१२ में आवे। और छावनी के बाहर तेरे लिये एक स्थान होगा
१३ और वहां बाहर निकलके जाया करना। और तेरे पास तेरे
हथियार पर एक खंती होवे और जब तू बाहर जाके बैठे तो
१४ उस्से खोदना और मल को ढांप देना। इस लिये कि परमेश्वर
तेरा ईश्वर तेरी छावनी के मध्य में फिरता है कि तुझे बचावे
और तेरे बैरियों को तेरे वश में करे सो तेरी छावनी पवित्र
रहे न होवे कि वुह तेरे मध्य में किसी वस्तु की अशुद्धता
देखे और तुझ से फिर जावे॥

१५ यदि किसी का सेवक अपने स्वामी से भागके तुझ पास
१६ आवे तू उसे उस के स्वामी को मत सौंप। वुह तेरे स्थानों
में से जहां चाहे तहां तेरे मध्य में रहे तेरे फाटकों में से किसी
एक में जो उसे अच्छा लगे तू उसे क्लेश मत देना॥

१७ इसराएल की बेटियों में बेश्या न हों और न इसराएल के
१८ बेटों में पुरुषगामी हों। तू किसी छिनाल की कमाई अथवा कुत्ते
का मोल किसी मनौती में परमेश्वर अपने ईश्वर के मन्दिर में
मत लाइयो क्योंकि ये दोनों परमेश्वर तेरे ईश्वर से घिनित हैं॥

१९ तू अपने भाई को बियाज पर ऋण मत देना रोकड़
अनाज अथवा और कोई वस्तु जो बियाज पर दिई जाती है
२० बियाज पर मत देना। परदेशी को बियाज पर उधार दे सके
परन्तु अपने भाई को बियाज पर उधार मत देना जिसतें

परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का तू अधिकारी होने
जाता है जिस जिस काम में तू हाथ लगावे तुझे आशीष
देवे ॥
२१ जब तू ने कोई मनोती परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मानी
उसे पूरी करने में बिलम्ब मत कर क्योंकि परमेश्वर तेरा
ईश्वर निश्चय तुझ से उस का लेखा लेगा और तुझ पर पाप
२२ लगेगा । परन्तु यदि तू कुछ मनोती न माने तो तुझ पर पाप
२३ न लगेगा । जो कुछ तेरे मुंह से निकला अर्थात् बांछा की भेंट
जैसा तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मानी है जिसे तू ने
अपने मुंह से प्रण किया है उसे मान और पूरी कर ॥
२४ जब तू अपने परोसी के दाख की बारी में जावे तब जितने
दाख चाहे अपनी इच्छा भर खा परन्तु अपने पात्र में मत
२५ रख । जब तू अपने परोसी के अन्न के खेत में जावे तब अपने
हाथ से बालें तोड़ सके परन्तु अपने भाई का खेत हंसुआ से
मत काट ॥

चौबीसवां पर्व्व ।

१ जब कोई पुरुष पत्नी से ब्याह करे और उस के पीछे ऐसा
हो कि वुह उस की दृष्टि में अनुग्रह न पावे इस कारण कि
उस ने उस में कुछ अशुद्ध बात पाई तो वुह त्यागपत्र लिखके
२ उस के हाथ में देवे और उसे अपने घर से बाहर करे । और
जब वुह उस के घर से निकल गई तब वुह दूसरे पुरुष की हो
३ सके । और दूसरा पति भी उसे देख न सके और उस के लिये
त्यागपत्र लिखके उस के हाथ में देवे और उसे अपने घर में से
४ निकाल देवे अथवा दूसरा उसे पत्नी करके मर जावे । तो उचित
नहीं कि उस का पहिला पति जिस ने उसे निकाल दिया था जब
वुह अशुद्ध हो चुकी उसे फिर लेके पत्नी करे क्योंकि वुह परमेश्वर

के आगे घिनित है सो उस देश को अशुद्ध मत कर जिस का
अधिकारी परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करता है॥
५ जब किसी का नया विवाह होवे तब वुह लड़ाई को न
जावे और उस्से कुछ कार्य्य न लिया जावे परन्तु वुह एक बरस
अपने घर में अवकाश से रहे और अपनी पत्नी को जिसे उस
ने व्याहा बहलावे॥
६ कोई मनुष्य किसी की चक्की के ऊपर का अथवा नीचे का
पाट बंधक न रक्खे क्योंकि वुह जीवन को बंधक रखता है॥
७ यदि कोई मनुष्य इसराएल के संतानों में से अपने किसी भाई
को चुराते हुए पकड़ा जावे और उस का ब्योपार करे अथवा उसे
बेचे तो वुह चोर मारा जावे और तू बुराई को अपने में से
दूर कर॥
८ चौकस रह कि कोढ़ की मरी में तू चौकसी से देख और
सब जो लावी याजक तुम्हें सिखावें उस की रीति पर चल
९ जैसी मैं ने तुझे आज्ञा किई है वैसा ही करना। चेत कर कि
जब तुम मिस्र से निकले परमेश्वर तेरे ईश्वर ने मार्ग में मिरयम
से क्या किया॥
१० जब तू अपने भाई को कोई वस्तु मंगनी अथवा उधार
देवे तब उस का बंधक लेने को उस के घर में मत पैठ।
११ तू बाहर खड़ा रह और उधारनिक आप अपना बंधक तेरे
१२ पास बाहर लावेगा। और यदि वुह कंगाल होवे तो तू उस के
१३ बंधक को रखके मत लेट रह। किसी भांति से जब सूर्य्य
अस्त होने लगे उस का बंधक उसे फिर देना जिसतें वुह
अपने वस्त्र में सोवे और तुझे आशीष देवे सो तुझे परमेश्वर
तेरे ईश्वर के आगे धर्म्म होगा॥
१४ ऐसा न हो कि तू कंगाल और दीन बनिहार को सतावे
चाहे वुह तेरे भाइयों में से हो अथवा तेरे परदेशियों में से जो

१५ तेरे देश में तेरे फाटकों में रहते हैं। तू उस दिन सूर्य्य
अस्त होने से पहिले उस की बनी दे डालना क्योंकि वुह
दरिद्र है और उस का मन उसी में है न हो कि परमेश्वर के
आगे तुझ पर दोष देवे और तुझ पर पाप ठहरे ॥
१६ संतान की संती पितर मारे न जावें न पितरों की संती
संतान मारे जावें हर एक अपने ही पाप के कारण मारा
जावेगा ॥
१७ तू परदेशी और अनाथ के बिचार को मत बिगाड़ और
१८ विधवा का कपड़ा बंधक मत रख। परन्तु चेत कर कि तू
मिस्र में बंधुआ था और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे वहां से
छुड़ाया इस लिये मैं तुझे यह कार्य्य करने को आज्ञा करता
हूं ॥
१९ जब तू अपने खेत में कटनी करे और एक गट्ठी खेत में
भूलके छूट जावे तो उस के लेने को फिर मत जा वुह परदेशी
और अनाथ और बिधवा के लिये रहे जिसतें परमेश्वर तेरा
२० ईश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्य्यों में तुझे आशीष देवे। जब
तू अपने जलपाई के वृक्ष को झारे तो फिरके उस की डालियों
को मत झाड़ वुह परदेशी अनाथ और बिधवा के लिये रहे।
२१ जब तू अपनी बारी के दाख एकट्ठा करे तो अपने पीछे मत
२२ बीन्ना वुह परदेशी अनाथ और बिधवा के लिये रहे। और
चेत कर कि तू मिस्र के देश में बंधुआ था इस लिये मैं तुझे
यह कार्य्य करने को आज्ञा देता हूं ॥

पचीसवां पर्ब्ब ।

१ यदि लोगों में झगड़ा होवे और धर्म्मसभा में आवें कि
न्यायी उन का न्याय करे तो वे धर्म्मी को निष्पापी और दुष्ट
२ को पापी ठहरावें। और यदि वुह दुष्ट पीटे जाने के योग्य

होवे तो न्यायी उसे लेटवावे और जैसा उस का अपराध होवे
३ न्यायी अपने आगे ठहराये हुए के समान उसे पिटावे। चालीस
कोड़े उसे मारें उस्से बढ़ती नहीं न होवे कि यदि वुह उस्से बढ़
जावे और इन्हों से बहुत अधिक मारे तब तेरा भाई तेरे आगे
तुच्छ समझा जावे॥
४ दांवने के समय में बैल का मुंह मत बांध॥
५ यदि कोई भाई एकट्ठे रहें और उन में से एक निर्वंश मर
जावे तो उस मृतक की पत्नी का बिवाह किसी परदेशी से न
किया जावे परन्तु उस का दूसरा कुटुम्ब उसे ग्रहण करे और
उसे अपनी पत्नी करे और पति के भाई का व्यवहार उस्से करे।
६ और यों होगा कि जो पहिलौठा वुह जने वुह उस के मृतक भाई
के नाम पर स्थापित होवे जिसतें उस का नाम इसराएल में से न
७ मिटे। और यदि वुह पुरुष अपने कुटुम्ब की पत्नी को लेने न चाहे
तो उस के भाई की पत्नी प्राचीनों पास फाटक पर जावे और कहे
कि मेरे पति का भाई इसराएल में अपने भाई के नाम को स्थापने
से नाह करता है मेरे पति का भाई मुझे अपनी पत्नी नहीं
८ किया चाहता है। तब उस के नगर के प्राचीन उस पुरुष को
बुलाके उसे समझावें यदि वुह उसी पर खड़ा होवे और कहे
९ कि मैं उसे लेने नहीं चाहता। तो उस के भाई की पत्नी
प्राचीनों के सन्मुख उस के पास आवे और उस के पावों से
जूती खोले और उस के मुंह पर थूक देवे और उत्तर देके कहे
कि उस मनुष्य की यही दशा होगी जो अपने भाई के घर
१० को न बनावे। और इसराएल में उस का यह नाम रक्खा
जावेगा कि यह उस जन का घर है जिस का जूता खोला
गया॥
११ जब मनुष्य आपुस में लड़ते हों और एक की पत्नी आवे
कि अपने पति को उस के हाथ से जो उसे मार रहा है

१२ छुड़ावे और अपना हाथ बढ़ाके उस के गुप्तों को पकड़े। तो
तू उस का हाथ काट डालना तेरी आंख उस पर दया न
करे ॥
१३। १४ तू अपने थैले में बड़े छोटे बटखरे न रखना। अपने
१५ घर में छोटा बड़ा नपुआ मत रखना। पूरे और ठीक बटखरे
रखना और पूरे और ठीक नपुए रखना जिसतें उस देश में
जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है तेरा जीवन बढ़ जावे।
१६ क्योंकि सब जो ऐसा अधर्म्म करते हैं परमेश्वर तेरे ईश्वर
से घिनित हैं ॥
१७ चेत कर कि जब तू मिस्र से निकला तब मार्ग में अमालीक़
१८ ने तुझ से क्या किया। मार्ग में तुझ पर क्योंकर चढ़ आया
जब तू मूर्छित और थका था तब उस ने तेरे पीछे के सब
लोगों को जो दुर्बल पिछरे हुए थे मारा और वुह ईश्वर से न
१९ डरा। इस लिये ऐसा होगा कि जब परमेश्वर तेरा ईश्वर उस
देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे अधिकार के लिये तुझे
देता है तुझे तेरे चारों ओर के वैरियों से चैन देवे तब तू
स्वर्ग के तले से अमालीक़ के नाम को मिटा डालना इसे मत
भूलना ॥

छब्बीसवां पर्ब्ब ।

१ और जब तू उस देश में प्रवेश करे जिस का अधिकारी
परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे करता है और उसे वश में करे और
२ उस में बसे। तब तू उस देश का जो परमेश्वर तेरा ईश्वर
तुझे देता है समस्त फलों का पहिला जिसे तू भूमि से लेके
पहुंचावेगा एक टोकरे में रखके उस स्थान में ले जा जिसे
परमेश्वर तेरा ईश्वर अपने नाम को स्थापन करने के लिये
३ चुनेगा। और उन दिनों में जो याजक होगा उस के पास जा

ग्रीर उस्से कह कि ग्राज परमेश्वर तेरे ईश्वर के ग्रागे प्रगट करता हूं
कि मैं ने उस देश में जिस के विषय में परमेश्वर ने हमारे पितरों से
४ किरिया खाके हमें देने को कहा था प्रवेश किया। ग्रीर याजक
वुह टोकरा तेरे हाथ से लेके उसे परमेश्वर तेरे ईश्वर की बेदी
५ के ग्रागे रख देवे। तब तू परमेश्वर ग्रपने ईश्वर के ग्रागे बिनती
करके यों कहना कि मेरा पिता ग्ररामी जो मरने पर था ग्रीर वुह
मिस्र में उतरा ग्रीर उस ने थोड़े लोगों के साथ वहां वास किया
६ ग्रीर वहां एक ग्रति बलवंत ग्रीर बड़ी जाति बना। ग्रीर मिस्रियों
ने हम से बुरा व्यवहार किया ग्रीर हमें सताया ग्रीर हम से
७ कठिन सेवा कराई। ग्रीर जब हम ने परमेश्वर ग्रपने पितरों
के ईश्वर के ग्रागे दोहाई दिई तब परमेश्वर ने हमारा शब्द
सुना ग्रीर हमारी बिपत्ति ग्रीर हमारे परिश्रम ग्रीर हमारे ग्रंधेर
८ को देखा। ग्रीर परमेश्वर सामर्थी हाथ ग्रीर बढ़ाई हुई भुजा
ग्रीर महा ग्राश्चर्य्यित ग्रीर ग्रद्भुत लक्षणों के हाथ से निकाल
९ लाया। ग्रीर हमें इस स्थान में लाया ग्रीर उस ने हमें यह देश
१० दिया जिस में दूध ग्रीर मधु बहता है। ग्रीर ग्रब देख मैं
इस देश के पहिले फल जिसे हे परमेश्वर तू ने मुझे दिया
लाया हूं सो तू परमेश्वर ग्रपने ईश्वर के ग्रागे उसे रख देना
११ ग्रीर परमेश्वर ग्रपने ईश्वर के ग्रागे दण्डवत करना। ग्रीर तू
ग्रीर लावी ग्रीर परदेशी जो तेरे मध्य में होवे मिलके हर एक
भलाई पर जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे ग्रीर तेरे घराने पर
किई है ग्रानन्द करना॥

१२ जब तू तीसरे बरस जो दशांश का बरस है ग्रपनी समस्त
बढ़ती के दसवें ग्रंश को पूरा करेगा तब तू उसे लावी परदेशी
ग्रनाथ ग्रीर बिधवा को देना जिसतें वे तेरे फाटकों के
१३ भीतर खावें ग्रीर तृप्त होवें। तब तू परमेश्वर ग्रपने ईश्वर के
ग्रागे यों कहना कि मैं ग्रपने घर से पवित्र वस्तें लाया हूं

लावी और परदेशी अनाथ और बिधवा को तेरी समस्त आज्ञा
के समान जो तू ने मुझे किया और मैं ने तेरी आज्ञाओं से
१४ बिरुद्ध न किया और न उन्हें भूला। मैं ने उस में से
अपनी बिपत्ति में न खाया और मैं ने उस में से किसी अशुद्ध
बात में न उठाया और न उस में से कुछ मृतकों के लिये दे डाला
मैं ने परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को माना जो कुछ तू ने मुझे
१५ आज्ञा किई है मैं ने उन सभों के समान किया। अपने पवित्र
निवास स्वर्ग पर से नीचे दृष्टि कर और अपने इसराएल लोगों
को और इस भूमि को जिसे तू ने हमें दिया है आशीष दे
जैसी तू ने हमारे पितरों से किरिया खाई एक देश जिस में
दूध और मधु बहता है॥

१६ आज के दिन परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे इन बिधिन और
बिचारों को पालन करने की आज्ञा दिई इस लिये उन्हें पालन
कर और अपने सारे मन और अपने सारे प्राण से उन्हें मान।
१७ तू ने आज के दिन मान लिया है कि परमेश्वर मेरा ईश्वर है
और मैं उस के मार्गों पर चलूंगा और उस की बिधिन को और
उस की आज्ञाओं को और उस के बिचारों को पालन करूंगा
१८ और उस के शब्द को सुनूंगा। और परमेश्वर ने भी आज के
दिन मान लिया है कि तू उस का निज लोग होवे जैसा उस
ने तुझ से कहा है और तू उस की समस्त आज्ञाओं को पालन
१९ करे। और तुझे समस्त जातिगणों से जिन्हें उस ने उत्पन्न
किया बड़ाई और नाम और प्रतिष्ठा में अधिक बढ़ावे और कि
तू परमेश्वर अपने ईश्वर का पवित्र लोग होवे जैसा उस ने
कहा॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब।

१ फिर मूसा ने इसराएल के प्राचीनों के साथ होके लोगों को

आज्ञा करके कहा कि उस समस्त आज्ञा को जो आज के दिन
२ में तुम्हें कहता हूं पालन करो। और यों होगा कि जिस दिन
तुम यरदन पार होके उस देश में पहुंचो जो परमेश्वर तेरा
ईश्वर तुझे देता है तब तू अपने लिये बड़े बड़े पत्थर खड़े
३ करना और उन पर गच करना। और जब तू पार उतरे तब
इस व्यवस्था के समस्त बचनों को उन पर लिखना जिसतें तू
उस देश में प्रवेश करे जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है
वुह एक देश है जिस में दूध और मधु बहता है जैसा परमेश्वर
४ तेरे पितरों के ईश्वर ने तुझे देने को बाचा बांधी है। सो जब
तुम यरदन के पार उतर जाओ तब तुम इन पत्थरों को जिन
के विषय में मैं तुम्हें आज के दिन आज्ञा करता हूं ऐबाल
५ के पहाड़ पर खड़ा करना और उन पर गच फेरना। और वहां
परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये बेदी पत्थरों की एक बेदी बनाना
६ उन पर लोहा न उठाना। तू परमेश्वर अपने ईश्वर की
बेदी ढोकों से बनाना और उस पर परमेश्वर अपने ईश्वर के
७ लिये बलिदान की भेंट चढ़ाना। और कुशल की भेंट चढ़ाना
और वहीं खाना और परमेश्वर अपने ईश्वर के आगे आनन्द
८ करना। और उन पत्थरों पर इस व्यवस्था के समस्त बचन
खोलके लिखना॥

९ फिर मूसा और लावी याजकों ने समस्त इसराएलियों से
कहा कि हे इसराएल चौकस हो और सुन तू आज के दिन
१० परमेश्वर अपने ईश्वर की मंडली हुआ। सो परमेश्वर अपने
ईश्वर के शब्द को मान और उस की आज्ञाओं को और उस
की विधिन को पालन कर जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा
करता हूं॥

११ और मूसा ने उस दिन मंडली को आज्ञा करके कहा।
१२ कि जब तुम यरदन पार जाओ तब शमऊन और लावी और

यहूदाह और इशकार और यूसुफ़ और बिनयमीन जरिज़ीम के
१३ पहाड़ पर खड़े होके लोगों को आशीष देवें। और रूबिन
और जद और यसर और ज़बुलून और दान और नफ़ताली
१४ ऐबाल के पहाड़ पर स्राप देने के लिये खड़े होवें। और लावी
इसराएल के समस्त पुरुषों को बड़े शब्द से कहें॥
१५ कि वुह जन स्रापित है जो खोदके अथवा ढालके मूर्त्ति
बनावे जो परमेश्वर के आगे घिनित है और कार्य्यकारी के
हाथ की बनाई हुई है और गुप्त स्थान में रक्खे तब समस्त
१६ मंडली उत्तर देके कहे आमीन। जो कोई अपने माता पिता
की निन्दा करे वुह स्रापित और समस्त लोग बोलें आमीन।
१७ जो अपने परोसी के सिवाने के चिन्ह को हटावे सो स्रापित
१८ और समस्त लोग कहें आमीन। जो अंधे को मार्ग से बहकावे
१९ सो स्रापित और समस्त लोग कहें आमीन। जो परदेशी अनाथ
और विधवा के बिचार को बिगाड़ देवे सो स्रापित और समस्त
२० लोग कहें आमीन। जो अपने पिता की पत्नी के साथ कुकर्म्म
करे सो स्रापित क्योंकि उस ने अपने पिता की नग्नता उघारी
२१ और समस्त लोग कहें आमीन। जो किसी प्रकार के पशु से
२२ कुकर्म्म करे सो स्रापित और समस्त लोग कहें आमीन। जो
कोई अपनी बहिन अपनी माता अथवा अपने पिता की पुत्री
के साथ कुकर्म्म करे सो स्रापित और समस्त लोग कहें आमीन।
२३ जो कोई अपनी सास के संग कुकर्म्म करे सो स्रापित और
२४ समस्त लोग कहें आमीन। जो कोई अपने परोसी को छिपके
२५ मारे सो स्रापित और समस्त लोग कहें आमीन। जो कोई
घूस लेके किसी निर्दोषी को घात करे सो स्रापित और समस्त
२६ लोग कहें आमीन। जो कोई इस व्यवस्था के बचनों को पालन
करने को स्थिर न रहे सो स्रापित और समस्त लोग कहें
आमीन॥

अट्ठाईसवां पर्व्व ।

१ और ऐसा होगा कि यदि तू ध्यान से परमेश्वर अपने ईश्वर
का शब्द सुनेगा और चेत में रखके उस की समस्त आज्ञाओं
को मानेगा जो आज के दिन में तुझे आज्ञा करता हूं तो
परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे पृथिवी के समस्त जातिगणों में श्रेष्ठ
२ करेगा। और यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को सुनेगा
तो ये समस्त आशीष तुझ पर आवेंगे और तुझे जा ही लेंगे।
३ । ४ तू नगर में धन्य और खेत में धन्य होगा। तेरे शरीर
का और तेरी भूमि का फल और तेरे ढोर का फल तेरी गाय
५ बैल की बढ़ती और तेरे भेड़ के झुंड धन्य। तेरा टोकरा
६ और तेरा कठरा धन्य। तू अपने बाहर भीतर आने जाने
७ में धन्य। परमेश्वर तेरे बैरियों को जो तेरे विरुद्ध उठेंगे तेरे
सन्मुख मारेगा वे एक मार्ग से तुझ पर चढ़ आवेंगे और सात
८ मार्गों से तेरे आगे से भाग निकलेंगे। परमेश्वर तेरे भंडार पर
और तेरे हाथ के समस्त कार्य्यों पर तेरे लिये आशीष की आज्ञा
करेगा और उस देश में जो परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे देता है
९ तुझे आशीष देगा। यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं
को पालन करे और उस के मार्गों पर चले तो परमेश्वर तुझे
अपना पवित्र लोग बनावेगा जैसा उस ने तुझ से किरिया खाई
१० है। और पृथिवी के समस्त लोग देखेंगे कि तू परमेश्वर के
११ नाम से प्रसिद्ध है सो वे तुझ से डरते रहेंगे। और परमेश्वर
तेरी संपत्ति में तेरे शरीर के फल में और तेरे ढोर के
फल में और तेरी भूमि के फल में उस भूमि पर जिस के
विषय में परमेश्वर ने तेरे पितरों से किरिया खाके कहा कि
१२ तुझे देउंगा तुझे बढ़ती देगा। परमेश्वर अपना सुथरा भंडार
तेरे आगे खोलेगा कि आकाश तेरे देश पर ऋतु में जल

बरसावेगा और तेरे हाथ के समस्त कार्य्यों में आशीष देगा
और तू बहुत से जातिगणों को ऋण देगा परन्तु तू ऋण न
१३ लेगा। और परमेश्वर तुझे सिर बनावेगा और पोंछ नहीं और
तू केवल ऊंचा होगा और नीचा न होगा आज के दिन जो
आज्ञा मैं तुझे करता हूं यदि तू उन आज्ञाओं को सुने और
१४ पालन करके माने। और तू उन सब बातों में जो आज के
दिन मैं तुम्हें आज्ञा करता हूं दहिने बायें न मुड़े अरु और
देवतों का पीछा करके उन की सेवा न करे॥
१५ परन्तु यदि तू परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द न सुनेगा
और ध्यान करके उस की समस्त आज्ञाओं को और उस की
विधिन को जो आज के दिन मैं तुझे आज्ञा करता हूं न मानेगा
तो ये समस्त स्राप तुझ पर आवेंगे और तुझे जा ही लेंगे।
१६। १७ तू नगर में स्रापित और तू खेत में स्रापित। तेरा टोकरा
१८ और तेरी थाल स्रापित। तेरे शरीर का फल और तेरी भूमि
का फल तेरी गाय बैल की बढ़ती और तेरी भेड़ बकरी के
१९ झुंड स्रापित। तू अपने बाहर भीतर आने जाने में स्रापित।
२० परमेश्वर तेरे हाथ के समस्त कार्य्यों में तुझ पर स्राप झंझट
और दपट भेजेगा यहां लों कि तू नाश हो जावे और शीघ्र
मिट जावे तेरी करनी की दुष्टता के कारण जिस्से तू ने
२१ मुझे त्याग किया। परमेश्वर तुझ पर मरी संयुक्त करेगा यहां
लों कि तुझे उस भूमि से मिटा डालेगा जिस का तू अधिकारी
२२ होने जाता है। परमेश्वर तुझे क्षयी और ज्वर और ज्वाला
और अत्यंत ज्वलन और पियास और झुलुस से और लेंढ़ा से
२३ मारेगा और वे तुझे रगेद रगेद के नाश करेंगे। और तेरे सिर
पर का स्वर्ग पीतल और तेरे तले की पृथिवी लोहे की होगी।
२४ परमेश्वर तेरे देश का बरसना बुकनी और धूल बना डालेगा
यह स्वर्ग से तुझ पर उतरेगा जब लों तू नाश न हो जावे।

२५ परमेश्वर तुझे तेरे बैरियों के आगे मारेगा तू एक मार्ग से उन
पर चढ़ जावेगा और उन के आगे सात मार्गों से भागेगा और
२६ पृथिवी के समस्त राज्यों में निकाला जावेगा। और तेरी लोथ
आकाश के समस्त पक्षियों का और बन के पशुन का भोजन
२७ हो जावेगी और कोई उन्हें न हांकेगा। परमेश्वर तुझे मिस्र के
फोड़े और बवासी और दिनाय और खजुली से मारेगा उन से
२८ तू कधी चंगा न होगा। परमेश्वर तुझे बौड़हापन और अंधापन
२९ और मन की घबराहट से मारेगा। और जिस रीति से कि
अंधा अंधेरे में टटोलता है तू दोपहर दिन को टटोलता
फिरेगा और तू अपने मार्गों में भाग्यमान न होगा और केवल
३० तुझ पर अंधेर हुआ करेगा और कोई न बचावेगा। तू पत्नी
से मंगनी करेगा और दूसरा उसे ग्रहण करेगा तू घर बनावेगा
परन्तु उस में वास न करेगा तू दाख की बारी लगावेगा परन्तु
३१ उस का फल न खावेगा। तेरा बैल तेरी आंखों के साम्ने मारा
जावेगा और तू उस्से न खावेगा तेरा गदहा तेरे आगे से बरबस
लिया जावेगा और तुझे फेरा न जावेगा तेरी भेड़ बकरियां तेरे
३२ बैरियों को दिई जावेंगी और कोई तेरे लिये न छुड़ावेगा। तेरे बेटे
और तेरी बेटियां और लोगों को दिई जावेंगी और तेरी आंखें
देखेंगी और दिन भर उन के लिये कुढ़ते कुढ़ते घट जावेंगी
३३ और तेरे हाथ में कुछ बूता न रहेगा। तेरी भूमि का और
तेरे सारे परिश्रम का फल एक जाति जिसे तू नहीं जानता
खा जावेगी और तुझ पर नित्य केवल अंधेर होगा और पिसा
३४ जावेगा। यहां लों कि तू आंखों से देखते देखते बौड़हा हो
३५ जावेगा। परमेश्वर तुझे घुटनों में और टांगों में ऐसे बुरे फोड़ों से
मारेगा कि तू अपने पांव के तलवे से अपनी चांदी ताईं चंगा न
३६ हो सकेगा। परमेश्वर तुझे और तेरे राजा को जिसे तू अपने ऊपर
स्थापित करेगा उस जाति के पास ले जावेगा जिसे तू और तेरे

पितरों ने न जाना और वहां तू लकड़ी पत्थर के देवतों की
३७ पूजा करेगा । और तू उन सब जातियों में जहां जहां परमेश्वर
तुझे पहुंचावेगा एक आश्चर्य्य और कहावत और आलाहना
३८ होगा । तू खेत में बहुत से बीज बोयेगा और थोड़ा बटोरेगा
३९ क्योंकि उन्हें टिड्डी चाट लेंगी । तू दाख की बारी लगावेगा
और उस की सेवा करेगा और मदिरा पीने और दाख
४० एकट्ठा करने न पावेगा क्योंकि उन्हें कीड़े खा जावेंगे । तेरे
समस्त सिवानों में जलपाई के पेड़ होंगे परन्तु तू चिकनाई
४१ लगाने न पावेगा क्योंकि तेरी जलपाई झड़ जावेगी । तू
बेटे बेटियां जन्मावेगा और वे तेरे न होंगे क्योंकि वे बंधुआई
४२ में जावेंगे । तेरे समस्त पेड़ को और तेरी भूमि के फल को टिड्डी
४३ चाट जावेंगी । परदेशी जो तेरे मध्य में होगा तुझ से प्रबल
४४ और ऊंचा होगा और तू नीचा हो जावेगा । वुह तुझे उधार
देगा परन्तु तुझ से उधार न लेगा वुह सिर होगा और तू पोंछ
होगा ॥

४५ और ये समस्त स्राप तुझ पर आवेंगे और तेरे पीछे पड़ेंगे
और तुझे जा ही लेंगे जब लों तू नाश न होवे क्योंकि तू ने
परमेश्वर अपने ईश्वर के शब्द को न सुना कि उस की आज्ञाओं
को और उस की बिधिन को पालन करता जैसी उस ने तुझे
४६ आज्ञा किई है । और वे तुझ पर और तेरे बंश पर सदा के
४७ लिये चिन्ह और आश्चर्य्य होंगे । इस कारण कि तू ने समस्त
बहुताई के लिये मन की आनन्दता और मगनता से परमेश्वर
४८ अपने ईश्वर की सेवा न किई । इस लिये तू भूख में और
पियास में और नम्रता में और दरिद्रता में अपने बैरियों की
सेवा करेगा जिन्हें परमेश्वर तुझ पर भेजेगा और वुह तेरे कंधे
पर लोहे का जुआ डालेगा जब लों तुझे नाश न कर लेवे ।
४९ परमेश्वर दूर से एक जाति को पृथिवी के अंत सिवाने से

एक ऐसी जाति जैसा गिद्ध उड़ता है तुझ पर चढ़ा लावेगा
५० एक जाति जिस की भाषा तू न समझेगा। भयंकर रूप की
५१ जाति जो न बूढ़ों को समझेगी न तरुण पर दया करेगी। और
वुह तेरे ढोर का फल और तेरी भूमि का फल खा जावेगी
जब लों तू नाश न हो जावे जो तेरे लिये अन्न और दाखरस
अथवा तेल अथवा तेरी गाय बैल की बढ़ती अथवा तेरी भेड़
५२ बकरी की झुंड न छोड़ेगी जब लों तुझे नाश न करे। और
वे तुझे तेरे हर एक फाटकों में आ घेरेंगे यहां लों कि तेरी
ऊंची और दृढ़ भीतें जिन पर तू ने अपने समस्त देश में
भरोसा किया था गिर जावेंगी और वे तुझे तेरे उस समस्त
देश में जो परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे दिया है तेरे हर एक
५३ फाटकों में आ घेरेंगे। और सकेती और कष्ट में जो तेरे
बैरियों के कारण से तुझ पर पड़ेंगे तू अपनी देह का फल और
अपने बेटे बेटियों का मांस खावेगा जिन्हें परमेश्वर तेरे ईश्वर
५४ ने तुझे दिया है। उस जन की आंखें जो तुम में कोमल और
अति सुकुआर होगा अपने भाई और अपनी गोद की पत्नी और
५५ अपने बचे हुए लड़कों से बुरी हो जावेंगी। यहां लों कि वुह
अपने बालक के मांस में से जिसे वुह खावेगा उन में से किसी
को कुछ न देगा इस कारण कि उस सकेती और क्लेश में जो
तेरे बैरियों के कारण से तेरे समस्त फाटकों में तुझ पर होंगे
५६ उस के लिये कुछ न बचेगा। तुझ में कोमल और सुकुआर स्त्री
जो कोमलता और सुकुआरी के मारे अपने पांवों को भूमि पर
न धरती थी अपनी गोद के पति और अपने बेटा बेटी की
५७ ओर से उस की आंखें बुरी हो जावेंगी। और अपने नन्हें
बालक से जो उस्से उत्पन्न होगा और अपने लड़कों से जिन्हें
वुह जनेगी क्योंकि वुह सकेती के कारण से जो तेरे बैरी तेरे
फाटकों में तुझ पर लावेंगे छिपके उन्हें खावेगी॥

५८ यदि तू पालन करके इस व्यवस्था के समस्त बचनों पर
जो इस पुस्तक में लिखे हैं न चलेगा जिसतें तू उस के
तेजमय और भयंकर नाम से जो परमेश्वर तेरा ईश्वर है न डरे।
५९ तब परमेश्वर तेरी मरियों को और तेरे बंश की मरियों को
अर्थात् बड़ी बड़ी मरियों को जो बहुत दिन ताईं रहेगी और
बड़े बड़े रोगों को जो बहुत दिन लों रहेंगे आश्चर्य्यित
६० बनावेगा। और मिस्र के सारे रोग जिन से तू डरता था तुझ
६१ पर लावेगा और वे सब तुझ पर चिपकेंगे। हर एक रोग भी
और हर एक मरी जो इस व्यवस्था की पुस्तक में नहीं लिखी
है परमेश्वर तुझ पर पहुंचावेगा जब लों तू नाश न होवे।
६२ और जैसा कि तुम लोग स्वर्ग के तारों की नाईं थे गिनती में
थोड़े से रह जाओगे क्योंकि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर
६३ के शब्द को न माना। और ऐसा होगा कि जिस रीति से
परमेश्वर ने तुम पर आनन्द होके तुम्हारे साथ भलाई करके
तुम्हें बढ़ाया उसी रीति से परमेश्वर तुम्हें नाश करके मिटा
देने में आनन्दित होगा और तुम उस भूमि पर से उखाड़े जाओगे
६४ जिस का अधिकारी तू होने जाता है। और परमेश्वर तुझे समस्त
जातियों में पृथिवी के इस खूंट से उस खूंट लों छिन्न भिन्न करेगा
और वहां तू और देवतों की जो काष्ठ और पत्थर हैं जिन्हें
६५ तू और तेरे पितर नहीं जानते थे पूजा करेगा। और उन
जातिगणों में तुझ को चैन न मिलेगा और न तेरे पांवों के तलवों
को विश्राम मिलेगा परन्तु परमेश्वर वहां तुझे कंपित मन और
६६ धुंधली आंखें और मन की उदासी देगा। और तेरा जीवन
तेरे आगे दुबिधा में टंगा रहेगा और तू रात दिन डरता
६७ रहेगा और तेरे जीवन का भरोसा न रहेगा। अपने मन के
डर से जिस्से तू डरेगा और उन वस्तुन से जिन्हें तेरी आंखें
देखेंगी बिहान को तू कहेगा कि हाय कब सांझ होगी और

६८ सांझ को कि हाय कब बिहान होगा। और परमेश्वर तुझे उस
मार्ग से जिस के विषय में मैं ने तुझे कहा कि तू उसे फिर
न देखेगा तुझे जहाज़ों में मिस्र को फेर लावेगा और तुम
वहां दासों और दासियों की नाईं अपने बैरियों के हाथ बेचे
६९ जाओगे और कोई मोल न लेगा। ये उस नियम की बातें हैं
जो परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई कि मोअब की भूमि में
इसराएल के संतानों से करे उस नियम को छोड़ जो उस ने
उन से होरिब में किया था॥

उन्तीसवां पर्ब्ब।

१ और मूसा ने समस्त इसराएल को बुलाके उन्हें कहा जो
कुछ कि परमेश्वर ने तुम्हारी आंखों के आगे मिस्र के देश में
फ़िरऊन और उस के समस्त सेवकों और उस के समस्त देश
से किया तुम ने देखा है॥
२ वे बड़ी बड़ी परिक्षा जिन्हें तेरी आंखों ने देखा है वे लक्षण
३ और वे बड़े बड़े आश्चर्य्य। तथापि परमेश्वर ने तुम्हें समझने
का मन और देखने की आंखें और सुन्ने के कान आज लों न
४ दिये। और मैं तुम्हें चालीस बरस बन में लिये फिरा तुम
पर तुम्हारे कपड़े पुराने न हुए न तेरे जूते तेरे पांवों
५ में पुराने हुए। तुम ने रोटी न खाई और तुम ने मदिरा
अथवा मद्य न पिया जिसतें तुम जानो कि मैं परमेश्वर तुम्हारा
६ ईश्वर हूं। और जब तुम इस स्थान में आये तब हसबून का
राजा सैहून और बसन का राजा ऊज संग्राम के लिये हम
७ पर चढ़ आये और हम ने उन्हें मारा। और हम ने उन का
देश ले लिया और उसे रूबीनियों और जद्दियों और मुनस्सी की
८ आधी गोष्ठी को अधिकार में दिया। सो तुम इस नियम की
बातों को पालन करो और उन्हें मानो जिसतें अपने सब कामों

९ में भाग्यमान होओ। आज के दिन तुम तुम्हारे प्रधान
तुम्हारी गोष्ठियां तुम्हारे प्राचीन और तुम्हारे करोड़े अर्थात्
समस्त इसराएल के लोग परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर के आगे खड़े
होते हैं ॥

१० तुम्हारे बालक तुम्हारी पत्नियां और तेरे परदेशी जो तेरी
११ छावनी में रहते हैं तेरे लकड़हारे से लेके तेरे पनभरे लों। जिसतें
तू परमेश्वर अपने ईश्वर के उस नियम और किरिया में प्रवेश करे
१२ जिसे परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझ से आज के दिन करता है। जिसतें
वुह आज के दिन तुझे अपने लिये एक लोग स्थिर करे कि
वुह तेरा ईश्वर होवे जैसा उस ने तुझे कहा और जैसा उस ने
तेरे पितरों अबिरहाम इज़हाक़ और यअक़ूब से किरिया खाई
१३ है। सो मैं तुम्हारे ही साथ केवल यह नियम और किरिया
१४ नहीं करता। परन्तु उस के साथ भी जो आज के दिन
परमेश्वर हमारे ईश्वर के आगे हमारे संग खड़ा है और उस के
१५ साथ भी जो आज के दिन हमारे साथ नहीं है। क्योंकि तुम
जानते हो कि हम मिस्र में क्योंकर बास करते थे और क्योंकर
उन जातिगणों के मध्य में से जिन में तुम रहते थे निकल गये ॥

१६ और तुम ने उन की लकड़ी और पत्थर और चांदी और
सोने की घिनित मूर्त्तों को जो तुम्हारे साथ थीं देखा है।
१७ ऐसा न हो कि तुम्हों में कोई पुरुष अथवा स्त्री अथवा घराना
अथवा गोष्ठी ऐसी हो कि जिस का मन आज के दिन परमेश्वर
हमारे ईश्वर से फिर जावे और उन जातिगणों के देवतों की सेवा
करे ऐसा न हो कि तुम्हारे बीच ऐसी जड़ हो जो कड़ुआ और
१८ नागदौना उपजावे। और यों होवे कि जब वुह इस स्राप की
बातें सुने तो वुह आप को अपने मन में आशीष देके कहे कि
मैं चैन करूंगा क्योंकि अपने मन की भावना में चलूंगा कि
१९ पियास में मतवालपन मिलाऊं। परमेश्वर उसे न छोड़ेगा क्योंकि

उसी समय उस जन पर परमेश्वर का क्रोध और उस का कोप
भड़केगा और समस्त स्राप जो इस पुस्तक में लिखे हैं उस पर पड़ेंगे
२० और परमेश्वर उस के नाम को स्वर्ग के तले से मिटा देगा। और
परमेश्वर वाचा के समस्त स्रापों के समान जो इस व्यवस्था की
पुस्तक में लिखे हैं इसराएल की सारी गोष्ठियों में से बुराई के
२१ लिये उस को अलग करेगा। यहां लों कि अवैया पीढ़ी अर्थात्
तुम्हारे बालक जो तुम्हारे पीछे उठेंगे और परदेशी जो दूर देश से
आवेंगे उस देश की मरी और रोगों को जो परमेश्वर ने उस
२२ पर धरे हैं देखके कहेंगे। कि यह सारा देश गंधक और लोन
से जल गया कि न बोया जाता न उपजता और न कुछ घास
उगती है जैसे कि सदूम और अमूरः अदमः और ज़िबोआन
उलट गये जिन्हें परमेश्वर ने अपनी रिस से और अपने कोप
२३ से उलट दिया। और समस्त जातिगण कहेंगे कि परमेश्वर ने
इस देश पर ऐसा क्यों किया इस महा कोप के तपन का
२४ क्या कारण है। तब लोग कहेंगे इस लिये कि उन्हों ने
परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर की उस बाचा को त्याग किया
जो मिस्र देश से निकालने के समय उन से बांधी थी।
२५ और उन्हों ने जाके आन आन देवतों की सेवा और उन्हें
दण्डवत किई उन देवतों को जिन्हें वे न जानते थे और
२६ जिन्हें उस ने उन्हें न दिया था। सो परमेश्वर का क्रोध इस
देश पर भड़का कि उस ने समस्त स्राप जो इस पुस्तक में
२७ लिखे हैं इस पर प्रगट किये। और परमेश्वर ने रिस और कोप
और बड़े जलजलाहट से उन के देश से उन्हें उखाड़ा है और
२८ दूसरे देश पर आज के दिन की नाईं उन्हें डाल दिया। गुप्त
बातें परमेश्वर हमारे ईश्वर की हैं परन्तु प्रकाशित हमारे और
हमारे बंश के लिये सदा लों हैं जिसतें हम इस व्यवस्था के
समस्त बचनों को पालन करें॥

तीसवां पर्व्व ।

१ और यों होगा कि जब यह सब बातें अर्थात् आशीष और स्राप
जिन्हें मैं ने तेरे आगे रक्खा तुझ पर पड़ेगा और तू उन सब जातिगणों
में जहां जहां परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे हांकेगा उन्हें चेत करेगा।
२ और तू परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरेगा और उस की समस्त
आज्ञा के समान जो आज मैं तुझे कहता हूं अपने लड़कों
समेत अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से उस के शब्द
३ को मानेगा। तब परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरी बंधुआई में तेरे पास
आवेगा और तुझे उन सब जातिगणों में से जिन में परमेश्वर तेरे
ईश्वर ने तुझे छिन्न भिन्न किया है दयाल होके फेरेगा और
४ एकट्ठे करेगा। यदि कोई तुझ में आकाश के अंत लों हांका
गया होगा तो परमेश्वर तेरा ईश्वर वहां से एकट्ठा करके तुझे
५ फेर लावेगा। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे उस देश में जिस
के तेरे पितर अधिकारी थे और तू उस का अधिकारी होगा
और वुह तुझ से भलाई करेगा और तेरे पितरों से अधिक
६ तुझे बढ़ावेगा। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे और तेरे बंश के
मन का ख़तनः करेगा कि तू परमेश्वर अपने ईश्वर को अपने
सारे मन और अपने सारे प्राण से प्यार करे जिसतें तू जीता
७ रहे। और परमेश्वर तेरा ईश्वर ये समस्त स्राप तेरे बैरियों पर
और उन पर डालेगा जो तेरा डाह रखते हैं जिन्हों ने तुझे
८ सताया। और तू फिर आवेगा और परमेश्वर के शब्द को मानेगा
और उस की उन समस्त आज्ञाओं को जो आज के दिन मैं तुझे
९ करता हूं पालन करेगा। और परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे हाथ के
हर एक काम में तेरे शरीर के फल में और तेरे ढोर के फल में
और तेरी भूमि के फल में भलाई के लिये तुझे अधिक करेगा
क्योंकि परमेश्वर आनन्दित होके तुझ से फिर भलाई करेगा

१० जैसा वुह तेरे पितरों से आनन्दित था। जब तू परमेश्वर
अपने ईश्वर के शब्द को सुनेगा जिसतें उस की आज्ञाओं और
उस की विधिन को जो व्यवस्था की इस पुस्तक में लिखी हुई
हैं स्मरण करे जब तू अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण
से परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिरे॥

११ क्योंकि यह आज्ञा जो आज मैं तुझे करता हूं वुह तुझ से
१२ न छिपी है और वुह न दूर है। वुह स्वर्ग पर नहीं जो तू कहे
कि हमारे लिये कौन स्वर्ग पर जावेगा और हमारे पास उसे लावे
१३ जिसतें हम उसे सुनें और पालन करें। और न वुह समुद्र पार है
जो तू कहे कौन हमारे लिये समुद्र पार जावेगा और उसे हम
१४ पास लावे कि हम उसे सुनें और पालन करें। क्योंकि बचन
तेरे पास ही तेरे मुंह में और तेरे अंतःकरण में है जिसतें तू
उसे पालन करे॥

१५ देख मैं ने आज जीवन और भलाई को और मृत्यु और
१६ बुराई को तेरे आगे रक्खा है। सो मैं तुझे परमेश्वर अपने
ईश्वर पर प्रेम करने को और उस के मार्गों पर चलने को और
उस की आज्ञाओं और उस की विधिन और उस के विचारों
को पालन करने को आज तुझे आज्ञा करता हूं जिसतें तू
जीये और बढ़े और परमेश्वर तेरा ईश्वर उस देश में जिस का
१७ तू अधिकारी होने जाता है तुझे आशीष देवे। परन्तु यदि
तेरा मन फिर जावे और तू न सुने और फुसलाया जावे
अरु और देवतों को दंडवत करे और उन की सेवा करे।
१८ तो आज मैं तुम्हें सुना रखता हूं कि तुम निश्चय नाश हो
जाओगे उस भूमि पर जिस के अधिकारी होने यरदन
१९ पार जाते हो तुम्हारी बय अधिक न होगी। मैं आज स्वर्ग
और पृथिवी को तुम्हारे ऊपर साक्षी लाता हूं कि मैं ने जीवन
और मृत्यु और आशीष और स्राप तेरे साम्ने रक्खे सो तू जीवन

२० को चुन जिसतें तू और तेरा बंश दोनों जीवें। कि तू परमेश्वर
अपने ईश्वर से प्रेम करे और उस के शब्द को माने और उस्से
लवलीन रहे क्योंकि वही तेरा जीवन और तेरे बय की अधिकाई
है जिसतें तू उस भूमि पर वास करे जिस के कारण परमेश्वर
ने तेरे पितरों अबिरहाम इज़हाक और यअक़ूब से किरिया
खाके कहा कि मैं उसे तुम्हें देऊंगा॥

एकतीसवां पर्व्व।

१ तब मूसा ने जाके ये बातें समस्त इसराएल से कहीं।
२ और उस ने उन्हें कहा कि मैं तो आज एक सौ बीस बरस का
हूं आगे मैं भीतर बाहर जा नहीं सक्ता और परमेश्वर ने भी मुझे
३ कहा है कि तू यरदन पार न जायगा। परमेश्वर तेरा ईश्वर
ही तेरे आगे आगे पार जावेगा वही इन जातिगणों को
तेरे आगे नाश करेगा और तू उन्हें बश में करेगा यहूशूअ वही
परमेश्वर के कहने के समान तेरे आगे आगे पार जावेगा।
४ और परमेश्वर उन से वैसा ही करेगा जैसा उस ने अमूरियों के
राजाओं सैहून और ऊज़ से और उन के देश से किया जिन्हें
५ उस ने नाश किया। और परमेश्वर उन्हें तुम्हारे आगे सौंप
देगा जिसतें तुम उन से उस सब आज्ञा के समान जो मैं ने
६ तुम्हें कहीं करो। पोढ़ होओ और साहस करो भय न करो और
उन से मत डरो क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर वही तेरे साथ
जाता है वुह तुझे न छोड़ेगा और न त्याग करेगा॥
७ फिर मूसा ने यहूशूअ को बुलाया और सारे इसराएल के
आगे उसे कहा कि दृढ़ हो और साहस कर क्योंकि तू ही इन
लोगों के साथ उस देश में प्रवेश करेगा जिस के देने के विषय
में परमेश्वर ने उन के पितरों से किरिया खाई और तू उन्हें
८ उस का अधिकारी करेगा। और परमेश्वर वही तेरे आगे आगे

जाता है वही तेरे साथ रहेगा वुह तुझे न छोड़ेगा और तुझे
न त्याग करेगा भय मत कर और मत डर ॥
९ और मूसा ने इस व्यवस्था को लिखा और उसे लावी के
बेटे याजकों को जो परमेश्वर के साक्षी की मंजूषा को उठाते
१० थे और इसराएल के समस्त प्राचीनों को सौंप दिया। और
मूसा ने उन्हें यह कहके आज्ञा किई कि हर एक सात बरस
के अंत में छुटकारे के ठहराये हुए समय में तंबू के पर्व्व में।
११ जब कि सारे इसराएल परमेश्वर तेरे ईश्वर के आगे उस स्थान
पर जिसे वुह चुनेगा जाया करें तब तू इस व्यवस्था को पढ़के
१२ समस्त इसराएल को सुनाया कर। समस्त लोगों पुरुषों और
स्त्रियों को और लड़कों और अपने परदेशी को जो तेरे फाटकों
के भीतर हों एकट्ठे कीजियो कि वे सुनें और सीखें और परमेश्वर
तुम्हारे ईश्वर से डरें और इस व्यवस्था के समस्त बचनों को
१३ पालन करें और मानें। और उन के लड़के जिन्हों ने ये बातें
नहीं जानीं सुनें और जब लों तुम उस देश में जिस के
अधिकारी होने को यरदन पार जाते हो रहो परमेश्वर अपने
ईश्वर से डरा करो ॥
१४ फिर परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख तेरे दिन आ पहुंचे
हैं तुझे मरना है सो तू यहूशूअ को बुला और मंडली के तंबू
में खड़े होओ जिसतें मैं उसे आज्ञा करूं सो मूसा और यहूशूअ
१५ चले और मंडली के तंबू में खड़े हुए। और परमेश्वर मेघ के
खंभे में होके तंबू में प्रगट हुआ और मेघ का खंभा तंबू के
१६ द्वार पर आके ठहरा। तब परमेश्वर ने मूसा से कहा कि देख
तू अपने पितरों के साथ शयन करेगा और इस मंडली के
लोग उठेंगे और उस देश पर जहां ये बसने जाते हैं कुकर्म्मी
होके वहां अन्यदेशी देवतों का पीछा करेंगे और मुझे छोड़
देंगे और मेरी बाचा को जो मैं ने उन के साथ बांधी है

१७ तोड़ेंगे । तब मेरा क्रोध उस दिन उन पर भड़केगा और मैं
उन्हें त्याग करूंगा और मैं उन से अपना मुंह छिपाऊंगा और
वे नष्ट हो जावेंगे और बहुत कष्ट और बिपत्ति उन्हें पकड़ेंगे
तब वे उस दिन कहेंगे कि क्या हम पर ये बिपत्ति इस
१८ लिये नहीं पड़ीं कि हमारा ईश्वर हम्में नहीं । और उस सब
बुराई के कारण से जो वे करेंगे और इस लिये कि ऊपरी
देवतों की ओर लवलीन होंगे मैं निश्चय उस दिन अपना मुंह
१९ छिपाऊंगा । सो तुम यह गीत अपने लिये लिखो और उसे
इसराएल के संतानों को सिखाओ और उन्हें पढ़ाओ जिसतें
२० यह गीत इसराएल के संतानों पर मेरी साक्षी रहे । क्योंकि
जब मैं उन्हें उस देश में पहुंचाऊंगा जिस के कारण मैं ने
उन के पितरों से किरिया खाई जिस में दूध और मधु बहता
है और वे खावेंगे और तृप्त होवेंगे और मोटे हो जावेंगे तब
वे और देवतों की ओर फिर जावेंगे और उन की सेवा करेंगे
२१ और मुझे खिजावेंगे और मुझ से बाचा तोड़ देंगे । और यों
होगा कि जब बहुत कष्ट और बिपत्ति उन पर पड़ेंगी तब
यही गीत उन पर साक्षी देगी क्योंकि वुह उन के वंश के मुंह
से बिसर न जावेगी क्योंकि मैं उन के बिचारों को जानता हूं
जो वे आज करते हैं उस्से आगे कि मैं उस देश में जिस के
कारण मैं ने किरिया खाई है उन्हें पहुंचाऊं ॥
२२ सो उसी दिन मूसा ने यह गीत लिखा और उसे इसराएल
२३ के संतान को सिखाया । और उस ने नून के बेटे यहूशूअ
को आज्ञा किई और कहा कि दृढ़ हो और साहस कर क्योंकि
इसराएल के संतान को उस देश में जिस के कारण मैं ने
उन से किरिया खाई है तू ले जावेगा और मैं तेरे साथ होऊंगा ॥
२४ और ऐसा हुआ कि जब मूसा इस व्यवस्था की बातों को
२५ पुस्तक में लिख चुका और उन्हें समाप्त किया । तब मूसा ने

लावियों को जो परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा को उठाते थे
२६ आज्ञा करके कहा। कि इस व्यवस्था की पुस्तक को लेके परमेश्वर
अपने ईश्वर की बाचा की मंजूषा के अलंग में रक्खो जिसतें यह
२७ तुम्हारी साक्षी के लिये वहां रहे। क्योंकि मैं तेरे झगड़े और
तेरे गले की कठोरता को जानता हूं देख अब लों मैं जीता
और आज के दिन लों तुम्हारे साथ हूं तुम ईश्वर से फिर
गये हो और मेरे मरने के पीछे कितना अधिक और करोगे।
२८ अपनी गोष्ठियों के समस्त प्राचीनों को और अपने प्रधानों को
मुझ पास एकट्ठा करो जिसतें मैं ये बातें उन्हें सुनाऊं और
२९ स्वर्ग और पृथिवी को उन पर साक्षी में लाऊं। क्योंकि मैं
जानता हूं कि मेरे मरने के पीछे तुम आप को नष्ट करोगे और
उस मार्ग से जो मैं ने तुम्हें आज्ञा किई है फिर जाओगे और
पिछले दिनों में तुम पर विपत्ति पड़ेगी क्योंकि तुम परमेश्वर
के आगे बुराई करोगे कि अपने हाथ के कार्य्यों से उसे
खिजाओगे॥

३० सो मूसा ने इस गीत के बचनों को इसराएल की समस्त
मंडली को कह सुनाके पूरा किया॥

बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ हे स्वर्गो कान धरो और मैं कहूंगा और हे पृथिवी मेरे
२ मुंह की बातें सुन। मेरी शिक्षा मेंह की नाईं टपकेगी मेरी
बातें ओस के समान चूवेंगी जैसे सागपात पर फूही पड़ें
३ और घास पर झड़ियां। क्योंकि मैं परमेश्वर के नाम को प्रगट
४ करता हूं तुम हमारे ईश्वर के नाम की महिमा करो। वुह
चटान है उस का कार्य्य सिद्ध है क्योंकि उस के सब मार्ग
न्याय के हैं वुह सच्चा सर्वशक्तिमान है और बुराई से रहित
५ वुह आप्त और सच्चा है। उन्हों ने आप को नष्ट किया वे उस

के बालक नहीं वे अपने चिन्ह हैं वे हठीली और टेढ़ी पीढ़ी
६ हैं। हे मूर्ख और निर्बुद्धि लोगो क्या तुम परमेश्वर को यों
पलटा देते हो क्या वुह तेरा पिता नहीं है जिस ने तुझे मोल
लिया क्या उस ने तुझे नहीं सिरजा और तुझे स्थिर न किया।
७ अगले दिनों को चेत करो पीढ़ी पर पीढ़ी के बरसों को
सोचो अपने पिता से पूछ और वुह तुझे बतावेगा अपने
८ प्राचीनों से और वे तुझ से कहेंगे। जब अति महान ने
जातिगणों के लिये अधिकार बांटा जब उस ने आदम के
संतान को अलग किया इसराएल के संतानों की गिनती के समान
९ उस ने लोगों का सिवाना ठहराया। क्योंकि परमेश्वर का भाग
१० उस के लोग हैं यअकूब उस के अधिकार की रस्सी है। वुह उसे
उजाड़ देश और भयानक अरण्य में पाता वुह उसे घेर लेता
उसे शिक्षा देता है अपनी आंख की पुतली की नाईं उस की
११ रक्षा करता है। जैसा गिद्ध अपने खोंते को हिलाता है अपने
बच्चों पर फरफराता है अपने पंखों को फैलाके उन्हें लेता है
१२ अपने पंखों पर उन्हें उठाता है। वैसा ही केवल परमेश्वर ने
उस की अगुआई किई और उस के साथ कोई ऊपरी देव न
१३ था। वुह उसे पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर चढ़ाता है जिसतें
वुह खेतों की बढ़ती खावे और उसे चटान में से मधु और
१४ चकमक के चटान में से तेल चुसाता है। गाय के मखन
और भेड़ के दूध मेम्नों की चिकनाई समेत और बसन
देश के पाले हुए मेढ़ों बकरों गोहूं के गुर्दों की चिकनाई
१५ सहित तू ने दाख का निराला रस पीया। परन्तु यशूरून
मोटा हुआ और लतिआने लगा तू मोटा हुआ है और फैल
गया है तू ढंप गया है तब उस ने ईश्वर अपने बनानेहारे को
छोड़ दिया और अपनी मुक्ति के चटान को तुच्छ जाना।
१६ उन्हों ने ऊपरी देवतों के कारण उसे झल दिया उन्हों ने उसे

१७ घिनितों से रिस दिलाया। उन्हों ने पिशाचों के लिये बलिदान
चढ़ाये जो ईश्वर न थे उन देवतों के लिये जिन को वे न
पहिचानते थे वे देवता जो थोड़े दिनों से प्रगट हुए जिन से
१८ तुम्हारे पितर न डरते थे। तू उस चटान से अचेत है जिस
ने तुझे उत्पन्न किया और उस सर्व्वशक्तिमान को भूल गया
१९ जिस ने तेरा डौल किया। जब परमेश्वर ने देखा तब उस ने
घिन किया इस कारण कि उस के बेटा बेटी ने उसे रिस
२० दिलाया। और उस ने कहा कि मैं उन से अपना मुंह छिपाऊंगा
जिसतें मैं उन का अंत देखूं क्योंकि वे टेढ़ी पीढ़ी हैं ऐसे
२१ लड़के जिन में विश्वास नहीं। उन्हों ने अनीश्वर से मुझे
ज्वलन दिलाया उन्हों ने व्यर्थों से मुझे रिस दिलाया सो मैं
भी उन्हें अलोग से झल दिलाऊंगा और एक मूर्ख जाति से
२२ उन्हें रिस दिलाऊंगा। क्योंकि मेरे रिस में आग भड़की है
और अत्यंत नरक लों जली है और पृथिवी को उस की बढ़ती
समेत भस्म कर गई और पहाड़ों की नेवों को जला दिया है।
२३ मैं उन पर बिपत्ति का ढेर करूंगा उन पर अपने बाणों को
२४ घटाऊंगा। वे भूख से जल जावेंगे और भस्मक तपन और
कड़वे बिनाश से भक्षण किये जावेंगे और मैं पशुओं के दांतों
२५ को और पृथिवी के बिषधर सर्पों को छोड़ूंगा। बाहर तलवार
और कोठरियों से भय तरुण मनुष्य को कुआरी को भी दूध
२६ पीवक को पुरनियां सहित नाश करेंगे। मैं ने कहा कि मैं
उन्हें कोने कोने छिन्न भिन्न करता मैं मनुष्यों में से उन का
२७ नाम मिटा देता। यदि मैं शत्रु के क्रोध पर दृष्टि न करता
न हो कि उन के बैरी घमंड करें और न हो कि वे कहें कि
हमारा ही हाथ प्रबल हुआ और परमेश्वर ने ये सब नहीं किये।
२८ क्योंकि वे मन्त्र रहित जाति हैं और उन में बुद्धि नहीं।
२९ हाय कि वे बुद्धिमान होके इसे समझते अपने अन्तकाल को

३० चिन्ता करते तो कैसे एक सहस्र को खेदता और दो दस सहस्र
को भगाते यदि उन का चटान उन्हें न बेंच डाले होता और
३१ परमेश्वर उन्हें बंद किये न होता। क्योंकि उन का चटान
हमारे चटान के समान नहीं हां हमारे वैरी आप न्यायी हैं।
३२ क्योंकि उन का दाख सदूम के दाख में के और अमूरः के खेतों का
है उन के अंगूर पित्त के अंगूर हैं उन के गुच्छे उन के लिये
३३ कड़वे हैं। उन की मदिरा नागों का विष है और सपोलों का
३४ कठिन विष। क्या यह मुझ पास धरा नहीं मेरे भंडारों में
३५ बंद नहीं। प्रतिफल और दण्ड देना मेरा है उन का पांव
समय पर फिसलेगा क्योंकि उन की विपत्ति का दिन आ पहुंचा
३६ और उन पर जो वस्तु आती है सो शीघ्र करती है। क्योंकि
परमेश्वर अपने लोगों का न्याय करेगा और अपने सेवकों के
लिये पछतावेगा जब वुह देखेगा कि सामर्थ्य जाती रही और
३७ कोई बंद अथवा छूटा नहीं है। और कहेगा कि उन के
३८ देवगण पहाड़ जिन का उन्हें भरोसा था क्या हुए। जिन्हों ने
उन के बलिदानों की चिकनाई खाई और पीने की भेंट की
मदिरा पीई वे उठें और तुम्हारा बचाव करें और तुम्हारे सहायक
३९ होवें। अब देखो कि मैं मैं वही हूं और कोई ईश्वर मेरा साथी
नहीं मैं ही मारता हूं और जिलाता हूं मैं घायल करता हूं
और मैं ही चंगा करता हूं और कोई नहीं जो मेरे हाथ से
४० छुड़ावे। क्योंकि मैं अपना हाथ स्वर्ग की ओर उठाता हूं और
४१ कहता हूं कि मैं ही सनातन जीवता हूं। यदि मैं अपना
चमकता हुआ खड्ग चोखा करूं और मेरा हाथ न्याय धारण
करे तो मैं अपने शत्रुन से प्रतिफल लूंगा और जो मुझ से बैर
४२ रखते हैं उन्हें पलटा दूंगा। मारे हुओं और बंधुओं के लोहू
से शत्रु पर पलटा लेने के आरंभ से मैं अपने बाणों को रुधिर
४३ से उन्मत्त करूंगा और मेरी तलवार मांस खावेगी। हे

जातिगणों उस के लोगों के साथ आनन्द से गाओ क्योंकि
वुह अपने सेवकों के लोहू का पलटा और अपने शत्रुन से
बदला लेगा और अपने देश और अपने लोगों पर दयाल
होगा ॥
४४ तब मूसा और नून के बेटे यहूशूत्र ने आके इस गीत की
४५ सारी बातें लोगों को कह सुनाईं। और जब मूसा ये सारी
४६ बातें इसराएल के सन्तानों को कह चुका। तब उस ने उन्हें
कहा कि उन सारी बातों से जिन की मैं आज के दिन तुम्हों
में साक्षी देता हूं अपने मन लगाओ जिसतें उन्हें अपने बालकों
को आज्ञा करो कि पालन करके इस व्यवस्था की सारी बातों को
४७ मानें। क्योंकि वुह तुम्हारे लिये वृथा नहीं इस कारण कि
वुह तुम्हारा जीवन है और इसी बात के लिये इस देश में
जिस के अधिकारी होने तुम यरदन पार जाते हो अपनी
आयुर्दाय बढ़ाओगे ॥
४८ और परमेश्वर ने उसी दिन मूसा से यह वचन कहा।
४९ अबरीम के इस पर्वत पर नबू पहाड़ी पर मोअब के देश में
जो यरीहो के साम्ने है चढ़ जा और कनआन देश को देख
५० जिसे मैं इसराएल के सन्तान को अधिकार में देता हूं। और
उसी पहाड़ी पर जिस पर तू जाता है मर जा और अपने
लोगों में बटुर जा जैसे तेरा भाई हारून हूर पहाड़ पर मर
५१ गया और अपने लोगों में बटुर गया। इस कारण कि तुम्हों
ने इसराएल के सन्तान के मध्य कादिश के झगड़े के पानी पर
सीन के अरण्य में मेरा अपराध किया क्योंकि तुम ने इसराएल
५२ के सन्तान के मध्य में मुझे पवित्र न किया। क्योंकि तू साम्हने
से उस देश को देख लेगा वहां न आवेगा अर्थात् उस देश में
जो मैं इसराएल के सन्तानों को देता हूं ॥

तेंतीसवां पर्ब्ब ।

१ और यह वुह आशीष है जिस्से ईश्वर के जन मूसा ने अपने
२ मरने से आगे इसराएल के सन्तनों को आशीष दिया। और
कहा कि

परमेश्वर सीना से आया और शईर से प्रगट हुआ फ़ारान
पहाड़ से उन पर चमक उठा और वुह दस सहस्र सिद्धों के
साथ आया उस के दहिने हाथ से एक आग की व्यवस्था
३ उन के लिये निकली। हां उस ने लोगों से प्रेम किया उस के
समस्त सिद्ध तेरे हाथ में और वे तेरे चरणों के पास बैठ गये
४ और तेरी बातों से पावेंगे। मूसा ने हम से अर्थात् यअ़कूब
५ की मंडली के अधिकार के लिये एक व्यवस्था कही। और
वुह यशूरून में राजा था जब लोगों के प्रधान इसराएल की
६ गोष्ठी एकट्ठे थे। रूबिन जीवे और न मरे और उस के जन
थोड़े न हों॥

७ और यहूदाह के लिये उस ने यह कहा कि

हे परमेश्वर यहूदाह का शब्द सुन और उसे उस के लोगों
में पहुंचा उस के हाथ उस के लिये बहुत होवें और तू उस
के वैरियों से सहायक हो॥

८ और उस ने लावी के विषय में कहा कि

तेरा तुम्मीम और तेरा उरीम तेरे धर्म्ममय के साथ होवें
जिसे तू ने मस्सः में परखा और जिस के साथ तू मरीबः के
९ पानियों पर झगड़ा। जिस ने अपनी माता पिता से कहा कि
मैं ने उसे न देखा और उस ने अपने भाइयों को न माना न
अपने बालकों को पहिचाना क्योंकि उन्हों ने तेरे बचन को
१० माना और तेरी बाचा को धारण किया। वे तेरे बिचार
यअ़कूब को और तेरी व्यवस्था इसराएल को सिखावें वे तेरी

नासिका के आगे धूप रक्खें और होम के पूरे बलिदान तेरी
११ वेदी पर धरें। हे परमेश्वर उस की संपत्ति पर आशीष दे और
उस के हाथों के कामों को ग्राह्य कर जो उस के बिरोध में
उठे और जो उस्से वैर रक्खे उन की कटि वेध डाल जिसतें
वे फिर न उठें॥

१२ उस ने बिनयमीन के विषय में कहा कि
परमेश्वर का प्रिय उस के पास चैन से रहेगा उसे दिन भर
आड़ करेगा और वुह उस के दोनों कांधों के बीच रहेगा॥

१३ और उस ने यूसुफ़ के विषय में कहा कि
उस की भूमि पर ईश्वर की आशीष होगी स्वर्ग की बहुमूल्य
वस्तुन के लिये और ओस के कारण और गहिराव के कारण
१४ जो नीचे झुका है। और सूर्य्य के निकाले हुए अच्छे फलों में
१५ से और चन्द्रमा की निकाली हुई अच्छी वस्तुन के कारण। और
प्राचीन पहाड़ों की श्रेष्ठ वस्तुन के लिये और दृढ़ पहाड़ियों की
१६ बहुमूल्य बस्तुन के कारण। और पृथिवी की बहुमूल्य बस्तें
और उस की भरपूरी के कारण और उस की भलाई के लिये
जो झाड़ी में रहता था यूसुफ़ के सिर पर उतरे और उस के
१७ मस्तक पर जो अपने भाइयों से अलग किया गया था। उस
का बिभव उस के बैल के पहिलौठे की नाईं और उस के सींग
गैंड़े के सींग वुह उन्हीं से लोगों को पृथिवी के सिवाने लों
रेलेगा और वे इफ़रायम के दस सहस्र और वे मुनस्सी के सहस्र॥

१८ और उस ने ज़बुलून के विषय में कहा कि
हे ज़बुलून अपने बाहर जाने में आनन्द हो और इशकार
१९ तू अपने तंबुओं में। वे लोगों को पहाड़ पर बुलावेंगे वहां धर्म्म
के बलिदान चढ़ावेंगे क्योंकि वे समुद्रों की अधिकाई को और
भंडारों को जो बालू में छिपे हैं चूसेंगे॥

२० और उस ने जद के विषय में कहा कि

धन्य है वुह जो जद को फैलाता है वुह सिंह के समान
पड़ा रहता है और भुजा को सिर की चांदी सहित फाड़ता
२१ है । और उस ने पहिला भाग अपने लिये ठहराया क्योंकि उस
ने वहां व्यवस्थादायक के भाग को चुना और वुह लोगों के
प्रधानों के साथ आया वुह परमेश्वर के न्याय को और उस के
विचारों को इसराएल से बजा लाया ॥
२२ और दान के विषय में कहा कि
दान एक सिंह का बच्चा है जो बसन से उछलेगा ॥
२३ और उस ने नफ़ताली के विषय में कहा कि
हे नफ़ताली तू अनुग्रह से तृप्त और परमेश्वर की आशीष से
पूर्ण तू पश्चिम और दक्षिण का अधिकारी हो ॥
२४ और उस ने यशर के विषय में कहा कि
यशर बालकों की आशीष पावे वुह अपने भाइयों का
२५ ग्राह्य होवे और अपना पांव तेल में डुबोवे । तेरे जूते के तले
लोहा और पीतल होगा और तेरे समय के समान तेरा बल
होगा ॥
२६ यशूरून के सर्वशक्तिमान के समान कोई नहीं जो स्वर्ग पर तेरी
सहाय के लिये चढ़ता है और उस की प्रतिष्ठा में आकाश
२७ पर । सनातन का ईश्वर तेरा शरण है और नीचे सनातन की
भुजा और बैरी को तेरे आगे से वुह हांकेगा और कहेगा
२८ कि उसे नाश कर । तब इसराएल अकेला चैन से रहेगा
यअ़क़ूब का सोता अन्न और मदिरा की भूमि पर होगा
२९ उस के आकाश से ओस पड़ेगी । हे इसराएल तू धन्य है
लोग तुझ सा कौन है कि परमेश्वर ने तुझे बचाया है वुह
तेरी सहाय के लिये ढाल और तेरी बड़ाई की तलवार है
और तेरे शत्रु तेरे बश में होंगे और तू उन के ऊंचे स्थानों को
लताड़ेगा ॥

चौंतीसवां पर्ब्ब ।

१ और मूसा मोअब के चौगानों से नबू के पहाड़ पर पिसगः
की चोटी पर जो यरीहो के साम्ने है चढ़ गया और परमेश्वर
२ ने जिलिअद के समस्त देश दान लों उसे दिखाया। और
समस्त नफ़ताली और इफ़रायम और मुनस्सी के देश और
३ यहूदाह के समस्त देश अत्यंत समुद्र लों। और दक्षिण और
यरीहो के चौगान की नीचाई जो खजूर के पेड़ का नगर
४ है सुग़र लों उस को दिखाया। और परमेश्वर ने उसे कहा
कि यह वुह देश है जिस की मैं ने अबिरहाम इज़हाक़ और
यअ़क़ूब से किरिया खाके कहा कि मैं उसे तेरे वंश को
दूंगा मैं ने तुझे आंखों से दिखा दिया परन्तु तू उधर पार न
जावेगा॥

५ सो परमेश्वर का सेवक मूसा परमेश्वर के बचन के समान
६ वहां मोअब के देश में मर गया। और उस ने उसे मोअब
के देश की तराई में बैतफ़ाऊर के साम्ने गाड़ा पर आज के
७ दिन लों कोई उस की समाधि को नहीं जानता। और मूसा
अपने मरने के समय में एक सौ बीस बरस का था उस की
आंखें धुंधली न हुईं और उस का स्वाभाविक बल न घटा।
८ और इसराएल के संतानों ने मूसा के लिये मोअब के चौगानों
में तीस दिन लों बिलाप किया तब मूसा के लिये उन के
रोने पीटने के दिन समाप्त हुए॥

९ और नून का बेटा यहूशूअ बुद्धि के आत्मा से भर गया
क्योंकि मूसा ने अपने हाथ उस पर रक्खे थे और इसराएल के
संतान ने उसे माना और जैसा परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई
थी उस ने वैसा ही किया॥

१० और इसराएल में मूसा के समान कोई आगमज्ञानी फेर

११ न हुआ जिसे परमेश्वर आम्ने साम्ने जानता था। उन सब
अचंभित और आश्चर्य्यित जिन्हें मिस्र देश में प्रगट करने के
लिये परमेश्वर ने उसे फ़िरऊन के पास और उस के समस्त
१२ सेवकों के पास और उस के समस्त देश में भेजा। और समस्त
सामर्थी हाथ और समस्त बड़े बड़े भय में जो मूसा ने समस्त
इसराएल के आगे दिखाये॥

यहूशूअ की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ जब परमेश्वर का सेवक मूसा मर गया तब यों हुआ कि
परमेश्वर ने मूसा के सेवक नून के बेटे यहूशूअ को कहा।
२ कि मेरा सेवक मूसा मर गया है सो अब तू उठ और इन समस्त
लोगों समेत उस देश को जो मैं उन्हें देता हूं अर्थात् इसराएल
३ के संतानों को लेके यरदन के पार उतर जा। जैसा मैं ने
मूसा से कहा कि हर एक स्थान जिस पर तेरे पांव का तलवा
४ पड़ेगा मैं ने तुझे दिया है। अरण्य से और इस लुबनान से
लेके महा नदी अर्थात् फुरात नदी लों हित्तियों का सारा देश
महा समुद्र लों सूर्य्य के अस्त होने की ओर तुम्हारा सिवाना
५ होगा। तेरे जीवन भर कोई तेरे आगे ठहर न सकेगा जैसा मैं
मूसा के साथ था तेरे साथ रहूंगा मैं तुझ से न हटूंगा और न
६ तुझे त्यागूंगा। बलवंत हो और सुसाहस कर क्योंकि यह
भूमि जो मैं ने किरिया खाके उन के पितरों को देने कही
७ है तू इन लोगों को उसे अधिकार में दिलावेगा। केवल तू
बलवंत और अति साहसी हो जिसतें तू इस व्यवस्था के समान
जिस की मेरे सेवक मूसा ने तुझे आज्ञा किई है सोचके मान उस्से
दहिने बायें मत मुड़ जिसतें जहां कहीं तू जावे भाग्यमान
८ होवे। इस व्यवस्था की पुस्तक की चर्चा तेरे मुंह से जाने न
पावे परन्तु रात दिन उस में ध्यान कर जिसतें तू सोचके जो
कुछ उस में लिखा है माने क्योंकि तब तू अपने मार्ग में

९ भाग्यमान होगा और तब तू बुद्धि से कार्य्य करेगा। क्या मैं ने
तुझे आज्ञा न किई कि बलवंत हो और सुसाहस कर मत डर
और मत घबरा क्योंकि परमेश्वर तेरा ईश्वर जहां जहां तू जाता
है तेरे साथ है॥
१० तब यहूशूअ ने लोगों के अध्यक्षों को आज्ञा करके कहा।
११ कि तुम सेना में से होके जाओ और लोगों को आज्ञा करके कहो
कि अपने लिये भोजन सिद्ध करें क्योंकि तीन दिन के भीतर
तुम इस यरदन पार उतरोगे जिसतें उस भूमि के जो परमेश्वर
तुम्हारा ईश्वर तुम्हें देता है अधिकारी होओ॥
१२ और रूबिनियों और जद्दियों को और मुनस्सी की आधी
१३ गोष्ठी को यहूशूअ कहके बोला। कि जो बात परमेश्वर के
सेवक मूसा ने तुम्हें आज्ञा किई चेत करो कि परमेश्वर तुम्हारे
ईश्वर ने तुम्हें बिश्राम दिया है और यह देश तुम्हें दिया है।
१४ तुम्हारी पत्नियां तुम्हारे बालक और तुम्हारे ढोर इस देश में
रहेंगे जो मूसा ने यरदन के इस पार तुम्हें दिया है परन्तु
तुम लोग अर्थात् समस्त बीर अपने भाइयों के आगे आगे
१५ हथियार बांधके चलो और उन की सहायता करो। जब लों
परमेश्वर तुम्हारी नाईं तुम्हारे भाइयों को चैन देवे और वे भी
उस भूमि के जो परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर उन्हें देता है अधिकारी
होवें तब तुम उस देश में जो तुम्हारा अधिकार है और
परमेश्वर के सेवक मूसा ने यरदन के इसी पार पूरब दिशा में
तुम्हें दिया है फिर आइयो और उसे अधिकार कीजियो॥
१६ तब उन्हों ने यहूशूअ को उत्तर दिया कि जो जो तू ने हमें
आज्ञा किई सो हम मानेंगे और जहां जहां हमें भेजेगा हम
१७ जावेंगे। जिस रीति से हम ने मूसा की सब बातें मानी
उसी रीति से तेरी सब मानेंगे केवल परमेश्वर तेरा ईश्वर जिस
१८ रीति से मूसा के साथ था तेरे साथ भी रहे। जो कोई तेरी

आज्ञा को न माने और तेरी सारी बातों को जो तू आज्ञा करे
न सुनेगा सो मार डाला जावेगा केवल बलवंत हो और
सुसाहस कर ॥

दूसरा पर्व्व ।

१ और नून के बेटे यहूशूअ ने सित्तीम से दो मनुष्य भेजे कि
चुपके से भेद लेवें और उन्हें कहा कि जाओ उस देश को
और यरीहो को देखो सो वे गये और एक गणिका के घर में
जिस का नाम राहब था आके वहां उतरे ॥
२ तब यरीहो के राजा को संदेश पहुंचा कि देख आज रात
इसराएल के संतान में से लोग यहां आये हैं जिसतें देश का भेद
३ लेवें । तब यरीहो के राजा ने राहब को यह कहके कहला
भेजा कि उन मनुष्यों को जो तुझ पास आये हैं और तेरे घर
में उतरे हैं निकाल दे क्योंकि वे सारे देश का भेद लेने को
आये हैं ॥
४ तब उस स्त्री ने उन दोनों मनुष्यों को लेके छिपा रक्खा
और यों कहा कि वे मनुष्य मेरे पास आये तो थे पर मैं
५ नहीं जानती कि वे कहां के थे । और यों हुआ कि फाटक
बंद करते वे मनुष्य अंधेरे में निकल गये और मैं नहीं जानती
कि वे कहां गये सो शीघ्र उन का पीछा करो क्योंकि तुम
६ उन्हें जा ही लेओगे । परन्तु वुह उन्हें अपनी छत पर चढ़ा ले
गई और सनई के नीचे जो छत पर सजो रक्खी थी उन्हें छिपा
७ दिया । और लोग उन के पीछे यरदन की ओर हलाव लों
गये और ज्यों उन के खोजी बाहर निकल गये त्योंही उन्हों
ने फाटक बंद कर लिया ॥
८ और वुह स्त्री उन के लेटने से आगे छत पर उन पास
९ गई । और उन मनुष्यों से कहा कि मैं जानती हूं कि परमेश्वर ने यह

देश तुम्हें दिया है और कि तुम्हारा भय हम पर पड़ा है
और इस देश के समस्त बासी तुम्हारे आगे गल गये हैं ।
१० क्योंकि हम ने सुना है जब कि तुम मिस्र से बाहर निकले तो
परमेश्वर ने तुम्हारे साम्हने लाल समुद्र के पानी को किस
रीति से सुखा दिया और तुम ने अमूरियों के दो राजाओं सैहून
और ऊज से जो यरदन के उस पार थे क्या किया जिन्हें तुम
११ ने सर्व्वथा नाश किया । और ज्योंही हम ने सुना त्योंही
हमारे मन गल गये और किसी में तुम्हारा साम्ना करने का
तनिक भी हियाव न रहा क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर ऊपर
१२ स्वर्ग में और नीचे पृथिवी में वही ईश्वर है । सो अब मुझ से
परमेश्वर की किरिया खाओ कि जैसा मैं ने तुम पर अनुग्रह
किया वैसा ही तुम भी मेरे पिता के घराने पर अनुग्रह करियो
१३ और मुझे एक सच्चा चिन्ह दीजिये । कि मेरे पिता और मेरी
माता को और मेरे भाइयों और मेरी बहिनों को और सब जो
उन का है बचाओ और हमारे प्राणों को मृत्यु से छुड़ाओ ॥
१४ तब उन मनुष्यों ने उसे उत्तर दिया कि मृत्यु के विषय में
हमारे प्राण तुम्हारे प्राण के संती यदि तू हमारा यह कार्य्य
न उच्चारे और ऐसा होगा कि जब परमेश्वर इस देश को हमें
देगा तब हम तेरे साथ अनुग्रह और सच्चाई से ब्यवहार करेंगे।
१५ तब उस ने उन्हें डोरी से खिड़की में से उतार दिया क्योंकि
उस का घर नगर की भीत पर था और वुह भीत ही पर
१६ रहती थी । और उस ने उन्हें कहा कि पहाड़ पर चढ़ जाओ
न हो कि खोजी तुम्हें मिलें सो तुम वहां तीन दिन लों छिपे
रहो जब लों कि खोजी फिर आवें और उस के पीछे तुम अपने
मार्ग पर चलो ॥
१७ तब उन मनुष्यों ने उसे कहा कि इस किरिया से जो तू ने
१८ हम से लिई है हम निर्दोषी होंगे । देख जब हम इस देश

में आवेंगे तब यह लाल सूत की डोरी इस खिड़की से बांधियो
जिस्से तू ने हमें नीचे उतार दिया और अपने पिता और
अपनी माता और अपने भाइयों को और अपने पिता के सारे
१९ घराने को अपने यहां घर में बटोरियो। और ऐसा होगा कि जो
कोई तेरे घर के द्वारों से बाहर जावेगा उस का लोहू उस के
सिर पर होगा और हम निर्दोष होंगे और जो कोई तेरे साथ
घर में होगा यदि किसी का हाथ उस पर पड़े तो उस का
२० लोहू हमारे सिर पर होगा। और यदि तू हमारा यह कार्य्य उच्चारे
तो हम उस किरिया से जो तू ने हम से लिई अलग होंगे।
२१ और वुह बोली जैसा तुम ने कहा वैसा ही हो सो उन्हें बिदा
किया और वे चले गये तब उस ने वुह लाल सूत की डोरी
खिड़की पर बांधी॥
२२ और वे वहां से चलके तीन दिन लों पहाड़ पर रहे जब
लों कि खोजी लौट आये और उन खोजियों ने उन्हें समस्त
२३ मार्ग में ढूंढ़ा और न पाया। तब वे दोनों पुरुष फिरे और
पहाड़ से उतरे और पार हुए और नून के बेटे यहूशूअ पास
२४ आये और जो जो कुछ उन पर बीता था सब उस्से कहा। और
उन्हों ने यहूशूअ से कहा कि निश्चय परमेश्वर ने यह समस्त
देश हमारे बश में कर दिया और देश के समस्त बासी भी
हमारे कारण गल गये॥

तीसरा पर्व्व।

१ तब यहूशूअ बड़े तड़के उठा और सित्तीम से यात्रा किई
और वुह और समस्त इसराएल के संतान यरदन पार पहुंचे
२ और पार उतरने से आगे वहां रात भर रहे। और यों हुआ
३ कि तीन दिन के पीछे अध्यक्ष सेना में होके गये। और लोगों
को आज्ञा करके कहा कि जब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की

साक्षी की मंजूषा को और लावी याजक को उसे उठाते हुए
देखो तब तुम अपने स्थान से यात्रा करो और उस के पीछे
४ पीछे चलो। केवल तुम्हारे और उस के मध्य में दो सहस्र
हाथ का अंतर रहे उस के पास मत आओ जिसतें जिस मार्ग
से तुम्हें जाना है तुम पहिचानो क्योंकि तुम इस मार्ग से आज
कल नहीं गये॥

५ और यहूशूअ ने लोगों से कहा कि अपने को शुद्ध करो
क्योंकि कल परमेश्वर तुम्हारे मध्य में आश्चर्य्य दिखावेगा।
६ और यहूशूअ याजकों को कहके बोला कि साक्षी की मंजूषा को
उठाओ और लोगों के आगे आगे पार उतरो सो उन्हों ने साक्षी
की मंजूषा को उठाया और लोगों के आगे आगे चले॥

७ तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि आज के दिन मैं
समस्त इसराएल की दृष्टि में तुझे महान बनाना आरंभ करूंगा
जिसतें वे जानें कि जिस रीति से मैं मूसा के साथ था तेरे
८ साथ हूंगा। और तू उन याजकों से जो साक्षी की मंजूषा को
उठाते हैं आज्ञा करके कहियो कि जब तुम यरदन के जल के
तीर पर पहुंचो तब यरदन में खड़े रहियो॥

९ सो यहूशूअ ने इसराएल के संतानों से कहा कि इधर
१० आओ और परमेश्वर अपने ईश्वर की बातें सुनो। और यहूशूअ
ने कहा कि इस्से तुम जानोगे कि जीवता सर्वशक्तिमान तुम्हारे
मध्य में है और वुह कनआनियों और हित्तियों और हवियों
और फ़रज्जियों और जिरजासियों और अमूरियों और यबूसियों
११ को तुम्हारे आगे से हांक देगा। देखो समस्त पृथिवी के
परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा तुम्हारे आगे आगे यरदन के
१२ पार जाती है। सो अब तुम अपने लिये बारह जन इसराएल
१३ की गोष्ठियों में से हर एक गोष्ठी पीछे एक मनुष्य लेओ। और
ऐसा होगा कि ज्योंही याजक के पांव के तलवे जो परमेश्वर

समस्त पृथिवी के प्रभु की साक्षी की मंजूषा उठाते हैं यरदन
के जल में ठहरें त्योंही यरदन के पानी जो ऊपर से बहते हैं
थम जायेंगे और एक ढेर हो रहेंगे॥
१४ और ऐसा हुआ कि जब लोग अपने डेरे से चल निकले
कि यरदन पार जावें और याजकों ने लोगों के आगे साक्षी की
१५ मंजूषा को उठाया। और ज्यों वे जो मंजूषा को उठाये हुए
थे यरदन लों पहुंचे और उन याजकों के पांव जो मंजूषा को
उठाये हुए थे तीर के पानी में डूबे क्योंकि लवनी के समय
१६ में यरदन अपने समस्त कड़ारों के ऊपर बहती है। तो जल
जो ऊपर से आये ठहर गये और एक ढेर होके आदम नगर से
बहुत दूर उभड़े जो ज़रतान के पास है और जो समुद्र के
चौगान की ओर बहि आये अर्थात् खारी समुद्र के घट गये
और अलग किये गये और लोग यरीहो के सन्मुख पार उतर
१७ गये। और याजक जो परमेश्वर की बाचा की मंजूषा को लिये
हुए थे दृढ़ता से सूखी भूमि पर यरदन नदी के मध्य में खड़े
रहे और समस्त इसराएली सूखी भूमि पर पार उतर गये यहां
लों कि समस्त लोग निर्धार पार उतर चुके॥

चौथा पर्ब्ब।

१ और यों हुआ कि जब सारे लोग यरदन पार उतर चुके
२ तब परमेश्वर यहूशूअ से कहके बोला। कि लोगों में से अपने
लिये बारह मनुष्य लेओ हर एक गोष्ठी में से एक मनुष्य।
३ और उन्हें आज्ञा करके कह कि अपने लिये यहां से यरदन
के बीचोंबीच में से उस स्थान से जहां याजकों के पांव दृढ़
खड़े रहे बारह पत्थर लेओ और उन्हें अपने साथ पार ले
जाओ और उन्हें निवास स्थान में जहां तुम आज रात निवास
४ करोगे धरो। तब यहूशूअ ने बारह मनुष्यों को जिन्हें उस

ने इसराएल के संतानों में से सिद्ध किया था बुलाया हर एक
५ गोष्ठी पीछे एक एक मनुष्य । और यहूशूअ ने उन्हें कहा कि
अपने ईश्वर परमेश्वर की मंजूषा के आगे पार उतरके यरदन
के बीचोंबीच जाओ और हर एक तुम्में से अपने लिये इसराएल
के संतानों की गोष्ठी की गिनती के समान एक पत्थर अपने कांधे
६ पर लेवे । जिसतें यह तुम्हारे मध्य एक चिन्ह होवे जब
आगमी काल में तुम्हारे वंश पूछें और कहें कि ये पत्थर
७ तुम्हारे लिये कैसे हैं । तो तुम उन्हें कहियो कि जब यरदन के
पानी परमेश्वर की बाचा की मंजूषा के आगे दो भाग हुए जब
वुह यरदन पार गया तो यरदन के पानी दो भाग हुए सो
ये पत्थर स्मरण के लिये इसराएल के संतानों के कारण अन्त
लों होंगे ॥
८ और इसराएल के संतानों ने जैसी यहूशूअ ने उन्हें आज्ञा
किई वैसा ही किया और इसराएल के संतानों की गोष्ठियों की
गिनती के समान यरदन के मध्य में से बारह पत्थर उठाये
जैसा परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा था और उन्हें अपने संग
९ उस स्थान लों जहां वे टिके ले गये । तब यहूशूअ ने यरदन
के बीचोंबीच उस स्थान पर जहां याजकों के पांव पड़े जो
साक्षी की मंजूषा को उठाये थे बारह पत्थर खड़े किये सो वे
आज के दिन लों वहां हैं ॥
१० और याजक जो मंजूषा को उठाये हुए थे यरदन के
बीचोंबीच खड़े रहे जब लों हर एक बात जो परमेश्वर ने
यहूशूअ को आज्ञा किई कि मंडली को कहे उस सब के समान
जो मूसा ने यहूशूअ को आज्ञा किई संपूर्ण हो चुकी तब लोग शीघ्रता
११ करके पार उतर गये । और यों हुआ कि जब समस्त लोग पार हो
चुके तब लोगों के आगे याजक परमेश्वर की मंजूषा लिये हुए पार
१२ गये । तब रूबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की

आधी गोष्ठी जैसा मूसा ने कहा था इसराएल के संतानें के
१३ आगे हथियार बांधे हुए पार उतर गये। चालीस सहस्र एक
हथियार बांधे हुए लैस संग्राम के निमित्त परमेश्वर के आगे
यरीहो के चैागानें में पार उतरे ॥
१४ उस दिन परमेश्वर ने समस्त इसराएल की दृष्टि में यहूशूअ
को महिमा दिई और वे उस के जीवन भर उस्से ऐसा डरे जैसा
वे मूसा से डरते थे ॥
१५। १६ तब परमेश्वर यहूशूअ से यों कहके बोला। कि उन
याजकों से जो साक्षी की मंजूषा को उठाते हैं आज्ञा कर कि
१७ यरदन से बाहर निकल आओ। सो यहूशूअ ने याजकों को
१८ आज्ञा किई कि यरदन से निकल आओ। और ऐसा हुआ कि
जब वे याजक जो परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा उठाये हुए
थे यरदन के बीच में से बाहर आये और याजकों के पांव के
तलवे सूखी भूमि पर निकल आये त्योंही यरदन के पानी
अपने स्थानों में फिर आये और आगे के समान अपने सब
कड़ारों पर बहने लगे ॥
१९ और मंडली पहिले मास की दसवीं तिथि को यरदन से
निकली और यरीहो के पूरब सिवाने में जिलजाल में छावनी
२० किई। और यहूशूअ ने उन बारह पत्थरों को जो यरदन से
२१ उठाये गये थे जिलजाल में खड़ा किया। और इसराएल के
संतानों से कहा कि जब तुम्हारे लड़के आगमी काल में अपने
२२ पितरों से पूछें कि ये पत्थर कैसे हैं। तो तुम अपने लड़कों
को बतलाके कहियो कि इसराएली इस यरदन से सूखी भूमि
२३ से पार आये। क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने यरदन के
पानियों को तुम्हारे आगे सुखा दिया जब लों तुम पार हो
गये जैसा परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने लाल समुद्र को किया था
जिसे उस ने हमारे आगे सुखा दिया जब लों हम पार उतर

२४ गये । जिसतें समस्त पृथिवी के लोग जानें कि परमेश्वर का
हाथ सामर्थी है जिसतें तुम परमेश्वर अपने ईश्वर से सदा डरा
करो ॥

पांचवां पर्व्व ।

१ और ऐसा हुआ कि जब अमूरियों के सारे राजाओं ने जो
यरदन के इस पार पश्चिम दिशा में थे और कनआनियों के
समस्त राजाओं ने जो समुद्र के तीर पर थे सुना कि परमेश्वर
ने इसराएल के संतानों के आगे यरदन के पानियों को सुखा
दिया यहां लों कि वे पार उतर गये तो उन के मन घट
गये और इसराएल के संतान के कारण उन के जी में जी न
रहा ॥
२ उस समय परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि अपने लिये
चोखी छुरी बना और इसराएल के संतानों का ख़तनः फेर कर ।
३ और यहूशूअ ने अपने लिये चोखी छुरियां बनाईं और खलड़ियों के
४ टीले पर इसराएल के संतानों का ख़तनः किया । और यहूशूअ ने
जो ख़तनः किया उस का कारण यह है कि सारे लोग जो
मिस्र से निकल आये थे अर्थात् समस्त योद्धा पुरुष अरण्य के
५ मार्ग में मर गये । क्योंकि सब लोग जो बाहर आये ख़तनः किये
गये पर वे सब लोग जो मिस्र से निकलने के पीछे अरण्य के
६ मार्ग में उत्पन्न हुए थे उन का ख़तनः न हुआ था । क्योंकि
इसराएल के संतान चालीस बरस अरण्य में फिरते रहे यहां
लों कि सारे योद्धा जो मिस्र से बाहर आये नष्ट हुए क्योंकि
उन्हों ने परमेश्वर के शब्द को न माना जिन से परमेश्वर ने
किरिया खाई थी कि मैं तुम्हें वुह देश न दिखलाऊंगा जिस
के कारण मैं ने तुम्हारे पितरों से किरिया खाके कहा कि मैं
तुम्हें वुह देश देऊंगा जिस में दूध और मधु बहता है ।

७ और उन के संतानों ने जिन्हें उस ने उन की संती उठाया
यहूशूअ ने उन का ख़तनः किया क्योंकि वे अख़तनः थे इस
८ कारण कि उन्हों ने मार्ग में ख़तनः न करवाया। और ऐसा
हुआ कि जब वे सब लोग ख़तनः करवा चुके तब वे छावनी में अपने
९ अपने स्थान में रहे जब लों वे चंगे हुए। तब परमेश्वर ने यहूशूअ
से कहा कि आज के दिन मैं ने मिस्र के अपमान को तुम पर
से उठा दिया इस लिये वुह स्थान आज के दिन लों जिलजाल
कहावता है॥

१० सो इसराएल के संतानों ने जिलजाल में डेरा किया और
उन्हों ने यरीहो के चौगान में मास की चौदहवीं तिथि में
११ सांझ को पार जाने का पर्व रक्खा। और उन्हों ने बिहान
को उसी दिन पार जाने के पर्व के पीछे उस देश के पुराने
१२ अन्न के अख़मीरी फुलके और भुना खाया। और जब उन्हों
ने उस देश के पुराने अन्न खाये उसी दिन से मन्न बरसना
थम गया और इसराएल के संतानों के लिये मन्न न था और
उन्हों ने उसी बरस कनआन के देश की बढ़ती खाई॥

१३ और ऐसा हुआ कि जब यहूशूअ यरीहो के पास था तो
उस ने अपनी आंख ऊपर किई और देखा कि उस के साम्ने
एक मनुष्य तलवार हाथ में खैंचे हुए खड़ा है तब यहूशूअ
उस पास गया और उसे कहा कि तू हमारी ओर अथवा हमारे
१४ शत्रुन की ओर है। और वुह बोला नहीं परन्तु मैं अभी
परमेश्वर की सेना का अध्यक्ष होके आया हूं तब यहूशूअ भूमि
पर औंधा गिरा और दंडवत किई और उसे कहा कि मेरे प्रभु
१५ अपने सेवक को क्या आज्ञा करता है। तब परमेश्वर की सेना
के अध्यक्ष ने यहूशूअ से कहा कि अपने पांव से अपना जूता
१६ उतार क्योंकि यह स्थान जहां तू खड़ा है पवित्र है। और
यहूशूअ ने ऐसा ही किया॥

छठवां पर्ब्ब।

१ अब इसराएल के संतानों के कारण यरीहो बंद हुआ और
बंद किया गया कोई बाहर न जाता था और न कोई भीतर
२ आता था। और परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि देख मैं ने
यरीहो को और उस के राजा और वहां के महावीरों को तेरे
३ बश में कर दिया। सो समस्त योद्धा नगर को घेर लेओ और
एक बार उस के चारों ओर फिरो इस रीति से छः दिन लों
४ कीजियो। और सात याजक मंजूषा के आगे सात नरसिंगे
उठावें और तुम सातवें दिन सात बार नगर के चारों ओर
५ फिरो और याजक नरसिंगे फूंकें। और यों होगा कि जब वे
देर लों नरसिंगे फूंकेंगे और जब तुम नरसिंगे का शब्द सुनो
तो समस्त लोग महा शब्द से ललकारें और नगर की भीत
नीचे से गिर जायेगी और लोग ऊपर चढ़ जावें हर एक जन
अपने अपने आगे॥

६ तब नून के बेटे यहूशूअ ने याजकों को बुलाया और उन्हें
कहा कि साक्षी की मंजूषा उठाओ और सात याजक सात
नरसिंगे परमेश्वर की मंजूषा के आगे लिये हुए चलो॥

७ तब उस ने लोगों से कहा कि जाओ और नगर को घेरो
और जो हथियारबंद हैं सो परमेश्वर की मंजूषा के आगे आगे
८ चलें। और ऐसा हुआ कि जब यहूशूअ ने लोगों से यह कहा
तो सात याजक सात नरसिंगे लेके परमेश्वर के आगे आगे चले
और उन्हों ने नरसिंगे फूंके और परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा
९ उन के पीछे पीछे गई। और हथियारबंद लोग उन याजकों
के जो नरसिंगे फूंकते थे आगे आगे चले और जो अन्त की
सेना में थे मंजूषा के पीछे पीछे चले और नरसिंगे फूंकते जाते
१० थे। और यहूशूअ ने लोगों को आज्ञा करके कहा कि तुम

मत ललकारियो और न अपना शब्द सुनाइयो और तुम्हारे
मुंह से कुछ बात न निकले जब लों मैं तुम्हें ललकारने को
११ कहूं तब ललकारियो। सो परमेश्वर की मंजूषा नगर के चारों
ओर एक बार फिर आई और वे छावनी में आये और छावनी
में रात भर रहे॥
१२ और बिहान को यहूशूअ उठा और याजकों ने परमेश्वर
१३ की मंजूषा को उठा लिया। और सात याजक सात नरसिंगे
लेके परमेश्वर की मंजूषा के आगे आगे नरसिंगे फूंकते चले
जाते थे और वे जो हथियारबंद थे उन के आगे आगे हो
लिये और वे जो पीछे थे परमेश्वर की मंजूषा के पीछे हुए और
१४ नरसिंगे फूंकते जाते थे। सो दूसरे दिन भी वे एक बार नगर
की चारों ओर फिरके छावनी में फिर आये ऐसा ही उन्हों ने
छः दिन लों किया॥
१५ और सातवें दिन यों हुआ कि वे बिहान पौ फटते भोर
को उठे और उसी भांति से नगर की चारों ओर सात बार
फिरे केवल उसी दिन वे सात बार नगर की चारों ओर फिरे।
१६ सो सातवीं फेरी में ऐसा हुआ कि जब याजकों ने नरसिंगे
फूंके तब यहूशूअ ने लोगों से कहा कि ललकारो क्योंकि
१७ परमेश्वर ने नगर तुम को दिया है। और नगर और सब जो
उस में हैं परमेश्वर के लिये स्रापित होंगे केवल राहब गणिका
उन सब समेत जो उस के साथ उस के घर में हैं जीती
बचेगी क्योंकि उस ने उन अगुओं को जो हम ने भेजे
१८ थे छिपाया। परन्तु तुम जो हो अपने को स्रापित बस्तों से
अलग रखियो ऐसा न होवे कि तुम स्रापित बस्तु लेके स्रापित हो
जाओ और इसराएल की छावनी को स्रापित करके उसे दुःख
१९ देओ। परन्तु सब चांदी और सोना और लोहे पीतल के पाच
परमेश्वर के लिये पवित्र हैं वे परमेश्वर के भंडार में पहुंचाये जावेंगे॥

२० सो लोगों ने ललकारा और उन्हों ने नरसिंगे फूंके और
ऐसा हुआ कि जब लोगों ने नरसिंगे का शब्द सुना और लोगों
ने महा शब्द से ललकारा तब भीत नीचे से गिर पड़ी और
लोग नगर पर चढ़ गये हर एक मनुष्य अपने अपने आगे और
२१ नगर को ले लिया। और उन्हों ने उन सब को जो नगर में
थे क्या पुरुष क्या स्त्री क्या युवा क्या वृद्ध क्या बैल क्या भेड़
क्या गदहा एक बार तलवार की धार से मार डाला॥
२२ परन्तु यहूशूअ ने उन दो मनुष्यों को जो उस देश के
भेद के लिये गये थे कहा कि गणिका के घर जाओ और वहां
से उस स्त्री को और सब जो उस का हो जैसे तुम ने उस्से
२३ किरिया खाई थी निकाल लाओ। तब वे दोनों तरुण भेदिये
चले गये और राहब को उस के पिता और उस की माता
और उस के भाइयों और सब जो उस का था और उस के
समस्त घराने समेत निकाल लाये और उन्हें इसराएल की छावनी
के बाहर रख छोड़ा॥
२४ और उन्हों ने उस नगर को और सब जो उस में थे आग
से फूंक दिया केवल चांदी और सोना और पीतल और लोहे
के पात्र परमेश्वर के घर के भंडार में पहुंचाये॥
२५ और यहूशूअ ने राहब गणिका को और उस के पिता के
घराने को और सब जो उस का था बचाया और उस का
निवास आज लों इसराएल के संतानों में है क्योंकि उस ने
उन भेदियों को जिन्हें यहूशूअ ने यरीहो के भेद के लिये भेजा
था छिपाया॥
२६ और यहूशूअ ने उस समय किरिया खाई और कहा कि
जो मनुष्य उठे और इस नगर यरीहो को फिर बनावे वुह
परमेश्वर के आगे स्रापित होगा वुह अपने पहिलौठे पर उस की
नेंव डालेगा और अपने छोटे पर उस के फाटक को खड़ा करेगा॥

२७ सो परमेश्वर यहूशूअ के साथ था और समस्त देश में उस
की कीर्त्ति फैली ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ परन्तु इसराएल के संतानों ने स्रापित बस्तु के बिषय में
अपराध किया क्योंकि शारिक का पुत्र ज़बदी का पुत्र करमी के
पुत्र अकन ने जो यहूदाह की गोष्ठी का था कुछ स्रापित बस्तु
में से लिया और परमेश्वर का कोप इसराएल के संतानों पर
भड़का ॥

२ तब यहूशूअ ने यरीहो से अई में जो बैतअवन के लग
बैतएल की पूरब ओर है लोगों को भेजा और उन्हें कहके
बोला कि जाओ और देश को देख आओ सो वे लोग चढ़ गये
३ और अई को देख आये । और वे यहूशूअ पास फिर आये
और उस्से कहा कि समस्त लोग न चढ़ें केवल दो अथवा
तीन सहस्र जन के लग भग चढ़ जावें और अई को मारें सब
४ लोगों को परिश्रम न दीजिये क्योंकि वे थोड़े हैं । सो लोगों में
से तीन सहस्र के लग भग वहां चढ़ गये और अई के लोगों
५ के आगे से भागे । और अई के लोगों ने उन में से छत्तीस
मनुष्य मार लिये और वे फाटक के आगे से लेके शबरीम
लों उन्हें रगेदे आये और उन्हों ने उतार में उन्हें मारा इस
कारण लोगों के मन घट गये और पानी की नाईं हो गये ॥

६ तब यहूशूअ और इसराएल के प्राचीनों ने अपने अपने
कपड़े फाड़े और परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा के आगे सांझ
लों भूमि पर औंधे पड़े रहे और अपने सिरों पर धूल उड़ाई ।
७ और यहूशूअ बोला कि हाय हे प्रभु परमेश्वर तू इन लोगों को
किस कारण यरदन पार लाया कि हमें नाश करने के लिये
अमूरियों के हाथ में सौंप देवे हाय कि हम सन्तोष करते और

८ यरदन के उसी पार रहते। हे मेरे स्वामी जब इसराएल
९ अपने शत्रुन के आगे पीठ फेरते हैं तब मैं क्या कहूं। क्योंकि
कनआनी और देश के समस्त बासी सुनेंगे और हमें घेर लेंगे
और हमारा नाम पृथिवी पर से मिटा डालेंगे और तू अपने
महत नाम के लिये क्या करेगा॥
१० तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि उठ तू किस लिये
११ औंधा पड़ा है। इसराएल ने पाप किया है और उन्हों ने उस
बाचा से जो मैं ने उन से बांधी अपराध किया क्योंकि उन्हों
ने स्रापित बस्तु में से भी कुछ लिया और चोरी भी किई और
१२ छल भी किया और अपनी सामग्री में भी रख लिया। सो
इसराएल के संतान अपने शत्रुन के आगे ठहर न सके उन्हों
ने अपने बैरियों के आगे पीठ फेरी क्योंकि वे स्रापित हुए सो
अब मैं आगे को तुम्हारे साथ न होऊंगा जब लों तू स्रापित
१३ को अपने में से नाश न करे। उठ लोगों को शुद्ध कर और
कह कि अपने को कल के लिये शुद्ध करो क्योंकि परमेश्वर
इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि हे इसराएल तेरे मध्य
स्रापित बस्तु है तू अपने शत्रुन के साम्ने ठहर नहीं सक्ता जब
१४ लों स्रापित बस्तु को अपने में से दूर न करेगा। सो तुम बिहान
को अपनी अपनी गोष्ठियों के समान पहुंचाये जाओगे और ऐसा
होगा कि जिस गोष्ठी को परमेश्वर पकड़ेगा सो अपने घराने
समेत आवे और जिस घराने को परमेश्वर पकड़ेगा वुह अपने
परिवार समेत आवे और जिस घराने को परमेश्वर पकड़ेगा सो
१५ एक एक जन आवे। और ऐसा होगा कि जो किसी स्रापित
बस्तु के साथ पकड़ा जायगा सो अपनी सामग्री समेत आग से
जला दिया जायगा इस लिये कि उस ने परमेश्वर की बाचा
का अपराध किया और इस कारण कि उस ने इसराएल के
संतानों में मूरखता किई॥

१६ तब यहूशूअ बिहान को तड़के उठा और इसराएल को
उन की गोष्ठियों के समान लाया और यहूदाह की गोष्ठी पकड़ी
१७ गई। और यहूदाह के घराने को समीप लाया और शारिक
का घराना पकड़ा गया और शारिक के घराने के एक एक मनुष्य
१८ को आगे लाया और ज़बदी पकड़ा गया। और वुह उस के
घराने का एक एक जन लाया और शारिक का बेटा ज़बदी
का बेटा करमी का बेटा यहूदाह की गोष्ठी का अकन पकड़ा
गया॥

१९ तब यहूशूअ ने अकन से कहा कि हे मेरे बेटे अब परमेश्वर
इसराएल के ईश्वर की महिमा कर और उस को मान ले और
मुझ से कहियो कि तू ने क्या किया है मुझ से मत छिपा।
२० तब अकन ने यहूशूअ को उत्तर दिया और कहा कि निश्चय
मैं ने परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का पाप किया है और मैं ने
२१ ऐसा ऐसा किया है। जब मैं ने बाबुल्नी सुन्दर बस्त्र और
दो सौ शेकल चांदी और पचास शेकल के तौल की सोने की
गुल्ली लूट के धन में से देखा तो मैं ने उन का लालच किया
और उन्हें ले लिया और देख वे मेरे तंबू के बीच भूमि में
२२ गड़े हैं और चांदी उस के तले। तब यहूशूअ ने दूत भेजे
और वे तंबू को दौड़े और देखा कि उस के तंबू में गड़ा था
२३ और चांदी उस के तले। और वे उन्हें तंबू में से निकाल के
यहूशूअ और समस्त इसराएल के संतान के आगे लाये और
उन्हें परमेश्वर के आगे डाल दिया॥

२४ तब यहूशूअ और उस के संग सारे इसराएल ने शारिक के बेटे
अकन को और चांदी और बस्त्र और सोने की गुल्ली और उस के
बेटे बेटियां और उस के गोरू और उस के गदहे और उस के
भेड़ बकरी और उस के तंबू और सब जो उस का था लिया
२५ और उन्हें अकूर की तराई में लाये। और यहूशूअ ने कहा

कि तू ने हमें क्यों दुःख दिया परमेश्वर आज तुझे दुःख देगा
तब समस्त इसराएल ने उस पर पत्थरवाह किया और उन्हें
२६ आग से जला दिया और उन्हें पत्थरों से छिपा दिया। और
उन्हों ने उस पर पत्थरों का ढेर किया जो आज लों है तब
परमेश्वर अपने क्रोध के जलजलाहट से फिर गया इस लिये
उस स्थान का नाम आज लों अकूर की तराई है॥

आठवां पर्ब्ब।

१ तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि मत डर और भय
मत कर सारे योद्धाओं को अपने साथ ले और उठ अई पर
चढ़ जा देख मैं ने अई के राजा और उस के लोग और उस
के नगर और उस के देश को तेरे हाथ में कर दिया है।
२ और तू अई से और उस के राजा से वही कीजियो जो तू ने
यरीहो से और उस के राजा से किया केवल वहां का धन
और उस का ढोर तुम अपने लिये लूट लीजियो नगर के पीछे
से घात में बैठियो॥
३ सो यहूशूअ और सारे योद्धा उठे जिसतें अई पर चढ़ें
और यहूशूअ ने तीस सहस्र महाबीर चुन लिये और रात को
४ उन्हें भेज दिया। और उन्हें आज्ञा करके कहा कि देखो तुम
नगर के पिछवाड़े घात में बैठियो नगर से बहुत दूर मत
५ जाइयो परन्तु तुम सब लैस हो रहो। और मैं अपने संगी लोगों
को लेके नगर की ओर बढूंगा और ऐसा होगा कि जब वे
आगे की नाईं हमारा साम्ना करेंगे तब हम उन के आगे से
६ भागेंगे। और वे हमारा पीछा करेंगे यहां लों कि हम उन्हें
नगर से खेंच ले जावें क्योंकि वे कहेंगे कि वे आगे की नाईं
हमारे आगे से भागते हैं सो हम उन के आगे से भागेंगे।
७ तब तुम घात से उठियो और नगर को ले लीजियो क्योंकि

८ परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर उसे तुम्हारे हाथ में सौंप देगा। और
यों होगा कि जब तुम नगर को लेओगे तब नगर में आग
लगाइयो और परमेश्वर की आज्ञा के समान कीजियो देखो मैं
९ ने तुम्हें आज्ञा किई है। सो यहूशूअ ने उन्हें भेज दिया
और वे घात में बैठने गये और बैतएल और अई के मध्य
में अई की पश्चिम ओर रहे परन्तु यहूशूअ उसी रात लोगों
में रहा॥
१० और यहूशूअ ने बिहान को उठके लोगों को गिना और
वुह इसराएल के प्राचीन लोगों के आगे होके अई पर चढ़
११ गया। और समस्त योद्धा जो उस के साथ थे चढ़े और पास
आये और नगर के आगे पहुंचे और अई की उत्तर अलंग डेरे
१२ किये और उन में और अई में एक नीचाई थी। तब उस ने
पांच सहस्र मनुष्य के लगभग लिये और उन्हें बैतएल और
अई के मध्य में नगर की पश्चिम अलंग घात में बैठाया।
१३ और जब उन्हों ने सारे लोगों को अर्थात् समस्त सेना को
जो नगर के उत्तर थी और अपने घात के लोगों को नगर की
पश्चिम ओर घात में बैठाया तब यहूशूअ उसी रात उस
१४ नीचाई के मध्य में गया। और ऐसा हुआ कि जब अई के
राजा ने देखा तब उन्हों ने उतावली किई और तड़के उठे
और नगर के मनुष्य राजा और उस के सारे लोग ठहराये
हुए समय में चौगान के आगे इसराएल से लड़ाई करने के
लिये निकले परन्तु उस ने न समझा कि नगर के पीछे उस
१५ के बिरोध में लोग घात में लगे हैं। तब यहूशूअ और सारे
इसराएल ने ऐसा किया जैसा कि उन के आगे मारे गये और
१६ अरण्य की ओर भागे। और अई के समस्त लोग उन का
पीछा करने के लिये एकट्ठे बुलाये गये सो उन्हों ने यहूशूअ
१७ का पीछा किया और नगर से खैंचे गये। और अई में अथवा

बेतएल में कोई पुरुष न छूटा जिस ने इसराएल का पीछा न
किया और उन्हों ने नगर को खुला छोड़ा और इसराएल का
पीछा किया ॥
१८ तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि अपने हाथ के भाले
को अई की ओर बढ़ा क्योंकि मैं उसे तेरे हाथ में कर दूंगा
सो यहूशूअ ने अपने हाथ के भाले को उस नगर की ओर
१९ बढ़ाया। और उस के हाथ फैलाते ही घातिये अपने स्थान से
तत्काल उठे और नगर में पैठ गये और उसे ले लिया और
२० चटक से नगर में आग लगाई। और जब अई के लोगों ने
अपने पीछे देखा तो क्या देखते हैं कि नगर का धूंआं स्वर्ग
लों उठ रहा है और उन्हें इधर उधर भागने की सामर्थ्य न
रही और जो अरण्य की ओर भाग गये थे खेदवैयों पर उलटे
२१ फिरे। और जब यहूशूअ और सारे इसराएल ने देखा कि
घातियों ने नगर ले लिया और नगर से धूंआं उठ रहा है तब
२२ वे उलटे फिरे और अई के लोगों को घात किया। और वे
नगर में से उन पर निकल आये और इसराएल के मध्य में
पड़ गये कुछ इधर कुछ उधर और उन्हों ने उन्हें ऐसा मारा
२३ कि उन में से एक को न छोड़ा न भागने दिया। और उन्हों
ने अई के राजा को जीता पकड़ लिया और उसे यहूशूअ पास
लाये ॥
२४ और यों हुआ कि जब इसराएल खेत में उस अरण्य में
जहां उन का पीछा किया अई के सारे निवासियों को मार
चुके और जब वे सब खड्ग की धार पर पड़ गये और खप
गये तब सारे इसराएली अई को फिरे और उसे खड्ग की धार
२५ से मारा। और यों हुआ कि जो उस दिन मारे गये पुरुष
२६ और स्त्री बारह सहस्र थे अर्थात् अई के सब लोग। क्योंकि
यहूशूअ ने भाले के बढ़ाने से अपने हाथ को न खैंचा जब

लों अई के सारे निवासियों को सर्बथा नाश न किया था।
२७ परमेश्वर के बचन के समान जो उस ने यहूशूअ को आज्ञा
किई थी इसराएल ने उस नगर के केवल ढोर और लूट को
२८ आप ही लिया। और यहूशूअ ने अई को जलाके उसे सदा के
२९ लिये ढेर कर दिया सो वुह आज लों उजाड़ है। और उस
ने अई के राजा को फांसी देके सांझ लों पेड़ पर लटका रक्खा
और ज्योंही सूर्य्य अस्त हुआ यहूशूअ ने आज्ञा किई कि उस
की लोथ को पेड़ से उतारें और नगर के फाटक के पैठ में
फेंक देवें और उस पर पत्थरों का बड़ा ढेर करें सो आज
लों है॥
३० तब यहूशूअ ने ऐबाल के पहाड़ पर परमेश्वर इसराएल के
३१ ईश्वर के लिये एक बेदी बनाई। जैसा परमेश्वर के सेवक मूसा
ने इसराएल के संतानों से आज्ञा किई थी जैसा मूसा की
व्यवस्था की पुस्तक में लिखा हुआ है कि ढोकों की एक बेदी
जिस में टांकी न लगाई गई हो और उन्हों ने परमेश्वर के
लिये उस पर बलिदान की भेंटें और कुशल के बलि चढ़ाये।
३२ और उस ने वहां उन पत्थरों पर उस व्यवस्था को खोदा जो
३३ मूसा ने इसराएल के संतानों के आगे लिखी थी। और समस्त
इसराएलो और उन के प्राचीन और अध्यक्ष और उन के न्यायी
लावी याजकों के आगे जो परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा को
उठाया करते थे मंजूषा के इधर उधर खड़े हुए और उसी
रीति से परदेशी और जो उन में उत्पन्न हुए थे आधे जरिज़ीम
के पहाड़ पर और आधे ऐबाल के पहाड़ पर जैसा कि परमेश्वर
के सेवक मूसा ने पहिले कहा था कि वे इसराएल के संतानों
३४ को आशीष देवें। और उस ने उस के पीछे व्यवस्था की पुस्तक
के समस्त लिखे हुए के समान आशीष और स्राप की व्यवस्था
३५ के समस्त बचन को पढ़ा। मूसा की समस्त आज्ञा के समान

एक बात भी न रही जिसे यहूशूअ ने इसराएल की सारी
मंडली और स्त्रियों और बालकों और उन परदेशियों के आगे
जो उन के मध्य में चलते थे न पढ़ी ॥

नवां पर्ब्ब ।

१ और यों हुआ कि जब सारे राजाओं ने जो यरदन के इसी पार
पहाड़ में और तराई में और महा सागर के समस्त तीरों में
जो लुबनान के आगे हैं हित्ती और अमूरी कनआनी फिरज्जी
२ हव्वी और यबूसी ने सुना । तो वे एक मता होके यहूशूअ
और इसराएल के संतान से संग्राम करने के लिये एकट्ठे
हुए ॥
३ और जो कुछ यहूशूअ ने यरीहो और अई से किया था
४ जब जिबऊन के बासियों ने सुना । तब उन्हों ने कपट से
दूत का भेष बनाके पुराने पुराने बोरे और पुराने और टूटे
५ और जोड़े हुए मदिरा के पखाल अपने गदहों पर लादे । और
पुरानी और जोड़ी हुई जूती अपने पांवों में और अपनी देह पर
पुराने वस्त्र और उन के भोजन की रोटी सूखी और फफूंदी लगी
६ हुई । और वे यहूशूअ पास जिलजाल की छावनी में गये और
उस्से और इसराएल के लोगों से कहा कि हम दूर देश से आये हैं
७ सो अब तुम हम से बाचा बांधो । तब इसराएल के लोगों
ने हव्वियों से कहा कि कदाचित् तू हम में बास करता है तो
८ हम तुझ से क्योंकर बाचा बांधें । तब उन्हों ने यहूशूअ से
कहा कि हम तेरे सेवक हैं और यहूशूअ ने उन से कहा कि
९ तुम कौन और कहां से आये हो । और उन्हों ने उसे कहा कि
तेरे सेवक परमेश्वर तेरे ईश्वर के नाम के लिये अति दूर देश
से आये हैं क्योंकि हम ने उस की कीर्त्ति सुनी है और सब
१० जो उस ने मिस्र में किये । और सब जो उस ने अमूरियों के

दो राजाओं से जो यरदन के उस पार अर्थात् हसबून के राजा
सेहून और बसन के राजा ऊज से जो अश्तरूत में था किये ।
११ इस लिये हमारे प्राचीन और हमारे देश के समस्त बासी हम
से कहके बोले कि तुम यात्रा का भोजन अपने साथ लेओ
और उन से भेंट करो और उन्हें कहो कि हम तुम्हारे सेवक
१२ हैं तो अब तुम हम से बाचा बांधो । हम ने जिस दिन तेरे पास
आने को अपने घर छोड़े हमारे भोजन के लिये रोटी टटकी
१३ थी परन्तु अब देख सूख गई और फफूंदी लग गई । पर जब
हम ने इन्हें भरा था तब ये मदिरा के पखाल नये थे और
हमारे ये बस्त्र और जूते दूर की यात्रा के कारण से पुराने
१४ हो गये । तब उन लोगों ने उन के भोजन के कारण उन्हें ग्रहण
१५ किया और परमेश्वर से न बूझा । और यहूशूअ ने उन से
मिलाप किया और उन्हें जीते छोड़ने के लिये उन से बाचा
बांधी और मंडली के अध्यक्षों ने उन से किरिया खाई ॥
१६ और उन से बाचा बांधने के तीन दिन पीछे यों हुआ कि
उन्हों ने सुना कि वे हमारे परोसी हैं और हम्में रहते हैं ।
१७ और इसराएल के संतान यात्रा करके तीसरे दिन उन के
नगरों में पहुंचे और उन के नगर जिबऊन और कफ़ीर: और
१८ बिअरात और क़रयतअरीम थे । तब इसराएल के संतानों ने
उन्हें न मारा क्योंकि मंडली के अध्यक्षों ने उन से परमेश्वर
इसराएल के ईश्वर की किरिया खाई थी सो सारी मंडली अध्यक्षों
से कुड़कुड़ाई ॥
१९ परन्तु सारे अध्यक्षों ने समस्त मंडली से कहा कि हम ने उन
से परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की किरिया खाई है सो इस लिये
२० हम उन्हें छू नहीं सक्ते । हम उन से यह करके उन्हें जीता
छोड़ेंगे ऐसा न हो कि उस किरिया के कारण जो हम ने उन
२१ से खाई है हम पर कोप पड़े । और अध्यक्षों ने उन्हें कहा

कि उन्हें जीता छोड़ो परन्तु वे सारी मंडली के लिये लकड़हारे
और पनिहारे होवें जैसा कि अध्यक्षों ने उन से प्रण किया
था॥
२२ तब यहूशूअ ने उन्हें बुलाया और उन से कहा कि तुम ने हम
से यह कहके क्यों छल किया कि हम तुम से अति दूर हैं जब
२३ कि तुम हम्में रहते हो। सो इस लिये तुम स्रापित हुए और
तुम्में से कोई बंधुआई से छुट्टी न पावेगा जो मेरे ईश्वर के घर
२४ के लिये लकड़हारा और पनिहारा न हो। और उन्हों ने
यहूशूअ को उत्तर दिया और कहा कि तेरे सेवकों से निश्चय
कहा गया था कि किस रीति से परमेश्वर तेरे ईश्वर ने अपने दास
मूसा को आज्ञा किई कि मैं सारा देश तुम्हें देऊंगा और उस
देश के सारे बासियों को तुम्हारे आगे नाश करूंगा इस लिये
हम ने तुम्हारे कारण अपने प्राणों के डर के लिये यह काम
२५ किया। और अब देख हम तेरे बश में हैं जो कुछ तुझे
२६ हमारे लिये भला और ठीक जान पड़े सो कर। और उस ने
उन से वैसा ही किया और इसराएल के संतान के हाथ से
२७ उन्हें बचाया कि उन्हें मार न डालें। और यहूशूअ ने उन्हें
उसी दिन मंडली के लिये और परमेश्वर की वेदी के लिये उस
स्थान में जिसे वुह चुनेगा लकड़हारे और पनिहारे ठहराये॥

दसवां पर्ब्ब।

१ और जब यरूसलम के राजा अदूनीसिदक़ ने सुना कि यहूशूअ
ने अ़ई को ले लिया और उसे सर्बथा नाश किया जैसा उस ने
यरीहो और उस के राजा से किया था वैसा ही उस ने अ़ई
और उस के राजा से किया और कि जिबऊन के बासियों ने
२ इसराएल से मिलाप किया और उन में रहे। तब वे निपट
डर गये क्योंकि जिबऊन एक बड़ा नगर था और राज

नगरों के समान था और इस कारण कि वुह अई से भी बड़ा
३ था और वहां के लोग बली थे। तब यरूसलम के राजा
अदूनीसिदक़ ने हबरून के राजा हूहाम और यरमूत के राजा
पिराम और लकीस के राजा यफ़ीअ और इजलून के राजा
४ दबीर के पास कहला भेजा। कि मुझ पास चढ़ आओ और
मेरी सहायता करो जिसतें हम जिबऊन को मारें क्योंकि उस
५ ने यहूशूअ और इसराएल के संतानों से मिलाप किया। सो
अमूरियों के पांच राजा अर्थात् यरूसलम का राजा हबरून
का राजा यरमूत का राजा लकीस का राजा इजलून का राजा
वे एकट्ठे होके और उन की समस्त सेना जिबऊन के आगे
डेरे खड़े किये और उस्से लड़ाई किई॥

६ तब जिबऊन के लोगों ने यहूशूअ के पास जो जिलजाल
में डेरा किये था कहला भेजा कि अपने सेवकों से अपना
हाथ मत खैंच हम पास शीघ्र आइये और हमें बचाइये और
हमारी सहायता कीजिये क्योंकि अमूरियों के सारे राजा जो
७ पहाड़ में रहते हैं हमारे बिरोध में एकट्ठे हुए हैं। तब
यहूशूअ सारे योद्धाओं को और समस्त महाबीरों को साथ लेके
८ जिलजाल से चढ़ गया। और परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि
उन से मत डर क्योंकि मैं ने उन्हें तेरे बश में कर दिया उन
९ में से एक जन भी तेरे साम्ने ठहर न सकेगा। तब यहूशूअ
जिलजाल से उठके रात भर चला गया और अचानक उन पर
१० आ पहुंचा। और परमेश्वर ने इसराएल के आगे उन्हें ध्वस्त
किया और जिबऊन में बड़ी मार से उन्हें मारा और बेतहोरान
को जाते हुए मार्ग में उन्हें रगेदा और अज़ीक़: और मुक़ेद:
११ लों उन्हें मारा। और ऐसा हुआ कि जब वे इसराएल के साम्ने
से भाग निकले और बेतहोरान के उतार की ओर गये तब
परमेश्वर ने अज़ीक़: लों स्वर्ग से उन पर बड़े बड़े पत्थर बरसाये

और वे मूये वे जो ओले से मारे गये थे उन से अधिक थे
जिन्हें इसराएल के संतानों ने तलवार से मारा ॥
१२ जब परमेश्वर ने अमूरियों को इसराएल के संतान के बश
में कर दिया तब यहूशूअ ने उसी दिन परमेश्वर के लिये
इसराएल के आगे यों कहा कि हे सूर्य्य जिबऊन पर
१३ और हे चंद्रमा तू ऐयलून की तराई में ठहर जा। तब
सूर्य्य ठहर गया और चंद्रमा स्थिर हुआ जब लों उन लोगों
ने अपने शत्रुन से पलटा लिया क्या यसर की पुस्तक में नहीं
लिखा है सो सूर्य्य स्वर्ग के मध्य में ठहर रहा और दिन भर
१४ अस्त होने में शीघ्र न किया। और उस्से आगे पीछे ऐसा दिन
कभी न हुआ कि परमेश्वर ने एक पुरुष के शब्द को माना
१५ क्योंकि परमेश्वर ने इसराएल के लिये युद्ध किया। तब
यहूशूअ समस्त इसराएल के संग जिलजाल की छावनी को
फिर गया ॥
१६ परन्तु ये पांचों राजा भागे और मुक़ेद: की कंदला में जा
१७ छिपे। और यहूशूअ को संदेश पहुंचा कि पांचों राजा मुक़ेद:
१८ की कंदला में छिपे हुए पाये गये। तब यहूशूअ ने कहा कि
बड़े बड़े पत्थर उस कंदला के मुंह पर ढुलकाओ और उस पर
१९ चौकी बैठाओ। और तुम मत ठहरो परन्तु अपने शत्रुन का
पीछा करो और उन के पछरे हुओं को मार डालो उन के
नगरों में उन्हें पैठने मत देओ क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर
२० ने उन्हें तुम्हारे हाथ में कर दिया है। और ऐसा हुआ कि
जब यहूशूअ और इसराएल के संतान उन्हें नाश कर चुके
और बड़ी मार से उन्हें घात किया यहां लों कि वे नष्ट हुए और
२१ उन में के उबरे हुए बाड़े के नगरों में पैठ गये। और सारे
लोग मुक़ेद: की छावनी में यहूशूअ पास कुशल से फिर आये
और इसराएल के संतानों के विरोध में किसी ने मुंह न खोला ॥

२२ तब यहूशूअ ने कहा कि कंदला के मुंह को खोलो और
उन पांचों राजाओं को कंदला से मुझ पास बाहर लाओ।
२३ और उन्हों ने ऐसा ही किया और उन पांचों राजाओं को अर्थात्
यरूसलम के राजा को हबरून के राजा को यरमूत के राजा
को लकीस के राजा को इजलून के राजा को कंदला से उस
२४ पास निकाल लाये। और यों हुआ कि जब वे उन राजाओं
को यहूशूअ के आगे लाये तब यहूशूअ ने इसराएल के सारे
मनुष्यों को बुलाया और अपने साथ के योद्धा के प्रधानों से
कहा कि आगे आओ इन राजाओं के गलों पर अपने पांव
रक्खो तब वे पास आये और उन के गलों पर अपने पांव
२५ रक्खे। तब यहूशूअ ने उन्हें कहा कि डरो मत और बिस्मित
मत होओ प्रबल होके हियाव करो क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे
२६ समस्त शत्रुन से जिन से तुम लड़ते हो ऐसा ही करेगा। और
उस के पीछे यहूशूअ ने उन्हें मारा और उन्हें घात किया और
उन्हें पांच पेड़ों पर लटका दिया और वे सांझ लों उन पेड़ों
२७ पर लटके रहे। और सूर्य्य अस्त होने पर यों हुआ कि उन्हों
ने यहूशूअ की आज्ञा से उन्हें पेड़ों पर से उतारा और उसी
कंदला में जिस में वे जा छिपे थे डाल दिया और उस कंदला
के मुंह पर बड़े बड़े पत्थर ढुलकाये सो आज के दिन लों
है॥

२८ और उसी दिन यहूशूअ ने मुक़ेद: को ले लिया और उसे
और उस के राजा को और उस में के सारे प्राणियों को तलवार
की धार से नाश किया किसी को न छोड़ा और उस ने मुक़ेद: के
राजा से वही किया जो उस ने यरीहो के राजा से किया था॥

२९ तब यहूशूअ सारे इसराएल सहित मुक़ेद: से लिबन: को
३० गया और लिबन: से लड़ा। और परमेश्वर ने उसे भी उस के
राजा समेत इसराएल के हाथ में कर दिया और उस ने उसे

ओर उस में के समस्त प्राणियों को तलवार की धार से नाश
किया उस ने उस में एक भी न छोड़ा परन्तु वहां के राजा से
उस ने वही किया जो यरीहो के राजा से किया था ॥
३१ और लिबनः से यहूशूअ सारे इसराएल समेत लकीस को
३२ गया और उस के आगे छावनी किई और उस्से लड़ा । और
परमेश्वर ने लकीस को इसराएल के हाथ में कर दिया और
उस ने दूसरे दिन उसे ले लिया और उसे और उस में के
सारे प्राणियों को तलवार की धार से नाश किया उस सब के
समान जो उस ने लिबनः से किया था ॥
३३ तब जज़र का राजा होराम लकीस की सहायता को चढ़
आया पर यहूशूअ ने उसे और उस के लोगों को यहां लों
मारा कि एक भी न बचा ॥
३४ और यहूशूअ लकीस से सारे इसराएल समेत इजलून को
३५ गया और उस के साम्ने छावनी किई और उस्से लड़ा । और
उसी दिन उसे ले लिया और उसे तलवार की धार से मारा और
उस में के समस्त प्राणियों को सर्बथा नाश किया उस सब के
समान जो उस ने लकीस से किया था ॥
३६ फिर इजलून से यहूशूअ सारे इसराएल समेत हबरून को
३७ गया और उस्से लड़ा । और उसे लिया और उसे और उस के
राजा को और उस के समस्त नगरों को और उस में के समस्त
प्राणियों को तलवार की धार से मार डाला उस सब के समान जो
उस ने इजलून से किया था उस में एक को भी न छोड़ा परन्तु
उसे और उस में के सारे प्राणियों को सर्बथा नाश किया ॥
३८ तब यहूशूअ सारे इसराएल सहित वहां से दबीर को फिरा
३९ और उस्से लड़ा । और उसे और उस के राजा और उस के
सारे नगरों को ले लिया और उन्हें तलवार की धार से मार
डाला और उस में के समस्त प्राणियों को सर्बथा नाश किया

उस ने एक को भी न छोड़ा जैसा उस ने हबरून से किया था
वैसा दबीर से और उस के राजा से किया और जैसा लिबन:
से और उस के राजा से किया था ॥
४० सो यहूशूअ ने पहाड़ों के और दक्षिण की ओर तराई के और
नालों के देशों को और उन के समस्त राजाओं को मारा उस
ने एक को न छोड़ा परन्तु समस्त स्वासियों को सर्बथा नाश
किया जैसा कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने आज्ञा किई थी।
४१ और यहूशूअ ने क़ादिशबरनीअ से लेके अज्ज़: लों और जस्न
४२ के सारे देश को जिबऊन लों उन्हें मार डाला। और यहूशूअ
ने उन सब राजाओं को और उन के देश को एक ही समय
में ले लिया क्योंकि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर इसराएल के
लिये लड़ा तब यहूशूअ सारे इसराएल सहित जिलजाल की
छावनी को फिर आया ॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ और यों हुआ कि जब हसूर के राजा यबीन ने सुना तो
उस ने मदून के राजा यूबाब और शमरून के राजा और
२ इकशाफ़ के राजा को। और उन राजाओं को जो पहाड़ में उत्तर
दिशा को और किन्नारात की दक्षिण दिशा के चौगान को और
३ तराई में और दोर की ऊंचाइयों में पश्चिम में। और पूरब
पश्चिम में कनआनियों को और अमूरियों और हित्तियों और
[illegible]ज़ियों और यबूसियों को पर्बत में और हव्वियों को जो
[illegible] मिसफ़: में थे कहला भेजा। तब वे अपनी
[illegible]हुत लोग समुद्र के तीर की बालू के समान
[illegible]ार बहुत से रथों के साथ बाहर निकले।
[illegible]स्त राजा ठहराके एकट्ठे निकले तब उन्हों ने
[illegible] पर एकट्ठे छावनी किई जिसतें इसराएल से लड़ें ॥

६ तब परमेश्वर ने यहूशूअ से कहा कि उन से मत डर
क्योंकि कल इसी समय उन सभों को इसराएल के आगे मारके
डाल देता हूं तू उन के घोड़ों के पट्ठों की नस काटना और उन
७ के रथों को आग से जला देना। सो यहूशूअ और सारे लड़ाके
लोग उस के संग मेरोम के पानियों पास अचानक उन पर आ गिरे।
८ और परमेश्वर ने उन्हें इसराएल के हाथ में सौंप दिया और उन्हों
ने उन्हें मारा और बड़े सैदा और मिसरेफोटमाईम और पूरब में
मिसफ: की तराई लों उन्हें रगेदा और उन्हें यहां लों मारा
९ कि एक भी न बचा। और यहूशूअ ने परमेश्वर की आज्ञा के
समान उन के घोड़ों के पट्ठों की नस काटी और उन के रथ
आग से जला दिये॥

१० फिर यहूशूअ उसी समय फिरा और हसूर को ले लिया
और उस के राजा को तलवार से मारा क्योंकि अगले समय में
११ हसूर समस्त राज्यों से श्रेष्ठ था। और उन्हों ने समस्त
प्राणियों को जो वहां थे तलवार की धार से मारके सर्बथा
नाश किया वहां एक भी स्वासधारी न बचा और उस ने हसूर
१२ को आग से जला दिया। और यहूशूअ ने उन राजाओं के
सारे नगरों को और उन नगरों के सारे राजाओं को लिया और
उन्हें तलवार की धार से मारके सर्बथा नाश किया जैसी कि परमेश्वर
१३ के सेवक मूसा ने आज्ञा किई थी। परन्तु हसूर को छोड़ जिसे
यहूशूअ ने जलाया उन समस्त नगरों को जो अपने टीलों
१४ पर थे इसराएल ने उन्हें न जलाया। और इन नगरों की
सारी लूट और ढोर को इसराएल के संतान ने अपने लिये
लूट लिया परन्तु हर एक जन को तलवार की धार से मार
डाला यहां लों कि उन्हें नाश कर दिया कि एक को भी स्वास
१५ लेने को न छोड़ा। जैसी कि परमेश्वर ने अपने दास मूसा को
आज्ञा किई थी वैसी ही मूसा ने यहूशूअ को आज्ञा किई और

यहूशूअ ने वैसा ही किया उस ने उन समस्त बस्तुन में जो
परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई थी एक को भी बिन करे
अधूड़ा न छोड़ा ॥
१६ सो यहूशूअ ने उस सारे देश और पर्बत को और दक्षिण
के समस्त देश और जश्न की समस्त भूमि और तराई और
चौगान और इसराएल के पहाड़ और उस की तराई को लिया।
१७ चिकने पहाड़ से जो शईर की ओर चढ़ता है और बआलगाद
लों जो लुबनान की तराई में हरमून पहाड़ के नीचे है ले
लिया और उस ने उन के सारे राजाओं को लिया और उन्हें
१८ मारा और नाश किया। यहूशूअ इन समस्त राजाओं से बहुत
दिन लों लड़ा किया ॥
१६ हवियों को छोड़ जो जिबऊन के बासी थे कोई नगर
न था जिस ने इसराएल के संतान से मिलाप किया हो
२० सब को उन्हों ने लड़ाई में लिया। क्योंकि यह परमेश्वर
की ओर से था कि उन के मन को कठोर करे जिसतें वे
इसराएल के संतान से लड़ें जिसतें वुह उन्हें सर्बथा
नाश करे और जिसतें उन पर दया न होवे परन्तु जिसतें
वुह उन्हें नाश करे जैसी कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई
थी ॥
२१ और उसी समय यहूशूअ ने अनाकियों को पहाड़ों से नाश
किया हबरून से दबीर से अनाब से और यहूदाह के सारे
पहाड़ों से और इसराएल के सारे पहाड़ों से यहूशूअ ने उन्हें
२२ उन के नगरों सहित सर्बथा नाश किया। अनाकियों में से
इसराएल के संतानों के देश में कोई न बचा परन्तु केवल अज्जः
जअत और अशदूद में कुछ बचे थे ॥
२३ सो यहूशूअ ने उस समस्त देश को लिया उस सब के समान
जो कि परमेश्वर ने मूसा को कहा था और यहूशूअ ने उसे

इसराएल को उन के भागों के और उन की गोष्ठियों के समान
अधिकार में दिया और देश ने युद्ध से चैन पाया ॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ और उस देश के राजा जिन्हें इसराएल के संतानों ने मार
डाला और उन का देश यरदन के उस पार उदय की ओर
अरनून की नदी से लेके हरमून पहाड़ लों और पूरब दिशा
२ के सारे चौगान अधिकार में लिया ये हैं। सैहून अमूरियों का
राजा जो हसबून में रहता था अरआयर से लेके जो अरनून
की नदी के तीर पर है और नदी के मध्य से और आधे
जिलिअद से यबूक़ की नदी लों जो अम्मून के संतान का
३ सिवाना है। और चौगान से पूरब और कनेरूस के सागर लों
और चौगान के सागर लों अर्थात् पूरब के खारी सागर लों
उस मार्ग से जो बैतजशीमत को जाता है और दक्षिण से जो
४ पिसग: के नालों के तले है प्रभुता करता था। और बसन के
राजा ऊज के सिवाने जो दानव के उबरे हुए में थे जो
५ इसतारात और अद्रिअई में रहता था। और हरमून पहाड़
में और सलक़: में और सारे बसन में जशूरियों और मअकातियों
के सिवाने लों और आधा जिलिअद जो हसबून के राजा सैहून
६ का सिवाना था राज्य किया। उन को परमेश्वर के सेवक
मूसा और इसराएल के संतानों ने मारा और परमेश्वर के सेवक
मूसा ने रूबिनियों और जद्दियों और मुनस्सी की आधी गोष्ठी
को उसे अधिकार में दिया ॥

७ और उस देश के राजा ये हैं जिन्हें यहूशूअ और इसराएल
के संतानों ने यरदन के इस पार पश्चिम दिशा में मारा
बअलजद से लेके लुबनान की तराई में और चिकने पहाड़
लों जो शअीर को जाता है और यहूशूअ ने उसे इसराएल

८ की गोष्ठियों को उन के भागों के समान बांटा। हित्ती अमूरी
और कनआनी फरिज्ज़ी हव्वी और यबूसी जो पहाड़ में और
तराई में और चौगान में और नालों में और अरण्य में और
९ देश में रहते थे। यरीहो का राजा एक अई का राजा
१० जो बैतएल के लग है एक। यरूसलम का राजा एक हबरून
११ का राजा एक। यरमूत का राजा एक लकीस का राजा एक।
१२। १३ इजलून का राजा एक जज़र का राजा एक। दबीर का
१४ राजा एक जदृ का राजा एक। हुरमः का राजा एक अराद
१५ का राजा एक। लिबनः का राजा एक अदूलाम का राजा
१६ एक। मुक़ेदः का राजा एक बैतएल का राजा एक।
१७। १८ तफ़फुह का राजा एक हिफ़्र का राजा एक। अफ़ीक
१९ का राजा एक लशारून का राजा एक। मदून का राजा एक
२० हासूर का राजा एक। शमरूनमोरून का राजा एक अक़शाफ़ का
२१ राजा एक। तअनाक का राजा एक मजिद्दो का राजा एक।
२२ क़ादिस का राजा एक यकनियम करमिल का राजा एक।
२३ दोर का राजा दोर की ऊंचाई में एक जातिगणों का राजा
२४ जिलजाल में का एक। तिरजः का राजा एक ये सब एकतीस
राजा थे॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ अब यहूशूअ बृद्ध होके पुरनिया हुआ और परमेश्वर ने
उसे कहा कि तू बूढ़ा और पुरनिया हुआ और अब लों बहुत
२ सी भूमि अधिकार के लिये धरी है। यह देश अब लों धरा
३ है फ़िलिस्तियों का समस्त विभाग और समस्त जसूरी। सैहूर
से जो मिस्र के आगे है अक़रून के सिवाने लों उत्तर दिशा
को कनआनियों में गिना जाता है जो फ़िलिस्तियों के पांच
अध्यक्ष हैं गज्ज़ाथी और अशदूदी अशक़लूनी गित्ती और

४ अक़रूनी और अैयीम । दक्षिण दिशा से कनआ़नियों के सारे देश
और कंदला जो सैदियों के लग है अमूरियों के सिवाने अफ़ीक़
५ लों । और जिबली का देश और सारा लुबनान उदय की ओर
बअ़लजद से जो हरमून के पहाड़ के नीचे है हमात की पैठ लों ।
६ पहाड़ी देश के समस्त बासी लुबनान से लेके मिसरेफ़ोटमाईम
लों और सारे सैदी में उन्हें इसराएल के संतान के साम्ने
से दूर करूंगा केवल तू चिट्ठी डालके उसे इसराएलियों
को अधिकार के लिये बांट दे जैसी मैं ने तुझे आज्ञा किई
है ॥
७ सो अब इस देश को नव गोष्ठियों को और मुनस्सी की
८ आधी गोष्ठी को अधिकार के लिये बांट दे । उस के साथ
रूबिनी और जद्दी अपना अधिकार पाये हैं जो मूसा ने यरदन
के पार उन्हें दिया पूरब दिशा को जैसा कि परमेश्वर के सेवक
९ मूसा ने उन्हें दिया । अरअ़ायर से जो अरनून के तीर पर है
और उस नगर से जो नदी के बीचोंबीच है और मेदिबा के
१० चौगान से लेके दैबून लों । और अमूरियों के राजा सैहून के
सारे नगर जो हसबून में राज्य करता था अम्मून के संतान
११ के सिवाने लों । और जिलिअ़द और जशूरी का सिवाना और
मअ़क़ाती और हरमून का सारा पर्वत और सारा बसन सलक़:
१२ लों । बसन में ऊ़ज का सारा राज्य जो इसतारात और
अद्रिअ़ई में राज्य करता था जो दानव के उबरे हुए से बच
रहा था सो मूसा ने उन्हें मारा और उन्हें बाहर किया ।
१३ तथापि इसराएल के संतानों ने जशूरी और मअ़क़ातियों को दूर
न किया परन्तु जशूरी और मअ़क़ाती आज लों इसराएलियों में
१४ बसते हैं । केवल लावी की गोष्ठी को अधिकार न दिया इसराएल
के ईश्वर परमेश्वर के होम के बलिदान उस के कहने के समान
उन का अधिकार है ॥

१५ और मूसा ने रूबिन के संतान की गोष्ठी को उन के घरानों
१६ के समान अधिकार दिया। और अरूआयर से जो अरनून की
नदी के तीर पर है उन का सिवाना था और वुह नगर जो
नदी के मध्य में है और सारा चैागान जो मेदिब: के लग
१७ है। हसबून और उस के सारे नगर जो चैागान में हैं दैबून
१८ और बामातबअल और बैतबअबालमऊन। और यहासा और
१९ क़र्दीमात और मेफ़ाअत। और क़रियतैम और सिबमा और
२० जिरतसहर जो तराई के पहाड़ में हैं। और बैतफ़ग़ूर और
२१ पिसग: के नाले और बैतुलयसीमात। और चैागान के सारे
नगर और अमूरियों के राजा सैहून का सारा राज्य जो हसबून
में राज्य करता था जिसे मूसा ने मिदयान के प्रधानों अवी
और रक़म और सूर और हूर और रबअ जो सैहून के अध्यक्ष
२२ उस देश में बसते थे मार डाला। और बऊर का बेटा बलआम
जो गणक था जिसे इसराएल के संतान ने उन के जूझे हुओं
२३ के साथ अपनी तलवार से मारा। और रूबिन के संतान का
सिवाना यरदन और उस का सिवाना हुआ ये नगर और उन
के गांव रूबिन के संतान के घरानों के समान अधिकार में पड़े॥

२४ और मूसा ने जद की गोष्ठी को उन के घरानों के समान
२५ भाग दिया। और उन का सिवाना यअज़ीर और जिलिआद
के सारे नगर और अम्मून के संतान का आधा देश अरूआयर
२६ लों जो रब: के आगे है। और हसबून से रामातमिसप: और
२७ बतूनीम लों और महनैन से लेके दबीर के सिवाने लों। और
बैतुलराम की तराई में और बैतनिमर: और सकूत और साफ़ून
जो हसबून के राजा सैहून के राज्य में से बच रहा था यरदन
और उस के सिवाने किनारत के समुद्र के तीर लों यरदन के
२८ उस पार पूरब ओर। ये नगर और उन के गांव जद के संतान
के अधिकार उन के घरानों के समान हुए॥

२९ और मूसा ने मुनस्सी के संतान की आधी गोष्ठी को भी
भाग दिया सो मुनस्सी के संतान की आधी गोष्ठी का भाग उन
३० के घरानों के समान यह था । और उन के सिवाने महानाईम
से सारा बाशान बसन के राजा ऊज का सारा राज्य और यायर
३१ के सारे नगर बसन में हैं साठ नगर । और आधा जिलिअद
और अश्तरूत और अद्री बसन के राजा ऊज के नगर मुनस्सी
के बेटे माकीर के संतान को अर्थात् माकीर के आधे संतान
३२ उन के घरानों के समान । इन्हें मूसा ने मोअब के चौगान
में यरदन के उस पार यरीहो के लग पूरब की ओर अधिकार
३३ के लिये दिया । परन्तु मूसा ने लावी के संतान को अधिकार
न दिया परमेश्वर इसराएल का ईश्वर वही उन का अधिकार
था जैसा उस ने उन्हें कहा ॥

चौदहवां पर्ब्ब ।

१ और इन्हें कनआन के देश में इसराएल के संतानों ने
अपने अधिकार में लिया जिन्हें इलिअज़र याजक और नून के
बेटे यहूशूअ और इसराएल के संतानों की गोष्ठियों के पितरों
२ के प्रधानों ने उन्हें अधिकार में बांट दिया । जैसा परमेश्वर
ने साढ़े नव गोष्ठी के विषय में मूसा के हसते आज्ञा किई उन
३ का अधिकार चिट्ठी से हुआ । क्योंकि मूसा ने यरदन के उस
पार अढ़ाई गोष्ठी को अधिकार दिया था पर लावियों को उन
४ में कुछ अधिकार न दिया । क्योंकि यूसुफ़ के संतान दो गोष्ठी
थे मुनस्सी और इफ़रायम सो उन्हों ने लावियों को देश में
कुछ भाग न दिया केवल कई एक नगर उन के रहने के लिये
और उन के आस पास की बस्तियां उन के ढोर और संपत्ति
५ के लिये । जैसी परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा किई इसराएल के
संतानों ने वैसा ही किया और उन्हों ने देश का भाग किया ॥

६ तब यहूदाह के संतान जिलजाल में यहूशूअ पास आये
और क़नज़ी यफ़ुन्ने के बेटे कालिब ने उसे कहा कि उस बात
को जो ईश्वर ने अपने जन मूसा को मेरे और तेरे विषय में
७ क़ादिशबरनीअ में कही तू जानता है। जिस समय ईश्वर के
दास मूसा ने क़ादिशबरनीअ से मुझे भेजा कि देश का भेद
लेओ उस समय मैं चालीस बरस का था और मैं ने उसे अपने
८ मन के समान संदेश पहुंचाया। तथापि मेरे भाइयों ने जो
मेरे साथ चढ़ गये थे मंडली के मन को पिघला दिया परन्तु
९ मैं ने परमेश्वर अपने ईश्वर का परिपूर्णता से पीछा किया। और
मूसा ने उसी दिन किरिया खाके कहा कि निश्चय वुह देश
जिस पर तेरे चरण पड़े थे तेरा और तेरे बेटों का सदा
का अधिकार होगा क्योंकि तू ने परमेश्वर मेरे ईश्वर का
१० परिपूर्णता से पीछा किया। और अब देख परमेश्वर ने मुझे
अपने कहने के समान आज के दिन लों जीता रक्खा और
उस समय से लेके जो परमेश्वर ने यह बात मूसा से कही जब
कि इसराएल अरण्य में फिरा किये इस समय लों पैंतालीस
बरस बीत गये और अब आज के दिन मैं पचासी बरस का
११ बृद्ध हूं। अब लों मैं ऐसा बली हूं जैसा उस दिन था जब
मूसा ने मुझे भेजा जैसा लड़ाई के लिये और बाहर भीतर
आने जाने के लिये मेरा बल तब था वैसा ही अब भी है।
१२ सो अब यह पहाड़ जिस के बिषय में परमेश्वर ने उस दिन
कहा मुझे दीजिये क्योंकि तू ने उस दिन सुना था कि अनाक़ीम
वहां हैं और नगर बड़े और बाड़ित हैं सो यदि ऐसा हो कि
परमेश्वर मेरे साथ होवे तब मैं परमेश्वर के कहे के समान
उन्हें निकाल देऊंगा॥

१३ तब यहूशूअ ने उसे आशीष दिई और यफ़ुन्ने के बेटे
१४ कालिब को हबरून अधिकार में दिया। सो हबरून क़नज़ी

यफुन्ने के बेटे कालिब का आज लों अधिकार हुआ इस लिये
कि उस ने परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का पीछा परिपूर्णता से
१५ किया । और अगिले समय में हबरून का नाम क़रयतअरबअ
और जो अर्बो अनाक़ियों में महाजन था और देश ने लड़ाई
से चैन पाया ॥

पंदरहवां पर्ब्ब ।

१ और यहूदाह के संतान की गोष्ठी की चिट्ठी उन के घरानों
के समान यह थी सीन के बन से दक्षिण दिशा दक्षिण के
अत्यंत तीर अदूम के सिवाने लों दक्षिण ॥
२ और उन का दक्षिणी सिवाना खारी सागर से अर्थात् उस
३ कोल से जो दक्षिण की ओर जाता है । और वुह दक्षिण की
अलंग अक्रबिम की ऊंचाई से निकलके सीन लों गया और
दक्षिण की ओर से क़ादिशबरनीअ लों चढ़ गया और हसरून
को पहुंचा और अट्टार लों चढ़ गया और क़रक़अ को फिरा ।
४ और अज़मून को पहुंचा और निकलके मिस्र की नदी लों गया
और उस के तीर के निकास समुद्र को गये यही तुम्हारा
दक्षिण सिवाना होगा ॥
५ और उस का पूरब सिवाना खारी समुद्र से यरदन के अंत लों ॥
और उस का उत्तर का सिवाना समुद्र के कोल से जो
६ यरदन का अंत है । और यह सिवाना बैतहजलः को चढ़
गया और बैतुलअरबः के उत्तर की अलंग चला गया और
७ रूबिन के बेटे बुहन के पत्थर लों सिवाना चढ़ गया । फिर
अकूर की तराई से दबीर की ओर चढ़ गया और यों उत्तर
को जिलजाल की ओर गया जो अदूमीम की चढ़ाई के साम्ने
है जो नदी के दक्षिण अलंग है और वुह सिवाना ऐनशम्स के
पानियों की ओर गया और उस के निकास ऐनराजिल में थे ।

८ ग्रेर यबूसी जो यरूसलम है उस की उत्तर अलंग हिनूम के
बेटे की तराई के पास सिवाना चढ़ गया ग्रेर उस पहाड़ की
चोटी लों जो पश्चिम दिशा हिनूम की तराई के आगे है जो
९ उत्तर दिशा में दानव की तराई के अंत में है। ग्रेर सिवाना
पहाड़ की चोटी से नफ़तूह के सोते के पास ग्रेर इफ़रून
पहाड़ के नगरों के पास जा निकला ग्रेर वहां से सिवाना
१० बअ़लः को जो क़रयतअ़रीम है खिंच गया। ग्रेर बअ़लः की
पश्चिम दिशा से घूमके सिवाना शअ़ीर पहाड़ को ग्रेर वहां से
जियारीम पहाड़ की अलंग गया जो कसलून है उत्तर अलंग की
ग्रेर बेतशम्स को उतर गया ग्रेर तिमनः को निकल गया।
११ ग्रेर सिवाना अक़रून की उत्तर दिशा के पास से जा निकला
ग्रेर सिवाना शिकरून को खिंच गया ग्रेर बअ़लः पहाड़ को
गया ग्रेर यबनिएल को निकला ग्रेर सिवाने के निकास समुद्र
को थे॥
१२ ग्रेर उस का पश्चिम सिवाना महा सागर ग्रेर उस के तीर
लों था यहूदाह के संतान के घराने का सिवाना उन के घरानों
के समान यह है॥
१३ ग्रेर उस ने यफुन्ने के बेटे कालिब को यहूदाह के संतानों
में जैसी कि परमेश्वर ने यहूशूअ को आज्ञा किई थी क़रयतअरबअ
१४ अनाक़ का पिता जो हबरून है भाग दिया। ग्रेर कालिब ने
अनाक़ के तीन बेटे शेशाई ग्रेर अहीमान ग्रेर तलमी को
१५ जो अनाक़ के संतान हैं वहां से दूर किया। ग्रेर वुह वहां
से दबीर के बासियों पर चढ़ा ग्रेर दबीर का नाम आगे
१६ क़रयतसिफ़र था। सो कालिब ने कहा कि जो कोई क़रयतसिफ़र
को मारे ग्रेर उसे लेवे मैं उसे अपनी बेटी अक़सः को ब्याह
१७ देऊंगा। तब कालिब के छोटे भाई क़नज़ के बेटे ग़ुतनिएल
ने उसे लिया तब उस ने अपनी बेटी अक़सः को उस्से ब्याह

१८ दिई। और ऐसा हुआ कि जब वुह उस पास गई तो उसे
उभारा कि वुह उस के पिता से एक खेत मांगे सो वुह अपने
गदहे पर से उतरी तब कालिब ने उसे कहा कि तू क्या
१९ चाहती है। और उस ने उत्तर दिया कि मुझे आशीष दीजिये
क्योंकि आप ने मुझे दक्षिण की भूमि दिई सो मुझे पानी के
सोते भी दीजिये तब उस ने उसे ऊपर के सोते और नीचे के
सोते दिये॥

२० यहूदाह के संतान की गोष्ठी का अधिकार उन के घरानों
के समान यह है॥

२१ और अदूम के सिवाने की ओर दक्षिण दिशा यहूदाह के
संतान की गोष्ठी के नगर के अंत ये हैं क़बिजएल और अद्र
२२ और यजूर। और क़ैनः और दमूना और अ़दअ़दः।
२३। २४ और क़ादिस और हसूर और इतनान। ज़ीफ़ और तल्म
२५ और बअ़लात। और हसूर हदता और क़रयतहसरून जो
२६। २७ हसूर है। अमाम और समअ़ और मोलदः। और
२८ हसरजहु: और हशमून और बैतफ़लत। और हसूर शुआल
२९ और बिअ़रसब: और बिजयूतियाह। बअ़लः और ऐयीम और
३०। ३१ अ़ज़म्। और इलतवलुद और कसील और हुरमः। और
३२ सिक़लज़ और मदमन्नः और सनसन्नः। और लिबावत और
शिलहीम और ऐन और रूम्मान ये सब उंतीस नगर और उन
के गांव॥

३३। ३४ वे तराई में इसताल और सुरअः और असनः। और
३५ जनूह और एनजन्नीम तुफ़फ़ाह और ऐनाम। यरमूत और
३६ अदूलाम सोकः और अ़जोकः। और सग़रीन और अ़दीतैन
और जदीरः और अदीरतैन चौदह नगर उन के गांव समेत॥
३७। ३८ जिनान और हदाशः और मिजदलजद्दु। और दिलआन
३९ और मिसपः और युक़तिएल। लकीश और बुसक़त और

४० । ४१ इजलून । और कबून और लहमास और क़ितलीस । और
जदीरात बैतदजून और नअमः और मुक़ैदः सोलह नगर उन
४२ । ४३ के गांवों समेत । लिबनः और अतर और अशन । और
४४ इफ़ताह और अशनः और नसीब । और क़ईलः और अकज़ीब
४५ और मरीशः नव नगर उन के गांवों समेत । अक़रून उस के
४६ नगर और गांवों समेत । अक़रून से समुद्र लों सब जो अशदूद
४७ के आस पास थे उन के गांव समेत । अशदूद अपने नगरों
और गांवों सहित अज्ज़ः अपने नगरों और गांवों समेत मिस्र
की नदी लों और महा सागर और उस का सिवाना ॥
४८ । ४९ और पहाड़ में समार और वतीर और शोकः । और
५० दन्नः और क़रयतसन्नः जो दबीर है। और अनाब और इस्तिमाअ
५१ और आनीम । और जश्न और होलन और जैलः ग्यारह नगर
५२ उन के गांवों समेत । अराब और दूमः और इशअन ।
५३ । ५४ और यनूम और बैतुलतफ़ाह और अफ़ीक़ः । और हुमतः
और क़रयतअरबअ जो हबरून है और सैगूर नव नगर उन
५५ के गांवों समेत । मऊन करमिल और ज़ैफ़ और जत्ता ।
५६ । ५७ और यज़रअएल और यक़दीआम और ज़नूह । क़ाइन
जिबअः और तिमनः दस नगर उन के गांवों समेत ।
५८ । ५९ हलहूल बैतसूर और जदूर । और मग़ारात और बैतअनात
६० और इलतक़ून छः नगर उन के गांवों समेत । क़रयतबअल
जो क़रयतअरीम और रब्बः है दो नगर उन के गांवों सहित ॥
६१ । ६२ अरण्य में बैतुलअरबअ मदीन और सकाकः । और
निबशान और लोन का नगर और ऐनजदी छः नगर उन के
गांवों समेत ॥

६३ परन्तु यबूसी जो थे यरूसलम में रहते थे सो उन्हें यहूदाह
के संतान दूर न कर सके परन्तु यबूसी यहूदाह के संतान के
साथ आज के दिन लों यरूसलम में रहते हैं ॥

सोलहवां पर्व्व ।

१ और यूसुफ़ के संतान की चिट्ठी यरदन से यरीहो के पास
निकलके यरीहो के पानी के पूरब जो है और उस बन लों
जो यरीहो से बेतएल पहाड़ की ओर पार को जाता है ।
२ और बेतएल से निकलके लौज़ को जाके अरकी के सिवाने
३ को अ़तरात के पास चला । और पश्चिम दिशा से यफ़लती
के तीर को जाता है नीचे की ओर बेतहोरान के तीर को
और जज़र लों पहुंचता है और उस के निकास समुद्र में
हैं ॥
४ सो यूसुफ़ के संतान मुनस्सी और इफ़रायम ने अपना
५ अधिकार लिया । और इफ़रायम के संतान का सिवाना उन
के घरानों के समान यह था अर्थात् उन के अधिकार का
सिवाना पूरब की ओर अतरात अदार से ऊपर के बेतहोरान
६ को गया । और सिवाना निकलके समुद्र की ओर उत्तर दिशा
में मिकमतात को निकला और सिवाना पूरब की ओर
तानतशीलोह को गया और उस के पूरब को होके यनूहा को
७ गया । और यनूहा से अ़तरात को और नारात को नीचे गया
८ और यरीहो को आया और यरदन पास जा निकला । पश्चिम
का सिवाना तुफ़फ़ाह से कनकी नदी को और उस के निकास
समुद्र को हैं इफ़रायम के संतान की गोष्ठी का अधिकार उन
९ के घरानों के समान यह है । और इफ़रायम के संतान के
लिये अलग अलग नगर मुनस्सी के संतान के अधिकार में थे
१० सारे नगर उन के गांवों सहित । और उन्हों ने उन कनआ़नियों
को जो जज़र में रहते थे दूर न किया परन्तु कनआ़नी
इफ़रायमियों में आज के दिन लों बस्ते हैं और सेवा करते
हैं ॥

सतरहवां पर्व्व ।

१ मुनस्सी की गोष्ठी ने भी अधिकार पाया क्योंकि वुह यूसुफ़
का पहिलौठा था सो जिलिअद के पिता मुनस्सी के पहिलौठे
मकीर ने जो लड़ाका था जिलिअद और बशन अधिकार
२ पाया। और मुनस्सी के संतान के उबरे हुओं को उन के घरानों
के समान अधिकार मिला अबिअज़र के संतान के लिये और
ख़लक़ के संतान के लिये और यसरएल के संतान के लिये
और सिकम के संतान के लिये और हिफ़्र के संतान के लिये
और सिमीदाअ के संतान के लिये यूसुफ़ के बेटे मुनस्सी के
घरानों के समान पुरुष बालक ये थे॥
३ परन्तु मुनस्सी का बेटा मकीर का बेटा जिलिअद का बेटा
हिफ़्र का बेटा सिलाफ़ीहाद के बेटे न थे परन्तु बेटियां थीं
जिन के नाम ये हैं महलः और नूअः हजलः मिलकः और
४ तिरजः। सो वे इलिअज़र याजक और नून के बेटे यहूशूअ
के और प्रधानों के आगे आके बोलीं कि परमेश्वर ने मूसा को आज्ञा
किई कि वुह हमारे भाइयों के मध्य में हमें अधिकर देवे सो
परमेश्वर की आज्ञा के समान उस ने उन के पिता के भाइयों में
५ उन्हें अधिकार दिया। सो जिलिअद और बशन के देश को
छोड़के जो यरदन के उस पार है मुनस्सी को दस भाग पड़े।
६ क्योंकि मुनस्सी की बेटियों ने अपने भाइयों के साथ अधिकार
पाया था और मुनस्सी के उबरे हुए बेटों ने जिलिअद का देश
पाया॥
७ और यसर से लेके मिकमतात लों जो सिकम के साम्ने है
मुनस्सी का सिवाना था और सिवाना दहिने से निकलके
८ ऐनतुफ़्फ़ाह के बासियों लों गया। तुफ़्फ़ाह का देश मुनस्सी
का था परन्तु तुफ़्फ़ाह जो मुनस्सी के सिवाने में था इफ़रायम

९ के संतान का भाग था। सो उस का सिवाना नल की नाली की
दक्षिण ओर था और इफ़रायम के ये नगर मुनस्सी के नगरों
में मिले हैं और मुनस्सी का सिवाना उत्तर की नदी से था और
१० उस के निकास समुद्र में थे। दक्षिण दिशा इफ़रायम की
हुई और उत्तर दिशा मुनस्सी की और उस का सिवाना समुद्र
था सो वे दोनों उत्तर दिशा यसर और पूरब दिशा इशकार से
११ जा मिलीं। और मुनस्सी इशकार में और यसर में बैतशन
और उस के नगर और इबलिआम और उस के नगर और दार
के निवासी और उस के नगर और ऐनदार के निवासी और
उस के नगर और तअनाक के बासी और उस के नगर और
मजिद्दो के निवासी और उस के नगर अर्थात् तीन देश रखते
१२ थे। तथापि मुनस्सी के संतान उन नगरों को न ले सके परन्तु
१३ कनआनी उस देश में बसा चाहते थे। तथापि यों हुआ कि
जब इसराएल के संतान प्रबल हुए तो कनआनियों से कर
लिया परन्तु उन्हें सर्बथा दूर न किया॥
१४ सो यूसुफ़ के संतान ने यहूशूअ से कहा कि तू ने किस
लिये चिट्ठी से हमें एक ही अधिकार और केवल एक ही भाग
दिया यह जानके कि हम बहुत हैं जैसा कि परमेश्वर ने हमें
१५ अब लों आशीष दिई है। तब यहूशूअ ने उन्हें उत्तर दिया कि
यदि तू बड़ी जातिगण है तो अपने लिये बन की ओर चढ़ जा
और वहां अपने लिये फरिज्ज़ी और दानव के देश में काट
१६ क्योंकि इफ़रायम का पर्बत तेरे लिये सकेत है। तब यूसुफ़
के संतान ने कहा कि यह पहाड़ हमारे लिये थोड़ा है और
समस्त कनआनी जो बैतशान के और उस के गांवों के और
यज़रअएल की नीचाई के और जो नीचाई के देश में रहते हैं
१७ लोहे की गाड़ियां रखते हैं। तब यहूशूअ ने यूसुफ़ के संतान
इफ़रायम और मुनस्सी से कहा कि तू तो बड़ी जातिगण है

और बड़ी सामर्थ्य रखता है तेरे लिये केवल एक ही भाग न
१८ होगा। क्योंकि पहाड़ तेरा होगा क्योंकि वुह अरण्य है और
तू उसे काट डालियो और उस के निकास तेरे होंगे क्योंकि तू
कनआनी को खदेड़ेगा यद्यपि वुह लोहे का रथ रखके बली
है॥

अठारहवां पर्व्व।

१ तब सारे इसराएल के संतान की मंडली सैला में एकट्ठी
हुई और वहां मंडली के तंबू को खड़ा किया और देश उन
के बश में आया॥
२ और इसराएल के संतानों में सात गोष्ठी रह गई थीं जिन्हों
३ ने अपना अधिकार न पाया था। सो यहूशूअ ने इसराएल के
संतानों से कहा कि कब लों उस देश को बस करने में जो
परमेश्वर तुम्हारे पितरों के ईश्वर ने तुम्हें दिया है आलस्य
४ करोगे। अपने लिये हर एक गोष्ठी में से तीन तीन जन
देओ और मैं उन्हें भेजूंगा कि वे उठके उस देश के आरंपार
फिरें और उसे अपने अधिकार के समान लिखें और फिर मुझ
५ पास आवें। और वे उस के सात भाग करें यहूदाह अपने
सिवाने पर दक्षिण की ओर रहे और यूसुफ़ के घराने उत्तर दिशा
६ में अपने सिवाने पर ठहरें। सो उस देश के सात भाग लिखके
मुझ पास यहां लाओ जिसतें मैं परमेश्वर के आगे जो हमारा
७ ईश्वर है तुम्हारे लिये चिट्ठी डालूं। परन्तु तुम्हों में लावी का
भाग नहीं क्योंकि परमेश्वर की याजकता उन का अधिकार है
और जद और रूबिन और मुनस्सी की आधी गोष्ठी ने तो
यरदन के पार पूरब दिशा में अपने अधिकार पाये हैं जो
परमेश्वर के सेवक मूसा ने उन्हें दिया था॥
८ तब लोग उठे कि चलें सो जो देश के लिखने को गये थे

यहूशूअ ने उन्हें आज्ञा करके कहा कि उस देश में जाओ
और आरंपार फिरो और लिखके मुझ पास फिर आओ जिसतें
९ मैं यहां सैला में परमेश्वर के आगे तुम्हारे लिये चिट्ठी डालूं। सो वे
लोग गये और उस देश में आरंपार फिरे और उसे नगर नगर
सात भाग करके एक पुस्तक में वर्णन किया और यहूशूअ
१० पास सैला में तंबूस्थान को फिर आये। तब यहूशूअ ने सैला
में परमेश्वर के आगे उन के लिये चिट्ठी डाली और देश इसराएल
के संतान को उन के भागों के समान वहां बांट दिया॥

११ और बिनयमीन के संतान की गोष्ठी की चिट्ठी उन के
घरानों के समान निकली और उन के भाग का सिवाना
यहूदाह के संतान और यूसुफ़ के संतान के मध्य में निकला॥

१२ और उन का सिवाना उत्तर दिशा यरदन नदी से था और
उस का सिवाना यरीहो के पास से उत्तर दिशा को चढ़ा और
पर्वत में से पश्चिम चढ़ गया और उस के निकास बैतअवन
१३ के बन में थे। और सिवाना वहां से लौज़ की ओर गया
लौज़ की अलंग जो बैतएल है दक्षिण दिशा को और सिवाना
अतरातअद्दार को उतरा उस पहाड़ के पास जो नीचे के
बैतहोरान की दक्षिण की ओर है॥

१४ और खैंचा जाके सिवाना वहां से होके उस पहाड़ पास
जो बैतहोरान के दक्षिण को है दक्षिण की ओर समुद्र के कोने
को और उस के निकास क़रयतबअल को थे जो क़रयतयअरीम
है यहूदाह के संतान का एक नगर जो पश्चिम की ओर॥

१५ और दक्षिण की अलंग क़रयतयअरीम के अंत से और सिवाना
पश्चिम को गया और निकलके नफ़तूह के पानियों के कुए
१६ को गया। और सिवाना उस पहाड़ पास जो हिनम के बेटे
की तराई के आगे है उतरा जो दानव की तराई के उत्तर को
है और दक्षिण हिनम की तराई को दक्षिण को यबूसी की

१७ अलंग में ऐनराजिल को उतर गया। और उत्तर से खेंचा
जाके ऐनशम्स को निकल गया और वहां से गलीलूत की ओर
जो अदूमीम की घाटी के साम्ने है और वहां से रूबिन के बेटे
१८ बुहन के पत्थर लों उतरा। और उत्तर दिशा की ओर चौगान
के साम्ने होके उस की अलंग की ओर निकल गया और अरब:
१६ को उतरा। फिर उत्तर दिशा की ओर निकलके बैतहजल: की
एक ओर को गया और सिवाने के निकास उत्तर को खारी समुद्र
के कोल पर और यरदन के दक्षिण अंत को थे यही दक्षिण
तीर था॥

२० और उस का पूरब सिवाना यरदन था बिनयमीन के संतान
के सिवाने का अधिकार उस के सब सिवानों के समान उन के
घरानों के समान चारों ओर यह था॥

२१ अब वे बस्तियां जो बिनयमीन के संतान की गोष्ठी की
थीं उन के घरानों के समान यरीहो और बैतहजल: और
२२ कोसिस की तराई थीं। और बैतुलअरब: और समरैन और
२३। २४ बैतएल। और ऐयीम और फ़ारह और ऊफ़र:। और
कफ़्रअम्मूनी और ऊफ़नी और जिबअ बारह नगर उन के गांव
२५। २६ सहित। जिबऊन और रामः और बिअरात। और मिसपः
२७ और कफ़ीर: और मोज:। और रेक़म और इरफ़ाएल और
२८ तरल:। और ज़िलअ अलिफ़ और यबूसी जो यरूसलम है
गबियातकरियास चौदह नगर उन के गांव सहित बिनयमीन
के संतान का अधिकार उन के घरानों के समान यह है॥

उन्नीसवां पर्व्व।

१ और दूसरी चिट्ठी समऊन के संतान की गोष्ठी की उन के
घरानों के समान निकली और उन का अधिकार यहूदाह के
२ संतान के अधिकार के मध्य में था। और उन के अधिकार में

३ विश्ररसव: और सवअ़ और मोलद: था । और हसरसूआ़ल और
४ बलह और अ़ज़म् । और इलतवल्लुद और वतूल और हुरम: ।
५ । ६ और सिकलज और बैतमरकबात और हसारसूस: । और
बैतलवाओ़ात और सरूहन तेरह नगर उन के गांव समेत ।
७ अ़ेन रूम्मान और अ़तर और अ़सन चार नगर उन के गांव
८ समेत । और सारे गांव जो उन नगरों के आस पास थे
बअ़लतबिअ़र दक्षिण का रामात समऊ़न के संतान की गोष्ठी
९ का अधिकार उन के घरानों के समान यह है । यहूदाह के
संतान के भाग में से समऊ़न के संतान का भाग था क्योंकि
यहूदाह के संतान के भाग का देश उन के लिये अधिक था
इस कारण समऊ़न के संतान ने उन के अधिकार के मध्य में
अपना भाग पाया ॥
१० और तीसरी चिट्ठी ज़बुलून के संतान की उन के घरानों के
समान निकली सो उन के अधिकार का सिवाना सारीद लों
११ हुआ । और उन का सिवाना समुद्र की ओर मरअ़ल: की ओर
गया और दवासत लों पहुंचा और युक़निअ़ाम के आगे की
१२ नदी लों गया । और पूरब और सलीद से फिरके सूर्य्य
के उदय की ओर किसलाततबूर के सिवाने की ओर निकल
१३ जाता है और वहां से दाबरत और यफ़ीअ़ पर चढ़ा । और
वहां से जाते जाते पूरब की ओर जअ़तहिफ़र और ऐतक़ाज़ीन
१४ लों गया और रिम्मुनमथूआ़रनीअ़: पास जा निकला । और उस
का सिवाना उत्तर अलंग हनातोन को घूम जाता है और उस
के निकास इफ़ताहिएल की तराई हैं ॥
१५ और क़त्तत और नहलाल और समरून और इदअ़ल: और
१६ बैतलहम बारह नगर उन के गांव सहित । ये नगर और
उन के गांव ज़बुलून के संतान के घरानों के अधिकार थे ॥
१७ इशकार के संतान के घरानों के समान इशकार के लिये

१८ चौथी चिट्ठी निकली। और उन का सिवाना यजरअएल और
१९ कसूलात और शूनेम की ओर था। और हफ़रैन और शैयून
२० और अनाहरत। और रब्बियत और क्रिसयुन और इबतस।
२१ और रमत और ऐनजन्नीम और ऐनहद्दः और बैतफ़सीस।
२२ और उन का सिवाना तबूर और शख़सीम और बैतशम्स से
जा मिला और उन के सिवाने के निकास यरदन को हुए
२३ सोलह नगर उन के गांव समेत। ये नगर और उन के गांव
इशकार के संतान का अधिकार उन के घरानों के समान है॥
२४ और पांचवीं चिट्ठी यसर के संतान की गोष्ठी के लिये उन
२५ के घरानों के समान निकली। और उन का सिवाना हलकात
२६ और हली और बतन और इकशाफ़ हुआ। और अलम्मिलिक
और अमिआद और मिसाल और उन का सिवाना पश्चिम
२७ दिशा करमिल और सैहूर लिबनात लों पहुंचता है। और
उदय की ओर बैतदजून को फिरा और ज़बुलून और इफताहिएल
की तराई को बैतुलउमुक़ की उत्तर ओर जा मिला और नअईएल
२८ और कबूल के बाईं ओर निकलता है। और अबरून और
२९ रहूब और हम्मून और क़ाना बड़े सिदून लों। और उस का
सिवाना रामा को और दृढ़ नगर सूर को फिर जाता है और वहां
से मुड़के हूसः लों गया और उस के निकास समुद्र के तीर
३० से अकज़ीब को। और अम्मः और अफ़ीक़ और रहूब बाईस
३१ नगर उन के गांव सहित। यसर के संतान की गोष्ठी का
अधिकार उन के घरानों के समान ये नगर उन के गांवों
सहित॥

३२ छठवीं चिट्ठी नफ़ताली के संतान के अर्थात् नफ़ताली के
३३ संतान के घरानों के समान निकली। और उन का सिवाना हिलफ़
से अलून से ज़अननीम को और अदामीनकब और यबनिएल
३४ लक़्क़ूम लों और उस के निकास यरदन से थे। और सिवाना पश्चिम

दिशा को फिरके उज़नातुलतबूर को जाता है और वहां से
जाके हकूक को दक्षिण दिशा जबुलून को पहुंचता है और
पश्चिम दिशा में यसर को पहुंचता है और पूरब की ओर
यरदन पर यहूदाह से जा मिलता है ॥
३५ और सिट्टीम और सूर और हमात और रकत और किन्नारात
३६ ये बाड़ित नगर हैं । और अदाम: और रामा और हसूर ।
३७ । ३८ और क़ादिस और अद्रिअई और एनहसूर । और इरयून
और मजदिएल हरीम और बैतअनात और बैतशम्स उन्नीस
३६ नगर उन के गांवों सहित । ये नगर और उन के गांव नफ़ताली
के संतान की गोष्ठी का अधिकार उन के घरानों के समान
था ॥
४० सातवीं चिट्ठी दान के संतान की गोष्ठी के घरानों के समान
४१ निकली । और उन के अधिकार का सिवाना सुरअ: और
४२ इशताल और ईरिशम्स थे । और सअलबीन और ऐयलून और
४३ । ४४ इतालह । और ऐलून और तमनात और अक़रून। और
४५ इलतक़ी और जिबतून और बअलात । और यिहूद और
४६ बनीबरक़ और जअतरूम्मान । और मेयरकून और रक्कून उस
४७ सिवाने समेत जो याफ़ा के सन्मुख है । और दान के संतान
का सिवाना निकला वुह उन के लिये थोड़ा था इस लिये
दान के संतान लसिम से लड़ने को चढ़ गये और उसे ले
लिया और उसे तलवार की धार से मार डाला और उसे
बश में कर लिया और उस में बसे और लसिम का नाम दान
४८ रक्खा जो उन के पिता का नाम था । ये सब नगर उन के
गांवों समेत दान के संतान की गोष्ठी का भाग था ॥
४६ जब उन्हों ने अधिकार के लिये अपने सिवानों के समान
देश का बांटना समाप्त किया तब इसराएल के संतान ने नून
५० के बेटे यहूशूअ को अपने मध्य में अधिकार दिया । उस ने

तिमनत सिरह का नगर जो इफ़रायम के पहाड़ में है मांगा
सो उन्हों ने परमेश्वर के बचन के समान उसे दिया और उस
ने उस नगर को बनाया और उस में जा बसा ॥
५१ ये वे अधिकार हैं जिन्हें इलिअज़र याजक ने और नून
के बेटे यहूशूअ ने और इसराएल के संतान की गोष्ठियों के
पितरों के प्रधानों ने चिट्ठी डालके सैला में परमेश्वर के आगे
मंडली के तंबू के द्वार पर अधिकार के लिये बांट दिया सो
उन्हों ने देश का बांटना समाप्त किया ॥

बीसवां पर्ब्ब ।

१ । २ और परमेश्वर यहूशूअ से कहके बोला । कि इसराएल
के संतान को यह कहके बोल कि अपने लिये शरण के नगर
ठहराओ जिन के विषय में मैं ने तुम्हें मूसा के द्वारा से कहा ।
३ जिसतें वुह घातक जो अज्ञान से अथवा आकस्मात् किसी को
मार डालके वहां भागे तो लोहू के पलटा लेवैये से वे तुम्हारे
४ शरण होवें । और जब कोई उन में से किसी एक नगर में
भाग जावे तो नगर के फाटक की पैठ में खड़ा रहे और उस
नगर के प्रधानों के सुन्ने में अपना समाचार बर्णन करे तब वे उसे
नगर में अपने पास लेवें और उसे स्थान देवें कि वुह उन के
५ साथ रहे । और यदि घात का पलटा लेवैया उसे खेदे तो
वे घातक को उसे न सौंपें क्योंकि उस ने अपने परोसी को
६ अज्ञान से मारा और उस्से आगे बैर न रखता था । और वुह
उसी नगर में रहे जब लों न्याय के लिये मंडली के आगे न
खड़ा होवे जब लों प्रधान याजक न मरे जो उन दिनों
में होवे उस के पीछे वुह घातक फिरे और अपने नगर में
और अपने घर में जावे उस नगर में जहां से वुह भागा
था ॥

७ सो उन्हों ने बचाव के लिये जलील में क़ादिश को नफ़ताली
पर्व्वत पर और इफ़रायम पर्व्वत पर शकीम को और क़रयतअरबअ
को जो हबरून है यहूदाह के पहाड़ में पवित्र किया ॥
८ और यरदन के पार यरीहो के पास और पूरब दिशा को
बुस्र के अरण्य में रूबिन के संतान की गोष्ठी के चैागान में
और रामात जिलिअद में जो जद की गोष्ठी का है और जौलान
मुनस्सी की गोष्ठी के बसन में ठहराया ॥
९ सारे इसराएल के संतान के लिये और उस परदेशी के लिये
जो उन के मध्य में बसता है इन बस्तियों को ठहराया जिसतें
जो कोई कि अज्ञान से किसी को मार डाले सो उधर भागे
और जब लों कि मंडली के आगे न आवे तब लों लोहू के
पलटा लेवैये के हाथ से मारा न जावे ॥

एक्कीसवां पर्व्व ।

१ तब लावियों के पितरों के प्रधान इलिअज़र याजक और
नून के बेटे यहूशूअ और इसराएल के संतान की गोष्ठियों के
२ पितरों के प्रधान पास आये । और वे कनआन के देश सैला
में उन्हें कहके बोले कि परमेश्वर ने मूसा की ओर से आज्ञा
किई कि हमारे निवास के लिये बस्तियां उन के उपनगर
३ सहित हमारे ढोरों के लिये हमें दिई जावें । तब इसराएल
के संतान ने अपने अधिकार में से परमेश्वर की आज्ञा के समान
ये नगर और उन के आस पास लावियों को दिया ॥
४ सो चिट्ठी क़िहातियों के घरानों के लिये और हारून
याजक के बंश के जो लावियों में से थे उन्हों ने चिट्ठी डालके
यहूदाह की गोष्ठी और समऊन की गोष्ठी और बिनयमीन की
गोष्ठी में से तेरह नगर पाये ॥
५ और क़िहात के उबरे हुए बंश ने इफ़रायम की गोष्ठी के

घरानों में से और दान की गोष्ठी में से और मुनस्सी की आधी
गोष्ठी में से दस नगर पाये ॥

६ और जैरशुन के संतान ने चिट्ठी के समान इशकार की
गोष्ठी के घरानों में से और यसर की गोष्ठी में से और नफ़ताली
की गोष्ठी में से और मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से बसन में
तेरह नगर पाये ॥

७ मिरारी के संतान ने अपने घरानों से रूबिन की गोष्ठी में
से और जद की गोष्ठी में से और ज़बुलून की गोष्ठी में से बारह
नगर पाये ॥

८ और इसराएल के संतान ने चिट्ठी डालके ये नगर और
उन के आस पास जैसी परमेश्वर ने मूसा की ओर से आज्ञा
क्रिई थी लावियों को दिया ॥

९ सो उन्हों ने यहूदाह के संतान की गोष्ठी में से और समऊन
के संतान की गोष्ठी में से ये नगर दिये जिन के नाम लिये
१० जाते हैं। और हारून के संतान को जो क़िहातियों के घरानों में
११ से थे क्योंकि पहिली चिट्ठी उन के नाम की थी। सो उन्हों ने
अनाक़ के पिता अरबअ का नगर जो हबरून है यहूदाह के
पहाड़ पर उस के चारों ओर के आस पास समेत उन्हें दिये।
१२ परन्तु नगर के खेत उस के गांव सहित उन्हों ने यफुन्ने के बेटे
१३ कालिब को उस के अधिकार के लिये दिया। सो उन्हों ने
हारून याजक के संतान को घातक के शरण के नगर के लिये
हबरून का नगर उस के आस पास सहित और लिबनः उस के
१४ आस पास समेत दिये। और बतीर उस के आस पास समेत और
१५ इसतिमाअ उस के आस पास समेत। और होलून उस के आस पास
१६ समेत और दबीर उस के आस पास समेत। और ऐन उस के
आस पास समेत और युता उस के आस पास समेत बैतशम्स
उस के आस पास समेत नव नगर उन दोनों गोष्ठियों में से।

१७ और बिनयमीन की गोष्ठी में से जिबऊन उस के आस पास
१८ समेत और जिबञ्ज उस के आस पास समेत। अनतात
उस के आस पास समेत और अलमून उस के आस पास समेत
१९ चार नगर। सारे नगर हारून याजक के संतान के तेरह
नगर उन के आस पास समेत थे॥

२० और क़िहात के संतान के घरानों को लावियों से जो
क़िहात के संतान में से उबरे हुए थे इफ़रायम की गोष्ठी में से
२१ ये नगर अधिकार मिले। और घातक के शरण का नगर
इफ़रायम के पहाड़ में सिकम को उस के आस पास सहित
२२ दिया और जज़र उस के आस पास सहित। और कबज़ैन उस
के आस पास सहित और बैतहोरान उस के आस पास सहित
२३ चार नगर। और दान की गोष्ठी में से इलतकी उस के आस
२४ पास सहित जिबतून उस के आस पास समेत। ऐलून उस के
आस पास समेत जअतरूम्मान उस के आस पास समेत चार
२५ नगर। और मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से तअनाक उस के
आस पास सहित और जअतरूम्मान उस के आस पास समेत
२६ दो नगर। ये सब दस नगर अपने अपने आस पास समेत
क़िहात के बचे हुए बंश के घरानों को मिले॥

२७ और जैरसुन के संतान को जो लावियों के घरानों में से
हैं मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से घातक के शरण के लिये
उन्हों ने बशन में जैलाम उस के आस पास समेत और बइस्तार:
२८ उस के आस पास समेत दो नगर दिये। और इशकार की
गोष्ठी में से कसून उस के आस पास सहित दावरत उस
२९ के आस पास सहित। यरमूत उस के आस पास सहित ऐनजन्नीम
३० उस के आस पास समेत चार नगर। और यसर की गोष्ठी में
से मिशाल उस के आस पास समेत अबदून उस के आस पास
३१ समेत। हलकाथ उस के आस पास समेत और रहूब उस के

३२ आस पास समेत चार नगर। और नफ़ताली की गोष्ठी में से
गलील में क़ादिश उस के आस पास समेत घातक के शरण के
नगर के लिये और हमूतडूर उस के आस पास सहित और
३३ क़रतान उस के आस पास सहित तीन नगर। जेरसूनियों के सारे
नगर उन के घरानें के समान तेरह नगर उन के आस पास सहित॥
३४ और मिरारी के संतान के घरानें के जो लावियों में से
उबरे थे ज़बुलून की गोष्ठी में से ये नगर मिले युक़निआम उस
३५ के आस पास सहित क़रताह उस के आस पास सहित। दिमनः
उस के आस पास समेत नाहलाल उस के आस पास सहित
३६ चार नगर। और रूबिन की गोष्ठी में से बुस्र उस के आस
३७ पास सहित और यहज़ा उस के आस पास समेत। क़दमत
उस के आस पास सहित और मीफ़ात उस के आस पास समेत
३८ चार नगर। और जद की गोष्ठी में से घातक के शरण का
नगर जिलिआद में से रामत उस के आस पास सहित और
३९ महनैन उस के आस पास समेत। हशबून उस के आस पास
समेत यासर यअज़ीर उस के आस पास समेत सब में चार
४० नगर। वे सारे नगर मिरारी के संतान के घरानें के लिये जो
उबरे थे बारह नगर चिट्ठी से मिले॥
४१ इसराएल के संतान के अधिकार के मध्य में लावियों के
४२ सब नगर अठतालीस थे उन के आस पास सहित। उन
नगरों में से हर एक नगर अपने आस पास समेत चारों ओर
यों ही समस्त नगर थे॥
४३ सो परमेश्वर ने सब देश जिस के बिषय में उस ने उन के
पितरों को देने को किरिया खाई थी इसराएल को दिया सो
४४ उन्हों ने उसे बश में किया और उस में बसे। और परमेश्वर
ने अपनी किरिया के समान जो उन के पितरों से खाई थी
चारों ओर में उन्हें चैन दिया और उन के सब शत्रुन में से

एक भी उन के साम्ने न ठहरा परमेश्वर ने उन के सारे शत्रुन
४५ को उन के हाथ में कर दिया। उन सारी अच्छी बातों में से
जो परमेश्वर ने इसराएल के घराने को कही थीं एक बात न
घटी सब की सब पूरी हुईं॥

बाईसवां पर्व्व।

१ तब यहूशूअ ने रूबिनियों और जादियों और मुनस्सी की
२ आधी गोष्ठी को बुलाया। और उन्हें कहा कि उन सब को
जो परमेश्वर के दास मूसा ने तुम्हें आज्ञा किई तुम ने पालन
किया और उन सब बातों को जो मैं ने तुम्हें कहीं तुम ने
३ माना। तुम ने अपने भाइयों को बहुत दिनों से आज लों
नहीं छोड़ा परन्तु परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा को पालन
४ किया। और अब परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे भाइयों
को चैन दिया जैसी उस ने उन से बाचा बांधी थी सो तुम
अब फिर जाओ और अपने तंबुओं के अधिकार की भूमि में
जाओ जो परमेश्वर के दास मूसा ने यरदन के उस पार तुम्हें
५ दिई है। परन्तु चौकसी के साथ उस आज्ञा की और उस
व्यवस्था की जो परमेश्वर के दास मूसा ने तुम्हें आज्ञा दिई
है पालन करो जिसतें परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रेम रक्खो और
उस के सारे मार्गों पर चलो और उस की आज्ञाओं को पालन
करो और उस्से लौलीन रहो और अपने सारे मन और अपने
६ सारे प्राण से उस की सेवा करो। और यहूशूअ ने उन्हें
आशीष दिई और उन्हें बिदा किया सो वे अपने अपने तंबुओं
७ को गये। और मुनस्सी की आधी गोष्ठी को मूसा ने बसन में
अधिकार दिया था और उस की आधी को यहूशूअ ने उन
के भाइयों के संग यरदन के इसी पार पश्चिम दिशा में
अधिकार दिया और जब यहूशूअ ने उन्हें अपने अपने तंबुओं

८ को बिदा किया तब उन्हें भी आशीष दिई। और उन्हें कहा
कि बड़े धन के साथ बहुत से ढोर और चांदी और सोना
और तांबा और लोहा और बहुत से वस्त्र लेके अपने डेरों
को जाओ अपने शत्रुन की लूट को अपने भाइयों के साथ
बांट लेओ॥
९ तब रूबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी
की आधी गोष्ठी फिरे और सैला में से जो कनआन की भूमि
है इसराएल के संतान से चले गये जिसतें जिलिअद के देश
को जो उन के अधिकार का देश था जावें जिसे उन्हों ने
मूसा के द्वारा से परमेश्वर के वचन के समान पाया था॥
१० और जब कि वे यरदन के सीमा कनआन के देश में पहुंचे
तो रूबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की
आधी गोष्ठी ने वहां यरदन पास एक बेदी बनाई एक बड़ी
बेदी कि उसे देखा करें॥
११ और इसराएल के संतान ने यह सुनके कहा कि देखो
रूबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी की आधी
गोष्ठी ने कनआन देश के साम्ने यरदन के तीर पर इसराएल
१२ के संतान के मार्ग में बेदी बनाई। और जब इसराएल के
संतान ने सुना तो इसराएल की सारी मंडली सैला में एकट्ठी
१३ हुई जिसतें उन के ऊपर लड़ाई के लिये चढ़ जावें। और
इसराएल के संतान ने रूबिन के संतान के और जद के संतान
के और मुनस्सी की आधी गोष्ठी के पास इलिअज़र याजक के
१४ बेटे फ़ीनिहास को भेजा। और उस के संग दस अध्यक्ष
इसराएल की समस्त गोष्ठियों में हर एक घर में से श्रेष्ठ अध्यक्ष
भेजा जो उन में से हर एक अपने पितरों के घरानों में सहस्रों
१५ इसराएलियों का प्रधान था। सो वे रूबिन के संतान और
जद के संतान के और मुनस्सी की आधी गोष्ठी पास जिलिअद

१६ के देश में आये और उन से कहके बोले । कि परमेश्वर की
सारी मंडलियों ने कहा है कि तुम ने इसराएल के ईश्वर के
बिरोध यह क्या अपराध किया है जो तुम आज के दिन
परमेश्वर का पीछा करने से उस बात में फिर गये कि अपने
लिये एक बेदी बनाई जिसतें तुम आज के दिन परमेश्वर के
१७ बिरोधी होओ । क्या हमारे लिये फ़गुर की बुराई कुछ थोड़ी
थी जिस्से हम आज के दिन लों पवित्र नहीं हुए यद्यपि
१८ परमेश्वर की मंडली में मरी थी । परन्तु क्या तुम्हें उचित था
कि आज के दिन परमेश्वर की सेवा करने से फिर जाओ आज
तो तुम परमेश्वर से फिरे हुए हो और कल इसराएल की सारी
१९ मंडली पर उस का कोप भड़केगा । तथापि यदि तुम्हारे
अधिकार की भूमि अशुद्ध होवे तो अपने लिये पार आओ इस
देश में जो परमेश्वर का अधिकार है जहां परमेश्वर का तंबू है
और हमारे बीच अधिकार लेओ परन्तु हमारे ईश्वर परमेश्वर
की बेदी को छोड़ अपने लिये बेदी बनाके परमेश्वर से और हम
२० से मत फिर जाओ । क्या शारिक के बेटे अकन ने स्रापित
वस्तु में चूक न किया और इसराएल की सारी मंडली पर
कोप न पड़ा और वुह जन अकेला ही अपनी बुराई से नाश
न हुआ ॥

२१ तब रूबिन के संतान और जद के संतान और मुनस्सी
की आधी गोष्ठी ने इसराएलियों के सहस्रों के प्रधानों को उत्तर
२२ देके कहा । कि सर्व्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर सर्व्वशक्तिमान ईश्वर
परमेश्वर वुही जानता है और इसराएल वुही जानेगा कि यदि
फिर जाने में अथवा परमेश्वर के बिरोध करने में यह किया
२३ तो हमें आज के दिन मत छोड़ । अथवा हम ने बेदी बनाई
जिसतें परमेश्वर की सेवा से फिरें अथवा उस पर बलिदान की
भेंटें अथवा भोजन की भेंट अथवा कुशल की भेंट चढ़ावें तो

२४ परमेश्वर वही बिचार करे। श्रोर यदि हम ने उस भय से यह
कहके किया है कि आगे को तुम्हारा बंश हमारे बंश को
कहके बाले कि तुम्हें परमेश्वर इसराएल के ईश्वर से क्या काम।
२५ क्योंकि परमेश्वर ने हमारे श्रोर तुम्हारे मध्य में यरदन की
मेड़ बांधी सो है रूबिन के संतान श्रोर जद के संतान परमेश्वर
में तुम्हारा भाग नहीं सो तुम्हारा बंश हमारे बंश को परमेश्वर
२६ के भय से फेर देवे। इस लिये हम ने कहा कि श्राश्रो हम
अपने लिये एक बेदी बनावें कुछ बलिदान की भेंट के श्रोर
२७ बलि के लिये नहीं। परन्तु इस लिये कि यह हमारे तुम्हारे
मध्य में श्रोर हमारे पीछे हमारी पीढ़ियों के मध्य में एक साक्षी
होवे जिसतें हम परमेश्वर के आगे अपनी बलिदान की भेंटों
से श्रोर अपने बलि की भेंटों से श्रोर अपने कुशल की भेंटों
से परमेश्वर की सेवा करें श्रोर आगे को तुम्हारे बंश हमारे बंश
२८ को न कहें कि परमेश्वर में तुम्हारा भाग नहीं। सो हम ने
कहा कि ऐसा होगा कि जब वे हमें अथवा हमारे बंश को
आगमी काल में कहें तब हम उन्हें उत्तर देंगे कि देखो
परमेश्वर की बेदी का डौल जिसे हमारे पितरों ने बनाया कुछ
बलिदान की भेंट श्रोर बलि की भेंट के लिये नहीं परन्तु इस
२९ लिये कि हमारे तुम्हारे मध्य में साक्षी रहे। ईश्वर न करे कि
हम परमेश्वर से फिर जावें श्रोर आज परमेश्वर से फिरके परमेश्वर
अपने ईश्वर की बेदी को छोड़ें जो उस के तंबू के साम्ने है
श्रोर बलिदान की भेंटें श्रोर भोजन की भेंटें श्रोर बलि की
भेंट के लिये एक बेदी बनावें॥

३० जब फ़ीनिहास याजक श्रोर मंडली के अध्यक्ष श्रोर इसराएल
के सहस्रों के प्रधानों ने जो उस के साथ थे वे बातें सुनीं जो
रूबिन के संतान श्रोर जद के संतान श्रोर मुनस्सी के संतान
३१ ने कहीं तब उन की दृष्टि में अच्छा लगा। तब इलिअज़र

के बेटे फ़ीनिहास याजक ने रूबिन के संतान और जद के
संतान और मुनस्सी के संतान से कहा कि आज के दिन हम
जानते हैं कि परमेश्वर हमारे मध्य में है इस कारण कि तुम
ने परमेश्वर का अपराध न किया क्योंकि तुम ने इसराएल के
संतान को परमेश्वर के हाथ से छुड़ाया ॥
३२ तब इलिअज़र का बेटा फ़ीनिहास याजक और रूबिन के
संतान और जद के संतान के अध्यक्ष जिलिअद की भूमि से
कनआन के देश में इसराएल के संतान पास फिर आये और
३३ उन पास संदेश पहुंचाये। और उसी बात से इसराएल के
संतान प्रसन्न हुए और इसराएल के संतान ने ईश्वर की स्तुति
किई और न चाहा कि युद्ध के लिये उन पर चढ़ जावें कि
उस देश को जिस में रूबिन के संतान और जद के संतान
बसते थे उजाड़ देवें ॥
३४ तब रूबिन के संतान और जद के संतान ने उस बेदी का
नाम साक्षी रक्खा क्योंकि वुह हमारे मध्य में एक साक्षी ठहरी
कि परमेश्वर ईश्वर है ॥

तेईसवां पर्ब्ब।

१ जब परमेश्वर ने इसराएल को उन के सारे शत्रुन से चैन
दिया तो बहुत दिन पीछे यों हुआ कि यहूशूअ बृद्ध और
२ दिनी हुआ। तब यहूशूअ ने सारे इसराएल और उन के
प्राचीनों और उन के प्रधानों और उन के न्याइयों और उन के
कड़ोरों को बुलाया और उन्हें कहा कि मैं बृद्ध और दिनी हूं।
३ और सब कुछ जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने उन सब जातिगणों
के साथ तुम्हारे साम्ने किया तुम देख चुके हो क्योंकि परमेश्वर
४ तुम्हारा ईश्वर आप तुम्हारे लिये लड़ा। देखो मैं ने चिट्ठी
डालके इन सब जातिगणों को जो बचे हैं तुम्हारी गोष्ठियों के

लिये यरदन से लेके समस्त जातिगणों के साथ जिन्हें मैं ने
काट डाला है अर्थात् अस्त की ओर महा समुद्र लों अधिकार
दिया ॥
५ और परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही उन्हें तुम्हारे आगे निकाल
देगा और तुम्हारी दृष्टि से दूर करेगा और तुम उन की भूमि
को बश में करोगे जैसी कि परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम से
६ बाचा बांधी है। इस लिये सब जो मूसा की व्यवस्था की
पुस्तक में लिखा है उन्हें पालन करने को और धारण करने
को हियाव करो जिसतें दहिने अथवा बायें हाथ न मुड़ो।
७ जिसतें तुम इन जातिगणों में जो तुम्हारे संग बचे हैं मत जाओ
और उन के देवों के नाम मत लेओ और उन की किरिया मत
खाओ और उन की सेवा मत करो और न उन को दंडवत
८ करो। परन्तु परमेश्वर अपने ईश्वर से लौलीन रहो जैसा आज
९ के दिन लों रहे हो। क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे आगे बड़े बड़े
और बलवंत जातिगणों को नष्ट किया परन्तु कोई आज के
१० दिन लों तुम्हारे साम्ने ठहर न सका। तुम्में से एक पुरुष
सहस्र को खेदेगा क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर वही तुम्हारे
लिये लड़ता है जैसी उस ने तुम से बाचा बांधी है ॥
११ इस लिये अपने प्राणों को अत्यंत चौकसी से रक्खो कि
१२ परमेश्वर अपने ईश्वर को प्यार करो। यदि तुम किसी रीति से
फिर जाओ और इन्हीं जातिगणों के बचे हुओं में मिल जाओ जो
तुम्हारे संग बचे हैं और उन के साथ बिवाह करो और उन में
१३ आया जाया करो। तो निश्चय जानो कि परमेश्वर तुम्हारा
ईश्वर फिर उन लोगों को तुम्हारे आगे से दूर न करेगा परन्तु
वे तुम्हारे लिये फंदे और जाल और तुम्हारे पंजरों में छड़ियां
और तुम्हारी आंखों में कांटे होंगे यहां लों कि इस अच्छे देश
में से जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें दिया है तुम नाश

१४ हो जाओ। और देखो आज के दिन मैं समस्त पृथिवी के
मार्ग जाता हूं और तुम अपने सारे मन में और अपने सारे
प्राण में जानते हो कि उन सब भली बातों से जो जो परमेश्वर
तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हारे विषय में कही हैं एक भी न घटी
सब की सब तुम्हारें विषय में पूरी हुईं उन में से एक भी न घटी।
१५ सो ऐसा होगा कि जिस रीति से वुह सारी भली बातें जिन के
कारण परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने बाचा बांधी थी तुम्हारे आगे आई
उसी रीति से परमेश्वर सारी बुरी बातें तुम पर लावेगा यहां
लों कि उस अच्छे देश में से जो परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर ने तुम्हें
१६ दिया है तुम्हें नाश करे। जब तुम परमेश्वर अपने ईश्वर की
उस बाचा को जो उस ने तुम से बांधी भंग करोगे और जाके
और देवतों की सेवा करोगे और उन्हें दण्डवत करोगे तब
परमेश्वर का क्रोध तुम पर भड़केगा और तुम उस अच्छे देश
में से जो उस ने तुम्हें दिया है शीघ्र नाश हो जाओगे॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ तब यहूशूअ ने इसराएल की सारी गोष्ठियों को सिकम में
एकट्ठा किया और इसराएल के प्राचीनों को और उन के प्रधानों
को और उन के न्याइयों को और उन के करोड़ों को बुलाया
और वे ईश्वर के साम्ने खड़े हुए॥
२ तब यहूशूअ ने सब लोगों को कहा कि परमेश्वर इसराएल
का ईश्वर यों कहता है कि तुम्हारे पितर अबिरहाम का पिता
तारह और नहूर के पिता प्राचीन समय से नदी के उस पार
३ रहते थे अरु और देवतों की सेवा करते थे। और मैं तुम्हारे
पिता अबिरहाम को नदी के उस पार से लेके उसे कनआन के
समस्त देश में लिये फिरा और उस के वंश को बढ़ाया
४ और उसे इज़हाक दिया। और इज़हाक को यअक़ूब और

एसौ दिये और एसौ को रहने के लिये शईर पहाड़ दिया
४ परन्तु यअकूब और उस के बंश मिस्र को उतर गये। तब मैं ने
मूसा और हारून को भेजा और उन सब कामों से जो मैं ने
वहां किये मिस्र को मारा और उस के पीछे तुम्हें निकाल
६ लाया। और मैं तुम्हारे पितरों को मिस्र से निकाल लाया और तुम
समुद्र पर आये तब मिस्रियों ने रथ और घोड़चढ़े लेके लाल
७ समुद्र लों तुम्हारे पितरों का पीछा किया। और जब उन्हों ने
परमेश्वर की प्रार्थना किई तब उस ने तुम्हारे और मिस्रियों
के मध्य अंधियारा कर दिया और समुद्र को उन पर फेर
दिया और उन्हें ढांप लिया और जो कुछ मैं ने मिस्रियों पर
किया तुम ने अपनी आंखों से देखा और तुम बहुत दिन लों
८ अरण्य में रहा किये। फिर मैं तुम्हें उन अमूरियों के देश
में जो यरदन के उस पार रहते थे ले आया और वे तुम से
लड़े और मैं ने उन्हें तुम्हारे हाथ में सौंप दिया जिसतें तुम
उन के देश को वश में करो और मैं ने उन्हें तुम्हारे आगे
९ नाश किया। तब मोअब का राजा सफूर का बेटा बलक उठा
और इसराएल से लड़ा और बऊर के बेटे बलआम को बुला
१० भेजा कि तुम्हें स्राप देवे। पर मैं बलआम की न सुनता था
इस लिये वुह तुम्हें आशीष देता गया सो मैं ने तुम्हें उस के
११ हाथ से छुड़ाया। फिर तुम यरदन पार उतरे और यरीहो
को आये और यरीहो के लोग अमूरी और फ़रिज़्ज़ी और
कनआनी और हित्ती और जिरजासी हवी और यबूसी तुम से
१२ लड़े और मैं ने उन्हें तुम्हारे वश में किया। तब मैं ने तुम्हारे
आगे बर्रों को भेजा और उन्हों ने उन्हें अर्थात् अमूरियों के
दो राजाओं को तुम्हारे आगे से हांक दिया तेरी तलवार और
१३ तेरे धनुष से नहीं। और मैं ने तुम्हें वुह देश दिया जिस
के लिये तुम ने परिश्रम न किया और वे नगर जिन्हें तुम ने

न बनाया और तुम उन में बसे हो तुम दाख की बारी और
जलपाई की बारी से जो तुम ने नहीं लगाई खाते हो ॥
१४ सो अब तुम परमेश्वर से डरो और सीधाई से और सच्चाई
से उस की सेवा करो और उन देवतों को जिन की तुम्हारे
पितर नदी के उस पार और मिस्र में सेवा करते थे निकाल
१५ फेंको और परमेश्वर की सेवा करो। और यदि परमेश्वर की
सेवा करना तुम्हें बुरा जान पड़े तो आज के दिन चुनो कि
किस की सेवा करोगे उन देवतों की जिन की सेवा तुम्हारे
पितर नदी के उस पार करते थे अथवा अमूरियों के देवतों
को जिन के देश में तुम बसते हो परन्तु मैं और मेरा घराना
परमेश्वर की सेवा करेंगे ॥
१६ तब लोगों ने उत्तर देके कहा कि ईश्वर न करे कि हम
१७ परमेश्वर को त्यागके आन देवतों की सेवा करें। क्योंकि
परमेश्वर हमारा ईश्वर वुही है जो हमें और हमारे पितरों को मिस्र
देश से बंधुआई के घर से निकाल लाया और जिस ने ये बड़े
बड़े आश्चर्य्य हमारी आंखों के साम्ने दिखाये और सारे मार्ग
में जहां जहां हम चलते थे और उन सब लोगों के मध्य
१८ जिन में से होके आये हमारी रक्षा किई। और परमेश्वर ने सारे
लोगों को अर्थात् अमूरियों को जो उस देश में बसते थे
हमारे आगे से निकाल दिया इस लिये हम भी परमेश्वर की
सेवा करेंगे क्योंकि वही हमारा ईश्वर है ॥
१९ फिर यहूशूअ ने लोगों से कहा कि तुम परमेश्वर की सेवा न
कर सकोगे क्योंकि वुह पवित्र ईश्वर वही ज्वलित सर्बशक्तिमान है
वही तुम्हारे अपराधों और तुम्हारे पापों को क्षमा न करेगा।
२० यदि तुम परमेश्वर को त्यागोगे और ऊपरी देवतों की सेवा
करोगे तो वुह भला करने के पीछे फिरके तुम्हें दुःख देगा
और तुम्हें नाश कर डालेगा ॥

२१ तब लोगों ने यहूशूअ से कहा कि कभी नहीं परन्तु हम
परमेश्वर ही की सेवा करेंगे ॥
२२ फिर यहूशूअ ने लोगों से कहा कि तुम आप ही अपने पर
साक्षी हो कि सेवा के लिये तुम ने परमेश्वर को चुन लिया है ॥
तब वे बोले कि हम साक्षी हैं ॥
२३ सो अब तुम ऊपरी देवतों को जो तुम्हारे मध्य में हैं
निकाल फेंको और अपने अपने मन को परमेश्वर इसराएल के
ईश्वर की ओर झुकाओ ॥
२४ तब लोगों ने यहूशूअ से कहा कि हम परमेश्वर अपने ईश्वर
की सेवा करेंगे और उस का शब्द मानेंगे ॥
२५ तब यहूशूअ ने उस दिन लोगों से बाचा बांधी और उन
२६ के लिये बिधि और व्यवहार सिकम में ठहराये। और यहूशूअ
ने ईश्वर की व्यवस्था की पुस्तक में उन बातों को लिख रक्खा
और एक बड़ा पत्थर लेके बलूत के वृक्ष तले जो परमेश्वर के
२७ पवित्र स्थान में था खड़ा किया। और यहूशूअ ने सारे लोगों
से कहा कि देखो यह पत्थर हमारा साक्षी होगा क्योंकि उस
ने वे सब बातें जो परमेश्वर ने हमें कहीं सुनी हैं इस लिये
यही तुम पर साक्षी होगा न हो कि तुम अपने ईश्वर से मुकर
२८ जाओ। फिर यहूशूअ ने हर एक जन को अपने अपने अधिकार
की ओर बिदा किया ॥
२९ और ऐसा हुआ कि इन बातों के पीछे परमेश्वर का दास
नून का बेटा यहूशूअ एक सौ दस बरस का होके मर गया।
३० और उन्हों ने उस के अधिकार अर्थात् तिमनतसिरह के सिवाने
में जो जअस की पहाड़ी की उत्तर दिशा इफ़रायम पहाड़ में
है उसे गाड़ा ॥
३१ और इसराएल यहूशूअ के जीवन भर और प्राचीनों के जीवन
भर जो यहूशूअ के पीछे जीये और परमेश्वर के समस्त कार्य्य

को जो उस ने इसराएल के लिये किया जानते थे परमेश्वर की
सेवा करते रहे ॥
३२ और यूसुफ़ की हड्डियों को जिन्हें इसराएल के संतान मिस्र
से उठा लाये थे उन्हों ने सिकम की उस भूमि में गाड़ा जिसे
यअ़क़ूब ने सिकम के पिता हमूर के बेटों से सौ टुकड़े चांदी
पर मोल लिया था सो वुह भूमि यूसुफ़ के संतान की अधिकार
हुई ॥
३३ और हारून का बेटा इलिअ़ज़र मर गया और उन्हों ने
उसे उस पहाड़ी में जो उस के बेटे फ़िनिहास की थी जो
इफ़रायम के पहाड़ में उसे दिई गई थी गाड़ा ॥

न्याइयों की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ अब यहूशूअ के मरने के पीछे यों हुआ कि इसराएल के
संतानों ने परमेश्वर से यह कहके पूछा कि कनआनियों से युद्ध
२ करने को हमारे कारण पहिले कौन चढ़ जावे। तब परमेश्वर
ने कहा कि यहूदाह चढ़ जावे देखो मैं ने देश को उस के
३ हाथ में कर दिया है। तब यहूदाह ने अपने भाई समऊन
से कहा कि मेरे भाग में मेरे साथ चढ़िये जिसतें हम कनआनियों
से लड़ें और इसी रीति से मैं भी तेरे भाग में तेरे साथ चलूंगा
४ सो समऊन उस के साथ गया। तब यहूदाह चढ़ गया और
परमेश्वर ने कनआनियों और फरिज्ज़ियों को उन के हाथ में
कर दिया और उन्हों ने उन में से बज़क में दस सहस्र पुरुष
५ को घात किया। और उन्हों ने अदूनिबज़क को बज़क में पाया
६ और उससे लड़े और कनआनियों और फरिज्ज़ियों को मारा। परन्तु
अदूनिबज़क भाग निकला और उन्हों ने उस का पीछा किया
७ और जा पकड़ा और उस के हाथ पांव के अंगूठे काटे। तब
अदूनिबज़क ने कहा कि हाथ पांव के अंगूठे काटे हुए सत्तर
राजा मेरे मंच तले के चूर चार चुन चुन खाते थे जैसा मैं ने
किया था वैसा ही ईश्वर ने मुझे पलटा दिया फिर वे उसे
यरूसलम में लाये और वुह वहां मर गया॥

८ अब यहूदाह के संतान यरूसलम से लड़े थे और उसे ले
लिया था और उसे तलवार की धार से मारा और उस नगर को

९ आग से फूंक दिया । और उस के पीछे यहूदाह के संतान
उतरके उन कनआनियों से जो पहाड़ में और दक्षिण में
१० और तराई में बसते थे लड़े । और यहूदाह ने उन कनआनियों
का जो हबरून में रहते थे साम्ना किया और उन्हों ने सीसी और
अख़िमान और तलमी को मारा और हबरून का नाम आगे
११ क़रयतअरबअ था । और वुह वहां से दबीर के बासियों पर
१२ चढ़ गया और दबीर का नाम आगे क़रयतसिफ़र था । तब
कालिब ने कहा कि जो कोई क़रयतसिफ़र को मार लेगा मैं
१३ उसे अपनी कन्या अक़स: को बियाह देऊंगा । तब कालिब के
लहुरे भाई क़नज़ के बेटे ग़ुतनिएल ने उसे ले लिया और उस
१४ ने अपनी कन्या अक़स: उसे बियाह दिई । और ऐसा हुआ
कि जाते ही उस ने उसे उभाड़ा कि अपने पिता से एक खेत
मांगे तब वुह अपने गदहे पर से उतरी और कालिब ने उसे
१५ कहा कि तू क्या चाहती है । और उस ने उसे कहा कि मुझे
आशीष दीजिये क्योंकि तू ने मुझे दक्षिण दिशा की भूमि दिई
मुझे पानी के सोते भी दीजिये तब कालिब ने ऊपर के और
नीचे के सोते उसे दिये ॥

१६ तब मूसा के ससुर क़ैनी के बंश यहूदाह के संतान के
साथ खजूरों के नगर में से यहूदाह के अरण्य को जो अराद
की दक्षिण की ओर है चढ़ गये और उन लोगों में जा बसे ॥

१७ और यहूदाह अपने भाई समऊन के साथ गया और उन्हों
ने उन कनआनियों को जो सफात में रहते थे जा मारा और
उसे सर्व्वथा नाश किया और उस नगर का नाम हुरम: रक्खा ।
१८ और यहूदाह ने अज्ज़: को उस के सिवाने सहित और
असक़लून को उस के सिवाने सहित और अक़रून को उस के
१९ सिवाने सहित ले लिया । और परमेश्वर यहूदाह के साथ था
और उस ने पर्व्वत को अधिकार में किया क्योंकि तराई के

बासियों को निकाल न सका क्योंकि उन के रथ लोहे के थे।
२० तब उन्हों ने मूसा के कहने के समान कालिब को हबरून
दिया और उस ने वहां से अनाक़ के तीन बेटों को दूर
किया॥

२१ और बिनयमीन के संतान यबूसियों को जो यरूसलम में
रहते थे दूर न किया परन्तु यबूसी बिनयमीन के संतान के
साथ आज के दिन लों यरूसलम में बसते हैं॥

२२ और यूसुफ़ का घराना भी बैतएल पर चढ़ गया और
२३ परमेश्वर उन के साथ था। और यूसुफ़ के घराने ने बैतएल
का भेद लेने को भेजा और उस नगर का नाम आगे लौज़
२४ था। और भेदियों ने नगर से एक मनुष्य को बाहर आते
देखके उस्से कहा कि नगर का पैठ हमें बता और हम तुझ
२५ पर दया करेंगे। जब उस ने उन्हें नगर का पैठ बताया तब
उन्हों ने नगर को तलवार की धार से मारा परन्तु उस
२६ मनुष्य को उस के सारे घराने समेत छोड़ दिया। और वुह
मनुष्य हित्तियों की भूमि में गया और वहां एक नगर बनाया
और उस का नाम लौज़ रक्खा जो आज लों उस का नाम
है॥

२७ और मुनस्सी ने भी बैतशान को और उस के गांवों को
और तअनाक को और उस के गांवों को और दोर के बासियों
को और उस के गांवों को और इबलिआम के बासियों को
और उस के गांवों को और मजिद्दो के बासियों को और उस के
गांवों को न निकाल दिया परन्तु कनआनी उसी देश में बसा
२८ किये। और यों हुआ कि जब इसराएल प्रबल हुए तब उन्हों
ने कनआनियों से कर लिया परन्तु उन्हें सर्वथा निकाल न
२९ दिया। और इफ़रायम ने भी उन कनआनियों को जो जज़र
में बस्ते थे न निकाला परन्तु कनआनी उन के मध्य में जज़र

३० में बस्ते थे । ज़बुलून ने क़ितरून के बासियों को और नहलाल
के बासियों को न निकाला परन्तु कनआनी उन के मध्य में रहे
३१ और करदायक हुए । यसर ने अक्को के बासियों को और सैदा
के बासियों को और अहलाब और अक़ज़ीब और हिलब: और
३२ अफ़ीक़ और रहूब के बासियों को दूर न किया । परन्तु यसरी
उन कनआनियों के मध्य में जो उस देश के बासी थे बसे क्योंकि
३३ उन्हों ने उन्हें दूर न किया । नफ़ताली ने बैतशम्स के बासियों
को और बैतअनात के बासियों को दूर न किया परन्तु वुह उस
देश के बासी कनआनियों के मध्य में रहा तथापि बैतशम्स
३४ और बैतअनात के बासी उन के करदायक हुए । और अमूरियों
ने दान के संतान को पहाड़ में खेदा क्योंकि वे उन्हें तराई में
३५ उतरने न देते थे । परन्तु अमूरी हरिस पहाड़ में ऐयलून में
और शालबीम में बसा किये तथापि यूसुफ़ के घराने का हाथ
३६ प्रबल हुआ यहां लों कि उन्हें करदायक किया । और अमूरियों
का सिवाना अक़्रबिम की चढ़ाई से पहाड़ के ऊपर लों था ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ तब परमेश्वर के दूत ने जिलजाल से बोकीम को आके
कहा कि मैं तुम्हें मिस्र से उठाके इस देश में जिस के कारण
तुम्हारे पितरों से किरिया खाई थी ले आया और मैं ने कहा
२ कि मैं तुम से कभी अपनी बाचा न तोड़ूंगा । और तुम इस
देश के बासियों के साथ बाचा न बांधियो तुम उन की बेदियों
को ढाइयो परन्तु तुम ने मेरे शब्द को न माना तुम ने ऐसा
३ क्यों किया । इसी कारण मैं ने भी कहा कि मैं उन्हें तुम्हारे
आगे से दूर न करूंगा परन्तु वे तुम्हारे पांजरों में कांटे और
उन के देवते तुम्हारे लिये फंदे होंगे ॥

४ और ऐसा हुआ कि जब परमेश्वर के दूत ने सारे इसराएल

के संतान को ये बातें कहीं तो उन्हों ने बड़े शब्द से बिलाप
५ किया। और उन्हों ने उस स्थान का नाम बोकीम रक्खा और
उन्हों ने वहां परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाया॥
६ और जब कि यहूशूअ ने लोगों को बिदा किया था तब
इसराएल के संतान में से हर एक अपने अपने अधिकार पर
७ गया जिसतें उस देश को बश में करे। और वे लोग परमेश्वर
की सेवा करते थे यहूशूअ के जीवन भर और उन प्राचीनों के
जीवन भर जो यहूशूअ के पीछे रहते थे जिन्हों ने परमेश्वर
का समस्त बड़ा कार्य्य देखा जिसे उस ने इसराएल के लिये
८ किया परमेश्वर की सेवा करते रहे। और परमेश्वर का दास
नून का बेटा यहूशूअ एक सौ दस बरस का बृद्ध होके मर
९ गया। और उन्हों ने उस के अधिकार के सिवाने तिमनतहरिस
में इफ़रायम के पहाड़ में जो जअश के पहाड़ की उत्तर अलंग
१० है उसे गाड़ा। और वही समस्त पीढ़ी भी अपने पितरों में जा
मिली

और उन के पीछे दूसरी पीढ़ी उठी जिस ने परमेश्वर को
और उस कार्य्य को जो उस ने इसराएल के लिये किया था
११ नहीं पहिचाना। तब इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि
१२ में बुराई किई और बअलीम की सेवा किई। और परमेश्वर अपने
पितरों के ईश्वर को जो उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाया
था छोड़ दिया और ऊपरी देवों का पीछा किया अर्थात् अपने
चारों ओर के लोगों के देवों के आगे दंडवत किई और परमेश्वर
१३ को रिस दिलाई। सो उन्हों ने परमेश्वर को छोड़ दिया और
१४ बअल और इस्तारात की सेवा किई। तब परमेश्वर का क्रोध
इसरायल पर भड़का और उस ने उन्हें नष्टकारियों के बश में
कर दिया और उन्हों ने उन्हें नष्ट किया और उस ने उन्हें
उन के आस पास के बैरियों के हाथ में बेचा यहां लों कि वे फिर

१५ अपने बैरियों के आगे न ठहर सक्ते थे। जहां कहीं वे निकलते
थे परमेश्वर का हाथ बुराई के लिये उन के बिरोध में था
जैसा कि परमेश्वर ने कहा था और जैसी कि परमेश्वर ने उन
से किरिया खाई थी और वे अत्यंत दुःखी हुए॥
१६ तथापि परमेश्वर ने न्याइयों को खड़ा किया जिन्हों ने उन्हें
१७ उन के नष्टकारियों के हाथ से छुड़ाया। तदभी वे अपने
न्याइयों की भी न सुनते थे परन्तु ऊपरी देवों के पश्चाद्गामी
हुए और उन के आगे दंडवत किई वे उस मार्ग से जिस पर
उन के पितर परमेश्वर की आज्ञा का पालन करके चलते थे
१८ बहुत शीघ्र उलटे फिरे और उन्हें पालन न किया। और
जब परमेश्वर उन के लिये न्याइयों को खड़ा करता था तब
परमेश्वर न्यायी के साथ रहता था और उन्हें उन के शत्रुन के
हाथ से न्यायी के जीवन भर छुड़ाता रहा क्योंकि परमेश्वर
उन के कहरने से जो उन के सताने और दुःख देनेहारों के
१६ कारण से था पछताया। और ऐसा हुआ कि जब न्यायी मर
जाता था तब वे फेर फिर जाते थे और आप को अपने पितरों
से अधिक बिगाड़ते थे कि और ऊपरी देवताओं का पीछा
पकड़ते थे कि उन की सेवा और दंडवत करें वे अपनी अपनी
चाल से और अपने अपने हठीले मार्ग से न फिरते थे॥
२० तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस ने
कहा इस कारण कि जैसा इन लोगों ने मेरी उस बाचा को
जो मैं ने उन के पितरों से बांधी थी भंग किया है और मेरे
२१ शब्द को न माना है। मैं भी अब से उन जातिगणों में से जिन्हें
यहूशूअ छोड़के मरा किसी को भी उन के आगे से दूर न
२२ करूंगा। जिसतें मैं उन के द्वारा से इसराएल को परखूं कि
वे अपने पितरों की नाईं परमेश्वर के मार्ग पर चलने को पालन
२३ करेंगे कि नहीं। सो परमेश्वर ने उन जातिगणों को छोड़ा कि

उन्हें शीघ्र दूर न किया और उस ने उन्हें यहूशूत्र के हाथ
में न सौंपा ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ और ये वे जातिगण हैं जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल की
परीक्षा के लिये उन में छोड़ा अर्थात् उन में जो कनत्रान के
२ सारे संग्राम न जानते थे । केवल जिसतें इसराएल के संतान
की पीढ़ी निज करके जो आगे लड़ाई का भेद न जानते थे
३ उन से सीखें । फ़िलिस्तियों के पांच अध्यक्ष और सारे कनत्रानी
और सैदानी और हव्वी थे जो लुबनान पर्वत में बत्रल हरमून
४ पर्वत से लेके हमात के पैठ लों बसते थे । और वे इसराएल
की परीक्षा के लिये थे जिसतें जानें कि वे परमेश्वर की उन
आज्ञाओं को जो उस ने मूसा की ओर से उन के पितरों को दिई
थीं मानेंगे कि नहीं ॥
५ सो इसराएल के संतान कनत्रानियों हित्तियों और अमूरियों
और फरिज्ज़ियों और हव्वियों और यबूसियों के मध्य में बसते
६ थे । और उन्हों ने उन की बेटियों को अपनी पत्नियां किया
और उन की बेटियां अपने बेटों को दिईं और उन के देवतों
७ की सेवा किई । और इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि
में बुराई किई और परमेश्वर अपने ईश्वर को भूल गये और
८ बत्रलीम और कुंजों की सेवा किई । इस लिये इसराएल पर
परमेश्वर का कोप भड़का और उस ने उन्हें कूशनरिसत्रतैन
अरमनहराईम के राजा के हाथ बेचा और इसराएल के संतान
ने कूशनरिसत्रतैन की सेवा आठ बरस लों किई ॥
९ और जब इसराएल के संतान ने परमेश्वर से दोहाई दिई
तब परमेश्वर ने इसराएल के संतान के लिये एक निस्तारक
जिस ने उन्हें छुड़ाया अर्थात् कालिब के लहुरे भाई क़नज़

१० के पुत्र अत्निएल को खड़ा किया । और परमेश्वर का आत्मा
उस पर था और उस ने इसराएल का न्याय किया और संग्राम
को निकला तब परमेश्वर ने अराम के राजा कूशनरिसअतैन
को उस के हाथ में सौंप दिया और उस का हाथ कूशनरिसअतैन
११ पर प्रबल हुआ । और देश को चालीस बरस लों चैन हुआ और
क़नज़ का बेटा अत्निएल मर गया ॥
१२ फिर इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई
किई तब परमेश्वर ने मोअब के राजा इजलून को इसराएल
पर प्रबल किया इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर की दृष्टि में
१३ बुराई किई । और उस ने अम्मून के और अमालीक़ के संतान
को अपने पास एकट्ठा किया और जाके इसराएल को मारा
१४ और खजूर पेड़ों के नगर को बश में किया । सो इसराएल के
संतान मोअब के राजा इजलून की सेवा अठारह बरस लों
करते रहे ॥
१५ परन्तु जब इसराएल के संतान परमेश्वर के आगे चिल्लाये
तब परमेश्वर ने एक बिनयमीनी जेरा के बेटे अहूद को जो
बैंहथा था उन के छुड़ाने के लिये उभाड़ा और इसराएल के
संतान ने उस के द्वारा से मोअब के राजा इजलून के लिये
१६ भेंट भेजी । परन्तु अहूद ने हाथ भर का दो धारा खंजर
बनाया और उसे अपने दहिनी जांघ में वस्त्र के तले बांधा ।
१७ और वुह मोअब के राजा इजलून के पास भेंट लाया और
इजलून बड़ा मोटा जन था ॥
१८ और जब वुह भेंट दे चुका तब उस ने उन लोगों को जो
१९ भेंट लाये थे विदा किया । परन्तु वुह आप उन मूर्त्तिस्थान
के पास से जो जिलजाल में हैं लौटा और कहा कि हे राजा
मेरे पास तेरे लिये एक गुप्त संदेश है और उस ने कहा कि
चुपके रह तब जितने लोग पास खड़े थे बाहर निकल गये ।

२० तब अहूद उस पास आया और वुह एक ठंढे स्थान में जो
उस ने अपने लिये बनाया था अकेला बैठा था और अहूद ने
कहा कि ईश्वर का संदेश आप के लिये मुझ पास है तब वुह
२१ आसन पर से उठ खड़ा हुआ। तब अहूद ने अपना बांयां
हाथ बढ़ाया और दहिनी जांघ पर से खंजर को लिया और
२२ उस की तोंद में गोद दिया। और मूठ भी फलके पीछे पैठ गई
और चिकनाई से फल ढंप गया क्योंकि उस ने खंजर
को उस की तोंद से नहीं निकाला और मल निकल पड़ा।
२३ तब अहूद ओसारे में बाहर निकला और अपने पीछे ऊंचे
स्थान के द्वारों को खैंच लिया और उन्हें बंद किया॥
२४ जब वुह बाहर निकल गया तब उस के सेवक आये
और उन्हों ने ऊंचे स्थान के द्वार को बंद देखके कहा कि
२५ निश्चय वुह अपने ठंढे स्थान में चैन करता है। और वे
ठहरते ठहरते लज्जित हुए और देखो कि उस ने बैठक के
द्वार को नहीं खोला तब उन्हों ने कुंजी लेके खोला और क्या
देखते हैं कि उन का प्रभु भूमि पर मरा पड़ा है॥
२६ और उन के ठहरते ठहरते अहूद भाग निकला और
२७ मूर्त्तिस्थान से पार हुआ और सीरात में जाके बचा। और
आते ही यों हुआ कि उस ने पहाड़ इफ़रायम पर नरसिंगा
फूंका तब इसराएल के संतान उस के साथ पहाड़ पर से उतरे
२८ और वुह उन के आगे आगे हुआ। और उस ने उन्हें कहा
कि मेरे पीछे पीछे हो लेओ क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हारे शत्रु
मोआबियों को तुम्हारे हाथ में कर दिया सो वे उस के पीछे
पीछे उतर आये और यरदन के घाटों को जो मोआब की
ओर थे ले लिया और एक को भी पार उतरने न दिया।
२९ और उसी समय उन्हों ने मोआब के दस सहस्र मनुष्य के
अटकल जो सब पुष्ट और साहसी थे घात किये उन में से एक

३० भी न बचा। सो उस दिन मोअब इसराएल के बश में हुआ
और देश ने अस्सी बरस लों चैन पाया॥
३१ और उस के पीछे अनात का बेटा शमजर हुआ जिस ने
छः सौ फ़िलिस्तियों को बैल की आर से मारा और उस ने
भी इसराएल को छुड़ाया॥

चौथा पर्ब्ब।

१ और जब अहूद मर गया तब इसराएल के संतान ने फिर
२ परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई। और परमेश्वर ने उन्हें
कनआन के राजा यबीन के हाथ में बेचा जो हसूर में राज्य
करता था और उस की सेना के अध्यक्ष का नाम सीसरा था
३ और वुह अन्यदेशियों के हरसत में रहता था। तब इसराएल
के संतान परमेश्वर के आगे चिल्लाये क्योंकि उस पास लोहे के
नव सौ रथ थे और उस ने बीस बरस लों इसराएल के संतान
को कठोरता से सताया॥
४ और लफ़ीदात की पत्नी दबूर: आगमज्ञानिनी उस समय
५ में इसराएल का न्याय करती थी। और पहाड़ इफ़रायम में
रामः और बैतएल के मध्य दबूर: के खजूर तले रहती थी
और इसराएल के संतान उस पास न्याय के लिये चढ़ आते
६ थे। तब उस ने क़ादिस नफ़ताली से अबिनुअम के बेटे बरक़
को बुला भेजा और उसे कहा कि क्या परमेश्वर इसराएल के
ईश्वर ने आज्ञा नहीं किई कि जा और तबूर पहाड़ की ओर
लोगों को बटोर और नफ़ताली के संतान और ज़बुलून के संतान
७ में से दस सहस्र जन अपने साथ ले। और मैं क़ूसून की नदी पर
यबीन की सेना का प्रधान सीसरा को उस के रथ और उस
की मंडली समेत तेरी ओर बटोरूंगा और उसे तेरे हाथ में
८ कर देऊंगा। और बरक़ ने उसे कहा कि यदि तू मेरे साथ

जावेगी तो मैं जाऊंगा परन्तु यदि तू मेरे साथ न जावेगी तो
९ मैं न जाऊंगा। तब वुह बोली कि निश्चय मैं तेरे साथ चलूंगी
तथापि जो यात्रा तू करता है सो तेरी प्रतिष्ठा के लिये न
होगी क्योंकि परमेश्वर सीसरा को एक स्त्री के हाथ में सौंपेगा
१० तब दबूरः उठी और बरक़ के साथ क़ादिस को गई। और
बरक़ ने ज़बुलून और नफ़ताली को क़ादिस में बुलाया और
वुह दस सहस्र जन अपने साथ लेके चढ़ा और दबूरः भी
उस के साथ साथ चढ़ गई॥

११ अब हिब्र क़ैनी ने जो मूसा के ससुर होबाब के बंश में
का था क़ैनियों से आप को अलग किया और अपना डेरा
ज़अनन्नीम में क़ादिस के लग बलूत के बृच्छ के पास जो है
खड़ा किया॥

१२ तब सीसरा को संदेश पहुंचा कि अबिनुअम का बेटा बरक़
१३ पहाड़ तबूर पर चढ़ गया। तब सीसरा ने अपने समस्त रथ
अर्थात् लोहे के नव सौ रथ और अपने साथ के सारे लोगों
को अन्यदेशियों के हरसत से बुलाके क़ैसून की नदी पर
एकट्ठे किया॥

१४ तब दबूरः ने बरक़ से कहा कि उठ क्योंकि यह वुह दिन
है जिस में परमेश्वर ने सीसरा को तेरे हाथ में कर दिया है
क्या परमेश्वर तेरे आगे नहीं गया तब बरक़ तबूर पहाड़ से
१५ नीचे उतरा और दस सहस्र जन उस के पीछे पीछे। और
परमेश्वर ने सीसरा को और समस्त रथों को और सारी सेना
को बरक़ के आगे तलवार की धार से हरा दिया यहां लों
१६ कि सीसरा रथ पर से उतरके पांव पांव भागा। परन्तु बरक़
रथों और सेनाओं के पीछे अन्यदेशियों के हरसत कोइम लों
रगेदे गया और सीसरा की सारी सेना तलवार की धार से
१७ मारी गई और एक भी न बचा। तथापि सीसरा पांव पांव

भागके हिब्र क़ैनी की पत्नी याइल के तंबू में घुसा क्योंकि
हसूर के राजा यबीन और हिब्र क़ैनी के घर में मिलाप था।
१८ तब याइल सीसरा से मिलने को निकली और उसे कहा कि
हे मेरे प्रभु इधर फिरिये मेरे यहां फिर आइये मत डरिये
और जब वुह उस के तंबू में आया तब उस ने उसे एक
१९ ओढ़ने से ढांप दिया। तब उस ने उसे कहा कि मैं तेरी
बिनती करता हूं कि मुझे तनिक जल दीजिये क्योंकि मैं
प्यासा हूं सो उस ने दूध का एक कुप्पा खोलके उसे पिलाया
२० और उसे ढांप दिया। तब उस ने उसे कहा कि तंबू के द्वार
पर खड़ी रह और यों होगा कि जब कोई आके तुझ से पूछे
२१ और कहे कि कोई पुरुष यहां है तो कहियो कि नहीं। तब
हिब्र की पत्नी याइल ने तंबू की एक खूंटी और मोगरी हाथ
में लिई और होले होले उस पास जाके उस खूंटी को उस की
कनपटी में ठोंका और भूमि में गड़ा दिया क्योंकि वुह थका
२२ होके बड़ी नींद में था सो वुह मर गया। और देखो कि जब
बरक़ सीसरा को रगेदता आया तो याइल उस की भेंट को
निकली और उसे कहा कि आ मैं तुझे उस जन को जिसे तू
ढूंढ़ता है दिखाऊं और जब वुह भीतर आया तो देखता है कि
सीसरा मरा पड़ा है और खूंटी उस की कनपटी में है॥
२३ सो ईश्वर ने उस दिन कनआन के राजा यबीन को इसराएल
२४ के संतान के बश में किया। और इसराएल के संतान का हाथ
भाग्यमान हुआ और कनआन के राजा यबीन पर प्रबल हुआ
यहां लों कि उन्हों ने कनआन के राजा यबीन को नाश किया॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ तब दबूरः और अबिनुअम के बेटे बरक़ ने उसी दिन
में गाके कहा

२ जब इसराएल में संपूर्ण निरंकुश थे जब लोगों ने मनमंता
३ आप को सौंप दिया परमेश्वर की स्तुति करो। हे राजाओ
सुनो हे अध्यक्षो कान धरो मैं ही परमेश्वर के लिये गाऊंगा
४ मैं परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के लिये बजाऊंगा। हे परमेश्वर
जब तू शईर से निकला जब तू ने अदूम के चौगान से यात्रा
किई तब भूमि थर्थरा उठी स्वर्ग भी टपके और मेघों से भी
५ बूंदियां पड़ीं। पहाड़ परमेश्वर के आगे बहि गये अर्थात् यह
सीना परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के आगे॥

६ अनात के बेटे शमजर के दिनों में याइल के समय में
७ राजमार्ग सूने थे और पथिक टेढ़े मार्गों से जाते थे। गांव
रह गये वे इसराएल में से उठ गये जब लों कि मैं दबूरः न
८ उठी कि मैं इसराएल में एक माता उठी। जब उन्हों ने नये
देवों को चुन लिया तब फाटकों पर युद्ध हुआ क्या इसराएल
के चालीस सहस्रों में एक ढाल अथवा एक भाला था॥

९ मेरा मन इसराएल के अध्यक्षों की ओर है जिन्हों ने
लोगों में मनमंता आप को सौंप दिया तुम परमेश्वर का धन्य
१० मानो। तुम जो श्वेत गदहों पर चढ़ते हो जो न्याय पर
११ बैठते हो और मार्ग चलते हो सोचो। कि पनिघटों में
धनुषधारियों के शब्द से लोग परमेश्वर के धर्म्मों की चर्चा
करेंगे अर्थात् धर्म्म कार्य्यों को जो गांवों में इसराएल पर हुए
१२ तब परमेश्वर के लोग फाटकों पर उतर जावेंगे। जाग जाग
हे दबूरः जाग जाग गीत गा उठ हे बरक़ और अबिनुअम के
बेटे अपने बंधुअन को बंधुआई में ले जा॥

१३ तब उस ने उसे जो बच रहा है लोगों के प्रधानों पर
प्रभुता दिई परमेश्वर ने मुझे सामर्थियों पर प्रभुता दिई।
१४ इफ़रायम में से एक जड़ अमालीक के सन्मुख हुई तेरे लोगों
में से हे बिनयमीन तेरे पीछे मकीर में से अध्यक्ष उतर आये

१५ और ज़बुलून में से जो लेखनी से खेंचते हैं। और इशकार
के अध्यक्ष दबूर: के साथ थे अर्थात् इशकार बरक़ के साथ
वुह पांव पांव तराई को भेजा गया रूबिन के बिभागों में मन
१६ में बड़ी बड़ी चिन्ता हुई। तू क्यों भुंडों का मिमियाना सुन्ने
को भेड़शालों में रहा रूबिन के बिभागों से मन में बड़ी बड़ी
१७ चिन्ता हुई। जिलिअद यरदन पार रहा और दान जहाज़ों
पर क्यों रह गया यसर समुद्र के घाट में और कोलों में
१८ ठहर रहा। ज़बुलून और नफ़ताली ने चौगान में ऊंचे ऊंचे
स्थानों पर अपने प्राण को तुच्छ जाना॥

१६ राजा आके लड़े तब कनआन के राजाओं ने तअनाक में
मजिद्दो के पानियों पर युद्ध किया उन्हों ने कुछ रोकड़ न
२० लिया। वे स्वर्ग पर से लड़े तारागण अपने अपने चक्र में
२१ सीसरा से लड़े। क़ीसून की नदी वुह प्राचीन नदी क़ीसून नदी
उन्हें बहा ले गई हे मेरे प्राण तू ने बलवंतों को रौंद डाला।
२२ तब उन के घोड़ों के खुर टापें मारते थे उस के बीरों के
दौड़ाने से॥

२३ परमेश्वर के दूत ने कहा कि मिरोज़ को स्राप देओ वहां
के बासियों को अति स्राप देओ क्योंकि वे परमेश्वर की सहाय
के लिये अर्थात् परमेश्वर की सहाय के लिये बलवंतों के सन्मुख
न आये॥

२४ क़ैनी हिब्र की पत्नी याइल सब स्त्रियों से अधिक धन्य
होगी वुह उन स्त्रियों से जो डेरों में हैं अधिक धन्य होगी।
२५ उस ने पानी मांगा उस ने उसे दूध दिया वुह प्रतिष्ठित पात्र
२६ में माखन लाई। उस ने अपना हाथ खूंटी पर रक्खा और
अपना दहिना हाथ कार्य्यकारी की मोगरी पर मोगरी से सीसरा
को मारा उस ने उस के सिर को कुचला और गोदा और उस
२७ की कनपटी को आरंपार छेदा। वुह उस के चरणों के तले झुका

गिर पड़ा पड़ रहा उस के चरणों के नीचे झुका गिर पड़ा जहां
वुह झुका तहां गिरके नाश हुआ॥
२८ सीसरा की माता ने खिड़की से झांका और झरोखे से पुकारा
कि उस का रथ क्यों बिलम्ब करता है उस के रथों के पहिये
२९ क्यों बिलम्ब करते हैं। उस की बुद्धिमती स्त्रियों ने उत्तर
३० दिया हां उस ने आप ही उत्तर दिया। क्या वुह न पावेंगे
लूट न बांटेंगे एक एक पुरुष पीछे दो एक सहेलियां सीसरा को
भांति भांति के रंगीले बस्त्र की लूट अर्थात् बूटे काढ़े हुए
नाना रंग के बस्त्र की लूट दोनों अलंग बूटे काढ़े हुए नाना
३१ रंग के बस्त्र की लूट उठानेहारों के गलों के लिये। इसी
रीति से हे परमेश्वर तेरे सारे शत्रु नाश होवें परन्तु जो उस्से
प्रेम रखते हैं सो सूर्य्य के तुल्य होवें जब वुह अपने पराक्रम
से निकलता है। और देश ने चालीस बरस चैन पाया॥

छठवां पर्ब्ब।

१ फिर इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई
किई तब परमेश्वर ने उन्हें सात बरस लों मिदयानियों के
२ हाथ में सौंप दिया। और मिदयानियों का हाथ इसराएल पर
प्रबल हुआ मिदयानियों के कारण इसराएल के संतानों ने अपने
लिये पहाड़ों में मांद और कंदला और दृढ़स्थान बनाये।
३ और ऐसा होता था कि जब इसराएल कुछ बोते थे तब
मिदयानी और अमालीकी और पूरबी बंश उन पर चढ़ आते
४ थे। और उन के साम्ने डेरा खड़ा करके अज्जः लों भूमि की
बढ़ती को नष्ट करते थे और इसराएल के लिये न जीविका
५ न भेड़ बकरी न गाय बैल न गदहा छोड़ते थे। क्योंकि वे
अपने ढोर और अपने तंबुओं सहित टिड्डी दल की नाईं

मंडली होके आते थे वे और उन के ऊंट अगणित थे और वे
६ पैठके उन के देश को नष्ट करते थे। सो इसराएल मिदयानियों
के कारण दुर्बल हो गये और इसराएल के संतान ने परमेश्वर
की दोहाई दिई॥
७ और ऐसा हुआ कि जब इसराएल के संतान ने मिदयानियों
८ के कारण परमेश्वर की दोहाई दिई। तब परमेश्वर ने इसराएल
के संतान पास एक जन अर्थात् आगमज्ञानी भेजा जिस ने
उन्हें कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि
मैं तुम्हें मिस्र से ले आया और मैं तुम्हें सेवकाई के घर से
९ निकाल लाया। और मैं ने तुम्हें मिस्रियों के हाथ से और
उन सब के हाथ से जो तुम्हें सताते थे छुड़ाया और तुम्हारे
आगे से उन्हें दूर किया और उन का देश तुम्हें दिया।
१० और मैं ने तुम्हें कहा कि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर मैं हूं उन
अमूरियों के देवतों से जिन के देश में तुम बसते हो मत
डरो पर तुम ने मेरा शब्द न माना॥
११ फिर परमेश्वर का एक दूत आया और बलूत वृक्ष तले
उफ़र: में बैठा जो अबीअज़री यूआस का था और उस का
बेटा जिदऊन कोल्हू के पास गोहूं झाड़ रहा था जिसतें
१२ मिदयानियों के हाथ से छिपावे। तब परमेश्वर का दूत उसे
दिखाई दिया और उसे कहा कि हे महावीर परमेश्वर तेरे
१३ साथ। तब जिदऊन ने उसे कहा कि हे मेरे प्रभु यदि
परमेश्वर हमारे साथ है तो हम पर ये सब क्यों बीतते हैं
और उस के समस्त आश्चर्य्य कहां हैं जो हमारे पितरों ने
हम से बर्णन किया था क्या परमेश्वर हमें मिस्र से नहीं निकाल
लाया परन्तु अब परमेश्वर ने हमें त्याग किया और हमें
१४ मिदयानियों के हाथ में सौंप दिया। तब परमेश्वर ने उस पर
दृष्टि किई और कहा कि अपनी इसी सामर्थ्य से जा और तू

इसराएल को मिदयानियों के हाथ से छुड़ावेगा क्या मैं ने
१५ तुझे नहीं भेजा। और उस ने उसे कहा कि हे प्रभु मैं किस
करके इसराएल को छुड़ाऊं देख मेरा घराना मुनस्सी में सब से
१६ तुच्छ और मैं अपने पितरों के घराने में सब से छोटा। तब
परमेश्वर ने उसे कहा कि मैं तेरे साथ होऊंगा और तू एक ही
१७ मनुष्य के समान मिदयान को मारेगा। तब उस ने उसे
कहा कि यदि अब मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है
१८ तो मुझे कोई लक्षण दिखा कि तू मुझ से बोलता है। मैं तेरी
बिनती करता हूं जब लों मैं तुझ पास फिर आऊं और अपने
मांस की भेंट लाऊं और तेरे आगे धरूं तब लों तू यहां से
मत जाइयो सो उस ने कहा कि जब लों तू फिर न आवे मैं
ठहरूंगा॥

१९ तब जिदऊन गया और उस ने बकरी का एक मेम्ना और
एक ईफा पिसान के फुलके सिद्ध किये और मांस को उस ने
टोकरी में रक्खा और जूस एक कटोरे में डालके उस के
२० लिये बलूत बृक्ष तले लाके भेंट चढ़ाई। तब ईश्वर के दूत
ने उसे कहा कि मांस और फुलकों को लेके इस चटान पर
२१ रख और जूस उंडेल सो उस ने वैसे ही किया। तब
परमेश्वर के दूत ने अपने हाथ की लाठी को बढ़ाया और उस
की टोंक से मांस और फुलकों को छुआ और उस चटान से आग
निकली और मांस और फुलके को भस्म किया तब परमेश्वर
का दूत उस की दृष्टि से जाता रहा॥

२२ जब जिदऊन ने देखा कि वुह परमेश्वर का दूत था तब
जिदऊन ने कहा कि हाय हे प्रभु परमेश्वर क्योंकि मैं ने ईश्वर
२३ का दूत आम्ने साम्ने देखा। तब परमेश्वर ने उसे कहा कि
तुझ पर कुशल हो मत डर तू न मरेगा॥

२४ तब जिदऊन ने वहां परमेश्वर के लिये बेदी बनाई और

उस का नाम यह रक्खा कि परमेश्वर कुशल भेजे सो वुह
२५ अबीअज़री उफ़र: में आज के दिन लों बनी है। और ऐसा
हुआ कि उसी रात परमेश्वर ने उसे कहा कि अपने पिता का
बछड़ा और एक दूसरा बैल जो सात बरस का है ले और
उस बेदी को जो तेरे पिता ने बअल के लिये बनाई है ढा
२६ दे और वुह कुंज जो उस के निकट है काट डाल। और
परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये इस चटान पर जिस रीति से
आज्ञा किई गई थी एक बेदी बना और उस दूसरे बछड़े को
लेके उस कुंज की लकड़ियों से जिसे तू काटेगा होम की भेंट
२७ चढ़ा। तब जिदऊन ने अपने सेवकों से दस जन लिये और
जैसा कि परमेश्वर ने उसे कहा था वैसा किया और इस कारण
कि वुह अपने पिता के घराने से और उस नगर के लोगों से डरता
था वुह दिन को न कर सका उस ने यह काम रात को
किया ॥

२८ और जब उस नगर के लोग बिहान को उठे तो क्या देखते
हैं कि बअल की बेदी ढाई हुई पड़ी है और उस के पास का
कुंज कटा पड़ा है और उस बेदी पर जो बनाई गई थी दूसरा
२९ बछड़ा चढ़ाया हुआ है। तब उन्हों ने आपुस में कहा कि
वुह कौन है जिस ने यह काम किया और जब उन्हों ने यत्न
करके पूछा तो लोगों ने कहा कि यूआस के बेटे जिदऊन का
३० यह काम है। तब उस नगर के लोगों ने यूआस को कहा
कि अपने बेटे को निकाल ला जिसतें मारा जावे क्योंकि उस
ने बअल की बेदी ढाई और उस के पास के कुंज को काट
३१ डाला। तब यूआस ने उन सभों को जो उस के साम्ने खड़े
हुए थे कहा क्या तुम बअल के कारण बिवाद करोगे क्या
तुम उसे बचाओगे जो कोई उस के लिये बिवाद करे सो
बिहान होते ही मारा जावे यदि वुह देव है तो आप ही

अपने लिये बिवाद करे क्योंकि उस ने उस की बेदी ढा दिई।
३२ इस लिये उस ने उस दिन से उस का नाम यरुब्बअाल रक्खा
और कहा कि बअल अपना बिवाद उस्से करे क्योंकि उस ने
उस की बेदी ढा दिई॥

३३ तब सारे मिदयानी और अमालीकी और पूरबी बंश एकट्ठे
हुए और पार उतरके यज़रअएल की तराई में डेरे खड़े किये।
३४ परन्तु परमेश्वर का आत्मा जिदऊन पर उतरा सो उस ने
नरसिंगा फूंका और अबिअज़र के लोग उस के पीछे एकट्ठे
३५ हुए। फिर उस ने सारे मुनस्सी में दूत भेजे सो वे भी उस
के पीछे एकट्ठे हुए और उस ने यसर के और ज़बुलून के और
नफ़ताली के पास दूत भेजे सो वे भी उन की भेंट करने को
आये॥

३६ तब जिदऊन ने ईश्वर से कहा कि यदि अपने कहने के
३७ समान तू इसराएल को मेरे हाथ से निस्तार देगा। तो देख
मैं ऊन का एक गुच्छा खलिहान में रखता हूं यदि ओस केवल
गुच्छे ही पर पड़े और समस्त पृथिवी सूखी रहे तो मैं निश्चय
जानूंगा कि तू अपने कहे के समान इसराएल को मेरे हाथों से
३८ निस्तार देगा। और यों हुआ कि वुह प्रात:काल उठा और
उस ने उस गुच्छे को बटोरा और उस में की ओस एक कटोरा
३९ भरके निकली। तब जिदऊन ने ईश्वर से कहा कि तेरा क्रोध
मुझ पर न भड़के मैं एक ही बार और कहूंगा मैं तेरी बिनती
करता हूं कि इसी गुच्छे पर केवल एक बार और तेरी परीक्षा करूं
सो अब की केवल गुच्छा सूखा रहे और समस्त भूमि पर ओस
४० पड़े। सो ईश्वर ने उसी रात ऐसा किया कि गुच्छा तो सूखा
था और केवल सारी भूमि पर ओस थी॥

सातवां पर्व्व ।

१ तब यरुब्बअल जो जिदऊन है सारे लोग सहित जो
उस के साथ थे तड़के उठा और हरूद के सोते पर डेरा खड़ा
किया यहां लों कि मिदयानियों की सेना उस के उत्तर अलंग
२ मोरिः की पहाड़ी पास तराई में थी। तब परमेश्वर ने
जिदऊन को कहा कि मिदयानियों को तेरे वश में कर देने
को लोग अति बहुत हैं ऐसा न हो कि इसराएल मेरे साम्ने
३ अहंकार करके कहे कि मेरे ही हाथ ने मुझे बचाया। सो तू
अब जाके लोगों के कानों में प्रचार करके कह कि जो कोई
डरपुकना हो और भय रखता हो सो जिलिअद पहाड़ से
तड़के फिर जाय सो उन लोगों में से बाईस सहस्र फिर गये
४ और दस सहस्र रहि गये। तब परमेश्वर ने जिदऊन से कहा
कि तथापि अभी लोग बहुत हैं तू उन्हें पानी पर उतार ला
और वहां मैं उन्हें तेरे लिये उन की परीक्षा करूंगा और ऐसा
होगा कि जिस के विषय में मैं तुझे कहूंगा कि यह तेरे साथ
जावे वही तेरे साथ जायेगा और हर एक जिस के विषय में
५ मैं कहूं कि यह तेरे साथ न जावे सो न जायगा। सो वुह
उन लोगों को पानी पर उतार लाया और परमेश्वर ने जिदऊन
से कहा कि जो कोई पानी को कूकर की नाईं चपड़ चपड़
पीये तू उन में से हर एक को अलग रख और हर एक जो
६ अपने घुठनों पर झुकके पीये उन्हें भी। सो जिन्हों ने अपने
हाथ अपने मुंह पास लाके चपड़ चपड़ पीया सो तीन सौ जन
थे परन्तु बचे हुए लोग पानी पीने को घुठनों पर झुक गये।
७ तब परमेश्वर ने जिदऊन से कहा कि मैं उन तीन सौ मनुष्यों
से जिन्हों ने चपड़ चपड़ पीया तुम्हें बचाऊंगा और मिदयानियों
को तेरे हाथ में कर देऊंगा और समस्त लोग अपने स्थान

८ को फिर जायें। तब उन लोगों ने अपने भोजन और अपने
नरसिंगे हाथों में लिये और उस ने सब इसराएल को डेरों में
भेजा और उन तीन सौ को रख छोड़ा और मिदयानियों की
सेना उस के नीचे तराई में थी॥

९ और ऐसा हुआ कि उसी रात परमेश्वर ने उसे कहा कि
उठ सेना में उतर जा क्योंकि मैं ने उन्हें तेरे बश में
१० कर दिया। परन्तु यदि तू अकेला उतरने को डरता है तो
११ अपने सेवक फूराह के साथ सेना में उतर। और सुन वे क्या
कहते हैं और पीछे से तेरे हाथ बली होंगे और तू सेना में
उतर जाना सो वुह अपने सेवक फूराह को साथ लेकर सेना
१२ के हथियारबंद की पांतियों में उतर गया। और मिदयानी
और अमालीकी और पूरबी बंश बहुताई से टिड्डी की नाईं
तराई में पड़े थे और उन के ऊंट समुद्र के तीर की बालू के
१३ समान अगणित थे। और जब जिदऊन आया तो क्या
देखता है कि एक जन अपने परोसी से अपना स्वप्न कहि रहा
है कि देख मैं ने एक स्वप्न देखा कि जव की रोटी का एक
फुलका मिदयानी की सेना में लुढ़का और एक तंबू में आया
और उस तंबू को ऐसा मारा कि वुह गिर गया और उसे उलट
१४ दिया ऐसा कि वुह डेरा पड़ा रहा। तब उस के परोसी ने
उत्तर देके कहा कि यह इसराएल के पुरुष यूआस के बेटे
जिदऊन की तलवार को छोड़ और नहीं है ईश्वर ने मिदयान
और सारी सेना उस के बश में कर दिया है॥

१५ और ऐसा हुआ कि जब जिदऊन ने यह स्वप्न और उस
का अर्थ सुना तो दंडवत किई और इसराएल की सेना को
फिर आके कहा कि उठो क्योंकि परमेश्वर ने मिदयानी सेना
१६ को तुम्हारे हाथ में सौंप दिया। तब उस ने उन तीन सौ
मनुष्यों को तीन जथा किया और उन सभों के हाथ में

नरसिंगा श्रीर छूछा घड़ा दिया श्रीर एक एक दीपक घड़े के
१७ भीतर रक्खा । श्रीर उन्हें कहा कि मुझे देखो श्रीर वैसा ही
करो श्रीर सोचेत रहियो जब मैं छावनी के बाहर जाऊं तब
१८ जा कुछ मैं करूं सो तुम भी कीजियो । श्रीर जब मैं श्रीर मेरे
संगी नरसिंगे फूंकें तब तुम लोग भी सेना की हर एक श्रीर
से नरसिंगा फूंकियो श्रीर बोलियो कि परमेश्वर के लिये श्रीर
जिदऊन के लिये ॥
१९ फिर जिदऊन श्रीर वे सो जन जो उस के साथ थे दो
पहर को छावनी के बाहर श्राये श्रीर वहां पहरे बैठाये थे
श्रीर उन्हों ने नरसिंगे फूंके श्रीर उन घड़ों को जा उन के हाथों
२० में थे तोड़ा । श्रीर उन तीनों जथा ने नरसिंगे फूंके श्रीर घड़े
तोड़े श्रीर दीपकों को श्रपने बायें हाथ में लिया श्रीर नरसिंगों
को फूंकने के लिये श्रपने दहिने हाथों में श्रीर चिल्ला उठे कि
२१ परमेश्वर की श्रीर जिदऊन की तलवार । श्रीर उन में से हर
एक जन श्रपने स्थान पर सेना की चारों श्रीर खड़ा था तब
२२ सारी सेना दैाड़ी श्रीर चिल्लाई श्रीर भाग निकली । श्रीर उन
तीनों सैाश्रों ने नरसिंगे फूंके श्रीर परमेश्वर ने सारी सेना में
हर एक की तलवार उस के संगी पर चलवाई श्रीर वे बैतसित्त:
लों सरीर: की श्रीर श्रीर श्रबिलमहूल: के तीर लों जो तब्बात
के लग हैं भाग गये ॥
२३ तब इसराएली लोग नफ़ताली श्रीर यसर श्रीर समस्त
मुनस्सी से एकट्ठे होके निकले श्रीर मिदयानियों का पीछा
२४ किया । श्रीर जिदऊन ने सारे इफ़रायम पहाड़ में दूत भेजे
श्रीर कहा कि मिदयानियों के बिरोध में उतरो श्रीर उन के
श्रागे पानियों का बैतबर: श्रीर यरदन लों रोको तब सारे
इफ़रायमी ने एकट्ठे होके पानियों को बैतबर: श्रीर यरदन लों
२५ रोका । श्रीर उन्हों ने मिदयान के दो श्रध्यक्षों को गुराब श्रीर

ज़िअब को पकड़ा और गराब को गराब पहाड़ पर और ज़िअब
को ज़िअब के कोल्हू पास मार डाला और मिदयान का पीछा
किया और गराब और ज़िअब का सिर यरदन के उस पार
जिदऊन पास लाये ॥

आठवां पर्ब्ब ।

१ और इफ़रायम के लोगों ने उसे कहा कि तू ने हम से
यह क्यों किया कि जब तू मिदयानियों से लड़ने गया तब
हमें न बुलाया और उन्हों ने उस्से बहुत विवाद किया ।
२ तब उस ने उन्हें कहा कि मैं ने तुम्हारे तुल्य अब क्या किया
क्या इफ़रायम के दाख का बीन्ना अबिअज़र की लवनी से
३ अति अच्छा है । ईश्वर ने मिदयान के अध्यक्ष गराब और
ज़िअब को तुम्हारे हाथों में सौंप दिया सो तुम्हारे तुल्य काम
करने का मुझे क्या सामर्थ्य था जब उस ने यह कहा तब
उन की रिस धीमी हुई ॥
४ और जिदऊन यरदन पास आया वुह और उस के तीन
५ सौ संगी सहित पार उतरे थके हुए और रगेदते गये । तब
उस ने सुक्कात के लोगों से कहा कि मेरे संगियों को रोटियां
दीजिये क्योंकि वे थके हैं और मैं मिदयान के राजाओं का
६ ज़िबह और ज़लमून: का पीछा किये जाता हूं । तब सुक्कात
के अध्यक्षों ने कहा कि क्या ज़िबह और ज़लमून: अब तेरे
७ हाथ में हो गये कि हम तेरे कटक को रोटियां देवें । तब
जिदऊन बोला कि जब परमेश्वर ज़िबह और ज़लमून: को
मेरे हाथ में कर देगा तब मैं तुम्हारी देह को बन के कांटों
८ से और ऊंटकटारों से दाऊंगा । और वहां से फ़नुएल को
गया और उन से ऐसा ही कहा और फ़नुएल के मनुष्यों ने
९ भी सुक्कात के मनुष्यों के समान उसे उत्तर दिया । और उस

ने फ़नुएल के मनुष्यों से भी कहा कि जब मैं कुशल से फिरूंगा
तब इस बुर्ज को ढा देऊंगा ॥
१० अब ज़िबह और ज़लमून: अपनी सेना सहित जो पंद्रह
सहस्र पूरब के संतान की सेना में से बचे थे करकूर में था
क्योंकि एक लाख बीस सहस्र मनुष्य खड्गधारी तलवार से
११ जूझ गये थे। तब जिदऊन उन की ओर जो नुबाह और
युगबिहाह को पूरब दिशा को तंबुओं में रहते थे गया और
१२ सेना को मारा क्योंकि वुह सेना निश्चिन्त थी। और जब
ज़िबह और ज़लमून: भागे तो उस ने उन का पीछा किया
और मिदयान के दोनों राजाओं को ज़िबह और ज़लमून:
को पकड़ा और सारी सेना को डरा दिया ॥
१३ और यूआस का बेटा जिदऊन सूर्य्य के उदय से आगे
१४ संग्राम से फिरा। और सुक्कात के मनुष्यों में से एक तरुण
को पकड़ा और उस्से पूछा तब उस ने उसे सतहत्तर मनुष्यों
१५ का पता बताया जो सुक्कात के अध्यक्ष और प्राचीन थे। तब
वुह सुक्कात के मनुष्यों पास आया और कहा कि देखो ज़िबह
और ज़लमून: जिन के बिषय में तुम ने यह कहके मुझे
ओलहना दिया कि क्या ज़िबह और ज़लमून: अब तेरे हाथ
१६ में हैं कि हम तेरे थके हुए मनुष्यों को रोटियां देवें। तब
उस ने नगर के प्राचीनों को और बन के कांटों को और
ऊंटकटारों को लिया और उन से सुक्कातियों को जनाया।
१७ और फ़नुएल का गढ़ ढा दिया और उस नगर के मनुष्यों
को मार डाला ॥
१८ तब उस ने ज़िबह और ज़लमून: को कहा कि वे लोग
कैसे थे जिन्हें तुम ने तबूर में घात किया और वे बोले कि
१९ तेरे समान हर एक राजपुत्र के डौल था। तब उस ने कहा
कि वे मेरे सगे भाई थे जीवते परमेश्वर की किरिया है यदि

२० तुम उन्हें जीता छोड़ते तो मैं भी तुम्हें न मारता। तब उस
ने अपने पहिलौठे यितर को आज्ञा किई कि उठ उन्हें बधन
कर परन्तु उस तरुण ने अपनी तलवार न खींची क्योंकि वुह
२१ डरता था क्योंकि वुह अब लों तरुण था। तब ज़िबह और
ज़लमून: ने कहा कि तू उठके हमें घात कर क्योंकि जैसा मनुष्य
तैसा उस का बल सो जिदऊन ने उठके ज़िबह और ज़लमून:
को मार डाला और वे आभूषण जो उन के ऊंटों के गले में
थे ले लिये॥

२२ तब इसराएल के मनुष्यों ने जिदऊन से कहा कि तू हम
पर राज्य कर तू और तेरा बेटा और तेरा पोता भी हम पर
राज्य करे क्योंकि तू ने हमें मिदयान के हाथों से छुड़ाया।
२३ तब जिदऊन ने उन्हें कहा कि मैं तुम पर प्रभुता न करूंगा
और न मेरा बेटा तुम पर प्रभुता करेगा परमेश्वर तुम पर
२४ प्रभुता करेगा। और जिदऊन ने उन्हें कहा कि मैं तुम से
एक बात चाहता हूं हर एक मनुष्य तुम्में से अपनी लूट का
करनफूल मुझे देवे क्योंकि वे सोने के करनफूल रखते थे
२५ क्योंकि वे इसमअएली थे। और उन्हों ने उत्तर दिया कि
हम मनमंता देंगे तब उन्हों ने वस्त्र बिछाया और हर एक
२६ ने अपनी लूट के धन से करनफूल उस पर डाल दिये। सो वे
सोने के करनफूल जो उस ने मांगे तौल में एक सहस्र सात
सौ शैकल सोने के थे गहना और पट्टा और लाल वस्त्र जो
मिदयानी राजा पहिनते थे और ऊंटों के गले की सीकरों से
२७ अधिक थे। तब जिदऊन ने उस का एक अफ़ूद बनाया
और उसे अपने नगर ऊफ़र: में रक्खा और वहां सारे इसराएल
के संतान उस के पीछे कुकर्म्मी हुए और जिदऊन और उस
के घर के लिये फंदा हुआ॥

२८ और मिदयानी इस रीति से इसराएल के संतान के बश

में हुए कि सिर फिर न उठा सके और जिदऊ़न के समय
२६ में चालीस बरस लों देश में चैन रहा । और यूआस का बेटा
३० यरुब्बअ़ल जाकर अपने घर में रहा । और जिदऊ़न के
३१ सत्तर निज पुत्र थे क्योंकि उस की पत्नियां बहुत थीं । और
उस की एक दासी भी जो सिकम में थी उस्से एक बेटा जनी
३२ और उस ने उस का नाम अबिमलिक रक्खा । और यूआस
का बेटा जिदऊ़न अच्छा पुरनिया होके मर गया और अपने
पिता यूआस की समाधि में अबिअज़र के ऊफ़र: में गाड़ा
गया ॥

३३ और ऐसा हुआ कि जिदऊ़न के मरते ही इसराएल के
संतान फिर गये और बअ़लीम के पीछे कुकर्म्मी हुए और
३४ बअ़लबरीत को अपना देव बनाया । और इसराएल के संतान
ने तो परमेश्वर अपने ईश्वर को जिस ने उन्हें हर एक ओर से
३५ उन के शत्रुन के हाथ से बचाया था स्मरण न किया । और
उन्हों ने यरुब्बअ़ल जिदऊ़न के घर पर जैसा उस ने
इसराएल से भलाई किई वैसा उन्हों ने अनुग्रह न किया ॥

नवां पर्ब्ब ।

१ अब यरुब्बअ़ल का बेटा अबिमलिक अपने मामूओं के पास
सिकम को गया और उन से और अपने नाना के समस्त
२ घराने से कहा । कि सिकम के सारे लोगों को कहो कि तुम्हारे
लिये क्या भला है कि यरुब्बअ़ल के सब सत्तर बेटे तुम पर
राज्य करें अथवा कि एक ही राज्य करे और चेत रक्खो
३ कि मैं तुम्हारी हड्डी और तुम्हारा मांस हूं । और उस
के मामूओं ने उस के लिये सिकम के लोगों से ये सब
बातें कहीं यहां लों कि उन के मन अबिमलिक की ओर झुके
४ क्योंकि वे बोले कि यह हमारा भाई है । और उन्हों ने

बअ़लबरीत के मन्दिर में से सत्तर टुकड़ा चांदी उसे दिई
जिन से अबिमलिक ने तुच्छ और नीच लोगों को अपनी ओर
५ किया। और वुह ऊफ़र: में अपने पिता के घर गया और
उस ने यरुब्बअ़ल के बेटे अपने सत्तर भाइयों को एक पत्थर
पर मार डाला तथापि यरुब्बअ़ल का सब से छोटा बेटा यूताम
बच रहा क्योंकि उस ने आप को छिपाया॥

६ तब सिकम के सारे लोग और मिल्लो के सारे बासी एकट्ठे
हुए और गये और बलूत के खंभे के निकट जो सिकम में था
७ पहुंचके अबिमलिक को राजा किया। और जब यूताम ने
यह सुना तो वुह गया और जरिज़ीम पहाड़ की चोटी पर
चढ़के खड़ा हुआ और अपने शब्द से पुकारा और उन्हें
कहा कि हे सिकम के लोगो मेरी सुनो जिसतें ईश्वर तुम्हारी
सुने॥

८ बृक्ष निकले कि किसी को अपने ऊपर राज्याभिषेक करें सो
उन्हों ने जाके जलपाई बृक्ष से कहा कि तू हम पर राज्य
९ कर। परन्तु जलपाई बृक्ष ने उन से कहा कि मैं अपनी
चिकनाई को जिस्से वे ईश्वर को और मनुष्य को प्रतिष्ठा देते
१० हैं छोड़ देऊं और जाके बृक्षों पर बढ़ाया जाऊं। तब बृक्षों
ने गूलर बृक्ष से कहा कि तू आ और हम पर राज्य कर।
११ और गूलर बृक्ष ने उन्हें कहा कि क्या मैं अपनी मिठाई और
१२ सुफल छोड़के बृक्षों पर बढ़ाया जाऊं। तब बृक्षों ने दाख से
१३ कहा कि चल हम पर राज्य कर। और दाख ने उन्हें कहा
कि क्या मैं अपनी मदिरा, जिस्से ईश्वर और मनुष्य आनन्द
१४ होते हैं छोड़के जाऊं और बृक्षों पर बढ़ाया जाऊं। तब सब
बृक्षों ने भटकटैया से कहा कि तू आके हम पर राज्य कर।
१५ और भटकटैया ने बृक्षों से कहा कि यदि सच मुच मुझे अपने
ऊपर राज्याभिषेक करते हो तो आओ मेरी छाया में शरण

लेओ और यदि नहीं तो भटकटैया से एक आग निकलेगी
और लुबनान के आरज वृक्ष को जलावेगी॥
१६ सो अब यदि सच्चाई और निष्कपट से तुम ने अबिमलिक
को अपना राजा किया और यदि यरुब्बअल और उस के घर
से अच्छा व्यवहार किया और यदि उसे उस उपकार के समान
१७ जो उस के हाथों ने किया है पलटा दिया। क्योंकि मेरा पिता
तुम्हारे कारण लड़ा और अपने प्राण को धर दिया और तुम्हें
१८ मिदयान के हाथ से छुड़ाया। और तुम आज मेरे पिता के
घर पर उठे हो और उस के सत्तर बेटों को एक पत्थर पर
मार डाला और उस की दासी के पुत्र अबिमलिक को सिकम
के लोगों पर राजा किया क्योंकि वुह तुम्हारा भाई है।
१९ सो यदि तुम ने सच्चाई और निष्कपट से यरुब्बअल और उस
के घर के साथ आज यह व्यवहार किया है तो तुम
अबिमलिक से आनन्द रहो और वुह भी तुम से आनन्द रहे।
२० परन्तु यदि नहीं तो अबिमलिक से आग निकले और सिकम
के लोगों को और मिल्लो के घर को भस्म करे और सिकम के
लोग और मिल्लो के घर में से भी एक आग निकले और
२१ अबिमलिक को भस्म करे। तब यूताम भागके चला गया
और अपने भाई अबिमलिक के डर के मारे बईर में जाके रहा॥
२२ जब अबिमलिक ने इसराएल पर तीन बरस राज्य किया।
२३ तब ईश्वर ने अबिमलिक और सिकमियों के मध्य दुष्टात्मा
भेजा और सिकम के लोगों ने अबिमलिक से छल किया।
२४ जिसतें वुह कठोरता जो यरुब्बअल के सत्तर बेटों के साथ
किया था आवे और उन का लोहू उन के भाई अबिमलिक
के सिर पर जिस ने उन्हें मार डाला और सिकमियों के सिर
२५ पर पड़े जो उस के भाइयों के मारने में साझी हुए। तब
सिकम के लोगों ने उस के लिये पहाड़ों की चोटियों पर घात

में लोगों को बैठाया और जो उस मार्ग से आ निकलते थे वे
२६ उन्हें लूटते थे और अबिमलिक को संदेश पहुंचा। तब अबद
का बेटा जअल अपने भाइयों समेत आया और सिकम को
२७ गया और सिकम के लोगों ने उस पर भरोसा रक्खा। और वे
खेतों में निकले और अपने दाख के खेतों को लताड़ा और
रौंदा और आनन्द किया और अपने देवतों के मन्दिर में
२८ घुसे और खाया पीया और अबिमलिक को धिक्कारा। तब
अबद के बेटे जअल ने कहा कि अबिमलिक कौन और सिकम
क्या है कि हम उस की सेवा करें क्या यरुब्बअल का बेटा
नहीं और क्या ज़बूल उस का अध्यक्ष नहीं तुम सिकम के पिता
हमूर के लोगों की सेवा करो और हम उस की सेवा क्यों करें।
२९ और हाय कि ये लोग मेरे वश में होते तो मैं अबिमलिक को
अलग कर देता तब उस ने अबिमलिक से कहा कि तू अपने
कटक बढ़ा और निकल आ॥

३० जब नगर के अध्यक्ष ज़बूल ने अबद के बेटे जअल
३१ की ये बातें सुनीं तो उस का क्रोध भड़का। और उस ने
चतुराई से अबिमलिक के पास दूत भेजके कहा कि देख
अबद का बेटा जअल अपने भाइयों समेत सिकम में आया
३२ और देख वे तेरे विरोध में नगर को दृढ़ करते हैं। सो अब
तू अपने लोगों सहित रात को उठ और खेत में घात में बैठ।
३३ और बिहान को ज्यों हीं सूर्य्य उदय हो त्यों हीं नगर पर
चढ़ जा और नगर से लड़ और देखो जब वुह और उस के
लोग तेरे पास निकल आवें तब जो हाथ से हो सके सो
करियो॥

३४ तब अबिमलिक अपने सारे लोग सहित रात ही को उठा
३५ और चार जथा करके सिकम के साम्ने घात में बैठा। और
अबद का बेटा जअल बाहर निकला और नगर के फाटक

को पैठ पर खड़ा हुआ और अबिमलिक अपने लोगों सहित
३६ ढूंके से उठा। और जब जअ़ल ने लोगों को देखा तो उस
ने ज़बूल से कहा कि देख पहाड़ों की चोटियों पर से लोग
उतरते हैं तब ज़बूल ने उसे कहा कि तू पहाड़ों की छाया
३७ को मनुष्यों की नाईं देखता है। तब जअ़ल फिर कहके बोला
कि देखो लोग खेत के मध्य से निकले आते हैं और एक
३८ जथा ओझों के बलूत के मार्ग से आती है। तब ज़बूल ने
उस्से कहा कि अब तेरा वुह मुंह कहां है जिस्से तू ने कहा
कि अबिमलिक कौन जो हम उस की सेवा करें क्या ये वे
लोग नहीं जिन की तू ने निन्दा किई सो अब बाहर जाइये
३९ और उन से युद्ध कीजिये। तब जअ़ल सिकमियों के साम्ने
४० बाहर निकला और अबिमलिक से युद्ध किया। और
अबिमलिक ने उसे खदेड़ा और वुह उस के साम्ने से भाग
निकला और फाटक के पैठ लों आते बहुतेरे जूझे हुए गिर पड़े।
४१ और अबिमलिक ने अरूमः में बास किया और ज़बूल ने जअ़ल
को और उस के भाइयों को खदेड़ दिया कि वे सिकम में न रहें॥
४२ और बिहान को ऐसा हुआ कि लोग निकलके खेत में
४३ गये और अबिमलिक को संदेश पहुंचा। और उस ने लोगों
को लेके उन की तीन जथा बिभाग किया और चौगान में
ढूंके में बैठा और क्या देखता है कि लोग नगर से निकले
तब उस ने उन का साम्ना किया और उन्हें मार लिया।
४४ और अबिमलिक अपने साथ की जथा समेत आगे बढ़ा और
नगर के फाटकों की पैठ में जाके खड़ा हुआ और दो जथा
उन लोगों पर आ पड़ी जो खेत में थीं और उन्हें काट डाला।
४५ और अबिमलिक उस दिन भर नगर से लड़ता रहा और
नगर को ले लिया और नगर के लोगों को मार डाला और
नगर को ध्वस्त किया और वहां नोन बिथराया॥

४६ जब सिकम के गढ़ के सब लोगों ने यह सुना तो वे
अपने देव ब्रिरीत के मन्दिर के गढ़ में शरण के लिये जा
४७ घुसे। और अबिमलिक को यह संदेश पहुंचा कि सिकम के
४८ गढ़ के सब लोग एकट्ठे हुए हैं। तब अबिमलिक अपने सारे
लोग समेत ज़लमून पहाड़ पर चढ़ा और अबिमलिक ने
कुल्हाड़ा अपने हाथ में लिया और वृक्षों में से एक डाली
काटी और उसे उठाके अपने कांधे पर धरा और अपने
साथियों से कहा कि जो कुछ तुम ने मुझे करते देखा है तुम
४९ भी शीघ्र वैसा करो। तब सब लोगों में से हर एक ने एक
एक डाली काट लिई और अबिमलिक के पीछे हो लिये और
उन्हें गढ़ पर डालके उन में आग लगा दिई यहां लों कि
सिकम के गढ़ के समस्त जन मरे और वे सब पुरुष और स्त्री
एक सहस्र के लग भग थे॥

५० तब अबिमलिक तैबीज़ में आया और तैबीज़ के साम्ने
५१ डेरा किया और उसे ले लिया। परन्तु नगर के भीतर एक
दृढ़ गढ़ था और उस में समस्त पुरुष और स्त्रियां और नगर के
सारे वासी भागके जा घुसे और उसे बंद किया और गढ़ की
५२ छत पर चढ़ गये। तब अबिमलिक गढ़ पर आया और
५३ उस्से लड़ा और चाहा कि गढ़ के द्वार जला देवे। तब किसी
स्त्री ने चक्की के पाट का एक टुकड़ा अबिमलिक के सिर पर
५४ दे मारा जिसतें उस की खोपरी चूर हो जाय। तब उस ने
अपने अस्त्रधारी तरुण को शीघ्र बुलाया और उसे कहा कि
अपनी तलवार खींच और मुझे मार डाल जिसतें मेरे बिषय
में कहा न जाय कि एक स्त्री ने उसे घात किया तब उस
५५ तरुण ने उसे गोदा और वुह मर गया। जब इसराएलियों
ने देखा कि अबिमलिक मर गया तब हर एक अपने अपने
स्थान को चला गया॥

५६　इसी रीति से ईश्वर ने अविमलिक की दुष्टता को जो उस
ने अपने सत्तर भाइयों को मारके अपने पिता से किई थी
५७ पलटा दिया । और सिकम के लोगों की सारी बुराई ईश्वर ने
उन के सिरों पर डाली और वुह स्राप जो यरुब्बअल के बेटे
यूताम ने उन पर किई थी उन पर पड़ी ॥

दसवां पर्व्व ।

१　और अविमलिक के पीछे इशकार का एक जन दूदू का
पोता फूअः का पुत्र तोलअ इसराएल के संतान के बचाव
के लिये उठा और वुह इफ़रायम पहाड़ समीर में रहता था ।
२ और उस ने तेईस बरस इसराएल का न्याय किया और मर
गया और समीर में गाड़ा गया ॥
३　और उस के पीछे जिलिअदी याइर उठा और उस ने
४ इसराएल का बाईस बरस न्याय किया । और उस के तीस
बेटे थे जो तीस गदहों पर चढ़ा करते थे और उन के तीस
नगर थे जिन के नाम आज के दिन लों याइर के गांव हैं
५ जो जिलिअद के देश में हैं । और याइर मर गया और
क़मून में गाड़ा गया ॥
६　तब इसराएल के संतानों ने परमेश्वर की दृष्टि में फिर बुराई
किई और उन्हों ने बअलीम और इस्तारात और अराम के
देवों की और सैदा के देवों की और मोअब के देवों की और
अम्मून के संतान के देवों की और फिलिसतियों के देवों की
सेवा किई और परमेश्वर को छोड़ दिया और उस की सेवा न
७ किई । तब परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस
ने उन्हें फिलिसतियों और अम्मून के संतानों के हाथों में कर
८ दिया । और उन्हों ने उस बरस से सारे इसराएल के संतान
को जो यरदन के उस पार अमूरियों के देश में जो जिलिअद

९ में थे अठारह बरस लों उन्हें अति खिजाके चूर किया। और
अम्मून के संतान ने यरदन पार होके यहूदाह से भी और
बिनयमीन और इफ़रायम के घर से युद्ध किया यहां लों कि
इसराएल अति दुःखी हुए॥
१० तब इसराएल के संतान ने परमेश्वर को पुकारके कहा कि
हम ने तेरे बिरुद्ध में पाप किया इस कारण कि अपने ईश्वर
११ को छोड़ा और बअलीम की सेवा भी किई। तब परमेश्वर ने
इसराएल के संतान से कहा कि क्या मैं ने तुम्हें मिस्रियों से
और अमूरियों से अम्मून के संतान से और फिलिसतियों से
१२ नहीं छुड़ाया। और सैदानियों और अमालिक़ियों और
मऊनियों ने भी तुम्हें दुःख दिया और तुम ने मेरी दोहाई
१३ दिई सो मैं ने तुम्हें उन के हाथों से छुड़ाया। तथापि तुम
ने मुझे त्याग किया और उपरी देवतों की सेवा किई इस
१४ लिये मैं तुम्हें फिर न छुड़ाऊंगा। तुम जाओ और जिन देवों को
तुम ने चुना है उन की दोहाई देओ कि वे तुम्हारे कष्ट के
१५ समय में तुम्हें छुड़ावें। और इसराएल के संतानों ने परमेश्वर
से कहा कि हम ने तो पाप किया सो जो तेरी दृष्टि में अच्छा
जान पड़े सो हम से कर हम तेरी बिनती करते हैं केवल
१६ अब की हमें छुड़ा। और उन्हों ने परदेशियों के देवतों को
अपने में से दूर किया और परमेश्वर की सेवा करने लगे तब
उस का जीव इसराएल की बिपत्ति के लिये सकेती में पड़ा॥
१७ तब अम्मून के संतान बुलाये गये और जिलिअद में
छावनी किई और इसराएल के संतान एकट्ठे हुए और मिसफ:
१८ में छावनी किई। तब जिलिअद के अध्यक्षों और लोगों ने
आपुस में कहा कि वुह कौन जन है जो अम्मून के संतान
से युद्ध आरंभ करेगा वही जिलिअद के बासियों का प्रधान
होगा॥

ग्यारहवां पर्व्व ।

१ अब जिलिअदी इफ़ताह एक महाबीर था जो गणिका स्त्री
२ का बेटा था और जिलिअद से इफ़ताह उत्पन्न हुआ। और
जिलिअद की पत्नी उस्से बेटे जनी और उस की पत्नी के बेटे
जब सयाने हुए तब उन्हों ने इफ़ताह को निकाल दिया
और उसे कहा कि हमारे पिता के घर में तेरा अधिकार नहीं
३ इस लिये कि तू उपरी स्त्री का लड़का है। तब इफ़ताह
अपने भाई के आगे से भागा और तूब के देश में जा रहा
और यफ़ताह के पास बहुत से तुच्छ लोग एकट्ठे हुए और वे उस
के साथ आया जाया करते थे॥
४ और कितने दिनों के पीछे अम्मून के संतान ने
५ इसराएल से लड़ाई किई। और ऐसा हुआ कि जब अम्मून के
संतान ने इसराएल से लड़ाई किई तब जिलिअद के प्राचीन
६ निकले कि इफ़ताह को तूब के देश से ले आवें। और उन्हों
ने इफ़ताह को कहा कि आ और हमारा प्रधान हो जिसतें
७ हम अम्मून के संतानों से संग्राम करें। तब इफ़ताह ने
जिलिअद के संतानों से कहा कि क्या तुम ने मुझ से बैर
करके मुझे मेरे पिता के घर से निकाल नहीं दिया सो अब
८ जो तुम विपत्ति में पड़े तो मुझ पास क्यों आये हो। और
जिलिअद के प्राचीनों ने इफ़ताह को कहा कि अब हम इस
लिये तेरे पास फिर आये कि तू हमारे साथ चलके अम्मून के
संतान से संग्राम करे और हमारा और जिलिअद के सारे
९ बासियों का प्रधान होवे। और इफ़ताह ने जिलिअद के
प्राचीनों से कहा कि यदि अम्मून के संतान से लड़ाई करने के
लिये तुम मुझे घर फेर लिये चलते हो और परमेश्वर उन्हें
१० मेरे आगे सौंप देवे तो क्या मैं तुम्हारा प्रधान होऊंगा। तब

जिलिअद के प्राचीनों ने इफ़ताह को उत्तर दिया कि परमेश्वर
हमारे मध्य में सुनवैया होगा यदि हम तेरे कहने के समान
११ न करें। तब इफ़ताह जिलिअद के प्राचीनों के साथ चला
गया और लोगों ने उसे अपना प्रधान और अध्यक्ष किया और
इफ़ताह ने मिसफ़ा में परमेश्वर के आगे अपनी सारी बातें
उच्चारण किईं॥

१२ और इफ़ताह ने अम्मून के संतान के राजा पास यह
कहके दूत भेजे कि तुझे मुझ से क्या काम जो तू मुझ पर
१३ मेरे देश में युद्ध करने को चढ़ आया है। पर अम्मून के
संतान के राजा ने इफ़ताह के दूतों को कहा इस लिये कि
जब इसराएल मिस्र से निकल आये तब उन्हों ने मेरे देश
को अरनून से लेके यबूक और यरदन लों ले लिया सो अब
कुशल से उन्हें फेर देओ॥

१४ तब इफ़ताह ने दूतों को फेर अम्मून के संतान के राजा
१५ पास भेजा। और उसे कहा कि इफ़ताह यह कहता है
इसराएल ने मोअब का देश और अम्मून के संतान का देश
१६ नहीं लिया। परन्तु जब इसराएल मिस्र से चढ़ आये और
१७ अरण्य से होके लाल समुद्र और क़ादिस में चले आये। तब
इसराएल ने अदूम के राजा को दूतों से यह कहला भेजा कि
मुझे अपने देश में से जाने दीजिये परन्तु अदूम के राजा ने
उस की न सुनी और उसी रीति से उस ने मोअब के राजा
को भी कहला भेजा परन्तु उस ने न माना और इसराएल
१८ क़ादिस में ठहरा रहा। तब वुह अरण्य में होके चला गया
और अदूम के देश और मोअब देश से चक्कर खाके मोअब की
पूरब ओर से आया और अरनून के पल्ले ओर डेरा खड़ा किया
पर मोअब के सिवानों में प्रवेश न किया क्योंकि अरनून मोअब
१९ का सिवाना था। तब इसराएल ने अमूरियों के राजा सेहून

को हसबून के राजा को दूत भेजे और इसराएल उसे बोला
कि मुझे अपने स्थान को अपने देश में से जाने दीजिये।
२० पर सेहून ने इसराएल को अपने सिवाने से जाने न दिया
परन्तु सेहून ने अपने समस्त लोग एकट्ठे किये और यहास में
२१ डेरा खड़ा किया और इसराएल से लड़ा। और परमेश्वर
इसराएल के ईश्वर ने सेहून को उस के सारे लोगों समेत
इसराएल के हाथ में सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें मारा सो
इसराएल ने अमूरियों के सारे देश और उस देश के बासियों
२२ का अधिकार पाया। और उन्हों ने अरनून से लेके यबूक़ लों
और अरण्य से यरदन लों अमूरियों के सारे सिवानों को बश
२३ में किया। सो अब परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने अमूरियों
को अपने इसराएल लोग के आगे से दूर किया तो क्या तू
२४ उसे बश में करेगा। जो तेरे देव कमूस ने तेरे बश में किया
है उसे नहीं चाहता है सो परमेश्वर हमारा ईश्वर जिन्हें हमारे
२५ आगे से दूर करेगा हम उन्हें बश में करेंगे। और क्या तू
मोअब के राजा सफूर के बेटे बलक़ से भला है उस ने कभी
इसराएल से झगड़ा किया अथवा उस ने कभी उन से युद्ध
२६ किया। जब लों इसराएल हसबून में और उस के नगरों में
और अरआयर और उस के नगरों में और उन सब नगरों में
जो अरनून के सिवानों में है तीन सौ बरस रहा किये तो
२७ उस समय लों तुम ने उन्हें क्यों न छुड़ाया। सो मैं ने तेरा
अपराध नहीं किया परन्तु मुझ से युद्ध करने में तू अनुचित
करता है सो परमेश्वर न्यायी इसराएल के संतान के और
अम्मून के संतान के मध्य में आज के दिन न्याय करे॥
२८ तिस पर भी अम्मून के संतान के राजा ने उन बातों को
जो इफ़ताह ने उसे कहला भेजीं न सुना॥
२९ तब परमेश्वर का आत्मा इफ़ताह पर आया और वुह

जिलिअद और मुनस्सी के पार गया और जिलिअद के मिसफ़ा
से पार गया और जिलिअद के मिसफ़ा से अम्मून के संतान
३० की ओर उतरा। और इफ़ताह ने परमेश्वर की मनौती मानी
और कहा कि यदि तू सचमुच अम्मून के संतान को मेरे हाथ
३१ में सौंप देगा। तो ऐसा होगा कि जब मैं अम्मून के संतान
से कुशल से फिर आऊंगा तो जो कुछ मेरे घर के द्वारों से
पहिले मेरी भेंट को निकलेगा वुह निश्चय परमेश्वर का होगा
और मैं उसे बलिदान की भेंट के लिये चढ़ाऊंगा॥
३२ तब इफ़ताह अम्मून के संतान की ओर पार उतरा कि उन
३३ से लड़े और परमेश्वर ने उन्हें उस के हाथ में सौंप दिया। और
अरूआयर से लेके मिनियत के पहुंचने लों बीस नगर और
दाख की बारी के चौगान लों अति बड़ी मार से उन्हें मारा
इसी रीति से अम्मून के संतान इसराएल के संतानों के बश
में हुए॥
३४ और जब इफ़ताह मिसफ़ा को अपने घर आया तब क्या
देखता है कि उस की बेटी तबले बजाती और नाचती हुई उसे
आगे लेने को निकली और वुह उस की एकलौती थी उसे छोड़
३५ उस का कोई बेटा बेटी न था। और यों हुआ कि जब उस
ने उसे देखा तब अपने कपड़े फाड़े और बोला हाय हाय मेरी
बेटी तू ने मुझे अति उदास किया और तू उन में से एक है जो
मुझे सताते हैं क्योंकि मैं ने तो परमेश्वर को बचन दिया है
३६ और हट नहीं सक्ता। तब उस ने उसे कहा कि हे मेरे पिता
यदि तू ने ईश्वर को बचन दिया है तो जो कुछ तेरे मुंह से
निकला सो मुझ से कीजिये क्योंकि परमेश्वर ने तेरे शत्रु अम्मून
३७ के संतान से तेरा पलटा लिया है। फिर उस ने अपने पिता
से कहा कि मेरे लिये इतना कीजिये कि दो मास मुझे छोड़िये
जिसतें मैं पहाड़ों में फिरूं और अपनी संगियों को लेके अपने

३८ कुआंरपन पर बिलाप करूं। और वुह बोला कि जा और उस
ने उसे दो मास की छुट्टी दिई और वुह अपनी संगियों सहित
३९ गई और पहाड़ों पर अपने कुआंरपन पर बिलाप किया। और
दो मास के पीछे अपने पिता पास फिर आई और उस ने जैसी
मनौती मानी थी वैसी ही उस्से किई और वुह पुरुष से अज्ञान
४० रही और यह इसराएल में बिधि हुई। सो इसराएल की कन्या
बरस बरस जिलिअदी इफ़ताह की बेटी के सुमरने के लिये
बरस में चार दिन जाती थीं॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ और इफ़रायम के लोग एकट्ठे होके उत्तर दिशा को
गये और इफ़ताह से कहा कि जब तू अम्मून के संतान से
युद्ध करने को पार उतरा तब हमें क्यों न बुलाया सो अब
२ हम तेरे घर को तुझ समेत जला देंगे। तब इफ़ताह ने उन्हें
उत्तर दिया कि मैं और मेरे लोग अम्मून के संतान से बड़ा
झगड़ा रखते थे और जब मैं ने तुम्हें बुलाया तब तुम ने
३ उन के हाथ से मुझे न छुड़ाया। और जब मैं ने देखा कि
तू ने मुझे न छुड़ाया तब मैं ने अपना प्राण हाथ पर रक्खा
और पार उतरके अम्मून के संतान का साम्ना किया और
परमेश्वर ने उन्हें मेरे हाथ में सौंप दिया सो तुम आज के
दिन किस लिये मुझ पर लड़ने को चढ़ आये हो॥

४ तब इफ़ताह ने सारे जिलिअदियों को एकट्ठा करके
इफ़रायमियों से लड़ाई किई और जिलिअदियों ने इफ़रायमियों
को मार लिया क्योंकि वे कहते थे कि जिलिअदी इफ़रायमियों
५ में और मुनस्सियों में इफ़रायमियों के भगोड़े हैं। और जिलिअद
ने इफ़रायमियों के आगे यरदन के घाटों को ले लिया और
ऐसा हुआ कि जब इफ़रायमी भागे हुए आये और बोले कि

मुझे पार जाने दे तब जिलिअदी उसे कहते थे कि तू इफ़रायमी
६ है यदि उस ने नाह किया। तब उन्हों ने उसे कहा कि
शबूलीस कहो और उस ने सबूलीस कहा इस लिये कि वुह
ठीक उच्चारण कर न सक्ता था तब वे उसे पकड़के यरदन के
घाटों पर मार डालते थे सो उस समय वहां बयालीस सहस्र
इफ़रायमी मारे गये ॥

७ और इफ़ताह ने छः बरस लों इसराएल का न्याय किया
उस के पीछे जिलिअदी इफ़ताह मर गया और जिलिअद की
बस्तियों में गाड़ा गया ॥

८ और उस के पीछे बैतलहम का इबसान इसराएल का
९ न्यायी हुआ। और उस के तीस तो बेटे थे और तीस बेटियां
और उस ने बेटों को बाहर भेजके उन के लिये तीस बेटियां
मंगवाईं और उस ने सात बरस इसराएल का न्याय किया।
१० तब इबसान मर गया और बैतलहम में गाड़ा गया ॥

११ और उस के पीछे ज़बुलूनी ऐलून इसराएल का न्यायी हुआ
१२ और उस ने दस बरस इसराएल का न्याय किया। और
ज़बुलूनी ऐलून मर गया और ऐयलून में ज़बुलून के देश में
गाड़ा गया ॥

१३ और उस के पीछे हलील का बेटा अ़बदून एक परअ़तूनी
१४ इसराएल का न्यायी हुआ। और उस के चालीस बेटे और
तीस पोते थे जो सत्तर गदहों के बछेड़ों पर चढ़ा करते थे
१५ और आठ बरस उस ने इसराएल का न्याय किया। और
हलील का बेटा परअ़तूनी अ़बदून मर गया और अमालीक़ियों
के पहाड़ इफ़रायम के देश में परअ़तून में गाड़ा गया ॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ और इसराएल के संतान ने परमेश्वर की दृष्टि में फिर

बुराई किई और परमेश्वर ने उन्हें चालीस बरस लों फ़िलिसतियों
के हाथ में सौंप दिया ॥
२　और दान के घराने में सुरत्र: का एक जन था जिस का
नाम मनूहा था और उस की स्त्री बांझ होके न जनती थी ।
३ तब परमेश्वर का दूत उस स्त्री को दिखाई दिया और उसे
कहा कि देख तू बांझ होके नहीं जनती है पर तू गर्भिणी
४ होगी और बेटा जनेगी । सो सोचेत हो और मदिरा अथवा
अमल की कोई वस्तु न पीजियो और कोई अशुद्ध वस्तु न
५ खाइयो । क्योंकि देख तू गर्भिणी होगी और बेटा जनेगी और उस
के सिर पर छुरा न फिरेगा क्योंकि वुह बालक गर्भ से परमेश्वर
के लिये नासरी होगा और वुह इसराएलियों को फ़िलिसतियों
के हाथ से छुड़ाने को आरंभ करेगा ॥
६　तब उस स्त्री ने आके अपने पति से कहा कि ईश्वर का
एक जन मुझ पास आया और उस का स्वरूप ईश्वर के दूत
की नाई अति डरावना था परन्तु मैं ने उसे न पुछा कि तू
७ कहां का और उस ने भी अपना नाम मुझे न बताया । पर
उस ने मुझे कहा कि देख तू गर्भिणी होके बेटा जनेगी और
अब तू मदिरा और कोई अमल की वस्तु न पीजियो और
अपवित्र वस्तु मत खाइयो क्योंकि वुह बालक गर्भ में से जीवन
भर ईश्वर के लिये नासरी होगा ॥
८　तब मनूहा ने परमेश्वर से बिनती करके कहा कि हे मेरे
प्रभु ऐसा कर कि ईश्वर का वुह जन जिसे तू ने भेजा था
हम पास फिर आवे और हमें सिखावे कि हम उस लड़के के
९ विषय में जो उत्पन्न होगा क्या करें । और ईश्वर ने मनूहा का
शब्द सुना और ईश्वर का दूत उस स्त्री पास जब वुह खेत में
थी फिर आया परन्तु उस का पति मनूहा उस पास न था ।
१० तब वुह स्त्री फुरती से दौड़ी गई और अपने पति को जताया

और उसे कहा कि देख वुही मनुष्य जो अगिले दिन मुझे
११ दिखाई दिया था फिर दिखाई दिया है। तब मनूहा उठके
अपनी पत्नी के पीछे चला और उस मनुष्य पास आके उसे कहा
कि तू वुही पुरुष है जिस ने इस स्त्री से बातें किईं और उस
१२ ने कहा कि मैं हूं। तब मनूहा ने कहा कि जैसे तू ने कहा
वैसे ही होवे लड़के की कौन सी रीति अथवा वुह क्या करेगा।
१३ तब परमेश्वर के दूत ने मनूहा से कहा कि सब जो मैं ने स्त्री
१४ से कहा है वुह चौकस रहे। वुह दाख में का कुछ न खाय
और मदिरा और कोई अमल न पीये और अपवित्र बस्तु न
खाय सब जो मैं ने उसे आज्ञा किई पालन करे॥
१५ और मनूहा ने परमेश्वर के दूत को कहा कि तनिक आप
ठहर जाइये कि हम आप के आगे एक मेम्ना सिद्ध करें।
१६ परन्तु परमेश्वर के दूत ने मनूहा से कहा कि यद्यपि तू मुझे
रोके तथापि मैं तेरी रोटी न खाऊंगा और यदि तू बलिदान
की भेंट चढ़ावे तो तुझे उचित है कि परमेश्वर के लिये उसे चढ़ावे
क्योंकि मनूहा न जानता था कि वुह परमेश्वर का दूत है।
१७ फिर मनूहा ने परमेश्वर के दूत से कहा कि आप का नाम क्या
जिसतें जब आप का कहा पूरा होवे हम आप की प्रतिष्ठा करें।
१८ और परमेश्वर के दूत ने उसे कहा कि तू मेरा नाम क्यों पूछता
१९ है कि वुह आश्चर्य्यित। तब मनूहा ने एक मेम्ना भोजन की
भेंट के कारण परमेश्वर के लिये एक चटान पर चढ़ाया और
उस ने आश्चर्य्यित रीति किई और मनूहा और उस की स्त्री
२० देख रहे थे। क्योंकि ऐसा हुआ कि जब बेदी पर से स्वर्ग की
और लौर उठी तब परमेश्वर का दूत लौर में होके बेदी पर
से स्वर्ग को चला गया और मनूहा और उस की स्त्री ने देखा
२१ और मुंह के बल भूमि पर गिरे। परन्तु परमेश्वर का दूत
मनूहा को और उस की स्त्री को फेर दिखाई न दिया तब

२२ मनूहा ने जाना कि वुह परमेश्वर का दूत था। और मनूहा
ने अपनी पत्नी से कहा कि हम अब निश्चय मर जावेंगे क्योंकि
२३ हम ने ईश्वर को देखा। परन्तु उस की पत्नी ने उसे कहा कि
यदि परमेश्वर की इच्छा हमें मारने की होती तो वुह बलिदान
की भेंट और भोजन की भेंट हमारे हाथों से ग्राह्य न करता
और हमें यह सब न दिखाता और इस समय के समान हमें
ये बातें न कहता॥
२४ और वुह स्त्री बेटा जनी और उस का नाम शम्सून रक्खा
और वुह लड़का बढ़ा और परमेश्वर ने उसे आशीष दिई।
२५ और परमेश्वर का आत्मा दान की छावनी सुरअ: और इसताल
के बीच उसे उभाड़ने लगा॥

चौदहवां पर्व्व।

१ और शम्सून तिमन: में उतरा और तिमन: में उस ने
२ फ़िलिसतियों की बेटियों में से एक स्त्री को देखा। और उस
ने ऊपर आके अपने माता पिता से कहा कि मैं ने फ़िलिसतियों
की बेटियों में से तिमन: में एक को देखा सो उस्से मेरा बिवाह
३ करा देओ। तब उस के माता पिता ने उसे कहा कि क्या
तेरे भाइयों की बेटियों में और मेरे सारे लोगों में कोई स्त्री
नहीं जो तू अख़तना फ़िलिसतियों में से पत्नी लिया चाहता है
और शम्सून ने अपने पिता से कहा कि उसे मुझे दिलाइये
४ क्योंकि वुह मेरे मन में भाई है। परन्तु उस के माता पिता
न जानते थे कि यह परमेश्वर की ओर से है कि वुह
फ़िलिसतियों से वैर ढूंढ़ता है क्योंकि उस समय में फ़िलिसती
५ इसराएलियों पर प्रभुता करते थे। तब शम्सून अपने माता
पिता के संग तिमन: को उतरा और तिमनत के दाख की
बारियों में आये और क्या देखता है कि एक युवा सिंह उस

६ के सन्मुख गर्जता हुआ उस पर आ पहुंचा। तब परमेश्वर का
आत्मा सामर्थ्य के साथ शम्सून पर पड़ा और उस ने उसे ऐसा
फाड़ा जैसे कोई मेम्ना को फाड़ता है और उस के हाथ में
कुछ न था परन्तु जो कुछ उस ने किया था सो अपने माता
७ पिता से भी न कहा। तब उस ने जाके उस स्त्री से बात
किई और वुह शम्सून के मन में भाई॥
८ और कितने दिनों के पीछे वुह उसे लेने फिरा और वुह
अलग होके उस सिंह की लोथ देखने गया और क्या देखता
है कि सिंह की लोथ में मधु मक्खी का झुंड और छत्ता है।
९ तब उस ने उस में से हाथ में लिया और खाता हुआ चला
गया और अपनी माता पिता के पास आया और उन्हें भी कुछ
दिया और उन्हों ने खाया परन्तु उस ने उन्हें न कहा कि यह
मधु सिंह की लोथ में से निकला॥
१० फिर उस का पिता उस स्त्री के पास गया और वहां शम्सून
११ ने जेवनार किया क्योंकि तरुणों का यह व्यवहार था। और ऐसा
हुआ कि जब उन्हों ने उसे देखा तो वे तीस संगी को लाये
१२ कि उस के साथ रहें। और शम्सून ने उन्हें कहा कि मैं तुम
से एक पहेली कहता हूं यदि तुम जेवनार के सात दिन के
भीतर निश्चय उस का अर्थ मुझे बतलाओगे और उस का भेद
पाओगे तो मैं तीस ओढ़ना और तीस जोड़े वस्त्र तुम्हें देऊंगा।
१३ परन्तु यदि तुम मुझे न बता सकोगे तो तुम तीस ओढ़ना
और तीस जोड़े वस्त्र मुझे देओगे सो वे बोले कि अपनी पहेली
१४ कह कि हम सुनें। तब उस ने उन्हें कहा कि भक्षक में से
भक्ष्य निकला और बली में से मिठास और वे तीन दिन लों उस
१५ पहेली का अर्थ न बता सके। और यों हुआ कि सातवें दिन
उन्हों ने शम्सून की स्त्री से कहा कि अपने पति को फुसला
कि वुह इस पहेली का अर्थ हमें बतावे नहीं तो हम तेरा

और तेरे पिता का घर आग से जला देंगे क्या तुम ने हमें
१६ बुलाया है कि नहीं कि हमारा अधिकार लेओ। तब शम्सून
की पत्नी उस के आगे बिलाप करके बोली कि तू मुझ से केवल
बैर रखता है और मुझे प्यार नहीं करता तू ने मेरे लोगों के
संतानों से एक पहेली कही और मुझे न बतलाई और उस ने
उसे कहा कि देख मैं ने अपने माता पिता को नहीं बताया सो
१७ क्या तुझे बताऊं। और वुह उस के आगे उन के जेवनार के सात
दिन लों रोया किई और सातवें दिन ऐसा हुआ कि उस ने
उसे बता दिया क्योंकि उस ने उसे निपट सताया और उस ने
१८ उस पहेली का अर्थ अपने लोगों के संतानों से कहा। और
उस नगर के मनुष्यों ने सातवें दिन सूर्य्य के अस्त होने से
पहिले उस्से कहा कि मधु से मीठा क्या है और सिंह से
बलवान कौन तब उस ने उन्हें कहा कि यदि तुम मेरी कलोर
१९ से न जोत्ते तो मेरी पहेली का भेद न पावते। तब परमेश्वर
का आत्मा उस पर पड़ा और वुह अशक़लून को गया और
उन में से तीस मनुष्यों को मार डाला और उन के वस्त्र लिये
और उन्हें जोड़ा जोड़ा बस्त्र दिये जिन्हों ने पहेली का अर्थ
कहा था सो उस का क्रोध भड़का और अपने पिता के घर चढ़
गया॥

२० परन्तु शम्सून की पत्नी उस के संगी को जिसे वुह मित्र
जानता था दिई गई॥

पंदरहवां पर्ब्ब।

१ और कितने दिन पीछे गोहूं की कटनी के समय में ऐसा
हुआ कि शम्सून एक मेम्ना लेके अपनी पत्नी की भेंट को गया
और कहा कि मैं अपनी पत्नी पास कोठरी में जाऊंगा परन्तु
२ उस के पिता ने उसे जाने न दिया। और उस के पिता ने

कहा कि मुझे निश्चय हुआ कि तू उस्से बैर रखता था इस
लिये मैं ने उसे तेरे संगी को दिया क्या उस की लहुरी बहिन
उस्से अति सुंदरी नहीं सो उस की संती इसे ले ॥
३ तब शम्सून ने उन के बिषय में कहा कि अब मैं
फ़िलिसतियों से निर्दोष होऊंगा क्योंकि मैं उन की हानि
४ करूंगा। तब शम्सून ने जाके तीन सौ सियार पकड़े और
दो दो की पूंछ एक साथ बांधी और पलीता लिया और पूंछ
५ बांधके एक एक पलीता बीच में बांधा। और पलीतों को
बारके उन्हें फ़िलिसतियों के खड़े खेतों में छोड़ दिया और
फलों से लेके खड़े खेत लों और दाख के बाटिकों को और
६ जलपाई को जला दिया। तब फ़िलिसतियों ने कहा कि यह
किस ने किया है और वे बोले कि तिमनी के जंवाई शम्सून ने
क्योंकि उस ने उस की पत्नी को लेके उस के संगी को दिया
तब फ़िलिसती चढ़ आये और उसे और उस के पिता को आग
से जला दिया ॥
७ तब शम्सून ने उन्हें कहा कि यद्यपि तुम ने ऐसा किया
है तथापि मैं तुम से प्रतिफल लेऊंगा तब पीछे चैन करूंगा।
८ और उस ने उन्हें जांघ और कूला से मार मारके बड़ा नाश
किया और फिर जाके ऐताम पर्बत पर बैठ गया ॥
९ तब फ़िलिसती चढ़ गये और यहूदाह में डेरा किया और
१० लही में फैल गये। और यहूदाह के मनुष्यों ने कहा कि तुम
हम पर क्यों चढ़ आये हो और वे बोले कि शम्सून के बांधने
को हम चढ़ आये हैं कि जैसा उस ने हम से किया हम उस्से
११ करें। तब यहूदाह के तीन सहस्र मनुष्य ऐताम पर्बत की
चोटी पर गये और शम्सून को कहा कि क्या तू नहीं जानता
है कि फ़िलिसती हम पर प्रभुता करते हैं सो तू ने हम से
यह क्या किया है और उस ने उन्हें कहा कि जैसा उन्हों ने

१२ मुझ से किया वैसा मैं ने उन से किया। तब उन्हों ने उसे
कहा कि हम आये हैं कि तुझे बांधके फ़िलिसतियों के
हाथ में सैांप देवें और शम्सून ने उन्हें कहा कि मुझ से
१३ किरिया खाओ कि हम आप तुझे न मारेंगे। पर उन्हों ने उसे
कहा कि नहीं परन्तु हम तुझे दृढ़ता से बांधेंगे और तुझे उन
के हाथ में सैांपेंगे पर निश्चय हम तुझे मार न डालेंगे और
उन्हों ने उसे दो नई डोरियों से बांधा और उसे पहाड़ी पर से
उतार लाये॥

१४ जब वुह लही में पहुंचा तब फ़िलिसती उस के मिलने पर
ललकारे और परमेश्वर का आत्मा सामर्थ्य के साथ उस पर पड़ा
और उस की बांह पर की डोरी जले सन की नाईं हो गई
१५ और उस के हाथों के बंधन खुल गये। तब उस ने गदहे
की एक नई जबड़े की हड्डी पाई और अपना हाथ बढ़ाके उसे लिया
१६ और उस ने उस्से एक सहस्र मनुष्य मार डाले। और शम्सून
बोला कि एक गदहे की जबड़े की हड्डी से ढेर पर ढेर मैं ने
१७ एक गदहे की जबड़े की हड्डी से एक सहस्र पुरुष मारे। और
ऐसा हुआ कि इतना कहके जबड़े की हड्डी को अपने हाथ से
फेंक दिया और उस स्थान का नाम रामतलही रक्खा॥

१८ और वुह निपट पियासा हुआ तब वुह परमेश्वर की बिनती
करके बोला कि तू ने अपने दास के हाथ से ऐसा बड़ा बचाव
दिया और अब क्या मैं पियासा मरके अख़तनों के हाथ में
१९ पड़ूं। तब परमेश्वर ने एक गड़हा लही में खोदा और वहां
से पानी निकला और उस ने उसे पीया तब उस के जी में जी
आया और वुह फिर जीया इस लिये उस ने उस का नाम
बुलानेवाले का कुआ रक्खा जो आज लों लही में है॥

२० और उस ने फ़िलिसतियों के समय में बीस बरस लों इसराएल
का न्याय किया॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

१ तब शम्सून अज्ज़: को गया और वहां एक गणिका स्त्री
२ देखी और उस पास गया । अज्ज़ियों से कहा गया कि शम्सून
यहां आया है सो उन्हों ने उसे घेर लिया और सारी रात
नगर के फाटक पर उस की घात में लगे रहे पर रात भर
यह कहके चुप चाप रहे कि जब बिहान होगा तब हम उसे
३ मार लेंगे । और शम्सून आधी रात लों पड़ा रहा और आधी
रात को उठा और उस ने उस नगर के फाटक के द्वारों को
और दो खंभों को पकड़के उन्हें अड़ंगे समेत उखाड़के अपने
कांधे पर धरा और उन्हें उस पहाड़ी की चोटी पर जो हबरून
के आगे है ले गया ॥

४ और उस के पीछे ऐसा हुआ कि उस ने सूरेक की
तराई में एक स्त्री से प्रीति किई जिस का नाम दलील: था ।
५ और फ़िलिसतियों के प्रधान उस पास चढ़ गये और उसे कहा
कि उसे फुसला और देख कि उस का महाबल कहां है और
किस रीति से हम उसे बश में करें जिसतें हम उसे बांधके
बश में करें और हर एक हम में से ग्यारह ग्यारह सौ टुकड़े
चांदी तुझे देगा ॥

६ और दलील: ने शम्सून से कहा कि मुझे बता कि तेरा
महाबल किस में है और किस्से तू बांधा जावे कि तुझे बश
७ में करें । और शम्सून ने उसे कहा कि यदि वे मुझे सात
आदी डोरियों से जो कभी झूरी न हुई हों बांधें तब मैं निर्बल
८ हो जाऊंगा और दूसरे मनुष्य की नाईं हो जाऊंगा । तब
फ़िलिसतियों के प्रधान उस पास सात आदी डोरी लाये जो
९ कभी न सूखी थीं और उस ने उन से उसे बांधा । और
घातवाले उस के संग कोठरी के भीतर ढुके में थे और वुह

उस्से बोली हे शम्सून फ़िलिसती तुझ पर पड़े तब उस ने उन
डोरियों को सन के सूत की नाईं जो आग में लग जावे तोड़ा
सो उस का बल जाना न गया ॥
१० तब दलील: ने शम्सून से कहा कि देख तू ने मुझे चिढ़ाया
और मुझ से झूठ बोला अब मुझे बता कि तू किस्से बांधा
११ जावे । और उस ने उसे कहा कि यदि वे मुझे नई रस्सियों
से जो कभी काम में न आई हों कसके बांधें तब मैं निर्बल
१२ होके दूसरे मनुष्य की नाईं हो जाऊंगा । तब दलील: ने नई
रस्सियां लेके उसे उन से बांधा और उस्से बोली कि हे शम्सून
फ़िलिसती तुझ पर आये और घातवाले कोठरी में बैठे थे सो
उस ने अपनी भुजाओं से उन्हें तागे की नाईं तोड़ डाला ॥
१३ तब दलील: ने शम्सून से कहा कि अब लों तू ने मुझे
चिढ़ाया और मुझ से झूठ बोला मुझे बता कि तू किस्से बांधा
जावे तब उस ने उसे कहा कि यदि तू मेरी सात जटा ताने
१४ में बिने । तब उस ने खूंटे से उन्हें कसा और उस्से बोली कि
हे शम्सून फ़िलिसती तुझ पर आ पड़े और वुह नींद से जागा
और बुन्ने के खूंटे को ताने के साथ लेके चला गया ॥
१५ तब उस ने उसे कहा कि क्योंकर तू कहता है कि मैं तुझ से
प्रीति रखता हूं और तेरा मन मुझ से नहीं लगा तू ने यह
तीन बार मुझे चिढ़ाया और मुझे नहीं बताया कि तेरा
१६ महाबल किस में है । और ऐसा हुआ कि जब उस ने उसे प्रति
दिन अपनी बातों से दबाया और उसे उसकाया यहां लों
१७ कि वुह जीवन से उदास हुआ । तब उस ने उसे अपने मन
का सारा भेद खोलके कहा कि मेरे सिर पर छुरा नहीं फिरा
क्योंकि मैं अपनी माता के गर्भ में से ईश्वर के लिये नासरी हूं
यदि मेरा सिर मुड़ाया जावे तब मेरा बल मुझ से जाता
रहेगा और मैं निर्बल होके और मनुष्य की नाईं हो जाऊंगा ॥

१८ और जब दलील: ने देखा कि उस ने अब उसे अपने सारे
मन का भेद कह दिया तब उस ने फ़िलिसतियों के प्रधानों को
यह कहके बुलवाया कि एक बार फेर आओ क्योंकि उस ने
अपने मन का सारा भेद मुझ पर प्रगट किया तब फ़िलिसतियों
के प्रधान उस पर चढ़ आये और रोकड़ अपने हाथ में लाये।
१९ और उस ने उसे अपने घुठनों पर सुला रक्खा और एक जन
को बुलवाके सात जटा जो उस के सिर पर थीं मुड़वाईं और
२० उसे सताने लगी और उस का बल जाता रहा। तब वुह
बोली कि हे शम्सून फ़िलिसती तुझ पर आये और वुह नींद
से जागा और कहा कि मैं आगे की नाईं बाहर जाऊंगा और
आप को बल से हिलाऊंगा परन्तु वुह न जानता था कि
२१ परमेश्वर उसे छोड़ गया। तब फ़िलिसतियों ने उसे पकड़ा
और उस की आंखें निकाल डालीं और उसे अज्ज़: में उतार
लाये और पीतल की सीकरों से उसे जकड़ा और वुह बंदीगृह
में पड़ा चक्की पीसता था॥
२२ तथापि सिर मुड़ाने के पीछे उस के बाल फेर बढ़ने लगे।
२३ और फ़िलिसतियों के प्रधान एकट्ठे हुए कि अपने देव दजून
के लिये बड़ा बलिदान चढ़ावें और आनन्द करें क्योंकि उन्हों
ने कहा कि हमारे देव ने हमारे बैरी शम्सून को हमारे वश
२४ में कर दिया। और जब लोगों ने उसे देखा तब उन्हों ने
अपने देव की स्तुति किई क्योंकि उन्हों ने कहा कि हमारे
देव ने हमारे बैरी को जिस ने हमारा देश उजाड़ा और हमारे
बहुत से लोगों को नाश किया हमारे हाथ में सौंप दिया।
२५ और ऐसा हुआ कि जब वे मगन हो रहे थे तब उन्हों ने
कहा कि शम्सून को बुलाओ कि हमारे आगे लीला करे तब
उन्हों ने शम्सून को बंदीगृह से बुलवाया और वुह उन के आगे
लीला करने लगा और उन्हों ने उसे खंभों के मध्य में रक्खा।

२६ तब शम्सून ने उस छोकड़े को जो उस का हाथ पकड़े हुए
था कहा कि मुझे खंभे टटोलने दे जिन पर घर खड़ा है
२७ जिसतें उन पर ओठगूं । और घर पुरुषों और स्त्रियों से भरपूर
था और फ़िलिसतियों के समस्त प्रधान वहीं थे और तीन
सहस्र के लग भग स्त्री पुरुष छत पर थे जो शम्सून की लीला
२८ देख रहे थे । तब शम्सून ने परमेश्वर को पुकारा और कहा कि
हे प्रभु परमेश्वर दया करके मुझे स्मरण कीजिये केवल इसी
बार मुझे बल दीजिये जिसतें मैं एकट्ठे फ़िलिसतियों से अपनी
२९ दोनों आंखों का पलटा लेऊं । तब शम्सून ने दोनों मध्य के
खंभों को जिन पर घर खड़ा था एक को दहिने हाथ से और
३० दूसरे को बायें से पकड़ा । और शम्सून बोला कि मेरा प्राण
भी फ़िलिसतियों के साथ जाय सो उस ने बल करके उसे
झुकाया और घर उन प्रधानों और उन सब लोगों पर जो उस
में थे गिर पड़ा और वे लोग जिन्हें उस ने अपने साथ मारा
उन से अधिक थे जिन्हें उस ने अपने जीते जी मारा था ॥
३१ तब उस के भाई और उस के पिता के सारे घराने आये
और उसे उठाया और उसे सुरआ: और इसताल के मध्य में
उस के पिता मनूहा की समाधिस्थान में गाड़ा और उस ने
बीस बरस लों इसराएल का न्याय किया ॥

सतरहवां पर्ब्ब ।

१ और इफ़रायम पहाड़ का एक जन था जिस का नाम
२ मीका था । और उस ने अपनी माता से कहा कि वे ग्यारह
सौ रुपये जो तुझ से लिये गये थे जिस के कारण तू ने स्राप
दिया और जिस के बिषय में मैं ने भी सुना देखो चांदी मेरे
पास है मैं ने उसे लिया और उस की माता बोली कि हे मेरे
३ बेटे ईश्वर का धन्यबाद । और जब उस ने ग्यारह सौ चांदी

अपनी माता को फेर दिई तब उस की माता ने कहा कि मैं
ने यह चांदी अपने बेटे के लिये अपने हाथ से सर्वथा
परमेश्वरार्पण किया था कि एक खोदी हुई और एक ढाली हुई
४ मूर्त्ति बनाऊं सो अब मैं तुझे फेर देती हूं। तथापि उस ने
वुह रोकड़ अपनी माता को दिया और उस की माता ने दो
सौ चांदी लेके सोनार को दिया और उस ने एक खोदी हुई और
एक ढाली हुई मूर्त्ति बनाई और वे दोनों मीका के घर में थीं।
५ और मीका के देवतों का एक मंदिर था और एक अफूद और
तराफ़ीम बनाया और अपने बेटों में से एक को पवित्र किया
६ था जो उस के लिये पुरोहित हुआ। उन दिनों में इसराएल में
कोई राजा न था जिस को जो ठीक सूझ पड़ता था सो करता था॥
७ और यहूदाह के घराने का बैतलहम यहूदाह में का एक
८ तरुण लावी था जो वहां आ रहा था। और वुह मनुष्य
नगर में से यहूदाह के बैतलहम से निकला कि अंतेबास
करे और वुह चलते चलते इफ़रायम पहाड़ को मीका के घर
९ पहुंचा। तब मीका ने उसे कहा कि तू कहां से आता है और
उस ने उसे कहा कि मैं बैतलहम यहूदाह में का एक लावी
हूं और मैं जाता हूं कि जहां कहीं ठिकाना होवे तहां रहूं।
१० और मीका ने उसे कहा कि मेरे साथ रह और मेरे लिये पिता
और पुरोहित हो और मैं तुझे बरस बरस दस टुकड़े चांदी
और एक जोड़ा वस्त्र और भोजन देऊंगा सो लावी भीतर
११ गया। और वुह लावी उस मनुष्य के साथ रहने पर प्रसन्न
१२ हुआ और वुह तरुण उस के एक बेटों के समान हुआ। और
मीका ने उस लावी को ठहराया और वुह तरुण उस का
१३ पुरोहित बना और मीका के घर में रहने लगा। तब मीका
ने कहा कि अब मैं जानता हूं कि परमेश्वर मेरा भला करेगा
क्योंकि एक लावी मेरा पुरोहित हुआ॥

अठारहवां पर्व्व ।

१ उन दिनों में इसराएल में कोई राजा न था और उन्हीं
दिनों में दान की गोष्ठी अपने अधिकार के निवास ढूंढ़ती थी
क्योंकि उस दिन लों इसराएल की गोष्ठियों में उन्हें कुछ
२ अधिकार न मिला था। सो दान के संतान ने अपने घराने
में से पांच जन अपने सिवाने सुरआ: और इसताल से भेजे कि उन
के देश को देखके भेद लेवें तब उन्हों ने उन से कहा कि जाओ
देश को देखो जब वे इफ़रायम पहाड़ को मीका के घर आये
३ तो वहां रात भर टिके। जब वे मीका के घर के पास आये तब
उन्हों ने उस लावी तरुण का शब्द पहिचाना और उधर
मुड़के उसे कहा कि तुझे यहां कौन लाया और तू यहां क्या
४ करता है और तेरा यहां क्या काम। तब उस ने उन्हें कहा
कि मीका ने मुझ से यों यों व्यवहार किया है और मुझे बनी
५ में रक्खा है और मैं उस का पुरोहित हूं। तब उन्हों ने उसे
कहा कि ईश्वर से मंत्र लीजिये जिसतें हम जानें कि हमारा
६ मार्ग जिस पर हम चलते हैं सिद्ध होगा अथवा नहीं। और
पुरोहित ने उन्हें कहा कि तुम्हारा मार्ग परमेश्वर के आगे है
सो उस पर कुशल से जाओ॥

७ तब वे पांचों जन चल निकले और लैस को आये और
वहां के लोगों को देखा कि सैदानियों के समान निश्चिंत रहते
हैं और देश में कोई स्वामी न था जो उन्हें किसी बात में
लज्जित करता और वे सैदानियों से दूर थे और किसी से कुछ
८ कार्य्य न रखते थे। तब वे अपने भाई कने सुरआ: और
इसताल को आये और उन के भाइयों ने पूछा कि तुम क्या
९ करते हो। तब वे बोले कि उठो और हम उन पर चढ़ जावें
क्योंकि हम ने उस भूमि को देखा है और देखो वुह बहुत

अच्छी है और तुम चुपके हो उस भूमि में पैठके अधिकार
१० लेने में आलस न करो। जब चलोगे तब निश्चिंत लोगों पर
और बड़े देश में पहुंचोगे क्योंकि ईश्वर ने उसे तुम्हारे हाथ में
कर दिया है वुह एक देश है जिस में पृथिवी में की कोई
वस्तु घटी नहीं है॥
११ तब दान के घराने में से सुरअ: और इसताल के छ: सौ
१२ पुरुष युद्ध के हथियार बांधे हुए वहां से चले। और वे चढ़
गये और आके यहूदाह के क़रयतअरीम में डेरा किया इस
लिये आज के दिन लों उस स्थान का नाम उन्हों ने महानेह
१३ दान रक्खा देखो वुह क़रयतअरीम के पीछे है। और वहां से
चलके इफ़रायम पहाड़ को पहुंचे और मीका के घर में आये।
१४ तब उन पांच पुरुषों ने जो लैस के देश का भेद लेने को गये
थे अपने भाइयों से उत्तर देके कहा कि तुम जानते हो कि
इन घरों में अफ़ूद और तराफ़ीम और एक खोदी हुई और
१५ एक ढाली हुई मूर्त्ति है सो अब सोचो कि क्या करोगे। तब
वे उधर फिरे और मीका के घर में उस लावी तरुण के स्थान
१६ में प्रवेश किया और उस्से कुशल पूछा। और वे छ: सौ जो
दान के संतान के हथियारबंद थे फाटक की पैठ में खड़े रहे।
१७ और वे पांच जो देश के भेद को निकले थे घरके भीतर घुसे
और खोदी हुई मूर्त्ति और अफ़ूद और तराफ़ीम और ढाली
हुई मूर्त्ति लिई और वुह पुरोहित उन छ: सौ हथियारबंद
१८ मनुष्यों के साथ फाटक की पैठ में खड़ा था। और उन्हों ने
मीका के घर में घुसके खोदी हुई मूर्त्ति अफ़ूद और तराफ़ीम
और ढाली हुई मूर्त्ति उठा लिये तब पुरोहित उन से बोला
१९ कि तुम क्या करते हो। तब उन्हों ने उसे कहा कि
चुप रह अपने मुंह पर हाथ रखके हमारे साथ चल और
हमारे लिये पिता और पुरोहित हो कौन सी बात भली है कि

एक मनुष्य के घर का पुरोहित हो अथवा यह कि तू इसराएल
२० के घराने की एक गोष्ठी का पुरोहित हो। और पुरोहित का
मन मगन हुआ और उस ने अफ़ूद और तराफ़ीम और खोदी
हुई मूर्त्ति को उठा लिया और लोगों के मध्य में प्रवेश किया।
२१ सो वे फिरे और चले और बालकों और ढोर और गाड़ी को
अपने आगे किया ॥
२२ वे मीका के घर से बहुत दूर निकल गये थे कि मीका
के घर के आस पास के बासी एकट्ठे हुए और दान के संतान
२३ को जाही लिया। और उन्हों ने दान के संतान को ललकारा
तब उन्हों ने मुंह फेरा और मीका से कहा कि तुझे क्या हुआ
२४ जो तू एकट्ठा हुआ है। और वुह बोला कि तुम मेरे देवों को
जिन्हें मैं ने बनाया और मेरे पुरोहित को लेके चले गये हो
अब मेरा और क्या रहा और तुम मुझ से कहते हो कि तेरा क्या
२५ हुआ। तब दान के संतान ने उसे कहा कि तू अपना शब्द
हमें न सुना न हो कि क्रूर लोग तुझ पर लपकें और तू और
२६ तेरा घराना मारा जावे। और दान के संतान ने अपना मार्ग
लिया और जब मीका ने देखा कि वे मुझ से बली हैं तब
मुंह फेरके अपने घर को लौट आया ॥
२७ और वे मीका की बनाई हुई वस्तें उस के पुरोहित समेत
लिये हुए लैस को उन लोगों पर आये जो चैन में और निश्चिंत
थे और उन्हें तलवार की धार से मारा और नगर को आग से
२८ जला दिया। और कोई छोड़वैया न था क्योंकि सैदा से
वुह दूर था और वे किसी से व्यवहार न करते थे और वुह
उस तराई में था जो बैतरहुब के लग है और उन्हों ने एक
२९ नगर बनाया और उस में बसे। और उस नगर का नाम
दान रक्खा जो उन के पिता इसराएल के बेटे का नाम
३० था परन्तु पहिले उस नगर का नाम लैस था। और दान

के संतान ने उस खोदी हुई मूर्त्ति की स्थापना किई और
मुनस्सी के बेटे गेरसुम का बेटा यहूनतन और उस के
बेटे उस देश की बंधुआई के दिन लों दान की गोष्ठी के पुरोहित
३१ बने रहे। और जब लों ईश्वर का मंदिर सैला में था उन्हों ने
मीका की खोदी हुई मूर्त्ति अपने लिये स्थापित किई॥

उन्नीसवां पर्व्व।

१ और उन दिनों में ऐसा हुआ कि इसराएल में कोई राजा न था
और एक लावी मनुष्य इफ़रायम पहाड़ के अलंग में रहता था और उस
ने अपने लिये यहूदाह के बैतलहम से एक दासी पत्नी के लिये लिई।
२ और उस की दासी कुकर्म्म करके उस पास से यहूदाह बैतलहम
में अपने पिता के घर जा रही और चार मास लों वहां रही॥
३ और उस का पति उठा और उस के पीछे चला कि उसे
मनावे और फेर लावे और उस के साथ एक सेवक और दो
गदहे थे सो वुह उसे अपने पिता के घर में ले गई और उस
दासी के पिता ने ज्यों उसे देखा त्यों उस की भेंट से मगन हुआ।
४ और उस के ससुर अर्थात् उस स्त्री के पिता ने उसे रोका और
वुह उस के साथ तीन दिन लों रहा और उन्हों ने खाया
५ पीया और वहां टिके। और चौथे दिन यों हुआ कि जब वे
तड़के उठे तब उस ने चाहा कि यात्रा करे तब दासी के पिता
ने अपने जंवाई से कहा कि रोटी के एक टुकड़े से अपने मन
६ को संतुष्ट कर तब मार्ग लीजियो। सो वे दोनों बैठ गये और
मिलके खाया पीया क्योंकि दासी के पिता ने उस जन से कहा
कि मैं तेरी बिनती करता हूं मान जा और रात भर रह जा
७ और मन को आल्हादित कर। फिर जब वुह मनुष्य बिदा
होने को उठा तब उस के ससुर ने उसे रोका इस लिये वुह
८ फेर वहां रहा। और पांचवें दिन भोर को उठा कि बिदा

होवे फिर दासी के पिता ने उसे कहा कि मैं तेरी बिनती
करता हूं कि अपने मन को मगन कर सो वे दिन ढले लों
६ ठहरे रहे और उन दोनों ने खाया पीया। फिर वुह मनुष्य
और उस की दासी और उस का सेवक बिदा होने को उठे
फिर कन्या के पिता ने उसे कहा कि देख दिन ढल चला है
और सांझ पहुंची है अब रात भर ठहर जा देख दिन समाप्त
हो चला है अब रह जा जिसतें तेरा मन मगन हो जावे
१० और कल तड़के अपने डेरे जाने को सिधार। परन्तु वुह जन
उस रात को न रहा पर उठके बिदा हुआ और यबूस के
सन्मुख आया जिस का दूसरा नाम यरूसलम है और उस के
संग काठी बांधे हुए दो गदहे और उस की दासी भी उस के
साथ थी॥
११ जब वे यबूस पास पहुंचे तब दिन बहुत ढल गया तब
सेवक ने अपने स्वामी से कहा कि मैं आप की बिनती करता
हूं आइये यबूसियों के इस नगर में मुड़ें और उसी में टिकें।
१२ तब उस के स्वामी ने उसे कहा कि हम उपरी नगरों में जो
इसराएल के संतानों का नहीं है न टिकेंगे परन्तु जिबआ: को
१३ पार जायेंगे। और अपने सेवक से कहा कि चल इन स्थानों
१४ में से एक में जिबआ: अथवा रामः में रात भर टिकें। और उन
के जाते जाते बिनयमीन के जिबआ: के पास सूर्य्य अस्त हुआ।
१५ और वे उधर फिरे कि जिबआ: में टिकें और नगर के एक
मार्ग में उतरके बैठ गये क्योंकि कोई ऐसा न था जो उन्हें
अपने घर ले जाके टिकावे॥
१६ और देखो कि एक वृद्ध खेत पर से काम करके सांझ को
वहां आया वुह भी इफ़रायम पहाड़ का था जो जिबआ: में
१७ आके बसा था परन्तु उस स्थान के बासी बिनयमीनी थे। जब
उस ने आंखें उठाईं तब देखा कि एक पथिक नगर के मार्ग पर

है तब उस बृद्ध ने उसे कहा कि तू किधर जाता है और
१८ कहां से आता है। तब उस ने उसे कहा कि हम यहूदाह
बेतलहम से इफ़रायम के पहाड़ की अलंग लों जाते हैं जहां के
हैं और मैं यहूदाह बेतलहम को गया था परन्तु अब परमेश्वर
के मंदिर को जता हूं और कोई ऐसा मनुष्य नहीं जो मुझे
१९ अपने घर उतारे। तथापि मेरे साथ गदहों के लिये अन्न
भूसा है और मेरे और तेरी दासी के लिये और इस तरुण के
लिये जो मेरा सेवक है रोटी और मदिरा है किसी वस्तु की
२० घटी नहीं है। और उस बृद्ध ने कहा कि तेरा कल्याण होवे
तिस पर भी तेरा आवश्यक मुझ पर होवे केवल मार्ग में रात को
२१ मत टिको। सो वुह उसे अपने घर ले गया और उस के गदहों
को चारा दिया तब उन्हों ने अपने पांव धोये और खाया पीया॥
२२ वे मगन हो रहे थे तब देखो कि उस नगर के लोगों ने
जो बलियाल के लड़के थे उस घर को घेर लिया और द्वार
ठोंकके उस घर के स्वामी अर्थात् उस बृद्ध से कहा कि उस
जन को जो तेरे घर में आया है बाहर ला जिसतें हम उस्से
२३ कुकर्म्म करें। तब उस घर का स्वामी बाहर निकला और
उन्हें कहा कि नहीं भाइयो मैं तुम्हारी बिनती करता हूं ऐसी
दुष्टता न कीजिये देखो यह जन मेरे घर में आया है सो
२४ ऐसी मूढ़ता न कीजिये। देख मैं अपनी कुंआरी बेटी और
उस की दासी को बाहर ले आता हूं आप उन्हें आलिंगन
कीजिये और इच्छा भर मनमंता जो चाहिये सो करिये परन्तु
२५ इस मनुष्य से ऐसी दुर्गति न कीजिये। पर वे उस की बात
न मानते थे सो वुह जन उस की दासी को उन पास बाहर
ले आया और उन्हों ने उस्से कुकर्म्म किया और रात भर
बिहान लों उस की दुर्दशा किई और जब दिन निकलने लगा
तब उसे छोड़ गये॥

२६ और वुह स्त्री पौ फटते ही उस पुरुष के घर के द्वार पर
जहां उस का स्वामी था आके गिर पड़ी यहां लों कि उंजियाला
२७ हुआ । और उस का स्वामी बिहान को उठा और उस ने घर
के द्वारों को खोला और बाहर निकला कि यात्रा करे और क्या
देखता है कि उस की दासी घर के द्वार पर पड़ी है और
२८ उस के हाथ डेवढ़ी पर थे । तब उस ने उस्से कहा कि उठ आ
चलें पर कोई उत्तर न दिया तब उस मनुष्य ने उसे गदहे
पर धर लिया और अपने स्थान को चल निकला ॥

२९ और उस ने घर पहुंचके छुरी लिई और अपनी दासी को
पकड़के हड्डियों समेत उस के बारह भाग करके टुकड़े टुकड़े
३० काटे और इसराएल के समस्त सिवानों में भेज दिये । और
ऐसा हुआ कि जिस किसी ने वुह देखा सो बोला कि जिस
दिन से इसराएल के संतान मिस्र से चढ़ आये आज लों ऐसा कर्म्म
न हुआ न देखा गया सोचो और बिचार करो और बोलो ॥

बीसवां पर्ब्ब ।

१ तब इसराएल के सारे संतान निकले और दान से लेके
बिअरसबः लों और जिलिअद के देश लों मंडली एक मन
२ होके परमेश्वर के आगे मिसफ़ः में एकट्ठी हुई । और समस्त
लोगों के अर्थात् इसराएल की समस्त गोष्ठियों के प्रधान जो
ईश्वर के लोगों की सभा में आये चार लाख पगइत खड्गधारी
थे ॥

३ अब बिनयमीन के संतानों ने सुना कि इसराएल के संतान
मिसफ़ः में एकट्ठे हुए तब इसराएल के संतानों ने कहा कि कह यह
४ दुष्टता क्योंकर हुई । तब उस लावी पुरुष ने जो मारी गई स्त्री का
पति था उत्तर देके कहा कि मैं अपनी दासी समेत बिनयमीन
५ की जिबिअत में टिकने को आया । और जिबिअत के लोग

मुझ पर चढ़ आये और घर रात को घेर लिया और चाहा
कि मुझे मार लेवें और उन्हों ने मेरी दासी पर बरबस किया
६ कि वुह मर गई। सो मैं ने अपनी दासी को पकड़के उसे टुकड़े
टुकड़े किये और उन्हें इसराएल के अधिकार के समस्त देश
में भेजा क्योंकि इसराएल में उन्हों ने कुकर्म्म और मूढ़ता
७ किई। देखो हे इसराएल के समस्त संतानो अब तुम ही
अपना मंच और परामर्श देओ॥

८ तब सब के सब यह कहके एक जन की नाईं उठे और
बोले कि हम में से कोई अपने डेरे में न जावेगा और हम में
९ से कोई अपने घर की ओर न फिरेगा। परन्तु अब हम
१० जिबअ: से यह करेंगे कि चिट्ठी डालके उस पर चढ़ेंगे। और
हम इसराएल के संतान की हर एक गोष्ठी में से सौ पीछे दस
और सहस्र पीछे सौ और दस सहस्र पीछे एक सहस्र पुरुष लेंगे
जिसतें लोगों के लिये भोजन लावें और जिस समय कि
बिनयमीन के जिबअ: में आवें तब उस समस्त मूढ़ता के
कारण उन से करें जो उन्हों ने इसराएल में किई॥

११ सो सारे इसराएल के लोग एक मता होके उस नगर पर
१२ एकट्ठे हुए। और इसराएल की गोष्ठियों ने बिनयमीन की
समस्त गोष्ठी में यह कहके लोग भेजे कि यह क्या दुष्टता है
१३ जो तुम्में हुई। सो अब बलियाल के संतानों को जो जिबअ:
में हैं हमें सौंप देओ कि हम उन्हें मार डालें और इसराएल
में से बुराई को मिटा डालें परन्तु बिनयमीन के संतान ने
१४ अपने भाई इसराएल के संतान का कहा न माना। परन्तु
बिनयमीन के संतान नगरों में से जिबअ: में एकट्ठे हुए जिसतें
१५ इसराएल के संतान से संग्राम करें। और बिनयमीन के संतान
जो नगरों में से उस समय गिने गये जिबअ: के सात सौ
१६ चुने हुए जन को छोड़के छब्बीस सहस्र खड्गधारी थे। इन

सब लोगों में सात सौ चुने हुए बैंहथे थे जिन में हर एक
ढिलवांस के पत्थर से बाल भर मारने में न चूकता था।
१७ और बिनयमीन को छोड़ इसराएल के संतान चार लाख योद्धा
खड्गधारी थे॥
१८ और इसराएल के संतान उठके ईश्वर के मंदिर को गये
और ईश्वर से मंत्र चाहा और कहा कि हम्में से कौन पहिले
बिनयमीन के संतानों पर युद्ध के लिये चढ़ जावे तब परमेश्वर
ने कहा कि पहिले यहूदाह॥
१९ सो इसराएल के संतान बिहान को उठे और जिबअ: के
२० सन्मुख छावनी किई। और इसराएल के लोग बिनयमीन
से लड़ाई करने को निकले और इसराएल के लोग जिबअ:
२१ में उन के आगे पांती बांध संग्राम के लिये खड़े हुए। तब
बिनयमीन के संतान ने जिबअ: से निकलके उस दिन बाईस
सहस्र इसराएलियों को मारके धूल में मिला दिया॥
२२ और इसराएल के लोगों ने हियाव किया और उसी
२३ स्थान पर जहां वे पहिले दिन लैस थे संग्राम किया। और
इसराएल के संतानों ने ऊपर जाके सांझ लों परमेश्वर के आगे
बिलाप किया और यह कहके परमेश्वर से मंत्र चाहा कि हम
अपने भाई बिनयमीन के संतानों से संग्राम करें तब परमेश्वर
२४ ने कहा कि उन पर चढ़ जाओ। सो इसराएल के संतान
दूसरे दिन बिनयमीन के संतान के बिरोध में समीप आये।
२५ और उस दूसरे दिन बिनयमीन ने जिबअ: से निकलके
इसराएल के संतान के अठारह सहस्र मनुष्य मारके भूमि पर
डाल दिये ये सब खड्गधारी थे॥
२६ तब सारे इसराएल के संतान और सारे लोग ईश्वर के
मंदिर को चढ़ गये और रोये और वहां परमेश्वर के आगे बैठे
और उस दिन सांझ लों ब्रत किया और बलिदान की भेंटें और

२७ कुशल की भेंटें परमेश्वर के आगे चढ़ाईं। और इसराएल के
सतानों ने परमेश्वर से बूझा क्योंकि परमेश्वर की साक्षी की
२८ मंजूषा उन दिनों में वहां थी। और हारून के बेटे इलिअज़र
का बेटा फीनिहास उन दिनों में उस के आगे खड़ा रहता था
तब उन्हों ने पूछा कि मैं अपने भाई बिनयमीन के संतान
से फिर संग्राम के लिये जाऊं अथवा रहि जाऊं तब परमेश्वर
ने कहा कि चढ़ जा क्योंकि कल मैं उन्हें तेरे हाथ में कर
देऊंगा॥
२९ सो इसराएल ने जिबअ: के चारों ओर घातियों को
३० बैठाया। और इसराएल के संतान तीसरे दिन बिनयमीन
के संतान के साम्ने चढ़ गये और जिबअ: के सन्मुख आगे के
३१ समान फिर पांती बांधी। और बिनयमीन के संतान ने उन
का साम्ना किया और नगर से खैंचे गये और आगे की नाईं
राजमार्गों में जो बैतएल को जाता है और दूसरा जिबअ: को
३२ तीस मनुष्य के अंटकल मारते गये। और बिनयमीन के
संतान ने कहा कि वे आगे की नाईं हमारे आगे मारे पड़े
परन्तु इसराएल के संतान ने कहा कि आओ भागें और उन्हें
३३ नगर से राजमार्गों में खींच लावें। तब सारे इसराएल के
लोग अपने स्थान से निकले और उस स्थान पर पांती बांधी
जिस का नाम बअलतमर है और इसराएल के घातिये अपने
३४ स्थानों से जिबअ: के खेतों में से निकले। और समस्त
इसराएल में से दस सहस्र चुने हुए जन जिबअ: के सन्मुख
आये और बड़ा संग्राम हुआ पर उन्हों ने न जाना कि विपत्ति
३५ उन पर आ पहुंची। तब परमेश्वर ने बिनयमीन को इसराएल
के आगे मारा और इसराएल के संतान ने उस दिन पचीस
सहस्र एक सौ जन बिनयमीनी मारे ये सब खड्गधारी थे॥
३६ और बिनयमीन के संतान ने देखा कि हम मारे पड़े

क्योंकि इसराएल के मनुष्य बिनयमीनी को निकाल लाये क्योंकि
वे उन घातियों के भरोसे पर थे जिन्हें उन्हों ने जिबअः के
३७ अलंग बैठाया था । तब घातियों ने फुरती किई और जिबअः
पर लपके और बढ़ गये और सारे नगर को तलवार की धार
३८ से घात किया । अब इसराएल के मनुष्यों में और उन घातियों
में एक पता ठहराया हुआ था कि नगर में से धूआं के साथ
३९ बड़ी लीर निकालें । जब इसराएल के मनुष्य संग्राम में हट
गये तब बिनयमीनी उन में के तीस मनुष्य के अंटकल मारने
लगे क्योंकि उन्हों ने कहा कि निश्चय आगे के संग्राम के
४० समान वे हमारे आगे मारे पड़े । परन्तु जब लीर और धूआं
एक साथ नगर से उठे तो बिनयमीनियों ने अपने पीछे दृष्टि
किई और क्या देखते हैं कि नगर से स्वर्ग लों लीर उठ रही है।
४१ और जब इसराएल के संतान फिरे तब बिनयमीन के मनुष्य
घबराये क्योंकि उन्हों ने देखा कि हम पर बिपत्ति आ पहुंची ।
४२ इस लिये उन्हों ने इसराएलियों से भागके अरण्य का मार्ग
लिया परन्तु संग्राम ने उन्हें जाही लिया और जो नगरों से
४३ निकल आये थे उन्हों ने अपने बीच में नाश किया । उन्हों
ने यों बिनयमीनी को घेरा और खेदा और सहज से जिबअः
४४ के साम्ने पूरब दिशा में लताड़ा। और अठारह सहस्र बिनयमीनी
४५ जूझ गये ये सब बीर थे । सो वे फिरे और रुम्मान की पहाड़ी
की ओर अरण्य में भाग गये और उन्हों ने राजमार्गों में चुन
चुनके पांच सहस्र पुरुष मारे और जिदऊन लों उन का पीछा
४६ किया और उन में से दो सहस्र और मारे । सो सब बिनयमीनी
४७ जो उस दिन जूझे पचीस सहस्र खड्गधारी बीर थे । परन्तु छः
सौ मनुष्य बन की ओर फिरके रुम्मान पहाड़ी को भाग गये
और चार मास रुम्मान पहाड़ी में रहे ॥
४८ तब इसराएल के मनुष्य बिनयमीन के संतान पर फिरे

और बसती के पुरुष और पशु और सब को जो उन के हाथ
लगा तलवार की धार से मारा और जिस जिस नगर में आये
उसे फूंक दिया ॥

एक्कीसवां पर्ब्ब ।

१ अब इसराएल के लोगों ने मिसफ़ः में यह कहके किरिया
खाई थी कि हम में से कोई अपनी बेटी पत्नी के लिये
२ बिनयमीन को न देगा । और लोग ईश्वर के मंदिर को आये
और ईश्वर के आगे सांझ लों चिल्लाये और बिलख बिलख रोये।
३ और बोले कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर इसराएल पर यह
क्यों हुआ कि इसराएल से आज के दिन एक गोष्ठी घट गई ।
४ और यों हुआ कि बिहान को उठके उन लोगों ने वहां एक
बेदी बनाई और बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें
चढ़ाईं ॥
५ और इसराएल के संतानों ने कहा कि मंडली में इसराएल
की सारी गोष्ठियों में से परमेश्वर की मंडली के संग कौन कौन
नहीं चढ़ा क्योंकि उन्हों ने उस के विषय में बड़ी किरिया
खाई थी कि जो मिसफ़ः में परमेश्वर के आगे न आवेगा सो
६ निश्चय मारा जावेगा । सो इसराएल के संतान अपने भाई
बिनयमीन के कारण पछताये और बोले कि आज इसराएल में
७ से एक गोष्ठी कट गई । हम उन के लिये पत्नियां कहां से
लावें क्योंकि हम ने तो परमेश्वर की किरिया खाई है कि हम
८ अपनी बेटियां उन्हें पत्नियों के लिये न देंगे । तब उन्हों ने
कहा कि इसराएल की गोष्ठियों में से वुह कौन है जो मिसफ़ः
में परमेश्वर के आगे नहीं चढ़ा और देखो कि यबीस जिलिअ़द
९ में से कोई सभा में नहीं आया था । क्योंकि लोग गिने गये
१० और यबीस जिलिअ़द के बासियों में से कोई न था । तब

मंडली ने बारह सहस्र जन को जो बड़े वीर थे आज्ञा करके
उधर भेजा कि यबीस जिलिअद के बासियों को जाके स्त्री और
११ बालक सहित खड्ग की धार से मार डालो। पर इतना कीजियो
कि हर एक पुरुष और हर एक स्त्री को जो पुरुष से ज्ञाता हो सर्वथा
१२ नष्ट कर देना। सो उन्हों ने यबीस जिलिअद के बासियों में
चार सौ कुंआरी पाईं जो पुरुष से अज्ञान थीं और उन्हें सैला की
छावनी में जो कनआन के देश में है ले आये ॥
१३ तब सारी मंडली ने बिनयमीन के संतान को जो रुम्मान
की पहाड़ी में थे कहला भेजा और उन से कुशल का प्रचार
१४ किया। और उस समय बिनयमीन फिर आये और उन्हों ने
उन स्त्रियों को जो यबीस जिलिअद में से जीती बचा रक्खा
१५ था उन्हें दिया तथापि उन के लिये न अटीं। और लोग
बिनयमीन के लिये पछताये क्योंकि परमेश्वर ने इसराएल की
गोष्ठियों में फूट डाली ॥
१६ तब मंडली के प्राचीन बोले कि उबरे हुओं के लिये पत्नियों
के विषय में क्या करें क्योंकि बिनयमीन में से सारी स्त्री नष्ट
१७ हुईं। तब उन्हों ने कहा कि बिनयमीन में से जो बच रहे हैं
अवश्य है कि उन के लिये अधिकार होवे जिसतें इसराएल
१८ की एक गोष्ठी नष्ट न हो जावे। तथापि हम तो अपनी बेटियां
उन्हें पत्नियों के लिये दे नहीं सक्ते क्योंकि इसराएल के संतानों
ने यह कहके किरिया खाई है कि वुह जो बिनयमीन को
पत्नी देवे सो स्रापित है ॥
१९ तब उन्हों ने कहा कि देखो सैला में परमेश्वर के लिये
बरस का पर्व्व है जो बैतएल की उत्तर अलंग को और उस
राजमार्ग की पूरब अलंग जो बैतएल से सिकम को जाता है
२० और लबोना के दक्षिण। इस लिये उन्हों ने बिनयमीन के
संतानों को आज्ञा करके कहा कि जाओ और दाख की बारियों

२१ में घात में रहो। और देखते रहो और यदि सैला में की कन्या
नाचने को बाहर आवें तो दाख की बारियों में से निकलो
और हर एक पुरुष सैला की बेटियों में से अपनी पत्नी के लिये
२२ पकड़े और बिनयमीन के देश को जावे। और यों होगा कि
जब उन के पिता अथवा भाई हमारे पास आके दोहाई देंगे
तब हम उन्हें कहेंगे कि हमारे कारण उन पर कृपा कीजिये
क्योंकि संग्राम में हम ने हर एक पुरुष के लिये पत्नी न बचा
२३ रक्खी क्योंकि तुम ने उन्हें न दिया जिसतें दोषी होते। सो
बिनयमीन के संतानों ने ऐसा ही किया और अपनी गिनती के
समान उन में से जो नाचती थीं एक एक पत्नी ले लिई और
उन्हें लिये हुए अपने अधिकार को फिरे और अपने नगरों को
२४ सुधारा और उन में बसे। और इसराएल के संतान उस समय
वहां से चले और हर एक अपनी अपनी गोष्ठी और अपने
२५ अपने घराने में और अपने अपने अधिकार को गया। उन्हीं
दिनों में इसराएल में कोई राजा न था जिस को जो अच्छा
लगता था सो करता था॥

रूत की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब

१ अब न्याइयों की प्रभुता के दिनों में देश में अकाल पड़ा
और यहूदाह बैतलहम से एक जन अपनी पत्नी और दो बेटे
२ समेत निकला कि मोअब के देश में जा रहे। और उस पुरुष
का नाम इलीमलिक और उस की पत्नी का नाम नअमी था
और उस के दो बेटों के नाम महलून और किलयून थे ये
यहूदाह बैतलहम के इफ़राती थे सो वे मोअब के देश में
आये और वहां रहे॥

३ तब नअमी का पति इलीमलिक मर गया और वुह और
४ उस के दोनों बेटे रह गये। और उन दोनों ने मोअबी स्त्रियों
से विवाह किया एक का नाम उरफ़ः और दूसरी का रूत था
५ और वे बरस दस एक वहां रहे। और महलून और किलयून
भी दोनों मर गये सो वुह स्त्री अपने दो बेटों से और पति
से अकेली छोड़ी गई॥

६ तब वुह अपनी बहुओं समेत उठी कि मोअब के देश से
फिर जावे क्योंकि उस ने मोअब के देश में सुना था कि परमेश्वर
७ ने अपने लोगों पर कृपा करके उन्हें अन्न दिया। इस लिये
वुह उस स्थान से जहां थी अपनी दोनों बहुओं समेत चल निकली
और अपना मार्ग लिया कि यहूदाह के देश को फिर जावे।
८ तब नअमी ने अपनी दोनों बहुओं से कहा कि अपने अपने
मैके को जाओ और जैसे तुम ने मृतक से और मुझ से व्यवहार

९ किया वैसे ही परमेश्वर तुम पर अनुग्रह करे। परमेश्वर ऐसा
करे कि अपने अपने पति के घर में विश्राम पाओ तब उस ने
१० उन्हें चूमा और उन्हों ने चिल्लाके विलाप किया। फिर उन्हों
ने उसे कहा कि हम तो निश्चय तेरे साथ तेरे लोगों में फिर
जावेंगे॥

११ और नश्रमी बोली मेरी बेटियो फिर जाओ मेरे साथ किस
लिये जाओगी क्या मेरी कोख में और बेटे हैं कि तुम्हारे
१२ पति होवें। मेरी बेटियो फिर जाओ क्योंकि पति करने को मैं
अति बृद्ध हूं यदि मैं कहूं कि मेरी आशा है और आज रात
१३ पति करूं और बेटे जनूं। तो क्या तुम उन के सयाने होने
लों आशा रखतीं और पति करने से उन के लिये ठहरतीं
नहीं मेरी बेटियो मैं तुम्हारे लिये निपट दुःखी हूं क्योंकि
१४ परमेश्वर का हाथ मेरे बिरोध पर निकला। तब वे फिर
चिल्लाके रोईं और उरफ़ः ने अपनी सास को चूमा लिया परन्तु
रूत उस्से लपटी रही॥

१५ तब वुह बोली कि देख तेरे भाई की पत्नी अपने लोगों
और अपने देवतों कने फिर गई तू भी अपने भाई की पत्नी के
१६ पीछे फिर जा। पर रूत बोली मुझे आप से छोड़के फिर जाने
को मत मना क्योंकि जिधर तू जावेगी मैं भी जाऊंगी और
जहां तू रहेगी रहूंगी तेरे लोग मेरे लोग और तेरा ईश्वर मेरा
१७ ईश्वर। जहां तू मरेगी मैं मरूंगी और वहां गाड़ी जाऊंगी ईश्वर
मुझ से ऐसा ही करे और उस्से अधिक यदि केवल मृत्यु मुझे
१८ तुझ से अलग करे। जब उस ने देखा कि उस का मन उस
के साथ जाने पर दृढ़ है तब वुह चुप हो रही॥

१९ सो वे दोनों जाते जाते बैतलहम में आईं और यों हुआ
कि जब बैतलहम में पहुंचीं तो उन के बिषय में सारे नगर
२० में धूम मची और लोग बोले कि क्या यह नश्रमी है। तब

उस ने उन्हें कहा कि मुझे नग़मी मत कहा मुझे मार: कहा
क्योंकि सर्बशक्तिमान ने अति कड़ुआहट से मुझ से व्यवहार किया
२१ है। मैं भरी पूरी निकल गई और परमेश्वर मुझे छूछी फेर
लाया मुझे नग़मी क्यों कहते हो देखते हो कि परमेश्वर ने मेरे
बिरोध साक्षी दिई है और सर्बसामर्थी ने मुझे दु:ख दिया है॥
२२ सा नग़मी अपनी बहू मात्र्बी रूत समेत मात्र्ब के देश से
फिर आई और जव की कटनी के आरंभ में बैतलहम में पहुंची॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ और नग़मी के पति का एक कुटुम्ब था जो इलीमलिक के
२ घराने में बड़ा धनी था जिस का नाम बोअ़ाज़ था। और
मात्र्बी रूत ने नग़मी से कहा कि मुझे उस के खेत में जा
मुझ पर कृपा करे अन्न बीन्ने को जाने दीजिये तब वुह उस्से
३ बाली कि मेरी बेटी जा। सा वुह गई और लवैयों के पीछे पीछे
खेत में बीन्ने लगी और संयोग से वुह इलीमलिक के कुटुम्ब
बोअ़ाज़ के खेत में गई॥
४ और देखा कि बोअ़ाज़ बैतलहम में से आ गया और लवैयों
से बोला कि परमेश्वर तुम्हारे साथ और वे उत्तर देके उस्से
५ बाले कि परमेश्वर आप को बढ़ती देवे। फिर बोअ़ाज़ ने अपने
सेवक से जा लवैयों पर था पूछा कि यह किस की कन्या है।
६ तब जा सेवक लवैयों पर था सा उत्तर देके बाला कि वुह
मात्र्बी कन्या है जा मात्र्ब के देश से निकलके नग़मी के
७ साथ फिर आई। और वुह बाली मुझे लवैयों के पीछे पीछे
गट्ठों के बीच बीच में बीन्ने दीजिये सा वुह आई और बिहान
८ से अब लों बनी रही और तनिक घर में ठहरी। तब बोअ़ाज़
ने रूत को कहा कि हे मेरी बेटी क्या तू नहीं सुनती है तू
दूसरे खेत में अन्न बीन्ने न जा और यहां से मत जा परन्तु

९ मेरी कन्यों से पिलची रह। तेरी आंखें उसी खेत पर होवें
जो वे लवते हैं और उन के पीछे पीछे चली जा क्या मैं ने
तरुणों को नहीं चिताया कि तुझे न छूवें और जब तू पियासी
१० होय तो पात्रों में से जाके पी जो तरुणों ने खींचा है। तब उस
ने अपने मुंह के बल भूमि पर झुकके दण्डवत किई और उस्से
बोली कि आप की दृष्टि में किस कारण मैं ने अनुग्रह पाया
११ कि आप मेरी सुधि लेते हैं यद्यपि मैं परदेशिन हूं। तब बोआज़
ने उत्तर देके उसे कहा कि जो तू ने अपने पति के मरने के
पीछे अपनी सास से किया है रत्ती रत्ती मुझ पर प्रगट हुआ
है कि तू ने अपने माता पिता को और अपनी जन्म भूमि को
छोड़ा और इन लोगों में आई जिन्हें तू आगे न जानती थी।
१२ परमेश्वर तेरे कार्य्य का प्रतिफल देवे और परमेश्वर इसराएल का
ईश्वर जिस के डैने के नीचे भरोसा रखने आई है तुझे परिपूर्ण
१३ पलटा देवे। तब वुह बोली कि हे मेरे प्रभु आप की कृपा
मुझ पर होवे क्योंकि आप ने मुझे शान्ति दिई है और इस
लिये कि तू ने स्नेह से अपनी दासी से बातें किईं यद्यपि मैं
१४ तेरी दासियों में से एक के समान नहीं। फिर बोआज़ ने उसे
कहा कि भोजन के समय में तू इधर आ और रोटी खा और
कौर को सिरके में चभोर तब वुह लवैयों के पीछे बैठ गई
और उस ने उसे चबेना दिया और वुह खाके तृप्त हुई और
१५ कुछ छोड़ दिया। और जब वुह बीन्ने को उठी तब बोआज़
ने अपने तरुणों को आज्ञा करके कहा उसे गट्ठों हीं के बीच
१६ में बीन्ने देओ और उसे लज्जित न करो। और जान बूझके
उस के लिये मुट्ठी भर भर गिरा भी देओ और छोड़ देओ
१७ जिसतें वुह बीने और उसे कोई न झिड़के। सो वुह सांझ
लों खेत में बीनती रही और जो कुछ उस ने बीना था सो
झाड़ा और वुह जव चार पसेरी से ऊपर हुआ॥

१८ सो वुह उसे उठाके नगर में गई और जा कुछ उस ने
बीना था सो उस की सास ने देखा और तृप्त होने के पीछे जो
कुछ उस ने रख छोड़ा था सो निकालके अपनी सास को दिया।
१९ तब उस की सास ने पूछा कि तू ने आज कहां बीना है और
कहां परिश्रम किया धन्य है वुह जिस ने तेरी सुधि लिई तब
उस ने जिस के यहां परिश्रम किया था अपनी सास को बताके
कहा कि जिस के यहां मैं ने आज परिश्रम किया है उस का
२० नाम बोआज़ है। तब नऊमी ने अपनी बहू से कहा कि वुह
परमेश्वर से धन्य होवे जिस ने जीवतों और मृतकों से अपनी
अनुग्रह न उठाया और नऊमी ने उसे कहा कि वुह जन
२१ हमारा कुटुम्ब है वुह हमारा एक समीपी कुटुम्ब। और मोअबी
रूत बोली कि उस ने मुझे यह भी कहा कि जब लों मेरी
समस्त लवनी न हो जावे तू मेरे तरुणों के पास पास रहियो।
२२ तब नऊमी ने अपनी बहू से कहा कि मेरी बेटी भला है कि
तू उस की कन्यों के साथ साथ जाया करे जिसतें वे किसी
२३ दूसरे खेत में तुझे न पावें। सो वुह जव और गोहूं की लवनी
के अंत्य लों बोआज़ की कन्यों के साथ पिलची रही और अपनी
सास के साथ रहती थी॥

तीसरा पर्व्व ।

१ तब उस की सास नऊमी ने उसे कहा कि हे मेरी बेटी
२ क्या मैं तेरा चैन न चाहूं जिस में तेरा भला होवे। सो अब
क्या बोआज़ हमारा कुटुम्ब नहीं जिस की कन्यों के साथ तू
३ थी देख वुह आज रात खलिहान में जव ओसावता है। सो
तू स्नान कर और चिकनाई लगा और अपना वस्त्र पहिन
और खलिहान को उतर जा जब लों वुह खा पी न चुके तब
४ लों आप को उस पुरुष पर प्रगट मत कर। और ऐसा हो कि

जब वुह लेट जावे तब तू उस के शयनस्थान को देख रख
और भीतर जाके उस के पांव को उघार और वहीं लेट जा
५ और जो कुछ तुझे करना है वुह सब बतावेगा। और उस ने
उसे कहा कि जो तू मुझे कहती है मैं सब करूंगी॥
६ सो वुह खलिहान को उतर गई और जो कुछ कि उस की
७ सास ने आज्ञा किई थी उस ने किया। और जब बोआज़ खा
पी चुका और उस का मन मगन हुआ तब अन्न के ढेर की एक
अलंग जाके लेट गया तब उस ने हौले हौले आके उस के
८ पांव को उघारा और लेट गई। और ऐसा हुआ कि आधी
रात को उस पुरुष ने डरके करवट लिई और क्या देखता है
९ कि एक स्त्री उस के पांव पास पड़ी है। तब उस ने पूछा कि
तू कौन है और वुह बोली कि मैं तेरी दासी रूत और तू
अपनी दासी पर अपने अंचल फैला क्योंकि तू छुड़ानेवाला
१० कुटुम्ब है। और उस ने कहा कि हे मेरी बेटी तू ईश्वर की
धन्य तू ने आरंभ से अंत को मुझ पर अधिक कृपा किई है
इस कारण कि तू ने तरुणों का पीछा न किया चाहे कंगाल
११ चाहे धनमान हो। और अब हे मेरी बेटी मत डर जो
कुछ तू चाहती है मैं सब तुझ से करूंगा क्योंकि लोगों का सारा
१२ नगर जानता है कि तू धर्म्मी स्त्री है। और अब यह सच
है कि मैं छुड़ानेवाला कुटुम्ब हूं तथापि एक छुड़ानेवाला
१३ कुटुम्ब मुझ से अधिक समीपी है। आज रात ठहर जा और
बिहान को ऐसा होगा कि यदि नाते का व्यवहार पूरा करे
तो भला नाते का व्यवहार करे और यदि वुह नाते का व्यवहार
तुझ से न करे तो परमेश्वर के जीवन सों मैं नाते का व्यवहार
तुझ से करूंगा सो बिहान लों लेटी रह॥
१४ सो वुह बिहान लों उस के पांव पास पड़ी रही और उस्से
पहिले उठी कि एक दूसरे को चीन्ह सके तब उस ने कहा कि

१५ कोई जान्ने न पावे कि कोई स्त्री खलिहान में आई थी। फिर
उस ने यह भी कहा कि अपनी ओढ़नी धर और जब उस ने
धरा तो उस ने छः नपुआ जव उस पर डाल दिये और वुह
नगर को गई॥
१६ और जब वुह अपनी सास पास आई तब वुह बोली हे
बेटी तू कौन और जो कुछ कि उस पुरुष ने उस्से किया था
१७ उस ने सब वर्णन किया। और कहा कि मुझे उस ने यह छः
नपुआ जव दिया क्योंकि उस ने मुझे कहा कि तू अपनी सास
१८ पास छूंछी मत जा। तब उस ने कहा कि हे मेरी बेटी जब लों
इस बात का अंत न देख ले तब लों चुपकी रह क्योंकि जब लों
आज इस बात को समाप्त न कर ले वुह पुरुष चैन न करेगा॥

चौथा पर्व्व।

१ तब बोआज़ फाटक पर चढ़ गया और वहां जा बैठा और
क्या देखता है कि जिस छुड़ानेवाले कुटुम्ब के विषय में बोआज़ ने
कहा था वुह आया जिसे उस ने कहा कि अहो अमुक आइये एक
२ अलंग हो बैठिये सो वुह एक अलंग जा बैठा। तब उस ने
नगर के दस प्राचीन बुलाये और कहा कि यहां बैठिये सो वे
३ बैठ गये। और उस ने उस छुड़ानेवाले कुटुम्ब को कहा कि
नअमी जो मोअब के देश से फिर आई है भूमि का एक टुकड़ा
४ बेचती है जो हमारे भाई इलीमलिक का था। सो यह कहके
मैं ने तुझे चिताने चाहा कि निवासियों के आगे और मेरे
लोगों के प्राचीनों के आगे उसे मोल ले यदि तू छुड़ावे तो
छुड़ा और यदि न छुड़ावे तो मुझे कह जिसतें मैं जानूं क्योंकि
तुझे छोड़ कोई छुड़वैया नहीं और तेरे पीछे मैं हूं तब वुह
५ बोला कि मैं छुड़ाऊंगा। तब बोआज़ ने कहा कि जिस दिन
तू वुह खेत नअमी से मोल लेवे तब रूत मोअबी से भी जो

मृतक की पत्नी है मोल लेना तुझे अवश्य है और मृतक का
६ नाम उस के अधिकार पर ठहरावे। तब उस छुड़ानेवाले
कुटुम्ब ने कहा कि मैं अपने लिये छुड़ा नहीं सक्ता न हो कि मैं
अपना अधिकार बिगाड़ूं सो तू अपने लिये मेरा पद छुड़ा
७ क्योंकि मैं छुड़ा नहीं सक्ता। और सब बात के दृढ़ करने के
लिये अगले समय में पलटने और छुड़ाने के विषय में इसराएल
में यह व्यवहार था कि मनुष्य अपना जूता उतारके अपने
८ परोसी के देता था और इसराएल में यही साक्षी थी। सो
उस छुड़ानेवाले कुटुम्ब ने बोआज़ के कहा कि तू अपने लिये
मोल ले तब उस ने अपना जूता उतारा॥
९ और बोआज़ ने प्राचीनों के और सारे लोगों के कहा कि
तुम आज साक्षी हो कि मैं ने इलीमलिक और किलयून और
१० महलून का सब कुछ नऊमी के हाथ से मोल लिया। और
उस्से अधिक मैं ने महलून की पत्नी मोआबी रूत के अपनी
पत्नी के लिये मोल लिया जिसतें मृतक के नाम के उस के
अधिकार में स्थिर करूं कि मृतक का नाम अपने भाइयों से
और अपने स्थान के फाटक में से मिट न जावे तुम आज के
११ दिन साक्षी हो। तब सारे लोगों ने जो फाटक पर थे और
प्राचीनों ने कहा कि हम साक्षी हैं परमेश्वर इस स्त्री के जो
तेरे घर में आई है राख़िल और लियाह के समान करे जिन
दोनों ने इसराएल के घरानों के बनाया सो तू इफ़राता में
१२ भाग्यवान हो और अपना नाम बैतलहम में प्रचार कर। और
तेरा घर जिसे परमेश्वर इस कन्या के बंश से तुझे देगा फ़ाड़स
के घर के समान होवे जिसे तामर यहूदाह के लिये जनी॥
१३ तब बोआज़ ने रूत के लिया और वुह उस की पत्नी हुई
और जब उस ने उसे ग्रहण किया तब वुह परमेश्वर के अनुग्रह
१४ से गर्भिणी हुई और बेटा जनी। और स्त्रियों ने नऊमी से कहा

कि परमेश्वर धन्य है जिस ने तुझे आज के दिन बिना छुड़ानेवाला
कुटुम्ब न छोड़ा जिसतें उस का नाम इसराएल में प्रसिद्ध
१५ होवे । और वुह तेरे जीवन के बढ़ाने का कारण और तेरे
बुढ़ापे के पालने का कारण होगा क्योंकि तेरी बहू जो तुझ से
प्रीति रखती है जो सात बेटों से तेरे लिये भला है उस के
१६ लिये जनी है । और नऊमी ने उस बालक को लिया और
१७ उसे अपनी गोद में रक्खा और उस की दाई हुई । तब उस
की परोसिन उस का नाम लेकर बोलीं कि नऊमी का बेटा
उत्पन्न हुआ और उन्हों ने उस का नाम ओबिद रक्खा वुह
यस्सी का पिता दाऊद का पिता ॥

१८ सो फ़ाड़स की वंशावली यह है कि फ़ाड़स से हसरून
१९ उत्पन्न हुआ । और हसरून से राम और राम से अम्मिनदब
और अम्मिनदब से नहसून और नहसून से सलम और सलम
से बोआज़ और बोआज़ से ओबिद और ओबिद से यस्सी
और यस्सी से दाऊद उत्पन्न हुआ ॥

समूएल की पहिली पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ और इफ़रायम पहाड़ के रामातयम सूफ़ीम का एक जन
थी वुह सूफ़ एफ़राती के बेटे तुहु का बेटा इलिहू का बेटा
२ यरुहम का बेटा था और उस का नाम एलकाना था। और
उस की दो पत्नियां थीं एक का नाम हन्ना और दूसरी का
फनीन: और फनीन: के बालक थे परन्तु हन्ना के बालक न थे॥
३ और वुह जन बरस बरस अपने नगर से जाके सैला में
सेनाओं के परमेश्वर के आगे सेवा करके बलि चढ़ाता था और
एली के दो बेटे हफ़नी और फ़ीनिहास वहां परमेश्वर के याजक
४ थे। और ऐसा हुआ कि जब एलकाना भेंट चढ़ाता था तब
वुह अपनी पत्नी फनीन: को और उस के सब बेटों और बेटियों
५ को भाग देता था। परन्तु हन्ना को दुहरा भाग दिया करता
था क्योंकि वुह हन्ना से प्रीति रखता था परन्तु परमेश्वर ने
६ उस की कोख बंद कर रखी थी। और उस की सौत उसे
कुढ़ाने के लिये अत्यंत खिझाती थी इस कारण कि परमेश्वर
७ ने उस की कोख बंद कर रक्खी थी। और बरस बरस वुह
परमेश्वर के मंदिर में जाता था उसी रीति से वुह उसे खिझाती
८ थी सो वुह रोया करती और कुछ न खाती थी। तब उस के
पति एलकाना ने उसे कहा कि हे हन्ना तू क्यों बिलाप करती
है और क्यों नहीं खाती है और तेरा मन क्यों शोकित है क्या
तेरे लिये मैं दस बेटों से अच्छा नहीं॥

९ और जब वे सैला में खा पी चुके तो हन्ना उठी और उस
समय एली याजक परमेश्वर के मंदिर के खंभे पास बैठक पर
१० बैठा हुआ था। और उस ने मन के शोक से परमेश्वर की
११ प्रार्थना किई और बिलख बिलख रोई। और उस ने मनौती
मानके कहा कि हे सेनाओं के परमेश्वर यदि तू अपनी दासी
के कष्ट पर दृष्टि करे और मेरी सुधि लेवे और अपनी दासी को
भूल न जावे परन्तु अपनी दासी को पुत्र देवे तो मैं उसे
जीवन भर परमेश्वर के लिये समर्पण करूंगी और उस के सिर
पर छुरा न फिरेगा॥

१२ और यों हुआ कि जब वुह परमेश्वर के आगे प्रार्थना कर
१३ रही थी तब एली उस के मुंह को देख रहा था। अब हन्ना
मन ही मन कह रही थी केवल उस के होंठ हिलते थे परन्तु
उस का शब्द सुना न जाता था इस लिये एली समझा कि
१४ वुह अमल में है। और एली ने उसे कहा कि कब लों तू
१५ मतवाली रहेगी अपनी मदिरा अपने से दूर कर। तब हन्ना ने
उत्तर देके कहा कि नहीं मेरे प्रभु मेरा मन दुःखी है मैं ने मदिरा
अथवा अमल नहीं पीया परन्तु अपने मन को परमेश्वर के
१६ आगे बहा दिया है। आप अपनी दासी को बलीआल की पुत्री
मत जानिये क्योंकि मैं अपने ध्यान और शोक की अधिकाई
१७ से अब लों बोली हूं। तब एली ने उत्तर देके कहा कि कुशल
से जा और इसराएल का ईश्वर तेरी प्रार्थना जो तू ने उस्से
१८ किई पूरी करे। तब उस ने कहा कि तेरी दासी तेरी दृष्टि
में अनुग्रह पावे तब वुह स्त्री चली गई और खाया और फिर
उस का मुंह उदास न हुआ॥

१९ और वे बिहान को तड़के उठे और परमेश्वर के आगे
दण्डवत किई और फिरे और रामात में अपने घर आये और
एलकाना ने अपनी पत्नी हन्ना को ग्रहण किया तब परमेश्वर ने

२० उसे स्मरण किया। और कितने दिन बीते ऐसा हुआ कि
हन्ना गर्भिणी हुई और बेटा जनी और उस का नाम इस कारण
समूएल रक्खा कि मैं ने उसे परमेश्वर से मांगा है॥
२१ और एलकाना अपने समस्त घर समेत चढ़ गया कि बरस
२२ का बलिदान और मनौती परमेश्वर के आगे चढ़ावे। परन्तु
हन्ना ऊपर न गई क्योंकि उस ने अपने पति से कहा कि जब
लों बालक का दूध बढ़ाया न जावे मैं यहीं रहूंगी और तब
उसे ले जाऊंगी जिसतें वुह परमेश्वर के आगे दिखाई देवे और
२३ सदा वहीं रहे। तब उस के पति एलकाना ने उसे कहा कि
जो तुझे भला लगे सो कर तू उस का दूध छुड़ाने लों ठहरी
रह केवल परमेश्वर अपने बचन को स्थिर करे सो वुह स्त्री
ठहरी रही और जब लों उस का दूध न छुड़ाया गया तब लों
अपने बेटे को दूध पिलाया किई॥
२४ और जब उस का दूध बढ़ाया गया तो उसे अपने साथ
ले चली और तीन बैल और आधे मन से ऊपर पिसान और
एक कुप्पा मदिरा अपने साथ लिया और उसे सैला में परमेश्वर
२५ के मंदिर में लाई और बालक छोटा था। तब उन्हों ने एक
२६ बैल को बलि किया और बालक को एली पास लाये। और
बोली कि हे मेरे प्रभु तेरे जीवन सों मैं वही स्त्री हूं जिस ने
तेरे पास परमेश्वर के आगे यहां खड़ी होके प्रार्थना किई थी।
२७ मैं ने इस बालक के लिये प्रार्थना किई थी सो परमेश्वर ने
२८ मेरी बिनती जो मैं ने उस्से किई थी ग्रहण किई। सो इस
लिये मैं ने इसे बिनती से पाके परमेश्वर को फेर दिया जब
लों वुह जीता है परमेश्वर का दिया रहे और उस ने वहां
परमेश्वर को दण्डवत किई॥

दूसरा पर्व्व।

१ तब हन्ना ने प्रार्थना करके कहा कि मेरा मन परमेश्वर से
आनन्द है परमेश्वर से मेरा सींग बढ़ाया गया शत्रुन के साम्ने
बोलने को मेरा मुंह बढ़ गया क्योंकि मैं तेरी मुक्ति में आनन्दित
२ हूं। परमेश्वर के तुल्य कोई पवित्र नहीं क्योंकि तुझे छोड़ कोई
३ नहीं और कोई चटान हमारे ईश्वर के समान नहीं। अति घमंड
की बातें मत कहो अहंकार तुम्हारे मुंह से न निकले क्योंकि
परमेश्वर ज्ञान का सर्वशक्तिमान है और करणी उस्से जांची जाती
४ हैं। बलवंतों के धनुष टूट गये और ठोकर खाये हुओं की
५ कटि दृढ़ता से बंध गई। वे जो तृप्त थे उन्हों ने अपने को
बनी में लगाया है और जो भूखे थे उन्हों ने उस्से हाथ उठाया
यहां लों कि बांझ सात जनी और जिस के बहुत बालक हैं
६ सो दुर्बल हुई। परमेश्वर मारता है और जिलाता है समाधि
७ में उतारता है और उठाता है। परमेश्वर कंगाल करता है और
८ धनी बनाता है घटाता है और बढ़ाता है। वुह कंगाल को
धूल से उठाता है कुअरों में बैठाने के लिये भिखारी को कूड़े
की ढेर से उठाता है और बिभव के सिंहासन का अधिकारी
करता है क्योंकि भूमि के खंभे परमेश्वर के हैं और उस ने
९ जगत को उन पर धरा है। वुह अपने सिद्धों के चरणों की
रक्षा करेगा और दुष्ट अंधियारे में चुप चाप पड़े रहेंगे क्योंकि
१० बल से कोई न जीतेगा। परमेश्वर के बैरी चूर होंगे स्वर्ग से
वुह उन पर गर्ज्जेगा परमेश्वर पृथिवी के अंत का न्याय करेगा
और वुह अपने राजा को बल देगा और अपने अभिषिक्त के
सींग को उभारेगा॥

११ तब एलकाना अपने घर रामात को गया और वुह लड़का
एली याजक के आगे परमेश्वर की सेवा करता रहा॥

१२ अब एली के बेटे जो दुष्ट जन थे परमेश्वर को पहिचानते न
१३ थे। और लोगों से याजकों की यह रीति थी कि जब कोई
बलि चढ़ाता था और जब लों मांस उसना जाता था याजक
का सेवक त्रिशूली मांस की कंटिया हाथ में लेके आता था।
१४ और उसे कड़ाही अथवा बटलोही अथवा हण्डा अथवा हांड़ी
में लगाता था जितना उस कांटे में निकलता था याजक आप
लेता था सो वे सारे इसराएलियों से जो वहां सैला में जाते
१५ थे योंहीं करते थे। चिकनाई जलाने से आगे भी याजक
का सेवक आता था और बलि के चढ़वैये से कहता था कि
भूनने के लिये याजक को मांस देओ क्योंकि वुह तुझ से सिझाया
१६ हुआ मांस न लेगा परन्तु कच्चा। और यदि कोई उसे कहता
कि हम अभी चिकनाई जला लेवें तब जितना तेरा जी चाहे
उतना लेना तब वुह उत्तर देता था कि नहीं तू मुझे अभी
१७ दे नहीं तो मैं छीन लेऊंगा। इस लिये परमेश्वर के आगे उन
तरुणों का महा पाप था क्योंकि लोग परमेश्वर की भेंट से घिन
करते थे॥

१८ परन्तु वुह बालक समूएल सूती अफूद पहिने हुए परमेश्वर
१९ के आगे सेवा करता था। और उस्से अधिक उस की माता
एक छोटा कुरता बनाके बरस बरस जब अपने पति के साथ
२० भेंट चढ़ाने आती थी उस के लिये लाया करती थी। सो एली
ने एलकाना और उस की पत्नी को आशीष देके कहा कि परमेश्वर
इस उधार की संती जो परमेश्वर को उधार दिया गया तुझे
२१ इस स्त्री से बंश देवे और वे अपने स्थान को गये। क्योंकि
हन्ना पर परमेश्वर की कृपा हुई यहां लों कि वुह गर्भिणी हुई
और तीन बेटे और दो बेटियां जनी और वुह बालक समूएल
परमेश्वर के आगे बड़ा हुआ॥

२२ अब एली अति बृद्ध हुआ और उस ने सब कुछ सुना जो

उस के बेटे समस्त इसराएलियों से करते थे और किस रीति
से वे उन स्त्रियों से कुकर्म्म करते थे जो जथा की जथा मंडली
२३ के तंबू के द्वार पर एकट्ठी होती थीं। और उस ने उन्हें कहा
कि तुम यह क्या करते हो क्योंकि मैं तुम्हारी बुराइयां इन
२४ सब लोगों से सुनता हूं। यह अच्छा नहीं हे मेरे बेटो जो
मैं सुनता हूं सो भला नहीं तुम परमेश्वर के लोगों से पाप
२५ कराते हो। यदि एक मनुष्य दूसरे मनुष्य के विरोध में पाप करे
तो न्यायी बिचार करेगा परन्तु यदि कोई परमेश्वर के विरोध
में पाप करे तो उस के लिये कौन बिनती करेगा तिस पर भी
उन्हों ने अपने पिता का कहा न माना क्योंकि परमेश्वर उन्हें
घात किया चाहता था॥

२६ और वुह लड़का समूएल बढ़ता गया और परमेश्वर के और
लोगों के आगे अनुग्रह पाया॥

२७ तब ईश्वर का एक जन एली पास आया और उसे कहा कि
परमेश्वर यों कहता है कि क्या मैं तेरे पिता के घराने पर जब
२८ वुह मिस्र में फ़िरऊन के देश में था प्रगट न हुआ। और क्या
मैं ने उसे इसराएल की समस्त गोष्ठियों से चुन न लिया कि
मेरा याजक होवे और मेरी बेदी पर बलिदान चढ़ावे और
सुगंध जलावे और मेरे आगे अफ़ूद पहिने और होम की सारी
भेंट जो इसराएल के संतान चढ़ाते हैं मैं ने तेरे पिता के
२९ घराने को नहीं दिया। तुम काहे को मेरे बलिदानों को और
मेरी भेंटों को जो मैं ने अपने निवास में आज्ञा किई हैं
लताड़ते हो और तू अपने बेटों को मुझ से अधिक प्रतिष्ठा
देता है कि मेरे लोग इसराएल के संतान की भेंटों से मोटे
३० बनो। सो परमेश्वर इसराएल का ईश्वर कहता है कि मैं ने
निश्चय कहा था कि तेरा घर और तेरे पिता का घर सदा
मेरे आगे चले परन्तु अब परमेश्वर कहता है कि यह मुझ से

दूर होवे क्योंकि जो मुझे प्रतिष्ठा देते हैं मैं उन्हें प्रतिष्ठा
३१ देऊंगा और जो मेरी निन्दा करते हैं सो निन्दित होंगे। देखो
वे दिन आते हैं कि मैं तेरी भुजा और तेरे पिता के घराने
की भुजा काट डालूंगा कि तेरे घर में कोई बूढ़ा न होगा।
३२ और समस्त समय में कि परमेश्वर इसराएल पर भलाई करेगा
तू मंदिर में अपना बैरी देखेगा और तेरे बंश में कभी कोई
३३ बृद्ध न होगा। और तेरा वुह जन जिसे मैं अपनी बेदी में
से काट न डालूंगा तेरी आंखें फोड़ेगा और तेरे मन को शोकित
३४ करेगा और तेरे घर की बढ़ती तरुणाई में मर जावेगी। कि
तेरे दोनों बेटों हफनी और फ़ीनिहास पर यह पड़ेगा तेरे
लिये यह पता है कि एक ही दिन में दोनों के दोनों मर
३५ जावेंगे। और मैं अपने लिये एक बिश्वासमय याजक उठाऊंगा
जो मेरे मन के और मेरे अंतःकरण के समान करेगा और उस के
लिये मैं एक घर स्थिर करूंगा और वुह सदा मेरे अभिषिक्त के
३६ आगे चलेगा। और ऐसा होगा कि हर एक जन जो तेरे घर
में बच रहेगा एक टुकड़ा चांदी और एक एक कौर रोटी के
लिये उस के पीछे फिरेगा और कहेगा कि उन याजकों में से
मुझे एक की सेवा दीजिये कि मैं एक टुकड़ा रोटी खाया करूं॥

तीसरा पर्व्व।

१ और वुह बालक समूएल एली के आगे परमेश्वर की सेवा
करता था और उन दिनों में ईश्वर का बचन बहुमूल्य था कोई
२ प्रगट दर्शन न होता था। और ऐसा हुआ कि जब एली
अपने स्थान में लेटा था और उस की आंखें धुंधली होने लगीं
३ ऐसा कि वुह देख न सक्ता था। जहां ईश्वर की मंजूषा थी
तहां परमेश्वर के मंदिर का दीपक अब लों न बुझा था और
४ समूएल लेट गया था। कि परमेश्वर ने समूएल को पुकारा

५ और उस ने कहा कि मैं यहीं हूं। और एली पास दौड़के
कहा कि मैं यहीं हूं क्योंकि तू ने मुझे पुकारा है तब वुह
बोला कि मैं ने नहीं पुकारा फिर जा लेट रह सो वुह जाके
६ लेट गया। और परमेश्वर ने समूएल को फेर पुकारा और
समूएल उठके एली पास गया और बोला कि मैं यहीं हूं क्योंकि
तू ने मुझे बुलाया और उस ने उत्तर दिया कि हे पुच मैं ने
७ नहीं बुलाया फिर जा लेट रह। और समूएल अब लों परमेश्वर
को न जानता था और न परमेश्वर का बचन उस पर प्रगट
८ हुआ था। तब परमेश्वर ने तीसरे बार समूएल को फिर पुकारा
और वुह उठके एली पास गया और कहा कि मैं यहीं हूं
क्योंकि तू ने मुझे बुलाया सो एली ने बूझा कि इस बालक
९ को परमेश्वर ने पुकारा है। तब एली ने समूएल को कहा
कि जा पड़ रह और यों होगा कि यदि तुझे पुकारे तो कहियो
कि हे परमेश्वर कह क्योंकि तेरा दास सुनता है सो समूएल
१० अपने स्थान पर जाके लेट रहा। और परमेश्वर आके खड़ा
हुआ और आगे की नाईं पुकारा समूएल समूएल तब समूएल
ने उत्तर दिया कि कहिये क्योंकि तेरा दास सुनता है॥
११ तब परमेश्वर ने समूएल से कहा कि देख मैं इसराएल में
ऐसा कार्य्य करूंगा जिसतें सब सुनवैयों के कान झंझना उठेंगे।
१२ मैं उस दिन सब कुछ जो मैं ने एली के घराने के बिषय में
कहा है पूरा करूंगा जब मैं आरंभ करूंगा तब समाप्त भी
१३ करूंगा। क्योंकि मैं ने उसे कहा है कि मैं उस बुराई की संती
जो वुह जानता है उस के घर का न्याय करूंगा इस कारण
कि उस के बेटों ने आप को स्रापित किया है और उस ने
१४ उन्हें न घुरका। सो इस लिये एली के घर के बिषय में मैं ने
किरिया खाई है कि एली के घर का पाप बलिदानों और भेंटों
से कधी पावन न किया जावेगा॥

१५ तब समूएल बिहान लों पड़ा रहा और उस ने ईश्वर के
मंदिर के द्वारों को खोला और समूएल उस दर्शन को एली
१६ पर प्रगट करने से डरा। तब एली ने समूएल को बुलाया और
कहा कि हे मेरे बेटे समूएल तब वुह बोला कि मैं यहीं हूं।
१७ तब उस ने कहा कि वुह क्या बचन है जो उस ने तुझे कहा
है मुझ से मत छिपा यदि तू इस में से कुछ छिपावे जो उस
ने तुझे कहा है तो ईश्वर तुझ से ऐसा ही करे और अधिक।
१८ तब समूएल ने उस्से सारी बातें कहीं और कुछ न छिपाया
तब वुह बोला कि वुह परमेश्वर है जो भला जाने सो करे॥
१९ और समूएल बढ़ा और परमेश्वर उस के साथ था और उस
२० ने उस की कोई बात भूमि पर अकारथ गिरने न दिई। और
दान से लेके बिअरसबः लों समस्त इसराएल जान गये कि
२१ समूएल परमेश्वर का आगमज्ञानी स्थिर हुआ। और परमेश्वर
सैला में फेर प्रगट हुआ क्योंकि परमेश्वर ने अपने को सैला में
समूएल पर अपने बचन के द्वारा से प्रगट किया॥

चौथा पर्व्व।

१ और समूएल की बात सारे इसराएल को पहुंची और
इसराएल फ़िलिसतियों से संग्राम करने को निकले और
अबनअज़र के पास डेरा खड़ा किया और फ़िलिसतियों ने
२ आफ़ीक में डेरा खड़ा किया। और फ़िलिसतियों ने इसराएल
के आगे पांती बांधी और जब संग्राम फैल गया तब इसराएल
फ़िलिसतियों के आगे मारे गये और उन्हों ने सेना में से चार
सहस्र मनुष्य चौगान में मारे॥
३ और जब लोग छावनी में आये तब इसराएल के प्राचीनों
ने कहा कि परमेश्वर ने आज हमें फ़िलिसतियों के आगे क्यों
ध्वस्त किया आओ परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा सैला से अपने

पास ले आवें कि जब वुह हम्में आवे वुह हमें बैरियों के हाथ
४ से बचावे। सो उन्हों ने सैला में लोग भेजे जिसतें वहां से
सेनाओं के परमेश्वर की जो करोबियों के ऊपर बैठा है साक्षी की
मंजूषा को ले आवें और एली के दोनों बेटे हफ़नी और
५ फ़ीनिहास ईश्वर की साक्षी की मंजूषा के पास वहां थे। और
जब परमेश्वर की साक्षी की मंजूषा छावनी में पहुंची तब सारे
इसराएलियों ने बड़े शब्द से ललकारा यहां लों कि भूमि कांप
६ उठी। और जब फ़िलिसतियों ने ललकारने का शब्द सुना
तो बोले कि इबरानियों की छावनी में यह क्या महा शब्द
है फिर उन्हों ने समझा कि परमेश्वर की मंजूषा छावनी में
७ पहुंची। तब फ़िलिसती डरे क्योंकि उन्हों ने कहा कि ईश्वर
छावनी में आया है और बोले कि हाय हम पर क्योंकि आज
८ कल ऐसी बात नहीं हुई। हाय कौन ऐसे बलवंत देवों के
हाथों से हमें बचावेगा यह वुह देव हैं जिन्हों ने मिस्रियों
९ को अरण्य में समस्त मरियों से मारा। हे फ़िलिसतियो
बलवंत होओ और पुरुषार्थ करो जिसतें तुम इबरानियों के
सेवक न बनो जैसा वे तुम्हारे हुए हैं परन्तु पुरुषार्थ करो
और लड़ो॥

१० सो फ़िलिसतियों ने लड़ाई किई और इसराएल मारे गये
और हर एक पुरुष अपने अपने तंबू को भागा और वहां बड़ा
जूझ हुआ क्योंकि तीस सहस्र इसराएल के पैदल मारे गये।
११ और ईश्वर की मंजूषा लिई गई और एली के दोनों बेटे हफ़नी
और फ़ीनिहास जूझ गये॥

१२ और बिनयमीन का एक जन सेना से दौड़ा और कपड़े
फाड़े हुए और सिर पर धूल डाले हुए उसी दिन सैला में
१३ आया। और जब वुह पहुंचा तब देखा एली एक आसन पर
मार्ग के लग बैठके बाट जोह रहा था क्योंकि ईश्वर की

मंजूषा के लिये उस का मन थर्थरा रहा था और जब उस
जन ने नगर में पहुंचके संदेश दिया तब सारे नगर में रोना
१४ पीटना हुआ। और जब एली ने रोने का शब्द सुना तब
उस ने कहा कि इस हेरे के शब्द का कारण क्या और वुह जन
१५ झप आ पहुंचा और एली को कहा। अब एली अट्ठानवे बरस
का बृद्ध था और उस की आंखें धुंधली थीं और वुह देख न
१६ सक्ता था। सो उस जन ने एली से कहा कि मैं सेना से आज
भाग आया हूं और वही हूं जो सेना से निकला हूं तब वुह
१७ बोला हे बेटे क्या समाचार है। तब उस दूत ने उत्तर देके
कहा कि इसराएल फ़िलिसतियों के आगे भाग गये और लोगों
में बड़ा जूझ हुआ और तेरे दोनों बेटे भी हफ़नी और फ़ीनिहास
१८ मर गये हैं और ईश्वर की मंजूषा लिई गई। और यों हुआ
कि जब उस ने एली से ईश्वर की मंजूषा का नाम लिया तब
वुह आसन पर से फाटक के लग पिछले बल गिरा और उस
का गला टूट गया और मर गया क्योंकि वुह बृद्ध और
भारी था और उस ने चालीस बरस इसराएल का न्याय
किया॥

१९ और उस की बहू फ़ीनिहास की पत्नी गर्भिणी थी और उस
के जन्ने का समय समीप था जब उस ने यह संदेश सुना कि
ईश्वर की मंजूषा लिई गई और उस का ससुर और पति मर
गये तब वुह झुक गई और जन पड़ी क्योंकि उस की पीड़ा
२० आन पहुंची। और उस के मरते मरते उन स्त्रियों ने जो
उस पास खड़ी थीं उसे कहा कि मत डर क्योंकि तू बेटा जनी
२१ है परन्तु उस ने उत्तर न दिया न सुरत लगाई। और उस
ने यह कहके उस बालक का नाम इकाबोद रक्खा और बोली
कि बिभव इसराएल में से जाता रहा इस लिये कि परमेश्वर
की मंजूषा लिई गई और उस के ससुर और उस के पति चल

२२ बसे । और वुह बोली कि बिभव इसराएल से जाता रहा
क्योंकि ईश्वर की मंजूषा लिई गई ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ और फ़िलिसती परमेश्वर की मंजूषा को अबनअज़र से लेके
२ अशदूद को आये । और जब फ़िलिसती परमेश्वर की मंजूषा
को ले गये तब उन्हों ने उसे दागून के मंदिर में पहुंचाया
३ और उसे दागून के पास रक्खा । और जब अशदूदी बिहान
को तड़के उठे तो क्या देखते हैं कि दागून परमेश्वर की मंजूषा
के आगे मुंह के बल भूमि पर गिरा है सो उन्हों ने दागून को
४ उठाके उस के स्थान पर फिर रक्खा । फिर जब वे तड़के
बिहान को उठे तब क्या देखते हैं कि दागून परमेश्वर की
मंजूषा के आगे मुंह के बल भूमि पर पड़ा है और दागून का
सिर और दोनों हथेलियां कटी हुईं डेवढ़ी पर पड़ी हैं केवल
५ दागून का धड़ रह गया था । इस लिये दागून के याजक
और वे जो उस के मंदिर में जाते हैं दागून की डेवढ़ी पर
आज लों पांव नहीं धरते ॥

६ परन्तु परमेश्वर का हाथ अशदूदियों पर भारी पड़ा था और
उस ने उन्हें नाश किया और अशदूद को और उस के सिवानों
७ को बवेसी से मारा । और जब अशदूदियों ने यह देखा तब
बोले कि इसराएल के ईश्वर की मंजूषा हमारे साथ न रहेगी
क्योंकि उस का हाथ हम पर और हमारे देव दागून पर पड़ा
८ है । सो उन्हों ने फ़िलिसतियों के सारे प्रधानों को बुला भेजा
और कहा कि हम इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को क्या करें
तब वे बोले कि आओ इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को जात को
ले जावें सो वे इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को वहां ले गये ।
९ और उस के ले जाने के पीछे ऐसा हुआ कि परमेश्वर का हाथ

अत्यंत नाश करने को उस नगर के विरोध में पड़ा और उस
ने उस नगर के लोगों को छोटे से लेके बड़े लों मारा और
उन के गुप्तों में बबेसी का लोहू बहने लगा ॥
१० तब उन्हों ने ईश्वर की मंजूषा अक़रून में पहुंचाई और
अक़रूनी चिल्लाके बोले कि वे इसराएल के ईश्वर की मंजूषा
को इस लिये हम्में लाये हैं कि हमें और हमारे लोगों को
११ घात करें। सो उन्हों ने भेजके फ़िलिसतियों के प्रधानों को
एकट्ठे किया और कहा कि इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को
जहां से वुह आई वहीं फेर भेजो जिसतें वुह हमें और हमारे
लोगों को घात न करे क्योंकि सारे नगर में मारू हुल्लड़ हुआ
१२ और परमेश्वर का हाथ उन पर भारी था। और जो मर न
गये सो बबेसी से रोगी थे और नगर का विलाप स्वर्ग लों
पहुंचा था ॥

छठवां पर्ब्ब ।

१ सो परमेश्वर की मंजूषा सात मास लों फ़िलिसतियों के देश
२ में थी। तब फ़िलिसतियों ने याजकों और दैवज्ञों को बुलाके
पूछा कि परमेश्वर की मंजूषा से क्या करें हमें बताओ कि हम
३ किस रीति से उसे उस के स्थान को भेजें। तब वे बोले कि यदि
तुम इसराएल के ईश्वर की मंजूषा को भेजते हो तो उसे छूछी
मत भेजो परन्तु किसी भांति से पाप की भेंट के साथ उसे
फेर भेजो तब तुम चंगे होओगे और तुम्हें जान पड़ेगा कि
४ उस का हाथ तुम से किस लिये नहीं उठता है। तब
उन्हों ने पूछा कि वुह कौन सा पाप का बलिदान है जो हम
उसे फेर देवें तब वे बोले कि फ़िलिसती प्रधानों की गिनती
के समान पांच सोनोली बबेसी और सोने के पांच मूस क्योंकि
५ तुम सभों पर और तुम्हारे प्रधानों पर एक ही मरी है। सो

तुम अपनी बबेसी की और मूसों की मूर्त्ति बनाओ जो देश को
नष्ट करते हैं और इसराएल के परमेश्वर की महिमा करो क्या
जाने वुह तुम से और तुम्हारे देवते से और तुम्हारे देश से
६ हाथ उठा लेवे । तुम क्यों अपने मन को कठोर करते हो
जैसा कि मिस्रियों ने और फ़िरऊन ने अपने मन को कठोर
किया था जब कि ईश्वर ने आश्चर्य्यित कार्य्य उन में किये सो
७ क्या उन्हों ने उन्हें जाने न दिया और वे बिदा न हुए । सो
अब तुम एक नई गाड़ी बनाओ और दो दुधार गायें जो
जूआ तले न आई हों लेओ और उन गायों को गाड़ी में जोतो
८ और उन के बछड़ों को घर में उन के पीछे रहने देओ । और
परमेश्वर की मंजूषा लेके उस गाड़ी पर रक्खो और सोने के
पात्र जो पाप की भेंट के कारण देते हो एक मंजूषा में धरके
उस की अलंग में रख देओ और उसे छोड़ देओ कि चली
९ जावें । और देखो यदि वुह अपने ही सिवाने से होके बेतशम्स
को चढ़े तब उसी ने हम पर यह बड़ी बिपत्ति भेजी परन्तु
यदि नहीं तो हम जानेंगे कि उस का हाथ हम पर नहीं
पड़ा परन्तु यह बिपत्ति आकस्मात् हुई ॥
१० सो लोगों ने वैसा ही किया और दो दुधार गायें लिईं और
उन्हें गाड़ी में जोता और उन के बछड़ों को घर में बंद
११ किया । और परमेश्वर की मंजूषा और सोने के मूसों को और
१२ बबेसियों को मंजूषा में रखके गाड़ी पर धरा । सो उन गायों
ने बेतशम्स का सीधा मार्ग लिया और राजमार्ग में बंबाती
चलीं और दहिने अथवा बायें हाथ न मुड़ीं और फ़िलिसतियों
के प्रधान उन के पीछे पीछे बेतशम्स के सिवाने लों गये ।
१३ और तराई में बेतशम्सी गोहूं लवते थे और जब उन्हों ने
अपनी आंखें ऊपर किईं तब मंजूषा को देखा और देखते ही
१४ आनन्द हुए । और गाड़ी बेतशम्सी यहूशूअ के खेत में और

जहां बड़ा पत्थर था आके खड़ी हुई सो उन्हों ने गाड़ी की
लकड़ियों को चीरा और गायों को परमेश्वर के लिये बलिदान
१५ की भेंट चढ़ाई। और लावियों ने परमेश्वर की मंजूषा को
उस मंजूषा सहित जो उस के साथ थी जिस में सोने के गहने
थे नीचे उतारा और उसे बड़े पत्थर पर रक्खा और बेतशम्स
के लोगों ने उसी दिन परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंटें और
१६ बलि चढ़ाये। और जब फ़िलिसतियों के पांच प्रधानों ने यह
देखा तो वे उसी दिन अक़रून को फिर गये॥
१७ और सोनोली बवेसी जिन्हें फ़िलिसतियों ने पाप की भेंट के
लिये परमेश्वर को चढ़ाया ये हैं अशदूद के लिये एक अज़्ज़ः
के लिये एक अस्क़लून के लिये एक जात के लिये एक और
१८ अक़रून के लिये एक। और सोने के मूस फ़िलिसतियों के सारे
नगरों की गिनती के समान थे जो पांच प्रधानों के थे बाड़े के
नगर और बाहर बाहर के गांओं अबील के बड़े पत्थर लों
जिस पर उन्हों ने परमेश्वर की मंजूषा को रक्खा जो आज के
दिन लों बेतशम्सी यहुशूअ के चौगान में है॥
१९ और परमेश्वर ने बेतशम्स के लोगों को मारा क्योंकि उन्हों
ने परमेश्वर की मंजूषा के भीतर देखा अर्थात् पचास सहस्र
और सत्तर मनुष्य लोगों में से मारे गये और लोगों ने बिलाप किया
क्योंकि परमेश्वर ने लोगों में से बहुतों को बधन किया था।
२० सो बेतशम्स के लोग बोले कि किस की सामर्थ्य है कि इस
पवित्र परमेश्वर ईश्वर के आगे खड़ा होवे और हम्में से वुह
२१ किस के पास चढ़ जावेगा। तब उन्हों ने क़रयतअरीम के
निवासियों के पास यह कहके दूत भेजे कि फ़िलसती परमेश्वर
की मंजूषा को फेर लाये हैं तुम उसे उतारके अपने पास ले
जाओ॥

सातवां पर्ब्ब।

१ तब क़रयतअ़रीम के लोग आये और परमेश्वर की मंजूषा
को ले जाके अबिनदब के घर में पहाड़ी पर रक्खा और उस के
बेटे इलिअ़ज़र को पवित्र किया कि परमेश्वर की मंजूषा की
रक्षा करे॥
२ और यों हुआ कि मंजूषा क़रयतअ़रीम में बहुत दिन लों
रही क्योंकि बीस बरस बीत गये थे तब इसराएल के सारे
३ घरानों ने परमेश्वर के लिये बिलाप किया। और समूएल
इसराएल के सारे घराने को कहके बोला कि यदि तुम अपने
सारे मन से परमेश्वर की ओर फिरोगे तो उन उपरी देवतों को
और इसतारात को अपने में से निकाल फेंको और परमेश्वर के
लिये मन को सिद्ध करो और केवल उस की सेवा करो और
४ वुह तुम्हें फ़िलिसतियों के हाथ से छुड़ावेगा। तब इसराएल
के संतान ने बअ़लीम और इसतारात को दूर किया और केवल
५ परमेश्वर की सेवा करने लगे। तब समूएल ने कहा कि सारे
इसराएल मिसफ़ः में एकट्ठे होवें और मैं तुम्हारे लिये परमेश्वर
६ से प्रार्थना करूंगा। सो वे मिसफ़ः में एकट्ठे हुए और पानी
खींचा और परमेश्वर के आगे उंड़ेला और उस दिन ब्रत रक्खा
और वहां बोले कि हम परमेश्वर के अपराधी हैं और समूएल
मिसफ़ः में इसराएल के संतान का न्यायी हुआ॥
७ और जब फ़िलिसतियों ने सुना कि इसराएल के संतान
मिसफ़ः में एकट्ठे हुए तब उन के प्रधान इसराएल के साम्ने चढ़
आये सो इसराएल के संतान यह सुनके फ़िलिसतियों से डर गये।
८ और इसराएल के संतान ने समूएल को कहा कि हमारे लिये
परमेश्वर हमारे ईश्वर से प्रार्थना करने में थम मत जा जिसतें
९ वुह हमें फ़िलिसतियों के हाथ से बचावे। तब समूएल ने

एक दूध पीउआ मेम्ना लिया और उसे परमेश्वर के लिये
बलिदान की भेंट चढ़ाया और समूएल ने इसराएल के लिये
१० परमेश्वर की प्रार्थना किई और परमेश्वर ने उसे उत्तर दिया। और
समूएल बलिदान की भेंट चढ़ा रहा था कि फ़िलिसती संग्राम
के लिये इसराएल के सन्मुख आये परन्तु परमेश्वर उस दिन
फ़िलिसतियों पर महा गर्ज्जन से गर्ज्जा और उन्हें हरा दिया
११ और वे इसराएल के आगे मारे गये। और इसराएली लोगों ने
मिसफ़: से निकलके फ़िलिसतियों को खदेड़ा और उन्हें बेतकर
१२ के नीचे लों उन्हें मारते चले गये। तब समूएल ने एक पत्थर
लेके मिसफ़: और शेन के मध्य में खड़ा किया और उस का
नाम यह कहके एबनअज़र रक्खा कि परमेश्वर ने यहां लों
१३ हमारी सहाय किई। सो फ़िलिसती बश में हुए और वे
इसराएल के सिवानों में फिर न आये और परमेश्वर का हाथ
१४ समूएल के जीवन भर फ़िलिसतियों के विरुद्ध था। और वे
बस्तियां जो फ़िलिसतियों ने इसराएल से ले लिईं थीं इसराएल
को फेरी गईं अक़रून से लेके जात लों और उन के सिवाने
को इसराएल ने फ़िलिसतियों के हाथ से छुड़ाया और इसराएलियों
में और अमूरियों में मेल हुआ॥

१५ और समूएल अपने जीवन भर इसराएल का न्यायी रहा।
१६ और बरस बरस वुह बेतएल का और जिलजाल का और मिसफ़:
का फेरा करता था और उन समस्त स्थानों में इसराएल का
१७ न्याय करता था। और रामात को फिर आता था क्योंकि वहां
उस का घर था और इसराएल का न्याय वहां करता था और
वहां उस ने परमेश्वर के लिये बेदी बनाई॥

आठवां पर्व्व।

१ और जब समूएल बृद्ध हुआ तब ऐसा हुआ कि उस ने

२ अपने बेटों को इसराएल पर न्यायी किया। अब उस के
पहिलौठे का नाम यूएल था और उस के दूसरे का नाम
३ अबियाह वे बिअरसब: में न्यायी थे। पर उस के बेटे उस
की चाल पर न चलते थे परन्तु लोभ करके घूस लेने लगे और
न्याय बिरुद्ध करने लगे॥
४ तब इसराएल के सारे प्राचीनों ने आप को एकट्ठे किया
५ और रामात में समूएल पास आये। और उसे कहा कि देख
तू वृद्ध है और तेरे बेटे तेरी चाल पर नहीं चलते अब
समस्त जातिगणों की नाईं हमारा न्याय करने के लिये एक
राजा ठहरा॥
६ परन्तु जब उन्हों ने उसे कहा कि हमारे न्याय करने के
लिये हमें एक राजा दे इस बात से समूएल उदास हुआ और
७ समूएल ने परमेश्वर से प्रार्थना किई। और परमेश्वर ने समूएल
को कहा कि लोगों के शब्द पर जो वे तुझे कहें कान धर
क्योंकि उन्हों ने कुछ तुझे त्याग नहीं किया परन्तु मुझे त्याग
८ किया जिसतें मैं उन पर राज्य न करूं। जब से कि मैं उन्हें
मिस्र से निकाल लाया आज लों उन सब कार्य्यों के समान
उन्हों ने किया जिन से मुझे छोड़ दिया और आन आन देवों
९ की सेवा किई वैसा ही वे तुझ से भी करते हैं। सो अब उन
के शब्द पर कान धर तथापि अति दृढ़ता से उन के बिरुद्ध
उन्हें कह दे और उन्हें उस राजा का व्यवहार बता जो उन पर
राज्य करेगा॥
१० और समूएल ने उन लोगों को जो उससे राजा के खोजी
११ थे परमेश्वर की सारी बातें कहीं। और उस ने कहा कि उस
राजा के जो तुम पर राज्य करेगा ये व्यवहार होंगे कि वुह
तुम्हारे बेटों को लेके अपने लिये अपने रथों के और अपने
घोड़चढ़ों के लिये ठहरावेगा और वे उस के रथों के आगे

१२ दौड़ेंगे। और अपने लिये सहस्र सहस्र के प्रधान और पचास
पचास के प्रधान ठहरावेगा और अपनी भूमि उन से जोताके
बोआवेगा और लवावेगा और अपने संग्राम के और अपने रथों
१३ के हथियार बनवावेगा। और तुम्हारी बेटियों से अपने लिये
मिठाई बनवावेगा और भोजन बनवावेगा और रोटी पोवावेगा।
१४ और वुह तुम्हारे खेतों को और तुम्हारे दाख के और तुम्हारी
जलपाई की बारियों को जो अच्छी से अच्छी होंगी लेके अपने
१५ सेवकों को देगा। और तुम्हारे अन्न और तुम्हारे दाख की बारियों
का दसवां अंश लेके अपने नपुंसकों को और अपने सेवकों को देगा।
१६ और वुह तुम्हारे दासों और तुम्हारी दासियों को और तुम्हारे
सुंदर से सुंदर युवा मनुष्यों को और तुम्हारे गदहों को लेके
१७ अपने काम में लगावेगा। तुम्हारी भेड़ों का दसवां अंश लेगा
१८ और तुम उस के सेवक होओगे। और तब तुम अपने राजा
के कारण जिसे तुम ने चुना है दोहाई देओगे और उस दिन
परमेश्वर तुम्हारी न सुनेगा॥

१९ तिस पर भी उन लोगों ने समूएल की बात न मानी पर
२० बोले कि नहीं परन्तु हम एक राजा लेंगे। जिसतें हम भी
समस्त जातिगणों के समान होवें और जिसतें हमारा राजा
हमारे लिये न्याय करे और हमारे आगे आगे चले और हमारे
२१ लिये संग्राम करे। तब समूएल ने मंडली की सारी बातें सुनीं
२२ और परमेश्वर के श्रवण लों पहुंचाईं। और परमेश्वर ने समूएल
को कहा कि तू उन का शब्द सुन और उन के लिये एक राजा
ठहरा तब समूएल ने इसराएल के मनुष्यों से कहा कि हर
एक अपनी अपनी बस्ती को जावे॥

नवां पर्व्व।

१ अब बिनयमीन का एक जन था जो अफीह के बेटे बकूरत

के बेटे सरूर के बेटे अबिएल का बेटा जिस का नाम क़ीस
२ था वुह बिनयमीनी और महाबली था। और उस के एक बेटा
था जिस का नाम साऊल जो सुंदर और चुना हुआ तरुण था
और इसराएल के संतानों में उस्से कोई अधिक सुंदर न था
सारे लोगों में कांधे से लेके ऊपर लों ऊंचा था॥
३ और साऊल के पिता के गदहे खो गये थे सो क़ीस ने
अपने बेटे साऊल को कहा कि सेवकों में से एक को अपने
४ साथ ले और उठ जा गदहों को ढूंढ़। सो वुह इफ़रायम
पहाड़ में से और सलीसः के देश में होके निकला परन्तु न
पाया तब वे सअलीम के देश में से निकले परन्तु वहां भी
न पाया और वुह बिनयमीन के देश में होके गया परन्तु न
५ पाया। जब वे सूफ़ के देश में आये तब साऊल ने अपने
साथ के सेवक को कहा कि आ फिर चलें ऐसा न हो कि मेरा
६ पिता गदहों को छोड़ हमारे लिये चिंता करे। तब उस ने
उसे कहा कि देख इस नगर में ईश्वर का एक जन है जो
प्रतिष्ठित है जो कुछ वुह कहता है सो निश्चय होता है आ
उधर जावें क्या जाने कि जो मार्ग हमें जाना उचित है वुह
७ हमें बता सके। तब साऊल ने अपने सेवक से कहा कि देख
यदि हम जावें तो हम उस जन के लिये क्या ले जावें क्योंकि
हमारे पात्रों में रोटी चुक गई और ईश्वर के जन के लिये भेंट
८ नहीं हमारे पास क्या है। पर सेवक ने साऊल को उत्तर देके
कहा कि देख पांच शेकल चांदी मुझ पास है सो मैं ईश्वर के
९ जन को देऊंगा कि हमें मार्ग बतावे। अगले समय में जब
मनुष्य परमेश्वर से प्रश्न करने जाता था तब यह कहता था
कि आओ दर्शी पास जावें क्योंकि आगमज्ञानी आगे दर्शी
१० कहाता था। तब साऊल ने अपने सेवक से कहा कि तू ने अच्छा
कहा आ चलें सो वे नगर में आये जहां ईश्वर का वुह जन था॥

११ जब वे उस नगर की चढ़ाई पर चढ़ते थे तब उन्हें कई कन्या
मिलीं जो पानी भरने जाती थीं और उन्हों ने उन से पूछा कि दर्शी
१२ यहां है। तब उन्हों ने उन्हें उत्तर दिया और कहा कि हां देख
वुह तुम्हारे आगे है अब शीघ्र करो क्योंकि वुह आज नगर में
आया है क्योंकि आज ऊंचे स्थानों में लोगों का बलिदान है।
१३ जब तुम नगर में पहुंचो तब तुम उस्से आगे कि वुह ऊंचे
स्थान में खाने जावे उसे पाओगे क्योंकि जब लों वुह न जावे
तब लों लोग न खावेंगे क्योंकि वुह बलि को आशीष देता है
उस के पीछे नेउंतहरी खाते हैं सो अब तुम चढ़ो क्योंकि आज
१४ तुम उसे पाओगे। सो वे नगर को चढ़े और नगर में जाते
ही क्या देखते हैं कि समूएल उन के आगे आया कि ऊंचे स्थान
पर चढ़ जावे॥

१५ और परमेश्वर ने साऊल के आने से एक दिन आगे समूएल
१६ के कान में प्रगट कह दिया था। कि कल इसी समय में एक
जन को बिनयमीन के देश से तुझ पास भेजूंगा और तू मेरे
इसराएल लोगों पर उसे प्रधान अभिषेक करियो जिसतें वुह
मेरे लोगों को फ़िलिसतियों के हाथ से छुड़ावे क्योंकि मैं ने
अपने लोगों पर दृष्टि किई क्योंकि उन का चिल्लाना मेरे पास
१७ पहुंचा। सो जब समूएल ने साऊल को देखा तब परमेश्वर ने
उसे उत्तर दिया कि देख वही जन जिस के कारण मैं ने तुझे
कहा था यही मेरे लोगों पर राज्य करेगा॥

१८ तब साऊल समूएल के पास फाटक पर आके बोला कि कृपा
१९ करके हमें बताइये कि दर्शी का घर कहां है। तब समूएल
ने साऊल को उत्तर देके कहा कि दर्शी मैं ही हूं मेरे आगे
आगे ऊंचे स्थान पर चढ़ क्योंकि तुम आज मेरे साथ भोजन
करोगे और कल मैं तुझे बिदा करूंगा और जो कुछ तेरे मन
२० में है तुझे बताऊंगा। और तेरे गदहे जो आज तीन दिन से

खो गये हैं उन की ओर से निश्चिंत रह क्योंकि वे मिल गये
और इसराएल की सारी इच्छा किस पर है क्या तेरे और तेरे
२१ पिता के समस्त घराने पर नहीं। सो साऊल ने उत्तर देके
कहा कि मैं विनयमीनी इसराएल की गोष्ठियों में से सब से
छोटा नहीं और क्या मेरा घराना विनयमीन की गोष्ठी के सारे
घरानों में छोटे से छोटा नहीं सो इस वचन के समान तू मुझ
से क्यों बोलता है॥

२२ और समूएल साऊल को और उस के सेवक को लेके उन्हें
कोठरी में लाया और उन्हें नेउंतहरियों में जो बुलाये गये थे
२३ जो जन तीस एक थे सब से श्रेष्ठ स्थान में बैठाया। तब
समूएल ने रसोईकारक को कहा कि वुह भाग जो मैं ने तुझे
२४ रख छोड़ने को कहा था ले आ। और रसोईकारक ने एक
कांधे को और जो उस पर था उठा लिया और साऊल के आगे
रखके कहा कि देख यह जो धरा है अपने आगे रखके खा
क्योंकि मैं ने जब से कि लोगों को नेउंता किया अब लों तेरे
लिये रख छोड़ा था सो साऊल ने उस दिन समूएल के साथ
भोजन किया॥

२५ और जब वे ऊंचे स्थान से नगर में उतर आये तब उस
२६ ने साऊल से छत पर बात चीत किई। और वे तड़के उठे
और बिहान होते ही समूएल ने साऊल को फिर छत पर बुलाके
कहा कि उठ मैं तुझे बिदा करूं सो साऊल उठा और वे दोनों
वुह और समूएल बाहर चले गये॥

२७ जब वे नगर के निकास पर जाते थे तब समूएल ने साऊल
को कहा कि अपने सेवक को कह कि हम से आगे बढ़े और
वुह बढ़ गया पर तू तनिक खड़ा रह जिसतें ईश्वर का वचन
तुझे बताऊं॥

दसवां पर्व्व।

१ तब समूएल ने एक कुप्पी तेल लिया और उस के सिर पर
ढाला और उसे चूमा और कहा कि यह इस कारण नहीं कि
परमेश्वर ने तुझे अपने अधिकार के ऊपर प्रधान करके अभिषेक
२ किया। जब तू मेरे पास से आज चला जायगा तब दो जन
को राख़िल की समाधि के पास बिनयमीन के सिवाने के जिल्ज़ह
में पाओगे और वे तुझे कहेंगे कि जिन गदहों को तू ढूंढ़ने गया
था सो मिले और अब तेरा पिता गदहों की चिंता छोड़कर
तेरे लिये कुढ़ता है और कहता है कि मैं अपने बेटे के लिये
३ क्या करूं। तब तू वहां से आगे बढ़ेगा और तबूर के चौगान
को पहुंचेगा और वहां तुझे तीन जन मिलेंगे जो बैतएल के
ईश्वर कने चले जाते होंगे एक तो बकरी के तीन मेम्ना लिये
हुए और दूसरा तीन रोटी और तीसरा एक कुप्पा दाखरस।
४ और वे तेरा कुशल पूछेंगे और दो रोटी तुझे देंगे और तू
५ उन के हाथ से ले लीजियो। उस के पीछे तू ईश्वर के पहाड़
पास जहां फ़िलिस्तियों की चौकी है पहुंचेगा और जब नगर
में प्रवेश करेगा ऐसा होगा कि तू आगमज्ञानियों की एक जथा
पावेगा जो ऊंचे स्थान से उतरी होगी जिन के आगे आगे
मुरचंग और ढोलक और बांसुरी और बीणा होंगे और वे भविष्य
६ कहेंगे। तब परमेश्वर का आत्मा तुझ पर उतरेगा और तू भी
उन के साथ भविष्य कहेगा और और ही एक मनुष्य हो
७ जावेगा। और यों होगा कि जब तू ये चिन्ह पावे फिर जैसा
संयोग होवे वैसा कीजियो क्योंकि ईश्वर तेरे साथ है।
८ और मेरे आगे तू जिलजाल को उतरियो और देख मैं
तुझ पास उतरूंगा जिसतें बलिदान की भेंट और कुशल
की भेंट बलि करूं सो तू सात दिन लों वहीं ठहरियो जब

लों मैं तुझ पास आऊं और तुझे बताऊं कि तू क्या क्या
करेगा ॥
६ और ऐसा हुआ कि ज्योंहीं उस ने समूएल से जाने को पीठ
फेरी त्योंहीं ईश्वर ने उसे दूसरा मन दिया और वे सब लक्षण
१० उस ने उसी दिन पाये। और जब वे उधर पहाड़ को आये
तो क्या देखते हैं कि आगमज्ञानियों की एक जथा उन्हें मिली
और ईश्वर का आत्मा उस पर उतरा और वुह उन में भविष्य
११ कहने लगा। और यों हुआ कि जब उस के अगले जान
पहिचानों ने यह देखा कि वुह आगमज्ञानियों के मध्य भविष्य
कहता है तब लोगों ने आपुस में कहा कि क़ीस के बेटे को
१२ क्या हुआ क्या साऊल भी आगमज्ञानियों में है। तब एक ने
उन में से उत्तर दिया और कहा कि उन का पिता कौन है
तब हो से यह कहावत चली कि क्या साऊल भी आगमज्ञानियों
१३ में है। और जब वुह आगम कह चुका तब ऊंचे स्थान में
आया ॥
१४ और साऊल के चचा ने उसे और उस के सेवक को कहा
कि तुम कहां गये थे और वुह बोला कि गदहे ढूंढ़ने और
१५ जब उन्हें कहीं न पाया तो समूएल पास गये। तब साऊल
का चचा बोला कि मुझे बता कि समूएल ने तुम्हें क्या कहा।
१६ और साऊल ने अपने चचा से कहा कि उस ने हमें खोलके
बताया कि गदहे मिल गये पर राज्य का समाचार जो समूएल
ने उसे कहा था उसे न बताया ॥
१७ और समूएल ने मिसफ़ः में परमेश्वर के आगे लोगों को
१८ एकट्ठे बुलाया। और इसराएल के संतान को कहा कि परमेश्वर
इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं इसराएल को मिस्र से
निकाल लाया और तुम्हें मिस्रियों के और सारे राजाओं के
१९ हाथ से और जो तुम्हें सताते थे उन से छुड़ाया। और तुम

ने आजके दिन अपने ईश्वर को त्याग किया जिस ने तुम्हें
तुम्हारे सारे बैरियों और तुम्हारी बिपतों से बचाया और तुम
ने उसे कहा कि हम पर एक राजा ठहरा सो अब अपनी
अपनी गोष्ठी के और सहस्र सहस्र के समान परमेश्वर के आगे
आओ ॥
२० और जब समूएल ने इसराएल की सारी गोष्ठियों को एकट्ठी
२१ किया तब बिनयमीन की गोष्ठी लिई गई। और जब वुह
बिनयमीन की गोष्ठी को उन के घरानों के समान पास लाया
तब मत्री का घराना चुना गया और क़ीस का बेटा साऊल
चुना गया और जब उन्हों ने उसे ढूंढ़ा तो न पाया ॥
२२ इस लिये उन्हों ने परमेश्वर से पूछा कि वुह जन फिर यहां
आवेगा कि नहीं और परमेश्वर ने उत्तर दिया कि देखो वुह
२३ सामग्री के बीच छिप रहा है। तब वे दौड़े और उसे वहां से
लाये और जब वुह लोगों में खड़ा हुआ तब अपने कांधे से
लेके ऊपर लों सभों से अधिक ऊंचा था ॥
२४ और समूएल ने समस्त लोगों को कहा कि जिसे परमेश्वर
ने चुना है तुम उसे देखते हो क्योंकि उस के समान सारे
लोगों में कोई नहीं तब समस्त लोग ललकारके बोले कि राजा
२५ जीता रहे। तब समूएल ने लोगों को राज्य की रीति बताई और
पुस्तक में लिखके परमेश्वर के आगे रक्खा और समूएल ने हर
एक मनुष्य को अपने अपने घर भेजा ॥
२६ और साऊल भी अपने घर जिबिअत को गया और उस के
साथ लोगों की एक जथा जिन के मन को ईश्वर ने फेर दिया
२७ था हो लिई। परन्तु दुष्ट जन बोले कि यह जन हमें क्योंकर
बचावेगा और उस की निन्दा किई और उस के पास भेंट न
लाये पर वुह अनसुने के समान हो रहा ॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ तब अम्मूनी नाहस चढ़ा और यबीसजिलिअद के साम्ने
छावनी किई तब यबीस के सब लोगों ने नाहस से कहा कि
२ हम से बाचा बांध और हम तेरी सेवा करेंगे। और अम्मूनी
नाहस ने उन्हें उत्तर दिया कि इस बात पर मैं तुझ से बाचा
बांधूंगा कि मैं तुम सभों की हर एक दहिनी आंख निकाल डालूं
और समस्त इसराएल के अपमान के लिये धरूं॥
३ तब यबीस के प्राचीनों ने उसे कहा कि हमें सात दिन
की छुट्टी दे जिसतें हम इसराएल के सारे सिवाने में दूत
भेजें और यदि कोई हमारा उद्धारक न ठहरे तब हम तुझ
४ पास निकलेंगे। तब साऊल के दूत जिबिअः में पहुंचे और लोगों
के कान लों यह संदेश पहुंचाया तब सब लोगों ने अपना शब्द
५ उठाके बिलाप किया। और देखो कि साऊल खेत से ढोर के
पीछे पीछे चला आता था और साऊल ने कहा कि क्या है कि
लोग बिलाप करते हैं और उन्हों ने यबीसियों का संदेश उसे
६ कह सुनाया। तब इन संदेशों को सुनते ही साऊल पर ईश्वर
७ का आत्मा पड़ा और उस का क्रोध अत्यंत भड़का। और उस
ने एक जोड़ा बैल लिया और उन्हें टुकड़ा टुकड़ा किया और
उन्हें दूतों के हाथ इसराएल के सारे सिवाने में यह कहके
भेजा कि जो कोई साऊल और समूएल के पीछे पीछे न निकल
आवेगा उस के बैलों की यही दशा होगी तब लोगों पर परमेश्वर
८ का डर पड़ा और वे एक जन की नाईं निकल आये। और
उस ने उन्हें बज़क़ में गिना और इसराएल के संतान तीन लाख
थे और यहूदाह के मनुष्य तीस सहस्र॥
९ और उन्हों ने उन दूतों को कहा कि तुम यबीसजिलिअद
के लोगों को कहो कि कल सूर्य्य की तपन होते ही तुम

छुटकारा पाओगे और दूतों ने आके यबीस के मनुष्यों से कहा
१० और वे आनन्द हुए। तब यबीस के मनुष्यों ने कहा कि कल
तुम पास हम निकलेंगे और जो भला जानो सो हमारे बिषय
में कीजियो॥

११ और बिहान को साऊल ने लोगों की तीन जथा किई और
तड़के के पहर सेना के मध्य में आया और दिन के घाम लों
अम्मूनियों को मारा और ऐसा हुआ कि वे जो रह गये सो
छिन्न भिन्न हो गये यहां लों कि दो एकट्ठे न थे॥

१२ तब लोग समूएल से बोले कि किस ने कहा है कि क्या
साऊल हम पर राज्य करेगा उन लोगों को लाओ जिसतें हम
१३ उन्हें बधन करें। तब साऊल बोला कि आज के दिन कोई
मनुष्य मारा न जावेगा क्योंकि आज के दिन परमेश्वर ने
इसराएल को बचाया॥

१४ तब समूएल ने लोगों को कहा कि आओ जिलजाल को
१५ जावें और राज्य को दोहरावें। तब सारे लोग जिलजाल को
गये और वहां जिलजाल में परमेश्वर के आगे उन्हों ने साऊल
को राजा किया और वहां उन्हों ने कुशल की भेंटों को परमेश्वर
के आगे बलि किया और वहां साऊल ने और सारे इसराएल
के समस्त जनों ने बड़ा आनन्द किया॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ तब समूएल ने सारे इसराएल से कहा कि देखो जो कुछ
तुम ने मुझे कहा मैं ने तुम्हारी हर एक बात मानी और एक
२ को तुम पर राजा किया। और अब देखो राजा तुम्हारे आगे
आगे जाता है और मैं बृद्ध और मेरा बाल पक गया और
देखो मेरे बेटे तुम्हारे साथ और मैं लड़काई से आज लों
३ तुम्हारे आगे आगे चला। देखो मैं यहां हूं सो आओ परमेश्वर

के और उस के अभिषिक्त के आगे मुझ पर साक्षी देओ कि मैं
ने किस का बैल लिया अथवा किस का गदहा मैं ने रख छोड़ा अथवा
मैं ने किसे छला अथवा किस पर मैं ने अंधेर किया अथवा किस
के हाथ से मैं ने घूस लिया कि उस्से अपनी आंखें मूंदूं और
४ मैं तुम्हें फेर देऊंगा । और वे बोले कि तू ने हमें न छला न
हम पर अंधेर किया और न तू ने किसी के हाथ से कुछ
५ लिया । तब उस ने उन्हें कहा कि परमेश्वर तुम पर साक्षी
और उस का अभिषिक्त आज साक्षी है कि मेरे हाथ में तुम ने
कुछ न पाया तब वे बोले कि वुह साक्षी है ॥
६ फिर समूएल ने लोगों से कहा कि परमेश्वर ने मूसा
और हारून को बढ़ाया और तुम्हारे पितरों को मिस्र के देश
७ से ऊपर निकाल लाया । सो अब ठहर जाओ जिसतें मैं परमेश्वर
के आगे उन सब भलाइयों के कारण जो परमेश्वर ने तुम से
८ और तुम्हारे पितरों के साथ किईं तुम से विचार करूं । जब
यअ़कूब मिस्र में आया और तुम्हारे पितर परमेश्वर के आगे
चिल्लाये तब परमेश्वर ने मूसा और हारून को बुलाया और वे
तुम्हारे पितरों को मिस्र से निकाल लाये और उन्हें इस स्थान में
९ बसाया । और जब वे परमेश्वर अपने ईश्वर को भूल गये तब
उस ने उन्हें हसूर की सेना के प्रधान सीसरा के हाथ और
फ़िलिस्तियों के हाथ और मोअब के राजा के हाथ बेचा और
१० वे उन से लड़े । फिर वे परमेश्वर के आगे चिल्लाके बोले कि
हम ने पाप किया क्योंकि हम ने परमेश्वर को त्याग किया
और बअ़लीम और इसतारात की सेवा किई परन्तु अब हमारे
११ बैरियों के हाथ से हमें छुड़ा और हम तेरी सेवा करेंगे । तब
परमेश्वर ने यरुब्बअ़ल और बिदान और इफ़ताह और समूएल
को भेजा और तुम्हें तुम्हारे चारों ओर के बैरियों के हाथ से
१२ बचाया और तुम ने चैन पाया । और जब तुम ने देखा कि

अम्मून के संतान का राजा नाहस तुम पर चढ़ आया तब
तुम ने मुझे कहा कि नहीं परन्तु राजा हम पर राज्य करे जब
१३ कि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर तुम्हारा राजा था। सो अब देखो
तुम्हारा राजा जिसे तुम ने चुन लिया जिसे तुम ने मांगा और
१४ देखो परमेश्वर ने तुम पर एक राजा ठहराया। यदि तुम
परमेश्वर से डरते रहोगे और उस की सेवा करोगे और उस का
शब्द मानोगे और परमेश्वर के सन्मुख से फिर न जाओगे तो
तुम और तुम्हारा राजा भी जो तुम पर राज्य करता है परमेश्वर
१५ अपने ईश्वर के पीछे पीछे चलोगे। पर यदि तुम परमेश्वर का
शब्द न मानोगे और परमेश्वर की आज्ञाओं से फिर जाओगे तो
परमेश्वर का हाथ तुम्हारे विरुद्ध होगा जैसा कि तुम्हारे पितरों
१६ पर था। सो अब ठहर जाओ और देखो वुह बड़ा काम जो
१७ परमेश्वर तुम्हारी आंखों के साम्ने करेगा। क्या आज गोहूं की
लवनी नहीं मैं परमेश्वर से प्रार्थना करता हूं और वुह गर्ज्जन
और मेंह भेजेगा और तुम बूझो और देखो कि राजा के मांगने
से तुम्हारी दुष्टता बड़ी है जो तुम ने परमेश्वर की दृष्टि में
किई ॥

१८ सो समूएल ने परमेश्वर से प्रार्थना किई और परमेश्वर ने उसी
दिन गर्ज्जन और मेंह भेजा तब सारे लोग परमेश्वर से और
१९ समूएल से निपट डर गये। और सारे लोगों ने समूएल से कहा
कि अपने दासों के लिये परमेश्वर अपने ईश्वर की प्रार्थना कीजिये
कि हम न मरें क्योंकि हम ने अपने सारे पापों से यह बुराई
२० अधिक किई कि अपने लिये एक राजा मांगा। तब समूएल
ने लोगों को कहा कि मत डरो यह सब दुष्टता तुम ने किई
है तिस पर भी परमेश्वर के पीछे पीछे जाने से अलग न होओ
२१ परन्तु अपने सारे अंतःकरण से परमेश्वर की सेवा करो। और
वृथा का पीछा करने को अलग मत होओ जिन में लाभ और

२२ मुक्ति नहीं क्योंकि वे व्यर्थ हैं । क्योंकि परमेश्वर अपने महत्
नाम के लिये अपने लाग का छोड़ न देगा क्योंकि परमेश्वर
२३ की इच्छा हुई कि तुम्हें अपने लाग बनावे । और ईश्वर न करे
कि मैं तुम्हारे लिये प्रार्थना करने में थम जाऊं और परमेश्वर
के बिरुद्ध पापी होऊं परन्तु मैं वुह मार्ग जो अच्छा और सीधा
२४ है तुम्हें सिखाऊंगा । केवल परमेश्वर से डरो और सच्चाई के
साथ अपने सारे मन से उस की सेवा करो क्योंकि देखो कि
२५ उस ने तुम्हारे लिये कैसा बड़ा काम किया है । परन्तु यदि
तुम अब भी दुष्टता करोगे तो तुम और तुम्हारा राजा नाश
हो जाओगे ॥

तेरहवां पर्व्व ।

१ साऊल ने एक बरस राज्य किया और जब वुह इसराएल
२ पर दो बरस राज्य कर चुका । तब साऊल ने इसराएल में से
तीन सहस्र अपने लिये चुने और दो सहस्र उस के साथ
मिकमास में और बैतएल पहाड़ में थे और एक सहस्र यूनतन
के साथ बिनयमीन के जिबिअत में थे और उबरे हुओं को
उस ने बिदा किया कि अपने अपने डेरे को जावें ॥
३ और यूनतन ने फ़िलिसतियों के थाने को जो जिबिअ: में
था मारा और फ़िलिसतियों ने सुना और साऊल ने सारे देश
४ में यह कहके नरसिंगा फूंका कि इबरानी सुनें । और सारे
इसराएलियों ने यह समाचार सुना कि साऊल ने फ़िलिस्तियों
के थाने को मारा और इसराएल भी फ़िलिस्तियों से घिनित
हुए और लाग साऊल के पास जिलजाल में एकट्ठे बुलाये गये।
५ और फ़िलिस्ती इसराएल से लड़ने को एकट्ठे हुए तीस सहस्र रथ
और छः सहस्र घोड़चढ़े और लाग समुद्र की बालू की नाईं समूह
चढ़ आये और मिकमास में बैतअवन की पूर्व्व ओर डेरा किया॥

६ और जब इसराएल के मनुष्यों ने देखा कि हम सकेती में
हैं क्योंकि लोग दुःखी थे तब लोग आके खोहों में और झाड़ों
में और पहाड़ों में और ऊंचे ऊंचे स्थानों में और गड़हियों में
७ जा छिपे। और इब्रानी यरदन के पार जद और जिलिअद
के देश को गये और साऊल तो अब लों जिलजाल ही में था
८ और समस्त लोग उस के पीछे पीछे थर्थराते गये। और वहां
समूएल के ठहराने के समान सात दिन लों ठहरा रहा परन्तु
समूएल जिलजाल में न आया और लोग उस के पास से बिथरे
९ थे। तब साऊल ने कहा कि बलिदान की भेंट और कुशल
की भेंट मुझ पास लाओ और उस ने बलिदान की भेंट
चढ़ाई॥

१० और ऐसा हुआ कि ज्योंहीं वुह बलिदान की भेंट चढ़ा
चुका त्योंहीं समूएल आ पहुंचा और साऊल उसे मिलने को
११ बाहर निकला कि उसे धन्यवाद करे। और समूएल ने पूछा
कि तू ने क्या किया तब साऊल बोला कि जब मैं ने देखा
कि लोग मुझ से बिथर गये और तू ठहराये हुए दिनों के
भीतर न आ पहुंचा और फ़िलिस्ती मिकमास में एकट्ठे हुए।
१२ तब मैं ने कहा कि अब फ़िलिस्ती जिलजाल में मुझ पर आ पड़ेंगे
और मैं ने परमेश्वर की प्रार्थना किई इस लिये मैं ने सकेती से
१३ बलिदान की भेंट चढ़ाई। तब समूएल ने साऊल को कहा
कि तू ने मूढ़ता किई है तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा
को जो उस ने तुझे दिई पालन न किया क्योंकि परमेश्वर अब
१४ तेरा राज्य इसराएल पर सदा स्थिर करता। परन्तु अब तेरा
राज्य बना न रहेगा परमेश्वर ने एक जन को अपने मन के
समान खोजा है और परमेश्वर ने उसे आज्ञा किई कि उस के
लोगों का प्रधान होवे क्योंकि तू ने परमेश्वर की आज्ञा को
पालन न किया॥

१५ और समूएल उठा और जिलजाल से बिनयमीन के जिबिअत
को चला गया तब साऊल ने उन लोगों को जो उस पास थे
१६ गिना और वे एक छः सौ जन थे । और साऊल और उस का
बेटा यूनतन और उस के साथ के लोग बिनयमीन के संतान
के जिबिअः में ठहर गये परन्तु फ़िलिस्तियों ने मिकमास में
छावनी किई ॥
१७ और लुटेरे फ़िलिस्तियों की छावनी से तीन जथा होके
१८ निकले एक तो सूआल के देश की उफ़रः की ओर । और
दूसरी जथा बेतहोरान के मार्ग आई और तीसरी जथा ने उस
सिवाने का मार्ग लिया जो सबुईम की तराई के बन के सन्मुख
है ॥
१९ अब इसराएल के सारे देश में कोई लोहार न मिलता था
क्योंकि फ़िलिस्तियों ने कहा था कि न हो कि इबरानी खड्ग
२० अथवा भाला बनावें । परन्तु सारे इसराएली हर एक जन
अपना अपना फार और भाला और कुल्हाड़ी और कुदारी चोखा
२१ करने के लिये फ़िलिस्तियों कने उतरते थे । तद भी कुदारियों
और फारों और चिशूलों और कुल्हाड़ी के लिये और अरई को
२२ चोखा करने के लिये उन के पास एक रेती थी । और ऐसा
हुआ कि लड़ाई के दिन साऊल और उस के बेटे यूनतन को
छोड़ उन लोगों में से जो साऊल और यूनतन के साथ थे किसी
के हाथ में एक तलवार और एक भाला न था ॥
२३ तब फ़िलिस्तियों का थाना मिकमास की घाटी पर आ पड़ा॥

चौदहवां पर्ब्ब ।

१ और एक दिन ऐसा हुआ कि साऊल के बेटे यूनतन ने
अपने अस्त्रधारी युवा मनुष्य को कहा कि आ हम फ़िलिस्तियों
के थाने पर जो पल्ले ओर है चलें परन्तु उस ने अपने पिता से

२ नहीं कहा। और साऊल जिबिश्र: के निकास पर एक अनार
के वृक्ष तले जो मिजरून में था ठहर रहा और एक छ: सौ
३ लोग उस के साथ थे। तब परमेश्वर का याजक सैला में एली
का बेटा फ़ीनिहास का बेटा ईकबूद के भाई अखितूब का
बेटा अख़ी अफ़ूद पहिने हुए था और लोगों ने न जाना कि
४ यूनतन चला गया। और उन घाटियों के बीच जिन से
यूनतन चाहता था कि फ़िलिस्तियों के थाने पर जा पड़े एक
एक और चोखी चटान थी और एक का नाम बोज़ीज़ और
५ दूसरी का सन: था। एक का साम्ना उत्तर दिशा मिकमास के
सन्मुख था और दूसरी का दक्षिण दिशा जिबिश्र: के सन्मुख।
६ तब यूनतन ने अपने अस्त्रधारी युवा से कहा कि आ और
हम उन अख़तनों के थाने पर चढ़ जायें क्या जाने परमेश्वर
हमारे लिये कार्य्य करे क्योंकि परमेश्वर के आगे कुछ बड़ी
७ बात नहीं चाहे बहुतों से जय दे चाहे तो थोड़ों से। और
उस के अस्त्रधारी ने उसे कहा कि सब जो आप के मन में
है करिये फिरिये देखिये आप के मन के समान में भी
८ साथी हूं। तब यूनतन बोला कि देख हम इन लोगों पास
९ पार जाते हैं औ हम अपने तईं उन पर प्रगट करें। यदि वे
हमें कहें कि ठहरो जब लों हम तुम्हारे पास आवें तब हम
१० ठहरे रहेंगे और उन पास चढ़ न जावेंगे। परन्तु यदि वे यों
कहें कि हम पर चढ़ आओ तो हम चढ़ जावेंगे क्योंकि
परमेश्वर ने उन्हें हमारे हाथ में कर दिया और यह हमारे
लिये एक पता होगा॥

११ तब उन दोनों ने आप को फ़िलिसतियों के थाने पर प्रगट
किया और फ़िलिसती बोले कि देखो इबरानी उन छेदों में से
१२ जहां वे छिप रहे थे बाहर आते हैं। और उस थाने के लोगों
ने यूनतन और उस के अस्त्रधारी को कहा कि हम पर चढ़

आओ और हम तुम्हें कुछ दिखावेंगे सो यूनतन ने अपने
अस्त्रधारी से कहा कि अब मेरे पीछे चढ़ आ क्योंकि परमेश्वर ने
१३ उन्हें इसराएल के हाथ में कर दिया। और यूनतन बकैंया
चढ़ गया और उस के पीछे उस का अस्त्रधारी और वे यूनतन
के आगे मारे गये और उस के पीछे पीछे उस के अस्त्रधारी ने
१४ मारा। सो यह पहिला काट कूट जो यूनतन और उस के
अस्त्रधारी ने किया सारे मनुष्य बीस एक थे उतनी भूमि में
जितनी में एक हल आधे दिन लों फिरे॥
१५ तब सेना में खेत में और सारे लोगों में थर्थराहट हुई और
थाने के लोग और लुटेरे भी थर्थराने लगे और भूमि कंपित हुई
यह थर्थराहट ईश्वर की ओर से थी॥
१६ और बिनयमीन के जिबिअत में के साऊल के पहरुओं ने
देखा तो क्या देखते हैं कि मंडली घट गई और वे मारते चले
१७ जाते थे। तब साऊल ने अपने साथी लोगों से कहा कि गिना
और देखो हम में से कौन निकल गया है जब उन्हों ने गिना
तो क्या देखते हैं कि यूनतन और उस का अस्त्रधारी नहीं
१८ है। तब साऊल ने अख़ी को कहा कि ईश्वर की मंजूषा यहां
ला क्योंकि ईश्वर की मंजूषा उस समय में इसराएल के पास
१९ थी। और ऐसा हुआ कि जब याजक से साऊल बात करता
था तब फ़िलिसतियों की सेना में धूम होती चली जाती थी
और साऊल ने याजक से कहा कि अपना हाथ खींच ले।
२० और साऊल और उस के सारे लोग एकट्ठे बुलाये गये और
संग्राम को आये और देखो कि हर एक पुरुष का खड्ग उस के
२१ संगी पर पड़ा और बड़ा गड़बड़ाहट हुई। और वे इबरानी
भी जो आगे फ़िलिसतियों के साथ थे और जो चारों ओर से
उन के पास छावनी में गये थे वे भी फिरके उन इसराएलियों
२२ में जो साऊल और यूनतन के साथ थे मिल गये। और

इसराएल के सारे लोग भी जिन्हों ने इफ़रायम पहाड़ में
आप को छिपाया था यह सुना कि फ़िलिसती भागे तब वे भी
२३ संग्राम में उन्हें खदेड़ते गये। और परमेश्वर ने उस दिन
इसराएलियों को बचाया और लड़ाई बेतअवन के उस पार लों
पहुंची॥

२४ और इसराएली लोग उस दिन दुःखी हुए क्योंकि साऊल ने
लोगों को किरिया देके कहा कि जो कोई सांझ लों खाना खावे
उस पर धिक्कार जिसतें मैं अपने बैरियों से पलटा लेऊं यहां
२५ लों कि किसी ने कुछ न चखा। और समस्त देश बन में
२६ पहुंचे और वहां भूमि पर मधु था। और ज्योंहीं लोग बन में
पहुंचे तो क्या देखते हैं कि मधु टपकता है पर किसी ने
अपने मुंह लों हाथ न उठाया क्योंकि लोग किरिया से डरे।
२७ परन्तु यूनतन ने न सुना था कि उस के पिता ने लोगों को
किरिया दिई सो उस ने अपने हाथ की छड़ी की नोक से मधु
के छत्ते में बोरा और हाथ में लेके मुंह में डाला और उस की
२८ आंखों में ज्योति आई। तब उन लोगों में से एक ने उसे
कहा कि तेरे पिता ने दृढ़ किरिया देके कहा था कि जो जन
आज कुछ खाय उस पर धिक्कार और उस समय लोग थके हुए
२९ थे। तब यूनतन बोला कि मेरे पिता ने देश को दुःख दिया
देखो मैं ने तनिक सा मधु चखा और मेरी आंखों में ज्योति
३० आई। क्या न होता यदि सारे लोग बैरियों की लूट से जो
उन्हों ने पाई मनमंता खाते क्या फ़िलिसती अधिक मारे न
जाते॥

३१ और उन्हों ने उस दिन मिकमास से लेके ऐयलून लों
३२ फ़िलिसतियों को मारा और लोग निपट थक गये। और लोग लूट
पर गिरे और भेड़ और बैल और बछड़े पकड़े और उन्हें मार
३३ मार लोहू समेत खा गये। तब वे साऊल से कहके बोले कि

देख लोहू समेत खाके लोग परमेश्वर के अपराधी होते हैं और वुह
बोला कि तुम ने पाप किया सो एक बड़ा पत्थर आज मेरे
३४ साम्ने ढुलकाओ । तब साऊल ने कहा कि लोगों में फैल जाओ
और उन से कहो कि हर एक जन अपना अपना बैल और
अपनी अपनी भेड़ लावें और यहां मारके खावें और लोहू
समेत खाके परमेश्वर के अपराधी न बनें सो उस रात हर एक
३५ जन अपना अपना बैल लाया और वहीं मारा । और साऊल
ने परमेश्वर के लिये एक वेदी बनाई यह पहिली वेदी है जो
उस ने परमेश्वर के लिये बनाई ॥

३६ तब साऊल ने कहा कि आओ रात को फ़िलिसतियों के
पीछे उतरें और भिनसार लों उन्हें लूटें और उन में से एक
जन को न छोड़ें और वे बोले कि जो कुछ आप को अच्छा
जान पड़े सो करिये तब याजक बोला कि आओ यहां ईश्वर
३७ से मंच लेवें । तब साऊल ने ईश्वर से मंच पूछा कि मैं
फ़िलिसतियों का पीछा करने को उतरूं तू उन्हें इसराएल के
हाथ में सौंप देगा परन्तु उस ने उस दिन उसे कुछ उत्तर न
दिया ॥

३८ तब साऊल ने कहा कि लोगों के समस्त प्रधान यहां आवें
३९ और जानें और देखें कि आज कौन सा पाप हुआ है । क्योंकि
परमेश्वर के जीवन सों जिस ने इसराएल को बचाया यद्यपि
मेरा बेटा यूनतन भी होवे तो वुह निश्चय मारा जायगा
४० परन्तु समस्त लोगों में से किसी ने उत्तर न दिया । तब उस
ने सारे इसराएल से कहा कि तुम लोग एक ओर होओ और
मैं और मेरा बेटा यूनतन दूसरी ओर तब लोग साऊल से बोले
४१ कि जो आप भला जानें सो कीजिये । और साऊल ने परमेश्वर
इसराएल के ईश्वर से कहा कि ठीक चिता दे और साऊल और
४२ यूनतन पकड़े गये परन्तु लोग निकल गये । तब साऊल ने

कहा कि मेरे और मेरे बेटे यूनतन के नाम चिट्ठी डालो तब
४३ यूनतन पकड़ा गया। तब साऊल ने यूनतन से कहा कि मुझे
बता कि तू ने क्या किया है और यूनतन ने उसे बताया
और कहा मैं ने तो केवल तनिक मधु अपनी छड़ी की नोक
४४ से चखा था सो अब देख मुझे मरना है। तब साऊल ने कहा
कि ईश्वर ऐसा ही और उस्से अधिक करे कि यूनतन तू निश्चय
४५ मर जायगा। तब लोगों ने साऊल को कहा कि क्या यूनतन
मर जाय जिस ने इसराएल के लिये ऐसा बड़ा बचाव किया
ईश्वर न करे परमेश्वर की सों उस के सिर का एक बाल लों
भूमि पर न गिराया जायगा क्योंकि उस ने आज ईश्वर के साथ
कार्य्य किया सो लोगों ने यूनतन को छुड़ा लिया जिसतें वुह
४६ मर न जाय। तब साऊल फ़िलिसतियों का पीछा करने से थम
गया और फ़िलिसती अपने स्थान को गये॥

४७ और साऊल ने इसराएल का राज्य लिया और अपने समस्त
बैरियों से हर एक ओर मोअब के और अम्मून के संतान के
और अदूम भी और सूबा के राजाओं के और फ़िलिसतियों के
साथ लड़ा और वुह जहां कहीं जाता था उन्हें छेड़ता था।
४८ तब उस ने बल के साथ कार्य्य किया और अमालीक़ को मारा
और इसराएलियों को लुटेरों के हाथ से छुड़ाया॥

४९ अब साऊल के बेटों के नाम ये हैं यूनतन और यशुई
और मलिकिसूअ और उस की दोनों बेटियों के नाम ये हैं
५० पहिलौठी मैरब और लहुरी मीकल। और साऊल की पत्नी का
नाम अख़िनुअम जो अख़िमअज़ की बेटी थी और उस के
सेनापति का नाम अबिनैयिर था जो साऊल के चचा नैयिर
५१ का बेटा था। और क़ीस साऊल का पिता और नैयिर
अबिनैयिर का पिता अबिएल का बेटा था॥

५२ और साऊल के जीवन भर फ़िलिसती से कठिन संग्राम रहा

श्रार जब कभो साऊल किसी बलवंत को अथवा जाधा को
देखता था तब वुह उसे अपने पास रखता था॥

पंद्रहवां पर्ब्ब ।

१ श्रार समूएल ने साऊल से कहा कि परमेश्वर ने मुझे भेजा
कि तुझे अपने इसराएली लोगों पर राज्याभिषेक करूं सो अब
२ परमेश्वर की बातें सुन । सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि
मुझे चेत है जो कुछ कि अमालीक़ ने इसराएल से किया वे
मार्ग में उन के लिये ठूके में क्योंकर लगे जब वे मिस्र से चढ़
३ आये । अब तू जा श्रार अमालीक़ को मार श्रार सब कुछ जो
उन का है सर्बथा नाश कर श्रार उसे मत छोड़ परन्तु
क्या पुरुष क्या स्त्री श्रार क्या बालक क्या दूध पीवक क्या
बैल श्रार क्या भेड़ क्या ऊंट श्रार क्या गदहे सब को मार
डाल ॥

४ श्रार साऊल ने लोगों को एकट्ठा किया श्रार तलाइम में दो
५ लाख पैदल गिना श्रार यहूदाह के दस सहस्र जन थे । श्रार
साऊल अमालीक़ के एक नगर को आया श्रार तराई में लड़ा ।
६ श्रार साऊल ने क़ैनियों को कहा कि निकल जाओ अमालीक़ियों
में से उतरो न हो कि मैं उन के साथ तुम्हें नाश करूं क्योंकि
तुम ने इसराएल के समस्त संतान पर जब वे मिस्र से चढ़
आये कृपा किई सो क़ैनी अमालीक़ियों में से निकल गये ।
७ श्रार साऊल ने अमालीक़ियों को हवील: से लेके सूर लों जो
८ मिस्र के साम्ने है मारा । श्रार अमालीक़ियों के राजा अगाग
को जीता पकड़ा श्रार सब लोगों को खड्ग की धार से सर्बथा
९ नाश किया । परन्तु साऊल श्रार लोगों ने अगाग को श्रार अच्छी
से अच्छी भेड़ों को श्रार बैलों को श्रार मोटे मोटे जीवधारियों
को श्रार मेम्नों को श्रार सब अच्छी बस्तों को जीता रक्खा श्रार

उन्हें सर्वथा नाश न किया परन्तु उन्हों ने हर एक वस्तु को
जो तुच्छ और बुरी थी सर्वथा नाश किया॥
१०। ११ तब परमेश्वर का यह बचन समूएल को पहुंचा। मैं
पछताता हूं कि साऊल को राजा किया क्योंकि वुह मेरे पीछे
से फिर गया और मेरी आज्ञाओं को पूर्ण न किया और समूएल
उदास हुआ और रात भर परमेश्वर के आगे चिल्लाता रहा।
१२ और बिहान को बड़े तड़के समूएल उठा कि साऊल से भेंट करे
और समूएल से कहा गया कि साऊल करमिल को आया और
देखो कि उस ने अपने लिये एक स्मरण का चिन्ह खड़ा किया
और फिरा और जिलजाल को उतर गया॥
१३ फिर समूएल साऊल पास गया और साऊल ने उसे कहा
कि तू परमेश्वर का आशीसित है मैं ने परमेश्वर की आज्ञा को
१४ पूर्ण किया। तब समूएल ने कहा परन्तु यह भेड़ों का मिमियाना
१५ और बैलों का बमाना जो मैं सुनता हूं सो क्या है। और
साऊल ने कहा कि वे अमालीक़ियों से ले आये हैं क्योंकि लोगों
ने अच्छी से अच्छी भेड़ और बैल को बचा रक्खा है कि परमेश्वर
तेरे ईश्वर के लिये बलि चढ़ावें और बचे हुओं को तो हम
१६ ने सर्वथा नाश किया है। तब समूएल ने साऊल को कहा कि
ठहर जा और जो कुछ परमेश्वर ने आज रात मुझ से कहा है
मैं तुझ से कहूंगा तब वुह उसे बोला कि कहिये॥
१७ और समूएल ने कहा कि जब तू अपनी दृष्टि में तुच्छ था
तब क्या इसराएल की गोष्ठियों का प्रधान न हुआ और परमेश्वर
१८ ने तुझे इसराएल पर राज्याभिषेक न किया। और परमेश्वर ने
तुझे यह कहके यात्रा को भेजा कि जा उन पापी अमालीक़ियों
को सर्वथा नाश कर और उन से यहां लों लड़ाई कर कि वे
१९ मिट जावें। सो तू ने किस लिये परमेश्वर का शब्द न माना
परन्तु लूट पर दौड़ा और परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई।

२० तब साऊल ने समूएल को कहा कि हां मैं ने तो परमेश्वर के
शब्द को माना है और जिस मार्ग में परमेश्वर ने मुझे भेजा
चला हूं और अमालीकियों के राजा अगाग को ले आया हूं
२१ और अमालीकियों को सर्वथा नाश किया है। पर लोगों ने लूट
में भेड़ और बैल और जो अच्छे से अच्छे चाहिये था कि सर्वथा
नाश किये जावें सो रख लिये जिसतें जिलजाल में परमेश्वर
तेरे ईश्वर के लिये भेंट चढ़ावें ॥
२२ और समूएल बोला कि क्या परमेश्वर बलिदान की भेंटों और
बलि से ऐसा आनन्द है जैसे परमेश्वर के शब्द के मान्ने से देखो
मान्ना बलिदान से और सुन्ना मेढ़े की चिकनाई से उत्तम है।
२३ क्योंकि फिर जाना टोना के पाप के तुल्य है और बुराई और ढिठाई
मूर्त्ति पूजा के समान इस लिये कि तू ने परमेश्वर के बचन को त्याग
२४ किया है उस ने तुझे भी राज्य से त्याग किया है। तब साऊल
ने समूएल से कहा कि मैं ने पाप किया है क्योंकि मैं ने परमेश्वर
की आज्ञा को और तेरी बातों को उलंघन किया क्योंकि मैं ने
२५ लोगों से डरके उन के शब्द को माना। सो मैं तेरी बिनती
करता हूं कि मेरे पाप क्षमा कीजिये और मेरे साथ उलटा
२६ फिरिये जिसतें मैं परमेश्वर की सेवा करूं। और समूएल ने
साऊल से कहा कि मैं तेरे साथ न फिरूंगा क्योंकि तू ने परमेश्वर
के बचन को त्याग किया है और परमेश्वर ने इसराएल पर
२७ राजा होने से तुझे त्याग किया है। और जब समूएल फिरा
कि चला जावे तो उस ने उस के वस्त्र का खूंट पकड़ा और
२८ वुह फट गया। तब समूएल ने उसे कहा कि परमेश्वर ने
आज इसराएल के राज्य को तुझ से फाड़ा है और तेरे एक
२९ परोसी को दिया है जो तुझ से अच्छा है। और जो इसराएल
का बल है सो झूठ न बोलेगा और न पछतावेगा क्योंकि वुह
३० मनुष्य नहीं कि वुह पछतावे। तब उस ने कहा कि मैं ने

तो पाप किया है अब लोगों के प्राचीनों के और इसराएल के
आगे मेरी प्रतिष्ठा कीजिये और मेरे साथ लौटिये जिसतें मैं
३१ परमेश्वर तेरे ईश्वर की सेवा करूं। तब समूएल साऊल के पीछे
फिरा और साऊल ने परमेश्वर की सेवा किई॥

३२ तब समूएल ने कहा कि अमालीक़ के राजा अगाग को
इधर मुझ पास लाओ और अगाग निधड़क से उस पास आया
और अगाग ने कहा कि निश्चय मृत्यु की कड़ुवाहट जाती
३३ रही। और समूएल ने कहा कि जैसा तेरी तलवार ने स्त्रियों
को निर्वंश किया वैसा ही तेरी माता स्त्रियों में निर्वंश होगी
और समूएल ने अगाग को जिलजाल में परमेश्वर के आगे टुकड़ा
टुकड़ा किया॥

३४ और समूएल रामात को गया और साऊल अपने घर
३५ जिबिअत को चढ़ गया। और समूएल अपने जीवन भर साऊल
को देखने न गया तिस पर भी समूएल साऊल के कारण विलाप
करता रहा और परमेश्वर भी पछताया कि उस ने साऊल को
इसराएल पर राजा किया॥

सोलहवां पर्व्व।

१ और परमेश्वर ने समूएल से कहा कि तू कब लों साऊल के
कारण विलाप करता रहेगा मैं ने तो उसे इसराएल पर राज्य
करने से त्याग किया अपने सींग में तेल भर और तुझे
बैतलहमी यस्सी पास भेजता हूं क्योंकि मैं ने उस के बेटों में
२ से अपने लिये एक को राजा ठहराया है। तब समूएल बोला
मैं क्योंकर जाऊं यदि साऊल सुने तो मुझे मार ही डालेगा
और परमेश्वर ने कहा कि एक बछिया अपने हाथ में ले जा
और कह कि मैं परमेश्वर के लिये बलिदान चढ़ाने आया हूं।
३ और बलिदान चढ़ाने में यस्सी को बुला और मैं तुझे बताऊंगा

कि तू क्या करेगा और जिस का नाम मैं तेरे आगे लेऊं तू
उसे मेरे लिये अभिषेक कर ॥
४ और जो परमेश्वर ने उसे कहा समूएल ने किया और
बैतलहम को आया तब नगर के प्राचीन उस के आने से कांप
५ गये और बोले कि तू कुशल से आता है। और वुह बोला
कि कुशल से मैं परमेश्वर के लिये बलि करने आया हूं तुम
आप को पवित्र करो और मेरे साथ बलि करने के लिये आओ
और उस ने यस्सी को उस के बेटों सहित पवित्र किया और
६ उन्हें बलि करने को बुलाया। और ऐसा हुआ कि जब वे
आये तो उस ने इलिअब पर दृष्टि किई और बोला कि निश्चय
७ परमेश्वर का अभिषिक्त उस के आगे है। परन्तु परमेश्वर ने
समूएल से कहा कि उस के स्वरूप पर और उस के डील की
ऊंचाई पर दृष्टि न कर क्योंकि मैं ने उसे नाह किया कि परमेश्वर
मनुष्य के समान नहीं देखता क्योंकि मनुष्य बाहरी रूप देखता
८ है परन्तु परमेश्वर अंतःकरण पर दृष्टि करता है। तब यस्सी
ने अबिनदाब को बुलाया और उसे समूएल के आगे चलाया
९ और वुह बोला कि परमेश्वर ने इसे भी नहीं चुना। तब यस्सी
ने सम्मः को आगे चलाया और वुह बोला कि परमेश्वर ने
१० इसे भी नहीं चुना। तब यस्सी ने अपने सातों बेटों को समूएल
के साम्ने किया सो समूएल ने यस्सी को कहा कि परमेश्वर ने
११ इन्हें भी नहीं चुना। और समूएल ने यस्सी से कहा कि तेरे
सब बेटे येही हैं तब वुह बोला कि सब से छोटा रह गया
है और देख वुह भेड़ चराता है सो समूएल ने यस्सी को कहा
कि उसे भेजके मंगवा क्योंकि जब लों वुह यहां न आवे हम
१२ न बैठेंगे। और वुह भेजके उसे भीतर लाया और वुह लाल रङ्ग
और सुंदर नेत्र देखने में अच्छा था तब परमेश्वर ने कहा कि
१३ उठके उसे अभिषेक कर क्योंकि यह वही है। तब समूएल ने

तेल का सींग लिया और उसे उस के भाइयों के मध्य में
अभिषेक किया और परमेश्वर का आत्मा उस दिन से आगे लों
दाऊद पर उतरा और समूएल उठके रामात को चला गया ॥
१४ परन्तु परमेश्वर का आत्मा साऊल से जाता रहा और परमेश्वर
१५ की ओर से एक दुष्ट आत्मा उसे सताने लगी। तब साऊल
के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये अब एक दुष्ट आत्मा ईश्वर
१६ की ओर से आप को सताती है। सो अब हमारे प्रभु अपने
सेवकों को जो आप के आगे हैं आज्ञा कीजिये कि एक जन
ऐसा खोजें जो सारंगी बजाने में निपुण हो और यों होगा कि
जब दुष्ट आत्मा ईश्वर से आप पर चढ़े तब वुह अपने हाथ
१७ से बजावेगा और आप अच्छे होंगे। और साऊल ने अपने
सेवकों से कहा कि अब मेरे लिये अच्छा बजनिया ठहराओ
१८ और उसे मुझ पास लाओ। तब उस के दासों में से एक ने
उत्तर देके कहा कि देख मैं ने बैतलहमी यस्सी का एक बेटा
देखा जो बजाने में निपुण है और वुह जन सामर्थी बीर है
और वुह लड़ाक और बचन में चतुर और देखने में सुंदर है
१९ और परमेश्वर उस के साथ है। तब साऊल ने यस्सी पास दूत
भेजके कहा कि अपने बेटे दाऊद को जो भेड़ों के संग है
२० मुझ पास भेज। सो यस्सी ने एक गदहा रोटी लिई और एक
कुप्पा मदिरा और बकरी का मेम्ना लिया और अपने बेटे दाऊद
२१ को दिया कि साऊल के लिये ले जाय। सो दाऊद साऊल
पास आया और उस के आगे खड़ा हुआ और उस ने उसे
२२ बहुत प्यार किया और वुह उस का अस्त्रधारी हुआ। और
साऊल ने यस्सी को कहला भेजा कि कृपा करके दाऊद को
मेरे आगे रहने दीजिये क्योंकि वुह मेरे मन में भाया है।
२३ और ऐसा हुआ कि जब ईश्वर से आत्मा साऊल पर चढ़ती थी
तब दाऊद सारंगी लेके अपने हाथ से बजाता था और साऊल

संतुष्ट होके अच्छा होता था और दुष्ट आत्मा उस पर से उतर
जाती थी ॥

सत्तरहवां पर्ब्ब ।

१ अब फ़िलिसतियों ने युद्ध के लिये अपनी सेनाओं को
यहूदाह के शोकः में एकट्ठी किया और शोकः और अज़ीकः
२ के मध्य अफ़सद्‌दमिम में डेरा किया। और साऊल और
इसराएल के मनुष्यों ने एकट्ठे होके एला की तराई में डेरा
किया और युद्ध के लिये फ़िलिसतियों के सन्मुख पांती बांधी।
३ और फ़िलिसती एक ओर पहाड़ पर खड़े हुए और दूसरी ओर
एक पहाड़ पर इसराएल और उन दोनों के मध्य में तराई
४ थी। और फ़िलिसती की सेना से एक महाबीर जो जात का
जुलिअत कहाता था जिस के डील की ऊंचाई छः हाथ थी।
५ और उस के सिर पर पीतल का एक टोप था और वुह झिलम
६ पहिने हुए था जो तोल में मन दो एक पीतल का था। और
उस की दो पिंडुलियों पर पीतल के अस्त्र थे और उस के दोनों
७ कांधों के मध्य पीतल की एक फरी थी। और उस के भाले
की छड़ ऐसी थी जैसे जोलाहे का लट्ठा और उस के भाले का
फल सेर नव एक का था और एक जन ढाल लिये हुए उस
८ के आगे आगे चलता था। और उस ने खड़े होके इसराएल
की सेनाओं को ललकारके कहा कि तुम क्यों संग्राम के लिये
निकले हो क्या मैं फ़िलिसती नहीं हूं और तुम साऊल के
सेवक सो अपने में से एक जन को चुनो और वुह मेरा साम्ना
९ करे। यदि वुह मुझ से लड़ सके और मुझे मार डाले तो हम
तुम्हारे सेवक होंगे पर यदि मैं उस पर प्रबल होके उसे मार
डालूं तो तुम हमारे सेवक होगे और हमारी सेवा करोगे।
१० और फ़िलिसती बोला कि मैं आज के दिन इसराएल की

सेनाओं को तुच्छ जानता हूं कोई जन मुझे दो कि हम एक
११ संग युद्ध करें। जब साऊल और समस्त इसराएल ने उस
फ़िलिसती की ये बातें सुनीं तब वे विस्मित होके डर गये॥
१२ अब दाऊद बेतलहम यहूदाह के इफ़राती का पुत्र था
जिस का नाम यस्सी था और उस के आठ बेटे थे और वुह
जन साऊल के दिनों में लोगों में पुरनिया गिना जाता था।
१३ और यस्सी के तीन बड़े बेटे थे जो लड़ाई में साऊल के पीछे
हुए और जो संग्राम में गये थे और उन तीनों के ये नाम थे
पहिलौठा इलिअब और मंझिला अबिनदाब और लहुरा सम्मः।
१४ और दाऊद सब से छोटा था और उस के तीनों बड़े बेटे
१५ साऊल के साथ साथ गये। परन्तु दाऊद साऊल से फिरके
१६ अपने पिता की भेड़ें बेतलहम में चराने गया था। और वुह
फ़िलिसती चालीस दिन लों सांझ बिहान आया करता था॥
१७ और यस्सी ने अपने बेटे दाऊद से कहा कि अब एक ईफ़ा
भर भूना और ये दस रोटी लेके छावनी को अपने भाइयों
१८ पास दौड़ जा। और पनीर की इन दस चक्कियों को सहस्रों के
प्रधानों पास ले जा और देख तेरे भाई कैसे हैं और उन का
१९ कुछ चिन्ह ला। और साऊल और वे और सारे इसराएल
के लोग एला की तराई में फ़िलिसतियों से लड़ रहे थे।
२० और दाऊद भोर को तड़के उठा और झुंड को एक रखवाल
को सौंपके जैसा यस्सी ने उसे कहा था लेके चला और मुरचे
पर पहुंचा और उसी समय सेना लड़ाई के लिये ललकारती
२१ थी। क्योंकि इसराएलियों और फ़िलिसतियों ने अपनी अपनी
२२ सेना के आम्ने साम्ने परे बांधे थे। और दाऊद अपने पात्रों
को रखवाल को सौंपके सेना को दौड़ गया और अपने भाइयों
२३ से कुशल पूछा। और वुह उन से बातें करता ही था कि देखो
वुह महावीर जात का फ़िलिसती जिस का नाम जुलिअत था

फ़िलिसतियों की सेनाओं में से निकल आया और उन्हीं बातों के
२४ समान बोला और दाऊद ने सुना। और इसराएल के सारे
लोग उसे देखके उस के सन्मुख से भागे और निपट डर गये।
२५ तब इसराएल के लोगों ने कहा कि तुम इस जन को देखते
हो जो निकला है कि यह निश्चय इसराएल को तुच्छ करने
को निकल आया है और यों होगा कि जो जन उसे मारेगा
राजा उसे बहुत धन से धनमान करेगा और अपनी बेटी उसे
देगा और उस के पिता के घराने को इसराएल में निर्बंध
करेगा॥
२६ तब दाऊद ने अपने आस पास के लोगों से पूछा कि जो
जन इस फ़िलिसती को मारेगा और इसराएल से कलंक को
दूर करेगा उसे क्या मिलेगा क्योंकि यह अख़तनः फ़िलिसती
२७ कौन है जो जीवते ईश्वर की सेना को तुच्छ समझे। सो लोगों
ने इस रीति से उत्तर देके उसे कहा जो इसे मारेगा उसे यह
मिलेगा॥
२८ तब उस के बड़े भाई इलिअब ने उस की बातें सुनीं जो
वुह लोगों से करता था और इलिअब का क्रोध दाऊद पर
भड़का और वुह बोला कि तू इधर क्यों आया है और बन में
उन थोड़ी सी भेड़ों को किस पास छोड़ा मैं तेरे घमंड और
तेरे मन की नटखटी को जानता हूं क्योंकि तू संग्राम देखने
२९ को उतर आया है। तब दाऊद बोला कि मैं ने क्या किया
३० क्या कारण नहीं। और वुह वहां से दूसरी ओर गया और
वही बात कही तब लोगों ने उसे आगे के समान फेर उत्तर
३१ दिया। और जब उन बातों की जो दाऊद ने कही थीं चर्चा
हुई तब साऊल लों संदेश पहुंचा और उस ने उसे लिया॥
३२ और दाऊद ने साऊल से कहा कि उस के कारण किसी का
३३ मन न घटे तेरा दास जाके इस फ़िलिसती से लड़ेगा। तब

साऊल ने दाऊद से कहा कि तुझ में यह सामर्थ्य नहीं कि
इस फ़िलिसती से लड़े क्योंकि तू लड़का है और वुह लड़कपन
३४ से योद्धा है। तब दाऊद ने साऊल से कहा कि तेरा सेवक
अपने पिता की भेड़ों की रखवाली करता था और एक सिंह
और एक भालू निकला और झुंड में से एक मेम्ना ले गया।
३५ और मैं ने उस के पीछे निकलके उसे मारा और उसे उस के
मुंह से छुड़ाया और जब वुह मुझ पर झपटा तब मैं ने उस
३६ की दाढ़ पकड़के उसे मारा और नाश किया। तेरे सेवक ने
उस सिंह और भालू दोनों को मार डाला फेर यह अख़तनः
फ़िलिसती उन में से एक के समान होगा कि उस ने जीवते
३७ ईश्वर की सेनाओं को तुच्छ जाना। और दाऊद ने यह भी
कहा कि जिस परमेश्वर ने मुझे सिंह के और भालू के पंजे से
बचाया वही मुझे इस फ़िलिसती के हाथ से बचावेगा तब
साऊल ने दाऊद से कहा कि जा और परमेश्वर तेरे साथ होवे॥
३८ और साऊल ने अपना बस्त्र दाऊद को पहिनाया और पीतल
का एक टोप उस के सिर पर रक्खा और उसे झिलम भी
३९ पहिनाया। और दाऊद ने अपनी तलवार झिलम पर लटकाई
और जाने का मन किया क्योंकि उस ने उसे न जांचा था तब
दाऊद ने साऊल से कहा कि इन से मैं नहीं जा सक्ता क्योंकि
मैं ने इन्हें नहीं परखा तब दाऊद ने उन्हें अपने पर से उतार दिया।
४० और उस ने अपना लट्ठ हाथ में लिया और नाले में से पांच
चिकने पत्थर चुन लिये और उन्हें अपने गड़रिया के पात्र में
अर्थात् झोले में रक्खा और अपनी गोफन अपने हाथ में लिई
४१ और उस फ़िलिसती की ओर बढ़ा। और फ़िलिसती चला और
दाऊद के निकट आने लगा और जो जन उस की ढाल उठाता
था सो उस के आगे आगे गया॥
४२ जब उस फ़िलिसती ने इधर उधर ताका तब दाऊद को

देखा और उसे तुच्छ जाना क्योंकि वुह तरुण लाल और
४३ सुंदर रूप था। और फ़िलिसती ने दाऊद से कहा कि क्या
में कूकर हूं जो तू लट्ठ लेके मुझ पास आता है और फ़िलिसती
४४ ने अपने देवतों के नाम से उसे धिक्कारा। और फ़िलिसती ने
दाऊद से कहा कि मुझ पास आ और मैं तेरा मांस आकाश
४५ के पक्षियों को और बनेले पशुओं को देऊंगा। तब दाऊद ने
उस फ़िलिसती को कहा कि तू तलवार और बरछा और ढाल
लेके मुझ पर आता है परन्तु मैं सेनाओं के परमेश्वर के नाम
से जो इसराएल के सेनाओं का ईश्वर है जिस की तू ने निन्दा
४६ किई है तुझ पास आता हूं। आज ही परमेश्वर तुझे मेरे हाथ
में सौंप देगा और मैं तुझे मार लूंगा और तेरा सिर तुझ से
अलग करूंगा और मैं आज फ़िलिसतियों की सेना की लोथों
को आकाश के पक्षियों को और बनेले पशुओं को देऊंगा जिसतें
४७ समस्त पृथिवी जाने कि ईश्वर इसराएल में है। और यह
समस्त मंडली जानेगी कि परमेश्वर तलवार और भाले से नहीं
बचाता क्योंकि संग्राम परमेश्वर का है और वही तुम्हें हमारे
हाथों में सौंप देगा॥

४८ और ऐसा हुआ कि जब फ़िलिसती उठा और दाऊद पास
पहुंचने को आगे बढ़ा तब दाऊद ने फुर्ती किई और सेना
४९ की ओर फ़िलिसती पर पहुंचने दौड़ा। और दाऊद ने अपने
थैले में हाथ डाला और उस में से एक पत्थर लिया और
गोफन से उस फ़िलिसती के माथे पर मारा और वुह पत्थर
उस के माथे में गड़ गया और वुह भूमि पर मुंह के बल गिरा।
५० सो दाऊद ने गोफन और पत्थर से उस फ़िलिसती को जीता
और उस फ़िलिसती को मारा और उसे घात किया परन्तु
५१ दाऊद के हाथ में तलवार न थी। तब दाऊद लपकके
फ़िलिसती के निकट आया और उस की तलवार लेके काठी

से खींची और उसे नाश किया और उसी से उस का सिर
उतारा और जब फ़िलिसतियों ने देखा कि हमारा सूरमा मारा
गया तब वे भाग निकले ॥
५२ और इसराएल के और यहूदाह के लोग उठे और ललकारे
और अक्रून के फाटक लों और तराई लों फ़िलिसतियों को
रगेदा और मारा और फ़िलिसतियों के घायल सगरीम अर्थात्
५३ जात और अक्रून लों जूझ गये। तब इसराएल के संतान
फ़िलिसतियों के खेदने से फिर आये और उन के तंबुओं को
५४ लूट लिया। और दाऊद उस फ़िलिसती का सिर लेके उसे
यरूसलम में लाया परन्तु अपने हथियारों को तंबू में रक्खा ॥
५५ और जब साऊल ने दाऊद को फ़िलिसती के साम्ने होते
देखा तब उस ने सेना के प्रधान अबिनेयिर से पूछा कि हे
अबिनेयिर यह गबरू किस का बेटा है तब अबिनेयिर बोला
५६ कि हे राजा आप के जीवन सों मैं नहीं जानता। तब राजा ने
५७ कहा कि बूझ यह गबरू किस का लड़का है। और जब दाऊद
उस फ़िलिसती को मारके फिरा तब अबिनेयिर उसे राजा पास
५८ ले गया और फ़िलिसती का सिर उस के हाथ में था। तब
साऊल ने उसे पूछा कि तू किस का लड़का और दऊाद ने
उत्तर दिया कि मैं तेरे सेवक बैतलहमी यस्सी का लड़का हूं ॥

अठारहवां पर्ब्ब।

१ और ऐसा हुआ कि जब वुह साऊल से बात कह चुका
तब यूनतन का मन दाऊद के मन से बंध गया और यूनतन
२ ने उसे अपने ही प्राण के तुल्य प्रेम किया। और साऊल ने
तब से उसे अपने साथ रक्खा और फिर उस के पिता के घर
३ जाने न दिया। तब यूनतन और दाऊद ने आपुस में बाचा
बांधी क्योंकि वुह उसे अपने प्राण के तुल्य प्रेम करता था।

४ तब यूनतन ने अपना बागा और अपने वस्त्र उतारे और
अपनी तलवार और धनुष और अपने पटुका लों दाऊद को
दिया॥

५ और जहां कहीं साऊल उसे भेजता था दाऊद जाया करता
था और भाग्यमान होता था और साऊल ने उसे जाधाओं का
प्रधान किया और वुह सारे लोगों की दृष्टि में और साऊल के
समस्त सेवकों की दृष्टि में भी ग्राह्य हुआ॥

६ और उन के आते हुए ऐसा हुआ कि जब दाऊद उस
फिलिसती को मारके फिर आया तब सारी इसराएली स्त्रियां
नगरों से गाती नाचतीं आनंद से तबले और चितारे लेके
७ साऊल राजा से भेंट करने को निकलीं। और उन के बजाने
से स्त्रियां उत्तर देके कहती थीं कि साऊल ने अपने सहस्रों
८ को मारा और दाऊद ने अपने दस सहस्रों को। और साऊल
अति क्रोधित हुआ और यह कहावत उस की दृष्टि में बुरी
लगी और वुह बोला कि उन्हों ने दाऊद के लिये दस सहस्रों
को ठहराया और मेरे लिये सहस्रों को अब केवल राज्य भर
९ उसे पाना है। और साऊल ने उसी दिन से दाऊद को तक
रक्खा॥

१० और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि ईश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा
साऊल पर उतरी और वुह अपने घर में भविष्य कहने लगा
और दाऊद आगे की नाईं हाथ से बजाने लगा और साऊल के
११ हाथ में एक सांग थी। तब साऊल ने सांग फेंकी क्योंकि उस
ने कहा कि मैं दाऊद को भीत ही में गोदूंगा पर दाऊद दो
बार उस के आगे से बच निकला॥

१२ और साऊल दाऊद से डरा करता था क्योंकि परमेश्वर उस
१३ के साथ था और साऊल से जाता रहा। इस लिये साऊल
ने उसे अपने पास से अलग किया और सहस्र का प्रधान किया

१४ और वुह लोगों के आगे आया जाया करता था। और दाऊद
अपने सारे मार्ग में बुद्धिमान था और परमेश्वर उस के साथ
१५ था। इस लिये जब साऊल ने देखा कि वुह अति बुद्धिमान
१६ है तब वुह उस्से डरता था। पर सारे इसराएल और यहूदाह
दाऊद को चाहते थे क्योंकि वुह उन के आगे आया जाया
करता था॥

१७ तब साऊल ने दाऊद को कहा कि मेरी बड़ी बेटी मेरब
को देख मैं उसे तुझे बियाह देऊंगा केवल तू मेरे लिये बली
पुत्र हो और परमेश्वर का संग्राम किया कर क्योंकि साऊल ने
कहा कि मेरा हाथ उस पर न पड़े परन्तु फ़िलिसतियों का हाथ
१८ उस पर पड़े। तब दाऊद ने साऊल से कहा कि मैं कौन
और मेरा प्राण क्या और इसराएल में मेरे पिता का घराना
१९ क्या जो मैं राजा का जवांई हूं। परन्तु यों हुआ कि जब
साऊल की बेटी मेरब को दाऊद के देने का समय आया तब
वुह महुलती अदरिएल से बियाही गई॥

२० और साऊल की बेटी मीकल दाऊद से प्रीति रखती थी
और उन्हों ने साऊल से कहा और वुह बात उस की दृष्टि में अच्छी
२१ लगी। तब साऊल ने कहा कि मैं उसे उस को देऊंगा जिसतें
वुह उस के लिये फंदा होवे और जिसतें फ़िलिसतियों का
हाथ उस पर पड़े तब साऊल ने दाऊद से कहा कि तू
२२ आज इन दोनों में से मेरा जवांई होगा। और साऊल ने
अपने सेवकों को आज्ञा किई कि दाऊद से गुप्त में बात चीत
करो और कहो कि देख राजा तुझ से प्रसन्न है और उस के
सारे सेवक तुझे चाहते हैं और अब तू राजा का जवांई हो।
२३ सो साऊल के सेवकों ने ये बातें दाऊद से कह सुनाईं और
दाऊद बोला कि तुम राजा का जवांई होना छोटा समझते
२४ हो मैं तो कंगाल होके तुच्छ गिना जाता हूं। और साऊल

२५ के सेवकों ने इन बातों के समान उसे कहा। तब साऊल ने
कहा कि तुम दाऊद से यों कहियो कि राजा कुछ दाएजा
नहीं चाहता परन्तु केवल एक सौ फ़िलिसतियों की खलड़ियां
जिसतें राजा के बैरियों से पलटा लिया जाय परन्तु साऊल
२६ ने चाहा कि दाऊद को फ़िलिसतियों से मरवा डाले। और
जब उस के सेवकों ने इन बातों को दाऊद से कहा तब
राजा का जवांई होना दाऊद को अच्छा लगा और दिन बीत
२७ न गये थे। और दाऊद उठा और अपने लोगों को लेके गया
और दो सौ फ़िलिसती को मारा और दाऊद उन की खलड़ियों
को लाया और उन्हों ने उन्हें राजा के आगे पूरा गिनके धर
दिया जिसतें वुह राजा का जवांई होवे और साऊल ने अपनी
२८ बेटी मीकल उसे बियाह दिई। और जब साऊल ने देखा
और जाना कि परमेश्वर दाऊद के साथ है और साऊल की
२९ बेटी मीकल उस्से प्रीति रखती है। तब साऊल दाऊद से
अधिक डर गया और साऊल सदा दाऊद का बैरी रहा।
३० तब फ़िलिसतियों के प्रधान निकले और उन के निकलने
के पीछे यों हुआ कि दाऊद साऊल के सारे सेवकों से
अधिक चौकसी करता था यहां लों कि उस का बड़ा नाम
हुआ॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ तब साऊल ने अपने बेटे यूनतन से और अपने समस्त
सेवकों से कहा कि दाऊद को मार लेओ परन्तु साऊल का
२ बेटा यूनतन दाऊद से अति प्रसन्न था। और यूनतन दाऊद
से कहके बोला कि मेरा पिता तुझे बधन करने चाहता है
सो अब बिहान लों अपनी चौकसी करियो और गुप्रस्थान में
३ छिप रहियो। और मैं जाके चौगान में जहां तू होगा अपने

पिता के पास खड़ा हूंगा और अपने पिता से तेरी चर्चा करूंगा
और जो मैं देखूंगा सो तुझे कह देऊंगा ॥
४ और यूनतन ने दाऊद के विषय में अपने पिता साऊल से
अच्छी कही कि राजा अपने दास दाऊद से बुराई न कीजिये
क्योंकि उस ने आप का कुछ अपराध नहीं किया और इस
५ कारण कि उस के कर्म्म आप के लिये अति उत्तम हैं। और
उस ने अपना प्राण हथेली पर रक्खा और उस फ़िलिसती को
घात किया और परमेश्वर ने सारे इसराएल के लिये बड़ी मुक्ति
दिई आप ने देखा और आनन्द हुए सो आप किस लिये निर्दोष
से बुराई किया चाहते हैं और अकारण दाऊद को मारा चाहते
६ हैं। और साऊल ने यूनतन की बात सुनी और साऊल ने
किरिया खाई कि ईश्वर के जीवन सों दाऊद मारा न जावेगा।
७ और यूनतन ने दाऊद को बुलाया और ये सारी बातें उसे बताईं
और यूनतन दाऊद को साऊल पास लाया और कल परसों के
समान फेर उस के पास रहने लगा ॥
८ और फिर लड़ाई हुई और दाऊद निकला और फ़िलिसतियों
से लड़ा और बड़ी मार से उन्हें मारा और वे उस के आगे से
भागे ॥
९ और ज्यों साऊल अपने घर में एक सांग हाथ में लिये हुए
बैठा था परमेश्वर की ओर से दुष्ट आत्मा उस पर उतरी और
१० दाऊद हाथ से बजा रहा था। और साऊल ने चाहा कि दाऊद
को भीत में सांग से गोद देवे परन्तु दाऊद साऊल के आगे
से अलग हो गया और सांग भीत में जा लगी और दाऊद
११ भागके उस रात बच गया। तब साऊल ने दाऊद के घर
पर दूतों को भेजा कि उसे अगोरें और बिहान को उसे मार
डालें तब दाऊद की पत्नी मीकल यह कहके उसे बोली कि
यदि आज रात तू अपना प्राण न बचावे तो बिहान को मारा

१२ जावेगा । तब मीकल ने खिड़की में से दाऊद को उतार दिया
१३ और वुह भागके बच गया । और मीकल ने एक पुतला लेके
बिछौने पर रक्खा और बकरियों के रोम की तकिया उस के
१४ सिर तले रक्खी और कपड़ा से ढांप दिया । और जब साऊल
ने दाऊद को पकड़ने को दूत भेजे तब वुह बोली कि वुह
१५ रोगी है । और साऊल ने यह कहके दूतों को दाऊद को
देखने भेजा कि उसे खाट सहित मुझ पास लाओ जिसतें मैं
१६ उसे मार डालूं । और जब दूत भीतर आये तब क्या देखते
हैं कि बिछौने पर एक पुतला पड़ा है और उस के सिर तले
१७ बकरियों के रोम की तकिया है । तब साऊल ने मीकल से
कहा कि तू ने मुझ से क्यों ऐसा छल किया और मेरे बैरी को
निकाल दिया और वुह बच गया सो मीकल ने साऊल को
उत्तर दिया कि उस ने मुझे कहा कि मुझे जाने दे नहीं तो
मैं तुझे मार डालूंगा ॥
१८ और दाऊद भागा और बच रहा और रामात में समूएल
पास गया और जो कुछ कि साऊल ने उस्से किया था सब उसे
१९ कहा तब वुह और समूएल दोनों नायूत में जा रहे । और
साऊल को यह कहा गया कि देख दाऊद रामात में नायूत
२० में है । और साऊल ने दूतों को भेजा कि दाऊद को पकड़ें
और जब उन्हों ने देखा कि आगमज्ञानियों की जथा भविष्य
कहती है और समूएल ठहराये हुए के समान उन में खड़ा है
तब ईश्वर का आत्मा साऊल के दूतों पर उतरा और वे भी
२१ भविष्य कहने लगे । जब साऊल को कहा गया तब उस ने
और दूत भेजे और वे भी भविष्य कहने लगे तब साऊल ने
तीसरे बार और दूत भेजे और वे भी भविष्य कहने लगे ।
२२ तब वुह आप रामात को गया और उस बड़े कुए पर जो सेकू
में है पहुंचा और उस ने पूछा कि समूएल और दाऊद कहां

२३ हैं तब एक ने कहा कि देख वे नायूत में हैं। तब वुह
रामात नायूत की ओर चला और ईश्वर का आत्मा उस पर भी
पड़ा और वुह बढ़ा गया और रामात के नायूत लों भविष्य
२४ कहता गया। और उस ने भी अपने कपड़े उतार फेंके और
समूएल के आगे उस के समान भविष्य कहा और उस रात
दिन भर नंगा पड़ा रहा इसी लिये यह कहावत हुई कि क्या
साऊल भी आगमज्ञानियों में है॥

बीसवां पर्व्व।

१ तब दाऊद नायूत रामात से भागके यूनतन पास आया और
उसे कहा कि मैं ने क्या किया मेरा क्या अपराध है मैं ने तेरे
पिता का कौन सा पाप किया है जो वुह मेरे प्राण का गांहक
२ है। और वुह बोला कि ऐसा न होवे तू मारा न जावेगा देख
मेरा पिता बिना मुझ पर प्रगट किये कोई छोटी बड़ी बात न
करेगा और यह बात किस कारण से मेरा पिता मुझ से छिपावे
३ यह नहीं। तब दाऊद ने फिर किरिया खाके कहा कि तेरा पिता
निश्चय जानता है कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया है और
वुह कहता है कि यूनतन यह न जाने न हो कि वुह शोकित हो
परन्तु परमेश्वर सों और तेरे जीवन सों मुझ में और मृत्यु में
४ केवल डग भर का अन्तर है। तब यूनतन ने दाऊद से कहा
कि जो कुछ तेरा जी चाहे मैं तेरे लिये करूंगा॥
५ और दाऊद ने यूनतन से कहा कि देख कल अमावाश्या
है और मुझे उचित है कि राजा के साथ भोजन करूं सो मुझे
६ जाने दीजिये कि मैं तीसरी सांझ लों खेत में जा छिपूं। यदि
तेरा पिता मेरी खोज करे तो कहियो कि दाऊद यत्न से मुझे
पूछके अपने नगर बैतलहम को दौड़ गया क्योंकि वहां समस्त
७ घराने के लिये बरसयन का बलिदान है। यदि वुह यों बोले

कि अच्छा तो तेरे सेवक के लिये कुशल है परन्तु यदि वुह
अति क्रोध करे तो निश्चय जानियो कि उस के मन में बुराई
८ है। सो अपने सेवक पर दया से व्यवहार कीजियो
क्योंकि तू अपने दास को अपने साथ परमेश्वर की बाचा में
लाया है तथापि यदि मुझ में अपराध होवे तो तू मुझे बधन
कर किस कारण मुझे अपने पिता पास ले जावेगा॥
९ तब यूनतन ने कहा कि तुझ से दूर होवे क्योंकि यदि मैं
निश्चय जानता कि मेरे पिता ने ठाना है कि तेरी बुराई करे
तो क्या मैं तुझे न बताता॥
१० फिर दाऊद ने यूनतन से कहा कि कौन मुझे कहेगा अथवा
११ क्या जाने तेरा पिता तुझे घुरकके कहे। तब यूनतन ने
दाऊद से कहा कि आ खेत में चलें सो वे दोनों खेत को गये।
१२ और यूनतन ने दाऊद से कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के
ईश्वर जब मैं कल अथवा परसों अपने पिता को बूझ लेऊं और
देखूं कि दाऊद के बिषय में भला है और भेजके तुझे न
१३ बताऊं। तो परमेश्वर ऐसा ही और इस्से अधिक यूनतन से
करे और यदि तेरी बुराई करने को मेरे पिता की इच्छा होवे
तो मैं तुझे बताऊंगा और तुझे बिदा करूंगा कि तू कुशल से
चला जावे और जैसा परमेश्वर मेरे पिता के साथ हुआ है वैसा
१४ तेरे साथ होवे। और तू केवल मेरे जीवन लों परमेश्वर की कृपा
१५ मुझे न दिखाइयो जिसतें मैं न मरूं। परन्तु जब परमेश्वर
दाऊद के हर एक शत्रु को पृथिवी पर से नाश करे तो मेरे
१६ घराने पर से भी अनुग्रह उठा न लीजियो। सो यूनतन ने
दाऊद के घराने से बाचा बांधी और कहा कि परमेश्वर दाऊद
१७ के शत्रुन के हाथ से पलटा लेवे। और यूनतन ने दाऊद से
फिर किरिया खिलाई इस लिये कि वुह उस्से अपने प्राण ही
के तुल्य प्रेम रखता था॥

१८ तब यूनतन ने दाऊद से कहा कि कल अमावाश्या और
तेरी खोज होगी इस कारण कि तेरा आसन सूना रहेगा।
१९ और जब तू तीन दिन अलग रहे तब तू शीघ्र उतरके उसी
स्थान में जाइयो जहां तू ने आप को कार्य्य के दिन छिपाया
२० था और तू अज़ल के चटान पास रहियो। और मैं उस अलंग
२१ तीन बाण मरूंगा जैसा कि चिन्ह मारता हूं। और देख मैं यह
कहके एक छोकरे को भेजूंगा कि जा बाणों को खोज यदि मैं
निश्चय छोकरे को कहूं कि देख बाण तेरे इस अलंग हैं उन्हें
ले तब निकल आइयो क्योंकि परमेश्वर के जीवन सों तेरे लिये
२२ कुशल है और कुछ नहीं। पर यदि मैं उस तरुण से यों कहूं
कि देख बाण तेरे आगे हैं तब तू मार्ग लीजियो क्योंकि परमेश्वर
२३ ने तुझे विदा किया है। रही वुह बात जो आपुस में ठहराई
है सो देख परमेश्वर सदा मेरे और तेरे मध्य में है॥
२४ सो दाऊद खेत में जा छिपा और जब अमावाश्या हुई तब
२५ राजा भोजन पर बैठा। और राजा अपने व्यवहार के समान
भीत के लग अपने आसन पर बैठा और यूनतन उठा और
अबिनेयिर साऊल की एक अलंग में बैठा था और दाऊद का
२६ स्थान सूना था। तथापि उस दिन साऊल ने कुछ न कहा
क्योंकि उस ने समझा था कि उस पर कुछ बीता है वुह
२७ अपवित्र होगा निश्चय वुह अपावन होग। और बिहान को
मास की दूसरी तिथि को ऐसा हुआ कि दाऊद का स्थान सूना
रहा तब साऊल ने अपने बेटे यूनतन से कहा कि किस कारण
यस्सी का बेटा कल और आज भोजन को नहीं आया है।
२८ तब यूनतन ने साऊल को उत्तर दिया कि दाऊद मुझ से पूछके
२९ बैतलहम को गया। और उस ने कहा कि मुझे जाने दे
कि नगर में हमारे घराने में बलि है और मेरे भाई ने मुझे
बुलाया है और अब यदि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया

है तो मुझे जाने दे कि अपने भाइयों को देखूं इस लिये वुह
राजा के भोजन पर नहीं आता॥
३० तब साऊल का कोप यूनतन पर भड़का और उस ने उसे
कहा कि हे ढीठ और दंगइत के पुत्र क्या मैं नहीं जानता
कि तू ने अपनी लज्जा के लिये और अपनी माता की नंगापन
३१ की लज्जा के लिये यस्सी के बेटे को चुना है। क्योंकि जब
लों यस्सी का बेटा भूमि पर जीता है तब लों तू और तेरा
राज्य स्थिर न होगा सो अब भेजके उसे मुझ पास ला क्योंकि
३२ वुह निश्चय मारा जावेगा। तब यूनतन ने अपने पिता को
उत्तर देके कहा कि वुह किस कारण मारा जावेगा उस ने क्या
३३ किया है। तब साऊल ने मारने को उस की ओर सांग फेंकी
तब यूनतन को निश्चय हुआ कि उस के पिता ने दाऊद के
३४ मारने को ठाना है। सो यूनतन बहुत रिसियाके मंच से उठ गया
और मास की दूसरी तिथि में भोजन न किया क्योंकि वुह दाऊद के
लिये निपट उदास हुआ क्योंकि उस के पिता ने उसे लज्जित किया॥
३५ और बिहान को यूनतन उसी समय जो दाऊद से ठहराया
३६ था खेत को गया और एक छोकरा उस के साथ था। और उस
ने उस छोकरे को आज्ञा किई कि दौड़ और जो बाण मैं चलाता
हूं उन्हें ढूंढ़ और ज्योंहीं वुह दौड़ा त्योंहीं एक बाण उस के
३७ परे मारा। और जब वुह छोकरा उस स्थान में पहुंचा जहां
यूनतन ने बाण मारा था तब यूनतन ने छोकरे को पुकारके
३८ कहा कि क्या वुह बाण तुझ से परे नहीं। और यूनतन ने
छोकरे को पुकारा कि चटक कर ठहर मत सो यूनतन के
छोकरे ने बाणों को एकट्ठा किया और अपने स्वामी पास आया।
३९ परन्तु उस छोकरे ने कुछ न जाना केवल दाऊद और यूनतन
४० उस का भेद जानते थे। तब यूनतन ने अपने हथियार उस
छोकरे को दिये और उसे कहा कि नगर में ले जा॥

४१ छोकरे के जाने के पीछे दाऊद दक्खिन की ओर से निकला
ओर भूमि पर औंधे मुंह गिरा ओर तीन बार दण्डवत किई
ओर उन्हों ने आपुस में एक दूसरे को चूमा ओर परस्पर यहां
४२ लों बिलाप किये कि दाऊद ने जीता। ओर यूनतन ने दाऊद
को कहा कि कुशल से चला जा उस बाचा पर जो हम ने परमेश्वर
के नाम की किरिया खाके आपुस में किई है मेरे तेरे मध्य में ओर
हमारे बंश के मध्य में सदा लों परमेश्वर साक्षी होवे सो वुह
उठके चला गया ओर यूनतन नगर में आया॥

एक्कीसवां पर्ब्ब।

१ तब दाऊद नूब को अखिमलिक याजक पास आया ओर
अखिमलिक दाऊद की भेंट करने से डरा ओर बोला कि तू
२ क्यों अकेला है ओर तेरे साथ कोई नहीं। ओर दाऊद ने
अखिमलिक याजक से कहा कि राजा ने मुझे एक काम को
भेजा है ओर मुझ से कहा कि यह काम जो मैं ने तुझे कहा
है किसी को मत जनाइयो ओर मैं ने सेवकों को अमुक स्थान
३ को भेज दिया है। सो अब तेरे हाथ तले क्या है मुझे पांच
४ रोटी अथवा जो कुछ धरा हो सो मेरे हाथ में दीजिये। ओर
याजक ने दाऊद को कहा कि मेरे हाथ तले सामान्य रोटी
नहीं परन्तु पवित्र रोटी है यदि तरुण लोग स्त्रियों से अलग
५ रहे हों। तब दाऊद ने उत्तर देके याजक को कहा कि
निश्चय तीन दिन हुए होंगे जब से मैं निकला हूं स्त्री हम से
अलग है ओर तरुणों के पात्र पवित्र हैं ओर यद्यपि रोटी आज
६ पात्र में पवित्र किई गई हो तथापि सामान्य के तुल्य है। सो
याजक ने पवित्र किई गई रोटी उसे दिई क्योंकि भेंट की रोटी
को छोड़ वहां कोई रोटी न थी जो परमेश्वर के आगे से उठाई
गई थी जिसतें उस की संती वहां ताती रोटी रक्खी जावे।

७ अब उस दिन साऊल के सेवकों में से एक जन अदूमी परमेश्वर
के आगे रोका गया था जिस का नाम दोयेग था वुह साऊल
८ के अहीरों का प्रधान था। तब दाऊद ने अखिमलिक से पूछा
कि यहां तेरे हाथ तले कोई भाला अथवा खड्ग तो नहीं क्योंकि
मैं अपनी तलवार अथवा हथियार साथ नहीं लाया हूं क्योंकि
९ राजा के काम की शीघ्रता थी। तब याजक ने कहा कि
फ़िलिस्ती जुलिअत का खड्ग जिसे तू ने एला की तराई में
मारा एक कपड़े में लपेटा हुआ अफ़ूद के पीछे धरा है यदि
तू उसे लिया चाहे तो ले क्योंकि उसे छोड़ यहां दूसरा नहीं
तब दाऊद बोला कि उस के तुल्य दूसरा नहीं वही मुझे दे॥
१० और दाऊद उठा और साऊल के सन्मुख से उसी दिन
११ भागा चला गया और जात के राजा अकीस पास आया। तब
अकीस के सेवकों ने उसे कहा कि क्या यह दाऊद उस देश
का राजा नहीं क्या यह वही नहीं जिस के बिषय में वे आपुस
में गा गाके और नाच नाचके कहती थीं कि साऊल ने अपने
१२ सहस्रों को मारा और दाऊद ने अपने दस सहस्रों को। और
दाऊद ने ये बातें अपने मन में जुगा रक्खीं और जात के
१३ राजा अकीस से अति डरा। तब उस ने उन के आगे अपनी
चाल पलट डाली और उन में आप को बौड़हा बनाया और
फाटक के द्वारों पर लकीरें खींचने लगा और अपनी लार को
१४ दाढ़ी में बहने दिया। तब अकीस ने अपने सेवकों से कहा
कि लेओ यह जन तो सिड़ी है तुम उसे मुझ पास क्यों लाये।
१५ क्या मुझे सिड़ी का प्रयोजन है कि तुम इसे मुझ पास लाये
कि सिड़ीपन करे क्या यह मेरे घर में आवेगा॥

बाईसवां पर्व्व।

१ तब दाऊद वहां से निकलके भागा और अदुल्लाम की

कंदला में गया और उस के भाई और उस के पिता का सारा
२ घराना यह सुनके उस पास वहां गये। और हर एक दुःखी
और ऋणी और उदासी उस पास एकट्ठे हुए और वुह उन का
प्रधान हुआ और उस के साथ चार सौ मनुष्य के लग भग
हो गये॥
३ और वहां से दाऊद मोअब के मिसफ़ः को गया और मोअब
के राजा से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मेरे माता
पिता निकलके आप के पास रहें जब लों मैं जानूं कि ईश्वर
४ मेरे लिये क्या करता है। और वुह उन्हें मोअब के राजा के
आगे लाया और जब लों दाऊद ने अपने तई दृढ़ स्थानों में
५ छिपाया था वे उसी के साथ रहे। तब जद आगमज्ञानी ने
दाऊद को कहा कि दृढ़ स्थानों में मत रह यहूदाह के देश
को जा तब दाऊद चला और हारित के बन में पहुंचा॥
६ जब साऊल ने सुना कि दाऊद दिखाई दिया और लोग
उस के साथ हैं अब साऊल उस समय रामात के जिबअः में
एक कुंज के नीचे अपने हाथ में भाला लिये था और उस के
७ सारे दास उस के आस पास खड़े थे। तब साऊल ने अपने
आस पास के सेवकों से कहा कि सुनो हे बिनयमीनो क्या यस्सी
का बेटा तुम्में से हर एक को खेत और दाख की बारी देगा
८ और तुम सब को सहस्रों और सैकड़ों का प्रधान करेगा। क्योंकि
तुम सब ने मेरे विरुद्ध परामर्श किया है और किसी ने मुझे नहीं
सुनाया कि मेरे बेटे ने यस्सी के बेटे से वाचा बांधी है और
तुम्में कोई नहीं जो मेरे लिये शोक करे अथवा मुझे संदेश
देवे कि मेरे बेटे ने मेरे सेवक को उभारा है कि ढूके में रहे
जैसा आज के दिन है॥
९ तब अदूमी दोयेग ने जो साऊल के सेवकों का प्रधान था
उत्तर दिया और यों कहा कि मैं ने यस्सी के बेटे को नूब में

१० अख़ितूब के बेटे अख़िमलिक पास देखा है। और उस ने उस के
लिये परमेश्वर से बूझा और उसे भोजन दिया और फ़िलिसती
जुलिअत का खड्ग उसे दिया॥
११ तब राजा ने अख़ितूब के बेटे अख़िमलिक याजक को और
उस के पिता के सारे घराने अर्थात् उन याजकों को जो नूब में थे
१२ बुला भेजा और वे सब के सब राजा पास आये। और साऊल ने
कहा कि हे अख़ितूब के बेटे सुन तब वुह बोला मेरे प्रभु मैं यहीं
१३ हूं। और साऊल ने उसे कहा कि तू ने मेरे विरुद्ध पर यस्सी के
बेटे के साथ क्यों एक मता किई कि तू ने उसे रोटी और
खड्ग दिया और उस के लिये परमेश्वर से बूझा जिसतें वुह मेरे
विरोध में उठे और घात में लगे जैसा कि आज के दिन है।
१४ तब अख़िमलिक ने राजा को उत्तर देके कहा कि आप के सारे
सेवकों में दाऊद सा बिश्वस्त कौन है जो राजा का जवांई और
१५ आज्ञापालक है और आप के घर में प्रतिष्ठित है। क्या मैं ने
उस के लिये परमेश्वर से बूझा यह मुझ से परे होवे राजा
अपने सेवक पर और उस के पिता के सारे घराने पर यह दोष
न लगावें क्योंकि आप का सेवक इन बातों में से घट बढ़
नहीं जानता॥
१६ तब राजा बोला अख़िमलिक तू और तेरे पिता का सारा
१७ घराना निश्चय मर जावेगा। तब राजा ने उन पादातों को
जो पास खड़े थे आज्ञा किई कि फिरो और परमेश्वर के
याजकों को मार डालो क्योंकि इन के हाथ भी दाऊद से मिले
हुए हैं और उन्हों ने जाना कि वुह भागा है और मुझे संदेश न
दिया परन्तु राजा के सेवकों ने परमेश्वर के याजकों को मारने के
१८ लिये हाथ न बढ़ाया। तब राजा ने दोयेग को कहा कि तू फिर
और उन याजकों को घात कर सो अदूमी दोयेग फिरा और
याजकों पर लपका उस दिन उस ने पचासी मनुष्यों को जो

१९ सूती अफूद पहिनते थे घात किया। और उस ने याजकों के
नगर नूब के पुरुषों और स्त्रियों और लड़कों और दूध पीवकों
को और बैलों और गदहों और भेड़ों को तलवार की धार से
घात किया॥
२० और अखितूब के बेटे अखिमलिक के बेटों में से एक जन
जिस का नाम अबिवतर था बच निकला और दाऊद के पीछे
२१ भागा। और अबिवतर ने दाऊद को संदेश दिया कि साऊल
२२ ने परमेश्वर के याजकों को मार डाला। और दाऊद ने अबिवतर
को कहा कि जिस दिन अदूमी दोयेग वहां था मैं ने उसी
दिन जाना था कि वुह निश्चय साऊल को कहेगा मैं तेरे पिता
२३ के सारे घराने के मारे जाने का कारण हुआ। सो तू मेरे
साथ रह मत डर क्योंकि जो तेरे प्राण का गांहक है सो मेरे
प्राण का गांहक है परन्तु मेरे पास बचा रह॥

तेईसवां पर्ब्ब।

१ तब उन्हों ने यह कहके दाऊद को संदेश दिया कि देख
फ़िलिसती क़ईल: से लड़ते हैं और खलिहानों को लूटते हैं।
२ तब दाऊद ने परमेश्वर से यह कहके बूझा कि मैं जाऊं और
उन फ़िलिसतियों को मारूं और परमेश्वर ने दाऊद से कहा
कि जा और फ़िलिसतियों को मार और क़ईल: को बचा।
३ और दाऊद के मनुष्यों ने उसे कहा कि देख हम तो यहूदाह
में होते हुए डरते हैं तो कितना अधिक क़ईल: में जाके
४ फ़िलिसतियों की सेनाओं का साम्ना करें। तब दाऊद ने
परमेश्वर से फिर बूझा और परमेश्वर ने उत्तर देके उसे कहा कि
उठ क़ईल: को उतर जा क्योंकि मैं फ़िलिसतियों को तेरे
५ हाथ में सौंपूंगा। सो दाऊद और उस के लोग क़ईल: को
गये और फ़िलिसतियों से लड़े और उन के ढोर ले आये और

उन्हें बड़ी मार से मारा यों दाऊद ने क़ईल: के बासियों को
बचाया ॥
६ और ऐसा हुआ कि जब अखिमलिक का बेटा अबियतर
भागके क़ईल: में दाऊद पास गया तब उस के हाथ में एक
अफ़ूद था ॥
७ और साऊल को संदेश पहुंचा कि दाऊद क़ईल: में आया
और साऊल बोला कि ईश्वर ने उसे मेरे हाथ में सौंप दिया
क्योंकि वुह ऐसे नगर में जिस में फाटक और अड़ंगे हैं पहुंचके
८ बंद हो गया। और साऊल ने समस्त लोगों को युद्ध के लिये
एकट्ठा किया कि क़ईल: में उतरके दाऊद को और उस के
९ लोगों को घेर लेवें। और दाऊद ने जाना कि साऊल चाहता
है कि चुपके से मेरी बुराई करे तब उस ने अबियतर याजक
१० से कहा कि अफ़ूद मुझ पास ला। तब दाऊद ने कहा कि
हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तेरे सेवक ने निश्चय सुना है
कि साऊल का विचार है कि क़ईल: में आके मेरे कारण
११ नगर को नष्ट करे। क्या क़ईल: के लोग मुझे उस के हाथ
में सौंप देंगे क्या जैसा तेरे दास ने सुना है साऊल उतर
आवेगा हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं
कि अपने सेवक को बता तब परमेश्वर ने कहा कि वुह उतर
१२ आवेगा। तब दाऊद ने कहा क्या क़ईल: के लोग मुझे और
मेरे लोगों को साऊल की बंधुआई में सौंप देंगे और परमेश्वर
१३ ने कहा कि वे सौंप देंगे। तब दाऊद अपने लोग सहित जो
मनुष्य छ: सौ एक थे उठा और क़ईल: से निकल गया और
जिधर जा सका गया और साऊल को संदेश पहुंचा कि दाऊद
१४ क़ईल: से बच निकला तब वुह जाने से रह गया। और
दाऊद ने अरण्य में दृढ़ स्थानों में बास किया और जेफ़ के
बन में एक पहाड़ के बीच रहा और साऊल प्रति दिन उस

की खोज में लगा हुआ था परन्तु ईश्वर ने उसे उस के हाथ में
१५ सोंप न दिया। और दाऊद ने देखा कि साऊल उस के मारने के
कारण निकला और दाऊद जेफ़ के अरण्य के बीच एक बन
में था॥
१६ और साऊल का बेटा यूनतन उठा और बन में दाऊद
१७ पास गया और ईश्वर पर उसे दृढ़ किया। और उसे कहा कि
मत डर क्योंकि तू मेरे पिता साऊल के हाथ में न पड़ेगा
और तू इसराएल का राजा होगा और तेरे पीछे मैं हूंगा और
१८ मेरा पिता साऊल भी यह जानता है। और उन दोनों ने
परमेश्वर के आगे बाचा बांधी और दाऊद बन में ठहर रहा
और यूनतन अपने घर गया॥
१९ तब जेफ़ के लोग जिबिअः में साऊल पास चढ़ आके बोले
कि क्या दाऊद दृढ़ स्थानों में हमारे मध्य एक बन में हकील:
पहाड़ पर जो यसीमून की दक्षिण दिशा में है नहीं रहता।
२० सो हे राजा अब तू चल और अपने मन के समान उतर आ
२१ और हमें उचित है कि उसे राजा के हाथ में सोंप देवें। तब
साऊल बोला कि परमेश्वर तुम्हें आशीष देवे क्योंकि तुम ने
२२ मुझ पर दया किई। अब जाओ और और भी जुगत करो
और देखो कि उस के लुकने का स्थान कहां है और किस ने
उसे वहां देखा है क्योंकि मुझे कहा गया कि वुह बड़ी चैाकसी
२३ करता है। सो देखो और उन लुकने के सारे स्थानों को जहां
वुह छिपता है जानो और ठीक संदेश लेके मुझ पास फिर
आओ और मैं तुम्हारे साथ जाऊंगा और यों होगा कि यदि
वुह देश में होवे तो मैं उसे यहूदाह के सारे सहस्रों में से ढूंढ़
२४ लेऊंगा। तब वे उठे और साऊल से आगे जेफ़ को गये परन्तु
दाऊद अपने लोगों सहित मऊन के बन में यसीमून के दक्षिण
दिशा को एक चैागान में था॥

२५ तब साऊल और उस के लोग उस की खोज को निकले
और दाऊद को समाचार पहुंचा तब वुह पहाड़ी से उतरके
मऊन के बन में जा रहा और साऊल ने यह सुनके मऊन के
२६ बन में दाऊद का पीछा किया। और साऊल पर्बत की इस
अलंग चला गया और दाऊद और उस के लोग पर्बत की उस
अलंग और दाऊद ने साऊल के डर से हाली किया कि निकल
जावे क्योंकि साऊल और उस के लोगों ने दाऊद को और उस
२७ के लोगों को पकड़ने को चारों ओर से घेर लिया। तब एक
दूत ने साऊल पास आके कहा कि हाली आ कि फ़िलिसती
२८ देश में फैल गये। सो साऊल दाऊद के खेदने से फिरा और
फ़िलिसतियों के सन्मुख हुआ इस कारण उन्हों ने उस स्थान
का नाम बिभाग का चटान धरा॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ और दाऊद वहां से चलके अैनजदी के दृढ़ स्थानों में जा
२ रहा। और यों हुआ कि जब साऊल फ़िलिसतियों के पीछे से
फिरा तब उसे कहा गया कि देख दाऊद अैनजदी के अरण्य
३ में है। तब साऊल समस्त इसराएली में से तीन सहस्र चुने
हुए पुरुष लेके दाऊद की और उस के लोगों की खोज को
४ बनैली बकरियों के पहाड़ों पर गया। तब वुह मार्ग के भेड़शाला
में आया जहां एक खोह थी और साऊल उस खोह में अपने
पांव दाबने और लेटने के लिये गया और दाऊद और उस के
५ लोग खोह की अलंगों में रहे। और दाऊद के लोगों ने उसे
कहा कि देखिये यह वुह दिन है जिस के बिषय में परमेश्वर
ने आप को कहा था कि देख मैं तेरे शत्रुन को तेरे हाथ में
सौंपूंगा जिसतें तू अपनी बांछा के समान उस्से करे तब दाऊद
उठा और चुपके से साऊल के बस्त्र का खूंट काट लिया।

६ और उस के पीछे यों हुआ कि दाऊद के मन में खटका हुआ
७ इस कारण कि उस ने साऊल का खूंट काटा। और उस ने
अपने लोगों से कहा कि परमेश्वर न करे कि मैं अपने स्वामी
पर जो परमेश्वर का अभिषिक्त है ऐसा करूं कि अपना हाथ
उस पर बढ़ाऊं क्योंकि वुह परमेश्वर का अभिषिक्त है॥
८ सो दाऊद ने इन बातों से अपने लोगों को रोक रक्खा
और उन्हें साऊल पर हाथ चलाने न दिया परन्तु साऊल ने
९ खोह से निकलके अपना मार्ग लिया। और उस के पीछे दाऊद
उठा और उस खोह से बाहर आया और साऊल से यह कहके
पुकारा कि हे मेरे स्वामी राजा और जब साऊल ने अपने पीछे
१० फिरके देखा तब दाऊद ने भूमि पर झुकके दण्डवत किई। और
दाऊद ने साऊल से कहा कि लोगों की ये बातें आप क्यों
सुनते हैं कि देखिये दाऊद आप की बुराई चाहता है।
११ देखिये आज ही के दिन आप की आंखों ने देखा है कि
परमेश्वर ने आज आप को खोह में मेरे हाथ में सौंप दिया
और कितनों ने आप को मारने कहा परन्तु मैं ने आप को छोड़ा
और अपने मन में बिचारा कि अपने स्वामी पर अपना हाथ
१२ न बढ़ाऊंगा क्योंकि वुह परमेश्वर का अभिषिक्त है। इस्से अधिक
हे मेरे पिता देखिये हां अपने वस्त्र के खूंट को मेरे हाथ में
देखिये क्योंकि मैं ने जो आप के बस्त्र का खूंट काट लिया
और आप को न मारा इस्से जानिये और देखिये कि मेरे मन
में बुराई और किसी प्रकार का अपराध नहीं है और मैं ने
आप के बिरुद्ध पाप न किया तथापि आप मेरे प्राण का अहेर
१३ करने को निकले हैं। परमेश्वर मेरे और आप के मध्य में
न्याय करे और परमेश्वर आप से मेरा पलटा लेवे परन्तु मेरा
१४ हाथ आप पर न पड़ेगा। जैसा प्राचीनों की कहावत में कहा
गया है कि दुष्ट से दुष्टता निकलती है परन्तु मेरा हाथ आप

१५ पर न उठेगा। इसराएल का राजा किस के पीछे निकला है
आप किस के पीछे पड़े हैं क्या मरे हुए कूकर के अथवा एक
पिसू के॥
१६ सो परमेश्वर बिचार करे और मेरे और आप के मध्य में
न्याय करे और देखे और मेरे पद का पक्ष करे और आप के
१७ हाथ से मुझे बचावे। और जब दाऊद ये बातें साऊल से
कह चुका तब साऊल ने कहा कि मेरे बेटे दाऊद क्या यह
तेरा शब्द है और साऊल ने बड़े शब्द से बिलाप किया।
१८ और दाऊद से कहा कि तू मुझ से अधिक धर्म्मी है क्योंकि
१९ तू ने बुराई की संती मेरी भलाई किई। और तू ने आज के दिन
दिखाया है कि तू ने मुझ से भलाई किई है यद्यपि परमेश्वर
ने मुझे तेरे हाथ में सौंप दिया और तू ने मुझे मार न डाला।
२० क्योंकि यदि कोई अपने बैरी को पावे तो क्या वुह उसे कुशल से
छोड़ देगा सो जो तू ने आज मुझ से किया है परमेश्वर
२१ इस का प्रतिफल देवे। और अब देख मैं जानता हूं कि तू
निश्चय राजा होगा और इसराएल का राज्य तेरे हाथ में स्थिर
२२ होगा। सो अब तू मुझ से परमेश्वर की किरिया खा कि तेरे
पीछे मैं तेरे बंश को काट न डालूंगा और तेरे पिता के घराने
२३ में से तेरे नाम को मिटा न डालूंगा। तब दाऊद ने साऊल
से किरिया खाई और साऊल अपने घर को चला गया परन्तु दाऊद
और उस के लोग दृढ़ स्थान में गये॥

पचीसवां पर्ब्ब।

१ और समूएल मर गया और समस्त इसराएलियों ने एकट्ठे
होके उस पर बिलाप किया और रामात में उस के घर में उसे
गाड़ा और दाऊद उठके फ़ारान के अरण्य में उतर गया॥
२ और वहां मऊन में एक पुरुष था जिस की संपत्ति करमिल

में थी वुह महाजन था और उस के तीन सहस्र भेड़ और एक
सहस्र बकरी थीं और वुह अपनी भेड़ों का रोम करमिल में
३ कतरता था। और उस जन का नाम नबाल और उस की
स्त्री का नाम अबिजेल था और वुह स्त्री बुद्धिमती और सुंदरी
थी परन्तु वुह पुरुष कठोर और कुकर्म्मी था और कालिब के
४ वंश के घराने में से था। और दाऊद ने अरण्य में सुना कि
५ नबाल भेड़ों के रोम कतरता है। तब दाऊद ने दस तरुण
भेजे और उन तरुणों से कहा कि नबाल पास करमिल को
६ चढ़ जाओ और मेरे नाम से उस का कुशल पूछो। और उस
भरे पूरे जन से कहियो कि तुझ पर कुशल और तेरे घर पर
७ कुशल और तेरी समस्त बस्तु पर कुशल होवे। और मैं ने
अब सुना है कि तुझ पास रोम कतरवैये हैं सो तेरे गड़रिये
हमारे संग थे और हम ने उन्हें दुःख न दिया और जब लों
वे करमिल में हमारे साथ थे उन का कुछ जाता न रहा।
८ तू अपने तरुणों से पूछ और वे तुझे कहेंगे इस लिये तरुण
लोग तेरी दृष्टि में अनुग्रह पावें क्योंकि हम अच्छे दिन में आये
हैं सो मैं तेरी बिनती करता हूं कि जो तेरे हाथ आवे सो तेरे
सेवकों और अपने बेटे दाऊद को दीजिये॥

९ और दाऊद के तरुणों ने आके नबाल को दाऊद का नाम
१० लेके उन सारी बातों के समान कहा और चुप हो रहे। तब
नबाल ने दाऊद के सेवकों को उत्तर देके कहा कि दाऊद
कौन और यस्सी का बेटा कौन आज कल बहुत सेवक हैं जो
११ अपने स्वामियों से भाग निकले हैं। क्या अपनी रोटी और
पानी और मांस जो मैं ने अपने कतरवैयों के लिये मारा है
लेके उन मनुष्यों को देऊं जिन्हें मैं नहीं जानता कि कहां से
१२ हैं। सो दाऊद के तरुणों ने अपना मार्ग लिया और आके
१३ उन सब बातों को उस्से कहा। तब दाऊद ने अपने लोगों से

कहा कि हर एक तुम में से अपना अपना खड्ग बांधे सो उन्हों
ने अपना अपना खड्ग बांधा और दाऊद ने भी अपना खड्ग
बांधा और दाऊद के पीछे पीछे चार सौ जन गये और दो सौ
सामग्री के साथ रहे ॥
१४ परन्तु तरुणों में से एक ने नबाल की पत्नी अबिजैल से
कहा कि देख दाऊद ने अरण्य में से हमारे स्वामी पास दूतों
१५ को भेजा कि नमस्कार करें पर वुह उन पर झपटा। परन्तु
उन मनुष्यों ने हम से भलाई किई कि हमें कुछ दुःख न हुआ और
जब लों हम चौगान में थे और उन से परिचय रखते थे तब
१६ लों हम ने कुछ न खोया। जब लों हम उन के साथ भेड़
की रखवाली करते रहे रात दिन वे हमारे लिये एक आड़
१७ थे। सो अब जान रख और सोच कि तू क्या करेगी क्योंकि
हमारे स्वामी पर और उस के सब घराने पर बुराई ठहराई
गई क्योंकि वुह ऐसा बुरा जन है कि कोई उस्से बात नहीं
कर सक्ता ॥
१८ तब अबिजैल हाली से दो सौ रोटियां और दो कुप्पे दाखरस
और पांच भेड़ें बनी बनाई और मन सन्ताईस एक भुना और
एक सौ गुच्छा अंगूर और दो सौ गूलर की लिट्टी लिई और
१९ उन्हें गदहों पर लादा। और अपने सेवकों को कहा कि मेरे
आगे आगे बढ़ो देखो मैं तुम्हारे पीछे पीछे आती हूं परन्तु
२० उस ने अपने पति नबाल से न कहा। और ज्योंहीं वुह गदहे
पर चढ़के पहाड़ के आड़ से उतरी तो क्या देखती है कि
दाऊद अपने लोगों समेत उतर के उस के सन्मुख आया और
२१ उस्से भेंट हुई। अब दाऊद ने कहा था कि निश्चय मैं ने इस
जन की समस्त बस्तुन की जो अरण्य में थीं बृथा रखवाली
किई यहां लों कि उस के सब में से कुछ नष्ट न हुआ और
२२ भलाई की संती मुझ से बुराई किई। सो यदि बिहान लों

उस के समस्त पुरुषों में से मैं एक को जो भीत पर मूत्ता है
छोड़ूं तो ईश्वर उस्से और उस्से भी अधिक दाऊद के शत्रुन से
करे ॥
२३ और ज्योंहीं अबिजेल ने दाऊद को देखा त्योंहीं वुह गदहे
से उतरी और दाऊद के आगे औंधी गिरी और भूमि पर दंडवत
२४ किई। और उस के चरणों पर गिरके कहा कि हे मेरे प्रभु
मुझ ही पर अपराध रखिये मैं तेरी बिनती करती हूं कि अपनी
दासी को कान में बात करने दीजिये और अपनी दासी की
२५ बातें सुनिये। मैं आप से बिनती करती हूं कि मेरे प्रभु इस
बुरे पुरुष की अर्थात् नबाल की चिंता न करिये क्योंकि जैसा
उस का नाम वैसा वही है नबाल उस का नाम और मूर्खता
उस के साथ परन्तु मैं जो तेरी दासी हूं अपने प्रभु के तरुणों
२६ को जिन्हें आप ने भेजा था न देखा। सो अब हे मेरे प्रभु
परमेश्वर के जीवन सों और आप के प्राण के जीवन सों जैसा
कि परमेश्वर ने आप को लोहू बहाने से और अपने ही हाथ
से प्रतिफल लेने से रोका है वैसा ही अब आप के शत्रु और
वे जो मेरे प्रभु की बुराई चाहते हैं नबाल के समान होवें।
२७ सो अब यह भेंट आप की दासी अपने प्रभु के आगे लाई है
सो उन तरुणों को दिया जाय जो मेरे प्रभु के पश्चातगामी
२८ हैं। अब मैं आप की बिनती करती हूं कि अपनी दासी का
पाप क्षमा कीजिये क्योंकि निश्चय परमेश्वर मेरे प्रभु के लिये
दृढ़ घर बनावेगा क्योंकि मेरा प्रभु परमेश्वर की लड़ाइयां
लड़ता है और आप के दिनों में आप में बुराई न पाई गई।
२९ तथापि एक जन उठा है कि आप का पीछा करे और आप के
प्राण का गांहक होवे परन्तु मेरे प्रभु का प्राण आप के ईश्वर
परमेश्वर के संग जीवन की ढेर में बांधा जावेगा और तेरे
३० शत्रुन के प्राण गोफन से फेंके जावेंगे। और ऐसा होगा कि

जब परमेश्वर अपने बचन के समान सब भलाई मेरे प्रभु से
३१ कर चुके और आप को इसराएल पर आज्ञाकारी करे। तब
आप के लिये यह कुछ डगमगाने का अथवा मेरे प्रभु के मन
की ठोकर का कारण न होगा कि आप ने अकारथ लोहू बहाया
अथवा कि मेरे प्रभु ने अपना पलटा लिया परन्तु जब परमेश्वर
मेरे प्रभु से भलाई करे तब अपनी दासी को स्मरण कीजिये।
३२ और दाऊद ने अबिजैल से कहा कि परमेश्वर इसराएल का
ईश्वर धन्य है जिस ने तुझे मेरी भेंट के लिये आज के दिन
३३ भेजा है। और तेरा मंत्र धन्य और तू धन्य है जिस ने
मुझे आज के दिन लोहू से और अपने हाथ से पलटा लेने से
३४ रोक रक्खा है। क्योंकि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के जीवन
सों जिस ने तुझे दुःख देने से मुझ से अलग रक्खा यदि तू
शीघ्र न करती और मुझ पास चली न आती तो निःसंदेह
बिहान लों नबाल का एक भी पुरुष जो भीत पर मूत्ता है न
३५ छूटता। और जो कुछ कि वुह उस के निमित्त लाई थी दाऊद
ने उस के हाथ से लिया और उसे कहा कि अपने घर कुशल
से जा देख मैं ने तेरा वचन माना है और तुझे ग्रहण किया
है॥

३६ तब अबिजैल नबाल पास आई और देखो कि उस ने अपने
घर में राजा का सा एक जेवनार किया और नबाल का मन मगन
हो रहा था क्योंकि वुह बड़ा मतवाला था सो इस कारण उस
३७ ने उसे बिहान लों कुछ घट बढ़ न कहा। परन्तु ऐसा हुआ
कि बिहान को जब नबाल का मद उतरा और उस की स्त्री
ने यह समाचार उसे कहा तब उस का मन मृतक सा हो
गया और वुह पत्थर हो गया॥

३८ और ऐसा हुआ कि दस दिन के पीछे परमेश्वर ने नबाल
३९ को मारा और वुह मर गया। और जब दाऊद ने सुना कि

नबाल मर गया तब उस ने कहा कि परमेश्वर धन्य है जिस
ने नबाल के हाथ से मेरे कलंक का पलटा लिया और अपने
दास को बुराई से अलग रक्खा है क्योंकि परमेश्वर ने नबाल
की दुष्टता को उसी के सिर पर डाला और दाऊद ने भेजा
और अबिजैल से बात चीत करवाई कि अपनी पत्नी करे॥
४० और जब दाऊद के सेवक करमिल को अबिजैल पास आये
तब वे यह कहके उस्से बोले कि दाऊद ने हमें तुझ पास
४१ भेजा है कि तुझे अपनी पत्नी करे। तब वुह उठी और भूमि
पर झुकके बोली कि देख तेरी दासी अपने स्वामी के सेवकों
४२ के चरण धोने के लिये दासी होवे। और अबिजैल शीघ्रता
करके उठी और गदहे पर चढ़ी और अपनी पांच दासियां साथ
लिईं और दाऊद के दूतों के साथ चली और उस की पत्नी
४३ हुई। और दाऊद ने यज़रअएल में से अखिनुअम को
४४ लिया और वे दोनों उस की पत्नियां हुईं। परन्तु साऊल ने
अपनी बेटी मीकल को जो दाऊद की पत्नी थी लैश के बेटे
फ़लती को दिया जो जल्लीम का था॥

छब्बीसवां पर्व्व।

१ तब ज़ैफ़ी जिबिअः में साऊल पास आ बोले क्या दाऊद
२ हकील: पहाड़ में यसीमून के आगे छिपा हुआ नहीं। तब साऊल
उठके तीन सहस्र चुने हुए इसराएली लेके ज़ैफ़ के अरण्य में
३ उतरा कि दाऊद को ज़ैफ़ के अरण्य में ढूंढ़े। और हकील:
के पहाड़ में जो यसीमून के आगे है मार्ग की ओर डेरा किया
परन्तु दाऊद अरण्य में रहा और उस ने देखा कि साऊल उस
४ का पीछा किये हुए अरण्य में आया। तब दाऊद ने भेदिये
भेजे और बूझ लिया कि साऊल सच मुच आया है॥
५ तब दाऊद उठके साऊल के डेरे को चला और दाऊद ने

उस स्थान को देख रक्खा जहां साऊल पड़ा था और नेयिर का
बेटा अबिनेयिर उस की सेना का प्रधान था और साऊल खाई में
सोता था और लोग उस के चारों ओर डेरा किये थे।
६ तब दाऊद ने हित्ती अख़िमलिक और ज़रूयाह के बेटे अबिशै
को जो यूअब का भाई था कहा कि कौन मेरे साथ छावनी
में साऊल पास चलेगा और अबिशै बोला कि मैं आप के साथ
७ उतरूंगा। सो दाऊद और अबिशै रात को सेना में घुसे और
क्या देखते हैं कि साऊल खाई के भीतर सोता है और उस
का भाला उस के सिरहाने भूमि में गड़ा था परन्तु अबिनेयिर
८ और उस के लोग चारों ओर सोते थे। तब अबिशै ने दाऊद
से कहा कि ईश्वर ने आज आप के शत्रु को आप के हाथ में
कर दिया सो अब मुझे भाले से एक ही बार मारके भूमि
९ में उसे गोदने दीजिये और दूसरी बार उसे न मारूंगा। तब
दाऊद ने अबिशै से कहा कि उसे नाश न कर क्योंकि कौन
परमेश्वर के अभिषिक्त पर हाथ बढ़ाके निर्दोष ठहर सके।
१० और दाऊद ने कहा कि परमेश्वर के जीवन सों परमेश्वर उसे
मारेगा अथवा उस का दिन आवेगा और वुह मर जावेगा अथवा
११ युद्ध पर उतरेगा और मारा जावेगा। ईश्वर न करे कि मैं
परमेश्वर के अभिषिक्त पर अपना हाथ बढ़ाऊं पर अब तू उस के
सिरहाने के भाले को और पानी की झारी को ले लेना और हम
१२ चल निकलें। सो दाऊद ने भाला और पानी की झारी साऊल
के सिरहाने से ले लिई और चल निकले और किसी ने न देखा
और न जाना और कोई न जागा क्योंकि सब के सब
सोते थे क्योंकि परमेश्वर की ओर से भारी निद्रा उन पर
पड़ी थी॥

१३ तब दाऊद दूसरी ओर गया और एक पहाड़ की चोटी पर
१४ दूर जा खड़ा हुआ और उन में बड़ा बीच था। और दाऊद

ने लोगों को और नेयिर के बेटे अबिनेयिर को पुकारके कहा
कि हे अबिनेयिर तू उत्तर नहीं देता तब अबिनेयिर ने उत्तर
१५ देके कहा कि तू कौन है जो राजा को पुकारता है। तब
दाऊद ने अबिनेयिर से कहा कि क्या तू बलवंत नहीं और
इसराएल में तेरे समान कौन सो किस लिये तू ने अपने प्रभु
राजा की रक्षा न किई क्योंकि लोगों में से एक जन तेरे प्रभु
१६ राजा के मारने को निकला था। तू ने यह काम कुछ
अच्छा न किया परमेश्वर के जीवन सों तुम मार डालने के
योग्य हो इस कारण कि तुम ने अपने स्वामी की जो परमेश्वर
का अभिषिक्त है रक्षा न किई और अब देख कि राजा का भाला
और पानी की झारी जो उस के सिरहाने थी कहां है॥

१७ तब साऊल ने दाऊद का शब्द पहिचाना और कहा कि हे मेरे
बेटे दाऊद क्या यह तेरा शब्द है तब दाऊद बोला कि हे मेरे
१८ प्रभु हे राजा मेरा शब्द है। और उस ने कहा कि मेरे प्रभु
क्यों इस रीति से अपने दास के पीछे पड़े हैं क्योंकि मैं ने क्या
१९ किया और मेरे हाथ से क्या पाप हुआ। सो अब मैं बिनती
करता हूं कि मेरा प्रभु राजा अपने सेवक की बातों पर
कान धरे यदि परमेश्वर ने मुझ पर आप को उभाड़ा है तो
वुह भेंट ग्रहण करे परन्तु यदि यह मनुष्य के बंश से है तो
परमेश्वर का स्राप उन पर पड़े क्योंकि उन्हों ने आज मुझे
परमेश्वर के अधिकार से यह कहके हांक दिया है कि जा उपरी
२० देवतों की सेवा कर। सो अब परमेश्वर के आगे मेरा लोहू
भूमि पर न बहे क्योंकि इसराएल का राजा एक पिसू की खोज
को निकला है जैसा कोई तीतर के अहेर को पहाड़ों पर
निकलता है॥

२१ तब साऊल ने कहा कि मैं ने पाप किया है मेरे बेटे
दाऊद फिर आ क्योंकि फेर तुझे न सताऊंगा इस लिये कि

मेरा प्राण आज के दिन तेरी दृष्टि में बहुमूल्य हुआ देख मैं
२२ ने मूढ़ता किई और अति चूक किई । तब दाऊद ने उत्तर
देके कहा कि देख यह राजा का भाला है सो तरुणों में से
२३ एक आके इसे ले जावे । और परमेश्वर हर जन को उस के धर्म्म
का और उस की सच्चाई का प्रतिफल देवे क्योंकि परमेश्वर ने आज आप
को मेरे हाथ में सौंप दिया पर मैं ने न चाहा कि परमेश्वर के
२४ अभिषिक्त पर अपना हाथ बढ़ाऊं । और देख जिस रीति से
आप का प्राण मेरी आंखों में आज के दिन प्रिय हुआ वैसा
ही मेरा प्राण ईश्वर की दृष्टि में प्रिय होवे और वुह मुझे सब
२५ कष्टों से बचावे । तब साऊल ने दाऊद से कहा कि तू धन्य है
हे मेरे बेटे दाऊद तू महाकार्य्य करेगा और तद भी तू भाग्यमान
होगा सो दाऊद ने अपना मार्ग लिया और साऊल अपने स्थान
को फिरा ॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब ।

१ और दाऊद ने अपने मन में कहा कि अब मैं किसी दिन
साऊल के हाथ से मारा जाऊंगा सो मेरे लिये इस्से अच्छा
कुछ नहीं कि मैं शीघ्रता से भागके फ़िलिसतियों के देश में
जा रहूं और साऊल इसराएल के सिवानों में मुझे खोजने से
२ निरास हो जावेगा यों मैं उस के हाथ से बच जाऊंगा । तब
दाऊद अपने साथ के छः सौ तरुणों को लेके जात के राजा
३ मऊक के बेटे अकीस की ओर गया । और दाऊद अपने
लोगों के साथ जिन में से हर एक अपने घराने समेत था
अपनी दोनों स्त्री अख़िनुअ़म को जो यज़रअ़एली थी और
करमिली अबिजेल को जो नबाल की पत्नी थी लेके जात में
४ अकीस के साथ रहा । और साऊल को संदेश पहुंचा कि दाऊद
जात को भाग गया तब उस ने फिर उस का पीछा न किया ॥

५ और दाऊद ने अकीस से कहा कि यदि मैं ने आप की
दृष्टि में अनुग्रह पाया है तो वे इस देश में मुझे किसी बस्ती
में स्थान देवें जहां मैं बसूं क्योंकि आप का दास किस लिये
६ आप के राज्य नगर में रहे। तब अकीस ने उस दिन सिक़लाज
उसे दिया इस लिये सिक़लाज आज के दिन लों यहूदाह के
७ राजाओं के बश में है। और दाऊद फ़िलिसतियों के देश में
एक बरस चार मास लों रहा॥

८ और दाऊद ने अपने लोगों को लेके जसूरी और जरिज़ी
और अमालीक़ियों को घेर लिया क्योंकि वे जसूर के सिवाने
९ से लेके मिस्र के सिवाने लों आगे से बस्ते थे। और दाऊद
ने देश को नष्ट किया और न पुरुष को न स्त्री को जीता छोड़ा
और उन के भेड़ और ढोर और गदहे और ऊंट और कपड़े
१० लिये और अकीस पास फिर आये। और अकीस ने पूछा कि
आज तुम ने मार्ग किधर खोला और दाऊद ने कहा कि
यहूदाह के दक्षिण और यरहमिएली के दक्षिण और क़ेनी के
११ दक्षिण दिशा पर। और दाऊद ने उन में से कोई स्त्री पुरुष
को जीता न छोड़ा जो जात को संदेश ले जावे यह कहके
कि न होवे कि हमारे बिरुद्ध संदेश पहुंचावें कि दाऊद ने ऐसा
वैसा किया और जब से वुह फ़िलिसतियों के राज्य में आ रहा
१२ तब से उस का व्यवहार ऐसा ही था। और यह कहके अकीस
ने दाऊद को सच्चा जाना कि उस ने आप को अपने इसराएली
लोगों से अत्यंत निन्दा करवाई इस लिये वुह मेरा दास सदा
होगा॥

अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

१ और उन्हीं दिनों में ऐसा हुआ कि फ़िलिसतियों ने इसराएल
से लड़ने को अपनी सेनाओं को एकट्ठी किया तब अकीस ने

दाऊद से कहा कि तू निश्चय जान कि तुझे और तेरे लोगों को
२ मेरे साथ लड़ाई पर चढ़ने होगा। तब दाऊद ने अकीस से
कहा निश्चय आप जानियेगा जो कुछ आप के दास से बन
पड़ेगा और अकीस ने दाऊद से कहा कि मैं अपने सिर का
रक्षक सदा तुझे करूंगा॥

३ और समूएल मर गया और समस्त इसराएल उस पर रोते
थे और उसे उसी के नगर रामात में गाड़ा था और साऊल ने
उन्हें जो भुतहे और टोनहे थे देश से निकाल दिया था॥

४ और फ़िलिसती एकट्ठे होके आये और सूनेम में डेरा किया
और साऊल ने भी सारे इसराएल को एकट्ठा किया और
५ जिलबूअ: में डेरा किया। और जब साऊल ने फ़िलिसतियों
की सेना को देखा तब डरा और उस का मन अत्यंत कंपित
६ हुआ। और जब साऊल ने परमेश्वर से बूझा परमेश्वर ने उसे
कुछ उत्तर न दिया न तो दर्शन से न ऊरीम से न आगमज्ञानियों
७ के द्वारा से। तब साऊल ने अपने सेवकों से कहा कि मेरे
लिये किसी स्त्री को खोजो जो भुतही होवे जिसतें मैं उस
पास जाऊं और उस्से बूझूं तब उस के सेवकों ने उसे कहा कि
देखिये ऐनदोर में एक भुतही स्त्री है॥

८ तब साऊल ने अपना भेष बदलके दूसरा वस्त्र पहिना
और गया वुह और दो जन उस के साथ और रात को
उस स्त्री पास पहुंचा और उसे कहा कि कृपा करके मेरे लिये
अपने भूत से बिचार पूछ और जिसे मैं कहूं उसे मेरे लिये
९ उठा। और उस स्त्री ने उसे कहा कि देख तू जानता है कि
साऊल ने क्या किया कि उस ने उन्हें जो भुतहे थे और
टोनहों को किस रीति से देश से काट डाला सो मुझे मरवा
डालने के लिये तू क्यों मेरे प्राण के लिये जाल डालता है।
१० तब साऊल ने परमेश्वर की किरिया खाके कहा कि परमेश्वर के

जीवन में इस बात के लिये तुझ पर कोई दंड न पड़ेगा।
११ तब वुह स्त्री बोली मैं किसे तेरे लिये उठाऊं तब वुह बोला
कि समूएल को मेरे लिये उठा॥
१२ जब उस स्त्री ने समूएल को देखा तब वुह बड़े शब्द से
चिल्लाई और उस स्त्री ने साऊल से कहा कि आप ने मुझ से
१३ क्यों छल किया आप तो साऊल हैं। तब राजा ने उसे कहा
कि मत डर तू ने क्या देखा और उस स्त्री ने साऊल से कहा
१४ कि मैं ने देवों को पृथिवी से उठते देखा। तब उस ने उसे
कहा कि उस का डौल क्या तब वुह बोली कि एक वृद्ध पुरुष
ऊपर आता है और दोहर ओढ़े है तब साऊल ने जाना कि
वुह समूएल है और वुह मुंह के बल निहुड़के भूमि पर झुका।
१५ तब समूएल ने साऊल से कहा कि तू ने क्यों मुझे उठाके
बेचैन किया और साऊल ने कहा कि मैं अति दुःखी हूं क्योंकि
फ़िलिसती मुझ से लड़ते हैं और परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया
है और कुछ उत्तर नहीं देता न तो आगमज्ञानियों के द्वारा से
न दर्शन से सो मैं ने तुझे बुलाया जिसतें तू मुझे बतावे कि
१६ मैं क्या करूं। और समूएल ने कहा कि जब परमेश्वर ने तुझे
छोड़ दिया और तेरा बैरी बना तब मुझ से किस लिये पूछता
१७ है। और जैसा परमेश्वर ने मेरे द्वारा से कहा उस ने उस के
लिये वैसा ही किया है क्योंकि परमेश्वर ने तेरे राज्य को फाड़ा
१८ है और तेरे परोसी दाऊद को दिया है। इस लिये कि तू ने
परमेश्वर के शब्द को नहीं माना और अमालीक़ियों पर उस के
अति कोप को पूरा न किया इसी कारण से परमेश्वर ने आज
१९ के दिन तुझ से यह व्यवहार किया है। और परमेश्वर इसराएल
को तेरे संग फ़िलिसतियों के हाथ में सौंपेगा और तू और तेरे
बेटे कल मेरे साथ होंगे परमेश्वर इसराएली सेना को भी
फ़िलिसतियों के हाथ में सौंपेगा॥

२० तब साऊल तुरंत भूमि पर गिरा और समूएल की बातों से
बहुत डर गया और उस में कुछ सामर्थ्य न रही क्योंकि उस
२१ ने दिन भर और रात भर रोटी न खाई थी । तब वुह स्त्री
साऊल पास आई और देखा कि वुह अति व्याकुल है तब उस
ने उसे कहा कि देख आप की दासी ने आप का शब्द सुना
और मैं ने अपना प्राण अपनी हथेली पर रक्खा और जो कुछ
२२ आप ने मुझे कहा मैं ने उसे माना । सो अब आप भी कृपा
करके अपनी दासी की बात सुनिये और मुझे अपने आगे एक
ग्रास रोटी धरने दीजिये और खाइये जिसतें आप को इतनी
२३ सामर्थ्य हो कि अपने मार्ग जाइये । पर उस ने न माना और
कहा कि मैं न खाऊंगा परन्तु उस के दासों ने उस स्त्री सहित
उसे बरबस खिलाया और उस ने उन का कहा माना और
२४ भूमि पर से उठा और खाट पर बैठा । और उस स्त्री के घर
में एक मोटा बछुड़ा था सो उस ने चटक किया और उसे मारा
और पिसान लेके गूंधा और उस्से अख़मीरी रोटियां पकाईं ।
२५ और साऊल और उस के सेवकों के आगे लाई और उन्हों ने
खाया और उठे और उसी रात वहां से चले गये ।

उनतीसवां पर्ब्ब ।

१ सो फ़िलिसती की सब सेना अफ़ीक़ में एकट्ठी हुई और
इसराएली यज़रअएल के सोते के पास डेरा किये हुए थे ।
२ और फ़िलिसतियों के अध्यक्ष सैकड़ों सैकड़ों और सहस्र सहस्र
आगे बढ़ते गये परन्तु दाऊद और उस के लोग अकीस के
३ पीछे पीछे गये । तब फ़िलिसतियों के अध्यक्षों ने कहा कि
इन इबरानियों का क्या काम और अकीस ने फ़िलिसती अध्यक्षों
को कहा कि क्या यह इसराएल के राजा साऊल का सेवक
दाऊद नहीं जो इतने दिनों और इतने बरसों से मेरे साथ है

और जब से वुह मुझ पास आया है आज लों उस में कुछ
४ दोष नहीं पाया। तब फ़िलिसतियों के अध्यक्ष उस्से क्रुद्ध हुए
और उन्हों ने उसे कहा कि इस जन को यहां से फेर दे
जिसतें वुह अपने स्थान को जो तू ने उसे दिया है फिर जाय
और हमारे साथ युद्ध में न उतरे क्या जाने युद्ध में वुह
हमारा बैरी होवे क्योंकि वुह अपने स्वामी से किस बात से
५ मेल करेगा क्या इन लोगों के सिरों से नहीं। क्या यह वही
दाऊद नहीं जिस के बिषय में वे नाचती हुई गाती थीं कि साऊल
ने तो अपने सहस्रों को मारा और दाऊद ने अपने दस सहस्रों को॥
६ तब अकीस ने दाऊद को बुलाया और उसे कहा कि
निश्चय परमेश्वर के जीवन सों तू खरा है तेरा आना जाना
सेना में मेरे साथ मेरी दृष्टि में अच्छा है क्योंकि जिस दिन से
तू मुझ पास आया मैं ने आज लों तुझ में कुछ बुराई नहीं
७ पाई तथापि अध्यक्षों की दृष्टि में तू अच्छा नहीं। सो अब
फिर और कुशल से चला जा और फ़िलिसतियों के अध्यक्षों
८ की दृष्टि में बुराई न कर। परन्तु दाऊद ने अकीस से कहा
कि मैं ने क्या किया है और जब से मैं आप के साथ रहा और
आज लों आप ने अपने सेवक में क्या पाया कि मैं अपने प्रभु
९ राजा के बैरियों से लड़ाई न करूं। तब अकीस ने दाऊद को
उत्तर दिया और कहा कि मैं जानता हूं और तू मेरी दृष्टि में ईश्वर
के दूत के समान है परन्तु फ़िलिसतियों के अध्यक्षों ने कहा है
१० कि वुह हमारे साथ युद्ध में न जावे। सो अब बिहान को
तड़के अपने स्वामी के दासों समेत जो तेरे साथ यहां आये
हैं उठके शीघ्र तड़के चले जाइये॥
११ तब दाऊद अपने लोगों सहित तड़के उठा कि प्रातःकाल
को वहां से चलके फ़िलिसतियों के देश को फिर जावे और
फ़िलिसती यज़रअएल को चढ़ गये॥

तीसवां पर्ब्ब ।

१ और ऐसा हुआ कि जब दाऊद और उस के लोग तीसरे
दिन सिक़लाज में पहुंचे क्योंकि अमालीक़ी दक्षिण दिशा से
सिक़लाज पर चढ़ आये थे और उन्हों ने सिक़लाज को मारा
२ और उसे आग से फूंक दिया। और उस में की स्त्रियों को
पकड़ लिया पर उन्हों ने छोटी बड़ी को न मारा परन्तु उन्हें
३ लेके अपने मार्ग चले गये। जब दाऊद और उस के लोग
नगर में पहुंचे तो क्या देखते हैं कि नगर जला पड़ा है और
उन की पत्नियां और उन के बेटे और उन की बेटियां बंधुआई
४ में पकड़ी गई हैं। तब दाऊद और उस के साथ के लोग
चिल्लाये और बिलाप किया यहां लों कि उन में रोने की सामर्थ्य
५ न रही। और दाऊद की दोनों पत्नियां यज़रअएली अख़िनुअम
और करमिली नबाल की पत्नी अबिजेल बंधुआई में पकड़ी
६ गईं। और दाऊद अति दुःखी हुआ क्योंकि लोग उस पर
पत्थरवाह करने की बातचीत करते थे इस लिये कि उन में
से हर एक अपने बेटों और बेटियों के लिये निपट उदास
था पर दाऊद ने परमेश्वर अपने ईश्वर से हियाव पाया॥

७ और दाऊद ने अख़िमलिक के बेटे अबिबतर याजक से
कहा कि कृपा करके अफ़ूद मुझ पास ला सो अबिबतर अफ़ूद
८ दाऊद पास ले आया। और दाऊद ने यह कहके परमेश्वर
से बूझा कि मैं इस जथा का पीछा करूं क्या मैं उन्हें जा ही लूंगा
तब उस ने उसे उत्तर दिया कि पीछा कर क्योंकि तू निश्चय
९ उन्हें जा ही लेगा और निःसंदेह उन्हें छुड़ावेगा। सो दाऊद
अपने साथ के छः सौ तरुणों को लेके चला और बसूर के
नाले लों आया और जो पीछे छोड़े गये वहां पर रहि गये।
१० पर दाऊद आप चार सौ तरुणों से उन का पीछा किये चला गया।

क्योंकि दो सौ पीछे रहि गये थे जो ऐसे थक गये थे कि बसूर
के नाले पार जा न सके ॥
११ और उन्हों ने खेत में एक मिस्री को पाया और उसे दाऊद
पास ले आये और उसे रोटी खाने को दिई और उस ने खाई
१२ और उन्हों ने उसे पानी भी पिलाया। और उन्हों ने गूलर
की लिट्टी और दो गुच्छे अंगूर उसे दिये और जब वुह खा
चुका तब उस के जी में जी आया क्योंकि उस ने तीन रात
१३ दिन न रोटी खाई न पानी पीया था। तब दाऊद ने उसे
पूछा कि तू कौन और कहां का है और वुह बोला कि मैं एक
मिस्री तरुण और एक अमालीक़ी का सेवक हूं और मेरा स्वामी
१४ मुझे छोड़ गया क्योंकि तीन दिन हुए कि मैं रोगी हुआ। हम
करीती के दक्षिण और चढ़ गये और यहूदाह के सिवाने पर
और कालिब की दक्षिण और चढ़ गये थे और हम ने सिक़लाज
१५ को आग से फूंक दिया। और दाऊद ने उसे कहा कि तू
मुझे इस जथा लों ले जा सक्ता है और वुह बोला कि मुझ से
ईश्वर की किरिया खाइये कि मैं तुझे प्राण से न मारूंगा और
तुझे तेरे स्वामी के हाथ न सौंपूंगा तो मैं आप को इस जथा
लों ले जाऊंगा ॥
१६ जब वुह उसे वहां ले गया तो क्या देखते हैं कि वे समस्त
पृथिवी पर फैले हुए खाते पीते और नाचते थे क्योंकि फ़िलिसतियों
१७ के और यहूदाह के देश से बहुत लूट लाये थे। और दाऊद
ने उन्हें गोधूली से दूसरे दिन की सांझ लों मारा और उन में
से एक भी न बचा केवल चार सौ तरुण ऊंटों पर चढ़के
१८ भाग निकले। और जो कुछ कि अमालीक़ी ले गये थे दाऊद
ने फेर पाया और अपनी दोनों पत्नियों को भी दाऊद ने छुड़ाया।
१९ और उन के छोटे बड़े और बेटा बेटी और धन संपत्ति जो
२० लूटी गई थी दाऊद ने सब फेर पाई। और दाऊद ने सारे

झुंड और ढोर ले लिये जिन्हें उन्हों ने ढोरों के आगे हांक
लिया और बोले कि यह दाऊद की लूट ॥

२१ और दो सौ तरुण ऐसे थके थे जो दाऊद के साथ न जा
सके थे और उन्हों ने उन्हें बसूर के नाले पर छोड़ दिया और
वे दाऊद को और उस के लोगों को आगे से लेने को निकले
और जब दाऊद उन लोगों के पास पहुंचा तब उस ने उन
२२ का कुशल पूछा । तब सब दुष्टों और कुकर्म्मियों ने जो दाऊद
के साथ गये थे यह कहा इस लिये कि वे हमारे साथ न
गये हम इन्हें इस लूट में से जो हम ने पाई है भाग
न देंगे केवल हर एक अपनी पत्नी और बेटा बेटी को लेके
२३ बिदा होवे । तब दाऊद बोला कि हे मेरे भाइयो जो
कुछ कि परमेश्वर ने हमें दिया है और उस ने हमें बचाया
और जथा को जो हम पर चढ़ आये थे हमारे हाथ में कर
२४ दिया सो तुम उस में से ऐसा न करो । क्योंकि इस बिषय में
कौन तुम्हारी सुनेगा परन्तु जैसा जिस का भाग है जो युद्ध
में चढ़ जाता है वैसा उस का भाग होगा जो संपत्ति पास
२५ रहता है दोनों एक समान भाग पावेंगे । और ऐसा हुआ कि
उस दिन से आगे यही बिधि और व्यवस्था इसराएल के लिये
आज के दिन लों हुई ॥

२६ जब दाऊद सिक़लाज में आया तब उस ने लूट में से
यहूदाह के प्राचीन और अपने मित्रों के लिये भाग भेजा और
कहा कि देखो परमेश्वर के शत्रुन की लूट में से यह तुम्हारी
२७ भेंट है । जो बैतएल में और जो दक्षिण रामात में और जो
२८ जतीर में । और जो अरऋायर में और जो सिफ़मोत में और
२९ जो इस्तिमाअ में । और जो रकल में और जो यरमिएली के
३० नगरों में और जो क़ैनी के नगरों में । और जो हुरमः में और
३१ जो कोराशान में और जो अताक में । और जो हबरून में और

उन सब स्थानों में जहां जहां दाऊद और उस के लोग फिरा
करते थे भेजा ॥

एकतीसवां पर्व्व ।

१ अब फ़िलिसती इसराएल से लड़े और इसराएल फ़िलिसती
२ के आगे से भागे और जिलबूअ पहाड़ पर जूझ गये । और
फ़िलिसती साऊल के और उस के बेटों के पीछे पीछे पिलचे गये
और फ़िलिसतियों ने उस के बेटे यूनतन को और अबिनदाब
३ और मलकीसूअ को मार लिया । और साऊल से बड़ी लड़ाई
हुई और धनुषधारियों ने उसे ऐसा बेधा कि वुह धनुषधारियों
४ के हाथ से अत्यंत घायल हुआ । तब साऊल ने अपने
अस्त्रधारी से कहा कि अपनी तलवार खींच और मुझे गोद दे
जिसतें ये अख़तनः आके मुझे गोद न लेवें और मेरी दुर्दशा
न करें पर उस के अस्त्रधारी ने न माना क्योंकि वुह
अत्यंत डरा तब साऊल ने तलवार लिई और उस पर गिरा ।
५ और जब उस के अस्त्रधारी ने देखा कि साऊल मर गया तब
वुह भी अपनी तलवार पर गिरा और उस के साथ मर गया ।
६ सो साऊल और उस के तीनों बेटे और उस का अस्त्रधारी
और उस के सारे लोग उसी दिन एक साथ मर गये ॥
७ जब इसराएल के लोगों ने जो तराई के उस अलंग थे और
जो यरदन के पार थे देखा कि इसराएल के लोग भागे और
साऊल और उस के बेटे मारे गये तब बस्तियां छोड़ छोड़
भाग निकले और फ़िलिसती आये और उन में बसे ॥
८ और बिहान को ऐसा हुआ कि जब फ़िलिसती आये कि
जूझे हुओं को लूटें तब उन्हों ने साऊल को और उस के तीन
९ बेटों को जिलबूअ पहाड़ पर पड़ा पाया । तब उन्हों ने उस
का सिर काट लिया और उस के हथियार लेके फ़िलिसतियों के

देश में चारों ओर भेज दिये कि उन की मूरतों के मंदिर में
१० और लोगों में प्रचार होवे। और उन्हों ने उस के हथियार को
इस्तारात के मंदिर में रक्खा और उस की लोथ को बैतशान
की भीत पर लटकाया॥
११ और जब यबीसजिलिअद के बासियों ने सुना कि फ़िलिसतियों
१२ ने साऊल से यों किया। तब उन में के सारे महाबीर उठे और
रात भर चले गये और बैतशान की भीत पर से साऊल की
और उस के बेटों की लोथों को लेके यबीस में फिर आये और
१३ वहां उन्हें जला दिया। और उन की हड्डियों को लेके यबीस
के पेड़ तले गाड़ दिया और सात दिन लों ब्रत किया॥

क्योंकि दो सौ पीछे रहि गये थे जो ऐसे थक गये थे कि बसूर
के नाले पार जा न सके ॥
११ और उन्हों ने खेत में एक मिस्री को पाया और उसे दाऊद
पास ले आये और उसे रोटी खाने को दिई और उस ने खाई
१२ और उन्हों ने उसे पानी भी पिलाया। और उन्हों ने गूलर
की लिट्टी और दो गुच्छे अंगूर उसे दिये और जब वुह खा
चुका तब उस के जी में जी आया क्योंकि उस ने तीन रात
१३ दिन न रोटी खाई न पानी पीया था। तब दाऊद ने उसे
पूछा कि तू कौन और कहां का है और वुह बोला कि मैं एक
मिस्री तरुण और एक अमालीक़ी का सेवक हूं और मेरा स्वामी
१४ मुझे छोड़ गया क्योंकि तीन दिन हुए कि मैं रोगी हुआ। हम
करीती के दक्षिण ओर चढ़ गये और यहूदाह के सिवाने पर
और कालिब की दक्षिण ओर चढ़ गये थे और हम ने सिक़लाज
१५ को आग से फूंक दिया। और दाऊद ने उसे कहा कि तू
मुझे इस जथा लों ले जा सक्ता है और वुह बोला कि मुझ से
ईश्वर की किरिया खाइये कि मैं तुझे प्राण से न मारूंगा और
तुझे तेरे स्वामी के हाथ न सौंपूंगा तो मैं आप को इस जथा
लों ले जाऊंगा ॥
१६ जब वुह उसे वहां ले गया तो क्या देखते हैं कि वे समस्त
पृथिवी पर फैले हुए खाते पीते और नाचते थे क्योंकि फ़िलिसतियों
१७ के और यहूदाह के देश से बहुत लूट लाये थे। और दाऊद
ने उन्हें गोधूली से दूसरे दिन की सांझ लों मारा और उन में
से एक भी न बचा केवल चार सौ तरुण ऊंटों पर चढ़के
१८ भाग निकले। और जो कुछ कि अमालीक़ी ले गये थे दाऊद
ने फेर पाया और अपनी दोनों पत्नियों को भी दाऊद ने छुड़ाया।
१९ और उन के छोटे बड़े और बेटा बेटी और धन संपत्ति जो
२० लूटी गई थी दाऊद ने सब फेर पाई। और दाऊद ने सारे

झुंड और ढोर ले लिये जिन्हें उन्हों ने ढोरों के आगे हांक
लिया और बोले कि यह दाऊद की लूट ॥
२१ और दो सौ तरुण ऐसे थके थे जो दाऊद के साथ न जा
सके थे और उन्हों ने उन्हें बसूर के नाले पर छोड़ दिया और
वे दाऊद को और उस के लोगों को आगे से लेने को निकले
और जब दाऊद उन लोगों के पास पहुंचा तब उस ने उन
२२ का कुशल पूछा। तब सब दुष्टों और कुकर्म्मियों ने जो दाऊद
के साथ गये थे यह कहा इस लिये कि वे हमारे साथ न
गये हम इन्हें इस लूट में से जो हम ने पाई है भाग
न देंगे केवल हर एक अपनी पत्नी और बेटा बेटी को लेके
२३ बिदा होवे। तब दाऊद बोला कि हे मेरे भाइयो जो
कुछ कि परमेश्वर ने हमें दिया है और उस ने हमें बचाया
और जथा को जो हम पर चढ़ आये थे हमारे हाथ में कर
२४ दिया सो तुम उस में से ऐसा न करो। क्योंकि इस बिषय में
कौन तुम्हारी सुनेगा परन्तु जैसा जिस का भाग है जो युद्ध
में चढ़ जाता है वैसा उस का भाग होगा जो संपत्ति पास
२५ रहता है दोनों एक समान भाग पावेंगे। और ऐसा हुआ कि
उस दिन से आगे यही बिधि और व्यवस्था इसराएल के लिये
आज के दिन लों हुई ॥
२६ जब दाऊद सिक़लाज में आया तब उस ने लूट में से
यहूदाह के प्राचीन और अपने मित्रों के लिये भाग भेजा और
कहा कि देखो परमेश्वर के शत्रुन की लूट में से यह तुम्हारी
२७ भेंट है। जो बैतएल में और जो दक्षिण रामात में और जो
२८ जतीर में। और जो अरूआयर में और जो सिफ़मोत में और
२९ जो इस्तिमाऊ में। और जो रकल में और जो यरमिएली के
३० नगरों में और जो क़ैनी के नगरों में। और जो हुरमः में और
३१ जो कोराशान में और जो अताक में। और जो हबरून में और

उन सब स्थानों में जहां जहां दाऊद और उस के लोग फिरा करते थे भेजा॥

एकतीसवां पर्ब्ब।

१ अब फ़िलिसती इसराएल से लड़े और इसराएल फ़िलिसती
२ के आगे से भागे और जिलबूआ पहाड़ पर जूझ गये। और
फ़िलिसती साऊल के और उस के बेटों के पीछे पीछे पिलचे गये
और फ़िलिसतियों ने उस के बेटे यूनतन को और अबिनदाब
३ और मलकीसूआ को मार लिया। और साऊल से बड़ी लड़ाई
हुई और धनुषधारियों ने उसे ऐसा बेधा कि वुह धनुषधारियों
४ के हाथ से अत्यंत घायल हुआ। तब साऊल ने अपने
अस्त्रधारी से कहा कि अपनी तलवार खींच और मुझे गोद दे
जिसतें ये अख़तनः आके मुझे गोद न लेवें और मेरी दुर्दशा
न करें पर उस के अस्त्रधारी ने न माना क्योंकि वुह
अत्यंत डरा तब साऊल ने तलवार लिई और उस पर गिरा।
५ और जब उस के अस्त्रधारी ने देखा कि साऊल मर गया तब
वुह भी अपनी तलवार पर गिरा और उस के साथ मर गया।
६ सो साऊल और उस के तीनों बेटे और उस का अस्त्रधारी
और उस के सारे लोग उसी दिन एक साथ मर गये॥
७ जब इसराएल के लोगों ने जो तराई के उस अलंग थे और
जो यरदन के पार थे देखा कि इसराएल के लोग भागे और
साऊल और उस के बेटे मारे गये तब बस्तियां छोड़ छोड़
भाग निकले और फ़िलिसती आये और उन में बसे॥
८ और बिहान को ऐसा हुआ कि जब फ़िलिसती आये कि
जूझे हुओं को लूटें तब उन्हों ने साऊल को और उस के तीन
९ बेटों को जिलबूआ पहाड़ पर पड़ा पाया। तब उन्हों ने उस
का सिर काट लिया और उस के हथियार लेके फ़िलिसतियों के

देश में चारों ओर भेज दिये कि उन की मूरतों के मंदिर में
१० ओर लोगों में प्रचार होवे। ओर उन्हों ने उस के हथियार को
इस्तारात के मंदिर में रक्खा ओर उस की लोथ को बेतशान
की भीत पर लटकाया॥
११ ओर जब यबीसजिलिअद के बासियों ने सुना कि फ़िलिसतियों
१२ ने साऊल से यों किया। तब उन में के सारे महाबीर उठे ओर
रात भर चले गये ओर बेतशान की भीत पर से साऊल को
ओर उस के बेटों की लोथों को लेके यबीस में फिर आये ओर
१३ वहां उन्हें जला दिया। ओर उन की हड्डियों को लेके यबीस
के पेड़ तले गाड़ दिया ओर सात दिन लों ब्रत किया॥

समूएल की दूसरी पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ और साऊल के मरने के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद
अमालीक़ियों को मारके फिर आया और दो दिन सिक़लाज में
२ रहा। और तीसरे दिन ऐसा हुआ कि देखो एक जन साऊल
की छावनी से अपने वस्त्र फाड़े हुए और अपने सिर पर धूल डाले
हुए आया और ऐसा हुआ कि जब दाऊद के पास पहुंचा तब भूमि
३ पर गिरा और दण्डवत किई। तब दाऊद ने उसे कहा कि तू कहां
से आता है और वुह उस्से बोला कि इसराएल की छावनी से मैं बच
४ निकला हूं। तब दाऊद ने उस्से पूछा कि क्या हुआ मुझे कहिये
और उस ने उत्तर दिया कि लोग संग्राम से भागे हैं और बहुत
लोग जूझ गये हैं और साऊल और उस का बेटा यूनतन भी मर
५ गये हैं। तब उस तरुण से जिस ने उसे कहा था दाऊद ने
पूछा कि तू क्योंकर जानता है कि साऊल और उस का बेटा
६ यूनतन मर गये हैं। तब उस तरुण ने उसे कहा कि मैं
संयोग से जिलबूआ पहाड़ पर था तो क्या देखता हूं कि साऊल
अपने भाले पर टेक रहा था और देखो कि रथ और घोड़चढ़े
७ उस के पीछे धाये गये। और जब उस ने पीछे फिरके मुझे
देखा तब उस ने मुझे बुलाया और मैं ने उत्तर दिया कि
८ यहीं हूं। तब उस ने मुझे कहा कि तू कौन और मैं ने उसे
९ कहा कि मैं एक अमालीक़ी हूं। फिर उस ने मुझे कहा कि मैं
तेरी बिनती करता हूं निकट खड़ा होके मुझे बधन कर क्योंकि

व्याकुलता ने मुझे पकड़ा है कि मेरा प्राण अब लों मुझ में
१० पूर्ण है । सो मैं उस के निकट खड़ा हुआ और उसे मार डाला
क्योंकि मुझे निश्चय हुआ कि गिरने के पीछे वुह जी न सक्ता
था और मैं ने उस के सिर का मुकुट और विजायठ जो उस
की भुजा पर था लिया और उन्हें अपने स्वामी पास इधर लाया
हूं ॥

११ तब दाऊद ने अपने कपड़े को पकड़ा और उन्हें फाड़
डाला और उस के साथ के समस्त मनुष्यों ने भी ऐसा ही
१२ किया । और वे साऊल और उस के बेटे यूनतन और परमेश्वर
के लोगों और इसराएल के घराने के लिये जो तलवार से मारे
पड़े थे रोये पीटे और सांझ लों ब्रत किया ॥

१३ तब दाऊद ने उस तरुण से जिस ने उसे संदेश पहुंचाया
था पूछा कि तू कहां का है और उस ने उत्तर दिया कि मैं परदेशी
१४ का लड़का एक अमालीकी हूं । तब दाऊद ने उसे कहा कि
क्योंकर तू परमेश्वर के अभिषिक्त पर नाश करने को हाथ उठाते
१५ हुए न डरा । तब दाऊद ने तरुणों में से एक को बुलाया
और कहा कि उस पास जाके उस पर लपक सो उस ने उसे
१६ ऐसा मारा कि वुह मर गया । और दाऊद ने उसे कहा कि
तेरा लोहू तेरे ही सिर पर क्योंकि तेरे ही मुंह ने तुझ पर
यह कहके साक्षी दिई कि मैं ने परमेश्वर के अभिषिक्त को घात
किया ॥

१७ और दाऊद ने साऊल और उस के बेटे यूनतन पर इस
१८ विलाप से विलाप किया । और उस ने आज्ञा किई कि यहूदाह
के संतान को धनुष का गीत सिखावें देख यशर की पुस्तक
में लिखा है ॥

१९ कि इसराएल की सुंदरता तेरे ऊंचे स्थानों पर जूझ गई
२० बलवंत कैसे मारे पड़े हैं । जात में मत कहो अस्कलून

की सड़कों में मत प्रचारो न हो कि फ़िलिसतियों की बेटियां
आनन्द करें न हो कि अख़तनों की लड़कियां जय जय करें।
२१ हे जिलबूअ के पहाड़ो ओस ओर मेंह तुम पर न पड़ें ओर
न भेड़ों का खेत होवे क्योंकि वहां बलवंत की ढाल तुच्छता
से फेंकी गई साऊल की ढाल जैसे कि वुह अभिषिक्त न हुआ।
२२ जूझे हुए के लोहू बलवंत की चिकनाई से यूनतन का
धनुष उलटा न फिरा ओर साऊल की तलवार छूछी न फिरी।
२३ साऊल ओर यूनतन अपने जीवन में प्रिय ओर शोभित थे
ओर अपनी मृत्यु में वे अलग न किये गये वे गिद्ध से अधिक
२४ फुरतीले थे सिंहों से बलवंत थे। हे इसराएल की बेटियो
साऊल पर रोओ जिस ने तुम्हें बैंजनी वस्त्र पहिनाया जिस
२५ ने सोने के आभूषण तुम्हारे वस्त्र पर संवारा। संग्राम के मध्य
बलवंत कैसे गिर गये हे यूनतन तू अपने ऊंचे स्थानों में
२६ मारा गया। हे मेरे भाई यूनतन तेरे लिये मैं दुःखित हूं तू
मेरे लिये अति शोभित था तेरी प्रीति मुझ पर अचंभित थी
२७ स्त्रियों की प्रीति से अधिक। बलवंत कैसे गिर गये ओर संग्राम
के हथियार नष्ट हुए॥

दूसरा पर्व्व।

१ ओर इस के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद ने यह कहके
परमेश्वर से बूझा कि मैं यहूदाह के किसी नगरों में चढ़ जाऊं
ओर परमेश्वर ने उसे कहा कि चढ़ जा तब दाऊद ने कहा
कि किधर चढ़ जाऊं ओर उस ने कहा कि हबरून को।
२ सो दाऊद उधर चढ़ गया ओर उस की दोनों पत्नी भी
यज़रअएली अख़िनुअम ओर नबाल की पत्नी करमिली अबिजेल।
३ ओर उस के लोग जो उस के साथ थे दाऊद हर एक जन
को उस के घराने समेत ऊपर लाया ओर वे हबरून के नगरों

४ में आ बसे। तब यहूदाह के लोग आये और उन्हों ने वहां
दाऊद को यहूदाह के घराने पर राज्याभिषेक किया और लोगों
ने दाऊद से कहा कि यबीसजिलिअद के मनुष्यों ने साऊल
को गाड़ा॥
५ तब दाऊद ने यबीसजिलिअद के लोगों को दूत से कहला
भेजा कि परमेश्वर का धन्य क्योंकि तुम ने अपने प्रभु साऊल
६ पर यह अनुग्रह किया और उसे गाड़ा। सो अब परमेश्वर तुम
पर अनुग्रह और सच्चाई करे और मैं भी इस अनुग्रह का पलटा
तुम्हें देऊंगा इस कारण कि तुम ने यह काम किया है।
७ सो अब तुम्हारी भुजा बली होवें और शूरता के बेटे होओ
क्योंकि तुम्हारा प्रभु साऊल मर गया और यहूदाह के घराने
ने भी मुझे अपने पर राज्याभिषेक किया॥
८ परन्तु नेयिर के बेटे अबिनेयिर ने जो साऊल का सेनापति
था साऊल के बेटे अशबोशीश को लिया और उसे महनैन में
९ पहुंचाया। और उसे जिलिअद और अशूरी और यज़रअएल
और इफ़रायम और बिनयमीन और समस्त इसराएल पर राजा
१० किया। साऊल के बेटे अशबोशीश की वय चालीस बरस
की थी जब वुह इसराएल पर राज्य करने लगा और उस ने
दो बरस राज्य किया परन्तु यहूदाह के घराने ने दाऊद का
११ पीछा किया। और जिन दिनों में दाऊद यहूदाह के घराने
पर हबरून में राजा था सो साढ़े सात बरस था॥
१२ तब नेयिर के बेटे अबिनेयिर और साऊल के बेटे अशबोशीश
१३ के सेवक महनैन से निकलके जिबऊन को गये। और ज़रूयाह
का बेटा यूअब दाऊद के सेवकों को लेके निकला और जिबऊन
के कुंड पर दोनों मिल गये और बैठ गये एक कुंड की इस
१४ अलंग और दूसरा कुंड की उस अलंग। तब अबिनेयिर ने
यूअब से कहा कि तरुणों को उठने और हमारे आगे लीला

१५ करने दीजिये तब यूअब बोला कि उठें। तब गिनती में
बिनयमीन के बारह जन जो साऊल के बेटे अशबोशीश की
ओर से थे उठे और दाऊद के सेवकों में से बारह जन निकले।
१६ सो उन में से हर एक जन ने अपने अपने संगी का सिर पकड़ा
और अपने संगी के पंजर में तलवार गोद दिई सो वे एकट्ठे
गिर पड़े इस लिये उस स्थान का नाम हलकातहसुरीम हुआ
१७ जो जिबऊन में है। और उस दिन बड़ा संग्राम हुआ और
अबिनैयिर और इसराएल के लोग दाऊद के सेवकों के आगे
हार गये॥

१८ और ज़रूयाह के तीन बेटे यूअब और अबिशै और असहेल
वहां थे और असहेल बनेली हरिणी की नाईं दौड़ता था।
१९ और असहेल ने अबिनैयिर का पीछा किया और वुह अबिनैयिर
२० के पीछे से दहिने बायें न मुड़ा। तब अबिनैयिर ने अपने पीछे
२१ देखके कहा कि तू असहेल है और वुह बोला हां। और अबिनैयिर
ने उसे कहा कि दहिनी अथवा बाईं ओर फिर और तरुणों
में से एक को पकड़ और उसे लूट ले परन्तु उस का पीछा
२२ करने से असहेल न फिरा। और अबिनैयिर ने असहेल को
फिर कहा कि मेरा पीछा करने से मुड़ किस कारण मैं तुझे
भूमि पर मारके डाल देऊं सो क्योंकर मैं तेरे भाई यूअब
२३ को अपना मुंह दिखाऊं। तथापि उस ने मुड़ने को न माना
तब अबिनैयिर ने उलटे भाले से पांचवीं पसुली के नीचे मारा
और भाला उस के पीछे से निकल पड़ा और वहां गिरके उसी
स्थान में वुह मर गया और ऐसा हुआ कि जितने उस स्थान
में आते थे जहां असहेल गिरके मर गया था खड़े रहते थे।
२४ तब यूअब और अबिशै भी अबिनैयिर के पीछे पड़े और जब
वे अम्मः के टीले को जो जिबऊन के बन के मार्ग में जीहा
के आगे है पहुंचे तब सूर्य्य अस्त हुआ॥

२५　और बिनयमीन के संतानों ने एकट्ठे होके अबिनेयिर की
सहाय किई और सब के सब मिलके एक जथा बनके एक
२६ पहाड़ की चोटी पर खड़े हुए। तब अबिनेयिर ने यूअब को
पुकारके कहा कि क्या तलवार सदा लों नाश करेगी क्या तू
नहीं जानता है कि अंत में कड़ुवाहट होगी सो कब लों तू
२७ लोगों को अपने भाइयों का पीछा करने से न रोकेगा। तब
यूअब ने कहा कि जीवते ईश्वर की किरिया यदि तू न कहता तो
निश्चय लोगों में से हर एक अपने भाई का पीछा छोड़के भोर
२८ ही को फिर जाता। फिर यूअब ने नरसिंगा फूंका और सब
लोग ठहर गये और इसराएल का पीछा न किया और लड़ाई
भी थम गई ॥
२९　और अबिनेयिर अपने लोगों समेत चौगान से होके रात
भर चला गया और यरदन पार उतरा और समस्त बितरून
३० से चलके महनैन में पहुंचा। और यूअब अबिनेयिर का पीछा
करने से उलटा फिरा और उस ने सारे लोगों को एकट्ठा किया
तब दाऊद के सेवकों में से असहेल को छोड़ उन्नीस जन घटे
३१ थे। परन्तु दाऊद के सेवकों ने बिनयमीनियों में से और
३२ अबिनेयिर के लोगों में से तीन सौ साठ जन मारे। और उन्हों
ने असहेल को उठाया और उसे उस के पिता की समाधि में जो
बेतलहम में है गाड़ा और यूअब अपने लोगों समेत रात भर
चला गया और पौ फटते हुए हबरून में पहुंचा ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१　सो साऊल के और दाऊद के घरानों में बहुत दिन लों
लड़ाई होती रही परन्तु दाऊद बलवंत होता गया और साऊल
२ का घराना निर्बल होता गया। और हबरून में दाऊद के
बेटे उत्पन्न हुए और उस का पहिलौठा अमनून जो यज़रअएली

३ अख़िनुअम से था। और उस का दूसरा किलिअब जो करमिली
नबाल की पत्नी अबिजैल से हुआ और तीसरा अबिसलुम जो जशूर
४ के राजा तलमी की बेटी मअक: से था। और चौथा हग्गीत
का बेटा अदूनियाह और पांचवां अबितल का बेटा शफ़तियाह।
५ और छठवां यतरिआम जो दाऊद की पत्नी रगल: से था ये सब
दाऊद के लिये हबरून में उत्पन्न हुए॥
६ और जब लों साऊल और दाऊद के घरानों में युद्ध होता
रहा ऐसा हुआ कि अबिनैयिर ने आप को साऊल के घराने के
७ लिये बली किया। और साऊल की एक दासी थी जिस का
नाम रिसफ: था अयाह की बेटी और इसबुसत ने अबिनैयिर
८ से कहा कि तू क्यों मेरे पिता की दासी के पास गया है। तब
अबिनैयिर ने इसबुसत की बातों से अति कोपित होके कहा
कि क्या मैं कूकर का सिर हूं कि मैं यहूदाह का साम्ना करके
आज के दिन लों तेरे पिता साऊल के घराने पर उस के भाइयों
और उस के मित्र पर दया करता हूं और तुझे दाऊद के हाथ
में नहीं सौंपा है कि तू मुझे इस स्त्री के विषय में दोष लगाता
९ है। सो अब जैसा परमेश्वर ने दाऊद से बाचा बांधी है वैसा
ही यदि मैं न करूं तो परमेश्वर अबिनैयिर से ऐसा ही और
१० उस्से अधिक करे। कि साऊल के घराने से राज्य पलट डालूं
और दाऊद के सिंहासन को इसराएल पर और यहूदाह पर
११ दान से लेके बिअरसबः लों स्थिर करूं। तब वुह अबिनैयिर
को एक बात का उत्तर न दे सका क्योंकि वुह उस्से डरता
था॥
१२ और अबिनैयिर ने अपने विषय में दाऊद पास दूत से
कहला भेजा कि देश किस का है मुझ से बाचा बांध और
देख कि मेरा हाथ तेरे साथ होगा कि सारे इसराएल को तेरी
१३ ओर फेरूं। तब वुह बोला अच्छा मैं तुझ से बाचा बांधूंगा

परन्तु तुझ से एक बात चाहता हूं और वुह यह है कि
तू मेरा मुंह न देखेगा जब लों पहिले साऊल की बेटी मीकल
१४ को अपने साथ लावे तब तू मेरा मुंह देखेगा। और दाऊद ने
साऊल के बेटे इसबुसत के पास यह कहके दूतों को भेजा कि
मेरी पत्नी मीकल को जिसे मैं ने फ़िलिसतियों की सा खलड़ियां
१५ देके बियाहा है सौंप दे। तब इसबुसत ने भेजके उस के पति
१६ लाईश के बेटे फ़लतिएल से उसे मंगवाया। और उस का पति
उस के पीछे पीछे बहूरीम लों रोता चला गया तब अबिनेयिर
ने उसे कहा कि चल फिर जा तब वुह फिर गया॥
१७ और अबिनेयिर ने इसराएल के प्राचीनों से संवाद करके
कहा कि तुम तो पहिले ही चाहते थे कि दाऊद को अपना
१८ राजा करो। और अब ऐसा ही करो क्योंकि परमेश्वर ने दाऊद
के विषय में कहा है कि मैं अपने दास दाऊद के हाथ से
अपने इसराएली लोगों को फ़िलिसतियों के और उन के सब
१९ बैरियों के हाथ से बचाऊंगा। और अबिनेयिर ने बिनयमीनियों
के कानों में भी कहा और फिर अबिनेयिर हबरून को चला
कि दाऊद के कानों में भी कहे कि इसराएलियों को और
२० बिनयमीनियों के सारे घराने को अच्छा लगा। सो अबिनेयिर
हबरून में दाऊद पास आया और बीस जन उस के साथ थे
और दाऊद ने अबिनेयिर को और उन लोगों को जो उस के
२१ साथ थे नेउंता किया। और अबिनेयिर ने दाऊद से कहा कि
अब मैं उठके जाऊंगा और सारे इसराएल को अपने प्रभु
राजा के लिये एकट्ठा करूंगा जिसतें वे तुझ से बाचा बांधें
और तू अपनी इच्छा के समान उन पर राज्य करे तब दाऊद
ने अबिनेयिर को बिदा किया और वुह कुशल से चला गया॥
२२ और देखो कि दाऊद के सेवक और यूअब एक जथा से
बहुत सी लूट अपने साथ लेके आये परन्तु अबिनेयिर

हबरून में दाऊद पास न था क्योंकि उस ने उसे बिदा किया
२३ था और वुह कुशल से चला गया था। जब यूअब और समस्त सेना
के लोग जो उस के साथ थे पहुंचे तब उन्हों ने यह कहके
यूअब से कहा कि नेयिर का बेटा अबिनेयिर राजा पास आया
था और उस ने उसे फेर दिया और वुह कुशल से चला गया।
२४ तब यूअब राजा पास गया और बोला कि आप ने क्या किया
देखिये अबिनेयिर आप के पास आया और आप ने उसे क्यों
२५ छोड़ दिया कि वुह चल निकला। आप नेयिर के बेटे अबिनेयिर
को जानते हैं कि वुह आप को छल देने और आप के बाहर
भीतर आने जाने से और सब जो आप करते हैं जान्ने को
आया था॥

२६ तब यूअब ने दाऊद पास से निकलके अबिनेयिर के पीछे
दूत भेजे जो उसे हासीर: के कुए से फेर लाये परन्तु दाऊद
२७ ने न जाना। और जब अबिनेयिर हबरून को फिर आया तब
यूअब उसे फाटक की एक अलंग निराले में उसे बात करने
को ले गया और वहां उस की पांचवीं पसुली के तले यहां
लों गोदा कि वुह मर गया क्योंकि उस ने उस के भाई असहेल
को मारा था॥

२८ और उस के पीछे जब दाऊद ने सुना तब वुह बोला कि मैं
और मेरा राज्य परमेश्वर के आगे नेयिर के बेटे अबिनेयिर के
२९ लोहू से सदा निर्दोष हैं। वुह यूअब के सिर पर और उस के
पिता के समस्त घराने पर होवे और यूअब के घराने में एक
भी ऐसा न हो जो प्रमेही अथवा कोढ़ी और जो लाठी टेकके
न चले और तलवार से मारा न जाय और रोटी का आधीन
३० न हो। सो यूअब और उस के भाई अबिशै ने अबिनेयिर को
घात किया क्योंकि उस ने उन के भाई असहेल को जिबऊन
के बीच रण में मारा था॥

३१ और दाऊद ने यूअब को और उस के सारे साथियों को
कहा कि अपने कपड़े फाड़ो और टाट ओढ़ो और अबिनेयिर
के आगे आगे बिलाप करो और दाऊद राजा आप अर्थी के पीछे
३२ पीछे गया। और उन्हों ने अबिनेयिर को हबरून में गाड़ा
और राजा अपना शब्द उठाके अबिनेयिर की समाधि पर
रोया और सब लोग रोये॥
३३ और राजा ने अबिनेयिर पर यों बिलाप करके कहा कि
३४ अबिनेयिर मूढ़ की नाईं मूआ। तेरे हाथ बंधे न थे और तेरे
पाओं में पैकड़ियां पड़ी न थीं तू यों गिरा जैसा कोई दुष्टों के
संतान के हाथ में पड़के गिरता है तब उस पर सब के सब
३५ दोहराके रोये। और जब सब लोग आये और चाहा कि दाऊद
को दिन रहते कुछ खिलावें तब दाऊद ने किरिया खाके
कहा कि यदि मैं सूर्य्य अस्त होने से आगे रोटी खाऊं अथवा
कुछ चीखूं तो ईश्वर मुझ से ऐसा और इस्से अधिक करे।
३६ और सब लोगों ने सोचा और उन की दृष्टि में अच्छा लगा
क्योंकि जो कुछ राजा करता था सो सब को अच्छा लगता
था॥
३७ क्योंकि सब लोगों ने और सारे इसराएलियों ने उस दिन
बूझा कि नेयिर के बेटे अबिनेयिर को मारना राजा की ओर
३८ से न था। और राजा ने अपने सेवकों से कहा कि क्या तुम
नहीं जानते हो कि आज के दिन एक कुंअर और एक महाजन
३९ इसराएल में से गिर गया। और मैं आज के दिन दुर्बल हूं
यद्यपि राज्याभिषिक्त हूं और ये लोग अर्थात् ज़रूयाह के बेटे
मुझ से अति बली हैं परमेश्वर दुष्ट को उस की दुष्टता के समान
फल देगा॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ और जब साऊल के बेटे ने सुना कि अबिनेयिर हबरून
में मर गया तो उस की बांह टूट गई और सारे इसराएल
२ व्याकुल हुए। और साऊल के बेटे के दो जन थे जो जथा के
प्रधान थे एक का नाम बअ़ना और दूसरे का रैकाब दोनों
बिनयमीन के संतान में बिअ़राती रूम्मान के बेटे थे क्योंकि
३ बरूत भी बिनयमीन में गिना जाता था। तब बिअ़राती
जअ़तैन को भाग गये और आज के दिन लों वे वहीं रहते
हैं॥

४ और साऊल के बेटे यूनतन का एक बेटा था जो पांव का
लंगड़ा था जब साऊल और यूनतन को यज़रअ़एल का संदेश
आया तब वुह पांच बरस का था और उस की दाई उसे लेके
भाग गई और उस ने भागने में शीघ्रता किई तब ऐसा हुआ
कि वुह गिर पड़ा और लंगड़ा हो गया और उस का नाम
मिफ़िबूसत था॥

५ और रूम्मान के बेटे बिअ़राती रैकाब और बअ़ना आये और
दिन के घाम के समय में इसबुसत के घर में पहुंचे और वुह दो
६ पहर को बिछौने पर लेटा था। और वे घर के मध्य में ऐसा
आये जैसा कि गोहूं लेने जाते हैं और उन्हों ने उस की
पांचवीं पसुली के नीचे मारा और रैकाब और उस के भाई
७ बअ़ना बच निकले। और जब वे घर में पैठे तब वुह अपने
शयनस्थान में बिछौने पर पड़ा था सो उन्हों ने उसे मारा और
उसे घात किया और उस का सिर काटा और उस का सिर
८ लिया और रात भर चौगान के मार्ग भागे चले गये। और
इसबुसत का सिर हबरून में दाऊद पास लाये और राजा को
कहा कि देख यह साऊल के बेटे आप के बैरी इसबुसत का

सिर है जो आप के प्राण का गाहक था सो परमेश्वर ने आज
के दिन मेरे प्रभु राजा का पलटा साऊल और उस के वंश से
लिया ॥
९ तब दाऊद ने रैकाब और उस के भाई बअना को जो
बिअरात रूम्मान के बेटे थे उत्तर दिया और उन से कहा कि
परमेश्वर के जीवन सों जिस ने मेरी आत्मा को समस्त बिपत्ति
१० से छुड़ाया । जब किसी ने मुझे कहा कि देख साऊल मर गया
और वुह समझा कि सुसंदेश पहुंचाता है तब मैं ने उसे पकड़ा
और उसे सिक़लाग में घात किया यह मैं ने उसे उस के संदेश
११ लाने का पलटा दिया । कितना अधिक जब दुष्टों ने एक
धर्म्मी जन को उस के घर में घुसके उस के बिछौने पर
मारा तो क्या मैं अब उस का पलटा तुम से न लूंगा और
१२ तुम्हें पृथिवी पर से उठा न डालूंगा । तब दाऊद ने अपने
तरुणों को आज्ञा किई कि उन्हें मार डालें और उन के हाथ
और पांव काट डालें और उन्हें हबरून के कुंड पर लटका
देवें परन्तु इसबुसत के सिर को उन्हों ने लेके हबरून के बीच
अबिनैयिर की समाधि में गाड़ दिया ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ तब इसराएल की समस्त गोष्ठियां हबरून में दाऊद पास
आईं और कहा कि देख हम तेरी हड्डी और तेरा मांस
२ हैं । अगिले समय में भी जब साऊल हमारा राजा था तब
तू इसराएल को बाहर भीतर ले जाया करता था और परमेश्वर
ने तुझे कहा है कि तू मेरे इसराएली लोगों को चरावेगा और
३ तू इसराएल का प्रधान होगा । सो इसराएल के सारे प्राचीन
हबरून में राजा पास आये और दाऊद राजा ने हबरून में
उन के साथ परमेश्वर के आगे बाचा बांधी और उन्हों ने दाऊद

४ को इसराएल पर राज्याभिषेक किया। जब दाऊद राज्य
करने लगा तब तीस बरस का था और उस ने चालीस बरस
५ राज्य किया। उस ने हबरून में सात बरस छः मास यहूदाह
पर राज्य किया और यरूसलम में सारे इसराएल और यहूदाह
पर तेंतीस बरस॥

६ तब राजा और उस के लोग उस देश के बासी यबूसियों कने
गये और उन्हों ने दाऊद को कहा कि जब लों तू अंधों और
लंगड़ों को दूर न करे यहां आने न पावेगा यह समझके कि
७ दाऊद यहां न आ सकेगा। तिस पर भी दाऊद ने सेहून
८ का गढ़ ले लिया वही दाऊद का नगर हुआ। और दाऊद
ने उस दिन कहा कि जो कोई पनाले लों पहुंचे और यबूसियों
और लंगड़ों और अंधों को जिस्से दाऊद को घिन है मारे
सोई सेना का प्रधान होगा इस लिये यह कहावत कहते हैं
९ कि अंधे और लंगड़े घर में पैठने न पावेंगे। और दाऊद गढ़
में रहा और उस ने उस का नाम दाऊद का नगर रक्खा और
दाऊद ने मिल्लो की चारों ओर और उस के भीतर बनाये।
१० और दाऊद बढ़ता गया और परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर उस के
साथ था॥

११ तब सूर के राजा हीराम ने देवदार और बढ़ई और
पत्थर के गढ़वैये दूतों के साथ दाऊद पास भेजे और उन्हों ने
१२ दाऊद के लिये भवन बनाया। और दाऊद को सूझ पड़ा कि
परमेश्वर ने मुझे इसराएल पर राजा स्थिर किया और मेरे राज्य
को अपने लोग इसराएल के लिये स्थिर किया॥

१३ और दाऊद ने हबरून से आके यरूसलम में और सहेलियां
और पत्नियां किईं और दाऊद के और भी बेटा बेटी उत्पन्न
१४ हुए। और उस के उन बेटों के नाम जो यरूसलम में उत्पन्न
हुए ये थे शमूअ और शोबाब और नातन और सुलेमान।

१५ और इबहार और इलीसूअ: और नफग और यफ़ीअ।
१६ और इलिसम: और इलयद: और इलिफ़लत ॥
१७ परन्तु जब फ़िलिसतियों ने सुना कि उन्हों ने दाऊद को
अभिषेक करके इसराएल का राजा किया तब सारे फ़िलिसती
दाऊद की खोज को चढ़ आये और दाऊद सुनके गढ़ में
१८ उतरा। और फ़िलिसती आये और रिफ़ाइम की तराई में फैल
१९ गये। तब दाऊद ने परमेश्वर से यह कहके बूझा कि मैं
फ़िलिसतियों पर चढ़ जाऊं क्या तू उन्हें मेरे बश में कर देगा
तब परमेश्वर ने दाऊद से कहा कि चढ़ जा क्योंकि मैं निःसंदेह
२० फ़िलिसतियों को तेरे हाथ में सौंपूंगा। तब दाऊद बअलफरसीन
में आया और वहां उन्हें मारके कहा कि परमेश्वर मेरे आगे
मेरे बैरियों पर ऐसा टूट पड़ा जैसा पानियों का दरार इस
२१ लिये उस ने उस स्थान का नाम बअलफरासीन रक्खा। और
उन्हों ने अपनी मूर्त्तिन को वहीं छोड़ा और दाऊद और उस
के लोग उन्हें उठा ले गये ॥
२२ और फ़िलिसती फिर चढ़ आये और रिफ़ाइम की तराई में
२३ फैल गये। और जब दाऊद ने परमेश्वर से बूझा तब उस ने
कहा कि तू मत चढ़ जा परन्तु उन के पीछे से घूम और तूत
२४ के पेड़ों के साम्ने होके उन पर जा पड़। और यों होवे कि
जब तू तूत के पेड़ों के ऊपर जाने का शब्द सुने तो आप को
चौकस कर क्योंकि तब परमेश्वर तेरे आगे आगे चलेगा कि
२५ फ़िलिसतियों की सेना को मारे। और जैसी कि परमेश्वर ने उसे
आज्ञा किई थी दाऊद ने वैसा ही किया और फ़िलिसतियों
को जिबअ से लेके जज़र लों मारा ॥

छठवां पर्ब्ब।

१ फिर दाऊद ने इसराएल में से तीस सहस्र चुने हुओं को

२ एकट्ठा किया। और दाऊद सारे लोगों को लेके यहूदाह के
बअली से चला कि वहां से ईश्वर की मंजूषा को लावे जिस
का नाम सेनाओं का परमेश्वर कहाता है जो करोबियों में रहता
है॥

३ और उन्हों ने ईश्वर की मंजूषा को नई गाड़ी पर धराया
और उसे अबिनदाब के घर से जो जिबअ में था निकाल लाये
और उस नई गाड़ी को अबिनदाब के बेटों ने जो उज्ज़: और
४ अख़यू थे हांका। और वे अबिनदाब के घर से जो जिबअ
में था उसे निकाल लाये और ईश्वर की मंजूषा के साथ साथ
५ गये और अख़यू मंजूषा के आगे आगे चला। और दाऊद और
इसराएल के सारे घराने सरो की लकड़ी के सब भांति के
बाजे जैसे कि बीणा और सारंगियां और तबले और तंबूरे और
झांझ लेके परमेश्वर के आगे आगे बजाते चले॥

६ और जब वे नकून के खलिहान पर पहुंचे तब उज्ज़: ने
हाथ बढ़ाके ईश्वर की मंजूषा को थाम लिया क्योंकि बैलों ने
७ उसे हिलाया था। तब परमेश्वर का क्रोध उज्ज़: पर भड़का
और ईश्वर ने उसे उस की ढिठाई के कारण मारा और वुह
८ ईश्वर की मंजूषा के लग मर गया। और इस कारण कि परमेश्वर
ने उज्ज़: पर दरार किया दाऊद उदास हुआ और उस
९ ने उस स्थान का नाम आज लों परज़उज्ज़: रक्खा। और
दाऊद उस दिन परमेश्वर से डरा और बोला कि परमेश्वर की
१० मंजूषा मुझ पास क्योंकर आवेगी। और दाऊद ने न चाहा कि
परमेश्वर की मंजूषा को अपने नगर में ले जाके अपने पास
रक्खे परन्तु दाऊद उसे एक अलंग ओबिदअदूम जाती के घर
११ ले गया। और परमेश्वर की मंजूषा ओबिदअदूम जाती के घर
में तीन मास लों रही और परमेश्वर ने ओबिदअदूम को और
उस के सारे घराने को आशीष दिया॥

१२ और यह दाऊद राजा से कहा गया कि परमेश्वर ने
आबिदअदूम को और उस की हर एक वस्तु को अपनी मंजूषा
के लिये आशीष दिया तब दाऊद गया और ईश्वर की मंजूषा को
आबिदअदूम के घर से अपने नगर में आनन्द से चढ़ा लाया ।
१३ और यों हुआ कि जब परमेश्वर की मंजूषा के उठवैये छः डग
चले तब दाऊद ने बैल और पले हुओं को बलि किया ।
१४ और दाऊद परमेश्वर के आगे सूती अफूद कटि में बांधे हुए
१५ अपनी शक्ति भर नाचते नाचते चला । और दाऊद और
इसराएल के सारे घराने परमेश्वर की मंजूषा को ललकारते और
नरसिंगे के शब्द के साथ ले आये ॥
१६ और ज्यों परमेश्वर की मंजूषा दाऊद के नगर में पहुंची तब
साऊल की बेटी मीकल ने खिड़की में से दृष्टि किई और दाऊद
राजा को परमेश्वर के आगे उछलते और नाचते देखा और उस
ने अपने मन में उस की निन्दा किई ॥
१७ और वे परमेश्वर की मंजूषा को भीतर लाये और उसे उस
के स्थान पर उस तंबू के मध्य जो दाऊद ने उस के लिये
खड़ा किया था रख दिया और दाऊद ने बलिदान की भेंटें
१८ और कुशल की भेंटें परमेश्वर के आगे चढ़ाईं। और जब दाऊद
बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ा चुका तब उस ने
१९ लोगों को सेनाओं के परमेश्वर के नाम से आशीष दिया । और
उस ने सारे लोगों को अर्थात् इसराएल की सारी मंडली को
क्या स्त्री क्या पुरुष हर एक को एक एक रोटी और एक एक
बोटी और एक एक दाख की टिकिया दिई और समस्त लोग
अपने अपने घर को चले गये ॥
२० जब दाऊद अपने घराने को आशीष देने को फिरा तब
साऊल की बेटी मीकल दाऊद की भेंट को निकली और बोली
कि इसराएल का राजा आज क्या ही ऐश्वर्यमान था जिस ने

आज अपने सेवकों की दासियों की आंखों में आप को ऐसा
उघारा जैसा कि तुच्छ जन आप को निर्लज्जा से उघारता है।
२१ तब दाऊद ने मीकल से कहा कि यह परमेश्वर के आगे था
जिस ने मुझे तेरे पिता के और उस के सारे घराने के आगे
चुना और अपने इसराएल लोग पर मुझे आज्ञाकारी किया इस
२२ लिये मैं परमेश्वर के आगे लीला करूंगा। और मैं इस्से भी
अधिक तुच्छ हूंगा और अपनी दृष्टि में नीचा हूंगा और जिन
दासियों के विषय में तू ने कहा है मैं उन से प्रतिष्ठा पाऊंगा।
२३ इस लिये साऊल की बेटी मीकल अपने जीवन भर निर्बंश
रही॥

सातवां पर्ब्ब।

१ और ऐसा हुआ कि जब राजा घर में बैठा था और परमेश्वर
२ ने उसे उस के सारे बैरियों से चारों ओर चैन दिया। तब
राजा ने नातन भविष्यद्वक्ता को कहा कि देख मैं देवदार के
घर में रहता हूं परन्तु ईश्वर की मंजूषा ओझलों में रहती है।
३ तब नातन ने राजा से कहा कि जा जो कुछ तेरे मन में है
उसे कर क्योंकि परमेश्वर तेरे साथ है॥
४ और उसी रात ऐसा हुआ कि परमेश्वर का बचन यह कहके
५ नातन को पहुंचा। कि जा और मेरे सेवक दाऊद से कह
कि परमेश्वर यों कहता है कि क्या मेरे निवास के लिये तू एक
६ घर बनाविगा। क्योंकि जब से इसराएल के संतान को मिस्र से
निकाल लाया मैं ने तो आज के दिन लों घर में बास न किया
७ परन्तु तंबू में और डेरे में फिरा किया। जहां जहां मैं सारे
इसराएल के संतान के साथ फिरता रहा क्या मैं ने इसराएल
की किसी गोष्ठियों से कहा जिसे मैं ने आज्ञा किई कि मेरे
इसराएल लोगों को चरावे कि तुम मेरे लिये देवदार का घर

८ क्यों नहीं बनाते । सो अब तू मेरे सेवक दाऊद से कह कि
सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे भेड़शाले में
से भेड़ का पीछा करने से लेके अपने इसराएली लोगें पर
९ अध्यक्ष किया । और जहां जहां तू गया मैं तेरे साथ साथ
रहा और तेरे सारे बैरियों को तेरे साम्ने से मार गिराया है
और मैं ने जगत के महान लोगें के नाम के समान तेरा नाम
१० बढ़ाया है । और मैं अपने इसराएली लोगें के लिये एक स्थान
ठहराऊंगा और उन्हें लगाऊंगा जिसतें वे अपने ही स्थान में
बसें और फिर अस्थिर न होवें और दुष्टता के बंश आगे की
११ नाईं उन्हें न सतावें । और उस समय की नाईं जब से मैं ने
न्याइयों को अपने इसराएली लोगें पर ठहराया और तुझे
तेरे सारे बैरियों से चैन दिया परमेश्वर तुझे यह भी कहता
१२ है कि मैं तेरे लिये घर बनाऊंगा । जब तेरे दिन पूरे होंगे
और तू अपने पितरों के साथ शयन करेगा तब मैं तेरे पीछे
तेरे बंश को उभारूंगा जो तेरे ही उदर से होगा और उस के
१३ राज्य को स्थिर करूंगा । मेरे नाम के लिये वही घर बनावेगा
और मैं उस के राज्य के सिंहासन को सदा लों स्थिर करूंगा ।
१४ मैं उस का पिता हूंगा और वुह मेरा बेटा होगा यदि वुह
अपराध करे तो मैं उसे मनुष्यों की छड़ी से और मनुष्यों के
१५ संतान की मार से ताड़ना करूंगा । परन्तु मेरी दया उस्से
अलग न होगी जिस रीति से कि मैं ने साऊल से उठा लिई
१६ जिसे मैं ने तेरे आगे से अलग किया । परन्तु तेरा घर और
तेरा राज्य तेरे आगे सनातन लों स्थिर रहेगा तेरा सिंहासन
१७ नित्य स्थिर रहेगा । नातन ने इन समस्त बचनों के समान
और इस समस्त दर्शन के समान वैसा ही दाऊद से कहा ॥
१८ 　तब दाऊद राजा भीतर गया और परमेश्वर के आगे बैठके
कहा कि हे प्रभु परमेश्वर मैं कौन और मेरा घर क्या कि तू

१६ ने मुझे यहां लों पहुंचाया। और तेरी दृष्टि में हे प्रभु परमेश्वर
यह भी छोटी बात थी परन्तु तू ने अपने सेवक के घर के
विषय में आगे को बहुत दिन के लिये कहा और हे प्रभु
२० परमेश्वर क्या मनुष्य का यह व्यवहार है। और दाऊद तुझे
क्या कह सक्ता है क्योंकि हे प्रभु परमेश्वर तू अपने सेवक को
२१ जानता है। अपने वचन के कारण और अपने मन के समान
तू ने ये सारे महत्कार्य्य किये कि अपने सेवक को जनावे।
२२ इस कारण हे परमेश्वर ईश्वर तू महान है क्योंकि तेरे समान
कोई नहीं और तुझे छोड़ कोई ईश्वर नहीं उन सभों के समान
२३ जो हम ने अपने कानों से सुना है। और तेरे इसराएल
लोग के समान पृथिवी में कौन सी जाति है जिसे अपना
ही लोग बनाने के लिये ईश्वर छुड़ाने गया कि अपना नाम
करे और जिसतें तुम्हारे लिये बड़े बड़े और भयंकर कार्य्य
अपने देश के लिये अपने लोगों के आगे करे जिन्हें तू ने मिस्र
२४ से जातिगणों से और उन के देवतों से छुड़ाया। क्योंकि तू
ने अपने लिये अपने इसराएल लोग को दृढ़ किया कि अपने
लिये सनातन के लोग होवें और हे परमेश्वर तू उन का ईश्वर
२५ हुआ। और अब हे परमेश्वर ईश्वर उस वचन को जो तू ने
अपने सेवक के विषय में और उस के घराने के बिषय में कहा
२६ है सदा लों स्थिर रख और अपने कहने के समान कर। और
यह कहके तेरा नाम सनातन लों बढ़ जाय कि सेनाओं का
परमेश्वर इसराएल का ईश्वर और तेरे सेवक दाऊद का घर
२७ तेरे आगे स्थिर होवे। क्योंकि हे सेनाओं के परमेश्वर इसराएल
के ईश्वर तू ने अपने सेवक के कान यह कहके खोले हैं कि
मैं तेरे लिये घर बनाऊंगा सो तेरे सेवक ने अपने मन में
२८ पाया कि तेरे आगे यह प्रार्थना करे। और अब हे प्रभु परमेश्वर
तू वही ईश्वर है और तेरे वचन सच्चे हैं और तू ने अपने

२९ सेवक से इस भलाई की बाचा दिई है। सो अब अनुग्रह
करके अपने सेवक के घराने पर आशीष दे जिसतें वुह सनातन
लों तेरे आगे बना रहे क्योंकि हे प्रभु परमेश्वर तू ने कहा है
सो तेरे आशीष से तेरे सेवक का घर सनातन लों आशीष पावे ॥

अठवां पर्ब्ब ।

१ और इस के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद ने फ़िलिसतियों को
मारा और उन्हें बश में किया और दाऊद ने मिथेगअम्मः
फ़िलिसतियों के हाथ से लिया ॥
२ और उस ने मोअब को मारा और उन्हें भूमि पर गिराके
रस्सी से नापा अर्थात् दो रस्सियों से बधन करने को और एक
पूरी रस्सी से जीता रखने को और मोअबी दाऊद के सेवक हुए
और भेंट लाये ॥
३ और दाऊद ने सूबः के राजा रिहोब के बेटे हददअ़ज़र
को भी जब कि वुह अपना सिवाना छुड़ाने को फ़ुरात नदी को
४ गया मार लिया। और दाऊद ने उस के एक सहस्र रथ और
सात सै घोड़चढ़े और बीस सहस्र पैदल लिये और दाऊद ने
समस्त रथों के घोड़ों की घोड़नसें काट डालीं परन्तु उन में
५ से सै रथों के लिये रख छोड़ा। और जब कि दमिशक़ के
सुरियानी हददअ़ज़र सूबः के राजा की सहाय को आये तब
दाऊद ने सुरियानियों में से बाईस सहस्र लोग मार डाले।
६ तब दाऊद ने दमिशक़ के सुरिया में चौकियां बैठाईं और
सुरयानी दाऊद के सेवक हुए और भेंटें लाये और जहां कहीं
७ दाऊद गया परमेश्वर ने उस की रक्षा किई। और दाऊद ने
हददअ़ज़र के सेवकों की सोने की ढालें लेके यरूसलम में
८ पहुंचाईं। और बतह से और बिअराती से जो हददअ़ज़र के
नगर हैं दाऊद राजा बहुत सा तांबा लाया ॥

९ और जब कि हमात के राजा तुग़ी ने सुना कि दाऊद ने
१० हददअज़र की सारी सेना मारी। तब तुग़ी ने अपने बेटे यूराम
को दाऊद राजा पास भेजा और उस का कुशल पूछा और
बधाई दिई इस कारण कि उस ने संग्राम करके हददअज़र
को मार डाला क्योंकि हददअज़र तुग़ी से लड़ा करता था और
अपने हाथ में चांदी के और सोने के और तांबे के पात्र लाये।
११ दाऊद राजा ने उन्हें उस चांदी और सोने सहित जो उस ने
१२ सब जातिगणों से जिन्हें उस ने वश में किया। अर्थात् सुरिया
से और मोअब से और अम्मून के संतान से और फ़िलिसतियों
से और अमालीक से और सूबः के राजा रिहोब के बेटे हददअज़र
से लूट में ले लिया था परमेश्वर को समर्पण किया॥
१३ और जब दाऊद अठारह सहस्र सुरियानियों को नोन की
१४ तराई में मारके फिर आया तब उस की कीर्त्ति फैली। और उस
ने अदूम में चौकियां बैठाईं और सारे अदूम में चौकियां और
सारे अदूमी भी दाऊद के सेवक हुए और जहां कहीं दाऊद
गया परमेश्वर ने उस की रक्षा किई॥
१५ और दाऊद सारे इसराएल पर राज्य करता रहा और दाऊद
अपनी समस्त प्रजा के लिये विचार और न्याय करता था।
१६ और ज़रूयाह का बेटा यूअब सेना पर था और अख़िलूद का
१७ बेटा यहूसफ़त स्मारक था। अख़ितूब का बेटा सदूक और
अबियतर का बेटा अख़िमलिक याजक थे और शिरायाह
१८ लेखक था। और यहूयदः का बेटा बिनायाह करीती और
पलीती पर था और दाऊद के बेटे प्रधान आज्ञाकारी थे॥

नवां पर्ब्ब।

१ तब दाऊद ने कहा कि अब भी साऊल के घराने में से
२ कोई बचा है कि मैं उस पर यूनतन के लिये कृपा करूं। और

साऊल के घराने का एक सेवक सीबा नाम था और जब उन्हों
ने उसे दाऊद पास बुलाया तब राजा ने उसे कहा कि तू
३ सीबा है और वुह बोला मैं आप का सेवक। तब राजा ने
पूछा कि साऊल के घराने में से और कोई भी है जिसतें मैं
उस पर ईश्वरीय कृपा दिखाऊं और सीबा ने राजा से कहा कि
४ अब लों यूनतन का एक लंगड़ा बेटा है। तब राजा ने उसे
पूछा वुह कहां है और सीबा ने राजा से कहा कि देखिये वुह
५ अमिएल के बेटे मकीर के घर लोदीबार में है। तब दाऊद
राजा ने भेजके अमिएल के बेटे मकीर के घर से जो लोदीबार
में है उसे मंगवा लिया॥
६ और जब साऊल के बेटे यूनतन का बेटा मिफ़िबूसत दाऊद
पास पहुंचा तब उस ने औंधे गिरके दण्डवत किई तब दाऊद
ने कहा कि मिफ़िबूसत और उस ने उत्तर दिया देखिये तेरा
७ सेवक है। और दाऊद ने उसे कहा कि मत डर क्योंकि निश्चय
तेरे पिता यूनतन के लिये तुझ पर अनुग्रह करूंगा और तेरे
पिता साऊल की सारी भूमि तुझे फेर देऊंगा और तू मेरे मंच
८ पर नित भोजन किया कर। तब उस ने दण्डवत किई और
कहा कि तेरा सेवक क्या कि आप मुझ से मरे हुए कुत्ते पर
दृष्टि करें॥
९ तब राजा ने साऊल के सेवक सीबा को बुलाया और उसे
कहा कि मैं ने सब जो कुछ कि साऊल का और उस के घराने
१० का था तेरे स्वामी के बेटे को दे दिया है। सो तू अपने बेटों
और सेवकों समेत उस के लिये भूमि जोत और ले आ जिसतें
तेरे स्वामी के खाने को रहे परन्तु मिफ़िबूसत जो तेरे स्वामी
का बेटा है नित मेरे मंच पर भोजन किया करेगा और सीबा
११ के पंदरह बेटे और बीस सेवक थे। तब सीबा ने राजा से
कहा कि सब जो मेरे प्रभु राजा ने अपने सेवक को कहा सो

तेरा सेवक करेगा परन्तु मिफ़िबूसत जो है सो मेरे मंच पर
१२ राजपुत्रों में से एक के समान खायगा। और मिफ़िबूसत का
एक छोटा बेटा था जिस का नाम मीका था और सब जितने
१३ कि सीबा के घर में रहते थे मिफ़िबूसत के सेवक थे। सो
मिफ़िबूसत यरूसलम में रहा क्योंकि वुह राजा के मंच पर
सदा भोजन करता था और वुह अपने दोनों पाओं से लंगड़ा
था॥

दसवां पर्ब्ब।

१ और उस के पीछे ऐसा हुआ कि अम्मून के संतान का
राजा मर गया और उस का बेटा हनून उस के राज्य पर
२ बैठा। तब दाऊद ने कहा कि मैं नाहस के बेटे हनून पर
अनुग्रह करूंगा जैसा उस के पिता ने मुझ पर अनुग्रह किया
सो दाऊद ने अपने सेवकों को भेजा कि उस के पिता के लिये
उसे शांति देवें और दाऊद के सेवक अम्मून के संतान के
३ देश में पहुंचे। और अम्मून के संतान के अध्यक्षों ने अपने
प्रभु हनून को कहा कि तेरी दृष्टि में क्या दाऊद तेरे पिता
की प्रतिष्ठा करता है कि उस ने शांतिदायकों को तेरे पास
भेजा है क्या दाऊद ने अपने सेवकों को तेरे पास इस लिये
नहीं भेजा है कि नगर को देख लेवें और उस का भेद लेवें
४ और उसे नाश करें। तब हनून ने दाऊद के सेवकों को
पकड़ा और हर एक की आधी दाढ़ी मुंड़वाई और उन के
वस्त्रों को बीच से अर्थात् पुट्ठे लों काटा और उन्हें फेर भेजा।
५ सो दाऊद को संदेश पहुंचा और उस ने उन्हें आगे से लेने के
लिये लोग भेजे इस कारण कि वे अत्यंत लज्जित थे सो राजा
ने कहा कि जब लों तुम्हारी दाढ़ियां बढ़ें यरीहो में रहो
उस के पीछे चले आओ॥

६ और अम्मून के संतान ने ज्यों देखा कि हम दाऊद के
आगे दुर्गंध हैं तो अम्मून के संतान ने भेजके बैतरहुब के
सुरियानियों के और सूबः के सुरियानियों के बीस सहस्र पैदल
और मअकः के राजा से सहस्र जन और तूब के बारह सहस्र
जन भाड़े पर लिये ॥
७ और दाऊद ने यह सुनके यूअब और सूरों की सारी सेना
८ को भेजा। तब अम्मून के संतान निकले और नगर के फाटक
की पैठ में युद्ध के लिये पांती बांधी और सूबः के और रहूब
के सुरियानी और तूब और मअकः आप ही आप चौगान में थे।
९ जब यूअब ने अपने आगे पीछे लड़ाई का साम्ना देखा तब
उस ने इसराएल के चुने हुए में से चुन लिये और सुरियानियों
१० के साम्ने पांती बांधी। और उबरे हुए लोगों को अपने भाई
अबिशै को सौंपा कि अम्मून के संतान के आगे पांती बांधे।
११ और कहा कि यदि सुरियानी मुझ पर प्रबल होवें तो तू मेरी
सहाय कीजियो परन्तु यदि अम्मून के संतान तुझ पर प्रबल
१२ होवें तो मैं आके तेरी सहाय करूंगा। ढाढ़स कर और अपने
लोगों के लिये और अपने ईश्वर के नगरों के लिये पुरुषार्थ
कर और परमेश्वर जो भला जाने सो करे ॥
१३ तब यूअब और उस के साथ के लोग सुरियानियों के
१४ सन्मुख बढ़े और वे उस के आगे से भागे। और अम्मून के
संतान भी यह देखके कि सुरियानी भागे वे भी अबिशै के
आगे से भागे और नगर में घुसे सो यूअब अम्मून के संतान
के पीछे से फिरके यरूसलम को आया ॥
१५ और जब सुरियानियों ने देखा कि हम इसराएल के आगे
१६ मारे गये तब वे एकट्ठे बटुर गये। और हददअज़र लोग
भेजके नदी पार से सुरियानियों को ले आया और वे हीलम
में आये और साबिक़ जो हददअज़र की सेना का प्रधान था

१७ उन के आगे आगे चला। और जब दाऊद को कहा गया
तब वुह सारे इसराएलियों को एकट्ठा करके यरदन पार उतरा
और हीलम को आया और सुरियानी ने दाऊद के सन्मुख
१८ पांती बांधी और उस्से लड़े। और सुरियानी इसराएल के साम्ने
से भागे और दाऊद ने सात सौ रथों के सुरियानी और चालीस
सहस्र घोड़चढ़े मारे और उन की सेना के प्रधान साबिक् को
१९ मार लिया और वुह वहीं मर गया। और जब उन राजाओं
ने जो हददअज़र के सेवक थे देखा कि वे इसराएल के आगे
मारे गये तब उन्हों ने इसराएलियों से मिलाप किया और उन
की सेवा किई सो सुरियानी फेर अम्मून के संतान की सहाय
करने को डरे॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ और जब बरस बीत गया कि राजा लड़ाई पर चढ़ते हैं
यों हुआ कि दाऊद ने अपने सेवकों को और समस्त इसराएल
को यूअब के साथ भेजा और उन्हों ने अम्मून के संतान को
नाश किया और रब्बः को घेर लिया परन्तु दाऊद यरूसलम
में रह गया॥
२ और एक संध्याकाल को यों हुआ कि दाऊद अपने बिछौने
पर से उठा और राजभवन की छत पर टहलने लगा और
वहां से उस ने एक स्त्री को स्नान करते देखा और वुह स्त्री
३ देखने में अत्यंत सुंदरी थी। और दाऊद ने भेजके उस स्त्री
का खोज किया और किसी ने कहा कि क्या वुह इलिआम
४ की बेटी बिन्तसबअ ऊरियाह हित्ती की पत्नी नहीं है। और
दाऊद ने दूत भेजके उसे बुला लिया और वुह दाऊद पास
आई सो उस ने उस्से रति किया क्योंकि वुह अपनी अपवित्रता
५ से पवित्र हुई थी फिर वुह अपने घर को चली गई। और

वुह स्त्री गर्भिणी हुई और दाऊद को कहला भेजा कि मैं
६ गर्भिणी हूं । और दाऊद ने यूअब को कहला भेजा कि हित्ती
ऊरियाह को मुझ पास भेज दे सो यूअब ने ऊरियाह को दाऊद
पास भेज दिया ॥
७ और जब ऊरियाह उस पास आया तब दाऊद ने यूअब
का अरु और लोगों का कुशल क्षेम और लड़ाई का समाचार
८ पूछा । तब दाऊद ने ऊरियाह को कहा कि अपने घर जा
और अपने पांव धो तब ऊरियाह राजा के घर से निकला
९ और उस के पीछे पीछे राजा के घर से भोजन गया । पर ऊरियाह
राजा के घर की डेवढ़ी पर अपने प्रभु के सेवकों के साथ सो
१० रहा और अपने घर को न गया । और जब दाऊद को कहा
गया कि ऊरियाह अपने घर नहीं गया तब दाऊद ने ऊरियाह
से कहा कि क्या तू यात्रा से नहीं आया फेर तू अपने घर
११ क्यों न गया । और ऊरियाह ने दाऊद से कहा कि मंजूषा और
इसराएल और यहूदाह तंबूओं में रहते हैं और मेरा प्रभु
यूअब और मेरे प्रभु के सेवक खुले चैागान में पड़े हुए हैं और
मैं क्योंकर अपने घर जाऊं और खाऊं पीऊं और अपनी स्त्री
के साथ सो रहूं तेरे जीवन सों और तेरे प्राण के जीवन सों
१२ मैं ऐसा न करूंगा । तब दाऊद ने ऊरियाह को कहा कि
आज के दिन भी यहीं रह जा और कल मैं तुझे भेजूंगा सो
ऊरियाह उस दिन भी प्रातःकाल लों यरूसलम में रह गया ।
१३ तब दाऊद ने उसे बुलाके अपने साम्ने खिलाया पिलाया और
उसे उन्मत्त किया और सांझ को वुह बाहर जाके अपने प्रभु
के सेवकों के साथ अपने बिछौने पर सो रहा परन्तु अपने
घर न गया ॥
१४ और प्रातःकाल यों हुआ कि दाऊद ने यूअब को चिट्ठी
१५ लिखके ऊरियाह के हाथ भेजी । और उस ने चिट्ठी में यह

लिखा कि ऊरियाह को भारी लड़ाई के आगे करो और उस के
पीछे से हट जाओ जिसतें वुह मारा जावे॥
१६ और ऐसा हुआ कि जब यूअब ने उस नगर का भेद ले
लिया तो उस ने ऊरियाह को ऐसे स्थान में ठहराया जहां
१७ वुह जानता था कि सूरमा हैं। और उस नगर के लोग निकले
और यूअब से लड़े और दाऊद के सेवकों में से गिरे और हित्ती
ऊरियाह भी मारा गया॥
१८ तब यूअब ने युद्ध का समस्त समाचार दाऊद को कहला
१९ भेजा। और दूत को आज्ञा किई कि जब तू राजा से युद्ध का
२० समाचार कह चुके। तो यदि ऐसा हो कि राजा का क्रोध
भड़के और वुह तुझे कहे कि जब तुम लड़ाई पर चढ़े तो
नगर के निकट क्यों आये क्या तुम न जानते थे कि वे भीत
२१ पर से मारेंगे। यरुब्बुसत के बेटे अबिमलिक को किस ने
मारा एक स्त्री ने चक्की का पाट भीत पर से उस पर नहीं दे
मारा कि वुह तैबीज़ में मरा तुम भीत के नीचे क्यों गये थे
तब कहियो कि तेरा सेवक हित्ती ऊरियाह भी मारा गया॥
२२ सो दूत बिदा हुआ और आया और जो कुछ कि यूअब ने
२३ कहला भेजा था सो दाऊद को सुनाया। और दूत ने दाऊद
से कहा कि लोग हम पर प्रबल हुए और वे चौगान में हम
पर निकले और हम उन्हें रगेदे हुए फाटक की पैठ लों चले
२४ गये। तब धनुषधारियों ने भीत पर से तेरे सेवकों को बाण
से मारा और राजा के कितने ही सेवक मारे गये और आप
२५ का सेवक हित्ती ऊरियाह भी मारा गया। तब दाऊद ने दूत
से कहा कि यूअब को जाके उभाड़ और कह कि यह बात
तेरी दृष्टि में बुरी न लगे क्योंकि खड्ग जैसा एक को वैसा
दूसरे को काटता है तू नगर के साम्ने संग्राम को दृढ़ कर
और उसे ढा दे॥

२६ 　और ऊरियाह की स्त्री अपने पति ऊरियाह का मरना सुनके
२७ विलाप करने लगी । और जब शोक के दिन बीत गये तब
दाऊद ने उसे अपने घर बुलवा लिया और वुह उस की पत्नी
हुई और वुह उस के लिये बेटा जनी परन्तु जो दाऊद ने किया
सो परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था ॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ 　और परमेश्वर ने नातन को दाऊद पास भेजा और उस ने
उस पास आके उस्से कहा कि एक नगर में दो जन थे एक
२ तो धनी और दूसरा कंगाल । उस धनी के पास बहुत से झुंड
३ और ढोर थे । परन्तु उस कंगाल के पास भेड़ की एक पठिया
को छोड़ कुछ न था उसे उस ने मोल लिया और पाला था
और वुह उस के और उस के बालबच्चों के साथ बढ़ी उसी ही
का कौर खाती और उसी ही के कटोरे से पीती थी और उस
की गोद में सोती थी और उस के लिये कन्या के समान थी ।
४ और उस धनमान के पास एक पथिक आया तब उस ने उस
के लिये सिद्ध करने को अपने ही झुंड और अपने ही ढोर को
बचा रक्खा परन्तु उस कंगाल की पठिया लिई और उस पुरुष
के लिये जो उस पास आया था पकवाई ॥
५ 　तब दाऊद का क्रोध उस पुरुष पर बहुत भड़का और उस
ने नातन से कहा कि परमेश्वर के जीवन सों जिस पुरुष ने
६ यह काम किया सो निश्चय मार डालने के योग्य है । और
वुह पठिया चौगुनी उसे फेर दे इस कारण कि उस ने ऐसा
काम किया और कुछ मया न किई ॥
७ 　तब नातन ने दाऊद से कहा कि वुह पुरुष तू ही है
परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे
इसराएल पर राज्याभिषेक किया है और मैं ने तुझे साऊल के

८ हाथ से छुड़ाया। और मैं ने तेरे स्वामी का घर तुझे दिया
और तेरे स्वामी की स्त्री को तेरी गोद में दिया और इसराएल
और यहूदाह का घराना तुझे दिया और यदि यह थोड़ा था
९ तो मैं तुझे ऐसी वैसी बस्तु भी देता। तू ने क्यों परमेश्वर की
आज्ञा की निन्दा किई कि उस की दृष्टि में बुराई करे तू ने
हित्ती ऊरियाह को खड्ग से मरवाया और उस की पत्नी को
लेके अपनी पत्नी किया और उसे अम्मून के संतान के खड्ग से
१० मरवा डाला। इस लिये अब तेरे घर से खड्ग कधी जाता न
रहेगा इस कारण कि तू ने मुझे तुच्छ किया और हित्ती
११ ऊरियाह की पत्नी को लेके अपनी पत्नी किया। परमेश्वर यों
कहता है कि देख मैं तेरे ही घर से तुझ पर बुराई उभारूंगा
और मैं तेरी आंखों के आगे तेरी पत्नियों को लेके तेरे परोसी
को देऊंगा और वुह इस सूर्य्य के साम्ने तेरी पत्नियों के साथ
१२ अकर्म्म करेगा। क्योंकि तू ने छिपके किया पर मैं यह सारे
इसराएल के साम्ने और सूर्य्य के साम्ने करूंगा॥
१३ तब दाऊद ने नातन से कहा कि मैं ने परमेश्वर का
अपराध किया और नातन ने दाऊद से कहा कि परमेश्वर ने
१४ भी तेरे अपराध को दूर किया तू न मरेगा। तथापि इस काम
के कारण से तू ने परमेश्वर के बैरियों को उस की अपनिन्दा
करने का कारण दिया लड़का भी जो तेरे लिये उत्पन्न है
निश्चय मर जावेगा॥
१५ सो नातन अपने घर को गया और परमेश्वर ने उस लड़के
को जो ऊरियाह की पत्नी दाऊद के लिये जनी थी मारा कि
१६ वुह बड़ा रोगी हुआ। इस लिये दाऊद ने उस लड़के के लिये
ईश्वर से बिनती किई और ब्रत रक्खा और भीतर जाके सारी
१७ रात भूमि पर पड़ा रहा। और उस के घर के प्राचीन
उसे भूमि पर से उठाने को आये परन्तु उस ने न चाहा और

१८ न उन के साथ भोजन किया । और सातवें दिन वुह लड़का
मर गया और दाऊद के सेवक उसे कहने से डरे कि लड़का
मर गया क्योंकि उन्हों ने कहा कि देखो जब लड़का जीता ही
था तब हम ने उसे कहा और उस ने हमारी बात न मानी
और यदि हम उसे कहें कि लड़का मर गया फेर वुह आप
१९ को कैसा कष्ट देगा । पर जब दाऊद ने देखा कि उस के
सेवक फुसफुसा रहे हैं तब उस ने बूझा कि लड़का मर गया इस
लिये दाऊद ने अपने सेवकों को कहा कि क्या लड़का मर
२० गया और वे बोले कि मर गया । तब दाऊद भूमि पर से
उठा और नहाया और सुगंध लगाया और अपना बस्त्र बदला
और परमेश्वर के घर में आया और दण्डवत किई तब वुह
अपने घर गया और जब उस ने चाहा तब उस के आगे रोटी
२१ धरी गई और उस ने खाई । तब उस के सेवकों ने उसे कहा
कि आप ने यह कैसा किया है जब लों लड़का जीता था आप
ने ब्रत करके बिलाप किया परन्तु जब लड़का मर गया तब
२२ उठके रोटी खाई । और उस ने कहा कि जब लों लड़का
जीता ही था तब लों मैं ने ब्रत करके बिलाप किया क्योंकि
मैं ने कहा कि कौन जानता है कि ईश्वर मुझ पर अनुग्रह
२३ करेगा जिसतें लड़का जीवे । पर अब तो वुह मर गया सो
मैं किस लिये ब्रत करूं क्या मैं उसे फेर ला सक्ता हूं मैं उस
पास जाऊंगा पर वुह मुझ पास फिर न आवेगा ॥

२४ और दाऊद ने अपनी पत्नी बितसबअ को शांति दिई और
उस पास गया और बेटा जनी और उस ने उस का नाम
२५ सुलेमान रक्खा और परमेश्वर उस्से प्रीति रखता था । और उस
ने नातन आगमज्ञानी के द्वारा से कहला भेजके उस का नाम
परमेश्वर के कारण परमेश्वर का प्रिय रक्खा ॥

२६ और यूअब अम्मून के संतान के रब्बः से लड़ा और

२७ राजनगर ले लिया । तब यूअब ने दूतों को भेजके दाऊद
को कहला भेजा कि मैं रब्ब: से लड़ा और मैं ने पानियों के
२८ नगर को ले लिया । अब आप उबरे हुए लोगों को एकट्ठा
करिये और इस नगर के आगे छावनी करके उसे लीजिये न
हो कि मैं उस नगर को लेऊं और मेरा नाम उस पर होवे ।
२९ तब दाऊद ने सारे लोग एकट्ठे किये और रब्ब: पर चढ़ा और
३० लड़के उसे ले लिया । और उस ने वहां के राजा का मुकुट
उस के सिर पर से लिया और उस का तौल रत्न सहित एक
तोड़ा सोने का था और वुह दाऊद के सिर पर था और उस
३१ ने उस नगर से बहुत सी लूट निकाली । और उस ने उस में
के लोगों को बाहर निकालके आरों और लोहे के दावने की
गाड़ी से और कुल्हाड़ों के नीचे किया और उन्हें ईंटों के पैजावे
में से चलाया और उस ने अम्मून के संतान के सारे नगरों से
ऐसा ही किया और दाऊद सेना समेत यरूसलम को फिरा॥

तेरहवां पर्ब्ब ।

१ और इस के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद के बेटे अबिसलुम
की एक सुंदर बहिन थी जिस का नाम तमर और दाऊद के
२ बेटे अमनून ने उस पर मन लगाया था । और अमनून ऐसा
बिकल हुआ कि अपनी बहिन तमर के लिये रोगी हुआ क्योंकि
३ वुह कुंआरी थी पर कुछ बन न पड़ता था । परन्तु अमनून
का एक मित्र था जिस का नाम यूनदब जो दाऊद के भाई
सिमआह का बेटा था और यूनदब एक अति चतुर जन था ।
४ सो उस ने उसे कहा कि राजा का बेटा होके तू क्यों प्रतिदिन
दुर्बल होता जाता है क्या तू मुझ से न कहेगा तब अमनून
ने उसे कहा कि मेरा जीव अपने भाई अबिसलुम की बहिन
५ तमर पर लगा है । तब यूनदब ने उसे कहा कि तू अपने

बिछौने पर पड़ा रह और आप को रोगी ठहरा और जब तेरा
पिता तुझे देखने आवे तो उसे कहियो कि मैं आप की बिनती
करता हूं कि मेरी बहिन तमर को आने दीजिये कि मुझे कुछ
खिलावे और मेरे आगे भोजन बनावे जिसतें मैं देखूं और उस
६ के हाथ से खाऊं। सो अमनून पड़ा रहा और आप को रोगी
ठहराया और जब राजा उसे देखने को आया तो अमनून ने
राजा से कहा कि मैं आप की बिनती करता हूं कि मेरी बहिन
तमर को आने दीजिये कि मेरे आगे दो फुलके पकावे जिसतें
मैं उस के हाथ से खाऊं॥
७ तब दाऊद ने तमर के घर कहला भेजा कि अभी अपने
८ भाई अमनून के घर जा और उस के लिये भोजन बना। सो
तमर अपने भाई अमनून के घर गई और वुह पड़ा हुआ था
और उस ने पिसान लेके गूंधा और उस के आगे फुलके बनाये
९ और पकाये। और उस ने एक पात्र लिया और उन्हें उस के आगे
उंडेला पर उस ने खाने को नाह किया तब अमनून ने कहा
कि सब जन मुझ पास से बाहर निकल जाओ सो हर एक उस
१० पास से बाहर गया। और अमनून ने तमर को कहा कि भोजन
कोठरी के भीतर ला कि मैं तेरे हाथ से खाऊं सो तमर फुलके
जो उस ने बनाये थे उठाके कोठरी में अपने भाई अमनून पास
११ लाई। और जब वुह खिलाने के लिये उस के आगे लाई तब
उस ने उसे पकड़ा और उसे कहा कि आ मेरी बहिन मेरे संग
१२ लेट जा। पर वुह बोली नहीं भाई मुझे निन्दित मत कर
क्योंकि इसराएलियों में यह बात उचित नहीं सो ऐसी मूर्खता
१३ मत कर। और मैं किधर अपना कलंक छुड़ाऊं और तू
जो है सो इसराएलियों में एक मूढ़ की नाईं होगा सो
मैं तेरी बिनती करती हूं कि राजा से कहिये कि वुह मुझे
१४ तुझ से न रोकेगा। तथापि उस ने उस की बात न मानी

परन्तु उस्से प्रबल होके बरबस किया और उस्से अकर्म्म
किया ॥
१५ तब अमनून ने उस्से अति घिन किया यहां लों कि जिस
घिन से घिन किया उस प्रीति से जो वुह उस्से रखता था
अधिक हुआ और अमनून ने उसे कहा कि उठ दूर हो।
१६ और उस ने उसे कहा कि यह बुराई कि तू ने मुझे निकाल
दिया उस्से जो तू ने मुझ से किई अधिक है पर उस ने न
१७ माना। तब अमनून ने अपने सेवा करवैये एक दास को बुलाके
कहा कि अब इसे मुझ पास से निकाल दे और उस के पीछे
१८ द्वार में अगरी लगा। और उस पर बहुरंग वस्त्र था क्योंकि
राजा की कुंआरी बेटियां ऐसा ही वस्त्र पहिनती थीं तब उस
के सेवक ने उसे बाहर कर दिया और उस के पीछे द्वार पर
अगरी लगाई ॥
१९ और तमर ने सिर पर धूल डाली और अपना बहुरंगी वस्त्र
२० फाड़ा और सिर पर हाथ धरके रोती चली गई। और उस के
भाई अबिसलुम ने उसे कहा कि क्या तेरा भाई अमनून तेरे
संग हुआ परन्तु हे बहिन अब चुपकी हो रह वुह तेरा भाई
है उस बात पर अपना मन मत लगा तब तमर अपने भाई
अबिसलुम के घर में अति उदासीन पड़ी रही ॥
२१ परन्तु दाऊद राजा इन सब बातों को सुनके अति क्रुद्ध
२२ हुआ। और अबिसलुम ने अपने भाई अमनून को कुछ भला
बुरा न कहा क्योंकि अबिसलुम अमनून से घिन करता था
क्योंकि उस ने उस की बहिन तमर से बरबस किया था।
२३ और पूरे दो बरस के पीछे ऐसा हुआ कि बअलहसूर में जो
इफ़रायम के लग है अबिसलुम की भेड़ों के रोम कतरवैये थे
२४ तब अबिसलुम ने राजा के सब बेटों को नेउंता दिया। और
अबिसलुम राजा पास आया और कहा कि देखिये अब तेरे

सेवक को भेड़ों के ऊन कतरवैये हैं सो अब मैं तेरी बिनती
करता हूं कि राजा और उस के सेवक भी तेरे दास के साथ
२५ चलें। तब राजा ने अबिसलुम से कहा कि नहीं बेटे हम
सब के सब न जावें जिसतें न हो कि तुझ पर भार होवे और
उस ने उसे बहुत मनाया परन्तु तदभी वुह न गया पर उसे
२६ आशीष दिया। तब अबिसलुम ने कहा कि यदि नहीं तो में
आप की बिनती करता हूं कि मेरे भाई अमनून को हमारे
साथ जाने दीजिये तब राजा ने उसे कहा कि वुह किस लिये
२७ तेरे साथ जावे। परन्तु अबिसलुम ने उसे बहुत मनाया तब
उस ने अमनून को और सारे राजपुत्रों को उस के साथ जाने
दिया॥

२८ और अबिसलुम ने अपने सेवकों को कह रक्खा था कि
चीन्ह रक्खो कि जब अमनून का मन मदिरा से मगन होवे
और मैं तुम्हें कहूं कि अमनून को मारो तब उसे घात कीजियो
डरियो मत क्या मैं ने तुम्हें आज्ञा नहीं किई सो ढाढ़स और
२९ सूरता कीजियो। और जैसी कि अबिसलुम ने उन्हें आज्ञा किई
थी वैसा ही उस के सेवकों ने अमनून से किया तब समस्त
राजपुत्र उठे और हर एक जन अपने अपने खच्चर पर चढ़
भागा॥

३० और ऐसा हुआ कि उन के मार्ग में होते ही दाऊद पास
यह समाचार पहुंचा कि अबिसलुम ने सारे राजपुत्रों को मार
३१ डाला और उन में से एक भी न बचा। तब राजा उठा और
अपने कपड़े फाड़े और भूमि पर लोट गया और उस के सारे
३२ सेवक भी कपड़े फाड़के उस के आगे खड़े हुए। तब दाऊद
के भाई सिमआह का बेटा यूनदब उत्तर देके बोला कि
मेरे प्रभु ऐसा न समझें कि समस्त तरुण अर्थात् राजपुत्र मारे
गये क्योंकि अमनून अकेला मारा गया क्योंकि जिस दिन से

अमनून ने अबिसलुम की बहिन तमर की पत खोई उस ने
३३ यह बात ठान रक्खी थी। सो अब मेरा प्रभु राजा इस बात
को न समझे कि समस्त राजपुत्र मारे गये क्योंकि केवल अमनून
मारा गया ॥
३४ परन्तु अबिसलुम भागा और उस तरुण ने जो पहरे पर था
आंखें उठाईं और दृष्टि किई और क्या देखता है कि बहुत से
३५ लोग मार्ग में पहाड़ की ओर से उस के पीछे आते हैं। तब
यूनदब ने राजा से कहा कि देखिये तेरे दास के कहे के समान
३६ राजपुत्र आये। और ऐसा हुआ कि जब वुह कह चुका तब
राजपुत्र आ पहुंचे और चिल्ला चिल्ला बिलाप किये और राजा भी
और उस के समस्त सेवकों ने बहुत बिलाप किया ॥
३७ पर अबिसलुम जसूर के राजा अम्मिहूर के बेटे तलमी पास
गया और दाऊद प्रतिदिन अपने पुत्र के लिये बिलाप करता रहा ॥
३८ और अबिसलुम भागके जसूर में गया और तीन बरस लों वहां
३९ रहा। और दाऊद राजा का मन अबिसलुम पास जाने को
बहुत था क्योंकि अमनून के मरने के विषय में उस का मन
शांति हुआ ॥

चौदहवां पर्व्व।

१ जब ज़रूयाह के बेटे यूअब ने देखा कि राजा का मन
२ अबिसलुम की ओर है। तब यूअब ने तक़ूअ में भेजके वहां
से एक बुद्धिमती स्त्री बुलवाई और उसे कहा कि मैं तेरी
बिनती करता हूं कि उदासी का भेष बना और उदासी बस्त्र
पहिन और अपने पर तेल मत लगा परन्तु ऐसा हो जैसे कोई
स्त्री जिस ने बहुत दिन से मृतक के लिये बिलाप किया है।
३ और राजा पास आ और इस रीति से उस्से कह सो यूअब ने
उस के मुंह में बातें डालीं ॥

४ और जब तकूअ की स्त्री राजा से बोली तब वुह भूमि पर
औंधे मुंह गिरी और दण्डवत करके बोली कि हे राजा छुड़ाइये।
५ तब राजा ने उसे कहा कि तुझे क्या हुआ और वुह बोली मैं
६ निश्चय बिधवा स्त्री हूं और मेरा पति मर गया है। और
आप की दासी के दो बेटे थे और उन दोनों ने खेत में झगड़ा
किया और उन में कोई न था कि छुड़ावे और एक ने दूसरे को
७ मारा और उसे बध किया। और देखिये कि सारे घराने आप
की दासी पर उठे हैं और वे कहते हैं कि जिस ने अपने
भाई को मार डाला उसे हमें सौंप दे जिसतें हम उस के भाई
के प्राण की संती जिसे उस ने घात किया उसे मार डालें और
हम अधिकारी को भी नाश करेंगे और यों वे मेरी बची हुई
चिनगारी को भी बुझा डालेंगे और मेरे पति के नाम और
८ बचे हुए को भूमि पर न छोड़ेंगे। तब राजा ने उस स्त्री से
कहा कि अपने घर जा और मैं तेरे विषय में आज्ञा करूंगा।
९ तब तकूअ की उस स्त्री ने राजा से कहा कि मेरे प्रभु राजा
सारी बुराई मुझ पर और मेरे पिता के घराने पर होवे और
१० राजा और उस का सिंहासन निर्दोष रहे। तब राजा ने कहा
कि जो कोई तुझे कुछ कहे उसे मुझ पास ला और वुह फिर
११ तुझे न छूयेगा। तब वुह बोली मैं बिनती करती हूं कि राजा
अपने ईश्वर परमेश्वर को स्मरण करे कि रुधिर का पलटादायक
मेरे बेटे को घात करने को न बढ़े तब वुह बोला परमेश्वर
के जीवन सों तेरे बेटे का एक बाल भी भूमि पर न गिरेगा॥
१२ तब उस स्त्री ने कहा कि मैं तेरी बिनती करती हूं कि
अपनी दासी को एक बात अपने प्रभु राजा से कहने दीजिये
१३ और वुह बोला कहे जा। तब उस स्त्री ने कहा कि आप ने
किस लिये ईश्वर के लोगों के विरुद्ध ऐसी चिंता किई क्योंकि
राजा ऐसी बात कहते हैं जैसा कोई इस बात में दोषी है

कि राजा भेजके अपने निकाले हुए को घर में फेर नहीं
१४ लाते। क्योंकि हमें मरने पड़ेगा और पानी के समान हैं जो
भूमि पर गिराया जाके बटोरा नहीं जा सक्ता और ईश्वर भी
मनुष्यत्व पर दृष्टि नहीं करता तथापि वुह युक्ति करता है कि
१५ उस का निकाला हुआ उस्से अलग न रहे। सो अब जो मैं
अपने प्रभु राजा पास इस बात के विषय में कहने आई हूं
इस कारण कि लोगों ने मुझे डराया और आप की दासी ने
कहा कि मैं आप राजा से कहूंगी कदाचित राजा अपनी दासी
१६ की बिनती सुनें। क्योंकि राजा अपनी दासी को उस पुरुष के
हाथ से छुड़ाने को सुनेंगे जो मुझे और मेरे बेटे को ईश्वर के
१७ अधिकार से निकालके मार डाला चाहता है। तब तेरी
दासी बोली कि मेरे प्रभु राजा की बात कुशल की होगी
क्योंकि मेरे प्रभु राजा भला बुरा सुन्ने में ईश्वर के दूत के समान
हैं इस कारण परमेश्वर तेरा ईश्वर तेरे साथ होगा॥
१८ तब राजा ने उस स्त्री को कहा कि जो कुछ मैं तुझ से पूछूं
तू मुझ से मत छिपा और स्त्री बोली कि मेरे प्रभु राजा कहिये।
१९ तब राजा ने कहा कि क्या इन सब बातों में यूअब भी तेरे
साथ नहीं तब उस स्त्री ने उत्तर दिया कि तेरे प्राण की
किरिया हे मेरे प्रभु राजा कोई इन बातों में से जो प्रभु राजा
ने कही हैं दहिने अथवा बायें जा नहीं सक्ती क्योंकि
तेरे सेवक यूअब ही ने मुझे यह कहा है और उसी ने यह
२० सब बातें तेरी दासी के मुंह में डाली हैं। तेरे सेवक यूअब ने
यह बात इस लिये किई जिसतें इस कहने का डौल बनावे
और पृथिवी के समस्त ज्ञान में मेरा प्रभु ईश्वर के दूत के
समान बुद्धिमान है॥
२१ तब राजा ने यूअब को कहा कि देख मैं ने यह बात
२२ किई है सो जा और उस तरुण अबिसलुम को फेर ला। सो

यूअब भूमि पर औंधा गिरा और दण्डवत किई और राजा का
धन्य माना और यूअब बोला कि आज तेरे सेवक को निश्चय
हुआ कि मैं ने तेरी दृष्टि में अनुग्रह पाया कि हे मेरे प्रभु
२३ राजा आप ने अपने सेवक की बिनती मानी। तब यूअब
उठके जसूर को गया और अबिसलुम को यरूसलम में लाया।
२४ तब राजा ने कहा कि उसे कह कि अपने घर जावे और मेरा
मुंह न देखे सो अबिसलुम अपने घर गया और राजा का मुंह
न देखा ॥

२५ परन्तु समस्त इसराएल में कोई जन अबिसलुम के तुल्य
सुंदर और प्रशंसा के योग्य न था तलवे से लेके चांदी लों उस
२६ में कोई पय न थी। और जब वुह अपने सिर के बाल मुंड़ाता
था क्योंकि हर बरस के अंत में उस का यह बंधेज था क्योंकि
उस के बाल बहुत घने थे और तौल में दो सौ मिसक़ाल
२७ राजा के बटखरे से होते थे। और अबिसलुम के तीन बेटे
उत्पन्न हुए और एक बेटी जिस का नाम तमर था वुह बहुत
सुंदर थी ॥

२८ सो अबिसलुम पूरे दो बरस यरूसलम में रहा और राजा
२९ का मुंह न देखा। तब अबिसलुम ने यूअब को बुलवाया कि
उसे राजा पास भेजे परन्तु वुह न चाहता था कि उस पास
आवे तब उस ने दुहराके बुलवाया तब भी वुह न आया।
३० तब उस ने अपने सेवकों से कहा कि देखो यूअब का खेत
मेरे खेत से लगा है और वहां उस का जव है जाओ और
उस में आग लगाओ तब अबिसलुम के सेवकों ने खेत में आग
३१ लगाई। तब यूअब उठा और अबिसलुम के घर आया और
उस्से कहा कि तेरे सेवकों ने मेरे खेत में क्यों आग लगाई।
३२ तब अबिसलुम ने यूअब को उत्तर दिया कि देख मैं ने तुझे
कहला भेजा कि यहां आ कि मैं तुझे राजा पास भेजके कहूं

कि मैं जसूर से क्यों यहां आया मेरे लिये तो वहीं रहना
अच्छा था सो अब मैं राजा का मुंह देखूं और यदि
३३ मुझ में अपराध होवे तो वुह मुझे मार डाले। तब यूअब
ने राजा पास जाके यह कहा और उस ने अबिसलुम को
बुलाया सो वुह राजा पास आया और राजा के आगे औंधा
गिरा और राजा ने अबिसलुम को चूमा॥

पंदरहवां पर्ब्ब।

१ और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि अबिसलुम ने अपने
लिये रथ और घोड़े और पचास मनुष्य अपने आगे दौड़ने को
२ सिद्ध किये। और अबिसलुम तड़के उठा और फाटक की
अलंग खड़ा हुआ और यों होता था कि जब कोई झगड़ा रखके
राजा के न्याय के लिये आता था तब अबिसलुम उसे बुलाके
पूछता था कि तू किस नगर का है और उस ने कहा कि तेरा
३ सेवक इसराएल की एक गोष्ठी में का है। और अबिसलुम ने
उसे कहा कि देख तेरा पद भला और ठीक है परन्तु राजा
४ की ओर से कोई श्रोता नहीं है। और अबिसलुम ने कहा
हाय कि मैं देश में न्यायी होता कि जिस किसी का पद
अथवा कारण होता मुझ पास आता और मैं उस का न्याय
५ करता। और जब कोई उस पास आता था कि उसे नमस्कार
करे तो वुह हाथ बढ़ाके उसे पकड़ लेता था और उस का चूमा
६ लेता था। और इस रीति से अबिसलुम सारे इसराएल से
करता था जो राजा पास बिचार के लिये आते थे सो अबिसलुम
ने इसराएल के मनुष्यों के मन चुराये॥

७ और चालीस बरस के पीछे ऐसा हुआ कि अबिसलुम ने
राजा से कहा कि मैं आप की बिनती करता हूं कि मुझे जाने
दीजिये कि अपनी मनौती को जो मैं ने परमेश्वर के लिये मानी

८ हे हबरून में पूरी करूं। क्योंकि आप के दास ने जब अराम
जसूर में था यह मनौती मानी थी कि यदि परमेश्वर मुझे
यरूसलम में निश्चय फेर ले जावेगा तो मैं परमेश्वर की सेवा
९ करूंगा। तब राजा ने उसे कहा कि कुशल से जा सो वुह
उठके हबरून को गया ॥
१० परन्तु अबिसलुम ने इसराएल के संतान की सारी गोष्ठियों
में भेदियों के द्वारा से कहला भेजा कि जब तुम नरसिंगे का
शब्द सुनो तब बोल उठो कि अबिसलुम हबरून में राज्य
११ करता है। और अबिसलुम के साथ यरूसलम से दो सौ
मनुष्य निकल आये और वे अपनी भोलाई से गये थे और कुछ
१२ न जानते थे। और अबिसलुम ने जैली अखितुफल दाऊद
के मंत्री को उस के नगर जैला से बुलाया जब वुह बलि
चढ़ाता था और गुष्ट दृढ़ हो रहा था क्योंकि अबिसलुम पास
लोग बढ़ते जाते थे ॥
१३ तब एक दूत ने आके दाऊद को कहा कि इसराएल के
१४ लोगों के मन अबिसलुम के पीछे लगे हैं। तब दाऊद ने
अपने समस्त सेवकों को जो यरूसलम में उस के साथ थे
कहा कि उठो और हम भागें क्योंकि अबिसलुम से हम न बचेंगे
शीघ्र चलो न हो कि वुह अचानक हम पर आ पड़े और हम
पर बुराई लावे और तलवार की धार से नगर को नाश करे।
१५ तब राजा के सेवकों ने राजा से कहा कि देखिये आप के सेवक
जो कुछ कि प्रभु राजा की इच्छा होवे ॥
१६ तब राजा निकला और उस का सारा घराना उस के
पीछे हुआ और राजा ने दस स्त्रियां जो उस की दासियां
१७ थीं घर देखने को छोड़ीं। और राजा अपने सब लोगों समेत
१८ बाहर निकलके दूर स्थान में जा ठहरा। और उस के सारे
सेवक उस के साथ साथ निकल गये और सारे करीती और सारे

फलीती और सारे जाती छ: सौ जन जो जात से उस के पीछे आये
१६ थे राजा के आगे आगे गये। तब राजा ने जाती इत्ती से कहा
कि तू भी हमारे साथ क्यों आता है अपने स्थान को फिर जा
और राजा के साथ रह क्योंकि तू परदेशी और अपने स्थान
२० से भी निकाला हुआ है। कल ही तू आया है और आज मैं
तुझे भ्रमाके चलाऊं और मेरे जाने का कहीं ठिकाना नहीं सो
तू फिर जा और अपने भाइयों को ले जा दया और सत्य
२१ तेरे साथ होवे। तब इत्ती ने राजा को उत्तर देके कहा कि
परमेश्वर के और मेरे प्रभु राजा के जीवन सों निश्चय जिस
स्थान में मेरा प्रभु राजा होवेगा चाहे मृत्यु में चाहे जीवन में
२२ वहीं आप का सेवक भी होगा। और दाऊद ने इत्ती को कहा
कि पार उतर जा तब इत्ती जाती पार उतर गया और उस
२३ के सारे मनुष्य और उस के साथ सब लड़के बाले चले। और
सारे देश ने रो रोके बिलाप किया और सारे लोग उतर गये
और राजा भी किदरून के नाले पार उतर गया और समस्त
लोगों ने पार उतरके बन का मार्ग लिया॥
२४ और देखो कि सदूक़ भी और समस्त लावी ईश्वर की साक्षी
की मंजूषा लिये हुए उस के साथ थे सो उन्हों ने ईश्वर की
मंजूषा को रख दिया और अबियतर चढ़ गया जब लों कि
२५ सारे लोग नगर से निकल आये। तब राजा ने सदूक़ से कहा
कि ईश्वर की मंजूषा नगर को फेर ले जा यदि परमेश्वर के
अनुग्रह की दृष्टि मुझ पर होगी तो वुह मुझे फेर लावेगा और
२६ उसे और अपने निवास को मुझे दिखावेगा। पर यदि वुह यों
कहे कि अब मैं तुझ से प्रसन्न नहीं देख मैं जो वुह भला
२७ जाने सो मुझ से करे। और राजा ने सदूक़ याजक को फिर
कहा क्या तू दर्शी नहीं नगर को कुशल से फिर और तेरे संग
तेरे दो बेटे अख़िमअ़ज़ और यूनतन अबियतर का बेटा।

२८ देख मैं उस बन के चौगान में ठहरूंगा जब लों कि तुम्हारे
२९ पास से कुछ संदेश आवे । सो सदूक़ और अबियतर ईश्वर की
मंजूषा को यरूसलम में फेर लाये और वहीं रहे ॥
३० और दाऊद जलपाई के पहाड़ की चढ़ाई पर चढ़ता गया
और चढ़ते चढ़ते बिलाप करता गया और उस का सिर ढपा
हुआ और नंगे पांव था और उस के साथ के सारे लोग अपने
३१ सिर ढांपे हुए बिलाप करते चढ़ते चले जाते थे । तब एक
ने दाऊद से कहा कि अख़ितुफल अबिसलुम के गुष्टकारियों
में है तब दाऊद ने कहा कि हे परमेश्वर तेरी बिनती करता हूं
कि अख़ितुफल के मंच को मूढ़ता की संती पलट दे ॥
३२ और ऐसा हुआ कि जब दाऊद चोटी पर पहुंचा जहां
उस ने ईश्वर की पूजा किई तो हूसी अरकी अपना बस्त्र फाड़े
हुए और अपने सिर पर धूल डाले हुए उस्से भेंट करने को
३३ आया । तब दाऊद ने उसे कहा कि यदि तू मेरे साथ पार
३४ उतरेगा तो मुझ पर भार होगा । परन्तु यदि तू नगर में फिर
जावे और अबिसलुम से कहे कि हे राजा मैं तेरा सेवक हूंगा
मैं अब लों तेरे पिता का सेवक था उसी रीति तेरा भी सेवक
हूंगा तब तू मेरे कारण से अख़ितुफल के मंच को भंग कर
३५ सक्ता है । और क्या तेरे साथ सदूक़ और अबियतर याजक
नहीं हैं सो ऐसा होवे कि जो कुछ तू राजा के घर में सुने
३६ सो सदूक़ और अबियतर याजकों से कह दे । देख वहां उन
के साथ उन के दो बेटे अख़िमअ़ज़ सदूक़ के और यूनतन
अबियतर के बेटे हैं और जो कुछ तुम सुन सको सो उन के
३७ द्वारा से मुझे कहला भेजो । सो दाऊद का मिच हूसी नगर
को आया और अबिसलुम भी यरूसलम में पहुंचा ॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

१ और जब दाऊद चोटी पर से तनिक पार गया तब देखो
कि मिफ़िबूसत का सेवक सीबा दो गदहे काठी कसे हुए जिन
पर दो सौ रोटी और दाख के एक सौ गुच्छे और अंजीर के
फल के सौ गुच्छे और एक कुप्पा मदिरा का लदा हुआ था
२ उसे मिला। और राजा ने सीबा को कहा कि इन बस्तुन से
तुम्हारा क्या अभिप्राय है तब सीबा बोला कि ये गदहे राजा
के घराने के चढ़ने के लिये और रोटियां और अंजीर फल
तरुणों के भोजन के लिये और यह मदिरा उन के लिये जो
३ अरण्य में थके हुए हों। तब राजा ने कहा कि तेरे स्वामी
का बेटा कहां है और सीबा ने राजा से कहा कि देखिये वुह
यरूसलम में ठहरा है क्योंकि उस ने कहा है कि आज
इसराएल के घराने मेरे पिता का राज्य मुझे फेर देंगे।
४ तब राजा ने सीबा से कहा कि देख मिफ़िबूसत का सब
कुछ तेरा है तब सीबा ने कहा कि मैं आप को दण्डवत
करता हूं कि मैं अपने प्रभु राजा की दृष्टि में अनुग्रह
पाऊं॥

५ और जब दाऊद राजा बहूरीम में पहुंचा तो देखो वहां
से साऊल के घराने में से एक जन निकला जिस का नाम
६ शमीय जेरा का पुत्र धिक्कारते हुए चला आता था। और
वुह दाऊद पर और दाऊद राजा के सारे सेवकों पर पत्थर
फेंकने लगा और समस्त लोग और समस्त बीर उस के दहिने
७ बायें थे। और धिक्कारते हुए शमीय यों कहता था कि निकल
८ आ निकल आ हे हत्यारे मनुष्य हे दुष्ट जन। परमेश्वर ने
साऊल के घर की सारी हत्या को तुझ पर फेरा जिस की संती
तू ने राज्य किया है और परमेश्वर ने राज्य को तेरे बेटे

अबिसलुम के हाथ में सौंप दिया और देखो आप को अपनी
बुराई में इस कारण कि तू हत्यारा है॥
९ तब ज़रूयाह के बेटे अबिशै ने राजा से कहा कि यह
मरा हुआ कुत्ता मेरे प्रभु राजा को किस लिये धिक्कारे मैं आप
की बिनती करता हूं कि मुझे पार जाने दीजिये कि उस का
१० सिर उतार डालूं। तब राजा ने कहा कि हे ज़रूयाह के
बेटे मुझे तुम से क्या काम उसे धिक्कारने देओ इस कारण कि
परमेश्वर ने उसे कहा है कि दाऊद को धिक्कार और उसे कौन
११ कहेगा कि तू ने ऐसा क्यों किया है। और दाऊद ने अबिशै
और अपने सारे सेवकों से कहा कि देख मेरा बेटा जो मेरी
कटि से निकला मेरे प्राण का गांहक है तो कितना अधिक
यह बिनयमीनी उसे छोड़ देओ धिक्कारने देओ क्योंकि परमेश्वर
१२ ने उसे कहा है। क्या जाने परमेश्वर मेरे दुःख पर दृष्टि करे
और परमेश्वर आज उस के धिक्कार की संती मेरी भलाई करे।
१३ और ज्यों दाऊद अपने लोग लेके मार्ग से चला जाता था तब
शमीय पहाड़ के अलंग उस के सन्मुख धिक्कारता हुआ चला
जाता था और उसे पत्थर मारता था और धूल फेंकता था।
१४ और राजा और उस के सारे लोग थके हुए आये और वहीं
उन्हों ने अपने को संतुष्ट किया॥
१५ तब अबिसलुम और इसराएल के सारे लोग यरूसलम में
१६ आये और अख़ितुफ़ल उस के साथ। और यों हुआ कि जब
दाऊद का मित्र हूसी अरकी अबिसलुम पास पहुंचा तो हूसी
ने अबिसलुम से कहा कि राजा जीता रहे राजा जीता रहे।
१७ और अबिसलुम ने हूसी से कहा कि क्या अपने मित्र पर यही
१८ अनुग्रह किया तू अपने मित्र के साथ क्यों न गया। तब
हूसी ने अबिसलुम से कहा कि नहीं परन्तु जिसे परमेश्वर और
ये लोग और सारे इसराएल चुनें मैं उसी का हूं और उस के

१९ साथ रहूंगा। और फिर किस की सेवा करूं यदि उस के बेटे
की नहीं तो जैसे मैं ने आप के पिता के सन्मुख सेवा किई
है वैसा ही आप के सन्मुख हूंगा॥
२० तब अबिसलुम ने अख़ितुफल से कहा कि मंत्र देखो कि
२१ हम क्या करें। तब अख़ितुफल ने अबिसलुम से कहा कि
अपने पिता की दासियों के पास जाइये जिन्हें वुह घर की
रक्षा को छोड़ गया है और सारे इसराएल सुनेंगे कि आप
अपने पिता से घिनित हैं तब आप के सारे साथियों के हाथ दृढ़
२२ होंगे। सो उन्हों ने कोठे की छत पर अबिसलुम के लिये
तंबू खड़ा करवाया और अबिसलुम सारे इसराएल की दृष्टि
२३ में अपने पिता की दासियों के पास गया। और अख़ितुफल
का मंत्र जो उन दिनों में वुह देता था ऐसा था जैसा कि
कोई ईश्वर के वचन से बूझता था अख़ितुफल का समस्त मंत्र
दाऊद और अबिसलुम के विषय में ऐसा ही था॥

सतरहवां पर्ब्ब।

१ और अख़ितुफल ने अबिसलुम से यह भी कहा कि मुझे
बारह सहस्र पुरुष चुन लेने दीजिये और मैं उठके इसी रात
२ दाऊद का पीछा करूंगा। और थका और दुर्बल होते हुए
मैं उस पर जा पड़ूंगा और उसे डराऊंगा और उस के साथ के
सारे लोग भाग जावेंगे और केवल राजा ही को मार लेऊंगा।
३ और मैं सब लोगों को आप की ओर फेर लाऊंगा जब उसे
छोड़ जिसे आप खोजते हैं सब फिर आये तो सब कुशल से
४ रहेंगे। और वुह कहना अबिसलुम और इसराएल के समस्त
५ प्राचीन की दृष्टि में अच्छा लगा। तब अबिसलुम ने कहा कि
हूसी अरकी को भी बुला और उस के मुंह में जो है सो भी सुनें॥
६ और जब हूसी अबिसलुम पास पहुंचा तब अबिसलुम यह

कहके उसे बोला कि अख़ितुफल ने यों कहा है क्या हम उस के
७ बचन के समान करें अथवा नहीं तू ही कह । तब हूसी ने
अबिसलुम से कहा कि यह मंत्र जो अख़ितुफल ने दिया है
८ इस समय भला नहीं । और हूसी ने कहा कि आप अपने
पिता को और उस के साथियों को जानते हैं कि वे शूर हैं
और वे अपने मन में ऐसे उदास हैं जैसे जंगली भालू
जिस का बच्चा चुराया जावे और आप का पिता योद्धा पुरुष
९ है और लोगों के साथ न रहेगा । देखिये वुह अब किसी गड़हे में
अथवा किसी स्थान में छिपा है और यों होगा कि जब प्रथम उन
में से कितने मारे पड़ेंगे तो जो कोई सुने सो कहेगा कि अबिसलुम
१० के साथी जूझ गये हैं । और वुह भी जो शूर है जिस का मन
सिंह के मन की नाईं है सर्व्वथा पिघल जावेगा क्योंकि सारे
इसराएली जानते हैं कि आप का पिता बलवंत है और उस
११ के साथ के लोग शूर हैं । क्योंकि मैं यह मंत्र देता हूं कि
सारे इसराएल दान से लेके बिअरसबः लों बालू के समान जो
समुद्र के तीर पर हो जिस का लेखा नहीं आप के साथ बटोरे
१२ जावें और कि आप लड़ाई पर चढ़िये । यों जहां वुह होगा
हम उस पर जा पहुंचेंगे और ओस की नाईं जो भूमि पर
गिरती है उस पर टूट पड़ेंगे तब वुह आप और उन लोगों में
१३ से जो उस के साथ हैं एक भी न बचेगा । और यदि वुह
किसी नगर में पैठा होगा तब सारे इसराएल उस नगर पर
रस्सी लावेंगे और उसे नदी में खींच ले जावेंगे यहां लों कि
एक रोड़ा पाया न जावे ॥

१४ तब अबिसलुम और इसराएल के सारे लोग बोले कि हूसी
अरकी का मंत्र अख़ितुफल के मंत्र से भला है क्योंकि परमेश्वर
ने ठहराया था कि अख़ितुफल का भला मंत्र खंडित होवे
जिसतें परमेश्वर अबिसलुम पर बुराई लावे ॥

१५ तब हूसी ने सटूक और अबियतर याजक से कहा कि
अख़ितुफल और इसराएल के प्राचीनों ने अबिसलुम को ऐसा
१६ ऐसा मंत्र दिया और मैं ने ऐसा ऐसा। सो अब चटक से
भेजके दाऊद से कहो कि आज की रात बन के चौगान में
मत टिकिये परन्तु बेग से पार उतर जाइये न हो कि राजा
और उस के साथ के समस्त लोग निंगले जावें॥
१७ अब यूनतन और अख़िमअ़ज़ ऐनराजिल के लग ठहरे थे
क्योंकि उन्हें नगर में दिखाई देना न था और एक स्त्री ने
जाके उन्हें कहा सो वे निकलके दाऊद राजा से बोले।
१८ तथापि एक छोकरे ने उन्हें देखके अबिसलुम से कहा परन्तु
वे दोनों के दोनों चटक से चले गये और बहूरीम में पहुंचके
एक पुरुष के घर में घुसे जिस के चौक में एक कुआ था और
१९ वहां वे उतर पड़े। और स्त्री ने उस कूए के मुंह पर एक
ओढ़ना बिछाया और उस पर पिसा हुआ अन्न बिछाया और
२० यह बात प्रगट न हुई। और जब अबिसलुम के सेवक उस
स्त्री के घर आये और पूछा कि अख़िमअ़ज़ और यूनतन कहां
हैं तब उस स्त्री ने उन्हें कहा कि वे नाली पार उतर गये
और जब उन्हों ने उन्हें ढूंढा और न पाया तो यरूसलम को
२१ फिर आये। और यों हुआ कि जब वे चले गये तो वे कूए से
निकलके चले और दाऊद राजा से कहा कि उठिये और शीघ्र
जल से पार उतर जाइये क्योंकि अख़ितुफल ने आप के बिरोध
२२ में यों यों मंत्र दिया है। तब दाऊद और उस के सारे लोग
उठे और यरदन के पार उतर गये और बिहान होते होते
एक भी न रहा जो यरदन के पार न उतरा था॥
२३ और जब अख़ितुफल ने देखा कि उस का मंत्र न चला
तो उस ने अपने गदहे पर काठी बांधी और चढ़के अपने
घर अपने नगर में गया और अपने घर के बिषय में आज्ञा

क्रिई और आप फांसी लगाके मर गया और अपने पिता की
समाधि में गाड़ा गया ॥
२४ तब दाऊद महनैन को गया और अबिसलुम और उस के
२५ साथ इसराएल के सारे मनुष्य यरदन के पार उतरे। और
अबिसलुम ने यूअब की संती अमासा को सेना का प्रधान
बनाया और अमासा एक जन का बेटा था जिस का नाम
इथरा इसराएली था जो नाहस की बेटी यूअब की मौसी
२६ अबिजैल के पास गया। सो इसराएल और अबिसलुम ने
जिलिअद के देश में डेरा किया ॥
२७ और यों हुआ कि जब दाऊद महनैन में पहुंचा तो अम्मून
के संतान के रब्बः नाहस का बेटा शोबी और लादिबार
अमीअल का बेटा मकीर और राजिलीम जिलिअद बरज़िल्ली।
२८ खाट और बासन और माटी के पात्र और गोहूं और जव
और पिसान और भूना और फलियां और मसूर और भूने चने।
२९ और मधु और माखन और भेड़ और ढोर का खोआ दाऊद
के और उस के लोगों के खाने के लिये लाये क्योंकि उन्हों ने
कहा कि लोग अरण्य में भूखे और थके और प्यासे हैं ॥

अठारहवां पर्ब्ब।

१ और दाऊद ने अपने संग के लोगों को गिना और सहस्रों
२ पर और सैकड़ों पर प्रधान ठहराया। और दाऊद ने लोगों
के तिहाई भाग को यूअब के अधीन और तिहाई यूअब के
भाई ज़रूयाह के बेटे अबिशै के अधीन और तिहाई को
जाती इत्ती के अधीन किया और उन्हें भेजा और राजा ने
लोगों से कहा कि मैं भी निश्चय तुम्हारे साथ जाऊंगा।
३ परन्तु लोगों ने उत्तर दिया कि आप न जाइये क्योंकि यदि
हम भाग निकलें तो उन्हें कुछ हमारी चिंता न होगी और

यदि हम्में से आधे मारे जायें तो उन्हें कुछ चिंता न होगी
क्योंकि अब आप हम्में से दस सहस्र के तुल्य हैं सो अब
अच्छा यह है कि आप नगर में रहके हमारी सहायता
४ कीजिये। तब राजा ने उन्हें कहा कि जो तुम्हें सब से
अच्छा लगे सो मैं करूंगा और राजा फाटक की अलंग खड़ा
हुआ और समस्त लोग सैकड़ों सैकड़ों और सहस्र सहस्र होके
बाहर निकले॥

५ और राजा ने यूअब और अबिशै और इत्ती को कहा कि
मेरे कारण उस युवा जन अर्थात् अबिसलुम से कोमलता
कीजियो और जो कुछ राजा ने समस्त प्रधानों से अबिसलुम
के बिषय में कहा सो सब लोगों ने सुना॥

६ तब लोग निकलके चौगान में इसराएल के साम्ने हुए और
७ संग्राम इफ़रायम के बन में हुआ। और वहां इसराएल के
लोग दाऊद के सेवकों के आगे मारे गये और उस दिन वहां
८ बड़ा जूझ अर्थात् बीस सहस्र का हुआ। क्योंकि संग्राम समस्त
देश में फैल गया था और उस दिन बन ने खड्ग से अधिक
९ लोगों का नाश किया। और अबिसलुम दाऊद के सेवकों से
मिला और अबिसलुम खच्चर पर चढ़ा था और खच्चर उसे लेके
बलूत बृक्ष की घनी डारों के तले घुसा और उस का सिर
बलूत में फंसा और वुह अधर में टंग गया और खच्चर उस के
नीचे से चला गया॥

१० और कोई देखके यूअब से कहके बोला कि मैं ने अबिसलुम
११ को एक बलूत बृक्ष पर टंगा देखा। तब यूअब उस कहवैये
से बोला कि जब तू ने देखा तो उसे मारके भूमि पर क्यों न
डाल दिया कि मैं तुझे दस टुकड़े चांदी और एक पटुका
१२ देता। और उस जन ने यूअब को उत्तर दिया कि यदि तू
सहस्र टुकड़े चांदी मुझे तोल देता तो भी मैं राजा के बेटे

पर हाथ न उठाता क्योंकि राजा ने हमें सुनाके तुझे और
अबिशै और इत्ती को आज्ञा करके चिताया कि चौकस हो कोई
१३ उस तरुण अबिसलुम को न छूवे। नहीं तो मैं अपने प्राण ही
के बिरोध में झूठा होता क्योंकि कोई वस्तु राजा से छिपी
१४ नहीं और तू भी मेरे बिरोध पर खड़ा होता। तब यूअब ने कहा
कि मैं तेरे आगे इस रीति से न ठहरूंगा और अब लों अबिसलुम
जीता हुआ बलूत बृक्ष के मध्य में लटका था तब यूअब ने
तीन बाण हाथ में लेके अबिसलुम के अंत:करण में उन्हें गोदा।
१५ और दस तरुणों ने जो यूअब के अस्त्रधारी थे आ घेरा और
अबिसलुम को मारके उसे बधन किया॥

१६ तब यूअब ने नरसिंगा फूंका और लोग इसराएल का पीछा
१७ करने से फिरे क्योंकि यूअब ने लोगों को रोक रक्खा। और
उन्हों ने अबिसलुम को लेके उस को बन के एक बड़े गड़हे
में डाल दिया और उस पर पत्थरों का एक बड़ा ढेर किया
१८ और सारे इसराएल भागके अपने अपने तंबू को गये। अब
अबिसलुम ने जीते जी अपने लिये राजा की तराई में एक
खंभा बनाया था क्योंकि उस ने कहा कि मेरे कोई बेटा नहीं
जिस्से मेरा नाम चले और उस ने अपना ही नाम खंभे पर
रक्खा और आज के दिन लों वुह अबिसलुम का स्थान कहाता
है॥

१९ तब सदूक के बेटे अखिमअज़ ने कहा कि मैं दौड़के राजा
को संदेश पहुंचाऊं कि परमेश्वर ने किस रीति से उस के बैरियों
२० के हाथ से उस का प्रतिफल लिया। तब यूअब ने उसे कहा
कि आज तू संदेशी मत होना परन्तु दूसरे दिन संदेश
पहुंचाइयो परन्तु आज तू संदेश मत ले जा क्योंकि
२१ राजा का पुत्र मर गया है। तब यूअब ने कूशी को कहा कि
जा और जो कुछ तू ने देखा है सो राजा से कह तब कूशी

२२ यूअब को प्रणाम करके दौड़ा। तब सदूक़ के बेटे अख़िमअ़ज़
ने दूसरी बार यूअब से कहा कि जो कुछ हो परन्तु मुझे भी
कूशी के पीछे दौड़ने दीजिये तब यूअब बोला कि हे पुत्र तू
किस लिये दौड़ेगा तू देखता है कि कोई संदेश धरा नहीं।
२३ परन्तु जो होय मैं दौड़ता हूं तब उस ने कहा कि दौड़ तब
अख़िमअ़ज़ ने चौगान का मार्ग लिया और कूशी से आगे बढ़
गया॥

२४ और दाऊद दो फाटकों के बीच बैठा था और पहरू नगर
की भीत की छत पर फाटक के ऊपर चढ़ गया था और अपनी
आंखें उठाके देखा और क्या देखता है कि एक जन अकेला
२५ दौड़ता आता है। और पहरू ने पुकारके राजा को कहा सो
राजा ने कहा यदि अकेला है तो उस के मुंह में संदेश हैं
२६ और वुह बढ़ते बढ़ते पास आया। तब पहरू ने दूसरे जन
को दौड़ते देखा और पहरू ने द्वारपालक को पुकारके कहा
कि देख पुरुष अकेला दौड़ा आता है और राजा बोला कि
२७ वुह संदेश लाता है। तब पहरू ने कहा कि मैं देखता हूं
कि अगले की दौड़ सदूक़ के बेटे अख़िमअ़ज़ की दौड़ की नाईं
है तब राजा बोला कि वुह भला मनुष्य है और मंगल संदेश
लाता है॥

२८ और अख़िमअ़ज़ ने पुकारा और राजा से कहा कि सब
कुशल है और राजा के आगे औंधे मुंह गिरा और बोला कि
परमेश्वर आप का ईश्वर धन्य है जिस ने उन लोगों को जिन्हों
२९ ने मेरे प्रभु राजा के बिरोध में हाथ उठाये सौंप दिया। तब
राजा बोला कि क्या तरुण अबिसलूम कुशल से है और
अख़िमअ़ज़ ने कहा कि जब राजा के सेवक यूअब ने टहलू
को भेजा तो उस समय मैं ने एक बड़ी भीड़ देखी पर मैं ने
३० न जाना वुह क्या है। तब राजा ने कहा कि अलग होके

३१ यहां खड़ा हो और वुह अलग जाके खड़ा हो रहा। और
देखो कूशी आया और कूशी ने कहा कि मेरे प्रभु राजा संदेश
है क्योंकि परमेश्वर ने आज के दिन आप को उन सभों से
३२ जो आप के बैर में उठे थे पलटा लिया। तब राजा ने कूशी
से पूछा कि क्या अबिसलुम तरुण कुशल से है और कूशी ने
उत्तर दिया कि मेरे प्रभु राजा के बैरी और सब जो आप को
दुःख देने में उठते हैं आप उस तरुण की नाईं हो जावें।
३३ तब राजा अति व्याकुल हुआ और उस कोठरी पर चढ़ गया
जो फाटक के ऊपर थी और बिलाप किया और जाते जाते
यों कहा कि हाय मेरे बेटे अबिसलुम हाय मेरे बेटे मेरे बेटे
अबिसलुम भला होता जो तेरी संती मैं ही मरता हाय अबिसलुम
हाय मेरे बेटे मेरे बेटे॥

उन्नीसवां पर्व्व ।

१ और यूअब से कहा गया कि देख राजा अबिसलुम के
२ लिये रोता और बिलाप करता है। और उस दिन का बचाव
सब लोगों के लिये बिलाप का दिन हुआ क्योंकि लोगों ने उस दिन
३ सुना कि राजा अपने बेटे के लिये खेद में है। और लोग उस
दिन लज्जितों के समान जो लड़ाई से भाग निकलते हैं चोरी
४ से नगर में चले गये। परन्तु राजा ने अपना मुंह ढांपा और
चिल्ला चिल्ला रोया कि हाय मेरे बेटे अबिसलुम हाय अबिसलुम
मेरे बेटे मेरे बेटे॥

५ तब यूअब घर में राजा पास आया और कहा कि तू ने
आज के दिन अपने सब सेवकों के मुंह को लज्जित किया
जिन्हों ने आज तेरे प्राण और तेरे बेटे बेटियों के प्राण और
तेरी पत्नियों के प्राण और तेरी दासियों के प्राण बचाये।
६ क्योंकि तू अपने शत्रुन को प्यार करके अपने मित्रों से बैर

करता है क्योंकि तू ने आज दिखाया है कि तुझे न प्रधानों
को न सेवकों की चिंता है क्योंकि आज मैं जानता हूं कि यदि
अबिसलुम जीता होता और हम सब आज मर जाते तो तू
७ अति प्रसन्न होता। सो अब उठ बाहर निकल और अपने
सेवकों का बोध कर क्योंकि मैं परमेश्वर की किरिया खाता हूं
कि यदि तू बाहर न जावेगा तो रात लों एक भी तेरे साथ न
रहेगा और यह तेरे लिये उन सब बिपतों से जो युबावस्था
८ से अब लों हुईं अधिक होगी। तब राजा उठा और फाटक
में बैठा और सब लोगों को कहा गया कि देखो राजा फाटक
में बैठा है तब सब लोग राजा के आगे आये क्योंकि सारे
इसराएल अपने अपने तंबुओं को भाग गये थे॥
९ और इसराएल की सारी गोष्ठियों में सारे लोग झगड़के
कहने लगे कि राजा ने हमें हमारे शत्रुन के हाथ से और
फ़िलिस्तियों के हाथ से बचाया और अब वुह अबिसलुम के
१० कारण देश से भाग निकला है। और अबिसलुम जिसे हम ने
अपने ऊपर अभिषिक्त किया था रण में मारा गया सो अब
राजा के फेर लाने में चुपके क्यों हो॥
११ तब दाऊद राजा ने सदूक़ और अबियतर याजक को
कहला भेजा कि यहूदाह के प्राचीनों को कहो कि राजा को उस
के घर में फेर लाने में क्यों सब से पीछे हो देखते हो कि समस्त
इसराएल की बोली राजा के हां उस के घर के पास पहुंची।
१२ तुम मेरे भाई मेरी हड्डी और मेरे मांस हो सो राजा को फेर
१३ लाने में क्यों सब से पीछे हो। और अमासा से कहो क्या तू
मेरी हड्डी और मेरा मांस नहीं सो यदि मैं तुझे यूअब की
संती सदा के लिये सेना का प्रधान न करूं तो ईश्वर मुझ से
१४ ऐसा और उस्से अधिक करे। और उस ने सारे यहूदाह के
समस्त लोगों का मन ऐसा फेरा जैसा कि एक का मन होता

है और उन्हों ने राजा कने भेजा कि आप अपने सारे सेवकों
१५ समेत फिर आइये । तब राजा फिरा और यरदन को आया
और यहूदाह जिलजाल में राजा की भेंट को आये कि राजा
को यरदन पार लावें ॥
१६ और जेरा के बेटे शमीय बिनयमीनी बहूरीम से शीघ्र चले
और यहूदाह के मनुष्यों के साथ मिलके दाऊद राजा से भेंट
१७ करने आये । और उस के साथ बिनयमीनी एक सहस्र जन थे
और साऊल के घराने का सेवक अपने पंदरह बेटे और बीस
टहलुओं समेत आया और वे राजा के आगे यरदन के पार
१८ उतर गये । और राजा के घराने को पार उतारने और उस
की इच्छा के समान करने के लिये घटवाही की एक नाव पार
गई और जेरा का बेटा शमीय यरदन पार आते ही राजा के
१९ आगे औंधे मुंह गिरा । और राजा से कहा कि मेरे प्रभु मुझ
पर पाप मत धरिये उस बात को स्मरण करके मन में मत
लाइये जो आप के सेवक ने जिस दिन कि मेरा प्रभु राजा
२० यरूसलम से निकल आया था बैर में कही थी । क्योंकि आप
का सेवक जानता है कि मैं ने पाप किया सो देखिये आज के
दिन मैं यूसुफ़ के समस्त घराने में से पहिले आया हूं कि उतरके
२१ अपने प्रभु राजा से भेंट करूं । परन्तु ज़रूयाह के बेटे अबिशै
ने उत्तर में कहा क्या शमीय इस कारण मारा न जावेगा कि
२२ उस ने परमेश्वर के अभिषिक्त को धिक्कारा । तब दाऊद ने
कहा कि हे ज़रूयाह के बेटे मुझे तुम से क्या कि तुम आज
के दिन मेरे बैरी हुआ चाहते हो क्या इसराएल में आज
कोई मारा जावेगा क्या मैं नहीं जानता कि आज मैं इसराएल
२३ का राजा हूं । तब राजा ने शमीय से कहा कि तू मारा न
जावेगा और राजा ने उस के लिये किरिया खाई ॥
२४ तब साऊल का बेटा मिफ़िबूसत राजा को आगे से मिलने

को उतरा और जब से राजा निकला था उस दिन लों कि वुह
कुशल से फिर न आया अपने पांव न धोये थे न अपनी दाढ़ी
२५ सुधारी थी और न अपने कपड़े धोलवाये थे। और ऐसा हुआ
कि जब वुह यरूसलम में राजा से मिलने आया तो राजा ने
उसे कहा कि हे मिफ़िबूसत किस लिये तू हमारे साथ न
२६ गया। और उस ने उत्तर दिया कि हे मेरे प्रभु राजा मेरे
सेवक ने मुझे छला क्योंकि आप के सेवक ने कहा था कि मैं
अपने लिये गदहे पर काठी बांधूंगा जिसतें उस पर चढ़के
२७ राजा के पास जाऊं क्योंकि आप का सेवक लंगड़ा है। और
उस ने तेरे सेवक को मेरे स्वामी राजा के आगे अपवाद
लगाया परन्तु मेरा प्रभु राजा ईश्वर के दूत के समान है सो
२८ आप की दृष्टि में जो अच्छा लगे सो कीजिये। क्योंकि मेरे
पिता के घराने मेरे प्रभु राजा के आगे मृतक थे तथापि आप
ने अपने सेवक को उन में बैठाया जो आपही की मंच पर
भोजन करते थे इस लिये मेरा क्या पद है कि अब भी मैं
२९ राजा के आगे पुकारूं। तब राजा ने उस्से कहा कि तू अपना
समाचार क्यों अधिक वर्णन करता है मैं कह चुका कि तू और
३० सीबा भूमि को बांट लो। तब मिफ़िबूसत ने राजा से कहा
कि हां सब वही लेवे जैसा कि मेरा प्रभु राजा अपने ही घर
में फिर कुशल से पहुंचा॥

३१ और राजिलीम से जिलिअदी बरज़िल्ली उतरके राजा के
३२ साथ यरदन पार गया कि उसे यरदन पार पहुंचावे। और
यह बरज़िल्ली अस्सी बरस का अति बृद्ध था और जब कि
राजा महनैन में पड़ा था वुह जीविका पहुंचाता था क्योंकि
३३ वुह अति महत जन था। सो राजा ने बरज़िल्ली से कहा कि
तू मेरे साथ पार उतर और मैं यरूसलम में अपने साथ तेरा
३४ पालन करूंगा। और बरज़िल्ली ने राजा को उत्तर दिया कि

अब मेरे जीवन के बरस कितने दिन के हैं कि राजा के साथ
३५ साथ यरूसलम को चढ़ जाऊं । आज मैं अस्सी बरस का हुआ
और क्या मैं भलाई बुराई का अंतर जान सक्ता हूं और क्या
आप का सेवक जो कुछ खाता पीता है उस का स्वाद जान
सक्ता है और क्या मैं गायकों और गायिकाओं का शब्द सुन
सक्ता हूं सो आप का सेवक अपने प्रभु राजा पर क्यों बोझ
३६ होवे । आप का सेवक राजा के संग थोड़ी दूर यरदन के पार
चलेगा और किस कारण राजा ऐसे फल से मुझे प्रतिफल देवे ।
३७ अपने सेवक को बिदा कीजिये कि फिर जावे जिसतें मैं अपने
ही नगर में अपने माता पिता की समाधि पास मरूं परन्तु
देखिये आप का सेवक किमहाम मेरे प्रभु राजा के साथ पार
३८ जावे और जो कुछ आप भला जानें सो उस्से कीजिये । तब
राजा ने उत्तर दिया कि किमहाम मेरे साथ पार चले और जो
कुछ मुझे अच्छा लगे सोई उस के लिये करूंगा और जो कुछ
३९ तेरी इच्छा होय सोई तेरे लिये करूंगा । और समस्त लोग
यरदन पार गये और जब राजा पार आया तो राजा ने
बरज़िल्ली को चूमा और उसे आशीष दिया और वुह अपने ही
४० स्थान को फिर गया । तब राजा जिलजाल को चला और
किमहाम उस के साथ साथ गया और सारे यहूदाह के लोगों
ने और इसराएल के आधे लोगों ने भी राजा को पहुंचाया॥
४१ और देखो कि सारे इसराएल राजा के पास आये और
राजा से कहा कि हमारे भाई यहूदाह के लोगों ने आप को
हम से क्यों चुराया है और राजा को और उस के घराने को
और दाऊद के समस्त लोग सहित यरदन पार लाये हैं ।
४२ और समस्त यहूदाह के मनुष्यों ने इसराएल के मनुष्यों को
उत्तर दिया इस कारण कि राजा हमारे कुटुम्ब हैं सो इस बात
में तुम क्यों क्रुद्ध होते हो क्या हम ने राजा का कुछ खाया

४३ है अथवा क्या उस ने हमें कुछ दान दिया है। तब इसराएल
के मनुष्यों ने यहूदाह के मनुष्यों को उत्तर दिया और कहा
कि राजा में हम दस भाग रखते हैं और दाऊद पर हमारा
पद तुम से अधिक है सो तुम ने क्यों हमें हलुक समझा कि
राजा के फेर लाने में पहिले हम से क्यों नहीं पूछा और
यहूदाह के मनुष्यों की बातें इसराएल के मनुष्यों की बातों
से प्रबल हुईं॥

बीसवां पर्व्व।

१ और संयोग से वहां एक दुष्ट पुरुष था जिस का नाम सबअ
जो बिनयमीन बिकरी का बेटा था और उस ने नरसिंगा
फूंकके कहा कि हम दाऊद में कुछ भाग नहीं रखते और हम
यस्सी के बेटे में कुछ अधिकार नहीं रखते हैं हे इसराएल
२ हर एक जन अपने अपने तंबू में जाय। सो इसराएल का
हर एक जन दाऊद के पीछे से चला गया और बिकरी के
बेटे सबअ के पीछे हो लिया परन्तु यहूदाह के मनुष्य यरदन
से लेके यरूसलम लों अपने राजा के साथ बने रहे॥

३ और दाऊद यरूसलम में अपने घर को पहुंचा और राजा
ने अपनी दस दासियों को जिन्हें वुह घर की रखवाली के
लिये छोड़ गया था लेके दृष्टिबंध किया और उन्हें भोजन
दिया परन्तु उन के पास न गया सो वे जीवन भर जीवन के
रंडापे में बंद रहीं॥

४ तब राजा ने अमासा को कहा कि तीन दिन के भीतर
यहूदाह के मनुष्यों को मुझ पास यहां एकट्ठा कर और तू भी
५ यहां हो। सो अमासा यहूदाह को एकट्ठा करने गया परन्तु
६ ठहराये हुए समय से उसे अबेर हुई। तब दाऊद ने अबिशै
से कहा कि अब बिकरी का बेटा सबअ अबिसलुम से हमारी

अधिक बुराई करेगा सो तू अपने प्रभु के सेवकों को ले और
उस का पीछा कर न हो कि वुह बाड़े के नगरों में पैठे और
७ हमारी दृष्टि से बच निकले । सो उस के साथ यूअब के मनुष्य
और करीती और पलीती और समस्त बीर निकले और यरूसलम
से बाहर गये कि बिकरी के बेटे सबअ का पीछा करें ॥
८ जब वे जिबऊन में बड़े पत्थर के पास पहुंचे तो अमासा
उन के आगे आगे जाता था और यूअब का बस्त्र जो वुह
पहिने था सो उस पर लपेटा हुआ था और उस के ऊपर एक
कटिबंध और एक खड्ग काठी समेत उस की कटि पर कसा
९ हुआ था और उस के जाते जाते निकल पड़ा । सो यूअब ने
अमासा को कहा कि भाई तू कुशल से है और यूअब ने
अमासा को चूमने को अपने दहिने हाथ से उस की दाढ़ी
१० पकड़ी । परन्तु यूअब के हाथ के खड्ग को अमासा ने सुर्त न
किया सो उस ने उसे उस के पांजर में मारा कि उस की
अंतड़ियां भूमि पर निकल पड़ीं और दुहराके न मारा सो वुह
मर गया फिर यूअब और उस के भाई अबिशै ने बिकरी के बेटे
११ सबअ का पीछा किया । और यूअब के जनों में से एक जो
उस पास खड़ा था यों बोला कि जिस को यूअब भला लगे
१२ और जो दाऊद की ओर है सो यूअब के पीछे जावे । और
अमासा मार्ग के मध्य में लोहू से बोरा हुआ था और जब
उस पुरुष ने देखा कि सब लोग खड़े होते हैं तो वुह अमासा
को राजमार्ग से खेत में खींच ले गया और जब उस ने देखा
कि जो कोई पास आता है सो खड़ा होता है तब उस ने उस
१३ पर कपड़ा डाल दिया । जब वुह मार्ग में से अलग किया
गया तो सब लोग यूअब के पीछे पीछे गये कि बिकरी के बेटे
सबअ को खेदें ॥
१४ और वुह इसराएल की सारी गोष्ठियों में से होके अबीला

ओर बेतमअ़कः ओर सारे बरीती लों गया ओर वे भी एकट्ठे
१५ होके उस के पीछे पीछे गये। ओर उन्हों ने आके उसे
बेतमअ़कः के अबीला में घेरा ओर नगर पर एक मेंड़ बांधी
जो बाहर की भीत के सन्मुख थी ओर सब लोग जो यूआब
१६ के साथ थे खोद खाद करते थे कि भीत को गिरावें। तब
एक बुद्धिमती स्त्री ने नगर में से पुकारा कि सुनो सुनो अनुग्रह
करके यूआब से कहो कि इधर पास आवे कि मैं उसे कुछ
१७ कहूं। ओर जब वुह उस पास आया तो उस स्त्री ने उसे कहा
कि आप यूआब हैं ओर उस ने उत्तर दिया कि हां तब उस ने
उसे कहा कि अपनी दासी की बात सुनिये ओर वुह बोला मैं
१८ सुनता हूं। तब वुह कहके बोली कि आरंभ में यों कहा
करते थे कि वे निश्चय अबीला में पूछेंगे ओर यों समाप्त करते
१९ थे। मैं इसराएलियों में शांतिकारिणी ओर विश्वस्त हूं सो
आप एक नगर ओर इसराएल में एक माता को नाश किया
चाहते हैं क्या आप परमेश्वर के अधिकार को निंगला चाहते
२० हैं। तब यूआब ने उत्तर देके कहा कि यह परे होवे यह
२१ मुझ से परे होवे कि निंगलूं अथवा नाश करूं। यह बात
ऐसी नहीं परन्तु इफ़रायम पर्वत के एक जन बिकरी के बेटे
ने जिस का नाम सबअ़ है राजा पर अर्थात् दाऊद पर बिरोध
का हाथ उठाया है सो केवल उसी को सौंप दे ओर मैं नगर
से जाता रहूंगा तब उस स्त्री ने यूआब को कहा कि देखिये उस
२२ का मस्तक भीत पर तेरे पास फेंक दिया जावेगा। तब वुह
स्त्री अपनी चतुराई से सब लोगों के पास गई ओर उन्हों ने
बिकरी के बेटे सबअ़ का मस्तक काटके बाहर यूआब की ओर
फेंक दिया तब उस ने नरसिंगा फूंका ओर लोग नगर में से
छूटके अपने तंबू को गये ओर यूआब फिरके यरूसलम में
राजा पास आया॥

२३ और यूअब इसराएल की समस्त सेना का प्रधान था और
यहूयद: का बेटा बिनायाह करीती और पलीती का प्रधान
२४ था। और अदूराम कर पर था और अखिलूद का बेटा यहूसफ़त
२५ स्मारक था। और शिया लेखक और सदूक और अबिवतर
२६ याजक। और ईरायाइरी दाऊद का एक याजक भी था॥

एक्कीसवां पर्व्व ।

१ फिर दाऊद के दिनों में तीन बरस लगातार अकाल पड़ा
और दाऊद ने परमेश्वर से पूछा सो परमेश्वर ने कहा कि यह
साऊल के और उस के हत्यारे घराने के कारण है क्योंकि उस
२ ने जिबऊनियों को बधन किया। तब राजा ने जिबऊनियों
को बुलाके उन्हें कहा अब जिबऊनी इसराएल के संतानों में
के न थे परन्तु अमूरियों के उबरे हुए थे और इसराएल के
संतान ने उन से किरिया खाई थी और साऊल ने चाहा कि
इसराएल के संतान और यहूदाह के ज्वलन के लिये उन्हें
३ नाश करे। सो दाऊद ने जिबऊनियों से कहा कि मैं तुम्हारे
लिये क्या करूं और किस्से मैं संतुष्ट करूं जिसतें तुम परमेश्वर
४ के अधिकार को आशीष देओ। तब जिबऊनियों ने उसे कहा
कि हम साऊल से और उस के घराने से सोना चांदी नहीं
चाहते हैं और न हमारे लिये इसराएल में किसी जन को
बधन कीजिये तब वुह बोला जो तुम कहोगे सो मैं तुम्हारे
५ लिये करूंगा। तब उन्हों ने राजा को उत्तर दिया कि जिस
जन ने हमें नाश किया और इसराएल के सिवानों में से हमें
६ नाश करने की युक्ति किई थी। उस के सात बेटे हमें सौंपे
जावें और हम उन्हें परमेश्वर के लिये साऊल के जिबअ: में
जो परमेश्वर का चुना हुआ है फांसी देंगे तब राजा बोला मैं
देऊंगा॥

७ परन्तु राजा ने साऊल के बेटे यूनतन के बेटे मिफ़िबूसत
को उस किरिया के कारण जो साऊल के बेटे यूनतन के और
८ दाऊद के मध्य में थी बचा रक्खा। परन्तु राजा ने अयाह
की बेटी रिसफ़: के दो बेटों को जिन्हें वुह साऊल के लिये
जनी थी अर्थात् अरमूनी और मिफ़िबूसत को और साऊल की
बेटी मीकल के पांच बेटों को जिन्हें वुह महलाती बरज़िल्ली
९ के बेटे अदरिएल के लिये जनी थी। और उस ने उन्हें
जिबऊनियों के हाथ सौंप दिया और उन्हों ने उन्हें पहाड़ पर
परमेश्वर के आगे फांसी दिई और वे सातों कटनी के दिनों में
१० एक साथ मारे गये यह जव कटने के आरंभ में था। तब
अयाह की बेटी रिसफ़: ने टाट बस्त्र लिया और कटनी के
आरंभ से लेके आकाश में से उन पर पानी टपकने लों अपने
लिये पहाड़ पर बिछा दिया और दिन को आकाश के पंछी
और रात को बनैले पशु को उन पर ठहरने न देती थी॥
११ और दाऊद को कहा गया कि साऊल की दासी अयाह की
१२ बेटी रिसफ़: ने यों किया। सो दाऊद ने जाके साऊल की
हड्डियों और उस के बेटे यूनतन की हड्डियों को यबीस
जिलिआद के मनुष्यों से फेर लिया जिन्हों ने उन्हें बैतशान
की सड़क से जहां फ़िलिसतियों ने उन्हें टांगा था तब फ़िलिसतियों
१३ ने साऊल को जिलबूआ में मारा था चुरा लिया। और वुह
वहां से साऊल की हड्डियों को और उस के बेटे यूनतन की
हड्डियों को ले आया और जो टांगे गये थे उन की हड्डियों
१४ को एकट्ठा करवाया। और उन्हों ने साऊल और उस के बेटे
यूनतन की हड्डियों को ज़िलअ के बिनयमीनी के देश में उस के
पिता क़ीस की समाधि में गाड़ा और सब जो राजा ने उन्हें
आज्ञा किई थी उन्हों ने किया और उस के पीछे देश के कारण
ईश्वर ने बिनय को मान लिया॥

१५ और फ़िलिसती इसराएल से फिर लड़े और दाऊद अपने
सेवकों के साथ उतरके फ़िलिसतियों से लड़ा और दाऊद
१६ दुर्बल हुआ। अब यशबूबनूब ने जो रफ़ा के बेटों में से था जिस
की बरछी के फल का पीतल सवा दस सेर एक का और नया
१७ खड्ग बांधे था चाहा कि दाऊद को मार डाले। पर ज़रूयाह के
बेटे अबिशे ने उस की सहाय किई और उस फ़िलिसती को मारके
बधन किया तब दाऊद के लोग उस्से किरिया खाके बोले कि आप
फिर कभी हमारे साथ लड़ाई पर मत जाइये जिसतें आप
इसराएल का दीआ न बुझावें॥
१८ और उस के पीछे ऐसा हुआ कि जुब में फ़िलिसतियों से
फेर संग्राम हुआ तब हूशाती सिबिकाई ने साफ को जो दानव
१९ के बेटों में का था मार डाला। और जुब में फिर फ़िलिसतियों
से संग्राम हुआ तब यअरीआरिजीम के बेटे इलहनन बेतलहमी
ने जाती जुलियात को जिस के भाले की छड़ जोलाहे के लट्ठे
२० सी थी मारा। फिर जात में एक और संग्राम हुआ जहां बड़े
डील का एक जन था और उस के एक एक हाथ में छः छः
अंगुलियां और एक एक पांव में छः छः अंगुलियां थीं गिनती में
२१ चौबीस और वुह भी दानव से उत्पन्न हुआ। और जब उस
ने इसराएल को तुच्छ जाना तब दाऊद के भाई सिमयाह के बेटे
२२ युनतन ने उसे घात किया। ये चार जात में दानव से उत्पन्न
हुए और दाऊद और उस के सेवकों के हाथ से मारे गये॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ और दाऊद ने उस दिन परमेश्वर से इस भजन की बातें
कहीं जब कि परमेश्वर ने उसे उस के सारे बैरियों के और
साऊल के हाथ से छुड़ाया॥
२ और बोला कि परमेश्वर मेरा पहाड़ और मेरा गढ़ और

३ मेरा बचवैया। मेरी चटान का ईश्वर उस पर मैं भरोसा
रक्खूंगा मेरी ढाल और मेरी मुक्ति का सींग मेरा ऊंचा गढ़ और
मेरा शरण और मेरा त्राणकर्त्ता है तू मुझे अंधेर से बचाता
४ है। मैं परमेश्वर की दुहाई देऊंगा जो स्तुति के योग्य है और
५ अपने बैरियों से बचाया जाऊंगा। क्योंकि मृत्यु की लहरों
६ ने मुझे घेरा और अधर्म्मियों के बाढ़ों ने मुझे डराया। नरक
७ की पीड़ा ने मुझे घेरा मृत्यु के फंदों ने मुझे रोका। अपने
दुःख में मैं ने परमेश्वर को पुकारा और अपने ईश्वर के आगे
चिल्लाया तब उस ने अपने मंदिर में से मेरा शब्द सुना और
८ मेरा चिल्लाना उस के कानों में पहुंचा। तब उस के क्रोध के
कारण पृथिवी हिल गई और थरथरा उठी स्वर्ग की नेवें हिल
९ गईं। उस के क्रोध से एक धूंआ उठा और उस के मुंह में
१० की आग खा गई उस्से कोइले धधक उठे। उस ने स्वर्गों को
भी झुकाया और उतर आया और उस के पांव तले अंधियारा
११ था। और वुह एक करोबी पर चढ़ा था और उड़ा और पवन
१२ के डैनों पर दिखाई दिया। और उस ने जलों के बंधन से
और आकाश के घनघोर मेघों से अपनी चारों ओर अंधकार
१३ का तंबू किया। उस के आगे की चमक से कोइले सुलग गये।
१४ परमेश्वर स्वर्ग से गर्जा और अति महान ने अपना शब्द उच्चारा।
१५ और उस ने बाण चलाये और उन्हें बिथरा दिया बिजुली और
१६ उन्हें हरा दिया। परमेश्वर के दपट से और उस के नथुनों
के स्वास के झोंके से समुद्र की थाह दिखाई दिई जगत की
१७ नेवें उघर गईं। उस ने ऊपर से भेजा मुझे उठा लिया उस
१८ ने मुझे बहुत पानियों में से खींच लिया। उस ने मुझे मेरे
बलवंत बैरी से उन से जो मुझ से घिन करते थे छुड़ाया क्योंकि
१९ वे मुझ से प्रबल थे। उन्हों ने मुझे मेरे बिपत के दिन में
२० रोका परन्तु परमेश्वर मेरा आस्रा था। और वुह मुझे बड़े

स्थान में भी निकाल लाया उस ने मुझे छुड़ाया क्योंकि वुह
२१ मुझ से प्रसन्न था। परमेश्वर ने मेरे धर्म्म के समान मुझे
प्रतिफल दिया और मेरे हाथ की पवित्रताई के समान मुझे
२२ पलटा दिया। क्योंकि मैं ने परमेश्वर के मार्गों का पालन किया
२३ और अपने ईश्वर से दुष्टता न किई। क्योंकि उस के सारे बिचार
२४ मेरे आगे हैं और उस की बिधिन से मैं फिर न गया। और
मैं उस के लिये खरा था और मैं ने आप को अपनी बुराई से
२५ बचा रक्खा है। इस लिये परमेश्वर ने मेरे धर्म्म के समान
और उस की दृष्टि में मेरी पवित्रता के समान मुझे प्रतिफल
दिया॥

२६ दयाल पर तू आप को दयाल दिखावेगा खरे को खरा
२७ दिखावेगा। निर्मल के लिये आप को निर्मल दिखावेगा और
२८ क्रूर को तू आप को बिपरीत दिखावेगा। और तू कष्टित
लोगों को बचावेगा परन्तु ध्वस्त करने के लिये तेरी आंखें
२९ घमंडियों पर हैं। क्योंकि हे परमेश्वर तू मेरा दीपक और
३० परमेश्वर मेरे अंधियारे को उंजियाला करेगा। क्योंकि तुझी से
मैं ने एक जथा को तोड़ दिया मैं अपने ईश्वर से भीत फांद
३१ गया। सर्वशक्तिमान का मार्ग सिद्ध परमेश्वर का बचन जांचा
हुआ जिन सभों का भरोसा उस पर है वुह उन के लिये ढाल
३२ है। क्योंकि परमेश्वर को छोड़ सर्वशक्तिमान कौन और हमारे
३३ ईश्वर को छोड़ चटान कौन। सर्वशक्तिमान मेरा बूता और
३४ पराक्रम वही मेरी चाल सिद्ध करता है। वुह हरिणी के से
मेरे पांव बनाता है और मुझे मेरे ऊंचे स्थानों पर बैठाता है।
३५ वुह मेरे हाथों को युद्ध के लिये सिखाता है ऐसा कि पोलाद
३६ का धनुष मेरी भुजाओं से टूटता है। तू ही ने अपने बचाव
की ढाल भी मुझे दिई है और तेरी कोमलता ने मुझे बढ़ाया
३७ है। तू मेरे डग को मेरे तले बढ़ावेगा और मेरी घुट्टियां

३८ फिलस न गईं। मैं अपने बैरियों का पीछा करूंगा और उन्हें
नाश करूंगा और उलटा न फिरूंगा जब लों वुह संघार न
३९ किया जावे। और मैं उन्हें नाश करूंगा और उन्हें घायल
करूंगा ऐसा कि वे उठ न सकें और वे मेरे पांव तले गिरेंगे।
४० क्योंकि तू ने संग्राम के लिये बल से मेरी कटि बांधी जो
४१ मुझ पर चढ़ आवेंगे तू उन्हें मेरे नीचे झुकावेगा। और तू ने
मेरे बैरियों के गले भी मुझे दिये हैं और मैं अपने बैरियों को
४२ नाश करूंगा। वुह ताकेंगे पर कोई बचवैया न होगा परमेश्वर
४३ की ओर और वुह उन की नहीं सुनता। और मैं उन्हें पृथिवी
की धूल की नाईं बुकनी करूंगा मैं उन्हें मार्ग के चहले की
४४ नाईं रौंदूंगा और उन्हें बिछा दूंगा। और तू मुझे मेरे लोगों के
झगड़ों से छुड़ावेगा तू मुझे अन्यदेशियों का प्रधान करेगा
४५ एक लोग जिसे मैं ने नहीं जाना मेरी सेवा करेंगे। परदेशियों
के पुच कपट से मुझे मानेंगे सुनते ही वे मेरे अधीन हो
४६ जावेंगे। परदेशी कुम्हला जावेंगे और वे अपने सकेत स्थानों
में से डर निकलेंगे॥

४७ परमेश्वर जीता है और मेरी चटान धन्य और मेरी मुक्ति की
४८ चटान का ईश्वर महान होवे। सर्बशक्तिमान जो मेरे लिये
४९ प्रतिफल देता है और लोगों को मेरे नीचे उतारता है। और
मुझे मेरे बैरियों में से निकाल लाता है और तू मुझे उन से ऊपर
उभार लावेगा जो मुझ पर चढ़ आयेंगे तू मुझे अंधेरी मनुष्य
५० से छुड़ावेगा। इस लिये हे परमेश्वर मैं अन्यदेशियों में तेरा
५१ धन्य मानूंगा और तेरे नाम की स्तुति गाऊंगा। जो अपने
राजा की मुक्ति का गर्गज है और अपने अभिषक्ति दाऊद पर
और उस के बंश पर सदा लों दया करता है॥

तेईसवां पर्ब्ब ।

१ और ये दाऊद के अंत की बातें हैं यस्सी के बेटे दाऊद
ने कहीं और उस पुरुष ने जो उभारा गया यअ़कूब के ईश्वर
२ के अभिषिक्त ने जो इसराएल में मधुरगायक है कहा। ईश्वर
का आत्मा मेरी ओर से बोला और उस का बचन मेरी जीभ
३ पर था। इसराएल के ईश्वर ने कहा इसराएल के चटान ने
मुझे कहा जो मनुष्यों पर राज्य करता है वुह धर्म्मी हो और
४ ईश्वर के डर से राज्य करे। और प्रातःकाल की ज्योति की
नाईं बिना मेघों के बिहान सूर्य्य उदय होता है और मेंह के
५ पीछे पृथिवी में से कोमल घास उगने की नाईं। यद्यपि मेरा घर
सर्बशक्तिमान के आगे ऐसा न हो तथापि उस ने मेरे साथ समस्त
बिषय में सनातन की एक सत्य बाचा बांधी मेरी सारी मुक्ति
६ और सारी बांछा के लिये यद्यपि वुह उसे न उगावे। परन्तु
दुष्ट सब के सब कांटों के समान दूर किये जावेंगे क्योंकि वे
७ हाथों से पकड़े नहीं जा सके। परन्तु जो जन उन्हें छूवे उसे
अवश्य है कि लोहे और बरछी के छड़ से पूर्ण होवे और वे
उसी स्थान में सर्बथा जलाये जावेंगे॥

८ दाऊद के बीरों के नाम ये हैं तहकमूनी जो प्रधानों में
श्रेष्ठ आसन पर बैठता था वही अज़नी अ़दिनू था उसी ने
९ आठ सौ के सन्मुख होके उन्हें एक साथ घात किया। और
उस के पीछे अहोही दूदू का बेटा इलिअ़ज़र जो उन तीन
बीरों में से जो दाऊद के संग थे उन्हों ने उन फ़िलिसतियों
को तुच्छ समझा जो इसराएली लोगों से लड़ने के लिये एकट्ठे थे।
१० उस ने उठके फ़िलिसतियों को मारा यहां लों कि उस का हाथ थक
गया और मूठ हाथ में चिपक गई और परमेश्वर ने उस दिन बड़ा
जय दिया और लोग केवल लूट के लिये उस के पीछे फिर गये॥

११ और उस के पीछे हरारी अजी का बेटा शम्म: फ़िलिसती
मसूर के खेत में कहीं लेने को एकट्ठे हुए और लाग फ़िलिसतियों
१२ के आगे से भाग गये। परन्तु वुह खेत के मध्य में खड़ा रहा
और उसे बचाया और फ़िलिसतियों को मार डाला और परमेश्वर
ने बड़ा जय दिया॥
१३ और तीस में से तीन प्रधान निकले और कटनी के समय
में दाऊद अदुल्लम की कंदला में गये और फ़िलिसतियों की
१४ जथा ने रिफ़ाइम की तराई में डेरा किया था। और दाऊद
उस समय गढ़ में था और फ़िलिसतियों की चौकी बेतलहम
१५ में। और दाऊद ने लालसा करके कहा हाय कि कोई मुझे
उस कुए का एक घूंट पानी पिलावे जो बेतलहम के फाटक पास
१६ है। सो उन तीन शूरों ने फ़िलिसतियों की सेना को आरंपार
तोड़के बेतलहम के कुए से जो फाटक के पास था पानी
निकाल लाके दाऊद को दिया तथापि उस ने उस्से पीने न चाहा
१७ परन्तु परमेश्वर के आगे उसे उंडेल दिया। और उस ने कहा
कि हे परमेश्वर मुझ से परे होवे कि मैं ऐसा करूं क्या यह
उन लोगों का लोहू नहीं जो अपने प्राण को जोखिम में लाये
हैं इस लिये उस ने पीने न चाहा इन तीन शूरों ने ऐसे ऐसे
काम किये॥
१८ और ज़रूयाह के बेटे यूअब का भाई अबिशै भी तीन में
प्रधान था और उस ने तीन सौ पर भाला चलाया और उन्हें
१९ मार डाला और तीन में नामी हुआ। क्या वुह तीनों में सब
से प्रतिष्ठित न था इस लिये वुह उन का प्रधान हुआ तथापि
वुह पहिले तीन लों न पहुंचा॥
२० और क़बज़िएल में एक बलवन्त पुरुष था उस ने बड़े बड़े
कार्य्य किये उस का बेटा यहूयद: जिस के बेटे बिनायाह
ने मोअब के दो जन को जो सिंह के तुल्य थे मारा और

जाके पाला के समय में गड़हे के बीच एक सिंह को मारा ।
२१ और उस ने एक सुंदर मिस्री को मार डाला और उस मिस्री
के हाथ में एक भाला था परन्तु वुह लट्ठ लेके उस पर उतरा
और मिस्री के हाथ से भाला छीन लिया और उसी के भाले
२२ से उसे मार डाला । यहूयदः के बेटे बिनायाह ने यह यह
२३ किये और तीन शूरों में नामी था । वुह उन तीसों से अधिक
प्रतिष्ठित था पर वुह उन तीन लों न पहुंचा और दाऊद ने
उसे अपने मंचियों का प्रधान किया ॥

२४ यूअब का भाई असहेल उन तीसों में एक इलहनान
२५ बैतलहमी दूदू का बेटा । शम्मः हरूदी इलिका हरूदी ।
२६ । २७ पलीती ख़ालिस तकूई अक़ीस का बेटा ईरा । अनातोती
२८ अबिअज़र हूशाती मबनाई । अहोही सलमून नीतोफाती
२९ महरी । नीतोफाती बअना का बेटा हलिब बिनयमीन के
३० संतान के जिबअ में से रैबी का बेटा इत्ती । पिराथूनी बनाया
३१ गाश के नालों का हिदई । अरबाती अबिअलबोन बरहूमी
३२ अस्मावत । अलयख़बा शअालबूनी बनियासन यूनतन ।
३३ हरारी शम्मः और हरारी शरार का बेटा अहयाम ।
३४ महाकाती का बेटा अहशबई का बेटा इलीफलत गलूनी
३५ अख़ितुफल का बेटा इलियम । करमली हसराई अरबी पाराई ।
३६ । ३७ सूबा से नातन का बेटा येगाल जाती बानी । अमूनी सिलक़
बीरूती नहराई ज़रूयाह के बेटे यूअब का अस्त्रधारी था ।
३८ । ३९ इथरी ऐरा इथरी गारीब । हित्ती ऊरियाह सब समेत
सैंतीस ॥

चौबीसवां पर्ब्ब ।

१ और फेर परमेश्वर का क्रोध इसराएल पर भड़का और उस
ने दाऊद को उन पर उभारा कि इसराएल को और यहूदाह

२ को गिनावे। क्योंकि राजा ने सेना के प्रधान यूअब को जो
उस के साथ था आज्ञा किई कि इसराएल की सारी गोष्ठियों में से
दान से बिअरशबअ लों जा और लोगों को गिन जिसतें मैं
३ लोगों की गिनती को जानूं। तब यूअब ने राजा से कहा कि
परमेश्वर आप का ईश्वर उन लोगों को जितने वे होवें सो गुना
अधिक करे जिसतें मेरे प्रभु राजा की आंख देखें परन्तु किस
कारण मेरे प्रभु राजा यह काम किया चाहते हैं॥
४ तथापि राजा की बात यूअब के और सेना के प्रधानों की
बात पर प्रबल हुई और यूअब और सेना के प्रधान राजा के
५ पास से इसराएल के लोगों को गिन्ने को निकल गये। और
यरदन पार उतरे और अराईर में नगर की दहिनी ओर जो
जद की तराई के मध्य में याएज़र की ओर है डेरा किया।
६ और जिलिअद और नये बसे हुए नीचे के देश में आये और
७ दान को और घूमके सेदून को आये। और सूर के गढ़ को
आये और हवियों के सारे नगरों को और कनआनियों के और
८ वे यहूदाह के दक्षिण को बिअरशबअ लों निकल गये। सो
जब वे सारे देश में से होके गये तब नव मास बीस दिन के
९ पीछे यरूसलम को आये। और यूअब ने लोगों की गिनती
का पत्र राजा को दिया सो इसराएल में आठ लाख खड्गधारी
बीर थे और यहूदाह के लोग पांच लाख॥
१० और लोगों के गिनाने के पीछे दाऊद के मन में खटका
हुआ और दाऊद ने परमेश्वर से कहा कि मैं ने इस काम में
बड़ा पाप किया है और अब हे परमेश्वर मैं तेरी विनती करता
हूं कि अपनी कृपा से अपने दास का पाप क्षमा कर क्योंकि मैं
११ ने अति मूढ़ता किई है। और जब दाऊद बिहान को उठा तो
परमेश्वर का वचन दाऊद के दर्शी जाद भविष्यद्वक्ता पर यह
१२ कहके पहुंचा। कि जा और दाऊद से कह कि परमेश्वर यों

कहता है कि मैं तेरे आगे तीन बात धरता हूं तू उन में से
१३ एक को चुन कि मैं तेरे लिये करूं । सो जाद दाऊद पास
आया और उसे कहके बोला कि तेरे देश में तुझ पर सात
बरस का अकाल पड़े अथवा तू तीन मांस लों अपने शत्रुन
के आगे भागा फिरे और वे तुझे रगेदें अथवा तेरे देश में तीन
दिन की मरी पड़े अब सोच और देख कि मैं उसे जिस ने
१४ मुझे भेजा क्या उत्तर देऊं । तब दाऊद ने जाद से कहा कि
मैं बड़े सकेत में हूं हम परमेश्वर के हाथ में पड़ें क्योंकि उस
की दया बहुत है और मनुष्यों के हाथ में मैं न पड़ूं ॥
१५ सो परमेश्वर ने इसराएल पर बिहान से ठहराये हुए समय
लों मरी भेजी और दान से लेके बिअरशबअ लों लोगों में से
१६ सत्तर सहस्र जन मर गये । और जब दूत ने नाश करने के
लिये यरूसलम पर अपना हाथ बढ़ाया तब परमेश्वर बुराई से
फिर गया और उस दूत से कहा जिस ने लोगों को नाश किया
कि बस है अब अपना हाथ रोक ले और परमेश्वर का दूत यबूसी
१७ अराना के खलिहान के लग था । और जब दाऊद ने उस दूत
को देखा जिस ने लोगों को मारा तो परमेश्वर से कहा कि
देख पाप तो मैं ने किया है और दुष्टता मैं ने किई है परन्तु
इन भेड़ों ने क्या किया है सो मुझ पर और मेरे बाप के घराने
पर तेरा हाथ पड़े ॥
१८ और उस दिन जाद ने दाऊद पास आके उसे कहा कि
चढ़ जा और यबूसी अराना के खलिहान में परमेश्वर के लिये
१९ एक बेदी बना । और जाद के कहने पर दाऊद परमेश्वर की
२० आज्ञा के समान चढ़ गया । और अराना ने ताका और राजा
को और उस के सेवकों को अपनी ओर आते देखा सो अराना
निकला और राजा के आगे झुकके भूमि पर प्रणाम किया ।
२१ और अराना ने कहा कि मेरे प्रभु राजा अपने सेवक के पास

किस लिये आये हैं तब दाऊद ने कहा कि तुझ से खलिहान
मोल लेके परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाऊं जिसतें लोगों में
२२ से मरी थम जावे। और अराना ने दाऊद से कहा कि मेरे
प्रभु राजा लेवें और जो अच्छा जानें सो भेंट करें देखिये कि
बलिदान की भेंट के लिये बैल और पीटने की सामग्री बैलों
२३ की सामग्री समेत ईंधन के लिये हैं। सो जैसा राजा राजा
को देता है अराना ने सब कुछ किया और अराना ने राजा
२४ से कहा कि परमेश्वर आप का ईश्वर आप को ग्रहण करे। तब
राजा ने अराना से कहा कि यों नहीं परन्तु मैं निश्चय दाम
देके उसे मोल लेऊंगा और मैं अपने ईश्वर परमेश्वर के लिये
ऐसी बलिदान की भेंट न चढ़ाऊंगा जो सेंत की हो सो दाऊद
ने वुह खलिहान और बैल पचास शेकल चांदी देके मोल
२५ लिये। और दाऊद ने वहां परमेश्वर के लिये बेदी बनाई और
बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ाईं और परमेश्वर देश
के लिये मनाया गया और मरी इसराएल में से थम गई॥

राजाओं की पहिली पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ अब दाऊद राजा पुरनिया और दिनी हुआ और उन्हों ने
२ उसे कपड़े उढ़ाये परन्तु वुह न गरमाता था। सो उस के
सेवकों ने उसे कहा कि मेरे प्रभु राजा के लिये एक कन्या
ढूंढ़ी जावे जिसतें वुह राजा के आगे खड़ी रहे और उस के
लिये सेविका होवे और वुह आप की गोद में पड़ी रहे जिसतें
३ मेरा प्रभु राजा गरमा जावे। सो उन्हों ने इसराएल के समस्त
सिवानों में एक सुंदरी कन्या ढूंढ़ी और शुनामी अबिशाग़ को
४ पाया और उसे राजा पास लाये। और वुह कन्या अति
रूपवती थी और राजा की सेवा और उस की टहल करती थी
परन्तु राजा उस्से अज्ञान रहा॥
५ तब हज्जीत के बेटे अदूनियाह ने यह कहके आप को
बढ़ाया कि मैं राज्य करूंगा और अपने लिये रथ और घोड़चढ़े
और पचास मनुष्य अपने आगे आगे दौड़ने को सिद्ध किये।
६ और उस के बाप ने उसे यह कहके कधी उदास न किया कि
तू ने ऐसा क्यों किया और वुह भी बहुत सुंदर था और उस
७ की मा उसे अबिसलुम के पीछे जनी थी। और वुह ज़रूयाह
के बेटे यूअब और अबियतर याजक से बातचीत करता था
और यह दोनों अदूनियाह के पीछे सहायता करते थे।
८ परन्तु सदूक़ याजक और यहूयदः का बेटा बिनायाह और
नातन आगमज्ञानी और शमीय और रेई और दाऊद के

९ महाबीर अदूनियाह के साथ न थे। और अदूनियाह ने भेड़
और बैल और पले हुए ढोर जुहलत के पत्थल पर जो रूगल
के कुए के लग है बधन किये और अपने सारे भाई अर्थात्
राजा के बेटों का और यहूदाह के सारे लोगों का राजा के
१० सेवकों का नेउंता किया। परन्तु नातन आगमज्ञानी और
बिनायाह और महाबीरों को और अपने भाई सुलेमान को न
बुलाया॥
११ इस लिये नातन सुलेमान की माता बिन्तसबअ़ को यह
कहके बोला कि क्या तू ने नहीं सुना कि हज्जीत का बेटा
अदूनियाह राज्य करता है और हमारा प्रभु दाऊद नहीं
१२ जानता। सो अब आइये मैं आप को मंच देऊं जिसतें आप
१३ ही का प्राण और आप के बेटे सुलेमान का प्राण बचे। आप
दाऊद राजा पास जाइये और उसे कहिये कि मेरे प्रभु राजा
क्या आप ने अपनी दासी से किरिया खाके नहीं कहा कि
निश्चय तेरा बेटा सुलेमान मेरे पीछे राज्य करेगा और वही
मेरे सिंहासन पर बैठेगा फेर अदूनियाह क्यों राज्य करता है।
१४ देख आप के राजा से बातें करते ही मैं भी आप के पीछे आ
पहुंचूंगा और आप की बातों को दृढ़ करूंगा॥
१५ सो बिन्तसबअ़ भीतर कोठरी में राजा पास गई और राजा
तो बहुत बृद्ध था और शुनामी अबिशाग़ राजा की सेवा करती
१६ थी। और बिन्तसबअ़ झुकी और राजा के आगे दण्डवत
१७ किई तब राजा ने कहा कि तुझे क्या है। और उस ने उसे
कहा कि हे मेरे प्रभु आप ने परमेश्वर अपने ईश्वर की किरिया
खाके अपनी दासी से कहा कि निश्चय मेरे पीछे तेरा बेटा
सुलेमान राज्य करेगा और वुह मेरे सिंहासन पर बैठेगा।
१८ सो अब देखिये अदूनियाह राज्य करता है और अब लों मेरा
१९ प्रभु राजा नहीं जानता। और उस ने बहुत से बैल और

पले हुए ढोर और भेड़ें बधन किये और राजा के सब बेटों
और अबिवतर याजक और सेना के प्रधान यूअब को नेउंता
किया है परन्तु उस ने आप के दास सुलेमान को नहीं बुलाया।
२० और अब हे मेरे प्रभु राजा समस्त इसराएल की दृष्टि तुझ पर
है जिसतें तू उन्हें कहे कि मेरे प्रभु राजा के सिंहासन पर
२१ उस के पीछे कौन बैठेगा। नहीं तो यह होगा कि जब मेरा
प्रभु राजा अपने पितरों के साथ शयन करेगा तब मैं और
मेरा बेटा सुलेमान दोनों दोषी गिने जावेंगे॥
२२ और देखो कि वुह राजा से बातें कर रही थी कि नातन
२३ आगमज्ञानी भी आ पहुंचा। और उन्हों ने यह कहके राजा
को जनाया कि नातन आगमज्ञानी आया है और जब वुह
राजा के आगे आया तो उस ने राजा के आगे भूमि लों झुक
२४ के प्रणाम किया। और बोला हे मेरे प्रभु राजा क्या तू ने
कहा है कि मेरे पीछे अदूनियाह राज्य करके मेरे सिंहासन
२५ पर बैठेगा। क्योंकि वुह आज उतरा और बहुत से बैल और
पले हुए ढोर और भेड़ें मारीं और समस्त राजकुमारों को और
सेना के प्रधानों को और अबिवतर याजक को नेउंता किया
और देखिये वे उस के साथ खाते पीते हैं और कहते हैं कि
२६ अदूनियाह राजा जीवे। परन्तु आप के दास मुझे और सदूक़
याजक और यहूयदः के बेटे बिनायाह को और तेरे दास
२७ सुलेमान को न बुलाया। क्या यह मेरे प्रभु राजा की ओर से
है और तू ने अपने दास को न जनाया कि मेरे प्रभु राजा के
पीछे उस के सिंहासन पर कौन बैठेगा॥
२८ तब दाऊद राजा ने उत्तर देके कहा कि बिन्तसबअ को
मेरे पास बुलाओ और वुह राजा के आगे आई और राजा के
२९ सन्मुख खड़ी हुई। तब राजा ने किरिया खाके कहा कि उस
परमेश्वर के जीवन सों जिस ने मेरे प्राण को समस्त दुःख से

३० छुड़ाया। जैसा मैं ने परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की किरिया
खाके तुझे कहा था कि निश्चय तेरा बेटा सुलेमान मेरे पीछे
राज्य करेगा और मेरी संती मेरे सिंहासन पर वही बैठेगा
३१ वैसा ही मैं आज निश्चय करूंगा। तब बिन्तसबअ ने भूमि
लों झुकके प्रणाम किया और बोली कि मेरा प्रभु राजा दाऊद
सर्व्वदा जीता रहे॥

३२ तब दाऊद राजा ने आज्ञा किई कि सदूक याजक और
नातन आगमज्ञानी और यहूयदः के बेटे बिनायाह को पास
३३ बुलाओ और वे राजा के आगे आये। तब राजा ने उन्हें भी
कहा कि अपने प्रभु के सेवकों को अपने साथ लेओ और मेरे
बेटे सुलेमान को मेरे ही खच्चर पर चढ़ाओ और उसे जैहून
३४ को ले जाओ। और सदूक याजक और नातन आगमज्ञानी
उसे वहां इसराएल पर राज्याभिषेक करें और तुरही फूंकके
३५ बोलें कि सुलेमान राजा जीता रहे। तब उस के पीछे पीछे
चले आओ जिसतें वुह आवे और मेरे सिंहासन पर बैठे क्योंकि
मेरी संती वही राजा होगा और मैं ने ठहराया है कि इसराएल
३६ पर और यहूदाह पर वही प्रभुता करे। तब यहूयदः के बेटे
बिनायाह ने राजा को उत्तर देके कहा कि आमीन मेरे प्रभु
३७ राजा का ईश्वर परमेश्वर भी ऐसा ही कहे। जिस रीति से
परमेश्वर मेरे प्रभु राजा के संग था उसी रीति से सुलेमान के
संग होवे और उस के सिंहासन को मेरे प्रभु दाऊद राजा के
सिंहासन से श्रेष्ठ करे॥

३८ सो सदूक याजक और नातन आगमज्ञानी और यहूयदः
का बेटा बिनायाह और करीती और पलीती आये और सुलेमान
को दाऊद राजा के खच्चर पर चढ़ाया और उसे जैहून को
३९ लाये। और वहां सदूक याजक ने तंबू से एक सींग में तेल
लिया और सुलेमान को अभिषेक किया तब उन्हों ने तुरही फूंकी

४० और सब के सब बोले कि सुलेमान राजा जीता रहे। और
समस्त लोग उस के पीछे पीछे चढ़ आये और लोग बांसली
बजाते बजाते बड़ा आनन्द करने लगे ऐसा कि भूमि उन के
शब्द से फट गई ॥

४१ और अदूनियाह ने और उस के साथ के समस्त नेउंतहरी ने
सुना और ज्यों वे खा चुके और यूअब ने तुरही का शब्द
सुना तो बोला कि नगर में यह क्या कोलाहल और होरा है।
४२ वुह यह कह रहा था कि देखो अबियतर याजक का बेटा
यूनतन आया और अदूनियाह ने उसे कहा कि आ क्योंकि तू बीर
४३ है और सुसंदेश लाता है। तब यूनतन ने उत्तर दिया और
अदूनियाह से कहा कि निश्चय हमारे प्रभु राजा दाऊद ने
४४ सुलेमान को राजा किया है। और राजा ने सदूक़ याजक को
और नातन आगमज्ञानी को और यहूयदः के बेटे बिनायाह को
और करीती और पलीती को उस के साथ भेजा और उन्हों ने
४५ राजा के खच्चर पर उसे चढ़ाया। और सदूक़ याजक और
नातन आगमज्ञानी ने जेहून में उसे राज्याभिषेक किया और
वे वहां से ऐसा आनन्द करते हुए फिरे हैं कि नगर गूंज गया
४६ तुम ने वही शब्द सुना है। और सुलेमान राज्य सिंहासन
४७ पर भी बैठा है। और इस्से अधिक राजा के सेवक हमारे
प्रभु राजा दाऊद को यह कहके बधाई दे रहे हैं कि ईश्वर
सुलेमान को तेरे नाम से अधिक बढ़ावे और उस के सिंहासन
को तेरे सिंहासन से अधिक श्रेष्ठ करे और राजा ने बिछौने
४८ पर दण्डवत किई। और राजा ने भी कहा है कि परमेश्वर
इसराएल का ईश्वर धन्य है जिस ने आज के दिन मेरे
सिंहासन को बैठवैया दिया और मेरी आंखों ने देखा॥

४९ तब सारे नेउंतहरी जो अदूनियाह के साथ थे डरके उठे
५० और हर एक अपने अपने मार्ग चला गया। और अदूनियाह

सुलेमान के डरके मारे उठा ओर जाके बेदी के सींगों को
५१ पकड़ा। ओर सुलेमान को संदेश पहुंचा कि देखिये अदूनियाह
सुलेमान राजा से डरता है क्योंकि वुह बेदी के सींगों को
पकड़े हुए कहता है कि सुलेमान राजा आज मुझ से किरिया
खाके कहे कि मैं अपने सेवक को खड्ग से घात न करूंगा।
५२ तब सुलेमान बोला यदि वुह आप को योग्य पुरुष दिखावेगा
तो उस का एक बाल भूमि पर न गिरेगा परन्तु यदि उस में
५३ दुष्टता पाई जावे तो वुह मारा जावेगा। सो सुलेमान राजा
लोग भेजके उसे बेदी पर से उतार लाया ओर उस ने आके
सुलेमान राजा के आगे दण्डवत किई ओर सुलेमान ने उसे
कहा कि अपने घर जा॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ जब दाऊद के मरने के दिन आ पहुंचे तब उस ने अपने
२ बेटे सुलेमान को यह कहके उपदेश किया। कि मैं समस्त
पृथिवी की रीति पर जाता हूं सो तू दृढ़ हो ओर अपना
३ पुरुषार्थ दिखा। ओर परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञा को पालन
करके उस के मार्गों में चल जिसतें उस की व्यवस्थों उस की
आज्ञाओं ओर उस की विधिन ओर उस की साक्षियों की रक्षा
कर जेसा मूसा की व्यवस्था में लिखा है जिसतें तू अपने समस्त
४ कार्य्यों में ओर जिधर तू फिरे भाग्यवान होवे। जिसतें परमेश्वर
अपने बचन पर बना रहे जो उस ने मेरे बिषय में कहा कि
यदि तेरे बंश अपने मार्ग में चोकस रहके अपने सारे मन से
ओर अपने सारे प्राण से मेरे आगे सच्चाई से चलेंगे तो इसराएल
५ के संतान का सिंहासन तुझ से अलग न होगा। ओर जो कुछ
कि ज़रूयाह के बेटे यूअब ने मुझ से ओर इसराएली सेना के
दो प्रधानों अर्थात् नेयिर के बेटे अबिनेयिर ओर यतर के

बेटे अमासा से किया तू जानता है कि उस ने उन्हें मार
डाला और मिलाप में संग्राम का लोहू बहाया और संग्राम के लोहू
को अपनी कटि के पटुके पर और अपने पांओं की जूतियों पर
६ छिड़का। सो तू अपनी बुद्धि के समान कर और उस का पक्का
७ बाल कुशल से समाधि में उतरने न दे। परन्तु जिलिअदी
बरज़िल्ली के बेटों पर दया कर और वे उन में होवें जो तेरे
मंच पर भोजन करते हैं इस लिये कि जब मैं तेरे भाई
८ अबिसलुम से भागा था वे मुझ पास आये। और देख बहूरीमी
बिनयमीनी जेरा का बेटा शमीय तेरे साथ है जिस ने मुझे
भारी स्राप से स्रापा जिस दिन मैं महनेन में गया परन्तु वुह यरदन
पर मुझ से भेंट करने को आया और मैं ने यह कहके उस्से
परमेश्वर की किरिया खाई कि मैं तुझे तलवार से घात न
६ करूंगा। पर अब उसे निर्दोष मत जानियो क्योंकि तू बुद्धिमान
है और जानता है जो कुछ उस्से किया चाहे परन्तु उस का
१० पक्का बाल लोहू के साथ समाधि में उतारियो। और दाऊद
ने अपने पितरों में शयन किया और दाऊद के नगर में गाड़ा
११ गया। और दाऊद ने इसराएल पर चालीस बरस राज्य किया
सात बरस हबरून में और तेंतीस बरस यरूसलम में उस ने
राज्य किया॥

१२ तब सुलेमान अपने पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठा
१३ और उस का राज्य बहुत स्थिर हुआ। तब हज्जीत का बेटा
अदूनियाह सुलेमान की माता बिन्तसबअ पास आया और
उस ने पूछा कि तू कुशल से आता है और वुह बोला कि
१४ कुशल से। तब उस ने कहा कि मैं तुझ से कुछ कहा चाहता
१५ हूं और वुह बोली कह। तब उस ने कहा कि तू जानती है
कि राज्य मेरा था और समस्त इसराएल ने मुझ पर रुख
किया था कि मैं राज्य करूं परन्तु राज्य पलट गया और मेरे

१६ भाई का हुआ क्योंकि परमेश्वर की ओर से उसी का था। सो अब
मेरी तुझ से एक बिनती है उस्से मुंह न फेरिये ओर वुह उस्से
१७ बोली कह। तब उस ने कहा कि अनुग्रह करके सुलेमान राजा से
कहिये क्योंकि वुह आप को नाह न करेगा कि शुनामी अबिशाग़
१८ को मुझे ब्याह देवे। सो बिन्तसबअ बोली कि अच्छा मैं तेरे
लिये राजा से कहूंगी॥

१६ सो बिन्तसबअ सुलेमान राजा पास अदूनियाह के लिये
कहने गई ओर राजा उसे मिलने को उठा ओर उसे प्रणाम
किया तब अपने सिंहासन पर बैठ गया ओर राजा ने अपनी
माता के लिये एक आसन मंगवाया ओर वुह उस की दहिनी
२० ओर बैठी। तब वुह बोली कि मैं एक छोटी बात चाहती हूं
मुझ से नाह न कीजियो ओर राजा ने उसे कहा कि हे मेरी
२१ माता मांगिये क्योंकि मैं तुझ को नाह न कहूंगा। ओर वुह
बोली कि शुनामी अबिशाग़ तेरे भाई अदूनियाह से ब्याही
२२ जावे। तब सुलेमान राजा ने अपनी माता को उत्तर देके
कहा कि तू केवल शुनामी अबिशाग़ को अदूनियाह के लिये
क्यों मांगती है उस के लिये राज्य भी मांग क्योंकि वुह मेरा
बड़ा भाई है हां उस के लिये ओर अबियतर याजक के ओर
२३ ज़रूयाह के बेटे यूअब के लिये भी। तब सुलेमान राजा ने
परमेश्वर की किरिया खाके कहा कि यदि अदूनियाह ने यह
बात अपने प्राण पर खेलने को नहीं कही तो ईश्वर मुझ से
२४ ऐसा ही ओर उस्से अधिक करे। सो अब परमेश्वर के जीवन
सों जिस ने मुझे मेरे पिता दाऊद के सिंहासन पर बैठाया
ओर स्थिर किया ओर जिस ने अपनी बाचा के समान मेरे
२५ लिये घर बनाया आज ही अदूनियाह मारा जावेगा। ओर
सुलेमान राजा ने यहूयदः के बेटे बिनायाह को भेजा ओर
उस ने उस पर लपकके उसे मार डाला॥

२६ तब राजा ने अबियतर याजक को कहा कि अनातूत को
अपने खेतों में जा क्योंकि तू मृत्यु के योग्य है परन्तु इस
जून में तुझे मार न डालूंगा क्योंकि तू मेरे पिता दाऊद के
आगे परमेश्वर ईश्वर की मंजूषा उठाता था और इस लिये कि तू
२७ उन सब दुःखों में जो मेरे पिता पर पड़े संगी था। सो
सुलेमान ने अबियतर को परमेश्वर का याजक होने से दूर
किया जिसतें वुह परमेश्वर के वचन को संपूर्ण करे जो उस ने
सैला में एली के घराने के विषय में कहा था ॥
२८ तब यूअब को संदेश पहुंचा क्योंकि यूअब अदूनियाह के
पीछे हुआ था यद्यपि वुह अबिसलुम की ओर न फिरा था सो
उस ने परमेश्वर के तंबू में भागके बेदी के सींगों को धरा।
२९ और सुलेमान को संदेश पहुंचा कि यूअब भागके परमेश्वर के
तंबू में गया और देखो कि वुह बेदी के लग है तब सुलेमान
ने यहूयदः के बेटे बिनायाह को कहला भेजा कि उसे मार
३० डाले। सो बिनायाह परमेश्वर के तंबू में गया और उसे कहा
कि राजा की आज्ञा है कि तू बाहर निकल और वुह बोला
कि नहीं मैं यहीं मरूंगा तब बिनायाह फिर गया और राजा
से कहा कि यूअब यों कहता है और उस ने मुझे यों उत्तर
३१ दिया। तब राजा ने उसे आज्ञा किई कि जैसा उस ने कहा
है वैसा ही कर और उस पर लपक और उसे गाड़ जिसतें तू
उस निष्पाप लोहू को जो यूअब ने बहाया मुझ से और मेरे
३२ पिता के घराने से मिटा देवे। और परमेश्वर उस का लोहू
उसी के सिर पर धरेगा जिस ने दो मनुष्यों पर जो उस्से
अधिक धर्म्मी और भले थे लपकके उन्हें तलवार से घात किया
और मेरा पिता दाऊद न जानता था अर्थात् इसराएली सेना
के प्रधान नेयिर के बेटे अबिनेयिर को और यहूदाह की सेना
३३ के प्रधान यतर के बेटे अमासा को। सो उन का लोहू यूअब

के सिर पर और उस के बंश के सिर पर सनातन लों पलटे
परन्तु दाऊद पर और उस के बंश पर और उस के घराने पर
और उस के सिंहासन पर परमेश्वर की ओर से सदा कुशल
३४ होगा। सो यहूयद: के बेटे बिनायाह ने जाके उस पर लपकके
उसे मार डाला और वुह अरण्य में अपने ही घर में गाड़ा
३५ गया। तब राजा ने यहूयद: के बेटे बिनायाह को उस की संती
सेना का प्रधान किया और सदूक याजक को राजा ने अबियतर
के स्थान पर रक्खा॥
३६ तब राजा ने शमीय को बुला भेजा और उसे कहा कि
यरूसलम में अपने लिये घर बना और वहीं रह और वहां
३७ से कहीं बाहर मत निकल। क्योंकि जिस दिन तू बाहर
निकलेगा और किदरून की नाली के पार जावेगा निश्चय
जानियो कि अवश्य मारा जावेगा तेरा लोहू तेरे ही सिर पर
३८ होगा। और शमीय ने राजा से कहा कि आज्ञा उत्तम है जैसा
मेरे प्रभु राजा ने कहा है वैसा ही तेरा सेवक करेगा सो शमीय
बहुत दिन लों यरूसलम में रहा॥
३९ और तीसरे बरस के अंत में ऐसा हुआ कि शमीय के दो
सेवक जात के राजा मअक: के बेटे अकीस कने भाग गये
और शमीय से कहा गया कि देख तेरे सेवक जात में हैं।
४० तब शमीय ने उठके अपने गदहे पर काठी बांधी और अपने
सेवकों के ढूंढ़ने को जात में अकीस पास गया और शमीय जाके
४१ जात से अपने सेवकों को ले आया। और यह संदेश सुलेमान को
पहुंचा कि शमीय यरूसलम से जात को गया था और फिर
४२ आया। तब राजा ने शमीय को बुला भेजा और उसे कहा कि
क्या मैं ने तुझे परमेश्वर की किरिया न दिलाई थी और तुझ
से बाचा लेके न कहा था कि तू निश्चय जानियो कि जिस
दिन तू बाहर जावेगा या कहीं फिरेगा तू अवश्य मारा जावेगा

और तू ने मुझे कहा था कि यह बचन जो मैं ने सुना उत्तम
४३ है । सो तू ने परमेश्वर की किरिया को और उस आज्ञा को
४४ जो मैं ने तुझे किई क्यों नहीं माना । तब राजा ने शमीय
से कहा कि तू उस सब दुष्टता को जानता है जो तू ने मेरे
पिता दाऊद से किई जिन से तेरा मन जानकार है सो परमेश्वर
४५ तेरी दुष्टता को तेरे ही सिर पर पलटेगा । और सुलेमान राजा
भाग्यवान होगा और दाऊद का सिंहासन परमेश्वर के आगे
४६ सर्बदा स्थिर रहेगा । सो राजा ने यहूयदः के बेटे बिनायाह
को आज्ञा किई और उस ने बाहर जाके उस पर लपकके उसे
मार डाला तब राज्य सुलेमान के हाथ में स्थिर हुआ ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ और सुलेमान ने मिस्र के राजा फिरऊन से नाता किया
और फिरऊन की कन्या को ब्याहा और अपने भवन और
परमेश्वर के मंदिर और यरूसलम की भीत चारों ओर बनाके
२ समाप्त करने लों उसे दाऊद के नगर में लाया । केवल
लोग ऊंचे स्थानों में बलिदान चढ़ाते थे क्योंकि उन दिनों
लों कोई मंदिर परमेश्वर के नाम के लिये बनाया न गया
३ था । और सुलेमान परमेश्वर से प्रेम करके अपने पिता की
बिधिन पर चलता था केवल वुह ऊंचे स्थानों पर बलिदान
चढ़ाता और धूप जलाता था ॥

४ और बलिदान चढ़ाने को राजा जिबऊन को गया क्योंकि
महा ऊंचा स्थान वहीं था और उस बेदी पर सुलेमान ने
५ सहस्र बलिदान की भेंटें चढ़ाईं । जिबऊन में परमेश्वर ने रात
को सुलेमान को स्वप्न में दर्शन दिया और ईश्वर ने कहा कि
६ मांग मैं तुझे क्या देऊं । तब सुलेमान ने कहा कि तू ने मेरे
पिता अपने सेवक दाऊद को बड़ा दान दिया इस कारण कि

वुह तेरे आगे सच्चाई और धर्म्म और मन की खराई से चला
था और तू ने उस पर यह बड़ा अनुग्रह किया कि तू ने उस के
सिंहासन पर बैठने के लिये एक बेटा दिया जैसा आज के
७ दिन है। सो अब हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू ने मेरे पिता दाऊद
की संती अपने सेवक को राजा किया और मैं बालक हूं बाहर
८ भीतर आने जाने नहीं जानता। और तेरा सेवक तेरे लोगों
के मध्य में है जिन्हें तू ने चुना है बड़े लोग जो अगणय और
९ बहुत हैं ऐसा कि गिने नहीं जा सक्ते हैं। सो अपने लोगों के
न्याय करने के लिये अपने सेवक को सुन्ने का मन दे जिसतें
मैं भले और बुरे में बिबेक करूं क्योंकि तेरे ऐसे बड़े लोगों
का न्याय कौन कर सक्ता है॥

१० और यह बात परमेश्वर को अच्छी लगी कि सुलेमान ने
११ ऐसी बस्तु मांगी। और ईश्वर ने उसे कहा इस कारण कि तू
ने यह बस्तु मांगी है और अपनी बड़ी आयुर्दा न चाही और
न अपने लिये धन मांगा है और न अपने बैरियों का प्राण
चाहा है परन्तु अपने लिये न्याय करने को बुद्धि चाही।
१२ देख मैं ने तेरी बात के समान किया है देख मैं ने एक बुद्धिमान
और ज्ञानवान मन तुझे दिया है ऐसा कि तेरे आगे तेरे तुल्य
१३ कोई न था और तेरे पीछे तेरे तुल्य कोई न होगा। और मैं ने
तुझे वुह भी जो तू ने नहीं मांगा अर्थात् धन और प्रतिष्ठा यहां
लों दिया है कि राजाओं के बीच तेरे जीवन भर तेरे तुल्य नहीं
१४ हुआ है। और यदि तू मेरे मार्गों पर चलके मेरी बिधिन और मेरी
आज्ञाओं को पालन करेगा जिस रीति से तेरा पिता दाऊद चलता
१५ था तो मैं तेरी बय बढ़ाऊंगा। तब सुलेमान जागा और देखा
कि स्वप्न है और वुह यरूसलम को आया और परमेश्वर के नियम
की मंजूषा के आगे खड़ा हुआ और बलिदान की भेंटें और कुशल की
भेंटें चढ़ाईं और अपने समस्त सेवकों के लिये जेवनार किया॥

१६ उस समय में दो बेश्या राजा पास आईं और उस के आगे
१७ खड़ी हुई। और एक बोली कि हे मेरे प्रभु में और यह स्त्री
एक घर में रहती हैं और में उस के साथ घर में रहते हुए एक
१८ बालक जनी। और मेरे जन्ने के तीसरे दिन पीछे यों हुआ
कि यह स्त्री भी जनी और हम एक साथ थीं घर में हम
१९ दोनों को छोड़ कोई उपरी हमारे संग न था। और इस स्त्री
का बालक रात को मर गया इस लिये कि वुह इस के नीचे
२० दब गया। तब वुह आधी रात को उठी और जब कि तेरी
लौंडी सोती थी मेरे पास से मेरे पुच को ले गई और अपनी
गोद में रक्खा और अपने मरे हुए बालक को मेरी गोद में
२१ धर दिया। और बिहान को जब मैं उठी कि अपने बालक को
दूध पिलाऊं तो क्या देखती हूं कि वुह मरा पड़ा है पर बिहान
को जब मैं ने सोचा तो देखा कि यह मेरा जना हुआ लड़का
२२ नहीं। तब वुह दूसरी स्त्री बोली नहीं परन्तु जीता मेरा पुच
है और मरा तेरा पुच है और यह बोली कि नहीं मरा हुआ
तेरा पुच और जीता मेरा पुच यों उन्हों ने राजा के आगे बातें
२३ किईं। तब राजा बोला कि एक कहती है जीता पुच मेरा है
और मृतक तेरा पुच और दूसरी कहती है कि नहीं परन्तु
२४ मृतक तेरा पुच और जीता मेरा पुच। तब राजा ने कहा कि
मुझ पास एक खड्ग लाओ तब वे राजा के आगे खड्ग लाये।
२५ तब राजा ने कहा कि इस जीते बालक को दो भाग करो और
२६ आधा एक को देओ और आधा दूसरी को। तब जिस स्त्री
का जीता बालक था उस ने राजा से कहा क्योंकि उस की
मया अपने पुच के लिये तपित हुई हे मेरे प्रभु जीता बालक
उसी को दीजिये और किसी भांति से न मारिये परन्तु दूसरी
बोली कि यह न मेरा हो न तेरा परन्तु भाग किया जावे।
२७ तब राजा ने कहके आज्ञा किई कि जीता बालक इसी को देओ

और उसे किसी भांति से मत मारो उस की माता यही है।
२८ और समस्त इसराएल ने यह न्याय सुना जो राजा ने किया
और राजा से डरे क्योंकि उन्हों ने देखा कि ईश्वर की बुद्धि
न्याय करने के लिये उस के मन में है॥

चौथा पर्व्व।

१ सो सुलेमान राजा सारे इसराएल का राजा हुआ।
२ और उस के अध्यक्ष ये थे सदूक याजक का बेटा अज़रियाह।
३ इलीहुरिफ़ और अख़ियाह शीशा लेखक के बेटे थे और अख़िलूद
४ का बेटा यहूशफत स्मारक। और यहूयदः का बेटा बिनायाह
५ सेना का प्रधान और सदूक और अबियतर याजक। और नातन
का बेटा अज़रियाह प्रधानों पर और नातन का बेटा ज़बूद
६ श्रेष्ठ प्रधान और राजा का मित्र। और अख़िशार घर का प्रधान
और अबदा का बेटा अदुनीराम कर का प्रधान॥
७ और सारे इसराएल पर सुलेमान के बारह प्रधान थे जो
राजा के और उस के घराने के भोजन सिद्ध करते थे उन में
से हर एक जन बरस भर में एक मास भोजन सिद्ध करता
८ था। और उन के नाम यह हैं हूर का बेटा इफ़रायम पहाड़
९ में। दिक्र का बेटा मक़स में और शअलबीम में और बेतशमश
१० और एलून बेतहनान में। हसद का बेटा अरूबूत में शोकः
११ और हिफ़्र का समस्त देश उस के बश में था। अबिनदाब
का बेटा दोर के समस्त देश में सुलेमान की बेटी ताफ़तः
१२ उस की पत्नी थी। अख़िलूद का बेटा बअना तअनाक और
मिजद्दो और समस्त बेतशान जो जरंतान के लग यज़रएल
के नीचे बेतशान से लेके अबील महूलः लों युक़मिआम के
१३ पार लों उस के बश में था। जब्र का बेटा रामात जिलिअद
में मनस्सी के बेटे याइर के नगर जो जिलिअद में हैं अरजूब

के देश समेत जो बशन में है अर्थात् जो भीत से घेरे और
जिन में पीतल के अड़ंगे थे साठ नगर उस्से प्रयोजन
१४ रखते थे । इद्दू का बेटा अख़िनदब महनैन रखता था ।
१५ अख़िमअ़ज़ नफ़ताली में वुह भी सुलेमान की बेटी बासमत
१६ को पत्नी किये था । हूशी का बेटा बअ़नः यसर और अलूत
१७ । १८ में । फरूह का बेटा यहूशफ़त इशकार में । आला
१९ का बेटा शमयी बिनयमीन में । ऊरी का बेटा जब्र जिलिअ़द
के देश में था जो अमूरी के राजा सैहून का राज्य और बशन
के राजा ऊग का राज्य था और उस देश का केवल वही
प्रधान था ॥

२० यहूदाह और इसराएल बहुताई में समुद्र की बालू की
२१ नाई थे वे खाते पीते और आनन्द करते थे । और सुलेमान
समस्त राज्यों पर राज्य करता था नदी से फ़िलिसतियों के
देश लों और मिस्र के सिवाने लों वे उस पास भेंट लाते थे
और उस के जीवन भर उस की सेवा करते थे ॥

२२ और सुलेमान के दिन भर का भोजन यह था तीस पैमानः
२३ चोखा पिसान और साठ पैमानः आटा । दस मोटे बैल और
चराई के बीस बैल एक सौ भेड़ें और उस्से अधिक चिकारे
और हरिण और काले हरिण और मोटे मोटे पंछी को छोड़के ।
२४ क्योंकि वुह नदी के इस पार तिफसह से लेके गअ़ज़्ज़ लों
उन सारे राजाओं पर जो समुद्र की इसी ओर थे राज्य करता
२५ था और चौदिसा से मेल रखता था । और यहूदाह और
इसराएल हर एक पुरुष अपने अपने दाख और अपने गूलर के
पेड़ तले दान से लेके बिअ़रसबः लों सुलेमान के जीवन भर
कुशल से रहता था ॥

२६ और सुलेमान के रथों के लिये चालीस सहस्र घोड़शाला
२७ थीं और बारह सहस्र घोड़चढ़े । और उन बारह प्रधानों में

से हर एक जन अपने अपने मास में सुलेमान राजा के लिये
ओर उन सब के लिये जो सुलेमान राजा के भोजन में आते
थे भोजन सिद्ध करता था उन को किसी बात की घटती न
२८ थी। और घोड़ों और चालाक पशुन के लिये जव और पुआल
भी हर एक जन आज्ञा के समान उसी स्थान में लाता था॥
२९ और ईश्वर ने सुलेमान को अत्यन्त बुद्धि और ज्ञान और
मन का फैलावा समुद्र के तीर की बालू की नाईं दिया था।
३० और सुलेमान की बुद्धि सारे पूर्बियों की बुद्धि से और मिस्रियों
३१ की सारी बुद्धि से श्रेष्ठ थी। क्योंकि वुह इशराकी ऐतान से
और हैमान से और खलकल से और दरदअ से जो महूल के
बेटे थे और समस्त मनुष्य से अधिक बुद्धिमान था और उस
की कीर्त्ति चारों ओर के समस्त जातिगणों में फैल गई थी।
३२ और उस ने तीन सहस्र दृष्टांत कहे और उस के गीत एक
३३ सहस्र और पांच थे। और उस देवदार से लेके जो लुबनान
में है उस जूफ़ा लों जो भीतों पर उगती है उस ने सब वृक्षों
का वर्णन किया और पशुन और पक्षियों और रेंगवैयों और
३४ मछलियों के बिषय में कहा। और सारे लोगों में से और
पृथिवी के समस्त राजाओं से जिन्हों ने उस की बुद्धि का
संदेश पाया था सुलेमान की बुद्धि सुन्ने को आते थे॥

पांचवां पर्ब्ब।

१ और सूर के राजा हीराम ने सुलेमान के पास अपने सेवकों
को भेजा क्योंकि उस ने सुना था कि उन्हों ने उस के पिता
की संती उसे राज्याभिषेक किया क्योंकि हीराम दाऊद से सदा
२ प्रीति रखता था। और सुलेमान ने हीराम को कहला भेजा।
३ कि तू जानता है कि उन लड़ाइयों के कारण जो उस के
आस पास चौदिशा थीं मेरा पिता दाऊद परमेश्वर अपने ईश्वर

के नाम के लिये एक मंदिर न बना सका जब लों कि परमेश्वर
४ ने उन सभों को उस के पावों तले न कर दिया। सो अब
परमेश्वर मेरे ईश्वर ने मुझे चारों ओर से चैन दिया यहां लों
५ कि अब न बैरी न उपद्रवी है। सो देख मैं ने ठाना है कि
परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम से एक मंदिर बनाऊं जैसा कि
परमेश्वर ने मेरे पिता दाऊद से कहा कि तेरा बेटा जिसे मैं
तेरे सिंहासन पर बैठाऊंगा वही मेरे नाम का मंदिर बनावेगा।
६ सो तू आज्ञा कर कि मेरे लिये लुबनान से देवदार काटें और
मेरे सेवक तेरे सेवकों के साथ होंगे और तेरे कहने के समान
तेरे सेवकों की बनी देऊंगा क्योंकि तू जानता है कि हम्में यह
गुण नहीं कि सैदानियों के समान लट्ठा काटें॥
७ और ऐसा हुआ कि जब हीराम ने सुलेमान की बातों को
सुना तब उस ने अत्यन्त मगन होके कहा कि आज परमेश्वर
का धन्यबाद होवे जिस ने अपने महत लोग पर दाऊद को
८ एक बुद्धिमान बेटा दिया। तब हीराम ने सुलेमान को कहला
भेजा कि जो जो बात के लिये तू ने मुझे कहलाया है मैं ने
समझा मैं देवदार के लट्ठे और सरो के लट्ठे के विषय में तेरी
९ समस्त इच्छा करूंगा। मेरे सेवक उन्हें लुबनान से समुद्र पर
लावेंगे और उन्हें बेड़ों में समुद्र पर से उस स्थान लों जहां तू
कहे पहुंचाऊंगा और वहां उलवा देऊंगा और तू पावेगा
और तू मेरी इच्छा के समान मेरे घराने के लिये भोजन
दे॥
१० सो हीराम ने सुलेमान को देवदार और सरो अपनी समस्त
११ बांछा के समान दिये। और सुलेमान ने हीराम को उस के
घराने के भोजन के लिये बरस बरस बीस सहस्र पैमान: गेहूं
और बीस पैमान: निराला तेल यों सुलेमान हीराम को बरस
१२ बरस देता रहा। और परमेश्वर ने सुलेमान को अपनी बाचा

के समान बुद्धि दिई और हीराम और सुलेमान में मिलाप था
और उन दोनों ने आपुस में बाचा बांधी ॥
१३ और सुलेमान राजा ने सब इसराएल के संतान से मनुष्यों
१४ का कर लिया और तीस सहस्र मनुष्य हुए। और बुह उन्हें
लुबनान को हर मास पारी पारी दस सहस्र भेजा किया
मास भर लुबनान में रहते थे और दो मास अपने घर में और
१५ अदुनीराम उन का प्रधान था। और सुलेमान के सत्तर सहस्र
बोझिये थे और अस्सी सहस्र पेड़ कटवैये पर्ब्बतों में थे।
१६ सुलेमान के श्रेष्ठ प्रधानों से अधिक जो कार्य्य पर थे तीन सहस्र
१७ तीन सौ थे जो कार्य्यकरवैयों से काम लेते थे। और राजा
ने आज्ञा किई और वे बड़े बड़े पत्थर और बहुमूल्य पत्थर
१८ और गढ़े हुए पत्थर लाये जिसतें घर की नेंव डालें। और
सुलेमान के थवई और हीराम के थवई और पत्थर के सुधरवैये
उन्हें काटते थे सो घर बनाने के लिये उन्हों ने लट्ठे और
पत्थर सुधारे ॥

छठवां पर्ब्ब ।

१ और मिस्र के देश से इसराएल के संतान के निकलने से
चार सौ अस्सी बरस पीछे इसराएल पर सुलेमान के राज्य के
चौथे बरस ज़ीफ़ के मास में जो दूसरा मास है ऐसा हुआ कि
उस ने परमेश्वर का घर बनाना आरंभ किया॥
२ और बुह घर जो सुलेमान राजा ने परमेश्वर के लिये बनाया
उस की लम्बाई साठ हाथ और चौड़ाई बीस हाथ और ऊंचाई
३ तीस हाथ थी। और उस घर के मंदिर के ओसारे की लम्बाई
बीस हाथ घर की चौड़ाई के समान थी और उस की चौड़ाई
४ घर के आगे दस हाथ थी। और घर के लिये उस ने झरोखे
५ बनाये बाहर की ओर से सकेत और भीतर चौड़े। और घर

की भीत से मिली हुई कोठरियां चारों ओर बनाईं अर्थात् घर
की भीतों के चारों ओर क्या मंदिर का क्या ईश्वरीय बाणी का
६ ओर उस ने चारों ओर कोठरियां बनाईं। और नीचे की
कोठरी पांच हाथ चौड़ी और बीच की छः हाथ चौड़ी और
तीसरी सात हाथ चौड़ी थी क्योंकि घर के बाहर बाहर उस ने
चारों ओर सकेत सकेत स्थान बनाये जिसतें लट्ठे घर की
७ भीतों में जमाये न जावें। और जब घर बन रहा था वहां
लाने से आगे पत्थर सुधारा हुआ था यहां लों कि न हथौड़ा
और न कुल्हाड़ी और न लोहे का कोई हथियार घर बनाने
८ में सुना गया। बीच की कोठरी का द्वार घर की दहिनी
अलंग रक्खा और वे घूमती सीढ़ी से बीच में और उस्से तीसरी
९ अटारी में चढ़ते थे। सो उस ने उस घर को बनाया और उसे
समाप्त किया और उस की छत देवदार के लट्ठे की पटरियों से
१० पाटी। और उस ने समस्त घर के आस पास पांच पांच हाथ
की ऊंची कोठरियां बनाईं और वे देवदार के लट्ठों से घर पर
थंभी हुई थीं॥
११　तब परमेश्वर का वचन यह कहते हुए सुलेमान पर उतरा।
१२ कि यदि तू मेरी बिधिन पर चलेगा और मेरे बिचारों को पूर्ण
करेगा और मेरी समस्त आज्ञाओं को पालन करके उन पर
चलेगा तो इस घर के बिषय में जो तू बनाता है मैं अपने
वचन को जो तेरे पिता दाऊद से कहा था तेरे साथ पूरा
१३ करूंगा। और मैं इसराएल के संतानों में बास करूंगा और
१४ अपने इसराएली लोगों को त्याग न करूंगा। सो सुलेमान ने
उस घर को बनाया और उसे समाप्त किया॥
१५　और उस ने घर की गच से लेके भीत से छत लों देवदार
काष्ठ के पटरे लगाये और उस ने भीतर की अलंग काष्ठ से
ढांप दिया और घर की गच को सरो की पटरियों से ढांपा।

१६ और उस ने घर की गच और भीतें देवदार के पटरों से घर
की अलंगों में बीस बीस हाथ की बनाईं और उस ने उस के
भीतर के लिये अर्थात् ईश्वरीय बाणी के लिये अर्थात् अत्यन्त
१७ पवित्र स्थान के लिये बनाये। और घर अर्थात् आगे का मंदिर
१८ चालीस हाथ था। और घर के भीतर देवदार की खोदी हुई
कली और खिले हुए फूल थे सब के सब देवदार के थे कोई
१९ पत्थर दिखाई न देता था। और घर के भीतर परमेश्वर के
नियम की मंजूषा रखने के लिये ईश्वरीय बाणी का स्थान सिद्ध
२० किया। और ईश्वरीय बाणी के आगे की ओर लम्बाई में बीस
हाथ और चौड़ाई में बीस हाथ और उस की ऊंचाई बीस हाथ
और उसे निर्मल सोने से मढ़ा और देवदार की बेदी को भी मढ़ा।
२१ और सुलेमान ने घर के भीतर भीतर निर्मल सोने से मढ़ा
और उस में ईश्वरीय बाणी के आगे सोने की सीकरों के लग
२२ एक आड़ बनाया और उस पर सोना मढ़ा। और सारे घर को
सोने से मढ़ा यहां लों कि समस्त घर बन गया और समस्त
बेदी को जो ईश्वरीय बाणी के लग थी सोने से मढ़ा॥

२३ और ईश्वरीय बाणी के भीतर जलपाई बृक्ष के दस दस हाथ
२४ ऊंचे दो करौबी बनाये। और करौबी का एक पंख पांच हाथ
का और दूसरा पंख पांच हाथ का एक के पंख के एक खूंट से
२५ लेके दूसरे पंख के खूंट लों दस हाथ थे। और दूसरा करौबी
दस हाथ का दोनों करौबियों को एक ही नाप और एक ही
२६ डौल का बनाया। एक करौबी की ऊंचाई दस हाथ और वैसी ही
२७ दूसरी करौबी की भी। और उस ने दोनों करौबियों को भीतर
के घर में रक्खा और करौबी अपने डैने फैलाये हुए थे यहां
लों कि एक का डैना एक भीत को छूता था और दूसरे करौबी
का डैना दूसरी भीत को छूता था और उन के डैने एक दूसरे को
२८ घर के बीच में छूते थे। और उस ने करौबियों को सोने से मढ़ा॥

२९ और घर की सारी भीतों को चारों ओर खोदे हुए करोबियों
की सूरतों से और खजूर पेड़ों से और खिले हुए फूलों से बाहर
३० भीतर खोदा। और घर की गच को बाहर भीतर सोने से
मढ़ा ॥

३१ और ईश्वरीय बाणी में पैठने के लिये उस ने जलपाई पेड़
के केवाड़े बनाये और सहोट और साह भीत के पांचवें भाग
३२ थे। और केवाड़े के पाट जलपाई काष्ठ के थे और उस ने
उन पर करोबियों को और खजूर पेड़ों को और खिले हुए
फूलों को खोदा और करोबियों और खजूर पेड़ों पर सोना
३३ मढ़ा। और वैसा उस ने मंदिर के द्वार के लिये जिस की
चौखट जलपाई काष्ठ की थी भीत को चौथा भाग बनाया।
३४ और उस के दो केवाड़े सरो काष्ठ से बनाये उन दोनों केवाड़ों
३५ के दो दो पाट दोहराए जाते थे। और उन पर करोबियों
और खजूर पेड़ और खिले हुए फूल खोदे और उन खोदे हुए
३६ कार्य्यों को सोने से मढ़ा। और उस ने भीतर के आंगन को
तीन पांती खोदे हुए पत्थर की बनाई और एक पांती देवदार
के काष्ठ की ॥

३७ चौथे बरस ज़ीफ़ के मास में परमेश्वर के मंदिर की नेव
३८ डाली गई। और ग्यारहवें बरस बुल के मास में जो आठवां
मास है घर उस की समस्त सामग्री समेत और उस के सारे
डौल के समान बन गया और उस के बनाने में सात बरस
लगे ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ परन्तु सुलेमान को अपना ही घर बनाने में तेरह बरस
२ लगा और जब वुह अपना सारा घर बना चुका। तो उस ने
लुबनान के बन का भी देवदार काष्ठ के खंभों की चार

पांती पर बनाया और खंभों पर देवदार काष्ठ के लट्ठे थे
और उस घर की लम्बाई सौ हाथ और चौड़ाई पचास हाथ
३ और ऊंचाई तीस हाथ। और उस की छत देवदार काष्ठ से
बनाई और कड़ियों को उस काष्ठ पर रक्खा जो पैंतालीस खंभों
४ के ऊपर था हर एक पांती में पंदरह पंदरह खंभे थे। और
खिड़कियों की तीन पांती थीं तीनों पांती आम्ने साम्ने थीं।
५ और समस्त द्वार और चौखट देखने में चौकोर थे और तीन
६ पांतियों में खिड़की के सन्मुख खिड़की थी। और उस ने खंभों
का एक ओसारा बनाया जिस की लम्बाई पचास हाथ और
चौड़ाई तीस हाथ और ओसारा उस के सन्मुख था और खंभे
७ और मोटा लट्ठा उन के सन्मुख। तब उस ने सिंहासन के
लिये एक ओसारा बनाया अर्थात् न्याय का ओसारा और उस
की एक अलंग दूसरी लों देवदार काष्ठ से पाटा॥
८ और उस के रहने के घर के ओसारे में वैसा ही कार्य्य का
एक दूसरा आंगन था और सुलेमान ने फ़िरऊन की बेटी के
लिये जिसे उस ने ब्याहा था इस ओसारे की नाईं एक घर
बनाया॥
९ उस की नेव सारे बहुमूल्य पत्थर से थी जो गढ़े और
आरे से चीरे गये थे और उसी रीति से घर के भीतर और
बाहर नेव से लेके छत लों और उसी भांति घर के बाहर
१० आंगन लों बनाया। और नेव बहुमूल्य बड़े बड़े पत्थरों की
११ थी दस दस और आठ आठ हाथ के पत्थर। और गढ़े हुए
पत्थरों के समान ऊपर भी बहुमूल्य पत्थरों का और देवदार
१२ काष्ठ का था। और चारों ओर के बड़े आंगन तीन पांती गढ़े
हुए पत्थर की और एक पांती देवदार लट्ठे की परमेश्वर के
घर के भीतर के आंगन के लिये और घर के ओसारे के लिये॥
१३ और सुलेमान राजा ने सूर से हीराम को बुला भेजा।

१४ वुह नफ़ताली की गोष्ठी की एक बिधवा स्त्री का बेटा
था और उस का बाप सूर का एक ठठेरा और पीतल के
समस्त कार्य्य में विद्या और ज्ञान से निपुण और परिपूर्ण था
और वुह सुलेमान पास आया और उस का समस्त कार्य्य
१५ किया। और उस ने पीतल के दो खंभे अठारह अठारह
हाथ के ढाले और बारह हाथ की डोरी उन की चारों ओर
१६ का नाप था। और उस ने खंभों के ऊपर धरने के लिये ढले
हुए पीतल के दो झाड़ बनाये हर एक की ऊंचाई पांच हाथ
१७ की। झाड़ों के लिये जो खंभों के ऊपर थे चौघरे कार्य्य के
और गुथी हुई सीकरें हर एक झाड़ के लिये सात सात
१८ बनाये। और उस ने खंभे और उन के मथाल के झाड़ों को
अनारों से ढांपने के लिये जाल कार्य्य के चारों ओर दो पांतियां
१९ बनाईं वैसा ही दूसरे झाड़ के लिये बनाया। और खंभे के
झाड़ों के ऊपर ओसारे में चार हाथ के सोसन फूल के कार्य्य।
२० और वैसा ही दोनों खंभों के झाड़ों के ऊपर जो जाल कार्य्य
के लग थे बीच के आम्ने साम्ने और दूसरे झाड़ पर चारों ओर
२१ पांती पांती दो सौ अनार थे। और उस ने मंदिर के ओसारे
में खंभे खड़े किये और उस ने दहिना खंभा खड़ा किया और
उस का नाम याक़ीन रक्खा और दूसरा खंभा बाईं ओर और उस
२२ का नाम बोअज़ रक्खा। और खंभों के ऊपर सोसन फूल का
कार्य्य सो खंभों का कार्य्य बन गया॥

२३ तब उस ने ढला हुआ एक समुद्र बनाया जिस का एक
कोर दूसरे कोर से दस हाथ का था वुह चारों ओर गोल था
और उस की ऊंचाई पांच हाथ और तीस हाथ की डोरी उस
२४ के चारों ओर जाती थी। और उस के कोर की चारों ओर
के नीचे हाथ भर में दस कलियां घेरीं जो समुद्र की चारों
२५ ओर घेरती थीं दो दो पांती में कलियां ढाली गईं। वुह

बारह बैलों पर धरा गया था तीन के मुंह उत्तर की ओर
और तीन के पश्चिम की ओर और तीन के दक्षिण की ओर
और तीन के पूरब की ओर और समुद्र उन सभों के ऊपर और
२६ उन के पुट्ठे भीतर की अलंग थे। और उस की मोटाई चार
अंगुल की और उस का कोर कटोरे के कोर की नाईं
सोसन के फूलों से बना हुआ था उस में दो सहस्र मन की
समाई थी॥
२७ और उस ने पीतल के दस आधार बनाये एक एक आधार
चार हाथ का लम्बा चार हाथ चौड़ा और तीन हाथ ऊंचा।
२८ और उन आधारों का कार्य्य ऐसा था उन के छोर थे और छोर
२९ कोरों के मध्य में थे। और कोरों के मध्य में छोर के ऊपर
सिंह बैल और करोबी थे और कोरों के ऊपर एक आधार था
और सिंहों और बैलों के नीचे कई एक अच्छे चोखे कार्य्य
३० बनाये। और हर एक आधार के लिये पीतल की चार चार
पहिया और पीतल के पच थे और उन के चार कोनों के लिये
नीचे के आधार थे और स्नानपात्र के नीचे हर एक साज की
३१ अलंग ढले हुए नीचे के आधार थे। और उस का मुंह भाड़
के भीतर और ऊपर हाथ भर का परन्तु उस का मुंह गोल
उस के आधार के कार्य्य की नाईं डेढ़ हाथ का था और उस
३२ के मुंह पर चित्रकारी और चौकोर गोट थी गोल नहीं। और
गोट के नीचे चार पहिया थीं और पहियों की धुरी आधार
में थी और हर एक पहिये की ऊंचाई डेढ़ हाथ की थी।
३३ और पहियों का काम रथ के पहियों के कार्य्य के समान उन
की धुरी और माभा और पुट्ठी और आरा सब ढले हुए थे।
३४ और हर एक आधार के चारों कोनों के नीचे के चार आधार
३५ थे और नीचे के आधार उसी आधार ही से थे। और आधार
के सिरे पर चारों ओर आधा हाथ ऊंचा और आधार के सिरे

३६ पर उस के कोर और उस के गोट एक ही थे। क्योंकि उस
के कोरों का पत्तर और उन के गोटों पर करोबी सिंह और
खजूर पेड़ हर एक के डौल और चारों ओर के साज के समान
३७ उस ने खोदा। इस डौल से उस ने दस आधार को बनाया
३८ और उन सब का नाप जोख और ढाल एक ही था। तब
उस ने पीतल के दस स्नानपात्र बनाये हर एक स्नानपात्र में मन
चालीस एक की समाई थी और हर एक स्नानपात्र चार हाथ
का था उन दसों आधारों में हर एक पर एक स्नानपात्र था।
३९ और उस ने पांच आधार दहिनी अलंग और पांच बाईं अलंग
रक्खे और उस ने समुद्र को पूरब ओर घर की दहिनी अलंग
दक्खिन के सन्मुख रक्खा॥
४० और हीराम ने पात्र और फावड़ियां और बासन बनाये
और हीराम ने परमेश्वर के घर के लिये सुलेमान के लिये समस्त
४१ कार्य्य समाप्त किया। दो खंभे और झाड़ के कटोरे जो दोनों
खंभों के मथाले पर थे और दोनों जालकार्य्य झाड़ों के कटोरों
४२ के ढांपने के लिये दोनों खंभों के मथाले पर थे। और दोनों
जालकार्य्य के लिये चार सो अनार अनारों की दो पांतियां
एक एक जालकार्य्य के लिये जिसतें खभों के ऊपर के झाड़ों
४३ के दोनों टोंक ढांपे जावें। और दस आधार और आधारों
४४ पर दस स्नानपात्र। और एक समुद्र और बारह बैल समुद्र के नीचे।
४५ और हांडियां और फावड़ियां और बासन और यह समस्त पात्र
जो हीराम ने सुलेमान राजा के लिये परमेश्वर के मंदिर के
४६ निमित्त बनाये आपे हुए पीतल के थे। राजा ने उन्हें यरदन
के चौगान में और सुक्कात और जरतान के मध्य भूमि की
४७ गहिराई में ढाला। और सुलेमान ने उन सब पात्रों को उन
की बहुताई के मारे बेतौल छोड़ा और उस पीतल की तौल
कधी जांची न गई॥

४८ और सुलेमान ने परमेश्वर के घर के लिये सब पात्र बनाये
अर्थात् सोने की बेदी और सोने का मंच जिस पर भेंट की रोटी
४९ रक्खी जाती थी। और चोखे सोने की दीअटें पांच दहिनी
और पांच बाईं अलंग और उस के फूल और दीये और चिमटे
५० सोने के ईश्वरीय वाणी के आगे। और कटोरे और कतरनियां
और बासन और चमचे और धूपदान निर्मल सोने के और
भीतर के अत्यन्त पवित्र स्थान के द्वारों के लिये और घर के
अर्थात् मंदिर के द्वारों के लिये सोने की चूलें बनाईं॥
५१ सो सब कार्य्य जो सुलेमान राजा ने परमेश्वर के घर के
लिये किये बन गये तब सुलेमान अपने पिता दाऊद की
समर्पण किई हुई बस्तें भीतर लाया अर्थात् चांदी सोना और
पात्र परमेश्वर के घर के भंडारों में रक्खा॥

आठवां पर्ब्ब।

१ तब सुलेमान ने इसराएल के प्राचीनों को और गोष्ठियों के
सारे प्रधानों को इसराएल के संतान के अध्यक्षों को अपने
पास यरूसलम में एकट्ठा किया जिसतें वे परमेश्वर की बाचा
की मंजूषा को दाऊद के नगर सेहून से लावें॥
२ तब इसराएल के सारे लोग सुलेमान राजा के पास जेवनार
३ में इथानिम मास में जो सातवां मास है एकट्ठे हुए। और
इसराएल के सारे प्राचीन आये और याजकों ने मंजूषा उठाई।
४ और परमेश्वर की मंजूषा को और मंडली के तंबू को और तंबू
में के समस्त पवित्र पात्रों को याजक और लावी उठा लाये।
५ और सुलेमान राजा ने और इसराएल की सारी मंडली ने जो
उस पास एकट्ठी हुई और उस के साथ मंजूषा के आगे थे भेड़
और बैल इतने बलि किये जिन का लेखा और गिनती बहुताई
६ के मारे न किई गई। और याजकों ने परमेश्वर की बाचा की

मंजूषा को लाके उस के स्थान में ईश्वर की बाचा के मंदिर के मध्य
७ अत्यंत पवित्र में करोबियों के डैनों के नीचे रक्खा। क्योंकि
करोबी अपने डैने मंजूषा पर फैलाये थे और करोबियों ने
८ मंजूषा को और उस के बहंगरों को ढांप लिया। और बहंगरों
के सारे पवित्र स्थान ईश्वरीय बाणी के आगे दिखाये जाने के
लिये उन्हों ने बहंगरों को निकाला इस लिये वे बाहर देखे
९ न जाते थे और वे आज लों वहां हैं। पत्थर की उन दो
पटियों को छोड़ जिन्हें मूसा ने उस में होरिब में रक्खा था
जहां परमेश्वर ने इसराएल के संतान से जब वे मिस्र के देश
से निकल आये थे बाचा बांधी थी मंजूषा में कुछ न था॥
१० और यों हुआ कि जब याजक पवित्र स्थान से बाहर आये
११ तब परमेश्वर का मंदिर मेघ से भर गया। यहां लों कि मेघ
के कारण याजक सेवा के लिये ठहर न सके क्योंकि परमेश्वर
के बिभव से परमेश्वर का मंदिर भर गया था॥
१२ तब सुलेमान ने कहा कि परमेश्वर ने कहा था कि मैं
१३ अंधकार मेघ में बास करूंगा। मैं ने निश्चय तेरे निवास के
लिये घर बनाया है तेरे सनातन के रहने के लिये एक स्थिर
१४ स्थान। तब राजा ने अपना मुंह फेरके इसराएल की सारी
मंडली को आशीष दिया और इसराएल की सारी मंडली खड़ी
१५ हुई। तब उस ने कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य
जिस ने मेरे पिता दाऊद से अपने मुंह से कहा और यह
१६ कहके अपने हाथ से पूरा किया है। जब से मैं अपने इसराएल
लोगों को मिस्र से निकाल लाया मैं ने सारे इसराएल की
गोष्ठियों में से किसी नगर को नहीं चुना कि घर बनावे जिसतें
मेरा नाम उस में होवे परन्तु मैं ने दाऊद को चुना कि मेरे
१७ इसराएल लोगों पर प्रधान होवे। और मेरे पिता दाऊद के
मन में था कि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के नाम के लिये

१८ एक घर बनावे। और परमेश्वर ने मेरे पिता दाऊद से कहा
कि मेरे नाम के लिये एक घर बनाना तेरे मन में था सो तू
१९ ने अच्छा किया कि तेरे मन में था। तिस पर भी तू मेरे
लिये घर न बनाना परन्तु तेरा बेटा जो तेरी कटि से निकलेगा
२० सो मेरे नाम के लिये घर बनावेगा। और परमेश्वर ने अपने
कहे हुए बचन को पूरा किया और मैं अपने पिता दाऊद के
स्थान में उठा हूं और परमेश्वर की बाचा के समान इसराएल
के सिंहासन पर बैठा हूं और इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के
२१ नाम का एक घर बनाया है। और मैं ने उस में मंजूषा के
लिये एक स्थान बनाया जिस में परमेश्वर की बाचा है जो
उस ने हमारे पितरों से किई जब वुह उन्हें मिस्र के देश से
निकाल लाया॥

२२ और सुलेमान ने परमेश्वर की बेदी के आगे इसराएल की
सारी मंडली के आगे खड़े होके अपने हाथ स्वर्ग की ओर
फैलाये॥

२३ और कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तेरे समान
कोई ईश्वर ऊपर स्वर्ग में अथवा नीचे पृथिवी में नहीं जो अपने
सेवकों के साथ जो तेरे आगे अपने सारे मन से चलते हैं
२४ बाचा और दया को रखता है। जिस ने अपने सेवक मेरे
पिता दाऊद से अपने कहे के समान रक्खी तू ने अपने मुंह
से भी कहा है और अपने हाथ से आज के दिन पूरा किया
२५ है। सो अब हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर अपने सेवक
मेरे पिता दाऊद के साथ पालन कर जो तू ने यह कहके प्रण
किया कि केवल यदि तेरे संतान अपनी चाल में चौकस होके
तेरे समान मेरे आगे चलें तो तेरे लिये इसराएल के सिंहासन
२६ पर बैठने को मेरी दृष्टि में पुरुष कट न जावेगा। और अब
हे इसराएल के ईश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं अपने उस

बचन को जो तू ने मेरे पिता अपने सेवक दाऊद से कहा
पूरा कर ॥
२७ परन्तु क्या सचमुच ईश्वर पृथिवी पर बास करेगा देख स्वर्ग
और स्वर्गों के स्वर्ग तेरी समाई नहीं रखते तो फिर क्या यह
२८ घर जो में ने बनाया है । हे परमेश्वर मेरे ईश्वर अपने सेवक
की प्रार्थना और उस की बिनती पर सुरत लगा और अपने
दास का गिड़गिड़ाना और प्रार्थना सुन जो तेरे सेवक ने आज
२९ के दिन तेरे आगे किई है । जिसतें रात दिन तेरी आंखें
इस स्थान की ओर खुली रहें उस स्थान की ओर जिस के
विषय में तू ने कहा है कि मेरा नाम वहां होगा जिसतें तू
उस प्रार्थना को सुने जो तेरा सेवक इस स्थान में करेगा ।
३० अपने सेवक की बिनती सुन और जब तेरे इसराएल लोग
इस स्थान में प्रार्थना करें तो अपने निवासस्थान स्वर्ग में से
सुन और सुनके क्षमा कर ॥
३१ यदि कोई पुरुष अपने परोसी का अपराध करे और वुह
उस्से किरिया लेने चाहे और इस घर में तेरी बेदी के आगे
३२ किरिया लाई जावे । तो तू स्वर्ग पर से सुन और कर और
अपने सेवकों का बिचार कर और दुष्ट को दोषी ठहराके उस
का पाप उसी के सिर पर ला और धर्मियों को निर्दोष ठहराके
उस धर्म्म के समान उसे प्रतिफल दे ॥
३३ और जब तेरे इसराएल लोग तेरे बिरोध पाप करने के
कारण अपने बैरियों के आगे मारे जावें और फिर तेरी ओर
फिरें और तेरे नाम को मान लेवें और प्रार्थना करें और इस
३४ घर की ओर तेरी बिनती करें । तो तू स्वर्ग में सुन और
अपने इसराएल लोगों के पाप को क्षमा कर और उन्हें उस
देश में जो तू ने उन के पितरों को दिया था फेर ला ॥
३५ जब तेरे बिरोध पाप करने के कारण से स्वर्ग बंद हो

जावे और मेंह न बरसे यदि वे इस स्थान की ओर प्रार्थना
करें और तेरे नाम को मान लेवें और अपने पाप से फिरें इस
३६ लिये कि तू ने उन्हें दुःख दिया। तो तू स्वर्ग में सुन और
अपने सेवकों और अपने इसराएल लोग के पाप को क्षमा कर
जिसतें उन्हें सच्चे मार्ग में जिन में उन्हें चलना उचित है
सिखावे और अपने देश पर जो तू ने अपने लोगों को अधिकार
के लिये दिया है मेंह बरसा॥
३७ यदि देश में अकाल पड़े और यदि मरी होवे और खेती
झुलस जावे और लेंढ़ा लगे अथवा टिड्डी अथवा यदि कीड़े
लगें यदि उन के बैरी उन के देश में उन के किसी नगरों में
३८ उन्हें घेरें और जो कुछ मरी अथवा रोग होवे। कोई मनुष्य
से अथवा तेरे समस्त इसराएल लोग से जो जन अपने ही
मन की बुराई को जाने और प्रार्थना और बिनती करे और
३९ अपने हाथ इस घर की ओर फैलावे। तब तू स्वर्ग पर से
अपने निवासस्थान से सुन और क्षमा कर और संपूर्ण कर
और हर एक जन को जिस के मन को तू जानता है उस की
चालों के तुल्य प्रतिफल दे क्योंकि केवल तू ही समस्त मनुष्य
४० के समस्त संतान के अंतःकरण को जानता है। जिसतें वे
जीवन भर उस देश में जो तू ने उन के पितरों को दिया है
तुझ से डरते रहें॥
४१ और उस परदेशी के विषय में जो तेरे इसराएल लोग में
४२ से नहीं है परन्तु तेरे नाम के कारण परदेश से आवे। क्योंकि
वे तेरा बड़ा नाम और तेरा बलवंत भुजा और तेरी फैली हुई
बांह को सुनेंगे और जब वुह आवे और इस घर की ओर प्रार्थना
४३ करे। तो स्वर्ग पर से अपने निवासस्थान से सुन और परदेशी
की समस्त यांचना के समान उसे पूरा कर जिसतें पृथिवी
के समस्त लोग तेरे नाम को जानें और तेरे इसराएल लोग

की नाईं तुझे डरें और जिसतें वे जानें कि तेरा नाम इस घर
पर जिसे मैं ने बनाया है पुकारा जाता है ॥
४४ यदि तेरे लोग अपने बैरी पर संग्राम के लिये निकलें जहां
कहीं तू उन्हें भेजे और परमेश्वर की प्रार्थना इस नगर की
ओर करें जिसे तू ने चुना है और इस घर की ओर जिसे मैं ने
४५ तेरे नाम के लिये बनाया है। तब तू स्वर्ग पर से उन की प्रार्थना
और उन की बिनती सुन और उन का पद स्थिर कर ॥
४६ यदि वे तेरे बिरुद्ध पाप करें क्योंकि कोई निष्पापी नहीं
और तू उन से क्रुद्ध होके बैरी को सौंप देवे यहां लों कि वे
४७ उन्हें अपने देश में दूर अथवा निकट ले जावें। जिस देश
में वे बंधुआई में पहुंचाये गये यदि वे फिरके सोचें और
पश्चात्ताप करें और उन के देश में जो उन्हें बंधुआई में ले
गये यह कहके बिनती करें कि हम ने पाप किया है और हम ने
४८ हठ किया है हम ने दुष्टता किई है। और अपने सारे मन
से और अपने सारे प्राण से अपने बैरियों के देश में जो उन्हें
बंधुआई में ले गये थे तेरी ओर फिरें और अपने देश की ओर
जो तू ने उन के पितरों को दिया और उस नगर की ओर
४९ जो मैं ने तेरे नाम के लिये बनाया तेरी प्रार्थना करें। तो
तू अपने निवासस्थान स्वर्ग में से उन की प्रार्थना और उन
५० की बिनती सुन और उन का पद स्थिर कर। और अपने
लोगों को जिन्हों ने तेरे बिरुद्ध पाप किया है क्षमा कर और
उन के सारे अपराधों को जो उन्हों ने तेरे बिरुद्ध अपराध
किया है क्षमा कर और जो उन्हें बंधुआई में ले गये हैं वे
५१ उन पर दया करें और उन पर दयाल होवें। इस लिये कि
जिन्हें तू मिस्र से अर्थात् लोहे की भट्ठी के मध्य में से निकाल
५२ लाया वे तेरे लोग और अधिकार हैं। जिसतें तेरे सेवक की
प्रार्थना पर तेरी आंखें खुली रहें और तेरे इसराएल लोगों की

बिनती पर हर बात के लिये जो वे तुझे पुकारते हैं तू सुने।
५३ क्योंकि हे परमेश्वर ईश्वर जब तू हमारे पितरों को मिस्र से
निकाल लाया जैसा तू ने अपने सेवक मूसा के द्वारा से कहा
था वैसा तू ने उन्हें समस्त पृथिवी के लोगों से अपने अधिकार
के लिये अलग किया॥
५४ और ऐसा हुआ कि जब सुलेमान परमेश्वर के आगे समस्त
प्रार्थना और यह बिनती कर चुका तो वुह परमेश्वर की वेदी
के आगे से अपने हाथ स्वर्ग की ओर फैलाने के साथ घुटना
टेकने से उठा॥
५५ और खड़ा होके यह कहके बड़े शब्द से इसराएल की
५६ सारी मंडली को आशीष दिई। कि परमेश्वर धन्य जिस ने
अपने बचन के समान अपने इसराएल लोगों को बिश्राम दिया
और उस ने जो अपने सेवक मूसा के द्वारा से प्रतिज्ञा किई
५७ थी उन में से एक बात भी न घटी। परमेश्वर हमारा ईश्वर
जिस रीति से हमारे पितरों के साथ था हमारे साथ होवे
५८ वुह हमें न छोड़े और हमें त्याग न करे। जिसतें वुह अपने
समस्त मार्गों में चलाने को और अपनी आज्ञाओं को और
बिधिन को और उस के बिचारों को जो उस ने हमारे पितरों
से आज्ञा किई थी पालन करने को हमारे मन अपनी ओर
५९ झुकावे। और मेरे ये बचन जिस के लिये मैं ने परमेश्वर के
आगे बिनती किई है सो रात दिन परमेश्वर हमारे ईश्वर के पास
होवें कि जैसा प्रयोजन होवे वैसा वुह अपने सेवक के पद को और
६० अपने इसराएल लोगों के पद को प्रति दिन स्थिर करे। जिसतें
पृथिवी के समस्त लोग जानें कि परमेश्वर को छोड़ और कोई
६१ ईश्वर नहीं है। इस लिये हमारे ईश्वर परमेश्वर की बिधि पर
चलने को और आज के दिन की नाईं उस की आज्ञा पालन
करने को हमारा अंतःकरण उस के आगे सिद्ध होवे॥

६२ और राजा और उस के साथ सारे इसराएल ने परमेश्वर के
६३ आगे बलिदान चढ़ाये। और सुलेमान ने परमेश्वर के लिये
बाईस सहस्र बैल और एक लाख बीस सहस्र भेड़ बकरी से
कुशल का बलि किया और राजा ने और सारे इसराएल के
समस्त संतानों ने इस रीति से परमेश्वर के मंदिर की स्थापना
६४ किई। उस दिन राजा ने परमेश्वर के मंदिर के आगे मध्य के
आंगन को पवित्र किया क्योंकि वहां उस ने बलिदान की भेंटें
और भोजन की भेंटें और कुशल की भेंटों की चिकनाई चढ़ाई
क्योंकि परमेश्वर के सन्मुख जो पीतल की वेदी है सो बलिदान
की भेंटों के और भोजन की भेंटों के और कुशल की भेंटों की
चिकनाई के लिये छोटी हुई॥
६५ तब सुलेमान ने और उस के साथ इसराएल के समस्त
लोगों ने हमात के पैठ से मिस्र की नदी लों बड़ी मंडली ने
सात दिन और सात दिन अर्थात् चौदह दिन पर्ब्ब किया।
६६ आठवें दिन उस ने उन लोगों को बिदा किया और उन्हों ने
राजा को धन्य माना और परमेश्वर ने जो अपने दास दाऊद
के कारण और अपने इसराएल लोगों के कारण समस्त भलाई
किई थी उस्से आनंदित और मगन होके अपने अपने डेरे
गये॥

नवां पर्ब्ब ।

१ और यों हुआ कि जब सुलेमान ने परमेश्वर के मंदिर और
राजा के भवन और सुलेमान ने जो समस्त इच्छा किई सो
२ बनाके समाप्त किया। तब परमेश्वर ने जैसा जिबऊन में
सुलेमान को दर्शन दिया था वैसा दोहराके उसे दर्शन दिया॥
३ और परमेश्वर ने उसे कहा कि जो तू ने मेरे आगे प्रार्थना
और बिनती किई है सो मैं ने सुनी है और जिस घर को तू

ने मेरे नाम को वहां नित्य स्थापन करने के लिये बनाया है मैं
ने उसे पवित्र किया है और मेरी आंखें और मेरा अंतःकरण
४ उस में नित्य रहेंगे। और यदि तू अपने पिता दाऊद के
समान मेरे आगे मन की खराई से और सच्चाई से चलेगा
जिसतें मेरी समस्त आज्ञा के समान करे और मेरी बिधि और
५ बिचार को पालन करेगा। तब मैं तेरे राज्य के सिंहासन को
इसराएल पर सदा के लिये स्थिर करूंगा जैसा मैं ने तेरे पिता
दाऊद से यह कहके बाचा बांधी और कहा कि तेरे बंश से
६ राज्य कधी न जावेगा। परन्तु यदि तुम मेरा पीछा करने से
किसी रीति से हटोगे अथवा तुम अथवा तुम्हारे बंश मेरी आज्ञाओं
और बिधिन को जो मैं ने तुम्हारे आगे रक्खीं पालन न करोगे
७ परन्तु जाके उपरी देवों की सेवा और दण्डवत करोगे। तब
मैं इसराएल को इस देश से जो मैं ने उन्हें दिया है उखाड़
डालूंगा और इस घर को जिसे मैं ने अपने नाम के लिये
पवित्र किया है अपनी दृष्टि से दूर करूंगा और इसराएल एक
८ कहावत और कहानी सारे लोगों में होगा। और हर एक
पथिक इस महत मंदिर से बिस्मित होके फुफकारी मारके
कहेगा कि परमेश्वर ने किस कारण इस देश से और इस घर
९ से ऐसा किया है। तब वे उत्तर देंगे इस कारण कि उन्हों
ने परमेश्वर अपने ईश्वर को छोड़ दिया जो उन के पितरों को
मिस्र से निकाल लाया और उपरी देवों को ग्रहण किया और
उन की दण्डवत और सेवा किई है इस लिये परमेश्वर उन
पर ये सब बुराई लाया॥

१० और यों हुआ कि बीस बरस के अंत में जब सुलेमान
दोनों घरों को अर्थात् परमेश्वर का घर और राजा का भवन
११ बना चुका। सूर के राजा हीराम ने सुलेमान की समस्त इच्छा
के समान उसे देवदार और सरो के बृक्ष और सोना पहुंचाया

था तब सुलेमान राजा ने हीराम को जलील के देश में बीस
१२ नगर दिये । और हीराम सूर से उन नगरों को जो सुलेमान
ने उसे दिये थे देखने को आया और वे नगर उस की दृष्टि
१३ में ठीक न थे । और उस ने उसे कहा कि हे भाई कैसे नगर
हैं जो आप ने मुझे दिये हैं और उस ने उन का नाम काबुल
१४ देश रक्खा । और हीराम ने छः कोड़ी तोड़े सोना राजा कने
भेजे ॥

१५ और सुलेमान राजा के कर ठहराने का यह कारण था
कि परमेश्वर के घर और अपने भवन और मिल्लो और यरूसलम
१६ की भीत और हसूर और मजिद्दो और जज़र बनावे । मिस्र
का राजा फ़िरऊन चढ़ गया था और जज़र को लेके उसे आग से
फूंक दिया और उस नगर के बासी कनआनियों को घात किया
और अपनी बेटी को सुलेमान की पत्नी होने के लिये उसे
१७ दिया । इस लिये सुलेमान ने जज़र और नीचे के बैतहूरून
१८ को बनाया । और देश के बन में बालात और तदमूर को ।
१९ और सुलेमान के समस्त भंडार के नगर और उस के रथों के नगर
और घोढ़चढ़ों के नगर के लिये और सुलेमान की बांछा जो
उस ने बांछा किई थी यरूसलम और लुबनान में और अपने
राज्य के सारे देश में बनाये ॥

२० सारे लोग जो अमूरियों हित्तियों फरज्ज़ियों हवियों और
यबूसियों से बच रहे थे जो इसराएल के संतान न थे ।
२१ उन के संतान जो देश में उन के पीछे बचे रहे जिन्हें इसराएल
के संतान सर्बथा मिटा न सके उन्हों से सुलेमान ने आज के
२२ दिन लों दासत्व की सेवा का कर लिया । परन्तु इसराएल के
संतानों में से किसी को सुलेमान ने दास न बनाया परन्तु वे
योद्धा और उस के सेवक और उस के अध्यक्ष और उस के सेनापति
२३ और उस के सारथी और उस के घोड़चढ़े थे । सुलेमान के

कार्य्यों पर पांच सो पचास श्रेष्ठ प्रधान थे जो बनिहारों पर
आज्ञाकारी थे ॥
२४ परन्तु फिरऊन की कन्या दाऊद के नगर से निकलके अपने
घर में आई जो सुलेमान ने उस के लिये बनाया वहां उस ने
मिल्लो को बनाया ॥
२५ और जो यज्ञबेदी सुलेमान ने परमेश्वर के कारण बनाई थी
उस पर बरस में तीन बार बलिदान की भेंटें और कुशल की
भेंटें चढ़ाई थीं और उस ने उस पर परमेश्वर के आगे सुगंध
जलाया सो वुह उस घर को बना चुका ॥
२६ और सुलेमान राजा ने अदूम के देश में लाल समुद्र के
तीर पर असयूनजब्र में जो ईलूत के पास है जहाजों की
२७ बहीर बनाई। और हीराम ने सुलेमान के सेवकों के साथ
उसी बहीर में अपने सेवक मल्लाहों को जो समुद्र के जानकार
२८ थे भेजे। और वे ओफ़ीर को गये और वहां से चार सो बीस
तोड़े सोना लेके राजा सुलेमान पास आये ॥

दसवां पर्ब्ब।

१ और जब सिबा की रानी ने परमेश्वर के नाम के विषय में
सुलेमान का यश सुना तो वुह गूढ़ प्रश्नों से उस की परीक्षा
२ लेने आई। और वुह बहुत से लोगों के और सुगंध द्रब्य लदे
हुए ऊंट और बहुत सोना और मणि के साथ बड़ी भीड़ से
यरूसलम में आई और उस ने सुलेमान पास आके सब जो
३ उस के मन में था उस्से पूछा। और सुलेमान ने उस के
समस्त प्रश्नों का उत्तर दिया राजा से कोई वस्तु छिपी न थी
४ जो उस ने उसे न बताया। और जब सिबा की रानी ने
सुलेमान की समस्त बुद्धि को और उस घर को जो उस ने
५ बनाया था। और उस के मंच के भोजन को और उस के

सेवकों का बैठना और उस के दासों का खड़ा होना और उन का
पहिरावा और उस के कटोरे के देवैयों और उस का चढ़ावा
जो वुह लेके परमेश्वर के मंदिर को जाता था देखा तब वुह
६ मूर्छित हो गई। और उस ने राजा से कहा कि आप की
कहावत और बुद्धि जो मैं ने अपने ही देश में सुनी थी सो
७ सत्य समाचार था। तिस पर भी जब लों मैं ने अपनी आंखों
से न देखा तब लों उन बातों की प्रतीति न किई और देखिये
कि आधा मुझे न कहा गया था तू ने बुद्धि और भलाई उस
८ यश से जो मैं ने सुनी अधिक बढ़ाई। धन्य तेरे जन धन्य ये
तेरे सेवक जो नित तेरे आगे खड़े होके तेरा ज्ञान सुनते हैं।
९ परमेश्वर तेरा ईश्वर धन्य जिस ने तुझ से प्रसन्न होके इसराएल
के सिंहासन पर तुझे बैठाया इस कारण कि परमेश्वर ने
इसराएल से प्रीति रक्खी इस लिये उस ने तुझे न्याय और
१० धर्म्म के लिये राजा किया। और उस ने एक सौ बीस तोड़े
सोना और अति बहुत सुगंध द्रव्य और मणि राजा को दिये
और इन के समान जो सिबा की रानी ने सुगंध द्रव्य सुलेमान
राजा को बहुताई से दिया ऐसा कभी न आया॥

११ और हीराम की बहीर भी जो आफ़ीर से सोना लाये थे
१२ और आफ़ीर से चंदन के बहुत बृक्ष और मणि लाये। और
राजा ने परमेश्वर के मंदिर के लिये और अपने भवन के लिये
चंदन बृक्ष के खंभे बनवाये और गायकों के लिये बीणा और
खंजड़ी बनवाई और चंदन के ऐसे बृक्ष न कभी आये न आज
१३ लों देखे गये। और सुलेमान राजा ने सिबा की रानी को उस
की समस्त बांछा जो उस ने मांगी उसे दिई उस के उपरांत
जो सुलेमान राजा ने राजकीय दान से उसे दिया था और वुह
अपने सेवकों समेत अपने ही देश को फिर गई॥

१४ और सोने की तौल जो सुलेमान के पास एक बरस में

१५ आती थी सो छ: सो छियासठ तोड़े थी। उस से अधिक जो
ब्योपारियों और सुगंध द्रव्य के ब्योपारियों और अरब के समस्त
राजाओं और पृथिवी के अध्यक्षों से पहुंचाया जाता था॥
१६ और सुलेमान राजा ने सोना गढ़वाके दो सो ढालें बनवाईं
हर एक ढाल में सवा पांच सो मोहर के लग भग लगा।
१७ और सोना गढ़वाके तीन सो ढालें बनवाईं एक एक ढाल डेढ़
डेढ़ सेर सोने की थी सो राजा ने उन्हें लुबनान के बन के घर
में रक्खा॥
१८ और राजा ने हाथी दांत का एक बड़ा सिंहासन बनवाके
१९ उसे अत्युत्तम सोने से मढ़वाया। उस सिंहासन की छ: सीढ़ी
और सिंहासन के ऊपर पीछे की ओर गोल था और आसन की
दोनों ओर टेक था और दोनों हाथों की अलंग दो सिंह खड़े
२० थे। और उन छ: सीढ़ियों के ऊपर दोनों अलंग सिंह खड़े थे
२१ किसी राज्य में ऐसा न बना था। और सुलेमान के समस्त
पीने के पाच सोने के थे लुबनान के बन के घर के समस्त
पाच चोखे सोने के थे एक भी रूपे का न था सुलेमान के
२२ समय में उस की कुछ गिनती न थी। क्योंकि हीराम के
बहीरों के साथ राजा के तरसीसी बहीर समुद्र में थे और
तरसीस के बहीर तीन तीन बरस में एक बार सोना और रूपा
और हाथी दांत और बंदर और मोर लाते थे॥
२३ सो सुलेमान राजा धन और बुद्धि में पृथिवी के सारे
२४ राजाओं से अधिक था। और ईश्वर ने सुलेमान के अंत:करण
में जो ज्ञान दिया था उसे सुन्ने के लिये सारी पृथिवी उस के
२५ दर्शन की बांछा करती थी। और हर एक जन बरस बरस
अपनी अपनी भेंट लाया अर्थात् रूपे और सोने के पाच और
पहिरावा और हथियार और सुगंध द्रव्य और घोड़े और
खच्चर॥

२६ और सुलेमान ने रथ और घोड़चढ़े एकट्ठे किये और उस
के पास चौदह सौ रथ और बारह सहस्र घोड़चढ़े थे जिन्हें
उस ने रथों के नगरों में और राजा के संग यरूसलम में
रक्खा ॥
२७ और राजा ने यरूसलम में चांदी को पत्थरों के तुल्य और
२८ देवदार बहुताई में चौगान के गूलर पेड़ों के समान किया। और
सुलेमान के पास घोड़े मिस्र से लाये गये थे और राजा के
२९ बेपारी भाव से लाते थे। और एक रथ छः सौ टुकड़े चांदी
का मिस्र से निकलता और ऊपर आता था और एक घोड़ा डेढ़
सौ को और हित्ती के सारे राजाओं के लिये और अराम के
राजाओं के लिये उन के द्वारा से ऐसा ही लाते थे ॥

ग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ परन्तु सुलेमान राजा ने फ़िरऊन की बेटी को छोड़ बहुत
उपरी स्त्रियों से प्रीति किई अर्थात् मोअबी अम्मूनी अदूमी
२ सैदूनी और हित्ती की स्त्रियों से। उन जातिगणों से जिन के
बिषय में परमेश्वर ने इसराएल के संतान को आज्ञा किई थी
कि तुम उन के पास मत जाओ और न वे तुम्हारे पास आवें
निश्चय वे तुम्हारे मन को अपने देवों की ओर फिरावेंगी पर
३ सुलेमान प्रीति से उन्हीं से पिलचा रहा। और उस की सात
सौ राजकुमारी पत्नियां और तीन सौ सहेलियां थीं और उस
४ की पत्नियों ने उस के मन को फेर दिया। और ऐसा हुआ
कि जब सुलेमान बृद्ध हुआ तब उस की पत्नियों ने उस के
मन को भिन्न देवों की ओर फेर दिया और उस का मन अपने
ईश्वर परमेश्वर की ओर अपने पिता दाऊद के मन के समान
५ सिद्ध न था। क्योंकि सुलेमान ने सैदानियों के देवता इसतारात
६ का और अम्मूनी के घिनित मिलकूम का पीछा पकड़ा। और

सुलेमान ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और उस ने
परिपूर्णता से अपने पिता दाऊद के समान परमेश्वर का पीछा
७ न पकड़ा। तब सुलेमान ने यरूसलम के सन्मुख की पहाड़ी
पर मोआबियों की घिनित कमूस के लिये और अम्मून के संतानों
८ की घिनित मालक के लिये ऊंचा स्थान बनाया। और
इसी रीति से अपनी सारी उपरी पत्रियों के लिये जो अपने
देवतों के लिये धूप जलाती और बलि करती थीं उस ने
बनाया॥

९ और परमेश्वर सुलेमान पर इस कारण क्रुद्ध हुआ कि
इसराएल के ईश्वर परमेश्वर से जिस ने उसे दोबार दर्शन दिया
१० था उस का मन फिर गया। और उसे इस विषय में आज्ञा
किई थी कि वुह आन देवों का पीछा न पकड़े परन्तु उस ने
११ परमेश्वर की आज्ञा को पालन न किया। सो परमेश्वर ने
सुलेमान से कहा इस कारण कि तुझ से यह हुआ है और
तू ने मेरे नियम और मेरी विधिन को जो मैं ने तुझे आज्ञा
किई पालन नहीं किया है निश्चय मैं राज्य तुझ से फाड़ूंगा
१२ और तेरे सेवक को देऊंगा। तथापि तेरे जीते जी तेरे पिता
दाऊद के कारण से ऐसा न करूंगा परन्तु तेरे बेटे के हाथ
१३ से उसे फाड़ूंगा। तथापि मैं सारा राज्य न फाड़ लेऊंगा परन्तु
अपने सेवक दाऊद के कारण और अपने चुने हुए यरूसलम
के लिये तेरे बेटे को एक गोष्ठी देऊंगा॥

१४ तब परमेश्वर ने सुलेमान के एक बैरी को उभारा अर्थात्
अदूमी हदद को वुह अदूम में राजाओं के बंश से था।
१५ क्योंकि जब दाऊद अदूम में था और सेनापति यूअब अदूम
१६ के समस्त पुरुष को घात करके उन्हें गाड़ने गया। क्योंकि
यूअब छः मास लों समस्त इसराएलियों के संग वहीं रहा
यहां लों कि उस ने अदूम में एक पुरुष को जीता न छोड़ा।

१७ तब हदद अपने पिता के कई एक अटूमी सेवकों के साथ
मिस्र को भाग गया और तब वुह छोटा बालक था ॥
१८ तब वे मिदयान से निकलके फ़ारान में आये और फ़ारान
से लोगों को साथ लेके मिस्र में मिस्र के राजा फ़िरऊन पास
पहुंचे जिस ने उसे घर दिया और उस के लिये भोजन ठहराया
१९ और उसे भूमि दिई । और हदद ने फ़िरऊन की दृष्टि में
बड़ा अनुग्रह पाया यहां लों कि उस ने अपनी पत्नी तिहफ़निहीस
२० रानी की बहिन उसी को बियाह दिई । और तिहफ़निहीस
की बहिन उस के लिये जनूबत जनी जिस का दूध तिहफ़निहीस
ने फ़िरऊन के घर में छुड़ाया और जनूबत फ़िरऊन के बेटों
के साथ फ़िरऊन के घराने में रहता था ॥
२१ और जब हदद ने मिस्र में सुना कि दाऊद ने अपने
पितरों में शयन किया और सेनापति यूअब मर गया तब उस
ने फ़िरऊन से कहा कि मुझे बिदा कीजिये कि मैं अपने ही
२२ देश को जाऊं । तब फ़िरऊन ने उसे कहा कि तुझे मेरे पास
कौन सी घटती है कि तू अपने ही देश को जाने चाहता है
और उस ने उत्तर दिया कुछ नहीं तथापि मुझे किसी रीति से
जाने दीजिये ॥
२३ फिर ईश्वर ने उस के लिये बैरी खड़ा किया अर्थात् इलियदः
के बेटे रज़ून को जो सूबः के राजा अपने स्वामी हददअज़र
२४ पास से भागा था। और जब दाऊद ने उन्हें घात किया तब उस
ने अपने पास लोगों को एकट्ठा किया और एक जथा पर प्रधान
हुआ और दमिश्क में जाके बास किया और दमिश्क में राज्य
२५ किय । और हदद की बुराई से अधिक सुलेमान के जीवन
भर वुह इसराएल का बैरी था और वुह इसराएल से घिन
रखता था और अराम पर राज्य करता था ॥
२६ और सरीदः के एक इफ़राती नबात के बेटे यरुबिआम ने

जो सुलेमान का सेवक जिस की माता का नाम सरूअः जो
२७ बिधवा थी उसी ने राजा के बिरोध हाथ उठाया। और राजा के
बिरोध हाथ उठाने का यह कारण था कि सुलेमान ने मिल्लो
को बनाया और अपने बाप दाऊद के नगर के दरारों को बंद
२८ किया। और यरुबिआम अति बलवान बीर था और उस
तरुण को फुरतीला देखके सुलेमान ने उसे यूसुफ़ के घराने पर
प्रधान किया॥

२९ और उस समय में ऐसा हुआ कि जब यरुबिआम यरूसलम
से बाहर गया तब शैलूनी अख़ियाह भविष्यद्वक्ता ने उसे मार्ग में
पाया और वुह एक नया वस्त्र पहिने था और केवल ये दोनों
३० चौगान में थे। तब अख़ियाह ने उस पर के नये वस्त्र को
३१ पकड़ा और फाड़के बारह टुकड़े किये। और उस ने यरुबिआम
को कहा कि दस टुकड़े तू ले क्योंकि इसराएल का ईश्वर परमेश्वर
यों कहता है कि देख मैं सुलेमान के हाथ से राज्य फाड़ूंगा
३२ और दस गोष्ठियां तुझे देऊंगा। परन्तु मेरे सेवक दाऊद के
कारण और यरूसलम नगर के कारण जिसे मैं ने इसराएल
की समस्त गोष्ठियों में से चुन लिया वुह एक गोष्ठी पावेगा।
३३ इस कारण कि उन्हों ने मुझे त्यागके सैदानियों के देवता
इसतारात की और मोअबियों के देव कमुस की और अम्मून
के संतान के देव मिलकूम की पूजा किई है और अपने पिता
दाऊद की नाईं मेरी दृष्टि में जो भला है मेरे मार्गों में नहीं
चला और मेरी बिधि और मेरे बिचारों को पालन नहीं किया।
३४ तथापि मैं समस्त राज्य को उस के हाथ से निकाल न लेऊंगा
परन्तु मैं अपने सेवक दाऊद के कारण जिसे मैं ने इस कारण
चुना कि उस ने मेरी आज्ञा और बिधिन को पालन किया उस के
३५ जीवन भर में उस को राजा कर रक्खूंगा। परन्तु उस के बेटे
के हाथ से मैं राज्य लेऊंगा और दस गोष्ठी तुझे देऊंगा।

३६ और मैं उस के बेटे को एक गोष्ठी देऊंगा जिसतें यरूसलम
नगर में जिसे मैं ने अपने नाम के लिये चुना है मेरा दास
३७ दाऊद एक दीपक रक्खा करे। और मैं तुझे लेऊंगा और तू
अपने मन की समस्त इच्छा के समान राज्य करेगा और इसराएल
३८ का राजा होगा। और ऐसा होगा कि यदि तू मेरी समस्त
आज्ञाओं को सुनेगा और मेरे मार्गों पर चलेगा और जिस रीति से
मेरा दास दाऊद करता था वैसा मेरी बिधि और आज्ञा पालने के
लिये मेरी दृष्टि में भलाई करेगा तो मैं तेरे साथ होऊंगा और
तेरे लिये एक दृढ़ घर बनाऊंगा जैसा मैं ने दाऊद के लिये
३९ बनाया और इसराएल को तुझे देऊंगा। और इस लिये मैं
४० दाऊद के बंश को दुःख देऊंगा परन्तु सदा लों नहीं। इस
लिये सुलेमान ने यरुबिआम को बधन करने चाहा तब
यरुबिआम उठा और भागके मिस्र के राजा शिशाक के पास
मिस्र में गया और सुलेमान के मरने लों वहीं रहा॥

४१ और सुलेमान का रहा हुआ कार्य्य और सब जो उस ने
किया और उस की बुद्धि क्या सुलेमान की क्रिया की पुस्तक
४२ में नहीं लिखा है। और यरूसलम में सारे इसराएलियों पर
४३ सुलेमान के राज्य के दिन चालीस बरस थे। और सुलेमान ने
अपने पितरों के संग शयन किया और अपने पिता दाऊद के
नगर में गाड़ा गया और उस के बेटे रहबिआम ने उस की
संती राज्य किया॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ और रहबिआम सिकम को गया क्योंकि समस्त इसराएल
सिकम में आये कि उसे राजा बनावें॥

२ और ऐसा हुआ कि जब नबात के बेटे यरुबिआम ने जो
अब लों मिस्र में था यह सुना क्योंकि वुह सुलेमान राजा के

३ आगे से भागा था और मिस्र में जा रहा था। तब उन्हों ने
भेजके उसे बुलवाया और यरूबिआम और इसराएल की सारी
४ मंडली आये और यह कहके रहबिआम से बोले। कि तेरे पिता
ने हमारे जूए को कठिन किया इस लिये अब तू अपने पिता
की कठिन सेवा को और उस के भारी जूए को जो उस ने हम
५ पर रक्खा हलका कर और हम तेरी सेवा करेंगे। तब उस ने
उन्हें कहा तीन दिन लों चले जाओ तब मुझ पास फिर आओ
और लोग चले गये॥

६ तब रहबिआम राजा ने पुरनियों से जो उस के पिता
सुलेमान के जीते जी उस के आगे होते थे परामर्श किया
और कहा कि तुम्हारा क्या मंत्र है मैं इन लोगों को क्या
७ उत्तर देऊं। और वे उसे कहके बोले कि यदि आज के दिन
तू इन लोगों का सेवक होके उन की सेवा करेगा और उत्तर
देके उन्हें अच्छी बात कहेगा तो वे सर्वदा तेरे सेवक हो
रहेंगे॥

८ परन्तु उस ने प्राचीनों के मंत्र को त्यागके उन यूवा पुरुषों
के संग जो उस के साथ साथ बढ़े थे और उस के आगे खड़े
९ होते थे परामर्श किया और उन से कहा। कि ये लोग मुझ
से यह कहके बोले और उस ने उन्हें कहा कि तेरे पिता ने
जो जूआ हम पर रक्खा है उसे कुछ हलका कीजिये तुम क्या
१० मंत्र देते हो मैं उन्हें क्या उत्तर देऊं। तब उन यूवा पुरुषों
ने जो उस के साथ साथ बढ़े थे उस्से कहके बोले कि जिन
लोगों ने तुझ से यह कहा है कि तेरे पिता ने हमारे जूए
को भारी किया है परन्तु तू हमारे लिये उसे हलका कर तू
उन्हें यों कहियो कि मेरी छिंगुली मेरे पिता की कटि से अधिक
११ मोटी होगी। और जैसा कि मेरे पिता ने तुम पर भारी
जूआ रक्खा था मैं तुम्हारे जूए को बढ़ाऊंगा मेरे पिता ने

कोड़े से तुम्हें ताड़ना किई परन्तु मैं तुम्हें बिच्छुओं से ताड़ना
करूंगा ॥
१२ सो जैसा राजा ने ठहराके कहा था कि तीसरे दिन फेर
मेरे पास आना वैसा ही यरुबिआम और सारे लोग तीसरे दिन
१३ रहबिआम के पास आये । तब राजा ने उन लोगों के कठोरता
से उत्तर दिया और जो मंच प्राचीनों ने दिया था उसे त्याग
१४ किया । और यूवा पुरुषों के मंत्र के समान उन्हें कहा कि मेरे
पिता ने तुम पर भारी जूआ रक्खा था परन्तु मैं उस जूए को
और भारी करूंगा मेरे पिता ने तुम्हें कोड़ों से दंड दिया था
परन्तु मैं तुम्हें बिच्छुओं से ताड़ना करूंगा ॥
१५ सो राजा ने उन लोगों की बात न सुनी क्योंकि यह ईश्वर
की ओर से था जिसतें वुह अपने बचन को जो परमेश्वर ने
शैलूनी अख़ियाह की ओर से नबात के बेटे यरुबिआम से
१६ कहा पुरा करे । सो जब सारे इसराएलियों ने देखा कि राजा
ने उन लोगों की न सुनी तब लोगों ने यह कहके राजा को
उत्तर दिया कि दाऊद में हमारा क्या भाग है और यस्सी के
बेटे के साथ हमारा कुछ अधिकार नहीं है हे इसराएल अब
अपने अपने तंबुओं को जाओ हे दाऊद अपने घर को देख सो
१७ इसराएल अपने अपने तंबुओं को चले गये । परन्तु इसराएल के
संतान जो यहूदाह के नगरों में बस्ते थे रहबिआम ने उन पर
राज्य किया ॥
१८ तब रहबिआम राजा ने अदूराम को जो कर का स्वामी
था भेजा और समस्त इसराएलियों ने यहां लों उसे पत्थरों
से पथरवाह किया कि वुह मर गया इस लिये रहबिआम
राजा आप को दृढ़ करके यरूसलम को भागने के लिये रथ
१९ पर चढ़ा । सो इसराएल आज के दिन लों दाऊद के घराने से
फिर गये ॥

२० और ऐसा हुआ कि जब सारे इसराएलियों ने सुना कि
यरुबिआम फिर आया तो उन्हों ने भेजके उसे मंडली में
बुलवाया और उन्हों ने उसे सारे इसराएलियों पर राजा किया
केवल यहूदाह की गोष्ठी को छोड़ कोई दाऊद के घराने की
ओर न हुआ ॥
२१ और जब रहबिआम यरूसलम में पहुंचा तो उस ने
यहूदाह के सारे घराने को बिनयमीन की गोष्ठी समेत जो
सब एक लाख अस्सी सहस्र चुने हुए जन लड़ाक थे एकट्ठा
किया कि इसराएल के घराने से लड़के राज्य को सुलेमान के
२२ बेटे रहबिआम की ओर लावें। परन्तु ईश्वर के जन शमाया
२३ के पास ईश्वर का बचन यह कहके पहुंचा। कि यहूदाह के
राजा सुलेमान के बेटे रहबिआम को और सारे यहूदाह और
बिनयमीन के घराने को और उबरे हुए लोगों को कहके बोल।
२४ कि परमेश्वर यों कहता है कि चढ़ाई न करो और अपने भाइयों
इसराएल के संतान से लड़ाई न करो परन्तु हर एक तुम्में से
अपने अपने घर को फिरे क्योंकि यह बात मेरी ओर से है
सो उन्हों ने परमेश्वर की आज्ञा मानी और परमेश्वर के बचन
के समान उलटे फिरे ॥
२५ तब यरुबिआम इफ़रायम पहाड़ में सिकम को बनाके उस
में बसा उस के पीछे वहां से निकलके फ़नुएल को बनाया।
२६ तब यरुबिआम ने अपने मन में कहा कि अब राज्य दाऊद
२७ के घराने को फिर जावेगा। यदि ये लोग बलि चढ़ाने के
लिये परमेश्वर के मंदिर में यरूसलम को चढ़ेंगे तब इन लोगों
का मन अपने प्रभु यहूदाह के राजा रहबिआम की ओर
फिरेगा और वे मुझे मार लेंगे और यहूदाह के राजा रहबिआम
२८ की ओर फिर जावेंगे। इस लिये राजा ने परामर्श करके सोने
की दो बछिया बनवाईं और उन्हें कहा कि तुम्हारे लिये अति

क्रोश है कि तुम यरूसलम को जाओ हे इसराएल अपने देवों
२८ को देख जो तुझे मिस्र की भूमि से निकाल लाये। और उस
ने एक को बेतएल में और दूसरे को दान में स्थापित किया।
३० और यह बात एक पाप हुई क्योंकि लोग दान में जाके एक
३१ की पूजा करते थे। और उस ने ऊंचे स्थानों में एक घर
बनाया और नीच लोगों में से याजक बनाये जो लावी के बेटों
३२ में से न थे। और यरुबिआम ने यहूदाह के एक पर्ब्ब की
नाई आठवें मास की पंदरहवीं तिथि में पर्ब्ब ठहराया और
बेदी पर बलिदान चढ़ाया ऐसा ही उस ने उन बछियों के
आगे जो उस ने बनाई थीं बेतएल में किया और उस ने उन
३३ ऊंचे स्थानों के याजकों को जिन्हें उस ने बनाया था रक्खा। सो
आठवें मास की पंदरहवीं तिथि को अर्थात् उस मास में जो
उस ने अपने मन में रोपा था बेतएल में अपनी बनाई हुई
बेदी पर बलिदान चढ़ाया और इसराएल के संतानों के लिये
एक पर्ब्ब ठहराया और उस ने उस बेदी पर चढ़ाया और
धूप जलाया॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ और देखो कि परमेश्वर के बचन से ईश्वर का एक जन
यहूदाह से बेतएल में आया और यरुबिआम बेदी के पास
२ धूप जलाने के लिये खड़ा था। और उस ने परमेश्वर के बचन
से बेदी के बिरुद्ध में पुकारके कहा कि हे बेदी हे बेदी परमेश्वर
यों कहता है कि देख यूसियाह नाम एक बालक दाऊद के
घराने में उत्पन्न होगा और वुह ऊंचे स्थानों के याजकों को
जो तुझ पर धूप जलाते हैं तुझी पर चढ़ावेगा और मनुष्यों
३ के हाड़ तुझ पर जलाये जावेंगे। और उस ने उसी दिन यह
कहके एक पता दिया कि परमेश्वर ने यह कहके यह पता

दिया है कि देख वेदी फट जावेगी और उस पर की राख
उंडेली जावेगी ॥
४ और ऐसा हुआ कि जब यरुबिआम राजा ने ईश्वर के जन
का कहना सुना जिस ने वेतएल की वेदी के विरुद्ध पुकारा
था ता उस ने वेदी पर से अपना हाथ बढ़ाके कहा कि उसे
पकड़ लेओ सो उस का हाथ जो उस ने उस पर बढ़ाया था
५ झुरा गया ऐसा कि वुह उसे फिर सकोड़ न सका। और उस
लक्षण के समान जो ईश्वर के उस जन ने परमेश्वर के बचन
से दिया था वेदी फट गई और राख वेदी पर से उंडेली गई।
६ तब राजा ने ईश्वर के उस जन को कहा कि अब अपने ईश्वर
परमेश्वर से बिनती करिये और मेरे लिये प्रार्थना करिये कि
मेरा हाथ चंगा किया जावे तब ईश्वर के जन ने परमेश्वर के
सुख बिनती किई और राजा का हाथ चंगा किया गया और
७ आगे की नाईं हो गया। तब राजा ने ईश्वर के उस जन से
कहा कि मेरे साथ घर में चलके सुस्ताइये और मैं तुझे प्रतिफल
८ देऊंगा। परन्तु ईश्वर के जन ने राजा से कहा कि यदि तू
अपना आधा घर मुझे देवे तथापि मैं तेरे साथ भीतर न
जाऊंगा और इस स्थान में न रोटी खाऊंगा न जलपान करूंगा।
९ क्योंकि परमेश्वर के बचन से मुझे यों कहा गया कि न रोटी
खाइयो न जलपान करियो और जिस मार्ग से होके तू जाता
१० है उसी से फेर मत आना। सो वुह जिस मार्ग में होके
बेतएल में आया था उस मार्ग से न गया वुह दूसरे मार्ग से
चला गया ॥
११ और बेतएल में एक बृद्ध भविष्यद्वक्ता रहता था और उस
के बेटे उस पास आये और उन कार्य्यों को जो ईश्वर के जन
ने उस दिन बेतएल में किये उसे कह सुनाया और उस की
उन बातों को जो उस ने राजा से कही थीं अपने पिता के

१२ आगे बर्णन किया । और उन के पिता ने उन से पूछा कि वुह
किस मार्ग से गया क्योंकि उस के बेटों ने देखा था कि ईश्वर
का वुह जन जो यहूदाह से आया किस मार्ग से फिर गया ।
१३ तब उस ने अपने बेटों से कहा कि मेरे लिये गदहे पर
काठी बांधो सो उन्हों ने उस के लिये गदहे पर काठी बांधी
१४ और वुह उस पर चढ़ा । और ईश्वर के उस जन के पीछे चला
और उसे बलूत बृक्ष तले बैठे पाया तब उस ने उसे कहा
कि तू ईश्वर का वुह जन है जो यहूदाह से आया और वुह बोला
१५ हां । तब उस ने उसे कहा कि मेरे संग घर पर चल और रोटी
१६ खा । और वुह बोला मैं तेरे साथ नहीं फिर सक्ता और न
तेरे साथ जा सक्ता और न मैं तेरे साथ इस स्थान में रोटी
१७ खाऊंगा न जल पीऊंगा । क्योंकि परमेश्वर के बचन से मुझे
यों कहा गया कि तू वहां न रोटी खाना न जल पीना और
१८ जिस मार्ग से तू जाता है उस मार्ग से होके न फिरना । तब
उस ने उसे कहा कि मैं भी तेरी नाईं एक भविष्यद्वक्ता हूं
और परमेश्वर के बचन के द्वारा से एक दूत ने मुझे कहा कि
उसे अपने साथ अपने घर में फिरा ला जिसतें वुह रोटी खावे
१९ और पानी पीये उस ने उस्से झूठ कहा । सो वुह उस के साथ
फिर गया और उस के घर में रोटी खाई और जल पीया ॥
२० और यों हुआ कि ज्यों वे मंच पर बैठे थे तब परमेश्वर
का बचन उस भविष्यद्वक्ता पर जो उसे फिरा लाया था उतरा।
२१ और उस ने ईश्वर के उस जन से जो यहूदाह से आया था
चिल्लाके कहा कि परमेश्वर यह कहता है कि इस कारण तू ने
परमेश्वर के बचन को उलंघन किया है और जो तेरे ईश्वर
परमेश्वर ने तुझे आज्ञा किई है तू ने उसे पालन न किया ।
२२ परन्तु फिर आया और उस ने जिस स्थान के बिषय में तुझे
कहा कि कुछ रोटी न खाना न जल पीना उसी स्थान में तू

ने रोटी खाई और जल पिया सो तेरी लोथ तेरे पितरों की
समाधि में न पहुंचेगी ॥
२३ और ऐसा हुआ कि जब वुह खा पी चुका तब उस ने उस
के लिये अर्थात् उस भविष्यद्वक्ता के लिये जिसे वुह फेर लाया
२४ था गदहे पर काठी बांधी। और जब वुह वहां से गया तो मार्ग
में उसे एक सिंह मिला जिस ने उसे मार डाला और उस की
लोथ मार्ग में पड़ी थी और गदहा उस पास खड़ा रहा और
२५ सिंह भी उस लोथ के पास खड़ा था। और देखो कि लोगों
ने उधर से जाते जाते लोथ को मार्ग में पड़ी देखा और कि
सिंह भी लोथ पास खड़ा है तब उन्हों ने नगर में आके जहां
२६ वुह बृद्ध भविष्यद्वक्ता रहता था कहा। और जब उस भविष्यद्वक्ता
ने जो उसे मार्ग में से फिरा लाया था सुना तो कहा कि यह
ईश्वर का वुह जन है जिस ने परमेश्वर का बचन न माना
इस लिये परमेश्वर ने उसे सिंह को सौंप दिया जिस ने उसे
परमेश्वर के बचन के समान जो उस ने कहा था फाड़ा और
२७ मार डाला है। फिर वुह अपने बेटों से यह कहके बोला कि
२८ मेरे लिये गदहे पर काठी बांधो और उन्हों ने बांधी। तब
उस ने जाके उस की लोथ मार्ग में पड़ी पाई और गदहा और
सिंह लोथ पास खड़े थे सिंह ने लोथ को न खाया था और न
२९ गदहे को फाड़ा था। तब उस भविष्यद्वक्ता ने ईश्वर के जन की
लोथ को उठाके उस गदहे पर लादा और उसे फेर लाया और
उस के लिये शोक करते हुए बृद्ध भविष्यद्वक्ता नगर में पहुंचा
३० कि उसे गाड़े। तब उस ने उस की लोथ को अपनी ही समाधि
में रक्खा और यह कहके उस के लिये उन्हों ने बिलाप किया
३१ कि हाय मेरे भाई। और उस के गाड़ने के पीछे यों हुआ
कि वुह यह कहके अपने बेटों से बोला कि जब मैं मरूं तो
मुझे ईश्वर के इस जन की समाधि में गाड़ियो और मेरी हड्डियां

३२ उस की हड्डियों के पास रखियो। क्योंकि वुह बचन जो
परमेश्वर ने बेतएल की बेदी और समरून के नगरों के ऊंचे
स्थानों के समस्त घरों के बिरोध में कहा से अवश्य पूरा
होगा ॥
३३ इस के पीछे यरुबिअाम अपने बुरे मार्ग से न फिरा परन्तु
फिर नीच लोगों को ऊंचे स्थानों का याजक बनाया जिस ने
चाहा उसे उस ने स्थापित किया और वुह ऊंचे स्थानों का
३४ एक याजक हुआ। और यही बस्तु यरुबिअाम के घराने
के लिये यहां लों पाप हुई कि उसे उखाड़े और पृथिवी पर
से नष्ट करे ॥

चौदहवां पर्ब्ब ।

१ उस समय में यरुबिअाम का बेटा अबियाह रोगी हुआ।
२ और यरुबिअाम ने अपनी पत्नी से कहा कि उठके अपना भेष
बदल जिसतें न जाना जाय कि तू यरुबिअाम की पत्नी है
और शीलो को जा देख वहां अख़ियाह भविष्यद्वक्ता है
जिस ने मुझे कहा था कि तू इन लोगों का राजा होगा।
३ और अपने हाथ में दस रोटियां और लड्डू और एक पात्र मधु
लेके उस पास जा और वुह तुझे बतावेगा कि इस लड़के को
४ क्या होगा। तब यरुबिअाम की पत्नी ने वैसा ही किया और
उठके शीलो को गई और अख़ियाह के घर में पहुंची परन्तु
अख़ियाह देख न सक्ता था क्योंकि बुढ़ापे के कारण उस की
५ आंखें बैठ गई थीं। तब परमेश्वर ने अख़ियाह से कहा कि
देख यरुबिअाम की पत्नी अपने बेटे के विषय में तुझ से कुछ
पूछने को आती है क्योंकि वुह रोगी है तू उसे यों यों कहियो
क्योंकि यों होगा कि जब वुह भीतर आवेगी वुह अपना भेष
बदल डालेगी ॥

६ और यों हुआ कि जब वुह द्वार पर पहुंची और अख़ियाह
ने उस के पावों का शब्द सुना तो उस ने उसे कहा कि हे
यरुबिआम की पत्नी भीतर आ तू अपना भेष क्यों बदलती है
क्योंकि मैं कठिन समाचार के लिये तुझ पास भेजा गया हूं।
७ सो जा यरुबिआम से कह कि इसराएल का ईश्वर परमेश्वर यों
कहता है कि जैसा मैं ने लोगों में से तुझे बढ़ाया और तुझे
८ अपने इसराएल लोग पर अध्यक्ष किया। और दाऊद के घराने से
राज्य फाड़के तुझे दिया तथापि तू मेरे सेवक दाऊद के समान
न हुआ जिस ने मेरी आज्ञाओं को पालन किया और जो अपने
सारे मन से मेरे पीछे चला जिसतें केवल वही करे जो मेरी दृष्टि में
९ अच्छा था। परन्तु सभों से जो तेरे आगे थे तू ने अधिक बुराई
किई है क्योंकि मुझे क्रुद्ध करने को तू ने जाके अपने लिये
और देवों को और ढाली हुई मूर्त्तिन को बनाया और मुझे अपने
१० पीछे टाल दिया है। इस लिये देख मैं यरुबिआम के घराने
पर बुराई लाऊंगा और यरुबिआम के हर एक को जो भीत
पर मूत्ता है और इसराएल में बन्द हैं और बचा है नष्ट
करूंगा और उन को जो यरुबिआम के घर में बच रहेंगे यों
मिटा डालूंगा जैसा कोई जन कूड़े को यहां लों ले जाता है
११ कि सब जाता रहे। यरुबिआम का जो कोई नगर में मरेगा
उसे कुत्ते खावेंगे और जो चौगान में मरेगा उसे आकाश के
१२ पक्षी खावेंगे क्योंकि परमेश्वर ने यों कहा है। सो तू उठके
अपने ही घर जा और नगर में तेरे पांव पहुंचते ही वुह लड़का
१३ मर जावेगा। और उस के लिये सारे इसराएल विलाप करेंगे
और उसे गाड़ेंगे क्योंकि यरुबिआम की समाधि में केवल वही
पहुंचेगा इस कारण कि इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की ओर
१४ यरुबिआम के घराने में से उस में भलाई पाई गई। और
परमेश्वर इसराएल पर एक राजा खड़ा करेगा जो उसी दिन

यरुबिऩ्आम के घराने को नष्ट करेगा और क्या हां अभी नहीं ।
१५ और परमेश्वर इसराएलियों को मारेगा जिस रीति से जल में
सेंठा हिलता है और इसराएल को इस अच्छी भूमि से जो
उस ने उन के पितरों को दिई है उखाड़ फेंकेगा और उन्हें
नदी के पार लों बिथरावेगा इस कारण कि उन्हों ने अपना
१६ अपना कुंज बनाके परमेश्वर को खिजाके रिसिआया । और वुह
यरुबिऩ्आम के पाप के कारण इसराएल को दूर करेगा क्योंकि
उस ने पाप किया और इसराएल से पाप करवाया ॥
१७ तब यरुबिऩ्आम की पत्नी उठ चली और तिरज: में आई
और ज्योंहीं वुह देहली पर पहुंची त्योंहीं लड़का मर गया ।
१८ और जैसा परमेश्वर ने अपने सेवक अखियाह भविष्यद्वक्ता के
द्वारा से कहा था उन्हों ने उसे गाड़ा और सारे इसराएलियों
ने उस के लिये बिलाप किया ॥
१९ और यरुबिऩ्आम की रही हुई क्रिया जिस रीति से उस ने
युद्ध किया और कि जिस रीति से उस ने राज्य किया सो
देखो इसराएल के राजाओं के समाचार की पुस्तक में लिखा
२० है । और यरुबिऩ्आम ने बाईस बरस राज्य किया तब अपने
पितरों में सो गया और उस का बेटा नदब उस की सन्ती
राज्य पर बैठा ॥
२१ और सुलेमान के बेटे रहबिऩ्आम ने यहूदाह पर राज्य
किया उस ने एकतालीस बरस की अवस्था में राज्य करना
आरंभ किया और यरूसलम में अर्थात् उस नगर में जिसे
परमेश्वर ने अपना नाम रखने के लिये इसराएल की समस्त
गोष्ठियों में से चुन लिया था सत्रह बरस राज्य किया और उस
२२ की माता का नाम नअमः जो अम्मूनी थी । और यहूदाह ने
परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और उन्हों ने अपने पितरों
के पाप से अधिक पाप करके परमेश्वर को खिजाके क्रोध

२३ दिलाया। क्योंकि उन्हों ने भी अपने लिये हर एक ऊंचे
पहाड़ पर और एक एक हरे पेड़ तले ऊंचा स्थान और मूर्त्ति
२४ और कुंज बनाया। और देश में सदूमी भी थे और उन्हों ने
अन्यदेशियों के समस्त घिनित कार्य्यों के समान किया जिन्हें
परमेश्वर ने इसराएल के संतानों के आगे से दूर किया॥
२५ और रहबिआम राजा के पांचवें बरस ऐसा हुआ कि मिस्र
२६ का राजा शीशाक यरूसलम के विरोध में चढ़ आया। और
वुह परमेश्वर के मंदिर का धन और राजा के घर का धन लेके
चला गया और वुह सब कुछ ले गया जो सोने की ढालें
२७ सुलेमान ने बनाई थीं वुह सब ले गया। और रहबिआम
राजा ने उन की सन्ती पीतल की ढालें बनाईं और प्रधान
दौड़हों को जो राजा के भवन के द्वार की रक्षा करते थे
२८ दिया। और ऐसा हुआ कि जब राजा परमेश्वर के मंदिर में
जाता था तब पहरू उन्हें उठा लेते थे फिर उन्हें लाके पहरू
की कोठरी में रख छोड़ते थे॥
२९ अब रहबिआम की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस
ने किया सो क्या यहूदाह के राजावली के समाचार की पुस्तक
३० में नहीं लिखा। और रहबिआम में और यरुबिआम में जीवन
३१ भर सर्बदा युद्ध रहा। और रहबिआम ने अपने पितरों में
शयन किया और दाऊद के नगर में अपने पितरों के साथ
गाड़ा गया और उस की माता का नाम नअमः जो अम्मूनी
थी और उस के बेटे अबियाम ने उस की सन्ती राज्य
किया॥

पन्दरहवां पर्ब्ब।

१ और नबात के बेटे यरुबिआम के राज्य के अठारहवें बरस
२ अबियाम ने यहूदाह पर राज्य किया। उस ने यरूसलम में

तीन बरस राज्य किया और उस की माता का नाम मअ़क:
३ था जो अबिसलुम की बेटी थी। और जैसा उस के पिता ने
उस्से पहिले पाप किया वैसे उस ने भी किये और उस का मन
परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर सिद्ध न था जैसा कि उस के
४ पिता दाऊद का था। तथापि दाऊद के कारण उस के ईश्वर
परमेश्वर ने उसे यरूसलम में एक दीपक दिया कि उस के बेटे
को उस के पीछे बैठावे और जिसतें यरूसलम को स्थिर करे।
५ इस कारण कि दाऊद ने वही कार्य्य किया जो ईश्वर की दृष्टि
में ठीक था और अपने जीवन भर केवल ऊरियाह हित्ती की
६ बात को छोड़ और किसी आज्ञा से न मुड़ा। और रहबिआम
और यरूबिआम के मध्य में जीवन भर युद्ध रहा॥
७ अब अबियाम की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने
किया था सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार
८ की पुस्तक में नहीं लिखा है। और अबियाम और यरूबिआम
में लड़ाई थी तब अबियाम ने अपने पितरों में शयन किया
और उन्हों ने उसे दाऊद के नगर में गाड़ा और उस का बेटा
असा उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥
९ और इसराएल के राजा यरूबिआम के राज्य के बीसवें
१० बरस असा यहूदाह पर राज्य करने लगा। और उस ने यरूसलम
में एकतालीस बरस राज्य किया और उस की माता का नाम
११ मअ़क: था जो अबिसलुम की बेटी थी। और असा ने अपने
१२ पिता दाऊद की नाईं परमेश्वर की दृष्टि में ठीक किया। और
उस ने गांडुओं को देश से दूर किया और उन मूर्त्तिन को
१३ जिन्हें उस के पितरों ने बनाया था निकाल फेंका। और उस
ने अपनी माता मअ़क: को भी रानी होने के पद से अलग
किया क्योंकि उस ने कुंज में एक मूर्त्ति बनाई थी और असा
ने उस की मूर्त्ति को ढा दिया और केदरून के नाले के तीर

१४ जला दिया। परन्तु ऊंचे स्थान अलग न किये गये तथापि
१५ उस का मन जीवन भर परमेश्वर के आगे सिद्ध था। और जो
जो वस्तु उस के पिता ने समर्पण किई थीं और जो जो वस्तु
उस ने आप समर्पण किई थी अर्थात् रूपा और सोना और पात्र
उस ने उन्हें परमेश्वर के मंदिर में पहुंचाया॥
१६ और असा में और इसराएल के राजा बअशा में उन के
१७ जीवन भर युद्ध रहा। और इसराएल का राजा बअशा यहूदाह
के बिरोध में चढ़ गया और रामः को बनाया जिसतें यहूदाह
के राजा असा पास किसी को जाने न देवे॥
१८ तब असा ने परमेश्वर के मंदिर के भंडार का बचा हुआ रूपा
और सोना और राजा के घर का धन लेके उन्हें अपने सेवकों
के हाथ में सौंपा और असा राजा ने उन्हें अराम हज़यून के
बेटे तबरिम्मून के बेटे बिनहदद पास जो दमिश्क में रहता
१९ था यह कहके भेजा। कि मेरे और तेरे मध्य में और मेरे
बाप के और तेरे बाप के बीच मेल है देख मैं ने तेरे लिये
रूपा और सोना भेंट भेजी सो आइये और इसराएल के राजा
बअशा से मेल तोड़िये जिसतें वुह मेरी ओर से चढ़ जावे॥
२० तब बिनहदद ने असा राजा की बात मानके अपने
सेनापतिन को इसराएल के नगरों के बिरोध में भेजा और
ऐयून और दान को और अबिल बैतमअकः को और समस्त
२१ किन्नारात को नफताली के समस्त देश सहित मारा। और
ऐसा हुआ कि जब बअशा ने सुना तब रामः का बनाना
छोड़के तिरजः में जा रहा॥
२२ तब असा राजा ने सारे यहूदाह में प्रचारा और कोई न
रहा सो वे रामः के पत्थरों को और उस के लट्ठों को जिन
से बअशा ने बनाया था उठा ले गये और असा राजा ने
बिनयमीन के जिबअ को और मिसफ़ा को उन से बनाया॥

२३ और असा की समस्त उबरी हुई क्रिया और उस के समस्त
पराक्रम और सब जो उस ने किया था और उस ने जो जो
नगर बनाये सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार
की पुस्तक में नहीं लिखा है तथापि उस के बुढ़ापे में उस के
२४ पांव में रोग था। तब असा ने अपने पितरों में शयन किया
और अपने पितरों में दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस
का बेटा यहूशफत उस की सन्ती राजा हुआ॥
२५ और यहूदाह के राजा असा के राज्य के दूसरे बरस
यरुबिआम का बेटा नदब इसराएल के संतान का राजा हुआ
२६ और उस ने इसराएल पर दो बरस राज्य किया। और उस ने
परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और अपने पिता के मार्ग में
और उस के पाप में जिस्से उस ने इसराएल से पाप करवाया
चला॥
२७ तब इशकार के घराने में से अखियाह के बेटे बअशा ने
उस के बिरोध में गुष्ट बांधी और फ़िलिसतियों के जिबतून में
उसे घात किया क्योंकि नदब और सारे इसराएल ने जिब्बतून
२८ को घेरा था। अर्थात् यहूदाह के राजा असा के तीसरे बरस
२९ बअशा ने उसे घात करके उस की सन्ती राज्य किया। और
ऐसा हुआ कि उस ने राज्य पर स्थिर होके यरुबिआम के सारे
घराने को बध किया और उस ने यरुबिआम के लिये एक
स्वासधारी को न छोड़ा जब लों उसे नाश न कर डाला जैसा
कि परमेश्वर ने अपने सेवक अखियाह शैलूनी के द्वारा से कहा
३० था। क्योंकि यरुबिआम ने आप बहुत पाप किये थे और
इसराएल से भी पाप करवाये थे और परमेश्वर इसराएल के
ईश्वर को निपट क्रोधित किया था रिसियाके खिजाया था।
३१ और नदब की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया था क्या
वुह इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में

३२ नहीं लिखा है। और असा और इसराएल के राजा बअशा में
उन के जीवन भर लड़ाई रही॥
३३ यहूदाह के राजा असा के राज्य के तीसरे बरस अख़ियाह
का बेटा बअशा तिरज: में समस्त इसराएल पर राज्य करने
३४ लगा उस ने चौबीस बरस राज्य किया। और उस ने परमेश्वर
की दृष्टि में बुराई किई और यरुबिआम के मार्ग में और उस
के पाप में जिस्से उस ने इसराएल से पाप करवाया चलता
था॥

सोलहवां पर्व्व।

१ तब बअशा के विरोध में हनानी के बेटे याहू पर परमेश्वर
२ का बचन उतरा। जैसा कि मैं ने तुझे धूल में से उठाया
और तुझे अपने लोग इसराएलियों पर अध्यक्ष किया परन्तु तू
यरुबिआम के पथ पर चला और तू ने मेरे इसराएली लोगों
३ से पाप करवाया। देख मैं बअशा के वंश को और उस के
घराने के वंश को दूर करूंगा और मैं तेरे घराने को नबात के
४ बेटे यरुबिआम के घराने के समान करूंगा। बअशा के घर
का जो कोई नगर में मरेगा उसे कुत्ते खावेंगे और जो चौगान
में मर जावेगा उसे आकाश के पक्षी खावेंगे॥
५ और बअशा की रही हुई क्रिया और जो कुछ उस ने किया
और उस की सामर्थ्य क्या वुह इसराएल के राजाओं के समयों
६ के समाचार की पुस्तक में लिखा नहीं। सो बअशा अपने
पितरों में सो गया और तिरज: में गाड़ा गया और उस के
बेटे एला ने उस की सन्ती राज्य किया॥
७ और हनानी के बेटे याहू भविष्यद्वक्ता के द्वारा से परमेश्वर
का बचन बअशा के बिरोध में और उस के घराने के बिरोध
में आया अर्थात् उस समस्त बुराई के कारण जो उस ने परमेश्वर

की दृष्टि में करके अपने हाथ के कार्य्यों से जो यरुबिआम के
घराने की नाईं था और इस कारण कि उसे मार डाला था
उसे रिस दिलाया ॥
८ यहूदाह के राजा असा के राज्य के छब्बीसवें बरस बअशा
के बेटे एला ने तिरज: में इसराएल पर दो बरस राज्य किया।
९ और जब वुह तिरज: में अपने घर के प्रधान अरज़ा के घर
में पीके मतवाला रहा था तब उस के आधे रथों के प्रधान
१० उस के सेवक ज़िमरी ने उस के बिरोध में गुष्ट किई। तब
ज़िमरी ने भीतर पैठके उसे मारा और यहूदाह के राजा असा
के सताईसवें बरस उसे मार डाला और उस की सन्ती राज्य
किया ॥
११ और यों हुआ कि जब वुह राज्य करने लगा तो सिंहासन
पर बैठते ही उस ने बअशा के सारे घराने को घात किया
तब उस ने उस के लिये न तो एक पुरुष को जो भीत पर
१२ मूत्ता है न उस के कुटुम्ब को न मित्र को छोड़ा। यों ज़िमरी
ने परमेश्वर की बाचा के समान जो उस ने बअशा के बिषय
में याहू भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा और बअशा के समस्त
१३ घराने को नष्ट किया। बअशा के सारे पापों के कारण और उस
के बेटे एला के पापों के कारण जो उन्हों ने किये और जिन से
उन्हों ने इसराएल से पाप करवाये यों अपनी मूढ़ता से परमेश्वर
इसराएल के ईश्वर को रिस दिलाया ॥
१४ अब एला की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने
किया था सो क्या वुह इसराएल के राजाओं के समयों के
समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा ॥
१५ यहूदाह के राजा असा के सताईसवें बरस ज़िमरी ने तिरज:
में सात दिन राज्य किया और लोगों ने फिलिसतियों के जिबतून
१६ के बिरोध में छावनी किई। और जब छावनी के लोगों ने

सुना कि ज़िमरी ने गुप्त करके राजा को भी बधन किया है
इस लिये समस्त इसराएल ने सेनापति उमरी को छावनी में
१७ उसी दिन इसराएल पर राजा किया। और उमरी ने सारे
१८ इसराएल समेत जिबतून से चढ़के तिरज: को घेरा। और यों
हुआ कि जब ज़िमरी ने देखा कि नगर लिया गया तो वुह
राजा के भवन में गया और अपने ऊपर राजा के भवन में
१९ आग लगाके जल मरा। उस के पापों के कारण जो उस ने
यरुबिआम के मार्ग पर चलने में और अपने पाप में जो उस
ने इसराएल से पाप करवाके किया था परमेश्वर की दृष्टि में
बुराई किई॥

२० और ज़िमरी की रही हुई क्रिया और उस का छल जो उस
ने किया क्या वुह इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार
की पुस्तक में नहीं लिखा॥

२१ उस के पीछे इसराएल लोग दो भाग हुए आधे लोग गिनात
के बेटे तिबनी को राजा करने को उस की ओर और आधे
२२ लोग उमरी के पीछे हुए। परन्तु जो लोग उमरी के पीछे
हुए थे उन लोगों ने गिनात के बेटे तिबनी की ओर के लोगों
को जीता और तिबनी मारा गया और उमरी ने राज्य किया॥

२३ यहूदाह के राजा असा के राज्य के एकतीसवें बरस उमरी
इसराएल पर राज्य करने लगा उस ने बारह बरस राज्य किया
२४ तिरज: में छ: बरस राज्य किया। तब उस ने दो तोड़ा चांदी
पर समरून का पहाड़ समर से मोल लेके उस पहाड़ पर एक
नगर बसाया और उस नगर का नाम जो उस ने बनाया था
२५ समरून रक्खा जो समर के पहाड़ का स्वामी था। परन्तु
उमरी ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और उन सब से जो
२६ उस्से आगे थे अधिक बुराई किई। क्योंकि वुह नबात के बेटे
यरुबिआम के सारे मार्ग में और उस के पापों में चलता था

जिन से उस ने इसराएल से पाप करवाके परमेश्वर इसराएल के
ईश्वर को अपनी मूढ़ता से रिस दिलाया ॥
२७ अब उमरी की रही हुई क्रिया और उस का पराक्रम जो
उस ने दिखाया सो क्या वुह इसराएल के राजाओं के समयों
२८ के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा । और उमरी अपने
पितरों में सो गया और समरून में गाड़ा गया और उस के
बेटे अख़िअब ने उस की सन्ती राज्य किया ॥
२९ और यहूदाह के राजा असा के राज्य के अठतीसवें बरस
उमरी का बेटा अख़िअब इसराएल पर राज्य करने लगा और
उमरी के बेटे अख़िअब ने बाईस बरस समरून में इसराएल
३० पर राज्य किया । और उमरी के बेटे अख़िअब ने उन सब
से जो उस्से आगे थे परमेश्वर की दृष्टि में अधिक बुराई किई ।
३१ और यों हुआ कि उस ने इतने पर बस न किया कि नबात
के बेटे यरुबिआम के से पाप करता था परन्तु वुह सैदानियों
के राजा इतबअल की बेटी ईज़बिल को ब्याह लाया और
३२ जाके बअल को पूजा और उस के आगे दण्डवत किई । और
बअल के मंदिर में जो उस ने समरून में बनाया था बअल
३३ के लिये एक बेदी बनाई । और अख़िअब ने कुंज बनाया
और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को उन सब इसराएली राजाओं
से जो उस्से आगे थे अधिक रिस उभाड़ा ॥
३४ उस के दिनों में हैएल बैतएली ने यरीहो को बनाया उस
ने उस की नेंव अपने पहिलौठे अबिराम पर डाली और उस
के फाटक अपने लहुरे सगूब पर खड़े किये जैसा कि परमेश्वर
ने नून के बेटे यहूशूअ के द्वारा से बचन दिया था ॥

सत्तरहवां पर्ब्ब ।

१ तब जिलिअद के बासियों में से इलियाह तिसबी ने

अख़िअब से कहा कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के जीवन सों
जिस के आगे मैं खड़ा हूं कई एक बरस लों न ओस पड़ेगी
न मेंह बरसेगा परन्तु जब मैं कहूंगा॥
२ और यह कहते हुए परमेश्वर का बचन उस पर उतरा।
३ कि यहां से चलके पूरब की ओर जा और करीथ की नाली के
४ पास जो यरदन के आगे है आप को छिपा। और ऐसा होगा
कि तू उस नाली से पीजियो और मैं ने जंगली कौव्वों को
५ आज्ञा किई है कि वे तुझे वहां खिलावें। सो उस ने जाके
परमेश्वर के बचन के समान किया और यरदन के आगे करीथ
६ नाली के पास जा रहा। और सांझ बिहान कौव्वे उस पास
रोटी और मांस लाया करते थे और वुह उस नाली से पीता
७ था। और कुछ दिन के पीछे ऐसा हुआ कि देश में मेंह न
बरसने के कारण से नाली का जल सूख गया॥
८ तब परमेश्वर का बचन यह कहके उस पर उतरा।
९ कि उठके सैदानियों के सरफ़त को चला जा और वहां रह
देख मैं ने तेरे प्रतिपाल के लिये एक रांड़ को आज्ञा किई है।
१० सो वुह उठके सरफ़त को गया और जब वुह नगर के फाटक
पर पहुंचा तो क्या देखता है कि एक बिधवा वहां लकड़ियां
बटोर रही थी और उस ने उसे पुकारके कहा कि कृपा करके
११ मुझे एक घूंट पानी किसी पाच में लाइये कि पीऊं। और जब
वुह लाने चली तो इतने में वुह उसे पुकारके बोला कि मैं
बिनती करता हूं कि अपने हाथ में एक टुकड़ा रोटी मेरे
१२ लिये लेती आइयो। तब उस ने उसे कहा कि परमेश्वर तेरे
ईश्वर के जीवन सों मेरे पास एक भी फुलका नहीं परन्तु केवल
मुट्ठी भर पिसान एक मटके में है और पाच में थोड़ा तेल
और देखिये कि मैं दो लकड़ियां बटोर रही हूं जिसतें घर
जाके अपने और अपने बेटे के लिये पोऊं और सिद्ध करूं कि

१३ हम खावें और मर जावें। तब इलियाह ने उसे कहा कि
मत डर जा अपने कहने के समान कर परन्तु पहिले
मेरे लिये उस्से एक लिट्टी बना और मुझ पास ला और पीछे अपने
१४ और अपने बेटे के लिये पोइओ। क्योंकि परमेश्वर इसराएल का
ईश्वर यों कहता है कि परमेश्वर पृथिवी पर जब लों मेंह न
बरसावे मटके में का पिसान न घटेगा और पात्र में का तेल
१५ न चुकेगा। और उस ने जाके इलियाह के कहने के समान
किया और आप और वुह और उस का घराना बहुत दिन लों
१६ खाते रहे। परमेश्वर के बचन के समान जो उस ने इलियाह
के द्वारा से कहा था मटके का पिसान और पात्र का तेल न
घटा॥

१७ और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि घर की स्वामिनी
का बेटा रोगी हुआ और उस का रोग ऐसा बढ़ा कि उस में
१८ प्राण न रहा। तब उस स्त्री ने इलियाह से कहा कि हे ईश्वर
के जन तुझ से मुझ से क्या प्रयोजन तू मेरे पाप स्मरण कराने
१९ को और मेरे बेटे को नाश करने को आया है। और उस ने
उस्से कहा कि अपना बेटा मुझे दे और वुह उस को गोद से
लेके उसे कोठे पर जहां वुह रहता था चढ़ा ले गया और
२० उसे अपने बिछौने पर लेटाया। और उस ने परमेश्वर से प्रार्थना
करके कहा कि हे परमेश्वर मेरे ईश्वर क्या तू ने इस रांड़ पर
भी बिपत्ति भेजी जिस के यहां में उतरा हूं कि उस के बेटे
२१ को नाश करे। तब उस ने आप को तीन बार उस बालक
पर फैलाया और परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा कि हे परमेश्वर
मेरे ईश्वर मैं बिनती करता हूं कि इस बालक का प्राण इस
२२ में फिर आवे। तब परमेश्वर ने इलियाह की प्रार्थना सुनी
और बालक का प्राण उस में फिर आया और वुह जी उठा।
२३ तब इलियाह उस बालक को उठाके कोठरी में से घर के

भीतर ले गया और उसे उस की माता को सौंप दिया और
२४ इलियाह ने कहा कि देख तेरा बेटा जीता है। तब उस स्त्री ने
इलियाह से कहा कि अब इस्से मैं जानती हूं कि तू ईश्वर का
जन है और तेरे मुंह से परमेश्वर का बचन सत्य है॥

अठारहवां पर्व्व।

१ और बहुत दिन के पीछे ऐसा हुआ कि तीसरे बरस
परमेश्वर का बचन इलियाह पर उतरा कि आप को अख़िअब
२ पर प्रगट कर और मैं देश में मेंह बरसाऊंगा। और जब
इलियाह अपने तईं अख़िअब को दिखाने गया तब समरून
में बड़ा अकाल था॥
३ तब अख़िअब ने अपने घर के अध्यक्ष अबदियाह को
४ बुलाया अब अबदियाह ईश्वर से बहुत डरता था। क्योंकि
यों हुआ कि जब ईज़बिल ने ईश्वर के भविष्यद्वक्तों को मार
डाला तो अबदियाह ने सौ भविष्यद्वक्तों को लेके पचास पचास
करके एक खोह में छिपाया और उन्हें अन्न जल से पाला।
५ और अख़िअब ने अबदियाह से कहा कि देश में फिर और
समस्त जल के सोताओं और नालों में जा क्या जाने कि घोड़े
और खच्चर के जीते रखने के लिये घास मिल जावे न हो कि
६ पशु हम्में से नष्ट होवें। सो उन्हों ने आपुस में देश का बिभाग
किया कि आरंपार जावें अख़िअब आप एक और गया और
अबदियाह आप दूसरी ओर॥
७ और ज्यों अबदियाह मार्ग में था तो देखो इलियाह उसे मिला
और उस ने उसे पहिचाना और औंधा गिरा और बोला कि आप
८ मेरे प्रभु इलियाह हैं। और उस ने उसे उत्तर दिया कि मैं
९ हो हूं जा अपने प्रभु से कह कि इलियाह है। और वुह बोला
कि मैं ने क्या अपराध किया है जो तू अपने दास को बध

१० करने के लिये अख़िअब के हाथ सौंपा जाता है। परमेश्वर
तेरे ईश्वर के जीवन सों कोई जाति अथवा राज्य नहीं है जहां
मेरे प्रभु ने तेरी खोज के लिये न भेजा हो और जब उन्हों ने
कहा कि वुह नहीं है तब उस ने राज्य की और जाति की
११ किरिया लिई कि हम ने उसे नहीं पाया। और अब तू कहता
१२ है कि जाके अपने प्रभु से कह कि देख इलियाह है। और
जब मैं तेरे पास से चला जाऊंगा तब ऐसा होगा कि परमेश्वर
का आत्मा तुझे क्या जाने कहां ले जावेगा और जब मैं जाके
अख़िअब से कहूंगा और वुह तुझे न पा सके तब मुझे बधन
करे परन्तु मैं तेरा सेवक अपनी लड़काई से परमेश्वर से डरता
१३ है। क्या मेरे प्रभु से नहीं कहा गया कि जब ईज़बिल ने
परमेश्वर के भविष्यद्वक्तों को मार डाला तब मैं ने क्या किया
कि परमेश्वर के सौ भविष्यद्वक्तों को लेके पचास पचास करके
१४ एक खोह में छिपाया और उन्हें अन्न जल से पाला। और
अब तू कहता है कि जाके अपने प्रभु को जनाव कि देख
१५ इलियाह है और वुह मुझे बधन करेगा। तब इलियाह ने
कहा कि सेनाओं के परमेश्वर के जीवन सों जिस के आगे मैं
खड़ा रहता हूं मैं अवश्य आज उस पर अपने को दिखाऊंगा॥
१६ सो अबदियाह अख़िअब से भेंट करने को गया और उसे
१७ कहा और अख़िअब इलियाह की भेंट को गया। और ऐसा
हुआ कि जब अख़िअब ने इलियाह को देखा तो अख़िअब ने
उसे कहा कि क्या तू वही है जो इसराएलियों को सताता है।
१८ और उस ने उत्तर दिया कि मैं ने नहीं परन्तु तू ने और तेरे
पिता के घराने ने इस बात में इसराएलियों को सताया है
कि तुम ने परमेश्वर की आज्ञाओं को छोड़के बअलीम का पीछा
१९ पकड़ा है। इस लिये अब भेज और सारे इसराएल को करमिल
पहाड़ पर मेरे लिये एकट्ठा कर और बअल के साढ़े चार सौ

भविष्यद्वक्तों को और कुंजों के चार सौ भविष्यद्वक्तों को जो
२० ईज़बिल के मंच पर भोजन करते हैं। सो अख़िअब ने इसराएल
के समस्त संतान के पास भेजा और भविष्यद्वक्तों को करमिल
पहाड़ पर एकट्ठा किया॥

२१ तब इलियाह ने सारे लोगों के पास जाके कहा कि कब
लों अधर में पड़े रहोगे यदि परमेश्वर ईश्वर है तो उसे गहो
परन्तु यदि बअ़ल तो उसे गहो पर लोगों ने उसे तनिक उत्तर
२२ न दिया। तब इलियाह ने लोगों से कहा कि परमेश्वर के
भविष्यद्वक्तों में से मैं ही अकेला बचा हूं परन्तु बअ़ल के
२३ भविष्यद्वक्ता साढ़े चार सौ जन हैं। सो वे अब हमें दो बैल
देवें और अपने लिये एक बैल चुनें और उसे टुकड़ा टुकड़ा
करें और लकड़ी पर धरें परन्तु आग न लगावें और दूसरा बैल
मैं सिद्ध करूंगा और उसे लकड़ी पर धरूंगा परन्तु आग न
२४ लगाऊंगा। और तुम अपने देवों के नाम से प्रार्थना करो और
मैं परमेश्वर के नाम से प्रार्थना करूंगा और जो ईश्वर आग के द्वारा
से उत्तर देगा वही ईश्वर होवे तब सब लोगों ने उत्तर देके
कहा कि यह अच्छी बात है॥

२५ और इलियाह ने बअ़ल के भविष्यद्वक्तों से कहा कि तुम
अपने लिये एक बैल चुनके पहिले उसे सिद्ध करो क्योंकि तुम
बहुत हो और अपने देवों के नाम से प्रार्थना करो परन्तु उस
२६ में आग मत लगाओ। तब उन्हों ने एक बैल को जो उन्हें
दिया गया लिया और उसे सिद्ध किया और बिहान से दो
पहर लों यह कहके बअ़ल के नाम से प्रार्थना किई कि हे
बअ़ल हमें उत्तर दे परन्तु न कुछ शब्द हुआ न किसी ने सुना
२७ और वे उस बनाई हुई बेदी पर कूद पड़े। और ऐसा हुआ
कि दो पहर को इलियाह ने उन्हें चिढ़ाके कहा और बोला
कि चिल्लाके पुकारो क्योंकि वुह देव है क्योंकि वुह किसी से बातें

कर रहा है अथवा कहीं गया है अथवा किसी यात्रा में है
२८ क्या जाने वुह सोता है और उसे जगाना अवश्य है । तब वे
बड़े शब्द से चिल्लाये और अपने व्यवहार के समान आप को
छुरियों और गोदनियों से यहां लों गोदा कि वे लोहू लुहान
२९ हो गये । और ऐसा हुआ कि दो पहर ढल गया और बलिदान
चढ़ाने के समय लों भविष्य कहते रहे परन्तु न कुछ शब्द
हुआ न कोई उत्तर देवैया न बुझवैया ठहरा ॥
३० तब इलियाह ने सारे लोगों से कहा कि मेरे पास आओ और
सारे लोग उस के पास गये तब उस ने परमेश्वर की ढाई हुई
३१ बेदी को सुधारा । और यअकूब के संतान की गोष्ठियों के
समान जिन के पास यह कहके परमेश्वर का बचन आया था
कि तेरा नाम इसराएल होगा इलियाह ने बारह पत्थर लिये ।
३२ और उन पत्थरों से उस ने परमेश्वर के नाम के लिये एक बेदी
बनाई और बेदी के आस पास उस ने ऐसी बड़ी खाई खोदी
३३ जिस में दो नपुए बीज अमावें । और लकड़ियों को चुना और
बैल को काटके टुकड़ा टुकड़ा किया और लकड़ियों पर धरा ।
३४ और कहा कि चार पीपा पानी से भर देओ और उस बलिदान
की भेंट पर और लकड़ियों पर उंडेलो और उस ने कहा कि
दूसरी बेर उंडेलो तब उन्हों ने दूसरी बेर उंडेला फिर उस ने
कहा कि तीसरी बेर उंडेलो और उन्हों ने तीसरी बेर उंडेला ।
३५ और पानी बेदी की चारों ओर बहा और खाई को भी पानी से
३६ भर दिया । और भेंट चढ़ाने के समय ऐसा हुआ कि इलियाह
भविष्यद्वक्ता ने पास आके कहा कि हे परमेश्वर अबिरहाम
इज़हाक़ और इसराएल के ईश्वर आज जाना जावे कि इसराएल
में तू ही ईश्वर है और कि मैं तेरा सेवक हूं और मैं ने तेरे
३७ बचन से यह सब बातें किई हैं । हे परमेश्वर मेरी सुन मेरी
सुन जिसतें ये लोग जानें कि तू ही परमेश्वर ईश्वर है और उन

३८ के अंतःकरण को फेर दिया है। तब परमेश्वर की आग उतरी
और बलिदान की भेंट को और लकड़ी को और पत्थरों
को और धूल को भस्म किया और खाईं के जल को चाट
लिया॥

३६ और जब सारे लोगों ने यह देखा तब वे ओंधे मुंह गिरे
और बोले कि परमेश्वर वही ईश्वर है परमेश्वर वही ईश्वर है।
४० तब इलियाह ने उन्हें कहा कि बअल के भविष्यद्वक्तों को पकड़ो
उन में से एक भी न बचे सो उन्हों ने उन्हें पकड़ा और इलियाह
उन्हें क़ीसून की नाली पर उतार लाया और वहां उन्हें बधन
किया॥

४१ तब इलियाह ने अख़िअब को कहा कि चढ़ जा खा और
४२ पी क्योंकि मेंह का बड़ा शब्द है। सो अख़िअब खाने पीने
को उठ गया और इलियाह करमिल की चोटी पर चढ़ गया
और आप को भूमि पर झुकाया और अपना मुंह दोनों घुटनों
४३ के बीच में किया। और उस ने अपने सेवक को कहा कि अब
चढ़ जा समुद्र की ओर देख और उस ने जाके देखा और
कहा कि कुछ नहीं तब उस ने कहा कि फेर सात बेर जा।
४४ और सातवें बेर ऐसा हुआ कि वुह बोला कि देख मनुष्य के
हाथ की नाईं मेघ का एक छोटा सा टुकड़ा समुद्र में से उठता
है तब उस ने कहा कि चढ़ जा अख़िअब को कह कि
४५ सिद्ध हो और उतर जा न हो कि मेंह तुझे रोके। और इतने
में ऐसा हुआ कि आकाश मेघों से और पवन से अंधेरा हो
गया और अति वृष्टि होने लगी और अख़िअब चढ़के यज़रअएल
४६ को गया। और परमेश्वर का हाथ इलियाह पर था और वुह
अपनी कटि कसके अख़िअब के आगे आगे यज़रअएल लों दौड़
गया॥

उन्नीसवां पर्ब्ब ।

१ तब जो कुछ कि इलियाह ने किया था अख़िअब ने
ईज़बिल से कहा और कि किस रीति से उस ने समस्त भविष्यद्वक्तों
२ को तलवार से बध किया था। तब ईज़बिल ने दूत की ओर
से इलियाह को कहला भेजा कि यदि मैं तेरे प्राण को उन में
से एक की नाईं कल इस जून लों न करूं तो देवगण मुझ से
३ वैसा ही और उस्से अधिक भी करें। और जब उस ने देखा
तो वुह उठा और अपने प्राण के लिये गया और यहूदाह के
बिअरसबः में आया और वहां अपने सेवक को छोड़ा॥

४ परन्तु आप एक दिन के मार्ग बन में पैठ गया और एक
रतम बृक्ष तले बैठा और अपने प्राण के लिये मृत्यु मांगी और
कहा अब हे परमेश्वर हो चुका है अब मेरा प्राण उठा ले
५ क्योंकि मैं अपने पितरों से भला नहीं। और ज्यों वुह रतम
बृक्ष के तले लेटा और सो गया तो देखो कि एक दूत ने
६ आके उसे छूआ और उस्से कहा कि उठ खा। और उस ने दृष्टि
किई तो देखो कि उस के सिरहाने एक फुलका कोइलों पर का
पका हुआ है और एक पात्र जल धरा है तब वुह खा पीके
७ फेर लेट गया। फिर परमेश्वर का दूत दोहराके आया और
उसे छूके कहा कि उठ खा क्योंकि तेरी यात्रा तेरे बल से
८ अधिक है। सो उस ने उठके खाया और पीया और उसी
भोजन के बल से चालीस दिन रात चलके ईश्वर के पहाड़ होरिब
को गया॥

९ और वहां एक खोह में टिका और देखो कि परमेश्वर का
बचन उस पास आया और उस ने उसे कहा कि हे इलियाह
१० तू यहां क्या करता है। और वुह बोला कि मैं सेनाओं के
ईश्वर परमेश्वर के लिये अति ज्वलित हुआ हूं क्योंकि इसराएल

के संतानों ने तेरी बाचा को त्यागा तेरी बेदियों को ढा दिया
और तेरे भविष्यद्वक्तों को तलवार से घात किया है और मैं ही
केवल मैं ही बचा और वे मेरे प्राण को भी लेने चाहते
११ हैं। और उस ने कहा कि बाहर निकल और पहाड़ पर
परमेश्वर के आगे खड़ा हो और देख वहां परमेश्वर जा निकलता
है और परमेश्वर के आगे एक बड़ी और प्रचंड पवन पर्वतों को
तड़कातो है और चटानों को टुकड़ा टुकड़ा करती है परन्तु
परमेश्वर पवन में नहीं और पवन के पीछे भुइंडोल आया और
१२ परमेश्वर भुइंडोल में नहीं। और भुइंडोल के पीछे एक आग
परन्तु परमेश्वर आग में नहीं और आग के पीछे एक किंचित शब्द।
१३ और ऐसा हुआ कि जब इलियाह ने सुना तो उस ने अपना
मुंह अपने ओढ़ने से ढांप लिया और बाहर निकलके कन्दला
की पैठ पर खड़ा हुआ और देखो कि यह कहके उस पास
१४ एक शब्द आया कि इलियाह तू यहां क्या करता है। और
वुह बोला कि मुझे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर के लिये बड़ा
ज्वलन हुआ है क्योंकि इसराएल के संतानों ने तेरी बाचा को
त्यागा तेरी बेदियां ढाईं और तेरे भविष्यद्वक्तों को तलवार
से घात किया और एक मैं ही अकेला जीता बचा सो वे मेरे
१५ भी प्राण को लेने चाहते हैं। तब परमेश्वर ने उसे कहा कि
दमिश्क के अरण्य की ओर फिर जा और पहुंचते ही अराम
१६ पर हज़ाएल को राज्याभिषेक कर। और निमशी के बेटे याहू
को इसराएल पर राज्याभिषेक कर और अबीलमहूल: सफ़त के
बेटे इलीशअ को अभिषेक कर कि तेरी सन्ती भविष्यद्वक्ता
१७ होवे। और ऐसा होगा कि जो हज़ाएल की तलवार से बच
निकलेगा उसे याहू मार डालेगा और जो याहू की तलवार से
१८ बच रहेगा उसे इलीशअ घात करेगा। तथापि इसराएल में
मैं ने सात सहस्र जन बचा रक्खे हैं जिन के घुटने बअल

के आगे नहीं झुके और हर एक मुंह जिस ने उसे नहीं
चूमा ॥
१९ सो उस ने वहां से चलके सफ़त के बेटे इलीशअ को पाया
जो अपने आगे बारह जोड़े बैल के हल से जोत्ता था और
बारहवें जोड़े के संग आप था और इलियाह ने उस के पास
२० से जाते जाते अपना ओढ़ना उस पर डाल दिया। तब उस
ने बैलों को छोड़के इलियाह के पीछे दौड़के कहा कि मैं तेरी
बिनती करता हूं मुझे छुट्टी दीजिये कि अपने माता पिता को
चूमूं और तेरे पीछे हो लेऊंगा और उस ने उस्से कहा कि फिर जा
२१ क्योंकि मैं ने तुझे क्या किया है। तब वुह उस पास से फिर
गया और उस ने एक जोड़ी बैल लेके उन्हें बधन किया और
हल की लकड़ियों से उन के मांस को उसिना और लोगों को
दिया और उन्हों ने खाया तब वुह उठा और इलियाह के
पीछे हो लिया और उस की सेवा किई ॥

बीसवां पर्व्व ।

१ तब अराम के राजा बिनहदद ने अपनी समस्त सेना को
एकट्ठे किया और उस के साथ बत्तीस राजा और घोड़े और
रथ थे और उस ने जाके समरून को घेर लिया और उस्से
२ लड़ाई किई। और उस ने इसराएल के राजा अखिअब के
पास नगर में दूतों को भेजके कहा कि बिनहदद यों कहता है।
३ कि तेरा रूपा और तेरा सोना मेरा है और तेरी सुंदर सुंदर
४ पत्नियां और तेरे बालक भी मेरे हैं। तब इसराएल के राजा ने
उत्तर देके कहा कि मेरे प्रभु राजा तेरे वचन के समान मैं और
मेरा सब कुछ तेरा है ॥
५ और दूतों ने फिर आके कहा कि बिनहदद यों कहता है
कि यद्यपि मैं ने तेरे पास यह कहला भेजा है कि अपना

रूपा और सोना और अपनी पत्नियां और अपने बाल बच्चे
६ मुझे सोंपना। तथापि मैं कल इस जुन अपने सेवकों को तुझ
पास भेजूंगा और वे तेरे घर और तेरे सेवकों के घरों को
खोजेंगे और ऐसा होगा कि जो कुछ तेरी दृष्टि में मनभावनी
७ होगी वे अपने हाथ में करके ले आवेंगे। तब इसराएल के
राजा ने देश के समस्त प्राचीनों को बुलाके कहा कि चीन्ह
रक्खो और देखो कि वुह कैसा बिरोध ढूंढता है क्योंकि उस
ने मेरी पत्नियां और मेरे बालकों के और मेरे रूपा और मेरे
८ सोना के लिये लोगों को भेजा और मैं ने उसे न रोका। तब
सारे प्राचीन और सारे लोगों ने उसे कहा कि मत सुनियो
९ और मत मानियो। इस लिये उस ने बिनहदद के दूतों से
कहा कि मेरे प्रभु राजा से कहो कि जो तू ने पहिले अपने सेवक
को कहला भेजा सो सब मैं करूंगा परन्तु यह कार्य्य मैं न कर
सकूंगा तब दूतों ने जाके संदेश दिया॥

१० तब बिनहदद ने उस पास यह कहला भेजा कि देवगण
मुझ से ऐसा ही करें और उस्से अधिक यदि समरून की धूल
सारे लोगों के लिये जो मेरे चरण पर हैं मुट्ठी भर भर होवे।
११ फिर इसराएल के राजा ने उत्तर देके कहा कि तुम कहो कि
जो जन कटि कसता है सो उस के समान जो कटि खोलता
१२ है गर्व न करे। और यों हुआ कि जब वुह राजाओं के साथ
तंबुओं में पी रहा था उस ने यह बचन सुना तो अपने
सेवकों को कहा कि लैस हो रहो और वे नगर के बिरुद्ध लैस
हो रहे॥

१३ और देखो कि इसराएल के राजा अख़िअब पास एक
भविष्यद्वक्ता ने आके कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि क्या
तू ने इस बड़ी मंडली को देखा है सो देख मैं आज सभों
को तेरे हाथ में सोंपूंगा और तू जानेगा कि मैं ही परमेश्वर हूं।

१४ तब अखिअब ने पूछा कि किन के द्वारा से और वुह बोला
कि परमेश्वर यों कहता है कि देश देश के अध्यक्षों के तरुणों
के द्वारा से फिर उस ने पूछा कि संग्राम में कौन पांती बंधावे
और उस ने उत्तर दिया कि तू ॥
१५ तब उस ने देशों के अध्यक्षों के तरुणों को गिना और वे
दो सौ बत्तीस जन हुए फिर उस ने इसराएल के समस्त संतान
१६ को भी गिना और वे सात सहस्र जन हुए। और वे सब दो
पहर को निकले परन्तु बिनहदद और बत्तीस राजा जो उस
१७ के सहायक थे तंबुओं में पी पीके मतवाले होते थे। तब
देशों के अध्यक्षों के तरुण पहिले निकले और बिनहदद ने
भेजा और वे कहके उसे बोले कि समरून से लोग निकल
१८ आये हैं। तब वुह बोला कि यदि वे मिलाप के लिये निकले हैं
तो उन्हें जीता पकड़ो अथवा यदि युद्ध के लिये निकले हैं
१९ तो उन्हें जीता पकड़ो। तब देशों के अध्यक्षों के तरुण लोग
२० नगर से निकले और सेना उन के पीछे पीछे। और उन में से
हर एक ने एक एक को घात किया और अरामी भागे और
इसराएलियों ने उन्हें खेदा और अराम का राजा बिनहदद
२१ घोड़े पर घोड़चढ़ों के साथ भागके बचा। और इसराएल के
राजा ने निकलके घोड़ों और रथों को मार लिया और अरामियों
२२ को बनाके मारा। तब उस भविष्यद्वक्ता ने इसराएल के राजा
के पास आके उसे कहा कि तू फिर जा आप को दृढ़ कर और
चीन्ह रख जो किया चाहता है सो देख क्योंकि अराम का
राजा पीछे तेरे बिरोध में चढ़ आवेगा॥
२३ तब अराम के राजा के सेवकों ने उसे कहा कि उन के
देव पहाड़ों के देव हैं इस लिये वे हम से बलवान हुए परन्तु
आओ हम चौगान में उन से युद्ध करें तो निश्चय हम उन
२४ पर प्रबल होंगे। और तू यह काम कर कि हर एक राजा को

उस के स्थान से अलग कर और उन की सन्ती सेनापतिन को
२५ खड़ा कर। और अपनी जूझी हुई सेना की नाईं एक सेना
गिन ले घोड़े की सन्ती घोड़ा और रथ की सन्ती रथ और हम
चौगान में उन से संग्राम करेंगे और निश्चय उन पर प्रबल
होंगे सो उस ने उन का कहा माना और वैसा ही किया ॥
२६ और ज्योंहीं बरस बीता त्योंहीं बिनहदद ने अरामियों को
गिना और इसराएलियों से युद्ध करने को अफ़ीकः को चढ़ा।
२७ और इसराएल के संतान गिने हुए और सब एकट्ठे थे सो उन
का साम्ना किया और इसराएल के संतान ने उन के आगे ऐसा
डेरा किया जैसा मेम्ना का दो झुंड हो परन्तु अरामियों से देश
भर गया ॥
२८ और ईश्वर का एक जन इसराएल के राजा पास आया और
उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि अरामियों
ने कहा है कि परमेश्वर पहाड़ों का ईश्वर परन्तु तराई का ईश्वर
नहीं इस लिये मैं इस बड़ी मंडली को तेरे हाथ में सौंपूंगा
२९ और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं। सो उन्हों ने एक दूसरे
के सन्मुख सात दिन लों छावनी किई और सातवें दिन ऐसा
हुआ कि संग्राम हुआ और इसराएल के संतान ने दिन भर
३० में अरामियों के एक लाख पगइत मारे। परन्तु उबरे हुए
अफ़ीकः के नगर में पैठे और वहां एक भीत सत्ताईस सहस्र
बचे हुओं पर गिर पड़ी और बिनहदद भागके नगर में आया
और भीतर की कोठरी में घुसा ॥
३१ और उस के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये हम ने सुना
है कि इसराएल के घरानों के राजा बड़े दयाल राजा हैं सो
हमें आज्ञा दीजिये कि अपनी कटि पर टाट लपेटें और अपने
सिरों पर रस्सियां धरें और इसराएल के राजा पास जावें कदाचित
३२ वुह तेरा प्राण बचावे। सो उन्हों ने अपनी कटि पर टाट

और अपने सिर पर रस्सियां बांधीं और इसराएल के राजा पास
आके बोले कि तेरा सेवक बिनहदद यों कहता है कि मैं तेरी
बिनती करता हूं कि मुझे जाता छोड़िये और वुह बोला कि
३३ क्या वुह अब लों जीता है वुह मेरा भाई है। और वे मनुष्य
चौकसी से सोच रहे थे कि वुह क्या कहता है और झट उस
बात को पकड़के कहा कि हां तेरा भाई बिनहदद तब उस
ने कहा कि जाओ उसे ले आओ तब बिनहदद उस पास
३४ निकल आया और उस ने उसे रथ पर उठा लिया। और
उस ने उसे कहा कि जो जो नगर मेरे पिता ने तेरे पिता से
ले लिया मैं फेर देऊंगा और जिस रीति से मेरे पिता ने समरून
में सड़कें बनाईं तू दमिश्क में बना तब अखिअब बोला कि
मैं तुझे इसी बाचा से बिदा करूंगा सो उस ने उस्से बाचा
बांधी और बिदा किया॥

३५ और भविष्यद्वक्तों के संतानों में से एक जन ने परमेश्वर के
बचन से अपने परोसी को कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं
कि मुझे मार परन्तु उस जन ने उसे मारने से नाह किया।
३६ तब उस ने उसे कहा इस कारण कि तू ने परमेश्वर की आज्ञा
न मानी देख ज्योंहीं तू मुझ पास से बिदा होगा त्योंहीं एक
सिंह तुझे मार लेगा और ज्योंहीं वुह उस के पास से बिदा
हुआ त्योंहीं उसे एक सिंह ने पाया और उसे मार डाला।
३७ तब उस ने एक दूसरे को बुलाके कहा कि मैं तेरी बिनती
करता हूं मुझे मार तब उस मनुष्य ने उसे मारा और मारके
३८ घायल किया। तब वुह भविष्यद्वक्ता चला गया और मार्ग में
राजा की बाट जोहने लगा और अपने मुंह पर राख मलके
३९ अपना भेष बदला। और राजा के उधर जाते जाते उस ने
राजा को पुकारा और कहा कि तेरा सेवक संग्राम के मध्य में
गया था और देखिये एक जन फिरा और मुझ पास एक जन

यह कहके लाया कि इस की चैकसी कर यदि किसी रीति से
यह पाया न जावेगा ते इस के प्राण की सन्ती तेरा प्राण
४० जावेगा और नहीं ते तू एक तोड़ा चांदी देगा। और जिस
समय तेरा सेवक इधर उधर और काम में लिप्त था तब वुह जाता
रहा तब इसराएल के राजा ने उसे कहा कि तेरा यही बिचार
४१ है तू ही ने चुकाया है। और उस ने फुरती करके अपने मुंह
की राख पोंछी तब इसराएल के राजा ने उसे पहिचाना कि
४२ वुह भविष्यद्वक्तों में से है। तब उस ने उसे कहा कि परमेश्वर
यों कहता है इस लिये कि तू ने उस जन को अपने हाथ से
जाने दिया जिसे मैं ने सर्व्वथा नाश के लिये ठहराया था इस
कारण उस के प्राण की सन्ती तेरा प्राण और उस के लोगों की
४३ सन्ती तेरे लोग। तब इसराएल का राजा उदास और भारी
मन होके अपने घर को गया और समरून में आया॥

एक्कीसवां पर्व्व।

१ और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि नबात यज़रअएली
की एक दाख की बारी समरून के राजा अख़िअब के भवन से
२ लगी हुई यज़रअएल में थी। और अख़िअब ने नबात से कहा
कि अपनी दाख की बारी मुझे दे कि उसे तरकारी की बारी
बनाऊं क्योंकि वुह मेरे भवन के लग है और मैं उस की सन्ती
तुझे उस्से अच्छी दाख की बारी देऊंगा अथवा यदि तेरी दृष्टि
३ में अच्छा लगे तो मैं तुझे उस का दाम रोकड़ देऊंगा। और
नबात ने अख़िअब से कहा कि परमेश्वर ऐसा न करे कि मैं
अपने पितरों का अधिकार तुझे देऊं॥

४ तब यज़रअएली नबात की बात से अख़िअब उदास और
भारी मन होके अपने घर में आया क्योंकि उस ने कहा था
कि मैं अपने पितरों का अधिकार तुझे न देऊंगा और अपने

बिछौने पर पड़ा रहा और अपना मुंह फेर लिया और रोटी
५ न खाई । परन्तु उस की पत्नी ईज़बिल ने उस पास आके कहा
६ कि तू ऐसा उदास क्यों है कि रोटी नहीं खाता । तब उस ने
उसे कहा इस कारण कि मैं ने यज़रअएली नबात से कहा था
कि अपनी दाख की बारी मेरे हाथ बेंच और नहीं तो यदि
तेरा मन होवे तो मैं तुझे उस की सन्ती दाख की बारी देऊंगा
और उस ने उत्तर दिया कि मैं तुझे अपनी दाख की बारी न
देऊंगा ॥
७ तब उस की पत्नी ईज़बिल ने उसे कहा कि क्या तू इसराएलियों
पर राज्य करता है उठिये रोटी खाइये और मन को मगन
करिये मैं तुझे अज़रअएली नबात की दाख की बारी देऊंगी ।
८ तब उस ने अखिअब के नाम से पत्रियां लिखीं और उस की छाप
से छाप करके नबात के नगर के बासियों के अध्यक्षों और
९ प्राचीनों के पास भेजीं । और उस ने पत्रियों में यह बात लिखी
१० कि ब्रत को प्रचारो और लोगों पर नबात को बैठाओ । और
दुष्टों के पुत्रों में से दो जन ठहराओ कि यह कहके उस पर
साक्षी देवें कि तू ने ईश्वर की और राजा की अपनिन्दा किई
तब उसे बाहर ले जाके पत्थरवाह करो कि मर जावे ॥
११ और उस के नगर के लोगों ने अर्थात् प्राचीन और अध्यक्षों ने
जो उस के नगर के बासी थे ईज़बिल के कहने के समान जैसा
पत्रियों में जो उस ने उन पास भेजी थीं लिखा था किया ।
१२ उन्हों ने ब्रत को प्रचारा और लोगों पर नबात को बैठाया ।
१३ तब दुष्टों के पुत्रों में से दो जन भीतर आये और उस के आगे
बैठे और दुष्ट जनों ने नबात के बिरोध में यह कहके लोगों
के सोंहीं साक्षी दिई कि नबात ने ईश्वर की और राजा की
अपनिन्दा किई है तब वे उसे नगर से बाहर ले गये और
१४ उस पर ऐसा पत्थरवाह किया कि वुह मर गया । तब उन्हों

ने ईज़बिल को कहला भेजा कि नबात पथरवाह किया गया
और मर गया ॥
१५ और ऐसा हुआ कि जब ईज़बिल ने सुना कि नबात
पथरवाह किया गया और मर गया तो ईज़बिल ने अख़िअब
को कहा कि उठिये यज़रअएली नबात की बारी को बश में
करिये जिसे उस ने रोकड़ की सन्ती तुझे देने को नाह किया
१६ क्योंकि नबात जीता नहीं है परन्तु मर गया। और यों हुआ
कि जब अख़िअब ने सुना कि नबात मर गया तो अख़िअब
उठा कि यज़रअएली नबात की दाख की बारी में उतरे जिसतें
उसे बश में करे ॥
१७ तब परमेश्वर का बचन तिसबी इलियाह पास यह कहके
१८ आया। कि उठ जाके इसराएल के राजा अख़िअब से जो
समरून में है भेंट कर देख कि वुह नबात की दाख की
बारी में है जिधर वुह उसे बश में करने को उतरा है।
१६ और तू उसे यह कहना कि परमेश्वर यों कहता है कि तू ने
घात किया है और बश में भी किया है और तू उसे कह कि
परमेश्वर आज्ञा करता है कि जिस स्थान में कुत्तों ने नबात
का लोहू चाटा उसी स्थान में तेरा भी लोहू कुत्ते चाटेंगे।
२० और अख़िअब ने इलियाह को कहा कि हे मेरे बैरी क्या तू ने
मुझे पाया है और उस ने उत्तर दिया कि मैं ने पाया है क्योंकि
तू ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई करने के लिये आप को बेंच
२१ डाला। देख मैं तुझ पर बुराई लाऊंगा और तेरे बंश को दूर
करूंगा और अख़िअब में से हर एक पुरुष को जो भीत पर
मुत्ता है और जो जन इसराएल में से बंधुआ और बचा हुआ
२२ है उसे भी मैं मिटा डालूंगा। और उस खिजाव के कारण जिस्से
तू ने मुझे खिजाया है और इसराएल से पाप करवाया है मैं
तेरे घराने को नबात के बेटे यरुबिआम के घराने की नाईं

और अख़ियाह के बेटे बअशा के घराने की नाईं करूंगा।
२३ और परमेश्वर ईज़बिल के विषय में भी यह कहके बोला कि
यज़रअएल के खाईं के पास ईज़बिल को कुत्ते खावेंगे।
२४ अख़िअब का जो जन नगर में मरेगा उसे कुत्ते खावेंगे और
जो चौगान में मरेगा उसे आकाश के पक्षी खावेंगे॥
२५ परन्तु अख़िअब के समान कोई न था जिस ने परमेश्वर की
दृष्टि में दुष्टता के लिये आप को बेंचा जिसे उस की पत्नी
२६ ईज़बिल ने उसे उभाड़ा। और उस ने अमूरियों के समान
जिन्हें परमेश्वर ने इसराएलियों के आगे से दूर किया था अति
घिनित बस्तुन में मूर्त्तों का पीछा पकड़ा॥
२७ और ऐसा हुआ कि जब अख़िअब ने ये बातें सुनीं तो
अपने कपड़े फाड़े और अपने शरीर पर टाट रक्खा और ब्रत
२८ किया और टाट पहिने हुए हौले हौले चलने लगा। तब
परमेश्वर का बचन तिसबी इलियाह पर यह कहके उतरा।
२९ क्या तू देखता है कि अख़िअब मेरे आगे आप को कैसा दीन
करता है इस कारण कि वुह आप को मेरे आगे दीन करता
है मैं यह बुराई उस के दिनों में न लाऊंगा परन्तु उस के
बेटों के समय में उस के घराने पर बुराई लाऊंगा॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ और तीन बरस लों बिश्राम किया कि अरामियों इसराएलियों
२ में कोई लड़ाई न हुई। और तीसरे बरस ऐसा हुआ कि
यहूदाह का राजा यहूसफ़त इसराएल के राजा पास गया।
३ तब इसराएल के राजा ने अपने सेवकों से कहा कि तुम
जानते हो कि रामात जिलिअद हमारे हैं और हम उसे लेने
में चुपके हो रहे हैं और अराम के राजा के हाथ से उसे नहीं
४ लेते हैं। तब उस ने यहूसफ़त से कहा कि क्या तू मेरे साथ

लड़ने को रामात जिलिअद पर संग्राम के लिये चढ़ेगा और यहूसफ़त
ने इसराएल के राजा को उत्तर दिया कि तेरी नाईं मैं हूं
तेरे लोग मेरे लोगों की नाईं तेरे घोड़े मेरे घोड़े को नाईं॥
५ और यहूसफ़त ने इसराएल के राजा से कहा कि मैं तेरी
बिनती करता हूं कि आज परमेश्वर के वचन से बूझिये।
६ तब इसराएल के राजा ने भविष्यद्वक्तों को एकट्ठा किया जो
चार सौ जन के लगभग थे और उन्हें कहा कि क्या मैं रामात
जिलिअद पर लड़ने चढ़ूं अथवा अलग रहूं और वे बोले कि
चढ़ जाइये क्योंकि परमेश्वर उसे राजा के हाथ में सौंपेगा॥
७ तब यहूसफ़त ने कहा कि यहां कोई परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता
८ नहीं है कि हम उस्से बूझें। तब इसराएल के राजा ने
यहूसफ़त से कहा कि अब भी एक जन है यिमलः का बेटा
मीकायाह जिस के द्वारा से हम परमेश्वर से बूझ सक्ते हैं परन्तु
मैं उस्से बैर रखता हूं क्योंकि वुह मेरे विषय में अच्छी बात
नहीं कहता परन्तु बुरी तब यहूसफ़त बोला कि राजा ऐसा
न कहें॥
९ तब इसराएल के राजा ने एक प्रधान को बुलाके कहा कि
१० यिमलः के बेटे मीकायाह को शीघ्र ले आ। तब इसराएल
का राजा और यहूदाह का राजा यहूसफ़त राजवस्त्र पहिने
हुए समरून के फाटक की पैठ में अपने अपने सिंहासन पर
जा बैठे और समस्त भविष्यद्वक्ता उन के आगे भविष्य करते
११ थे। और कनआनः के बेटे सटक़याह ने अपने लिये लोहे
के सींग बनाये और बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि तू
इन से अरामियों को गोदेगा यहां लों कि उन्हें नाश करेगा।
१२ तब सारे भविष्यद्वक्तों ने यह कहके भविष्य कहा कि रामात
जिलिअद पर चढ़ जाइये और भाग्यमान हूजिये क्योंकि उसे
परमेश्वर राजा के हाथ में सौंपेगा॥

१३ और जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था उस ने उस्से
यह कहा कि देख भविष्यद्वक्तों का बचन एक सा राजा के
लिये भला है इस लिये मैं बिनती करता हूं तेरा बचन उन
१४ में से एक के बचन की नाईं होवे और भला कहियो। और
मीकायाह बोला कि परमेश्वर के जीवन सों परमेश्वर जो मुझे
कहेगा वही मैं कहूंगा॥
१५ सो वुह राजा पास आया और राजा ने उसे कहा कि हे
मीकायाह क्या हम लड़ने को रामात जिलिआद पर चढ़ें अथवा रह
जावें तब उस ने उसे उत्तर दिया कि चढ़ जा और भाग्यमान
हो क्योंकि परमेश्वर ने उसे राजा के हाथ में कर दिया है।
१६ तब राजा ने उसे कहा कि मैं के बेर तुझे किरिया खिलाया
करूं कि तू परमेश्वर के नाम से सच्ची बात से अधिक कुछ न
१७ कह। तब उस ने कहा कि मैं ने सारे इसराएल को बिन
चरवाहे की भेड़ों के समान पहाड़ों पर बिथरे हुए देखा और
परमेश्वर ने कहा कि कोई उन का स्वामी नहीं सो उन में से
१८ हर एक जन अपने अपने घर कुशल से चला जावे। तब
इसराएल के राजा ने यहूसफ़त से कहा क्या मैं ने तुझ से नहीं
कहा कि वुह मेरे बिषय में भला भविष्य न कहेगा परन्तु
१९ बुरा। तब उस ने कहा कि परमेश्वर के बचन को सुनो मैं ने
परमेश्वर को अपने सिंहासन पर बैठे और स्वर्ग की सारी सेना
२० को उस के दहिने बायें खड़ी देखा। तब परमेश्वर ने कहा कि
अख़िअब को कौन छलेगा जिसतें वुह रामात जिलिआद पर
चढ़के जूझ जावे तब उन में से एक ने कुछ कहा दूसरे ने
२१ कुछ। और एक आत्मा निकलके परमेश्वर के आगे आ खड़ी हुई
और बोली कि मैं उस को बोध करूंगी फिर परमेश्वर ने कहा
२२ कि किस्से। और वुह बोली मैं जाऊंगी और उस के सारे
भविष्यद्वक्तों के मुंह में मिथ्या आत्मा हूंगी तब उस ने कहा

कि तू उस का बोध करेगी और प्रबल भी होगी जा और ऐसा
२३ कर। सो अब देख परमेश्वर ने तेरे उन सब भविष्यद्वक्तों के
मुंह में मिथ्या आत्मा को डाला है और परमेश्वर ही ने तेरे
विषय में बुरा कहा है॥
२४ परन्तु कनआन का बेटा सदक़याह पास आया और
मीकायाह के गाल पर थपेड़ा मारके बोला कि परमेश्वर की
२५ आत्मा मुझ से निकल के किधर से तुझे कहने गई। तब
मीकायाह बोला कि देख तू उस दिन जब तू आप को छिपाने
को एक कोठरी से दूसरी कोठरी में घुसता फिरेगा तब
देखेगा॥
२६ तब इसराएल के राजा ने कहा कि मीकायाह को लेओ और
नगर के अध्यक्ष अम्मून और राजपुत्र यूआस के पास फिर ले
२७ जाओ। और कहो कि राजा की आज्ञा है कि इसे बंधन में
रक्खो और जब लों मैं कुशल से न आऊं तब लों उसे कष्ट
२८ की रोटी और कष्ट का जल दिया करो। तब मीकायाह
बोला यदि तू किसी रीति से कुशल से फिर आवे तो परमेश्वर
ने मेरे द्वारा से नहीं कहा और वुह बोला हे लोगो तुम में से
हर एक जन सुन रक्खे॥
२९ तब इसराएल का राजा और यहूदाह का राजा यहूसफ़त
३० रामात जिलिआद पर चढ़ गये। और इसराएल के राजा ने
यहूसफ़त से कहा कि मैं संग्राम में अपना भेष पलटके प्रवेश
करूंगा परन्तु तू अपना राजबस्त्र पहिनियो सो इसराएल के
३१ राजा ने अपना भेष पलटके युद्ध में प्रवेश किया। परन्तु
अरामी के राजा ने अपने रथों के बत्तीस प्रधानों को कहके
आज्ञा किई कि छोटे बड़े किसी से मत लड़ियो परन्तु केवल
३२ इसराएल के राजा के संग। और ऐसा हुआ कि रथों के प्रधानों
ने यहूसफ़त को देखके यों कहा कि निश्चय इसराएल का

राजा वही है और उन्हों ने एक ओर होके चाहा कि उस्से
३३ युद्ध करें तब यहूसफ़त चिल्लाया। और जब रथ के प्रधानों
ने जाना कि यह इसराएल का राजा नहीं तो वे उस के खेदने
३४ से हट आये। और अकस्मात एक जन ने बाण चलाया और
वुह संयोग से इसराएल के राजा को झिलम के जोड़ में लगा
तब उस ने अपने सारथी से कहा कि बाग फेर और सेना में
३५ से मुझे निकाल ले जा क्योंकि मैं घायल हुआ। परन्तु उस
दिन संग्राम बढ़ गया और राजा अरामियों के सन्मुख रथ पर
ठहरा रहा और सांझ होते होते मर गया और लोहू उस के
३६ घाव से रथ में बहि निकला। और सूर्य्य अस्त होते हुए
समस्त सेना में प्रचार हुआ कि हर एक जन अपने अपने
३७ नगर और अपने अपने देश को जावे। सो राजा मर गया
और उसे समरून में ले गये और समरून में राजा को गाड़
३८ दिया। और रथ को समरून के कुंड में धोया और कुत्तों ने
उस का लोहू चाटा और वेश्यायें धोती थीं उस बचन के समान
जैसा परमेश्वर ने कहा था॥

३९ और अख़िअब की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने
किया था और हाथी दांत का भवन जो उस ने बनाया और
जो जो नगर उस ने बनाये सो क्या वे इसराएल के राजाओं के
४० समयों के समाचारों की पुस्तक में नहीं लिखे हैं। और
अख़िअब ने अपने पितरों में शयन किया और उस का बेटा
अख़ज़याह उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥

४१ और इसराएल के राजा अख़िअब के चौथे बरस आसा का
४२ बेटा यहूसफ़त यहूदाह पर राज्य करने लगा। यहूसफ़त
पैंतीस बरस का होके राज्य करने लगा और उस ने यरूसलम
में पचीस बरस राज्य किया और उस की माता का नाम अज़ूबः
४३ था वुह सीलही की बेटी थी। और वुह अपने बाप आसा के

सारे मार्गों में चलता था वुह उस्से परमेश्वर की दृष्टि में भलाई
करने से न मुड़ा तथापि ऊंचे स्थान अलग न किये गये अब
लों उन ऊंचे स्थानों पर लोग भेंट चढ़ाते और धूप जलाते
४४ रहे। और यहूसफ़त ने इसराएल के राजा से मिलाप किया॥
४५ अब यहूसफ़त की रही हुई क्रिया और उस के पराक्रम
जो उस ने दिखाया और किस रीति से युद्ध किया सो क्या
वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं
४६ लिखे हैं। और उस ने गांडुओं को जो उस के बाप आसा के
४७ समय में रह गये थे देश में से दूर किया। उस समय अदूम
में कोई राजा न था परन्तु एक उपराजा राज्य करता था॥
४८ यहूसफ़त ने तरसीस के जहाज़ बनवाये जिसतें ओफ़ीर से
सोना मंगवावे परन्तु वे वहां लों न गये क्योंकि असयूनजब्र में
४९ जाहज़ मारे गये। तब अख़िअब के बेटे अख़ज़याह ने
यहूसफ़त से कहा कि जहाज़ों पर अपने सेवकों के साथ मेरे
सेवकों को भी जाने दीजिये परन्तु यहूसफ़त ने न माना।
५० तब यहूफ़त ने अपने पितरों के साथ शयन किया और अपने
पितर दाऊद के नगर में अपने पितरों के मध्य में गाड़ा गया
और उस का बेटा यहूराम उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥
५१ अख़िअब का बेटा अख़ज़याह यहूदाह के राजा यहूसफ़त
के राज्य के सतरहवें बरस समरून में इसराएल पर राज्य करने
५२ लगा और उस ने दो बरस इसराएल पर राज्य किया। और
उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और अपने पिता और
अपनी माता के और नबात के बेटे यरुबिआम के मार्ग पर
५३ जिस ने इसराएल से पाप करवाया चलता था। क्योंकि अपने
पिता के सारे कार्य्य के समान उस ने बअ़ल की सेवा किई और उस
को दण्डवत किई और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर को रिस दिलाई॥

राजाओं की दूसरी पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ और अख़िअब के मरने के पीछे मोअब इसराएल से फिर
२ गया। और अख़ज़याह अपने ऊपर की कोठरी के झरोखे
से जो समरून में था गिर पड़ा और रोगी हुआ और उस ने
दूतों को भेजा और उन्हें कहा कि जाओ अक़रून के देव
बअलज़बूब से पूछो कि मैं इस रोग से चंगा हूंगा कि नहीं।
३ परन्तु परमेश्वर के दूत ने तिसबी इलियाह को कहा कि उठ
समरून के राजा के दूतों से भेंट कर और उन्हें कह कि क्या
इसराएल में कोई ईश्वर नहीं जो तुम अक़रून के देव बअलज़बूब
४ से पूछने जाते हो। सो इस कारण परमेश्वर यों कहता है कि
जिस बिछौने पर तू पड़ा है उस्से न उतरेगा परन्तु निश्चय
मर जावेगा तब इलियाह चला गया॥

५ और जब दूत उस पास फिर आये तब उस ने उन से
६ पूछा कि तुम किस लिये फिर आये हो। और उन्हों ने उसे
कहा कि एक जन हमें मिला और हमें कहा कि राजा पास
जिस ने तुम्हें भेजा है फिर जाओ और उसे कहो कि परमेश्वर
यों कहता है इस लिये नहीं कि इसराएल में कोई ईश्वर नहीं
जो तू अक़रून के देव बअलज़बूब से पूछने भेजता इस लिये
तू उस बिछौने पर से जिस पर तू चढ़ा है उतरने न पावेगा
७ परन्तु निश्चय मर जावेगा। और उस ने उन से कहा कि उस जन
की रीति जो तुम्हें मिला और जिस ने तुम्हें ये बातें कहीं

८ कैसी थी। और उन्हों ने उसे कहा कि वुह रोआंर जन था
और चमड़े के पटुके से उस की करिहांव कसी हुई थी तब
उस ने कहा कि वुह तिसबी इलियाह है॥
९ तब राजा ने पचास के प्रधान को उस के पचास जन समेत
उस पास भेजा और वुह उस पास चढ़ गया और देखा कि
वुह एक पहाड़ की चोटी पर बैठा था और उस ने उसे कहा
१० कि हे ईश्वर के जन राजा ने कहा है कि उतर आ। तब इलियाह
ने उस पचास के प्रधान को उत्तर देके कहा कि यदि मैं ईश्वर
का जन हूं तो स्वर्ग से आग उतरे और तुझे और तेरे पचास
जन को भस्म करे तब आग स्वर्ग से उतरी और उसे और
११ उस के पचास को भस्म किया। फिर उस ने दूसरी बेर और
एक पचास के प्रधान को उस के पचास समेत भेजा उस ने
भी जाके कहा कि हे ईश्वर के जन राजा ने कहा है कि शीघ्र
१२ उतर आ। तब इलियाह ने उन्हें उत्तर देके कहा कि यदि
मैं ईश्वर का जन हूं तो स्वर्ग से आग उतरे और तुझे और
तेरे पचास को भस्म करे और ईश्वर की आग स्वर्ग से उतरी
१३ और उसे और उस के पचास को भस्म किया। फिर उस ने
तीसरी बेर और एक पचास के प्रधान को उस के पचास समेत भेजा
और तीसरा पचास का प्रधान चढ़ गया और आके इलियाह
के आगे घुठने टेके और बिनती करके बोला कि हे ईश्वर के
जन मैं तेरी बिनती करता हूं कि मेरा प्राण और तेरे इन
१४ पचास दासों के प्राण तेरी दृष्टि में बहुमूल्य होवें। देखिये कि
स्वर्गीय अग्नि ने दो पचास के प्रधानों को उन के पचास पचास
समेत भस्म किया सो अब मेरा प्राण तेरी दृष्टि में बहुमूल्य
१५ होवे। तब परमेश्वर के दूत ने इलियाह को कहा कि उस के
साथ उतर जा उस्से मत डर तब वुह उठा और उतरके उस
१६ के साथ राजा पास गया। और उस ने उसे कहा कि परमेश्वर

यों कहता है जैसा कि तू ने दूतों को भेजा है कि अक्रून
के देव बअलज़बूब से जाके पूछें यह इस कारण नहीं कि
इसराएल में कोई ईश्वर नहीं कि उस के बचन से बूझता इस
लिये जिस बिछौने पर तू चढ़ा है उस्से न उतरेगा परन्तु
निश्चय मर जावेगा ॥
१७ सो परमेश्वर के बचन के समान जो इलियाह ने कहा था
वुह मर गया और यहूदाह के राजा यहूसफ़त के बेटे यहूराम
के दूसरे बरस में यहूराम उस की सन्ती राज्य पर बैठा क्योंकि
१८ उस का कोई बेटा न था । और अख़ज़याह की रही हुई क्रिया
जो उस ने किई क्या इसराएली राजाओं के समयों के समाचार
की पुस्तक में लिखा नहीं ॥

दूसरा पर्व्व ।

१ और यों हुआ कि जब परमेश्वर ने चाहा कि इलियाह को
बौंडर में स्वर्ग पर ले जावे तब इलियाह इलीशअ के साथ
२ जिलजाल से चला । और इलियाह ने इलीशअ को कहा कि
यहां ठहर जा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे बैतएल को भेजा है
तब इलीशअ ने कहा कि परमेश्वर के जीवन और तेरे प्राण के
जीवन सों मैं तुझे न छोड़ूंगा सो वे बैतएल को उतर गये ।
३ और बैतएल के भविष्यद्वक्तों के पुत्रों ने निकल आके इलीशअ
से कहा कि तुझे कुछ चेत है कि परमेश्वर आज तेरे सिर पर
से तेरे स्वामी को उठा लेगा और वुह बोला कि हां मैं जानता
४ हूं तुम चुप रहो । तब इलियाह ने इलीशअ को कहा कि
यहीं ठहर जा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यरीहो को भेजा है
और उस ने कहा कि परमेश्वर के जीवन और तेरे प्राण के जीवन
सों मैं तुझे न छोड़ूंगा सो वे यरीहो को आये ॥
५ और भविष्यद्वक्तों के संतान जो यरीहो में थे इलीशअ पास

आये और उस्से कहा कि तुझे कुछ चेत है कि परमेश्वर आज
तेरे स्वामी को तेरे सिर पर से उठा लेगा और उस ने उत्तर
६ दिया कि हां मैं जानता हूं तुम चुप रहो। और इलियाह ने उसे
कहा कि यहां ठहर जा क्योंकि परमेश्वर ने मुझे यरदन को
भेजा है और वुह बोला कि परमेश्वर के जीवन और तेरे प्राण
७ के जीवन सों मैं तुझे न छोड़ुंगा सो वे दोनों बढ़ गये। और
पचास मनुष्य भविष्यद्वक्तों के पुत्रों में से चले और दूर खड़े
होके देखने लगे और वे दोनों यरदन के तीर खड़े हुए।
८ और इलियाह ने अपना ओढ़ना लिया और लपेटके पानियों
को मारा और वे इधर उधर विभाग हो गये यहां लों कि वे
दोनों सूखे सूखे उतर गये॥

९ और जब पार हुए तो इलियाह ने इलीशअ से कहा कि
तुझ से अलग किये जाने से आगे मांग कि मैं तेरे लिये क्या
करूं तब इलीशअ बोला कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि तेरी
१० आत्मा से दूना भाग मुझ पर पड़े। और उस ने कहा कि तू
ने मांगने में कठिन किया यदि तू मुझे आप से अलग होते
हुए देखेगा तो ऐसा ही तुझ पर होगा और यदि नहीं तो न
होगा॥

११ और ऐसा हुआ कि ज्योंहीं वे दोनों टहलते हुए बातें करते
चले जाते थे तो देखो कि एक आग का रथ और आग के घोड़े
आये और उन दोनों को अलग किया और इलियाह बोंडर में
१२ होके स्वर्ग पर जाता रहा। और इलीशअ देखके चिल्लाया
कि हे मेरे पिता हे मेरे पिता इसराएल के रथ और उस के
घोड़चढ़े और उस ने उसे फिर न देखा और उस ने अपने ही
१३ कपड़ों को लेके उन्हें दो टुकड़ा किया। और उस ने इलियाह
के ओढ़ने को भी जो उस पर से गिर पड़ा था उठा लिया और
१४ उलटा फिरा और यरदन के तीर पर खड़ा हुआ। और उस

ने इलियाह के ओढ़ने को जो उस्से गिर पड़ा था लेके पानियों
को मारा और कहा कि परमेश्वर इलियाह का ईश्वर कहां और
जब उस ने भी पानियों को मारा तो पानी इधर उधर हो
गया और इलीशअ पार गया॥
१५ और जब यरीहो के भविष्यद्वक्तों के संतानों ने जो देखने
को निकले थे उसे देखा तो बोले कि इलियाह की आत्मा
इलीशअ पर ठहरती है और वे उस की भेंट के लिये आये
१६ और उस के आगे भूमि पर झुके। और उसे कहा कि देखिये
अब तेरे सेवकों के साथ पचास बीर पुत्र हैं हम तेरी बिनती
करते हैं कि उन्हें जाने दीजिये कि तेरे स्वामी को ढूंढ़ें क्या
जाने परमेश्वर के आत्मा ने उसे उठाके किसी पर्बत पर अथवा
१७ तराई में फेंक दिया हो और वुह बोला कि मत भेजो। और
जब उन्हों ने यहां लों उसे उभारा कि वुह लज्जित हुआ तब
उस ने कहा कि भेजो और उन्हों ने पचास जन भेजे और
१८ उन्हों ने तीन दिन लों उसे ढूंढ़ा परन्तु उसे न पाया। और जब
वे उस पास फिर आये क्योंकि वुह यरीहो में ठहरा था तब उस
ने उन्हें कहा कि क्या मैं ने तुम्हें न कहा था कि मत जाओ॥
१९ तब उस नगर के लोगों ने इलीशअ से कहा कि देखिये
इस नगर का स्थान मनभावना है जैसा मेरे प्रभु देखते हैं
२० परन्तु पानी निकम्मा और भूमि फलहीन है। तब उस ने
कहा कि नया पात्र लाओ और उस में नोन डालो और वे उस
२१ पास लाये। तब वुह पानियों के सोतों पर गया और नोन
वहां डालके बोला कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने इन
पानियों को अच्छा किया है फिर वहां से मृत्यु अथवा ऊसर
२२ न होगा। और इलीशअ के कहे हुए बचन के समान आज
लों जल अच्छे हुए॥
२३ फिर वुह वहां से बैतएल को चढ़ा और ज्यों वुह मार्ग में

ऊपर जाता था त्यों देखो कि नगर के लड़के निकले और उसे
चिढ़ा चिढ़ा कहने लगे कि चढ़ जा सिर मुंडे चढ़ जा सिर
२४ मुंडे। तब उस ने पीछे फिरके उन्हें देखा और परमेश्वर का
नाम लेके उन्हें स्राप दिया तब वन में से दो भालू निकले
२५ और उन में से बयालीस लड़कों को मार डाला। फिर वुह
वहां से करमिल पहाड़ को गया और वहां से समरून को
फिर आया॥

तीसरा पर्व्व।

१ अब यहूदाह के राजा यहूसफ़त के अठारहवें बरस अख़िअब
का बेटा यहूराम समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा
२ और उस ने बारह बरस राज्य किया। और उस ने परमेश्वर
की दृष्टि में बुराई किई परन्तु अपने माता पिता के तुल्य नहीं
इस लिये कि उस ने बअ़ल की मूर्त्ति को जो उस के पिता ने
३ बनाई थी दूर किया। तथापि वुह नबात के बेटे यरुबिआम
के समान पापों में जिस ने इसराएल से पाप करवाया पिलचा
रहा उन से अलग न हुआ॥

४ और मोअब का राजा मैसा जो भेड़ों का स्वामी था और
इसराएल के राजा को एक लाख मेम्ने और एक लाख मेढ़े ऊन
५ समेत भेंट भेजता था। परन्तु यों हुआ कि जब अख़िअब
मर गया तब मोअब का राजा इसराएल के राजा से फिर
गया॥

६ और यहूराम राजा उसी समय समरून से निकला और
७ सारे इसराएलियों को गिना। और उस ने जाके यहूदाह के
राजा यहूसफ़त को कहला भेजा कि मोअब का राजा मुझ से
फिर गया क्या तू मोअब से लड़ने को मेरे साथ जावेगा और
उस ने कहा कि मैं चढ़ जाऊंगा जैसा मैं वैसा तू जैसे मेरे

८ लोग वैसे तेरे लोग जैसे मेरे घोड़े वैसे तेरे घोड़े। तब उस
ने पूछा कि हम किस मार्ग से चढ़ जावें और उस ने उत्तर
९ दिया कि अदूम के बन के मार्ग में से। सो इसराएल के राजा
और यहूदाह के राजा और अदूम के राजा निकले और उन्हों
ने सात दिन के मार्ग का चक्कर खाया और सेना के लिये और
उन के ढोरों के लिये जल न था॥

१० तब इसराएल का राजा बोला हाय परमेश्वर ने इन तीन
राजाओं को एकट्ठा किया कि उन्हें मोअब के हाथ में सैांपे।
११ परन्तु यहूसफ़त बोला कि परमेश्वर के भविष्यद्वक्तों में से कोई
यहां नहीं जिसतें हम उस के द्वारा से परमेश्वर से बूझें तब
इसराएल के राजा के सेवकों में से एक बोल उठा कि सफ़त
का बेटा इलीशअ यहां है जो इलियाह के हाथों पर जल
१२ डालता था। तब यहूसफ़त बोला कि परमेश्वर का बचन उस
पास है इस लिये इसराएल का राजा और यहूसफ़त और अदूम
१३ का राजा उस पास गये। तब इलीशअ ने इसराएल के राजा
से कहा कि मुझे तुझ से क्या काम तू अपने पिता के भविष्यद्वक्तों
और अपनी माता के भविष्यद्वक्तों पास जा और इसराएल का
राजा उस्से बोला नहीं क्योंकि परमेश्वर ने इन तीन राजाओं
१४ को एकट्ठा किया कि उन्हें मोअब के हाथ में सैांपे। तब
इलीशअ ने कहा कि सेनाओं के परमेश्वर की सों जिस के आगे
मैं खड़ा हूं यदि यहूदाह के राजा यहूसफ़त के साक्षात होने
को न मानता तो निश्चय मैं तेरी ओर न ताकता और न
१५ तुझे देखता। परन्तु अब मुझ पास एक बीणा बजवैया लाओ
और जब उस ने बीणा बजाई तो ऐसा हुआ कि परमेश्वर का
१६ हाथ उस पर आया। और वुह बोला कि परमेश्वर यों कहता
१७ है कि इस तराई को गड़हों से भर देओ। क्योंकि परमेश्वर
यों कहता है कि तुम न बयार न मेंह देखोगे तथापि यह

तराई पानी से भर जावेगी जिसतें तुम और तुम्हारे ढोर और
१८ तुम्हारे पशु पीवें। और यह परमेश्वर की दृष्टि में छोटी बात
१९ है वुह मोअबियों को भी तुम्हारे हाथों में सोंपेगा। और तुम
हर एक बाड़ित नगर और हर एक चुनी हुई बस्ती मारोगे
और हर एक अच्छे पेड़ को गिराओगे और पानी के सारे कूओं
को भाठोगे और हर एक अच्छी भूमि को पत्थरों से बिगाड़ोगे॥
२० और बिहान को यों हुआ कि जब भेंट चढ़ाई गई तो
देखो कि अदूम के मार्ग से पानी आया और देश पानी से भर
२१ गया। और मोअबियों ने यह सुनके कि राजा हम से लड़ने
चढ़ आये हैं उन्हों ने ललकारके सभों को जो करिहांव बांध
२२ सक्ते एकट्ठा किया और अपने सिवाने पर खड़े हुए। और बड़े
तड़के उठे और सूर्य्य पानी पर चमकने लगा और मोअबियों
२३ ने उस पार से पानी को लोहू सा लाल देखा। तब वे बोल
उठे कि वुह लोहू है निश्चय राजा नष्ट हुए और एक ने दूसरे
२४ को बधन किया है हे मोअबियो अब लूटो। और जब वे
इसराएल की छावनी में आये तो इसराएली उठे और मोअबियों
को यहां लों मारा कि वे उन के आगे से भाग निकले परन्तु
२५ वे मोअबियों को मारते हुए बढ़ते गये अर्थात् देश में। और
उन्हों ने उन के नगरों को ढा दिया और हर एक जन ने हर
एक अच्छे स्थान पर अपना पत्थर डाला और उसे भर दिया
और पानी के सारे कुए भाठ दिये और सब अच्छे पेड़ गिरा
दिये यहां लों कि क़ीरहरसत के पत्थरों से अधिक कुछ बचा
न रहा तथापि ढेलवासियों ने उसे जा घेरा और मार लिया॥
२६ और जब मोअब के राजा ने देखा कि संग्राम मेरे लिये
अति भारी हुआ तो उस ने अपने संग सात सौ जन खड्गधारी
२७ लिये जिसतें अदूम के राजा लों पैठे परन्तु न सके। तब
उस ने अपने जेठे बेटे को लिया जिसे उस की सन्ती राज्य

पर बैठना था और उसे भीत पर होम के बलिदान के लिये
चढ़ाया और इसराएलियों के विरुद्ध बड़ा जलजलाहट हुआ
और वे उस्से हट गये और देश में फिर आये ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ अब भविष्यद्वक्तों के पुत्रों की पत्नियों में से एक स्त्री इलीशअ
के आगे चिल्लाके बोली कि तेरा सेवक मेरा पति मर गया है
और तू जानता है कि तेरा सेवक परमेश्वर से डरता था और
अब धनिक आया है कि मेरे दोनों बेटों को लेके दास बनावे।
२ तब इलीशअ ने उस्से कहा कि मैं तेरे लिये क्या करूं मुझे
बतला तुझ पास घर में क्या है और वुह बोली कि तेरी दासी
३ के घर में एक हांडी तेल से अधिक कुछ नहीं। तब उस ने
कहा कि बाहर जाके अपने सब परोसियों से छूछे पात्र मंगनी
४ ला और वे थोड़े न होवें। और अपने घर में जाके अपने
और अपने बेटों पर द्वार बन्द कर और उन सब पात्रों में
५ उंडेल और जो जो भर जावे उसे अलग रख। सो वुह उस
के पास से गई और अपने पर और अपने बेटों पर द्वार मूंद
लिया वे उस के पास लाते जाते थे और वुह उंडेलती थी।
६ और ऐसा हुआ कि जब वे पात्र भर गये तो उस ने अपने बेटे
से कहा कि एक और पात्र ला और वुह उस्से बोला और पात्र
७ तो नहीं तब तेल थम गया। और उस ने आके ईश्वर के जन
से कहा तब वुह बोला जा तेल बेंच और धनिक को दे और
बचे हुए से तू और तेरे सन्तान जीवें ॥
८ और एक दिन ऐसा संयोग हुआ कि इलीशअ सूनेम को
गया और वहां एक धनवती स्त्री थी और उस ने उसे पकड़ा
कि रोटी खाय सो ऐसा हुआ कि जब उस का जाना उधर
९ होता था तब वुह वहां जाके रोटी खाता था। फिर उस ने

अपने पति से कहा कि देख मैं जानती हूं कि यह ईश्वर का
१० पवित्र जन है जो नित्य हमारे पास से जाता है। सो हम
उस के लिये एक छोटी सी कोठरी भीत पर बनावें और वहां
उस के लिये बिछौना बिछावें और एक मंच लगावें और एक
पीढ़ी रक्खें और एक दीअट और जब वुह हम पास आया
११ करे तब वहीं टिके। सो एक दिन ऐसा हुआ कि वुह वहां
१२ गया और उस कोठरी में टिका और सोया। तब उस ने
अपने सेवक जेहाज़ी को कहा कि इस सूनेमी को बुला और
उस ने उसे बुलाया तो वुह उस के आगे आ खड़ी हुई।
१३ फिर उस ने अपने सेवक से कहा कि तू उसे कह कि तू ने
जो हमारे लिये यह सब चिन्ता किई तो तेरे लिये क्या किया
जावे तू चाहती है कि राजा अथवा सेना के प्रधान से तेरे
विषय में कहा जावे और वुह बोली कि मैं अपने ही लोगों में
१४ रहती हूं। फिर उस ने कहा कि इस के लिये क्या किया
जावे तब जेहाज़ी बोला कि निश्चय यह निर्वंश है और उस
१५ का पति वृद्ध। तब वुह बोला कि उसे बुला और उस ने
१६ उसे बुलाया तब वुह द्वार पर खड़ी हुई। और वुह बोला
इसी समय से पूरे दिन पर तू एक बेटा गोद में लेगी और
वुह बोली कि नहीं हे मेरे प्रभु ईश्वर के जन अपनी दासी से
१७ झूठ न कहिये। और वुह स्त्री गर्भिणी हुई और उसी समय
जो इलीशअ ने उसे कहा था जीवन के समान एक बेटा जनी॥
१८ और वुह बालक बड़ा हुआ और एक दिन यों हुआ कि
१९ वुह अपने पिता पास लवैयों कने गया। और अपने पिता से
कहा कि मेरा सिर मेरा सिर और उस ने एक तरुण से कहा
२० कि उसे उस की माता पास ले जा। तब उस ने उसे लेके
उस की माता के पास पहुंचाया और वुह उस के घुठनों पर
२१ पड़े पड़े मध्यान्ह को मर गया। तब उस ने उसे ले जाके

उस ईश्वर के जन के बिछौने पर डाल दिया और द्वार मूंदके
२२ निकल गई। और अपने पति पास गई और कहा कि शीघ्र
एक तरुण और एक गदहा मेरे लिये भेजिये जिसतें मैं ईश्वर
२३ के जन पास दौड़ जाऊं और फिर आऊं। और उस ने पूछा
कि आज तू उस पास क्यों जाया चाहती है आज न अमावाश्या
२४ है न विश्राम और वुह बोली कि कुशल होगा। तब उस ने
एक गदहे पर काठी बांधी और तरुण से कहा कि हांक
और बढ़ मेरे चढ़ने के लिये मत रोक जब लों मैं तुझे न
कहूं॥
२५ सो वुह चल निकली और करमिल पहाड़ पर ईश्वर के जन
पास आई और ऐसा हुआ कि जब ईश्वर के जन ने दूर से
उसे देखा तो अपने सेवक जैहाज़ी से कहा देख वुह सूनेमी
२६ है। अब उसे आगे से मिलने को दौड़ और उस्से पूछ कि तू
कुशल से है तेरा पति कुशल से है तेरा बालक कुशल से है
२७ और उस ने उत्तर दिया कि कुशल से। और उस ने उस
पहाड़ पर आके ईश्वर के जन के चरण को पकड़ा परन्तु
जैहाज़ी ने पास आके चाहा कि उसे अलग करे परन्तु ईश्वर के
जन ने कहा कि उसे छोड़ दे क्योंकि इस का प्राण दुःखी है
२८ और परमेश्वर ने मुझ से छिपाया और मुझे नहीं कहा। तब
वुह बोली कि कब मैं ने अपने प्रभु से पुत्र मांगा क्या मैं ने
२९ नहीं कहा कि मुझे मत भुला। तब उस ने जैहाज़ी को कहा
कि अपनी करिहांव कस और मेरी छड़ी अपने हाथ में ले और
चला जा यदि कोई तुझे मार्ग में मिले तो उसे नमस्कार मत
कर और यदि कोई तुझे नमस्कार करे तो उसे उत्तर मत दे
३० और मेरी छड़ी बालक के मुंह पर रख। तब उस की माता
बोली परमेश्वर के जीवन सों और तेरे प्राण के जीवन सों मैं
तुझे न छोड़ूंगी तब वुह उठा और उस के पीछे पीछे चला।

३१ तब जेहाज़ी उन से आगे आगे गया और छड़ी लड़के के मुंह
पर धरी परन्तु कुछ शब्द अथवा सुरत न हुई इस लिये वुह
उस्से भेंट करने को फिरा और उसे कहा कि लड़का नहीं
३२ जागा। और जब इलीशअ घर में पहुंचा तो देखो वुह बालक
३३ उस के बिछौने पर मरा पड़ा था। तब वुह भीतर गया और
३४ दोनों पर द्वार मूंदके परमेश्वर से प्रार्थना किई। और जाके
बालक से लिपटा और उस के मुंह पर अपना मुंह रक्खा और
उस की आंखों पर अपनी आंखें और उस के हाथों पर अपने
हाथ और बालक पर फैल गया तब उस बालक की देह
३५ गरमाई। फिर वुह उठा और उस घर में इधर उधर टहलने
लगा और फिर जाके उस पर फैला और बालक ने सात बेर
३६ छींका और अपनी आंखें खोलीं। तब उस ने जेहाज़ी को
बुलाके कहा कि उस सूनेमी को बुला सो उस ने उसे बुलाया
और जब वुह भीतर उस पास आई तो उस ने उस्से कहा कि
३७ अपना बेटा उठा ले। तब वुह भीतर गई और उस के पांओं
पर गिरी और भूमि लों झुकके दण्डवत किई और अपने बेटे
को उठाके बाहर गई॥

३८ और इलीशअ जिलजाल को फिर आया और उस देश में
अकाल पड़ा था और वहां भविष्यद्वक्तों के पुत्र उस के साम्ने
बैठे हुए थे और उस ने अपने सेवक से कहा कि बड़ा हंडा
३९ चढ़ा और भविष्यद्वक्तों के पुत्रों के लिये लपसी पका। और
एक जन चौगान में गया कि कुछ तरकारी चुन लावे और उस
ने बनैले दाख पाये और उस्से गोद भरके जंगली तुंबियां
बटोरीं और आके लपसी की हांड़ी में डाल दिईं क्योंकि वे न
४० जानते थे। सो उन्हों ने लोगों के खाने के लिये उंडेला और
यों हुआ कि जब वे वुह लपसी खाने लगे तो चिल्ला उठे कि
४१ हे ईश्वर के जन खाने में मृत्यु है और खा न सके। तब

उस ने पिसान मंगवाया और उस हांड़े में डाल दिया और
कहा कि लोगों के खाने के लिये उंडेल तब हांड़े में कुछ
अवगुण न हुआ॥
४२ तब बअलसलीसः से एक पुरुष ईश्वर के जन पास पहिले
अन्न की रोटी जव के बीस फुलके और अन्न से भरी
हुई बालें अपने अंचल में लाया और बोला कि लोगों को
४३ खाने को दे। तब उस का सेवक बोला कि क्या मैं इसे सौ
मनुष्यों के आगे रक्खूं उस ने फिर कहा कि लोगों को खाने
को दे क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि वे खावेंगे और बच
४४ रहेगा। तब उस ने उन के आगे रक्खा और उन्हों ने खाया
और परमेश्वर के बचन के समान बच रहा॥

पांचवां पर्व्व।

१ अब नअमान जो अरामी के राजा की सेना का प्रधान था
अपने प्रभु के आगे महान पुरुष और प्रतिष्ठित था क्योंकि
परमेश्वर ने उस के द्वारा से अरामियों को जय दिया था और
२ वुह महाबीर और बली था परन्तु कोढ़ी। और अरामी जथा
जथा होके निकल गये थे और इसराएल के देश में से एक
छोटी कन्या को बंधुआई में लाये थे और वुह नअमान की
३ पत्नी के पास रहती थी। और उस ने अपनी स्वामिनी से कहा
हाय कि मेरा स्वामी उस भविष्यद्वक्ता के आगे जाता जो
समरून में है क्योंकि वुह उसे उस के कोढ़ से चंगा करता।
४ और वुह जाके अपने प्रभु से कहके बोली इसराएल के देश
५ की कन्या यों कहती है। सो अरामी के राजा ने कहा कि
चल निकल और मैं इसराएल के राजा को पत्री लिख भेजूंगा
सो वुह चला और दस तोड़े चांदी और छः सहस्र टुकड़े सोना
६ और दस जोड़े वस्त्र अपने साथ ले चला। और वुह उस

पत्री को यह कहके इसराएल के राजा पास लाया कि यह
पत्री जब तेरे पास पहुंचे तब देख मैं ने अपने सेवक नअमान
६ को तुझ पास भेजा है जिसतें तू उसे कोढ़ से चंगा करे। और
यों हुआ कि जब इसराएल के राजा ने उस पत्री को पढ़ा तो
अपने कपड़े फाड़े और बोला कि क्या मैं ईश्वर हूं जो मारूं
और जिलाऊं कि यह जन मुझ पास भेजता है कि एक जन
को उस के कोढ़ से चंगा करो सो तुम्हीं विचारो और देखो
कि वुह मुझ से झगड़ा ढूंढ़ता है॥
८ और जब ईश्वर के जन इलीशअ ने सुना कि इसराएल के
राजा ने अपने कपड़े फाड़े तो राजा को कहला भेजा कि तू ने
अपने कपड़े क्यों फाड़े अब वुह मुझ पास आवे और उसे जान
९ पड़ेगा कि इसराएल में एक भविष्यद्वक्ता है। सो नअमान
अपने घोड़े और अपने रथ समेत आया और इलीशअ के घर
१० के द्वार पर खड़ा हुआ। तब इलीशअ ने उस पास दूत भेजके
कहा कि जा और यरदन में सात बेर नहा और तेरा शरीर
११ फिर पवित्र हो जावेगा। परन्तु नअमान यह कहके क्रुद्ध होके
चला गया देख मैं ने कहा था कि वुह निश्चय मुझ पास
निकल आवेगा और खड़ा होके अपने ईश्वर परमेश्वर का नाम
लेगा और उस स्थान पर हाथ फेरेगा और कोढ़ को चंगा
१२ करेगा। क्या अमानः और फ़रफ़र दमिश्क की नदियां इसराएल
के सारे पानियों से कितनी अच्छी नहीं क्या मैं उन में नहाके
शुद्ध नहीं हो सक्ता और वुह फिरा और कोपित चला गया।
१३ तब उस के सेवक उस पास आये और यह कहके बोले कि
हे पिता यदि भविष्यद्वक्ता तुझे कुछ भारी बात बताता तो तू
उसे न मानता फेर कितना अधिक जब वुह तुझे कहता है
१४ कि नहा और शुद्ध हो। तब वुह उतरा और जैसा कि ईश्वर
के जन ने कहा था यरदन में सात बेर डुबकी मारी और उस

का शरीर बालक के शरीर के समान फिर हो गया और वुह
पवित्र हुआ ॥
१५ तब वुह अपनी सारी जथा समेत ईश्वर के जन के पास
फिर आया और उस के आगे खड़ा हुआ और यों कहा कि
देखिये अब मैं जानता हूं कि समस्त पृथिवी में इसराएल में
छोड़ कोई ईश्वर नहीं है इस लिये अब अनुग्रह करके अपने
१६ सेवक की भेंट लीजिये । परन्तु उस ने कहा कि परमेश्वर के
जीवन सों जिस के आगे मैं खड़ा हूं मैं कुछ न लेऊंगा और
उस ने उसे बहुत सकेती में डाला कि लेवे परन्तु उस ने न
१७ माना । और नआमान ने कहा कि मैं तेरी विनती करता हूं
तेरे सेवक को दो खच्चर भर के मिट्टी न मिलेगी क्योंकि तेरा
सेवक आगे को परमेश्वर को छोड़ दूसरे देवों के लिये न बलिदान
१८ न होम की भेंट चढ़ावेगा । इस बात में परमेश्वर तेरे
सेवक को क्षमा करे कि जब जब मेरा स्वामी पूजा के लिये
रिम्मन के मंदिर में जावे और वुह मेरे हाथ पर आठंगे और
मैं रिम्मन के मंदिर में झुकूं सो जब मैं रिम्मन के मंदिर में
झुकूं तब परमेश्वर इस बात में तेरे सेवक को क्षमा करे ।
१९ और उस ने उसे कहा कि कुशल से जा सो वुह उस्से थोड़ी
दूर गया ॥
२० परन्तु ईश्वर के जन इलीशअ के सेवक जैहाज़ी ने कहा
कि देख मेरे स्वामी ने इस अरामी नआमान को छोड़ दिया
और जो कुछ वुह लाया था उस के हाथ से ग्रहण न किया
परमेश्वर के जीवन सों मैं निश्चय उस के पीछे दौड़ जाऊंगा
२१ और उस्से कुछ लेऊंगा । सो जैहाज़ी नआमान के पीछे गया
और नआमान ने जो देखा कि वुह पीछे दौड़ा आता है तो
वुह उस की भेंट के लिये रथ पर से उतरा और बोला कि
२२ क्या सब कुशल । और उस ने कहा कि सब कुशल मेरे स्वामी

ने यह कहके मुझे भेजा है कि देख भविष्यद्वक्ता के संतान में
से दो तरुण पुरुष इफ़रायम पहाड़ से आये हैं सो अनुग्रह
करके उन्हें एक तोड़ा चांदी और दो जोड़े बस्त्र दीजिये।
२३ तब नअमान ने कहा कि प्रसन्न हो और दो तोड़े ले और उस
ने उसे सकेत करके दो तोड़े चांदी दो थैलियों में दो जोड़े
बस्त्र सहित बांधे और अपने दो सेवकों पर धरा और वे उठाके
२४ उस के आगे आगे गये। और उस ने एकान्त में आके उन के
हाथ से उन्हें ले लिया और घर में रखके उन पुरुषों को बिदा
२५ किया सो वे चले गये। परन्तु वुह जाके अपने स्वामी के साम्ने
खड़ा हुआ तब इलीशअ ने उसे कहा कि जैहाज़ी कहां से
और वुह बोला कि तेरा सेवक तो इधर उधर नहीं गया था।
२६ फिर उस ने उसे कहा कि क्या मेरा मन न गया था जब वुह जन
अपने रथ पर से उतरके तेरी भेंट को फिरा क्या यह रोकड़
और बस्त्र और जलपाई और दाख की बारी और भेड़ें और
२७ बैल और दास और दासियां लेने का समय है। इस लिये
नअमान का कोढ़ तुझे और तेरे बंश को सदा लगा रहेगा
तब वुह उस के आगे से पाला की नाईं कोढ़ी चला गया॥

छठवां पर्ब्ब।

१ और भविष्यद्वक्तों के पुत्रों ने इलीशअ से कहा कि अब
देखिये यह स्थान जहां हम तेरे संग बसते हैं हमारे लिये
२ अति सकेत है। अब अनुग्रह करके यरदन को चलिये और
वहां से हर एक जन एक एक बल्ला लावे और वहां एक
३ बसगित बनावें और वुह बोला कि जाओ। तब एक ने कहा
कि मान लीजिये और अपने सेवकों के साथ चलिये तब उस
४ ने उत्तर दिया कि मैं जाऊंगा। सो वुह उन के साथ साथ
५ गया और उन्हों ने यरदन पर आके लकड़ियां काटीं। परन्तु

ज्यों एक जन बल्ला काटता था तब कुल्हाड़ा पानी में गिर पड़ा
और उस ने चिल्लाके कहा कि हे मेरे स्वामी यह तो मंगनी का
६ था । और ईश्वर का जन बोला कि कहां गिरा और उस ने उसे
वुह स्थान बताया तब उस ने टहनी काटके उधर डाल दिई
७ और कुल्हाड़ा उतरा उठा । तब उस ने कहा कि उठा ले
और उस ने हाथ बढ़ाके उसे उठा लिया ॥
८ तब अराम का राजा इसराएल से लड़ा और उस ने अपने
सेवकों से परामर्श करके कहा कि मैं उस स्थान में डेरा करूंगा।
९ तब ईश्वर के जन ने इसराएल के राजा को कहला भेजा कि
चौकस हो और अमुक स्थान से मत जाइयो क्योंकि वहां
१० अरामी उतर आये हैं । और इसराएल के राजा ने उस स्थान
में भेजा जिस के विषय में ईश्वर के जन ने उसे कहके चौकस
किया था और आप को बारंबार बचा रक्खा ॥
११ इस लिये इस बात के कारण अराम के राजा का मन अति
व्याकुल हुआ और उस ने अपने सेवकों को बुलाके कहा क्या
मुझे न बताओगे कि हम्में से इसराएल के राजा की ओर कौन
१२ है । तब उस के एक सेवक ने कहा कि हे मेरे प्रभु राजा
नहीं परन्तु इलीशअ भविष्यद्वक्ता जो इसराएल में है तेरी हर
एक बात जो तू अपने शयनस्थान में करता है इसराएल के
१३ राजा को कहता है । सो उस ने कहा कि जा और भेद ले
कि वुह कहां है जिसतें मैं भेजके उसे बुलाऊं और उसे यह
कहके संदेश पहुंचाया कि देखिये वुह दूतान में है ॥
१४ इस लिये उस ने उधर घोड़े और रथ और भारी सेना
भेजी और उन्हों ने रात को आकर उस नगर को घेर लिया।
१५ और जब ईश्वर के जन का सेवक तड़के उठा और बाहर
निकला तो क्या देखता है कि सेना और घोड़चढ़े और रथ
नगर को घेरे हुए हैं तब उस के सेवक ने उसे कहा कि हाय

१६ हे मेरे स्वामी हम क्या करें। तब उस ने उत्तर दिया कि मत
डर क्योंकि जो हमारे साथ हैं सो उन के साथियों से अधिक
१७ हैं। तब इलीशअ ने प्रार्थना किई और कहा कि हे परमेश्वर
कृपा करके इस की आंखें खोल जिसतें देखे सो परमेश्वर ने
उस तरुण की आंखें खोलीं और उस ने जो दृष्टि किई तो
देखा कि इलीशअ की चारों ओर पहाड़ आग के घोड़ों और
१८ गाड़ियों से भरा हुआ है। और जब वे उस पर उतर आये
तो इलीशअ ने परमेश्वर से प्रार्थना करके कहा कि इन लोगों
को अन्धा कर डाल और इलीशअ के बचन के समान उस
१९ ने उन्हें अन्धा कर डाला। फिर इलीशअ ने उन्हें कहा कि यह
मार्ग नहीं और यह नगर नहीं तुम मेरे पीछे पीछे चले आओ
और मैं तुम्हें उस जन पास पहुंचाऊंगा जिसे तुम ढूंढ़ते हो
२० और वुह उन्हें समरून में ले गया। और जब वे समरून में
पहुंचे तो यों हुआ कि इलीशअ ने कहा कि हे परमेश्वर उन
की आंखें खोल जिसतें वे देखें तब परमेश्वर ने उन की आंखें
खोलीं और वे देखने लगे और क्या देखते हैं कि समरून के
मध्य में हैं॥

२१ और इसराएल के राजा ने उन्हें देखके इलीशअ से कहा
२२ कि हे पिता मैं बधन करूं मैं बधन करूं। और उस ने कहा
कि बधन मत कर क्योंकि जिन्हें तू ने अपने तलवार और
धनुष से बन्धुआ किया तू उन्हें बधन करता उन के आगे
खाना पीना धर दे जिसतें वे खा पीके अपने स्वामी पास जावें।
२३ सो उस ने उन के लिये बहुत सा भोजन सिद्ध करवाया और
जब वे खा पी चुके तो उस ने उन्हें बिदा किया और वे अपने
स्वामी पास चले गये और फिर कभी अराम की जथा इसराएल
के देश में न आई॥

२४ और इस के पीछे ऐसा हुआ कि अराम के राजा बिनहदद

ने अपनी समस्त सेना एकट्ठी किई और चढ़के समरून को
२५ घेरा । तब समरून में बड़ा अकाल पड़ा और वे उसे घेरे
रहे यहां लों कि गदहे का एक सिर नब्बे रुपये के ऊपर
बिकता था और कपोत की बीट पाव भर से कुछ ऊपर पांच
रुपये से अधिक को बिकती थी ॥
२६ और यों हुआ कि जब इसराएल का राजा भीत पर जाता
था तब एक स्त्री उस के आगे चिल्लाके बोली कि हे मेरे प्रभु
२७ राजा सहाय कीजिये । तब वुह बोला कि यदि परमेश्वर ही
तेरी सहाय न करे तो मैं तेरी सहाय क्योंकर करूं क्या खत्ते
२८ से अथवा अंगूर के कोल्हू से । तब राजा ने उसे कहा कि
तुझे क्या हुआ और उस ने उत्तर दिया कि इस स्त्री ने मुझे
कहा कि आओ तेरे बेटे को आज खावें और अपने बेटे को
२९ कल खावेंगे । सो हम ने अपने बेटे को उसिनके खाया और
मैं ने दूसरे दिन उसे कहा कि अपना बेटा ला जिसतें हम
३० उसे खावें परन्तु उस ने अपना बेटा छिपा रक्खा है । तब
राजा ने उस स्त्री की बातें सुनके अपने कपड़े फाड़े और भीत
पर चला जाता था और लोगों ने जो दृष्टि किई तो देखो
३१ अपने शरीर पर भीतर उदासी वस्त्र पहिने था । तब उस ने
कहा कि ईश्वर मुझ से वैसा और उस्से भी अधिक करे यदि
आज सफ़त के बेटे इलीशश्र का सिर उस पर ठहरे ॥
३२ और इलीशश्र अपने घर में बैठा था और प्राचीन भी उस
के साथ बैठे थे और राजा ने अपने साथ का एक जन अपने
आगे भेजा परन्तु दूत न पहुंचा था कि उस ने प्राचीनों
से कहा कि देखो इस बधिक के बेटे ने कैसा भेजा है कि मेरा
सिर काटे सो देखो जब दूत आवे तो द्वार बन्द करो और
उसे दृढ़ता से द्वार पर पकड़े रहो क्या उस के पीछे पीछे उस
३३ के स्वामी के पांव का शब्द नहीं । वुह उन से यह कहि

रहा था तो क्या देखता है कि दूत उस पास आ पहुंचा और
उस ने कहा कि देखो यह बिपत्ति परमेश्वर की ओर से है अब
आगे मैं परमेश्वर की बाट क्यों जोहूं ॥

सातवां पर्ब्व ।

१ तब इलीशअ ने कहा कि परमेश्वर का बचन सुनो परमेश्वर
यों कहता है कि कल इसी जून समरून के फाटक पर चोखा
पिसान पांच सूकी का एक पैमानः बिकेगा और जब दो पैमानः
२ पांच सूकी को। तब राजा के एक प्रतिष्ठित ने जिस के हाथों
पर राजा उठंगता था ईश्वर के जन को उत्तर दिया और कहा
कि देख यदि परमेश्वर स्वर्ग में खिड़कियां बनाता तो क्या
यह बात होगी तब उस ने कहा कि देख तू उसे अपनी आंखों
से देखेगा पर उस्से न खायगा ॥
३ और नगर के फाटक की पैठ में चार कोढ़ी थे और उन्हों
४ ने आपुस में कहा कि मरने लों हम यहां क्यों बैठें। यदि
हम कहें कि नगर में जावेंगे तो नगर में अकाल है और
हम वहां मर जावेंगे और यदि यहीं बैठे रहें तो भी मरेंगे
सो अब चलो हम अरामी सेना में जावें यदि वे हमें जीवते
छोड़ेंगे तो हम बचेंगे और यदि वे हमें बधन करें तो मरही
५ जावेंगे। सो वे गोधूली में उठके अरामियों की सेना को चल
निकले और जब वे अरामियों की छावनी के बाहर ही बाहर
६ पहुंचे तो देखो वहां कोई न था। क्योंकि प्रभु ने रथों
का और घोड़ों का और एक बड़ी सेना का शब्द अरामियों
की सेना को सुनाया तब उन्हों ने आपुस में कहा कि देखो
इसराएल का राजा हित्तियों के राजाओं को और मिस्रियों के
७ राजाओं को हमारे बिरुद्ध भाड़े में चढ़ा लाया। इस लिये
वे उठके गोधूली में भाग निकले और अपने डेरे और अपने

घोड़े और अपने गदहे अर्थात् अपनी छावनी को जैसी की
तैसी छोड़ छोड़ अपने अपने प्राण ले भागे ॥
८ और जब यह कोढ़ी छावनी में पहुंचे तो वे एक तंबू में
घुसे और वहां खाया और पीया और वहां से रूपा और सोना
और वस्त्र लिया और एक स्थान पर जाके छिपा रक्खा और
फिर आके दूसरे तंबू में घुसे और वहां से भी ले गये और
९ छिपा रक्खा। तब उन्हों ने आपस में कहा कि हम अच्छा
नहीं करते आज मंगलसमाचार का दिन है और हम चुप हो
रहे हैं यदि हम बिहान की ज्योति लों ठहरें तो दण्ड पावेंगे
सो आओ हम जाके राजा के घराने को संदेश पहुंचावें॥
१० तब उन्हों ने आके नगर के द्वारपाल को पुकारा और उन
को संदेश पहुंचाया कि हम अरामियों की छावनी में गये और देखो
कि वहां न मनुष्य न मनुष्य का शब्द परन्तु घोड़े और गदहे
११ बंधे हुए और तंबू जैसे के तैसे हैं। और द्वारपालक
बुलाये गये और उन्हों ने राजा के भवन में भीतर संदेश
पहुंचाया॥
१२ और राजा रात ही को उठा और अपने सेवकों से कहा
कि मैं तुम्हें बताता हूं कि अरामियों ने हम से क्या किया वे
जानते हैं कि हम भूखे हैं इस लिये वे छावनी से निकलके
चौगान में यह कहके छिपे हैं कि जब वे नगर से निकलेंगे
१३ तब हम उन्हें जीता पकड़ लेंगे और नगर में घुसेंगे। और
उस के सेवकों में से एक ने उत्तर देके कहा कि हम उन घोड़ों
में से जो बचे हैं पांच घोड़े लेवें देख वे इसराएल की बची
हुई मंडली के समान जो नष्ट हुए हैं आओ उन्हें भेजें और
१४ बूझें। सो उन्हों ने रथों के दो घोड़े लिये और राजा ने
अरामियों की सेना के पीछे लोगों को यह कहके भेजा कि
१५ जाओ और बूझो। सो वे उन के पीछे पीछे यरदन लों चले

गये और क्या देखते हैं कि सारे मार्ग में बस्त्र और पात्र जो
अरामी अपनी उतावली में फेंक गये थे भरपूर थे तब दूत
फिर आके राजा से बोले ॥
१६ तब लोगों ने निकलके अरामियों के तंबुओं को लूटा सो
परमेश्वर के बचन के समान चोखा पिसान पांच सूकी का एक
१७ पैमानः बिका और जब पांच सूकी का दो पैमानः। और राजा
ने उस प्रतिष्ठित को जिस के हाथ पर वुह आठंगता था फाटक
की चौकसी दिई और लोगों ने फाटक में उसे लताड़ा और
जैसा कि परमेश्वर के जन ने कहा था वुह मर गया जब राजा
१८ उस पास आया था वुह मर गया। और जैसा कि ईश्वर का
जन यह कहके राजा को बोला कि दो पैमानः जब पांच सूकी
को और एक पैमानः चोखा पिसान पांच सूकी को कल इसी
१९ जून समरून के द्वार पर होगा सो पूरा हुआ। और उस
प्रतिष्ठित ने ईश्वर के जन को उत्तर देके कहा था अब देख
यदि परमेश्वर स्वर्ग में खिड़कियां बनावे क्या इस बात के समान
होगा तब उस ने कहा कि तू उसे अपनी आंखों से देखेगा पर
२० उस्से न खावेगा। और उस पर ऐसा ही कुछ बीता क्योंकि
लोगों ने फाटक पर उसे लताड़ डाला और वुह मर गया ॥

आठवां पर्ब्ब।

१ तब इलीशअ ने उस स्त्री को कहा जिस के बेटे को उस
ने जिलाया था कि उठ और अपने घराने समेत जा और
जहां कहीं बास कर सके बास कर क्योंकि परमेश्वर एक अकाल
२ लाता है सो देश में सात बरस लों अकाल रहेगा। तब वुह
स्त्री उठी और उस ने ईश्वर के जन के कहने के समान किया
और अपने घराने समेत फ़िलिसतियों के देश में सात बरस
लों बास किया ॥

३ और सातवें बरस के अन्त में ऐसा हुआ कि वुह स्त्री
फ़िलिसतियों के देश से फिर आई और राजा पास चली गई
४ जिसतें अपने घर और अपनी भूमि के लिये चिल्लावे। तब
राजा ईश्वर के जन के सेवक जेहाज़ी से यह कहके बोला कि
सारे बड़े बड़े कार्य्य जो इलीशअ़ ने दिखलाये हैं उन्हें मेरे
५ आगे बर्णन कर। और ज्यों वुह राजा से कहि रहा था कि
उस ने एक मृतक को किस रीति से जिलाया तो देखो कि
वुह स्त्री जिस के बेटे को उस ने जिलाया था आके राजा के
आगे अपने घर और अपनी भूमि के लिये चिल्लाई तब जेहाज़ी बोल
उठा कि हे मेरे प्रभु राजा वुह स्त्री और उस का बेटा जिसे
६ इलीशअ़ ने जिलाया यही है। और जब राजा ने उस स्त्री
से पूछा तो उस ने बताया तब राजा ने एक प्रधान को उस
के संग करके कहा कि उस का सब कुछ और उस के अन्न
जिस दिन से उस ने यह भूमि छोड़ी है आज के दिन लों
फेर दिलाओ॥

७ तब इलीशअ़ दमिश्क में आया और अराम का राजा
बिनहदद रोगी था और उसे संदेश पहुंचा कि ईश्वर का जन
८ यहां आया है। और राजा ने हज़ाएल को कहा कि कुछ
अपने दान हाथ में ले और ईश्वर के जन से भेंट करके और उस
के द्वारा से परमेश्वर से बूझ और कह क्या मैं इस रोग से चंगा
६ होऊंगा। सो हज़ाएल उस्से भेंट करने चला और उस ने
दमिश्क की समस्त अच्छी बस्तु भेंट के लिये हाथ में लिई
अर्थात् चालीस ऊंट लदे हुए और उस के आगे खड़े होके
कहा कि तेरे बेटे बिनहदद अराम के राजा ने मुझे यह
कहके तेरे पास भेजा है और पूछा है कि क्या मैं इस रोग से
१० चंगा हूंगा। तब इलीशअ़ ने उसे कहा कि जाके उसे कह
कि तू निश्चय चंगा होगा तथापि परमेश्वर ने मुझे दिखाया

११ है कि वुह निश्चय मर जावेगा। और उस ने रूप स्थिर
करके यहां लों रक्खा कि वुह लज्जित हुआ और ईश्वर के जन
१२ ने बिलाप किया। तब हज़ाएल ने कहा कि मेरा प्रभु क्यों
रोता है और उस ने उत्तर दिया इस लिये कि मैं जानता हूं
कि तू इसराएल के संतान से कैसी बुराई करेगा उन के दृढ़
गढ़ों को फूंक देगा और उन के तरुणों को तलवार से घात
करेगा और उन के बालकों को दे दे पटकेगा और उन की
१३ गर्भिणियों को फाड़ेगा। तब हज़ाएल बोला क्या तेरा सेवक
कुत्ता है कि वुह ऐसी बुरी बात करे तब इलीशअ बोला
परमेश्वर ने मुझे बताया है कि तू अराम का राजा होगा।
१४ तब वुह इलीशअ पास से अपने स्वामी के पास गया जिस ने
उसे पूछा कि इलीशअ ने तुझे क्या कहा और उस ने कहा
१५ कि उस ने मुझे बताया कि तू अवश्य चंगा होगा। और
बिहान को ऐसा हुआ कि उस ने एक मोटा कपड़ा लिया और
उसे पानी में चभोड़के उस के मुंह पर यहां लों फैलाया कि
वुह मर गया और हज़ाएल ने उस की सन्ती राज्य किया॥
१६ और अख़िअब के बेटे इसराएल के राजा यूराम के राज्य
के पांचवें बरस जब यहूसफ़त यहूदाह का राजा था तब
यहूसफ़त का बेटा यहूराम यहूदाह के राज्य पर बैठने लगा।
१७ जब कि वुह राज्य करने लगा उस की बय बत्तीस बरस की
१८ थी और उस ने यरूसलम में आठ बरस राज्य किया। और
वुह अख़िअब के घराने के समान इसराएली राजाओं की चाल
पर चलता था क्योंकि अख़िअब की बेटी उस की पत्नी थी और
१९ उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई। तथापि परमेश्वर ने
न चाहा कि यहूदाह को नाश करे क्योंकि उसे अपने सेवक
दाऊद का पक्ष था कि उस ने उसे बाचा दिई थी कि मैं तुझे
और तेरे बंश को सर्वदा के लिये एक दीपक दूंगा॥

२० उस के समय में अटूम यहूदाह के बश से फिर गये और
२१ उन्हों ने अपने लिये एक राजा बनाया। तब यूराम सग़ीर
में आया और सारे रथ उस के साथ थे और उस ने रात को
उठके अदूमियों को जो उसे घेरे हुए थे और रथों के प्रधानों
२२ को मारा और लोग अपने अपने तंबुओं को भाग गये। परन्तु
अटूम आज के दिन लों यहूदाह के बश से फिरा है उसी
समय में लिबनः भी फिर गये॥
२३ और यूराम की उबरी हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने
किया था सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार
२४ की पुस्तक में लिखा नहीं है। तब यूराम ने अपने पितरों में
शयन किया और दाऊद के नगर में अपने पितरों में गाड़ा
गया और उस का बेटा अख़ज़याह उस की सन्ती राज्य पर
बैठा॥
२५ इसराएल के राजा अख़िअब के बेटे यूराम के बारहवें बरस
यहूदाह का राजा यहूराम का बेटा अख़ज़याह राज्य पर बैठा।
२६ जब अख़ज़याह राज्य पर बैठा तब वुह बाईस बरस का था
और यरूसलम में एक बरस राज्य किया और उस की माता
का नाम अतलीयाह था जो इसराएल के राजा उमरी की बेटी
२७ थी। और वुह अख़िअब के घराने की चाल पर चलता था
और उस ने अख़िअब के घराने के समान परमेश्वर की दृष्टि
में बुराई किई क्योंकि वुह अख़िअब के घराने का जवांई था।
२८ और वुह अख़िअब के बेटे यूराम के साथ अराम के राजा
हज़ाएल से लड़ने को रामात जिलिअद पर चढ़ा और अरामियों
२९ ने यूराम को घायल किया। सो राजा यूराम यज़रअएल को
फिर गया जिसतें उन घावों से चंगा होवे जो अरामियों से
जब वुह अराम के राजा हज़ाएल से लड़ा था उसे लगा था
और यहूराम का बेटा यहूदाह का राजा अख़ज़याह यज़रअएल

को गया जिसतें अख़िअब के बेटे यूराम को देखे क्योंकि वुह
घायल था ॥

नवां पर्व्व ।

१ तब इलीशअ भविष्यद्वक्ता ने भविष्यद्वक्ताओं के संतानों में
से एक को बुलाया और उस्से कहा कि अपनी कटि बांध और
तेल की यह कुप्पी अपने हाथ में ले और रामात जिलिअद
२ को जा। और जब तू वहां पहुंचे तो निमसी के बेटे यहूसफ़त
के बेटे याहू को ढूंढ़ ले और भीतर जाके उसे अपने भाइयों
३ में से उठाके भीतर की कोठरी में ले जा। और कुप्पी का तेल
लेके उस के सिर पर ढाल और कह कि परमेश्वर यों कहता
है कि मैं ने तुझे इसराएल पर राज्याभिषेक किया तब तू द्वार
४ खोलके भाग और ठहर मत। सो वुह तरुण अर्थात् वुह तरुण
भविष्यद्वक्ता रामात जिलिअद को गया ॥
५ और जब वुह आया तो क्या देखता है कि सेनापति बैठे
हैं तब उस ने कहा कि हे सेनापति तेरे लिये मुझ पास संदेश
है और याहू ने कहा कि हम सभों में से किस के लिये और
६ उस ने कहा कि तेरे लिये हे सेनापति। और वुह उठके घर
में गया और उस ने उस के सिर पर वुह तेल ढालके उसे
कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने
तुझे परमेश्वर के लोगों पर अर्थात् इसराएल पर राज्याभिषेक
७ किया। और तू अपने स्वामी अख़िअब के घराने को मारेगा
जिसतें मैं अपने सेवक भविष्यद्वक्ताओं के लोहू का और परमेश्वर
के सारे सेवकों के लोहू का ईज़ाबिल के हाथ से पलटा लेऊं।
८ क्योंकि अख़िअब का सारा घर नष्ट होगा और मैं अख़िअब से
हर एक पुरुष को जो भीत पर मूत्ता है क्या निरबंध क्या दास
९ इसराएल में काट डालूंगा। और मैं अख़िअब के घर को नबात

के बेटे यरुबिआम के घर के समान और अखियाह के बेटे
१० बअशा के घर के समान करूंगा। और ईज़बिल को यज़रअएल
के भाग में कुत्ते खावेंगे और कोई गड़वैया न होगा और वुह
द्वार खोलके भागा ॥
११ तब याहू निकलके अपने प्रभु के सेवकों के पास आया
और एक ने उसे कहा कि सब कुशल है यह बौड़हा तेरे पास
किस लिये आया तब उस ने उन्हें कहा कि तुम उस पुरुष को
१२ और उस के संदेश को जानते हो। और वे बोले कि झूठ
हमें अब बता तब उस ने कहा कि वुह मुझे यों कहके बोला
कि परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने तुझे इसराएल पर
१३ राज्याभिषेक किया। तब उन्हों ने फुरती किई और हर एक
ने अपना अपना वस्त्र लिया और अपने नीचे सीढ़ी पर रक्खा
और यह कहके नरसिंगा फूंका कि याहू राज्य करता है।
१४ सो निमसी के बेटे यहूसफ़त के बेटे याहू ने यूराम के बिरोध
में गुट्ट बांधी अब अराम के राजा हज़ाएल के कारण यूराम
और सारे इसराएल रामात जिलिअद की रक्षा करते थे।
१५ परन्तु राजा यहूराम ने उन घावों से जो अरामियों ने उसे
मारा था जब वुह अराम के राजा हज़ाएल से लड़ा था चंगा
होने फिर आया तब याहू ने कहा कि यदि तुम्हारे मन होवें
तो नगर से किसी को न निकलने न बचने देओ न होवे कि
१६ यज़रअएल में हमारा समाचार पहुंचावे। सो याहू रथ पर
चढ़के यज़रअएल को गया क्योंकि यूराम वहीं था और यहूदाह
का राजा अख़ज़याह यूराम को देखने को उतर आया था।
१७ और यज़रअएल की बुर्ज पर एक पहरू था और उस ने ज्यों याहू
की जथा को आते देखा त्यों कहा कि मैं एक जथा को देखता
हूं और यूराम ने कहा कि एक घोड़चढ़े को लेके उन की भेंट
१८ के लिये भेज और पूछ कि कुशल है। सो उस की भेंट को

लिये एक जन घोड़े पर चढ़के आगे बढ़ा और जाके उस ने
कहा कि राजा पूछता है कि कुशल है और याहू ने कहा कि
तुझे कुशल से क्या मेरे पीछे हो ले फिर पहरू यह कहके
१९ बोला कि दूत उन पास पहुंचा परन्तु फिर नहीं आता। तब
उस ने दूसरे को घोड़े पर भेजा और उस ने भी उन पास पहुंचके
कहा कि राजा पूछता है कि कुशल है और याहू ने उत्तर
२० दिया कि तुझे कुशल से क्या मेरे पीछे हो ले। फिर पहरू
यह कहके बोला कि वुह भी उन पास पहुंचा और फिर नहीं
आता और हांकना निमसी के बेटे याहू के हांकने के समान
२१ है क्योंकि वुह बौड़ाहपन से हांकता है। तब यूराम ने कहा
कि जोतो सो उस का रथ जोता गया तब इसराएल का राजा
यूराम और यहूदाह का राजा अख़ज़याह अपने अपने रथ पर
बाहर गये और वे याहू के बिरोध में बाहर गये और उसे
यज़रअएली नबात के भाग में पाया॥

२२ तब यूराम ने याहू को देखके कहा कि याहू कुशल है
और याहू बोला कैसा कुशल कि जब तेरी माता ईज़बिल का
२३ छिनाला और उस के टोने इतने हैं। तब यूराम अपने हाथ
फेरके भागा और अख़ज़याह से कहा कि हे अख़ज़याह छल
२४ है। तब याहू ने अपना हाथ धनुष से भरा और यहूराम
की भुजाओं के मध्य में मारा और बाण उस के हृदय में
२५ पैठ गया और वुह अपने रथ में झुक गया। तब उस ने
अपने प्रधान बिदक़र से कहा कि उसे उठाके यज़रअएली
नबात के खेत के भाग में डाल दे क्योंकि चेत कर कि जब
में और तू उस के बाप अख़िअब के पीछे चढ़े जाते थे परमेश्वर
२६ ने यह बोझ उस पर धरा था। परमेश्वर कहता है कि निश्चय
में ने नबात के लोहू और उस के बेटों के लोहू को कल
देखा है और परमेश्वर कहता है कि मैं तुझ से इसी भाग में

पलटा लेऊंगा सो परमेश्वर के बचन के समान उसे लेके उसी
स्थान में डाल दे ॥
२७ परन्तु जब यहूदाह के राजा अख़ज़याह ने यह देखा
तो वुह घर की बारी के मार्ग से निकल भागा और याहू ने
उस का पीछा किया और कहा कि उसे भी रथ में मार लेओ
सो उन्हों ने जूर के मार्ग में जो इबलिआम के लग है उसे
मारा और वुह भागके मजिद्दो में आया और वहां मर गया।
२८ और उस के सेवक उसे रथ में डालके यरूसलम को ले गये
और उसे उस की समाधि में दाऊद के नगर में उस के पितरों
२९ के साथ गाड़ा। और अख़िअब के बेटे यूराम के ग्यारहवें
बरस अख़ज़याह यहूदाह पर राज्य करने लगा ॥
३० और जब याहू यज़्रअएल को आया तो ईज़बिल ने सुना
और अपनी आंखों में अंजन लगाया और अपना मस्तक सवांरा
३१ और एक झरोखे से झांकने लगी। ज्यों हीं याहू ने फाटक
में से प्रवेश किया त्यों हीं वुह बोली कि क्या ज़िमरी को कुशल
३२ मिला जिस ने अपने प्रभु को बधन किया। तब उस ने झरोखे
की ओर मस्तक उठाया और कहा कि मेरी ओर कौन कौन
है और उस की ओर दो तीन शयनस्थान के प्रधानों ने देखा।
३३ तब उस ने कहा कि उसे गिरा दो सो उन्हों ने उसे नीचे
गिरा दिया और उस का लोहू भीत पर और घोड़ों पर पड़ा
३४ और उस ने उसे लताड़ा। और भीतर आके खा पीके कहा
कि जाओ और उस स्रापित को देखो और उसे गाड़ो क्योंकि
३५ वुह राजपुत्री है। और वे उसे गाड़ने गये परन्तु उन्हों ने
उस की खोपड़ी और उस के पांवों और हथेलियों से अधिक
३६ कुछ न पाया। तब वे फिर आये और उसे संदेश दिया वुह
बोला कि यह वुह बात है जो परमेश्वर ने अपने सेवक इलियाह
तिसबी से कही थी कि यज़्रअएल के भाग में कुत्ते ईज़बिल

३७ का मांस खावेंगे। और ईज़बिल की लोथ यज़रअएल के भाग
में खेत पर खाद की नाईं पड़ी रहेगी और न कहेंगे कि यह
ईज़बिल है॥

दसवां पर्व्व।

१ और समरून में अख़िअब के सत्तर बेटे थे सो याहू ने पत्र
लिखे और यज़रअएल के आज्ञाकारियों के और प्राचीनों के और
अख़िअब के संतानों के पालकों के पास समरून को यह कहके
२ भेजा। कि अब जैसा कि तुम्हारे प्रभु के बेटे और रथ और
घोड़े और बाड़ित नगर और नगर भी और अस्त्र हैं सो इस
३ पत्र के तुम्हारे पास पहुंचते ही। जो तुम्हारे स्वामी के बेटों
में से सब से अच्छा और योग्य होवे देखके उस के पिता के
सिंहासन पर उसे बैठाओ और अपने स्वामी के घर के लिये
४ लड़ाई करो। परन्तु वे अत्यन्त डर गये और बोले कि देखो
दो राजा तो उस का साम्ना न कर सके फेर हम क्योंकर
५ ठहरेंगे। तब जो घर का प्रधान था और जो नगर का प्रधान
था और प्राचीन और पालकों ने याहू को कहला भेजा कि हम
तेरे सेवक हैं तू जो कुछ कहेगा सो सब हम मानेंगे हम राजा
न बनावेंगे जो तुझे अच्छा लगे सो कर॥

६ तब उस ने उन के पास यह कहके दूसरी पत्री लिखी कि
यदि तुम मेरी ओर हो और मेरा शब्द मानोगे तो अपने
स्वामी के बेटों के मस्तकों को लेके कल इसी समय मुझ पास
यज़रअएल में चले आओ अब राजा के बेटे सत्तर जन होके
७ नगर के महत लोगों के साथ थे जो उन के पालक थे। और
जब यह पत्री उन के पास पहुंची तो उन्हों ने सत्तर जन
राजपुत्रों को मार डाला और उन के मस्तकों को टोकरों में
८ रखके और उस पास यज़रअएल में भेजा। तब एक दूत आया

और यह कहके उसे बोला कि वे राजपुत्रों के मस्तक लाये
हैं और वुह बोला कि नगर के फाटक की पैठ में बिहान लों
९ उन की दो ढेर कर रक्खो। और यों हुआ कि प्रातःकाल को
वुह बाहर जाके खड़ा हुआ और सब लोगों से कहा कि तुम
धर्म्मी हो देखो मैं ने तो अपने स्वामी के विरुद्ध गुष्ट बांधके
१० उसे बधन किया पर इन सभों को किस ने घात किया। अब
जानो कि परमेश्वर के बचन में से जो परमेश्वर ने अखिअब के
घर के विषय में कहा था कोई बात भूमि पर न गिरेगी क्योंकि
परमेश्वर ने जो कुछ कि अपने सेवक इलियाह के द्वारा से कहा
११ था उसे पूरा किया। सो याहू ने उन सब को जो अखिअब
के घराने से यज़रअएल में बच रहे थे और उस के समस्त
महत जनों को और उस के कुटुम्बों को और उस के याजकों
को मार डाला यहां लों कि एक को भी न छोड़ा॥
१२ तब वुह उठा और चलके समरून को आया और ज्यों वुह
१३ बैतएक़द गड़ेरियों के मार्ग के निकट पहुंचा। तब याहू ने
यहूदाह के राजा अख़ज़याह के भाइयों को पाया और कहा
कि तुम कौन और वे बोले कि हम अख़ज़याह के भाई राजा
१४ और रानी के पुत्रों के कुशल के लिये जाते हैं। तब उस ने
आज्ञा किई कि उन्हें जीते पकड़ लेओ सो उन्हों ने उन्हें जीते
पकड़ लिया और उन्हें अर्थात् बयालीस को बैतएक़द के गड़हे
पर मार डाला और उन में से एक को न छोड़ा॥
१५ फिर वहां से चला और रैकाब के बेटे यहूनदब को पाया
जो उस के भेंट करने को आता था तब उस ने उसे आशीष
देके पूछा कि जैसा मेरा मन तेरे मन के साथ है क्या वैसा तेरा
मन ठीक है तब यहूनदब ने उत्तर दिया कि है यदि होवे
तो अपना हाथ मुझे दे सो उस ने अपना हाथ दिया और उस
१६ ने उसे रथ पर अपने साथ बैठा लिया। और कहा कि मेरे

साथ चल और परमेश्वर के लिये मेरा ज्वलन देख सो वुह उस
के साथ रथ पर बैठ लिया॥
१७ और जब वुह समरून में पहुंचा तो उस ने उन सभों को
जो अख़िअब के बचे हुए थे मार डाला यहां लों कि जैसा
परमेश्वर ने इलियाह के द्वारा से कहा था उस ने उसे नष्ट
१८ कर दिया। फिर याहू ने सब लोगों को एकट्ठा किया और
उन्हें कहा कि अख़िअब ने बअ़ल की थोड़ी पूजा किई याहू
१९ उस की बहुत सी पूजा करेगा। सो अब बअ़ल के सारे
भविष्यद्वक्तों को और उस के सारे सेवकों और उस के सारे
याजकों को मुझ पास बुलाओ उन में से एक भी न छूटे
क्योंकि मैं बअ़ल के लिये बड़ा बलि चढ़ाऊंगा जो कोई घटेगा
सो जीवता न बचेगा परन्तु याहू ने चतुराई से किया जिसतें
२० बअ़ल के सेवकों को नाश करे। और याहू ने कहा कि बअ़ल
२१ के लिये पर्ब्ब शुद्ध करो और उन्हों ने प्रचारा। और याहू ने
समस्त इसराएलियों में भेजा और बअ़ल के सारे सेवक आये
ऐसा कोई न था जो न आया हो और वे बअ़ल के मन्दिर में
गये और बअ़ल का मन्दिर इस सिरे से उस सिरे लों भर
२२ गया। तब उस ने वस्त्र के घर के प्रधान को कहा कि सारे
बअ़ल के सेवकों के लिये वस्त्र निकाल ला सो वुह उन के
२३ लिये वस्त्र निकाल लाया। तब याहू और रैकाब का बेटा
यहूनदब बअ़ल के मन्दिर में गये और बअ़ल के सेवकों से
कहा कि खोजो और देखो कि यहां तुम्हारे मध्य में परमेश्वर
के सेवकों में से कोई न हो परन्तु केवल बअ़ल के सेवक।
२४ और जब वे भेंट और बलिदान चढ़ाने को भीतर गये तब याहू
ने बाहर बाहर अस्सी जन को ठहरा रक्खा और उन्हें कहा कि
यदि कोई इन लोगों में से जिन्हें मैं ने तुम्हारे हाथ में कर दिया
है बच निकले तो उस का प्राण उस के प्राण की सन्ती होगा॥

२५ और ऐसा हुआ कि ज्यों वुह बलिदान की भेंट चढ़ा
चुका तो याहू ने पहरुओं को और प्रधानों को आज्ञा किई
कि घुसो उन्हें मार डालो एक भी बाहर निकलने न पावे सो
उन्हों ने उन को तलवार की धार से मार डाला और पहरू
और प्रधान उन की लोथों को बाहर फेंकके बअल के मन्दिर
२६ को नगर में गये। और उन्हों ने बअल के मन्दिर की मूर्त्तों
२७ को निकाला और उसे जला दिया। और बअल की मूर्त्ति
को चकनाचूर किया और बअल का मन्दिर ढा दिया और
२८ आज के दिन लों उसे दिशा फिरने का घर बनाया। यों याहू ने
२९ बअल को इसराएल में से नष्ट किया। परन्तु याहू ने उन
पापों को जो नबात के बेटे यरुबिआम ने इसराएलियों से
करवाया था छोड़ न दिया अर्थात् सोने के बछड़ों को जो
बैतएल और दान में थे रहने दिया॥

३० तब परमेश्वर ने याहू से कहा इस कारण कि जो मेरी दृष्टि
में अच्छा था तू ने उसे किया है और जो कुछ कि मेरे मन
में था तू ने अखिअब के घराने पर किया है सो तेरे संतान
३१ चौथी पीढ़ी लों इसराएल के सिंहासन पर बैठेंगे। पर याहू
इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की व्यवस्था पर अपने सारे मन से
न चला उस ने यरुबिआम के पापों को न छोड़ा जिस ने
३२ इसराएल से पाप करवाया। उन दिनों में परमेश्वर ने
इसराएल को काट काटके घटाना आरंभ किया और हज़ाएल
३३ ने उन्हें इसराएल के सारे सिवानों में मारा। यरदन से लेके
उदय की ओर सारे जिलिअद के देश जद और रूबीनी और
मुनस्सी अरूआयर से लेके जो अरनुन की नदी के लग है अर्थात्
जिलिअद और बसन लों॥

३४ अब याहू की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया
और उस के सारे पराक्रम क्या वे इसराएल के राजाओं के समयों

३५ के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखे। और याहू अपने
पितरों में सो रहा और उन्हों ने उसे समरून में गाड़ा
और उस के बेटे यहूअख़ज़ ने उस की सन्ती राज्य किया।
३६ और जिन दिनों में याहू ने समरून में इसराएल पर राज्य
किया सो अट्ठाईस बरस थे॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ तब अख़ज़याह की माता अतलीयाह ने ज्यों देखा कि
मेरा बेटा मूआ तो उठी और राजा के सारे बंश को मार
२ डाला। परन्तु अख़ज़याह की बहिन यूराम राजा की बेटी
यहूसबअ ने अख़ज़याह के बेटे यूआस को लिया और उसे
उन राजपुत्रों में से जो मारे गये थे चुराके उसे और उस की
दाई को शयनस्थान में अतलीयाह से छिपाया यहां लों कि
३ वुह मारा न गया। और वुह उस के साथ परमेश्वर के मन्दिर
में छः बरस लों छिपा रहा और अतलीयाह देश पर राज्य करती
रही॥
४ और सातवें बरस यहूयदः ने सौ सौ के अध्यक्षों को और
प्रधानों को पहरुओं समेत बुला भेजा और उन्हें परमेश्वर के
मन्दिर में अपने पास बुलाके उन से बाचा बांधी और परमेश्वर
के मन्दिर में उन से किरिया लिई और राजा के बेटे को उन्हें
५ दिखाया। और उस ने यह कहके उन्हें आज्ञा किई कि तुम
यह काम करो कि तुम्हारा तीसरा भाग जो बिश्राम में भीतर
६ जाता है राजा के भवन का रक्षक होवे। और तीसरा भाग
सूर के फाटक पर रहे और तीसरे फाटक पर पहरुओं के पीछे
७ इस रीति से भवन की रक्षा करो और रोको। और तुम सभों
में से दो जथा जो बिश्राम में निकलती हैं राजा के आस पास
८ होके परमेश्वर के मन्दिर की रखवाली करें। और राजा को

चारों ओर रहो और हर एक जन शस्त्र हाथ में लिये रहे
और जो बाड़ों के भीतर आवे सो मारा जावे और बाहर भीतर
आते जाते राजा के साथ रहो ॥
९ तब जैसा यहूयदः याजक ने समस्त आज्ञा किई थी
शतपतियों ने वैसा ही किया और उन में से हर एक ने अपने
अपने जनों को जो विश्राम में बाहर भीतर आने जाने पर
१० थे लिया और यहूयदः याजक पास आये। तब याजक ने
राजा दाऊद की बरछियां और ढालें जो परमेश्वर के मन्दिर
११ में थीं शतपतियों को दिईं। और पहरू अपने अपने शस्त्र
हाथ में लेके हर एक जन मन्दिर के दहिने कोने से लेके बायें
कोने लों और बेदी की ओर मन्दिर की ओर राजा की चारों
१२ ओर खड़े हुए। तब वुह राजपुत्र को निकाल लाया और उस
पर मुकुट रखके उसे साक्षी दिई और उसे राजा बनाया और उसे
अभिषेक किया और उन्हों ने तालियां बजाईं और बोले कि
१३ राजा जीवे। और जब अतलीयाह ने पहरूओं और लोगों
का शब्द सुना तो वुह लोगों में परमेश्वर के मन्दिर में पहुंची।
१४ और क्या देखती है कि व्यवहार के समान राजा खंभे से लगा
हुआ खड़ा है और अध्यक्ष और नरसिंगे के बजवैये राजा के
लग खड़े हैं और देश के सारे लोग आनन्द में हैं और नरसिंगे
फूंकते हैं तब अतलीयाह ने अपने कपड़े फाड़े और चिल्लाके
१५ बोली कि छल छल। परन्तु यहूयदः याजक ने शतपतियों
को और सेना के अध्यक्षों को आज्ञा किई और उन से कहा
कि उसे बाड़ों से बाहर करो और जो उस का पीछा करे उसे
तलवार से मार डालो क्योंकि याजक ने कहा था कि वुह
१६ परमेश्वर के मन्दिर में मारी न जावे। तब उन्हों ने उस पर
हाथ चलाये और वुह उस मार्ग में जिस मार्ग से घोड़े राजा
के भवन में आते थे जाती थी और वहां मारी गई ॥

१७ और यहूयदः ने परमेश्वर के और राजा के और लोगों के
मध्य में एक बाचा बांधी कि वे परमेश्वर के लोग होवें और
१८ राजा और लोगों के मध्य में बाचा बांधी। तब देश के सारे
लोग बअ्ल के मन्दिर में आये और उसे ढाया और उन्हों ने
उस की मूर्त्तों और उस की बेदियों को चकनाचूर किया और
बअ्ल के याजक मत्तान को बेदियों के सन्मुख घात किया
और याजक ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये पदों को ठहराया।
१९ तब उस ने शतपतियों को और प्रधानों को और पहरुओं को
और देश के सारे लोगों को लिया और वे राजा को परमेश्वर के
मन्दिर से उतारके पहरुओं के फाटक के मार्ग से राजभवन
२० में लाये और वुह राजाओं के सिंहासन पर बैठा। और देश
के सारे लोग आनन्दित हुए और नगर में चैन हुआ और
उन्हों ने अतलीयाह को राजभवन के लग खड्ग से घात किया।
२१ जब यूआस राजा सिंहासन पर बैठा तब वुह सात बरस का
था॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ और याहू के सातवें बरस यूआस राज्य करने लगा और
उस ने यरूसलम में चालीस बरस राज्य किया और उस की
२ माता का नाम बिअरसबः की ज़िबयः था। जब लों यहूयदः
याजक यूआस को उपदेश करता रहा उस के जीवन भर उस
३ ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई। परन्तु ऊंचे स्थान दूर
न किये गये थे लोग अब लों ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते
थे और सुगंध जलाते थे॥
४ और यूआस ने याजकों से कहा कि पवित्रता के सारे रोकड़
जो परमेश्वर के मन्दिर में पहुंचाये जाते हैं अर्थात् वुह बिशेष
रोकड़ जो प्राण का मोल ठहरता है समस्त रोकड़ जो हर

५ एक अपनी इच्छा से परमेश्वर के मन्दिर में लाता है। सो
याजक हर एक अपने अपने जान पहिचान से लेवें और घर
के दरारों को जहां कहीं दरार पाये जावें सुधारें ॥
६ परन्तु ऐसा हुआ कि यूआस के राज्य के तेईसवें बरस लों
७ याजकों ने मन्दिर के दरारों को न सुधारा। तब यूआस राजा
ने यहूयदः याजक को और याजकों को बुलाके उन्हें
कहा कि घर के दरारों को क्यों नहीं सुधारते हो सो अब
अपने अपने जान पहिचानों से रोकड़ मत लेओ परन्तु उसे
घर के दरारों के लिये सोंपो ॥
८ और याजकों ने लोगों से रोकड़ न लेने को मान लिया कि
९ घर के दरारों को न सुधारें। परन्तु यहूयदः याजक ने एक
मंजूषा लिई और उस के ढपने पर एक छेद किया और उसे
बेदी के लग परमेश्वर के मन्दिर में जाने की दहिनी ओर
रक्खा और याजक जो डेवढ़ी की रक्षा करता था सब रोकड़
को जो परमेश्वर के मन्दिर में लाये जाते थे उस में रखता
था ॥
१० और ऐसा हुआ कि जब मंजूषा में बहुत रोकड़ होता था तो
राजा का लेखक और प्रधान याजक आके रोकड़ को थैलियों
में बांधते थे और उस रोकड़ को जो परमेश्वर के मन्दिर में
११ पाते थे गिनते थे। और वे उस गिने हुए रोकड़ को उन के
हाथ में देते थे जो काम करते थे जो ईश्वर के मन्दिर पर
करोड़े थे और वे उसे बढ़इयों को और थवइयों को जो परमेश्वर के
१२ मन्दिर का काम बनाते थे उसे पहुंचाते थे। और पत्थरियों
को और पत्थर के गढ़वैयों को और लट्ठे और ढाए हुए पत्थर
के लिये उठान करते थे जिसतें परमेश्वर के मन्दिर के दरारों
को सुधारें और सब के लिये जो घर के सुधारने के लिये थे।
१३ तथापि उस रोकड़ से जो परमेश्वर के मन्दिर में आता था

परमेश्वर के मन्दिर के लिये चांदी के कटोरे और कतरनियां
और थालियां और तुरहियां कोई सोने का पाच अथवा चांदी का
१४ पाच नहीं बनाया गया। परन्तु उसे बनिहारों को देते थे और उस्से
१५ परमेश्वर के मन्दिर को सुधारते थे। और जिन के हाथ रोकड़
को बनिहारों के लिये सैांपते थे वे उन से लेखा न लेते थे
१६ क्योंकि वे सच्चाई से उठाते थे। अपराध के रोकड़ और पाप
के रोकड़ परमेश्वर के मन्दिर में न लाते थे परन्तु वे याजक
के थे॥

१७ उसी समय अराम का राजा हज़ाएल चढ़ गया और जात
से लड़के उसे ले लिया और फिर यरूसलम की ओर फिरा कि
१८ उसे भी लेवे। तब यहूदाह के राजा यूआस ने समस्त पवित्र
किई गई बस्तें जो उस के पितर यहूसफ़त और यूराम और
अख़ज़याह यहूदाह के राजाओं ने भेंटें चढ़ाई थीं और उस
की अपनी पवित्र किई हुई बस्तु उस सब सोने समेत जो
परमेश्वर के मन्दिर के भंडारों और राजा के भवन में पाया
गया लेके अराम के राजा हज़ाएल पास भेजी तब वुह यरूसलम
से चला गया॥

१९ और यूआस की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने
किया सो क्या यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की
२० पुस्तक में लिखा हुआ नहीं है। तब उस के सेवकों ने उठके
युक्ति बांधी और यूआस को मिल्लो के घर में जो सिल्ला को
२१ उतरता है घात किया। और सिमआत के बेटे यूज़कर और
सामिर के बेटे यहूज़बद उस के सेवकों ने उसे मारा और वुह
मर गया और उन्हों ने उस के पितरों के संग दाऊद के नगर
में उसे गाड़ा और उस का बेटा अमसियाह उस की सन्ती
राज्य पर बैठा॥

तेरहवां पर्ब्ब ।

१ यहूदाह के राजा अख़ज़याह के बेटे यूआस के तेईसवें
बरस याहू के बेटे यहूअख़ज़ ने समरून में इसराएल पर राज्य
२ करना आरंभ किया और सत्रह बरस राज्य किया। और उस
ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई और नबात के बेटे
यरुबिआम के पापों का पीछा किया जिस ने इसराएल से पाप
३ करवाया वुह उन से अलग न हुआ। तब परमेश्वर का क्रोध
इसराएल पर भड़का और उस ने उन्हें अराम के राजा हज़ाएल
को और हज़ाएल के बेटे बिनहदद को उन के जीवन भर
४ सौंप दिया। और यहूअख़ज़ ने परमेश्वर की बिनती किई
और परमेश्वर ने उस की सुनी क्योंकि उस ने इसराएल
का सताया जाना देखा क्योंकि अराम का राजा उन्हें सताता
५ था। और परमेश्वर ने इसराएल को एक उद्धारक दिया यहां
लों कि वे अरामियों के वश से निकल गये और इसराएल के
६ संतान आगे की नाईं अपने अपने डेरों में रहने लगे। तथापि
उन्हों ने यरुबिआम के घर के पापों को न छोड़ा जिस ने
इसराएल से पाप करवाया परन्तु उसी चाल पर चलता रहा
७ और समरून में भी कुंज बना रहा। और उस ने लोगों में से
किसी को यहूअख़ज़ के साथ न छोड़ा परन्तु पचास घोड़चढ़े
और दस रथ और दस सहस्र पगइत क्योंकि अराम के राजा
ने उन्हें नाश किया और उन्हें पीट पीटके धूल की नाईं
बनाया॥

८ अब यहूअख़ज़ की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने
किया और उस का पराक्रम क्या इसराएल के राजाओं के समयों
९ के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखा है। और यहूअख़ज़ ने
अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे समरून

में गाड़ा तब उस का बेटा यहूआश उस की सन्ती राजा
हुआ ॥

१० यहूदाह के राजा यूआस के सैंतीसवें बरस यहूअख़ज़
का बेटा यहूआश समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा
११ सोलह बरस उस ने राज्य किया। और उस ने परमेश्वर की
दृष्टि में बुराई किई वुह नबात के बेटे यरुबिआम के सारे पापों
से अलग न हुआ जिस ने इसराएल से पाप करवाया
१२ वुह उस में चलता था। और यूआस की उबरी हुई क्रिया
और सब जो उस ने किया और उस का पराक्रम जिस्से यहूदाह
के राजा अमसियाह के बिरोध में लड़ता था सो क्या वे इसराएल
के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखे
१३ हैं। और यूआस ने अपने पितरों में शयन किया और
यरुबिआम उस के सिंहासन पर बैठा और यूआस समरून में
इसराएल के राजाओं में गाड़ा गया ॥

१४ अब इलीशअ एक रोग से रोगी पड़ा जिस्से वुह मर गया
और इसराएल का राजा यूआस उस पास उतर आया और
उस के मुंह पर रोके कहा कि हे मेरे पिता हे मेरे पिता
१५ इसराएल के रथ और उस के घोड़चढ़े। और इलीशअ ने उसे
कहा कि धनुष बाण अपने हाथ में ले और उस ने धनुष
१६ बाण लिये। फिर उस ने इसराएल के राजा को कहा कि
धनुष पर अपना हाथ धर और उस ने अपना हाथ धरा और
१७ इलीशअ ने राजा के हाथों पर अपने हाथ रक्खे। और उसे कहा
कि पूरब की ओर की खिड़की खोल सो उस ने खोली तब इलीशअ
ने कहा कि मार और उस ने मारा तब उस ने कहा कि यह
परमेश्वर के बचाव का बाण और अराम से बचाव का बाण है क्योंकि
तू अराम को अफ़ीक़ में ऐसा मारेगा कि उन्हें मिटा डालेगा।
१८ फिर उस ने उसे कहा कि बाणों को ले और उस ने लिया तब

उस ने इसराएल के राजा से कहा कि भूमि पर बाण मार और
१९ वुह तीन बेर मारके रहि गया। तब ईश्वर के जन ने उस्से
क्रुद्ध होके कहा उचित था कि पांच अथवा छः बेर मारता
तब तू अराम को यहां लों मारता कि उन्हें मिटा डालता
परन्तु अब तो तू अराम को तीन बेर मारेगा॥
२० तब इलीशअ मर गया और उन्हों ने उसे गाड़ा और बरस
के आरंभ में मोअबियों की जथाओं ने देश को घेर लिया।
२१ और ऐसा हुआ कि जब वे एक जन को गाड़ते थे तो क्या
देखते हैं कि एक जथा तब उन्हों ने उस मृतक को इलीशअ
की समाधि में फेंका और वुह गिरा और इलीशअ की लोथ पर
पड़ा और वुह जी उठा और अपने पांव से खड़ा हो गय॥
२२ परन्तु अराम का राजा हज़ाएल यहूअख़ज़ के जीवन भर
२३ इसराएलियों को सताता रहा। और परमेश्वर ने उन पर
अनुग्रह किया और उन पर दयाल हुआ और उस ने अबिरहाम
और इज़हाक़ और यअक़ूब से अपनी बाचा के कारण सुधि
लिई और उन्हें नाश करने न चाहा और अपने आगे से अब
२४ लों दूर न किया। सो अराम का राजा हज़ाएल मर गया
और उस के बेटे बिनहदद ने उस की सन्ती राज्य किया।
२५ और यहूअख़ज़ के बेटे यूआस ने हज़ाएल के बेटे बिनहदद
के हाथ से उन नगरों को फेर लिया जो उस ने उस के पिता
यहूअख़ज़ से लड़ाई में लिये थे और यूआस ने उसे तीन बेर
मारा और इसराएलियों के नगर फेर लिये॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१ इसराएल के राजा यहूअख़ज़ के बेटे यूआस के राज्य के
दूसरे बरस यहूदाह के राजा यहूआस का बेटा अमसियाह
२ राजा हुआ। जब वुह राज्य करने लगा तो पचीस बरस का

था और उस ने यरूसलम में उनतीस बरस राज्य किया और
२ उस की माता का नाम यहूअद्दान यरूसलमी था। और उस
ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई तथापि अपने पिता दाऊद
के समान नहीं परन्तु उस ने सब कुछ अपने पिता यूआस की
४ नाईं किया। तथापि ऊंचे स्थान दूर न किये गये अब लों
लोग ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते थे और सुगंध जलाते
५ थे। और यों हुआ कि ज्यों राज्य उस के हाथ में स्थिर हुआ
त्यों उस ने अपने सेवकों को मार डाला जिन्हों ने उस के
६ पिता राजा को मार डाला था। परन्तु घातकों के संतानों को
घात न किया जैसा कि मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा
है जिस में परमेश्वर ने यह कहके आज्ञा किई थी कि बालकों
के कारण पिता मारे न जावें और न पितरों के कारण बालक
परन्तु हर एक जन अपने ही पाप के कारण मारा जावेगा।
७ उस ने नोन की तराई में दस सहस्र अदूमी को घात किया
और सिला को लड़ाई में ले लिया और उस का नाम आज
लों युक़्तिएल रक्खा॥

८ तब अमसियाह ने याहू राजा के बेटे यहूअख़ज़ के बेटे
यहूआस पास यह कहके दूत भेजा कि आ एक दूसरे के मुंह
९ परस्पर देखें। सो इसराएल के राजा यहूआस ने यहूदाह के
राजा अमसियाह को कहला भेजा कि लुबनान की भटकटैया
ने लुबनान के देवदार बृक्ष से कहला भेजा कि अपनी बेटी
मेरे बेटे से ब्याह दे पर लुबनान के एक बनैले पशु ने उधर
१० से जाते जाते उस भटकटैया को लताड़ा। निश्चय तू ने अदूम
को मारा है और तेरे मन ने तुझे उभारा है बड़ाई कर और
घर में रह जा अपनी घटती के लिये क्यों छेड़े कि तू अर्थात्
११ यहूदाह समेत ध्वस्त होवे। परन्तु अमसियाह ने उस की न
सुनी इस लिये इसराएल का राजा यहूआस चढ़ गया और

उस ने और यहूदाह के राजा अमसियाह ने बेतशम्स में जो
१२ यहूदाह का है परस्पर मुंह देखा। सो यहूदाह का राजा
इसराएल के आगे ध्वस्त हुआ और उन में से हर एक अपने
१३ अपने तंबू का भागा। और इसराएल के राजा यहूआस ने
अख़ज़याह के बेटे यहूआस के बेटे यहूदाह के राजा अमसियाह
के बेतशम्स में पकड़ लिया और यरूसलम में आया और
यरूसलम की भीत इफ़रायम के फाटक से लेके कोने के फाटक
१४ लों चार सो हाथ ढा दिई। और उस ने सारा सोना और चांदी
और सारे पाच जो परमेश्वर के मंदिर में और राजा के भंडारों
में पाये ले लिये और ओल लेके समरून को फिर गये॥
१५ अब यहूआस की रही हुई क्रिया और उस का पराक्रम कि
वुह यहूदाह के राजा अमसियाह से क्योंकर लड़ा सो क्या
इसराएली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखा
१६ हुआ नहीं है। और यहूआस ने अपने पितरों में शयन किया
और इसराएली राजाओं के संग समरून में गाड़ा गया और उस
के बेटे यरुबिआम ने उस की सन्ती राज्य किया॥
१७ और यहूदाह के राजा यूआस का बेटा अमसियाह इसराएल
के राजा यहूअख़ज़ के बेटे यहूआस के मरने के पीछे पन्दरह
१८ बरस जीया। और अमसियाह की रही हुई क्रिया क्या वे यहूदाह
के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी हुई
१९ नहीं हैं। अब उन्हों ने यरूसलम में उस के बिरोध में युक्ति
बांधी तब वुह लकीस के भाग गया फिर उन्हों ने उस के
२० पीछे लोग लकीस में भेजे और वहां उसे मार डाला। और वे
उसे घोड़ों पर लाये और दाऊद के नगर में यरूसलम में उस के
पितरों के संग गाड़ा॥
२१ तब यहूदाह के सारे लोगों ने अज़रियाह को जो सोलह
बरस का था लेके उस के पिता अमसियाह की सन्ती राजा

२२ किया। उस ने एलात का नगर बनाया और यहूदाह में
मिला दिया उस के पीछे राजा ने अपने पितरों में शयन
किया॥
२३ और यहूदाह के राजा यूआस के बेटे अमसियाह के
पन्द्रहवें बरस इसराएल के राजा यहूआस का बेटा यरुबिआम
समरून में इसराएल के संतान पर राज्य करने लगा उस ने
२४ एकतालीस बरस राज्य किया। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि
में बुराई किई नबात के बेटे यरुबिआम के सारे पापों के
कारण जिस ने इसराएल से पाप करवाया छोड़ न दिया।
२५ उस ने हमात की पैठ से लेके चौगान के समुद्र लों इसराएल
के ईश्वर परमेश्वर के बचन के समान जो उस ने अपने सेवक
जातहिफर के भविष्यद्वक्ता अमित्ते के बेटे यूनस के द्वारा से
२६ कहा था उस ने इसराएल के सिवाने को फेर दिया। क्योंकि
परमेश्वर ने इसराएल के कष्ट को देखा कि अति है क्योंकि न
कोई बंधन में था न कोई छोड़ा गया और न कोई इसराएल
२७ का रक्षक था। और परमेश्वर ने यह न कहा था कि मैं स्वर्ग
के नीचे से इसराएल का नाम मिटाऊंगा परन्तु उस ने उन्हें
यहूआस के बेटे यरुबिआम के द्वारा से बचाया॥
२८ अब यरुबिआम की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने
किया और उस का पराक्रम कि क्योंकर लड़ा और दमिश्क को और
यहूदाह के हमात को इसराएल के लिये फेर दिया सो क्या वे
इसराएली राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखे
२९ हुए नहीं हैं। और यरुबिआम ने अपने पितरों में अर्थात्
इसराएली राजाओं के संग शयन किया और उस के बेटे
ज़करियाह ने उस की सन्ती राज्य किया॥

पंदरहवां पर्ब्ब ।

१ इसराएल के राजा यरुबिऋाम के सताईसवें बरस यहूदाह
के राजा अमसियाह का बेटा अज़रियाह राज्य करने लगा ।
२ जब वुह राज्य पर बैठा तो सोलह बरस का था और उस ने
यरूसलम में बावन बरस राज्य किया और उस की माता का
३ नाम यकुल्लियाह था जो यरूसलमी थी । और उस ने अपने
पिता अमसियाह की सारी क्रिया के समान परमेश्वर की दृष्टि
४ में भलाई किई । केवल यह कि ऊंचे स्थान दूर न किये
गये और लोग अब लों ऊंचे स्थानों पर बलिदान चढ़ाते और
धूप जलाते थे ॥
५ और परमेश्वर ने राजा को मारा कि वुह मरने के दिन लों
कोढ़ी रहा और घर में अलग रहता था और उस का बेटा यूताम
घर का अध्यक्ष था और देश के लोगों का न्याय किया करता था ॥
६ और अज़रियाह की उबरी हुई क्रिया और सब जो उस ने
किया सो क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की
७ पुस्तक में लिखे नहीं हैं । सो अज़रियाह ने अपने पितरों में
शयन किया और उन्हों ने दाऊद के नगर में उस के पितरों
के संग उसे गाड़ा और उस के बेटे यूताम ने उस की सन्ती
राज्य किया ॥
८ यहूदाह के राजा अज़रियाह के अठतीसवें बरस यरुबिऋाम
के बेटे ज़करियाह ने इसराएल पर समरून में छः मास राज्य
९ किया । और उस ने अपने पितरों के समान परमेश्वर की दृष्टि में
बुराई किई नबात के बेटे यरुबिऋाम के पापों से जिस ने इसराएल
१० से पाप करवाया अलग न हुआ । और यबीस के बेटे सलूम
ने उस के बिरोध में युक्ति बांधके लोगों के आगे मारा और
उसे घात किया और उस की सन्ती राज्य किया ॥

११ और ज़करियाह की उबरी हुई क्रिया देखो वे इसराएल
के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में लिखी हैं।
१२ परमेश्वर का यह बचन है जो वुह याहू से कहके बोला कि
तेरे बेटे चौथी पीढ़ी लों इसराएल के सिंहासन पर बैठेंगे वैसा
ही संपूर्ण हुआ ॥
१३ यहूदाह के राजा उज़्ज़ियाह के राज्य के उंतालीसवें बरस
यबीस के बेटे सलूम ने राज्य करना आरंभ किया और उस ने
१४ समरून में एक मास भर राज्य किया। क्योंकि जद्दी का बेटा
मुनहिम तिरज़: से समरून पर चढ़ आया और यबीस के बेटे
सलूम को समरून में मारा और उसे घात करके उस की सन्ती
राज्य किया ॥
१५ और सलूम की रही हुई क्रिया और उस की युक्ति जो उस
ने बांधी सो देखो वे इसराएली राजाओं के समयों के
१६ समाचार की पुस्तक में लिखी हैं। तब मुनहिम ने तिफ़सह
को उन सब समेत जो उस में थे तिरज़: से लेके उस के
सिवाने लों मारा क्योंकि उन्हों ने उस के लिये न खोला इस
लिये उस ने मारा और उस में की सारी गर्भिणी स्त्रियों का
पेट फाड़ा ॥
१७ यहूदाह के राजा अज़रियाह के उनतालीसवें बरस जद्दी
के बेटे मुनहिम ने इसराएल पर राज्य करना आरंभ किया
१८ उस ने समरून में दस बरस राज्य किया। और परमेश्वर की
दृष्टि में बुराई किई और नबात के बेटे यरबिआम के पापों
को जिस ने इसराएल से पाप करवाया अपने जीवन भर न
१९ छोड़ा। तब असूरियों का राजा फूल देश के बिरोध में चढ़
आया और मुनहिम ने चालीस लाख रुपये के लग भग फूल
को दिया जिसतें उस का साथी होके उस का राज्य स्थिर
२० करे। और मुनहिम ने यह रोकड़ इसराएल से काढ़ा अर्थात्

हर एक धनी से पचास शैकल चांदी लिई और असूरियों के
राजा को दिया सो असूरियों का राजा फिर गया और देश में
न ठहरा ॥
२१ और मुनहिम की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने
किया सो क्या वे इसराएली राजाओं के समयों के समाचार
२२ की पुस्तक में नहीं लिखी हैं । और मुनहिम ने अपने पितरों में
शयन किया और उस के बेटे फ़िक़हियाह ने उस की सन्ती
राज्य किया ॥
२३ यहूदाह के राजा अज़रियाह के पचासवें बरस मुनहिम
का बेटा फ़िक़हियाह समरून में इसराएलियों पर राज्य करने
२४ लगा उस ने दो बरस राज्य किया । और परमेश्वर की दृष्टि
में बुराई किई उस ने नबात के बेटे यरुबिआम के पापों को
२५ जिस ने इसराएल से पाप करवाया छोड़ न दिया । परन्तु उस
के सेनापति रमलियाह के बेटे फ़िक़: ने उस के विरुद्ध युक्ति
बांधी और उसे समरून में अरजूब और अरिया और जिलिअदी
पचास मनुष्यों समेत राजा के भवन में मारा और उसे घात
करके उस की सन्ती राज्य किया ॥
२६ और फ़िक़हियाह की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने
किया देखो वे इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की
पुस्तक में लिखी हैं ॥
२७ यहूदाह के राजा अज़रियाह के बावनवें बरस में रमलियाह
का बेटा फ़िक़: समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा
२८ और उस ने बीस बरस राज्य किया । और उस ने परमेश्वर
की दृष्टि में बुराई किई नबात के बेटे यरुबिआम के
पापों से जिस ने इसराएल से पाप करवाया अलग न हुआ ।
२९ इसराएल के राजा फ़िक़: के दिनों में असूर के राजा
तिगलतपिलासर ने आके ऐयून को और अबीलबैतमअक: को और

यनहा को ओर क़ादिस को ओर हसूर को ओर जिलिअद को
ओर जलील को ओर नफ़ताली के सारे देश को लेके उन्हें
३० असूर को बंधुआई में ले गया। ओर एला के बेटे हूसीअ ने
रमलियाह के बेटे फ़िक़: के विरुद्ध में युक्ति बांधके उसे मारा
ओर घात करके उज्ज़ियाह के बेटे यूताम के बीसवें बरस
उस की सन्ती राज्य किया॥

३१ ओर फ़िक़: की रही हुई क्रिया ओर सब जो उस ने किया
देखो वे इसराएल के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक
में लिखी हैं॥

३२ इसराएल के राजा रमलियाह के बेटे फ़िक़: के दूसरे बरस
यहूदाह के राजा उज्ज़ियाह का बेटा यूताम राज्य करने लगा।
३३ जब उस ने राज्य करना आरंभ किया तो वुह पचीस बरस
का था ओर उस ने सोलह बरस यरूसलम में राज्य किया
ओर उस की माता का नाम यरूसा था जो सदूक की बेटी
३४ थी। ओर उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई जो कुछ
३५ किया सो अपने बाप उज्ज़ियाह के समान किया। तथापि
ऊंचे स्थान अलग न किये गये अब लों लोग ऊंचे स्थानों पर
बलि चढ़ाते ओर धूप जलाते थे उस ने परमेश्वर के मंदिर का
ऊंचा फाटक बनाया॥

३६ अब यूताम की रही हुई क्रिया ओर सब जो उस ने किया
सो क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की
३७ पुस्तक में नहीं लिखी हैं। उन्हीं दिनों में परमेश्वर ने अराम
के राजा रसीन को ओर रमलियाह के बेटे फ़िक़: को यहूदाह
३८ पर भेजा। ओर यूताम ने अपने पितरों में शयन किया ओर
अपने पिता दाऊद के नगर में अपने पितरों में गाड़ा गया
ओर उस का बेटा आख़ज़ उस की सन्ती राज्य करने लगा॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

१ रमलियाह के बेटे फ़िक़ः के राज्य के सत्तहवें बरस
यहूदाह के राजा यूताम का बेटा आख़ज़ राज्य करने लगा ।
२ जब आख़ज़ राज्य करने लगा तब वुह बीस बरस का था और
उस ने सोलह बरस यरूसलम में राज्य किया और उस ने
परमेश्वर अपने ईश्वर की दृष्टि में अपने पिता दाऊद के समान
३ भलाई न किई । परन्तु वुह इसराएल के राजाओं की चाल
पर चलता था और उस ने भी अन्यदेशियों के घिनितों के
समान जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के संतान के आगे से दूर
४ किया था अपने बेटे को आग में से चलाया । और ऊंचे ऊंचे
स्थानों और पहाड़ों पर और हर एक हरे पेड़ के नीचे बलि
चढ़ाये और धूप जलाये ॥

५ तब अराम के राजा रसीन और इसराएल के राजा
रमलियाह का बेटा फ़िक़ः यरूसलम पर लड़ने चढ़े और
६ उन्हों ने आख़ज़ को घेर लिया परन्तु जीत न सके । उसी
समय अराम के राजा रसीन ने समरून के लिये ऐलात फेर
लिया और यहूदियों को ऐलात से खेद दिया और अरामी
७ ऐलात को आये और आज लों उस में बस्ते हैं । और आख़ज़
ने असुर के राजा तिगलतपिलासर पास दूत के द्वारा से कहला
भेजा कि मैं तेरा सेवक और तेरा बेटा सा हूं आ और मुझे
अराम के राजा के हाथ से और इसराएल के राजा के हाथ
८ से जो मुझ पर चढ़ आये हैं छुड़ा । और आख़ज़ ने सोना
चांदी जो परमेश्वर के मंदिर में और राजा के घर के भंडारों
९ में था लेके असुर के राजा के लिये भेंट भेजी । और असुर
के राजा ने उस का बचन माना क्योंकि असुर का राजा
दमिश्क के बिरोध में चढ़ गया और उसे ले लिया और वहां

के लोगों को बंधुआ करके क़ीर में लाया और रसीन को मार
डाला ॥
१० तब राजा आख़ज़ असूर के राजा तिगलतपिलासर से भेंट
करने दमिश्क को गया और दमिश्क में एक बेदी देखी और
आख़ज़ राजा ने उस बेदी का डौल और रूप उस के समस्त
११ कार्य्यकारी के समान ऊरियाह याजक के पास भेजा। सो
ऊरियाह याजक ने उन सभों के समान जो आख़ज़ ने दमिश्क
से भेजा था एक बेदी बनाई और आख़ज़ राजा के दमिश्क
१२ से आते आते ऊरियाह याजक ने बेदी को सिद्ध किया। और
जब राजा दमिश्क से आया तो राजा ने बेदी को देखा और
१३ राजा बेदी पास गया और उस पर चढ़ाया। और उस ने
अपने बलिदान की भेंट और अपने होम की भेंट चढ़ाई और
अपने पीने की भेंट उस पर ढाली और अपने कुशल की भेंट
१४ का लोहू बेदी पर छिड़का। और उस ने पीतल की उस बेदी
को जो परमेश्वर के आगे थी घर के साम्ने से अर्थात् बेदी के
और परमेश्वर के घर के मध्य से लाके बेदी के उत्तर अलंग रक्खा।
१५ और राजा आख़ज़ ने ऊरियाह याजक को आज्ञा करके कहा
कि बिहान के बलिदान की भेंट और सांझ के होम की भेंट
और राजा के बलिदान की भेंट और उस के होम की भेंट
और देश के सारे लोगों के बलिदान की भेंट और उन के होम
की भेंट और उन के पीने की भेंटें जला और बलिदान की भेंट के
सारे लोहू और बलि के सारे लोहू उस पर छिड़क और पीतल
१६ की बेदी मेरे बूझने के लिये होगी। यों ऊरियाह याजक ने
१७ आख़ज़ राजा की आज्ञा के समान सब कुछ किया। और
राजा आख़ज़ ने आधार के कोरों को काट डाला और उन
पर के स्नान पात्र को अलग किया और समुद्र को पीतल के
१८ बैलों पर से उतारके बिछे हुए पत्थरों पर रक्खा। और

बिश्राम की छत को जो उन्हों ने घर में बनाई थी और राजा
के पैठ के बाहर बाहर असूर के राजा के लिये उस ने परमेश्वर
के मंदिर से बाहर किया ॥
१९ अब आख़ज़ की रही हुई क्रिया जो उस ने किई सो क्या वे
यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में
२० लिखी नहीं हैं । और आख़ज़ ने अपने पितरों में शयन किया
और अपने पितरों के संग दाऊद के नगर में गाड़ा गया और
उस का बेटा हिज़क़ियाह उस की सन्ती राज्य पर बैठा ॥

सत्रहवां पर्व्व ।

१ यहूदाह के राजा आख़ज़ के बारहवें बरस एला का बेटा
हूसीअ समरून में इसराएल पर राज्य करने लगा उस ने नव
२ बरस राज्य किया । और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई
किई परन्तु इसराएल के राजाओं के समान नहीं जो उस्से
३ आगे थे । असूर का राजा शलमनाज़र उस के बिरोध में चढ़
आया और हूसीअ उस का सेवक होके उसे भेंट देने लगा ॥
४ और असूर के राजा ने हूसीअ में बैर की युक्ति पाई क्योंकि
उस ने मिस्र के राजा सो के पास दूतों को भेजा था और जैसा
वुह बरस बरस करता था असूर के राजा के पास भेंट न भेजी
इस लिये असूर के राजा ने उसे बंधन में किया और उसे
५ बन्दीगृह में डाला । तब असूर का राजा सारे देश पर चढ़
६ गया और समरून पर आके तीन बरस उसे घेरे रहा । हूसीअ के
नवें बरस में असूर के राजा ने समरून को ले लिया और
इसराएल को असूर में ले गया और उन्हें ख़लह और ख़बूर
में जोज़ान नदी के पास और मादियों की बस्ती में बसाया ॥
७ क्योंकि इसराएल के संतान ने परमेश्वर अपने ईश्वर के
बिरोध में जिस ने उन्हें मिस्र की भूमि में से निकालके मिस्र

के राजा फ़िरऊन के हाथ से मुक्ति दिई पाप किया अरु और
८ देवों से डरते थे। और अन्यदेशियों की बिधिन पर जिन्हें
परमेश्वर ने इसराएल के संतान के आगे से दूर किया था और
इसराएली राजाओं के जो उन्हों ने किई थीं चलता था।
९ और इसराएल के संतानों ने परमेश्वर अपने ईश्वर के विरुद्ध
छिप छिपके ठीक न किया और उन्हों ने अपनी सारी बस्तियों
में पहरू के गर्गज से लेके बाड़े के नगर लों ऊंचे ऊंचे स्थान
१० बनाये। और हर एक पहाड़ पर और हर एक हरे पेड़ के
११ नीचे मूर्त्तें स्थापित किईं और कुंज लगाये। और अन्यदेशियों
के समान जिन्हें परमेश्वर ने उन के आगे से दूर किया सारे
ऊंचे स्थान में धूप जलाये और दुष्टता करके परमेश्वर को रिस
१२ दिलाया। क्योंकि उन्हों ने मूर्त्ति पूजी जिन के विषय में
परमेश्वर ने उन्हें कहा था कि तुम यह काम मत कीजियो॥
१३ तद भी परमेश्वर ने सारे भविष्यद्वक्तों और सारे दर्शियों के
द्वारा से इसराएल के संतान पर और यहूदाह के संतान पर
यह कहके साक्षी दिई कि अपने बुरे मार्गों से फिरो और मेरी
आज्ञाओं और मेरी बिधिन को सारी व्यवस्था के समान जो
मैं ने तुम्हारे पितरों को आज्ञा किई और जिन्हें मैं ने अपने
सेवक भविष्यद्वक्तों के द्वारा से तुम पास भेजा पालन करो।
१४ तथापि उन्हों ने न माना परन्तु अपने पितरों के गले के समान
जो परमेश्वर अपने ईश्वर पर विश्वास न लाये थे अपने गले को
१५ कठोर किया। और उन्हों ने उस की बिधिन को और उस
की बाचा को जो उस ने उन के पितरों से किई और उस की
साक्षियों को जो उस ने उन के बिरोध में साक्षी दिई थी
त्याग किया और व्यर्थ का पीछा किया और व्यर्थ होके अपने
चारों ओर के अन्यदेशियों का पीछा किया जिन्हें परमेश्वर ने
उन्हें चिता रक्खा था कि तुम उन के समान मत कीजियो।

१६ और उन्हों ने परमेश्वर अपने ईश्वर की आज्ञाओं को छोड़ दिया
और अपने लिये ढाली हुई मूर्त्ते और दो बछियां बनाईं और एक
कुंज लगाया और आकाश की सारी सेना की पूजा किई और
१७ बअल की सेवा करते थे। और उन्हों ने अपने बेटों को और
अपनी बेटियों को आग में से चलाया और आगम कहने और
टोना करने लगे और परमेश्वर की दृष्टि में उसे रिसियाने के
१८ लिये और बुराई करने के लिये आप को बेचा। इस लिये
परमेश्वर इसराएल पर निपट रिसाया और उन्हें अपनी दृष्टि से
अलग किया और केवल यहूदाह की गोष्ठी को छोड़ कोई न
१९ छूटा। यहूदाह के संतान ने भी परमेश्वर अपने ईश्वर की
आज्ञाओं को पालन न किया परन्तु इसराएल की बिधिन पर
चलते थे॥

२० तब परमेश्वर ने इसराएल के सारे बंश को त्याग किया
और उन्हें कष्ट दिया और उन्हें लुटेरों के हाथ में सौंप दिया
२१ यहां लों कि उस ने उन्हें अपनी दृष्टि से दूर किया। क्योंकि
उस ने इसराएल को दाऊद के घराने से निकाल दिया और
उन्हों ने नबात के बेटे यरुबिआम को राजा किया और
यरुबिआम ने इसराएल को परमेश्वर का पीछा करने से दूर
२२ किया और उन से बड़ा पाप करवाया। क्योंकि इसराएल के
संतान यरुबिआम के किये हुए सारे पापों पर चलते थे
२३ वे उन से अलग न हुए। यहां लों कि परमेश्वर ने इसराएल
को अपनी दृष्टि से दूर किया जैसा उस ने अपने सारे दास
भविष्यद्वक्तों के द्वारा से कहा था सो इसराएल अपने देश से
निकाले जाके आज लों असूर में पहुंचाये गये॥

२४ और असूर के राजा ने बाबुल से और कूत से और अव्वा से
और हमात से और सिफ्रवाइम से लोगों को लाके समरून की
बस्तियों में इसराएल के संतान की सन्ती बसाया और वे

२५ समरून के अधिकारी हुए और उस के नगरों में बसे। और
जब वे आरंभ में वहां जा बसे तो परमेश्वर से न डरते थे
इस लिये परमेश्वर ने उन में सिंहों को भेजा और वे उन्हें
२६ फाड़ने लगे। इस लिये यह कहके वे असूर के राजा से बोले
कि जिन जातिगणों को तू ने उठा लिया है और समरून की
बस्तियों में बसाया है इस देश के ईश्वर का व्यवहार नहीं
जानते इस लिये उस ने उन में सिंह भेजे और देखो वे इस
कारण उन्हें बधन करते हैं कि वे इस देश के ईश्वर का
२७ व्यवहार नहीं जानते हैं। तब असूर के राजा ने यह आज्ञा
किई कि उन याजकों में से जिन्हें तुम वहां से यहां ले आये
हो एक को वहां ले जाओ कि वुह जाके वहां रहा करे और
२८ उस देश के ईश्वर का व्यवहार उन्हें सिखावे। तब उन याजकों
में से जिन्हें वे समरून से ले गये थे एक आया और बैतएल
२९ में रहा और उन्हें परमेश्वर का डर सिखाया। परन्तु हर एक
जाति ने अपने अपने देव बनाये और उन्हें ऊंचे स्थानों के
घरों में जो समरूनियों ने बनाये थे रक्खा हर एक जाति
३० अपने अपने रहने के नगरों में। और बाबुल के मनुष्यों ने
सुक्कातबिनात बनाया और कूत के मनुष्यों ने नेरगल बनाया
३१ और हमात के मनुष्यों ने असीमा बनाया। और अवियों ने
निबहज़ और तरताक़ बनाये और सिफारवियों ने अपने बालकों
को अदरम्मलिक और अदनम्मलिक सिफारवियों के देवों के
३२ लिये आग में जला दिया। सो वे परमेश्वर से डरे और उन्हों
ने अपने लिये सब में से लेके ऊंचे स्थानों का याजक बनाया
जो उन के लिये ऊंचे स्थानों के घरों में बलिदान चढ़ाते थे।
३३ वे परमेश्वर से डरते थे और उन जातिगणों के समान जिन्हें
वे वहां से ले गये थे अपने ही देवों की सेवा करते थे॥
३४ आज के दिन लों वे अगली बिधि और व्यवहार पर चलते

हैं क्योंकि वे परमेश्वर से नहीं डरते और उन की बिधिन पर
और व्यवस्था और आज्ञा पर जो परमेश्वर ने यअक़ूब के संतान
के लिये आज्ञा किई जिस का नाम उस ने इसराएल रक्खा
३५ नहीं चलते । जिस्से परमेश्वर ने एक बाचा बांधा और यह
कहके उन्हें चिताया कि तुम और देवों से मत डरो और उन
के आगे प्रणाम मत करो और उन की सेवा मत करो और
३६ उन के लिये बलि मत चढ़ाओ । परन्तु तुम परमेश्वर से जिस
ने अपनी बड़ी सामर्थ्य से और अपनी बढ़ाई हुई भुजा से
तुम्हें मिस्र के देश से निकाल लाया डरियो और तुम उसी
३७ की सेवा कीजियो और उस के लिये बलि चढ़ाइयो । और
उन व्यवहारों और बिधिन और व्यवस्था और आज्ञा को जो
उस ने तुम्हारे लिये लिखवाये तुम सदा लों मानियो और
३८ और देवों से मत डरियो । और उस बाचा को जो मैं ने तुम
से किई है मत भूलियो और और देवों से मत डरियो ।
३९ परन्तु परमेश्वर अपने ईश्वर से डरियो और वही तुम्हारे सारे
४० बैरियों के हाथ से तुम्हें छुड़ावेगा । तथापि उन्हों ने न सुना
परन्तु अपने अगिले व्यवहारों पर चलते थे ॥
४१ सो इन जातिगणों ने परमेश्वर का भय न रक्खा और अपनी
खोदी हुई मूर्त्तों की सेवा किई उन के लड़के और उन के
लड़कों के लड़के भी अपने पितरों के समान आज के दिन लों
करते हैं ॥

अठारहवां पर्व्व ।

१ और एला के बेटे हूसीअ इसराएल के राजा के तीसरे
बरस यहूदाह के राजा आख़ज़ का बेटा हिज़क़ियाह राजा
२ हुआ । जब वुह राजा हुआ तब पचीस बरस का था और
उस ने उन्तीस बरस यरूसलम में राज्य किया और उस की

३ माता का नाम अबी था जो ज़करियाह की बेटी थी। और उस
ने अपने पिता दाऊद के समान परमेश्वर की दृष्टि में सब बात
४ में भलाई किई। उस ने ऊंचे स्थानों को ढा दिया और मूर्त्तों
को तोड़ा और कुंजों को काट डाला और उस पीतल के सांप
को जो मूसा ने बनाया था तोड़के टुकड़ा टुकड़ा किया
क्योंकि इसराएल के सन्तान उस समय लों उस के आगे धूप
जलाते थे और उस ने उस का नाम पीतल का सांप रक्खा।
५ और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर पर भरोसा रखता था यहां
लों कि उस के पीछे यहूदाह के सब राजाओं में ऐसा कभी
६ न हुआ और न उस्से आगे कोई हुआ था। क्योंकि वुह
परमेश्वर से लवलीन रहा और उस के पीछे से अलग न हुआ
परन्तु उस ने उन आज्ञाओं को जो परमेश्वर ने मूसा से किई
थीं पालन किया॥

७ और परमेश्वर उस के साथ था वुह जहां कहीं जाता था
भाग्यमान होता था और असूर के राजा के बिरोध में फिर
८ गया और उस की सेवा न किई। उस ने फ़िलिसतियों को
अज़्ज़: लों और उस के सिवानों के अन्त लों रखवालों के गर्गज
से लेके घेरित नगर लों मारा॥

९ और हिज़क़ियाह राजा के चौथे बरस जो इसराएल के
राजा एला के बेटे हूसीअ के सातवें बरस था यों हुआ कि
असूर के राजा शलमनाज़र के बिरोध पर चढ़ आया और उसे
१० घेर लिया। और तीसरे बरस के अन्त में उन्हों ने उसे ले
लिया और हिज़क़ियाह के छठवें बरस जो इसराएल के राजा
११ हूसीअ का नवां बरस है समरून लिया गया। और असूर का
राजा इसराएलियों को असूर को ले गया और उन्हें ख़लह में
और ख़बूर में जो जौज़ान की नदी के लग है और मादियों
१२ के नगरों में रक्खा। यह इस लिये हुआ कि उन्हों ने परमेश्वर

अपने ईश्वर की बात न मानी परन्तु उस की बाचा को और
उन सभों को जो परमेश्वर के दास मूसा ने कहा था टाल दिया
और न सुनते थे और न करते थे ॥
१३ और हिज़क़ियाह राजा के राज्य के चौदहवें बरस
असूर के राजा सनहेरीब ने यहूदाह के सारे बाड़ित नगरों पर
१४ चढ़ आके उन्हें ले लिया। तब यहूदाह के राजा हिज़क़ियाह
ने असूर के राजा को जो लकीस में था कहला भेजा कि मुझ
से अपराध हुआ मुझ से फिर जाइये जो कुछ तू मुझ
पर धरेगा मैं उठाऊंगा और उस ने यहूदाह के राजा हिज़क़ियाह
१५ पर तीन सौ तोड़े चांदी और तीस तोड़े सोना ठहराये। और
हिज़क़ियाह ने सारी चांदी जो परमेश्वर के मन्दिर में और
१६ राजा के घर के भंडारों में पाई गई उसे दिई। उस समय
हिज़क़ियाह ने परमेश्वर के मन्दिर के द्वारों का और खंभों पर
का सोना जो यहूदाह के राजा हिज़क़ियाह ने उन पर मढ़ा
था काट काटके असूर के राजा को दिया ॥
१७ तब असूर के राजा ने तरतान को और रबसारीस को और
रब्बसाकी को लकीस से भारी सेना सहित यरूसलम के बिरोध
में भेजा और वे चढ़े और यरूसलम को आये और आके ऊपर
कुंड के पनाले के लग जो धोबी के खेत के मार्ग में है खड़े
१८ हुए। और जब उन्हों ने राजा को बुलाया तब ख़िलक़ियाह
का बेटा इलयक़ीम जो घराने पर था और शबना लेखक और
आसफ़ का बेटा यूअख़ स्मारक उन पास आये ॥
१९ तब रब्बसाकी ने उन्हें कहा कि तुम हिज़क़ियाह से कहो
कि महाराज असूर का राजा यों कहता है कि वुह क्या आसरा
२० है जो तू रखता है। तू केवल होंठों की बात कहता है कि मुझ
में परामर्श और युद्ध का पराक्रम है सो अब तू किस पर भरोसा
२१ रखता है कि मुझ से फिर जाता है। अब देख तू उस मसले

हुए सेंठे के दंड पर अर्थात् मिस्र पर भरोसा रखता है यदि
कोई उस पर ओठंगे तो वुह उस के हाथ में गड़ जावेगा
और उसे बेधेगा सो मिस्र का राजा फ़िरऊन उन सब के लिये
२२ जो उस पर भरोसा रखते हैं ऐसा ही है। परन्तु यदि तू
मुझे कहे कि हमारा भरोसा परमेश्वर अपने ईश्वर पर है क्या
वही नहीं जिस के ऊंचे स्थानों को और जिस की बेदियों को
हिज़क़ियाह ने अलग किया और यहूदाह और यरूसलम को
कहा है कि तुम यरूसलम में इस बेदी के आगे सेवा करो।
२३ सो अब असूर के राजा मेरे प्रभु को ओल दीजिये और मैं
तुझे दो सहस्र घोड़े देऊंगा यदि तुझ में यह शक्ति हो कि तू
२४ चढ़वैयों को उन पर बैठावे। सो किस रीति से तू मेरे प्रभु
के सेवकों में से सब से छोटे प्रधान का मुंह फेरेगा और मिस्र
२५ पर रथों के और घोड़चढ़ों के लिये भरोसा रक्खे। अब क्या
मैं इस स्थान के नाश करने को बिना परमेश्वर के आया हूं
परमेश्वर ने मुझे कहा कि उस देश पर चढ़ जा और उसे नाश
कर॥

२६ तब ख़िलक़ियाह का बेटा इलयक़ीम और शबना और
यूअख़ ने रब्बसाकी से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि
अपने दासों से अरामी भाषा में कहिये क्योंकि उसे हम समझते
हैं और यहूदियों की भाषा में हम से भीत पर के लोगों के
२७ कान में न कहिये। परन्तु रब्बसाकी ने उन्हें कहा कि क्या
मेरे प्रभु ने मुझे तेरे प्रभु के अथवा तुझ पास ये बातें कहने
को भेजा है क्या उस ने मुझे उन लोगों पास जो भीत पर
बैठे हैं नहीं भेजा जिसतें वे तुम्हारे साथ अपना ही मल मूत्र
खावें पीवें॥

२८ तब रब्बसाकी खड़ा होके यहूदियों की भाषा में ललकारके
बोला और कहा कि असूर के राजा महाराज का बचन सुनो।

२६ राजा यह कहता है कि हिज़क़ियाह तुम्हें छल न देवे क्योंकि
३० वुह मेरे हाथ से तुम्हें छुड़ा नहीं सक्ता। और हिज़क़ियाह
तुम्हें यह कहके परमेश्वर का भरोसा न दिलावे कि परमेश्वर
निश्चय हमें छुड़ावेगा और यह नगर असूर के राजा के हाथ
३१ में सौंपा न जावेगा। हिज़क़ियाह की मत सुनो क्योंकि असूर
का राजा यों कहता है कि मुझे भेंट देके मुझ पास निकल
आओ और तुम्में से हर एक अपने अपने दाख में से और
अपने अपने गूलर पेड़ में से खावे और अपने अपने कुंड का
३२ पानी पीवे। जब लों मैं आऊं और तुम्हें यहां से एक देश में
जो तुम्हारे देश की नाईं है ले जाऊं वुह अन्न और दाखरस
का देश रोटी और दाख की बारी का देश जलपाई के तेल
और मधु का देश है जिसतें तुम जीओ और न मरो और
हिज़क़ियाह की मत सुनो जब वुह यह कहके तुम्हारा बोध
३३ करता है कि परमेश्वर हमें बचावेगा। भला जातिगणों के
देवों में से किसी ने भी अपने देश को असूर के राजा के हाथ
३४ से छुड़ाया है। हमत और अरफाद के देव कहां हैं और
सिफ़्रवाइम हेना और ऐवा के देव कहां क्या उन्हों ने समरून
३५ को मेरे हाथ से छुड़ाया है। देशों के सारे देवों में वे कौन
जिन्हों ने अपने देश मेरे हाथ से छुड़ाये जो परमेश्वर यरूसलम
को मेरे हाथ से छुड़ावे॥

३६ परन्तु लोग चुपके रहे और उस के उत्तर में एक बात न
कही क्योंकि राजा की आज्ञा यों थी कि उसे उत्तर मत दीजियो॥

३७ तब ख़िलक़ियाह का बेटा इलयक़ीम जो घराने पर था
और शबना लेखक और आसफ़ स्मारक का बेटा यूअख़ अपने
कपड़े फाड़े हुए हिज़क़ियाह के पास आये और रब्बसाक़ी की
बातें उस्से कहीं॥

उन्नीसवां पर्व्व ।

१ और ऐसा हुआ कि जब हिज़क़ियाह राजा ने यह सुना तब
अपने कपड़े फाड़ और टाटवस्त्र ओढ़के परमेश्वर के मन्दिर
२ में गया। तब उस ने इलयक़ीम को जो घराने पर था और
शबना लेखक और याजकों के प्राचीनों को टाटवस्त्र ओढ़े
३ हुए अमूस के बेटे यसअियाह भविष्यद्वक्ता पास भेजा। और
उन्हों ने उसे कहा कि हिज़क़ियाह यों कहता है कि आज
दुःख और डपट और खिझाव का दिन है क्योंकि बालक
४ उत्पन्न होने पर हैं और जन्ने की सामर्थ्य नहीं। क्या जाने
परमेश्वर तेरा ईश्वर रब्बसाक़ी की सब बातें सुनेगा जिसे उस
के स्वामी असूर के राजा ने जीवते ईश्वर की निन्दा करने को
भेजा है और जिन बातों को परमेश्वर तेरे ईश्वर ने सुना है
उन पर दोष देवे इस लिये तू बचे हुओं के कारण प्रार्थना
करेगा॥

५। ६ सो हिज़क़ियाह के सेवक यसअियाह पास आये। तब
यसअियाह ने उन्हें कहा कि तुम अपने स्वामी से यों कहो
कि परमेश्वर यह कहता है कि उन बातों से जिन्हें असूर के
राजा के सेवकों ने मेरे विषय में पाषंड कहा है मत डर।
७ देख मैं उस पर एक झोंका भेजूंगा और वुह एक कोलाहल
सुनके अपने ही देश को फिर जावेगा और मैं उसे उसी के
देश में तलवार से मरवा डालूंगा॥

८ सो रब्बसाक़ी फिर गया और उस ने असूर के राजा को
लिबनः से लड़ते पाया क्योंकि उस ने सुना था कि वुह लकीस
९ से चला गया। जब उस ने यह कहते सुना कि देखिये कूश
के राजा तिरहाक़ः ने तुझ पर चढ़ाई किई तब उस ने दूतों
१० के द्वारा से हिज़क़ियाह को फेर कहला भेजा। यहूदाह के

राजा हिज़क़ियाह से यों कहियो कि तेरा ईश्वर जिस पर तू
भरोसा रखता है यह कहके तुझे छल न देवे कि यरूसलम
११ असूर के राजा के हाथ में सौंपा न जावेगा। देख तू ने सुना
है कि असूर के राजाओं ने सारे देशों को सर्व्वथा नाश करके
१२ क्या किया और क्या तू बच जावेगा। क्या उन जातिगणों
के देव जिन्हें मेरे पितरों ने नाश किया है उन्हें छुड़ा सके
अर्थात् जोज़ान और हर्रान और रसफ़ और अदन के संतान जो
१३ तिल्लासर में थे। हमात के राजा और अरफाद के राजा और
सिफ़्रवाइम के नगर का राजा हेना और ऐवा के कहां हैं॥
१४ सो हिज़क़ियाह ने दूतों के हाथों से पत्रियां पाईं और उन्हें
पढ़के परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ गया और परमेश्वर के आगे
१५ फैलाया। और हिज़क़ियाह ने परमेश्वर के आगे प्रार्थना करके
कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर जिस का सिंहासन
करोबीम पर है केवल तू ही सारी पृथिवी के राज्यों का ईश्वर
१६ है तू ही ने स्वर्ग और पृथिवी को सिर्जा है। हे परमेश्वर अब
अपना कान धरके सुन हे परमेश्वर अपनी आंखें खोल और
देख और सनहेरीब की बातों को जो उस ने जीवते ईश्वर की
१७ निन्दा के लिये कहला भेजी हैं सुन। सच है हे परमेश्वर कि
असूर के राजाओं ने जातिगणों को और उन के देशों को नाश
१८ किया। और उन के देवों को आग में डाला क्योंकि वे देव
न थे परन्तु मनुष्यों के हाथों के कार्य्य लकड़ी और पत्थर इसी
१९ लिये उन्हों ने उन्हें नाश किया। और अब हे परमेश्वर हमारे
ईश्वर मैं तेरी बिनती करता हूं तू हमें उस के हाथ से बचा
ले जिसतें पृथिवी के सारे राज्य जानें कि परमेश्वर ईश्वर केवल
तू ही है॥
२० तब अमूस के बेटे यसअियाह ने हिज़क़ियाह को कहला
भेजा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि जो

कुछ तू ने असूर के राजा सनहेरीब के बिरोध में प्रार्थना किई
२१ है में ने सुनी है। यह वुह बचन है जो परमेश्वर ने उस के
बिषय में कहा है कि सैहून की कुंआरी बेटी ने तेरी निन्दा
किई और तुझ पर हंसी और यरूसलम की बेटी ने तुझ पर
२२ सिर धुना। तू ने किस की निन्दा किई और पाषंड कहा है
और तू ने किस पर शब्द उठाया और आंखें चढ़ाके ऊपर
२३ किई अर्थात् इसराएल के पवित्रमय के बिरोध में। तू ने अपने
दूतों के द्वारा से प्रभु की निन्दा करके कहा है कि मैं
अपने रथों की बहुताई से पहाड़ों की ऊंचाई पर और लुबनान
की अलंगों पर चढ़ा और वहां के ऊंचे ऊंचे देवदार पेड़ को
और चुने हुए सरो पेड़ को काट डालूंगा और मैं उस के
सिवानों के निवासों में और उस के बन की बारी में पैठूंगा।
२४ मैं ने खोदा है और उपरी पानी पीया है और मैं ने अपने पांव
२५ के तलवों से मिस्र की सारी नदियों को सुखा दिया है। क्या
तू ने नहीं सुना कि मैं ने अगिले समय में क्या किया है और
अगिले समय से क्या क्या बनाया अब मैं ने उसे पूरा किया है
२६ कि तू घेरित नगरों को उजाड़े और ढेर ढेर करे। सो वहां के
निवासी दुर्बल थे और बिस्मित होके घबरा गये वे तो खेत
की घास और हरियाली सागपात छतों पर की घास हैं जो
२७ बढ़ने से आगे झौंस जाती है। परन्तु में तेरा निवास और
तेरा बाहर भीतर आना जाना और मुझ पर तेरा झुंझलाना
२८ जानता हूं। इस कारण कि तेरा झुंझलाना और तेरा हुल्लर
मेरे कान लों पहुंचा है सो मैं अपना कांटा तेरी नाक में मारूंगा
और अपनी ढाठी तेरे मुंह में देऊंगा और जिस मार्ग से तू
२९ आया है मैं तुझे उस ही से फेरूंगा। अब तेरे लिये यही
पता है कि तुम अब की बरस वही बस्तें खाओगे जो आप से
आप उगती हैं और दूसरे बरस जो उसी से उगती हैं और

तीसरे बरस बोओ और लओ और दाख की बारी लगाओ
३० और उन के फल खाओ। और यहूदाह के घराने से
जो बच निकला है फिरके जड़ पकड़ेगा और ऊपर फल लावेगा।
३१ क्योंकि बचा हुआ यरूसलम से और बच निकले सेहून के
३२ पहाड़ से निकलेंगे परमेश्वर का ज्वलन यह करेगा। इस लिये
परमेश्वर असूर के राजा के विषय में यों कहता है कि वुह
इस नगर में न आवेगा न यहां बाण चलावेगा और न ढाल
पकड़के उस के आगे आवेगा न इस के विरोध में मुरचा
३३ बांधेगा। परमेश्वर कहता है कि जिस मार्ग से वुह आया उसी
३४ से फिर जावेगा और इस नगर में न आवेगा। क्योंकि मैं अपने
ही लिये और अपने सेवक दाऊद के लिये इस नगर का आड़
करके उसे बचाऊंगा॥

३५ और ऐसा हुआ कि परमेश्वर के दूत ने जाके असूर की
छावनी में उसी रात एक लाख पचासी सहस्र मनुष्य को घात
किया और तड़के उठते ही क्या देखते हैं कि सब लोथ पड़ी
३६ हैं। सो असूर का राजा सनहेरीब चला और फिर गया और
३७ नीनवः में जा रहा। और यों हुआ कि ज्यों वुह अपने देव
निसरूक के मन्दिर में पूजा करता था तब उस के बेटे
अदरम्मलिक और शरेज़र ने उसे तलवार से मार डाला और
वे बचके अरारात के देश को गये और उस का बेटा
असरहद्दून उस की सन्ती राज्य पर बैठा॥

बीसवां पर्व्व।

१ उन्हीं दिनों में हिज़क़ियाह को मृत्यु का रोग हुआ तब
अमूस का बेटा यसअियाह भविष्यद्वक्ता उस पास आया और
उस्से कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि तू अपने घर का
२ ठिकाना कर क्योंकि तू मर जावेगा और न जीवेगा। तब

उस ने अपना मुंह भीत की ओर फेरके परमेश्वर से
३ प्रार्थना करके कहा। कि हे परमेश्वर मैं तेरी बिनती करता
हूं कि दया करके अब स्मरण करिये कि मैं क्योंकर सचाई
और सिद्ध मन से तेरे आगे चला किया और तेरी दृष्टि में मैं
ने भलाई किई और हिज़क़ियाह बिलख बिलख के रोया॥
४ और यों हुआ कि यसअियाह के आंगन के मध्य पहुंचने
५ से आगे यह कहके परमेश्वर का बचन उस पर पहुंचा। कि
फिर जा और मेरे लोगों के प्रधान हिज़क़ियाह को कह कि
परमेश्वर तेरे पिता दाऊद का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने
तेरी प्रार्थना सुनी है तेरे आंसुओं को देखा है देख मैं तुझे
तीसरे दिन चंगा करूंगा तू परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ जावेगा।
६ और मैं तेरी वय पन्द्रह बरस बढ़ाऊंगा और तुझे और इस
नगर को असूर के राजा के हाथ से छुड़ाऊंगा और अपने लिये
७ और अपने दास दाऊद के लिये इस नगर का आड़ करूंगा। तब
यसअियाह ने कहा कि गूलर की एक टिकिया ले सो उन्हों ने
८ लिई और फोड़े पर रक्खी और वुह चंगा हो गया। तब
हिज़क़ियाह ने यसअियाह से कहा कि उस का लक्षण क्या
कि परमेश्वर मुझे चंगा करेगा और मैं तीसरे दिन परमेश्वर के
९ मन्दिर में चढ़ जाऊंगा। तब यसअियाह बोला कि परमेश्वर से
तू यह लक्षण पावेगा कि जो कुछ परमेश्वर ने कहा है सो
करेगा कि छाया दस क्रम आगे बढ़े अथवा दस क्रम पीछे हटे।
१० और हिज़क़ियाह ने उत्तर दिया कि छाया का दस क्रम ढलना
११ सहज है नहीं परन्तु छाया दस क्रम पीछे हटे। तब यसअियाह
भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर से प्रार्थना किई और उस ने छाया को
आख़ज़ की धूपघड़ी में से जो ढल गई थी दस क्रम पीछे
हटाया॥
१२ उस समय बलदान के बेटे बाबुल के राजा बरेदाक बलदान

ने भेंट और पत्री हिज़क़ियाह को भेजी क्योंकि उस ने सुना
१३ था कि हिज़क़ियाह रोगी था। सो हिज़क़ियाह ने उन की
बातें सुनीं और अपने घर की सारी बहुमूल्य बस्तें चांदी और
सोना और सुगन्ध और सुगन्ध तेल और शस्त्र अपने सारे
स्थान और सब जो उस के भंडारों में पाये गये उन्हें दिखाये
उस के घर में और उस के सारे राज्य में ऐसी कोई बस्तु न
थी जो हिज़क़ियाह ने उन्हें न दिखलाई॥
१४ तब यसअियाह भविष्यद्वक्ता हिज़क़ियाह राजा पास आया
और उसे कहा कि इन लोगों ने क्या कहा और ये कहां से
तुझ पास आये और हिज़क़ियाह ने कहा कि ये बाबुल के
१५ दूर देश से आये हैं। तब उस ने पूछा कि उन्हों ने तेरे
घर में क्या देखा है और हिज़क़ियाह बोला कि मेरे घर का
सब कुछ उन्हों ने देखा है मेरे भंडारों में ऐसी कोई बस्तु न
१६ रही जो मैं ने उन्हें न दिखलाई। तब यसअियाह ने
१७ हिज़क़ियाह से कहा कि परमेश्वर का बचन सुन। देख वे
दिन आते हैं कि सब कुछ जो तेरे घर में है और जो कुछ
कि तेरे पितरों ने आज लों बटोर रक्खा है बाबुल को पहुंचाये
१८ जावेंगे परमेश्वर कहता है कि कुछ न छोड़ा जावेगा। और
तेरे बेटों में से जो तुझ से उत्पन्न होंगे और तुझ से जन्मेंगे
उन्हें वे ले जावेंगे और बाबुल के राजा के भवन में नपुंसक
१९ होंगे। तब हिज़क़ियाह ने यसअियाह से कहा कि परमेश्वर
का बचन जो तू ने कहा है अच्छा है फिर उस ने कहा कि
कुशल और सच्चाई मेरे दिनों में होंगी॥
२० और हिज़क़ियाह की रही हुई क्रिया और उस का सारा
पराक्रम और किस रीति से उस ने एक कुंड और एक पनाला
बनाया और नगर में पानी लाया सो क्या वे यहूदाह के राजाओं
२१ के समयों के समाचार की पुस्तक में नहीं लिखी हैं। तब

हिज़क़ियाह ने अपने पितरों में शयन किया और उस का बेटा
मुनस्सी उस की संती राज्य पर बैठा ॥

एक्कीसवां पर्ब्ब ।

१ जब मुनस्सी राज्य करने लगा तब वुह बारह बरस का
था और उस ने पचपन बरस यरूसलम में राज्य किया और
२ उस की माता का नाम हिफ़ज़िबा था । और उस ने अन्यदेशियों
के घिनितों के समान जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के सन्तान
के आगे से दूर किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई ।
३ क्योंकि उस ने उन स्थानों को जिन्हें उस के पिता हिज़क़ियाह
ने ढाया था फिर बनाया और उस ने बअल के लिये बेदियां
स्थापित किईं और एक कुंज लगाया जैसा कि इसराएल के
राजा अख़िअब ने किया था और स्वर्ग की सारी सेना की
४ पूजा करके उन की सेवा किई । और उस ने परमेश्वर के उस
मन्दिर में जिस के बिषय में परमेश्वर ने कहा था कि में
५ यरूसलम में अपना नाम रक्खूंगा बेदियां बनाईं । और उस
ने परमेश्वर के मन्दिर के आंगनों में स्वर्ग की सारी सेनाओं
६ के लिये बेदियां बनाईं । और उस ने अपने बेटे को आग में
से चलाया और मुहूर्त्तों को मानता था और टोना करता था
और भुतहों और ओझों से व्यवहार रखता था और परमेश्वर
७ की दृष्टि में बहुत ही दुष्टता करके उसे रिस दिलाया । और
उस ने कुंज की एक खोदी हुई मूर्त्ति बनाके परमेश्वर के मन्दिर
में स्थापित किई जिस के बिषय में परमेश्वर ने दाऊद और
उस के बेटे सुलेमान से कहा था कि इस मन्दिर में और
यरूसलम में जिसे में ने इसराएल की सारी गोष्ठियों में से चुन
८ लिया है में अपना नाम सदा लों रक्खूंगा । और में इसराएल
के पांव को इस भूमि से जो में ने उन के पितरों को दिई है

कधी न डोलाऊंगा केवल यदि वे मेरी सारी आज्ञाओं के समान
चलें और सारी व्यवस्था के समान जो मेरे सेवक मूसा ने
९ उन्हें दिई मानें । पर उन्हों ने न माना और मुनस्सी ने उन्हें
फुसलाके उन जातिगणों से जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के
सन्तान के आगे से नष्ट किया अधिक बुराई करवाई ॥
१० सो परमेश्वर अपने सेवक भविष्यद्वक्तों के द्वारा से कहके
११ बोला । इस कारण कि यहूदाह के राजा मुनस्सी ने ये सारे
घिनित काम किये और अमूरियों से जो उस्से आगे थे अधिक
बुराई किई और यहूदाह से अपनी मूर्त्तों के कारण पाप
१२ करवाये । इस लिये परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है
कि देखो मैं यरूसलम पर और यहूदाह पर ऐसी बिपत्ति लाता
हूं कि उस का समाचार जिस के कान लों पहुंचेगा उस के
१३ दोनों कान झंझना उठेंगे । और मैं यरूसलम पर समरून की
डोरी और अख़िअब के घराने का साहुल डालूंगा और मैं
यरूसलम को ऐसा पोंछूंगा जैसे कोई बासन को पोंछता है
१४ और ओंधा देता है । और उन के अधिकार के बचे हुओं को
अलग करूंगा और उन्हें उन के बैरियों के हाथ में सौंपूंगा
और वे अपने सारे बैरियों के लिये अहेर और लूट होंगे ।
१५ क्योंकि उन्हों ने मेरी दृष्टि में बुराई किई और जिस दिन से
उन के पिता मिस्र से निकले उन्हों ने आज लों मुझे रिस
१६ दिलाई । और इस्से अधिक मुनस्सी ने बहुत निर्दोष लोहू बहाया
यहां लों कि उस ने यरूसलम को एक सिरे से दूसरे सिरे लों
भर दिया यह उस पाप से अधिक है जो परमेश्वर की दृष्टि में
यहूदाह से बुराई करवाई ॥
१७ और मुनस्सी की रही हुई क्रिया और सब कुछ जो उस ने
किया और यह कि उस ने कैसे पाप किये सो क्या वे यहूदाह
१८ के राजाओं के समयों की पुस्तक में लिखी नहीं हैं । और

मुनस्सी ने अपने पितरों में शयन किया और अपने घर की
बाटिका में उज्ज़ा की बाटिका में गाड़ा गया और उस का बेटा
अमून उस की सन्ती राज्य पर बैठा ॥
१९ जब अमून राज्य करने लगा तब बाईस बरस का था उस
ने यरूसलम में दो बरस राज्य किया और उस की माता का
२० नाम मुशल्लिमत था जो युतब: के हरूस की बेटी थी। और
उस ने परमेश्वर की दृष्टि में अपने पिता मुनस्सी के समान
२१ बुराई किई। और वुह अपने पिता की सारी चाल पर चला
किया और अपने पिता की मूर्त्तों की प्रार्थना करके उन की
२२ पूजा किई। और उस ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर को
२३ त्यागा और परमेश्वर के मार्ग पर न चला। और अमून के
सेवकों ने उस के बिरोध में युक्ति बांधके राजा को उसी के
२४ घर में घात किया। और देश के लोगों ने उन सब को घात
किया जिन्हों ने अमून राजा के बिरुद्ध युक्ति बांधी और देश
के लोगों ने उस के बेटे यूसियाह को उस के स्थान पर राजा
किया ॥
२५ और अमून की रही हुई क्रिया जो उस ने किये सो क्या
वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में
२६ लिखी नहीं हैं। और वुह अपनी समाधि में उज्ज़ा की बाटिका
में गाड़ा गया और उस का बेटा यूसियाह उस की सन्ती
राज्य पर बैठा ॥

बाईसवां पर्व्व।

१ जब यूसियाह राज्य करने लगा तो आठ बरस का था
और उस ने एकतीस बरस यरूसलम में राज्य किया और उस
की माता का नाम यदीदा था जो बुसक़त के अदायाह की
२ बेटी थी। और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई और

अपने पिता दाऊद की सारी चालों पर चलता था और दहिनी
अथवा बाईं ओर न मुड़ा ॥
३ और यूसियाह के अठारहवें बरस यों हुआ कि राजा ने
मुसल्लम के बेटे असलियाह के बेटे साफ़न लेखक को परमेश्वर
४ के मन्दिर में कहला भेजा। कि तू प्रधान याजक ख़िलक़ियाह
पास जा कि वुह परमेश्वर के मन्दिर की चांदी का लेखा करे
५ जो द्वारपालों ने लोगों से एकट्ठा किया। और वे उन्हें
कार्य्यकारियों के हाथ में सौंपें जो परमेश्वर के मन्दिर के करोड़े
हैं और वे उन्हें परमेश्वर के मन्दिर के कार्य्यकारियों को देवें
६ कि वे मन्दिर के दरारों को सुधारें। अर्थात् बढ़ैयों को और
थवैयों को और पथरियों को और लट्ठों के और गढ़े हुए पत्थर
७ मोल लेने के लिये जिसतें घर सुधारें। तिस पर भी रोकड़
का लेखा जो उन के हाथ में दिया गया था उन से न लिया
जाता था क्योंकि वे धर्म्म से व्यवहार करते थे ॥
८ और प्रधान याजक ख़िलक़ियाह ने साफ़न लेखक को कहा
कि मैं ने परमेश्वर के मन्दिर में व्यवस्था की पुस्तक पाई है
और ख़िलक़ियाह ने वुह पुस्तक साफ़न को दिई और उस ने
९ उसे पढ़ा। और साफ़न लेखक राजा पास आया और राजा
को संदेश पहुंचाया कि तेरे सेवकों ने वुह रोकड़ जो ईश्वर के
मन्दिर में पाया गया पिघलाया है और उसे कार्य्यकारियों के हाथ
१० सौंपा है जो परमेश्वर के घर के करोड़े हैं। अब साफ़न लेखक
ने राजा से कहा कि ख़िलक़ियाह याजक ने मुझे एक पुस्तक
११ दिई है और साफ़न ने उसे राजा के आगे पढ़ा। और राजा
ने ज्यों उस पुस्तक के अभिप्राय को सुना त्यों अपने कपड़े फाड़े।
१२ और राजा ने ख़िलक़ियाह याजक और साफ़न के बेटे अख़ीआम
और मीका के बेटे अख़बूर और साफ़न लेखक और राजा के
१३ सेवक असायाह को आज्ञा देके कहा। कि तुम जाओ मेरे और

लोगों के और सारे यहूदाह के लिये परमेश्वर से इस पुस्तक के
बचन के बिषय में जो पाया गया है पूछो क्योंकि परमेश्वर का कोप
हम पर निपट भड़का है इस कारण कि उन सभों के समान
जो हमारे बिषय में लिखा है हमारे पितरों ने इस पुस्तक
के बचन को पालन करने को नहीं सुना है॥
१४ और ख़िलक़ियाह याजक और अख़ीआम और अख़बूर और
साफ़न और असायाह हुलदा आगमवक्तानी पास गये जो
हरहास के बेटे तिक़ब: के बेटे सलूम बस्त्रों के रखवेये की
पत्नी थी अब वुह यरूसलम में एक दूसरे स्थान में रहती थी
१५ और उन्हों ने उस्से बात चीत किई। और उस ने उन्हें कहा कि
परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तुम उस पुरुष
१६ से जिस ने तुम्हें मुझ पास भेजा है कहो। कि परमेश्वर यों
कहता है कि देख मैं इस स्थान पर और उस के निवासियों
पर उस पुस्तक की सारी बातें जो यहूदाह के राजा ने पढ़ी
१७ हैं अर्थात् बुराई लाऊंगा। क्योंकि उन्हों ने मुझे त्यागा है
अरु और देवों के लिये धूप जलाया है जिसतें अपने हाथों
के सारे कामों से मुझे रिस दिलावें इस लिये मेरा कोप इस
१८ स्थान के बिरोध भड़केगा और बुझाया न जावेगा। परन्तु
यहूदाह के राजा को जिस ने तुम्हें परमेश्वर से बूझने को
भेजा उसे यों कहियो कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों
१९ कहता है कि जो बचन तू ने सुने हैं। इस कारण कि
तेरा मन कोमल था और परमेश्वर के आगे तू ने आप को नम्र
किया है जब तू ने सुना जो मैं ने इस स्थान के और उस के
निवासियों के बिरोध में कहा कि वे उजाड़ित और स्रापित
होंगे और अपने कपड़े फाड़े हैं और मेरे आगे बिलाप किया
२० परमेश्वर कहता है कि मैं ने भी सुना है। इस लिये देख मैं
तुझे तेरे पितरों के साथ बटोरूंगा और तू अपनी समाधि में

कुशल से समेटा जावेगा और सारी बुराई को जो मैं इस स्थान
पर लाऊंगा तेरी आंखें न देखेंगी तब वे राजा पास फेर
संदेश लाये॥

तेईसवां पर्ब्ब।

१ तब राजा ने भेजके यहूदाह और यरूसलम के सारे
२ प्राचीनों को अपने पास एकट्ठा किया। और राजा और यहूदाह
के सारे लोग और यरूसलम के सारे निवासी और याजकों
और भविष्यद्वक्ता और सारे लोग छोटे से बड़े लों परमेश्वर के
मन्दिर को उस के संग चढ़ गये और बाचा की पुस्तक के
बचन को जो परमेश्वर के मन्दिर में पाया गया था उस ने
३ उन्हें पढ़ सुनाया। और परमेश्वर का पीछा करने को और उस
की आज्ञाओं को और उस की साक्षियों को और उस की विधिन
को अपने सारे मन और सारे जीव से पालन करने को इस
बाचा के बचन को जो इस पुस्तक में लिखा है राजा ने खंभे
के लग खड़ा होके परमेश्वर के आगे बाचा बांधी और सारे
लोग इस बाचा पर खड़े हुए॥
४ तब राजा ने प्रधान याजक ख़िलक़ियाह को और दूसरी
पांती के याजकों को और द्वारपालों को आज्ञा किई कि परमेश्वर
के मन्दिर में से सारे पात्र जो बअ़ल के लिये और अशतरूत
के और सारी स्वर्गीय सेनाओं के लिये बनाये गये थे बाहर
निकलवायें और उस ने यरूसलम के बाहर क़िदरून के खेतों
में उन्हें जला दिया और उन की राख को बैतएल में पहुंचा
५ दिया। और उन देवपूजक याजकों को जिन्हें यहूदाह के
राजाओं ने यहूदाह के नगरों के ऊंचे स्थानों में और यरूसलम
के चारों ओर के स्थानों में धूप जलाने के लिये ठहराया था
उन सब समेत जो बअ़ल के और सूर्य्य के और चन्द्रमा के

और नक्षत्रों के और स्वर्गीय सारी सेनाओं के लिये धूप जलाते
६ थे रोक लिया। और वुह उस अश्तरूत को परमेश्वर के
मन्दिर से निकालके यरूसलम के बाहर किदरून के नाले पर
लाया और उसे किदरून के नाले पर जला दिया और उसे
लताड़के बुकनी किया और उस बुकनी को लोगों के संतान की
७ समाधि पर फेंक दिया। और उस ने गांडुओं के घरों को जो
परमेश्वर के घर से मिले हुए थे जिन में स्त्रियां कुंज के लिये
८ घूंघट बुनतियां थीं ढा दिया। और उस ने यहूदाह के सारे
नगरों के याजकों को एकट्ठे किया और उन ऊंचे स्थानों को जहां
याजकों ने सुगन्ध जलाया था जिबअ से बिअरसब: लों
अशुद्ध किया और फाटकों के ऊंचे स्थानों को जो नगर के
अध्यक्ष यहूशूअ के फाटक की पैठ में थे जो नगर के फाटक
९ की बाईं ओर हे ढा दिया। तथापि ऊंचे स्थानों के याजक
यरूसलम में परमेश्वर की बेदी के पास चढ़ न आये परन्तु
उन्हों ने अख़मीरी रोटी अपने भाइयों के साथ खाई थी।
१० और उस ने तुफ़त को जो हिन्नूम के संतान की तराई में हे
अशुद्ध किया जिसतें कोई अपने बेटा बेटी को आग में से
११ मोलक को न पहुंचावे। और उस ने उन घोड़ों को जो
यहूदाह के राजाओं ने सूर्य्य को चढ़ाये थे परमेश्वर के मन्दिर
की पैठ में से जो नतनमलिक प्रधान की कोठरी के लग जो
आस पास में था दूर किया और सूर्य्य के रथ को भस्म किया।
१२ और उन बेदियों को जो आख़ज की उपरौटी कोठरी पर थी
जिन्हें यहूदाह के राजाओं ने बनाया था और उन बेदियों को
जिन्हें मुनस्सी ने परमेश्वर के मन्दिर के दो आंगनों में बनाया था
राजा ने उन्हें चूर करके दूर किया और उन को राख को किदरून
१३ नाले में फेंक दिया। और जो जो ऊंचे स्थान यरूसलम के
आगे जो सड़ाहट के पहाड़ की दहिनी ओर थे जिन्हें इसराएल

के राजा सुलेमान ने सैदानियों के घिनित अश्तरूत के और
मोअबियों के घिनित कमूस के और अम्मून के सन्तान के
घिनित मिलकूम के लिये बनाया था राजा ने उन्हें अशुद्ध
१४ किया। और मूर्त्तों को तोड़ डाला और अश्तरूत को काट
डाला और उन के स्थानों को मनुष्यों के हाड़ों से भर दिय॥
१५ और उस बेदी को भी जो बैतएल में थी उस ऊंचे स्थान
को जिसे इसराएल के पाप करवैया नबात के बेटे यरुबिआम
ने बनाया था हां उस बेदी को और उस ऊंचे स्थान को उस
ने ढा दिया और उस ऊंचे स्थान को जलाके चूर करके रौंदा
१६ और अश्तरूत को जला दिया। और ज्यों यूसियाह फिरा तो
उस ने पहाड़ पर की समाधिन को देखा और लोग भेजके उन
समाधिन की हड्डियां निकलवाईं और बेदी पर जलाईं और परमेश्वर
के बचन के समान जो ईश्वर के उस जन ने प्रचारा था जिस
ने इन बातों को प्रचारा उस ने उसे अशुद्ध किया फिर उस ने पूछा
१७ कि यह पदवी क्या है जिसे मैं देखता हूं। और नगर के लोगों ने
उसे कहा कि यह ईश्वर के उस जन की समाधि है जिस ने
यहूदाह से आके इन बातों को जो तू ने किया है बैतएल की
१८ बेदी के बिरोध में प्रचारा था। तब उस ने कहा कि उसे रहने
दो कोई उस की हड्डियों को न हटावे सो उन्हों ने उस की हड्डियां
उस भविष्यद्वक्ता के साथ जो समरून से आया था रहने दिईं॥
१९ और सारे ऊंचे स्थानों के घरों को भी जो समरून के
नगरों में थे जिन्हें इसराएल के राजाओं ने रिसियाने के लिये
बनाये यूसियाह ने दूर किया और उन से वैसा ही किया जैसा
२० उस ने बैतएल में किया था। और ऊंचे स्थानों के सारे
याजकों को जो बेदियों पर थे बधन किया और मनुष्यों का
हाड़ उन पर जलाया और यरूसलम को फिरा॥
२१ और राजा ने यह कहके सारे लोगों को आज्ञा किई कि

परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये पार जाने का पर्ब रक्खो जैसा इस बाचा
२२ की पुस्तक में लिखा है। क्योंकि उन न्याइयों के समय से लेके
जो इसराएल का न्याय करते थे और इसराएल के राजाओं के और
यहूदाह के राजाओं के सब दिनों में ऐसा पार जाने का पर्ब
२३ किसी ने न रक्खा था। परन्तु यूसियाह राजा के अठारहवें बरस
यरूसलम में परमेश्वर के लिये यही पार जाना पर्ब रक्खा गया॥
२४ और भूतों को और ओझाओं को और मूर्त्तों को और
पुतलों को और सारे घिनितों को जो यहूदाह के देश में और
यरूसलम में देखे गये थे यूसियाह ने दूर किया जिसतें
ब्यवस्था की वे बातें जो उस पुस्तक में जिसे ख़िलक़ियाह
याजक ने परमेश्वर के मन्दिर में पाया था लिखी थीं पूरी करे।
२५ और उस के समान अगिले दिनों में ऐसा कोई राजा न हुआ
जो अपने सारे मन से और अपने सारे प्राण से और अपनी
सारी सामर्थ्य से मूसा की सारी ब्यवस्था के समान परमेश्वर की
ओर फिरा और उस के पीछे कोई उस के समान न उठा।
२६ तिस पर भी परमेश्वर अपने महा क्रोध से जो यहूदाह के संतान
पर भड़काया था न फिरा उन सारे रिसों के कारण जिन से
२७ मुनस्सी ने उसे रिस दिलाया था। और परमेश्वर ने कहा कि
जैसा मैं ने इसराएल को अलग किया वैसा यहूदाह को भी
अपनी दृष्टि में से अलग करूंगा और मैं इस यरूसलम नगर
को जिसे मैं ने चुना है और जिस घर के बिषय में मैं ने कहा
कि मेरा नाम वहां होगा दूर करूंगा॥
२८ अब यूसियाह की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने किया सो
क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार की पुस्तक में
नहीं लिखी हैं॥
२९ उस के दिनों में मिस्र का राजा फिरऊन निकोह असूर के
राजा के बिरोध में फ़ुरात की नदी को चढ़ गया और यूसियाह

राजा ने उस का साम्ना किया और उस ने उसे देखके मजिद्दो
३० में घात किया। और उस के सेवक उसे रथ में डालके मजिद्दो
से यरूसलम में ले गये और उसे उसी की समाधि में गाड़ा
और देश के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूअख़ज़ को लेके उसे
अभिषेक किया और उस के पिता की सन्ती उसे राजा किया॥
३१ जब यहूअख़ज़ राज्य करने लगा तब वुह तेईस बरस का
था और उस ने यरूसलम में तीन मास राज्य किया और उस
की माता का नाम हमूतल था जो लिबन: के यरमियाह की
३२ बेटी थी। और उस ने उन सब के समान जो उस के पितरों
३३ ने किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई। सो फ़िरऊन
निकोह ने उसे हमात देश के रिबल: में बंधन में डाला
जिसतें वुह यरूसलम में राज्य न करे और देश पर सौ तोड़े
३४ चांदी और एक तोड़ा सोना कर ठहराया। और फ़िरऊन
निकोह ने यूसियाह के बेटे इलयाक़ीम को उस के पिता
यूसियाह की सन्ती राजा किया और उस का नाम यहूयक़ीन
रक्खा और यहूअख़ज़ को ले गया और वुह मिस्र में जाके मर
३५ गया। और यहूयक़ीन ने चांदी और सोना फ़िरऊन को दिया और
फ़िरऊन की आज्ञा के समान रोकड़ देने को उस ने देश पर कर
लगाया और देश के लोगों के हर एक जन से उस के कर के
समान चांदी सोना निचोड़ा जिसतें फ़िरऊन निकोह को देवे॥
३६ यहूयक़ीन जब राज्य पर बैठा तब पचीस बरस का था और उस
ने यरूसलम में ग्यारह बरस राज्य किया और उसकी माता का नाम
३७ ज़बूद: था जो रूम: फ़िदायाह की बेटी थी। और उस ने उन सब के
समान जो उस के पितरों ने किया था परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ उस के दिनों में बाबुल का राजा नबूख़ुदनज़र चढ़ आया

और यहूयक़ीन तीन बरस लों उस का सेवक रहा तब वुह
२ उस के बिरोध में फिरा। और परमेश्वर ने कसदियों की और
अराम की और मोअब की और अम्मून के संतान की जथाओं
को अपने बचन के समान जैसा उस ने अपने सेवक भविष्यद्वक्तों
के द्वारा से कहा था यहूदाह के बिरोध में उसे नाश करने
३ को भेजा। निश्चय परमेश्वर की आज्ञा के समान यह सब
कुछ मुनस्सी के पापों के कारण जो उस ने किये यहूदाह पर
४ पड़ा कि उन्हें अपनी दृष्टि से दूर करे। और निर्दोष लोहू के
कारण भी जो उस ने बहाया क्योंकि उस ने यरूसलम को
निर्दोष लोहू से भर दिया जिस की क्षमा परमेश्वर ने न चाही॥
५ अब यहूयक़ीन की रही हुई क्रिया और सब जो उस ने
किया था सो क्या वे यहूदाह के राजाओं के समयों के समाचार
की पुस्तक में लिखी नहीं हैं॥
६ सो यहूयक़ीन ने अपने पितरों में शयन किया और उस का बेटा
७ यहूयकीन उस की सन्ती राज्य पर बैठा। और मिस्र का राजा अपने
देश से फेर बाहर न गया क्योंकि बाबुल के राजा ने मिस्र की नदी से
लेके फ़ुरात की नदी लों मिस्र के राजा का सब कुछ ले लिया॥
८ यहूयकीन जब राज्य करने लगा तब अठारह बरस का
था और यरूसलम में उस ने तीन मास राज्य किया और उस
की माता का नाम नहूसता था जो यरूसलम इलनतन की
९ बेटी थी। और उन सब के समान जो उस के पिता ने किया
था परमेश्वर की दृष्टि में उस ने बुराई किई॥
१० उस समय में बाबुल के राजा नबूख़ुदनज़र के सेवक
११ यरूसलम पर चढ़ गये और नगर घेरा गया। और बाबुल का
राजा नबूख़ुदनज़र नगर के बिरोध में आया और उस के
१२ सेवकों ने उसे घेर लिया। तब यहूदाह का राजा यहूयकीन
और उस की माता और उस के सेवक और उस के प्रधान और

उस के नपुंसक बाबुल के राजा के पास बाहर गये और बाबुल
१३ के राजा ने अपने राज्य के आठवें बरस उसे लिया। और
परमेश्वर के मन्दिर का सारा भंडार और वुह भंडार जो राजा
के घर में था ले गया और सोने के सारे पात्रों को जो
इसराएल के राजा सुलेमान ने परमेश्वर की आज्ञा के समान
१४ परमेश्वर के मन्दिर के लिये बनाये थे कटवाया। और सारे
यरूसलम को और सारे प्रधानों को और सारे महाबीरों को
अर्थात् दस सहस्र बंधुओं को और सारे कार्य्यकारियों को और
लोहारों को और देश के लोगों के छोटों से छोटों को छोड़
१५ कोई न छूटा। और वुह यहूयकीन को और उस की माता
और राजा की पत्नियों को और उस के नपुंसकों को और देश
के पराक्रमियों को यरूसलम से बंधुआई में बाबुल को ले गया।
१६ और सारे बीरों को अर्थात् सात सहस्र को और एक सहस्र
कार्य्यकारियों को और लोहारों को सब बलवन्त जो संग्राम के योग्य
थे बाबुल का राजा उन्हें बंधुआई में बाबुल को ले गया।
१७ और बाबुल के राजा ने उस के चचा मत्तनियाह को उस की
सन्ती राज्य दिया और उस का नाम पलटके सिदक़ियाह रक्खा॥
१८ सिदक़ियाह जब राज्य पर बैठा तो एक्कीस बरस का था और उस
ने ग्यारह बरस यरूसलम में राज्य किया और उस की माता का
१९ नाम हमूतल था जो लिबनः यरमियाह की बेटी थी। और उस ने
यहूयकीन के समस्त कार्य्य के समान किया और परमेश्वर की दृष्टि में
२० बुराई किई। क्योंकि परमेश्वर के कोप के कारण यरूसलम और
यहूदाह पर यों बीत गया यहां लों कि उस ने उन्हें अपने आगे से
दूर किया और सिदक़ियाह बाबुल के राजा के बिरोध में फिर गया॥

पचीसवां पर्ब्ब।

१ और उस के राज्य के नवें बरस के दसवें मास की दसवीं

तिथि में यों हुआ कि बाबुल का राजा नबूखुदनज़र वुह
और उस की सारी सेना यरूसलम के बिरोध चढ़ आये और
उस के सन्मुख डेरा किया और उन्हों ने उस के बिरोध में
२ उस की चारों ओर गढ़ बनाये। और सिदक़ियाह राजा के
३ ग्यारहवें बरस लों नगर घेरा हुआ था। मास की नवीं तिथि
में नगर में अकाल बढ़ा और देश के लोगों को रोटी न मिलती
४ थी। और नगर टूट निकला और सारे योद्धा उस फाटक के
मार्ग से जो भीतों के मध्य राजा की बारी के लग है रात को
भाग गये अब कसदी नगर को घेरे हुए थे और चौगान की
५ ओर चले गये। पर कसदियों की सेना ने राजा का पीछा
किया और उसे यरीहो के चौगानों में जाही लिया और उस
६ का सारा कटक उस्से छिन्न भिन्न हुआ। सो वे राजा को
पकड़के उसे बाबुल के राजा पास रिबल: में लाये और उन्हों
७ ने उस का न्याय किया। और उन्हों ने सिदक़ियाह के बेटों
को उस की आंखों के आगे घात किया और सिदक़ियाह की
आंखें अंधी किईं और पीतल की बेड़ियों से उसे जकड़ा और
उसे बाबुल को ले गया॥
८ और बाबुल के राजा नबूखुदनज़र के राज्य के उन्नीसवें
बरस के पांचवें मास सातवीं तिथि में बाबुल के राजा का एक
सेवक नबूसरअद्दान जो निज सेना का प्रधान अध्यक्ष था
९ यरूसलम में आया। और उस ने परमेश्वर का मन्दिर और
राजा का भवन और यरूसलम के सारे घर और हर एक बड़े
१० घर को जला दिया। और कसदियों की सारी सेना ने जो उस
निज सेना के अध्यक्ष के साथ थीं यरूसलम की भीतों को
११ चारों ओर से ढा दिया। और रहे हुए लोगों को जो नगर में
बचे थे और उन को जो भागके बाबुल के राजा पास गये थे
मंडली के उबरे हुओं के साथ नबूसरअद्दान निज सेना का

१२ अध्यक्ष ले गया । परन्तु निज सेना के अध्यक्ष ने दाख के
सुधरवैये और किसानों को अर्थात् देश के कंगालों को छोड़ दिया॥
१३ और परमेश्वर के मन्दिर के पीतल के खंभों को और
आधारों को और पीतल के समुद्र को जो परमेश्वर के मन्दिर
में था कसदियों ने तोड़के टुकड़ा टुकड़ा किया और पीतल
१४ को बाबुल में ले गये । और बटलोहियां और फावड़ियां और
कतरनियां और चमचे और पीतल के सारे पाच जिस्से वे सेवा
१५ करते थे ले गये । और अंगेठियां और कटोरे और सब कुछ
१६ जो सोने चांदी का था निज सेना का अध्यक्ष ले गया । दो
खंभों को और समुद्र को और आधारों को जिन्हें सुलेमान ने
परमेश्वर के मन्दिर के लिये बनाया था इन सारे पाचों का
१७ पीतल बेतौल था । एक खंभे की उंचाई अठारह हाथ और
उस पर का झाड़ तांबे का और झाड़ की उंचाई तीन हाथ
झाड़ की चारों ओर जाल के कार्य्य और अनार सब पीतल के
और इन्हीं के समान दूसरे खंभे में जालियों का काम था ॥
१८ और प्रधान याजक शिरायाह को और दूसरे याजक
सफ़नियाह को और तीनों द्वारपालों को निज सेना का अध्यक्ष
१९ ले गया । और उस ने नगर में से एक नपुंसक को लिया जो
योद्धों पर था उन में से पांच जन राजा के सन्मुख रहते थे
और नगर में पाये गये थे और सेना के अध्यक्ष लेखक को जो
देश के लोगों की गिन्ती करता था और देश के साठ जन
२० को जो नगर में पाये गये लिया । और निज सेना का अध्यक्ष
नबूसरअद्दान उन्हें पकड़के बाबुल के राजा पास रिबल: में
२१ ले गया । और बाबुल के राजा ने हमात देश रिबल: में
उन्हें घात किया सो यहूदाह अपने देश से निकाला गया ॥
२२ और जो लोग यहूदाह के देश में रह गये थे जिन्हें बाबुल
के राजा नबूखुदनज़र ने छोड़ा था उन पर उस ने आज्ञाकारी

साफ़न के बेटे अख़िक़ाम के बेटे जिदलियाह को उन का
२३ प्रधान किया। और जब सेनाओं के प्रधानों ने और उन के
लोगों ने सुना कि बाबुल के राजा ने जिदलयाह को अध्यक्ष
किया तो नतनियाह का बेटा इसमअएल और क़रीह का
बेटा यूहानान नतूफाती तनहूमत का बेटा शिरायाह और
मकाती का बेटा याज़ानिया अपने लोगों समेत मिसफ़ा में
२४ जिदलियाह पास आये। और जिदलियाह ने उन से और उन
के लोगों से किरिया खाके उन से कहा कि कसदियों के सेवक
होने से मत डरो देश में बसो और बाबुल के राजा की सेवा
२५ करो और उस में तुम्हारी भलाई होगी। परन्तु सातवें मास
में ऐसा हुआ कि इलीसमः के बेटे नतनियाह का बेटा
इसमअएल जो राजा के बंश से था आया और उस के साथ
दस जन और जिदलियाह को और उन यहूदियों को और
कसदियों को जो उस के साथ मिसफ़ा में थे प्राण से मारा।
२६ तब सब लोग क्या छोटे क्या बड़े और सेनाओं के प्रधान उठे
और मिस्र में आ रहे क्योंकि वे कसदियों से डरते थे॥
२७ और यहूदाह के राजा यहूयकीन की बंधुआई के सैंतीसवें
बरस के बारहवें मास की सताईसवीं तिथि में ऐसा हुआ कि
बाबुल का राजा अबीलमरूदक जिस बरस राज्य करने लगा
उस ने यहूदाह के राजा यहूयकीन को बंधुआई से उभारा।
२८ और उस्से अच्छी अच्छी बातें कहीं और उस के सिंहासन को
उन सब राजाओं से जो उस के साथ बाबुल में थे बढ़ाया।
२९ और उस की बंधुआई के बस्त्र को पलट डाला और वुह अपने
जीवन भर उस मंच पर उस के संग भोजन करता रहा।
३० और उस के जीवन भर उस के प्रति दिन की बृत्ति नित राजा
की ओर से दिई जाती थी॥

पवित्र शास्त्र

अर्थात्

पुराने नियम का दूसरा भाग।

इब्रानी भाषा से हिंदी में उतारा गया।

THE

HOLY BIBLE

IN THE

HINDI LANGUAGE.

TRANSLATED FROM THE HEBREW.

VOL. II.

1869

पुराने नियम के दूसरे भाग की पुस्तक।

पुराने नियम के दूसरे भाग की पुस्तक ॥

काल के समाचार की
पहिली पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१।२ आदम सेत अनूस। क़ीनान महललिएल यारद।
३।४ हनूक मतूसिलह लमक। नूह शाम हाम और याफ़त॥
५ याफ़त के बेटे जुम्र और माजूज और मादी और यूनान
६ और तूबल और मसक और तीरास। और जुम्र के बेटे
७ असकनाज़ और रीफ़त और तजरमः। और यूनान के बेटे
इलिसः और तरसीस और कित्ती और दानी॥
८।९ हाम के बेटे कूश और मिस्र फूत और कनआन। और
कूश के बेटे सिबा और हविलः और सबता और रग़मा और
१० सबतिका और रग़मा के बेटे शिबा और ददान। और कूश से
११ निमरूद उत्पन्न हुआ वुह पृथिवी पर बलवन्त होने लगा। और
मिस्र से लूदीम और अनामीम और लहाबीम और नफ़तूहीम
१२ उत्पन्न हुए। और फ़तरूसीम और कसलूहीम जिन से फ़िलिसती
१३ निकले और कफ़तूरीम। और कनआन से उस के पहिलौठे सैदा
१४ और हित्ती उत्पन्न हुए। और यबूसी और अमूरी और जिरजाशी।
१५।१६ और हवी और अरक़ी और सीनी। और अरवादी और
समरी और हमाती॥
१७ सिम के बेटे एलाम और असूर और अरफ़कसद और लूद
और अराम और ऊज़ और हूल और जतर और मसक।
१८ और अरफ़कसद से सिलह उत्पन्न हुआ और सिलह से इब्र

१९ उत्पन्न हुआ। और इब्र से दो बेटे उत्पन्न हुए एक का नाम
फ़लज इस कारण कि उस के समय में पृथिवी विभाग किई
२० गई और उस के भाई का नाम युक्तान। और युक्तान से
अलमूदाद और सलफ़ और हसरिमौत और इरख़ उत्पन्न हुए।
२१। २२ और हदराम और उज़ाल और दिक़्लः। और ऐबाल और
२३ अबिमायल और सिबा। और ओफ़िर और हविलः और जोबाब
ये सब युक्तान के बेटे थे॥

२४। २५। २६ सिम अरफ़कसद सिलह। इब्र फ़लज रऊ। सरूज
२७ नहूर तारह। अबिराम जो अबिरहाम है॥

२८ अबिरहाम के बेटे इज़हाक और इसमअएल॥

२९ यह उन की बंशावलियां इसमअएल का पहिलौठा नबीत
३० और कीदार और अदबिएल और मिबसाम। मिसमाअ और
३१ दूमा मस्सा हदद और तैमा। इतूर नफ़ीस और क़िदमः ये
इसमअएल के बेटे थे॥

३२ और अबिरहाम की सहेली क़तूरः के बेटे उस्से ज़िमरान
और युकसान और मिदान और मिदयान और इसबाक़ और
सूख़ उत्पन्न हुए और युकसान के बेटे सिबा और ददान।
३३ और मिदयान के बेटे ऐफ़ः और गिफ़र और हनूक और अबीदः
और इलदाआ ये सब क़तूरः के बेटे थे॥

३४ और अबिरहाम से इज़हाक उत्पन्न हुआ और इज़हाक के
बेटे एसौ और इसराएल॥

३५ एसौ के बेटे इलीफ़ज़ रऊएल और यऊस और यअलाम और
३६ क़ुरह। इलिफ़ज़ के बेटे तैमन और ऊमर सफ़ी और जअतान
३७ क़नज़ और तिमनाअ और अमालीक़। रऊएल के बेटे नहत शारिक
३८ सम्मः और मिज़्ज़ः। और शअीर के बेटे लौतान और सोबल
और सबऊन और अनाह और दैसून और असर और दैसान।
३९ और लौतान के बेटे हूरी और हूमाम और लौतान की बहिन

४० तिमनाअ। सोवल के बेटे अलयान और मनहत और ऐबाल
सिफ़ी और ओनाम और सवऊन के बेटे ऐयाह और अनाह।
४१ अनाह के बेटे दैसून और दैसून के बेटे हमरान और इसबान
४२ और इथरान और किरान। असर के बेटे बिलहान और जअवान
४३ और यअक़ान दैसान के बेटे ऊज़ और अरान। अब इसराएलियों
के संतान पर किसी राजा के राज्य करने से पहिले अदूम के देश
में इन राजाओं ने राज्य किया बऊर का बेटा बालिग और
४४ उस के नगर का नाम दिनहबः था। और जब बालिग मर
गया तब बूसरः के बेटे यूबाब ने उस की सन्ती राज्य किया।
४५ और जब यूबाब मर गया तब तैमानी के देश के हूसाम ने
४६ उस की सन्ती राज्य किया। और जब हूसाम मर गया तब
बिदद के बेटे हदद ने उस की सन्ती राज्य किया उस ने मोअब
के चौगान में मिदयान को मारा और उस के नगर का नाम
४७ ग़वीत था। और जब हदद मर गया तब मसरीक़ के बेटे
४८ समलः ने उस की सन्ती राज्य किया। और जब समलः मर
गया तब नदी के तीर रिहाबात के साऊल ने उस की सन्ती
४९ राज्य किया। और जब साऊल मर गया तब अकबोर के
५० बेटे बअलहनान ने उस की सन्ती राज्य किया। और जब
बअलहनान मर गया तब हदद ने उस की सन्ती राज्य किया
और उस के नगर का नाम पाई और उस की पत्नी का नाम
मुहेतबिएल जो मतरिद की बेटी जो मेज़हब की बेटी थी।
५१ और हदद भी मर गया और अदूम के ये अध्यक्ष थे अध्यक्ष
५२ तिमनाअ अध्यक्ष अलियाह अध्यक्ष यतीत। अध्यक्ष अहलिबामः
५३ अध्यक्ष एलाह अध्यक्ष फ़ीनून। अध्यक्ष क़नज़ अध्यक्ष तैमन
५४ अध्यक्ष मिबसार। अध्यक्ष मजदिएल अध्यक्ष ईराम ये अदूम के
अध्यक्ष॥

दूसरा पर्व्व।

१ इसराएल के बेटे ये हैं रूबिन समऊन लावी और यहूदाह
२ इशकार और ज़बूलून। दान यूसुफ़ और बिनयमीन नफ़ताली
जद और यसर॥
३ यहूदाह के बेटे ऐर और ओनान और सेल: ये तीनों
कनआनी सूआ की लड़की से उस के लिये उत्पन्न हुए और
यहूदाह का पहिलौठा ऐर परमेश्वर की दृष्टि में बुरा था और
४ परमेश्वर ने उसे मारा। और उस की बहू तमर उस के लिये
फाड़स और शारिक को जनी यहूदाह के सब बेटे पांच थे॥
५।६ फाड़स के बेटे हसरून और हमूल। और शारिक के
बेटे जिमरी और ऐतान और हैमान और कैलकूल और दरऋ
सब समेत पांच॥
७ और करमी के बेटे अकार इसराएल का क्लेशदायक जिस
८ ने स्रापित बस्तु में अपराध किया। और ऐतान के बेटे
९ अज़रियाह। और हसरून के बेटे भी जो उस्से उत्पन्न हुए
यरहमिएल और राम और कलूबी॥
१० और राम से अम्मिनदब उत्पन्न हुआ और अम्मिनदब से
११ यहूदाह के सन्तान का अध्यक्ष नहसून उत्पन्न हुआ। और
१२ नहसून से सलम: और सलम: से बुअज़ उत्पन्न हुआ। और
१३ बुअज़ से आबिद और आबिद से यस्सी उत्पन्न हुआ। और
यस्सी का पहिलौठा इलिअब और दूसरा अबिनदाब और
१४।१५ तीसरा सिमआ। चौथा नतनिएल पांचवां रद्दी। छठवां
१६ ऊज़म सातवां दाऊद। और उन की बहिन ज़रूयाह और
अबिजेल और ज़रूयाह के तीन बेटे अबिशै और यूअब और
१७ असहेल। और अबिजेल से अमासा उत्पन्न हुआ और अमासा
का पिता इसमअएली यिथ था॥

१८ और हसरून के बेटे कालिब की पत्नी अज़ूब: से और
यरीआत से ये बेटे उत्पन्न हुए यस्र और सोबाब और अरदन।
१९ और जब अज़ूब: मर गई तब कालिब ने इफ़रात को ग्रहण
२० किया और वुह उस के लिये हूर जनी। और हूर से ऊरी
२१ और ऊरी से बज़िल्लिएल उत्पन्न हुआ। और उस के पीछे जब
हसरून साठ बरस का हुआ तब जिलिअद के पिता मकीर
की लड़की को ग्रहण किया और वुह उस के लिये शजूब जनी।
२२ और शजूब से याइर उत्पन्न हुआ जो जिलिअद देश में तेईस
२३ नगर रखता था। और उस ने जसूर को और अराम को और
याइर के नगरों को और क़िनात सहित और उस के नगरों
को अर्थात् साठ नगर लिये ये सब जिलिअद के पिता मकीर
२४ के बेटे के थे। और जब कालिब इफ़रात: में हसरून मर
गया तब हसरून की पत्नी अबियाह उस के लिये तकूअ के
पिता अशहूर को जनी॥
२५ और हसरून के पहिलौठे यरहमिएल के बेटे ये हैं राम
उस का पहिलौठा और बुनाह और उरन और उज़म अख़ियाह।
२६ और यरहमिएल की दूसरी पत्नी भी थी जिस का नाम अत्तारा
२७ जो ओनाम की माता थी। और यरहमिएल के पहिलौठे राम
२८ के बेटे मअ़ज़ और यमीन और अक़र। और ओनाम के बेटे सम्मी
२९ और यदअ़ और सम्मी के बेटे नदब और अबीशूर। और
अबीशूर की पत्नी का नाम अबिख़ैल और वुह उस के लिये अख़बान
३० और मोलीद को जनी। और नदब के बेटे सिलद और अप्पईम
३१ परन्तु सिलद निर्वंश मर गया। और अप्पईम के बेटे यसई
३२ और यसई के बेटे सैसान और सैसान के संतान अख़ली। और
सम्मी के भाई यदअ़ के बेटे यिथ और यूनतन और यिथ
३३ निर्वंश मर गया। और यूनतन के बेटे फ़लत और ज़ाज़ा ये
यरहमिएल के बेटे थे॥

३४ अब सेसान के बेटे न थे परन्तु बेटियां थीं और सेसान
३५ के एक मिस्री सेवक था जिस का नाम यरख़ाअ था। और
सेसान ने अपनी बेटी को अपने सेवक यरख़ाअ से बियाह
३६ दिया और वुह उस के लिये अत्ती को जनी। और अत्ती से
३७ नातन और नातन से ज़बद उत्पन्न हुआ। और ज़बद से इफ़लाल
३८ और इफ़लाल से आबिद उत्पन्न हुआ। और आबिद से याहू और
३९ याहू से अज़रियाह उत्पन्न हुआ। और अज़रियाह से ख़ालिस
४० और ख़ालिस से इलिअसः उत्पन्न हुआ। और इलिअसः से
४१ सिसमी और सिसमी से सलूम उत्पन्न हुआ। और सलूम से
यक़मियाह और यक़मियाह से इलिसमः उत्पन्न हुआ॥

४२ और यरहमिएल के भाई कालिब के बेटे ये हैं उस का
पहिलौठा मीसाअ जो ज़ैफ़ का पिता और हबरून का पिता
४३ मरीसः के बेटे। और हबरून के बेटे क़ुरह और तुफ़फ़ाह
४४ और रक़म और समाअ। और समाअ से रहम उत्पन्न हुआ
जो यरकाम का पिता था और रक़म से सम्मी उत्पन्न हुआ।
४५ और सम्मी का बेटा मऊन और मऊन बेतसूर का पिता था।
४६ और कालिब की सहेली ऐफ़ः से हरान और मोज़ाअ और
४७ जज़ीज़ और हरान से जज़ीज़ उत्पन्न हुआ। और यहदी के
बेटे रजम और यूताम और गेशान और फ़लत और ऐफ़ः
४८ और शअफ़। कालिब की सहेली मअकः से शाबर और तिरहनः
४९ उत्पन्न हुए। और उससे मदमन्नः का पिता शअफ़ और
मकबीनः का पिता और जिबआ का पिता शिवा उत्पन्न हुए
और कालिब की बेटी अक्सः॥

५० इफ़रातः का पहिलौठा हूर का बेटा कालिब के ये बेटे थे
५१ करयतअरीम का पिता सोबल। बेतलहम का पिता सलमा और
५२ बेतजदीर का पिता हरीफ़। और करयतअरीम के पिता सोबल
५३ के बेटे ये हैं हारोए और हटसे हमनुख़ोथ। और करयतअरीम

के घराने विची और फ़ूती और सिमाती और मिशराञी इन से
५४ सरआती और इसताली निकले। सलमा के बेटे बैतलहम
और नतुफ़ती यूआब के घराने के मुकुट और मनहती की
५५ अतरात सरुञी। और यअबीज़ के वासी लेखकों के घराने
तिरआती सिमआती शोकाती ये सब रैकाब के घराने के पिता
हमात से क़ैनी निकले॥

तीसरा पर्व्व।

१ अब जो बेटे दाऊद से हबरून में उत्पन्न हुए सो ये थे
पहिलौठा यज़रअएली अख़िनुअम से अमनून दूसरा दानिएल
२ करमिली अबिजैल से। तीसरा जसूर के राजा तलमी की
बेटी मअक: का बेटा अबिसलुम चौथा हज्जित का बेटा
३ अदूनियाह। पांचवां अबितल से सफ़तियाह छठवां उस की
४ पत्नी हज़ल से बितरिआम। वे छ: हबरून में उस के लिये
उत्पन्न हुए और उस ने वहां साढ़े सात बरस और यरूसलम
५ में तेंतीस बरस राज्य किया। और यरूसलम में उस के लिये
ये उत्पन्न हुए सिमअ और सोबाब नातन और सुलेमान ये
६ चार अमिएल की बेटी बिन्तसूअ से उत्पन्न हुए। इबहार भी
७ और इलिसम: और अलिफ़लत। और नूज: और नफ़ज
८ और यफ़ीअ। और इलिसम: और इलियद: और इलिफ़लत
९ नव। सहेलियों के बेटों को छोड़ दाऊद के ये सब बेटे और
उन की बहिन तमर॥

१० और सुलेमान का बेटा रहबिआम उस का बेटा अबियाह
११ उस का बेटा असा उस का बेटा यहूसफ़त। उस का बेटा
१२ यूराम उस का बेटा अख़ज़याह उस का बेटा यूआस। उस
का बेटा अमसियाह उस का बेटा अज़रियाह उस का बेटा
१३ यूताम। उस का बेटा आख़ज़ उस का बेटा हिज़क़ियाह उस

१४ का बेटा मुनस्सी। उस का बेटा अमून उस का बेटा
यूसियाह॥
१५ और यूसियाह के बेटे पहिलौठा यूहनान दूसरा यहूयक़ीम
तीसरा सिदक़ियाह चौथा शालूम॥
१६ और यहूयक़ीम के बेटे यकुनियाह उस का बेटा सिदक़ियाह॥
१७ और यकुनियाह का बेटा असीर उस का बेटा सियालतिएल।
१८ और मलक़ीराम भी और फ़िदायाह और सिनज्ज़र यक़मियाह
हसमअ और नदबियाह॥
१९ और फ़िदायाह के बेटे ज़रूबाबल और शमीय और
ज़रूबाबल के बेटे मुसल्लम और हननियाह और उन की बहिन
२० सलूमियत। और हसब: और अहल और बरकियाह और
हसदियाह यसूबहसद पांच॥
२१ और हननियाह के बेटे फ़लतियाह और यसाअियाह
रिफ़ायाह के बेटे अरनान के बेटे अबदियाह के बेटे सकनियाह
के बेटे॥
२२ और सकनियाह के बेटे समअैयाह और समअैयाह के बेटे
हतूश और इज़ाल और बरीह और नआरयाह और सफ़त
छ:॥
२३ और नआरियाह के बेटे इलियूअैनी और हिज़क़ियाह और
अज़रिक़ाम तीन॥
२४ और इलियूअैनी के बेटे हूदायाह और इलयसीब और
फ़िलायाह और अक़ूब और यूहनान और दिलायाह और
अनानी सात॥

चौथा पर्व्व।

१ यहूदाह के बेटे फ़ाड़स हसरून और करमी और हूर और
२ सोबल। और सोबल के बेटे रियाहाह से यहत उत्पन्न हुआ

ओर यहत से अहूमाई ओर लहद उत्पन्न हुए ये सुरअती के
२ घराने हैं । ओर ऐताम के पिता ये हैं यज़रअएल ओर इसमा
ओर इदबास ओर उन की बहिन का नाम हसालीलपुनी ।
४ ओर जदूर का पिता फ़नुएल ओर हूस: का पिता अज़ बेतलहम
के पिता इफ़रात के पहिलौठे हूर के बेटे ये हैं ॥
५ ओर तकूअ के पिता अशहूर की दो पत्नियां थीं हिलयाह
६ ओर नअर: । ओर नअर: उस के लिये अख़ज़ाम ओर हिफ़
ओर तमिनी ओर अख़सतारी को जनी ये नअर: के बेटे हैं ।
७ ओर हिलयाह के बेटे ज़िहरत ओर इसहार ओर इतनान ।
८ ओर कूज़ से अनूब ओर सोबिबह उत्पन्न हुए ओर हरूम के
बेटे अख़िरख़ेल के घराने ॥
९ ओर यअबीज़ अपने भाइयों से प्रतिष्ठित था ओर उस की
माता ने कहा कि मैं इसे कष्ट से जनी इस लिये उस ने उस
१० का नाम यअबीज़ रक्खा । ओर यअबीज़ ने यह कहिके
इसराएल के ईश्वर की प्रार्थना किई कि यदि तू निश्चय मुझे
आशीष देवे ओर मेरे सिवाने बढ़ावे जिसतें तेरे हाथ मेरे
साथ होवें ओर कि बुराई से मेरी रक्षा करे जिसतें मुझे उदासी
न होवे तब ईश्वर ने उस की बांछा पूर्ण किई ॥
११ ओर सुख: के भाई कलूब से महीर उत्पन्न हुआ जो इसतून
१२ का पिता था । ओर इसतून से बेतराफ़ा ओर फ़सीख़ ओर
इरनहस के पिता तहिन्न: उत्पन्न हुए ये सब रैक: के जन हैं ।
१३ ओर क़नज़ के बेटे गतनिएल ओर सिराया ओर गतनिएल के
१४ बेटे हतत । ओर मअनाती से उफ़र: उत्पन्न हुआ ओर
सिराया से यूअब उत्पन्न हुआ जो तराई के बासी का पिता
१५ था क्योंकि वे कार्य्यकारी थे । ओर यफुन्न: के बेटे कालिब के
बेटे ईरू ओर ईला ओर नअम ओर ईला के बेटे क़नज़ ।
१६ ओर यहलिएल के बेटे ज़ीफ़ ओर ज़ीफ़ाह तीरिया ओर

१७ असरएल। और अज़र: के बेटे यित्र और मरद और गिफ़
और यलून और वुह मिरयम को और सम्मी को और इसतिमाअ
१८ के पिता इसबाह को जनी। और उस की पत्नी यहूदिया जदूर
के पिता यिरद को और सोको के पिता हिब्र को और ज़नुह
के पिता यकूतिएल को जनी और फ़िरऊन की बेटी बिन्तियाह
१९ के बेटे जिसे मरद ने लिया ये हैं। और उस की पत्नी हूदियाह
नहम की बहिन के बेटे जरमी क़ईल: का पिता और माकाती
२० इसतिमाअ। और शिमोन के बेटे अमनून और रिन्न: और
बिनेहनान और तेलून और यसअई के बेटे ज़ाहित और
बिनज़ाहित॥

२१ यहूदाह के बेटे सेल: के बेटे लेक: का पिता एर और
मारेशाह का पिता लग़द: और अशबीअ उन के घर के घराने
२२ जो झीना सूती बस्त्र बनाते थे। और यूक़ीम और क़ज़ीब:
के लोग और यूआस और शरराफ़ जो मोअब में प्रभुता रखते
२३ थे और यसूबीलहम ये प्राचीन बातें हैं। ये कुम्हार थे जो
सागपात में और बाड़ों में रहते थे और राजा के संग उस के
कार्य्य के लिये वहां रहते थे॥

२४ समऊन के बेटे नमूएल और यमीन यरीब शारिक साऊल।
२५ उस का बेटा सलूम उस का बेटा मिबसाम उस का बेटा
२६ मिसमाअ। और मिसमाअ के बेटे हम्मूएल उस का बेटा
२७ ज़कूर उस का बेटा शमई उस का बेटा। और शमई के
सोलह बेटे और छ: बेटियां थीं परन्तु उस के भाई के बहुत
बालक न थे और उन के सारे घराने यहूदाह के सन्तान के
२८ समान न बढ़े। और वे बिअरसब: में और मोलद: और
२९ हसरसूआल। और बिलह: में और अज़म में और तोलद में।
३० । ३१ और बतूएल में और हुरम: में और सिक़लज में। और
बेतमरकबात में और हसरसूसीम में और बेतबिरी में और

सग़रीम में रहते थे दाऊद के राज्य लों ये उन के नगर थे।
३२ और उन के गांव ऐताम और अ़ैन और रुम्मान और तक़न
३३ और अ़सनन पांच नगर। और बअ़ल लों सारे गांव जो उन
नगरों की चारों ओर थे ये उन के निवास और उन की
३४ वंशावली। और मिसोअ़ाब और यमलीक और अमसियाह का
३५ बेटा योशाह। और यूएल और यूसिबियाह का बेटा याहू
३६ जो शिरायाह का बेटा जो अ़सिएल का बेटा। और इलयूएनी
और यअ़कूब: और यसूख़ायाह और अ़सायाह और अ़दिएल
३७ और इसमिएल और बनाया। और समअ़ियाह का बेटा सिमरी
का बेटा यादायाह का बेटा अलोन का बेटा शिफ़ई का बेटा
३८ ज़ीज़ा। ये जिन का नाम लिया गया सो अपने अपने घराने
के अध्यक्ष और उन के पितरों के घराने बहुत बढ़ गये थे॥
३९ और वे जदूर के पूरब की तराई के अलंग की पहुंच लों
४० अपनी झुंडों की चराई के लिये गये थे। और उन्हों ने पुष्ट
और उत्तम चराई पाई और वुह फैलाव और चैन का और
कुशल का देश था क्योंकि हाम के लोग आगे उस में रहते
४१ थे। और यहूदाह के राजा हिज़क़ियाह के दिनों में जिन के
नाम लिखे हुए हैं वे आये और उन के तंबुओं को और निवासों
को जो वहां पाये गये थे मार लिया और आज लों उन्हें
सर्वथा नष्ट किया और उन के स्थान में बास किया क्योंकि
४२ उन की झुंडों के लिये वहां चराई थी। और उन में से
अर्थात् समऊ़न के बेटों में से पांच सौ जन शअ़ीर के पहाड़ पर
गये फ़लतियाह और नअ़रियाह और रिफ़ायाह और उज़्ज़िएल
४३ जो यसअ़ई के बेटे थे उन के प्रधान थे। और ये उबरे हुए
अ़मालीक़ियों को जो बच निकले थे मारके वहां बसे॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ और इसराएल के पहिलौठे रूबिन के बेटे क्योंकि वुह
पहिलौठा था परन्तु इस लिये कि उस ने अपने पिता का
बिछौना अशुद्ध किया उस का जन्मपद इसराएल के बेटे
युसुफ़ के बेटों को दिया गया और बंशावली जन्मपद पर
२ नहीं गिनी जाती है। क्योंकि यहूदाह अपने भाइयों से बढ़
गया और उस्से श्रेष्ठ अध्यक्ष हुआ परन्तु जन्मपद युसुफ़ का था।
३ इसराएल के पहिलौठे रूबिन के बेटे हनूक और पलू हसरून
४ और करमी। यूएल के बेटे समअियाह उस का बेटा जूज उस
५ का बेटा शमीय उस का बेटा। मीकः उस का बेटा रियाहाह
६ उस का बेटा बअल उस का बेटा। बिअर: उस का बेटा
जिस को यसर का राजा तिलगतपिलनेसर ले गया वुह रूबिनियों
का अध्यक्ष था॥

७ और जब उन की पीढ़ियों की बंशावली लिखी गई तब
अपने अपने घराने की रीति पर उस के भाई प्रधान थे यईएल
८ और ज़करियाह। और यूएल का बेटा समअ उस का बेटा
अज़ज़ उस का बेटा बालिग जो अरआयर में अर्थात् नबू और
९ बअलमऊन लों बसा किया। और पूरब दिशा में उस ने फ़ुरात
नदी से बन की पैठ लों बास किया क्योंकि जिलिआद
१० देश में उन के ढोर बढ़ गये। और साऊल के दिनों में उन्हों
ने हगारियों से युद्ध किया जो उन के हाथ से मारे पड़े और
वे जिलिआद देश की पूरब और सर्बत्र उन के तंबुओं में
बसे॥

११ और जद के सन्तान उन के सन्मुख बसन देश में सलक:
१२ लों बसे। यूएल प्रधान और दूसरा साफ़म और यअनी और
१३ बसन में सफ़त। और उन के पितरों के घराने के भाई मीकाएल

और मुसल्लम और सबअ और यूरी और यअकान और ज़ीअ
१४ और इब्र सात जन । बूज़ का बेटा वहदू उस का बेटा यसीसी
उस का बेटा मीकाएल उस का बेटा जिलिअद उस का बेटा
यरूहा उस का बेटा हूरी उस के बेटे अबिख़ैल के ये सन्तान
१५ हैं । जूनी का बेटा अबदिएल का बेटा अख़ी उन के पितरों
१६ के घराने का प्रधान । और वे बसन के जिलिअद में और
उस के नगरों में और सरून की चारों ओर के गांओं में और
१७ उन के निवासों में जा बसे । यहूदाह के राजा यूताम के
दिनों में और इसराएल के राजा यरूबिआम के दिनों में ये
सब वंशावलियों में गिने गये थे ॥
१८ रूबिन के और जद्दियों के और मुनस्सी की आधी गोष्ठियों
के बेटे बीर पुत्र थे जो ढाल तलवार और धनुष से मारने में
संग्राम में निपुण थे जो चौआलीस सहस्र सात सौ साठ जन
१९ जो संग्राम को निकल गये थे । और उन्हों ने हगारियों से
२० और यतूर से और नफ़ीस से और नादब से युद्ध किई । और
वे उन के बिरुद्ध जयमान हुए और हगारी और सब जो उन
के साथ थे उन के हाथ में सौंपे गये क्योंकि उन्हों ने संग्राम
में ईश्वर की प्रार्थना किई और उसी पर भरोसा रक्खा इस कारण
२१ उस ने उन की प्रार्थना ग्रहण किई । और वे उन के ढोर को
अर्थात् उन के पचास सहस्र ऊंट और अढ़ाई लाख भेड़ और
दो सहस्र गदहे और एक लाख मनुष्य बंधुआई में ले गये।
२२ क्योंकि बहुत जूझ गये इस कारण कि संग्राम ईश्वर का था
और वे उन के स्थानों में बंधुआई लों बसे ॥
२३ और मुनस्सी की आधी गोष्ठी के सन्तान देश में बसे
बसन से बअलहरमून और सिनर और हरमून पर्बत लों
२४ बढ़ गये । और उन के पितरों के घराने के प्रधान ये थे गिफ़्र
और यसअई और इलिएल और अज़रिएल और यरमियाह

ओर हूदायाह ओर वहदिएल जो बल में बीर प्रसिद्ध जन थे
अपने अपने पितरों के घरानें में श्रेष्ठ ॥
२५ ओर उन्हों ने अपने पितरों के ईश्वर के बिरुद्ध अपराध
किया ओर उस देश के लोगों के देवों के पीछे व्यभिचार में
२६ चले गये जिन्हें ईश्वर ने उन के आगे नष्ट किया। ओर इसराएल
के ईश्वर ने असूर के राजा पूल के मन को ओर असूर के
राजा तिलगतपिलनेसर के मन को उभाड़ा ओर वे उन्हें अर्थात्
रूबिनियों को ओर जद्दी को ओर मुनस्सी की आधी गोष्ठी को
ले गये ओर उन्हें ख़लह में ओर ख़बूर में ओर हारा में ओर
जोज़ान नदी में जहां वे आज लों हैं ले गये ॥

छठवां पर्व्व।

१।२ लावी के बेटे जेरसुम क़िहात ओर मिरारी। ओर
क़िहात के बेटे अ़मराम इज़हार ओर हबरून ओर उज़्ज़िएल।
३ ओर अ़मराम के सन्तान हारून ओर मूसा ओर मिरयम हारून
के बेटे भी नदब ओर अबिहू इलिअ़ज़र ओर ईतमर।
४ इलिअ़ज़र से फ़िनिहास फ़िनिहास से अबिसूअ़ उत्पन्न हुआ।
५ ओर अबिसूअ़ से बुक़्क़ी ओर बुक़्क़ी से उज़्ज़ी उत्पन्न हुआ।
६ ओर उज़्ज़ी से शरक़ियाह ओर शरक़ियाह से मिरयात उत्पन्न
७ हुआ। मिरयात से अमरियाह ओर अमरियाह से अख़ितूब
८ उत्पन्न हुआ। ओर अख़ितूब से सदूक़ ओर सदूक़ से अख़िमअ़ज़
९ उत्पन्न हुआ। ओर अख़िमअ़ज़ से अ़ज़रियाह ओर अ़ज़रियाह
१० से यूहनान उत्पन्न हुआ। ओर यूहनान से अ़ज़रियाह उत्पन्न
हुआ वुह उस मन्दिर में जो सुलेमान ने यरूसलम में बनाया
११ याजक के पद का कार्य्य करता था। ओर अ़ज़रियाह से
अमरियाह ओर अमरियाह से अख़ितूब उत्पन्न हुआ।
१२ ओर अख़ितूब से सदूक़ ओर सदूक़ से सलूम उत्पन्न हुआ।

१३ और सलूम से ख़िलक़ियाह और ख़िलक़ियाह से अज़रियाह
१४ उत्पन्न हुआ। और अज़रियाह से सिरायाह और सिरायाह से
१५ यहूसदक़ उत्पन्न हुआ। जिस समय कि परमेश्वर नबूख़ुदनज़र के
द्वारा से यहूदाह और यरूसलम को ले गया उस समय यहूसदक़
गया॥

१६ । १७ लावी के बेटे जैरसुम क़िहात और मिरारी। और ये
१८ जैरसुम के बेटों के नाम लिबनी और शमई। और क़िहात
के बेटे अमराम और यिज़हार और हबरून और उज़्ज़िएल।
१९ मिरारी के बेटे मुहली और मूसी और उन के पितरों के समान ये
२० लावी के घराने हैं। जैरसुम से लिबनी उस का बेटा यहत
२१ उस का बेटा ज़िम्मः उस का बेटा। यूअख़ उस का बेटा
ईदू उस का बेटा शारिक उस का बेटा यतरी उस का बेटा।
२२ क़िहात के बेटे अम्मिनदब उस का बेटा क़ुरह उस का बेटा
२३ असीर उस का बेटा। इलक़नः उस का बेटा अबीयसफ़ उस
२४ का बेटा और असीर उस का बेटा। तहत उस का बेटा ऊरीएल
उस का बेटा उज़्ज़ियाह उस का बेटा और साऊल उस का
२५ बेटा। और इलक़नः के बेटे अमासी और अख़िमोत।
२६ इलक़नः के ये बेटे हैं सूफ़ी और उस का बेटा नहत।
२७ इलिअब उस का बेटा यरूहम उस का बेटा इलक़नः उस का बेटा।
२८ और समुएल के बेटे पहिलौठा वसनी और अबियाह।
२९ मिरारी के बेटे मुहली लिबनी उस का बेटा शिमई उस का
३० बेटा उज़्ज़ः उस का बेटा। सिमआह उस का बेटा हग्गिया
उस का बेटा असायाह उस का बेटा॥

३१ और जब कि मंजूषा ने ईश्वर के मन्दिर में बिश्राम पाया था ये
३२ वे हैं जिन्हें दाऊद ने गाने की सेवा पर ठहराया। जब
लों सुलेमान ने यरूसलम में परमेश्वर का मन्दिर न बनाया
और वे मंडली के तंबू के स्थान के आगे गाने की सेवा

करते थे और वे अपने पद की पारी के समान सेवा में रहते
थे॥
३३ और ये वे हैं जो अपने बालक सहित रहते थे क़िहाती
के बेटों में से समुएल का बेटा यूएल उस का बेटा हैमान
३४ गायक। इलक़नः का बेटा यरूहम का बेटा इलिएल का बेटा
३५ तूख़ का बेटा। सूफ़ का बेटा इलक़नः का बेटा महत का
३६ बेटा अमासी का बेटा। इलक़नः का बेटा यूएल का बेटा
३७ अज़रियाह का बेटा सफ़नियाह का बेटा। तहत का बेटा
३८ असीर का बेटा अबियासफ़ का बेटा क़ुरह का बेटा। इज़हार
का बेटा क़िहात का बेटा लावी का बेटा इसराएल का बेटा।
३९ और उस का भाई आसफ़ जो उस की दहिनी ओर खड़ा होता
४० था बरक़ियाह का बेटा आसफ़ सिमअ़ का बेटा। मीकाएल
४१ का बेटा बअ़सियाह का बेटा मलक़ियाह का बेटा। एतनी
४२ का बेटा शारिक़ का बेटा अ़दायाह का बेटा। ऐतान का
४३ बेटा जिम्मः का बेटा शिमई का बेटा। यहत का बेटा
४४ जेरसुम का बेटा लावी का बेटा। और उन के भाई जो
मिरारी के सन्तान थे जो बांएं हाथ खड़ा होता था ऐतान
का बेटा क़ीसी का बेटा अ़बदी का बेटा मलूक का बेटा।
४५ हसबियाह का बेटा अमसियाह का बेटा ख़िलक़ियाह का
४६ बेटा। अमसी का बेटा बानी का बटा समर का बेटा।
४७ मुहली का बेटा मूसी का बेटा मिरारी का बेटा लावी का
४८ बेटा। और उन के भाई लावी परमेश्वर के मन्दिर के तंबू
की हर प्रकार की सेवा के लिये ठहराये गये॥
४९ परन्तु हारून और उस के बेटे बलिदान की बेदी और
धूप की बेदी के लिये और सकल महा पवित्र कर्म्म के लिये
और ईश्वर के सेवक मूसा ने जो जो आज्ञा किई थी उन के
समान इसराएल के कारण प्रायश्चित्त करने के निमित्त

५० ठहराये गये थे। और हारून के बेटे ये हैं इलिअज़र उस का
५१ बेटा फ़िनिहास उस का बेटा अविसूअ उस का बेटा। बूक्की
उस का बेटा उज़्ज़ी उस का बेटा ज़रकियाह उस का बेटा।
५२ मिरयात उस का बेटा अमरियाह उस का बेटा अख़ितूब उस
५३ का बेटा। सदूक़ उस का बेटा अख़िमअज़ उस का बेटा॥
५४ अब क़िहात के घराने हारून के बेटे की बसती उन के सिवानों
५५ में जो उन्हें चिट्ठी से मिली यह है। और उन्हों ने यहूदाह की
भूमि में हबरून और उस की चारों ओर के आस पास समेत
५६ उन्हें दिया। परन्तु नगर के खेत और उन के गांव उन्हों ने
५७ यफ़ुन्नः के बेटे कालिब को दिये। और हारून के बेटों को
यहूदाह के नगर दिये अर्थात् शरण के लिये हबरून और
लिबनः उस के आस पास समेत और यतीर और इसतिमाअ
५८ उन के आस पास समेत। और हेलान उस के आस पास समेत
५९ और दबीर उस के आस पास समेत। और अ़सन उस के
आस पास समेत और बैतशम्स उस के आस पास समेत।
६० और बिनयमीन की गोष्ठी में से जिबअ उस के आस पास समेत
और अ़ालामत उस के आस पास समेत और अ़नतात उस के
आस पास समेत उन के सारे नगर उन के घरानों में तेरह
६१ नगर। और उस गोष्ठी के घराने से बचे हुए क़िहात के बेटों
को आधी गोष्ठी में से मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से चिट्ठी
६२ डालके दस नगर। और जैरसुम के बेटों को उन के सारे
घरानों में इशकार की गोष्ठी में से और यसर की गोष्ठी में से
और नफ़ताली की गोष्ठी में से और बसन में मुनस्सी की गोष्ठी
६३ में से तेरह नगर। मिरारी के बेटों को उन के सारे घरानों
में रूबिन की गोष्ठी में से और जद की गोष्ठी में से और ज़बुलून
६४ की गोष्ठी में से चिट्ठी डालके बारह नगर। और इसराएल के
सन्तानों ने लावियों को ये ये नगर उन के आस पास समेत

६५ दिये। और यहूदाह के सन्तान की गोष्ठी में से और समऊन के
सन्तान की गोष्ठी में से और बिनयमीन के सन्तान की गोष्ठी में
से चिट्ठी डालके ये ये नगर जिन के नाम लिये जाते हैं दिये
गये ॥

६६ और क़िहात के बेटों के घरानों ने अपने सिवानों में
६७ इफ़रायम की गोष्ठी में से नगर पाये थे। और उन्हों ने
इफ़रायम पहाड़ में सिकम उस के आस पास समेत और जज़र
भी उस के आस पास समेत उन्हें शरण नगर के लिये दिये।
६८ और युक़मिआम उस के आस पास समेत और बेतहोरान उस
६९ के आस पास समेत। और ऐयलून उस के आस पास समेत
७० और जातरुम्मान उस के आस पास समेत। और मुनस्सी की
आधी गोष्ठी में से अनेर उस के आस पास समेत और बलआम
उस के आस पास समेत ये क़िहात के बेटों के उबरे हुए
घरानों को दिये गये ॥

७१ जेरसुम के बेटों को मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से बसन
में जौलान उस के आस पास समेत और इसतारात उस के
७२ आस पास समेत। और इशकार की गोष्ठी में से क़ादिस उस
७३ के आस पास समेत दाबरत उस के आस पास समेत। और
रामात उस के आस पास समेत और आनेम उस के आस पास
७४ समेत। और यसर की गोष्ठी में से मसल उस के आस पास
७५ समेत और अबदून उस के आस पास समेत। और हकूक उस
के आस पास समेत और राहब उस के आस पास समेत।
७६ और नफ़ताली की गोष्ठी में से जलील में क़ादिस उस के आस
पास समेत और हम्मून उस के आस पास समेत और क़रयतैन
उस के आस पास समेत ॥

७७ और मिरारी के उबरे हुए सन्तान ज़बुलून की गोष्ठी में से
रुम्मान उस के आस पास समेत तबूर उस के आस पास समेत।

७८ और यरिहू के लग यरदन के उस पार अर्थात् यरदन
की पूरब ओर रूबिन की गोष्ठी में से अरण्य में बुस्र उस के
आस पास समेत और याहज़ा उस के आस पास समेत।
७९ क़दीमात भी उस के आस पास समेत और मेफ़अत उस के
८० आस पास समेत। और जद की गोष्ठी में से जिलिअद में
रामात उस के आस पास समेत और महनैन उस के आस
८१ पास समेत। और हसबून उस के आस पास समेत और याज़ीर
उस के आस पास समेत॥

सातवां पर्व्व।

१ अब इशकार के बेटे तोलअ और फ़ूअः यसूब और सिमरून
२ चार। और तोलअ के बेटे उज़्ज़ी और रिफ़ायाह और यरिएल
और यहमी और इबसाम और समूएल अपने पिता तोलअ के
घराने के श्रेष्ठ जो अपने बंश में बड़े पराक्रमी बीर दाऊद के
३ समय में गिनती में बाईस सहस्र छः सौ थे। और उज़्ज़ी के
बेटे इशराक़ियाह और इशराक़ियाह के बेटे मीकाएल और
अबदियाह और यूएल और यस्सीयाह पांच सब श्रेष्ठ थे॥
४ और उन के संग उन की बंशावलियों के समान उन के
पितरों के घराने की रीति पर संग्राम के लिये योद्धा की जथा
में छत्तीस सहस्र क्योंकि उन की बहुत सी पत्नियां और बेटे
५ थे। और उन के भाईबन्द इशकार के सारे घरानों में बड़े
पराक्रमी बीर थे जो अपनी सारी पीढ़ियों में सत्तासी सहस्र जन
गिने गये थे॥
६ बिनयमीन के बेटे बालिग और बकर और बदीअएल तीन।
७ और बालिग के बेटे इसबून और उज़्ज़ी और उज़्ज़िएल और
यरीमात और ईरी पांच अपने पिता के घराने के श्रेष्ठ बड़े
पराक्रमी लोग और अपनी बंशावलियों में बाईस सहस्र चौंतीस

८ गिनती में थे। और बकर के बेटे ज़मीरः और यूआस और
इलिअज़र और इलियूनाई और उमरी और यरीमात और
अयिबाह और अनतात और अलामत ये सब बकर के बेटे।
९ और उन की बंशावली के समान उन की पीढ़ी की रीति अपने
पितरों के घराने के श्रेष्ठ उन की गिनती बीस सहस्र दो सौ
१० जन जो बड़े पराक्रमी बीर थे। और यदीअएल के बेटे बिलहान
और बिलहान के बेटे यईस और बिनयमीन और अहूद और
११ कनआनः और जैतान और तरसीस और अखिसहर। ये सब
यदीअएल के बेटे अपने पितरों में श्रेष्ठ बलवन्त बीर सत्रह
१२ सहस्र दो सौ संग्राम करने के योग्य। और सुफ़फ़ीम और
हुफ़फ़ीम ईर के सन्तान अख़ीर के बेटे हूशिम॥

१३ नफ़ताली के बेटे यहसिएल और जुनी और यिस्र और
सलूम बिलहः के बेटे॥

१४ मुनस्सी के बेटे यसरएल जिसे वुह जनी परन्तु उस की
१५ दासी अरामी जिलिअद के पिता मकीर को जनी। और मकीर
ने हुफ़फ़ीम और सुफ़फ़ीम की बहिन से जिस का नाम मअकः
था ब्याह किया और दूसरी का नाम सिलाफ़िहाद और
१६ सिलाफ़िहाद की बेटियां थीं। और मकीर की पत्नी मअकः
एक बेटा जनी और उस का नाम फ़ारिस रक्खा और उस के
भाई का नाम शारस और उस के बेटे औलाम और रक़म।
१७ और औलाम के बेटे बिदान ये मुनस्सी के बेटे मकीर के बेटे
१८ जिलिअद के बेटे थे। और उस की बहिन हमोलिकत इसहोद
१९ को और अबिअज़र को और महलः को जनी। और सिमीदाअ
के बेटे अहीआन और सिकम और लिक़ही और अनिआम थे॥

२० और इफ़रायम के बेटे शुसीलाह और उस का बेटा बरिद
और उस का बेटा तहत और उस का बेटा इलिअदः और
२१ उस का बेटा तहत। और उस का बेटा ज़बद और उस का

बेटा शुथीला और अज्र और इलिआद जिन्हें जात के लोगों
ने जो उस देश में उत्पन्न हुए थे मार डाला इस कारण
२२ कि वे उन के ढोर लेने को उतर आये थे। और उन के पिता
इफ़रायम ने बहुत दिन लों शोक किया और उस के भाई उसे शान्ति
२३ देने को आये। और वुह अपनी पत्नी के पास गया और वुह
गर्भिणी होके बेटा जनी और उस का नाम बरीअ: रक्खा इस
२४ लिये कि उस के घर पर विपत्ति पड़ी थी। और उस की
बेटी सैर: जिस ने ऊपर नीचे का बैतहैारान और उज्जिसैर:
२५ बनाये। और उस का बेटा रिफ़ह और रसफ़ भी और उस का
२६ बेटा तिलह और उस का बेटा तहन। उस का बेटा लग़दान
२७ उस का बेटा अम्मिहूद उस का बेटा इलिसम:। उस का
बेटा नून उस का बेटा यहूसूअ॥
२८ और उन के अधिकार और उन के निवास बैतएल और उस के
गांव और पूरब और नआरान और पश्चिम और जज़र और उस
के गांव सिकम भी और उस के गांव जज़र लों और उस के
२९ गांव। और मुनस्सी के सन्तान के सिवाने के लग बैतशान
और उस के गांव तअनाक और उस के गांव मजिद्दो और
उस के गांव दोर और उस के गांव इन में इसराएल के बेटे
यूसुफ़ के सन्तान बसे॥
३० यसर के बेटे यिमन: और इसवाह और यिशुआई और
३१ बरीअ: और उन की बहिन सिरह। और बरीअ: के बेटे हिब्र
३२ और मलकिएल जो बिजेत का पिता था। और हिब्र से यफ़लीत
और सामिर और ख़ातिम और उन की बहिन सूआ उत्पन्न
३३ हुए। और यफ़लीत के बेटे फ़ासक और बिमहाल और
३४ अशवास ये यफ़लीत के सन्तान। और समर के बेटे अख़ी
३५ और रुहज़: और यहुब्बा और अराम। और उस के भाई
हिल्म के बेटे सुफ़ह और यिमनाअ और सिलस और अमल।

३६ सुफ़ह के बेटे सूह और हरनफ़र और सुआल और बिअरी
३७ और इमराई। बुस्र और हूद और सम्मा और सलीस: और
३८ इतरान और बिअरा। और बिच के बेटे यफुन्न: और फ़िसफ़:
३९ और अरा। और गुल्ला के बेटे अरख़ और हन्निएल और
रिज़िआ॥
४० ये सब यसर के सन्तान अपने पिता के घराने के श्रेष्ठ चुने
हुए और बड़े पराक्रमी और अध्यक्षों में श्रेष्ठ और सारी बंशावली
में जो संग्राम में निपुण थे गिनती में छब्बीस सहस्र जन थे॥

आठवां पर्व्व।

१ और बिनयमीन से उस का पहिलौठा बालिग उत्पन्न हुआ
२ दूसरा असबील तीसरा अख़िरख। चौथा नूह: और पांचवां
३ रफ़ा। और बालिग के बेटे अदार और जेरा और अबिहूद।
४। ५ और अबिसूअ और नअमान और अख़ूह। और जेरा और
६ सफूफ़ान और हूराम। और ये एहूद के बेटे और जिबअ के
बासी के पितरों के श्रेष्ठ और उन्हों ने उन्हें मनहत में उठा
७ दिया। और उस ने नअमान को और अख़ियाह को और जेरा
को वहां से उठा दिया और उस्से उज्ज़ा और अख़िहूद उत्पन्न
८ हुए। और उन्हें भेज देने के पीछे सहरैन में मोआब के देश
में बालक उत्पन्न हुए हुसीम और बअरा उस की पत्नियां थीं।
९ और उस की पत्नी हुदस से यूबअब और जिबिया और मैसा
१० और मलकाम। और यऊज़ और शाबियाह और मिरम: उत्पन्न
११ हुए ये उस के बेटे अपने पितरों में श्रेष्ठ। और हूसीम से
१२ अबितूब और इलपाएल उत्पन्न हुए। और इलपाएल के बेटे
इब्र और मिशआम और सामिर जिन्हों ने ओनू और लूद उन
१३ के आस पास के गांव बसाये। और बरीअ: और शमअ जो
ऐयलून के बासियों के पितरों में श्रेष्ठ जिन्हों ने जात के

१४ वासियों को खेद दिया। और अख़यू शाशक और यरीमात।
१५। १६ और ज़ब्दियाह और अराद और अद्र। और मीकाएल
१७ और इसफ़ाह और यूख़ा ये बरीअ: के बेटे। और ज़ब्दियाह
१८ और मुसल्लम और हिज़क़ी और हिब्र। यसमरी भी और
१९ यज़लियाह और यूबाब इलपाएल के बेटे। और यक़ीम और
२० ज़िकरी और ज़बदी। और इलिऐनी और ज़िल्लती और इलिएल।
२१ और अदायाह और बिरायाह और सिमरात ये सिमई के बेटे।
२२। २३ और इसपान और हिब्र और इलिएल। और अबदून और
२४ ज़िकरी और हन्नान। और हननियाह और ऐलाम और
२५ अनतातियाह। और यफ़दियाह और फ़िनुएल ये शाशक के
२६ बेटे। और शम्सरी और सहरियाह और अतलीयाह।
२७ और यअरसियाह और इलियाह और ज़िकरी ये यरूहम के
२८ बेटे। इन्हों ने अपनी अपनी वंशावली के समान अपने पितरों
२९ में श्रेष्ठ यरूसलम में बास किया। और जिबऊन में जिबऊन
३० का पिता बसा उस की और पत्नी का नाम मअकः। और उस
का पहिलौठा बेटा अबदून और सूर और क़ीस और बअल
३१। ३२ और नदब। और जदूर और अख़यू और ज़कर। और
मिक़लात से सिमयाह उत्पन्न हुआ और ये भी अपने भाइयों
३३ के आगे यरूसलम में अपने भाइयों समेत बसे। और नैयिर
से क़ीस उत्पन्न हुआ और क़ीस से साऊल और साऊल से
३४ यूनतन और मलिकिसूअ और अबिनदाब और इशबाल। और
यूनतन के बेटे मुरीब्बअल और मुरीब्बअल से मीक: उत्पन्न
३५ हुआ। और मीक: के बेटे फ़ेतून और मलिक और तरीअ
३६ और आख़ज़। और आख़ज़ से यहूअद्दः उत्पन्न हुआ और
यहूअद्दः से अलामत और अज़िमौत और ज़िमरी उत्पन्न हुए
३७ और ज़िमरी से मौज़ा उत्पन्न हुआ। और मौज़ा से बनअः
उत्पन्न हुआ उस का बेटा रफ़ः उस का बेटा इलिअसः उस का

३८ बेटा असील। और असील के छः बेटे थे जिन के ये नाम हैं
अज़रिक़ाम बाक़िरू और इसमअएल और सग़रियाह और
३९ अबदियाह और हन्नान ये सब असील के बेटे। और उस के
भाई इशक़ के बेटे औलाम उस का पहिलौठा और दूसरा यऊस
४० और तीसरा इलिफ़लत। और ये औलाम के बेटे बड़े पराक्रमी
धनुषधारी थे और बहुत से बेटे और पोते रखता था ये सब
डेढ़ सौ बिनयमीन के बेटे॥

नवां पर्ब्ब।

१ यों सारे इसराएल बंशावली गिने गये और देखो
वे इसराएल के और यहूदाह के राजाओं की पुस्तक में लिखे
हुए थे जो अपने अपराध के कारण बाबुल में उठाये गये॥
२ अब अगिले बासी जो उन के नगरों और अधिकारों में
बसते थे सो इसराएली और याजक और लावी और नथीनी
३ थे। और यरूसलम में यहूदाह के सन्तान और बिनयमीन
के सन्तान और यफ़राइम और मुनस्सी के सन्तान रहते
थे॥
४ यहूदाह के बेटे फ़ाड़स के सन्तान के बनी के बेटे इमरी
५ के बेटे उमरी के बेटे अम्मिहूद के बेटे ऊती। और शीलूनि
६ का पहिलौठा असायाह और उस के बेटे। और शारिक के
बेटे यअएल और उस के भाईबन्द छः सौ नब्बे॥
७ और बिनयमीन के बेटे हसीनूआह के बेटे हूदायाह के बेटे
८ मुसल्लम के बेटे सल्लू। और यरूहम के बेटे इबनियाह और मिक्री
के बेटे उज़्ज़ी के बेटे ईलाह और इबनियाह के बेटे रऊएल के बेटे
९ सफ़तियाह के बेटे मुसल्लम। और उन की बंशावली के समान
उन के भाईबन्द नव सौ छप्पन ये सब अपने अपने पितरों
के घराने में पितरों के प्रधान थे॥

१० और याजकों में से यदैअयाह और यहूयरीब और यकीन ।
११ और ईश्वर के मन्दिर के आज्ञाकारी अख़ितूब का बेटा मिरयात
का बेटा सदूक़ का बेटा मुसल्लम का बेटा ख़िलक़ियाह का
१२ बेटा अज़रियाह । और मलकियाह का बेटा फ़सिहूर का बेटा
यरूहम का बेटा अदायाह और अमीर के बेटे मुसलिमियत
का बेटा मुसल्लम का बेटा यहज़ीर: का बेटा अदिएल का बेटा
१३ मअमी । और उन के भाईबन्द अपने अपने पितरों के घराने
के प्रधान एक सहस्र सात सौ साठ थे ईश्वर के मन्दिर के
कार्य्य के लिये महा बीर थे ॥
१४ और लावियों में से मिरारियों के बेटों में से हसबियाह का
१५ बेटा अज़रिक़ाम का बेटा हसूब का बेटा समअयाह । और
बक़बक़्क़र और हरस और जलाल और आसफ़ का बेटा ज़िकरी
१६ का बेटा मीका का बेटा मत्तनियाह । और यदूतून का बेटा
जलाल का बेटा समअयाह का बेटा अबदियाह और नतूफ़ातियों
के गांओं के बासी इलकन: का बेटा आसा का बेटा बरकियाह ।
१७ और सलूम और अक़्कूब और तलमान और अख़िमान और उन
१८ के भाईबन्द द्वारपाल थे और सलूम श्रेष्ठ था । और वुह अब लों
पूरब और राजा के फाटक में रहता था वे लावियों के
१९ सन्तान की जथाओं में द्वारपाल थे । और क़ुरह का बेटा
अबियासफ़ का बेटा क़ारी का बेटा सलूम और उस के पिता
के घराने के भाईबन्द जो क़ाराथी थे सेवा के कार्य्य पर और
तंबू के डेवढ़ीदार थे और उन के पितर परमेश्वर की सेना के
२० प्रवेश के रक्षक थे । और इलिअज़र का बेटा फ़ीनिहास पिछले दिनों
में उन पर आज्ञाकारी था और परमेश्वर उस के साथ था ।
२१ मुसलिमियाह का बेटा ज़करियाह मंडली के तंबू का द्वारपाल
२२ था । ये सब फाटकों के लिये दो सौ बारह चुने गये थे अपनी
अपनी बंशावली में और गांओं में गिने गये जिन्हें दाऊद

२३ और समुएल दर्शी ने उन के कार्य्यों में ठहराया था। सो वे
और उन के सन्तान परमेश्वर के मन्दिर के फाटकों पर थे
२४ अर्थात् तंबू के घर की चौकी के लिये। द्वारपाल चौदिशा थे
२५ अर्थात् पूरब पश्चिम उत्तर दक्षिण की ओर। और उन के गाओं
में उन के भाईबन्द जब तब सात दिन पीछे उन के साथ
२६ आते थे। क्योंकि ये लावी चार प्रधान द्वारपाल अपने अपने
कार्य्य में रहते थे और ईश्वर के मन्दिर की कोठरियों और
२७ भंडारों पर थे। और वे ईश्वर के मन्दिर की चारों ओर
रात को रहते थे क्योंकि उन्हें चौकी देना था और हर
२८ बिहान उस का खोलना उन्हीं से था। और उन में से सेवा
के पात्रों के रक्षक थे जिसतें वे उन्हें बाहर भीतर गिन गिनके
२९ ले आवें ले जावें। और उन में से भी पवित्र स्थान के पात्र
और समस्त हथियार और चोखा पिसान और दाखरस और
तेल और लोबान और सुगन्ध द्रव्य के देखने के लिये ठहराये
३० गये थे। और याजक के बेटों में से कितने सुगन्ध द्रव्य का
३१ तेल पेरते थे। और लावियों में से मत्तितियाह को सलूम
कुरही पहिलौठा था वे बस्तें उसी के बंश में थीं जो थालों में
३२ बनती थीं। और क़िहाती के बेटों में से उन के भाईबन्द
३३ हर विश्राम को भेंट की रोटी सिद्ध करने पर थे। और ये
लावियों के पितरों के प्रधान गायक थे कोठरियों की सेवा से
३४ रहित थे क्योंकि कार्य्य दिन रात उन्हीं पर था। लावियों के
पितरों के ये प्रधान अपनी अपनी पीढ़ियों में प्रधान यरूसलम
में रहते थे॥

३५ और जिबऊन का पिता यऊएल जिबऊन में रहता था
३६ और उस की पत्नी का नाम मअ़कः। और उस का पहिलौठा
बेटा अ़बदून तब सूर और क़ीस और बअ़ल और नैयिर और
३७ नदब। और जदूर और अख़यू और ज़करियाह और मिक़लात।

३८ और मिक़लात से सिमयाम उत्पन्न हुआ और वे भी अपने
भाइयों के साथ यरूसलम में अपने भाइयों के सन्मुख रहते
३९ थे। और नेयिर से क़ीस उत्पन्न हुआ और क़ीस से साऊल
उत्पन्न हुआ और साऊल से यूनतन और मलिकिसूअ और
४० अबिनदाब और इशबाअल उत्पन्न हुए। और यूनतन के
४१ बेटे मुरीब्बअल और मुरीब्बअल से मीक: उत्पन्न हुआ। और
४२ मीक: के बेटे फ़ेतून और मलिक और तहरीअ। और आख़ज़
से जारा उत्पन्न हुआ और जारा से अलामत और अज़िमौत
४३ और ज़िमरी उत्पन्न हुए और ज़िमरी से मौजा। और मौजा से
बनअ: उत्पन्न हुआ और उस का बेटा रिफ़ायाह उस का बेटा
४४ इलिअस: उस का बेटा असील। और असील के छ: बेटे थे जिन
के ये नाम अज़रिक़ाम बोकरू और इसमअएल और शिआरियाह
और अबदियाह और हन्नान ये असील के बेटे थे॥

दसवां पर्ब्ब ।

१ अब फ़िलिसती इसराएल से लड़े और इसराएल फ़िलिसतियों
२ के आगे से भागे और जिलबूअ पर्बत में जूझ गये। और
फ़िलिसती साऊल के और उस के बेटों के पीछे पीछे धाये गये और
फ़िलिसतियों ने साऊल के बेटों यूनतन को और अबिनदाब को
३ और मलिकिसूअ को मार डाला। और संग्राम साऊल के बिरुद्ध
हुआ और धनुषधारियों ने उसे मारा और धनुषधारियों से
४ घायल किया गया। तब साऊल ने अपने शस्त्रधारी से कहा
कि अपनी तलवार खींचके मुझे गोद दे ऐसा न हो कि ये
अख़तने आके मेरा अपमान करें परन्तु उस के शस्त्रधारी ने न
माना क्योंकि वुह निपट डर गया तब साऊल एक तलवार लेके
५ उस पर गिरा। और साऊल को मृतक देखके उस का शस्त्रधारी
६ भी उसी रीति से अपनी तलवार पर गिरके मर गया। सो

साऊल और उस के तीन बेटे और उस के सारे घराने एक साथ
७ मर गये। और जब इसराएल के सारे मनुष्यों ने जो तराई में
थे देखा कि वे भाग गये और साऊल और उस के बेटे मर गये
तब वे अपने अपने नगरों को छोड़ छोड़ भाग गये और फिलिसती
आके उन में बसे॥
८ और दूसरे दिन ऐसा हुआ कि जब फिलिसती जूझे हुओं
को नंगा करने आये तब उन्हों ने जिलबूअ पर्बत पर साऊल
९ को और उस के बेटों को पड़े पाया। और उसे नंगा करके उस
के सिर को और उस के अस्त्र को लेके फिलिसतियों के देश
में चारों ओर भेजा जिसतें उन की मूर्त्तिन के और लोगों के
१० पास संदेश पहुंचावें। और उन्हों ने अपने देवों के मन्दिर में
उस के शस्त्र को रक्खा और दजून के मन्दिर में उस के सिर
को लटका दिया॥
११ और जब जिलिअद में यबीस के सारे लोगों ने सब कुछ
१२ सुना जो फिलिसतियों ने साऊल से किया था। तब सारे बीर
उठे और साऊल की लोथ और उस के बेटों की लोथें लिईं और
उन्हें यबीस में लाये और यबीस में बलूत पेड़ तले उन की
१३ हड्डियां गाड़ीं और सात दिन लों ब्रत किया। सो साऊल अपने
पाप के लिये मर गया जो उस ने ईश्वर के बिरुद्ध अर्थात् ईश्वर
के बचन के बिरुद्ध किया जो उस ने न माना और इस लिये
१४ भी कि उस ने भुतनी से पूछा था। और उस ने परमेश्वर से
न बूझा इस लिये उस ने उसे मारा और यस्सी के बेटे दाऊद
की ओर राज्य को फेर दिया॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ तब सारे इसराएल ने हबरून में दाऊद पास एकट्ठे होके
२ कहा कि देखिये हम तेरे हाड़ मांस हैं। और कल परसों भी

अर्थात् जब साऊल राजा था तब इसराएल को तू बाहर भीतर
ले आया जाया करता था और परमेश्वर तेरे ईश्वर ने तुझे कहा
कि तू मेरे इसराएल लोगों को चरावेगा और तू मेरे इसराएल
३ लोगों का अध्यक्ष होगा। इस लिये इसराएल के सारे प्राचीन
हबरून में राजा पास आये और हबरून में दाऊद ने परमेश्वर
के आगे उन से नियम किया और समूएल के द्वारा से परमेश्वर
के वचन के समान उन्हों ने दाऊद को इसराएल पर
राज्याभिषेक किया॥

४ और दाऊद और सारे इसराएल यरूसलम को जो यबूस है
५ गये जहां देश के बासी यबूसी थे। और यबूस के बासियों
ने दाऊद से कहा कि तू यहां आने न पावेगा तथापि दाऊद
६ ने सैहून के गढ़ को लिया वही दाऊद का नगर हुआ। और
दाऊद ने कहा कि जो कोई पहिले यबूसियों को मारेगा सो
श्रेष्ठ और सेनापति होगा तब ज़रूयाह का बेटा यूअब पहिले
७ चढ़ गया और श्रेष्ठ हुआ। और दाऊद ने गढ़ में बास किया
इस लिये उन्हों ने उस का नाम दाऊद का नगर रक्खा।
८ और उस ने नगर को चारों ओर अर्थात् मिल्लो से चारों ओर
९ बनाया और यूअब ने नगर के रहे हुए को सुधारा। और
दाऊद बढ़ता गया क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर उस के साथ
था॥

१० और दाऊद के शूरों के श्रेष्ठ भी ये हैं जो इसराएल के
विषय में परमेश्वर के वचन के समान उसे राजा बनाने के
लिये दृढ़ता से सारे इसराएल के संग उस्से पिलचे रहे।
११ और दाऊद के शूर की गिनती यह है युसुबिआम एक हकमूनी
प्रधानों में श्रेष्ठ उस ने तीन सहस्र पर अपना भाला उठाके
१२ एकही समय में उन्हें मारा। और उस के पीछे अहोहीदोदो
१३ का बेटा इलिअज़र जो तीन शूरों में एक था। वुह दाऊद के

साथ अफ़सदम्मीम में था जहां फिलिसती संग्राम के लिये एकट्ठे
हुए थे उस स्थान में जव भरा हुआ था और लोग फिलिसतियों
१४ के आगे से भागे। और उन्हों ने उस खेत में खड़े होके उसे
छुड़ाया और फिलिसतियों को मारा और परमेश्वर ने उन्हें बड़ा
जैमान किया॥
१५ सो तीसों के प्रधान तीन जन अदूलाम की कन्दला से
दाऊद पास चट्टान को गये और फिलिसतियों की सेना रिफ़ाईम
१६ की तराई में छावनी किये हुई थी। और उस समय दाऊद
१७ गढ़ में था और फिलिसतियों का थाना बैतलहम में। तब
दाऊद ने बड़ी लालसा से कहा हाय कि कोई मुझे बैतलहम
१८ के फाटक के कुए का जल पिलाता। तब वुह तीनों
फिलिसतियों की सेना को तोड़के बैतलहम के फाटक के
कुए का जल खींचके दाऊद पास लाये परन्तु दाऊद ने उसे
१९ न पिया पर उसे परमेश्वर के निमित्त उंडेला। और कहा कि
मेरा ईश्वर न करे कि मैं ऐसा करूं क्या मैं इन मनुष्यों के लोहू
को पीऊं जो अपना अपना प्राण जोखिम में लाये क्योंकि वे
अपने अपने प्राण के जोखिम से उसे लाये इस लिये उस ने
उसे न पिया यह कार्य्य इन तीन बलवन्तों ने किया॥
२० और यूअब का भाई अबिशै उन तीनों का प्रधान था क्योंकि
उस ने तीन सौ पर भाला चलाके उन्हें घात किया और वुह
२१ तीनों में नामी था। उन तीनों में वुह दो से प्रतिष्ठित था
क्योंकि वुह उन का प्रधान था तथापि वुह अगिले तीन लों न
पहुंचा॥
२२ क़ज़िएल के शूर का बेटा यहूयदः का बेटा बिनायाह जो
कार्य्य में महान था उस ने सिंह तुल्य मोअब दो जन को
घात किया उस ने पाले के दिन में भी उतरके एक गड़हे में
२३ सिंह को मार डाला। और उस ने नपे हुए पांच हाथ के एक

मिस्री को मार डाला और उस मिस्री के हाथ में जुलाहे के
तूर के समान भाला था परन्तु वुह एक लट्ठ लेके उस पर
उतरा और भाले को उस के हाथ से छीन लिया और उसी के
२४ भाले से उसे मार डाला। यहूयद: के बेटे बिनायाह ने ये
२५ ये कार्य्य किये और तीन शूरों में नामी था। देखो वुह तीसों में
प्रतिष्ठित था परन्तु अगिले तीन लों न पहुंचा और दाऊद ने
उसे अपना निज मंत्री किया॥

२६ सेनाओं के भी शूर यूअब का भाई असहेल बैतलहमी दूटू
२७ का बेटा इलहनान। हरोरी सम्मात फलूनी ख़ालिस।
२८ । २९ तक़ूअी अक़ीस का बेटा ईरा अनताती अबिअज़र। हूशासी
३० सिबकी अखूही इलई। नतूफ़ाती महरी नतूफ़ाती बअना का बेटा
३१ हिलद। बिनयमीनी सन्तानों के जिबिअत के रैबी का बेटा इत्ती
३२ फ़रअतूनी बिनायाह। ज़अश की नालियों का हूरी अरबाती अबिएल।
३३ । ३४ बहरूमी अज़िमौत शअलबूनी इलियहबा। जिज़ूनी
३५ हशीम के बेटे हरारी शजी का बेटा यूनातन। हरारी शक्र
३६ का बेटा अख़ीआम ऊर का बेटा इलिफ़ाल। मिकेरासी हिफ़्र
३७ फ़लूनी अख़ियाह। करमिली हसरू अज़बी का बेटा नअरी।
३८ । ३९ नातन का भाई यूएल हजरी मिबख़ार। अमूनी जिलक़
बेरोसी नहाराई सरूया के बेटे यूआब का शस्त्रधारी।
४० । ४१ इथ्री ऐरा इथ्री गारेब। हत्ती ओरिया अहलाई का बेटा
४२ साबाद। राओबीनी शीज़ा का बेटा अदीना राओबीनियों का
४३ एक प्रधान और उस के संग तीस जन। मअका का बेटा
४४ हनान और मितनी यूशाफ़ात। अशतिराती उज़्ज़िया अरूईरी
४५ होसान के बेटे शामा और जईयल। शिमरी जदियाएल उस
४६ का भाई जोहा तीसीती। महावी इलईल और इलनआम के
४७ बेटे यरीबाई और यूशाविया और मोआबी इसमाह। एलीयेल
और ओबेद और मिसोबाती यसिएल॥

बारहवां पर्व्व ।

१ और ये वे हैं जो ज़िक्लाग में दाऊद पास आये जब वुह कीश
के बेटे साऊल के कारण आप को बंद करता था और वे शूरों
२ में संग्राम में सहायक थे । वे धनुष से लैस थे और पत्थरों
को दहिने बांये हाथ से और बाणों को धनुष से मार सक्ते थे
३ जो बिनयमीनी साऊल के भाईबन्द में से थे । अहईजर
प्रधान और गिबियासी शिमाह के बेटे यूआश और अज़मावेत के
बेटे जज़ाईल और पलत और अनतोसी बराका और याहू ।
४ और गबियूनी इसमाया तीसों में शूर और तीसों का प्रधान और
इरमिया और इहाज़ियेल और योहानान और गदरासी यूसबाद ।
५ इलूजाई और इरीमूस और बिअलिया और शिमरिया और
६ हरूफ़ी शिफतिया । ईलकाना और इसिया और अज़रईल और
७ यूजेर और कोरहाती यशोबियाम । और गिदोरी इरोहाम के
बेटे जोइला और जब्दीया ॥
८ और जद्दियों के वीर और सेना में के संग्राम के योग्य जो
ढाल और फरी उठा सक्ते थे जिन के मुंह सिंह के मुंह के
समान और जो पहाड़ी में हरिणों की नाईं चालाक थे और
९ बन के दृढ़ स्थान में दाऊद पास अलग हुए । पहिले एजेर
१० दूसरा उबदिया तीसरा इलिआब । चौथा मिशमन्ना पांचवां
११ । १२ इरमिया । छठवां अत्तई सातवां एलीयेल । आठवां
१३ यूहानान नवां एलज़ाबाद । दसवां इरमिया ग्यारहवां मकबनई ।
१४ सेना के प्रधान जद के बेटों में के थे जो एक छोटे से छोटा
१५ था सो सौ पर था और बड़े से बड़ा सहस्र पर । ये वे हैं
जिन्हों ने पहिले मास में जब यरदन के कराड़े डूबे थे पार
उतरके तराइयों के सारे लोगों को पूरब और पश्चिम ओर से
भगा दिया ॥

१६ और बिनयमीन के और यहूदाह के सन्तान कितने लोग
१७ दाऊद पास गढ़ में आये । और दाऊद उन को भेंट को गया
और उन से कहने लगा कि यदि तुम लोग निरविरोध होके
मेरे उपकार के निमित्त मुझ पास आये हो तो मेरा मन तुम
से एक होगा परन्तु जो मुझे मेरे बैरियों के हाथ पकड़वाने
आये हो यद्यपि मेरे हाथ में कुछ अंधेर नहीं है तो हमारे
१८ पितरों का ईश्वर देखे और न्याय करे । तब सेनापतियों
के श्रेष्ठ अमासी पर आत्मा उतरा और कहा हे दाऊद हम
तेरे और हे यस्सी के बेटे हम तेरे हैं कुशल मुझ पर और
कुशल तेरे उपकारियों पर क्योंकि तेरा ईश्वर तेरा उपकार
करता है तब दाऊद ने उन्हें ग्रहण किया और उन्हें जथा
का प्रधान बनाया ॥
१९ और मुनस्सी में से कई जन दाऊद पास गये जब वुह
फिलिसतियों के संग साऊल के बिरुद्ध संग्राम को गया परन्तु
उन्हों ने उन का उपकार न किया क्योंकि फिलिसतियों के
अध्यक्षों ने जानते हो यह कहके उसे बिदा किया कि वुह
२० हमारे सिर पर से अपने स्वामी साऊल से जा मिलेगा । जब
वुह सीकलग में गया तब मुनस्सी में से अदनः और यूज़बद
और बदीअएल और मीकाएल और यूज़बद और इलिहू और
२१ ज़िल्लती मुनस्सी में के सहस्रों के पति उस पास आये । और
उन्हों ने जथा के बिरुद्ध दाऊद का उपकार किया क्योंकि वे
२२ सब के सब महावीर और सेना में प्रधान थे । क्योंकि उस
समय प्रति दिन दाऊद के उपकार के लिये लोग चले आते
थे यहां लों कि बड़ी सेना जैसी ईश्वर की सेना हुई ॥
२३ और श्रेष्ठों की यह गिनती संग्राम के लिये हथियारबन्द
लोग दाऊद पास हबरून को आये जिसतें परमेश्वर के बचन
२४ के समान साऊल का राज्य दाऊद की ओर फेर देवें । यहूदाह

के सन्तान जो ढाल और बरछी लिये थे छः सहस्र आठ सो
२५ जन संग्राम के लिये लैस। समअून के सन्तान संग्राम के लिये
२६ महाबीर सात सहस्र एक सो। लावी के सन्तान चार सहस्र छः
२७ सा। और हारूनियों के अगुआ यहूयदः और उस के संग तीन
२८ सहस्र सात सो। और सदूक एक तरुण महाबीर और उस के
२९ पिता के घराने से बाईस प्रधान। और बिनयमीन के सन्तान
साऊल के भाईबन्द में से तीन सहस्र क्योंकि अब लों उन में
३० से एक मंडली साऊल के घर की पहरू थी। और इफ़रायम के
सन्तान में से बीस सहस्र आठ सा महाबीर अपने अपने पितरों
३१ के घराने में नामी। और मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से अठारह
सहस्र जो नाम नाम से बुलाये गये जिसतें आके दाऊद को
३२ राजा करें। और इशकार के सन्तानों में से जो समयों के ज्ञाता
और जानते थे कि इसराएल क्या करेगा उन में से श्रेष्ठ दो सो
३३ और उन के सारे भाईबन्द उन की आज्ञा में थे। ज़बुलून में
से जो संग्राम को निकलते थे युद्ध के सारे हथियार सहित
युद्ध में निपुण पचास सहस्र जो पांती में स्थिर रहि सक्ते थे और
३४ दुचित न थे। और नफ़ताली में से एक सहस्र सेनापति और
३५ उन के संग सैंतीस सहस्र ढाल और भाला सहित। और
३६ दानियों में से संग्राम में निपुण अट्ठाईस सहस्र छः सो। और
यसर में से जो संग्राम को निकलते थे चालीस सहस्र संग्राम में
३७ निपुण। और यरदन के पार से रूबिनियों में से और जाद्दियों
में से और मुनस्सी की आधी गोष्ठी में से युद्ध के सारे प्रकार के
हथियार सहित संग्राम के लिये एक लाख बीस सहस्र जन।
३८ ये सब योद्धा पांती में स्थिर खरे मन से हबरून में आये
जिसतें दाऊद को सारे इसराएल पर राजा करें और इसराएल
के सारे उबरे हुए लोग एक मन से दाऊद को राजा बनाने
३९ आये। और वे दाऊद के संग खाते पीते वहां तीन दिन रहे

क्योंकि उन के भाईबन्दों ने उन के लिये सिद्ध किया था ।
४० और इशकार के और ज़बुलून के और नफ़ताली के आस पास
के लोग भी गदहों पर और ऊंटों पर और खच्चरों पर और बैलों
पर भोजन रोटी और गूलर और अंगूर के गुच्छे और दाखरस
और तेल और बैल और भेड़ें बहुताई से लाये क्योंकि इसराएल
में बड़ा आनन्द हुआ ॥

तेरहवां पर्व्व ।

१ और उस के पीछे दाऊद ने सहस्रपति से और शतपति से
२ और हर एक अगुआ से परामर्ष किया। और दाऊद ने इसराएल
की सारी मंडली को कहा कि जो तुम्हें और हमारे ईश्वर परमेश्वर
को भला लगे तो आओ अपने भाईबन्द पास जो इसराएल के
सारे देश में बच रहे हैं हर एक स्थान में और उन के संग
याजकों के और लावियों के पास जो उन के नगरों में और
सिवानों में हैं संदेश भेजें जिसतें वे हमारे पास एकट्ठे होवें ।
३ और चलो अपने ईश्वर की मंजूषा को अपने यहां फेर लावें
४ क्योंकि साऊल के दिनों में हम ने उस्से नहीं बूझा । और
सारी मंडली ने कहा कि हम यह बात करेंगे क्योंकि वुह बात
सारे लोगों की दृष्टि में अच्छी लगी ॥
५ तब दाऊद ने मिस्र के सैहूर से हमात की पैठ लों सारे
इसराएल को एकट्ठे किया जिसतें ईश्वर की मंजूषा को
६ करयतअरीम से लावें । तब सारे इसराएल दाऊद के संग
बअलात को अर्थात् यहूदाह के करयतअरीम को चढ़ गये
जिसतें उस ईश्वर परमेश्वर की मंजूषा को जो करोबियों के मध्य
बास करता है जिस के नाम से पुकारी जाती है वहां से ऊपर
७ लावें । और उन्हों ने अबिनदाब के घर से ईश्वर की मंजूषा
को नई गाड़ी पर धरा और उज्ज़ा और अख़यू ने उस गाड़ी

८ को हांका। और दाऊद और सारे इसराएल अपनी अपनी सारी
सामर्थ्य और बीन और तबले और खंजड़ी और करताल और
९ तुरही से ईश्वर के आगे गाते बजाते गये। और जब वे कैदून
के खलिहान को पहुंचे तब उज़्ज़ा ने मंजूषा को धरने के लिये
१० अपना हाथ बढ़ाया क्योंकि बैलों ने ठोकर खाई। तब परमेश्वर
का क्रोद्ध उज़्ज़ा पर भड़का और उस ने उसे इस कारण घात
किया कि उस ने अपना हाथ मंजूषा पर रक्खा और वुह वहां
११ परमेश्वर के आगे मर गया। और दाऊद उदास हुआ इस
कारण कि परमेश्वर ने उज़्ज़ा पर चियाड़ डाली इस लिये आज
१२ लों वुह स्थान उज़्ज़ा का दरार कहावता है। और उस दिन
दाऊद यह कहके ईश्वर से डरा कि ईश्वर की मंजूषा को अपने
१३ पास क्योंकर लाऊं। सो दाऊद मंजूषा को अपने यहां दाऊद
के नगर में न लाया परन्तु जित्ती अ़ाबिदअदूम के घर में उसे
एक अलंग ले गया॥

१४ और ईश्वर की मंजूषा अ़ाबिदअदूम के घर में तीन मास
रही और परमेश्वर ने अ़ाबिदअदूम के घराने पर और उस की
सारी संपत्ति पर आशीष दिई॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१ तब सूर के राजा हीराम ने दाऊद पास उस के घर
बनाने के लिये दूतों को और देवदार लट्ठों को थवैयों
२ और बढ़इयों के साथ भेजा। और दाऊद को निश्चय हुआ
कि परमेश्वर ने इसराएल पर मेरे राज्य को स्थिर किया और
अपने इसराएल लोग के लिये मेरा राज्य बढ़ाया॥

३ तब दाऊद ने यरूसलम में और पत्नियां किईं और
४ दाऊद से और बेटे बेटियां उत्पन्न हुए। और उस के सन्तान
के नाम जो यरूसलम में उत्पन्न हुए ये हैं सम्मूअ और सोबाब

५ नातन और सुलेमान। और इब्हार और इलिसूत्र: और
६ इलिफ़लत। और नुग: और नफ़ग और यफ़ीत्र और इलिसम:।
७ और बत्र्रलयदत्र और इलिफ़लत ॥
८ जब फिलिसतियों ने सुना कि दाऊद सारे इसराएल
पर राज्याभिषिक्त हुआ तब सारे फिलिसती दाऊद की खोज
९ को निकले और दाऊद सुनके उन के बिरुद्ध निकला। और
१० फिलिसती आये और रिफ़ाईम की तराई में फैल गये। और
दाऊद ने यह कहके परमेश्वर से बूझा कि मैं फिलिसतियों पर
चढ़ जाऊं और तू उन्हें मेरे हाथ में सैांप देगा तब परमेश्वर ने
उसे कहा कि चढ़ जा क्योंकि मैं उन्हें तेरे हाथ में सैांपूंगा।
११ सो वे बत्र्रलफ़रसीन को चढ़ गये और दाऊद ने वहां उन्हें
मारा तब दाऊद ने कहा कि ईश्वर ने पानियों के तोड़ की
नाईं मेरे बैरियों को तोड़ा इस लिये उन्हों ने उस स्थान का
१२ नाम बत्र्रलफ़रसीन रक्खा। और जब उन्हों ने अपने देवों को
वहां छोड़ा तो दाऊद ने आज्ञा किई और वे आग से जलाये
गये ॥
१३ । १४ और फिलिसती फेर तराई में फैल गये। इस लिये
फेर दाऊद ने ईश्वर से बूझा और ईश्वर ने उसे कहा कि उन
के पीछे मत चढ़ जा उन से अलग हो जा और तूत पेड़ों के
१५ साम्ने से उन पर जा पड़। और ऐसा होगा कि जब तू तूत
पेड़ों के ऊपर चलने का सन्नाटा सुने तब तू संग्राम को निकल
क्योंकि फिलिसतियों की सेना के मारने को ईश्वर तेरे आगे आगे
१६ निकल गया। और जैसा ईश्वर ने दाऊद को आज्ञा किई तैसा
उस ने किया और उन्हों ने फिलिसतियों की सेना को जिबऊन
१७ से जज़र लों मारा। और दाऊद की कीर्त्ति सारे देशों में फैली
और परमेश्वर ने सारे जातिगणों पर उस का भय डाला ॥

पंद्रहवां पर्व्व ।

१ और दाऊद ने अपने नगर में अपने लिये घर बनाये और
ईश्वर की मंजूषा के लिये एक स्थान सिद्ध किया और उस के
२ लिये डेरा खड़ा किया । तब दाऊद ने कहा कि लावियों को
छोड़ ईश्वर की मंजूषा उठाने को किसी को उचित नहीं क्योंकि
ईश्वर की मंजूषा उठाने को और नित्य की सेवा करने को
परमेश्वर ने उन्हें चुन लिया है ॥
३ और दाऊद ने परमेश्वर की मंजूषा को उस स्थान में लाने
के लिये जो उस ने उस के लिये सिद्ध किया था यरूसलम में
४ सारे इसराएल को एकट्ठे किया । और दाऊद ने हारून के
५ सन्तान को और लावियों को बटोरा । क़िहात के बेटों में से
६ ऊरिएल प्रधान और उस के भाईबन्द एक सौ बीस । मिरारी
के बेटों में से असायाह प्रधान और उस के भाईबन्द दो सौ
७ बीस । जैरसुम के बेटों में से यूएल प्रधान और उस के
८ भाईबन्द एक सौ तीस । इलिसफ़न के बेटों में से समअयाह
९ प्रधान और उस के भाईबन्द दो सौ । हवरून के बेटों में से
१० इलिएल प्रधान और उस के भाईबन्द अस्सी । उज्ज़िएल के
बेटों में से अम्मिनदब प्रधान और उस के भाईबन्द एक सौ
बारह ॥
११ और दाऊद ने सदूक़ और अबियतर याजक को और
लावियों को ऊरिएल को असायाह को और यूएल को समअयाह
१२ को और इलिएल को और अम्मिनदब को बुलाया । और उन्हें
कहा कि हे लावियों के पितरों के प्रधानो तुम लोग और
तुम्हारे भाईबन्द आप आप को पवित्र करें जिसतें इसराएल
के ईश्वर परमेश्वर की मंजूषा को उस स्थान में जो मैं ने सिद्ध
१३ किया है उठा लावें । क्योंकि तुम लोगों ने पहिले नहीं किया

हमारे ईश्वर परमेश्वर ने हम पर चिथाड़ डाली क्योंकि हम ने
उसे विधि से न खोजा ॥
१४ सो याजकों ने और लावियों ने इसराएल के ईश्वर परमेश्वर
१५ की मंजूषा लाने को आप आप को पवित्र किया। और जैसा
मूसा ने परमेश्वर के वचन के समान आज्ञा किई थी तैसा ही
लावियों के सन्तानों ने बहंगरों सहित अपने अपने कांधों पर
ईश्वर की मंजूषा उठाई ॥
१६ और दाऊद ने लावियों के प्रधान को कहा कि अपने
भाईबन्दों को गायक ठहराओ कि वे बाजा अर्थात् खंजड़ी और
बीना और करताल को बजाके आनन्द से अपना शब्द उठाके
१७ गावें। सो लावियों में से ये ठहराये गये यूएल के बेटे हमान
को और उस के भाइयों में से बरक्रियाह के बेटे आसफ़ को
और उन के भाईबन्द मिरारी के बेटों में से क़ौसायाह के बेटे
१८ ऐतान को। और उन के साथ उन के भाईबन्द दूसरी पांती के
ज़करियाह बिन और यअज़िएल और सिमिरामात और यहिएल
और अन्नी इलिअब और बिनायाह और मअसियाह और
मत्तितियाह और इलिफ़िलेहू और मिक़नयाहू और आबिदअदूम
१९ और यईएल द्वारपालक। सो हमान और आसफ़ और ऐतान
२० गायक पीतल के करताल बजाते थे। और अलामूस पर खंजड़ियों
के साथ ज़करियाह और यअज़िएल और सिमिरामात
और यहिएल और अन्नी और इलिअब और मअसियाह और
२१ बिनायाह। और शिमीनिस पर जय करने के लिये बीनों से
मत्तितियाह और इलिफ़िलेहू और मिक़नेयाहू और आबिदअदूम
और यईएल और अज़ज़ियाह को ठहराया ॥
२२ और गाने के लिये लावियों में से प्रधान कननियाह को
उस ने गाने के विषय में सिखाया क्योंकि वुह निपुण था।
२३ और मंजूषा के लिये द्वारपाल बरक्रियाह और इलक़नः ॥

२४ और शबनियाह और यहूशफ़त और नासानएल और अमासाई
और जिकरिया और बिनाया और इलीयज़र याजक ईश्वर की
मंजूषा के आगे तुरही बजाते थे और मंजूषा के लिये आबिद
अदूम और जहिया द्वारपाल थे॥

२५ सो दाऊद और इसराएल के प्राचीन और सहस्रपति
आनन्द से आबिदअदूम के घर से परमेश्वर के नियम की
२६ मंजूषा लाने को गये। और ऐसा हुआ कि जब ईश्वर ने उन
लावियों की सहाय किई जो परमेश्वर के नियम की मंजूषा को
उठाते थे तब उन्हों ने सात बैल और सात मेढ़े चढ़ाये।
२७ और दाऊद और सारे लावी जो मंजूषा को उठाते थे और गायक
और गायकों के संग गान का गुरू किनानिया सूती वस्त्र पहिने
२८ था और दाऊद पर भी सूती अफ़ूद था। यों सारे इसराएल
ललकारते हुए नरसिंगा और तुरही और करताल के शब्द से
और खंजड़ी और बीणा के बड़े शब्द से इसराएल के परमेश्वर
के नियम की मंजूषा को ऊपर लाये॥

२९ और यों हुआ कि ज्यों परमेश्वर के नियम की मंजूषा दाऊद
के नगर में पहुंची त्यों साऊल की पुची मीकल ने दाऊद को
गाते और नाचते एक खिड़की में से देखा तो उस ने अपने
मन में उसे तुच्छ समझा॥

सोलहवां पर्व्व।

१ सो वे ईश्वर की मंजूषा ले आये और जो तंबू दाऊद ने
उस के लिये खड़ा किया था उसे उस के मध्य रक्खा और उन्हों
ने परमेश्वर के आगे बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें
२ चढ़ाईं। और जब दाऊद बलिदान की भेंटें और कुशल की
भेंटें चढ़ा चुका तब उस ने परमेश्वर के नाम से लोगों को
३ आशीष दिया। और उस ने हर एक इसराएल को क्या पुरुष

क्या स्त्री एक एक रोटी और अच्छा टुकड़ा मांस और एक
एक दाख की टिकिया दिई ॥
४ और उस ने कितने लावियों को परमेश्वर की मंजूषा के
आगे सेवा करने के लिये और स्मरण करने के लिये और
इसराएल के ईश्वर परमेश्वर का धन्य मान्ने और स्तुति करने के
५ लिये स्थापित किया। अर्थात् प्रधान आसफ़ को और उस के
पीछे ज़करियाह यईएल और सिमिरामात को और यहिएल
और मत्तितियाह और इलिअब और बिनायाह और आबिद
अदूम को और यूएल को बीणा और बरबत लिये हुए ठहराया
६ परन्तु आसफ़ करताल बजाता था। और बिनायाह और
यहज़िएल याजक को भी तुरही लिये हुए नित्य ईश्वर के नियम
की मंजूषा के आगे ठहराया ॥
७ तब उसी दिन दाऊद ने आसफ़ के और उस के भाइयों
के हाथ में परमेश्वर का धन्य मान्ने को यह गीत सौंपा ॥
८ परमेश्वर का धन्य मानो उस का नाम लेओ लोगों में उस
९ की क्रिया प्रगट करो। उस के लिये गाओ उस के लिये
१० बजाओ उस के सारे आश्चर्य्य कार्य्य की चर्चा करो। उस के
पवित्र नाम की महिमा करो जिसतें परमेश्वर के खोजियों के
११ मन आनन्दित होवें। परमेश्वर को और उस के बल को ढूंढ़ो
१२ उस का रूप सदा ढूंढ़ो। उस के आश्चर्य्य कार्य्यों उस के
१३ अचंभों और उस के मुंह के विचारों को स्मरण करो। हे उस
के सेवक इसराएल के वंशो हे उस के चुने हुआ यअ़कूब के
१४ सन्तानो। वही परमेश्वर हमारा ईश्वर उस के विचार सारी
१५ पृथिवी में हैं। उस के नियम को जो बचन उस ने सहस्र पीढ़ियों
१६ के लिये आज्ञा किई है नित मनन करो। जो उस ने अबिरहाम
के साथ किया और इज़हाक़ से जो उस ने किरिया खाई।
१७ और उसे यअ़कूब को व्यवस्था के लिये इसराएल को

१८ सनातन के नियम के लिये स्थिर किया। कि मैं कनआन का
१९ देश तुझे देऊंगा जो तुम्हारे अधिकार का भाग है। जब तुम
लोग गिने हुए जन थे अर्थात् थोड़े थे और उस में परदेशी।
२० और वे एक जाति से दूसरी जाति को गये और एक राज्य से
२१ दूसरे लोग को। तब उस ने किसी को उन्हें सताने न दिया
२२ हां उस ने उन के कारण राजाओं को डपटा। और कहा कि
मेरे अभिषिक्तों को मत छूओ और मेरे भविष्यद्वक्तों को दुःख
मत देओ॥
२३ हे सारी पृथिवी परमेश्वर के लिये गाओ प्रति दिन उस की
२४ मुक्ति को प्रगट करो। उस की महिमा अन्यदेशियों में उस के
२५ आश्चर्य्यित कर्म्म सारे जातिगणों में वर्णन करो। क्योंकि
परमेश्वर महान और अति स्तुति के योग्य है और वही सब
२६ देवों से अधिक डरने के योग्य है। क्योंकि जातिगणों के सारे
२७ देव तुच्छ हैं परन्तु परमेश्वर ने स्वर्गों को सिरजा। उस
का विभव और प्रतिष्ठा उस के आगे है पराक्रम और आनन्दता
२८ उस के स्थान में हैं। परमेश्वर को मानो हे जातिगणों के कुटुम्बो
२९ बिभव और पराक्रम परमेश्वर के लिये मानो। परमेश्वर के नाम
की महिमा उसे देओ भेंट लेके उस के आगे आओ पवित्रता की
३० सुन्दरता में परमेश्वर की सेवा करो। हे सारी पृथिवी उस के
३१ आगे डरो जगत भी स्थिर होगा जिसतें टल न जावे। स्वर्ग
गण आनन्दित होवें और पृथिवी आनन्द करे और जातिगणों में
३२ कहें कि परमेश्वर राज्य करता है। समुद्र और उस की भरपूरी
३३ हलरावे चौगान और सब जो उन में हैं आनन्द करें। तब
वन के पेड़ परमेश्वर के साक्षात के लिये पुकार पुकारके गावें
३४ क्योंकि वुह पृथिवी का बिचार करने को आता है। परमेश्वर
का धन्यबाद करो क्योंकि वुह भला और उस की दया नित्य है।
३५ और कहो हे हमारे मुक्तिदायक ईश्वर हमें बचा और हमें

एकट्ठा कर और अन्यदेशियों से हमें छुड़ा जिसतें हम तेरे
पवित्र नाम का धन्यवाद करें तेरी स्तुति में बड़ाई करें ।
३६ इसराएल के ईश्वर परमेश्वर का धन्यवाद सदा लों होवे
और सारे लोगों ने कहा आमीन और परमेश्वर की स्तुति
किई ॥
३७ और परमेश्वर के नियम की मंजूषा के आगे उस ने आसफ़
को और उस के भाईबन्दों के प्रतिदिन के कार्य्य के समान
३८ मंजूषा के आगे नित्य सेवा करने के लिये वहां रक्खा । और
ओबिदअदूम और उन के भाईबन्द अरसठ और द्वारपालों के
लिये यदूतून का बेटा ओबिदअदूम भी और होसाह को ।
३९ और परमेश्वर के तंबू के आगे सदूक़ याजक और उस के
भाईबन्द याजकों को उस ऊंचे स्थान में जो जिबऊन में है
४० रक्खा । जिसतें परमेश्वर के लिये सांझ बिहान बलिदान की
भेंट की बेदी पर नित्य बलिदान की भेंट चढ़ाने के लिये और
परमेश्वर की व्यवस्था में के सारे लिखे हुए के समान जो उस
४१ ने इसराएल को आज्ञा किई थी चढ़ावें । और उन के संग
हमान और यदूतून और रहे हुए जो नाम नाम से कहे गये
चुने हुओं को ठहराया जिसतें परमेश्वर का धन्यवाद करें इस
४२ कारण कि उस की दया सदा लों है । और शब्द करने के
लिये तुरही और करताल और ईश्वर के बाजा को लिये हुए हमान
और यदूतून को ठहराया और फाटक के लिये यदूतून के
४३ बेटों को । तब सारे लोग हर एक जन अपने अपने घर गये
और दाऊद अपने घराने को आशीष देने को फिरा ॥

सत्रहवां पर्व्व ।

१ अब यों हुआ कि जब दाऊद अपने घर में बैठा था तब
दाऊद ने नातन भविष्यद्वक्ता से कहा कि देख मैं देवदारों के

घर में रहता हूं परन्तु परमेश्वर के नियम की मंजूषा ओझलों
में॥
२ तब नातन ने दाऊद से कहा कि जो तेरे मन में है सो
कर क्योंकि परमेश्वर तेरे साथ है॥
३ और उस रात को ऐसा हुआ कि ईश्वर का वचन नातन के
४ पास यह कहते हुए पहुंचा कि। जा और मेरे सेवक दाऊद से कह
कि परमेश्वर यों कहता है कि मेरे निवास के लिये तू घर मत
५ बना। क्योंकि जिस दिन से मैं इसराएल को ऊपर लाया आज
लों मैं ने घर में बास नहीं किया है परन्तु तंबू तंबू में और
६ डेरे डेरे में रहा किया। जहां कहीं मैं सारे इसराएल के साथ
साथ फिरा किया हूं मैं इसराएल के न्याइयों को जिन्हें मैं
ने अपने लोगों को चराने की आज्ञा किई यह कहके कोई
बचन बोला कि तुम ने मेरे लिये देवदारों का घर क्यों नहीं
७ बनाया। सो अब तू मेरे दास दाऊद से कह कि सेनाओं का
परमेश्वर यों कहता है कि मेरे इसराएल लोगों के ऊपर राज्य
करने को मैं ने तुझे भेड़शाला से अर्थात् भेड़ के पीछे से लिया।
८ और जहां जहां तू गया है मैं तेरे साथ साथ रहा हूं और
तेरे आगे से तेरे सारे बैरियों को काट डाला है और पृथिवी
९ के महत जनों के नाम के समान तेरा नाम किया है। और
मैं ने अपने इसराएली लोगों के लिये एक स्थान ठहराया और
उन्हें बसाया और वे उस स्थान में रहेंगे और फिर न घबरावेंगे
और दुष्ट जन उन को न सतावेंगे जैसा कि आरंभ में और उन
दिनों में कि मैं ने न्याइयों को अपने इसराएली लोगों पर
१० ठहराया। और जब से मैं ने न्याइयों को अपने इसराएल
लोगों पर ठहराया दुष्टता के सन्तान उन्हें फेर न उजाड़ेंगे
उस्से अधिक तेरे सारे बैरियों को नीचा करूंगा और भी मैं
११ तुझ्से कहता हूं कि परमेश्वर तेरा घर बनावेगा। और ऐसा

होगा कि जब तेरे दिन पूरे होंगे जिसतें तू अपने पितरों में
जावे तब तेरे पीछे तेरे बंश को जो तेरे बेटों में होगा उठाऊंगा
१२ और उस के राज्य को स्थिर करूंगा। वही मेरे लिये एक घर
बनावेगा और मैं उस का सिंहासन सदा लों स्थिर करूंगा।
१३ मैं उस का पिता होऊंगा और वुह मेरा पुत्र होगा और अपनी
दया उस्से उठा न लूंगा जैसा तेरे अगिलों में से उठाई।
१४ परन्तु मैं उसे अपने घर में और अपने राज्य में सदा स्थिर
करूंगा और उस का सिंहासन सदा लों स्थिर होगा॥
१५ इन सारी बातों के समान और इस सारे दर्शन के समान
नातन ने दाऊद से कहा॥
१६ और दाऊद राजा आया और परमेश्वर के आगे बैठके कहा
कि हे परमेश्वर ईश्वर मैं कौन और मेरा घर क्या जो तू ने
१७ मुझे यहां लों पहुंचाया। और हे ईश्वर तेरी दृष्टि में यह
छोटी बात थी क्योंकि तू ने अपने सेवक के घर के विषय में
बहुत दिन के लिये कहा है और हे परमेश्वर ईश्वर तू ने मुझे
१८ बड़े पद के मनुष्य के समान समझा है। तेरे दास की प्रतिष्ठा
के लिये दाऊद तुझे और क्या कह सक्ता है क्योंकि तू अपने
१९ दास को पहिचानता है। हे परमेश्वर अपने सेवक के लिये
और अपने ही मन के समान यह सारी महिमा जनाने के
२० लिये तू ने यह सारी बड़ाई प्रगट किई है। हे परमेश्वर तेरे
समान कोई नहीं और तुझे छोड़ कोई ईश्वर नहीं जैसा कि
२१ हम ने अपने कानों सुना। और तेरे इसराएल लोगों के तुल्य
कौन ऐसी जाति है जिन्हें अपने लोग बनाने को ईश्वर मिस्र
में छुड़ाने को गया और मिस्र से अपने छुड़ाये हुए लोगों के
आगे जातिगणों को खेद खेदके अपने लिये एक महिमा और
२२ भयानक नाम बनाया। क्योंकि अपने इसराएल लोग को तू
ने सदा के लिये अपना लोग बनाया और हे परमेश्वर तू उन

२३ का ईश्वर हुआ है। सा अब हे परमेश्वर जा बात तू ने अपने
दास के विषय में और उस के घर के विषय में कही है सो
सदा के लिये स्थिर होवे और जैसा तू ने कहा है तैसा कर।
२४ सा ही स्थिर होवे जिसतें यह कहके तेरे नाम की महिमा सदा
होवे सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर अर्थात् इसराएल
के लिये ईश्वर और तेरे दास दाऊद का घर तेरे आगे स्थिर
२५ होवे। क्योंकि हे मेरे ईश्वर तू ने अपने दास पर प्रकाश किया
है कि तू उस के लिये घर बनावेगा इस लिये तेरे सेवक ने
२६ तेरे आगे प्रार्थना करने का मन पाया है। और अब हे परमेश्वर
तू वही ईश्वर है और अपने सेवक से यह भलाई की बाचा
२७ बांधी है। सा अब अपने सेवक के घर पर आशीष दे जिसतें
तेरे आगे सदा बना रहे क्योंकि हे परमेश्वर जिस का तू आशीष
देता है वुह सदा आशीर्बाद होता है॥

अठारहवां पर्व्व।

१ और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि दाऊद ने फिलिसतियों
का मारा और उन्हें बश में किया और जात का और उस के
नगरों का फिलिसतियों के हाथ से ले लिया॥

२ और मोअब का मारा और मोअबी दाऊद के सेवक हुए
और भेंट लाये॥

३ और दाऊद ने सूबः के राजा हदरअजर को जब वुह
फुरात नदी के लग अपने देश को स्थिर करने गया था हमात
४ लों मारा। और दाऊद ने उस्से एक सहस्र रथ और सात
सहस्र घोड़चढ़ों को और बीस सहस्र पगइतों को लिया और
दाऊद ने रथ के सारे घोड़ों की नस काटी परन्तु उन में से
सौ रथों के लिये रख छोड़ा॥

५ और जब दमिश्क के अरामी सूबः के राजा हदरअजर की

सहाय को आये तब दाऊद ने अरामियों में से बाईस सहस्र
६ को मारा । तब दाऊद ने अरामी के दमिश्क में थाना बैठाया
और अरामी दाऊद के सेवक होके भेंट लाये इस रीति से
जहां कहीं दाऊद जाता था तहां परमेश्वर उस की रक्षा करता
७ था । और दाऊद ने हदरअज़र के सेवकों की सोने की ढालें
८ लियां और उन्हें यरूसलम में लाया । इसी रीति से हदरअज़र
के नगर तिबख़त से और कून से दाऊद अति बहुत पीतल
लाया जिस्से सुलेमान ने पितली समुद्र और खंभे और पीतल
के पात्र बनाये ॥
९ और जब हमात के राजा तुगू ने सुना कि दाऊद ने किस
रीति से सूबः के राजा हदरअज़र की सारी सेना को मारा ।
१० तो उस ने अपने बेटे हदूराम को सोने चांदी और पीतल के
सारे प्रकार के पात्रों के साथ दाऊद राजा का कुशल पूछने
को और उसे आशीर्वाद देने को भेजा इस कारण कि उस ने
हदरअज़र से संग्राम करके उसे मारा क्योंकि हदरअज़र तुगू
११ से लड़ता था । दाऊद राजा ने भी सोना चांदी जो उस ने
सारे जातिगणों से अर्थात् अदूम से और मोअब से और अम्मून
के सन्तान से और फिलिसतियों से और अमालीक़ से लाया
था परमेश्वर के लिये उन्हें समर्पण किया ॥
१२ और ज़रूयाह के बेटे अबिशै ने नोन की तराई में
१३ अठारह सहस्र अदूमियों को घात किया । और उस ने
अदूम में थाने बैठाये और सारे अदूमी दाऊद के सेवक हुए
और जहां कहीं दाऊद जाता था तहां परमेश्वर उस की रक्षा
करता था ॥
१४ सो दाऊद सारे इसराएल पर राज्य करता था और अपने
१५ सारे लोगों में विचार और नीति करता था । और ज़रूयाह
का बेटा यूअब सेना पर था और अख़िलूद का बेटा यहूसफ़त

१६ लेखक था। और अखितूब का बेटा सदूक़ और अबियतर का
१७ बेटा अबिमलिक याजक और शीशा लेखक था। और यहूयदः
का बेटा बिनायाह करीती और पलीती पर था और दाऊद
के बेटे राजा के पास प्रधान थे॥

उन्नीसवां पर्व्व।

१ और इन बातों के पीछे ऐसा हुआ कि अम्मून के सन्तान
का राजा नाहस मर गया और उस का बेटा उस की सन्ती
२ राज्य पर बैठा। और दाऊद ने कहा कि मैं नाहस के बेटे
हनून पर अनुग्रह करूंगा क्योंकि उस का पिता मुझ पर अनुग्रह
करता था और उस के पिता के विषय में दाऊद ने उसे
शान्ति देने के लिये दूतों को भेजा सो दाऊद के सेवक अम्मून के
३ सन्तान के देश में हनून के पास उसे शान्ति देने को आये। परन्तु
अम्मून के सन्तान के अध्यक्षों ने हनून को कहा कि तेरी
दृष्टि में दाऊद क्या तेरे पिता की प्रतिष्ठा करता है जो उस ने
तेरे पास शान्तिदायकों को भेजा है क्या उस के सेवक तेरे
पास इस लिये नहीं आये हैं कि देश का भेद लेवें और उसे
४ देखें और उसे उलट देवें। इस लिये हनून ने दाऊद के
सेवकों को पकड़ा और उन्हें मुड़ाया और उन के पुट्ठे लों उन के
५ वस्त्रों को बीच से काट डाला और उन्हें फेर भेजा। तब
किसी ने जाके उन मनुष्यों की दशा दाऊद से कही तब उस
ने उन की भेंट को लोग भेजे क्योंकि वे जन अति लज्जित
हो रहे थे और राजा ने कहा कि जब लों तुम्हारी दाढ़ी बढ़
न जावे तब लों यरीहो में ठहरो तब फिर आओ॥

६ और जब अम्मून के सन्तान ने देखा कि हम दाऊद के
आगे घिनित हुए तब हनून और अम्मून के सन्तान ने एक
सहस्र तोड़े चांदी भेजी जिसतें अराम में से और मअ़कः में से

७ और सूबः में से रथ और घोड़चड़े को भाड़ा करें। सो उन्हों
ने बत्तीस सहस्र रथ और मअ्रकः के राजा को और उस के
लोगों को भाड़ा किया और उन्हों ने आके मेदिबा के आगे
छावनी किई और अम्मून के सन्तान अपने अपने नगरों से
एकट्ठे हुए और संग्राम में आये॥
८ और दाऊद ने सुनके यूअब को और वीरों की सारी सेना
९ को भेजा। और अम्मून के सन्तानों ने आके नगर के फाटक के
आगे लड़ाई की पांती बांधी और राजा जो आये थे सो चौगान
१० में अलग थे। जब यूअब ने संग्राम के रुख अपने विरुद्ध आगे
पीछे देखा तब उस ने इसराएल के तरुणों को चुन लिया और
११ उन से अरामियों के सन्मुख पांती बांधी। और रहे हुए लोगों
को अपने भाई अबिशै के हाथ सौंपा और उन्हों ने अम्मून के
१२ सन्तान के सन्मुख पांती बांधी। और कहा कि यदि अरामी
मुझसे अति बलवन्त होवें तो तू मेरी सहायता करना परन्तु
यदि अम्मून के सन्तान तेरे लिये अति बलवन्त होवें तो मैं
१३ तेरी सहाय करूंगा। हियाव करो और आओ हम अपने लोगों
के और अपने ईश्वर के नगरों के लिये सूरता करें और जो
परमेश्वर की दृष्टि में भला हो सो करे॥
१४ सो यूअब और उस के लोग संग्राम के लिये अरामियों के
१५ आगे बढ़े और वे उस के आगे से भाग गये। और जब अम्मून
के सन्तानों ने अरामियों को भागते देखा तो वे भी उस के
भाई अबिशै के आगे से भागे और नगर में घुसे तब यूअब
यरूसलम को आया॥
१६ और जब अरामियों ने देखा कि हम इसराएल से हार गये
तब वे दूतों को भेजके नदी पार के अरामियों को खींच लाये
और हदरअ़जर की सेना का प्रधान शोफाक उन के आगे आगे
१७ गया। और दाऊद से कहा गया तब उस ने सारे इसराएल

को एकट्ठा किया और यरदन पार होके उन पर चढ़ आया
और उन के सन्मुख पांती बांधी सो जब दाऊद ने अरामियों
१८ के बिरुद्ध में संग्राम की पांती बांधी तो वे उस्से लड़े। परन्तु
अरामी इसराएल के आगे से भागे और दाऊद ने अरामियों के
रथों में के सात सहस्र जन को और चालीस सहस्र पगइतों
१९ को मारा और सेनापति शोफाक को घात किया। और जब
हदरअजर के सेवकों ने देखा कि हम इसराएल के आगे हार
गये तब उन्हों ने दाऊद से मिलाप किया और उस के सेवक
हुए फिर अरामियों ने अम्मून के सन्तान की सहायता करनी
न चाही॥

बीसवां पर्व्व।

१ और जब बरस बीत गया तो यों हुआ कि जब राजा
संग्राम को निकलते हैं तब यूअब सेना के बीरों को लेके
निकला और अम्मून के सन्तान के देश को उजाड़ दिया और
आके रब्बः को घेर लिया परन्तु दाऊद यरूसलम में ठहर
गया और यूअब ने रब्बः को मारा और उसे नष्ट किया।
२ और दाऊद ने उन के राजा के मुकुट को उस के सिर से
उतार लिया और उसे तौल में तीन सहस्र सात सौ मोहर के
लग भग पाया और उस पर मणि भी थे और वुह दाऊद के
सिर पर धरा गया और वुह नगर में से बहुत सी लूट भी
३ लाया। और उस ने उन लोगों को जो उस में थे बाहर लाके
उन्हें आरों से और लोहे के हेंगों से और कुल्हाड़ों से काट
डाला इसी रीति से दाऊद ने अम्मून के सन्तान के सारे नगरों
से किया और दाऊद के सारे लोग यरूसलम को फिर
आये॥

४ और उस के पीछे ऐसा हुआ कि जज़र में फिलिसतियों से संग्राम

हुआ उस समय हूशती सिबाकी ने दानव के सन्तान सिपई
को मारा और वे बश में किये गये॥
५ और फिलिसतियों से फिर संग्राम हुआ और यऋीर के बेटे
इलहनान ने जऋतैनो जुलियत के भाई लहमी को मारा जिस
के भाले का छड़ जोलाहे के तूर के समान था॥
६ और फिर जात में संग्राम हुआ जहां एक नपा हुआ जन था
जिस की चौबीस अंगुलियां हाथ पांव में छः छः और वुह भी
७ दानव उत्पन्न हुआ। परन्तु जब उस ने इसराएल को तुच्छ
समझा तब दाऊद के भाई सिमआ के बेटे यहूनतन
८ ने उसे घात किया। ये जात में दानव से उत्पन्न हुए
और वे दाऊद के और उस के सेवकों के हाथ से जूझ
गये॥

एक्कीसवां पर्ब्ब।

१ और शैतान इसराएल के बिरुद्ध उठा और इसराएल को
२ गिनाने के लिये दाऊद को उभारा। और दाऊद ने यूअब को
और लोगों के आज्ञाकारियों को कहा कि जाओ बिअरसबः से
दान लों इसराएल को गिनो और उन की गिनती मुझ पास
३ लाओ जिसतें मैं जानूं। तब यूअब ने उत्तर दिया कि परमेश्वर
अपने लोगों को जितने हैं उतने से सौ गुना अधिक बढ़ावे
परन्तु हे मेरे प्रभु राजा क्या वे सब मेरे प्रभु के दास नहीं
फिर मेरा प्रभु यह बात क्यों चाहता है तू क्यों इसराएल के
४ पाप का कारण होगा। तथापि राजा का वचन यूअब पर
प्रबल हुआ इस लिये यूअब बिदा हुआ और सारे इसराएल में
५ से होके यरूसलम में आया। और यूअब ने लोगों की गिनती
दाऊद को दिई और सारे इसराएल ग्यारह लाख खड्गधारी
६ और यहूदाह चार लाख सत्तर सहस्र खड्गधारी थे। परन्तु उस

ने उन में लावी को और बिनयमीन को न गिना क्योंकि राजा
का वचन यूअब को घिनित था॥
७ और ईश्वर इस बात से उदास हुआ इस लिये उस ने
८ इसराएल को मारा। तब दाऊद ने ईश्वर से कहा कि यह
कार्य्य करके मैं ने बड़ा पाप किया है परन्तु अब तेरी बिनती
करता हूं कि अपने दास का पाप मिटा डाल क्योंकि मैं ने
९ बड़ी मूर्खता किई है। और परमेश्वर ने दाऊद के दर्शी जद
१० से कहा। कि जा दाऊद को कह कि परमेश्वर यों कहता है
कि मैं तेरे आगे तीन बात धरता हूं उन में से एक चुन ले
११ जिसतें वही मैं तेरे लिये करूं। सो जद दाऊद पास आया
और उसे कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि तू इन में से
१२ एक ले। अर्थात् तीन बरस का अकाल अथवा अपने बैरी के
आगे तीन मास नष्ट हो जब लों तेरे बैरी के खड्ग आ पड़ें
अथवा तीन दिन परमेश्वर की तलवार अर्थात् मरी देश में
पड़े और परमेश्वर का दूत इसराएल के सारे सिवानों में नाश
किया करे अब इस लिये बता कि मैं अपने प्रेरक के पास क्या
१३ कहूं। तब दाऊद ने जद से कहा कि मैं बड़े सकेत में हूं मैं
परमेश्वर के हाथ में पड़ूं क्योंकि उस की दया बड़ी है परन्तु
मनुष्यों के हाथ में न पड़ूं॥
१४ सो परमेश्वर ने इसराएल पर मरी भेजी और इसराएल में
१५ से सत्तर सहस्र पुरुष गिर गये। और ईश्वर ने यरूसलम को
नष्ट करने के लिये दूत को भेजा और उसे बिनाश करते ही
परमेश्वर देखके उस बुराई के लिये पछताया और उस नाशक
दूत से कहा कि बहुत है हाथ सिकोड़ और परमेश्वर का दूत
१६ यबूसी अरनान के खलिहान के लग खड़ा हुआ। और दाऊद
ने अपनी आखें उठाके अधर में परमेश्वर के दूत को हाथ में
नंगा खड्ग यरूसलम पर बढ़ाये हुए देखा तब दाऊद और

१७ प्राचीन टाट ओढ़े हुए मुंह के बल गिरे । तब दाऊद ने ईश्वर
से कहा कि क्या मैं ने लोगों को नहीं गिनवाया अर्थात् मैं हीं
ने तो पाप किया और निश्चय बुराई किई परन्तु इन भेड़ों
ने क्या किया है कि मरी इन पर पड़े हे मेरे ईश्वर परमेश्वर
मैं तेरी बिनती करता हूं तेरा हाथ मुझ पर और मेरे पिता
के घराने पर पड़े परन्तु अपने इन लोगों पर नहीं ॥
१८ तब परमेश्वर के दूत ने जद को आज्ञा किई कि दाऊद
से कह कि तू चढ़ जा और अरनान यबूसी के खलिहान में परमेश्वर
१९ के लिये एक बेदी स्थापन कर । और जद के कहने पर जो
२० उस ने परमेश्वर के नाम से कहा था दाऊद गया । और
अरनान ने फिरके दूत को देखा और उस के चार बेटों ने उस
के संग आप आप को छिपाया अब अरनान गोहूं पीटता था ।
२१ और ज्यों दाऊद अरनान पास आया त्यों अरनान ने ताका
और दाऊद को देखके खलिहान से बाहर गया और भूमि लों
२२ झुकके दाऊद को दंडवत किई । तब दाऊद ने अरनान से
कहा कि इस खलिहान का स्थान मुझे दे जिसतें मैं उस में
परमेश्वर के लिये एक बेदी बनाऊं तू उस का पूरा दाम
२३ लेके मुझे दे जिसतें मरी लोगों में से थम जावे । और अरनान
ने दाऊद से कहा कि अपने लिये लीजिये और मेरे प्रभु राजा
जो अपनी दृष्टि में भला जानें सो करें देखिये मैं बलिदान की
भेंट के लिये बैलों को और ईन्धन के लिये पीटने की सामग्री
२४ और भोजन की भेंट के लिये गोहूं सब देता हूं । तब दाऊद
राजा ने अरनान से कहा कि नहीं परन्तु निश्चय मैं पूरा दाम
देके मोल लेऊंगा क्योंकि परमेश्वर के लिये मैं तेरा न लेऊंगा
२५ और बिना मोल के बलिदान की भेंट न चढ़ाऊंगा । सो उस
स्थान के लिये दाऊद ने छः सौ शेकल सोना तौलके अरनान
२६ को दिया । तब दाऊद ने परमेश्वर के लिये वहां एक बेदी बनाई

और बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें चढ़ाईं और परमेश्वर
का नाम लिया और उस ने बलिदान के भेंट की बेदी पर आग
२७ के द्वारा से स्वर्ग से उसे उत्तर दिया। और परमेश्वर ने उस दूत
को आज्ञा किई और उस ने अपनी तलवार काठी में डाली॥
२८ उस समय में जब दाऊद ने देखा कि परमेश्वर ने यबूसी
अरनान के खलिहान में उसे उत्तर दिया तब उस ने वहां
२९ बलि चढ़ाया। क्योंकि परमेश्वर का तंबू जो मूसा ने अरण्य में
बनाया और बलिदान के भेंट की बेदी उस समय जिबऊन
३० के ऊंचे स्थान में थी। परन्तु दाऊद ईश्वर से बूझने को उस
के आगे न जा सका क्योंकि परमेश्वर के दूत की तलवार के
कारण वुह डरता था॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ तब दाऊद ने कहा कि यह परमेश्वर ईश्वर का मन्दिर है
और यही इसराएल के लिये बलिदान के भेंट की बेदी है॥
२ और दाऊद ने इसराएल के देश के परदेशियों को एकट्ठा
करने की आज्ञा किई और उस ने ईश्वर के मन्दिर को बनाने
के लिये पत्थर के गढ़वैयों को पत्थर गढ़ने के लिये ठहराया।
३ और दाऊद ने फाटकों के किवाड़े के जोड़ों के लिये और कीलों
४ के लिये बहुत से लोहे पीतल बेतौल सिद्ध किये। और देवदारु
काष्ठ भी बहुताई से क्योंकि सैदानी और सूर के लोग दाऊद
५ पास बहुत देवदारु काष्ठ लाये थे। और दाऊद ने कहा कि
मेरा बेटा सुलेमान तरुण और कोमल है और चाहिये कि
परमेश्वर का मन्दिर बन जाये और अति सुंदर होवे जिस की
कीर्त्ति और ऐश्चर्य्य सारे देशों में फैल जावे मैं अब उस के लिये लैस
करूंगा सो दाऊद ने अपनी मृत्यु से आगे बहुत कुछ लैस किया॥
६ तब उस ने अपने बेटे सुलेमान को बुलाया और इसराएल

के ईश्वर परमेश्वर का मन्दिर बनाने को उसे आज्ञा किई ।
७ और दाऊद ने सुलेमान से कहा कि हे मेरे बेटे मैं जो हूं सो
मेरे ईश्वर परमेश्वर के नाम के लिये मन्दिर बनाने को मेरे
८ मन में था । परन्तु यह कहिके परमेश्वर का बचन मेरे पास
आया कि तू ने बहुत सा लोहू बहाया है और बड़ी बड़ी
लड़ाई किई है तू मेरे नाम के लिये मन्दिर मत बनाना
क्योंकि मेरी दृष्टि में तू ने पृथिवी पर बहुत लोहू बहाया है ।
९ देख तुझ से एक बेटा उत्पन्न हेगा वुह कुशल का जन होगा
और मैं उसे उस की चारों ओर के बैरियों से चैन देऊंगा
क्योंकि उस का नाम सुलेमान होगा और उस के दिनों में मैं
१० इसराएल को कुशल और चैन देऊंगा । वुह मेरे नाम के लिये
मन्दिर बनावेगा और वुह मेरा बेटा और मैं उस का पिता हूंगा और
मैं इसराएल पर उस के राज्य का सिंहासन सदा स्थिर करूंगा।
११ अब हे मेरे बेटे परमेश्वर तेरे साथ होवे और तू भाग्यवान
हो और अपने ईश्वर परमेश्वर का मन्दिर बना जैसा उस ने
१२ तेरे बिषय में कहा है । केवल परमेश्वर तुझे बुद्धि और समझ
देवे और इसराएल के विषय में आज्ञा करे जिसतें तू अपने
१३ ईश्वर परमेश्वर की व्यवस्था पालन करे । यदि तू चौकस होके
परमेश्वर की बिधि और बिचार को जो उस ने इसराएल के
विषय में मूसा को आज्ञा किई पालन करे तब तू भाग्यवान
होगा बलवान हो और साहस कर मत डर और बिस्मित
मत हो ॥
१४ और देख मैं ने अपने दुःख में परमेश्वर के मन्दिर के लिये
एक लाख तोड़ा सोना और दस लाख तोड़ा चांदी और पीतल
और लोहा बेतौल बहुताई से सिद्ध किया है और मैं ने लट्ठे
और पत्थर भी सिद्ध किये हैं और तू उन में और भी मिला
१५ सके । और इस्से अधिक तेरे पास कार्य्यकारी अर्थात् पत्थर

तोड़ और पत्थर और लट्ठे के कार्य्यकारी और हर परकार के
कार्य्य के लिये और सारे प्रकार के गुणी लोग बहुताई से हैं ।
१६ सोना चांदी और पीतल और लोहा अनगिनित हैं उठ और
कार्य्य कर और परमेश्वर तेरे साथ होवे ॥
१७ और दाऊद ने इसराएल के सारे अध्यक्षों को भी अपने
१८ बेटे सुलेमान की सहायता करने की आज्ञा किई । क्या तुम्हारा
परमेश्वर ईश्वर तुम्हारे संग नहीं और उस ने चारों ओर से
तुम्हें चैन नहीं दिया है क्योंकि उस ने देश के निवासियों
को मेरे हाथ में दिया है और परमेश्वर के आगे और उस के
१९ लोगों के आगे देश वश में हुआ है । अब अपने अन्त:करण
और मन को अपने ईश्वर परमेश्वर की खोज में लगाओ इस
लिये उठो और ईश्वर परमेश्वर का पवित्र स्थान बनाओ जिसतें
परमेश्वर की बाचा की मंजूषा को और ईश्वर के पवित्र पात्रों
को उस मन्दिर में जो परमेश्वर के नाम के लिये बनेगा
लाओ ॥

तेईसवां पर्ब्ब ।

१ जब दाऊद बृद्ध और दिनी हुआ तब उस ने अपने बेटे
सुलेमान को इसराएल पर राजा किया ॥
२ और उस ने इसराएल के सारे अध्यक्षों को और याजकों
३ को और लावियों को एकट्ठा किया । और लावी तीस बरस
और उस्से अधिक वय में गिने गये थे और एक एक जन की
४ गिनती अठतीस सहस्र थी । उन से परमेश्वर के मन्दिर के
कार्य्य को बढ़ाने के लिये चौबीस सहस्र थे और प्रधान और
५ न्यायी छ: सहस्र । उस्से अधिक चार सहस्र द्वारपालक और
उन बाजों से जो मैं ने स्तुति के लिये बनाये थे परमेश्वर की
स्तुति के लिये चार सहस्र ॥

६ और दाऊद ने लावियों के अर्थात् गेरसुम क़िहात मिरारी
के बेटों को विभाग विभाग किया ॥
७ । ८ गेरसुमियों में से लगदान और शिमई । लगदान के बेटों
९ में से श्रेष्ठ यहिएल और ज़ेताम और यूएल तीन। शिमई के बेटे
सलूमियत और हज़िएल और हारान तीन ये लगदान के
१० पितरों के श्रेष्ठ । और शिमई के बेटे यहत ज़ीना और यऊस
११ और बरीअ: ये चार शिमई के बेटे । और यहत श्रेष्ठ था और
ज़ीज़: दूसरा परन्तु यऊस और बरीअ: के बेटे बहुत न थे
इस लिये वे अपने अपने पितरों के घराने के समान एक ही
गिनती में थे ॥
१२ क़िहात के बेटे अमराम इसहार हबरून और उज़्ज़िएल
१३ चार । अमराम के बेटे हारून और मूसा और हारून अलग
किया गया था जिसतें अति पवित्र बस्तुन को पवित्र करे वुह
और उस के बेटे परमेश्वर के आगे सदा के लिये धूप जलावें
और उस की सेवा करें और उस के नाम की सदा स्तुति करें।
१४ अब ईश्वर के जन मूसा के बेटों के नाम लावी की गोष्ठियों से थे ।
१५ । १६ मूसा के बेटे गेरसुम और इलिअज़र । गेरसुम के बेटों
१७ में से सबूएल श्रेष्ठ। और इलिअज़र के बेटे रिहबियाह इलिअज़र
के और बेटे न थे परन्तु रिहबियाह के बहुत बेटे थे ।
१८ । १९ इसहार के बेटों में से प्रधान सलूमियत । हबरून के
बेटों में से पहिला यरीयाह दूसरा अमरियाह तीसरा यहज़िएल
२० और चौथा युक़मिआम । उज़्ज़िएल के बेटों में से पहिला मीक:
और दूसरा यस्सीयाह ॥
२१ मिरारी के बेटे मुहली और मूसी मुहली के बेटे इलिअज़र
२२ और क़ीस । और इलिअज़र मर गया और उस के बेटे न थे
परन्तु बेटियां और उन के भाई क़ीस के बेटों ने उन्हें लिया।
२३ मूसी के बेटे मुहली और अद्र और यरीमात तीन ॥

२४ ये लावी के बेटे अपने अपने पितरों के घराने के समान
अर्थात् पितरों में श्रेष्ठ जैसा वे नाम नाम गिने गये थे और
बीस बरस और ऊपर के बय से परमेश्वर के मन्दिर की सेवा
२५ करते थे। क्योंकि दाऊद ने कहा कि इसराएल के ईश्वर
परमेश्वर ने अपने लोगों को चैन दिया है जिसतें वुह सर्बदा
२६ यरूसलम में वास करेगा। और लावियों को आगे को तंबू
२७ और उस की सेवा के किसी पाच को उठाना न पड़ेगा। क्योंकि
दाऊद के अन्त के बचन से लावी बीस बरस और ऊपर से
२८ गिने गये थे। क्योंकि वे परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये
ओसारों और कोठरियों में और सारी पविच बस्तु पविच करने
में और ईश्वर के मन्दिर की सेवा के कार्य्य में हारून के बेटों
२९ के पास बने रहें। और भेंट की रोटी के लिये और चोखे
पिसान और भोजन की भेंट के लिये और अख़मीरी फुलकों के
लिये और तावा में की रोटी के लिये और पुरी के लिये और
३० सारे रीति के तौल और नाप के लिये। और हर सांझ बिहान
को खड़ा होके परमेश्वर की स्तुति और धन्य मान्ने के लिये।
३१ और बिश्रामों में और अमावास्यों में और ठहराये हुए पर्वों में
गिनती से आज्ञा के समान परमेश्वर के आगे परमेश्वर के लिये
३२ नित्य सारे बलिदान की भेंट चढ़ाने के लिये। और जिसतें
वे मंडली के तंबू की रक्षा करें और और पविच स्थान की और
अपने भाई हारून के बेटों की परमेश्वर के मन्दिर की सेवा में
रक्षा करें॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ अब हारून के बेटों के बिभाग हारून के बेटे नदब और
२ अबिहू इलिअज़र और ईतमर। परन्तु नदब और अबिहू
अपने पिता से आगे मर गये और उन के सन्तान न थे इस

कारण इलिअज़र और ईतमर याजक के पद का कार्य्य करते
३ थे। और दाऊद ने उन्हें अर्थात् इलिअज़र के बेटों में से
सदूक़ और ईतमर के बेटों में से अख़िमलिक को उन के पद
के समान उन की सेवा में बांट दिया ॥
४ और ईतमर के बेटों में से और इलिअज़र के बेटों में से
अधिक श्रेष्ठ जन पाये गये और भाग किये गये और इलिअज़र
के बेटों में से और पितरों के घरानों में से सोलह श्रेष्ठ जन
और ईतमर के बेटों में उन के पितरों के घराने के समान
५ आठ जन पाये गये। और एक दूसरे के साथ चिट्ठी के द्वारा
से पवित्र स्थान के और ईश्वर के मन्दिर के अध्यक्षों के लिये
इलिअज़र के बेटों में से और ईतमर के बेटों में से अलग
किये गये ॥
६ और लावियों में से नतनएल लेखक का बेटा समअियाह
राजा के और अध्यक्षों के और सदूक़ याजक के और अबियतर
के बेटे अख़िमलिक के और याजकों के श्रेष्ठ पितरों के और
लावियों के लोगों के आगे लिखा इलिअज़र के लिये एक बिशेष
घराना और एक ईतमर के लिये लिया गया ॥
७ अब पहिली चिट्ठी यहूयरीब की और दूसरी यदैअयाह की।
८ । ९ तीसरी हारिम की चौथी सग़रीन की। पांचवीं मलकियाह
१० की छठवीं मिनयमीन की। सातवीं हक़ूज़ की आठवीं अयिबाह
११ । १२ की। नवीं युशूअ की दसवीं सकनियाह की। ग्यारहवीं
१३ इलयसीब की बारहवीं यक़ीम की। तेरहवीं हूफ़फ़ः की
१४ चौदहवीं यसबिअब की। पंदरहवीं बिलजः की सोलहवीं अमीर
१५ । १६ की। सतरहवीं हज़ीर की अठारहवीं अफसीस की। उन्नीसवीं
१७ फ़तहियाह की बीसवीं हिजक़िएल की। एक्कीसवीं यकीन की
१८ बाईसवीं जमूल की। तेईसवीं दिलायाह की चौबीसवीं मअज़ियाह
की ॥

१६ इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की आज्ञा के समान हारून के
नीचे उन की रीति के समान परमेश्वर के मन्दिर की सेवा में
आने की यह विधि थी ॥
२० और लावियों के उबरे हुए बेटे अमराम के बेटों में से
२१ सुबाएल सुबाएल के बेटों में से यहदियाह। रहबियाह के
२२ विषय में रहबियाह के बेटों में से पहिला इशिया। सलूमियत
२३ इज़हारी के विषय में सलूमियत के बेटों में से यहत। और
हबरून का पहिला बेटा यरीयाह दूसरा अमरियाह तीसरा
२४ यहज़िएल चौथा युक़मिआम। उज्ज़िएल के बेटे मीकः मीकः
२५ के बेटे समीर। मीकः का भाई यस्सीयाह यस्सीयाह के बेटे
२६ ज़करियाह। मिरारी के बेटे मुहली और मूसी यअज़ियाह का
२७ बेटा बेनू। यअज़ियाह से मिरारी के बेटे बेनू और सूहाम
२८ और ज़कूर और इबरी। मुहली से इलिअज़र जिस का कोई
२६ बेटा न था। यह कीस के विषय में कीस का बेटा यरहमिएल।
३० और मूसी के बेटे भी मुहली और अद्र और यरीमात ये लावियों
३१ के बेटे अपने अपने पितरों के घराने के समान। और उन्हों ने
भी दाऊद राजा के और सदूक़ के और अख़िमलिक के और
याजकों के और लावियों के श्रेष्ठ पितरों के आगे अर्थात् विशेष
पितर जो अपने सारे भाइयों पर थे अपने भाई हारून के
बेटों के सन्मुख चिट्ठी डाली ॥

पचीसवां पर्व्व।

१ उस्से अधिक दाऊद और सेना के प्रधान आसफ़ के बेटे
और हीमान के और यदूतून के बेटों की सेवा के लिये उन्हों
को अलग किया जो वीणा और नवल और करताल से भविष्य
कहते थे और वुह कार्य्यों की गिनती उन की सेना के समान
२ थी। आसफ़ के बेटों में से ज़कूर और यूसुफ़ और नतनियाह

और यसरएल आसफ़ के बेटे आसफ़ के हाथ के वश में जो
३ राजा की आज्ञा के समान भविष्य कहते थे। यदूतून से यदूतून
के बेटे से जिदलयाह और सूरी और यसग्रियाह हसवियाह और
मत्तितियाह छः जन अपने पिता यदूतून के हाथ के वश में जो
परमेश्वर की स्तुति और धन्यवाद करने को बीणा से भविष्य कहते
४ थे। हीमान से हीमान के बेटे बूक़ियाह मत्तनियाह उज़्ज़िएल
सबूएल और यरीमात हननियाह हनानी इलियात: जिदलती और
५ रूम्मतीअज़र युसबिक़स: मल्लूती होसीर महज़ियात। ये सब
हीमान के बेटे ईश्वर के वचन राजा के दर्शी नरसिंगा उठाने
के लिये और ईश्वर ने हीमान को चौदह बेटे और तीन बेटियां
६ दिईं। राजा की आज्ञा के समान जो आसफ़ को और यदूतून
को और हीमान को दिई गई थी ये सब परमेश्वर के मन्दिर
में भजन के लिये करताल नवल और बीणा से अपने पिता
के वश में परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये सौंपे गये।
७ सो उन की गिनती उन के भाइयों के संग जो परमेश्वर के भजन
में सिखाये गये थे अर्थात् सब जो निपुण थे सो दो सौ अट्ठासी
थे॥

८ और क्या छोटे क्या बड़े क्या गुरू क्या शिष्य पहरे के
९ सन्मुख उन्हों ने चिट्ठी डाली। और पहिली चिट्ठी यूसुफ़ को
आसफ़ के लिये निकली दूसरी जिदलयाह के लिये जो अपने
१० भाई और बेटे समेत बारह थे। तीसरी ज़कूर के लिये उस
११ के बेटे और भाई बारह। चौथी इसरी के लिये उस के बेटे
१२ और भाई बारह। पांचवीं नतनियाह के लिये उस के बेटे
१३ और भाई बारह। छठवीं बूक़िया के लिये उस के बेटे और
१४ भाई बारह। सातवीं यसरिलाह के लिये उस के बेटे और
१५ भाई बारह। आठवीं यसग्रियाह के लिये उस के बेटे और
१६ भाई बारह। नवीं मत्तनियाह के लिये उस के बेटे और भाई

१७ बारह। दसवीं शिमई के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
१८ ग्यारहवीं अज़रिएल के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
१९ बारहवीं हसबियाह के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
२० तेरहवीं सुबाएल के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
२१ चौदहवीं मत्तितियाह के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
२२ पंद्रहवीं यरीमात के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
२३ सोलहवीं हनानियाह के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
२४ सतरहवीं युसबिक़स: के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
२५ अठारहवीं हनानी के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
२६ उन्नीसवीं मल्लुती के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
२७ बीसवीं इलियात: के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
२८ एक्कीसवीं होसीर के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
२९ बाईसवीं जिद्लती के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
३० तेईसवीं महाज़ियात के लिये उस के बेटे और भाई बारह।
३१ चौबीसवीं रूम्मतीअज़र के लिये उस के बेटे और भाई बारह॥

छब्बीसवां पर्व्व।

१ द्वारपालकों के विभाग के विषय में कोरियों से आसफ़ के
२ बेटों में का क़ारी का बेटा मुसलिमियाह। और मुसलिमियाह
के बेटे पहिलौठा ज़करियाह दूसरा यदीअएल तीसरा ज़बदियाह
३ चौथा यतनिएल। पांचवां ऐलाम छठवां यहूहनान सातवां
४ इलियाहूऐनी। उन से अधिक आबिदअदूम के बेटे समअयाह
पहिलौठा दूसरा यहूज़बद तीसरा यूअख़ चौथा शक्र पांचवां
५ नतनिएल। छठवां अमिएल सातवां इशकार आठवां फ़अलती
६ क्योंकि ईश्वर ने उसे बर दिया। और समअयाह के बेटे
उत्पन्न हुए जो अपने पिता के घराने पर प्रभुता करते थे
७ क्योंकि वे सामर्थी वीर थे। समअयाह के बेटे उतनी और

रफ़एल और आबिद और इलज़बद जिस के भाई इलिहू और
८ समकियाह बलवन्त थे। ये सब आबिदअदूम के बेटों में से
वे और उन के बेटे और उन के भाई सेवा के लिये बल में
६ सामर्थी आबिदअदूम के बासठ। और मुसलिमियाह के बेटे
१० और भाई अठारह जन बलवन्त थे। और मिरारी के सन्तानों
में से हूस: के भी बेटे थे सिमरी श्रेष्ठ क्योंकि वुह पहिलौठा न था
११ तथापि उस के पिता ने उसे श्रेष्ठ किया। दूसरा ख़िलक़ियाह
तीसरा तबलियाह चौथा ज़करियाह हूस: के सारे बेटे और
भाई तेरह॥

१२ इन्हों में से द्वारपाल बिभाग किये गये अर्थात् श्रेष्ठ जनों
में से परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये आम्ने साम्ने पहरे
१३ थे। और क्या छोटे क्या बड़े अपने अपने पितरों के घराने के
१४ समान हर एक फाटक के लिये उन्हों ने चिट्ठी डाली। और
पूरब ओर की चिट्ठी शलमियाह के लिये पड़ी तब उस के बेटे
ज़करियाह जो बुद्धिमान मंत्री था उन्हों ने चिट्ठी डाली और
१५ उत्तर की ओर उस की चिट्ठी निकली। और दक्षिण की ओर
आबिदअदूम के और उस के बेटों के घराने एकट्ठे किये गये
१६ के लिये। सुफ़्फ़ीम के और हूस: के पश्चिम को सलकत के
फाटक सहित जो ऊपर जाने के मार्ग के पहरुओं के सन्मुख
१७ पहरू। पूरब की ओर छ: लावी थे उत्तर की ओर प्रति दिन
चार दक्षिण की ओर प्रति दिन चार सुफ़्फ़ीम की ओर दो दो।
१८ पश्चिम की ओर पार वार के पथ में चार और पार वार में
१९ दो। कोर के और मिरारी के बेटों में द्वारपालकों के ये
बिभाग हैं॥

२० और लावियों में से अख़ियाह ईश्वर के मन्दिर के भंडार
२१ और पवित्र भंडारों पर। लग़दान के बेटों के बिषय में जैरसूनी
लग़दानियों के बेटों में से श्रेष्ठ पितरों का अर्थात् जैरसूनी

२२ लगदान को यहिएल। यहिएल के बेटे जैताम और उस का
२३ भाई यूएल ये परमेश्वर के मन्दिर के भंडार पर थे। अमरामी
२४ के इज़हारी के हबरूनियों के उज्ज़िएलियों के। और मूसा
२५ के बेटे और जैरमूम का बेटा सबूएल भंडार पर था। और
इलिअज़र से उस के भाई उस का बेटा रहबियाह और उस
का बेटा यसअियाह और उस का बेटा यूराम और उस का
२६ बेटा ज़िकरी और उस का बेटा सलूमियत। वही सलूमियत
और उस के भाई सारे पवित्र भंडारों पर थे जो दाऊद राजा
ने और श्रेष्ठ पितरों ने और सहस्रपति और शतपति और
२७ सेनापति ने समर्पण किया था। संग्रामों की लूट में से परमेश्वर
२८ के मन्दिर के कारण उन्हों ने समर्पण किया था। और सब
जो समूएल दर्शी ने और क़ीस के बेटे साऊल ने और नैयिर
के बेटे अबिनैयिर ने और जरूयाह के बेटे यूअब ने समर्पण
किया और जिस किसी ने समर्पण किया था सो सलूमियत के
और उस के भाई के हाथों में था॥
२९ इसहारियों में से कननियाह और उस के बेटे जो इसराएल
के ऊपर बाहर बाहर के कार्य्य के प्रधान और न्याइयों के
३० लिये। हबरूनियों में हसबियाह और उस के भाई एक सहस्र
सात सौ बीर परमेश्वर के सारे कार्य्य और राजा की सारी सेना के
लिये वे यरदन के इस पार पश्चिम की ओर इसराएलियों में
३१ से प्रधान थे। हबरूनियों में से यरीयाह श्रेष्ठ अर्थात् हबरूनी
अपने पितरों की पीढ़ियों के समान दाऊद राजा के चालीसवें
बरस में वे ढूंढ़े गये थे और जिलिअद के यअज़ीर में उस के
३२ महावीर लोग पाये गये। और उस के भाईबन्द दो सहस्र
सात सौ श्रेष्ठ पितर बीर थे जिन्हें दाऊद राजा ने ईश्वर के
विषय के हर एक कार्य्य और राजा के कार्य्य पर रूबिनियों के
और जद्दियों के और मुनस्सी की आधी गोष्ठी पर ठहराया॥

सत्ताईसवां पर्व्व ।

१ अब इसराएल के सन्तान अपनी गिनती के समान अर्थात्
जो पितरों के श्रेष्ठ और सहस्रों के और सैकड़ों के श्रेष्ठ जो
अपनी अपनी पारी की रीति पर राजा की सेवा करते थे जो
बरस के सारे मासों में मास मास आया जाया करते थे हर
एक पारी के लिये चौबीस सहस्र थे ॥
२ पहिली पारी पर पहिले मास के लिये ज़बदिएल का बेटा
३ युसुबिआम और उस की पारी में चौबीस सहस्र थे। फ़ाड़स
सन्तानों में से पहिले मास के लिये सेना के सारे पतियों का
४ श्रेष्ठ था। और दूसरे मास की पारी पर एक अखूही दोदाई
था उस की पारी में मिक़लात भी श्रेष्ठ उस की पारी में चौबीस
५ सहस्र। तीसरे मास के तीसरा सेनापति श्रेष्ठ याजक यहूयदः
का बेटा बिनायाह और उस की पारी में चौबीस सहस्र।
६ यही बिनायाह तीसों में बलवन्त और तीसों से श्रेष्ठ और उस
७ की पारी में उस का बेटा अम्मिज़बद। चौथे मास के लिये
चौथा यूअब का भाई असहेल और उस के पीछे उस का बेटा
८ ज़बदियाह और उस की पारी में चौबीस सहस्र। पांचवें मास
के लिये पांचवां सेनापति इशराक़ी शमूस और उस की पारी में
९ चौबीस सहस्र। छठवें मास के लिये छठवां तक़ूई अक़ीस
१० का बेटा ईरा और उस की पारी में चौबीस सहस्र। सातवें
मास के लिये सातवां इफ़रायम के सन्तान में से फ़लूनी ख़ालिस
११ और उस की पारी में चौबीस सहस्र। आठवें मास के लिये
आठवां शारिका में का हूशाती सिबाकी और उस की पारी में
१२ चौबीस सहस्र। नवें मास के लिये नवां बिनयमीनियों में से
अनताती अबिअज़र और उस की पारी में चौबीस सहस्र।
१३ दसवें मास के लिये दसवां जारही में का नतूफ़ाती महरी और

१४ उस की पारी में चौबीस सहस्र। ग्यारहवें मास के लिये ग्यारहवां
इफ़रायम के सन्तान में का फ़रअतूनी बिनायाह और उस की
१५ पारी में चौबीस सहस्र। बारहवें मास के लिये बारहवां गुतनिएल
में का नतूफ़ाती खुलदी और उस की पारी में चौबीस
सहस्र॥

१६ और भी इसराएल की गोष्ठियों पर रूबिनियों का आज्ञाकारी
ज़िकरी का बेटा इलिअज़र समअूनियों के मअकः का बेटा
१७ सफ़तियाह। लावियों में का क़मूएल का बेटा हसबियाह
१८ हारून में का सदूक़। यहूदाह में का दाऊद के भाइयों में
१९ का इलिहू इशकार में का मीकाएल का बेटा उमरी। ज़बुलून
में का अबदियाह का बेटा इसमाअियाह नफ़ताली में का
२० अज़रिएल का बेटा यरीमात। इफ़रायम के सन्तानों में का
अज़ज़ियाह का बेटा हूसीअ मुनस्सी की आधी गोष्ठी में का
२१ फ़िदायाह का बेटा यूएल। जिलिअद में आधे मुनस्सी में का
ज़करियाह का बेटा इडूबिनयमीन में का अबिनैर का बेटा
२२ यअसिएल। दान में का इरूहम का बेटा अज़रिएल ये इसराएल
की गोष्ठियों के अध्यक्ष॥

२३ परन्तु बीस बरस से और घटती की वय के दाऊद ने
गिनती न लिई इस कारण कि परमेश्वर ने कहा था कि मैं
२४ स्वर्ग के तारों के समान इसराएल को बढ़ाऊंगा। ज़रूयाह के
बेटे यूअब ने गिन्ना आरंभ किया परन्तु इस कारण उस ने
समाप्त न किया कि उस के लिये इसराएल के विरोध में कोप
पड़ा और न वुह गिनती दाऊद राजा के समयों के समाचार
में लिखी गई॥

२५ और राजा के भंडारों पर अदिएल का बेटा अज़िमौत और
नगर में और गांओं में और गढ़ में के भंडारों के खत्तों पर
२६ उज़्ज़ियाह का बेटा यहूनतन था। और भूमि के जोतने बोने

के लिये जो खेतों में कार्य्य करते थे उन पर कलूब का बेटा
२७ अज़री । और दाख बारियों पर रामाती समई और दाख की
बारियों की बढ़ती पर और दाखरस की शाला पर शिफ़मी ज़व्दी ।
२८ और जलपाई के पेड़ों पर और गूलर पेड़ों पर जो नीचे की भूमि
में थे जदरी बअलहनाम और तेल की शाला पर यूआस ।
२९ और ढोर जो सरून में चरते थे सरूनी शिटरी और तराई में
३० के ढोरों पर अदली का बेटा सफ़त । और ऊंटों पर इसमअएली
३१ उबील और गदहों पर मेरूनाती यहदियाह । और झुंडों पर
हजरियज़ीज़ ये सारे दाऊद राजा की संपत्ति के आज्ञाकारी थे ॥
३२ और दाऊद का चचा यहूनतन एक मंत्री और बुद्धिमान
और लेखक था और हकमनी का बेटा यहिएल राजपुत्रों के
३३ संग रहता था । और अख़ितुफ़ल राजमंत्री था और अरकी
३४ हूसी राजा का संगी था । और अख़ितुफ़ल के पीछे बिनायाह
का बेटा यहूयदः और अबियतर था और राजा की सेना का
सेनापति यूअब था ॥

अट्ठाईसवां पर्व्व ।

१ और दाऊद ने इसराएल के सारे अध्यक्षों को अर्थात्
गोष्ठियों के अध्यक्षों को और जथाओं के श्रेष्ठों को जो राजा की
सेवा पारी पारी करते थे और महस्रपतियों को और शतपतियों
को और राजा के और उस के बेटों के ढोर और सारी संपत्ति
के भंडारियों को और श्रेष्ठों और बलवन्तों और सारे बीर समेत
यरूसलम में एकट्ठे किया ॥
२ तब दाऊद राजा अपने पाओं पर उठ खड़ा हुआ और
बोला कि हे मेरे भाइयो और हे मेरे लोगो मेरी सुनो मेरे मन
में था कि परमेश्वर के नियम की मंजूषा के लिये और हमारे
ईश्वर के चरणों की पीढ़ी के लिये विश्राम का मन्दिर बनाऊं

३ और मैं ने बनाने के लिये सिद्ध कर रक्खा था। परन्तु ईश्वर
ने मुझे कहा कि तू मेरे नाम के लिये मन्दिर मत बनाना
४ क्योंकि तू संग्रामी जन है और बहुत लोहू बहाया है। तथापि
इसराएल के ईश्वर परमेश्वर ने मुझे अपने पिता के सारे घराने
से आगे इसराएल पर सदा राज्य करने को चुन लिया क्योंकि
उस ने आज्ञाकारी के लिये यहूदाह को चुना है और यहूदाह
के घराने में से मेरे पिता के घराने को चुन लिया और मेरे
पिता के बेटों में से सारे इसराएल पर राज्य करने के लिये
५ मुझे प्रसन्न किया। और मेरे सारे बेटों में से क्योंकि परमेश्वर
ने मुझे बहुत बेटे दिये हैं उस ने मेरे बेटे सुलेमान को चुन
लिया है कि इसराएल पर परमेश्वर के राज्य के सिंहासन पर
६ बैठे। और उस ने मुझे कहा कि तेरा बेटा सुलेमान वही
मेरा मन्दिर और मेरे आंगन बनावेगा क्योंकि मैं ने उसे चुन
लिया कि वुह मेरा बेटा हो और मैं उस का पिता हूंगा।
७ और भी यदि वुह आज की नाईं मेरी आज्ञा और बिचार पालने
में दृढ़ होगा तो मैं उस के राज्य को सदा लों स्थिर करूंगा।
८ अब इस लिये परमेश्वर की मंडली सारे इसराएल की दृष्टि में
और हमारे ईश्वर के सुन्ने में अपने ईश्वर परमेश्वर की सारी आज्ञा
को ढूंढ़ो और पालन करो जिसतें तुम इस अच्छे देश के
अधिकारी होओ और अपने पीछे अपने सन्तान के लिये सदा
के कारण अधिकार छोड़ जाओ॥
९ और तू हे मेरे बेटे सुलेमान तू अपने पिता के ईश्वर को
जान और सिद्ध अन्तःकरण से और मन की वांछा से उस की
सेवा कर क्योंकि परमेश्वर सारे अन्तःकरणों को और चिंताओं
की सारी भावनाओं को बिचारता है जो तू उसे ढूंढ़ेगा तो वुह
तुझसे पाया जावेगा परन्तु जो तू उसे बिसरावेगा तो वुह तुझे
१० सदा के लिये त्याग करेगा। अब चौकस हो क्योंकि परमेश्वर

ने पवित्र स्थान के लिये मन्दिर बनाने के निमित्त तुझे चुना
है बलवान हो और उसे बना ॥
११ तब दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान को उस ओसारे का
और उस के घरों का और उस के भंडारों का और उस के
ऊपर की कोठरियों का और उस के भीतर की कोठरियों का
१२ और दया के आसन के स्थान का डौल दिया। और उन
सभों का जो वुह आत्मा के द्वारा से रखता था परमेश्वर के
मन्दिर के आंगनों का और सारी कोठरियों और ईश्वर के
मन्दिर के भंडारों का और समर्पण किई हुई वस्तुन के भंडारों
१३ का डौल दिया। और याजकों की और लावियों की पारियों
के लिये और परमेश्वर के मन्दिर की सेवा के सारे कार्य्य के
लिये और परमेश्वर के मन्दिर में सेवा करने के सारे पात्रों के
१४ लिये। भांति भांति की सारी सेवा के सारे सोने के पात्रों के
लिये सोना तौल दिया और चांदी के सारे पात्रों के लिये हर
१५ प्रकार की सेवा के सारे पात्रों के लिये तौल के साथ। और
सोनहुली दीअटों के लिये और उन के सोनहुले दीपकों के
लिये और हर एक दीअट के लिये और उस के दीपकों के
लिये तौल के साथ और चांदी के दीअटों के लिये तौल के
साथ दीअट के लिये और उन के दीपकों के लिये हर एक
१६ दीअट के कार्य्य के समान। भेंट की रोटी के मंचों के लिये
अर्थात् हर एक मंच के लिये सोना तौल दिया और चांदी
१७ के मंचों के लिये चांदी। और मांस के त्रिशूल के लिये और
कटोरे कटोरियों के लिये निर्मल सोना और सोनहुले बासनों
के लिये हर एक बासन के लिये तौल के साथ और हर एक
१८ रूपहुले बासन के लिये तौल दिया। और धूप की बेदी के
लिये चोखा सोना तौल दिया और परमेश्वर के नियम की
मंजूषा को ढांपने के लिये पंख फैलाये हुए करोबियों के रथ के

१९ डोल के लिये सोना दिया। यह सब कार्य्य के डौल के समान
परमेश्वर ने लिखके मुझे अपने हाथ के द्वारा से समझा दिया॥
२० तब दाऊद ने अपने बेटे सुलेमान से कहा कि बलवन्त
और सुहियाव होके कार्य्य कर मत डर और विस्मित मत हो
क्योंकि परमेश्वर ईश्वर मेरा ईश्वर तेरे साथ है वुह तुझ से न
घटेगा और न तुझे त्याग करेगा जब लों तू परमेश्वर के मन्दिर
२१ की सेवा के लिये सारे कार्य्य पूरे न करे। और ईश्वर के मन्दिर
की सारी सेवा के लिये याजकों की और लावियों की पारियों
को देख और तेरे संग सारे कार्य्यकारियों के लिये हर एक
भांति की सेवा के लिये हर एक बांछित गुणी पुरुष और अध्यक्ष
और सारे लोग भी तेरी आज्ञा में होंगे॥

उन्तीसवां पर्व्व।

१ और दाऊद राजा ने सारी मंडली से कहा कि मेरा बेटा
सुलेमान जिसे केवल ईश्वर ने चुना है युवा और कोमल है
और कार्य्य बड़ा क्योंकि वुह भवन मनुष्य के लिये नहीं परन्तु
२ परमेश्वर ईश्वर के लिये है। अब मैं ने अपनी सारी सामर्थ्य
भर अपने ईश्वर के मन्दिर के कारण सिद्ध किया है सोने के
लिये सोना और चांदी के लिये चांदी और पीतल के लिये
पीतल लोहे के लिये लोहा और लकड़ी के लिये लकड़ी और
जड़ने के लिये बैदूर्य्य मणि तेजस्वी पत्थर और नाना रंग के और
सारे प्रकार के बहुमूल्य मणि और मर्मर के पत्थर बहुताई से।
३ और भी इस कारण कि मैं ने अपने ईश्वर के मन्दिर पर
अपना मन लगाया है मैं ने अपनी निज संपत्ति में से उस
पवित्र मन्दिर के लिये सोना और चांदी उन सभों से अधिक
जो मैं ने पवित्र मन्दिर के लिये सोना और रूपा दिया है।
४ अर्थात् मन्दिर की भीत पर मढ़ने के लिये तीन सहस्र तोड़े

सोने अर्थात् ओफ़ीर के सोने और निर्मल चांदी का सात सहस्र
५ तोड़ा। सोना सुनहुले के लिये और रूपा रुपहुले के लिये
और सारे प्रकार के कार्य्य के लिये कार्य्यकारियों के हाथों से
और परमेश्वर को अपनी सेवा देने को आज कौन इच्छा रखता
है॥
६ तब पितरों के प्रधानों ने और इसराएली गोष्ठियों के अध्यक्षों
ने और सहस्र और शतपतियों ने और राजा के कार्य्य के
७ आज्ञाकारियों ने मनमंता चढ़ाया। और ईश्वर के मन्दिर के
कार्य्य के लिये पांच सहस्र तोड़े और दस सहस्र द्राक्रम सोना
और दस सहस्र तोड़ा चांदी और अठारह सहस्र तोड़ा पीतल
८ और एक लाख तोड़ा लोहा दिया। और जिन में मणि पाये
गये उन्हों ने गेरसूनी यहिएल के हाथों से परमेश्वर के मन्दिर
९ के भंडार में दिये। तब लोगों ने आनन्द किया क्योंकि
उन्हों ने मनमंता चढ़ाया इस कारण कि सिद्ध मन से उन्हों
ने परमेश्वर के लिये मनमंता चढ़ाया और दाऊद राजा भी
बड़े आनन्द से आनन्दित हुआ॥
१० इस कारण दाऊद ने सारी मंडली के आगे परमेश्वर का
धन्य माना और दाऊद ने कहा कि हे परमेश्वर हमारे पिता
११ इसराएल के ईश्वर तू सनातन काल के लिये धन्य है। हे
परमेश्वर बड़ाई और पराक्रम और ऐश्वर्य और जय और महिमा
तेरी क्योंकि स्वर्ग और पृथिवी में के सब तेरे हैं हे परमेश्वर
१२ राज्य तेरा और तू सभों पर श्रेष्ठ उभारा हुआ है। और धन
और प्रतिष्ठा तुझी से और तू सभों पर राज्य करता है तेरे हाथ
में पराक्रम और सामर्थ्य बढ़ा और सब को पराक्रम देना तेरे
१३ हाथ में है। सो अब हे हमारे ईश्वर हम तेरा धन्यवाद
करते हैं और तेरे ऐश्वर्यमान नाम की स्तुति करते हैं।
१४ परन्तु मैं कौन और मेरे लोग कौन कि इस रीति से हम

मनमंता चढ़ा सकें क्योंकि तुझ से सब कुछ है और तेरी ही
१५ में से हम ने तुझे दिया है। क्योंकि हम अपने सारे पितरों
के समान तेरे आगे परदेशी और प्रवासी हमारे दिन पृथिवी
१६ पर छाया के समान अस्थिर हैं। हे परमेश्वर हमारे ईश्वर यह
सारी ढेर जो तेरे पवित्र नाम के लिये मन्दिर बनाने के लिये
१७ सिद्ध किई हैं सो तेरे ही हाथ से और सब तेरे ही हैं। हे
मेरे ईश्वर मैं यह भी जानता हूं कि मन को तू जांचता है
और खराई से प्रसन्न है मैं जो हूं सो अपने मन की खराई से
ये सारी वस्तें मनमंती चढ़ाई हैं और आनन्द से मैं ने तेरे
लोगों को जो यहां साक्षात हैं मनमंता तुझे भेंट चढ़ाते देखा
१८ है। हे परमेश्वर हमारे पितर अबिरहाम इज़हाक़ और इसराएल
के ईश्वर तू इसे अपने लोगों के अन्तःकरण की चिन्ता की
भावना में सदा लों रख और अपने लिये उन के मन को सिद्ध
१९ रख। और मेरे बेटे सुलेमान को सिद्ध अन्तःकरण दे जिसतें
तेरी आज्ञाओं साक्षिओं और विधिन को पालन करे और यह
सब माने और उस भवन को बनावे जिस के लिये मैं ने सिद्ध
किया है॥

२० तब दाऊद ने सारी मंडली से कहा कि अब परमेश्वर अपने
ईश्वर का धन्यबाद करो और सारी मंडली ने परमेश्वर अपने
पितरों के ईश्वर का धन्यवाद किया और अपना अपना सिर
२१ झुकाके परमेश्वर को और राजा को दण्डवत किई। और उस
के दूसरे दिन उन्हों ने परमेश्वर के लिये बलि चढ़ाये और
परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंटें चढ़ाईं एक सहस्र बैल और
एक सहस्र मेढ़ा और एक सहस्र मेम्ने उन के पीने की भेंटों सहित
२२ और सारे इसराएल के कारण बहुताई से बलि चढ़ाया। और उसी
दिन बड़ी आनन्दता से परमेश्वर के आगे उन्हों ने खाया पीया
और उन्हों ने दूसरी बेर दाऊद के बेटे सुलेमान को राजा किया

और परमेश्वर के लिये श्रेष्ठ अध्यक्ष होने को उसे अभिषेक और
सदूक़ को याजक किया ॥
२३ तब सुलेमान परमेश्वर के सिंहासन पर राजा होके अपने
पिता दाऊद की सन्ती राज्य पर बैठा और भाग्यमान हुआ और सारे
२४ इसराएल उस के वश में हुए। और सारे अध्यक्षों और सामर्थी
लोगों और दाऊद राजा के सारे बेटे भी सुलेमान राजा के वश
२५ में हुए। और परमेश्वर ने सारे इसराएल की दृष्टि में सुलेमान
को अत्यन्त महान किया और उसे ऐसा राज्य बिभव दिया
कि उस्से आगे इसराएल में किसी राजा का न था ॥
२६ यों यस्सी के बेटे दाऊद ने सारे इसराएल पर राज्य
२७ किया। और उस ने इसराएल पर चालीस बरस राज्य किया
सात बरस उस ने हबरून में और यरूसलम में तेंतीस बरस
२८ राज्य किया। तब वुह प्रतिष्ठा में और धन में और दिनों में
परिपूर्ण अच्छा पुरनिया होके मरा और उस के बेटे सुलेमान ने
२९। ३० उस की सन्ती राज्य किया। अब दाऊद राजा की अगिली
और पिछली क्रिया उस के सारे राज्य सहित और उस का
पराक्रम और जो जो समय उस पर और इसराएल पर और
देशों के सारे राज्यों पर बीता था सो क्या समूएल दर्शी की
पुस्तक में और नातन भविष्यद्वक्ता की पुस्तक में और दर्शी
जद की पुस्तक में नहीं लिखा है ॥

काल के समाचार की
दूसरी पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ अब दाऊद का बेटा सुलेमान अपने राज्य में दृढ़ हुआ
और परमेश्वर उस का ईश्वर उस के साथ था और उसे अत्यंत
२ महान किया। तब सुलेमान ने सारे इसराएल और सहस्रपतिन
और शतपतिन और न्याइयों और सारे इसराएल के हर एक
३ अध्यक्ष और पितरों के प्रधानों से वार्त्ता किई। तब सुलेमान
और उस के साथ इसराएल की सारी मंडली जिबऊन के ऊंचे
स्थान में गई क्योंकि मंडली का तंबू जिसे परमेश्वर के सेवक
४ मूसा ने बन में बनाया सो वहीं था। परन्तु दाऊद ईश्वर की
मंजूषा को क़रयतअरीम से उस स्थान में उठा लाया था जो
उस ने उस के लिये सिद्ध किया था क्योंकि उस ने उस के
५ लिये यरूसलम में एक तंबू खड़ा किया था। और भी अधिक
पीतल की बेदी जिसे हूर के बेटे ऊरी के बेटे बज़िल्लिएल ने
बनाया था वहां परमेश्वर के तंबू के आगे थी और सुलेमान
६ और मंडली उस के पास ढूंढ़ने के लिये आते थे। और सुलेमान
उधर परमेश्वर के आगे पीतल की बेदी को जो मंडली के तंबू
में थी चढ़ गया और उस पर एक सहस्र बलिदान की भेंटें
चढ़ाईं॥

७ उसी रात ईश्वर ने सुलेमान को दर्शन देके कहा कि मांग

८ मैं तुझे क्या देऊं। तब सुलेमान ने ईश्वर से कहा कि तू ने
मेरे पिता दाऊद पर बड़ी दया किई है और उस को संती
९ मुझ से राज्य करवाया है। अब हे परमेश्वर ईश्वर मेरे पिता
दाऊद से अपनी वाचा स्थिर कर क्योंकि तू ने एक लोग पर
जो पृथिवी की धूल की नाईं बहुत हैं मुझे राजा किया है।
१० अब मुझे बुद्धि और ज्ञान दे जिसतें मैं इन लोगों के आगे
बाहर भीतर आया जाया करूं क्योंकि तेरे इन बड़े लोगों का
न्याय कौन कर सक्ता है॥

११ तब ईश्वर ने सुलेमान से कहा इस कारण कि तेरे मन में
था और तू ने संपत्ति और धन अथवा प्रतिष्ठा और अपने बैरियों
का प्राण न चाहा और न जीवन की बढ़ती मांगी है परन्तु अपने
लिये बुद्धि और ज्ञान मांगा है जिसतें मेरे लोगों पर जिन पर
१२ मैं ने तुझे राजा किया है न्याय करे। बुद्धि और ज्ञान तुझे
दिये गये और मैं धन और संपत्ति और प्रतिष्ठा तुझे ऐसी देऊंगा
जैसी तेरे आगे के राजाओं को न दिई और न तेरे पिछलों
१३ को ऐसी होगी। तब सुलेमान जिबऊन के ऊंचे स्थान से
मंडली के तंबू के आगे यरूसलम को आया और इसराएल पर
राज्य किया॥

१४ और सुलेमान ने रथों और घोड़चढ़ों को बटोरा और उस
के चौदह सौ रथ और बारह सहस्र घोड़चढ़े थे जिन्हें उस ने
रथ के नगरों में और यरूसलम में राजा के पास रक्खा॥

१५ और राजा ने यरूसलम में सोने चांदी को पत्थर की नाईं
किया और देवदारु पेड़ों को बहुताई से बनैले गूलर पेड़ों की
१६ नाईं किया। और सुलेमान के लिये घोड़े मिस्र से आते थे
१७ और राजा के बैपारियों के झुंड रोकड़ देके लाते थे। और
मिस्र से छः सौ टुकड़े चांदी पर एक एक रथ और डेढ़ सौ पर
एक एक घोड़ा लाते थे और इसी रीति से हित्तियों के सारे

राजाओं के लिये और अराम के राजाओं के लिये उन के द्वारा
से लाते थे ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ और सुलेमान ने परमेश्वर के नाम के लिये एक मन्दिर
२ और अपने राज्य के लिये एक घर बनाने को ठाना। और
सुलेमान ने सत्तर सहस्र बोझियों और पहाड़ में अस्सी सहस्र
पत्थर तोड़वैयों को और उन पर तीन सहस्र छः सौ कड़ोरों
को ठहराया ॥
३ और सुलेमान ने सूर के राजा हूराम पास कहला भेजा कि
जैसा तू ने मेरे पिता दाऊद से व्यवहार करके एक निवास
स्थान बनाने के लिये उस पास देवदारु काष्ठ भेजा था वैसा
४ मुझ से भी कर। देख मैं अपने ईश्वर परमेश्वर के नाम के और
उस की स्थापना के लिये और उस के आगे सुगंधों का धूप
जलाने के लिये और नित्य की भेंट की रोटी के लिये और
सांझ बिहान के और बिश्रामों और अमावाश्या में और परमेश्वर
हमारे ईश्वर के भारी पर्बों में बलिदान की भेंटों के लिये एक
मन्दिर बनाता हूं यह इसराएल के लिये नित्य की विधि है।
५ और मैं जो मन्दिर बनाता हूं सो महान होगा क्योंकि हमारा
६ ईश्वर सारे देवों से महान है। परन्तु किस ने सामर्थ्य पाई है
कि उस के लिये एक मन्दिर बनावे क्योंकि स्वर्ग और स्वर्गों
का स्वर्ग उसे समा नहीं सक्ता फेर मैं कौन हूं जो उस के लिये
मन्दिर बनाऊं यह केवल इस कारण है कि उस के आगे सुगंध
७ चढ़ाऊं। सो अब मेरे पास एक जन भेज जो सोने और रूपे
और पीतल और लोहे और बैंजनी और किरमी और नीले वर्ण
के सूत का कार्य्य जानता है और चित्रकारी में निपुण है कि
उन कार्य्यकारियों के संग जो यहूदाह और यरूसलम में मेरे

साथ हैं जिन्हें मेरे पिता दाऊद ने ठहराया है काम करें।
८ और देवदारु पेड़ सरो पेड़ और अलगुम पेड़ लुबनान में
से मेरे पास भेज क्योंकि मैं जानता हूं कि तेरे सेवक लुबनान
के लट्ठों को काटने में निपुण हैं और देख मेरे सेवक तेरे
९ सेवकों के साथ होंगे। अर्थात् लट्ठे बहुताई से सिद्ध करने
को क्योंकि जो मन्दिर मैं बनाने पर हूं सो महान और आश्चर्य्यित
१० होगा। और देख मैं तेरे लकड़हार सेवकों को जो लट्ठे काटते
हैं बीस सहस्र नपुये गोहूं के पिसान और बीस सहस्र नपुये जव
और बीस सहस्र कुप्पे दाखरस और बीस सहस्र कुप्पे तेल
देऊंगा॥

११ तब सूर के राजा हूराम ने उत्तर लिखके सुलेमान पास
भेजा इस कारण कि परमेश्वर ने अपने लोगों से प्रेम किया
१२ उस ने तुझ को उन पर राजा बनाया। हूराम ने और भी
कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य है जिस ने स्वर्ग
और पृथिवी को सिरजा जिस ने दाऊद राजा को एक बुद्धिमान
पुत्र दिया जो चतुराई और ज्ञान में निपुण है जिसतें परमेश्वर
के लिये मन्दिर और अपने राज्य के लिये एक भवन बनावे।
१३ और अब मैं ने अपने पिता हूराम के एक गुणवान जन को
१४ जो ज्ञानी है भेजा है। जो दान की लड़कियों में की स्त्री
का बेटा और उस का पिता सूर का एक जन वुह सोना
और चांदी पीतल लोहा पत्थर और लट्ठे बैंजनी नीले
और झीने वस्त्र और लाल कार्य्य का गुणी है और हर
प्रकार के खोदने में प्रवीण जो तेरे गुणवानों के संग और मेरे
प्रभु तेरे पिता दाऊद के गुणवानों के साथ जो कार्य्य उसे
१५ दिया जावेगा वुह हर एक जुगत से निकालेगा। सो अब
मेरे प्रभु ने जो गोहूं और जव और तेल और दाखरस के
१६ विषय में कहा है सो अपने सेवकों के लिये भेजिये। और

तेरे सारे प्रयोजन के समान हम लुबनान में लकड़ी काटेंगे
और बेड़ा बांधके समुद्र से तेरे पास याफ़ा में पहुंचावेंगे और
तू उन्हें यरूसलम में चढ़ाइयो ॥
१७ और उस के पिता दाऊद के गिन्ने के समान सुलेमान ने
इसराएल के देश में के सारे परदेशियों को गिना और वे एक
१८ लाख तिरपन सहस्र छः सौ ठहरे। और उस ने उन में से
सत्तर सहस्र जन बोझिये और अस्सी सहस्र जन पहाड़ में
तोड़वैये और लोगों पर तीन सहस्र छः सौ कड़ोरे ठहराये ॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ तब सुलेमान परमेश्वर के मन्दिर को यरूसलम में मोरियः
पर्बत पर जहां उस के पिता दाऊद ने दर्शन पाया था उस
स्थान में जो दाऊद ने यबूसी अरनान के खलिहान में सिद्ध
२ किया था बनाने लगा। और उस ने अपने राज्य के चौथे
बरस और दूसरे मास की दूसरी तिथि में बनाना आरंभ किया॥
३ अब ईश्वर का मन्दिर बनाने को सुलेमान ने यह पाया
पहिले नाप के समान हाथों से लम्बाई साठ हाथ की और
४ चौड़ाई बीस हाथ की। और आगे के ओसारे की लम्बाई घर
की चौड़ाई के समान बीस हाथ और लम्बाई एक सौ बीस
हाथ और उस ने उसे भीतर निर्मल सोने से मढ़ा ॥
५ और उस्से बड़े घर को उस ने सरो के काठ से पटवाया
जिसे उस ने चोखे सोने से मढ़ा और उस के ऊपर खजूर पेड़
६ और सीकरें रक्खीं। और उस ने घर को शोभित करने के
७ लिये मणि से जड़ा और सोना परवाइम का सोना था। और
उस ने घर को और लट्ठों को और खंभों को और उस की
भीतों को और उस के केवाड़ों को भी सोने से मढ़ा और भीत
पर करोबियों को खोदा ॥

८ और उस ने अत्यंत पवित्र घर बनाया जिस की लम्बाई
घर की चौड़ाई के समान बीस हाथ और उस की चौड़ाई
बीस हाथ और उस ने उसे छः सौ तोड़े चोखे सोने से मढ़ा ।
९ और कीलों की तौल पचास शैकल सोना था और उस ने ऊपर
की कोठरियां सोने से मढ़ीं ॥
१० और उस अत्यंत पवित्र घर में उस ने दो करोबी खोदके
११ बनवाये और उन्हें सोने से मढ़ा । और करोबियों के डैनों
की लम्बाई बीस हाथ एक डैना पांच हाथ का घर की भीत
लों पहुंचा और दूसरा डैना पांच हाथ का दूसरे करोबी के
१२ डैने लों पहुंचा । और दूसरे करोबी का डैना पांच हाथ का
घर की भीत लों पहुंचा और दूसरा डैना पांच हाथ का दूसरे
१३ करोबी के डैने लों मिला था । इन करोबियों के डैने बीस
हाथ लों फैले और वे अपने अपने पांव पर खड़े थे और उन
१४ के मुंह भीतर की ओर थे । और उस ने घूंघट को नीला
और बैंजनी और लाल और झीने सूती कपड़े से बनाया और
उस पर करोबियों को उभारा ॥
१५ और उस ने घर के आगे पैंतीस हाथ लम्बे दो खंभे भी
१६ बनाये और उस के ऊपर के कलस भी पांच हाथ के । और
उस ने ईश्वरीय वाचा में सीकरें बनाईं और खंभों के सिरों पर
लगाईं और एक सौ अनार बनाये और सीकरों पर रक्खे ।
१७ और उस ने मन्दिर के आगे उन खंभों को खड़ा किया एक
दहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर और दहिनी का नाम उस ने
याकीन और बाईं का नाम बुअज़ रक्खा ॥

चौथा पर्व्व ।

१ और उस ने पीतल की बेदी भी बनाई जिस की लम्बाई बीस
हाथ और चौड़ाई बीस हाथ की और उस की ऊंचाई दस हाथ की ॥

२ और उस ने कोर से कोर लों दस हाथ गोल एक ढला
हुआ कुंड बनाया और उस की ऊंचाई पांच हाथ और तीस
३ हाथ की रस्सी उस की चारों ओर जाती थी। और उस के
नीचे बैल की सी सूरत जो उस की चारों ओर थे हाथ भर में
दस कुंड को घेरे हुए थे और ढाले जाने के समय दो पांती
४ बैल ढाले गये। वुह बारह बैलों पर धरा गया था तीन
उत्तर की ओर देखते थे और तीन पश्चिम की ओर देखते थे
तीन दक्षिण की ओर देखते थे और तीन पूरब की ओर देखते
थे और कुंड उन्हीं के ऊपर और उन सभों के पुट्ठे भीतर थे।
५ और उस की मोटाई चार अंगुल की और उस के कोर जैसा
कटोरे के कार्य्य का होता है सोसन के फूल के समान उस में
एक सहस्र सात सौ मन के लग भग की समाई थी॥

६ उस ने दस स्नान पात्र भी बनाये और उन में धोने के
लिये पांच को दहिनी ओर पांच को बाईं अलंग रक्खा और
जो वस्तु बलिदान की भेंट के लिये चढ़ाते थे उन्हीं में धोते
थे परन्तु कुंड याजकों के स्नान के लिये था॥

७ और उन के डौल के समान उस ने सोने की दस दीअट
बनाईं और उन्हें मन्दिर में पांच दहिनी ओर पांच बाईं ओर
रक्खा॥

८ उस ने दस मंच भी बनाये और मन्दिर में पांच दहिनी
ओर पांच बाईं ओर रक्खे और उस ने सोने के सौ कटोरे
बनाये॥

९ उन से अधिक याजकों का आंगन और बड़ा आंगन और
आंगन के केवाड़े भी बनाये और उन के केवाड़ों को पीतल से
१० मढ़ा। और उस ने कुंड को पूरब की दहिनी ओर दक्षिण के
साम्ने रक्खा॥

११ और हूराम ने बर्तन और करछुल और कटोरे बनाये तब

हूराम ईश्वर के मन्दिर के निमित्त सुलेमान राजा के लिये जो
१२ कुछ बनाने को था सब बना चुका । दो खंभे और गोलाई
और दोनों खंभों के ऊपर की चोटी और खंभों के ऊपर के दो
कलशों की गोलाई ढांपने के लिये दो ढपने जाली बनाये ।
१३ और दोनों जाली ढकनों पर चार सौ अनार एक एक जाली पर
दो दो पांती अनार जिसतें खंभों पर के कलशों की दोनों
१४ गोलाइयों को ढांपे । उस ने आधार भी बनाये और उन पर
१५ स्नानपात्रों को रक्खा । एक कुंड और उस के नीचे बारह बैल ।
१६ और उस के पिता हूराम ने बर्तन और करछुल और मांस की कांटियें
और उन की सारी सामग्री सुलेमान राजा के निमित्त परमेश्वर
१७ के मन्दिर के लिये मांजे हुए पीतल से बनाईं । यरदन के
चौगान में सुक्कात और सरीदः के बीच कचली भूमि में राजा
ने उन्हें ढाला ॥
१८ यों सुलेमान ने इन सारे पात्रों को बहुताई से बनाया
१९ क्योंकि पीतल की तौल पाई न जा सकी । और सुलेमान ने
ईश्वर के मन्दिर के सारे पात्रों को और सोने की बेदी को भी
२० और भेंट की रोटी के मंचों को भी बनाया । उन से अधिक
दीअट उन के दीपक समेत बनाईं जिसतें वे चोखे सोने से
२१ ईश्वरीय बाणी के आगे रीति के समान जला करें । और फूल
और दीपक और चिमटे सोने से निर्म्मल सोने से बनाये ।
२२ और छुरियां और कटोरे और करछुल और निर्म्मल सोने की
धूपाचरियां और घर की पैठ और अति पवित्र के भीतर के
केवाड़े और मन्दिर के घर के केवाड़े सोने के ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ यों सारे कार्य्य जो सुलेमान ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये
किये बन चुके और सुलेमान अपने पिता दाऊद की समर्पण

ऋई हुई वस्तुन को ले आया और सोना चांदी और सारे पाचों
को ईश्वर के मन्दिर के भंडारों में रक्खा ॥
२ तब सुलेमान ने दाऊद के नगर अर्थात् सैहून से परमेश्वर
के नियम की मंजूषा को ऊपर लाने के लिये इसराएल के
प्राचीनों को और गोष्ठियों के सारे प्रधानों को अर्थात् इसराएल
के सन्तानों के पितरों के प्रधानों को यरूसलम में एकट्ठा
किया ॥
३ इस लिये सातवें मास के पर्व में इसराएल के सारे मनुष्य
४ राजा पास एकट्ठे हुए। और इसराएल के सारे प्राचीन आये
५ और लावियों ने मंजूषा उठा लिई। और वे मंजूषा को और
मंडली के तंबू को और सारे पवित्र पाचों को जो तंबू में थे
६ याजक और लावी उठा लाये। और सुलेमान राजा ने और
इसराएल की सारी मंडली ने जो उस पास मंजूषा के आगे
एकट्ठे हुए थे इतने भेड़ और बैल के बलिदान चढ़ाये जो
७ बहुताई के मारे गिने नहीं जा सक्ते थे। तब याजक परमेश्वर
के नियम की मंजूषा को उस के स्थान अर्थात् मन्दिर की
ईश्वरीय बाणी अत्यंत पवित्र स्थान में करोबियों के डैनों के
८ नीचे लाये। क्योंकि मंजूषा के स्थान में करोबी डैना फैलाये
हुए थे और करोबियों ने मंजूषा को और उस के बहंगरों को
९ ऊपर से ढांपा। और बहंगर ऐसे लम्बे थे कि उन के सिरे
मंजूषा पर से बाणी के आगे दिखाई देते थे परन्तु बाहर से
१० नहीं दिखाई देते थे और आज लों वहीं हैं। मिस्र से निकलने
से जब परमेश्वर ने इसराएल के सन्तान से नियम किया था
पटियों को छोड़ जिन्हें मूसा ने होरिब में रक्खा था मंजूषा में
कुछ न था ॥
११ और ऐसा हुआ कि जब याजक पवित्र स्थान से निकल
आया क्योंकि सारे याजक जो पाये गये थे और पवित्र किये

१२ गये थे पारी पारी में नहीं ठहरते थे। और आसफ़ के और
हैमान के और यदूतून के सारे लावी गायक भी उन के बेटे
और उन के भाईबन्द समेत झीने सूती कपड़े पहिने हुए
करताल और नबल और बीन लेके बेदी के पूरब के अलंग
खड़े हुए और उन के साथ तुरही बजाते हुए एक सौ बीस
१३ याजक। और जब उन्हों ने तुरही से और करताल से और
बाजे की सामग्री से शब्द उठाया और परमेश्वर की स्तुति किई
क्योंकि वुह भला है और उस की दया सर्वदा के लिये ज्यों
तुरहियां और गायक ने परमेश्वर की स्तुति और धन्यमानके
सुनाया जाने के लिये एक साथ स्वर उठाया यों हुआ कि घर
१४ अर्थात् परमेश्वर का मन्दिर मेघ से भर गया। यहां लों कि
याजक मेघ के मारे सेवा के लिये ठहर न सक्ते थे क्योंकि
परमेश्वर के विभव ने ईश्वर के मन्दिर को भर दिया था॥

छठवां पर्व्व ।

१ तब सुलेमान ने कहा कि परमेश्वर ने कहा है कि मैं गाढ़े
२ अंधकार में बास करूंगा। परन्तु मैं ने तेरे निवास के लिये
एक घर बनाया है और तेरे सर्वदा के रहने के लिये एक
३ स्थान। और राजा ने अपना मुंह फेरके इसराएल की सारी
मंडली को आशीष दिया और इसराएल की सारी मंडली उठ
खड़ी हुई॥

४ और उस ने कहा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य
जिस ने अपने हाथों से वुह संपूर्ण किया जो वुह मेरे पिता
५ दाऊद से अपने मुंह से कहके बोला। कि जब से मैं अपने
लोगों को मिस्र के देश से निकाल लाया मैं अपने नाम के लिये
इसराएल की सारी गोष्ठियों में से मन्दिर बनाने को कोई नगर
न चुना और अपने इसराएल लोगों पर प्रभुता करने को किसी

६ मनुष्य को नहीं चुना। परन्तु मैं ने अपने नाम के लिये
यरूसलम को चुना है और मेरे इसराएल लोगों पर होने के
७ लिये दाऊद को चुन लिया है। अब मेरे पिता दाऊद के मन
में था कि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के नाम के लिये एक
८ मन्दिर बनावे। परन्तु परमेश्वर ने मेरे पिता दाऊद से कहा
इस कारण कि मेरे नाम के लिये तेरे मन में एक मन्दिर बनाना
९ था सो तू ने अच्छा किया कि तेरे मन में था। तथापि तू
वुह मन्दिर न बनाना परन्तु तेरा बेटा जो तेरी कटि से
१० निकलेगा सोई मेरे नाम के लिये मन्दिर बनावेगा। इस लिये
परमेश्वर ने अपने कहे हुए बचन को पूरा किया है क्योंकि मैं
अपने पिता दाऊद के स्थान पर उठा हूं और परमेश्वर की
प्रतिज्ञा के समान इसराएल के सिंहासन पर बैठा हूं और परमेश्वर
इसराएल के ईश्वर के नाम के लिये वुह मन्दिर बनाया है।
११ और मैं ने उस में मंजूषा रक्खी है जिस में परमेश्वर का वुह
नियम है जो उस ने इसराएल के सन्तानों के साथ किया॥
१२ तब वुह इसराएल की सारी मंडली के सान्ने परमेश्वर की
१३ बेदी के आगे खड़ा हुआ और अपने हाथ फैलाये। क्योंकि
सुलेमान ने पांच हाथ लम्बा और पांच हाथ चौड़ा और तीन
हाथ ऊंचा पीतल का एक मंच बनाया था और आंगन के
मध्य में उसे रक्खा और उसी पर खड़ा होके इसराएल की
सारी मंडली के आगे घुठना टेका और स्वर्ग की ओर अपने
हाथ फैलाये॥
१४ और कहा कि हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तेरे तुल्य
स्वर्ग में अथवा पृथिवी में कोई ईश्वर नहीं जो अपने दासों के
लिये जो अपने सारे मन से तेरे आगे चलते हैं नियम और
१५ दया रखता है। क्योंकि तू ने अपने दास मेरे पिता दाऊद से जो
प्रतिज्ञा किई है सो संपूर्ण किया है और अपने मुंह से कहा

१६ और उसे अपने हाथ से पूरा किया जैसा आज है। सो अब
हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर उसे पालन कर जो तू ने
अपने दास मेरे पिता से यह कहके प्रतिज्ञा किई कि तेरे लिये
पुरुष मेरी दृष्टि में न घटेगा कि इसराएल के सिंहासन पर बैठे
यदि तेरे बंश चौकस होके मेरी व्यवस्था पर चलें जैसा तू मेरे
१७ आगे चला है। सो अब हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर जो
वचन तू ने अपने दास दाऊद से कहा है उसे पूरा कर॥
१८ परन्तु क्या निश्चय ईश्वर पृथिवी के मनुष्यों के साथ बास
करेगा देख स्वर्ग और स्वर्गों के स्वर्ग तुझे समा नहीं सक्ते
१६ कितना अधिक यह मन्दिर जो मैं ने बनाया है। इस लिये हे
परमेश्वर मेरे ईश्वर तू अपने दास की प्रार्थना पर और उस की
बिनती पर सुरत लगा और अपने दास की बिनती और प्रार्थना
२० को सुन जो वुह तेरे आगे प्रार्थना करता है। जिसतें तेरी
आंखें रात दिन इस मन्दिर पर अर्थात् इस स्थान पर जिस के
विषय में तू ने कहा है कि मैं अपना नाम उस में स्थापन
करूंगा कि अपने दास की प्रार्थना को जो इस स्थान की ओर
२१ करता है सुने। इस लिये अपने दास की और अपने इसराएल
लोगों की बिनतियां सुन जो वे इस स्थान की ओर करें और तू
अपने निवासस्थान स्वर्ग से सुन और सुनके क्षमा कर॥
२२ यदि कोई अपने परोसी का पाप करे और उस्से किरिया
लेने को उस पर किरिया रक्खी जावे और वुह किरिया इस
२३ मन्दिर में तेरी बेदी के आगे आवे। तब स्वर्ग में से सुन और
अपने दास का न्याय कर जिसतें दुष्ट के सिर पर उस की चाल
का पलटा पड़े जिसतें धर्म्मी अपने धर्म्म के समान पाने को
निर्दोष ठहरे॥
२४ और यदि तेरे इसराएल लोग तेरे विरुद्ध पाप करने के
कारण बैरी के आगे हार जावें और फिरके तेरे नाम को मान

लेवें और प्रार्थना करके इस मन्दिर में तेरे आगे बिनती करें ।
२५ तब तू स्वर्गों में से सुन और अपने इसराएल लोगों का पाप
क्षमा कर और उन्हें इस देश में फिर ला जो तू ने उन्हें और
उन के पितरों को दिया है ॥
२६ जब स्वर्ग बंद हो जावे और उन के पाप के कारण जल
न बरसे जब तू उन्हें कष्ट देता है यदि वे इस स्थान की ओर
प्रार्थना करें और तेरे नाम को मान लेवें और अपने पाप से
२७ फिरें । तब तू स्वर्ग से सुन और अपने दासों का और अपने
इसराएल लोगों का पाप क्षमा कर और उन्हें अच्छा मार्ग बता
जिन में उन्हें चलना उचित है और अपने देश में जिसे तू ने
अपने लोगों को अधिकार के लिये दिया है जल बरसा ॥
२८ यदि देश में अकाल अथवा मरी अथवा झुलस अथवा
लेंढ़ा होवे अथवा टिड्डी अथवा कीड़े हों अथवा उन के बैरी
उन के देश के नगरों में उन्हें घेर लेवें जो कुछ घाव अथवा
२९ रोग होवे । तब जो जो प्रार्थना अथवा बिनती किसी जन से
अथवा अपने सारे इसराएल लोगों से किई जाय जब हर एक
जन अपने ही घाव और अपने ही शोक को पहिचाने और
३० अपने हाथ इस मन्दिर की ओर फैलावे । तब तू अपने रहने
के निवास स्वर्ग से सुन और क्षमा कर और हर एक जन को
उस की सारी चाल के समान जिस का मन तू जानता है
प्रतिफल दे क्योंकि केवल तू मनुष्यों के सन्तान के अंतःकरणों
३१ को जानता है । जिसतें वे तुझे डरके तेरे मार्गों पर अपने
जीवन भर उस देश में जिसे तू ने हमारे पितरों को दिया
है चलें ॥
३२ और जो बिदेशी तेरे इसराएल लोगों में का नहीं है परन्तु
जो तेरे महत नाम और तेरे बलवन्त हाथ और फैलाई हुई
भुजा के लिये दूर देश से आये हैं यदि वे आवें और इस

३३ मन्दिर में प्रार्थना करें। तो तू अपने निवासस्थान स्वर्गों में
से सुन और परदेशी की सारी प्रार्थना के समान कर जिसतें
पृथिवी के सारे लोग तेरे नाम को जानें और तेरे इसराएल
लोगों के समान तुझे डरें और जानें कि इस मन्दिर पर तेरा
नाम कहा जाता है॥

३४ यदि तेरे लोग उस मार्ग से अपने वैरियों से संग्राम करने
को निकलें जिस्से तू उन्हें भेजेगा और वे इस नगर की ओर
जिसे तू ने चुना है और इस मन्दिर की ओर जो मैं ने तेरे
३५ नाम के लिये बनाया है प्रार्थना करें। तो स्वर्ग में से उन की
प्रार्थना और उन की बिनती सुन और उन के पद का पक्ष
कर॥

३६ जब वे तेरे विरोध पाप करें क्योंकि कोई जन नहीं जो
पाप नहीं करता और तू उन से रिसियाके उन्हें वैरी के हाथ
सौंप देवे और वे उन्हें बंधुआई में दूर देश में अथवा समीप
३७ ले जावें। तथापि जिस देश में वे बंधुआई में उठाये जावें
यदि वे अपने मन में चेत करें और अपनी बंधुआई के देश
में फिरें और यह कहिके तेरी प्रार्थना करें कि हम ने पाप
किया है हम ने चूक किया है और दुष्टता से व्यवहार किया
३८ है। वे अपनी बंधुआई के देश में जहां वे उन्हें बंधुआई में
ले गये हैं यदि वे अपने सारे अंतःकरण से और अपने सारे
प्राण से तेरी ओर फिरें और अपने देश की जो तू ने उन के
पितरों को दिया है और उस नगर की ओर जिसे तू ने चुना
है और इस मन्दिर की ओर जो मैं ने तेरे नाम के लिये
३९ बनाया है प्रार्थना करें। तब तू अपने निवासस्थान स्वर्ग में
से उन की प्रार्थना और उन की बिनतियां सुन और उन के
पद का पक्ष कर और जो पाप तेरे लोगों ने किया है क्षमा
कर॥

४० अब हे मेरे ईश्वर मैं बिनती करता हूं कि इस स्थान की
४१ प्रार्थना पर तेरी आंखें खुली और तेरे कान झुके रहें। इस
लिये अब हे परमेश्वर ईश्वर अपने विश्राम स्थान पर उठ जा
तू और तेरी मंजूषा का बल हे परमेश्वर ईश्वर तेरे याजक
मुक्ति से पहिराये जावें और तेरे संत भलाई से आनन्द करें।
४२ हे परमेश्वर ईश्वर तू अपने अभिषिक्त का मुंह मत फेर अपने
दास दाऊद की दया को स्मरण कर॥

सातवां पर्व्व।

१ जब सुलेमान प्रार्थना कर चुका था तब स्वर्ग से आग
उतरी और बलिदान की भेंट और बलिदानों को भस्म किया
२ और परमेश्वर के विभव से मन्दिर भर गया। और याजक
परमेश्वर के मन्दिर में प्रवेश न कर सके क्योंकि परमेश्वर
३ के विभव से परमेश्वर का मन्दिर भर गया था। और जब
इसराएल के सारे सन्तानों ने देखा कि किस रीति से आग और
परमेश्वर का विभव मन्दिर पर उतरा तब उन्हों ने गच पर
भूमि लों मुंह के बल झुकके दंडवत और परमेश्वर की स्तुति
किई कि वुह भला है और उस की दया सर्वदा लों है॥
४ तब राजा और सारे लोगों ने परमेश्वर के आगे बलि चढ़ाये।
५ और सुलेमान राजा ने बाईस सहस्र बैल और एक लाख बीस
सहस्र भेड़ बलि चढ़ाये यों राजा और सारे लोगों ने ईश्वर के
६ मन्दिर की प्रतिष्ठा किई। और याजक और लावी भी परमेश्वर
के बाजे की सामग्री लिये हुए जिन्हें दाऊद राजा ने परमेश्वर
की स्तुति के लिये बनाया था अपने अपने पदों पर खड़े हुए
और दाऊद ने उन के द्वारा से स्तुति किई क्योंकि उस की
दया सर्वदा लों है और याजकों ने उन के आगे तुरही बजाई
७ और सारे इसराएल खड़े हुए। और सुलेमान ने परमेश्वर के

मन्दिर के आगे के आंगन के मध्य को पवित्र किया क्योंकि
वहां उस ने बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटों की चिकनाई
चढ़ाई क्योंकि सुलेमान ने जो पीतल की वेदी बनाई थी उस
में बलिदान की भेंट और भोजन की भेंट और चिकनाई समा
न सकी ॥

८ और उस समय में सुलेमान और उस के साथ सारे इसराएल
की एक अति बड़ी मंडली ने हमात की पैठ से मिस्र की नदी
९ लों सात दिन लों पर्व रक्खा । और आठवें दिन उन्हों ने बड़ा
पर्व्व माना क्योंकि उन्हों ने सात दिन वेदी की प्रतिष्ठा के लिये
१० और सात दिन पर्व के लिये रक्खा । और दाऊद पर और सुलेमान
पर और अपने इसराएल लोगों पर परमेश्वर के अनुग्रह के लिये
उस ने सातवें मास की तेईसवीं तिथि में आनन्दित और मगनता
से लोगों को अपने अपने डेरे को बिदा किया ॥

११ यों सुलेमान परमेश्वर का मन्दिर और राजा का भवन बना
चुका और परमेश्वर के मन्दिर में और अपने भवन में जो जो
कुछ सुलेमान के मन में आया उस ने उसे सिद्ध किया ॥

१२ और परमेश्वर ने रात को सुलेमान को दर्शन दिया और
उसे कहा कि मैं ने तेरी प्रार्थना सुनी है और बलि के घर के
१३ लिये यह स्थान चुन लिया है । जो मैं स्वर्ग को बन्द करूं
जिसतें न बरसे अथवा जो देश नष्ट करने को टिड्डियों को
१४ आज्ञा करूं अथवा जो मैं अपने लोगों में मरी भेजूं । यदि
मेरे लोग जो मेरे नाम से कहाये जाते हैं आप को दीन करके
प्रार्थना करें और मेरा मुंह ढूंढें और अपने दुष्ट मार्गों से फिरें
तो मैं स्वर्ग से सुनूंगा और उन का पाप क्षमा करूंगा और
१५ उन के देश को चंगा करूंगा । अब इस स्थान की प्रार्थना पर
१६ मेरी आंखें खुली रहेंगी और मेरे कान झुके रहेंगे । और अब
मैं ने इस मन्दिर को चुनके इसे पवित्र किया है जिसतें मेरा

नाम सर्वदा इस में रहे और मेरी आंखें और मेरा मन सदा
यहां रहेंगे ॥
१७ और तू जो है जैसा तेरा पिता दाऊद मेरे आगे चलता
था वैसा यदि मेरे आगे चलेगा और मेरी सारी आज्ञा के समान
१८ करेगा और मेरी विधिन और विचार मानेगा। जैसा मैं ने
यह कहके तेरे पिता दाऊद से वाचा बांधी है कि इसराएल
में से तेरे लिये आज्ञाकारी न घटेगा तब मैं तेरे राज्य के
सिंहासन को स्थिर करूंगा ॥
१९ परन्तु मेरी विधिन और आज्ञाओं को जो मैं ने तुम्हारे
आगे रक्खी हैं यदि तुम फिरके छोड़ देओगे और जाके दूसरे
२० देवों की सेवा और पूजा करोगे। तो मैं उन्हें अपने देश से
जो मैं ने उन्हें दिया है उखाड़ डालूंगा और यह मन्दिर जिसे
मैं ने अपने नाम के लिये पवित्र किया है अपनी दृष्टि से दूर
करूंगा और उसे एक कहानी और एक कहावत सारे जातिगणों
२१ में बनाऊंगा। और यह महत मन्दिर इधर के हर एक जानेवाले
पर आश्चर्य्यित होगा यहां लों कि वुह कहेगा कि परमेश्वर ने
२२ इस देश को और इस मन्दिर को क्यों ऐसा किया है। तब
उत्तर दिया जावेगा इस कारण कि उन्हों ने परमेश्वर अपने
पितरों के ईश्वर को जो उन्हें मिस्र के देश से निकाल लाया था
त्याग करके और देवों को गहा है और उन की पूजा और
सेवा किई इस लिये वुह ये सारी बुराई उन पर लाया है ॥

आठवां पर्व्व।

१ और बीस बरस के अन्त में जब कि सुलेमान ने परमेश्वर
२ का मन्दिर और अपने ही भवन को बनाया यों हुआ। कि
जो जो नगर हूराम ने सुलेमान को फेर दिया था सुलेमान ने
उन्हें बनाके इसराएल के सन्तानों को उन में बसाया ॥

३ फिर सुलेमान हमात सूबः में जाके उस पर प्रबल हुआ।
४ और उस ने बन में तदमूर बनाया और हमात में सारे भंडार
५ नगर बनाये। उस ने ऊपर का और नीचे का बेतहोरान भी
बनाये जो अड़ंगे और फाटक और भीत से बाड़ित नगर थे।
६ और बअलात और सारे भंडार नगर जो सुलेमान के थे और
सारे रथ नगर और घोड़चढ़ों के नगर बनाये और जो कुछ
सुलेमान की बांछा थी सो यरूसलम में और लुबनान में और
अपने राज्य के सारे देश में बनाये॥
७ हित्तियों के और अमूरियों के और फ़रज़ियों के और हवियों
के और यबूसियों के बचे हुए सारे लोग जो इसराएल के न
८ थे। परन्तु उन के वंश जो उन के पीछे उस देश में छोड़े
गये जिन्हें इसराएल के सन्तानों ने नष्ट न किया उन्हें सुलेमान
९ ने आज लों करदायक ठहराया। परन्तु इसराएल के सन्तानों
में से सुलेमान ने अपने कार्य्य के लिये किसी को दास न
बनाया क्योंकि वे योद्धा और सेनापति और रथपति और घोड़
चढ़े थे॥
१० और वे सुलेमान राजा के श्रेष्ठ प्रधान थे अर्थात् अढ़ाई सौ
जो लोगों पर प्रभुता करते थे॥
११ और सुलेमान फ़िरऊन की पुत्री को दाऊद के नगर से उस
भवन में लाया जो उस ने उस के लिये बनाया था क्योंकि
उस ने कहा था कि मेरी पत्नी इसराएल के राजा दाऊद के
भवन में न रहेगी इस कारण कि पवित्रता में परमेश्वर की
मंजूषा आई है॥
१२ तब सुलेमान ने परमेश्वर की वेदी पर जो उस ने ओसारे
के आगे बनाई थी परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंटें चढ़ाईं।
१३ अर्थात् मूसा की आज्ञा के समान प्रतिदिन के लिये विश्रामों में
और अमावास्यों में और बरस बरस तीन बार भारी पर्व्वों में

अख़मीरी रोटी के पर्ब्ब में और अठवारों के पर्ब्ब में और तंबुओं
१४ के पर्ब्ब में ठहराये हुए नियम के समान भेंट चढ़ाई। और
उस ने अपने पिता दाऊद के ठहराने के समान याजकों की
पारी सेवा के लिये ठहराई और प्रतिदिन के आवश्यक कार्य्य
के समान याजकों के आगे स्तुति और सेवा करने के लिये
लावियों को और उन की पारी के समान हर एक फाटक में
द्वारपालक भी ठहराया क्योंकि ईश्वर के जन दाऊद की आज्ञा
१५ योंही थी। और वे राजा की आज्ञा से जो उस ने याजकों
और लावियों को किसी विषय में और भंडार के विषय में दिई
१६ थी अलग न हुए। अब सुलेमान के सारे कार्य्य परमेश्वर के
मन्दिर की नेंव डाली जाने के दिन से उस के पूरा होने लों
सिद्ध हुए सो परमेश्वर का मन्दिर बन गया॥
१७ अब सुलेमान समुद्र के तीर अदूम देश में असयूनजब्र को
१८ और अलूत को गया। और हूराम ने अपने दासों के हाथ से
जहाज़ों को और समुद्र के जानकार दासों को उस पास भेजा
और वे सुलेमान के दासों के संग ओफ़ीर को गये और वहां
से साढ़े चार सौ तोड़े सोना सुलेमान राजा पास लाये॥

नवां पर्ब्ब।

१ और जब सबअ़ की रानी ने सुलेमान की कीर्त्ति सुनी तो
वुह अति बड़ी जथा और ऊंटों पर सुगंध द्रव्य लदे हुए और
बहुताई से सोना और मणि लेके गूढ़ प्रश्नों से यरूसलम में
सुलेमान को परखने के लिये आई और सुलेमान पास पहुंचके
२ अपने मन की सारी बातों से उस्से बात चीत किई। और
सुलेमान ने उस के सारे प्रश्नों का उत्तर दिया और सुलेमान
से कोई बात छिपी न रही जो उस ने उस्से न कही हो॥
३ और सबअ़ की रानी ने सुलेमान का ज्ञान और घर जो उस

४ ने बनाया था। और उस के मंच का भोजन और उस के
सेवकों का बैठना और उस के मंचियों का खड़ा होना और
उन का पहिरावा और उस के पानदायक को भी और उन का
पहिरावा और उस चढ़ावा को जिस्से वुह परमेश्वर के मन्दिर
५ में जाता था देखते ही मूर्छित हो गई। तब उस ने राजा
से कहा कि वुह सत्य चर्चा थी जो मैं ने तेरी क्रिया और
६ बुद्धि के विषय में अपने ही देश में सुना था। तथापि जब
लों आके मैं ने अपनी आंखों से नहीं देखा तब लों मैं ने उन
की बातें प्रतीत न किईं और देखिये तेरी बुद्धि की बड़ाई की
आधी भी मुझ से नहीं कही गई मेरे सुन्ने से आप की कीर्त्ति
७ अधिक है। धन्य तेरे जन और धन्य तेरे ये सेवक जो तेरे
८ आगे नित्य खड़े रहते हैं और तेरी बुद्धि सुनते हैं। धन्य
परमेश्वर तेरा ईश्वर जिस ने तुझ से प्रसन्न होके तुझे अपने
सिंहासन पर बैठाया जिसतें तू परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये
राजा होवे इस कारण कि तेरा ईश्वर इसराएल को सदा स्थिर
रखने के लिये उन से प्रेम रखता था इस लिये बिचार और
९ न्याय करने के लिये उस ने तुझे उन पर राजा किया। और
उस ने राजा को एक सौ बीस तोड़े सोने और बहुताई से
सुगंध द्रव्य और मणि दिये और ऐसा सुगंध द्रव्य जैसा कि
सबअ की रानी ने सुलेमान को दिया था वैसा न था॥

१० और हूराम के सेवक भी और सुलेमान के सेवक जो आफ़ीर
११ से सोना लाये अलगुम पेड़ और मणि ले आये। तब राजा
ने उन अलगुम पेड़ों से परमेश्वर के मन्दिर की और राजा के
भवन की छत और गायकों के लिये वीणा और नवल बनाये
और ऐसा यहूदाह के देश में आगे देखने में नहीं आया।
१२ और राजा सुलेमान ने सबअ की रानी को उस की सारी बांछा
जो कुछ उस ने मांगा उन्हें छोड़ जो वुह राजा पास लाई

थों दिया और वुह अपने सेवकों समेत अपने देश को फिर
गई॥

१३ अब सोने की तौल जो बरस भर में सुलेमान पास आया
१४ था सो छः सै। छियासठ तोड़े थे। उस ने सोने को छोड़ जो
बनिये और बैपारी लाये और अरब के सारे राजा और देश के
अध्यक्ष सुलेमान पास सोना चांदी लाये॥

१५ और सुलेमान राजा ने सोना गढ़वाके दो सै फरी बनाईं फरी
१६ पीछे छः सै शेकल सोना लगता था। और पीटे हुए सोने
की तीन सै ढाल बनाईं दस पीछे तीन सै शेकल सोना लगता
था और राजा ने लुबनान के बन के भवन में उन्हें रक्खा॥

१७ और भी राजा ने हाथीदांत का एक महा सिंहासन बनाया
१८ और उसे चोखे सोने से मढ़ा। और उस सिंहासन की छः सांढ़ी
और सोने की एक पीढ़ी सिंहासन से जड़ी थी और आसन की
१९ दोनों ओर हाथ और हाथों के पास दो सिंह खड़े थे। और बारह
सिंह छः सीढ़ियों के इधर उधर खड़े थे वैसा किसी राज्य में
२० नहीं बनाया गया। और सुलेमान राजा के सारे पान पाच सोने के
थे और लुबनान के भवन के सारे पाच चोखे सोने के थे चांदी
का कुछ भी न था सुलेमान के दिनों में उस की कुछ गिनती
२१ न थी। क्योंकि हूराम के सेवकों के साथ राजा के जहाज़
तरसीस को जाते थे और तीन तीन बरस पीछे तरसीस के
जहाज़ सोना चांदी और हाथीदांत और बांदरों को और मोरों
को लाते थे॥

२२ और सुलेमान राजा धन में और ज्ञान में पृथिवी के सारे
२३ राजाओं से बढ़ गया। और जो बुद्धि ईश्वर ने सुलेमान के
अंन्तःकरण में डाली थी उसे सुन्ने को पृथिवी के सारे राजा
२४ उस्से भेंट करने की लालसा रखते थे। और उन में से हर
एक जन चांदी के पाच और सोने के पाच और वस्त्र और शस्त्र

और सुगंध द्रव्य और घोड़े और खच्चर नियम के साथ बरस
बरस लाता था॥
२५ और घोड़ों के और रथों के लिये सुलेमान के चार सहस्र
थान थे और उस के बारह सहस्र गोड़चढ़े थे जिन्हें उस ने
रथ नगरों में और यरूसलम में राजा के पास रक्खा॥
२६ और उस ने नदी से लेके फ़िलिसतियों के देश लों और
२७ मिस्र के सिवाने लों सारे राजाओं पर राज्य किया। और राजा
ने यरूसलम में चांदी को पत्थरों के समान और देवदारु पेड़
को बनैले गूलर की नाईं जो चौगान में बहुताई से हैं किया।
२८ और वे मिस्र से और सारे देशों से सुलेमान पास घोड़े लाये॥
२९ अब सुलेमान की रही हुई क्रिया आदि और अंत सो क्या
नातन भविष्यद्वक्ता के वचन में और ऋख़ियाह शिलोनी की
भविष्यवाणी में और नबात के बेटे यरूबिआम के विरोध के
३० दर्शी ईदू के दर्शनों में नहीं लिखा है। और सुलेमान ने
यरूसलम में सारे इसराएल पर चालीस बरस राज्य किया।
३१ उस के पीछे सुलेमान ने अपने पितरों में शयन किया और
अपने पिता दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस के बेटे
रहबिआम ने उस की संती राज्य किया॥

दसवां पर्व्व।

१ और रहबिआम सिकम को गया क्योंकि सारे इसराएल उसे
राजा करने को सिकम में आये थे॥
२ और ऐसा हुआ कि जब नबात के बेटे यरूबिआम ने जो
मिस्र में था और सुलेमान राजा के आगे से जहां भाग निकला
३ था सुना तब यरूबिआम मिस्र से फिर आया। और लोगों ने
भेजके उसे बुलाया सो यरूबिआम और सारे इसराएल आये
४ और यह कहके रहबिआम से बोले। कि तेरे पिता ने हमारे

जूआ को शोगवार किया सो अब अपने पिता की शोगवार सेवा
आर उस के भारी जूआ को जो उस ने हम पर रक्खा था कुछ
५ हलका कीजिये और हम तेरी सेवा करेंगे। और उस ने उन्हें
कहा कि तीन दिन पीछे मेरे पास फिर आओ और लोग बिदा
हुए॥

६ और राजा रहबिआम ने प्राचीनों से जो उस के पिता के
जीते जी उस के आगे खड़े होते थे यह कहके परामर्श किया
७ कि इन लोगों को क्या उत्तर देने को मंच देते हो। और वे
यह कहके उसे बोले कि यदि तू उन लोगों की भलाई के
लिये उन की इच्छा रक्खे और उन से अच्छी अच्छी बातें कहे
८ तो वे सदा तेरे सेवक बने रहेंगे। परन्तु उस ने प्राचीनों के
मंच को त्याग किया और उन तरुणों से जो उस के साथ बढ़े
९ थे परामर्श किया। और उस ने उन्हें कहा कि जिन्हों ने मुझ
से यह कहके पूछा कि जो जूआ तेरे पिता ने हम पर रक्खा
था उसे कुछ हलका कर तुम लोग क्या मंच देते हो हम उन्हें
१० क्या उत्तर देवें। और जो उस के साथ बढ़े थे यह कहके
बोले कि जिन लोगों ने तुझ से यह कहा कि तेरे पिता ने
हमारा जूआ भारी किया परन्तु तू हमारे लिये उसे कुछ हलका
कर तू उन्हें यह उत्तर दे कि मेरी कनगुरिया मेरे पिता की
११ कटि से अधिक मोटी होगी। क्योंकि जैसा कि मेरे पिता ने
भारी जूआ तुम पर रक्खा था मैं तुम्हारे जूआ में अधिक
मिलाऊंगा मेरे पिता ने तुम्हें कोड़े से ताड़ना किई परन्तु मैं
बिच्छुओं से ताड़ना करूंगा॥

१२ सो राजा के कहने के समान कि तीसरे दिन मेरे पास फिर
आओ वैसा ही यरूबिआम और सारे लोग तीसरे दिन रहबिआम
१३ पास आये। और राजा ने कठोरता से उन्हें उत्तर दिया और
१४ रहबिआम राजा ने प्राचीनों के मंच को त्यागा। और यह

कहके तरुणों के मंच के समान उन्हें उत्तर दिया कि मेरे पिता
ने तुम्हारा जूआ भारी किया था परन्तु मैं उसे बढ़ाऊंगा मेरे
पिता ने कोड़े से तुम्हें ताड़ना किई थी परन्तु मैं तुम्हें विच्छुओं
से ताड़ना करूंगा ॥
१५ सो राजा ने लोगों की न सुनी क्योंकि यह ईश्वर की ओर
से था कि उस बात को जो उस ने शैलूनी अख़ियाह के द्वारा
१६ से नबात के बेटे यरुबिग्राम से कहा था उसे पूरा करे। और
जब सारे इसराएल ने देखा कि राजा ने उन की न सुनी तो
यह कहके राजा को उत्तर दिया कि दाऊद में हमारा क्या
भाग और यस्सी के बेटे में हमारा अधिकार नहीं हे इसराएल
हर एक जन अपने अपने डेरे को चलें अब हे दाऊद अपने
ही घर को देख तब सारे इसराएल अपने अपने डेरों को गये।
१७ परन्तु इसराएल के सन्तान पर जो यहूदाह के नगरों में रहते
थे रहबिग्राम ने राज्य किया ॥
१८ तब रहबिग्राम राजा ने हदूराम को जो कर का अध्यक्ष
था भेजा परन्तु इसराएल के सन्तानों ने उसे पत्थरवाह करके
मार डाला तब राजा रहबिग्राम आप को दृढ़ कर रथ पर
१९ चढ़के यरूसलम को भागा। और इसराएल दाऊद के घराने
से आज लों फिरे रहे ॥

ग्यारहवां पर्व्व ।

१ और जब रहबिग्राम यरूसलम में आया तब उस ने
यहूदाह के और बिनयमीन के घरानों में से एक लाख अस्सी
सहस्र चुने हुए योधाओं को इसराएल से लड़ने के लिये एकट्ठे
२ किया जिसतें राज्य को रहबिग्राम की ओर फेर लावें। परन्तु
परमेश्वर का वचन ईश्वर के जन समअियाह पास यह कहके
३ पहुंचा। कि यहूदाह के राजा सुलेमान के बेटे रहबिग्राम से

और यहूदाह और बिनयमीन में के सारे इसराएल से कह ।
४ कि परमेश्वर यों कहता है कि चढ़ मत जाइयो और अपने
भाइयों से मत लड़ियो हर एक जन अपने अपने घर जाय
क्योंकि यह बात मुझ से हुई है और उन्हों ने परमेश्वर के
बचन को माना और यरूबिश्राम के बिरुद्ध चढ़ जाने से फिर
आये ॥
५ और रहबिश्राम ने यरूसलम में बास किया और बचाव
६ के लिये यहूदाह में नगर बनाये । और उस ने बैतलहम और
७ ऐताम और तकूअ । और बैतसूर और शोको और अदूलाम ।
८ । ९ और जात और मरीसः और जैफ़ । और अदूरैम और
१० लकीस और अज़ीकः । और सुरअः और ऐयलून और हबरून
११ बनाये ये यहूदाह और बिनयमीन में बाड़ित नगर हैं । और
उस ने गढ़ों को दृढ़ किया और उन में प्रधानों को और
१२ भोजन और तेल और दाखरस एकट्ठे किये । और उस ने हर
एक नगर में ढाल और बरछी रखके उन्हें अति दृढ़ किया
१३ और यहूदाह और बिनयमीन उस की ओर थे । और याजक
और लावी जो सारे इसराएल में थे अपने सारे सिवानों में से
१४ उस पास आये । क्योंकि लावी अपना अपना गांव और अधिकार
छोड़ छोड़ यहूदाह में और यरूसलम में आये क्योंकि यरूबिश्राम
और उस के बेटों ने उन्हें परमेश्वर के आगे याजक के पद की
१५ सेवा से अलग किया । और उस ने ऊंचे स्थानों के और बनैले
पशुओं के और बछड़ों के लिये जो उस ने बनाये थे याजकों
१६ को ठहराया । और इसराएल की सारी गोष्ठी में से जितनों ने
इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की खोज के लिये अपना मन लगाया
सब यरूसलम में अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के लिये बलि
१७ चढ़ाने को उन के पीछे आये । सो उन्हों ने यहूदाह का राज्य
पोढ़ किया और तीन बरस लों सुलेमान के बेटे रहबिश्राम को

दृढ़ किया क्योंकि वे तीन वरस दाऊद के और सुलेमान के मार्ग
पर चलते थे ॥
१८ और रहबिआम ने दाऊद के बेटे यरीमात की बेटी महलत
को और यस्सी के बेटे इलिअव की बेटी अबिखैल को पत्नी
१९ किया। और वुह उस के लिये बालक जनी अर्थात् यऊस और
२० समरियाह और ज़हम। और उस के पीछे उस ने अबिसलुम की
बेटी मअ्रक: को लिया जो उस के लिये अबियाह को और अत्ती
२१ को और ज़ीज़ा को और सलूमियत को जनी। और रहबिआम अपनी
सारी पत्नियों से और सहेलियों से अबिसलुम की बेटी मअ्रक: को
अधिक प्यार करता था क्योंकि उस ने अठारह पत्नी और साठ
सहेलियां किईं थीं और उस्से अट्ठाईस बेटे और साठ बेटियां
२२ उत्पन्न हुईं। और रहबिआम ने मअ्रक: के बेटे अबियाह को
राजा करने को श्रेष्ठ और अपने भाइयों पर आज्ञाकारी किया।
२३ और उस ने चतुराई से कार्य्य किया और यहूदाह और बिनयमीन
के सारे देशों और हर एक बाड़ित नगरों में से अपने बेटों
को बांट दिया और उन्हें बहुताई से भोजन दिया और उस
ने बहुत पत्नियां चाहीं ॥

बारहवां पर्व्व ।

१ और यों हुआ कि जब रहबिआम ने राज्य को स्थिर किया
और अपने को दृढ़ किया था तब उस ने और उस के साथ
सारे इसराएल ने परमेश्वर की व्यवस्था को छोड़ दिया ॥
२ और रहबिआम राजा के पांचवें वरस में यों हुआ कि मिस्र
का राजा सीसक़ यरूसलम पर चढ़ आया क्योंकि उन्हों ने
३ परमेश्वर के विरुद्ध अपराध किया। वुह बारह सौ रथ और
साठ सहस्र घोड़चढ़े लेके आया और लूबी और सुक्की और
हबशी लोग जो उस के साथ मिस्र से निकल आये अनगणित

४ थे। और उस ने यहूदाह के बाड़ित नगरों को ले लिया और
५ यरूसलम में आया। तब समअ्रैयाह भविष्यद्वक्ता ने रहबिआम
पास और यहूदाह के अध्यक्षों के पास जो सीसक के कारण
यरूसलम में एकट्ठे थे आके उन्हें कहा कि परमेश्वर यों कहता
है कि तुम ने मुझे त्यागा है इस लिये मैं ने तुम्हें भी सीसक
६ के हाथ में छोड़ दिया है। और इसराएल के अध्यक्षों ने और
राजा ने आप आप को नम्र किया और कहा कि परमेश्वर
७ धर्म्मी है। और जब परमेश्वर ने देखा कि उन्हों ने अपने को
नम्र किया तब परमेश्वर का वचन यह कहके समअ्रैयाह पास
आया कि उन्हों ने अपने को नम्र किया है मैं उन्हें नाश
न करूंगा परन्तु उन का कुछ बचाव करूंगा और मेरा कोप
८ सीसक के हाथ से यरूसलम पर उंडेला न जायगा। तथापि
वे उस के सेवक होंगे जिसतें वे मेरी सेवा और देशों के राज्यों
९ की सेवा जानें। सो मिस्र का राजा सीसक यरूसलम के विरुद्ध
चढ़ आया और परमेश्वर के मन्दिर का भंडार और राजभवन
का भंडार ले लिया उस ने सब कुछ ले लिये वुह सोने की
१० ढालों को भी जो सुलेमान ने बनवाई थीं ले गया॥ और
उन की सन्ती रहबिआम राजा ने पीतल की ढालें बनवाईं
और राजभवन के प्रवेश के पहरुओं के प्रधान को सौंप दिईं।
११ और जब राजा परमेश्वर के मन्दिर में जाया करता था तब
पहरू आते थे और उन्हें लेके जाते थे और पहरू की कोठरी
१२ में फेर लाते थे। और जब उस ने अपने को नम्र किया तब
परमेश्वर का कोप उस्से यहां लों फिरा कि उस ने उसे सर्वथा
नाश न किया और यहूदाह में भी कुछ भलाई रही॥
१३ सो रहबिआम राजा ने आप को यरूसलम में दृढ़ करके
राज्य किया क्योंकि रहबिआम ने एकतालीस बरस के वय में
राज्य करना आरंभ किया और उस ने उस नगर में अर्थात्

यरूसलम में सत्रह बरस राज्य किया जो परमेश्वर ने इसराएल
की सारी गोष्ठियों में से अपने नाम के लिये चुना था और
उस की माता का नाम नअमः था जो एक अम्मूनी थी ।
१४ और उस ने परमेश्वर के खोज में अपना मन न लगाने से बुराई
किई ॥
१५ अब रहबिआम की क्रिया का आदि और अंत क्या
समअयाह भविष्यद्वक्ता के और वंशावली के विषय में ईदू दर्शी
के वचन में नहीं लिखा है और रहबिआम और यरूबिआम
१६ में संग्राम नित्य रहा किया । और रहबिआम ने अपने पितरों
में शयन किया और दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस का
बेटा अबियाह उस की सन्ती राज्य पर बैठा ॥

तेरहवां पर्व्व ।

१ यरूबिआम राजा के अठारहवें बरस में अबियाह ने यहूदाह
२ पर राज्य करना आरंभ किया । उस ने यरूसलम में तीन
बरस राज्य किया और उस की माता का नाम मीकायाह था
जो जिबअः के ऊरिएल की बेटी थी और अबियाह में और
यरूबिआम में संग्राम रहा ॥
३ और अबियाह ने चार लाख महावीर चुने हुए योद्धा की
गठी हुई सेना से संग्राम में पांती बांधी और यरूबिआम ने
भी उस के विरोध में आठ लाख चुने हुए बलवन्त बीरों से
संग्राम में पांती बांधी ॥
४ और अबियाह ने समरायम पहाड़ पर जो इफ़रायम पहाड़
में है खड़ा होके कहा कि हे यरूबिआम और सारे इसराएल
५ मेरी सुनो । क्या तुम्हें जान्ने को उचित नहीं कि परमेश्वर
इसराएल के ईश्वर ने इसराएल का राज्य दाऊद को सदा के
लिये दिया उस को और उस के बेटों को लोन के बाचा के

६ साथ दिया। तथापि नवात का बेटा यरूबिस्राम जो दाऊद
के बेटे सुलेमान का एक सेवक था उठा है और अपने प्रभु के
७ विरोध में फिर गया। और उस की ओर तुच्छ लोग और दुष्ट
जन के सन्तान एकट्ठे हुए हैं और जब रहबिस्राम तरुण और
कोमल मन था और उन का साम्ना न कर सक्ता था तब उन्हों ने
आप को सुलेमान के बेटे रहबिस्राम के विरुद्ध दृढ़ किया है।
८ सो अब तुम लोग चाहते हो कि परमेश्वर के राज्य का जो
दाऊद के बेटों के हाथ में है साम्ना करो और तुम लोग बड़ी
मंडली हो और तुम्हारे संग सोने के बछड़े हैं जिन्हें यरूबिस्राम
९ ने तुम्हारे लिये देव बना रक्खा है। क्या तुम लोगों ने परमेश्वर
के याजकों को अर्थात् हारून के बेटों को और लावियों को
दूर नहीं किया और देश के जातिगणों की नाईं अपने लिये याजक
नहीं बनाये यहां लों कि जो कोई आप को पवित्र करने के
लिये एक बैल और सात मेढ़े ले आया सो अदेवों का याजक
१० हुआ। परन्तु हम लोग जो हैं सो परमेश्वर हमारा ईश्वर है और
हम ने उसे त्याग नहीं किया है और याजक जो परमेश्वर की
सेवा करते हैं सो हारून के बेटे हैं और लावी अपने अपने
११ कार्य्य पर हैं। और वे परमेश्वर के लिये हर सांझ बिहान को
बलिदान की भेंटें और सुगंध जलाते हैं और पवित्र मंच पर भेंट
की रोटी रखते हैं और हर सांझ के लिये सोने की दीअट
और उन के दीआ समेत क्योंकि हम लोग परमेश्वर अपने ईश्वर
के बारने के लिये ठहराये हुए कार्य्य को पालन करते रहते
१२ हैं परन्तु तुम लोगों ने उसे त्याग किया है। और देख परमेश्वर
आप सेनापति होने के लिये हमारे संग है और तुम्हारे विरुद्ध
उस के याजक तुरही के शब्दों के साथ चिताने को हैं हे
इसराएल के सन्तानो अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के विरुद्ध
संग्राम मत करो क्योंकि तुम लोग भाग्यमान न होओगे॥

१३ परन्तु यरूबिआम ने उन के पीछे घूमके ठुक्के को बैठवाया
यहां लों कि वे यहूदाह के आगे और ठुक्के उन के पीछे हुए ।
१४ और जब यहूदाह ने पीछे दृष्टि किई तो क्या देखता है कि
संग्राम आगे पीछे है और उन्हों ने परमेश्वर की प्रार्थना किई
१५ और याजकों ने तुरहियों से शब्द किया । तब यहूदाह के
लोगों ने ललकारा और यहूदाह के ललकारने से यों हुआ कि
ईश्वर ने अबियाह के और यहूदाह के आगे से यरूबिआम को
१६ और सारे इसराएल को मारा । और इसराएल के सन्तान
यहूदाह के आगे से भाग गये और ईश्वर ने उन्हें उन के हाथ
१७ में सौंप दिया । तब अबियाह और उस के लोगों ने बड़ी
जूझ से उन्हें जूझाया सो इसराएल में के पांच लाख चुने हुए
१८ जन जूझ गये । यों इसराएल के सन्तान उस समय बश में
किये गये और यहूदाह के सन्तानों ने इस कारण जय पाया
कि उन्हों ने अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर पर भरोसा रक्खा।
१९ और अबियाह ने यरूबिआम को खेदा और उस्से नगर ले
लिये अर्थात् बैतएल और उस के गांव और यासन: और उस
२० के गांव और इफ़रायम और उस के गांव । और अबियाह के
दिनों में यरूबिआम ने फेर बल न पकड़ा और परमेश्वर ने
उसे मारा और वुह मर गया ॥

२१ परन्तु अबियाह सामर्थी हुआ और चौदह पत्नियां किईं और
उस्से बाईस बेटे और सोलह बेटियां उत्पन्न हुईं ॥

२२ और अबियाह की रही हुई क्रिया और उस की चाल और
कहावत क्या इंदू भविष्यद्वक्ता के टीका में नहीं लिखा है ॥

चौदहवां पर्व्व ।

१ सो अबियाह ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों
ने दाऊद के नगर में उसे गाड़ा और उस के बेटे असा ने उस

की संती राज्य किया उस के दिनों में देश में दस बरस चैन
रहा ॥
२ और असा ने अपने ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में भला और
३ ठीक किया। क्योंकि उस ने ऊपरी बेदियों को और ऊंचे स्थानों
को दूर किया और मूर्त्तिन को तोड़ा और कुंजों को काटके गिरा
४ दिया। और यहूदाह को आज्ञा किई कि परमेश्वर अपने
पितरों के ईश्वर को खोजो और व्यवस्था और आज्ञा को पालन
५ करो। और उस ने यहूदाह के सारे नगरों में से ऊंचे स्थान
और सूर्य्य की मूर्त्तिन को दूर किया और उस के आगे राज्य
को चैन मिला ॥
६ और उस ने यहूदाह में बाड़ित नगर बनवाये क्योंकि देश
में चैन था और उन बरसों में संग्राम न हुआ क्योंकि परमेश्वर
७ ने उसे चैन दिया था। इस लिये उस ने यहूदाह को कहा
कि जब लों देश हमारे आगे है चलो हम ये नगर बनावें
और चारों ओर भीत और गुम्मट और फाटक और अड़ंगे
बनावें इस कारण कि हम ने परमेश्वर अपने ईश्वर को खोजा
है हम ने खोजा है और उस ने हमें चारों ओर से चैन दिया
८ है सो उन्हों ने बनाया और सुफल हुए। और यहूदाह में असा
की एक सेना तीन लाख की थी जो फरी और भाला उठाती
थी और बिनयमीन में से जो ढाल उठाते और धनुष चलाते
थे दो लाख अस्सी सहस्र थे ये सब के सब बलवन्त बीर थे ॥
९ और उन के विरुद्ध कूसी ज़ारिह दस लाख की एक सेना
१० को और तीन सौ रथों को लेके मरीसः को आये। तब असा
उस के बिरुद्ध में निकला और उन्हों ने मरीसः के सफात की
११ तराई में संग्राम की पांती बांधी। और असा ने परमेश्वर अपने
ईश्वर की प्रार्थना किई और कहा हे परमेश्वर तेरे लिये कुछ
नहीं चाहे बहुत से चाहे निर्बलों से सहायता करे सो

हे परमेश्वर हमारे ईश्वर सहायता कर क्योंकि हम लोग तुझ
पर आशा रखते हैं और तेरे नाम से इस मंडली के बिरुद्ध
जाते हैं सो हे परमेश्वर हमारे ईश्वर मनुष्य तेरे बिरुद्ध जय
१२ न पावें । सो परमेश्वर ने असा के और यहूदाह के आगे से
१३ कूसियों को मारा और कूसी भागे । फिर असा और उस के
साथी लोगों ने उन्हें जिरार लों खेदा और कूसी ऐसा ध्वस्त
हुए कि फेर आप को संभाल न सके क्योंकि वे परमेश्वर के
आगे और उस की सेना के आगे नष्ट किये गये और वे बहुत
१४ सी लूट ले गये । और उन्हों ने जिरार को चारों ओर के
सारे नगरों को मारा क्योंकि परमेश्वर का डर उन पर पड़ा
और उन्हों ने सारे नगरों को लूट लिया क्योंकि उन में बड़ी
१५ लूट थी । और उन्हों ने ढोरों के डेरों को भी मारा और भेड़ों
को और ऊंटों को बहुताई से लेके यरूसलम को फिरे ॥

पंदरहवां पर्व्व ।

१ अब ईश्वर का आत्मा आदिद के बेटे अज़रियाह पर आया ।
२ और वुह असा के आगे गया और उसे कहा कि हे असा और
सारे यहूदाह और बिनयमीन हमारी सुनो जब लों तुम लोग
परमेश्वर के संग हो तब लों वुह तुम्हारे संग है और यदि
उसे ढूंढ़ोगे तो वुह तुम्हें मिलेगा परन्तु यदि उसे त्यागोगे तो
३ वुह तुम्हें त्यागेगा । अब बहुत दिन से इसराएल सच्चे ईश्वर
४ बिना और बिना शिक्षक याजक और बिना व्यवस्था थे । परन्तु
जब वे अपने दुःख में परमेश्वर इसराएल के ईश्वर की ओर
५ फिरे और उसे खोजा तो उन से पाया गया । और उन दिनों
में जो बाहर अथवा भीतर आया जाया करता था उसे कुछ
कुशल न मिलता था परन्तु देशों के सारे निवासियों पर बड़ी
६ बड़ी बिपत्ति थी । और जाति जाति से और नगर नगर से

चूर्ण किया जाता था क्योंकि ईश्वर ने उन्हें सारे क्लेशों से व्याकुल
७ किया। इस लिये तुम पोढ़ होत्रो और अपने हाथों को
दुर्व्वल होने न देओ क्योंकि तुम्हारे कार्य्य का प्रतिफल
मिलेगा॥
८ और जब असा ने इन बातों को और आदिद भविष्यद्वक्ता
की भविष्यबाणी को सुना तो उस ने हियाव पकड़ा और
यहूदाह और बिनयमीन के सारे देश में से और उन नगरों
में से जो उस ने इफ़रायम पहाड़ से लिया था घिनित मूर्त्तों
को दूर किया और परमेश्वर के ओसारे के आगे परमेश्वर की
९ बेदी दुहराके बनाई। और उस ने सारे यहूदाह और बिनयमीन
को और इफ़रायम में से और मुनस्सी में से और समऊन में
से परदेशियों को एकट्ठे किया क्योंकि जब उन्हों ने देखा कि
परमेश्वर उस का ईश्वर उस के साथ है तो इसराएल में से
१० बहुताई से उस की ओर आये। सो असा के राज्य के पंदरहवें
बरस के तीसरे मास में उन्हों ने यरूसलम में आप को एकट्ठा
११ किया। और जो लूट की बस्तु वे लाये थे उस में से उसी
दिन उन्हों ने परमेश्वर को सात सौ बैल और सात सहस्र भेड़
१२ भेंट चढ़ाई। और उन्हों ने अपने सारे मन और अपने सारे
प्राण से अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के खोजने के लिये बाचा
१३ बांधी। कि जो कोई इसराएल के ईश्वर परमेश्वर को ढूंढ़ने न
चाहे सो बधन किया जाय चाहे छोटा चाहे बड़ा चाहे पुरुष
१४ चाहे स्त्री होवे। और उन्हों ने पुकारते हुए और तुरहियों
से और सींगों के बड़े शब्द से परमेश्वर के लिये किरिया खाई।
१५ और सारे यहूदाह उस किरिया से आनन्दित हुए क्योंकि
उन्हों ने अपने सारे अंत:करण से किरिया खाई थी और अपनी
सारी बांछा से उसे ढूंढ़ा और वुह उन से पाया गया और परमेश्वर
ने उन्हें चारों ओर से चैन दिया॥

१६ और असा ने अपनी माता मअ़कः को रानी के पद से भी
अलग किया इस कारण कि उस ने कुंज के तले एक मूर्त्ति
बनाई थी और असा ने उस की मूर्त्ति को काट डाला और
१७ रौंदा और क़िदरून नाले के तीर उसे जला दिया। परन्तु ऊंचे
स्थान इसराएल में से दूर न किये गये तथापि असा का मन
१८ उस के जीवन भर शुद्ध रहा। और अपने पिता की समर्पण
किई हुई वस्तुन को और जो उस ने आप चांदी सोना और
१९ पात्र समर्पण किया था वुह ईश्वर के मन्दिर में लाया। और
असा के राज्य के पैंतीसवें बरस लों संग्राम न हुआ॥

सोलहवां पर्व्व।

१ असा के राज्य के छत्तीसवें बरस इसराएल का राजा बअ़शा
यहूदाह के विरुद्ध चढ़ आया और रामः को बनाया जिसतें
यहूदाह के राजा असा कने कोई जाने न पावे॥

२ तब असा ने परमेश्वर के मन्दिर के और राजा के भवन के
भंडारों में से चांदी और सोना बाहर किया और अराम के
राजा बिनहदद पास जो दमिश्क में रहता था कहला भेजा।
३ कि मेरे और तेरे मध्य ऐसा मेल हो जैसा मेरे और तेरे पिता
में था देखिये मैं ने तेरे पास सोना और चांदी भेजी है सो
आके इसराएल के राजा बअ़शा से बाचा को तोड़ जिसतें
४ वुह मुझ से फिर जावे। तब बिनहदद ने असा राजा की
बात सुनी और इसराएल के नगरों के विरुद्ध अपने सेनापतिन
को भेजा और उन्हों ने ऐयून और दान और अबीलमायम
और नफ़ताली के सारे भंडार नगरों को ले लिया॥

५ और ऐसा हुआ कि जब बअ़शा ने सुना तब रामः का
६ बनाना छोड़ दिया और अपने कार्य्य से थम गया। फिर असा
राजा ने सारे यहूदाह को लिया और वे रामः के पत्थरों को

और लट्ठों को ले गये जिन्हों से बञ्शा रामः बनाता था और
उस ने उन से जिवञ्च और मिसफ़ा बनाये ॥
७ और उस समय हन्नानी दर्शी ने यहूदाह के राजा असा
पास आके उससे कहा तू ने जो अराम के राजा पर आशा
रक्खी है और अपने ईश्वर परमेश्वर पर आशा नहीं रक्खी है
इस लिये अराम के राजा की सेना तेरे हाथ से बच निकली
८ है। क्या कूसी और लूबीमी बहुताई से सेना और अति बहुत
रथ और घोड़चढ़े को लिये हुए न थे तथापि तू ने जो परमेश्वर
पर आशा रक्खी थी उस ने उन्हें तेरे हाथ में सौंप दिया।
९ क्योंकि परमेश्वर की आंखें सारी पृथिवी में आरंपार इधर उधर
दौड़ती हैं जिसतें उन के लिये आप को बलवन्त दिखावे जिन
का मन उस की ओर सिद्ध है इस में तू ने मूर्खता किई है
१० इस लिये अब से तेरे साथ लड़ाई होगी। तब असा उस दर्शी
पर कोपित हुआ और उसे बंदीगृह में डाला क्योंकि वुह इस
बात के लिये उससे कोपित हुआ और उसी समय असा ने
लोगों में से कितनों को सताया ॥
११ अब देखो असा की क्रिया आदि से अंत लों यहूदाह के
और इसराएल के राजावली की पुस्तक में लिखी है ॥
१२ और असा के राज्य के उंतालीसवें बरस में उस के पांव में
रोग हुआ यहां लों कि उस का रोग अति हुआ तथापि अपने
१३ रोग में उस ने परमेश्वर को न खोजा परन्तु बैद्यों को। और
असा ने अपने पितरों में शयन किया और अपने राज्य के
१४ एकतालीसवें बरस मर गया। और उन्हों ने उसे उसी के
समाधि में जो उस ने अपने लिये दाऊद के नगर में खोदी
थी गाड़ा और उसे बिछौने पर रक्खा जो नाना प्रकार के सुगंध
द्रव्य से भरा हुआ था जिसे बैद्यों ने सिद्ध किया था और उन्हों
ने उस के लिये बड़ी आग बारी ॥

सत्रहवां पर्व्व।

१ और उस के बेटे यहूसफ़त ने उस की संती राज्य किया
२ और इसराएल के बिरुद्ध अपने को दृढ़ किया। और यहूदाह
के सारे बाड़ित नगरों में उस ने योद्धा रक्खे और यहूदाह
देश में इफ़रायम के नगरों में जो उस के पिता असा ने लिया
३ था थाने बैठाये। और परमेश्वर यहूसफ़त के साथ था क्योंकि
वुह अपने पिता दाऊद की अगली चालों पर चलता था और
४ बअलीम का पीछा न किया। क्योंकि अपने पिता के ईश्वर को
ढूंढ़ा और उस की आज्ञाओं पर चलता था और इसराएल के
५ कार्य्य के समान न किया। इस लिये परमेश्वर ने उस के हाथ
में राज्य स्थिर किया और सारे यहूदाह यहूसफ़त के पास भेंट
६ लाये और उस के पास धन और प्रतिष्ठा बहुताई से थी। और उस
का मन परमेश्वर के मार्गों में उभरा हुआ था और इस्से अधिक
उस ने यहूदाह में से ऊंचे स्थानों को और कुंजों को दूर किया॥
७ और अपने राज्य के तीसरे बरस उस ने बिनख़ैल को और
अबदियाह को और ज़करियाह को और नतनिएल को और
मीकायाह को जो उस के अध्यक्ष थे भेजा कि यहूदाह के
८ नगरों में उपदेश करें। और उन के साथ लावियों को अर्थात्
समअयाह को और नतनियाह को और ज़बदियाह को और
असहेल को और सिमिरामात को और यहूनतन को और
अदूनियाह को और तूबियाह को और तूब अदूनियाह लावियों
को और उन के संग इलिसमः को और यहूराम याजक को
९ भेजा। और उन्हों ने यहूदाह में उपदेश किया और परमेश्वर
की व्यवस्था की पुस्तक उन के साथ थी और यहूदाह के सारे
नगरों में से हो होके लोगों को उपदेश किया॥
१० और ईश्वर का डर यहूदाह के चारों ओर के राज्यों के

देशों पर हुआ यहां लों कि उन्हों ने यहूसफ़त से संग्राम न
११ किया। और फ़िलिसतियों में से भी यहूसफ़त के पास भेंट
और चांदी कर लाये अरबी भी उस पास सात सहस्र सात सौ
१२ झुंड भेड़ और सात सहस्र सात सौ बकरे लाये। और यहूसफ़त
अत्यन्त बढ़ गया और यहूदाह में गढ़ और भंडार नगर
१३ बनवाये। और यहूदाह के नगरों में उस का बड़ा कार्य्य था
और यरूसलम में महावीर योद्धा लोग थे॥
१४ और उन के पितरों के घरानों के समान उन की गिनती
ये है यहूदाह के सहस्रपति अदना प्रधान और उस के संग
१५ तीन लाख महावीर थे। और उस के लग यहूहनान सेनापति
१६ और उस के साथ दो लाख अस्सी सहस्र जन थे। और उस
के पीछे ज़िकरी का बेटा अमसियाह जिस ने आप को मनमन्ता
परमेश्वर को सौंपा और उस के साथ दो लाख महावीर थे।
१७ और बिनयमीन का इलयद: एक महावीर था और उस के
१८ साथ दो लाख ढाल और धनुष से लैस थे। और उस के पीछे
यहूज़ाबाद और उस के साथ संग्राम के लिये लैस एक लाख
१९ अस्सी सहस्र जन। उन से अधिक जिन्हें राजा ने यहूदाह के
सारे बाड़ित नगरों में रक्खा था ये राजा की सेवा करते थे॥

अठारहवां पर्व्व।

१ अब यहूसफ़त धन और प्रतिष्ठा बहुताई से रखता था और
२ उस ने अख़िअब के संग नाता किया। और बरसों के पीछे
वुह अख़िअब पास समरून को उतर गया और अख़िअब
ने उस के और उस के साथियों के लिये भेड़ और बैलों को
बहुताई से मारा और रामतजिलिअद पर चढ़ जाने को उसे
३ उभारा। और इसराएल के राजा अख़िअब ने यहूदाह के राजा
यहूसफ़त से कहा क्या तू मेरे साथ रमातजिलिअद को चलेगा

तब उस ने उसे उत्तर दिया कि आप की नाईं मैं और मेरे लोग
तेरे लोगों की नाईं और संग्राम में आप के साथी हैं ॥
४ तब यहूसफ़त ने इसराएल के राजा से कहा कि आज परमेश्वर
५ के बचन से बूझिये । इस लिये इसराएल के राजा ने चार सौ
भविष्यद्वक्तों को एकट्ठे किया और उन्हें कहा कि हम
रामतजिलिअद को संग्राम करने जावें अथवा न जावें और
उन्हों ने कहा कि चढ़ जाइये क्योंकि ईश्वर उसे राजा के हाथ
में सौंप देगा ॥
६ परन्तु यहूसफ़त ने कहा कि इन्हें छोड़ परमेश्वर का कोई
७ भविष्यद्वक्ता नहीं जिस्से हम बूझें । फिर इसराएल के राजा
ने यहूसफ़त से कहा कि अब भी एक जन है जिस के द्वारा
से हम परमेश्वर से बूझ सक्ते हैं परन्तु मैं उस्से बैर रखता हूं
क्योंकि वुह मेरे लिये कभी भला भविष्य नहीं कहता परन्तु
सदा बुरा सो यिमला का बेटा मीकायाह है तब यहूसफ़त ने
कहा कि राजा ऐसा न कहे ॥
८ तब इसराएल के राजा ने एक प्रधान बुलाके कहा कि
९ शीघ्रता से यिमला के बेटे मीकायाह को ले आ । और इसराएल
का राजा और यहूदाह का राजा यहूसफ़त राजवस्त्र से बिभूषित
होके अपने अपने सिंहासन पर समरून के फाटक की पैठ के
खुले स्थान में बैठे थे और सारे भविष्यद्वक्ता उन के आगे भविष्य
१० कहि रहे थे । और कनानियाह के बेटे सिदक़ियाह ने अपने
लिये लोहे के सींग बनवाये थे और कहा कि परमेश्वर यों कहता
है कि इन्हों से तू अरामियों को ऐसा ठेलेगा कि वे मिट जावेंगे ।
११ और सारे भविष्यद्वक्ता यों भविष्य कहि रहे थे कि रामतजिलिअद
को चढ़ जाइये और भाग्यमान हूजिये क्योंकि परमेश्वर उसे
राजा के हाथ में सौंप देगा ॥
१२ और जो दूत मीकायाह को बुलाने गया था उस ने यह बचन

उसे कहा कि देख भविष्यद्वक्तों के वचन राजा के लिये एक मन से
अच्छा है सो मैं तेरी बिनती करता हूं कि तेरी बात भी उन में
१३ से एक के समान होवे और तू भी अच्छा कह। तब मीकायाह
ने कहा कि परमेश्वर के जीवन सों अर्थात् जो मेरा ईश्वर कहेगा
सोई मैं कहूंगा॥
१४ और राजा के पास आते ही राजा ने उसे कहा कि मीकायाह
हम संग्राम के लिये रामतजिलिअद को जावें अथवा मैं न
जाऊं और उस ने कहा कि चढ़ जाइये और भाग्यमान हूजिये
१५ और वे तुम्हारे हाथ में सौंपे जावेंगे। फिर राजा ने उसे कहा
कि मैं तुझे कितने बेर किरिया दिलाऊं कि तू परमेश्वर के नाम
१६ से सत्य को छोड़ कुछ न कहना। तब उस ने कहा कि मैं
ने सारे इसराएल को बिन गड़रिये की भेड़ों की नाईं पहाड़ों
पर बिथरे हुए देखा और परमेश्वर ने कहा कि इन का कोई
स्वामी नहीं सो उन में से हर एक जन अपने अपने घर कुशल
१७ से जावे। तब इसराएल के राजा ने यहूसफ़त से कहा कि
क्या मैं ने तुझ से नहीं कहा कि वुह मेरे लिये अच्छा भविष्य
१८ न कहेगा परन्तु बुरा। तब उस ने कहा कि इस लिये परमेश्वर
का वचन सुनो मैं ने परमेश्वर को अपने सिंहासन पर बैठे
देखा और स्वर्ग की सारी सेना उस के दहिने बायें खड़ी है।
१९ तब परमेश्वर ने कहा कि इसराएल के राजा अख़िअब को कौन
फुसलावेगा जिसतें वुह चढ़ जावे और रामतजिलिअद में मारा
जावे तब एक ने इस रीति का वचन कहा और दूसरे ने उस
२० रीति का। तब एक आत्मा बाहर आके परमेश्वर के सन्मुख
खड़ा होके बोला कि मैं उसे फुसलाऊंगा तब परमेश्वर ने उस्से
२१ पूछा कि किस बात से। तब उस ने कहा कि मैं निकलूंगा
और उस के सारे भविष्यद्वक्तों के मुंह में मिथ्यावादी आत्मा
होऊंगा तब उस ने कहा कि तू फुसलावेगा और उस पर प्रबल

२२ भी होगा जा और वैसा कर। सो अब देख परमेश्वर ने तेरे इन
भविष्यद्वक्तों के मुंह में मिथ्यावादी आत्मा डाला है और परमेश्वर
ने तेरे विरुद्ध बुरा कहा है॥
२३ तब कननियाह का बेटा सिदक़याह पास आया और
मीकायाह के गाल पर थपेड़ा मारा और कहा कि परमेश्वर का
२४ आत्मा तुझे कहने को मेरे पास से किधर से गया। और
मीकायाह ने कहा कि देख तू उस दिन देखेगा जब तू आप
को छिपाने को भीतर की कोठरी में घुसेगा॥
२५ तब इसराएल के राजा ने कहा कि मीकायाह को लेओ
और उसे नगर के अध्यक्ष अमून पास और राजकुमार यूआश
२६ पास फेर ले जाओ। और कहो कि राजा यों कहता है कि इसे
बन्धन में रक्खो और जब लों मैं कुशल से फिर न आऊं इसे
२७ कष्ट की रोटी और कष्ट का जल दिया करो। और मीकायाह
ने कहा कि यदि तू निश्चय कुशल से फिर आवे तो परमेश्वर
ने मेरे द्वारा से नहीं कहा और उस ने कहा कि हे सारे लोगो
सुन रक्खो॥
२८ तब इसराएल का राजा और यहूदाह का राजा यहूसफ़त
२९ रामतजिलिआद को चढ़ गये। और इसराएल के राजा
ने यहूसफ़त को कहा कि मैं भेष बदलके संग्राम में
जाऊंगा परन्तु तू राजवस्त्र पहिन सो इसराएल के राजा ने
३० भेष पलटा और वे संग्राम को गये। अब अराम के राजा ने
अपने साथ के रथपतिन को यह कहके आज्ञा किई थी कि
केवल इसराएल के राजा को छोड़ तुम छोटे बड़े से मत युद्ध
३१ करना। और यों हुआ कि जब रथपतिन ने यहूसफ़त को
देखा तो बोले कि यह इसराएल का राजा है इस लिये उन्हों
ने लड़ने के लिये उसे घेरा परन्तु यहूसफ़त चिल्ला उठा और
परमेश्वर ने उस का उपकार किया और ईश्वर ने उन्हें उस्से

३२ फेर दिया। क्योंकि ऐसा हुआ कि जब रथपतिन ने देखा कि
यह इसराएल का राजा नहीं है तब वे उस के पीछे से हट
३३ गये। फिर एक जन ने धनुष पर बाण साजके इसराएल के
राजा को बिना जाने झिलम के और जोड़ के मध्य में मारा
इस लिये उस ने अपने सारथी को कहा कि बाग फेर दे जिसतें
मुझे सेना में से बाहर ले जावे क्योंकि मुझे घाव लगा है।
३४ और उस दिन संग्राम बढ़ा तथापि सांझ लों इसराएल का राजा
अरामियों के बिरुद्ध अपने रथ पर थमा रहा और सूर्य्य के
अस्त होते होते मर गया॥

उन्नीसवां पर्ब्ब।

१ और यहूदाह का राजा यहूसफ़त कुशल से यरूसलम में
२ अपने घर गया। और हनानी का बेटा याहू दर्शी उस की
भेंट को निकला और यहूसफ़त राजा से कहा कि क्या उचित
था कि तू अधर्मी की सहाय करे और परमेश्वर के बैरी से प्रेम
३ करे सो इस लिये परमेश्वर के आगे से तुझ पर कोप है। तथापि
तुझ में कुछ भला कार्य्य पाया गया है क्योंकि तू ने देश में
से कुंजों को दूर किया और ईश्वर की खोज के लिये अपना मन
सिद्ध किया है॥

४ और यहूसफ़त ने यरूसलम में बास किया और फिरके
बिअरसबः में इफ़रायम पर्बत लों लोगों में से गया और उन्हें
५ परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर की ओर फेर लाया। और उस
ने देश में यहूदाह के सारे बाड़ित नगरों में नगर नगर न्याइयों
६ को बैठाया। और न्याइयों को कहा कि अपने अपने काम में
चौकस रहो क्योंकि तुम मनुष्यों के लिये नहीं परन्तु परमेश्वर
के लिये जो न्याय की बात में तुम्हारे साथ है न्याय करते
७ हो। सो अब परमेश्वर का भय तुम पर होवे कि जो कुछ करो

सो चौकस होके करो क्योंकि परमेश्वर हमारे ईश्वर के संग कोई
दुष्टता अथवा अंधेर अथवा पक्ष अथवा अकोर लेना नहीं है ।
८ और जब वे यरूसलम को फिरे तब यहूसफ़त ने परमेश्वर के
विचार के लिये और विवाद के लिये यरूसलम में लावियों को
और याजकों को और इसराएल के पितरों के प्रधानों को ठहराया ।
९ और उन्हें यह कहके आज्ञा किई कि यों परमेश्वर के भय से
१० विश्वास से और अंत:करण की सिद्धता से करो। और जो कुछ लोहू
और लोहू के मध्य व्यवस्था और आज्ञा और विधिन के और विचार
के मध्य तुम्हारे भाइयों के विषय में जो उन के नगरों में बसते
हैं जो बात तुम पास आवे तुम उन्हें चिता देना कि वे परमेश्वर
के विरुद्ध अपराध न करें और कोप तुम पर और तुम्हारे भाइयों
११ पर न पड़े यही करो और तुम अपराध न करोगे । और देखो
परमेश्वर की सारी बातों में तुम पर अमरियाह प्रधान याजक
है और राजा की सारी बातों में इसमअएल का बेटा यहूदाह
के घराने का प्रधान ज़बदियाह और तुम्हारे आगे लावी
प्रधान होंगे हियाव से कार्य्य करो और परमेश्वर भले के साथ
होगा ॥

बीसवां पर्व्व ।

१ और इस के पीछे ऐसा हुआ कि मोअब के सन्तान और
अम्मून के सन्तान और उन के साथ बहुत से लोग अमूनियों
२ को छोड़ यहूसफ़त के विरुद्ध संग्राम करने को आये । तब
कितनों ने आके यहूसफ़त से यह कहके सन्देश दिया कि
अराम के इस अलंग के समुद्र पार से एक बड़ी मंडली तुम्हारे
विरुद्ध में आती है और देख वे हस:सूनतमर में हैं जो
३ ऐनजदी है । और यहूसफ़त डर गया और परमेश्वर की खोज
को अपना रुख किया और यहूदाह के सर्बत्र ब्रत प्रचारा ।

४ और परमेश्वर से सहाय मांगने के लिये सारे यहूदाह एकट्ठे
हुए अर्थात् यहूदाह के सारे नगरों में से परमेश्वर की खोज
को आये॥
५ और यहूसफ़त परमेश्वर के मन्दिर में नये आंगन के आगे
६ यहूदाह और यरूसलम की मंडली के मध्य खड़ा हुआ। और
कहा कि हे परमेश्वर हमारे पितरों के ईश्वर क्या स्वर्ग में तू
ईश्वर नहीं और अन्यदेशियों के सारे राज्यों पर प्रभुता नहीं
करता और तेरे हाथ में क्या पराक्रम और ऐसा बल नहीं कि
७ कोई तेरा साम्ना नहीं कर सक्ता। क्या तू हमारा ईश्वर नहीं
जिस ने अपने इसराएल लोगों के आगे से इस देश के निवासियों
को खेद दिया और इसे अपने मित्र अबिरहाम के वंश को
८ सदा के लिये नहीं दिया। और वे उस में बसे और यह
कहके तेरे नाम के लिये उस में एक पवित्र स्थान बनाया।
९ कि यदि बुराई जैसा कि तलवार अथवा बिचार का दंड
अथवा मरी अथवा अकाल आदिक हम पर आ पड़े और हम
इस मन्दिर के आगे और तेरे साक्षात खड़े होवें क्योंकि तेरा
नाम इस मन्दिर में है और हम अपने दुःख में तेरे आगे
१० प्रार्थना करें तब तू सुनके सहाय करेगा। और अब अम्मून
के सन्तान को और मोअब को और शईर पर्बत को देख
जिन्हें तू ने इसराएल को जब वे मिस्र के देश से निकल
आये घेरने न दिया परन्तु वे उन से फिर गये और उन्हें नष्ट
११ न किया। सो देख वे हमें यह प्रतिफल देते हैं कि हमें उस
अधिकार से जो तू ने हमें भोग करने को दिया है निकाल
१२ देने को चढ़ आये हैं। हे हमारे ईश्वर क्या तू उन का विचार
न करेगा क्योंकि इस बड़ी जथा के विरुद्ध जो हम पर चढ़
आते हैं हम कुछ बल नहीं रखते और क्या करें सो भी नहीं
जानते परन्तु हमारी आंखें तुझ पर हैं॥

१३ और सारे यहूदाह अपने बालकों और अपनी स्त्री और
१४ सन्तान समेत परमेश्वर के आगे खड़े हुए। तब आसफ़ के
बेटों में का एक लावी अर्थात् मत्तनियाह के बेटे यओएल के
बेटे बिनायाह के बेटे ज़करियाह के बेटे यहज़िएल पर परमेश्वर
१५ का आत्मा मंडली के मध्य में उतरा। और उस ने कहा कि
हे सारे यहूदाह और यरूसलम के बासियो और यहूसफ़त
राजा तुम मेरी सुनो परमेश्वर तुम्हें यह कहता है कि तुम
इस बड़ी मंडली से मत डरो अथवा बिस्मित मत होओ
१६ क्योंकि संग्राम तुम्हारा नहीं परन्तु ईश्वर का। उन के बिरुद्ध
कल उतरो देखो वे सीस के चढ़ाव से आते हैं और तुम
१७ जरूयल बन के आगे नाली के तीर उन्हें पाओगे। इस में
तुम्हें लड़ने न पड़ेगा लैस होके खड़े होओ और हे यहूदाह
और यरूसलम परमेश्वर की मुक्ति को अपने संग देखो मत
डरो और बिस्मित मत होओ कल उन के बिरुद्ध निकलो
१८ क्योंकि परमेश्वर तुम्हारे संग है। और यहूसफ़त ने भूमि पर
झुकके प्रणाम किया और सारे यहूदाह और यरूसलम के
बासियों ने परमेश्वर के आगे गिरके परमेश्वर की सेवा किई।
१९ और क़िहाती के सन्तान क़ुरही के सन्तान लावी इसराएल
के ईश्वर परमेश्वर की स्तुति ऊंचे स्वर से करने को खड़े
हुए॥

२० और वे भोर को उठके तक़ुअ के बन को गये और उन के
जाते जाते यहूसफ़त ने खड़ा होके कहा कि हे यहूदाह और
यरूसलम के बासियो मेरी सुनो परमेश्वर अपने ईश्वर पर बिश्वास
रक्खो और तुम स्थिर किये जाओगे उस के भविष्यद्वक्तों की
२१ प्रतीति करो जिसतें तुम भाग्यमान होओ। और जब उस ने
लोगों के साथ परामर्श किया तब उस ने परमेश्वर के लिये
गायकों और पवित्रता की सुन्दरता की स्तुति करवैयों को

ठहराया कि सेना के आगे आगे यह कहते हुए चलें परमेश्वर
की स्तुति करो क्योंकि उस की दया सदा लों है॥
२२ और गाने और स्तुति करने के समय परमेश्वर ने अम्मून के
सन्तानों के और मोअब के और शईर पर्बत के जो यहूदाह
२३ के विरुद्ध आये थे ढुकिये बैठाये और वे मारे गये। क्योंकि
अम्मून के सन्तान और मोअब सर्बथा मार डालने और नष्ट करने
को शईर पर्बत के बासियों के विरुद्ध उठे और जब उन्हों ने शईर
के बासियों को समाप्त किया तो आपुस के नाश में सहायक हुए॥
२४ और जब यहूदाह बन में चौकी के गुम्मट लों आये तब
उन्हों ने मंडली की ओर ताका और क्या देखते हैं कि लोथ
२५ भूमि पर पड़ी हैं और कोई न बचा। और जब यहूसफ़त और
उस के लोग उन्हें लूटने को आये तब उन्हों ने उन में धन
और बहुमूल्य मणि बहुताई से पाये जो उन्हों ने अपने लिये
यहां लों लोथों में से उतारा कि ले जा न सक्ते थे और इतने
२६ थे कि उन्हें तीन दिन लों लूट बटोरते लगा। और चौथे
दिन वे बरक: की तराई में एकट्ठे हुए क्योंकि उन्हों ने वहां
परमेश्वर को धन्य माना इस लिये आज लों वुह स्थान बरक:
की तराई कहाता है॥
२७ तब यहूदाह के और यरूसलम के सारे लोग फिरे और
उन के आगे आगे यहूसफ़त जिसतें आनन्द के साथ यरूसलम
को लौटें क्योंकि परमेश्वर ने उन के बैरियों पर उन्हें आनन्द
२८ करवाया। और वे नबल और बीणा और तुरहियों को लिये
२९ हुए यरूसलम को परमेश्वर के मन्दिर में आये। और जब
उन देशों के सारे राजाओं ने सुना कि परमेश्वर इसराएल के
३० बैरियों के विरुद्ध लड़ा तब ईश्वर का डर उन पर पड़ा। सो
यहूसफ़त के राज्य पर चैन हुआ क्योंकि उस के ईश्वर ने चारों
ओर से उसे चैन दिया॥

३१ और यहूसफ़त ने यहूदाह पर राज्य किया जब वुह राज्य
करने लगा तब पैंतीस बरस का था और उस ने यरूसलम में
पचीस बरस राज्य किया और उस की माता का नाम अज़ूब:
३२ जो शिलही की बेटी थी। और वुह अपने पिता असा की चाल
पर चलता था और जो परमेश्वर की दृष्टि में भला था उन्हें
३३ पालने से न फिरा। तथापि ऊंचे स्थान दूर न किये गये थे
क्योंकि अब लों लोगों ने अपने पितरों के ईश्वर की ओर अपने
मन को सिद्ध न किया था॥

३४ और यहूसफ़त की रही हुई क्रिया आदि और अंत देखो
वे हनानी के बेटे याहू के बचन में जो इसराएल के राजाओं
की पुस्तक में उठाया गया है लिखी हैं॥

३५ और उस के पीछे यहूदाह का राजा यहूसफ़त इसराएल के
राजा अख़ज़याह से मिल गया जिस ने बड़ी दुष्टता किई।
३६ और तरसीस को जाने के लिये जहाज़ बनाने को उस्से मिल
३७ गया और उन्हों ने असयूनजब्र में जहाज़ बनाये। तब
मरीसाई दोदावा के बेटे इलिअज़र ने यहूसफ़त के बिरुद्ध
यह भविष्य कहा इस कारण कि तू अख़ज़याह से मिल गया
परमेश्वर ने तेरे कार्य्यों को तोड़ दिया है और जहाज़ तोड़े
गये कि वे तरसीस को न जा सकें॥

एकीसवां पर्ब्ब।

१ अब यहूसफ़त ने अपने पितरों में शयन किया और अपने
पितरों में दाऊद के नगर में गाड़ा गया और उस के बेटे
यहूराम ने उस की सन्ती राज्य किया॥

२ और उस के भाई यहूसफ़त के बेटे अज़रियाह और यहिएल
और ज़करियाह और अज़रियाह और मीकाएल और सफ़तियाह
३ थे ये सब इसराएल के राजा यहूसफ़त के बेटे थे। और

उन के पिता ने बहुत चांदी और सोना और बहुमूल्य बस्तें
और यहूदाह में बाड़ित नगर उन्हें दिये परन्तु उस ने राज्य
४ यहूराम को दिया क्योंकि वुह पहिलौठा था। और जब यहूराम
ने अपने पिता के राज्य को पाया तब उस ने आप को दृढ़
करके अपने सारे भाइयों को और इसराएल के बहुत से अध्यक्षों
को तलवार से घात किया ॥

५ यहूराम ने बत्तीस बरस का होके राज्य करना आरंभ किया
६ और यरूसलम में आठ बरस राज्य किया। और अख़िअब के
घराने के समान वुह इसराएल के राजाओं की चाल पर चलता
था क्योंकि अख़िअब की बेटी उस की पत्नी थी और उस ने
७ परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई। तथापि उस बाचा के जो
उस ने दाऊद से बांधी थी और उसे और उस के बेटों को
सदा के लिये एक ज्योति देने की प्रतिज्ञा के कारण से परमेश्वर
ने दाऊद के घराने को नाश करने न चाहा॥

८ उस के दिनों में अदूमी यहूदाह के बश से फिर गये और
९ अपने लिये एक राजा बनाया। तब यहूराम अपने अध्यक्षों
को और अपने सारे रथ साथ लेके बाहर निकला और रात ही
को उठके अदूमियों को और रथपतिन को जो उसे घेरे हुए थे
१० मारा। सो अदूमी आज लों यहूदाह के बश से फिरे हैं उसी
समय लिबना भी उस के हाथ से फिर गया क्योंकि उस ने
अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर को त्याग किया॥

११ उस ने भी यहूदाह के पर्वतों पर ऊंचे ऊंचे स्थान बनाये
और यरूसलम के बासियों से और यहूदाह से व्यभिचार करवाया।
१२ और इलियाह भविष्यद्वक्ता के पास से यह कहके लिखा हुआ
उस पास आया कि तेरे पिता दाऊद का ईश्वर परमेश्वर यों
कहता है इस कारण कि तू अपने पिता यहूसफ़त की चालों
पर और यहूदाह के राजा असा की चालों पर न चला।

१३ परन्तु इसराएल के राजाओं की चाल पर चला है और अखिअब
के घराने के छिनालों के समान यहूदाह से और यरूसलम के
बासियों से छिनाला करवाया है और अपने पिता के घराने के
१४ अपने भाइयों को जो तुझ से भले थे तू ने घात किया। देख
परमेश्वर तेरे लोगों को और तेरे बालकों और तेरी पत्नियों को
१५ और तेरी सारी संपत्ति को बड़ी मार से मारेगा। और तू अपनी
अंतड़ियों के रोग से ऐसा रोगी होगा कि रोग के मारे तेरी
अंतड़ियां प्रतिदिन निकलती रहेंगी॥

१६ और परमेश्वर ने यहूराम के विरुद्ध फ़िलिसतियों को
और अरबियों को और आस पास के कूसियों को उभारा।
१७ और वे यहूदाह पर चढ़ आये और उसे तोड़के राजभवन में
सारी संपत्ति जो पाई गई और उस के बेटों को भी और उस
की पत्नियों को ले गये यहां लों कि उस के बेटों में लहुरे
१८ यहूअख़ज़ को छोड़ उस के किसी बेटे को न छोड़ा। और
इस सब के पीछे परमेश्वर ने उस की अंतड़ियों के असाध्य
१९ रोग से उसे मारा। और दो बरस बीतने के समय में यों
हुआ कि उस के रोग के मारे उस की अंतड़ियां निकल पड़ीं
और वुह बड़े बड़े रोगों से मरा और उस के लोगों ने उस के पितरों
२० के जलाने के समान उस के लिये नहीं जलाया। जब उस ने
राज्य करना आरंभ किया तब वुह बत्तीस बरस का था और
उस ने यरूसलम में आठ बरस राज्य किया और बिना आदर
मर गया तथापि उन्हों ने दाऊद के नगर में उसे गाड़ा परन्तु
राजाओं की समाधिन में नहीं॥

बाईसवां पर्व्व।

१ और यरूसलम बासियों ने उस की सन्ती उस के लहुरे
बेटे अख़ज़याह को राजा किया क्योंकि अरबियों के साथ जो

जथा छावनी में आई थी उन्हों ने सारे जेठों को घात किया
था सो यहूदाह के राजा यहूराम के बेटे अख़ज़याह ने राज्य
२ किया। अख़ज़याह ने बयालीस बरस का होके राज्य करना
आरंभ किया और उस ने यरूसलम में एक बरस राज्य किया
और उस की माता का नाम अतलीयाह उमरी की बेटी था।
३ वुह भी अख़िअब के घराने की चालों पर चलता था क्योंकि
४ कुकर्म्म करने के लिये उस की माता उस की मंत्री थी। इस
लिये उस ने अख़िअब के घराने के समान परमेश्वर की दृष्टि
में बुराई किई क्योंकि उस के पिता के मरने के पीछे उस के
५ नाश के लिये वे उस के मंत्री थे। वुह उन के मंत्र के समान भी
चलता था और इसराएल के राजा अख़िअब के बेटे यहूराम
के साथ अराम के राजा हज़ाएल के बिरुद्ध युद्ध करने को
रामतजिलिअद में गया और अरामियों ने यूराम को मारा।
६ और वुह घाओं के कारण जिस्से उन्हों ने रामः में उसे घायल
किया जब वुह अराम के राजा हज़ाएल के साथ लड़ा था वुह चंगा
होने को यज़रअएल को फिर आया और यहूदाह के राजा
यहूराम का बेटा अज़रियाह अख़िअब के बेटे यहूराम को
देखने के लिये यज़रअएल को उतरा क्योंकि वुह रोगी था।
७ और अख़ज़याह का लताड़ा जाना यूराम कने आने के लिये
ईश्वर की ओर से था क्योंकि वुह आके यहूराम के साथ निमसी
के बेटे याहू के बिरुद्ध उतरा जिसे परमेश्वर ने अख़िअब के
८ घराने को काट डालने के लिये अभिषेक किया था। और ऐसा
हुआ कि जब याहू अख़िअब के घराने पर दंड देता था तो
यहूदाह के अध्यक्षों को और अख़ज़याह के भाइयों के बेटों
को जो अख़ज़याह की सेवा करते थे पाया और उस ने उन्हें
९ घात किया। और उस ने अख़ज़याह को ढूंढ़ा और उन्हों ने उसे
पकड़ा क्योंकि वुह समरून में छिपा था और उसे याहू पास

लाये और उन्हों ने उसे घात करके गाड़ा क्योंकि उन्हों ने
कहा कि वुह यहूसफ़त का बेटा है जिस ने अपने सारे मन
से परमेश्वर की खोज किई सो अख़ज़याह के घराने का राज्य
रखने का सामर्थ्य न था ॥
१० परन्तु जब अख़ज़याह की माता अतलीयाह ने देखा कि
मेरा बेटा मर गया तो उस ने उठके यहूदाह के घराने के
११ सारे राजवंशों का नाश किया । परन्तु राजकन्या यहूसबअत
ने अख़ज़याह के बेटे यूआश को लिया और राजा के बेटों में
से जो घात किये जाते थे चुराया और उसे और उस की दाई
को एक शयनस्थान की कोठरी में रक्खा इस रीति से यहूयदः
याजक की पत्नी यहूराम राजा की बेटी यहूसबअत ने क्योंकि
वुह अख़ज़याह की बहिन थी उसे अतलीयाह से छिपाया
१२ यहां लों कि उस ने उसे घात न किया । और वुह उन के
साथ ईश्वर के मन्दिर में छः बरस लों छिपा रहा और अतलीयाह
ने देश पर राज्य किया ॥

तेईसवां पर्ब्ब ।

१ और सातवें बरस में यहूयदः ने आप को दृढ़ किया और
शतपतियों को अर्थात् यरूहाम के बेटे अज़रियाह को और
यहूहनान के बेटे इसमअएल को और आबिद के बेटे अज़रियाह
को और अदायाह के बेटे मअसियाह को और ज़िकरी के बेटे
२ इलिसफ़त को वाचा में अपने साथ लिया । और वे यहूदाह
में फिरा किये और यहूदाह के सारे नगरों में से लावियों को
और इसराएल के पितरों के प्रधानों को एकट्ठे किया और वे
३ यरूसलम में आये । और सारी मंडली ने परमेश्वर के मन्दिर
में राजा के साथ वाचा बांधी और उस ने उन्हें कहा कि देखो
जैसा कि परमेश्वर ने दाऊद के बेटों के विषय में कहा था कि

४ राजा का बेटा राज्य करेगा। तुम यह काम करो बिश्राम में
भीतर जाने में लावी के और याजकों के तीसरे भाग डेवढ़ियों
५ के द्वारपालक होवें। और तीसरे भाग राजा के भवन में और
तीसरे भाग नेंव के फाटक में और सारे लोग परमेश्वर के मन्दिर
६ के आंगनों में। परन्तु याजक और लावी सेवकों को छोड़ कोई
परमेश्वर के मन्दिर में आने न पावे वे भीतर जावें क्योंकि वे
पवित्र हैं परन्तु सारे लोग परमेश्वर के चौकी की रक्षा करें।
७ और लावियों का हर एक जन हथियार हाथ में लेके राजा को
चारों ओर से घेरे और जो कोई मन्दिर में आवेगा सो मारा
जावेगा परन्तु राजा के बाहर भीतर आने जाने में तुम लोग
उस के साथ रहो॥

८ सो लावी और सारे यहूदाह ने यहूयद: याजक की सारी
आज्ञा के समान किया और हर एक ने अपने अपने जन को
लिया जिन्हें बिश्राम में भीतर जाना था उन के साथ जिन्हें
बिश्राम में बाहर जाना था क्योंकि यहूयद: याजक ने पारीवालों
९ को बिदा न किया था। इस्से अधिक यहूयद: याजक ने
दाऊद राजा की बरछी और फरी और ढाल जो ईश्वर के मन्दिर
१० में थीं शतपतियों को सौंप दिईं। और उस ने हर एक जन
को हाथ में हथियार लिये हुए मन्दिर की दहिनी बाईं ओर
यज्ञवेदी और मन्दिर के पास राजा की चारों ओर सारे लोगों
११ को खड़ा किया। फिर वे राजपुत्र को बाहर ले आये और उस
पर मुकुट रक्खा और साक्षी देके उसे राजा किया और यहूयद:
और उस के बेटों ने उसे अभिषेक किया और कहा कि राजा
जीता रहे॥

१२ जब अतलीयाह ने लोगों के दौड़ने का और राजा की
स्तुति का शब्द सुना तब वुह परमेश्वर के मन्दिर में लोगों के
१३ पास आई। और ताकके क्या देखती है कि राजा पैठ में खंभे के

लग खड़ा है और अध्यक्ष और तुरही राजा के लग और देश के
सारे लोगों ने आनन्द किया और तुरहियों से और गायक भी
बाजों को लेके और जो स्तुति गाने को सिखाते थे शब्द किया
तब अतलीयाह ने अपने बस्त्र फाड़के कहा कि छल है छल
१४ है। तब यहूयदः याजक सेना के शतपतियों को निकाल
लाया और उन्हें कहा कि उसे सिवाने से बाहर करो और जो
कोई उस के पीछे जावे सो तलवार से मारा जावे क्योंकि याजक
ने कहा था कि परमेश्वर के मन्दिर में उसे घात मत करो।
१५ सो उन्हों ने उस पर हाथ डाले और जब वुह घोड़ फाटक
के पैठ लों जो राजा के भवन के लग था पहुंची तो उन्हों ने
उसे वहां घात किया॥

१६ फिर यहूयदः ने अपने मध्य में और सारे लोगों के मध्य
में और राजा के मध्य में बाचा बांधी जिसतें वे परमेश्वर के
१७ लोग होवें। तब सारे लोग बअल के मन्दिर में गये और उसे
तोड़ डाला और उस की बेदियों को और उस की मूर्त्तिन को
टुकड़े टुकड़े किये और बअल के याजक मत्तान को बेदियों के
१८ आगे घात किया। और मूसा की व्यवस्था के लिखने के समान
जैसा दाऊद ने परमेश्वर के मन्दिर में अलग अलग ठहराया
था वैसा यहूयदः ने लावी याजकों के हाथों से परमेश्वर के
बलिदान की भेंटें चढ़ाने के लिये गाते और आनन्द करते
१९ हुए दाऊद के ठहराने के समान ठहराया। और उस ने
परमेश्वर के मन्दिर के फाटकों पर द्वारपालों को बैठाया जिसतें
जो कोई किसी बात में अपवित्र होवे सो भीतर जाने न पावे।
२० और उस ने शतपतियों को और कुलीनों को और लोगों के
अध्यक्षों को और देश के सारे लोगों को लिया और राजा को
परमेश्वर के मन्दिर से ले आये और बड़े फाटक से होके राज
भवन में आये और राजा को राज्य के सिंहासन पर बैठाया।

२१ और अतलीयाह को तलवार से घात करने के पीछे देश के
सारे लोगों ने आनन्द किया और नगर में चैन हुआ ॥

चौबीसवां पर्व्व ।

१ यूआश ने सात बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया
और उस ने यरूसलम में चालीस बरस राज्य किया और उस
२ की माता का नाम जिबिया था जो बिअरसबः की थी । और
यहूयदः याजक के जीवन भर यूआश ने परमेश्वर की दृष्टि
३ में भलाई किई । और यहूयदः ने उस के लिये दो पत्नियां कर
दिईं और उस्से बेटे और बेटियां उत्पन्न हुईं ॥
४ और इस के पीछे यों हुआ कि यूआश ने परमेश्वर के मन्दिर
५ को नवीन करने चाहा । और उस ने याजकों को और लावियों
को एकट्ठा करके उन्हें कहा कि यहूदाह के नगरों में जाओ
और सारे इसराएलियों से बरस बरस परमेश्वर का मन्दिर
सुधारने के लिये रोकड़ एकट्ठा करो और देखो कि यह बात
शीघ्र होवे तथापि लावियों ने शीघ्र न किई ॥
६ और राजा ने प्रधान यहूयदः को बुलाके उसे कहा कि
परमेश्वर के दास मूसा के और इसराएल की मंडली के कहे के
समान साक्षी के तंबू के लिये तू ने लावियों से क्यों नहीं चाहा
७ कि यहूदाह में से और यरूसलम में से बेहरी लावें । क्योंकि
उस दुष्ट स्त्री अतलीयाह के बेटों ने परमेश्वर के मन्दिर को
ढा दिया था और परमेश्वर के मन्दिर की अर्पण किई हुई
सारी वस्तुन को भी उन्हों ने बअलीम पर चढ़ाया ॥
८ सो राजा की आज्ञा से उन्हों ने एक मंजूषा बनाई और
९ उसे परमेश्वर के मन्दिर के फाटक पर बाहर रक्खी । और उन्हों
ने सारे यहूदाह और यरूसलम में प्रचारा कि जो बेहरी ईश्वर के
सेवक मूसा ने बन में इसराएल पर ठहराई थी सो परमेश्वर

१० के लिये भीतर लावें । और सारे अध्यक्ष और सारे लोग आनन्द
से लाये और मंजूषा में डालते रहे जब लों वे पूरा न कर
११ चुके । अब ऐसा हुआ कि जब लावियों के हाथ से मंजूषा
राजा के भंडार में पहुंचाई गई और जब उन्हों ने बहुत रोकड़
देखा तब राजा के लेखक और महायाजक का एक प्रधान
आके मंजूषा को छूंछी करते थे और फेर ले जाके उसी स्थान
में रखते थे वे प्रतिदिन ऐसा ही करते थे और बहुताई से
१२ रोकड़ बटोरा। फिर राजा ने और यहूयद: ने उसे परमेश्वर के
मन्दिर के कार्य्यकारियों को दिया और परमेश्वर का मन्दिर
सुधारने के लिये उन्हों ने थवइयों को और बढ़इयों को दिया
और परमेश्वर का मन्दिर बनाने के लिये लोहारों को और ठठेरों
१३ को लोहा और तांबा दिया । तब कार्य्यकारियों ने कार्य्य किया
और उन से कार्य्य बन गया और उन्हों ने ईश्वर के मन्दिर
१४ को ठिकाने में लाके दृढ़ किया । और वे बनाके उबरा हुआ
रोकड़ राजा के और यहूयद: के आगे लाये और उस्से परमेश्वर
के मन्दिर के लिये पाच बनवाये गये अर्थात् सेवा के पाच
और बलिदान के पाच और करछुल और सोने चांदी के पाच
और यहूयद: के जीवन भर वे नित्य परमेश्वर के मन्दिर में
बलिदान की भेंट चढ़ाते थे ॥

१५ परन्तु यहूयद: बृद्ध हुआ और दिन का पूरा होके मर
गया और मरने के समय वुह एक सौ तीस बरस का था ।
१६ और उन्हों ने उसे दाऊद के नगर में राजाओं में गाड़ा क्योंकि
उस ने परमेश्वर की और उस के मन्दिर की और इसराएल में
भला किया था ॥

१७ अब यहूयद: के मरने के पीछे यहूदाह के अध्यक्षों ने
आके राजा को प्रणाम किया तब राजा ने उन की बात मानी।
१८ और वे अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के मन्दिर को त्याग

करके कुंजों की और मूर्त्तों की पूजा करने लगे और उन के इस
अपराध के लिये यहूदाह पर और यरूसलम पर कोप पड़ा।
१९ तथापि उस ने भविष्यद्वक्तों को उन पास भेजा कि उन्हें परमेश्वर
की ओर फेरें और उन्हों ने उन्हें जताया परन्तु उन्हों ने उन
२० की न मानी। फिर ईश्वर का आत्मा यहूयदः याजक के बेटे
ज़करियाह पर आया और उस ने ऊपर खड़ा होके लोगों से
कहा कि ईश्वर यों कहता है कि तुम लोग परमेश्वर की आज्ञाओं
को क्यों उल्लंघन करते हो तुम लोग भाग्यमान नहीं हो सक्ते
हो तुम ने जो परमेश्वर को त्यागा है इस कारण उस ने तुम्हें
२१ भी त्याग किया है। तब उन्हों ने उस के विरुद्ध युक्ति बांधके
राजा की आज्ञा से परमेश्वर के मन्दिर के आंगन में पत्थरवाह
२२ करके उसे मार डाला। यों यूआश राजा ने उस के पिता
यहूयदः की कृपा को जो उस ने उस पर किई थी स्मरण न
किया परन्तु उस के बेटे को घात किया और मरने के समय
में उस ने कहा कि परमेश्वर इस पर दृष्टि करके पलटा लेवे॥
२३ और जब एक बरस बीत गया तो ऐसा हुआ कि अराम की
सेना उस के विरुद्ध में चढ़ आई और वे यहूदाह में और
यरूसलम में आये और लोगों में से सारे अध्यक्षों को नष्ट किया
२४ और उन की सारी लूट दमिश्क के राजा पास भेजी। क्योंकि
अरामियों की सेना तो एक छोटी जथा को लेके आई और
परमेश्वर ने एक अति बड़ी सेना को उन के हाथ में सौंप दिया
क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर को त्यागा था
सो उन्हों ने यूआश पर न्याय का दण्ड किया॥
२५ और जब वे उस्से फिर गये क्योंकि उन्हों ने उसे बड़े बड़े
रोग में छोड़ दिया तब उसी के दासों ने यहूयदः याजक के
बेटों के लोहू के लिये युक्ति बांधी और उस के बिछौने पर
उसे मारके घात किया और उन्हों ने उसे दाऊद के नगर में

२६ गाड़ा परन्तु उसे राजाओं की समाधिन में न गाड़ा। और
जिन्हों ने उस के विरुद्ध में गुष्ट बांधी सो एक अम्मूनी
सिमआत का बेटा जवद था और एक मोअबी सिमियत का
२७ बेटा यहूज़बद था। अब उस के बेटे और बोझों का भार जो
उस पर धरा गया और परमेश्वर के मन्दिर की नेंव डालना
देखो वे राजाओं के बर्णन की पुस्तक में लिखे हैं और उस के
बेटे अमसियाह ने उस की संती राज्य किया॥

पचीसवां पर्व्व।

१ अमसियाह ने पचीस बरस की वय में राज्य करना आरंभ
किया और उस ने यरूसलम में उंतीस बरस राज्य किया और
उस की माता का नाम यहूअट्टान था जो यरूसलीमी थी।
२ और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई परन्तु सिद्ध मन
३ से नहीं। और ऐसा हुआ कि जब राज्य उस पर स्थिर हुआ
तब उस ने अपने पिता के घातक सेवकों को घात किया।
४ परन्तु उस ने उन के सन्तानों को घात न किया पर जैसा कि
मूसा की व्यवस्था की पुस्तक में लिखा है जहां परमेश्वर ने
आज्ञा करके कहा था कि बालकों की संती पिता मारे न जावेंगे
और पिता के लिये बालक मारे न जावेंगे परन्तु हर एक जन
अपने अपने पाप के लिये मारा जावेगा॥

५ और अमसियाह ने यहूदाह को एकट्ठा किया और उन के
घराने के समान उस ने उन्हें सहस्रपति और शतपति सारे
यहूदाह और बिनयमीन में किये उस ने उन्हें बीस बरस के
और उस्से ऊपर गिना और उन्हें तीन लाख चुने हुए पाया जो
संग्राम में जाने के और बरछी और ढाल बांधने के योग्य थे।
६ और उस ने एक लाख महाबीर इसराएलियों में से सौ तोड़े
चांदी पर भाड़े किये॥

७ परन्तु ईश्वर का एक जन यह कहते हुए उस पास आया
कि हे राजा इसराएल की सेना तेरे साथ जाने न पावे क्योंकि
परमेश्वर इसराएल के साथ अर्थात् सारे इफ़रायम के सन्तानों
८ के साथ नहीं है। परन्तु यदि तू जावेगा तो जा संग्राम के
लिये दृढ़ हो ईश्वर तुझे तेरे बैरियों के आगे ध्वस्त करेगा
क्योंकि सहाय करने को और ध्वस्त करने को ईश्वर में शक्ति
९ है। और अमसियाह ने ईश्वर के जन से कहा पर सौ तोड़े
के लिये जो मैं ने इसराएल की सेना को दिये हैं हम क्या
करें और ईश्वर के जन ने उत्तर दिया कि परमेश्वर इस्से अधिक
तुझे देने को सामर्थ्य रखता है॥

१० तब अमसियाह ने उस सेना को अलग किया जो इफ़रायम
में से उस पास आई थी कि अपने स्थान को फिर जावे इस
कारण उन का क्रोध यहूदाह के विरुद्ध अत्यन्त भड़का और वे
११ क्रोध के तपन से अपने घर गये। तब अमसियाह ने आप को
दृढ़ किया और अपने लोगों को बाहर नून की तराई में ले
गया और शऊर के सन्तानों के दस सहस्र जन को जुझा दिया।
१२ और यहूदाह के सन्तान ने दस सहस्र को जीते जी बंधुआई
में ले जाके और एक पर्वत की चोटी पर पहुंचाके पर्वत की
चोटी पर से उन्हें गिरा दिया कि सब के सब चकनाचूर हो
१३ गये। परन्तु जथा के पुत्र जिन्हें अमसियाह ने फेर दिया था
जिसतें उस के साथ संग्राम पर न जावें समरून से लेके
बैतहोरान लों यहूदाह के नगरों पर पड़े और उन में से तीन
सहस्र को जुझा दिया और बहुत लूट लिया॥

१४ और जब अमसियाह अदूमियों को जुझाके फिर आया उस
के पीछे यों हुआ कि वुह शऊर के सन्तान के देवों को लाया
और उन्हें अपने लिये देव स्थापित किये और उन के आगे
१५ दण्डवत किई और उन के लिये धूप जलाया। इस्से परमेश्वर

का क्रोध अमसियाह पर भड़का और उस ने उस पास एक
भविष्यद्वक्ता को भेजा जिस ने उसे कहा कि जो देव अपने ही
लोगों को तेरे हाथ से छुड़ा न सके तू ने उन का पीछा क्यों
१६ किया। जब वुह उस्से कह रहा था तो यों हुआ कि उस ने
उसे कहा कि तू राज्य के मंचियों में को है रह जा तू क्यों
मारा जावे तब भविष्यद्वक्ता रह गया और कहा कि जो तू ने
यह किया है और मेरे मंच को नहीं माना है मैं जानता हूं
कि परमेश्वर ने तुझे नाश करने को मंच दिया है॥
१७ तब यहूदाह के राजा अमसियाह ने मंच लेके इसराएल
के राजा याहू के बेटे यहूअखज़ के बेटे यूआश कने कहला
१८ भेजा कि आ हम एक दूसरे को आम्ने साम्ने देखें। सो इसराएल
के राजा यूआश ने यहूदाह के राजा अमसियाह को कहला
भेजा कि लुबनान के भटकटैया ने लुबनान के देवदारु पेड़ को
कहला भेजा कि अपनी बेटी मेरे बेटे को बियाह दे फिर
लुबनान का एक बनैला पशु उस मार्ग से निकला और भटकटैये
१९ को रौंद डाला। तू कहता है कि देख मैं ने अदूमियों को
मारा है और तेरे मन ने अहंकार के लिये तुझे उभारा है सो
अब अपने घर में रह जा तू अपने कष्ट के लिये क्यों छेड़ता
२० है कि आप और यहूदाह तेरे साथ मारे जावें। परन्तु
अमसियाह ने न माना क्योंकि यह ईश्वर से था जिसतें वुह
उन्हें उन के हाथ में सौंप देवे क्योंकि उन्हों ने अदूम के देवों
२१ का पीछा किया था। सो इसराएल का राजा यूआश चढ़ गया
और उन्हों ने अर्थात् उस ने और यहूदाह के राजा अमसियाह
२२ ने यहूदाह के बैतशम्स में आम्ने साम्ने देखा। और यहूदाह
इसराएल के आगे मारे गये और हर एक जन अपने अपने
२३ तंबू को भागा। और इसराएल के राजा यूआश यहूअखज़
के बेटे यूआश के बेटे यहूदाह के राजा अमसियाह को

बेतशम्स में पकड़के यरूसलम में लाया और इफ़रायम के
फाटक से देखवैये फाटक लों चार सौ हाथ यरूसलम की
२४ भीत ढा दिई। और सारे सोना चांदी और सारे पात्र जो
परमेश्वर के मन्दिर में पाये गये और आविदअटूम के संग और
राजा के भवन के भंडार और ओलों को लेके समरून को फिर
आया॥
२५ और युआश का बेटा यहूदाह का राजा अमसियाह इसराएल
के राजा यहूअख़ज़ के बेटे यूआश के मरने के पीछे पंद्रह
२६ बरस जीया। अब अमसियाह की रही हुई क्रिया आदि और
अन्त देखो क्या वे इसराएल और यहूदाह के राजाओं की
२७ पुस्तक में नहीं लिखीं। और जब अमसियाह परमेश्वर का
पीछा करने से फिर गया तब उन्हों ने उस के बिरुद्ध यरूसलम
में एक गुप्त बांधी और वुह लकीस को भाग गया परन्तु उन्हों
ने लकीस में उस के पीछे भेजा और उसे वहां घात किया।
२८ और वे उसे घोड़ों पर लाये और यहूदाह के नगर में उस के
पितरों में उन्हों ने उसे गाड़ा॥

छबीसवां पर्व्व।

१ तब यहूदाह के सारे लोगों ने उज़्ज़ियाह को लिया जो
सोलह बरस का था और उस के पिता अमसियाह के स्थान
२ पर उसे राजा किया। उस ने ऐलात को बनाया और जब
राजा ने अपने पितरों में शयन किया तब उसे यहूदाह के
राज्य में फेर मिला दिया॥
३ उज़्ज़ियाह ने सोलह बरस की बय में राज्य करना आरंभ
किया और बावन बरस यरूसलम में राज्य किया उस की माता
४ का नाम यरूसलोमी यकुल्लियाह था। और अपने पिता
अमसियाह की सारी क्रिया के समान उस ने परमेश्वर की दृष्टि

५ में भलाई किई। और उस ने ज़करियाह के दिनों में जो ईश्वर
के दर्शन में समझ रखता था ईश्वर को खोजा और जब लों
वुह परमेश्वर को खोजता रहा तब लों ईश्वर ने उसे भाग्यमान
किया॥

६ और उस ने जाके फ़िलिसतियों के विरुद्ध संग्राम किया और
जात की और यबनिः की और अशदूद की भीत को तोड़
डाला और अशदूद के आस पास और फ़िलिसतियों के मध्य
७ नगर बनवाये। और ईश्वर ने फ़िलिसतियों के विरुद्ध और
अ़रबियों के विरुद्ध जो गुरबअ़ल में रहते थे मऊनियों के
८ विरुद्ध उस की सहाय किई। और अम्मूनियों ने उज्ज़ियाह के
पास भेंट भेजी और मिस्र के पैठ लों उस की कीर्त्ति फैली
क्योंकि वुह अत्यंत दृढ़ हुआ॥

९ और भी उज्ज़ियाह ने यरूसलम में कोने के फाटक पर
और तराई के फाटक पर और घूम में गुम्मट बनाके उन्हें
१० दृढ़ किया। और उस ने अरण्य में गुम्मट बनवाये और
बहुत कूए खोदवाये क्योंकि नीचे देश में और चौगानों में
उस के बहुत ढोर थे और पर्व्वतों में और करमिल में किसान
और दाख के सुधरवैये थे क्योंकि किसनई उसे अच्छी लगती
थी॥

११ और भी उज्ज़ियाह योद्धाओं की एक सेना रखता था जो
जथा जथा यईएल लेखक के और मअ़सियाह आज्ञाकारी के
और राजा के एक सेनापति हननियाह के बश में होके संग्राम
१२ को निकलती थी। महावीरों के पितरों के प्रधानों की समस्त गिनती
१३ दो सहस्र छः सौ। और उन के बश में बैरी के विरुद्ध राजा
की सहाय के लिये एक सेना का पराक्रम तीन लाख सात सहस्र
१४ पांच सौ जो बड़े पराक्रम से युद्ध करते थे। और उज्ज़ियाह
ने उन के लिये सारी सेना में सर्व्वत्र ढाल और बरछी और

टोप और झिलम और धनुष और पत्थर के लिये ढेलवांस
१५ सिद्ध किये। और उस ने गुम्मटों पर और कोटों पर धरने के
लिये जिसतें बाण और बड़े बड़े पत्थर मारे यरूसलम में गुणी
लोगों से निकाले हुए कल बनाये और उस का नाम दूर लों
फैल गया क्योंकि बलवन्त होने लों आश्चर्य्यित से उस की सहाय
हुई॥

१६ परन्तु जब वुह बलवन्त हुआ तब विनाश के लिये उस
का मन फूला क्योंकि उस ने परमेश्वर अपने ईश्वर के बिरुद्ध
अपराध किया और धूप की बेदी पर धूप जलाने के लिये परमेश्वर
१७ के मन्दिर में गया। और अज़रियाह याजक और उस के साथ
१८ परमेश्वर के अस्सी बलवन्त याजक उस के पीछे गये। और
उन्हों ने उज़्ज़ियाह राजा को रोकके उसे कहा कि हे उज़्ज़ियाह
परमेश्वर के लिये धूप जलाने को तेरा काम नहीं परन्तु हारून
के बेटे याजकों के जो धूप जलाने के लिये ठहराये गये हैं
सो पवित्र स्थान से बाहर जा क्योंकि तू ने अपराध किया है
और परमेश्वर ईश्वर तेरी प्रतिष्ठा के लिये न होगा॥

१९ तब उज़्ज़ियाह कोपित हुआ और धूप जलाने को उस के
हाथ में एक धूपावरी थी और याजकों पर कोपित होते हुए
धूप की बेदी के लग से ईश्वर के मन्दिर में याजकों के आगे उस
२० के कपाल पर कोढ़ फूट निकला। और अज़रियाह प्रधान
याजक और सारे याजकों ने उस पर दृष्टि किई और क्या देखते
हैं कि उस के सिर पर कोढ़ निकला और उन्हों ने उसे वहां
से दूर करने को शीघ्रता किई क्योंकि परमेश्वर ने उसे मारा
२१ था। और उज़्ज़ियाह राजा अपने मरने लों कोढ़ी रहा और
अलग घर में कोढ़ी होके रहा क्योंकि वुह परमेश्वर के मन्दिर
से अलग किया गया था और उस का बेटा यूताम राजा के
भवन पर होके देश के लोगों का न्याय करता था॥

२२ अब उज्ज़ियाह की रही हुई क्रिया आदि और अंत अमूस
२३ के बेटे यसअियाह भविष्यद्वक्ता ने लिखा है। सो उज्ज़ियाह
ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसे उस के
पितरों में राजाओं की समाधिस्थान में गाड़ा क्योंकि उन्हों ने
कहा कि वुह कोढ़ी है और उस के बेटे यूताम ने उस की
संती राज्य किया ॥

सत्ताईसवां पर्व्व ।

१ यूताम ने पचीस बरस की वय में राज्य करना आरंभ किया
और उस ने यरूसलम में सोलह बरस राज्य किया और उस
२ की माता का नाम यरूसः था जो सदूक़ की बेटी थी। और
उस ने अपने पिता उज्ज़ियाह के सारे कार्य्य के समान परमेश्वर
की दृष्टि में भलाई किई तथापि वुह परमेश्वर के मन्दिर में
३ नहीं पैठा और अब भी लोग अशुद्ध कर्म करते रहे। उस ने
परमेश्वर के मन्दिर का ऊंचा फाटक बनाया और उफ़ल की
भीत पर उस ने बहुत बनाया ॥
४ और इस्से अधिक उस ने यहूदाह के पर्वतों में नगर
बनवाये और बन में उस ने गढ़ियां और गुम्मट बनवाये।
५ उस ने अम्मूनियों के राजा के साथ लड़के भी उसे जीता और
उस बरस में अम्मून के सन्तानों ने उसे एक सौ तोड़े चांदी
और दस सहस्र नपुए गोहूं और दस सहस्र नपुए जव दिये
और दूसरे और तीसरे बरस भी अम्मून के सन्तानों ने उसे
६ उतना ही दिये। सो यूताम बलवन्त हुआ क्योंकि उस ने अपने
ईश्वर परमेश्वर के आगे अपनी चाल सुधारी ॥
७ अब यूताम की रही हुई क्रिया और उस की सारी लड़ाइयां
और उस की चाल देखो वे यहूदाह और इसराएल के राजाओं
८ की पुस्तक में लिखी हैं। जब उस ने राज्य करना आरंभ किया

तब पचीस बरस का था और यरूसलम में सोलह बरस राज्य
९ किया। और यूताम ने अपने पितरों में शयन किया और उन्हों
ने उसे दाऊद के नगर में गाड़ा और उस के बेटे आख़ज़ ने
उस की संती राज्य किया॥

अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

१ आख़ज़ ने बीस बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया
और उस ने यरूसलम में सोलह बरस राज्य किया परन्तु अपने
पिता दाऊद के समान परमेश्वर की दृष्टि में भलाई न किई।
२ क्योंकि वुह इसराएल के राजाओं की चालों पर चलता था और
३ बञलीम के लिये ढाली हुई मूर्त्ति भी बनाईं। और उस्से अधिक
उस ने हिन्नुम के बेटे की तराई में बलि चढ़ाया और अन्यदेशियों
के घिनितों के समान जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल के सन्तानों
के आगे से दूर किया था अपने सन्तान को आग में से चलाया।
४ और उस ने ऊंचे स्थानों और पर्बतों पर और हर एक हरे पेड़
तले बलि चढ़ाया और धूप जलाया॥
५ इस लिये उस के ईश्वर परमेश्वर ने उसे अराम के राजा के
हाथ में सौंप दिया और उन्हों ने उसे मारा और उन में से
एक बड़ी मंडली को बंधुआई में ले गये और दमिश्क में
पहुंचाया और वुह भी इसराएल के राजा के हाथ में सौंपा
६ गया जिस ने उसे बड़ी मार से मारा। क्योंकि रमलियाह के
बेटे फ़िक़: ने दिन भर में यहूदाह में से एक लाख बीस सहस्र
को घात किया ये सब बीर पुत्र थे इस कारण से कि उन्हों
७ ने अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर को त्याग किया था। और
इफ़रायम के एक बलवन्त जन ज़िकरी ने राजा के बेटे
मअसियाह को और घर के अध्यक्ष अज़रिक़ाम को और राजा
८ के समीपी इलक़न: को घात किया। और इसराएल के सन्तान

अपने भाईबंद में से दो लाख स्त्री बेटे और बेटी बंधुआई में
ले गये और उन में बहुत सी लूट लेके लूट को समरून में
लाये ॥
९ परन्तु आदिद नाम एक जन परमेश्वर का भविष्यद्वक्ता वहां
था और वुह समरून की सेना के आगे गया और उन्हें कहा
कि देखो तुम्हारे पितरों का ईश्वर परमेश्वर यहूदाह से कोपित
था इस लिये उस ने उन्हें तुम्हारे हाथ में सौंप दिया है और
तुम ने उन्हें ऐसे कोप से घात किया कि स्वर्ग लों पहुंच गया।
१० और अब तुम यहूदाह और यरूसलम के सन्तानों को दास
और दासी में रक्खा चाहते हो क्या तुम्में अर्थात् तुम्हों में
११ अपने ईश्वर परमेश्वर के बिरुद्ध पाप नहीं है। इस लिये अब
मेरी सुनो और अपने भाईबंदों में के बंधुओं को जिन्हें तुम
लाये हो उन बंधुओं को सौंप देओ क्योंकि परमेश्वर का कोप
१२ तुम पर भड़का है। तब इफ़रायम के सन्तान के कितने
प्रधानों ने अर्थात् यहूहनान का बेटा अज़रियाह और मुसलिमियत
का बेटा बरकियाह और सलूम का बेटा हिज़कियाह और
हदली का बेटा अमासा उन के बिरुद्ध खड़े हुए जो संग्राम से
१३ आये। और उन्हें कहा कि तुम बंधुओं को इधर न लाओगे
क्योंकि हम ने तो परमेश्वर के बिरोध में अपराध किया है
हमारे पापों को और अपराधों को बढ़ाने चाहते हो क्योंकि
हमारा अपराध बड़ा है और इसराएल के बिरुद्ध महा कोप
१४ है। तब हथियारबंदों ने बंधुओं को और लूट को अध्यक्षों
१५ के और सारी मंडली के आगे छोड़ दिया। फिर जिन मनुष्यों
का नाम लिखा था सो उठ खड़े हुए और बंधुओं को और
लूट को लेके उन में के सारे नग्नों को पहिराया और बिभूषित
किया और जूते पहिनाये और उन्हें खिला पिलाके उन पर
तेल लगवाया और उन में के सारे दुर्बलों को गदहों पर बैठाके

खजूर पेड़ के नगर अर्थात् यरीहो में अपने भाइयों के पास
पहुंचाया तब वे समरून को फिर आये ॥
१६ उस समय आख़ज़ राजा ने अपनी सहाय के लिये असूर
१७ के राजा पास भेजा। क्योंकि अदूमी ने फेर आके यहूदाह को
१८ मारा और बंधुये ले गये। फ़िलिसतियों ने भी तराई के देश
के नगरों को और यहूदाह के दक्षिण को घेरा था और बैतशम्स
को और ऐयलून को और जदीरात को और शोको को उस के
गाओं समेत और तिमन: उस के गाओं समेत और जिमसू को
भी और उस के गाओं को ले लिया और वे उन में बसे।
१६ क्योंकि इसराएल के राजा आख़ज़ के कारण से परमेश्वर ने
यहूदाह को घटाया इस लिये कि उस ने यहूदाह को नग्न
२० किया और परमेश्वर के बिरुद्ध महा अपराध किया। तब असूर
के राजा तिगलतपिलासर ने उस पास आके उसे सताया परन्तु
२१ उसे दृढ़ न किया। क्योंकि आख़ज़ ने परमेश्वर के मन्दिर से
और राजभवन से और अध्यक्षों से भाग लेके असूर के राजा
२२ को दिया परन्तु उस ने उस की सहाय न किई। और अपने
दुःख के समय में इसी आख़ज़ राजा ने परमेश्वर के बिरुद्ध
अधिक अपराध किया॥
२३ क्योंकि उस ने दमिश्क के देवों के लिये जिन्हों ने उसे
मारा था बलि चढ़ाया और उस ने कहा कि अराम के राजाओं
के देवों ने उन की सहायता किई इस लिये मैं उन के लिये
बलि चढ़ाऊंगा जिसतें वे मेरी सहायता करें परन्तु वे उस के
२४ और सारे इसराएल के नष्टता के कारण हुए। और आख़ज़ ने
ईश्वर के मन्दिर के पात्रों को एकट्ठे किया और ईश्वर के मन्दिर
के पात्रों को काटके टुकड़े टुकड़े किये और परमेश्वर के मन्दिर
के द्वारों को बंद किया और उस ने अपने लिये यरूसलम के
२५ हर एक कोने में बेदियां बनवाईं। और यहूदाह के हर एक

नगर में उस ने उपरी देवों के नाम से धूप जलाने को ऊंचे
ऊंचे स्थान बनाये और अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर को रिस
दिलाया ॥
२६ अब उस की रही हुई क्रिया और उस की सारी चाल आदि
और अंत देखो वे यहूदाह के और इसराएल के राजाओं की
२७ पुस्तक में लिखी हैं । और आख़ज़ ने अपने पितरों में शयन
किया और उन्हों ने उसे यरूसलम नगर में गाड़ा परन्तु उसे
इसराएल के राजाओं की समाधिन में न पहुंचाया और उस
का बेटा हिज़क़ियाह उस की संती राज्य पर बैठा ॥

उंतीसवां पर्व्व ।

१ हिज़क़ियाह ने पचीस बरस की बय में राज्य करना आरंभ
किया और उंतीस बरस यरूसलम में राज्य किया और उस
की माता का नाम अबियाह था वुह ज़करियाह की बेटी थी।
२ और उस ने अपने पिता दाऊद के सारे कार्य्य के समान परमेश्वर
की दृष्टि में भलाई किई ॥
३ उस ने अपने राज्य के पहिले बरस के पहिले मास में परमेश्वर
४ के मन्दिर के द्वारों को खोला और उन्हें सुधारा । और उस ने
याजकों को और लावियों को भीतर लाके पूरब की सड़क में
५ एकट्ठे किया । और उन्हें कहा कि हे लावियो मेरी सुनो अब
अपने को पवित्र करो और अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर के
मन्दिर को पवित्र करो और पवित्रस्थान से सारा कूड़ा बाहर
६ ले जाओ । क्योंकि हमारे पितरों ने अपराध किया है और
हमारे ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई है और उसे त्याग
किया है और अपने अपने मुंह को परमेश्वर के निवास से फेर
७ दिया है और अपनी अपनी पीठ उस की ओर किई है । और
ओसारे के द्वारों को बंद किया है और दीपकों को बुझाया है

और इसराएल के ईश्वर के लिये धूप नहीं जलाया और पवित्र
८ स्थान में बलिदान नहीं चढ़ाया। इस लिये परमेश्वर का कोप
यहूदाह और यरूसलम पर पड़ा और जैसे तुम लोग अपनी आंखों
से देखते हो उस ने वैसा ही उन्हें बिपत में पड़ने विस्मित होने
९ और ठट्ठे में उड़ाये जाने के लिये छोड़ दिया। क्योंकि देख हमारे
पितर तलवार से मारे गये हैं और हमारे बेटे बेटियां और हमारी
१० पत्नियां इस के लिये बंधुआई में हैं। अब मेरे मन में है कि
इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के साथ एक बाचा बांधूं जिसतें
११ उस का महा कोप हम से फिर जावे। हे मेरे बेटो तुम अब
आलश्य न करो क्योंकि परमेश्वर ने तुम्हें अपने आगे खड़ा
होके सेवा करने को चुन लिया है जिसतें तुम लोग उस की
सेवा करके धूप जलाओ॥

१२ तब क़िहातियों के सन्तानों में से अमासै का बेटा महत
और अज़रियाह का बेटा यूएल और मिरारी के बेटों में से
अबदी का बेटा क़ीश और यहलिएल का बेटा अज़रियाह और
जैरसुनियों में से ज़िम्म: का बेटा यूअख़ और यूअख़ का बेटा
१३ अदन। और इलिसफ़न के बेटों में से शिमरी और यआीएल
और आसफ़ के बेटों में से ज़िकरियाह और मत्तनियाह।
१४ और हेमान के बेटों में से यहिएल और शमई और यदूतून
१५ के बेटों में से समअयाह और उज्ज़िएल लावी उठे। और
अपने भाईबन्दों को एकट्ठा किया और अपने को पवित्र किया
और परमेश्वर के कार्य्य के बिषय में राजा की आज्ञा के समान
१६ परमेश्वर के मन्दिर को झाड़ने आये। और याजक झाड़ने के
लिये ईश्वर के मन्दिर के भीतर गये और जो जो अपवित्रता
उन्हों ने परमेश्वर के मन्दिर में और परमेश्वर के मन्दिर के
आंगन में पाई सो सो बाहर किया और लावियों ने उठके
१७ बाहर कैदरून नाली में डाला। अब पहिले मास की पहिली

तिथि में उन्हों ने पवित्र करना आरंभ किया और मास के
आठवें दिन वे परमेश्वर के ओसारे लों आये सो उन्हों ने आठ
दिन में परमेश्वर के मन्दिर को पवित्र किया और पहिले मास
की सोलहवीं तिथि में वे पूरा कर चुके ॥
१८ तब उन्हों ने हिज़क़ियाह राजा के आगे जाके कहा कि
हम परमेश्वर के सारे मन्दिर को और बलिदान की बेदी को
उस के सारे पात्र समेत और भेंट की रोटी का मंच उस के
१९ सारे पात्र समेत शुद्ध किया है। और उस्से अधिक सारे पात्रों
को जो आख़ज़ राजा ने अपने राज्य में अपराध करके दूर
किया हम ने सिद्ध करके पवित्र किया है और देख वे परमेश्वर
की बेदी के आगे हैं ॥
२० तब हिज़क़ियाह राजा तड़के उठा और नगर के अध्यक्षों
२१ को एकट्ठे किया और परमेश्वर के मन्दिर को चढ़ गया। और
राज्य के पाप की भेंट के लिये और पवित्रस्थान के लिये और
यहूदाह के लिये वे सात बैल और सात मेंढ़े और सात मेम्ने
और सात बकरे लाये और उस ने हारून के बेटे याजकों को
२२ उन्हें परमेश्वर की बेदी पर चढ़ाने की आज्ञा किई। सो उन्हों
ने बैलों को मारा और याजकों ने लोहू लेके बेदी पर छिड़का
इसी रीति से उन्हों ने मेंढ़ों को मारके लोहू को बेदी पर छिड़का
उन्हों ने मेम्नों को भी मारा और लोहू को बेदी पर छिड़का।
२३ और वे पाप की भेंट के बकरों को राजा के और मंडली के
२४ आगे लाये और उन्हों ने अपने हाथ उन पर धरे। फिर याजकों
ने उन्हें मारा और सारे इसराएल के लिये प्रायश्चित्त करने
को उन के लोहू से बेदी पर छिड़का क्योंकि राजा ने सारे
इसराएल के लिये बलिदान की भेंट और पाप की भेंट चढ़ाने
२५ की आज्ञा किई। और दाऊद की और राजा के दर्शक जद
की और नातन भविष्यद्वक्ता की आज्ञा के समान उस ने करताल

और नवल और वीणा लिये हुए लावियों को परमेश्वर के मन्दिर
में ठहराया क्योंकि परमेश्वर ने अपने भविष्यद्वक्तों के द्वारा से
२६ यों आज्ञा किई थी। और लावी दाऊद के बाजों को और याजक
२७ तुरहियों को लेके खड़े हुए। और हिज़क़ियाह ने वेदी पर
बलिदान की भेंट चढ़ाने को आज्ञा किई और बलिदान करने
के समय में परमेश्वर का गान तुरहियों से और इसराएल के
२८ राजा दाऊद के बाजों से आरंभ हुआ। और सारी मंडली ने
दण्डवत किई और गायकों ने गाया और तुरही के बजवैयों
ने शब्द किया और ये सब बलिदान की भेंट के चढ़ाये जाने
२९ लों होते रहे। और जब वे बलिदान की भेंट चढ़ा चुके तब
राजा ने और सभों ने जो उस के पास थे झुकके प्रणाम किया।
३० और भी हिज़क़ियाह राजा ने और अध्यक्षों ने लावियों को
आज्ञा किई कि दाऊद के और आसफ़ दर्शी के वचन से परमेश्वर
की स्तुति गावें और उन्हों ने आनन्द से स्तुति गाई और सिर
झुकाके सेवा किई॥

३१ तब हिज़क़ियाह ने उत्तर देके कहा कि अब तुम परमेश्वर
के लिये हाथ भरके आये हो सो अब पास आओ और बलि
और धन्यवाद की भेंट परमेश्वर के मन्दिर में लाओ फिर मंडली
बलि के लिये और धन्यवाद के लिये भेंट लाई और बहुतेरे
३२ अपनी वांछा के समान बलिदान के लिये भेंट लाये। और
बलिदान की भेंट की गिनती जो मंडली लाई सो सत्तर बैल
और सौ मेंढ़े और दो सौ मेम्ने ये सब परमेश्वर के बलिदान
३३ की भेंट के लिये थे। और पवित्रित वस्तु छः सौ बैल और
३४ तीन सहस्र भेड़ें। परन्तु याजक ऐसे थोड़े थे कि वे बलिदान की
सारी भेंटों की खाल उतार न सके इसी लिये उन के भाई
लावियों ने कार्य्य के अंत लों और याजकों के आप को पवित्र
करने लों उन की सहाय किई क्योंकि लावियों ने अपने को

३५ पवित्र करने के लिये याजकों से अधिक खरे मन के थे । और
कुशल की भेंटों की चिकनाई के साथ और बलिदान की पीने
की भेंटों के साथ बलिदान भी बहुताई से थे इसी रीति से
३६ परमेश्वर के मन्दिर की सेवा विधि से ठहराई गई । और
हिज़क़ियाह और सारे लोगों ने आनन्द किया कि परमेश्वर ने
लोगों को सिद्ध किया था क्योंकि वुह कार्य्य अचानक हुआ ॥

तीसवां पर्व्व ।

१ और हिज़क़ियाह ने सारे इसराएल और यहूदाह और
इफ़रायम और मुनस्सी के पास पत्रियां लिख भेजीं जिसतें वे
यरूसलम को परमेश्वर के मन्दिर में आके परमेश्वर इसराएल
२ के ईश्वर के लिये फसह का पर्व रक्खें । क्योंकि राजा और उस
के अध्यक्ष और यरूसलम में की सारी मंडली ने दूसरे मास
३ में फसह के पर्व रखने का परामर्श किया । क्योंकि उस समय
वे इस कारण रख न सके कि याजकों ने आप को निरधार
पवित्र न किया था और लोग भी यरूसलम में एकट्ठे न हुए
४ थे । और वुह बात राजा की और सारी मंडली की दृष्टि में
५ अच्छी लगी । सो उन्हों ने बिअरसबः से लेके दान लों सारे
इसराएलियों में प्रचारने को यह बात ठहराई कि वे यरूसलम
में आके परमेश्वर इसराएल के ईश्वर के लिये फसह का पर्व
रक्खें क्योंकि लिखे हुए के समान उन्हों ने बहुत दिन से न
किया था ॥

६ सो राजा के हाथ की और उस के अध्यक्षों की पत्री लेके डाकिये
सारे इसराएलियों में और यहूदाह में ले गये और राजा की आज्ञा
के समान कहा कि हे इसराएल के सन्तानो परमेश्वर अबिरहाम
इज़हाक़ और इसराएल के ईश्वर की ओर फिरो और वुह तुम्हारे
रहे हुए की ओर जो असूर के राजाओं के हाथ से बचे हैं

७ फिरेगा। और अपने पितरों के समान और अपने भाईबंदों के
समान जिन्हों ने परमेश्वर अपने पितरों के ईश्वर का अपराध
किया मत होओ इस लिये उस ने उन्हें नाश को सौंप दिया
८ जैसा तुम देखते हो। इस कारण अब अपने पितरों की नाईं
अपने गले को कठोर मत करो परन्तु आप आप को परमेश्वर
को सौंपो और उस के पवित्रस्थान में जाओ जिसे उस ने सदा
के लिये पवित्र किया है और परमेश्वर अपने ईश्वर की सेवा
९ करो जिसतें उस का महा कोप तुम पर से जाता रहे। क्योंकि
यदि तुम लोग फेर परमेश्वर की ओर उलटा फिरोगे तब
तुम्हारे भाई और तुम्हारे बाल बच्चे उन के आगे जो उन्हें बंधुआई
में ले गये हैं दया पावेंगे यहां लों कि वे इस देश में फिर
आवेंगे क्योंकि परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर कृपालु और दयालु
है और जो तुम उस की ओर फिरोगे तो वुह तुम से अपना
मुंह न मोड़ेगा॥
१० सो डांकिये इफ़रायम और मुनस्सी के देश में से नगर
नगर ज़बूलून लों गये परन्तु उन्हों ने ठट्ठा करके उन्हें चिढ़ाया।
११ तथापि यसर के और मुनस्सी और ज़बूलून के बहुतेरों ने
१२ अपने को नम्र किया और यरूसलम को आये। यहूदाह में
भी उन्हें एक मन देने को परमेश्वर का हाथ उन पर पड़ा कि
परमेश्वर के बचन से राजा की और अध्यक्षों की आज्ञा को
पालन करें॥
१३ और दूसरे मास में अख़मीरी रोटी का पर्ब्ब रखने को अति
१४ बड़ी मंडली यरूसलम में एकट्ठी हुई। और उन्हों ने उठके
यरूसलम में की वेदियों को दूर किया और धूप जलाने की
सारी वेदियों को दूर किया और क़ैदरून नाली में फेंक दिया।
१५ तब उन्हों ने दूसरे मास की चौदहवीं तिथि में फसह का
मेम्ना मारा और याजकों ने और लावियों ने लज्जित होके

आप को पवित्र किया और परमेश्वर के मन्दिर में बलिदान की
१६ भेंटें लाये । और वे ईश्वर के जन मूसा की व्यवस्था के समान
अपनी रीति की नाईं अपने अपने स्थान में खड़े हुए और
याजकों ने लावियों के हाथ से लोहू लेके छिड़का ॥
१७ क्योंकि मंडली में बहुत थे जो पवित्र न किये गये थे इस
लिये हर एक की संती जो पवित्र न किया गया परमेश्वर के
लिये पवित्र करने को लावियों ने फसह का मेम्ना मारा ।
१८ क्योंकि लोगों की एक मंडली अर्थात् इफ़रायम और मुनस्सी के
इशकार और ज़बूलून के बहुतों ने आप को पवित्र न किया
तथापि लिखे हुए से भिन्न फसह खाया परन्तु हिज़क़ियाह ने
यह कहके उन के लिये प्रार्थना किई कि परमेश्वर हर एक को
१९ क्षमा करे । जिस ने अपने ईश्वर परमेश्वर की खोज के लिये
अपने मन को सिद्ध न किया यद्यपि पवित्रस्थान के पवित्र किये
२० जाने के समान न हुआ हो । और परमेश्वर ने हिज़क़ियाह
की सुनी और लोगों को क्षमा किया ॥
२१ और इसराएल के सन्तान जो यरूसलम में पाये गये बड़े
आनन्द से सात दिन लों अख़मीरी रोटी का पर्व रक्खा और
लावी और याजक प्रति दिन परमेश्वर के बड़े शब्द के बाजों
२२ से परमेश्वर की स्तुति करते रहे। और हिज़क़ियाह ने सारे लावियों
से जो परमेश्वर का ज्ञान अच्छी रीति से जानते थे शान्ति की
बात कही और वे सात दिन भर सारे पर्व लों खाते और कुशल
की भेंट चढ़ाते धन्य मानते रहे ॥
२३ और सारी मंडली ने परामर्ष करके सात दिन और रक्खे
२४ और वे सात दिन आनन्द से मानते रहे । क्योंकि यहूदाह के
राजा हिज़क़ियाह ने मंडली को एक सहस्र बैल और सात
सहस्र भेड़ दिये और अध्यक्षों ने मंडली को एक सहस्र बैल
और दस सहस्र भेड़ दिये और याजकों में से बहुतों ने अपने

२५ को पवित्र किया। और यहूदाह की सारी मंडलियों ने याजकों
और लावियों सहित और इसराएल में की सारी मंडली और
परदेशी जो इसराएल के देश से आये थे और जो यहूदाह
२६ देश में रहते थे उन्हों ने आनन्द किया। सो यरूसलम में
बड़ा आनन्द हुआ क्योंकि इसराएल के राजा दाऊद के बेटे
२७ सुलेमान के समय से यरूसलम में ऐसा न हुआ था। तब
याजक और लावी उठे और लोगों को आशीर्वाद दिया और
उन का शब्द सुना गया और उन की प्रार्थना उस की पवित्रता
के निवास स्वर्ग लों पहुंची॥

एकतीसवां पर्व्व।

१ और जब यह सब हो चुका तब सारे इसराएल वहां से
यहूदाह के नगरों को गये और सारी मूरतों को तोड़ डाला
और कुंजों को काट डाला और ऊंचे स्थानों को और बेदियों
को सारे यहूदाह और बिनयमीन और इफ़रायम और मुनस्सी
में से ढा दिया यहां लों कि उन्हों ने सभों को सर्व्वथा नाश
किया तब इसराएल के सारे सन्तान अपने अपने नगर और
अधिकार को फिर गये॥

२ और हिज़क़ियाह ने याजकों की पारियों को ठहराया और
लावियों को उन की पारियों के समान हर एक जन को उस की सेवा
के समान बलिदान की भेंट के लिये और कुशल की भेंटों के लिये
और परमेश्वर के तंबुओं के फाटकों में स्तुति करने के कारण
३ याजकों को और लावियों को ठहराया। और बलिदान की भेंटों
के लिये अर्थात् सांझ बिहान के बलिदान की भेंटों के लिये और
विश्रामों और अमावास्या और ठहराये हुए पर्व्वों के बलिदान
की भेंटों के लिये जैसा परमेश्वर की व्यवस्था में लिखा है राजा
का भाग उस की संपत्ति में से ठहराया॥

४ और उस ने यरूसलम बासियों को आज्ञा किई कि याजकों
और लावियों को भाग देओ जिसतें वे परमेश्वर की व्यवस्था में
५ लगे रहें। और आज्ञा निकलते ही इसराएल के सन्तान बहुताई
से अन्न और दाखरस और तेल और मधु और भूमि की सारी
बढ़ती के पहिले फल लाये और सारी वस्तु का दसवां भाग
६ बहुताई से लाये। और इसराएल और यहूदाह के सन्तान
जो यहूदाह की बस्तियों में बास करते थे वे भी बैलों और भेड़ों
का दसवां अंश और पवित्र वस्तुन का दसवां अंश जो परमेश्वर उन
के ईश्वर के लिये पवित्र किये गये थे लाये और ढेर ढेर रक्खा।
७ उन्हों ने तीसरे मास में ढेरों की नेंव डालना आरंभ किया
८ और सातवें मास में पूरा किया। और जब हिज़क़ियाह और
अध्यक्षों ने आके ढेरों को देखा तो उन्हों ने परमेश्वर को और
९ उस के इसराएल लोगों को धन्य माना। तब हिज़क़ियाह ने
ढेरों के विषय में याजकों से और लावियों से प्रश्न किया।
१० और सदूक़ के घराने के प्रधान याजक अज़रियाह ने उसे उत्तर
देके कहा कि जब से लोगों ने परमेश्वर के मन्दिर में भेंट
लाना आरंभ किया तब से हम खाने को बहुत रखते हैं और
बहुत बच रहता है क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों को बर
दिया है और जो बचा सो यही बड़ा ढेर है॥

११ तब हिज़क़ियाह ने आज्ञा किई कि परमेश्वर के मन्दिर में
भंडार की कोठरियां सिद्ध करो और उन्हों ने सिद्ध किया।
१२ और भेंट और दसवां अंश और पवित्र किई हुई वस्तु बिश्वस्तता
से भीतर लाये और जिन पर कननियाह लावी प्रभुता करता
१३ था और उस का भाई सिमई दूसरा। और यहिएल और
अज़ज़ियाह और नहत और असहेल और यरमूत और यूज़बद
और इलिएल और इसमाकियाह और महत और बिनाया
हिज़क़ियाह राजा की और परमेश्वर के मन्दिर के अध्यक्ष

अज़रियाह की आज्ञा से कनानियाह और उस के भाई सिमई
१४ के वश में करोड़े थे। और सिमई लावी का बेटा कोर पूरब
की ओर द्वारपाल था वुह ईश्वर की मनमनता भेंटों पर था कि
परमेश्वर के नैवेद्यों को और महा पवित्र वस्तुन को बांटे।
१५ और उस के पीछे अदन और बिनयमीन और युशूअ और
समअयाह और अमरियाह और सकनियाह थे कि याजकों के
नगरों में अपने भाईबंदों को क्या बड़े क्या छोटे उन के पदों
१६ के समान बिश्वस्तता से बांटें। उन के लिखे हुए पुरुषों को जो
तीन बरस से और ऊपर थे अर्थात् उन सब को जो अपनी
पारियों के समान अपनी सेवा के कार्य्य करने के लिये प्रतिदिन
१७ परमेश्वर के मन्दिर में आते थे। और उन याजकों को जिन
के नाम उन के पितरों की बंशावली के समान लिखे गये और
उन लिखे हुए लावियों को जो बीस बरस के और ऊपर थे
१८ और अपनी पारियों में सेवा करते थे। और उन के सब लिखे
हुए नन्हे बच्चों और उन की पत्नियों और उन के बेटों बेटियों
को अर्थात् उस सारी मंडली को बांट देवें क्योंकि उन्हों ने
अपनी अपनी पारियों में बिश्वस्तता से आप को पवित्र किया था।
१९ और हारून के बेटों उन याजकों के लिये जो अपने नगरों के
आस पास के खेतों में थे हर एक नगर में कई एक पुरुष जिन
के नाम लिखे गये थे ठहराये गये कि सब याजकों के सब
पुरुषों को और सब लिखे हुए लावियों को भाग देवें॥

२० ऐसा हिज़क़ियाह ने यहूदाह में सर्बच किया और अपने
ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में भला और ठीक और सत्य किया।
२१ और हर एक कार्य्य में जो उस ने ईश्वर के मन्दिर की सेवा में
आरंभ किया और व्यवस्था और आज्ञा में और अपने ईश्वर के
खोजने की आज्ञा में उस ने अपने सारे मन से किया और
भाग्यमान हुआ॥

बत्तीसवां पर्ब्ब ।

१ इन बातों के और अच्छे कार्य्यों के स्थिर होने के पीछे
असूर का राजा सनहेरीब आके यहूदाह में पैठा और बाड़ित
नगरों के विरुद्ध छावनी किई और चाहा कि उन्हें अपने बश
में करे ॥
२ और जब हिज़क़ियाह ने देखा कि सनहेरीब आया है और
३ कि यरूसलम से लड़ने को रुख किया । तब उस ने अपने
अध्यक्षों से और महावीरों से उन सोतों के जल को जो नगर
से बाहर थे बंद करने का परामर्ष किया और उन्हों ने उस
४ की सहाय किई । सो बहुत लोग एकट्ठे हुए जिन्हों ने यह
कहके सारे सोतों को और उस नाली को जो देश के मध्य में
से बहती थी बंद किया कि असूर का राजा आके क्यों मुक्ता
५ जल पावे । और उस ने आप को दृढ़ किया और सारी टूटी
हुई भीतों को गुम्मट लों बनाया और बाहर बाहर एक दूसरी
भीत और दाऊद के नगर में मिल्लो को सुधारा और सांग और
६ ढाल बहुताई से बनवाई । और उस ने लोगों पर सेनापति
ठहराये और नगर के फाटक की सड़क में उन्हें अपने पास
७ एकट्ठा किया और यह कहके उन्हें शान्ति दिई । कि दृढ़ होके
हियाव करो असूर के राजा से और उस के साथ की सारी
मंडली से मत डरो और बिस्मित मत होओ क्योंकि हमारे
८ साथी उन के साथियों से अधिक हैं । उस के साथ शारीरिक
की भुजा परन्तु हमारे साथ सहाय करने को और हमारे लिये
संग्राम करने को हमारा ईश्वर परमेश्वर है और लोग यहूदाह
के राजा हिज़क़ियाह के बचन पर स्थिर हुए ॥
९ इन बातों के पीछे असूर के राजा सनहेरीब ने अपने सेवकों
को यरूसलम में यहूदाह के राजा हिज़क़ियाह राजा को और

सारे यहूदाह को जो यरूसलम में थे कहला भेजा परन्तु उस
१० ने और उस के सारे पराक्रम ने लकीश को घेरा। कि असूर
का राजा सनहेरीब यह कहता है कि तुम लोग किस पर भरोसा
रखते हो जो तुम लोग यरूसलम के दृढ़ स्थान में रहते हो।
११ जिसतें अकाल से और पियास से मरो क्या यह कहके
हिज़क़ियाह तुम्हारा बोध नहीं करता कि परमेश्वर हमारा ईश्वर
१२ हमें असूर के राजा के हाथ से छुड़ावेगा। क्या उसी हिज़क़ियाह
ने उस के ऊंचे स्थानों को और उस की बेदियों को दूर करके
और यह कहके यहूदाह और यरूसलम को आज्ञा न किई
कि एक बेदी के आगे पूजा करो और उस पर धूप जलाओ।
१३ जो मैं ने और मेरे पितरों ने देशों के सारे लोगों से किया है
तुम नहीं जानते हो क्या उन देशों के जातिगणों के देव
अपने देशों को किसी भांति से उन के देश को मेरे हाथ से
१४ छुड़ा सके। उन जातिगणों के सारे देवों में से जिन्हें मेरे
पितरों ने सर्व्वथा नाश किया कौन अपने लोगों को मेरे हाथ
से बचा सका कि तुम्हारा ईश्वर तुम्हें मेरे हाथ से बचा सके।
१५ इस लिये अब हिज़क़ियाह तुम्हें न भरमावे और इस रीति से
तुम्हारा बोध करने न पावे और उस की प्रतीति न करो क्योंकि
किसी जातिगण का अथवा राज्य का देव अपने लोगों को मेरे
हाथ से और मेरे पितरों के हाथ से छुड़ा न सका तो कितना
१६ थोड़ा तुम्हारा ईश्वर हमारे हाथ से तुम्हें छुड़ावेगा। और उस
के सेवकों ने ईश्वर परमेश्वर के विरुद्ध और उस के दास
हिज़क़ियाह के विरुद्ध और बहुत सी बातें कहीं॥
१७ उस ने इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की निन्दा की पत्री भी
लिखी और उस के विरुद्ध यह कहा जैसा आन आन देशों के
जातिगणों के देव ने अपने लोगों को मेरे हाथ से न छुड़ाया
है वैसा हिज़क़ियाह का ईश्वर उस के लोगों को मेरे हाथ से

१८ न छुड़ावेगा। तब वे उन्हें डराने को और दुःख देने को
जिसतें नगर को ले लेवें यहूदियों की भाषा में ललकारके
१९ यरूसलम के लोगों को जो भीत पर थे बोले। और जैसा उन्हों
ने पृथिवी के लोगों के देवों के विषय में जो मनुष्य के हाथों
से बने थे बिरुद्ध कहा तैसा उन्हों ने यरूसलम के ईश्वर के
विरोध में॥
२० इस कारण हिज़क़ियाह राजा और अमूस का बेटा यसअियाह
२१ भविष्यद्वक्ता स्वर्ग की ओर प्रार्थना करके चिल्लाये। तब परमेश्वर
ने एक दूत को भेजा जिस ने असूर के राजा की छावनी में
सारे महावीरों को और अगुओं को और सेनापतियों को मार
डाला तब लज्जित होके अपने ही देश को वुह फिर गया
और जब वुह अपने देव के मन्दिर में गया उसी के कोख के
२२ लोगों ने वहां उसे तलवार से घात किया। यों परमेश्वर ने
हिज़क़ियाह को और यरूसलम बासियों को असूर के राजा
सनहेरीब के हाथ से और सभों के हाथ से छुड़ाया और चारों
२३ ओर से उन की रक्षा किई। और परमेश्वर के लिये बहुतेरे
यरूसलम में भेंट और यहूदाह के राजा हिज़क़ियाह के पास
बहुमूल्य वस्तु यहां लों लाये कि तब से सारी जातिगणों की
दृष्टि में उस का महात्म्य हुआ॥
२४ उन दिनों में हिज़क़ियाह ऐसा रोगी हुआ कि मरने पर
था और परमेश्वर की प्रार्थना किई और उस ने यह कहके उसे
२५ एक पता दिया। परन्तु हिज़क़ियाह ने उस के अनुग्रह के
समान गुण न माना क्योंकि उस का मन बढ़ गया इस लिये
उस पर और यहूदाह पर और यरूसलम पर कोप पड़ा।
२६ तथापि हिज़क़ियाह ने अपने उभरने से आप को यहां लों दीन
किया उस ने और यरूसलम बासियों ने कि हिज़क़ियाह के
२७ दिनों में परमेश्वर का कोप उन पर न पड़ा। और हिज़क़ियाह

के धन और प्रतिष्ठा बहुत थी और चांदी सोने के और मणि
और सुगन्धद्रव्य के और ढाल के लिये और समस्त प्रकार के
२८ वांछित के लिये उस ने भंडार बनाये। और अन्न और दाखरस
और तेल की बढ़ती के लिये भंडार और हर प्रकार के पशुओं
२९ के लिये स्थान और झुंडों के लिये शाला रखते थे। और भी
उस ने अपने लिये नगर और झुंड और ढोर बहुताई से सिद्ध
किये क्योंकि ईश्वर ने उसे बहुत संपत्ति दिई थी।
३० और इसी हिज़क़ियाह ने जैहून के ऊपर के जल की धारा को
बंद करके दाऊद के नगर की पश्चिम ओर उतारा और हिज़क़ियाह
३१ अपने सारे कार्य्यों में भाग्यमान हुआ। तथापि बाबुल के
अध्यक्ष दो भाषिया के विषय में जिन्हों ने भेजके देश में के
आश्चर्य्यित होने का बूझा था उसे परखने के लिये ईश्वर ने
उसे छोड़ा जिसतें अपने मन का सब कुछ उसे सूझ पड़े॥
३२ और हिज़क़ियाह की रही हुई क्रिया और उस की भलाई
देखो वे अमूस के बेटे यसअियाह भविष्यद्वक्ता के दर्शन में
और यहूदाह के और इसराएल के राजाओं की पुस्तक में लिखी
३३ हैं। तब हिज़क़ियाह ने अपने पितरों में शयन किया और
उन्हों ने उसे दाऊद के श्रेष्ठ समाधिन में गाड़ा और सारे
यहूदाह और यरूसलम बासियों ने उस के मरने में उसे प्रतिष्ठा
दिई और उस का बेटा मुनस्सी उस की सन्ती राजा हुआ॥

तेंतीसवां पर्ब्ब।

१ मुनस्सी ने बारह बरस की बय में राज्य करना आरंभ
किया और उस ने यरूसलम में पचपन बरस राज्य किया।
२ परन्तु उस ने अन्यदेशियों के घिनितों के समान जिन्हें परमेश्वर
ने इसराएल के सन्तान के आगे से दूर किया था परमेश्वर की
३ दृष्टि में बुराई किई। क्योंकि उस ने फेरके उन ऊंचे स्थानों

को बनाया जिन्हें उस के पिता हिज़क़ियाह ने ढा दिया था
और बअलीम के लिये बेदियां खड़ी किई और कुंज लगाये और
४ स्वर्ग की सारी सेना की पूजा और सेवा किई। और जिस
मन्दिर के विषय में परमेश्वर ने कहा था कि मेरा नाम यरूसलम
५ में सदा रहेगा उस ने उस में भी बेदियां बनाईं। और उस
ने स्वर्ग की सारी सेनाओं के लिये परमेश्वर के मन्दिर के दोनों
६ आंगनों में बेदियां बनाईं। और उस ने हिन्नुम की तराई में
अपने सन्तानों को आग में से चलाया और मुहूर्त्त माना और
मोहनी मंत्र और टोना और भुतनों से व्यवहार करते थे और
परमेश्वर को रिस दिलाने को उस ने उस की दृष्टि में बहुत
७ बुराई किई। और जिस खोदी हुई मूर्त्ति को उस ने बनाया
था उस ने उसे ईश्वर के मन्दिर में स्थापित किया जिस के विषय
में ईश्वर ने दाऊद से और उस के बेटे सुलेमान से कहा था कि
इस मन्दिर में और यरूसलम में जिसे मैं ने इसराएल की सारी
गोष्ठियों में से चुन लिया है उस में अपना नाम सदा रक्खूंगा।
८ और फेर मैं इसराएल के चरण को इस देश में से दूर न
करूंगा जिसे मैं ने तुम्हारे पितरों के लिये ठहराया है केवल
यह कि वे चौकस होके मेरी सारी आज्ञाओं को जैसा मैं ने
मूसा के द्वारा से दिई थी सारी व्यवस्था और विधि और विचार
९ को पालन करें। सो मुनस्सी ने यहूदाह को और यरूसलम
बासियों को भरमाके अन्यदेशियों से जिन्हें परमेश्वर ने इसराएल
के सन्तानों के आगे से नष्ट किया था अधिक बुराई करवाई।
१० और परमेश्वर ने मुनस्सी से और उस के लोगों से कहा परन्तु
११ उन्हों ने न माना। इस कारण परमेश्वर उन पर असूर के राजा
के सेनापतिन को लाया जिन्हों ने सीकरों कांटों में मुनस्सी को
१२ धरा और उसे बेड़ियों से जकड़के बाबुल को ले गये। और जब वुह
बिपत्ति में था तब अपने ईश्वर परमेश्वर की खोज किई और

१३ अपने पितरों के ईश्वर के आगे आप को अति नम्र किया। और
उस की प्रार्थना किई और उस ने उस की बिनती सुनके मान
लिया और उसे उस के राज्य यरूसलम में फेर लाया तब
मुनस्सी ने जाना कि परमेश्वर ईश्वर वही है॥
१४ और इस के पीछे उस ने दाऊद के नगर के बाहर जैहून की
पश्चिम और तराई में अर्थात् मछली फाटक की पैठ लों एक भीत
बनाई और उफ़ल को घेरा और उसे अति ऊंचा किया और
१५ युद्धपतिन को यहूदाह के सारे बाड़ित नगरों में रक्खा। और
उस ने उपरी देवों को और प्रतिमा को परमेश्वर के मन्दिर से
और सारी बेदियों को जो उस ने परमेश्वर के मन्दिर के पर्वत
पर और यरूसलम में बनवाई थी दूर किया और नगर के
१६ बाहर फेंक दिया। और उस ने परमेश्वर की बेदी सुधारी और
उस पर बलिदान और कुशल की भेंटें और धन्यबाद की भेंटें
चढ़ाईं और यहूदाह को इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की सेवा
१७ करने की आज्ञा किई। तथापि लोग अब लों ऊंचे स्थानों पर
बलि चढ़ाते रहे परन्तु केवल अपने ईश्वर परमेश्वर के लिये॥
१८ अब मुनस्सी की रही हुई क्रिया और अपने ईश्वर के लिये
उस की प्रार्थना और इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के नाम से
जिन दर्शियों ने उस्से कहा उन के बचन इसराएल के राजाओं
१९ की पुस्तक में देखो। और उस की प्रार्थना भी और ईश्वर का
मनाया जाना और उस के सारे पाप और अपराध और स्थान
जहां जहां उस ने ऊंचे स्थान बनाये और अपने नम्र होने से
आगे कुंजों को और खोदी हुई मूरतों को स्थापित किया देखो
२० वे दर्शियों की कहावतों में लिखे हुए हैं। सो मुनस्सी ने
अपने पितरों में शयन किया और उन्हों ने उसी के घर में उसे
गाड़ा और उस का बेटा अमून उस की संती राज्य पर बैठा॥
२१ अमून ने बाईस बरस की बय में राज्य करना आरंभ किया

२२ और यरूसलम में दो बरस राज्य किया। परन्तु उस ने अपने
पिता मुनस्सी के समान परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई क्योंकि
अमून ने अपने पिता मुनस्सी की समस्त खोदी हुई मूरतों के लिये
२३ बलि चढ़ाया और उन की सेवा किई। और जैसा उस के पिता
मुनस्सी ने आप को नम्र किया था तैसा उस ने आप को
परमेश्वर के आगे नम्र न किया परन्तु अमून ने अपराध को
२४ बढ़ाया। और उस के सेवकों ने उस के विरुद्ध गुष्ठ बांधके
२५ उसी के घर में उसे घात किया। परन्तु जिन्हों ने अमून राजा
के विरुद्ध में गुष्ठ बांधी थी देश के लोगों ने उन सभों को घात
किया और देश के लोगों ने उस के बेटे यूसियाह को उस की
संती राजा किया॥

चौंतीसवां पर्व्व।

१ यूसियाह ने आठ बरस की वय में राज्य करना आरंभ
२ किया और यरूसलम में एकतीस बरस राज्य किया। और
परमेश्वर की दृष्टि में भलाई किई और अपने पिता दाऊद की
३ चालों पर चलता था और वुह दहिने बायें न मुड़ा। क्योंकि
उस के राज्य के आठवें बरस में जब लों वुह बालक था उस
ने अपने पिता दाऊद के ईश्वर का खोज करना आरंभ किया
और बारहवें बरस में यहूदाह और यरूसलम को ऊंचे स्थानों
से और कुंजों से और खोदी हुई मूरतों से और ढाली हुई
४ मूरतों से पवित्र किया। और उस के आगे बअलीम की वेदियों
को तोड़ दिया और मूरतें जो उन के ऊपर थीं काट डालीं
और कुंजों को और खोदी हुई और ढाली हुई मूरतों को टुकड़ा
टुकड़ा किया और धूल बनाके उन की समाधिन पर जिन्हों ने
५ उन पर भेंट चढ़ाई थीं बिथराई। और उस ने याजकों की
हड्डियां उन की वेदियों पर जलाईं और यहूदाह और यरूसलम

६ को शुद्ध किया। ऐसा उन्हों ने मुनस्सी के और इफ़रायम के
और समऊन के नगरों में नफ़ताली लों चारों ओर कुल्हाड़ी से
७ किया। और जब उस ने वेदियों को और कुंजों को तोड़ डाला
और खोदी हुई मूरतों को बुकनी किई और इसराएल के सारे
देश में से सारी प्रतिमाओं को काट डाला तब यरूसलम में
फिर आया॥

८ अब उस के राज्य के अठारहवें बरस जब उस ने देश को
और मन्दिर को शुद्ध किया तब उस ने असलियाह के बेटे
साफ़न को और नगर के अध्यक्ष मअसियाह को और यूअख़ज़
के बेटे यूअख़ स्मारक को अपने ईश्वर परमेश्वर के मन्दिर
९ सुधारने को भेजा। और वे ख़िलक़ियाह प्रधान याजक पास
पहुंचके रोकड़ को जो ईश्वर के मन्दिर में पहुंचाया गया था
जिसे द्वारपाल लावियों ने मुनस्सी के और इफ़रायम के और
इसराएल के सारे बचे हुए के और सारे यहूदाह और बिनयमीन
के हाथों से एकट्ठा किया था सौंपके यरूसलम को फिर आये।
१० और उन्हों ने उसे कार्य्यकारियों के हाथ में जो परमेश्वर के
मन्दिर के करोड़े थे रक्खा और उन्हों ने मन्दिर को सुधारने
११ और बनाने के लिये कार्य्यकारियों को दिया। अर्थात् कार्य्यकारियों
को और थवइयों को दिया जिसतें वे ढाये हुए पत्थर को और
जोड़ाव के लिये लट्ठे और घरों के बरगों के लिये जिसे यहूदाह
१२ के राजाओं ने नष्ट किया था मोल लेवें। और लोगों ने धर्म्म
से कार्य्य किया और मिरारी के बेटे यहत और अबदियाह
लावी और क़िहातियों के बेटों में से ज़करियाह और मुसल्लम
और सारे लावी जो निपुण बजवैये काम बढ़ाने के लिये उन
१३ पर करोड़े थे। और वे बोझियों के और हर प्रकार की सेवा
के कार्य्यों पर करोड़े थे और लावियों में से लेखक और प्रधान
और द्वारपाल थे॥

१४ और जब वे परमेश्वर के मन्दिर में से उस रोकड़ को निकाल
लाये जो उस में पहुंचाया गया था तो ख़िलक़ियाह याजक ने
मूसा के हाथों की परमेश्वर की व्यवस्था की एक पुस्तक पाई ।
१५ फेर ख़िलक़ियाह ने उत्तर देके साफ़न लेखक से कहा कि मैं ने
परमेश्वर के मन्दिर में व्यवस्था की पुस्तक पाई है फिर
१६ ख़िलक़ियाह ने साफ़न को पुस्तक सौंपी । और साफ़न उस
पुस्तक को राजा के पास ले गया और राजा के आगे यह
कहके बोला कि सब जो आप ने अपने दासों को सौंपा है सो
१७ वे करते हैं । और परमेश्वर के मन्दिर में जो रोकड़ पाया
गया सो उंडेला गया है और करोड़ों के हाथों में और
१८ कार्य्यकारियों के हाथों में सौंपा गया है । तब साफ़न लेखक
राजा से यह कहके बोला कि ख़िलक़ियाह याजक ने मुझे
एक पुस्तक दिई है और साफ़न ने उसे राजा के आगे पढ़ा ।
१९ और ऐसा हुआ कि जब राजा ने व्यवस्था के बचन को सुना
२० तो उस ने अपने कपड़े फाड़े । और राजा ने ख़िलक़ियाह को
और साफ़न के बेटे अख़िक़ाम को और मीकः के बेटे अबदून
को और साफ़न लेखक को और राजा के सेवक असायाह को
२१ कहा । कि मेरे लिये और उन के लिये जो इसराएल में और
यहूदाह में बचे हैं इस पुस्तक के बचन के विषय में जो पाई
गई है परमेश्वर से बूझो क्योंकि परमेश्वर का बड़ा कोप हम
पर पड़ा है इस कारण कि हमारे पितरों ने परमेश्वर के बचन
को पालन करने को सभों के समान जो इस पुस्तक में लिखा
है नहीं माना ॥

२२ तब ख़िलक़ियाह और वे जो राजा से भेजे गये थे बस्त्र के
रक्षक ख़सरः के बेटे तिक़्वास के बेटे शलूम की पत्नी
भविष्यद्वक्ताचिनी ख़ुलदः पास गये अब वुह यरूसलम के
पाठशाले में रहती थी और उन्हों ने उस के समान उसे कहा।

२३ ओर उस ने उन्हें उत्तर दिया कि इसराएल का ईश्वर परमेश्वर
यों कहता है कि जिस जन ने तुम्हें मुझ पास भेजा है उस्से
२४ कहो। कि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इस स्थान पर
ओर उस के बासियों पर सारे स्राप जो उस पुस्तक में लिखे
हैं जो उन्हों ने यहूदाह के राजा के आगे पढ़ा है लाऊंगा।
२५ इस कारण कि उन्हों ने मुझे छोड़के आन आन देवों के लिये
धूप जलाया है जिसतें वे मुझे अपने हाथ के सारे कार्य्यों से
रिस दिलावें इस लिये मेरा कोप इस स्थान पर उंडेला जायगा
२६ ओर बुताया न जायगा। ओर यहूदाह के राजा के विषय में
जिस ने तुम्हें परमेश्वर से बूझने को भेजा उस्से यों कहियो कि
तेरे सुने हुए बचन पर परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता
२७ है। इस कारण कि तेरा मन कोमल था ओर जब तू ने इस
स्थान के बिरुद्ध में ओर यहां के बासियों के बिरुद्ध में परमेश्वर
के बचन को सुना था तू ने उस के आगे आप को नम्र किया
ओर मेरे आगे आप को दीन करके अपने वस्त्र को फाड़ा ओर
मेरे आगे बिलाप किया इस लिये परमेश्वर कहता है कि मैं ने
२८ सुना है। देखो मैं तुझे तेरे पितरों में बटोरूंगा ओर तू कुशल
से अपनी समाधि में बटोरा जायगा ओर सारी बिपत्ति जो मैं
इस स्थान पर ओर उस के बासियों पर लाऊंगा तेरी आंखें न
देखेंगी सो उन्हों ने फिरके राजा को बचन कहा॥

२९ तब राजा ने भेजके यहूदाह के ओर यरूसलम के सारे
३० प्राचीनों को एकट्ठे किया। ओर राजा ओर यहूदाह के सारे
लोग ओर यरूसलम के निवासी ओर याजक ओर लावी ओर
सारे लोग बड़े से लेके छोटे लों परमेश्वर के मन्दिर में गये ओर
उस ने परमेश्वर के नियम की पुस्तक के सारे बचन जो परमेश्वर
३१ के मन्दिर में पाई गई पढ़ सुनाये। ओर राजा अपने स्थान
में खड़ा हुआ ओर परमेश्वर के मार्ग पर चलने को ओर उस

की आज्ञा और व्यवस्था और विधि को अपने सारे मन और
अपने सारे प्राण से पालन करने को और उस बाचा के बचन को
जो इस पुस्तक में लिखा है पूरा करने को परमेश्वर के आगे
३२ बाचा बांधी। और सब जो यरूसलम में और बिनयमीन में
पाये गये उन्हें इस बात पर खड़ा किया और यरूसलम के
निवासियों ने ईश्वर की अपने पितरों के ईश्वर की बाचा के समान
३३ किया। और यूसियाह ने इसराएल के सन्तानों में के सारे
देश में से सारी घिनितों को दूर किया और इसराएल में के
सभों से सेवा अर्थात् उन के ईश्वर परमेश्वर की सेवा करवाई उस
के जीवन भर वे अपने पितरों के ईश्वर परमेश्वर का पीछा करने
से अलग न हुए॥

पैंतीसवां पर्व्व ।

१ और यूसियाह ने यरूसलम में परमेश्वर के निमित्त फसह
का पर्व्व रक्खा और उन्हों ने पहिले मास की चौदहवीं
२ तिथि में फसह बलि किया। और उस ने याजकों को उन के
ठहराये हुए पद पर स्थापित किया और परमेश्वर के मन्दिर
३ की सेवा के लिये उन्हें उभारा। और उस ने लावियों से जो
सारे इसराएल को उपदेश करते थे और परमेश्वर के लिये पवित्र
थे कहा कि पवित्र मंजूषा को उस मन्दिर में रक्खो जो इसराएल
के राजा दाऊद के बेटे सुलेमान ने बनाया था तुम्हारे कंधे
पर बोझ न रहे अब तुम ईश्वर परमेश्वर की और उस के इसराएल
४ लोगों की सेवा करो। और अपने अपने पितरों की गोष्ठी की
रीति पर अपनी अपनी पारियों में इसराएल के राजा दाऊद के
लिखने के और उस के बेटे सुलेमान के लिखने के समान तुम
५ लोग सिद्ध करो। और लोगों के पुत्रों के पितरों के घराने के
भाग के समान और लावियों के घरानों के भाग के समान

६ पवित्रता में खड़े होओ। सो फसह बलि करो और आप आप
को पवित्र करो और अपने भाइयों को सिद्ध करो जिसतें मूसा
७ के द्वारा से परमेश्वर के वचन के समान करें। और यूसियाह
ने झुंड में से गिनती में तीस सहस्र मेम्ने और बकरी के बच्चे
और तीन सहस्र बैल लोगों को सब फसह की भेंट के लिये
८ दिये ये राजा की संपत्ति से थे। और उस के अध्यक्षों ने लोगों
को और याजकों को और लावियों को मनमंता दिया और ईश्वर
के मन्दिर के प्रधान ख़िलक़ियाह और ज़करियाह और यहिएल
ने फसह बलि के लिये याजकों को दो सहस्र छः सौ छोटे
९ पशु और तीन सौ बैल दिये। और कननियाह और समअियाह
और नतनिएल उस के भाई और लावियों के प्रधान हसबियाह
और यअीएल और यूज़बद ने फसह भेंट के लिये लावियों को
पांच सहस्र भेड़ बकरी और पांच सौ बैल दिये॥

१० सो अब सेवा सिद्ध हुई और याजक अपने अपने स्थान पर
और लावी अपनी अपनी पारी में राजा की आज्ञा के समान
११ खड़े हुए। और उन्हों ने फसह बलि किया और याजकों ने
अपने अपने हाथ से लोहू छिड़का और लावियों ने उन की
१२ खाल खींची। और मूसा की पुस्तक के लिखे हुए के समान
उन्हों ने बलिदान की भेंट अलग किई जिसतें वे लोगों के
घराने के विभागों के समान परमेश्वर की भेंट के लिये देवें वैसा
१३ उन्हों ने बैलों से भी किया। फिर उन्हों ने ठहराये हुए के
समान फसह आग से भूना और पवित्र भेंटों को उन्हों ने
हांडियों में और हंडों में और कड़ाहियों में उसिना और सारे
लोगों को शीघ्र बांट दिया॥

१४ और उन्हों ने पीछे अपने और याजकों के लिये सिद्ध किया
क्योंकि हारून के सन्तान याजक रात लों बलिदान की भेंट
और चिकनाई चढ़ाते थे इस लिये लावियों ने अपने लिये

१५ और हारून के बेटे याजकों के लिये सिद्ध किया। और दाऊद
की और आसफ़ की और हैमान की और राजा के दर्शी यदूतून
की आज्ञा के समान आसफ़ के गायक बेटे अपने अपने ठिकाने
पर और द्वारपालक हर एक फाटक पर थे उन्हें अवश्य न था
कि वे अपनी अपनी सेवा से अलग होवें क्योंकि उन के भाई
१६ लावियों ने उन के लिये सिद्ध किया था। सो यूसियाह राजा
की आज्ञा के समान फसह पालन करने को और परमेश्वर की
बेदी पर बलिदान की भेंटें चढ़ाने को परमेश्वर की सारी सेवा
१७ उसी दिन सिद्ध हुई। और जो इसराएल के सन्तान पाये गये
उन्हों ने फसह और अख़मीरी रोटी का पर्ब्ब रखने को सात दिन
लों पालन किया॥

१८ और समुएल भविष्यद्वक्ता के दिनों से इसराएल में ऐसा
फसह न हुआ था और इसराएल के सारे राजाओं ने भी ऐसा
फसह न रक्खा था जैसा कि यूसियाह और याजकों और
लावियों और सारे यहूदाह और इसराएल जो वहां थे और
१९ यरूसलम के निवासियों ने रक्खा था। यूसियाह के राज्य के
अठारहवें बरस में यह फसह रक्खा गया॥

२० इन सभों के पीछे जब यूसियाह ने मन्दिर सिद्ध किया तो
मिस्र का राजा निकोह फुरात नदी की ओर से करकिमीस में
संग्राम के लिये आया तब यूसियाह उस के विरुद्ध निकला।
२१ परन्तु उस ने दूतों के द्वारा उसे कहला भेजा कि हे यहूदाह
के राजा तुझ से मेरा क्या काम आज तेरे विरुद्ध नहीं परन्तु
जिस के घराने से मेरा संग्राम है उस के विरुद्ध आता हूं
क्योंकि परमेश्वर ने मुझे शीघ्र करने को आज्ञा किई सो तू ईश्वर
से रहि जा जो मेरे साथ है जिसतें वुह तुझे नाश न करे।
२२ तथापि यूसियाह ने उस्से मुंह न मोड़ा परन्तु उस्से लड़ने के
लिये अपना भेष बदला और ईश्वर के वचन को निकोह के

द्वारा से न माना और लड़ने के लिये मजिद्दो की तराई में
२३ आया। और धनुषधारियों ने यूसियाह राजा को और मारा
तब राजा ने अपने सेवकों से कहा कि मुझे ले जाओ क्योंकि
२४ मुझे बड़ा घाव लगा है। इस लिये उस के सेवकों ने उसे
उस रथ से उतारा और उस के दूसरे रथ पर उसे चढ़ाया और
यरूसलम को ले गये और वुह मर गया और अपने पितरों की
समाधिन में गाड़ा गया और सारे यहूदाह और यरूसलम ने
२५ यूसियाह के लिये बिलाप किया। और यरमियाह ने यूसियाह
के लिये बिलाप किया और सारे गायक और गायिका अपने
अपने बिलाप में आज लों यूसियाह की बात कहते हैं और
इसराएल में अपने लिये ठहराया और देखो वे बिलापों में लिखे हैं॥
२६ अब यूसियाह की रही हुई क्रिया और उस का अनुग्रह
जैसा कि परमेश्वर की व्यवस्था में लिखा है और उस की क्रिया
आदि और अंत देखो वे इसराएल के और यहूदाह के राजाओं
की पुस्तक में लिखी हैं॥

छत्तीसवां पर्ब्ब।

१ तब देश के लोगों ने यूसियाह के बेटे यहूअख़ज़ को लेके
२ उस के पिता की संती उसे यरूसलम में राजा किया। जब
यहूअख़ज़ ने राज्य करना आरंभ किया तो उस की बय तेईस
बरस की थी और उस ने तीन मास यरूसलम में राज्य किया।
३ तब मिस्र के राजा ने यरूसलम से उसे अलग किया और देश
४ से सौ तोड़े चांदी और एक तोड़ा सोना डांड़ लिया। और
मिस्र के राजा ने उस के भाई इलयक़ीम को यहूदाह और
यरूसलम पर राजा किया और उस का नाम यहूयक़ीम रक्खा
और निकोह उस के भाई यहूअख़ज़ को पकड़के उसे मिस्र को
ले गया॥

५ जब कि यहूयक़ीम ने राज्य करना आरंभ किया तब वुह
पचीस बरस का था और ग्यारह बरस उस ने यरूसलम में
राज्य किया और अपने ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में उस ने बुराई
६ किई। बाबुल का राजा नबूखुदनज़र उस के विरुद्ध चढ़ आया
७ और बाबुल में ले जाने को उसे सीकरों से बांधा। और
नबूखुदनज़र परमेश्वर के मन्दिर के पाच बाबुल को ले गया
और बाबुल में अपने मन्दिर में रक्खा॥

८ अब यहूयक़ीम की रही हुई क्रिया और जो जो घिन उस
ने किया और जो उस में पाया गया देखो वे इसराएल और
यहूदाह के राजाओं की पुस्तक में लिखी हैं और उस का बेटा
यहूयक़ीन उस की संती राज्य पर बैठा॥

९ जब उस ने राज्य करना आरंभ किया तब यहूयक़ीन आठ
बरस का था और उस ने यरूसलम में तीन मास दस दिन
राज्य किया और उस ने परमेश्वर की दृष्टि में बुराई किई।
१० और जब बरस बीत गया तो नबूखुदनज़र ने भेजके उसे
परमेश्वर के मन्दिर के वांछित पाच सहित बाबुल में मंगवाया
और उस के भाई सिदक़याह को यहूदाह और यरूसलम पर
राजा किया॥

११ जब सिदक़याह ने राज्य करना आरंभ किया तो वुह
एक्कीस बरस का था और उस ने यरूसलम में ग्यारह बरस
१२ राज्य किया। और उस ने अपने ईश्वर परमेश्वर की दृष्टि में
बुराई किई और यरमियाह भविष्यद्वक्ता के आगे परमेश्वर के
१३ मुंह से कहते हुए आप को नम्र न किया। और वुह नबूखुदनज़र
राजा के विरुद्ध फिर गया जिस ने उसे ईश्वर की किरिया दिलाई
थी परन्तु उस ने इसराएल के ईश्वर की ओर से फिरके अपने
१४ गले को और अपने मन को कठोर किया। उस्से अधिक
सारे प्रधान याजक और लोगों ने अन्यदेशियों के सारे घिनितों

के समान बहुत अपराध किया और परमेश्वर के मन्दिर को
जिसे उस ने यरूसलम में पवित्र किया था अशुद्ध किया।
१५ और उन के पितरों के ईश्वर परमेश्वर ने अपने दूतों के द्वारा
से यत्न से उन के पास बारंबार भेजा किया कि अपने लोगों
१६ पर और अपने निवासस्थान पर उस की दया थी। परन्तु
उन्हों ने परमेश्वर के दूतों को चिढ़ाया और उस के वचन को
तुच्छ जाना और उस के भविष्यद्वक्तों की दुर्दशा किई यहां
लों कि परमेश्वर का कोप उस के लोगों के विरुद्ध उभरा और
उपाय न रहा॥
१७ इस लिये वुह कसदियों के राजा को उन पर लाया जिस ने
उन के पवित्र स्थान में उन के तरुणों को तलवार से घात
किया और उन के तरुणों पर अथवा कुंआरियों पर अथवा वृद्धों
पर अथवा कुबड़े पुरनियों पर दया न किई उस ने सभों को
१८ उस के हाथ में कर दिया। और ईश्वर के मन्दिर के छोटे बड़े सारे
पात्रों को और परमेश्वर के मन्दिर के धन और राजा के और उस
१९ के अध्यक्षों के धन सब को वुह बाबुल में लाया। और उन्हों
ने ईश्वर के मन्दिर को जला दिया और यरूसलम की भीत
को गिरा दिया और उस के सारे भवनों को आग से जला दिया।
२० और सारे उत्तम पात्रों को नाश किया। और खड्ग से बचे
हुओं को बाबुल में पहुंचाया जहां वे उस के और उस के पुत्रों
२१ के सेवक फ़ारस के राज्य लों बने रहे। जिसतें परमेश्वर का
वचन जो यरमियाह के द्वारा कहा गया पूरा होवे कि जब लों
भूमि ने अपना बिश्राम पूरा न किया क्योंकि जितने दिनों वुह
उजाड़ पड़ी रही वुह बिश्राम करती थी जब लों सत्तर बर्ष पूरे
न हुए॥
२२ अब फ़ारस के राजा ख़ोरस के पहिले बरस जिसतें यरमियाह
के द्वारा परमेश्वर का वचन पूरा होवे परमेश्वर ने फ़ारस के राजा

ख़ोरस के मन को उभारा कि उस ने अपने सारे राज्य में सर्बच
२३ प्रचार करवाया और यह कहके लिखवाया भी। कि फ़ारस
का राजा ख़ोरस कहता है कि स्वर्ग के ईश्वर परमेश्वर ने पृथिवी
के सारे राज्य मुझे दिये हैं और उस ने अपने लिये यहूदाह
के देश के यरूसलम के घर बनवाने को मुझे आज्ञा दिई है
सो जो उस के सारे लोगों में तुम्में है उस का ईश्वर परमेश्वर
उस के साथ हो और वुह चढ़ जाये॥

एज़रा की पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ और जिसतें परमेश्वर का वचन यरमियाह के द्वारा से पूरा होवे
परमेश्वर ने फ़ारस के राजा ख़ोरस के मन को उभाड़ा कि फ़ारस
के राजा ख़ोरस के राज्य के पहिले बरस में उस ने अपने सारे
राज्य में प्रचार करवाया और यह कहिके लिखवाया भी॥
२ कि फ़ारस का राजा ख़ोरस यों कहता है कि परमेश्वर स्वर्ग
के ईश्वर ने पृथिवी का सारा राज्य मुझे दिया है और यहूदाह
के यरूसलम में अपने लिये एक मन्दिर बनाने को मुझे आज्ञा
३ किई है। उस के सारे लोगों में से तुम्हों में कौन है उस का ईश्वर
उस के संग होवे और वुह यहूदाह के यरूसलम को चढ़ जावे
और परमेश्वर इसराएल के ईश्वर का मन्दिर बनावे वही ईश्वर
४ है जो यरूसलम में है। और जो कोई किसी स्थान में रहता
है जहां कहीं वुह वास करता हो उसी स्थान के मनुष्य सोना
चांदी से और संपति और पशु से यरूसलम में ईश्वर के मन्दिर
के लिये मनमनता भेंट से अधिक उस की सहायता करें॥
५ तब यहूदाह और बिनयमीन के पितरों के प्रधान और
याजक और लावी उन सभों के साथ उठे जिन के मन को
ईश्वर ने जाने को उभाड़ा कि यरूसलम में परमेश्वर का मन्दिर
६ बनावें। और उन की चारों ओर के लोगों ने सोने चांदी के

पाचों से संपति और पशुन से और बहुमूल्य वस्तुन से उन सभों
से अधिक मनमनता चढ़ाके उन के हाथों को दृढ़ किया॥
७ और ख़ोरस राजा ने भी परमेश्वर के मन्दिर के उन पाचों
को जिन्हें नबूखुदनज़र यरूसलम से निकाल लाया था और
८ देवलों में रक्खा था निकाल लाया। और फ़ारस के राजा
ख़ोरस ने उन्हें मिचदाद भंडारी के हाथ से मंगवाया और
९ यहूदाह के अध्यक्ष चसपानआज़र के आगे उन्हें गिना। और
उन की गिनती सोने की तीस थाली और चांदी की सहस्र
१० थाली और उंतीस छूरी। और सोने के तीस कटोरे और दूसरी
भांति की चांदी के चार सौ दस कटोरे सहस्र और पाच।
११ सोने चांदी के सारे पाच पांच सहस्र चार सौ थे चसपानआज़र
इन सभों को जिस समय कि बाबुल से वुह बंधुओं को यरूसलम
में लाया था लेता आया॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ अब ये प्रदेश के सन्तान हैं जो बंधुआई से निकल गये
थे उन में से जो पहुंचाये गये थे जिन्हें बाबुल के राजा
नबूखुदनज़र ने बाबुल में पहुंचाया था और फेर यरूसलम में
और यहूदाह में हर एक जन अपने अपने नगर में आया।
२ जो ज़रूबाबुल के युशूअ के नहमियाह के शिरायाह के
रैअलायाह के मरदकी के बिलशान के मिसफ़ार के बिगवै के
रहूम के बअनह के संग आये इसराएली लोगों की गिनती।
३।४ बुरग़ुस के सन्तान दो सहस्र एक सौ बहत्तर। सफ़त्तियाह
५ के सन्तान तीन सौ। अरख़ के सन्तान सात सौ पचहत्तर।
६ पखतमोअब के सन्तान और युशूअ और यूअब के सन्तान दो
७ सहस्र आठ सौ बारह। ऐलाम के सन्तान एक सहस्र दो सौ
८।९ चौवन। ज़ूतू के सन्तान नव सौ पैंतालीस। ज़क्की के

१० सन्तान सात सौ साठ। बनी के सन्तान छः सौ बयालीस।
११। १२ बबी के सन्तान छः सौ तेईस। अज़जाद के सन्तान एक
१३ सहस्र दो सौ बाईस। अदुनिक़ाम के सन्तान छः सौ छियासठ।
१४। १५ बिगवै के सन्तान दो सहस्र छप्पन। अदीन के सन्तान
१६ चार सौ चौवन। अतीर से हिज़क़ियाह के सन्तान अट्ठानवे।
१७। १८ बेज़ी के सन्तान तीन सौ तेईस। यूरः के सन्तान एक
१९। २० सौ बारह। हशुम के सन्तान दो सौ तेईस। जब्बार
२१ के सन्तान पंचानवे। बैतलहम के सन्तान एक सौ तेईस।
२२। २३ नतूफ़ः के मनुष्य छप्पन। अनतात के मनुष्य एक सौ
२४। २५ अट्ठाईस। अज़िमौत के सन्तान बयालीस। क़रयतअरीम
कफ़ीरः और बिअरात के सन्तान सात सौ तेंतालीस।
२६। २७ रामः और जिबअ के सन्तान छः सौ एक्कीस। मिकमास
२८ के एक सौ बाईस मनुष्य। बैतएल और अई के दो सौ तेईस
२९। ३० मनुष्य। नबू के सन्तान बावन। मजबीस के सन्तान
३१ एक सौ छप्पन। दूसरे ऐलाम के सन्तान एक सहस्र दो सौ
३२। ३३ चौवन। हारिम के सन्तान तीन सौ बीस। लूद के
३४ सन्तान हदीद और ओनू सात सौ पचीस। यरीहो के सन्तान
३५ तीन सौ पैंतालीस। सनाह के सन्तान तीन सहस्र छः सौ
तीस॥

३६ युशूअ के घराने में के यदैअयाह के सन्तान नव सौ
३७ तिहत्तर याजक। अमीर के सन्तान एक सहस्र बावन।
३८। ३९ फ़शिहूर के सन्तान एक सहस्र दो सौ सैंतालीस। हारिम
के सन्तान एक सहस्र सत्रह॥

४० हूदायाह के सन्तान में से युशूअ के और क़दमिएल के
सन्तान चौहत्तर लावी॥

४१ आसफ़ के सन्तान एक सौ अट्ठाईस गायक॥

४२ द्वारपालकों के सन्तान सालों के सन्तान ख़तीता के सन्तान

अक्कूव के संतान ज़ुल्मान के संतान अतीर के संतान सलूम के
संतान सब एक सौ उनतालीस ॥
४३ तवआत के संतान हसूफ़ा के संतान सोहा के संतान
४४ नसीनेम । क़ेरूस के संतान सीग़हा के संतान फ़दून के संतान।
४५ लिबानः के संतान हजाब के संतान अक्कूब के संतान।
४६ हजाब के संतान शमली के संतान हन्नान के संतान।
४७ जदील के संतान जहर के संतान रियाहाह के संतान।
४८ रसीन के संतान नक्कूदा के संतान जज़्ज़ाम के संतान।
४९ ज़ूज़्ज़ा के संतान फ़सीख़ के संतान बेजी के संतान।
५० असनः के संतान महूनिम के संतान नफ़सीम के संतान।
५१ बक़बूक़ के संतान हक़ूफ़ा के संतान हरहूर के संतान।
५२ बसलूत के संतान महीदा के संतान हरशा के संतान।
५३ बरकूस के संतान सीसरा के संतान तिमह के संतान।
५४ । ५५ नसीह के संतान ख़तीफ़ा के संतान । सुलेमान के सेवकों
के संतान सूती के संतान सफीरत के संतान फ़रूदा के संतान।
५६ जअलः के संतान दरकन के संतान जदील के संतान।
५७ सफ़तियाह के संतान ख़तील के संतान फ़ाक़िरतुज़बिआन के संतान
५८ आमी के संतान । सब नसीनेम और सुलेमान के सेवकों के
संतान तीन सौ बानवे ॥
५९ और ये हैं वे जो तल्लमिल्ह से और तल्लहरसा से और करुब
से और अद्दान से और अमीर से चढ़ गये थे पर वे अपने
पितरों के घराने को और अपने बंश को जो इसराएल के थे
६० अथवा न थे बता न सके । दिलायाह के संतान तूबियाह के
६१ संतान नक्कूदा के संतान छः सौ बावन जन । और याजकों के
संतानों में हबायाह के क़ूज़ के संतान बरज़िल्ली के संतान
जिस ने जिलिअदी बरज़िल्ली की बेटियों में से पत्नी किई थी
६२ और उन के नाम से कहलाया । उन्हों ने अपने को बंशावली

की गिनती में ढूंढ़ा परन्तु न पाये गये इस लिये वे याजकता
६३ से अशुद्ध हुए। और अध्यक्ष ने उन्हें कहा कि जब लों ऊरिम
और तुमिम के साथ एक याजक न उठे तब लों महापवित्र
वस्तुन में से न खाना॥

६४ समस्त मंडली एक संग बयालीस सहस्र तीन सौ साठ थी।
६५ उन के दास और दासियों से अधिक और ये सात सहस्र तीन
६६ सौ सैंतीस थे और उन में दो सौ गायक और गायका थीं। उन के
६७ घोड़े सात सौ छत्तीस उन के खच्चर दो सौ पैंतालीस। उन के
ऊंट चार सौ पैंतीस उन के गदहे छः सहस्र सात सौ बीस॥

६८ और जब उन के पितरों के प्रधान यरूसलम को परमेश्वर
के मन्दिर में आये तो ईश्वर के मन्दिर को और उस के स्थान
६९ में स्थापन के लिये मन खोलके चढ़ाया। उन्हों ने अपनी
सामर्थ्य के समान कार्य्य के भंडार में एकसठ सहस्र दिरम
सोना और पांच सहस्र मानः चांदी और याजकों के सौ वस्त्र
दिये॥

७० सो याजक और लावी और लोगों में से और गायक और
द्वारपालक और मन्दिर के सेवक अपने अपने नगरों में और
सारे इसराएल अपने अपने नगरों में बसे॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ और जब सातवां मांस पहुंचा और इसराएल के संतान
अपने नगरों में थे तब लोग यरूसलम में एक जन की नाईं
२ एक संग एकट्ठे हुए। तब यूसदक के बेटे युशूअ ने और उस
के भाई याजकों ने और सियालतिएल के बेटे ज़रूबाबुल और
उस के भाई उठे और इसराएल के ईश्वर की वेदी को बनाया
कि जैसा ईश्वर के जन मूसा की व्यवस्था में लिखा है उस पर
बलिदान की भेंटें चढ़ाईं॥

३ और उन्हों ने उस वेदी को उस के स्थान पर रक्खा क्योंकि
उन देशों के लोगों के लिये उन पर भय था और उन्हों ने
परमेश्वर के लिये उस पर बलिदान की भेंटें चढ़ाईं अर्थात्
४ सांझ विहान के बलिदान की भेंटें। और लिखे हुए के समान
उन्हों ने तंबुओं का पर्ब रक्खा जैसा कि प्रतिदिन का व्यवहार
था उस के समान प्रतिदिन गिन गिनके बलिदान की भेंटें
५ चढ़ाईं। और उस के पीछे नित्य के लिये और अमावस्यों के
लिये और परमेश्वर के पवित्र किये हुए सारे पर्बों के लिये और
उन सभों के लिये जो परमेश्वर के लिये मन खोलके चढ़ावा
६ लाते थे बलिदान की भेंट चढ़ाई। सातवें मास की पहिली तिथि
से उन्हों ने परमेश्वर के लिये बलिदान की भेंट चढ़ाना आरंभ
किया परन्तु परमेश्वर के मन्दिर की नेव अब लों डाली न गई
७ थी। और उन्हों ने थवइयों को और बढ़इयों को रोकड़ और
सेंदानियों को और सूर के लोगों को अन्नजल और तेल दिया
कि फ़ारस के राजा ख़ोरस की आज्ञा के समान देवदारु पेड़
लुबनान से याफा के समुद्र लों लाये॥
८ और यरूसलम में परमेश्वर के मन्दिर में फिर आने के
दूसरे बरस और दूसरे मास में सियालतिएल के बेटे ज़रूबाबुल
और यूसदक़ के बेटे युशूअ और उन के बचे हुए भाई याजक
और लावी और सब जो बंधुआई में से यरूसलम में आये थे
आरंभ किया और परमेश्वर के मन्दिर के कार्य्य के देखने के
९ लिये बीस बरस के और ऊपर लावियों को ठहराया। तब
युशूअ अपने बेटे और भाई और क़दमिएल और उस के बेटे
जो यहूदाह के बेटे थे एक संग उठे कि ईश्वर के मन्दिर के
कार्य्यकारियों को देखें और हन्नादाद के बेटे और उन के भाई
लावी ऐसा ही करते थे॥
१० और जब थवई परमेश्वर के मन्दिर की नेव डालते थे तब

याजक बस्त्र पहिने हुए और तुरहियां लेके और आसफ़ के
बेटे लावी करताल लेके उठ खड़े हुए कि इसराएल के राजा
११ दाऊद के समान परमेश्वर की स्तुति करें। और वे पारी पारी
स्तुति करते और परमेश्वर का धन्य मानते हुए गाते थे इस
कारण कि वुह भला है और उस की दया सदा इसराएल पर
है और जब वे परमेश्वर की स्तुति करते थे तब सारे लोग
परमेश्वर के मन्दिर की नेव डालने में बड़े शब्द से ललकारते
१२ थे। परन्तु बहुत से याजकों और लावियों और पितरों के
प्रधानों में प्राचीन जिन्हों ने पहिले मन्दिर को देखा था जब
इस मन्दिर की नेव उन के देखने में डाली गई तो बड़े शब्द
१३ से बिलाप किया और बहुतेरे आनन्द के मारे ललकार उठे। यहां
लों कि लोग आनन्द के शब्द में और लोगों के बिलाप के शब्द
में बेवरा न करसके क्योंकि लोगों ने बड़े शब्द से ललकारा
और शब्द दूर लों सुना गया॥

चौथा पर्ब्ब।

१ और जब यहूदाह और बिनयमीन के बैरियों ने सुना कि
देश से निकाले हुओं के बेटे इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के
२ लिये मन्दिर बनाते हैं। तब उन्हों ने ज़रूबाबुल के और
पितरों के प्रधान के पास आके उन से कहा कि हमें भी अपने
साथ बनाने देओ क्योंकि हम तुम्हारी नाईं तुम्हारे ईश्वर को
खोजते हैं और हम असूर के राजा असरहद्दून के दिनों से
३ जो हमें उठा लाया है उस के लिये बलि चढ़ाते हैं। परन्तु
ज़रूबाबुल और युशूअ और इसराएल के पितरों के रहे हुए
प्रधानों ने उन्हें कहा कि तुम्हारा काम नहीं कि हमारे साथ
हमारे ईश्वर के लिये मन्दिर बनाओ परन्तु हम एकट्ठे होके
आप इसराएल के ईश्वर परमेश्वर के लिये बनावेंगे जैसा फ़ारस

४ के राजा ख़ोरस ने हमें आज्ञा किई है । तब देश के लोगों ने
यहूदाह के लोगों के हाथों को ढीला किया और बनाने में
५ उन्हें सताया । और फ़ारस के राजा ख़ोरस के समय से लेके
फ़ारस के राजा दारा के राज्य लों उन्हों ने उन के कार्य्य भंग
करने को उन के विरुद्ध में रोकड़ देकर मंत्रियों को ठहराया॥
६ और उन्हों ने शेरशाह राजा के आरंभ में यहूदाह के और
७ यरूसलम निवासियों के विरुद्ध दोषपत्र लिखा। और अरदशेर
के दिनों में विसलाम ने और मित्रदाद ने और ताविएल ने
और उन के रहे हुए संगियों ने फ़ारस के राजा अरदशेर पास
पत्री लिखी और वुह पत्री अरामी भाषा में थी और उस का
८ अर्थ भी अरामी भाषा में किया गया । रहूम प्रधान मंत्री ने
और शम्सी लेखक ने राजा अरदशेर के पास यरूसलम के
९ विरुद्ध इस भांति की पत्री लिखी । तब रहूम प्रधान मंत्री ने
और शम्सी लेखक ने और उन के बचे हुए साथियों ने दीनाई
और अफ़रसतक: और तरफ़ील: और अफ़ारसी और अर्किवी
१० और बबूलनी और सूसानकी और दिहावी और एलामी । और
जातिगणों के रहे हुए जिन्हें महान और कुलीन उसनफ़्फ़र ने
लाके समरैन के नगरों में और नदी इस पार के रहे हुओं को
बसाया इत्यादि ॥
११ उन्हों ने राजा अरदशेर पास यही पत्री भेजी कि आप के
सेवक जो नदी के इस अलंग रहते हैं इत्यादि समय में ।
१२ राजा पर प्रगट होय कि यहूदी जो आप की ओर से हमारे
पास आये हैं सो यरूसलम में आके उस दंगइत और दुष्ट
नगर को बनाते हैं और भीतों को खड़ी किये हैं और नेवों
१३ को जोड़ा है । सो अब राजा पर प्रगट होवे कि यदि यह नगर
बन जाय और भीत उठ जाय तो वे शुल्क और कर और पोत
१४ न देंगे और राजाओं के भंडार की टूटी होगी। अब इस कारण

कि हम भवन का लोन खाते हैं उचित नहीं है कि हम राजा
का अनादर देखें इस लिये हम ने भेजके राजा को जनाया
१५ है। जिसतें आप अपने पितरों के वर्णन की पुस्तक में ढूंढ़
लीजिये सो आप वर्णन की पुस्तक में पावेंगे और जानेंगे कि
यह नगर दंगइत नगर और राजाओं का और प्रदेशों का
दुःखदायक और कि उन्हों ने उसी के मध्य पुरातन समय में
दंगा किया है उसी कारण से यह नगर नाश किया गया था।
१६ इस लिये हम राजा को जताते हैं कि यदि यह नगर बनाया
जाय और उस की भीत खड़ी किई जाय तो इसी कारण से
नदी के इस अलंग आप का कुछ भाग न रहेगा॥
१७ तब राजा ने रहूम प्रधान मंत्री को और शम्सी लेखक को
और उन के रहे हुए साथियों को जो समरैन में रहते हैं और
नदी पार के उबरे हुओं को उत्तर दिया कि अमुक समय में
१८ कुशल। जिस पत्री को तुम ने हमारे पास भेजा खोल खोल
१९ मेरे आगे पढ़ी गई। और मैं ने आज्ञा किई है और ढूंढ़ा
गया है और पाया गया है कि पुरातन समय में इस नगर ने
राजाओं के विरुद्ध में आप को उभाड़ा है और उस में दंगा
२० और हुल्लड़ हुआ है। यरूसलम पर बलवंत राजा भी हुए हैं
जिन्हों ने नदी पार के सभों पर राज्य किया है और उन्हें
२१ शुल्क और कर और पोत दिये जाते थे। सो अब आज्ञा करो
कि वे थम जायें और कि यह नगर बनाया न जावे जब लों
२२ मुझ से आज्ञा न पावें। सो अब चौकस होओ जिसतें इस
बात में कुछ न घटे राजाओं के लिये क्यों घटती होवे॥
२३ सो जब अरटशेर राजा की पत्री का उतारा रहूम के और
शम्सी लेखक के और उन के संगियों के आगे पढ़ा गया तब
वे शीघ्र करके यरूसलम को यहूदियों के पास चढ़ गये और
२४ भुजा के बल से उन का कार्य्य बंद करवाया। तब यरूसलम

में परमेश्वर के मन्दिर का कार्य्य थम गया सो फ़ारस के राजा
दारा के राज्य के दूसरे बरस लों बंद रहा ॥

पांचवां पर्व्व ।

१　और हज्जी भविष्यद्वक्ता ने और इद्दू के बेटे ज़करियाह
भविष्यद्वक्ता ने यहूदाह और यरूसलम के यहूदियों को इसराएल
२ के ईश्वर के नाम से भविष्य कहा । तब सियालतिएल का बेटा
ज़रूबाबुल और यूसदक़ का बेटा युशूआ उठे और यरूसलम
में ईश्वर के मन्दिर का बनाना आरंभ किया और उन के साथ
सहायता के लिये ईश्वर के भविष्यद्वक्ते थे ॥

३　उस समय नदी के इस पार के अध्यक्ष ततनी और
सितारबाज़नाई और उन के संगी उन पास आके बोले कि तुम्हें
यह मन्दिर बनाने को और यह भीत उठाने को किस ने
४ आज्ञा दिई है । तब हम ने उन्हें इस रीति से कहा कि जो
५ बनता है इन के बनवैयों के नाम क्या हैं । परन्तु परमेश्वर
की दृष्टि यहूदियों के प्राचीनों पर थी कि वे उन्हें रोक न सक्ते
थे जब लों यह बात दारा पास न पहुंची और तब उन्हों ने
उस के विषय में उत्तर दिया ॥

६　पत्री का उतारा जो नदी के इस पार के अध्यक्ष ततनी और
सितारबाज़नाई और उस के संगियों ने अफ़रसकी जो नदी के
इस पार रहते थे दारा राजा पास भेजा ॥

७　उन्हों ने उस पास पत्री लिखी जिस में यों था दारा राजा
८ का सारा कुशल । राजा पर प्रगट होवे कि हम यहूदाह के
प्रदेश परमेश्वर के मन्दिर में गये जो बड़े बड़े पत्थरों से बनता
है और भीतों पर लट्ठे धरे हैं और यह कार्य्य शीघ्र बनता
९ जाता है और उन के हाथों में बढ़ जाता है। तब हम ने उन
प्राचीनों से यों कहके पूछा कि यह मन्दिर बनाने को और ये

१० भीतें उठाने को किस ने तुम्हें आज्ञा दिई। आप को जनाने
के लिये हम ने उन का नाम भी पूछा जिसतें हम उन के
११ प्रधान जनों के नाम लिखें। और उन्हों ने हमें यों उत्तर
दिया कि हम स्वर्ग और पृथिवी के ईश्वर के सेवक हैं और वही
मन्दिर बनाते हैं जो बहुत बरसों से बना था जिसे इसराएल
१२ के एक महाराज ने बनवाया और उठाया था। परन्तु जब
हमारे पितरों ने स्वर्ग के ईश्वर का कोप भड़काया तब उस ने उन्हें
बाबुल के राजा कसदी नबूखुदनज़र के हाथ में सौंपा जिस ने
इस मन्दिर को नष्ट किया और लोगों को बाबुल में ले गया।
१३ परन्तु बाबुल के राजा ख़ोरस के पहिले बरस ख़ोरस राजा ने
१४ ईश्वर के इस मन्दिर बनाने के लिये आज्ञा किई। और ईश्वर के
मन्दिर के सोने चांदी के पात्रों को भी जिन्हें नबूखुदनज़र यरूसलम
के मन्दिर से निकाल लिया और बाबुल के मन्दिर में पहुंचाया
उन्हों को ख़ोरस राजा ने बाबुल के मन्दिर से निकाल लिया
और चसपानआज़र नाम एक जन को सौंपा जिसे उस ने
१५ अध्यक्ष किया था। और उसे कहा कि इन पात्रों को लेके जा
और यरूसलम के मन्दिर में पहुंचा और ईश्वर का मन्दिर
१६ अपने स्थान में बनाया जावे। तब वही चसपानआज़र आया
और यरूसलम में ईश्वर के मन्दिर की नेव डाली और उस
समय से अब लों बन रहा है और अब लों बन नहीं चुका।
१७ अब यदि राजा को अच्छा जान पड़े तो राजा के भंडार घर
में जो बाबुल में है ढूंढ़ा जावे कि ख़ोरस राजा ने यरूसलम
में ईश्वर का मन्दिर बनाने को आज्ञा किई थी कि नहीं और
इस बात के विषय में राजा हम पर अपनी इच्छा जनावे॥

छठवां पर्व्व।

१ तब दारा राजा की आज्ञा से पुस्तकों का घर जहां बाबुल

२ में धन धरा जाता था ढूंढा गया । और अख़मता भवन में
जो मादी के प्रदेश में है एक पत्र पाया गया और उस में यों
लिखा था ॥
३ कि ख़ोरस राजा के पहिले बरस में ख़ोरस राजा ने आज्ञा
किई कि यरूसलम में ईश्वर के लिये मन्दिर उस स्थान में जहां
बलि चढ़ाते थे बनाया जावे और उस की नेवें दृढ़ता से डाली
जायें उस की ऊंचाई साठ हाथ और चौड़ाई साठ हाथ की ।
४ तीन पांती बड़े बड़े पत्थर की और एक पांती नये लट्ठे की और
५ उस की लागत राजभवन से दिई जावे । और ईश्वर के मन्दिर के
जो जो सोना चांदी के पात्र नबूख़ुदनज़र यरूसलम के मन्दिर
से निकाल लाया और बाबुल में पहुंचाया था सो भी फेर दिया
जावे और यरूसलम के मन्दिर में अपने अपने स्थान में लाया
जावे और ईश्वर के मन्दिर में रक्खा जावे ॥
६ अब नदी के पार का अध्यक्ष ततनी और सितारबाज़नाई
और उन के संगी अफरसकी जो नदी के पार हैं तुम वहां से
७ दूर होओ । ईश्वर के इस मन्दिर के कार्य्य को बन्ने देओ
यहूदियों के अध्यक्ष को और उन के प्राचीनों को ईश्वर के इस
८ मन्दिर को उस स्थान में बनाने देओ । और इस्से अधिक मैं
ने ईश्वर के इस मन्दिर के बनाने के लिये एक आज्ञा किई है
कि तुम यहूदियों के प्राचीनों से यों करियो कि राजा की संपत्ति से
अर्थात् नदी के पार के कर से उन लोगों को तुरंत उठा दिया
९ जावे जिसतें वे रोके न जावें । और जो कुछ उन्हें स्वर्ग के
ईश्वर के बलिदान की भेंट के लिये बैल और मेढ़े और मेम्ने
और गोहूं और लोन और दाखरस और तेल यरूसलम में
याजकों के ठहराने के समान अवश्य होवे सो उन्हें प्रति दिन
१० निरंतर दिया जावे । जिसतें वे स्वर्ग के ईश्वर के लिये बलि
के सुगंध चढ़ावें और राजा के और उस के बेटों के जीवन के

११ लिये प्रार्थना करें। और मैं आज्ञा भी दे चुका कि जो कोई
इस बचन को पलटेगा उस के घर से लट्ठा खींचा जाये और
खड़ा किया जाके वही उस पर टांगा जावे और इस बात के
१२ लिये उस का घर कूड़ा का ढेर किया जावे। और जिस ईश्वर
ने अपने नाम को उस में बसाया है सारे राजाओं को और
लोगों को जो यरूसलम में ईश्वर के इस मन्दिर को पलटने
को और नाश करने को हाथ बढ़ावें नाश करे मुझ दारा ने
यह आज्ञा ठहराई है सो शीघ्र किई जावे॥

१३ तब नदी के इस पार के देश के अध्यक्ष ततनी और
सितारबाज़नाई और उन के साथियों ने दारा राजा के भेजने
१४ के समान शीघ्रता से किया। और यहूदियों के प्राचीनों ने
बनाया और हज्जी भविष्यद्वक्ता और इद्दू के बेटे ज़करियाह
भविष्यद्वक्ता के भविष्य कहने से भाग्यमान हुए और बनाके
इसराएल के ईश्वर की आज्ञा के समान और फ़ारस के राजा
ख़ोरस की और दारा की और अरदशेर की आज्ञा के समान
१५ पूरा किया। और यह मन्दिर अदार मास की तीसरी तिथि में
बन गया जो दारा राजा के छठवें बरस में था॥

१६ और इसराएल के संतान याजक और लावी और देश से
निकाले गयों के संतानों ने आनन्द से ईश्वर के इस मन्दिर की
१७ प्रतिष्ठा किई। और ईश्वर के मन्दिर की प्रतिष्ठा में सौ बैल
और दो सौ मेढ़े और चार सौ मेम्ने और सारे इसराएल के
पाप की भेंट के लिये इसराएल की बारह गोष्ठी की गिनती के
१८ समान बारह बकरे चढ़ाये। और मूसा की पुस्तक के लिखे
हुए के समान उन्हों ने याजकों को उन के विभाग में और
लावियों को उन की पारियों पर यरूसलम में ईश्वर की सेवा
के लिये रक्खा॥

१९ और पहिले मास की चौदहवीं तिथि में बंधुआई के संतानों

२० ने फसह का पर्ब रक्खा । क्योंकि याजकों और लावियों ने
आप को पवित्र किया था वे सब के सब शुद्ध हुए और बंधुआई
के सारे संतानों के लिये और अपने याजक भाइयों के लिये
२१ और अपने लिये उन्हों ने फसह बलि किया । और इसराएल
के संतान जो बंधुआई से फिर आये और सभों ने जो कि
इसराएल के ईश्वर परमेश्वर की खोज के लिये देश के अन्यदेशियों
की मलीनता से उन में आप को अलग किया था खाया ।
२२ और आनन्द से सात दिन अख़मीरी रोटी का पर्ब रक्खा क्योंकि
परमेश्वर ने उन्हें आनन्दित किया था और असूर के राजा के
मन को उन की ओर फेरा कि ईश्वर इसराएल के ईश्वर के
मन्दिर के कार्य्य में उन के हाथ को दृढ़ करे ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ अब इन बातों के पीछे फ़ारस के राजा अरदशेर के राज्य
में एज़रा जो शिरायाह का बेटा अज़रियाह का बेटा ख़िलक़ियाह
२ का बेटा । सलूम का बेटा सदूक़ का बेटा अख़ितूब का बेटा ।
३ अमरियाह का बेटा अज़रियाह का बेटा मिरयात का बेटा ।
४ ज़रहियाह का बेटा उज़्ज़ी का बेटा बूक्की का बेटा ।
५ अबिसूअ का बेटा फ़ीनिहास का बेटा इलिअज़र का बेटा
६ हारून प्रधान याजक का बेटा । यही एज़रा बाबुल से उठ
चला और मूसा की व्यवस्था में जिसे इसराएल के ईश्वर परमेश्वर
ने दिया था निपुण अध्यापक था और राजा ने उस की सारी
वांछा उसे दिई इस लिये कि परमेश्वर उस का ईश्वर उस का
७ सहायक था । और अरदशेर राजा के सातवें बरस इसराएल
के संतानों में से और याजकों में से और लावी और गायक
८ और द्वारपाल और मन्दिर के सेवक यरूसलम को गये । और
राजा के सातवें बरस के पांचवें मास में वुह यरूसलम में पहुंचा ।

९ क्योंकि उस ने बाबुल से चढ़ जाने का आरंभ पहिले मास की
पहिली तिथि में किया और ईश्वर की सहायता के समान जो
उस पर थी पांचवें मास की पहिली तिथि में यरूसलम में
१० पहुंचा। क्योंकि एज़रा ने परमेश्वर की व्यवस्था के खोज के
लिये और उसे पालने के लिये और इसराएल में विधि और
विचार सिखाने के लिये अपने मन को सिद्ध किया था॥
११ अब उस पत्री का उतारा जो अरटशेर राजा ने एज़रा
याजक और लेखक को जो दिया सो यह है परमेश्वर की
आज्ञाओं के वचन और इसराएल के विधिन में निपुण था॥
१२ राजाओं का राजा अरटशेर स्वर्ग के ईश्वर की व्यवस्था के
१३ सिद्ध लेखक एज़रा याजक को इत्यादि। मैं आज्ञा करता हूं
कि मेरे राज्य में इसराएल के सारे लोग और उस के याजक
और लावी जो अपनी अपनी इच्छा से यरूसलम को चढ़ जाने
१४ चाहते हैं तेरे साथ जावें। जैसा कि तू राजा के आगे से और
उस के सात मंत्रियों से भेजा जाता है कि तू अपने ईश्वर की
व्यवस्था के समान जो तेरे हाथ में है यहूदाह और यरूसलम
१५ के विषय में बूझे। और सोना चांदी जो राजा और उस के
मंत्रियों ने इसराएल के ईश्वर के लिये जिस का निवास यरूसलम
१६ में है मनमंता भेंट चढ़ाई है पहुंचावे। और सारे सोना चांदी
जो तू बाबुल के सारे प्रदेश में लोगों के और याजकों के मनमंता
की भेंट के संग जो अपने ईश्वर के मन्दिर के लिये जो
१७ यरूसलम में है पा सक्ता है। जिसतें तू इस रोकड़ से शीघ्रता
बैल और मेढ़े और मेम्ने उन के मांस की और पीने की भेंट
सहित मोल लेवे और यरूसलम में अपने ईश्वर के मन्दिर की
१८ वेदी पर चढ़ावे। और उबरे हुए सोना चांदी से जो कुछ तुझे
और तेरे भाइयों को करने को अच्छा लगे सो अपने ईश्वर की
१९ इच्छा के समान करें। और जो जो पात्र तेरे ईश्वर के मन्दिर

की सेवा के लिये तुझे दिये गये हैं सो यरूसलम के ईश्वर के
२० आगे सौंप दे। और तेरे ईश्वर के मन्दिर के लिये जो कुछ
अधिक आवश्यक होय जो तुझे देने पड़े सो राजा के भंडार
२१ स्थान से देना। और मैं अर्थात् मैं ही अर्तखशेर राजा सारे
भंडारियों के लिये जो नदी पार हैं आज्ञा करता हूं कि स्वर्ग
के ईश्वर की व्यवस्था का लेखक एज़रा याजक को जो कुछ तुम
२२ से चाहे। सो एक सौ तोड़े चांदी और सौ परिमाण गोहूं और
सौ बत्त दाखरस और सौ बत्त तेल लों और बिना परिमाण नोन
२३ दिया जावे। जो कुछ स्वर्ग के ईश्वर की आज्ञा है सो स्वर्ग
के ईश्वर के मन्दिर के लिये यत्न से किया जावे क्योंकि राजा
के राज्य के और उस के बेटों के विरुद्ध क्यों कोप होवे।
२४ और हम तुम्हें जता देते हैं कि याजकों के और लावियों के
और गायकों और द्वारपालकों और मन्दिर के सेवकों के अथवा
ईश्वर के इस मन्दिर के सेवकों के विषय में कर अथवा शुल्क
२५ अथवा पोत उन से लेना तुम्हें उचित नहीं है। और हे एज़रा
तू अपने ईश्वर की बुद्धि के समान जो तुझ में है न्यायक और
विचारक को ठहरा जिसतें नदी पार के सारे लोगों का सब
जो तेरे ईश्वर की व्यवस्था जानते हैं न्याय करें और जो नहीं
२६ जानते हैं तू उन्हें सिखला। और जो कोई तेरे ईश्वर की
व्यवस्था को और राजा की व्यवस्था को पालन न करे उन पर
दण्ड की आज्ञा शीघ्र किई जावे चाहे मृत्यु लों अथवा देश
से निकाले जाने लों अथवा संपत्ति के लेने लों अथवा बंधन
में डालने लों॥

२७ परमेश्वर हमारे पितरों के ईश्वर का धन्यवाद होवे जिस ने
यरूसलम में अपने मन्दिर को शोभित करने के लिये ऐसी
२८ बात राजा के मन में डाली। और राजा के और उस के
मंत्रियों के आगे और राजा के सारे पराक्रमी अध्यक्षों के आगे

मुझ पर दया किई और परमेश्वर की सहायता के समान मैं ने
दृढ़ता पाई और मैं ने अपने संग चलने के लिये इसराएल में
से श्रेष्ठ मनुष्यों को एकट्ठा किया॥

आठवां पर्व्व।

१ अब उन के पितरों का प्रधान और उन की बंशावली जो
अरदशेर राजा के राज्य में मेरे संग बाबुल से चढ़ गये थे ये
२ हैं। फीनिहास के बेटों में से गैरसुम ईतमर के बेटों में से
३ दानिएल दाऊद के बेटों में से हत्तूश। सकनियाह के बेटों
में से बुरगुम के बेटों में से ज़करियाह और उस के संग डेढ़
४ सौ पुरुष गिने गये। पख़तमोअब के बेटों में से ज़रहियाह
का बेटा इलियाहूऐनी और उस के संग दो सौ पुरुष।
५ सकनियाह के बेटों में से यहज़िएल का बेटा और उस के
६ संग तीन सौ पुरुष। अदीन के बेटों में से भी यूनतन के बेटे
७ अबद और उस के संग पचास पुरुष। और ऐलाम के बेटों में
से अतलियाह का बेटा यसअियाह और उस के संग सत्तर
८ पुरुष। और सफ़तियाह के बेटों में से मीकाएल का बेटा
९ ज़बदियाह और उस के संग अस्सी पुरुष। यूअब के बेटों में से
यहिएल का बेटा अबदियाह और उस के संग दो सौ अठारह
१० पुरुष। और सलूमियत के बेटों में से यूसिफ़ियाह का बेटा
११ और उस के संग एक सौ साठ पुरुष। और बबी के बेटों में
से बबी का बेटा ज़करियाह और उस के संग अट्ठाईस पुरुष।
१२ अज़गाद के बेटों में से हक्कतान का बेटा यूहनान और उस
१३ के संग एक सौ दस पुरुष। और अदूनिक़ाम के पिछले बेटों
में से जिन के नाम ये हैं इलीफ़लत यऔएल और समअयाह
१४ और उन के संग साठ पुरुष। बिगवै के भी बेटों में से ऊती
और ज़बूद और उन के संग सत्तर पुरुष॥

१५ फिर मैं ने उन्हें उस नदी के पास जो अहवा की ओर
बहती है एकट्ठे किया और वहां हम ने तंबुओं में तीन दिन
डेरा किया और मैं ने लोगों को और याजकों को देखा और
१६ लावी के बेटों में से वहां किसी को न पाया। तब मैं ने
इलिअज़र को और अरिएल को और समअियाह को और
इल्नातन को और यारीब को और इल्नातन को और नातन को
और ज़करियाह को और मुसल्लम श्रेष्ठ जनों को और बुद्धिमान
१७ युयरीब को और इल्नातन को भी बुलाया। और आज्ञा करके
मैं ने उन्हें इदू प्रधान के पास कसिफिया में भेजा और जो
कुछ उन्हें इदू को और उस के भाई मन्दिर के सेवकों को
कसिफिया के स्थान में कहना था बताया जिसतें हमारे ईश्वर
१८ के मन्दिर के लिये सेवकों को हमारे पास लावें। और हम पर
ईश्वर की सहायता से वे इसराएल के बेटे लावी के बेटे मुहली
के बेटों में से एक बुद्धिमान जन अर्थात् सरिबियाह को उस
१९ के बेटे और उस के भाइयों सहित अठारह को लाये। और
हसबियाह को और उस के साथ मिरारी के बेटों में से यसअियाह
२० को उस के भाई बंद और उस के बेटे बीस जन। और मन्दिर
के सेवकों में से भी जिन्हें दाऊद ने और अध्यक्षों ने लावियों
की सेवा के लिये ठहराया था दो सौ बीस सेवक उन सभों के
नाम लिखे हुए थे॥

२१ और मैं ने वहां अहवा की नदी पर ब्रत प्रचारा जिसतें
हम ईश्वर के आगे अपने को कष्ट देवें और अपने लिये और
अपने बालकों के लिये और अपनी सारी संपत्ति के लिये उस्से
२२ ठीक मार्ग ढूंढें। क्योंकि मार्ग में बैरियों के विरुद्ध सहायता
के लिये मैं ने योद्धा और घोड़चढ़ों को राजा से मांगने में
लाज किया क्योंकि हम यह कहके राजा से बोले कि हमारे
ईश्वर का हाथ उन सभों पर भलाई के लिये है जो उसे ढूंढ़ते

हैं परन्तु उस का पराक्रम और कोप उन सभों के विरुद्ध है
२३ जो उसे त्यागते हैं। सो हम ने इस बात के लिये व्रत करके
अपने ईश्वर की बिनती किई और उस ने हमारी बिनती सुनी॥
२४ तब याजकों में से मैं ने बारह प्रधान को अलग किया
अर्थात् सरिबियाह और हसबियाह और उन के संग उन के
२५ दस भाई बंदों को। और उन्हें सोना चांदी और पात्र अर्थात्
हमारे ईश्वर के मन्दिर की भेंट जिन्हें राजा और उस के मंत्री और
उस के अध्यक्ष और सारे इसराएल ने भेंट के लिये चढ़ाया
२६ था तौल दिया। अर्थात् मैं ने साढ़े छः सौ तोड़े चांदी और
२७ सौ तोड़े चांदी के पात्र और सौ तोड़ा सोना। और एक सहस्र
दिरम के सोनहुले बीस कटोरे जगमगाते हुए पीतल के दो
पात्र जिन का मोल सोने की नाईं बहुमूल्य था तौल दिये।
२८ और मैं ने उन्हें कहा कि तुम परमेश्वर के लिये पवित्र हो
और पात्र भी पवित्र और सोना चांदी तुम्हारे पितरों के ईश्वर
२९ परमेश्वर के लिये मनमंता भेंट है। चौकस होके रक्षा करो
जब लों तुम यरूसलम में परमेश्वर के मन्दिर की कोठरियों में
प्रधान याजकों के और लावियों के और इसराएल के पितरों के
३० प्रधानों के आगे तौल न देओ। सो याजकों और लावियों ने
सोना चांदी और पात्र को तौल लिया जिसतें यरूसलम में
हमारे ईश्वर के मन्दिर में पहुंचावें॥
३१ तब हम यरूसलम को जाने के लिये पहिले मास की
बारहवीं तिथि में अहवा नदी से चल निकले और हमारे ईश्वर की
सहायता हम पर थी और उस ने हमें बैरियों के और जो
३२ मार्ग में घात में लगे थे उन के हाथों से बचाया। फिर हम
३३ यरूसलम में पहुंचके तीन दिन वहां रहे। अब चौथे दिन
में वुह सोना चांदी और पात्र हमारे ईश्वर के मन्दिर में ऊरियाह
याजक के बेटे मरीमात के हाथ में तौला गया और उस के

संग फ़ीनिहास के बेटे इलिअज़र और उन के संग युशूअ का
बेटा यूज़बद और बिनवी का बेटा नोअदियाह लावी थे।
३४ हर एक को गिनके और तौलके और उसी समय में सारी
तौल लिखी गई॥
३५ निकाले हुओं के सन्तान जो बंधुआई से फिर आये थे
इसराएल के ईश्वर के बलिदान की भेंटों के लिये सारे इसराएल
के कारण बारह बैल और पाप की भेंट के लिये छानबे मेंढ़े
और सतहत्तर मेम्ने और बारह बकरे भेंट दिये सब परमेश्वर
३६ के बलिदान की भेंट के लिये। और उन्हों ने राजा की पत्रियों
को राज्य के प्रधानों को और नदी के इस पार के अध्यक्षों को दिया
और उन्हों ने लोगों की और ईश्वर के मन्दिर की सहायता किई॥

नवां पर्ब्ब।

१ सो जब ये बातें हुईं तब अध्यक्ष मुझ पास आके बोले कि
इसराएल के लोग और याजक और लावी ने देश के लोगों में
से आप को अलग न किया पर कनआनियों और हित्तियों और
फरिज़ियों और यबूसियों और अम्मूनियों और मोआबियों और
२ मिस्त्रियों और अमूरियों के घिनितों के समान करते हैं। क्योंकि
उन्हों ने उन की लड़कियों में से अपने लिये और अपने बेटों
के लिये लिया यहां लों कि पवित्र वंश देश के लोगों में मिल
गये हैं हां इस अपराध में अध्यक्ष और आज्ञाकारियों के हाथ
३ अगुआ हुए हैं। सो मैं ने यह बात सुनके अपना वस्त्र और अपना
ओढ़ना फाड़ा और अपने सिर के बाल और दाढ़ी नोच डाली
४ और विस्मित बैठ गया। तब उन के पापों के कारण जो
उठाये गये थे इसराएल के ईश्वर के वचन से हर एक जो
डरता था मेरे आगे बटुर गया और सांझ की भेंट लों मैं
विस्मित बैठा रहा॥

५ और सांझ की भेंट के समय में मैं अपने शोक से उठा
और अपने वस्त्र और ओढ़ने फाड़े हुए घुटना टेका और अपने
६ ईश्वर परमेश्वर के आगे हाथ फैलाये। और कहा कि हे मेरे
ईश्वर मैं लज्जित हूं और हे मेरे ईश्वर मैं तेरी ओर सिर उठाने
को लजाता हूं क्योंकि हमारे सिर पर हमारी दुष्टता बढ़ गई
७ है और हमारा अपराध स्वर्ग लों उठ गया है। अपने पितरों के
समय से आज लों हम ने बड़ा अपराध किया है और हमारी
दुष्टता के लिये हम और हमारे राजा और हमारे याजक देशियों
के राजाओं के हाथ में तलवार और बंधुआई में लूट और मुंह की
८ घबराहट में सौंपे गये जैसा आज हैं। और अब क्षणभर के लिये
हमारे ईश्वर परमेश्वर से अनुग्रह हुआ है कि हमारी बचती कुछ रहने
दे और अपने पवित्र स्थान में हमें एक कील मारने दे जिसतें
ईश्वर हमारी आंखों को ज्योतिमान करे और हमारी बंधुआई
९ में तनिक फेर जिलावे। क्योंकि हम बंधुए थे तथापि हमारी
बंधुआई में ईश्वर ने हमें त्याग नहीं किया है परन्तु फ़ारस
के राजाओं की दृष्टि में हम पर दया किई है कि हमें फेरके
जिलावे जिसतें हम अपने ईश्वर के मन्दिर को खड़ा करें और
उस के उजाड़ों को बना डालें जिसतें यहूदाह और यरूसलम
१० में हमें एक बाड़ा देवे। और अब हे हमारे ईश्वर इस के
पीछे हम क्या कहें क्योंकि हम ने तेरी आज्ञाओं को त्यागा है।
११ जो तू ने अपने सेवक भविष्यद्वक्तों के द्वारा से यह कहके आज्ञा
किई है कि जिस देश में अधिकार करने के लिये तुम जाते
हो सो देश लोगों की मलीनता से और घिनितों से जिन्हों ने
अपनी अशुद्धता से उसे मुंहा मुंह भर दिया है अशुद्ध है।
१२ इस लिये अब अपनी बेटियों को उन के बेटों को मत देओ
और उन की बेटियों को अपने बेटों के लिये मत लेओ और
उन के कुशल और उन के धन कभी मत चाहो जिसतें तुम

बलवन्त होके देश की उत्तम वस्तु भोग करो और अधिकार
के लिये अपने सन्तानों को सदा के लिये उसे छोड़ जाओ ।
१३ और हे हमारे ईश्वर जैसा तू ने हमें हमारे पापों से थोड़ा
दण्ड दिया है और हमें ऐसा बचाव दिया है और हमारे
कुकर्म्मों के लिये और हमारे महा अपराधों के लिये यह सब
१४ हम पर पड़ा है । यदि हम इन घिनितों के लोगों से नाता
करके तेरी आज्ञाओं को फेर उल्लंघन करें तो तू क्रोध करके
हमें यहां लों न मिटा डालेगा कि कोई उबरा हुआ और
१५ बचाव न होवे । हे परमेश्वर इसराएल के ईश्वर तू धर्म्मी है
क्योंकि आज की नाईं अब लों हम बच निकले हैं सो देख
हम अपने अपराधों में तेरे आगे हैं क्योंकि इसी लिये हम
तेरे आगे ठहर नहीं सक्ते ॥

दसवां पर्ब्ब ।

१ सो जब एज़रा प्रार्थना कर चुका और बिलाप करते हुए
ईश्वर के मन्दिर के आगे लोटता था और पाप मानता था तब
इसराएल में से स्त्री पुरुष और बालक की एक अति बड़ी
मंडली उस पास एकट्ठी हुई क्योंकि लोगों ने बहुतही बिलाप
२ किया । तब ऐलाम के बेटों में से यहिएल के बेटे सकनियाह
ने एज़रा को उत्तर देके कहा कि हम ने अपने ईश्वर का
अपराध किया है और देश के लोगों में से उपरी स्त्रियों को
लिया है जद भी इसराएल में इस बात के विषय में आशा
३ है । सो अब आओ हम अपने ईश्वर के लिये बाचा बांधें कि
अपने प्रभु के और उन के मंत्र के समान जो परमेश्वर की
आज्ञा से डरते हैं सारी पत्नियों को और उन्हें जो उन से
४ उत्पन्न हुए हैं दूर करें और यह व्यवस्था के समान होवे । उठ
क्योंकि यह तेरा कार्य्य और हम भी तेरे साथी सो दृढ़ हो और कर ॥

५ तब एज़रा उठा और याजकों और लावियों को और सारे
इसराएल को यह क्रिरिया खिलाई कि हम इस बचन के
६ समान करेंगे और उन्हों ने क्रिरिया खाई। तब एज़रा ईश्वर
के मन्दिर के आगे से उठा और इलयसीब के बेटे यहूहनान
की कोठरी में गया और वहां जाके न रोटी खाई न जल
पीया क्योंकि जो बंधुआई में पहुंचाये गये थे उन के पाप के
७ कारण वुह बिलाप करता था। और उन्हों ने बंधुआई के
बालकों में सारे यहूदाह और यरूसलम में प्रचार करवाया
८ कि वे यरूसलम में एकट्ठे होवें। और कि जो कोई अध्यक्षों
और प्राचीन लोगों के परामर्ष के समान तीन दिन के भीतर
न आवे उस की सारी संपत्ति डांड़ में लिई जायगी और वुह
आप मंडली से जो बंधुआई में पहुंचाये गये थे अलग किया
जायगा॥

९ तब यहूदाह के और बिनयमीन के सारे लोगों ने नवें
मास की बीसवीं तिथि में तीन दिन के भीतर आप को
यरूसलम में एकट्ठा किया और सारे लोग ईश्वर के मंदिर के
पथ में इस बात के लिये और झड़ी के मारे बैठे कांप रहे
१० थे। और एज़रा याजक ने खड़ा होके उन्हें कहा कि तुम
लोगों ने अपराध किया है और उपरी स्त्रियों को लेके इसराएल
११ के अपराध को बढ़ाया है। इस लिये अब परमेश्वर अपने पितरों
के ईश्वर के आगे मान लेओ और उस की इच्छा पालो और
देश के लोगों से और उपरी स्त्रियों से आप आप को अलग
करो॥

१२ तब सारी मंडलियों ने उत्तर देके बड़े शब्द से कहा कि
१३ जैसा आप ने कहा है तैसा हमें करना अवश्य है। परन्तु लोग
बहुत हैं और बड़ी वृष्टि का समय है और हम बाहर ठहर
नहीं सक्ते और यह कार्य्य दो एक दिन का नहीं है क्योंकि इस

१४ वात में हम वहुतों ने अपराध किया है। सो अब मंडली
के सारे आज्ञाकारी उठें और जिन्हों ने हमारे नगरों में उपरी
स्त्रियों को लिया है सब आवें और उन के संग हर एक नगर
के प्राचीन और उस के न्यायी ठहराये हुए समयों में आवें
जब लों इस बात के लिये हमारे ईश्वर का महा कोप हम से
१५ फिर न जावे। इस कार्य्य पर केवल असहेल के बेटे यूनतन
और तिक़व: के बेटे यहज़ियाह खड़े हुए और लावी मुसल्लम
और सबती ने उन की सहाय किई॥
१६ और बंधुआई के सन्तानों ने वैसा किया और एज़रा याजक
और पितरों के कई प्रधान अपने अपने पितरों के घराने के
समान और सब के सब अपने नाम के समान अलग किये गये
और दसवें मास की पहिली तिथि में इस बात के पूछने को
१७ बैठ गये। और पहिले मास की पहिली तिथि में उन्हों ने
सारे मनुष्यों से जिन्हों ने उपरी स्त्री किई थीं समाप्त किया।
१८ और याजकों के बेटों में भी पाये गये जिन्हों ने उपरी स्त्रियां
ग्रहण किईं अर्थात् यूसदक़ का बेटा युशूअ के बेटों में से और
उस के भाई मअसियाह और इलिअज़र और यरीब और
१९ जिदलयाह। और उन्हों ने अपनी अपनी पत्नी को त्याग
करने को हाथ मारा और अपराधी होके झुंड में का एक मेंढ़ा
२० अपने अपराध के लिये चढ़ाया। और अमीर के बेटों में से
२१ हनानी और ज़बदियाह। और हारिम के बेटों में से मअसियाह
और इलियाह और समअैयाह और यहिएल और उज़्ज़ियाह।
२२ और फ़सिहूर के बेटों में से इलियूअैनी और मअसियाह और
इसमअएल और नतनिएल और यूज़बद और इलिअस:।
२३ लावियों में का भी यूज़बद और शिमई और क़ेलायाह जो
कलीता है और फ़र्तहियाह और यहूदाह और इलिअज़र।
२४ और गायकों से भी इलयसीव और द्वारपालकों में से शलूम

२५ और तुल्म और ऊरी। और इसराएल में से बुरगुस के बेटों
में से रमियाह और यज्ज़ियाह और मिलकियाह और मिनयमीन
२६ और इलिअज़र और मलकियाह और बिनायाह। और ऐलाम
के बेटों में से मत्तनियाह और ज़करियाह और यहिएल और
२७ अबदी और यरीमात और इलियाह। और ज़त्तू के बेटों में से
इलियूऐनी और इलयसीब और मत्तनियाह और यरीमात और
२८ ज़बद और अज़ीज़ा। और बबी के बेटों में से यहूहनान और
२९ हननियाह और ज़बी और अतली। और बानी के बेटों में से
मुसल्लम और मलूक और अदायाह और यसूब और सियाल
३० और रामात। और पख़तमोअब के बेटों में से अदना और
क़िलाल और बिनायाह और मअसियाह और मत्तनियाह और
३१ बज़िल्लिएल और बिन्नू और मुनस्सी। और हारिम के बेटों में
से इलिअज़र और यस्सीयाह और मलकियाह और समऐयाह
३२ और समऊन। और बिनयमीन और मलूक और समरियाह।
३३ हशुम के बेटों में से मत्तानी और मत्तता और ज़बद और इलिफ़लत
३४ और यरीमी और मुनस्सी और शिमई। बानी के बेटों में से
३५ मअदी और अमराम और ऊएल। बिनायाह और बेदयाह
३६ और कलूही। और बनयाह और मरीमात और इलयसीब।
३७। ३८ मत्तनियाह और मत्तनी और यअसी। और बानी और
३९ बिनवी और शिमई। और सलमियाह और नातन और
४०। ४१ अदायह। मकनदबी और सासी और सारी। अज़रिएल
४२ और सलमियाह और समरियाह। सलूम और अमरियाह और
४३ यूसुफ़। नबू के बेटों में से यईएल और मत्तितियाह और
ज़बद और ज़बीना और यद्दो और यूएल और बिनायाह।
४४ इन सभों ने ऊपरी पत्नियों को लिया था और उन में से कितनी
पत्नियां थीं जिन से उन के बालक हुए थे॥

नहमियाह की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ हकलियाह के बेटे नहमियाह के बचन और बीसवें बरस
के किसलिउ मास में जब मैं सूसन के भवन में था तब ऐसा
२ हुआ। कि हमारे भाइयों में से हनानी और यहूदाह में से
कई जन आये और मैं ने उन से उन यहूदियों के विषय में जो
बच निकले थे और बंधुआई से रह गये थे और यरूसलम के
३ विषय में पूछा। और उन्हों ने मुझे कहा कि प्रदेश में जो
बंधुआई से बच रहे हैं सो अति कष्टित और निन्दित हैं
यरूसलम की भीत भी टूटी पड़ी है और उस के फाटक आग
से जले हुए हैं॥
४ और यों हुआ कि जब मैं ने ये बातें सुनीं तो बैठके रोया
और कई दिन लों बिलाप किया और ब्रत रखके स्वर्ग के ईश्वर
५ के आगे प्रार्थना किई। और कहा हे परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर
सर्बशक्तिमान महान और भयंकर जो अपने प्रेमियों से और
६ अपने आज्ञापालकों से नियम और दया रखता है। मैं तेरी
बिनती करता हूं कि अपने कान लगा और अपनी आंखें खोल
जिसतें तू अपने सेवक की प्रार्थना सुने जो मैं तेरे आगे अब
रात दिन तेरे सेवक इसराएल के सन्तानों के लिये करता हूं
जो हम ने तेरे बिरुद्ध किया है मान लेता हूं मैं ने और

७ मेरे पिता के घराने ने पाप किया है। हम ने तेरे आगे अति
बुराई किई है और उन आज्ञाओं को और विधिन को और
विचारों को जो तू ने अपने सेवक मूसा को आज्ञा किई थी
८ पालन नहीं किया है। मैं तेरी बिनती करता हूं कि उस
वचन को स्मरण कर जो तू ने अपने दास मूसा को यह कहके
आज्ञा किई थी कि यदि अपराध करोगे तो मैं तुम्हें जातिगणों
९ में बिथराऊंगा। परन्तु जो तुम मेरी ओर फिरोगे और मेरी
आज्ञाओं को पालन करोगे और उन्हें मानोगे तो यद्यपि तुम्में
से स्वर्ग के अत्यंत सिवाने लों दूर किया जावे तौ भी मैं उन्हें
वहां से बटोरूंगा और उस स्थान में पहुंचाऊंगा जिसे मैं ने
१० चुना है कि मेरा नाम वहां रहे। अब ये तेरे सेवक और तेरे
लोग हैं जिन्हें तू ने अपने महा पराक्रम और बलवन्त भुजा
११ से छुड़ाया है। हे प्रभु मैं तेरी बिनती करता हूं कि अपने
सेवक की प्रार्थना की ओर अब तेरा कान झुके और तेरे उन
दासों की प्रार्थना की ओर जो तेरे नाम से डरा चाहते हैं और
मैं तेरी बिनती करता हूं कि आज अपने सेवक को भाग्यमान कर
और इस जन की दृष्टि में उसे दया दे क्योंकि मैं राजा के घर का
कटोरादायक था॥

दूसरा पर्व्व।

१ और अरदशेर राजा के बीसवें बरस नीसान मास में दाख
रस उस के आगे था और मैं ने दाखरस उठाके राजा को
२ दिया और आगे मैं उस के समीप उदासीन न था। तब
राजा ने मुझे कहा कि तेरा रूप क्यों उदास है तू तो रोगी
नहीं मन के शोक को छोड़ यह कुछ नहीं तब मैं बहुत डर
३ गया। और राजा से कहा कि राजा सदा जीवे जब वुह
नगर जो कि मेरे पितरों का समाधिस्थान है उजाड़ पड़ा

होय और उस के फाटक भस्म किये गये हों तो मेरा रूप
४ क्यों न उदास होवे। तब राजा ने मुझे कहा कि फेर तू क्या
चाहता है तब मैं ने स्वर्गीय ईश्वर की प्रार्थना किई।
५ और मैं ने राजा से कहा कि यदि राजा की इच्छा होय और
जो आप के दास ने आप की दृष्टि में कृपा पाई है तो मुझे
यहूदाह में अपने पितरों के समाधि के नगर में भेजिये जिसतें
६ मैं उसे बनाऊं। तब राजा और रानी ने जो उस के पास
बैठी थी मुझे कहा कि तेरी यात्रा कब लों होगी और तू कब
फिरेगा सो मुझे भेजने में राजा की इच्छा हुई और मैं ने उस
७ के लिये समय ठहराया। फिर मैं ने राजा से कहा कि जो
राजा की इच्छा होय तो नदी पार के अध्यक्षों के लिये मुझे
८ पचियां दिई जायें जिसतें वे मुझे यहूदाह लों पहुंचावें। और
राजा के बनरक्षक आसफ़ के लिये एक पत्री जिसतें वुह मन्दिर
के भवन के फाटकों के और नगर की भीति के और अपने
रहने के घर के निमित्त लट्ठे के लिये लकड़ी देवे और जैसा कि
ईश्वर की कृपा का हाथ मुझ पर था वैसा राजा ने मुझे दिया॥
९ तब मैं नदी पार के अध्यक्षों कने पहुंचा और राजा की
पचियां उन्हें दिईं अब राजा ने मेरे साथ सेनापतिन को और
१० घोड़चढ़ों को भेजा। जब हूरूनी सनबल्लत और अम्मूनी दास
तूबियाह ने सुना तब उन्हें बड़ा शोक हुआ कि इसराएल के
संतानों का कुशलचाहक एक जन आया है॥
११ सो मैं यरूसलम में पहुंचा और वहां तीन दिन रहा।
१२ फिर मैं रात को उठा मैं और थोड़े जन मेरे संग और जो
कुछ मेरे ईश्वर ने मेरे मन में यरूसलम में करने को डाला था
सो मैं ने किसी से न कहा और मेरे बाहन को छोड़ कोई पशु
१३ मेरे संग न था। और मैं तराई के फाटक से अर्थात् नाग
कूआं के आगे से और कूड़ा खिड़की से रात को बाहर निकला

और यरूसलम की टूटी हुई भीतों को और उस के जले हुए
१४ फाटकों को देखा। तब मैं सोता के फाटक को और राजा के
कुंड को चढ़ गया परन्तु वहां मेरे वाहन को निकास न था।
१५ फिर मैं रात को नाली के पास होके चढ़ गया और भीति को
देखा और घूमके तराई के फाटक से भीतर फिर आया॥
१६ और अध्यक्षों ने न जाना कि मैं कहां गया अथवा क्या
किया और अब लों मैं ने न तो यहूदियों से न याजकों से न
कुलीनों से न अध्यक्षों से न रहे हुए कार्य्यकारियों से कहा।
१७ तब मैं ने उन्हें कहा कि हमारे दुःख को देखते हो कि
यरूसलम उजाड़ है और उस के फाटक जले हुए हैं सो आओ
यरूसलम की भीति को बनावें जिसतें आगे निन्दित न होवें।
१८ तब मैं ने ईश्वर की सहाय के विषय में जो मुझ पर थी और
राजा के वचन भी जो उस ने मुझे कहे थे उन्हें कहा तब
उन्हों ने कहा कि चलो उठके बनावें सो इस सुकार्य्य के लिये
उन्हों ने अपने हाथ को दृढ़ किया॥
१९ परन्तु जब हूरूनी सनबल्लत ने और अम्मूनी दास तूबियाह
ने और अरबी जिसम ने सुना तब उन्हों ने हमें ठट्ठे में उड़ाके
हमारी निन्दा किई और कहा कि तुम यह क्या करते हो क्या
२० राजा से फिर जाओगे। तब मैं ने उत्तर देके उन्हें कहा कि
स्वर्ग का ईश्वर हमें भाग्यमान करेगा इस लिये हम उस के
दास उठके बनावेंगे परन्तु यरूसलम में तुम्हारा भाग अथवा
पद अथवा स्मरण नहीं है॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ तब प्रधान याजक इलयसीब ने अपने याजक भाइयों के
संग उठके भेड़ फाटक बनाये उन्हों ने उसे पवित्र करके उस
के केवाड़ों को खड़ा किया अर्थात् मियाह के गुम्मट लों और

२ हननिएल के गुम्मट लों पवित्र किया । और उस के लग यरीहो
के लोगों ने बनाया और उन के लग इमरी के बेटे ज़कूर ने
बनाया ॥

३ परन्तु मछली फाटक को हस्सिनाह के बेटों ने बनाया
उन्हों ने उस के लट्ठे धरे और उस के केवाड़ों को उस के ताले
४ और उस के अड़ंगे सहित खड़ा किया । और उन के लग
क़ुज़ के बेटे ऊरियाह के बेटे मरीमात ने सुधारा और उन के
लग मुशीज़बीएल के बेटे बरक़ियाह के बेटे मुसल्लम ने सुधारा
५ और उन के लग बअना के बेटे सदूक़ ने सुधारा । और उन के
लग तक़ूअइयों ने सुधारा परन्तु उन के कुलीनों ने अपने प्रभु
के कार्य्य में हाथ न लगाये ॥

६ फिर फ़सीख़ के बेटे यूयदअ और बसूदियाह के बेटे मुसल्लम
ने पुराना फाटक सुधारा उन्हों ने उस के लट्ठे धरे और उस
के केवाड़ों को उस के ताले और उस के अड़ंगे सहित खड़ा
७ किया । और उन के लग जिबऊनी मलतियाह ने और मेरूनाती
यदून ने और जिबऊनी के और मिसफ़: के लोगों ने नदी के
८ इस अलंग अध्यक्ष के सिंहासन लों सुधारा । उस के लग
सोनारों में से हरहया के बेटे उज़्ज़िएल ने सुधारा और उस के
लग गंधियों के बेटे हननियाह ने भी सुधारा और उन्हों ने
९ यरूसलम की चौड़ी भीति लों सुधारा । और उन के लग
यरूसलम के आधे का अध्यक्ष हूर के बेटे रिफ़ायाह ने सुधारा ।
१० और उन के लग हरूमाफ के बेटे यादायाह ने अपने घर के
सन्मुख सुधारा और उस के लग हसबनियाह के बेटे हतूश ने
११ सुधारा । हारिम के बेटे मलकियाह ने और पख़तमोअब के
१२ बेटे हसूब ने दूसरा भाग और भट्ठों की गुम्मट बनाई । और
उस के लग यरूसलम के एक भाग के अध्यक्ष हलोहेश के बेटे
सलूम ने और उस की बेटियों ने सुधारा ॥

१३ हनून और ज़नूह के बासियों ने तराई फाटक सुधारा
उन्हों ने उसे बनाया और उस के केवाड़ों को उस के ताले
और उस के अड़ंगे सहित खड़ा किया और कूड़ा फाटक लों
भीति पर सहस्र हाथ सुधारे॥
१४ परन्तु कूड़ा फाटक का बैतुलकरम के भाग के अध्यक्ष रैकाब
के बेटे मलकियाह ने सुधारा उस ने उसे बनाया और उस के
केवाड़ों को उस के ताले और अड़ंगे सहित खड़ा किया॥
१५ परन्तु सोता फाटक को मिसफ़: के भाग का अध्यक्ष कुलहोसी
के बेटे सल्लून ने सुधारा उस ने उसे बनाया और पाटा और
उस के केवाड़ों को उस के ताले और अड़ंगे सहित खड़ा किया
और राजा की वारी के लग सिलह के कुंड की भीति और सीढ़ी
१६ लों जो दाऊद के नगर से उतरती है बनाई। उस के पीछे
बैतसूर के आधे भाग के अध्यक्ष अज़बूक़ के बेटे नहमियाह
दाऊद के समाधिन के सन्मुख और बनाये हुए कुंड लों और
१७ पराक्रमियों के घर लों सुधारा। उस के पीछे लावियों में से
बानी के बेटे रहूम ने सुधारा उस के लग क़ईल: के आधे
१८ भाग के अध्यक्ष हसबियाह ने अपने भाग में सुधारा। उस के
पीछे उन के भाई अर्थात् क़ईल: के आधे भाग के अध्यक्ष
१९ हन्नादाद के बेटे बवी ने सुधारा। और उस के लग मिसफ़:
के अध्यक्ष यशूअ के बेटे इज़र ने दूसरा टुकड़ा घूम से
२० शस्त्रस्थान की चढ़ाई के सन्मुख सुधारा। उस के पीछे ज़बी
के बेटे बरूक ने यत्न से घूम से दूसरे टुकड़े के प्रधान याजक
२१ इलयसीब के घर के द्वार लों सुधारा। उस के पीछे क़ूज़ के
बेटे ऊरियाह के बेटे मरीमात ने दूसरे टुकड़े इलयसीब के
२२ घर के द्वार से इलयसीब के घर के अन्त लों सुधारा। और
२३ उस के पीछे चौगान के मनुष्य याजकों ने सुधारा। उस के
पीछे बिनयमीन और हशूब ने अपने घर के सन्मुख सुधारा

उस के पीछे अननियाह के बेटे मअसियाह के बेटे अज़रियाह
२४ ने अपने घर के पास सुधारा। उस के पीछे हन्नादाद के बेटे
बिनवी ने दूसरा टुकड़ा अज़रियाह के घर से घूम लों अर्थात्
२५ कोने लों सुधारा। ऊज़्ज़ी के बेटे फ़लाल ने उस घूम और
गुम्मट के सन्मुख जो राजा के ऊंचे भवन के ऊपर से जाता
है जो बंदीगृह के आंगन के निकट है सुधारा उस के पीछे
२६ फ़रुस के बेटे फ़िदायाह ने। और मन्दिर के सेवक उफ़ल
पर पूर्व की ओर जलफाटक के सन्मुख और गुम्मट जो बाहर
है रहते थे॥
२७ उन के पीछे तक्कूत्रियों ने बड़े गुम्मट के सन्मुख जो बाहर
है अर्थात् उफ़ल की भीति लों दूसरा टुकड़ा सुधारा॥
२८ याजकों ने हर एक अपने अपने घर के सन्मुख घोड़ फाटक
२९ के आगे से सुधारा। उन के पीछे अमीर के बेटे सदूक़ ने
अपने घर के सन्मुख सुधारा और उस के पीछे पूर्ब फाटक के
३० रक्षक सकनियाह के बेटे समअयाह ने भी सुधारा। उस के
पीछे सलमियाह के बेटे हननियाह ने और सलफ़ के छठवें
बेटे हनून ने दूसरा टुकड़ा सुधारा उस के पीछे बरकियाह के
३१ बेटे मुसल्लम ने अपनी कोठरी के सन्मुख सुधारा। उस के
पीछे सोनार के बेटे मलकियाह ने मन्दिर के सेवकों के और
बेपारियों के स्थान लों मिफ़काद फाटक के सन्मुख घूम के कोने
३२ लों सुधारा। और कोने की चढ़ाई के मध्य में भेड़ फाटक
सोनारों ने और बेपारियों ने सुधारा॥

चौथा पर्व्व।

१ और ऐसा हुआ कि जब सनबल्लत ने सुना कि हम भीति
बनाते हैं तब वुह बहुत कोपित और क्रोधित हुआ और
२ यहूदियों को चिढ़ाया। और अपने भाइयों के और समरः की सेना

के आगे यह कहके बोला कि ये निर्बल यहूदी क्या करते हैं
क्या उन्हें रहने देंगे क्या वे बलि चढ़ावेंगे वे दिन भर में बना
डालेंगे और क्या वे जलाये हुए कूड़ों को ढेरों से पत्थर जगावेंगे।
३ तब अम्मूनी तूबियाह ने जो उस पास खड़ा था उसे कहा कि
जो वे भी बनाते हैं यदि गीदड़ चढ़ जाय वुह उन की पत्थर
की भीति को तोड़ देगा॥
४ हे हमारे ईश्वर सुन क्योंकि हम निन्दित हैं और उन की
निन्दा उन्हीं के सिर पर फेर और बंधुआई के देश में उन्हें
५ अहेर के लिये दे। और उन की बुराई मत ढांप और तेरे
आगे उन का पाप मिटाया न जाय क्योंकि थवइयों के आगे
उन्हों ने रिस दिलाया है॥
६ सो हम ने भीति बनाई और आधी लों सारी भीति जुट गई
क्योंकि लोगों का मन काम पर था॥
७ परन्तु ऐसा हुआ कि जब सनबल्लत और तूबियाह और
अरबियों और अम्मूनियों और अशदूदियों ने सुना कि यरूसलम
की भीति बन गई और दरारें बंद होने लगीं तब वे अति
८ कोपित हुए। और सभों ने मिलके युक्ति बांधी कि आके
९ यरूसलम के विरुद्ध लड़ें और हानि पहुंचावें। तथापि हम
ने अपने ईश्वर की प्रार्थना किई और उन के कारण उन के
१० विरुद्ध दिन रात पहरा बैठा रक्खा। और यहूदाह ने कहा
कि बोझियों का बल घट गया और कूड़ा बहुत है यहां लों
११ कि हम भीति नहीं बना सक्ते हैं। और हमारे बैरियों ने कहा
कि जब लों हम उन के मध्य में न आ लें और उन्हें घात
न करें और कार्य्य को रोक न लेवें वे न जानेंगे न देखेंगे॥
१२ और ऐसा हुआ कि जब उन के लग के निवासी यहूदी
आये तब उन्हों ने हमें दस बार कहा कि अवश्य है कि हर
१३ स्थान से हमारे पास आओ। इसी लिये मैं ने वहां के नीचे

के स्थानों की भीति के पीछे और ऊंचे स्थानों में मैं ने लोगों
को उन के घराने के समान तलवार और भाला और धनुषों
१४ को लिये हुए बैठाया। और मैं ने देखा और उठा और कुलीनों
को और प्रधानों को और बचे हुए लोगों को कहा कि तुम उन
से मत डरो महा भयंकर परमेश्वर का स्मरण करो और अपने
भाइयों और बेटों और बेटियों और पत्नियों और घरों के लिये
लड़ो ॥

१५ और ऐसा हुआ कि जब हमारे बैरियों ने सुना कि यह
बात हम पर प्रगट हुई और कि ईश्वर ने उन का परामर्श
व्यर्थ किया तब हम सब भीति के हर एक जन अपने अपने
१६ कार्य्य में फिर लगे। और ऐसा हुआ कि उस समय से मेरे
आधे सेवक तो काम में लगे और आधे ने भाले और ढाल
और धनुष और झिलम पकड़ा और अध्यक्ष यहूदाह के सारे
१७ घराने के पीछे। जो जो भीति के ऊपर जोड़ाई करते थे और
जो बोझा ढोते थे बोझवैया सहित एक एक हाथ से कार्य्य
१८ करता था और दूसरे से हथियार पकड़ता था। क्योंकि हर
एक थवई अपनी कटि पर तलवार बांधे था और जोड़ाई
१९ करता था और तुरही के बजवैये मेरे लग थे। फिर मैं ने
कुलीनों को और अध्यक्षों को और रहे हुए लोगों को कहा कि
कार्य्य महान और बड़ा है और भीति पर हम एक दूसरे से
२० अलग हैं। सो जहां तुम लोग तुरही का शब्द सुनो तहां
हमारे पास चले आओ हमारा ईश्वर हमारे लिये लड़ेगा ॥

२१ सो हम ने कार्य्य में परिश्रम किया और भोर से तारा दिखाई
२२ देने लों आधे जन भाला लिये रहे। मैं ने भी उस समय में
लोगों से कहा कि हर एक जन अपने अपने सेवक को ले ले
यरूसलम में टिके जिसतें रात को हमारे लिये पहरा होवे
२३ और दिन को कार्य्य करें। सो न मैं ने न मेरे भाईबंदों ने

न मेरे सेवकों ने न पहरे के मनुष्यों ने जो मेरे पीछे थे स्नान
की जून को छोड़ हम्में से किसी ने अपने वस्त्रों को न उतारा॥

पांचवां पर्व्व ।

१ और लोगों ने और उन की पत्नियों ने अपने भाईबन्द
२ यहूदियों पर दोष लगाया। क्योंकि कितने कहते थे कि हम
और हमारे बेटे बेटियां बहुत हैं इस लिये हम अन्न लेवें जिसतें
३ खायें और जीयें। कितनों ने यह भी कहा कि हम ने महंगी
में अन्न मोल लेने के लिये अपनी भूमि और दाख की बारी
४ और घरों को बंधक रक्खा है। और कितनों ने यह भी कहा
कि राजा का कर देने के लिये हम ने अपनी भूमि और दाख
५ की बारी पर रोकड़ उधार लिया है। तथापि हमारा मांस
हमारे भाइयों के मांस के समान और हमारे बालक उन के
बालकों के समान और अब देख हम अपने बेटे बेटियों को
बंधुआई में दास होने के लिये लाते हैं और हमारी बेटियों
में से कितनी बंधुआई में जा चुकी हैं और हम अशक्त हैं
क्योंकि और लोग हमारी भूमि और दाख की बारी रखते हैं॥
६ जब मैं ने यह बचन और उन का चिल्लाना सुना तो मैं
७ अति रिसिआया। तब मैं ने अपने मन में बिचारा और कुलीनों
को और अध्यक्षों को दपट के कहा कि तुम हर एक जन
अपने अपने भाई से ब्याज लेते हो और मैं ने उन के बिरुद्ध
८ बड़ी मंडली एकट्ठी किई। और उन्हें कहा कि हम ने अपनी
सामर्थ्य के समान अपने यहूदी भाइयों को जो अन्यदेशियों में
बेचे गये थे छुड़ा लिया और तुम क्या अपने भाइयों को बेचोगे
अथवा वे हमारे पास बेचे जायेंगे तब वे चुप रहे और कुछ
९ उत्तर न पाया। फिर मैं ने कहा कि तुम जो करते हो सो
अच्छा नहीं हमारे बैरी अन्यदेशियों के कारण ईश्वर के भय

१० में चलने को क्या तुम्हें उचित नहीं। और मैं भी मेरे भाई
और मेरे सेवकों ने उन्हें अन्न और रोकड़ दिये हैं सो मैं
तुम्हारी बिनती करता हूं कि आओ यह ब्याज लेना छोड़ देवें।
११ मैं बिनती करता हूं कि उन की भूमि और उन की दाख की और
जलपाई की बारी और उन के घर और सवां भाग रोकड़ और अन्न
और दाखरस और तेल जो उन से लिया है उन्हें आज फेर देओ।
१२ तब उन्हों ने कहा कि आप के कहने के समान हम करेंगे हम
फेर देंगे और उन से कुछ न लिया करेंगे तब मैं ने याजकों
को बुलाया और उन से किरिया लिई कि इस बाचा के समान
१३ हम करेंगे। मैं ने भी अपना वस्त्र झाड़के कहा कि इसी
रीति से ईश्वर हर एक जन को जो इस बाचा को पूरी न करे
अपने मन्दिर से और अपनी बाचा से झाड़ देवे यों वुह झाड़ा
जाय और शून्य होवे और सारी मंडली ने कहा कि आमीन
और परमेश्वर की स्तुति किई और इस बाचा के समान लोगों
ने किया॥

१४ और भी जब से मैं यहूदाह के देश में उन पर अध्यक्ष
ठहराया गया अर्थात् अरदशेर राजा के बीसवें बरस से बत्तीसवें
बरस लों जो बारह हैं मैं ने और मेरे भाई ने अध्यक्ष की
१५ रोटी न खाई। परन्तु मेरे आगे के अध्यक्ष लोगों पर भार
थे और उन से रोटी और दाखरस और चालीस शेकल चांदी
लेते थे हां उन के सेवक भी लोगों पर प्रभुता करते थे परन्तु
१६ ईश्वर के डर के मारे मैं ने ऐसा न किया। और इस भांति के
कार्य्य में भी मैं लगा रहा और हम ने भूमि न मोल लिई
१७ और मेरे सेवक वहां काम की ओर बटुर गये। और भी उन्हें छोड़
जो हमारे आस पास के अन्यदेशियों में से आते थे मेरे भोजन
१८ में डेढ़ सौ यहूदी और अध्यक्ष थे। और मेरे लिये प्रति दिन एक
बैल और छः चुने हुए भेड़ और पक्षी भी सिद्ध किये जाते थे

ओर दस दिन में एक वार हर प्रकार का दाखरस था तथापि
इन बातों के लिये में ने अध्यक्ष का भोजन न चाहा क्योंकि
इन लोगों पर बंधुआई का बोझ था॥
१६ हे मेरे ईश्वर इन लोगों के लिये सब जो मैं ने किया है
भलाई के लिये मुझे स्मरण कर॥

छठवां पर्ब्ब।

१ अब यों हुआ कि जब सनवल्लत ओर तूबियाह ओर अरबी
जिसम ओर हमारे रहे हुए बैरियों ने सुना कि मैं भीति बना
चुका ओर उस में कोई दरार न रहा तथापि उसी समय मैं ने
२ फाटकों पर केवाड़े न चढ़ाये थे। तब सनबल्लत ओर जिसम
ने मुझे यह कहला भेजा कि आ हम ओनो के चौगान के
गाओं में भेंट करें परन्तु उन के मन में मेरा उपद्रव करना
३ था। ओर मैं ने दूतों से कहला भेजा कि मैं बड़े कार्य्य में
लगा हूं यहां लों कि मैं उतर आ नहीं सक्ता जब लों उसे
४ छोड़ के तुम पास आऊं क्यों कार्य्य थम जाय। तथापि उन्हों
ने इस रीति से चार वार मुझ पास भेजा ओर उसी रीति से
मैं ने उन्हें उत्तर दिया॥
५ फिर सनवल्लत ने पांचवीं वार उसी रीति से अपने दास के
६ हाथ से एक खुली हुई पत्री मेरे पास भेजी। उस में लिखा था
कि अन्यदेशियों में चर्चा है ओर जिसमू कहता है कि तू ओर
यहूदी फिर जाने की चिन्ता करते हो इस बात के लिये तू
भीति बनाता है जिसतें इन बातों के समान तू उन का राजा
७ होवे। तू ने अपने लिये यह कहके यरूसलम में उपदेश
करने को आचार्य्यों को भी ठहराया है कि यहूदाह में एक
राजा है ओर अब इन बातों के समान राजा को समाचार
८ दिया जायगा इस लिये अब आओ एकट्ठे परामर्ष करें। तब

में ने उस पास कहला भेजा कि तेरे कहने के समान कोई
९ बात नहीं हुई परन्तु तू अपने ही मन से बनाता है। क्योंकि
यह कहके सभों ने हमें डराया कि इस काम से उन के हाथ
दुर्बल होंगे जिसतें बन न पड़े इस लिये अब मेरे हाथों को
दृढ़ कर ॥

१० उस के पीछे तब मैं मुहेतबिएल के बेटे दिलायाह के बेटे
समअियाह के घर गया जो बंधन में था और उस ने कहा कि
आ ईश्वर के घर में मन्दिर के भीतर भेंट करें और मन्दिर के
केवाड़े बन्द करें क्योंकि वे तुझे घात करने को आवेंगे हां रात
११ को तुझे घात करने को आवेंगे। और मैं ने कहा कि क्या मुझ
ऐसा जन भागे और मुझ ऐसा होके अपने प्राण बचाने के
१२ कारण मन्दिर में पैठे मैं न जाऊंगा। और लो मैं ने देख लिया
कि ईश्वर ने उसे न भेजा था परन्तु कि उस ने यह आचार्य्य बचन
मेरे विरुद्ध कहा था क्योंकि तूबियाह और सनबल्लत ने उसे
१३ ठीके में किया था। इस लिये उसे ठीके में किया जिसतें मैं
डर जाऊं और ऐसा करके दोषी होऊं और जिसतें वे अपबाद
का कारण पावें और मेरी निन्दा करें ॥

१४ हे मेरे ईश्वर उन के इन कार्य्यों के समान तूबियाह को
और सनबल्लत को और नोअदियाह आचार्य्यानी को और रहे
हुए आचार्य्यों को जो मुझे डराने चाहते हैं स्मरण कर ॥

१५ सो बावन दिन में एलुल मास की पचीसवीं तिथि में भीति बन
१६ चुकी। और ऐसा हुआ कि जब हमारे सारे बैरियों ने सुना
और चारों ओर के अन्यदेशियों ने देखा तो वे अपनी दृष्टि में
अति शोकित हुए क्योंकि उन्हें सूझ पड़ा कि यह कार्य्य हमारे
ईश्वर की ओर से हुआ ॥

१७ उस्से अधिक उन दिनों में यहूदाह के कुलीन पत्री पर पत्री
तूबियाह पास भेजते गये और तूबियाह की उन पास पहुंचती

१८ थी। क्योंकि यहूदाह में बहुत उस की किरिया में थे इस
कारण कि वुह अरख़ के बेटे सकनियाह का जवांई था और
उस का बेटा यहूहनान बरकियाह के बेटे मुसल्लम की बेटी
१९ को ब्याह लाया था। उन्हों ने मेरे आगे उस के सुकार्य्यों की
भी चर्चा किई और मेरी बातें उस्से कहीं और तूबियाह ने मुझे
डराने के लिये पत्रियां भेजीं॥

सातवां पर्व्व।

१ और जब भीति बन गई और मैं ने केवाड़ों को खड़ा किया
और द्वारपालों को और गायकों को और लावियों को ठहराया
२ तब यों हुआ। कि मैं ने अपने भाई हनानी को और भवन के
अध्यक्ष हननियाह को यरूसलम सौंपा क्योंकि वुह बिश्वस्त
३ मनुष्य और बहुतों से अधिक ईश्वर को डरता था। और मैं
ने उन्हें कहा कि जब लों धूप न चढ़े तब लों यरूसलम के
फाटक खोले न जायें और उन के आगे अड़ंगे से द्वार बंद
किये जायें और यरूसलम के बासी हर एक अपनी अपनी चौकी
में और हर एक अपने अपने घर के सन्मुख चौकी के लिये
ठहराया जाय॥

४ अब नगर बड़ा और चौड़ा था परन्तु उस में थोड़े लोग थे
५ और घर बनाये न गये थे। और कुलीनों को और अध्यक्षों को
और लोगों को एकट्ठा करने के लिये मेरे ईश्वर ने मेरे मन में
डाला जिसतें वे बंशावली से गिने जायें और जो पहिले चढ़
आये थे मैं ने उन की बंशावली की एक पत्री पाई और उस में
लिखा पाया॥

६ ये प्रदेशी के बंश जो बंधुआई से चढ़ गये थे जिन्हें बाबुल
का राजा नबूखुदनज़र ले गया था और यरूसलम में और
यहूदाह में हर एक जन अपने अपने नगर में फिर आया।

२ जो ज़रूबाबुल युशूअ नहमियाह अज़रियाह रग़मियाह नहमानी
मरदकी बिलशान मिशफ़रत बिगवै नहूम और बअना के साथ
८ आये इसराएल के लोगों की गिनती यह है। बुग़ुस के सन्तान
९ दो सहस्र एक सौ बहत्तर । सफ़तियाह के सन्तान तीन सौ
१० । ११ बहत्तर । अरख के सन्तान छ: सौ बावन । युशूअ के
और यूअब के सन्तान पख़तमोअब के सन्तान दो सहस्र आठ
१२ सौ अठारह । ऐलाम के सन्तान एक सहस्र दो सौ चौवन ।
१३ । १४ ज़तू के सन्तान आठ सौ पैंतालीस । ज़क्की के सन्तान
१५ सात सौ साठ । बिनवी के सन्तान छ: सौ अठतालीस ।
१६ । १७ बबी के सन्तान छ: सौ अट्ठाईस । अज़गाद के सन्तान
१८ दो सहस्र तीन सौ बाईस । अदूनिक़ाम के सन्तान छ: सौ
१९ । २० सतसठ । बिगवै के सन्तान दो सहस्र सतसठ । अदीन
२१ के सन्तान छ: सौ पचपन । हिज़क़ियाह के अतीर के सन्तान
२२ । २३ अट्ठानवे । हशूम के सन्तान तीन सौ अट्ठाईस । बेज़ी
२४ के सन्तान तीन सौ चौबीस । हरीफ़ के सन्तान एक सौ बारह ।
२५ । २६ जिबऊन के सन्तान पंचानवे । बैतलहम के और नतूफ़:
२७ के एक सौ अट्ठासी जन । अनतात के एक सौ अट्ठाईस जन ।
२८ । २९ बैतअज़मौत के बयालीस जन । क़रयतअरीम कफ़ीर:
३० और बीरूत के सात सौ तेंतालीस जन । रामः और जिबअ के
३१ छ: सौ एक्कीस जन । मिकमास के एक सौ बाईस जन ।
३२ । ३३ बैतएल और ऐ के एक सौ तेईस जन । दूसरे नबू के
३४ बावन जन । दूसरे ऐलाम के सन्तान एक सहस्र दो सौ चौवन।
३५ । ३६ हारिम के सन्तान तीन सौ बीस । यरीहो के सन्तान
३७ तीन सौ पैंतालीस । लूद के और हदीद के और ओनू के
३८ सन्तान सात सौ एक्कीस । सनाह के सन्तान तीन सहस्र नव
सौ तीस ॥
३९ यदैअयाह के सन्तान युशूअ के घराने के याजक नौ सौ

४० । ४१ तिहत्तर । अमीर के सन्तान एक सहस्र बावन । फ़सिहूर
४२ के सन्तान एक सहस्र दो सौ सैंतालीस । हारिम के सन्तान
एक सहस्र सत्रह ॥

४३ लावी क़दमिएल से युशूअ के सन्तान और हूदियाह के सन्तान
से चौहत्तर ॥

४४ गायक असफ़ के सन्तान एक सौ अठतालीस ॥

४५ द्वारपाल सलूम के सन्तान अतीर के सन्तान तल्मान के
सन्तान अक़ूब के संतान ख़तीता के संतान सावी के संतान एक
सौ अठतीस ॥

४६ मन्दिर के सेवक ज़िहा के संतान हसूफ़ा के संतान तबआत
४७ के संतान । क़ैरूस के संतान सीग़ा के संतान फ़दून के संतान ।
४८ लिबाना के संतान हजाब: के संतान शलमई के संतान ।
४९ हनान के संतान जद्दील के संतान गहर के संतान ।
५० रियाहाह के संतान रसीन के संतान नक़ूदा के संतान ।
५१ गज़्ज़ाम के संतान ऊज़्ज़ा के संतान फ़सीख़ के संतान ।
५२ बेज़ी के संतान मिऊनिम के संतान निफ़ीशिसम के संतान ।
५३ बक़बूक़ के संतान हक़ूफ़ा के संतान हरहूर के संतान ।
५४ बसलीस के संतान महीदा के संतान हरसा के संतान ।
५५ बरकूस के संतान सीसरा के संतान तिमह के संतान ।
५६ । ५७ नसिया के संतान ख़तीफ़ा के संतान । सुलेमान के दासों
के संतान सूती के संतान साफ़िरत के संतान फ़रीदा के संतान ।
५८ यअला के संतान दरक़ून के संतान जदील के संतान ।
५९ सफ़तियाह के संतान ख़तील के संतान फ़ाकिरतुज़बीआन के
६० संतान अमून के संतान । मन्दिर के सारे सेवक और सुलेमान
के सेवकों के संतान तीन सौ बानबे ॥

६१ और तल्लमिल्ह तल्लहरसा करुब अद्दून और अमीर में से
गये थे परन्तु वे न तो अपने पितरों के घराने न अपने गोतो

६२ दिखा सके कि इसराएल के थे अथवा न थे। दिलायाह के
संतान तूबियाह के संतान नकूदा के संतान छः सौ बयालीस॥
६३ और याजकों में से हबायाह के संतान कोस के संतान
बरज़िल्ली के संतान जिस ने बरज़िल्ली जिलिअदी की बेटियों
६४ में से ब्याहा और उन के नाम से कहा जाता था। जो बंशावली
में गिने गये इन्हों ने उन में अपना नामपत्र ढूंढ़ा परन्तु न
पाया इस लिये वे अपवित्र के समान याजकता से अलग किये
६५ गये। और अध्यक्ष ने उन्हें कहा कि जब लों उरीम और
तमीमधारी एक याजक न उठे तब लों वे पवित्र वस्तुन में से
न खाने पावेंगे॥

६६ सारी मंडली मिलके बयालीस सहस्र तीन सौ साठ।
६७ उन के दास दासी को छोड़के जो सात सहस्र तीन सौ सैंतीस
६८ थे और उन के गायक और गायिका दो सौ पैंतालीस। उन
के घोड़े सात सौ छत्तीस उन के खच्चर दो सौ पैंतालीस।
६९ उन के ऊंट चार सौ पैंतीस उन के गदहे छः सहस्र सात सौ
बीस॥

७० और पितरों के कई प्रधान ने उस कार्य्य के लिये दिया
अध्यक्ष ने भंडार में एक सहस्र दिरहम सोना और पचास पात्र
७१ और पांच सौ तीस याजकों के वस्त्र दिये। और पितरों के
प्रधानों में से उस काम के भंडार में बीस सहस्र दिरहम सोना
७२ और दो सहस्र मना चांदी दिई। और रहे हुए लोगों ने बीस
सहस्र दिरहम सोना और दो सहस्र मना चांदी और याजकों
के सठसठ वस्त्र दिये॥

७३ इस लिये याजक और लावी और द्वारपाल और गायक और
कितने लोग और मन्दिर के सेवक और सारे इसराएल अपने
अपने नगर में बसे और जब सातवां मास आया तब इसराएल
के संतान अपने अपने नगर में थे॥

आठवां पर्व्व ।

१ और सारे लोग एक मन से जल फाटक के आगे चौगान
में एकट्ठे हुए और उन्हों ने एज़रा अध्यापक से मूसा की व्यवस्था
की पुस्तक को जो परमेश्वर ने इसराएल को आज्ञा किई थी
२ मंगवाया। और सातवें मास की पहिली तिथि में एज़रा याजक
स्त्री पुरुष की मंडली के और सब के आगे जो सुनके समझ
३ सक्ते थे व्यवस्था को लाया। और जल फाटक के चौगान के
आगे भोर से दो पहर लों स्त्री पुरुष के और समुझवैयों
के आगे उस ने पढ़ा और सारे लोगों ने व्यवस्था की पुस्तक की
४ और कान लगाये। और एज़रा अध्यापक काठ के एक मचान
पर खड़ा हुआ जो उन्हों ने उसी बात के लिये बनाया था
और उस के लग मत्ततियाह और समअ और अनायाह और
ऊरियाह और ख़िलक़ियाह और मअसियाह उस की दहिनी
ओर और बाईं ओर फ़िदायाह और मीसाएल और मलक़ियाह
और हशूम और हसबदानः और ज़करियाह और मुसल्लम खड़े
५ हुए। और एज़रा ने सारे लोगों की आंखों के आगे पुस्तक
खोली क्योंकि वुह सारे लोगों से ऊपर था और उस के खोलते
६ ही सारे लोग खड़े हुए। और एज़रा ने परमेश्वर महेश्वर को
धन्य माना और सारे लोगों ने हाथ उठाये हुए उत्तर में आमीन
आमीन कहा और मुंह के बल सिर झुकाके भूमि लों परमेश्वर
७ को प्रणाम किया। और युशूअ और बानी और सरिबियाह और
यमीन और अक़ूब और सबती और हूदियाह और मअसियाह और
क़लीता और अज़रियाह और यूज़बद और हनान और फ़िलायाह
और लावियों ने लोगों को व्यवस्था समझाई और लोग अपने अपने
८ ठिकाने पर खड़े हुए। इसी रीति से उन्हों ने परमेश्वर की व्यवस्थ की
पुस्तक को खोलके पढ़ा और अर्थ किया और उन्हें पढ़ समझाया॥

९ और नहमियाह ने जो अध्यक्ष है और अध्यापक एज़रा
याजक ने और लावियों ने जिन्हों ने लोगों को सिखाया सारे
लोगों से कहा कि यह दिन तुम्हारे ईश्वर परमेश्वर के लिये
पवित्र है विलाप और शोक मत करो क्योंकि व्यवस्था के वचन
१० सुनके सारे लोगों ने विलाप किया। तब उस ने उन्हें कहा
कि अब जाओ चिकना खाओ और मीठा पीओ और जिन के
यहां कुछ नहीं पक्का उन के पास वैना भेजो क्योंकि आज
हमारे प्रभु के लिये पवित्र है और उदास मत होओ क्योंकि
११ परमेश्वर का बल तुम्हारा आनन्द है। सो लावियों ने लोगों को
यह कहके धीरज दिया और कहा कि चुपके रहो क्योंकि दिन
१२ पवित्र है और शोकित मत होओ। तब सारे लोगों ने खाने
पीने और वैना भेजने और आनन्द करने को अपना अपना मार्ग
लिया क्योंकि उन्हों ने उन बातों को जो उन के आगे कही गई
थीं समझा॥

१३ और दूसरे दिन सारे लोगों के पितरों के प्रधान याजक और
लावी व्यवस्था का वचन सीखने को एज़रा अध्यापक पास एकट्ठे
१४ हुए। और जो परमेश्वर ने मूसा के द्वारा से व्यवस्था में आज्ञा
किई थी उन्हों ने लिखा हुआ पाया कि सातवें मास के पर्ब्ब में
१५ इसराएल के सन्तान पर्णशालों में रहें। और कि वे अपने सारे
नगरों में और यरूसलम में यह कहके प्रचारें कि पर्ब्बत को
जाओ और जलपाई की और अनानास की और हदस की और
खजूर की और छप्पर बनाने के लिये घने पेड़ों की डालियां
१६ लिखे के समान लाओ। और लोग बाहर जा जाके लाये और
हर एक जन ने अपने अपने घर की छत पर और अपने
आंगनों में और ईश्वर के मन्दिर के आंगनों में और जल फाटक
के चौगान में और इफ़रायम फाटक के चौगान में अपने लिये
१७ छप्पर बनाया। और सारी मंडली जो बंधुआई से फिर आई थी

पर्णशाला बना बना उन के तले बैठ गये क्योंकि नून के बेटे
युशूअ के दिनों से उस दिन लों इसराएल के सन्तानों ने ऐसा
न किया था और अत्यंत आनन्द था ॥
१८ और पहिले दिन से अंत के दिन लों उस ने प्रति दिन
ईश्वर की व्यवस्था की पुस्तक को पढ़ा और उन्हों ने सात दिन
पर्व रक्खा और रीति के समान आठवें दिन भारी सभा
हुई ॥

नवां पर्ब्ब ।

१ सो इस मास के चौबीसवें दिन इसराएल के संतान ब्रत
करते और टाट ओढ़े और धूल अपने ऊपर डालते हुए एकट्ठे
२ हुए । और इसराएल के संतानों ने उपरी संतानों से आप को
अलग किया और खड़े होके अपने अपने पाप और अपने पितरों
३ के पाप मान लिये । और वे अपने स्थान पर खड़े हुए और
एक पहर दिन लों अपने ईश्वर परमेश्वर की व्यवस्था की पुस्तक
को पढ़ा और एक पहर में पाप को मान मानके परमेश्वर अपने
४ ईश्वर को प्रणाम किया । तब लावियों में से युशूअ और बानी
और क़दमिएल और सबनियाह और बुनी और सरिबियाह और
बानी और कनानी ने मचान पर खड़े होके बड़े शब्द से अपने
ईश्वर परमेश्वर के आगे दोहाई दिई ॥
५ फिर युशूअ और क़दमिएल और बानी और हसबनियाह
और सरिबियाह और हूदियाह और सबनियाह और फ़तहियाह
लावियों ने कहा कि उठो और अपने ईश्वर परमेश्वर को सदा
धन्य मानो और तेरे ऐश्वर्यमान नाम का धन्य होवे जो सारे
६ धन्यबाद और स्तुति से बढ़कर है । तू केवल तू ही परमेश्वर
है तू ने स्वर्ग अर्थात् स्वर्गों का स्वर्ग उन की सारी सेना सहित
और पृथिवी और उस में के सब कुछ और समुद्र और उस में के

सब कुछ उत्पन्न किया है और तू सब की रक्षा करता है और
स्वर्ग की सेना तुझे भजती हैं ॥
७ तू वुह परमेश्वर ईश्वर है जिस ने अबराम को चुनके उसे
कसदियों के ऊर से निकाल लाया और उस का नाम अबिरहाम
८ रक्खा । और अपने आगे उस का मन बिश्वासमय पाया और
कनआनियों के और हित्तियों के और अमूरियों के और फ़रिज़्ज़ियों
के और यबूसियों के और जिरजाशियों के देश को उस के
संतान को देने के लिये तू ने उस्से नियम किया और अपने
वचन को पूरा किया क्योंकि तू धार्म्मिक है ॥
९ और मिस्र में हमारे पितरों के कष्ट को देखा और लाल
१० समुद्र के तीर पर उन की दुहाई सुनी । और फ़िरऊन पर
और उस के सारे सेवकों पर और उस के देश के सारे लोगों
पर आश्चर्य्य और लक्षण दिखाया क्योंकि तू जानता था कि
उन्हों ने उन से अहंकार से व्यवहार किया सो तू ने अपना
११ नाम किया जैसा कि आज है । और तू ने उन के आगे समुद्र
को दो भाग किया यहां लों कि वे समुद्र के मध्य में से सूखी
भूमि पर चले गये और उन के दुःखदायकों को गहिरावों में
१२ पत्थर की नाईं बड़े पानियों में फेंक दिया । और दिन को
मेघ के खंभे से और रात को आग के खंभे से उन्हें ले गया
कि जिस मार्ग में उन्हें चलना था उस में उन्हें उंजियाला देवे ।
१३ और तू सीना पर्बत पर भी उतर आया और स्वर्ग से उन के
साथ बात चीत किई और उन्हें ठीक बिचारों को और सच्ची
१४ व्यवस्थों को और अच्छी बिधि और आज्ञाओं को दिया । और
अपने पवित्र बिश्राम को उन पर प्रगट किया और अपने सेवक
मूसा के हाथ से आज्ञा और बिधि और व्यवस्था उन्हें दिईं ।
१५ और उन की भूख के निमित्त उन्हें स्वर्ग से रोटी दिई और
उन की प्यास के निमित्त पहाड़ में से पानी निकाला और उस

देश को उन के बश में करने को जो तू ने उन्हें देने को हाथ
बढ़ाया था वाचा दिई ॥
१६ पर उन्हों ने और हमारे पितरों ने अहंकार और अपने गलों को
१७ कठोर किया और तेरी आज्ञाओं को न माना। और उन्हें पालने
को नहीं किया और जो आश्चर्य्य तू ने उन के मध्य में किये थे
उन्हें स्मरण न किया परन्तु अपने गलों को कठोर किया और
अपनी बंधुआई में फिर जाने को अपनी दंगैती में एक प्रधान
को ठहराया परन्तु तू ईश्वर क्षमा करने को सिद्ध और कृपाल
और दयाल और रिसियाने में धीर और अनुग्रह में बड़ा और
१८ उन्हें न त्यागा। हां जब उन्हों ने अपने लिये ढालके एक
बछड़ा बनाया और कहा कि यह तेरा देव है जो तुझे मिस्र
१९ से निकाल लाया और बड़े बड़े निन्दित कार्य्य किये। तब तू
ने अपनी बड़ी बड़ी दया से उन्हें अरण्य में त्याग न किया
और मार्ग में ले जाने के लिये दिन को मेघ का खंभा और
रात को आग का खंभा उन्हें उंजियाला करने के लिये जिस
२० मार्ग में उन्हें जाना था उन से अलग न हुआ। उन्हें सिखाने
के लिये अपना उत्तम आत्मा भी उन्हें दिया और उन के मुंह
से अपने मन्ना को न रोका और प्यास में उन्हें पानी दिया।
२१ हां चालीस बरस तू ने बन में उन्हें पाला और उन के लिये
कोई वस्तु न घटी और उन के वस्त्र पुराने न हुए और उन
२२ के पांव न फूले। और तू ने उन्हें राज्यों को और जातिगणों को
दिया और उन्हें कोना कोना बांट दिया सो उन्हों ने सैहून के
देश को और हसबून के राजा के देश को और बसन के राजा
२३ ऊज के देश को अधिकार में लिया था। और तू ने उन के
सन्तानों को भी स्वर्ग के तारों की नाईं बढ़ाया और इस देश
में उन्हें लाया जिस के विषय में तू ने उन के पितरों को
२४ अधिकार में देने को प्रण किया था। सो उन के सन्तान ने

उस में जाके देश को वश में किया और तू ने उन के आगे
उस देश के वासी कनआनियों को वश में किया और उन के
राजा और देश की प्रजा समेत उन के वश में किया कि जैसा
२५ चाहें वैसा उन से करें। और उन्हों ने दृढ़ नगर और फलवंत
देश को लिया और संपत्ति से भरे हुए घर और खोदे हुए कुए
और दाख और जलपाई की बारी और फलवंत पेड़ बहुताई से
अपना अधिकार किया सो वे खाके तृप्त हुए और मोटाने और
तेरी बड़ी भलाई से आनन्दित हुए॥
२६ तिस पर भी वे दंगइत हुए और तुझ से फिर गये और
तेरी व्यवस्था को अपने पीठ के पीछे डाल दिया और तेरे
भविष्यद्वक्तों को घात किया जिन्हों ने तेरी ओर फिराने को
उन से विरुद्ध साक्षी दिई और उन्हों ने बड़ी बड़ी निन्दा का
२७ कर्म्म किया। सो तू ने उन्हें उन के बैरियों के हाथ सौंप
दिया जिन्हों ने उन्हें दुःख दिया और दुःख के समय में जब
उन्हों ने तेरे आगे दुहाई दिई तब तू ने स्वर्ग से उन की सुनी
और अपनी दया की बहुताई के समान उन्हें निस्तारक दिये
२८ जिन्हों ने उन्हें उन के बैरियों के हाथ से बचाया। परन्तु
विश्राम पाने के पीछे उन्हों ने तेरे आगे फेर बुराई किई इस
लिये तू ने उन के बैरियों के हाथ में उन्हें छोड़ दिया यहां
लों कि वे उन पर प्रभुता करने लगे तिस पर भी जब वे फिरे
और तेरे आगे दुहाई दिई तब तू ने स्वर्ग में से सुन सुनके
२९ अपनी दया के समान उन्हें बारंबार छुड़ाया। और अपनी
व्यवस्था की ओर उन्हें फेर लाने के लिये उन के विरुद्ध साक्षी
दिई तिस पर भी उन्हों ने अहंकार किया और तेरी आज्ञाओं
को न सुना परन्तु तेरे विचारों के विरुद्ध पाप किया यदि मनुष्य
उन्हें पालन करे तो उन में जियेगा और अपने कांधे को खींच
३० के अपने गले को कठोर किया और न सुना। तथापि तू बहुत

बरस लों उन की सहता रहा और अपने भविष्यद्वक्तों के द्वारा
अपने आत्मा से उन के विरुद्ध साक्षी दिई परन्तु उन्हों ने
कान न धरा इस लिये तू ने उन्हें देश देश के लोगों के हाथ
३१ में सौंप दिया। तथापि अपनी बड़ी बड़ी दया के कारण तू ने
उन्हें सर्वथा नाश न किया और उन्हें न त्यागा क्योंकि तू
दयाल और कृपाल ईश्वर है॥
३२ सो अब हे हमारे ईश्वर महान और शक्तिमान और भयंकर
ईश्वर जो नियम और कृपा को पालता है हम पर और हमारे
राजाओं पर और हमारे अध्यक्षों पर और हमारे याजकों पर
और हमारे भविष्यद्वक्तों पर और हमारे पितरों पर और तेरे
सारे लोगों पर असूर के राजाओं के समय से आज लों जो
दुःख कि हम पर पड़ा है सो तेरे आगे थोड़ा न जाना जाय।
३३ तथापि जो जो हम पर पड़ा है उन सभों में तू धर्म्मी है
३४ क्योंकि तू ने ठीक किया है और हम ने बुराई किई है। और
हमारे राजा और हमारे अध्यक्ष और हमारे याजक और
हमारे पितरों ने तेरी व्यवस्था को पालन नहीं किया है और
तेरी आज्ञा और साक्षियों को नहीं सुना है जिन से तू ने हम
३५ पर साक्षी दिई है। क्योंकि उन्हों ने अपने राज्य में और तेरी
भलाई की अधिकाई में जो तू ने उन्हें दिई है और इस बड़े
और फलवंत देश में जो तू ने उन्हें दिया है तेरी सेवा न किई
३६ और अपने बुरे कार्य्यों से न फिरे। देख हम आज सेवक हैं
और जो देश तू ने हमारे पितरों को उस के फल और अच्छी
३७ वस्तु खाने को दिया है देख हम उस में सेवक हैं। और
हमारे पापों के कारण उन राजाओं के लिये जिन्हें तू ने हम
पर किया है बहुत बढ़ती लाता है और वे हमारे देहों पर
और हमारे ढोरों पर भी मनमंता प्रभुता करते हैं और हम
बड़े दुःख में हैं॥

३८ और इन बातों के कारण हम दृढ़ करके लिखते हैं और
हमारे अध्यक्ष और लावी और याजक छाप लगाते हैं ॥

दसवां पर्ब्ब ।

१ और छाप करने में ये थे हकलियाह का बेटा नहमियाह
२ अध्यक्ष और सिदकियाह । शिरायाह और अज़रियाह और
३ यरमियाह । फ़सिहूर और अमरियाह और मलकियाह ।
४ । ५ हतूश और सबनियाह और मलूक । हारिम और मरीमात
६ और अबदियाह । दानिएल और जन्नतून और बरूक ।
७ । ८ मुसल्लम और अबियाह और मियमीन । मअज़ियाह और
बिलजी और समअियाह ये याजक थे ॥
९ और लावी ये हैं अज़नियाह का बेटा युशूअ और हन्नादाद
१० के सन्तानों में से बिनवी और क़दमिएल । और उन के भाई
शबनियाह और हूदियाह और क़लीता और फ़िलायाह और
११ । १२ हन्नान । मीका और रहूब और हसबियाह । ज़कूर और
१३ सरिबियाह और शबनियाह । हूदियाह और बानी और
बनीनू ॥
१४ लोगों के प्रधान बुरगुस और पख़तमोअब और अैलाम और
१५ । १६ ज़त्तू और बाना । बुनी और अज़गाद और बबी । अदूनियाह
१७ और बिगवे और अदीन । अतीर और हिज़क़ियाह और अज़ूर ।
१८ । १९ हूदियाह और हशूम और बेज़ी । हरीफ़ और अनतात
२० और निबाई । मगफ़ीआस और मुसल्लम और हज़ीर ।
२१ । २२ मुसीजबीएल और सदूक़ और बदूअ । फ़लतियाह और
२३ हन्नान और अनानियाह । हूसीअ और हननियाह और हसुब ।
२४ । २५ हलोहेश और पिलिहा और शोबेक । रहूम और हसबनः
२६ और मअसियाह । अख़ियाह और हन्नान और अनान ।
२७ मलूक और हारीम और बअना ॥

२८ और उबरे हुए लोग याजक लावी द्वारपाल गायक मन्दिर
के सेवक और सब जिन्हों ने देशों के लोगों में से ईश्वर की
व्यवस्था की ओर अपने को अलग किया था वे और उन की
पत्नियां और उन के बेटे बेटियां हर एक जो समझ बूझ रखता
२९ था। अपने कुलीन भाइयों से पिलचे रहे और स्राप और किरिया
में मिले कि हम ईश्वर की व्यवस्था पर जो उस ने ईश्वर के
सेवक मूसा के द्वारा दिई चलेंगे और परमेश्वर अपने प्रभु की
सब आज्ञा और विचार और विधिन को मानेंगे और उस के
३० समान करेंगे। और कि हम अपनी बेटियों को देश के लोगों
को न देंगे और अपने बेटों के लिये उन की बेटियां न लेंगे।
३१ और यदि देश के लोग विश्राम दिन में माल अथवा भोजन
बेचने को लावें तो हम विश्राम में अथवा पवित्र दिन में उन
से भोजन न लेंगे और सातवें बरस बढ़ती और ऋण को छोड़
देंगे॥

३२ और हम ने अपने लिये एक विधि ठहराई कि हमें उचित
३३ है कि अपने ईश्वर के मन्दिर की सेवा के लिये। भेंट की
रोटियों के लिये और नित्य के बलिदान के लिये और विश्रामों
के लिये और अमावश्यों के लिये और ठहराये हुए पर्वों और
पवित्र वस्तुन के लिये और पाप के बलों के लिये इसराएल के
कारण प्रायश्चित्त करने को और अपने ईश्वर के मन्दिर की
सारी सेवा के लिये शेकल का तीसरा अंश हर बरस देवें॥

३४ और हम याजक और लावियों और लोगों ने चिट्ठी डाली
काष्ठ की भेंट पर कि उसे हर बरस ठहराये हुए समयों में
अपने पितरों के घरानों के समान अपने ईश्वर के मन्दिर में
लावें कि परमेश्वर हमारे ईश्वर की यज्ञवेदी पर जलाई जावे
३५ जैसा व्यवस्था में लिखा है। और कि हम भूमि का नेवान्न और
सारे पेड़ों का पहिला फल बरस बरस परमेश्वर के मन्दिर में

३६ लावें। और व्यवस्था के लिखे के समान अपने बेटों के और
अपने ढोरों के और अपने गोरुओं के और झुंडों के पहिलौठों
को ईश्वर के मन्दिर में याजकों के पास जो अपने ईश्वर
३७ के मन्दिर में सेवा करते हैं लावें। और कि हम अपने
गूंधे हुए का पहिला भाग और अपनी सारी भेंटें और हर प्रकार
के पेड़ों का और दाख का और तेल का फल अपने ईश्वर के मन्दिर
की कोठरियों में याजकों के पास लावें और अपनी खेती के
दसवां भाग लावियों कने लावें क्योंकि लावियों को जो सब
नगरों में जहां हम किसनई करते हैं चाहिये कि दसवां अंश
३८ देवें। और जब लावी दसवां भाग लेवें तब हारून के बेटे
याजक लावियों के साथ होवें और लावी हमारे ईश्वर के मन्दिर
की कोठरी में अर्थात् भंडार के घर में दसवें अंश का दसवां
३९ भाग लावें। कि उन कोठरियों में जहां पवित्र पात्र और याजक
जो सेवा करते हैं और द्वारपाल और गायक रहते हैं इसराएल के
संतान और लावी के संतान अन्न की और नये दाखरस की
और तेल की भेंट लावें और हम अपने ईश्वर के मन्दिर को
न छोड़ें॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ अब लोगों के अध्यक्ष यरूसलम में बसे और पवित्र नगर
यरूसलम में वास करने के लिये उबरे हुए मनुष्यों ने भी चिट्ठी
डाली जिसतें दस में एक उस में बसे और नव भाग नगरों में
२ बसें। और जिन्हों ने यरूसलम में बसने के लिये मनमंता
आप को सौंपा था लोगों ने उन सभों का धन्य माना॥

३ और प्रदेश के ये ये मुखिया यरूसलम में बसे परन्तु यहूदाह
के नगरों में हर एक अर्थात् याजक और लावी और मन्दिर
के सेवक और सुलेमान के सेवकों के संतान अपने अपने नगर

४ के अधिकार में। और यरूसलम में यहूदाह के संतान और
बिनयमीन के संतान में से बास किया यहूदाह के संतानों
में से अतायाह जो बेटा ऊज्ज़ियाह का बेटा ज़करियाह का
बेटा अमरियाह का बेटा सफ़तियाह का बेटा महललिएल
५ फ़ाड़स के संतान में से। और मअसियाह जो बेटा बरूक का
बेटा कलहूज़ी का बेटा हज़ायाह का बेटा अदायाह का बेटा
६ यूयरीब का बेटा ज़करियाह का बेटा शैलूनी का। फ़ाड़स के
सारे बेटे जो यरूसलम में बसे थे चार सौ अठसठ बीर॥
७ और बिनयमीन के बेटों में से सलू जो बेटा मुसल्लम का
बेटा वाअिद का बेटा फ़िदायाह का बेटा कोलायाह का बेटा
८ मअसियाह का बेटा इत्तिएल का बेटा यसअियाह का। और
९ उस के पीछे जब्बी और सल्ला नव सौ अट्ठाईस। और ज़िकरी
का बेटा यएल उन का करोड़ा था और सनूआह का बेटा
यहूदाह नगर पर दूसरा था॥
१० याजकों में से यूयरीब का बेटा वदेअयाह यकीन।
११ शिरायाह जो बेटा खिलकियाह का बेटा मुसल्लम का बेटा
सदूक का बेटा मिरयात का बेटा अखितूब का ईश्वर के मन्दिर
१२ का अध्यक्ष था। और घर के कार्य्यकारी उन के भाईबंद आठ
सौ बाईस थे और अदायाह जो इरूहाम का बेटा फ़िललियाह
का बेटा अमसी का बेटा ज़करियाह का बेटा फसिहूर का बेटा
१३ मलकियाह का बेटा। और पितरों के मुखिया उस के भाई
बंद दो सौ बयालीस और अमस्सः जो बेटा अज़रिएल का बेटा
१४ आखज़ी का बेटा मुसलिमात का बेटा अमीर का। और उन
के भाई बंद महावीर मनुष्य एक सौ अट्ठाईस और उन का
करोड़ा एक महत जन का बेटा ज़बदिएल॥
१५ और लावियों में से भी समअयाह जो बेटा हसूब का बेटा
१६ अज़रिकाम का बेटा हसबियाह का बेटा बुनी का। और

लावियों में का मुखिया सब्बती और यूज़बद ईश्वर के मन्दिर
१७ के बाहर के कार्य्य पर थे। और आसफ़ के बेटे ज़ब्दी के बेटे मीका
का बेटा मत्तनियाह प्रार्थना में धन्यवाद आरंभ करने को प्रधान था
और अपने भाइयों में से बक़बूक़ियाह दूसरा था और अबदा
१८ जो बेटा समूअ का बेटा जलाल का बेटा यदुतून का। पवित्र
नगर में सारे लावी दो सौ चौरासी थे॥

१९ और द्वारपाल अक़्क़ूब और तल्मान और उन के भाईबंद जो
फाटकों के रक्षक थे एक सौ बहत्तर॥

२० और इसराएल के और याजकों के और लावियों के उबरे
हुए लोग यहूदाह के सारे नगरों में हर एक जन अपने अपने
अधिकार में रहा॥

२१ परन्तु मन्दिर के सेवक उफ़ल में बसे और सीहा और
जिसफ़ा मन्दिर के सेवकों पर थे॥

२२ और यरूसलम के लावियों का करोड़ा भी उज़्ज़ी बेटा
बानी का बेटा हसबियाह का बेटा मत्तनियाह का बेटा मीका
का आसफ़ के बेटों में से गायक ईश्वर के मन्दिर के कामकाज
२३ पर थे। क्योंकि उन के विषय में राजा की आज्ञा थी कि
गायकों के लिये प्रति दिन ठहराया हुआ भाग दिया जाय॥

२४ और यहूदाह के बेटे जरह के संतानों में से मुसैज़बिएल
का बेटा फ़तहियाह लोगों के सारे कार्य्यों के विषय में राजा
के लग था॥

२५ और गाओं के और उन के खेतों के कारण यहूदाह के
सन्तान के कितने लोग क़रयतअरबअ में और उन के गाओं
में और दैबून और उस के गांव में और यिक़बज़िएल और उस
२६ के गांव में बसे। और युशूअ में और मूलादा में और बैतफ़लत
२७ में। और हसरसूआल में और बिअरसब: और उस के गाओं
२८ में। और सिक़लाज में और मकून: और उस के गाओं में।

२६ और ऐनिरूम्मान में और सुरअ: में और यरमूत में।
३० ज़नूह अदूलाम और उन के गाओं में लकीस और उस के खेतों
में अजीक: में और उस के गाओं में और वे बिअरसब: से लेके
हिन्नूम की तराई लों रहा करते थे॥
३१ और बिनयमीन के संतान भी जिबअ से मिकमास और
३२ ऐया और बैतएल और उन के गाओं। और अनतात और
३३ नूब और अननियाह में। और हसूर और रामा और जित्तैन।
३४। ३५ और हदीद और ज़िबिआन और नबल्लत। और लूद और
ओनू कार्य्यकारी की तराई में॥
३६ और लावियों के भाग यहूदाह में और बिनयमीन में
रहे॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ अब याजक और लावी जो सियालतिएल के बेटे ज़रूबाबुल
और युशूअ के साथ चढ़ आये थे ये हैं शिरायाह और यरमियाह
२। ३ और एज़रा। अमरियाह और मलूक और हतूश। सकनियाह
४ और रहूम और मरीमात। ईदू और जन्नतू और अबियाह।
५। ६ मिनयमीन और मअदियाह और बिलज:। समअयाह
७ और यूयरीब और यदैअयाह। सलू और अमुक और खिलकियाह
और यदैअयाह ये युशूअ के दिनों में याजकों के मुखिया और
उन के भाईबंद थे॥
८ उन से अधिक लावी और युशूअ और बिनवी और कदमिएल
और सरिबियाह और यहूदाह और मत्तनियाह धन्यवाद करने
९ पर वुह और उस के भाईबंद। और उन के भाई बकबूकियाह
और ऊन्नी चौकी में उन के सन्मुख थे॥
१० और युशूअ से यूयकीम उत्पन्न हुआ और यूयकीम से भी
इलयसीब उत्पन्न हुआ और इलयसीब से यूयदअ उत्पन्न हुआ।

११ और यूयदअ से यूनतन उत्पन्न हुआ और यूनतन से वदूअ
उत्पन्न हुआ ॥
१२ और यूयक़ीम के दिनों में पितरों के मुखिये याजक थे
१३ शिरायाह से मिरायाह यरीमियाह और हननियाह । एज़रा से
१४ मुसल्लम और अमरियाह से यहूहनान । मलूक से यूनतन और
१५ शबनियाह से युसुफ़ । हरीम से अदना और मिरयात से खिलकी ।
१६ । १७ इद्दू से ज़करियाह और जन्नतू से मुसल्लम । अबियाह
१८ से ज़िक्री और मिनयमीन से मोअदियाह और फ़िलती । बिलज:
१९ से समूअ और समअयाह से यहूनतन । यूयरीब से मत्तानी
२० और वदीअयाह से ऊज़्ज़ी । सल्ला से क़ल्ली और अमूक़ से इब्र ।
२१ खिलक़ियाह से हसबियाह और वदीअयाह से नतनिएल ॥
२२ इलयसीब के और यूयदअ के और यूहनान के और वदूअ
के दिनों में लावी और याजक फ़ारसी दारा के राज्य लों पितरों
२३ के मुखिये लिखे गये। लावी के बेटे पितरों के मुखिये कालविवरण
की पुस्तक में इलयसीब के बेटे यूहनान के समय लों लिखे
२४ गये । और लावियों के मुखिये हसबियाह और सरिबियाह और
क़दमिएल का बेटा युशूअ और उन के भाईबंद उन के सन्मुख
होते हुए ईश्वर के जन दाऊद की आज्ञा के समान स्तुति करने
२५ और धन्य मान्ने के लिये चौकी के आगे चौकी । मत्तनियाह
और बक़बूक़ियाह और अबदियाह और मुसल्लम और तलमान
और अक्कूब द्वारपाल फाटकों की डेवढ़ी पर रखवाली करते थे ।
२६ ये यूसदक़ के बेटे युशूअ के बेटे यूयक़ीम के दिनों में और
नहमियाह अध्यक्ष के और एज़रा याजक अध्यापक के दिनों
में थे ॥
२७ और यरूसलम की भीति के स्थापने में उन्हों ने लावियों
को उन के सारे स्थानों से खोजा जिसतें नवल और करताल
और वीणा लिये हुए धन्यवाद करते और गाते हुए आनन्द

२८ से स्थापना करने के लिये यरूसलम में उन्हें लावें। और
गायकों के बेटे यरूसलम की चारों ओर के चौगान से और
२९ नतूफ़ः के गांओं से। और जिलजाल के घर से और जिबअ
और अज़िमौत के चौगानों से आप को एकट्ठा किया क्योंकि
गायक यरूसलम की चारों ओर अपने लिये गांव बनाये थे।
३० और याजकों ने और लावियों ने अपने को पवित्र किया और
लोगों को और फाटकों को और भीति को पवित्र किया॥

३१ इस के पीछे मैं यहूदाह के अध्यक्षों को भीति पर लाया
और धन्यबाद के लिये दो जथा को ठहराया उन में से एक
३२ जो भीति पर दहिने अलंग कूड़ा फाटक की ओर गई। और
उन के पीछे हूसअयाह और यहूदाह के आधे अध्यक्ष गये।
३३। ३४ और अज़रियाह और एज़रा और मुसल्लम। यहूदाह और
३५ बिनयमीन और समअयाह और यरमियाह। और याजक के
बेटों में से तुरही लिये हुए अर्थात् ज़करियाह जो यूनतन का
बेटा समअयाह का बेटा मत्तनियाह का बेटा मीकायाह का
३६ बेटा ज़कूर का बेटा आसफ़ का बेटा। और उस के भाई
समअयाह और अज़रिएल और मिलाली और जिलली और माई
और नतनिएल और यहूदाह और हनानी ईश्वर के जन दाऊद
के बाजे की सामग्री हाथ में लेके गये और एज़रा अध्यापक
३७ उन के आगे आगे। और सोता फाटक से जो उन के सन्मुख
था भीति पर जाने के स्थान में दाऊद के घर के आगे अर्थात्
जल फाटक लों पूरब की ओर दाऊद के नगर की सीढ़ी पर चढ़
गये॥

३८ और धन्यवाद की दूसरी जथा उन के सन्मुख और मैं और
आधे लोग भीति पर भट्ठों के गुम्मट के परे से चौड़ी भीति
३९ लों उन के पीछे पीछे गये। और इफ़रायम के फाटक के आगे
से और पुराने फाटक के आगे से और मछली फाटक और

हननिएल के गुम्मट और मियाह के गुम्मट के आगे से भेड़
फाटक लों और वे बन्दीग्रह के फाटक पर खड़े रह गये ॥
४० सो दोनों ने ठहरके और मैं ने और अध्यक्ष के आधों ने
४१ ईश्वर के मन्दिर में धन्यबाद किया। और इलयक़ीम और
मअसियाह और मिनियमीन और मीकायाह और इलयूएनी
और ज़करियाह और हनानियाह याजक तुरही लिये हुए।
४२ और मअसियाह और समऐयाह और इलिअज़र और उज़्ज़ी
और यहूहनान और मलकियाह और ऐलाम और अज़र और
गायकों ने इशराक़ियाह करोड़ा सहित अपना शब्द सुनाया।
४३ और उस दिन उन्हों ने बड़े बड़े बलि भी चढ़ाके आनन्द
किया क्योंकि ईश्वर ने बड़े आनन्द से उन्हें आनन्दित किया
और उन की पत्नियां और बालकों ने भी आनन्द किया यहां
लों कि यरूसलम का आनन्द बहुत दूर लों सुना गया ॥
४४ और उस समय में भंडारों के और भेंटों के और नवान्न के
और दसवें अंश के लिये कितने लोग कोठरियों पर ठहराये
गये जिसतें उन में नगरों के खेतों से व्यवस्था के भाग याजकों
और लावियों के लिये एकट्ठे करें क्योंकि याजकों और लावियों
४५ के लिये जो खड़े थे यहूदाह ने आनन्द किया। और गायकों
ने और द्वारपालों ने दाऊद की और उस के बेटे सुलेमान की
आज्ञा के समान अपने ईश्वर की और पवित्रता की चौकी दिई।
४६ क्योंकि दाऊद के और आसफ के पुरातन दिनों में गायकों के
४७ प्रधान ईश्वर के निमित्त स्तुति और धन्यबाद गाते थे। और
ज़रूबाबुल के दिनों में और नहमियाह के दिनों में सारे
इसराएल ने प्रति दिन अपना अपना भाग गायकों और द्वारपालों
को दिया और उन्हों ने लावियों के लिये पवित्र किया और
लावियों ने हारून के सन्तानों के लिये उसे पवित्र किया ॥

तेरहवां पर्ब्ब ।

१ उसी दिन उन्हों ने लोगों के कान में मूसा की व्यवस्था
सुनाई और उस में यह लिखा पाया गया कि अम्मूनी और
२ मोअबी ईश्वर की मंडली में कभी न आने पावें । क्योंकि उन्हों
ने अन्न जल से इसराएल के संतानों से भेंट न किई परन्तु
उन्हें स्राप देने को बलआम को उन के विरुद्ध भाड़ा किया
तथापि हमारे ईश्वर ने उस स्राप को आशीष से पलट दिया ।
३ सो यों हुआ कि जब उन्हों ने व्यवस्था सुनी तो सारे परदेशियों
को इसराएल से अलग किया ॥
४ और इस के आगे हमारे ईश्वर के मन्दिर की कोठरी के
करोड़ा इलयसीब याजक ने तूबियाह से नाता किया था ।
५ और उस ने उस के लिये एक बड़ी कोठरी सिद्ध किई थी जहां
आगे को वे मांस की भेंट और गन्धरस और बर्त्तन और अन्न
का और नवीन दाखरस का और तेल का दसवां भाग आज्ञा
समान लावियों और गायकों और द्वारपालों और याजकों की
६ भेंट धरी जाती थी । परन्तु जब यह सब होता था तब मैं
यरूसलम में न था क्योंकि बाबुल के राजा अरदशेर के बत्तीसवें
बरस में मैं राजा पास गया और कितने दिनों के पीछे मैं ने
७ राजा की अति बिनती किई । और मैं यरूसलम में आया और
जो बुराई इलयसीब ने तूबियाह के लिये ईश्वर के मन्दिर के
आंगनों में कोठरी सिद्ध करने में किई थी उसे मैं ने बूझा ।
८ और उस्से मुझे बड़ा शोक हुआ इस लिये मैं ने तूबियाह की
९ सारी सामग्री को उस कोठरी से निकाल फेंका । तब मैं ने
आज्ञा किई और उन्हों ने कोठरियों को पवित्र किया और मैं
ईश्वर के मन्दिर के बर्त्तन मांस की भेंट गन्धरस सहित उस में
फेर लाया ॥

१० और मैं ने देख लिया कि लावियों के भाग उन्हें न दिये
गये थे क्योंकि लावी और गायक जो कार्य्य करते थे हर एक
११ अपने अपने खेत को भागा था। तब मैं ने अध्यक्षों से विवाद
करके कहा कि ईश्वर का मन्दिर क्यों त्यागा गया है और मैं
१२ ने उन्हें एकट्ठे करके उन्हीं के पद पर स्थिर किया। तब सारे
यहूदाह अन्न और नये दाखरस और तेल का दसवां भाग
१३ भंडार में लाये। और मैं ने भंडारों पर सलमियाह याजक को
और सदूक़ लेखक को और लावियों में से फ़िदायाह को भंडारी
किया और उन के लग मत्तनियाह का बेटा ज़क्कूर के बेटे
हनान को क्योंकि वे बिश्वस्त गिने जाते थे और उन के भाइयों
को बांट देना उन पर था॥

१४ हे मेरे ईश्वर इस विषय में मुझे स्मरण कर और मेरे सुकार्य्यों
को जो मैं ने अपने ईश्वर के मन्दिर के और उस की सेवा के
लिये किया है मिटा न डाल॥

१५ उन दिनों में मैं ने यहूदाह में कितनों को विश्राम के दिन में
दाख का कोल्हू रौंदते और गठरियां लाते और गदहे लादते और
विश्राम में दाखरस और दाख और गूलर और सारे बोझ
यरूसलम में लाते भी देखा और जब उन्हों ने भोजन बेचा
१६ उसी दिन मैं ने उन्हें जताया। उस में सूर के लोग भी बसते
थे जो मछली और सारे प्रकार का माल लाके यहूदाह के
१७ सन्तानों के हाथ यरूसलम में विश्राम के दिन में बेचते थे। तब मैं
ने यहूदाह के कुलीनों से विवाद करके उन्हें कहा कि यह
क्या बुरा काम है जो तुम करते हो और बिश्राम के दिन को अशुद्ध
१८ करते हो। क्या तुम्हारे पितरों ने ऐसा नहीं किया और हमारा
ईश्वर हम पर और इस नगर पर यह सारी बुराई नहीं लाया
तद भी तुम विश्राम दिन को अशुद्ध करके इसराएल पर
अधिक कोप भड़काते हो॥

१९ फेर यों हुआ कि बिश्राम से आगे जब यरूसलम के फाटक
अंधियारे होने लगे तब मैं ने फाटकों को बंद करने की दृढ़
आज्ञा दिई कि जब लों बिश्राम न बीते तब लों वे न खोले
जायें और मैं ने अपने सेवकों को फाटकों पर रक्खा जिसतें
२० बिश्राम के दिन में कोई बोझ भीतर आने न पावे। इस लिये बेपारी
और सब प्रकार के माल के बेचवैये एक दो बार यरूसलम के
२१ बाहर रात को टिक रहे। तब मैं ने उन्हें जताया और उन्हें
कहा कि तुम लोग किस लिये भीति के आगे टिके हो यदि
फेर ऐसा करोगे तो मैं तुम पर हाथ डालूंगा तब से वे बिश्राम
२२ में फेर न आये। और लावियों से जो अपने को पवित्र करते
और आके फाटकों की रखवाली करते थे मैं ने कहा कि
बिश्राम दिन को पवित्र मानो हे मेरे ईश्वर इस में भी मुझे
स्मरण कर और अपनी दया की बहुताई से मुझ पर अनुग्रह
कर॥

२३ उन दिनों में मैं ने उन यहूदियों को भी देखा जिन्हों ने
अशदूदी और अम्मूनी और मोअबी स्त्रियों से बिवाह किया था।
२४ और उन के सन्तान आधी अशदूदी भाषा बोलते थे और यहूदी
भाषा न बोल सक्ते थे परन्तु लोग लोग की भाषा के समान।
२५ तब मैं ने उन से बिवाद किया और उन्हें स्राप दिया और उन
में से कितनों को थपड़ाया और उन के बाल उखाड़े और उन
से यों ईश्वर की किरिया लिई कि हम अपनी बेटियों को उन
के बेटों को न देंगे और उन की बेटियों को अपने बेटों के और
२६ अपने लिये न लेंगे। क्या इसराएल के राजा सुलेमान ने इन इन
बातों में पाप नहीं किया तथापि बहुत से जातिगणों में उस के
समान कोई राजा न था जो अपने ईश्वर का प्रिय था और
ईश्वर ने उसे सारे इसराएल पर राजा किया तथापि परदेशी
२७ स्त्रियों ने उस्से भी पाप करवाया। यों सारे महा पाप करके

तुम जिसतें हमारे ईश्वर के बिरुद्ध उपरी स्त्रियों से बिवाह कर
करके अपराध करो क्या हम तुम्हारी सुनेंगे ॥
२८ और इलयसीब प्रधान याजक के बेटों में से यूयदअ का
एक बेटा हरूनी सनबल्लत का जवाई था इस लिये मैं ने अपने
२९ पास से उसे निकाल दिया। हे मेरे ईश्वर उन्हें स्मरण कर इस
कारण कि उन्हों ने याजकता को और याजकता के और
लावियों के नियम को अशुद्ध किया है ॥
३० यों मैं ने सारे परदेशियों से उन्हें पवित्र किया और याजक
और लावी की सेवा दृढ़ किई हर एक को अपने अपने कार्य्य
३१ में ठहराया। और काष्ठ की और नोत्र की भेंटें ठहराईं कि
समय समय पर चढ़ाई जावें हे मेरे ईश्वर मेरी भलाई के लिये
मुझे स्मरण कर ॥

आसतर की पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ और शेरशाह के समय में ऐसा हुआ यह वुही शेरशाह है
जिस ने हिंद से कोश लों एक सौ सत्ताईस प्रदेशों पर राज्य
२ किया। कि उन दिनों में जब शेरशाह सूसन के भवन में अपने
३ राज्य के सिंहासन पर बैठा था। तब अपने राज्य के तीसरे बरस
में उस ने अपने सारे अध्यक्षों और अपने सेवकों के लिये फारस
और मादी के पराक्रमियों के लिये और प्रदेशों के कुलीन और
४ अध्यक्षों के लिये अपने आगे जेवनार बनाया। तब उस ने
अपने राज्य के बिभव के धन को और अपनी उत्तम महिमा
की प्रतिष्ठा को बहुत दिन लों अर्थात् एक सौ अस्सी दिन लों
दिखाया॥

५ और जब वे दिन बीत गये तब राजा ने सारे लोगों के
लिये जो सूसन के भवन में पाये गये क्या बड़े क्या छोटे के
लिये राजा के भवन की बाटिका के आंगन में सात दिन लों
६ जेवनार बनाया। जहां बैंजनी और झीने कपड़े की डोरियों
से चांदी की कड़ियों से मर्मर के खंभों पर श्वेत और हरे और
नीले ओझल टंगे थे और नीले और श्वेत और काले मर्मर के
७ पटाव पर सोने चांदी के पलंग बिछे थे। और उन्हों ने सोने
के पात्र में उन्हें पिलाया और पात्र भी भिन्न भिन्न डौल के थे

और राजीय दाखरस राजा के महात्म के समान बहुताई से
८ था । और पीना व्यवस्था के समान बरबस न था क्योंकि
राजा ने अपने घर के सारे प्रधानों के लिये ठहराया था
९ कि हर एक जन अपनी अपनी इच्छा के समान करे । वशती
रानी ने भी स्त्रियों के लिये शेरशाह राजा के राजमन्दिर में
जेवनार किया ॥

१० सातवें दिन में जब राजा का मन दाखरस से मगन हुआ
तब उस ने सात शयनस्थान के प्रधानों को जो शेरशाह राजा
के आगे सेवा करते थे अर्थात् महूमान और बसत: और ख़रबूना
और बिगता और अबगता और सिच और करगस को आज्ञा
११ किई । कि वशती रानी को राजमुकुट पहिने हुए राजा के
आगे लाओ जिसतें लोगों को और अध्यक्षों को उस की सुन्दरता
१२ दिखावे क्योंकि वुह सुन्दर रूप थी । परन्तु शयनस्थान के
प्रधान के द्वारा से राजा की आज्ञा पालन करने को वशती
रानी ने नाह किया इस लिये राजा महा कोपित हुआ और
वुह क्रोध से तपने लगा ॥

१३ तब राजा ने उन बुद्धिमानों से जो मुहूर्त्तियों को जानते
थे कहा क्योंकि नीति और बिचार के सारे जानकारों के लिये
१४ राजा की यही रीति थी । और उस के समीपी कारशिना और
सितार और अदमाता और तरसीस और मरस और मरसिना
और ममूकान फ़ारस और मादी के सातों अध्यक्ष जो राजा के
१५ रूपदर्शी और राज्य में श्रेष्ठ स्थान में बैठते थे । कि नीति के
समान वशती रानी से क्या करें क्योंकि उस ने शेरशाह राजा
की आज्ञा शयनस्थान के प्रधानों के द्वारा सुनके न मानी ॥

१६ तब ममूकान ने राजा के और अध्यक्षों के आगे कहा कि
वशती रानी ने केवल राजा का ही नहीं परन्तु सारे अध्यक्षों
का भी और सारे लोगों का जो शेरशाह राजा के प्रदेशों

१७ में हैं अपराध किया। क्योंकि रानी का यह कार्य्य समस्त
स्त्रियों पर प्रगट होगा जब कि चर्चा होगी कि शेरशाह
राजा ने वशती रानी को अपने आगे लाने की आज्ञा किई
परन्तु वुह न आई वे अपने अपने पति को तुच्छ जानेंगी।
१८ और आज के दिन फारस और मादी की स्त्रियें जिन्हों ने रानी
की यह बात सुनी हैं सो भी राजा के सारे अध्यक्षों से कहेंगी
१९ सो यों निन्दा और झगड़ा होगा। जो राजा को अच्छा लगे
तो उस के आगे से राजीय आज्ञा निकले और वही फारस और
मादी की नीतों में लिखा जाय जिसतें न टले कि वशती रानी
राजा शेरशाह के आगे फेर न आवे और राजा उस के राजीय
२० पद उस की संगी को जो उस्से भली है देवे। और जब राजा
की किई हुई आज्ञा उस के सारे राज्य में प्रचारी जाय क्योंकि
वुह बड़ा है तब सारी पत्नियां अपने अपने पति बड़े से छोटे लों
को प्रतिष्ठा देंगी॥
२१ और यह बचन राजा की और उस के अध्यक्षों की दृष्टि में
अच्छा लगा और राजा ने ममूकान के बचन के समान किया।
२२ क्योंकि उस ने राजा के सारे प्रदेशों में पत्रियां भेजीं हर एक
प्रदेश में उस के लिखने के समान और हर एक लोग को उस
की भाषा के समान जिसतें हर एक जन अपने अपने घर में प्रभुता
करे और कि वुह हर एक लोगों की भाषा के समान प्रचारी
जाय॥

दूसरा पर्व्व।

१ इन बातों के पीछे जब शेरशाह राजा का क्रोध धीमा हुआ
तब उस ने वशती को और जो कि उस ने किया था और जो
२ कि उस के विषय में आज्ञा हुई थी स्मरण किया। तब राजा
के सेवक दासों ने उसे कहा कि राजा के लिये युवती सुन्दरी

३ कुमारियां ढूंढी जायें। और राजा अपने राज्य के सारे प्रदेशों
में प्रधानों को ठहरावे जिसतें वे सारी युवती सुन्दरी कुमारियों
को सूसन के भवन में राजा के शयनस्थान के प्रधान स्त्रियों
के रक्षक हिजई के हाथ स्त्रियों के घर में एकट्ठे करें और
४ पवित्र करने की बस्तु उन्हें दिई जाय। और जो कन्या राजा
को अच्छी लगे सो वशती की सन्ती रानी होय और राजा उस
बात से प्रसन्न हुआ और उस ने वैसा ही किया॥

५ अब सूसन के भवन में मरदकी नाम एक यहूदी था जो
बिनयमीनी याइर का बेटा था जो शमई का बेटा जो कीस
६ का बेटा था। जो उस बंधुआई में यरूसलम से उठाये गये
थे जो यहूदाह के राजा यकुनियाह के संग उठाये गये जिन्हें
७ बाबुल का राजा नबूखुदनज़र ले गया था। और उस ने अपने
चचा की बेटी हदश: अर्थात् आसतर को पाला था क्योंकि
उस के माता पिता न थे और वुह कन्या सुडौल और सुन्दर रूप
थी जिसे मरदकी ने जब उस के माता पिता मर गये अपनी
ही लड़की कर लिया था॥

८ और यों हुआ कि जब राजा की आज्ञा और उस का ठहराया
हुआ सुना गया और जब बहुत कन्या सूसन भवन में हिजई
के बश में एकट्ठी किई गई तब आसतर भी स्त्रियों के रक्षक
९ हिजई के हाथ में राजा के भवन में पहुंचाई गई। और वुह
कन्या उसे अच्छी लगी और उस ने उस्से अनुग्रह पाया और
उस ने उसे पवित्र करने की वस्तु और उस के भाग दिये और
राजा के भवन से योग्यता के समान सात दासी उसे दिई गई
और उस ने उसे और उस की दासियों को स्त्रियों के मन्दिर
१० के अच्छे से अच्छा स्थान दिया। आसतर ने अपने लोग और
कुटुम्ब न बताये क्योंकि मरदकी ने उसे जता दिया था कि
न बतावे॥

११ और प्रति दिन मरदकी स्त्रियों के मन्दिर के भवन के आगे
फिरता था जिसतें आसतर का कुशल बूझे और कि उस का
१२ क्या होगा। और जब स्त्रियों की रीति के समान बारह मास
उस के लिये बीतते थे और हर एक कन्या की पारी शेरशाह
राजा कने जाने को आती थी क्योंकि उन्हें पवित्र करने के दिन
यों थे मुर के तेल से छः मास और सुगन्धों से और स्त्रियों
१३ की पवित्र करने की बस्तु से छः मास। तब यों कन्या राजा
कने आती थी और जो जो वस्तु वुह चाहती थी सो स्त्रियों
के मन्दिर में से राजा के घर में जाने को उसे दिई जाती थी।
१४ सांझ को वुह जाती थी और बिहान को स्त्रियों के दूसरे मन्दिर
में सासगज़ राजा के शयनस्थान के प्रधान जो सहेलियों का
रक्षक था उस के बश में फिर जाती थी और जब लों राजा
उस्से मगन न होता था और कि वुह नाम लेके पुकारी न
जाती थी तब लों राजा कने फेर न जाती थी॥
१५ और जब मरदकी के चचा अबिख़ैल की लड़की आसतर को
जिसे मरदकी ने अपनी लड़की कर रखा था राजा कने जाने
की पारी आई तो कुछ राजा के शयनस्थान के प्रधान स्त्रियों
के रक्षक हिजई ने ठहराया था अधिक न चाहा और सभों
की दृष्टि में जो उसे देखता था आसतर ने अनुग्रह पाया।
१६ सो दसवें मास में जो तबीस मास है आसतर राजभवन में
राजा शेरशाह कने पहुंचाई गई जो उस के राज्य का सातवां
१७ बरस था। और राजा ने सारी स्त्रियों से आसतर को अधिक
प्यार किया और उस ने सारी कुंआरियों से उस की दृष्टि में
अधिक अनुग्रह और कृपा पाई यहां लों कि उस ने राजमुकुट
उस के सिर पर रख दिया और वशती की सन्ती उसे रानी
१८ किया। तब राजा ने अपने सारे अध्यक्षों और सेवकों के लिये
एक बड़ा जेवनार किया अर्थात् आसतर का जेवनार और उस

ने प्रदेशों को विश्राम दिया और राजा के महात्म के समान
दान किया ॥
१९ और जब कुमारी दूसरी बार एकट्ठी हुई तब मरदकी राजा
२० की डेवढ़ी पर बैठा था । और मरदकी के चिताने के समान
आसतर ने अपने कुटुम्ब और अपने यत को अब लों न बताया
क्योंकि आसतर मरदकी की आज्ञा को अब भी ऐसा मानती थी
जैसा जब उस्से पाली जाती थी ॥
२१ उन दिनों में जब मरदकी राजा के फाटक पर बैठता था
तब राजा के शयनस्थान के दो प्रधान अर्थात् डेवढ़ी के रक्षकों
में से बिगतान और तुर्श क्रुद्ध होके चाहते थे कि राजा शेरशाह
२२ पर हाथ डालें । और यह बात मरदकी को जान पड़ी और
उस ने आसतर रानी को कहा और आसतर ने मरदकी के
२३ नाम से राजा को जनाया । फेर जब इस बात की पूछ पाछ
हुई तो खुल गई इस लिये दोनों एक पेड़ पर टांगे गये और
वुह राजा के काल के समाचार की पुस्तक में लिखा गया ॥

तीसरा पर्व्व ।

१ इन बातों के पीछे शेरशाह राजा ने अगागी हम्मिदासा के
बेटे हामन को बढ़ाया और उसे महान किया और उस के संग
२ के सारे अध्यक्षों से उस के आसन को ऊंचा किया । और राजा
के सारे सेवक जो राजा की डेवढ़ी पर रहते थे हामन के आगे
झुकते थे और उसे प्रतिष्ठा देते थे क्योंकि राजा ने उस के
विषय में वैसी ही आज्ञा किई थी परन्तु मरदकी न झुकता था
३ न प्रतिष्ठा देता था । तब राजा के सेवकों ने जो राजा की
डेवढ़ी पर रहते थे मरदकी को कहा कि तू क्यों राजा की
आज्ञा उल्लंघन करता है ॥
४ सो यों हुआ कि जब वे प्रति दिन उसे कहते रहे और उस

ने उन की न मानी तब मरदकी की बात उन्हों ने हामन से
बूझने को कही कि मरदकी की बात ठहरेगी कि नहीं क्योंकि
५ उस ने उन्हें कहा था कि मैं यहूदी हूं। और जब हामन ने
देखा कि मरदकी न झुकता है न मुझे प्रतिष्ठा देता है तब
६ हामन कोप से भर गया। और उस ने केवल मरदकी पर
हाथ डालना तुच्छ समझा क्योंकि उन्हों ने उसे मरदकी के
लोगों को बताया था इस लिये हामन ने शेरशाह के सारे
राज्य के सारे यहूदियों को अर्थात् मरदकी के लोगों को नष्ट
करने के लिये चिन्ता किई॥

७ शेरशाह राजा के बारहवें बरस के पहिले मास में जो
नीसान मास है दिन दिन और मास मास बारहवें लों जो
अदार मास है वे हामन के आगे पारा अर्थात् चिट्ठी डाला
८ किये। तब हामन ने शेरशाह राजा से कहा कि आप के राज्य
के सारे प्रदेशों के लोगों में एक छितरे हुए और फैले हुए
लोग हैं और उन की व्यवस्था सारे लोगों से भिन्न है और वे
राजा की व्यवस्था भी नहीं मानते हैं इस लिये उन के रहने
९ में राजा को लाभ न होगा। जो राजा की इच्छा होय तो
उन्हें नाश करने के लिये लिखा जाय और जो इस काम पर
हैं मैं उन के हाथ में दस सहस्र तोड़े चांदी राजा के भंडारों
१० में डालने को देऊंगा। तब राजा ने अपने हाथ से अंगूठी
निकालके यहूदियों के बैरी अगागी हम्मिदासा के बेटे हामन
११ को दिई। और राजा ने हामन से कहा कि चांदी और लोग
भी तुझे दिये गये हैं जो चाहे सो उन से कर॥

१२ तब राजा के लेखक पहिले मास की तेरहवीं तिथि में
बुलाये गये और हामन की सारी आज्ञा के समान हर एक
प्रदेश पर के राजाध्यक्षों और अध्यक्षों के और हर एक प्रदेश
के हर एक लोगों के प्रधानों के हर एक लोगों को उन की

भाषा के समान उस लिखने के तुल्य लिखा गया और वुह
शेरशाह राजा के नाम से लिखा गया और राजा की अंगूठी से
१३ छाप किई गई। और पत्रियां डाकियों के हाथों से राजा के
सारे प्रदेशों में भेजी गईं कि क्या तरुण क्या वृद्ध क्या स्त्री
सारे यहूदियों को एक ही दिन में अर्थात् बारहवें मास की
तेरहवीं तिथि में जो अदार मास है नाश करो बधन करो
१४ और नष्ट कराओ और उन की संपत्ति लूट लो। हर एक प्रदेश
के सारे लोगों के लिये लिखे हुए का उतारा आज्ञा के लिये
१५ प्रचारा गया जिसतें उस दिन के लिये लैस हो रहें। राजा
की आज्ञा की शीघ्रता के कारण डाकिये निकल चले और आज्ञा
सूसन के भवन में दिई गई और राजा और हामन पीने के
लिये बैठ गये परन्तु सूसन नगर व्याकुल हुआ ॥

चौथा पर्व्व ।

१ जो कि किया गया था जब मरदकी ने देखा तो उस ने
अपने कपड़े फाड़े और राख सहित टाट पहिनके बाहर नगर
२ के मध्य में जाके चिल्ला चिल्ला बिलख बिलख रोया। और
राजा की डेवढ़ी के भी आगे आया क्योंकि टाट पहिने कोई
३ राजा की डेवढ़ी से न जाता था। और हर एक प्रदेश में जहां
कहीं राजा की आज्ञा और ठहराया हुआ पहुंचता था तहां
यहूदियों में बड़ा बिलाप और व्रत और रोना और पीटना
होता था और राख और टाट पर बैठ गये ॥

४ तब आसतर की दासियों ने और उस के नपुंसकों ने आके
उसे संदेश दिया तब रानी अत्यन्त उदासिन हुई और मरदकी
को टाट ले लेने को और उसे पहिनाने को बस्त्र भेजा परन्तु
५ उस ने न लिया। तब आसतर ने राजा के शयनस्थान के
प्रधान हताक को जिसे उस ने उस के आगे रक्खा था बुलवाया

और आज्ञा करके मरदकी को पुछवा भेजा कि क्या है और
६ किस लिये। सो हताक निकलके नगर के चैाक में जो राजा
७ की डेवढ़ी के आगे था मरदकी कने गया। और सब जो उस
पर बीता था और यहूदियों को नष्ट करने के कारण और जो
रोकड़ हामन ने राजा के भंडारों में देने को प्रण किया था
८ सो मरदकी ने उसे कहा। और आज्ञा के लिखे हुए का उतारा
भी जो उन्हें नष्ट करने को सूसन में दिया गया था उस ने
उसे दिया कि आसतर को दिखावे और सुना देवे और उसे
जता देवे कि अपने लोगों के कारण बिनती और प्रार्थना करने
के लिये राजा के पास जाय॥
९ और हताक ने आके आसतर को मरदकी की बातें सुनाईं।
१० फिर आसतर ने हताक से कहा और मरदकी के लिये उसे
११ आज्ञा दिई। कि राजा के सारे दास और राजा के प्रदेश के
लोग जानते हैं कि क्या स्त्री क्या पुरुष जो कोई बिना बुलाये
राजा के पास जाय उस के बधन करने की एक ही व्यवस्था है
केवल वुह जिस के लिये राजा सोने का राजदंड उठावे जिसतें
वुह जीये परन्तु तीस दिन हुए कि मैं राजा कने बुलाई न
१२ गई। और उन्हों ने मरदकी को आसतर की बातें कहीं॥
१३ तब मरदकी ने आज्ञा दिई कि आसतर को उत्तर देओ कि
अपने मन में न समझे कि सारे यहूदियों से अधिक राजा के
१४ भवन में मैं बचूंगी। क्योंकि यदि तू इस समय में सर्वथा
चुपकी हो रहेगी तो जीवन और बचाव यहूदियों के लिये
अन्त से उदय होगा परन्तु तू अपने पितरों के घराने सहित
नष्ट हो जायेगी और कौन जानता है कि ऐसे समय के लिये
१५ तू ने राज्य पाया है। तब आसतर ने मरदकी कने फेर
१६ कहला भेजा। कि जा सूसन में जितने यहूदी पाये जायें
उन्हें एकट्ठे कर और मेरे लिये ब्रत कर और रात दिन तीन

दिन लों न खा न पी मैं और मेरी दासियां भी व्रत रक्खेंगी
और यों मैं राजा कने जाऊंगी यह व्यवस्था की रीति नहीं है
१७ यदि मैं नष्ट होऊं तो होऊं । सो मरदकी ने जाके आसतर
की आज्ञा के समान सब कुछ किया ॥

पांचवां पर्ब्व ।

१ और तीसरे दिन ऐसा हुआ कि आसतर राजीय पहिरावा
पहिन राजा के भवन के आंगन के भीतर राजमन्दिर के
साम्ने खड़ी हुई और राजा राजमन्दिर में अपने राजीय सिंहासन
२ पर भवन के फाटक के सन्मुख बैठा था । फिर ऐसा हुआ
कि जब राजा ने आसतर रानी को आंगन में खड़ी देखा तब
उस ने उस की दृष्टि में अनुग्रह पाया और राजा ने आसतर
के लिये अपने हाथ का सोनैला राजदंड बढ़ाया सो आसतर
३ ने बढ़के राजदंड के टोंक को छूआ । तब राजा ने उसे कहा
कि हे आसतर रानी तू क्या चाहती है और तेरी क्या बिनती
४ है आधे राज्य लों तुझे दिया जायगा । तब आसतर ने उत्तर
दिया कि यदि राजा की इच्छा होय तो राजा और हामन
५ आज मेरे सिद्ध किये हुए नेवते में आवें । तब राजा ने कहा
कि हामन को शीघ्र बुलाओ कि आसतर के कहे के समान
करे सो राजा और हामन आसतर के सिद्ध किये हुए जेवनार
में आये ॥

६ और राजा ने दाखरस के पीने के समय में आसतर से कहा
कि तेरी बिनती क्या और वुह तुझे दिया जायगा और तेरी
७ इच्छा क्या सो आधे राज्य लों किया जायगा । तब आसतर
ने उत्तर देके कहा कि मेरी बिनती और याचना यह है ।
८ जो राजा की दृष्टि में मैं ने अनुग्रह पाया है और यदि मेरी
बिनती सुन्ने को और मेरी याचना पूरी करने को राजा की इच्छा

होय तो राजा और हामन उस जेवनार में आवें जो मैं उन
के लिये सिद्ध करूंगी और राजा के कहे के समान मैं कल
करूंगी ॥
९ सो उस दिन हामन आल्हादित और मगन होके बाहर
गया परन्तु जब हामन ने राजा के फाटक पर मरदकी को
देखा कि वुह खड़ा न हुआ और न उस के लिये टला तब
१० वुह मरदकी पर जलजलाहट से भर गया। तथापि हामन ने
आप को रोक रक्खा और घर में आ अपने मित्रों को और अपनी
११ पत्नी ज़रिश को बुलवा भेजा। और हामन ने उन से अपने
धन की महिमा और अपने बालकों की बहुताई और सब जहां
लों राजा ने उसे बढ़ाया था और किस रीति से उस ने उसे
अध्यक्षों से और राजा के सेवकों से महान किया था सुनाया।
१२ और हामन ने यह भी कहा हां आसतर रानी ने राजा के
साथ अपने जेवनार में जो उस ने सिद्ध किया था मुझे छोड़
किसी जन को आने नहीं दिया और कल भी राजा के साथ
१३ उस के यहां मेरा नेवता है। परन्तु जब लों मैं राजा के
फाटक पर यहूदी मरदकी को देखता हूं यह सब मेरे लिये
१४ कुछ नहीं। तब उस की पत्नी ज़रिश और उस के सारे मित्रों
ने उसे कहा कि पचास हाथ ऊंची फांसी की लकड़ी खड़ी किई
जाय और कल राजा से कह कि मरदकी उस पर टांगा जाय
तब तू आनन्द से राजा के संग जेवनार में जाइयो और उस
बात से हामन प्रसन्न हुआ और उस ने फांसी की लकड़ी
बनवाई ॥

छठवां पर्ब्ब।

१ राजा की नींद उस रात जाती रही और उस ने आज्ञा
करके काल विवरण की लिखी हुई पुस्तकें मंगवाईं और वे

२ राजा के आगे पढ़ी गई। और उस में यह लिखा हुआ पाया
गया कि राजा के शयनस्थान के दो प्रधान द्वारपालक अर्थात्
बगताना और तुर्श जिन्हों ने राजा शेरशाह पर हाथ बढ़ाने
को चाहा और मरदकी ने उसे प्रगट किया था॥
३ और राजा ने कहा कि इस बात के लिये मरदकी की क्या
प्रतिष्ठा और आदर हुआ तब राजा के दासों ने जो उस की सेवा
४ करते थे उस्से कहा कि उस के लिये कुछ न हुआ। तब राजा
ने कहा कि आंगन में कौन हैं इतने में हामन राजभवन के
बाहर के आंगन में आया जिसतें राजा से कहके मरदकी को
उस फांसी की लकड़ी पर जो उस ने सिद्ध किई थी टांग देवे।
५ तब राजा के सेवकों ने उसे कहा कि देखिये हामन आंगन में
खड़ा है तब राजा ने कहा कि वुह भीतर आवे॥
६ तब हामन भीतर आया और राजा ने उसे कहा कि जिसे
राजा प्रतिष्ठा देने चाहता है उस के लिये क्या किया जाय
अब हामन ने अपने मन में समझा कि मुझ से अधिक राजा
७ किसे प्रतिष्ठा देने को चाहेगा। और हामन ने राजा को उत्तर
८ दिया कि जिस की प्रतिष्ठा में राजा आनन्दित है। उस के
लिये राजकीय वस्त्र जो राजा आप पहिनते हैं और जिस
घोड़े पर राजा आप चढ़ते हैं और राजीय मुकुट जो आप के
९ सिर पर धरा जाता है मंगवाया जाय। और वुह वस्त्र और
घोड़े राजा के अत्यन्त कुलीन अध्यक्षों में से एक को सौंपे जायें
कि वुह उस मनुष्य को विभूषित करे जिसे राजा प्रतिष्ठा देने
में आनन्दित है और उसे घोड़े पर नगर की सड़क में से ले
जाये और उस के आगे प्रचारे कि जिस की प्रतिष्ठा में राजा
१० आनन्दित है उस के लिये ऐसा ही किया जायगा। तब राजा
ने हामन से कहा कि चटक कर और अपने कहने के समान
वस्त्र और घोड़ा ले और यहूदी मरदकी को जो राजा

की डेवढ़ी पर बैठा है वैसा ही कर जैसा तू ने कहा है उस्से
तनिक न घटे॥
११ तब हामन ने वुह वस्त्र और घोड़ा लेके मरदकी को
विभूषित किया और उसे घोड़े पर नगर की सड़क में से ले
गया और उस के आगे प्रचारा कि जिस की प्रतिष्ठा में राजा
आनन्दित है उस के लिये ऐसा ही किया जायगा॥
१२ और मरदकी फेर राजा की डेवढ़ी पर आया परन्तु हामन
बिलाप करते और सिर ढांपे हुए अपने घर उतावली से गया।
१३ और जो जो उस पर बीता था सो हामन ने अपनी पत्नी ज़रिश
से और अपने सारे मित्रों से कहा तब उस के बुद्धिमानों ने
और उस की पत्नी ज़रिश ने उसे कहा कि यदि मरदकी जिस
के आगे तू ध्वस्त होने लगा यहूदियों के वंश में से होवे तो
तू उस पर प्रबल न होगा परन्तु निश्चय उस के आगे ध्वस्त
होगा॥
१४ जब लों वे उस्से ये बातें कर रहे थे तब राजा के शयनस्थान
के प्रधानों ने आसतर के बनाये हुए जेवनार में हामन को ले
जाने के लिये शीघ्रता किई॥

सातवां पर्ब्ब।

१ सो आसतर रानी के साथ पान करने को राजा और हामन
२ आये। और दूसरे दिन दाखरस पीने के समय में राजा ने
आसतर से फेर पूछा कि हे रानी आसतर तेरी बिनती क्या
सो तेरे लिये किई जायगी और तू क्या चाहती है सो आधे
३ राज्य लों किया जायगा। तब आसतर रानी ने उत्तर देके
कहा कि हे राजा यदि मैं ने आप की दृष्टि में अनुग्रह पाया
है और यदि राजा की इच्छा होय तो मेरा प्राण मेरी बिनती
४ में और मेरे मांगने में मेरे लोग मुझे दिये जायें। क्योंकि मैं

ओर मेरे लोग बेचे गये जिसतें नाश ओर घात ओर नष्ट किये
जायें परन्तु यदि हम लोग दास ओर दासी में बेचे जाते तो
मैं चुपकी रहती यद्यपि बैरी राजा की घटती सुधार न सक्ता ॥
५ तब शेरशाह राजा ने उत्तर देके आसतर रानी से कहा कि
किस के मन ने उसे ऐसा करने को फुलाया हे वुह कोन हे
६ ओर कहां हे । तब आसतर ने कहा कि वुह बैरी ओर शत्रु
यह दुष्ट हामन हे तब हामन राजा ओर रानी के आगे डर
गया ॥
७ तब राजा कोपित हो दाखरस के पान से उठके राजभवन
की बाटिका में गया ओर हामन अपने प्राण के लिये आसतर
रानी से बिनती करने को खड़ा हुआ क्योंकि उस ने देखा कि
राजा की ओर से मेरे लिये बुराई ठहराई गई ॥
८ तब राजा भवन की बाटिका में से दाखरस के पानस्थान
में फिर आया ओर जिस पर आसतर थी हामन उस बिछोने
पर गिरा था तब राजा ने कहा कि घर में मेरे आगे वुह रानी
पर भी बरबस करेगा यह वचन राजा के मुंह से निकलते ही
९ उन्हों ने हामन का मुंह ढांपा । तब शयनस्थान के एक प्रधान
ख़रबून: ने राजा के आगे कहा कि पचास हाथ ऊंची एक
फांसी की लकड़ी भी देखिये जिसे हामन ने अपने घर में
मरदकी के लिये खड़ी कर रक्खी थी जिस ने राजा के लिये
भला कहा था तब राजा ने कहा कि उसी पर इसे टांगो ।
१० सो उन्हों ने हामन को उसी लकड़ी पर फांसी दिई जो उस ने
मरदकी के लिये खड़ी कर रक्खी थी तब राजा का कोप धीमा
हुआ ॥

आठवां पर्व्व ।

१ उसी दिन शेरशाह राजा ने आसतर को यहूदियों के बैरी

हामन का घर दिया और मरदकी राजा के आगे आया क्योंकि
२ जो वुह उस का था आसतर ने कह दिया था। और राजा ने
अपने हाथ की अंगूठी जो उस ने हामन से ले लिई थी निकालके
मरदकी को दिई और आसतर ने हामन के घर पर मरदकी
को ठहराया॥
३ और आसतर ने राजा के चरणों पर गिरके और रो रोके
उस की बिनती किई कि अगागी हामन की दुष्टता और उस की
जुगत जो उस ने यहूदियों के बिरुद्ध जुगत किई थी सो दूर
४ किई जाय। तब राजा ने आसतर की ओर राजदंड बढ़ाया
५ तब आसतर राजा के आगे उठ खड़ी हुई। और बोली कि
यदि राजा की इच्छा होय और यदि मैं ने उस की दृष्टि में
अनुग्रह पाया है और यह बात राजा के आगे ठीक होवे और
मैं उस की दृष्टि में अच्छी लगूं तो अगागी हम्मिदासा के बेटे
हामन की जुगत के मंच जो उस ने राजा के सारे प्रदेशों के
यहूदियों को नष्ट करने को लिखा था उन्हें पलटने को लिखा
६ जाय। क्योंकि जो बुराई मेरे लोगों पर पड़ेगी मैं उसे क्योंकर
देख सकूंगी अथवा अपने कुटुम्बों का नष्ट होना मैं क्योंकर
देख सकूंगी॥
७ तब शेरशाह राजा ने आसतर रानी से और यहूदी मरदकी
से कहा कि देख मैं ने हामन का घर आसतर को दिया है
और उन्हों ने उसे फांसी की लकड़ी पर इस कारण टांगा कि
८ उस ने यहूदियों पर हाथ डाला। जैसा तुम्हें अच्छा लगे राजा
के नाम से तुम भी यहूदियों के लिये लिखो और राजा की
अंगूठी से छाप करो क्योंकि जो लिखा हुआ राजा के नाम से
लिखा गया है और राजा की अंगूठी से छापा गया है उसे
कोई पलट नहीं सक्ता॥
९ तब उसी समय तीसरे मास में अर्थात् सिवान मास का

तेईसवीं तिथि में राजा के लेखक बुलाये गये और मरदकी की
सारी आज्ञा के समान प्रदेशों के यहूदियों को और राजाध्यक्षों
को और नायकों को और प्रधानों को जो हिन्द से हबश लों
हैं एक सौ सत्ताईस प्रदेश उस लिखने के समान हर एक प्रदेश
को और उन की भाषा के समान हर एक लोग को और यहूदियों
को उन के लिखने और उन की भाषा के समान लिखा गया ॥
१० और उस ने शेरशाह राजा के नाम से लिखा और राजा
की अंगूठी से छाप किया और डाकियों के हाथ से जो घोड़ों
और खच्चरों घोड़ियों के बच्चों पर चढ़वैये थे पत्रियां दौड़ाईं ।
११ कि राजा ने यहूदियों को छुट्टी दिई कि सब नगरों में एकट्ठे
होवें और अपने प्राण के बचाव के लिये खड़े होवें जिसतें
लोगों और प्रदेशों के सारे पराक्रम जो उन पर हल्ला करें क्या
बालक क्या स्त्री घात करके नाश करें और नष्ट करवावें और
१२ उन की संपत्ति लूट लेवें । एक ही दिन में राजा शेरशाह के
सब प्रदेशों में बारहवें मास अर्थात् अदार मास की तेरहवीं
तिथि में ॥
१३ लिखे हुए का उतारा हर एक प्रदेशों में देने को सारे लोगों
के लिये प्रगट किया गया जिसतें यहूदी अपने बैरियों से पलटा
१४ लेने को उस दिन में लैस हो रहें । सो डाकिये जो सांड़नियों
और खच्चरों पर चढ़वैये थे राजा की आज्ञा से बेग से जाके
निकल गये और सूसन के भवन में आज्ञा दिई गई थी ॥
१५ और मरदकी नीला और श्वेत राजवस्त्र और सोने का एक
महा मुकुट बैंजनी और झीना वस्त्र पहिने हुए राजा के आगे
से निकल गया और सूसन नगर आनन्दित और आल्हादित
१६ हुआ । यहूदियों को ज्योति और आनन्द और आल्हाद और
१७ प्रतिष्ठा हुई । और हर एक प्रदेश में और हर एक नगर में
जहां कहीं राजा की आज्ञा और ठहराया हुआ पहुंचता था

वहां पर यहूदियों को आनन्द और आल्हाद और जेवनार और
मंगल दिन होता था और देश के बहुत लोग यहूदी हो गये
क्योंकि यहूदियों का डर उन पर पड़ा था॥

नवां पर्व्व ।

१ अब बारहवें मास जो अदार मास है उस की तेरहवीं
तिथि में जब राजा की आज्ञा और उस का ठहराया हुआ
बजालाने को पास आ पहुंचा जिस में यहूदियों के बैरी उन
पर प्रबल होने की आशा रखते थे यद्यपि वुह पलटा गया था
२ कि यहूदियों ने अपने बैरियों पर प्रभुता पाई थी। तब शेरशाह
राजा के सारे प्रदेशों के सारे नगरों में जो उन की बुराई चाहते थे
उन पर हाथ डालने को यहूदी एकट्ठे हुए और कोई उन का
साम्ना न कर सक्ता था क्योंकि उन का भय सारे लोगों पर पड़ा।
३ और प्रदेश के सारे अध्यक्षों ने और राजाध्यक्षों ने और न्याइयों
ने और राजा के कार्य्यकारियों ने यहूदियों का उपकार किया
४ इस कारण कि मरदकी का भय उन पर पड़ा। क्योंकि मरदकी
राजभवन में महान हुआ और उस की कीर्त्ति सारे प्रदेशों में
फैल गई क्योंकि यह मरदकी बढ़ता गया॥
५ यों यहूदियों ने अपने सारे बैरियों को तलवार की धार से
जुझाया और मार डाला और नष्ट किया और अपनी इच्छा के
६ समान अपने बैरियों से किया। और सूसन के भवन में
७ यहूदियों ने पांच सौ मनुष्यों को मारके नष्ट किया। और
८ परशनदासा और दलफून और असपासा। और पूरता और
९ अदलयाह और अरीदाता। और फ़रमशता और अरिसाई और
१० अरीदी और वजीजासा। अर्थात् यहूदियों के बैरी हम्मिदासा
के बेटे हामन के दस बेटों को उन्हों ने घात किया परन्तु
लूट पर उन्हों ने हाथ न डाला॥

११ उस दिन सूसन के भवन में जितने मारे गये उन की
१२ गिनती राजा के आगे पहुंची। फिर राजा ने आसतर रानी से
कहा कि यहूदियों ने सूसन के भवन में पांच सौ मनुष्यों को और
हामन के दस बेटों को घात करके नष्ट किया और राजा के
रहे हुए प्रदेशों में उन्हों ने क्या किया होगा अब तेरी बिनती
क्या सो तुझे दिया जायगा अथवा तू और क्या मांगती है सो
किया जायगा॥

१३ तब आसतर ने कहा कि यदि राजा की इच्छा होय तो
सूसन के यहूदियों को आज के ठहराने के समान कल भी दिया
जाय और लोग हामन के दस बेटों को फांसी की लकड़ी पर
१४ टांगें। फिर राजा ने ऐसा ही होने को आज्ञा दिई और सूसन
में वुह आज्ञा दिई गई और उन्हों ने हामन के दस बेटों को
१५ फांसी दिई। क्योंकि सूसन के यहूदी अदार मास के चौदहवें
दिन में भी एकट्ठे हुए और सूसन में तीन सौ जनों को घात
किया परन्तु लूट पर उन्हों ने हाथ न डाला॥

१६ परन्तु राजा के प्रदेशों के यहूदी अपने प्राण के लिये एकट्ठे
हुए और अपने बैरियों से चैन पाया और अपने शत्रुन के
पचहत्तर सहस्र जनों को घात किया परन्तु लूट पर हाथ न
१७ डाले। अदार मास के तेरहवें और चौदहवें दिन उन्हों ने
चैन पाया और उसे खाने पीने और आनन्द करने का दिन
१८ किया। परन्तु उस के तेरहवें और चौदहवें दिन सूसन के
यहूदी एकट्ठे हुए और उस के पंदरहवें बिश्राम किया और
१९ उसे खाने पीने और आनन्द का दिन किया। इस लिये गांओं के
यहूदियों ने जो अभीत नगरों में रहते थे अदार मास की
चौदहवीं तिथि को खाने पीने और आनन्द करने और मंगल
दिन और आपुस में बैना भेजने का किया॥

२० और मरदकी ने शेरशाह राजा के पास के और दूर के सारे

प्रदेशों में सारे यहूदियों के पास इन बातों की पत्रियां लिख
२१ भेजीं। कि उन में यह बात ठहर जाय कि वे अदार मास
की चौदहवीं और पंदरहवीं तिथि को बरस बरस माना करें।
२२ कि उन दिनों में यहूदियों ने अपने शत्रुन से चैन पाया और
वुह मास उन के लिये शोक से आनन्द और बिलाप से मंगल
दिन हुआ जिसतें वे उन्हें खाने पीने और आनन्द करने और
आपुस में बैना भेजने और दरिद्रों को दान देने के दिन करें।
२३ और जैसा उन्हों ने आरंभ किया मरदकी के लिखने के समान
२४ यहूदियों ने वैसा ही करने को मान लिया। क्योंकि अगागी
हम्मिदासा के बेटे यहूदियों के बैरी हामन ने उन्हें नष्ट करने
की युक्ति किई थी और उन्हें चूर और नष्ट करने के लिये पूर
२५ अर्थात् चिट्ठी डाली थी। परन्तु जब वुह राजा के आगे आई
तब उस ने पत्रियों के द्वारा से आज्ञा किई कि उस की दुष्ट
युक्ति जो उस ने यहूदियों के बिरुद्ध युक्ति किई थी उसी के
सिर पर पलटे और कि वुह और उस के बेटे फांसी दिये जायें।
२६ इस लिये पूर के नाम से उन्हों ने उन दिनों को पूरीम कहा
सो इस पत्री के सारे बचन के लिये और जो कुछ उन्हों ने
इस बात के बिषय में देखा था और जो उन पास पहुंचा था।
२७ उन के लिखने के समान और उन के समय के समान यहूदियों
ने अपने ऊपर और अपने बंश पर और उन सभों पर जो उन
में मिल गये थे अपने लिये ठाना और ठहराया कि हम बरस
२८ बरस इन दो दिनों को मानेंगे जिसतें जाने न पावें। और कि
ये दिन हर एक पीढ़ी में और हर एक घराने में और हर एक
प्रदेश में और हर एक नगर में स्मरण और पालन किये जायें
और कि पूरीम के ये दिन यहूदियों में से जाने न पावें न उन
का स्मरण उन के बंश से जाता रहे॥
२९ तब अबिख़ैल की पुत्री आसतर रानी ने और मरदकी यहूदी

ने पूरीम की दूसरी पत्री दृढ़ करने को सारे पराक्रम से लिखा।
३० और शेरशाह के राज्य के एक सौ सत्ताईस प्रदेशों में उस ने
पत्रियों को सारे यहूदियों के पास कुशल और सत्य के वचन
३१ से भेजा। कि पूरीम के इन दिनों को ठहराये समय में जैसा
मरदकी यहूदी और आसतर रानी ने आज्ञा किई थी और जैसा
उन्हों ने अपने लिये और अपने बंश के लिये व्रत और प्रार्थना
३२ करने को दृढ़ किया था स्थापन करें। और आसतर की आज्ञा
ने पूरीम की इन बातों को दृढ़ किया और पुस्तक में लिखा
गया॥

दसवां पर्व्व।

१ और शेरशाह राजा ने देश पर और समुद्र के टापुओं पर
२ कर ठहराया। और उस के पराक्रम और सामर्थ्य की सारी
क्रिया और मरदकी के महात्म्य का वर्णन जहां लों राजा ने उसे
बढ़ाया था क्या वे मादी और फारस के राजाओं के काल की
३ पुस्तकों में नहीं लिखी हैं। क्योंकि यहूदी मरदकी शेरशाह
राजा का समीपी और यहूदियों में महान और अपने भाइयों
की मंडली में ग्राह्य था और अपने लोगों की बढ़ती का खोजी
और अपने सारे बंश से कुशल की बात कहता था॥

ऐयूब की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ ऊज़ देश में ऐयूब नाम एक जन था जो सिद्ध और खरा
पुरुष था और ईश्वर से डरता और बुराई से अलग रहता था।
२। ३ और उस्से सात बेटे और तीन बेटियां उत्पन्न हुईं। उस
की संपत्ति भी सात सहस्र भेड़ और तीन सहस्र ऊंट और पांच
सौ जोड़े बैल और पांच सौ गदहियां और अनेकन टहलू थे
यहां लों कि पूरब के लोगों में सब से बड़ा था॥
४ और उस के बेटे हर एक अपने अपने दिन में अपने घरों
में जेवनार करते थे और अपने संग खाने पीने के लिये भेजके
५ अपनी तीनों बहिनों को नेउता देते थे। और उन के जेवनार
के दिनों के पीछे यों होता था कि ऐयूब उन्हें बुलवाके पवित्र
करता था और बिहान को तड़के उठके उन की गिनती के
समान बलिदान की भेंट चढ़ाता था क्योंकि ऐयूब ने कहा कि
क्या जाने मेरे बेटों ने अपने मन में ईश्वर को त्याग करके पाप
किया हो ऐयूब यों नित्य करता रहा॥
६ अब एक दिन ऐसा हुआ कि परमेश्वर के आगे ईश्वर के पुत्र आये
७ और शैतान भी उन के मध्य में आया। तब परमेश्वर ने शैतान से
पूछा कि तू कहां से आता है और शैतान ने परमेश्वर को उत्तर
में कहा पृथिवी पर घूमते और इधर उधर से फिरते आया हूं।

८ फिर परमेश्वर ने शैतान से कहा क्या तू ने मेरे सेवक ऐयूब
को जांचा है कि उस के समान पृथिवी में कोई नहीं वुह सिद्ध
और खरा जन है जो ईश्वर से डरता और पाप से अलग रहता
९ है । तब शैतान ने उत्तर में परमेश्वर से कहा क्या ऐयूब संत
१० से ईश्वर से डरता है । क्या तू ने उस का और उस के घर
की और उस के सब कुछ का चारों ओर से बाड़ा नहीं बांधा
तू ने उस के हाथ के कार्य्यों पर आशीष दिई है और उस की
११ संपत्ति देश में बढ़ गई है । परन्तु अब अपने हाथ बढ़ाके
उस का सब कुछ छू तो क्या वुह तेरे साम्ने तुझे न त्यागेगा ।
१२ तब परमेश्वर ने शैतान से कहा देख उस का सब कुछ तेरे
बश में है केवल उस पर अपना हाथ मत बढ़ा तब शैतान
परमेश्वर के आगे से चल निकला ॥
१३ और एक दिन ऐसा हुआ कि जब उस के बेटे बेटियां
अपने जेठे भाई के घर में खाते और मद्यपान करते थे ।
१४ तब एक दूत ने ऐयूब पास आके कहा बैल जोत्ते थे और
१५ गदहियां उन के लग चरती थीं । तब सबियूनी झपटके उन्हें
ले गये हां सेवकों को तलवार की धार से घात किया पर आप
१६ को संदेश देने को केवल मैं हीं बच निकला । यह कहता ही
था और दूसरे ने भी आके कहा कि ईश्वर की आग स्वर्ग से पड़ी
और भेड़ और तरुणों को भस्म किया और आप को संदेश देने को
१७ केवल मैं हीं बच निकला । यह कहता ही था कि एक और
ही आ बोला कि कसदी तीन जथा होके ऊंटों पर झपटके उन्हें
ले गये हां तरुणों को तलवार की धार से घात किया और
१८ आप को संदेश देने को केवल मैं हीं बच निकला । यह कहता
ही था कि एक और ही ने आके कहा कि आप के बेटे बेटियां
१९ अपने जेठे भाई के घर खाते और मद्यपान कर रहे थे । और
देखो बन की ओर से एक बड़ी आंधी आके उस घर के चारों

कोनों में लगी और वुह तरुणों पर गिर पड़ा और वे मर गये
और आप को संदेश देने को केवल मैं हीं बच निकला॥
२० तब ऐयूब ने उठके अपना कपड़ा फाड़ा और सिर मुंड़ाया
२१ और भूमि पर गिरके सेवा किई। और कहा मैं अपनी माता
की कोख से नंगा निकला और नंगा फेर जाऊंगा परमेश्वर ने
दिया और परमेश्वर ने लिया परमेश्वर का नाम धन्य हो।
२२ इस सब में ऐयूब ने पाप न किया और ईश्वर के बिरुद्ध दुर्बचन
न कहा॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ और एक दिन ऐसा हुआ कि परमेश्वर के आगे ईश्वर के
पुत्र आ खड़े हुए और शैतान भी उन के मध्य में परमेश्वर के
२ आगे आ खड़ा हुआ। और परमेश्वर ने शैतान से कहा कि तू
कहां से आता है तब शैतान ने उत्तर देके परमेश्वर से कहा
कि पृथिवी पर घूमते और इधर उधर से फिरते चला आता
३ हूं। तब परमेश्वर ने शैतान से पूछा कि तू ने मेरे दास ऐयूब
को जांचा है कि उस के समान पृथिवी में कोई नहीं है वुह
सिद्ध और खरा जन ईश्वर से डरता और पाप से अलग रहता
है और अब लों अपनी सच्चाई को धर रक्खा है और तू ने
४ मुझे उसे अकारण नाश करने को उभारा है। तब शैतान ने
उत्तर देके परमेश्वर से कहा कि चाम के लिये चाम हां जो
५ मनुष्य का है सो अपने प्राण के लिये देगा। परन्तु अब अपना
हाथ बढ़ा और उस के हाड़ मांस को छू तब वुह निःसन्देह
६ तुझे तेरे साम्ने त्यागेगा। तब परमेश्वर ने शैतान से कहा कि
देख वुह तेरे हाथ में है केवल उस के प्राण को बचा॥
७ तब शैतान परमेश्वर के आगे से चला गया और ऐयूब को
८ सिर से तलवे लों बुरे फोड़ों से मारा। और वुह एक

ठीकरा लेके अपने को खुजलाने लगा और राख पर बैठ
गया ॥
९ तब उस की पत्नी ने उसे कहा कि क्या तू अब लों अपने
१० धर्म्म में स्थिर है ईश्वर को त्याग कर और मर जा। परन्तु
उस ने उसे कहा कि तू मूर्ख स्त्री की नाईं बोलती है क्या
हम ईश्वर के हाथ से भलाई लेंगे और बुराई न लेंगे इस सब
में ऐयूब ने अपने होठों से पाप न किया ॥
११ सो जब ऐयूब के तीन मित्रों ने अर्थात् तीमानी इलीफाज
ने और शुहीती बिलदाद ने और नामाती ज़ोफ़ार ने उस की
सारी बिपत्ति को जो उस पर पड़ी थी सुना तो वे अपने अपने स्थान
से आये क्योंकि उन्हों ने आके उस के साथ बिलाप करने और
१२ उसे शान्ति देने को एकट्ठे ठान रक्खा था। और जब दूर ही
से उन्हों ने अपनी आंखें उठाके उसे न चीन्हा तब चिल्लाके
रोये और हर एक ने अपना अपना कपड़ा फाड़ा और स्वर्ग की
१३ और अपने अपने सिरों पर धूल डाली। और सात दिन और
सात रात वे उस के साथ भूमि पर बैठे रहे और किसी ने
उसे एक बात न कही क्योंकि उन्हों ने देखा कि उस का शोक
बहुत बड़ा है ॥

तीसरा पर्व्व ।

१ अन्त में ऐयूब ने अपना मुंह खोला और अपने दिन को
धिक्कारा ॥
२। ३ और ऐयूब ने उत्तर देके कहा। वुह दिन नाश हो
जिस में मैं उत्पन्न हुआ और वुह रात जिस में कहा गया कि
४ एक बेटे का गर्भ हुआ। वुह दिन अंधियारा होय ईश्वर ऊपर
से उस की खोज न करे और न उंजियाला उस पर चमके।
५ अंधियारा और मृत्यु की छाया फिर उसे अपने घेरे में लावे

मेघ उस पर बने रहें दिन की अंधियारा करनेहारी बस्तें उसे
६ डरावें। अंधियारा उस रात को पकड़े वुह बरस के दिनों में
७ आनन्द न करे मासों की गिनती में न आवे। देख कि वुह
८ रात बांझ होवे उस में आनन्दित शब्द न होवे। दिन के
कोसनेवाले उस को धिक्कारें अर्थात् वे जो लिवीयातन के उठाने
९ को सिद्ध हैं। उस की गोधूली के तारे अंधियारे हों वुह
ज्योति की बाट जोहे पर न पावे और बिहान के पलकों
१० को न देखे। क्योंकि उस ने मेरे लिये कोख के द्वारों को बन्द
न किया और मेरी आंखों से शोक न छिपाया॥
११ मैं कोख में मर क्यों न गया पेट से निकलते ही मैं ने
१२ प्राण क्यों न त्यागा। क्यों घुठने मुझे मिले और स्तन की मैं
१३ चूसूं। क्योंकि अब तो मैं चुपका होके पड़ा रहता और चैन
१४ में होता मैं सो रहता और बिस्राम करता। राजाओं और
पृथिवी के मंत्रियों के संग जो उजाड़ स्थानों को अपने लिये
१५ बना लेते हैं। अथवा उन अध्यक्षों के संग जो सोने की
संपत्ति रखते थे और चांदी से अपने घरों को भरते थे।
१६ अथवा मैं हुआ न होता उस गर्भ की नाईं जो छिपके गिरा
१७ है उन बालकों की नाईं जिन्हों ने ज्योति को न देखा। वहां
१८ दुष्ट सताने से रहि जाते हैं और थके हुए चैन से हैं। बंधुए
एक साथ चैन करते हैं वे अंधेरों का शब्द नहीं सुनते।
१९ छोटे बड़े वहां हैं और दास अपने स्वामी से छूटा है॥
२० कष्टित को ज्योति और कड़वे प्राण को जीवन क्यों दिया
२१ जाता है। जो मृत्यु के लालसित हैं पर नहीं है और छिपे
२२ हुए धन से अधिक उस के लिये खोदते हैं। जब समाधि पा
२३ सक्ते हैं तो अत्यन्त मगन और आल्हादित होते हैं। उस मनुष्य
को क्यों ज्योति दिई गई जिस का मार्ग गुप्त है और जिसे ईश्वर
२४ ने घेर रक्खा है। क्योंकि भोजन के आगे मेरी ठंडी सांस

२५ आती है और मेरा बिलाप जल की नाईं बहता है। क्योंकि
जिस दुःख से मैं डरता था सोई मुझ पर आ पड़ा और जिस्से
२६ मैं हटता गया उसी ने मुझे आ ही लिया। मुझे कुशल न
था मैं चैन न रखता था और मुझे शांति न थी और दुःख
पहुंचा॥

चैाथा पर्ब्ब ।

१।२ तब तीमानी इलीफाज़ ने उत्तर देके कहा। यदि
कोई तुझ से एक बात परीक्षारीति पूछे तो क्या तू शोकित
होगा परन्तु बातें बोलने से कौन अपने को रोक सक्ता है।
३ देख तू ने बहुतों को सिखाया है और निर्बल हाथों को दृढ़
४ किया है। गिरते हुए को तेरे बचन ने उभारा है और तू ने
५ झुके घुठनों को दृढ़ किया है। पर अब तुझ पर पड़ा है और
६ तू मूर्छित होता है तुझे छूता है और तू घबराता है। क्या
ईश्वरीय भय तेरी आशा नहीं और तेरी चाल की खराई तेरा
७ भरोसा नहीं। चेत कर मैं तेरी बिनती करता हूं कि कौन
निर्दोष होके नाश हुआ है अथवा धर्म्मी कहां कट गये।
८ जैसा मैं ने देखा है जो बुराई जोत्ते और दुष्टता बोते हैं सोई
९ लवते हैं। ईश्वर के झोंके से वे नष्ट होंगे और उस के नथुनों
१० के श्वास से बिनाश होंगे। सिंह का गर्ज्जना और भयानक
सिंह का शब्द रुक जाता है और युवा सिंह के दांत टूट जाते
११ हैं। महा बलि सिंह अहेर बिना मरता है और सिंहनी के
बच्चे छिन्न भिन्न होते हैं॥

१२ एक बात चुपके से मुझ पास पहुंचाई गई और मेरे कानों
१३ ने उस की कुछ भनक पाई। रात के स्वप्नों के चिन्ताओं में
१४ जब मनुष्यों पर भारी नींद पड़ती है। तब डर और थर्थराहट
१५ मुझ पर ऐसी पड़ी कि मेरी सारी हड्डियों को कंपाया। तब

एक आत्मा मेरे आगे चला उस ने मेरे शरीर के रोंगटे खड़े
१६ कर दिये। वुह चुपचाप खड़ा रहा और मैं उस का डौल न
पहिचान सका एक रूप मेरी आंखों के आगे था निःशब्दता
१७ थी तब मैं ने एक शब्द सुना। क्या मनुष्य ईश्वर से अधिक
धर्म्मी ठहरेगा क्या मनुष्य अपने कर्त्ता के आगे पावन ठहरेगा।
१८ देख वुह अपने सेवकों पर भरोसा नहीं रखता और अपने दूतों
१९ को मूर्ख जानता है। तो कितना थोड़ा उन पर जो मिट्टी के
घर में रहते हैं जिन की नेंव धूल में है जो कीड़े के आगे
२० पिस जाते हैं। जो बिहान से सांझ लों चूर हो जाते हैं वे
सदा के लिये नष्ट हो जाते हैं और कोई बुझवैया नहीं।
२१ क्या उन की उत्तमता जो उन में है जाती नहीं रहती हां वे
निर्बुद्धि मरते हैं॥

पांचवां पर्व्व।

१ अब पुकार क्या वुह तुझे उत्तर देगा और साधुन में से तू
२ किस की ओर फिरेगा। क्योंकि कोप मूर्ख को नाश करता है
३ और डाह अनारी को क्षीण करता है। मैं ने मूर्ख को जड़
पकड़ते देखा परन्तु तत्काल मैं ने उस के घर को धिक्कारा।
४ उस के बालक चैन से परे हैं वे फाटक में कुचले हुए हैं और
५ उन का बचानेहार कोई नहीं। उस की खेती भूखा खा लेता
है और उसे कांटों में से चोंथ लेता है और बटमार उन की
६ संपत्ति लील जाता है। क्योंकि कष्ट धूल से नहीं उपजता
७ और दुःख भूमि से नहीं निकलता। कि मनुष्य दुःख के लिये
उत्पन्न हुआ है जैसा कि चिनगारियां ऊपर ऊपर उठती हैं॥
८ तौभी मैं सर्वशक्तिमान को खोजूंगा और अपना पद ईश्वर
९ ही को सौंपूंगा। वुह बड़े बड़े कार्य्य जो खोज से बाहर हैं
१० और अगणित आश्चर्य्य करता है। जो पृथिवी के ऊपर मेंह

११ बरसता है और चौगानों पर पानी पहुंचाता है। जिसतें दीनों
१२ को उभाड़े और बिलापी चैन में बढ़ाये जायें। वुह चतुरों की
जुगतों को निरास करता है यहां लों कि उन के हाथों से कुछ
१३ उद्यम बन नहीं पड़ता। वुह बुद्धिमानों को उन्हीं की चतुराई
में बझाता है और हठीलों के परामर्ष को उलट देता है।
१४ वे दिन को अंधियारे में जा पड़ते हैं और मध्यान्ह में रात
१५ की नाईं टटोलते फिरते हैं। परन्तु वुह कंगाल को तलवार
से और उन के मुंह से और बलवान के हाथ से बचाता है।
१६ सो निर्बल की आशा है और बुराई अपना मुंह मूंदती है॥
१७ देख क्या ही धन्य वुह मनुष्य जिसे ईश्वर ताड़ना करता है
१८ इस लिये सर्बशक्तिमान की ताड़ना को तुच्छ न जान। क्योंकि
वही चोटालता है और बांधता है घायल करता है और उसी
१९ के हाथ चंगा करते हैं। वुह छः दुखों से तुझे छुड़ावेगा हां
२० सात में तुझे बुराई न छुयेगी। वुह अकाल में तुझे मृत्यु से
२१ छुड़ावेगा और लड़ाई में तलवार की धार से। जीभ के कोड़े
से तू बचा रहेगा और जब नाश आवेगा तब तू उस्से न डरेगा।
२२ नाश और अकाल से तू हंसेगा और तू बनपशुन से न डरेगा।
२३ क्योंकि तू खेत के पत्थरों से बाचा बांधेगा और बनैले पशुन
२४ से तुझे मेल होगा। और तू जानेगा कि तेरा तंबू कुशल से
है और तू अपने निवास का ठिकाना करेगा और न चूकेगा।
२५ और तू जानेगा कि तेरा बंश बहुत होगा और तेरे संतान
२६ पृथिवी की घास की नाईं होंगे। तू पूरी आयुर्दाय में समाधि
में पहुंचेगा जैसे अन्न का पूला अपने समय में उठता है।
२७ देख हम ने इसे बूझा है और यों ही है इसे सुन और अपने
लिये जान ले॥

छठवां पर्ब्ब ।

१।२ तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा। हाय कि मेरा शोक
सर्बथा तौला जाता और मेरी बिपत्ति पलड़े में एक साथ
३ उठाई जाती। क्योंकि अब वुह समुद्र के बालू से भी अति
४ भारी है इस लिये मेरी बातें व्यर्थ हैं। क्योंकि सर्बशक्तिमान
के बाण मुझ में लगे हैं जिन का बिष मेरे प्राण को पीता
५ है ईश्वर के भय मेरे सन्मुख पांती बांधते हैं। क्या जंगली
गदहा घास पर रेंकता है अथवा बैल अपने पुआल पर
६ डकरता है। जो बस्तु फीकी है क्या वुह बिना लोन खाई
७ जाती है अथवा क्या अंडे के लासे में स्वाद है। जिन
बस्तुन के छूने से मेरा प्राण घिन करता है वेही मेरे शोक
के भोजन हैं॥

८ हाय कि मेरी बिन्ती पूरी होती और ईश्वर मेरी इच्छा पूरी
९ करता। जो मुझे बिनाश करने को ईश्वर की इच्छा होती जो
१० वुह अपने हाथ खोलके मुझे बिनाश करता। तो मैं थोड़ी
बहुत शांति पाता हां कठोर दुख में आनन्द से ललकारता
११ क्योंकि मैं ने धर्म्ममय की बातों को नहीं छिपा रक्खा। मेरा
क्या बल जो आशा रक्खूं और मेरा अन्त कब होगा कि
१२ धीर्य्यमान होऊं। क्या मेरा बल पत्थरों का बल है अथवा
१३ मेरा शरीर क्या पीतल का है। क्या मेरे लिये कुछ सहाय नहीं
और क्या छुटकारा मुझ्से दूर किया गया॥

१४ कष्टित पर उस के मित्र से दया चाहिये परन्तु वुह
१५ सर्बसामर्थी के डर को त्यागता है। मेरे भाइयों ने नाली की
नाईं मेरे संग छल से व्यवहार किया है तराई की नाली की
१६ नाईं वे चले जाते हैं। जो हिम के मारे गदली हो रही हैं
१७ और जिन में पाला छिपा है। थोड़े ही समय में वे घट जाते

ओर जाते रहते हैं ओर घाम में अपने स्थान से मिट जाते
१८ हैं। पथिक अपने पथ से फिर जाते हैं वे शून्यस्थान में जाते
१९ हैं ओर मिट जाते हैं। तीमा के पथिक देखते ओर शीबा के
२० यात्री उन के लिये बाट जोहते हैं। आशा रखने के मारे वे लज्जित
२१ हैं वे वहां पहुंचके घबरा जाते हैं। क्योंकि अब तुम कुछ
२२ नहीं हो तुम दुख को देखके डरते हो। क्या मैं ने कहा कि
मुझे कुछ देओ अथवा अपनी संपत्ति में से मुझे कुछ दान देओ।
२३ अथवा बैरी के हाथ से मुझे बचाओ अथवा बलवंतों के हाथ
से मुझे छुड़ाओ॥
२४ मुझे सिखाओ ओर मैं चुप रहूंगा किस बात में मैं ने चूक
२५ किई है सो मुझे समझाओ। सत्य बचन कैसे दृढ़ हैं परन्तु
२६ तुम्हारे दपट में क्या बिचार। क्या तुम दपट के लिये बचन
निकाला चाहते हो निरासों की बातें तो पवन के लिये हैं।
२७ हां तुम अनाथों पर फंदा डालते हो ओर अपने मित्र के लिये
२८ गड़हे खोदते हो। सो अब मान जाओ ओर मुझे देखो ओर
२९ यदि मैं झूठा हूं तो तुम्हारे आगे हूं। मैं बिनती करता हूं
कि फिर जाओ बुराई न होवे हां फिर जाओ इस बात में मेरा
३० धर्म्म है। क्या मेरी जीभ पर बुराई है ओर मेरा तालू हठीली
वस्तु नहीं बूझता॥

सातवां पर्व्व।

१ क्या पृथिवी पर मनुष्य के लिये कठिन सेवा नहीं ओर उस
२ के दिन बनिहार के दिनों के समान नहीं। जैसे सेवक छाया
के लिये हांफता है ओर बनिहार अपनी बनी की लालसा करता
३ है। तैसा मुझे बृथा मासों का अधिकारी बन्ने पड़ा ओर रातों
४ का कष्ट मेरे लिये ठहराया गया है। जब मैं लेटता हूं तब
कहता हूं कि मैं कब उठूंगा ओर रात कब बीतेगी ओर पो

५ फटने लों इधर उधर छटपटाने से थक जाता हूं। कीड़े और
धूल की बहुताई से मेरा शरीर ढंका हुआ है मेरा चाम फिर
६ आता और फिर फट जाता है। मेरे दिन जोलाहे की ढरकी
से भी अधिक बेगवान हैं और निरास से बीते जाते हैं।
७ स्मरण कर कि मेरा जीवन पवन है और मेरी आंखें भलाई
८ देखने को फिर न आवेंगी। जिस की आंख ने मुझे देखा है
९ मुझे फिर न देखेगी तेरी आंखें मुझ पर हैं और मैं नहीं हूं। जैसा
मेघ छूट गया और जाता रहा तैसा जो समाधि में उतरता
१० है सो ऊपर न आवेगा। वुह अपने घर में फिर न आवेगा
११ और उस का स्थान उसे फिर न जानेगा। मैं भी अपना मुंह
न रोकूंगा मैं अपने मन के कष्ट में कहूंगा मैं अपने प्राण की
कडुआहट में बोलूंगा॥

१२ क्या मैं समुद्र अथवा महा मच्छ हूं जो तू मुझ पर चौकी
१३ बैठाता है। जब मैं कहता हूं कि मेरा बिछौना मुझे बिश्राम
१४ देगा मेरी खाट मेरे बिलाप को शांति करेगी। तब तू स्वप्नों
से मुझे डराता है और दर्शनों से मुझे भय दिलाता है।
१५ यहां लों कि मेरा प्राण फांसी को हां मृत्यु को भी अपनी
१६ हड्डियों से अधिक चाहता है। मैं घुला जाता हूं मैं सदा
जीने नहीं चाहता मुझे छोड़ दे क्योंकि मेरे दिन बृथा हैं।
१७ मनुष्य क्या है जो तू उसे महिमा देवे और जो तू अपना मन
१८ उस पर लगावे। और जो तू हर बिहान उस की सुधि लेवे
१९ और पल पल उसे परखे। तू कब लों मुझ से आंख न फेरेगा
२० और मुझे रहने न देगा जब लों मैं अपना थूक लीलूं। मैं ने
पाप किया है हे मनुष्य के रक्षक मैं तेरे लिये क्या करूं तू ने
मुझे अपने बिरोध का चिन्ह क्यों बना रक्खा है यहां लों कि
२१ मैं अपने लिये बोझ हूं। और मेरे अपराध को तू क्यों नहीं
क्षमा करता और मेरी बुराई को क्यों नहीं दूर करता क्योंकि

अब मैं धूल पर सोऊंगा और तू बिहान को मुझे ढूंढ़ेगा परन्तु
मैं न हूंगा ॥

आठवां पर्व्व ।

१ । २ तब शूहीती बिलदाद ने उत्तर देके कहा । तू कब लों
३ ये बातें कहेगा और तेरे मुंह की बातें बड़ी आंधी हों । क्या
सर्व्वशक्तिमान बिचार को उलटेगा अथवा क्या सर्व्वसामर्थी सच्चाई
४ को लचावेगा । यदि तेरे बालकों ने उस के बिरुद्ध पाप किया
५ है और उस ने उन के अपराधों में उन्हें दूर किया है । यदि
तू समय में सर्व्वशक्तिमान को ढूंढ़ेगा और सर्व्वसामर्थी के आगे
६ प्रार्थना करेगा । यदि तू पवित्र और खरा होता तो निश्चय
अब तेरे कारण वुह उठेगा और तेरे धर्म्म के निवास को
७ भाग्यमान करेगा । यद्यपि तेरा आरंभ छोटा था तथापि तेरा
अन्त बहुत बढ़ जायेगा ॥
८ क्योंकि मैं बिनती करता हूं कि पिछले समय से बूझो और सिद्ध
९ होके उन के पितरों में खोजो। क्योंकि कल के होके हम कुछ नहीं
जानते क्योंकि हमारे दिन पृथिवी में छाया के तुल्य हैं ।
१० क्या वे तुझे न सिखावेंगे और तुझ से न कहेंगे और अपने मन
११ से बातें न उच्चारेंगे । क्या नल चहला बिना उग सक्ता है और
१२ हुगला पानी बिना बढ़ सक्ता है। वुह अब लों अपनी हरियाली हो
में है और काटा नहीं गया तौभी सब साग पातों से आगे
१३ सूख जाता है । जो ईश्वर को बिसराते हैं उन सभों की चाल
१४ ऐसी ही है और अधर्म्मी की आशा नष्ट हो जायगी । उन की
आशा काटी जायगी और मकड़ी का जाला सा उन का भरोसा
१५ है । वुह अपने घर पर ओठंगेगा परन्तु वुह न ठहरेगा वुह
१६ उसे पकड़ेगा परन्तु न थमेगा । वुह सूर्य्य के आगे हरा होता
१७ और उस की डालियां उस की बाटिका पर बढ़ती हैं । उस

को जड़ें ढेर की चारों ओर लिपटी हैं और वुह पथरैले स्थान
१८ को तकता है। जो वुह अपने स्थान से उखड़ जाय तो वुह
१९ उस्से मुकरेगा कि मैं ने तुझे नहीं देखा। देख उस की चाल
का आनन्द यह है और पृथिवी से दूसरे उगेंगे॥
२० देख सर्बशक्तिमान सिद्ध को न त्यागेगा और अधर्म्मी का
२१ हाथ न पकड़ेगा। जब लों तेरे मुंह को हंसी से न भरे और
२२ तेरे होठों को आनन्द के शब्द से। जो तुझ से बैर करते
हैं वे लाज से पहिराये जायेंगे और दुष्टों का निवास न रहेगा॥

नवां पर्ब्ब।

१।२ तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा। सचमुच मैं जानता
हूं कि योंही है और मनुष्य सर्बशक्तिमान के आगे क्योंकर
३ धर्म्मी ठहरेगा। यदि वुह उस्से बिवाद करने चाहे तो वुह
४ सहस्र में एक का उस को उत्तर न दे सकेगा। वुह मन में बुद्धिमान
और बल में बीर है कौन उस के बिरुद्ध कठोर होके भाग्यमान
५ हुआ है। वुह पर्बतों को टालता है और वे नहीं जानते वुह
६ अपने क्रोध से उन्हें उलट देता है। वुह पृथिवी को उस के
७ स्थान से हिलाता है और उस के खंभे थरथराते हैं। वुह
सूर्य्य को आज्ञा करता है और वुह उदय नहीं होता और वुह
८ तारों पर छाप करता है। वुह अकेला ही स्वर्गों को फैलाता
९ है और समुद्र की लहरों पर चलता है। वुह भल्लूक और
मृगासिर और कृत्तिका और दक्खिन के गुप्त स्थानों का
१० सिरजनहार है। जो बड़े बड़े कार्य्य जो खोज से बाहर हैं
११ और अगणित आश्चर्य्य करता है। देख वुह मेरे पास से जाता
है और मैं नहीं देखता वुह चला भी जाता है परन्तु वुह
१२ मुझे सूझ नहीं पड़ता। देख वुह छीन लेता है और कौन उसे
१३ रोक सक्ता है कौन उसे कहेगा कि तू क्या करता है। यदि

ईश्वर अपना क्रोध उठा न ले तो अहंकारी सहायक उस के
१४ नीचे दब जायेंगे। तो मैं कौन हूं जो उसे उत्तर दूं और बचन
१५ छांट छांटके उसे कहूं। यद्यपि मैं धर्म्मी होता तथापि उसे
१६ उत्तर न देता परन्तु अपने न्याई से बिनती करता। यदि मैं
पुकारता और वुह मुझे उत्तर देता तथापि मैं प्रतीति न करता
१७ कि उस ने मेरा शब्द सुना। वुह जो आंधी से मुझ पर आ
१८ पड़ता है और अकारथ मेरे घाओं को बढ़ाता है। वुह मुझे
सांस नहीं लेने देता परन्तु मुझे कडुआहट से पूर्ण करता है।
१९ यदि मैं बल के बिषय में कहूं तो देखो वुह बली है और
यदि न्याय की तो कौन मेरे लिये न्याय का समय ठहरावेगा।
२० यदि अपने को निर्दोष ठहराऊं तो मेरा मुंह मुझे दोषी
२१ ठहरावेगा यदि सिद्ध तो मुझे हठीला भी ठहरावेगा। यदि
मैं सिद्ध होता तौभी मैं अपने प्राण की सुधि न ले सक्ता मैं अपने
ही प्राण को तुच्छ समझता॥
२२ यह एक ही बात है इस लिये मैं ने कहा कि वुह सिद्ध
२३ को और दुष्ट को एक समान नाश करता है। यदि कोड़ा
अचानक मार डाले तो वुह निर्दोषों के दुख पर हंसता है।
२४ पृथिवी दुष्ट के हाथ में दिई गई है वुह उस के न्याइयों के
२५ मुंह को ढांपता है यदि ऐसा न हो तो वुह कौन है। पर मेरे
दिन डाकिये से भी शीघ्र जाते हैं वे भाग गये और उन्हों ने
२६ भलाई को नहीं देखा। उड़ाक नौका के समान और गिद्ध की
२७ नाईं जो अहेर पर टूटता है वे चले गये। यदि मैं कहूं कि
अपनी दोहाई को भूलूंगा अपने मुंह को बदल दूंगा और आप
२८ को मगन करूंगा। तौभी मैं अपने सारे दुखों से डरता हूं
२९ मैं जानता हूं कि तू मुझे निर्दोष न ठहरावेगा। मैं दुष्ट
३० ठहरूंगा तो फिर क्यों बृथा परिश्रम करता हूं। यदि मैं अपने
को पाले के जल से स्नान दूं और अपने हाथों को रेह से अति

३१ पावन करूं। तथापि तू मुझे गड़हे में बोर देगा और मेरे
३२ बस्त्र मुझ से घिन करेंगे। क्योंकि वुह मेरे समान मनुष्य
नहीं कि उसे उत्तर देऊं और हम आपुस में न्याय में एकट्ठे
३३ आवें। हमारे मध्य में कोई बिचवई नहीं जो अपना हाथ हम
३४ दोनों पर धरे। वुह अपना दंडा मुझ पर से दूर करे और
३५ उस का भय मुझे न डरावे। तब मैं कहूंगा और उस्से न
डरूंगा क्योंकि मैं अपने मन में ऐसा नहीं हूं॥

दसवां पर्ब्ब।

१ मेरे जीवन से मेरा प्राण थक गया मैं अपना बिलाप अपने ऊपर
२ रहने दूंगा मैं अपने प्राण की कड़ुआहट में बोलूंगा। मैं ईश्वर
से कहूंगा कि मुझ पर दोष मत ठहरा मुझे बता कि तू मुझ
३ से क्यों झगड़ता है। क्या तेरे लिये भला है कि तू सतावे और
कि अपने हाथ के कार्य्य को तुच्छ जाने और दुष्टों के परामर्ष पर
४ चमके। क्या तेरी आंखें शारीरिक हैं अथवा तू मनुष्य के समान
५ देखता है। क्या तेरे दिन मनुष्य के दिन की नाईं हैं और
६ क्या तेरे बरस मनुष्य के दिन के समान हैं। जो तू मेरी
७ बुराई को ढूंढ़ता है और मेरे पाप को खोजता है। यद्यपि
तू जानता कि मैं दुष्ट नहीं हूं और कोई तेरे हाथ से छुड़ा
नहीं सक्ता॥

८ तेरे हाथों ने मुझे बनाया और चारों ओर मेरा डौल किया
९ तथापि तू मुझे बिनाश करता है। मैं तेरी बिनती करता हूं
कि स्मरण कर तू ने मुझे मिट्टी के समान बनाया और फिर
१० क्या तू मुझे धूल में मिलावेगा। क्या तू मुझे दूध के
समान नहीं उंडेलेगा और दही की नाईं मुझे नहीं जमावेगा।
११ तू ने मुझे चाम और मांस से पहिनाया है और तू ने हाड़
१२ और नस से मुझे बिना है। तू ने जीवन और कृपा मुझे दिई

१३ है और तेरी सुधि ने मेरे प्राण की रक्षा किई है। और इन
बातों को तू ने अपने मन में छिपा रक्खा है मैं जानता हूं
कि यही तेरे मन में था॥
१४ यदि मैं पाप करूं तो तू मुझे चीन्ह रखता है और मेरी बुराई
१५ से तू मुझे न छोड़ेगा। यदि मैं दुष्ट होऊं तो मुझ पर सन्ताप
और यदि धर्म्मी तो अपना सिर न उठाऊंगा मैं घबराहट से
१६ भरा हूं सो तू मेरे दुख को देख। यदि वुह उठे तो सिंह
की नाईं तू मुझे अहेर करता है और मुझ पर फिर अपने को
१७ आश्चर्य्यित दिखाता है। मेरे विरोध तू अपनी साक्षी दुहराता
है और अपनी जलजलाहट मुझ पर बढ़ाता है अदल बदल
और संग्राम मेरे विरुद्ध हैं॥
१८ सो तू ने मुझे कोख से क्यों बाहर निकाला है हाय कि
मैं ने अपना प्राण त्यागा होता और कोई आंख मुझे न देखती।
१९ तो न होने के समान मैं हुआ होता और कोख में से समाधि
२० में पहुंचाया जाता। मेरे दिन क्या थोड़े नहीं थम जा और
२१ मुझे रहने दे जिसतें तनिक शांति पाऊं। उस्से पहिले कि मैं
जाऊं और फिर न आऊं अंधकार और मृत्यु की छाया के देश
२२ में। अंधकार के देश में मृत्यु की छाया के अंधकार के समान
जो बेडौल और जहां की ज्योति अंधकार के तुल्य है॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१।२ तब नामाती ज़ोफार ने उत्तर देके कहा। क्या वचन
की बहुताई का उत्तर दिया न जायगा क्या अति कथक निर्दोषी
३ ठहराया जायगा। क्या तेरी बकवाद मनुष्यों को चुप करेगी
४ ऐसा कि तू चिढ़ावे और कोई तुझे न लजवाये। और तू ने
कहा कि मेरा उपदेश शुद्ध है और तेरी दृष्टि में मैं पवित्र हूं।
५ परन्तु हाय कि ईश्वर बोलता और अपने होंठों को तेरे विरुद्ध

६ खोलता। और वुह तुझे गुप्त ज्ञान दिखाता क्योंकि उस की
बुद्धि जान्ने से परे है सो जान रख कि ईश्वर तेरी बहुत बुराइयों
को भुला देता है॥

७ क्या खोजके तू ईश्वर को पा सक्ता है क्या तू सर्बसामर्थी
८ की पूर्णता को पहुंच सक्ता है। वुह स्वर्ग से भी ऊंचा है तू
क्या कर सक्ता है पाताल से गहिरा है तू क्या जान सक्ता
९ है। उस का नाप पृथिवी से लंबा और समुद्र से चौड़ा है।
१० यदि वुह चढ़ आवे और पकड़ ले और न्याय के लिये एकट्ठा
११ करे तो कौन उसे रोक सक्ता है। क्योंकि वुह बुरे मनुष्यों को
१२ जानता है वुह दुष्टता भी देखता है पर वे न बूझेंगे। और
वृथा मनुष्य निर्बुद्धि है और मनुष्य जंगली गदहे के बच्चे के
समान जन्मता है॥

१३ जो तू अपने मन को सिद्ध करे और अपने हाथ उस की
१४ ओर फैलावे। जो तेरे हाथ में बुराई हो तो उसे दूर कर
१५ और दुष्टता को अपने डेरे में रहने मत दे। तब तू अपना
मुंह निष्कलंक उठावेगा हां तू दृढ़ होगा और न डरेगा।
१६ क्योंकि तू अपने कष्ट को भूल जायगा और उसे ऐसा जानेगा जैसे
१७ पानी जो बह जाता है। तेरी वय ठीक दोपहर दिन से भी
अधिक ज्योतिमान होगी और यद्यपि तू अब अंधेरे में है तद्यपि
१८ शीघ्र बिहान के समान हो जायगा। और तू बचा रहेगा क्योंकि
आशा है अभी तू भरमता है आगे को चैन में बिस्राम
१९ करेगा। और तू लेट जायगा और कोई न डरावेगा हां बहुत
२० से तेरी बिनती करेंगे। परन्तु दुष्टों की आंखें धुंधली हो
जायेंगी और उन का शरणस्थान उन से जाता रहा और उन
की आशा प्राण के निकलने के स्वास के समान होगी॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ । २ तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा । निःसंदेह तुम्हीं लोग
३ हो और बुद्धि तुम्हारे साथ मरेगी । परन्तु तुम सरीखा
में भी ज्ञान रखता हूं कुछ तुम से घाट नहीं हूं ऐसी
४ बातें कौन नहीं जानता । मैं परोसी से चिढ़ाया जाता हूं जो
ईश्वर को पुकारता है और वुह उसे उत्तर देगा सज्जन और
५ खरा पुरुष ठट्ठे में उड़ाया जाता है । जिस के पांव फिसलने
के लिये सिद्ध हैं वुह उस दीपक के समान है जो सुचित्तों की
समझ में निन्दित है ॥

६ बटमारों के डेरे भाग्यमान होते हैं और सर्वशक्तिमान
के खिजवैये निर्भय हैं उन के हाथ में ईश्वर पहुंचाता है ।
७ परन्तु अब तू पशुन से पूछ और वे तुझे सिखावेंगे और आकाश
८ के पक्षियों से और वे तुझे बतावेंगे । अथवा पृथिवी से कह
और वुह तुझे सिखावेगी और समुद्र की मछलियां तुझे बतावेंगी ।
९ इन सभों में कौन नहीं जानता कि परमेश्वर के हाथ ने यह
१० सब किया है । जिस के हाथ में सब जीवधारियों का प्राण
और मनुष्यों के सारे शरीर का स्वास है ॥

११ क्या कान बातों को नहीं जांचता और तालू भोजन नहीं
१२ चीखता । बूढ़ों में बुद्धि है और पुरनियों में समझ ।
१३ बुद्धि और बल उस के साथ हैं वुह मंत्र और समझ रखता है ।
१४ देख वुह घर ढा देता है और फिर बनाया न जायेगा वुह मनुष्य
१५ को बन्द करता है और वुह खोला न जायेगा । देख वुह पानियों
को रोक लेता है और वे सूख जाते हैं वुह फिर उन्हें भेजता
१६ है और वे धरती को उलट पुलट कर देते हैं । बल और
बुद्धि उस के साथ हैं छल खाया हुआ और छली उस के हाथ
१७ में है । वुह मंत्रियों को बंधुआई में ले जाता है और न्याइयों

१८ को बोड़हा करता है। वुह राजाओं की आज्ञा को भंग कर
१९ देता है और रस्सी से उन की कटि बांधता है। वुह याजकों
को बंधुआई में ले जाता है और बलियों को उलट देता है।
२० वुह बिश्वस्तों के होंठों को बंद कर देता है और प्राचीनों की
२१ समझ को ले लेता है। वुह अध्यक्षों पर निन्दा डालता है
२२ और बलवंतों का पटुका खोलता है। अंधियारे में से वुह
गहिरी बातें प्रगट करता है और मृत्यु की छाया को उंजियाले में
२३ लाता है। वुह जातिगणों को बढ़ाता है और उन्हें नाश
करता है वुह जातिगणों को फैलाता है और उन्हें फेर लाता
२४ है। वुह पृथिवी के जातिगणों के श्रेष्ठ लोगों का मन ले लेता है
२५ और बिना मार्ग जंगल में उन्हें भ्रमाता है। वे बिन उंजियाले
अंधियारे में टटोलते हैं और वुह उन्हें मतवाले के समान
झुमाता है॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ देख मेरी आंखों ने यह सब देखा है और मेरे कानों ने
२ सुना और उसे बूझा है। जो कुछ तुम जानते हो सो मैं भी
जानता हूं मैं तुम से घाट नहीं हूं॥
३ हाय कि मैं सर्ब्बसामर्थी से बोल सक्ता और ईश्वर से बिवाद
४ किया चाहता हूं। परन्तु तुम झूठ के बनानेहारे और झूठ
५ मूठ के बैद्य हो। हाय कि तुम सर्ब्बथा चुप हो रहते तो
वही तुम्हारी बुद्धि होती॥
६ अब मेरा बिचार सुनो और मेरे होंठों के प्रत्युत्तर पर कान
७ धरो। क्या तुम ईश्वर के लिये मिथ्या कहोगे और क्या उस के
८ लिये छल से बोलोगे। क्या तुम उस का पक्ष करोगे क्या ईश्वर
९ के लिये झगड़ोगे। क्या यह भला है कि वुह तुम्हें जांचे
अथवा जैसा कि एक मनुष्य दूसरे को धोखा देता है तुम उसे

१० धोखा दोगे । यदि तुम गुप्त में पक्ष करो तो निश्चय वुह
११ तुम्हें दपटेगा । क्या उस की महिमा तुम्हें न डरावेगी और
१२ उस का भय तुम पर न पड़ेगा । तुम्हारे स्मरण की बातें
राख के समान हैं और तुम्हारे गढ़ मिट्टी के गढ़ हैं ॥
१३ चुप हो रहो मुझे अकेला छोड़ो कि मैं बोलूं और मुझ पर
१४ जो हो सो हो । किस लिये मैं अपने मांस को अपने दांतों से
१५ काटूं और अपना प्राण अपने हाथ में लेऊं । देख वुह मुझे
घात करे तौभी मैं उस पर भरोसा रक्खूंगा परन्तु उस के आगे
१६ मैं अपनी चाल को स्थिर करूंगा । मेरी मुक्ति भी वही है
१७ क्योंकि कपटी उस के आगे न पहुंचेगा । मेरा बचन ध्यान से
१८ सुनो और मेरे वर्णन पर कान धरो । अब देखो मैं ने अपना
पद सिद्ध किया है मैं जानता हूं कि मैं निर्दोष ठहरूंगा ।
१९ कौन है जो मुझ से बिवाद कर सकेगा क्योंकि मैं अब चुप
रहूंगा और मर ही जाऊंगा ॥
२० केवल दो बात तू मुझ से मत कर तब मैं आप को तुझ
२१ से न छिपाऊंगा । अपना हाथ मुझ से परे खींच ले और अपने
२२ भय से मुझे मत डरा । तब पुकार और मैं उत्तर देऊंगा
२३ अथवा मैं कहूंगा और तू उत्तर दे । मेरी बुराई और पाप
२४ कितने हैं मेरा अपराध और पाप मुझे बता । किस लिये तू अपना
२५ मुंह छिपावेगा और मुझे अपना बैरी समझेगा । क्या तू उड़ाये
२६ हुए पत्ते को तोड़ेगा और तू सूखी खूंथी को खेदेगा । क्योंकि
तू मेरे बिरुद्ध कड़ुई कड़ुई बातें लिखता है और मुझे तरुणाई
२७ की बुराई का पलटा देता है । और मेरे पांव को तू काठ में
डालता है और मेरी सारी चालों को ताकता रहता है और
२८ मेरे पांव के तलवे पर तू चिन्ह रखता है । और वुह सड़ी
हुई वस्तु के समान कीड़े खाये बस्त्र की नाईं नष्ट हो
जायेगा ॥

चौदहवां पर्ब्ब ।

१ मनुष्य जो स्त्री से उत्पन्न हुआ थोड़े दिन का और दुख
२ से भरा हुआ है। वुह फूल की नाईं उगता है और काटा
जाता है और छाया की नाईं जाता रहता और नहीं ठहरता।
३ क्या तू निश्चय ऐसे पर अपनी आंखें खोलता है और मुझे अपने संग
४ बिचार में लाता है। कौन अपवित्र से पवित्र निकाल सक्ता है
५ कोई नहीं। यद्यपि उस के दिन ठहराये गये उस के मासों
की गिनती तेरे पास है तद्यपि तू ने उस के सिवाने ठहराये
६ हैं और वुह उन से पार नहीं जा सक्ता। उस्से अपनी दृष्टि
फेर जिसतें वुह बिश्राम करे जब लों वुह बनिहार के समान
अपने दिन से मगन हो॥
७ क्योंकि पेड़ के लिये आशा है यदि वुह काटा जाय तो
८ वुह फिर फूटेगा और उस की कोंपलें निकलेंगी। यद्यपि उस
की जड़ भूमि में पुरानी होवे और उस की खूथी मट्टी में सूख
९ जाय। तथापि पानी के बास से पनपेगा और पौधे के समान
१० डालें उगावेगा। परन्तु मनुष्य मरता है और मिट जाता है
हां मनुष्य का प्राण निकल जाता है और वुह कहां है॥
११ समुद्र से पानी घट जाते हैं और नद्दी हटके सूख जाती
१२ है। और मनुष्य लेट जाता है और न उठेगा जब लों कि
स्वर्ग टल न जायें वे न उठेंगे और अपनी नींद से न चौंकेंगे॥
१३ हाय कि तू मुझे समाधि में छिपा लेवे और जब लों तेरा
क्रोध जाता न रहे मुझे गुप्त रक्खे और मेरे लिये समय ठहराके
१४ मुझे स्मरण करे। यदि मनुष्य मरे तो क्या वुह फिर जीयेगा
मैं अपनी सेवकाई के सारे दिनों से बाट जोहूंगा जब लों मेरा
पलटा न आवे॥
१५ तू पुकारेगा और मैं तुझे उत्तर देऊंगा तू अपने हाथ के

१६ कार्य्य पर इच्छा रक्खेगा। क्योंकि तू अब मेरे डग डग को
१७ गिनता है क्या तू मेरे पाप को नहीं देखा करता। मेरा
अपराध थैली में छाप किया गया है और तू मेरी बुराई को
बढ़ाता जाता है॥

१८ निश्चय पर्बत गिरके नष्ट होता है और पत्थर अपने स्थान
१९ से सरकाया गया है। पानी पत्थरों को घिस डालते हैं और बाढ़ें
पृथिवी की धूल को बहा ले जाती हैं और तू मनुष्य की आशा
२० को नष्ट करता है। तू उस के बिरुद्ध नित्य प्रबल होता है
और वुह जाता रहता है तू उस के रूप को पलटता है और
२१ उसे भेज देता है। उस के बेटे प्रतिष्ठा पाते हैं और वुह
नहीं जानता और वे घटाये जाते हैं परन्तु वुह नहीं देखता।
२२ केवल उस की देह अपने लिये पीड़ा में रहेगी और उस का
प्राण अपने लिये बिलाप करेगा॥

पन्दरहवां पर्व्व ।

१।२ तब इलीफाज़ तीमानी ने उत्तर देके कहा। क्या बुद्धिमान
बृथा ज्ञान उच्चारेगा और अपने पेट को पुर्वी पवन से भरेगा।
३ क्या वुह निष्फल वार्त्ता से बिचारेगा अथवा ऐसे बचन से जिसे
४ वुह भला न कर सके। हां तू डर को व्यर्थ करता है और
५ ईश्वर के आगे प्रार्थना रोकता है। क्योंकि तेरा मुंह तेरी बुराई
६ उच्चारता है और धूर्त्त की जीभ तुझे भाती है। तेरा ही
मुंह तुझ पर दोष लगाता है और मैं नहीं हां तेरे होंठ तुझ
पर साक्षी देते हैं॥

७ क्या पहिला पुरुष तूही उत्पन्न हुआ अथवा तू पर्बतों से
८ आगे बना था। क्या तू ईश्वर के भेद को सुनेगा और क्या तू
९ अपने ही पास बुद्धि ले रक्खेगा। तू क्या जानता है जो हम
१० नहीं जानते तुझ में कौन समझ है जो हम्में नहीं। पक्के बाल के

और बड़े पुरनिये हमारे साथ हैं जो तेरे पिता से भी बहुत
११ बूढ़े हैं। क्या सर्बशक्तिमान की शांति तेरे लिये छोटी है और
वुह बचन जो कोमलता के साथ तुझ से कहा गया है॥
१२ तेरा मन तुझे क्यों खींच ले जाता है तेरी आंखें क्यों पलक
१३ मारती हैं। जो तू अपना प्राण सर्बशक्तिमान के बिरुद्ध फेरता
१४ है और बातें अपने मुंह से निकालता है। मनुष्य क्या जो
१५ वुह पवित्र होवे और जो स्त्री से जन्मा वुह धर्मी होवे। देख
वुह अपने साधुन पर भरोसा नहीं करता और उस की दृष्टि में
१६ स्वर्ग भी पवित्र नहीं हैं। तो कितना अधिक घिनित और मलीन
मनुष्य है जो बुराई को पानी की नाईं पीता है॥
१७ मैं तुझे बताऊंगा मेरी सुन और जो मैं ने देखा है सोई
१८ बताऊंगा। जो बुद्धिमान वर्णन करते और अपने पितरों से
१९ पाके नहीं छिपाते। केवल उन्हों को पृथिवी दिई गई थी और
२० उन के मध्य में कोई उपरी न गया था। दुष्ट जन जीवन भर
पीड़ा में रहता है और अंधेरी पर बरस की गिनती छिपी है।
२१ उस के कान में डरों का शब्द है भाग्यमानी में नाशक उस
२२ पर आ पड़ेगा। वुह प्रतीति नहीं करता कि मैं अंधियारे से
फिर आऊंगा परन्तु तलवार से उस की बाट जोही जाती है।
२३ वुह रोटी के लिये भ्रमता है कि कहां है वुह जानता है कि
२४ अंधियारे का दिन उस के हाथ पर लैस है। दुख और
क्लेश उसे डरावेंगे जैसा कि राजा संग्राम के लिये लैस होता
२५ है तैसा वे उस पर प्रबल होंगे। क्योंकि वुह सर्बशक्तिमान के
बिरुद्ध अपना हाथ बढ़ाता है और सर्बसामर्थी के बिरुद्ध आप
२६ को बलवंत करता है। वुह अकड़ता हुआ अपनी ढाल की
२७ घनी फुलियों के संग उस पर दौड़ता है। इस कारण कि वुह
अपनी मोटाई से अपना मुंह ढांपता है और अपने पांजर पर
२८ चिकनाई जमाई है। और वुह उजाड़ नगरों में और उस घर

में जिस में कोई नहीं रहता जो खंड़हर होने पर है बसेगा ।
२९ वुह धनी न होगा और उस की संपत्ति न ठहरेगी और उस
३० का अधिकार पृथिवी पर न फैलेगा । वुह अंधियारे से निकल
न जायगा लवर उस की डालियों को सुखा देगी और वुह अपने
मुंह के श्वास से जाता रहेगा ॥
३१ जो छल खाया हुआ है सो बृथा का भरोसा न करे क्योंकि
३२ बृथा उस का प्रतिफल होगा । वुह अपने समय से आगे कट
३३ जायगा और उस की डाली हरी न रहेगी । लता की नाईं वुह
अपने कच्चे दाख झाड़ेगा और जलपाई की नाईं अपना फूल
३४ गिरावेगा । क्योंकि कपटियों की मंडली उजड़ जायगी और
३५ अकोर के डेरे आग से भस्म हो जायेंगे । उन्हें दुष्टता का गर्भ
है और बुराई जनते हैं और उन के पेट छल सिद्ध करते हैं ॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

१ । २ तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा । कि मैं ने ऐसी ऐसी बहुत सी
३ बातें सुनी हैं तुम सब खिजाऊ शांतिदायक हो । क्या बृथा
वचन का अंत न होगा अथवा उत्तर देने को तुझे किस से
४ साहस होता है । मैं भी तुम सरीखा बात कर सक्ता हूं जो
तुम्हारा प्राण मेरे प्राण की संती होता तो मैं तुम्हारे बिरुद्ध
५ बातों का ढेर कर सक्ता और तुम पर सिर धुनता । परन्तु मैं
अपने मुंह से तुम्हें बल देता और मेरे होंठ की शांति तुम्हें
ढाड़स देती ॥
६ यद्यपि मैं कहता हूं तद्यपि मेरा शोक नहीं घटता और
७ जो चुप रहूं तो क्या वुह मुझ से जाता रहेगा । परन्तु अब
केवल उस ने मुझे थकाया है तू ने मेरी सारी जथा को उजाड़ा
८ है । और तू ने मुझे दृढ़ता से पकड़ लिया है और यह मुझ
पर साक्षी है और मेरी दुर्बलता उठके मेरे मुंह पर साक्षी देती

९ है। उस का कोप मुझे फाड़ता है और वुह मुझ से बैर रखता है
वुह अपने दांत मुझ पर किचकिचाता है मेरा बैरी मुझ पर
१० आंखें चढ़ाता है। वे अपना मुंह मुझ पर पसारते हैं वे निन्दा
से मेरे गाल पर थपेड़ा मारते हैं वे मेरे विरुद्ध एकट्ठे हुए हैं॥
११ सर्वशक्तिमान मुझे अधर्म्मियों के हाथ बन्द करता है और
१२ दुष्टों के हाथ में सौंपता है। मैं चैन से था परन्तु उस ने मुझे
फाड़ा और मेरा गला पकड़ा और झकोरके मुझे टुकड़ा टुकड़ा
१३ किया है और मुझे अपना चिन्ह खड़ा कर रक्खा है। उस के
धनुषधारी मुझे घेरते हैं वुह मेरे गुर्दे को बेधता है और
१४ नहीं छोड़ता और भूमि पर मेरा पित्त उंडेलता है। वुह दरार
पर दरार से मुझे तोड़ता है वुह महाबली के समान मुझ पर
१५ दौड़ता है। मैं ने अपने चाम पर टाट वस्त्र सीया है और
१६ अपने सींग को धूल में अपवित्र किया है। बिलाप करते करते
मेरा मुंह लाल हो गया और मृत्यु की छाया मेरी भौंहों
१७ पर है। यद्यपि मेरे हाथ में अधर्म्म नहीं है और मेरी प्रार्थना
भी पवित्र है॥
१८ हे पृथिवी मेरा लोहू मत ढांप और मेरा चिल्लाना कहीं
१९ ठिकाना न पावे। अब भी देख मेरा साक्षी स्वर्ग पर है और
२० मेरा प्रमाण ऊंचे स्थानों पर। मेरे मित्र मेरे निन्दक हैं परन्तु
२१ मेरी आंखें ईश्वर के आगे बहती हैं। हाय कि कोई मनुष्य के
लिये ईश्वर से ऐसा बिवाद करता जैसा मनुष्य अपने मित्र के
२२ लिये करता है। क्योंकि जब गिनती के बरस आवेंगे तब मैं
उस मार्ग से जाऊंगा जहां से फिर न आऊंगा॥

सत्तरहवां पर्व्व।

१ मेरा प्राण घट गया मेरे दिन हो चुके मेरे लिये समाधि
सिद्ध हैं॥

२ क्या मेरे पास निन्दक नहीं और मेरी आंखें उन के खिजाव
३ पर नहीं बस्तीं। सो अब आ गहने रख दे और मुझ में और
आप में बिचवई दे वुह कौन है जो मुझ से हाथ मारेगा।
४ क्योंकि तू ने उन के मन के ज्ञान से छिपाया है इस लिये तू
५ उन्हें न बढ़ावेगा। जो अपने मित्रों को दुष्टों के हाथ में
पकड़वाता है उस के बालकों की आंखें धुंधली हो जायेंगी॥
६ और उस ने मुझे लोगों की कहावत बनाया है और मैं
७ उन के आगे घिनित हो गया। और मेरी आंखें शोक के मारे
८ धुंधला गई मेरे अंग अंग छाया के समान हैं। खरे जन इस्से
आश्चर्य्यित होंगे और निर्दोष आप को कपटी के बिरुद्ध
९ उभारेगा। धर्म्मी भी अपने मार्ग को धरे रहेगा और जो
१० पवित्र हाथ रखते हैं सो बल में बढ़ते जायेंगे। परन्तु तुम
सब जो हो अब फिरो और आओ क्योंकि मैं तुम्हारे मध्य में
एक भी बुद्धिमान नहीं पाता॥
११ मेरे दिन बीत गये हैं मेरी युक्ति अर्थात् मेरे मन का
१२ अधिकार जाता रहा। वे रात को दिन से पलटते हैं उंजियाला
१३ अंधियारे के निकट है। जो मैं ठहरूं तो समाधि मेरा घर
१४ हो मैं ने अपना बिछौना अंधियारे में बनाया है। मैं ने
गढ़हे को अपना पिता करके पुकारा कीड़े को अपनी माता
१५ और बहिन। परन्तु अब मेरी आशा कहां और मेरी आशा को
१६ कौन देखेगा कि पूरी हुई। वे मेरे साथ पाताल के अड़ंगों में
उतरेंगी हां हम एक संग धूल में उतरेंगे॥

अठारहवां पर्व्व ।

१।२ तब शुहीती बिलदाद ने उत्तर देके कहा। कि अब
तुम बातों का अंत कब लों करोगे सोचो और पीछे हम कहेंगे।
३ हम किस लिये पशुन के समान गिने जाते हैं और तुम्हारी

४ दृष्टि में अपवित्र जाने जाते हैं। तू जो अपने क्रोध में अपने प्राण
को फाड़ता है तेरे लिये क्या पृथिवी त्यागी जायगी और क्या
चटान अपने स्थान से सरकाई जायगी॥

५ हां दुष्ट की ज्योति बुत जायगी और उस की आग की
६ चिनगारी न चमकेगी। उंजियाला उस के तंबू में अंधियारा
हो जायगा और उस का दिआ उस के साथ बुत जायगा।
७ उस के डग जो वुह बल के साथ रखता है घट जायेंगे और
८ उसी का बिचार उसे गिरावेगा। क्योंकि वुह अपने ही पांव से
९ जाल में पड़ गया है और वुह फंदे पर चलता है। फंदा उस
१० की एड़ी को पकड़ेगा और जाल उस पर प्रबल होगा। उस के
लिये जाल भूमि पर छिपे हैं और उस के लिये मार्ग में एक
११ फंदा। चारों ओर से भय उसे डराता है और उस का पीछा
१२ करके उस के पांव को डिगाता है। उस का बल भूख से
१३ घटा जाता है और नाश उस के पास लैस है। वुह उस के
शरीर के अंगों को भखता है हां मृत्यु का पहिलौठा उस के
१४ अंगों को खाता है। उस का भरोसा उस के तंबू से उखाड़ा
जायगा और भय राजा के समान उस का पीछा करता है।
१५ भय उस के तंबू में बसेगा कि वुह उस का न हो गंधक उस के
१६ निवास पर बरसाई जायगी। नीचे से उस की जड़ सूख
१७ जायगी और ऊपर उस की डाल काटी जायगी। उस का
स्मरण पृथिवी से नाश हो जायगा और मार्ग में उस का नाम
१८ न रहेगा। वे उसे उंजियाले से अंधियारे में खेदेंगे और जगत
१९ से खदेड़ा जायगा। वुह अपने लोगों में न बेटा न भतीजा
२० रक्खेगा और न उस के निवासों में कोई रहेगा। जो पीछे
आवेंगे सो उस के दिन से आश्चर्य्यित होंगे और जो उस के
२१ आगे हैं वे डर को पकड़ेंगे। निश्चय दुष्टों के निवास यही हैं
और जो सर्वशक्तिमान को नहीं जानता उस का ठिकाना यही है॥

उन्नीसवां पर्व्व ।

१ । २ फिर ऐयूब ने उत्तर देके कहा । तुम कब लों मेरे प्राण
३ को खिजाओगे और बातों से मुझे टुकड़े टुकड़े करोगे । तुम
लोग अभी दस बार मेरी निन्दा कर चुके और लजाते नहीं
४ कि मुझे हक्का बक्का करते हो । और माना कि मैं ने चूक
५ किई हो तो मेरी चूक मेरे ही पास है । यदि निश्चय तुम
मेरे विरुद्ध आप को बढ़ाओगे और मेरी निन्दा मेरे विरुद्ध
६ करोगे । तो जान रक्खो कि ईश्वर ने मुझे दबा दिया है और
७ अपने जाल से मुझे घेरा है । देखो मैं बरबस्ती से चिल्लाता
हूं परन्तु सुना नहीं जाता मैं शब्द उठाता हूं पर कोई नहीं
८ विचारता । उस ने मेरे मार्ग को घेरा है कि मैं बाहर नहीं
जा सक्ता और उस ने मेरे पथों को अंधियारा किया है ।
९ मेरे विभव को उस ने उतार दिया है और मेरे सिर से मुकुट
१० ले लिया । चारों ओर से उस ने मुझे नाश किया है और मैं
जाता रहा और पेड़ के समान उस ने मेरे भरोसे को उखाड़ा
११ है । और उस ने अपना कोप मुझ पर भड़काया है और अपने
१२ बैरियों में मुझे गिनता है । उस की जथों ने एकट्ठी आके मेरे
विरुद्ध अपने मार्ग सिद्ध किये हैं और मेरे डेरे की चारों ओर
१३ छावनी करती हैं । उस ने मेरे भाई बन्दों को मुझ से दूर
किया है और मेरे जान पहिचान निश्चय मुझ से अलग हुए
१४ हैं । मेरे कुटुम्ब घट गये हैं और मेरे समीपी मित्र मुझे भूल
१५ गये हैं । मेरे घर के दास और मेरी दासियां मुझे उपरी गिनती
१६ हैं उन की दृष्टि में मैं उपरी हूं । मैं ने अपने दास को बुलाया
और उस ने उत्तर न दिया मैं ने अपने मुंह से उस की बिनती
१७ किई । मेरा प्राण मेरी पत्नी के आगे घिनौना हो गया और
१८ मेरी बिन्तियां मेरे भाइयों के आगे । हां बालकों ने भी मेरी

१९ निन्दा किई मैं उठा और उन्हों ने मेरे बिरुद्ध कहा। मेरे सारे
परमहितों ने मुझ से घिन किया और जिन्हें मैं प्यार करता था मेरे
२० बिरुद्ध फिर गये। मेरी हड्डी मेरे चाम और मेरे मांस से लगी है
२१ और मैं अपने दांतों के चाम से बच निकला हूं। हे मेरे
मित्रो मुझ पर दया करो मुझ पर दया करो क्योंकि ईश्वर का हाथ
२२ मुझ पर पड़ा है। सर्बशक्तिमान के समान क्यों तुम मुझे सताते
हो और मेरे मांस से क्यों नहीं संतुष्ट होते हो॥
२३ हाय कि मेरे बचन अब लिखे जाते हाय कि वे पुस्तक में
२४ छापे जाते। कि वे लोहे की लेखनी और रांगे से सदा के
२५ लिये चटान पर खोदे जाते। क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरा
मुक्तिदायक जीता है और अंत में वुह पृथिवी पर खड़ा होगा।
२६ यदि मेरे चाम के पीछे यह नाश हो जाय तथापि मैं अपने
२७ शरीर से ईश्वर को देखूंगा। जिसे मैं अपने लिये देखूंगा और मेरी
आंखें देखेंगी और उपरी नहीं ये मेरे लंक मुझ में नाश हो गये॥
२८ क्योंकि तुम तो कहते हो कि हम क्योंकर उसे सतावें और
२९ बात का तत्व उस में पायें। अपने लिये तलवार से डरो
क्योंकि कोप तलवार से दण्ड पाता है जिसतें तुम जानो कि
न्याय है॥

बीसवां पर्ब्ब।

१। २ तब नामाती ज़ोफ़ार ने उत्तर देके कहा। कि इस लिये
मेरी चिन्तायें मुझ से उत्तर दिलाती हैं और इस लिये कि
३ शीघ्रता मुझ में है। मैं ने अपनी निन्दा का रोक सुना है
और मेरी समझ का आत्मा मुझ से उत्तर दिलाता है॥
४ क्या तू आगे से यह नहीं जानता है जब से पृथिवी पर
५ मनुष्य रक्खा गया। कि दुष्टों का जय जय करना थोड़े लों
६ है और कपटी का आनन्द पलमात्र। यद्यपि उस की ऊंचाई

७ स्वर्ग लों पहुंचे और उस का सिर मेघ से जा लगे। तथापि
वुह अपने बिष्ठा की नाईं सदा लों नाश हो जायगा जिन्हों ने
८ उसे देखा है सो कहेंगे कि वुह कहां है। वुह स्वप्न के समान
उड़ जायगा और पाया न जायगा हां रात के दर्शन के समान
९ वुह खेदा जायगा। जिस आंख ने उस पर दृष्टि किई थी वुह
फिर उसे न देखेगी और उस का स्थान उसे फिर न देखेगा।
१० उस के सन्तान कंगालों की प्रसन्नता ढूंढेंगे और उन के हाथ
११ उस की संपत्ति फेर देंगे। उस की हड्डियां उस की तरुणाई से
भरी हैं पर वुह धूल में उस के साथ लेट जायेंगी।
१२ यद्यपि दुष्टता उस के मुंह में मीठी लगे और वुह उसे
१३ अपनी जीभ के तले छिपावे। यद्यपि वुह उसे बचावे और न
१४ छोड़े परन्तु अपने तालू के मध्य में रक्खे। तथापि उस का
भोजन उस के आंद्र में पलट के नाग के बिष के समान हुआ
१५ है। वुह धन को लील गया है परन्तु वुह उसे फिर उगलेगा
सर्वशक्तिमान उस के आंद्र से उसे निकालेगा॥
१६ वुह नाग का बिष चूसेगा और काले सांप की जीभ उसे
१७ नाश करेगी। वुह नदियों और मधु और दूध की बहती
१८ नालियों और धाराओं को न देखेगा। जिन वस्तुन के लिये
उस ने परिश्रम किया है वुह उन्हें फेर देगा और उन्हें न
लीलेगा उस की संपत्ति के समान पलटा होगा और वुह आनन्दित
१९ न होगा। क्योंकि उस ने कंगालों को सताया और उन्हें त्यागा और
जिस घर को उस ने नहीं बनाया उसे बरबस्ती से ले लिया।
२० क्योंकि उस ने अपने आंद्र में चैन न पाया और जिस की उस
२१ ने इच्छा किई उस में से वुह कुछ रख न छोड़ेगा। उस के
भोजन से कुछ न रहा इस लिये उस की संपत्ति न ठहरेगी।
२२ अपनी भरपूरी की संतुष्टता में वुह सकेती में पड़ेगा दुष्ट का
हर एक हाथ उस पर पड़ेगा॥

२३ अपना पेट भरते भरते ईश्वर अपने कोप का झोंका उस पर
२४ डालेगा और भोजन के समय उस पर बरसावेगा। वुह लोहे
के हथियार से भागेगा परन्तु खेड़ी का धनुष उसे बेधेगा।
२५ वुह खींचा गया है और देह में से निकलता है हां जगमगाता
२६ खड्ग उस के पित्त से निकलता है भय उस पर पड़े हैं। उस
के भण्डारों में हर प्रकार की विपत्ति है बिन बरी आग उसे
नाश करेगी उस के तंबू में जो छूटा है उस के लिये बुराई
२७ होगी। स्वर्ग उस की बुराई प्रगट करेगा और पृथिवी उस के
२८ बिरुद्ध उठेगी। उस के घर की बढ़ती जाती रहेगी उस
२९ के कोप के दिन में बहि जायगी। ईश्वर की ओर से दुष्टों का
भाग यही है और अधिकार जो सर्बशक्तिमान की ओर से उस
के लिये ठहराया गया यही है॥

एक्कीसवां पर्ब्ब।

१।२ परन्तु ऐयूब ने उत्तर देके कहा। मेरी कथा ध्यान से
३ सुनो और यही तुम्हारी शांति होवे। मुझे कहने देओ और
४ मेरे कहने के पीछे चिढ़ाओ। मैं जो हूं क्या मेरी दोहाई मनुष्य
५ से है और यदि होती तो मेरा प्राण क्यों न घटता। मुझे
देखो और अचंभित होओ और हाथ मुंह पर धरो॥
६ और यदि मैं स्मरण करता हूं तो डरता हूं और थर्थराहट
७ मेरे शरीर को पकड़ती है। किस लिये दुष्ट जीते हैं और
८ पुरनियां होते हैं हां बल में सामर्थी हो जाते हैं। उन के
संतान उन की दृष्टि के आगे उन के साथ और उन के संतान
९ उन की आंखों के आगे स्थिर हैं। भय से उन के घर निर्भय
१० और कुशल में हैं और ईश्वर का दण्ड उन पर नहीं है। उन
के सांड़ बहते हैं और नहीं घटते उन की गाय बियाती है
११ और गाभ नहीं गिराती। वे झुंड की नाईं अपने बालकों को

१२ बाहर ले जाते हैं और उन के बालक नाचते हैं। वे तबला
और बीणा बजाते हैं और बांसुरी के शब्द से आनन्दित होते
१३ हैं। वे सुख बिलास से अपने दिन काटते हैं और पलमात्र में
१४ पाताल में पड़ते हैं। इस लिये वे सर्वशक्तिमान से कहते हैं
कि हम से दूर हो क्योंकि हम तेरे मार्गों का ज्ञान नहीं चाहते
१५ हैं। सर्वशक्तिमान क्या कि हम उस की सेवा करें और जो हम
उस की प्रार्थना करें तो हमें क्या लाभ होगा॥

१६ देखो उन की भलाई उन के हाथ में नहीं है दुष्टों का
१७ परामर्श मुझ से दूर है। दुष्टों का दीपक बहुधा बुत जाता
है और उन का नाश उन पर आता है ईश्वर अपने कोप से
१८ दुख बांटता है। वे उस पुआल के समान हैं जो पवन के
आगे हो और भूसे के नाईं जिसे आंधी उड़ा ले जाती
१९ है। ईश्वर उस की बुराई उस के संतानों के लिये रख छोड़ता
२० है वुह उसे पलटा दे जिसतें उसे उस का निश्चय हो। उस
की आंखें उस का नाश देखें और वुह सर्वशक्तिमान के कोप
२१ को पीये। क्योंकि उस के पीछे उस को अपने घर से क्या आनन्द
होगा जब कि उस के मास की गिनती कट जाय॥

२२ क्या कोई ईश्वर को ज्ञान सिखावेगा जो महत्तों का न्याय
२३ करता है। एक अपने बल की भरपूरी में सर्वथा चैन और
२४ सुख में मरता है। उस की कोखें चिकनाई से भरपूर हैं और
२५ गूदा से उस की हड्डियां चिकनी हैं। दूसरा अपने प्राण की
२६ कड़ुआहट में मरता है और सुख से कधी नहीं खाता। वे एक
ही समान धूल में पड़े रहेंगे और कीड़े उन्हें ढांपेंगे॥

२७ देखो मैं तुम्हारी चिंतों को जानता हूं और उन जुगतों को
२८ जिन से तुम मुझ पर अंधेर करते हो। क्योंकि तुम कहते
हो अध्यक्ष का घर कहां है और दुष्टों के तंबू के निवास कहां
२९ हैं। तुम ने क्या पथिकों से नहीं पूछा है और क्या उन के

३० पते नहीं जानते हो। कि नाश के दिन के लिये दुष्ट धरा है
३१ वे कोपों के दिन में ले लिये जायेंगे। उस के मुंह पर कौन
उस की चाल को बर्णन करेगा और उस के किये हुए का पलटा
३२ कौन उसे देगा। वही समाधों में पहुंचाया जायगा और ढेर में
३३ अगोरेगा। तराई के ढेले उस के लिये मीठे होंगे और वुह हर
३४ एक जन को अपने पीछे खींचेगा जैसा अगिनित के आगे थे। सो
तुम लोग क्यों मुझे बृथा शांति देते हो और तुम्हारे उत्तरों में
अपराध धरा है॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१।२ तब तीमानी ईलीफ़ाज ने उत्तर देके कहा। क्या मनुष्य
से सर्बशक्तिमान को लाभ पहुंच सक्ता है जिस रीति से कि
३ बुद्धिमान अपनी बुद्धि से लाभ प्राप्त करता है। क्या तेरे धर्म्मी
होने से सर्बशक्तिमान को आनन्द है अथवा तेरे मार्ग सिद्ध करने
४ में उसे लाभ है। क्या वुह तेरे डर के मारे तुझे दपटेगा और
५ क्या वुह तेरे संग बिचार में जायगा। क्या तेरी दुष्टता बड़ी नहीं
६ और तेरी बुराई अत्यन्त नहीं। क्योंकि तू अकारण अपने भाई से
धरोहर मांग लेता है और नंगे के वस्त्र को उतार लेता है।
७ तू थके को जल नहीं पिलाता और न भूखे को भोजन देता है।
८ और जिस को बल है उस की भूमि है और महान उस में
९ बसता है। तू ने रांडों को छूछे हाथ फेर दिया है और अनाथों
१० की भुजा तोड़ी गई। इस लिये तेरी चारों ओर जाल हैं और
११ अचानक भय तुझे सताता है। अथवा अंधियारा जिस के कारण
से तू देख नहीं सक्ता अथवा पानी की बाढ़ तुझे छिपा लेगी॥
१२ क्या ईश्वर स्वर्ग की ऊंचाई पर नहीं और तारों के सिरों को
१३ देख कि वे कैसे ऊंचे हैं। और तू कहता है कि सर्बशक्तिमान
१४ क्या जानता है क्या वुह काली घटा में से न्याय करेगा। गाढ़े

मेघ उस के लिये ढपना हैं कि वुह न देखेगा वुह स्वर्ग के
१५ मंडल पर चलता है। क्या तू उस पुराने मार्ग को थांभ रक्खेगा
१६ जिस में दुष्ट जन चले हैं। जो असमय में कट गये बाढ़ उन
१७ की नेव पर बहाई गई। जो सर्वशक्तिमान से कहते थे कि हमारे पास
१८ से हट जा और सर्वसामर्थी हमारा क्या कर सक्ता है। तथापि
उस ने अच्छी वस्तु से उन के घर को भर दिया और दुष्टों का
१९ परामर्श मुझ से दूर हो। धर्म्मी उन का अंत देखते और
आनन्दित होते हैं और निर्दोष मनुष्य उन पर हंसते हैं।
२० निश्चय हमारा बैरी काटा गया और उन के बचे हुए को आग
ने भस्म किया है॥

२१ अब उस्से परिचित हो तो तेरा कुशल होगा उस्से तेरा भला
२२ होगा। उस के मुंह से व्यवस्था ले और उस के बचन अपने
२३ मन में धर रख। जो तू सर्वशक्तिमान की ओर फिरेगा तो बन
२४ जायगा तू अपने डेरों से बुराई दूर करेगा। और भूमि पर सोना
२५ फेंक दे और ओफीर का सोना नालों के पत्थरों में। तब
सर्वशक्तिमान तेरा सोना होगा और तेरे लिये चांदी के भण्डार।
२६ क्योंकि तब तू सर्वशक्तिमान में आनन्द पावेगा और ईश्वर के
२७ आगे अपना मुंह उठावेगा। तू उस की प्रार्थना करेगा और वुह
२८ तेरी सुनेगा और तू अपनी मनौतियों को पूरा करेगा। जो बात
कि तू ठहरावेगा वुह तेरे लिये बन पड़ेगी और तेरे मार्गों पर
२९ उंजियाला होगा। जब लोग गिरा दिये जायेंगे तब तू कहेगा
३० कि महानता है और वुह दीन जन को बचा लेगा। वुह उसे
जो निर्दोषी नहीं है बचावेगा और वुह तेरे हाथों की पवित्रता
से बच जायगा॥

तेईसवां पर्व्व।

१। २ तब ऐयूब ने उत्तर देके कहा। आज भी मेरा बिलाप

३ कड़ुआ है मेरी पीड़ा मेरे कुढ़ने से अधिक भारी है। हाय कि
मैं जानता कि मैं उसे कहां पाऊं जिसतें मैं उस के आसन लों
४ जाता। मैं उस के आगे अपना बिचार धरता और प्रमाणों से
५ अपना मुंह भरता। जो कुछ वुह मुझे उत्तर देता मैं उसे जान
६ लेता और जो कुछ मुझ से कहता उसे समझ लेता। क्या वुह
अपने बड़े पराक्रम से मेरे साथ बिवाद करेगा नहीं परन्तु वुह
७ मुझ पर दृष्टि करेगा। वहां धर्म्मी उस्से बिवाद करता और यों
८ मैं सदा अपने न्यायी से बचता। देख मैं आगे जाता हूं परन्तु
९ वुह नहीं और पीछे परन्तु उसे देख नहीं सक्ता। बाईं ओर
जहां वुह कार्य्य करता है परन्तु मैं उसे देख नहीं सक्ता वुह
आप को दहिनी ओर ऐसा छिपाता है कि मुझे सूझ नहीं पड़ता।
१० क्योंकि वुह मेरे मार्ग को जानता है जब वुह मुझे परखे तब
११ मैं सोने की नाईं निकलूंगा। मेरे पांव ने उस के डग को धरा है
१२ मैं ने उस के पथ को धारण किया है और न मुड़ा। मैं उस
के होठों की आज्ञा से न हटा मैं ने उस के मुंह के बचन को
आवश्यक भोजन से अधिक धर रक्खा है॥

१३ परन्तु वुह एक समान है और उसे कौन फेर सक्ता है और
१४ जो उस का जी चाहता है सो वुह करता है। क्योंकि जो मेरे
लिये ठहराया गया वुह उसे पूरा करता है और ऐसी बहुत सी
१५ बातें उस के पास हैं। इस लिये मैं उस के साक्षात से व्याकुल
१६ हूं और मैं जब सोचता हूं तो उस्से डरता हूं। और सर्वशक्तिमान
मेरे मन को कोमल करता है और सर्बसामर्थी मुझे व्याकुल करता
१७ है। इस कारण कि मैं अंधियारे के आने से आगे नहीं काटा गया
और उस ने मेरे मुंह से अंधियारे को नहीं छिपाया॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ दण्ड के समय सर्बशक्तिमान की ओर से क्यों छिपे नहीं हैं

और जो उसे जानते हैं सो उस के दिनों को क्यों नहीं देखते
२ हैं। वे मेंड़ों को सरकाते हैं वे बरबस्ती से झुंडों को ले जाते
३ और चराते हैं। वे अनाथों के गदहे को हांक लेते हैं वे
४ बंधक में रांड़ का बैल लेते हैं। वे दरिद्रों को मार्ग से फेरते
हैं और पृथिवी के कंगाल सब के सब अपने को छिपाते हैं।
५ देख जैसे अरण्य में जंगली गदहे वे अपने अपने कार्य्य को
निकलते हैं अहेर के लिये तड़के उठते हैं बन उन के और
६ उन के संतानों के लिये आहार देता है। वे खेत में अपना
७ अपना अन्न लवते हैं और दुष्ट के दाख बटोरते हैं। वे रात
को बिन बस्त्र नग्न टिकते हैं और जाड़े में उन के ओढ़ना नहीं।
८ वे पर्बत की झड़ी से भीगते हैं और आड़ के लिये पत्थर में
लिपटते हैं॥

९ वे अनाथों को छाती से छीनते हैं और कंगालों के बस्त्र
१० बंधक रखते हैं। वे बिन बस्त्र नग्न फिरते हैं और भूखे होके
११ पूला उठा लाते हैं। वे अपने आंगनों में तेल पेरते हैं और
१२ अपने दाख के कोल्हू लताड़ते हैं और प्यासे रहते हैं। नगर
में से मरते हुए कहरते हैं और घायलों का प्राण दोहाई देता
है और ईश्वर उन की प्रार्थना पर दृष्टि नहीं करता॥

१३ कितने उन में हैं जो उंजियाले से बैर रखते हैं उस के
पथ को नहीं पहिचानते और न उस के पथों पर ठहरते हैं।
१४ घातक भोर को उठता है और कंगाल और निर्धन को घात
१५ करता है और रात को चोर की नाईं है। और छिनले की आंखें
गोधूली की बाट जोहती हैं वुह कहता है कि किसी की आंख
१६ मुझ पर न पड़ेगी और अपना रूप छिपाता है। अंधियारे में
वे घरों में सेंध मारते हैं और दिन को अपने तईं छिपाते हैं
१७ वे उंजियाला नहीं जानते। क्योंकि बिहान उन के लिये मृत्यु
की छाया है क्योंकि वे मृत्यु की छाया के भय को पहिचानते

१८ हैं। वे पानियों के ऊपर शीघ्र चलते हैं पृथिवी पर उन का
भाग स्रापित है वे दाखों की वारी की ओर नहीं फिरते ॥
१९ जैसे झुराहट और घाम पाला जल को भक्षन करते हैं वैसा
२० ही पाताल पापियों को। कोख उसे भूल जायगी कीड़े आनन्द
से उसे खायेंगे वुह फेर स्मरण न किया जायगा और दुष्टता
पेड़ की नाईं तोड़ी जायगी ॥
२१ वुह बांझ को जो नहीं जनती है सताता है और रांड़ की
२२ भलाई नहीं करता। वुह बलवानों को भी अपने पराक्रम से
खींचता है वुह उठता है और किसी को जीवन की आशा नहीं
२३ रहती। ईश्वर उन्हें चैन के लिये देता है और वे भरोसा करते
२४ हैं और उस की आंखें उन के मार्गों पर लगी हैं। वे ढाये
जाते हैं और थोड़ी वेर में हैं ही नहीं वे उतारे जाते हैं और
सभों की नाईं बटोरे जाते हैं और अन्न की पक्की बालों के समान
२५ काटे जाते हैं। और यदि अब न हो तो कौन मुझे झुठावेगा
और मेरा बचन व्यर्थ करेगा ॥

पचीसवां पर्ब्ब।

१।२ तब शुहीती बिलदाद ने उत्तर देके कहा। कि प्रभुता
और डर उस के साथ हैं वुह अपने ऊंचे स्थानों में कुशल रखता
३ है। क्या उस की सेनाओं की कुछ गिनती है और उस की
४ ज्योति किस पर नहीं चमकती। फेर मनुष्य क्योंकर सर्वशक्तिमान
के आगे निर्दोष ठहर सक्ता है अथवा जो स्त्री से उत्पन्न हुआ
५ सो क्योंकर पवित्र हो सक्ता है। देख चंद्रमा भी उस के आगे
नहीं चमकता और हां तारे उस की दृष्टि में पवित्र नहीं हैं।
६ फेर कितना थोड़ा मनुष्य जो कीड़ा है और मनुष्य का पुत्र जो
कीड़ा ही है ॥

छब्बीसवां पर्व्व ।

१ । २　परन्तु ऐयूब ने उत्तर देके कहा । कि तू ने क्योंकर निर्बल
का उपकार किया तू ने क्योंकर निर्बल भुजा को बचाया है ।
३ निर्बुद्धि को तू ने किस रीति से मंच दिया है और बुद्धि बिस्तार
४ से वर्णन किई है । किस के लिये तू ने वचन उच्चारा है और
किस की आत्मा तुझ से निकली है ॥
५　उस के साम्ने मृतक नीचे से कांपते हैं पानी और उस के
६ निवासी भी । पाताल उस के आगे उघारा है और बिनाश का
७ ढपना नहीं है । वुह उत्तर को शून्य के ऊपर फैलाता है और
८ नास्ति के ऊपर पृथिवी को टांगता है । वुह अपने घने मेघों
में जल को बांधता है और उन के नीचे मेघ नहीं फटता है ।
९ वुह अपने सिंहासन का मुंह छिपाता है और अपना मेघ उस
१० पर फैलाता है । उस ने जलों को सिवाने से घेरा है जहां लों
११ कि उंजियाला अंधियारे से मिल जाता है । स्वर्ग के खंभे कांपते
१२ हैं और उस की दपट से आश्चर्य्यित हैं । वुह अपने पराक्रम
से समुद्र को धमकाता है और अपनी समझ से उस के अहंकार
१३ को मारता है । उस ने अपने आत्मा से स्वर्गों को सुन्दर किया
१४ उस के हाथ ने शीघ्र चलवैये सर्प को बनाया । देखो यही उस
के मार्गों के सिवाने हैं परन्तु उसी के बिषय में कैसा थोड़ा
सुना जाता है पर उस के सामर्थ्य की गर्जन को कौन समझ
सक्ता है ॥

सत्ताईसवां पर्व्व ।

१ । २　तब ऐयूब ने अपना दृष्टान्त बढ़ाया और कहा । कि
जीवते सर्वशक्तिमान की सोंह जिस ने मेरा बिचार ले लिया और
३ सर्वसामर्थी कि जिस ने मेरे प्राण को शोकित किया । जब

लों मेरा स्वास मुझ में है और परमेश्वर का आत्मा मेरे नथुनों
४ में। तब लों मेरे होंठ दुष्टता न कहेंगे और मेरी जीभ छल
५ न उच्चारेगी। ईश्वर न करे कि मैं तुम्हें निर्दोष ठहराऊं मैं
६ मरने लों अपनी खराई को न छोड़ूंगा। मैं अपना धर्म्म दृढ़ता
से धरता हूं और उसे जाने न देऊंगा मेरा प्राण मेरे बीते हुए
७ दिनों के बिषय मुझे दोषी नहीं ठहराता है। मेरा बैरी दुष्ट की
नाईं होय और जो मेरे बिरोध में उठता है सो अधर्म्मी के
समान॥

८ क्योंकि कपटी की क्या आशा है जब ईश्वर उसे काट डाले
९ और उस का प्राण ले ले। क्या सर्वशक्तिमान उस का रोना
१० सुनेगा जब उस पर दुख पड़ेगा। क्या वुह सर्बसामर्थी से
आनन्दित होगा और क्या वुह सदा ईश्वर की प्रार्थना करेगा॥

११ सर्वशक्तिमान की सामर्थ्य में तुम्हें सिखाऊंगा जो सर्बसामर्थी के
१२ पास है मैं न छिपाऊंगा। लो तुम सभों ने यह देखा है तो
१३ क्यों यह सर्वथा ब्यर्थ बातें बोलते हो। सर्वशक्तिमान से दुष्ट मनुष्य
का यह भाग है और अंधेरियों का अधिकार जो वे सर्बसामर्थी से
१४ पावेंगे। यदि उस के संतान बढ़ जायें तो तलवार के लिये हैं
१५ और उस के लड़के बाले रोटी से तृप्त न होंगे। उन के बचे
हुए लोग मृत्यु से गाड़े जायेंगे और उन की रांड़ें बिलाप न
१६ करेंगी। यद्यपि वुह चांदी को धूल की नाईं ढेर करे और मिट्टी
१७ की नाईं बस्त्र सिद्ध करे। वुह सिद्ध करे परन्तु धर्म्मी उसे
१८ पहिनेगा और निर्दोषी चांदी बांट लेगा। वुह कीट के समान
अपना घर बनाता है और उस कुरिया की नाईं जो रखवाल ने
१९ बनाई। धनमान लेट जाता है पर गाड़ा नहीं जाता अपनी
२० आंखें खोलता है और वुह है ही नहीं। भय जल के समान
उसे पकड़ते हैं और रात को आंधी उसे चुरा ले जाती है।
२१ पुरवा पवन उसे उड़ा ले जाती है और वुह चला जाता है वुह

२२ आंधी की नाईं उसे उस के स्थान से उड़ाती है। क्योंकि ईश्वर उस
पर अपने तीर चलायेगा और दया न करेगा वुह उस के हाथ से
२३ भागा चाहता है। लोग उस पर तालियां बजावेंगे और उस के
स्थान में से उसे सीसकारेंगे॥

अट्ठाईसवां पर्ब्ब।

१ निश्चय चांदी के लिये खान और सोने के लिये स्थान है
२ जहां निर्मल करते हैं। लोहा भूमि से निकाला जाता है और
३ पत्थर तांबा बनाने के लिये गलाया जाता है। मनुष्य अंधियारे
का अंत ठहराता है और अंधियारे और मृत्यु के छाया के
४ पत्थर के लिये सारी नीचाइयों की खोज करता है। जहां
मनुष्य रहते हैं वहां से वुह सोता खोल देता है पांव से बिना
५ सहारा वे डोलते हैं और मनुष्यों से अलग झूलते हैं। पृथिवी
जिस्से भोजन की उत्पत्ति है अपने नीचे से मानो आग की नाईं
६ उलटाई जाती है। उस के पत्थर नीलमणि के स्थान हैं और
७ उस में सोने की धूल है। उस के मार्ग को कोई पंछी नहीं
८ जानता और गिद्ध की आंखों ने उसे नहीं देखा। भयानक
बनैले पशु ने उसे नहीं लताड़ा और न सिंह उस पर से गया।
९ मनुष्य अपना हाथ चटान पर धरता है और पहाड़ों को जड़
१० से उलटता है। चटानों में से वुह नद्दियां निकालता है और
११ उस की आंखें हर एक बहुमूल्य बस्तु को देखती हैं। वुह
झरनों को रसने से रोकता है और छिपी हुई बस्तु को उंजियाले
में लाता है॥

१२ परन्तु बुद्धि कहां पाई जायगी और समझ का स्थान कहां
१३ है। मनुष्य उस का मोल नहीं जानता और जीवतों के देश में
१४ वुह नहीं पाई जाती। गहिराव कहता है कि वुह मुझ में नहीं
१५ है और समुद्र कहता है कि मेरे साथ नहीं है। चोखा सोना

उस के लिये दिया नहीं जा सक्ता और उस के मोल के लिये
१६ चांदी तोलो नहीं जाती। ओफीर के सोने को उस्से क्या बरोबरी
१७ है बहुमूल्य बैदूर्य्य अथवा नीलमणि को। सोना और सफटिक
उस के तुल्य नहीं हो सक्ते और चोखे सोने के गहिने भी उस
१८ का पलटा नहीं हो सक्ते। मूंगे और बिल्लोर का क्या बखान
१९ क्योंकि बुद्धि का मोल मोतियों से अधिक है। कूश का पोखराज
उस के तुल्य नहीं और न चोखा सोना उस के मोल का है॥
२० फिर बुद्धि कहां से आती है और समझ का स्थान कहां है।
२१ वुह तो सारे जीवतों की आंखों से गुप्त है और आकाश के पंछियों
२२ से छिपी है। बिनाश और मृत्यु कहती हैं कि हम ने अपने
कानों से उस की कीर्त्ति सुनी है॥
२३ ईश्वर उस का पथ समझता है और वही उस का स्थान जानता
२४ है। क्योंकि वही पृथिवी के सिवाने लों देखता है सारे स्वर्ग के तले
२५ देखता है। जिसतें पवनों का तौले और पानियों को नपुए में
२६ नापे। जब उस ने मेंह के लिये आज्ञा ठहराई और कड़कनेहारी
२७ बिजली के लिये मार्ग। तब उस ने उसे देखा और उस का
बर्णन किया उस ने उसे सिद्ध किया और उस ने उसे ढूंढ़
२८ निकाला। और मनुष्य से उस ने कहा कि देख ईश्वर का भय
सोई बुद्धि है और बुराई छोड़ना वही समझ है॥

उंतीसवां पर्ब्ब।

१। २ फिर ऐयूब ने अपना दृष्टान्त बढ़ाके कहा। हाय कि मैं
पिछले मासों के समान होता उन दिनों की नाईं जब ईश्वर ने
३ मेरी रक्षा किई थी। जब उस का दीपक मेरे सिर पर चमकता
४ था और उस की ज्योति से मैं अंधियारे में चलता था। जैसा
मैं अपनी तरुणाई के दिनों में था जब कि ईश्वर की संगति मेरे
५ तंबू में थी। जब सर्वसामर्थी मेरे साथ था मेरे संतान मेरी

६ चारों ओर । जब कि मैं अपने डगों को दूध से धोता था और
चटान मेरे लिये तेल की नदियां बहती थी ॥
७ जब कि मैं नगर में होके फाटक पर जाता था और चौक
८ में अपना आसन रखता था । तरुण मुझे देखके आप को छिपाते
९ थे और बृद्ध उठ खड़े होते थे । अध्यक्ष बोलने से रुक जाते
१० थे और अपना हाथ मुंह पर धरते थे। कुलीन चुप होते थे और
११ उन की जीभ उन के मुंह के तालू में लग जाती थी । जब
कान सुनता था तब मुझे बर देता था और जब आंखें देखती
१२ थीं तब मेरे लिये साक्षी देती थीं । क्योंकि मैं ने कंगाल
को जो दोहाई देता था और अनाथ को और उसे जिस का कोई
१३ उपकारी न था बचाया । उस की आशीष जो नाश होने पर था
मुझ पर पड़ी और मैं बिधवा के मन के आनन्द के गान का
१४ कारण हुआ । मैं ने धर्म्म को पहिना और उस ने मुझे ढांपा
१५ मेरा बिचार बागा और मुकुट की नाईं था । मैं अंधे के
१६ लिये आंख था और लंगड़े के लिये पांव । मैं कंगालों के
लिये पिता था और उस का व्यवहार जिस को मैं जानता न
१७ था खोज लेता था । और मैं ने दुष्ट की डाढ़ें तोड़ीं और उस के
१८ दांतों से लूट छीनी । तब मैं ने कहा कि मैं अपने बसेरे में
मरूंगा और मैं अपने जीवन के दिन बालू की नाईं बढ़ाऊंगा ।
१९ मेरी जड़ पानियों के लग फैली है और मेरी डालियों पर रात
२० भर ओस रहेगी । मेरा तेज मुझ में नवीन होगा और मेरा
धनुष मेरे हाथ में बल बढ़ायेगा ॥
२१ लोग मेरी ओर कान धरते थे और बाट जोहते थे और
२२ मेरे मंच के लिये चुप हो रहते थे। मेरे बचन के पीछे फिर न
२३ बोलते थे और मेरा बचन उन पर टपकता था । और वे मेंह की
नाईं मेरी बाट जोहते थे और वे अपना मुंह ऐसा पसारते थे जैसा
२४ कोई पिछले मेंह के लिये मुंह पसारता है । जब मैं उन के

साथ हंसता था तो वे प्रतीति न करते थे और मेरे मुंह की
२५ लाली न उतारते थे। जब मैं ने उन का मार्ग चुना तब
अध्यक्ष के समान उन के मध्य में बैठा और उस राजा के समान
जो सेना में है और उस मनुष्य के समान जो बिलापियों को
शांति देता है रहता था॥

तीसवां पर्व्व।

१ परन्तु अब वे जो मुझ से थोड़े दिन के हैं मेरी निन्दा
करते हैं जिन के पितरों को मैं अपने झुंड के कूकरों के साथ
२ बैठाना तुच्छ जानता था। हां उन के हाथों के बल से मुझे
३ क्या लाभ जिन पर से समाप्त करने की शक्ति बीत गई। क्योंकि
कंगालपन और भूख से वे लीन हैं जो शून्य स्थानों की रात में
४ उजाड़ को काट खाते हैं। जो झाड़ी के लग लोनियां तोड़ते
५ हैं और रतम की जड़ उन का भोजन है। वे मनुष्यों में से
खेदे जाते हैं और चोर की नाईं उन के पीछे पीछे पुकारते हैं।
६ वे भयानक तराइयों और पृथिवी के गड़हों और चटानों में
७ रहते हैं। वे झाड़ियों में रेंकते हैं भटकटैया के नीचे एकट्ठे होते
८ हैं। वे मूढ़ों के संतान हां नामहीन के संतान हैं वे देश से निकाले
९ जाते हैं। पर अब मैं उन का गान हूं और मैं उन की कथनी
१० हो गया। वे मुझ से घिनाते हैं वे मुझ से परे खड़े रहते हैं
११ और मेरे मुंह पर थूकने से अलग नहीं रहते। क्योंकि वे अपनी
बाग छोड़ देते और मुझे दुख देते हैं और मेरे आगे से बागडोरी
१२ फेंक देते हैं। मेरी दहिनी ओर नीच लोग उठते हैं और मेरे
पांव को ठेल देते हैं और अपने नाश के मार्गों को मेरे बिरुद्ध
१३ बनाते हैं। वे मेरे पथ को बिगाड़ते मेरी बिपत्ति की सहाय
१४ करते हैं वे जिन का कोई उपकारी नहीं। वे मानो चौड़े दरार
में से मुझ पर आते हैं वे बन में मुझ पर पलट पड़ते हैं।

१५ भय मुझ पर उलट पड़े हैं और पवन की नाईं मेरी भाग्यमानी
का पीछा करते हैं और मेघ के समान मेरा कुशल क्षेम जाता रहा ॥
१६ और अब मेरा प्राण आप को बहाता है कष्ट के दिनों ने
१७ मुझे धर रक्खा है। रात मेरी हड्डियों को बेधती और मेरे पास
से खींच लेती है और मेरे काट खानेहारे चैन नहीं लेते।
१८ मेरे रोग की बहुताई के कारण मेरा वस्त्र अपने को पलट देता
१९ है मेरे कुरते के गले की नाईं मुझे जकड़ता है। उस ने मुझे
चहले में डाल दिया है और मैं धूल और राख की नाईं बना
२० हूं। मैं तेरी दोहाई देता हूं और तू नहीं सुनता मैं तेरे आगे
२१ खड़ा होता हूं और तू मेरी सुधि नहीं लेता। तू मेरे लिये क्रूर
२२ हो गया अपने हाथ के बल से मुझ से बैर रखता है। तू मुझे
पवन पर उठाता और चढ़ाता है और मुझे पिघलाता और डराता
२३ है। क्योंकि मैं जानता हूं कि तू मुझे मृत्यु में और उस सभा
२४ के घर में जो सारे जीवतों के लिये है पहुंचावेगा। निश्चय
प्रार्थना से कुछ लाभ नहीं जब वुह अपना हाथ बढ़ाता है और
जब वुह विनाश करता है तब दोहाई से उन को कुछ लाभ
२५ नहीं। क्या मैं ने दुखियों के लिये बिलाप न किया और क्या मेरे
२६ प्राण ने कंगाल के लिये दुख न सहा। क्योंकि मैं ने भलाई के
लिये बाट जोही और बुराई आई मैं ने उंजियाले की बाट जोही
और अंधियारा आया ॥
२७ मेरी अंतड़ियां उबलती हैं और थमती नहीं कष्ट के दिन
२८ मुझ पर आ पड़े। मैं स्यामबरण हो गया पर धूप से नहीं
२९ मैं खड़ा हुआ और मण्डली में दोहाई देता हूं। मैं गीदड़ों का
३० भाई और शुतरमुर्ग़ का संगी हो गया। मेरा चाम काला हो
गया और मुझ पर खिंचता है और मेरी हड्डियां घाम से जल
३१ गईं। और मेरी बीणा बिलाप से पलट गई और मेरी बांसुरी
बिलापियों के शब्द से ॥

एकतीसवां पर्ब्ब ।

१ मैं ने अपनी आंखें से बाचा बांधी फिर क्योंकर मैं कन्या
२ पर दृष्टि करूं । पर ऊपर से ईश्वर की ओर से मेरा क्या भाग
३ है और ऊंचाई से सर्बशक्तिमान से मेरा क्या अधिकार है । क्या
दुष्टों के लिये नाश और कुकर्मियों के लिये महा बिपत्ति नहीं
४ है । क्या वुह मेरी चालों को नहीं देखता और मेरे सारे डगों
५ को नहीं गिनता है । जो मैं कपट की चाल चला हूं अथवा
६ जो मेरा पग छल की ओर बेग पड़ा हो । तो वुह मुझे न्याय
७ की तुला में तौले और ईश्वर मेरी खराई को जाने । जो मेरा
डग पथ से फिरा हो और मेरा मन मेरी आंखें के पीछे गया
८ हो और जो मेरे हाथों में कोई पय लगी हो । तो मैं बोऊं और
९ दूसरा खाय और मेरी खेती उखाड़के फेंक दिई जाय । यदि
मेरे मन ने किसी स्त्री से छल खाया हो अथवा अपने परोसी
१० के द्वार में बाट जोही हो । तो मेरी पत्नी दूसरे के लिये चक्की
११ पीसे और दूसरे उस पर झुकें । क्योंकि यह महा पाप है हां
१२ यह एक बुराई है जो न्याइयों के दण्ड के योग्य है । क्योंकि
यह एक आग है जो बिनाश लों भस्म करेगी और मेरी सारी
बढ़ती को उखाड़ डालेगी ॥

१३ जो मैं ने अपने दास अथवा दासी के पद की जब वे मुझ
१४ से झगड़ते थे निन्दा किई हो । तो मैं क्या करूंगा जब सर्बशक्तिमान
उठेगा और जब वुह पूछेगा तब मैं उसे क्या उत्तर देऊंगा ।
१५ क्या जिस ने मुझे कोख में सृजा उसे नहीं सृजा और एक ही
ने कोख में हमारा डौल नहीं किया ॥

१६ जो मैं ने कंगालों को उन की इच्छा से रोका हो अथवा
१७ बिधवा की आंखें को धुंधला कर दिया हो । अथवा अपना कौर
आप ही खा लिया हो और अनाथ ने उस्से न खाया हो ।

१८ क्योंकि मेरी लड़काई से वुह मेरे साथ ऐसा पला जैसा पिता के
साथ और मैं ने अपनी माता के गर्भ ही में से बिधवा की
१९ अगुआई किई । यदि मैं ने किसी को बिना बस्त्र नष्ट होते
२० अथवा किसी कंगाल को बिना ओढ़ना देखा हो । जो उस की
कटि ने मुझे आशीष न दिई और उस ने मेरी भेड़ों की ऊन
२१ से गरमी न पाई हो । जो मैं ने अनाथ पर अपना हाथ उठाया
२२ हो इस लिये कि अपना सहायक फाटक में देखा । तो मेरा
कांधा अपनी भुजा के घर से गिर पड़े हां मेरी बांहें जड़ से
२३ टूट जावें । क्योंकि सर्वशक्तिमान की ओर से बिनाश मेरे लिये एक डर
है और उस महत्व के आगे मैं कुछ नहीं कह सक्ता ॥
२४ जो मैं ने कंचन पर अपनी आशा किई हो और चोखे सोने
२५ से कहा हो कि तू मेरी आशा का स्थान है । यदि मैं मगन
हुआ कि मेरा धन बहुत बढ़ गया और कि मेरे हाथ ने बहुत
२६ पाया । जो मैं ने सूर्य्य को देखा जब वुह चमकता था और
२७ ज्योतिमान चलनेहारे चन्द्रमा को । और मेरा मन चुपके से
फुसलाया गया हो अथवा मेरे मुंह ने मेरे हाथ को चूमा हो ।
२८ तो यह भी एक बुराई है जो न्याइयों के दण्ड के योग्य है
२९ क्योंकि मैं उस सर्वशक्तिमान से जो ऊपर है मुकर जाता । यदि
मैं अपने बैरी के नाश से आनन्दित हुआ अथवा जब बुराई
३० उस पर पड़ी तो फूला । और हां मैं ने अपने तालू से पाप
३१ होने न दिया कि उस के प्राण को धिक्कारूं । क्या मेरे डेरे के
मनुष्यों ने नहीं कहा कि कौन है जो उस के मांस से सन्तुष्ट
३२ नहीं हुआ । परदेशी रात को बाहर न टिका मैं ने अपने द्वारों
३३ को पथिक के लिये खोला । क्या मैं ने आदम की नाईं अपने
अपराधों को ढांपा कि अपनी बुराई को अपनी गोद में छिपाऊं ।
३४ जिसतें बड़ी मंडली से भयमान हो जाऊं अथवा परिवारों की
निन्दा मुझे डराये और मैं चुप हो रहूं और द्वार के बाहर न जाऊं ॥

३५ हाय कि वुह मेरी सुने देखो यह मेरी लिखावट है सर्वशक्तिमान
३६ मुझे उत्तर देवे और मेरा बैरी अपना विवाद लिखे। अवश्य मैं
उसे अपने कांधे पर उठाता और उसे मुकुट के समान अपने
३७ पर बांधता। मैं उस्से अपने डगों की गिनती वर्णन करता
अध्यक्ष के समान मैं उस के पास जाता॥
३८ यदि मेरी भूमि मेरे विरुद्ध चिल्लावे अथवा उस की रेघारियां
३९ मिलके बिलाप करें। यदि मैं ने बिना रोकड़ उस का फल
४० खाया अथवा उस के स्वामियों के प्राणों को मसोसा हो। तो
गोहूं की संती भरभांड़ उगें और जव की संती ऊंटकटारे।
ऐयूब के वचन समाप्त हुए॥

बत्तीसवां पर्व्व।

१ सो ये तीनों जन ऐयूब को उत्तर देने से रहि गये क्योंकि
वुह अपनी ही दृष्टि में धर्म्मी ठहरा॥
२ तब राम के घराने के बाराकेल बूज़ी के बेटे इलीहू का
कोप भड़का ऐयूब पर उस का कोप भड़का क्योंकि उस ने अपने
३ प्राण को ईश्वर से बिशेष धर्म्मी ठहराया। और उस के तीनों
मित्रों पर भी उस का कोप भड़का इस कारण कि उन्हों ने उत्तर
४ न पाया था तौभी ऐयूब को दोषी ठहराया। अब इलीहू ने
५ ऐयूब के वचनों की बाट जोही क्योंकि वे उस्से जेठे थे। जब
इलीहू ने तीनों जन के मुंह में उत्तर न देखा तब उस का कोप
भड़का॥
६ और बाराकेल बूज़ी के बेटे इलीहू ने उत्तर देके कहा कि
मैं थोड़े दिन का हूं और तुम लोग पुरनिये हो इस लिये मैं
७ भयमान हुआ और अपना ज्ञान तुम पर प्रगट करने से डरा। मैं
८ ने कहा कि दिनी लोग बातें करें और वृध बुद्धि उच्चारें। निश्चय
मनुष्य में आत्मा है और सर्बसामर्थी का श्वास उन्हें समझ

९ देता है। महत जन सदा बुद्धिमान नहीं हैं न प्राचीन विचार
१० बूझते हैं। इस लिये मैं ने कहा कि मेरी सुना मैं भी अपने मन
की कहूंगा ॥
११ देखा मैं ने तुम्हारे बचनों की बाट जोही और तुम्हारे
प्रमाणों को सुनता रहा जब लों कि तुम बातें खोजते थे।
१२ और मैं तुम पर सुरत लगाये रहा और देखा तुम्में से कोई
नहीं जो ऐयूब को दोषी ठहराता अथवा उस के बचन का
१३ उत्तर देता। ऐसा कि तुम कहो कि हम ने बुद्धि पाई
१४ सर्बशक्तिमान उसे जीतेगा मनुष्य नहीं। उस ने तो मेरे बिरुद्ध
बातों को नहीं गढ़ा और न मैं तुम्हारे बचनों के समान उसे
उत्तर देऊंगा॥
१५ वे बिस्मित हुए फेर उत्तर न दिया बातें कहने से चुप
१६ रहे। और मैं बाट जोहता रहा क्योंकि उन्हों ने और
बातें न किईं क्योंकि वे खड़े रहे और फिर उत्तर न दिया।
१७ मैं भी अपनी पारी में उत्तर देऊंगा मैं भी अपने मन की
१८ सुनाऊंगा। क्योंकि मैं बातों से परिपूर्ण हूं मेरे भीतर का
१९ आत्मा मुझे दबाता है। देखा मेरा पेट उस दाखरस के समान
है जो खोला नहीं गया नये कुप्पों की नाईं वुह फटने
२० पर है। मैं बातें करूंगा और स्वास लूंगा अपने होठों को
२१ खोलूंगा और उत्तर देऊंगा। मैं किसी का पक्ष न करूं और न
२२ मनुष्य को फुसलाने का पद देऊं। क्योंकि फुसलाने का पद मैं
नहीं जानता नहीं तो मेरा सृजनहार मुझे शीघ्र उठा लेता॥

तेंतीसवां पर्ब्ब।

१ सो इस लिये हे ऐयूब मेरे बचन सुन और मेरी सब बातों
२ पर कान धर। देख मैं ने अपना मुंह खोला है मेरी जीभ मेरे
३ तालू में बातें करती है। मेरी बातें मेरे मन की खराई से

४ होंगी और मेरे होंठ खोल खोलके ज्ञान उच्चारेंगे। सर्वशक्तिमान के
आत्मा ने मुझे बनाया है और सर्वसामर्थी के स्वास ने मुझे
५ जीवन दिया है। यदि तुझ से हो सके तो मुझे उत्तर दे
६ अपने तईं मेरे सन्मुख लैस कर और खड़ा हो। देख मैं तेरे समान
७ सर्वशक्तिमान का बनाया हुआ हूं मैं भी मिट्टी से बना हूं। देख
मेरा भय तुझे न घबरायेगा और मेरा बोझ तुझ पर भारी न
होगा॥

८ निश्चय तू ने मेरे कानों में कहा है और तेरे बचन का
९ शब्द मैं ने सुना है। कि मैं निरापराध पवित्र हूं मैं निर्दोष हूं
१० और मुझ में बुराई नहीं। देख वुह मेरे बिरुद्ध बैर का कारण
११ ढूंढता है वुह मुझे अपना बैरी जानता है। मेरे पांव को
वुह काठ में डालता है मेरे सारे मार्गों को चीन्ह रखता है।
१२ देख इस में तू धर्मी नहीं मैं तुझे उत्तर देऊंगा क्योंकि ईश्वर
मनुष्य से बड़ा है॥

१३ तू क्यों उस्से झगड़ता है क्योंकि वुह किसी को अपने कार्य्यों
१४ का लेखा नहीं देता है। क्योंकि सर्वशक्तिमान एक बार कहता है
१५ हां दो बार जब मनुष्य नहीं बूझता। स्वप्न में रात के दर्शन में
जब भारी नींद मनुष्यों पर पड़ती है जब वे बिछौने पर
१६ सोते हैं। तब वुह मनुष्यों के कानों को खोलता है और उन
१७ के उपदेश पर छाप करता है। जिसतें मनुष्य को उस के
१८ कार्य्य से फिरावे और मनुष्य से अहंकार को छिपावे। वुह उस
के प्राण को गड़हे से रोकता है और उस के जीव को कि खड्ग
से न निकले॥

१९ फिर वुह अपनी खाट पर पीड़ा से ताड़ना पाता है और
२० उस की हड्डियों में सदा की घबराहट से। यहां लों कि उस का
प्राण रोटी से और उस का जीव रुचि भोजन से घिनाता है।
२१ उस का मांस गलके अदेख हो जाता है और उस की अदेख

२२ हड्डियां निकल आती हैं। सो उस का प्राण समाधि के पास
२३ और उस का जीव नाशकों कने पहुंचता है। यदि उस के पास
कोई दूत दो भाषिया सहस्रों में से एक हो जो मनुष्य को उस
२४ के कार्य्य प्रगट करे। तब वुह उस पर कृपाल होगा और कहेगा
२५ कि उसे गड़हे में गिरने से बचा ले मैं ने प्रायश्चित पाया है। उस
की देह बालक की देह से भी अति पुष्ट होगी वुह अपनी तरुणाई
२६ के दिनों में फिर आयेगा। वुह ईश्वर से बिनती करेगा और
वुह उस पर कृपाल होगा हां वुह आनन्द से उस का मुंह देखेगा
२७ और वुह मनुष्य को उस के धर्म्म का प्रतिफल देगा। वुह मनुष्यों
के साम्हने गायेगा और कहेगा कि मैं ने पाप किया और सिद्ध को
२८ टेढ़ा किया और मुझे उस का बदला न मिला। उस ने मेरे
प्राण को समाधि में जाने से बचा लिया और मेरा जीव उंजियाले
को देखता है॥

२९ देखो ये सब कर्म्म दो बार तीन बार सर्वशक्तिमान मनुष्य
३० के साथ करता है। जिसतें उस के प्राण को गड़हे से फेर लावे
जिसतें जीवतों के उंजियाले से उंजियाला हो॥

३१ हे ऐयूब कान धर मेरी सुन चुपका रह और मैं बातें करूंगा।
३२ जो तुझे कुछ कहना हो तो मुझे उत्तर दे बातें कर क्योंकि मैं
३३ तुझे निर्दोष ठहराने चाहता हूं। यदि नहीं तो मेरी सुन चुपका
रह और मैं तुझे बुद्धि सिखाऊंगा॥

चैांतीसवां पर्ब्ब ।

१।२ फेर इलीहू ने उत्तर देके कहा। कि हे बुद्धिमानो मेरे
३ वचन सुनो और हे ज्ञानियो मेरी ओर कान धरो। क्योंकि कान
४ बातों को परखता है और मुंह भोजन को चीखता है। आओ हम
५ बिचार को अपने लिये चुनें आपुस में जानें कि क्या अच्छा है। क्योंकि
ऐयूब ने कहा है कि मैं धर्म्मी हूं और सर्वशक्तिमान ने मेरा

६ विचार हटा दिया है। मैं अपने बिचार में झूठा ठहरता हूं
७ मेरा घाव असाध्य है यद्यपि मैं निरापराध हूं। कौन जन ऐयूब
८ के समान है जो निन्दा को पानी की नाईं पीता है। और
कुकर्म्मियों के संग संग जाता है और दुष्टों के साथ चलता है।
९ क्योंकि उस ने कहा है कि मनुष्य को कुछ लाभ नहीं यदि वुह
ईश्वर की संगत में मगन हो॥
१० इस लिये हे ज्ञानियो मेरी सुनो सर्वशक्तिमान से परे रहे कि वुह
११ दुष्टता करे और सर्वसामर्थी से कि बुराई करे। क्योंकि वुह
हर एक मनुष्य को उस के कार्य्य का फल देता है और हर एक
१२ मनुष्य से उस की चाल के समान व्यवहार करता है। हां
निश्चय सर्वशक्तिमान दुष्टता न करेगा और सर्वसामर्थी न्याय को न
१३ फेरेगा। किस ने उसे पृथिवी सौंपी और किस ने सारे संसार की
१४ नेव डाली। यदि वुह उस पर अपना मन लगावे तो वुह उस
१५ का आत्मा और उस का स्वास अपने पास समेटेगा। तो सारे
शरीर एक साथ नष्ट होंगे और मनुष्य के संतान फेर धूल में
मिल जायेंगे॥
१६ अब जो तुझ में बुद्धि है तो यह सुन मेरे बचनों के
१७ शब्द पर कान धर। क्या सत्य का बैरी प्रभुता करेगा और
१८ क्या तू धर्म्ममय और महान पर दोष लगावेगा। क्या राजा
१९ को दुष्ट और अध्यक्षों को अधर्म्मी कहना उचित है। तो उस
को नहीं जो अध्यक्षों का पक्ष नहीं करता और धनी को कंगाल
से अधिक नहीं बूझता क्योंकि सब के सब उसी के हाथ के
२० कार्य्य हैं। वे पल भर में मर जायेंगे हां आधी रात को लोग
कांपेंगे और जाते रहेंगे और बिना हाथ लगाये बलवान दूर
२१ किये जायेंगे। क्योंकि उस की आंखें मनुष्यों की चालों पर हैं
२२ और वुह उस की सारी चालों को देखता है। न अंधकार है
२३ न मृत्यु की छाया जहां कुकर्म्मी अपने को छिपायें। क्योंकि

वुह बेर लों मनुष्य पर ध्यान न लगायेगा जिसतें वुह ईश्वर के
२४ आगे न्याय में जाय । वुह बिना पूछे बलवंतों को टुकड़े टुकड़े
२५ करता है और उन के स्थान पर दूसरों को ठहराता है । इस कारण
कि वुह उन के कार्य्यों को जानता है और वुह रात को उन्हें उलट
२६ देता है और वे नष्ट होते हैं । वुह उन्हें उन की दुष्टता के
२७ पलटे में मारता है देखनेहारों के आगे । क्योंकि वे उस के पीछे
२८ से फिर गये और उस के सारे मार्गों से सुचेत न रहे । यहां
लों कि वे कंगालों को उस के आगे चिलवाते हैं और वुह
२९ दुखियों की दोहाई को सुनता है । जब वुह सुख देता है तब
कौन दोषी ठहरायेगा और जब वुह अपना मुंह छिपाता है तब
कौन उसे देख सक्ता है चाहे जातिगण के विषय होवे चाहे
३० केवल एक मनुष्य के । जिसतें कपटी राज्य न करे और प्रजा
फंदे में न पड़े ॥

३१   क्योंकि उचित है कि तू सर्वशक्तिमान से कहे कि मैं ने ताड़ना पाई
३२ है फेर पाप न करूंगा । जो मैं नहीं देखता तू मुझे सिखा जो
३३ मैं ने बुराई किई है तो मैं फेर न करूंगा । क्या वुह तेरी
इच्छा के समान तुझे पलटा देगा चाहे तू माने चाहे न माने
३४ और वुह नहीं इस लिये जो तू जानता है सो कह । ज्ञानी
३५ और बुद्धिमान जो मेरी सुनते हैं मेरे विषय में कहेंगे । कि
ऐयूब अज्ञानता से बातें करता है और उस की बातें निर्बुद्धि
३६ की हैं । मेरी यह इच्छा है कि ऐयूब अंत लों परखा जाय इस
३७ कारण कि वुह दुष्टों की नाईं उत्तर देता है । क्योंकि वुह अपने
पापों में आज्ञा भंग करना मिलाता है और हमारे मध्य में थपोड़ा
मारता है और सर्वशक्तिमान के विरुद्ध अपनी बातें बढ़ाता है ॥

पैंतीसवां पर्ब्ब ।

१ । २   फिर इलीहू ने उत्तर दिया और कहा । क्या तू इसे ठीक

समझता है जो तू ने कहा है कि मेरा धर्म्म सर्वशक्तिमान के धर्म्म से
३ अधिक है। क्योंकि तू कहता है कि मुझे क्या बढ़ती और क्या
४ लाभ होगा उस्से अधिक कि मैं पाप करता। मैं तुझे और तेरे
संगियों को इन बातों का उत्तर देऊंगा॥
५ स्वर्गों को ताक और मेघों को देख जो तुझ से कहीं ऊंचे
६ हैं। जो तू पाप करे तो उस के विरुद्ध क्या करता है अथवा
७ तेरे अपराध बढ़ जायें तो उस का क्या बिगड़ता है। जो तू
धर्म्मी होय तो उसे क्या देता है अथवा वुह तेरे हाथ से क्या
८ लेता है। तेरी दुष्टता से उस को हानि हो सक्ती है जो तुझ
सरीखा मनुष्य है और तेरे धर्म्म से मनुष्य के पुत्र को लाभ
९ है। अंधेर की बहुताई के कारण दुखियारे दोहाई देते हैं वे
१० बलवंतों की भुजा के मारे चिल्लाते हैं। परन्तु कोई नहीं कहता
११ कि मेरा कर्त्ता कहां है जो रात को गान कराता है। जो पृथिवी
के पशुओं से अधिक हमें सिखाता है और आकाश के पक्षियों
१२ से अधिक हमें बुद्धिमान बनाता है। वहां वे दुष्टों के अहंकार
के मारे चिल्लाते हैं पर वुह उत्तर नहीं देता॥
१३ निश्चय सर्वशक्तिमान व्यर्थ बिनती न सुनेगा और सर्वसामर्थी
१४ मन न लगाविगा। हां तब भी नहीं जब तू कहता है कि मैं उसे
नहीं देख सक्ता न्याय उस के आगे है और तू उस की बाट
१५ जोह। पर अब इस कारण कि उस ने अपने कोप में होके
दृष्टि न किई और पाप की अधिकाई को बहुत नहीं चीन्हा।
१६ इस लिये ऐयूब वृथा अपना मुंह खोलता है और अज्ञानता से
बातें बढ़ाता है॥

छत्तीसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर इलीहू ने अपनी बात बढ़ाई और कहा। कि तनिक
ठहर जा और मैं तुझे दिखाऊंगा क्योंकि मुझे ईश्वर के लिये और

३ बातें कहनी हैं। मैं दूर से अपना ज्ञान लाऊंगा और अपने
४ कर्त्ता को धर्म्मी ठहराऊंगा। क्योंकि निश्चय मेरे बचन मिथ्या
न होंगे तेरे साथ पूरी बुद्धि का मनुष्य है॥
५ देख सर्वशक्तिमान सामर्थी है और किसी की निन्दा नहीं करता
६ बुद्धि की शक्ति में सामर्थी। वुह दुष्ट को जीता न रक्खेगा और
७ कंगालों का बिचार करेगा। वुह अपनी आंखें धर्म्मी से न फेरेगा
परन्तु राजाओं के साथ सिंहासन पर हैं और वुह उन्हें सदा के लिये
८ बसाता है और वे बढ़ाये जाते हैं। और यदि वे सीकरों में
९ जकड़े जायें और दुख की रस्सियों से बांधे जायें। तब वुह
उन्हें उन का कार्य्य और उन का अपराध दिखाता है कि उन्हों
१० ने दुर्बचन कहा। और उन के कानों को भी उपदेश के लिये
११ खोलता है और उन से कहता है कि बुराई से फिरो। जो वे
मानें और सेवा करें तो वे अपने दिनों को कुशल में काटेंगे
१२ और अपने बरसों को आनन्द में। परन्तु जो वे न मानें तो
तलवार से मारे जायेंगे और अज्ञानता से मरेंगे॥
१३ परन्तु मन के कपटी कोप ढेर करते हैं वे ईश्वर की दोहाई
१४ न देंगे जब वुह उन्हें बांधता है। उन का प्राण तरुणाई में
१५ जाता रहेगा और उन का जीवन अशुद्धों के साथ। वुह दरिद्र
को उस के दुख से छुड़ाता है और कष्ट में उन के कानों को
१६ खोलता है। और वुह तुझे सकेती के मुंह से भी निकालेगा चौड़े
स्थान में जहां सकेती नहीं और जो तेरे मंच पर रक्खा जाता
१७ है सो चिकनाई से भरा होगा। परन्तु यदि तू दुष्ट के बिचार को
१८ पूरा करे तो बिचार और न्याय एक दूसरे से लिपटेगा। क्योंकि
उस के साथ कोप है ऐसा न हो कि वुह अपनी ताड़ना से तुझे
१९ निकाल दे उस समय बड़ा प्रायश्चित्त तुझे न बचा सकेगा। क्या
वुह तेरा धन बूझेगा नहीं न सोने को और न धन के सारे बल
२० को। उस रात को मत चाह जब लोग अपने अपने स्थान से

२१ उठ जाते हैं। चौकस रह बुराई पर मन मत लगा क्योंकि तू
ने इसे दुख से अधिक चाहा है॥
२२ देख सर्वशक्तिमान अपने पराक्रम से आप को बढ़ाता है कौन
२३ उस के समान सिखवैया है। किस ने उसे उस का मार्ग बताया है
२४ अथवा कौन कह सक्ता कि तू ने बुराई किई है। स्मरण कर कि तू
उस के कार्य्य की महिमा कर जिस के विषय में मनुष्य गाते
२५ हैं। हर एक जन उस पर दृष्टि करते हैं मनुष्य दूर से उसे
२६ देखते हैं। देख सर्वशक्तिमान महान है और हम नहीं जानते
२७ उस के बरसों की गिनती का खोज नहीं हो सक्ता। क्योंकि
वुह जल के बूंदों को खींचता है जो उस की भाप से टपकती
२८ हैं। जिन से मेघ बहते हैं और मनुष्य पर बहुताई से चुआते
२९ हैं। क्या उस के मेघों के फैलाने की रीति और उस के तंबू
३० की कड़क को भी कोई समझ सक्ता है। देख वुह अपना
उंजियाला अपने चहुंओर फैलाता है और समुद्र की जड़ों से
३१ अपने को ढांपता है। क्योंकि वुह उन से लोगों का बिचार
३२ करता है और भोजन बहुताई से देता है। वुह अपने हाथों
को बिजुली से ढांपता है और उसे बैरी पर आज्ञा करता है।
३३ वुह अपना शब्द उस पर सुनाता है ढोर और साग पात पर भी॥

सैंतीसवां पर्व्व।

१ हां इस पर भी मेरा मन थर्थराता है और अपने स्थान से
२ उछलता है। सुनो सुनो उस के शब्द की गर्जन और वुह
३ धूमधाम का शब्द जो उस के मुंह से निकलता है। वुह उसे
सारे स्वर्ग के तले भेजता है और अपनी बिजुली को पृथिवी के
४ अंत लों। उस के पीछे शब्द गर्जता है वुह अपनी महिमा
के शब्द से गर्जता है और जब उस का शब्द सुना जाता है
५ तब वुह उन्हें नहीं रोकता। सर्वशक्तिमान अपने शब्द से

अद्भुत रीति से गर्जता है जो बड़े बड़े कार्य्य करता है और
६ हम नहीं बूझ सक्ते। क्योंकि वुह पाले से कहता है कि तू
पृथिवी पर हो जा और मेंह की झड़ी से हां अपने बल की मेंह
७ की झड़ियों से। वुह हर एक मनुष्य के हाथों को बंद
कर देता है जिसतें सारे लोग जिन्हें उस ने बनाया उस को
८ जानें। तब पशु अपनी मांदों में जाते हैं और अपने अपने
९ ठिकाने में रहते हैं। दक्खिन से बवंडर आता है और उत्तर से
१० जाड़ा। सर्व्वशक्तिमान के स्वास से पाला पड़ता है और फैला
११ हुआ पानी सकेत हो जाता है। वुह गाढ़े मेघ को भी मेंह में
गिरा देता है अपनी बिजुली के मेघ को छितराता है।
१२ और वुह अपने मंच से उन्हें घुमाता फिराता है जिसतें पृथिवी
में जगत पर वे सब कुछ करें जो वुह उन्हें आज्ञा करता है।
१३ चाहे वुह उन्हें दण्ड के लिये अथवा अपने देश के लिये अथवा
कृपा के लिये निकाले॥

१४ हे ऐयूब इस पर कान धर खड़ा हो और सर्व्वशक्तिमान के
१५ आश्चर्य्य कार्य्यों को सोच। क्या तू जानता है जब ईश्वर ने
उन का ठिकाना किया और अपने मेघ की बिजुली को चमकाया।
१६ क्या तू मेघों के फैलने की रीति जानता है उस के आश्चर्य्य
१७ कार्य्य जो ज्ञानमय हैं। तेरे वस्त्र किस भांति से गरमाते हैं
जब वुह दक्खिनहा पवन से पृथिवी पर घुमस करता है।
१८ क्या तू उस के साथ मेघों को फैला सक्ता है जो ढालुआ
१९ दर्पण की नाईं पोढ़ हैं। हमें बतला कि हम उस्से क्या कहें
२० क्योंकि अंधियारे के मारे हम बात बना नहीं सक्ते। क्या उस्से
बताया जायेगा जो मैं बातें करूं यदि मनुष्य उस्से कहे तो
निश्चय वुह निगला जायगा॥

२१ और अब लोग उंजियाले को नहीं देख सक्ते जब वुह मेघों
में चमकता है जब पवन बहती है और उन्हें पवित्र करती

२२ है। उत्तर से सोनहरी ज्योति आती है ईश्वर के पास
२३ भयंकर महिमा है। हम सर्व्वसामर्थी को नहीं पा सक्ते वुह
पराक्रम और विचार में बड़ा है और सच्चाई में महान वुह न
२४ सतावेगा। इसी लिये मनुष्य उस्से डरें वुह किसी बुद्धिमान पर
पक्ष की दृष्टि न करेगा॥

अठतीसवां पर्व्व।

१ तब परमेश्वर ने आंधी में से ऐयूब को उत्तर दिया
२ और कहा। यह कौन है जो अज्ञान की बातों से मेरे
३ परामर्ष को अंधियारा कर देता है। अब मनुष्य की नाईं
अपनी कटि कस क्योंकि मैं तुझ से पूछूंगा और तू मुझे उत्तर
दे॥

४ जब मैं ने पृथिवी की नेवें डालीं तब तू कहां था यदि तू बुद्धि
५ रखता है तो बतला। किस ने उस का परिमाण किया है
६ जो तू जानता है अथवा किस ने उस पर सूत खींचा। किस
पर उस की नेवें डाली गईं अथवा किस ने उस के कोने का
७ पत्थर रक्खा। जब बिहान के तारागणों ने मिलके गाया और
ईश्वर के सारे पुत्रों ने आनन्द के मारे ललकारा॥

८ जब समुद्र फूट के गर्भ से निकल आया तब किस ने उस
९ के द्वारों को बंद किया। जब मैं ने मेघ को उस का वस्त्र
१० बनाया और उस की पेटी के कारण गाढ़े मेघ को। और अपनी
आज्ञा को उस पर स्थिर किया और अड़ंगे और केवाड़े रक्खे।
११ और कहा कि यहां लों तू आना और आगे न बढ़ना और यहां
तेरी अहंकार लहरें ठहरें॥

१२ क्या तू ने अपने दिनों में बिहान को आज्ञा किई है और
१३ पौ फटते को उस का ठिकाना जताया। जिसतें वुह पृथिवी के
१४ अंतों को घेरे और दुष्ट उस्से दूर किये जायें। वुह छाप की

मिट्टी के समान पलट जाती है और सब वस्तें विभूषित होके
१५ खड़ी होती हैं। और दुष्टों से उन की ज्योति रोकी जाती है
और ऊंची भुजा तोड़ी जाती है॥
१६ क्या तू समुद्र के सोतों में पैठा है अथवा गहिराई की थाह लेने
१७ गया है। क्या मृत्यु के फाटक तेरे लिये खोले गये हैं अथवा तू ने
१८ मृत्यु की छाया के केवाड़ों को देखा है। क्या तू ने पृथिवी की
चौड़ाई को देखा है यदि इन सभों को जानता हो तो कह॥
१९ जहां उंजियाला निवास करता है उस का मार्ग कहां है
२० और अंधियारे का स्थान कहां है। जिसतें तू उसे उस के
सिवाने लों पहुंचावे और उस के घर की पगडंडियों को जाने।
२१ तू जानता है क्योंकि तू उस समय उत्पन्न हुआ था और तेरे
दिनों की गिनती बहुत है॥
२२ क्या तू पाले के भंडारों में पैठा है अथवा ओले के भंडारों
२३ को तू ने देखा है। जिन्हें मैं ने बिपत्ति के लिये लड़ाई और
संग्राम के दिन के लिये रख छोड़ा है॥
२४ कहां है वुह मार्ग जिस से ज्योति का भाग किया गया और
२५ पुरुवा पवन पृथिवी पर फैलाई गई है। किस ने मेंह की बाढ़ों
के लिये नद्रियां ठहराईं और चमकनेहारी बिजुली के लिये
२६ मार्ग। जिसतें पृथिवी पर बरसावे जहां मनुष्य नहीं और बन
२७ में जहां मनुष्य नहीं। जिसतें उजाड़ और परती को तृप्त करे
और कोमल साग पात की कली को निकलवाये॥
२८ क्या मेंह का कोई पिता है और ओस की बूंदों को किस ने
२९ जना है। पाला किस की कोख से निकला और आकाश के
३० पाले का पिता कौन है। जल मानो पत्थर के नीचे आप को
छिपाता है और गहिराव का मुंह जम जाता है॥
३१ क्या तू कृत्तिका के बंधनों को बांध सक्ता है अथवा मृगशिर
३२ का बंधन खोल सक्ता है। क्या तू राशिचक्र को उस की ऋतु

में निकाल सक्ता है अथवा भल्लूक उस के बेटों के साथ चला
३३ सक्ता है। क्या तू स्वर्ग की बिधिन को जानता है और उस
३४ की प्रभुता पृथिवी पर ठहराता है। क्या तू मेघों को अपना
३५ शब्द उठा सक्ता है जिसतें जल की बाढ़ तुझे ढांपे। क्या तू
बिजुलियों को भेज सक्ता है जिसतें वे जाके तुझे कहें कि देख
३६ हम यहां हैं। किस ने हृदय में बुद्धि डाली है अथवा किस
३७ ने मन में समझ दिई है। कौन बुद्धि से मेघों की गिनती
३८ करता है और कौन स्वर्ग के कुप्पों को उंडेलता है। जब धूल
चहले में बहि जाती है और ढेले लिपट जाते हैं॥

३९ क्या तू सिंहनी के लिये अहेर करेगा अथवा युवा सिंहों का
४० जी भर देगा। जब वे अपनी मांदों में झुकते हैं और झाड़ी
४१ में घात में बैठते हैं। कौन बनैले कौओं के लिये आहार सिद्ध
करता है जब उस के कवेले सर्बशक्तिमान को पुकारते हैं जब
वे भोजन बिना भ्रमते हैं॥

उन्तालीसवां पर्ब्ब।

१ क्या तू उस समय को जानता है जब पहाड़ी बकरियां
जनती हैं अथवा हरणियों के जन्ने की पीड़ा को बता सक्ता
२ है। क्या तू उन मासों को जिन्हें वे पूरा करती हैं गिन सक्ता
३ है अथवा उन के जन्ने का समय जानता है। वे निहुड़ती हैं
अपने बच्चे जनती हैं और अपने जन्ने के दुख को दूर करती
४ हैं। उन के बच्चे हृष्टपुष्ट होते हैं खेत में बढ़ते हैं निकल
जाते हैं और उन के पास फिर नहीं आते॥

५ किस ने बनैले गदहे को निर्बन्ध भेजा है और किस ने
६ बनैले गदहे के बंधनों को खोला है। जिस का घर मैं ने बन
७ को बनाया और नोनछार स्थान उस का निवास। वुह नगर
की भीड़ पर हंसता है और हंकवैयों के शब्द को नहीं मानता।

८ पर्वतों की दौड़ उस की चराई का स्थान है और वुह हर एक
हरयाली को ढूंढता है ॥
९ क्या अरना तेरी सेवा की इच्छा करेगा क्या तेरी चरनी के
१० निकट रात भर रहेगा । क्या तू अरने को उस के बंधन से
रेघारी में बांध सक्ता है क्या वुह तेरे पीछे पीछे तराइयों में
११ हेंगा फेरेगा । क्या तू उस पर आशा रक्खेगा इस लिये कि वुह
महाबली है अथवा क्या तू अपने परिश्रम का काम उस पर
१२ छोड़ेगा । क्या तू उस पर भरोसा रक्खेगा कि वुह तेरा बोया
हुआ फिर लावेगा और तेरे खलिहान में एकट्ठा करेगा ॥
१३ शुतुरमुरग़ का पंख आनन्द के साथ चलता है क्या लगलग
१४ के से पंख और डैने उस के नहीं । क्योंकि वुह अपने अंडे
१५ भूमि पर छोड़ जाती है और धूल से उन्हें सेवती है । और
भूल जाती है कि पांव उन्हें कुचलेगा और बनपशु उन्हें
१६ रौंदेगा । वुह अपने बच्चों पर कठोर है जैसा कि वे उस के
१७ नहीं हैं उस का परिश्रम व्यर्थ और वुह निर्भय है । इस
कारण कि ईश्वर ने उसे बुद्धिरहित किया है और उस ने उसे
१८ समझ नहीं दिई है । जब वुह पंख मारके आप को उठाती है
तब वुह घोड़े और उस के चढ़वैये पर हंसती है ॥
१९ क्या तू घोड़े को बल देता है क्या तू उस के गले को कांपनेहारी
२० चोटी से पहिनाता है । क्या तू उसे टिड्डी की नाईं कुदा सक्ता है उस
२१ का फुंकारना बिभवमय और भयानक है । वुह तराई में टापता है
और अपने बल पर आनन्दित होता है और हथियार से मिलने
२२ को बढ़ता है । वुह भय पर हंसता है और नहीं डरता और
२३ तलवार से नहीं हटता है । तूण उस पर हड़हड़ाते हैं और
२४ झलझलाता भाला और बरछी । वुह हुल्लड़ और धूमधाम क्रोध
से भूमि को निंगलता है और प्रतीति नहीं करता कि वुह तुरही
२५ का शब्द है । वुह तुरही का शब्द सुनते ही हाहा करता है

ओर दूर से संग्राम को सूंघता है सेनापतिन के गर्ज्जन ओर
ललकार ॥
२६ क्या तेरी बुद्धि से बाज उड़ता है ओर दक्खिन की ओर
२७ अपने डैने फैलाता है। क्या तेरे बचन से गिद्ध ऊपर उड़ता
२८ है ओर ऊंचाई पर अपना घोंसला बनाता है। वुह चटान पर
रहता ओर बसेरा करता है चटान के किनारे ओर पहाड़ की चोटी
२९ पर। वहां से वुह अपना अहेर ढूंढता है ओर उस की आंखें
३० दूर से देखती हैं। ओर उस के बच्चे लोहू पीते हैं ओर जहां
लोथ होती है तहां वुह है ॥

चालीसवां पर्ब्ब।

१।२ फिर परमेश्वर ने ऐयूब को उत्तर दिया ओर कहा। क्या
सर्वसामर्थी का निन्दक उस्से झगड़ेगा क्या ईश्वर का दोषदायक
उस को उत्तर देगा ॥
३।४ तब ऐयूब ने परमेश्वर को उत्तर दिया ओर कहा। कि
देख में तुच्छ हूं में तुझे क्या उत्तर देऊं में अपना हाथ अपने
५ मुंह पर रखता हूं। एक बार में ने बातें किईं पर उत्तर न
देऊंगा हां दो बार ओर आगे न बढ़ूंगा ॥
६ तब परमेश्वर ने बवंडर में से ऐयूब को उत्तर दिया ओर
७ कहा। अब मनुष्य की नाईं अपनी कटि बांध में तुझ से प्रश्न
८ करूंगा ओर तू मुझे बता। क्या सच मुच तू मेरे बिचार को
बृथा करेगा मुझ पर दोष लगायेगा जिसतें तू धर्म्मी ठहरे।
९ क्या सर्वशक्तिमान के समान तेरी भुजा है ओर क्या तू उस के
१० समान अपने शब्द से गर्जेगा। अब अपने को प्रभाव ओर
उत्तमता से संवार सुन्दरता ओर बिभव से आप को बिभूषित
११ कर। अपने कोप की जलजलाहट फैला ओर हर एक अहंकारी
१२ को देख ओर उसे तुच्छ कर। हर एक अहंकारी को देखके उसे

१३ नीचे कर और दुष्टों को उन के स्थानों में रौंद डाल। उन्हें एकही
१४ साथ धूल में छिपा और गुप्त में उन के मुंह बांध। तब मैं भी
तेरे आगे मान लेऊंगा कि तेरा दहिना हाथ तुझे बचा सक्ता है॥
१५ बहेमोत को देख जिसे मैं ने तेरे साथ बनाया है वुह बैल
१६ की नाईं घास खाता है। अब देख उस का बल उस की कटि
१७ में है और उस का बल उस के पेट की नसों में है। वुह अपनी
पूंछ को देवदारु की नाईं हिलाता है और उस के जांघों की
१८ नसें समेटी हुई हैं। उस के हाड़ तांबे की नलियां हैं उस की
१९ हड्डियां लोहे की छड़ की नाईं हैं। वुह सर्वशक्तिमान के बनाये
हुए में श्रेष्ठ है जिस ने उसे सृजा वुह उसे उस की तलवार
२० देता है। क्योंकि पर्बत उस को चारा देते हैं जहां सारे बनपशु
२१ कलोल करते हैं। वुह छतनार पेड़ों के नीचे नरकट की आड़
२२ और दलदल में लेटता है। छतनार पेड़ उसे अपनी छाया से
२३ ढांपते हैं नाले की बेंतें उसे घेरती हैं। देख नदी बाढ़ पर है
पर वुह नहीं डरता वुह चैन में है जब यरदन उस के मुंह
२४ पर बहि निकले। क्या कोई उस के देखते हुए उसे पकड़ सक्ता
है अथवा उस की नाक को नकेल से छेद सक्ता है॥

एकतालीसवां पर्व्व।

१ क्या तू कंटिया से लवियातान को बाहर खींच सक्ता है और
२ रस्सी से उस की जीभ को बांध सक्ता है। क्या तू उस की नाक
में रस्सी लगा सक्ता है अथवा उस की डाढ़ को कांटे से छेद
३ सक्ता है। क्या वुह तेरी बहुत सी बिन्तियां करेगा क्या वुह
४ तुझ से कोमल बातें करेगा। क्या वुह तुझ से बाचा बांधेगा
५ क्या तू उसे सदा के दास के लिये लेगा। क्या चिड़िया के
समान तू उस्से खेलेगा और अपनी कन्यों के लिये उसे बांधेगा।
६ क्या मछुए मिलके उस के लिये फंदा लगाते हैं क्या उसे ब्यपारियों

७ में बांटते हैं। क्या तू उस की खाल को अंकड़ियों से अथवा
८ उस के सिर को मछुओं के भालों से भर सक्ता है। अपना हाथ
उस पर धर संग्राम को स्मरण कर तू फिर ऐसा न करेगा।
९ देख उस की आशा मिथ्या है क्या उसे देखते ही मनुष्य गिर
१० न पड़ेगा। कोई ऐसा निर्भय नहीं है कि उसे जगाये और कौन
११ ऐसा है जो मेरे आगे खड़ा हो सक्ता है। किस ने मुझे पहिले
कुछ दिया है कि मैं उसे फेर देऊं स्वर्ग के तले सब कुछ मेरा है॥
१२ मैं उस के अंग और उस के बल और उस की सजावट की
१३ सुन्दरता के विषय चुप न रहूंगा। किस ने उस के वस्त्र का
रूप उघारा है उस के दोहरे जबड़ों में कौन जा सक्ता है।
१४ उस के मुंह के केवाड़ों को किस ने खोला है उस के दांतों की
१५ पांतियां भयंकर हैं। उस का पराक्रम उस की पोढ़ ढालें हैं
१६ जो मानो दृढ़ छाप से बंद हैं। वे एक दूसरे से ऐसे गुथे हैं
१७ कि उन के मध्य पवन का प्रवेश नहीं। वे एक दूसरे से मिले
१८ हुए हैं वे एकट्ठे ऐसे सटे हैं कि अलग नहीं हो सक्ते। उस
की छींक ज्योति चमकाती है और उस की आंखें बिहान के पलकों
१९ की नाईं हैं। उस के मुंह से बरते हुए दीए निकलते हैं और
२० आग की चिनगारियां उछल पड़ती हैं। उस के नथुनों से भाफ
२१ निकलती है जैसा उसिन्ने के हंडे अथवा कड़ाही से। उस की
स्वास से कोइले बर उठते हैं और उस के मुंह से लवर निकलती
२२ है। उस के गले में बल रहता है और उस के आगे शंका
२३ नाचती है। उस के मांस के परत मिले हुए हैं वे उस पर
२४ सटे हुए हैं और हिल नहीं सक्ते। उस का मन पत्थर की नाईं
पोढ़ है हां चक्की के नीचे के पाट की नाईं कड़ा है॥
२५ उस के उठने से बलवंत डरते हैं हां भय के मारे वे घबरा
२६ जाते हैं। यदि कोई उस पर खड्ग चलाये तो वुह न लगेगा
२७ न बरछी न सांग न फरी। वुह लोहे को पुआल और तांबे को

२८ सड़ी लकड़ी जानता है। बाण उसे भगा नहीं सक्ते ढेलवांस
२९ के पत्थर उस के आगे भूसी हो जाते हैं। सोंटे उस के आगे भूसी
की नाईं गिने जाते हैं और बरछी के हिलाने से वुह हंसता है॥
३० उस के नीचे चोखी चोखी ठीकरियां हैं और वुह अपना
३१ करवरा चाम कांदो पर बिछाता है। वुह गहिराई को हंडे की
नाईं उबालता है और समुद्र को तेल के हांडे की नाईं बनाता
३२ है। वुह अपने पीछे की लीक को चमकाता है मानो मनुष्य
३३ समझेगा कि गहिराई के पक्के बाल हैं। पृथिवी पर कोई उस
३४ के समान नहीं है जो निर्भय बनाया गया। वुह सारी ऊंची
वस्तुन को देखता है वुह अहंकारियों के सारे संतानों का राजा है॥

बयालीसवां पर्ब्ब।

१। २ तब ऐयूब ने परमेश्वर को उत्तर दिया और कहा। मैं जानता
हूं कि तू सब कुछ कर सक्ता है और तेरी कोई चिंता नहीं रुक सक्ती।
३ यह कौन है जो परामर्ष को अज्ञानता से छिपाता है इस लिये मैं
ने वुह उच्चारा जो नहीं समझा मेरे लिये बड़े आश्चर्य्य की बातें
४ जो नहीं जानता था। कृपा करके सुन और मैं बातें करूंगा मैं
५ तुझ से प्रश्न करूंगा और तू मुझे बता। सुनी सुनाई बातों से
मैं ने तेरे विषय में अपने कान से सुना था पर अब मेरी आंखों
६ ने तुझे देखा है। इस लिये मैं अपने से घिनाता हूं और धूल
और राख पर बैठके पश्चात्ताप करता हूं॥
७ और यों हुआ कि जब परमेश्वर ये बातें ऐयूब से कह चुका
तो परमेश्वर ने तीमानी इलीफाज़ से कहा कि मेरा कोप तुझ पर
और तेरे दोनों मित्रों पर भड़का है क्योंकि तुम ने मेरे दास
८ ऐयूब के समान मेरे विषय में सच्ची बातें नहीं कहीं। सो अब
अपने लिये सात बैल और सात मेंढ़े लेके मेरे दास ऐयूब
पास जाओ और अपने लिये बलिदान की भेंट चढ़ाओ और मेरा

दास ऐयूब तुम्हारे लिये प्रार्थना करेगा क्योंकि मैं उसे ग्रहण
करूंगा न हो कि मैं तुम्हारी मूर्खता के समान तुम्हारे संग
व्यवहार करूं क्योंकि तुम ने मेरे दास ऐयूब के समान मेरे
विषय ठीक बातें नहीं कहीं॥
९ सो इलीफाज़ तीमानी और बिलदाद शुहीती और जोफ़ार
नामाती गये और जैसा परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा किई थी वैसा
उन्हों ने किया और परमेश्वर ने ऐयूब को ग्रहण किया॥
१० और जब ऐयूब ने अपने मित्रों के लिये प्रार्थना किई तब
परमेश्वर ने ऐयूब की बंधुआई को पलट दिया और परमेश्वर ने
११ ऐयूब को आगे से दूना धन दिया। तब उस के सारे भाई और
उस की सारी बहिनें और उस के सारे आगे के जान पहिचानों
ने आके उस के घर में उस के संग भोजन किया और उस के
लिये विलाप किया और उस सारी विपत्ति के लिये जो परमेश्वर
ने उस पर डाली थी उसे शांति दिई और हर एक जन ने उसे एक
एक टुकड़ा चांदी और हर एक ने उसे सोने की एक एक मुंदरी दिई॥
१२ सो परमेश्वर ने ऐयूब के अंत को उस के आरंभ से अधिक बर
दिया क्योंकि उस के चौदह सहस्र भेड़ बकरी और छः सहस्र ऊंट
१३ और एक सहस्र जोड़े गाय बैल और एक सहस्र गदहियां थीं। और
१४ उस के सात बेटे और तीन बेटियां थीं। और उस ने जेठी
का नाम जमीमा और दूसरी का नाम कसीआ और तीसरी का
१५ नाम करनहप्पूक रक्खा। और उस सारे देश में कोई स्त्री ऐयूब
की बेटियों के समान सुन्दर न थी और उन के पिता ने उन्हें
उन के भाइयों के साथ अधिकार दिया॥
१६ और उस के पीछे ऐयूब एक सौ चालीस बरस जीया और अपने
१७ बेटे और अपने पोते चार पीढ़ी लों देखे। और ऐयूब वृद्ध और
पूरे दिनों का होके मर गया॥

गीतों की पुस्तक।

पहिला गीत।

१ वुह मनुष्य क्या ही धन्य है जो पापियों के मत पर नहीं
चला और अपराधियों के पथ पर नहीं खड़ा हुआ और निन्दकों
२ की सभा में नहीं बैठा है। परन्तु परमेश्वर की व्यवस्था में उस की
प्रसन्नता है और उस की व्यवस्था पर वुह दिन रात ध्यान करेगा॥
३ और वुह उस पेड़ के समान होगा जो जल की धारों पर
लगाया गया जो अपना फल अपने ऋतु पर देगा और उस
के पत्ते न मुरझायेंगे और जो वुह करेगा सब भाग्यमानी से
४ करेगा। अधर्म्मी ऐसे नहीं परन्तु उस भूसे के समान हैं जिसे
बयार उड़ा ले जाती है॥
५ इस कारण से अधर्म्मी न्याय में और अपराधी धर्म्मियों की
६ सभा में खड़े न रहेंगे। क्योंकि परमेश्वर धर्म्मियों का मार्ग
जानता है पर अधर्म्मियों का मार्ग नष्ट हो जायगा॥

दूसरा गीत।

१ अन्यदेशी किस लिये हुल्लर मचाते हैं और लोग अनर्थ
२ चिन्ता करते हैं। जगत के राजा साम्हना करते हैं और प्रधान
परमेश्वर और उस के मसीह के विरुद्ध आपस में परामर्श
३ करते हैं। कि आओ हम उन के बंधनों को तोड़ डालें और
उन की रस्सियों को अपने पास से फेंक देवें॥

४ स्वर्ग पर बैठा हुआ वुह हंसेगा परमेश्वर उन्हें ठट्टों में
५ उड़ावेगा। तब वुह अपने कोप में उन से बातें करेगा और
६ अपने महा कोप से उन्हें कंपायेगा। और मैं ने अपने राजा
को अपने पवित्र पहाड़ सैहून पर स्थिर किया है॥
७ मैं नियम को वर्णन करूंगा परमेश्वर ने मुझ से कहा कि तू
८ मेरा पुत्र है मैं ने आज तुझे उत्पन्न किया। मुझ से मांग और
मैं अन्यदेशियों को तेरे बश में और पृथिवी के सिवानों को
९ तेरे अधिकार में देऊंगा। तू उन्हें लोहे के राजदण्ड से तोड़ेगा
कुम्हार के पात्र की नाईं उन्हें चूर चूर कर डालेगा॥
१० और अब हे राजाओ बुद्धिमान होओ हे पृथिवी के न्याइयो
११ उपदेश को ग्रहण करो। डरके साथ परमेश्वर की सेवा करो और
१२ कांपते हुए आनन्द करो। पुत्र को चूमो कि वुह रिसिया न
जाय और तुम बगदके नाश हो क्योंकि उस का क्रोध
शीघ्र भड़केगा उस के समस्त भरोसा रखनेहारे क्या ही धन्य
हैं॥

तीसरा गीत।

दाऊद का गीत जब वुह अपने बेटे अबिसलूम
के साम्हने से भागा॥

१ हे परमेश्वर मेरे दुखदायक क्या ही बढ़ गये बहुतेरे मेरे
२ विरुद्ध उठते हैं। बहुतेरे मेरे प्राण को कहते हैं कि उस के
लिये ईश्वर से कुछ मुक्ति नहीं है। सिलाह॥
३ और तू हे परमेश्वर मेरे चहुंओर ढाल मेरी प्रतिष्ठा और
४ मेरा ऊंचा करनेहारा है। जब मैं अपने शब्द से परमेश्वर को
पुकारता हूं तब वुह अपने पवित्र पहाड़ पर से मुझे उत्तर देता
है। सिलाह॥
५ मैं लेट गया और सो रहा और जाग उठा हूं क्योंकि परमेश्वर

६ मेरी रक्षा करता है। मैं जातिगण के सहस्रों के सहस्र से न
डरूंगा जिन्हें उन्हों ने चारों ओर मेरे विरोध में रक्खा है ॥
७ हे परमेश्वर उठ हे मेरे ईश्वर मुझे बचा क्योंकि तू ने मेरे
सारे बैरियों के गाल पर थपेड़े मारे हैं तू ने अधर्म्मियों के दांत
८ तोड़े हैं। परमेश्वर ही से मुक्ति है तेरे लोगों पर तेरी आशीष
हो। सिलाह ॥

चैाथा गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों पर
दाऊद का गीत ॥

१ हे मेरे धर्म्म के ईश्वर जब मैं पुकारूं तब मुझे उत्तर दे
कष्ट में तू ने मुझे छुड़ाया मुझ पर दया कर और मेरी प्रार्थना
सुन ले ॥
२ हे मनुष्य के पुत्रो कब लों मेरी प्रतिष्ठा लाज में बदलती
जायगी कब लों तुम बृथा को प्रीति करोगे और झूठ के पीछे
३ रहोगे। सिलाह। और जानो कि परमेश्वर ने धर्म्मी को अपने
लिये अलग कर लिया है जब मैं परमेश्वर को पुकारूं तब वुह
सुन लेगा ॥
४ क्रोध करके पाप न करो अपने बिछौने पर अपने मन में
५ कहो और चुप रहो। सिलह। धर्म्म के बलिदान चढ़ाओ और
परमेश्वर पर भरोसा करो ॥
६ बहुतेरे कहते हैं कि हमें कौन भलाई दिखावेगा हे परमेश्वर
७ अपने स्वरूप की ज्योति हम पर उदय कर। जिस समय से
उन का अनाज और उन की दाखरस अधिक हो गई तू ने मेरे
८ मन को अति आनन्द किया है। चैन में मैं एक ही साथ
लेटूंगा और सो जाऊंगा क्योंकि तू ही हे परमेश्वर अकेला मुझे
चैन में रहने देगा ॥

पांचवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये अधिकारों के विषय में
दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर मेरी बातों पर कान धर मेरे सोच पर ध्यान
२ रख। हे मेरे राजा और मेरे ईश्वर मेरी दोहाई के शब्द को सुन
३ क्योंकि मैं तुझ ही से प्रार्थना करूंगा। हे परमेश्वर तू बिहान
को मेरा शब्द सुनेगा बिहान को मैं अपनी प्रार्थना को सिद्ध
करूंगा और ताकता रहूंगा॥
४ क्योंकि तू वुह सर्वशक्तिमान नहीं जो दुष्टता से प्रसन्न हो
५ दुष्ट तेरे साथ न रहेगा। घमंडी तेरी आंखों के साम्हने खड़े
६ न रहेंगे तू सारे कुकर्म्मियों से घिन करता है। तू मिथ्यावादियों
को नाश करेगा बधिक और छली से परमेश्वर घिन रक्खेगा।
७ और मैं तेरी दया की बहुताई से तेरे घर में आऊंगा तेरे
पवित्र मन्दिर की ओर तेरे डर के साथ दण्डवत करूंगा॥
८ हे परमेश्वर मेरे बैरियों के कारण से अपने धर्म्म में मेरी
९ अगुआई कर मेरे आगे अपने मार्ग को सीधा कर। क्योंकि उस
के मुंह में कुछ सच्चाई नहीं उन का मन ही दुष्ट है उन का
गला खुली हुई समाधि है वे अपनी जीभ को चिकनी करते हैं।
१० हे ईश्वर उन्हें दोषी ठहरा वे अपने परामर्शों से आप ही गिर
जायेंगे उन के अपराधों की बहुताई में उन्हें धकिया दे क्योंकि
उन्हों ने तुझ से विरोध किया है॥
११ और तेरे सारे भरोसा रखनेहारे मगन होंगे वे सदा आनन्द
करेंगे और तू उन पर आड़ करेगा और तेरे नाम के प्रीति
१२ रखनेहारे तुझ से आनन्दित होंगे। क्योंकि हे परमेश्वर तू ही
धर्म्मी को आशीष देगा ढाल की नाईं तू उसे कृपा से ढांपेगा॥

छठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों के साथ
आठवीं पर गाया जाय दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर अपनी रिस से मुझे मत दपट और न अपने
२ कोप की तप्त से मुझे दण्ड दे। हे परमेश्वर मुझ पर दया कर
क्योंकि मैं कुम्हला गया हे परमेश्वर मुझे चंगा कर क्योंकि मेरी
३ हड्डियां थर्थराती हैं। और मेरा प्राण बहुत थर्थराता है और
४ तू हे परमेश्वर कब लों। हे परमेश्वर फिर आ मेरे प्राण को
५ छुड़ा अपनी दया के कारण मुझे बचा। क्योंकि मृत्यु में तेरा
कुछ स्मरण नहीं समाधि में कौन तेरा धन्यवाद करेगा।
६ मैं अपने कराहने से थक गया हर रात अपने बिछौने को
७ भिगाऊंगा अपनी सेज अपने आंसुओं से भिगाऊंगा। मेरी आंख
खिजाहट से धुंधला गई मेरे सारे बैरियों के कारण बुढ़ा गई॥
८ हे सारे कुकर्म्मियो मुझ से दूर होओ क्योंकि परमेश्वर ने
९ मेरे रोने का शब्द सुना है। परमेश्वर ने मेरी बिनती सुनी है
१० परमेश्वर मेरी प्रार्थना ग्रहण करेगा। मेरे सारे बैरी लज्जित
और अत्यन्त थर्थरा जायेंगे वे पलट जायेंगे और अकस्मात्
लज्जित होंगे॥

सातवां गीत ।

दाऊद की डंवांडोली का गीत जो उस ने परमेश्वर के लिये
बिनयमीनी कूश के बचनों के विषय में गाया॥

१ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है मेरे
२ सारे सतानेहारों से मुझे बचा और मुझे छुड़ा। न होवे कि वुह
सिंह के नाईं मेरे प्राण को फाड़े टुकड़े टुकड़े करे और कोई
छोड़वैया न हो॥

३ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर यदि मैं ने यह किया हो यदि मेरे
४ हाथों में टेढ़ाई हो। यदि मैं ने अपने मित्र से बुराई किई हो
५ और जो अकारण मेरा बैरी था उसे लूटा हो। तो बैरी मेरे
प्राण का पीछा करे और पकड़ ले और मेरे जीवन को पृथिवी
पर लताड़े और मेरी प्रतिष्ठा को धूल में मिलावे। सिलाह॥
६ हे परमेश्वर अपने क्रोध में उठ मेरे बैरियों के कोपों के
मध्य में आप को ऊंचा कर और मेरे लिये जाग न्याय की
७ आज्ञा तू ने किई है। और लोगों की मंडली तुझे घेरे और तू
८ उस के ऊपर ऊंचे पर फिर जा। परमेश्वर लोगों का न्याय करेगा
हे परमेश्वर मेरे धर्म्म और मेरी खराई के समान जो मेरे ऊपर
९ है मेरा न्याय कर। हाय कि दुष्टों की बुराई नाश हो और तू
धर्म्मी को दृढ़ करे और हे धर्म्मी ईश्वर तू मनों और अन्तःकरणों
का जांचनेहारा है॥
१० मेरी ढाल ईश्वर पर है जो खरे मनों का बचानेहारा है।
११ ईश्वर धर्म्मी का बिचार करता है और सर्वशक्तिमान प्रति दिन
१२ क्रोधित है। यदि वुह न फिरे तो वुह अपनी तलवार पर बाढ़
धरेगा उस ने अपने धनुष को चढ़ाया और उसे लैस किया है।
१३ और उस ने उस की ओर मृत्यु के हथियार साधे हैं वुह अपने
बाणों को जलनेवाले बनावेगा॥
१४ देखो उसे बुराई की पीड़ होगी और उसे अपकार का गर्भ
१५ रहेगा और झूठ को जनेगा। उस ने कुआ खोदा और उसे
गहिरा किया है और उस गड़हे में आप ही गिरा है जिसे वुह
१६ बनाता है। उस का अपकार उस के सिर पर लौट आयेगा और
१७ उस की खोपड़ी पर उस का उपद्रव उतरेगा। मैं परमेश्वर की
स्तुति उस के धर्म्म के समान करूंगा और परमेश्वर अति महान
के नाम की स्तुति में गाऊंगा॥

आठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये गित्तीत पर दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तेरा नाम सारी पृथिवी पर क्या ही
विभवमय है अपनी इस महिमा को स्वर्गों के ऊपर प्रकाश कर।
२ तू ने अपने बैरियों के लिये जिसतें बैरी और पलटालेनेहारे
को चुप करे बालकों और दूधपीवकों के मुंह से शक्ति की नेव
डाली है ॥
३ जब मैं तेरे स्वर्गों तेरे हाथों की क्रिया चांद और तारों को
४ जिन्हें तू ने ठहराया है देखता हूं। तो मरणहार मनुष्य क्या
है कि तू उस का चेत करे और मनुष्य का पुत्र क्या कि तू उस
५ पर दृष्टि करे। और उसे ईश्वरता से थोड़ा सा छोटा करे और
६ विभव और प्रतिष्ठा का मुकुट उस पर रक्खे। और अपने हाथ
के कार्य्यों पर उसे प्रभुता देवे तू ने सब कुछ उस के पांवों के
७ नीचे रक्खा है। झुंड और गाय बैल सब के सब और जंगल
८ के बनपशु भी। आकाश के पक्षी और समुद्र की मछलियां और
जो समुद्र के पथों में चलते हैं ॥
९ हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तेरा नाम सारी पृथिवी पर क्या ही
विभवमय है ॥

नवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये पुत्र की मृत्यु पर
दाऊद का गीत ॥

१ मैं अपने सारे मन से परमेश्वर की स्तुति करूंगा तेरे सारे
२ आश्चर्य्यों का वर्णन करूंगा। मैं तुझ में आनन्द और आल्हाद
करूंगा हे अति महान मैं तेरे नाम की स्तुति में गाऊंगा ॥
३ जब मेरे बैरी पलट जायेंगे तब वे तेरे आगे से ठोकर खायेंगे

४ और नाश होंगे। क्योंकि तू ने मेरा झगड़ा और मेरा न्याय
चुकाया है तू सच्चाई से न्याय करते हुए सिंहासन पर बैठा है।
५ तू ने अन्यदेशियों को दपटा दुष्ट को नष्ट किया उन का नाम
६ सदा के लिये मिटा डाला है। बैरी की दुष्टतायें सर्बदा के लिये
समाप्त हुईं और तू ने उन के नगरों को उजाड़ा है उन का
७ स्मरण उन्हीं के साथ मिट गया। और परमेश्वर सदा लों बिमान
पर बैठा रहेगा उस ने न्याय के लिये अपने सिंहासन को
८ स्थापित किया है। और वही धर्म्म के साथ संसार का बिचार
९ करेगा खराई के साथ लोगों का न्याय करेगा। और परमेश्वर
सताये हुए के लिये ऊंचा स्थान होगा ऊंचा स्थान दुख के
१० समयों में। और तेरे नाम के जान्नेहारे तुझ पर भरोसा रक्खेंगे
क्योंकि हे परमेश्वर तू ने अपने खोजियों को नहीं छोड़ा है॥

११ परमेश्वर जो सैहून में बास करता है उस की स्तुति में गाओ
१२ लोगों में उस के बड़े कार्य्यों का बर्णन करो। क्योंकि लोहू का
लेखा लेते हुए उस ने उस का स्मरण किया है वुह दुखियों की
दोहाई को नहीं भूला॥

१३ हे परमेश्वर मुझ पर दया कर मेरे दुख को जो मेरे बैरियों
१४ से है देख तू कि मृत्यु के द्वारों से मेरा उठानेहारा है। जिसतें
मैं सैहून की बेटी के द्वारों में तेरी सारी स्तुति बर्णन करूं तेरी
मुक्ति से आनन्दित होऊं॥

१५ अन्यदेशी उस गड़हे में जिसे उन्हों ने खोदा धंस गई उस
१६ फंदे में जिसे उन्हों ने छिपाया उन्हीं का पांव फंसा। परमेश्वर
जाना गया उस ने न्याय किया है दुष्ट अपने ही हाथों के कार्य्य
में फंस गया। हिग्गायून। सिलाह॥

१७ दुष्ट समाधि लों पलट जायेंगे हां ईश्वर को भूलनेहारी सारी
१८ जातिगण। क्योंकि कंगाल सदा भुलाया न जायगा और न दीनों
की आशा सदा लों नष्ट होगी॥

१६ उठ हे परमेश्वर मरणहार मनुष्य प्रबल न होने पावे
२० अन्यदेशियों का विचार तेरे आगे किया जावे। हे परमेश्वर
उन्हें भय में डाल जातिगण जानें कि हम मरणहार मनुष्य हैं।
सिलाह॥

दसवां गीत।

१ हे परमेश्वर तू किस लिये दूर खड़ा रहता है सकेती के
२ समयों में अपने तईं छिपाता है। दुष्ट के अहंकार से दुखी
जलता है वे उन जुगुतों में जो उन्हों ने निकाली हैं फंस जाते
३ हैं। क्योंकि दुष्ट अपने प्राण की लालसा पर बड़ाई किया करता
है और अपनी इच्छा पूरी करके परमेश्वर को धन्य कहता और
४ उस की निन्दा करता है। दुष्ट अपने अहंकार में परमेश्वर का खोजी न
५ होगा उस की सारी चिंतायें ये हैं कि ईश्वर है ही नहीं। उस के मार्ग
हर घड़ी स्थिर रहते हैं तेरे न्याय उस की दृष्टि से ऊंचे हैं वुह
६ अपने सारे बैरियों पर फूंक मारता है। उस ने अपने मन में कहा
है कि मैं न टलूंगा पीढ़ी से पीढ़ी लों मैं वही हूं जो विपत्ति में
७ न पड़ूंगा। उस का मुंह धिक्कार और कपट और अंधेर से भरा
८ है उस की जीभ के तले अपकार और बुराई हैं। वुह गांव के
ढूकों में बैठता है गुप्त स्थानों में निर्दोष को घात करता है
९ उस की आंखें दुखी के लिये छिपती हैं। वुह सिंह की नाईं
जो अपनी झाड़ी में हो गुप्त स्थान में ढूके में रहता है वुह
दुखी के पकड़ने के लिये ताक में रहता है दुखी को अपने
१० जाल में खेंचके पकड़ता है। और वुह दबके बैठ जाता है
११ और उस के बलवंतों से दुखी गिर पड़ते हैं। उस ने अपने
मन में कहा है कि सर्वशक्तिमान भूल गया उस ने अपना मुंह
छिपाया है उस ने कभी नहीं देखा॥

१२ हे परमेश्वर उठ हे सर्वशक्तिमान अपना हाथ बढ़ा दुखियों

१३ को न भूल। किस कारण से दुष्ट ने ईश्वर को तुच्छ जाना और
१४ अपने मन में कहा है कि तू पूछ पाछ न करेगा। तू ने देखा है
क्योंकि तू अपकार और खिजाहट को देखता है जिसतें अपने
हाथ में रक्खे दुखी तुझ पर अपना बोझ छोड़ता है अनाथ का
१५ उपकारी तू ही हुआ है। दुष्ट की भुजा तोड़ और बुरे मनुष्य की
दुष्टता को तू ढूंढ़ेगा और उसे न पायेगा॥

१६ परमेश्वर सनातन से सनातन लों राजा रहेगा जातिगण उस
१७ की भूमि से नष्ट हुईं। हे परमेश्वर तू ने दीनों की इच्छा सुनी
है तू उन के मनों को दृढ़ करेगा अपना कान धरके सुनेगा।
१८ जिसतें अनाथ और सताये हुए का न्याय करे मरणहार मनुष्य
जो पृथिवी से है फिर विरुद्ध न करेगा॥

ग्यारहवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत॥

१ मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है तुम क्योंकर मेरे प्राण
से कहोगे कि चिड़िया की नाईं तुम अपने पहाड़ पर भाग जाओ।
२ क्योंकि देखो दुष्ट धनुष को चढ़ाया चाहते हैं उन्हों ने अपना
बाण पनच पर चढ़ाया है जिसतें खरे मनवालों को अंधेरे में
३ मारें। क्योंकि खंभा गिरा चाहते हैं धर्म्मी ने क्या किया है॥

४ परमेश्वर अपने पवित्र मन्दिर में है परमेश्वर का सिंहासन
स्वर्ग पर है उस की आंखें देखती हैं उस की पलकें मनुष्य के
५ संतानों को परखती हैं। परमेश्वर धर्म्मी को जांचता है और
६ दुष्ट और अंधेर के प्रेमी से उस का आत्मा घिन करता है। वुह
दुष्टों पर फंदे आग और गंधक बरसावेगा और भयंकर आंधी
७ उन के कटोरे का भाग होगी। क्योंकि परमेश्वर धर्म्मी है वुह
धर्म्म को प्यार करता है उस का रूप खरे जन को देखता
है॥

बारहवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये आठवीं पर दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर बचा क्योंकि साधु जन हो चुका क्योंकि विश्वासी
२ मनुष्य के संतान में से क्षीण हो गये । वे हर एक अपने परोसी
से झूठ बोलते हैं चापलूसी के होंठ और दोहरे मन से बातें
३ करते हैं । परमेश्वर सारे चापलूसी के होंठों को और उस जीभ
४ को जो बड़ा बोल बोलती है काट डाले । जिन्हों ने कहा है
कि हम अपनी जीभ से जीतेंगे हमारे होंठ हमारे साथ हैं
कौन हमारा प्रभु है ॥

५ दुखियों की दरिद्रता से और कंगालों की ठंढी सांस से
परमेश्वर बोला चाहता है कि अब मैं उठूंगा मैं उसे जो उस के
६ लिये हांफता है चैन में रक्खूंगा । परमेश्वर की बातें पवित्र
बातें हैं पृथिवी के महान मनुष्य के लिये ताई हुई हां सात बार
७ निर्मल किई हुई चांदी हैं । हे परमेश्वर तू ही उन्हें रक्षा में
८ रक्खेगा तू उसे इस पीढ़ी से सदा लों बचावेगा । दुष्ट चारों ओर
चलते फिरते हैं पर मनुष्य के संतान के लिये उन की यह
नीचाई मानो ऊंचाई है ॥

तेरहवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर तू कब लों मुझे सनातन लों भूला रहेगा तू
२ कब लों अपना मुंह मुझ से छिपावेगा । मैं कब लों अपने प्राण
में परामर्श और अपने मन में शोक प्रति दिन रक्खूंगा मेरा बैरी
कब लों मुझ पर ऊंचा रहेगा ॥

३ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर दृष्टि कर मेरी सुन मेरी आंखें उंजियाली
४ कर कदाचित मैं मृत्यु में सोऊं । कदाचित मेरा बैरी कहे कि

में ने उसे जीता और मेरे बिरोधी जब मैं टल जाऊंगा आनन्द
करें ॥
५ और मैं ने तेरी दया पर भरोसा रक्खा है मेरा मन तेरी
६ मुक्ति से आनन्द करे। मैं परमेश्वर की स्तुति गाऊंगा क्योंकि
उस ने मुझ से अच्छा व्यवहार किया है ॥

चौदहवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ मूर्ख ने अपने मन में कहा है कि ईश्वर है ही नहीं उन्हों
ने बिगाड़ किया घिनौने कार्य्य किये हैं कोई सुकर्म्मी नहीं।
२ परमेश्वर ने स्वर्ग पर से मनुष्य के संतान पर झांका जिसतें
देखे कि कोई बुद्धिमान है अर्थात् ईश्वर को ढूंढता अथवा नहीं।
३ वे सब के सब भटक गये वे एक ही साथ बिगड़ गये कोई
धर्म्मी नहीं एक भी नहीं ॥
४ क्या यह सारे कुकर्म्मी नहीं जानते जो मेरे लोगों को खाते
५ जैसे रोटी खाते हैं और परमेश्वर का नाम नहीं लेते। वहां वे
६ बहुत ही डरे क्योंकि ईश्वर धर्म्मी के बंश में है। तुम दुखी
के परामर्श को निरादर करोगे क्योंकि परमेश्वर उस का शरणस्थान है॥
७ हाय कि परमेश्वर के अपने बंधुवे लोगों के पास फिर आने में
सैहून से इसराएल की मुक्ति हो तब यअक़ूब आनन्दित और
इसराएल मगन हो ॥

पंदरहवां गीत।

दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर तेरे तंबू में कौन रहेगा तेरे पवित्र पहाड़ में
कौन बास करेगा ॥
२ अपने मन से सीधा चलते हुए और धर्म्म करते हुए और

३ सच बोलते हुए। उस ने अपनी जीभ से चुगली नहीं किई
अपने परोसी की हानि नहीं किई और अपने परोसी पर अपबाद
४ नहीं लगाया। निकम्मा उस की आंखों में निन्दित है और वुह
परमेश्वर के डरवैयों की प्रतिष्ठा करता है उस ने अपनी हानि
५ करनेहारी किरिया खाई और न पलटेगा। उस ने अपना रोकड़
ब्याज के लिये नहीं दिया और न निर्द्दोषी के लिये अकोर लिया है
यही करते हुए वुह सदा लों न टलेगा॥

सोलहवां गीत।

दाऊद का भेद॥

१ हे सर्व्वशक्तिमान मेरी रखवाली कर क्योंकि मैं ने तुझ पर
भरोसा रक्खा है॥

२ हे मेरे प्राण तू ने परमेश्वर से कहा है कि तू ही प्रभु है मेरी
३ भलाई तुझ बिना नहीं। उन साधुन के संग जो पृथिवी पर हैं
और उत्तमों के जिन में मेरा सारा आनन्द है॥

४ उन के शोक बहुत होंगे जिन्हों ने आन देव के संग गठिबंधन
किया है उन के लोहू के तपावन मैं न तपाऊंगा और न अपने
५ होंठों से उन के नाम लूंगा। परमेश्वर मेरा ठहराया हुआ
भाग और मेरा कटोरा है तू ही मेरे पासे को बढ़ती देगा।
६ नापने की रस्सियां मेरे लिये मनभावने स्थानों में पड़ी हैं हां
मेरा अधिकार सुथरा है॥

७ मैं परमेश्वर का धन्य मानूंगा जिस ने मुझे मंत्र दिया है
८ हां रात को मेरे अंतःकरण ने मुझे सिखाया है। मैं ने परमेश्वर
को सदा अपने साम्हने रक्खा है क्योंकि वुह मेरे दहिने हाथ
९ है मैं न टलूंगा। इस लिये मेरा मन मगन हुआ और मेरे
१० विभव ने आनन्द किया हां मेरा शरीर चैन से रहेगा। क्योंकि
तू मेरा प्राण समाधि को न सौंपेगा तू अपने धर्म्ममय को सड़ने

११ न देगा। तू मुझे जीवन का मार्ग बतलावेगा तेरे आगे आनन्द
की भरपूरी है तेरे दहिने हाथ में सनातन का बिलास है ॥

सत्रहवां गीत।

दाऊद की प्रार्थना ॥

१ हे परमेश्वर धर्म्म को सुन मेरे उस चिल्लाने पर सुरत लगा
मेरी उस प्रार्थना पर कान धर जो निष्कपट होंठों से है।
२ मेरा न्याय तेरे आगे से होगा तेरी आंखें खराइयों को देखेंगी।
३ तू ने मेरे मन को परखा रात को तू मेरे पास आया तू ने मुझे
ताया तू कुछ न पावेगा मेरा मुंह मेरे ध्यान से अधिक न बढ़ेगा।
४ तेरे होंठों के वचन के द्वारा से जो मनुष्य के संतान के कार्य्यों
के विषय में है मैं ने अपने को नाशक के पथों से बचा रक्खा
५ है। मेरे डगों ने तेरे पथों को पकड़ा मेरे पांव नहीं टले ॥
६ मैं ने तुझे पुकारा है क्योंकि हे सर्वशक्तिमान तू मुझे उत्तर
७ देगा अपना कान मेरी ओर झुका मेरी बात सुन। हे तू कि
अपने दहिने हाथ से अपने आश्रितों को उन के बैरियों से
८ बचाता है उन पर अपनी दया को मुख्य कर। आंख की
पुतली की नाईं मेरी रक्षा कर तू अपने पंखों के छाया तले मुझे
९ छिपावेगा। दुष्टों के साम्हने से जिन्हों ने मुझे बिगाड़ा है मेरे
१० प्राण के बैरी मुझे घेर लेंगे। वे अपनी चिकनाई में ढंप गये
११ उन्हों ने अपने मुंह से घमंड में शब्द उच्चारा है। अब उन्हों
ने हमारे हर डग पर हमें घेरा है वे अपनी आंखें लगाये रहेंगे
१२ जिसतें भूमि पर सीधे मार्ग से हट जायें। उस की सादृश्य
सिंह की सी है वुह फाड़ने चाहता है और युवा सिंह की सी
१३ जो गुप्त स्थानों में बैठता है। हे परमेश्वर उठ उस का साम्हना
कर उसे झुका दे अपनी तलवार से मेरे प्राण को दुष्ट से बचा।
१४ अपने हाथ से हे परमेश्वर मेरे प्राण को मनुष्यों से बचा हां

मनुष्यों से और संसार से उन का भाग इसी जीवन में है और
तू अपने छिपे हुए धन से उन का पेट भर देगा वे लड़कों से
संतुष्ट होंगे और अपनी बचती अपने बच्चों के लिये छोड़
१५ जायेंगे। मैं धर्म्म में तेरा मुंह देखूंगा जब मैं जागूंगा तब तेरे
रूप से तृप्त होऊंगा॥

अठारहवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये परमेश्वर के सेवक दाऊद का गीत जिस
ने परमेश्वर से इस गीत की बातें कहीं जिस दिन परमेश्वर
ने उसे उस के सारे बैरियों के पंजे से और साऊल
के हाथ से छुड़ाया और कहा॥

१।२ हे परमेश्वर मेरे बल मैं तुझे प्यार करूंगा। परमेश्वर मेरी
चटान और मेरा गढ़ और मेरा छुड़वैया है मेरा सर्वशक्तिमान
मेरी चटान है मैं उस पर भरोसा रक्खूंगा मेरी ढाल और मेरी
३ मुक्ति का सींग मेरा ऊंचा स्थान। मैं परमेश्वर को जो स्तुति के
योग्य है पुकारूंगा और अपने बैरियों से बच जाऊंगा॥
४ मृत्यु के बंधनों ने मुझे घेरा है और दुष्टता की बाढ़ें मुझे
५ डराया करेंगी। समाधि के बंधनों ने मुझे घेरा मृत्यु के फंदों
६ ने मेरा साम्हना किया है। मैं अपनी सकेती में परमेश्वर को
पुकारूंगा और अपने ईश्वर की दोहाई दूंगा वुह अपने मन्दिर
से मेरा शब्द सुनेगा और मेरी दोहाई उस के आगे हां उस के
७ कानों में पहुंचेगी। तब पृथिवी कांपी और थर्थराई और पहाड़ों
८ की नेवें हिल गईं और थर्थरा गईं क्योंकि वुह क्रोधित था। उस
के क्रोध से धूआं उठा और उस के मुंह की आग भस्म करती
९ है अंगारे उस्से धधके। और उस ने स्वर्गों को झुकाया और नीचे
१० उतरा और उस के पांव तले घटा थी। और वुह करोबी पर
चढ़ा और उड़ा और उस ने पवन के डैनों पर उड़ान किया।

११ उस ने अपने चारों ओर अंधियारे को अपनी ओट ठहराया
१२ अपनी आड़ पानी का अंधेरा बादलों की घटायें। उस चमक
से जो उस के आगे थी उस के बादल हट गये ओले और
१३ अंगारे। तब परमेश्वर स्वर्गों में गर्जा और अति महान ने अपना
१४ शब्द उच्चारा ओले और अंगारे। तब उस ने अपने बाण चलाये
और उन्हें छिन्न भिन्न किया और बिजुलियां चमकाईं और उन्हें
१५ घबरा दिया। तब हे परमेश्वर तेरी डांट से और तेरे क्रोध के
स्वास के झोंके से पानी की नालियां देख पड़ीं और जगत की
नेवें खुल गईं॥

१६ वुह ऊपर से अपना हाथ बढ़ायेगा मुझे ले लेगा मुझे बड़े
१७ पानी में से खैंच लेगा। वुह मेरे बैरी से मुझे छुड़ावेगा क्योंकि
वुह बलवंत है और मेरे डाह रखनेहारों से क्योंकि वे मुझ से
१८ अति बली हैं। वे मेरी विपत्ति के दिन मेरा साम्हना करेंगे और
१९ परमेश्वर मेरे लिये टेक हुआ है। और मुझे फैलाव स्थान में
लाया वुह मुझे बचावेगा क्योंकि वुह मुस्से प्रसन्न है॥

२० परमेश्वर मेरे धर्म्म के समान मुझ से व्यवहार करेगा मेरे
२१ हाथों की पवित्रता के समान वुह मुझे प्रतिफल देगा। क्योंकि
मैं ने परमेश्वर के मार्गों को मनन किया है और अपने ईश्वर से
२२ न फिरा। क्योंकि उस के सारे न्याय मेरे साम्हने हैं
२३ और उस की विधिन को मैं अपने से दूर न करूंगा। और मैं
उस के साथ निर्दोष रहा और आप को अपनी बुराई से बचा
२४ रक्खा। और परमेश्वर ने मेरे धर्म्म के समान और मेरे हाथों
की पवित्रता के समान जो उस की आंखों के साम्हने थी मुझे
प्रतिफल दिया है॥

२५ साधु के साथ तू अपने तईं साधु दिखावेगा सज्जन मनुष्य के साथ
२६ तू अपने तईं सज्जन दिखावेगा। पवित्र किये हुए के साथ तू
अपने तईं पवित्र दिखावेगा और टेढ़े के साथ तू अपने तईं

२७ टेढ़ा दिखावेगा । क्योंकि तू ही दुखी लोगों को बचावेगा और
२८ ऊंची आंखों को नीची करेगा । क्योंकि तू ही मेरा दीपक बारेगा
२९ परमेश्वर मेरा ईश्वर मेरे अंधियारे को उंजियाला करेगा । क्योंकि
मैं तेरी सहाय से जथा पर दौड़ूंगा और अपने ईश्वर की सहायता से
३० भीत फांदूंगा । अर्थात् सर्वशक्तिमान से जिस का मार्ग शुद्ध है
परमेश्वर का बचन ताया गया है वुह अपने सारे आश्रितों के
३१ लिये ढाल है । क्योंकि परमेश्वर को छोड़ कौन ईश्वर है और
हमारे ईश्वर को छोड़ कौन चटान है ॥
३२ अर्थात् सर्वशक्तिमान को छोड़ जो मेरी कटि दृढ़ता से बांधता
३३ है और जिस ने मेरा मार्ग शुद्ध किया है । जो मेरे पांव को
हरणियों के से बनाता है और मेरी ऊंचाइयों पर मुझे खड़ा
३४ करता है । जो मेरे हाथों को युद्ध करना सिखाता है और
३५ मेरी बांहों ने पीतल का धनुष झुकाया है । और तू ने मुझे
अपनी मुक्ति की ढाल दिई है और तेरा दहिना हाथ मुझे
३६ संभालेगा और तेरी कोमलता मुझे बढ़ावेगी । तू मेरे डगों को
३७ मेरे नीचे बढ़ावेगा और मेरे घुठने न हटेंगे । मैं अपने बैरियों
का पीछा करूंगा और उन्हें जा लूंगा और पीछे न फिरूंगा जब
३८ लों वे नाश न हों । मैं उन्हें पटक दूंगा और वे उठ न सकेंगे
३९ वे मेरे पांव के नीचे गिर पड़ेंगे । और तू ने संग्राम के लिये मेरी
कटि दृढ़ता से बांधी है तू मेरे बिरोधियों को मेरे नीचे झुकावेगा ।
४० और तू ने मेरे बैरियों की पीठ मुझे दिखाई और मैं अपने शत्रुओं
४१ को नाश करूंगा । वे दोहाई देंगे और कोई बचानेहारा नहीं
४२ परमेश्वर को और वुह उन की नहीं सुनता है । और मैं उन्हें
धूल की नाईं जो बयार के आगे है पीस डालूंगा मार्गों की कीच
४३ की नाईं उन्हें फेंक दूंगा । तू मुझे लोगों के झगड़ों से छुड़ावेगा
तू मुझे अन्यदेशियों का अध्यक्ष ठहरावेगा जिन लोगों को मैं
४४ ने नहीं जाना वे मेरी सेवा करेंगे । कान से सुनते ही वे मुझे

का श्रोर हम परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम का स्मरण करेंगे।
८ वे झुके श्रोर गिर पड़े हैं श्रोर हम उठे श्रोर सीधे खड़े हुए हैं॥
९ हे परमेश्वर बचा जिस दिन कि हम पुकारें राजा हमारी
सुने॥

इक्कीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर राजा तेरे बल से आनन्द होगा श्रोर तेरी मुक्ति
२ से क्या ही बहुत मगन होगा। तू ने उस के मन की इच्छा उसे
दिई है श्रोर उस के होंठों की बिनती को उस्से नहीं रोका। सिलाह।
३ क्योंकि तू भलाई की आशीषों के साथ उस के आगे आवेगा उस
४ के सिर पर चोखे सोने का मुकुट रक्खेगा। उस ने तुझ से
जीवन मांगा तू ने उसे जीवन की बढ़ती सर्बदा के लिये दिई।
५ तेरी मुक्ति से उस का बिभव बड़ा होगा प्रतिष्ठा श्रोर महिमा तू
६ उस के ऊपर रक्खेगा। क्योंकि तू उसे सर्वदा के लिये आशीषें
ठहरावेगा तू अपने रूप से उस को आनन्द से आनन्दित करेगा।
७ क्योंकि राजा परमेश्वर पर भरोसा करता है श्रोर अति महान की
दया से वुह न टलेगा॥
८ तेरा हाथ तेरे सारे बैरियों को ढूंढ निकालेगा तेरा दहिना
९ हाथ तेरे बैर रखनेहारों को पकड़ लेगा। तू अपनी सन्मुखता
के समय उन्हें जलते हुए भट्ठे के समान ठहरावेगा परमेश्वर
अपने कोप में उन्हें निगल लेगा श्रोर आग उन को खा जायगी।
१० तू उन का फल पृथिवी से श्रोर उन का बंश मनुष्य के संतान
११ में से नष्ट करेगा। क्योंकि उन्हों ने तेरे बिरुद्ध में बुराई फैलाई
है उन्हों ने ऐसी जुगुत बांधी है जिसे समाप्त न कर सकेंगे।
१२ क्योंकि तू उन की पीठ दिखावेगा जब तू उन के साम्हने अपने
पनच को चढ़ावेगा॥

१३ हे परमेश्वर अपने ही बल से महान हो हम तेरी सामर्थ्य की स्तुति में गावेंगे और बड़ाई करेंगे ॥

बाईसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये बिहान की हरणी के विषय में दाऊद का गीत ॥

१ हे मेरे ईश्वर हे मेरे ईश्वर तू ने मुझे क्यों छोड़ दिया है
तू क्यों मेरी मुक्ति और मेरे कहरने की बातों से दूर खड़ा
२ रहता है । हे मेरे ईश्वर मैं दिन को पुकारता हूं और तू उत्तर
नहीं देता और रात को और मुझे चैन नहीं है ॥
३ और तू इसराएल की स्तुति में बास करनेहारा पवित्र है ।
४ हमारे पितरों ने तुझ पर भरोसा किया उन्हों ने भरोसा किया
५ और तू ने उन्हें छुड़ाया । उन्हों ने तुझ को पुकारा और छुड़ाये
गये उन्हों ने तुझ पर भरोसा रक्खा और लज्जित न हुए ।
६ पर मैं कीड़ा हूं और न मनुष्य मनुष्यों की निन्दा और लोगों
७ में लज्जा । मेरे सारे देखनेहारे मुझ पर हंसते हैं वे यह
८ कहते हुए होंठ बिचकाते और मूड़ हिलाते हैं । कि परमेश्वर
पर डाल दे वुह उसे छुड़ावेगा उस को निर्बंध करेगा क्योंकि
९ उस्से प्रसन्न है । क्योंकि तू ही गर्भ से मेरा निकासनेहारा था
१० मेरी माता के स्तनों पर मुझे आशा देनेहारा । कोख से मैं तुझ
पर डाला गया मेरी माता के गर्भ से मेरा सर्वशक्तिमान तू ही
है ॥

११ मुझ से दूर मत रह क्योंकि संकट निकट है और इस
१२ लिये कि कोई सहायक नहीं । बहुत से बैलों ने मुझे घेरा है
१३ बसनिया के सांड़ों ने मुझे घेरा है । उन्हों ने फाड़ने और
१४ गर्जनेवाले सिंह होके मुझ पर अपना मुंह पसारा है । मैं पानी
की नाईं उंडेला गया हूं और मेरी सारी हड्डियां अलग हो गईं मेरा

मन मोम की नाईं हो गया मेरी अंतड़ियों के मध्य में पिघल
१५ गया। मेरा बल ठीकरे की नाईं सूख गया और मेरी जीभ मेरे
तालू से लग गई और मृत्यु की धूल में तू मुझे उतारेगा।
१६ क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेरा है दुष्टों की मंडली ने मुझे घेर लिया
१७ उन्हों ने मेरे हाथों और मेरे पांवों को छेदा है। मैं अपनी
सारी हड्डियों को गिन सक्ता हूं वे ताकते रहते और मुझे घूरते
१८ हैं। वे मेरे कपड़े आपुस में बांटा चाहते हैं और मेरे बागे पर
चिट्ठी डाला चाहते हैं॥
१९ पर तू हे परमेश्वर दूर मत रह हे मेरे बल मेरी सहाय
२० के लिये शीघ्र कर। मेरे प्राण को तलवार से और मेरे प्रिय
२१ को कुत्ते के हाथ से बचा। मुझे सिंह के मुंह से बचा और तू
ने भैंसों के सींगों से मेरी सुनी है॥
२२ मैं अपने भाइयों से तेरा नाम वर्णन करूंगा मंडली के मध्य
२३ तेरी स्तुति करूंगा। हे परमेश्वर के डरवैयो उस की स्तुति करो
हे यअकूब के सारे वंश उस की प्रतिष्ठा करो और हे इसराएल
२४ के सारे वंश उस्से भय रक्खो। क्योंकि उस ने दुखी के दुख को
तुच्छ न जाना और न उस्से घिन किई और न उस्से अपना मुंह
छिपाया है और जब उस ने उस की दोहाई दिई तब उस ने सुना।
२५ तेरी सहाय से मैं बड़ी मंडली में तेरी स्तुति करूंगा उस के
डरनेहारों के साम्हने अपनी मनौती पूरी करूंगा॥
२६ दीन लोग खायेंगे और तृप्त होवेंगे परमेश्वर के खोजी उस की
२७ स्तुति करेंगे तुम्हारा मन सदा लों जीता रहे। जगत के सारे
खूंट चर्चा करेंगे और परमेश्वर की ओर फिरेंगे और जातिगणों के
२८ सारे घराने तेरे साम्हने झुकेंगे। क्योंकि राज्य परमेश्वर का है
२९ और वुह जातिगणों पर अध्यक्ष है। पृथिवी के सारे पुष्टों ने
खाया और सेवा किई है सारे धूल में मिलनेहारे उस के
आगे झुकेंगे और वुह भी जो अपने प्राण को नहीं बचा सक्ता

३० था। आनेवाला वंश उस की सेवा करेगा आनेवाली पीढ़ी को
३१ परमेश्वर के विषय में बतलाया जायगा। वे आवेंगे और उन
लोगों को जो उत्पन्न होंगे उस के धर्म्म का वर्णन करेंगे कि
उस ने यह किया है॥

तेईसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१।२ परमेश्वर मेरा गड़रिया है मुझे घटती न होगी। वुह मुझे
कोमल घास की चराई में बिठलावेगा मुझे स्थिर जल के लग
३ ले जायेगा। वुह मेरे प्राण को यथावस्थित करेगा अपने नाम
४ के लिये धर्म्म के पथों पर मेरी अगुआई करेगा। इस के उपरान्त
जब मैं मृत्यु की छाया की तराई में चलूंगा तब भी बिपत्ति से
न डरूंगा क्योंकि तू ही मेरे साथ होगा तेरी छड़ी और तेरी
५ लाठी वही मुझे शान्ति देंगी। तू मेरे बैरियों के आगे मेरे साम्हने
मंच बिछावेगा तू ने तेल से मेरे सिर को चिकना किया है मेरा
६ कटोरा छलकता है। केवल भलाई और दया जीवन भर मेरा
पीछा करेंगी और मैं जीवन की बढ़ती लों परमेश्वर के घर में
रहूंगा॥

चौबीसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ पृथिवी और उस की भरपूरी जगत और उस के वासी परमेश्वर
२ के हैं। क्योंकि उसी ने उस की नेव समुद्रों पर डाली और उसे
धारों पर स्थिर किया है॥

३ परमेश्वर के पहाड़ पर कौन चढ़ेगा और उस के पवित्र स्थान
में कौन स्थिर रहेगा॥

४ जिस का हाथ शुद्ध और मन पवित्र है जिस ने अपना जी

मिथ्या पर नहीं लगाया और छल देने के लिये किरिया नहीं
५ खाई। वुह परमेश्वर से आशीष और अपने मुक्तिदाता ईश्वर से
धर्म्म प्राप्त करेगा॥
६ यह बंश उस की ढूंढनेहारी है तेरे रूप के खोजी यअ़कूब
हैं। सिलाह॥
७ हे फाटको अपने सिरों को ऊंचा करो और हे सनातन के
द्वारो ऊंचे हो जाओ और बिभव का राजा प्रवेश करेगा॥
८ यह बिभव का राजा कौन है परमेश्वर पराक्रमी और बलवंत
९ परमेश्वर संग्राम में बलवंत। हे फाटको अपने सिरों को ऊंचा
करो और हे सनातन के द्वारो उन्हें ऊंचा करो और बिभव
का राजा प्रवेश करेगा॥
१० यह बिभव का राजा कौन है परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर वही
बिभव का राजा है। सिलाह॥

पच्चीसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर मैं अपने प्राण को तेरी ओर उठाता हूं।
२ हे मेरे ईश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा किया है मुझे लज्जित न
३ होने दे मेरे बैरियों को मुझ पर फूलने न दे। तेरे सारे
जोहनेहारों में से कोई भी लज्जित न होगा वे लज्जित होंगे
४ जो अकारण छल करते हैं। हे परमेश्वर अपने मार्ग मुझे दिखला
५ अपने पथ मुझे बतला। अपनी सत्यता के मार्ग पर मुझे ले
चल और मुझे शिक्षा दे क्योंकि मेरा मुक्तिदाता ईश्वर तू ही है
६ मैं ने सारे दिन तेरी बाट जोही है। हे परमेश्वर अपनी दया
७ और कृपा को स्मरण कर क्योंकि वे सनातन से हैं। मेरी
तरुणाई के पापों और अपराधों को स्मरण मत कर तू अपनी
दया के लिये अपनी भलाई के समान मुझे स्मरण कर॥

८　　परमेश्वर अच्छा और सीधा है इस लिये वुह मार्ग में पापियों
९ की अगुआई करेगा। वुह बिचार में दीनों की अगुआई करेगा
१० और आधीनों को अपने मार्ग बतलावेगा। परमेश्वर के सारे मार्ग
उन के लिये जो उस के नियम और साक्षी के पालन करनेहारे
११ हैं दया और सच्चाई हैं। हे परमेश्वर अपने नाम के लिये तू
दया करेगा और मेरी बुराई को क्षमा करेगा क्योंकि वुह बहुत
१२ है। वुह कौन सा मनुष्य है जो परमेश्वर से डरता है
वुह उस मार्ग में जिसे चुन लेगा उस की अगुआई करेगा।
१३ उस का प्राण सुख में रहेगा और उस का बंश पृथिवी का
१४ अधिकारी होगा। परमेश्वर की मित्रता उस के डरवैयों
के साथ और उस का नियम उन्हें पहिचान देने को
है॥

१५　　मेरी आंखें सदा परमेश्वर की ओर हैं क्योंकि वही मेरे पाओं
१६ को फंदे में से निकालेगा। मेरी ओर फिर और मुझ पर दया कर
१७ क्योंकि मैं अकेला और दुखी हूं। मेरे मन के दुख बढ़ गये
१८ मेरे दुखों से मुझे निकाल। मेरे दुख और मेरी पीड़ा को देख
१९ और मेरे सारे पापों को क्षमा कर। मेरे बैरियों को देख क्योंकि वे
बहुत हैं और बड़े बैर के साथ उन्हों ने मुझ से बैर रक्खा है।
२० मेरे प्राण की रक्षा कर और मुझे छुड़ा मुझे लज्जित न होने दे
२१ क्योंकि मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है। धर्म्म और खराई मेरी
२२ रक्षा करेंगी क्योंकि मैं ने तेरी बाट जोही है। हे ईश्वर इसराएल
को उस के सारे दुखों से छुड़ा॥

छब्बीसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१　　हे परमेश्वर मेरा बिचार कर क्योंकि मैं अपने धर्म्म में चला
२ हूं और मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है मैं न टलूंगा। हे

परमेश्वर मुझे परख और मुझे ताड़ मेरे अंतःकरण को और मेरे
मन को जांच ले ॥
३ क्योंकि तेरी दया मेरी आंखों के आगे है और मैं तेरी सच्चाई
४ में चला हूं। मैं मिथ्यावादी मनुष्यों के संग नहीं बैठा और
५ कपटियों के साथ न चलूंगा। मैं ने कुकर्म्मियों की मंडली से
६ घिन रक्खा है और दुष्टों के साथ न बैठूंगा। हे परमेश्वर मैं अपने
हाथों को निसकपटता में धोऊंगा और तेरी बेदी की प्रदक्षिणा
७ करूंगा। जिसतें धन्यवाद के शब्द के साथ तेरे सारे आश्चर्य्यों
८ को सुनाऊं और बर्णन करूं। हे परमेश्वर मैं ने तेरे घर के निवास
९ और तेरे बिभव के तंबू के स्थान से प्रेम रक्खा है। मेरे प्राण
को पापियों के संग और मेरे जीवन को बधिकों के संग मत
१० मिला। जिन के हाथों में बुराई है और उन का दहिना हाथ
११ अकोर से भरा है। और मैं अपनी खराई में चलूंगा मुझे छुड़ा
१२ और मुझ पर दया कर। मेरा पांव समथर स्थान पर स्थिर
हुआ है मैं मंडलियों में परमेश्वर को धन्य कहूंगा ॥

सत्ताईसवां गीत।

दाऊद का गीत ॥

१ परमेश्वर मेरा उंजियाला और मेरी मुक्ति है मैं किस्से डरूं
२ परमेश्वर मेरे जीवन का गढ़ है मैं किस्से भय रक्खूं। जब दुष्ट
मेरे बिरोध में निकट आये जिसतें मेरा मांस खा लें जब मेरे
बिरोधी और मेरे बैरी मेरे निकट आये तब उन्हीं ने ठोकर
३ खाई और गिर पड़े। यद्यपि सेना मेरे बिरुद्ध चढ़ाई करे तो
मेरा मन न डरेगा यदि संग्राम मेरे बिरुद्ध उभरे इस में भी
४ मैं धीर्य्यमान रहूंगा। मैं ने परमेश्वर से एक प्रश्न किया है मैं
उसी के खोज में रहूंगा कि परमेश्वर के घर में अपने जीवन
भर रहूं जिसतें परमेश्वर की सुन्दरता को देखा करूं और उस के

५ मन्दिर में ढूंढा करूं। क्योंकि वुह विपत्ति के दिन मुझे अपने
तंबू में छिपावेगा अपने डेरे की आड़ में मुझे आड़ देगा मुझे
६ चटान की ऊंचाई पर रक्खेगा। और अब मेरा सिर मेरे चारों
ओर के बैरियों के ऊपर ऊंचा होगा और मैं उस के तंबू में
आनन्दित शब्द के साथ बलि चढ़ाऊंगा मैं परमेश्वर की स्तुति
में गाऊंगा और बजाऊंगा॥
७ हे परमेश्वर सुन मैं अपने शब्द से पुकारता हूं और मुझ पर
८ दया कर और मुझे उत्तर दे। जब तू ने कहा है कि मेरे मुंह
के खोजी हो तब मेरे मन ने कहा कि हे परमेश्वर मैं तेरे मुंह
९ का खोजी हूंगा। मुझ से अपना मुंह मत छिपा क्रोध से अपने
दास को मत हटा तू मेरा सहायक हुआ है हे मेरी मोक्ष के ईश्वर
१० मुझे मत त्याग और मुझे मत छोड़। क्योंकि मेरे पिता और
मेरी माता ने मुझे त्यागा है पर परमेश्वर मुझे अपने घर में
११ लेगा। हे परमेश्वर मुझे अपना मार्ग बतला और मेरे बैरियों के
१२ कारण सीधे मार्ग पर मुझे ले चल। मुझे मेरे बैरियों की इच्छा
पर न छोड़ क्योंकि झूठे साक्षी और अंधेर की सांस लेनेहारे
मुझ पर उठे हैं॥
१३ यदि मुझे विश्वास न होता कि जीवन की भूमि पर परमेश्वर
१४ की भलाई को देखूं तो नाश होता। परमेश्वर की बाट जोह
दृढ़ रह और वुह तेरे मन को बल देवे हां परमेश्वर की बाट
जोह॥

अट्ठाईसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर मैं तुझे पुकारूंगा हे मेरी चटान मुझ से चुपका
मत हो न होवे कि तू मुझ से चुप हो रहे और मैं गढ़हे में
२ गिरनेवालों की नाईं हो जाऊं। जब मैं तेरी दोहाई दूं और

अपने हाथ तेरे पवित्र मन्दिर की ओर उठाऊं तब मेरी बिनतियों
३ का शब्द सुन। मुझे दुष्टों के साथ और कुकर्म्मियों के साथ न
खैंच जो अपने परोसियों के साथ कुशल की बातें करते हैं पर
४ उन के मन में बुराई है। उन की क्रिया के समान और उन
के कार्य्यों की दुष्टता के समान उन्हें दे उन के हाथों के कार्य्य
५ के समान उन्हें दे उन का व्यवहार उन्हीं पर पलट दे। इस
लिये कि वे परमेश्वर के कार्य्यों और उस के हाथों की क्रिया पर
ध्यान न करेंगे वुह उन्हें ढायेगा और उन्हें न बनावेगा॥
६ परमेश्वर धन्य हो क्योंकि उस ने मेरी बिनतियों का शब्द
७ सुना है। परमेश्वर मेरा बल और मेरी ढाल है मेरे मन ने उस
पर भरोसा किया और मैं ने सहाय पाई है और मेरा मन अत्यन्त
आनन्दित होगा और मैं अपनी छन्द में उस की स्तुति करूंगा।
८ परमेश्वर उन के लिये बल है और वही अपने अभिषिक्त के
९ लिये बचाव का गढ़ है। अपने लोगों को बचा और अपने
अधिकार को आशीष दे और उन्हें चरा और उन्हें सदा के
लिये ऊंचा कर॥

उंनतीसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ हे सर्वशक्तिमान के पुत्रो परमेश्वर को दो परमेश्वर को महिमा
२ और बल दो। परमेश्वर को उस के नाम की प्रतिष्ठा दो पवित्रता
की सुन्दरता के संग परमेश्वर को दण्डवत करो॥
३ परमेश्वर का शब्द पानियों पर है महिमा का सर्वशक्तिमान
४ गर्ज्जा परमेश्वर बड़े पानियों पर है। परमेश्वर का शब्द बल के
५ साथ परमेश्वर का शब्द विभव के साथ है। परमेश्वर का
शब्द देवदारों को तोड़ता है और परमेश्वर ने लुबनान के
६ देवदारु पेड़ों को तोड़ डाला है। और उन्हें बछेरे की नाईं

लुबनान और सुरियून को भैंसों के बच्चों की नाईं कुदाया है।
७ परमेश्वर का शब्द आग की लवरों के द्वारा से चीरता है।
८ परमेश्वर का शब्द बन को कंपा सक्ता परमेश्वर क़ादिश के बन
९ को कंपा सक्ता है। परमेश्वर का शब्द हरणियों के गाभ गिरा सक्ता
और जंगलों को पतझाड़ कर सक्ता है और उस के मन्दिर में
१० हर एक उस के बिभव की बात कहता है। परमेश्वर बाढ़ पर
बैठा था और परमेश्वर राजा सदा लों सिंहासन पर बैठा रहेगा।
११ परमेश्वर अपने लोगों को बल देगा परमेश्वर अपने लोगों को कुशल
की आशीष देगा॥

तीसवां गीत।

गीत। मन्दिर के स्थापन करने के लिये दाऊद का भजन॥

१ हे परमेश्वर मैं तेरी महिमा करूंगा क्योंकि तू ने मुझे बढ़ाया
है और मेरे बैरियों को मेरे विषय में आनन्द करने नहीं दिया।
२ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मैं ने तेरी दोहाई दिई और तू ने मुझे
३ चंगा किया। हे परमेश्वर तू ने मेरे प्राण को समाधि से उठाया
तू ने गड़हे के गिरनेहारों में से मुझे जिलाया है॥
४ हे उस के धर्म्मियो परमेश्वर की स्तुति में गान करो और
५ उस की पवित्रता के स्मरण में उस का धन्यवाद करो। क्योंकि
उस की रिस पल भर की है उस की कृपा में जीवन है विलाप
सांझ को टिकेगा और बिहान को आनन्द॥
६ और मैं ने अपनी बढ़ती में कहा कि कभी न टलूंगा।
७ हे परमेश्वर तू ने अपनी कृपा से मेरे पहाड़ के लिये बल स्थापन
८ किया तू ने अपना मुंह छिपाया मैं घबरा गया। हे परमेश्वर
मैं तुझ को पुकारूंगा और परमेश्वर को दया के लिये पुकारूंगा।
९ मेरे लोहू में क्या लाभ जब मैं गड़हे में गिरूंगा क्या धूल तेरी
१० स्तुति करेगी क्या वुह तेरी सत्यता बर्णन करेगी। हे परमेश्वर

सुन और मुझ पर दया कर हे परमेश्वर मेरा सहायक हो।
११ तू ने मेरे लिये मेरे शोक को नाच से पलट डाला है तू ने
१२ मेरा टाट खोला और आनन्द से मेरी कटि बांधी है। जिसतें
विभव तेरी स्तुति में भजन करे और चुपका न रहे हे परमेश्वर
मेरे ईश्वर मैं सर्वदा लों तेरा धन्यबाद करूंगा॥

एकतीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है मुझे सदा लों
२ लज्जित न होने दे अपने धर्म्म से मुझे छुड़ा। अपना कान
मेरी ओर झुका झट पट मुझे छुड़ा मेरे लिये गढ़ की चटान
३ और आड़ का घर हो जिसतें मुझे बचाये। क्योंकि तू ही मेरी
चटान और मेरा गढ़ है और तू अपने नाम के लिये मुझे ले
४ चलेगा और मेरा अगुआ होगा। तू मुझे उस जाल से जो उन्हों
ने मेरे लिये छिपाया है निकालेगा क्योंकि तू ही मेरा गढ़ है।
५ मैं अपने आत्मा को तेरे हाथ में सौंपता हूं हे परमेश्वर सत्यता
६ के सर्वशक्तिमान तू ने मुझे छुड़ाया है। मैं ने झूठ की बृथा
बस्तुन के मान्नेहारों से घिन किया है और मैं ने परमेश्वर पर
७ भरोसा किया है। मैं तेरी दया में आनन्दित और आल्हादित
हूंगा तू जिस ने मेरे दुख को देखा मेरे प्राण की बिपत्तों को
८ पहिचाना है। और मुझे वैरी के हाथ में बंद नहीं किया पर
मेरे पांव को फैलावस्थान में खड़ा किया है॥

९ हे परमेश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मुझ पर बिपत्ति है
मेरी आंख खिजाहट से क्षीण हो गई मेरा आत्मा और मेरा
१० पेट भी। क्योंकि मेरा जीवन शोक में और मेरी बय कराहने
में नाश हो गई मेरे पाप के कारण से मेरे बल ने डगमगाहट
११ खाई है और मेरी हड्डियां सूख गईं। मैं अपने सारे वैरियों के

कारण से दुर्नाम हुआ और अपने परोसियों के निकट बहुत
और अपने जान पहिचानों के निकट भय मुझे बाहर देखते ही
१२ वे मुझ से भागे । मैं मृतक की नाईं मन से भुला दिया गया
१३ मैं टूटे हुए पात्र के तुल्य हुआ । क्योंकि मैं ने बहुतों से निन्दा
सुनी भय चारों ओर था जब कि उन्हों ने आपुस में मेरे विरोध
परामर्श किया तब उन्हों ने मेरे प्राण लेने की युक्ति किई ॥
१४ और हे परमेश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा किया मैं ने कहा
१५ कि तू ही मेरा ईश्वर है । मेरे समय तेरे हाथ में हैं मेरे
वैरियों के हाथ से और मेरे पीछा करनेहारों से मुझे छुड़ा ।
१६ अपना रूप अपने सेवक पर चमका अपनी दया से मुझे बचा ।
१७ हे परमेश्वर मुझे लज्जित न होने दे क्योंकि मैं ने तुझे पुकारा
१८ हे दुष्ट लज्जित हों समाधि में चुपके पड़े रहें । झूठे होंठ जो
धर्म्मी के विरुद्ध घमण्ड और निन्दा करते हुए ढिठाई से बोलते
हैं गूंगे किये जावें ॥
१९ क्या ही बड़ी तेरी कृपा है जो तू ने अपने डरवैयों के लिये
छिपा रक्खी है और अपने भरोसा रखनेहारों पर मनुष्य के
२० संतानों के आगे प्रगट किई है । तू मनुष्य की जुगुतों से
अपने रूप की ओट में उन्हें छिपायेगा जीभों के झगड़े से उन्हें
२१ आड़ में छिपा लेगा । परमेश्वर धन्य हो क्योंकि उस ने मुझे
दृढ़ नगर में लाके अपनी कृपा मेरे लिये आश्चर्य्य किई है ।
२२ और मैं ने अपनी घबराहट में कहा कि मैं तेरी आंखों के
साम्हने से कट गया परन्तु जब मैं ने तेरी दोहाई दिई तब
तू ने मेरी बिन्तियों का शब्द सुना ॥
२३ परमेश्वर से प्रेम रक्खो हे उस के सारे साधुओ परमेश्वर सत्य
का रखवाल है और अहंकारी को बहुताई से पलटा देता है ।
२४ हे तुम सब कि परमेश्वर के आश्रित हो दृढ़ हो और वुह तुम्हारे
मन को दृढ़ करे ॥

बत्तीसवां गीत ।

दाऊद का उपदेश देनेहारा गीत॥

१ वुह क्या ही धन्य है जिस का अपराध क्षमा किया गया
२ जिस का पाप ढांपा गया। वुह मनुष्य क्या ही धन्य है जिस
के लिये परमेश्वर अधर्म्म लेखा नहीं करता और उस के प्राण
में कुछ छल नहीं है॥

३ क्योंकि मैं चुप हो रहा और मेरे सारे दिन के कहरने से
४ मेरी हड्डियां गल गईं। क्योंकि रात दिन तेरा हाथ मुझ पर
भारी रहता है मेरी तरावट गरमी की झुराहट से पलट गई।
५ सिलाह। मैं ने कहा कि अपनी बुराई तुझ पर प्रगट करूंगा
और अपना अधर्म्म नहीं छिपाया मैं ने कहा कि परमेश्वर के
आगे अपने अपराधों को मान लूंगा और तू ही ने मेरे पाप का
६ अधर्म्म क्षमा किया। सिलाह। इसी लिये हर एक साधू जब
तक तू मिल सक्ता है तेरी ओर फिरके प्रार्थना करे निश्चय जब
७ बड़े पानियों के बाढ़ हों तब उस लों न पहुंचेंगे। तू ही मेरे
लिये आड़ है तू मुझे सकेती से बचावेगा बचाव के गानों से
मुझे घेरेगा। सिलाह॥

८ मैं तुझे शिक्षा देऊंगा और जिस मार्ग पर तू चलेगा तेरी
अगुआई करूंगा मैं तुझे मन्त्र दूंगा मेरी आंख तुझ पर लगी
९ रहेगी। घोड़े के समान खच्चर के समान न हो जिन में कुछ
समुझ नहीं बाग और लगाम में उन का सिङ्गार है जिसतें उन
१० का मुंह पकड़े क्योंकि वे तेरे समीप नहीं आते। दुष्ट पर बहुत
बिपत्ति हैं और जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है वुह उसे दया
११ से घेरेगा। हे धर्म्मियो परमेश्वर से आल्हादित हो और आनन्द
करो और हे सारे खरे अन्तःकरणियो आनन्द के मारे चिल्लाओ॥

तेंतीसवां गीत ।

१ हे धर्म्मियो परमेश्वर में आनन्दित होओ स्तुति करना सज्जनों
२ को सजता है । बीणा के संग परमेश्वर की स्तुति करो दसतार
३ की सारङ्गी के संग उस की स्तुति में गाओ । उस के लिये नया
गीत गाओ मंगल के शब्द के साथ भली रीति बजाओ ॥
४ क्योंकि परमेश्वर का वचन ठीक है और उस का सारा कार्य्य
५ सच्चाई के साथ किया गया । वुह धर्म्म और न्याय से प्रेम
६ रखता है पृथिवी परमेश्वर की दया से भरी है । परमेश्वर के
वचन से स्वर्ग बने और उस के मुंह के स्वास से उन की सारी
७ सेना । वुह समुद्र के जल को ढेर की नाईं एकट्ठा करता है
८ गहिरापों को भंडारों में रख छोड़ता है । सारी पृथिवी के रहनेहारे
परमेश्वर से डरें संसार के सारे बासी उस का भय रक्खें ।
९ क्योंकि उसी ने कहा कि हो और हो गया उसी ने आज्ञा किई
१० और खड़ा हुआ । परमेश्वर ने अन्यदेशियों के परामर्श को व्यर्थ
११ किया लोगों की युक्ति को मिथ्या किया है । परमेश्वर का मन्त्र
सर्बदा लों स्थिर रहेगा उस के मन की चिन्तायें पीढ़ी से पीढ़ी लों ॥
१२ वुह जाति क्या ही धन्य है जिस का ईश्वर परमेश्वर है वुह
१३ लोग जिसे उस ने अपने अधिकार के लिये चुन लिया । परमेश्वर
ने स्वर्ग पर से दृष्टि किई उस ने मनुष्य के सारे संतान को
१४ देखा । अपने निवासस्थान से उस ने पृथिवी के सारे निवासियों
१५ की ओर ताका । जो उन के सारे अन्तःकरणों को बनाता है
१६ जो उन के सारे कार्य्यों की ओर ध्यान रखता है । राजा बल
की बहुताई से कभी नहीं बचता बीर बल की बहुताई से
१७ छुड़ाया न जायेगा । घोड़ा बचाने के लिये बृथा है और वुह
अपने बल की बहुताई से न बचेगा ॥
१८ देखो परमेश्वर की आंख उस के डरनेहारों की ओर है उन

१९ के लिये जो उस की दया के जोहनेहारे हैं। जिसतें मृत्यु से
उन के प्राण को छुड़ावे और उन्हें अकाल में जीता रक्खे।
२० हमारे प्राण ने परमेश्वर की बाट जोही है हमारा उपकार और
२१ हमारी ढाल वही है। क्योंकि हमारा अन्त:करण उस्से आनन्दित
होगा इस कारण कि हम ने उस के पवित्र नाम पर भरोसा
२२ रक्खा है। हे परमेश्वर तेरी दया हम पर होवे जैसा हम ने
तेरी आशा किई है॥

चौंतीसवां गीत।

दाऊद का गीत जब उस ने अबिमलिक के साम्हने अपनी
समुझ को बदल डाला और उस ने उसे निकलवा
दिया और वुह चला गया॥

१ मैं हर समय परमेश्वर को धन्य कहूंगा उस की स्तुति सदा
२ मेरे मुंह में होगी। मेरा प्राण परमेश्वर पर फूलता रहेगा दीन
३ सुनेंगे और आनन्दित होंगे। मेरे साथ परमेश्वर की बड़ी स्तुति
करो और हम मिलके उस का नाम ऊंचा करें॥
४ मैं ने परमेश्वर को खोजा और उस ने मेरी सुनी और मेरे
५ सारे भय से मुझे छुड़ाया। उन्हों ने उस की ओर दृष्टि किई
और उंजियाला हो गये और उन के मुंह लज्जित न हों।
६ यह दुखी चिल्लाया और परमेश्वर ने सुना और उसे उस की सारी
७ बिपतों से बचाया। परमेश्वर का दूत उस के डरनेहारों के
८ चहूंओर छावनी किये है और उस ने उन्हें छुड़ाया है। चीखो
और देखो कि परमेश्वर भला है वुह मनुष्य क्या ही धन्य जो
९ उस पर भरोसा रखता है। हे उस के संतो परमेश्वर से डरो
१० क्योंकि उस के डरनेहारों को कुछ कमी नहीं। तरुण सिंह
वाञ्छित और भूखे हुए पर परमेश्वर के खोजी किसी अच्छी
वस्तु के आकांक्षित न होंगे॥

११ आओ हे लड़को मेरी सुनो मैं तुम्हें परमेश्वर का भय सिखाऊंगा।
१२ वुह कौन मनुष्य है जो जीवन को चाहता और दिनों से प्रेम
१३ रखता है जिसतें भलाई को देखे। अपनी जीभ को बुराई से
१४ और अपने होंठों को झूठ बोलने से रोक रख। बुराई से फिर आ
और भलाई कर कुशल को ढूंढ और उस का पीछा कर॥
१५ परमेश्वर की आंखें धर्म्मियों की ओर हैं और उस के कान
१६ उन की दोहाई की ओर। परमेश्वर का मुंह कुकर्म्मियों के
१७ विरुद्ध है जिसतें उन की चर्चा पृथिवी पर से मिटा दे। वे
चिल्लाये और परमेश्वर ने सुना और उन के सारे दुखों से उन्हें
१८ छुड़ाया। परमेश्वर चूर्ण मनों के निकट है और जिन का आत्मा
१९ कुचला हुआ है उन्हें बचावेगा। धर्म्मी पर बहुत सी विपत्ति
२० पड़ती हैं पर परमेश्वर उन सभों से उसे छुड़ावेगा। जो उस की
सारी हड्डियों का रक्षक है उन में से एक भी टूटने नहीं पाती।
२१ क्लेश दुष्ट को मृत्यु तक पहुंचावेगा और धर्म्मी के बैरी दोषी
२२ ठहरेंगे। परमेश्वर अपने सेवकों के प्राण को बचाता है और
उस के सारे भरोसा रखनेहारों में से एक भी दोषी न ठहरेगा॥

पैंतीसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर मेरे लड़नेहारों से लड़ मेरे निगलनेहारों को
२ निगल जा। ढाल और फरी को थाम और मेरी सहाय के लिये
३ खड़ा हो। और भाला निकाल और मेरे पीछा करनेहारों के
साम्हने में मार्ग रोक मेरे प्राण से कह कि मैं तेरी मुक्ति हूं।
४ मेरे प्राण के गाहक लज्जित और संकोचित हों मेरी बुराई के
५ चाहनेहारे पीछे हटाये जायें और लज्जित हों। वे भूसे की
नाईं हों जो बयार के साम्हने है और परमेश्वर का दूत उन्हें
६ मारता हो। उन का मार्ग अंधियारा और फिसलहा होवे और

७ परमेश्वर का दूत उन्हें रगेदता हो। क्योंकि उन्हों ने अकारण
मेरे लिये गड़हे में अपना जाल छिपाया उन्हों ने अकारण मेरे
प्राण के लिये खोदा ॥
८ उस पर अचानक बिनाश आवे और उस का जाल जिसे उस
ने छिपाया है उसे फंसा ले वुह बिनाश के साथ उस में गिरे।
९ और मेरा प्राण परमेश्वर में आनन्दित होगा उस की मुक्ति में
१० मगन होगा। मेरी सारी हड्डियां कहेंगी कि हे परमेश्वर तेरे
तुल्य कौन है जो दुखी को उस मनुष्य से जो उस्से बलवान
है हां दुखी और कंगाल को उस के लूटनेहारे से छुड़ाता
है ॥
११ अंधेर के साक्षी उठते हैं वे मुझ से उस के विषय में प्रश्न
१२ करते हैं जिस को मैं ने नहीं जाना। वे भलाई की संती मुझे
१३ बुराई का पलटा देते हैं बरन मेरे प्राण के लिये नष्टता। और
मैं जब वे रोगी हुए तब मेरा पहिराव टाट था मैं ने ब्रत से
अपने प्राण को दुख दिया और मेरी प्रार्थना मेरी गोद में फिर
१४ आवेगी। मेरी चाल ऐसी थी कि वुह मेरा हितु मेरा भाई था
जैसा कोई माता के लिये बिलाप करे वैसा ही मैं मैला कुचैला
१५ होकर झुक गया। और वे मेरे लंगड़ाने से आनन्दित हुए
और एकट्ठे हो गये लंगड़े मेरे बिरोध में एकट्ठे हुए और मैं ने
१६ न जाना उन्हों ने फाड़ा और चुप न रहे। उन निकम्मों के
साथ जो रोटी के लिये ठट्ठा करते हैं जिन्हों ने मुझ पर अपने
दांत पीसे ॥
१७ हे प्रभु तू कब लों देखेगा मेरे प्राण को उन की बुराई से
१८ फेर ला मेरे अकेले को तरुण सिंहों से। मैं बड़ी मंडली में
तेरा धन्यवाद करूंगा बलवान लोगों में तेरी स्तुति करूंगा।
१९ मेरे झूठ कहनेहारे बैरी मुझ पर आनन्दित न होने पायें और
२० जो अकारण मेरे बैरी हैं वे आंख न मारने पायें। क्योंकि वे

कुशल की बात नहीं करते और पृथिवी के मुखियों के बिरोध
२१ छल की बातें सोचते हैं। और उन्हों ने मुझ पर अपना
मुंह बिचकाया है उन्हों ने कहा है कि अहा अहा हमारी आंखों
ने देखा है॥
२२ हे परमेश्वर तू ने देखा है चुपका मत रह हे प्रभु मुझ से
२३ दूर मत रह। मेरे बिचार के लिये और मेरे झगड़े के लिये
हे मेरे ईश्वर और मेरे परमेश्वर अपने तईं जगा और चौंका।
२४ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर अपने धर्म्म के समान मेरा बिचार कर
२५ और वे मेरे बिषय में आनन्दित न होने पायें। वे अपने मन
में न कहने पायें आहा हमारे मन की इच्छा वे न कहने पायें
२६ कि हम उसे निंगल गये। मेरी बिपत्ति से आनन्द करनेहारे
एक ही साथ लज्जित और संकोचित हों जो मेरे बिरुद्ध में आप
२७ को बढ़ाते हैं वे लाज और दुर्नामी का पहिरावा पहिनें। मेरे
धर्म्म के चाहनेहारे ललकारें और आनन्द करें और नित कहा
करें कि परमेश्वर महान हो जो अपने सेवक के कुशल का
२८ चाहनेहारा है। और मेरी जीभ तेरे धर्म्म का हां सब दिन तेरी
स्तुति का चर्चा किया करेगी॥

छत्तीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये परमेश्वर के सेवक दाऊद का गीत॥

१ मुझ दुष्ट से मेरे मन के भीतर बुराई बात करती है उस
२ की आंखों के आगे ईश्वर का भय तनिक भी नहीं। क्योंकि उस
ने अपने अधर्म्म के ढूंढ निकालने के बिषय और उस्से घिन
करने के बिषय अपनी समुझ में अपने बिषय में चिकनी चिकनी
३ बातें किई हैं। उस के मुंह की बातें झूठ और छल हैं वुह
४ ज्ञान की बातें करने और भलाई करने से फिरा है। वुह अपने
बिछौने पर झूठ सोचा करता है वुह अपने तईं उस मार्ग पर

खड़ा करता है जो अच्छा नहीं है वुह बुराई को नहीं
छोड़ता ॥
५ हे परमेश्वर तेरी दया स्वर्गों पर है और तेरी सच्चाई मेघों
६ लों। तेरा धर्म्म सर्वशक्तिमान के पर्वतों की नाईं है तेरे न्याय
बड़े गहिराव हैं हे परमेश्वर तू मनुष्य और पशुन को बचाता
७ है। हे ईश्वर तेरी दया क्या ही बहुमूल्य है और मनुष्य के संतान
८ तेरे पंखों की छाया के नीचे आश्रय ले सक्ते हैं। वे तेरे घर की
चिक्नाई से सन्तुष्ट होके पियेंगे और तू अपने बिलासों की नदी से
९ उन्हें तृप्त करेगा। क्योंकि जीवन का सोता तेरे पास है तेरे
उंजियाले में हम उंजियाले को देखेंगे ॥
१० अपनी दया को अपने पहिचान्नेहारों के लिये और सूधे मनवालों
११ के लिये अपने धर्म्म को बढ़ाता रह। घमण्ड का पांव मुझ
पर आने न पाये और दुष्टों का हाथ मुझे ढेशांच करने
न पाये ॥
१२ कुकर्म्मी वहीं गिर पड़े हैं वे ढकेले गये और उठ नहीं सक्ते ॥

सैंतीसवां गीत।

दाऊद का गीत ॥

१ कुकर्म्मियों के कारण से तू अपने तईं न कुढ़ और बुराई
२ करनेहारों पर डाह न खा। क्योंकि घास की नाईं वे झट से
३ काटे जायेंगे और हरयाली की नाईं मुरझावेंगे। परमेश्वर पर
भरोसा रख और भलाई कर पृथिवी पर बास कर और सत्यता
४ पर चराई कर। और परमेश्वर पर अपने तईं मगन कर और
५ वुह तुझे तेरे मन की इच्छा पूरी करेगा। अपना मार्ग परमेश्वर
पर छोड़ दे और उस पर भरोसा कर और वुह आप बना लेगा।
६ और तेरे धर्म्म को उंजियाले की नाईं और तेरे न्याय को दो
पहर की नाईं निकालेगा ॥

७ परमेश्वर के आगे चुप रह और उस की बाट जोह उस पर
जो अपने मार्ग को भाग्यमान करता है अपने तईं मत कुढ़ा
८ उस मनुष्य पर जो कुमंत्रणा करता है। क्रोध को छोड़ और
कोप को त्याग दे तू केवल बुराई करने के लिये अपने तईं न
९ कुढ़ा। क्योंकि कुकर्म्मी काट डाले जायेंगे और परमेश्वर के आश्रित
१० वे ही पृथिवी के अधिकारी होंगे। और थोड़ी बेर में और दुष्ट है
ही नहीं और तू उस के स्थान पर सोच करेगा वुह भी किंचित
११ नहीं। और दीन पृथिवी के अधिकारी होंगे और चैन की बहुताई
से अपने तईं मगन करेंगे॥

१२ दुष्ट धर्म्मी के लिये युक्ति बांधता है और उस पर अपने
१३ दांत किचकिचाता है। प्रभु उस पर हंसता है क्योंकि उस ने
१४ देखा है कि उस का दिन आयेगा। दुष्टों ने तलवार निकाली
और अपनी कमान खैंची है जिसतें दुखी और कंगाल को गिरा
१५ दें और उन्हें जिन का मार्ग सीधा है बध करें। उन की तलवार
उन्हीं के हृदय में पैठेगी और उन के धनुष तोड़े जायेंगे॥

१६ थोड़ा सा जो धर्म्मी का है बहुत दुष्टों के हूहूकार से भला
१७ है। क्योंकि दुष्टों की भुजा तोड़ी जायेगी और धर्म्मियों का
संभालनेहारा परमेश्वर है॥

१८ परमेश्वर खरों के दिनों को जानता है और उन का अधिकार
१९ सर्वदा लों रहेगा। वे बिपत्ति के समय लज्जित न होंगे और
२० अकाल के दिनों में तृप्त रहेंगे। क्योंकि दुष्ट नष्ट होंगे और
परमेश्वर के बैरी मेम्ना की चिकनाई की नाईं जाते रहे वे धूएं
२१ में जाते रहे। दुष्ट उधार लेता है और भर नहीं देता और धर्म्मी
२२ दया करता है और देता है। क्योंकि उस के आशीर्बादी लोग
पृथिवी के अधिकारी होंगे और उस के स्रापित काट डाले
जायेंगे॥

२३ भले मनुष्य के डग परमेश्वर से स्थिर हुए और वुह उस के

२४ मार्ग में आनन्दित होगा। क्योंकि वुह गिरेगा परन्तु पड़ा न
२५ रहेगा क्योंकि परमेश्वर उस का हाथ थामता है। मैं बालक था
वृद्ध भी हुआ और मैं ने धर्म्मी को अव्यवहारित और उस के
२६ बंश को रोटी मांगते न देखा। वुह सारे दिन दया करता है
और उधार देता है और उस का बंश आशीष का कारण है॥
२७ बुराई से अलग हो और भलाई कर और सदा लों बास कर।
२८ क्योंकि परमेश्वर न्याय से प्रीति रखता है और अपने अनुग्रहितों को
छोड़ न देगा वे सदा लों रक्षित हैं और दुष्टों का बंश कट गया।
२९ धर्म्मी भूमि के अधिकारी होंगे और सदा लों उस पर बास
करेंगे॥
३० धर्म्मी का मुंह बुद्धि बर्णन करता है और उस की जीभ
३१ न्याय का बचन बोलती है। उस के ईश्वर की व्यवस्था उस के
३२ मन में है उस के डग न हटेंगे। दुष्ट धर्म्मी की घात में लगा
३३ रहता है और उसे घात करने चाहता है। परमेश्वर उसे उस
के हाथ में न छोड़ेगा और जब उस का न्याय किया जाय तब
३४ उसे दोषी न ठहरावेगा। परमेश्वर के लिये आशा कर और उस
के मार्ग को थाम और वुह तुझे पृथिवी के अधिकारी होने के लिये
बढ़ती देगा जब दुष्ट काट डाले जायेंगे तब तू देखेगा॥
३५ मैं ने दुष्ट को डरौना और देसी हरे पेड़ के नाईं अपने तईं
३६ फैलते हुए देखा। और वुह जाता रहा और देख वुह था ही
३७ नहीं और मैं ने उसे ढूंढा और वुह न मिला। सिद्ध मनुष्य को
ताक रख और खरे को देख क्योंकि कुशल चाहनेहारे मनुष्य के
३८ लिये अंत है। और अपराधी एक ही संग नष्ट हुए दुष्टों का
३९ अंत कट गया। और धर्म्मियों की मुक्ति परमेश्वर से है दुख
४० के समय वुह उन का गढ़ है। और परमेश्वर ने उन की
सहायता किई और उन्हें छुड़ाया है वुह उन्हें दुष्टों से छुड़ावेगा
और उन्हें बचावेगा क्योंकि उन्हों ने उस पर भरोसा रक्खा है॥

अठतीसवां गीत ।

स्मरण कराने के लिये दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर अपने क्रोध से मुझे मत दपट और न अपने
२ कोप की तपन से मुझे दण्ड दे । क्योंकि तेरे बाण मुझ में चुभ
गये हैं और तेरा हाथ मुझ पर बल के साथ पड़ा है ॥
३ तेरे कोप के कारण से मेरी देह में कहीं आरोग्यता नहीं
४ मेरे पाप के कारण से मेरी हड्डियों में कहीं कल नहीं । क्योंकि
मेरे अधर्म्म मेरे सिर पर से ऊपर हो गये भारी बोझ की नाईं
५ वे मेरे लिये भारी हैं । मेरी मूर्खता के कारण से मेरे घाव बास
६ करने लगे और बहते हैं । मैं ऐंठ गया अति झुक गया मैं
७ सारे दिन मैला कुचैला चलता फिरता रहा । क्योंकि मेरी कटि शुष्क
८ से भर गई और मेरी देह में कहीं आरोग्यता नहीं । मैं ठिठुर
गया और अति पिस गया हूं अपने मन के चिल्लाने से गर्ज उठा हूं ॥
९ हे प्रभु मेरी सारी इच्छा तेरे आगे है और मेरा कराहना
१० तुझ से छिपा नहीं । मेरा मन धड़कता है मेरे बूते ने मुझे
छोड़ दिया है और मेरी जिन आंखों में ज्योति थी वे भी मेरे
११ साथ नहीं हैं । मेरे मित्र और मेरे साथी मेरी ताड़ना के आगे
१२ से अलग खड़े हैं और मेरे कुटुम्ब दूर खड़े हुए हैं । और जो
मेरे प्राण के गाहक हैं उन्हों ने फंदे लगाये हैं और मेरी हानि
के चाहकों ने बुराई की बातें कही हैं और सारे दिन छल की
१३ जुगुत सोचते हैं । और मैं बहिरे के समान नहीं सुनता और
१४ गूंगे के समान हूं जो अपना मुंह नहीं खोलता । और मैं उस
मनुष्य की नाईं हुआ जो नहीं सुनता और जिस के मुंह में कुछ
उत्तर नहीं ॥
१५ क्योंकि हे परमेश्वर मैं ने तेरी बाट जोही है प्रभु मेरे
१६ ईश्वर तू ही उत्तर देगा । क्योंकि मैं ने कहा न हो कि वे मुझ

पर आनन्दित होवें मेरे पांव के टलने में वे मुझ पर फूले हैं।
१७ क्योंकि मैं लंगड़ाने पर हूं और मेरा शोक सदा मेरे आगे है।
१८ क्योंकि मैं अपना अधर्म्म मान लेता हूं अपने पाप के कारण से
१९ उदास रहता हूं। और मेरे प्राण के बैरी बलवन्त हैं और जो
२० अकारण मेरे बैरी हैं वे बढ़ गये। और वे जो भलाई की संती
बुराई का बदला देते हैं वे इस कारण से मेरे बिरोधी हैं कि
२१ मैं भलाई का पीछा करता हूं। हे परमेश्वर मुझे मत त्याग हे
२२ मेरे ईश्वर मुझ से दूर मत रह। मेरी सहाय के लिये शीघ्र
कर हे मेरी मुक्ति के प्रभु॥

उन्तालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये अर्थात् यदूतून के लिये
दाऊद का गीत॥

१ मैं ने कहा कि अपने मार्गों की चौकसी करूंगा जिसतें अपनी
जीभ से पाप न करूं जब लों कि दुष्ट मेरे साम्हने है मैं अपने
२ मुंह पर खोंच लगाऊंगा। मैं गूंगा होके चुप हो रहा भलाई
३ से अपना मुंह मूंद लिया और मेरा शोक उभारा गया। मेरा
मन मेरे भीतर जल उठा जब मैं सोचता हूं तब आग भड़कती
है मैं अपनी जीभ से बोल उठा॥

४ कि हे परमेश्वर मेरे अंत का मुझे ज्ञान दे और मेरे दिनों
का प्रमाण कि वुह कितना है मैं जान्ने चाहता हूं कि किस समय
५ समाप्त हूंगा। देख तू ने मेरे दिन बित्तों से दिये हैं और मेरी
स्थापिता तेरे साम्हने मानो निकम्मी है सारे मनुष्य केवल सर्व्वथा
६ बृथा स्थापित हुए हैं। सिलाह। मनुष्य केवल स्वरूप में चलता
फिरता है वे केवल क्षण भर धूम धाम करते हैं वुह धन
का ढेर करता है और नहीं जानता कि कौन उन्हें बटोर ले
जायगा॥

७ और अब मैं ने किस की बाट जोही है हे प्रभु मेरी
८ आशा तुझी पर है। मुझ को मेरे सारे अपराधों से छुड़ा मुझे
९ मूर्खों की निन्दा न बना। मैं चुपका हो गया हूं अपना मुंह
१० न खोलूंगा क्योंकि तू ही ने यह किया है। अपनी ताड़ना मुझ
११ पर से हटा ले मैं तो तेरे हाथ की मार से नाश हो गया। तू
अधर्म्म के कारण से दपटों के साथ मनुष्य को दण्ड देता है
और उस की वाञ्छित वस्तु को कीड़े के समान नाश कर डालता
है सारे मनुष्य केवल वृथा हैं। सिलाह॥
१२ हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन ले और मेरी दोहाई पर कान
धर मेरे आंसुओं से चुप मत रह क्योंकि मैं तेरे साथ परदेशी
१३ हूं अपने सारे पितरों की नाईं याची। मुझ से क्रोध की दृष्टि
फेर ले और मैं मगन हूं उस्से पहिले कि मैं जाऊं और फिर न
रहूं॥

चालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत॥

१ मैं ने धीर्ज के साथ परमेश्वर की बाट जोही है और उस ने
२ अपना कान मेरी ओर झुकाया और मेरी दोहाई सुनी। और
मुझे भयंकर गहिराव से और दलदल की कीच से उठा लिया
और मेरे पांओं को चटान पर स्थिर किया उस ने मेरे डगों को
३ अचल किया। और मेरे मुंह में नया गीत डाला अर्थात् हमारे
ईश्वर की स्तुति बहुतेरे देखेंगे और डरेंगे और परमेश्वर पर भरोसा
४ रक्खेंगे। वुह मनुष्य क्या ही धन्य है जिस ने परमेश्वर को अपनी
आड़ का स्थान ठहराया है और अहंकारियों की ओर उन को
ओर जो झूठ की ओर बगदते हैं नहीं फिरा॥
५ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू ने बहुत से काम किये हैं हो
नहीं सक्ता कि तेरे अनूठे और तेरी चिंतों को जो हमारे

विषय में हैं तेरे साम्हने क्रम से बखान कर सकें मैं चर्चा और
६ वर्णन किया चाहता हूं परन्तु वे गिनती से बाहर हैं। बलि
और भेंट से तू प्रसन्न नहीं तू ने मेरे कान छेदे हैं बलिदान की
७ भेंट और पाप की भेंट को तू ने नहीं चाहा। तब मैं ने कहा
देख मैं आता हूं पुस्तक के पत्रों में मेरे विषय में लिखा है।
८ हे मेरे ईश्वर मैं तेरी इच्छा मान्ने से आनन्दित हुआ हूं और
९ तेरी व्यवस्था मेरे मन के भीतर है। मैं ने बड़ी मंडली में
धर्म्म को प्रचारा है देख मैं अपने होंठों को न रोकूंगा हे
१० परमेश्वर तू जानता है। मैं ने तेरे धर्म्म को अपने मन के
भीतर नहीं छिपाया मैं ने तेरी सच्चाई और तेरी मुक्ति को वर्णन
किया है मैं ने तेरी दया और तेरी सच्चाई को बड़ी मंडली से
नहीं छिपाया॥

११ हे परमेश्वर तू अपनी दया मुझ से रोक न रक्खेगा तेरी दया
१२ और तेरी सच्चाई नित मेरी रक्षा करेंगी। क्योंकि अगणित बुराइयों
ने मुझे घेरा है मेरे पापों ने मुझे पकड़ लिया है और मैं देख
नहीं सक्ता वे मेरे सिर के बालों से अधिक हैं और मेरे मन ने
१३ मुझे छोड़ दिया है। हे परमेश्वर मुझे छुटकारा देने पर प्रसन्न
१४ हो हे परमेश्वर मेरी सहायता के लिये शीघ्र कर। वे जो मेरे
प्राण के चाहक हैं कि उसे नाश करें एक साथ लज्जित और
संकोचित होंगे मेरे दुख के चाहनेहारे पीछे हटाये और लज्जित
१५ किये जायेंगे। जो मुझ पर अहा अहा कहते हैं वे अपनी लाज के
१६ कारण से उजड़ जायेंगे। तेरे सारे खोजी तुझ से आनन्दित
और मगन होंगे तेरी मुक्ति के प्रेमी नित कहा करेंगे कि परमेश्वर
१७ महान हो। और मैं दुखी और कंगाल हूं परमेश्वर मेरी चिंता
करेगा मेरा सहायक और मेरा छुड़ानेवाला तू ही है हे मेरे
ईश्वर विलम्ब न कर॥

एकतालीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ वुह क्या ही धन्य है जो कंगाल के विषय में बुद्धिमानी
२ करता है परमेश्वर बिपत्ति के दिन उसे छुड़ावेगा । परमेश्वर उस
की रक्षा करेगा और उसे जीता रक्खेगा वुह भूमि पर आशीषित
रहेगा और तू उसे उस के बैरियों की इच्छा पर न छोड़ ।
३ परमेश्वर उसे रोग के बिछौने पर संभालेगा तू ने उस की बेरामी
में उस के सारे बिछौने को उलटके बिछाया है ॥

४ मैं ने कहा है कि हे परमेश्वर मुझ पर दया कर मेरे प्राण को
५ चंगा कर क्योंकि मैं ने तेरा पाप किया है । मेरे बैरी मेरे विषय
में बुरा कहते हैं कि वुह कब मरेगा और कब उस का नाम
६ मिट जायेगा । और यदि वुह देखने को आए तो मिथ्या बोलेगा
वुह अपने मन में अपने लिये अधर्म्म बटोरता है वुह बाहर
७ जायेगा और मार्ग में बखान करेगा । मेरे सारे बैरी आपुस में
मेरे बिरोध में फुसफुसाते हैं वे मेरे बिषय में मेरी हानि की
८ परामर्श करते हैं । दुष्टता की बात उस में उंडेली गई और
९ जो वहां पड़ा है वुह फेर न उठेगा । जिस्से मैं मिलाप रखता
था जिस पर मेरा भरोसा था जो मेरी रोटी खाता था उस
मनुष्य ने भी मुझ पर लात उठाई है ॥

१० और तू हे परमेश्वर मुझ पर दया कर और मुझे उठाके खड़ा
११ कर और मैं उन से बदला लूंगा । इस्से मैं ने जाना है कि तू
मुझ से प्रसन्न हुआ कि मेरा बैरी मुझ पर जय नहीं पा सक्ता ।
१२ और मैं जो हूं तू ने मेरी खराई में मुझे थांभा और मुझे अपने
१३ साम्हने सदा लों रक्खा है । परमेश्वर इसराएल का ईश्वर सनातन
से सनातन लों धन्य होवे । आमीन और आमीन ॥

बयालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये कोरह के पुत्रों के लिये
उपदेश का गीत ॥

१ जैसा हरणी पानी की नदियों के लिये हांफती है वैसा ही
२ मेरा प्राण हे ईश्वर तेरे लिये हांफता है। मेरा प्राण ईश्वर के
लिये जीवते सर्वशक्तिमान के लिये पियासा है मैं कब आऊंगा
३ और ईश्वर के आगे आके उपस्थित होऊंगा। मेरा आंसू रात
दिन मेरे लिये रोटी हुआ है जब वे सारे दिन मुझ से कहते
४ थे कि तेरा ईश्वर कहां है। मैं इन बातों को स्मरण करूंगा
और मन ही मन में सोच औ बिचार करूंगा जब मंडली में
चलूंगा आनन्द और स्तुति के शब्द और पर्व के धूमधाम से उन
के संग ईश्वर के घर में जाऊंगा ॥

५ हे मेरे प्राण तू आप को क्यों झुकाया करेगा और मुझ में
धूम मचायेगा ईश्वर की बाट जोह क्योंकि मैं उस के मुंह की
मुक्ति के लिये फिर उस की स्तुति करूंगा ॥

६ हे मेरे ईश्वर मेरा प्राण मुझ में आप को झुकाया करता है
इस कारण मैं यरदन और हरमूनीम की भूमि से और मिसग़ार
७ के पहाड़ से तुझे स्मरण करूंगा। तेरे परनालों के शब्द से
गहिराव गहिराव को पुकारता है तेरी सारी लहरें और तेरे ढेव
८ मेरे ऊपर से चले गये हैं। दिन को परमेश्वर अपनी दया और
रात को अपना गीत मेरे साथ रहने को आज्ञा करेगा मेरे जीवन
९ के सर्वशक्तिमान से मेरी प्रार्थना होगी। मैं सर्वशक्तिमान से जो
मेरी चटान है कहूंगा कि तू मुझे क्यों भूल गया मैं क्यों बैरी
१० के अंधेर से विलाप करता चलूं। मेरी हड्डियों की टूटन के
संग मेरे बैरियों ने मुझ पर निन्दा किई है जब वे सारे दिन
मुझ से कहते थे कि तेरा ईश्वर कहां है ॥

११ हे मेरे प्राण तू आप को क्यों झुकाया करेगा और क्यों मुझ
में धूम मचाया करेगा ईश्वर की बाट जोह क्योंकि मैं फिर उस
की स्तुति करूंगा जो मेरे मुंह की मुक्ति और मेरा ईश्वर है ॥

तेंतालीसवां गीत ।

१ हे ईश्वर मेरा न्याय कर और निर्दई जातिगण से मेरे विवाद में
मेरी सहाय कर छली और टेढ़े मनुष्य से तू मुझे छुड़ावेगा ।
२ क्योंकि मेरे गढ़ का ईश्वर तू ही है किस कारण तू ने मुझे छोड़ा
३ हे किस कारण मैं बैरी के अंधेर से शोक करता फिरूं । अपनी
ज्योति और अपनी सच्चाई को भेज वे ही मेरी अगुआई करेंगी
मुझे तेरे पवित्र पर्वत पर और तेरे तंबुओं के पास पहुंचायेंगी ।
४ और मैं ईश्वर की बेदी के पास आऊंगा सर्वशक्तिमान के पास जो
मेरा बड़ा आनन्द है और हे ईश्वर मेरे ईश्वर मैं बीणा के संग
तेरी स्तुति करूंगा ॥
५ हे मेरे प्राण तू आप को क्यों झुकाया करेगा और क्यों मुझ
में धूम मचायेगा ईश्वर की बाट जोह क्योंकि मैं फिर उस की
स्तुति करूंगा जो मेरे मुंह की मुक्ति और मेरा ईश्वर है ॥

चवालीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये कोरह के पुत्रों के लिये
उपदेश का गीत ॥

१ हे ईश्वर हम ने अपने कानों से सुना हमारे पितरों ने हम से
वुह कार्य्य बर्णन किया है जो तू ने उन के दिनों में अगले
२ समयों में किया । तू ने अपने हाथ से जातिगणों को बिन
अधिकार किया और इन्हें जमाया लोगों को दबाया और इन्हें
३ फैलाया । क्योंकि वे अपनी ही तलवार से पृथिवी के अधिकारी
नहीं हुए और न उन के भुजा ने उन्हें मुक्ति दिई परन्तु तेरे

दहिने हाथ और तेरी भुजा और तेरे रूप की ज्योति ने यह
किया क्योंकि तू उन से प्रसन्न था ॥
४ हे ईश्वर तू ही मेरा राजा है यअ़क़ूब के लिये छुटकारे की
५ आज्ञा कर। तेरी ही सहाय से हम अपने सतानेहारों को ठेल
देंगे हम तेरे नाम से अपने बिरोधियों को लतरौंदन करेंगे।
६ क्योंकि मैं अपने धनुष पर भरोसा न रक्खूंगा और मेरी तलवार
७ मुझे छुटकारा न देगी। क्योंकि तू ने हमें हमारे सतानेहारों
८ से बचाया और हमारे शत्रुन को लज्जित किया है। हम ने
सारे दिन ईश्वर पर फूलना किया है और सदा तेरे नाम का
स्वीकार करेंगे। सिलाह ॥
९ परन्तु तू ने हमें त्यागा और लज्जित किया है और हमारी
१० सेनाओं के साथ न चलेगा। तू सतानेहारे के साम्हने से हमें
पांव के पीछे करेगा और हमारे शत्रुओं ने अपने लिये लूट पाई
११ है। तू हमें भोजन की भेड़ों के समान बनायेगा और जातिगणों
१२ के मध्य तू ने हमें छिन्न भिन्न किया है। तू अपने लोगों को
संत बेच डालेगा और तू ने उन के मोल से अपने धन को नहीं
१३ बढ़ाया है। तू हमें हमारे परोसियों के लिये निन्दा बनायेगा
१४ हमारे अड़ोस पड़ोस वालों के लिये ठट्ठा और हंसी। तू हमें
जातिगणों में कहावत बनावेगा लोगों में सिर हिलाने का कारण।
१५ सारे दिन मेरा अपमान मेरे साम्हने है और लाज ने मेरे मुंह
१६ को ढांप लिया है। दोषक और ठट्ठा करनेहारे के शब्द से बैरी
और पलटा लेनेहारे के साम्ने से ॥
१७ यह सब हम पर बीता और हम तुझे नहीं भूले और न
१८ तेरी बाचा से बगद गये हैं। हमारा मन पीछे नहीं फिरा और
१९ न हमारा डग तेरे मार्ग से हटा। कि तू ने हमें गीदड़ों के
स्थान में कुचला है और मृत्यु की छाया से हमें ढांपा है।
२० यदि हम अपने ईश्वर के नाम को भूले और ठपरी देव की ओर

२१ अपने हाथ फैलाये हों। क्या ईश्वर इसे ढूंढ न निकालेगा क्योंकि
२२ वही मन के भेदों को जानता है। क्योंकि हम तेरे लिये सारे
दिन घात हुए हैं हम घात होने की भेड़ के नाईं गिने गये
हैं ॥
२३ जाग हे प्रभु तू किस लिये सोता रहेगा जाग सदा लों दूर
२४ न कर। तू किस लिये अपना मुंह छिपायेगा हमारे दुख और
२५ हमारी त्रिपत्ति को भुला देगा। क्योंकि हमारा प्राण धूल लों
२६ झुक गया हमारा पेट भूमि से चिपक गया। हमारी सहाय के
लिये उठ और अपनी दया के कारण से हमें उद्धार दे ॥

पैंतालीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये सोसनों के विषय में कोरह के पुत्रों
के लिये उपदेश का गीत पियारियों का गान ॥

१ मेरा मन उबल रहा है मैं अच्छी बात कहता हूं मेरे कार्य्य
राजा के लिये हों मेरी जीभ चटक लेखक की लेखनी हो।
२ तू मनुष्य के संतानों से अति सुन्दर औ स्वरूप है तेरे होंठों
में अनुग्रह उंडेला गया है इसी लिये ईश्वर ने तुझे सदा के लिये
आशीष दिई है ॥

३ हे शक्तिमान अपनी तलवार कटि पर बांध अपने बिभव
४ और अपने माहात्म्य समेत। और अपने माहात्म्य में सत्यता
और कोमलता औ धर्म्मता के कारण चढ़के आगे बढ़ और तेरा
५ दहिना हाथ तुझे भयंकर कार्य्यों का मार्ग दिखावेगा। राजा के
वैरियों के अंतःकरण में तेरे बाण चोखे किये गये हैं लोग तेरे
नीचे गिरेंगे ॥

६ हे ईश्वर तेरा सिंहासन सनातन से सनातन लों है तेरे राज्य
७ का राजदंड सच्चाई का दंड है। तू ने धर्म्म को प्रेम रक्खा
और दुष्टता से घिन किया है इसी कारण से ईश्वर तेरे ईश्वर ने

आनन्द के तेल से तेरे संगियों से अधिक तुझे अभिषिक्त किया
है ॥
८ तेरे सारे पहिरावे बोल और अगर और तज हैं हाथीदांत
के भवनों से वहीं से उन्हों ने तुझे आनन्दित किया है ।
९ राजा की बेटियां तेरी बहुमूलियों में हैं रानी ओफीर के सोने
१० से संवारी जाके तेरे दहिने हाथ बैठलाई गई है । हे बेटी
सुन और देख और अपना कान झुका और अपनी जाति और
११ अपने पिता के घर को भूल जा । और राजा तेरी सुन्दरता का
अभिलाषी हो क्योंकि वही तेरा प्रभु है और तू उस को दण्डवत
१२ कर । और सूर की बेटी अर्थात् सब से धनमान लोग भेंट के
द्वारा से तेरी कृपा की बिनती करेंगे ॥
१३ राजा की बेटी भवन के भीतर सम्पूर्ण प्राक्रमी है उस का
१४ पहिराव सोनहला बूटेदार है । बहुरंगी पहिराव में वुह राजा
के पास पहुंचाई जायगी उस के पीछे पीछे उस की संगी कुंआरियां
१५ तुझ पास लाई गईं । वे मंगल और मगनता के संग पहुंचाई
१६ जायेंगी राजा के भवन में आयेंगी । तेरे पितरों की संती तेरे
१७ संतान होंगे तू उन्हें सारी पृथिवी पर अध्यक्ष ठहरावेगा । मैं
सारी पीढ़ियों में तेरे नाम का स्मरण कराऊंगा इस कारण से
लोग सर्वदा लों तेरा स्वीकार करेंगे ॥

छियालीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये कोरह के पुत्रों के लिये कुमारियों
के शब्द के संग । गान ॥

१ ईश्वर हमारे लिये शरणस्थान और बल है वुह बिपत्तों में
२ बड़ा ही सहायक पाया गया । इसी कारण से पृथिवी के बदल
जाने और पर्वतों के समुद्रों के अंतःकरण में हिल जाने से हम
३ न डरेंगे । उस के पानी हड़हड़ावें और फेनावें उस के बढ़ने

४ से पर्वत थर्थरावें । सिलाह । एक नदी है जिस की धारें ईश्वर
के नगर अर्थात् अति महान के निवासों के पवित्र स्थान को
५ आनन्दित करेंगी । ईश्वर उस के मध्य में है वुह न टलेगा
६ ईश्वर बिहान होते ही उस की सहाय करेगा । जातिगणों ने
हुल्लर मचाया राज्य कंप उठे उस ने अपना शब्द दिया है
७ पृथिवी पिघल जायगी । परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर हमारे साथ
है यअ़क़ूब का ईश्वर हमारे लिये शरणस्थान है । सिलाह ॥
८ आओ परमेश्वर के कार्य्यों को देखो जिस ने पृथिवी पर उजाड़
९ किया है । जो पृथिवी के अंत लों लड़ाइयों को उठा डालता
है वुह धनुष को तोड़ेगा और बर्छी को टुकड़े टुकड़े करेगा रथों
१० को आग से जलावेगा । थम जाओ और जानो कि मैं ईश्वर हूं
मैं जातिगणों में प्रतिष्ठित होऊंगा पृथिवी पर महान होऊंगा ।
११ परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर हमारे साथ है यअ़क़ूब का ईश्वर हमारे
लिये शरणस्थान है । सिलाह ॥

सैंतालीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये कोरह के पुत्रों का गीत ॥

१ हे सब लोगो तालियां बजाओ जय के शब्द से ईश्वर के
२ लिये ललकारो । क्योंकि परमेश्वर महान भयंकर है वुह सारी
३ पृथिवी पर महाराजा है। वुह जातिगणों को हमारे नीचे दबावेगा
४ और लोगों को हमारे पांव के नीचे । वुह हमारे लिये हमारे
अधिकार को चुनेगा यअ़क़ूब की ऊंचाई को जिसे उस ने प्यार
किया है । सिलाह ॥
५ ईश्वर ललकार के साथ चढ़ गया है परमेश्वर तुरही के शब्द
६ के साथ। ईश्वर की स्तुति में भजन करो भजन करो हमारे राजा की
७ स्तुति में भजन करो भजन करो । क्योंकि ईश्वर सारी पृथिवी पर
राजा है उपदेश देनेहारे गान से उस की स्तुति में भजन करो।

८ ईश्वर जातिगणों पर राजा हुआ ईश्वर अपने पवित्र सिंहासन पर
९ बैठा है। लोगों के अध्यक्ष अबिरहाम के ईश्वर के लोग होकर
एकट्ठा हुए क्योंकि पृथिवी की ढालें ईश्वर की हैं वुह अत्यन्त
महान है॥

अठतालीसवां गीत।

कोरह के पुत्रों का गीत और गान॥

१ हमारे ईश्वर के नगर में अपने पवित्र पहाड़ पर परमेश्वर
२ महान और अति स्तुति के योग्य है। ऊंचाई में सुन्दर सारी
पृथिवी का आनन्द उत्तर की अलंग में सैहून पर्वत महाराज
३ का नगर है। ईश्वर उस के भवनों में शरण का स्थान जाना
गया है॥

४ क्योंकि देखो राजा आपुस में मिले वे एक साथ ही चले
५ गये। ज्योंहीं उन्हों ने देखा वोंहीं आश्चर्यित हुए घबरा गये
६ भाग निकले। वहां जन्नेहारी की पीड़ा की नाईं कंपकंपी ने
७ उन्हें पकड़ा। तू तरसीस के जहाजों को पूरबी पवन से तोड़ेगा।
८ जैसा हम ने सुना था वैसा ही हम ने परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर
के नगर में अपने ईश्वर के नगर में देखा है ईश्वर उसे सदा
लों स्थिर रक्खेगा। सिलाह॥

९ हे ईश्वर हम ने तेरे मन्दिर के मध्य तेरी दया पर सोच
१० किया है। हे ईश्वर जैसा तेरा नाम वैसा ही तेरी स्तुति पृथिवी
११ के अंत लों है तेरा दहिना हाथ धर्म्म से भरा है। तेरे न्यायों
के कारण से सैहून पहाड़ आनन्दित और यहूदाह की बेटियां
मगन होंगी॥

१२ सैहून का चक्र करो और उस के आर पार फिरो उस के
१३ गुम्मटों को गिनो। अपना मन उस के परकोट पर लगाओ उस
के भवनों का वर्तमान करो जिसतें तुम आनेहारी पीढ़ी से

१४ वर्णन करो। क्योंकि यह ईश्वर सनातन लों हमारा ईश्वर है
वही मृत्यु लों हमारा अगुआ होगा ॥

उंचासवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये कोरह के पुत्रों का गीत ॥

१ हे सारे लोगो यह सुनो हे जगत के सारे बासियो कान
२ लगाओ। क्या छोटे क्या बड़े धनी और कंगाल एक ही साथ।
३ मेरा मुंह बुद्धि की बातें करेंगा और मेरे मन का सोच बुद्धि है।
४ मैं अपना कान दृष्टान्त की ओर लगाऊंगा बीणा के साथ अपनी
पहेली खोलके कहूंगा ॥

५ मैं क्लेश के दिनों में किस लिये डरूं जब मेरे लताड़नेहारों
६ की बुराई मुझे घेरेगी। जो अपने बल पर भरोसा करते हैं और
७ अपनी संपत्ति की बहुताई पर फूलते हैं। मनुष्य अपने भाई
का छुटकारा किसी प्रकार न दे सकेगा और न ईश्वर को अपना
८ प्रायश्चित्त देगा। और उन के प्राण का प्रायश्चित्त बहुमूल्य है
९ और वुह सर्वदा के लिये उस्से असाध्य है। कि सदा लों जीता
रहे और सड़न को न देखे ॥

१० क्योंकि वुह उसे देखेगा बुद्धिमान मरेंगे मूढ़ और पशुवत
एक ही संग नष्ट होंगे और अपनी संपत्ति औरों के लिये छोड़
११ जायेंगे। उन के मन की चिंता यह है कि हमारे घर सदा लों
स्थिर रहेंगे हमारे निवास पीढ़ी से पीढ़ी लों उन्हों ने अपने
१२ अपने खेतों पर अपने नाम रक्खे हैं। पर मनुष्य प्रतिष्ठा में
न टिकेगा वुह पशु की नाईं ठहराया गया है वे नाश हुए।
१३ यह उन की चाल है उन की ऐसी मूर्खता है और उन के
१४ पीछे आनेहारे उन की बातों से आनन्दित होंगे। सिलाह। वे
झुंड की नाईं समाधि की ओर हंकाये जाते हैं मृत्यु उन का
चरवाहा होगी और बिहान को धर्म्मी उन पर प्रभुता करेंगे और

उन का स्वरूप समाधि में गल जायेगा व अपने निवास से उस
१५ में उतरते हैं। केवल ईश्वर समाधि के हाथ से मेरे प्राण का
छुटकारा देगा क्योंकि वुह मुझे उस्से निकाल लेगा। सिलाह॥
१६ इस्से मत डर कि मनुष्य धनमान हो जाय कि उस के
१७ घर का बिभव बढ़े। क्योंकि वुह अपनी मृत्यु में कुछ न ले
१८ जायगा उस का बिभव उस के पीछे उतरेगा। क्योंकि वुह अपने
जीवन में अपने प्राण को आशीष देगा और लोग तेरी स्तुति
१९ करेंगे इस कारण से कि तू अपने लिये भला करता है। तू अपने
पितरों की पीढ़ी में मिल जायगा वे सदा लों उंजियाले को न
२० देखेंगे। जो मनुष्य का संतान बिभव में है और समझ नहीं
रखता वुह उन पशुओं की नाईं ठहराया गया है जो नाश होते
हैं॥

पचासवां गीत।

आसफ़ का गीत॥

१ सर्बशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर ने उच्चारण किया है और पृथिवी
२ को सूर्य्य के उदय से उस के अस्त लों बुलाया है। सैहून से
३ जो सुन्दरता की सम्पूर्णता है ईश्वर उजागर हुआ है। हमारा
ईश्वर आवेगा और चुपचाप न रहे आग उस के साम्हने खा
जायगी और उस के आस पास बड़ी चंचल आ तीक्ष्ण होगी।
४ वुह ऊपर स्वर्गों को और पृथिवी को बुलायेगा जिसतें अपने
५ लोगों का न्याय करे। मेरे साधुओं को जो बलिदान पर मुझ
६ से वाचा बांधते हैं मेरे लिये एकट्ठा करो। और अब स्वर्गों ने
उस के धर्म्म को प्रगट किया है क्योंकि ईश्वर आप ही न्यायी
है। सिलाह॥
७ हे मेरे लोगो सुनो और मैं उच्चारण करूंगा हे इसराएल और
८ मैं तुझ पर साक्षी देऊंगा ईश्वर तेरा ईश्वर मैं ही हूं। मैं तेरे

बलिदानों और तेरे जलाने की भेंटों के कारण जो नित मेरे
९ साम्हने होती हैं तुझे धिक्कार न करूंगा। मैं तेरे घर से बैल
१० और तेरे भेड़शाले से बकरे न लेऊंगा। क्योंकि बन के सारे
११ पशु और पहाड़ों पर सहस्रों ढोर मेरे हैं। मैं पहाड़ों के हर
१२ पक्षी को जानता हूं और चौगान के पशु मेरे पास हैं। यदि मैं
भूखा हूं तो तुझ से न कहूंगा क्योंकि जगत और उस की भरपूरी
१३ मेरी है। क्या मैं बैलों का मांस खाऊंगा और बकरों का लोहू
१४ पीऊंगा। ईश्वर के लिये धन्यवाद की भेंट चढ़ा और अति
१५ महान के लिये अपनी मनौतियां पूरी कर। और बिपत्ति के
दिन मुझे पुकार मैं तुझे छुड़ाऊंगा और तू मेरी महिमा प्रगट
करेगा॥

१६ और ईश्वर ने दुष्ट से कहा है कि तुझे क्या है कि मेरी
बिधिन को प्रगट करे और मेरी वाचा को अपनी जीभ पर
१७ लाये। और तू ने उपदेश से बैर रक्खा और मेरे बचनों को
१८ अपने पीछे डाल दिया है। जब तू ने चोर को देखा तो उस्से
१९ प्रसन्न हुआ और व्यभिचारियों का साझी हुआ। तू ने अपना
मुंह बुराई के समर्पण किया है और तेरी जीभ छल का उपाय
२० बांधेगी। तू बैठके अपने भाई के बिरोध बातें करता है अपनी
माता के बेटे को धक्का देता है॥

२१ तू ने ये कार्य्य किये और मैं चुपका हो रहा तू ने समझा
कि मैं सर्वथा तुझी सा हूं मैं तुझे दपटूंगा और तेरे पापों
२२ को तेरी आंखों के साम्हने संभारके धरूंगा। हे ईश्वर के
बिसरवैयो मैं बिनती करता हूं सोचो न हो कि मैं फाडूं और
कोई छुड़वैया न हो॥

२३ जो गुणवाद की भेंट चढ़ाता है वुह मेरी महिमा प्रगट
करेगा और जो अपना मार्ग ठीक रखता है मैं उसे ईश्वर की
मुक्ति दिखलाऊंगा॥

एकावनवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत जब नातन भविष्यद्वक्ता उस पास आया जब कि वुह बिन्तसबअ पास गया था ॥

१ हे ईश्वर अपनी दया के समान मुझ पर कृपा कर अपनी
२ दया की अधिकाई के समान मेरे अपराधों को मिटा दे । मेरे
अधर्म्म से मुझे भली भांति धो और मेरे पाप से मुझे पावन
कर ॥

३ क्योंकि मैं अपने अपराधों को जानता हूं और मेरा पाप सदा
४ मेरे साम्हने है । मैं ने तेरा केवल तेरा ही अपराध किया है
और तेरी दृष्टि में बुराई किई है जिसतें तू अपनी बात में सच्चा
५ रहे और अपने विचार में शुद्ध ठहरे । देख मैं अधर्म्म में
उत्पन्न हुआ और पाप के संग मेरी माता ने मुझे गर्भ में लिया ॥

६ देख तू ने अंतर में सच्चाई चाही है और गुप्त में तू मुझे
७ बुद्धि की पहिचान देगा । तू मुझे जूफ़ा से पावन करेगा और मैं
पवित्र होऊंगा मुझे धो डालेगा और मैं पाला से अधिक उजला हो
८ जाऊंगा । तू मुझे आनन्द और मगनता का संदेश सुनावेगा
तब वुह हड्डियां जिन्हें तू ने कुचला है आनन्दित होंगी ।
९ मेरे पापों से अपना मुंह छिपा और मेरे सारे अधर्म्मों को मिटा
१० दे । हे ईश्वर मेरे लिये पवित्र मन उत्पन्न कर और स्थिर आत्मा
११ मेरे भीतर में नवीन बना । मुझे अपने आगे से मत निकाल
१२ और अपना पवित्र आत्मा मुझ से मत ले । अपनी मुक्ति की
आनन्दता मुझे फिर दे और प्रसन्न आत्मा से मुझे संभाल ॥

१३ तब मैं अपराधियों को तेरे मार्ग सिखाऊंगा और पापी तेरी
१४ और फिरेंगे । हे ईश्वर मेरी मुक्ति के ईश्वर हत्या से मुझे छुड़ा
१५ और मेरी जीभ तेरे धर्म्म के गीत गावेगी । हे प्रभु तू मेरे होंठों
१६ को खोलेगा और मेरा मुंह तेरी स्तुति वर्णन करेगा । क्योंकि तू

बलिदान से प्रसन्न नहीं होता नहीं तो मैं देता होम के बलिदान
१७ से तू प्रसन्न नहीं है। ईश्वर के बलिदान चूर्ण आत्मा हैं चूर्ण
अंत:करण और कुचले हुए को हे ईश्वर तू तुच्छ न जानेगा॥
१८ अपनी प्रसन्नता से सैहून पर दया कर तू यरूसलम की भीतों
१९ को बनावेगा। तब तू धर्म्म के बलिदानों और होम और पूरी
भेंटों से आनन्दित होगा तब वे तेरी बेदी पर बैल चढ़ावेंगे॥

बावनवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का उपदेश देनेहारा गीत जब अदूमी दोयेग आया और साऊल को संदेश दिया और उस्से कहा कि दाऊद अखिमलिक के घर में आया है॥

१ हे बलवान तू क्यों बुराई पर फूलता है सर्वशक्तिमान की
२ कृपा सारे दिन रहती है। तीक्ष्ण किये हुए छुरे की नाईं जो
छल से अपना कार्य्य करता है तेरी जीभ बुराइयां निकाला
३ करती है। तू ने भलाई से अधिक बुराई को और सत्य बोलने
४ से अधिक झूठ को प्यार किया है। सिलाह। हे छली जीभ
तू ने सारी नाश करनेहारी बातों को प्यार किया है॥
५ सर्वशक्तिमान भी तुझे सदा के लिये ढा देगा वुह तुझे झाड़
डालेगा और तुझे तेरे तंबू से निकाल फेंकेगा और तुझे
६ जीवन की भूमि से उखाड़ डालेगा। सिलाह। और धर्म्मी
७ देखेंगे और डरेंगे और उस पर हंसेंगे। देख उस बलवान को
जो ईश्वर को अपना शरणस्थान नहीं ठहराता और अपने धन
की अधिकाई पर भरोसा रखता है और अपनी दुष्टता में प्रबल
रहता है॥
८ परन्तु मैं ईश्वर के मन्दिर में हरे जलपाई के पेड़ की नाईं हूं
मैं ने ईश्वर की दया पर जो सदा सर्वदा लों रहेगी भरोसा रक्खा
९ है। मैं सर्वदा तेरी स्तुति करूंगा क्योंकि तू ने यह किया है

और तेरे संतों के साम्हने तेरे नाम की बाट जोहूंगा क्योंकि वुह
भला है ॥

तिरपनवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये रोग के बिषय दाऊद का
उपदेश देनेहारा गीत ॥

१ मूर्ख ने अपने मन में कहा है कि ईश्वर है ही नहीं उन्हों
ने बुराई किई और घिनित बुराई किई है कोई भलाई करनेहारा
२ नहीं। ईश्वर ने स्वर्ग पर से मनुष्य के संतान पर झांका जिसतें
देखे कि कोई बुद्धिमानी करता अर्थात् ईश्वर को ढूंढता है
३ अथवा नहीं। वे सब के सब फिर गये वे एक ही साथ बिगड़
गये कोई सुकर्म्मी नहीं एक भी नहीं ॥
४ क्या ये कुकर्म्मी नहीं जानते जो मेरे लोगों को खाते जैसे
५ रोटी खाते हैं और ईश्वर का नाम नहीं लेते। वहां वे अत्यन्त
डरे जहां डर न था क्योंकि ईश्वर ने तेरे छावनी करनेहारों
की हड्डियों को बिथराया है तू ने उन्हें लज्जित किया क्योंकि
६ ईश्वर ने उन्हें त्यागा है। हाय कि ईश्वर के अपने बंधू लोगों
के पास फिर आने में सेहून से इसराएल का उद्धार हो तब यअ़क़ूब
आनन्दित और इसराएल मगन हो ॥

चौवनवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों पर दाऊद का उपदेश देनेहारा
गीत जब ज़िफ़ीम ने आके साऊल से कहा कि क्या दाऊद
आप को हमारे साथ नहीं छिपाता है ॥

१ हे ईश्वर अपने नाम से मुझे बचा और तू अपने बल से
२ मेरा न्याय करेगा। हे ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन मेरे मुंह की
३ बातों पर कान धर। क्योंकि परदेशी मेरे बिरोध में उठते हैं

और सताऊ मेरे प्राण के गाहक हुए उन्हों ने ईश्वर को अपने
साम्हने नहीं रक्खा । सिलाह ॥
४ देखो ईश्वर मेरा सहायक है प्रभु मेरे प्राण के संभारनेहारों
५ में है । वुह बुराई मेरे बैरियों पर लौट आयेगी अपनी सच्चाई
६ से उन्हें नष्ट औ ध्वस्त कर । मैं आप से आप तेरे लिये बलि
चढ़ाऊंगा हे परमेश्वर मैं तेरे नाम की स्तुति करूंगा क्योंकि वुह
७ भला है । क्योंकि उस ने सारी विपत्ति से मुझे छुड़ाया और
मेरी आंख ने मेरे बैरियों पर दृष्टि किई है ॥

पचपनवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों के संग दाऊद का
उपदेश देनेहारा गीत ॥

१ हे ईश्वर मेरी प्रार्थना पर कान धर और मेरी बिनती से आप
२ को मत छिपा । मेरा श्रोता हो और मेरी सुन मैं अपने सोच
३ में अपने मन को भरमाऊंगा और चिल्लाऊंगा । बैरी के
शब्द के कारण से और दुष्ट के अंधेर के कारण से क्योंकि
वे मेरे ऊपर हानि पहुंचाते हैं और कोप में मेरा बिरोध
करते हैं ॥
४ मेरा मन मेरे भीतर में मसोसता है और मृत्यु के भय मेरे
५ ऊपर पड़े हैं । डर और थर्थराहट मुझ में आया चाहती है
६ और कंपकंपी मुझ पर प्रबल आई है । और मैं ने कहा हाय
कि मेरे पंख कपोत के से होते तो मैं उड़ जाता और चैन पाता ।
७ देख मैं दूर तक फिरा करता और जंगल में रहता । सिलाह ।
८ मैं प्रचण्ड आंधी से और झक्कड़ से अपने लिये बचाव बेग
करूंगा ॥
९ हे प्रभु उन्हें निगल जा उन की जीभ भाग भाग कर
१० क्योंकि मैं ने नगर में अंधेर और झगड़ा देखा है । वे दिन

और रात उसे उस की भीतों पर घेरते हैं और बुराई और घटी
११ उस के मध्य में हैं। बुराइयां उस के मध्य में हैं और उस के
चौक से अंधेर और कपट अलग नहीं होते ॥
१२ क्योंकि न मेरा बैरी मेरी निन्दा करेगा नहीं तो मैं सह लेता
न मेरे डाही ने मेरे बिरुद्ध में अपनी बड़ाई किई है नहीं तो
१३ मैं आप को उस्से छिपाता। परन्तु तू मेरे बराबर का जन मेरा
१४ मित्र और मेरा चिन्हार। जिस्से हम आपुस में मीठा परामर्श
करते हैं ईश्वर के घर में पर्व्व के धूम धाम से चलते हैं।
१५ उन पर बिनाश आ पड़े वे जीते जी समाधि में गिरेंगे क्योंकि
उन के निवास में और उन के अंतःकरण में बुराइयां हैं ॥
१६ मैं ईश्वर को पुकारूंगा और परमेश्वर मुझे बचा लेगा।
१७ सांझ और बिहान और मध्यान्ह को मैं सोचूंगा और चिल्लाऊंगा
१८ और उस ने मेरा शब्द सुना है। जो लड़ाई मुझ पर थी उस
ने उस्से कुशल में मेरे प्राण को मोक्ष दिई क्योंकि मेरे बिरोधी
बहुत थे ॥
१९ सर्वशक्तिमान सुनेगा और उन्हें उत्तर देगा और जो सनातन
से सिंहासन पर बैठा है। सिलाह। वुह सुनके उन्हें उत्तर देगा
जिन के लिये बदले न होंगे और जो ईश्वर से नहीं डरते।
२० उस ने अपने मित्रों के बिरोध में अपने हाथ बढ़ाये हैं अपनी
२१ बाचा को तोड़ डाला है। उस के मुंह की लुपड़ी बातें चिकनी
चुपड़ी हैं पर उस का मन लड़ाई है उस की बातें तेल से अधिक
कोमल हैं पर वे खैंची हुई तलवारें हैं ॥
२२ परमेश्वर पर अपना बोझ डाल दे और वुह तेरी पालना
२३ करेगा वुह धर्म्मी को सदा लों टलने न देगा। और तू हे
ईश्वर उन्हें सड़न के कूप में गिरा देगा हत्यारा और छली मनुष्य
अपनी आधी बय लों न पहुंचेंगे और मैं तुझ पर भरोसा रक्खूंगा॥

छप्पनवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये परदेशियों के मध्य गूंगी पिनडुकी के विषय
दाऊद का भेद जब फिलिसतियों ने उसे जात में पकड़ा ॥

१ हे ईश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मरनहार मनुष्य ने मुझ
पर मुंह फैलाया है निगलनेहारा सारे दिन मुझे दबाया करता
२ है। मेरे बैरियों ने सारे दिन मुंह फैलाया है क्योंकि हे अति
महान मेरे निगलनेहारे बहुत हैं ॥
३ । ४ जिस दिन मैं डरूंगा मैं तुझ पर भरोसा रक्खूंगा। मैं
ईश्वर की स्तुति में उस के वचन की बड़ाई करूंगा मैं ने ईश्वर
पर भरोसा रक्खा है मैं न डरूंगा मनुष्य मेरा क्या करेगा ॥
५ वे सारे दिन मेरी बातों को बिगाड़ते हैं मेरे बिरुद्ध में उन
६ की सारी चिन्ता बुराई के लिये हैं। वे एकट्ठे होंगे अपने तईं
छिपावेंगे वेही मेरे गिरानेवाले ठूके में बैठेंगे जिस रीति कि वे मेरे
७ प्राण की बाट जोह चुके हैं। अधर्म्म पर उन का बचना धरा
८ है हे ईश्वर क्रोध में जातिगणों को गिरा दे। तू ने मेरे भ्रमणा
को गिना है मेरे आंसुओं को अपने पात्र में रख क्या वे तेरी
बही में नहीं हैं ॥
९ जिस दिन मैं पुकारूंगा उसी समय मेरे बैरी पीछे हटेंगे
१० यह मैं जानता हूं कि ईश्वर मेरी ओर है। ईश्वर की स्तुति में
मैं इस वचन की बड़ाई करूंगा परमेश्वर की प्रशंसा में मैं इस
११ वचन की स्तुति करूंगा। मैं ने परमेश्वर पर भरोसा रक्खा है
१२ मैं न डरूंगा आदमी मेरा क्या करेगा। हे ईश्वर तेरी मनौतियां
१३ मुझ पर हैं मैं तेरी स्तुति करूंगा। क्योंकि तू ने मेरे प्राण को
मृत्यु से बचाया है क्या तू मेरे पांव को ठोकर खाने से छुटकारा
न देगा जिसतें मैं जीवन के उंजियाले में ईश्वर के साम्हने
चला फिरा करूं ॥

सत्तावनवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये नाश न कर दाऊद का भेद जब वुह
साऊल के साम्हने से कंदला में भागा ॥

१ मुझ पर दया कर हे ईश्वर मुझ पर दया कर क्योंकि मेरे
प्राण ने तुझ में शरण ढूंढ़ा है और मैं तेरे डैनों की छाया के
२ नीचे शरण लेऊंगा जब लों ये संकष्ट टल न जायें। मैं ईश्वर
अति महान को पुकारूंगा उस सर्वशक्तिमान को जो अपने वचनों
३ को मेरे विषय में पूरा करता है। वुह स्वर्गों से भेजेगा और
मुझे बचावेगा जिस पर मेरे निगलनेवाले ने निन्दा किई है।
सिलाह। ईश्वर अपनी दया और अपनी सच्चाई को भेजेगा॥

४ मेरा प्राण सिंहों के मध्य में है मैं जलनेहारों अर्थात् मनुष्य
के पुत्रों के मध्य लेटूंगा उन के दांत भाले और तीर हैं और
उन की जीभ चोखी तलवार॥

५ हे ईश्वर स्वर्गों के ऊपर महान हो सारी पृथिवी के ऊपर
६ तेरा विभव हो। उन्हों ने मेरे डगों के लिये जाल सिद्ध किया
उस ने मेरे प्राण को दबा डाला उन्हों ने मेरे साम्हने गड़हा
७ खोदा वे उस के बीच में गिर पड़े। सिलाह। हे ईश्वर मेरा
मन स्थिर है मेरा मन स्थिर है मैं गाऊंगा और बजाऊंगा।
८ हे मेरे विभव जाग हे बीणा और सितार जाग मैं बिहान को
९ जगाऊंगा। हे प्रभु मैं लोगों में तेरा धन्य करूंगा जातिगणों के
१० मध्य तेरी स्तुति में बजाऊंगा। क्योंकि तेरी दया स्वर्गों लों महान
११ है और तेरी सच्चाई मेघों लों। हे ईश्वर स्वर्गों के ऊपर महान हो
सारी पृथिवी के ऊपर तेरी महिमा हो॥

अट्ठावनवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये नाश न कर दाऊद का भेद ॥

१ हे मनुष्य के पुत्रो क्या तुम सच मुच गूंगे रहते हो जब
२ अवश्य है कि धर्म्म से बोलो और सचाई से बिचार करो। हां
तुम मन में दुष्टता करते हो अपने हाथों का अंधेर पृथिवी पर
३ तोलते हो। दुष्ट कोख ही से पराये हुए वे झूठ बोलते हुए
४ पेट ही से भटक गये। उन का बिष सर्प के बिष के समान
है वुह अपने कान को उस बहिरे नाग की नाईं मूंद लेगा।
५ जो मंत्र पढ़नेहारों के शब्द न सुनेगा कैसी ही बुद्धिमानी से
मंत्र क्यों न फूंकता हो॥

६ हे ईश्वर उन के दांत उन के मुंह में तोड़ डाल हे परमेश्वर
७ युवा सिंहों की डाढ़ों को कुचल डाल। वे पानी की नाईं पिघल
जायें अपने मार्ग चले जायें वुह अपने बाण लगाये मानो कि वे
८ कट जायें। जिस रीति कि घोंघा पिघल जाता है वुह भी चला
जाये स्त्री के गर्भपात की नाईं उन्हों ने सूर्य्य को नहीं देखा।
६ उस्से आगे कि तुम्हारी हांडियों में कांटे की आंच लगे क्या
कच्चा हो क्या पक्का वुह उसे उड़ा ले जावेगा॥

१० धर्म्मी आनन्दित होगा क्योंकि उस ने प्रतिफल को देखा है
११ वुह अपने चरणों को दुष्ट के लोहू में डुबायेगा। और मनुष्य
कहेंगा कि हां धर्म्मी के लिये प्रतिफल है हां पृथिवी पर न्याय
करनेहारा ईश्वर है॥

उनसठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये नाश न कर दाऊद का भेद जब साऊल ने
भेजा और उन्हों ने घर की चौकसी किई जिसतें उसे घात करे॥

१ हे मेरे ईश्वर मुझे मेरे बैरियों से छुड़ा तू मुझे मेरे बिरोधियों

२ से ऊंचा करेगा। मुझे कुकर्म्मियों से छुड़ा और हत्यारे मनुष्यों
से मुझे बचा॥
३ क्योंकि देख वे मेरे प्राण के लिये घात में लगे हैं बलवन्त
मेरे विरोध पर एकट्ठा होते हैं हे परमेश्वर न मेरा अपराध है
४ और न मेरा पाप। मेरे दोष के विना वे दौड़ते हैं और अपने तई
५ लैस करते हैं मुझ से मिलने के लिये जाग और देख। और तू हे
परमेश्वर ईश्वर सेनाओं के स्वामी इसराएल के ईश्वर सारी जातिगणों
पर कृपा करने के लिये जाग किसी दुष्ट अपराधी पर दया मत
६ कर। सिलाह। वे सांझ को फिरें कुत्ते की नाईं भूंकें और नगर
में घूमते फिरें॥
७ देख वे अपने मुंह से निकालते हैं तलवारें उन के होंठों
८ पर हैं क्योंकि कौन सुनता है। और तू हे परमेश्वर उन पर
९ हंसेगा तू सारी जातिगणों को ठट्ठे में उड़ाविगा। मैं तेरे लिये
उस के बल की रक्षा करूंगा क्योंकि ईश्वर मेरा शरणस्थान है।
१० मेरा ईश्वर अपनी दया से मेरे आगे आविगा ईश्वर मेरे बैरियों
पर मुझे जयमान कर दिखाविगा॥
११ उन्हें प्राण से न मार ऐसा न हो कि मेरे लोग भूल जायें हे
प्रभु हमारी ढाल अपने पराक्रम से उन्हें छिन्न भिन्न कर और
१२ उन्हें गिरा दे। उन के होंठों का वचन उन के मुंह का पाप
है और वे अपने अहंकार में और अपनी क्रिया से और उस
१३ झूठ से जो वे बोलेंगे पकड़े जायेंगे। क्रोध से उन्हें नाश कर
नाश कर और वे ध्वस्त हो जायें और लोग पृथिवी के अंत
१४ लों जानें कि ईश्वर यअकूब में राज्य करता है। सिलाह। और वे
सांझ को फिरें कुत्ते की नाईं भूंकें और नगर में घूमते फिरें।
१५ वे खाने के लिये भ्रमते फिरेंगे और यदि तृप्त न हों तो रात भर
दौड़ते रहेंगे॥
१६ और मैं तेरे पराक्रम की छन्द गाऊंगा और बिहान को तेरी

दया का गान करूंगा क्योंकि तू मेरे लिये ऊंचा स्थान हुआ
१७ और मेरी विपत्ति के दिन में मेरा शरणस्थान । हे मेरे बल
मैं तेरे लिये गाऊंगा क्योंकि ईश्वर मेरा शरणस्थान और मेरा
दयामान ईश्वर है ॥

साठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये साची के सोसन के विषय दाऊद का भेद
सिखलाने के लिये जब उस ने अराम नहराइन पर और अराम
जोबाह पर जय पाई और यूअब लौटा और लोन की
तराई में बारह सहस्र अदूमी मारे ॥

१ हे ईश्वर तू ने हमें त्यागा हम्में फूट डाली है तू क्रोधित
२ हुआ तू हमें फिर यथावस्थित करेगा । तू ने पृथवी को कंपाया
उसे चीरा है उस की दरारों को सुधार क्योंकि वुह हिल गई ।
३ तू ने अपने लोगों को कठोरता दिखलाई हमें लड़खड़ाने की
४ मदिरा पिलाई है । तू ने अपने डरवैयों को एक ध्वजा दिया है
जिसतें तेरी सच्चाई के कारण से खड़ा किया जाय । सिलाह ।
५ जिसतें तेरे प्रेमी छुड़ाये जायें तू अपने दहिने हाथ से बचा
और हमारी सुन ॥

६ ईश्वर ने अपनी पवित्रता के संग बचन किया इस कारण मैं
फूलूंगा सिकम को बिभाग करूंगा और सुक्कात की तराई को
७ नापूंगा । जिलिअद मेरा है मुनस्सी भी मेरा और इफ़रायम
८ मेरे सिर का गढ़ यहूदाह मेरा ब्यवस्थादायक । मोअब मेरे
धोने धाने का पात्र है मैं अदूम पर अपनी जूती फेंकूंगा हे
फिलिस्त मेरे लिये जय जयकार कर ॥

९ कौन मुझे दृढ़ नगर में लायेगा किस ने मुझे अदूम लों
१० पहुंचाया है । क्या तू ही ने नहीं हे ईश्वर जिस ने हमें त्यागा
११ और हे ईश्वर तू जो हमारी सेनाओं के संग न चलेगा । बिपत्ति

में हमारी सहाय कर क्योंकि मनुष्य की ओर से बचाव वृथा
है ॥
१२ ईश्वर से हम बल पावेंगे और वही हमारे सतानेहारों को
लताड़ेगा ॥

एकसठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजे पर दाऊद का गीत ॥
१ हे ईश्वर मेरा चिल्लाना सुन मेरी प्रार्थना पर सुरत लगा ।
२ मैं अपने मन के शोक में पृथिवी के खूंट से तेरी ओर पुकारूंगा
उस चटान पर जो मुझ से ऊंची है तू मेरी अगुआई करेगा ।
३ क्योंकि तू मेरे लिये शरणस्थान हुआ है बैरी के सन्मुख दृढ़
४ गढ़ । मैं तेरे तंबू में सदा लों रहा करूंगा तेरे पंखों के छाया
के नीचे में शरण लेऊंगा । सिलाह ॥
५ क्योंकि हे ईश्वर तू ही ने मेरी मनौतियों को ग्रहण किया
६ अपने नाम से डरवैयों का अधिकार मुझे दिया है । तू राजा
की वय पर वय बढ़ावेगा उस के बरस पीढ़ी से पीढ़ी लों ।
७ वुह सदा लों ईश्वर के साम्हने सिंहासन पर बैठा रहेगा तू दया
८ और सत्यता भावमान रख वे उस की रक्षा करेंगी । सो मैं सदा
लों तेरे नाम की स्तुति करूंगा जिसतें प्रति दिन अपनी मनौतियां
पूरी करूं ॥

बासठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये यदुतुन के ऊपर दाऊद का गीत ॥
१ केवल ईश्वर की ओर फिरने से मेरा प्राण चैन में है उसी
२ से मेरी मुक्ति है । केवल वही मेरी चटान और मेरी मुक्ति है
३ मेरा शरणस्थान मुझे अत्यन्त हिलान न होगा । तुम कब लों
एक मनुष्य पर चढ़ाई करोगे तुम सब के सब उस के मारने के

निमित्त पीछा करोगे जो झुकी हुई भीत और ढाई हुई खाड़े के
४ समान है। केवल उस के महत्व से वे उसे ढकेलने का परामर्श
करते हैं वे झूठ से आनन्दित हैं वे अपने मुंह से आशीष देते
हैं पर अपने अंत:करण में स्रापते हैं। सिलाह॥
५ हे मेरे प्राण केवल ईश्वर की ओर फिरके चुप रह क्योंकि
६ उसी से मेरी आशा है। केवल वही मेरी चटान और मेरी
७ मुक्ति है मेरा शरणस्थान मुझे हल चल न होगी। मेरी मुक्ति
और मेरा विभव ईश्वर में है मेरे बल की चटान और मेरा
८ शरणस्थान ईश्वर में है। हे जातिगण सदा उस पर भरोसा रक्खो
अपने अंत:करण उस के आगे उंडेल दो ईश्वर हमारे लिये
शरणस्थान है। सिलाह॥
९ नीच लोग केवल वृथा हैं ऊंचे पदवाले झूठ वे तुला में
१० उठ जायेंगे वे सब के सब वृथा से हलुक हैं। अन्धेर पर भरोसा
न करो और अन्याय में निरर्थक न बनो धन यद्यपि बढ़े उस
११ पर मन न लगाओ। ईश्वर ने एक बात कही ये दो बातें मैं
१२ ने सुनी कि पराक्रम ईश्वर का है। और हे प्रभु दया तेरी है
क्योंकि तू हर एक मनुष्य को उस के कार्य्यों के समान पलटा
देगा॥

तिरसठवां गीत।

दाऊद का गीत जब वुह यहूदाह के वन में था॥
१ हे ईश्वर मेरा सर्वशक्तिमान तू ही है मैं तड़के तुझे ढूंढूंगा
मेरा प्राण तेरे लिये प्यासा है मेरा शरीर सूखी भूमि में और
२ थका बिन पानी तेरा लालसित है। जिसतें तेरे पराक्रम और तेरे
३ विभव को देखूं जैसा कि मैं ने धर्म्मधाम में देखा है। क्योंकि
तेरी कृपा जीवन से भली है मेरे होंठ तेरी स्तुति किया करेंगे।
४ सो मैं जीवन भर तुझे धन्य कहा करूंगा तेरा नाम ले लेके अपने

५ हाथ उठाऊंगा। मेरा प्राण मानो मज्जा और चिकनाई से तृप्त
होगा और आनन्दित होंठों से मेरा मुंह स्तुति करेगा ॥
६ जब मैं अपने बिछौने पर तुझे स्मरण करता हूं तो रात के
७ पहरों में तुझ पर ध्यान किया करता हूं। क्योंकि तू मेरे लिये
सहाय हुआ है और मैं तेरे पंखों की छाया तले आनन्द
८ करूंगा। मेरा प्राण तेरे पीछे लिपटा है तेरा दहिना हाथ
९ मुझे संभालता है। और वे अपने विनाश के लिये मेरे प्राण
१० के गाहक होते हैं वे पृथिवी के नीचे के स्थान को जायेंगे। वे
११ तलवार से खेत आयेंगे गीदड़ों के ग्रास होंगे। और राजा
ईश्वर से आनन्दित होगा हर एक मनुष्य जो उस की किरिया
खाता है उस्से दर्प करेगा क्योंकि झूठ बोलनेहारों के मुंह बन्द
किये जायेंगे ॥

चौंसठवां गीत।

प्रधान बजानिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१ हे ईश्वर मेरी दोहाई में मेरा शब्द सुन तू मेरे प्राण को
२ बैरी के डर से बचा रक्खेगा। तू मुझे दुष्टों की छिपी हुई
संमति से और कुकर्म्मियों के हुल्लर से छिपावेगा ॥
३ जिन्हों ने तलवार की नाईं अपनी जीभ चोखी किई है
और अपना तीर चिल्ले पर चढ़ाया है अर्थात् कड़वी बात।
४ जिसतें गुप्त स्थानों में सिद्ध मनुष्य को मारें वे अचानक उसे
५ मारेंगे और न डरेंगे। वे अपने लिये बुरी बात स्थिर करते हैं
छिपके फंदे मारने की बात चीत करते हैं वे कहते हैं कि
६ कौन हमें देखेगा। वे बुरे कर्म्मों की खोज करते हैं कहते हैं
कि हम लेस हैं क्या ही अच्छी युक्ति और हर एक का अन्तर
और मन गहिरा है ॥
७ परन्तु ईश्वर ने उन्हें अचानक बाण से मारा है घाव उन्हीं

८ के हो गये। और वे गिराये गये उन की जीभ उन्हीं पर
९ पड़ी सब कोई उन पर दृष्टि करते हुए भागेंगे। और सारे
मनुष्य डरते हैं और कहते हैं कि यह ईश्वर का किया हुआ है
१० और इसे उसी का कार्य्य समझते हैं। धर्म्मी परमेश्वर से
आनन्दित होगा और उस पर भरोसा रक्खेगा और सारे खरे
मनवाले उस्से दर्प करेंगे॥

पैंसठवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत और गान॥

१ हे ईश्वर सेहून में चुपके चुपके तेरी स्तुति किई जाती है
२ और तेरे लिये मनौती पूरी किई जायगी। हे प्रार्थना के श्रोता
३ सारे शरीर तेरे पास आवेंगे। अधर्म्म की बातें मुझ से अति
४ प्रबल हैं हमारे अपराधों का बलिदान तू ही देगा। वुह क्या ही
धन्य है जिसे तू चुने और समीपी करेगा जिसतें तेरे आंगनों
में रहे हम तेरे घर अर्थात् तेरे पवित्र मंदिर की भलाई से
५ तृप्त होंगे। हे हमारे मुक्तिदाता ईश्वर पृथिवी और समुद्र के
सारे अति दूर सिवानों की आशा तू धर्म्म से हमें भयंकर उत्तर
देगा॥

६ जो सामर्थ्य से कटि बांधके अपने बल से पहाड़ों को दृढ़
७ करता है। जो समुद्रों के गर्गराहट उन की लहरों के गर्गराहट
८ और लोगों की धूम धाम को स्थिर करता है। तब पृथिवी
के अन्त के बसनेहारे तेरे चिन्हों से डरे तू सांझ और बिहान
९ के निकास स्थानों से आनन्द करायेगा। तू ने पृथिवी पर
दृष्टि किई और उसे सींचा है तू उसे अति फलदायक करेगा
ईश्वर की नदी जल से परिपूर्ण है तू उन के अनाज को सिद्ध
१० करेगा क्योंकि तू उसे इस रीति से सिद्ध करता है। उस की
रेघारियों को सींच उस के ढेलों को समथर कर तू उसे मेंहों से

११ कोमल करेगा उस की कोंपलों पर आशीष देगा। तू ने अपनी
भलाई से बरस पर मुकुट रक्खा है और तेरे पथों से चिकनाई
१२ टपकती है। बन की चराइयां टपकती हैं और टीले आनन्द
१३ से गुथे हैं। चराई ने झुंडों का पहिरावा पहिना है और
तराइयां अन्न से ढंप जायेंगी वुह आनन्द से ललकारेंगी हां
वे गाया करेंगी॥

छियासठवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये गीत और गान॥

१।२ हे सारी पृथिवी ईश्वर की ओर ललकारो। उस के
नाम के बिभव में गान करो उस की स्तुति में उसे प्राक्रम
३ देओ। ईश्वर से कहो कि तेरे कार्य्य क्या ही भयंकर हैं तेरे
४ बल की बहुताई से तेरे बैरी तुझ से दब जायेंगे। सारी
पृथिवी के रहनेहारे तुझे दंडवत करेंगे और तेरी स्तुति में
गान करेंगे वे तेरे नाम के लिये गान करेंगे। सिलाह॥

५ आओ और ईश्वर के कार्य्यों को देखो जो अपने कार्य्य में
६ मनुष्य के पुत्रों पर भयंकर है। उस ने समुद्र को सूखी से
पलट डाला वे नदी से पांव पांव चले जायेंगे वहां हम उस्से
७ आनन्दित होंगे। जो अपने बल से सदा लों राज्य करता है
उस की आंखें जातिगणों को देखती हैं दंगइत अपने को न
उभारें। सिलाह॥

८ हे लोगो हमारे ईश्वर का धन्यवाद करो और उस की स्तुति
९ का शब्द सुनाओ। जो हमारे प्राण को जीता रखता है और
१० जिस ने हमारे पांव को टलने नहीं दिया है। क्योंकि हे ईश्वर
तू ने हमें परखा तू ने हमें ऐसा ताया है जैसा रूपा ताया
११ जाये। तू ने हमें जाल में फंसाया हमारी कटि पर भार
१२ रक्खा है। तू ने मरनहार मनुष्य को हमारे सिर पर चढ़ाया

है हम आग और पानी में आये और अब तू ने हमें आनन्द
की भरपूरी में पहुंचाया है ॥
१३ मैं बलिदानों के साथ तेरे घर में आऊंगा अपनी मनौतियां
१४ तुझे पूरी करूंगा । जिन्हें मेरे होंठों ने उच्चारा और मेरी
१५ विपत्ति में मेरा मुंह बोला । मैं पुष्ट मेमनों के बलिदानों मेंढ़ों
की चिकनाई समेत तुझे चढ़ाऊंगा बैल बकरों समेत बलि
करूंगा । सिलाह ॥
१६ हे सारे ईश्वर के डरनेहारो आओ सुनो और मैं वर्णन
१७ करूंगा जो उस ने मेरे प्राण के लिये किया है । मैं ने अपने
मुंह से उस को पुकारा और बड़ी बड़ाई मेरी जीभ के नीचे
१८ थी । यदि मैं अपने मन में अधर्म्म की ओर ताकता तो
१९ प्रभु न सुनता । परन्तु ईश्वर ने सुना है उस ने मेरी
२० प्रार्थना के शब्द पर कान धरा है । ईश्वर धन्य हो जिस ने
न मेरी प्रार्थना फेरी है और न मेरी ओर से अपनी दया ॥

सतसठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों पर गीत और गान ॥
१ ईश्वर हम पर दया करे और हमें आशीष दे और अपना
२ मुख हम पर चमकावे । सिलाह । जिसतें तेरा मार्ग पृथिवी
३ में जाना जाय सारे जातिगणों में तेरी मुक्ति । हे ईश्वर
जातिगण तेरी स्तुति करेंगी सारी जातिगण तेरी स्तुति करेंगी ।
४ जातिगण आनन्दित होंगी और जय जय करेंगी क्योंकि तू
धर्म्म से लोगों का बिचार करेगा और पृथिवी पर जातिगणों
५ की अगुआई करेगा । सिलाह । हे ईश्वर जातिगण तेरी स्तुति
६ करेंगी जातिगण तेरी स्तुति करेंगी सब की सब । पृथिवी ने अपनी
बढ़ती दिई है और ईश्वर हमारा ईश्वर हमें आशीष देगा ।
७ ईश्वर हमें आशीष देगा और पृथिवी के सारे सिवाने उस्से डरेंगे ॥

अठसठवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत और गान॥
१ ईश्वर उठेगा उस के वैरी छिन्न भिन्न होंगे और उस के बैर
२ रखनेहारे उस के आगे से भागेंगे। जैसे धूआं मिट जाता है
तैसा तू उन्हें मिटा देगा जैसे मोम आग के आगे पिघल जाता
३ है तैसा दुष्ट ईश्वर के आगे नाश होंगे। और धर्म्मी आनन्दित
होंगे ईश्वर के आगे आल्हादित होंगे और आनन्द के मारे
हर्षित होंगे॥
४ ईश्वर का गान करो उस के नाम की स्तुति गाओ उस के
लिये मार्ग सिद्ध करो जो अपने नाम याह से बनों से चढ़के
५ आता है और उस के आगे आनन्द करो। ईश्वर अपने धर्म्म
६ धाम में अनाथों का पिता और रांड़ों का बिचारी है। ईश्वर
अकेलों को गृहस्थ बनाता है बंधुओं को बंदीगृह से भाग्यमानी
में निकाल लाता है केवल दंगइत भूर स्थान में रहते हैं॥
७ हे ईश्वर जब तू अपने लोगों के आगे चल निकला जब तू
८ ने बन में पग धरा। सिलाह। तब पृथिवी थर्थराई हां स्वर्ग
भी ईश्वर के आगे टपके यह सीना पर हुआ ईश्वर अर्थात्
९ इसराएल के ईश्वर के साम्हने। हे ईश्वर तू संत के दान का
मेंह बरसाता है तू ही अपने अधिकार हां अपने निर्बल
अधिकार को स्थिर करता है॥
१० तेरा झुंड उस में बसा है हे ईश्वर तू अपनी दया से
११ कंगाल के लिये सिद्ध करेगा। प्रभु संदेश देता है उस की
१२ प्रचारक बड़ी सेना हैं। सेनाओं के राजा भाग भाग जायेंगे
१३ और घर की रहनेहारी लूट बांटेगी। जब तुम पृथिवी के
सिवानों के मध्य लेटोगे तब तुम चांदी से मढ़ी हुई कपोत
के डैनों और उस के पीले सुनहले पंखों के समान होओगे।

१४ जब सर्वसामर्थी उस भूमि में राजाओं को छिन्न भिन्न करता है
१५ तब ज़िल्मून में पाला गिरता है । बसनिया का पहाड़ ईश्वर का
१६ पहाड़ है बसनिया का पहाड़ चोटियों का पहाड़ है । हे पहाड़ो
हे चोटियो उस पहाड़ के लिये जिसे ईश्वर ने अपने रहने के
लिये चाहा है तुम क्यों घात में बैठते हो हां परमेश्वर उस में
सर्वदा लों रहेगा ॥
१७ ईश्वर की रथें बीस सहस्र सहस्रों पर सहस्र हैं प्रभु उन
१८ में है और सीना धर्म्मधाम में । तू ऊंचे पर चढ़ गया है तू ने
बंधुओं को बंधुआ किया है हे परमेश्वर ईश्वर तू ने आदम के
संतान में हां दुष्टों में भी भेंटें ले लिईं जिसतें यहां बसे ॥
१९ प्रभु प्रति दिन धन्य होवे जब मनुष्य हम पर बोझ
रक्खेगा तब सर्वशक्तिमान हमारी मुक्ति होगा । सिलाह ।
२० सर्वशक्तिमान हमारी मुक्ति के लिये सर्वसामर्थी है और मृत्यु से
२१ छुड़ाना परमेश्वर प्रभु ही का काम है । निश्चय ईश्वर अपने
बैरियों का सिर कुचलेगा उस बालवाली खोपड़ी को जो अपने
२२ अपराधों में चलती फिरती है । प्रभु ने कहा कि मैं उन्हें
बसनिया से फेर लाऊंगा समुद्र के गहिराओं से फेर लाऊंगा ।
२३ जिसतें तू उन्हें कुचले और तेरा पांव लोहूलुहान और तेरे कुत्तों
की जीभ बैरियों के लोहू से हां उसी से लोहूलुहान हो ॥
२४ हे ईश्वर उन्हों ने तेरी धूमधामी चालों को मेरे सर्वसामर्थी
और मेरे राजा की धूमधामी चालों को धर्म्मधाम में देखा है ।
२५ मृदंग बजाती हुई कुमारियों के मध्य गायक आगे आगे और
२६ बजनिये पीछे पीछे चले । अरे तुम कि इसराएल के सोते से
२७ हो मंडलियों में ईश्वर प्रभु को धन्य कहो । वहां छोटा
बिनयमीन उन पर दबानेहारा है यहूदाह के अध्यक्ष उन के
पत्थरवाह करवैये हैं ज़बूलून के अध्यक्ष नफ़ताली के अध्यक्ष ॥
२८ तेरे ईश्वर ने तेरे बल को ठहराया है हे ईश्वर जिस ने

२९ हमारे लिये यह क्रिया है दृढ़ हो। तेरे मन्दिर के कारण से
३० जो यरूसलम के ऊपर है राजा तेरे पास भेंट लावेंगे। तू जंगल
के बनपशु को और बलवन्त बैलों की मंडली को जातिगणों के
बछड़ों सहित जो चांदी के टुकड़े लिये हुए निहुर जाते हैं
तृषकार कर उस ने जातिगणों को जो संग्राम से मगन रहती
३१ हैं छिन्न भिन्न किया है। अध्यक्ष लोग मिस्र से आवेंगे कूश अपने
हाथ ईश्वर की ओर बढ़ावेगा॥
३२ हे पृथिवी की राजधानियो ईश्वर का गान करो प्रभु की
३३ स्तुति में गाओ। सिलाह। उस के लिये गाओ जो सनातन के
स्वर्गों के स्वर्ग पर असवार है देखो वुह अपना शब्द महा शब्द
३४ उच्चारता है। ईश्वर को बल देओ उस का महात्म्य इसराएल के
३५ ऊपर है और उस का बल मेघों पर। हे ईश्वर तू अपने धर्म्मधामों
से भयंकर है इसराएल का सर्वशक्तिमान वही जातिगण को बल
और सामर्थ्य देता है ईश्वर धन्य हो॥

उनहत्तरवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये सोसनों के बिषय दाऊद का गीत॥

१ हे ईश्वर मुझे बचा क्योंकि पानी मेरे प्राण लों पहुंच गया
२ है। मैं गहिराव की कीच में धस गया हूं और खड़े होने का
स्थान नहीं है मैं पानी के गहिराओं में आया और बाढ़ ने मुझे
३ दबा लिया है। मैं पुकारते पुकारते थक गया हूं मेरा गला
सूख गया अपने ईश्वर की बाट जोहते जोहते मेरी आंखें धुंधला
४ गईं। जो अकारण मुझ से बैर रखते हैं वुह मेरे सिर के बालों
से अधिक हैं मेरे नाशक मेरे धोखादेनेहारे बैरी बली हैं जो
मैं ने नहीं लूटा मैं आगे को उन्हें भर दूंगा॥
५ हे ईश्वर तू मेरी मूर्खता को जानता है और मेरे अपराध
६ तुझ से छिपे नहीं हैं। हे प्रभु परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर तेरी

बाट जोहनेहारे मेरे कारण से लज्जित न हों हे इसराएल के
७ ईश्वर तेरे खोजी मेरे कारण से अपमानित न हों। क्योंकि मैं
ने तेरे लिये उलहना सहा लाज ने मेरे मुंह को ढांप लिया है।
८ मैं अपने भाइयों के निकट परदेशी हो गया और अपनी माता
९ के पुत्रों में ऊपरी। क्योंकि तेरे घर के ज्वलन ने मुझे खा लिया
१० है और तेरे अपवाद करनेहारों के अपवाद मुझ पर आ पड़े। और मैं
ने ब्रत में रो रो अपने प्राण को निकाला और वुह भी मेरे लिये
११ अपवादों का कारण हुआ। और मैं ने टाट का वस्त्र पहिना और
१२ उन के लिये कहावत बना। फाटक पर के बैठवैये मेरे बिरुद्ध
सोचते हैं और मदिरा के पिअक्कड़ गान करते हैं॥
१३ और मैं हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना तुझ से है हे ईश्वर तेरी
दया की बहुताई में ग्राह्य का समय हो अपनी मुक्ति की सत्यता
१४ में मेरी सुन ले। मुझे कीच से निकाल और मैं धसने न पाऊं
मैं अपने बैरियों से और पानी के गहिराव से बचाया जाऊं।
१५ पानी की बाढ़ मुझे दबाने न पावे और गहिराव मुझे निगलने
न पावे और कूआ अपना मुंह मुझ पर बंद न करने पावे।
१६ हे परमेश्वर मेरी सुन क्योंकि तेरी दया भली है अपनी दया की
१७ बहुताई के समान मेरी ओर फिर। और अपने दास से अपना
मुंह न छिपा क्योंकि मैं विपत्ति में हूं शीघ्र कर मेरी सुन।
१८ मेरे प्राण के निकट आ उसे बचा मेरे बैरियों के कारण मुझे
बचा॥
१९ तू ही ने मेरा उलहना और मेरी लज्जा और मेरे अनादर को
२० जाना है मेरे सारे सताऊ तेरे आगे हैं। अपवाद ने मेरा मन तोड़ा
है और मैं रोगी हूं और मैं ने दया की बाट जोही और कुछ
२१ नहीं और शान्तिदायकों की पर नहीं पाया। और उन्हों ने मेरे
भोजन में पित्त दिया और मेरी प्यास बुझाने को मुझे सिरका
२२ पिलाया। उन का मंच उन के लिये फंदा हो जाये और उन

२३ के लिये जो कुशल में हैं जाल होवे। उन की आंखें अंधी हो
२४ जायें जिसतें न देखें और उन की कटि सदा झुकी रख। अपना
क्रोध उन पर उंडेल और तेरे कोप की जलजलाहट उन्हें पकड़
२५ ले। उन का घर उजाड़ हो जाये उन के तंबुओं में कोई
२६ बसवैया न हो। क्योंकि उन्हों ने उन्हें सताया जिन्हें तू ने
मारा है और तेरे घायलों के शोक के विषय वे बातें करते हैं।
२७ उन के अधर्म्म पर अधर्म्म का दण्ड दे और वे तेरे धर्म्म में
२८ आने न पावें। वे जीवतों की बही से मिटाये जावें और
धर्म्मियों के संग न लिखे जावें॥

२९ और मैं विपत्ति का मारा और दुखी हूं हे ईश्वर तेरी मुक्ति मुझे
३० ऊंचाई पर रक्खे। मैं गीत में ईश्वर के नाम की स्तुति करूंगा और
३१ धन्यवाद से उस की महिमा करूंगा। और यह परमेश्वर के
लिये सींगदार और खुरीले बैल और बरध से अधिक भला
३२ होगा। दीन लोगों ने देखा है और आनन्दित होंगे अर्थात्
तुम जो ईश्वर के खोजी हो और तुम्हारा मन जीता रहे।
३३ क्योंकि परमेश्वर कंगालों की सुनता है और उस ने अपने बंधुओं
३४ को तुच्छ नहीं जाना। आकाश और पृथिवी उस की स्तुति करें
३५ समुद्र और उन में के सारे रेंगनेहारे। क्योंकि ईश्वर सेहून को
बचावेगा और यहूदाह के नगरों को बनावेगा और वे उस में
३६ बसेंगे और उसे अधिकार में लेंगे। और उस के सेवकों के बंश
उस के अधिकारी होंगे और उस के नाम के प्रेमी उस में रहा
करेंगे॥

सत्तरवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये स्मरण के लिये दाऊद का गीत॥

१ हे ईश्वर मेरे बचाव के लिये हे परमेश्वर मेरी सहायता के
२ लिये चटक कर। वे जो मेरे प्राण के गाहक हैं लज्जित और

संकोचित होंगे मेरी बिपत्ति के चाहनेहारे पीछे हटाये और अपमानित
३ किये जायेंगे। जो अहा अहा कहते हैं वे अपने लाज
४ के कारण उलटे फिरेंगे। तेरे सारे खोजी तुझ से आनन्दित
और मगन होंगे और तेरी मुक्ति के प्रेमी सदा कहा करेंगे कि
५ ईश्वर महान हो। और मैं दुखी और कंगाल हूं हे ईश्वर मेरे
लिये शीघ्र कर मेरा सहायक और मेरा मुक्तिदाता तू ही है हे
परमेश्वर बिलम्ब न कर॥

एकहत्तरवां गीत।

१ हे परमेश्वर मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है मुझे कधी
२ लज्जित होने न दे। तू अपने धर्म्म से मेरा छुटकारा करेगा
और मुझे छुड़ावेगा अपना कान मेरी ओर झुका और मुझे बचा।
३ तू मेरे निवास की चटान हो कि मैं नित्य आया करूं तू ने
मुझे बचाने की आज्ञा किई है क्योंकि तू ही मेरी चटान और
४ मेरा गढ़ है। हे मेरे ईश्वर दुष्ट के हाथ से और अधर्म्मी और
५ क्रूर मनुष्य के पंजे से मुझे छुड़ा। क्योंकि हे प्रभु परमेश्वर
मेरी आशा तू ही है मेरी यूवा अवस्था से मेरा शरणस्थान।
६ मैं कोख से तुझ से थामा गया तू ही ने मुझे मेरी माता के पेट
से निकाला मेरी स्तुति नित्य तेरे विषय में है॥
७ मैं बहुतों के लिये अचंभा हुआ पर तू ही मेरा दृढ़ शरण
८ स्थान है। मेरा मुंह तेरी स्तुति से और सारे दिन तेरे बिभव
९ से भरा रहेगा। बुढ़ापे में मुझे फेंक न दे जब मेरा बल घटे
१० तब मुझे दूर न कर। क्योंकि मेरे बैरियों ने मुझ से यों कहा
है और जो मेरे प्राण के घात में हैं उन्हों ने आपुस में युक्ति
११ बांधी हैं। और कहते हैं कि ईश्वर ने उसे त्यागा है उस का
पीछा करो और उसे पकड़ लो क्योंकि कोई छुड़वैया नहीं है।
१२ हे ईश्वर मुझ से दूर मत हो हे मेरे ईश्वर मेरी सहाय के लिये

१३ चटक कर। मेरे प्राण के बैरी लज्जित और नष्ट हो जायेंगे
मेरी बुराई के चाहक निन्दा और अनादर से ढंप जायेंगे॥
१४ और मैं नित्य आशा रक्खूंगा और तेरी सारी स्तुति पर बढ़ाता
१५ जाऊंगा। मेरा मुंह तेरे धर्म्म का और सारे दिन तेरी मुक्ति
का बर्णन किया करेगा क्योंकि मैं उन की गिनती नहीं जानता।
१६ मैं प्रभु परमेश्वर के पराक्रम कर्म्मों के साथ आऊंगा मैं तेरी
१७ केवल तेरे ही धर्म्म की चर्चा करूंगा। हे ईश्वर तू ने मेरी
युवा अवस्था से मुझे सिखाया और अब लों मैं तेरी आश्चर्य्य
१८ क्रिया बर्णन किया करता हूं। और बुढ़ापे और बाल पकने लों
भी हे ईश्वर मुझे मत त्याग जब लों कि मैं आनेहारी पीढ़ी से
तेरे हाथ का और हर एक अवैया से तेरे पराक्रम का बखान
१९ न करूं। और हे ईश्वर तेरा धर्म्म अति ऊंचा है हे ईश्वर तू
जिस ने बड़े बड़े कार्य्य किये हैं तेरे तुल्य कौन है॥
२० तू जिस ने हमें बहुत कठिनताएं और बिपत्ति दिखलाई हैं
फिर आके हमें जिलावेगा और पृथिवी के गहिराओं से फिर आके
२१ हमें उठा लेगा। तू मेरी महिमा को बढ़ावेगा और फिरके मुझे
२२ शान्ति देगा। हे मेरे ईश्वर मैं भी तेरी सत्यता के लिये बीणा
बजाके तेरी स्तुति करूंगा हे इसराएल के धर्म्ममय मैं सितार
२३ के संग तेरी स्तुति में गान करूंगा। जब मैं तेरी स्तुति में
बजाऊंगा तब मेरे होंठ और मेरा प्राण जिसे तू ने छुड़ाया है
२४ गायेंगे। मेरी जीभ भी सारे दिन तेरे धर्म्म को रटा करेगी क्योंकि
मेरी बुराई के चाहक निन्दित और लज्जित हो गये हैं॥

बहत्तरवां गीत।

सुलेमान का गीत॥

१ हे ईश्वर राजा को अपने बिचार और राजा के पुत्र को अपना
धर्म्म दे॥

२ वुह धर्म्म के साथ तेरे लोगों का और बिचार के साथ तेरे
३ दुखियों का न्याय करेगा। तब धर्म्म से पहाड़ और पहाड़ियां
४ लोगों के लिये कुशल उपजावेंगी। वुह लोगों के दुखियों का
न्याय करेगा कंगाल के संतानों को बचावेगा और अन्धेरी को
५ कुचलेगा। जब लों कि सूर्य्य और चंद्रमा ठहरेंगे पीढ़ी से पीढ़ी
६ लों वे तुझ से डरा करेंगे। वुह मेंह की नाईं जो कटी हुई
घास पर हो और झड़ी की नाईं जो पृथिवी को सींचती है
७ उतरेगा। उस के दिनों में जब लों चांद रहेगा धर्म्मी उगेगा
८ और कुशल की अधिकाई होगी। और वुह समुद्र से समुद्र लों
९ और नदी से पृथिवी के अंत लों प्रभुता करेगा। बनबासी लोग
१० उस के आगे झुकेंगे और उस के बैरी माटी चाटेंगे। तरसीस
और टापुओं के राजा भेंट भेजेंगे सबा और सिबा के राजा भेंट
११ बलिदान में लायेंगे। और सारे राजा उस को दंडवत करेंगे सारे
१२ जातिगण उस की सेवा करेंगे। क्योंकि वुह दोहाई देनेहारे
कंगाल को और दुखी और जिन का कोई सहायक नहीं बचावेगा।
१३ वुह दरिद्र और कंगाल पर दया करेगा और कंगालों का प्राण
१४ बचावेगा। वुह उन के प्राण को अन्धेर और उपद्रव से छुड़ावेगा
१५ और उन का लोहू उस की दृष्टि में बहुमूल्य होगा। और वुह
जीता रहेगा और सबा के सोने में से उसे दिया करेगा और वुह
उस के लिये सदा प्रार्थना किया करेगा वुह सारे दिन उस का
१६ धन्यबाद करेगा। पृथिवी में पहाड़ों की चोटी पर केवल मुट्ठी
भर अनाज हो उस का फल लुबनान की नाईं हड़हड़ायेगा
और नगर में से वे पृथिवी की घास की नाईं लहलहावेंगे।
१७ उस का नाम सदा लों रहेगा जब लों कि सूर्य्य रहेगा तब लों
उस का नाम फैलता जायेगा और लोग उस्से आशीष पायेंगे सारे
जातिगण उसे धन्य कहेंगे॥
१८ परमेश्वर ईश्वर इसराएल का प्रभु जो अकेला आश्चर्य्य कार्य्य

१९ करता है धन्य हो। और उस का बिभवमय नाम सदा लों
धन्य हो और सारी पृथिवी उस के बिभव से परिपूर्ण होवे
आमीन और आमीन ॥
२० यस्सी के बेटे दाऊद की प्रार्थनाएं समाप्त हुईं ॥

तिहत्तरवां गीत।

आसफ़ का गीत ॥

१ ईश्वर इसराएल के लिये खरे अन्तःकरणियों के लिये केवल
२ भला है। और मैं निकट था कि मेरे पांव टल जायें निकट
३ था कि मेरे पग फिसल जायें। क्योंकि मैं अहंकारियों से डाह
करता था और कहता था कि दुष्टों का कुशल देखा करूंगा॥
४ क्योंकि उन के लिये मृत्यु के समय किसी प्रकार के बंधन
५ नहीं हैं और उन का बल पुष्ट है। वे मनुष्य की नाईं दुख
६ में नहीं हैं और मनुष्य के पुत्र के संग मार नहीं खाते। इस
लिये घमंड उन के गले की हमुली हुआ अन्धेर के बस्त्र ने
७ उन्हें ढांप लिया है। उन की आंखें चिकनाई से उभरी हुई
८ हैं उन के मन की चिन्तायें निकलती हैं। वे चिढ़ाते और
दुष्टता के संग बातें करते हैं घमंड से अन्धेर की बातें करते
९ हैं। उन्हों ने अपना मुंह स्वर्ग पर रक्खा है और उन की जीभ
१० पृथिवी पर घूमती है। इस लिये वुह अपने लोगों को यहां
फेर लाता है और मूहामुंह पानी उन पर निचोड़ा जाता है।
११ और वे कहते हैं कि सर्वशक्तिमान क्योंकर जाने और क्योंकर
१२ अति महान को इस का ज्ञान हो। देखो ये अधर्म्मी हैं और
सदा के भाग्यमान उन्हों ने अपनी संपत्ति बढ़ाई है॥
१३ केवल बृथा मैं ने अपने मन को शुद्ध किया है और निर्मलता
१४ में अपने हाथ धोये हैं। और मैं सारे दिन मार खाता रहा
१५ और हर बिहान को मेरी ताड़ना हुई। यदि मैं ने कहा हो कि

यों वर्णन करूंगा तो देख मैं ने तेरे बालकों की मंडली से छल
१६ किया है। और मैं इसे जान्ने के लिये सोचा करता था वुह
१७ मेरी आंखों में दुख था। और मैं ने कहा कि जब लों
सर्वशक्तिमान के धर्म्मधाम में न आऊं तब लों उन के अन्त का
सोच किया करूंगा॥

१८ तू उन्हें केवल फिसलने स्थानों में रक्खेगा और अब तू ने
१९ उन्हें नाश में डाला है। वे मानो एक पलमात्र में क्या ही उजाड़
२० में पड़ गये भय से सर्वथा मिट गये। जागनेहारे के स्वप्न की
नाईं हे प्रभु जब तू जागेगा तब उन के स्वरूप को तुच्छ
जानेगा॥

२१ क्योंकि मेरा मन आप को खट्टा कर देता है और मैं अपनी
२२ कटि में अपने ताईं छेदता हूं। और मैं मूर्ख हूं और नहीं
२३ जानता मैं तेरे आगे पशु हुआ। और मैं सर्वदा तेरे संग हूं तू
२४ ने मेरा दहिना हाथ धरा। तू अपने मंत्र से मेरी अगुआई करेगा
२५ और उस के पीछे मुझे विभव में ले लेगा। स्वर्ग पर मेरा कौन
२६ है और पृथिवी पर तेरे संग मैं ने किसी को नहीं चाहा। मेरा
शरीर और मेरा मन घट गया पर ईश्वर सदा मेरे मन की
चटान और मेरा भाग है॥

२७ क्योंकि देख जो तुझ से दूर हैं वे नष्ट होंगे तू ने हर एक
२८ को जो तुझ से व्यभिचारी हुआ काट डाला है। और मैं—ईश्वर
की संगति मेरे लिये भली है मैं ने प्रभु परमेश्वर पर अपना भरोसा
रक्खा है जिसतें तेरे सारे कार्य्यों का वर्णन करूं॥

चौहत्तरवां गीत।

आसफ़ का उपदेशदायक गीत॥

१ हे ईश्वर तू ने क्यों हमें सर्वदा के लिये त्यागा है और क्यों
तेरे रिस का धुआं तेरी चराई की भेड़ों पर उठता है।

२ अपनी मंडली को जिसे तू ने सदा से मोल लिया और अपने
अधिकार के उस दंड को छुड़ाया इस सैहून पहाड़ को जिस
३ में तू रहा है स्मरण कर। सदा के उजाड़ों की ओर उन सभों
की ओर जिन्हें बैरी ने धर्म्मधाम में बिगाड़ा है अपने डग बढ़ा॥
४ तेरे बैरी तेरी मंडली के मध्य गर्जते हैं उन्हों ने अपने
५ चिन्ह प्रभुता के चिन्ह ठहराये हैं। वुह जान पड़ता है कि
६ मानो घने पेड़ों पर कुल्हाड़ियां बहुत ऊंची उठाता है। और
अब उस के खोदे हुए कार्य्य को वे हथौड़े और हथौड़ियों से
७ तोड़के एक ही साथ गिरा देते हैं। उन्हों ने तेरे धर्म्मधाम
में आग लगाई है भूमि लों तेरे नाम के निवासस्थान को
८ अशुद्ध किया है। उन्हों ने अपने मन में कहा है कि हम
उन्हें एक ही साथ नाश करें उन्हों ने भूमि पर सर्वशक्तिमान
९ के सारे सभास्थानों को जला दिया है। हम अपने चिन्हों को
नहीं देखते अब कोई भविष्यद्वक्ता नहीं है और हमारे मध्य
कोई नहीं जानता कि यह कब लों होगा॥
१० हे ईश्वर बैरी कब लों निन्दा करेगा क्या बैरी सदा तेरे नाम
११ की अपनिन्दा करेगा। तू क्यों अपना हाथ और अपना दहिना
हाथ खींचे रहता है उसे अपनी गोद में से निकालके उन्हें
१२ नाश कर। और ईश्वर प्राचीन से मेरा राजा है जो पृथिवी के
१३ मध्य छुटकारे दिया करता है। तू ही ने अपने पराक्रम से
समुद्र को फाड़ा अजगरों के सिरों को पानी पर कुचल डाला।
१४ तू ही ने लिवयातान के सिरों को कुचल डाला तू उसे बनवासी
१५ लोगों के भोजन के लिये देगा। तू ही ने सोता और धारा को
१६ चीरा तू ही ने नित्य बहती नदियों को सुखा दिया। दिन
तेरा है रात भी तेरी है तू ही ने उंजियाले और सूर्य्य को
१७ सिद्ध कर रक्खा। तू ही ने पृथिवी के सारे सिवानों को ठहराया
गरमी और जाड़ा तू ही ने उन्हें बनाया॥

१८ इसे स्मरण कर कि बैरी ने परमेश्वर की निन्दा किई और
१९ मूढ़ जातिगण ने तेरे नाम की अपनिन्दा किई है। पेंडूक जथा
को अपनी पंडुकी मत दे अपने दुखियों की मंडली को सदा
२० लों न भूल। बाचा को चेत कर क्योंकि पृथिवी के अंधियारे
२१ स्थान क्रूरता के निवासों से पूर्ण हैं। सताया हुआ लज्जित
होके पलट न जाये दुखी और कंगाल तेरे नाम की स्तुति
२२ करें। हे ईश्वर उठ अपना ही बिवाद कर अपनी उस निन्दा
को जो सारे दिन मूर्ख की ओर से होती है स्मरण कर।
२३ अपने बैरियों का शब्द अपने शत्रुओं के कोलाहल को जो
नित्य उठता है भूल न जा॥

पचहत्तरवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये नाश न कर
आसफ़ का गीत और गान॥

१ हे ईश्वर हम तेरी स्तुति करते हैं हम स्तुति करते हैं
क्योंकि तेरे नाम का प्रगट होना निकट है उन्हों ने तेरे आश्चर्य्य
२ का वर्णन किया है। क्योंकि मैं ठहराया हुआ समय चुन लूंगा
३ मैं ही सच्चाई से बिचार करूंगा। पृथिवी और उस के सारे
निवासी पिघल गये मैं ही ने उस के खंभों को संभाला है।
सिलाह॥

४ मैं ने घमंडियों से कहा कि घमंड न करो और दुष्टों से
५ कि सींग न उठाओ। अपना सींग ऊंचाई पर न उठाओ और
६ मगराई से ढीठाई की बातें न करो। क्योंकि न पूरब से
७ न पच्छिम से और न पहाड़ों के बन से न्याय आवेगा। क्योंकि
ईश्वर न्याई है वुह एक को नीचा करेगा और दूसरे को ऊंचा
८ करेगा। क्योंकि परमेश्वर के हाथ में कटोरा है और उस
में मदिरा फेनाती है मिलावट से भरी हुई है और वुह

इस कटोरे से उंडेला करता है केवल उस की तरछट पृथिवी
के सारे दुष्ट निचोड़ेंगे और पीयेंगे॥
९ और मैं सदा लों बर्णन करूंगा यअ़कूब के ईश्वर की स्तुति
१० में गान करूंगा। और मैं दुष्टों के सारे सींगों को काट डालूंगा
धर्म्मी के सींग ऊंचे किये जायेंगे॥

छिहत्तरवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये तार के बाजों पर
आसफ़ का गीत और गान॥

१ ईश्वर यहूदाह में प्रसिद्ध है इसराएल में उस का नाम
२ महान है। और सालिम में उस का तंबू था और सैहून में
३ उस का निवास। उधर उस ने धनुष के जलते हुए बाणों ढाल
और तलवार और लड़ाई को तोड़ डाला। सिलाह॥
४ तू लुटेरे पर्वतों से अधिक ज्योतिमान और विभवमय है।
५ हियाई मन मनुष्य लुट गये वे अपनी नींद में सो गये हैं और
सारे बलवान मनुष्यों में से किसी ने अपना हाथ नहीं पाया।
६ हे यअ़कूब के ईश्वर तेरी दपट से रथ और घोड़े नींद में पड़
७ गये। तुझ से हां तुझी से डरा चाहिये और जब तू क्रोध
८ करे तब कौन तेरे आगे खड़ा रहेगा। तू ने स्वर्ग पर से बिचार
९ सुनाया पृथिवी डर गई और थम गई। जब ईश्वर न्याय के
लिये उठा जिसतें पृथिवी के सारे कोमलों को बचावे। सिलाह॥
१० क्योंकि मनुष्य का क्रोध तेरी स्तुति करेगा और कोपों का
११ शेष तू कटि पर बांधेगा। हे तुम सब कि उस के आस पास
हो परमेश्वर अपने ईश्वर के लिये मनौतियां मानो और पूरी करो
१२ उस भयंकर ईश्वर के आगे लोग भेंट लावें। वुह अध्यक्षों के
प्राण को काट डालेगा वुह पृथिवी के राजाओं के लिये भयंकर
है॥

सतहत्तरवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये यदूतून के ऊपर आसफ़ का गीत ॥

१ मैं अपना शब्द ईश्वर की ओर उठाऊंगा और पुकारूंगा अपना
शब्द ईश्वर की ओर उठाऊंगा और वुह मेरी ओर कान धरेगा।
२ मैं ने अपनी बिपत्ति के दिन प्रभु को ढूंढा मेरा हाथ रात को
फैला रहा और निर्बल न हो गया मेरे प्राण ने शान्ति पाने से
३ नाह किया। मैं ईश्वर को स्मरण करता और हाहाकार करता हूं
चिन्ता करता हूं और मेरा प्राण मूर्छित में पड़ा है। सिलाह।
४ तू ने मेरी आंखें खुली रक्खी हैं मैं मारा गया और बोल नहीं
सक्ता ॥

५ मैं ने अगिले दिनों पर और प्राचीन बरसों पर सोच किया।
६ मैं अपने रात के गान को स्मरण करूंगा अपने मन में सोच
७ करूंगा और मेरा आत्मा खोज करता है। कि क्या प्रभु
८ सदा के लिये त्यागेगा और फिर कभी प्रसन्न न होगा। क्या
उस की दया सदा के लिये जाती रही उस की बाचा पीढ़ी
९ से पीढ़ी लों कट गई। क्या सर्वशक्तिमान अनुग्रह करना भूल
गया क्या उस ने क्रोध में अपनी दया को बन्द कर रक्खा है।
सिलाह ॥

१० और मैं ने कहा कि यह मेरी निर्बलता है अति महान के
११ दहिने हाथ के बर्ष। मैं परमेश्वर के कार्य्यों का बर्णन करूंगा
१२ क्योंकि मैं तेरे प्राचीन आश्चर्य्यों को स्मरण करूंगा। और मैं
तेरे सारे कार्य्यों को ध्यान करूंगा और तेरी कीर्त्ति पर सोच करूंगा॥

१३ हे ईश्वर तेरा मार्ग पवित्रता में है ईश्वर के समान कौन बड़ा
१४ महेश्वर है। तू ही वुह सर्वशक्तिमान है जो आश्चर्य्य कर्म्म
किया करता है तू ने लोगों में अपना बल प्रगट किया है।
१५ तू ने अपनी भुजा से अपने लोग यअकूब और यूसुफ़ के संतानों

१६ को छुड़ाया। सिलाह। हे ईश्वर पानियों ने तुझे देखा पानियों
१७ ने तुझे देखा वे थर्थराते हैं हां गहिराव कांप उठते हैं। मेघों
ने जल उंडेल दिया बादलों ने शब्द दिया हां तेरे बाण चारों ओर
१८ उड़ते हैं। तेरे गर्ज्जन का शब्द बवंडर में हुआ बिजलियों ने
भूमंडल को उंजियाला कर दिया तब पृथिवी थर्थराई और कांप
१९ गई। तेरा मार्ग समुद्र में था और तेरे पथ बड़े पानियों में
२० और तेरे पांव के चिन्ह नहीं जाने गये। तू ने मूसा और हारून
के हाथ से झुंड की नाईं अपने लोगों की अगुआई किई॥

अठहत्तरवां गीत।

आसफ़ का उपदेशदायक गीत॥

१ हे मेरे लोगो मेरी व्यवस्था पर कान धरो मेरे मुंह की बातों
२ पर अपने कान लगाओ। मैं अपना मुंह दृष्टान्त में खोलूंगा
३ प्राचीन भेदों को प्रगट करूंगा। जिन्हें हम ने सुना और उन्हें
४ जाना और हमारे पितरों ने हम से बर्णन किया। हम उन्हें उन
के बालकों से न छिपावेंगे परन्तु अवैया पीढ़ी से परमेश्वर की
स्तुतों का और उस के बल का और उस के आश्चर्य्यों का जो
उस ने किये बर्णन करते रहेंगे॥

५ और उस ने यअक़ूब में साक्षी ठहराई और इसराएल में
व्यवस्था स्थिर किई जिन के विषय उस ने हमारे पितरों को
६ आज्ञा किई कि उन्हें अपने बालकों को सिखावें। जिसतें अवैया
पीढ़ी जानें बालक उत्पन्न होवें और उठकर अपने बालकों से
७ बर्णन करें। और ईश्वर पर अपना आसा रक्खें और सर्बशक्तिमान
८ के कार्य्यों को न भूलें और उस की आज्ञाओं को पालन करें। और
अपने पितरों की नाईं झगरे और दंगइत पीढ़ी न होवें ऐसी
पीढ़ी कि जिस ने अपने मन को सिद्ध न रक्खा और जिस का
आत्मा सर्बशक्तिमान पर पूरा भरोसा न रखता था॥

९ इफ़रायम के संतान हथियार बांधे हुए धनुष चढ़ाये हुए लड़ाई
१० के दिन में लौट आये। उन्हों ने ईश्वर की बाचा को स्मरण न
११ किया और उस की व्यवस्था पर चलने से नाह किया। और
उस के कार्य्यों को और उस के आश्चर्य्यों को जो उस ने उन्हें
दिखाये भूल गये॥

१२ उन के पितरों के आगे मिस्र देश में ज़ुअ़न के चौगान में
१३ उस ने आश्चर्य्य कर्म्म किये। उस ने समुद्र को दो भाग कर
दिया और उन्हें पार पहुंचाया और पानी को ढेर की नाईं खड़ा
१४ कर दिया। और दिन को मेघ से और रात भर आग की
१५ ज्योति से उन की अगुआई किई। वुह बन में चटानों को
चीरता है और उन्हें पीने को मानो बड़े गहिराव देता है।
१६ और चटान से धारें निकालता है और नदी की नाईं पानी
बहा देता है॥

१७ पर उन्हों ने उस की बिरुद्धता में और अधिक पाप किया
१८ और बन में अति महान के आगे बहुत दंगा किया। और
अपने मन में सर्वशक्तिमान को यों परखा कि अपनी इच्छा के
१९ अनुसार भोजन मांगें। और ईश्वर के बिरुद्ध बोले और कहा कि
२० क्या सर्वशक्तिमान बन में मंच सिद्ध कर सकेगा। देखो उस ने
चटान को मारा और पानी बहता है और धारें फूट निकलती
हैं पर क्या वुह रोटी भी दे सक्ता है अथवा अपने लोगों के
२१ लिये मांस सिद्ध कर सक्ता है। इस लिये परमेश्वर ने सुना और अति
क्रोधित हुआ और यअ़क़ूब में आग भड़की और इसराएल पर
२२ भी क्रोध उभरा। क्योंकि वे ईश्वर पर बिश्वास न लाये और
२३ उन्हों ने उस की मुक्ति पर भरोसा न रक्खा। यद्यपि उस ने
२४ ऊपर से मेघों को आज्ञा किई और स्वर्ग के द्वार खोले। और
उन पर खाने के लिये मन्न बरसाया और उन्हें स्वर्गीय अन्न
२५ दिया। हर एक ने दूतों की रोटी खाई उस ने उन्हें बहुताई

२६ से मार्ग के लिये भोजन भेजा। वुह स्वर्ग में पूरवी पवन चलाता
२७ है और अपने बल से दक्षिणी पवन बहाता है। और उस ने
उन पर धूल की नाईं मांस और समुद्र के बालू की नाईं पक्षी
२८ बरसाये। और उन की छावनी के बीच में उन के घरों के
२९ आस पास गिराये। और उन्हों ने खाया और अति तृप्त हुए और
३० वुह उन्हें उन्हीं की इच्छा देता है। वे अपनी लालसा से अलग
३१ न हुए अब लों उन का भोजन उन के मुंही में था। कि ईश्वर
का कोप उन पर भड़का और उन के पुष्टों में से मारा और
इसराएल के तरुणों को गिरा दिया॥

३२ तिस पर भी उन्हों ने फिर पाप किया और उस के आश्चर्य्य
३३ कार्य्यों का विश्वास न किया। इस लिये उस ने उन के दिनों
को अनर्थ में और उन के बरसों को भय में बिताया॥

३४ जब उस ने उन्हें मारा तब उन्हों ने उसे ढूंढा और
३५ पश्चाताप किया और शीघ्र सर्वशक्तिमान के खोजी हुए। और
चेत किया कि ईश्वर उन की चटान और सर्वशक्तिमान महेश्वर
३६ उन का मुक्तिदाता था। पर उन्हों ने अपने मुंह से उस्से लल्लो
३७ पत्तो किई और अपनी जीभ से उस्से झूठ बोले। और उन
का मन उस के साथ स्थिर न रहा और वे उस की बाचा पर
३८ विश्वास न लाये। और वुह दयालु अधर्म्म को क्षमा करता है
और सर्बथा नाश नहीं करता है और उस ने अपने क्रोध को
३९ बारम्बार रोका और अपने सारे क्रोध को न भड़काया। और
उस ने स्मरण किया कि वे मांस हैं और चलनेहारी पवन जो
फेर न आवेगी॥

४० वे बन में उस्से क्या ही बेर बेर दंगा करते हैं और अरण्य
४१ में उसे उदास करते हैं। और उन्हों ने फिर सर्वशक्तिमान को
परखा और इसराएल के पवित्रमय पर अनादर का चिन्ह लगाया।
४२ उन्हों ने उस के हाथ को स्मरण न किया उस दिन को जब

४३ उस ने उन्हें सतानेहारे से छुड़ाया। जिस ने मिस्र में अपने
४४ चिन्ह और जुअन के चौगान में अपने आश्चर्य्य प्रगट किये। और
उन की नदियों को लोहू कर डाला और वे अपनी धाराओं से पी
४५ नहीं सक्ते। वुह उन में मक्खियां भेजता है और वे उन्हें खा
४६ लेती हैं और मेंडुक और वे उन्हें नष्ट करते हैं। और उस ने
उन के फल कीड़े को और उन का परिश्रम टिड्डी को दिया।
४७ वुह उन के दाख को ओलों से और उन के गूलरों को पाले से
४८ मारता है। और उस ने उन के ढोर ओलों को और उन
४९ के झुंड बिजुलियों को सोंपे। वुह उन पर अपने कोप की
ज्वलन क्रोध और जलजलाहट और व्याकुलता अर्थात् आपत्ति
५० के दूतों को जथा भेजता है। वुह अपने क्रोध के लिये
मार्ग सिद्ध करता है उस ने उन के प्राण को मृत्यु से नहीं
५१ बचाया और उन के प्राण मरी को सोंपे। और मिस्र में हर
एक पहिलौठे को हाम के तंबुओं में उन के बलों के पहिले
५२ फल को मारा। और अपने लोगों को भेड़ों की नाईं चलाया
५३ और झुंड की नाईं बन में उन की अगुआई किई। और कुशल
के संग उन की अगुआई किई ऐसा कि वे न डरे और समुद्र
५४ ने उन के बैरियों को ढांप लिया। और उन्हें अपने पवित्र
सिवाने लों इस पहाड़ पर जिसे उस के दहिने हाथ ने मोल
५५ लिया पहुंचाया। और उन के आगे से जातिगणों को दूर
किया और रस्सी के साथ उन जातिगणों को अधिकार
ठहराया और इसराएल की गोष्ठियों को उन के तंबुओं में
बसाया॥

५६ तिस पर भी उन्हों ने ईश्वर अति महान को परखा और
उस्से फिर गये और उस की साक्षियों को पालन न किया।
५७ और फिर गये और अपने पितरों की नाईं छल किया वे बरे
५८ हुए धनुष की नाईं फिर गये। और अपने ऊंचे स्थानों के कारण

से उस को खिजाया और अपनी खोदी हुई मूर्त्तों के कारण से
उसे ज्वलित किया ॥
५९ ईश्वर ने सुना और कोपित हुआ और इसराएल से अति घिन
६० किया। और सैला के निवास को उस तंबू को जिसे उस ने मनुष्यों के
६१ मध्य में खड़ा किया था त्यागा। और अपने बल को बंधुआई
६२ में दिया और अपने बिभव को बैरी के हाथ में। और अपने
लोगों को तलवार को सौंपा और अपने अधिकार पर क्रुद्ध हुआ।
६३ आग ने उस के तरुणों को भस्म किया और उस की कुंआरियों
६४ के बिवाह के गीत गाये न गये। उस के याजक तलवार से
मारे गये और उन की रांड़ें बिलाप नहीं करतीं ॥
६५ तब प्रभु उस की नाईं जो नींद से चौंके जागा उस महाबीर
६६ के समान जो मदिरा के अमल से ललकारता है। और
उस ने अपने बैरियों को मारके पीछे हटा दिया सदा की लज्जा
उन्हें दिई ॥
६७ और यूसुफ़ के तंबू से घिन किई और इफ़रायम की गोष्ठी को
६८ न चुना। और यहूदाह की गोष्ठी को सैहून के पहाड़ को जिसे
६९ उस ने प्यार किया चुन लिया। और ऊंचे पहाड़ों के समान
पृथिवी की नाईं जिस की नेव उस ने सदा के लिये डाली अपने
७० धर्म्मधाम को बनाया। और दाऊद को अपना सेवक होने के
लिये चुन लिया और उसे झुंडों के भेड़शालों में से निकाल
७१ लाया। उस ने बच्चेवाली भेड़ियों के पीछे से उसे ले लिया
जिसतें उस के लोग यअ़कूब को और उस के अधिकार इसराएल
७२ को चरावे। सो उस ने अपने मन की खराई के समान उन्हें
चराया है और अपने हाथों की गुणता से उन की अगुआई
किया करेगा ॥

उनासीवां गीत ।

आसफ़ का गीत ॥

१　हे ईश्वर अन्यदेशी तेरे अधिकार में आये हैं उन्हों ने तेरे
पवित्र मन्दिर को अशुद्ध किया यरूसलम को ढेर ढेर कर
२ दिया है । उन्हों ने तेरे सेवकों की लोथों को आकाश के पक्षियों
का और तेरे साधुन का मांस पृथिवी के बनपशुन का आहार
३ ठहराया है । उन्हों ने उन का लोहू यरूसलम की चारों ओर
४ पानी की नाईं बहाया है और कोई गाड़नेहारा नहीं है । हम
अपने परोसियों के लिये निन्दा अपने आस पासियों के लिये
ठट्ठा और उपहास हो गये हैं ॥

५　हे परमेश्वर तू कब लों सदा रिसियाता रहेगा और तेरा ज्वलन
६ आग की नाईं बरा करेगा । अपना कोप उन जातिगणों पर
उंडेल जिन्हों ने तुझे नहीं जाना और उन राज्यों पर जिन्हों ने
७ तेरा नाम लेके नहीं पुकारा है । क्योंकि उन्हों ने यअकूब को
निगल लिया और उस के निवास को उजाड़ कर दिया है ॥

८　अगिली पीढ़ियों के पापों का स्मरण हमारे विषय न कर शीघ्र
कर तेरी दया हमारे आगे आयें क्योंकि हम बहुत क्षीण
९ हो गये । हे हमारे मुक्तिदाता ईश्वर अपने नाम की महिमा के
लिये हमारी सहाय कर और अपने नाम के लिये हमें छुड़ा और
१० हमारे पापों को क्षमा कर । अन्यदेशी किस लिये कहें कि उन
का ईश्वर कहां है अन्यदेशियों के मध्य हमारी दृष्टि के आगे
तेरे दासों के उस लोहू का पलटा जो बहाया गया है प्रगट
हो ॥

११　बंधुए का कराहना तेरे आगे पहुंचे अपनी भुजा की महिमा
१२ के समान मृत्यु के बालकों को जीता रहने दे । और जिस
रीति कि उन्हों ने हे प्रभु तेरी निन्दा किई तू उन की इस

निन्दा का पलटा शतगुण हमारे परोसियों की गोद में रख दे।
१३ और हम तेरे लोग और तेरी चराई की भेड़ें सदा तेरा धन्य
मानेंगे पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरी स्तुति वर्णन करेंगे॥

अस्सीवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये सोसनों के विषय। साक्षी।
आसफ़ का गीत॥

१ हे इसराएल के चरवाहे जो झुंड की नाईं यूसुफ़ की अगुआई
करता हे कान धर हे करोबीम पर के बैठवैये बिभूशित हो।
२ इफ़रायम और बिनयमीन और मुनस्सी के आगे अपने बल को
३ जगा और हमारे बचाव के लिये आ। हे ईश्वर हमें फिर स्थिर
कर और अपने मुख को हम पर चमका और हम बच जायेंगे॥
४ हे परमेश्वर ईश्वर सेनाओं के ईश्वर तू ने कब्ब से अपने लोगों
५ की प्रार्थना पर धूआं उठाया हे। तू ने उन्हें आंसुओं की रोटी
६ खिलाई और उन्हें मटके भर भर आंसू पिलाये हैं। तू हमें
हमारे परोसियों के लिये झगड़े का कारण ठहराता है और
७ हमारे वैरी अपने को मुदित करते हैं। हे ईश्वर सेनाओं के
ईश्वर हमें फिर स्थिर कर और अपना मुख चमका और हम बच
जायेंगे॥
८ तू एक लता मिस्र से निकालता अन्यदेशियों को दूर करता
९ और उसे लगाता हे। तू ने उस के आगे ठिकाना सिद्ध किया
१० और उस ने जड़ पकड़ लिई और पृथिवी को भर दिया। पहाड़
उस की छाया से ढंप गये और उस की डालियों से सर्वशक्तिमान
११ के देवदारु। वुह अपनी डालियां समुद्र लों पहुंचाता हे
१२ और अपनी टहनियां नदी लों। तू ने उस के बाड़ों को किस
१३ कारण तोड़ डाला कि सारे पथिक उसे खसोटते हैं। बनैला सूअर
उसे उजाड़ता हे और बनपशु उसे चर जाता हे॥

१४ हे ईश्वर सेनाओं के ईश्वर दया करके फिर आ स्वर्ग से दृष्टि कर
१५ और देख और इस लता पर दृष्टि कर । और जो तेरे दहिने हाथ
ने लगाया है उसे स्थिर कर और उस बेटे पर जिसे तू ने अपने
१६ लिये पोसा है रक्षा कर । वुह आग से जलाया गया काटा गया
१७ वे तेरे मुख की दपट से नाश होते हैं । तेरा हाथ अपने
दहिने हाथ के मनुष्य पर हो उस मनुष्य के पुत्र पर जिसे तू
ने अपने लिये पोसा है ॥
१८ तो हम तुझ से न फिरेंगे तू हमें जिलावेगा और हम तेरा
१९ ही नाम पुकारेंगे । हे परमेश्वर ईश्वर सेनाओं के ईश्वर हमें फिर
स्थिर कर अपना मुख चमका और हम बच जायेंगे ॥

एकासीवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये । गित्तीत पर । आसफ़ का गीत ॥

१ ईश्वर के लिये जो हमारा बल है पुकारके गाओ यअ़कूब के
२ ईश्वर की ओर आनन्द से ललकारो । गीत उठाओ और तबला
३ बजाओ मनोहर बीणा सितार समेत । पर्बमास में पूर्णमासी में
और हमारे पर्ब के दिन में तुरही फूंको ॥
४ क्योंकि यह इसराएल के लिये आज्ञा और यअ़कूब के ईश्वर
५ का अधिकार है । उस ने उसे यूसुफ़ में साक्षी के लिये ठहराया
जब वुह मिस्र की भूमि पर से होके निकला जहां मैं ने एक
ऐसी भाषा सुनी जो नहीं जानता था ॥
६ मैं ने उस के कांधे पर से बोझ उतारा उस के हाथ टोकरी
७ से निर्बंध होते हैं । तू ने बिपत्ति में पुकारा और मैं ने तुझे
छुड़ाया है मैं गर्ज्जन के ओट में होके तुझे उत्तर दूंगा मरीबः
८ के पानी पर तुझे परखूंगा । सिलाह । हे मेरे लोग सुन और मैं
तेरे बिरुद्ध साक्षी दूंगा हे इसराएल मैं बोलूंगा यदि तू मेरी
९ सुनेगा । तेरे मध्य और कोई सर्वशक्तिमान न हो और तू अान्य

१० सर्बशक्तिमान की पूजा न कर। मैं हीं परमेश्वर तेरा ईश्वर हूं
जो तुझे मिस्र देश से बाहर लाया अपना मुंह फैला और मैं
११ उसे भर दूंगा। पर मेरे लोग मेरे शब्द के सुन्नेहारे न हुए
१२ और इसराएल ने मुझे न माना। और मैं ने उन्हें उन के मन
की कठोरता पर छोड़ दिया वे अपने ही मतों पर चलते हैं॥
१३ हाय कि मेरे लोग मेरी सुनें और इसराएल मेरे मार्गों पर
१४ चलें। तो मैं शीघ्र उन के बैरियों को झुकाऊंगा और उन के
१५ सतानेहारों पर अपना हाथ फेरूंगा। परमेश्वर के बैर रखनेहारे
१६ उस्से दब जायेंगे और उन का समय सदा लों रहेगा। और वुह
उसे अच्छे से अच्छा गेंहूं खिलायेगा और पत्थर के मधु से मैं
तुझे तृप्त करूंगा॥

बयासीवां गीत।

आसफ़ का गीत॥

१ ईश्वर सर्बशक्तिमान की मंडली में खड़ा होता है वुह देवों
२ के मध्य में बिचार करेगा। तुम कब लों अधर्म्म से बिचार
३ करोगे और दुष्टों की पक्ष करोगे। सिलाह। दुर्बल और अनाथ
४ का बिचार करो दुखी और कंगाल का न्याय करो। दुर्बल और
कंगाल को छुड़ाओ दुष्टों के हाथ से उसे बचाओ॥
५ वे नहीं जानते और न समझेंगे वे अंधियारे में चला करेंगे
६ पृथिवी की सारी नेवें हिल जायेंगी। मैं ने तो कहा कि तुम
७ देव हो और तुम सब कोई अति महान के पुत्र हो। पर
निश्चय तुम मनुष्य के समान मरोगे और राजपुत्रों में से एक
की नाईं गिरोगे॥
८ हे ईश्वर उठ पृथिवी का बिचार कर क्योंकि तू ही सारी
जातिगणों को अधिकार में लेगा॥

तिरासीवां गीत ।

आसफ़ का गान और गीत ॥

१ हे ईश्वर चुप मत हो चुपका मत रह और चैन न ले हे
सर्वशक्तिमान ॥
२ क्योंकि देख तेरे बैरी हुल्लर करते हैं और तुझ से डाह
३ रखनेहारे सिर उठाते हैं । वे तेरे लोगों पर छल का परामर्श
करते हैं और तेरे छिपे हुओं के बिरुद्ध चिन्ता करते हैं ।
४ उन्हों ने कहा है कि आओ और हम उन्हें काट डालें जिसतें
वे एक जाति न रहें और इसराएल का नाम फिर स्मरण न हो ।
५ क्योंकि उन्हों ने आपुस में मन से परामर्श किया है वे तेरे
६ बिरुद्ध नियम बांधते हैं। अर्थात् अदूम के तंबू और इसमऊएली
७ मोअब और हाजरी । जिबाल और अमून और अमालीक़
८ फ़िलिस्त सूर के बासी समेत । असूर भी उन के संग मिल गया
वे लूत के संतान की बांह हो गये । सिलाह ॥
९ तू उन से ऐसा कर जैसा मिदियान से जैसा सीसरा से जैसा
१० याबीन से कैसून की तराई में तू ने किया । वे ऐनदोर में नाश
११ हुए पृथिवी के लिये खाद हो गये । उन्हें हां उन के कुलीनों
को ग़ुराब की नाईं और जिअब की नाईं कर और जिब्रह की
१२ नाईं और जिलमनअ की नाईं उन के समस्त अध्यक्षों को । जिन्हों
ने कहा है कि हम अपने लिये ईश्वर के भवनों को अधिकार में
१३ लें । हे मेरे ईश्वर उन्हें बवंडर की नाईं कर भूसे की नाईं
१४ पवन के सन्मुख । जैसे आग बन को भस्म करती है और जैसे
१५ लवर पहाड़ों को दहन करता है । वैसा ही तू अपनी आंधी
से उन का पीछा करेगा और अपनी झंकोर से उन्हें डरावेगा ।
१६ उन का मुंह लाज से भर दे तब हे परमेश्वर लोग तेरे नाम
१७ का पीछा करेंगे । वे सदा लों लज्जित और भयमान रहेंगे

१८ और लज्जित और नाश होंगे। और लोग जानेंगे कि तू
ही जिस का नाम परमेश्वर है अकेला सारी पृथिवी पर
महान है ॥

चौरासीवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये। गित्तीत पर। कोरह के पुत्रों के
लिये गीत ॥

१ हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर तेरे तंबू कैसे मनभावने हैं।
२ मेरा प्राण परमेश्वर के आंगनों के लिये अभिलाषी और मूर्छित
भी है मेरा मन और मेरा तन जीवते सर्वशक्तिमान के लिये
३ आनन्द का शब्द करता है। हां गौरैये ने घर पाया और
सुपाबिना ने अपने लिये खोंथा जहां वुह अपने गदे रखती है
अर्थात् तेरी बेदियों को हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर मेरे राजा
और मेरे ईश्वर ॥
४ तेरे घर के निवासी क्या ही धन्य हैं वे सदा तेरी स्तुति
५ किया करेंगे। सिलाह। क्या ही धन्य वुह मनुष्य जिस का
६ बल तुझ से है जिस के मन में मार्ग हैं। वे रोने की तराई
में चलते चलते उसे कुण्ड ठहराते हैं हां मार्गदर्शक आशीषों
७ से ढंप जाता है। वे बल पर बल बढ़ाते हुए चला करेंगे ईश्वर
के आगे सैहून में प्रगट होंगे ॥
८ हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर मेरी प्रार्थना सुन हे यअ़कूब
९ के ईश्वर कान धर। सिलाह। हे हमारी ढाल देख हे ईश्वर
१० और अपने अभिषिक्त के मुंह पर दृष्टि कर। क्योंकि एक दिन
तेरे आंगनों में सहस्र से भला है मैं ने अपने ईश्वर के घर की
डेवढ़ी पर खड़ा रहना चुन लिया है उस्से अधिक कि दुष्टता
११ के तंबुओं में रहूं। क्योंकि परमेश्वर ईश्वर सूर्य्य और ढाल है
परमेश्वर अनुग्रह और विभव देगा जो खराई से चलते हैं वुह

१२ उन से भलाई न रख छोड़ेगा । हे परमेश्वर सेनाओं के प्रभु क्या
ही धन्य वुह मनुष्य जो तुझ पर भरोसा रखता है ॥

पचासीवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये। कोरह के पुत्रों का गीत ॥

१ हे परमेश्वर तू ने अपनी भूमि पर प्रसन्नता प्रगट किई
२ तू यअक़ूब की बंधुआई की दशा में फिर आया । तू ने अपने
लोगों के अधर्म्म को क्षमा किया उन के सारे पाप को ढांप
३ लिया । सिलाह । तू ने अपने सारे कोप को उठा लिया अपने
क्रोध की ज्वलन से फिर गया ॥

४ हे हमारे मुक्तिदाता ईश्वर हमारे पास फिर आ और अपनी
५ रिस को हम पर से रोक। क्या तू सदा लों हम से रिसयावेगा पीढ़ी
६ से पीढ़ी लों अपने क्रोध को बढ़ाता रहेगा । क्या तू न फिरेगा
और हमें जिलावेगा और क्या तेरे लोग तुझ से आनन्द न होंगे।
७ हे परमेश्वर अपनी दया हमें दिखला और निश्चय तू अपनी मुक्ति
हमें देगा ॥

८ मैं सुनूंगा कि सर्वशक्तिमान परमेश्वर क्या कहेगा क्योंकि वुह
अपने लोगों के लिये और अपने साधुन के लिये कुशल का बचन
९ कहेगा पर वे मूर्खता की ओर न फिरें । केवल उस के डरवैयों के
१० पास उस की मुक्ति है जिसतें बिभव हमारी भूमि में बास करे। दया
और सच्चाई मिल गई हैं धर्म्म और कुशल चूमा ले चुकी हैं ।
११ सच्चाई पृथिवी से उगती है और धर्म्म स्वर्ग से झांकता है ।
१२ परमेश्वर भलाई भी देगा और हमारी भूमि अपना फल देगी ।
१३ धर्म्म उस के आगे आगे चला करेगा और हमें उस के डगों के
मार्ग पर रक्खेगा ॥

छियासीवां गीत ।

दाऊद की प्रार्थना ॥

१ हे परमेश्वर अपना कान धर और मेरी सुन क्योंकि मैं दुखी और
२ कंगाल हूं। मेरे प्राण की रक्षा कर क्योंकि मैं तेरा अनुगृहित
हूं हे तू मेरे ईश्वर अपने दास को बचा जो तुझ पर भरोसा
३ रखता है। हे प्रभु मुझ पर दया कर क्योंकि मैं प्रति दिन
४ तुझ को पुकारता ही रहूंगा। अपने दास के प्राण को आनन्दित
कर क्योंकि हे प्रभु मैं अपने प्राण को तेरी ओर उठाता हूं।
५ क्योंकि तू ही हे प्रभु भला और क्षमावान है और अपने सारे
६ पुकरवैयों पर दया में बहुत। हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना पर कान
७ धर और मेरी बिनतियों के शब्द पर ध्यान रख। मैं अपनी
विपत्ति के दिन तुझे पुकारूंगा क्योंकि तू मेरी सुनेगा ॥

८ हे प्रभु देवों में तेरे तुल्य कोई नहीं और तेरे से कार्य्य
९ कहीं नहीं। सारी जातिगणें जिन्हें तू ने सिरजा है आवेंगी और
तेरे आगे दण्डवत करेंगी हे प्रभु और तेरे नाम की बड़ाई करेंगी।
१० क्योंकि तू ही महान और आश्चर्य्यकर्त्ता है तू ही अकेला
११ ईश्वर है। हे परमेश्वर अपना मार्ग मुझे दिखला मैं तेरी सच्चाई में
१२ चलूंगा मेरे मन को एकाग्र कर जिसतें तेरे नाम से डरूं। हे
प्रभु मेरे ईश्वर मैं अपने सारे मन से तेरी स्तुति करूंगा और
१३ सदा लों तेरे नाम की बड़ाई किया करूंगा। क्योंकि तेरी दया
मुझ पर बड़ी थी और तू ने मेरे प्राण को अति नीचे पाताल
से छुड़ाया है ॥

१४ हे ईश्वर अहंकारी मेरे विरुद्ध उठे हैं और अंधेरियों की
मंडली मेरे प्राण की गाहक हुई और उन्हों ने तुझे अपने आगे
१५ नहीं रक्खा। और तू ही हे प्रभु सर्वशक्तिमान दयालु और
१६ कृपालु धीर्जमान और दया और सच्चाई में परिपूर्ण है। मेरी

और फिर और मुझ पर दया कर अपने दास को अपनी सामर्थ्य
१७ दे और अपनी दासी के पुत्र को छुटकारा दे। मेरे संग भलाई
के लिये चिन्ह कर तो मेरे बैरी देखेंगे और लज्जित होंगे
क्योंकि हे परमेश्वर तू ही ने मेरी सहाय किई और मुझे
शान्ति दिई है॥

सतासीवां गीत।

कोरह के पुत्रों का गीत और गान॥

१।२ उस की नेव पवित्र पर्वतों पर है। परमेश्वर सैहून के
फाटकों को यअकूब के सारे निवासों से अधिक प्यार करता है।
३ हे ईश्वर के नगर तुझ में विभवमय बातें कही गईं। सिलाह॥
४ मैं अपने जान्नेहारों के साथ रहब और बाबुल का चर्चा
करूंगा देखो फिलिस्त और सूर कूश समेत इन में से हर एक
के विषय कहा जायेगा कि यह जातिगण वहां उत्पन्न हुई।
५ और सैहून के विषय कहा जायेगा कि यह जन और वुह जन
उस में उत्पन्न हुआ और अत्यन्त महान आप उसे स्थिर करेगा।
६ जब जातिगणें लिखी जायेंगी तब परमेश्वर गिनेगा कि यह
७ वहां उत्पन्न हुई। सिलाह। और जैसे गवैये वैसे बजवैये कहते
होंगे कि मेरे सारे सोते तुझ में हैं॥

अठासीवां गीत।

कोरह के पुत्रों का गीत और गान। प्रधान बजनिये के लिये।
पीड़ादायक रोग के विषय। हैमान इज़राही का
उपदेश देनेहारा गीत॥

१ हे परमेश्वर मेरी मुक्ति के ईश्वर मैं ने दिन रात तेरे आगे
२ दोहाई दिई है। मेरी प्रार्थना तेरे आगे पहुंचे अपना कान मेरे
रोने पर रख॥

३ क्योंकि मेरा प्राण बिपत्तों से भरा है और मेरा जीवन पाताल
४ के लग आ रहा है। मैं गड़हे में गिरनेहारों के संग गिना गया
५ निर्बल मनुष्य की नाईं हो गया। मृतकों में निर्बन्ध घायलों
के नाईं जो समाधि में लेटते हैं जिन्हें तू फिर स्मरण नहीं
६ करता और वे ही तेरे हाथ से कट गये हैं। तू ने मुझे नीचे
स्थानों के गड़हे में अंधियारे स्थानों में गहिराओं में रक्खा है।
७ तेरे कोप ने मुझ पर दबाव डाला और तू ने अपनी सारी
८ लहरों से मुझे दुख दिया है। सिलाह। तू ने मेरे जान पहिचानों
को मुझ से दूर रक्खा है तू ने मुझे उन के लिये घिनित किया
९ मैं बन्दीगृह में हूं और न निकलूंगा। मेरी आंख दुख के मारे
धुंधला गई हे परमेश्वर मैं ने प्रति दिन तुझे पुकारा है अपने
हाथ तेरी ओर फैलाये हैं॥
१० क्या तू मृतकों के लिये आश्चर्य्य कर्म्म करेगा क्या मृतक
११ उठेंगे और तेरी स्तुति करेंगे। सिलाह। क्या तेरी दया समाधि
१२ में और तेरी सच्चाई बिनाश में वर्णन किई जायेगी। क्या तेरे
आश्चर्य्य कर्म्म अंधियारे में जाने जायेंगे और तेरा धर्म्म भुलावा
१३ के देश में। और हे परमेश्वर मैं ने तेरी दोहाई दिई है और
बिहान को मेरी प्रार्थना तेरे साम्हने पहुंचेगी॥
१४ हे परमेश्वर तू किस कारण मेरे प्राण को त्यागेगा अपना मुंह
१५ मुझ से छिपावेगा। मैं लड़काई से दुखी और मरने पर हूं मैं
१६ ने तेरे भयों को सहा है मैं घबरा गया। तेरे कोपानल मुझ
१७ पर बीत गये तेरे भयों ने मुझे काट डाला है। उन्हों ने पानी
की नाईं मुझे दिन भर घेरे में रक्खा अकस्मात मुझे चारों ओर
१८ से घेर लिया है। तू ने प्रिय और मित्र को मुझ से दूर कर दिया
है मेरे चीन्ह पहिचान अंधियारे स्थान हैं॥

नवासीवां गीत।

ऐतान इज़राही का उपदेश देनेहारा गीत॥

१ मैं सदा लों परमेश्वर की दया को गाया करूंगा पीढ़ी से पीढ़ी
२ लों अपने मुंह से तेरी सच्चाई का संदेश देता रहूंगा। क्योंकि
मैं ने कहा है कि दया का घर सदा लों बनाया जायेगा तू
३ अपनी सच्चाई स्वर्गों ही पर स्थिर रक्खेगा। मैं ने अपने चुने
हुए से वाचा बांधी अपने दास दाऊद से किरिया खाई है।
४ कि सदा लों तेरे बंश को स्थिर रक्खूंगा और पीढ़ी से पीढ़ी लों
तेरा सिंहासन बनाये रक्खूंगा। सिलाह॥
५ और स्वर्ग हे परमेश्वर तेरे आश्चर्य्यकर्म्मों का स्वीकार करेंगे
हां तेरी सच्चाई सिद्धों की मंडली में स्वीकार किई जायेगी।
६ क्योंकि स्वर्ग में कौन परमेश्वर के तुल्य हो सक्ता और सर्वशक्तिमान
७ के पुत्रों में कौन परमेश्वर के समान होगा। उस सर्वशक्तिमान
के समान जो अपने सिद्धों की सभा में अत्यन्त भयंकर है और
उन सब से जो उस की चारों ओर हैं अति प्रतिष्ठा के योग्य
८ है। हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर हे परमेश्वर कौन तेरे तुल्य
९ बलवान है और तेरी सच्चाई तेरे आस पास है। तू ही समुद्र
की प्रचंडता पर प्रभुता करता है उस की लहरें जब उठती हैं
१० तब तू ही उन्हें स्थिर कर देता है। तू ही ने रहब को
घायल के समान कुचल डाला अपनी बलवन्त भुजा से अपने
११ बैरियों को छिन्न भिन्न किया। स्वर्ग तेरा है पृथिवी भी तेरी
१२ भूमंडल और उस की भरपूरी की तू ही ने नेव डाली। उत्तर
और दक्षिण को तू ही ने सिरजा तबूर और हरमून तेरे नाम
१३ से आनन्द करते हैं। तेरी बाहु बल सहित है तेरा हाथ
१४ शक्तिमान है तेरा दहिना हाथ ऊंचा। धर्म्म और बिचार तेरे
सिंहासन का स्थान है दया और सत्य तेरे मुंह के आगे चला करेंगे॥

१५ वुह जातिगण क्या ही धन्य है जो मंगल के शब्द को
१६ जानती है हे परमेश्वर वुह तेरे मुंह की ज्योति में चला करेगी। वुह
तेरे नाम से सारे दिन आनन्द रहेगी और तेरे धर्म्म से ऊंची
१७ होगी। क्योंकि उन के बल का विभव तू ही है और तू
१८ अपनी कृपा से हमारे सींग को ऊंचा करेगा। क्योंकि हमारी ढाल
परमेश्वर की और हमारा राजा इसराएल के धर्म्ममय का है॥
१९ तब तू ने दर्शन में अपने साधुन से बार्त्ता किई और बोला
कि मैं ने एक सामर्थी पर सहायता रक्खी है जातिगण में से एक
२० चुने हुए को बढ़ाया है। मैं ने दाऊद अपने दास को पाया
२१ अपने पवित्र तेल से उसे अभिषिक्त किया है। जिस के साथ
२२ मेरा हाथ उपस्थित रहेगा मेरी भुजा भी उसे बल देगी। बैरी
उसे दुख न पहुंचायेगा और दुष्टता का संतान उसे क्लेश न
२३ देगा। और मैं उस के सन्मुख उस के दुखदायकों को कुचल
२४ डालूंगा और उस के बैरियों को मारूंगा। और मेरी सच्चाई और
मेरी दया उस के संग रहेगी और मेरे नाम से उस का सींग
२५ ऊंचा होगा। और मैं उस का हाथ समुद्र पर रक्खूंगा और
२६ उस का दहिना हाथ नदियों पर। वुह मुझे पुकारेगा कि मेरा
पिता तू ही है मेरा सर्वशक्तिमान और मेरी मुक्ति की चटान।
२७ मैं भी उसे अपना पहिलौठा ठहराऊंगा पृथिवी के राजाओं
२८ से महान। मैं सदा अपनी दया उस के लिये रक्खूंगा
२९ और मेरी वाचा उस के साथ दृढ़ है। और मैं उस के वंश
को सदा लों और उस के सिंहासन को स्वर्ग के दिनों के समान
स्थिर करूंगा॥
३० यदि उस के बालक मेरी व्यवस्था को त्याग देंगे और मेरे
३१ न्यायों पर न चलेंगे। यदि वे मेरी बिधि को अपवित्र करेंगे और मेरी
३२ आज्ञाओं को पालन न करेंगे। तो मैं छड़ी के साथ उन के पापों को
३३ और कोड़ों से उन के अधर्म्म का दण्ड देऊंगा। तथापि अपनी

दया उस्से दूर न करूंगा और अपनी सच्चाई में झूठा न होऊंगा।
३४ मैं अपनी बाचा को भंग न करूंगा और जो मेरे मुंह से निकला
३५ उसे न पलटूंगा। मैं ने अपनी पवित्रता के साथ एक बात की
३६ किरिया खाई है मैं दाऊद से झूठ न बोलूंगा। उस का बंश
सदा लों और उस का सिंहासन मेरे आगे सूर्य्य की नाईं बना
३७ रहेगा। जिस रीति कि चन्द्रमा सदा लों स्थिर रहेगा और
स्वर्ग पर वुह साक्षी सच्चा है। सिलाह॥

३८ पर तू ने तो दूर और घिन किया है तू तो अपने अभिषिक्त
३९ पर क्रुद्ध हुआ। तू ने अपने दास से नियम को तोड़ा भूमि
४० पर उस का मुकुट अपवित्र कर दिया है। तू ने उस की सारी
बाड़ों को तोड़के गिरा दिया उस के गढ़ों को बिनाश कर
४१ दिया है। सारे पथिक उसे लूटते हैं वुह अपने परोसियों के
४२ निकट निन्दा हुआ। तू ने उस के शत्रुन का दहिना हाथ ऊंचा
४३ किया उस के सारे बैरियों को मगन किया है। तू उस की
तलवार की धार को भी मोड़ देता है और उसे युद्ध में ठहरने
४४ नहीं देता। तू ने उसे उस के बिभव से दूर कर दिया
४५ और उस के सिंहासन को भूमि पर गिरा दिया है। तू ने उस
की तरुणाई के दिनों को अल्प किया तू ने उसे लाज से ढांपा
है। सिलाह॥

४६ हे परमेश्वर तू कब लों सदा के लिये आप को छिपायेगा
४७ कब लों तेरा क्रोद्ध आग की नाईं धधकता रहेगा। चेत कर
कि मैं कितना जीवन रखता हूं तू ने किस लिये सारे मनुष्य
४८ के संतानों को व्यर्थ उत्पन्न किया। कौन मनुष्य जीता रहेगा
और मृत्यु को न देखेगा और अपने प्राण को समाधि के हाथ
४९ से बचावेगा। सिलाह। हे प्रभु तेरी अगिली दया जिन की
५० तू ने दाऊद से अपनी सच्चाई में किरिया खाई कहां हैं। हे
प्रभु अपने दासों की निन्दा को स्मरण कर और यह कि

५१ मैं अपनी गोद में बहुत जातिगणों को लिये हूं। मैं जिसे हे
परमेश्वर तेरे उन बैरियों ने तुच्छ समझा है जिन्हों ने तेरे अभिषिक्त
५२ के पांव के चिन्ह की निन्दा किई है। परमेश्वर सदा लों धन्य
हो। आमीन और आमीन॥

नब्बेवां गीत।

ईश्वर के जन मूसा की प्रार्थना॥

१ हे प्रभु पीढ़ी से पीढ़ी लों हमारा शरणस्थान तू ही
२ रहा है। उस्से पहिले कि पहाड़ उत्पन्न हुए और तू ने पृथिवी
और जगत को सिरजा और सनातन से सनातन लों तू ही
३ सर्वशक्तिमान है। तू मनुष्य को धूर लों फिर पहुंचाता है और कहता
४ है कि हे मनुष्य के संतानो फिरो। क्योंकि तेरी दृष्टि में सहस्र
बरस कल की नाईं हैं जो बीत गया और रात का एक पहर।
५ तू उन्हें बहा ले जाता है वे मानो नींद हैं बिहान को वे
६ घास की नाईं जाते रहते हैं। बिहान को वुह फूलता तब
जाता रहता है क्योंकि संध्या को वुह काटा जाता और सूख
७ जाता है। क्योंकि हम तेरे क्रोध से नाश हो गये और
८ तेरे कोप से व्याकुल हो गये। तू ने हमारे अधर्म्मों को अपने
आगे रक्खा है हमारे गुप्त पाप को अपने रूप के प्रकाश में।
९ क्योंकि हमारे सारे दिन तेरे क्रोद्ध में बीत गये हम अपने बरसों
१० को ध्यान की नाईं बिताते हैं। हमारे जीवन के दिन उन में
सत्तर बरस हैं और यदि बल से अस्सी बरस हों तथापि उन
का अहंकार क्लेश और दुख है क्योंकि हम शीघ्र हंकाये जाते
११ और उड़ जाते हैं। तेरे क्रोध के पराक्रम का और तेरे डर के
१२ समान तेरे कोप का कौन जानकार है। हमें ऐसा ज्ञान दे
जिसतें अपने दिनों को गिनें और हम बुद्धिमान मन भेंट के
लिये लायेंगे॥

१३ हे परमेश्वर हमारी ओर फिर कब लों हमें छोड़े रहेगा ओर
१४ अपने सेवकों के विषय पछता । बिहान को हमें अपनी दया
से तृप्त कर तो हम अपने जीवन भर आनन्द करेंगे और
१५ मगन रहेंगे । उन दिनों के समान जिन में तू ने हमें दुख में
रक्खा ओर उन बरसों के समान जिन में हम ने बुराई देखी है
१६ हमें आनन्दित कर । तेरा कार्य्य तेरे दासों को प्रगट हो ओर
१७ तेरा विभव उन के बेटों पर । ओर प्रभु हमारे ईश्वर की
सुन्दरता हम पर हो ओर हमारे हाथों के कार्य्य हम पर दृढ़
कर हां हमारे हाथों का कार्य्य दृढ़ कर ॥

एकानबेवां गीत ।

१ अति महान के ओझल में बैठनेहारा सर्वशक्तिमान की
२ छाया के नीचे रहा करेगा । मैं परमेश्वर से कहूंगा कि मेरा
शरणस्थान ओर मेरा गढ़ मेरा ईश्वर तू ही है जिस पर मैं भरोसा
३ रक्खूंगा । क्योंकि वुह तुझे ब्याधा के जाल से ओर नाशक मरी
४ से मुक्ति देगा । वुह अपने पर से तुझे ढांप लेगा ओर उस के
पंखों के नीचे तू शरण पायेगा उस की सच्चाई फरी ओर ढाल
५ है । तू रात के भय से न डरेगा न उस बान से जो दिन
६ को उड़ता है । न उस मरी से जो अंधियारे में चलती है न
७ उस बिनाश से जो मध्यान्ह में उजाड़ करता है । तेरे लग
सहस्र गिरेंगे ओर तेरे दहिने हाथ सहस्रों के सहस्र पर यह
८ बिपत्ति तुझ लों न पहुंचेगी । तू केवल अपनी आंखों से दृष्टि
करेगा ओर दुष्टों के पलटे को देखेगा ॥

९ क्योंकि हे परमेश्वर तू ही मेरा शरणस्थान है तू ने अति
१० महान को अपना शरण ठहराया है । बिपत्ति तुझ लों आने न
११ पायेगी ओर मरी तेरे निवास के पास न आवेगी । क्योंकि वुह
तेरे लिये अपने दूतों को आज्ञा करेगा जिसतें तेरे सारे मार्गों

१२ में तेरी रक्षा करें। वे अपने हाथों पर तुझे उठा लेंगे जिसतें
१३ न हो कि तू अपना पांव पत्थर पर पटके। तू सिंह और सांप
को लताड़ेगा सिंह के बच्चे और अजगर को कुचलेगा॥
१४ क्योंकि वुह मुझ पर मोहित हुआ और मैं उसे छुड़ाऊंगा
उसे ऊंचे पर रक्खूंगा क्योंकि उस ने मेरे नाम को जाना है।
१५ वुह मुझे पुकारेगा और मैं उस की सुनूंगा विपत्ति में मैं
१६ उस के संग हूं मैं उसे छुड़ाऊंगा और उसे प्रतिष्ठा दूंगा। मैं
उसे बय की बृद्धि से सन्तुष्ट करूंगा और अपनी मुक्ति उसे
दिखाऊंगा॥

बानबेवां गीत।

विश्राम दिन के लिये गीत और गान॥

१ परमेश्वर का धन्य मानना और हे अति महान तेरे नाम की
२ स्तुति में गान करना भला है। कि बिहान को तेरी दया का और
३ रातों को तेरी सच्चाई का वर्णन करें। दसतार का बाजा और
बीणा बरबत के संग सोच और विचार से बजा बजाके।
४ क्योंकि हे परमेश्वर तू ने अपने कार्य्य से मुझे आनन्दित किया
है मैं तेरे हाथों की क्रिया से आनन्द के शब्द करूंगा॥
५ हे परमेश्वर तेरे कार्य्य क्या ही बड़े हैं तेरी चिन्ता अति
६ गहिरी हैं। पशुवत जन न जानेगा और मूर्ख इसे न समझेगा।
७ जब दुष्ट घास की नाईं उगते और सारे कुकर्म्मी फूलते हैं तो
८ यह उन के सदा के नाश होने के लिये है। और हे परमेश्वर
तू ही सर्वदा लों अति महान है॥
९ क्योंकि देख तेरे बैरी हे परमेश्वर क्योंकि देख तेरे बैरी नाश
१० होंगे सारे कुकर्म्मी अपने को छिन्नभिन्नता में डालेंगे। और तू
ने मेरे सींग को गैंडे के नाईं ऊंचा किया मैं ने टटके तेल से
११ अपने सिर को चिकना किया है। और मेरी आंख ने मेरे

बैरियों पर दृष्टि किई है मेरे कान उन दुष्टों के विषय सुनेंगे जो
मेरे विरोध में उठते हैं ॥
१२　धर्म्मी खजूर के पेड़ की नाईं लहलहाविगा लुबनान के
१३ देवदारु वृत्त के समान बढ़ेगा । परमेश्वर के घर में लगाये
१४ हुए वे हमारे ईश्वर के आंगनों में लहलहावेंगे । वे बुढ़ापे में
१५ भी फला करेंगे मोटे और हरे रहेंगे । जिसतें वर्णन करें कि
परमेश्वर खरा है और मेरी चटान और उस में अनीति नहीं है ॥

तिरानबेवां गीत ।

१　परमेश्वर राज्य करता है उस ने विभव का वस्त्र पहिना है
परमेश्वर ने बल का वस्त्र पहिना और उस ने अपनी कटि
२ बांधी है जगत भी स्थिर रहेगा और न टलेगा । तेरा सिंहासन
३ सदा से स्थिर है सनातन से तू ही है । नदियों ने उठाया
हे परमेश्वर नदियों ने अपना महा शब्द उठाया हैं नदियां अपना
४ महा शब्द उठावेंगी । बड़े और बलवन्त पानियों के महा शब्द से
५ समुद्र की लहरों से परमेश्वर उच्चता में अति बलवान है । तेरी
साक्षियां अत्यन्त सच्ची हैं हे परमेश्वर सर्वदा लों तेरे घर को
पवित्रता फबती है ॥

चैारानबेवां गीत ।

१　हे पलटा लेनेहारे सर्वशक्तिमान परमेश्वर हे पलटा लेनेहारे
२ सर्वशक्तिमान प्रकाशित हो । हे जगत के विचारी अपने ताईं उठा
घमंडियों पर उन का व्यवहार पलट दे ॥
३　हे परमेश्वर दुष्ट कब लों कब लों दुष्ट फूला करेंगे ।
४ सारे कुकर्म्मी कब लों वचन निकालेंगे कठोरता से बातें करेंगे
५ और फूला करेंगे । हे परमेश्वर वे तेरे लोगों को पीस डालते हैं
६ और तेरे अधिकार को दुख देते हैं । वे रांड और परदेशी को

७ घात करते हैं और अनाथों को वधन करते हैं। और वे
कहते हैं कि परमेश्वर न देखेगा और यअकूब का ईश्वर न
समझेगा ॥
८ अरे पशुवत लोगो समझो और अरे मूर्खो तुम कब बुद्धिमान
९ होओगे। क्या कान का उत्पन्न करनेहारा न सुनेगा अथवा
१० आंख का बनानेहारा न देखेगा। क्या जातिगणों का शिक्षक
ताड़ना न करेगा मनुष्य को ज्ञान देनेहारा क्या वुह हर एक को
११ नहीं शिक्षा दे सक्ता। परमेश्वर मनुष्य की चिन्ताओं को जानता
है कि वे मिथ्या हैं ॥
१२ हे परमेश्वर वुह मनुष्य क्या ही धन्य है जिसे तू ताड़ना
१३ करता है और अपनी व्यवस्था से उसे सिखाता है। जिसतें
उसे विपत्ति के दिनों से बचाके चैन देवे जब लों कि दुष्ट के
१४ लिये गड़हा खोदा जाय। क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों को छोड़
१५ न देगा और अपने अधिकार को न त्यागेगा। क्योंकि बिचार
धर्म्म लों फिर आयेगा और उस के पीछे सारे खरे अंतःकरणी
चलेंगे ॥
१६ कौन मेरे लिये दुष्टों पर उठेगा कौन मेरे लिये अधर्म्मियों
१७ का साम्ना करेगा। यदि परमेश्वर मेरे लिये सहायक न होता तो
१८ शीघ्र मेरा प्राण सुनसानी में चुपका हो जाता। यदि मैं कहूं कि
मेरा पांव फिसलता है तो हे परमेश्वर तेरी दया मुझे संभालेगी।
१९ जब मेरे मन में मेरी चिन्तायें बढ़ जाती हैं तब तेरी शान्ति
मेरे प्राण को आनन्दित करती हैं ॥
२० क्या अधर्म्मों का सिंहासन जो व्यवस्था की रीति बुराई
२१ उत्पन्न करता है तेरा साझी होगा। वे धर्म्मी के प्राण के विरोध
में एकट्ठे होते हैं और निर्दोष के लोहू बहाने की आज्ञा करते
२२ हैं। परन्तु परमेश्वर मेरा ऊंचा स्थान हुआ और मेरा ईश्वर मेरे
२३ शरण की चटान। और वुह उन का अधर्म्म उन्हीं पर फेर

देता है और वुह उन्हें उन की दुष्टता में नष्ट करेगा हां परमेश्वर
हमारा ईश्वर उन्हें नष्ट करेगा ॥

पंचानबेवां गीत ।

१ आओ परमेश्वर के लिये गान करें अपनी मुक्ति की चटान की
२ ओर ललकारें । धन्यवाद के साथ उस के आगे आवें और गीतों
३ के संग उस की ओर ललकारें । क्योंकि परमेश्वर बड़ा महेश्वर
४ है और सारे देवों के ऊपर महाराजा । जिस के हाथ में पृथिवी
५ की गहिराइयां और पहाड़ों की ऊंचाइयां उस की हैं । समुद्र उस
का है और उसी ने उसे बनाया और उस के हाथों ने स्थल
को बनाया ॥

६ आओ दंडवत करें और झुकें परमेश्वर अपने कर्त्ता के आगे
७ घुटने टेकें । क्योंकि वही हमारा ईश्वर है और हम उस की
चराई के लोग और उस के हाथ की भेड़ें आज यदि तुम
८ उस का शब्द सुनो । अपने मन को कठोर मत करो मरीव्र:
९ की नाईं मस्स: के दिन के समान वन में । जहां तुम्हारे पितरों
१० ने मुझे परखा मेरी परीक्षा किई मेरे कार्य्य को भी देखा । मैं चालीस
बरस लों उस बुरी पीढ़ी से उदास रहता हूं और मैं ने कहा
कि वे एक मन फिरी हुई जाति हैं और उन्हों ने मेरे मार्गों को
११ नहीं जाना । जिन से मैं ने अपने क्रोध में किरिया खाई कि वे
मेरे बिश्राम में कभी प्रवेश न करेंगे ॥

छियानबेवां गीत ।

१ परमेश्वर के लिये नया गीत गाओ हे सारी पृथिवी परमेश्वर
२ के लिये गाओ । परमेश्वर के लिये गाओ उस के नाम का धन्य
३ मानो प्रति दिन उस की मुक्ति को प्रगट करो । अन्यदेशियों में
उस की महिमा प्रगट करो सारे लोगों में उस के आश्चर्य्य

४ कर्म्म । क्योंकि परमेश्वर महान है और अति स्तुति के योग्य
५ वुह सारे देवों के ऊपर भयमान है । क्योंकि जातिगणों के
६ सारे देव तुच्छ हैं और परमेश्वर ने स्वर्ग को बनाया। प्रतिष्ठा
और महिमा उस के आगे हैं बल और सुन्दरता उस के
धर्म्मधाम में ॥

७ परमेश्वर को दो हे जातिगणों के परिवारो परमेश्वर को प्रतिष्ठा
८ और बल दो। परमेश्वर को उस के नाम की प्रतिष्ठा दो
९ भेंट लाओ और उस के आंगनों में आओ। पवित्रताई की
सुन्दरता के संग परमेश्वर को दंडवत करो हे सारी पृथिवी
१० उस के आगे कांपो। अन्यदेशियों के मध्य में कहो कि परमेश्वर
राज्य करता है हां जगत स्थिर रहेगा और न टलेगा वुह
११ खराइयों के संग जातिगणों का विचार करेगा। स्वर्ग आनन्द करें
और पृथिवी मगन हो समुद्र और उस की भरपूरी गर्जन करे।
१२ खेत और सब जो उस में है आनन्दित होवे तब बन के सारे
१३ पेड़ आनन्द के शब्द करेंगे। परमेश्वर के आगे क्योंकि वुह
आता है क्योंकि वुह पृथिवी का न्याय करने को आता है वुह
धर्म्म के साथ जगत का और अपनी सच्चाई के साथ जातिगणों
का न्याय करेगा ॥

सतानबेवां गीत ।

१ परमेश्वर राज्य करता है पृथिवी आनन्दित हो सारे टापू
आल्हादित होवें ॥

२ मेघ और काली घटा उस के आस पास है धर्म्म और न्याय
३ उस के सिंहासन का स्थान। आग उस के आगे चलती है
४ और उस के वैरियों को चारों ओर जलाती है। उस की
बिजलियों ने जगत को उंजियाला किया तब पृथिवी ने देखा
५ और थर्थरा गई। पहाड़ परमेश्वर के आगे सारे जगत के प्रभु

६ के आगे मोम की नाईं पिघल गये। स्वर्ग उस के धर्म्म को
प्रगट करते हैं और सारे लोग उस के विभव को देखते हैं।
७ खोदी हुई मूर्त्ति के सारे पूजनेहारे जो तुच्छ वस्तुन पर फूलते
हैं लज्जित होंगे हे सारे देवगण उस को दण्डवत करो॥
८ सैहून सुनती और मगन होती है और यहूदाह की बेटियां
९ आनन्दित होती हैं हे परमेश्वर तेरे बिचारों के लिये। क्योंकि
हे परमेश्वर तू ही सारी पृथिवी के ऊपर महेश्वर है तू सारे देवों
के ऊपर अत्यन्त ही बड़ा है॥
१० हे परमेश्वर के प्रेमियो बुराई से घिन करो वुह अपने साधुओं
११ के प्राणों का रक्षक है दुष्टों के हाथ से उन्हें छुड़ावेगा। धर्म्मी
मनुष्य के लिये उंजियाला बोया गया और खरे अन्तःकरणियों
१२ के लिये आनन्द। हे धर्म्मियो परमेश्वर से आनन्दित होओ
और उस की पवित्रता का वर्णन करते हुए धन्यवाद करो॥

अठानबेवां गीत।

गीत॥

१ परमेश्वर के लिये गाओ नया गीत गाओ क्योंकि उस ने आश्चर्य्य
कार्य्य किये हैं उस के दहिने हाथ और उस के पवित्र भुजा ने
उस के लिये उस के लोगों को बचाया है॥
२ परमेश्वर ने अपनी मुक्ति को प्रगट किया है अन्यदेशियों
३ की दृष्टि में अपने धर्म्म को प्रगट किया है। उस ने अपनी
दया और अपनी सच्चाई को इसराएल के घराने के लिये स्मरण किया
है पृथिवी के सारे खूंटों ने हमारे ईश्वर की मुक्ति को देखा है॥
४ हे सारी पृथिवी परमेश्वर की ओर ललकारो फूट निकलो
५ और आनन्द करो और गाओ बजाओ। बीणा के संग परमेश्वर
६ के लिये गाओ बजाओ बीणा और गान के शब्द के साथ। तुरहियों
और नरसिंगे के शब्द के संग परमेश्वर राजा के आगे ललकारो।

७ समुद्र और उस को भरपूरी गर्ज्जन करे जगत और उस के
८ रहनेवाले। नदियें ताल दें पहाड़ मिलके आनन्द करें।
९ परमेश्वर के आगे क्योंकि वुह पृथिवी का न्याय करने आता है
वुह धर्म्म के साथ जगत का और खराइयों के संग लोगों का न्याय
करेगा ॥

निन्नानबेवां गीत।

१ परमेश्वर राज्य करता है जातिगणें थर्थराती हैं वुह करोबीम
२ पर बैठा हुआ राज्य करता है पृथिवी कांपती है। परमेश्वर
सैहून में महान है और सारी जातिगणों के ऊपर वही श्रेष्ठ है।
३ वे तेरे बड़े और भयंकर नाम का स्वीकार करेंगी कि पवित्र
४ वही है। और राजा का बल विचार से प्रीति रखता है तू ही
ने खराइयों को स्थिर किया है न्याय और धर्म्म यअकूब
५ में तू ही ने किया है। परमेश्वर हमारे ईश्वर की बड़ाई करो
और उस के चरणों के नीचे की चौकी को दण्डवत करो पवित्र
वही है ॥

६ मूसा और हारून उस के याजकों के मध्य और समुएल उन
के बीच जो उस का नाम लेते हैं परमेश्वर को और पुकारते हैं
७ और वुह उन की सुनता है। वुह मेघ के खंभे में से उन से
बातें करता है उन्हों ने उस की साक्षियों को और उस आज्ञा को
८ जो उस ने उन्हें दिई पालन किया। हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तू
ही ने उन की सुनी तू उन के लिये क्षमा करनेवाला सर्वशक्तिमान
९ था और उन के बुरे कार्य्यों का पलटा लेनेहारा। परमेश्वर
हमारे ईश्वर की बड़ाई करो और उस के पवित्र पहाड़ को दण्डवत
करो क्योंकि परमेश्वर हमारा ईश्वर पवित्र है ॥

सौवां गीत ।

धन्यवाद का गीत ॥

१ । २　हे सारी पृथिवी परमेश्वर की ओर ललकारो । आनन्दता
के संग परमेश्वर की सेवा करो जयध्वनि के संग उस के आगे
३ आओ । जानो कि परमेश्वर वही ईश्वर है उसी ने हमें अपनी
जाति और अपनी चराई की भेड़ें बनाया और हम ने नहीं ।
४ धन्यवाद करते हुए उस के फाटकों में और स्तुति करते हुए
उस के आंगनों में प्रवेश करो उस का धन्य मानो उस के
५ नाम को धन्यवाद कहो । क्योंकि परमेश्वर भला है सदा
लों उस की दया और पीढ़ी से पीढ़ी लों उस की सच्चाई
है ॥

एकसौ पहिला गीत ।

दाऊद का गीत ॥

१　मैं दया और न्याय का गीत गाऊंगा तेरी स्तुति में हे
२ परमेश्वर बजाऊंगा । मैं सिद्ध मार्ग में चौकसी दिखलाऊंगा तू
कब मेरे पास आवेगा मैं अपने घर के भीतर सिद्ध मन से चला
३ करूंगा । मैं अपनी आंखों के आगे बुराई की बात न रक्खूंगा
कुटिलता करने से मैं बैर रखता हूं वुह मुझ से न लिपटेगी ।
४ कुटिल अन्तःकरण मुझ से जाता रहेगा मैं बुराई को न जानूंगा ।
५ जो छिपके अपने परोसी पर दोष लगाता है मैं उसे नाश
करूंगा जो ऊंची दृष्टि और अभिमानी है मैं उस की न
६ सहूंगा । मेरी आंखें पृथिवी के विश्वस्तों पर हैं जिसतें वे मेरे
संग रहें जो सिद्ध मार्ग में चलता है वही मेरी सेवा करेगा ।
७ मेरे घर के भीतर छली और झूठ बोलनेहारा न रहेगा वुह
८ मेरी आंखों के साम्हने न ठहरेगा । बिहान को मैं पृथिवी के

सारे दुष्टों को नाश किया करूंगा जिसतें परमेश्वर के नगर से
सारे कुकर्म्मियों को काट डालूं ॥

एकसौ दूसरा गीत।

दुखी की प्रार्थना जब वुह शोकित है और परमेश्वर के
आगे अपनी दोहाई देता है ॥

१ हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन और मेरी दोहाई तुझ लों
२ पहुंचे। मुझ से अपना मुंह न छिपा मेरी विपत्ति के दिन
मेरी ओर अपना कान धर जिस दिन में पुकारूं शीघ्र मेरी
सुन ॥

३ क्योंकि मेरे दिन धूंए में बीत गये और मेरी हड्डियां
४ लुकटी की नाईं जल गईं। मेरा मन घास की नाईं कुम्हला
गया और सूख गया क्योंकि मैं अपनी रोटी खाना भूल गया।
५ मेरे कराहने के शब्द से मेरी हड्डियां मेरे मांस से सट गईं।
६ मैं जंगली गरुड़ के तुल्य हूं मैं खंडहरों के उल्लू के समान हो
७ गया। मैं जागता रहा और उस चिड़िया की नाईं हो गया जो
८ अकेली छत के ऊपर रहती है। सारे दिन मेरे बैरियों ने मुझ पर
निन्दा किई है जो मेरे बिरोध में उन्मत हैं वे मेरे नाम से
९ कोसते हैं। क्योंकि मैं ने रोटी के समान राख फांकी और अपने
१० पानी में आंसू मिलाया है। तेरे जलजलाहट और तेरे कोप
के कारण से क्योंकि तू ने मुझे उठाकर फेंक दिया है ॥

११ मेरे दिन्न छाया के समान बीत गये और मैं घास के समान
१२ कुम्हलाने पर हूं। और तू हे परमेश्वर सदा लों सिंहासन पर बैठा
१३ रहेगा और तेरा स्मरण पीढ़ी से पीढ़ी लों। तू उठेगा सैहून पर दया
करेगा क्योंकि उस पर कृपा करने का समय हां उस का ठहराया
१४ हुआ समय आया है। क्योंकि तेरे सेवक उस के पत्थरों से
१५ मगन हैं और उस की धूल पर अनुग्रह करते हैं। और जातिगण

परमेश्वर के नाम से डरेंगी और पृथिवी के सारे राजा तेरे बिभव
से ॥
१६ क्योंकि परमेश्वर ने सैहून को बनाया है अपने बिभव
१७ में प्रगट हुआ है। वुह कंगाल की प्रार्थना की ओर फिरा है
१८ और उस ने उन की प्रार्थना को तुच्छ नहीं जाना है। यह अवैया
पीढ़ी के लिये लिखा जायगा और उत्पन्न होनेहारी जाति परमेश्वर
१९ की स्तुति करेगी। क्योंकि उस ने अपने धर्म्मधाम की ऊंचाई पर
से झांका परमेश्वर ने स्वर्ग पर से पृथिवी की ओर दृष्टि किई है।
२० जिसतें बंधुए का कराहना सुने जिसतें मृत्यु के संतानों को
२१ छुड़ावे। जिसतें सैहून में परमेश्वर का नाम बर्णन किया जाये
२२ और यरूसलम में उस की स्तुति। जब जातिगणें आपुस में
एकट्ठी होंगी और राज्य जिसतें परमेश्वर की सेवा करें॥
२३ उस ने मार्ग में उस दुखी का बल घटा दिया मेरी बय को
२४ घटा दिया है। मैं कहूंगा कि हे मेरे सर्बशक्तिमान मेरी आधी
२५ बय में मुझे न उठा ले पीढ़ी से पीढ़ी लों तेरे बरस हैं। तू
ने आरंभ से पृथिवी की नेव डाली और स्वर्ग तेरे हाथों के
२६ कार्य्य हैं। वे नाश होंगे और तू स्थिर रहेगा और वे सब वस्त्र
की नाईं पुराने हो जायेंगे तू वस्त्र की नाईं उन्हें पलटेगा और
२७ वे पलट जायेंगे। और तू वही है और तेरे बरसों का अन्त
२८ न होगा। तेरे सेवकों के लड़के बने रहेंगे और उन के बंश
तेरे आगे स्थिर रहेंगे॥

एकसौ तीसरा गीत।

दाऊद का गीत॥

१ हे मेरे प्राण परमेश्वर को धन्य कह और सब जो मुझ में
२ है उस के पवित्र नाम को। हे मेरे प्राण परमेश्वर को धन्य
कह और उस के सारे उपकारों को न भूल॥

३ जो तेरे सारे अधर्म्मों को क्षमा करता है जो तेरे सारे रोगों
४ को चंगा करता है। जो समाधि से तेरे प्राण को छुड़ाता है
५ जो तुझ पर अनुग्रह और दया का मुकुट रखता है। जो तेरे
प्राण को भलाई से तृप्त करता है तब तेरी तरुणाई गिद्ध की
नाईं अपने ताईं नये सिरे से नवीन करती है॥

६ परमेश्वर सारे सताये हुओं के लिये धर्म्म और बिचार करता
७ है। वुह मूसा को अपने मार्गों को इसराएल के संतान
८ को अपने बड़े कार्य्य जनाता है। परमेश्वर दयालु और कृपालु
९ है क्रोध में धीमा और दया में बड़ा। न सदा लों वुह झगड़ा
१० करेगा और न सदा लों कोप रक्खेगा। उस ने हमारे पापों के
समान हमारे साथ नहीं किया और न हमारे अधर्म्मों के समान
११ हम से व्यवहार किया है। क्योंकि जैसा स्वर्ग पृथिवी के ऊपर
ऊंचा है वैसा ही उस की दया उस के डरवैयों के ऊपर दृढ़
१२ है। जैसा पूरब पच्छिम से दूर है वैसा ही उस ने हमारे पापों
१३ को हम से दूर किया है। जैसा पिता बालकों पर मया करता
है वैसा ही परमेश्वर अपने डरवैयों पर दया करता है॥

१४ क्योंकि वही हमारी बनावट को जानता है स्मरण करता
१५ है कि हम माटी हैं। मरनहार मनुष्य जो है उस के दिन
घास की नाईं हैं जैसा बन का फूल वैसा ही वुह फूलता है।
१६ क्योंकि पवन उस पर बही और वुह है ही नहीं और उस का
१७ ठौर फिर उसे न पहिचानेगा। और परमेश्वर की दया उस के
डरवैयों पर सनातन से सनातन लों है और उस की सच्चाई
१८ संतानों के संतानों पर। उस के नियम के धारण करवैयों पर
और उस की बिधों के स्मरण करवैयों पर जिसतें उन्हें पूरा
करें॥

१९ परमेश्वर ने स्वर्गों पर अपना सिंहासन स्थिर किया और
२० उस का राज्य सब पर प्रभुता करता है। परमेश्वर का धन्य

मानो हे उस के दूतो बल में सामर्थी उस के वचन पर इस
२१ रीति से चलनेहारो कि उस के वचन का शब्द सुनो। परमेश्वर
का धन्य मानो हे उस की सारी सेनाओ उस के सेवको उस की
२२ इच्छा पर चलनेहारो। परमेश्वर का धन्य मानो हे उस के सारे
कार्य्यो उस के राज्य के सारे स्थानों में हे मेरे प्राण परमेश्वर का
धन्य मान ॥

एकसौ चौथा गीत।

१ हे मेरे प्राण परमेश्वर का धन्य मान हे परमेश्वर मेरे ईश्वर
तू अति महान है तू प्रतिष्ठा और ऐश्वर्य्य से विभूषित है।
२ वुह ज्योति को वस्त्र की नाईं पहिरता है स्वर्गों को घूंघट की
३ नाईं फैलाता है। पानी से अपनी ऊपर की कोठरियों को बनाता
है मेघों को अपना रथ बनाता पवन के डैनों पर चलता है।
४ पवनों को अपने दूत बनाता है जलती आग अपने सेवक॥
५ उस ने पृथिवी की नेवें उस के ठौरों पर डालीं वुह सनातन
६ लों न टलेगी। तू ने उसे वस्त्र की नाईं गहिराव से ढांपा पानी
७ पहाड़ों के ऊपर खड़े होते हैं। वे तेरी दपट से भाग जाते
८ हैं तेरे गर्ज्जन के शब्द से शीघ्र करते हैं। वे पहाड़ों पर
चढ़ते हैं तराइयों में बहते हैं इस स्थान लों जिस की नेव तू
९ ने उन के लिये डाली है। तू ने सिवाना बांधा वे उस्से पार
न जायेंगे पृथिवी को ढांपने के लिये न फिरेंगे॥
१० वुह नालों में सोते बहाता है वे पहाड़ों के बीचों बीच
११ बहते हैं। वे वन के हर एक पशुन को पिलाते हैं उन से
१२ बनैले गदहे अपनी पियास मिटाते हैं। उन के ऊपर आकाश
के पक्षी बसते हैं डालियों के बीच में से वे चहचहाते हैं।
१३ अपनी ऊपर की कोठरियों से पर्वतों को सींचता है पृथिवी तेरे
कार्य्य के फल से तृप्त होती है॥

१४ वुह पशु के लिये घास उगाता है और हरियाली मनुष्य के
१५ जोतने बोने के लिये जिसतें पृथिवी से रोटी निकाले। और
मदिरा मनुष्य के मन को मगन करती है जिसतें उस के मुंह
को तेल से अधिक चमकावे और रोटी मनुष्य के मन को बल
१६ देती है। परमेश्वर के पेड़ रस से परिपूर्ण हैं लुबनान के
१७ देवदारु जिन्हें उस ने लगाया है। जहां छोटी चिड़ियां
१८ खोंते बनाती हैं लगलग जो है सगे उस का घर है। पहाड़
ऊंचे पहाड़ पहाड़ी बकरों के लिये हैं चटान खरहों के लिये
शरणस्थान हैं॥

१९ उस ने चन्द्रमा को ठहराई हुई ऋतों के लिये बनाया सूर्य्य
२० अपने अस्त होने को पहिचानता है। तू अंधियारे को उत्पन्न
करता है और रात हो जाती है उस में जंगल का हर एक पशु
२१ चलने लगता है। सिंग के बच्चे अहेर के लिये गर्ज्जते हुए और
२२ सर्वशक्तिमान से अपना अहेर ढूंढने के लिये। सूर्य्य उदय
होते ही वे एकट्ठे हो जाते हैं और अपनी अपनी मांदों में
२३ लेट जाते हैं। मनुष्य अपने काम काज के लिये बाहर निकलता
है और अपने परिश्रम के लिये सांझ लों॥

२४ हे परमेश्वर तेरी रचना क्या ही बहुत हैं तू ने उन सभों को
२५ बुद्धि के साथ बनाया पृथिवी तेरे धन से परिपूर्ण है। यह
समुद्र है बड़ा और हर ओर से चौड़ा वहां अगणित रेंगवैये हैं
२६ छोटे जन्तु बड़ों समेत। वहां नावें चलती हैं और यह
लिवियातान जिसे तू ने उस में कलोल करने के लिये बनाया।
२७ वे सब तुझ पर भरोसा रखते हैं जिसतें समय पर उन का
२८ आहार देवे। तू उन्हें देता है वे उठा लेते हैं तू अपनी मुट्ठी
२९ खोलता है वे उत्तम बस्तु से तृप्त होते हैं। तू अपना मुंह
छिपाता है वे व्याकुल होते हैं तू उन का स्वास फेर लेता है
३० वे मर जाते हैं और अपनी माटी में फिर मिल जाते हैं। तू

अपना आत्मा भेजता है वे उत्पन्न होते हैं और तू पृथिवी के
स्वरूप को नवीन करता है ॥
३१ परमेश्वर का ऐश्वर्य्य सर्वदा लों हो परमेश्वर अपनी क्रिया पर
३२ आनन्दित रहे । जो पृथिवी पर दृष्टि करता और वुह थर्थराती
३३ है पहाड़ों को छूता है और उन से धूआं उठता है। मैं अपने जीवन
भर परमेश्वर के लिये गाऊंगा अपने जीते रहने लों अपने ईश्वर
३४ के लिये गान करूंगा। मेरा उस के विषय सोच करना अच्छा होगा
३५ मैं परमेश्वर से मगन रहूंगा। पापी भूमि पर से नाश होंगे और दुष्ट
आगे को है ही नहीं हे मेरे प्राण परमेश्वर को धन्य मान। हलिलूयाह॥

एकसौ पांचवां गीत ।

१ परमेश्वर को धन्य मानो उसे उस के नाम से पुकारो जातिगणों
२ में उस के बड़े कार्य्यों को प्रगट करो । उस के लिये गाओ उस
के लिये बजाओ उस के सारे आश्चर्य्य कार्य्यों पर सोच करो ।
३ उस के पवित्र नाम से फूलो परमेश्वर के खोजियों का मन
४ आनन्दित रहेगा । परमेश्वर और उस के बल को ढूंढ़ो सदा
५ उस के रूप के खोजनेहारे रहो । उस के अचम्भित कार्य्यों को
जो उस ने किये उस के आश्चर्य्यों को और उस के मुंह के विचारों
६ को स्मरण करो । हे उस के दास अबिरहाम के वंश यअ़कूब
के संतान उस के चुने हुओ ॥
७ वही परमेश्वर हमारा ईश्वर है सारी पृथिवी पर उसी के
८ न्याय हैं । उस ने अपने नियम को सदा के लिये उस बचन
९ को जो उस ने सहस्र पीढ़ियों के लिये कहा चेत किया । जिस
नियम को उस ने अबिरहाम के संग बांधा और अपनी किरिया
१० को जो इज़हाक से खाई । और उसे यअ़कूब के संग व्यवस्था
११ इसराएल के संग सर्वदा का नियम ठहराया। यह कहते हुए कि
मैं तुझे कनआ़न की भूमि तुम्हारी अधिकार के भाग में देऊंगा ॥

१२ जब उन की गिनती हो सक्ती थी थोड़े से और उस में
१३ परदेशी थे। और वे जातिगण से जातिगण में और एक राज्य
१४ से दूसरे लोगों में फिरा किये। उस ने किसी मनुष्य को उन
पर अंधेर करने नहीं दिया और उन के लिये राजाओं को
१५ धिक्कारा। कि मेरे अभिषिक्तों को न छूओ और मेरे भविष्यद्वक्तों
१६ को हानि न पहुंचाओ। और उस ने देश पर अकाल की आज्ञा
किई रोटी के हर टेकन को तोड़ डाला॥
१७ उस ने एक मनुष्य को उन के आगे भेजा यूसुफ़ बेचा गया
१८ कि दास हो। उन्हों ने बेड़ी से उस के पाओं को दुख दिया
१९ उस का प्राण लोहे में पड़ा। उस समय लों कि उस का वचन
२० पूरा हुआ परमेश्वर के वचन ने उसे परखा। राजा ने भेजके
उसे छुड़ाया लोगों के अध्यक्ष ने भेजा और उसे निर्बंध किया।
२१ उस ने उसे अपने घर का अधपति और अपने सारे अधिकार
२२ का प्रधान ठहराया। जिसतें अपनी इच्छा से उस के अध्यक्षों
को बांधे और उस के महन्तों को बुद्धिमान बनाये॥
२३ और इसराएल मिस्र में आया और यअकूब हाम के देश
२४ में परदेशी हुआ। और उस ने अपने लोगों को बहुत ही बढ़ाया
२५ और उन्हें उन के बैरियों से अधिक बलवान किया। उस ने
उन के मनों को फेरा जिसतें उस के लोगों से बैर रक्खें उस
२६ के सेवकों से छल करें। उस ने मूसा अपने दास को भेजा
हारून को जिसे उस ने चुन लिया॥
२७ उन्हों ने उन के मध्य उस के चिन्हों के वचन और हाम के देश
२८ में आश्चर्य्य प्रगट किये। उस ने अंधियारा भेजा और अंधकार
कर दिया और उन्हों ने उस के वचनों की बिरुद्धता न किई।
२९ उस ने उन के पानियों को लोहू कर डाला और उन की मछलियों
३० को मार डाला। उन की भूमि मेंडकों से भर गई और वे उन
३१ के राजाओं की कोठरियों में आये। उस ने आज्ञा किई और

३२ मक्खियां और मच्छड़ उन के सारे सिवानें में आये । उस ने
उन पर मेंह की संती ओले बरसाये उन के देश में जलती
३३ आग । और उन के दाख और उन के गूलर के वृक्षों को विनाश
३४ किया और उन के सिवानें के पेड़ों को तोड़ डाला । उस ने
आज्ञा किई और टिड्डियां आईं और कीड़े और वे असंख्य थे ।
३५ और उन्हों ने उन के देश की सारी हरियाली को खा लिया
३६ और उन के खेत के फल को भक्षण कर लिया । और उस ने
उन के देश में हर पहिलैाठे को उन के सारे बल के पहिले
३७ फल को मार डाला । और उन्हें चांदी और सोने के साथ
निकाल लाया और उन की गोष्ठियों में ठोकर खानेहारा कोई न
३८ था । मिस्र उन के निकलने से आनन्दित था क्योंकि उन का
३९ भय उन पर पड़ा था । उस ने छाये के लिये मेघ फैलाया और
४० रात को उंजियाला देने के लिये आग । लोगों ने मांगा और
उस ने बटेर पहुंचाये और स्वर्गीय रोटी से उन्हें तृप्त किया ।
४१ उस ने चटान को खोल दिया और पानी बह निकला वुह सूखी
भूमि पर नदी की नाईं चला ॥
४२ क्योंकि उस ने अपने उस पवित्र बचन को स्मरण किया जो
४३ अबिरहाम उस के दास के साथ था । और अपनी जाति को
आनन्द के संग अपने चुने हुओं को गाते बजाते निकाल लाया।
४४ और उन्हें अन्यदेशियों का देश दिया और वे जातिगणों का
४५ परिश्रम अधिकार में पाते हैं । जिसतें वे उस की बिधिन
को मनन करें और उस की व्यवस्थाओं को मानें। हलिलूयाह ॥

एकसैा छठवां गीत ।

१ हलिलूयाह परमेश्वर का धन्य मानो क्योंकि वुह भला है
२ क्योंकि उस की दया सदा लों है । कौन परमेश्वर के पराक्रमों
३ का वर्णन करेगा कौन उस की सारी स्तुति सुनायेगा । बिचार

के पालन करवैये क्या ही धन्य हैं और वुह जो सदाकाल धर्म्म
करता है॥
४ हे परमेश्वर जो अनुग्रह तू अपने लोगों पर प्रगट करता है
उस के संग मुझे स्मरण कर मुझ पर कृपा करके मुक्ति दे।
५ जिसतें तेरे चुने हुओं की भलाई को देखूं तेरे लोगों के आनन्द
से आनन्दित होऊं तेरे अधिकार के संग बड़ाई करूं॥
६ हम ने अपने पितरों समेत पाप किया टेढ़ाई किई दुष्टता
७ किई। हमारे पितर मिस्र में तेरे आश्चर्य्य कार्य्यों को न समझे
उन्हों ने तेरी दया की अधिकाई को स्मरण न किया और
८ समुद्र पर अर्थात् लाल समुद्र पर फिर गये। और उस ने उन्हें
अपने नाम के लिये बचाया जिसतें अपने पराक्रम को प्रगट
९ करे। और उस ने लाल समुद्र को दपटा और वुह सूख गया
१० और उन्हें गहिराव में ऐसा चलाया जैसा बन में। और उस
ने उन्हें शत्रु के हाथ से बचाया और उन्हें वैरी के हाथ से
११ छुड़ाया। और पानी ने उन के वैरियों को ढांप लिया उन में
१२ से एक भी न बचा। तब वे उस की बातों पर बिश्वास
१३ लाये उस की स्तुति गाई। उन्हों ने झट उस के कार्य्यों को
१४ भुला दिया उस के मंत्र की बाट न जोही। और उन्हों ने जंगल
में कुइच्छा के संग इच्छा किई और बन में सर्वशक्तिमान को
१५ परखा। और उस ने उन की बांछा पूरी किई पर उन के
प्राण में छीणता भेजी॥
१६ और उन्हों ने मूसा से और परमेश्वर के सिद्ध हारून से
१७ डाह किया। तब पृथिवी ने अपना मुंह खोला और दातान को
१८ निंगल गई और अबीराम की जथा को ढांप लिया। और आग
ने उन की जथा को खा लिया लवर ने उन दुष्टों को भस्म
किया॥
१९ उन्हों ने होरेब में बछड़ा बनाया और ढाली हुई मूर्त्ति को

२० दण्डवत किई । और अपने ऐश्वर्य्य को घास खानेहारे बैल की
२१ मूर्त्ति से बदल डाला । उन्हों ने सर्वशक्तिमान को भुला दिया
२२ जिस ने उन्हें बचाया मिस्र में बड़े बड़े कार्य्य किये । हाम के
२३ देश में आश्चर्य्य कार्य्य लाल समुद्र पर भयंकर कर्म्म। और उस
ने कहा कि मैं उन्हें नाश करूंगा यदि उस का चुना हुआ मूसा
उस के सन्मुख दरार में खड़ा न होता जिसतें उस के कोप को
नाश करने से फेरे ॥

२४ और उन्हों ने मनोनीत भूमि को तुच्छ जाना वे उस के
२५ वचन पर विश्वास न लाये । और अपने तंबुओं में कुड़कुड़ाये
२६ वे परमेश्वर के शब्द के श्रोता न हुए । तब उस ने किरिया
खाने में उन की ओर अपना हाथ उठाया कि उन्हें बन में
२७ गिरा दे । और उन के बंश को जातिगणों में गिरा दे और
उन्हें देशों में बिथरावे ॥

२८ और वे बअलपिऊर से मिल गये और मृतकों के बलिदानों
२९ को खाया । और उन्हों ने अपने बुरे कर्म्मों से उसे रिसाया
३० और मरी उन में टूट पड़ी । तब फ़िनिहास खड़ा हुआ और
३१ न्याय किया और मरी थम गई । और यह उस के लिये धर्म्म
गिना गया पीढ़ी से पीढ़ी लों सर्बदा के लिये ॥

३२ और उन्हों ने उसे मरीब: के पानियों पर रिस दिलाई और
३३ उन के कारण से मूसा की हानि हुई । क्योंकि उन्हों ने उस
की आत्मा से दंगा किया और उस ने अपने होंठों से अनुचित
बातें कहीं ॥

३४ उन्हों ने उन जातिगणों को नाश न किया जिन के विषय
३५ में परमेश्वर ने उन्हें आज्ञा किई । और उन्हों ने अपने ताईं
३६ जातिगणों में मिला दिया और उन के स्वभाव सीखे । और
उन की मूर्त्तिन की सेवा किई और वे उन के लिये फंदा हो
३७ गईं । और उन्हों ने अपने बेटों और अपनी बेटियों को पिशाचों

३८ के लिये बलिदान किया। और उन्हों ने निर्दोष लोहू अर्थात्
अपने बेटों और अपनी बेटियों का लोहू बहाया जिन्हें उन्हों
ने कनआन की मूर्त्तिन के लिये बलि किया और देश लोहू से
३९ अशुद्ध हुआ। और वे अपने कार्य्यों से अपवित्र हो गये और
अपनी बुराइयों से व्यभिचारी॥

४० तब परमेश्वर का कोप अपने लोगों पर भड़का और उस ने
४१ अपने लोगों से घिन किया। और उस ने उन्हें जातिगणों के
हाथ में सौंपा और उन के बैरी उन पर अधिकृत हो गये।
४२ और उन के शत्रुन ने उन पर बरबस किया और वे उन के
४३ हाथ के नीचे दब गये। उस ने कई बार उन्हें छुड़ाया और
उन्हों ने अपने परामर्श से उस्से दंगा किया और वे अपने
४४ अधर्म्म के कारण से हीन हो गये। और उस ने उन की इस
कठिनता पर दृष्टि किई है जब उस ने उन का रोना सुना।
४५ और उस ने उन के लिये अपनी बाचा को स्मरण किया और
४६ अपनी दया की अधिकाई के समान पछताया है। और उस
ने उन के सारे बंधुआई करवैयों को उन पर दयावन्त किया
है॥

४७ हे परमेश्वर हमारे ईश्वर हमें बचा और हमें जातिगणों में
से बटोर जिसतें तेरे पवित्र नाम का धन्यबाद करें और तेरी
४८ स्तुति में बड़ाई करें। परमेश्वर इसराएल का ईश्वर धन्य हो
सनातन से सनातन लों और सारे लोग कहते हैं आमीन।
हलिलूयाह॥

एकसौ सातवां गीत।

१ परमेश्वर का धन्य मानो क्योंकि वुह भला है क्योंकि
२ उस की दया सदा लों है। परमेश्वर के वे छुड़ाये हुए यह
३ कहते हैं जिन्हें उस ने कष्ट के हाथ से छुड़ाया है। और

उन्हें देशों से एकट्ठा किया है पूरब और पच्छिम से उत्तर और
समुद्र से ॥
४ वे बन में सूने मार्ग में भ्रमते फिरे उन्हों ने बसने के लिये
५ कोई नगर न पाया। वे भूखे प्यासे भी हैं उन का प्राण
६ उन में मूर्छित होता है। और उन्हों ने अपनी बिपत्ति में
परमेश्वर को पुकारा उस ने उन के कठिन क्लेशों से उन्हें
७ छुड़ाया। और उस ने सीधे पथ पर उन की अगुआई किई जिसतें
रहने के लिये नगर में पहुंचे ॥
८ वे लोग परमेश्वर की उस के अनुग्रह के लिये और उस के
आश्चर्य्य कर्म्मों के लिये जो मनुष्य के संतान के लिये हैं
९ स्तुति करें। क्योंकि उस ने लालसित प्राण को तृप्त किया और
भूखे प्राण को भलाई से सन्तुष्ट किया है ॥
१० अंधेरे और मृत्यु की छाया में रहते थे दुख और लोहे के
११ बंधायमान। क्योंकि उन्हों ने सर्बशक्तिमान के बचनों से
बिरुद्धता किई और अति महान के मंत्र को तुच्छ जाना।
१२ और उस ने उन के अन्त:करण को परिश्रम से घटाया उन्हों
१३ ने ठोकर खाई और कोई सहायक न था। और उन्हों ने अपनी
बिपत्ति में परमेश्वर को पुकारा उस ने उन के कठिन क्लेशों से
१४ उन्हें बचाया। वुह उन्हें अंधियारे और मृत्यु की छाया से
निकालता है और उन के बंधनों को तोड़ डालता है ॥
१५ वे लोग परमेश्वर की उस के अनुग्रह के लिये और उस के
आश्चर्य्य कर्म्मों के लिये जो मनुष्य के संतान के लिये हैं
१६ स्तुति करें। क्योंकि उस ने पीतल के फाटकों को टुकड़े टुकड़े
कर दिया और लोहे के बेंड़ों को काट डाला है ॥
१७ मूर्ख अपने अपराध के मार्ग से और अपने अधर्म्म के कारण
१८ से अपने ताईं दुख देते हैं। उन का प्राण हर प्रकार के भोजन
से घिन करता है और वे ठीक मृत्यु के फाटकों के निकट

१९ पहुंचते हैं। तब वे अपनी विपत्ति में परमेश्वर को पुकारते हैं
२० वुह उन्हें उन के कठिन क्लेशों से बचाता है। वुह अपना
वचन भेजता है और उन्हें चंगा करता है और उन्हें उन के
नाशों से छुड़ाता है॥

२१ वे लोग परमेश्वर की उस के अनुग्रह के लिये और उस के
आश्चर्य्य कर्म्मों के लिये जो मनुष्य के संतान के लिये हैं
२२ स्तुति करें। और धन्यवाद के बलिदान बलि करें और आनन्द
के शब्द के संग उस के कार्य्यों का बर्णन करें॥

२३ समुद्र में नौकों पर चढ़े हुए बड़े पानियों में कार्य्य करते
२४ हुए। उन्हों ने परमेश्वर के कार्य्यों को और गहिराव में उस
२५ के आश्चर्य्यों को देखा। और उस ने कहा और परचंड पवन
२६ उठी और उस ने अपनी लहरों को उठाया। वे स्वर्ग लों चढ़ते
हैं गहिराव में नीचे जाते हैं उन का प्राण अपने ताईं बुराई से गला
२७ देता है। वे मतवाले की नाईं डगमगाते और लड़खड़ाते हैं और
२८ उन का सम्पूर्ण ज्ञान लोप हो जाता है। और उन्हों ने अपनी
बिपत्ति में परमेश्वर को पुकारा और उस ने उन्हें उन के कठिन
२९ क्लेशों से निकाला। वुह आंधी को शान्ति कर देता है और उन
३० की लहरें थम जाती हैं। तब वे मगन होते हैं कि आनन्द
में हैं और वुह उन्हें उन की इच्छा के घाट में पहुंचाता है॥

३१ वे लोग परमेश्वर की उस के अनुग्रह के लिये और उस के
आश्चर्य्य कर्म्मों के लिये जो मनुष्य के संतान के लिये हैं
३२ स्तुति करें। और जातिगणों की मंडली में उस की बड़ाई करें
और प्राचीनों की सभा में उस की स्तुति करें॥

३३ वुह नदियों को बन और पानी के सोतों को सूखी भूमि
३४ कर देता है। फलवन्त भूमि को नोनखार उन की बुराई के
३५ कारण से जो उस में रहते हैं। वुह बन को झील कर देता
३६ है और सूखी भूमि को पानी के सोते। और उस ने वहां भूखों

को बसाया है और उन्हों ने बसने के लिये नगर सिद्ध किया
३७ है । और खेतों को बोया है और दाख की बारी लगाई है
३८ और बढ़ती के फल कमाये हैं । और उस ने उन्हें आशीष
दिया और वे बहुत बढ़ गये हैं और वुह उन के पशुन को
३९ घटने नहीं देता । और वे अंधेर बुराई और शोक के मारे
४० घट और दीन हो गये । और अध्यक्षों पर तुच्छता उंडेलते
४१ हुए उस ने उन्हें अपथ अरण्य में भ्रमाया है । और कंगाल
को दुख से उठाया और घरानों को झुंड की नाईं बनाया है ।
४२ खरे जन देखेंगे और आनन्दित होंगे और सारी अधर्म्मता अपना
४३ मुंह बंद करेगी । कौन बुद्धिमान है कि इन बातों को सोच
करेगा और कौन बुद्धिमान लोग परमेश्वर की दया पर ध्यान
करेंगे ॥

एकसौ आठवां गीत ।

दाऊद का गान और गीत ॥

१ हे ईश्वर मेरा मन स्थिर है मैं गाऊंगा और बजाऊंगा हां
२ मेरा विभव भी । हे वीणा और सितार जाग मैं भोर को
३ जगाऊंगा । हे परमेश्वर मैं जातिगणों में तेरी स्तुति करूंगा और
४ देशगणों में तेरी स्तुति गाऊंगा । क्योंकि तेरी दया स्वर्गों के
५ ऊपर ऊंची है और तेरी सच्चाई मेघों लों । हे ईश्वर स्वर्गों के ऊपर
६ महान हो और सारी पृथिवी के ऊपर तेरा विभव हो । जिसतें
तेरे प्रिय छुड़ाये जायें तू अपने दहिने हाथ से बचा और
हमारी सुन ॥

७ ईश्वर ने अपनी पवित्रता के संग वचन कहा इस कारण
मैं आनन्दित होऊंगा सिकम को विभाग करूंगा और सुक्कात की
८ तराई को नापूंगा । जिलिअद मेरा है मनस्सी मेरा और इफ़रायम
९ मेरे सिर का गढ़ यहूदाह मेरा व्यवस्थादायक । मोअब मेरे

घोनेघाने का पात्र है मैं अदूम पर अपनी जूती फेकूंगा फिलिस्त
पर जय जयकार करूंगा ॥
१० कौन मुझे दृढ़ नगर में ले जायगा किस ने मुझे अदूम लों
११ पहुंचाया है। क्या ईश्वर नहीं है तू जिस ने हमें छोड़ दिया
है और हे ईश्वर तू जो हमारी सेनाओं के संग न चलेगा।
१२ बिपत्ति में हमारी सहाय कर क्योंकि मनुष्यीय मुक्ति बृथा
१३ है। ईश्वर से हम शूरता पावेंगे और वही हमारे बैरियों को
रौंद डालेगा ॥

एकसौ नवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये दाऊद का गीत ॥

१।२ हे मेरे स्तुति के ईश्वर चुप मत हो। क्योंकि उन्हों ने
दुष्ट मुंह और छल का मुंह मुझ पर खोला है वे मेरे साथ झूठ
३ की जीभ से बोले हैं। और उन्हों ने बैर की बातों से मुझे
४ घेरा है और अकारण मुझ से लड़े हैं। मेरे प्रेम की सन्ती वे
५ मेरी बिरुद्धता करते हैं और मैं प्रार्थना में हूं। और भलाई की
सन्ती वे मुझ पर बुराई लगाते हैं और मेरे प्रेम की सन्ती
बैर ॥
६ उस पर दुष्ट को करोड़ा ठहरा और बैरी उस के दहिने
७ हाथ पर खड़ा रहे। जब उस का बिचार किया जायेगा तो
वुह दोषी ठहरेगा और उस की प्रार्थना पाप गिनी जायेगी।
८।९ उस के दिन थोड़े हों उस का पद दूसरा कोई ले। उस
१० के बच्चे अनाथ हों और उस की स्त्री रांड हो। और उस के
बच्चे भ्रमते फिरें और भीख मांगें और अपने उजाड़ों से अपना
११ भोजन ढूंढें। ब्याज लेनेहारा उस का सब कुछ फंसा ले और परदेशी
१२ उस की कमाई को लूट लें। उस पर कोई दया बढ़ानेहारा न
हो और उस के अनाथों पर कोई अनुग्रह करवैया न हो।

१३ उस का बंश काटा जाय अवैया पीढ़ी में उन का नाम मिटाया
१४ जाय। उस के पितरों का अधर्म्म परमेश्वर के आगे स्मरण
किया जावे और उस की माता का पाप मिटाया न जाय।
१५ वे परमेश्वर के आगे नित्य रहें और वुह पृथिवी पर से उन का
स्मरण काट डाले॥

१६ इस कारण कि उस ने दया करना स्मरण न किया और
दुखी और कंगाल मनुष्य को सताया और चूरण अंत:करण को
१७ जिसतें उसे बध करे। और उस ने स्राप को चाहा और वुह
उस पर पहुंच गया है और वुह आशीष से प्रसन्न नहीं हुआ सो
१८ वुह उस्से दूर हो गया है। और उस ने स्राप को अपने बस्त्र
की नाईं पहिना है और वुह पानी की नाईं उस के भीतर आया है
१९ और तेल की नाईं उस की हड्डियों में। वुह उस के लिये
उस वस्त्र के समान हो जिसे वुह पहिनता है और पटुके के
२० समान वुह सदा उसे बांधे। मेरे बैरियों का पलटा परमेश्वर
की ओर से और उन का जो मेरे प्राण के बिरोध में बुरा कहते
हैं यही हो॥

२१ और तू हे परमेश्वर प्रभु अपने नाम के लिये मेरे संग
२२ व्यवहार कर क्योंकि तेरी दया भली है मुझे छुड़ा। क्योंकि मैं
दुखी और कंगाल हूं और मेरा अन्त:करण मुझ में घायल है।
२३ छाया की नाईं जब वुह फिर जाती मैं जाता रहता मैं टिड्डी
२४ की नाईं हंकाया गया। मेरे घुटने उपवास से डगमगाते हैं
२५ और मेरा मांस ऐसा घट गया कि मोटा नहीं। और मैं उन
के लिये निन्दा हुआ वे मुझे देखते हैं अपना सिर हिलाते हैं॥

२६ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर मेरी सहाय कर अपनी दया के समान
२७ मुझे बचा। और वे जानेंगे कि यह तेरा हाथ है हे परमेश्वर
२८ तू ही ने यह किया है। वे स्राप देंगे और तू आशीष देगा
वे उठे हैं और लज्जित होंगे और तेरा दास आनन्दित होगा।

२९ मेरे बैरी दुर्नामी का बस्त्र पहिनेंगे और बस्त्र के समान अपनी
३० लज्जा को पहिनेंगे। मैं अपने मुंह से परमेश्वर का अत्यन्त
धन्य मानूंगा और बहुतों के मध्य उस की स्तुति करूंगा।
३१ क्योंकि वुह कंगाल के दहिने हाथ पर खड़ा होगा जिसतें उसे
उस के प्राण के बिचारियों से बचावे॥

एकसौ दसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ परमेश्वर मेरे प्रभु से कहता है कि मेरे दहिने हाथ पर बैठ
जब लों कि मैं तेरे बैरियों को तेरे चरण की पीढ़ी न करूं।
२ परमेश्वर तेरे बल का राजदंड सैहून से भेजेगा तू अपने बैरियों
३ के मध्य में प्रभुता कर। तेरी सामर्थ्य के दिन तेरे लोग पवित्रता
की सुन्दरता के संग प्रसन्नता की भेंट होंगे बिहान के कोख
४ से तेरे लिये तेरी तरुणाई की ओस है। परमेश्वर ने किरिया
खाई है और न पछतावेगा कि तू मलिकिसिदक़ के समान सदा
५ लों याजक रहेगा। प्रभु ने तेरे दहिने हाथ पर अपने कोप
६ के दिन राजाओं को मारा है। वुह जातिगणों में बिचार करेगा
उस ने उन्हें लोथों से पूर्ण किया है उस ने बहुत देशों में
७ सिरों को कुचला है। वुह मार्ग में नाले से पीयेगा इस कारण
से वुह सिर को ऊंचा करेगा॥

एकसौ ग्यारहवां गीत।

१ हलिलूयाह। मैं सारे अन्तःकरण से परमेश्वर की स्तुति करूंगा
२ साधुन की सभा और मंडली में। परमेश्वर के कार्य्य महान हैं
और उन साधुन की सारी इच्छाओं के समान खोज किये
३ गये हैं। उस का कार्य्य प्रतिष्ठित और ऐश्वर्य्यमान है और उस
४ का धर्म्म सर्वदा लों स्थिर। उस ने अपने आश्चर्य्य कार्य्यों के

५ लिये चिन्ह रक्खा है परमेश्वर कृपालु और दयालु है । उस ने
अपने डरवैयों को अहेर दिया है वुह सदा अपनी बाचा को
६ स्मरण रक्खेगा । उस ने अपने कार्य्यों का बल अपने लोगों से
वर्णन किया है जिसतें उन्हें अन्यदेशियों का अधिकार देवे ।
७ उस के हाथ की क्रिया सत्यता और बिचार हैं उस की सारी
८ आज्ञायें सत्य हैं । सर्बदा के लिये स्थिर सच्चाई के संग किये गये
९ और सीधे हैं । उस ने अपने लोगों को मुक्ति दिई है सदा के
लिये अपनी बाचा को स्थिर किया है उस का नाम पवित्र और
१० भयंकर है । परमेश्वर का भय बुद्धि का आरंभ है उन सभों
के माननेहारों की उत्तम बुद्धि है उस की स्तुति सदा लों स्थिर है ॥

एकसौ बारहवां गीत ।

१ हल्लिलूयाह । वुह मनुष्य क्या ही धन्य जो परमेश्वर से डरता
२ है उस की आज्ञाओं पर अत्यन्त आनन्दित होता है । उस
का बंश पृथिवी पर बलवन्त होगा खरों के संतान आशीषित
३ होंगे । उस के घर में धन और सम्पत्ति है और उस का धर्म्म
४ सदा लों स्थिर । खरों के लिये अंधियारे में उंजियाला उदय
५ होता है जो कृपालु और दयालु और धर्म्मी हैं । क्या ही धन्य वुह
मनुष्य जो अनुग्रह करता और ऋण देता है वुह अपने काम
६ काज को बिचार से सुधारेगा । क्योंकि वुह सदा लों न टलेगा
७ सदा लों उस का धर्म्मी होना स्मरण किया जायगा । वुह कुसमाचार
से भय न करेगा उस का मन दृढ़ है परमेश्वर पर भरोसा रखता
८ हुआ । उस का मन स्थिर है वुह न डरेगा यहां लों कि
९ अपने बैरियों पर दृष्टि करे । उस ने बिथराया कंगालों को दिया
है उस का धर्म्म सदा लों स्थिर उस का सींग प्रतिष्ठा के संग
१० ऊंचा होगा । दुष्ट देखेगा और कुढ़ेगा अपने दांत किड़किड़ावेगा
और गल जायगा दुष्टों का अभिलाष नाश हो जायगा ॥

एकसौ तेरहवां गीत ।

१ हल्लिलूयाह। स्तुति करो हे परमेश्वर के दासो परमेश्वर के
२ नाम की स्तुति करो। परमेश्वर का नाम अब से और सदा लों
३ धन्य हो। सूर्य्य के उदय से लेके उस के अस्त लों परमेश्वर
४ के नाम की स्तुति हो। परमेश्वर सारे जातिगणों पर महान है
और स्वर्ग पर उस का विभव ॥
५ परमेश्वर हमारे ईश्वर की नाईं स्वर्ग और पृथिवी पर कौन
६।७ है। जो ऊंचाई पर रहता जो नीचे देखता है। जो कंगाल
को धूल से उठा लेता है घूरे से दीन को ऊंचा करेगा।
८ जिसतें उसे अध्यक्षों के संग अपने लोगों के अध्यक्षों के संग
९ बैठावे। जो घर की रहनेहारी बांझ को बच्चों की आनन्द
करनेहारी माता बनाकर बिठलाता है। हल्लिलूयाह ॥

एकसौ चौदहवां गीत ।

१ जब इसराएल मिस्र से और यअकूब का घराना परदेशी भाषा
२ की जाति में से निकला। तब यहूदाह उस का धर्म्मधाम
३ और इसराएल उस का राज्य हो गया। समुद्र ने देखा और
४ भागा यरदन उलटी बही। पहाड़ मेंढ़ों की नाईं उछले पहाड़ियां
भेड़ के बच्चों की नाईं ॥
५ हे समुद्र तुझे क्या हुआ कि तू भागता है और हे यरदन
६ तुझे क्या हुआ कि तू उलटी बहती है। हे पहाड़ो क्या हुआ
कि तुम मेंढ़ों की नाईं उछलते हो और हे पहाड़ियो भेड़ के
७ बच्चों की नाईं। हे पृथिवी प्रभु के आगे कांप यअकूब के
८ ईश्वर के आगे। जो पत्थर को पानी का कुण्ड बनाता है और
कड़े पाषाण को पानियों के सोते ॥

एकसौ पन्द्रहवां गीत ।

१ हम को नहीं हे परमेश्वर हम को नहीं परन्तु अपने नाम
को महिमा दे अपनी दया के कारण अपनी सच्चाई के कारण ।
२ जातिगण क्यों कहें कि अब उन का ईश्वर कहां है ।
३ हमारा ईश्वर तो स्वर्ग पर है जो उस ने चाहा सो सब किया
है ॥
४ उन की मूर्त्तें चांदी और सोना हैं मनुष्यों के हाथ की
५ बनाई हुई । वे मुंह रखती हैं पर बोलती नहीं आंखें रखती
६ हैं पर देखती नहीं । कान रखती हैं पर सुनती नहीं नाक
७ रखती हैं पर सूंघती नहीं । उन के हाथ हैं पर छूती नहीं
उन के पांव हैं पर चलती नहीं वे अपने गले से कुछ शब्द
८ नहीं निकालतीं । उन्हीं के समान उन के बनवैये होंगे और
हर एक जो उन पर भरोसा रखता है ॥
९ हे इसराएल परमेश्वर पर भरोसा रख उन की सहाय
१० और उन की ढाल वही है । हे हारून के घराने परमेश्वर पर
भरोसा रक्खो उन की सहाय और उन की ढाल वही है ।
११ हे परमेश्वर के डरवैयो परमेश्वर पर भरोसा रक्खो उन की
सहाय और उन की ढाल वही है ॥
१२ परमेश्वर ने हमें स्मरण किया है वुह आशीष देगा इसराएल
के घराने को आशीष देगा हारून के घराने को आशीष देगा ।
१३ वुह परमेश्वर के डरवैयों को आशीष देगा छोटों को बड़ों सहित ।
१४ परमेश्वर तुम को बढ़ती देवे तुम को और तुम्हारे लड़कों को ।
१५ तुम परमेश्वर के निकट स्वर्ग और पृथिवी के बनानेहारे के
निकट आशीषित हो ॥
१६ स्वर्ग परमेश्वर के लिये स्वर्ग हैं और उस ने मनुष्य के बंश
१७ को पृथिवी दिई है । न मृतक परमेश्वर की स्तुति करेंगे और

१८ न वे सब जो समाधि में उतरते हैं। और हम अब से और
सदा लों परमेश्वर की स्तुति किया करेंगे। हलिलूयाह ॥

एकसौ सोलहवां गीत।

१ मैं प्यार करता हूं क्योंकि परमेश्वर मेरा शब्द मेरी बिनतियां
२ सुनता है। क्योंकि उस ने अपना कान मेरी ओर झुकाया है
३ और मैं अपने सारे दिनों में उसे पुकारता रहूंगा। मृत्यु के
बंधनों ने मुझे घेरा समाधि के कष्टों ने मुझे पकड़ लिया मैं दुख
४ और शोक को पाता हूं। और मैं परमेश्वर के नाम को पुकारता
हूं कि हे परमेश्वर मैं बिनती करता हूं मेरे प्राण को बचा ले॥
५ परमेश्वर अनुग्राहक और धर्म्मी है और हमारा ईश्वर दया
६ दिखलाता है। परमेश्वर सूधे लोगों का रक्षक है मैं दीन हो
७ गया और उस ने मुझे मोक्ष दिई। हे मेरे प्राण अपने
चैनस्थानों में फिर क्योंकि परमेश्वर ने तुझ पर भलाई किई है।
८ क्योंकि तू ने मेरा प्राण मृत्यु से मेरी आंखों को आंसू बहाने से
९ मेरे पाओं को फिसलने से बचाया है। मैं परमेश्वर के
१० आगे जीवतों के देशों में चला फिरा करूंगा। मैं विश्वास लाया
११ क्योंकि यों बोलता हूं मैं बड़ा दुखी हुआ। मैं ने अपनी
घबराहट में कहा कि सारे मनुष्य झूठे हैं॥
१२ मैं किस रीति परमेश्वर को उस के सारे पदारथों के लिये जो
१३ मुझ पर हैं पलटा दूंगा। मैं मुक्ति का कटोरा उठाऊंगा और
१४ परमेश्वर के नाम को पुकारूंगा। मैं परमेश्वर के लिये अपनी
मनौतियां पूरी करूंगा उस के सारे लोगों के आगे मैं बिनती
करता हूं॥
१५ परमेश्वर की दृष्टि में उस के साधुन की मृत्यु बहुमूल्य है।
१६ हे परमेश्वर मैं बिनती करता हूं क्योंकि मैं तेरा दास हूं मैं तेरा
दास हूं तेरी दासी का पुत्र तू ने मेरे बंधनों को खोला है।

१७ मैं तुझे धन्यवाद का बलि चढ़ाऊंगा और परमेश्वर के नाम को
१८ पुकारूंगा । मैं अपनी मनौतियां परमेश्वर के लिये पूरी करूंगा
१९ उस के सारे लोगों के आगे मैं बिनती करता हूं । परमेश्वर के
मन्दिर के आंगनों में हे यरूसलम तुझ में । हलिलूयाह ॥

एकसौ सत्तरवां गीत ।

१ हे सारी जातिगणो परमेश्वर की स्तुति करो हे सारे लोगो
२ उस का धन्य मानो । क्योंकि उस की दया हम पर बहुत
है और परमेश्वर की सच्चाई सदा लों है । हलिलूयाह ॥

एकसौ अठारहवां गीत ।

१ परमेश्वर का धन्यवाद करो क्योंकि वुह भला है क्योंकि उस
२ की दया सदा लों है । हाय कि इसराएल कहे क्योंकि उस की
३ दया सदा लों है । हाय कि हारून का घराना कहे क्योंकि
४ उस की दया सदा लों है । हाय कि परमेश्वर के डरवैये कहें
क्योंकि उस की दया सदा लों है ॥

५ मैं ने सकेती में परमेश्वर को पुकारा परमेश्वर ने विस्तारित
६ स्थान में मेरी सुनी । परमेश्वर मेरी ओर है मैं न डरूंगा
७ मनुष्य मेरा क्या करेगा । परमेश्वर मेरे सहायकों में मेरी ओर
८ है और मैं अपने वैरियों पर दृष्टि करूंगा । परमेश्वर पर भरोसा
९ करना मनुष्य पर भरोसा करने से भला है। परमेश्वर पर भरोसा
१० करना अध्यक्षों पर भरोसा करने से भला है। सारी जातिगणों ने
मुझे घेर लिया है परमेश्वर के नाम से मैं किरिया खाता हूं कि उन्हें
११ नाश करूंगा । उन्हों ने मुझे घेर लिया हां मुझे घेर लिया परमेश्वर
१२ के नाम से मैं किरिया खाता हूं कि उन्हें नाश करूंगा । उन्हों
ने मधुमाखियों की नाईं मुझे घेर लिया है वे कांटों की आग के
समान बुझ गये परमेश्वर के नाम से मैं किरिया खाता हूं कि

१३ उन्हें नाश करूंगा। तू ने ढकेला मुझे ढकेला जिसतें मैं गिर
पड़ूं और परमेश्वर ने मेरी सहाय किई॥
१४ मेरा बल और मेरा गान परमेश्वर है और वुह मेरी मुक्ति
१५ हो गया है। आनन्द और मुक्ति का शब्द धर्म्मियों के तंबुओं
१६ में है परमेश्वर के दहिने हाथ ने शूरता किई है। परमेश्वर का
दहिना हाथ ऊंचा परमेश्वर का दहिना हाथ शूरता करता है।
१७ मैं न मरूंगा परन्तु जीता रहूंगा और परमेश्वर की क्रिया वर्णन
१८ करूंगा। परमेश्वर ने अति ताड़ना से मुझे ताड़ना किई पर
मुझे मृत्यु को नहीं दिया॥
१९ मेरे लिये धर्म्म के फाटक खोलो मैं उन में प्रवेश करूंगा
२० परमेश्वर की स्तुति करूंगा। यह वुह फाटक जो परमेश्वर का
२१ है धर्म्मी उस में जायेंगे। मैं तेरी स्तुति करूंगा क्योंकि तू ने
२२ मेरी सुनी है और मेरी मुक्ति हो गया है। जिस पत्थर को
थवैइयों ने निकम्मा ठहराया वुह कोने का सिरा हो गया है।
२३ परमेश्वर से यह हुआ वुह हमारी दृष्टि में आश्चर्य्यित है।
२४ यह वुह दिन है जिसे परमेश्वर ने बनाया है हम उस में
२५ आनन्द करेंगे और मगन होंगे। हे परमेश्वर हम बिनती करते
हैं कृपा करके बचा हे परमेश्वर हम बिनती करते हैं कृपा
२६ करके भाग्यमानी दे। जो आता है वुह परमेश्वर के नाम से
धन्य हो हम ने परमेश्वर के घर से तुम्हें आशीष दिई है॥
२७ परमेश्वर शक्तिमान है और उस ने हमें उंजियाला दिया है
२८ बलिदान को रस्सियों से बांधो यज्ञवेदी के सींगों लों। मेरा
सर्बशक्तिमान तू ही है और मैं तेरी स्तुति करूंगा मेरा ईश्वर
२९ मैं तेरी प्रतिष्ठा करूंगा। परमेश्वर का धन्यवाद करो क्योंकि
वुह भला है क्योंकि उस की दया सदा लों है॥

एकसौ उन्नीसवां गीत ।

अलिफ़ ॥

१ क्या ही धन्य वे जो मार्ग में सिद्ध हैं जो परमेश्वर की
२ व्यवस्था पर चलते हैं । क्या ही धन्य उस की साक्षियों के
३ पालन करनेहारे जो सारे मन से उसे ढूंढ़ते हैं । वे बुराई भी
४ नहीं करते और उस के मार्गों पर चलते हैं । तू ने अपनी
५ आज्ञाएं प्रचारीं कि हम उन्हें दृढ़ता से पालन करें । हाय
कि मेरे मार्ग तेरी विधिन को पालन करने के लिये स्थिर हों ।
६ तब मैं लज्जित न होऊंगा जब तेरी सारी आज्ञाओं पर दृष्टि
७ करूंगा । मैं मन की खराई से तेरी स्तुति करूंगा जब तेरे
८ धर्म्म के विचारों को सीखूं । मैं तेरी विधिन को पालन करूंगा
तू मुझे सर्वथा न त्याग ॥

बेत ॥

९ तरुण किस रीति अपने मार्ग को पवित्र रक्खे जिसतें तेरे
१० वचन के समान उसे पालन करे । मैं ने अपने सारे मन
११ से तुझे ढूंढ़ा मुझे अपनी आज्ञाओं से भरमने मत दे । मैं ने
अपने मन में तेरे वचन को छिपाया है जिसतें तेरे विरुद्ध
१२ पाप न करूं । हे परमेश्वर तू धन्य हो अपनी विधिन को मुझे
१३ शिक्षा दे । मैं ने तेरे मुंह के सारे न्याय अपने होंठों से वर्णन
१४ किये हैं । मैं तेरी साक्षियों के मार्ग में आनन्दित हुआ जैसे
१५ कि सारी बढ़ती पर । मैं तेरी आज्ञाओं पर ध्यान करूंगा और
१६ तेरे मार्गों पर दृष्टि करूंगा । मैं तेरी विधिन में अपने ताईं
मगन करूंगा तेरे वचन को न भूलूंगा ॥

गीमल ॥

१७ अपने सेवक पर भलाई कर जिसतें मैं जीऊं और तेरे वचन

१८ को मानूं। मेरी आंखों को खोल और मैं देखा करूंगा तेरी
१९ व्यवस्था से आश्चर्य्य। मैं पृथिवी पर परदेशी हूं अपनी
२० आज्ञाओं को मुझ से मत छिपा। मेरा प्राण हर घड़ी तेरे
२१ न्यायों की लालसा के मारे टूटा जाता है। तू ने अहंकारियों
को स्रापितों को जो तेरी आज्ञाओं से भटकते हैं दपटा है।
२२ मेरे ऊपर से निन्दा और तुच्छता उलट दे क्योंकि मैं ने तेरी
२३ साक्षियों को पालन किया है। अध्यक्ष भी बैठे और मेरे विरुद्ध
में बातें किईं तेरा सेवक तेरी विधिन पर ध्यान लगाये है।
२४ तेरी साक्षियां मेरे लिये आनन्द भी हैं और मेरी मंत्र देनेहारी॥

दालेथ॥

२५ मेरा प्राण धूल से लिपट गया है अपने वचन के समान
२६ मुझे जिला। मैं ने अपने पथों को वर्णन किया और तू ने मेरी
२७ सुनी अपनी विधिन की मुझे शिक्षा दे। अपनी आज्ञाओं का
मार्ग मुझे समझा और मैं तेरे आश्चर्य्यों पर ध्यान लगाऊंगा।
२८ मेरा प्राण शोक के मारे आंसू बहाता है अपने वचन के समान
२९ मुझे उठा। झूठ के मार्ग को मुझ से अलग कर और अपनी
३० व्यवस्था कृपा करके मुझे दे। मैं ने सच्चाई का मार्ग चुन लिया
३१ है और तेरे न्यायों को अपने सन्मुख रक्खा है। मैं तेरी साक्षियों
३२ से लिपटा हुआ हूं हे परमेश्वर मुझे लज्जित न कर। मैं तेरी
आज्ञाओं के मार्ग में दौड़ूंगा क्योंकि तू मेरे मन को बढ़ावेगा॥

हे॥

३३ हे परमेश्वर मुझे अपनी विधिन का मार्ग दिखा और मैं अन्त
३४ लों उसे पालन करूंगा। मुझे समुझ दे और मैं तेरी व्यवस्था को
३५ पालन करूंगा और सारे मन से उसे मानूंगा। मुझे अपनी आज्ञाओं
३६ के मार्ग पर चला क्योंकि मैं उस में आनन्दित हूं। मेरे मन
को अपनी साक्षियों की ओर फिरा और न लालच की ओर।

३७ मेरी आंखों को झूठ पर दृष्टि करने से उलट दे अपने मार्ग में
३८ मुझे जिला। अपने सेवक के लिये अपने उस बचन को स्थिर
३९ कर जो तेरे डरवैयों के लिये है। मैं अपनी जिस निन्दा से
४० डरता हूं उसे फेर दे क्योंकि तेरे न्याय उत्तम हैं। देख मैं तेरी
आज्ञाओं का लालसित हूं अपने धर्म्म में मुझे जिला॥

वाव॥

४१ और हे परमेश्वर तेरी दया मुझ पर आवे तेरी मुक्ति तेरे बचन
४२ के समान। तो मैं अपने निन्दक से उत्तर का बचन बोलूंगा
४३ क्योंकि मैं तेरे बचन पर भरोसा रखता हूं। और सच्चाई का
यह बचन मेरे मुंह से सर्वथा छीन न ले क्योंकि मैं तेरे बिचारों
४४ का आशावान हूं। और मैं तेरी व्यवस्था को सदा सर्बदा लों
४५ पालन करूंगा। और मैं निर्बंधता में चला फिरा करूंगा क्योंकि
४६ मैं ने तेरी आज्ञाएं ढूंढी हैं। और मैं राजाओं के आगे तेरी
४७ साक्षियों की चर्चा करूंगा और लज्जित न होऊंगा। और मैं
तेरी उन आज्ञाओं में जिन्हें प्यार करता हूं अपने ताईं आनन्दित
४८ करूंगा। और मैं अपने हाथ तेरी उन आज्ञाओं की ओर जिन्हें
प्यार करता हूं उठाऊंगा और तेरी बिधिन पर ध्यान लगाऊंगा॥

ज़ैन॥

४९ अपना बचन अपने सेवक के लिये स्मरण कर क्योंकि तू ने
५० मुझे आशावान किया है। यह मेरी शान्ति मेरे दुख में है कि
५१ तेरे बचन ने मुझे जिलाया है। अभिमानियों ने मुझे अति
५२ ठट्ठे में उड़ाया है मैं तेरी व्यवस्था से नहीं हटा। हे परमेश्वर
मैं ने तेरे पुरातन बिचारों को स्मरण रक्खा है और अपने को
५३ शान्ति दिई है। कोपाग्नि ने मुझे पकड़ लिया है उन दुष्टों के
५४ कारण से जो तेरी व्यवस्था को त्यागते हैं। मेरी यात्रालय में
५५ तेरी बिधिन मेरे लिये गान हुई हैं। हे परमेश्वर मैं रात को

तेरे नाम को स्मरण करता और तेरी व्यवस्था को पालन करता
५६ हूं। यह मुझ से बन पड़ा क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को
पालन किया है ॥

खेत ॥

५७ हे परमेश्वर मैं ने कहा कि मेरा भाग यह है कि तेरे बचनों
५८ को पालन करूं। मैं ने सारे मन से तेरे रूप की यांचना किई
५९ हे अपने बचन के समान मुझ पर दया कर। मैं ने अपने
मार्गों पर सोच किया है और अपने पांव तेरी साक्षियों की ओर
६० फिर फेरे हैं। मैं ने तेरी आज्ञाओं को पालन करने में फुरती किई
६१ और आलस्य न किई। दुष्टों के बंधनों ने मुझे घेरा पर मैं ने
६२ तेरी व्यवस्था को नहीं भुलाया। मैं आधी रात को उठूंगा
६३ जिसतें तेरे धर्म्म के बिचारों के कारण तेरा धन्य मानूं। मैं उन
सभों का संगी हूं जो तुझ से डरते हैं और उन का जो तेरी
६४ आज्ञाओं को मानते हैं। हे परमेश्वर पृथिवी तेरी दया से पूर्ण
है अपनी बिधिन की मुझे शिक्षा दे ॥

तेथ ॥

६५ हे परमेश्वर तू ने अपने बचन के समान अपने सेवक से अच्छा
६६ व्यवहार किया है। सुबिचार और ज्ञान की मुझे शिक्षा दे
६७ क्योंकि मैं तेरी आज्ञाओं पर बिश्वास लाया हूं। उस्से पहिले कि
मैं ने दुख पाया मैं भटका हुआ था पर अब मैं ने तेरे बचन
६८ को पालन किया है। तू भला है और भलाई करता है अपनी
६९ बिधिन को मुझे ज्ञान दे। अहंकारियों ने मेरे बिरुद्ध झूठ बना
रक्खा है मैं सारे मन से तेरी आज्ञाओं को पालन करूंगा।
७० उन का मन चिक्रनाई के समान चिकना है मैं तेरी व्यवस्था
७१ से आनन्दित हूं। मेरे लिये भला है कि मैं दुख में पड़ा जिसतें

७२ तेरी बिधिन को जानूं । तेरे मुंह की व्यवस्था मेरे लिये सोने
और चांदी के सहस्रों से अच्छी है ॥

योद ॥

७३ तेरे हाथों ने मुझे बनाया और मुझे सिद्ध किया मुझे समझ
७४ दे और मैं तेरी आज्ञाओं का ज्ञान प्राप्त करूंगा । तेरे डरवैये
मुझे देखेंगे और आनन्दित होंगे क्योंकि मैं तेरे वचन का
७५ आशावान रहा । हे परमेश्वर मैं जानता हूं कि तेरे बिचार सत्य
७६ हैं और तू ने सत्यता के संग मुझे दुख दिया है । अपने उस
वचन के समान जो अपने सेवक से किया होय कि तेरी दया
७७ मुझे शान्ति देने के लिये हो । तेरी कृपायें मुझ पर आवें तो
मैं जीता रहूंगा क्योंकि तेरी व्यवस्था मेरी आनन्दता है ।
७८ अहंकारी लज्जित हों क्योंकि उन्हों ने झूठ से मेरे विवाद
७९ को टेढ़ा किया है मैं तेरी आज्ञाओं पर ध्यान रक्खूंगा । तेरे
८० डरवैये मेरी ओर फिरें और तेरी साक्षियों को जानें । मेरा मन
तेरी विधिन में सिद्ध हो जिसतें मैं लज्जित न होऊं ॥

काफ़ ॥

८१ मेरा प्राण तेरी मुक्ति के लिये मूर्छित है मैं तेरे वचन पर
८२ आशावान रहता हूं । मेरी आंखें तेरे वचन के बाट जोहने में
८३ मूर्छित हुईं यह कहते हुए कि तू कब मुझे शान्ति देगा । क्योंकि
मैं उस चर्मरूपी जलपात्र के समान हुआ जो धूएं में है मैं ने
८४ तेरी विधिन को नहीं भुलाया । तेरे सेवक के दिन कितने हैं तू
८५ कब मेरे सतानेहारों पर न्याय प्रगट करेगा । अहंकारियों ने
मेरे लिये गड़हे खोदे हैं जो तेरी व्यवस्था के समान नहीं हैं ।
८६ तेरी सारी आज्ञाएं विश्वासमय हैं वे झूठ से मुझे सताते हैं
८७ मेरी सहाय कर । निकट था कि वे मुझे पृथिवी पर से मिटा
८८ डालते पर मैं ने तेरी आज्ञाओं को त्याग न किया । अपनी

दया के समान मुझे जीता रख और मैं तेरे मुंह की साक्षियों
को पालन करूंगा ॥

लामद ॥

८९ हे परमेश्वर तेरा बचन सर्वदा स्वर्ग पर स्थिर है।
९० तेरी सच्चाई पीढ़ी से पीढ़ी लों है तू ने पृथिवी को स्थिर किया
९१ और वुह स्थिर है। वे तेरे न्यायों के कारण आज लों स्थिर
९२ हैं क्योंकि सब तेरे सेवक हैं। यदि तेरी व्यवस्था मेरी
आनन्दता न होती तो मैं अपनी विपत्ति में नाश हो जाता।
९३ मैं कभी तेरी आज्ञाओं को न भूलूंगा क्योंकि तू ने उन के
९४ द्वारा से मुझे जिलाया है। मैं तेरा हूं मुझे बचा क्योंकि मैं
९५ ने तेरी आज्ञाओं को खोज किया है। दुष्ट मेरी घात में लगे
हैं जिसतें मुझे नाश करें मैं तेरी साक्षियों पर ध्यान लगाऊंगा।
९६ मैं ने सारी सिद्धता का अंत देखा पर तेरी आज्ञा अत्यन्त
चौड़ी है ॥

मीम ॥

९७ वाह मैं तेरी व्यवस्था से क्या ही प्रीति रखता हूं सारे दिन
९८ मेरा ध्यान वही है। तेरी आज्ञाएं मुझे मेरे बैरियों से अधिक
९९ बुद्धिमान बनाती हैं क्योंकि वे सदा मेरे लिये हैं। मैं अपने
सारे उपदेशकों से अधिक समझ रखता हूं क्योंकि तेरी साक्षियों
१०० पर मेरा ध्यान है। मैं प्राचीनों से अधिक समझता हूं क्योंकि
१०१ मैं ने तेरी आज्ञाओं को पालन किया है। मैं ने अपने पांव
को हर कुमार्ग से रोक रक्खा है जिसतें तेरे वचन को पालन
१०२ करूं। मैं तेरे विचारों से नहीं हटा क्योंकि तू ही ने मेरी
१०३ अगुआई किई है। तेरी बातें मेरे तालू में क्या ही मीठी लगती
१०४ हैं मधु से अधिक मेरे मुंह में। मैं तेरी आज्ञाओं से समझ
पाता हूं इस लिये मैं ने हर झूठे मार्ग से घिन किया है ॥

नून ॥

१०५ तेरा बचन मेरे पांव के लिये दीपक है और मेरे मार्ग के
१०६ लिये उंजियाला । मैं ने किरिया खाई है और उसे पुरा करूंगा
१०७ कि तेरे धर्म्म के बिचारों को पालन करूंगा । मैं अति दुखी
१०८ हूं हे परमेश्वर अपने बचन के समान मुझे जिला । हे परमेश्वर
मैं बिनती करता हूं मेरे मुंह की मनमनता की भेंटों से प्रसन्न
१०९ हो और अपने न्यायों का मुझे ज्ञान दे । मेरा प्राण सदा मेरी
हथेली पर है पर मैं ने तेरी व्यवस्था को नहीं बिसराया ।
११० दुष्टों ने मेरे लिये फंदा लगाया है पर मैं तेरी आज्ञाओं से भटक
१११ नहीं गया । मैं ने सदा के लिये तेरी साक्षियों को अधिकार
११२ में लिया है क्योंकि मेरे मन का आनन्द वेही हैं । मैं ने
अपने मन को झुकाया है कि सदा लों हां अन्त लों तेरी
बिधिन को पालन करूं ॥

सामिख ॥

११३ मैं कुभावनाओं से घिन करता हूं और तेरी व्यवस्था से
११४ प्रेम रखता हूं । मेरे छिपने का स्थान और ढाल तू ही है मैं
११५ तेरे बचन का आशावान हूं । हे कुकर्म्मियो मेरे पास से दूर
११६ होओ और मैं अपने ईश्वर की आज्ञाओं को मानूंगा । अपने
बचन के समान मुझे संभाल और मैं जीता रहूं और मेरी आशा
११७ से मुझे लज्जित न कर । मुझे थाम ले और मैं बचा रहूंगा
११८ और सदा तेरी बिधिन पर दृष्टि रक्खूंगा । तू अपनी बिधिन के
सारे भटके हुओं को तुच्छ जानता है क्योंकि उन का छल
११९ मिथ्या है । तू ने पृथिवी के सारे दुष्टों को सोने चांदी के मैल
की नाईं मिटा डाला है इस लिये मैं तेरी साक्षियों से प्रीति
१२० रखता हूं । मेरा शरीर तेरे डर से थर्थराता है और मैं तेरे
न्यायों से डरता हूं ॥

ऐन ॥

१२१ मैं ने न्याय और धर्म्म किया है मुझे मेरे सतानेवालों के वश
१२२ में न छोड़। भलाई के लिये अपने सेवक का बिचवई हो अहंकारी
१२३ मुझे न सतावें। मेरी आंखें तेरी मुक्ति के और तेरे धर्म्म के
१२४ बचन की बाट जोहने में मूर्छित हो गई। अपनी दया के
समान अपने सेवक से व्यवहार कर और अपनी बिधिन का मुझे
१२५ ज्ञान दे। मैं तेरा सेवक हूं मुझे समझ दे जिसतें तेरी साक्षियों
१२६ को जानूं। परमेश्वर के लिये कार्य्य करने का समय है वे
१२७ तेरी व्यवस्था को भंग करते हैं। इस लिये मैं तेरी आज्ञाओं
१२८ को सोने हां चोखे सोने से अधिक प्यार करता हूं। इस लिये
मैं तेरी सारी आज्ञाओं को सभों के विषय ठीक जानता हूं
और झूठ के हर मार्ग से घिन करता हूं॥

पे॥

१२९ तेरी साक्षियां आश्चर्य्यित हैं इस लिये मेरा प्राण उन्हें पालन
१३० करता है। तेरे वचनों का खुल जाना सूधे मनों को समझाके
१३१ उंजियाला करता है। मैं अपना मुंह फैलाता और हांफता
१३२ हूं क्योंकि तेरी आज्ञाओं के लिये अभिलाषी हूं। अपने नाम के
प्रेमियों के आचरण के समान मेरी ओर दृष्टि कर और मुझ पर दया
१३३ कर। अपने बचन के कारण से मेरे डगों को स्थिर कर और
१३४ कोई अधर्म्म मुझ पर राज्य न करे। मनुष्य के अंधेर से
मुझे छुड़ा और मैं तेरी आज्ञाओं को पालन किया करूंगा।
१३५ अपने सेवक पर अपने मुंह को चमका और अपनी बिधिन का
१३६ मुझे ज्ञान दे। मेरी आंखें पानी की नदियां होके बह जाती
हैं इस कारण कि वे तेरी व्यवस्था को पालन नहीं करते॥

ज़ादि ॥

१३७ हे परमेश्वर तू ही धर्म्मी है और अपने विचारों में सच्चा ।
१३८ तू ने अति धर्म्म और सच्चाई के संग अपनी साक्षियां प्रचारी
१३९ हैं । मेरी ज्वलन मुझे खा लेती है क्योंकि मेरे बिरोधी
१४० तेरे वचनों को भुला देते हैं । तेरा वचन भली भांति ताया
१४१ गया और तेरा दास उस्से प्रेम रखता है । मैं अधम हूं
१४२ और तुच्छ पर तेरी आज्ञाओं को नहीं भूलता । तेरा धर्म्म
१४३ सर्वदा सच्चा है और तेरी व्यवस्था सत्य । सकेती और कष्ट
ने मुझे ले लिया है तेरी आज्ञाएं मेरी आनन्दता हैं ।
१४४ तेरी साक्षियां सनातन लों सच्ची हैं मुझे ज्ञान दे तो मैं जीता
रहूंगा ॥

क़ाफ़ ॥

१४५ मैं सारे मन से पुकारता हूं हे परमेश्वर मेरी सुन मैं तेरी
१४६ विधिन को पालन करूंगा । मैं तुझे पुकारता हूं मुझे बचा और
१४७ मैं तेरी साक्षियों को ताकता रहूंगा । मैं पौ फटने के समय
तेरे आगे आता हूं और दोहाई देता हूं तेरे वचनों का
१४८ आशावान हूं । मेरी आंखें रात के पहरों को आगे से ले लेती हैं
१४९ जिसतें तेरे बचन पर ध्यान रक्खूं । अपनी दया के समान
मेरा शब्द सुन हे परमेश्वर अपने विचारों के अनुसार मुझे जिला।
१५० बुराई के पीछा करवैया समीप हैं वे तेरी व्यवस्था से दूर हैं ।
१५१ हे परमेश्वर तू ही निकट है और तेरी सारी आज्ञाएं सत्य हैं ।
१५२ मैं ने आगे से तेरी ही साक्षियों से जाना है कि तू ने उन्हें
सदा के लिये स्थिर किया है ॥

रेश ॥

१५३ मेरी विपत्ति को देख और मुझे छुड़ा क्योंकि मैं ने तेरी
58

१५४ व्यवस्था को नहीं भुलाया है। मेरे पद के बिवाद में मेरी सहायता
कर और मुझे छुड़ा अपने वचन के समान मुझे जिला।
१५५ मुक्ति दुष्टों से दूर है क्योंकि वे तेरी बिधिन को नहीं ढूंढ़ते।
१५६ हे परमेश्वर तेरी दया बहुत हैं अपने न्यायों के समान मुझे
१५७ जिला। मेरे सतानेहारे और दुखदेनेहारे बहुत हैं मैं तेरी
१५८ साक्षियों से नहीं हटा। मैं उन परपंचियों को देखता और
१५९ घिन करता हूं जो तेरे वचन का पालन नहीं करते। देख
कि मैं तेरी आज्ञाओं से प्रीति रखता हूं हे परमेश्वर अपनी
१६० दया के समान मुझे जिला। तेरे वचन का आरंभ सत्य है
और तेरी सच्चाई का हर एक बिचार सदा के लिये है॥

शीन॥

१६१ अध्यक्ष अकारथ मेरे पीछे पड़े हैं और मेरा मन तेरे बचनों
१६२ से भयमान है। मैं बहुत लूट पानेहारों की नाईं तेरे बचन
१६३ पर मगन रहता हूं। मैं झूठ से घिन करता और बैर रखता
१६४ हूं तेरी व्यवस्था से प्रीति रखता हूं। मैं तेरे धर्म्म के न्याय
१६५ के कारण प्रति दिन सात बेर तेरी स्तुति करता हूं। तेरी
व्यवस्था के प्रेमियों को बड़ा चैन है और उन के लिये किसी
१६६ प्रकार की ठोकर नहीं है। हे परमेश्वर मैं तेरी मुक्ति का
१६७ आशावान हूं और तेरी आज्ञाओं के अनुसार करता हूं। मेरा
प्राण तेरी साक्षियों को पालन करता है और मैं उन से अत्यन्त
१६८ प्रेम रखता हूं। मैं तेरी आज्ञाओं और तेरी साक्षियों को पालन
करता हूं क्योंकि मेरी सारी चाल तेरे आगे हैं॥

ता॥

१६९ हे परमेश्वर मेरा बिलाप तेरे आगे पहुंचे अपने वचन के
१७० समान मुझे समझ दे। मेरी बिनती तेरे आगे आये अपने
१७१ बचन के समान मुझे छुड़ा। मेरे होंठ स्तुति बर्णन किया

१७२ करेंगे क्योंकि तू अपनी विधिन का मुझे ज्ञान देगा। मेरी
जीभ तेरे बचन का यह उत्तर दे कि तेरी सारी आज्ञाएं
१७३ सच्ची हैं। तेरा हाथ मेरी सहायता के लिये निकट रहे
१७४ क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को अंगीकार किया है। हे परमेश्वर
मैं तेरी मुक्ति की लालसा रखता हूं और तेरी व्यवस्था मेरे
१७५ आनन्द हैं। मेरा प्राण जीता रहे और तेरी स्तुति करे और
१७६ तेरे न्याय मेरी सहायता करें। मैं खोई हुई भेड़ की नाईं भटक
गया अपने दास को ढूंढ़ क्योंकि मैं ने तेरी आज्ञाओं को नहीं
भुलाया ॥

एकसौ बीसवां गीत ।

याचाओं का गान ॥

१ मैं ने अपनी सकेती में परमेश्वर को पुकारा और उस ने मेरी
२ सुनी। हे परमेश्वर मेरे प्राण को झूठ के होंठ से और छली
जीभ से छुड़ा ॥

३ हे छली जीभ वुह तुझे क्या देगा और तुझे क्या अधिक
४ करेगा। बलवान के चोखे किये हुए बाण रतमवृक्ष के कोएले
सहित ॥

५ हाय मुझ पर कि मैं मसक के संग परदेशी हूं और किदार
६ के तंबुओं के निकट रहता हूं। मेरा प्राण कुशल के बैर
७ रखनेहारे के संग अपनी भलाई के लिये अबेर लों रहा है। मैं
कुशल हूं और जब बातें करता हूं तब वे लड़ाई के लिये लैस
होते हैं ॥

एकसौ एक्कीसवां गीत ।

याचाओं का गान ॥

१ मैं अपनी आंखें पहाड़ों की ओर उठाता हूं मेरी सहाय कहां

२ से आवेगी। मेरी सहाय परमेश्वर स्वर्ग और पृथिवी के बनानेहारे
३ से है। वुह तेरे पांव को टलने न दे तेरा रक्षक न ऊंघे।
४ देख इसराएल का रक्षक न ऊंघेगा और न सोवेगा।
५ परमेश्वर तेरा रक्षक है परमेश्वर तेरे दहिने हाथ पर तेरा
६ छाया है। दिन को सूर्य्य तुझे कुछ दुख न देगा और रात को
७ चन्द्रमा। परमेश्वर तुझे सारी बुराई से बचावेगा तेरे प्राण को
८ बचावेगा। परमेश्वर तेरे आने जाने में तुझे बचावेगा अब से सदा लों॥

एकसौ बाईसवां गीत।

याचाओं का गान। दाऊद का॥

१ मैं उन से आनन्दित हूं जो मुझ से कहते हैं कि परमेश्वर
२ के मन्दिर में चलें। हे यरूसलम हमारे पांव तेरे फाटकों में
३ खड़े होते हैं। यरूसलम में जो ऐसे नगर की नाईं बनाया गया
४ जो अपने घरों में आप में संयुक्त है। जहां गोष्ठियां परमेश्वर
की गोष्ठियां इसराएल को साक्षी देने के लिये ऊपर चढ़ती हैं
५ जिसतें परमेश्वर के नाम का धन्यवाद करें। क्योंकि वहां
न्याय के लिये सिंहासन दाऊद के घराने के लिये सिंहासन
धरे हुए हैं॥

६ यरूसलम के कुशल के लिये प्रार्थना करो तेरे प्यार करनेहारे
७ कुशल से रहें। तेरी भीतों के भीतर कुशल हो तेरे भवनों
८ में चैन। मैं अपने भाइयों और अपने संगियों के लिये कहूं
९ कि तुझ में कुशल हो। मैं परमेश्वर अपने ईश्वर के मन्दिर के
कारण तेरी भलाई का खोजी रहूंगा॥

एकसौ तेईसवां गीत।

याचाओं का गान॥

१ मैं अपनी आंखें तेरी ओर उठाता हूं हे स्वर्ग पर बैठनेहारे।

२ देख जिस रीति से कि सेवक अपने स्वामियों के हाथों को ताकते
हैं जिस रीति से कि दासी अपनी स्वामिनी के हाथों को ताकती
है उसी रीति हमारी आंखें परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर हैं जब
३ लों कि वुह हम पर दया न करे। हम पर दया कर हे
परमेश्वर हम पर दया कर क्योंकि हम निन्दा से अत्यन्त
४ परिपूर्ण हुए। हमारे प्राण सुखियों की निन्दा से अहंकारियों के
ठट्ठे से अपने लिये अत्यन्त परिपूर्ण हुए॥

एकसा चौबीसवां गीत ।

याचाओं का गान। दाऊद का॥

१ यदि परमेश्वर न होता जो हमारी ओर हुआ हाय कि
२ इसराएल कहे। यदि परमेश्वर न होता जो हमारी ओर हुआ
३ जब मनुष्य के संतान हमारे विरोध में उठे। तो वे उसी समय
हमें जीता निंगल जाते जब उन का क्रोध हम पर भड़का।
४ उसी समय पानी हम पर बहि जाता और धारा हमारे प्राण के
५ ऊपर जाती। उस समय पानी उमड़ता हुआ पानी हमारे प्राण
के ऊपर जाता॥

६ परमेश्वर धन्य हो जिस ने हमें उन के दांतों में अहेर के
७ समान नहीं दिया। हमारा प्राण चिड़िया की नाईं ब्याधों के
८ जाल से छूट गया फंदा टूट गया और हम छूट गये। हमारी
सहाय परमेश्वर स्वर्ग और पृथिवी के बनानेहारे के नाम से है॥

एकसा पचीसवां गीत ।

याचाओं का गान॥

१ परमेश्वर पर भरोसा रखनेहारे सैहून पर्वत की नाईं हैं जो न
२ टलेगा परन्तु सदा लों स्थिर रहेगा। यरूसलम उस के आस पास
पर्वत हैं और परमेश्वर अपने लोगों के चहुंओर है अब से और

३ सदा लों। क्योंकि दुष्टता का दण्ड धर्म्मियों के भाग पर न
रहेगा जिसतें धर्म्मी अपने हाथ बुराई पर न बढ़ावें॥
४ हे परमेश्वर भलों से भलाई कर और उन से जो अपने
५ अन्तःकरणों में खरे हैं। और जो अपने टेढ़े टेढ़े मार्गों की
ओर बहक जाते हैं उन्हें परमेश्वर कुकर्म्मियों के संग चलावेगा
इसराएल पर कुशल हो॥

एकसौ छब्बीसवां गीत।

याचाओं का गान॥

१ जब परमेश्वर सैहून के फिरनेहारों की ओर फिरा तब हम
२ स्वप्नदर्शियों की नाईं थे। उसी समय हमारा मुंह हंसी से और
हमारी जीभ आनन्द के शब्द से भर गई उसी समय उन्हों ने
जातिगणों में कहा कि परमेश्वर ने इन के साथ बड़े कार्य्य
३ किये हैं। परमेश्वर ने हमारे साथ बड़े कार्य्य किये हैं हम
आनन्दित हैं॥
४ हे परमेश्वर हमारी बंधुआई की ओर फिर उन धारों की
५ नाईं जो दक्षिण में हैं। जो आंसुओं के साथ बोते हैं वे
६ आनन्द के साथ लवेंगे। वुह अपने बीज का बोझ उठाये हुए
रोता हुआ चला जायेगा अपने पूले उठाये हुए आनन्द के साथ
आयेगा आयेगा॥

एकसौ सत्ताईसवां गीत।

याचाओं का गान। सुलेमान का॥

१ यदि परमेश्वर घर न बनावे तो उस के बनवैया अकार्थ
उस में परिश्रम करते हैं यदि परमेश्वर नगर की रक्षा न करे तो उस
२ का रखवाल व्यर्थ जागता है। तुम्हारे लिये वृथा है कि तुम
तड़के उठते अबेर में बैठते परिश्रमों की रोटी खाते हो

वुह तो ऐसी वस्तें अपने प्यार करनेहारे को नींद में देता
है ॥
३ देखो लड़के परमेश्वर की ओर से अधिकार हैं गर्भ का
४ फल प्रतिफल है । जैसे बलवान के हाथ में बाण तैसे ही
५ तरुणाई के लड़के हैं । क्या ही धन्य वुह मनुष्य जिस ने
अपने तूण को उन से भर दिया है वे लज्जित न होंगे जब
अपने शत्रुओं से द्वार पर बार्त्ता करेंगे ॥

एकसौ अट्ठाईसवां गीत ।

याचाओं का गान ॥

१ परमेश्वर का हर एक डरवैया क्या ही धन्य है जो उस के
२ मार्गों पर चलता है । जब तू अपने हाथों की कमाई खायेगा
३ तब तू क्या ही धन्य और तेरे लिये भलाई । तेरी पत्नी
फलवन्त दाख की नाईं तेरे घर के भीतर तेरे बच्चे तेरे मंच
की चारों ओर जलपाई के पौधों की नाईं होंगे ॥
४ देख कि जो मनुष्य परमेश्वर से डरता है वुह इसी रीति
५ से धन्य होगा । परमेश्वर तुझे सेहून से आशीष दे और तू
६ जीवन भर यरूसलम की भलाई पर दृष्टि किया कर । और
अपने बच्चों के बच्चों को देख इसराएल पर कुशल हो ॥

एकसौ उंतीसवां गीत ।

याचाओं का गान ॥

१ मेरी तरुणाई से उन्हों ने बहुधा मुझे सताया हाय कि
२ इसराएल कहे । मेरी तरुणाई से उन्हों ने बहुधा मुझे सताया
३ तद भी मुझ पर प्रबल न हुए । हलवाहों ने मेरी पीठ पर हल
४ जोता उन्हों ने अपनी रेघारियां लंबी किईं । परमेश्वर धर्म्मी
है उस ने दुष्टों की रस्सी को काट डाला ॥

५ सैहून के सारे वैर रखनेहारे लज्जित होंगे और पीछे
६ हटाये जायेंगे। वे छत्तों की घास की नाईं होंगे जो उस्से
७ पहिले कि कोई उसे उखाड़े सूख जाती है। जिस्से लवनेहारा
अपने हाथ को नहीं भरता और पूलों का बंधवैया अपनी
८ अंकवार को। और मार्ग के जवैया नहीं कहते हैं कि परमेश्वर
की आशीष तुम पर आवे हम तुम को परमेश्वर के नाम से
आशीष देते हैं॥

एकसौ तीसवां गीत।

याचाओं का गान॥

१ हे परमेश्वर मैं गहिराओं में से तुझे पुकारता हूं।
२ हे प्रभु मेरा शब्द सुन तेरे कान मेरे शब्द की बिन्तियों पर
३ लगे रहें। हे परमेश्वर यदि तू अधर्म्मों पर दृष्टि करे तो हे
४ प्रभु कौन खड़ा रहेगा। क्योंकि तेरे पास क्षमा है जिसतें तुझ
से डरें॥

५ मैं परमेश्वर की बाट जोहता हूं मेरा प्राण बाट जोहता है
६ और मैं उस के वचन का आशावान हूं। मेरा प्राण बिहान के
बाट जोहनेहारों से हां बिहान के बाट जोहनेहारों से अधिक
प्रभु की बाट जोहता है॥

७ हे इसराएल परमेश्वर पर आशा रख क्योंकि परमेश्वर के
८ पास दया है और उस के पास मुक्ति की बहुताई। और वही
इसराएल को उस के सारे अधर्म्मों से छुड़ावेगा॥

एकसौ एकतीसवां गीत।

याचाओं का गान। दाऊद का॥

१ हे परमेश्वर मेरा मन अहंकारी नहीं है और मेरी आंखें ऊंची
नहीं हैं और मैं बड़ी बातों में और उन में जो मेरे लिये

२ आश्चर्य्यित हैं नहीं लवलीन होता । यदि मैं ने अपने प्राण को
सदृश और चुपचाप नहीं किया है जैसा दूध छुड़ाया हुआ बालक
अपनी माता पर विश्राम करता है तो ईश्वर जानता है दूध
छुड़ाये हुए बालक के समान मेरा प्राण मुझ पर विश्राम करता
३ है। हे इसराएल परमेश्वर का आशावान हो अब से और
सदा लों ॥

एकसौ बत्तीसवां गीत ।

याचाओं का गान ॥

१ हे परमेश्वर दाऊद के लिये उस के सारे क्लेशित होने को
२ स्मरण कर। जिस ने परमेश्वर से किरिया खाई और यअकूब
३ के शक्तिमान की मनौती मानी। कि यदि मैं अपने घर के
४ डेरे में जाऊं अपने बिछौने की खाट पर चढूं। यदि अपनी आंखों
५ में नींद अपने पलकों में औंघाई को आने दूं। जब लों
परमेश्वर के लिये स्थान यअकूब के शक्तिमान के लिये
६ निवासस्थान न पाऊं तो ईश्वर बूझे। देखो हम ने इफ़राता में
उस के विषय में सुना हम ने उसे अरण्य के खेतों में पाया।
७ हम उस के तंबुओं में आवें उस के पांव के नीचे की पीढ़ी
को दण्डवत करें ॥

८ हे परमेश्वर अपने विश्रामस्थान को उठ तू और तेरे पराक्रम
९ की मंजूषा। तेरे याजक सच्चाई का वस्त्र पहिरे हों और तेरे साधु
१० आनन्द का शब्द करें। अपने दास दाऊद के कारण सुन अपने
अभिषिक्त के मुंह को न फिरा ॥

११ परमेश्वर ने सच्चाई के साथ दाऊद से किरिया खाई है और
उस्से न फिरेगा कि मैं तेरी देह के फल से तेरे लिये सिंहासन
१२ पर बैठाऊंगा। यदि तेरे लड़के मेरी वाचा को पालन करेंगे
और मेरी साक्षियों को जो मैं उन्हें सिखाऊंगा तो उन के लड़के

१३ भी सदा लों तेरे लिये सिंहासन पर बैठे रहेंगे। क्योंकि परमेश्वर
ने सेहून को चुन लिया है और चाहा कि वुह उस के लिये
१४ निवास हो। यह सदा लों मेरा विश्रामस्थान है यहीं मैं बास
१५ करूंगा क्योंकि मैं ने उसे चाहा है। मैं उस के भोजन पर
आशीष देऊंगा आशीष देऊंगा उस के कंगालों को रोटी से तृप्त
१६ करूंगा। और उस के याजकों को मुक्ति का वस्त्र पहिराऊंगा
और उस के साधु आनन्द का शब्द करेंगे आनन्द का शब्द
१७ करेंगे। वहां मैं दाऊद के लिये सींग जमाऊंगा मैं ने अपने
१८ अभिषिक्त के लिये दीपक सिद्ध किया है। मैं उस के बैरियों
को लाज का बस्त्र पहिराऊंगा और उस पर उस का मुकुट खिला
रहेगा॥

एकसौ तेंतीसवां गीत।

याचाओं का गान। दाऊद का॥

१ देखो क्या ही भला और क्या ही मनोहर भाइयों का साथ
२ साथ रहना है। उस तेल उस अच्छे तेल की नाईं है जो सिर
पर और दाढ़ी अर्थात् हारून की दाढ़ी पर बहि जाता है जो
३ उस के पहिरावे के खूंट लों बहि जाता है। हरमून की ओस
की नाईं वुह ओस है जो सेहून के पहाड़ों पर गिरती है क्योंकि
वहां परमेश्वर ने आशीष अर्थात् जीवन को सदा के लिये
आज्ञा किया॥

एकसौ चौंतीसवां गीत।

याचाओं का गान॥

१ देखो हे परमेश्वर के सारे सेवको जो रातों को परमेश्वर के घर
२ में खड़े रहते हो परमेश्वर को धन्यबाद कहो। अपने हाथ
धर्म्मधाम की ओर उठाओ और परमेश्वर को धन्यबाद कहो।

३ परमेश्वर स्वर्ग और पृथिवी का बनानेहारा सैहून से तुझे
आशीष दे ॥

एकसौ पैंतीसवां गीत ।

१ हलिलूयाह। परमेश्वर के नाम की स्तुति करो हे परमेश्वर के
२ सेवको उस की स्तुति करो। जो परमेश्वर के घर में हमारे
३ ईश्वर के घर के आंगनों में खड़े रहते हो। हलिलूयाह। क्योंकि
परमेश्वर भला है उस के नाम की स्तुति गाओ क्योंकि वुह
सुन्दर है ॥

४ क्योंकि परमेश्वर ने यअकूब को चुन लिया इसराएल को
५ अपने विशेष अधिकार के लिये। क्योंकि मैं जानता हूं कि
६ परमेश्वर महान है और हमारा प्रभु सारे देवों से श्रेष्ठ। जो
कुछ परमेश्वर चाहता है वुह सब स्वर्ग और पृथिवी में समुद्रों में
७ और गहिराओं में करता है। पृथिवी की सीमों से भाफों को उठाता
है मेंह के लिये उस ने बिजलियों को बनाया पवन को अपने
८ भंडारों से निकालता है। जिस ने मिस्र के पहिलौठों को मनुष्य
९ से लेके पशु लों मार डाला। लक्षण और आश्चर्य्य हे मिस्र तेरे
१० मध्य फ़िरऊन और उस के सारे सेवकों पर भेजे। जिस ने
बहुत जातिगणों को मार डाला और पराक्रमी राजाओं को
११ घात किया। अर्थात् अमूरियों के राजा सीहून को और बसनिया
१२ के राजा ऊज को और कनआन के सारे राज्यों को। और उन
का देश अधिकार में अपने लोगों इसराएल को अधिकार में दिया॥

१३ हे परमेश्वर तेरा नाम सर्वदा है हे परमेश्वर तेरा स्मरण
१४ पीढ़ी से पीढ़ी लों है। क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों का न्याय
१५ करेगा और अपने सेवकों के लिये पछतायेगा। अन्यदेशियों की
१६ मूर्त्ति रूपा और सोना हैं मनुष्य के हाथों की क्रिया। वे मुंह
रखती हैं पर बोलती नहीं आंखें रखती हैं पर देखती नहीं।

१७ कान रखती हैं पर सुनती नहीं हां उन के मुंह में कुछ स्वास
१८ नहीं है। उन्हीं के समान उन के बनवैये होंगे और हर एक
जो उन पर भरोसा रखता है॥
१९ हे इसराएल के घराने परमेश्वर को धन्यवाद कहो हे हारून
२० के घराने परमेश्वर को धन्यवाद कहो। हे लावी के घराने
परमेश्वर को धन्यवाद कहो हे परमेश्वर के डरनेहारो परमेश्वर
२१ को धन्यवाद कहो। परमेश्वर जो यरूसलम में बास करता है
सैहून से धन्य हो। हल्लिलूयाह॥

एकसौ छत्तीसवां गीत।

१ परमेश्वर का धन्य मानो क्योंकि वुह भला है क्योंकि उस
२ की दया सर्वदा है। ईश्वरों के ईश्वर का धन्य मानो क्योंकि
३ उस की दया सर्वदा है। प्रभुओं के प्रभु का धन्य मानो क्योंकि
उस की दया सर्वदा है॥
४ उस का जो अकेला आश्चर्य्य और बड़े काम करता है क्योंकि उस
५ की दया सर्वदा है। उस का जिस ने स्वर्ग को बुद्धि के साथ
६ बनाया क्योंकि उस की दया सर्वदा है। उस का जिस ने
पृथिवी को पानी के ऊपर फैलाया क्योंकि उस की दया सर्वदा
७ है। उस का जिस ने बड़ी बड़ी ज्योति बनाईं क्योंकि उस की
८ दया सर्वदा है। सूर्य्य को दिन पर प्रभुता के लिये क्योंकि
९ उस की दया सर्वदा है। चन्द्रमा और तारागण को रात पर
प्रभुता के लिये क्योंकि उस की दया सर्वदा है॥
१० उस का जिस ने मिस्र को उन के पहिलौठों की मृत्यु में
११ मारा क्योंकि उस की दया सर्वदा है। और इसराएल को उन
के मध्य से निकाल लाया क्योंकि उस की दया सर्वदा है।
१२ प्रबल हाथ और फैली हुई भुजा से क्योंकि उस की दया सर्वदा
१३ है। उस का जिस ने लाल समुद्र को दो भाग किया क्योंकि

१४ उस की दया सर्वदा है । और इसराएल को उस के मध्य से
१५ पार कर दिया क्योंकि उस की दया सर्वदा है । और फ़िरऊन
और उस की सेना को लाल समुद्र में झाड़ डाला क्योंकि उस
१६ की दया सर्वदा है । उस का जिस ने अरण्य में अपने लोगों
की अगुआई किई क्योंकि उस की दया सर्वदा है ॥
१७ उस का जिस ने बड़े राजाओं को मार डाला क्योंकि उस
१८ की दया सर्वदा है । और बलवान राजाओं को मार डाला क्योंकि
१९ उस की दया सर्वदा है । अमूरियों के राजा सीहून को क्योंकि उस
२० की दया सर्वदा है । और ऊज बसनिये के राजा को क्योंकि
२१ उस की दया सर्वदा है । और उन की भूमि अधिकार के समान
२२ दिई क्योंकि उस की दया सर्वदा है । अपने सेवक इसराएल का
अधिकार क्योंकि उस की दया सर्वदा है ॥
२३ जिस ने हमारी दुर्दशा में हमें स्मरण किया क्योंकि उस
२४ की दया सर्वदा है । और हमें हमारे बैरियों से छीन लिया
२५ क्योंकि उस की दया सर्वदा है । जो सारे शरीर को भोजन
२६ देता है क्योंकि उस की दया सर्वदा है । स्वर्ग के सर्वशक्तिमान
का धन्यबाद करो क्योंकि उस की दया सर्वदा है ॥

एकसौ सैंतीसवां गीत ।

१ बाबुल की नदियों पर वहां जब हम ने सैहून को स्मरण
२ किया तो बैठे और रोये भी । बेत के वृक्षों पर उस के मध्य
३ हम ने अपनी बीणों को लटका दिया । क्योंकि वहां हमारे
बंधुआ करवैये गीतों के बचनों के और हमारे लूटनेहारे आनन्द
के चाहक हुए कि हमारे लिये सैहून के गीतों से कुछ गाओ ॥
४ हम क्योंकर पराई भूमि पर परमेश्वर का गीत गावें ।
५ हे यरूसलम यदि मैं तुझे भूल जाऊं तो मेरा दहिना हाथ
६ अपनी बुद्धि को भूल जाय । यदि मैं तुझे स्मरण न करूं

यदि मैं यरूसलम को अपनी बड़ी से बड़ी आनन्दता पर श्रेष्ठ
न जानूं तो मेरी जीभ मेरे तालू से लग जाय ॥
७ हे परमेश्वर अदूम के संतान के दण्ड के लिये यरूसलम
के दिन को स्मरण कर जो कहते थे कि उस की जड़ मूल लों
८ उजाड़ करो उजाड़ करो। हे बाबुल की बेटी जो उजाड़ी गई क्या
ही धन्य वुह जो तुझे उस व्यवहार का पलटा देगा जो
९ व्यवहार तू ने हमारे साथ किया। क्या ही धन्य वुह जो तेरे
बालकों को पकड़ लेगा और पत्थर पर पटकेगा ॥

एकसौ अठतीसवां गीत।

दाऊद का गीत ॥

१ मैं अपने सारे मन से तेरी स्तुति करूंगा देवों के आगे तेरी
२ स्तुति गाऊंगा। मैं तेरे पवित्र मन्दिर की ओर दंडवत करूंगा
और तेरे नाम की स्तुति करूंगा तेरी दया और तेरी सत्यता
के कारण क्योंकि तू ने अपने सारे नाम के ऊपर अपने वचन को
३ अधिक बढ़ाया है। जिस दिन मैं ने पुकारा तू ने मेरी सुनी
४ तू मुझे मेरे आत्मा में बल के साथ बलवन्त करता है। हे
परमेश्वर पृथिवी के सारे राजा कि वे तेरे मुंह के वचन सुन
५ चुके हैं तेरा स्वीकार करेंगे। और वे परमेश्वर के मार्गों में
गायेंगे क्योंकि परमेश्वर का ऐश्वर्य्य महान होगा ॥
६ क्योंकि परमेश्वर महान है और नम्र को देखता है और
७ अहंकारी को दूर से जानता है। यदि मैं संकट के मध्य चलूं
तो तू मुझे जीता रक्खेगा मेरे बैरियों के क्रोध के ऊपर अपना
हाथ बढ़ावेगा और अपने दहिने हाथ से मुझे बचावेगा।
८ परमेश्वर ने जो मेरे लिये आरंभ किया है उसे पूरा करेगा हे
परमेश्वर तेरी दया सर्वदा है अपने हाथों की क्रिया को त्याग
न कर ॥

एकसा उंतालीसवां गीत ।

प्रधान बजनिये के लिये । दाऊद का गीत ॥

१ हे परमेश्वर तू ने मेरा खोज किया और जानता है ।
२ तू ही मेरे बैठने और उठने को जानता है दूर से मेरी चिन्ता को
३ बूझता है । तू मेरे मार्ग और मेरे शयन को जांचता है और मेरे
४ सारे मार्गों को पहिचानता है । क्योंकि मेरी जीभ पर कोई ऐसी
५ बात नहीं है देख जिसे हे परमेश्वर तू सर्वथा नहीं जानता । तू
आगे पीछे मुझे घेरता है और अपना हाथ मुझ पर रखता है ॥
६ यह ज्ञान मेरे लिये आश्चर्य्यित है और ऊंचा में उस लों
७ नहीं पहुंच सक्ता । तेरे आत्मा से मैं किधर जाऊं और तेरे
८ आगे से किधर भागूं । यदि स्वर्ग पर चढ़ जाऊं तो वहां तू
है और समाधि को बिछौना बनाऊं देख तू वहां भी है ।
९ मैं बिहान के पंखों को फैलाऊंगा समुद्र के अन्त सिवाने में
१० रहूंगा । वहां भी तेरा हाथ मेरी अगुआई करेगा और तेरा दहिना
११ हाथ मुझे पकड़ेगा । और मैं कहता हूं कि केवल अंधियारा
मुझे दबाये डालता है और उंजियाला मेरे आस पास रात
१२ हो गया । अंधियारा भी तुझ पर अंधियारी नहीं कर देता और
रात दिन की नाईं चमकती है जैसा अंधियारा वैसा उंजियाला ।
१३ क्योंकि तू मेरे अन्तःकरण का स्वामी है मेरी माता की कोख
१४ में तू ने मुझे ढांप लिया । मैं तेरी स्तुति करता हूं क्योंकि
मैं आश्चर्य्य रीति से बनाया गया हूं तेरे कार्य्य अद्भुत हैं और
१५ यह मेरा प्राण भली भांति जानता है । मेरा पिण्डा तुझ से
छिपा न रहा जब मैं गुप्त में बनाया गया पृथिवी की नीचाई में
१६ बिना गया । तेरी आंखों ने मेरे अधूरे मूल को देखा और तेरी
बही में मेरे सब दिन लिखे जाते चित्रकारी हो जाते थे यद्यपि
उन में से एक भी भाववान न था ॥

१७ और हे सर्वशक्तिमान मेरे निकट तेरे संकल्प क्या ही बहुमूल्य
१८ हैं उन का समुदाय क्या ही बड़ा है। मैं उन्हें गिन्ने चाहता हूं
पर वे बालू से कहीं अधिक हैं मैं जागा और अब लों तेरे साथ
हूं॥
१९ हे ईश्वर हाय कि तू दुष्ट को नाश करे और हे हत्यारे मनुष्यो
२० मेरे पास से दूर हो। जो दुष्टता के लिये तेरा स्मरण करते हैं
२१ और तेरे बैरी तेरा नाम झूठ पर लगाते हैं। हे परमेश्वर क्या
मैं तेरे बैरियों से बैर न रक्खूं और तेरे विरोधियों से घिन न
२२ करूं। अत्यन्त बैर के साथ मैं उन से बैर रखता हूं वे मेरे
२३ निकट बैरी समान हैं। हे सर्वशक्तिमान मेरा खोज कर और मेरे
अन्तःकरण को जान मुझे ताड़ और मेरी चिन्ताओं को जान।
२४ और देख यदि मुझ में दुख का मार्ग है और सनातन के मार्ग
पर मेरी अगुआई कर॥

एकसौ चालीसवां गीत।

प्रधान बजनिये के लिये। दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर मुझे दुष्ट मनुष्य से छुड़ा अंधेरी मनुष्य से तू मेरी
२ रक्षा करेगा। जो मन में बुराइयों की चिन्ता करते हैं वे
३ नित लड़ाइयों के लिये एकट्ठा होते हैं। उन्हों ने सांप की नाईं
अपनी जीभ को चोखा किया है नाग का विष उन के होठों
४ के नीचे है। सिलाह। हे परमेश्वर मुझे दुष्ट के हाथों से बचा
अंधेरी मनुष्य से तू मेरी रक्षा करेगा जिन्हों ने मेरे पाओं को
५ ढा देने की चिन्ता किई है। अहंकारियों ने मेरे लिये फंदा
और रस्सियां छिपाई हैं उन्हों ने मार्ग की ओर जाल बिछाया
है उन्हों ने मेरे लिये फंदे लगाये हैं। सिलाह॥
६ मैं ने परमेश्वर से कहा है कि मेरा सर्वशक्तिमान तू ही है
७ हे परमेश्वर मेरी बिनतियों के शब्द पर कान धर। हे परमेश्वर

प्रभु मेरी मुक्ति के पराक्रम तू ने संग्राम के दिन मेरे सिर को
८ ढांपा है। हे परमेश्वर दुष्ट की इच्छाओं को पूरी न कर उस
की युक्ति को पूरा न कर नहीं तो वे ऊंचे होंगे। सिलाह॥
९ मेरे घेरनेहारों के सिर को उन के होंठों की बुराई ढांपेगी।
१० उन पर अंगारे डाले जायेंगे वुह उन्हें आग में गिरायेगा और
११ गहिरे पानियों में जहां से वे न उठेंगे। कुवक्ता मनुष्य
पृथिवी पर स्थिर न रहेगा और न अन्धेरी जन वुह दुष्ट को
१२ विनाश लों अहेर करेगा। मैं जानता हूं कि परमेश्वर दुखी
१३ का न्याय और दरिद्रों का विचार करेगा। केवल धर्म्मी तेरे
नाम का धन्य मानेंगे खरे जन तेरे आगे बैठेंगे॥

एकसौ एकतालीसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर मैं तुझे पुकारता हूं मेरी ओर शीघ्रता कर जब
२ मैं तुझे पुकारूं तब मेरे शब्द पर कान धर। मेरी प्रार्थना
सुगंध की नाईं तेरे आगे उपस्थित हो मेरे हाथों का उठाना
३ सांझ की भेंट की नाईं। हे परमेश्वर मेरे मुंह पर पहरू बैठा मेरे
४ होंठों के द्वार की रक्षा कर। मेरे मन को बुरी बात की ओर
न झुकने दे कि कुकर्म्मियों के संग दुष्ट कर्म्म करूं उन मनुष्यों
के संग जो बुराई करते हैं और मैं उन के स्वादित भोजनों
५ में से न खाऊं। धर्म्मी ईश्वर मुझे कृपा के संग मारे और दपटे
मेरा सिर सिर के तेल से नाह न करे क्योंकि वुह फिर अवश्य
होगा और मेरी प्रार्थना उन की बुराइयों के मध्य फिर किई
जायेगी॥
६ उन के न्याई पत्थर के हाथों में गिराये गये तब उन्हों
७ ने मेरी बातें सुनीं कि वे मीठी हैं। जैसा मनुष्य पृथिवी को
हर से जोतता और चीरता है वैसा ही हमारी हड्डियां समाधि

८ के मुंह पर बिथराई गई। क्योंकि हे परमेश्वर प्रभु मेरी आंखें
तेरी ओर हैं मैं ने तुझ पर भरोसा रक्खा है मेरे प्राण को न
९ उंडेल। उस फंदे के हाथों से जो उन्हों ने मेरे लिये बनाया
१० है और कुकर्म्मियों के जालों से मुझे बचा रख। दुष्ट अपने फंदों
में गिरें जिस समय कि मैं बच जाऊं॥

एकसौ बयालीसवां गीत।

दाऊद का उपदेशदायक गीत जब वुह खोह में था।

प्रार्थना॥

१ मैं अपने शब्द से परमेश्वर को पुकारता हूं अपने शब्द से
२ परमेश्वर से बिन्ती करता हूं। मैं अपना सोच उस के आगे
३ प्रगट करता हूं अपना दुख उससे वर्णन करता हूं। इस कारण
कि मेरा प्राण मेरे भीतर व्याकुल है और तू मेरे मार्ग को जानता
है उस मार्ग में जिस में मैं चलता हूं उन्हों ने मेरे लिये
४ छिपाके फंदा लगाया है। दहिनी ओर ताक और देख कि मेरा
पहिचान्नेहारा नहीं है शरण मुझ से जाता रहा कोई मेरे प्राण
५ का पुछवैया नहीं। हे परमेश्वर मैं ने तुझ को पुकारा है मैं ने
कहा कि तू ही मेरा शरणस्थान है जीवन के देश में मेरा
६ भाग। मेरे रोने पर सुरत लगा क्योंकि मैं बहुत दुर्बल हो
गया मुझे मेरे सतानेहारों से छुड़ा क्योंकि वे मुझ से बली हैं।
७ मेरे प्राण को बंदीगृह से छुड़ा जिसतें तेरे नाम की स्तुति
किई जाय धर्म्मी मुझे घेरेंगे जब तू मुझ पर कृपा का व्यवहार
करेगा॥

एकसौ तेंतालीसवां गीत।

दाऊद का गीत॥

१ हे परमेश्वर मेरी प्रार्थना सुन मेरी बिन्तियों पर कान रख

अपनी सच्चाई के साथ मेरी सुन और अपने धर्म्म के साथ ।
२ और अपने सेवक के संग लड़ने के लिये विचार में मत आ
क्योंकि तेरे सन्मुख कोई प्राणी निर्दोष न ठहरेगा ॥
३ क्योंकि बैरी मेरे प्राण के पीछे पड़ा है मेरे जीवन को भूमि
लों लताड़ता है मुझे अगिले मृतकों की नाईं अंधियारे स्थानों
४ में बैठाता है । और मेरा प्राण मुझ में मूर्छित है मेरा मन मुझ
५ में उजड़ गया । मैं अगिले दिनों को स्मरण करता हूं तेरे
सारे कार्य्यों पर सोच करता हूं तेरे हाथ की रचना पर
६ ध्यान करता हूं । मैं अपने हाथ तेरी और फैलाता हूं मेरा
प्राण सूखी भूमि की नाईं तेरा प्यासा है । सिलाह ॥
७ हे परमेश्वर शीघ्रता कर मेरी सुन मेरा प्राण क्षीण हो गया
अपना मुंह मुझ से मत छिपा नहीं तो मैं गड़हे में गिरनेहारों के
८ साथ मिलाया जाऊंगा । बिहान को मुझे अपनी दया सुना
क्योंकि मैं तुझ पर भरोसा रखता हूं मुझे वुह मार्ग बता जिस
९ पर चलूं क्योंकि मैं अपना प्राण तेरी और उठाता हूं । हे
परमेश्वर मुझे मेरे बैरियों से छुड़ा मैं तेरे पास अपने को छिपाता
१० हूं । मुझे सिखला कि तेरी इच्छा के समान करूं क्योंकि तू ही
मेरा ईश्वर है तेरा आत्मा भला है वुह मुझे समथर भूमि पर
११ अगुआई करे । हे परमेश्वर तू अपने नाम के लिये मुझे
जिलावेगा तू अपने धर्म्म के साथ मेरे प्राण को सकेती से
१२ निकालेगा । और तू अपनी दया के साथ मेरे बैरियों को नाश
करेगा और मेरे प्राण के दुख देनेहारों को नाश करेगा क्योंकि
मैं तेरा सेवक हूं ॥

एकसौ चौंतालीसवां गीत ।

दाऊद का गीत ॥

१ परमेश्वर मेरी चटान धन्य हो जो मेरे हाथों को युद्ध करना

२ मेरी अंगुलियों को लड़ना सिखलाता है। मेरा अनुग्रह करनेहारा
और मेरा गढ़ मेरा ऊंचा स्थान और मेरा छुड़ानेवाला मेरी ढाल
और मैं उस पर भरोसा रखता हूं जो मेरे लोगों को मेरे नीचे
करता है॥
३ हे परमेश्वर मनुष्य क्या है कि तू उसे जाने मनुष्य का पुत्र
४ कि तू उस का सोच करे। मनुष्य व्यर्थ वस्तु की नाईं है उस
के दिन बीतते हुए छाये के समान हैं॥
५ हे परमेश्वर अपने स्वर्गों को झुका और नीचे आ पहाड़ों को
६ छू और उन से धूआं उठे। बिजुली गिरा और उन्हें बिथरा
७ अपने बाण चला और उन्हें घबरा दे। अपने हाथ ऊपर से
बढ़ा मुझे बचा और मुझे छुड़ा बहुत पानियों से परदेशी संतानों
८ के हाथ से। जिन का मुंह बृथा कहता है और उन का दहिना
हाथ झूठ का दहिना हाथ है॥
९ हे ईश्वर मैं तेरे लिये नया गीत गाऊंगा दसतार के बीन के
१० साथ तेरे लिये गाऊंगा। जो राजाओं को मुक्ति देता है जो
दाऊद अपने दास को दुखदायक की तलवार से छुड़ाता है।
११ मुझे बचा और मुझे छुड़ा परदेशियों के वंश के हाथ से जिन
का मुंह बृथा कहता है और उन का दहिना हाथ झूठ
१२ का दहिना हाथ है। जिसतें हमारे बेटे पौधों की नाईं अपनी
तरुणाई में बड़े हों हमारी बेटियां कोने के पत्थरों की नाईं
१३ मन्दिर की बनावट के लिये खोदी जायें। हमारे खत्ते पूर्ण
नाना प्रकार का अनाज देते हों हमारी भेड़ें हमारे चोचों में
१४ लखूखा सहस्र जनती रहें। हमारे बैल लदे हुए हों और कुछ
हानि और बिगाड़ न हो और हमारे मार्गों में कुछ बिलाप न
१५ हो। क्या ही धन्य वे लोग जिन की यह दशा है क्या ही
धन्य वे लोग जिन का ईश्वर परमेश्वर है॥

एकसौ पैंतालीसवां गीत ।

दाऊद की स्तुति ॥

१ हे मेरे ईश्वर राजा मैं तेरी बड़ाई करूंगा और मैं सदा
२ सर्बदा तेरे नाम का धन्यवाद करूंगा। मैं प्रति दिन तेरा
धन्यवाद करूंगा और सदा सर्बदा तेरे नाम की स्तुति करूंगा।
३ परमेश्वर महान और अत्यन्त स्तुति के योग्य है और उस की
४ महिमा खोज से बाहर। एक पीढ़ी दूसरी पीढ़ी से तेरे कार्य्यों
की स्तुति करती रहेगी और लोग तेरे महत कार्य्यों का वर्णन
५ किया करेंगे। मैं तेरी महिमा की बिभवमय सुन्दरता पर और
६ तेरे आश्चर्य्य कार्य्यों की बातों पर सोच किया करूंगा। और
वे तेरे भयंकर कार्य्यों के बल की चर्चा करेंगे और मैं तेरी
७ बड़ाइयों का वर्णन करूंगा। वे तेरी अत्यन्त भलाई का चर्चा
किया करेंगे और तेरी सच्चाई पर गान करेंगे ॥
८ परमेश्वर कृपालु और दयालु है धीर्य्यवान और दया में बड़ा।
९ परमेश्वर सब के लिये भला है और उस की दया उस के सारे कार्य्यों
१० पर हैं। हे परमेश्वर तेरी सारी क्रिया तेरी स्तुति करती हैं और
११ तेरे साधु तेरा धन्यवाद करते हैं। वे तेरे राज्य के ऐश्वर्य्य की
१२ चर्चा करते हैं और तेरे सामर्थ्य की बातें करते हैं। जिसतें
मनुष्य के संतान को उस के महान कार्य्यों का और उस के राज्य
१३ की सुन्दरता के बिभव का ज्ञान दें। तेरा राज्य सनातन का
राज्य है और तेरी प्रभुता पीढ़ी से पीढ़ी लों ॥
१४ परमेश्वर सारे गिरवैयों का थामनेहारा और सारे झुके हुओं का
१५ उठानेहारा है। सभों की आंखें तेरी ओर लगी रहती हैं और तू
१६ समय पर उन्हें उन का भोजन देता है। तू अपनी मुट्ठी खोलता है
१७ और हर एक जीवधारी को उस की इच्छा से संतुष्ट करता है। परमेश्वर
अपने सारे मार्गों में धर्म्मी और अपने सब कार्य्यों में दयालु है ॥

१८ परमेश्वर अपने सारे पुकारनेहारों के निकट है सभों के निकट
१९ जो सच्चाई के साथ उसे पुकारते हैं। वुह अपने डरवैयों की
इच्छा पूरी करेगा और उन की दोहाई सुनेगा और उन्हें
२० बचावेगा। परमेश्वर अपने सारे प्रेमियों का रक्षक है और सारे
२१ दुष्टों को नाश करेगा। मेरा मुंह परमेश्वर की स्तुति की बातें
करेगा और सारे प्राणी सदा सर्वदा उस के पवित्र नाम को
धन्यवाद कहा करेंगे॥

एकसौ छियालीसवां गीत।

१ हल्लिलूयाह। हे मेरे प्राण परमेश्वर की स्तुति कर।
२ मैं जब लों जीता रहूंगा परमेश्वर की स्तुति करूंगा अपने अस्ति
३ रहने लों अपने ईश्वर के लिये मैं गाऊंगा। अध्यक्षों पर भरोसा न
४ करो मनुष्य के संतान पर जिस्से छुटकारा कुछ नहीं। उस का स्वास
निकल जाता है वुह अपनी मिट्टी में फिर जाता है उसी दिन
उस की चिन्ता नाश हो जाती हैं॥

५ क्या ही धन्य वुह जिस का उपकारक यअकूब का सर्वशक्तिमान
६ है और उस का भरोसा परमेश्वर अपने ईश्वर पर है। जिस ने स्वर्ग
और पृथिवी समुद्र और जो कुछ उन में है सब बनाया जो सदा
७ सर्वदा सच्चाई का रक्षक है। जो सताये हुओं के लिये विचार
करता है भूखों को रोटी देता है परमेश्वर बंधुओं को खोल
देता है॥

८ परमेश्वर अंधों की आंखें खोल देता है परमेश्वर झुके हुओं
९ को उठाता है परमेश्वर धर्म्मियों को प्यार करता है। परमेश्वर
परदेशियों का रखवाल है अनाथ और रांड़ को संभालता है
१० और दुष्टों के मार्ग को टेढ़ा करता है। परमेश्वर सनातन
लों राज्य करेगा तेरा ईश्वर हे सैहून पीढ़ी से पीढ़ी लों।
हल्लिलूयाह॥

एकसौ सैंतालीसवां गीत ।

१　हल्लिलूयाह। क्योंकि हमारे ईश्वर के लिये स्तुति गाना भला
२ है क्योंकि वुह मनोहर है और स्तुति करना सुन्दर है। परमेश्वर
यरूसलम को बनाता है इसराएल के बिछुरे हुओं को एकट्ठा करता
३ है। जो चूर्ण अन्तःकरणियों को चंगा करता है और उन के
४ घावों को बांधता है। जो तारों की गिनती बतलाता है वुह
५ उन सभों को नाम ले ले बुलाता है। हमारा प्रभु महान है
और महा सामर्थ्य रखता है और उस की समुझ अगणित।
६ परमेश्वर दीनों को उठाता है दुष्टों को भूमि पर दे मारता है॥
७　परमेश्वर को धन्यवाद के संग उत्तर दो हमारे ईश्वर के
८ लिये वीणा के संग गाओ। जो स्वर्ग को मेघों से ढांपता है
जो पृथिवी के लिये मेंह सिद्ध करता है जो पहाड़ों पर घास
९ उगाता है। जो पशु को उस की अहार देता है कौवे के बच्चों
१० को जो चिल्लाते हैं। वुह घोड़े के बल से आनन्दित नहीं
११ है पुरुष की पिंडुलियों से प्रसन्न नहीं है। परमेश्वर अपने
डरवैयों से प्रसन्न है उन से जो उस की दया के आश्रित हैं॥
१२　हे यरूसलम परमेश्वर की स्तुति कर हे सैहून अपने ईश्वर
१३ की स्तुति कर। क्योंकि उस ने तेरे फाटकों के अड़ंगों को दृढ़
१४ किया है तेरे मध्य तेरे बालकों को आशीर्वाद दिया है। जो
तेरे सिवानों को चैन ठहराता है तुझे गेहूं की चिकनाई से तृप्त
१५ करता है। जो अपनी आज्ञा पृथिवी पर भेजता है उस का वचन
१६ बहुत शीघ्र दौड़ा जाता है। जो हिम ऊन के नाईं देता है
१७ वुह पाला राख की नाईं बिथराता है। जो ग्रास की नाईं अपना
तुषार फेंकता है उस की शीत के आगे कौन खड़ा हो सक्ता
१८ है। वुह अपना वचन भेजता है और उन्हें पिघलाता है वुह
१९ अपनी पवन चलाता है पानी बह जाता है। वुह अपना वचन

यअ़कूब से वर्णन करता है अपनी विधि और अपने न्याय
२० इसराएल से। उस ने किसी जातिगण से ऐसा नहीं किया है
और वे उस के न्यायों को नहीं जानते हैं। हल्लिलूयाह॥

एकसौ अठतालीसवां गीत।

१ हल्लिलूयाह। स्वर्गों से परमेश्वर की स्तुति करो ऊंचाइयों पर
२ उस की स्तुति करो। हे उस के सारे दूतो उस की स्तुति
३ करो हे उस की सारी सेनाओ उस की स्तुति करो। हे सूर्य्य
और चांद उस की स्तुति करो हे सारे ज्योतिमय तारो उस की
४ स्तुति करो। हे स्वर्गों के स्वर्गो और हे पानियो जो स्वर्ग के
५ ऊपर हो उस की स्तुति करो। वे परमेश्वर के नाम की स्तुति
६ करें क्योंकि उसी ने आज्ञा किई और वे उत्पन्न हुए। और उन्हें
सनातन के लिये स्थिर किया उस ने सीमा ठहराई और वे उस
के पार नहीं जा सक्ते॥

७ पृथिवी पर से परमेश्वर की स्तुति करो हे बड़ी मछलियो
८ और सारी गहिराइयो। आग और ओले हिम और कुहिरे बड़ी
९ आंधी जो उस के वचन का पालन करती है। पहाड़ो और
१० सब पहाड़ियो फलवान पेड़ और सारे देवदारुओ। बनपशु और
११ सारे चौपाये रेंगवैयें और उड़नेवाले पक्षी। पृथिवी के राजाओ
१२ और सारे लोगो अध्यक्षो और पृथिवी के सारे न्याइयो। तरुणो
१३ और कुंवारियो भी वृद्धो बालकों समेत। ये सब परमेश्वर के
नाम की स्तुति करें क्योंकि उस का नाम अकेला श्रेष्ठ है उस
१४ का ऐश्वर्य्य पृथिवी और स्वर्ग के ऊपर है। और उस ने अपने
लोगों के लिये एक सींग अपने सारे सिद्धों के लिये स्तुति ऊंची
किई है अर्थात् इसराएल के संतान अपने समीपी लोगों के
लिये। हल्लिलूयाह॥

एकसौ उंचासवां गीत ।

१ हल्लिलूयाह। परमेश्वर के लिये नया गीत गाओ और उस की
२ स्तुति उस के सिद्धों की सभा में । इसराएल अपने सृष्टिकर्त्ता
३ से आनन्दित हो सैहून के वंश अपने राजा से मगन हों । वे
नाच में उस के नाम की स्तुति करें तबले और बीणा के साथ
४ उस के लिये गान करें । क्योंकि परमेश्वर अपने लोगों से प्रसन्न
है वुह दीनों को मुक्ति से बिभूषित करता है ॥
५ सिद्ध लोग प्रतिष्ठा में आनन्दता से बजायें अपने बिछौनों
६ पर आनन्द के शब्द करें। सर्वशक्तिमान की बड़ी स्तुतें उन
७ के मुंह में हों और दोधारा खड्ग उन के हाथ में। जिसतें
८ जातिगणों में पलटा और लोगों में दंड चलावें। जिसतें उन
के राजाओं को सीकरों से और उन के अध्यक्षों को लोहे की
९ बेड़ियों से जकड़ें। जिसतें लिखा हुआ बिचार उन पर करें वही
बिचार उस के सारे सिद्धों के लिये प्रतिष्ठा है। हल्लिलूयाह ॥

एकसौ पचासवां गीत ।

१ हल्लिलूयाह। सर्वशक्तिमान की स्तुति उस के धर्म्मधाम में
२ करो उस के सामर्थ्य के आकाश में उस की स्तुति करो। उस के
महतकार्य्यों के लिये उस की स्तुति करो उस की महिमा की
३ उत्तमता के समान उस की स्तुति करो। तुरही के शब्द के
साथ उस की स्तुति करो बीणा और बरबत के साथ उस की स्तुति
४ करो। तबले और नाच के साथ उस की स्तुति करो तार और
५ बांसुरी के साथ उस की स्तुति करो। बड़े शब्द की झांझों के साथ उस
की स्तुति करो आनन्द के शब्द की झांझों के साथ उस की स्तुति
६ करो। हर एक स्वासधारी परमेश्वर की स्तुति करे। हल्लिलूयाह ॥

सुलेमान के दृष्टान्त।

पहिला पर्ब्ब।

१ दाऊद के बेटे इसराएल के राजा सुलेमान के दृष्टान्त।
२ बुद्धि और उपदेश जान्ने को और समुझ की बातें बूझने को।
३ बुद्धि धर्म्म और बिचार और खराई का उपदेश ग्रहण करने को।
४ भोलों को चतुराई और तरुण को ज्ञान और समुझ देने को।
५ बुद्धिमान सुनके बिद्या बढ़ावेगा और समुझवैया बुद्धि का मंत्र
६ प्राप्त करेगा। जिसतें दृष्टान्त और उस के अर्थ और बुद्धिमान की
बातों और उन की गुप्त कहावतों को समुझे॥
७ परमेश्वर का डर ज्ञान का आरंभ है परन्तु मूढ़ लोग बुद्धि
८ और उपदेश की निन्दा करते हैं। हे मेरे बेटे अपने पिता के
उपदेश को सुन और अपनी माता की आज्ञा को त्याग मत
९ कर। क्योंकि वे तेरे सिर के लिये अनुग्रह का मुकुट और तेरे
गले की सीकरें होंगे॥
१० हे मेरे बेटे यदि पापी तुझे फुसलावें तो मत मान।
११ यदि वे कहें कि हमारे संग आ हम रक्तपात के लिये घात में
१२ लगें और अकारण निर्दोष के लिये छिपके बैठें। हम पाताल
की नाईं उन्हें जीता और उन की नाईं जो गढ़हे में गिरते
१३ हैं समूचा निगल जायें। हमें सब बहुमूल्य संपत्ति मिलेगी लूट
१४ से हम अपना घर भरेंगे। तेरा भाग हमारे मध्य में गिरे एक

१५ हो थैली हम सभों के लिये हो। हे मेरे बेटे तू मार्ग में उन
के साथ मत चल उन के पथ से अपने पांवों को रोके रह।
१६ क्योंकि उन के पांव बुराई पर दौड़ते हैं और लोहू बहाने में
१७ शीघ्रता करते हैं। क्योंकि पंछी की दृष्टि में जाल बिछाना वृथा
१८ है। और वे अपने लोहू के लिये ढुके में हैं वे अपने प्राणों के
१९ लिये घात में हैं। हर एक जो धन का लोभी है उस की
चालें ऐसी ही हैं कि वुह अपने स्वामियों के प्राण को ले लेता
है॥

२० बुद्धि बाहर खड़ी पुकारती है वुह सड़कों में अपना शब्द
२१ करती है। वुह सभास्थान में फाटकों के निकास में पुकारती है
२२ नगर में वुह अपने बचन उच्चारती है। हे भोले लोगो कब
लों भोलेपन से प्रीति रक्खोगे और निन्दक अपनी निन्दा में
२३ आनन्द करेंगे और मूढ़ ज्ञान से बैर रक्खेंगे। मेरी दपट से
फिरो देखो मैं अपने आत्मा को तुम पर डालूंगा मैं अपने
बचन तुम्हें जनाऊंगा॥

२४ इस कारण कि मैं ने बुलाया पर तुम ने नाह किया मैं ने
२५ अपना हाथ बढ़ाया पर किसी ने न माना। पर तुम ने मेरे
समस्त मंत्र को तुच्छ जाना और मेरी दपट को न माना।
२६ मैं भी तुम्हारी विपत्ति पर हंसूंगा जब तुम पर भय आवेगा मैं
२७ ठट्ठे मारूंगा। जब तुम्हारा भय उजाड़ की नाईं आवेगा और
तुम्हारा बिनाश बवंडर की नाईं आ जायेगा जब कष्ट और दुख
२८ तुम पर पड़ेगा। तब वे मुझे पुकारेंगे परन्तु मैं उत्तर न देऊंगा
२९ वे मुझे तड़के ढूंढ़ेंगे परन्तु मुझे न पावेंगे। इस लिये कि उन्हों ने
३० ज्ञान से बैर रक्खा और परमेश्वर का भय न चुना। उन्हों ने
मेरे मंत्र को न माना उन्हों ने मेरी सारी दपट की निन्दा
३१ किई। सो वे अपनी ही चाल का फल खावेंगे और अपनी ही
३२ भावनाओं से पूर्ण होवेंगे। क्योंकि भोलों का भटकना उन्हें नाश

३३ करेगा और भकुओं की भाग्यमानी उन्हें नाश करेगी। परन्तु
जो मेरी सुनता है सो चैन से रहेगा और बुराई के भय से
बचा रहेगा॥

दूसरा पर्ब्ब।

१ हे मेरे बेटे यदि तू मेरे बचनों को मानेगा और मेरी
२ आज्ञाओं को अपने पास छिपा रक्खेगा। कि तू अपने कान को
बुद्धि की ओर झुकावे और समुझ की ओर अपना मन लगावे।
३ क्योंकि यदि तू ज्ञान के लिये पुकारेगा और समुझ के लिये
४ अपना शब्द बढ़ावेगा। यदि तू चांदी की नाईं उसे खोजेगा
५ और छिपे हुए धन की नाईं उसे ढूंढ़ेगा। तब तू परमेश्वर के
भय को समुझेगा और ईश्वर के ज्ञान को पावेगा॥
६ क्योंकि परमेश्वर बुद्धि देता है उस के मुंह से ज्ञान और
७ समुझ है। वुह धर्म्मियों के लिये चोखी बुद्धि धर रखता है
८ वुह उन के लिये जो खराई से चलते हैं एक ढाल है। जिसतें
बिचार के पथों की रक्षा करे और वुह अपने साधुओं के मार्ग की
९ चौकसी करता है। तब तू ठीक धर्म्म और बिचार और खराई
हां हर एक अच्छे पथ को समुझेगा॥
१० जब बुद्धि तेरे मन में प्रवेश करेगी और ज्ञान तेरे जीव को
११ अच्छा लगेगा। तब सोच तेरी रक्षा करेगा और समुझ तेरी
१२ रखवाली करेगी। जिसतें तुझे दुष्ट के मार्ग से और उस मनुष्य
१३ से जो छल की बातें करता है बचावे। उन से जो खराई के
पथ को छोड़ देते हैं जिसतें अंधियारे मार्गों पर चलें।
१४ जो बुराई करने से आनन्दित होते हैं और दुष्ट के छल से
१५ मगन होते हैं। जिन की चालें टेढ़ी हैं और वे अपने पथों
१६ में तिरछे हैं। कि तुझे परस्त्री से बचावे उस उपरी स्त्री से
१७ जो अपने बचन से फुसलाती है। जो अपनी तरुणाई के मित्र

को त्याग करती है और अपने ईश्वर की वाचा को बिसराती
१८ है। क्योंकि उस का घर मृत्यु की ओर और उस के मार्ग
१९ मृतकों की ओर झुके हैं। कोई उन में से जो उस पास गये
सो फिर नहीं लौटे और वे जीवन के मार्गों को नहीं पहुंचे।
२० जिसतें तू भलों के मार्ग पर चले और धर्म्मियों के पथों को
२१ धरे रहे। क्योंकि खरे देश में बसेंगे और सिद्ध उस में बने
२२ रहेंगे। परन्तु दुष्ट पृथिवी पर से काट डाले जायेंगे और धोखा
देनेहारे उस्से उखाड़े जायेंगे॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ हे मेरे बेटे मेरी व्यवस्था को मत भूल परन्तु तेरा मन
२ मेरी आज्ञाओं को पालन करे। क्योंकि दिनों की बढ़ती और
३ जीवन के बरस और कुशल वे तुझे बढ़ायेंगे। दया और
सत्यता तुझे त्याग न करें उन्हें अपने गले में लपेट उन्हें
४ अपने मन की पटिया पर लिख। और ईश्वर और मनुष्य की
दृष्टि में अनुग्रह और अच्छा ज्ञान पा॥
५ अपने सारे मन से परमेश्वर पर भरोसा रख और अपनी ही
६ समुझ पर आसा न कर। अपने सारे मार्गों में उस को पहिचान
७ और वुह तेरे पथों को सुधारेगा। अपनी दृष्टि में बुद्धिमान
८ मत हो परमेश्वर से डर और बुराई से अलग हो। यह तेरी
नाभी के लिये आरोग्यता और तेरी हड्डियों के लिये तरावट
होगी॥
९ अपनी संपत्ति में से और अपनी सारी बढ़ती के पहिले फल
१० से परमेश्वर की प्रतिष्ठा कर। तो तेरे खत्ते बहुताई से भर
जायेंगे और तेरे कोल्हू नई मदिरा से फूट निकलेंगे॥
११ हे मेरे बेटे परमेश्वर की ताड़ना की निन्दा मत कर और
१२ उस के दंड से थक मत जा। क्योंकि परमेश्वर जिसे प्यार

करता है उसे ताड़ना करता है जिस रीति बाप उस पुत्र को
जिस्से वुह प्रसन्न है ॥
१३ क्या ही धन्य वुह मनुष्य जिस ने बुद्धि को पाया और वुह
१४ मनुष्य जिस ने समुझ को प्राप्त किया है। क्योंकि उस का
ब्योपार चांदी के ब्योपार से और उस का लाभ चोखे सोने के
१५ लाभ से अच्छा है। वुह रतनों से बहुमूल्य है और समस्त
वस्तु जिन की तू लालसा कर सक्ता है उस के तुल्य नहीं।
१६ दिनों की बढ़ती उस के दहिने हाथ है धन और प्रतिष्ठा उस
१७ के बाएं में है। उस के मार्ग आनन्दता के मार्ग हैं और उस
१८ के समस्त पथ कुशल हैं। वुह उन के लिये जो उसे ग्रहण
करते हैं जीवन का वृक्ष है हर एक जो उसे थामता है धन्य
१९ है। परमेश्वर ने बुद्धि से पृथिवी की नेंव डाली समुझ से स्वर्ग
२० को स्थिर किया। उस के ज्ञान से गहिराइयां फूट निकली
हैं और मेघों से ओस टपकती है ॥
२१ हे मेरे बेटे उन्हें अपनी आंखों से अलग मत होने दे
२२ बुद्धि और सोच को धर रख। सो वे तेरे प्राण के लिये जीवन
२३ और तेरे गले के लिये अनुग्रह होंगे। तब तू अपने मार्ग में
२४ कुशल से चलेगा और तेरा पांव ठोकर न खायेगा। जब तू
लेट जायेगा तब न डरेगा हां तू लेट जायेगा और तेरी निद्रा
२५ मीठी होगी। अचानक भय से और दुष्टों के उजाड़ से जब
२६ वुह आता है मत डर। क्योंकि परमेश्वर तेरा भरोसा होगा
और तेरे पांव की रक्षा करेगा कि फंदे में न पड़े ॥
२७ भलाई उन से जो भलाई के योग्य हैं अलग मत रख जब
२८ कि तेरे हाथ में करने को सामर्थ्य हो। जब तेरे पास हो तो
अपने परोसी को यह मत कह कि जा फिर आइयो और मैं
२९ कल देउंगा। अपने परोसी से बुरा व्यवहार मत कर जब वुह
चैन से तेरे पास रहता है ॥

३० किसी मनुष्य से अकारण मत भगड़ यदि उस ने तुभ से
कुछ खोटाई न किई हो॥
३१ अंधेरी से डाह मत कर और उस के सारे मार्गों को मत
३२ चुन। क्योंकि द्रोही से परमेश्वर को घिन है परन्तु उस की
३३ मित्रता धर्म्मियों से है। परमेश्वर का स्राप दुष्ट के घर पर है
३४ परन्तु धर्म्मियों के निवास पर वुह आशीष देगा। निश्चय वुह
निन्दकों की निन्दा करता है पर दीनों पर दया करता है।
३५ बुद्धिमान विभव के अधिकारी होंगे परन्तु मूढ़ों की बढ़ती लाज
होगी॥

चौथा पर्व्व।

१ हे बालको पिता के उपदेश को सुनो और ज्ञान के प्राप्त
२ करने पर ध्यान रक्खो। क्योंकि मैं तुम्हें अच्छा उपदेश देता
३ हूं तुम मेरी व्यवस्था को त्याग मत करो। क्योंकि मैं अपने
४ पिता का बेटा था अपनी माता का एकलौता लाड़ला। उस ने
भी मुझे सिखलाया और मुझ से कहा कि मेरे बचन तेरे मन में
धरे रहें मेरी आज्ञाओं को पालन कर और जीता रह॥
५ बुद्धि को प्राप्त कर समुझ को प्राप्त कर उसे न भूल और मेरे
६ मुंह की बातों से मुंह मत फेर। उसे त्याग मत कर और
वुह तेरी रक्षा करेगी उसे प्यार कर और वुह तुझे बचावेगी।
७ बुद्धि सब से मूल बस्तु है बुद्धि को प्राप्त कर और अपनी समस्त
८ सामर्थ्य से समुझ प्राप्त कर। तू उस की प्रतिष्ठा कर और वुह
तुझे बढ़ावेगी वुह तुझे प्रतिष्ठा देगी जब तू उसे गोद में लेगा।
९ वुह तेरे सिर पर अनुग्रह का आभूषण रक्खेगी वुह तुझे विभव
१० का मुकुट देगी। हे मेरे बेटे सुन और मेरी बातों को ग्रहण
११ कर और तेरे जीवन के बरस बहुत होंगे। मैं ने बुद्धि के मार्ग
१२ में तेरी अगुआई किई ठीक पथों में तुझे चलाया है। जब तू

चलेगा तब तेरे डग सकेत न होंगे और जब तू दौड़ेगा तब तू
१३ ठोकर न खायेगा। उपदेश को दृढ़ता से धर रख उसे जाने
मत दे उसे रख छोड़ क्योंकि वुह तेरा जीवन है॥
१४ दुष्टों के पथ में मत पैठ और बुरों के मार्ग में मत जा।
१५ उसे छोड़ दे उस पर मत चल उधर से फिर और निकल जा।
१६ क्योंकि जब लों वे बुराई न कर लेवें तब लों सोते नहीं और
जब लों किसी को गिरा न देवें तब लों उन्हें नींद नहीं आती।
१७ क्योंकि वे दुष्टता की रोटी खाते हैं और अंधेर की मदिरा पीते
१८ हैं। परन्तु धर्म्मियों की चाल उस चमकती ज्योति के समान
१९ है जो मध्यान्ह लों चमकती चली जाती है। दुष्टों का मार्ग
अंधेरे के समान है वे नहीं जानते हैं कि किस्से ठोकर खायेंगे।
२० हे मेरे बेटे मेरी बातों पर ध्यान रख और मेरी कहावतों पर
२१ अपना कान झुका। उन्हें अपनी दृष्टि से जाने मत दे उन्हें
२२ अपने अन्तःकरण में धारण कर। क्योंकि वे उन के लिये जो
उन्हें प्राप्त करते हैं जीवन और उन के सारे शरीर के लिये
२३ आरोग्यता हैं। अपने अन्तःकरण को समस्त धारण से धारण
२४ कर क्योंकि जीवन की धारें उसी से हैं। मुंह के हठ को
अपने से अलग कर और होंठों की टेढ़ाई अपने पास से दूर
२५ रख। तेरी आंखें आगे देखा करें और तेरी पलकें तेरे साम्हने
२६ देखें। अपने पांव के पथ को तौल तो तेरे सारे मार्ग ठीक
२७ किये जायेंगे। न दहिने न बायें हाथ को मुड़ अपने पांव
को बुराई से हटा॥

पांचवां पर्व्व।

१ हे मेरे बेटे मेरी बुद्धि पर ध्यान रख और मेरी समुझ की
२ ओर अपना कान धर। जिसतें तू सोचे और तेरे होंठ ज्ञान
को धारण करें॥

३ क्योंकि परस्त्री के होंठ मधु के समान टपकते हैं और उस
४ का तालू तेल से अधिक चिकना है। पर उस का अन्त नागदौना
५ की नाईं कड़ुवा है दोधारे खड्ग की नाईं चोखा। उस के पांव
मृत्यु में उतरते हैं उस की डग पाताल को धारण करती हैं।
६ जिसतें न हो कि तू जीवन के पथ को तौले उस के मार्ग
७ चलायमान हैं कि तू उन्हें न जाने। सो अब हे बालको मेरी
८ सुनो और मेरे मुंह के वचन से अलग मत हो। अपना मार्ग
९ उस्से दूर बना और उस के घर के द्वार के पास मत जा। ऐसा
न होवे कि तू अपनी प्रतिष्ठा औरों को और अपने बरस क्रूर
१० को देवे। न होवे कि पराये लोग तेरे बल से पूर्ण होवें और
११ तेरा सारा परिश्रम उपरी के घर में हो। और तू अन्त में
विलाप करेगा जब तेरा मांस और तेरी देह क्षीण हो जायेगी।
१२ और कहेगा कि हाय मैं ने उपदेश से क्यों बैर रक्खा और मेरे
१३ मन ने दपट की क्यों निन्दा किई। और अपने उपदेशकों के
शब्द को न माना और जो मुझे उपदेश देते थे मैं ने उन की
१४ ओर कान न झुकाये। निकट था कि मैं मंडली और सभा के
मध्य हर प्रकार की बुराई में पड़ूं॥

१५ अपने ही कुण्ड से पानी पी और अपने ही कूए से बहता
१६ पानी। तेरे सोते बाहर फैलें और मार्गों में पानी की नदियां।
१७ वे अकेले तेरे ही लिये हों और कोई पराया तेरा साथी न हो।
१८ तेरे सोते में आशीष हो और अपनी तरुणाई की पत्नी से
१९ आनन्दित हो। वुह प्रिय हरिणी और मनोहर मृग के समान
हो उस के स्तन हर समय में तुझे संतुष्ट करें और उस की
२० प्रीति में सर्वदा मगन हो। सो हे मेरे बेटे तू किस लिये
परस्त्री से आल्हादित होवेगा और उपरी को किस लिये गोद
२१ में लेगा। क्योंकि मनुष्य की चालें परमेश्वर की आंखों के आगे
२२ हैं और वुह उस के सारे चलनों को जांचता है। दुष्ट की

बुराइयां उसी को पकड़ लेंगी और वुह अपने ही पाप की डोरियों
२३ से जकड़ा जायगा। वुह बिना शिक्षा से मर जायगा और
अपनी अति मूढ़ता में भटकता फिरेगा ॥

छठवां पर्व्व ।

१ हे मेरे बेटे यदि तू अपने मित्र का बिचवई हुआ हो यदि
२ किसी परदेशी से हाथ मारा हो। यदि तू अपने ही मुंह की
बातों से फंस गया हो और अपने ही मुंह की बातों से पकड़ा
३ गया हो। तो हे मेरे बेटे अब यह कर और आप को बचा
कि तू अपने मित्र के हाथ में पड़ा है तो जा आप को नम्र
४ कर और अपने मित्र की बिन्ती कर। अपनी आंखों को नींद
५ मत दे और अपनी पलकों को ऊंघने मत दे। अपने को हरिण
की नाईं व्याधा के हाथ से और चिड़िया के समान चिड़ीमार
के हाथ से बचा ॥

६ हे आलसी चिउंटी के पास जा उस के मार्गों को बूझ और
७ बुद्धिमान हो। यद्यपि उस का कोई अगुआ अध्यक्ष और
८ राजा नहीं। तथापि वुह ग्रीष्म में अपने लिये भोजन सिद्ध
९ करती है और लवने में अपना आहार बटोरती है। हे आलसी
१० तू कब लों सोवेगा तू कब अपनी नींद से उठेगा। थोड़ा सोना
थोड़ा ऊंघना थोड़ा और हाथों को नींद के लिये समेटना।
११ सो तेरा कंगालपन पथिक की नाईं आवेगा और तेरी दरिद्रता
हथियारबन्द की नाईं ॥

१२ क्रूर जन और दुष्ट मनुष्य मुंह की हठ से चलता है।
१३ वुह अपनी आंखें मारता है अपने पांओं से बोलता है अपनी
१४ अंगुलियों से बताता है। टेढ़ाई उस के मन में है वुह सदा बुराई
१५ सोचता है वुह बिगाड़ फैलाता है। सो उस पर अचानक विपत्ति
आ पड़ेगी वुह एकाएक टूट जायगा और कुछ औषध न होगी ॥

१६ परमेश्वर इन छओं से वैर रखता है हां सात से उस का
१७ जीव घिन करता है । अहंकारी आंखें झूठी जीभ और हाथ
१८ जो निर्दोष का लोहू बहाते हैं । मन जो बुरा बिचार बांधता
१९ है पांव जो बुराई के लिये बेग दौड़ते हैं । झूठा साक्षी जो
झूठ बोलता है और भाइयों में बिगाड़ बोता है ॥
२० हे मेरे बेटे अपने पिता की आज्ञा को पालन कर और अपनी
२१ माता की व्यवस्था को त्याग न कर । उन्हें सदा अपने मन
२२ में बांध ले उन्हें अपने गले में लपेट । जब तू चलेगा तब
वुह तेरी अगुआई करेगी जब तू सोवेगा तब वुह तेरी रक्षा
करेगी और जब तू जागेगा तब वुह तुझ से बातें करेगी ।
२३ क्योंकि आज्ञा एक दीपक है और व्यवस्था उंजियाला और
२४ उपदेश की दपट जीवन के मार्ग । जिसतें तुझे बुरी स्त्री से
२५ अलग रक्खें पराई स्त्री की जीभ की फुसलाहट से । अपने मन
में उस की सुन्दरता की इच्छा मत कर और वुह तुझे अपनी
२६ पलकों से पकड़ने न पाये । क्योंकि व्यभिचारिणी के कारण से
पुरुष टुकड़े मांगता फिरता है और व्यभिचारिणी महंग मोल
२७ प्राण की अहेर करती है । क्या मनुष्य अपनी गोद में आग
२८ लेवे और उस के कपड़े न जलें । क्या कोई अंगारों पर चले
२९ और उस के पांव न जलें । ऐसा ही वुह जो अपने परोसी की
पत्नी के पास जाता है और जो कोई उसे छूता सो निर्दोष न
३० रहेगा । मनुष्य चार को जो भूखा होके चोरी करे निन्दा नहीं
३१ करते हैं । पर यदि वुह पकड़ा जाय तो सातगुण भर देगा
३२ वुह अपने घर की समस्त संपत्ति देगा । परन्तु वुह जो किसी
की स्त्री से व्यभिचार करता है सो निर्बुद्धि है जो यह करता
३३ है वही अपने प्राण को नाश करने के लिये करता है । वुह
घाव और निरादर पावेगा और उस का कलंक मिटाया न
३४ जायगा । क्योंकि डाह से मनुष्य को कोप होता है और वुह

३५ पलटे के दिन न छोड़ेगा। वुह किसी भांति के छुड़ावे को न
मानेगा और प्रसन्न न होगा यद्यपि तू उसे घूस पर घूस देवे॥

सातवां पर्ब्ब।

१ हे मेरे बेटे मेरी बातों को धारण कर और मेरी आज्ञाओं
२ को अपने पास छिपा रख। मेरी आज्ञाओं को धारण कर और
जीता रह और मेरी व्यवस्था को अपनी आंखों की पुतली की
३ नाईं कर। उन्हें अपनी अंगुलियों पर बांध उन्हें अपने मन
४ की पटरी पर लिख। बुद्धि से कह कि तू मेरी बहिन है और
५ समुझ को अपना कुटुम्ब जान। जिसतें वे तुझे परस्त्री से और
उस उपरी से जो तुझे अपनी बातों से फुसलाती है बचा रक्खें॥
६ क्योंकि मैं ने अपने घर की खिड़की में बैठे हुए झरोखे से
७ झांका। और भकुओं में से एक को देखा और बेटों में से एक
८ अज्ञान तरुण पर ध्यान किया। वुह गली में उस के कोने
के निकट चला जाता था और उस ने उस के घर का मार्ग
९ लिया। गोधूली में सांझ को बड़ी अंधियारी रात को।
१० और देखो कि वहां वेश्या के पहिरावे में उसे एक स्त्री मिली
११ जो बड़ी चतुर थी। वुह चिल्लाती है और ढीठ है उस के
१२ पांव उस के घर में नहीं ठहरते। कभी बाहर है कभी चौकों
१३ में है और हर कोने के निकट घात में लगी है। सो उस ने
उसे पकड़ा और उस का चूमा लिया और टकटकी बांधके उसे
१४ कहा। कि मेरे यहां कुशल की भेंटें हैं आज के दिन मैं ने
१५ अपनी मनौतियां पूरी किईं हैं। इस लिये मैं तुझ से मिलने
को निकली हूं कि यत्न से तुझे ढूंढूं और मैं ने तुझे पाया है।
१६ मैं ने अपने बिछौने को मिसर के बूटे काढ़े हुए झीने वस्त्र से
१७ संवारा है। मैं ने अपने बिछौने को मुर और अगर और
१८ दारचीनी के सुगंध से सुगंधित किया है। आ प्रातःकाल लों

प्रेम से मिलके उन्मत्त होवें आपुस में प्यार से जी बहलावें।
१९ क्योंकि पति तो घर में नहीं है उस ने दूर की यात्रा किई है।
२० वुह एक थैला रोकड़ अपने हाथ में ले गया है और परिवा
२१ को घर आवेगा। सो यहां लों कि उस ने अपने छल की
बातों से उसे वश में किया और अपने होंठों के फुसलाने से
२२ उसे खींचा। वुह अचानक उस के पीछे चला जाता है जैसे
बैल घात होने को जाता है अथवा मूढ़ की नाईं जो पांव में
२३ सीकरें पहिनके अपने दंड के लिये जाता है। यहां लों कि
बरछी उस के कलेजे के पार हो गई उस चिड़िया के समान
जो जाल की ओर शीघ्र जाती है और नहीं जानती कि वहां
उस का प्राण जायगा॥
२४ सो अब हे बालको मेरी सुनो और मेरे मुंह के बचनों पर
२५ ध्यान रक्खो। अपने मन को उस के मार्गों पर झुकने मत
२६ देओ भटककर उस के पथों में मत जाओ। क्योंकि उस ने
बहुतों को घायल करके गिरा दिया है हां बहुत से सूर उस्से
२७ जूझ गये हैं॥ उस का घर नरक के मार्ग हैं जो मृत्यु के
भवनों में पहुंचाते हैं॥

आठवां पर्ब्ब।

१ क्या बुद्धि नहीं पुकारती और क्या समुझ अपना शब्द नहीं
२ उठाती। वुह ऊंचे स्थानों की चोटी पर मार्गों के सिरे पर
३ और चौराहों के बीच में खड़ी रहती है। वुह फाटकों पर
और नगर के पैठ पर और भीतर आने के द्वारों पर पुकारती
४ है। कि हे लोगो मैं तुम्हें बुलाती हूं और मनुष्य के संतानों
५ के लिये मेरा शब्द है। हे भोलो बुद्धि को समुझो और हे
६ मूर्खो समुझ का मन रक्खो। सुनो क्योंकि मैं उत्तम बातें
कहूंगी और मेरे होंठों के खुलने से ठीक बातें निकलेंगी।

७ क्योंकि मेरा मुंह सच सच कहेगा और दुष्टता से मेरे होंठों
८ को घिन है। मेरे मुंह की सारी बातें धर्म्म की हैं उन में
९ टेढ़ी तिरछी कोई वस्तु नहीं। समुझवैये के लिये सब खुला
१० है और ज्ञानी के लिये सब ठीक। मेरे उपदेश को ग्रहण
करो और रूपे को नहीं और ज्ञान को चोखे सोने से अधिक
११ चुनो। क्योंकि बुद्धि मोतियों से भी अच्छी है और समस्त वस्तें
जिन की लालसा किई जाती हैं उस के तुल्य हो नहीं सक्तीं॥
१२ मैं जो बुद्धि हूं चौकसी के साथ रहती हूं और चतुराई के
१३ भेद के ज्ञान को प्राप्त करती हूं। बुराई से घिन करना परमेश्वर
का भय है और मैं अहंकार और अभिमान और कुमार्ग और
१४ कुवचन से बैर रखती हूं। मंत्र और ठीक बुद्धि मेरी हैं मैं
१५ ही समुझ हूं मुझी में बल है। मुझ से राजा राज्य करते हैं
१६ और राजपुत्र विचार करते हैं। मुझ से प्रधान और अध्यक्ष और
१७ पृथिवी के सारे न्यायी प्रभुता करते हैं। मैं उन से प्रेम करती
हूं जो मुझ से प्रेम रखते हैं और वे जो मुझे तड़के ढूंढ़ते हैं
१८ मुझे पावेंगे। धन और प्रतिष्ठा हां दृढ़ धन और धर्म्म मेरे
१९ साथ हैं। मेरा फल सोने से हां चोखे सोने से और मेरी प्राप्ति
२० चोखी चांदी से भली है। मैं धर्म्म के मार्ग में और बिचार के
२१ पथ के मध्य में ले जाती हूं। जिसतें मैं उन्हें जो मुझे प्यार
करते हैं संपत्ति का अधिकारी करूं और मैं उन के भंडार भर
देऊं॥
२२ परमेश्वर अपने मार्ग के आरंभ में अपने प्राचीन कार्य्यों से
२३ आगे मुझे रखता था। मैं सनातन से स्थापित किई गई आरंभ
२४ से पृथिवी के होने से आगे। जब गहिराव न थे मैं उत्पन्न
२५ हुई जब पानी से भरे सोते न थे। मैं पहाड़ों के स्थिर होने
२६ से पहिले पहाड़ियों से आगे उत्पन्न हुई। जब लों उस ने
पृथिवी न बनाई थी न चौगान न जगत की रेणु का सिरा।

२७ जब कि उस ने स्वर्ग बनाये और गहिराव के मुंह को घेर लिया
२८ मैं वहां थी। जब उस ने ऊपर मेघों को ठहराया और जब
२९ कि उस ने गहिराव के सोतों को दृढ़ किया। जब उस ने
समुद्र को आज्ञा दिई कि पानी उस की आज्ञा से बाहर न
३० जावें जब उस ने पृथिवी की नेवें डालीं। तब मैं उस के पास
प्रतिपालित के समान थी और मैं प्रति दिन आनन्दित थी और
३१ सदा उस के आगे आनन्द करती थी। मैं उस की पृथिवी के
मण्डल पर आनन्द करती थी और मेरा आनन्द मनुष्य के
संतान के साथ था॥

३२ सो अब हे बालको मेरी सुनो क्योंकि जो मेरे मार्ग को धारण
३३ करते हैं सो क्या ही धन्य हैं। उपदेश को सुनो और बुद्धिमान
३४ होओ और उसे टाल मत देओ। क्या ही धन्य वुह मनुष्य
जो मेरी सुनता है और जो प्रति दिन मेरे फाटकों पर बाट
३५ जोहता है और मेरे द्वारों के खंभों पर ठहरता है। क्योंकि
जिस किसी ने मुझे पाया उस ने जीवन को पाया और परमेश्वर
३६ का अनुग्रह प्राप्त करेगा। परन्तु जो मेरा पाप करता है सो
अपने प्राण का बैर करता है वे सब जो मुझ से बैर रखते हैं
मृत्यु से प्रेम करते हैं॥

नवां पर्व्व ।

१ बुद्धि ने अपना घर बनाया है उस ने अपने सात खंभे गढ़े
२ हैं। उस ने अपने पशुन को बध किया है उस ने अपनी
मदिरा को मिलाया है उस ने अपना मंच भी बिछाया है।
३ उस ने अपनी सहेलियों को भेजा है वुह नगर के ऊंचे से ऊंचे
४ स्थानों पर पुकारती है। जो कोई भोला हो सो इधर फिरे जो
५ असमुझ है वुह उस्से कहती है। कि आ और मेरी रोटी में
६ से खा और उस मदिरा को पी जिसे मैं ने मिलाया है। मूढ़ों

की संगत को त्यागो और जीओ और समुझ के मार्ग में जाओ।
७ जो निन्दक को झिड़कता है सो अपने लिये लाज प्राप्त करता
है और जो दुष्ट को दपटता है सो आप ही कलंक पाता है।
८ निन्दक को मत झिड़क न हो कि वुह तुझ से बैर करे बुद्धिमान
९ को झिड़क तो वुह तुझ से प्रेम रक्खेगा। बुद्धिमान को उपदेश
कर तो वुह अधिक बुद्धिमान होगा धर्म्मी को सिखला तो वुह
१० विद्या में बढ़ेगा। परमेश्वर का भय बुद्धि का आरंभ है और
११ पवित्रमय का ज्ञान समुझ है। क्योंकि मुझ से तेरे दिन बढ़
१२ जायेंगे और तेरे जीवन के बरस अधिक होंगे। यदि तू
बुद्धिमान होवे तो तू अपने ही लिये बुद्धिमान होगा और तू
जो निन्दा करता है तो तू ही अकेला सहेगा॥

१३ मूढ़ स्त्री झगड़ालू है वुह मूढ़ है और कुछ नहीं जानती।
१४ और वुह अपने घर के द्वार पर नगर के ऊंचे स्थानों में पीढ़ी पर
१५ बैठी है। जिसतें पथिकों को जो अपने सीधे मार्गों पर चले जाते
१६ हैं बुलावे। कि जो कोई भोला हो सो इधर फिरे और जो
१७ बुद्धिहीन है वुह उस्से कहती है। कि चोरी का पानी मीठा
है और जो रोटी छिपके खाई जाय वुह बड़ी स्वादित है।
१८ परन्तु वुह नहीं जानता कि वहां मृतक हैं और उस के पाहुन
नरक के गहिरावे में हैं॥

दसवां पर्ब्ब।

१ सुलेमान के दृष्टान्त। बुद्धिमान बेटा पिता को आनन्दित
करता है परन्तु मूढ़ बेटा अपनी माता को उदास करता है।
२ दुष्टता के भंडार से कुछ प्राप्त नहीं परन्तु धर्म्म मृत्यु से
३ छुड़ाता है। परमेश्वर धर्म्मी के प्राण को भूख से मरने न देगा
४ परन्तु वुह दुष्ट की इच्छा को दूर करेगा। जो ढीले हाथ से
कार्य्य करता है सो कंगाल है परन्तु चतुरों का हाथ धन

५ बटोरेगा । जो ग्रीष्म में बटोरता है सो बुद्धिमान पुत्र है परन्तु
६ जो लवनी में सोता है सो लाज देवैया पुत्र है । धर्म्मी के
सिर पर आशीष हैं परन्तु अंधेर दुष्टों के मुंह को ढांपता है ।
७ धर्म्मी का स्मरण धन्य है परन्तु दुष्टों का नाम सड़ जायगा ।
८ अन्तःकरण का बुद्धिमान आज्ञा मानेगा परन्तु होंठों का मूर्ख
९ गिराया जायगा । जो खराई से चलता है सो कुशलता से
चलता है परन्तु जो अपने मार्गों को बिगाड़ता है सो प्रगट
१० हो जायगा । जो आंखें मटकाता है सो शोक करता है परन्तु
११ गप्पी मूर्ख गिराया जायगा । धर्म्मी का मुंह जीवन का कूआं
१२ है परन्तु अंधेर दुष्टों के मुंह को ढांपेगा । बैर झगड़ा उठाता
१३ है पर प्रेम सारे पापों को ढांपता है । समुझवैये के होंठों में
बुद्धि पाई जाती है परन्तु जो मूर्ख है उस की पीठ के लिये
१४ छड़ी है । बुद्धिमान ज्ञान को बटोरते हैं परन्तु मूर्ख का मुंह
१५ नाश के समीप है । धनवान का धन उस का दृढ़ नगर है
१६ परन्तु कंगालों की कंगालपन उन का नाशक है । धर्म्मी का
परिश्रम जीवन के लिये है परन्तु दुष्ट का फल पाप के लिये
१७ है । जो उपदेश धारण करता है सो जीवन के मार्ग पर है
१८ परन्तु जो दपट को नहीं मानता है सो चूक करता है । जो
झूठे होंठों से बैर छिपाता है और जो अपबाद लगाता है सो
१९ मूर्ख है । बचन की बहुताई पाप के बिना नहीं होती परन्तु
२० जो अपने होंठों को रोकता है सो बुद्धिमान है । धर्म्मी की
जीभ चुनी हुई चांदी है दुष्टों का मन न्यूनता की नाईं है ।
२१ धर्म्मियों के होंठ बहुतों को खिलाते हैं परन्तु मूर्ख लोग मूर्खता
२२ से मरते हैं । परमेश्वर ही की आशीष धनी करती है और वुह
२३ उस में कुछ परिश्रम नहीं बढ़ाती । बुराई करना मूर्ख के लिये
२४ ठट्ठा है परन्तु समुझवैये के पास बुद्धि है । दुष्ट का भय वही
२५ उस पर पड़ेगा परन्तु धर्म्मियों की इच्छा पूर्ण होगी । जिस

रीति से बगूला जाता रहता है वैसा ही दुष्ट न बचेगा परन्तु
२६ धर्म्मी सनातन की नेव है। जैसा दांतों के लिये सिरका और
आंखों के लिये धूआं ऐसा ही आलसी उन के लिये है जो उसे
२७ भेजते हैं। परमेश्वर का भय वय को बढ़ाता है परन्तु दुष्टों
२८ के बरस घटाये जायेंगे। धर्म्मियों की आशा आनन्द है परन्तु
२९ दुष्टों की आशा नाश होगी। परमेश्वर का मार्ग खरे मनुष्य के
३० लिये गढ़ है परन्तु कुकर्म्मियों के लिये बिनाश। धर्म्मी कभी
टलाया न जायेगा परन्तु दुष्ट पृथिवी के अधिकारी न होंगे।
३१ धर्म्मी के मुंह से बुद्धि निकलती है परन्तु टेढ़ी जीभ काट
३२ डाली जायेगी। धर्म्मी के होंठ जानते हैं कि ग्राह्य के योग्य
क्या है परन्तु दुष्ट का मुंह टेढ़ा है॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ छल की तुला से परमेश्वर को घिन है परन्तु पूरी तौल उस
२ की प्रसन्नता है। अहंकार जब आता है तब लज्जा आती है
३ परन्तु नम्रता के साथ बुद्धि है। सीधों की खराई उन की
अगुआई करेगी परन्तु अपराधियों की टेढ़ाई उन्हें नाश करेगी।
४ कोप के दिन धन से लाभ नहीं होता परन्तु धर्म्म मृत्यु से
५ छुड़ाता है। सिद्ध का धर्म्म उस के मार्ग को सुधारेगा परन्तु
६ दुष्ट अपनी दुष्टता से गिर पड़ेगा। खरों का धर्म्म उन्हें छुड़ावेगा
७ परन्तु अपराधी नटखटी में पकड़े जायेंगे। जब दुष्ट मनुष्य
मरता है तब उस की आशा नष्ट होती है और असत्य की
८ आसरा नष्ट होता है। धर्म्मी संकट से छुड़ाया जाता है और
९ उस की संती दुष्ट आता है। अधर्म्मी मनुष्य मुंह से अपने
परोसी का नाश करता है परन्तु धर्म्मी ज्ञान के द्वारा से छुड़ाये
१० जाते हैं। धर्म्मियों की मगनता में नगर आनन्दित होता है
११ और जब दुष्ट नष्ट होते हैं तब चिल्लाना होता है। खरों की

आशीष से नगर बढ़ाया जाता है परन्तु दुष्टों के मुंह से
१२ उलटाया जाता है। मूर्ख अपने परोसी की निन्दा करता है
१३ परन्तु समुझवैया चुपका रहता है। लुतड़ा मनुष्य चलते फिरते
भेद प्रगट करता है परन्तु जिस का विश्वस्त प्राण है सो बात
१४ छिपाता है। जहां परामर्श नहीं तहां लोग गिर पड़ते हैं
१५ परन्तु मंत्रियों की बहुताई से बचाव है। जो परदेशी का
मध्यस्थ होता है उस का बड़ा टूटा होगा और जो बिचवई
१६ होने से वैर रखता है सो निर्भय है। अनुग्रहित स्त्री प्रतिष्ठा
रख छोड़ती है और बलवन्त पुरुष धन को रख छोड़ता है।
१७ दयाल मनुष्य अपने ही प्राण पर भलाई करता है परन्तु कठोर
१८ अपने ही मांस को दुख देता है। दुष्ट छल के कार्य्य करता
१९ है परन्तु जो धर्म्म बोता है सो सच्चा प्रतिफल पावेगा। जैसा
धर्म्म से जीवन है वैसा जो बुराई का पीछा करता है सो अपनी
२० ही मृत्यु के लिये है। जिन के मन टेढ़े हैं वे परमेश्वर के
आगे घिनित हैं परन्तु जिन की चाल खरी है सो उस का
२१ आनन्द है। यद्यपि हाथ से हाथ मिले तथापि दुष्ट निर्दंड न
२२ जायगा परन्तु धर्म्मियों का बंश छुड़ाया जायगा। रूपवती
स्त्री जो लाज को छोड़ती है सो उस सूअर की नाईं है जिस
२३ की थूथनी में सोने की नथुनी है। धर्म्मियों की लालसा केवल
२४ भलाई है परन्तु दुष्टों की आशा क्रोध है। कोई तो ऐसा है
जो बिथराता है तथापि बहुत बढ़ाता है और कोई उचित से
अधिक रख छोड़ता है परन्तु केवल दरिद्रता के कारण हो
२५ जाता है। आशीष का अंतःकरण मोटा होगा और वुह जो
२६ सींचता है आप भी सींचा जायगा। जो अन्न रख छोड़ता है
उस को मनुष्य स्राप देंगे परन्तु बेचवैये के सिर पर आशीष
२७ होगी। जो यत्न से भलाई ढूंढ़ता है सो अनुग्रह प्राप्त करता
२८ है परन्तु जो बुराई को ढूंढ़ता है वुह उसी पर आवेगी। जो

अपने धन पर भरोसा रखता है सो गिर पड़ेगा परन्तु धर्म्मी
२९ पत्ती की नाईं लहलहावेंगे। जो अपने घराने को सताता है
सो पवन का अधिकारी होगा और मूर्ख जन बुद्धिमान अंतःकरण
३० का सेवक होगा। धर्म्मी का फल जीवन का वृत्त है और जो
३१ धर्म्म से प्राणों को मोल लेता है वुह बुद्धिमान है। देख धर्म्मी
को पृथिवी पर पलटा दिया जायगा तो कितना अधिक दुष्ट
और पातकी को॥

बारहवां पर्ब्ब।

१ जो उपदेश से प्रेम रखता है सो ज्ञान से प्रेम रखता है
२ परन्तु जो दपट से बैर रखता है सो पशुवत है। उत्तम मनुष्य
परमेश्वर से अनुग्रह पाता है परन्तु दुष्ट जुगती मनुष्य को वुह
३ दोषी ठहरावेगा। दुष्टता से मनुष्य स्थिर न किया जायगा
४ परन्तु धर्म्मियों की जड़ टलाई न जायगी। सुकर्म्मी स्त्री
अपने पति के लिये मुकुट है परन्तु जो लज्जित करती है सो
५ उस की हड्डियों में सड़ाहट की नाईं है। धर्म्मियों की चिन्ता
६ ठीक है परन्तु दुष्टों का परामर्श कपट है। दुष्टों की बातें यही
हैं कि घात में बैठके लोहू बहावें पर खरों का मुंह उन्हें
७ छुड़ावेगा। दुष्ट उलट दिये जाते हैं और हैं ही नहीं पर
८ धर्म्मियों का घर स्थिर रहेगा। मनुष्य का सराहना उस की
बुद्धि के समान होगा परन्तु जो अंतःकरण का टेढ़ा है सो
९ निन्दित है। वुह जो तुच्छ किया जाता है और जिस का
सेवक है उस्से श्रेष्ठ है जो अपनी प्रतिष्ठा करता है और रोटी
१० का आधीन है। धर्म्मी अपने पशुन के प्राण की चिन्ता करता
११ है परन्तु दुष्टों की कोमल दया कठोरता है। जो अपनी भूमि को
जोता बोया करता है सो रोटी से तृप्त होगा परन्तु जो तुच्छ
१२ लोगों का पीछा करता है सो मूर्ख है। दुष्ट की इच्छा यह है

कि बुराई का जाल बिछाये परन्तु धर्म्मियों की जड़ फल देगी।
१३ होंठों के पाप से दुष्ट बझाया जाता है परन्तु धर्म्मी दुख से
१४ निकल आवेगा। अपने मुंह के अच्छे फलों से मनुष्य तृप्त
किया जायगा और मनुष्य के हाथों का प्रतिफल उसे दिया
१५ जायगा। मूढ़ की चाल उस की दृष्टि में भली है परन्तु जो
१६ मंत्र को मानता है सो बुद्धिमान है। मूर्ख का क्रोध तुरंत
१७ जाना जाता परन्तु चतुर लाज को ढांपता है। जो सच
बोलता है सो धर्म्म को प्रगट करता है परन्तु झूठा साक्षी
१८ छल देता है। किसी की बोली ऐसी है जैसे खड्ग का चुभना
१९ परन्तु बुद्धिमान की जीभ कुशल है। सच्चाई का होंठ सदा
२० स्थिर रहेगा परन्तु झूठी जीभ पल भर की है। कुचिन्तक के
२१ मन में छल है परन्तु मिलाप के मंत्रियों को आनन्द है। धर्म्मी
२२ पर कोई बिपत्ति आने न पायेगी परन्तु दुष्ट बुराई से पूर्ण होंगे। झूठे
होंठों से परमेश्वर को घिन है परन्तु जो सच्चा व्यवहार करते
२३ हैं सो उस की प्रसन्नता हैं। चतुर मनुष्य ज्ञान को छिपाता
२४ है परन्तु मूर्खों के मन मूर्खता प्रचारते हैं। चालाकों का हाथ
२५ प्रभुता करेगा परन्तु आलसी कर के वश में होगा। मनुष्य
के मन का शोक उसे निहुड़ाता है परन्तु सुवचन मगन करता
२६ है। धर्म्मी अपने परोसी की अगुआई करता है परन्तु दुष्टों का
२७ मार्ग उन्हें भटकाता है। आलसी अपनी अहेर को नहीं भूंजता
२८ परन्तु चालाक मनुष्य की संपत्ति बहुमूल्य है। धर्म्म के मार्ग
में जीवन है और उस के पथ मृत्यु नहीं॥

तेरहवां पर्व्व।

१ बुद्धिमान बेटा अपने पिता का उपदेश सुनता है परन्तु
२ निन्दक दपट को नहीं सुनता। मनुष्य अपने मुंह के फल में
से अच्छा खायगा परन्तु अपराधियों का प्राण अंधेर को।

३ जो अपने मुंह को संभालता है सो अपने प्राण की रक्षा करता है
४ जो अपने होंठों को पसारता है सो नाश होगा। आलसी
का मन बहुत कुछ चाहता है और कुछ नहीं पाता परन्तु
५ चालाकों का मन पुष्ट होगा। धर्म्मी जन झूठी बात से बैर
रखता है परन्तु दुष्ट बुराई करता और लाज पहुंचाता है।
६ धर्म्म उस की जिस का मार्ग सीधा है रक्षा करता है परन्तु
७ दुष्टता पापी को उलट देती है। एक तो आप को धनी बनाता
है तथापि उस के पास कुछ नहीं एक आप को कंगाल करता
८ है तथापि बड़ा धनी है। मनुष्य के प्राण का प्रायश्चित उसी का
९ धन है परन्तु कंगाल डपट को नहीं सुनता। धर्म्मियों का
दिया जलता रहेगा परन्तु दुष्टों का दीपक बुझाया जायगा।
१० झगड़ा केवल अहंकार से उठता है परन्तु सुमंत्रों के साथ
११ बुद्धि है। जो धन कि अनर्थ से प्राप्त किया गया सो घट
जायगा परन्तु जो परिश्रम से बटोरता है सो बढ़ जायगा।
१२ आशा का टालना मन को रोगी करता है परन्तु आशा का पूर्ण
१३ होना जीवन का वृक्ष है। जो कोई बचन की निन्दा करता
है सो नाश किया जायगा परन्तु वुह जो आज्ञा से डरता है
१४ कुशल से रहेगा। ज्ञानी की व्यवस्था जीवन का सोता है जिसतें
१५ मृत्यु के जालों से अलग होवे। अच्छी समुझ अनुग्रह देती है
१६ परन्तु अपराधियों का मार्ग कठिन है। हर एक चतुर जन
ज्ञान से व्यवहार करता है परन्तु मूर्ख अपनी मूर्खता फैलाता
१७ है। दुष्ट दूत बुराई में पड़ता है परन्तु विश्वस्त दूत कुशल
१८ है। कंगालपन और लाज उस के लिये हैं जो उपदेश को
नहीं मानता परन्तु जो डपट को मानता है सो प्रतिष्ठा पावेगा।
१९ इच्छा का पूर्ण होना प्राण को मीठा है परन्तु बुराई को छोड़ना
२० मूर्खों को घिन है। जो बुद्धिमानों के संग चलता सो बुद्धिमान
२१ होगा परन्तु मूर्खों का संगी चूर्ण होगा। विपत्ति पापियों के पीछे

२२ दौड़ती है परन्तु धर्म्मियों को उत्तम प्रतिफल मिलेगा। उत्तम
अपने पोतों के लिये अधिकार छोड़ जाता है परन्तु पापी का
२३ धन धर्म्मी के लिये धरा है। कंगालों के जोतने बोने से
बहुत सा भोजन मिलता है परन्तु ऐसा भी होता है कि धन
२४ बिचार के न होने से उड़ाया जाता है। जो अपनी छड़ी को
रोकता है सो अपने बेटे से बैर रखता है परन्तु जो उसे प्यार
२५ करता है सो उस को आगे से ताड़ना करता है। धर्म्मी अपने
प्राण की संतुष्टता के लिये खाता है परन्तु दुष्टों का पेट नहीं
भरता॥

चौदहवां पर्व्व ।

१ बुद्धिमान स्त्री अपना घर बनाती है परन्तु अज्ञान उसे
२ अपने हाथों से ढाती है। जो अपनी खराई से चलता है सो
परमेश्वर से डरता है परन्तु कुमार्गी उस की निन्दा करता है।
३ मूर्खों के मुंह में घमंड की लाठी है परन्तु बुद्धिमानों के होंठ
४ उन की रक्षा करेंगे। जहां बैल नहीं तहां चरनी छूछी हैं
५ परन्तु अनाज की अधिकाई बैल के बल से है। बिश्वस्त
साक्षी झूठ न बोलेगा परन्तु झूठा साक्षी झूठ उच्चारण करेगा।
६ निन्दक बुद्धि की खोज करता है और नहीं पाता परन्तु ज्ञान
७ समुझवैये के लिये सहज है। जब तू ज्ञान के होंठ नहीं
८ देखता है तब मूर्ख से अलग हो जा। चतुर की बुद्धि यह
९ है कि अपना मार्ग बूझे परन्तु मूढ़ों की मूढ़ता कपट है। मूढ़
१० पाप को ठट्ठा जानते हैं परन्तु धर्म्मियों में कृपा है। प्राण
की कड़वाहट को प्राण ही जानता है और उपरी मनुष्य उस
११ की आनन्दता में हाथ नहीं डालता है। दुष्टों का घर नष्ट
१२ हो जायगा परन्तु खरों का तंबु लहलहावेगा। एक मार्ग है
जो मनुष्य को ठीक दिखलाई देता है परन्तु उस का अन्त

१३ मृत्यु का मार्ग है। हंसने में भी मन शोकित है और उस
१४ आनन्द का अन्त उदासी है। भटका हुआ मन अपने ही
मार्गों से तृप्त हो जायगा और उत्तम मनुष्य आप ही से।
१५ भोला हर एक वचन की प्रतीति करता है परन्तु चतुर देखके
१६ चलता है। बुद्धिमान डरता है और बुराई से भागता है
१७ परन्तु मूर्ख कोपित और निर्भय है। जो शीघ्र क्रोध करता
है सो मूर्खता से व्यवहार करता है और दुष्ट जुगती से बैर है।
१८ भकुए मूर्खता के अधिकारी हैं परन्तु चतुरों के सिर पर ज्ञान
१९ का मुकुट है। बुरे भलों के आगे और दुष्ट धर्म्मी के फाटकों
२० के आगे झुकते हैं। कंगाल से उस का परोसी भी बैर रखता है
२१ परन्तु धनी के बहुत से मित्र हैं। जो अपने परोसी की निन्दा
करता है सो पाप करता है परन्तु जो कंगालों पर दया करता
२२ है सो धन्य है। जो बुरी युक्ति करते हैं क्या वे चूक नहीं
करते परन्तु दया और सत्य उन पर है जो भले युक्ती हैं।
२३ समस्त परिश्रम में लाभ होगा परन्तु होंठों की बोली से केवल
२४ दरिद्रता है। बुद्धिमानों का धन उन का मुकुट है परन्तु
२५ मूर्खों की मूर्खता मूर्खता ही रहती है। सच्चा साक्षी प्राणों को
२६ बचाता है परन्तु छली झूठ बोलता है। परमेश्वर के डर में
दृढ़ बिश्वास है और उस के बालकों को शरणस्थान मिलेगा।
२७ परमेश्वर का डर जीवन का सोता है जिसतें मृत्यु के फंदों से
२८ अलग होवे। लोगों की बहुताई में राजा की प्रतिष्ठा है परन्तु
२९ लोगों के न होने में राजपुत्र का नाश है। जो क्रोध में धीमा
है बड़ा बुद्धिमान है परन्तु जो शीघ्र क्रोध करता मूर्खता प्रगट
३० करता है। शरीर का जीवन शुद्ध मन है परन्तु डाह हड्डियों
३१ की सड़ाहट है। जो कंगाल पर अंधेर करता है सो उस के
कर्त्ता की निन्दा करता है परन्तु जो उस की प्रतिष्ठा करता है
३२ कंगाल पर दया करता है। दुष्ट अपनी दुष्टता में खदेड़ा जाता

३३ है परन्तु धर्म्मी अपनी मृत्यु में आशा रखता है। समुझवैये के मन
में बुद्धि चुपचाप रहती है और मूढ़ों के मन की दशा प्रगट
३४ होती है। धर्म्म जातिगण को बढ़ाता है परन्तु पाप लोगों के
३५ लिये कलंक है। बुद्धिमान सेवक पर राजा की कृपा है परन्तु
जो लाज दिलाता है उस का क्रोध उस पर है॥

पंदरहवां पर्व्व।

१ कोमल उत्तर क्रोध को फेर देता है परन्तु कटुक वचन
२ क्रोध को उभाड़ते हैं। बुद्धिमानों की जीभ ज्ञान को उत्तम
रीति से काम में लाती है परन्तु मूर्खों का मुंह मूर्खता उगलता
३ है। परमेश्वर की आंखें हर स्थान में बुरों भलों को देखती
४ हैं। कुशलता की जीभ जीवन का वृक्ष है परन्तु उस की
५ चिकनी चुपड़ी बातें आत्मा के लिये हानि हैं। मूर्ख अपने पिता
के उपदेश को तुच्छ जानता है परन्तु जो घुड़की को मान लेता
६ है सो चतुर है। धर्म्मी के घर में बहुत धन है परन्तु दुष्ट
७ की प्राप्ति में दुःख है। बुद्धिमान के होंठ ज्ञान फैलाते हैं परन्तु
८ मूर्ख का मन ऐसा नहीं है। दुष्ट के बलिदान से परमेश्वर को
९ घिन है परन्तु खरे की प्रार्थना उस की प्रसन्नता है। दुष्ट की
चाल से परमेश्वर को घिन है परन्तु जो धर्म्म का पीछा करता
१० है वुह उस्से प्रेम रखता है। जो मार्ग को छोड़ देता है ताड़ना
उस के लिये भारी है और जो दपट से बैर रखता है सो मर
११ जायगा। पाताल और नाश परमेश्वर के आगे हैं तो कितना
१२ अधिक मनुष्य के संतान के अन्तःकरण न होंगे। निन्दक
अपने दपटनेहारे से प्रेम न करेगा और बुद्धिमानों के पास न
१३ जायगा। मगनमन रूप को आनन्द करता है परन्तु मन के
१४ शोक से मन टूट जाता है। समुझवैये का मन ज्ञान को
खोजता है परन्तु मूर्खों का मुंह मूर्खता आहार करता है।

१५ दुःखी के जीवन के दिन दुख हैं परन्तु जिस का मन मगन हे
१६ उस के लिये सदा जेवनार है। थोड़ा सा जो परमेश्वर के भय
के साथ हो उस बड़े भण्डार से जो क्लेश के संग हो भला है।
१७ साग पात का भोजन प्रेम के साथ उस्से भला है कि पाला हुआ
१८ बरद बैर के साथ। क्रोधी मनुष्य झगड़ा उभाड़ता है परन्तु
१९ जो क्रोध में धीमा है सो झगड़े को मिटाता है। आलसी का
मार्ग कांटों के बाड़े के समान है परन्तु धर्म्मियों का मार्ग ऊंचा
२० मार्ग है। बुद्धिमान लड़का पिता को आनन्दित करता है परन्तु
२१ मूर्ख अपनी माता की निन्दा करता है। मूढ़ता निर्बुद्धि के
लिये आनन्द है परन्तु समुझवैया मनुष्य खराई से चलता है।
२२ बिना परामर्श मनोरथ वृथा होते हैं परन्तु मंत्रियों की बहुताई
२३ से वे दृढ़ होते हैं। मनुष्य अपने मुंह के उत्तर से आनन्दित
२४ होता है और समय पर की बात कैसी अच्छी है। जीवन का
मार्ग बुद्धिमान के लिये ऊंचा है जिसतें वुह नीचे पाताल से
२५ निकल जाय। परमेश्वर घमंडियों का घर ढा देगा परन्तु वुह
२६ रांड़ के सिवाने को स्थिर करेगा। दुष्ट की चिन्ता से परमेश्वर
२७ को घिन है परन्तु पावनों की बातें मनोहर हैं। जो लाभ
का लालच करता है सो अपने घराने को दुख देता है परन्तु
२८ जो घूंस से बैर रखता है सोई जीयेगा। धर्म्मी का मन उत्तर
देने को सोचता है परन्तु दुष्टों का मुंह बुराइयां उगलता है।
२९ परमेश्वर दुष्टों से दूर है परन्तु वुह धर्म्मियों की प्रार्थना सुनता
३० है। आंखों की ज्योति मन को आनन्द करती है और सुसंदेश
३१ हड्डियों को पुष्ट करता है। जो कान जीवन की झिड़की सुनता
३२ है सो बुद्धिमानों में रहेगा। जो उपदेश को नहीं मानता सो
अपने ही प्राण को तुच्छ करता है परन्तु जो दपट को मानता
३३ है सो बुद्धि प्राप्त करता है। परमेश्वर का भय बुद्धि का उपदेश
है और प्रतिष्ठा के आगे दीनताई है॥

सोलहवां पर्व्व।

१ मनुष्य के मन की उपाय और जीभ का उत्तर परमेश्वर की
२ ओर से हैं। मनुष्य की सारी चालें उस की आंखों के आगे
३ पवित्र हैं परन्तु परमेश्वर आत्माओं को तौलता है। अपने
कार्य्यों को परमेश्वर को सौंप तो तेरी चिन्ताएं स्थिर किई जायेंगी।
४ परमेश्वर ने सब कुछ अपने लिये बनाया है हां दुष्ट को भी
५ बुराई के दिन के लिये। हर एक अहंकारी मन से परमेश्वर
को घिन है यद्यपि हाथ हाथ में मिले तथापि वुह बिना दण्ड
६ न छूटेगा। दया और सत्य से बुराई ढांपी जाती है और लोग
७ परमेश्वर के भय से बुराई से अलग रहते हैं। जब मनुष्य की
चालें परमेश्वर को अच्छी लगती हैं तब वुह उस के बैरियों
८ को भी उस्से मेल कराता है। थोड़ा सा जो धर्म्म के साथ है
९ बहुत प्राप्ति से जो अन्याय के साथ है अच्छा है। मनुष्य का
मन अपना मार्ग ठहराता है परन्तु परमेश्वर उस की डग को
१० दृढ़ करता है। दिव्य बचन राजा के होंठों से निकलता है
११ और उस का मुंह न्याय में अपराध नहीं करता। खरी तौल
और तुला परमेश्वर के हैं थैली के सारे बटखरे उस के कार्य्य
१२ हैं। दुष्टता के कर्म्म करने से राजाओं को घिन है क्योंकि
१३ सिंहासन धर्म्म से दृढ़ किया जाता है। धर्म्मी होंठ राजाओं को
प्रसन्न हैं और वे उस को जो ठीक बोलता है प्यार करते हैं।
१४ राजा का क्रोध मृत्यु के दूतों के समान है परन्तु बुद्धिमान
१५ मनुष्य उसे धीमा करेगा। राजा के रूप की ज्योति में जीवन
है और उस की कृपा पिछली वर्षा की एक बदली के समान
१६ है। बुद्धि को प्राप्त करना सोने से कितना भला है और समुझ
१७ को प्राप्त करना रूपे से कितना उत्तम है। खरों का राजमार्ग
यह है कि बुराई से अलग रहें जो अपने मार्ग की चौकसी

१८ करता है सो अपने प्राण की रक्षा करता है। नाश से पहिले
१९ अहंकार और गिर पड़ने से आगे मन का घमंड है। दीनें
के साथ दीन होना उस्से अच्छा है कि अहंकारियों के साथ
२० लूट बांटे। जो बुद्धिमानी के साथ कार्य्य करता है सो भलाई
देखेगा और जो परमेश्वर पर भरोसा रखता है सो क्या ही धन्य
२१ है। जो मन में बुद्धिमान है वुह चतुर कहलावेगा और होंठें
२२ की मीठाई विद्या बढ़ाती है। समुझवैयों के लिये समुझ
जीवन का सोता है परन्तु मूर्खों का उपदेश मूर्खता है।
२३ बुद्धिमान का अन्तःकरण उस के मुंह को बुद्धिमान करता है
२४ और उस के होंठें के विद्या देता है। मनभावनी बातें मधु
के छत्ते के समान प्राण के मीठी लगती हैं और वे हड्डियों
२५ के लिये चैन हैं। ऐसा मार्ग है जो मनुष्य के सीधा समुझ
२६ पड़ता है परन्तु उस का अन्त मृत्यु के मार्ग हैं। जो परिश्रम
करता है वुह अपने लिये करता है क्योंकि उस का मुंह उस्से
२७ परिश्रम करवाता है। दुष्ट मनुष्य बुराई के खोदके निकालता
२८ है और उस के होंठें में जलती आग की नाई है। क्रूर मनुष्य
झगड़ा उठाया करता है और फुसफुसहा मित्रों में बिभाग करता है।
२९ अंधेरी मनुष्य अपने परोसी के फुसलाता है और उसे उस मार्ग
३० से ले जाता है जो भला नहीं। वुह आंखें मटकाता है जिसतें
टेढ़ी बात की युक्ति करे और होंठ हिलाता है जिसतें बुराई
३१ उत्पन्न करे। उजला सिर बिभव का मुकुट है जो धर्म्म के
३२ मार्ग में पाया जाय। जो क्रोध में धीमा है सो सामर्थी से
भला है और जो अपने मन के बश में रखता है उस्से जो
३३ नगर के लेता है। चिट्ठी गोद में डाली जाती है परन्तु उस
का समस्त न्याय परमेश्वर से है॥

सत्तरहवां पर्व्व ।

१ रूखा ग्रास जो चैन के साथ हो उस घर से भला है जो
२ झगड़े के बलिदानों से भरा हुआ हो। बुद्धिमान सेवक उस
पुत्र पर जो लज्जित करता है प्रभुता करेगा और भाइयों में
३ अधिकार का भाग पावेगा। चांदी के लिये घरिया है और सोने
के लिये भट्ठी परन्तु परमेश्वर अंतःकरणों को जांचता है।
४ कुकर्म्मी झूठे होंठों की सुनता है और झूठा कुबचन का श्रोता
५ है। जो कंगाल पर हंसता है सो उस के कर्त्ता को कलंक
लगाता है और जो औरों की विपत्ति से आनन्दित होता है
६ सो निर्दोषी न ठहरेगा। बालकों के बालक अपने बृद्धों के
७ मुकुट हैं और बालकों के बिभव उन के पिता हैं। होंठों की
शोभा मूर्ख को नहीं सजती तो कितने अधिक झूठे होंठ
८ राजपुत्र को। दान उस की आंखों में जो उसे पाता है अनुग्रह
का मणि है और वुह जहां कहीं फिरता है सुफल होता है।
९ जो अपराध को छिपाता है सो प्रेम का खोजी है परन्तु जो
१० बात को दुहराता है सो मित्रों में बिभाग करता है। एक
झिड़की बुद्धिमान को अधिक चिताती है कि सौ कोड़ा मूर्ख
११ को। दुष्ट केवल दंगे का खोजी है सो उस पर कठोर दूत भेजा
१२ जायगा। मनुष्य को उस भालू से भेंट करना जिस के बच्चे
छीन लिये गये उस्से भला है कि मूर्ख से उस की मूर्खता की
१३ दशा में भेंट करे। जो भलाई की संती बुराई करता है बुराई
१४ उस के घर से अलग न होगी। झगड़े का आरंभ पानी के
बहि निकलने की नाईं है सो इस लिये झगड़े को उस्से पहिले
१५ कि बढ़ जाय त्याग करो। जो दुष्ट को निर्दोष और जो धर्म्मी
को दोषी ठहराता है उन दोनों से परमेश्वर को घिन है।
१६ काहे को मूर्ख के हाथ में दाम है जिस्से कि वुह बुद्धि मोल

१७ ले जब कि उस का मन उस की ओर नहीं है। जो मित्र
है सो सदा प्रेम करता है और भाई बिपत्ति के दिन के
१८ लिये उत्पन्न हुआ है। निर्बुद्धि मनुष्य हाथ मारता है और
१९ अपने मित्र के आगे बिचवई होता है। जो झगड़े से प्रीति
रखता है सो अपराध से प्रीति रखता है जो अपने फाटक को
२० ऊंचा करता है सो नाश को ढूंढ़ता है। जिस के मन में हठ
है सो भलाई प्राप्त नहीं करेगा और जो टेढ़ी जीभ रखता है
२१ सो बुराई में पड़ेगा। जो मूर्ख को उत्पन्न करता है सो अपने
ही शोक के लिये करता है और मूर्ख के पिता को आनन्द
२२ नहीं है। आनन्दित मन औषध की नाईं भला करता है
२३ परन्तु टूटा मन हड्डियों को सुखाता है। दुष्ट मनुष्य गोद में
२४ से घूस लेता है कि न्याय के मार्ग फेर देवे। समुझवैया के आगे
२५ बुद्धि है परन्तु मूर्ख की आंखें पृथिवी के सिवानों लों हैं। मूढ़
पुत्र अपने पिता के लिये शोक है और अपनी मा के लिये बड़ी
२६ कड़वाहट। धर्म्मी को भी दंड देना अच्छा नहीं और कुंअरों
२७ को न्याय के लिये मारना भला नहीं। ज्ञानी संभालके बोलता
२८ है और समुझवैया शीतल मन है। मूर्ख भी जब वुह चुपका रहता
है बुद्धिमान गिना जाता है और समुझवैया अपने होंठों को
बंद कर रखता है॥

अठारहवां पर्व्व।

१ जो आप को औरों से अलग करता है वुह अपनी इच्छा
२ को ढूंढ़ता है और हर एक मनोरथ में छेड़ता है। मूर्ख को
समुझ प्रसन्न नहीं परन्तु जब कि उस का मन आप को प्रगट
३ करे। जब दुष्ट आता है तब निन्दा भी आती है और दुर्गति
४ के साथ अपयश आता है। मनुष्य के मुंह की बातें गहिरे
५ जल हैं और बुद्धि का सोता बहता नाला है। धर्म्मी को

न्याय में पलटने को दुष्ट का पक्ष करना अच्छा नहीं है।
६ मूर्ख के होंठ विवाद में पैठते हैं और उस का मुंह थपेड़ा
७ मांगता है। मूर्ख का मुंह उस का बिनाश है और उस के
८ होंठ उस के प्राण के लिये फंदे। फुमफुमाहट की बातें मीठे
ग्रास की नाईं हैं और वे अंत:करण के भीतर पैठ जाती हैं।
९ जो अपने कार्य्य में आलसी है सो बृथा उठान करवैये का भाई
१० है। परमेश्वर का नाम एक दृढ़ गढ़ है धर्म्मी उस में दौड़के
११ बच रहता है। धनी मनुष्य का धन उस का दृढ़ नगर और
१२ उसी की समुझ में एक ऊंची भीत की नाईं है। बिनाश के
आगे मनुष्य का मन फूलता है और प्रतिष्ठा के आगे दीनताई
१३ है। जो बिन सुने बचन कह बैठता है उस के लिये मूर्खता
१४ और लाज है। मनुष्य का प्राण उस की निर्बलता को संभाल
१५ सक्ता है पर टूटे प्राण को कौन सह सक्ता है। चतुर का मन
ज्ञान प्राप्त करता है और बुद्धिमानों के कान ज्ञान को ढूंढते
१६ हैं। मनुष्य का दान उस के लिये ठिकाना कर लेता है और
१७ उसे महज्जनों के पास पहुंचाता है। जो अपने ही पद में पहिला
है सो धर्म्मी जाना जाता है परन्तु उस का परोसी आके उसे
१८ जांचता है। चिट्ठी डालना झगड़ों को मिटा देता है और
१९ बलवानों को अलग करता है। उदास भाई को मिला लेना
दृढ़ नगर को लेने से कठिन है और उन के झगड़े गढ़ के
२० अड़ंगे की नाईं हैं। मनुष्य का पेट उस के मुंह के फल से
तृप्त होता है वुह अपने होंठों की प्राप्ति से संतुष्ट होता है।
२१ जीवन और मरण जीभ के बश में हैं और जो उस्से प्रीति
२२ रखते हैं वे उस का फल खाते हैं। जो पत्नी को प्राप्त करता
है सो उत्तम बस्तु प्राप्त करता है और परमेश्वर से अनुग्रह
२३ पाता है। कंगाल बिन्ती किया करता है परन्तु धनी कड़ा
२४ उत्तर देता है। मनुष्य के मित्र हानि के लिये हैं परन्तु

एक जन जो प्रेम रखता है सो भाई से अधिक सटा रहता
है ॥

उन्नीसवां पर्ब्ब ।

१ जो कंगाल अपनी सच्चाई में चलता है सो उस्से अच्छा है
२ जो टेढ़े होंठ से चलता है और मूढ़ है । प्राण का अज्ञान
रहना भी अच्छा नहीं और जो पांवों से बेग करता है सो
३ पाप करता है । मनुष्य की मूर्खता उस के मार्ग बिगाड़ती है
४ और उस का मन परमेश्वर से उदास होता है । धन बहुत से
मित्र बनाता है परन्तु कंगाल अपने मित्र से अलग किया जाता
५ है । झूठा साक्षी निर्दोष न ठहरेगा और मिथ्यावादी न बचेगा।
६ बहुत से लोग राजपुत्र की दया के लिये बिन्ती करेंगे और सब
७ उस मनुष्य के मित्र हैं जो दान देता है । कंगाल के तो सारे
भाई उस्से बैर रखते हैं सो कितना अधिक उस के मित्र उस्से
दूर जायेंगे वुह गिड़गिड़ाके उन का पीछा करता है परन्तु वे
८ नहीं मानते। जो बुद्धि को प्राप्त करता है सो अपने प्राण को प्यार
९ करता है जो समुझ रखता है सो भलाई पावेगा । झूठा साक्षी
बिना दंड न छूटेगा और मिथ्यावादी नाश हो जायगा।
१० आनन्दता मूर्ख को नहीं सजती तो कितना अधिक कि सेवक
११ कुंअर पर राज्य करे । मनुष्य की चतुराई उस के क्रोध को
टालती है और अपराध पर दृष्टि न करने में उस की प्रतिष्ठा
१२ है । राजा का कोप सिंह के गर्जने की नाईं है परन्तु उस की
१३ कृपा घास पर की ओस की नाईं है । मूढ़ पुत्र अपने पिता की
विपत्ति है और पत्नी का झगड़ा रगड़ा नित्य का टपकना है ।
१४ घर और धन पितरों का अधिकार है और बुद्धिवती पत्नी
१५ परमेश्वर से मिलती है । आलस भारी नींद में डाल देता है
१६ और आलसी प्राणी भूखा मरेगा । जो आज्ञा को पालन करता

है सो अपने प्राण की रक्षा करता है और जो अपनी चालों को
१७ तुच्छ जानता है सो मारा जायगा । जो कंगाल पर दया
करता है सो परमेश्वर को उधार देता है और जो उस ने
१८ दिया होगा वुह उसे फेर देगा। जब लों कि आशा है तब लों अपने
बेटे को ताड़ना किये जा और उस के मार डालने पर अपना मन
१९ मत लगा । अति कोपित मनुष्य दंड ही पावेगा क्योंकि यदि तू
२० उसे छुड़ाये तो तुझे यह वारंवार करना पड़ेगा । मंत्र को सुन और
उपदेश को ग्रहण कर जिसतें अपने अंत में तू बुद्धिमान होवे।
२१ मनुष्य के मन में बहुत सी युक्ति हैं परन्तु परमेश्वर का मंत्र वही
२२ ठहरेगा । मनुष्य की इच्छा उस की दया है और झूठे से
२३ कंगाल अच्छा है । परमेश्वर का भय जीवन के लिये है और
जिस में वुह है सो तृप्त रहेगा बुराई उस के पास न आवेगी।
२४ आलसी अपना हाथ भोजन पात्र में छिपाता है और इतना
२५ नहीं करता कि उसे अपने मुंह लों लावे । ठठेलू को मार
तो भोला चतुर हो जायगा और समुझवैये को दपट तो वुह
२६ ज्ञान को समुझेगा । जो अपने पिता को लूटता है और अपनी
माता को खदेड़ता है सो पुत्र लाज दिलाता है और कलंक
२७ लाता है । हे मेरे बेटे ऐसे उपदेश को मत मान जो ज्ञान
२८ की बातों से फिरता है । झूठा साक्षी न्याय की निन्दा करता
२९ है और दुष्ट का मुंह बुराई निगलता रहता है । ठठेलू के
लिये दंड की आज्ञा धरी है और मूर्खों की पीठ के लिये
कोड़े ॥

बीसवां पर्व्व ।

१ मदिरा ठठेलू बनाती है और मद कोपित करता है और
२ जो कोई इस में भ्रमित है सो बुद्धिमान नहीं है । राजा का
भय सिंह के गर्ज्जन के समान है जो कोई उसे रिसियाता है

३ से। अपने प्राण का घातक है। मनुष्य की प्रतिष्ठा इसी में है
कि झगड़े से अलग रहे परन्तु हर एक मूढ़ छेड़ा करता है।
४ आलसी मनुष्य जाड़े के मारे न जोतेगा इस कारण वुह लवनी
५ में भीख मांगेगा और न पावेगा। मनुष्य के मन का मंच
गहिरे जल के समान है परन्तु समुझवैया मनुष्य उसे खींचेगा।
६ बहुधा मनुष्य अपनी भलाई प्रचारते हैं परन्तु विश्वस्त मनुष्य
७ को कौन पा सक्ता है। धर्म्मी मनुष्य अपनी खराई पर चलता
८ है उस के पीछे उस के बालक धन्य हैं। राजा जो न्याय
के सिंहासन पर बैठता है सो अपनी आंखों से सारी बुराई को
९ दूर करता है। कौन कह सक्ता कि मैं ने अपने मन को
१० पावन किया है मैं अपने पाप से पवित्र हूं। नानाप्रकार के
बटखरे और नानाप्रकार के तौल वे दोनों के दोनों परमेश्वर को
११ घिनित हैं। बालक भी अपनी चाल से जाना जाता है कि
१२ उस के कार्य्य पावन और सीधे होंगे। सुन्ने के कान और
१३ देखने की आंखें परमेश्वर ने दोनों को बनाया है। बहुत
नींद से प्रीति मत कर न होवे कि कंगालपना तुझ पर आ
१४ जावे अपनी आंखें खोल तो तू रोटी से तृप्त होगा। गांहक
कहता है कि यह बुरा है बुरा है परन्तु जब वुह चल
१५ निकलता है तब बड़ाई करता है। सोना और बहुत से मणि
१६ हैं परन्तु ज्ञान के होंठ बहुमूल्य गहने हैं। जो परदेशी का
बिचवई हो उस का कपड़ा छीन ले और ऊपरी के लिये
१७ उसे बंधक रख। छल की रोटी मनुष्य को मीठी लगती है
१८ परन्तु पीछे उस का मुंह कंकरों से भर जाता है। मनोरथ
१९ परामर्श से स्थिर होता है और सुमंत्र से युद्ध कर। लुतरा
जो फिरा करता है सो अपने भेदों को प्रगट करता है और
२० जो अपने होंठों से फुसलाता है उसे मत छेड़। जो कोई
अपने पिता अथवा अपनी माता को स्राप देता है उस का

२१ दीपक महाअंधकार में बुझाया जायगा । आरंभ में शीघ्रता से
अधिकार प्राप्त किया गया परन्तु उस का अन्त न फलेगा ।
२२ मत कह कि मैं बुराई का पलटा लेऊंगा परन्तु परमेश्वर पर
२३ ठहर और वही तुझे बचावेगा । नानाप्रकार के बटखरों में
परमेश्वर को घिन है और छल की तुला कुछ अच्छी नहीं ।
२४ मनुष्य की चाल परमेश्वर से है फिर मनुष्य क्योंकर अपनी
२५ चाल को समुझ सके । यह मनुष्य के लिये फंदा है कि पवित्र
२६ वस्तु को भक्षण करे और मनौती के पीछे सोच करे । बुद्धिमान
राजा दुष्टों को छिन्न भिन्न करता है और उन पर पहिया
२७ फिरवाता है । मनुष्य का आत्मा परमेश्वर का दीपक है जो
२८ मनुष्य के उदर के अंतर को ढूंढा करता है । दया और सत्य
राजा की रक्षा करते हैं और उस का सिंहासन दया से उभड़ा
२९ हुआ है । तरुण मनुष्यों का विभव उन का बल है परन्तु
३० बूढ़ों की शोभा उन के उजले बाल हैं । मार की चोट उस
की बुराई को दूर करती है और कोड़े उदर को अंतर से शुद्ध
करते हैं ॥

एकीसवां पर्ब्ब ।

१ राजा का मन परमेश्वर के हाथ में नदियों के जल की
२ नाईं है वुह उसे जिधर चाहता है उधर फेरता है । मनुष्य
की हर एक चाल अपनी दृष्टि में ठीक है परन्तु परमेश्वर मन
३ को तौलता है । धर्म्म और विचार करना परमेश्वर को बलिदान
४ से अधिक प्रसन्न है । ऊंची दृष्टि और अभिमानी मन और दुष्टों
५ की ज्योति पाप है । चटकहों की चिन्ता केवल बहुताई के
लिये है परन्तु हर एक जो उतावली है केवल कंगालता को
६ पहुंचता है । झूठी बोली से भंडार प्राप्त करना एक उड़नेहारी बृथा
७ है उन लोगों के लिये जो मृत्यु के खोजी हैं । दुष्टों की बटमारी

८ उन्हें भय देगी क्योंकि उन्हों ने बिचार को न माना। मनुष्य
का मार्ग टेढ़ा और कुपन्थ है परन्तु जो पवित्र है उस का
९ कार्य्य ठीक है। घर के कोठे के एक कोने में रहना झगड़ालू
१० स्त्री के साथ संयोग के घर में रहने से अच्छा है। दुष्ट का
प्राण बुराई चाहता है उस का परोसी उस की दृष्टि में कृपा
११ नहीं पाता। जब निन्दक दंड पाता है तब भोला बुद्धिमान
होता है और जब बुद्धिमान उपदेश पाता है तब वुह समुझ
१२ प्राप्त करता है। धर्म्मी मनुष्य बुद्धि से दुष्ट के घर को सोचता
है कि ईश्वर दुष्टों की दुष्टता के कारण से उन्हें गिरा देता है।
१३ जो कंगाल के रोने से अपने कान मूंदता है वुह आप भी
१४ रोवेगा परन्तु उस का रोना सुना न जायेगा। गुप्त दान क्रोध
को धीमा करता है और गोद में प्रतिफल देना महा कोप को
१५ ठंडा करता है। धर्म्मी के न्याय में आनन्द है परन्तु कुकर्म्मियों के
१६ लिये नाश है। जो मनुष्य समुझ के मार्ग से भटकता है सो
१७ मृतकों की मंडली में पड़ा रहेगा। जो लीला से प्रीति रखता
है सो कंगाल मनुष्य होगा जो मदिरा और चिकनाई से मन
१८ लगाता है सो धनी न होगा। धर्म्मी की संती दुष्ट और
१९ खरों की संती अपराधी पलटा दिये जायेंगे। अरण्य में रहना
झगड़ालू और क्रोधी स्त्री के साथ रहने से और भी भला है।
२० अच्छे भंडार और तेल बुद्धिमानों के निवास में हैं परन्तु मूर्ख
२१ मनुष्य उसे उड़ा डालेगा। जो धर्म्म और दया का पीछा करता
२२ है सो जीवन और धर्म्म और प्रतिष्ठा पाता है। बुद्धिमान
मनुष्य बलवानों के नगर पर चढ़ जाता है और उस बल को
२३ जिस पर उन का भरोसा है ढा देता है। जो अपने मुंह और
अपनी जीभ को बश में रखता है सो अपने प्राण को दुखों से
२४ बचाता है। अहंकारी और अभिमानी निन्दक उस का नाम
२५ है जो अहंकार और क्रोध से कार्य्य करता है। आलसी की

इच्छा उसे बधन करती है क्योंकि उस के हाथ परिश्रम से नाह
२६ करते हैं। वुह दिन भर अत्यन्त लालच करता है परन्तु
२७ धर्म्मी दान करता है और नहीं रख छोड़ता। दुष्टों का बलिदान
घिनित है तो कितना अधिक जब कि वुह दुष्टता से लाता
२८ है। झूठा साक्षी नाश होवेगा परन्तु जो जन सुनता है वुह बोलने
२९ के लिये नित्य लैस रहता है। दुष्ट मनुष्य अपने मुंह को कठोर
३० करता है परन्तु खरा वही अपने मार्गों को सोचता है। कोई
बुद्धि और कोई समुझ और कोई परामर्श परमेश्वर के आगे न
३१ लहेगा। संग्राम के दिन के लिये घोड़ा सिद्ध है परन्तु जय
परमेश्वर से है॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ शुभ नाम बड़े धन से अधिक चुने जाने के योग्य है और
२ कृपा सोने रूपे से अधिक अच्छी है। धनवान और कंगाल
३ एकट्ठे मिलते हैं परमेश्वर उन सभों का कर्त्ता है। बुराई को
आगे से देखके चतुर आप को छिपाता है परन्तु भोले लोग
४ उस में बढ़े जाते हैं और दण्ड पाते हैं। दीनताई और परमेश्वर
५ के भय का फल धन और प्रतिष्ठा और जीवन है। हठीले के
मार्ग में कांटे और जाल हैं जो अपने प्राण की रक्षा करता है
६ सो उन से दूर रहेगा। जिस मार्ग में बालक को चला चाहिये
उस में उसे चला और जब बूढ़ा हुआ वुह उस्से न फिरेगा।
७ कंगाल पर धनवान प्रभुता करता है और उधारनिक धनिक
८ का सेवक है। जो बुराई बोता है सो बृथा लवेगा और उस
९ के दण्ड की छड़ी नष्ट हो जायेगी। जिस की आंखें भली हैं
सो आशीष पावेगा क्योंकि वुह अपनी रोटी में से कंगालों को
१० देता है। निन्दक को निकाल दे तो झगड़ा मिट जायेगा हां
११ झगड़ा और कलंक जाते रहेंगे। जो मन की पवित्रताई से प्रेम

रखता है उस के होंठों में अनुग्रह रहता है राजा उस का
१२ मित्र होगा। परमेश्वर की आंखें ज्ञान की रक्षा करती हैं और
१३ वुह अपराधी के व्यवहारों को उलट देता है। आलसी कहता
१४ है कि बाहर सिंह है मैं गलियों में फाड़ा जाऊंगा। पराई स्त्रियों
का मुंह एक गहिरा गड़हा है उस में वुह गिरता है जिस्से
१५ परमेश्वर घिन करता है। मूढ़ता बालक के मन में बंधी हुई
१६ है परन्तु ताड़ना की छड़ी उसे उस में से दूर करेगी। जो
कंगाल पर अन्धेर करता है कि अपना धन बढ़ावे और जो
धनी को देता है वुह निश्चय दरिद्र होगा॥

१७ अपना कान झुका और बुद्धिमानों के वचन सुन और मेरे
१८ ज्ञान पर अपना मन लगा। क्योंकि यह अच्छी बात है कि तू
उन्हें अपने हृदय में धारण करे और वे तेरे होंठों में सजेंगे।
१९ जिसतें तेरा भरोसा परमेश्वर पर होवे मैं ने आज के दिन तुझे
२० हां तुझी को जताया है। क्या मैं ने तुझे अच्छे अच्छे परामर्श
२१ और ज्ञान नहीं लिखे। जिसतें मैं सच्ची बातों का निश्चय
तुझे जनाऊं कि तू उन के उत्तर में जिन्हों ने तुझे भेजा है
सच्ची बातों का उत्तर दे सके॥

२२ कंगाल को मत लूट इस कारण से कि वुह कंगाल है और
२३ फाटक में दुखी को मत सता। क्योंकि परमेश्वर उन के पद
का विवाद करेगा और उन के प्राणों को लूटेगा जिन्हों ने उन
२४ को लूटा है। क्रोधी मनुष्य से मित्रता मत कर और अति
२५ कोपित के साथ मत जा। न हो कि तू उस की चालें सीखे
और अपने प्राण को फंदे में फंसावे॥

२६ तू उन में मत हो जो हाथ मारते हैं अथवा उन में जो
२७ ऋण के कारण बिचवई होते हैं। यदि तुझ पास कुछ भर
देने को न हो तो किस लिये तेरे नीचे का बिछौना खींच ले
२८ जावे। पुराने सिवाने को जो तेरे पितरों ने बांधे हैं मत तोड़॥

२९ जिसे तू अपने काम में चतुर देखता है वुह राजाओं के
आगे खड़ा होगा वुह तुच्छ जनों के आगे खड़ा न होगा॥

तेईसवां पर्ब्ब ।

१ जब तू आज्ञाकारी के साथ भोजन पर बैठे तो चौकसी से
२ सोच कि तेरे आगे क्या है। यदि तू पेटू है तो अपने गले
३ पर छूरी लगा। उस के स्वादित भोजन का लालच मत कर
क्योंकि वुह छल का भोजन है॥
४ धनी होने के लिये परिश्रम मत कर अपनी ही बुद्धि से
५ थम जा। क्या तू अपनी आंखें उस पर दौड़ाविगा जो कुछ नहीं
है क्योंकि धन निश्चय अपने लिये पंख बनाता है और गिद्ध
६ की नाईं आकाश की ओर उड़ जाता है। कुदृष्टि की रोटी मत
७ खा और उस के स्वादित भोजनों की लालसा मत कर। क्योंकि
जैसा वुह अपने मन में चिन्ता करता है वुह वैसा ही है वुह
तुझे कहता है खा और पी परन्तु उस का मन तेरे संग नहीं
८ है। ग्रास जो तू ने खाया है उसे उगल देगा और अपनी मीठी
बातें गवांयेगा॥
९ मूढ़ के कानों में अपनी बातें मत कह क्योंकि वुह तेरी
बुद्धि के वचन की निन्दा करेगा॥
१० पुराने सिवाने को मत टाल और अनाथों के खेत में मत
११ पैठ। क्योंकि उन का मुक्तिदाता सामर्थी है वही तुझ से उन
के पद का विवाद करेगा॥
१२ उपदेश से अपना मन लगा और ज्ञान की बातों पर कान
धर॥
१३ बालक से ताड़ना अलग मत रख क्योंकि यदि तू उसे
१४ छड़ी मारेगा तो वुह मर न जायगा। तू उसे छड़ी से मार
और उस के प्राण को समाधि से बचा॥

१५ हे मेरे बेटे यदि तेरा मन बुद्धिमान हो तो मैं ही हां
१६ मेरा मन ही आनन्दित होगा। और जब तेरे होंठों से सच्ची
बातें निकलेंगी तब मेरा हृदय आनन्दित होगा॥
१७ तेरा मन पापियों से डाह करने न पावे परन्तु तू सारे
१८ दिन परमेश्वर से डरता रह। क्योंकि निश्चय आगे एक प्रतिफल
है और तेरी आस घट न जायेगी॥
१९ हे मेरे बेटे तू सुन और बुद्धिमान हो और मार्ग में अपने
२० मन को चला। तू मद्यपों में और उन में जो अपने मांस
२१ गंवाते हैं मत जा। क्योंकि मद्यप और पेटू कंगाल हो जायेंगे
और नींद चिथड़े पहिनावेगी॥
२२ अपने पिता की बात जो तेरा जनक है सुन और जब
२३ तेरी माता वृद्ध होवे तब उस की निन्दा मत कर। सच्चाई को
मोल ले और मत बेच बुद्धि और उपदेश और समुझ भी।
२४ धर्म्मी का पिता अत्यन्त आनन्दित होगा और जो बुद्धिमान
२५ पुत्र उत्पन्न करता है सो उस्से आनन्द पावेगा। तेरे माता पिता
आनन्द होंगे और जो तुझे जनी सो आनन्दित होगी॥
२६ हे मेरे बेटे अपना मन मुझे दे और तेरी आंखें मेरे मार्गों
२७ से प्रसन्न होवें। क्योंकि वेश्या एक गहिरी खाई है और उपरी
२८ स्त्री सकेत कूआं है। वुह बटमार की नाईं घात में लगी है
और मनुष्यों में अपराधों को बढ़ाती है॥
२९ किस पर संताप है किस पर शोक है कौन झगड़े में पड़ता
है किस को लुतड़ापन है और किस को घाव अकारण हैं और
३० किस की आंखें लाल हैं। वे जो मदिरा के पास अबेर लों
ठहरते हैं वे जो मिली हुई मदिरा की खोज में रहते हैं।
३१ जब मदिरा लाल होवे और उस का रंग कटोरे में देख पड़े
और जब वुह अच्छी भांति से हिलती है तब उसे मत ताक।
३२ अंत को वुह नाग के समान काटेगी और सर्प्प के नाईं डंसेगी।

३३ तेरी आंखें पराई स्त्रियों को देखेंगी और तेरा मन अनुचित
३४ बातें निकालेगा। और तू उस के समान हो जायेगा जो
समुद्र के मध्य में पड़ा रहता है अथवा उस की नाईं जो
३५ गुनरखा की चोटी पर लेटता है। तू कहेगा कि उन्हों ने तो
मुझे मारा है पर मैं तो पीड़ित न हुआ उन्हों ने मुझे पीटा मैं
नहीं जानता कि कब उठूंगा मैं फिर उसे खोजूंगा ॥

चौबीसवां पर्व्व ।

१ बुरे मनुष्यों से डाह मत कर और उन की संगत की चाह
२ मत रख। क्योंकि उन के मन बिनाश का सोच करते हैं और
३ उन के होंठ बुराई बोलते हैं। बुद्धि से घर बनाया जाता है
४ और समुझ से वुह दृढ़ किया जाता है। और ज्ञान से कोठरियां
बहुमूल्य और सुन्दर धन से भर जायेंगी ॥

५ बुद्धिमान मनुष्य बली है हां ज्ञानी मनुष्य बल बढ़ाता है।
६ क्योंकि बुद्धि के मंत्र से तू अपना युद्ध करेगा और मंत्रियों की
बहुताई से बचाव है ॥

७ बुद्धि मूर्खों के लिये अति ऊंची है वुह फाटक पर अपना
मुंह न खोलेगा ॥

८ जो बुराई की चिन्ता करता है सो बिगाड़ू जन कहलायेगा ॥

९ मूर्खता की चिन्ता पाप है और ठठेलू से मनुष्यों को घिन
है ॥

१० यदि तू बिपत्ति के दिन मूर्छित हो जावे तो तेरा बल
थोड़ा है ॥

११ यदि तू उन्हें जो मृत्यु के लिये खैंचे गये हों और उन्हें
१२ जो मारे जाने पर लैस हैं अपना हाथ खींचे। यदि तू कहे
कि देखो हम जानते न थे तो क्या वुह जो अन्तःकरण को
जांचता है यह नहीं सोचता और जो तेरे प्राण का रक्षक है

सो क्या नहीं जानता और क्या मनुष्य को उस के कार्य्य के
समान पलटा न देगा ॥
१३ हे मेरे बेटे तू मधु खा क्योंकि वुह अच्छा है और
१४ मधु का छत्ता जो तेरे तालू में मीठा है। सो बुद्धि का ज्ञान
तेरे प्राण को होगा जब तू उसे पावे उस का प्रतिफल होगा
और तेरी आशा वृथा न होगी ॥
१५ हे दुष्ट धर्म्मी के निवास की घात में मत लग उस के चैन
१६ के स्थान को मत लूट। क्योंकि धर्म्मी सात बार गिरता है
१७ और फिर उठता है परन्तु दुष्ट बुराई में गिर जायेंगे। जब तेरा
बैरी गिर पड़े तब आनन्दित मत हो और जब वुह ठोकर खाय
१८ तो तेरा मन मगन न हो। जिसतें न हो कि परमेश्वर देखे
और उस की दृष्टि में बुरा लगे और अपना क्रोध उस पर से
१९ उठा लेवे। दुष्टों के कारण से तू अपने तईं मत कुढ़ा और
२० दुष्टों से डाह मत कर। क्योंकि बुरे का अंत सुफल न होगा
और दुष्टों का दीपक बुझ जायेगा ॥
२१ हे मेरे बेटे तू परमेश्वर से और राजा से डर और दंगइतों
२२ के संग मत रह। क्योंकि उन की विपत्ति अचानक आ पड़ेगी
और उन दोनों के विनाश को कौन जानता है ॥
२३ ये भी बुद्धिमानों की बातें हैं न्याय में पक्ष करना भला
२४ नहीं। जो दुष्ट से कहता है कि तू धर्म्मी है लोग उसे स्राप
२५ देंगे और जातिगण उस्से घिन करेंगे। परन्तु जो उसे दपटते
हैं वे आनन्दित होंगे और उन पर अच्छी आशीष होगी ॥
२६ जो ठीक उत्तर देता है उस के होंठ चूमे जायेंगे॥
२७ बाहर में अपना कार्य्य सिद्ध कर और अपने लिये खेत में
उसे ठीक कर और उस के पीछे अपना घर बना ॥
२८ अपने परोसी पर अकारण साक्षी मत हो और अपने होंठों
२९ से मत छल। मत कह कि मैं उस्से ऐसा करूंगा जैसा उस

ने मुझ से क्रिया में मनुष्य को उस के काम के समान पलटा
देऊंगा ॥
३० मैं आलसी के खेत के पास से और असमुझ के दाख की
३१ बाटिका के पास से गया । और देखो वुह कांटों से समस्त छा
रहा था और भटकटैया उसे ढांपे हुए थीं और उस की पत्थर
३२ की भीत टूटी हुई थी । तब मैं ने देखा और मन से बूझा मैं
३३ ने उस पर दृष्टि किई और उपदेश पाया । थोड़ा सोना और
३४ थोड़ा ऊंघना और सोने के लिये हाथ को समेटना । सो तेरी
दरिद्रता पथिक की नाईं और तेरी दीनता ढलैत मनुष्य के
समान आवेगी ॥

पच्चीसवां पर्ब्ब ।

१ ये भी सुलेमान के दृष्टान्त हैं जिन्हें यहूदाह के राजा
हिज़्क़ियाह के लोगों ने उतारा ॥
२ बात को छिपाना ईश्वर का बिभव है परन्तु राजा की प्रतिष्ठा
३ बात को खोज लेने में है । जैसे स्वर्ग की ऊंचाई और पृथिवी
४ की नीचाई वैसे राजाओं के मन का भेद नहीं मिलता । रूपे
का मैल छांट डाल तो सुनार के लिये एक पात्र निकल आवेगा।
५ दुष्ट को राजा के पास से दूर कर तब उस का सिंहासन धर्म्म
६ से दृढ़ होगा । राजा के आगे अपना बिभव मत दिखा और
७ महानों के स्थान पर खड़ा मत हो । क्योंकि भला है कि तुझ
से कहा जाय कि ऊपर आ उस्से कि तू कुंअर के आगे जिसे
८ तेरी आंखों ने देखा है घटाया जाय। झगड़ने को शीघ्र मत
निकल न हो कि तू उस के अन्त को न जाने कि तू क्या करे
९ जब तेरा परोसी तुझे लज्जित करे । तू अपने परोसी से अपने
पद का बिवाद कर ले और दूसरे के गुप्त को प्रगट न कर ।
१० न हो कि सुनवैया तुझे लज्जित करे और तेरा अपयश किसी

११ रीति से न मिटे। समय पर कहा हुआ वचन सोने के आतों
१२ के समान है जो चांदी के चित्र पर खुदे हों। जैसे सोने की
वाली और चोखे सोने का गहना वैसे ही बुद्धिमान घुड़कवैया
१३ आधीन कान के लिये है। जैसे पाले का शीत लवनी में वैसे ही
विश्वस्त दूत अपने भेजवैयों के लिये है क्योंकि वुह अपने
१४ स्वामियों के मन को शान्ति करता है। जो कोई झुठाई के
दान पर अपनी बड़ाई करता है वुह उन मेघों और पवनों के
१५ समान है जिन के साथ वर्षा न हो। बड़े धीरज से कुंअर
१६ मान लेता है और कोमल जीभ हड्डी को तोड़ती है। क्या तू
ने मधु पाया तू इतना खा जितना तेरे लिये बस है न होवे
१७ कि तू अधिक खा जाय और उछाल डाले। अपने परोसी के
घर से अपने पावों को रोक न हो कि वुह तुझ से अघा जाय
१८ और तुझ से बैर रक्खे। जो मनुष्य अपने परोसी पर झूठी
साक्षी देता है सो हथौड़ा और एक खड्ग और चोखा बाण है।
१९ दुख में अविश्वस्त मनुष्य का भरोसा रखना टूटे दांत और लंगड़े
२० पांवों के समान है। जैसा जाड़े में वस्त्र उतार लेना और
जवखार पर सिरका वैसा है जैसा राग गाना शोकार्त्त मन
२१ के आगे। यदि तेरा बैरी भूखा होवे तो उसे रोटी खाने को दे
२२ और यदि वुह प्यासा होवे तो उसे पानी पीने को दे। क्योंकि तू
उस के सिर पर आग के अंगारों का ढेर करेगा और परमेश्वर
२३ तुझे प्रतिफल देगा। जिस रीति से उत्तरहिया पवन मेंह को
उड़ा ले जाती है वैसा ही क्रोधित रूप चवाई जीभ को।
२४ घर की छत के एक कोने में रहना और भी भला है कि
२५ झगड़ालू स्त्री के साथ चौड़े घर में। जैसे प्यासे के लिये ठंडा
पानी वैसा ही वुह मंगलसमाचार है जो दूर देश से आवे।
२६ धर्म्मी मनुष्य का दुष्ट के आगे झुकना ऐसा है जैसे गंदला सोता
२७ अथवा बिगड़ी धारा। जैसा बहुत मधु खाना अच्छा नहीं है

२८ वैसा अपना विभव ढूंढ़ना ठीक नहीं है। जो अपने प्राण को
वश में नहीं रखता सो एक नगर के समान है जो गिरा हुआ
बिन भीत का हो॥

छब्बीसवां पर्ब्ब ।

१ जैसा तपन में पाला और लवनी में मेंह वैसा मूर्ख को
२ प्रतिष्ठा नहीं सजती। जैसे चिड़ियों का भ्रमना और सुपाबीना
३ का उड़ते फिरना वैसा अकारथ स्राप न आवेगा। घोड़े के लिये
कोड़ा और गदहे के लिये ढट्टी और मूर्ख की पीठ के लिये
४ छड़ी। मूर्ख को उस की मूर्खता के समान उत्तर मत दे न
५ हो कि तू भी उस के समान हो जाय। मूर्ख को उस की
मूर्खता के समान उत्तर दे न हो कि वुह अपनी दृष्टि में
६ बुद्धिमान होवे। जो मूर्ख के हाथ से संदेश भेजता है सो पांव
७ काटता है और अंधेर पीता है। जैसा लंगड़े की टांगें लटकती
८ हैं वैसा मूर्खों के मुंह में दृष्टान्त है। जैसे मणि की थैली
पत्थरों के ढेर में वैसा ही वुह जो मूर्ख को प्रतिष्ठा देता है।
९ जैसा कांटा मद्यप के हाथ में गड़ जाता है वैसा मूर्खों के मुंह
१० में दृष्टान्त है। अति महान जो सब का सृष्टिकर्त्ता है वुह
११ मूर्खों और अपराधियों दोनों को प्रतिफल देता है। जैसा कुत्ता
अपने छांट को फिर खाता है वैसा मूर्ख अपनी मूर्खता फिर
१२ फिर प्रगट करता है। क्या तू मनुष्य को जो अपनी दृष्टि में
बुद्धिमान हो देखता है तो उस के विषय में मूर्ख से अधिक
१३ आशा है। आलसी कहता है कि मार्ग में सिंह है सिंह गलियों
१४ में है। जैसा द्वार अपनी चूलों पर फिरता है वैसा आलसी अपने
१५ बिछौने पर। आलसी अपना हाथ पात्र में छिपाता है और उसे मुंह
१६ में फेर लाना बड़ा दुख है। आलसी अपनी समुझ में सात मनुष्यों
से जो बिचार ला सक्ते हैं आप को अधिक बुद्धिमान जानता है॥

१७ जो चल निकलने में औरों के झगड़े से छेड़ता है सो ऐसा
१८ है जैसा कोई कुत्ते का कान धर लेता है। जैसा बौड़हा जो
१९ लवर को और बाण और मृत्यु को फेंकता है। वैसा ही वुह
मनुष्य है जो अपने परोसी को छल देकर कहता है कि मैं ने
२० तो ठट्ठा किया। ईंधन बिना आग बुझ जाती है वैसे जहां
२१ लुतड़ा नहीं तहां झगड़ा मिट जाता है। जैसा अंगारों पर
कोइले और आग पर ईंधन वैसा झगड़ालू मनुष्य झगड़ा उठाने
२२ में। फुसफुसाऊ की बातें मीठे ग्रासों की नाईं हैं और वे
अंतःकरण के भीतर जाती हैं॥

२३ जलते होंठ और दुष्ट मन चांदी के मैल से ढंपे हुए ठीकरे
२४ के समान हैं। जो बैर रखता है सो होंठों से कपट करता है
२५ कि मानो नहीं जानता पर मन में छल रख छोड़ता है। जब
वुह अनुग्रह की बातें करता है तब उस की प्रतीति न कर क्योंकि
२६ उस के मन में सात घिन हैं। जिस की डाह गुप्त में छिपी है
२७ उस की दुष्टता मंडली के आगे दिखाई जायेगी। जो गड़हा खोदता
है सो उस में गिरेगा और जो पत्थर ढलकाता है वुह पलटके
२८ उसी पर पड़ेगा। झूठी जीभ उन से डाह रखती है जो उसे
ताड़ना करते हैं और लुतड़े का मुंह बिनाश करता है॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब।

१ घमंड मत कर कि कल यों करूंगा क्योंकि तू नहीं जानता कि
२ दिन भर में क्या होगा। दूसरा तेरी बड़ाई करे और न तेरा ही
३ मुंह ऊपरी और न तेरे ही होंठ। पत्थर भारी है और बालू
४ गरू परन्तु मूढ़ का कोप दोनों से भारी है। क्रोध क्रूर है और
रिस एक बढ़ियाल परन्तु कौन है जो डाह के आगे ठहर सक्ता
५। ६ है। प्रगट झिड़की गुप्त प्रेम से उत्तम है। स्नेही के घाव
७ विश्वस्त हैं परन्तु बैरी के चूमे छली हैं। अघाया मन मधु

को लताड़ता है परन्तु भूखे प्राणी के लिये हर एक कड़वी
८ वस्तु मीठी है। जो मनुष्य अपने स्थान से भ्रमता है वुह
९ चिड़िया के समान है जो अपने खोंते से भ्रमती है। सुगंध
तेल और धूप मन को आनन्दित करते हैं वैसा मनुष्य के लिये
१० उस के मित्र के प्राण के मंत्र मीठे हैं। अपने मित्र और अपने
पिता के मित्र को त्याग मत कर और अपनी विपत्ति के दिन
अपने भाई के घर मत जा क्योंकि समीप का परोसी दूर के भाई
११ से अच्छा है। हे मेरे बेटे बुद्धिमान हो और मेरे मन को
आनन्दित कर जिसतें मैं उसे जो मुझे उलाहना देता है उत्तर
१२ दे सकूं। चतुर आगे से बुराई को देखता है और आप को
१३ छिपाता है परन्तु भोले बढ़े जाके दण्ड पाते हैं। जो परदेशी
का बिचवई हो तू उस के कपड़े ले ले और उस्से जो उपरी
१४ स्त्री का हो बंधक रख ले। जो बिहान को उठके अपने मित्र
को बड़े शब्द से आशीष देता है सो उस के लिये एक स्राप
१५ गिना जायेगा। झड़ी के दिन का सदा टपकना और झगड़ालू
१६ स्त्री दोनों एक हैं। जो उसे छिपाता है सो पवन को छिपाता
है और अपने दहिने हाथ की सुगंध जो आप को प्रगट करती है।
१७ जैसा लोहा लोहे को चोखा करता है वैसा मनुष्य अपने मित्र
१८ के रूप को चोखा करता है। जो गूलर के वृक्ष की रक्षा करता
है सो उस का फल खायगा और जो अपने स्वामी की रक्षा
१९ करता है सो प्रतिष्ठा पावेगा। जैसा पानी में मुंह मुंह के समान
२० दिखाई देता है वैसा मनुष्य का मन मनुष्य के समान। पाताल
और नाश नहीं भरते वैसा ही मनुष्य की आंखें तृप्त नहीं होतीं।
२१ जिस रीति से चांदी के लिये घड़िया और सोने के लिये भट्ठी
२२ है उसी रीति से मनुष्य की बड़ाई मनुष्य के लिये। यद्यपि
तू मूढ़ को गेहूं के साथ ओखली में डालके मूसल से कूटे
२३ तथापि उस की मूढ़ता उस्से दूर न होगी। अपने झुंडों की

दशा को जान्ने में यत्न कर और अपने ढोरों पर मन लगा।
२४ क्योंकि संपत्ति सदा नहीं रहती और क्या मुकुट पीढ़ी से पीढ़ी
२५ लों। तृण हटाया जाता है और कोमल घास दिखाई देती है
२६ और पहाड़ों के साग पात बटोरे जाते हैं। मेम्ने तेरे पहिरावा
२७ के लिये हैं और बकरे तेरे खेत के मोल हैं। और बकरियों
का दूध तेरे खाने के लिये और तेरे घराने के लिये और तेरी
लौंडियों की जीविका के लिये है॥

अट्ठाईसवां पर्व्व।

१ दुष्ट जब कोई उन का पीछा नहीं करता तब भागते हैं परन्तु
२ धर्म्मी सिंह के समान साहसी हैं। देश के अपराधों के कारण
उस के बहुत से कुंअर होते हैं परन्तु समुझवैया और बुद्धिमान
३ से वुह स्थिर हो जायेगा। जो मनुष्य कंगाल है और कंगालों
पर अन्धेर करता है सो बौछार की नाईं है जो अन्न को नाश
४ करता है। जो व्यवस्था को त्याग करते हैं सो दुष्ट की स्तुति
करते हैं परन्तु व्यवस्था के पालक उन से विरुद्ध करते हैं।
५ बुरे मनुष्य न्याय को नहीं समुझते पर जो परमेश्वर के खोजी
६ हैं सो सब कुछ समुझते हैं। कंगाल जो अपनी खराई पर
चलता है उस्से भला है जो अपने मार्गों से भटका हुआ और
७ वुह धनी है। जो व्यवस्था को पालन करता है सो बुद्धिमान पुत्र
है परन्तु जो खाऊ को खिलाता है सो अपने पिता को लज्जित
८ करता है। जो ब्याज और अधर्म्म से अपनी संपत्ति को बढ़ाता
है सो उस के लिये जो कंगालों पर दया करेगा बटोरता है।
९ जो व्यवस्था के सुन्ने से अपने कान को फेर देता है उस की
१० प्रार्थना भी घिनित है। जो धर्म्मियों को भटकाके उन्हें बुरे मार्ग
पर चलाता है सो अपने गड़हे में आप ही गिरेगा परन्तु खरे
११ अच्छी वस्तुन के अधिकारी होंगे। धनी मनुष्य अपनी दृष्टि

में बुद्धिमान है परन्तु कंगाल जो बुद्धिमान है उसे पहिचान
१२ लेता है। जब धर्म्मी आनन्द करते हैं तब बड़ा बिभव है
१३ परन्तु जब दुष्ट उभड़ते हैं तब मनुष्य ढूंढ़ा जाता है। जो
अपने पापों को ढांपता है सो भाग्यमान न होगा परन्तु जो
उन्हें मान लेता है और उन्हें छोड़ता है सो दया पावेगा।
१४ क्या ही धन्य वुह मनुष्य जो सदा डरा करता है परन्तु जो
१५ अपने मन को कठोर करता है सो बुराई में गिरेगा। जैसा
गर्जता हुआ सिंह और भ्रमता हुआ रीछ वैसा ही दुष्ट आज्ञाकारी
१६ कंगाल पर है। असमुझ प्रधान भी महा अंधेरी है परन्तु जो लोभ
१७ से बैर रखता है सो अपनी बय बढ़ावेगा। जो मनुष्य किसी
मनुष्य के लोहू से दबा हुआ है सो भागके गड़हे में गिरेगा
१८ उसे कोई न थांभेगा। जो खराई से चलता है सो बच जायेगा
१९ परन्तु जो कुचाली है सो अकस्मात गिर पड़ेगा। जो अपना
खेत जोता बोया करता है सो बहुत भोजन प्राप्त करेगा परन्तु
जो बृथा लोगों का पीछा करता है सो कंगालपन से पूर्ण होगा।
२० बिश्वस्त मनुष्य आशीषों से उभड़ेगा परन्तु जो धनी होने के
२१ लिये उतावली करता है निर्दंड न जायेगा। मनुष्यों का पक्ष
करना अच्छा नहीं क्योंकि ऐसा मनुष्य रोटी के टुकड़े के लिये
२२ पाप करेगा। जो बुरी आंख रखता है सो धनी होने को
उतावली करता है और नहीं सोचता कि दरिद्रता उस पर आ
२३ पड़ेगी। जो मनुष्य को दपटता है सो आगे को उस्से जो अपनी
२४ जीभ से फुसलाता है अधिक अनुग्रह पावेगा। जो अपनी माता
अथवा पिता को लूटता है और कहता है कि यह अपराध
२५ नहीं सो बिनाशक का संगी है। जिस के मन में घमंड है सो
झगड़ा उभाड़ता है परन्तु जिस का भरोसा परमेश्वर पर है सो
२६ पुष्ट किया जायेगा। जो अपने मन पर भरोसा रखता है सो
मूर्ख है परन्तु जो बुद्धि से चलता है सोई छुड़ाया जायेगा।

२७ जो कंगाल को देता है उस की घटी न होगी परन्तु जो अपनी
२८ आंखें छिपाता है बहुत स्राप पावेगा। जब दुष्ट उभड़ते हैं
तब मनुष्य आप को छिपाते हैं परन्तु जब वे नष्ट होते हैं
तब धर्म्मी बढ़ते हैं॥

उनतीसवां पर्व्व।

१ डपटा हुआ मनुष्य जो अपने गले को कठोर करता है सो
२ बिना औषध अकस्मात मारा जायेगा। जब धर्म्मी बढ़ते हैं तब
लोग आनन्दित होते हैं परन्तु जब दुष्ट प्रभुता करता है तब
३ लोग शोक करते हैं। जो मनुष्य बुद्धि से प्रेम रखता है सो
अपने पिता को मगन करता है परन्तु जो वेश्यों की संगत
४ करता है सो अपनी संपत्ति उड़ाता है। राजा न्याय से अपने
देश को स्थिर करता है परन्तु भेंटों का जन उसे बिगाड़ता है।
५ जो मनुष्य अपने परोसी से मिथ्या प्रशंसा करता है सो उस के
६ डगों के लिये जाल बिछाता है। दुष्ट मनुष्य के अपराध में
एक जाल है परन्तु धर्म्मी गाता है और मगन होता है।
७ धर्म्मी मनुष्य कंगालों के पद को बूझता है परन्तु दुष्ट जाने
८ की चिन्ता नहीं करता। निन्दक नगर में आग लगाते हैं परन्तु
९ बुद्धिमान क्रोध को फेर देते हैं। यदि बुद्धिमान मूर्ख से बिवाद
१० करे चाहे कोप से चाहे हंसी से तो वहां चैन नहीं। घातक
खरे से बैर रखते हैं परन्तु सज्जन उस का प्राण बचाता है।
११ मूर्ख अपना सारा मन उच्चारता है परन्तु बुद्धिमान आगे के
१२ लिये रोकता है। यदि आज्ञाकारक झूठी बात को सुना करे तो
१३ उस के समस्त सेवक दुष्ट हो जाते हैं। कंगाल और ब्याजग्राहक
एकट्ठे होते हैं परमेश्वर उन दोनों की आंखें उंजियाली करता
१४ है। जो राजा धर्म्म से कंगालों का न्याय करता है उस का
१५ सिंहासन सदा स्थिर रहेगा। छड़ी और दपट बुद्धि देती हैं

परन्तु छोड़ा हुआ बालक अपनी माता को लज्जित करता है ।
१६ जब दुष्ट बढ़ जाते हैं तब अपराध बढ़ता है परन्तु धर्म्मी उन
१७ का गिरना देखेंगे । अपने बेटे को ताड़ना कर और वुह तुझे
१८ चैन देगा हां वुह तेरे आत्मा को आनन्दित करेगा । जहां
दर्शन नहीं तहां लोग बिना बिचार हो जाते हैं परन्तु जो
१६ व्यवस्था को पालन करता है सो धन्य है । सेवक बचन से
ताड़ना न पावेगा क्योंकि यद्यपि वुह समझे तथापि वुह न
२० मानेगा । तू देखता है कि मनुष्य अपनी बातों से शीघ्रता करता
२१ है तो मूर्ख से उस्से अधिक आशा है । जो लड़काई से अपने सेवक
को सुकुआरी से पालता है अंत को वुह उस का बेटा हुआ चाहेगा ।
२२ क्रोधी मनुष्य झगड़ा उभाड़ता है और कोपित मनुष्य अपराध
२३ में घाट नहीं । मनुष्य का अहंकार उसे नीचा करेगा परन्तु
२४ प्रतिष्ठा दीनात्मा को संभालेगी । जो चोर का साझी है सो अपने
ही प्राण का वैरी है वुह स्राप सुनता है और उसे प्रगट नहीं
२५ करता । मनुष्य का डर जाल लाता है परन्तु जो परमेश्वर पर
२६ भरोसा रखता है सो रक्षित होगा । बहुत हैं जो आज्ञाकारक
का रूप ढूंढ़ते हैं परन्तु मनुष्य का न्याय परमेश्वर से है ।
२७ अधर्म्मी मनुष्य धर्म्मियों के लिये घिन है और खरा दुष्ट के
लिये घिन ॥

तीसवां पर्ब्ब ।

१ याक़ीह के बेटे आगुर के वचन अर्थात् भविष्यवाणी जो
उस ने एतियाल हां एतियाल और ऊकाल से कही ॥
२ निश्चय मैं मनुष्य से अधिक पशुवत हूं और मनुष्य की
३ सी बुद्धि मुझ में नहीं । और मैं ने न बुद्धि सीखी न धर्म्मियों
४ की पहिचान प्राप्त किई । कौन स्वर्ग पर चढ़ गया और उतरा
किस ने पवन को अपनी मुट्ठी में एकट्ठा किया किस ने पानियों

को वस्त्र में बांधा किस ने पृथिवी के सारे सिवानों को दृढ़
किया यदि तू कह सके उस का नाम क्या और उस के बेटे
५ का नाम क्या। ईश्वर का हर एक बचन शुद्ध किया गया है
६ जिन का भरोसा उस पर है वुह उन के लिये ढाल है। तू
उस के बचन में कुछ मत मिला न हो कि वुह तुझे दपटे
और तू झूठा ठहरे॥
७ मैं ने तुझ से दो बातें चाही हैं सो जीते जी मुझ से अलग
८ मत रख। बृथा और झूठ को मुझ से अलग कर और मुझे
९ न कंगालपन न धन दे मेरे योग्य मुझे भोजन दे। न होवे
कि मैं तृप्त हो जाऊं और मुकरके कहूं कि परमेश्वर कौन
अथवा कंगाल होके चोरी करूं और अपने ईश्वर का नाम
अकारथ लेऊं॥
१० सेवक को उस के स्वामी के आगे कलंक मत लगा न हो
११ कि वुह तुझे स्राप दे और तू दोषी ठहरे। एक पीढ़ी ऐसी है
जो अपने पिता को स्राप देती है और अपनी माता को धन्य
१२ नहीं कहती। एक पीढ़ी अपनी ही दृष्टि में पवित्र है परन्तु
१३ अपनी मलीनता से धोई नहीं गई। एक पीढ़ी है हाय
उस की आंखें उभड़ी हुई हैं और उस की पलकें उठी हुई हैं।
१४ एक पीढ़ी ऐसी है जिस के दांत खड्ग हैं और उस की डाढ़ें छुरियां
जिसतें कंगालों को पृथिवी पर से और दरिद्रों को मनुष्यों में
१५ से भक्षण करे। भेंमिया जोंक की दो बेटियां हैं जो दे दे
पुकारती हैं तीन हैं जो कभी तृप्त नहीं होतीं चार नहीं कहतीं
१६ कि बस। समाधि और बांझ और पृथिवी जो जल से पूर्ण नहीं
और आग नहीं कहती है कि बस॥
१७ वुह आंख जो अपने पिता को चिढ़ाती है और अपनी माता
को मान्ना तुच्छ जानती है तराई के कौवे उसे निकाल लेंगे
१८ और गिद्ध के चिंगने उसे खा लेंगे। मेरे लिये तीन अति

१९ अचंभित हैं हां चार जो मैं नहीं समुझता । गिद्ध का मार्ग
आकाश में और सांप की चाल चटान पर और समुद्र के मध्य
में जहाज़ की चाल और मनुष्य की चाल कन्या के साथ ।
२० व्यभिचारिणी का मार्ग ऐसा है कि वुह खाती है और अपना
मुंह पोंछती है और कहती है मैं ने कुछ दुष्टता नहीं किई ॥
२१ तीन बस्तुन से पृथिवी दुखित है हां चार का भार उठा
२२ नहीं सक्ती। सेवक जब वुह राजा हो जाय और मूढ़ जब वुह
२३ भोजन से तृप्त हो। निर्लज्ज से जब वुह ब्याही जावे और
२४ दासी से जो अपनी स्वामिनी की अधिकारिणी होवे। चार हैं
२५ जो पृथिवी पर छोटी हैं परन्तु अति बुद्धिमान हैं। चिउंटी
बलवान नहीं तथापि वे अपने लिये भोजन तपन में बटोरती
२६ हैं। खरहा निर्बल है तथापि पहाड़ियों में अपनी मांद बनाता
२७ है। टिड्डियों का राजा नहीं तथापि वे एकट्ठी होके निकलती
२८ हैं। और मकड़ी जो अपने हाथों से पकड़ती है और राजाओं
के भवनों में है ॥
२९ तीन हैं जो सुरीति से चलती हैं हां चार की चाल सुन्दर
३० है। सिंह जो पशुन में प्रबल है और किसी के साम्ने से फिरता
३१ नहीं। पराक्रमी अश्व और बकरा भी और राजा जिस के साथ
लोग हैं ॥
३२ यदि तू ने मूढ़ता से आप को उभाड़ा अथवा यदि तू ने
३३ बुरी चिन्ता किई तो हाथ अपने मुंह पर रख। निश्चय दूध
मथने से मक्खन निकलता है और नाक मरोड़ने से लोहू
निकलता है वैसा कोप को छेड़ने से झगड़ा उठता है ॥

एकतीसवां पर्ब्ब ।

१ लमूएल राजा के बचन अर्थात् वुह भविष्यवाणी जो उस
की माता ने उसे सिखाई ॥

२ हे मेरे बेटे क्या और हे मेरी कोख के बेटे क्या और हे
३ मेरी मनौतियों के बेटे क्या कहूं। अपना बल स्त्रियों को मत
दे और अपनी चाल उसे जो राजाओं को नष्ट करती है॥
४ हे लमूएल राजाओं को मद्यपान करना ठीक नहीं और
५ तीक्ष्ण पान राजपुत्रों को उचित नहीं। न होवे कि वे पीवें
और व्यवस्था को भूल जायें और दुखित के समस्त पुत्र के
६ न्याय को पलट डालें। तीक्ष्ण पान उसे देओ जो नाश होने
७ पर है और दाखरस उन्हें जिन का मन उदास है। जिसतें
वुह उसे पीये और अपने कंगालपन को भूल जाये और अपनी
बिपत्ति को फिर चेत न करे॥
८ अपना मुंह गूंगे के लिये खोल और उन के पुत्रों के पद के
९ लिये जो नाश होने पर हैं। अपना मुंह खोलके धर्म्मन्याय
कर और दीन और कंगाल के पद के लिये बिचार कर॥
१० धर्म्मी स्त्री को कौन पा सक्ता है क्योंकि उस का मोल
११ मोतियों से अधिक है। उस के पति का मन चैन से उस की
१२ प्रतीति करता है कि वुह लाभ का आधीन न होगा। वुह
१३ अपने जीवन भर उस्से भलाई करेगी और बुराई नहीं। वुह ऊन
और सन ढूंढती है और अपने हाथों से बांछा के साथ कार्य्य
१४ करती है। वुह ब्योपारियों के जहाज़ों के समान है अपना
१५ भोजन दूर से ले आती है। और वुह रात रहते हुए उठती है
और अपने घराने को भोजन देती है और अपनी कन्याओं को भाग
१६ देती है। वुह एक खेत की चिन्ता करती है और उसे ले
लेती है अपने हाथों के फल से दाख की बाटिका लगाती है।
१७ वुह अपनी कटि को बल से कसती है और अपनी भुजाओं को
१८ पोढ़ करती है। उस को जान पड़ता है कि मेरा ब्योपार भला
१९ है रात को उस का दीपक नहीं बुझता। वुह तकले पर अपने
२० हाथ चलाती है और उस के हाथ अटेरन पकड़ते हैं। वुह

कंगाल की ओर अपना हाथ बढ़ाती है हां वुह अपना हाथ
२० आधीन की ओर फैलाती है । वुह अपने घराने के लिये पाला
से नहीं डरती क्योंकि उस के समस्त घराने लाल वस्त्र पहिने
२२ हैं । वुह अपने लिये बूटा काढ़े हुए का ओढ़ना बनाती है
२३ उस का वस्त्र पीताम्बर और बैंजनी है । उस का पति प्रसिद्ध
है जब वुह फाटकों में देश के प्राचीनों के संग बैठता है ।
२४ वुह झीना कपड़ा बनाती है और बेचती है और कटिबंध
२५ व्योपारियों को सौंपती है । बल और प्रतिष्ठा उस का पहिराव
२६ है और आनेवाले दिनों में आनन्दित होगी । वुह अपना मुंह
बुद्धि से खोलती है और उस की जीभ में दया की व्यवस्था
२७ है । वुह अपने घराने की चाल को अच्छी रीति से देखती है
२८ और आलस की रोटी नहीं खाती । उस के बालक उठते हैं
और उसे धन्य कहते हैं उस का पति भी उठता है और उसे
२९ सराहता है । बहुतेरी बेटियों ने अच्छे कार्य्य किये हैं परन्तु
३० तू उन सब से उत्तम है । सुशीलता छली है और सुन्दरता बृथा
परन्तु वुह स्त्री जो परमेश्वर से डरती है सराही जायेगी ।
३१ उसे उस के हाथों का फल देओ और उसी के कार्य्य फाटकों
में उसे सराहें ॥

उपदेशक की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ यरूसलम के राजा दाऊद के बेटे उपदेशक के वचन।
२ उपदेशक कहता है कि व्यर्थों का व्यर्थ व्यर्थों का व्यर्थ सब व्यर्थ है।
३ अपने सारे परिश्रम से जो सूर्य्य के नीचे मनुष्य करता है उन
४ से क्या लाभ है। एक पीढ़ी बीती जाती है और दूसरी आती
५ है परन्तु पृथिवी सदा बनी रहती है। सूर्य्य उदय भी होता
है और सूर्य्य अस्त होता है और जहां से उदय हुआ तहां के
६ लिये शीघ्रता करता है। पवन दक्खिन की ओर बहती है
और उत्तर को घूम जाती है वुह नित्य घूमा करती है और
७ फिर अपने चक्र के समान फिर आती है। सारी नदियां समुद्र
में जा मिलती हैं तथापि समुद्र भरता नहीं जहां से नदियां
८ निकलती हैं तहां वे फिर जाती हैं। सब कार्य्य परिश्रम से
भरा है ऐसा कि मनुष्य कह नहीं सक्ता आंख देखने से और
कान सुन्ने से तृप्त नहीं होते॥
९ जो वस्तु हुई है सोई होवेगी और जो बना है सोई बनेगा
१० और सूर्य्य के नीचे कुछ नया नहीं। क्या कोई ऐसी वस्तु है
जिस के विषय में कहा जाय देख यह नई है हमारे आगे
११ पुरातन समय से यह हुआ है। अगिली वस्तुन का स्मरण
नहीं है और उन का स्मरण भी जो होंगे उन के बीच न
रहेगा जो उन के पीछे होंगे॥

१२ मैं उपदेशक यरूसलम में इसराएल का राजा था ।
१३ और स्वर्ग के नीचे के सारे कार्य्य के बिषय में बुद्धि से ढूंढने
और खोजने को मैं ने अपना मन लगाया यह अति कष्ट ईश्वर
ने मनुष्य के पुत्रों को व्यवहार के लिये दिया है ॥
१४ सूर्य्य के नीचे जो काम होते हैं मैं ने उन सभों को देखा
१५ है और देखो कि सब ब्यर्थ और जी का झंझट है। जो टेढ़ा
है सो सीधा नहीं हो सक्ता और जो घाट है सो गिना भी नहीं
१६ जा सक्ता। मैं ने अपने जी में कहा कि देख मैं ने उन सब
से जो मुझ से आगे यरूसलम में हो गये हैं अधिक बड़ी बुद्धि
प्राप्त किई है हां मेरे अन्तःकरण ने बुद्धि और ज्ञान बहुत
१७ देखा है। और मैं ने बुद्धि और बौड़ाहपन और मूढ़ता जान्ने
को मन लगाया मैं ने जान लिया कि यह भी मन का
१८ झंझट है। क्योंकि अधिक बुद्धि में बड़ा शोक है और जो ज्ञान
में बढ़ता है सो दुख में बढ़ता है ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ मैं ने अपने मन में कहा कि आ मैं तुझे सुख बिलास से
२ परखूंगा इस लिये सुख भोग और देखो यह भी बृथा है। मैं
ने हंसी के बिषय में कहा कि तू बौड़ही है और सुख बिलास
से कि क्या करता है ॥
३ मैं ने अपने मन से चाहा कि अपने शरीर को मद्य से खींचूं
तथापि अपने मन को बुद्धि से स्थिर रक्खा और मूढ़ता को
धरने चाहा जब लों देखूं कि वुह कौन सी भली बस्तु है जिस
के लिये मनुष्य के पुत्र स्वर्ग के नीचे जीवन भर परिश्रम करते हैं।
४ मैं ने अपने बड़े बड़े कार्य्य किये अपने लिये घर बनाये और
५ अपने लिये दाख की बारियां लगाईं। मैं ने अपने लिये बाटिके
और बारियां बनाईं और उन में हर प्रकार के फलदार पेड़

६ लगाये । मैं ने अपने लिये जल के कुंड बनाये जिसतें उन से
७ उस बन को सींचूं जो पेड़ों को उपजाता है । मैं ने दास और
दासियां प्राप्त किईं और घर ही के दास मेरे पास थे और जो मुझ
से आगे यरूसलम में थे उन सभों से अधिक छोटे बड़े चौपायों
८ की संपत्ति रखता था । मैं ने चांदी और सोना भी और राजाओं
और परदेशों का बिशेष धन अपने लिये बटोरा मैं ने गानेहारे
और गानेहारियां और मनुष्य के पुत्रों के आनन्द रानी और रानियां
९ अपने लिये ठहराईं । सो मैं महान हुआ और सभों से जो
यरूसलम में मेरे आगे थे बढ़ गया मेरी बुद्धि भी मेरे ही
१० साथ रही । और जो कुछ मेरी आंखों ने चाहा मैं ने उन से
न रोका मैं ने किसी आनन्दता को अपने मन से न रोका
क्योंकि मेरे सारे परिश्रम से मेरा मन आनन्दित हुआ और
११ मेरे सारे परिश्रम का यही फल हुआ । तब मैं ने अपने हाथ
के सारे कार्य्यों को और उस परिश्रम को जो परिश्रम मैं ने किया
था देखा और क्या देखता हूं कि सब बृथा और जीव का
झंझट और सूर्य्य के नीचे कुछ लाभ नहीं ॥

१२ तब मैं ने बुद्धि और बौड़ाहपन और मूर्खता देखने को
अपने को फेरा क्योंकि जो जन राजा के पीछे आयेगा सो जो
१३ हो चुका है उस्से अधिक क्या करेगा । तब मैं ने देखा कि
जैसा उंजियाला अंधियारे से उत्तम है तैसी मूर्खता से बुद्धि
१४ उत्तम हैं । बुद्धिमान की आंखें उस के सिर में हैं परन्तु मूढ़
अंधियारे में चलता है और मैं ने आप ही देखा कि एक ही
बात उन सभों पर बीती है ॥

१५ तब मैं ने अपने मन में कहा कि जैसी मूढ़ पर बीत्ती है
तैसी मुझ पर भी बीती है फिर मैं अधिक बुद्धिमान क्यों हुआ
१६ तब मैं ने अपने मन में कहा कि यह भी बृथा है । क्योंकि
बुद्धिमान का स्मरण मूर्ख से अधिक सदा न किया जायेगा

क्योंकि जो अब है सो आवेये समयों में भुलाया जायेगा और
१७ कैसा बुद्धिमान मूर्ख की नाईं मरता है। इस लिये मैं जीवन
से उदास हुआ क्योंकि जो कार्य्य सूर्य्य के नीचे बना है सो मेरे
१८ लिये शोकमय है क्योंकि सब बृथा और जीव का झंझट है। और
मैं अपने सारे परिश्रम से जो सूर्य्य के नीचे किया था उदास
हुआ क्योंकि जो जन मेरे पीछे होगा मुझे उस के लिये छोड़ना
१९ पड़ेगा। और कौन जाने कि वुह बुद्धिमान अथवा मूर्ख होवे
तथापि वुह मेरे सारे परिश्रम पर प्रभुता करेगा जिन पर मैं ने
परिश्रम किया है और जिन में मैं ने सूर्य्य के नीचे अपने तईं
बुद्धिमान दिखाया है यह भी बृथा है॥
२० इस लिये मैं ने सूर्य्य के नीचे सारे परिश्रमों से अपने मन
२१ को निरास कराया। क्योंकि एक जन है जिस का परिश्रम बुद्धि
में और ज्ञान में और नीति में है तथापि वुह उस जन के
लिये अपना भाग छोड़ जायेगा जिस ने परिश्रम नहीं किया
२२ यह भी बृथा और बड़ी बुराई है। क्योंकि उस के सारे परिश्रम
से और मन के सारे झंझट से जो उस ने सूर्य्य के नीचे परिश्रम
२३ किया है मनुष्य के लिये क्या है। क्योंकि उस का सारा समय
दुख और उस का परिश्रम उदास हां उस का मन रात को भी
२४ चैन नहीं पाता यह भी बृथा है। मनुष्य के लिये खाने पीने
और मन को अपने परिश्रम में आनन्द करने से भला नहीं यह
२५ भी मैं ने देखा कि ईश्वर की ओर से है। क्योंकि मुझ से अधिक
२६ कौन खा सक्ता और कौन मगन हो सक्ता है। क्योंकि जो जन
ईश्वर के आगे भला है उसे ईश्वर बुद्धि और ज्ञान और आनन्द
देता है परन्तु पापी को बटोरने और ढेर करने का परिश्रम
देता है जिसतें वुह उसे देवे जो ईश्वर के आगे भला है यह
भी बृथा और जीव का झंझट है॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ हर एक वस्तु के लिये एक समय है और आकाश के नीचे
२ की हर एक वाञ्छा के लिये एक काल है। जन्ने का एक समय है
और मरने का एक समय है लगाने का एक समय है और
३ लगाये हुए के उखाड़ने का एक समय है। घात करने का
एक समय है और चंगा करने का एक समय है ढाने का एक
४ समय है और बनाने का एक समय है। विलाप करने का
एक समय है और हंसने का एक समय है हाय हाय करने
५ का एक समय है और नाचने का एक समय है। पत्थर फेंक
देने का एक समय है और पत्थर बटोरने का एक समय है
मिलने का एक समय है और अलग होने का एक समय है।
६ पाने का एक समय है और खोने का एक समय है रखने
७ का एक समय है और फेंक देने का एक समय है। फाड़ने
का एक समय है और सीने का एक समय है चुप होने का
८ एक समय है और बोलने का एक समय है। प्रेम करने का
एक समय है और घिनाने का एक समय है संग्राम करने का
एक समय है और मिलाप करने का एक समय है॥
९ जिस में मनुष्य परिश्रम करता है उस में उसे क्या लाभ
है॥
१० मैं ने उस परिश्रम को देखा है जो ईश्वर ने मनुष्य के पुत्रों
११ को व्यवहार के लिये दिया है। अपने अपने समय में उस ने
हर एक को सुन्दर बनाया है हां उस ने संसार को उन के
मन में रक्खा है यहां लों कि जो कार्य्य ईश्वर करता है मनुष्य
१२ उसे आदि से अन्त लों नहीं पा सक्ता। मैं जानता हूं कि उन
में कुछ अच्छा नहीं परन्तु यह कि आनन्द होके अपने जीवन
१३ में भलाई करें। और यह भी कि हर एक मनुष्य खाय पीये

और अपने सारे परिश्रम की भलाई भोगे यही ईश्वर का दान
१४ है । मैं जानता हूं कि जो कुछ ईश्वर करता है सो सदा के
लिये है उस में कुछ बढ़ाया नहीं जा सक्ता न उस्से घटाया
जा सक्ता और ईश्वर ऐसा करता है जिसतें मनुष्य उस के आगे
१५ डरें । जो है सो आगे था और जो होना है सो आगे हुआ है
और जो बीत गया ईश्वर उस का लेखा चाहता है ॥
१६ और मैं ने सूर्य्य के नीचे बिचारस्थान भी देखा कि वहां
१७ दुष्टता थी और धर्म्म का स्थान कि वहां बुराई । मैं ने अपने
मन में कहा कि ईश्वर धर्म्मी और दुष्ट का बिचार करेगा क्योंकि
हर एक वाञ्छा के लिये और हर एक कार्य्य के लिये वहां एक
समय है ॥
१८ मैं ने अपने मन में मनुष्य के पुत्रों की दशा के बिषय में
कहा कि ईश्वर उन का खोज करे कि उन्हें सूझ पड़े कि हम
१९ पशु हैं । क्योंकि जो मनुष्य के पुत्रों पर बीतता है सो पशु पर
बीतता है और सभों पर एक ही सा बीतता है जैसा यह मरता
है वैसा वुह मरता है हां सभों का एक स्वास है यहां लों
कि पशुन से मनुष्य की कुछ श्रेष्ठता नहीं है क्योंकि सब बृथा
२० है । सब एक ही स्थान को जाते हैं सब धूल से हैं और सब
२१ धूल में फिर जाते हैं । कि मनुष्य के पुत्रों का प्राण जो ऊपर
जाता है और पशु का प्राण जो पृथिवी में उतरता है कौन जानता
२२ है । सो मैं ने देखा कि इस्से भला कुछ नहीं कि मनुष्य अपने
ही कार्य्य में आनन्द करे क्योंकि यह उस का भाग है क्योंकि
उस के पीछे जो होगा सो उसे दिखाने को कौन लावेगा ॥

चौथा पर्व्व ।

१ सो मैं फिरा और सूर्य्य के नीचे के सारे अंधेरों को देखा और क्या
देखता हूं कि सताये हुए का आंसू और उन का कोई शान्तिदायक

नहीं और उन के अंधेरे के हाथ में पराक्रम परन्तु उन का
२ कोई शान्तिदायक न था। सो मैं ने मृतकों को जो मर चुके
हैं उन जीवतों से जो अब जीते हैं अधिक स्तुति किई।
३ और वुह उन दोनों से अच्छा है जो अब लों नहीं हुआ है
और जिस ने सूर्य्य के नीचे के बुरे कार्य्यों को नहीं देखा है॥
४ फिर मैं ने सारे परिश्रम और सारे कार्य्य की खराई सोची
कि इस बात के लिये मनुष्य अपने परोसी के डाह में पड़ता
५ है यह भी बृथा और जीव का झंझट है। मूर्ख अपने हाथ
६ समेटके अपना ही मांस खाता है। कुशल के साथ मुट्ठी भर
भला है कि परिश्रम और जीव के झंझट के साथ दो मुट्ठी
भर॥
७ तब मैं फिरा और सूर्य्य के नीचे बृथा को देखा।
८ एक है और दूसरा नहीं हां उस के न बालक हैं न भाई
तथापि उस के परिश्रम का अन्त नहीं न उस की आंख धन से
तृप्त हैं न वुह कहता है कि मैं किस के लिये परिश्रम करता
हूं और अपने प्राण के सुख को खोता हूं यह भी बृथा हां अति
९ परिश्रम है। दो एक से भले हैं इस कारण कि वे अपने
१० परिश्रम का फल पाते हैं। क्योंकि यदि वे गिरें तो एक अपने
संगी को उठावेगा परन्तु जो जन अकेला होके गिरता है उस
११ पर सन्ताप क्योंकि उसे उठाने को दूसरा नहीं। फिर यदि दो
एक साथ लेटें तो गरमाते हैं परन्तु अकेला क्योंकर गरमा सक्ता
१२ है। और यदि एक उस के विरुद्ध प्रबल होवे तो दो उस का
साम्ना करेंगे और तेहरी रस्सी झट नहीं टूटती॥
१३ बृद्ध और मूर्ख राजा जो चिताया न जाय उस्से कंगाल और
१४ बुद्धिमान लड़का भला है। क्योंकि वुह बन्दीगृह से राज्य
करने को आता है पर जो उस के राज्य में उत्पन्न होता है
१५ सो कंगाल होता है। मैं ने सूर्य्य के नीचे के जीवधारियों को

उस दूसरे बालक सहित जो उस की सन्ती उठेगा देखा ।
१६ उन सब लोगों का अन्त नहीं जिन का वुह अगुआ हुआ है वे
भी जो पीछे आते हैं उस्से आनन्दित न होंगे क्योंकि यह भी
बृथा और जीव का झंझट है ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ जब तू ईश्वर के मन्दिर में जाय तब अपना पांव चौकसी
से रख और मूर्ख के बलि चढ़ाने से सुन्ने को अधिक सिद्ध हो
२ क्योंकि वे नहीं सोचते कि हम बुरा करते हैं । अपने मुंह से
उतावली मत कर और मन से ईश्वर के आगे शीघ्रता से मत
बोल क्योंकि ईश्वर स्वर्ग पर और तू पृथिवी पर इस लिये तेरे
३ बचन थोड़े होवें । क्योंकि कार्य्य की बहुताई से स्वप्न होता है
और बचन की बहुताई से मूर्ख का शब्द जाना जाता है ।
४ जब तू ईश्वर के लिये मनौती माने तब पूरा करने को मत
टाल क्योंकि मूर्खों से वुह प्रसन्न नहीं है जो तू ने माना है सो
५ पूरा कर । मनौती न मान्ने से भला है कि तू मनौती माने
६ और पूरा न करे । अपने मुंह से अपने शरीर को पाप कराने
न दे और न दूत के आगे कह कि यह चूक थी किस लिये
ईश्वर तेरे शब्द से रिसियाके तेरे हाथों के कार्य्य को नष्ट करे ।
७ क्योंकि स्वप्न की और बचन की बहुताई में भी बृथा है परन्तु
तू ईश्वर से डर ॥

८ यदि तू दरिद्र पर अंधेर और देश में अति बिरुद्ध न्याय
और बिचार देखे तो उस बात से आश्चर्य्यित मत हो क्योंकि जो
सब से ऊंचे से ऊंचा है सो देखता है और उन से ऊंचे भी
९ हैं । और देश का लाभ सब के लिये है राजा भी खेत से पाला
जाता है ॥

१० जो चांदी से प्रीति रखता है सो चांदी से तृप्त न होगा और

न वुह जो बहुताई से प्रीति रखता है बहुताई से यह भी
११ बृथा है। जब संपत्ति बढ़ती है तो उस के खवैये भी बढ़ते
हैं और उस के स्वामियों को क्या लाभ है केवल यह कि वे उसे
१२ अपनी आंखों से देखें। परिश्रमी की नींद चाहे थोड़ा खाय
चाहे बहुत मीठी है परन्तु धनवान की बहुताई उसे सोने न
१३ देगी। एक अति बुराई है जो मैं ने सूर्य्य के नीचे देखी है
१४ कि धन अपने स्वामियों की हानि के लिये धरा है। परन्तु
ऐसे धन बुरे परिश्रम से नष्ट होते हैं और वुह पुत्र जन्माता
१५ है और उस के हाथ में कुछ नहीं। जैसा वुह अपनी मा की
कोख से आया वैसा ही नंगा वुह फिर जायेगा और वुह अपने
हाथ में अपने परिश्रम का कुछ फल अपने संग न ले जायेगा।
१६ और यह भी अति बुराई है कि सब बातों में जैसा वुह आया
तैसा जायेगा और जिस ने पवन के लिये परिश्रम किया है
१७ उसे क्या लाभ है। वुह अपने जीवन भर भी अंधियारे में
खाता है और दुख और कोप में बहुत क्लेश पाता है॥
१८ लो मैं ने यह देखा है कि खाने पीने और सारे परिश्रम में
जो सूर्य्य के नीचे जीवन भर मनुष्य करता है जो ईश्वर उसे
देता है उस का फल भोगे यह भला और शुभ है क्योंकि उस
१९ का भाग है। फिर यदि ईश्वर किसी मनुष्य को धन संपत्ति
देता है और उसे पराक्रम देता है कि उसे खावे और अपना
भाग लेवे और अपने परिश्रम में आनन्द होवे तो यह भी ईश्वर
२० का दान है। क्योंकि वुह अपने जीवन के दिनों को बहुत
स्मरण न करेगा क्योंकि उस के मन की आनन्दता में ईश्वर
उस के मन को आनन्द करता है॥

छठवां पर्व्व।

१ एक बुराई है जो मैं ने सूर्य्य के नीचे देखी है और वुह

२ लोगों में प्रसिद्ध है। कि ईश्वर ने किसी मनुष्य को धन और
संपत्ति और महिमा दिई है यहां लों कि उस के मन की सारी
बांछा में घटी नहीं है तिस पर भी ईश्वर ने उसे खाने की
सामर्थ्य नहीं दिई है परन्तु उपरी उसे खाता है यह ब्यर्थ और
३ बुरा रोग है। यदि मनुष्य के सौ पुत्र हों और बहुत बरस लों
जीवे यहां लों कि उस के जीवन के दिन बहुत होवें और
उस का मन भलाई से न भरे और वुह गाड़ा भी न जाय तो
४ मैं कहता हूं कि गर्भपात उस्से भला है। क्योंकि वुह वृथा
आता है और अंधियारे में जाता है और उस का नाम
५ अंधियारे से ढांपा जायेगा। उस ने सूर्य्य को भी न देखा न
६ जाना यह अगिले से अधिक सुख पाता है। और यदि वुह
दो सहस्र बरस जीवे तो भी कुछ सुख नहीं देखता क्या सब
के सब एक ही स्थान को नहीं जाते॥

७ मनुष्य का सारा परिश्रम उस के मुंह के लिये है तिस पर भी
८ उस का जी नहीं भरता। क्योंकि बुद्धिमान मूर्ख से क्या
अधिक रखता है और दुखी जो जीवतों के आगे चलने को
९ जानता है सो क्या रखता है। आंखों का देखा हुआ मन
के भ्रमने से अच्छा है यह भी व्यर्थ और जीव का झंझट
है॥

१० जो हुआ है उस का नाम हो चुका और जाना गया कि
वुह मनुष्य है वुह अपने से बलवान का साम्हना न करे।
११ क्योंकि वृथा बढ़ानेवाली बहुत बस्तु हैं मनुष्य को क्या फल है।
१२ क्योंकि मनुष्य जो अपने जीवन के सारे दिन जिन्हें वुह छाया
के समान वृथा गंवाता है कौन जानता है कि मनुष्य के लिये
क्या भला है क्योंकि मनुष्य को कौन कह सक्ता है कि सूर्य्य
के नीचे उस के पीछे क्या होगा॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ बहुमूल्य सुगंध से सुनाम भला है और जन्म दिन से मरने
का दिन अच्छा है ॥
२ बिलाप के घर जाना जेवनार के घर में जाने से भला है
क्योंकि वुह हर एक जन का अंत और वुह जो जीता है अपने
३ मन में सोचेगा । हंसी से शोक भला है क्योंकि मुंह की
४ मलीनता से मन सुधर जाता है । बुद्धिमानों का मन
बिलाप के घर में है परन्तु मूर्खों का मन सुख अभिलाष के घर
में ॥
५ बुद्धिमान की दपट सुन्ना मनुष्य के लिये मूर्खों के गीत
६ सुन्ने से अति भला है । क्योंकि जैसा हांडी के नीचे कांटों का
पटपटाना तैसा मूर्खों का हंसना है यह भी व्यर्थ है ॥
७ क्योंकि अंधेर करना बुद्धिमान को बौड़हा करता है और
घूस मन को नाश करता है ॥
८ हर एक वस्तु का अंत उस के आरंभ से भला है और संतोषी
अहंकारी से भला है ॥
९ अपने मन में शीघ्र कोपित मत हो क्योंकि मूर्खों की गोद
में क्रोध बसता है ॥
१० मत कह कि अगिले दिन इन से क्यों भले थे क्योंकि तू इस
के बिषय में बुद्धि के साथ नहीं बूझता ॥
११ बुद्धि अधिकार के साथ भली है और सूर्य्य के दर्शी के
१२ लिये लाभ है । क्योंकि बुद्धि एक आड़ है और रोकड़ एक
आड़ है परन्तु ज्ञान की उत्तमता यह है कि अपने स्वामियों
को जीवन देती है ॥
१३ ईश्वर का कार्य्य सोच क्योंकि जो उस ने सीधा किया है
१४ उसे टेढ़ा कौन कर सक्ता है । सुदशा के दिन में आनन्दित

हो परन्तु दुर्दशा के दिन में सोच कि ईश्वर ने उन्हें भी उस
के सन्मुख रक्खा है जिसतें मनुष्य न जाने कि आगे क्या
है ॥

१५ मैं ने अपने बृथा के दिनों में यह सब कुछ देखा है कि एक
धर्म्मी अपने धर्म्म में नष्ट होता है और एक दुष्ट अपनी दुष्टता
१६ में बढ़ता है। अति धर्म्मी मत हो और आप को अति
१७ बुद्धिमान मत कर तू क्यों उजाड़ होवे। अति दुष्ट मत हो
१८ और मूर्ख भी मत हो असमय में क्यों मरे। इसे ग्रहण करना
तेरे लिये भला है हां इस्से भी अपने हाथ मत उठा क्योंकि
जो जन ईश्वर से डरता है सोई उन सभों से बच निकल
आवेगा ॥

१९ बुद्धिमान को बुद्धि नगर के दस बलवन्त से अधिक बलवन्त
२० करती है। क्योंकि पृथिवी में एक धर्म्मी नहीं है जो भला
करता हो और पाप न करे ॥

२१ फिर सब बातों पर जो कही जाती हैं अपना मन मत
२२ लगा न हो कि तू सुने कि तेरा दास तुझे स्रापता है। क्योंकि
तेरा मन भी बहुधा जानता है कि तू ने भी औरों को स्रापा
२३ है। मैं ने बुद्धि से यह सब परखा है मैं ने कहा कि मैं
२४ बुद्धिमान होऊंगा परन्तु वुह मुझ से दूर थी। जो बहुत दूर
और अति गहिरा है उसे कौन पा सक्ता है ॥

२५ मैं ने अपने मन को जान्ने और बिचारने को और बुद्धि
और कारण ढूंढ़ने को और मूर्ख की दुष्टता और बौड़हे की
२६ मूर्खता जान्ने को लगाया। और मैं ने उस स्त्री को मृत्यु से
अति कड़ुई पाया जिस का मन फन्दा और जाल और उस के
हाथ बन्धन हैं जो ईश्वर के आगे भला है सो उस्से बचेगा
२७ परन्तु पापी उस्से पकड़ा जायेगा। देख उपदेशक कहता है
कि कारण पाने को मैं ने एक एक बात को तोला और मैं ने

२८ यह पाया। जिसे अब भी मेरा प्राण खोजता है पर मैं नहीं
पाता सहस्र मनुष्य में से मैं ने एक पाया है परन्तु इन सभों
२९ में एक स्त्री को न पाया। देख केवल यही पाया है कि ईश्वर
ने मनुष्य को खरा बनाया परन्तु उन्हों ने बहुत सी युक्ति
निकाली हैं॥

आठवां पर्व्व।

१ बुद्धिमान के तुल्य कौन है और बात का अर्थ कौन जानता
है मनुष्य की बुद्धि उस के मुंह को प्रकाश करती है और उस
के मुंह की दृढ़ता पलट जायेगी॥
२ मैं तुझे कहता हूं कि तू ईश्वर की किरिया के कारण राजा
३ की आज्ञा को पालन कर। उस की दृष्टि से अलग होने को
उतावली मत कर और बुरी बात पर खड़ा मत हो क्योंकि
४ जो वुह चाहेगा सो करेगा। जहां राजा का बचन है तहां
राज्य है और कौन उस्से कहेगा कि तू यह क्या करता है॥
५ जो आज्ञा को मानता है सो बिपत्ति न जानेगा बुद्धिमान
६ का मन समय को और बिचार को बूझता है। क्योंकि हर
एक ठहराए हुए का समय है और बिचार है इस लिये मनुष्य
७ का दुख उस पर बड़ा है। क्योंकि जो कुछ होगा सो वुह
नहीं जानता है क्योंकि उसे कौन कह सक्ता है कि कब होगा॥
८ कोई मनुष्य आत्मा पर पराक्रम नहीं रखता कि आत्मा
को रख छोड़े और मरने के दिन में भी पराक्रम नहीं रखता
और उस लड़ाई में बचाव नहीं और दुष्टता अपने स्वामियों
को न बचावेगी॥
९ यह सब मैं ने देखा है और अपने मन को सूर्य्य के नीचे
के सारे कार्य्यों पर लगाया है ऐसा समय है कि एक जन
१० दूसरे जन पर अपनी ही बुराई के लिये प्रभुता करता है। और

इसी रीति से मैं ने दुष्टों को गाड़े जाते देखा और पवित्र स्थान
से आये गये थे और जिस नगर में उन्हों ने यह कार्य्य किया
था उस में वे बिसराये गये यह भी बृथा है॥
११ इस कारण से कि बुरे कर्म्म के लिये दंड की आज्ञा शीघ्र नहीं
दिई जाती इस लिये मनुष्यों के पुत्रों के मन बुराई करने को
१२ और दौड़ते हैं। यद्यपि पापी सौ बार बुराई करे और उस
का समय बढ़ जाय तथापि मैं निश्चय जानता हूं कि उन्हीं
का भला होगा जो ईश्वर से डरते हैं जो उस के आगे डरा
१३ करते हैं। परन्तु दुष्ट का भला न होगा और वुह छाया के
समान अपने दिन न बढ़ावेगा क्योंकि वुह ईश्वर के आगे नहीं
डरता॥
१४ पृथिवी पर एक बृथा किई जाती है कि धर्म्मी पर दुष्टों के
कार्य्य के समान बीता है फिर दुष्टों पर धर्म्मी के कार्य्य के
१५ समान बीता है मैं ने कहा कि यह भी बृथा है। तब मैं ने
सुख बिलास को सराहा इस कारण कि सूर्य्य के नीचे मनुष्य
को इस्से अधिक भला नहीं कि खाये पीये और आनन्द करे
क्योंकि उस के जीवन के दिनों में जो ईश्वर ने उसे सूर्य्य के
नीचे दिये हैं यही उस के साथ रहेगा॥
१६ जब मैं ने अपने मन को बुद्धि जान्ने को और पृथिवी पर
जो कार्य्य किया गया है देखने को लगाया क्योंकि ऐसा भी
१७ है कि रात दिन उस की आंखें नींद नहीं देखतीं। तब मैं ने
ईश्वर के सारे कार्य्यों को देखा कि मनुष्य उस कार्य्य को जो
सूर्य्य के नीचे किया जाता है नहीं जान सक्ता है इस कारण
मनुष्य यद्यपि उसे परिश्रम करके ढूंढे तथापि न पावेगा
हां बुद्धिमान भी जो उसे जान्ने चाहे तिस पर भी उसे न
पावेगा॥

नवां पर्व्व ।

१ क्योंकि इन बातों के लिये मैं ने मन लगाया अर्थात् सभों का
वर्णन करने को कि धर्म्मी और बुद्धिमान और उन के कार्य्य
ईश्वर के हाथ में हैं अपने आगे की सारी बातों से कोई मनुष्य
२ प्रेम अथवा बैर को नहीं जानता । सब के लिये सब समान
हैं धर्म्मी पर और दुष्ट पर भले और पवित्र और अपवित्र पर
जो बलि चढ़ाता है उस पर और जो बलि नहीं चढ़ाता है
उस पर एक ही बात बीत्ती है जैसा भला तैसा बुरा जैसा
३ किरियक तैसा अकिरियक । सूर्य्य के नीचे सब जो किया जाता
है उस में यह बुरा है कि सब पर एक ही बात बीत्ती है हां
मनुष्य के पुत्रों का मन भी बुराई से भरा है और जब लों जीते
हैं तब लों उन के मन में बौड़हापन है और उस के पीछे मृतकों
४ में जाते हैं । क्योंकि जो जीवतों में मिला है उस के लिये
आशा है इस लिये कि जीता कुत्ता मरे सिंह से भला है ।
५ क्योंकि जीते जानते हैं कि हम मरेंगे परन्तु मृतक कुछ भी
नहीं जानते और फिर उन का प्रतिफल नहीं क्योंकि उन का
६ स्मरण भी बिसर जाता है । उन का प्रेम भी उन का बैर
भी उन की डाह भी अब नष्ट हैं फिर सदा के लिये सूर्य्य के
नीचे की वस्तुन में उन का कुछ भाग नहीं है ॥
७ अपना मार्ग ले आनन्द से अपनी रोटी खा और मगन मन से
अपना दाखरस पी क्योंकि अब ईश्वर तेरे कार्य्य को ग्रहण करता
८ है । तेरा वस्त्र सदा उजला होवे और तेरे सिर की चिकनाई
९ कधी न घटे । अपनी प्रिय पत्नी के साथ अपने व्यर्थ के जीवन
के सारे दिन जो उस ने सूर्य्य के नीचे तुझे दिये हैं अपने
वृथा के सारे दिन आनन्द से रह क्योंकि जीवन में और सूर्य्य
१० के नीचे के परिश्रम में यही तेरा भाग है । जो कुछ तेरे

हाथ से हो सके सो अपनी सामर्थ्य भर कर क्योंकि समाधि
में जहां तू जाता है तहां न कार्य्य है न युक्ति न ज्ञान न
बुद्धि है ॥
११ मैं फिर आया और सूर्य्य के नीचे देखा कि चालाकों के
लिये दांव और बलवन्त के लिये संग्राम नहीं और न बुद्धिमानों
के लिये रोटी और न ज्ञानियों के लिये धन और न गुणियों
के लिये कृपा परन्तु समय और होनिहार इन सभों पर बीता
१२ है। क्योंकि मनुष्य भी अपना समय नहीं जानता जैसे
मछलियां बुरे जाल में पकड़ी जाती हैं और जैसे पंछी फन्दे
में बझाये जाते हैं तैसा ही बुरे समय में मनुष्यों के सन्तान
बझाये जाते हैं जब अचानक उन पर पड़ती है ॥
१३ यह भी बुद्धि मैं ने सूर्य्य के नीचे देखी है और वुह मेरे
१४ लिये बड़ी है। एक छोटा नगर था और उस में थोड़े मनुष्य
थे और उस के बिरोध में एक महाराज ने आके उसे घेर
१५ लिया और उस के सन्मुख बड़े बड़े गढ़ बनवाये। अब उस
में एक कंगाल बुद्धिमान मिला जिस ने अपनी बुद्धि से उस
नगर को बचाया तिस पर भी उस कंगाल मनुष्य को किसी ने
१६ स्मरण न किया। तब मैं ने कहा कि बल से बुद्धि अच्छी
है तिस पर भी कंगाल की बुद्धि की निन्दा होती है और उस
की बात सुनी नहीं जाती ॥
१७ बुद्धिमानों की धीमी बातें जो उन के चिल्लाने से मूर्खों पर
प्रभुता करती हैं अधिक सुनी जाती हैं ॥
१८ संग्राम के हथियार से बुद्धि अच्छी है परन्तु एक पापी बहुत
सी भलाई को नाश करता है ॥

दसवां पर्व्व ।

१ जैसा मूई माछी से गंधी का तेल बसाता है तैसा ही

तनिक मूढ़पना उस के लिये जो बुद्धि और प्रतिष्ठा में प्रसिद्ध
है ॥
२ बुद्धिमान का मन उस की दहिनी ओर है परन्तु मूर्ख का
मन उस के बाईं ओर ॥
३ हां मूर्ख जब मार्ग में भी जाता है उस का मन घट
जाता है और वुह सब से कहता फिरता है कि मैं मूर्ख
हूं ॥
४ जो अध्यक्ष का मन तेरे बिरुद्ध उठे तो अपना स्थान मत
छोड़ क्योंकि मान लेना बड़े बड़े दोष को शांति करता है।
५ एक बुराई है जो मैं ने सूर्य्य के नीचे देखी एक चूक की नाईं
६ जो अध्यक्ष से निकलती है। कि मूर्खता महात्मा पर धरी है
७ और धनी नीच स्थान पर बैठता है। मैं ने सेवकों को घोड़ों
पर और अध्यक्षों को सेवकों की नाईं भूमि पर चलते देखा
है ॥
८ जो गड़हा खोदता है सो उस में गिरेगा और जो बाड़ा
तोड़ता है उसे सांप डंसेगा ॥
९ जो जन पत्थरों को टारता है सो उन से चोट पावेगा और
जो लकड़ी चीरता है उसी से जोखिम में पड़ेगा ॥
१० यदि लोहा भोता होवे और सान पर उस की धार न
चढ़ावे तो अधिक बल आवश्यक है परन्तु बताने के लिये बुद्धि
लाभ है ॥
११ निश्चय मंत्र बिना सांप डंसेगा और बड़बड़िया उससे अच्छा
१२ नहीं। बुद्धिमान के मुंह के बचन कृपा हैं परन्तु मूर्ख के होंठ
१३ उसी को लील जायेंगे। उस के मुंह के बचन का आरंभ
मूर्खता है और उस के मुंह का अन्त नटखटी और बौड़हापन
१४ है। मूर्ख भी बचन बढ़ाता है मनुष्य नहीं कह सक्ता कि
क्या होगा और जो कुछ उस के पीछे होगा उसे कौन कह

१५ सक्ता है । मूर्खों का परिश्रम उन में से हर एक को थका डालता
है क्योंकि वुह नगर में जाने को नहीं जानता ॥
१६ हे देश जब तेरा राजा बालक हो और तेरे अध्यक्ष बिहान
१७ को खाते हैं तब तुझ पर संताप । हे देश जब तेरा राजा
कुलीनों का बेटा हो और तेरे अध्यक्ष समय पर बल के लिये
खाते हैं और मतवाले होने को नहीं तू धन्य है ॥
१८ अति आलस के कारण जोड़ाई घटी जाती है और हाथों
के आलस के मारे घर गिर पड़ता है ॥
१९ आनन्दता के लिये जेवनार होता है और दाखरस जीवन
को मगन करता है परन्तु रोकड़ सब कार्य्य का है ॥
२० राजा को अपने मन में भी स्राप न दे और धनी को अपने
शयनस्थान में स्राप न दे क्योंकि आकाश का पंछी शब्द
पहुंचावेगा और पखेरू बात कह देगा ॥

ग्यारहवां पर्व्व ।

१ पानियों के ऊपर अपनी रोटी फेंक दे क्योंकि बहुत दिनों
२ के पीछे तू उसे पावेगा । सात जन को हां आठ को भी भाग
दे क्योंकि पृथिवी में जो जो बिपत्ति होगी सो सो तू नहीं
३ जानता । यदि मेघ वर्षा से भरे हैं तब वे पृथिवी पर छूछे
होते हैं और यदि दक्खिन अथवा उत्तर की ओर पेड़ गिरे
४ तो जहां पेड़ गिरेगा तहां पड़ा रहेगा । जो वायु का पारखी
है सो न बोयेगा और जो मेघों को देखता है सो न लवेगा ।
५ तू जैसे पवन के मार्ग को और गर्भिणी की कोख में के हाड़
बढ़ने को नहीं जानता तैसा तू ईश्वर के कार्य्य को नहीं
६ जानता जो सब बनाता है । बिहान को अपना बीज बो और
सांझ को भी अपना हाथ मत उठा क्योंकि तू नहीं जानता कि
कौन ठीक होगा यह अथवा वुह अथवा दोनों के दोनों भले होंगे ॥

७ निश्चय उंजियाला मीठा है और आंखों को सूर्य्य का दर्शन
८ उत्तम है। क्योंकि यदि मनुष्य बहुत दिन जीवे और उन
सभों में आनन्द करे तथापि अंधियारे दिनों को चेत रक्खे
क्योंकि बहुत होंगे सब जो आता है सो बृथा है॥
९ हे तरुण जन अपनी तरुणाई में मगन हो और तेरी
तरुणाई के दिनों में तेरा मन तुझे आनन्दित करे और अपने
मन के मार्गों पर और अपनी आंखों की दृष्टि में चल परन्तु
जान रख कि इन सारी बातों के लिये ईश्वर तेरा बिचार करेगा।
१० और अपने मन से शोक को दूर कर और अपने शरीर से
बुराई निकाल डाल क्योंकि लड़काई और तरुणाई बृथा है॥

बारहवां पर्व्व।

१ और अपनी तरुणाई के दिनों में अपने सिरजनहार को
स्मरण कर जब लों बुराई के दिन और वे बरस न आ लें
२ जब तू कहेगा कि इन में मुझे आनन्द नहीं है। जब लों
सूर्य्य अथवा उंजियाला अथवा चन्द्रमा अथवा तारे अंधियारे
३ न होवें और बरसने के पीछे मेघ फेर न आवें। उस दिन में
कि जब घर के रखवाल थरथराने लगेंगे और बलवन्त जन
कुबड़े होवेंगे और पिसवैये थोड़े के कारण घट जायेंगे और जो
४ खिड़की से देखते हैं धुंधले हो जायेंगे। और गली के क्विाड़
बन्द हो जायें जब चक्की का शब्द धीमा हो जायेगा और
मनुष्य पंछी के शब्द के करते ही उठेगा और गान की सारी
५ कन्या घट जायेंगी। लोग ऊंची बस्तु से भी डरेंगे और मार्ग
में भय होगा और बादाम का पेड़ तुच्छ होगा और फनगा भारी
होगा और इच्छा घट जायेगी क्योंकि मनुष्य अपने सनातन के
घर को जानेवाला है और बिलापी गली गली फिरनेवाले हैं।
६ पहिले उस्से कि चांदी की डोरी खोली जाय और सोने की

कटोरी फट जाय और सोते में घड़ा तोड़ा जाय और कुंड में
७ रहट टूट जाय। तब धूल पृथिवी में फिर जायेगी जैसी थी
और आत्मा ईश्वर पास फिर जायेगा जिस ने उसे दिया है॥
८ उपदेशक कहता है वृथा पर वृथा सब वृथा है।
९ और इस के उपरान्त जैसा कि उपदेशक बुद्धिमान था उस ने
लोगों को हर प्रकार का ज्ञान सिखाया हां मन लगाया और
१० खोज खोजके बहुत से दृष्टांतों को सिद्ध किया। उपदेशक ने
मन भावनी बात पाने को ढूंढ़ा और लिखा हुआ ठीक और
११ सत्य वचन है। बुद्धिमानों के वचन अरई और उन कीलों
की नाई हैं जो सभाओं के स्वामियों से दृढ़ किई गई हैं जिन
१२ को एक ही गड़रिये ने एकट्ठे किया है। और इस के उपरान्त
हे मेरे बेटे इन बातों से सीख बहुत पुस्तक बनाने का अन्त
नहीं और बहुत पढ़ना शरीर को थकाता है॥
१३ अब आओ सारी बातों का अभिप्राय सुनें ईश्वर से डर
और उस की आज्ञा पालन कर क्योंकि यह सब मनुष्य के लिये
१४ अवश्य है। क्योंकि ईश्वर हर एक कार्य्य का और हर एक गुप्त
बात का न्याय करेगा चाहे भला हो चाहे बुरा॥

गीतों का गीत।

पहिला पर्ब्ब।

१।२ सुलेमान के गीतों का गीत। वुह अपने मुंह के चूमें
३ से मुझे चूमे क्योंकि तेरा प्रेम दाखरस से भला है। तेरे सुगंधों
के बास के कारण तेरा नाम सुगंध के समान उंडेला हुआ है
४ इस लिये कन्या तुझ से प्रेम रखती हैं। मुझे खींच हम तेरे
पीछे दौड़ेंगी राजा मुझे अपनी कोठरी में लाया है हम तुझ से
आनन्द और मगन होंगी हम तेरे प्रेम को दाखरस से अधिक
स्मरण करेंगी खरे जन तुझ से प्रेम रखते हैं॥
५ हे यरूसलम की पुत्रियो मैं काली हूं परन्तु सुन्दरी हूं
क़ीदार के तंबुओं की नाईं सुलेमान के ओझलों की नाईं।
६ मुझे मत देखो क्योंकि मैं काली हूं इस कारण कि सूर्य्य मुझ
पर पड़ा है मेरी मां के बालक मुझ से बहुत रिसियाए उन्हों
ने मुझ से दाख की बारी की रखवाली करवाई परन्तु मैं ने
अपने ही दाख की बारी की रखवाली न किई॥
७ हे मेरे मन के प्रिय मुझे बताइये कि आप कहां चराते हैं
मध्यान्ह में कहां बिश्राम देते हैं क्योंकि मैं उस की नाईं क्यों
बनूं जो आप के संगियों के झुंड के अलंग के आड़ में हो॥
८ हे तू जो स्त्रियों में अति सुन्दरी है जो तू न जाने तो
झुंड के पगचिन्हों पर जा और अपने मेम्नों को गड़रियों के
९ तंबुओं के लग चरा। हे मेरी प्रिया मैं ने तुझे फ़िरऊन के रथों के

१० घोड़ों की जथा से उपमा दिई है। तेरे गाल गहनों की पांती
११ से और तेरा गला मोकरों से शोभित है। हम तेरे लिये सोने
के हार चांदी की घुंडी सहित बनावेंगे ॥
१२ जब लों राजा अपने मंच पर है जब लों मेरे जटामासी से
१३ सुगंध निकलती है। मेरा प्रिय मेरे लिये गंधरस की पोटली
१४ है वुह रात भर मेरी छातियों के मध्य में पड़ा रहेगा। मेरा
प्रिय मेरे लिये ऐनजदी के दाख की बारी के कपूर का गुच्छा
है ॥
१५ हे मेरी प्रिया देख तू सुन्दरी है देख तू सुन्दरी है तेरी
आंखें कपोतों की सी हैं ॥
१६ हे मेरी प्रिया देख तू सुन्दरी है हां मन भावनी आ हमारा
१७ बिछौना भी हरा है। हमारे घर के लट्ठे देवदारु के और
धरन सरो की हैं ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ मैं शारून की सेवती और तराइयों का सोसन हूं।
२ जैसा सोसन कांटों में तैसी मेरी प्रिया पुत्रियों में है ॥
३ जैसा बन के पेड़ों में सेब का पेड़ तैसा मेरा प्रिय पुत्रों में
मैं बड़ी आनन्दता से उस की छाया तले बैठी और उस का
४ फल मेरे तालू में मीठा था। वुह मुझे दाखरस के घर में ले
५ गया और उस का झंडा मेरे ऊपर प्रेम था। दाख की टिकियों
से मुझे संभालो सेव से मुझे मगन करो क्योंकि मैं प्रेम से रोगी
६ हूं। उस का बायां हाथ मेरे सिर के नीचे है और उस का
दहिना हाथ मुझे समेटता है ॥
७ हे यरूसलम की पुत्रियो मैं बन के हरिणों और हरिणियों
की किरिया तुम्हें देती हूं कि मेरे प्रिय को मत उठाओ और
मत जगाओ जब लों वुह आप न चाहे ॥

८ मेरे प्रिय का शब्द देखो वुह पर्ब्बतों पर उछलते और
टीलों पर कुदक्का मारते आता है ॥
९ मेरा प्रिय हरिण की अथवा युवा हरिण की नाईं है देखो
वुह हमारी भीत के पीछे खड़ा है वुह खिड़कियों से देखता
१० है झंझरियों में से आप को दिखाता है। मेरा प्रिय यह कहके
११ मुझ से बोला कि हे मेरी प्रिया हे मेरी सुन्दरी उठ चली आ। क्योंकि
१२ देख जाड़ा बीत गया बरखा हो गई और जाती रही। पृथिवी
पर फूल दिखाते हैं दाख के बटोरने का समय आया है और
१३ हमारे देश में कपोत का शब्द सुना जाता है। गूलर पेड़
फलता है और अंगूर फूलते और उन से सुगंध निकलती है
१४ हे मेरी प्रिया सो उठ हे मेरी सुन्दरी चली आ। हे मेरे कपोत
चटान की दरारों में और कगारे की ओझल में अपना रूप मुझे
दिखा अपना शब्द मुझे सुना क्योंकि तेरा शब्द मीठा और
तेरा रूप सुन्दर है ॥
१५ लोमड़ियों को छोटी छोटी लोमड़ियों को जो लता को नष्ट
करती हैं हमारे लिये पकड़ लो क्योंकि हमारी लता पर कोमल
अंगूर लगे हैं ॥
१६ मेरा प्रिय मेरा है और मैं उस की हूं वुह सोसनों में
चराता है ॥
१७ जब दिन ढले और छाया जाती रहे तब हे मेरे प्रिय लौट
और हरिण की और पर्ब्बतों के दरारों के युवा हरिण की नाईं
हो ॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ रात को मैं ने अपने बिछौने पर अपने प्राण प्रिय को खोजा
२ मैं ने उसे खोजा पर न पाया। अब मैं उठूंगी और नगर में
गली गली फिरूंगी और चौड़े मार्गों में अपने प्राण प्रिय को

३ ढूंढूंगी मैं ने उसे ढूंढ़ा पर उसे न पाया । रखवाले जो नगर
में फिरते हैं मुझे मिले उन से मैं ने पूछा कि तुम ने मेरे प्राण
४ प्रिय को देखा है । जब मैं उन से तनिक आगे बढ़ गई थी
तो अपने प्राण प्रिय को पाया मैं ने उसे पकड़ा और उसे न
छोड़ा जब लों मैं उसे अपनी मां के घर में और अपनी जननी
की कोठरी में न ले गई ॥

५ हे यरूसलम की पुत्रियो मैं तुम्हें हरिण और जंगली
हरिणियों की किरिया देता हूं कि तुम मेरी प्रिया को मत
उठाओ और मत जगाओ जब लों वुह आप न चाहे ॥

६ यह कौन है जो धूआं की उठान की नाईं मुर और लोबान
और गंधी के सारे गंधरस द्रव्य से सुगंधित होके बन से आती
७ है । देखो सुलेमान का बिछौना उस के आस पास इसराएल
८ के बीरों में से साठ बीर हैं । वे सब के सब खड्गधारी और संग्राम
में निपुण हर एक जन रात के डर के मारे अपनी जांघ पर
९ तलवार लटकाये हुए है । सुलेमान राजा ने अपने लिये
१० लुबनान के काष्ठ का एक चौपाला बनवाया । उस ने उस के खंभे
चांदी के बनवाये उस के उसीसे सोने के उस का चंदवा बैंजनी
बनवाया और उस का भीतरवार यरूसलम की पुत्रियों के प्रेम से
११ बिछाया हुआ था । हे सैहून की पुत्रियो निकलके मुकुट पहिरे
हुए सुलेमान राजा को देखो जो उस की मां ने उस के ब्याह
के दिन में और उस के मन की मगनता के दिन में उसे
पहिराया ॥

चौथा पर्व्व ।

१ लो हे मेरी प्रिया तू सुन्दरी है लो तू सुन्दरी है तेरी ओढ़नी
के नीचे तेरी आंखें कपोतों की सी हैं तेरे बाल बकरियों के झुंड
की नाईं हैं जो जिलिअद के पहाड़ की घाटी पर बैठती हैं ।

२ तेरे दांत कतरे हुए झुंड की नाईं हैं जो नहान से निकला
हर एक उन में से जोड़ा जनती हैं और उन में कोई बांझ
३ नहीं है। तेरे होंठ लाल सूत की नाईं हैं तेरा मुंह सुन्दर
है और तेरी कनपटियां तेरे अलकों के नीचे अनार के टुकड़े
४ की नाईं हैं। तेरा गला दाऊद के गुम्मट की नाईं है जो
अस्त्र के लिये बनाया गया उस पर सहस्र ढालें लटकाई गईं
५ हैं सब महावीरों की ढालें। तेरे दो स्तन दो तरुण हरिण
६ की नाईं हैं जो जोड़ा होवें और सोसनों में चरते हैं। दिन
ढलने और छाया के बढ़ने लों मैं गंधरस के पर्ब्बत पर और
७ लोबान के टीले लों जाऊंगा। हे मेरी प्रिया तू निर्धार सुन्दरी
है और तुझ में कोई पय नहीं॥

८ हे दुल्हिन लुबनान से मेरे संग लुबनान से मेरे
संग आ अमानः की चोटी पर से शनीर और हरमून की चोटी
पर से सिंहों की मांदों में से और चीतों के पर्ब्बतों में से
९ देख। हे मेरी बहिन हे मेरी पत्नी तू ने मेरे मन को मोह लिया
अपनी एक आंख से अपने गले की एक सीकर से मेरे मन को
१० मोह लिया। हे मेरी बहिन हे मेरी पत्नी तेरे प्रेम कैसे सुन्दर
हैं दाखरस से तेरा प्रेम कितना भला है और तेरे सुगंध के
११ बास सारे सुगंधों से। हे मेरी पत्नी तेरे होंठ मधु के छत्ते
की नाईं टपकते हैं तेरी जीभ तले मधु और दूध है और तेरे
१२ वस्त्र की बास लुबनान की बास की नाईं है। मेरी बहिन मेरी
पत्नी एक घेरी हुई बारी बंधा हुआ सोता और छाप किया हुआ
१३ झरना है। तेरे पौधे अनारों की बारी हैं जिन में मन भावने
१४ फल हैं कपूर और जटामासी सहित। जटामासी और केसर
और गोरगाछ और दारचीनी और लोबान के सारे पेड़ सहित
१५ गंधरस और एलुआ सारे उत्तम सुगंध द्रव्य सहित। बारियों
का सोता अमृत जल का कूआं और लुबनान से धारें॥

१६ हे उत्तर की पवन जाग और हे दक्खिन की पवन आ
मेरी बारी पर बह जिसतें उस का सुगंध द्रव्य महके अब
मेरा प्रिय अपनी बारी में आवे और अपने मनभावन फल
खाय ॥

पांचवां पर्व्व ।

१ हे मेरी बहिन हे मेरी पत्नी मैं अपनी बारी में आया हूं मैं
ने अपना गंधरस और सुगंध द्रव्य समेत बटोरा है मैं ने अपने
मधु के साथ अपना मधु छत्ता खाया है मैं ने अपने दूध के
साथ अपना दाखरस पीया है हे मित्रो खाओ पीओ हे प्रिय
बहुताई से पीओ ॥
२ मैं सोती हूं पर मेरा मन जागता है मेरे प्रिय का शब्द
जो द्वार पर खटखटाता है मेरी बहिन मेरी प्रिया मेरे कपोत
मेरे शुद्ध मेरे लिये खोल क्योंकि मेरा सिर ओस से भर
३ गया है और मेरे अलक रात के बूंदों से। मैं ने अपना
वस्त्र उतारा है मैं उसे क्योंकर पहिनूं मैं ने अपने पांव
४ धोये हैं मैं उन्हें क्योंकर अशुद्ध करूं। मेरे प्रिय ने
झरोखे में से अपना हाथ डाला और मेरा मन उस के
५ लिये उभड़ा। अपने प्रिय के लिये मैं खोलने को उठी
और मेरे हाथों से गंधरस टपका और मेरी अंगुलियों ने
६ ताली की कड़ियों पर सुबास गंधरस। मैं ने अपने प्रिय
के लिये खोला परन्तु मेरा प्रिय फिरके चला गया था उस
की बोली से मेरा प्राण मूर्छित हुआ मैं ने उसे ढूंढ़ा परन्तु
पा न सकी मैं ने उसे पुकारा परन्तु उस ने मुझे उत्तर न
७ दिया। रखवालों ने जो नगर में फिरते थे मुझे पाया उन्हों
ने मुझे मारा और घायल किया भीतों के रखवालों ने मुझ
८ से मेरा घूंघट ले लिया। हे यरूशलम की पुत्रियो मैं तुम्हें

क्रिरिया देती हूं जो मेरे प्रिय को पाओ तो उसे कहियो कि मैं
प्रेम की रोगी हूं ॥
९ तेरा प्रिय और प्रिय से अधिक क्या है हे सारी स्त्रियों से
सुन्दरी तेरा प्रिय और प्रिय से अधिक क्या है जो तू हमें
यों क्रिरिया देती है ॥
१० मेरा प्रिय गोरा और लाल है दस सहस्रों में प्रसिद्ध।
११ उस का सिर चोखा सोना है उस की अलकें गुच्छे और
१२ काले कौवे की नाईं हैं। उस की आंखें उन कपोतों की नाईं
हैं जो पानी की नदियों पर हैं दूध से धोई हुई और
१३ भरी पुरी। उस के गाल सुगंध द्रव्य की क्रियारी की और
फूलों के गुम्मट की नाईं उस के होंठ सोसन की नाईं सुबास
१४ गंधरस टपकाते हैं। उस के हाथ पद्मराग मणि जड़ी
हुई सोने की अंगूठियों की नाईं हैं उस का पेट नीलकान्त
१५ मणि से मढ़े हुए चमकते हाथी दांत की नाईं है। उस के
पांव चोखे सोने की चूलों पर बैठाये हुए मर्मर के खंभों की
नाईं उस का रूप लुबनान की नाईं और देवदारु पेड़ों की
१६ नाईं उत्तम। उस का तालू अति मीठा है हां वुह सर्वथा
प्रिय है हे यरूसलम की पुत्रियो यही मेरा प्रिय और यही मेरा
मित्र है ॥

छठवां पर्व्व।

१ हे स्त्रियों में अति सुन्दरी तेरा प्रिय कहां गया तेरा
प्रिय किधर मुड़ा जो तेरे संग हम भी उसे ढूंढ़ें ॥
२ मेरा प्रिय अपनी बारी में सुगंध द्रव्य की क्रियारियों में
बारियों में चरने को और सोसन बटोरने को उतर गया।
३ मैं अपने प्रिय की हूं और मेरा प्रिय मेरा है वुह सोसनों के
मध्य चराता है ॥

४ 　हे मेरी प्रिया तू तरज़ा की नाईं रूपवती है यरूसलम
की नाईं सुन्दरी और ध्वजा सहित की नाईं भयावनी है।
५ अपनी आंखें मुझ से अलग कर क्योंकि उन्हों ने मुझे मोह
लिया है तेरा बाल बकरियों के झुंड की नाईं है जो
६ जिलिअद के पहाड़ के उतार पर बैठती हैं। तेरे दांत भेड़ियों
की झुंड की नाईं जो नहान से निकलीं जिन में से हर एक
जोड़ा जोड़ा जनती हैं और उन में से एक भी बांझ नहीं।
७ तेरी ओढ़नी के नीचे तेरी कनपटियां अनार के टुकड़े की
नाईं हैं॥

८ 　साठ रानियां और अस्सी सहेलियां और अगणित
९ कुमारियां हैं। पर मेरा कपोत मेरा शुद्ध एक ही है वुह
अपनी माता की एक ही है अपनी जननी की लाड़ली है
पुत्रियों ने उसे देखा और उसे धन्य कहा हां रानियां और
१० सहेलियां और उन्हों ने उसे सराहा। यह कौन है जो
बिहान के तुल्य चन्द्रमा के समान सुन्दरी सूर्य्य की नाईं
निर्मल और ध्वजा सहित की नाईं भयावनी दिखाई देती
है॥

११ 　मैं तराई के फूलों को देखने को और कि यदि लता
लहलहाती हैं और अनार में कली लगी हैं मैं देखने को एगोज़
१२ की बारी में उतर गया। मैं जानता न था पर मेरे प्राण ने
मुझे मेरे वांछित लोगों के रथों पर बैठाया॥

१३ 　लौट आ लौट आ हे शुलामी लौट आ लौट आ जिसतें
हम तुझ पर दृष्टि करें तुम शुलामी में क्या देखोगी जैसे दो
सेना का नाच॥

सातवां पर्व्व।

१ 　हे राजकन्या जूती से तेरे पांव कैसे सुन्दर हैं तेरी जांघ

की गांठें आभूषण की नाईं गुनकारी के हाथ के कृत्य हैं।
२ तेरी नाभी एक गोल पात्र की नाईं है जिस में दाखरस की
घटी नहीं तेरा पेट गोहूं के ढेर की नाईं है जो सोसनों से घेरा
३ हुआ हो। तेरे दो स्तन दो जमल युवा हरिण की नाईं हैं।
४ तेरा गला हाथीदांत के गुम्मट की नाईं है तेरी आंखें
बतरब्बिम फाटक के लग के हशबून के कुंडों की नाईं हैं तेरी
नाक लुबनान के गुम्मट की नाईं जो दमिशक की ओर देखता
५ है। तेरा सिर करमिल की नाईं है और तेरे सिर का बाल
६ बैंजनी की नाईं है राजा तेरी अलकों में बंधा है। हे प्रिया तू
७ कैसी सुन्दरी और आनन्दों के लिये मनभावनी है। तेरी यह
डौल खजूर पेड़ की नाईं और तेरे स्तन गुच्छों की नाईं हैं।
८ मैं ने कहा कि मैं खजूर पेड़ पर चढूंगा मैं उस की डारों को
पकडूंगा अब भी तेरे स्तन लता के गुच्छों की नाईं होंगे और
९ तेरी नाक का गंध चकोतरों की नाईं। और तेरा तालू अच्छे
दाखरस की नाईं है जो मेरे प्रिय के लिये सीधे चलती है
और उन के होंठों पर जो सोते हैं मीठे मीठे बह जाती है।
१० । ११ मैं अपने प्रिय की हूं और उस की वांछा मेरी ओर। हे मेरे
१२ प्रिय चलो खेत में जायें गांओं में टिकें। चलो तड़के
दाख की बारियों में जायें आओ देखें यदि लता लहलहाती
है यदि कोमल दाख लगा है और अनार में कली लगी
१३ हैं वहां मैं अपना प्रेम तुझे देऊंगी। दुदायीम महकते
हैं और हमारे फाटकों पर समस्त रीति के मनभावन
नये पुराने फल हैं जो हे प्रिय मैं ने तेरे लिये धर रक्खे
हैं॥

आठवां पर्व्व।

१ हाय कि तू मेरे भाई की नाईं होता जिस ने मेरी माता

के स्तनों को चूसा जब मैं तुझे बाहर पाती तो तुझे चूमती
२ हां मेरी निन्दा न होती। मैं तुझे अपनी माता के घर में ले
जाऊंगी कि तू मुझे सिखाये मैं तुझे अपने अनार के रस के
सुगंध दाखरस से पिलाऊंगी॥

३ उस का बायां हाथ मेरे सिर के नीचे और उस का दहिना
हाथ मुझे समेटता है॥

४ हे यरूसलम की पुत्रियो मैं तुम्हें किरिया देता हूं कि मेरे
प्रिया को मत जगाओ और मत उठाओ जब लों कि वुह आप
न चाहे॥

५ यह कौन है जो वन से अपने प्रिय पर ओठंगती हुई
ऊपर आती है मैं ने तुझे सेव के पेड़ तले से उठाया
जहां तेरी माता तुझे जनी जहां तेरी जननी तुझे जनी।
६ मुझे अपने मन में छाप की नाईं रख अपनी भुजा पर
की छाप की नाईं क्योंकि प्रेम मृत्यु की नाईं प्रबल है डाह
समाधि की नाईं कठिन है उस के अंगारे आग के अंगारे
७ हैं एक अति धधकती हुई लवर। बहुत से जल प्रेम को
बुझा नहीं सक्ते और बाढ़ उसे डुबा नहीं सक्ती यदि मनुष्य
अपने घर की सारी संपत्ति प्रेम के लिये देता तो सर्वथा
निन्दा होती॥

८ हमारी एक छोटी बहिन है और उस के स्तन नहीं हम
अपनी बहिन के लिये उस दिन क्या करें जब उस की बात
९ चलेगी। जो वुह भीत होवे तो हम उस पर चांदी का भवन
बनावेंगी और जो वुह द्वार होवे तो हम उसे देवदारु की
पटियों से ढांपेंगी॥

१० मैं भीत हूं और मेरे स्तन गुम्मटों की नाईं तब मैं उस की
११ दृष्टि में कुशल पाये हुए की नाईं हुई। बालहमून में सुलेमान
की एक दाख की बारी थी उस ने उस दाख की बारी को

रखवालों को सौंपा जिस के फल के लिये हर एक को उसे
१२ सहस्र टुकड़ा चांदी देना पड़ता था। मेरी दाख की बारी जो
मेरी है मेरे आगे है हे सुलेमान तू सहस्र ले और जो उस के
फल की रखवाली करते हैं दो सौ॥
१३ हे तू जो बारियों में बास करती है जथा तेरा शब्द
सुनती हैं मुझे भी सुना॥
१४ हे मेरे प्रिय उड़ जा और हरिण अथवा सुगंध द्रव्य के
पर्ब्बतों पर की हरिणी की नाईं हो जा॥

यसायियाह
भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ अमूस के बेटे यसायियाह का दर्शन जो उस ने यहूदाह
और यरूसलम के बिषय में यहूदाह के राजाओं उज्ज़ियाह
और यूताम और आख़ज़ और हिज़क़ियाह के दिनों में देखा॥
२ हे आकाशो सुनो और हे पृथिवी कान लगा क्योंकि परमेश्वर
कहता है कि मैं ने लड़कों को पाला और पोसा और वे मुझ
३ से फिर गये। बैल अपने स्वामी को पहिचानता है और गदहा
अपने प्रभु की चरनी को इसराएल नहीं जानता मेरे लोग नहीं
सोचते॥

४ हाय पापमय जातिगण पाप से लदे हुए लोग कुकर्म्मियों
के बंश बिगाड़ू लड़के उन्हों ने परमेश्वर को छोड़ दिया इसराएल
के धर्म्ममय को तुच्छ जाना है वे पीछे हटके पराये हो गये।
५ तुम किस अंग पर और मार खाओगे जो अधिक फिरते
जाते हो सारा सिर रोगी हो गया और सारा मन दुर्बल।
६ पांव के तलवे से लेके सिर ताईं उस में कहीं आरोग्यता नहीं
परन्तु घाव और चोट और नवीन घाव वे न दबाये गये और न
७ बांधे गये और किसी ने तेल से नम्र नहीं किया है। तुम्हारा
देश उजाड़ है तुम्हारे नगर आग से जल गये तुम्हारा खेत

तुम्हारे आगे परदेशी उसे खाते जाते हैं और वुह परदेशियों
८ के उजाड़ किये हुए के समान उजाड़ हो गया। और सैहून
की पुची दाख की बाटिका में झोंपड़ी की नाईं ककड़ी के खेत
में कुरिया के समान घेरे हुए नगर की नाईं बच गई है।
९ यदि परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर हमारे लिये बहुत छोटा शेषभाग
न छोड़ देता तो हम सदूम की नाईं हो जाते अमूरः से उपमा
दिये जाते॥

१० हे सदूम के न्याइयो परमेश्वर का वचन सुनो हे अमूरः के
११ लोगो हमारे ईश्वर की व्यवस्था पर कान लगाओ। परमेश्वर कहता
है कि तुम्हारे बलिदानों की बहुताई मेरे किस काम की है
मैं मेढे के होम की भेंटों से और पुष्ट चौपायों की चिकनाई से
छक गया हूं और बैलों और मेम्नों और बकरों के लोहू से
१२ प्रसन्न नहीं हूं। जब तुम आते हो कि मेरे सन्मुख सन्निधान
होओ तो कौन तुम्हारे हाथों से इस का खोजी हुआ है कि
१३ मेरे आंगनों को रौंदो। मिथ्या की भेंट तुम मत लाया
करो लोबान से मुझे घिन आती है नये चांद और बिश्राम के
दिन और मण्डली के बुलाने से भी मैं कुकर्म्म और पूजा दोनों
१४ को सह नहीं सक्ता। तुम्हारे नये चांदों और तुम्हारी मण्डली
से मेरा प्राण घिन करता है वे मेरे ऊपर बोझ हो
१५ गये मैं उन के उठाने से थक गया। और जब तुम अपने
हाथ फैलाओगे तब मैं तुम से अपनी आंखें फेर लूंगा हां जब
तुम प्रार्थना पर प्रार्थना करोगे तो मैं न सुनूंगा तुम्हारे हाथ
१६ लोहूलोहान हैं। अपने को धोओ आप को पवित्र करो अपने
कर्म्मों की बुराई को मेरी आंखों के साम्हने से दूर करो
१७ कुकर्म्म से फिरो। सुकर्म्म सीखो न्याय के खोजी हो अन्धेर
को सुधारो अनाथ का न्याय करो बिधवा का उपकार
करो॥

१८ परमेश्वर कहता है कि अब आओ और हम आपुस में विवाद
करें यदि तुम्हारे पाप लाल रंग पर हों पर पाले की नाईं श्वेत
हो जायेंगे यदि बैंजनी रंग के समान लाल हों ऊन के समान हो
१९ जायेंगे। यदि तुम सम्मति हो और सुनो तो तुम भूमि की
२० बढ़ती खाओगे। और यदि तुम नाह और दंगा करोगे तो खड्ग
का कौर हो जाओगे क्योंकि परमेश्वर के मुंह ने कहा है॥
२१ बिश्वासमय बस्ती क्योंकर ब्यभिचारिणी हो गई वुह न्याय
से भरी थी धर्म्म उस में निवास करता था और अब हत्यारी।
२२ तेरा रूपा मैल हो गया तेरे दाखरस में पानी मिल गया।
२३ तेरे अध्यक्ष दंगइत और चोरों के साथी हैं उन में से हर
एक अकोर का मित्र और दान का खोजी है वे अनाथ का
न्याय नहीं करते और बिधवा का विवाद उन तक नहीं
पहुंचता॥
२४ इस लिये प्रभु सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का सर्बशक्तिमान
कहता है कि हाय मैं अपने बिरोधियों से शान्ति पाऊंगा
२५ और अपने वैरियों से पलटा लेऊंगा। और मैं अपना हाथ
तुझ पर फेरूंगा और संपूर्ण तेरे मैल को निकालूंगा और
२६ तेरे सारे रांगे को दूर करूंगा। और मैं तेरे न्यायी जैसे पहिले
थे और तेरे मंत्री जैसे आरंभ में थे फिर स्थापित करूंगा उस
के पीछे तू धर्म्म का नगर बिश्वस्तमय बस्ती कहलायेगी।
२७ सैहून न्याय में उद्धार पायेगा और उस के फिरे हुए धर्म्म में।
२८ और उसी के साथ दंगइतों और पापियों की हार होगी और परमेश्वर
२९ के त्यागनेहारे नष्ट औ ध्वस्त होंगे। क्योंकि वे उन बुत्मबृक्षों
से लज्जित होंगे जिन की तुम ने इच्छा किई और तुम उन
३० बाटिकों से लज्जित होगे जिन्हें तुम ने चुना है। क्योंकि तुम
उस बुत्मबृक्ष की नाईं होगे जिस के पत्ते झड़ जाते और उस
३१ बाटिका की नाईं जिस में कुछ जल नहीं है। और बलवन्त

सन हो जायेगा और उस का कार्य्य चिनगारी और वे दोनों एक
साथ जल जायेंगे और कोई बुझवैया न होगा ॥

दूसरा पर्व्व ।

१ वुह बचन जो अमूस के बेटे यसअियाह ने यहूदाह और
२ यरूसलम के विषय दर्शन में देखा। और पिछले दिनों में
ऐसा होगा कि परमेश्वर के घर का पहाड़ पहाड़ों की चोटी पर
स्थापित होगा और टीलों से ऊंचा किया जायेगा और सारे जातिगण
३ उस की ओर रेले चले जायेंगे। और बहुत सी जातें चल खड़ी
होंगी और कहेंगी कि आओ और हम परमेश्वर के पहाड़ की
ओर और यअकूब के ईश्वर के घर की ओर चढ़ चलें और वुह हमें
अपना मार्ग बतलायेगा और हम उस के पथों पर चलेंगे क्योंकि
सैहून से व्यवस्था और परमेश्वर का बचन यरूसलम से
४ निकलेगा। और वुह जातिगणों के मध्य न्याय करेगा और
बहुत जातों का बिचार करेगा और वे अपनी तलवारों को
तोड़के फाले और अपने भालों को हंसुवे बना डालेंगी जाति जाति
पर तलवार न उठावेगी और वे फिर लड़ाई न सीखेंगे।
५ हे यअकूब के घराने आओ और हम परमेश्वर की ज्योति में
चलें ॥

६ क्योंकि तू ने अपने लोगों अर्थात् यअकूब के घराने को
छोड़ दिया है क्योंकि वे पूरब के टोने से और फिलिस्तियों
के समान टोनहों से भरे हैं और परदेशियों के लड़कों से
७ पूर्ण हैं। और उन की भूमि सोने रूपे से भरपूर हो गई है
और उन के भंडारों का कुछ अंत नहीं और उन का देश घोड़ों
से भर गया है और उन के रथों की कुछ गिनती नहीं।
८ और उन की भूमि मूर्त्तों से भर गई है वे अपने हाथों के
कार्य्य को पूजते हैं उस को जो उन की अंगुलियों ने बनाया

९ है । और छोटा मनुष्य झुक गया और बड़ा मनुष्य नीचे हो
गया और तू उन्हें क्षमा न कर ॥
१० चटान में घुस जा और अपने तईं धूल में छिपा परमेश्वर
के भय के साम्हने और उस की महिमा के बिभव से ।
११ मनुष्य की ऊंची आंखें नीची हो गईं और मनुष्यों का अहंकार
उतारा गया और परमेश्वर अकेला उस दिन महान ठहरा ।
१२ क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर का दिन हर अहंकारी और ऊंची बस्तु
के ऊपर और हर उभड़ी हुई बस्तु के ऊपर है और वुह
१३ नीचे आयेगी । और लुबनान के सारे ऊंचे और उभड़े हुए
देवदारु वृक्षों के ऊपर और बसनिया के सारे बलूतों के ऊपर ।
१४ और सारे ऊंचे पहाड़ों के ऊपर और सारे ऊंचे टीलों के ऊपर ।
१५ और हर ऊंचे गुम्मट के ऊपर और हर दृढ़ भीत के ऊपर ।
१६ और तरसीस के सारे जहाज़ों के ऊपर और सारे सुन्दर चित्रों
१७ के ऊपर । और मनुष्य की ऊंचाई नीची किई जायेगी और
लोगों का अभिमान उतारा जायेगा और परमेश्वर अकेला उस
१८ दिन महान होगा । और मूरतें सर्वथा जाती रहेंगी ।
१९ और लोग परमेश्वर के भय के साम्हने और उस की महिमा के
बिभव से पत्थरों के कंदलों में और भूमि के छेदों में घुस
जायेंगे जब वुह उठेगा जिसतें पृथिवी को कंपाये ॥
२० उस दिन मनुष्य अपनी रूपहली मूरतों और अपनी सुनहरी
मूरतों को जो उस की पूजा के लिये बनाई गईं छुछूंदरों
२१ और चमगुदड़ों के आगे फेंक देगा । जिसतें परमेश्वर के भय
से और उस के बिभव की महिमा से पत्थरों के दरारों में
और चटानों के छेदों में घुस जाये जब वुह उठेगा जिसतें
पृथिवी को कंपाये ॥
२२ मनुष्य कि जिस का स्वास उस के नथुनों में है उस्से हाथ
उठाओ क्योंकि वुह किस लेखे में है ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ क्योंकि देखो प्रभु सेनाओं का परमेश्वर यरूसलम और यहूदाह
से टेक और टेकन को दूर करता है रोटी की हर टेक को और
२ पानी की हर टेक को। बीर और योद्धा मनुष्य न्यायी और
३ भविष्यद्वक्ता और ज्योतिषी और प्राचीन को। पचास के प्रधान
को और प्रतिष्ठित और मंत्री और प्रवीण कार्य्यकारी और चतुर
४ टोनहे को। और मैं लड़कों को उन पर प्रधान बनाऊंगा और चिबिल्ले
५ उन पर प्रभुता करेंगे। और लोग आपुस में उपद्रव करेंगे
मनुष्य मनुष्य पर और मनुष्य अपने परोसी पर वे घमंड करेंगे
लड़का बृद्ध से और तुच्छ प्रतिष्ठित से॥

६ जब मनुष्य अपने पिता के घर में अपने भाई को पकड़ेगा
यह कहके कि तेरे पास वस्त्र है तू हमारा अध्यक्ष होगा
७ और यह नष्टता तेरे हाथ के नीचे होगी। उस दिन वुह
अपना शब्द उठायेगा यह कहते हुए कि मैं बैद्य न हूंगा और
मेरे घर में न कुछ रोटी है और न कुछ कपड़ा तुम मुझे लोगों
८ का अध्यक्ष न ठहराओ। क्योंकि यरूसलम उजाड़ हुआ
और यहूदाह गिर गया क्योंकि उन की बोल चाल और उन के
कर्म्म परमेश्वर के बिरुद्ध हैं जिसतें उस की बिभूषित आंखों
९ का साम्हना करें। उन के मुंह का रूप उन पर साक्षी देता है
और वे सदूम की नाईं अपना पाप वर्णन करते हैं और उसे
नहीं छिपाते उन के प्राणों पर संताप क्योंकि उन्हों ने अपनी
जाति से कुव्यवहार किया है॥

१० धर्म्मी से कहो कि उस का कल्याण होगा क्योंकि वुह
११ अपने कर्म्मों का फल खायेगा। दुष्ट पर संताप उस का बुरा
होगा क्योंकि उस के हाथों का ब्यवहार उस्से किया जायेगा।
१२ हाय मेरे लोग उस के सताऊ चिबिल्ले हैं और स्त्रियां उन पर

प्रभुता करती हैं हे मेरे लोग तेरे अगुआ भुलानेहारे हैं और
तेरे पथों के मार्ग को निगलते हैं॥
१३ परमेश्वर विवाद करने के लिये उठता है और लोगों का
१४ न्याय करने के लिये खड़ा होता है। परमेश्वर अपने लोगों
के प्राचीनों और उन के अध्यक्षों के संग बिचार में आयेगा
और तुम ने दाख की बाटिका को चट कर लिया है दुखी
१५ की लूट तुम्हारे घरों में है। प्रभु सेनाओं का परमेश्वर कहता
है कि तुम्हें क्या हुआ कि तुम मेरे लोगों को टुकड़े टुकड़े
करते हो और दुखियों के मुंह को कुचलते हो॥
१६ और परमेश्वर ने कहा इस लिये कि सैहून की पुत्रियां
अहंकारी हैं और ग्रीवा उठाके चलती हैं और आंखें मटकाती
हैं और ठुमुक चाली से चलती हैं और पांओं से अपना घुंघुरू
१७ ठनठनाती हैं। इस लिये प्रभु सैहून की पुत्रियों की चांद
को गंजी कर डालेगा और परमेश्वर उन के गुप्तस्थानों को
१८ उघारेगा। उस दिन प्रभु उन के घुंघुरुओं और जालियों
१९ और चांदों की शोभा को दूर करेगा। और झुमकों और खड़वों
२० और घूंघटों। मुकुटों और पायलों और पटुकों और सुगंध
२१ पात्रों और त्रिजायठों। अंगूठियों और नाक की नथों।
२२ बूटेदार पहिरावों और झूलों और दुपट्टों और बटुओं।
२३ आरसियों और महीन वस्त्रों और सिरबन्धनों और घूंघटों
२४ की शोभा को दूर करेगा। और ऐसा होगा कि सुगंध की संती
दुर्गन्ध होगी और पटुके की संती रस्सी और गुंधे हुए बाल
की संती गंजापन और ओढ़नी की संती टाट की चोली और
२५ दाह रूप की संती। तेरे पुरुष तलवार से गिरेंगे और तेरी
२६ सामर्थ्य युद्ध में। और उस के फाटक विलाप और रोदन करेंगे
और वुह उजाड़ होके धूल पर बैठ जायेगा॥

चौथा पर्व्व ।

१ और उस दिन सात स्त्रियां यह कहती हुई एक पुरुष को
पकड़ेंगी कि हम अपनी रोटी खायेंगी और अपने वस्त्र पहिनेंगी
केवल हम तेरे नाम की कहलावें हमारे अपयश को दूर कर ॥
२ उस दिन परमेश्वर की डाली इसराएल की बचती के लिये
प्रतिष्ठा और विभव होगी और भूमि का फल उत्तमता और
३ शोभा । और ऐसा होगा कि जो सैहून में छोड़ा जायेगा और
यरूसलम में बच रहेगा वुह पवित्र कहलायेगा हर एक
४ जो यरूसलम में जीवन के लिये लिखा हुआ । जब प्रभु
न्याय के आत्मा और जलन के आत्मा से सैहून की पुत्रियों
के मैल को धोयेगा और यरूसलम के लोहू को उस के मध्य
५ से दूर करेगा । और परमेश्वर सैहून पर्व्वत के समस्त निवास
के ऊपर और उस की सभाओं के ऊपर दिन को मेघ और धूंआ
उत्पन्न करेगा और रात को अग्नि की लवर की चमक क्योंकि
६ उस सारे विभव के ऊपर ढकना होगा । और दिन को तपन
से छाया के लिये चंदोआ होगा और झड़ी और मेंह से आड़
और शरण का स्थान ॥

पांचवां पर्व्व ।

१ मैं अपने प्रिय के विषय गाया चाहता हूं अपने प्रिय
की छंद उस की वाटिका के विषय मेरे प्रिय की दाख की वाटिका
२ अति फलवान पहाड़ पर थी । और उस ने उसे खोदा और उस
के पत्थर दूर किये और उस में अच्छे से अच्छा दाख लगाया
और उस के बीचोंबीच गर्गज बनाया और कुण्ड भी उस में
खोदा और बाट जोही कि दाख फले पर उस में बुरे दाख फले ॥
३ और अब हे यरूसलम के वासी और यहूदाह के पुरुष

कृपा करके मेरे और मेरी दाख की बाटिका के मध्य न्याय
४ करो। मुझे अपने दाख की बाटिका से और क्या करना है कि
मैं ने उस में नहीं किया है मैं ने क्यों बाट जोही कि वुह
५ दाख फले और उस में बुरे दाख फले। और अब मैं तुम्हें
वुह बताया चाहता हूं जो अपनी दाख की बाटिका से करवैया
हूं उस के बाड़े को दूर करना और वुह भक्षण किई
जायेगी उस की भीत को तोड़ डालना और वुह रौंदने को
६ स्थान हो जायेगी। और मैं उसे उजाड़ कर डालूंगा वुह न
छांटी जायेगी और न उस के थाले गोड़े जायेंगे और कांटे
और कटैले उगेंगे और मैं मेघों को आज्ञा करूंगा कि उस पर
७ मेंह न बरसावें। क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर की दाख की
बाटिका इसराएल का घराना है और यहूदाह का मनुष्य
उस के आनन्दों का पौधा और उस ने न्याय की बाट जोही
और देखो अन्धेर धर्म्म का और देखो चिल्लाना॥
८ उन पर संताप जो घर घर से मिला देते हैं खेत को खेत
के निकट कर देते हैं यहां लों कि कुछ स्थान न रह जाये
और तुम भूमि के मध्य में अकेले रह जाओ॥
९ मेरे कानों में सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि
सचमुच बहुतेरे घर हां बड़े और सुन्दर घर उजाड़ हो जायेंगे
१० इस कारण से कि उन में कोई बसवैया न रहेगा। क्योंकि
दाख की बटिका के दस बिघों से एक बत्त दाखरस प्राप्त होगा
और हमूर बीज से एफा अनाज॥
११ उन पर संताप जो भोर को उठते हैं मद का पीछा करते हैं
सांझ को अबेर करते हैं यहां लों कि मदिरा उन्हें उन्मत्त करे।
१२ और वीणा और बीन ढोलक और बांसली और मदिरा उन के
जेवनार हैं और वे परमेश्वर के कार्य्य पर दृष्टि नहीं करते और
उन्हों ने उस के हाथों की क्रिया को नहीं देखा है॥

१३ इस लिये मेरे लोग अज्ञानता से बंधुआई में गये हैं और
उन के प्रतिष्ठित भूखे मनुष्य हैं और उन की जथा प्यास से
१४ भूरी। इस लिये समाधि ने अपने तईं बढ़ाया और अपना
मुंह बेपरिमाण पसारा है और उन के विभव और उन का हूहा
और उन की भीड़ और जो उन में आनन्द करता है सब के सब
१५ उस में गिरते हैं। और छोटा मनुष्य झुक गया और बड़ा मनुष्य
१६ नीचे हो गया और ऊंचों की आंखें नीची हो गईं। और सेनाओं
का परमेश्वर न्याय में महान है और सर्वशक्तिमान धर्म्ममय
१७ धर्म्म में पवित्र है। और मेम्ने माना अपनी चराई में चरेंगे और
मोटों के उजाड़ खेतों को परदेशी खा लेंगे॥

१८ उन पर संताप जो झूठ की रस्सियों से अधर्म्म को खींचते
१९ हैं और पाप को माना गाड़ी की रस्सी से। जो कहते हैं कि
वुह शीघ्र करे फुरती से अपना काम करे जिसतें हम देखें और
इसराएल के धर्म्ममय का मंत्र समीप आये और पहुंचे जिसतें
हम जानें॥

२० उन पर संताप जो बुरे को भला और भले को बुरा कहते
हैं अंधियारा उंजियाले की संती और उंजियाला अंधियारे की
संती रखते हैं कडुआ मिठास की संती और मिठास कडुए की
२१ संती रखते हैं। उन पर संताप जो अपनी दृष्टि में बुद्धिमान
२२ और अपनी समझ में चतुर हैं। उन पर संताप जो मदिरा
पीने में बली और अमल की वस्तु मिलाने में बीर मनुष्य हैं।
२३ जो दुष्ट को घूस के कारण से सच्चा ठहराते हैं और धर्म्मियों
का धर्म्म उन से दूर करते हैं॥

२४ सो जिस रीति आग की लवर भूसे को खा लेती है और
जलती हुई घास गिर जाती है उसी रीति उन की जड़ सर्व्वथा
सड़ जायेगी और उन का फूल धूल की नाईं उड़ जायेगा क्योंकि
उन्हों ने सेनाओं के परमेश्वर की व्यवस्था को तुच्छ जाना

२५ और इसराएल के धर्म्ममय के वचन की निन्दा किई है। इस
लिये परमेश्वर का कोप अपने लोगों पर भड़का है और उस ने
अपना हाथ उन के बिरोध में बढ़ाया और उन्हें मारा और
पहाड़ कांपे और उन की लोथें उस कूड़े की नाईं हैं जो मार्गों
के मध्य में है इन सब के उपरान्त उस का क्रोध दूर नहीं
हुआ परन्तु उस का हाथ अब लों फैला हुआ है॥
२६ और वुह जातिगणों की ओर दूर से झंडा उठाता है और
पृथिवी के अंत से उस के लिये सीटी बजाती है और देखो
२७ शीघ्र हां फुरती से वुह आयेगा। उस में कोई थका और
ठोकर खानेहारा नहीं है वुह न ऊंघेगा न सोवेगा और उस
का पटुका नहीं खुलता और उस के जूतों का तस्मा नहीं टूटा।
२८ जिस के बाण चोखे किये गये और उस के सारे धनुष खींचे
गये उस के घोड़ों के खुर चक़माक़ के पत्थर की नाईं गिने
२९ गये और उस के पहिये बगूले के समान। उस की गर्ज
सिंहिनी के समान है और वुह सिंह के बच्चों की नाईं गर्जेगा और
गुर्रायेगा और अहेर को पकड़ेगा और उसे अनम्मत पहुंचायेगा
३० और कोई छुड़ानेहारा न होगा। और वुह उस दिन समुद्र
की गड़गड़ाहट की नाईं उस पर गड़गड़ावेगा और वुह पृथिवी
की ओर देखेगा और देखो अंधकार सकेती और उंजियाला
उस के मेघों में अंधयारा हो गया॥

छठवां पर्ब्ब ।

१ जिस बरस उज़्ज़ियाह राजा मर गया मैं ने परमेश्वर को
एक ऊंचे और महान सिंहासन पर बैठे देखा और उस के वस्त्र
२ के खूंट मन्दिर को भर देते थे। सराफ़ीम उस के ऊपर खड़े
थे और हर एक के छः छः पंख थे हर एक दो पंखों से अपने
मुंह को ढांपे रहा और दो से अपने पांवों को ढांपे रहा और

३ दो से उड़ता रहा। और एक ने दूसरे को पुकारा और कहा
पवित्र पवित्र पवित्र सेनाओं का परमेश्वर सारी पृथिवी उस के
विभव से परिपूर्ण है॥
४ तब उस पुकारनेवाले के शब्द से चौखटों की नेवें हिल
५ गईं और घर धूवें से भर गया। तब मैं ने कहा कि हाय
मुझ पर क्योंकि मैं नष्ट हुआ क्योंकि मैं अशुद्ध होठों का मनुष्य
हूं और अशुद्ध होंठ जाति के मध्य में बसता हूं क्योंकि मेरी
६ आंखों ने राजा सेनाओं के परमेश्वर को देखा है। तब उन
सराफ़ीमों में से एक मेरी ओर उड़ा जिस के हाथ में अंगारा
७ था उस ने चिमटे से उसे यज्ञवेदी पर से उठा लिया। और
उस ने उसे मेरे मुंह पर लगा दिया और कहा कि देख इस
ने तेरे होंठों को छूआ है और तेरे कुकर्म्म दूर हुए और तेरे
पाप का प्रायश्चित किया जायेगा॥
८ तब मैं ने प्रभु का शब्द यह कहते हुए सुना कि मैं
किस को भेजूं और कौन हमारी ओर से जायेगा और मैं ने कहा
कि देख मैं उपस्थित हूं मुझे भेज॥
९ और उस ने कहा कि जा और इस जाति से कह कि सुनते
१० रहो पर न समझो और देखते रहो पर न जानो। इस जाति के
मन को मोटा बना और उस के कानों को भारी कर और उस
की आंखों को मूंद न हो कि वुह अपनी आंखों से देखे और
अपने कानों से सुने और उस का मन समुझे और वुह फिरे और
चंगी हो॥
११ और मैं ने कहा कि हे प्रभु यह कब लों और उस ने
कहा कि यहां लों कि बसनेहारों के न होने से नगर उजाड़
हो जायें और मनुष्यों के न होने से घर और भूमि उजाड़ हो
१२ जाये और तहसनहस। और यहां लों कि परमेश्वर मनुष्यों
१३ को दूर करे और इस देश में परती भूमि बहुत हो। और

अब भी उस में दसवां भाग बच रहेगा और वुह फिर नाश
किया जायेगा पर बुत्मबृक्ष और बलूत की नाईं जिन में गिरने
के समय जमने की शक्ति रह जाती है वैसा ही पवित्र वंश
उस के जमने की शक्ति होगा॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ और यहूदाह के राजा यूताम के बेटे उज्ज़ियाह के बेटे
आख़ज़ के समय में ऐसा हुआ कि अराम का राजा रसीन और
इसराएल का राजा रमलियाह का बेटा फ़िक़: यरूसलम पर
चढ़ आया जिसतें उस्से युद्ध करे पर उस्से युद्ध न कर सका।
२ और दाऊद के घराने को यह संदेश दिया गया कि अराम
इफ़रायम पर सहारा करता है और उस का मन और उस के
लोगों का मन हिल गया जैसे बन के बृक्ष पवन के साम्हने
३ हिल जाते हैं। तब परमेश्वर ने यसअियाह से कहा कि तू
और तेरा बेटा शियारयासूब ऊपर के पोखरे की नाली के कोने
पर धोबी के खेत की सड़क पर आख़ज़ से मिलने को जा॥
४ और उस्से कह कि सोचेत हो और स्थिर रह मत डर और तेरा
मन इन लुकटियों की धूआंवाली पूछों के कारण से न घबराये
जब रसीन और अराम और रमलियाह के बेटे का क्रोध भड़के।
५ इस लिये कि अराम इफ़रायम और रमलियाह के बेटे ने यह
६ कहके तेरे बिरोध में कुबिचार किया है। कि हम यहूदाह पर
चढ़ें और उसे सतावें और उस में अपने जयमान होने के लिये
फूट डालें और उस के मध्य एक राजा को सिंहासन पर बैठावें
अर्थात् तबिएल के बेटे को॥
७ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यह न ठहरेगा और न ऐसा
८ होगा। क्योंकि अराम की राजधानी दमिशक़ है और दमिशक़ का
अध्यक्ष रसीन और पैंसठ बरस के भीतर इफ़रायम जाति होने

९ से तोड़ा जायेगा। और इफ़रायम की राजधानी समरून है
और समरून का अध्यक्ष रमलियाह का बेटा यदि तुम विश्वास
न लाओगे तो अवश्य कि चैन में न रहोगे॥
१० और परमेश्वर ने फिर आख़ज़ से ये बातें कहते हुए बातें
११ किईं। कि परमेश्वर अपने ईश्वर के पास से अपने लिये चिन्ह
१२ मांग चाहे नीचाई से मांग चाहे ऊंचाई से। पर आख़ज़ ने
कहा कि मैं न मांगूंगा और परमेश्वर की परीक्षा न करूंगा॥
१३ और उस ने कहा कि हे दाऊद के घराने सुनो क्या मनुष्यों
को थकाना तुम्हारे लिये थोड़ा है जो तुम मेरे ईश्वर को
१४ भी थकाया चाहते हो। इस लिये परमेश्वर आप तुम को एक
चिन्ह देगा देखो वुह कुआंरी गर्भिणी है और बेटा जनती है
१५ और उस का नाम इम्मानूएल रखती है। वुह मक्खन
और मधु खायगा जब लों कि बुराई से घिन करना और
१६ भलाई को चुन लेने में विरोध न जाने। क्योंकि उस्से पहिले
कि वुह लड़का बुराई से घिन करना और भलाई को चुन लेने
का ज्ञान जाने वुह भूमि जिस के दो राजाओं के कारण से तू
भयमान है उजाड़ हो जायेगी॥
१७ परमेश्वर तुझ पर और तेरे लोगों पर और तेरे पिता के
घराने पर ऐसे समय लावेगा जो उस दिन से नहीं आये जब
इफ़रायम यहूदाह से अलग हुआ अर्थात् असूर के राजा को॥
१८ और उस दिन ऐसा होगा कि परमेश्वर उस मक्खी के लिये
जो मिस्र की नदियों के तीर पर है और उस बर्रे के लिये
१९ जो असूर की भूमि में है सीटी बजायेगा। और वे आवेंगे और
वे सब के सब कराड़ों की निचाइयों में और चटानों की दरारों
में और सारे कटीले स्थानों और सारे चराइयों के स्थानों में
बैठेंगे॥
२० उसी दिन प्रभु उस छुरे से जो नदी के पार से भाड़े

में लिया गया अर्थात् असूर के राजा से सिर और पाओं के
बाल को मूंड़ेगा और दाढ़ी को भी वुह मूंड़ डालेगा॥
२१ और उस दिन ऐसा होगा कि एक मनुष्य एक छोटी गाय
२२ और दो भेड़ें बचा रक्खेगा। और ऐसा होगा कि दूध की
अधिकाई से वुह मक्खन खायगा क्योंकि हर एक जो इस भूमि
में बच रहेगा सो मक्खन और मधु खाया करेगा॥
२३ और उस दिन ऐसा होगा कि हर एक स्थान जहां सहस्र
रुपये की सहस्र लतायें होंगी सो कांटे और कटीले हो जायेंगी।
२४ लोग धनुष और बाण लेके वहां आवेंगे क्योंकि वुह सारी भूमि
२५ कांटे और कटीले होगी। और सारे पहाड़ जो कुदाली से
खोदे जाते हैं तू कांटे और कटीले के भय से उधर न आयेगा।
और गाय बैल वहां भेजे जायेंगे और भेड़ें उन्हें रौंदेंगे॥

आठवां पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि अपने लिये एक बड़ी पट्टी
ले और उस पर मनुष्य की लेखनी से लिख कि महेरशालालहाशबज़
२ के लिये। और मैं अपनी साक्षी के लिये बिश्वस्त साक्षियों को
लूंगा अर्थात् ऊरियाह याजक और यबरकियाह के बेटे
३ ज़करियाह को। और मैं ने आगमज्ञानिनी से समीपता किई और
वुह गर्भिणी हुई और बेटा जनी और परमेश्वर ने मुझ से कहा
४ कि उस का नाम महेरशालालहाशबज़ रख। क्योंकि उस्से
आगे कि वुह लड़का बप्पा अम्मा बोल सके दमिशक का धन
और समरून की लूट असूर के राजा के आगे उठा ले जायेंगे॥
५ और परमेश्वर ने यह कहते हुए फिर मुझ से बातें किईं।
६ इस कारण से कि इस जाति ने सिलोआह के पानी का जो
धीरे बहता है निरादर किया है और रसीन और रमलियाह
७ के बेटे के विषय उस का आनन्द है। तो इस लिये देखो

प्रभु उन पर नदी के पानी को जो तरखा और वहुत है चढ़ा
लायेगा अर्थात् असूर के राजा और उस की सारी महिमा को
और वुह अपने सारे सोतों पर चढ़ आयेगा और अपने सारे
८ कड़ारों पर बहि निकलेगा। और यहूदाह के भीतर से जायेगा
बाढ़ के साथ बहेगा और चला जायेगा गले लों पहुंचेगा और
उस के परों के फैलाओं से हे इम्मानूएल तेरी भूमि सर्वथा
भर जायेगी॥

९ हे लोगो दुष्टता करो और हार जाओ और हे पृथिवी के
सारे दूरदेशियो कान धरो अपनी कटि बांधो और हार जाओ
१० अपनी कटि बांधो और हार जाओ। परामर्श करो और वुह
खण्डन किया जायेगा बात बनाओ और न ठहरेगी क्योंकि
११ सर्वशक्तिमान हमारे संग है। क्योंकि परमेश्वर ने मुझ से यों
कहा जब उस का हाथ मुझ पर प्रबल था और मुझे जताया
१२ कि इन लोगों के मार्ग पर न चलूं यह कहते हुए। कि तुम
उस सब को युक्ति मत कहो जिसे ये लोग युक्ति कहते हैं और
१३ जिस्से वे डरते हैं न डरो और न भय रक्खो। सेनाओं का
परमेश्वर उसी को पवित्र जानो और उसी से डरो और उसी
१४ से भयमान होओ। और वुह पवित्र जाना जायेगा और इसराएल
के दोनों घरानों के लिये ठोकर का पत्थर और ठेस की चटान
१५ और यरूसलम के निवासियों के लिये फंदा और जाल। और
वहुतेरे उन में से ठोकर खायेंगे और गिरेंगे और टूट जायेंगे
१६ और जाल में फसेंगे और पकड़े जायेंगे। मेरे शिष्यों में साची
के पत्र को बंद कर व्यवस्था पर छाप कर॥

१७ और मैं परमेश्वर की बाट जोहता रहूंगा जो अपना मुंह
यअकूब के घराने से छिपाता है और उस की आशा करता
१८ रहूंगा। देख मैं और वे लड़के जिन्हें परमेश्वर ने मुझे दिया
है सेनाओं के परमेश्वर की ओर से जो सेहून के पहाड़ में

रहता है इसराएल में चिन्हों और आश्चर्य्यों के लिये
हैं ॥
१९ और जब वे तुम से कहें कि टोनहों और ओझों से प्रश्न
करो जो चहचहाते और बड़बड़ाते हैं तो कहो क्या लोग
अपने ईश्वर से प्रश्न न करें क्या जीवतों के लिये मृतकों से प्रश्न
२० करें। व्यवस्था और साक्षी के पक्ष से प्रश्न करो यदि वे इस
वचन के समान न कहें तो वुह ऐसा मनुष्य है जिस के लिये
२१ विहान नहीं है। और वे उस देश में दुखी और भूखे होके
फिरेंगे और ऐसा होगा कि जब वे भूखे होंगे तो अपने तईं
खिजावेंगे और अपने राजा और अपने ईश्वर को धिक्कारेंगे और
२२ ऊपर देखेंगे। और पृथिवी की ओर ताकेंगे और देखो सकेती
और अंधकार सकेती और अंधकार की अंधियारी हटाई गई।
२३ क्योंकि जो भूमि अभी कष्ट में है वुह सदा अंधकार में न
रहेगी जैसा कि अगिले समय ने ज़बुलून की भूमि और नफ़ताली
की भूमि को तुच्छ किया वैसा ही पिछला समय समुद्र के मार्ग
यरदन के तीर अन्यदेशियों के जलील को प्रतिष्ठित करेगा॥

नवां पर्व्व ।

१ जो लोग अंधियारे में चलते हैं उन्हों ने बड़ी ज्योति देखी
है जो मृत्यु की छाया के देश में रहते हैं उन पर ज्योति
२ चमक गई है। तू ने जातिगण को बढ़ाया है तू ने उस का
आनन्द अधिक किया है वे तेरे आगे आनन्दित होते हैं उस
आनन्द के समान जो लवनी के समय होता है और जिस
३ रीति लोग लूट बांटने में आनन्द करते हैं। कि तू ने उस
के भारी जूए को और उस के कांधे के लठ को उस के
हांकनेहारे की छड़ी को मिदियान के दिन की नाईं तोड़
४ डाला है। क्योंकि जो हथियारबन्द युद्ध में जाता है उस

के सारे हथियार और जो वस्त्र कि लोहू में डूबे हैं सो जलाये
जायेंगे और ईंधन हो जायेंगे ॥
५ क्योंकि हमारे लिये एक बालक उत्पन्न हुआ हम को एक
पुत्र दिया गया और प्रभुता उस के कांधे पर है और उस
का नाम आश्चर्य्य मंत्री सर्व्वशक्तिमान सनातन का पिता
६ कुशल का प्रधान कहलाता है। दाऊद के सिंहासन पर और
उस के राज्य पर इस राज्य की बढ़ती और कुशल का अन्त
न होगा जिसतें न्याय और धर्म्म के साथ अब से सदा लों
उसे स्थिर और स्थापना दे सेनाओं के परमेश्वर का तेज यह
करेगा ॥
७ परमेश्वर ने यअ़क़ूब में एक वचन भेजा और वुह इसराएल
८ पर उतरा। और वे उसे जानते हैं सारे लोग अर्थात् इफ़रायम
और समरून के वासी जो गर्ब और मन के अहंकार के साथ
९ कहते हैं। कि ईंटें गिर गईं पर हम कटाऊ पत्थरों के घर
बनायेंगे गूलर के वृक्ष काटे गये पर हम उन की संती देवदारु
१० वृक्ष लगायेंगे। और परमेश्वर उस के ऊपर रसीन के सतानेहारों
११ को उठाता है और उस के वैरियों को भी भड़कायेगा। अर्थात्
अराम आगे से और फ़िलिस्ती पीछे से और वे इसराएल को
मुंह फैलाके भक्षण कर जायेंगे तथापि उस का क्रोध उतर
नहीं गया पर उस का हाथ अब लों फैला हुआ है ॥
१२ और लोग अपने मारनेहारे की ओर नहीं फिरे हैं और
१३ सेनाओं के परमेश्वर को उन्हों ने नहीं ढूंढ़ा है। और परमेश्वर
ने एक ही दिन में इसराएल के सिर और पूंछ ताड़ और नरकट
१४ को काट डाला है। जो महान और प्रतिष्ठित है वही सिर
है और जो आगमज्ञानी झूठ सिखलाता है सोई पूंछ है।
१५ क्योंकि इस जाति के अगुआ भटकानेहारे हुए हैं और जिन्हों
१६ ने उन से सिक्षा पाई वे नष्ट हो गये। इस लिये प्रभु उस

के तरुणों पर आनन्दित न होगा और उस के अनाथों पर
और उस की विधवें पर दया न करेगा क्योंकि वे सब बेधर्म्म
और कुकर्म्मी हैं और हर एक मुंह मूढ़ता की बातें करता है
तथापि उस का क्रोध उतर नहीं गया पर उस का हाथ अब
लों फैला हुआ है ॥
१७ क्योंकि दुष्टता आग की नाईं जलती है कांटे और कटीले
को भस्म करती है तब बन की झाड़ी में बर उठती है और
वे लोग धूयें का खंभा होकर चक्र मारते हुए ऊपर चढ़ते
१८ हैं । सेनाओं के परमेश्वर के क्रोध के मारे यह देश अंधियारा
हो गया और लोग ईंधन की नाईं हो गये लोग एक दूसरे पर
१९ दया नहीं करते हैं । और वे दहिनी ओर नोचते हैं और
भूखे रहते हैं और बाईं ओर खा जाते हैं और वे लोग तृप्त
२० नहीं हुए वे हर एक अपने बाहु का मांस खाते हैं । अर्थात्
मुनस्सी इफ़रायम को और इफ़रायम मुनस्सी को और वे
मिलके यहूदाह के विरुद्ध हैं तथापि उस का क्रोध उतर नहीं
गया पर उस का हाथ अब लों फैला हुआ है ॥

दसवां पर्ब्ब ।

१ उन पर संताप जो अन्याय की व्यवस्था को लिखते हैं और
उस अंधेर के बिचार लिखते हैं जिसे उन्हों ने स्थापन
२ किया है । जिसतें दीनों को न्याय से दूर रक्खें और
मेरे लोगों के दरिद्रों का पद छीन लें जिसतें बिधवों
३ को घात करें और वे अनाथों को लूटते हैं । और
पलटा लेने के दिन और उस बिपत्ति में जो दूर से
आवेगी तुम क्या करोगे तुम सहायता के लिये किस के पास
४ भागोगे और कहां अपना बिभव रक्खोगे । यद्यपि वे
बंधुओं के नीचे नहीं झुके तथापि तुम्हारे अध्यक्ष घात किये

हुओं के नीचे गिर पड़ेंगे पर तौभी इस सब के उपरान्त उस
का क्रोध उतर नहीं गया परन्तु उस का हाथ अब लों फैला
हुआ है ॥
५ असूर पर संताप जो मेरे क्रोध का सोंटा है और जो लठ
६ उन के हाथ में है वुह मेरा कोप है। मैं उसे अधर्म्मी जाति
पर भेजूंगा और उन लोगों के विरोध में जिन पर मेरा क्रोध
है आज्ञा देऊंगा जिसतें नाश करे और लूट ले और उस
७ जाति को मार्गों की कीच की नाईं लताड़े। परन्तु वुह ऐसा
सोच न रक्खेगा और उस का मन ऐसी चिन्ता न करेगा क्योंकि
उस के मन में है कि नाश करे और बहुत सी जातिगणों को
काट डाले ॥
८ क्योंकि वुह कहता है कि क्या मेरे अध्यक्ष सब के सब
९ राजा नहीं हैं। क्या कलनो करकमीस की नाईं नहीं क्या
हमात अरपाद की नाईं नहीं अथवा समरून दमिशक की
१० नाईं नहीं। जैसा मेरे हाथ ने मूर्तिपूजकों के राज्यों को पाया
जिन की खोदी हुई मूरतें यरूसलम और समरून की मूर्तों
११ से कहीं अधिक थीं। क्या जैसा मैं ने समरून और उस की
मूर्तिन से किया है वैसा ही मैं यरूसलम और उस की मूर्तिन
से न करूंगा ॥
१२ और ऐसा होगा कि प्रभु सैहून के पहाड़ के पास और
यरूसलम के पास उस के समस्त कार्य्य को काट डालेगा हां
वहां मैं असूर के राजा के गर्वित अंतःकरण के फल की और
उस की ऊंची आंखों के विभव का दण्ड देऊंगा ॥
१३ क्योंकि वुह कहता है कि मैं ने अपनी भुजा के बल से
यह सब किया है और अपनी बुद्धि से क्योंकि मैं बुद्धिमान हूं
और जातिगणों के सिवानों को सरकाता हूं और उन के भंडारों को
लूटता हूं और बलवानों की नाईं होकर उन के बसनेवालों को

१४ गिरा देता हूं। और मेरे हाथ ने घोंसले की नाई जातिगणों के
धन को पाया है और जैसा कोई पड़े हुए अंडों को समेटता
है वैसा ही मैं ने समस्त पृथिवी को समेट लिया और कोई
पंख फैलानेहारा और मुंह खोलनेहारा और चहचहानेहारा न था॥
१५ क्या कुल्हाड़ा उस के आगे जो उस्से काटता है डींग मारेगा
अथवा आरा आराखिचवैये के ऊपर अपने तईं बढ़ायेगा
यह ऐसा है कि लठ अपने उठानेहारों को हिलावे
१६ और ऐसा कि छड़ी उसे उठाये जो लकड़ी नहीं है। इस
कारण प्रभु सेनाओं का परमेश्वर उस के मोटों पर दुर्ब्बलता
भेजेगा और उस की महिमा के नीचे एक जलन आग की
१७ तपन की नाई बरेगी। और इसराएल की ज्योति आग हो
जायेगी और उस का धर्म्ममय लवर और वुह उस के कांटे
१८ और कटीले को एक ही दिन में खा जायेगा। और उस के
जंगल और उस की बारी की सुन्दरता को वुह प्राण से मांस
लों भस्म करेगा और रोगी के क्षय हो जाने के समान होगा।
१९ और उस के वन के रहे हुए वृक्ष थोड़े होंगे और बालक उन्हें
लिख सकेगा॥
२० और उस दिन ऐसा होगा कि इसराएल के बचे हुए और
यअक़ूब के घराने के बचे हुए अपने मारनेहारे पर फिर सहारा
न करेंगे परन्तु परमेश्वर इसराएल के धर्म्ममय पर सच्चाई के
२१ साथ भरोसा करेंगे। बचे हुए यअक़ूब के बचे हुए सर्वशक्तिमान
२२ अति बलवान की ओर फिरेंगे। क्योंकि यद्यपि तेरे लोग हे
इसराएल समुद्र की बालू की नाई होंगे पर उस में से केवल
बचे हुए फिरेंगे उन का विनाश ठहरा हुआ है जो धर्म्म
२३ के साथ बहि चलेगा। क्योंकि सेनाओं का प्रभु सारी भूमि
के मध्य में विनाश हां ठहराया हुआ विनाश प्रगट करनेवाला
है॥

२४ इस कारण सेनाओं का प्रभु यों कहता है कि हे मेरी
जाति जो सैहून में बस्ती है असूर से मत डर वुह तो
तुझे लट्ठ से मारेगा और अपनी छड़ी तेरे ऊपर मिस्र की
२५ नाईं उठायेगा। क्योंकि थोड़ी ही देर और है कि क्रोध
थम जाये और मेरा कोप उन के विनाश के लिये चले।
२६ और सेनाओं का परमेश्वर उस के ऊपर कोड़ा उठायेगा जिस
रीति कि मिदयान ऊरेब की पहाड़ी पर मारा गया और उस की
छड़ी फिर नदी के ऊपर होगी और वुह उसे मिस्र की नाईं
२७ उठावेगा। और उस दिन ऐसा होगा कि उस का बोझ तेरे
कांधे पर से और उस का जूआ तेरे गले पर से दूर हो जायेगा
और वुह जूआ तेल के साम्हने तोड़ा जायेगा॥

२८ वुह ऐयत लों आया है मिजरून से पार गया है मिकमास
२९ में अपनी सामा सौंपता है। वे घाटी से पार गये जिबअ में
रात भर टिके रामः कांपता है ज़िबिआ साऊल भागा जाता
३० है। हे जल्लीम की पुत्री चीख मार हे लैस सुन हाय शोकमय
३१ अनातूत। मदमनः हट गया जबीम के बासी अपनी सामा
३२ हटाते हैं। आज वुह नूब में खड़ा हुआ चाहता है और वहां
से सैहून के पहाड़ के घर यरूसलम के पहाड़ पर अपना हाथ
हिलायेगा॥

३३ देखो प्रभु सेनाओं का परमेश्वर इस बड़े पेड़ की डाली को
भयानक रीति से छांटनेहारा है और जो पेड़ ऊंचाई में लंबे
हैं सो काट डाले जायेंगे और जो ऊंचे हैं सो नीचे किये
३४ जायेंगे। और वुह इस बन की झाड़ी को लोहे से काट डालेगा
और यह लुबनान बलवन्त के हाथ से गिर जावेगा॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ और यस्सी के ठूंट से एक कोंपल निकलेगी और उस की

२ जड़ों से एक डाली उगेगी । और उस पर परमेश्वर का आत्मा
रहेगा ज्ञान और बुद्धि का आत्मा मंत्र और सामर्थ्य का आत्मा
३ ज्ञान और परमेश्वर के भय का आत्मा । और वुह परमेश्वर के भय
की बास सूंघेगा और अपनी आंखों के देखने के समान न्याय
न करेगा और अपने कानों के सुन्ने के अनुसार चुकाव न करेगा।
४ परन्तु वुह धर्म्म के साथ दीनों का न्याय करेगा और सच्चाई
के संग पृथिवी के नम्रों का बिचार करेगा और वुह अपने मुंह
की लाठी से पृथिवी को मारेगा और अपने होंठों के स्वास से दुष्ट
५ को मार डालेगा । और धर्म्म उस की कटि का पटुका होगा
और सच्चाई उस की कटि का बंधन ॥

६ और भेड़िया मेम्ना के संग रहेगा और चीता बकरी के बच्चे के
संग बैठेगा और बछिया और सिंहबच्चे और पुष्ट पशु साथ साथ
७ और नन्हा बालक उस की अगुआई करेगा । और गाय और
भलूक मिलके चरेंगे उन के बच्चे साथ साथ बैठेंगे और सिंह
८ बैल की नाईं भूसा खायेगा । और दूधपीवक बालक सांप की
बांबी पर खेलेगा और दूध छुड़ाया हुआ लड़का काले की बांबी
९ में अपना हाथ डालेगा । वे मेरे पवित्र पर्वत पर हानि न
करेंगे और न बिगाड़ेंगे क्योंकि पृथिवी परमेश्वर के ज्ञान से परिपूर्ण
हो गई जिस रीति से पानी समुद्र को ढांपता है ॥

१० और उस दिन यस्सी की जड़ जो खड़ी होती है लोगों के
लिये झंडा होगी जातिगण उस का पीछा करेंगे और उस का
आश्रय बिभवमय होगा ॥

११ और उस दिन ऐसा होगा कि प्रभु दूसरी बार अपना
हाथ बढ़ायेगा जिसतें अपने लोगों के बचे हुओं को मोल ले
जो असूर और मिस्र और फ़तरूस और कूश और ऐलाम और
सिनआर और हमात और समुद्र के टापुओं से बच रहेंगे ।
१२ और वुह देशगणों की दृष्टि में झंडा उठायेगा और निकाले हुए

इसराएलियों को एकट्ठे करेगा और बिथरे हुए यहूदियों को
१३ पृथिवी के चारों खूंट से बटोर लेगा। और इफ़रायम का डाह
मिट जायेगा और यहूदाह के बिरोधी काट डाले जायेंगे इफ़रायम
यहूदाह से डाह न रक्खेगा और यहूदा इफ़रायम को कष्ट न
१४ पहुंचावेगा। और वे पच्छिम की ओर फ़िलिस्तियों के कन्धे पर
झपट्टा मारेंगे वे साथ साथ पूरब के बासियों को लूटेंगे अदूम
और मोअब पर हाथ डालेंगे और अम्मून के संतान उन के
१५ आधीन होंगे। और परमेश्वर मिस्र की नदी की जीभ को
सुखा डालेगा और अपनी आंधी के बल से अपना हाथ नदी पर
हिलावेगा और उसे सात नाले कर देगा और अपने लोगों को
१६ जूते पहिने हुए उस में चलायेगा। और उस के लोगों के बचे
हुओं के लिये जो असूर से बच रहेंगे एक सड़क होगी जिस
रीति इसराएल के लिये थी जिस दिन कि वुह मिस्र की भूमि से
चढ़ा॥

बारहवां पर्व्व।

१ और तू उस दिन कहेगा कि हे परमेश्वर मैं तेरा धन्यबाद
करूंगा क्योंकि यद्यपि तू मुझ पर क्रुद्ध हुआ तथापि तेरा क्रोध
२ उतर गया और तू मुझे शांति देता है। देखो सर्वशक्तिमान
मेरी मुक्ति है मैं आशा रक्खूंगा और न डरूंगा क्योंकि मेरा
बूता और मेरा गान ईश्वर परमेश्वर है और वुह मेरी मुक्ति
३ हुआ है। और तुम आनन्द के साथ मुक्ति के सोतों से पानी
भरोगे॥

४ और तुम उस दिन कहोगे कि परमेश्वर का धन्य मानो उस
का नाम पुकारो जातिगणों में उस के कार्य्य प्रगट करो उन्हें चेत
५ दिलाओ कि उस का नाम महान है। परमेश्वर की स्तुति में
गान करो क्योंकि उस ने महत कार्य्य किया है समस्त पृथिवी

६ में यह प्रगट हो जाये। हे सैहून की निवासिनी चिल्ला और
ललकार क्योंकि तेरे मध्य इसराएल का धर्म्ममय महान है ॥

तेरहवां पर्व्व ।

१ बाबुल का बोझ जिसे अमूस के बेटे यसअियाह ने दर्शन
२ में देखा। नंगे पहाड़ पर झंडा उठाओ उन की ओर शब्द
ऊंचा करो हाथ हिलाओ और वे अध्यक्षों के फाटकों में आयें।
३ मैं ने अपने ठहराए हुओं को आज्ञा किई है हां अपने कोप के
लिये अपने बीरों को अपने अभिमानी घमण्ड करवैयों को बुलाया
है ॥
४ पहाड़ों में भीड़ का शब्द बड़ी जाति के समान एकट्ठी हुई
जातिगणों के राज्यों के हुल्लड़ का शब्द सेनाओं का परमेश्वर लड़ाई
५ के लिये सेना की गिन्ती लेता है। दूर देश से स्वर्गों के अन्त
से आते हैं परमेश्वर और उस के क्रोध के हथियार जिसतें सारे
देश को नाश करें ॥
६ बिलाप करो क्योंकि परमेश्वर का दिन समीप है शक्तिमान
७ की ओर से वुह शक्ति के समान आयेगा। इस लिये सारे हाथ
नीचे हो जायेंगे और हर मनुष्य का मन पिघल जायेगा।
८ और वे भयातुर होंगे शोक और जन्ने की पीड़ा उन्हें पकड़
लेंगी जन्नेहारी स्त्री के समान वे ऐंठेंगे वे हर एक अपने पड़ोसी
पर आश्चर्य्यित होंगे उन के मुंह लवर के मुंह होंगे ॥
९ देखो परमेश्वर का दिन आता है कठोरता और जलजलाहट
और ज्वलत्कोप से भरा जिसतें देश को उजाड़ करे और वुह उस
१० के पापियों को उस में से नाश करेगा। क्योंकि स्वर्ग के तारे
और उस के नक्षत्र अपनी ज्योति न देंगे सूर्य्य उदय होते
होते अंधकार हो गया है और चन्द्रमा अपनी ज्योति न देगा।
११ और मैं जगत को उस की बुराई का और दुष्टों को उन के

कुकर्म्म का दण्ड दूंगा और अभिमानियों के अभिमान को मिटा
१२ दूंगा और भयंकरों के अहंकार को नीचा करूंगा। मैं मनुष्य
को चोखे सोने से और पुरुष को ओफ़ीर के सोने से अधिक
१३ वहुमूल्य वनाऊंगा। इस कारण मैं स्वर्गों को कंपाऊंगा और
पृथिवी अपने ठिकाने से टल जायगी सेनाओं के परमेश्वर
१४ की जलजलाहट से और उस के ज्वलत्कोप के दिन में। और
ऐसा होगा कि खेदी हुई हरिणी के समान और उस झुंड की
नाईं जिस का वटुरवैया कोई नहीं है वे हर एक अपनी जाति
की ओर फिरेंगे और हर एक अपने देश की ओर भागेंगे।
१५ हर एक जो वहां पाया जायेगा सो बेधा जायेगा और हर एक
१६ जो उन से मेल रक्खेगा सो खड्ग से मारा पड़ेगा। और उन
के वालक उन की आंखों के आगे पटके जायेंगे और उन के
घर लूटे जायेंगे और उन की पत्नियों की पत लिई जायेगी॥
१७ देखो मैं उन के विरोध में मादियों को उठाता हूं जो रूपे
१८ को कुछ न समझेंगे और सोने से आनन्दित न होंगे। और
धनुष लड़कों को टुकड़े टुकड़े कर डालेंगे और वे गर्भ के फल
पर दया न करेंगे उन की आंखें वालकों पर मया न
१९ करेंगी। और वावुल जो राज्यों का सौंदर्य और कसदियों की
सुन्दरता और विभव है उस की दशा ईश्वर के सदूम और
२० अमूरा के उलट देने की नाईं होगी। वुह कभी वसाया न जायेगा
और पीढ़ी से पीढ़ी लों कोई उस में न वसेगा और न वहां
कोई अरव डेरा खड़ा करेगा और न चरवाहे वहां अपने झुंडों
२१ को वैठायेंगे। पर वहां वन्यपशु वैठेंगे और उन के घर
भयानक शब्दों से भर जायेंगे और वहां शुतरमुर्ग रहेंगे और
२२ वड़े वालवाले पशु वहां नाचेंगे। और भेड़िये उस के भवनों में
और गीदड़ सुन्दर स्थानों में हूहा करेंगे और उस का समय
आने के समीप है और उस के दिन वढ़ाये न जायेंगे॥

चौदहवां पर्ब्ब ।

१ क्योंकि परमेश्वर यअक़ूब पर दया करेगा और फिर इसराएल
को चुनेगा और उन्हें उन के देश में चैन देगा और परदेशी
उन से जा मिलेंगे और परदेशी यअक़ूब के घराने से मिल
२ जायेंगे । और जातिगण उन्हें ले लेंगे और उन्हें उन के स्थान
में पहुंचावेंगे और इसराएल का घराना परमेश्वर के देश में
उन्हें अधिकार में लेगा जिसतें उस के दास और दासियां हों
और वे अपने बंधुआ करवैयों को बंधुआ करेंगे और अपने
अंधेरियों पर प्रभुता करेंगे ॥

३ और ऐसा होगा कि जिस दिन परमेश्वर तुझे तेरे दुख से
और तेरी घबराहट से और उस कठोर दासता से जो तुझ से
४ लिई गई चैन देगा । तब तू बाबुल के राजा पर यह
दृष्टान्त उठायेगा और कहेगा कि बलवान क्योंकर नष्ट हो
५ गया सोनहरा नगर नष्ट हो गया । परमेश्वर ने दुष्टों
६ का लट्ठ और आज्ञाकारियों का दण्ड तोड़ डाला है । जो
जातिगणों को क्रोध के साथ उस मार से जो थमती नहीं
मारता था जो जातिगणों पर कोप के साथ उस अंधेर से जिसे
७ कोई नहीं रोकता था प्रभुता करता था । सारी पृथिवी बिश्राम
और चैन में है वे आनन्द की ललकार में फूट निकलते हैं ।
८ सरो के बृक्ष भी तेरे बिषय आनन्द करते हैं और लुबनान
के देवदारु और यह कहते हैं इस लिये कि तू गिराया
९ गया कोई लकड़हारा हमारे बिरुद्ध न चढ़ेगा । पाताल नीचे
से तेरे लिये हिल उठा है जिसतें तेरे आने की अगौनी करे
वुह तेरे लिये रफाईम को पृथिवी के सारे अध्यक्षों को जगाता
है वुह जातिगणों के सारे राजाओं को उन के सिंहासनों पर
१० से उठाता है । वे सब कोई उत्तर देंगे और तुझ से कहेंगे कि

तू भी हमारे समान दुर्बल हो गया हमारे समान बनाया
११ गया। तेरा ऐश्वर्य्य श्रो विभव तेरी बीणों का बजना पाताल
में गिराया गया तेरे नीचे कृमि बिछाया गया तेरा ओढ़ना
१२ कीड़ा है। हे शुक्र प्रात:काल के पुच तू क्योंकर स्वर्ग पर से
गिर पड़ा तू कि जातिगणों पर अंधेर करता था क्योंकर पृथिवी
१३ पर गिराया गया। और तू अपने मन में कहता था कि मैं
स्वर्ग पर चढूंगा सर्वशक्तिमान के तारों के ऊपर अपना सिंहासन
उठाऊंगा और मंडली के पहाड़ पर उत्तर की अलंग में बैठूंगा।
१४ मैं मेघों की ऊंचाइयों पर चढूंगा अपने तईं अति महान के
१५ तुल्य बनाऊंगा। पर तू केवल पाताल में गड़हे की गहिराइयों
१६ में गिराया जायेगा। जो तुझे देखेंगे से तुझ को घूरेंगे तुझ
पर ध्यान से दृष्टि करेंगे और कहेंगे क्या यह वही मनुष्य है जो
१७ पृथिवी को हिलाता और राज्यों को कंपाता था। जिस ने जगत
को जंगल के समान बनाया और उस के नगरों को उजाड़ किया
१८ उस के बंधुओं को उन के घर की ओर न जाने दिया। जातिगणों
के समस्त राजा गाड़े जाकर विभव में लेटते हैं हर एक अपने अपने
१९ घर में। पर तू अपनी समाधि से फेंका गया घिनित डाली की नाईं
उन संघारितों के वस्त्र की नाईं जो खड्ग से छेदे गये जो गढ़े के
२० पत्थरों में गिरते हैं लताड़ी हुई लोथ की नाईं। तू उन के संग
समाधि में जाकर गाड़ा न जायेगा क्योंकि तू ने अपने देश को उजाड़
किया अपनी प्रजा को घात किया कुकर्म्मियों के बंश का फिर
२१ सदा लों चर्चा न हो। उस के बालकों के लिये घात सिद्ध करो
उन के पितरों के पाप के कारण से वे न उठें और पृथिवी को
बश में न करें और जगत को नगरों से न भर दें॥
२२ और मैं आप उन के बिरुद्ध में उठूंगा सेनाओं का परमेश्वर
कहता है और बाबुल से हर नाम और चिन्ह को और बंश
२३ और संतान को काट डालूंगा परमेश्वर कहता है। और मैं

उसे साही का अधिकार और पानी की झीलें ठहराऊंगा और
उसे नाश की बुहारू से बुहार डालूंगा सेनाओं का परमेश्वर
कहता है॥
२४ सेनाओं के परमेश्वर ने यह कहके किरिया खाई है कि
निश्चय जैसा मैं ने चाहा वैसा ही हुआ और जैसा मैं ने
२५ ठाना वही स्थिर रहेगा। कि असूर को अपने देश में हारमान
करूं और मैं अपने पहाड़ों पर उसे लताड़ूंगा और उस का
जूआ उन के ऊपर से अलग हो जायेगा और उस का बोझ
२६ उस के कंधे पर से टल जायेगा। यह वुह इच्छा है जो
सारी पृथिवी पर ठहराई गई और यह वुह हाथ है जो समस्त
२७ जातिगणों के ऊपर बढ़ाया गया। क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर ने
इस को ठहराया है और कौन उस की इच्छा को टाल सकेगा
और उस ही का हाथ है जो बढ़ाया गया और कौन उसे फेरेगा॥
२८ जिस बरस कि आख़ज़ राजा मर गया उसी बरस यह
बोझ बर्णन हुआ॥
२९ कि हे सारी फ़िलिस्त तू इस लिये आनन्द मत कर कि
तेरा मारनेवाला लट्ठ तोड़ा गया क्योंकि सर्प के मूल से एक
काला निकलेगा और उस का बंश एक प्रज्वलित उड़वैया सांप होगा।
३० और कंगालों के पहिलौंठे झुंड के समान चरेंगे और दरिद्र चैन
से बैठेंगे और मैं तेरी जड़ को आकाल से नाश कराऊंगा और
३१ तेरे बचे हुओं को आकाल मार डालेगा। हे फाटक विलाप कर
हे नगर चिल्ला हे फ़िलिस्त तू सर्बथा पिघल गया क्योंकि उत्तर
से धूआं आता है और उस की सेनाओं में कोई भटका हुआ
३२ नहीं है। और देश के दूतों को क्या उत्तर दिया जायेगा कि
परमेश्वर ने सैहून की नेंव डाली है और उस में उस के लोगों
के दरिद्र शरण पायेंगे॥

पंद्रहवां पर्व्व ।

१ मोआब का यह बोझ है कि रात को आरमोआब उजाड़
दिया गया सुनसान हो गया कि रात को कीरमोआब उजाड़
२ दिया गया सुनसान हो गया। वे देवालय में चढ़ जाते हैं
और दीबान ऊंचे स्थानों पर रोने के लिये नबू पर और मेदिबा
पर मोआब विलाप करता है उस के सारे सिर मुड़ाये गये हर
३ एक डाढ़ी कट गई। उस के मार्गों में उन्हों ने टाट का
पटुका बांधा है उस की छतों पर और उस के चौकों में वुह
४ सर्व्वथा रोने के साथ उतरते हुए विलाप करता है। और हसबान
और अलिआले चिल्लाते हैं यहज़ लों उन का शब्द सुना गया
इस लिये मोआब के शस्त्रधारी चिल्लाते हैं उस का प्राण
५ उस में बेचैन है। मेरा मन मोआब के लिये चिल्लाता है उस
के भगेडू जुग़र लों भाग गये वुह अब तीन बरस की बछिया
है क्योंकि लूहीत पर चढ़नेहारा रोने के साथ उस पर चढ़ता
है क्योंकि होरोनैम के मार्ग पर वे हार का शब्द उठाते हैं।
६ क्योंकि निमरीम की धाराएं सूखी पड़ी हैं क्योंकि घास सूख गई
७ वनस्पति झुरा गई और हरियाली कुछ नहीं है। इस लिये
जो कुछ किसी ने प्राप्त किया उस की बचती और अपना धन
८ वे बेंतों की नदी के पार उठा ले जायेंगे। क्योंकि उस का
चिल्लाना मोआब के सिवाने को घेरता है अजलैम लों उस का
विलाप सुना गया और बिअरऐलीम लों उस का हाहाकार।
९ क्योंकि दीमान के जल लोहू से भर गये क्योंकि मैं दीमान पर
अधिक विपत्तें डालूंगा मोआब के बचे हुओं पर और उस देश के
बचे हुओं पर सिंह भेजूंगा॥

सोलहवां पर्ब्ब ।

१ तुम सिलअ से बन की ओर सैहून की पुची के पहाड़ लों
२ देश के अध्यक्ष के पास मेम्ना भेजा । और ऐसा होगा कि
भटकी हुई चिड़िया के समान फेंके हुए खोंते की नाईं मोआब
३ की बेटियां और अर्नून के घाट होंगे । परामर्श दो बिचार
करो ठीक दोपहर को अपनी छाया रात के समान बना
४ निकाले हुओं को छिपा ले भटके हुए को प्रगट न कर । मेरे
अर्थात् मोआब के भटके हुए तुझ में रहें तू उन के लिये
नाशक के साम्हने आड़ हो क्योंकि अंधेरी हो चुका बरबस्ती
५ मिट गई भूमि पर से रौंदवैया नष्ट हुआ । और सिंहासन दया
से स्थिर किया जायेगा और उस पर दाऊद के तंबू में सत्य
के संग वुह बैठेगा जो न्याय करवैया और बिचार का चाहक
और धर्म्म में चतुर होगा ॥
६ हम ने मोआब के अर्थात् उस बड़े अहंकारी के अहंकार
का संदेश सुना है उस का घमंड और उस का गर्ब और उस
का क्रोध और उस की निरर्थक बातों का बेठिकाने होना ॥
७ इस लिये मोआब मोआब के लिये बिलाप करेगा उस का
सर्वथा बिलाप करेगा तुम सर्वथा मारे जाके क़ीरहरसत की
८ दाख की लिट्टियों के लिये हाय मारोगे । क्योंकि हसबान के
खेत सूख गये जातिगणों के अध्यक्षों ने सिबमाह की दाख की
उत्तम डालियों को तोड़ डाला वे यअज़ेर लों पहुंचीं जंगल
में बिखर गईं उस की डालियां फैल गईं समुद्र के पार गईं ।
९ इस लिये मैं सिबमाह की दाख के लिये यअज़ेर के रोने के
साथ रोऊंगा हे हसबान और हे अलिआले मैं तुझे अपने
आंसुओं से भिगाऊंगा क्योंकि तेरे फलों के बटोरने पर और
१० तेरे अनाज के काटने पर ललकार पड़ी है । और बाटिका से

मगनता और आनन्दता ले लिई गई और दाख की वाटिकों में
फिर गाया न जायेगा और ललकारा न जायेगा रौंदवैया दाख
को कोल्हुओं में फिर न रौंदेगा मैं ने ललकार को चुप कर दिया
११ है। इस लिये मेरी अंतड़ियां मोआब के लिये बीणा के समान
१२ बिलाप करेंगी और मेरा अंतःकरण क़ीरहरस के लिये। और
ऐसा होगा कि जब मोआब अपने देवों के साम्हने देखा
जायेगा जब ऊंचे स्थान पर अपने तईं निर्लोभ की प्रार्थनाओं से
थकायेगा तब वुह अपने मन्दिर में प्रार्थना करने के लिये
आयेगा पर उत्तर न पा सकेगा॥

१३ यह वुह बचन है जो परमेश्वर ने मोआब के विषय में
१४ प्राचीन मे कहा। और अब परमेश्वर यह कहता है कि तीन
बरस में बनिहार के बरसों के समान मोआब का बिभव अपने
सारे बड़े हुल्लड़ सहित तुच्छ हो जायेगा और उस का बचा
हुआ छोटा और थोड़ा होगा और बहुत नहीं॥

सतरहवां पर्व्व।

१ दिमिशक़ का बोझ देखो दिमिशक़ ऐसा नष्ट हुआ कि
२ नगर नहीं है और टीला और उजाड़ हो गया। अरआयर के
नगर छोड़ दिये गये वे झुंडों के लिये होंगे और वे वहां
३ बैठेंगे और उन का कोई डरानेहारा न होगा। तब इफ़राईम
से गढ़ जाता रहेगा और दिमिशक़ और अराम की बचती से
राज्य वे बचे हुए इसराएल के संतानों के बिभव की नाईं हो
जायेंगे सेनाओं का परमेश्वर कहता है॥

४ और उस दिन ऐसा होगा कि यअ़क़ूब का बिभव दुर्बल
५ हो जायेगा और उस की पुष्ट देह दूबर हो जायेगी। और
ऐसा होगा जैसा कोई लवनी करते हुए खड़े हुए अनाज को
बटोरे और उस का हाथ बालों को लवे और ऐसा होगा जैसा

६ कोई रफाईम की तराई में सिला बीने। और उस में सिला बीन्ने के
लिये कुछ बच रहेगा जैसा कि जलपाई के वृक्ष में हिलाने के
समय दो तीन दाने फुनगी के ऊपर चार पांच फलवन्त पेड़
की डालों पर परमेश्वर इसराएल का ईश्वर कहता है॥
७ उस दिन मनुष्य अपने सृष्टिकर्त्ता की ओर फिरेगा और उस
८ की आंखें इसराएल के धर्म्ममय की ओर दृष्टि करेंगी। और
वुह यज्ञबेदियों अर्थात् अपने हाथों के कार्य्य की ओर दृष्टि न
करेगा और जो उस की अंगुलियों ने बनाया वुह उस पर और
बिधातृदेवियों पर और सूर्य्य की प्रतिमाओं पर दृष्टि न करेगा।
९ उस दिन उस के दृढ़ नगर उस के समान होंगे जो झाड़ी
और फुनगी में बच गया अर्थात् वुह नगर जो वे छोड़ देते
हैं जब इसराएल के संतानों के आगे से फिर जाते हैं और
१० देश उजाड़ होगा। कि तू ने अपने मुक्तिदाता ईश्वर को भुला
दिया और अपनी शरण की चटान को चेत नहीं किया इस लिये
तू मनभावने पौधों को लगावेगा और उस में परदेशी कोंपल
११ जमावेगा। जिस दिन तू उसे लगायेगा तू उस के चहुंओर
बाड़ा बांधेगा और बिहान को अपने बीज से फूल दिखावेगा पर
उदासी और अत्यन्त शोक के दिन उस का फल जाता रहेगा॥
१२ सुनो बहुत से जातिगणों का हूहाकार समुद्रों के शब्द की
नाई वे हाहा करते हैं और जातिगणों का रेला बड़े पानियों
१३ के रेले के समान वे रौला करते हैं। जातिगण बहुत पानियों
के रेले के समान रौला मचाते हैं और वुह उसे दपटता है और
वुह दूर से भाग जाता है और पर्वतों की भूसी के समान
आंधी के आगे और घूमती हुई बस्तु के समान बगूले के
१४ साम्हने रगेदा जाता है। सांझ के जून और देखो भय
और बिहान से पहिले वुह है ही नहीं यह हमारे लूटनेहारों
का भाग और हमारे नाश करनेहारों का अधिकार होगा॥

अठारहवां पर्ब्ब ।

१ अरे हे फड़फड़ानेहारी पंखों की भूमि जो कूश की नदियों
२ के उस पार है । जो समुद्र पर और पटेरे की नौकों में पानियों
के ऊपर दूतों को भेजती है हे शीघ्र चलवैये दूतो लंबी
और सिर मुंडी हुई जाति के पास जाओ एक जाति के पास
जो आरंभ से अब लों भयानक है दूने बल और रौंदनेहारी
३ जाति जिस के देश की नदियां दो भाग कर देती हैं । हे
जगत के समस्त बासियो और पृथिवी के निवासियो तुम मानो
पर्बत पर ध्वजा उठाना देखोगे और मानो तुरही फूंकना
सुनोगे ॥

४ क्योंकि परमेश्वर ने मुझ से यों कहा कि मैं अपने निवास
में चुपचाप रहूंगा और ताक रक्खूंगा मध्यम ग्रीष्म के समान
जो हरियाली पर है और ओस टपकानेहारे बादल के समान
५ जो लवनी की तपन में है । क्योंकि लवनी से पहिले जब
कली पूर्ण हो और फूल पकनेहारा दाख होने पर हो तब वुह
हंसुओं से डालियों को काट डालता है और टहनियों को
६ काटके अलग कर देता है । वे एक ही साथ पहाड़ों के अहेरी
पक्षियों के लिये और पृथिवी के बनैले पशुओं के लिये छोड़ी
जायेंगी और अहेरी पक्षी उन पर ग्रीष्म का समय काटेंगे और
७ पृथिवी के सारे बनैले पशु उन पर जाड़ा काटेंगे । उस समय
सेनाओं के परमेश्वर के पास एक भेंट पहुंचाई जायेगी अर्थात्
एक लंबी और सिर मुंडी हुई जाति और एक जाति के द्वारा
से जो आरंभ से अब लों भयानक है और दूने बलवाली और
रौंदनेहारी जाति जिस के देश को नदियां दो भाग कर देती
हैं सेनाओं के परमेश्वर के नाम के स्थान अर्थात् सेहून के पर्बत
पर ॥

उन्नीसवां पर्व्व ।

१ मिस्र का बोझ देखो परमेश्वर हलकी बदली पर चढ़के
मिस्र में आता है और मिस्र की मूर्त्तें उस के आगे कांपती
२ हैं और मिस्र का मन उस के भीतर पिघल जाता है। और
मैं मिस्र को मिस्र पर उसकाऊंगा और वे लड़ेंगे हर एक अपने
भाई से और हर एक अपने पड़ोसी से नगर नगर से और
३ राज्य राज्य से। और मिस्र का आत्मा उस के भीतर घट जायेगा
और मैं उस की चतुराई को निगल जाऊंगा और वे मूर्त्तों और
४ गणकों और टोनहों और ओझाओं से प्रश्न करेंगे। और मैं
मिस्र को क्रूर अध्यक्ष के हाथ में जकड़ूंगा और बलवान राजा
५ उन पर राज्य करेगा परमेश्वर सेनाओं का प्रभु कहता है। और समुद्र
का जल घट जायेगा और नदी झूरी और निर्जल हो जायेगी।
६ और धाराएं दुर्गंध करेंगी मिस्र की नदियां छूछी और झूरी हो
७ गईं नल और शर कुम्हला गये। कछार नदी पर नदी के
मोहाने पर और नदी की सारी जुतार भूमि मारी जाके सूख
८ जायेगी और फिर न होगी। और मछवे हाय मारेंगे और
बिलाप करेंगे नील नदी के सारे बंसी फेंकनेहारे और पानी के
९ ऊपर के सारे जाल फैलानेहारे कुम्हला गये। और निर्मल किये हुए
पटसन के शिल्पी और स्वेत वस्त्रों के बिन्नेहारे लज्जित हैं।
१० और उस के खंभे तोड़े गये सारे बनिहार दुखित हैं।
११ ज़ोअन के अध्यक्ष सब के सब मूर्ख हैं फ़िरऊन के मंत्रियों
के बुद्धिमान जो हैं उन का मंत्र पशुवत हो गया तुम
क्योंकर फ़िरऊन से कहोगे कि मैं बुद्धिमानों का पुत्र प्राचीन
१२ राजाओं का बेटा हूं। वे कहां हैं तेरे बुद्धिमान कहां हैं अब
हाय कि तुझे बतलायें और नहीं तो जानें कि सेनाओं के
१३ परमेश्वर ने मिस्र के विषय में क्या ठहराया है। ज़ोअन के

अत्यन्त मूर्ख हो गये नूफ के अत्यन्त छल खा गये और जो
उस की गोष्ठी के प्रधान हैं उन्हों ने मिस्र को भ्रमा दिया है।
१४ परमेश्वर ने उस के मध्य में उलटनेहारा आत्मा मिलाया है
और उन्हों ने मिस्र को उस के सारे कार्य्यों में डगमगा दिया
जिस रीति कि मद्यप अपनी छांट की दशा में डगमगाता है।
१५ और मिस्र का ऐसा कोई काम न होगा जो सिर और पूंछ ताड़
और नरकट कर सके॥
१६ उस दिन मिस्र स्त्रियों की नाईं होगा और डरेगा और
कांपेगा सेनाओं के परमेश्वर के हाथ के उस हिलाने से जो वुह
१७ उस के ऊपर हिलाता है। और यहूदाह की भूमि मिस्र के
लिये भय का कारण होगी हर एक जिस्से उस का चर्चा किया
जायेगा वुह सेनाओं के परमेश्वर के उस मनोरथ से डरेगा जो
वुह उस के विरुद्ध में रखता है॥
१८ उस दिन मिस्र के देश में पांच नगर कनआन की भाषा
बोलनेहारे और सेनाओं के परमेश्वर से सेवा की किरिया
खानेहारे होंगे और एक विनाश का नगर कहा जायेगा॥
१९ उस दिन मिस्र के देश के मध्य में परमेश्वर के लिये बेदी
२० और उस के सिवाने पर परमेश्वर के लिये खंभा होगा। और
यह मिस्र के देश में सेनाओं के परमेश्वर का चिन्ह और साक्षी
होगा कि वे अंधेरियों के आगे परमेश्वर को पुकारेंगे और वुह उन
के लिये एक मुक्तिदाता और लड़नेहारा भेजेगा और उन्हें
२१ छुड़ावेगा। और परमेश्वर मिस्र में जाना जायेगा और मिस्री
उस दिन परमेश्वर को जानेंगे और बलिदानों और भेंटों के
साथ सेवा करेंगे और परमेश्वर से मनौती मानेंगे और उसे पूरी
२२ करेंगे। और परमेश्वर मिस्र को मारेगा मारके चंगा करेगा और
वे परमेश्वर की ओर फिरेंगे और वुह उन की प्रार्थना सुनेगा
और उन्हें चंगा करेगा॥

२३ उस दिन मिस्र से असूर लों एक बड़ी सड़क होगी और
असूर मिस्र में आवेगा और मिस्र असूर में और मिस्री असूर के
साथ सेवा करेंगे ॥
२४ उस दिन इसराएल मिस्र और असूर के संग एक तीसरा
२५ होगा और पृथिवी के मध्य आशीष का कारण। जिसे सेनाओं के
परमेश्वर ने यह कहते हुए आशीष दिई है कि धन्य हो मेरे लोग
मिस्र और मेरे हाथों के कार्य्य असूर और मेरा अधिकार इसराएल॥

बीसवां पर्व्व ।

१ जिस बरस कि तरतान अशदूद में आया जब असूर के
राजा सरजून ने उसे भेजा और वुह अशदूद से लड़ा और उसे
२ ले लिया। उस समय परमेश्वर ने अमूस के बेटे यसाियाह
के द्वारा यह कहते हुए बातें किईं कि जा और अपनी कटि
पर से टाट खोल डाल और अपने पांओं से अपनी जूती उतार
और उस ने ऐसा ही किया कि नग्न और नंगे पांओं होके चला
३ फिरा। और परमेश्वर ने कहा कि जिस रीति से मेरा सेवक
यसाियाह नग्न और नंगे पांओं होके चला फिरा है जिसतें
मिस्र और कूश के लिये तीन बरस लों चिन्ह और लक्षण रहे।
४ इसी रीति से असूर का राजा मिस्र के बंधुओं को और कूश के
देशत्यागियों को तरुणों और बृद्धों सहित नग्न और नंगे पांओं
और उन के चूतड़ों को नंगा करके मिस्र की लज्जा के लिये
५ ले जायेगा। और वे कूश से जो उन की आशा का स्थान और
मिस्र से जो उन की प्रतिष्ठा थी भयमान और लज्जित होंगे।
६ और उस दिन इस तट के बासी कहेंगे कि देखो हमारी आशा
के स्थान की यह दशा है जहां हम सहाय के लिये भागे
जिसतें असूर के राजा के साम्हने से छुटकारा पायें सो हम
किस रीति से बचेंगे ॥

एकीसवां पर्व्व ।

१ समुद्र के अरण्य का बोझ दक्षिणी बल करनेहारे बगूलों के
समान वुह अरण्य से भयंकर देश से आता है ॥
२ एक डरावने दर्शन का मुझ से वर्णन किया गया कि
धोखादेनेहारा धोखा देता है और लुटेरा लूटता है हे ऐलाम
चढ़ाई कर हे मादै घेर ले मैं ने सारे कराहने को जो उस के
३ कारण से हुआ बंद कर दिया है। इस कारण से मेरी कटि बड़ी
पीड़ा से भर गई जन्नेहारी स्त्री के जन्ने की पीड़ा के समान
जन्ने की पीड़ा ने मुझे पकड़ लिया है मैं ऐसा ऐंठ गया हूं कि
४ सुन नहीं सक्ता घबरा गया हूं कि देख नहीं सक्ता। मेरा मन घबरा
गया डर मुझ पर आ पड़ा उस ने मेरे बिलास की सांझ को मेरे
५ लिये डर ठहराया है। मंच लगाई गई भोजनआसनीयबस्त्र
बिछाया गया वे खाते पीते हैं हे अध्यक्षो उठो ढाल पर तेल मलो॥
६ क्योंकि प्रभु ने मुझ से यों कहा है कि जा पहरू खड़ा कर
जो वुह देखे सो बताये ॥
७ और जो वुह घोड़चढ़ों को घोड़े के दो दो घोड़चढ़ों को गदहे
के चढ़नेहारों को ऊंट के चढ़नेहारों को देखे तो बड़ी चौकसी के
८ साथ कान धरे। और वुह सिंह की नाईं पुकारता है कि हे
प्रभु मैं सदा दिन को पहिरे के गुम्मट पर खड़ा रहता हूं और
९ सब रातों को अपनी चौकी पर बना रहता हूं। और देखो ये
मनुष्य चढ़े हुए आते हैं दो दो अश्वार और वुह उत्तर देके
कहता है कि बाबुल गिर पड़ा गिर पड़ा है और उस के देवों
की सारी मूर्त्तों को उस ने भूमि पर चूर चूर कर डाला है ॥
१० हे मेरे मांड़े हुए और मेरे खलिहान के अनाज जो मैं ने
सेनाओं के परमेश्वर इसराएल के ईश्वर से सुना है सो तुम से
बर्णन किया है ॥

११ दूमः का बोझ शईर से कोई मुझे पुकारता है कि हे
पहरू कितनी रात है हे पहरू कितनी रात ॥
१२ पहरू कहता है कि बिहान होता है और रात भी यदि
तुम पूछा चाहते हो तो फिर आके पूछो॥
१३ अरब का बोझ हे ददानियों के याचिको तुम अरब की
१४ झाड़ियों में रात बिताओगे। तैमा के देश के बासी पानी लेके
पियासे की अगौनी करते हैं और भगवैये के लिये रोटी लेकर
१५ उस्से मिलने को निकलते हैं। क्योंकि वे खड्ग के आगे से नंगे
खड्ग के साम्हने से और चढ़ाये हुए धनुष से और युद्ध की
१६ बहुताई के कारण से भागे। क्योंकि प्रभु मुझ से यों कहता
है कि एक और बरस में बनिहार के बरसों के समान क़ीदार
१७ का सारा विभव जाता रहेगा। और धनुषधारियों की गिनती
में से जो बचे हुए हैं अर्थात् क़ीदार के संतानों के बीर घट
जायेंगे क्योंकि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने कहा है ॥

बाईसवां पर्व्व।

१ दर्शन की तराई का बोझ अब तुझे क्या हुआ कि तू
२ सर्वथा छतों के ऊपर चढ़ गई है। अरे कोलाहल से भरी
हुल्लड़ करनेहारे नगर आनन्द करनेहारी बस्ती तेरे जूझे हुए
३ खड्ग के जूझे हुए नहीं और न युद्ध के मारे हैं। तेरे सारे
अध्यक्ष एक ही साथ भागे वे धनुषधारियों के बंधुए हुए जो
तुझ में मिले वे सब एक ही संग बांधे गये वे दूर से भागे।
४ इसी लिये मैं ने कहा कि मेरी ओर से मुंह फेर लो मैं बिलख
बिलखके रोऊंगा मुझे मेरी जाति की बेटी के उजाड़ के विषय
५ शांति देने की चिंता न करो। क्योंकि प्रभु सेनाओं का परमेश्वर
दर्शन की तराई में कोलाहल और रौंदने और घबराहट का
दिन रखता है भीत तोड़ डाली जायेगी और लोग पर्बत

६ की ओर सहाय के लिये दोहाई देंगे। और ऐलाम ने रथों
और पदातियों और घोड़चढ़ों के साथ तूण उठाया और क़ीर ने
७ ढाल निकाली। और ऐसा हुआ कि तेरी चुनी हुई तराई रथों से
८ भर गई और घोड़चढ़ों ने फाटक की ओर डेरा किया। और
यहूदाह का ओट खोला गया और तू ने उस दिन बन के
९ घर के हथियारस्थान पर दृष्टि रक्खी। और तुम ने दाऊद
के नगर की दरारों को देखा कि वे बहुत थीं और तुम ने नीचे
१० के पोखरे के पानी को एकट्ठा कर लिया। और तुम ने
यरूशलम के घरों को गिन लिया और घरों को ढा दिया
११ जिसतें भीतों को फिर सुधारो। और तुम ने प्राचीन सरोवर
के पानी के लिये दोहरी भीतों के मध्य में कुण्ड बनाया
और उस के मुख्यकर्त्ता की ओर दृष्टि नहीं रक्खी और जो
प्राचीन से उस का बनानेहारा है तुम ने उसे नहीं देखा।
१२ और प्रभु परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर ने उस दिन रोने और बिलाप
१३ करने और बार नोचने और टाट बांधने को बुलाया। और
देखो आनन्द और आल्हाद गाय बैल बध करना और भेड़
बकरी का मारना मांस खाना और मदिरा पीना खायें और पीयें
१४ क्योंकि कल हम मरेंगे। और सेनाओं के परमेश्वर ने मेरे
कानों में यह प्रकाश किया कि निश्चय तुम्हारे मरने लों
तुम्हारे इस कुकर्म्म का प्रायश्चित्त न लिया जायेगा प्रभु
परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर कहता है॥

१५ प्रभु परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर ने यों कहा कि जा इस भंडारी
के पास शिबना के पास जो भवन का प्रधान है भीतर जा।
१६ और कह कि तेरा यहां क्या है और तेरा यहां कौन है कि तू ने
यहां अपने लिये समाधि खोदी है यह जो ऊंचाई पर अपनी
१७ समाधि खोदता है चटान में अपना निवासस्थान काटता है। हे
मनुष्य देख परमेश्वर बल के साथ तुझे सर्वथा गिरा देता है

१८ और तुझे सर्वथा वेष्टन से वेष्टित करता है। लपेटते लपेटते
वुह तुझे लपेट लेगा गेंद के समान जो चौड़ी भूमि में लुड़काया
गया वहां तू जाके मरेगा और वहां तेरे बिभव की रथें तुझे
ले जायेंगी अरे तू कि अपने स्वामी के घर की लज्जा है।
१९ और मैं तुझे तेरे ठिकाने से निकाल दूंगा और तू अपने पद
२० से गिराया जायेगा। और उस दिन ऐसा होगा कि मैं अपने
२१ सेवक ख़िलक़ियाह के बेटे इलियाक़ीम को बुलाऊंगा। और मैं
तेरा वस्त्र उसे पहिनाऊंगा और तेरे पटुके से उसे दृढ़
करूंगा और तेरा राज्य उस के हाथ में सौंपूंगा और वुह
यरूसलम के बासियों और यहूदाह के घराने का पिता हो
२२ जायेगा। और मैं दाऊद के घर की कुंजी उस के कांधे पर
धरूंगा सो वुह खोलेगा और कोई बंद करवैया न होगा और
२३ बंद करेगा और कोई खोलवैया न होगा। और मैं उसे खूंटी की नाईं
दृढ़ स्थान में स्थापन करूंगा और वुह अपने पिता के घराने के
२४ लिये महिमा की चौकी हो जायेगा। और उस के पिता के घराने
का सारा बिभव लड़के वाले और बाल बच्चे सारे छोटे छोटे पात्र
कटोरों से लेके सारे बड़े पात्रों तक उस पर लटकाये जायेंगे॥
२५ परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर कहता है कि उस दिन जो खूंटी दृढ़
स्थान में स्थापित किई गई सो सरक जायेगी और काटी जायेगी
और गिर पड़ेगी और जो बोझ उस पर था सो काट दिया
जायेगा क्योंकि परमेश्वर ने कहा है॥

तेईसवां पर्ब्ब।

१ सूर का बोझ हे तरसीस के जहाज़ो बिलाप करो क्योंकि
यहां लों उजाड़ दिया गया कि न घर न प्रवेश करने का
२ स्थान है कित्तीम के देश से उन को प्रगट हुआ। हे टापू के
बासियो चुप रहो सैदा के बेपारी जो समुद्र पार जाते थे तुझे

३ में भर गये। और बड़े पानियों में नील का अनाज होता था
उसी नदी का लाभ उस की प्राप्ति थी और वुह जातिगणों का
४ व्योपारस्थान था। हे सैदा लज्जित हो क्योंकि समुद्र हां
समुद्र की गढ़ी यों कहती है मुझे जन्ने की पीड़ा नहीं हुई
और मैं नहीं जनी और तरुणों को नहीं पाला कुंवारियों को
५ नहीं पोसा। जिस रीति कि मिस्र के संदेश से लोग पीड़ित
६ हुए वैसा ही सूर के संदेश से पीड़ित होंगे। तरसीस की ओर
७ पार उतर जाओ हे टापू के बासियो बिलाप करो। क्या यह
तुम्हारी आनन्द करनेहारी बस्ती है अगिले समयों से उस की
प्राचीनता है उस के पांओं उसे दूर लों प्रदेश में बसने के लिये
८ ले जायेंगे। किस ने यह मंत्र सूर मुकुट देनेहारे नगर के
बिरोध में बांधा है जिस के व्योपारी अध्यक्ष हैं और उस के
९ बणिक भूमि के कुलीन। परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर ने यह मंत्र
किया है कि सारी सुन्दरता की बड़ाई को नष्ट करे पृथिवी के
१० सारे कुलीनों को निन्दित करे। अपने देश पर नील नदी के
समान बढ़ जा हे तरसीस की पुत्री अब और कुछ बंधन नहीं
११ है। उस ने अपना हाथ समुद्र के ऊपर फैलाया राज्यों को
हिला दिया परमेश्वर ने कनआन के विषय में आज्ञा किई है
१२ कि उस के दृढ़ स्थानों को ढा दें। और उस ने कहा कि हे
सैदा की पुत्री अपति किई हुई कुंवारी तू फिर कभी अभिमान
न करेगी कित्तीम की ओर उठ पार उतर जा वहां भी तुझे
१३ चैन न मिलेगा। कसदियों के देश को देखो ये जाति न थी
असूर ने बनबासियों के लिये उस की नेव डाली उन्हों ने
अपने गर्गज बनाये हैं उन्हों ने उस के भवनों को जगा दिया
१४ है उस ने उन्हें उजाड़ ठहराया है। हे तरसीस के जहाज़ो
बिलाप करो क्योंकि तुम्हारा गढ़ उजाड़ दिया गया॥
१५ और उस दिन ऐसा होगा कि सूर सत्तर बरस लों एक राजा

के समय के समान भुला दिया जायेगा सत्तर बरस के पीछे सूर
१६ की दशा बेश्या के गीत के समान होगी। हे भूली हुई बेश्या
बीणा ले नगर में फिरा कर भली भांति बजा बहुत गा कि तू
फिर चेत किई जाय॥
१७ और ऐसा होगा कि सत्तर बरस के पीछे परमेश्वर सूर पर
दृष्टि करेगा और वुह अपने छिनाले की बृति के कमाने के
लिये फिरेगी और जगत की सारी राजधानियों के संग जो
१८ पृथिवी के ऊपर हैं छिनारा करेगी। और उस के ब्योपार का
फल और उस की छिनाले की बृति परमेश्वर के लिये पवित्र
होगी वुह न ढेर किई जायेगी और न रख छोड़ी जायेगी
क्योंकि उस की बाणिज्य का फल उन के लिये होगा जो परमेश्वर
के सन्मुख रहते हैं जिसतें भोजन करके तृप्त हों और टिकाऊ
वस्त्र पहिनें॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ देखो परमेश्वर देश को सूना करता और उसे सर्वथा छूछा
करता है और वुह उसे उलट देगा और उस के बासियों को
२ छिन्न भिन्न करेगा। और ऐसा होगा कि जैसी जाति वैसा
याजक जैसा सेवक वैसा उस का स्वामी जैसी दासी वैसी उस
की स्वामिनी जैसा गाहक वैसा बिचवैया जैसा ऋण देनेहारा वैसा
३ ऋण लेनेहारा जैसा ब्याजग्राहक वैसा ब्याजदायक होगा। देश
सर्वथा छूछा किया जायेगा और हर प्रकार से लूटा जायेगा
४ क्योंकि परमेश्वर ने यह वचन कहा है। देश बिलाप कर
रहा मुरझा रहा है जगत कुम्हला गया मुरझा रहा है
५ देश के लोगों के बड़े पदवीवाले कुम्हला गये। और देश
अपने बासियों के नीचे अशुद्ध हो गया क्योंकि उन्हों ने ब्यवस्थों
से उल्लंघन किया बिधि को पलट डाला और सदा की बाचा

६ को तोड़ डाला है। इस लिये स्राप ने देश को भक्ष लिया
और उस के वासी अपराधी ठहरे इसी लिये देश के वासी
७ भस्म हो गये और थोड़े मनुष्य बच रहे। नया दाखरस
बिलाप करता है दाख कुम्हला गया सारे आनन्दित अंत:करणी
८ हाय मारते हैं। मृदंग का आनन्दित शब्द हो चुका जय
करवैयों का शब्द जाता रहा बीणा का आनन्दित शब्द हो
९ चुका। वे गा गाके दाखरस न पीयेंगे तीक्षण मदिरा उस के
१० पीनेहारों के लिये कड़वी होगी। बिनाश नगर टूट गया हर एक
११ घर मुंद गया कि कोई भीतर नहीं जा सक्ता। मार्गों में दाखरस
के लिये चिल्लाना है सारी आनन्दता अंधियारी हो गई देश
१२ की आनन्दता दूर किई गई। जो नगर में बचती छोड़ दिई गई
१३ सो उजाड़ है और फाटक तोड़के नष्ट किये गये। क्योंकि देश
के मध्य में लोगों के बीच ऐसा होगा जैसे जलपाई का बृक्ष
१४ हिलाया जाये और दाख के तोड़े जाने के पीछे बीन्ना। वे अपना
शब्द उठायेंगे गावेंगे वे परमेश्वर की बड़ाई के कारण से
१५ समुद्र से ललकारते हैं। इस लिये तुम उंजियालों में
परमेश्वर की समुद्र के टापुओं में परमेश्वर इसराएल के ईश्वर
१६ के नाम की बड़ाई करो। पृथिवी के अन्त से हम ने गान
अर्थात् धर्म्मी की प्रतिष्ठा के गान सुने हैं और मैं ने कहा कि
मेरी दुर्गति मेरी दुर्गति मुझ पर संताप छलियों ने छल किया
१७ है हां छल के साथ छलियों ने छल किया है। हे देश के
१८ वासी भय और गड़हा और जाल तुझ पर है। और ऐसा
होगा कि जो डर के शब्द से भागता है सो गड़हे में गिरेगा
और जो गड़हे के बीच में से निकलता है सो जाल में पकड़ा
जायेगा क्योंकि ऊपर से खिड़कियां खुल गईं और पृथिवी की
१९ नेवें हिल गईं। पृथिवी टुकड़े टुकड़े हो गई पृथिवी चूर चूर
२० हो गई पृथिवी हिल हिल गई। पृथिवी डगमगाती मतवाले

के नाईं डगमगाती है और हिंडोले के नाईं हिल गई और उस
की बुराई उस पर भारी है और वुह गिरेगी और फिर न
उठेगी ॥
२१ और उस दिन ऐसा होगा कि परमेश्वर ऊंचे स्थान में महान
स्थान की सेना को और पृथिवी पर पृथिवी के महाराजाओं
२२ को दण्ड देगा। और जिस रीति बन्धुए गड़हे में बटोरे जाते
हैं वे बटोरे जायेंगे और बन्दीगृह में बन्द किये जायेंगे और
२३ बहुत दिनों के पीछे उन पर दृष्टि किई जायेगी। और चन्द्रमा
घबरा जायेगा और सूर्य्य लज्जित क्योंकि परमेश्वर सेनाओं का
प्रभु सेहून के पहाड़ में और यरूसलम में राजा हुआ और
उस के प्राचीनों के आगे विभव है ॥

पचीसवां पर्व्व।

१ हे परमेश्वर मेरा ईश्वर तू ही है मैं तेरी बड़ाई करूंगा तेरे
नाम की स्तुति करूंगा क्योंकि तू ने आश्चर्य्यित कार्य्य पुरातन
२ से मंत्र दृढ़ भक्ति और सत्यता किई हैं। क्योंकि तू ने उसे
नगर से ढेर कर डाला गढ़वाली बस्ती को उजाड़ औरों के
भवन को ऐसी दशा में कि नगर नहीं रहा वुह सदा
३ लों न बसाया जायेगा। इसी कारण से बलवाली जाति
तेरी बड़ाई करेगी भयंकर जातिगणों का नगर तुझ से डर
४ रक्खेगा। क्योंकि तू दरिद्री के लिये गढ़ हुआ कंगाल के लिये
उस की विपत्ति में गढ़ मेंह की आंधी में शरणस्थान गरमी में
छाया जब अंधेरियों की आंधी उस मेंह के झक्कड़ के समान
५ थी जो भीत पर आता है। जिस रीति झूरा में गरमी छांह से
दब जाती है वैसा ही तू परदेशियों के हूहा को दबायेगा
जिस रीति गरमी मेघ की छांह से दब जाती है वैसा ही
अंधेरियों का गान दबाया जायेगा ॥

६ और सेनाओं का परमेश्वर इस पहाड़ पर सारे लोगों के लिये
पुष्ट वस्तुन का जेवनार सिद्ध करेगा तलछट से निथरे हुए दाखरस
की पुष्ट मज्जा वाली वस्तुन की तलछट से निथरे हुए और भली भांति
७ छाने हुए दाखरस का जेवनार। और जो ओट सारे लोगों पर है
वुह इस पहाड़ पर उस ओट के साम्हने को मिटा देगा और उस
८ घूंघट को जो सारे जातिगणों पर बिना हुआ है। उस ने सर्वदा के
लिये मृत्यु को निगल लिया है और प्रभु परमेश्वर सारे मुंहों पर
से आंसू पोंछता है और वुह अपने लोगों के अपमान को सारी
पृथिवी पर से दूर करेगा क्योंकि परमेश्वर ने कहा है॥
९ और उस दिन लोग कहेंगे कि देखो हमारा ईश्वर यही है हम
ने उस की बाट जोही और वुह हमें मुक्ति देगा यही परमेश्वर
है हम ने उस की बाट जोही हम उस की मुक्ति से आनन्द
और मगन हों॥
१० क्योंकि परमेश्वर का हाथ इस पहाड़ पर रहेगा और मोआब
अपने नीचे ऐसा लताड़ा जायेगा जैसे पुआल घूरे के पानी में
११ लताड़ा जाये। और वुह अपने हाथ उस के मध्य में ऐसा
फैलावेगा जैसे पैराक पैरने को फैलाता है और वुह उस के
अहंकार को उस के हाथों के छल बल समेत नीचा करेगा।
१२ और उस ने तेरी भीतों के ऊंचे गर्गजवाले गढ़ को ढा दिया
गिरा दिया भूमि लों हां धूल लों पहुंचा दिया है॥

छब्बीसवां पर्ब्ब।

१ उस दिन यहूदाह के देश में यह गीत गाया जायेगा कि
हमारे लिये एक दृढ़ नगर है वुह मुक्ति को भीतें और परिकोट
२ ठहरावेगा। फाटकों को खोलो जिसतें धर्म्मी और सच्चे लोग
३ भीतर आएं। जिस अंत:करण का भरोसा तुझ पर है तू
४ उसे कुशल में रक्खेगा क्योंकि वुह तेरा दृढ़ भक्त है। परमेश्वर

पर सर्वदा भरोसा रक्खो क्योंकि तुम्हारे लिये याह परमेश्वर में
५ सदा की चटान है। क्योंकि उस ने ऊंचे स्थान के बासियों
और ऊंचे नगर को नीचा कर दिया है वुह उसे नीचा करेगा
६ उसे भूमि लों नीचा करेगा उसे धूल लों पहुंचायेगा। वुह पांव
७ से रौंदा जायेगा दरिद्रों के पांओं से दीनों के डगों से। धर्म्मी
का मार्ग सच्चाइयां हैं तू कि खरा है साधुन के मार्ग को समथर
८ करेगा। हां तेरे न्यायों के मार्ग में हे परमेश्वर हम ने तेरी
बाट जोही तेरे नाम और तेरे स्मरण की ओर हमारे मन की
९ अभिलाषा थी। मैं रात को अपने मन में तेरा अभिलाषी रहा
हां मैं अपने आत्मा से अपने भीतर में भोर को तुझे ढूंढूंगा
क्योंकि जब तेरे न्याय पृथिवी पर आते हैं तब जगत के बासी
१० धर्म्म सीखते हैं। यद्यपि दुष्ट पर दया किई जावे तथापि वुह
धर्म्म को न सीखेगा सच्चाइयों की भूमि में वुह टेढ़ाई करेगा
११ और परमेश्वर की ऊंचाई को न देखेगा। हे परमेश्वर तेरा हाथ
ऊंचा है वे देखा नहीं चाहते हैं पर वे तेरे उस ताप को जो
तेरे लोगों के लिये है देखेंगे और लज्जित होंगे हां वुह आग
१२ जो तेरे शत्रुन के लिये है उन्हें भस्म कर डालेगी। हे परमेश्वर
तू हमें कुशल देगा क्योंकि तू ने हमारे सब के सब काम
१३ हमारे लिये किये हैं। हे परमेश्वर हमारे ईश्वर तुझे छोड़ और
प्रभु हमारे स्वामी रहे हैं पर आगे को हम केवल तेरा तेरे ही
१४ नाम का स्मरण करेंगे। वे मृतक हैं फिर न जीयेंगे रफाईम
हैं फिर न उठेंगे इस लिये तू ने दृष्टि किई और उन्हें नाश
१५ किया है और उन का सारा स्मरण मिटा डाला है। तू ने
लोगों को बढ़ाया है हे परमेश्वर तू ने लोगों को बढ़ाया है तू
ने अपने तईं महान प्रगट किया है तू ने उस देश के सारे
सिवाने को दूर लों बढ़ाया है॥
१६ हे परमेश्वर वे बिपत्ति में तेरी ओर फिरे उन्हों ने दीनताई

१७ के साथ प्रार्थना किई जब तेरा दण्ड उन पर था। जिस रीति
कि जब गर्भिणी स्त्री जन्ने के निकट पहुंचती है वुह जन्ने की
पीड़ा में होती है अपनी पीड़ों में चिल्लाती है वैसा ही
१८ हे परमेश्वर हम तेरे आगे से निकाले हुए रहते हैं। हम पीड़ों
में थे जन्ने की पीड़ा में पड़े मानो हम पवन जने हम देश
को छुटकारे नहीं दे सक्ते थे और जगत के वासी न गिरते
१९ थे। तेरे मृतक जी उठेंगे मेरी लोथें उठ खड़ी होंगी हे
धूल के वासियो जागो और गाओ क्योंकि तेरी ओस उस ओस
की नाईं जो हरियालियों पर पड़ती है और तू उसे पृथिवी
पर और रफाईम पर गिरावेगा॥
२० हे मेरी जाति जा अपनी कोठरियों के भीतर जा और अपने
बाहर के द्वार मूंद ले अपने तईं क्षणमात्र के लिये छिपा यहां
२१ लों कि जलजलाहट उतर जाये। क्योंकि देखो परमेश्वर अपने
स्थान से बाहर आता है जिसतें पृथिवी के वासियों के अपराध
का दण्ड उन्हें दे और पृथिवी अपने लोहू को प्रगट करेगी
और फिर अपने जूझे हुओं को न छिपायेगी॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब।

१ उस दिन परमेश्वर अपनी तलवार से उस कठोर और बड़ी
और बली तलवार से लिवयातान शीघ्रगामी सर्प्प को और
लिवयातान पेचीला सर्प्प को दण्ड देगा और उस अजगर को
२ जो नदी में है मार डालेगा। उस दिन दाख की वाटिका के
३ समान उसे दबा दो। मैं परमेश्वर उस की रक्षा करता हूं मैं
हर घड़ी उसे सींचा करूंगा जिसतें न हो कि कोई उसे हानि
४ पहुंचावे मैं रात दिन उस की रक्षा किया करूंगा। जलन मुझ
में नहीं है हाय कि लड़ाई में कांटे और कटीले मेरे साम्हने
रक्खे जायें जिसतें मैं उन पर दौड़ूं और उन्हें एक ही साथ

५ जला दूं। अथवा वुह मेरे गढ़ की शरण पकड़े और मुझ से
मिलाप करे मिलाप मुझ से करे॥
६ आनेहारे दिनों में यअकूब जड़ पकड़ेगा और इसराएल
कोंपल लायेगा और फूलेगा और वे जगत को फल से भर देंगे।
७ क्या उस ने उसे ऐसा मारा जैसा उस के मारनेहारे को मारा
क्या वुह उस के घातकों के घात की नाईं घात किया गया।
८ उस के निकलने में तू प्रमाण के साथ उस्से लड़ता है वुह
पुरवा पवन के दिन अपनी प्रचंड आंधी से उसे दूर कर देता
९ है। इस लिये इस ताड़ना के कारण से यअकूब के पाप का
प्रायश्चित्त किया जायेगा और यह उस का सारा फल है कि
उस के पाप को दूर करे जैसा जान पड़ेगा जब वुह यज्ञबेदी
के सब पत्थरों को चूने के चूर चूर किये हुए पत्थरों के समान
कर देगा यहां लों कि विधातृदेवी की मूर्त्ति और सूर्य्य की मूरत्तें
१० फिर खड़ी न होंगी। क्योंकि दृढ़ नगर उजाड़ होगा एक सूनी
बस्ती और बन के समान छोड़ी हुई वहां बछड़ा चरेगा और
११ वहां लेट जायेगा और उस की डालियां खा जायेगा। जब उस
की डालें सूख जायेंगी तब तोड़ी जायेंगी और स्त्रियां आके
उन्हें जला देंगी क्योंकि वुह निर्बुद्धि जाति है इस लिये उस
का सिरजनहार उस पर दया न करेगा और उस का बनानेहारा
उस पर दयालु न होगा॥
१२ और उस दिन ऐसा होगा कि परमेश्वर नदी की बाढ़ से
लेके मिस्र की नाली लों वृक्ष को हिलाके फल बटोरेगा और
तुम हे इसराएल के संतानो सब के सब एकट्ठे किये जाओगे।
१३ और उस दिन ऐसा होगा कि बड़ा नरसिंगा फूंका जायेगा और
जो असूर के देश में छिन्न भिन्न थे और जो मिस्र की भूमि में
देशान्तर थे वे आयेंगे और पवित्र पहाड़ पर परमेश्वर को
दंडवत करेंगे॥

अठाईसवां पर्व्व ।

१ सन्ताप इफ़रायम के मतवालों के ऊंचे मुकुट पर और
कुम्हलाते हुए फूल उस की तेजवती सुन्दरता पर जो मदिरा
२ के मारे हुओं की फलवंत तराई के सिरे पर है। देखो प्रभु
एक पराक्रमी और बली मनुष्य रखता है जिस ने ओलों के
मेंह और नाशक प्रचंड वायु के समान महा डुबानेहारे पानियों
के मेंह की नाईं अपने हाथ से उसे भूमि पर गिरा दिया है।
३ इफरायम के मतवालों का ऊंचा मुकुट पांव से रौंदा जायेगा।
४ और उस की तेजवती सुन्दरता का मुरझाता हुआ फूल जो
फलवंत तराई के सिरे पर है सो पहिले पक्के गूलर के समान
होगा ऋतु से पहिले जिसे उस का देखवैया देखता है और
जब उस के हाथ ही में है तब उसे निगल जाता है॥
५ उस दिन सेनाओं का परमेश्वर अपनी जाति के बचे हुओं
६ के लिये सुन्दरता का मुकुट और तेजस्वी किरीट होगा। और
उस के लिये जो न्याय पर बैठता है न्याय का आत्मा और
उन के लिये जो लड़ाई को द्वार पर लौटा देते हैं बल होगा।
७ पर ये भी मदिरा से भटक गये और मद्यपान से भटक गये
याजक और भविष्यद्वक्ता मद्यपान से भटक गये मदिरा ने उन्हें
खा लिया मद्यपान से भटक गये दर्शन में भटक गये विचार
८ में डगमगा गये। क्योंकि सारे मंच छांट से और मल से भर
गये बिना निर्मल स्थान॥
९ वुह किस को ज्ञान सिखावेगा और किस को सुनी हुई बात
समझायेगा क्या उन को जिन का दूध छुड़ाया गया जो
१० स्तनों से अलग किये गये। क्योंकि आज्ञा पर आज्ञा आज्ञा पर
आज्ञा पांती पर पांती पांती पर पांती थोड़ा यहां थोड़ा वहां।
११ क्योंकि तुतले होंठों से और अन्य भाषा से वुह इस जाति से

१२ बातें करेगा। जिस ने उन से कहा कि यही विश्राम है थके
को विश्राम देओ और यही चैन है पर उन्हों ने सुन्ने को न
१३ चाहा। और परमेश्वर का वचन उन को आज्ञा पर आज्ञा आज्ञा
पर आज्ञा पांती पर पांती पांती पर पांती थोड़ा यहां थोड़ा
वहां था जिसतें वे चलें और ठोकर खाके चित गिर पड़ें और
टूट जायें और फंस जायें और पकड़े जायें॥
१४ सो हे ठट्ठा करनेहारे मनुष्यो इस जाति के न्याइयो जो
१५ यरूसलम में हो परमेश्वर का वचन सुनो। इस लिये कि तुम ने
कहा है कि हम ने मृत्यु से बाचा बांधी और पाताल से हम ने
नियम किया है डुबानेहारा कोड़ा जब आरंपार जायेगा
तब हम पर न आयेगा क्योंकि हम ने झूठ को अपना शरण
१६ स्थान ठहराया है और छल में अपने को छिपाया है। इस
लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं सैहून में नेव के
लिये एक पत्थर रखता हूं एक परीक्षा किया हुआ पत्थर कोने
के सिरे का बहुमूल्य पत्थर एक स्थिर नेव विश्वासी शीघ्र न
१७ करेगा। और मैं शलाका पर न्याय और साहुल पर धर्म्म
रक्खूंगा और ओला झूठ के शरणस्थान को ढा देगा और छिपने
१८ के स्थान को जल डुबा देगा। और तुम ने जो मृत्यु से बाचा
बांधी सो टूट जायेगी और पाताल से जो तुम ने नियम
किया वुह स्थिर न रहेगा डुबानेहारा कोड़ा जब आरंपार
१९ जायेगा तब तुम उस के नीचे रौंदे जाओगे। वुह अपने
आरंपार जाते ही तुम को ले जायेगा क्योंकि वुह हर बिहान
को आरंपार जायेगा दिन और रात को और केवल भय तुम
२० को सुनी हुई बात समझायेगा। क्योंकि खाट ऐसी छोटी
है कि कोई उस पर आप को लम्बा नहीं कर सक्ता और ओढ़ना
ऐसा सकेत है कि कोई आप को उस में लपेट नहीं सक्ता।
२१ क्योंकि प्रासीम के पहाड़ की नाईं परमेश्वर उठेगा उस तराई

के समान जो गिबजन में है क्रुद्ध होगा जिसतें अपना काम
अपना अनूठा काम करे और अपना कार्य्य अपना अनोखा
२२ कार्य्य करे। और अब ठट्ठा न करो न होवे कि तुम्हारे बंधन
दृढ़ हो जायें क्योंकि सारी भूमि पर विनाश हां ठहराये
हुए विनाश का संदेश मैं ने प्रभु सेनाओं के परमेश्वर से सुना
है ॥
२३ कान धरके मेरा शब्द सुनो ध्यान धरके मेरी बात सुनो।
२४ क्या हरवाहा बोने के लिये प्रति दिन हर जोता है क्या वुह
प्रति दिन अपनी भूमि को हेंगता और समथर किया करता है।
२५ जब वुह उस की धरातल को समथर कर चुका तो क्या वुह
अजवायन को नहीं छींटता और जीरे को नहीं छितराता
और गोहूं को पांतियों में लगाता और जव को उस के ठहराये
२६ हुए ठौर में और मुड़िया गोहूं को अपने ठिकाने में। यों उस का
ईश्वर ठीक रीति से उसे सिखाता है और उसे ज्ञान देता है।
२७ क्योंकि अजवायन दावने की वस्तु से नहीं दाई जाती है और
न गाड़ी का पहिया जीरे पर घुमाया जाता है पर अजवायन
२८ लाठी से झाड़ी जाती है और जीरा छड़ी से। रोटी का अन्न
कुचलवाया जाता है क्योंकि वुह सदा उसे दावता न रहेगा
पर वुह उस पर अपनी गाड़ी का पहिया चलाता है पर अपने
२९ घोड़ों से उसे नहीं कुचलवाता। यह भी सेनाओं के परमेश्वर
से आता है वुह मंत्र में आश्चर्य्यित बुद्धि में महान है ॥

उनतीसवां पर्व्व।

१ अरिएल पर अरिएल पर सन्ताप उस नगर पर जिस में
दाऊद ने बास किया था बरस पर बरस बढ़ने देओ पर्व्व क्रम
२ क्रम से आया करें। और मैं अरिएल को दुख देऊंगा और
उदासी और बिलाप होगा और वुह मेरे लिये अरिएल की

३ नाई होगा । और मैं तेरे चारों ओर छावनी खड़ी करूंगा और सेना
४ से तुझे घेरूंगा और तेरे बिरोध में गढ़ बनाऊंगा । और तू
नीचे उतारा जायगा और धूल से बातें करेगा और धूल से तेरी
बोली धीमी होगी और तेरा शब्द टोन्हे के समान भूमि से
५ होगा और धूल से तेरी बोली चहचहायेगी । तब तेरे शत्रुन
की मंडली सूक्ष्म धूलि की नाई होगी और उपद्रवियों की मंडली
उड़नेहारे भूसे की नाई और वुह क्षणमात्र एक पल में होगा ।
६ सेनाओं के परमेश्वर की ओर से गर्जन और भूमिकंप से
और बड़े शब्द आंधी और झक्कड़ और भस्मक आग की लवर
७ से उस पर दृष्टि किई जायेगी । तब स्वप्न और रात के दर्शन
की नाई उन सारी जातिगणों की भीड़ होगी जो अरियल के
सन्मुख संग्राम करते हैं हां सब जो उस्से और उस की गढ़ियों
८ से लड़ते हैं और उसे दुख देते हैं । और ऐसा होगा जैसा
भूखा स्वप्न में है और क्या देखता है कि खाता है और जाग
उठा और उस का पेट छूछा है और जैसा प्यासा स्वप्न में है
और क्या देखता है कि पीता है और जाग उठा और क्या
देखता है कि थका और उस का पेट इच्छुक है वैसा ही उन
सारी जातिगणों की भीड़ होगी जो सैहून के पहाड़ के बिरोध
में युद्ध करते हैं ॥

९ शङ्कित रहो और आश्चर्य्यित हो अपने को मगन रक्खो और
अन्धे बन जाओ वे मतवारे हैं पर मदिरा से नहीं वे लड़खड़ाते
१० हैं पर तीक्षण मदिरा से नहीं । क्योंकि परमेश्वर ने तुम पर भारी
नींद का आत्मा उंडेला है और तुम्हारी आंखें बंद किईं
भविष्यवक्तों को हां तुम्हारे अध्यक्षों को दर्शियों को उस ने
११ ढांप लिया है । और सारे दर्शियों का दर्शन तुम्हारे लिये उस
पुस्तक की बातों के समान हो गया जो छाप से बंद हो जिसे
यह कहके पढ़े लिखे को देते हैं कि आप इसे पढ़िये और

वुह उत्तर देवे कि मैं नहीं पढ़ सक्ता क्योंकि उस के ऊपर
१२ छाप किई हुई है। और पुस्तक यह कहके उस को दिई
जाये जो बिन पढ़ा लिखा है कि आप इस को पढ़िये और वुह
कहे कि मैं पढ़ा लिखा नहीं हूं॥
१३ और प्रभु ने कहा इस कारण से कि ये लोग अपने मुंह
से मेरी निकटता चाहते हैं और ये लोग अपने होंठों से मेरी
प्रतिष्ठा करते हैं पर ये लोग अपना मन मुझ से दूर रखते हैं
और उन का मुझ से भय रखना मनुष्यों की आज्ञा और सिखलाई
१४ बात है। इस लिये देखो मैं इस जाति से आश्चर्य्यित व्यवहार
करता जाऊंगा बड़ा ही आश्चर्य्य और अचंभे के साथ और
उस के बुद्धिमानों की बुद्धि नाश हो जायेगी और उस के
पंडितों की पंडिताई अपने को लुप्त करेगी॥
१५ उन पर सन्ताप जो गहिराई में जाते हैं जिसतें परमेश्वर से मंत्र
छिपायें और उन के काम काज अंधियारे में हैं और वे कहते हैं
१६ कि कौन हमें देखता और कौन हमें पहिचानता है। आज्ञा
का तुम्हारा क्या ही उलटना है क्या कुम्हार मिट्टी की नाईं
गिना जायेगा कि कृत्य कर्त्ता के विषय में कहे कि उस ने
मुझे नहीं बनाया और निर्मान किई हुई वस्तु अपने निर्माण
कर्त्ता के विषय कहे कि वुह निर्बुद्धि है॥
१७ अब क्या थोड़ी बेर में ऐसा न होगा कि लुबनान वाटिका
१८ हो जायेगा और वाटिका झाड़ी में गिनी जायेगी। और उसी
दिन बहिरे पुस्तक की बातें सुनेंगे और अंधों की आंखें
१९ अंधियारे में से और तिमिर में से देखेंगी। और कोमल परमेश्वर
से अधिक आनन्द करते रहेंगे और मनुष्यों के दीन इसराएल
२० के धर्ममय से आल्हादित होंगे। क्योंकि उपद्रवी हो चुका
और ठठेलू नष्ट हो गया और सारे बुराई के जोहक काट डाले
२१ गये। जो मनुष्य को बात में दोषी ठहराते थे और उस के

लिये जो फाटक पर बाद करता था फंदा लगाते थे और
धर्म्मी को झूठ के बल से हटा देते थे ॥
२२ इस लिये परमेश्वर जिस ने अबिरहाम को मुक्ति दिई
यअक़ूब के घराने से यों कहता है कि अब यअक़ूब
लज्जित न होगा और अब उस का मुंह पीला न होगा ।
२३ क्योंकि जब वुह अपने मध्य में अपने संतानों को जो मेरे
हाथों के बनाये हुए हैं देखेगा तब वे मेरे नाम को पवित्र
करेंगे हां यअक़ूब के धर्ममय को पवित्र मानेंगे और इसराएल
२४ के ईश्वर से डरेंगे । तब आत्मा के भ्रमी ज्ञान प्राप्त करेंगे
और क्रूर लोग उपदेश ग्रहण करेंगे ॥

तीसवां पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर कहता है कि उन दंगइत बालकों पर सन्ताप
जो ऐसा परामर्श करते हैं जो मेरी ओर से नहीं और ऐसा
घूंघट बिनते हैं जो मेरे आत्मा से नहीं है जिसतें पाप पर
२ पाप बढ़ावें । जो मिस्र में उतर जाने के लिये चले जाते हैं
और मेरे मुंह से प्रश्न नहीं किया जिसतें फिरऊन के गढ़ में
३ बचने के लिये भागें और मिस्र की छाया में शरण लें । और
फिरऊन का गढ़ तुम्हारे लिये लाज होगा और मिस्र की छाया
४ में शरण लेना दुर्नामी । क्योंकि उस के अध्यक्ष ज़ुअन में
५ हैं और उस के दूत हानेस में पहुंचते हैं । वे सब उस
जातिगण के कारण से लज्जित हैं जो उन्हें कुछ लाभ न
पहुंचायेगा उस जातिगण से जो न सहाय के लिये और न लाभ
के लिये पर लज्जा के लिये और निन्दा के लिये भी होगा ॥
६ दक्खिण के पशुन का क्या ही बोझ बिपत्त और कष्ट की
भूमि में जहां से सिंहिनी और सिंह नाग और अगिया उड़वैया
सर्प आता है वे अपना धन तरुण गदहों की पीठ पर और

अपने रोकड़ ऊंटों के पालानों पर उठा ले जाते हैं उस
७ जातिगण के लिये जो कुछ लाभ न पहुंचायेगा। और मिस्री
वृथा और अनर्थ सहायता करेंगे इस लिये मैं ने इस देश के
लोगों के विषय में यह कहा है कि वे अभिमानी बैठे रहेंगे॥
८ अब जा उन के आगे उसे पाटी पर लिख और पुस्तक में
उसे लिख रख और वुह आनेहारे दिन के लिये सदा के लिये
९ सर्वदा रहे। क्योंकि वुह दंगइत जाति है झूठे लड़के लड़के जो
१० परमेश्वर की व्यवस्था को सुन्ने नहीं चाहते। जो दर्शकों को
कहते हैं कि दर्शन न देखो और भविष्यद्वक्तों से यह कि हमें
सच्ची बातों का संदेश न दो हम से चिकनी चुपड़ी बातें करो
११ झूठे संदेश दो। मार्ग से भटक जाओ पथ से एक ओर
हो जाओ इसराएल के धर्ममय को हमारी दृष्टि से दूर करो॥
१२ इस लिये इसराएल का धर्ममय यों कहता है कि इस
कारण से कि तुम ने इस वचन को तुच्छ जाना है और अंधेर
और वक्रता पर भरोसा किया है और उन पर आशा किये हो।
१३ इस लिये यह अपराध तुम्हारे लिये गिरनेहारे दरार की नाईं
होगा जो ऊंची भीत में कूवड़ पड़ जाता है जिस का फटना
१४ अकस्मात एक पलमात्र हो सका। और वुह ऐसी टूट गई
जैसे कुम्हार का पात्र टूट जाता है चूर चूर हो जाता और
उस के चूरों में से ऐसी ठीकरी नहीं पाई जाती जिस्से चूल्हे से
आग उठायें और कुण्ड से पानी भर लें।
१५ क्योंकि प्रभु परमेश्वर इसराएल का धर्ममय यों कहता है कि
कि फिर आने और चैन में तुम बच जाओगे चुपके रहने और भरोसा
१६ करने में तुम्हारा बल होगा पर तुम ने नहीं चाहा। और
तुम ने कहा कि नहीं क्योंकि हम घोड़ों पर चढ़के भाग जायेंगे
इस लिये तुम भाग जाओगे और शीघ्रगामी पशुओं पर चढ़ोगे
१७ इस लिये तुम्हारे पीछा करनेहारे शीघ्रगामी होंगे। एक सहस्र एक

की घुरकी से पांच की घुरकी से हां तुम भागोगे यहां लों कि
तुम उस स्तंभ के समान रह जाओगे जो पहाड़ की चोटी पर
है और उस ध्वजा के समान जो टीले पर है ॥
१८ और इस लिये परमेश्वर तुम पर अनुग्रह करने के लिये
ताकता रहेगा और इस लिये वुह तुम पर दया करने के लिये
उठेगा क्योंकि परमेश्वर न्याय का ईश्वर है क्या ही धन्य उस
के सारे आश्रित ॥
१९ क्योंकि जाति सैहून और यरूसलम में बास करेगी तू फिर
बिलाप न करेगी वुह तेरी दुहाई का शब्द सुनके तुझ पर
२० बड़ी कृपा करेगा वुह सुनते ही तुझे उत्तर देगा। और प्रभु
तुम्हें कष्ट की रोटी और दुख का पानी देगा और तेरे उपदेशक
फिर अपने को न छिपावेंगे परन्तु तेरी आंखें तेरे उपदेशकों को
२१ देखती रहेंगी। और तेरे कान तेरे पीछे से यह बचन सुनेंगे
कि मार्ग यही है इसी पर चलो जब कि तुम दहिने और जब
२२ कि तुम बायें मुड़ो। और तुम अपनी गढ़ी हुई मूर्त्तिन का
रुपहला बस्त्र और अपनी ढाली हुई प्रतिमा के सोनहरे आभरण
को अशुद्ध जानोगे तू उन्हें अशुद्ध बस्तु की नाईं फेंक देगा तू
२३ उस्से कहेगा कि दूर हो। और वुह तेरे उस बीज के
लिये मेंह देगा जो तू भूमि में बोयेगा और रोटी भूमि का फल
और वुह चिकनी और चुपड़ी होगी तेरे पशु उस दिन फैलाव चराई
२४ के स्थान में चरेंगे। और बैल और गदहे भूमि के जोतनेहारे
सलोनी सानी खायेंगे जो चलनी और सूप से उसाई गई है।
२५ और हर एक ऊंचे पहाड़ और हर एक ऊंचे टीले पर प्रनाले
और पानी की धाराएं होंगी महा संहार के दिन गढ़ों के गिरने के
२६ समय। और चन्द्रमा की ज्योति सूर्य्य की ज्योति के समान
होगी और सूर्य्य की ज्योति शतगुणी होगी सात दिनों के
प्रकाश के समान जिस दिन परमेश्वर अपनी जाति के टूटे

फूटे को सुधारेगा और वुह उस की मार के घाव को चंगा
करेगा ॥
२७ देखो परमेश्वर का नाम दूर से आता है और उस का क्रोध
जलानेहारा और उठनेहारो अत्यन्त लवर है उस के होंठ
कोप से भरे हैं और उस की जीभ भस्मक आग की नाईं है।
२८ और उस का आत्मा डुबानेहारी धारा की नाईं गले लों दो
भाग कर देगा जिस्तें देशगणों को झूठ की चलनी में छाने
२९ और जातिगणों की दाढ़ों में भरमानेहारी बाग होगी। तुम्हारा
गाना ऐसा होगा जैसा पर्व्व के पवित्र मान्ने की रात और मन
का आनन्द जैसा उस का जो बांसुरी लिये हुए चलता है
जिस्तें परमेश्वर के पर्वत में इसराएल की चटान के पास जाये।
३० और परमेश्वर अपने शब्द का तेज सुनावेगा और अपने हाथ
का नीचे आना दिखावेगा कोप की जलन और भस्मक आग
३१ की लवर के साथ महा झड़ी और वरषा और ओले। क्योंकि
परमेश्वर के शब्द से असूर हारमान होगा वुह छड़ी से उसे
३२ मारेगा। और प्रारब्ध के दंड का हर प्रहार जो परमेश्वर उस
पर लगावेगा सो दमामों और बीणों के साथ होगा और घूमधाम
३३ की लड़ाइयों के साथ उस्से संग्राम किया जाता है। क्योंकि
तुफ़त कल से सिद्ध है हां वुह राजा के लिये सिद्ध हुआ है उस
ने उसे गहिरा किया चौड़ा किया है उस का ढेर अग्नि और
बहुत सी लकड़ी है परमेश्वर का श्वास गंधक की धारा के समान
उस को सुलगाता है ॥

एकतीसवां पर्व्व।

१ उन पर सन्ताप जो सहायता के लिये मिस्र को उतर जाते
हैं और घोड़ों पर भरोसा करते हैं और रथों पर आशा
रखते हैं क्योंकि वे बहुत हैं और घोड़चढ़ों पर क्योंकि वे बड़े

बलवंत हैं और इसराएल के धर्म्ममय की ओर नहीं फिरते
२ और परमेश्वर के खोजी नहीं हैं। और वुह भी बुद्धिमान है और
बिपत्ति लाता है और अपने वचनों को टलने नहीं देता
और दुष्टों के घराने की विरुद्धता पर और कुकर्मियों के उपकार
३ के विरोध में खड़ा होता है। और मिस्री तो मनुष्य हैं और
सर्वशक्तिमान नहीं और उन के घोड़े मांस हैं और आत्मा
नहीं और परमेश्वर अपना हाथ बढ़ावेगा और उपकारक ठोकर
खायगा और उपकृत गिर पड़ेगा और वे सब के सब एकट्ठे
नाश हो जायेंगे॥

४ क्योंकि परमेश्वर ने मुझ से यों कहा कि जैसा सिंह और
तरुण सिंह अपने अहेर को दबोचके गर्जता है जिस की
विरुद्धता पर गड़रियों की जथा बुलाई गई उन के शब्द से
वुह नहीं डरता और उन के कोलाहल से नहीं दबता वैसा ही
सेनाओं का परमेश्वर सैहून के पहाड़ और उस के टीले
५ पर संग्राम करने के लिये उतरेगा। जैसे चिड़ियां अपने
घोमलों के ऊपर उड़ती हैं वैसा ही सेनाओं का परमेश्वर यरूसलम
को ढांपेगा ढांपेगा और छुड़ावेगा आरंपार जायेगा और बचायेगा॥

६ उस की ओर फिरो जिस्से इसराएल के सन्तान बहुत ही
७ भटक गये। क्योंकि उस दिन वे हर एक अपनी रुपहली
मूर्त्तों और अपनी सोनहली प्रतिमाओं को जिन्हें तुम्हारे हाथों
८ ने तुम्हारे लिये पाप की सामा बनाई फेंक देंगे। और असूर
उस की तलवार से गिरेगा जो पुरुष नहीं है और उस का खड्ग
जो मनुष्य नहीं है उसे खा जायेगा और वुह खड्ग के सन्मुख
९ से भागेगा और उस के तरुण करदायक हो जायेंगे। और उस
की चटान भय के मारे जाती रहेगी और उस के अध्यक्ष
ध्वजा से घबरा जायेंगे परमेश्वर कहता है जिस की आग सैहून
में है और उस का भट्ठा यरूसलम में॥

बत्तीसवां पर्व्व ।

१ देखा धर्म्म के लिये एक राजा राज्य करेगा और अध्यक्ष
२ न्याय के लिये प्रभुता करेंगे । और एक मनुष्य आंधी से रक्षा
स्थान की नाईं होगा और मेंह से छिपने का स्थान पानी की
धाराओं की नाईं मरुस्थल देश में भारी चटान की छांह की
३ नाईं थकाई की भूमि में। और देखनेहारों की आंखें न धुंधलायेंगी
४ और श्रोतों के कान भली भांति सुनेंगे । और अविवेकी का
मन ज्ञान को समझेगा और तोतले की जिव्हा भली भांति
५ बोलने के लिये शीघ्रता करेगी । मूर्ख प्रतिष्ठित न कहलावेगा
६ और न कृपण दाता कहावेगा । क्योंकि मूर्ख मूर्खता की बातें
करेगा और उस का अंतःकरण बुराई करेगा जिसतें दुष्कर्म्म
करे और परमेश्वर की बिपरीतता में भटकने की बातें करे
जिसतें भूखे के पेट को छूंछा रक्खे और वुह प्यासे के पानी
७ को थोड़ा कर देगा । और कृपण के हथियार बुरे हैं वुह बुरी
युक्ति बांधता है जिसतें झूठी बातों से नम्र लोगों को फंसावे
८ हां जब कि कंगाल न्याय की बातें करता है । पर दाता
दातृता का बिचार करता है और वुह दातृता पर स्थिर
रहेगा ॥

९ हे निडर स्त्रियो खड़ी हो मेरा शब्द सुनो हे निश्चिन्त
१० बेटियो मेरी बात पर कान धरो । हे निश्चिन्त स्त्रियो एक
बरस और कुछ दिनों के उपरान्त तुम थरथराओगी क्योंकि
११ दाख की ऋतु जाती रही समेटने का समय न आवेगा । हे
निडर स्त्रियो थरथराओ हे निश्चिन्त बेटियो कांपो अपने को
उघारो और नंगा करो और टाट अपनी कटि पर बांधो ।
१२ सुन्दर खेतों के लिये फलवान दाख के लिये छातियां पीटती
१३ हुई । मेरी जाति की भूमि पर कांटे और कटीले उगेंगे क्योंकि

१४ हे हर्षित नगर वे तेरे सारे मंगलस्थानों में उगेंगे । क्योंकि
भवन त्यागा गया नगर का हुल्लड़ छोड़ दिया गया टीला
और गढ़ खोहों के चहुंओर सदा के लिये हो गये और जंगली
१५ गदहों के आनन्दस्थान झुंडों की चराईस्थान । जब लों कि
ऊपर से आत्मा हम पर उंडेला न जाये और बन बाटिका
१६ हो जाय और बाटिका बन के समान गिनी जावे । और न्याय
१७ बन में बसेगा और धर्म्म बाटिका में निवास करेगा । और
धर्म्म का कार्य्य कुशल होगा और धर्म्म का फल स्थिरता और
१८ निश्चिन्तता सदा के लिये । और मेरी जाति कुशल के भवन में
और निश्चिन्तता के निवासों में और चैन के स्थानों में रहेगी ।
१९ और झाड़ी के गिरने के समय ओले पड़ेंगे और वुह नगर
२० नीचाई में नीचा होगा । तुम क्या ही धन्य हो जो सारे
पानियों के पास बोते हो वहां बैल और गदहे के पांव जाने
देते हो ॥

तेंतीसवां पर्व्व ।

१ तुझ लुटेरे पर सन्ताप और तू लूटा न गया और तुझ
छली पर और तू ने छल नहीं खाया जब तू लूट चुकेगा तब
तू लूटा जायगा और जब तू छल दे चुकेगा तब तू छला
जायेगा ॥

२ हे परमेश्वर हम पर दयालु हो हम तेरी बाट जोहते हैं
हर बिहान को उन की भुजा हो हां बिपत्ति के समय में
३ हमारी मुक्ति । हुल्लड़ के शब्द से जातिगण भाग गए तेरे
उठने से जातिगण छिन्न भिन्न हो गए ॥

४ और तुम्हारी लूट ऐसी एकट्ठी किई जायगी जैसे भक्षण करनेहारी
टिड्डी बटोरती है टिड्डियों के दौड़ने के समान कोई उस पर
५ दौड़ता होगा । परमेश्वर महान प्रगट हुआ क्योंकि ऊंचाई पर

रहता है उस ने सेहून को न्याय और धर्म्म से भर दिया है।
६ और वुह तेरे समयों का रक्षक होगा उद्धारों का बल वुद्धि और
ज्ञान परमेश्वर का भय वही उस का भण्डार है॥
७ देखो उन के बलवान बाहर चिल्लाते हैं मिलाप के दूत
८ बिलख बिलखके रोते हैं। राजमार्ग सुनसान हो गये यात्रिक
जाता रहा उस ने बाचा भंग किई है नगरों को तुच्छ
९ जाना मनुष्य को लेखे में नहीं लाया। देश बिलाप करता
है झुर गया लुबनान लज्जित हुआ कुम्हला गया सरून
बन की नाईं हो गया और बसनिया और करमिल पत्ते झाड़ते
हैं॥
१० परमेश्वर कहता है कि अब मैं उठूंगा अब मैं ऊंचा हो
११ जाऊंगा अब मैं आप को महान करूंगा। तुम्हें भूसे का गर्भ
होगा तुम पुआल जनोगे तुम्हारा श्वासा आग के समान तुम्हें
१२ खा लेगा। और जातिगण चूने की भट्टियां होंगे कटे हुए कांटे
होकर वे आग में जलाए जायेंगे॥
१३ अरे तुम कि दूर हो जो मैं ने किया है उसे सुनो और
१४ अरे तुम कि समीप हो मेरी सामर्थ्य को जानो। सेहून में
पापी भयमान हुए कपकपी ने कपटियों को पकड़ लिया है
कौन हम्में से भस्मक अग्नि में रहेगा कौन हम्में से सनातन
की जलन में रहेगा॥
१५ धर्म्म के साथ चलते हुए और खराइयों की बातें
करते हुए अंधेरों के लाभ को तुच्छ करते हुए अकोर लेने
से अपने हाथ झाड़ते हुए हत्या की बातें सुन्ने से अपना
कान मूंदते हुए और बुराई पर दृष्टि करने से अपनी आंखें
१६ मूंदते हुए। वही ऊंचे स्थानों में बास करेगा चटानों
के गढ़ उस के ऊंचे स्थान होंगे उस को रोटी दिई
१७ गई उस के लिये जल का प्रण किया गया। तेरी आंखें

राजा को उस के बिभव में देखेंगी वे दूर दूर के देश पर दृष्टि
करेंगी ॥
१८ तेरा मन भय पर सोच करेगा कहां गिनवैया कहां तुलवैया
१९ कहां गढ़ों का गिनवैया है। तू उस बली जाति को फिर
न देखेगा उस जाति को जिस की बोली ऐसी अनोखी है
कि समझ में नहीं आती जिस की भाषा बिदेशी और निरर्थ
है ॥
२० हमारे पर्व्वों के नगर सैहून पर दृष्टि कर तेरी आंखें यरूसलम
को देखेंगी कि अब चैन का निवास है एक तंबू जो न टलेगा
उस के खूंटे कभी उखाड़े न जायेंगे और उस की डोरियों में
२१ से एक भी न तोड़ी जायेगी। परन्तु वहां परमेश्वर हमारे
लिये बली होगा उस स्थान में जहां धाराएं दोनों और चौड़ी
धाराएं हैं उस में डांड की नौका न चलेगी और न सुन्दर
२२ जहाज उस में होके पार जायेगा। क्योंकि परमेश्वर हमारा
न्यायी परमेश्वर हमारा व्यवस्थादायक परमेश्वर हमारा राजा वही
हमें मुक्ति देगा ॥
२३ तेरी रस्सियां ढीली किई गईं वे अपने मस्तूल को खड़ा
नहीं रख सक्तीं वे पाल को नहीं फैलातीं तब लूट की सामा
२४ बहुताई से बांटी जाती है लंगड़े लूट को लूटते हैं। और
बसनेहारा न कहेगा कि मैं रोगी हूं जो जाति उस में रहती है
उस का पाप क्षमा किया गया ॥

चौंतीसवां पर्व्व।

१ हे जातिगणो सुन्ने के लिये समीप आओ और हे लोगो
कान धरो पृथिवी और उस की भरपूरी सुने जगत और सब
२ वस्तें जो उस्से निकलती हैं। क्योंकि परमेश्वर का कोप सारे
जातिगणों पर है और उस का क्रोध उन की सारी सेना पर

उस ने उन्हें स्राप के नीचे रक्खा उन्हें संहार के लिये सौंप
३ दिया है। और उन के संहारित फेंके दिये जायेंगे और उन
की लोथों की दुर्गंध उठेगी और पहाड़ उन के लोहू से पिघल
४ जायेंगे। और स्वर्ग की सारी सेनायें गल जायेंगी और स्वर्ग गाते
की नाईं लपेटे जायेंगे और उन की सारी सेनायें मुरझा जायेंगी
जैसा दाख का पत्ता मुरझा जाता है और गूलर के वृक्ष के
५ मुरझाते हुए पत्ते के समान। क्योंकि मेरा खड्ग स्वर्ग में परिप्लुत
होगया देखो वुह अदूम पर उतरेगा और उस जाति पर जो
६ मेरे स्राप के नीचे है न्याय के लिये। परमेश्वर का एक खड्ग
है वुह लोहू से भरा है चिकनाई से चिकना किया गया है
मेढ़ों और बकरों के लोहू से मेढ़ों के गुर्दों की चिकनाई से
क्योंकि बुसराह में परमेश्वर के लिये एक बलिदान है और
७ अदूम के देश में महा संहार। और बनैले भैंसे उन के
साथ गिरेंगे और बैल सांड़ों के साथ और उन का देश
रुधिर से परिप्लुत हो जायेगा और उन की धूल चिकनाई
८ से चिकनाई जायेगी। क्योंकि परमेश्वर के पलटा लेने का दिन
९ है और सैहून के कारण के लिये पलटा लेने का बरस। और
उस के नाले राल हो जायेंगे और उस की धूल गंधक और
१० उस का देश जलती हुई राल हो जायगा। रात दिन
वुह कभी न बुझेगी सर्वदा लों उस का धूआं उठता रहेगा
पीढ़ी से पीढ़ी लों वुह उजाड़ रहेगा सनातन लों उस में कोई
११ यात्री न होगा। तब सारस और साही उसे अधिकार में लेंगे
और गरुड़ और काग उस में बसेंगे और उस पर उजाड़ का
१२ सूत और शून्यता के पत्थर फैलाये जायेंगे। उस की सांड़ों
को जिन में कोई नहीं है वे राज्य कहेंगे और उस के सारे
१३ अध्यक्ष जाते रहेंगे। और उस के भवनों में कांटे उगेंगे बिछुए
और ऊंटकटारे उस के गढ़ों में और वुह भेड़ियों का निवास

१४ और शुतुर्मुर्गों की राजधानी होगी । और वनपशु हूहा करनेहारे
पशुओं से भेंट करेंगे और बालवाला अपने संगी को पुकारेगा
केवल वहां निशाचर पशु चैन करता है और अपने लिये
१५ शयनस्थान पाता है । वहां उछाल करवैया सर्प्प बांबी बनायेगा
और अंडे देगा और सेवेगा और अपनी छाया के नीचे रक्षा
करेगा केवल वहां गिद्ध एकट्ठे होंगे हर एक अपने साथी
के साथ ॥

१६ परमेश्वर की पुस्तक में ढूंढो और सुनाओ उन में से एक भी
नहीं घटा है वे एक दूसरे को बिछुरा हुआ नहीं पाते हैं
क्योंकि मेरे मुंह ही ने आज्ञा किई है और उसी के आत्मा ही ने
१७ उन्हें एकट्ठा किया है । और उसी ने उन के लिये चिट्ठी डाली
है और उस के हाथ ने रस्सी डालके उसे उन के लिये भाग
कर दिया है वे सदा के लिये उसे अधिकार में रक्खेंगे पीढ़ी से
पीढ़ी लों उस में बसा करेंगे ॥

पैंतीसवां पर्व्व ।

१ वन और उजाड़ उन के लिये मगन होंगे और जंगल
२ आनन्दित होगा और फूल की नाईं फूलेगा । वुह बहुत
फूलेगा और आनन्द करेगा हां मगनता और आनन्दता के साथ
लुबनान का विभव उसे दिया गया है करमिल और सरून की
सुन्दरता वे ही परमेश्वर का तेज देखेंगे हमारे ईश्वर की
३ सुन्दरता । गिरते हुए हाथों को बल देओ और डगमगाते
हुए घुटनों को दृढ़ करो ॥

४ अधीर्य्यों से कहो कि बलवान होओ मत डरो देखो तुम्हारा
ईश्वर तुम्हारे निमित्त है और पलटा आया चाहता है ईश्वर
की ओर से बदला वही आया चाहता है और तुम्हें बचावेगा ॥

५ तब अंधों की आंखें खोली जायेंगी और बहिरों के कान

६ खोले जायेंगे। तब लंगड़ा हरिण के समान चौकड़ियां भरेगा
और गूंगे की जीभ गावेगी क्योंकि जंगल में पानी फूट निकले
७ हैं और शून्य स्थान में धारें। और मरीचिका पोखरा हो
जायेगी और पियासी भूमि पानियों के सोते हों भेड़ियों के घर
८ में उन की गुफा में नल और नरकट के स्थान में। और वहां
सड़क और मार्ग होगा और वुह धर्ममय का मार्ग कहा जायेगा
उस पर अपावन मनुष्य न चलेगा और वुह उन्हीं के लिये
९ होगा मार्गगामी और अज्ञान भटक न जायेंगे। वहां सिंह
न होगा और हिंसक पशु उस पर न चढ़ेगा न वहां
१० पाया जायगा परन्तु वहां छुड़ाये गये लोग चलेंगे। और
परमेश्वर के मोल लिये हुए लोग फिरेंगे और ललकार के
साथ सैहून में आवेंगे और नित्यानंद उन के सिरों पर होगा
आनन्द और आल्हाद उन्हें प्राप्त होगा और शोक और कहरना
भागेगा॥

छत्तीसवां पर्ब्ब।

१ और ऐसा हुआ कि हिज़क़ियाह राजा के चौदहवें बरस
असूर का राजा सनहेरीब यहूदा के सारे दृढ़ नगरों पर चढ़
२ आया और उन्हें ले लिया। और असूरियों के राजा ने रब्बसाक़ी
को बड़ी सेना के साथ लकीस से हिज़क़ियाह राजा के पास
यरूसलम को भेजा और वुह ऊपर के कुण्ड की नाली पर
३ धोबी के खेत की सड़क पर खड़ा था। और हिज़क़ियाह का
बेटा इलयाक़ीम जो घर का अध्यक्ष था और शबना लेखक
और आसफ़ का बेटा यूअख़ स्मारक उस के पास आये॥
४ तब रब्बसाक़ी ने उन से कहा कि जाके हिज़क़ियाह से
कहो कि महाराज असूरियों का राजा यह कहता है वुह कौन
५ सी आशा है जिस पर तू भरोसा रखता है। मैं कहता हूं कि

युद्ध के लिये तुम्हारे मंत्र और सामर्थ्य केवल मुंह की बातें
हैं अब किस पर तेरा भरोसा है कि तू मेरे बिरोध में फिर
६ गया है। देख तू ने इस टूटे हुए नल की लाठी पर अर्थात् मिस्र
पर भरोसा रक्खा है जिस पर यदि कोई मनुष्य आस्रा करे
तो वुह उस के हाथ में जाके उसे बेधेगी वैसा ही मिस्र का
राजा फिरऊन उन सभों के लिये है जो उस पर भरोसा रखते
७ हैं। और यदि तू मुझ से कहे कि हमारा भरोसा परमेश्वर अपने
ईश्वर पर है क्या वुह नहीं कि जिस के ऊंचे स्थानों और जिस
की यज्ञबेदियों को हिज़क़ियाह ने दूर किया और यहूदाह
और यरूसलम से कहा कि तुम इस यज्ञबेदी के आगे पूजा
८ किया करो। सो अब मेरे प्रभु असूर के राजा से होड़
बांधिये और मैं तुझे दो सहस्र घोड़े दूंगा यदि तू उन पर
९ चढ़वैये बैठा सके। सो तू क्योंकर एक आज्ञाकारी को
मेरे प्रभु के दासों में से छोटे से छोटे को हटा देगा और
यों तू मिस्र पर गाड़ियों और घोड़चढ़ों के लिये भरोसा
१० रखता है। और अब क्या मैं परमेश्वर बिना इस देश को
नाश करने आया हूं परमेश्वर ही ने तो मुझ से कहा कि उस
देश पर चढ़ जा और उसे नाश कर॥
११ तब इलयाक़ीम और शबना और यूआख़ ने रब्बसाक़ी से
कहा कि हम तेरी बिनती करते हैं कि अराम की बोली
में अपने दासों से बात कीजिये क्योंकि हम इसे समझते हैं
और लोगों के सुन्ने में जो भीत पर हैं यहूदी भाषा में हम
१२ से न कहिये। तब रब्बसाक़ी बोला क्या मेरे प्रभु ने मुझे तेरे
प्रभु के पास अथवा तेरे पास ये बातें कहने को भेजा है क्या
उस ने मुझे उन लोगों के पास जो भीत पर बैठे हैं नहीं
भेजा कि वे तुम्हारे साथ अपना बिष्ठा खावें और मूत्र पीवें॥
१३ और रब्बसाक़ी खड़ा रहा और यहूदी भाषा में बड़े शब्द

से पुकारके बोला और कहा कि महाराज की अर्थात् असूर
१४ के राजा की बात सुनो ॥ राजा यों कहता है कि हिज़क़ियाह
१५ तुम्हें छल न देवे क्योंकि वुह तुम्हें बचा न सकेगा। और
हिज़क़ियाह तुम्हें यह कहके उभारने न पावे कि तुम परमेश्वर
पर भरोसा रक्खो कि परमेश्वर निश्चय हमें बचावेगा यह नगर
१६ असूर के राजा के हाथ में न सोंपा जायेगा। हिज़क़ियाह की
न सुनो क्योंकि असूर का राजा यों कहता है कि मुझ से
मिलाप करके मेरे पास बाहर निकल आओ और तुम में से
हर एक अपने अपने दाख का और अपने अपने गूलरवृक्ष का फल
१७ खावे और अपने अपने कुण्ड का पानी पीवे। जब लों कि मैं
आऊं और तुम्हारे देश की नाईं तुम्हें एक देश में ले जाऊं
अन्न और दाखरस के देश में रोटी और दाख की बारी के
१८ देश में। चौकस रहो जिसतें हिज़क़ियाह तुम्हें छल देने न
पावे जो कहता है कि परमेश्वर हमें मुक्ति देगा भला जातिगणों
के देवों में से कोई अपने देश को असूर के राजा के हाथ से
१९ बचा सका है। हमात और अरफाद के देव कहां हैं सिफ़र्वाईम
के देव कहां और कब और कहां हुआ कि उन्हों ने समरून
२० को मेरे हाथ से बचाया। कौन इन देशों के सब देवों में से
है जो अपने देश को मेरे हाथ से बचा सके कि परमेश्वर भी
यरूसलम को मेरे हाथ से बचावेगा ॥

२१ और वे चुपके हो रहे और उत्तर में उसे एक बात न कही
क्योंकि राजा की आज्ञा यह थी कि उसे उत्तर मत दीजियो ॥

२२ तब ख़िलक़ियाह का बेटा इलयाक़ीम जो घर का अध्यक्ष
था और शबना लेखक और आसफ़ का बेटा यूआख़ स्मारक
अपने वस्त्र फाड़े हुए हिज़क़ियाह के पास आये और उन्हों ने
रब्समाक़ी की बातें उसे कह सुनाईं ॥

सैंतीसवां पर्व्व ।

१ और ऐसा हुआ कि जब हिज़क़ियाह राजा ने ये बातें सुनीं
तब उस ने अपने कपड़े फाड़े और टाट ओढ़ा और परमेश्वर के
२ मन्दिर में आया। और उस ने इलयाक़ीम को जो घर का अध्यक्ष
था और शबना लेखक और याजकों के प्राचीनों को टाट
ओढ़ाके अमूस के बेटे यसअियाह भविष्यद्वक्ता के पास भेजा।
३ और उन्हों ने उस्से कहा कि हिज़क़ियाह यों कहता है कि
आज का दिन दुःख और डपट और अपमान का दिन है
क्योंकि बालक उत्पन्न होने के स्थान पर आये और जन्ने
४ का बल नहीं है। यदि परमेश्वर तेरा ईश्वर रब्बसाक़ी की
बातें सुनेगा जिसे उस के प्रभु असूर के राजा ने भेजा कि
जीते ईश्वर की निन्दा करे और इन बातों का दंड देवे जो
परमेश्वर तेरे ईश्वर ने सुनी हैं तब तू इन बचे हुओं के लिये
जो अब हैं प्रार्थना करेगा॥

५ तब हिज़क़ियाह राजा के सेवक यसअियाह के पास आये।
६ और यसअियाह ने उन से कहा कि तुम अपने स्वामी से यों
कहो कि परमेश्वर यों कहता है कि तू इन बातों से जो तू
ने सुनीं जिन से असूर के राजा के सेवकों ने मेरी निन्दा
७ किई है भय मत कर। देख मैं उस में एक आत्मा डालता हूं
और वुह एक सन्देश सुनेगा और अपने देश की ओर लौटेगा
और मैं उसे उस के देश में खड्ग से मरवा डालूंगा॥

८ और रब्बसाक़ी लौटा और असूर के राजा को लिबनः से
लड़ते पाया क्योंकि उस ने सुना कि वुह लकीस से चला गया
९ था। और उस ने कूश के राजा तिरहाक़: के विषय में यह
सुना कि वुह तुझ से लड़ने आता है और जब उस ने
सुना तब उस ने दूतों को हिज़क़ियाह के पास यह कहते हुए

१० भेजा। कि तुम यहूदाह के राजा हिज़क़ियाह से यों कहो
कि तेरा ईश्वर जिस पर तू भरोसा रखता है तुझे छल न देवे
जब कहता है कि यरूसलम असूर के राजा के हाथ में न
११ दिया जायेगा। देख तू ने सुना जो कि असूर के राजाओं ने
सारे देशों से किया कि उन्हें सर्वथा नाश करें और तू बच जायेगा।
१२ क्या देशगणों के देवों ने उन्हें बचाया जिन्हें मेरे पितरों ने
बिनाश किया अर्थात् जौज़ान को और हारान को और रसफ़
१३ और अदन के संतान को जो तिल्लस्सार में हैं। हमात का
राजा और अरपाद का राजा और सिफ़र्वाईम के नगर का राजा
हेना और इव्वा का राजा कहां है॥

१४ और हिज़क़ियाह ने वुह पत्री दूतों के हाथ से लिई और
उसे पढ़ा और परमेश्वर के मन्दिर में ऊपर चढ़ गया और
१५ हिज़क़ियाह ने उसे परमेश्वर के आगे फैलाया। तब हिज़क़ियाह
१६ ने परमेश्वर के आगे आके प्रार्थना किई और कहा। कि
हे सेनाओं के परमेश्वर इसराएल के ईश्वर करोबीम पर
बैठनेहारे तू वही ईश्वर है तू ही अकेला पृथिवी के
समस्त राज्यों के लिये है तू ही ने आकाश और पृथिवी को
१७ सृजा। हे परमेश्वर अपना कान झुका और सुन हे परमेश्वर
अपनी आंखें खोल और देख और सनहेरीब की सारी बातें सुन
जिस ने जीवते ईश्वर की निन्दा करने के लिये भेजा है।
१८ हे परमेश्वर सत्य है कि असूर के राजाओं ने सारे देशों को
और उन की भूमि को बिनाश कर दिया है और उन के देवों
१९ को आग में झोंक दिया है। क्योंकि वे ईश्वर न थे पर मनुष्यों
के हाथ के बनाये हुए लकड़ी और पत्थर और उन्हें सर्वथा
२० नाश किया। और अब हे परमेश्वर हमारे ईश्वर हमें उस के
हाथ से बचा और पृथिवी के सारे राज्य जानेंगे कि तू ही
अकेला परमेश्वर है॥

२१ तब अमूस के बेटे यसन्नियाह ने यह कहते हुए हिज़क़ियाह
के पास भेजा कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है
कि जो तू ने असूर के राजा के विषय में मुझ से प्रार्थना
किई ॥
२२ यह वुह बचन है जो परमेश्वर ने उस के विषय में कहा
है कि सैहून की कुंवारी बेटी ने तेरी निन्दा किई तुझे ठट्ठे
में उड़ाया है यरूसलम की बेटी ने तेरे पीछे सिर हिलाया
२३ है। तू ने किस की निन्दा किई और किसे कुबचन कहा और
तू ने किस के बिरोध में अपना शब्द उठाया है और अपनी
२४ आंखें इसराएल के धर्ममय के बिरोध में चढ़ाईं। तू ने अपने
सेवकों के हाथ से प्रभु की निन्दा करके कहा है कि मैं अपने
रथों की बहुताई से पहाड़ों की ऊंचाई पर लुबनान की ओर
चढ़ गया हूं और मैं उस के ऊंचे देवदारुओं उस के चुने हुए
सरोबृक्षों को काट डालूंगा और उस के सिवाने की ऊंचाई पर
२५ उस के बन की बारी लों आऊंगा। मैं ने खोदा और पानी
पिया और अपने पांओं के तलवों से मिस्र की सारी नदियों को
सुखा दूंगा ॥
२६ क्या तू ने नहीं सुना दूर से मैं ने उसे किया प्राचीन
दिनों से और उसे बनाया अब मैं ने उसे पहुंचाया और वुह
दृढ़ नगरों को उजाड़ ढेरों में नाश करने के लिये होगा।
२७ और उन के निवासी अल्प बलवान हैं वे हारमान और ब्याकुल
हो गये वे खेत की घास और हरयाली हो गये छतों की घास
२८ और बन के खड़े अनाज से आगे वे मुरझा गये। पर तेरा
बैठना और तेरा जाना और तेरा आना मैं जानता हूं और
२९ तेरा मेरे बिरुद्ध अपने को कोप में लाना। तेरा मेरे बिरुद्ध अपने
को कोप में लाने के कारण से और इस कारण से कि तेरा
कोप मेरे कानों लों पहुंचा है सो मैं अपनी नकेल तेरी नाक में

लगाऊंगा और अपनी ढाठी तेरे मुंह में और जिस मार्ग से तू
आया है उसी पर तुझे फिराऊंगा ॥
३० और यह तेरे लिये चिन्ह होगा इस बरस में उसे खाओ जो
आप से उगता है और दूसरे बरस में उसे जो उसी से उगता है
और तीसरे बरस में बोओ और लवो और दाख की बारियों
३१ को लगाओ और उन के फल खाओ। और यहूदाह के घराने
के बचे हुए जो बच रहे हैं सो फिर नीचे जड़ पकड़ेंगे और
३२ ऊपर फल देंगे। क्योंकि यरूसलम से बचे हुए निकलेंगे और
सैहून पर्बत से बचे हुए सेनाओं के परमेश्वर का ताप यह
करेगा ॥
३३ इस लिये परमेश्वर असूर के राजा के विषय में यों कहता है
कि वुह इस नगर लों न आयेगा और यहां बाण न चलावेगा
और ढाल के साथ इस के साम्हने न आयेगा और न इस के
३४ आगे मेंड़ बांधेगा। जिस मार्ग से वुह आया उसी से वुह
लौटेगा और इस नगर लों न आवेगा परमेश्वर कहता है।
३५ और मैं अपने लिये और अपने सेवक दाऊद के लिये इस
नगर पर उसे बचाने के लिये रक्षा करूंगा ॥
३६ और परमेश्वर का दूत निकला और असूर की छावनी में एक
लाख पचासी सहस्रों को प्राण से मारा और वे बिहान को तड़के
३७ उठे और देखो वे सब मरे पड़े थे। तब असूर के राजा
सनहेरीब ने डेरा उठाया और चला गया और फिर गया और
३८ नीनवः में ठहरा। और वुह अपने देव अर्थात् निसरूक के
मन्दिर में पूजा करता रहा और अदरम्मलिक और सराज़र
उस के बेटों ने उसे खड्ग से मार डाला और उन्हों ने अरारात
के देश में अपने को बचाया और असरहद्दून उस का बेटा उस
की संती राजा हुआ ॥

अठतीसवां पर्व्व ।

१ उन्हीं दिनों में हिज़क़ियाह को मृत्यु का रोग हुआ और
अमूस का बेटा यसअियाह भविष्यद्वक्ता उस के पास आया
और उस्से कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि अपने घराने
२ को आज्ञा कर क्योंकि तू मरता है और न जीयेगा। तब
हिज़क़ियाह ने अपना मुंह भीत की ओर फेर लिया और
३ परमेश्वर से प्रार्थना किई। और कहा कि अब हे परमेश्वर
स्मरण कर मैं बिन्ती करता हूं कि मैं सच्चाई से और सिद्ध मन
से तेरे आगे चला फिरा हूं और जो तेरी दृष्टि में भला था सो
मैं ने किया और हिज़क़ियाह बिलख बिलखके रोया॥
४ और परमेश्वर का बचन यसअियाह के पास आया और
५ कहा। कि जा और हिज़क़ियाह से कह कि परमेश्वर तेरे
पिता दाऊद का ईश्वर यों कहता है कि मैं ने तेरी प्रार्थना
सुनी मैं ने तेरे आंसू देखे देख मैं तेरी आयुर्दा पंदरह
६ बरस और बढ़ाता हूं। और मैं तुझे और इस नगर को
असूर के राजा के हाथ से बचाऊंगा और इस नगर की रक्षा
७ करूंगा। और यह तेरे लिये परमेश्वर की ओर से वुह चिन्ह
होगा कि परमेश्वर इस बचन को जो उस ने कहा है पूरा
८ करेगा। देख मैं छाये को वे छायाजंचक्रम जो वुह आख़ज़
के छायाजंचक्रमों में सूर्य्य के साथ उतर गया है दस क्रम पीछे
फिरा देता हूं सो सूर्य्य दस क्रम फिरा उन छायाजंचक्रमों पर
जिन पर उतर गया था॥
९ यहूदाह के राजा हिज़क़ियाह का लिखा हुआ जब वुह
रोगी हुआ और अपने रोग से चंगा हुआ॥
१० मैं ने कहा कि अपने दिनों के ठहर जाने में मैं समाधि
के फाटकों में प्रवेश करूंगा मैं अपने बरसों के रहे हुए से निरास

११ हो गया। मैं ने कहा कि परमेश्वर को न देखूंगा परमेश्वर को
जीवतों की भूमि में मनुष्य को जगत के बासियों के साथ फिर
१२ न देखा करूंगा। मेरा निवास उखाड़ा गया और मुझ पर
खोला गया है गड़रिये के डेरे के समान मैं ने जुलाहे के समान
अपने जीवन को लपेट लिया वुह मुझे तांत से काट डालेगा
१३ दिन से रात लों तू मुझे समाप्त कर डालेगा। मैं ने उसे
बिहान लों सिंह की नाईं अपने साम्हने रक्खा यह कहता
हुआ कि वुह ऐसा ही मेरी सारी हड्डियों को तोड़ डालेगा दिन से
१४ रात लों तू मुझे समाप्त कर डालेगा। सुपाबिना के वा सारस
के समान वैसा ही मैं चहचहाता हूं पेंड़की के समान कूकू
करता हूं ऊपर की ओर देखने से मेरी आंखें घट गईं हे
परमेश्वर मैं दब गया मेरा उपकारी हो॥

१५ मैं क्या कहूं उस ने तो मुझ से कहा और उसी ने किया
है मैं अपने प्राण की कड़वाहट के कारण से अपने सारे बरसों
१६ में हौले हौले चला करूंगा। हे प्रभु उन्हीं पर वे जीते हैं
और हर एक के बिषय में जो उन में है मेरी आत्मा का जीवन
१७ है और तू मुझे चंगा करेगा और जीता रक्खेगा। देख मेरी
अधम कड़वाहट चैन में पलट गई और तू ने मेरे प्राण को
बिनाश के गड़हे से प्यार किया क्योंकि तू ने अपनी पीठ के
१८ पीछे मेरे सारे पापों को फेंक दिया है। क्योंकि समाधि तेरा
स्वीकार न करेगी न मृत्यु तेरा धन्य मानेगी गढ़े में उतरनेहारे
१९ तेरी सच्चाई के बिषय बाट न जोहेंगे। जीवता जीवता वही
तेरी स्तुति करेगा जैसा मैं आज के दिन करता हूं पिता पुत्रों को
२० तेरी सच्चाई के बिषय संदेश देगा। परमेश्वर मुझे बचाने के
लिये आया और हम अपनी छन्दों को अपने जीवन के सब
दिन परमेश्वर के मन्दिर में बजाया करेंगे॥

२१ और यसञ्चियाह ने कहा कि वे गूलरों की टिकिया लें और

२२ उस फोड़े पर लेप चढ़ावें और वुह चंगा हो जायेगा। और
हिज़क़ियाह ने कहा कि क्या चिन्ह है कि मैं परमेश्वर के
मन्दिर में चढ़ जाऊंगा॥

उंतालीसवां पर्व्व ।

१ उस समय बलदान के बेटे मरूदक बलदान ने जो बाबुल
का राजा था हिज़क़ियाह के लिये पत्री और भेंट भेजी क्योंकि
२ उस ने सुना कि वुह रोगी था और चंगा हुआ। और हिज़क़ियाह
उन के आने से आनन्दित हुआ और उन्हें अपना भंडारस्थान
अर्थात् रूपा और सोना और सुगंध द्रव्य और महंगमोल तेल और
अपने सारे हथियारस्थान और सब कुछ जो उस के भंडारों
में था उन्हें दिखलाया उस के घर में और उस के राज्य में
कोई ऐसी वस्तु न थी जो हिज़क़ियाह ने उन्हें नहीं दिखलाई॥
३ तब यसअियाह भविष्यद्वक्ता हिज़क़ियाह राजा के पास
आया और उस्से पूछा कि इन मनुष्यों ने क्या कहा और कहां
से तेरे पास आये और हिज़क़ियाह ने कहा कि दूर देश से
४ बाबुल से वे मेरे पास आये। और उस ने कहा कि उन्हों ने
तेरे घर में क्या देखा है और हिज़क़ियाह ने कहा कि
सब कुछ जो मेरे घर में है उन्हों ने देखा है कोई वस्तु नहीं
जो मैं ने अपने भंडारों में उन्हें नहीं दिखाई॥
५ तब यसअियाह ने हिज़क़ियाह से कहा कि सेनाओं के
६ परमेश्वर की बात सुन। देख वे दिन आते हैं कि सब कुछ
जो तेरे घर में है और जिसे तेरे पितरों ने आज के दिन लों
एकट्ठा किया है बाबुल को पहुंचाया जायेगा कि कोई वस्तु
७ छोड़ी न जायगी परमेश्वर कहता है। और तेरे बेटों से जो
तुझ से निकलेंगे जो तुझ से उत्पन्न होंगे वे ले जायेंगे और वे
बाबुल के राजा के भवन में नपुंसक होंगे॥

८ तब हिज़क़ियाह ने यसय्रियाह से कहा कि भला है
परमेश्वर का वचन जो तू ने कहा है और उस ने कहा क्योंकि
मेरे दिनों में कुशल और चैन रहेगा ॥

चालीसवां पर्व्व ।

१ तुम शांति दो मेरे लोगों को शांति दो तुम्हारा ईश्वर
२ कहता है । यरूसलम के मन के समान बातें करो और उस
को पुकारो कि तेरा संग्राम समाप्त हो गया और तेरे पाप का
प्रायश्चित्त हुआ और तू ने परमेश्वर के हाथ से अपने सारे
पापों के पलटे में दूना पाया ॥
३ एक पुकारनेहारे का शब्द कि बन में परमेश्वर के मार्ग को सुधारो
४ जंगल में हमारे ईश्वर के लिये राजमार्ग सिद्ध करो । हर एक
नीचाई ऊंची किई जायगी और हर एक पहाड़ और पहाड़ी नीचे
किये जायेंगे और ऊंचा नीचा बरोबर हो जायेगा और बीहड़
५ चौगान । और परमेश्वर का बिभव प्रगट किया जायेगा और
समस्त मांस एक ही संग उसे देखेंगे क्योंकि परमेश्वर के मुंह
ने कहा है ॥
६ एक शब्द कहता है कि पुकार और उस ने कहा कि क्या
पुकारूं सारे मांस तो घास हैं और उस की सुन्दरता खेत के
७ फूल की नाईं । घास सूख गई फूल कुम्हला गया क्योंकि
परमेश्वर के स्वास ने उस पर फूंक मारी है निश्चय लोग घास
८ हैं । घास तो सूख गई फूल कुम्हला गया पर हमारे ईश्वर
का वचन सदा लों स्थिर रहेगा ॥
९ ऊंचे पहाड़ पर चढ़ जा हे मंगलसमाचार प्रचारनेहारी
सैहून पराक्रम के साथ अपना शब्द उठा हे मंगलसमाचार
प्रचारनेहारी यरूसलम ऊंचा कर मत डर यहूदाह की बस्तियों
१० से कह कि देखो तुम्हारा ईश्वर । देखो प्रभु परमेश्वर बलवाले

में होके आता है और उस की भुजा उस के लिये राज्य करती
है देखो उस का पलटा उस के साथ है और उस का प्रतिफल
११ उस के आगे। चरवाहे के समान वुह अपने झुंड को चरावेगा
अपनी भुजा में मेम्नों को एकट्ठा करेगा और उन्हें अपनी गोद
में उठायेगा और दूध पिलानेहारियों की अगुआई करेगा॥
१२ किस ने पानियों को अपने चुल्लू से नापा और आकाशों को बित्ता
से परिमाण किया और पृथिवी की धूल को पात्र में भरा और पहाड़ों
१३ को पलड़े में और पहाड़ियों को तुला में तौला। किस ने परमेश्वर
के आत्मा को परिमाण किया और कौन उस का मंत्री होके उसे
१४ सिखलायेगा। उस ने किस्से परामर्ष पाया और उस ने उसे
समझाया और उसे न्याय का पथ बताया और उसे विद्या
बताई और समझ कि मार्ग कौन उसे सिखलायेगा॥
१५ देखो जातिगण डोल की एक बूंद की नाईं हैं और पलड़ों
की धूल के समान गिने गये देख वुह टापुओं को अणु की
१६ नाईं उठायेगा। और लुबनान ईंधन के लिये बस नहीं और
१७ उस के पशु यज्ञ के लिये बस नहीं। समस्त जातिगण उस के
आगे कुछ वस्तु नहीं हैं नास्ति से कम और वृथा उस के निकट
गिने गये॥
१८ सो तुम किस्से सर्व्वशक्तिमान को उपमा देओगे और उस्से
१९ क्या उपमा ठहराओगे। उस मूर्त्ति को जिसे कार्य्यकारी ने
ढाल के बनाया है और सुनार उसे सोने से मढ़ेगा और रूपे
२० की सीकरियां वुह ढालता है। जो बलिदान चढ़ाते चढ़ाते
दरिद्र हो गया वुह ऐसे वृक्ष को चुन लेता है जो न घुनेगा
वुह उस के लिये चतुर कार्य्यकारी ढूंढता है जिसतें ऐसी मूर्त्ति
खड़ी करे जो हिलाई न जायेगी॥
२१ क्या तुम न जानोगे क्या तुम न सुनोगे क्या आरंभ से तुम
को संदेश नहीं दिया गया क्या तुम ने धरती की नेवों को न

२२ समझा। जो भूमि के मंडल पर बैठता है और उस के बासी
टिड्डों के समान हैं जो आकाशों को सूक्ष्म वस्त्र की नाईं
फैलाता है और उन्हें उस तंबू की नाईं जो निवास के लिये
२३ है फैलाता है। जो अध्यक्षों को तुच्छ कर देता है
२४ पृथिवी के न्याइयों को उस ने व्यर्थ ठहराया है। हां वे न
लगाये गये हां वे न बाेये गये हां उन के मूल ने भूमि में जड़
नहीं पकड़ी और उस ने केवल उन पर फूंक मारी और वे सूख
गये और बगूला उन को भूसे की नाईं उड़ा ले जायेगा॥
२५ सो अब तुम किस्से मुझे उपमा देओगे और मैं किस के
२६ बराबर हूं धर्म्ममय कहता है। अपनी आंखें ऊंचाई पर उठा और
देख किस ने इन्हें सिरजा और वुह कौन है जो उन की सेना
को गिन के निकालता है वुह उन सभों को नाम लेके बुलायेगा
बल के महत्त्व से और पराक्रम में बलवान होकर उन में
से एक भी नहीं रह जाता॥
२७ हे यअ़कूब तू किस लिये कहेगा और हे इसराएल तू क्यों ये
बातें करेगा कि मेरा मार्ग परमेश्वर से छिपाया गया और मेरा
२८ बिचार मेरे ईश्वर के पास से पार हो जायेगा। क्या तू ने नहीं
जाना क्या तू ने नहीं सुना सनातन का ईश्वर परमेश्वर पृथिवी
के सिवानों का सृष्टिकर्त्ता न निर्बल होगा और न थकेगा उस
२९ की बुद्धि अखोज है। निर्बल को बल देता है और दुर्बल के
३० बल को बढ़ायेगा। और तरुण निर्बल हो जायेंगे और थक
३१ जायेंगे और चुने हुए यूवा मनुष्य सर्वथा डगमगायेंगे। पर परमेश्वर
के भरोसा रखनेहारे नया बल प्राप्त करेंगे वे गिद्धों के नाईं
बाल और पर फैलायेंगे और दौड़ेंगे और न थकेंगे चले जायेंगे
और निर्बल न होंगे॥

एकतालीसवां पर्व्व ।

१ हे टापुओ मेरे आगे चुप हो रहो और जातिगण नया बल
प्राप्त करें वे पास आवें तब बातें करें हम एक ही साथ विवाद
के लिये समीप आयें ॥
२ किस ने पूरब से जगाया है धर्म्म उस को अपने पांव के
पास बुलावेगा वुह जातिगणों को उस के आगे कर देगा और उसे
राजाओं पर अधिकारी करेगा वुह उन्हें धूल के समान उस के
खड्ग को और उड़ाये हुए भूसे के समान उस के धनुष को
३ देगा। वुह उन का पीछा करेगा कुशल के साथ पार हो
४ जायेगा वुह मार्ग में अपने पांओं के साथ न जायेगा। किस ने
पीढ़ियों को आरंभ से बुलाते हुए बनाया और यह काम किया
है मैं परमेश्वर पहिले और पिछले के साथ मैं वही हूं ॥
५ टापुओं ने देखा और डर गये पृथिवी के अंत कांपते हैं
६ वे निकट आये और पहुंच गये हैं। वे हर एक अपने पड़ोसी
की सहाय करेंगे और हर एक अपने भाई से कहेगा कि
७ हियाव कर। और मूर्त्ति बनानेहारे ने सुनार को और हथौड़े
से बराबर करनेहारे ने निहाई पर गढ़नेहारे को दृढ़ किया है
वुह जोड़न के विषय कहता है कि वुह अच्छा हुआ है और
उस ने उसे कीलों से दृढ़ किया है वुह हिलाई न जायेगी ॥
८ और तू हे इसराएल मेरे दास हे यअक़ूब जिसे मैं ने चुन लिया
९ हे मेरे मित्र अबिरहाम के वंश। जिसे मैं ने जगत के अंतों से खैंच
लिया और उस के सिवानों से तुझे बुलाया और तुझ से कहा
कि तू ही मेरा दास है मैं ने तुझे चुन लिया और तुझे नहीं
१० त्यागा। तू मत डर क्योंकि मैं तेरे साथ हूं मत घबरा
क्योंकि मैं तेरा ईश्वर हूं मैं ने तुझे दृढ़ किया हां तेरी सहायता
किई हां तुझे अपने धर्म्म के दहिने हाथ से संभाला है।

११ देख वे सब जो तुझ पर जलते हैं लज्जित होंगे और निन्दित
किये जायेंगे जो तुझ से लड़ते हैं वे मिट जायेंगे और नाश
१२ होंगे। जो तुझ से झगड़ा करते हैं तू उन्हें ढूंढेगा और
उन्हें न पायेगा जो तुझ से संग्राम करते हैं वे मिट जायेंगे
१३ और नास्ति की नाईं होंगे। क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर
तेरा दहिना हाथ धरता हूं जो तुझ से कहता हूं कि
१४ मत डर मैं ने तेरी सहायता किई है। हे कीड़े यअकूब
मत डर और हे इसराएल के मनुष्यो मैं ने तेरी सहायता
किई है परमेश्वर और तेरा मुक्तिदाता इसराएल का धर्ममय
१५ कहता है। देख मैं ने तुझे नया चोखा दांतेदार दावने
का हथियार ठहराया है तू पहाड़ों को दावेगा और उन्हें
१६ चूर चूर करेगा और टीलों को भूसे की नाईं बनावेगा। तू
उन्हें ओसावेगा और पवन उन्हें उड़ा ले जायेगी और ववंडर
उन्हें बिथरा देगा पर तू परमेश्वर से आनन्दित होगा और
इसराएल के धर्ममय पर फूलेगा॥

१७ दुखी और कंगाल पानी के खोजी हैं और कुछ नहीं है
उन की जिव्हा मारे प्यास के सूख गई मैं परमेश्वर उन की
१८ सुनूंगा मैं इसराएल का ईश्वर उन्हें न छोडूंगा। मैं उघारे टीलों
पर नदियां और तराइयों के बीच में सोते खोलूंगा मैं बन को
पानी की झील और सूखी भूमि को पानी के सोते बनाऊंगा।
१९ मैं बन में देवदारु और बबूर और मेंहदी और जंगली ज़ैतूनवृक्ष
लगाऊंगा मैं शून्यस्थानों में सरो सनोवर और शमशादवृक्ष एक
२० साथ लगाऊंगा। जिसतें वे देखें और जानें और मन लगायें
और एक ही साथ समझें कि परमेश्वर के हाथ ने यह किया
है और इसराएल के धर्ममय ने उसे सृजा है॥

२१ अपना विवाद समीप लाओ परमेश्वर कहता है अपने दृढ़
२२ प्रमाणों को मेरे आगे लाओ यअकूब का राजा कहता है। वे आगे

लावें और हमें बतायें जो बातें होंगी व्यतीत बातें क्या थीं
बतला दो और हम अपना मन लगायेंगे और उन का अंत
२३ जानेंगे अथवा अवैया समाचार हमें सुनाओ। जो आगे को
आनेहारी वस्तें हैं बतला दो और हम जानेंगे कि तुम देव
हो हां भला करो अथवा बुरा करो और हम विचार करेंगे
२४ और एक ही साथ दृष्टि करेंगे। देखो तुम तुच्छ से छोटे और
तुम्हारा कार्य्य अवस्तु से लघु जो तुम्हें चुन लेगा सो घिनौना
है ॥
२५ मैं ने उत्तर से एक को जगा दिया और वुह आया है सूर्य्य
के उदय से वुह मेरा नाम लेगा और वुह अध्यक्षों पर गारे की
नाईं आयेगा और जैसे कुम्हार माटी को रौंदता है ॥
२६ किस ने आरंभ से बताया वर्णन करो और हम जानेंगे और
पहिले से और हम कहेंगे कि सत्य है हां कोई बतानेहारा न
था हां कोई सुनानेहारा न था हां कोई तुम्हारी बातों का
२७ सुन्नेहारा न था। मैं पहिले सैहून को मंगलसमाचार देता हूं
कि देख उन्हें देख और यरूसलम को मैं मंगलसमाचार
२८ देनेहारा देऊंगा। और मैं देखूंगा पर कोई नहीं है और
इन में से पर कोई मंत्री नहीं और मैं उन से प्रश्न करूंगा
२९ और वे बचन का उत्तर देंगे। देखो वे सब नास्ति हैं तुच्छ
उन के कार्य्य पवन और व्यर्थ उन की ढाली हुई मूर्त्ति ॥

बयालीसवां पर्ब्ब ।

१ देखो मेरा दास मैं उसे संभालूंगा मेरा चुना हुआ जिस्से
मेरा प्राण संतुष्ट है मैं ने अपना आत्मा उस पर रक्खा है
२ न्याय वुह जातिगणों में चलायेगा। वुह न चिल्लायेगा और न
अपना शब्द उठायेगा और न अपना शब्द बाहर सुनावेगा।
३ वुह मसले हुए सेंटे को न तोड़ेगा और न धुंधली बत्ती को

४ बुझायेगा वुह सच्चाई के संग न्याय को चलायेगा। न वुह
धुंधलायेगा और न ममला जायेगा जब लों कि पृथिवी पर न्याय
को स्थापित न करे और टापू उस की व्यवस्था की बाट
जाेहेंगे ॥
५ सर्वशक्तिमान परमेश्वर जो स्वर्गों को सिरजता है और उन्हें
तानता है पृथिवी और उस की उगनेहारी वस्तु को बिछाता
है उस जाति को जो उस पर है स्वास देता है और आत्मा
६ उन्हें जो उस पर चलते हैं यों कहता है। कि मैं परमेश्वर ने
तुझ को धर्म्म में बुलाया है और तेरा हाथ थांभूंगा और तेरी
रक्षा करूंगा और तुझे लोगों के लिये बाचा और जातिगणों के
७ लिये ज्योति ठहराऊंगा। जिसतें तू अंधी आंखों को खोल दे जिसतें
बन्धुआई से बन्धुए को और बन्दीगृह से अंधियारे के बैठनेहारों
८ को निकाल दे। मैं परमेश्वर हूं यह मेरा ही नाम है और मैं
अपना बिभव दूसरे को न दूंगा और न अपनी स्तुति खोदी
९ हुई मूर्त्तों को। अगिली बातें देखो वे आ चुकीं और नई
बातें मैं बतलाता हूं उससे पहिले कि वे उगें मैं तुम्हें सुनाऊंगा॥
१० परमेश्वर के लिये नया गीत गाओ पृथिवी के अंत से उस
की स्तुति करो हे तुम जो समुद्र पर चलते हो और उस की
११ भरपूरी सहित हे टापुओ और उन के बसवैयो। बन और
उस की बस्तियां शब्द उठायेंगी वे बाड़े जिन में क़ीदार बस्ता
है पतरा के बासी आनन्द का शब्द करेंगे पहाड़ों की
१२ चोटी पर से ललकारेंगे। वे परमेश्वर को प्रतिष्ठा दें और टापुओं
१३ में उस की स्तुति बतायें। परमेश्वर बीर के समान निकलेगा
युद्धकारी मनुष्य के समान अपनी ज्वलन को जगायेगा वुह
ललकारेगा हां चिल्लायेगा अपने शत्रुओं के बिरुद्ध में अपनी
बीरता दिखलावेगा ॥
१४ मैं एक बड़े काल से चुप हो रहा यह कहता हुआ कि मैं

चुप रहूंगा अपने को रोकूंगा पर अब जन्नेहारी स्त्री की
१५ नाईं चिल्लाऊंगा हांफूंगा और एक ही साथ मुंह फैलाऊंगा। मैं
पहाड़ों और पहाड़ियों को उजाड़ कर डालूंगा और उन पर की
घास को सुखा डालूंगा और नदियों को टापू कर दूंगा
१६ और पोखरों को सुखा डालूंगा। और मैं अंधों को उस मार्ग
पर ले जाऊंगा जिसे वे नहीं जानते हैं और उन पगडंडियों
पर जिन से वे अज्ञान हैं उन की अगुआई करूंगा मैं उन के
आगे अंधकार को ज्योति और टेढ़े मार्गों को सीधा कर डालूंगा
ये ही वे बातें हैं मैं ने उन्हें पूरा किया है और उन्हें नहीं
छोड़ा॥

१७ वे पीछे हटाये गये सर्व्वथा लाज से लज्जित होंगे जो
खोदी हुई मूर्त्ति का भरोसा रखते हैं जो ढाली हुई मूर्त्ति
से कहते हैं कि तुम्हीं हमारे देव हो॥

१८ हे बहिरो सुनो और हे अंधो दृष्टि करो जिसतें तुम देखो।
१९ मेरे दास को छोड़ कौन अंधा है और बहिरा मेरे दूत के समान
जिसे मैं भेजूंगा कौन अनुग्रहित के समान अंधा और
२० परमेश्वर के दास के समान अंधा। तू ने बहुत बातों को देखा
है और उन की कुछ चिन्ता न करेगा कानों को खोलने के
२१ लिये वुह भेजा गया पर न सुनेगा। परमेश्वर अपने धर्म्म के
लिये प्रसन्न है वुह व्यवस्था की महिमा करेगा और उसे प्रतिष्ठा
२२ देगा। पर वुह लूटी हुई और छीनी हुई जाति है सब के सब
गुफाओं में फंस गये और बन्दीगृहों में छिप गये वे अहेर के
लिये हैं और कोई छुड़वैया नहीं लूट के लिये और कोई नहीं
कहता कि फेर दे॥

२३ कौन तुम्में से इस पर कान धरेगा आगे के लिये श्रोता
२४ होगा और सुनेगा। किस ने यअ़कूब को लूट के लिये दिया और
इसराएल को अहेर करवैयों को क्या परमेश्वर ने नहीं जिस के

विरोध में हम ने पाप किया और वे उस के मार्गों पर चलने
नहीं चाहते थे और उस की व्यवस्था के श्रोता न हुए।
२५ और उस ने उस पर कोप अर्थात् अपना क्रोध और युद्ध की
प्रबलता उस पर डाली और उस ने उसे चारों ओर जला दिया
और उस ने नहीं जाना और उसे भस्म कर दिया और वुह
मन में न रक्खेगा॥

तेंतालीसवां पर्ब्ब।

१ और अब हे यअकूब परमेश्वर तेरा सृजनहार और हे
इसराएल तेरा बनानेहारा यों कहता है कि मत डर क्योंकि
में ने तुझे छुड़ाया है में ने तेरा नाम लेके तुझे बुलाया है तू ही
२ मेरा है। जब तू पानियों में से चलेगा तब मैं तेरे साथ हूंगा
और नदियों में से तब वे तुझे न डुबायेंगी जब तू आग में चलेगा
तब जलाया न जायेगा और लवर तुझे भस्म न करेगी।
३ क्योंकि मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर इसराएल के धर्म्ममय तेरे मुक्तिदाता
ने तेरे प्रायश्चित्त में मिस्र दिया है कूश और सबा तेरे बदले
४ में। इस लिये कि तू मेरी दृष्टि में बहुमूल्य है तू ने प्रतिष्ठा
पाई और मैं ने तुझे प्यार किया है और मनुष्य तेरी संती में
५ और जातिगणों को तेरे प्राण के पलटे में देऊंगा। तू मत डर
क्योंकि मैं तेरे साथ हूं पूरब से मैं तेरे बंश को लाऊंगा और
६ पच्छिम से तुझे एकट्ठा करूंगा। मैं उत्तर से कहूंगा कि दे डाल
और दक्षिण से कि रख मत छोड़ मेरे बेटों को दूर से ला
७ और मेरी बेटियों को पृथिवी के अंत से। हर एक जो मेरे
नाम से बुलाया जाता है और मैं ने उसे अपने बिभव के लिये
सृजा है मैं ने उसे बनाया है हां उसे सिद्ध किया है॥
८ उस ने अंधी जाति को निकाला है और उन की आंखें हैं
९ और बहिरों को और उन के कान हैं। सारे जातिगण एक ही

साथ एकट्ठा किये गये और देशगण एकट्ठे किये जायेंगे कौन उन
में इसे वर्णन करेगा और वे हमें पहिली बातें सुनायें वे अपने
साक्षी निकालें और निर्दोष ठहरें और सुनें और कहें कि सच
है ॥
१० तुम मेरे साक्षी हो परमेश्वर कहता है और मेरा दास जिसे
मैं ने चुना जिसतें तुम जानो और मुझ पर विश्वास लाओ और
समझो कि मैं वही हूं मुझ से आगे कोई सर्बशक्तिमान न बनाया
११ गया और मेरे पीछे कोई न होगा। मैं मैं परमेश्वर वही हूं
१२ और मुझे छोड़ कोई मुक्तिदाता नहीं। मैं ने बताया और बचाया
और सुनाया और तुम्में कोई परदेशी देव नहीं है और तुम मेरे
१३ साक्षी हो परमेश्वर कहता है और मैं सर्बशक्तिमान हूं। हां आरंभ
से मैं वही हूं और मेरे हाथ से कोई छुड़ानेहारा नहीं है मैं
काम करूंगा और कौन उसे मेटेगा ॥
१४ परमेश्वर तुम्हारा मुक्तिदाता इसराएल का धर्ममय यों कहता
है कि मैं ने तुम्हारे लिये बाबुल लों भेजा है और सब भगोड़ों
को नीचे कर दिया है और कसदियों को जिन के जहाज़ों पर
१५ उन की ललकार है। मैं परमेश्वर तुम्हारा धर्ममय इसराएल
का सृष्टिकर्त्ता तुम्हारा राजा हूं ॥
१६ परमेश्वर यों कहता है जो समुद्र में मार्ग बनाता है और
१७ महाजलों में पथ। जो रथ और घोड़ा पराक्रम और बलवान
निकालता है वे एक साथ लेट रहेंगे और न उठेंगे वे बुझ गये बत्ती
१८ की नाई ठण्डे हो गये। पहिली बातों को स्मरण न करो और
१९ पुरानी बातों को सोच न करो। देखो मैं एक नई बात करता
हूं अब वुह उगेगी क्या तुम उसे न जानोगे हां मैं बन
२० में मार्ग और अरण्य में धारें बनाऊंगा। बन्यपशु मेरी प्रतिष्ठा
करेगा गीदड़ और शुतरमुर्ग क्योंकि मैं ने अरण्य में पानी
और बन में नदियां निकाली हैं जिसतें अपनी चुनी हुई जाति

२१ को पिलाऊं। यह जाति मैं ने अपने लिये बनाई है वे लोग
मेरी स्तुति बर्णन करेंगे॥
२२ पर हे यअ़्क़ूब तू ने मुझे नहीं बुलाया क्योंकि हे इसराएल
२३ तू मुझ से थक गया। तू अपने होम के बलिदानों की भेड़
बकरी मेरे पास नहीं लाया और अपने बलिदानों से मेरा
आदर नहीं किया मैं ने भेंट से तुझ से सेवा नहीं कराई और
२४ लोबान से तुझे नहीं थकाया। तू ने रूपे से मेरे लिये सुगंधित
सरकण्डा मोल नहीं लिया और अपने बलिदानों की चिकनाई से
मुझे तृप्त नहीं किया तू ने केवल अपने पापों से मुझ पर भार
२५ दिया अपने कुकर्म्मों से मुझे थकाया। मैं मैं ही अपने कारण
तेरे अपराधों को मिटाता हूं और तेरे पापों को स्मरण न करूंगा।
२६ मुझे स्मरण कर हम आपस में विवाद करें तू अपनी दशा
२७ बर्णन कर जिसतें तू निर्दोष ठहरे। तेरे पहिले पिता ने पाप
२८ किया और तेरे उलथा करनेहारे मुझ से फिर गये। और मैं
पवित्र अध्यक्षों को अशुद्ध करूंगा और यअ़्क़ूब को स्राप के
लिये और इसराएल को निन्दा के लिये दूंगा॥

चौंतालीसवां पर्व्व।

१ और अब हे यअ़्क़ूब मेरे सेवक सुन और हे इसराएल
२ जिसे मैं ने चुन लिया। परमेश्वर यों कहता है कि तेरा
सृष्टिकर्त्ता और गर्भ से तेरा बनानेहारा तेरी सहायता करेगा
हे मेरे दास यअ़्क़ूब और यशूरून जिसे मैं ने चुना है मत
३ डर। क्योंकि मैं प्यासे पर पानी उंडेलूंगा और बहिते पानी
सूखी भूमि पर मैं अपना आत्मा तेरे बंश पर उंडेलूंगा और
४ अपनी आशीष तेरे संतानों पर। और वे घास के बीच में
५ जमेंगे बेंत की नाईं पानियों की धाराओं में। एक तो यह
कहेगा कि मैं परमेश्वर का हूं और दूसरा यअ़्क़ूब का नाम लेगा

और तीसरा अपने हाथ से लिखेगा कि मैं परमेश्वर का हूं और
आप को इसराएल के नाम से प्रसिद्ध करेगा॥
६ परमेश्वर इसराएल का राजा और उस का मुक्तिदाता सेनाओं
का परमेश्वर यों कहता है कि मैं आदि और मैं अंत हूं और
७ मुझे छोड़ कोई ईश्वर नहीं है। और कौन मेरे समान पुकारेगा
और उसे बतायेगा और मेरे लिये क्रम से उस का वर्णन करेगा
जब से मैं ने अगिली जाति को स्थापन किया और आनेहारी
८ वस्तें और जो होनहार हैं उन के लिये बतलायेगा। तू न
थरथरा और मत डर क्या मैं ने तब से तुझे न सुनाया और
बताया और तुम मेरे साक्षी हो क्या मुझे छोड़ कोई ईश्वर है
और कोई चटान नहीं है मैं किसी को नहीं जानता॥
९ मूर्त्तों के बनानेहारे सब के सब बृथा हैं और उन की
मनोहर वस्तें उन्हें कुछ लाभ न देंगी और उन के साक्षी
१० आप न देखेंगे और न जानेंगे जिसतें लज्जित हों। किस ने
सर्वशक्तिमान को बनाया और मूर्त्ति को ढाला कि कुछ लाभ न
११ करे। देखो उस के सारे संगी लज्जित होंगे और मूर्त्ति के
गढ़नेहारे वे तो आप मनुष्य हैं वे सब के सब एकट्ठे होंगे
खड़े होंगे थरथरायेंगे एक साथ लज्जित होंगे॥
१२ उस ने लोहे को छेनी से काटा और अंगारों से उसे कमाया
है और हथौड़ों से उसे बनायेगा और अपनी बलवाली भुजा से
उसे कमायेगा वुह भूखा भी है और उस में बल नहीं है उस
ने पानी नहीं पीया और मूर्छित है॥
१३ उस ने लकड़ी काटी है सूत खींचा है सूजे से उस पर
लकीर खैंचेगा रुखानियों से उसे बनायेगा और परकार से उस
पर चिन्ह करेगा तब पुरुष के स्वरूप पर मनुष्य की सुन्दरता
१४ पर बनायेगा जिसतें घर में रहे। वुह देवदारुओं को काटता है
और अब उस ने सरो और बलूत को लिया है और बन के वृक्षों

में उसे अपने काम के लिये दृढ़ता दिई है उस ने सनोवर वृक्ष
१५ लगाया है और मेंह उसे बढ़ायेगा। और वुह मनुष्य के ईंधन
के लिये होगा और उस ने उन में से कुछ लिया और तापा है
हां वुह सुलगायेगा और रोटी पकावेगा हां वुह सर्बशक्तिमान
को बनावेगा और मुंह के बल गिरेगा उस ने उसे ढाली हुई
१६ मूर्त्ति बनाया और उसे दण्डवत किया है। उस का आधा उस
ने आग में जलाया है उस के आधे के ऊपर वुह मांस खायेगा
मांस भूनेगा और तृप्त होगा हां वुह तापेगा और कहेगा
१७ कि वाह मैं तात हुआ मैं ने आग को देखा है। और उस का
बचा हुआ उस ने एक सर्बशक्तिमान में अपनी खोदी हुई मूर्त्ति
में बनाया है वुह उसे दण्डवत करेगा और मुंह के बल गिरेगा
और उस्से प्रार्थना करेगा और कहेगा कि मुझे बचा क्योंकि तू
ही मेरा सर्बशक्तिमान है॥
१८ उन्हों ने नहीं जाना और वे न समझेंगे क्योंकि उस ने उन
की आंखें लेस दिई हैं कि नहीं देखते उस के अंतःकरणों को
१९ कि नहीं समझते। और वुह अपने मन पर न लगायेगा और
न ज्ञान और न समझ है कि कहे कि उस का आधा मैं ने
आग में जलाया और उस के अंगारों पर रोटी भी पकाई है
मैं मांस भूनूंगा और खाऊंगा और उस का बचा हुआ मैं घिनित
२० वस्तु बनाऊंगा पेड़ की पीड़ को मैं दण्डवत करूंगा। राख
चरता हुआ उस का मन छल खाया हुआ है उसे बहकाया
है और वुह अपने प्राण को बचा नहीं सक्ता और न कहेगा
कि क्या मेरे दाहिने हाथ में झूठ नहीं है॥
२१ इन बातों को स्मरण कर हे यअक़ूब और हे इसराएल
क्योंकि तू ही मेरा दास है मैं ने तुझे बनाया तू ही मेरे लिये
२२ सेवक है हे इसराएल तू मुझ से बिसराया न जायेगा। मैं
ने घटा के समान तेरे अपराधों को और मेघ के समान तेरे

पापों को मिटा दिया है मेरी ओर फिर क्योंकि मैं ने तुझे छुड़ा
लिया है ॥
२३ हे आकाशो आलापो क्योंकि परमेश्वर ने यह किया है हे
पृथिवी की नीचाइयो ललकारो हे पहाड़ो ललकार में फूट
निकलो हे बन और उस के हर एक पेड़ क्योंकि परमेश्वर ने
यअक़ूब को छुड़ा लिया है और इसराएल में अपना बिभव
प्रगट करेगा ॥
२४ परमेश्वर तेरा चाणकर्त्ता और गर्भ से तेरा निर्माण करनेहारा
मैं परमेश्वर सब का उत्पन्न करनेहारा अकेला आकाशों का
फैलानेहारा पृथिवी का बिछानेहारा यों कहता है कि कौन मेरे
२५ साथ है । जो टोन्हों के चिन्ह बृथा कर देता है और दैवज्ञों
को सिड़ी बनायेगा जो बुद्धिमानों को पीछे हटा देता है और
२६ वुह उन के ज्ञान को अज्ञानता ठहरायेगा । जो अपने दास
के बचन को स्थिर करता है और वुह अपने दूतों के मंत्र को
पूरा करेगा जो यरूसलम के बिषय में कहता है कि वुह
बसाई जायेगी और यहूदाह के नगरों के बिषय में कि वे
२७ बनाये जायेंगे और मैं उस के खण्डरों को उठाऊंगा । जो
गहिराव से कहता है कि सूख जा और मैं तेरी नदियों को सुखा
२८ डालूंगा । जो ख़ोरस के बिषय कहता है कि वुह मेरा चरवाहा
है और वुह मेरे समस्त अभिलाष को पूरा करेगा हां यरूसलम
से यह कहते हुए कि तू बनाई जायेगी और मन्दिर से यह
कि तेरी नेव डाली जायेगी ॥

पैंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर अपने अभिषिक्त ख़ोरस से जिस का दहिना हाथ
मैं ने पकड़ा है जिसतें उस के आगे जातिगणों को लताड़ूं और
राजाओं की कटि मैं खोलूंगा जिसतें उस के आगे दोहरे द्वारों

२ को खोल दूं और फाटक बंद न किये जायेंगे। मैं तेरे
आगे चलूंगा और टेढ़े स्थानों को समथर करूंगा पीतल के
द्वारों को टुकड़े टुकड़े करूंगा और लोहे के अड़ंगों को काट
३ डालूंगा। और मैं तुझे अंधियारे के धन को और गुप्त स्थानों
के छिपे हुए भंडारों को दूंगा जिसतें तू जाने कि मैं परमेश्वर
जो तेरा नाम लेके तुझे बुलाता हूं इसराएल का ईश्वर हूं।
४ अपने दास यअ़क़ूब और अपने चुने हुए इसराएल के कारण
इस लिये मैं तेरा नाम लेके तुझे बुलाऊंगा मैं तुझे पदवी
५ दूंगा और तू ने मुझे नहीं जाना। मैं परमेश्वर हूं और कोई
दूसरा नहीं मुझे छोड़ कोई ईश्वर नहीं मैं तेरी कटि बांधूंगा
६ और तू ने मुझे नहीं जाना। जिसतें सूर्य्य के उदय से पच्छिम
लों लोग जानें कि मुझे छोड़ कुछ नहीं है मैं परमेश्वर हूं और
७ कोई दूसरा नहीं। मैं उंजियाला बनाता और अंधियारा
सृजता कुशल निर्माण करता और बिपत्ति उत्पन्न करता मैं परमेश्वर
यह सब किया करता हूं॥

८ हे आकाशो ऊपर से टपक पड़ो और मेघ धर्म्म बरसावें
पृथिवी खुल जावे और मुक्ति और धर्म्म फलें वुह उन्हें एक
ही संग उपजावे मैं परमेश्वर ने उसे सृजा है॥

९ हाय उस पर जो अपने सृष्टिकर्त्ता से लड़ता है ठीकरा
मिट्टी के ठीकरों के साथ क्या माटी अपने बनानेहारे से कहे
कि तू क्या करता है और तेरा कार्य्य कि उस के हाथ नहीं हैं।
१० हाय उस पर जो पिता से कहता है कि तू क्या उत्पन्न करेगा
और स्त्री से कि तू क्या जनेगी॥

११ परमेश्वर इसराएल का धर्म्मय और उस का कर्त्ता यों कहता
है कि आनेहारी बातों के विषय मुझ से प्रश्न करो मेरे बालकों
के विषय और मेरे हाथों के कार्य्य के विषय तुम मुझे आज्ञा
१२ दो। मैं ही ने पृथिवी को बनाया और मनुष्य उस पर सृजा

मैं ही मेरे हाथों ने आकाशों को फैलाया और उन की समस्त
१३ सेना को आज्ञा दिई । मैं ही ने उसे धर्म्म में जगाया और
उस के सारे मार्गों को समथर करूंगा वही मेरे नगर को
बनावेगा और मेरे बंधुओं को बिना दाम और बिना भेंट लिये
हुए उन की जन्मभूमि में भेज देगा सेनाओं का परमेश्वर
कहता है ॥
१४ परमेश्वर यों कहता है कि मिस्र की कमाई और कूश के
ब्योपार का लाभ और सबा के लोग लंबे मनुष्य तेरे पास आगे
आयेंगे और तेरे होंगे तेरे पीछे चलेंगे सीकरों में तेरे आगे
आयेंगे और तेरी ओर दण्डवत करेंगे तेरी ओर प्रार्थना करेंगे
और कहेंगे कि केवल तुझ में सर्बशक्तिमान है और कोई दूसरा
नहीं दूसरा ईश्वर नहीं ॥
१५ निश्चय तू ही सर्बशक्तिमान आप को छिपाता है हे
१६ इसराएल के ईश्वर मुक्तिदाता । वे लज्जित हुए वे सब के सब
संकोचित भी किये गये मूर्त्ति के निर्माण करनेहारे एक ही साथ
१७ संकोच में चले गये । इसराएल अनन्त मुक्ति के साथ परमेश्वर
में बचाया गया तुम न लज्जित होगे और न संकोची किये
जाओगे हां सनातन लों ॥
१८ क्योंकि परमेश्वर आकाशों का उत्पन्न करनेहारा वही ईश्वर
है पृथिवी का बनानेहारा और उस का कर्त्ता उसी ने उसे स्थिर
किया न शून्य होने के लिये उसे उत्पन्न किया बसाने के लिये
उसे बनाया यों कहता है कि मैं परमेश्वर हूं और कोई दूसरा
१९ नहीं । मैं ने गुप्त में एक स्थान में जो अंधकार का देश है
बातें नहीं किईं मैं ने इसराएल के संतान से नहीं कहा कि
अकारथ मेरा खोज करो मैं परमेश्वर सत्य का वचन बोलता
२० सत्यताओं का प्रचार करता हूं । एकट्ठे हो और आओ एक
ही साथ निकट आओ हे देशगणों के बचे हुओ वे नहीं जानते

जो लकड़ी अपनी खोदी हुई मूर्त्ति उठाते हैं और ऐसे
२१ सर्व्वशक्तिमान से प्रार्थना करते हैं जो नहीं बचा सक्ता। वर्णन
करो और पास लाओ हां वे एक ही साथ परामर्ष करें किस ने
आगे से यह सुनाया आरंभ से उस का वर्णन किया क्या मैं परमेश्वर
नहीं और मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं धर्म्मी और मुक्तिदाता
सर्व्वशक्तिमान मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं॥
२२ मेरी ओर फिरो और मुक्ति पाओ हे जगत के समस्त अंतो
२३ क्योंकि मैं ही सर्व्वशक्तिमान हूं और कोई दूसरा नहीं। मैं ने
अपनी किरिया खाई धर्म्म के मुंह से वचन निकला है और न
फिरेगा कि मेरे आगे हर एक घुटना झुकेगा हर जीभ किरिया
खायेगी॥
२४ मनुष्य कहता है कि केवल परमेश्वर में मेरा धर्म्म और
सामर्थ्य है उस के पास मनुष्य आवेगा और सब जो उस के
२५ बिरोध में थे लज्जित होंगे। परमेश्वर में इसराएल के समस्त
बंश धर्म्मी ठहरेंगे और बड़ाई करेंगे॥

छियालीसवां पर्व्व।

१ बेल झुक गया नबू निहुड़ता है उन की मूर्त्तें पशुओं और
चौपायों पर लादी गईं तुम्हारा बोझ लादा गया थके हुए पशु
२ के लिये बोझ। वे एक ही साथ निहुड़े झुक गये वे बोझ को
बचा नहीं सक्ते वे आप बंधुआई में गये॥
३ हे यअकूब के घराने मेरी सुनो और हे इसराएल के घर के
सारे बचे हुए लोगो जो गर्भ से बोझ किये गये आदि से उठाये गये।
४ और बुढ़ापे लों मैं वही हूं और बाल पकने लों मैं तुम्हें उठाऊंगा
मैं ने यह किया और मैं ले जाऊंगा और उठाऊंगा और तुम्हें
बचाऊंगा॥
५ तुम मुझे किस्से उपमा देओगे और तुल्य करोगे और मुझे

६ मिलाओगे जिसतें हम समान होवें । उड़ाऊ लोग सोना थैली
से निकालके और रूपा तखरी से तौलेंगे वे मूर्त्ति के बनानेहारे
को बनी देंगे और वुह उसे सर्बशक्तिमान बनावेगा वे झुकेंगे
७ हां मुंह के बल गिरेंगे । वे उसे कांधे पर उठा लेंगे उसे ले
जायेंगे और उसे उस के स्थान में खड़ा करेंगे और वुह वहां खड़ा
रहेगा अपने स्थान से न टलेगा हां कोई उसे पुकारेगा और
वुह उत्तर न देगा वुह उसे उस के दुख से न बचा सकेगा ॥
८ इसे चेत करो और आप को पुरुष दिखाओ हे फिरे हुओ
९ ध्यान से इसे सोचो । अगिली बातों को प्राचीन से स्मरण करो
क्योंकि मैं ही सर्बशक्तिमान हूं और कोई दूसरा नहीं ईश्वर और
१० मेरे तुल्य कोई नहीं । आरंभ से अंत का प्रारंभ बनाता हूं
और आगे से वे काम जो नहीं किये गये हैं यह कहते
हुए कि मेरा मंच स्थिर रहेगा और मैं अपनी समस्त इच्छा
११ पूरी करूंगा । पूरब से एक अहेरी पची को बुलाता हूं दूर देश
से अपने मंच के पुरुष को हां मैं ने कहा हां मैं उसे पूरा
करूंगा मैं ने ठहराया हां उसे समाप्त करूंगा ॥
१२ हे कठोर अंतःकरणियो जो धर्म्म से दूर हो मेरी सुनो ।
१३ मैं ने अपने धर्म्म को समीप पहुंचाया है वुह दूर न होगा
और अपनी मुक्ति को वुह बिलम्ब न करेगी और मैं सैहून में
अपनी मुक्ति देऊंगा और इसराएल को अपना बिभव ॥

सैंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ नीचे उतर आ और धूल पर बैठ हे बाबुल की कुंवारी
बेटी भूमि पर बैठ कोई सिंहासन नहीं है हे कसीदीम की
पुत्री क्योंकि लोग फिर तुझे कोमल और सुकुमारी न कहेंगे ।
२ चक्कियां ले और आटा पीस अपनी ओढ़नी अलग कर तिलकबस्त्र
३ उतार टांग को नंगी कर नदियों के पार उतर जा। तेरी नग्नता

उघारी जाये हां तेरी लाज प्रगट किई जाये मैं पलटा लूंगा
मनुष्य से भेंट न करूंगा ॥
४ हमारा मुक्तिदाता जो है सेनाओं का परमेश्वर उस का नाम
५ है इसराएल का धर्ममय। चुपकी हो बैठ और अंधकार में
जा हे कसीदीम की पुत्री क्योंकि लोग तुझे फिर राज्यों की
६ रानी न कहेंगे। मैं अपनी जाति पर क्रुद्ध हुआ मैं ने अपने
अधिकार को अशुद्ध कर दिया और उन्हें तेरे हाथ में दिया
तू ने उन पर दया न किई बृद्ध पर तू ने अपना जूआ बहुत
७ भारी कर दिया। और तू ने कहा कि मैं सदा लों रानी
बनी रहूंगी जब लों कि तू ने इन बातों पर मन न लगाया उस
८ का समय सोच नहीं किया। और अब यह सुन हे भोगबिलासिनी
जो निश्चिन्त बैठी है जो अपने मन में कहती है कि मैं ही हूं
और मुझे छोड़ कोई दूसरा नहीं मैं रांड होके न बैठूंगी और लड़कों
९ के खो जाने को न जानूंगी। और ये दोनों बातें अचानक एक
ही दिन में तुझ पर आवेंगी अर्थात् लड़कों का खो जाना और
रांड होना तेरे टोनों की बहुताई में तेरे मंत्रों की बड़ी अधिकाई
१० में वे अपनी भरपूरी के साथ तुझ पर आ पड़ीं। और तू अपनी
बुराई में बेसोच है तू ने कहा है कि कोई मुझे नहीं देखता
है तेरी बुद्धि और तेरा ज्ञान उसी ने तुझे बहकाया और तू
ने अपने मन में कहा है कि मैं ही हूं और मुझे छोड़ कोई
११ दूसरा नहीं। और यों तुझ पर दुख आता है तू उस के
बिहान को न जानेगी और तुझ पर बिपत्ति आवेगी तू उस का
प्रायश्चित्त न कर सकेगी और अचानक तुझ पर नाश आवेगा जिसे
१२ तू न जानेगी। अपने मंत्रों और अपने टोनों की बहुताई में जिन में
तू ने अपनी युवावस्था से परिश्रम किया है कृपा करके खड़ी रह
क्या जाने तू लाभ उठा सकेगी क्या जाने तू साम्हना करेगी।
१३ तू अपने परामर्षों की बहुताई में थक गई हाय कि आकाश के

विचारी नक्षत्रों के दर्शक जो अमावास्य का भविष्य कहते हैं उन
वस्तुओं के विषय जो तुझ पर आवेंगी खड़े हों और तुझे
१४ बचावें। देख वे भूसे की नाईं हैं आग ने उन्हें भस्म कर
लिया है वे अपने प्राण को लवर के हाथ से बचा नहीं सक्ते
यह तापने के लिये अंगारा नहीं है आग उस के साम्हने
१५ बैठने के लिये। यों वे तेरे लिये हैं जिन के विषय तू ने
परिश्रम किया तेरे बैपारी तेरी यूवावस्था से हर एक अपनी
अपनी ओर भटक गये तेरा बचानेहारा कोई नहीं है॥

अठतालीसवां पर्व्व।

१ यह सुनो हे यअकूब के घराने जो इसराएल के नाम से
बुलाये गये और यहूदाह के सोते से निकले हो जो परमेश्वर
के नाम से किरिया खाते हो और इसराएल के ईश्वर का स्मरण
२ करते हो न सच्चाई में और न धर्म्म में। क्योंकि वे पवित्र
नगर के लोग कहलाते हैं और इसराएल के ईश्वर पर भरोसा
३ रखते हैं सेनाओं का परमेश्वर उस का नाम है। पहिली बातें मैं
ने पुरातन से बतलाईं और वे मेरे मुंह से निकलीं और मैं
उन्हें सुनाता हूं अकस्मात मैं करता हूं और वे देखने में आती
४ हैं। इस कारण से कि मैं ने जाना कि तू कठोर मन है और
५ लोहे का पट्टा तेरी ग्रीवा है और तेरा ललाट पीतल। इस
कारण मैं ने पहिले ही से तुझे बतला दिया उस्से आगे कि
देखने में आवे तुझे सुना दिया कदापि तू कहे कि मेरी मूर्त्ति
ने यह काम किये मेरी खोदी हुई मूर्त्ति और मेरी ढाली हुई
६ मूर्त्ति ने उन की आज्ञा किई। तू ने सुना है देख वुह सब देखने
में आया और क्या तुम न बताओगे मैं ने तुझे नई बातें
७ सुनाईं अब से और गुप्त बातें और तू ने उन्हें नहीं जाना। अभी
वे उत्पन्न किई गईं और प्राचीनता से नहीं और आज के दिन

से आगे तू ने तो उन्हें नहीं सुना था न हो कि तू कहे कि
८ देख में उन्हें जानता था। हां तू ने नहीं सुना था हां तू ने नहीं
जाना था हां आरंभ से तेरा कान नहीं खुला था क्योंकि मैं जानता
था कि तू सर्वथा छल का काम करेगा और पेट ही से तू ईश्वरत्यागी
९ कहा गया। अपने नाम के लिये में अपने क्रोध में अबेर
करूंगा और अपनी स्तुति के कारण उसे तेरे बिषय में रोकूंगा
१० जिसतें तुझे न काट डालूं। देख मैं ने तुझे ताया पर चांदी
११ न निकली मैं ने तुझे कष्ट के भट्ठे में चुना। अपने लिये हां
अपने ही लिये मैं करूंगा क्योंकि किस रीति मेरा नाम बुरा
ठहराया जाये और मैं अपना बिभव दूसरे को न देऊंगा॥
१२ हे यअकूब और हे इसराएल मेरे बुलाये हुए मेरी सुन मैं
१३ वही हूं मैं आदि हूं हां मैं अंत हूं। हां मेरे हाथ ने पृथिवी की
नेव डाली और मेरे दहिने हाथ ने स्वर्ग को बित्ते से नापा मैं
१४ उन को बुलाता हूं और वे एक ही साथ खड़े होंगे। तुम सब के
सब एकट्ठे हो जाओ और सुनो उन में से किस ने ये बातें
बताईं परमेश्वर उसे प्यार करता है वुह अपनी इच्छा बाबुल
१५ में करेगा और उस का हाथ कसदियों पर होगा। मैं मैं ही ने
बचन कहा हां मैं ने उसे बुलाया मैं उसे अस्ति में लाया और
उस ने अपने मार्ग को भाग्यमान किया॥
१६ मेरे निकट आओ यह सुनो आरंभ से छिपके मैं ने बचन
नहीं कहा उस के समय के होने से मैं वहीं था और अब प्रभु
१७ परमेश्वर और उस के आत्मा ने मुझे भेजा है। परमेश्वर तेरा
मुक्तिदाता इसराएल का धर्ममय यों कहता है कि मैं परमेश्वर
तेरा ईश्वर हूं जो तुझे लाभ प्राप्त करने के लिये सिखलाता हूं
उस मार्ग पर तेरी अगुआई करता हूं जिस पर तुझे चलना होगा।
१८ हाय कि तू मेरी आज्ञाओं का श्रोता होता तो तेरा कुशल नदी
की नाईं होता और तेरा धर्म्म समुद्र की लहरों की नाईं।

१६ तो तेरा बंश बालू के समान होता और तेरे गर्भ के संतान
उस के गर्भ के संतानों के समान उस का नाम मेरे आगे से
न काटा जायेगा और न मिटाया जायेगा ॥
२० बाबुल से निकलो कसदियों से भागो आनन्द के शब्द के
साथ बतला दो यह सुनाओ उसे पृथिवी के अंत लों पहुंचा
दो कहो कि परमेश्वर ने अपने सेवक यअ़कूब को छुड़ाया है ।
२१ और वे प्यासे न हुए उन जंगलों में जिन में उस ने उन्हें
चलाया उस ने पानी पत्थर से उन के लिये बहाया और उस
२२ ने पत्थर को चीरा और पानी फूट निकला । परमेश्वर कहता
है कि दुष्टों के लिये कुशल कुछ नहीं है ॥

उंचासवां पर्ब्ब ।

१ हे टापुओ मेरी सुनो और हे जातिगणों दूर से मेरे श्रोता हो
परमेश्वर ने कोख से मुझे बुलाया मेरी माता के गर्भ से मेरे
२ नाम का चर्चा किया । और उस ने मेरे मुंह को चोखे खड्ग
के समान बनाया उस ने मुझे अपने हाथ की छाया में छिपाया
और मुझे चमकता बाण बनाया अपने तूण से मुझे छिपाया ।
३ और मुझ से कहा कि तू ही मेरा दास है इसराएल जिस में
में अपना बिभव प्रगट करूंगा ॥
४ और मैं ने कहा कि मैं ने बृथा परिश्रम किया बृथा वस्तु
के लिये और अकारथ अपना बल गवांया है पर मेरा बिचार
परमेश्वर के साथ है और मेरा कार्य्य मेरे ईश्वर के साथ ॥
५ और अब परमेश्वर कहता है कोख से मेरा निर्माण करनेहारा
जिसतें उस का दास हूं जिसतें यअ़कूब को उस की ओर फिरा
दूं पर इसराएल बटोरा न जायेगा और मैं परमेश्वर की दृष्टि में
ऐश्वर्य्यमान होऊंगा और मेरा ईश्वर मेरा बल हुआ है ॥
६ और उसी ने कहा कि हलकी बात है कि तू मेरा दास हो

जिसतें यअकूब की गोष्ठियों को उठावे और इसराएल के बचे
हुओं को फिरा दे और मैं ने तुझे अन्यदेशियों की ज्योति
ठहराया है जिसतें मेरी मुक्ति पृथिवी के अंत लों हो॥
७ परमेश्वर इसराएल का मुक्तिदाता उस का धर्ममय मन से
तुच्छ जान्ने के विषय घिन दिलानेहारी जाति के विषय अध्यक्षों
के सेवक के विषय यों कहता है कि राजा देखेंगे और उठ
खड़े होंगे अध्यक्ष देखेंगे और दंडवत करेंगे परमेश्वर के कारण
जो सच्चा है इसराएल के धर्ममय के लिये जिस ने तुझे
चुना है॥
८ परमेश्वर कहता है कि ग्राह्य के समय में मैं ने तेरी सुनी
है और मुक्ति के दिन तेरी सहायता किई है और मैं तेरी रक्षा
करूंगा और तुझे जाति का नियम ठहराऊंगा जिसतें पृथिवी
को स्थिर रक्खे जिसतें उजाड़ अधिकारों को स्वामियों को देवे।
९ जिसतें बंधुओं को कहे कि निकलो उन से जो अंधियारे में
हैं कि आप को दिखलाओ वे पथों पर देखेंगे और सारी नंगी
१० पहाड़ियों पर उन के चराई के स्थान होंगे। वे न भूखे और
न प्यासे होंगे और न मरीचिका और न धूप उन को मारेगा
क्योंकि जो उन पर दया करता है वुह उन की अगुआई करेगा
११ और उन्हें पानी के सोतों के पास ले जायेगा। और मैं अपने
सारे पहाड़ों को पथ बनाऊंगा और मेरे राजमार्ग ऊंचे होंगे।
१२ देखो ये दूर से आयेंगे और देखो ये उत्तर से और पच्छिम से
और ये सीनीम के देश से॥
१३ हे स्वर्गो ललकारो और हे पृथिवी आनन्द हो पहाड़
ललकार में फूट निकलें क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों को
शांति दिई है और अपने दुखियों पर दया करेगा॥
१४ पर सैहून ने कहा कि परमेश्वर ने मुझे छोड़ दिया और
प्रभु मुझे भूल गया है॥

१५ क्या स्त्री अपने दूध पीते हुए बच्चे को भूलेगी कि अपनी कोख
के बालक पर मया न करे हां यह तो भूल जायेंगी पर मैं
१६ तुझे न भूलूंगा । देख मैं ने तुझे अपनी हथेलियों पर खोदा है
१७ तेरी भीतें प्रतिदिन मेरी दृष्टि में हैं । तेरे बेटे आने में शीघ्र
करते हैं तेरे बिगाड़नेवाले और तेरे उजाड़ करनेवाले तुझ में
१८ से निकल जायेंगे । अपनी आंखें चारों ओर उठा और देख वे
सब के सब एकट्ठा हुए और तेरे पास आये हैं परमेश्वर कहता
है कि मेरे जीवन सों कि आभूषण के समान तू उन सभों को
पहिन लेगी और दुल्हिन की नाईं आप को उन से संवारेगी ।
१९ क्योंकि तेरे खंडहर और तेरे शून्यस्थान और तेरे सत्यानाश
किये गये देश येसे न रहेंगे क्योंकि अब तू रहनेहारों के लिये
२० सकेत होगी और तेरे निगलनेवाले दूर हो जायेंगे । तेरी
निःसंतानता के लड़के तेरे कानों में फिर फिर कहा करेंगे
२१ कि स्थान मेरे लिये सकेत है मुझे स्थान दे कि मैं बसूं । तब
तू अपने मन में कहेगी कि किस ने इन्हें मेरे लिये उत्पन्न
किया है और मैं निःसंतान और बांझ बंधुवी और दूर थी और
इन्हें किस ने पाला देख मैं अकेली रह गई ये कहां थे ॥
२२ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं अपना हाथ देशगणों
की ओर उठाऊंगा और जातिगणों की ओर अपना झंडा ऊंचा
करूंगा और वे तेरे बेटों को गोद में लायेंगे और तेरी बेटियां
२३ कांधे पर उठाई जायेंगी । और राजा तुझे गोद में उठानेहारे
होंगे और उन की रानियां तेरी दूध पिलानेहारियां पृथिवी पर
मुंह रखके वे तेरे आगे दंडवत करेंगे और तेरे पाओं की धूल
चाटेंगे और तू जानेगी कि मैं परमेश्वर हूं जिस के आश्रित
लज्जित न होंगे ॥
२४ क्या बलवंत की लूट छीन लिई जायेगी और धर्म्मी के
२५ बंधुए छुड़ाये जायेंगे । क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि हां

बलवंत के बंधुए छीन लिये जायेंगे और भयानक की लूट ले
लिई जायेगी और मैं तेरे लड़नेहारों के साथ लड़ूंगा और तेरे
२६ बालकों को मैं ही बचाऊंगा। और मैं तेरे अंधेरियों को उन्हीं
का मांस खिलाऊंगा और वे नई मदिरा की नाईं अपने ही लोहू
से मतवाले होंगे और सारे प्राणी जानेंगे कि मैं परमेश्वर तेरा
त्राणकर्त्ता हूं और तेरा मुक्तिदाता इसराएल का शक्तिमान हूं॥

पचासवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर यों कहता है कि तुम्हारी मा का त्यागपत्र कहां
है जिसे मैं ने छोड़ दिया अथवा कौन मेरे धनिकों में है जिस
को मैं ने तुम्हें बेच डाला देखो तुम ने अपने पापों के कारण
अपने को बेच डाला और तुम्हारे अपराधों के कारण से तुम्हारी
२ मा छोड़ दिई गई। जब मैं आया तो कोई मनुष्य क्यों न था
जब मैं ने पुकारा तो कोई उत्तर देनेहारा क्यों न था क्या मेरा
हाथ छुड़ाने में बहुत छोटा है और मुझ में मुक्ति देने का बल
नहीं देखो मैं अपनी घुरकी से समुद्र को सुखा देता हूं नदियों
को बन कर देता हूं उन की मछलियां पानी न होने के कारण
३ से दुर्गन्ध करें और प्यास के मारे मर जायें। मैं स्वर्गों को कालिक
से पहिनाऊंगा और टाटवस्त्र उन का ओढ़ना ठहराता हूं॥

४ प्रभु परमेश्वर ने मुझे बुद्धिमानों की जीभ दिई है जिसतें
थके हुए को बात से सहाय करने जानूं वुह बिहान को
जगावेगा बिहान को मेरे लिये कान जगावेगा जिसतें बिद्यार्थियों
५ की नाईं सुनूं। प्रभु परमेश्वर ने मेरे लिये कान खोला और मैं
६ दंगइत न था और पीछे न हटा। मैं ने अपनी पीठ ताड़कों
को दिई और अपने गाल नोचनेहारों को मैं ने अपना मुंह
७ लाजों और थूक से न छिपाया। और प्रभु परमेश्वर मेरी सहायता
करेगा इस लिये मैं निन्दित नहीं होता इस लिये मैं ने अपना

मुंह पथरी के समान धरा और मैं जानता हूं कि मैं लज्जित
८ न हूंगा। मेरा धर्म्मी ठहरानेहारा निकट है कौन मेरे साथ
लड़ेगा हम एक साथ खड़े हों कौन मेरा बैरी है वुह मेरे निकट
९ आवे। देखो प्रभु परमेश्वर मेरी सहायता करेगा वुह कौन है जो
मुझे दोषी ठहरावेगा देखो वे सब के सब वस्त्र के समान पुराने
हो जायेंगे कीड़ा उन्हें खा लेगा॥

१० तुम्में कौन परमेश्वर से डरनेहारा उस के सेवक के शब्द
का सुन्नेहारा जो अंधकार में चलता है और उस के लिये कुछ
ज्योति नहीं है वुह परमेश्वर के नाम पर भरोसा रक्खे और
अपने ईश्वर पर सहारा रक्खे॥

११ देखो तुम सब के सब जो आग को सुलगाते और चिनगारियां
कटि पर बांधते हो अपनी आग की ज्योति में और उन चिनगारियों
में जिन्हें तुम ने सुलगाया मेरे हाथ से यह तुम्हारे लिये होगा
कि पीड़ा के स्थान में लेट जाओगे॥

एकावनवां पर्ब्ब।

१ मेरी सुनो हे धर्म्म के पीछा करनेहारे परमेश्वर के खोजी
उस पत्थर की ओर दृष्टि रक्खो जिस्से तुम काटे गये और उस
२ गड़हे के छेद की ओर जिस्से तुम खोदे गये। अपने पिता
अबिरहाम की ओर दृष्टि रक्खो और सर: की ओर जो तुम्हें
जनी क्योंकि मैं ने उसे एक बुलाया और मैं उसे आशीष दूंगा
३ और उसे बढ़ाऊंगा। क्योंकि परमेश्वर ने सैहून को शांति दिई
उस के सारे उजाड़ स्थानों को शांति दिई है और उस ने उस
का बन अदन की नाईं और उस के शून्यस्थान परमेश्वर की
वाटिका की नाईं बनाया है आनन्द और आल्हाद उस में
पाया जायेगा धन्यवाद और स्तुति का शब्द॥

४ हे मेरी जाति मेरी ओर कान धर और हे मेरे जातिगण

मेरी ओर कान लगा क्योंकि व्यवस्था मेरी ओर से जायेगी और
मैं अपना न्याय जातिगणों की ज्योति के लिये स्थिर रक्खूंगा॥
५ मेरा धर्म्म निकट है मेरी मुक्ति चल निकली है और मेरी
भुजा जातिगणों का न्याय चुकायेगी टापू मेरी बाट जोहेंगे और
मेरी भुजा की आशा करेंगे॥
६ अपनी आंखें स्वर्ग की ओर उठाओ और नीचे पृथिवी की
ओर दृष्टि करो क्योंकि स्वर्ग धूंए के समान मिट जायेंगे और
पृथिवी वस्त्र की नाईं पुरानी हो जायेगी और उस के बासी
उसी रीति से नष्ट होंगे पर मेरी मुक्ति सनातन लों ठहरेगी
और मेरा धर्म्म लोप न होगा॥
७ हे धर्म्म के जाननेहारो मेरी सुनो हे जाति जिस के हृदय
में मेरी व्यवस्था है दुर्गत मनुष्य की निन्दा से मत डरो और
८ उन की अपनिन्दों से व्याकुल न हो। क्योंकि वस्त्र की नाईं
कीड़ा उन्हें चाट लेगा और ऊर्णवस्त्र की नाईं कृमि उन्हें खा
लेगा पर मेरा धर्म्म सनातन लों रहेगा और मेरी मुक्ति पीढ़ी से
पीढ़ी लों॥
९ जाग जाग बल से विभूषित हो हे परमेश्वर की भुजा अगिले
दिनों और प्राचीन पीढ़ियों की नाईं क्या तू वही नहीं है जिस
ने रहब को काट डाला और अजगरों को घायल कर दिया।
१० क्या तू वुह नहीं है जिस ने समुद्र को बड़े गहिराव के पानी को
सुखा डाला जिस ने समुद्र के गहिराव को छुड़ाये हुओं के पार
जाने के लिये मार्ग कर दिया॥
११ और परमेश्वर के मोल लिये हुए लोग फिरेंगे और ललकारते
हुए सैहून में आवेंगे और सनातन का आनन्द उन के सिरों
पर होगा और आनन्द और आल्हाद उन्हें मिलेगा और शोक
और बिलाप भाग गया॥
१२ मैं मैं वही हूं जो तुम्हें शांति देता हूं तू कौन है जो

दुर्गत मनुष्य से जो मरेगा डरता है और मनुष्य के पुत्र से
१३ जो घास के समान किया जायेगा। और परमेश्वर अपने कर्त्ता
को भूला है जो स्वर्गों का फैलानेहारा और पृथिवी की नेव
डालनेहारा है और सदा प्रतिदिन अंधेरी के कोप के आगे से
डरता रहा जब वुह नाश करने के लिये लैस होता था और
१४ अब अंधेरी का कोप कहां है। झुका हुआ वुह निर्बंध होने
के लिये शीघ्र करता है और वुह गढ़हे में न गिरेगा और उस
१५ की रोटी न घटेगी। और मैं परमेश्वर तेरा ईश्वर हूं समुद्र को
धीमा करनेहारा जब उस की लहरें घूमधाम करती हैं सेनाओं
१६ का परमेश्वर उस का नाम है। और मैं ने अपनी बातें तेरे
मुंह में डाली हैं और तुझे अपने हाथ की छाया तले ढांपा
है जिसतें तू स्वर्गों को लगाये और पृथिवी की नेव डाले और
सैहून से कहे कि तू मेरी जाति है॥

१७ अपने को जगा अपने को जगा खड़ी हो हे यरूसलम तू
जिस ने परमेश्वर के हाथ से उस के कोप का कटोरा पीया है
तू ने लड़खड़ाहट के कटोरे का तलछट पीया तू ने उन्हें
१८ निचोड़ा है। उन सारे बेटों में से जिन्हें वुह जनी कोई
उस की अगुआई करनेहारा नहीं है और उन सारे लड़कों में
से जिन्हें उस ने पाला कोई उस का हाथ पकड़नेहारा नहीं
१९ है। ये दो बातें तुझ पर आनेहारी हैं कौन तेरे लिये
बिलाप करेगा उजाड़ और नाश और अकाल और खड्ग मुझे
२० छोड़ कौन तुझे शांति देगा। तेरे बेटे मूर्छित हैं सारे
मार्गों के सिरे पर पड़े हैं जंगली बैल के समान फन्दे में परमेश्वर
के कोप से तेरे ईश्वर के दपट से भरे हुए॥

२१ इस लिये हाय कि तू यह सुन हे दुखित और मतवाली
२२ पर मदिरा से नहीं। तेरा प्रभु परमेश्वर और तेरा ईश्वर यों कहता
है वुह अपनी जाति की सहाय करेगा देख मैं ने तेरे हाथ से

लड़खड़ाने का कटोरा अपने कोप के कटोरे का तलछट ले लिया
२३ है तू फिर कभी उसे न पीयेगी। और उसे तेरे दुख देनेहारों के
हाथ में जिन्हों ने तेरे प्राण से कहा कि झुक जा जिस्तें हम
पार हो जायें और तू ने पार जानेहारों के लिये अपनी पीठ
भूमि की नाईं और मार्ग के नाईं रक्खी ॥

बावनवां पर्ब्ब ।

१ जाग जाग अपना बल पहिन ले हे सैहून अपने सिङ्गार के
बस्त्र पहिन ले हे यरूसलम पवित्र नगर क्योंकि तुझ में कोई
२ अख़तनिक और अपवित्र मनुष्य कभी फिर न आयेगा। अपनी
धूल झाड़ दे खड़ी हो बैठ जा हे यरूसलम अपने गले के
बंधनों को खोल दे हे सैहून की बंधुवी कन्या ॥
३ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि तुम सेंत में बेचे गये
४ और बिना दाम के छुड़ाये जाओगे। क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों
कहता है कि आरंभ में मेरी जाति मिस्र में वहां यात्री के समान
रहने के लिये उतर गई और असूर ने अकारण उस पर अन्धेर
५ किया। और मेरा यहां क्या है परमेश्वर कहता है कि मेरी
जाति सेंत से ले लिई गई उस के राज्य करवैया ललकारते हैं
परमेश्वर कहता है और प्रतिदिन मेरे नाम की निन्दा किई
६ जाती है। इस लिये मेरी जाति मेरा नाम जानेगी इस लिये
उसी दिन जानेगी कि मैं वही हूं जो कहता हूं कि मुझे देख ॥
७ पहाड़ों पर मंगल सुनानेहारे के पांव क्या ही सुन्दर हैं जो
कुशल का प्रचार करता है भलाई का संदेश देता है मोक्ष
का उपदेश करता है सैहून से कहता है कि तेरा ईश्वर राज्य
८ करता है। तेरे रखवालों का शब्द वे शब्द उठाते हैं एक
साथ ललकारेंगे क्योंकि आंख से आंख मिलाके वे देखेंगे जब
९ परमेश्वर सैहून में फिर आवेगा। आनन्द में फूट निकलो

मिलके शब्द करो हे यरूसलम के खंडहरो क्योंकि परमेश्वर ने
अपनी जाति को शांति दिई उस ने यरूसलम को मुक्ति दिई
१० है । परमेश्वर ने अपनी पवित्र भुजा को समस्त जातिगणों की
दृष्टि में उघारा है और पृथिवी के सारे सिवानों ने हमारे ईश्वर
की मुक्ति को देखा है ॥
११ अलग होओ अलग होओ वहां से निकलो अपवित्र को मत
छूओ उस के मध्य से निकलो अपने को पवित्र करो हे परमेश्वर
१२ के हथियार के उठानेहारो । क्योंकि तुम शीघ्रता के संग न
निकलोगे और भागने के समान न चलोगे क्योंकि परमेश्वर
तुम्हारे आगे आगे चलता है और इसराएल का ईश्वर तुम्हारे
पीछे पीछे चलेगा ॥
१३ देखो मेरा दास बुद्धिमानी करेगा ऊंचा होगा अपने को
१४ उठायेगा और बहुत ऊंचा होगा । जैसा बहुतेरे तुझे देखके
आश्चर्य्यित हुए वैसा ही उस का रूप ऐसा बिगड़ गया कि
मनुष्य नहीं रहा और उस की मूर्त्ति कि मनुष्य के बेटों में
१५ से नहीं है । वैसा वुह बहुत से जातिगणों पर छिड़केगा राजा
उस के बिषय अपना मुंह बंद करेंगे क्योंकि जो उन से
बर्णन नहीं किया और जो उन्हों ने नहीं सुना उसे उन्हों ने
जान लिया ॥

तिरपनवां पर्ब्ब ।

१ कौन हमारे संदेश पर बिश्वास लाया और परमेश्वर की भुजा
२ किस पर प्रगट हुई । और वुह उस के आगे कोंपल की नाईं
बढ़ा और जड़ की नाईं सूखी भूमि से उस में न कुछ डौल था
और न सुन्दरता और जब हम उसे देखेंगे तब कुछ रूप नहीं
३ कि हम उसे चाहें । वुह निन्दित किया गया और मनुष्यों से
त्यक्त दुखों का मनुष्य और शोक से परिचित और हम से

अपना मुंह छिपाऊ की नाईं निन्दित किया गया और हम
४ उसे कुछ लेखे में न लाये। निश्चय उस ने हमारे रोग उठा
लिये और हमारे दुख ले गया और हम ने उसे प्रहारित
५ ईश्वर का मारा कूटा और दुखाया हुआ समझा। और वुह
हमारे अपराधों के लिये छेदा गया हमारी बुराइयों के कारण
से कुचला गया हमारे कुशल के लिये उस पर ताड़ना हुई
६ और उस के मार खाने से हम चंगे हो गये। हम सब के सब
भेड़ों की नाईं भटक गये थे हम्में से हर एक अपने अपने
मार्ग पर फिर गया था और परमेश्वर ने हम सभों का कुकर्म्म
७ उस पर लाद दिया। वुह क्लेशित था और आप अपने को दुख में
डाला और वुह अपना मुंह न खोलेगा जैसा मेम्ना घात के
लिये पहुंचाया जाता है और जैसे भेड़ अपने रोम कटवैये के
८ आगे चुपचाप रहती है वैसा ही वुह अपना मुंह न खोलेगा। वुह
अंधेर और विचार से लिया गया और उस की पीढ़ी में कौन
सोच करेगा कि वुह मेरी जाति के अपराध के कारण से जीवतों
की भूमि से काट डाला गया जिसतें उस के लिये दण्ड हो।
९ और उस की समाधि दुष्टों के साथ ठहराई गई पर वुह अपनी
मृत्यु के समय धनवान के संग रहा क्योंकि उस ने कुछ
१० अनुचित न किया और न उस के मुंह में छल था। और
परमेश्वर को अच्छा लगा कि उसे कुचल डाले उस ने उसे
काष्टित किया जब उस का प्राण प्रायश्चित्त का वलि करेगा तो
वुह अपने वंश को देखेगा अपनी आयुर्दा को बढ़ावेगा और
११ परमेश्वर का मनोरथ उस के हाथ में फलेगा। वुह अपने प्राण
की पीड़ा का फल देखेगा और संतुष्ट होगा मेरा धर्म्मी सेवक
अपने ज्ञान से बहुतों को धर्म्मी ठहरावेगा और वुह आप उन
१२ की बुराइयों को उठा लेगा। इस लिये मैं उस को बहुतेरों के
साथ भाग देऊंगा और बलवंतों के साथ वुह लूट का भाग

लेगा इस के बदले कि उस ने अपने प्राण को मृत्यु के लिये नंगा
कर दिया और वुह अपराधियों के साथ गिना गया और उस
ने आप बहुतों का पाप उठा लिया और अपराधियों के लिये
बिन्ती करेगा ॥

चौवनवां पर्ब्ब ।

१ हे बांझ जो न जन्ती थी आनन्द कर हे तू कि जंने की
पीड़ा में न थी आनन्द में फूट निकल क्योंकि अनाथ के बालक
२ बिवाहिता के बालकों से अधिक हैं परमेश्वर कहता है। अपने
तंबू के स्थान को चौड़ा कर दे और तेरे निवासों को फैला दें मत
रोक अपनी रस्सियों को लम्बी कर और अपने खूंटों को दृढ़
३ कर। क्योंकि तू दहिने और बायें फूट निकलेगी और तेरे बंश
जातिगणों के अधिकार प्राप्त करेंगे और उजाड़ नगरों को
४ बसावेंगे। मत डर क्योंकि तू लज्जित न होगी संकोचित मत
हो क्योंकि तू अपमानित न किई जायेगी क्योंकि तू अपनी
तरुणाई की लाज को भूलेगी और अपने रंडापे के अपमान को
५ फिर स्मरण न करेगी। क्योंकि तेरा पति तेरा कर्त्ता है सेनाओं
का परमेश्वर उस का नाम है और तेरा मुक्तिदाता इसराएल
६ का धर्ममय है वुह सारी पृथिवी का ईश्वर कहा जायेगा। क्योंकि
त्यक्त किई हुई और दुखित स्त्री की नाईं परमेश्वर ने तुझे
बुलाया और युवावस्था की स्त्री की नाईं क्योंकि वुह त्यक्त
७ किई जायेगी परमेश्वर ने कहा है। एक पल भर के लिये मैं
ने तुझे त्यागा और बड़ी दया के साथ तुझे बटोर लूंगा।
८ क्रोध की बाढ़ में एक पलमात्र के लिये मैं ने अपना मुंह तुझ
से छिपा लिया और सनातन की दया के साथ मैं ने तुझ पर
९ दया किई परमेश्वर तेरा मुक्तिदाता कहता है। क्योंकि यह मेरे
निकट नूह का प्रलय है जो मैं ने किरिया खाई कि नूह

का पानी पृथिवी पर फिर न होगा वैसा ही मैं ने किरिया
खाई कि तुझ पर फिर कोप न करूंगा और तुझे न डपटूंगा।
१० क्योंकि पहाड़ सरक जायेंगे और पहाड़ियां हिल जायेंगी पर मेरी
दया तेरे पास से न सरकेगी और न मेरे कुशल की बाचा हिलेगी
परमेश्वर तेरा दया करनेहारा कहता है॥
११ हे दुखित आंधी की मारी हुई और शांति रहित देख मैं
तेरे पत्थरों को सुरमे में डालता हूं और तेरी नेवें नीलमणि
१२ पर डालूंगा। और मैं तेरी मुंडेरों को बैदूर्य्य बनाऊंगा और तेरे
फाटकों को चमकनेहारे मणि और तेरी चारों ओर की भीत
१३ महंग मोल पत्थर। और तेरे सारे लड़के परमेश्वर के सिखाये
१४ हुए होंगे और तेरे लड़कों का बड़ा कुशल होगा। तू धर्म्म
में दृढ़ किई जायेगी अंधेर के भय से दूर रहेगी क्योंकि तुझ
पर भय न होगा और नाश से क्योंकि तेरे पास न आवेगा।
१५ देख वे एकट्ठे एकट्ठे होंगे परन्तु मेरे शयन से नहीं कौन तेरे
१६ बिरोध में एकट्ठा हुआ वुह तेरे पास गिरेगा। देख मैं ने लोहार
को सृजा जो कोएलों को आग में फूंकता है और हथियार
अपने कार्य्य के लिये निकालता है और मैं ने नाशक को उजाड़
१७ करने के लिये सृजा। कोई हथियार जो तेरे बिरोध में बनाया
गया सो न फलेगा और हर जीभ को जो बिचार में तेरे बिरोध
खड़ी होगी तू दोषी ठहरायेगा यह परमेश्वर के दासों का
अधिकार है और उन का धर्म्म मेरी ओर से परमेश्वर कहता है॥

पचपनवां पर्व्व।

१ हे हर एक प्यासे जल के पास आओ और वुह जिस के
पास रोकड़ नहीं आओ मोल लेओ और खाओ और आओ
बिना रोकड़ और बिना दाम दाखरस और दूध मोल लेओ।
२ तुम किस लिये रोकड़ उस के लिये तौला चाहते हो जो रोटी

नहीं है और अपनी कमाई उस के लिये जिस्से जी नहीं भरता
है सुनो मेरी सुनो और अच्छा खाओ और तुम्हारा प्राण अपने
३ को चिकनाई में आनन्दित करे। अपना कान झुकाओ और
मेरे पास आओ सुनो और तुम्हारा प्राण जीता रहे और मैं
तुम्हारे साथ सनातन की बाचा बांधूंगा अर्थात् उन दृढ़
४ अनुग्रहों की बाचा जो दाऊद से किई गई थी। देखो मैं ने
उसे देशगणों का साची ठहराया है जातिगण का अगुवा और
आज्ञाकारी ॥

५ देख तू एक जातिगण को जिसे नहीं जानता बुलावेगा और
वे जातिगण जो तुझे नहीं जानते तेरी ओर दौड़ेंगे परमेश्वर
तेरे ईश्वर के कारण और इसराएल के धर्ममय के लिये क्योंकि
उस ने तुझे महान किया है ॥

६ परमेश्वर को ढूंढो जब लों कि मिल सक्ता है उसे पुकारो
७ जब कि निकट है। दुष्ट अपने मार्ग को छोड़ दे और बुराई
का मनुष्य अपनी भावनाओं को और परमेश्वर की ओर फिरे
और वुह उस पर दया करेगा और हमारे ईश्वर की ओर और
८ वुह बहुताई से चमा करेगा। क्योंकि मेरी चिन्ताएं तुम्हारी
चिन्ताएं नहीं हैं और न मेरे मार्ग तुम्हारे मार्ग हैं परमेश्वर
९ कहता है। क्योंकि जैसे स्वर्ग पृथिवी से ऊंचे हैं वैसे ही मेरे
मार्ग तुम्हारे मार्गों से और मेरी चिन्ताएं तुम्हारी चिन्ताओं से
१० ऊंची हैं। क्योंकि जैसा कि बर्षा और पाला आकाश से गिरते
और उधर फिर नहीं जाते जब लों कि पृथिवी को न सींचें
और उसे फलवती करें और उस्से उगायें और बोवैये को बीज
११ और खवैये को रोटी देवें। वैसा ही मेरा बचन होगा जो मेरे
मुंह से निकलता है वुह मेरे पास छूछा न फिरेगा जब लों
उसे न करे जो मैं ने चाहा और उस में सुफल न हो जिस के
१२ लिये मैं ने उसे भेजा। क्योंकि तुम आनन्द के साथ निकलोगे

ओर कुशल के साथ पहुंचाये जाओगे पहाड़ ओर पहाड़ियां
तुम्हारे आगे ललकार में फूट निकलेंगी ओर खेत के सारे पेड़
१३ तालियां बजावेंगे। कांटों के झाड़ की संती सरो का बृक्ष
उगेगा ओर बिछुए की संती मेंहदी ओर यह परमेश्वर के
निकट नाम के लिये होगा सनातन के चिन्ह के लिये जो
काटा न जायेगा॥

छप्पनवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर यों कहता है कि न्याय को धारण करो ओर धर्म्म
को काम में लाओ क्योंकि मेरी मुक्ति आने के समीप है ओर
२ मेरा धर्म्म प्रगट होने के लिये। क्या ही धन्य वुह मनुष्य
जो यह करेगा ओर मनुष्य का पुत्र जो इसे दृढ़ता से धारण
करेगा बिश्राम को पालन करते हुए कि उसे अशुद्ध न करे ओर
अपना हाथ सारे कुकर्म्म करने से खैंचते हुए॥

३ ओर परदेशी का पुत्र जो परमेश्वर से मिल गया यह न
कहे कि परमेश्वर मुझे अपनी जाति से सर्व्वथा अलग करेगा
४ ओर नपुंसक न कहे कि देखो में सूखा बृक्ष हूं। क्योंकि उन
नपुंसकों के बिषय जो मेरे बिश्राम को पालन करते हैं ओर
जिस्से मैं प्रसन्न हूं उसे चाहते हैं परमेश्वर यों कहता है।
५ कि मैं उन्हें अपने घर में ओर अपनी भीतों में स्थान ओर नाम
बेटों ओर बेटियों से अच्छा देऊंगा सनातन का नाम मैं उसे
६ देऊंगा जो काटा न जायेगा। ओर परदेशी के बेटे जो आप
को परमेश्वर से मिला देते हैं जिसतें उस की सेवा करें ओर परमेश्वर
के नाम को प्यार करें कि उस के सेवक हो जायें हर एक बिश्राम
दिन का पालन करनेहारा कि उसे अशुद्ध न करे ओर मेरी बाचा
७ को दृढ़ता से पकड़नेहारे। सो मैं उन्हें अपने पवित्र पहाड़ पर
पहुंचाऊंगा ओर उन्हें अपने प्रार्थनागृह में आनन्दित करूंगा

उन के होम की भेंटें और उन के बलिदान मेरी यज्ञबेदी पर
ग्राह्य होंगे क्योंकि मेरा घर सारे जातिगणों का प्रार्थना का घर
८ कहा जायेगा। प्रभु परमेश्वर इसराएल के निकाले हुओं का
एकट्ठा करनेहारा यों कहता है कि उस के बटोरे हुओं के
अधिक मैं उस पर और भी बटोरूंगा॥

९ हे बन के सारे पशुओ भक्षण करने के लिये आओ हे जंगल के
१० सारे बनैले पशुओ। उस के रखवाले सब के सब अंधे हैं वे
नहीं जानते वे सब के सब गूंगे कुत्ते हैं वे भूंक नहीं सक्ते
११ स्वप्न देखते लेट जाते ऊंघने को प्यार करते हैं। और वे कुत्ते
मरभुक्खे हैं तृप्त को नहीं जानते और गड़रिये आप चौकसी
करने नहीं जानते वे सब के सब अपने अपने मार्ग की ओर
झुके हर एक अपने अपने स्वारथ की ओर अपने ठिकाने से।
१२ हर एक कहता है कि आओ मैं मदिरा लाऊंगा और हम अमल
से अपने को मद्यपान में डालेंगे और कल आज के दिन की
नाईं होगा बड़ा हां अधिक बड़ा॥

सत्तावनवां पर्ब्ब।

१ धर्म्मी नाश होता है और कोई मनुष्य उसे सोच में नहीं
लाता और दया करनेहारे मनुष्य उठा लिये जाते जब कोई
नहीं सोचता कि धर्म्मी बिपत्ति के साम्हने से उठा लिया जाता
२ है। वुह कुशल में प्रवेश करेगा वे अपने बिछौनों पर चैन करेंगे
हर एक सीधा अपने साम्हने चलनेहारा॥

३ और तुम यहां निकट आओ हे टोनहिन के बेटो छिनलो
४ और छिनाल के बंश। तुम किस्से अपने को आनन्दित करते
हो किस पर मुंह फैलाते जीभ निकालते हो क्या तुम पाप के
५ बालक नहीं मिथ्या के बंश। अपने को मूर्त्तों के मध्य हर एक
हरे पेड़ के नीचे जलाते हो तराइयों में चटानों की कंदरों

६ में बालकों को घात करते हो। नाले के चिकने पत्थरों के
मध्य तेरा अंश है वे वेही तेरे भाग हैं हां उन के लिये तू
ने तर्पण किया है तू ने अर्पण किया क्या मैं ऐसे कार्य्यों के
७ विषय शांति पाऊंगा। अति ऊंचे पर्वत के ऊपर तू ने अपना
बिछौना बिछाया है हां वहां बलिदान करने के लिये तू चढ़ा
८ है। और द्वार और चौखट के पिछवाड़े तू ने अपने स्मरण
का चिन्ह स्थापन किया क्योंकि मुझ से अलग तू ने अपने को नंगा
किया और तू खाट पर चढ़ गई अपने बिछौने को फैलाया
और उन से बाचा बांधी तू ने उन के बिछौने को प्रीति रक्खा
९ स्थान सिद्ध किया है। और तू राजा के पास तेल लगाके
गई और अपने को भली रीति से सुगन्धित किया और अपने
१० दूतों को बहुत दूर भेजा और नीचे पाताल लों गई। तू अपने
मार्ग की अधिकाई में थक गई पर तू ने नहीं कहा कि कुछ
आशा नहीं तू ने अपने हाथ का जीवन पाया इस लिये तू
११ निर्बल नहीं हो गई। और तू किस्से भयमान हुई और डरी
कि झूठ बोली और तू ने मुझे स्मरण नहीं किया और अपने
मन में नहीं रक्खा क्या इस लिये नहीं कि मैं चुपका रहा हां
१२ बहुत दिन से कि तू मुझ से न डरेगी। मैं तेरे धर्म्म और
तेरे कार्य्य बतलाऊंगा और वे तुझे कुछ लाभ न पहुंचायेंगे।
१३ जब तू पुकारे तब तेरे लाभ की वस्तें तुझे छुड़ावें पर पवन
उन सभों को उड़ा ले जायेगा और स्वास ले जायेगी और जो
मुझ पर भरोसा रखता है वुह देश को प्राप्त करेगा और मेरे
१४ पवित्र पहाड़ का अधिकारी होगा। और वुह कहेगा कि ऊंचा
करो ऊंचा करो मार्ग सिद्ध करो ठोकर खिलानेहारी वस्तु मेरी
जाति के मार्ग से उठा ले जाओ॥

१५ क्योंकि ऊंचा और अति महान सनातन का निवास करनेहारा
और उस का नाम धर्ममय है यों कहता है कि मैं ऊंचे पर

और पवित्र रहूंगा और कुचले हुए और दीन आत्मावाले के
साथ जिसतें दीनों के आत्मा को उभाडूं और कुचले हुओं के
१६ अंतःकरण को जिलाऊं। क्योंकि मैं सदा लों अपवाद न करूंगा
और सदा लों कोप न रक्खूंगा क्योंकि आत्मा मेरे आगे से
१७ मूर्छा में आ गया और वे प्राण जो मैं ने बनाए। उस के लोभ
की बुराई के कारण से मैं कोप में हूं और उसे मारूंगा आप
को छिपाऊंगा और कोप में रहूंगा क्योंकि वुह अपने मन के
१८ मार्ग पर भटकके चला गया। मैं ने उस की चालों को देखा और
उसे चंगा करूंगा और उस का अगुआ होऊंगा और उस को
१९ और उस के विलापियों को फिर शांति देऊंगा। कि मैं होंठों
के फल का उत्पन्न करनेहारा कुशल कुशल दूर को और समीप
को परमेश्वर कहता है और मैं उसे चंगा करता हूं॥
२० और दुष्ट तरंगित समुद्र के समान हैं क्योंकि वुह स्थिर
नहीं हो सक्ता और उस के जल चहला और कीचड़ उछालते
२१ हैं। मेरा ईश्वर कहता है कि दुष्टों के लिये कुशल नहीं
है॥

अट्ठावनवां पर्ब्ब।

१ गला फाड़के चिल्ला ठहर मत तुरही के समान अपना शब्द
उठा और मेरी जाति को उन के अपराध और इसराएल के
२ घराने को उन के अपराध बतला। और वे प्रति दिन मुझे
ढूंढते हैं और मेरे मार्गों की पहिचान चाहते हैं उस जाति के
समान जिस ने धर्म्म का कार्य्य किया और अपने ईश्वर की
विधिन को नहीं छोड़ा है वे धर्म्म की विधिन के विषय में
३ मुझ से पूछेंगे ईश्वर के निकट आने से आनन्दित हैं। हम किस लिये
ब्रत करते हैं और तू नहीं देखता अपने प्राण को कष्टित करते
हैं और तू नहीं जानता देखो तुम अपने ब्रत के दिन में

आनन्द पाते हो और अपने सब काम अंधेर से लेते हो।
४ देखो लड़ाई और झगड़े के कारण तुम ब्रत रखते हो और
जिसतें दुष्टता के घूंसे मारो तुम आज के दिन ब्रत न रक्खोगे
५ कि ऊंचे पर अपना शब्द सुना दो। क्या इस के समान वुह
होगा जिसे मैं चुनूंगा वुह दिन जिस में मनुष्य अपने प्राण को
दुख दे क्या झाऊ की नाईं अपना सिर झुकाना और टाट और
राख बिछाये क्या तू इसे ब्रत और परमेश्वर के लिये प्रसन्नता का
दिन कहेगा॥
६ क्या यह वुह ब्रत नहीं जिसे मैं चुनूंगा कि दुष्टता के
बंधनों को खोल दे जुए की रस्सियों को तोड़ डाले और पिसे
हुओं को निर्वन्ध करे और हर एक जूए को तुम तोड़ डालो।
७ क्या यह नहीं कि अपनी रोटी भूखे को खिलाये और दुखियों
और अनाथों को घर में लाओ क्योंकि तू नंगे को देखेगा और
उसे पहिनावेगा और अपने मांस से आप को न छिपावेगा॥
८ तब तेरी ज्योति प्रातःकाल के समान फूट निकलेगी और
तेरे घाव शीघ्र चंगे होंगे और तेरा धर्म्म तेरे आगे आगे चलेगा
९ और परमेश्वर का तेज तेरे पीछे पीछे चलेगा। तब तू पुकारेगा
और परमेश्वर उत्तर देगा तू दुहाई देगा और वुह कहेगा कि
मुझे देख यदि तू अपने मध्य में से जूए को और अंगुली
१० दिखाने को और कुबचन बोलने को दूर करेगा। और यदि तू
अपना प्राण भूखों को देगा और दुखित प्राण को संतुष्ट करेगा
तब तेरी ज्योति अंधकार में उदय होगी और तेरा अंधकार
११ मध्यान्ह के समान। और परमेश्वर सदा तेरी अगुआई करेगा
और झुराहट के समय में तेरे प्राण को संतुष्ट करेगा और तेरी
हड्डियों को बली करेगा और तू सींची हुई बाटिका के और
पानी के सोते के समान जिस के जल कधी न घटेंगे होगा।
१२ और तुझ से निकलके वे पुराने खंडहरों को बना डालेंगे और

तू पुरातन की नेवों को उठावेगा और तू टूटी हुई भीत का
सुधारक और बसने के लिये पथों का बनवैया कहावेगा ॥
१३ यदि तू बिश्राम के दिन से अपना पांव फिराये कि अपना
अभिलाष मेरे पवित्र दिन में न करे और बिश्राम के दिन को
आनन्द और परमेश्वर के पवित्र दिन को प्रतिष्ठित कहे
और उसे प्रतिष्ठित करे कि अपने काम काज न करे और अपने
१४ अभिलाष को न पावे और बृथा बात चीत न करे। तब तू
परमेश्वर में अपने को आनन्दित करेगा और मैं तुझे पृथिवी के
ऊंचे स्थानों पर चढ़ाऊंगा और तुझे तेरे पिता यअकूब का
अधिकार खिलाऊंगा क्योंकि परमेश्वर के मुख ने बचन कहा
है ॥

उनसठवां पर्ब्ब ।

१ देखो परमेश्वर का हाथ बचाने से छोटा नहीं है और उस
२ का कान सुन्ने से भारी नहीं है। परन्तु तुम्हारी बुराइयां
तुम्हारे और तुम्हारे ईश्वर में बिभाग डालती रहीं और तुम्हारे
पापों ने उस का मुंह तुम से छिपा दिया ऐसा कि वुह नहीं
३ सुनता। क्योंकि तुम्हारे हाथ लोहू से और तुम्हारी अंगुलियां
बुराई से अशुद्ध हैं तुम्हारे होंठों ने झूठी बातें किई और
तुम्हारी जीभ दुष्टता वर्णन करेगी ॥
४ कोई धर्म्म के साथ बिवाद नहीं करता और सच्चाई के
साथ नहीं लड़ता वे तुच्छ पर भरोसा रखते हैं और झूठी बातें
५ करते हैं उन्हें बुराई का गर्भ है और वे पाप जनते हैं। उन्हों
ने नाग के अंडों को सेया है और मकड़ी के जालों को बिनेंगे
जो उन के अंडों में से कुछ खाता है वुह मरेगा और कुचले
६ हुए अंडे से सपोला सेया जायेगा। उन के जाले वस्त्र के लिये
न होंगे और वे अपने कामों से अपने को न छिपायेंगे उन के

कार्य्य अधर्म्म के कार्य्य हैं और अंधेर का कार्य्य उन के हाथों
७ में है। उन के पांव बुराई की ओर दौड़ेंगे और वे निर्दोष
लोहू बहाने के लिये शीघ्रता करेंगे उन की चिन्ताएं बुराई
८ की चिन्ताएं हैं नाश और बिपत्ति उन के मार्गों में हैं। उन्हों
ने कुशल के मार्ग को नहीं जाना और उन के मार्गों में न्याय
नहीं है उन्हों ने अपने लिये अपने मार्ग टेढ़े कर दिये हर
एक उन में चलनेहारा कुशल को नहीं जानता॥
९ इस लिये न्याय हम से दूर है और धर्म्म हमें न पहुंचेगा
हम ज्योति की बाट जोहते हैं परन्तु देखो अंधकार जगमगाहटों
१० की परन्तु अंधियारे में चलते हैं। हम अंधों की नाईं भीत को
टटोलते हैं और उन की नाईं जिन के आंख नहीं टटोलते हैं हम
मध्यान्ह को मानो संध्याकाल की नाईं ठोकर खाते हैं और अति
११ अंधकार में मृतकों की नाईं। हम सब के सब भालुओं की
नाईं गर्जते हैं और पिण्डुकों की नाईं कू कू करते हैं हम न्याय
की बाट जोहते हैं परन्तु नहीं है और मुक्ति की पर वुह हम से
दूर है॥
१२ क्योंकि हमारे अपराध तेरे आगे बढ़ गये हैं और हमारे
ही पाप हम पर साक्षी देते हैं क्योंकि हमारे पाप हमारे साथ
१३ हैं और हम अपनी बुराइयों को जानते हैं। पाप करना
परमेश्वर के बिरुद्ध झूठ बोलना और हमारे ईश्वर के पीछे से
फिर जाना अंधेर और भटक जाने की बातें करना और मन
१४ से मिथ्या बातों का गर्भ रहना और उच्चारना। और बिचार
पीछे हटाया गया और धर्म्म दूर से खड़ा रहता है क्योंकि
सत्य सड़क में गिर पड़ा है और खराई प्रवेश नहीं हो सक्ती।
१५ तब सत्यता लुप्त हो गई और बुराई से अलग होनेहारे ने
अपने को लूट ठहराया तब परमेश्वर ने देखा और उस की
१६ दृष्टि में बुरा था कि कुछ न्याय नहीं है। और उस ने देखा

कि कोई मनुष्य नहीं है और अति शोकित हुआ कि कोई
बिचवई नहीं और उसी की भुजा ने उस के लिये बचाया और
१७ उस का धर्म्म उसी ने उसे संभाला। और उस ने धर्म्म को
झिलम की नाईं पहिन लिया और मुक्ति का टोप अपने सिर
पर और उस ने बस्त्र के लिये पलटा लेने के पहिरावे पहिन
१८ लिये और ज्वलन को उत्तरीय बस्त्र की नाईं ओढ़ा। उन के कार्य्यन
के समान उन्हीं के नाईं वुह प्रतिफल देगा कोप अपने बैरियों के
लिये प्रतिफल अपने बैरियों के लिये टापुओं को वुह पूरा प्रतिफल
१९ देगा। और पश्चिम के बासी परमेश्वर के नाम से डरेंगे और
पूरब के निवासी उस की महिमा से क्योंकि सकरी नदी की
नाईं वुह आवेगा जब परमेश्वर का आत्मा झंडा खड़ा करता है।
२० तब सैहून के लिये और यअकूब में अधर्म्म से पश्चात्ताप
२१ करनेहारों के लिये मुक्तिदाता आवेगा परमेश्वर कहता है। और
मैं जो हूं उन के साथ मेरी यह बाचा है परमेश्वर कहता है कि
मेरा आत्मा जो तुझ पर है और मेरी बातें जो मैं ने तेरे मुंह
में डाली हैं तेरे मुंह से और तेरे बंश के मुंह से और तेरे
बंश के बंश के मुंह से इस समय से सनातन लों जाती न
रहेंगी परमेश्वर कहता है॥

साठवां पर्ब्ब।

१ उठ ज्योतिमान हो क्योंकि तेरी ज्योति आ गई और
२ परमेश्वर का तेज तुझ पर उदय हुआ। क्योंकि देख अंधकार
पृथिवी को ढांप लेगा और अंधियारी अन्यदेशियों को और तुझ
पर परमेश्वर उदय होगा और उस का तेज तेरे ऊपर देखा
३ जायेगा। और देशगण तेरी ज्योति में चलेंगे और राजगण तेरे
उदय की चमक में॥

४ अपनी आंखें चारों ओर उठा और देख वे सब के सब

एकट्ठे हो गये तेरे पास आते हैं तेरे बेटे दूर से आवेंगे और
५ तेरी बेटियां गोद में उठाई जायेंगी। तब तू देखेगी और
ज्योतिमय होगी और तेरा अंत:करण हिलेगा और बढ़ जायेगा
क्योंकि समुद्र का धन तुझ पास लौटा दिया जायेगा जातिगणों
६ का बल तुझ में आवेगा। ऊंटों का झुंड तुझे ढांपेगा मिद्यान
और ऐफ़ा की सांड़नियां वे सब के सब सिबा से आवेंगे सोना
और लोबान लावेंगे और परमेश्वर की स्तुति का प्रचार करेंगे।
७ क़ीदार के सारे झुंड तेरे लिये एकट्ठे होंगे नबायूत के मेंढ़े
तेरी सेवा करेंगे वे ग्राह्य के साथ मेरी यज्ञबेदी पर चढ़ेंगे
और मैं अपनी शोभा के घर को शोभित करूंगा॥
८ ये कौन हैं जो मेघ की नाईं उड़ते हैं और कपोतों की
९ नाईं अपनी खिड़कियों की ओर। क्योंकि टापू मेरी बाट जोहते
हैं और तरसीस के जहाज़ पहिले जिसतें तेरे बेटों को दूर से
लावें उन की चांदी और उन का सोना उन के साथ परमेश्वर
तेरे प्रभु के नाम के लिये और इसराएल के धर्म्ममय के लिये क्योंकि
१० उस ने तुझे ऐश्वर्य्यमान किया है। और परदेशियों के बेटे तेरी
भीतों को उठावेंगे और उन के राजा तेरी सेवा करेंगे क्योंकि
मैं ने अपने क्रोध में तुझे मारा और अपने अनुग्रह में तुझ पर
११ दया किई है। और तेरे फाटक नित खुले रहेंगे वे रात दिन
कभी बंद न होंगे कि देशगणों का द्रव्य तुझ पास लावें और
१२ उन के राजा बन्दीगृह में लाये हुए। क्योंकि वुह जाति और
वुह राज्य जो तेरी सेवा न करेंगे सो नाश हो जायेंगे और वे
देशगण सर्वथा नष्ट हो जायेंगे॥
१३ लुबनान का बिभव तुझ पास आवेगा देवदारु सनोवर और
शमशाद एक ही साथ जिसतें अपने पवित्र स्थान को बिभूषित
करूं और मैं अपने चरणों के स्थान को शोभित करूंगा॥
१४ तब तेरे सारे अंधेर करनेहारों के संतान निहुड़े हुए तुझ

पास आवेंगे तब तेरे सारे निन्दा करनेहारे तेरे चरणों के तलवों
के पास प्रणाम करेंगे और तुझे परमेश्वर का नगर सैहून को
१५ इसराएल का धर्ममय कहेंगे । तेरे त्यक्त होने और घिनित
होने की संती जब तुझ में कोई तेरे मध्य जानेहारा न होगा
मैं तुझे सदा की ऊंचाई और सनातन की पीढ़ियों के आनन्द
का कारण बनाऊंगा ॥
१६ और तू जातिगणों का दूध पीयेगी और राजाओं के स्तन
चूस लेगी और तू जानेगी कि मैं परमेश्वर तेरा मुक्तिदाता हूं
और तेरा निस्तारकर्त्ता यअकूब का सामर्थ्यमय ॥
१७ पीतल की संती मैं सोना लाऊंगा और लोहे की संती रूपा
लाऊंगा और काष्ठ की संती पीतल और पत्थरों की संती लोहा
और मैं तेरे राज्य को शांति और तेरे करग्राहकों को धर्म्म
१८ ठहराऊंगा । तेरे देश में आगे को अंधेर न सुना जायेगा
बिनाश और बिपत्ति तेरे सिवाने में और तू अपनी भीतों को
मुक्ति और अपने फाटकों को स्तुति कहेगी ॥
१९ सूर्य्य तेरे लिये फिर दिन की ज्योति के लिये न होगा और
चमक के लिये चन्द्रमा तुझे ज्योति न देगा और परमेश्वर तेरी
सनातन की ज्योति हो जायेगा और तेरा ईश्वर तेरी महिमा ।
२० तेरा सूर्य्य फिर कभी अस्त न होगा और तेरा चन्द्रमा न घटेगा
क्योंकि परमेश्वर तेरी नित्य की ज्योति हो जायेगा और तेरे
बिलाप के दिन जाते रहेंगे ॥
२१ और तेरी जाति सब की सब धर्म्मी होकर सदा लों देश
की अधिकारी रहेगी मेरी लगाई हुई टहनी मेरे हाथों की क्रिया
२२ जिसतें अपना ऐश्वर्य्य प्रगट करूं । एक छोटा सहस्र हो जायेगा
और एक तनिक सा एक बलवन्त जाति मैं परमेश्वर उस के
समय में उसे शीघ्र पहुंचाऊंगा ॥

एकसठवां पर्व्व ।

१ प्रभु परमेश्वर का आत्मा मुझ पर है क्योंकि परमेश्वर ने
मुझे अभिषिक्त किया कि दीनों को मंगलसमाचार सुनाऊं उस
ने मुझे भेजा कि चूर्णअंतःकरणों को बांधूं जिसतें बंधुओं के लिये
मोक्ष का और बंधे हुओं के लिये बन्दीगृह से छुट्टी पाने का
२ प्रचार करूं। कि परमेश्वर के लिये ग्राह्य के बरस की और
हमारे ईश्वर के लिये पलटा लेने के दिन का प्रचार करूं कि
३ सारे शोकितों को शांति देऊं। कि सैहून के बिलापियों को
वस्त्र पहिना दूं कि उन को राख की संती मुकुट आनन्द की
चिकनाहट शोक की संती और स्तुति का वस्त्र मन की उदासी
की संती और वे धर्म्म के बलूत बृक्ष कहे जायेंगे परमेश्वर
के लगाये हुए जिसतें वुह अपने को बिभवमय करे॥
४ और वे सनातन के उजाड़ों को बनावेंगे और प्राचीनों के
उजड़े स्थानों को उठावेंगे और उजड़े हुए नगरों को नया
करेंगे पुरातन के उजाड़ों को॥
५ तब परदेशी खड़े होंगे और तुम्हारे झुंडों को चरावेंगे और
परदेशी के पुच तुम्हारे किसान और अंगूर के माली होंगे।
६ और तुम परमेश्वर के याजक कहलाओगे हमारे ईश्वर के सेवक
कहे जाओगे तुम जातिगणों का धन खाओगे और बदले के
नाई उन के बिभव में प्रवेश करोगे॥
७ तुम अपनी लाज की संती दूना पाओगे और संकोच की
संती वे अपने भाग के लिये आनन्द की ललकार मारेंगे इस
लिये वे अपने देश में दूना अधिकार पावेंगे और उन्हें सदा
का आनन्द होगा॥
८ क्योंकि मैं परमेश्वर न्याय से प्रेम रखता हूं और अनर्थ लूटी
हुई बस्तु से घिन करता हूं और मैं उन के कार्य्य का प्रतिफल

सच्चाई से दूंगा और उन के साथ एक सदा की वाचा बांधूंगा ।
९ तब उन का बंश अन्यदेशियों में और उन के संतान जातिगणों
में प्रसिद्ध होंगे सब जो उन्हें देखेंगे उन को मान लेंगे कि वे
परमेश्वर के आशीर्वादी वंश हैं ॥
१० मैं परमेश्वर से निपट आनन्दित होऊंगा मेरा मन मेरे ईश्वर
से मगन हो क्योंकि उस ने मुक्ति के वस्त्रों से मुझे विभूषित
किया और धर्म्म का बागा उस ने मुझे पहिना दिया है जिस
रीति से दुल्हा अपने याजकीय मुकुट से आप को संवारता
है और जिस रीति से दुल्हिन अपने गहनों से अपने को
११ संवारती है । क्योंकि जिस रीति से पृथिवी अपनी बोई हुई
वस्तु को उगाती है और जिस रीति से बाटिका जो उस में
बोया गया है उसे उगाती है इसी रीति से प्रभु परमेश्वर धर्म्म
और स्तुति को समस्त जातिगणों के साक्षात् उगावेगा ॥

बासठवां पर्व्व ।

१ सैहून के कारण मैं चुप न रहूंगा और यरूसलम के लिये
मैं चैन न लूंगा जब लों कि उस का धर्म्म ज्योति के समान
न चमके और उस की मुक्ति उस दीपक के समान जो बरता
२ है । और देशगण तेरे धर्म्म को देखेंगे और समस्त राजा तेरे
विभव को और तू एक नये नाम से पुकारी जायेगी जिसे
३ परमेश्वर का मुंह उच्चारेगा । और तू परमेश्वर के हाथ में एक सुन्दर
मुकुट होगी और अपने ईश्वर की हथेली पर एक राजकीय अध्यक्ष ॥
४ तू अज़ूबाह अर्थात् छोड़ी हुई फिर न कही जायेगी और
तेरी भूमि शमामाह अर्थात् उजाड़ फिर न कही जायेगी पर
तू हफ़ज़ीबाह अर्थात् मेरा आनन्द उस में है पुकारी जायेगी
और तेरी भूमि बऊलाह अर्थात् बियाही हुई क्योंकि परमेश्वर
तुझ से आनन्दित है और तेरी भूमि ब्याही जायेगी ॥

५ क्योंकि जैसे तरुण मनुष्य कुंवारी को व्याह लाता है इसी रीति
से तेरे बेटे तुझे व्याह लायेंगे और जिस रीति से दुल्हा दुल्हिन
से आनन्दित है उसी रीति से तेरा ईश्वर तुझ पर आनन्दित
होगा॥

६ हे यरूसलम मैं ने तेरी भीतों पर पहरू बैठलाये हैं सारे
दिन और सारी रात वे चुप न रहेंगे हे परमेश्वर के स्मरण
७ दिलानेहारो तुम्हें चैन न हो। और उसे चैन न दो जब लों कि
वुह स्थिर न करे और जब लों कि वुह यरूसलम को पृथिवी
पर स्तुति न ठहराये॥

८ परमेश्वर ने अपने दहिने हाथ की और अपनी बलवती
भुजा की किरिया खाई है कि यदि मैं तेरा अन्न फिर तेरे शत्रुओं
को भोजन के लिये दूंगा और यदि परदेशी के लड़के तेरे नये
दाखरस को पीयेंगे जिस में तू ने परिश्रम किया है तो मैं ईश्वर
९ नहीं। क्योंकि उस के लवनेहारे उसे खायेंगे और परमेश्वर की
स्तुति करेंगे और जो उस को एकट्ठा करते हैं मेरे पवित्र
आंगनों में पीयेंगे॥

१० चले आओ फाटकों में से चले आओ लोगों के लिये मार्ग
सुधारो ऊंचा करो सड़क ऊंची बनाओ उस्से पत्थर दूर करो
जातिगणों के ऊपर झंडा खड़ा करो॥

११ देखो परमेश्वर ने पृथिवी के अंत लों यह सुना दिया है
कि सैहून की कन्या से कहो कि देख तेरी मुक्ति आती है देख
उस का प्रतिफल उस के साथ है और उस की मुक्ति उस के
१२ आगे। और वे उन्हें पवित्र जाति परमेश्वर के छुड़ाये हुए कहेंगे
और तू दरूशाह अर्थात् अति याचित ईर-लो-निअज़िबाह
अर्थात् अत्यक्त नगर कहलायेगा॥

तिरसठवां पर्व्व ।

१ यह कौन है जो अदूम से आता है बुसरा से अपने वस्त्रों
में चमकनेहारा यह जो अपने पहिरावे में ऐश्वर्य्यमान अपने
बल के महत्त्व में भुकता है मैं धर्म्म में बचन कहनेहारा
बचाने के लिये बलवान ॥
२ तू क्यों अपने पहिरावे में रक्तवर्ण है और तेरे पहिरावे उस
३ के पहिरावे की नाईं हैं जो कोल्हू में लताड़ता है। मैं ने अकेले
कोल्हू में लताड़ा है और लोगों में से कोई मनुष्य मेरे साथ
न था और मैं अपने क्रोध में उन्हें लताडूंगा और अपनी
जलजलाहट में उन्हें रौंदूंगा और उन के रस का मेरे वस्त्रों
पर छींटा पड़ेगा और मैं ने अपने सारे पहिरावों को डुबाया
४ है। क्योंकि पलटा लेने का दिन मेरे मन में है और मेरे मोल
५ लिये हुओं का बरस आया है। और मैं देखता हूं और कोई
सहायक नहीं और अति शोकित हूं और कोई संभालनेवाला
नहीं और मेरी भुजा मेरे लिये मुक्ति का कार्य्य करती है और
६ मेरी जलजलाहट वही मुझे संभालती है। और मैं अपने
क्रोध में जातिगणों को लताड़ता हूं और अपनी जलजलाहट
में उन्हें मतवाला करता हूं और उन का रस भूमि पर गिरा
देता हूं ॥
७ मैं परमेश्वर की कृपाओं परमेश्वर की स्तुतों की चर्चा
कराऊंगा उस सब के समान जो परमेश्वर ने हम से व्यवहार
किया है और इसराएल के घराने के लिये वे बड़ी बड़ाई जो
उस ने उन से व्यवहार किया है उस की दयाओं के समान
और उस की कृपाओं के समान ॥
८ और उस ने कहा कि केवल वेही मेरी जाति हैं मेरे
लड़के झूठ न बोलेंगे और वुह उन का मुक्तिदाता हो गया।

९ उन के सारे बेर में वुह बेरी न था और उस के आगे के दूत
ने उन्हें बचाया अपने प्रेम में और अपनी बड़ी दया में उसी
ने उन्हें मुक्ति दिई और उस ने उन्हें उठाया और सारे प्राचीन
दिनों में उन्हें ले गया ॥
१० परन्तु वे फिर गये और उस के पवित्र आत्मा को खिजाया
और वुह उन का शत्रु हो गया वही उन से लड़ा ॥
११ और उस ने प्राचीन दिनों को मूसा और उस की जाति को
स्मरण किया कहां है वुह जो उन्हें समुद्र से उठा लाया अपने
झुंड के गड़रिये को कहां है वुह जिस ने उस के मध्य में
१२ अपने पवित्र आत्मा को डाला। उन्हें मूसा के दहिने हाथ
अपने बिभव की भुजा से ले चलता था उन के आगे से पानियों
को चीरता था कि अपने लिये एक सनातन का नाम करे।
१३ उन्हें गहिराइयों में ले चलता था घोड़े की नाईं चौगान में वे
१४ ठोकर न खायेंगे। जिस रीति से पशु तराई में उतर जायेगा
उसी रीति परमेश्वर का आत्मा उसे बिश्राम में पहुंचायेगा इसी
रीति तू ने अपनी जाति की अगुआई किई कि अपने लिये एक
तेजस्वी नाम बनावे ॥
१५ स्वर्ग पर से दृष्टि कर और अपने पवित्र और महिमा के
स्थान से देख तेरा उद्योग और तेरा बल कहां है तेरे हृदय
की मरोड़ ने और तेरे कोमल प्रेम ने अपने को मुझ से रोक
१६ रक्खा है। क्योंकि तूही हमारा पिता है क्योंकि इबराहीम
ने हमें न उत्पन्न किया और इसराएल हमें न पहिचानेगा तू
ही परमेश्वर हमारा पिता है हमारा मुक्तिदाता सनातन से
१७ तेरा नाम है। हे परमेश्वर तू क्यों हमें अपने मार्गों से भटकने
देगा और क्यों हमारे मन को अपने डर से कठोर करेगा
अपने सेवकों के लिये अर्थात् अपने अधिकार की गोष्ठियों के
१८ कारण फिर आ। थोड़ी बेर के लिये तेरी पवित्र जाति तेरे

पवित्र स्थान की अधिकारी रही तेरे बिरोधियों ने उसे लताड़ा
१६ है। हम सदा से हैं तू ने उन पर प्रभुता न किई तेरा नाम
उन पर नहीं रक्खा गया ॥

चौंसठवां पर्ब्ब ।

१ हाय कि तू स्वर्गों को फाड़े और उतर आवे हाय कि पहाड़
२ तेरे आगे पिघल जायें। जिस रीति से आग लकड़ी को
सुलगाती है और जैसा कि आग पानी को उबालती है कि तेरा
नाम तेरे बैरियों पर प्रगट होवे जातिगण तेरे आगे थर्थरा
३ जायेंगे। तेरे आश्चर्य्य कार्य्य करने में जिन की बाट हम नहीं
जोहते हाय कि तू नीचे उतरे कि पहाड़ तेरे आगे से पिघल
जावें ॥
४ और सनातन से उन्हों ने नहीं सुना उन के कानों में नहीं
पहुंचा और तुझे छोड़ आंख ने एक ईश्वर को नहीं देखा जो
५ अपने आश्रित के लिये कार्य्य करेगा। तू उस्से मिल गया है
जो आनन्दित होता और धर्म्म करता है तेरे मार्गों में वे तुझे
स्मरण करेंगे देख तू क्रुद्ध हुआ है और हम ने पाप किया है
उन में नित्यता है और हम बच जायेंगे ॥
६ और हम सब के सब अशुद्ध की नाईं थे और हमारे सारे
धर्म्म त्यक्त वस्त्र की नाईं और पत्ते के समान मुरझा गये और
७ हमारी बुराइयां पवन की नाईं हमें उड़ा ले जायेंगी। और
कोई तेरा नाम लेनेहारा नहीं है जो अपने को जगाये कि
तुझे पकड़े क्योंकि तू ने अपना मुंह हम से छिपाया है और
हमें हमारी बुराइयों के हाथ से पिघलाया है ॥
८ और अब हे परमेश्वर हमारा पिता तू ही है हम माटी हैं
और तू हमारा कुम्हार है और सब के सब तेरे हाथ के कार्य्य
९ हैं। हे परमेश्वर अत्यन्त ही कोपित मत हो और सदा कुकर्म्म

को स्मरण न कर देख दृष्टि कर हम तेरी बिन्ती करते हैं हम
१० सब के सब तेरी जाति हैं। तेरे पवित्र नगर अरण्य हो गये
११ सैहून जंगल हो गया यरूसलम उजाड़। हमारा पवित्र और
बिभवमय मन्दिर जिस में हमारे पितर तेरी स्तुति करते थे
आग से जलाया गया और हमारे सारे बांछित स्थान उजाड़
१२ हो गये। हे परमेश्वर क्या तू इन बातों के कारण आप को रोक
रक्खेगा और क्या तू चुपका होके हमें अब लों निपट सताता रहेगा॥

पैंसठवां पर्ब्ब।

१ मैं ने उन्हें पूछने की अनुमति दिई जिन्हों ने प्रश्न न
किया था मैं उन को मिला जिन्हों ने मुझे नहीं ढूंढा था मैं ने एक
जाति से कहा कि मुझे देख मुझे देख जो मेरे नाम से बुलाई
२ न गई थी। मैं ने सारे दिन अपने हाथ फैलाये एक ढंगइत
जाति की ओर जो उस मार्ग पर जो अच्छा नहीं है अपनी ही
३ इच्छा पर चलती है। उस जाति की ओर जो नित्य मेरे मुंह
पर मुझे खिजाती है और बाटिकों में बलि करती है और
४ ईटों पर सुगंध जलाती है। जो समाधिन में बैठती है और
खोहों में बस्ती है जो सूअर का मांस खाती है और घिनित
५ वस्तुओं का जूस उन के पात्रों में है। जो मनुष्य कहते हैं
कि अलग खड़ा रह मेरे पास मत आ क्योंकि मैं तुझ से पवित्र
हूं ये मेरे कोप में धूआं हैं एक आग जो दिन भर जला करती
६ है। देखो मेरे आगे लिखा है मैं चुप न रहूंगा क्योंकि पलटा
७ अवश्य लूंगा हां उन की गोद में प्रतिफल दूंगा। तुम्हारी
बुराइयों का और तुम्हारे पितरों की बुराइयों का एक ही साथ
परमेश्वर कहता है जिन्हों ने पहाड़ों पर लोबान जलाया और
पहाड़ियों पर मेरा अनादर किया और मैं उन का अगिला
कार्य्य उन की गोद में नापूंगा॥

८ परमेश्वर यों कहता है जैसे दाख के गुच्छे में रस पाया
जाता है और मनुष्य कहता है कि उसे नष्ट न कर क्योंकि
उस में आशीष है वैसे मैं अपने सेवकों के कारण करूंगा जिसतें
९ सब को नाश न करूं। और मैं यअकूब से वंश निकालूंगा
और यहूदाह से अपने पहाड़ों का अधिकारी और मेरे चुने
१० हुए उस के अधिकारी होंगे और मेरे सेवक वहां बसेंगे। और
सरून झुंडों का निवास हो जायेगा और अकूर की तराई गाय
बैलों के चैन के स्थान मेरी जाति के लिये जिस ने मुझे खोजा
है ॥
११ और तुम परमेश्वर के त्यागनेहारे जो मेरे पवित्र पहाड़ को भूलते
हो जो भाग्यमानी के लिये मंच सिद्ध करते हो और प्रालब्ध
१२ के लिये मिलाया हुआ दाखरस भर देते हो। सो मैं ने तुम्हें
तलवार को सौंप दिया और तुम सब के सब संहार होने को
लिये झुक जाओगे इस कारण कि मैं ने बुलाया और तुम ने उत्तर
न दिया मैं बोला और तुम ने न सुना परन्तु तुम ने मेरी
आंखों के साम्ने बुराई किई और वुह वस्तु चुनी कि जिस्से मैं
आनन्दित न था ॥
१३ सो प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो मेरे सेवक खायेंगे
परन्तु तुम भूखे रहोगे देखो मेरे सेवक पीयेंगे परन्तु तुम प्यासे
रहोगे देखो मेरे सेवक आनन्दित होंगे परन्तु तुम लज्जित
१४ होओगे। देखो मेरे सेवक मन की आनन्दता से गायेंगे परन्तु
तुम मन की उदासी के कारण रोओगे और चूर्ण अंत:करण के
१५ शोक से तुम चिल्लाओगे। और तुम अपना नाम मेरे चुने हुओं
के लिये क्रिया के लिये छोड़ोगे और प्रभु परमेश्वर तुझे घात
१६ करेगा और अपने सेवकों को दूसरे नाम से पुकारेगा। जिस्से
जो मनुष्य पृथिवी पर अपने को आशीष देवे वुह सच्चाई के
ईश्वर से अपने को आशीष देगा और जिस्से जो मनुष्य पृथिवी

पर किरिया खाये वुह सच्चाई के ईश्वर की किरिया खायेगा
क्योंकि अगिली खिजाहटें भुलाई गईं और मेरी आंखों से
छिपाई गईं ॥
१७ क्योंकि देखो मैं नये स्वर्ग और नई पृथिवी बनाता हूं और
अगिली वस्तें स्मरण न किई जायेंगी और मन में न आवेंगी।
१८ पर सदा लों उस में आल्हादित और मगन रह जो मैं सृजता
हूं क्योंकि देखो मैं यरूसलम को आनन्द और उस की जाति
१९ को आल्हाद उत्पन्न करता हूं। और मैं यरूसलम में
मगन होऊंगा और अपनी जाति से आनन्दित और उस में
फिर रोने और बिलाप का शब्द न सुना जायेगा ॥
२० और वहां से फिर थोड़ी वय का कोई बालक न होगा न
कोई बृद्ध जो अपने दिनों को पूरा न करेगा क्योंकि लड़का सौ
बरस का होके मरेगा और पापी सौ बरस का होके स्रापित
२१ होगा। और वे घर बनावेंगे और उन में बसेंगे और दाख की
२२ बारी लगावेंगे और उस के फल खायेंगे। और वे न बनावेंगे
कि दूसरा बास करे वे न लगायेंगे कि दूसरा खायेगा क्योंकि
मेरे लोगों के दिन बृक्ष के दिन के समान होंगे और मेरे चुने
२३ हुए अपने हाथों के कार्य्य से अधिक जीयेंगे। वे बृथा परिश्रम
न करेंगे और घबड़ाहट के लिये न जनेंगे और थोड़ी आयुर्दा के
वंश उन से उत्पन्न न होंगे क्योंकि वेही परमेश्वर के आशीषों
के वंश हैं और उन के संतान उन के साथ ॥
२४ और ऐसा होगा कि वे अब लों न पुकारेंगे और मैं उत्तर
२५ देऊंगा अब लों वे बातें कहते होंगे और मैं सुनूंगा। भेड़िया
और मेम्ना एक साथ चरेंगे और सिंह बैल के समान भूसा
खायेगा और सर्प्प अपने भोजन की सन्ती धूल वे मेरे सारे
पवित्र पहाड़ पर न दुख देंगे और न नाश करेंगे परमेश्वर
कहता है ॥

छियासठवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर यों कहता है कि स्वर्ग मेरा सिंहासन और पृथिवी
मेरे चरणों की पीढ़ी है कहां है वुह घर जो तुम मेरे लिये
२ बनाओगे और कहां है मेरा चैनस्थान। और इन सभों को
मेरे हाथ ने बनाया और ये सब हुए परमेश्वर कहता है और
इस पर मैं दृष्टि रक्खूंगा दुखी और चूर्ण अंत:करण पर और उस
पर जो मेरे बचन से थर्थराता है॥
३ बैल का घात करनेहारा मनुष्य का घात करनेहारा भेड़ी
का बलि करनेहारा कुत्ते का गला तोड़नेहारा भेंट का चढ़ानेहारा
सूअर के लोहू का चढ़ानेहारा स्मरण के लिये लोबान चढ़ानेहारा
नास्ति का धन्य कहनेहारा है हां उन्हों ने अपने मार्गों को चुन
लिया है और उन के प्राण उन की घिनित वस्तुओं से आनन्दित
४ रहे हैं। मैं भी उन की खिजाहटों को चुन लूंगा और उन
के डर उन पर पहुंचाऊंगा क्योंकि मैं ने बुलाया और कोई
उत्तर देनेहारा न था मैं बोला और उन्हों ने न सुना परन्तु
उन्हों ने मेरी आंखों के साम्ने बुराई किई और उस बात को
चुन लिया जिसे मैं ने न चाहा॥
५ परमेश्वर की बात सुनो हे तुम उस के बचन से कांपनेहारो
तुम्हारे भाई तुम्हारे बैरी मेरे नाम के कारण तुम्हें निकालनेहारे
कहते हैं कि परमेश्वर महान होगा और हम तुम्हारी आनन्दता
देखेंगे पर वे लज्जित होंगे॥
६ नगर में से हुल्लड़ का शब्द मन्दिर में से शब्द परमेश्वर
का शब्द अपने शत्रुन को उन के व्यवहार का पलटा देता है।
७ पीड़ा से पहिले वुह जन बैठी उस्से आगे कि पीड़ा उस को हो।
८ उस्से एक पुत्र उत्पन्न हुआ। किस ने इस के समान सुना है
किस ने इन के समान देखा है क्या पृथिवी एक ही दिन में

उत्पन्न होगी अथवा जाति एक ही साथ उत्पन्न होगी क्योंकि
९ सैहून को पीड़ लगी हां वुह अपने बालक जनी है। क्या मैं
जन्ने पर लाऊं और न जनाऊं परमेश्वर कहता है अथवा मैं
जनानेहारा और जन्ने से रोकूं तेरा परमेश्वर कहता है॥
१० यरूसलम के साथ आनन्द करो और उस में मगन हो
हे उस के सारे प्यार करनेहारो उस में अल्हाद के साथ आनन्द
११ करो हे उस के सारे बिलाप करनेहारो। जिसतें तुम चूसो और
उस की शांतों के स्तनों से संतुष्ट होओ जिसतें तुम निचोड़ो
और उस के बिभव की भरी हुई छातियों से अपने को मगन
करो॥
१२ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं कुशल को उस
की ओर नदी की नाईं फैलाता हूं और जातिगणों के बिभव
को डुबानेहारी धारा के समान और तुम चूसोगे और गोद में
१३ उठाये जाओगे और घुटनों पर कुदाये जाओगे। जैसा मनुष्य
जिसे उस की मां शांति देती है वैसा ही मैं तुम्हें शांति दूंगा
१४ और तुम यरूसलम में शांति पाओगे। और तुम देखोगे और
तुम्हारा मन आनन्दित होगा और तुम्हारी हड्डियां हरियाली
के समान लहलहायेंगी और परमेश्वर का हाथ उस के सेवकों
पर प्रगट होगा और उस की जलजलाहट उस के शत्रुन पर
भड़केगी॥
१५ क्योंकि देखो परमेश्वर आग में आवेगा और बगूले में उस
के रथ जिसतें कोप में अपने ताप फिरा दे और अपनी दपट
१६ को आग की लौ में। क्योंकि आग से परमेश्वर लड़ेगा और
अपने खड्ग से सारे मनुष्यों के साथ और परमेश्वर के जूझे हुए
बहुत होंगे॥
१७ जो अपने को पावन ठहराते हैं और जो अपने को पवित्र
ठहराते हैं बाटिकों की ओर मध्य में एक के पीछे सूअर का

मांस और घिनित वस्तु और चूहे के खानेहारे वे एक ही साथ
१८ नाश हो जायेंगे परमेश्वर कहता है । और मैं उन के कार्य्यों
और उन की युक्तिन को जानता हूं समय अब आया है कि
सारे देशगणों और भाषाओं को एकट्ठा करूं और वे आवेंगे और
१६ मेरे विभव को देखेंगे । और मैं उन के मध्य में एक चिन्ह
रक्खूंगा और उन में से बचे हुओं को देशगणों की ओर भेजूंगा
अर्थात् तरसीस और पूल और लूद की जो धनुषधारी हैं और
तूवल और यूनान की और दूर के टापुओं की ओर जिन्हों ने
कधी मेरा नाम न सुना और मेरे विभव को नहीं देखा और
२० वे जातिगणों में मेरा बिभव बर्णन करेंगे। और वे सारे जातिगणों
में से तुम्हारे सारे भाइयों को घोड़ों पर और गाड़ियों पर और
पालकियों में और खच्चरों पर और सांड़नियों पर मेरे पवित्र
पहाड़ यरूसलम में परमेश्वर की भेंट के लिये लावेंगे परमेश्वर
कहता है जिस रीति से कि इसराएल के संतान पावन पात्रों में
२१ अपनी भेंटों को परमेश्वर के मन्दिर में लाते हैं । और उन में
से मैं याजक और लावी भी बनाऊंगा परमेश्वर कहता है ॥
२२ क्योंकि जिस रीति से कि नये स्वर्ग और नई पृथिवी जिन्हें
मैं बनाता हूं मेरे आगे बने रहेंगे परमेश्वर कहता है वैसे
२३ तुम्हारे वंश और तुम्हारे नाम होंगे । और ऐसा होगा कि
अमावास्या से अमावास्या लों और विश्राम से विश्राम लों सारे
मनुष्य आके मेरे आगे सेवा करेंगे परमेश्वर कहता है ॥
२४ और वे निकलेंगे और उन मनुष्यों की लोथों पर जो मुझ
से फिर गये थे देखेंगे क्योंकि उन का कीड़ा न मरेगा और उन
की आग न बुझेगी और वे सारे मनुष्यन से घिनित होंगे ॥

यरमियाह
भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ ख़िलक़ियाह के पुत्र यरमियाह के बचन जो अनतात में
२ बिनयमीन की भूमि के याजकों में से था। जिस पर परमेश्वर
का बचन अम्मून के बेटे यहूदाह के राजा यूसियाह के दिनों
३ में उस के राज्य के तेरहवें बरस में उतरा। और यहूदाह के
राजा यूसियाह के बेटे यहूयक़ीम के भी दिनों में यहूदाह के
राजा यूसियाह के बेटे सिदक़ियाह के ग्यारहवें बरस के समाप्त
होने लों यरूसलम की बंधुआई के पांचवें मास में पहुंचाये
जाने लों॥
४ और परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा॥
५ कि मैं ने तुझे कोख में पड़ने से आगे जाना और तेरा जन्म
होने से आगे मैं ने तुझे पवित्र किया और जातिगणों के लिये
मैं ने तुझे भविष्यद्वक्ता ठहराया॥
६ और मैं ने कहा हाय प्रभु परमेश्वर देख मैं बोलने नहीं
७ जानता क्योंकि मैं बालक हूं। और परमेश्वर ने मुझ से कहा मत
कह कि मैं बालक हूं क्योंकि जिन सभों के पास मैं तुझे भेजूंगा
८ तू जायेगा और जो कुछ मैं तुझे आज्ञा करूं सो कहेगा। तू
उन से मत डर क्योंकि परमेश्वर कहता है कि तुझे बचाने को
९ मैं तेरे साथ हूं। और परमेश्वर ने अपना हाथ बढ़ाके मेरा मुंह

हुआ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि देख मैं ने अपने वचन
तेरे मुंह में डाले हैं ॥
१० देख आज के दिन मैं ने तुझे जातिगणों और राज्यों को
उखाड़ने और ढाने और नाश करने और उलटने और बनाने
और लगाने को पराक्रम दिया है ॥
११ और परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा
कि हे यरमियाह तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि बदाम
१२ के पेड़ की एक छड़ी मैं देखता हूं। तब परमेश्वर ने मुझ से कहा
कि तू ने ठीक देखा है क्योंकि मैं अपने वचन को पूरा करने
१३ के लिये सावधान हूं। और दूसरी बार परमेश्वर का वचन यह
कहते हुए मेरे पास पहुंचा कि तू क्या देखता है और मैं ने
कहा कि उबलता हुआ हंडा देखता हूं और उस का मुंह उत्तर
की ओर है ॥
१४ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि इस देश के सारे बासियों
१५ पर उत्तर से बुराई निकल आवेगी। क्योंकि परमेश्वर कहता है
कि देख मैं उत्तर के राज्यों के सारे परिवारों को बुलाता हूं और
वे आवेंगे और हर एक जन अपना अपना सिंहासन यरूसलम
के फाटकों की पैठ में और उस की चारों ओर की भीतों पर
१६ और यहूदाह के सारे नगरों पर रक्खेंगे। और उन की सारी
दुष्टता के लिये मैं उन के विरुद्ध अपना विचार उच्चारूंगा क्योंकि
उन्हों ने मुझे त्याग किया है और आन देवों के लिये धूप
जलाया है और अपने हाथ के कृत्य की सेवा किई है ॥
१७ सो तू अपनी कटि बांधके उठ और सब जो मैं तुझे आज्ञा
करूं सो उन से कह उन से मत डरना न हो कि मैं उन के
१८ आगे तुझे डराऊं। और देख आज मैं ने तुझे इस सारे देश
के विरुद्ध यहूदाह के राजाओं के विरुद्ध और उस के राजपुत्रों
के बिरुद्ध और उस के याजकों के विरुद्ध और देश के लोगों

के विरुद्ध दृढ़ किये हुए नगर की नाईं और लोहे के खंभे की
१९ नाईं और पीतल की भीतों की नाईं बना रक्खा है। और वे
तेरे विरुद्ध लड़ेंगे परन्तु तुझ पर प्रबल न होंगे क्योंकि परमेश्वर
कहता है कि तुझे छुड़ाने को मैं तेरे साथ हूं॥

दूसरा पर्व्व।

१ और परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास आया।
२ कि तू जाके यरूसलम के कानों में पुकारके कह कि परमेश्वर
यों कहता है कि मैं तेरे विषय तेरी तरुणाई की दया और
तेरे बियाह के प्रेम को स्मरण करता हूं जब तू बन में बिन
३ जोते बोए देश में मेरे पीछे पीछे चली। इसराएल और उस
के पहिले फल की बढ़ती परमेश्वर के लिये पवित्र थी उस के
सारे भक्षण करनेहारे अपराधी होंगे उन पर बुराई आवेगी
परमेश्वर कहता है॥

४ हे यअ़क़ूब के घर और हे इसराएल के घर के सारे परिवारो
५ परमेश्वर का वचन सुनो। परमेश्वर यों कहता है कि तुम्हारे
पितरों ने मुझ में कौन सी बुराई पाई जो वे मुझ से दूर हुए
६ और वृथा के पीछे जाके व्यर्थ हुए। और उन्हों ने नहीं कहा
कि परमेश्वर कहां है जो हमें मिस्र देश से निकाल लाया जिस
ने अरण्य में हमें चलाया अर्थात् बड़े उजाड़ देश और गड़हे
में और अवृष्टि और मृत्यु की छाया के देश में ऐसे देश में
जिस में कोई नहीं गया और जहां कोई मनुष्य न बसा।
७ और मैं तुम्हें फलवंत देश में लाया कि तुम उस के फल और
उस की अच्छी वस्तुन को खाओ परन्तु तुम लोगों ने उस में
पहुंचके मेरे देश को अशुद्ध किया और मेरे अधिकार को घिनित
८ कर डाला। याजकों ने नहीं कहा कि परमेश्वर कहां है और
व्यवस्था के ज्ञातों ने मुझे नहीं जाना उन के रखवाल भी मुझ

से फिर गये और भविष्यद्वक्तों ने बअल के नाम से भविष्य
कहा और निर्लाभ बस्तुन के पीछे चले गये ॥
९ इस लिये परमेश्वर कहता है कि मैं तुम से फिर विवाद करूंगा
१० और तुम्हारे संतानों के संतानों से विवाद करूंगा। क्योंकि
पार उतरके कित्तीम के टापुओं को देखो और क़ीदार में लोगों
को भेजके अच्छी रीति से बूझो और देख रक्खो कि जो ऐसी
११ वस्तु हुई है। क्या किसी जातिगण ने अपने देवों को बदला
है यद्यपि वे देव न थे परन्तु मेरी जाति ने उस की महिमा को
१२ उस के लिये बदला जिस्से लाभ नहीं। हे स्वर्गो इस्से अचंभित
होओ और डर जाओ और अत्यन्त घबराओ परमेश्वर कहता
१३ है। क्योंकि मेरी जाति ने दो बुराइयां किई हैं उन्हों ने मुझ
अमृत जल के सोते को त्यागा है और अपने लिये टूटे कुगड
खोदे हैं जिन में जल नहीं ठहरता ॥
१४ क्या इसराएल दास है अथवा वुह घर का बालक है तो
१५ फिर क्यों लूटा गया। युवा सिंह उस पर गर्ज्जते हैं उन्हों ने
अपना शब्द उठाया है और उस के देश को एक उजाड़
बनाया है उस के नगर जल गये ऐसा कि कोई निवासी न
१६ रहा। मन्फ के और तहफ़नीस के संतान भी तेरी खोपड़ी
१७ के चाम को खा लेते हैं। क्या तू इसे अपने लिये नहीं करता
है कि तू ने परमेश्वर अपने ईश्वर को त्यागा जिस समय वुह
मार्ग में तेरी अगुआई करता था ॥
१८ और अब सैहूर का जल पीने को तुझे मिस्र के मार्ग में
क्या काम है अथवा नदी के पानी पीने को तुझे असूर के मार्ग
१९ में क्या काम है। तेरी ही दुष्टता तुझे ताड़ना करेगी और तेरा
फिर फिर जाना तुझे दपटेगा सो जान और देख कि परमेश्वर
अपने ईश्वर को बिसराना बुरा और कड़वा है और मेरा भय
तुझ में नहीं प्रभु सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

२० क्योंकि सनातन से मैं ने तेरा जूआ तोड़ा तेरे बंधनों को
झटक डाला है और तू ने कहा है कि सेवा में न करूंगी
क्योंकि हर एक ऊंचे टीले पर और हर एक हरे पेड़ तले तू
२१ छिनाला करती थी। और मैं ने तुझे उत्तम दाख सर्वथा सत्य
बीज बोया था फिर तू क्योंकर उपरी लता का बिगड़ा हुआ
२२ पेड़ मेरे लिये हुई है। यद्यपि तू आप को रेह से धोवे और
बहुत सा साबुन लेवे तथापि तेरी बुराई मेरे आगे छिपी है
प्रभु परमेश्वर कहता है॥
२३ तू क्योंकर कह सक्ती है कि मैं अपवित्र नहीं हूं मैं बअलीम
के पीछे नहीं गई हूं अपनी चाल को तराई में देख और अपने
किये हुए को मान ले तू एक चालाक सांड़नी की नाईं है जो
२४ अपने मार्गों पर दौड़ती है। तू वन परिचित जंगली गदही
की नाईं है जो अपने प्राण की वांछा में पवन को सुरकती है
उस के प्रयोजन में कौन उसे फेर सक्ता है उस की खोज में
कोई नहीं आप को थकावेगा उस के मास में वे उसे पावेंगे।
२५ तू अपने पांव को नंगाई से और अपने गले को प्यास से अलग
रख परन्तु तू ने कहा है कि आशा नहीं है ऐसा न करूंगी
क्योंकि मैं ने उपरियों से प्रीति किई है और उन्हीं के पीछे
जाऊंगी॥
२६ जैसा पकड़े जाने में चोर लज्जित है तैसा इसराएल का
घराना वे उन के राजा उन के प्रधान और उन के याजक और
२७ उन के भविष्यद्वक्ते लजाये गये हैं। जो पेड़ से कहते हैं कि
तू मेरा पिता और पत्थर से कि तू मुझे जनी क्योंकि उन्हों ने
मेरी ओर पीठ फेरी और मुंह नहीं और वे अपने दुख के
समय में कहेंगे कि उठके हमें बचा॥
२८ परन्तु तेरे देव कहां हैं जिन्हें तू ने अपने लिये बनाया है
वे उठें यदि तेरे दुख के समय तुझे बचा सकें क्योंकि हे

यहूदाह तेरे नगरों की गिनती के समान तेरे देव हुए हैं ।
२९ तुम लोग किस बात के लिये मुझ से विवाद करोगे तुम सब
३० के सब मेरे विरुद्ध फिर गये हो परमेश्वर कहता है । वृथा मैं
ने तुम्हारे बालकों को मारा है उन्हों ने उपदेश नहीं ग्रहण
किया है तुम्हारी ही तलवार ने नाशक सिंह के समान तुम्हारे
भविष्यद्वक्तों को भक्षण किया है ॥
३१ हे इस पीढ़ी के लोगो तुम परमेश्वर के बचन को देखो क्या मैं
इसराएल के लिये अरण्य अथवा अंधियारा देश हुआ हूं मेरे
लोगों ने क्यों कहा है कि हम अपने ही स्वामी हैं हम
३२ तेरे पास फिर न आवेंगे । क्या कुंवारी अपने आभूषण को भूल
सक्ती है अथवा दुलहिन अपना पहिरावा तथापि मेरी जाति
अनगिनित दिन से मुझे बिसरा रही ॥
३३ प्रेम ढूंढने के लिये तू क्यों अपने मार्ग को सिद्ध करेगी इस
३४ लिये तू ने अपना मार्ग दुष्टों को सिखाया है । तेरे अंचलों में
भी लोहू पाया गया है अर्थात् दरिद्र निर्दोषों के प्राण मैं ने
उन्हें खोदे हुए स्थान में नहीं पाया परन्तु इन सभों पर ॥
३५ तथापि तू ने कहा है कि मेरे निर्दोष होने के कारण
निश्चय उस का कोप मुझ से जाता रहेगा देख मैं तेरा बिचार
करूंगा क्योंकि तू ने कहा है कि मैं ने पाप नहीं किया ॥
३६ तू अपनी चाल को पलटने के लिये क्यों ऐसा दौड़ती है
मिस्र के कारण भी तू लजाई जायेगी जैसे असूर के कारण
३७ लजाई गई है । यहां से भी तू अपने सिर पर हाथ रक्खे
हुए निकल जायेगी क्योंकि परमेश्वर ने तेरे भरोसा की बस्तुन
को त्याग किया है और तू उन में भाग्यमान न होगी ॥

तीसरा पर्व्व ।

१ कहते हैं कि यदि मनुष्य अपनी पत्नी को त्यागे और वुह

उस के पास से जाके दूसरे पुरुष की हो जाय तो क्या वुह
उसे फिर ग्रहण करेगा क्या वुह देश सर्वथा अशुद्ध न होगा
परन्तु तू ने बहुत से जारों से छिनाला किया है तथापि अब
२ भी मेरी ओर फिर परमेश्वर कहता है। ऊंचे स्थानों पर अपनी
आंखें उठा और देख कहां तू अशुद्ध न किई गई तू उस
अरब की नाईं जो बन में है उन के लिये मार्गों पर बैठी और
तू ने अपने छिनालों से और अपनी दुष्टता से देश को अशुद्ध
३ किया है। सो झड़ी रोकी गई और अंत की बरखा भी नहीं
हुई और तू बेश्या का कपाल रखती है क्योंकि तू लाज नहीं
४ मानती। क्या अब से तू ने मुझे नहीं पुकारा है मेरे पिता तू
५ मेरी तरुणाई का अगुआ है। क्या वुह सदा लों अपना क्रोध
रक्खेगा अथवा क्या वुह सर्वदा लों उसे स्मरण करेगा देख तू
ने कहा और दुष्टता किई है और प्रबल हुई है॥
६ और यूसियाह राजा के दिनों में परमेश्वर ने मुझ से कहा कि
क्या तू ने देखा है कि फिरे हुए इसराएल ने क्या किया है
वुह हर एक ऊंचे पर्ब्बत पर चढ़ गई है और हर एक हरे
७ पेड़ तले और वहां छिनाला किया है। और इस के पीछे कि
उस ने ये सारी बातें किईं मैं ने कहा कि मेरी ओर फिर परन्तु
वुह न फिरी और उस की अबिश्वासिनी बहिन यहूदाह ने
८ देखा। और जब मैं ने देखा कि फिरे हुए इसराएल के सारे
छिनाले के मारे जो उस ने किया था मैं ने उसे त्यागा और
उसे त्यागपत्र दिया तो भी उस की अबिश्वासिनी बहिन यहूदाह
९ न डरी परन्तु उस ने भी जाके छिनाल कर्म्म किया। और ऐसा
हुआ कि उस ने अपने निर्लज्ज छिनालपने से देश को अशुद्ध
किया और पत्थर और लकड़ी के साथ व्यभिचार किया।
१० और इस सब पर भी उस की अबिश्वासिनी बहिन यहूदाह अपने
सारे मन से मेरी ओर न फिरी परन्तु छल से परमेश्वर कहता है॥

११ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि अविश्वासिनी यहूदाह से भी
अधिक फिरे हुए इसराएल ने आप को निर्दोष ठहराया है ॥
१२ तू उत्तर की ओर जाके यह प्रचारके कह कि हे फिरे हुए
इसराएल फिर आ परमेश्वर कहता है और मैं तुझ पर क्रोधित
न हूंगा क्योंकि मैं दयाल हूं परमेश्वर कहता है मैं सदा लों
१३ क्रोध न रक्खूंगा । केवल अपनी बुराई को मान ले क्योंकि तू
ने परमेश्वर अपने ईश्वर का अपराध किया और हर एक हरे
पेड़ के तले उपरियों से मनमंता चली और तुम ने मेरे शब्द
१४ को नहीं माना है परमेश्वर कहता है । परमेश्वर कहता है कि
फिरे हुए सन्तानो फिर आओ क्योंकि मैं तुम्हारा पति हुआ हूं
और तुम्हें नगर में से एक को और गोष्ठी में से दो को निकालके
१५ सेहून में लाऊंगा । और मैं अपने ही मन के समान तुम्हें
गड़रिये देऊंगा और वे तुम्हें ज्ञान और समझ से चरावेंगे ॥
१६ और परमेश्वर यों कहता है कि उन दिनों में ऐसा होगा कि
जब तुम लोग देश में बढ़ोगे और फलोगे तब वे फिर न कहेंगे
कि परमेश्वर के नियम की मंजूषा और वुह उन के मन में न
आवेगा और वे उसे स्मरण न करेंगे और उस की चिंता न
१७ करेंगे और वुह फिर बनाया न जायेगा । उस समय यरूसलम
परमेश्वर का सिंहासन कहावेगा और सारे जातिगण परमेश्वर के
नाम के लिये यरूसलम में एकट्ठे होंगे और वे फिर अपने बुरे
मन की कठोरता के समान न चलेंगे ॥
१८ उन्हीं दिनों में यहूदाह का घराना इसराएल के घराने में
जायेगा और वे उत्तर देश में से एकट्ठे होके इस देश में आवेंगे
जो मैं ने तुम्हारे पितरों का अधिकार किया था ॥
१९ और मैं ने कहा कि मैं तुझे बेटों में क्योंकर रक्खूं और
वांछित देश तुझे देऊं जातिगणों के अच्छे से अच्छा अधिकार
तब मैं ने कहा तू मुझे पिता करके पुकारेगा और मेरे पीछे

२० आने से फिर न जायेगा। निश्चय जैसा कि स्त्री अपने पति
से अविश्वासिनी होती है तैसा हे इसराएल के घराने तुम लोगों
ने मेरी ओर से बिश्वास घात किया है परमेश्वर कहता है॥
२१ ऊंचे स्थानों में शब्द सुना गया है कि इसराएल के संतान
बिलाप करते हैं और बिनती करते हैं इस कारण कि उन्हों ने
अपनी चाल को बिगाड़ा है और अपने ईश्वर परमेश्वर को बिसराया
२२ है। हे फिरे हुए बालको फिर आओ मैं तुम्हारे धर्म्मत्यागियों
को चंगा करूंगा देख हम तेरी ओर आते हैं क्योंकि तू ही परमेश्वर
२३ हमारा ईश्वर है। निश्चय टीलों और बहुत से पर्बतों का आसा बृथा
२४ है निश्चय परमेश्वर हमारे ईश्वर में इसराएल की मुक्ति है। और
हमारी तरुणाई से लज्जित बस्तु ने हमारे पितरों की संपत्ति को
उन के झुंड और उन के ढोर और उन के बेटे बेटियों को भक्षण
२५ किया है। हम अपनी लाज में पड़े रहेंगे और हमारा लज्जित
कर्म्म हमें ढांपेगा क्योंकि हम ने और हमारे पितरों ने अपनी
तरुणाई से आज लों परमेश्वर अपने ईश्वर के बिरुद्ध पाप किया
है और परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द नहीं माना है॥

चौथा पर्व्व।

१ हे इसराएल यदि तू फिर आवेगा तो परमेश्वर कहता है
कि मेरी ओर फिर और यदि तू अपनी घिनितों को मेरी दृष्टि
२ से दूर करेगा तो तू भरमाया न जायेगा। परन्तु तू सच्चाई से
और बिचार से और धर्म्म से परमेश्वर के जीवन की किरिया
खायेगा और जातिगण उस में आप आप को आशीष देंगे और
उसी की स्तुति करेंगे॥
३ क्योंकि परमेश्वर यहूदाह और यरूसलम के लोगों से यह
कहता है कि अपनी बंजर भूमि को खेत करो और कांटों में
४ मत बोओ। हे यहूदाह के मनुष्यो और हे यरूसलम के

बासियो परमेश्वर के लिये खतन: कराओ और अपने अपने मन
की खलड़ी को अलग करो न होवे कि तुम्हारी चाल की
बुराइयों के कारण मेरा क्रोध आग की नाई फूट निकले और
ऐसा बर उठे कि कोई उसे बुता न सके ॥
५ यहूदाह में प्रगट करो और यरूसलम में यह कहके प्रचारो
और देश में तुरही का शब्द करो सर्बच प्रचारके कहो कि
६ एकट्ठे होओ और हम बाड़ित नगरों में चलें । सैहून की ओर
ध्वजा खड़ा करो और हटो खड़े मत होओ क्योंकि मैं उत्तर से
७ बुराई और बड़ा बिनाश लाता हूं । सिंह अपनी झाड़ी से निकला
है और जातिगणों का नाशक अपने मार्ग में है वुह तेरा देश
उजाड़ने को अपने स्थान से निकला है और तेरे नगर बिना
८ निवासी उजाड़ होंगे । इस लिये टाट पहिनो छाती पीटो और
बिलाप करो क्योंकि परमेश्वर का महा कोप उस्से फिर नहीं
९ गया है । और परमेश्वर कहता है कि उस दिन ऐसा होगा
कि राजा का मन और राजपुचों के मन घट जायेंगे और याजक
आश्चर्य्यित होंगे और भविष्यद्वक्ता अचंभित ॥
१० तब मैं ने कहा हाय प्रभु परमेश्वर निश्चय तू ने इन लोगों
को और यरूसलम को यह कहके भुलाया है कि तुम लोग
कुशल पाओगे यद्यपि तलवार प्राण लों पहुंचती है ॥
११ उस समय यरूसलम के और इन लोगों के विषय में यह
कहा जायेगा कि मेरी जाति की पुची की ओर बन के चौगानों
पर एक उष्ण पवन चलती है कुछ बुहारने और पावन करने
१२ को नहीं आती । एक पवन इन से अधिक पूर्ण मेरे लिये
१३ बहेगी अब मैं भी उन का न्याय करूंगा । देख वुह मेघों की
नाई चढ़ आता है और उस के रथ बवंडर की नाई उस के
घोड़े गिद्ध से भी बेगवन्त हैं हाय हम पर क्योंकि हम उजाड़े
१४ गये । हे यरूसलम अपने मन को दुष्टता से पवित्र कर जिसतें

तू मुक्ति पावे कब लों तेरी बुराई की युक्ति तुझ में बनी रहेगी।
१५ क्योंकि दान से एक शब्द प्रगट करता है और इफरायम
१६ पहाड़ से बुराई प्रचारता है। जातिगणों में प्रचारो देखो
यरूसलम के बिरुद्ध सुनाओ कि दूर देश से पहरू आते हैं
और यहूदाह के नगरों के बिरुद्ध अपना शब्द उठाते हैं।
१७ खेत के रखवालों की नाईं वे उस के बिरुद्ध चारों ओर हैं
१८ क्योंकि वुह मेरे बिरुद्ध फिर गई है परमेश्वर कहता है। तेरी
चाल और तेरे कर्म्म की कमाई ये हैं यही तेरी बुराई है क्योंकि
वुह कड़वी है क्योंकि तेरे अंतःकरण लों पहुंची है॥
१९ मेरी अंतड़ियां मेरी अंतड़ियां मेरे अंतःकरण की भीतें
पीड़ित हैं और मेरा अंतःकरण मुझे व्याकुल करता है मैं चुप
रह नहीं सक्ता इस लिये कि तू ने हे मेरे प्राण तुरही का शब्द
२० और लड़ाई की ललकार सुनी है। नाश पर नाश सुनाया
जाता है क्योंकि सारा देश नाश हुआ है मेरे तंबू अचानक
२१ लुट गये हैं मेरे ओझल पलमात्र में। कब लों मैं ध्वजा को
देखूं तुरही का शब्द सुनूं॥
२२ क्योंकि मेरी जाति मूर्ख है उस ने मुझे नहीं पहिचाना वे
मूर्ख बालक हैं और वे अज्ञान हैं वे कुकर्म्म में बुद्धिमान
परन्तु सुकर्म्म में असमझ हैं॥
२३ मैं ने पृथिवी को देखा और क्या देखता हूं कि उजाड़
और सुनसान है और आकाश की ओर और उंजियाला नहीं।
२४ मैं ने पर्वतों को देखा और क्या देखता हूं कि वे थरथराये
२५ और सारे टीले हिल गये। मैं ने देखा और क्या देखता हूं
कि कोई मनुष्य नहीं और आकाशों के सारे पंछी उड़ गये।
२६ मैं ने देखा और क्या देखता हूं कि फलवंत खेत अरण्य हो
गया है और परमेश्वर के आगे उस के कोप के अति तपन के
आगे उस के सारे नगर गिराये गये हैं॥

२७ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि सारा देश उजाड़ हो
२८ जायेगा तथापि मैं समाप्त न करूंगा। इस बात के लिये पृथिवी
बिलाप करेगी और ऊपर आकाश काले हो जायेंगे क्योंकि मैं
कह चुका और ठाना है और न पछताऊंगा और न उस्से
२९ हटूंगा। घोड़चढ़ों और धनुषधारियों के शब्द के मारे हर एक
नगर भागता है वे घने बन में जा रहे हैं और वे टीलों पर
चढ़ गये हैं हर एक नगर त्यागा गया है और उन में कोई
३० पुरुष बास नहीं करता। और लूटे जाने पर तू क्या करेगी
कि तू आप को लाल वस्त्र से बिभूषित करेगी कि तू सोने के
आभूषण से आप को संवारेगी कि तू अपनी आंखों में सुरमा
लगावेगी तथापि बृथा तू अपनी सुन्दरता प्रगट करती है तेरे
जारों ने तुझे त्यागा है वे तेरे प्राण के गाहक होंगे॥
३१ क्योंकि मैं ने पीड़ित स्त्री का चिल्लाना सुना है उस के दुख
की नाईं जो पहिलौठा पुत्र जनती है सैहून की पुत्री का
चिल्लाना वुह हांपती है वुह अपने हाथ फैलाके यह कहती
है कि हाय मुझ पर क्योंकि बधिकों के कारण मेरा प्राण घटा
जाता है॥

पांचवां पर्व्व।

१ यरूसलम की सड़कों में चारों ओर दौड़ो और देखो और
जानो और उस के चौड़े स्थानों में ढूंढ़ो यदि एक भी जन पा
सको यदि एक भी न्यायकर्त्ता है जो सत्य को ढूंढ़ता है जिसतें
२ मैं उसे क्षमा करूं। परन्तु यद्यपि वे कहते हैं कि परमेश्वर के
३ जीवन की सोंह निश्चय वे झूठी किरिया खाते हैं। हे परमेश्वर
क्या तेरी आंखें सत्य पर नहीं हैं तू ने उन्हें मारा है और वे
शोकित न हुए तू ने उन्हें क्षीण किया है परन्तु उन्हों ने
ताड़ना ग्रहण न किई उन्हों ने अपने मुंह को पत्थर से भी

अधिक कठोर किया है फिर आने में उन्हों ने नाह किया
है॥
४ तब मैं ने कहा कि निश्चय ये दीन लोग हैं जिन्हों ने
मूर्खता किई है क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर के मार्ग को और अपने
५ ईश्वर के न्याय को नहीं जाना है। मैं महतों के पास जाऊंगा
और उन से कहूंगा क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर के मार्ग को और
अपने ईश्वर के विचार को जाना है परन्तु उन्हों ने भी जूआ
को सर्वथा तोड़ दिया है उन्हों ने बंधनों को झटक दिया
है॥
६ इस लिये बन में से सिंह उन्हें घात करेगा सांझ का हुंडार
उन्हें नाश करेगा चीता उन के नगरों को अगोरेगा हर एक
जो उन में से निकलेगा सो टुकड़ा टुकड़ा किया जायेगा
क्योंकि उन का फिर जाना बढ़ गया है और उन का धर्म्म
७ त्यागना अधिक हुआ है। इस्से मैं तुझे क्योंकर क्षमा कर
सकूं तेरे संतानों ने मुझे बिसरा दिया है और उन की किरिया
खाई है जो देव नहीं हैं और जब मैं ने उन्हें सन्तुष्ट किया तब
उन्हों ने व्यभिचार किया और कंचनी के घर में एकट्ठे हुए।
८ वे सांड़ घोड़ों के समान कामी हुए हर एक अपने अपने परोसी
९ की पत्नी के पीछे हिनहिनाया करते हैं। परमेश्वर कहता है कि
इन बातों के लिये क्या मैं पलटा न लेऊंगा और ऐसे लोगों से
क्या मेरा प्राण बैर न लेगा॥
१० तुम उन की भीतों पर चढ़के नाश करो परन्तु समाप्त न
करो उन की डालियां तोड़ डालो क्योंकि वे परमेश्वर की नहीं
११ हैं। क्योंकि इसराएल के घराने और यहूदाह के घराने ने मेरे
१२ बिरुद्ध अति बिश्वास घात किया है परमेश्वर कहता है। वे
परमेश्वर से मुकर गये हैं और कहा है कि वुह नहीं और
बिपत्ति हम पर न आवेगी और हम तलवार और अकाल न

१३ देखेंगे। परन्तु भविष्यद्वक्ते पवन हो जायेंगे और बचन उन में
नहीं है उन पर ऐसा ही होगा ॥

१४ इस लिये सेनाओं का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि तुम
लोग जो यह बात कहते हो सो देखो मैं अपने बचनों को तेरे
मुंह में आग की नाईं करूंगा और इन लोगों को लकड़ी की
१५ और वुह उन्हें भस्म करेगी। परमेश्वर कहता है हे इसराएल
के घराने देखो मैं दूर से तुम्हारे विरुद्ध एक जातिगण लाऊंगा
वुह बलवंत जातिगण है और वुह प्राचीन जातिगण ऐसी जातिगण
है जिस की भाषा तू नहीं जानता और जिस का कहना तू नहीं
१६ समझता। उन का तूण खुली समाधि है वे सब के सब बलवंत
१७ हैं। तेरा लवण और तेरी रोटी जो तेरे बेटे बेटियों का खाना था
वे खा जायेंगे तेरे झुंड और तेरे ढोर खा जायें वे तेरे दाख और
तेरे गूलर पेड़ खा जायेंगे वे तेरे बाड़ित नगरों को जिन पर तेरा
१८ भरोसा है तलवार से उजाड़ेंगे। तथापि परमेश्वर कहता है कि
मैं उन दिनों में तुम्हें समाप्त न करूंगा ॥

१९ और यों होगा कि जब तुम कहोगे कि परमेश्वर हमारे
ईश्वर ने यह सब हम पर क्यों किया तब तू उन से यों कहियो
जैसा कि तुम ने मुझे त्यागके अपने देश में उपरी देवों की
सेवा किई है तैसा तुम परदेश में उपरी की सेवा करोगे ॥

२० यअक़ूब के घराने में इसे जनाओ और यहूदाह में यह
२१ कहके प्रचारो। अब इसे सुन हे मूर्ख और अज्ञान जाति जो
आंखें रखती है पर नहीं देखती और कान रखती है पर नहीं
२२ सुनती। परमेश्वर कहता है कि क्या तुम मुझ से न डरोगे
मेरे साक्षात से न थर्थराओगे जिस ने समुद्र के सिवाने के लिये
बालू सदा की बिधि के लिये ठहरा रक्खा है और वुह उस्से
आगे बढ़ नहीं सक्ता यद्यपि उस की लहरें उठा करें तथापि
वे प्रबल न होंगी यद्यपि वे गर्जें तथापि वे पार नहीं जा सक्तीं।

२३ परन्तु इस जाति का मन हटा हुआ और फिरा हुआ है वे और
२४ हटके चले गये हैं। और उन्हों ने अपने मन में नहीं कहा
कि चलो अपने ईश्वर परमेश्वर से डरें जो ऋतु में अगले और
पिछले मेंह देता है लवनी के ठहराये हुए अठवारों को हमारे
२५ लिये रख छोड़ता है। तुम्हारी बुराइयों ने इन बस्तुन को
दूर किया है और तुम्हारे पापों ने तुम से भलाई को रोक
२६ रक्खा है। क्योंकि मेरी जाति में दुष्ट पाये जाते हैं जो ब्याधा
की नाई घात में रहते हैं और मनुष्यों के फंसाने को जाल
२७ बिछाते हैं। जैसे पिंजड़ा चिड़ियों से भरा हुआ है तैसे उन
के घर छल से भरे हुए हैं इस लिये वे बढ़के धनी हुए हैं।
२८ वे मोटे होके चमकते हैं हां वे दुष्टों की क्रिया से बढ़ गये
हैं तथापि वे पद अर्थात् अनाथों का पद नहीं बिचारते और
वे भाग्यमान होते हैं और दरिद्रों का बिचार उन्हों ने नहीं
२९ बिचारा। परमेश्वर कहता है कि क्या इन बातों के लिये मैं
पलटा न लेऊंगा और ऐसी जाति से क्या मेरा प्राण बैर न
लेगा॥
३० देश में एक आश्चर्य्यित और घिनित बस्तु हुई है।
३१ भविष्यद्वक्ते झूठ भविष्य कहते हैं और याजक भी उन के
द्वारा से प्रभुता करते हैं और मेरी जाति ऐसा ही चाहती है
परन्तु उस के अंत में तुम लोग क्या करोगे॥

छठवां पर्ब्ब।

१ हे बिनयमीन के संतानो यरूसलम के मध्य में से भाग
जाओ और तकूअ में तुरही बजाओ और बेतुलकरम में
झगड़ा खड़ा करो क्योंकि उत्तर से बुराई दिखाई देती है
२ और एक बड़ा नाश। मैं ने सैहून की पुत्री को एक सुन्दरी
३ और सुकवारी से उपमा दिई है। गड़रिये अपने झुंडों के साथ

उस के पास आवेंगे वे उस के चारों ओर डेरे खड़े करेंगे हर एक
उस के आस पास चरावेगा ॥
४ उस के बिरुद्ध में संग्राम लैस करो उठो ओर मध्यान्ह को
चढ़ जायें हाय हम पर क्योंकि दिन ढलता है क्योंकि सांझ
५ की छाया बढ़ गई है । उठो ओर रात को चढ़ जायें ओर उस के
भवनों को नाश करें ॥
६ क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर ने कहा है कि पेड़ों को काटो
ओर यरूसलम के बिरुद्ध टीला उठाओ यह नगर पलटा पाने
७ पर है उस के मध्य में हर प्रकार का अंधेर है । जैसा सेता
अपना पानी बहाता है तैसा वुह अपनी दुष्टता फैलाती है
उपद्रव ओर लूट उस में सुना जाता है शोक ओर मार पीट
सदा मेरे साक्षात है ॥
८ हे यरूसलम सुधर जा ऐसा न होवे कि मेरा मन तुझ से
अलग हो जाय न हो कि मैं तुझे एक उजाड़ ओर सूना देश
बनाऊं ॥
९ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि वे इसराएल के
उबरे हुए को लता की नाईं सर्बथा बिनेंगे दाख के बटोरवैये की
१० नाईं टोकरों में अपने हाथ फेर दे । मैं किस्से कहूं ओर चिताऊं
जिसतें वे सुनें देखो उन का कान अख़तनः है यहां लों कि
वे सुन नहीं सक्ते देखो परमेश्वर का बचन उन में बृथा बस्तु
हुआ है वे उस्से आनन्दित नहीं होते ॥
११ ओर मैं परमेश्वर के कोप से भरपूर हूं सहने से थक गया
हूं मार्ग में लड़कों पर उंडेल ओर युवा पुरुषों की मंडली पर
भी पत्नी समेत पति भी ओर पुरनिये पूर्ण बय सहित धरे
१२ जायेंगे । ओर उन के घर ओर उन की भूमि स्त्री सहित ओरों
के हो जायेंगे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि देश के बासियों
पर मैं अपना हाथ बढ़ाऊंगा ॥

१३ क्योंकि उन के छोटे से उन के बड़े लों सब के सब
कामाभिलाष में लिप्त हैं और भविष्यद्वक्ता से लेके याजक लों
१४ वे सब के सब झूठ कर्म्म करते हैं। और उन्हों ने मेरी जाति
की पुत्री के घाव को यह कहिके बाहरी बाहर चंगा किया है
१५ कि कुशल कुशल जब कुशल न था। क्या घिनित कार्य्य करके
वे लज्जित हुए नहीं वे तनिक लज्जित न हुए वे लाज न
कर सके इस लिये वे एक पर एक गिरेंगे परमेश्वर कहता है कि
अपने पलटे के समय में वे गिराये जायेंगे॥
१६ परमेश्वर यों कहता है कि मार्गों पर खड़े होके देखो और
पुराने पथों के विषय में पूछो कि वुह उत्तम मार्ग कहां है और
उसी में चलो और अपने जी में जी पाओ परन्तु उन्हों ने कहा
१७ कि हम न चलेंगे। और मैं तुम पर पहरू बैठाऊंगा तुरही
का शब्द सुनो परन्तु उन्हों ने कहा कि हम न सुनेंगे॥
१८ इस लिये हे जातिगणो सुनो और हे मंडली जो उन में है
१९ जान। हे पृथिवी सुन देखो मैं इस जाति पर बुराई लाता हूं
अर्थात् उन्हीं की भावना का फल क्योंकि उन्हों ने मेरे वचनों
को न सुना और मेरी व्यवस्था जो है उसे उन्हों ने त्यागा है।
२० मेरे लिये धूप सिबा से क्यों पहुंचाया जाय अथवा दूरदेश से
सुगन्धद्रव्य तुम्हारी बलिदान की भेंटें ग्राह्य नहीं और तुम्हारी
बलि भी मुझे प्रसन्न नहीं॥
२१ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं इस जाति के
आगे ठोकरें धरता हूं और पिता और पुत्र उन से ठोकर खायेंगे
निवासी और उस का संगी एकट्ठे नष्ट होंगे॥
२२ परमेश्वर यों कहता है कि देखो उत्तर देश से एक जाति
आती है और एक बड़ी जाति पृथिवी के अंतों से उभारी
२३ जायेगी। वे धनुष और भाले को हाथ में लेंगे वे बड़े क्रूर हैं
और दया न दिखावेंगे उन का शब्द समुद्र की नाईं हा हा

करेगा और वे घोड़े पर चढ़ेंगे सो हे सैहून की पुत्री वे तेरे
बिरुद्ध योद्धाओं की नाईं पांती बांधेंगे ॥
२४ हम ने उस का समाचार सुना है हमारे हाथ दुर्बल हुए
हैं पीड़ित स्त्री की पीड़ा की नाईं व्याकुलता ने हमें पकड़
२५ रक्खा है । खेत में मत निकल जाओ और राजमार्ग में मत
२६ फिरो क्योंकि बैरी के पास खड्ग है चारों ओर भय । हे मेरी
जाति की पुत्री टाट पहिन और राख में लोट दुलारे बालक
के लिये हाय हाय और अत्यन्त बिलाप कर क्योंकि लुटेरा हम
पर अचानक आवेगा ॥
२७ मैं ने तुझे ठहराया है कि मेरी जाति के सोने के बिषय
में परीक्षा करो जब तू उन की चाल को परखेगा तो जानेगा ।
२८ वे सब के सब अति फिरे हुए हैं वे कलंक लगाते हुए चलते
हैं वे पीतल और लोहे हैं वे सब के सब बिगाड़नेवाले हैं ।
२९ धौंकनी जल गई सीसा भस्म हो गया ढलवैये ने व्यर्थ गलाया
३० है क्योंकि बुरे अलग नहीं हुए । लोग उन्हें खोटी चांदी कहेंगे
क्योंकि ईश्वर ने उन्हें त्यागा है ॥

सातवां पर्व्व ।

१ वुह बचन जो परमेश्वर की ओर से यह कहते हुए यरमियाह
२ के पास पहुंचा । तू परमेश्वर के मन्दिर के फाटक में खड़ा हो
और वहां इस बचन को प्रचारके कह कि हे सारे यहूदाह जो
परमेश्वर की सेवा के लिये इन फाटकों से भीतर जाते हो
३ परमेश्वर का बचन सुनो । सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का
ईश्वर यों कहता है कि अपनी अपनी चालों और अपनी अपनी
करनियों को सुधारो और मैं इस स्थान में तुम्हें बसाऊंगा ।
४ झूठी बातों पर भरोसा मत करो यह कहके कि परमेश्वर का
मन्दिर परमेश्वर का मन्दिर परमेश्वर का मन्दिर ये ही हैं ॥

५ क्योंकि जो तुम लोग अपनी अपनी चालों और अपनी अपनी
करनियों को निर्धार सुधारोगे और जो तुम मनुष्य में और उस के
६ परोसी के मध्य में सर्बथा न्याय करोगे। यदि तुम लोग
परदेशी और अनाथ और बिधवा पर अंधेर न करोगे और इस
स्थान में निर्दोष लोहू न बहाओगे और अपनी घटी के लिये
७ उपरी देवों का पीछा न करोगे। तो मैं इस देश में जो तुम्हारे
पितरों को दिया इस स्थान में सनातन से सनातन लों
बसाऊंगा॥
८ देखो तुम झूठी बातों पर जो ब्यर्थ हैं भरोसा रखते हो।
९ क्या चोरी और हत्या और परस्त्री गमन करते हो और झूठी
किरिया खाते हो और बअल के लिये धूप जलाते हो और
१० उपरी देवों के पीछे जिन्हें तुम ने न जाना जाते हो। और
मेरे आगे इस मन्दिर में जो मेरे नाम से कहा जाता है आके
खड़े होगे और कहोगे कि हम ने छुटकारा पाया कि ये सारे
११ घिनित कार्य्य करें। यह मन्दिर जो मेरे नाम से प्रसिद्ध है
क्या तुम्हारी दृष्टि में चोरों की मांद है परमेश्वर कहता है कि
१२ देखो मैं ने हां मैं ही ने देखा है। क्योंकि अब मेरे स्थान में
जा जो सैला में था जहां अगिले समय में मैं ने अपना नाम
स्थापन किया था और देखो मैं ने अपने इसराएल लोगों की
दुष्टता के कारण उस्से क्या किया है॥
१३ और अब इस कारण कि तुम लोगों ने ये सारे कार्य्य किये
हैं परमेश्वर कहता है और मैं तड़के उठ उठके तुम से
कहा करता रहा परन्तु तुम ने न सुना और मैं ने तुम्हें पुकारा
१४ परन्तु तुम ने उत्तर न दिया। इस लिये मैं इस मन्दिर
से जो मेरे नाम से प्रसिद्ध है जिस पर तुम लोग भरोसा
करते हो और इस स्थान से जो मैं ने तुम्हें और तुम्हारे
पितरों को दिया वही करूंगा जैसा मैं ने सैला से किया

१५ है। और मैं तुम्हें अपने आगे से दूर करूंगा जैसा मैं ने
तुम्हारे सारे भाईबन्द इफरायम के सारे सन्तानों को दूर
किया॥

१६ पर तू जो है इस जाति के लिये प्रार्थना मत कर और
उन के निमित्त प्रार्थना अथवा बिनती मत कर और मुझ से
१७ बिचवई की बिनती मत कर क्योंकि मैं तेरी न सुनूंगा। क्या
तू नहीं देखता कि यहूदाह के नगरों में और यरूसलम की
१८ सड़कों में ये लोग क्या करते हैं। कि लड़के ईंधन बटोरते
हैं और पितर आग बारते हैं और स्त्री आटा गूंधती हैं जिसतें
स्वर्ग की रानी के लिये रोटी बनावें और उपरी देवों के लिये
१९ तर्पण करें जिसतें मुझे रिस दिलावें। क्या वे मुझे रिस दिलाते
हैं क्या वे अपने ही मुंह की घबराहट के लिये आप ही नहीं
रिसियावते हैं परमेश्वर कहता है॥

२० इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो इस स्थान
पर और मनुष्य पर और पशुन पर और चौगान के पेड़ों पर
और भूमि के फलों पर मेरी रिस और मेरा कोप उंडेला जायगा
और वुह बरेगा और वुताया न जायगा॥

२१ इसराएल का ईश्वर सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि
तुम लोग अपने बलिदानों में अपने बलि की भेंट मिलाओ
२२ और मांस खाओ। क्योंकि जिस दिन मैं तुम्हारे पितरों को
मिस्र के देश में से निकाल लाया मैं ने उन्हें बलिदान और
बलि की भेंट के निमित्त नहीं कहा और उन्हें आज्ञा न किई।
२३ परन्तु इसी बात के लिये मैं ने उन्हें आज्ञा करके कहा कि
मेरे शब्द को मानो और मैं तुम्हारे लिये ईश्वर होऊंगा और
तुम मेरे लिये एक जाति होओगे और उस सारे मार्ग में चलो
२४ जो मैं तुम्हें आज्ञा करूंगा जिसतें तुम्हारा भला होवे। परन्तु
उन्हों ने न सुना और न अपना कान झुकाया परन्तु अपने

बुरे मन के परामर्श और कठोरता के समान चले और पीछे
२५ हटे और आगे न बढ़े। जिस दिन से तुम्हारे पितर मिस्र के
देश से निकल आये आज लों मैं ने तुम्हारे पास अपने सारे
सेवक भविष्यद्वक्तों को प्रतिदिन तड़के उठ उठके भेजा है।
२६ परन्तु उन्हों ने मेरी न सुनी और न अपने कान झुकाये परन्तु
अपने गले को कठोर किया और अपने पितरों से भी अधिक
दुष्ट कर्म्म किया॥
२७ अब जब तू यह सारी बातें उन्हें कहेगा वे तेरी न सुनेंगे
२८ और जब तू उन्हें पुकारेगा वे तुझे उत्तर न देंगे। इस लिये
तू उन से कहियो कि यह वुह जातिगण है जिस ने अपने ईश्वर
परमेश्वर के शब्द को न सुना और ताड़ना न मानी सच्चाई घट
गई और उन के मुंह से जाती रही॥
२९ अपने बाल मुंड़ा और फेंक दे और ऊंचे स्थानों में बिलाप
कर क्योंकि परमेश्वर ने अपने कोप की पीढ़ी को त्यागा और
३० फेंक दिया है। परमेश्वर कहता है कि यहूदाह के संतानों ने
मेरी दृष्टि में बुराई किई है उन्हों ने अपने घिनितों को उस
घर में जो मेरे नाम से प्रसिद्ध है अपवित्र करने को स्थापन
३१ किया है। और उन्हों ने अपने बेटे बेटियों को आग में
जलाने को तुफ़त के ऊंचे ऊंचे स्थानों को जो हिन्नूम के बेटे
की तराई में है स्थापन किया है जो मैं ने आज्ञा न किई और
३२ न मेरे लिये ग्राह्य था। इस लिये परमेश्वर कहता है कि देखो
वे दिन आते हैं कि वुह तुफ़त और हिन्नूम के बेटे की तराई
फिर न कहावेगी परन्तु जूझ की तराई और वे तुफ़त में यहां
३३ लों गाड़ेंगे कि स्थान न मिलेगा। और इन लोगों की लोथें
आकाश के पंछियों के लिये और पृथिवी के पशुन के लिये
३४ भोजन होंगी और कोई उन्हें न हांकेगा। और मैं यहूदाह के
नगरों से और यरूसलम की सड़कों से आनन्द का शब्द और

सुख बिलास का शब्द दुल्हा और दुल्हिन का शब्द उठवाऊंगा
क्योंकि देश उजाड़ हो जायेगा ॥

आठवां पर्व्व ।

१ परमेश्वर कहता है कि उस समय में वे यहूदाह के राजाओं
की हड्डियों को और उन के राजपुत्रों की हड्डियों को और
याजकों की हड्डियों को और भविष्यद्वक्तों की हड्डियों को और
यरूसलम के निवासियों की हड्डियों को उन की समाधिन में
२ से निकाल फेंकेंगे। और सूर्य्य और चांद और स्वर्ग की सारी
सेना के आगे उन्हें फैलावेंगे जिन से उन्हों ने प्रीति किई है
और जिन की सेवा किई है और जिन के पीछे गये हैं और
जिन की खोज किई है और जिन्हें दंडवत किई है वे बटोरी
न जायेंगी और गाड़ी न जायेंगी परन्तु वे भूमि पर के मल
३ की नाई होंगी। और सारे उबरे हुए जो इस बुरे घराने से
हर एक स्थान में रह जायेंगे जहां जहां मैं ने उन्हें खेदा है
मृत्यु को जीवन से अधिक चाहेंगे सेनाओं का परमेश्वर कहता है॥
४ तू उन से यह भी कह कि परमेश्वर कहता है जो गिरेंगे
सो क्या फिर न उठेंगे अथवा जो जाता है सो फिर न आवेगा।
५ यरूसलम के ये लोग सदा के धर्म्म त्याग से किस लिये फिर
गये उन्हों ने छल को दृढ़ता से पकड़ रक्खा है और फिर आने
६ को नाह किया है। मैं ने ध्यान से सुना कि उन्हों ने ठीक न
कहा और यह कहके कोई अपनी दुष्टता से नहीं पछताता कि
मैं ने क्या किया है हर एक अपनी चाल पर चलता है जैसा
७ घोड़ा लड़ाई में घुमता है। आकाश की लगलग भी अपने
समय को जानती है और पिंडुकी और सुपाबीना और सारस
अपने आने की ऋतु को जानती हैं परन्तु मेरी जाति परमेश्वर
के न्याय को नहीं बूझती है॥

८ तुम क्योंकर कहते हो कि हम बुद्धिमान हैं और परमेश्वर
की व्यवस्था हमारे पास है देख व्यर्थ लेखकों की झूठी लेखनी
९ ने उसे झूठ बना रक्खा है। बुद्धिमान जन घबरा गये बिस्मित
हुए और पकड़े गये देखो उन्हों ने परमेश्वर के बचन की
१० अवज्ञा किई और उन में किस बात की बुद्धि है। इस लिये
मैं उन की पत्नियां औरों को देऊंगा और उन के खेत उन्हें
जो उन के अधिकारी होंगे क्योंकि छोटे से बड़े लों वे सर्वथा
कामाभिलाषी भविष्यद्वक्ता से लेके याजक लों हर एक झूठा
११ व्यवहार करता है। और उन्हों ने मेरी जाति की पुत्री के
घाव को बाहरी बाहर यह कहके चंगा किया है कि कुशल
१२ कुशल जब कि कुशल न था। क्या वे अपने घिनित कर्म्म से
लज्जित थे नहीं वे लज्जित होने न जानते थे इस लिये वे
गिरनेवालों में गिरेंगे वे अपने दण्ड के समय गिराये जायेंगे
१३ परमेश्वर कहता है। परमेश्वर कहता है कि मैं सर्वथा उन्हें
नाश करूंगा लता में दाख न होंगे और गूलर पेड़ में गूलर न
होंगे पत्ते भी मुरझायेंगे क्योंकि मैं ने ठहराया है कि ये जाते
रहें॥

१४ हम क्यों चुपके बैठ रहे हैं आओ एकट्ठे होवें और दृढ़
नगरों में पैठें और वहां चुपके ठहरें क्योंकि हमारे ईश्वर परमेश्वर
ने हमें चुप किया है और बिष का जल हमें पीने को दिया
१५ है क्योंकि हम ने परमेश्वर के बिरुद्ध पाप किया है। हम ने
कुशल की बाट जोही परन्तु कुछ भलाई नहीं है चंगा होने
के समय के लिये और देख भय॥

१६ दान से उस के घोड़ों का फर्राना सुना जाता है उस के
बलवन्त घोड़ों के हिनहिनाने के शब्द से सारा देश थर्थरा
रहा है वे आये भी हैं और देश को और सब को जो उस में
१७ हैं नगर और उस में के बासियों को खा गये हैं। क्योंकि देख

में तुम्हारे बिरुद्ध सर्प्पों को अर्थात् नागों को भेजता हूं जो
मोहे नहीं जा सक्ते और वे तुम्हें डसेंगे परमेश्वर कहता है ॥
१८ हाय कि सुख मेरे शोक पर आवे मेरा मन मुझ में मूर्छित
१९ है । देखो मेरी जाति की पुत्री का शब्द दूर देश से क्या
परमेश्वर सेहून में नहीं क्या उस का राजा उस में नहीं तो
उन्हों ने क्यों मुझे अपनी खोदी हुई मूर्त्तिन से और अपनी
२० उपरी ब्यर्थता से खिजाया है । लवनी हो गई ग्रीष्म जाता
रहा तथापि हम बचाये न गये ॥
२१ अपनी जाति की लड़की के घाव के कारण से मेरा मन
चूर हो रहा है मैं बिलाप करता हूं घबराहट ने मुझे थामा
२२ है । क्या गिलियाद में औषध नहीं है वहां कोई बैद्य नहीं
फिर मेरी जाति की लड़की का घाव क्यों नहीं अच्छा हुआ ॥

नवां पर्ब्ब ।

१ हाय कि मेरा सिर जल हो जाता और मेरी आंखें आंसुओं
का सोता जिसतें मैं अपनी जाति की लड़की के जूझे हुओं के
लिये बिलाप करूं ॥
२ हाय कि बन में मेरे लिये पथिकों का टिकाव होता जिसतें मैं
अपनी जाति को छोड़के उन के पास से चला जाता क्योंकि वे सब
३ परस्त्री गामी हैं और छल ब्यवहारक की मंडली । और धनुष की
नाईं उन्हों ने अपनी जीभ खींची है झूठ से और सत्य के समान
नहीं वे देश में बलवन्त हुए हैं क्योंकि वे दुष्टता से दुष्टता में बढ़
४ गये हैं और मुझे नहीं जाना परमेश्वर कहता है। हर एक जन
अपने अपने संगी से चौकस रहे और कोई भाई पर भरोसा न करे
क्योंकि हर एक भाई निश्चय छल से ब्यवहार करेगा और हर
५ एक संगी दोष लगाता फिरेगा। और हर एक जन अपने अपने
संगी को छलेगा और वे सच सच न कहेंगे उन्हों ने अपनी

जीभ को झूठ बोलना सिखाया है और पाप करते करते थक
६ गये। तेरा निवासस्थान कपट के मध्य में है छल के मारे
मुझे जान्ने में उन्हों ने नाह किया है परमेश्वर कहता है॥
७ इसी लिये सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं उन्हें
पिघलाके जांचूंगा कि क्योंकर अपनी जाति की लड़की के बिषय
८ में व्यवहार करूं। उन की जीभ घातक बाण के समान है
वुह कपट से बचन बोलती है वुह अपने संगी से कुशल की
बात मुंह से कहेगी परन्तु अपने मन में उस की घात में
९ बैठती है। परमेश्वर कहता है कि क्या इन बातों के लिये मैं
उन्हें दण्ड न देऊंगा और मेरा प्राण ऐसी जातिगण से पलटा
१० न लेगा। मैं पहाड़ों पर रोना पीटना डालूंगा और चौगान की
चराई पर विलाप क्योंकि वे यहां लों जल गये कि कोई उस
में से नहीं जाता और ढोर का शब्द नहीं सुना जाता परन्तु
११ आकाश के पंछी और पशु भाग गये वे जाते रहे। और मैं
यरूसलम को ढूह और गीदड़ों की मांद बनाऊंगा और यहूदाह
के नगरों को उजाड़ करूंगा ऐसा कि कोई निवासी उस में न
रहेगा॥
१२ बुद्धिमान कौन है जो इसे बूझे और परमेश्वर के मुंह ने
किस्से कहा कि वुह प्रगट कर सके देश किस लिये नाश हुआ
है और अरण्य की नाईं यहां लों जल गया है कि कोई उस
में से नहीं जाता॥
१३ और परमेश्वर ने कहा इस कारण कि उन्हों ने मेरी व्यवस्था
को त्यागा है जो मैं ने उन के आगे रक्खी और मेरे शब्द को
१४ नहीं माना और उस के समान नहीं चले। परन्तु अपने अपने
मन की कठोरता के पीछे चले गये और बअलीम के पीछे जो
१५ उन के पितरों ने उन को सिखलाया। इस लिये सेनाओं का परमेश्वर
और इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देख मैं इस जाति

को नागदौना खिलाऊंगा और विष जल पीने को देऊंगा।
१६ और मैं उन्हें जातिगणों में छिन्न भिन्न करूंगा जिन्हें न उन्हों
ने न उन के पितरों ने जाना है और मैं उन के पीछे तलवार
भेजूंगा जब लों मैं उन्हें मिटा न डालूं॥
१७ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि सोचो और विलापिनियों
को बुलाओ और वे आवें और गुणकारनियों को बुलवा भेज
१८ और वे आवें। और वे शीघ्र हम पर विलाप आरंभ करें जिसतें
हमारी आंखें आंसू बहावें और हमारी पलकें जल ढालें।
१९ क्योंकि विलाप का शब्द सैहून से सुना गया है कि हम कैसे
नष्ट हुए हैं हम अति घबरा गये हैं क्योंकि हम ने देश को
छोड़ दिया है क्योंकि उन्हों ने हमारे निवासों को ढा दिया है।
२० इस लिये हे स्त्रियो परमेश्वर का वचन सुनो और तुम्हारे कान
उस के मुंह की बात ग्रहण करें और अपनी लड़कियों को
विलाप सिखाओ और हर एक अपने अपने संगी को विलाप
२१ सिखावे। क्योंकि मृत्यु हमारी खिड़कियों में से चढ़ आई है
और हमारे भवनों में पैठी है जिसतें सड़क में से बालक को
२२ और चौकों में से तरुणों को काट डाले। परमेश्वर यों कहता
है बोल कि मनुष्यों की लोथ खाद की नाईं खेतों में गिरेंगी
और लवैयों की मुठिया की नाईं जिन का कोई उठानेवाला न
हो॥
२३ परमेश्वर यों कहता है कि बुद्धिमान अपनी बुद्धि पर बड़ाई
न करे और बलवान अपने बल पर घमंड न करे धनवान
२४ अपने धन पर न फूले। परन्तु जो बड़ाई करता है सो मेरी
समझ और ज्ञान रखने में बड़ाई करे कि मैं परमेश्वर पृथिवी
पर दया और न्याय और सच्चाई का व्यवहार करता हूं क्योंकि
परमेश्वर कहता है कि मैं इन बातों से आनन्दित हूं॥
२५ परमेश्वर कहता है कि देख वे दिन आते हैं कि मैं

ख़तनः किये हुओं को उन के साथ जिन का ख़तनः किया
२६ नहीं गया है दण्ड देऊंगा। मिस्र को और यहूदाह को और
अदूम को और अम्मून के संतानों को और मोआब को और
सब को जिन की दाढ़ी के कोने मुड़े हुए हैं जो बन में बास
करते हैं क्योंकि सारे जातिगण अख़तनः हैं और इसराएल के
सारे घराने मन के अख़तने हैं॥

दसवां पर्ब्ब।

१ हे इसराएल के घराने जो बचन परमेश्वर ने तुम से कहा
२ है सुनो। परमेश्वर यों कहता है कि अन्यदेशियों की चाल
मत सीखो और स्वर्ग के चिन्हों से बिस्मित मत होओ क्योंकि
३ अन्यदेशी उन से बिस्मित होते हैं। क्योंकि लोगों के ठहराये
हुए कार्य्य बृथा ही हैं क्योंकि वे बन में पेड़ काटते हैं और
४ कार्य्यकारी उसे बसूले से बनाता है। वे चांदी और सोने से
उसे बिभूषित करते हैं कीलों और हथौड़ियों से उसे दृढ़ करते
५ हैं जिसतें वुह न डगमगावे। वे खजूर पेड़ की नाईं पोढ़ हैं
परन्तु बोल नहीं सक्ते उन्हें सर्बथा ले जाने पड़ेगा क्योंकि वे
चल नहीं सक्ते उन से मत डरो क्योंकि वे दुख नहीं दे सक्ते
और भलाई करने में वे अशक्त हैं॥

६ हे परमेश्वर तेरे तुल्य कोई नहीं तू महान है और पराक्रम
७ में तेरा नाम बड़ा है। हे जातिगणों के राजा तुझ से कौन न
डरेगा इस लिये कि तुझे योग्य है क्योंकि जातिगणों में और
सारे बुद्धिमानों में और उन के सारे राज्यों में तेरे तुल्य कोई
८ नहीं। और वे सर्बथा भट्ठ और मूढ़ हैं उन की शिक्षा बृथा
९ है वुह काष्ठ है। पीटी हुई चांदी तरसीस से और सोना
ऊफ़ाज़ से पहुंचाया जाता है सोनार के और ठठेरों के
हाथों के कार्य्य हैं नीला और बैंजनी उन का पहिरावा है वे

१० सब के सब गुणी के कार्य्य हैं। परन्तु परमेश्वर सत्य ईश्वर वही
जीवता ईश्वर और सनातन का राजा है उस के कोप से पृथिवी
थर्थरावेगी और जातिगण उस की जलजलाहट को नहीं सह
११ सकेंगे। उन्हें इस रीति से कहो कि जिन देवों ने स्वर्ग और
पृथिवी को नहीं बनाया वे पृथिवी पर से और इन स्वर्गों के तले से
१२ नष्ट होंगे। उस ने अपनी सामर्थ्य से पृथिवी को सृजा है अपनी
बुद्धि से जगत को स्थिर किया और अपनी समझ से स्वर्गों को
१३ फैलाया है। जब वुह अपने शब्द को बढ़ाता है तब जल
का कोलाहल आकाश में होता है और पृथिवी के सिवानों से
मेघों को उठाता है वुह मेंह के साथ बिजुली निकालता है
१४ और अपने भंडारों से पवन निकालता है। हर एक मनुष्य
अपनी समझ से मूर्ख होता है हर एक कार्य्यकारी मूरत से
लज्जा जाता है क्योंकि उस की ढाली हुई मूर्त्ति मिथ्या है और
१५ उन में कुछ स्वास नहीं। वे व्यर्थ हैं भूल चूक के कार्य्य
१६ अपने पलटा के समय में वे नाश होंगे। यअकूब का भाग
उन की नाईं नहीं है क्योंकि वुह सर्बलोक का कर्त्ता और
इसराएल उस के अधिकार का दण्ड है उस का नाम सेनाओं
का परमेश्वर है॥

१७ हे गढ़ के निवासी देश से अपनी सामग्री को बटोर।
१८ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं अब की बार देश
के निवासियों को ढेलवांसों से मारूंगा और मैं उन्हें यहां लों
सकेत करूंगा कि वे पकड़े जायेंगे॥

१९ मेरी चोट के कारण हाय मुझ पर मेरा घाव दुखता
है परन्तु मैं ने कहा है कि निश्चय यह कष्ट है तथापि मैं
२० उसे सहूंगा। मेरा तंबू उजाड़ पड़ा है और मेरी सारी रस्सियां
टूटी हैं मेरे बेटे मुझ में से निकल गये और नहीं हैं फिर
मेरा तंबू खड़ा करने को अथवा ओझलों को टांगने को कोई

२१ नहीं। क्योंकि चरवाहे पशुवत हुए और उन्हों ने परमेश्वर को
नहीं ढूंढ़ा इस लिये वे भाग्यवान न हुए और उन के सारे
२२ झुंड छिन्न भिन्न हुए हैं। देखो धूम का शब्द आया है यहूदाह
के नगरों को उजाड़ने और गीदड़ों का निवास करने को उत्तर
देश से एक बड़ा कोलाहल बढ़ा आता है॥
२३ हे परमेश्वर मैं जानता हूं कि मनुष्य की चाल आप से नहीं
है और चलनेवाले मनुष्य से नहीं कि अपने डग को सुधारे।
२४ हे परमेश्वर मुझे ताड़ना कर परन्तु बिचार से अपने क्रोध में
२५ नहीं न होवे कि मुझे चूर कर डाले। अन्यदेशियों पर जिन्हों
ने तुझे नहीं जाना है अपना कोप उंडेल और घरानों पर जिन्हों
ने तेरे नाम की प्रार्थना नहीं किई है क्योंकि उन्हों ने यअक़ूब
को खाया और उन्हों ने उसे भक्षण करके भस्म किया है और
उस के निवासस्थान को उजाड़ा है॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर का बचन यह कहते हुए यरमियाह के पास आया॥
२ कि इस वाचा के वचन सुनो और यहूदाह के मनुष्यों से
३ और यरूसलम के निवासियों से कहो। और तू उन से कह कि
परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि वुह जन स्रापित
४ है जो इस वाचा के वचनों को न सुनेगा। जो मैं ने तुम्हारे
पितरों से उस दिन कहा जब मैं उन्हें मिस्र देश से लोहे के
भट्ठे से यह कहके निकाल लाया कि मेरा शब्द सुनो और मेरी
सारी आज्ञा पालन करो सो तुम मेरे लिये एक जाति होओगे
५ और मैं भी तुम्हारा ईश्वर होऊंगा। जिसतें मैं अपनी उस
किरिया को पूरी करूं जो मैं ने तुम्हारे पितरों से खाई है कि
मैं दूध और मधु से बहते हुए देश उन्हें देऊं जैसा आज के
दिन है तब मैं ने उत्तर देके कहा कि हे परमेश्वर ऐसा ही होवे॥

६ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि इन सारी बातों को
यहूदाह के नगरों में और यरूसलम की सड़कों में प्रचारके
कह कि इस वाचा के बचनों को सुनो और उन्हें पालन करो।
७ क्योंकि मैं ने तुम्हारे पितरों को बड़े यत्न से चिताया उस दिन
से कि उन्हें मिस्र देश से निकाल लाया आज लों मैं ने तड़के
उठके उन्हें चिता चिताके कहा कि मेरे शब्द को सुनो।
८ परन्तु उन्हों ने न माना और न अपना कान झुकाया पर हर
एक अपने अपने दुष्ट मन की कठोरता पर चला इस लिये मैं
इस वाचा की सारी धमकियों को उन पर लाया जो मैं ने उन्हें
पालने की आज्ञा किई परन्तु उन्हों ने न पाला॥
९ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि यहूदाह के मनुष्यों में
१० और यरूसलम के वासियों में कुयुक्ति पाई गई है। वे अपने
प्राचीन पितरों की बुराइयों में फिर पलट गये हैं जिन्हों ने
मेरे बचन पालने को नाह किया है और वे उपरी देवों के
पीछे उन की सेवा करने को गये हैं इसराएल के घराने और
यहूदाह के घराने ने मेरी वाचा को भंग किया है जो मैं ने
उन के पितरों से किई थी॥
११ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं उन पर विपत्ति
लाने पर हूं जिस्से वे अपने को छुड़ा न सकेंगे और यद्यपि वे
१२ मेरी प्रार्थना करें तथापि मैं उन की न सुनूंगा। और यहूदाह के
नगर और यरूसलम के निवासी जायेंगे और उन देवों की
प्रार्थना करेंगे जिन के लिये वे धूप जलाते हैं परन्तु उन की
१३ विपत्ति के समय में वे उन्हें कुछ न बचावेंगे। क्योंकि हे
यहूदाह तेरे नगरों की गिनती के समान तेरे देव हुए हैं
और यरूसलम की सड़कों की गिनती के समान एक लज्जित
वस्तु के लिये बेदी और बअल के लिये धूप जलाने को बेदी
१४ तुम ने स्थापन किई हैं। इस लिये तू इस जाति के लिये

प्रार्थना मत कर और न उन के निमित्त बिनती अथवा प्रार्थना
कर क्योंकि उन की विपत्ति के समय में मैं उन की प्रार्थना न
सुनूंगा ॥
१५ मेरे घर में मेरी प्रिया का क्या काम जब लों वुह बहुतों
से दुष्टता करती है और पवित्र मांस तुझ से बीत जायेगा
१६ क्योंकि तू अपनी विपत्ति के समय में आनन्द करेगी। परमेश्वर
ने तेरा नाम हरी जलपाई और सुन्दर फलवंत पेड़ रक्खा था
उस ने बड़े हुल्लड़ के शब्द से उस पर आग बारी है और उस
१७ की डालियां तोड़ी गईं। और सेनाओं के परमेश्वर ने जिस ने
तुझे रोपा तुझ पर बुराई उच्चारी है उस बुराई के लिये जो
इसराएल के घराने और यहूदाह के घराने ने अपने विरुद्ध
किई कि मुझे रिस दिलाने को बअल के लिये धूप जलाया ॥
१८ और परमेश्वर ने मुझ पर प्रगट किया और मैं ने जाना तब
१९ तू ने उन का व्यवहार मुझे दिखाया। क्योंकि मैं घरैले मेम्ने
की नाईं था जो घात के लिये पहुंचाया जाता है पर मैं ने न
जाना कि उन्हों ने मेरे विरुद्ध यह कहके युक्ति बांधी थी कि
फल सहित पेड़ को नाश करें और जीवतों के देश में से उसे
२० काट डालें जिसतें उस का नाम फिर न लिया जाये। परन्तु
हे सेनाओं के परमेश्वर जो धर्म्म से बिचार करता है जो गुर्दों और
मन को जांचता है मैं तेरा बैर लेना उन पर देखूं क्योंकि मैं ने
अपना वाद तेरे आगे धरा है ॥
२१ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि अनतात के मनुष्यों
के बिषय में जो यह कहके तेरे प्राण के गाहक हैं परमेश्वर
के नाम से भविष्य मत कह जिसतें तू हमारे हाथ से मारा
२२ न जाये। इस कारण सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि
देखो मैं उन पर दण्ड बिचार करने पर हूं तरुण मनुष्य तलवार
से मारे जायेंगे और उन के बेटे बेटियां अकाल से मरेंगे।

२३ और उन में से कोई न बचेगा क्योंकि मैं अनतात के मनुष्यों
पर बुराई और उन के पलटे का बरस लाऊंगा ॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ हे परमेश्वर जब मैं तुझ से अपबाद करूं तू धर्म्मी है
तथापि बिचार के विषय में मैं तुझ से संबाद करूंगा कि दुष्टों
का मार्ग क्यों भाग्यवान होता है क्या सब के सब चैन में हैं जो
२ छल से व्यवहार करते हैं । तू ने उन्हें लगाया उन्हों ने जड़
भी पकड़ी है वे बढ़ गये और फल लाये तू उन के मुंह के
३ पास है परन्तु उन के मन से दूर है । परन्तु हे परमेश्वर तू
ने मुझे जाना है तू मुझे देखेगा और जांचने से तू ने मेरा मन
अपनी ओर पाया है उन्हें घात के लिये भेड़ों की नाईं निकाल
४ और घात के दिन के लिये उन्हें अलग कर। उस में के वासियों
की दुष्टता के मारे कब लों देश विलाप करेगा और हर एक
खेत की घास झुरा जायेगी पशु पंछी तो मिट गये क्योंकि
उन्हों ने कहा है कि वुह हमारा अंत न देखेगा ॥
५ यदि पगइत के संग दौड़ने में उन्हों ने तुझे थकाया फिर
तू घोड़ों के साथ क्योंकर दौड़ेगा और यद्यपि कुशल के देश
पर तुझे भरोसा हो तथापि यरदन के बाढ़ में तू क्या करेगा।
६ जब कि तेरे भाई बन्दों ने भी और तेरे पिता के घराने अर्थात्
इन्हों ने भी तुझ से छल का व्यवहार किया है और इन्हों ने
भी ललकारते ललकारते तेरा पीछा किया है उन की प्रतीत मत
कर जो वे तुझ से मित्रता से बात करें ॥
७ मैं ने अपने घर को त्यागा है मैं ने अपने अधिकार को
छोड़ दिया है अपने प्राण के प्रिय को उस के बैरियों के हाथ
८ में दिया है । मेरे लिये मेरा अधिकार बन में के सिंह की
नाईं हुआ है उस ने मेरे विरुद्ध अपना शब्द बढ़ाया है इस

९ लिये मैं ने उस्से घिन किया। क्या मेरा अधिकार मेरे लिये
बनपशु हां लकड़बग्घे के समान हुआ बनपशु उस के विरुद्ध चारों
ओर से हैं हे खेत के सारे पशुओ एकट्ठे होके खाने आओ।
१० बहुत से चरवाहों ने मेरी दाख की बारियों को नष्ट किया
उन्हों ने मेरे अधिकार को पांव तले रौंदा है और मेरा सुन्दर
११ अधिकार उजाड़ अरण्य कर डाला है। उन्हों ने उसे एक
उजाड़ बनाया है वुह उजाड़ होके मेरे लिये रोता है सारा
१२ देश उजाड़ हुआ है तथापि कोई उसे नहीं सोचता है। बन
के सारे ऊंचे स्थानों पर लुटेरे आये हैं क्योंकि तलवार परमेश्वर
के ठहराने से भक्षण करती है देश की एक ओर से दूसरी
१३ ओर लों किसी का कुशल नहीं है। उन्हों ने गोहूं बोये हैं
पर कांटे लवे हैं वे परिश्रम करते हैं परन्तु लाभ न पावेंगे और
वे परमेश्वर के बड़े कोप के मारे तुम्हारे अनाज से लज्जित
होंगे॥

१४ मेरे सारे बुरे परोसियों के विषय में जो अधिकार को छेड़ते
हैं जो मैं ने इसराएल अपने लोगों को अधिकार किया है
परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं उन्हें उन के देश से उखाड़
डालूंगा और यहूदाह के घराने को उन के मध्य में से उखाड़ूंगा॥

१५ और उन्हें उखाड़ने के पीछे मैं फिर उन पर दया करूंगा और
हर एक को अपने अपने अधिकार और अपने अपने देश में
१६ फिर लाऊंगा। और यदि वे निश्चय मेरी जाति की चालें सीखेंगे
कि मेरे नाम से किरिया खायें कि जीवते परमेश्वर सों जैसा
उन्हों ने मेरी जाति को बअल की किरिया सिखाई है तो ऐसा
१७ होगा कि वे मेरी जाति के मध्य में बनाये जायेंगे। परन्तु यदि
वे न मानेंगे तब मैं उस जातिगण को उखाड़ूंगा उखाड़ते उखाड़ते
नाश करूंगा परमेश्वर कहता है॥

तेरहवां पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर ने मुझ से यों कहा कि तू जाके एक सूती पटका ले
और उसे अपनी कटि पर बांध परन्तु उसे पानी में मत डालना।
२ सो परमेश्वर के बचन के समान मैं ने पटका लेके अपनी कटि
३ पर बांधा। और परमेश्वर का बचन दूसरी बार यह कहते
४ हुए मेरे पास पहुंचा। कि अपनी कटि पर का बंधा हुआ पटका
ले और उठके फुरात पर जा और चटान के एक दरार में उसे
५ छिपा। सो जैसा परमेश्वर ने मुझे आज्ञा किई थी तैसा ही
६ जाके मैं ने उसे फुरात के लग छिपाया। और बहुत दिनों के
पीछे ऐसा हुआ कि परमेश्वर ने मुझ से कहा कि उठ फुरात
को जा और वुह पटका जो मैं ने तुझे वहां छिपाने को आज्ञा
७ किई थी ले। और मैं फुरात को गया और खोदा जहां मैं ने
पटका छिपाया था वहां से उसे लिया और क्या देखता हूं कि
८ वुह पटका ऐसा बिगड़ गया कि किसी काम का न रहा। तब
परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा॥

९ परमेश्वर यों कहता है कि मैं इस भांति से यहूदाह की
बड़ाई और यरूसलम की बड़ी बड़ाई को अति नाश करूंगा।
१० ये दुष्ट लोग जो मेरे बचन सुन्ने को नाह करते हैं और अपने
ही मन की कठोरता के समान चलते हैं और सेवा करने और
दंडवत करने को उपरी देवों के पीछे गये हैं वे इस पटके की
११ नाईं होंगे जो किसी काम का नहीं। क्योंकि जैसे पटका मनुष्य
की कटि पर लिपटा रहता है तैसे इसराएल के सारे घराने
और यहूदाह के सारे घराने को अपने से लिपटाया परमेश्वर
कहता है कि वे मेरे लिये एक जाति और एक नाम और स्तुति
और बिभव बनें पर उन्हों ने न सुना॥

१२ और तू उन से यह बचन कह कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर

यों कहता है कि हर एक पाच दाखरस से भरा जायगा और वे
तुझे कहेंगे कि हम क्या निश्चय यह नहीं जानते कि हर एक
पाच दाखरस से भरा जायगा ॥
१३ और तू उन से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि देखो
मैं इस देश के सारे बासियों को और राजाओं को जो दाऊद
के सिंहासन पर बैठते हैं और याजकों और भविष्यद्वक्तों को
और यरूसलम के सारे निवासियों को मतवालपन से भर दूंगा।
१४ और मैं उन्हें एक दूसरे पर पटकूंगा और पुच सहित पिता पर
परमेश्वर कहता है मैं मया न करूंगा और न छोड़ूंगा और मैं
ऐसी दया न दिखाऊंगा जिसतें मैं उन्हें नाश न करूं ॥
१५ सुनो और कान धरो गर्ब न करो क्योंकि परमेश्वर ने कहा है।
१६ परमेश्वर अपने ईश्वर को तुम महिमा दो उस्से आगे कि वुह
अंधियारा लावे और उस्से आगे कि तुम्हारे पांव अंधेरे पहाड़ों
पर ठोकर खावें और जब तुम उंजियाले की बाट जोहते तब
वुह उसे मृत्यु की छाया में फिरावे और घोर अंधकार बनावे।
१७ पर यदि तुम लोग न सुनोगे तो मेरा मन गुप्त स्थान में तुम्हारे
गर्ब के लिये शोक करेगा और बहुत रोदन करेगा और मेरी
आंखों से आंसू बहि निकलेगा क्योंकि परमेश्वर का झुंड बंधुआई
में पहुंचाया जाता है ॥
१८ राजा और रानी से कहो कि अपने अपने को दीन
करके बैठो क्योंकि तुम्हारे बिभव का मुकुट तुम्हारे सिर से गिर
१९ पड़ा है। दक्खिन के नगर बंद हैं और कोई नहीं खोलता
यहूदाह की बंधुआई भरपूर हुई है सभों की बंधुआई हुई
२० है। अपनी आंखें उठाओ और उन्हें देखो जो उत्तर दिशा से
आते हैं तुझे दिया गया झुंड तेरे बिभव की भेड़ें कहां हैं।
२१ जब पलटा तुझ पर आवेगा तो तू क्या कहेगा क्योंकि तू तो
उन्हें अपने ऊपर प्रधानता और प्रभुता सिखाता है क्या पीड़ित

२२ स्त्री की नाईं पीर तुझे न पकड़ेगी। और जब तू अपने मन
में कहेगा कि ये बातें मुझ पर क्यों पड़ी हैं तेरी बुराई की
बहुताई के लिये तेरा ही आंचर उघारा गया और तेरी एड़ी
भी उघारी छोड़ी गई॥
२३ क्या हबशी अपने चाम को अथवा चीता अपने बिंदुवों को
पलट सक्ता है तब तुम भी जो कुकर्म्म सीखे हो सुकर्म्म कर
२४ सको। इस लिये मैं उन्हें छिन्न भिन्न करूंगा उस भूसी की
२५ नाईं जो बन के पवन से उड़ जाती है। परमेश्वर कहता है
कि यही तेरा भाग मेरी ओर से तेरा नपा हुआ अंश जिस ने
२६ मुझे बिसराया है और झूठ पर भरोसा किया है। इस लिये
मैं तेरे आंचरों को तेरे मुंह लों उघारूंगा जिसतें तेरी लाज
२७ देखी जाये। मैं ने तेरा व्यभिचार और तेरा हिनहिनाना और
तेरे छिनाले की बुराई और तेरे घिनितों को देखा है टीलों पर
खेतों में हे यरूसलम तुझ पर हाय तू कब लों पवित्र न
होगी॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर का बचन जो झुराहट के विषय में यरमियाह के
२ पास पहुंचा। यहूदाह बिलाप करता है और उस के फाटक
घटे जाते हैं और भूमि पर काले वस्त्र पहिने हुए हैं और
३ यरूसलम का रोना ऊपर पहुंचा। कुलीनों ने भी अपने छोटों
को पानी के लिये भेजा वे कूए पर आये परन्तु पानी न पाया
वे छूछे पात्र ले ले फिर आये वे लज्जित होके घबराये और
४ उन्हों ने अपने सिर ढांपे। इस लिये कि भूमि फट गई क्योंकि
भूमि पर पानी न बरसा किसानों ने लज्जित होके अपना सिर
५ ढांपा। क्योंकि हरिणी भी खेतों में बियानी परन्तु घास के न
६ होने से उस ने उसे त्याग किया। और बनैले गदहे ऊंचे

स्थानों में खड़े रहे उन्हों ने गीदड़ों की नाईं पवन को
सुङ्क लिया और हरयाली न होने से उन की आंखें घट गईं॥
७ यद्यपि हमारी बुराइयों ने हम पर साची दिई है तथापि
हे परमेश्वर अपने ही नाम के लिये कार्य्य कर क्योंकि हमारा
फिर फिर धर्म्म त्यागना वहुत हुआ है हम ने तेरे बिरोध में
८ पाप किया है। हे इसराएल की आशा बिपत्ति में उस का
निस्तारक तू देश में क्यों परदेशी के समान होता है और
पथिक की नाईं जो रात भर के टिकने के लिये बिछाता है।
९ तू क्यों व्याकुल मनुष्य के समान और वीर के नाईं है जो
बचाने का पराक्रम नहीं रखता हे परमेश्वर तू तो हमारे मध्य
में है और हम तेरे नाम से पुकारे जाते हैं तू हमें मत छोड़॥
१० परमेश्वर ने इस जाति से यों कहा है कि वे भ्रमने ऐसा
चाहते हैं उन्हों ने अपने पांव को नहीं रोका है इस लिये
परमेश्वर उन्हें ग्रहण नहीं करता अव वुह उन की बुराई को
स्मरण करेगा और उन के पापों का लेखा लेगा॥
११ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि इस जाति की भलाई के
१२ लिये प्रार्थना मत कर। वे जब व्रत करें तब मैं उन की
प्रार्थना न मुनूंगा और जब वे बलिदान की अथवा मांस की
भेंट चढ़ावें तो मैं उन्हें ग्रहण न करूंगा क्योंकि तलवार से
और अकाल से और मरी से उन्हें मिटा डालूंगा॥
१३ तब मैं ने कहा कि हाय हे प्रभु परमेश्वर देख भविष्यद्वक्ते
उन से कहते हैं कि तुम तलवार न देखोगे और तुम पर
अकाल न पड़ेगा क्योंकि निश्चय मैं तुम्हें इस स्थान में कुशल
देऊंगा॥
१४ तब परमेश्वर ने मुझ से कहा कि भविष्यद्वक्ते मेरे नाम से
झूठ भविष्य कहते हैं मैं ने उन्हें नहीं भेजा और न उन्हें
आज्ञा किई और न उन से कहा वे झूठा दर्शन और गणकता

और वृथा और अपने ही मन की कुटिलता तुम पर प्रगट
१५ करते हैं। इस लिये उन भविष्यद्वक्तों के विषय में जो मेरे
नाम से भविष्य कहते हैं यद्यपि मैं ने उन्हें नहीं भेजा परन्तु
वे आप से आप कहते हैं कि इस देश पर तलवार और अकाल
न होगा परमेश्वर यों कहता है कि तलवार और अकाल से वे
१६ ही भविष्यद्वक्ता नाश होंगे। और जिन लोगों से वे भविष्य
कहते हैं सो अकाल और तलवार के द्वारा से यरूसलम की
सड़कों में फेंके जायेंगे और उन्हें और उन की पत्नियों को और
उन के बेटे बेटियों को गाड़ने को कोई न होगा और मैं उन्हीं
की दुष्टता उन पर उंडेलूंगा॥
१७ और तू उन से यह वचन कह कि मेरी आंखें रात दिन
आंसू टपकाया करें और न थमें क्योंकि मेरी जाति की कुंआरी
लड़की ने बड़ा दुख पाया है अति पीड़ित चोट पाई है।
१८ यदि मैं बाहर खेत में जाऊं तो उन्हें देखता हूं कि तलवार
से जूझे हैं और जब नगर में भीतर आऊं तो क्या देखता हूं
कि अकाल से गले हुए तथापि भविष्यद्वक्ता और याजक भी
देश में फिरते हैं और सुध नहीं रखते॥
१९ क्या तू ने यहूदाह को सर्व्वथा त्यागा है क्या तेरा मन
सैहून से घिनाया है तू ने हमें ऐसा क्यों मारा है जिस का
कुछ उपाय नहीं हम कुशल की बाट जोहते हैं और भलाई
नहीं है और चंगा होने के समय के लिये परन्तु भय देखता
२० हूं। हे परमेश्वर हम अपनी दुष्टता और अपने पितरों की
बुराई मान लेते हैं क्योंकि हम लोगों ने तेरे विरुद्ध पाप किया
२१ है। तू अपने नाम के लिये हमारा अपमान मत कर अपने
विभव के सिंहासन का निरादर मत कर स्मरण कर और अपने
२२ नियम को जो हम से है मत तोड़। क्या अन्यदेशियों के
वृथाओं में कोई है जो बरसा सक्ता है अथवा आकाश झड़ी

दे सक्ता है हे परमेश्वर हमारे ईश्वर क्या तू वुह नहीं है इस
लिये हम तेरी बाट जाहेंगे क्योंकि तू ही ने इन बातों को
किया है ॥

पंदरहवां पर्व्व ।

१ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि यद्यपि मूसा अथवा
समूएल मेरे आगे खड़े होवें तो भी इन लोगों पर कृपा करने
को मेरा मन नहीं झुकता मेरे आगे से उन्हें दूर कर कि वे
२ चले जायें। और यों होगा कि जब वे तुझ से कहें कि हम
किधर जायें तो उन से कहियो कि परमेश्वर यों कहता है कि
जो मृत्यु के लिये हैं सो मृत्यु को और जो तलवार के लिये
हैं सो तलवार को और जो अकाल के लिये हैं सो अकाल को
३ और जो बंधुआई के लिये हैं सो बंधुआई को। और मैं उन
के बिरुद्ध चार प्रकार ठहराऊंगा परमेश्वर कहता है घात करने
को तलवार और घसीटने को कुत्ते और भक्षण और नाश करने
४ को आकाश के पंछियों को और बनैले पशुओं को। और मैं उन्हें
पृथिवी के सारे राज्यों में झंझट के लिये सौंपूंगा यहूदाह के
राजा हिज़क़ियाह के बेटे मुनस्सी के लिये उस के कारण जो
उस ने यरूसलम में किया ॥

५ क्योंकि हे यरूसलम तुझ पर कौन मया करेगा और कौन
तेरे साथ बिलाप करेगा और कौन अलग जाके तेरा कुशल क्षेम
६ पूछेगा। तू ने मुझे त्यागा है परमेश्वर कहता है तू पीछे हट
गई इस लिये तुझे नाश करने को मैं ने तेरे बिरुद्ध अपना
७ हाथ बढ़ाया है क्षमा करने से मैं थक गया हूं। इस लिये मैं
उन्हें सूप से भूमि के फाटकों में फटकूंगा और मैं उन्हें बिनाश
करूंगा मैं अपनी जाति को नाश करूंगा कि वुह अपने मार्गों
८ से नहीं फिरी। उन की बिधवा समुद्र की बालू से भी अधिक

मेरे आगे बढ़ाई गई हैं मैं माता और तरुण पर मध्यान्ह में
एक नाशक लाया हूं मैं ने उन पर अचानक एक बैरी और भय
९ पहुंचवाया है। जो सात जनी है सो दुर्बल हुई है और प्राण
त्यागा है दिन रहते उस का सूर्य्य अस्त हुआ है वुह लजाती
और घबराती है उन्हें बैरी के मुंह के आगे में उन के बचे
हुए तलवार को सौंपूंगा परमेश्वर कहता है॥
१० हे मेरी माता मुझ पर संताप कि तू मुझे एक विवादी
पुरुष जनी है और सारे देश में एक झगड़ालू पुरुष जनी है
में ने ब्याज के लिये ऋण नहीं दिया न उन्हों ने मुझ से ब्याज
लिया तथापि वे सब मुझ पर स्राप करते हैं॥
११ परमेश्वर ने कहा निश्चय मैं भलाई के लिये तुझे बचा
रक्खूंगा निश्चय बुराई के समय में और दुख के समय में बैरी
१२ को तुझ से बिनती करवाऊंगा। क्या लोहा उत्तर के लोहे और
१३ पीतल को तोड़ेगा। तेरी संपत्ति और तेरे भंडार मैं बिना मोल
तेरे सारे पापों के कारण तेरे सारे सिवानों में लूट के निमित्त
१४ देऊंगा। और मैं उन्हें तेरे शत्रुन के साथ एक देश में जिसे तू
ने नहीं जाना है पहुंचाऊंगा क्योंकि एक आग मेरे क्रोध में बरी
है जो तुम पर जलेगी॥
१५ हे परमेश्वर तू जानता है मुझे स्मरण कर और मेरी भेंट
को आ और मेरे सतानेवालों से मेरे लिये पलटा ले और अपने
धीरज की अधिकाई में मुझे मत ले जा जान रख तेरे ही
१६ कारण निन्दित हुआ हूं। तेरे वचन पाये गये और मैं ने उन्हें
धारण किया और तेरे वचन मेरे मन के लिये आनन्द और
मगनता थे क्योंकि हे परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर मैं तेरे नाम से
१७ पुकारा जाता हूं। मैं सुख बिलासियों में नहीं बैठा और तेरे
कोप के कारण आनन्द न किया मैं अकेला बैठा इस कारण कि
१८ तू ने मुझे जलजलाहट से भर दिया। मेरा शोक निरन्तर

क्यों हुआ है और मेरा घाव मारू है जो चंगा नहीं होता
क्या तू मेरे लिये सर्व्वथा धोखे के पानियों की नाईं होगा जिन
का ठिकाना नहीं ॥
१९ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि यदि तू फिरे तो मैं तुझे
फिराऊंगा और तू मेरे आगे खड़ा होगा और यदि तू बहुमूल्य को
तुच्छ से अलग करेगा तो तू मेरे मुंह के समान होगा और ये तेरी
२० ओर फिरें और तू उन की ओर न फिरना। और मैं तुझे इन
लोगों के सन्मुख पीतल की एक दृढ़ भीत बनाऊंगा जब वे
तुझ से लड़ेंगे तो तुझ पर प्रबल न होंगे क्योंकि परमेश्वर कहता
है कि तुझे बचाने को और तुझे छुड़ाने को मैं तेरे साथ हूंगा।
२१ और दुष्टों के हाथ से मैं तुझे छुड़ाऊंगा और मैं तुझे भयंकरों
की मुट्ठी से निकाल लेऊंगा॥

सोलहवां पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा।
२ कि तू इस स्थान में अपने लिये पत्नी मत कर और न बेटे
३ बेटियां तेरे लिये होवें। क्योंकि बेटों और बेटियों के बिषय
में जो इस स्थान में उत्पन्न हुए हैं और उन की माताओं के
बिषय में जो उन्हें जनीं और उन के पिताओं के बिषय में
४ जिन से वे उत्पन्न हुए हैं परमेश्वर कहता है। कि वे मारू
रोगों से मरेंगे उन के लिये बिलाप न किया जायेगा न वे गाड़े
जायेंगे वे भूमि पर खाद होंगे और तलवार से और अकाल से
नाश किये जायेंगे और उन की लोथें आकाश के पंछी और
बनैले पशुओं के भक्षण के लिये होंगी॥
५ क्योंकि परमेश्वर ने यों कहा है कि बिलाप के घर में मत
पैठ और उन के बिलाप और शोक करने को मत जा क्योंकि
परमेश्वर कहता है कि मैं ने अपना कुशल और कृपा प्रेम और

६ कोमल दया इस जाति से उठा लिई है। और बड़े छोटे इस
देश में मरेंगे वे गाड़े न जायेंगे और कोई उन के लिये
बिलाप न करेगा और कोई उन के लिये आप को न काटेगा
७ न कोई उन के लिये आप को मुंड़ावेगा। और मृतकों के
लिये उन्हें शांति देने को बिलाप में उन के निमित्त रोटी
न तोड़ेंगे और उन की माता अथवा पिता के लिये शांति का
कटोरा न देंगे ॥
८ और उन के साथ बैठके खाने पीने को जेवनार के घर मत
९ जाइयो। क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों
कहता है कि देख तुम्हारी आंखों के आगे और तुम्हारे दिनों
में मैं इस स्थान से आनन्द का शब्द और हर्ष का शब्द और
दुल्हे का शब्द और दुल्हिन का शब्द मिटाने पर हूं ॥
१० और ऐसा होगा कि जब तू इस जाति पर ये बातें प्रगट
करेगा और वे तुझ से कहें कि परमेश्वर ने क्यों यह सारी बड़ी
बुराई हमारे बिरुद्ध उच्चारी है और हमारी बुराई क्या और
हमारा पाप क्या जो हम ने अपने ईश्वर परमेश्वर के बिरुद्ध
किया है ॥
११ तब तू उन से कहियो कि परमेश्वर कहता है इस कारण
कि तुम्हारे पितरों ने मुझे त्यागा है और उपरी देवों के पीछे
गये हैं और उन की सेवा और पूजा किई है और मुझे त्यागा
१२ है और मेरी ब्यवस्था पालन न किई। और तुम लोगों ने
आप अपने पितरों से अधिक दुष्टता किई है और देखो मुझे न
मानके तुम सब अपने ही दुष्ट मन की कठोरता पर चलते
१३ हो। इस लिये मैं तुम्हें इस देश से उस देश में निकाल ले
जाऊंगा जिसे न तुम ने न तुम्हारे पितरों ने जाना है और
वहां तुम लोग रात दिन उपरी देवों की सेवा करोगे इस कारण
कि मैं तुम पर कृपा न करूंगा ॥

१४ इस लिये देख दिन आते हैं परमेश्वर कहता है जिन में
फिर कहा न जायेगा कि जीवते ईश्वर सोंह जो इसराएल के
१५ संतानें को मिस्र देश से निकाल लाया। परन्तु जीवते परमेश्वर
सोंह जो इसराएल के संतानें को उत्तर देश से और सारे देशें
में से जिधर जिधर उस ने उन्हें खेद दिया था निकाल लाया
क्योंकि मैं उन्हों के देश में उन्हें फिर पहुंचाऊंगा जो मैं ने उन
के पितरें को दिया था॥
१६ देख मैं बहुत से मछुओं को बुलवा भेजूंगा परमेश्वर कहता
है और वे उन्हें बझावेंगे और उस के पीछे मैं बहुत से
अहेरियों को बुलवा भेजूंगा जो हर एक पहाड़ और पहाड़ियों
१७ से और कंदलें में से उन्हें अहेर करेंगे। क्योंकि मेरी आंखें
उन की सारी चालें पर हैं वे मेरे आगे से छिपी नहीं हैं और
१८ उन की बुराई मेरी दृष्टि से गुप्त नहीं। और मैं पहिले उन की
बुराई और उन के पापें का दूना पलटा देऊंगा क्योंकि उन्हें
ने मेरे देश को अशुद्ध किया है उन्हें ने अपनी निन्दित और
घिनित वस्तुन की लोथें से मेरे अधिकार को भर दिया है॥
१६ हे परमेश्वर मेरा बल और मेरा गढ़ और विपत्ति के दिन
में मेरा शरण जातिगण पृथिवी के अंतें से तेरे पास आवेंगे और
कहेंगे कि निश्चय हमारे पितरें ने झूठ और वृथा और उन वस्तुन
२० को जिन में लाभ नहीं अधिकार में लिया। क्या मनुष्य अपने
२१ लिये देवें को बनावेगा और वे देव नहीं हैं। इस लिये देख
मैं उन्हें अब की बार समझाऊंगा और मैं उन पर अपनी भुजा
और अपना बल जनाऊंगा और वे जानेंगे कि परमेश्वर मेरा
नाम है॥

सत्तरहवां पर्ब्ब।

१ यहूदाह का पाप लोहे की लेखनी से और हीरे के नोक से

लिखा गया उन के अन्तःकरण की पटिया पर और उन की
२ बेदियों के सींगों पर खोदा गया है । जब उन के बालक हरे
पेड़ों के लग और सब से ऊंचे टीलों पर अपनी बेदियों और
३ बिधातृ देवियों को स्मरण करते हैं । हे मेरे पर्व्वत खेत में
तेरी संपत्ति तेरे सारे भंडार और तेरे दृढ़ गढ़ तेरे सारे
४ सिवानों में तेरे पापों के लिये मैं लुटा देऊंगा । और तू आप से
उस अधिकार से जो मैं ने तुझे दिया है बिदा होगा और मैं तुझ
से तेरे बैरियों की एक ऐसे देश में सेवा कराऊंगा जिसे तू ने
नहीं जाना है क्योंकि तुम ने मेरी रिस की आग भड़काई जो
नित जला करेगी ॥

५　परमेश्वर यह कहता है कि स्रापित है वुह मनुष्य जो
मनुष्य पर भरोसा रखता है और मांस को अपनी भुजा बनाता
६ है और जिस का मन परमेश्वर से हट जाता है । क्योंकि वुह
अरण्य के झुराये हुए पेड़ की नाईं होगा जो भलाई आने से
अचेत है परन्तु वुह सूखे स्थान और खारी भूमि में रहेगा
७ जहां निवासी नहीं । धन्य है वुह मनुष्य जो परमेश्वर पर
८ भरोसा रखता है और जिस का बिश्वास परमेश्वर है । क्योंकि
वुह उस पेड़ के तुल्य होगा जो पानी के लग लगाया जाय
जो धारा के पास अपनी जड़ फैलाता है और घाम आने से
नहीं डरता परन्तु उस का पत्ता हरा होगा और अबृष्टि के
बरस में वुह निश्चिन्त है और फल फलने में चूक नहीं
करता ॥

९　मन सारी बस्तुन से अधिक छली और असाध्य है उसे
१० कौन जान सक्ता है । मैं परमेश्वर मन को जांचता हूं और गुर्दों
को परखता हूं जिसतें हर एक जन को उस की चाल के समान
और उस की करणी के फल के तुल्य देऊं ॥

११　जैसा तीतरी उपरी अंडे को सेवती है तैसा ही जो अधर्म्म

से धन प्राप्त करता है से अपने दिनों के मध्य में उसे छोड़
देगा और अपने अन्त में मूर्ख होगा ॥
१२ तेजस्वी सिंहासन आरंभ से हमारा पवित्र स्थान है।
१३ हे परमेश्वर इसराएल की आशा सब जो तुझे त्यागते हैं सो
लज्जित होंगे और वे सब जो मुझ से फिर जाते हैं धूल पर
टांके जायेंगे क्योंकि उन्हों ने अमृत जलों के सोते परमेश्वर
को त्यागा है ॥
१४ हे परमेश्वर मुझे चंगा कर और मैं चंगा हूंगा मुझे बचा
१५ और मैं बचूंगा क्योंकि तू मेरी स्तुति है। देख वे मुझ से
कहते हैं कि परमेश्वर का वचन कहां है वुह अभी आवे।
१६ और मैं तेरी अगुआई से चरवाहा होने से न हटा और मैं ने
विपत्ति का दिन न चाहा तू जानता है जो मेरे होठों से निकला
१७ सो तेरे आगे हुआ है। तू मेरे लिये भय मत हो विपत्ति के
१८ दिन तू मेरा शरण है। मेरे सताऊ लज्जित होवें परन्तु मुझे
लज्जित होने न दे वे विस्मित हो जायें परन्तु मुझे विस्मित
होने न दे विपत्ति का दिन उन पर ला और दूने नाश से उन्हें
नाश कर ॥
१९ परमेश्वर ने मुझ से यों कहा कि लोगों के संतानों के फाटक
में जिस में से यहूदाह के राजा बाहर भीतर आया जाया
२० करते हैं और यरूसलम के सारे फाटकों में खड़ा हो। और
उन से कह कि हे यहूदाह के राजा और सारे यहूदाह और
यरूसलम के सारे बासियो जो इन फाटकों में से जाते हो
२१ परमेश्वर का वचन सुनो। परमेश्वर यों कहता है कि तुम आप
आप से चौकस रहो और विश्राम के दिन में बोझा मत ढोओ
२२ और यरूसलम के फाटकों में से मत लाओ। और विश्राम
दिन में अपने अपने घर से बोझ मत ले जाओ और कुछ
व्यवहार मत करो परन्तु जैसा मैं ने तुम्हारे पितरों को आज्ञा

२३ कि ई है बिश्राम दिन को पवित्र रक्खो । पर उन्हों ने न सुना
और न अपना कान लगाया परन्तु अपनी गरदन को कठोर
किया जिसतें न सुनें और उपदेश न मानें ॥
२४ परमेश्वर कहता है कि यदि निश्चय तुम लोग मेरी सुनोगे
यहां लों कि बिश्राम दिन में इस नगर के फाटकों में से कोई
बोझ न लावे और बिना ब्यवहार करने से बिश्राम दिन को
२५ पावन रक्खो । तो इस नगर के फाटकों से राजा और अध्यक्ष
प्रवेश करेंगे कि दाऊद के सिंहासन पर बैठें वे और उन के
अध्यक्ष यहूदाह के लोग और यरूसलम के बासी रथों और
२६ घोड़ों पर चढ़ेंगे और यह नगर सदा स्थिर रहेगा। और यहूदाह
के नगरों से और यरूसलम की चारों ओर से और बिनयमीन
के देश से और चौगान से और पर्ब्बत से और दक्खिन से बलिदान
की भेंट और बलि और मांस की भेंट और धूप ले ले और
स्तुति की भेंट लिये हुए परमेश्वर के मन्दिर में आवेंगे ॥
२७ परन्तु यदि बिश्राम दिन को पवित्र रखने को और कोई
बोझ ढोके यरूसलम के फाटकों में से जाने को मेरी न सुनोगे
तब मैं उस के फाटकों में एक आग बारूंगा और वुह यरूसलम
में के भवनों को भस्म करेगी और वुह बुताई न जायेगी ॥

अठारहवां पर्ब्ब ।

१ वुह बचन जो परमेश्वर की ओर से यरमियाह के पास यह
२ कहते हुए पहुंचा । कि उठके कुम्हार के घर को उतर जा
और मैं वहां अपने बचन तुझे सुनाऊंगा ॥
३ तब मैं कुम्हार के घर को उतर गया और क्या देखता हूं
४ कि वुह चाक पर कुछ बना रहा है । और जो मिट्टी का बर्त्तन
वुह बना रहा था सो कुम्हार के हाथ से बिगड़ गया तब उस
ने उससे फिर एक बर्त्तन बनाया जैसा कुम्हार की दृष्टि में

५ अच्छा लगा। तब यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास
पहुंचा ॥
६ कि हे इसराएल के घराने क्या मैं तुम्हारे विषय में इस
कुम्हार की रीति नहीं कर सक्ता परमेश्वर कहता है कि हे
इसराएल के घराने देखो जैसा मिट्टी कुम्हार के बश में है
७ तैसा तुम लोग मेरे बश में हो। जब कभी मैं किसी जातिगण
के अथवा राज्य के उखाड़ने के और गिरा देने के और नाश करने
८ के विषय में कहूं। और जिस जातिगण के विषय में मैं ने कहा है
सो अपनी दुष्टता से फिरे तो जो बुराई मैं ने उस पर करने
९ को ठानी थी उस्से पछताऊंगा। और जब कभी मैं किसी
जातिगण के अथवा राज्य के बनाने और लगाने के विषय में
१० कहूं। और वुह वही करे जो मेरी दृष्टि में बुराई है जिसतें मेरे
शब्द को न माने तो जो भलाई मैं ने उस के निमित्त करने
को कहा था उस्से मैं पछताऊंगा ॥
११ और अब यहूदाह के मनुष्यों से और यरूसलम के बासियों
से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तुम्हारे बिरुद्ध
बुराई ठहराता हूं और तुम्हारे बिरुद्ध युक्ति बांधता हूं सो तुम
हर एक अपनी अपनी बुरी चाल से फिरो और अपनी अपनी
१२ चालों और अपने अपने व्यवहारों को सुधारो। परन्तु उन्हों ने
कहा कि आशा नहीं है क्योंकि हम अपनी अपनी भावना पर
चलेंगे और हम अपने अपने बुरे मन की कठोरता पर चलेंगे ॥
१३ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि अब अन्यदेशियों में
पूछो किस ने ऐसी ऐसी बातें सुनी हैं कि इसराएल की कुंआरी
१४ ने बड़ा बड़ा भयानक कार्य्य किया है। क्या लुबनान का
पाला खेत के चटान से बन्द हो जायेगा क्या सकेत नाली का ठण्डा
१५ बहता पानी सूख जायेगा। क्योंकि मेरे लोगों ने मुझे बिसराया
है और व्यर्थ के लिये धूप जलाया है और उन्हों ने पुरातन

पथों से उन की चालों में उन्हें ठोकर दिलाया जिसतें खड़बिड़
१६ पथों पर उन्हें चलावें । वे अपने देश को उजाड़ और नित्य
का फुफकार बनाते हैं हर एक जो उधर से जाता है आश्चर्य्य
१७ मानेगा और अपना सिर धुनेगा । पुरवा पवन की नाईं मैं
उन्हें उन के बैरियों के आगे छितराऊंगा उन के नाश के
दिन में मैं अपनी पीठ उन की ओर फेरूंगा अपना मुंह नहीं॥
१८ तब उन्हों ने कहा कि आओ और हम यरमियाह की
विरुद्धता में युक्ति बांधें क्योंकि याजक से व्यवस्था घट न
जायेगी और न बुद्धिमान से परामर्श और न भविष्यद्वक्ता से
वचन सो आओ और हम उसे जीभ से मारें उस का कोई
वचन न मानें ॥
१९ हे परमेश्वर मेरी ओर सुरत लगा और मेरे झगड़नेवालों का
२० शब्द सुन । क्या भलाई की संती बुराई किई जायेगी क्योंकि
उन्हों ने मेरे प्राण के लिये गड़हा खोदा है सो स्मरण कर मैं
तेरे आगे उन की भलाई के लिये बिन्ती करने को खड़ा हुआ
२१ हूं जिसतें तेरा कोप उन से फिर जाये । इस लिये उन के
लड़कों को अकाल को सौंप और तलवार के द्वारा से उन्हें खींच
ले और उन की स्त्रियां निर्वंश और रांड होवें और उन के
पुरुष मरी से मारे जायें उन के तरुण संग्राम में तलवार से
२२ जुझाये जायें । जब तू अचानक उन पर एक जथा लावेगा तो
उन के घरों से रोना पीटना सुना जायेगा क्योंकि उन्हों ने मेरे
फंसाने को गड़हा खोदा है और चुपके से मेरा पांव बझाने के
२३ लिये जाल बिछाया है । परन्तु हे परमेश्वर मेरे प्राण के विरुद्ध
तू उन का सारा परामर्श जानता है तू उन की बुराई के लिये
प्रायश्चित्त ग्रहण न कर और अपने आगे से उन के पाप को
मत मिटा परन्तु तेरे साक्षात वे उलटाये जायें अपने कोप के
समय में तू उन से ऐसा कर ॥

उन्नीसवां पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर ने यों कहा कि तू जाके कुम्हार का एक मिट्टी का
पात्र और लोगों में के प्राचीनों में से और याजकों के प्राचीनों
२ में से ले । और हिन्नुम के बेटे की तराई में निकल जा जो
तपन फाटक के आगे है और जो वचन में तुझे कहूंगा सो वहां
प्रचारियो ॥

३ और कहियो कि हे यहूदाह के राजाओ और यरूसलम के
निवासियो परमेश्वर का वचन सुनो सेनाओं का परमेश्वर इसराएल
का ईश्वर यों कहता है कि देखो मैं इस स्थान पर ऐसी विपत्ति
लाता हूं कि जो कोई उसे सुनेगा उस के कान झंझना उठेंगे ।
४ क्योंकि उन्हों ने मुझे छोड़ा और इस स्थान को उपरियों के
लिये छोड़ दिया और उस में उपरी देवों के लिये धूप जलाया
जिन्हें न उन्हों ने न उन के पितरों ने न यहूदाह के राजाओं
ने जाना और इस स्थान को निर्दोषियों के लोहू से भर दिया
५ है । और बअल के ऊंचे स्थानों को खड़ा किया है जिसतें
अपने बेटों को बअल के बलिदानों की भेंट के लिये आग में
जलावें जो मैं ने आज्ञा न किई और न कहा न मेरे मन में
आया ॥

६ इस लिये परमेश्वर कहता है कि वुह समय आता है जब
कि यह स्थान फिर तुफ़त न कहाविगा अथवा हिन्नुम के बेटे
७ की तराई परन्तु जूझ की तराई । क्योंकि मैं इस स्थान में
यहूदाह का और यरूसलम का परामर्श वृथा करूंगा और मैं
उन्हें उन के बैरियों के आगे और जो उन के प्राण के गाहक
हैं तलवार से गिराऊंगा और मैं उन की लोथों को आकाश के
८ पंछियों के और बनैले पशुन के आहार के लिये देऊंगा । और
मैं इस नगर को उजाड़ का और फुफकार का कारण बनाऊंगा।

हर एक जो उस के पास से जाता है उस की सारी मरियों के
९ लिये आश्चर्य्यित होके फुफकारेगा। और मैं उन्हें उन के बेटों
का मांस और उन की बेटियों का मांस खिलाऊंगा और घेरे
जाने में और बिपत्ति में जिन से उन के बैरी और उन के प्राण
के गाहक उन्हें सकेती में डालेंगे हर एक अपने अपने संगी
का मांस खायेगा॥
१० तब उस बर्तन को उन पुरुषों के आगे जो तेरे साथ चलते
११ थे तोड़ डाल। और तू उन से कहियो कि सेनाओं का परमेश्वर
यों कहता है कि मैं इस जाति को और इस नगर को ऐसा
तोड़ूंगा जैसा वुह कुम्हार के पात्र को फोड़ता है जो फिर
समूचा नहीं हो सक्ता और लोग तुफ़त में गाड़ेंगे जब लों
१२ गाड़ने का स्थान न रहे। परमेश्वर कहता है कि मैं इस स्थान
को और उस में के बासियों को ऐसा करूंगा हां इस नगर को
१३ तुफ़त की नाईं बनाऊंगा। और यरूसलम के घर और यहूदाह
के राजाओं के घर तुफ़त की नाईं उन सारे घरों सहित जिन
की छतों पर उन्हों ने स्वर्ग की सारी सेनाओं के लिये और
उपरी देवों के लिये अर्पण किया और धूप जलाया अशुद्ध
होंगे॥
१४ तब यरमियाह तुफ़त से आया जिधर परमेश्वर ने उसे
भविष्य कहने को भेजा था और परमेश्वर के मन्दिर के आंगन
१५ में खड़े होके सारे लोगों से कहा। कि सेनाओं का परमेश्वर
इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देख मैं इस नगर पर
और इस में के सारे नगरों पर सारी बुराई जो मैं ने उस के
बिरुद्ध उच्चारी है लाता हूं क्योंकि उन्हों ने अपने गले को कठोर
किया है जिसतें मेरे बचनों को न सुनें॥

बीसवां पर्ब्ब ।

१ जब अमीर याजक के बेटे फ़शिहूर ने यरमियाह को भविष्य
बातें सुनीं क्योंकि वुह भी ईश्वर के मन्दिर का प्रधान था।
२ तो फ़शिहूर ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता को मारा और उसे काठ
में डाल दिया जो बिनयमीन के ऊपर के फाटक में परमेश्वर
के मन्दिर के लग था॥
३ और दूसरे दिन यों हुआ कि जब फ़शिहूर ने यरमियाह
को काठ से छोड़ दिया तब यरमियाह ने उस्से कहा कि परमेश्वर
ने तेरा नाम फ़शिहूर नहीं रक्खा परन्तु मागोरमिस्साबीब अर्थात्
४ चारों ओर भय। क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं
तुझी को अपने लिये और तेरे सारे मित्रों के लिये भय बनाता
हूं और वे अपने बैरियों की तलवार से गिरेंगे और तेरी आंखें
भी देखा करेंगी और सारे यहूदाह को मैं बाबुल के राजा के
हाथ में सौंपूंगा और वुह उन्हें बंधुआई में बाबुल को ले जायगा
५ और वहां उन्हें तलवार से घात करेगा। और मैं इस नगर के
सारे पराक्रम को और उस के सारे परिश्रम को और उन में के
सारे बहुमूल्य को और यहूदाह के राजा के सारे भंडारों को
उन के बैरियों के हाथ में सौंपूंगा और वे उन्हें लूटेंगे और
६ उन्हें पकड़ के बाबुल को ले जायेंगे। और तू हे फ़शिहूर और
सब जो तेरे घर में निवास करते हैं बंधुआई में जायेंगे और
तू बाबुल में जाके वहां मरेगा और वहां गाड़ा जायेगा तू और
तेरे सारे मित्र जिन से तू ने झूठा भविष्य कहा है॥
७ हे परमेश्वर तू ने मुझे मनाया है और मैं मान गया तू
मुझ से बली हुआ और प्रबल हुआ है मैं प्रतिदिन सबांग बना
८ हूं हर एक मुझे ठट्ठे में उड़ाता है। क्योंकि जब जब मैं
बोलूं और पुकारूंगा अंधेर और लूट मैं पुकारूंगा क्योंकि परमेश्वर

का वचन प्रतिदिन मेरी निन्दा और ठट्ठे का कारण होता है ।
९ तब मैं ने कहा कि मैं उस की चर्चा न करूंगा और उस के
नाम से फिर न कहूंगा परन्तु उस का बचन मेरे हृदय में आग
की तपन की नाईं था जो मेरी हड्डियों में बन्द था और मैं
१० थांभने से थक गया और मैं न सका । क्योंकि मैं ने बहुतों
का अपवाद सुना है चारों ओर भय था संदेश देओ वे कहते
हैं और हम संदेश देंगे मेरे सारे हित मेरे ठोकर खाने की
बाट जोह रहते हैं और कहते हैं कि क्या जाने वुह उसकाया
जायेगा और हम उस पर प्रबल होंगे और उस्से अपना पलटा
लेंगे ॥

११ परन्तु परमेश्वर भयंकर पराक्रमी मेरी ओर है इस लिये
मेरे सताऊ ठोकर खायेंगे और प्रबल न होंगे वे अति लज्जित
हुए क्योंकि उन से कुछ बन न पड़ा उन के सनातन की लाज
१२ कभी भुलाई न जायेगी। और हे सेनाओं के परमेश्वर जो धर्म्मी
का परखता है गुर्दों और अन्तःकरण का देखता है मैं तेरा
पलटा उन पर देखूंगा क्योंकि मैं ने अपना वाद तेरे आगे खोला
१३ है । परमेश्वर का गान करो परमेश्वर की स्तुति करो क्योंकि
उस ने कुकर्म्मियों के हाथ से कंगाल के प्राण को छुड़ाया
है ॥

१४ मेरे जन्म दिन पर धिक्कार होवे जिस दिन में मेरी माता
१५ मुझे जनी उस पर आशीष न होवे । उस जन पर धिक्कार जो
यह कहते हुए मेरे पिता के पास यह संदेश लाया कि तेरे
एक पुत्र उत्पन्न हुआ और उसे अत्यन्त आनन्दित किया ।
१६ और वुह जन उन नगरों की नाईं होवे जिन्हें परमेश्वर ने उलट
दिया और न पछताया बिहान को रोना पीटना सुने और
१७ मध्यान्ह को चिल्लाना । क्योंकि उस ने मुझे कोख में से घात
न किया अथवा मेरी माता समाधि होती और उस की कोख

१८ सदा मुझ से गर्भिणी रहती । कोख से क्यों मैं बाहर निकला
कि शोक और दुख भोगूं और मेरे दिन लाज में बीत जायें ॥

एक्कीसवां पर्ब्ब ।

१ वुह बचन जो परमेश्वर की ओर से यरमियाह के पास
आया जब राजा सिदक़ियाह ने मलकियाह के बेटे फ़सिहूर को
और मअ़सियाह याजक के बेटे सफ़नियाह को उस के पास
२ कहला भेजा । कि परमेश्वर के आगे हमारे लिये बिन्ती कर
क्योंकि बाबुल का राजा नबूखुदनज़र हम से संग्राम करता है
सो क्या जाने परमेश्वर अपने सारे आश्चर्य्य कार्य्य के समान
हम से व्यवहार करे और वुह हम्में से चला जाये ॥
३ तब यरमियाह ने उन से कहा कि सिदक़ियाह से यों कहो।
४ कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देख मैं
तुम्हारे संग्राम के हथियारों को जो तुम्हारे हाथ में हैं फेरूंगा
जिन से तुम बाबुल के राजा से और कसदियों से जो भीत के
बाहर से तुम्हें घेरे हैं लड़ते हो और मैं उन्हें इस नगर के
५ मध्य में एकट्ठा करूंगा । और मैं आप फैलाये हुए हाथ से
और पराक्रमी भुजा से और रिस से और जलजलाहट और बड़े
६ कोप के साथ तुम से लड़ूंगा । और मैं इस नगर के निवासियों
को क्या मनुष्य क्या पशु को मारूंगा और वे एक बड़ी मरी से
७ मरेंगे । और इस के पीछे परमेश्वर कहता है कि मैं यहूदाह के
राजा सिदक़ियाह को और उस के सेवकों को और लोगों को
और उन्हें जो इस नगर में छूटे हैं मरी से और तलवार से
और अकाल से बाबुल के राजा नबूखुदनज़र के हाथ में और
उन के बैरियों के हाथ में और उन के प्राण के गाहकों के
हाथ में सौंपूंगा और वुह उन्हें तलवार की धार से मारेगा वुह
उन पर मया न करेगा और न छोड़ेगा और दया न करेगा ॥

८ और इस जाति से कहियो कि परमेश्वर यों कहता है कि
देखो मैं तुम्हारे आगे जीवन का मार्ग और मृत्यु का मार्ग धरता
९ हूं। जो इस नगर में रहेगा सो तलवार से और अकाल से
और मरी से मरेगा परन्तु जो बाहर जायेगा और अपने को
कसदियों को सौंपेगा जो तुम्हें चारों ओर घेरे हैं वही जीयेगा
१० और अपने प्राण को लूट में पावेगा। क्योंकि मैं ने बुराई के
लिये अपना मुंह इस नगर के बिरुद्ध किया है और भलाई के
लिये नहीं परमेश्वर कहता है यह बाबुल के राजा के हाथ में
सौंपा जायेगा और वुह उसे आग से जलावेगा॥
११ और यहूदाह के राजा के घराने के विषय में परमेश्वर का
१२ वचन सुनो। हे दाऊद के घराने परमेश्वर यों कहता है कि
बिहान को न्याय करो और अंधेरी के हाथ से लूटे हुए को छुड़ाओ
न हो कि मेरा कोप आग के समान फूट निकले और बरे और
१३ तुम्हारी बुराई के कारण उस का बुतवैया कोई न होवे। देख
हे तराई के वासी हे चौगान की चटान परमेश्वर कहता है
मैं तेरे बिरुद्ध हूं जो कहते हो कि हम पर कौन उतरेगा
१४ अथवा हमारे निवासों में कौन पैठेगा। और मैं तुम्हारी युक्ति
के फल के समान तुम्हें दण्ड देऊंगा परमेश्वर कहता है और
उस के अरण्य में एक आग बारूंगा और वुह उस के चारों
ओर सब को भस्म करेगी॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर ने यों कहा कि तू यहूदाह के राजा के घर को
जा और वहां यह वचन कह॥
२ और बोल कि हे यहूदाह के राजा जो दाऊद के सिंहासन
पर बैठा है परमेश्वर का वचन सुन तू और तेरे सेवक और
३ तेरे लोग जो इन फाटकों से प्रवेश करते हैं। परमेश्वर यों

कहता है कि न्याय और बिचार करो और अंधेरियों के हाथ
से सताये हुए को छुड़ाओ और परदेशी और अनाथों और रांडों
से छल न करो और अंधेर से न सताओ और न इस स्थान
४ में निर्दोष लोहू बहाओ। क्योंकि जो निश्चय तुम लोग इस
बचन के समान करोगे तो दाऊद के सिंहासन पर बैठवैये
राजा रथों और घोड़ों पर चढ़े हुए इस घर के फाटकों में से
भीतर जायेंगे वुह और उस के सेवक और उस के लोग।
५ परन्तु यदि तुम लोग इन बातों को न मानोगे तो मैं अपनी
ही किरिया खाता हूं परमेश्वर कहता है कि निश्चय यह घर
उजाड़ हो जायेगा॥

६ क्योंकि यहूदाह के राजा के घराने के बिषय में परमेश्वर
यों कहता है कि मेरे लिये तू जिलिअद है और लुबनान की
चोटी निश्चय मैं तुझे एक उजाड़ और अबसाव नगर बनाऊंगा।
७ और मैं तेरे बिरोध में नाशकों को भेजूंगा हर एक जन को
अपना अपना हथियार लिये हुए और वे चुन चुनके तेरे
८ देवदारुओं को काटेंगे और आग में डालेंगे। और बहुत
जातिगण इस नगर के पास से जायेंगे और वे आपुस में कहेंगे
९ कि परमेश्वर ने इस बड़े नगर पर यों क्यों किया है। तब
वे उत्तर देके कहेंगे इस लिये कि उन्हों ने परमेश्वर अपने ईश्वर की
बाचा को त्यागा है और उपरी देवों की पूजा और सेवा
किई॥

१० मृतक के लिये बिलाप और शोक मत करो परन्तु उस के
लिये बहुत रोओ जो चला गया है क्योंकि वुह फिर न आवेगा
११ और अपनी जन्म भूमि न देखेगा। क्योंकि यहूदाह के राजा
यूसियाह के बेटे सलूम के बिषय में जो अपने पिता यूसियाह
की संती राज्य पर बैठा जो इस स्थान से निकल गया परमेश्वर
१२ यों कहता है कि वुह इधर फिर न आवेगा। परन्तु जहां वे

उसे बंधुआई में ले गये हैं तहां वुह मरेगा और इस देश को
फिर न देखेगा॥

१३ हाय उस पर जो अधर्म्म से अपना घर और अंधेर से
अपनी ऊपर की कोठरियां बनाता है और सेंत से अपने परोसी
१४ से काम कराता है और उसे बनी नहीं देता। जो कहता है
कि मैं अपने लिये बड़ा घर और ऊंची ऊंची कोठरियां बनाऊंगा
जो अपने लिये खिड़कियां भी काटता है और देवदारु की
१५ लकड़ी से छत ढांपता है और सिन्दूर से रंगता है। क्या
तू देवदारु से आप को घेरके राज्य करेगा क्या तेरे पिता ने
खा पीके न्याय और धर्म्म नहीं किया तब वुह भाग्यमान
१६ हुआ। उस ने दुखी और दरिद्रों के वाद का पक्ष किया तब
वुह भाग्यमान था क्या यह तेरी पहिचान न थी परमेश्वर
१७ कहता है। क्योंकि तेरी आंखें और तेरा मन केवल अपनी
लालच पर है और निर्दोष लोहू बहाने पर और अंधेर पर और
उत्पात पर॥

१८ इसी लिये परमेश्वर यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे
यहूयकीम के बिषय में कहता है कि वे उस के लिये यह बिलाप
न करेंगे कि हाय मेरे भाई और हाय बहिन वे उस के लिये
यों बिलाप न करेंगे कि हाय प्रभु अथवा हाय उस का बिभव।
१९ वुह गदहे के गड़ाव से गाड़ा जायेगा और यरूसलम के फाटकों
के बाहर घसीटा और फेंका जायेगा॥

२० लुबनान पर जाके चिल्ला और बसन पर अपना शब्द उठा
और घाटियों से पुकार क्योंकि तेरे सारे प्रेमी नाश हुए हैं।
२१ तेरे कुशल के समयों में मैं ने तुझ से कहा पर तू ने कहा मैं न
सुनूंगी तरुणाई से यही तेरी रीति थी क्योंकि तू ने मेरे शब्द
२२ को नहीं माना है। एक झोंका तेरे सारे रखवालों को बहा ले
जायेगा और तेरे मित्र बंधुआई में जायेंगे क्योंकि तब तू

लज्जित हो जायेगी और अपनी सारी दुष्टता के कारण घबरा
२३ जायेगी। हे लुबनान की निवासिनी जो देवदारुओं पर अपना
बसेरा बनाती है जब तुझ पर पीड़ित स्त्री की नाईं पीड़ें लगेंगी
तब तू कैसी दीन होगी ॥
२४ परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोंह यद्यपि यहूदाह
के राजा यहूयक़ीम का बेटा कुनियाह मेरे दहिने हाथ की
२५ अंगूठी होता तथापि मैं वहां से तुझे निकालता। और मैं तुझे
तेरे प्राण के गाहकों को सौंप देऊंगा और जिन से तू डरता है
उन के हाथ में तुझे सौंप देऊंगा अर्थात् बाबुल के राजा
२६ नबूखुदनज़र के हाथ में और कसदियों के हाथ में। और मैं
तुझे और तेरी जननी को परदेश में निकाल फेंकूंगा जहां तुम
२७ उत्पन्न नहीं हुए और तहां मरोगे। परन्तु जिस देश में उन्हों
२८ ने फिरने का मन लगाया है उस में फिर न आवेंगे। क्या यह
जन कुनियाह टूटी हुई घिनित मूर्त्ति है अथवा एक पात्र
जिस्से कोई प्रसन्न नहीं हुए और उस का बंश किस लिये
बाहर निकाले गये और जिस देश से वे अज्ञान थे उस में फेंके गये॥
२९ हे धरती हे धरती हे धरती परमेश्वर का बचन सुन।
३० परमेश्वर यों कहता है कि इस जन को निर्वंश लिख रक्खो
यह जन अपने दिनों में भाग्यमान न होगा क्योंकि उस का
कोई बंश दाऊद के सिंहासन पर बैठते हुए और यहूदाह पर
फिर राज्य करते हुए भाग्यमान न होगा ॥

तेईसवां पर्व्व ।

१ उन गड़रियों पर संताप जो मेरी चराई की भेड़ों को नाश
२ और छिन्न भिन्न करते हैं परमेश्वर कहता है। इस लिये परमेश्वर
इसराएल का ईश्वर उन गड़रियों के विषय में जो मेरी जाति
को चराते हैं कहता है तुम ने मेरे झुंड को छिन्न भिन्न किया।

और उन्हें खेद दिया है और उन की रखवाली न किई देखो
मैं तुम्हारे बुरे कार्य्यों के लिये तुम्हें प्रतिफल देता हूं परमेश्वर
३ यों कहता है । और मैं अपने झुंड के उबरे हुओं को सारे
देशों से जहां जहां मैं ने उन्हें खदेड़ा है बटोरूंगा और उन्हीं
के झुंड में उन्हें फिर लाऊंगा और वे फलवंत होके बढ़ेंगे ।
४ और मैं उन के लिये गड़रियों को ठहराऊंगा जो उन्हें चरावेंगे
और वे फिर न डरेंगे और न बिस्मित होंगे और उन पर घटी
न पड़ेगी परमेश्वर कहता है ॥
५ देखो वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है जब मैं दाऊद
के लिये एक धर्म्मी शाखा को उदय करूंगा और एक राजा
राज्य करेगा और भाग्यमान होगा और देश में न्याय और धर्म्म
६ करेगा । उस के दिनों में यहूदाह बचाया जायेगा और इसराएल
कुशल से रहेगा और इसी नाम से पुकारा जायेगा कि परमेश्वर
७ हमारा धर्म्म । इस लिये देख वे दिन आवेंगे परमेश्वर कहता
है जब कि वे फिर न कहेंगे कि परमेश्वर के जीवन सोंह जो
८ इसराएल के संतान को मिस्र देश से निकाल लाया । परन्तु
परमेश्वर के जीवन सोंह जिस ने इसराएल के घराने के बंश
को उत्तर देश से और सारे देशों से जहां जहां मैं ने उन्हें
खेदा था निकाल लाया और उन्हें ले गया जिसतें वे अपनी ही
भूमि में बास करें ॥
९ भविष्यद्वक्तों के बिषय में मेरा अन्तःकरण मुझ में चूर हो
रहा है मेरी सारी हड्डियां हिलती हैं और परमेश्वर के कारण
और उस के पवित्र बचनों के कारण मैं मतवाले जन की नाईं
हुआ हूं और उस जन की नाईं जिसे मद्य ने बश में किया ।
१० क्योंकि देश परस्त्री गामियों से भरा है कि स्राप करने के कारण
देश बिलाप करता है और अरण्य की चराई झुरा गई और
उन की दौड़ दुष्टता है और उन की सामर्थ्य ठीक नहीं ।

११ क्योंकि भविष्यद्वक्ता और याजक दोनों अशुद्ध हैं हां मैं ने उन
की दुष्टता को अपने मन्दिर में पाया है परमेश्वर कहता है।
१२ इस लिये उन का मार्ग उन के लिये फिसलहा होगा अंधियारे
में वे ढकेले जायेंगे और उस में गिरेंगे क्योंकि मैं उन पर
बुराई लाऊंगा अर्थात् उन के दण्ड पाने का बरस परमेश्वर
कहता है॥
१३ और मैं ने समरून के भविष्यद्वक्तों में मूर्खता देखी उन्हों
ने बअल के नाम से भविष्य कहा और मेरे इसराएल लोगों को
१४ भुलाया है। और यरूसलम के भविष्यद्वक्तों में मैं ने एक
भयानक बस्तु देखी है वे परस्त्री गमन करते और झूठ से
चलते वे दुष्टों के हाथों को भी दृढ़ करते हैं जिसतें कोई
अपनी दुष्टता से न फिरे वे सब के सब मेरे लिये सदूम की
नाईं और उस के निवासी अमूर: की नाईं हुए हैं॥
१५ इस लिये सेनाओं का परमेश्वर भविष्यद्वक्तों के विषय में
यों कहता है कि देखो मैं उन्हें नागदौना खिलाऊंगा और पित्त
का जल पिलाऊंगा क्योंकि यरूसलम के भविष्यद्वक्तों से हठ
सारे देश में फैला है॥
१६ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि भविष्यद्वक्तों के बचनों
को मत सुनो जो तुम्हें भविष्य कहते हैं वे तुम से बृथा कराते
हैं वे अपने ही मन के दर्शन उच्चारते हैं परमेश्वर के मुंह के
१७ समान नहीं कहते। वे उन को जो मुझे तुच्छ जानते हैं कहा
करते हैं कि परमेश्वर ने कहा है कि तुम पर कुशल होगा और
हर एक जन को जो अपने अपने मन की कठोरता के समान
चलता है वे कहते हैं कि तुम पर कधी बुराई न आवेगी।
१८ क्योंकि परमेश्वर के मंच में कौन खड़ा हुआ है और किस ने उस
की बात को देखा सुना है अथवा किस ने सुरत लगाके उस के
१९ बचन को सुना है। देख परमेश्वर का बवंडर वुह कोप से निकलता

है हां एक भयानक ववंडर जो दुष्टों के सिर पर उतरेगा।
२० परमेश्वर की रिस न फिरेगी जब लों वुह कार्य्य न करे और
जब लों वुह अपने मन के ठहराये हुए को पूरा न करे पिछले
दिनों में तुम लोग अच्छी रीति से बूझोगे॥
२१ मैं ने इन भविष्यद्वक्तों को नहीं भेजा परन्तु वे आप से
आप दौड़ गये मैं ने उन से नहीं कहा पर उन्हों ने आप से
२२ आप भविष्य कहा। परन्तु जो वे मेरे मंच में खड़े होते तो वे
मेरे लोगों को मेरे बचन सुनाते और उन्हें उन के बुरे मार्ग से
और उन के कार्य्यों की दुष्टता से फिराते॥
२३ परमेश्वर कहता है कि क्या मैं समीप का ईश्वर हूं और दूर
२४ का ईश्वर नहीं। परमेश्वर कहता है कि क्या कोई अपने को
ऐसे गुप्त स्थानों में छिपा सक्ता है जो मैं उसे न देखूं परमेश्वर
कहता है कि क्या स्वर्ग और पृथिवी मुझ से परिपूर्ण नहीं
हैं॥
२५ मैं ने सुना है जो भविष्यद्वक्तों ने कहा है जो यह कहके
मेरे नाम से झूठा भविष्य कहते हैं कि मैं ने स्वप्न देखा है
२६ स्वप्न देखा है। कब लों यह भविष्यद्वक्तों के मन में होगा
जो झूठ भविष्य कहते हैं हां वे अपने मन के छल के
२७ भविष्यद्वक्ते हैं। वे जुगत करते कि अपने स्वप्नों से जिन्हें
हर एक अपने अपने परोसी के आगे बर्णन करता है मेरे
लोगों से मेरे नाम को भुलवाते जैसा उन के पितरों ने मेरे
२८ नाम को बअल के कारण से बिसराया। जिस भविष्यद्वक्ता के पास
स्वप्न है सो स्वप्न कहे परन्तु जिस के पास मेरा बचन है सो मेरे
बचन को सच्चाई से कहे गेहूं को भूसी से क्या काम परमेश्वर
२९ कहता है। मेरे बचन का पराक्रम क्या आग के समान नहीं
परमेश्वर कहता है और हथौड़ी की नाईं नहीं जो चटान को
टुकड़े टुकड़े करती है॥

३० इस लिये देख मैं भविष्यद्वक्तों के बिरुद्ध हूं परमेश्वर कहता
है जो हर एक अपने अपने परोसी से मेरे बचनों को चुराते हैं।
३१ देख मैं उन भविष्यद्वक्तों के बिरुद्ध हूं परमेश्वर कहता है जो
३२ अपनी ही जीभ से कहते हैं कि उस ने कहा है। देख मैं
उन के बिरुद्ध हूं परमेश्वर कहता है जो झूठे स्वप्नों से भविष्य
कहते हैं और उन्हें वर्णन करते हैं और अपनी झुठाई और
हलकापन से मेरे लोगों को भटकाते हैं परन्तु मैं ने उन्हें
नहीं भेजा और न उन्हें आज्ञा दिई इस लिये इन लोगों को
कुछ लाभ नहीं परमेश्वर कहता है॥
३३ और जब ये लोग अथवा भविष्यद्वक्ता अथवा याजक यह
कहके तुझ से पूछें कि परमेश्वर का बोझ क्या है तब उन से
कहियो क्या बोझ यह कि मैं ने तुम को त्यागा परमेश्वर
३४ कहता है। और भविष्यद्वक्ता और याजक और लोग जो कहेंगे
कि परमेश्वर का बोझ मैं उसी जन को और उस के घराने को
३५ दंड देऊंगा। हर एक मनुष्य अपने अपने परोसी से और अपने
अपने भाई से यों कहेगा कि परमेश्वर ने क्या उत्तर दिया है
३६ और परमेश्वर ने क्या कहा है। परन्तु तुम परमेश्वर का बोझ
फिर न कहोगे क्योंकि हर एक का बचन उसी का बोझ होगा
क्योंकि जीवते ईश्वर सेनाओं के परमेश्वर हमारे ईश्वर के बचन
३७ को तुम ने बिगाड़ा है। तू भविष्यद्वक्ता से यों कह कि परमेश्वर
ने तुम्हें क्या उत्तर दिया है और परमेश्वर ने क्या कहा है।
३८ परन्तु जो तुम लोग कहोगे कि परमेश्वर का बोझ तो इस लिये
परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग जो यह बचन कहते हो
कि परमेश्वर का बोझ और मैं ने यह कहके तुम्हारे पास भेजा
३९ कि तुम परमेश्वर का बोझ मत कहो। इस लिये देख मैं तुम्हें
सर्बथा उठा लेऊंगा और मैं तुम्हें उस नगर सहित जो मैं ने
तुम्हें और तुम्हारे पितरों को दिया था अपने आगे से त्याग

४० करूंगा । और मैं तुम पर सनातन की निन्दा और नित का
अपमान लाऊंगा जो भुलाया न जायेगा ॥

चौबीसवां पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर ने मुझे दिखाया और देखो दो टोकरी गूलर परमेश्वर
के मन्दिर के आगे धरे थे उस के पीछे कि बाबुल का राजा
नबूखुदनज़र यहूदाह के राजा यहूयकीम के बेटे यकुनियाह
को और यहूदाह के अध्यक्षों को और कार्य्यकारियों को और
अस्त्रकारकों को यरूसलम से बाबुल को बंधुआई में ले गया ।
२ एक टोकरी में अच्छे से अच्छे गूलर थे पहिले पक्के हुए गूलर
की नाईं और दूसरी टोकरी में गूलर बुरे से बुरे थे जो बुराई
३ के मारे खाये न जा सकें । तब परमेश्वर ने मुझ से कहा कि
हे यरमियाह तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि गूलर
अच्छे गूलर बहुत ही अच्छे और बुरे बहुत ही बुरे जो बुराई
के मारे खाये नहीं जा सक्ते ॥
४ तब परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा ।
५ कि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि मैं इन अच्छे
गूलरों की नाईं यहूदाह की बंधुआई को पहचानूंगा जिन्हें मैं
ने इस स्थान से कसदियों के देश में भलाई के लिये भेजा
६ है । और मैं भलाई के लिये उन पर दृष्टि करूंगा और उन्हें
इस देश में फिर लाऊंगा और उन्हें बनाऊंगा और ढा न देऊंगा
७ और उन्हें लगाऊंगा पर न उखाड़ूंगा । और मैं उन्हें मन
देऊंगा कि मुझे पहिचानें कि मैं परमेश्वर हूं और वे मेरी जाति
होंगे और मैं उन का ईश्वर हूंगा क्योंकि वे मेरी और अपने सारे
मन से फिरेंगे ॥
८ परन्तु बुरे गूलर जो बुराई के मारे खाये नहीं जा सक्ते
निश्चय परमेश्वर यों कहता है कि मैं यहूदाह के राजा

सिदक़ियाह को और उस के अध्यक्षों को और यरूसलम के
उबरे हुओं को जो इस देश में छूटे हैं और जो मिस्र के देश
९ में बसते हैं ऐसा ही करूंगा। और मैं उन्हें जगत के सारे
राज्यों में झंझट और क्लेश के लिये सौंपूंगा कि सब स्थानों में
जहां मैं उन्हें खेदूंगा वहां वे निन्दा और कहावत और ठट्ठा
१० और स्राप के लिये होवें। और मैं उन में तलवार और अकाल
और मरी यहां लों भेजूंगा कि वे उस देश पर से जो मैं ने
उन्हें और उन के पितरों को दिया है मिट जायें॥

पचीसवां पर्ब्ब।

१ वुह बचन जो यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयक़ीम
के चौथे बरस में जो बाबुल के राजा नबूख़ुदनज़र का पहिला
बरस था यहूदाह के सारे लोगों के बिषय में यरमियाह के
२ पास आया। जिसे यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने यह कहके
यहूदाह के सारे लोगों को और यरूसलम के सारे बासियों को
कहा॥

३ यहूदाह के राजा अम्मून के बेटे यूसियाह के तेरहवें बरस
से आज लों अर्थात् तेईस बरस लों परमेश्वर का बचन मेरे
पास आया और मैं ने तुम्हें कहा तड़के उठ उठके कहा पर
४ तुम लोगों ने न माना। और परमेश्वर ने अपने सारे भविष्यद्वक्ता
सेवकों को कहके तुम्हारे पास भेजा तड़के उठ उठके भेजा
परन्तु तुम ने न सुना और सुन्ने के लिये अपना कान न झुकाया।
५ यह कहते हुए कि हर एक अपने अपने बुरे मार्ग से और
अपने कार्य्यों की दुष्टता से फिरो और उस देश में बसो जिसे
परमेश्वर ने तुम्हें और तुम्हारे पितरों को सदा के लिये दिया
६ है। और उपरी देवों के पीछे उन की सेवा और पूजा करने
को मत जाओ और अपने हाथों के कार्य्य से मुझे रिस मत

७ दिलाओ और मैं तुम्हें दुख न देऊंगा। परन्तु तुम ने मेरी
न सुनी परमेश्वर कहता है जिसतें तुम अपने दुख के लिये
अपने ही हाथों के कार्य्य से मुझे रिस दिलाओ॥
८ इस लिये सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है इस कारण
९ कि तुम लोगों ने मेरी बातों को नहीं माना। देखो मैं उत्तर
के सारे घरानों को और अपने दास बाबुल के राजा नबूखुदनज़र
को लेके भेजता हूं परमेश्वर कहता है और इस देश के और
उस के निवासियों के और चारों ओर के इन सारे देशगणों के
बिरुद्ध लाऊंगा और उन्हें सर्वथा नाश करूंगा और उन्हें एक
आश्चर्य्यित और फुफकार और नित का उजाड़ बनाऊंगा॥
१० और मैं उन में से आनन्द का शब्द और आल्हाद का शब्द
दुल्हा और दुल्हिन का शब्द चक्की का शब्द और दीपक की
ज्योति मिटाऊंगा॥
११ और यह सारा देश एक उजाड़ और आश्चर्य्यित होगा और
ये जातिगण सत्तर बरस लों बाबुल के राजा की सेवा करेंगे॥
१२ परमेश्वर कहता है कि यों होगा जब सत्तर बरस पूरे होंगे
तब मैं बाबुल के राजा और उसी जातिगण को और कसदियों
के देश को उन के पाप का दंड देऊंगा और उसे सनातन
१३ का उजाड़ करूंगा। और अपने सारे वचनों को जो मैं ने उस
के विषय में कहा है सब जो इस पुस्तक में लिखा है जो
यरमियाह ने जातिगणों के विषय में भविष्य कहा है मैं उसी
१४ देश पर लाऊंगा। क्योंकि उन से अर्थात् इन्हों से बहुत से
जातिगण और बड़े बड़े राजा सेवा लेंगे और उन की क्रिया के
समान और उन के हाथ के कार्य्य के समान मैं उन्हें पलटा
देऊंगा॥
१५ क्योंकि परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने मुझ से यों कहा कि
मेरे हाथ से इस कोप की मदिरा के कटोरे को ले और उसे

सारे जातिगणों को जिन के पास मैं तुझे भेजूंगा पीने को दे।
१६ और वे पीयेंगे और डगमगावेंगे और उन्मत होंगे उस तलवार
के कारण जो मैं उन पर भेजने पर हूं॥
१७ तब मैं ने उस कटोरे को परमेश्वर के हाथ से लेके उन
सारे देशगणों को जिन के पास परमेश्वर ने मुझे भेजा था पीने
१८ को दिया। अर्थात् यरूसलम और यहूदाह के नगरों और उस
के राजाओं और उस के अध्यक्षों को कि वुह उन्हें उजाड़ और
आश्चर्य्यित और फुफकार और स्राप बनावे जैसा आज के दिन
१९ है। मिस्र के राजा फिरऊन और उस के दासों और उस के
२० अध्यक्षों और उस के सारे लोगों को। और सारे मिले जुले
लोगों और ऊज़ के देश के सारे राजाओं और फ़िलिस्तानियों के
देश के सारे राजाओं और असक़लून और अज़्ज़ः और अक़रून
२१ और अशदूद के उबरे हुओं को। अदूम और मोआब और
२२ अम्मून के संतानों को। और सूर के सारे राजाओं और सैदा
के सारे राजाओं को और समुद्र के उस पार के टापुओं के सारे
२३ राजाओं को। ददान और तैमा और बूज़ और सभों को जो
२४ दाढ़ी के कोनों को मुड़वाते हैं। और अरब के सारे राजाओं
और जंगल के मिले जुले निवासी लोगों के सारे राजाओं को।
२५ और ज़िमरी के सारे राजाओं और ऐलाम के सारे राजाओं और
२६ मादी के सारे राजाओं को। और उत्तर के सारे राजाओं को
जो निकट हैं और दूर हैं एक दूसरे के साथ और पृथिवी के
सारे राज्यों को जो भूमि पर हैं और शेशाक का राजा उन के
पीछे पीयेगा॥
२७ और तू उन से कहना कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल
का ईश्वर यों कहता है कि उस तलवार के आगे जो मैं तुम
पर भेजता हूं पीयो और मतवाले होओ और छांट करो और
ऐसा गिरो कि फेर न उठो॥

२८ और यों होगा कि जो वे पीने को तेरे हाथ से कटोरा लेने
को नाह करें तो तू उन से कहियो कि सेनाओं का परमेश्वर
२६ कहता है कि तुम निश्चय पियोगे। क्योंकि देखो मैं उस नगर
पर जो मेरे नाम से कहा जाता है बुराई लाने को आरंभ
करता हूं और क्या तुम सर्बथा अदंडित रहोगे तुम अदंडित
न रहोगे क्योंकि मैं पृथिवी के सारे निवासियों के बिरुद्ध तलवार
को लाता हूं सेनाओं का परमेश्वर कहता है॥
३० और तू इन सारी बातों को उन से भविष्य कह और उन
से बोल कि परमेश्वर ऊपर से गर्जेगा और अपने पवित्र निवास
से अपने शब्द को उच्चारेगा वुह अपने चैनस्थान के बिरुद्ध
गर्जेगा वुह दाख के लताड़नेहारों की नाईं पृथिवी के सारे
३१ निवासियों के बिरुद्ध ललकारेगा। पृथिवी के अंत लों होरा पहुंच
गया है क्योंकि परमेश्वर का झगड़ा देशगणों से है वुह सारे
मनुष्यों का बिचार करेगा और दुष्टों को तलवार के बश में
सौंपेगा परमेश्वर कहता है॥
३२ परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर यों कहता है कि देखो जाति से
जाति पर बुराई निकलती है और पृथिवी के अंतों से एक बड़ा
३३ बवंडर उठेगा। और उस दिन परमेश्वर के जुझाये हुए पृथिवी
के एक खूंट से पृथिवी के दूसरे खूंट लों होंगे उन के लिये
बिलाप न किया जायगा और वे एकट्ठे न किये जायेंगे और न
३४ गाड़े जायेंगे वे भूमि पर घूर की नाईं होंगे। हे गड़रियो बिलाप
करके रोओ और हे झुंड के प्रधानो राख में लोटो क्योंकि
तुम्हारे जूझने के और छिन्न भिन्न होने के दिन पूरे हुए और
३५ तुम बहुमूल्य पात्र के समान गिरोगे। और भागने के उपाय
गड़रियों से और बचने के उपाय झुंड के प्रधानों से कट
३६ जायेंगे। गड़रियों के चिल्लाने का और झुंड के प्रधान के बिलाप
करने का शब्द क्योंकि परमेश्वर उन की चराई को उजाड़ता

३७ है। और परमेश्वर के भयंकर कोप के मारे कुशल के निवास
३८ उजड़ गये। सिंह के समान उस ने अपना लुकान छोड़ा है
क्योंकि उस के महा कोप के मारे और उत्कट ज्वलन के मारे
उन का देश एक उजाड़ हुआ है॥

छब्बीसवां पर्ब्ब।

१ यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयक़ीम के राज्य के
आरंभ में यह कहते हुए परमेश्वर का बचन पहुंचा॥
२ परमेश्वर यों कहता है कि परमेश्वर के मन्दिर के आंगन में
खड़ा हो और यहूदाह के सारे नगरों से जो परमेश्वर के मन्दिर
में सेवा करने को आते हैं वे सारी बातें जो मैं ने तुझे कहने
३ को आज्ञा किई हैं उन्हें कह बात भर मत घटा। क्या जाने
वे सुनें और हर एक जन अपने अपने कुमार्ग से फिरे जिसतें
मैं उस बुराई से पछताऊं जो मैं उन के कुकर्म्मों के कारण से उन
४ पर करने को ठहराता हूं। और तू उन से यह कह कि
परमेश्वर यों कहता है कि जो तुम लोग मेरी न सुनोगे कि मेरी
५ व्यवस्था पर चलो जो मैं ने तुम्हारे आगे रक्खी। जिसतें मेरे
सेवक भविष्यद्वक्तों के बचन सुनो जिन्हें मैं तुम्हारे पास भेजता
६ हूं तड़के उठके भेजा परन्तु तुम ने नहीं माना है। तो मैं
इस घर को सैला की नाईं बनाऊंगा और पृथिवी के सारे
जातिगणों में मैं इस नगर को स्रापित करूंगा॥
७ और याजक और भविष्यद्वक्ता और सारे लोगों ने यरमियाह
८ को ईश्वर के मन्दिर में यह बचन कहते सुना। और यों हुआ
कि जब यरमियाह सब बातें कह चुका जो परमेश्वर ने उसे
सारे लोगों से कहने को आज्ञा किई थीं तब याजकों ने और
भविष्यद्वक्तों ने और सारे लोगों ने उसे पकड़के कहा कि तू
९ निश्चय मारा जायेगा। तू ने यह कहके परमेश्वर के नाम से

क्यों भविष्य कहा है कि यह मन्दिर सैला की नाईं होगा और
यह नगर बिना निवासी उजाड़ किया जायेगा और सारे लोग
परमेश्वर के मन्दिर में यरमियाह के बिरुद्ध बटुर गये ॥
१० जब यहूदाह के अध्यक्षों ने ये बातें सुनीं तब वे राजा के
घर से परमेश्वर के मन्दिर में चढ़ गये और परमेश्वर के मन्दिर
११ के नये फाटक की पैठ में बैठ गये। तब याजकों और
भविष्यद्वक्तों ने अध्यक्षों से और सारे लोगों से कहा कि यह
जन मारे जाने के योग्य है क्योंकि उस ने इस नगर के बिषय
में भविष्य कहा है जैसा तुम ने अपने अपने कानों से सुना
है ॥
१२ तब यरमियाह सारे अध्यक्षों और सारे लोगों से कहके बोला
कि जो सारी बातें तुम लोगों ने सुनी हैं सो परमेश्वर ने इस
मन्दिर के और इस नगर के बिषय में मुझे भविष्य कहने को
१३ भेजा है। परन्तु अब अपने अपने मार्गों और चालों को सुधारो
और परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द मानो और परमेश्वर उस
बुराई से जो उस ने तुम्हारे बिरुद्ध में कही है पछतावेगा।
१४ और मैं जो हूं देखो मैं तुम्हारे बश में हूं जो तुम्हारी दृष्टि में
१५ भला और ठीक होवे सो मुझ से करो। केवल निश्चय जान
रक्खो जो तुम लोग मुझे घात करोगे तो निर्दोष लोहू को अपने
ऊपर और इस नगर पर और उस के बासियों पर लाओगे
क्योंकि परमेश्वर ने निश्चय मुझे तुम्हारे पास भेजा है कि तुम्हारे
कानों में ये सारी बातें कहूं ॥
१६ तब अध्यक्षों ने और सारे लोगों ने याजकों से और
भविष्यद्वक्तों से कहा कि यह जन मारे जाने के योग्य नहीं
क्योंकि इस ने परमेश्वर हमारे ईश्वर के नाम से हमें कहा
है ॥
१७ तब देश के कितने प्राचीनों ने भी उठके लोगों की सारी

१८ सभा से कहा। मोरासथी मीकायाह ने यहूदाह के राजा
हिज़क़ियाह के दिनों में भविष्य कहा और यहूदाह के सारे
लोगों से यह कहा कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है
कि सैहून खेत की नाईं जोता जायगा और यरूसलम ढेर ढेर
होगा और इस घर का पर्व्वत बन के ऊंचे ऊंचे स्थानों की
१९ नाईं होगा। क्या यहूदाह के राजा हिज़क़ियाह ने और सारे
यहूदाह ने उसे घात किया उस ने क्या परमेश्वर को डरके
उस की कृपा न चाही और परमेश्वर उस बुराई से पछताया
जो उस ने उन के विरुद्ध उच्चारी थी परन्तु हम लोग अपने
प्राणों पर बड़ी बुराई लाते हैं॥

२० और भी एक जन था जिस ने परमेश्वर के नाम से भविष्य
कहा क़रयतुलयअरमी से समअयाह के बेटे ऊरियाह जिस ने
इस नगर और इस देश के विरुद्ध यरमियाह की सारी बातों
२१ के समान भविष्य कहा। और जब यहूयक़ीम राजा और उस
के सारे महत जन और सारे अध्यक्षों ने उस की बातें सुनीं
तब राजा ने उसे घात करने चाहा परन्तु ऊरियाह सुनके डर
२२ गया और मिस्र को भागा। परन्तु यहूयक़ीम राजा ने मिस्र में
मनुष्यों को अर्थात् अकबूर के बेटे अलनतन को और उस के
२३ साथ कितने जनों को भेजा। और वे मिस्र से ऊरियाह को
निकाल लाये और उसे यहूयक़ीम राजा के पास पहुंचाया जिस
ने उसे तलवार से घात किया और उस की लोथ को लोगों के
२४ सन्तान की समाधि स्थान में फेंक दिया। परन्तु साफ़न के
बेटे अख़िक़ान का हाथ यरमियाह पर था जिसतें वुह घात
के लिये लोगों के हाथ में सौंपा न जाये॥

सत्ताईसवां पर्व्व।

१ यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयक़ीम के राज्य के

आरंभ में परमेश्वर का बचन यरमियाह के पास यह कहता
हुआ पहुंचा ॥
२ परमेश्वर ने मुझ से यों कहा है कि तू अपने लिये बंधन
३ और जूआ बना और उन्हें अपने गले पर धर। और उन्हें
अदूम के राजा के पास और मोआब के राजा के पास और
अम्मून के सन्तान के राजा और सूर के राजा के पास और
सैदा के राजा के पास दूतों के हाथ से जो यहूदाह के राजा
४ सिदक़याह के पास यरूसलम में आये हैं भेज। और उन के
स्वामियों के पास यह संदेश भेज कि सेनाओं का परमेश्वर
इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तुम लोग अपने अपने
५ प्रभुओं से यह कहो। कि मैं ने पृथिवी को और मनुष्यों को
और पशुन को जो पृथिवी पर हैं अपने बड़े पराक्रम से और
अपनी बढ़ाई हुई भुजा से सिरजा है और जिसे मैं ने चाहा
६ उसे दिया है। और अब मैं ने इन सारे देशों को अपने दास
बाबुल के राजा नबूखुदनज़र के हाथ में दिया है और उस
की सेवा के लिये मैं ने खेत के पशुन को भी उस के बश में
७ किया है। और सारे जातिगण उस की और उस के बेटे की
और उस के पोते की सेवा करेंगे जब लों उस के देश का
समय हां उसी का न आवे और बहुत से जातिगण और बड़े
८ बड़े राजा उस्से सेवा लेंगे। और ऐसा होगा कि जो जातिगण
और राज्य बाबुल के राजा नबूखुदनज़र की सेवा न करेगा
और अपना गला बाबुल के राजा के जूआ तले न रक्खेगा
परमेश्वर कहता है मैं उसी जातिगण पर तलवार से और
अकाल से और मरी से दंड भेजूंगा जब लों मैं उस के हाथ
से उन्हें नाश न करूं ॥
९ और तुम अपने भविष्यद्वक्तों की और अपने दैवज्ञों की और
अपने स्वप्न व्यवहारियों की और अपने गणकों की और मोहकों

की न सुनो जो तुम से कहते हैं कि तुम बाबुल के राजा की
१० सेवा न करोगे। क्योंकि वे तुम्हारे आगे मिथ्या भविष्य कहते
हैं जिसतें तुम्हें तुम्हारे देश से दूर करें और मैं तुम्हें बाहर
११ खेद देऊं और तुम नष्ट हो जाओ। परन्तु जो जातिगण अपने
गले को बाबुल के राजा के जूए तले धरेगा और उस की
सेवा करेगा परमेश्वर कहता है कि मैं उसे उसी के देश में
कुशल से रहने देऊंगा और वुह उस में जाते बोवेगा और उस
में बसेगा॥
१२ और इन सारी बातों के समान मैं ने यहूदाह के राजा
सिदक़ियाह से कहा कि अपने अपने गलों को बाबुल के राजा
के जूए तले लाओ और उस की और उस के लोगों की सेवा
१३ करो और जीते रहो। क्यों तुम तलवार से और अकाल से और
मरी से मारे जाओगे तू और तेरे लोग परमेश्वर के वचन के
समान जो उस ने उस जातिगण के विषय में कहा है जो
१४ बाबुल के राजा की सेवा करेगा। और भविष्यद्वक्तों की बातों
को जो तुम से कहते हैं कि तुम बाबुल के राजा की सेवा न
करोगे मत मानियो क्योंकि वे तुम से मिथ्या भविष्य कहते हैं।
१५ क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं ने उन्हें नहीं भेजा है परन्तु
वे मेरे नाम से मिथ्या भविष्य कहते हैं जिसतें मैं तुम्हें खेद
देऊं और तुम लोग और भविष्यद्वक्ते जो तुम्हें भविष्य कहते
हैं नष्ट हो जाओ॥
१६ और मैं ने याजकों और इन सारे लोगों से यह वचन कहा
कि परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग अपने भविष्यद्वक्तों की
बातें मत मानियो जो तुम से कहते हैं कि देखो परमेश्वर के मन्दिर
के पात्र थोड़े दिन के पीछे बाबुल से फिर लाये जायेंगे क्योंकि
१७ वे तुम से झूठा भविष्य कहते हैं। उन की बात मत सुनो
बाबुल के राजा की सेवा करो और जीओ यह नगर किस लिये

१८ उजाड़ हो जाये। परन्तु यदि वे भविष्यद्वक्ता होवें और परमेश्वर
का बचन उन के पास होवे तो वे सेनाओं के परमेश्वर से
बिनती करें कि जो पात्र परमेश्वर के मन्दिर में और यहूदाह
के राजा के घर में और यरूसलम में छूटे हैं बाबुल को जाने
न पावें ॥
१९ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है उन खंभों के बिषय
और उस समुद्र के बिषय और उन आधारों के बिषय और और
२० पात्रों के बिषय में जो इस नगर में रह गये हैं। जिन्हें बाबुल
का राजा नबूखुदनज़र न ले गया था जब वुह यहूदाह के
राजा यहूयक़ीम के बेटे यकुनियाह को और यहूदाह और
यरूसलम के सारे कुलीनों को यरूसलम से बाबुल को बंधुआई
२१ में ले गया। क्योंकि उन पात्रों के बिषय में जो परमेश्वर के
मन्दिर में और यहूदाह के राजा के घर में और यरूसलम में
बच रहे हैं सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता
२२ है। कि वे बाबुल में पहुंचाये जायेंगे और जब लों मैं उन पर
दृष्टि न करूं तब लों वे वहां रहेंगे परमेश्वर कहता है उस के
पीछे मैं उन्हें फिर लाऊंगा और इस स्थान में पहुंचाऊंगा ॥

अट्ठाईसवां पर्व्व ।

१ और उसी बरस में यहूदाह के राजा सिदक़याह के राज्य
के आरंभ में चौथे बरस के पांचवें मास में ऐसा हुआ कि
ज़िबऊनी अज़ूर के बेटे हननियाह भविष्यद्वक्ता ने परमेश्वर के
मन्दिर में याजकों के और सारे लोगों के आगे मुझ से कहा।
२ कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि
३ मैं ने बाबुल के राजा का जूआ तोड़ डाला है। परमेश्वर के
मन्दिर के सारे पात्र जिन्हें बाबुल का राजा नबूखुदनज़र इस
स्थान से बाबुल को ले गया मैं उन्हें दो बरस के भीतर भीतर

४ इस स्थान में फिर लाऊंगा। और मैं यहूदाह के राजा
यहूयक़ीम के बेटे यकुनियाह को और यहूदाह के सारे बंधुओं
को जो बाबुल में पहुंचाये गये मैं इस स्थान में फिर लाऊंगा
परमेश्वर कहता है क्योंकि बाबुल के राजा के जूए को तोड़ूंगा॥
५ तब यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने याजकों के और सारे लोगों
के आगे जो परमेश्वर के मन्दिर में खड़े थे हननियाह भविष्यद्वक्ता
६ से कहा। और यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने कहा आमीन
परमेश्वर ऐसा ही करे परमेश्वर तेरी बातों को पूरा करे जिन को
तू ने भविष्य कहा कि परमेश्वर के घर के पात्रों को और सारे
७ बंधुओं को बाबुल से इस स्थान में फिर लावे। तिस पर भी
यह बचन सुन जो मैं तेरे कानों में और सारे लोगों के कानों
८ में कहता हूं। भविष्यद्वक्तों ने भी जो मुझ से और तुझ से
आगे प्राचीन समय में थे बहुत से देशों के और बड़े बड़े
राज्यों के विषय में संग्राम और बिपत्ति और मरी का संदेश
९ दिया था। जो भविष्यद्वक्ता कुशल का भविष्य कहेगा उस
भविष्यद्वक्ता के बचन के पूरे होने से जाना जायेगा कि निश्चय
परमेश्वर ने उसे भेजा है॥
१० तब हननियाह भविष्यद्वक्ता ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता के
११ गले पर से जूआ उतारके तोड़ डाला। और हननियाह ने सारे
लोगों के आगे यह कहा कि परमेश्वर यों कहता है कि दो
बरस के भीतर भीतर में इसी रीति से बाबुल के राजा
नबूखुदनज़र का जूआ सारे देशगणों के गले से तोड़ूंगा तब
यरमियाह भविष्यद्वक्ता अपने मार्ग चला गया॥
१२ जब कि हननियाह भविष्यद्वक्ता ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता
के गले पर से जूआ तोड़ा था तब यह कहते हुए परमेश्वर
१३ का बचन यरमियाह के पास पहुंचा। कि जा और हननियाह
से कह परमेश्वर यों कहता है कि तू ने तो लकड़ी के जूओं

को तोड़ा है परन्तु उस की संती तू लोहे के जूए बना।
१४ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है
कि मैं ने इन सारे देशगणों के गले पर लोहे का जूआ रक्खा
है जिसतें वे बाबुल के राजा नबूखुदनज़र की सेवा करें और
वे उस की सेवा करेंगे और मैं ने चौगान के पशुन को भी उसे
दिया है॥
१५ और यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने हननियाह भविष्यद्वक्ता से
भी कहा कि हे हननियाह सुन परमेश्वर ने तुझे नहीं भेजा
१६ है परन्तु तू ने इन लोगों को झूठ की प्रतीति कराई है। इस
लिये परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तुझे भूमि पर से फेंकता
हूं तू इसी बरस मर जायगा क्योंकि तू ने परमेश्वर से फिर
१७ जाने को कहा है। और उसी बरस के सातवें मास में हननियाह
भविष्यद्वक्ता मर गया॥

उंतीसवां पर्ब्ब ।

१ और ये उस पत्री की बातें हैं जिसे यरमियाह भविष्यद्वक्ता
ने यरूसलम से प्राचीनों के बचे हुओं को जो बंधुआई में गये
थे और याजकों और भविष्यद्वक्तों को और उन सारे लोगों को
जिन्हें नबूखुदनज़र यरूसलम से बाबुल की बंधुआई में ले
२ गया था। उस के पीछे कि यकुनियाह राजा और रानी और
नपुंसक और यहूदाह और यरूसलम के अध्यक्ष और बढ़ई और
३ लोहार यरूसलम से चले गये। साफ़न के बेटे इलिआसः के
और ख़िलक़ियाह के बेटे जमरियाह के हाथों से कहते हुए
भेजा जिन्हें यहूदाह के राजा सिदक़ियाह ने बाबुल में बाबुल
के राजा नबूखुदनज़र के पास भेजा॥
४ सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर सारी बंधुआई से
यों कहता है जिन्हें मैं ने यरूसलम से बाबुल को बंधुआई

५ में पहुंचाया। घर बना बना बसो और बारी लगा लगा उन
६ के फल खाओ। बियाह करो और बेटे बेटियां जन्माओ और
अपने बेटों के लिये पत्नियां लेओ और अपनी बेटियों का बियाह
करो जिसतें वे बेटा बेटी जनें और वहां बढ़ो और मत घटो।
७ और जिस नगर में मैं ने तुम्हें बंधुआई में पहुंचाया उस का
कुशल चाहो और उस के लिये परमेश्वर से प्रार्थना करो क्योंकि
उस के कुशल में तुम्हारा कुशल है॥
८ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता
है कि तुम्हारे भविष्यद्वक्ता जो तुम्हारे मध्य में हैं और तुम्हारे
दैवज्ञ तुम्हें छल न देने पावें और अपने स्वप्न व्यवहारियों
९ को मत मानो जिन्हें तुम स्वप्न दिखवाते हो। क्योंकि वे मेरे
नाम से तुम से मिथ्या भविष्य कहते हैं मैं ने उन्हें नहीं भेजा
१० हे परमेश्वर कहता है। क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि
बाबुल में सत्तर बरस पूरे होने के पीछे मैं तुम से भेंट करूंगा
और तुम्हें इस स्थान में फिर लाने को तुम पर अपनी अच्छी
११ प्रतिज्ञा पूरी करूंगा। क्योंकि मैं तुम्हारे विषय में अपने मन
की बांछा जानता हूं अर्थात् कुशल की परन्तु दुख की बांछा
१२ नहीं जिसतें तुम्हारी पिछली दशा को आशा की बनाऊं। तब
तुम लोग मुझे पुकारोगे और जाके मेरी प्रार्थना करोगे और मैं
१३ तुम्हारी सुनूंगा। और तुम मुझे ढूंढ़ोगे और पाओगे क्योंकि तुम अपने
१४ सारे मन से मुझे ढूंढ़ोगे। और मैं तुम से पाया जाऊंगा परमेश्वर
कहता है और तुम्हारी बंधुआई को पलट देऊंगा और तुम्हें
सारे जातिगणों में से और सारे स्थानों में से जहां जहां मैं ने
तुम्हें खदेड़ा है मैं तुम्हें बटोरूंगा परमेश्वर कहता है और
तुम्हें उस स्थान में जहां से मैं ने तुम्हें बंधुआई में पहुंचवाया
फिर लाऊंगा॥
१५ क्योंकि तुम ने कहा कि परमेश्वर ने हमारे लिये बाबुल में

१६ भविष्यद्वक्तों को खड़ा किया है। क्योंकि परमेश्वर राजा के
बिषय में जो दाऊद के सिंहासन पर बैठा है और इस नगर
के सारे निवासियों के बिषय में और तुम्हारे भाई बंद के बिषय
में जो तुम्हारे साथ बंधुआई में न गये थे यों कहता है।
१७ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है देखो मैं उन पर तलवार
और अकाल और मरी भेजने पर हूं और उन्हें बुरे गूलरों की
१८ नाईं बनाऊंगा जो बुराई के मारे खाये नहीं जा सक्ते। और
मैं उन्हें तलवार से और अकाल से और मरी से सताऊंगा और
मैं उन्हें पृथिवी के सारे राज्यों में झंझट के लिये सौंपूंगा कि
वे सारे जातिगणों में जिन में मैं ने उन्हें खेदा स्राप और
१९ आश्चर्य्य और फुफकार और निन्दा के कारण होवें। इस लिये
कि उन्हों ने मेरे बचनों को न सुना परमेश्वर कहता है
जिन्हें मैं ने अपने सेवक भविष्यद्वक्तों के द्वारा उन के पास
भेजा बिहान ही को उठके भेजा पर तुम ने न सुना परमेश्वर
कहता है॥

२० इस लिये हे बंधुआई के सारे लोगो जिन्हें मैं ने यरूसलम
२१ से बाबुल में भेजा है परमेश्वर का बचन सुनो। क़ोलायाह के
बेटे अख़िअब के बिषय में और मअसियाह के बेटे सिदक़ियाह
के बिषय में जो मेरे नाम से तुम्में मिथ्या भविष्य कहते हैं सेनाओं
का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है देखो मैं उन्हें
बाबुल के राजा नबूख़ुदनज़र के हाथ में सौंपूंगा और वुह उन्हें
२२ तुम्हारी आंखों के आगे मार डालेगा। और उन से जो बाबुल
में यहूदाह के सारे बंधुओं में हैं यह स्राप लिया जायेगा कि
परमेश्वर तुझे सिदक़ियाह और अख़िअब की नाईं बनावे जिन्हें
२३ बाबुल के राजा ने आग में भूना था। क्योंकि उन्हों ने इसराएल
में मूर्खता किई है और अपने परोसियों की पत्नियों से व्यभिचार
किया है और मेरे नाम से मिथ्या कहा है जो मैं ने उन्हें

आज्ञा न किई मैं जानता हूं और साची हूं परमेश्वर कहता
है ॥
२४ और नखलामी समअ़ियाह से यह कहके बोल।
२५ कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है इस
कारण कि तू ने अपने नाम से यरूसलम के सारे लोगों के
पास और मअ़सियाह याजक के बेटे सफ़नियाह के और सारे
२६ याजकों के पास यह कहके पत्री भेजी है। कि यहूयदः याजक
की संती परमेश्वर ने तुझे याजक किया है जिसतें परमेश्वर के
मन्दिर में तुम प्रधान होओ और हर एक बौड़हे को और जो
अपने को भविष्यद्वक्ता बनाता है तू उसे बन्दीगृह और काठ
२७ में डाले। और अब किस लिये तू ने अ़नताती यरमियाह को
नहीं दपटा जो अपने को तुम्हारे आगे भविष्यद्वक्ता दिखाता
२८ है। क्योंकि उस ने यह कहके हमारे पास बाबुल में कहला
भेजा है कि बहुत दिन हैं घर बना बनाके बसो और बारी
२९ लगाके उन के फल खाओ। और सफ़नियाह याजक ने इस पत्री
को यरमियाह भविष्यद्वक्ता के सुन्ने में पढ़ा ॥
३० और परमेश्वर का वचन यह कहता हुआ यरमियाह के पास
३१ पहुंचा। कि बंधुआई के सारे लोगों को कहला भेज नखलामी
समअ़ियाह के बिषय में परमेश्वर यों कहता है इस लिये कि
समअ़ियाह ने तुम्हें भविष्य कहा और मैं ने उसे नहीं भेजा
३२ और उस ने तुम्हें झूठ पर भरोसा करवाया है। इस लिये
परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं नखलामी समअ़ियाह को
और उस के बंश को दंड देऊंगा और उस के परिवार का एक
भी उस के लोगों में न रहने पावेगा और जो भलाई में अपने
लोगों पर करूंगा परमेश्वर कहता है वुह उसे न देखेगा क्योंकि
उस ने परमेश्वर से फिर जाने को कहा है ॥

तीसवां पर्व्व ।

१ यह कहते हुए परमेश्वर का बचन यरमियाह के पास
२ पहुंचा। परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने यों कहा है कि सारे
३ बचन जो मैं ने तुझे कहा है पुस्तक में लिख। क्योंकि परमेश्वर
कहता है कि देखो वे दिन आते हैं जब कि मैं अपने
इसराएल और यहूदाह के लोगों की बंधुआई को पलटूंगा और
परमेश्वर कहता है कि मैं उन्हें उस देश में फिर लाऊंगा जो
उन के पितरों को दिया था और वे उस के अधिकारी होंगे।
४ और यह वे बचन हैं जो परमेश्वर ने इसराएल और यहूदाह
के विषय में कहे हैं॥

५ कि परमेश्वर यों कहता है कि हम ने थर्थराहट का शब्द
६ सुना है भय है और कुशल नहीं। अब पूछो और देखो यदि
पुरुष जन सत्ता है क्यों मैं ने हर एक पुरुष को पीड़ित स्त्री
की नाईं अपनी अपनी कटि पर हाथ धरे हुए देखा है कि सब
७ के मुंह पीले हो रहे हैं। हाय क्योंकि वुह दिन बड़ा है यहां
लों कि उस के तुल्य नहीं है वुह यअकूब की बिपत्ति का समय
होगा परन्तु वुह उस्से बच जायेगा॥

८ और उस दिन ऐसा होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है
कि मैं उस का जूआ तेरे गले पर से तोड़ देऊंगा और उस के
बंधनों को झटक देऊंगा और परदेशी उस्से फिर सेवा न
९ करावेंगे। परन्तु वे परमेश्वर अपने ईश्वर की और अपने राजा
१० दाऊद की सेवा करेंगे जिसे मैं उन के लिये उठाऊंगा। इस
लिये हे मेरे दास यअकूब मत डर परमेश्वर कहता है और हे
इसराएल बिस्मित मत हो क्योंकि देख दूर से मैं तुझे कुशल
से पहुंचाऊंगा और तेरे बंशों को उन की बंधुआई के देश से
और यअकूब फिरेगा और चैन करेगा और निर्भय से भी रहेगा

११ और उसे कोई न डरावेगा। क्योंकि मैं तेरे साथ हूं परमेश्वर
कहता है कि तुझे बचाऊं क्योंकि मैं सारे देशगणों को जहां जहां
मैं ने तुझे बिथराया है मिटाऊंगा पर मैं तुझे सर्वथा न मिटाऊंगा।
परन्तु तुझे परिमाण से ताड़ना करूंगा और तुझे निर्दंड न
छोडूंगा॥
१२ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि तेरी चोट असाध्य है
१३ तेरा घाव दुखदायक। कोई नहीं जो तेरा न्याय करे कि तू
बांधा जाये अच्छा करने की औषध तुझ पर कोई नहीं लगाता।
१४ तेरे सारे मित्र तुझे भूल गये वे तेरी खोज नहीं करते तेरे
पाप बड़े होने के और तेरे अपराध बहुत होने के कारण
निश्चय मैं ने एक बड़ी ताड़ना से बैरी की मार से तुझे मारा
१५ है। अपनी चोट के मारे क्यों चिल्लाता है तेरा कष्ट असाध्य
है तेरे पाप बड़े होने के और तेरे अपराध बहुत होने के
१६ कारण मैं इन बातों को तुझ पर लाया। इस लिये सब जो
तुझे भक्षते हैं पीछे आप भक्षे जायेंगे और तेरे सारे बैरी
बंधुआई में जायेंगे और जो तुझे लूटते हैं सो आप लूट बनेंगे
१७ और जो तुझे नष्ट करते हैं उन्हें मैं नष्टता को सोंपूंगा। क्योंकि
मैं तुझे फिर चंगा करूंगा और तेरा घाव अच्छा करूंगा परमेश्वर
कहता है क्योंकि उन्हों ने तेरा नाम अजाती सैहून रक्खा है
जिस की सुधि कोई नहीं लेता॥
१८ परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं यअकूब के तंबुओं की
बंधुआई को पलटूंगा और उस के निवासस्थानों पर दया करूंगा
और नगर अपने ढेर पर बनाया जायेगा और राजभवन अपने
१९ ठिकाने पर बसाया जायेगा। और उन में से धन्यबाद और
आनन्दित लोगों का शब्द निकलेगा और मैं उन्हें बढ़ाऊंगा
और वे घटाये न जायेंगे और मैं उन्हें प्रतिष्ठा देऊंगा और वे
तुच्छ न होंगे॥

२० 　और उस के बालक आगे की नाईं होंगे और उस की मंडली
मेरे आगे स्थिर होगी और मैं उन के अंधेरों को दंड देऊंगा।
२१ और उस का अध्यक्ष उसी के कुल में का होगा और उस का
प्रधान उस के मध्य में से निकलेगा और मैं उसे खींचूंगा
जिसतें वुह मेरे पास आवे क्योंकि परमेश्वर कहता है कि कौन
है जिस ने मेरे पास आने को अपना मन सिद्ध किया है।
२२ और तुम मेरे लोग होओगे और मैं तुम्हारा ईश्वर हूंगा॥
२३ 　देखो परमेश्वर का ववंडर वुह कोप से निकलता है हां एक
२४ भयानक ववंडर जो दुष्टों के सिर पर उतरेगा। परश्वमेर का
महा कोप फिर न आवेगा जब लों कार्य्य न करे और अपने
मन का ठाना हुआ पूरा न करे पिछले दिनों में तुम लोग उस
पर सोच करोगे॥

एकतीसवां पर्व्व ।

१ 　परमेश्वर कहता है कि उस समय में मैं इसराएल के सारे
२ परिवारों का ईश्वर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे। परमेश्वर यों
कहता है कि तलवार से उबरे हुए लोगों ने अर्थात् इसराएल
३ ने बन में कृपा पाई जब कि मैं उसे चैन देने गया। दूर से
परमेश्वर ने मुझे दिखाई देते हुए कहा कि मैं ने सनातन के
प्रेम से तुझे प्रेम किया इसी लिये मैं ने तुझ पर दया बढ़ाई
४ है। हे इसराएल की कन्या तथापि मैं तुझे फिरके बनाऊंगा
और तू बन जायेगी तू फिर अपने मृदंग से आप को सिंगारेगी
५ और आनन्दित लोगों के साथ नाच में जायेगी। तू फिरके
समरून के पर्व्वतों पर दाख की बारी लगायेगी लगानेवाले
६ लगावेंगे और भोगेंगे। क्योंकि दिन आया है इफ़रायम पहाड़
के पहरू ने प्रचारा है कि उठो हम परमेश्वर अपने ईश्वर के
पास सैहून पर चढ़ जायें॥

७ क्योंकि परमेश्वर ने कहा है कि यअ़क़ूब के लिये आनन्द
से गाओ और जातिगणों के श्रेष्ठ के साथ जय जयकार करो
प्रचारो स्तुति करके कहो कि हे परमेश्वर अपने लोगों को
८ अर्थात् इसराएल के उबरे हुओं को बचा। देख मैं उत्तर देश
से उन्हें लाऊंगा और पृथिवी के खूंटों से उन्हें एकट्ठा करूंगा
और उन में अंधे और लंगड़े और गर्भिणी और जो पीर में हैं
९ एक बड़ी मंडली फिर आवेगी। वे विलाप करते करते आवेंगे
और गिनती करते करते मैं उन्हें लाऊंगा मैं उन्हें जल की धारों
पर समथर मार्ग से चलाऊंगा जिस में वे ठोकर न खायेंगे क्योंकि
मैं इसराएल का पिता हुआ हूं और इफ़रायम मेरा पहिलौठा था॥
१० हे अन्यदेशियो परमेश्वर का वचन सुनो और दूर के टापुओं
में सुनाके कहो कि जिस ने इसराएल को छिन्न भिन्न किया
वही उसे बटोरेगा और जैसे गड़रिया अपनी झुंड की तैसा वुह
११ उस की रखवाली करेगा। क्योंकि परमेश्वर ने यअ़क़ूब को छुड़ा
लिया है और जो उस्से बलवन्त हैं उस के हाथ से छुड़ावेगा।
१२ इस लिये वे आके सैहून के टीले पर गावेंगे और परमेश्वर की
अच्छी वस्तुन को अर्थात् अन्न और दाखरस और तेल और
लेंढ़े के और झुंड के बच्चों को भाग लेने को एकट्ठे होंगे और
उन का प्राण सींची बारी की नाईं होगा और वे फिर उदास न
१३ होंगे। तब कन्या नाच में और तरुण और पुरनिया एकट्ठे आनन्दित
होंगे और मैं उन के विलाप को आनन्द से पलट डालूंगा और
१४ उन के शोक के पीछे मैं उन्हें शांति देके मगन करूंगा। और
मैं याजकों के प्राण को पदार्थों से अघाऊंगा और मेरे लोग मेरी
अच्छी वस्तुन से संतुष्ट होंगे परमेश्वर कहता है॥
१५ परमेश्वर यों कहता है कि रामः में एक शब्द सुना गया
अति बिलाप का हाहाकार राख़िल अपने बालकों के लिये
रोती है और शांति नहीं होती क्योंकि वे नहीं हैं॥

१६ परमेश्वर यों कहता है कि अपने विलाप के शब्द को और
आंखों से आंसू को रोक ले क्योंकि तेरे कार्य्य का प्रतिफल होगा
परमेश्वर कहता है और वे वैरियों के देश से फिर आवेंगे।
१७ और परमेश्वर कहता है कि तेरे अंत में भरोसा है और तेरे बालक
अपने ही सिवाने में आवेंगे॥
१८ निश्चय मैं ने इफ़रायम को विलाप करते सुना है कि तू
ने मुझे ताड़ना किया है और मैं ने बिन निकाले हुए बछड़े की
नाईं ताड़ना पाया तू मुझे फिरा और मैं फिरूंगा क्योंकि
१९ तू ही परमेश्वर मेरा ईश्वर है। निश्चय मेरे फिराये जाने
से मैं पछताया और चिताये जाने के पीछे अपनी जांघ पर
हाथ मारा मैं लज्जित हुआ और लाज से भर गया क्योंकि मैं
ने अपनी तरुणाई की निन्दा सही॥
२० क्या इफ़रायम मेरा प्रिय पुत्र नहीं क्या वुह दुलारा बालक
नहीं क्योंकि मेरा वचन ज्यों हीं उस के मन में पहुंचा मैं ने
उसे फिर स्मरण किया इस लिये मेरा मन उस के लिये व्याकुल
हुआ निश्चय मैं उस पर दया करूंगा परमेश्वर कहता है॥
२१ पथचिन्ह अपने लिये स्थापन कर अपने लिये खंभे खड़े कर
राजमार्ग की ओर मन लगा हे इसराएल की कन्या जिस मार्ग
२२ से तू गई फिर आ अपने इन नगरों की ओर फिर आ। हे
भगरी कन्या तू कब लों फिर फिर जायेगी क्योंकि परमेश्वर
पृथिवी में एक नई बात सिरजने पर है कि स्त्री पुरुष को घेरेगी॥
२३ सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि
जब मैं उन की बंधुआई को पलटूंगा तब वे यहूदाह देश में
और उस के नगरों में यह बचन कहेंगे कि हे धर्म्म के निवास
२४ हे अति धार्म्मिक के पर्ब्बत परमेश्वर तुझे आशीष देगा। और
यहूदाह और उस के सारे नगर किसान होके एक साथ उस में
२५ बसेंगे और वे झुंडों को लिये हुए फिरेंगे। क्योंकि मैं ने पियासे

प्राणी को संतुष्ट किया है और हर एक मरभूखे प्राणी को तृप्त
२६ किया है। उस्से मैं जाग उठा और देखा और मेरी नींद सुख
की थी॥

२७ परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं कि मैं इसराएल
के घराने को और यहूदाह के घराने को मनुष्य के और पशु
२८ के बीज से बोऊंगा। और यों होगा कि जैसा मैं उन्हें उखाड़ने
को और ढाने को और उलटने को और नाश करने को और
दुख देने को चौकस हुआ हूं तैसा उन्हें बनाने और बोने को
२९ चौकस हूंगा परमेश्वर कहता है। उन दिनों में वे फिर न
कहेंगे कि पितरों ने खट्टा अंगूर खाया है और बालकों के दांत
३० खट्टे हुए हैं। परन्तु हर एक जन अपने ही बुराई के लिये
मरेगा जिस जन ने खट्टा अंगूर खाया है उस के दांत
खट्टे होंगे॥

३१ परमेश्वर कहता है कि देख वे दिन आते हैं जिस में मैं
इसराएल के घराने से और यहूदाह के घराने से एक नई
३२ बाचा बांधूंगा। उस बाचा के समान नहीं जो मैं ने उन के
पितरों से किई थी जब कि मैं उन के हाथ पकड़के उन्हें मिस्र के
देश से निकाल लाया मेरी उस बाचा को उन्हों ने भंग किया
३३ यद्यपि मैं उन का पति था परमेश्वर कहता है। क्योंकि यह
वुह बाचा है जो मैं इसराएल के घराने से बांधूंगा उन दिनों
के पीछे परमेश्वर कहता है मैं अपनी व्यवस्था उन के अंतःकरण
में डालूंगा और उन के मन में उसे लिखूंगा और मैं उन का ईश्वर
३४ हूंगा और वे मेरे लोग होंगे। और वे फिर अपने अपने परोसी और
अपने अपने भाई को यह कहके न सिखावेंगे कि परमेश्वर को
जानो क्योंकि छोटे से बड़े लों सब मुझे जानेंगे परमेश्वर कहता
है क्योंकि मैं उन की बुराई को क्षमा करूंगा और उन का पाप
फिर स्मरण न करूंगा॥

३५ परमेश्वर यों कहता है जो दिन के उंजियाले के लिये
सूर्य्य को ठहराता है और रात के उंजियाले के लिये चांद
और तारों की बिधि करता है जो समुद्र को यहां लों लहराता
है कि उन के ढेऊ हाहा करते हैं उस का नाम सेनाओं का
३६ परमेश्वर है। जो ये व्यवस्था मुझ से जाती रहें परमेश्वर कहता
है तो इसराएल के वंश भी मेरे आगे नित्य एक जाति होने
३७ से जाते रहेंगे। परमेश्वर यों कहता है कि यदि ऊपर स्वर्ग
नापा जा सके अथवा पृथिवी के नीचे की नेवों की थाह लिई जाये
तो मैं भी उन की सारी करनी के कारण इसराएल के सारे वंश
को त्यागूंगा परमेश्वर कहता है॥
३८ देख वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है कि हननिएल के
गुम्मट से कोने के फाटक लों परमेश्वर के लिये नगर बनाया
३९ जायेगा। और नापने की रस्सी जरीब पहाड़ के ऊपर से होके
४० जुआ: को घेर लेगी। और लोथों की और राख की सारी तराई
और सारे खेत क़िदरून नाली लों पूरब के घोड़फाटक के कोने
लों परमेश्वर के लिये पवित्र होंगे वुह उखाड़ा और फिर कधी
गिराया न जायेगा॥

बत्तीसवां पर्ब्ब।

१ यहूदाह के राजा सिदक़ियाह के दसवें बरस जो नबूख़ुदनज़र
का अठारहवां बरस था परमेश्वर का बचन यरमियाह के पास
पहुंचा॥
२ और उस समय बाबुल के राजा की सेना ने यरूसलम को
घेर रक्खा था और यरमियाह भविष्यद्वक्ता बन्दीगृह के आंगन
३ में जो यहूदाह के राजा के भवन में था बन्द था। क्योंकि
यहूदाह के राजा सिदक़ियाह ने यह कहके उसे बंधन में
रक्खा कि तू ने क्यों यह भविष्य कहा है कि परमेश्वर यों कहता

है कि देख मैं इस नगर को बाबुल के राजा के हाथ में सौंपता
४ हूं और वुह इसे ले लेगा। और यहूदाह का राजा सिदक़ियाह
कसदियों के हाथ से न छूटेगा परन्तु निश्चय बाबुल के राजा
के हाथ में सौंपा जायेगा और वुह उस्से मुंहे मुंह बोलेगा और
५ इस की आंखें उस की आंखों को देखेंगी। और वुह सिदक़ियाह
को बाबुल में ले जायेगा और जब लों मैं उस्से पलटा न लेऊं
तब लों वुह वहीं रहेगा परमेश्वर कहता है जब तुम लोग
कसदियों से संग्राम करोगे तो भाग्यमान न होओगे॥
६ और यरमियाह ने कहा कि यह कहते हुए परमेश्वर का
७ वचन मेरे पास पहुंचा। देख तेरे चचा सलूम का बेटा
हनमिएल यह कहते हुए तेरे पास आवेगा कि मेरा खेत जो
अनतात में है अपने लिये मोल ले क्योंकि उसे छुड़ाने को तेरा
८ अधिकार है। तब मेरे चचा के बेटे हनमिएल ने परमेश्वर
के वचन के समान बन्दीगृह के आंगन में आके मुझ से यह
कहा कि मैं तेरी बिन्ती करता हूं कि मेरा खेत जो बिनयमीन
देश के अनतात में है मोल ले क्योंकि तेरा अधिकार है और
छोड़ाना तेरा है तू अपने लिये मोल ले तब मैं ने जाना कि
९ यह परमेश्वर का वचन है। इस लिये मैं ने उस खेत को जो
अनतात में था अपने चचा हनमिएल के बेटे से मोल लिया
१० और उसे रोकड़ दिया अर्थात सत्तरह शेकल चांदी। और
बिक्रय पत्र लिखके छापा और साक्षी करवाई और रोकड़ को
११ तोल दिया। और मैं ने छाप किये हुए बिक्रय पत्र को लिया
अर्थात् व्यवस्था और रीति के समान छापा हुआ था और जो
१२ खुला था। और वुह बिक्रय पत्र मेरे चचा के बेटे हनमिएल
के आगे और बिक्रय पत्र के साक्षियों के आगे और सारे यहूदियों
के आगे जो बन्दीगृह के आंगन में बैठे थे महसियाह के बेटे
१३ नेयरियाह के बेटे बरूक को सौंप दिया। और उन के आगे

१४ मैं ने बरूक को यह कहके आज्ञा किई । कि सेनाओं का
परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि इन लिखे हुए
विक्रय पत्रों को ले छापे हुए को और खुले हुए को और उन्हें
१५ एक मिट्टी के पात्र में रख जिसतें बहुत दिन ठहरें । क्योंकि
सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि घर
और खेत और दाख की बारी इस देश में फिर पाई जायेंगी ॥
१६ जब मैं ने नैयरियाह के बेटे बरूक को वुह विक्रय पत्र
सौंप दिया तब यह कहके मैं ने परमेश्वर की प्रार्थना किई ।
१७ हाय प्रभु परमेश्वर देख तू ने अपने महा पराक्रम से और अपनी
बढ़ाई हुई भुजा से स्वर्ग और पृथिवी को सृजा है तेरे
१८ लिये कुछ कठिन नहीं है । जो सहस्रों पर दया करता है और
पितरों की बुराई उन के पीछे उन के बालकों की गोद में जो
उन के पीछे आते हैं पलटा देता है अत्यन्त महान और
अत्यन्त पराक्रमी ईश्वर जिस का नाम सेनाओं का परमेश्वर है ।
१९ परामर्श में महान और कार्य्यों में बलवन्त जिस की आंखें
मनुष्य के पुत्रों की सारी चालों पर खुली हैं जिसतें हर एक
को उस की चालों के समान और उस के कार्य्यों के प्रतिफल के
२० तुल्य देवे । जिस ने मिस्र देश में और इसराएल में और
मनुष्यों में आज लों लक्षण और आश्चर्य्य दिखाये हैं और अपने
२१ लिये आज के समान नाम कर रक्खा है । और अपने
इसराएल लोगों को मिस्र देश से लक्षण और आश्चर्य्य और
दृढ़ हाथ से और फैलाई हुई भुजा से और बड़े भय से निकाल
२२ लाया है । और यह देश उन्हें दिया है जिस के बिषय में तू
ने उन के पितरों से किरिया खाई थी कि दूध और मधु का
२३ देश उन्हें देऊंगा । और वे प्रवेश करके उस के अधिकारी हुए
परन्तु उन्हों ने तेरा शब्द न माना और तेरी व्यवस्था पर न
चले और तेरी आज्ञाओं को उन्हों ने पालन न किया इसी

२४ कारण तू यह सारी विपत्ति उन पर लाया है। देख नगर लेने
को मोर्चे बढ़े आते हैं और नगर कसदियों के हाथ में जो उस
के विरुद्ध लड़ते हैं तलवार के और अकाल के और मरी के
कारण दिये गये हैं और जो तू देखता है कि जो कुछ तू ने
२५ कहा है सो पूरा हुआ है। और हे प्रभु परमेश्वर तू ने मुझ
से कहा है कि रोकड़ से अपने लिये खेत मोल ले और साक्षी
करा यद्यपि नगर कसदियों के हाथ में दिया गया है॥
२६ तब परमेश्वर का वचन यह कहके यरमियाह के पास
२७ पहुंचा। देख मैं परमेश्वर सारे प्राणियों का ईश्वर क्या मेरे लिये
२८ कुछ कठिन हो सक्ता है। इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि
देख मैं यह नगर कसदियों के हाथ में और बाबुल के राजा
नबूखुदनज़र के हाथ में देता हूं और वुह उसे ले लेगा।
२९ और कसदी जो इस नगर से लड़ते हैं पैठेंगे और इस नगर में
आग लगावेंगे और उसे और उन घरों को जिन की छतों पर
मुझे रिस दिलाने को उन्हों ने बअल के लिये धूप जलाया है
३० और उपरी देवों के लिये तर्प्पण किया है जला देंगे। क्योंकि
इसराएल के संतान और यहूदाह के संतान अपनी युवावस्था
से वही बात करते हैं जो मेरी दृष्टि में बुरी है कि इसराएल
के संतान अपने ही हाथों के कार्य्यों से मुझे रिस दिला रहे
३१ हैं परमेश्वर कहता है। क्योंकि यह नगर जब से उन्हों ने
बनाया है आज लों मेरे कोप और मेरी जलजलाहट का कारण
३२ हो रहा है कि मैं उसे अपनी दृष्टि से निकालूं। इसराएल के
संतानों की और यहूदाह के संतानों की समस्त दुष्टता के कारण
जो उन्हों ने और उन के राजाओं ने और उन के अध्यक्षों ने
और उन के याजकों ने और उन के भविष्यद्वक्तों ने और
यहूदाह के मनुष्यों ने और यरूसलम के निवासियों ने किई।
३३ क्योंकि उन्हों ने मेरी ओर पीठ फेरी और मुंह नहीं और

जब मैं ने उन्हें भोर को उठ उठके उपदेश किया और
३४ सिखाया तो उपदेश ग्रहण करने को किसी ने न सुना। और
जो घर मेरे नाम से कहावता है उसे अशुद्ध करने को उन्हों
३५ ने उस में घिनौनी वस्तुन को स्थापन किया है। और उन्हों
ने बअल के लिये ऊंचे ऊंचे स्थान बनाये जो हिन्नूम के बेटे
की तराई में है जिसतें अपने बेटे बेटियों को मालिक के लिये
आग में से चलावें जिसे मैं ने उन्हें बर्जा था और जो मेरे मन
में नहीं आया था कि वे यहूदाह पर अपराध लगाने को ऐसा
घिनित कार्य्य करें॥
३६ और अब इस लिये परमेश्वर इसराएल का ईश्वर इस नगर
के विषय में जिस की अवस्था में तुम लोग कहते हो कि
तलवार से और अकाल से और मरी से बाबुल के राजा के
३७ हाथ में सौंपा गया है यों कहता है। देख जहां जहां मैं ने
उन्हें अपनी रिस में और जलजलाहट में और महा कोप में
खेदा है मैं उन्हें उन सारे देशों से बटोरूंगा और फिर उन्हें
३८ इस स्थान में लाके निर्भय से बसाऊंगा। और वे मेरे लोग
३९ होंगे और मैं उन का ईश्वर हूंगा। और मैं उन्हें एक मन और
एक ही मार्ग उन की भलाई के लिये और उन के पीछे उन
के संतानों की भलाई के लिये देऊंगा जिसतें मुझ से नित्य
४० डरा करें। और मैं उन की भलाई करने को उन से एक
सनातन की बाचा बांधूंगा जो मैं उन से उठा न लेऊंगा और
मैं अपना भय उन के मन में डालूंगा जिसतें वे मुझ से फिर
४१ न जायें। और उन पर भलाई के लिये मैं उन से आनन्दित
हूंगा और निश्चय मैं उन्हें अपने सारे अंतःकरण और अपने
सारे प्राण से इस देश में बसाऊंगा॥
४२ क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि जैसा मैं इन लोगों पर
यह सारी महा बिपत्ति लाया हूं तैसा ही मैं उन पर सारी

४३ भलाई लाऊंगा जो मैं ने उन के विषय में कही है। और इस
देश में खेत फिर मोल लिया जायेगा जिस के विषय में तुम
लोग कहते हो कि वुह बिन मनुष्य और बिन पशु उजाड़ है
४४ और कसदियों के हाथ में दिया गया है। बिनयमीन देश में और
यरूसलम के आस पास और यहूदाह के नगरों में और पर्व्वत
देश के नगरों में और चौगान के नगरों में और दक्खिन के
नगरों में मनुष्य रोकड़ से खेत मोल लेंगे और मोल लेने का
पत्र भी लिखके छाप कर साची करावेंगे क्योंकि मैं उन की
बंधुआई को फेरूंगा परमेश्वर कहता है॥

तेंतीसवां पर्व्व।

१ और यरमियाह के बन्दीगृह के आंगन में बन्द रहते ही
परमेश्वर का वचन उस के पास यह कहते हुए दूसरी बार
पहुंचा॥
२ उस का कारक परमेश्वर यों कहता है उस का सृष्टिकर्त्ता
परमेश्वर जो उसे स्थिर भी करता है परमेश्वर उस का नाम है।
३ मेरी बिनती कर और मैं तुझे उत्तर देऊंगा और बड़े बड़े कार्य्य
और छिपी छिपी वस्तु जो तू नहीं जानता तुझे बतलाऊंगा।
४ क्योंकि इस नगर के घरों के और यहूदाह के राजाओं के घरों
के विषय में जो मोर्चों से और तलवार से गिराये गये हैं
५ परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है। जो कसदियों से
संग्राम करने को आये हैं और उन्हें मनुष्यों की लोथों से भरने को
जिन्हें मैं ने अपनी रिस और क्रोध में मारा है और जिन की
सारी दुष्टता के कारण मैं ने अपना मुंह इस नगर से छिपाया
६ है। देखो मैं उस पर लेप लगाऊंगा और औषध से चंगा
करूंगा और कुशल और सचाई की अधिकाई प्रगट करूंगा।
७ और मैं यहूदाह की और इसराएल की बंधुआई को फेर लाऊंगा

८ और पहिले के समान उन्हें बनाऊंगा । और मैं उन की सारी
बुराई से जो उन्हों ने मेरे बिरुद्ध अपराध किया है उन्हें
पवित्र करूंगा और उन की सारी बुराइयों को जो उन्हों ने
मेरे बिरोध अपराध किया है और जो उन्हों ने हठ से मेरा
९ बिरोध किया है क्षमा करूंगा । और वुह मेरे लिये आनन्द का
नाम और स्तुति और बिभव होगा पृथिवी के सारे जातिगणों
में जो मेरी सारी भलाई को जो मैं उन पर करता हूं सुनेंगे
और उस सारी भाग्यमानी और कुशलता के कारण जो मैं उन्हें
देता हूं वे डरेंगे और कांपेंगे ॥
१० परमेश्वर यों कहता है कि इस स्थान में जिस के बिषय में
तुम लोग कहते हो कि मनुष्य बिना और पशु बिना उजाड़ है
यहूदाह के नगरों में और यरूसलम के मार्गों में जो मनुष्य
११ बिना उजाड़ हैं अर्थात् निवासी और पशु बिना । आनन्द का
शब्द और सुख बिलास का शब्द और दुल्हा का शब्द और
दुल्हिन का शब्द और उन का शब्द सुना जायेगा जो कहते
हैं कि सेनाओं के परमेश्वर की स्तुति करो क्योंकि परमेश्वर भला
है और उस की दया सदा लों है और उन का शब्द जो
परमेश्वर के मन्दिर में स्तुति की भेंट लाते हैं क्योंकि मैं पहिले
के समान देश की बंधुआई को फेर देऊंगा परमेश्वर कहता
है ॥
१२ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि इस स्थान में जो
मनुष्य बिना और पशु बिना उजाड़ है और उस के सारे नगरों
में गड़रिये निवास करेंगे जो अपनी भेड़ बकरियों को बैठावेंगे ।
१३ पर्ब्बत देश के नगरों में और चौगान के नगरों में और दक्खिन
के नगरों में और बिनयमीन के देश में और यरूसलम के
आस पास के स्थानों में और यहूदाह के नगरों में झुंड फिर
गिनवैये के हाथ के नीचे बीतेंगे परमेश्वर कहता है ॥

१४ देख वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है जो मैं ने इसराएल
के घराने के और यहूदाह के घराने के विषय में कहा है उस
१५ अच्छी बात को पूरा करूंगा। उन दिनों में और उस समय
में मैं दाऊद के लिये एक धर्म्म की डाली उभाडूंगा और
१६ वुह देश में विचार और न्याय करेगा। उन दिनों में यहूदाह
मुक्ति पावेगा और यरूसलम निर्भय से बसेगा और वुह इस
१७ नाम से पुकारा जायेगा कि परमेश्वर हमारा धर्म्म। क्योंकि
परमेश्वर यों कहता है कि इसराएल के घराने के सिंहासन पर
१८ बैठने को दाऊद से एक भी न घटेगा। और बलिदान की
भेंट और होम की भेंट मेरे आगे चढ़ाने को और नित्य बलि
चढ़ाने को लावी याजकों से एक न घटेगा॥

१९ यह कहते हुए भी परमेश्वर का बचन यरमियाह के पास
२० पहुंचा। परमेश्वर यों कहता है कि जो तुम लोग दिन के मेरे
नियम को और रात के मेरे नियम को बृथा कर सको यहां
२१ लों कि प्रतिदिन प्रतिरात समय में न होवें। तो मेरे दास
दाऊद से मेरा नियम बृथा होगा कि उस के सिंहासन पर
राज्य करने को पुत्र न होवे और याजक लावियों से जो मेरी सेवा
२२ करते हैं। जैसे स्वर्ग की सेना गिनी नहीं जा सक्ती है और
समुद्र की बालू तौली नहीं जा सक्ती तैसा मैं अपने दास
दाऊद के बंश को और लावियों को जो मेरी सेवा करते हैं
बढ़ाऊंगा॥

२३ परमेश्वर का बचन यह भी कहते हुए यरमियाह के पास
२४ पहुंचा। क्या तू ने नहीं देखा कि जिन दो घरानों को परमेश्वर ने
चुना है उस ने उन्हें भी त्यागा है कि ये लोग क्या कहते हैं
इस रीति उन्हों ने मेरे लोगों को तुच्छ जाना यहां लों कि वे
२५ एक जातिगण उन के साम्हने नहीं हैं। परमेश्वर यों कहता
है जो दिन और रात से मेरा नियम न हो और स्वर्ग पृथिवी जो मैं

२६ ने ठहराई है विधि न हो । तो मैं यअकूब के वंश को और
अपने दास दाऊद को त्यागूंगा यहां लों कि अबिरहाम और
इज़हाक़ और यअकूब के वंश के लिये उन के बंश में से
प्रभुता के लिये न लेऊं क्योंकि मैं उन की बंधुआई को पलट
डालूंगा और उन पर दया करूंगा ॥

चौंतीसवां पर्ब्ब ।

१　जब बाबुल का राजा नबूखुदनज़र और उस की सारी सेना
और पृथिवी के सारे राज्य जो उस के आधीन थे और सारे
लोग यरूसलम के और उस के सारे नगरों के विरुद्ध संग्राम
कर रहे थे तब परमेश्वर का बचन यह कहते हुए यरमियाह
के पास पहुंचा ॥
२　परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि तू जाके
यहूदाह के राजा सिदक़ियाह से कह कि परमेश्वर यों कहता
है कि देख मैं बाबुल के राजा के हाथ में यह नगर सौंपता
३ हूं और वुह उसे आग से जला देगा । और तू उस के हाथ
से न बचेगा परन्तु निश्चय पकड़ा जायेगा और उस के हाथ
में सौंपा जायेगा और तेरी आंखें बाबुल के राजा की आंखें
देखेंगी और वुह मुंहे मुंह तुझ से कहेगा और तू बाबुल को
जायेगा ॥
४　तथापि हे यहूदाह के राजा सिदक़ियाह परमेश्वर का बचन
सुन परमेश्वर ने तेरे विषय में यों कहा है कि तू तलवार से
५ मारा न जायेगा । तू कुशल से मरेगा और जिस रीति से तेरे
पितर अगिले राजाओं के लिये सुगंध जलाते थे तेरे लिये
जलावेंगे और तेरे लिये यों बिलाप करेंगे कि हाय प्रभु क्योंकि
परमेश्वर कहता है कि मैं ने बचन कहा है ॥
६　और यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने यहूदाह के राजा सिदक़ियाह

७ से ये सारी बातें यरूसलम में कहीं। और जब बाबुल के
राजा की सेना यरूसलम के और यहूदाह के सारे रहे हुए
नगरों के बिरुद्ध और लकीस के और अज़ीक: के बिरुद्ध लड़
रही थीं क्योंकि यहूदाह के नगरों में ये बाड़ित नगर रह
गये थे॥

८ यह बचन जो परमेश्वर की ओर से यरमियाह के पास
पहुंचा जब सिदक़ियाह राजा ने सारे लोगों के साथ जो यरूसलम
९ में थे छुटकारा प्रचारने के लिये नियम किया। कि हर एक
अपने अपने इबरी दास दासी को छोड़ देवे और कोई अपने
१० यहूदी भाई से सेवा न लेवे। और सारे अध्यक्षों ने और सारे
लोगों ने जिन्हों ने अपने ही दास दासी को छोड़ने को और
उन से सेवा न लेने को नियम किया था उसे मानके उन्हें
११ छोड़ दिया। परन्तु उस के पीछे उन्हों ने अपने दास दासियों
को जिन्हें उन्हों ने छोड़ दिया था फिर लिया॥

१२ इस लिये परमेश्वर का बचन परमेश्वर से यरमियाह के पास
१३ पहुंचा। परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि जिस
दिन मैं तुम्हारे पितरों को मिस्र देश से बंधुआई के घर से
निकाल लाया मैं ने यह कहके उन के साथ एक बाचा बांधी।
१४ कि सात सात बरस पीछे हर एक जन अपने अपने इबरी
भाई को जो तेरे पास बेचा गया हो जाने दे और जब उस
ने तेरे पास छ: बरस तेरी सेवा किई तू उसे छोड़ दे परन्तु
तुम्हारे पितरों ने मेरा बचन न सुना और अपना कान न
१५ लगाया। और आज जब कि तुम लोग फिरे और हर एक
जन ने अपने अपने परोसी पर छुटकारा प्रचारने को मेरी
दृष्टि में भलाई किई थी और इस मन्दिर में जो मेरे नाम से
१६ कहा जाता है मेरे साथ नियम किया। परन्तु तुम फिरे और
मेरे नाम को अशुद्ध किया और हर एक जन ने अपने अपने

दास और हर एक अपनी दासी को जिन्हें तुम ने उन की
इच्छा पर चलने को छोड़ दिया था फिरके लिया और उन्हें
अपने वश में लाये कि वे तुम्हारे लिये दास और दासियां बनें॥
१७ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि तुम ने मेरी न मानी
कि हर एक अपने अपने भाई और अपने अपने परोसी पर
छुटकारा प्रचारे देख परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हारे लिये
तलवार और मरी और अकाल को छुटकारा प्रचारता हूं और
१८ तुम्हें पृथिवी के सारे राज्यों में झंझट में डालूंगा। और जिन
लोगों ने मेरी वाचा को उल्लंघन किया है जिन्हों ने उस वाचा
की बातों को पूरा न किया जो उन्हों ने मेरे आगे किई थी
जब वे बछड़े को दो टुकड़े करके उन के मध्य में होके गये
१९ थे। अर्थात् यहूदाह के अध्यक्षों को और यरूसलम के
अध्यक्षों को और नपुंसकों को और याजकों को और देश के
सारे लोगों को जो बछड़े के टुकड़ों के मध्य में से गये थे।
२० सो मैं उन्हें अर्थात् उन्हीं को बैरियों के हाथ में और उन के
प्राण के गाहकों के हाथ में सौंपूंगा और उन की लोथें आकाश
के पंछियों के लिये और पृथिवी के पशुन के लिये भोजन
२१ होंगी। और यहूदाह के राजा सिदक़ियाह को और उस के
अध्यक्षों को उन के बैरियों के हाथ में और उन के प्राण के
गाहकों के हाथ में सौंपूंगा अर्थात् बाबुल के राजा की सेना
२२ के हाथ में जो तुम से उठ गई। देखो मैं आज्ञा करूंगा
परमेश्वर कहता है और उन्हें इस नगर में फिर लाऊंगा और
वे इस्से लड़ेंगे और उसे लेके आग से जलावेंगे और मैं यहूदाह
के नगरों को एक उजाड़ और निवासी रहित बनाऊंगा॥

पैंतीसवां पर्व्व।

१ वुह बचन जो यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयक़ीम

के समय में परमेश्वर की ओर से यह कहते हुए यरमियाह
२ के पास पहुंचा। कि तू रैकाबियों के घर जा और उन से कहके
उन्हें परमेश्वर के मन्दिर में की एक कोठरी में ले जा और
उन्हें पीने को दाखरस दे॥
३ तब मैं ने हबसनियाह के बेटे यरमियाह के बेटे याज़नियाह
को और उस के भाइयों को और उस के सारे बेटों को और
४ रैकाबियों के सारे परिवार को लिया। और उन्हें परमेश्वर के
मन्दिर में ईश्वर के जन यजदलियाह के बेटे हन्नान के बेटों
की कोठरी में लाया जो अध्यक्षों की कोठरी के लग थी जो
द्वारपाल सलूम के बेटे मअ़सियाह की कोठरी के ऊपर थी।
५ और मैं ने रैकाबियों के घराने के पुत्रों के आगे हंडे भर भर
दाखरस और कटोरियां धर दिये और उन से कहा कि दाखरस
पीओ॥
६ पर उन्हों ने कहा कि हम दाखरस न पीयेंगे क्योंकि हमारे
पितर रैकाब के बेटे यूनदब ने हमें यह कहके चिताया कि
७ तुम और तुम्हारे बेटे कभी दाखरस न पीना। और न घर
बनाना न बीज बोना न दाख की बारी लगाना न उस के
अधिकारी होना परन्तु अपने जीवन भर तंबुओं में रहा करो
जिसतें देश में जहां तुम परदेशी हो बहुत दिन लों जीओ।
८ और हम ने अपने पितर रैकाब के बेटे यहूनदब की बात
मानी सारी बातों में जो उस ने हमें आज्ञा किई कि हम
और हमारी पत्नियां और हमारे बेटे और हमारी बेटियां अपने
९ जीवन भर दाखरस न पीवें। और न अपने लिये निवासस्थान
बनावें और न हम दाख की बारी न खेत न बीज रखते हैं।
१० परन्तु हम तंबुओं में रहते हैं और अपने पितर यूनदब की
११ सारी आज्ञा के समान हम ने किया है। परन्तु यों हुआ कि
जब बाबुल का राजा नबूखुदनज़र देश पर चढ़ आता था तब

हम लोगों ने कहा कि कसदियों की सेना के डर के मारे और
अरामियों की सेना के डर के मारे आओ हम यरूसलम में
चलें तब ही से हम यरूसलम में रहते हैं॥
१२ तब परमेश्वर का बचन यरमियाह के पास यह कहते हुए
१३ पहुंचा। कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता
है कि तू जा और यहूदाह के लोगों और यरूसलम के निवासियों
से कह क्या तुम लोग मेरे बचनों को सुनके उपदेश ग्रहण न
१४ करोगे परमेश्वर कहता है। जो बचन रैकाब के बेटे यहूनदब
ने अपने बेटों को दाखरस न पीने की आज्ञा दिई थी सो
दृढ़ता से पाली गई क्योंकि उन्हों ने आज लों दाखरस नहीं
पिया है परन्तु अपने पितरों की आज्ञा मानी है मैं ने तुम से
भी कहा है तड़के उठ उठके कहा पर तुम ने मुझे नहीं
१५ माना। और मैं ने अपने सारे भविष्यद्वक्ता सेवकों को तुम्हारे
पास भेजा है तड़के उठ उठके यह कहला भेजा कि तुम्में से
हर एक जन अपने अपने कुमार्ग से फिरे और अपनी चालों
को सुधारे और उपरी देवों की सेवा के लिये उन के पीछे न
जाये और जो देश मैं ने तुम्हें और तुम्हारे पितरों को दिया
है उस में बसो पर तुम ने अपना कान न झुकाया और न
१६ मेरी सुनी। क्योंकि रैकाब के बेटे यहूनदब के बेटों ने अपने
पिता की आज्ञाओं को पूरी किया जो उस ने उन्हें दिई थी
१७ परन्तु इन लोगों ने मेरी बात न मानी। इसी लिये परमेश्वर
सेनाओं का ईश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देखो मैं
यहूदाह पर और यरूसलम के सारे निवासियों पर वुह सारी
बुराई जो मैं ने उन के बिरुद्ध में कही है लाता हूं इस कारण
कि मैं ने उन से कहा है पर उन्हों ने न माना और मैं ने उन्हें
बुलाया पर उन्हों ने उत्तर न दिया॥
१८ और यरमियाह ने रैकाबियों के घराने से कहा कि सेनाओं

का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है इस कारण कि
तुम ने अपने पिता यहूनदब की आज्ञा मानी है और उस की
सारी शिक्षा को माना है और उस की सारी आज्ञा के समान
१६ चले हो। इस लिये सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर
यों कहता है कि रैकाब के बेटे यूनदब में से मेरे आगे नित
खड़े होने के लिये एक भी न घटेगा॥

छत्तीसवां पर्ब्ब।

१ और यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे यहूयकीम के
चौथे बरस यों हुआ कि परमेश्वर का बचन यरमियाह के पास
यह कहते हुए पहुंचा॥

२ एक बींडा अपने लिये ले और सारी बातें जो मैं ने तुझे
इसराएल के और यहूदाह के और सारे जातिगणों के विषय
में कहीं हैं उस दिन से लेके कि मैं तुझ से कहने लगा
३ यूसियाह के दिनों से लेके आज लों उस में लिख। क्या जानें
यहूदाह के घराने सारी बुराइयों को जो मैं ने उन पर लाने
को ठानी हैं मानें यहां लों कि हर एक अपने अपने कुमार्ग से
फिरे और मैं उन का अपराध और पाप क्षमा करूं॥

४ तब यरमियाह ने नेर्य्याह के बेटे बरूक को बुलाया
और बरूक ने परमेश्वर की सारी बातें यरमियाह के मुंह से
जो उस ने उसे कही थीं एक बींडे में लिखीं॥

५ और यरमियाह ने यह कहके बरूक को आज्ञा दिई कि मैं
६ बंद हूं मैं परमेश्वर के मन्दिर में जा नहीं सक्ता। इस लिये तू
जा और उस बींडे में से जो तू ने मेरे मुंह से लिखा है
परमेश्वर की बातें परमेश्वर के घर में ब्रत के दिन लोगों को
पढ़ सुना और सारे यहूदाह को भी जो अपने नगरों से आये
७ हों तू उन्हें पढ़ सुनाना। क्या जानें वे प्रार्थना में परमेश्वर के

आगे दंडवत करें और हर एक जन अपने अपने कुमार्ग से
फिरे क्योंकि परमेश्वर का कोप और जलजलाहट बड़ा है जो
परमेश्वर ने इन लोगों के बिरुद्ध कहा है ॥
८ तब नैयरियाह के बेटे बरूक ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता
की सारी आज्ञा के समान किया और परमेश्वर के मन्दिर में
९ पुस्तक में परमेश्वर के बचन को पढ़ा । और यहूदाह के राजा
यूसियाह के बेटे यहूयकीम के पांचवें बरस के नवें मास में
ऐसा हुआ कि यरूसलम के सारे लोगों ने और सारे लोगों ने
जो यहूदाह के नगरों से निकल आये थे यरूसलम में परमेश्वर
१० के आगे ब्रत प्रचारा । तब बरूक ने यरमियाह के बचनों को
परमेश्वर के मन्दिर में राजा के लेखक साफ़न के बेटे जमरियाह
की कोठरी के बड़े आंगन में परमेश्वर के मन्दिर के नये फाटक
की पैठ में सारे लोगों को पढ़ सुनाया ॥
११ और साफ़न के बेटे जमरियाह के बेटे मीकायाह ने उस
१२ पुस्तक से परमेश्वर के सारे बचनों को सुना । तब वुह राजा के
घर को लेखक की कोठरी में उतर गया और देखा कि सारे अध्यक्ष
अर्थात् इलिसम: लेखक और समअयाह का बेटा दिलायाह और
अकबुर का बेटा अलनतन और साफ़न का बेटा जमरियाह और
हननियाह का बेटा सिदकयाह और सारे अध्यक्ष वहां बैठे हैं ।
१३ तब मीकायाह ने उन सारे बचनों को जो उस ने सुना था जब
बरूक ने लोगों के सुन्ने में पुस्तक पढ़ी उन के आगे दुहराया ॥
१४ तब सारे अध्यक्षों ने कूशी के बेटे सलमियाह के बेटे
नतनियाह यहूदी को बरूक के पास यह कहके भेजा कि जो
बींडा तू ने लोगों को पढ़ सुनाया है उसे हाथ में लेके आ
तब नैयरियाह का बेटा बींडा अपने हाथ में लिये हुए उन के
१५ पास आया । और उन्हों ने उससे कहा कि बैठिये और हमें
पढ़ सुनाइये तब बरूक ने उन्हें पढ़ सुनाया ॥

१६ और ऐसा हुआ कि जब उन्हों ने सारी बातें सुनीं तो डरके
मारे एक दूसरे को देखने लगा और बरूक से कहा कि इन
१७ सारी बातों के विषय में निश्चय हम राजा से कहेंगे। और
उन्हों ने यह कहके बरूक से पूछा कि अब हम से कह
१८ तू ने ये सारी बातें क्योंकर उस के मुंह से लिखीं। तब बरूक
ने उन से कहा कि उस ने ये सारी बातें अपने मुंह से मेरे
आगे दुहराईं और उस के पीछे पीछे मैं ने इस पुस्तक में
१९ सियाही से लिखीं। तब अध्यक्षों ने बरूक से कहा कि जा
छिप रह तू और यरमियाह और कोई जान्ने न पावे कि तुम
कहां हो॥
२० और वे आंगन में राजा के पास गये परन्तु उन्हों ने उस
बीडे को इलिसमः लेखक की कोठरी में धर रक्खा और राजा
२१ के आगे ये सारी बातें कहीं। तब राजा ने यहूदी को बीडा
लाने को भेजा और वुह जाके इलिसमः लेखक की कोठरी में
से निकाल लाया और यहूदी ने राजा को और सारे अध्यक्षों
२२ को जो राजा के आस पास खड़े थे पढ़ सुनाया। और नवें
मास में राजा जाड़े की कोठरी में बैठा था और उस के आगे
२३ अंगेठी में बरता हुआ कोइला था। और ऐसा हुआ कि जब
यहूदी ने तीन चार भाग पढ़ा तब राजा ने लेखक की छूरी
से उसे काट डाला और अंगेठी की आग में डाल दिया यहां
२४ लों कि सारा बीडा अंगेठी की आग से भस्म हुआ। परन्तु
न तो राजा न उस के कोई सेवक जिन्हों ने इन बातों को
२५ सुना था डरे न अपने कपड़े फाड़े। और यद्यपि अलनतन
ने और दिलायाह ने और जमरियाह ने राजा से बिनती किई
कि इस बीडे को मत जलाइये तथापि उस ने उन की न
२६ मानी। और राजा ने अपने बेटे यरहमिएल को और अज़रिएल
के बेटे शिरायाह को और अबदिएल के बेटे सलमियाह को

आज्ञा किई कि बरूक लेखक को और यरमियाह भविष्यद्वक्ता
को पकड़ लाओ परन्तु परमेश्वर ने उन्हें छिपाया ॥
२७ और उस के पीछे जब राजा ने उस बींडे को और जो
बचन कि बरूक ने यरमियाह के मुंह से लिखा था जला
दिया परमेश्वर का बचन यह कहता हुआ यरमियाह के पास
२८ पहुंचा। कि तू फिर एक दूसरा बींडा ले और उस में सारे
बचन जो अगिले बींडे में थे जो यहूदाह के राजा यहूयक़ीम
२९ ने जलाया है उस में लिख। और यहूदाह के राजा यहूयक़ीम
से कह कि परमेश्वर यों कहता है कि तू ने यह कहके इस
बींडे को जलाया है कि तू ने उस में ऐसा क्यों लिखा है बाबुल
का राजा निश्चय आवेगा और इस देश को नष्ट करेगा और
इस में से मनुष्य को और पशु को मिटा डालेगा ॥
३० इस लिये यहूदाह के राजा यहूयक़ीम के विषय में परमेश्वर
यों कहता है कि दाऊद के सिंहासन पर बैठने को उस के
लिये एक भी न रहेगा और उस की लोथ दिन के घाम में
३१ और रात के पाले में बाहर फेंकी जायेगी। और मैं उस्से और
उस के बंश से और उस के सेवकों से उन के अपराधों का
पलटा लेऊंगा और मैं उन पर और यरूसलम के निवासियों
पर और यहूदाह के मनुष्यों पर वुह सारी बुराई लाऊंगा जो
मैं ने उन के बिरुद्ध उच्चारी पर उन्हों ने न सुना ॥
३२ तब यरमियाह ने एक दूसरा बींडा लिया और उसे
नेयरियाह के बेटे बरूक लेखक को दिया और उस ने उस
में यरमियाह के मुंह से उस पुस्तक की सारी बातें लिखीं जो
यहूदाह के राजा यहूयक़ीम ने आग में जलाई थीं और वैसी
ही बहुत सी बातें उस में मिलाई गईं ॥

सैंतीसवां पर्ब्ब ।

१ और कुनियाह के बेटे यहूयक़ीम के स्थान पर यूमियाह
के बेटे सिदक़ियाह ने राज्य किया जिसे बाबुल के राजा
२ नबूखुदनज़र ने यहूदाह देश में राजा किया था। परन्तु न तो
उस ने न उस के सेवकों ने और न देश के लोगों ने परमेश्वर के
बचन पर जो उस ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा से कहा
था मन लगाया ॥
३ और सिदक़ियाह राजा ने सलमियाह के बेटे यहूकल और
मअसियाह याजक के बेटे सफ़नियाह से यरमियाह भविष्यद्वक्ता
को कहला भेजा कि अब हमारे लिये परमेश्वर हमारे ईश्वर से
४ प्रार्थना कर। और यरमियाह लोगों में बाहर भीतर आया
जाया करता था और उन्हों ने उसे बंदीगृह में न डाला था।
५ और फ़िरऊन की सेना मिस्र से निकल आई थी और जब
यरूसलम के घेरवैये कसदियों ने उन का समाचार सुना तो
वे यरूसलम के आगे से कूच कर गये ॥
६ तब यह कहते हुए परमेश्वर का बचन यरमियाह
७ भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा। परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों
कहता है कि यहूदाह के राजा को जिस ने मुझ से बूझने
को तुझे भेजा है यों कहना कि देख फ़िरऊन की सेना जो
तुम्हारे सहाय के लिये आई है मिस्र में अपने ही देश को
८ फिर जायेगी। और कसदी फिर आके इस नगर से लड़ेंगे
९ और इसे ले लेंगे और उसे आग से जला देंगे। परमेश्वर यों
कहता है कि यह कहके अपने को मत छल दे कि कसदी
१० निश्चय हम से जाते रहेंगे क्योंकि वे न जायेंगे। परन्तु यद्यपि
तुम लोगों ने कसदियों की सारी सेना को जो तुम से लड़ते
हैं मारा होता और उन में केवल घायल लोग अपने अपने

तंबू में रह जाते तथापि वे उठके इस नगर को आग से जला
देते ॥
११ और ऐसा हुआ कि जब फ़िरऊ़न की सेना के कारण से
१२ कसदियों की सेना यरूसलम के आगे से कूच कर गई । तब
यरमियाह बिनयमीन के देश में जाने को यरूसलम से बाहर
१३ निकल गया जिसतें वहां लोगों में से भाग लेवे । और जब
वुह बिनयमीन के फाटक में पहुंचा तब हननियाह का बेटा
सलमियाह का बेटा इरियाह नामक पहरे का प्रधान वहां था
और उस ने यह कहके यरमियाह को पकड़ा कि तू कसदियों
१४ के पास जाता है। तब यरमियाह ने कहा कि झूठ मैं कसदियों
के पास नहीं जाता हूं परन्तु उस ने न माना और इरियाह
१५ यरमियाह को पकड़के उसे अध्यक्षों कने लाया। तब अध्यक्षों ने
यरमियाह को रिसियाके मारा और उसे यहूनतन लेखक के
घर में बंद किया क्योंकि उन्हों ने उसे बन्दीगृह बना रक्खा
था ॥
१६ जब यरमियाह बन्दीगृह और भकसी की कोठरियों में गया
१७ और वहां बहुत दिन रहा । तब सिदक़ियाह राजा ने उसे
बुला मंगाया और राजा ने अपने घर में उसे एकान्त में यह
कहके पूछा कि परमेश्वर की ओर से कोई बचन है और यरमियाह
ने कहा कि है और उस ने कहा है कि तू बाबुल के राजा के
१८ हाथ में सौंपा जायेगा । फिर यरमियाह ने सिदक़ियाह राजा
से कहा कि मैं ने तेरा और तेरे सेवकों के अथवा इन लोगों
के बिरुद्ध क्या अपराध किया कि तुम लोगों ने मुझे बन्दीगृह
१९ में डाला है । अब तुम्हारे भविष्यद्वक्ते कहां हैं जिन्हों ने
तुम्हारे आगे भविष्य कहा था कि बाबुल का राजा तुम्हारे
२० बिरुद्ध और इस देश के बिरुद्ध न आवेगा । हे मेरे प्रभु राजा
अब मेरी सुनिये और मेरी बिनती तेरे आगे ग्राह्य होवे और

मुझे यहूनतन लेखक के घर में फिर न भेजवाइये न हो कि मैं
२१ वहां मरूं। तब सिदक़ियाह राजा ने आज्ञा किई कि यरमियाह
को बन्दीगृह के आंगन में रक्खें और जब लों नगर में से सारी
रोटी चुक न जाये उसे रोटी पोअक की सड़क में से एक एक
रोटी प्रति दिन मिला करे और यरमियाह बन्दीगृह के आंगन
में रहा किया ॥

अठतीसवां पर्ब्ब ।

१ तब मत्तान के बेटे सफ़तियाह ने फ़शिहूर के बेटे जिदलयाह
ने और सलमियाह के बेटे यूकल ने और मलकियाह के बेटे
फ़सिहूर ने यरमियाह की वे बातें सुनीं जो वुह यह कहके
२ सारे लोगों से कहा करता था। परमेश्वर यों कहता है कि जो
कोई इस नगर में रहेगा सो तलवार से और अकाल से और
मरी से मरेगा परन्तु जो कोई कसदियों कने जायेगा सो जीता
रहेगा और उस का प्राण उस के लिये लूट के समान होगा
३ और वुह जीयेगा। परमेश्वर यों कहता है कि यह नगर
निश्चय बाबुल के राजा की सेना के हाथ में सोंपा जायेगा और
वुह उसे ले लेगा ॥

४ तब अध्यक्षों ने राजा से कहा कि हम आप की बिनती
करते हैं कि यह जन घात किया जाये क्योंकि वुह योद्धाओं
के हाथों को जो इस नगर में रहते हैं और सारे लोगों के
हाथों को ऐसे ऐसे वचन कह कहके दुर्बल करता है निश्चय
५ यह जन इन लोगों का भला नहीं चाहता परन्तु बुरा। तब
सिदक़ियाह राजा ने कहा कि देखो वुह तुम्हारे बश में है
६ क्योंकि तुम्हारे बिपरीत राजा कुछ नहीं कर सक्ता। तब
उन्हों ने यरमियाह को लिया और हम्मलक के बेटे मलकियाह
के भकसी में जो बन्दीगृह के आंगन में था डाल दिया और

उन्हों ने यरमियाह को रस्सों से नीचे उसे डाल दिया और भकसी
में पानी न था परन्तु दलदल सो यरमियाह दलदल में फंस
गया ॥
७ जब नपुंसक कूशी अबदमलिक ने जो राजा के घर में उस
समय था सुना कि उन्हों ने यरमियाह को भकसी में डाला
८ और वुह बिनयमीन के फाटक में बैठा था। तब अबदमलिक
९ राजा के घर से बाहर जाके राजा से यह कहके बोला। हे
मेरे प्रभु राजा इन लोगों ने जो कुछ यरमियाह भविष्यद्वक्ता
से किया जिसे उन्हों ने भकसी में डाला है बुरा किया और
जहां वुह है भूख से मरेगा क्योंकि नगर में रोटी नहीं है।
१० तब राजा ने कूशी अबदमलिक को यह कहके आज्ञा किई कि
तू यहां से तीस जन अपने संग ले और यरमियाह भविष्यद्वक्ता
को मरने से आगे भकसी में से निकाल ॥
११ तब अबदमलिक ने उन लोगों को अपने साथ लिया और
राजा के भवन के भंडार की कोठरी के नीचे गया और उस
में से गले फटे पुराने चीथड़े लिये और उन्हें रस्सियों से भकसी
१२ में यरमियाह के पास लटका दिया। और कूशी अबदमलिक
ने यरमियाह से कहा कि अब इन गले फटे और पुराने चीथड़ों
को रस्सी के नीचे अपने कांख तले डाल और यरमियाह ने
१३ वैसा ही किया। और उन्हों ने रस्सियों से यरमियाह को
भकसी में से खींच लिया और यरमियाह बन्दीगृह के आंगन
में रहा किया ॥
१४ तब सिदक़ियाह राजा ने सेवकों को भेजके यरमियाह
भविष्यद्वक्ता को अपने पास तीसरे पैठ में जो परमेश्वर के
मन्दिर में है मंगवा लिया और राजा ने यरमियाह से कहा
कि मैं तुझ से एक बात पूछता हूं मुझ से कुछ मत छिपा ॥
१५ तब यरमियाह ने सिदक़ियाह से कहा कि जो मैं तुझ से

कहूं तो क्या निश्चय तू मुझे घात न करेगा और जब मैं तुझ
को मंत्र दूं तो तू मेरी न मानेगा ॥
१६ तब सिदक़ियाह राजा ने गुप्त में यरमियाह से किरिया खाके
कहा कि परमेश्वर के जीवन सोंह जिस ने हमारा प्राण सृजा
है मैं तुझे घात न करूंगा और न तुझे उन मनुष्यों के हाथ
में सोंपूंगा जो तेरे प्राण के गाहक हैं ॥
१७ और यरमियाह ने सिदक़ियाह से कहा कि सेनाओं का ईश्वर
इसराएल का ईश्वर परमेश्वर यों कहता है कि जो तू निश्चय
बाबुल के राजा के अध्यक्षों के पास जायेगा तो तेरा प्राण
बचेगा और यह नगर आग से जलाया न जायेगा परन्तु तू अपने
१८ परिवार सहित बच जायेगा। परन्तु जो तू बाबुल के राजा
के अध्यक्षों के पास न जायेगा तो यह नगर कसदियों के हाथ
में सोंपा जायेगा और वे उसे आग से जला देंगे और तू आप
उन के हाथ से न बचेगा ॥
१९ तब सिदक़ियाह राजा ने यरमियाह से कहा कि मैं उन
यहूदियों से डरता हूं जो कसदियों के पास गये हैं क्या जाने
वे मुझे उन के हाथ में सोंपें और वे मेरी हंसी करें ॥
२० परन्तु यरमियाह ने कहा कि वे तुझे न सोंपेंगे मैं तेरी
बिनती करता हूं कि परमेश्वर का शब्द जो मैं तुझ से
कहता हूं मान जिसतें तेरा भला होवे और तेरा प्राण बचे।
२१ परन्तु जो तू बाहर जाने को नाह करे तो परमेश्वर ने यही
२२ बचन मुझ पर प्रगट किया है। कि देख सारी स्त्रियां जो
यहूदाह के राजा के भवन में रह गई हैं बाबुल के राजा के
अध्यक्षों के पास पहुंचाई जायेंगी और वे यह कहेंगी कि तेरे
परमहितों ने तुझे उभाड़ा और तुझ पर प्रबल हुए उन्हों ने
२३ तेरा पांव दलदल में फंसाया है और फिर गये हैं। और तेरी
सारी पत्नियों को और तेरे बालकों को वे कसदियों के पास

पहुंचावेंगे और तू उन के हाथ से न बचेगा परन्तु बाबुल के
राजा के हाथ से पकड़ा जायेगा और तू इस नगर के आग से
जलाने का कारण होगा॥
२४ तब सिदक़ियाह ने यरमियाह से कहा कि यह बचन कोई
२५ न जाने और तू मारा न जायेगा। परन्तु जो अध्यक्ष सुनें कि
मैं ने तुझ से बात चीत किई है और तेरे पास आके कहें कि
तू ने राजा से जो कहा है सो हमें बता और हम से मत
छिपा और हम तुझे घात न करेंगे और राजा ने जो तुझे कहा
२६ है सो भी कह। तब उन से कहियो कि मैं ने नम्रता से
राजा की बिन्ती किई कि वुह मुझे यहूनतन के घर मरने को
फिर न भेजे॥
२७ और सारे अध्यक्ष यरमियाह के पास आये और उस्से पूछा
और उस ने उन्हें राजा की आज्ञा के समान सारे बचन कहे
और वे उस्से और न बोले क्योंकि बात चीत न सुनी गई।
२८ और जिस दिन लों यरूसलम लिया गया यरमियाह बन्दीगृह
के आंगन में रहा और जब यरूसलम लिया गया वुह वहीं
था॥

उंतालीसवां पर्ब्ब।

१ यहूदाह के राजा सिदक़ियाह के नवें बरस के दसवें मास
में बाबुल का राजा नबूख़ुदनज़र अपनी सारी सेना समेत
यरूसलम पर आया और उसे घेर लिया॥
२ सिदक़ियाह के ग्यारहवें बरस के चौथे मास की नवीं तिथि
३ में नगर तोड़ा गया। और बाबुल के राजा के सारे अध्यक्ष
अर्थात् नेरगलसरअज़र समजरनबू सरसाकिम रबसारीस और
नेरगलसरअज़र रबमाग और बाबुल के राजा के सारे रहे हुए
अध्यक्ष पैठ के मध्य के फाटक में बैठे॥

४ और ऐसा हुआ कि जब यहूदाह के राजा सिदक़ियाह और
सारे बीरों ने उन्हें देखा तो भागके रातों रात राजा की बारी
के मार्ग में दो भीतों के मध्य के फाटक से हो नगर से बाहर
५ चौगान की ओर निकल गये। परन्तु कसदियों की सेना ने
उन का पीछा किया और यरीहू के चौगानों में सिदक़ियाह को
जा लिया और उसे पकड़के हमात देश के रिबलः में बाबुल
के राजा नबूख़ुदनज़र के पास लाये और उस ने उस पर न्याय
६ किया। और बाबुल के राजा ने सिदक़ियाह के बेटों को रिबलः
में उस की आंखों के आगे घात किया और बाबुल के राजा ने
७ यहूदाह के सारे कुलीनों को भी मार डाला। और उस ने
सिदक़ियाह की आंखें निकाल डालीं और उसे बाबुल में ले जाने
८ के लिये दो पीतल की सीकरों से जकड़ा। और कसदियों ने
राजभवन को और लोगों के घरों को आग से जला दिया और
यरूसलम की भीतें तोड़ डालीं॥

९ तब नबूसरअद्दान पहरुओं के प्रधान ने नगर के रहे हुए
लोगों को और जो भागके उन के पास गये थे अर्थात् बचे
१० हुए लोगों को जो बच रहे थे बाबुल में ले गया। परन्तु
नबूसरअद्दान पहरुओं के प्रधान ने तुच्छ लोगों को जिन की
संपत्ति न थी यहूदाह देश में छोड़ दिया और उसी दिन
उन्हें खेत और दाख की बारियां दिईं॥

११ और बाबुल के राजा नबूख़ुदनज़र ने यरमियाह के बिषय
में नबूसरअद्दान पहरुओं के प्रधान से यह कहके आज्ञा दिई।
१२ कि उसे लेके देखा कर और उसे किसी रीति का दुख मत दे
१३ परन्तु उस के कहे के समान उस्से ब्यवहार कर। तब राजा
के पहरुओं के प्रधान नबूसरअद्दान और नबूचशबान रबसारीस
और नेरगलसरअज़र रबमाग और बाबुल के सारे प्रधान
१४ भेजके यरमियाह को बन्दीगृह के आंगन से निकाल लाये

और साफ़न के बेटे अखिक़ाम के बेटे जिदलयाह को उसे घर
पहुंचाने को सोंपा और वुह लोगों के मध्य में रहा ॥
१५ और जिस समय यरमियाह बन्दीगृह के आंगन में बंद
१६ था परमेश्वर का बचन उस के पास पहुंचा । कि जा और कूशी
अबदमलिक से कह कि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का
ईश्वर यों कहता है कि देख मैं इस नगर पर अपने बचन को
बुराई के लिये लाता हूं और भलाई के लिये नहीं और उस
१७ दिन वे तेरे आगे होंगे । परन्तु उसी दिन में तुझे बचाऊंगा
परमेश्वर कहता है और जिन लोगों से तू डरता है उन लोगों
१८ के हाथ तू सोंपा न जायेगा। क्योंकि निश्चय मैं तुझे छुड़ाऊंगा
और तू तलवार से न गिरेगा और मुझ पर भरोसा रखने के
कारण तेरा प्राण लूट की नाईं तुझे दिया जायेगा परमेश्वर
कहता है ॥

चालीसवां पर्व्ब ।

१ परमेश्वर का बचन जो यरमियाह के पास उस के पीछे
पहुंचा जब कि पहरुओं के प्रधान नबूसरअद्दान ने उसे लेके
रामः से छोड़ दिया क्योंकि यरूसलम के और यहूदाह के सारे
बंधुओं में जो बाबुल में बंधुआई में पहुंचाये गये वुह सीकरों
से उन में बंधा था ॥
२ और पहरुओं के प्रधान ने यरमियाह को लेके उस्से कहा
कि परमेश्वर तेरे ईश्वर ने इस स्थान के विरुद्ध विपत्ति प्रगट
३ किई है । अब परमेश्वर ने आके अपने कहने के समान पूरा
किया है क्योंकि तुम ने परमेश्वर के बिरुद्ध पाप किया था
और उस का बचन नहीं माना इस लिये तुम पर यह पड़ा
४ है । और देख मैं ने आज तेरी हथकड़ी से तुझे छुड़ाया है
जो मेरे संग बाबुल में जाने को तुझे अच्छा लगे तो चल और

में तेरी सुधि लेऊंगा परन्तु जो मेरे संग बाबुल में जाने को
तुझे बुरा लगे तो रह जा देख सारा देश तेरे आगे है जिधर
जाने को अच्छा लगे और जिधर तेरी दृष्टि में जाने को ठीक
५ होवे तिधर जा। और जब वुह फिरने पर न था उस ने कहा
इस लिये साफ़न के बेटे अखिकाम के बेटे जिदलयाह के पास
फिर जा जिसे बाबुल के राजा ने यहूदाह के नगरों पर अध्यक्ष
किया है और उस के संग लोगों के मध्य में रह अथवा जिधर
तेरी दृष्टि में जाने को अच्छा लगे तिधर जा और पहरुओं के
६ प्रधान ने उसे भोजन और दान देके बिदा किया। तब
यरमियाह अखिकाम के बेटे जिदलयाह के पास मिसफ़: में
गया और उस के संग उन लोगों में रहा जो देश में छोड़े
गये॥

७ जब सारे सेनापतियों और उन के लोगों ने जो चौगान में
थे सुना कि बाबुल के राजा ने अखिकाम के बेटे जिदलयाह
को देश पर अध्यक्ष किया और कि उस ने पुरुष और स्त्री और
लड़के बाले उसे सौंप दिये अर्थात् देश के कितने एक कंगालों
८ को जो बाबुल को बंधुआई में न पहुंचाये गये। तब वे
अर्थात् ननियाह का बेटा इसमअएल और करीह के बेटे
यूहनान और यूनतन और तनहूमत का बेटा शिरायाह और
नतूफ़ती एफ़ा के बेटे और मआकाती का बेटा यज़नियाह वे
और उन के जन मिसफ़: में जिदलयाह के पास आये॥

९ तब साफ़न के बेटे अखिकाम के बेटे जिदलयाह ने उन
से और उन के जनों से किरिया खाके कहा कि तुम लोग
कसदियों की सेवा करने को मत डरो देश में रहो और बाबुल
१० के राजा की सेवा करो और तुम्हारा भला होगा। और मैं जो
हूं देखो जो कसदी हमारे पास आवेंगे उन के आगे खड़ा होने
को मैं मिसफ़: में रहूंगा परन्तु तुम लोग दाखरस और

ग्रीष्मफल और तेल एकट्ठा करके अपने अपने पात्रों में रक्खो
और अपने अपने नगरों में जो तुम ने लिया है बसो ॥
११ जब सारे यहूदियों ने भी जो मोत्र्याब में और अम्मून के
संतानों में और अदूम में और जो सारे देश में थे सुना कि
बाबुल का राजा यहूदाह में कुछ लोग छोड़ गया और कि
उस ने साफ़न के बेटे अख़िकाम के बेटे जिदलयाह को उन
१२ पर अध्यक्ष किया था। तब सब यहूदी सारे स्थानों से जहां
जहां वे खेदे गये थे यहूदाह के देश मिसफ़: में जिदलयाह
के पास आये और दाखरस और ग्रीष्मफल बहुताई से एकट्ठे
किये ॥
१३ और करीह का बेटा यूहनान और सेना के सारे प्रधान जो
१४ चौगान में थे मिसफ़: में जिदलयाह के पास आये। और उस्से
कहा कि तुझे चेत है कि अम्मून के संतान के राजा बअ़लीस
ने नतनियाह के बेटे इसमअ़एल को तेरा प्राण लेने को भेजा
है परन्तु अख़िकाम के बेटे जिदलयाह ने उन की प्रतीति न
१५ किई। तब करीह के बेटे यूहनान ने मिसफ़: में जिदलयाह से
चुपके से कहा कि मैं तेरी बिनती करता हूं कि मुझे जाने दे
जिसतें मैं नतनियाह के बेटे इसमअ़एल को घात करूं और
कोई न जानेगा वुह किस लिये तेरा प्राण लेवे और सारे यहूदाह
जो तेरे पास एकट्ठे हुए हैं यहूदाह के रहे हुए नष्ट हों।
१६ परन्तु अख़िकाम के बेटे जिदलयाह ने करीह के बेटे यूहनान
से कहा कि तू यह काम मत कर निश्चय तू इसमअ़एल के
विषय में झूठ कहता है ॥

एकतालीसवां पर्व्व ।

१ और सातवें मास में ऐसा हुआ कि राजवंश इलिसमः के
बेटे नतनियाह का बेटा इसमअ़एल और राजा के बड़े बड़े

प्रधान दस जन उस के संग मिसफ़: में अख़िक़ाम के बेटे
जिदलयाह के पास आये और उन्हों ने मिसफ़: में एकट्ठे रोटी
२ खाई। तब नतनियाह का बेटा इसमअएल और उस के संगी
दस जन उठे और साफ़न के बेटे अख़िक़ाम के बेटे जिदलयाह
को जिसे बाबुल के राजा ने देश पर अध्यक्ष किया था खड्ग
३ से मारके घात किया। और सारे यहूदी जो जिदलयाह के
संग मिसफ़: में थे और कसदी योद्धा जो वहां पाये गये उन्हें
इसमअएल ने घात किया॥
४ और जिदलयाह के घात करने के दूसरे दिन जब लों कोई
५ न जानता था यों हुआ। कि लोग सिकम से और सैला से और
समरून से अस्सी जन दाढ़ी मुंड़ाये हुए और कपड़े फाड़े हुए
और अपने को काटे हुए परमेश्वर के मन्दिर में नैवेद्य और
६ धूप अपने हाथ में लिये हुए आये। तब नतनियाह का बेटा
इसमअएल मिसफ़: से रोते उन से भेंट करने को गया और
उन से भेंट होते ही उस ने उन से कहा कि अख़िक़ाम के
७ बेटे जिदलयाह के पास चलो। और यों हुआ कि जब वे
नगर के मध्य में आये तब नतनियाह के बेटे इसमअएल और
उस के संगियों ने उन्हें घात करके एक गड़हे में डाल दिया।
८ परन्तु उन में दस जन पाये गये जिन्हों ने इसमअएल से कहा
कि हमें घात मत कर क्योंकि हमारे पास खेतों में गोहूं और
जव और तेल और मधु छिपे हुए धरे हैं इस लिये उस ने
उन के भाइयों में उन्हें घात न किया॥
९ अब जिस गड़हे में इसमअएल ने उन मनुष्यों की लोथों
को फेंका था जिन्हें उस ने जिदलयाह के साथ घात किया
वही था जिसे राजा असा ने इसराएल के राजा बअशा के
कारण बनाया था नतनियाह के बेटे इसमअएल ने उसे जूझे
हुओं से भर दिया॥

१० और मिसफ़ः के बचे हुओं को बंधुआई में ले गये अर्थात्
राजपुत्रियों को और मिसफ़ः के मारे रहे हुओं को जिन्हें
नबूसरअद्दान पहरुओं के प्रधान ने अख़िकाम के बेटे जिदलयाह
को सौंपा था और उन्हें नतनियाह का बेटा इसमअएल
बंधुआ करके अम्मून के संतान के देश की ओर चल निकला॥
११ परन्तु जब करीह के बेटे यूहनान ने और उस के साथ के सारे
सेनापतियों ने सारी बुराई सुनी जो नतनियाह के बेटे इसमअएल
१२ ने किई थी। तब वे सारे लोगों को लेके नतनियाह के बेटे
इसमअएल से लड़ने को निकले और जिबऊन के महा जलों
१३ पर उसे जाही लिया। और ऐसा हुआ कि जब इसमअएल
के संग के लोगों ने करीह के बेटे यूहनान को और उस के
१४ संग उन के सारे अध्यक्षों को देखा तो आनन्दित हुए। तब
जितने लोगों को इसमअएल ने मिसफ़ः से बंधुआ किया था
१५ वे लौटके करीह के बेटे यूहनान के पास गये। परन्तु
नतनियाह का बेटा इसमअएल आठ जन के संग यूहनान से
बच निकलके अम्मूनियों के संतानों कने गया॥
१६ तब करीह के बेटे यूहनान ने और उस के संग के सेनाओं
के सारे अध्यक्षों ने लोगों के सारे बचे हुओं को लिया जिन्हें उस
ने अख़िकाम के बेटे जिदलयाह के घात होने के पीछे मिसफ़ः
से नतनियाह के बेटे इसमअएल के हाथ से छुड़ाया था
बलवंत योद्धाओं को और स्त्रियों को और बालकों को और
१७ नपुंसकों को जिन्हें वुह जिबऊन से फेर लाया था। और वे
किमहाम के निवासस्थान में जो बैतलहम के लग है जा रहे
१८ जिसतें मिस्र को जायें। कसदियों के मारे क्योंकि वे उन से
डरे इस कारण कि नतनियाह के बेटे इसमअएल ने अख़िकाम
के बेटे जिदलयाह को जिसे बाबुल के राजा ने देश पर अध्यक्ष
किया था घात किया॥

बयालीसवां पर्ब्ब ।

१ तब सारे सेनापति और करीह का बेटा यूहनान और
हूसअयाह का बेटा यज़नियाह और छोटे बड़े सारे लाग पास
२ आये। और यरमियाह भविष्यद्वक्ता से कहा कि हमारी बिनती
तेरे आगे पहुंचे और हमारे लिये अर्थात् इन सारे बचे हुओं
के लिये परमेश्वर अपने ईश्वर से प्रार्थना कर क्योंकि बहुत से
३ हम थोड़े रह गये जैसा तेरी आंखें हमें देखती हैं। जिसतें
परमेश्वर तेरा ईश्वर हमें जतावे कि किस मार्ग पर हम चलें
और कौन सा कार्य्य करें॥

४ तब यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने उन से कहा कि मैं ने सुना
सो देखो तुम्हारे बचनों के समान मैं परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर
की प्रार्थना करता हूं और जो कुछ परमेश्वर उत्तर देगा मैं
तुम पर प्रगट करूंगा और मैं तुम से कुछ बात न छिपाऊंगा॥

५ तब उन्हों ने यरमियाह से कहा कि परमेश्वर हमारे मध्य
में सच्चा और विश्वस्त साक्षी होवे यदि हम उन सारी बातों के
समान न करें जिन के लिये परमेश्वर तेरा ईश्वर तुझे हमारे
६ पास भेजेगा। चाहे भला हो चाहे बुरा हम परमेश्वर अपने
ईश्वर का जिस के पास हम तुझे भेजते हैं शब्द मानेंगे जिसतें
जब हम परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द मानें तब हमारा भला
होवे॥

७ और दस दिनों के पीछे यों हुआ कि परमेश्वर का बचन
८ यरमियाह के पास पहुंचा। तब उस ने करीह के बेटे यूहनान
को और उस के साथ के सेनापतियों को और छोटे से बड़े
९ सारे लोगों को बुलाया। और उन से कहा कि परमेश्वर इसराएल
का ईश्वर जिस के पास तुम ने अपनी बिनती पहुंचाने को
मुझे भेजा यों कहता है॥

१० कि जो तुम लोग निश्चय इस देश में बने रहोगे तो मैं
तुम्हें बनाऊंगा और न ढाऊंगा और मैं तुम्हें लगाऊंगा और न
उखाड़ूंगा क्योंकि मैं उस बुराई से पछताता हूं जो मैं तुम पर
११ लाया । बाबुल के राजा से जिस्से तुम डरते हो मत डरो उस्से
मत डरो परमेश्वर कहता है क्योंकि तुम्हें उद्धार करने को और
१२ उस के हाथ से छुड़ाने को मैं तुम्हारे साथ हूं । और मैं तुम
पर दया करूंगा और वुह तुम पर दया करेगा और तुम्हें
तुम्हारे ही देश में फेर लावेगा ॥

१३ परन्तु जो तुम लोग कहो कि हम इस देश में न रहेंगे
१४ यहां लों कि परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द न मानोगे । और
कहो कि नहीं परन्तु हम मिस्र के देश को जायेंगे जिसतें हम
लड़ाई न देखें और तुरही का शब्द न सुनें और रोटी के
१५ मारे भूखे न होवें और वहां रहेंगे । और अब इस लिये हे
यहूदाह के बचे हुए लोगो परमेश्वर का वचन सुनो सेनाओं
का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि जो तुम लोग
सर्बथा मिस्र में जाने को रुख करोगे और वहां रहने को
१६ जाओगे । तो ऐसा होगा कि जिस तलवार से तुम लोग डरते
हो वही तुम्हें मिस्र में जाही लेगी और जिस अकाल के तुम
लोग खटके में हो वुह तुम्हारे पीछे पीछे मिस्र में जायेगा
१७ और तुम लोग वहां मरोगे । और यों होगा कि सारे लोग
जिन्हों ने बसने के लिये मिस्र में जाने को रुख किया है सो
तलवार से और अकाल से और मरी से मरेंगे और उन में से
एक भी न रहेगा और उस बुराई से जो मैं उन पर लाऊंगा
न बचेगा ॥

१८ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता
है कि जैसा मेरा कोप और मेरा क्रोध यरूसलम के निवासियों
पर उंडेला गया तैसा जब तुम लोग मिस्र में जाओगे मेरा

कोप तुम पर उंडेला जायेगा और तुम लोग एक घिन और
आश्चर्य्य और स्राप और निन्दा होओगे और इस स्थान को फिर
न देखोगे ॥
१९ हे यहूदाह के बचे हुए लोगो परमेश्वर तुम्हारे विषय में
यों कहता है मिस्र को मत जाओ तुम लोग निश्चय जानोगे
२० कि आज मैं ने तुम्हारे आगे साक्षी दिई है। क्योंकि तुम ने
अपने प्राण के बिरुद्ध छल किया है क्योंकि मुझे यह कहके
तुम लोगों ने परमेश्वर अपने ईश्वर के पास भेजा कि हमारे लिये
परमेश्वर हमारे ईश्वर की प्रार्थना कर और सब जो परमेश्वर हमारा
२१ ईश्वर कहेगा सो हम से कह और हम मानेंगे। और आज के
दिन मैं ने तुम से बर्णन किया है परन्तु तुम ने परमेश्वर अपने
ईश्वर का शब्द और उस बात को जिस के लिये उस ने मुझे
२२ तुम्हारे पास भेजा है नहीं माना है। और अब निश्चय जानो
कि जिस स्थान को तुम लोगों ने बास करने को और जाने को
चुना है उस में तुम तलवार से और अकाल से और मरी से
मरोगे ॥

तेंतालीसवां पर्ब्ब।

१ और यों हुआ कि जब यरमियाह सारे लोगों को परमेश्वर
उन के ईश्वर के सारे बचन जिन से परमेश्वर उन के ईश्वर ने
उसे उन के पास कहला भेजा था अर्थात् ये सारे बचन कह
२ चुका। तब हूसअयाह के बेटे अज़रियाह ने और करीह के
बेटे यूहनान ने और सारे अहंकारियों ने यरमियाह से यों
कहा कि तू झूठ कहता है परमेश्वर हमारे ईश्वर ने यह कहने
को तुझे नहीं भेजा है कि मिस्र में बसने को वहां मत जाओ।
३ क्योंकि नेयरियाह के बेटे बरूक ने तुझे हमारे बिरुद्ध उभाड़ा
है कि तू हमें कसदियों के हाथ में सौंपे कि वे हमें घात करें

४ और बाबुल में बंधुवे ले जावें। सो करीह के बेटे यूहनान
ने और सारे सेनापतियों ने और सारे लोगों ने यहूदाह के देश
में रहने को परमेश्वर का शब्द न माना॥
५ परन्तु करीह के बेटे यूहनान और सारे सेनापतियों ने
यहूदाह के बचे हुए सारे लोगों को लिया जो सारे जातिगणों
में से जहां जहां वे खेदे गये थे यहूदाह देश में बसने के
६ लिये फिर आये। अर्थात् पुरुषों और स्त्रियों को और लड़कों
को और राजपुत्रियों को और हर एक जन को जिसे पहरुओं
के अध्यक्ष नबूसरअद्दान ने साफ़न के बेटे अख़िकाम के बेटे
जिदलयाह के साथ छोड़ा था और यरमियाह भविष्यद्वक्ता को
७ और नेयरियाह के बेटे बरूक को। और वे मिस्र देश को गये
क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर का शब्द नहीं माना और वे
तिहफ़निहीस लों पहुंचे॥
८ तब परमेश्वर का यह बचन तिहफ़निहीस में यरमियाह
९ के पास यह कहते हुए पहुंचा। कि अपने हाथ में बड़े बड़े
पत्थर ले और उन्हें ईंट के भट्ठे की मिट्टी में जो तिहफ़निहीस
में फ़िरऊन के घर की पैठ में है यहूदाह के कई जनों की
१० दृष्टि में छिपा। और उन से कह कि सेनाओं का परमेश्वर
इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि देखो मैं भेजके अपने
दास बाबुल के राजा नबूख़ुदनज़र को लाऊंगा और उस के
सिंहासन को इन्हीं पत्थरों के ऊपर रक्खूंगा जिसे मैं
ने छिपाया है और वुह अपनी गद्दी उन पर फैलावेगा।
११ और वुह आके मिस्र देश को मारेगा जो मृत्यु के लिये हैं
मृत्यु को और जो बंधुआई के लिये हैं बंधुआई को और जो
१२ तलवार के लिये हैं तलवार को सौंपेगा। और मैं मिस्र के
देवों के मन्दिरों में एक आग बारूंगा और वुह उन्हें जलावेगी
और उन्हें बंधुआई में ले जायेगा और जैसे गड़रिया अपने

बस्त्र पहिनता है तैसा ही वुह मिस्र देश को पहिनेगा और
१३ वुह वहां से कुशल से चला जायेगा। और वुह सूर्य्य के
मन्दिर की मूर्त्तिन को जो मिस्र के देश में हैं टुकड़ा टुकड़ा
करेगा और मिस्र के देवों के मन्दिरों को आग से जला देगा॥

चवालीसवां पर्व्व।

१ वुह बचन जो उन सारे यहूदियों के विषय में जो मिस्र
देश में अर्थात् मिजदाल में और तिहफ़निहीस में और नोफ़
में और फ़तरूस के देश में रहते थे यह कहते हुए यरमियाह
के पास पहुंचा॥
२ सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि
सारी बुराई को जो मैं यरूसलम पर और यहूदाह के सारे नगरों
पर लाया हूं तुम लोगों ने देखा है और देखो वे आज के दिन
३ उजाड़ हैं और कोई उन में नहीं बस्ता। उस दुष्टता के कारण
जो उन्हों ने मुझे रिस दिलाने के लिये किई कि उन्हों ने
धूप जलाया और उपरी देवों की सेवा किई जिन्हें न वे जानते
४ थे न तुम और न तुम्हारे पितर। तब भी मैं ने अपने सारे
सेवक भविष्यद्वक्तों को भेजा तड़के उठके भेजा और कहा कि
५ यह घिनित कार्य्य मत करो जिस्से मैं घिन करता हूं। परन्तु
उन्हों ने न सुना और न अपना कान लगाया कि अपनी दुष्टता
६ से फिरें जिसतें उपरी देवों के आगे धूप न जलावें। इस लिये
मेरा कोप और मेरी रिस उंडेली गई है और यहूदाह के नगरों
के बिरुद्ध और यरूसलम की सड़कों के बिरुद्ध भड़की है और
वे आज के दिन की नाईं एक उजाड़ और शून्य हो रहे हैं॥
७ और अब सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता
है कि यहूदाह के मध्य में से पुरुष और स्त्री और बालक
और दूधपिउआ काट डालने को तुम लोग अपने प्राण के

बिरुद्ध क्यों बुराई करते हो जिसतें तुम्में बचे हुए न रहें।
८ कि मिस्र देश में जहां तुम लोग बसने गये हो उपरी देवों के
लिये धूप जलाने में अपने हाथ की क्रियों से मुझे रिस दिलाते
हो जिसतें काटे जाओ और जिसतें तुम लोग एक स्राप
९ और पृथिवी के सारे जातिगणों में निन्दित होओ। क्या
अपने पितरों की दुष्टताओं को और यहूदाह के राजाओं की
दुष्टताओं को और उन की पत्नियों की दुष्टताओं को और अपनी
ही दुष्टताओं को और अपनी पत्नियों की दुष्टताओं को जो उन्हों
ने यहूदाह के देश में और यरूसलम की सड़कों में किई हैं
१० भूल गये हो। वे आज लों न पछताये और न डरे और मेरी
ब्यवस्था और मेरी बिधिन को जो मैं ने तुम्हारे और तुम्हारे
पितरों के आगे धरी हैं पालन नहीं किया॥

११ इस लिये सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता
है कि देख बुराई के लिये अर्थात् समस्त यहूदाह को काट
१२ डालने के लिये मैं अपना मुंह तुम्हारे बिरुद्ध करता हूं। और
मैं यहूदाह के बचे हुओं को जिन्हों ने मिस्र के देश में जाके
रहने को रुख किया है लेऊंगा और वे सब के सब मिस्र देश
में नष्ट होंगे वे तलवार से और अकाल से नष्ट होंगे छोटे से
बड़े लों तलवार से और अकाल से मर जायेंगे और वे धिक्कार
१३ और घबराहट और स्राप और निन्दा हो जायेंगे। क्योंकि जैसा
मैं ने तलवार से और अकाल से और मरी से यरूसलम से
पलटा लिया है तैसा मैं मिस्र के निवासियों से पलटा लेऊंगा।
१४ और यहूदाह के जो बचे हुए लोग मिस्र में बास करने को
आये हैं एक भी न बचेगा कि यहूदाह देश में फिर जावें
जिधर वे फिरने को और रहने को अपना मन लगाते हैं क्योंकि
बचे हुओं को छोड़ कोई न फिरेगा॥

१५ तब सारे लोगों ने जो जानते थे कि हमारी पत्नियों ने

उपरी देवों के लिये धूप जलाया था और सारी स्त्रियों ने जो
पास खड़ी थीं एक बड़ी जथा अर्थात् सारे लोगों ने जो मिस्र
में फ़तरूस में रहते थे यरमियाह को उत्तर देके कहा ॥
१६ कि जो बचन तू ने परमेश्वर के नाम से हमें कहा है हम
१७ तेरी न मानेंगे । क्योंकि जैसा हमारे मुंह से निकल गया स्वर्ग
की रानी के लिये धूप जलाने में और उस के लिये तपावन करने
में जैसा हम ने और हमारे पितरों ने और हमारे राजाओं ने
और हमारे अध्यक्षों ने यहूदाह के नगरों में और यरूसलम की
सड़कों में किया था जब हमारा भोजन बहुत था और हम
भाग्यमान थे और बिपत्ति न देखते थे तैसा हम निश्चय करेंगे ।
१८ परन्तु जब से हम लोगों ने स्वर्गों की रानी के लिये धूप जलाना
और तपावन करना छोड़ दिया तब से हमारे लिये हर बात
की घटती हुई और हम तलवार से और अकाल से क्षीण हुए
१९ हैं । और जब हम स्वर्गों की रानी के लिये धूप जलाते थे
और उस के लिये तपावन करते थे तब क्या हम ने अपने
पुरुषों को छोड़के उस की पूजा के लिये रोटी बनाई और उस के
लिये तपावन तपाये ॥
२० तब यरमियाह ने सारे लोगों को क्या पुरुष क्या स्त्रियों
को अर्थात् सारे लोगों को जिन्हों ने उसे उत्तर दिया था यह
कहा ॥
२१ वुह धूप जो तुम ने यहूदाह के नगरों में और यरूसलम
की सड़कों में तुम ने और तुम्हारे पितरों ने और तुम्हारे
राजाओं ने और तुम्हारे अध्यक्षों ने और देश के लोगों ने
जलाया था तो क्या परमेश्वर ने उसे स्मरण नहीं किया और
२२ क्या वुह उस के मन में आया । परन्तु तुम्हारी क्रियों की
दुष्टता के कारण और तुम्हारे घिनित कार्य्यों के लिये जो तुम
ने किये परमेश्वर सह न सका इस लिये तुम्हारा देश एक

उजाड़ और आश्चर्य्य और स्राप हुआ है यहां लों कि आज के
२३ दिन की नाईं निवासी रहित है । इस कारण कि तुम ने धूप
जलाया है और परमेश्वर का अपराध किया है और परमेश्वर
का शब्द नहीं माना और उस की व्यवस्था और उस की बिधिन
और उस की साक्षियों के समान नहीं चले इस लिये यह बिपत्ति
तुम लोगों पर पड़ी जैसा आज है ॥
२४ और यरमियाह ने उन सारे लोगों और उन सारी स्त्रियों
से यह भी कहा कि हे सारे यहूदाह जो मिस्र देश में हो
२५ परमेश्वर का वचन सुनो । सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का
ईश्वर यों कहता है कि तुम लोगों ने और तुम्हारी स्त्रियों ने
जिन्हों ने तुम्हारे द्वारा से कहा है और तुम लोगों ने अपने
हाथों से यह कहके पूरा किया है कि अपनी मनौतियों को
जो हम ने स्वर्गों की रानी के लिये धूप जलाने को और
तपावन तपाने को मानी हैं निश्चय पूरी करेंगे तुम निश्चय
अपनी मनौतियां पूरी करोगे हां तुम निश्चय अपनी मनौतियां
२६ पूरी करोगे । इस लिये हे सारे यहूदाह जो मिस्र देश में
रहते हो परमेश्वर का वचन सुनो कि देखो मैं ने अपने महत
नाम की किरिया खाई है परमेश्वर कहता है कि मेरा नाम
यहूदाह के किसी जन की जीभ से मिस्र के सारे देश में यह
कहके फिर लिया न जायेगा कि परमेश्वर के जीवन सोंह ।
२७ देखो मैं बुराई के लिये उन्हें अगोरूंगा और भलाई के लिये
नहीं और यहूदाह के सारे लोग जो मिस्र देश में हैं तलवार
से और अकाल से क्षीण होंगे जब लों वे नाश न हो जायें ।
२८ और तलवार से बचे हुए जो मिस्र देश से यहूदाह के देश में
फिर आवेंगे गिनती में थोड़े होंगे और यहूदाह के सारे उबरे
हुए लोग जो मिस्र में रहने को आये हैं जानेंगे कि किस का
बचन ठहरेगा मेरा अथवा उन का ॥

२९ और यह तुम्हारे लिये एक पता होगा परमेश्वर कहता है
कि मैं ही इस स्थान में तुम्हें पलटा देऊंगा जिसतें तुम जानो
३० कि मेरे बचन निश्चय तुम्हारे दुख के लिये पूरे होंगे। परमेश्वर
यों कहता है कि देखो मैं मिस्र के राजा फ़िरऊन हुफ़रअ को
उस के बैरियों के हाथ और उस के प्राण के गाहकों के हाथ
सोंपूंगा जैसा मैं ने यहूदाह के राजा सिदक़याह को उस के
बैरी बाबुल के राजा नबूखुदनज़र के हाथ में सोंपा जो उस
के प्राण का गाहक था॥

पैंतालीसवां पर्ब्ब।

१ वुह बचन जो यरमियाह भविष्यद्वक्ता ने नेयरियाह के बेटे
बरूक से कहा उस के पीछे कि उस ने इन बातों को यरमियाह
के मुंह से पुस्तक में लिखा था यहूदाह के राजा यूसियाह के
२ बेटे यहूयक़ीम के चौथे बरस में। हे बरूक तेरे बिषय में
३ परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है। कि तू ने कहा
है कि हाय मुझ पर क्योंकि परमेश्वर ने मेरे दुख पर शोक
मिलाया है मैं अपनी ठंडी सांसों से थक गया और चैन न
पाया॥

४ तू उसे यह कह कि परमेश्वर यों कहता है कि देख जो मैं ने
बनाया है सो ढाता हूं और जो मैं ने लगाया है सो उखाड़ता
५ हूं अर्थात यह सारा देश। और क्या तू अपने लिये बड़ी बातें
खोजता है मत खोज कि देख मैं सब प्राणियों पर बुराई लाता
हूं परमेश्वर कहता है परन्तु तू जहां कहीं जायेगा मैं तेरे प्राण
को लूट के लिये तुझे देऊंगा॥

छियालीसवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर का बचन जो जातिगणों के बिषय में यरमियाह

२ भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा। मिस्र के विषय में मिस्र के राजा
फ़िरऊ़ननिकोाह की सेना के विषय में जो फ़ुरात नदी के पास
करकिमीस में थी जिसे यहूदाह के राजा यूसियाह के बेटे
यहूयक़ीम के चौथे बरस बाबुल के राजा नबूख़ुदनज़र ने
मारा था॥
३ तुम फरी और ढाल सिद्ध करो और संग्राम के लिये बढ़ो।
४ घोड़ों को जोतो और अश्वों पर चढ़ो और टोप पहिन लैस हो
रहो भालों को चमकाओ झिलम पहिनो॥
५ मैं ने उन्हें क्यों शंकित और पीछे हटते हुए देखा है उन
के बलवंत मारे पड़े और भाग गये हैं और उन्हों ने पीछे
६ नहीं ताका चारों ओर भय है परमेश्वर कहता है। चालाक
न भागेगा और बलवंत बचने न पावेगा उत्तर की ओर फ़ुरात
नदी के लग उन्हों ने ठोकर खाई और गिर पड़े॥
७ यह कौन है जो नदियों की नाईं उमड़ा आता है जिस के
८ पानी बाढ़ की नाईं बढ़ते हैं। नदी की नाईं मिस्र उठता है
और उस के पानी बाढ़ की नाईं बढ़ते हैं और वुह कहता है
कि मैं बढूंगा और देश को छा लूंगा और नगर को उस के
९ निवासी सहित नाश करूंगा। घोड़ों पर चढ़ो और रथ गर्जें
और योद्धे निकलें अर्थात् कूश और फूट ढाल लिये हुए और
१० लूदीम जो धनुष लेके तीर लगाते हैं। क्योंकि यही प्रभु का
दिन है सेनाओं के परमेश्वर के पलटे का दिन जिसतें अपने
बैरियों से पलटा लेवे और तलवार खा लेगी वुह उन के लोहू
में बोरी जाके अघायेगी क्योंकि उत्तर देश में फ़ुरात नदी के
लग प्रभु सेनाओं के परमेश्वर का एक यज्ञ है॥
११ हे मिस्र की कुंआरी पुत्री जिलिअ़द को चढ़ जा और औषध
१२ ले तू ने वृथा औषध बटोरी है तू चंगी न होगी। जातिगणों
ने तेरा अपमान सुना है और तेरे चिल्लाने से पृथिवी भर गई

है क्योंकि बलवंतों ने बलवंतों पर ठोकर खाया है वे दोनों
एकट्ठे गिरे हैं ॥
१३ वुह बचन जो परमेश्वर ने यरमियाह भविष्यद्वक्ता से बाबुल
के राजा नबूखुदनज़र के आने और मिस्र के देश के मारने के
विषय में कहा ॥
१४ मिस्र में प्रगट करो और मिजदाल में प्रचारो नोफ़ में भी
और तिहफ़निहीस में प्रचारो और कहो स्थिर खड़ा रह और
आप को लैस कर क्योंकि तलवार तेरी चारों ओर के लोगों को
खायेगी ॥
१५ तेरे बलवंत क्यों गिराये गये वे न ठहरे क्योंकि परमेश्वर
१६ ने उन्हें ढकेल दिया। उस ने बहुतों को ठोकर खिलाया हां
एक दूसरे पर गिरा और उन्हों ने कहा कि उठो और हम
अंधेर की तलवार से अपने अपने लोगों में और अपनी जन्म
१७ भूमि में फिर जावें। वहां वे चिल्लाये कि मिस्र का राजा
फ़िरऊन नाश हुआ ठहराया हुआ समय बीत गया है।
१८ वुह राजा जिस का नाम सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है
कि अपने जीवन सोंह जैसे पर्व्वतों में तबूर और जैसे करमिल
१९ समुद्र के लग वैसा निश्चय वुह आवेगा। हे मिस्र की
निवासिनी पुत्री बंधुआई में जाने को अपनी संपत्ति सिद्ध कर
क्योंकि नोफ़ एक उजाड़ हो जायेगा वुह नाश भी किया जायेगा
जिसतें कोई निवासी न होवे ॥
२० मिस्र एक सुन्दर रूप कलोर है नाश आता है उत्तर से
२१ आता है। उस के भड़इत लोग भी उस के मध्य में मोटे
बैलों की नाईं हैं तथापि ये भी अपनी पीठ फेरे हैं वे एकट्ठे
भागे हैं और न ठहरे क्योंकि उन के नाश का दिन उन पर
२२ आया उन के पलटा का दिन। उस का शब्द सर्प के समान
निकलेगा क्योंकि वे बल के संग चलेंगे और कुल्हाड़ी लिये

२३ हुए उस पर आवेंगे। उन्हों ने उस का वन काट डाला
परमेश्वर कहता है यद्यपि उस का खोज नहीं हो सक्ता क्योंकि
२४ वे टिड्डियों से भी अधिक अनगणित हैं। मिस्र की कन्या
घबरा गई वुह उत्तर के लोगों के हाथ में सौंपी गई॥
२५ सेनाओं के परमेश्वर इसराएल के ईश्वर ने कहा है कि
देखो मैं अमून को नो में और फ़िरऊन को और मिस्र को और
उन के देवों को और उन के राजाओं को अर्थात् फ़िरऊन को
२६ और उस के आश्रितों को दण्ड देऊंगा। और मैं उन्हें उन के
प्राण के गाहकों के हाथ अर्थात् बाबुल के राजा नबूखुदनज़र
के हाथ और उस के सेवकों के हाथ सौंपूंगा और उस के पीछे
वुह अगिले दिनों के समान बसाया जायेगा परमेश्वर कहता है॥
२७ परन्तु हे मेरे दास यअ़क़ूब तू मत डर और हे इसराएल
तू मत घबरा क्योंकि देख मैं तुझे बड़ी दूर से और तेरे वंश
को उन की बंधुआई के देश से लाऊंगा और यअ़क़ूब फिर
चैन पावेगा और वुह निर्भय से रहेगा और उसे कोई न
२८ डरावेगा। हे मेरे दास यअ़क़ूब तू मत डर परमेश्वर कहता
है क्योंकि मैं तेरे साथ हूं जहां जहां मैं ने तुझे खेदा है मैं
वहां के सारे देशगणों का अंत करूंगा तथापि तेरा अंत सर्व्वथा
न करूंगा परन्तु मैं तुझे न्याय से ताड़ना करूंगा और सर्व्वथा
दण्ड रहित तुझे न छोड़ूंगा॥

सैंतालीसवां पर्व्व।

१ फ़िरऊन के अ़ज़्ज़: मारने से आगे परमेश्वर का बचन
फ़िलिस्तियों के विषय में यरमियाह भविष्यद्वक्ता के पास
पहुंचा॥
२ परमेश्वर यों कहता है देख उत्तर से जल चले आते हैं
और उमड़ती हुई एक धारा होगी और देश को और सब को

जो उस में हैं और नगर को और उस के निवासियों को
डुबावेगी तब मनुष्य चिल्लावेंगे और देश के सारे निवासी बिलाप
३ करेंगे। उस के बली घोड़ों के खुरों के पोड़यों के शब्द से और
उस के रथों के हड़हड़ाने से और उस की पहियों के गड़गड़ाने
से और पिता अपने हाथ की ढीलाई के कारण से अपने बालकों
४ की ओर न फिरेंगे। उस दिन के कारण जो आता है कि
फ़िलिस्तियों को उजाड़े और सूर और सैदा से हर एक सहायक
को जो बचा है काट डाले क्योंकि परमेश्वर फ़िलिस्तियों को
५ कफ़तूर टापू के बचे हुओं को उजाड़ करेगा। अज़्ज़ः पर
चंदलापन आया है असक़लून अपनी तराई के समेत सुनसान
हुआ तू आप को कब लों चीरेगा॥
६ हे परमेश्वर की तलवार तू कब लों चैन न करेगी तू अपनी
काठी में फिर जा विश्राम ले और स्थिर हो॥
७ वुह क्योंकर चैन करेगी क्योंकि परमेश्वर ने असक़लून पर
और समुद्र के क़िनारे पर उसे आज्ञा दिई है वहां उसे ठहराया
है॥

अठतालीसवां पर्व्व।

१ मोआब के विषय में सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर
यों कहता कि हाय नबू पर क्योंकि वुह लूटा गया है करयतैन
घबराया हुआ और लिया गया है मिसजाब घबराया हुआ और
२ विस्मित हुआ है। मोआब की बड़ाई फिर न होगी हसबून
में उन्हों ने यह कहके उस पर बुरी युक्ति बांधी है कि आओ
हम जातिगण होने से उसे काटें तू भी हे मदमीन चुप किया
३ जायेगा एक तलवार तेरे पीछे पड़ेगी। होरानैम से रोने
४ का शब्द होगा उजाड़ और बड़ा बिनाश। मोआब तोड़ा गया
५ उस के छोटों ने रोना सुनाया है। क्योंकि लोहियत की चढ़ाई में

बिलाप उठेगा निश्चय होरानैम के उतार में मेरे बैरियों ने
नाश का शब्द सुना है ॥
६ भागो अपना प्राण बचाओ और अरण्य में झुराये हुए पेड़
७ की नाईं हो जाओ। क्योंकि तू ने अपनी कमाई और धन पर
भरोसा किया है इस लिये तू पकड़ा जायेगा और कमूस अपने
८ पुरोहित और अध्यक्ष सहित बंधुआई में जायेगा। और लुटेरा
भी हर एक नगर पर आवेगा और कोई नगर न बचेगा परमेश्वर
के कहने के समान तराई नष्ट हो जायेगी और चौगान उजाड़ा
९ जायेगा। मोआब को पंख दो कि उड़ जावे और भागे कि उस के
१० नगर उजाड़ होंगे और उन में कोई निवासी न होगा। स्रापित
वुह मनुष्य है जो छल से परमेश्वर का कार्य्य करता है और
स्रापित वुह है जो अपनी तलवार को लोहू से रख छोड़ता
है ॥
११ मोआब अपनी तरुणाई से चैन में और अपने तरछट पर
बैठा है और पात्र से पात्र में नहीं उंडेला गया और वुह
बंधुआई में न गया इस लिये उस का स्वाद उस में बना है
१२ और उस का बास नहीं पलटा। इस लिये देख वे दिन आते
हैं परमेश्वर कहता है जब कि मैं उस के पास उंडेलवैयों
को भेजूंगा जो उसे उंडेलेंगे और वे उस के पात्र छूछे करेंगे
१३ और उन के कुप्पे फाड़ डालेंगे। जैसा इसराएल का घराना
अपनी आसा बैतएल से लज्जित हुआ तैसा मोआब कमूस से
लज्जित होगा ॥
१४ तुम लोग क्योंकर कहोगे कि हम बलवंत और संग्राम के
१५ लिये बीर जन हैं। मोआब लूटा गया है और उस के नगर
उठ गये और उस के तरुण घात के लिये उतर गये हैं वुह
राजा जिस का नाम सेनाओं का परमेश्वर है यों कहता है।
१६ मोआब का बिनाश पहुंचता है और उस की बिपत्ति शीघ्र बढ़ी

१७ आती है। हे उस के चारों ओर के सारे लोगो बिलाप करो
तुम सब जो उस का नाम जानते हो कहो कि बल का राजदंड
१८ और सुन्दर छड़ी कैसी टूटी पड़ी है। हे देबून की निवासिनी
पुत्री अपने ऐश्वर्य्य से उतर और प्यासी बैठ क्योंकि मोआब का
नाशक तेरे बिरुद्ध चढ़ आया है वुह तेरे दृढ़ गढ़ों का नाशक।
१९ हे अरूआयर की निवासिनी मार्ग के लग खड़ी होके देख और
भगवैये से और बचे हुए से पूछ और कह कि क्या हुआ है॥
२० मोआब घबराया है क्योंकि वुह ढाया गया है बिलाप करो
२१ और रोओ अरनून में प्रचारो कि मोआब लुट गया। समथर
भूमि पर दंड बिचार आता है होलून पर और यहास पर
२२ और मेफ़अत पर। और दैबून पर और नबू पर और बेतदिबलतैन
२३ पर। और क़रयतैन पर और बेतजमूल पर और बेतमऊन पर।
२४ और क़रयत पर और बुसर: पर और मोआब के देश के सारे नगरों
२५ पर जो दूर हैं और पास हैं। मोआब का सींग कट गया है
और उस की भुजा टूटी है परमेश्वर कहता है॥
२६ उसे मतवाला करो क्योंकि उस ने आप को परमेश्वर के
बिरोध में फुलाया और मोआब अपने छांट में बहेगा उस की
२७ भी निन्दा होगी। क्या इसराएल तेरे लिये निन्दा न था क्या
वुह चोरों में पाया गया कि जितनी बेर तेरी बातें उस के
२८ बिषय में थीं तू ने अपना सिर धुना। हे मोआब के निवासियो
नगरों को छोड़के चटान पर बसो और एक पंडुकी की नाईं हो
जो गढ़े के मुंह के अलंगों में अपना खोंता बनाती है॥
२९ हम ने मोआब का घमंड सुना है वुह अति घमंडी है
उस का फूलना और उस की बड़ाई भी और उस का अहंकार
३० और उस के मन का उभड़ना। मैं उस का महा कोप जानता
हूं परमेश्वर कहता है परन्तु उस की सामर्थ्य ऐसी नहीं है वुह
पूरा करने में ऐसा नहीं है॥

३१ इस लिये मैं मोआब के लिये बिलाप करूंगा हां मैं सारे
मोआब के लिये चिल्लाऊंगा कीरिहर्स के मनुष्यों के लिये बिलाप
३२ होगा। हे शिबमः के दाख मैं तेरे लिये यअज़ीर के बिलाप
से बिलाप करूंगा और तेरी लता समुद्र पार चली गई वे
यअज़ीर के समुद्र लों पहुंच गई तेरे ग्रीष्मफलों पर और तेरे
३३ दाख के फलों पर लुटेरा पड़ा है। और फलवंत खेत से अर्थात्
मोआब के देश से आनन्द और मगनता उठाई जायेगी और
कोल्हुओं में से मैं ने दाख के रस को रोका है लताड़ू न
३४ लताड़ेगा और उन का ललकारना न होगा। हसबून के रोने
से इलिआली लों और यहस लों और सुग़ से होरानैम लों तीन
बरस के बछड़े की नाईं उन्हों ने अपना शब्द बढ़ाया है
क्योंकि निमरिम के जल भी जाते रहेंगे॥
३५ परमेश्वर कहता है कि जो मनुष्य ऊंचे स्थान में भेंट चढ़ाता
है और अपने देवों के लिये धूप जलाता है मैं उसे मोआब से
३६ मिटाऊंगा। इस लिये मेरा मन मोआब के लिये बांसुलियों
की नाईं बजेगा और कीरिहर्स के मनुष्यों के लिये मेरा मन
बांसुलियों की नाईं शब्द करेगा क्योंकि धन जो उस ने प्राप्त
३७ किया था नष्ट हुआ है। क्योंकि हर एक सिर मुंडा है और
हर एक दाढ़ी कतरी है सब हाथों पर कटा कटा है और
३८ कटि पर टाटवस्त्र है। मोआब की सारी छतों पर और उस
की सड़कों में भरपूर बिलाप है क्योंकि मोआब को मैं ने ऐसा
तोड़ा है जैसा पात्र जिस्से कोई प्रसन्न नहीं परमेश्वर कहता है।
३९ वुह कैसा तोड़ा गया है वे चिल्लाये हैं कि मोआब ने कैसी पीठ
फेरी है मोआब लज्जित है और अपने चारों ओर के सारे
लोगों के लिये एक ठट्ठे का और भय का चिन्ह होगा॥
४० क्योंकि परमेश्वर यों कहता है कि देख गिद्ध की नाईं एक
४१ उड़ेगा और मोआब पर अपने पंख फैलावेगा। क़रयत लिया

गया और दृढ़ गढ़ अकस्मात लिये गये और मोआब के
बलवंत जनों के मन उस दिन पीड़ित स्त्री के मनों की नाईं
४२ होंगे। और मोआब ऐसा नाश हो जायेगा कि फिर एक
जाति न रहेगा क्योंकि उस ने अपने को परमेश्वर के विरुद्ध
४३ फुलाया है। हे मोआब के निवासी डर और गड़हा और जाल
४४ तुझ पर हैं परमेश्वर कहता है। जो भय से भागता है सो
गड़हे में गिरेगा और जो गड़हे से निकलता है सो जाल में
पकड़ा जायेगा क्योंकि मैं मोआब पर बिलाप अर्थात् उस के दंड
४५ पाने का बरस लाऊंगा परमेश्वर कहता है। जो भाग गये सो
बल के लिये हसबून की छाया तले ठहर गये परन्तु एक
आग हसबून से और एक लवर सेहून के मध्य से बाहर
निकलेगी और मोआब के कोने को और कोलाहल के पुत्रों के
सिर की खोपड़ी को खा जायेगी॥

४६ हाय तुझ पर हे मोआब कमूस के लोग नष्ट हुए क्योंकि
उन्हों ने तेरे पुत्रों को बंधुआ किया है और तेरी पुत्रियों को
भी बंधुई॥

४७ परन्तु पिछले दिनों में मैं मोआब की बंधुआई को फेरूंगा
परमेश्वर कहता है यहां मोआब का बिचार है॥

उंचासवां पर्ब्ब।

१ अम्मून के संतानों के विषय में परमेश्वर यों कहता है कि
क्या इसराएल के बेटे नहीं क्या उस का कोई अधिकारी नहीं
फिर मिलकूम ने जद को क्यों बश में किया है और उस के लोग
उस के नगरों में बसे॥

२ इस लिये देख वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है कि मैं
अम्मूनियों के रब्ब: में संग्राम का भय सुनाऊंगा और वुह उजाड़
का एक ढेर होगा और उस की पुत्रियां आग से नष्ट होंगी तब

इसराएल उन का अधिकार होगा जैसा वे उस के अधिकार थे
परमेश्वर कहता है॥
३ हे हसबून बिलख बिलख के रो क्योंकि ऐ लूटा गया है रब्बः
की पुत्रियो रोओ और टाटबस्त्र कसो बिलाप करो और बाड़ों
के भीतर इधर उधर दौड़ो क्योंकि मिलकूम बंधुआई में जायेगा
अपने पुरोहितों और अध्यक्षों सहित॥
४ हे हठीली कन्या यद्यपि तेरी तराई फलवंत है तू तराइयों
की क्यों बड़ाई करती है जो अपने धन पर बड़ाई करती है
५ और अपने मन में कहती है कि कौन मेरे पास आवेगा। प्रभु
सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देख अपनी चारों ओर
से तुझ पर एक भय लाऊंगा और तुम्में से हर एक उस के
आगे आगे खेदा जायेगा और भागे हुए को कोई नहीं बटोर
सकेगा॥
६ परन्तु इस के पीछे मैं अम्मून के संतान की बंधुआई को
फेरूंगा परमेश्वर कहता है॥
७ अदूम के विषय में सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि
क्या तैमन में और बुद्धि न रही और क्या चतुरों से मंत्र जाता
८ रहा क्या उन की बुद्धि लोप हो गई। हे ददान के निवासियो
भागो अपनी अपनी पीठ फेरो बसने को गहिरे उतर जाओ
क्योंकि मैं एसौ की बिपत्ति अर्थात् उस के दंड का समय
उस पर लाया हूं॥
९ जो दाख के बटोरक तेरे पास आवें तो क्या वे बिनिया न
१० छोड़ेंगे जो रात को चोर तो क्या वे लूटके न अघावेंगे। क्योंकि
मैं ने एसौ को छूछा किया उस के गुप्त स्थानों को उघारा है
यहां लों कि वुह आप को छिपा नहीं सक्ता उस के बीज और
उस के भाईबंद और उस के अरोसी परोसी लूटे गये हैं और
११ उस का कुछ नहीं बचा। अपने अनाथ बालकों को छोड़ मैं

उन के जीवन की रक्षा करूंगा और तेरी रांडें मुझ पर बिश्वास
करें ॥
१२ क्योंकि परमेश्वर ने निश्चय यों कहा है कि देख जिन का
भाग पीना न था उन्हों ने कटोरे से निश्चय पीआ है और क्या
तू अर्थात् तू ही सर्व्वथा निर्दंड रहेगा तू निर्दंड न रहेगा
१३ क्योंकि तू निश्चय पीयेगा। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि मैं ने
अपनी ही किरिया खाई है कि बस्रः आश्चर्य्यित और निन्दित
और उजाड़ और घिनित होगा और उस के सारे नगर सदा
उजाड़ रहेंगे ॥
१४ मैं ने परमेश्वर से एक प्रचार सुना है और एक दूत जातिगणों
के पास यह कहते हुए भेजा गया कि आप आप को एकट्ठे करके
१५ उस के विरुद्ध चढ़ो और संग्राम के लिये उठो। क्योंकि देख
मैं ने तुझे जातिगणों में छोटा और मनुष्यों में अत्यन्त निन्दित
१६ किया है। तेरी भयानकता और तेरे मन के अहंकार ने तुझे
छला है हे चटान की खोह के निवासी जो पहाड़ की चोटी
पर रहता है यद्यपि तू गिद्ध की नाईं अपने खोंते को ऊंचा
बनावे तो भी वहां से मैं तुझे उतारूंगा परमेश्वर कहता है ॥
१७ और अदूम उजाड़ होगा हर एक जो उस के पास से जायेगा
सो आश्चर्य्यित होगा और उस की सारी विपत्ति के लिये
१८ फुफकारी मारेगा। सदूम और अमूरः और आस पास के स्थानों
के उलटने के समान उस में एक मनुष्य न बसेगा हां मनुष्य
१९ का पुत्र भी उस में न रहेगा परमेश्वर कहता है। देख जैसा
एक सिंह यरदन के उमड़ने से एक बलवंत के निवासस्थान
पर आता है परन्तु मैं उसे उस के आगे से अकस्मात भगवाऊंगा
और कौन चुना गया है जो उस पर स्थापित करूं क्योंकि कौन
मेरे समान है जो मुझे बतावेगा अथवा कौन वुह गड़रिया है
जो मेरे आगे खड़ा हो सक्ता ॥

२० इस लिये परमेश्वर के परामर्श को सुनो जो उस ने अदूम
के विरुद्ध किया है और उस की युक्ति को जो उस ने तैमन
के निवासियों के विरुद्ध ठहराई है निश्चय झुंड के छोटे छोटे
में से खींचे जायेंगे निश्चय वुह उन के निवास को उन के
२१ संग उजाड़ करेगा। उन के गिरने के शब्द से पृथिवी थर्थराती
है उन के चिल्लाने का शब्द लाल समुद्र लों सुना जाता है।
२२ देखो वुह गिद्ध की नाईं चढ़के उड़ेगा और बुसरः पर अपने
डैने फैलावेगा और अदूम के बलवंतों का मन उस दिन
जन्नेवाली के मन की नाईं होगा जो पीड़ा में है॥

२३ दमिशक़ के विषय में हमात और अरफाद घबरा गये हैं
क्योंकि उन्हों ने कुसंदेश सुना है वे मूर्छित हैं समुद्र पर
२४ व्याकुलता है वुह स्थिर नहीं हो सक्ता। दमिशक़ दुर्बल हुआ
है और भागने के लिये फिरा है और थर्थराहट ने उसे जकड़ा
है पीड़ा और क्लेश ने जन्नेवाली स्त्री की नाईं उसे पकड़ा है।
२५ क्यों उन्हों ने उसे एक स्तुति का नगर मेरे आनन्द का नगर
नहीं छोड़ा है॥

२६ इस लिये उस के तरुण उस की सड़कों में गिरेंगे और सारे
संग्रामी उस दिन चुप किये जायेंगे सेनाओं का परमेश्वर कहता
है॥

२७ और मैं दमिशक़ की भीत पर एक आग बारूंगा और वुह
बिनहदद के भवनों को भस्म करेगी॥

२८ क़ीदार के विषय और हसूर के राज्यों के विषय में जिन्हें
बाबुल के राजा नबूखुदनज़र ने मारा परमेश्वर ने यों कहा है
कि उठो क़ीदार को चढ़ जाओ और पूर्बी लोगों को लूटो।
२९ उन के तंबुओं को और झुंडों को ले जायेंगे उन के ओहार
और उन की सारी संपत्ति और उन के ऊंट अपने ही कार्य्य
के लिये ले जायेंगे और वे चिल्लावेंगे कि चारों ओर डर है।

३० हे हसूर के निवासियो भागो शीघ्र बढ़ो और गहिरे बसने को
उतरो परमेश्वर कहता है क्योंकि तुम्हारे विरोध में बाबुल के
राजा नबूखुदनज़र ने परामर्श किया है और तुम्हारे विरोध में
एक युक्ति बांधी है ॥
३१ उठो और उस देश के विरुद्ध चढ़ जाओ जो चैन से और
निर्भय से रहता है परमेश्वर कहता है जिन के न फाटक न
३२ अड़ंगे हैं वे अलग निवास करते हैं। और उन के ऊंट लूट
के लिये होंगे और उन के ढोर की बहुताई लूट के लिये और
मैं उन्हें जो अपनी दाढ़ी का कोना काटते हैं चारों ओर छिन्न
भिन्न करूंगा और उन के सारे अलंगों से मैं उन पर विपत्ति
३३ लाऊंगा परमेश्वर कहता है। और हसूर गीदड़ों का निवास
सदा उजाड़ होगा कोई जन उस में न बसेगा और न कोई
मनुष्य का वंश उस में बास करेगा ॥
३४ परमेश्वर का वचन जो यह कहते हुए यहूदाह के राजा
सिदक़याह के राज्य के आरंभ में ऐलाम के विषय में यरमियाह
३५ भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा। सेनाओं का परमेश्वर यों कहता
है कि देखो मैं ऐलाम के धनुष उन के बल के श्रेष्ठ भाग को
३६ तोड़ता हूं। और मैं स्वर्ग के चारों खूंटों से चार पवनों को
ऐलाम के विरुद्ध लाऊंगा और उन सारी पवनों के आगे उन्हें
छिन्न भिन्न करूंगा और कोई ऐसा जातिगण न होगा जिस में
३७ ऐलाम का निकाला हुआ न आवे। और मैं ऐलाम को उन के
बैरियों के आगे और उन के प्राण के गाहकों के सन्मुख
घबराऊंगा और मैं उन पर बुराई अर्थात् अपना प्रचण्ड कोप
लाऊंगा परमेश्वर कहता है और जब लों मैं उन्हें नष्ट न करूं
३८ तब लों उन के पीछे पीछे तलवार भेजूंगा। और मैं अपना
सिंहासन ऐलाम में रक्खूंगा और राजा को और अध्यक्षों को
वहां से नष्ट करूंगा परमेश्वर कहता है ॥

३९ परन्तु दिनों के अंत में यों होगा कि मैं ऐलाम की बंधुआई
को फेर देऊंगा परमेश्वर कहता है ॥

पचासवां पर्ब्ब ।

१ परमेश्वर का वुह बचन जो यरमियाह भविष्यद्वक्ता के द्वारा से
बाबुल और कसदियों के देश के विषय में पहुंचा ॥
२ कि जातिगणों में कहो और प्रचारो और ध्वजा खड़ी करो
प्रचारो मत छिपाओ कहो कि बाबुल लिया गया है और बेल
मूर्त्ति घबरा गई है मरूदक टूट गया है उस की मूरतें घबरा
३ गईं और उस की घिनित बस्तें तोड़ी गई हैं। क्योंकि उत्तर
से उस के बिरुद्ध एक जातिगण चढ़ आया है जो उस के देश
को उजाड़ करेगा यहां लों कि उस में कोई निवासी न होगा
मनुष्य और पशु भाग गये हैं वे चले गये ॥
४ परमेश्वर कहता है कि उन दिनों और उस समय में इसराएल
के संतान आवेंगे और यहूदाह के संतान एकट्ठे आवेंगे वे
जायेंगे वे रोते रोते जायेंगे और अपने ईश्वर परमेश्वर को खोजेंगे।
५ वे अपना रुख सैहून की ओर करते करते उसे खोजेंगे वे आवेंगे
और सर्वदा की बाचा में परमेश्वर से मिल जायेंगे जो भुलाई
न जायेगी ॥
६ मेरे लोग खोई हुई भेड़ें हैं उन के गड़रियों ने उन्हें
भटकाया उन्हों ने उन्हें छोड़ दिया है वे पर्ब्बतों से टीलों पर
७ फिरे हैं वे अपने चैनस्थान को भूल गये हैं। जितनों ने
उन्हें पाया उन सभों ने उन्हें भक्षण किया और उन के वैरियों
ने कहा कि हम अपराध नहीं करते इस कारण कि उन्हों ने
धर्म्म के धाम परमेश्वर के बिरुद्ध अर्थात् अपने पितरों के
भरोसा परमेश्वर के बिरुद्ध पाप किया है ॥
८ बाबुल में से निकल जाओ और कसदियों के देश से बाहर

८ जाओ और झुंडों के आगे के बकरों की नाईं होओ। क्योंकि
देखो मैं बाबुल के विरुद्ध उत्तर देश से बड़े बड़े जातिगणों
की मंडली को उठाऊंगा और लाऊंगा और उन के विरुद्ध उन
से पांती बांधूंगा जिस्से वुह लिया जायेगा उन के बाण निपुण
१० संग्रामियों की नाईं होंगे छूछे न फिरेंगे। और कसदिया लूट के
लिये होगा सब जो उसे लूटेंगे तृप्त होंगे परमेश्वर कहता है॥
११ हे मेरे अधिकार के लुटेरो इस लिये कि तुम लोगों ने
आनन्द किया और मगन हुए कि तुम घास खाऊ बछड़े की
१२ नाईं मोटे हुए हो और घोड़ों की नाईं हिनहिनाते हो। तब
तुम्हारी माता बहुत घबरावेगी तुम्हारी जननी लज्जित हो
जायेगी देख अन्त में जातिगणों को अरण्य और झुराया हुआ देश
१३ और बन। परमेश्वर के कोप के मारे वुह फिर बसाया न
जायेगा परन्तु वुह सर्वथा उजाड़ होगा हर एक जो बाबुल के
पास से जायेगा आश्चर्य्यित होगा और उस की सारी विपत्तों के
कारण फुफकारेगा॥
१४ अपने तईं बाबुल के विरुद्ध चारों ओर से लैस हो रहो तुम
जो धनुष खींचते हो उस पर बाण चलाओ बाण को मत रख
१५ छोड़ो क्योंकि उस ने परमेश्वर के विरुद्ध पाप किया है। उस
के चारों ओर ललकारो उस ने अपना हाथ दिया है उस की
नेवें गिरी हैं उस की भीतें ढाई गई हैं क्योंकि यह परमेश्वर
का पलटा है सो उस्से पलटा लेओ जैसा उस ने किया है तैसा
१६ उस्से करो। बोवैये को और उसे जो लवनी में हंसुआ पकड़ता
है बाबुल में से काट डालो हर एक उन में से नाशक की
तलवार के मारे अपने अपने लोगों में फिर जायेगा और उन में
हर एक अपने अपने देश को भाग जायेगा॥
१७ इसराएल छिन्न भिन्न भेड़ है सिंहों ने फाड़ा है पहिले असूर
के राजा ने उसे भक्षण किया और इस पिछले ने अर्थात् बाबुल

१८ के राजा नबूखुदनज़र ने उस के हाड़ों को तोड़ा है। इस
लिये सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता है कि
देखो जैसा मैं ने असूर के राजा को दंड दिया है तैसा बाबुल
१९ के राजा को और उस के देश को दंड देऊंगा। परन्तु मैं
इसराएल को उसी के स्थान में फेर लाऊंगा और वुह करमिल
और बसन पर चराई करेगा और उस का प्राण इफ़रायम पर्व्वत
२० पर और जिलिअद पर तृप्त होगा। परमेश्वर कहता है कि उन
दिनों में और उस समय में इसराएल की बुराई खोजी जायेगी
और पाई न जायेगी और यहूदाह के पापों का बिचार किया
जायेगा परन्तु पाये न जायेंगे क्योंकि जिन्हें मैं ने रख छोड़ा
है उन को क्षमा करूंगा॥

२१ 　दो बेर दंगइत देश पर हां उस पर चढ़ जा और दगड
के निवासियों पर उजाड़ कर और उस के वंश को नष्ट कर
२२ परमेश्वर कहता है और मेरी सारी आज्ञा के समान कर। देश
२३ में संग्राम का और बड़े नाश का शब्द है। सारी पृथिवी की
हथौड़ी कैसी काटी और तोड़ी गई देशगणों में बाबुल कैसा
२४ एक उजाड़ हुआ है। हे बाबुल जब तू अचेत था तब मैं ने
तेरे लिये जाल बिछाया है और तू पकड़ा भी गया है तू पाया
गया है और अचानक पकड़ा गया है क्योंकि तू ने परमेश्वर की
विरुद्धता किई है॥

२५ 　परमेश्वर ने अपना अस्त्रस्थान खोला है और अपनी
जलजलाहट के हथियार निकाले हैं क्योंकि कसदियों के देश
२६ में प्रभु सेनाओं के परमेश्वर का यह कार्य्य है। दूर सिवाने से
उस पर चढ़ आओ उस के भंडारों को खोलो उसे ढेर ढेर करो
२७ और उसे नष्ट करो कुछ भी उस्से न बचे। उस के सारे बैलों को
बध करो और उन्हें घात के लिये उतरने देओ हाय उन पर
क्योंकि उन का दिन आया है अर्थात् उन के दंड पाने का

२८ समय। उन का शब्द जो बाबुल देश से भागके बच गये हैं
कि परमेश्वर हमारे ईश्वर का पलटा अर्थात् उस के मन्दिर का
पलटा सैहून में प्रचारें॥
२९ धनुषधारियों को बाबुल के बिरुद्ध बुलाओ तुम सब जो
धनुष खींचते हो उस के बिरुद्ध चारों ओर छावनी करो और
कोई बचने न पावे उस के कार्य्य के समान उसे पलटा देओ
उस के सारे किये हुए के समान उस्से करो क्योंकि उस
ने परमेश्वर के बिरुद्ध अहंकार से कार्य्य किया है अर्थात्
३० इसराएल के धर्ममय के बिरुद्ध। इस लिये उस के तरुण उस
की सड़कों में गिरेंगे और उस के सारे योद्धा उस दिन काट
डाले जायेंगे परमेश्वर कहता है॥
३१ हे अहंकारी देख मैं तुझ पर आता हूं प्रभु सेनाओं का
परमेश्वर कहता है कि मैं तेरे बिरुद्ध हूं क्योंकि तेरा दिन अर्थात्
३२ तेरे दंड का समय आया है। और अहंकारी ठोकर खाके
गिरेगा और उसे उठाने को कोई न होगा और मैं उस के नगरों
में आग बालूंगा और वुह उस के चारों ओर भस्म करेगी॥
३३ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि इसराएल के संतान
और यहूदाह के संतान एकट्ठे सताये गये और सभों ने जो
उन्हें बंधुआई में ले गये उन्हें दृढ़ता से पकड़ रक्खा उन्हों
३४ ने उन्हें छोड़ने को नाह किया। उन का मुक्तिदायक बली है
उस का नाम सेनाओं का परमेश्वर है वुह निश्चय उन के पद
का पक्ष करेगा यहां लों कि पृथिवी में कुशल देवे और बाबुल
के निवासियों को कंपवावे॥
३५ परमेश्वर कहता है कि कसदियों पर और बाबुल के निवासियों
पर और उस के अध्यक्षों पर और उस के बुद्धिमानों पर
३६ तलवार। छलदायकों पर खड्ग और उन की बुद्धि मारी जायेगी
३७ उन के बीरों पर तलवार और वे बिस्मित होंगे। उन के घोड़ों

पर और उन के रथों पर और उन की सारी मिली हुई मंडली
पर जो उस के मध्य में हैं तलवार और वे स्त्रियों की नाईं
हो जायेंगे उन के भंडारों पर तलवार और वे लूटे जायेंगे ।
३८ उन के जलों पर सुखाहट और वे सूख जायेंगे क्योंकि वुह
खोदी हुई मूर्त्तिन का देश है और वे मूर्त्तिन से बौड़हे हैं ।
३९ इस कारण बनबिलाव सियारों के साथ रहेंगे ऊंटपक्षी की
चिंगनियां भी उस में रहेंगी वुह फिर कधी बसाया न जायेगा
४० और पीढ़ी से पीढ़ी लों वहां कोई न रहेगा । परमेश्वर यों
कहता है कि जैसा ईश्वर ने सदूम और अमूरः और उस के
आस पास के स्थानों को उलट दिया तैसा उस में कोई न
बसेगा और मनुष्य का कोई पुत्र उस में बास न करेगा ॥
४१ देख उत्तर से एक बड़ी जाति आती है और बहुत से लोग
४२ और बहुत से राजा पृथिवी के अंतों से उभड़ेंगे । वे धनुष
और बरछी हाथ में लेंगे वे क्रूर हैं और दया न दिखावेंगे उन का
शब्द समुद्र की नाईं गर्जेगा और वे घोड़ों पर चढ़ेंगे हे बाबुल
की पुत्री वे तेरे बिरुद्ध संग्रामियों की नाईं पांती बांधेंगे ।
४३ बाबुल के राजा ने उन की चर्चा सुनी है और उस के हाथ
दुर्बल हुए हैं जननी की पीड़ा के समान पीड़ा ने उसे पकड़ा है ।
४४ देख जैसा एक सिंह यरदन के उभड़ने से एक बलवन्त के
निवासस्थान पर आता है परन्तु मैं उसे उस के आगे से अकस्मात्
भगवाऊंगा और कौन चुना गया है जो उस पर स्थापित करूं
क्योंकि मेरी नाईं कौन है अथवा कौन मुझे बतावेगा अथवा कौन
वुह गड़रिया है जो मेरे आगे खड़ा होगा ॥
४५ इस लिये परमेश्वर का परामर्श सुनो जो उस ने बाबुल के
बिरुद्ध युक्ति किई है और उस के ठहराये हुए जो उस ने
कसदियों के निवासियों के बिरुद्ध ठहराया है वे झुंड के छोटे
छोटों में से खींचे जायेंगे वुह निश्चय उन के निवास को उन

४९ के संग उजाड़ करेगा। बाबुल लिया गया इस बात के शब्द
से पृथिवी सरक गई और उस का चिल्लाना अन्यदेशियों लों सुना
गया है॥

एकावनवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं बाबुल के बिरुद्ध और
कसदीम के निवासियों के बिरुद्ध एक नाशक पवन उभाड़ूंगा।
२ और मैं बाबुल के बिरुद्ध ओसवैयों को भेजूंगा और वे उसे
ओसावेंगे और उस का देश छूछा करेंगे क्योंकि बिपत्ति के
३ दिन वे उस के बिरुद्ध चारों ओर होंगे। खींचनेहारे पर
धनुषधारी अपना धनुष खींचे और उस पर जो आप को अपने
झिलम में उभाड़ता और उस के तरुणों को मत छोड़ो उस की
४ सारी सेना को सर्वथा नाश करो। और वे कसदीम के देश
में जूझ जायेंगे और उस की सड़कों में गोदे हुए गिरेंगे॥
५ क्योंकि न इसराएल न यहूदाह अपने ईश्वर सेनाओं के
परमेश्वर से त्यागा गया है क्योंकि उन का देश इसराएल के
धर्ममय के बिरुद्ध अपराध से परिपूर्ण है॥
६ बाबुल के मध्य में से भाग निकलो और हर एक अपना
अपना प्राण बचाओ जिसतें उस के दंड में तुम लोग काटे न
जाओ क्योंकि परमेश्वर के पलटे का समय है वुह उसे प्रतिफल
७ देगा। परमेश्वर के हाथ में बाबुल एक सोने का कटोरा है
जिस ने सारी पृथिवी को मतवाली किया अन्यदेशियों ने उस
में का दाखरस पीया है इस लिये अन्यदेशी बौड़हे हो गये
८ हैं। कि बाबुल अचानक गिर पड़ा है और टूट गया उस के
लिये चिल्लाओ उस के दुख के लिये ओषध लेओ क्या जाने
वुह चंगा हो जाये॥
९ हम ने बाबुल पर ओषध लगाया है परन्तु वुह चंगा न

हुआ उसे छोड़ देओ और चलो हर एक अपने अपने देश को
जायें क्योंकि उस का दंड स्वर्ग लों पहुंचा है और आकाश लों
१० उठ गया है। परमेश्वर ने हमारे बचाव प्रगट किये हैं आओ
हम सेहून में अपने ईश्वर परमेश्वर का कार्य्य प्रगट करें ॥
११ बाण जगमगाओ ढालों को धरो परमेश्वर ने मादी के राजाओं
के मन को उभाड़ा है क्योंकि बाबुल को नष्ट करने को उस ने
ठहराया है निश्चय वुह परमेश्वर का पलटा अर्थात् उस के
१२ मन्दिर का पलटा है। बाबुल की भीतों पर ध्वजा खड़ी करो
और दृढ़ पहरू रक्खो पहरे बैठाओ और ठूकियों को लैस करो
क्योंकि परमेश्वर ने ठहराया है और जो कुछ उस ने बाबुल के
निवासियों के विषय में कहा सो उस ने पूरा किया ॥
१३ अरे तू जो बहुत से जलों के अलंग में रहती है जिस में धन
१४ मुक्ता है तेरा अन्त पहुंचा तेरी लालच हो चुकी। सेनाओं के परमेश्वर
ने अपनी ही किरिया खाई कि मैं निश्चय तुझे मनुष्यों से जैसा
टिड्डियों से भर देऊंगा और वे तेरे विरुद्ध ललकारेंगे ॥
१५ उस ने अपने पराक्रम से पृथिवी को सृजा है अपनी बुद्धि
से जगत को स्थिर किया है और अपने ज्ञान से उस ने स्वर्गों
१६ को फैलाया है। जब वुह अपना शब्द बढ़ाता है तब आकाशों
में जलों का कोलाहल होता है और पृथिवी के अन्त से वुह
मेघों को उठाता है वृष्टि के साथ बिजुलियां निकालता है और
१७ वुह अपने भंडारों से पवन निकालता है। हर एक जन अपनी
समझ से मूर्ख होता है हर एक कार्य्यकारी मूर्त्ति से लज्जा
जाता है क्योंकि उस की ढाली हुई मूर्त्तें मिथ्या हैं और उन
१८ में श्वास नहीं। ये वृथा हैं उन का कार्य्य जो बहुत चूक
१९ करते हैं अपने दण्ड आने के समय में वे नष्ट होंगे। यअकूब
का भाग ऐसा नहीं क्योंकि वुह सृष्टि का कर्त्ता है और इस्राएल
उस के अधिकार का दण्ड उस का नाम सेनाओं का परमेश्वर है ॥

२० हे संग्राम के कुल्हाड़े तू मेरे संग्राम का हथियार होगा और
जातिगणों को मैं तुझी से तोड़ूंगा और तुझी से राज्यों को नष्ट
२१ करूंगा। और तुझी से मैं घोड़े को और उस के चढ़वैये को
तोड़ूंगा और तुझी से रथ को और उस के सारथी को तोड़ूंगा।
२२ और तुझी से पति पत्नी को तोड़ूंगा और तुझी से बूढ़े और
लड़के को तोड़ूंगा और तुझी से तरुण पुरुष और कुंआरी को
२३ तोड़ूंगा। और तुझी से गड़रिये और उस के झुंड को तोड़ूंगा
और तुझी से मैं किसान को और उस के जोड़े बैल को तोड़ूंगा
२४ और तुझी से मैं अध्यक्षों और आज्ञाकारियों को तोड़ूंगा। और
मैं बाबुल को और कसदीम के सारे निवासियों को उन की सारी
बुराई का जो उन्हों ने सैहून में किई हैं तुम्हारी आंखों के
आगे प्रतिफल देऊंगा परमेश्वर कहता है॥

२५ देख मैं तेरे बिरुद्ध हूं परमेश्वर कहता है हे नाशक पर्ब्बत
जो सारी पृथिवी को नाश करता है और अपना हाथ तुझ पर
बढ़ाऊंगा और तुझे टीलों पर से लुढ़काऊंगा और तुझे एक जला
२६ हुआ पर्ब्बत बनाऊंगा। और वे तुझ से कोने के लिये एक
पत्थर अथवा नेव के लिये पत्थर न लेंगे परन्तु तू सदा का
उजाड़ होगा परमेश्वर कहता है॥

२७ देश में ध्वजा खड़ी करो जातिगणों में तुरही बजाओ उस
के बिरुद्ध जातिगणों को भरती करो और अरारात और मिन्नी
और असकनाज़ के राज्यों को उस के बिरुद्ध बुलाओ उस के
बिरुद्ध सेनापति को ठहराओ घोड़चढ़ों को भयंकर टिड्डी की
२८ नाईं उन पर मंगवाओ। मादी के राजाओं और उस के सारे
अध्यक्षों और उस के सारे प्रधानों और उस के राज्य के सारे
२९ देशों को उस के बिरुद्ध सिद्ध करो। और देश थरथराके पीड़ित
होवे क्योंकि परमेश्वर का ठहराया हुआ बाबुल के बिरोध में स्थिर
है जिसतें बाबुल के देश को बिना निवासी एक उजाड़ बनावे॥

३० बाबुल के बीर संग्राम से थम गये वे दृढ़ स्थानों में रह
गये उन का बल घट गया वे स्त्रियों की नाईं हुए हैं उस के
३१ निवास जल गये उन के अड़ंगे टूट गये। दौड़हा दौड़हे से
मिलने को दौड़ेगा और दूत दूत से भेंट करने को जिसतें
बाबुल के राजा को संदेश देवे कि उस का नगर एक अलंग
३२ से दूसरे लों लिया गया है। और घाट बंद हुए नरकटस्थानों
को भी आग से जला दिया और संग्रामी भयातुर हुए॥
३३ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर यों कहता
है कि बाबुल की पुत्री खलिहान की नाईं है उस के झाड़ने
का समय तनिक और और वुह आ पहुंचता है और उस के
लवने का समय॥
३४ बाबुल के राजा नबूखुदनज़र ने मुझे भक्षण किया है और
नष्ट किया है उस ने मुझे छूछे पात्र किये हैं वुह अजगर के
समान मुझे लील गया है और उस ने अपने पेट को मेरी
अच्छी बस्तुन से भर दिया उस ने मुझे निकाल दिया है।
३५ सैहून की निवासिनी यों कहेगी कि जो अंधेर मुझ पर
और मेरे शरीर पर किये गये हैं सो बाबुल पर होवें और
यरूसलम कहेगी कि मेरा लोहू कसदीम के निवासियों पर
होवे॥
३६ इस लिये परमेश्वर यह कहता है कि देख मैं तेरा पक्षबादी
होऊंगा और मैं तेरा पलटा लेऊंगा और मैं उस के समुद्र को
३७ सुखाऊंगा और उस के सोते को निर्जल करूंगा। और बाबुल
ढेर ढेर हो जायेगा गीदड़ों का निवास और आश्चर्य्य का और
३८ फुफकारने का कारण और बिन निवास होगा। वे सिंहों के
समान एक साथ गर्जेंगे वे सिंह के बच्चों की नाईं शब्द करेंगे।
३९ उन के ताप में मैं उन्हें पिलाऊंगा और मैं उन्हें मतवाला करूंगा
जिसतें वे मगन होवें और सनातन की नींद में पड़े रहें और

४० फिर न जागें परमेश्वर कहता है। मेम्नों और मेढ़ों के समान
बकरे सहित घात करने के लिये मैं उन्हें उतारूंगा ॥
४१ शेशक कैसा लिया गया है और सारी पृथिवी की स्तुति
कैसी अकस्मात लिई गई है देशगणों में बाबुल कैसा आश्चर्य्यित
४२ हुआ है। बाबुल पर समुद्र चढ़ आया है वुह उस की लहरों
४३ की अधिकाई से ढांपा गया है। उस के नगर उजाड़ हो रहे
हैं भूरा देश और बन एक देश जिस में कोई न बसता और
४४ मनुष्य के पुत्र उस में से न जायेंगे। और बाबुल में बेल को
मैं दंड देऊंगा और जो उस ने लीला सो उस के मुंह से
निकालूंगा और देशगण उस के पास फिर न बटुरेंगे बाबुल की
भीत भी गिर गई ॥
४५ हे मेरे लोगो उस के मध्य में से निकल जाओ और हर
एक अपने अपने प्राण को परमेश्वर के ज्वलित कोप से
४६ बचाओ। न हो कि तुम्हारा मन घट जाय और तुम उस चर्चा
से डर जाओ जो देश में सुनी जायेगी क्योंकि एक बरस में
चर्चा होगी और उस के पीछे दूसरे बरस में दूसरी चर्चा होगी
और देश में अंधेर और आज्ञाकारी के विरुद्ध आज्ञाकारी ॥
४७ इस लिये देखो वे दिन आते हैं जिन में मैं बाबुल की
खोदी हुई मूर्त्तिन को दंड देऊंगा और उस का सारा देश
लज्जित हो जायेगा और उस के सारे जूझे हुए उस के मध्य में
४८ मारे पड़ेंगे। तब स्वर्ग और पृथिवी और सब जो उन में हैं
बाबुल पर ललकारेंगे क्योंकि लुटेरे उस के विरोध में उत्तर से
४९ आवेंगे परमेश्वर कहता है। जैसा बाबुल ने इसराएल के
जुझाये हुओं को गिरवाया है तैसा बाबुल में सारी पृथिवी में से
जूझ जायेंगे ॥
५० तुम जो तलवार से बच निकले हो जाओ खड़े
मत होओ दूर से परमेश्वर को स्मरण करो और यरूसलम

५१ तुम्हारे मन में आवे । हम घबरा गये हैं क्योंकि हम ने
निन्दा सुनी है लाज ने हमारे मुंह को ढांपा है क्योंकि परदेशी
परमेश्वर के मन्दिर के पवित्र स्थान में पैठे हैं ॥
५२ इस लिये परमेश्वर कहता है कि देखो वे दिन आते हैं कि
में उन की खोदी हुई मूर्त्तिन को दंड देऊंगा और उस के मारे
५३ देश में घायल लोग कहरेंगे । यद्यपि बाबुल स्वर्ग लों चढ़ी
हुई हो और वुह अपने बल को ऊंचा वाड़ित किये हो तो
भी मुझ से लुटेरे उस के पास आवेंगे परमेश्वर कहता है ॥
५४ बाबुल में से चिल्लाने का और कसदी के देश से बड़ा बिनाश
५५ का शब्द । क्योंकि परमेश्वर बाबुल को नष्ट करता है और उस्से
महाशब्द को नाश करता है उन की लहरें भी बड़े पानियों की
नाईं गर्जती हैं उन के शब्द के कारण कोलाहल हुआ ।
५६ क्योंकि उस के विरुद्ध अर्थात् बाबुल के विरुद्ध एक नाशक
आया है और उस के बलवन्त जन पकड़े जायेंगे उन का हर
एक धनुष टूटेगा क्योंकि पलटा का सर्वशक्तिमान परमेश्वर
५७ निश्चय पलटा लेगा । और मैं उन के अध्यक्षों को और उन के
बुद्धिमानों को उस के सेनापतियों को और उस के आज्ञाकारियों
को और उस के बलवन्तों को मतवाला करूंगा और वे सनातन
की नींद से सोया करेंगे और कभी न जागेंगे राजा जिस का
नाम सेनाओं का परमेश्वर सो कहता है ॥
५८ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि बाबुल की चौड़ी
भीत सर्व्वथा ढाई जायेगी और उस के ऊंचे ऊंचे फाटक आग
से जलाये जायेंगे और लोग वृथा परिश्रम करेंगे और जातिगण
आग में और वे थक जायेंगे ॥
५९ यरमियाह भविष्यद्वक्ता का वुह वचन जो उस ने महसियाह
के बेटे नैयरियाह के बेटे शिरायाह को आज्ञा किई थी जब
वुह यहूदाह के राजा सिदक़ियाह के संग उस के राज्य के चौथे

बरस में बाबुल को गया था क्योंकि शिरायाह नम्र अध्यक्ष था।
६० और यरमियाह ने सारी बुराई को जो बाबुल पर बीतनी थी
एक पुस्तक में लिखी ये सारी बातें बाबुल के विषय में लिखीं।
६१ और यरमियाह ने शिरायाह से कहा कि जब तू बाबुल में
६२ पहुंचे तब देखके इन सारी बातों को पढ़ना। और कहना कि
हे परमेश्वर तू ने इस स्थान के काट डालने के विषय में कहा
है यहां लों कि उस में कोई निवासी मनुष्य अथवा पशु न
६३ रहेगा क्योंकि सनातन उजाड़ रहेगा। और यों होगा कि जब
तू इस पुस्तक को पढ़ चुकेगा तब उस में एक पत्थर बांधके
६४ फुरात के मध्य में फेंक देना। और कहना कि यों बाबुल डूब
जायेगा और उस बुराई के कारण जो मैं उस पर लाता हूं फिर
न उठेगा और वे थक जायेंगे यहां लों यरमियाह के बचन॥

बावनवां पर्ब्ब।

१ सिदकियाह एकीस बरस का था जब राज्य करने लगा और
उस ने यरूसलम में ग्यारह बरस राज्य किया और उस की
माता का नाम हमूतल जो लिबनाही यरमियाह की बेटी थी।
२ और उस ने यहूयकीम की सारी क्रिया के समान परमेश्वर की
३ दृष्टि में बुराई किई। क्योंकि यरूसलम और यहूदाह के
बिरोध में परमेश्वर के कोप के कारण ऐसा हुआ था कि उस ने
उन्हें अपनी दृष्टि से दूर किया सिदकियाह राजा बाबुल के
राजा के विरुद्ध फिर गया॥

४ और उस के राज्य के नवें बरस के दसवें मास की दसवीं
तिथि में ऐसा हुआ कि बाबुल का राजा नबूखुदनज़र वुह और
उस की सारी सेना यरूसलम के बिरुद्ध आई और उस के
साम्ने छावनी किई और उस के बिरुद्ध चारों ओर गढ़ बनाये।
५ और सिदकियाह राजा के ग्यारहवें बरस लों नगर घेरा रहा॥

६ चौथे मास की नवीं तिथि में जब नगर में बड़ा अकाल
७ था और देश के लोगों के लिये रोटी न रही। तब नगर तोड़ा
गया और सारे योद्धा भागे और दोनों भीतों के फाटक में से जो
राजा की बारी के लग है रात को नगर से निकल गये और
वे चौगान की ओर गये जब लों कसदी नगर की चारों ओर
८ थे। परन्तु कसदियों की सेना ने राजा का पीछा किया और
यरीहो के चौगानों में सिदक़याह को जा ही लिया और उस की
९ सारी जथा उस्से छिन्न भिन्न थी। और उन्हों ने राजा को पकड़ा
और उसे हमात देश रिबल: में बाबुल के राजा के पास लाये और
१० उस ने उस का बिचार किया। और बाबुल के राजा ने सिदक़याह
की आंखों के आगे उस के पुत्रों को घात किया और उस ने
११ रिबल: में यहूदाह के सारे अध्यक्षों को भी मार डाला। और
उस ने सिदक़याह की आंखें निकालीं और उसे पीतल की
सीकरों से जकड़ा और बाबुल का राजा बाबुल में ले गया और
उस के मरने लों उसे बन्दीगृह में रक्खा॥

१२ और बाबुल के राजा नबूख़ुदनज़र के उन्नीसवें बरस के
पांचवें मास की दसवीं तिथि में बाबुल के राजा का समीपी
१३ पहरुओं का प्रधान नबूसरअद्दान यरूसलम में आया। और
परमेश्वर के मन्दिर को और राजा के भवन को जला दिया
और यरूसलम के सारे घरों को और हर एक बड़े घर को
१४ आग से जला दिया। और पहरुओं के प्रधान के संग के
कसदियों की सारी सेनाओं ने यरूसलम की चारों ओर की
सारी भीतें तोड़ डालीं॥

१५ तब पहरुओं के प्रधान नबूसरअद्दान ने लोगों में के कितने
कंगालों और नगर में के रहे हुए लोगों को और भगेडुओं को
जो बाबुल के राजा की ओर गये अर्थात् रही हुई मंडली
१६ बंधुआई में ले गया। परन्तु पहरुओं के प्रधान नबूसरअद्दान

ने देश के कितने एक कंगालों को दाख की वारी के और
१७ किसनई के लिये छोड़ दिया। और परमेश्वर के मन्दिर में के
पीतल के खंभे और आधार और परमेश्वर के मन्दिर में के
पीतल का समुद्र कसदियों ने तोड़ डाला और उन का सारा
१८ पीतल बाबुल को ले गये। वे कड़ाहे भी और फावड़े और
कतरनियां और कटोरे और करछुलें और सारे पीतल के पात्र
१९ जिन से वे सेवा करते थे ले गये। और बर्त्तन और धूपात्रों
और कटोरे और कड़ाहे और दीअट और करछुल और कटोरियां
और जो कुछ सोने का था सोने को और जो कुछ चांदी का
२० था चांदी को पहरुओं का प्रधान ले गया। दो खंभे और
समुद्र और पीतल के बारह बैल जो नीचे थे और आधार
जिन्हें सुलेमान राजा ने परमेश्वर के मन्दिर के लिये बनाया
था इन पांचों का पीतल बेतौल था॥

२१ और खंभे एक एक खंभे की ऊंचाई अठारह हाथ थी
और बारह हाथ की रस्सी उस की गोलाई थी और पोला होके
२२ वुह चार अंगुल मोटा था। और उस पर पीतल का मथाल
था और एक मथाल की उंचाई पांच हाथ और मथाल की
चारों ओर जाल कार्य्य और अनार थे और सब पीतल के और
२३ इसी रीति से दूसरे खंभे पर भी अनार। और एक एक ओर
छियानवे अनार और जालकार्य्य पर के चारों ओर के अनार
एक सौ॥

२४ और पहरुओं के प्रधान ने शिरायाह प्रधान याजक को
और दूसरे याजक सफनियाह को और तीन द्वारपालों को
२५ लिया। और नगर में से उस ने एक नपुंसक को जो योद्धाओं
का प्रधान था और सात जन राजा के समीपियों में से जो
नगर में पाये गये और सेना के श्रेष्ठ लेखक को जो देश के
लोगों की गिनती करता था और देश में के साठ जन को जो

२६ नगर के मध्य पाये गये। और नबूसरअट्टान पहरुओं का
प्रधान उन्हें लेके रिबल: में बाबुल के राजा के पास ले आया।
२७ और बाबुल के राजा ने उन्हें मारा और हमात देश के रिबल:
में उन्हें घात किया और यहूदाह को उन के देश में से
बंधुआई में ले गया॥

२८ ये वे लोग हैं जिन्हें नबूखुदनज़र सातवें बरस में बंधुआई
२९ में ले गया अर्थात् तीन सहस्र तेईस यहूदी। नबूखुदनज़र
के अठारहवें बरस में वुह यरूसलम से आठ सौ बत्तीस जन
३० को ले गया। नबूखुदनज़र के तेईसवें बरस में नबूसरअट्टान
पहरुओं का प्रधान सात सौ पैंतालीस यहूदियों को बंधुआई
में ले गया सारे लोग चार सहस्र छ: सौ थे॥

३१ और यहूदाह के राजा यहूयक़ीम की बंधुआई के सैंतीसवें
बरस के बारहवें मास की पचीसवीं तिथि में ऐसा हुआ कि
बाबुल के राजा अवीलमरूदक ने अपने राज्य के पहिले बरस
में यहूदाह के राजा यहूयक़ीम को बढ़ाया और उसे बन्दीगृह
३२ से निकाल लाया। और उस्से अनुग्रह की बातें किईं और उस
के सिंहासन को अपने संग के राजाओं के सिंहासन से जो बाबुल
३३ में थे सभों से ऊंचा किया। और उस ने उस के बन्दीगृह
के वस्त्रों को पलट डाला और वुह अपने जीवन भर नित्य उस
३४ के आगे भोजन करता रहा। और उस के जीवन भर की
जीविका मरने लों नित्य की जीविका बाबुल के राजा की
आज्ञा से प्रति दिन परिमाण से दिई जाती थी॥

यरमियाह का बिलाप।

पहिला पर्ब्ब।

१ लोगों से भरी हुई नगरी क्यों अकेली बैठी है वुह बिधवा
की नाईं हो गई जो जातिगणों में बड़ी थी और प्रदेशों में
रानी थी सो करदायक हुई॥
२ वुह रात को बिलख बिलख रोती है और उस के आंसू उस
के गालों पर उस के सारे प्रेमियों में उस का शांतिदायक कोई
नहीं उस के सारे मित्रों ने उस्से छल का ब्यवहार किया है वे
उस के बैरी हुए हैं॥
३ अति कष्ट के मारे और सेवा के कारण यहूदाह बंधुआई में
गया है वुह अन्यदेशियों में बास करता है वुह चैन नहीं
पाता उस के सारे खेदनेहारों ने उसे सकेती में जा ही लिया॥
४ सेहून के मार्ग बिलाप करते हैं क्योंकि बड़े पर्ब्ब में कोई
नहीं आता उस के सारे फाटक उजाड़ हैं उस के याजक हाय
हाय करते हैं उस की कुंवारियां कष्टित हैं और वुह आप
कड़वाहट में है॥
५ उस के बैरी श्रेष्ठ उस के शत्रु भाग्यमान हुए हैं क्योंकि
उस के अपराधों की बहुताई के लिये परमेश्वर ने उसे दुख
दिया है उस के बालक बैरी के आगे बंधुआई में गये हैं॥
६ और सेहून की कन्या से उस की सारी सुन्दरता जाती

रही उस के अध्यक्ष उन हरिणों की नाईं हैं जो चराई नहीं
पातें और खेदनेहारे के आगे निर्बल चले गये ॥
७ यरूसलम ने अपने दुःख और बिपत्ति के दिनों में अपने
पुरातन दिनों की सारी मनभावनी बस्तुन को चेत किया है
जब उस के लोग बैरी के हाथ में पड़े और उस का सहायक
कोई न हुआ बैरियों ने उसे देखा और उस के बिश्राम दिनों
पर हंसे ॥
८ यरूसलम ने बहुत ही पाप किया है इस लिये वुह अलग
किई गई उस के सारे आदरदायकों ने उस की निन्दा किई है
क्योंकि उन्हों ने उस की नग्नता देखी है हां वुह हाय हाय करते
करते मुंह फिराती है ॥
९ उस की अपवित्रता उस के अंचलों में थी उस ने अपने
अंत को नहीं सोचा इसी लिये वुह आश्चर्य्यित से उतारी गई
उस का शांतिदायक कोई नहीं हे परमेश्वर मेरे कष्ट को देख
क्योंकि बैरी ने आप को बढ़ाया है ॥
१० बैरी ने उस की सारी मनभावनी बस्तुन पर अपना हाथ
फैलाया है क्योंकि उस ने जातिगणों को अपने पवित्रस्थान में
पैठते देखा है जिन के विषय में तू ने आज्ञा किई है कि वे
मेरी मंडली में न पैठेंगे ॥
११ उस के सारे लोग हाय हाय करते हैं वे रोटी ढूंढ़ते हैं
उन्हों ने अपना जीव पालने को भोजन के लिये अपने मोल
की बस्तु दिई है हे परमेश्वर देख और सोच क्योंकि मैं तुच्छ
बना हूं ॥
१२ हे सारे पथिको क्या यह तुम्हें कुछ नहीं है दृष्टि करके
देखो क्या कोई दुःख मेरे दुःख के समान है जो मुझ पर हुआ
है जिस्से परमेश्वर ने अपने महा कोप के दिन में मुझे कष्टित
किया है ॥

१३ ऊपर से उस ने मेरी हड्डियों में आग भेजी है और वुह
उन पर प्रबल होती है उस ने मेरे पांव के लिये जाल बिछाया
है उस ने मुझे उलटा फेर दिया है उस ने मुझे उजाड़ और
दिन भर घटाया है ॥
१४ मेरे अपराधों का जूआ उसी के हाथ से बांधा गया वे
लिपटे हुए मेरे गले पर आ रहे उस ने मेरे बल को घटाया
है प्रभु ने मुझे उन के हाथों में सौंपा है मैं उठ नहीं सक्ती
हूं ॥
१५ प्रभु ने मेरे मध्य में सारे बलवन्त जनों को रौंदा है उस
ने मेरे तरुणों को चूर करने को मेरे बिरुद्ध जथा बुलाई है
प्रभु ने यहूदाह की कुंवारी पुची को दाख के कोल्हू में रौंदा
है ॥
१६ इन बातों के लिये मैं बिलाप करती हूं मेरी आंख मेरी
आंख जल बहाती है क्योंकि मेरे प्राण के सहायक शांतिदायक
दूर हैं मेरे बालक उजड़ गये हैं क्योंकि बैरी प्रबल हुए हैं ॥
१७ सैहून अपने हाथ फैलाती है उस का शांतिदायक कोई
नहीं परमेश्वर ने यअकूब के बिषय में आज्ञा किई है उस के
बैरी उस के चारों ओर हैं उन में यरूसलम अशुद्ध स्त्री की
नाईं हुई है ॥
१८ परमेश्वर धर्म्मी है क्योंकि मैं उस की आज्ञा से फिर गया हूं
हे सारे लोगो सुन रक्खो और मेरे दुख को देखो मेरी कुंवारियां
और मेरे तरुण बंधुआई में पहुंचाये गये हैं ॥
१९ मैं ने अपने प्रेमियों को बुलाया पर वे मुझ से छली ठहरे
मेरे याजक और मेरे प्राचीनों ने अपना अपना जीव पालने को
अपने लिये भोजन खोजते खोजते नगर में प्राण त्यागा ॥
२० हे परमेश्वर देख कि मुझ पर दुख है मेरी अंतड़ियां मरोड़ती
हैं मुझ में मेरा अन्तःकरण उलट पुलट हुआ है क्योंकि मैं ने

तेरे बिरुद्ध अति सिर उठाया है बाहर तलवार नष्ट करती है
और भीतर मृत्यु की नाईं है ॥
२१ उन्हों ने सुना है कि मैं हाय हाय करता हूं मेरा शांतिदायक
कोई नहीं मेरे सारे बैरियों ने मेरी बिपत्ति को सुना और
आनन्दित हुए हैं क्योंकि तू ने यह किया है जो तू ने उच्चारा
सोई दिन तू लाया है और वे मेरे समान होंगे ॥
२२ उन की सारी दुष्टता तेरे आगे आवें और जैसा तू ने हम से
सारे अपराधों के लिये व्यवहार किया है तू उन से ऐसा व्यवहार
कर क्योंकि मेरा हाय हाय करना बहुत और मेरा मन निर्बल है ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ प्रभु ने अपनी रिस से सैहून की कन्या को घटा से कैसे
ढांपा है उस ने इसराएल की शोभा को स्वर्ग से पृथिवी पर
डाल दिया है और अपनी रिस के दिन अपने पांव की पीढ़ी
को स्मरण नहीं किया है ॥
२ प्रभु ने यअ़क़ूब के सारे स्थानों को निर्दयता से बिगाड़ा है
उस ने अपने कोप से यहूदाह की लड़की के दृढ़ गढ़ों को
गिरा दिया है उस ने उन्हें भूमि पर उतार दिया है उस ने
राज्य को और उस के अध्यक्षों को अशुद्ध किया है ॥
३ उस ने अपनी अति रिस से इसराएल के हर एक सींग को
काट डाला है उस ने बैरियों के आगे से अपना दहिना हाथ
खींचा है और उस ने यअ़क़ूब में धधकती आग की नाईं बारा
है जो चारों ओर भक्षण करती है ॥
४ उस ने बैरी की नाईं अपना धनुष खींचा है उस का दहिना
हाथ बैरी की नाईं बढ़ाया हुआ है और हर एक आंख की
सारी बांछा को सैहून की पुत्री के तंबू में घात किया है उस
ने आग की नाईं अपने कोप को उंडेला है ॥

५ प्रभु बैरी की नाईं हुआ है उस ने इसराएल को उजाड़ा
है उस ने उस के सारे भवनों को उजाड़ा है उस ने उस के
दृढ़ गढ़ों को नाश किया है और यहूदाह की पुची में हाहाकार
और बिलाप बढ़ाया है ॥
६ और उस ने अपनी ही बाहित बाड़ी पर बरबस किया है
उस ने अपनी मंडली को नष्ट किया है परमेश्वर ने सेहून में
पवित्र पर्व्वों और बिस्राम दिनों को भुलवाया है और अपनी
रिस की जलजलाहट से उस ने राजा को और याजक को
तुच्छ जाना है ॥
७ परमेश्वर ने अपनी बेदी को त्यागा है अपना पवित्रस्थान
स्रापित किया है उस ने उस के भवनों की भीतों को बैरी के
हाथ में सोंपा है पवित्र पर्व्वों के दिनों की नाईं उन्हों ने
परमेश्वर के मन्दिर में शब्द उठाया है ॥
८ परमेश्वर ने सेहून की पुची की भीत को नाश करने को
ठाना है उस ने रस्सी फैलाई है उस ने नाश करने में अपना
हाथ नहीं उठाया है परन्तु उस ने कोट और भीत से बिलाप
करवाया है वे मिलके घट गये हैं ॥
९ उस के फाटक भूमि में गिर गये हैं उस ने उस के अड़ंगों
को तोड़के बिनाश किया है उस का राजा और उस के अध्यक्ष
अन्यदेशियों में हैं व्यवस्था नहीं है उस के भविष्यद्वक्ते भी
परमेश्वर से दर्शन नहीं पाते हैं ॥
१० सेहून की पुची के प्राचीन भूमि पर बैठे हैं वे चुपचाप हैं
उन्हों ने अपने सिरों पर धूल डाली है उन्हों ने टाट बस्त्र
कसा है यरूसलम की कुंवारियों ने भूमि लों सिरों को झुकाया
है ॥
११ आंसुओं से मेरी आंखें घट गई हैं मेरी अंतड़ियां ममोड़ती
हैं मेरे लोगों की पुची के दरार के मारे मेरा कलेजा भूमि पर

उंडेला गया है जब लों बालक ओर दूधपीवक नगर की गलियों
में मूर्छित पड़े हैं ॥
१२ जब वे नगर की गलियों में के घायलों की नाईं मूर्छित हैं
जब उन की माता की गोद में उन का प्राण निकलता है
तब वे अपनी अपनी माता से कहते हैं अन्न ओर दाखरस
कहां ॥
१३ हे यरूसलम की पुत्री मैं तुझे कौन सी बात से उपदेश
देऊं ओर किस्से उपमा देऊं हे सैहून की कुंवारी पुत्री तुझे
शांति देने को मैं तुझे किस के तुल्य करूं क्योंकि तेरा दरार
समुद्र की नाईं चौड़ा है कौन तुझे चंगा कर सक्ता है ॥
१४ तेरे भविष्यद्वक्तों ने तेरे लिये भविष्य कहा है जो बृथा ओर
मिथ्या है ओर उन्हों ने तेरी बंधुआई फेर लाने को तेरे आगे
तेरी बुराई प्रगट नहीं किई है परन्तु उन्हों ने तेरे लिये बृथा
बोझ ओर देश निकाले जाने का भविष्य कहा है ॥
१५ मार्ग के सारे पथिकों ने तुझ पर थपोड़ी मारी है वे यरूसलम
की पुत्री पर सिर धुनके फुफकारी मार मार कहते हैं क्या यह
वही नगरी है जो पूरी सुन्दरी ओर सारी पृथिवी का आनन्द
कहलाती थी ॥
१६ तेरे सारे बैरियों ने तेरे बिरुद्ध मुंह खोला है उन्हों ने
फुफकारी मार ओर दांत किचकिचाके कहा कि हम उसे लील
गये हैं निश्चय हम इसी दिन की बाट जोहते थे हम ने पाया
है हम ने देखा है ॥
१७ परमेश्वर ने अपनी युक्ति को कर डाला उस ने अपने बचन
को पूरा किया है जो उस ने अगिले दिनों में ठहराया सो उस
ने नाश किया ओर न छोड़ा परन्तु उस ने एक बैरी को तुझ
पर आनन्द कराया है उस ने तेरे बैरियों के सींग को उभाड़ा
है ॥

१८ उन का मन प्रभु के आगे चिल्लाता है हे सैहून की पुत्री
रात दिन धारा की नाईं अपने आंसू बहने दे आप को चैन
मत दे अपनी आंख की पुतली को स्थिर मत होने दे ॥
१९ उठ रात्री के पहरों के आरंभ में चिल्ला चिल्ला रो अपना
मन पानी की नाईं प्रभु के आगे उंडेल अपने नन्हे बालकों के
प्राण के लिये अपने हाथ उठा जो सारे मार्गों के सिरे में भूख
के मारे मूर्छित हैं ॥
२० हे परमेश्वर देख और दृष्टि कर कि तू ने किस्से यह व्यवहार
किया है क्या स्त्री अपने कोख का फल जो बालक हाथ में
नचाया गया भक्षेगी क्या याजक और भविष्यद्वक्ता परमेश्वर के
पवित्रस्थान में मारे जायेंगे ॥
२१ बालक और बृद्ध मार्गों में पड़े हुए हैं मेरी कुंवारियां और
मेरे युवा पुरुष तलवार से गिरे हैं तू ने उन्हें अपनी रिस के
दिन में घात किया है तू ने उन्हें मार डाला है और दया न
किई ॥
२२ तू ने जैसा पवित्र दिन में मेरे भय को चारों ओर बटोरा
है यहां लों कि परमेश्वर की रिस के दिन में कोई न छूटा न
बचा जिन्हें मैं ने पाला पोसा था वे सब मेरे बैरी हुए ॥

तीसरा पर्व्व ।

१ मैं वुह मनुष्य हूं जिस ने उस के कोप के दंड का दुख
२ देखा है । उस ने मेरी अगुआई किई और अंधियारे में चलाया
३ है परन्तु उंजियाले में नहीं । निश्चय वुह मेरे बिरुद्ध बैठा
है वुह दिन भर अपना हाथ फेरता है ॥
४ उस ने मेरा मांस और मेरा चाम गला दिया है उस ने
५ मेरी हड्डियों को तोड़ा है । उस ने मुझ पर जुड़ाई किई है
६ और कड़ुआहट और परिश्रम से मुझे घेरा है । उस ने उन

की नाईं जो पुरातन से मर गये हैं मुझे अंधियारे के मध्य में
रहने कराया है॥
७ उस ने मेरी चारों ओर बाड़ा बांधा है कि मैं निकल नहीं
८ सक्ता उस ने मेरी सीकरें भारी किईं हैं। हां जब मैं चिल्ला
९ चिल्ला पुकारता हूं तब वुह मेरी प्रार्थना को रोकता है। उस ने
गढ़े हुए पत्थर से मेरे मार्गों को बन्द किया है उस ने मेरे पथों
को टेढ़ा किया है॥
१० वुह घात में लगे हुए भालू की और छिपे हुए सिंह की
११ नाईं मेरे लिये है। उस ने मेरे मार्गों को टेढ़ा किया है और
१२ मुझे टुकड़े टुकड़े किया है उस ने मुझे उजाड़ा है। उस ने
अपना धनुष खींचा है और मुझे बाण के लिये चिन्ह कर
रक्खा है॥
१३ उस ने अपने तूण के बाण को मेरे गुर्दों में चलाया है।
१४ मैं अपने सारे लोगों के लिये स्वांग और दिन भर उन का गान
१५ हुआ हूं। उस ने मुझे कड़वाहट से भर दिया है और
नागदौना मुझे पिलाया है॥
१६ और उस ने कंकड़ से मेरे दांतों को भी तोड़ा है उस ने मुझे
१७ राख पर लोटाया है। और मेरा प्राण कुशल से दूर किया गया
१८ मैं भलाई को भूल गया। तब मैं ने कहा कि परमेश्वर से मेरा
बल और मेरी आशा जाती रही॥
१९ मेरे क्लेश और मेरी बिपत्ति नागदौना और पित्त का स्मरण
२० कर। मेरा प्राण अब लों स्मरण करता है और मुझ में निहुरता
२१ है। यह मैं अपने मन में दुहराता हूं इस लिये मैं आशा रक्खूंगा॥
२२ परमेश्वर की दया से हम क्षय नहीं होते क्योंकि उस की
२३ दया नहीं घटती है। वे कृपा हर बिहान को नई हैं तेरी
२४ सत्यता बड़ी है। मेरा प्राण कहता है कि परमेश्वर मेरा भाग
इस लिये मैं उस पर भरोसा रक्खूंगा॥

२५ परमेश्वर उस पर कृपाल है जो उस की बाट जोहता है
२६ और जो प्राणी उसे खोजता है। भला है कि मनुष्य आशा
२७ रक्खे और परमेश्वर की मुक्ति की बाट चुपके से जोहे। भला
है कि मनुष्य अपनी तरुणाई में जूआ उठावे॥
२८ कि वुह चुपका और एकांत बैठा रहे क्योंकि वुह उसे उस
२९ पर रखता है। वुह अपने मुंह को धूल पर रक्खे क्या जाने
३० आशा होवे। वुह थपड़ाऊ की ओर गाल फेरे वुह अपमान से
भर पूर होवे॥
३१। ३२ क्योंकि प्रभु सदा त्याग न करेगा। परन्तु यद्यपि वुह
क्लेश देवे तथापि वुह अपनी दया की बहुताई के समान मया
३३ करेगा। क्योंकि वुह आनन्द से मनुष्य के पुत्रों को दुख नहीं
देता अथवा न शोकित करता॥
३४ कि देश के सारे बंधुओं को अपने पांव तले रौंदे।
३५ और महा शक्तिमान के आगे मनुष्य के बिचार को फेर देवे।
३६ और मनुष्य का पद बिगाड़ने में प्रभु को नहीं भावता॥
३७ किस ने कहा है और पूरा हुआ है जब प्रभु ने आज्ञा न
३८ दिई। क्या अति महान के मुंह से भला बुरा नहीं निकलता।
३९ जीवता मनुष्य क्यों कुड़कुड़ाता है हर एक अपने पाप के लिये
कुड़कुड़ावे॥
४० आओ हम अपने मार्गों को ढूंढ़ें और परखें और परमेश्वर
४१ की ओर फिरें। आओ हम अपने अन्तःकरण और हाथ स्वर्ग
४२ को सर्बशक्तिमान की ओर उठावें। हम ने अपराध किया है
और फिर गये हैं तू ने क्षमा नहीं किई है॥
४३ तू ने अपनी रिस से आप को छिपाया है और हमें खेदा
४४ है तू ने घात किया है और नहीं छोड़ा है। तू ने अपनी
४५ चारों ओर मेघ से घेरा है जिसतें प्रार्थना प्रवेश न करे। तू
ने हमें लोगों के मध्य में बोहारन और कूड़ा किया है॥

४६ हमारे सारे बैरियों ने हमारे बिरुद्ध मुंह खोले हैं ।
४७ भय और गड़हा और उजाड़ और नाश हम पर पड़ा है ।
४८ मेरे लोगों की पुत्री के नाश के कारण मेरी आंखें जल की धारा
बहाती हैं ॥
४९ मेरी आंखें टपकती हैं और नहीं थमतीं यहां लों कि उसे
५० चैन नहीं । जब लों परमेश्वर स्वर्ग से न झांके और न देखे ।
५१ मेरे नगर की सारी पुत्रियों के कारण मेरी आंखों से प्राण को
कष्ट होता है ॥
५२ मेरे बैरी मुझे चिड़िया की नाईं अकारण खेदते हैं ।
५३ उन्हों ने मेरे प्राण को गड़हे में काटा है और मुझ पर पत्थर
५४ धर दिया है। मेरे सिर के ऊपर से पानी बढ़ गये मैं ने कहा
कि मैं कट गया हूं ॥
५५ हे परमेश्वर मैं ने नीचे की भकसी में से तेरा ही नाम
५६ लिया । तू ने मेरा शब्द सुना है मेरे रोने पर और सहाय
५७ करने में अपना कान मत छिपा । जब मैं ने तुझे पुकारा पास
आके तू ने कहा कि मत डर ॥
५८ हे प्रभु तू ने मेरे प्राण के बाद का बिवाद किया है तू ने मेरे
५९ जीव को छुड़ाया । हे परमेश्वर जो अनीति मुझ पर हुई सो
६० तू ने देखी है मेरा न्याय कर । तू ने उन के सारे बैर और
सारी युक्तियों को मेरे बिरुद्ध देखा है ॥
६१ हे परमेश्वर तू ने उन की निन्दा और मेरे बिरुद्ध उन की
६२ सारी युक्तियों को सुना है । बैरियों के होंठ और उन का
६३ कुड़कुड़ाना मेरे बिरुद्ध दिन भर । उन के बैठने उठने को
देख मैं उन का गान हूं ॥
६४ हे परमेश्वर उन के हाथों के कार्य्य के समान तू उन्हें प्रतिफल दे ।
६५ । ६६ तू उन्हें मन की कठोरता दे तेरा धिक्कार उन पर। हे परमेश्वर
तू रिस से उन का पीछा कर और स्वर्ग के तले से उन्हें नाश कर ॥

चैाथा पर्व्व ।

१ सोना क्यों मलीन हुआ चोखे से चोखा सोना क्योंकर पलटा
गया पवित्र पत्थर गलियों के हर एक सिरे पर छितरे हैं।
२ सैहून के अत्युत्तम पुत्र जा चोखे सोने के तुल्य थे कुम्हार
के बनाये हुए मिट्टी के घड़े की नाई क्यों समझे जाते हैं।
३ सियारिनें भी अपने स्तनों को निकाल निकाल अपने बच्चों
का पिलाती है मेरे लोगों की पुत्री अरण्य के ऊंटपक्षियों की
नाई क्रूर है॥
४ दूध के बालक की जीभ प्यास के मारे तालू से लगी है
नन्हे बालक रोटी मांगते हैं परन्तु कोई उन्हें नहीं देता॥
५ जो सुस्वाद खाते थे वे सड़कों में त्यक्त हैं जो लाल वस्त्र
पर पाले गये थे से घूरों पर लोटते हैं॥
६ और मेरे लोगों की पुत्री का पाप सदूम के अपराध से भी
बड़ा है जो पलमात्र के तुल्य उलटाया गया और उस में हाथों
ने कार्य्य न किया॥
७ उस के कुलीन पाले से भी शुद्ध थे वे दूध से अति श्वेत
थे उन की हड्डी पद्मराग मणि से भी लाल उन का डौल
नीलमणि की नाई था॥
८ अब उन का रूप कालिख से काला है वे सड़कों में जाने
नहीं जाते उन का चमड़ा उन के हाड़ों से सटा हुआ है वुह
काठ की नाई झुरा गया है॥
९ जो तलवार से मारे गये हैं से अकाल से मारे हुओं से
अच्छे हैं क्योंकि वे खेत के फलों की घटी से घुले जाते हैं॥
१० मयालु स्त्रियों के हाथों ने अपने ही बालकों को उसिना है
जो मेरे लोगों की पुत्री के नाश में उन के लिये भोजन हुए॥
११ परमेश्वर ने अपने कोप को प्रगटा है उस ने अपनी रिस

की जलजलाहट उंडेली है और सैहून में एक आग बारी है
और उस ने उस की नेवों को भस्म किया है ॥
१२ पृथिवी के राजाओं ने और जगत के सारे बासियों ने प्रतीति
न किई कि बैरी और शत्रु यरूसलम के फाटकों में पैठेंगे ॥
१३ उस के भविष्यद्वक्तों के पापों और उस के याजकों की
बुराइयों के कारण जिन्हों ने धर्म्मियों का लोहू उस में बहाया
यों हुआ ॥
१४ वे अंधों की नाईं गलियों में भटकते फिरे उन्हों ने आप
को लोहू से अशुद्ध किया ऐसा कि लोग उन के कपड़े नहीं
छूते ॥
१५ उन्हें पुकार पुकारके कहते थे कि अरे अपवित्र दूर होओ
दूर होओ दूर होओ छूओ मत क्योंकि वे भागे वे भटके
भी गये जातिगणों में कहा जाता है कि वे फिर वहां न
टिकेंगे ॥
१६ परमेश्वर के रूप ने उन को विभाग किया है वुह उन पर
फिर दृष्टि न करेगा उन्हों ने याजकों का आदर नहीं किया
उन्हों ने प्राचीनों पर कृपा न दिखाई ॥
१७ हम जो हैं सो हमारी आंखें मिथ्या सहायता के लिये घट
गईं पहरे के गुम्मट पर हम ने एक जाति की बाट जोही जो
बचा नहीं सक्ती ॥
१८ वे हमारे डग अहेरते थे यहां लों कि हम अपने मार्गों में
चल न सक्ते थे हमारा अंत आ पहुंचा हमारे दिन पूरे हुए
क्योंकि हमारा अंत आया है ॥
१९ हमारे खेदवैये आकाश के गिद्धों से अधिक बेगवान थे
उन्हों ने हमें पर्ब्बतों पर खेदा वे जंगल में हमारे दूके में
लगे हैं ॥
२० हमारे नथुनों का स्वास परमेश्वर का अभिषिक्त उन के गड़हों

में पकड़ा गया जिस के बिषय में हम ने कहा कि हम उस
की छाया के तले अन्यदेशियों में जियेंगे ॥
२१ हे अदूम की पुत्री जो ऊज़ के देश में वास करती है तू
आनन्द कर और मगन हो कटोरा तुझ पर भी पहुंचेगा तू भी
मतवाली होगी और अपनी नग्नता उघारेगी ॥
२२ हे सेहून की पुत्री तेरे दंड का अन्त हुआ है वुह तुझे
फिर कभी बंधुआई में न पहुंचावेगा हे अदूम की पुत्री वुह
तेरे पापों का प्रतिफल देगा तेरे पापों के कारण तुझे बंधुआई
में ले गया है ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ हे परमेश्वर जो कुछ हम पर बीता है सो स्मरण कर
बिचार और हमारे अपमान को देख ॥
२ हमारा अधिकार उपरियों को हमारे घर परदेशियों को
३ मिले। हम अनाथ हुए और पिता रहित और हमारी
४ मातायें बिधवाओं की नाईं हुईं। हम ने रोकड़ दे दे जल
५ पीया है हमारा ईंधन मोल से आता है। हमारे गलों पर
जूए हैं जिन से हम सताये जाते हैं हम परिश्रम करते हैं
६ और हमें बिश्राम नहीं मिलता। हम ने मिस्रियों और असूरियों
७ को हाथ दिया जिसतें हम भोजन से तृप्त होवें। हमारे पितरों
ने पाप किया है और वे नहीं हैं हम ने उन की बुराइयों का
८ दंड भोगा है। सेवकों ने हम पर प्रभुता किई है और उन
९ के हाथ से हमें छुड़ाने को कोई नहीं। बन की तलवार के
१० मारे हम अपनी रोटी जी के जोखिम से पाते हैं। भयानक
११ अकाल के मारे हमारे चाम भट्ठी की नाईं झौंस गये। सेहून
में स्त्रियों पर और यहूदाह के नगरों में कुंवारियों पर बलात्कार
१२ किया है। उन के हाथ से राजपुत्र लटकाये गये और प्राचीनों

१३ की प्रतिष्ठा न हुई। तरुणों को चक्की पीसने पड़ा और लड़के
१४ लकड़ी तले दब गये। प्राचीन फाटक में से और तरुण अपने
१५ बाजे से रह गये हैं। हमारे मन का आनन्द जाता रहा है
१६ हमारा नाच बिलाप से पलट गया है। हमारे सिर से मुकुट
गिरा है हाय हम पर क्योंकि हम ने पाप किया है॥
१७ इसी कारण हमारा मन घट गया है इन बातों के कारण
१८ हमारी आंखें धुंधला गईं। सैहून पहाड़ के कारण जो उजाड़
है लोमड़ियां उस में चलती फिरती हैं॥
१९ हे परमेश्वर तू सदा स्थिर रहेगा तेरा सिंहासन पीढ़ी से
२० पीढ़ी लों। तू क्यों हमें सर्बथा भूलेगा क्या तू हमें बहुत दिन
२१ लों त्यागेगा। हे परमेश्वर हमें अपनी ओर फिरा और हम
२२ फिरेंगे आगे की नाईं हमारे दिनों को नवीन कर। क्या तू ने
हमें सर्बथा त्यागा है तू हम पर अत्यन्त कोपित रहेगा।

हिज़क़िएल
भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब

१ अब तीसवें बरस के चौथे मास की पांचवीं तिथि में ऐसा
हुआ कि ख़बूर नदी के लग जब मैं बंधुआई में था तब स्वर्ग खुल
२ गये और मैं ने ईश्वर के दर्शन पाये। यहूयकीन राजा की बंधुआई
३ के पांचवें बरस के मास की पांचवीं तिथि में। ख़बूर नदी के
लग कसदीम के देश में बूज़ के बेटे हिज़क़िएल याजक के
पास परमेश्वर का बचन पहुंचा और परमेश्वर का हाथ वहां उस
पर था॥

४ और मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखता हूं कि उत्तर से एक
बवंडर एक महा मेघ और बरती हुई आग और उस के आस
पास एक चमक थी और उस के मध्य में से अर्थात् आग में
से चमकते पीतल का सा रंग॥

५ और उस के मध्य में से चार जीवधारियों का आकार
निकला और यह उन का रूप और उन्हें मनुष्य का आकार
६ था। और हर एक के चार चार मुंह और हर एक के चार चार
७ डैने थे। और उन के पांव सीधे पांव और उन के पांव के
तलवे बछरू के पांव के तलवे की नाईं और वे चमकते पीतल
८ की नाईं चमकते थे। और उन के चारों अलंग डैनों के नीचे
९ मनुष्य के हाथ थे और उन चारों के मुंह और डैने थे। उन

के डैने एक एक से जोड़े हुए थे चलने में वे फिरते न थे उन
१० में हर एक अपने मुंह के साम्हने चलता था। और उन के
दहिने अलंग उन चारों के मुंह मनुष्य के मुंह की नाईं और
सिंह के मुंह की नाईं थे और बाईं अलंग उन चारों के मुंह
बैल के से थे और उन चारों के मुंह गिद्ध के से भी थे।
११ और उन के मुंह यों हीं और उन के डैने ऊपर से बिभक्त थे
हर एक के दो डैने एक दूसरे से जोड़े हुए थे और दो उन
१२ की देह ढांपते थे। और उन में से हर एक अपने मुंह के साम्हने
चला जाता था जिधर आत्मा को जाना था उधर वे जाते थे वे
१३ जाने में फिरते न थे। और उन जीवधारियों का स्वरूप जो था
सो आग के जलते अंगारों की नाईं और देखने में दीपकों की
नाईं जीवधारियों में ऊपर नीचे जाते थे और वुह आग तेज
१४ थी और उस आग में से बिजली निकलती थी। और वे
जीवधारी देखने में बिजली की चमक की नाईं दौड़ते थे और
फिर आते थे॥

१५ सो जब मैं उन जीवधारियों को देख रहा था तो क्या
देखता हूं कि उन जीवधारियों के लग पृथिवी पर चार मुंह
१६ का एक एक चक्र है। चक्र और उन का कार्य्य बैदूर्य्य रंग के
समान और चारों एक ही समान थे और उन के देखने और उन
१७ के कार्य्य में चक्र के मध्य में चक्र की नाईं थे। चलने में वे अपने
१८ चारों अलंगों पर चलते थे चलने में वे फिरते न थे। और
उन की गोलाई जो थी सो ऐसी ऊंची थी कि वे भयंकर थे
और उन की गोलाई में चारों ओर आंखें भरी हुई थीं॥

१९ और जीवधारियों के चलने में चक्र उन के आस पास जाते
थे और जब जीवधारी पृथिवी से उठाये जाते थे तब चक्र भी
२० उठाये जाते थे। जहां कहीं आत्मा को जाना था तहां वे जाते
थे जहां आत्मा को जाना था और उन के सन्मुख चक्र उठाये

२१ जाते थे क्योंकि जीवधारी का आत्मा चक्रों में था। उन के
चलने में चलते थे और उन के ठहरने में ठहरते थे और
जब वे पृथिवी से उठाये जाते थे तब चक्र उन के सन्मुख
उठाये जाते थे क्योंकि चक्रों में जीवधारी का आत्मा था॥
२२ और उन जीवधारियों के सिरों पर आकाश की नाईं भयंकर
स्फटिक के रंग के समान उन के सिरों के ऊपर फैला था।
२३ और आकाश के तले उन के डैने सीधे एक दूसरे की ओर
हर एक के दो दो थे जो इस अलंग को ढांपते थे और हर
एक के दो दो थे जो उन के शरीरों के उस अलंग को ढांपते थे।
२४ और जब वे चलते थे तब मैं ने उन के डैनों का शब्द जैसे
बहुत से पानियों का शब्द सुना सर्वशक्तिमान के शब्द की
नाईं बोली का शब्द सेना के शब्द की नाईं खड़े होने में वे
२५ डैने सिकोड़ लेते थे। और जब वे खड़े होते और पर को
सिकोड़ते थे तब उन के सिर के ऊपर आकाश से शब्द होता
था॥
२६ और उन के सिरों पर के आकाश के ऊपर देखने में नीलकांत
की नाईं एक सिंहासन था और सिंहासन के रूप पर मनुष्य
२७ के रूप की नाईं उस के ऊपर था। और उस के भीतर चारों
ओर आग की नाईं चमकते पीतल की नाईं मैं ने देखा अर्थात्
उस की कटि के स्वरूप ऊपर लों और उस की कटि से नीचे
लों मैं ने आग की नाईं देखा और उस की चारों ओर चमक
२८ थी। उस धनुष की नाईं जो बरसने के दिन मेघ पर होता
है चारों ओर की चमक देखने में वैसी ही थी परमेश्वर का
विभव देखने में ऐसा ही था और देखते ही मैं औंधे मुंह गिरा
और एक के कहने का मैं ने शब्द सुना॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र अपने पांव
२ के बल खड़ा हो और मैं तुझ से कहूंगा। और जब वुह कहता
था तब आत्मा ने मुझ में प्रवेश किया और मुझे पांव के बल
खड़ा किया और जो मुझ से कह रहा था मैं ने उस की सुनी॥
३ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र मैं तुझे
इसराएल के संतानों के पास दंगइत जातिगणों के पास जो
मुझ से फिर गये हैं भेजता हूं उन्हों ने और उन के पितरों
४ ने आज लों मेरा अपराध किया है। क्योंकि वे ढीठ और
कठोर मन के संतान हैं मैं तुझे उन के पास भेजता हूं और
५ उन से कहियो कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है। और चाहे
वे सुनें चाहे न सुनें क्योंकि वे दंगइत घराने हैं तथापि वे
जानेंगे कि एक भविष्यद्वक्ता उन के मध्य में है॥
६ और हे मनुष्य के पुत्र तू उन से मत डर और न उन के
बचनों से डर क्योंकि दंगइत और कांटे तेरे साथ हैं और तू
बिच्छुओं में बास करता है उन के बचनों से मत डर और
उन की दृष्टि से बिस्मित मत हो क्योंकि वे दंगइत घराने हैं।
७ और मेरे बचन उन से कहियो चाहे वे सुनें चाहे न सुनें
क्योंकि वे दंगइत हैं॥
८ परन्तु हे मनुष्य के पुत्र तू मेरा कहना सुन तू उस दंगइत
घराने के समान दंगइत मत हो जो मैं तुझे देता हूं उसे
९ अपना मुंह खोलके खा। और दृष्टि करके क्या देखता हूं कि
एक हाथ मेरी ओर बढ़ाया गया और क्या देखता हूं कि उस
१० में एक पुस्तक का बीड़ा है। और उस ने मेरे आगे उसे खोला
और बाहर भीतर लिखा था उस में बिलाप और शोक और
सन्ताप लिखा था॥

तीसरा पर्व्व ।

१ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र जो तू
पावे सो खा इस बीड़े को खा और जाके इसराएल के घराने
२ से कह । और मैं ने मुंह खोला और उस ने वुह बीड़ा मुझे
३ खिलाया । फिर उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र
उस बीड़े से जो मैं तुझे देता हूं अपने पेट को खिला और
उस्से अपना उदर भर तब मैं ने खाया और वुह मेरे मुंह में
मधु की नाईं मीठा था ॥

४ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू इसराएल
५ के घराने के पास जा और मेरे बचन उन से कह । क्योंकि
उपरी भाषा और कठिन बोली के लोगों के पास तू नहीं भेजा
६ जाता है परन्तु इसराएल के घराने के पास । उपरी भाषा
और कठिन बोली के बहुत से लोगों के पास नहीं जिन के
बचन तू समझ नहीं सक्ता जो मैं तुझे उन के पास भेजता तो
७ वे निश्चय तेरी मानते । परन्तु इसराएल के घराने तेरी न
सुनेंगे क्योंकि मेरी न सुनेंगे क्योंकि इसराएल के सारे घराने ढीठ
८ और कठोर अंतःकरण के हैं। देख उन के मुंह के आगे मैं ने तेरे
मुंह को दृढ़ किया है और तेरे कपाल को उन के कपाल के सन्मुख
९ दृढ़ किया है । मैं ने तेरे कपाल को हीरे की नाईं चक्रमक्र से
भी करेर किया है उन से मत डर और उन के रूप से बिस्मित
मत हो क्योंकि वे दंगइत घराने हैं ॥

१० और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र सारे बचनों
को जो मैं तुझ से कहूंगा उन्हें अपने मन में ग्रहण कर और
११ अपने कानों से सुन । और उठके अपने लोगों के संतानों के
बंधुआइयों के पास जा और उन से कहके बोल कि प्रभु
परमेश्वर यों कहता है चाहे वे सुनें चाहे न सुनें ॥

१२ फिर आत्मा ने मुझे उठा लिया और मैं ने अपने पीछे एक
बड़े सन्नाटे का शब्द सुना कि अपने स्थान से परमेश्वर के
१३ महात्म का धन्यबाद । और मैं ने जीवधारियों के मिड़े हुए
डैनों का शब्द भी सुना और उन के साम्ने के चक्रों का शब्द
१४ और एक बड़े सन्नाटे का शब्द। और आत्मा मुझे उठाके ले गया
और मैं अपने मन की रिस की अति कड़वाहट से गया परन्तु
१५ परमेश्वर का हाथ मुझ पर बलवान था । तब मैं तल्लअबीब
में ख़बुर नदी के तीर बंधुआइयों के पास पहुंचा और जहां
वे बैठे थे तहां मैं बैठ गया और उन में सात दिन लों
आश्चर्य्यित रह गया ॥

१६ और सात दिनों के पीछे यों हुआ कि परमेश्वर का बचन
१७ यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र मैं ने
तुझे इसराएल के घराने के लिये रखवाल बनाया है इस लिये
१८ मेरे मुंह से बचन सुन और मेरी ओर से उन्हें चिता । जब मैं
दुष्ट से कहूं कि तू निश्चय मरेगा और तू उसे न चितावे और
दुष्ट को उस का प्राण बचाने को उस की दुष्टता से फिराने को
न चितावे तो वुह दुष्ट अपनी बुराई में मरेगा परन्तु मैं उस का
१९ लोहू तेरे हाथ से मांगूंगा । तथापि यदि तू दुष्ट को चितावे
और वुह अपनी दुष्टता से और अपने दुष्ट मार्ग से न फिरे तो
वुह अपनी बुराई में मरेगा परन्तु तू ने अपना प्राण छुड़ाया
है ॥

२० फिर जब धर्म्मी अपने धर्म्म से फिर जाये और बुराई करे
और मैं उस के आगे ठोकर रक्खूं तो वुह मरेगा क्योंकि तू ने
उसे नहीं चिताया वुह अपने पाप में मरेगा और उस का धर्म्म
कर्म्म जो उस ने किया स्मरण न किया जायेगा परन्तु मैं उस
२१ के लोहू का पलटा तेरे हाथ से लेऊंगा । परन्तु यदि तू
धर्म्मी को चितावे कि पाप न करे और धर्म्मी पाप न करे तो

वुह चिताये जाने के कारण से अवश्य जीयेगा और तू ने भी
अपना प्राण छुड़ाया ॥
२२ और वहां परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और उस ने
मुझ से कहा कि उठ चैागान को जा और वहां मैं तुझ से
२३ बार्त्ता करूंगा। तब मैं उठके चैागान में गया और क्या
देखता हूं कि परमेश्वर का महात्म उस महात्म की नाईं जो
मैं ने ख़बूर नदी के तीर देखा था खड़ा है और मैं मुंह के
२४ बल गिरा। तब आत्मा ने मुझ में प्रवेश करके मुझे मेरे पांव पर
खड़ा किया और मुझ से कहके बोला कि जा अपने घर में आप को
२५ बंद कर। परन्तु हे मनुष्य के पुत्र देख वे तुझ पर बन्धन
डालेंगे और उन से तुझे बांधेंगे और तू उन में फिर बाहर न
२६ जायेगा। और तुझे गूंगा करने को मैं तेरी जीभ को तेरे तालू
से लगाऊंगा और तू उन का दपटवैया न होगा क्योंकि वे दंगइत
२७ घराने हैं। परन्तु जब मैं तुझ से कहूं तब मैं तेरा मुंह खोलूंगा और
तू उन से कहना कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जो सुनता है
सो सुने और जो न सुने सो न सुने क्योंकि वे दंगइत घराने हैं॥

चैाथा पर्ब्ब।

१ और तू हे मनुष्य के पुत्र एक खपरा ले और उसे अपने
२ आगे रख और उस पर यरूसलम नगर का चित्र उतार। और
उस के विरुद्ध घेर और उस के सन्मुख गढ़ बना और उस
के विपरीत मोर्चा बांध और उस के विरुद्ध छावनी भी कर
३ और उस के विरुद्ध चारों ओर ढाहक लगा। और तू अपने
लिये एक लोहे की कड़ाही ले और अपने और नगर के मध्य
में उस्से एक लोहे की भीत खड़ी कर और उस के विरुद्ध हो
और वुह घेरा जायेगा और तू उस के विरुद्ध उसे घेरना यही
इसराएल के घराने के लिये एक चिन्ह होगा॥

४ और तू अपनी बाईं करवट भी लेटना और इसराएल के
घराने की बुराई उस पर धर तू अपने लेटने के दिनों की
५ गिनती के समान उन की बुराई को सहना। क्योंकि मैं ने
तुझ पर उन की बुराइयों के बरसों के दिनों की गिनती के
समान तीन सौ नब्बे दिन धरे हैं और तू इसराएल के घराने
६ की बुराई को सहेगा। और उन्हें पूरा करके फिर अपने दहिने
करवट लेट जा और चालीस दिन लों यहूदाह के घराने की
बुराई को सहना मैं ने बरस बरस के लिये तुझे एक एक दिन
दिया है॥

७ इस लिये तू यरूसलम के घेरे जाने की ओर मुंह फेर
और तेरी भुजा उघारी हुई और उस के बिरुद्ध भविष्य कह।
८ और देख मैं तुझ पर बंधन डालूंगा और अपने घेरे जाने के
दिनों के समाप्त लों करवट से करवट लों न फिरेगा॥

९ और तू अपने लिये गोहूं और जव और उर्द और तिल और
बाजरा और मसूर ले और उन्हें एक पात्र में रख और अपनी
करवट के दिनों की गिनती के समान उन की रोटी बना तू
१० तीन सौ नब्बे दिन लों उन्हें खाया कर। और तेरा भोजन
जो तू खायेगा तौल के बीस शेकल भर दिन भर में हो तू
११ उसे जब तब खाया करना। और तू एक हिन का छठवां भाग
१२ तौल तौलके जल भी जब तब पीया करना। और तू जव
का फुलका खाना और तू उन की दृष्टि में मनुष्यों के बिष्ठा से
उसे पकाया कर॥

१३ और परमेश्वर ने कहा कि मैं जिधर उन्हें खेदूंगा इसराएल
के संतान इसी रीति से अपनी अशुद्ध रोटी अन्यदेशियों में
खायेंगे॥

१४ तब मैं ने कहा कि हाय प्रभु परमेश्वर देख मेरा प्राण
अशुद्ध नहीं हुआ है क्योंकि तरुणाई से अब लों मरा हुआ

अथवा फाड़ा हुआ मैं ने नहीं खाया है और न घिनित मांस
मेरे मुंह में पड़ा ॥
१५ तब उस ने मुझ से कहा कि देख मैं ने मनुष्य के बिष्ठा
की संती गोइंठे तुझे दिये हैं और तू अपनी रोटी उन पर
पकाया कर ॥
१६ उस ने मुझ से यह भी कहा कि हे मनुष्य के पुत्र देख
मैं यरूसलम में रोटी की टेक तोड़ डालूंगा और वे चिन्ता से
रोटी तौल तौल खायेंगे और आश्चर्य्य से जल नाप नाप पीयेंगे।
१७ जिसतें वे अन्न जल के मारे हों और एक दूसरे से बिस्मित
हों और अपने पाप के मारे छीण हो जावें ॥

पांचवां पर्व्व ।

१ और हे मनुष्य के पुत्र तू एक चोखी छुरी ले और एक
नापित का छुरा ले और उन्हें अपने सिर पर और दाढ़ी पर
२ चला तब तौलने और भाग करने की तुला ले। जब घेरे जाने
के दिन पूरे होवें तब नगर के मध्य में तू तीसरा भाग आग
से जला और तीसरा भाग लेके उस के आस पास छुरी मार
और तीसरा भाग पवन में उड़ा और मैं उन के पीछे तलवार
३ खींचूंगा। और तू उन में से गिनती में थोड़ा सा लेके अपने
४ खूंट में बांध। और उन में से लेके आग में डाल और
आग से उन्हें जला उस्से आग सारे इसराएल के घराने पर
निकलेगी ॥
५ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यही यरूसलम है मैं ने
उसे चारों ओर के जातिगणों और देशों के मध्य में रक्खा है।
६ और जातिगणों से अधिक उस ने मेरे न्यायों को दुष्टता से
और अपने चारों ओर के देशों से मेरी बिधिन को अधिक
पलट डाला है क्योंकि उन्हों ने मेरे न्यायों को नाह किया

७ और मेरी बिधिन पर नहीं चले। इस लिये प्रभु परमेश्वर
यों कहता है इस कारण कि तुम लोग अपनी चारों ओर
के जातिगणों से बढ़ गये और मेरी बिधिन पर न चले
और न मेरे न्यायों को पाला है और न चारों ओर के
८ जातिगणों के न्याय के समान किया है। इस लिये प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि देख मैं हीं तेरे बिरुद्ध हूं और अन्यदेशियों
९ की दृष्टि में तेरे मध्य में न्याय करूंगा। और तेरे सारे घिनित
कार्य्यों के कारण मैं तुझ में वही करूंगा जो मैं ने कभी नहीं
१० किया है और वैसा फिर कधी न करूंगा। इस लिये तेरे मध्य
में पिता पुत्रों को खायेंगे और पुत्र पिताओं को खायेंगे और मैं तुझ
में दंड का न्याय करूंगा और तुम्हारा सारा बचा हुआ चौदिसा
में छितरा देऊंगा॥

११ इस लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोंह
निश्चय जैसा तू ने अपनी सारी तुच्छ और सारी घिनित बस्तुन
से मेरे पवित्रस्थान को अशुद्ध किया है तैसा मैं भी तुझे
घटाऊंगा और मेरी आंख न छोड़ेगी और मैं मया न करूंगा।
१२ तेरा तीसरा भाग मरी से मरेगा और तेरे मध्य में अकाल से
क्षीण हो जायेंगे और तीसरा भाग तेरी चारों ओर की तलवार
से गिरेगा और मैं सारे पवन में तीसरे भाग को छितरा देऊंगा
१३ और उन के पीछे तलवार खींचूंगा। इस रीति से मैं अपनी
रिस पूरी करूंगा और मैं अपना कोप उन पर धरूंगा तब मैं
शान्ति पाऊंगा और जब मैं अपने कोप को उन पर उतार
चुकूंगा तब वे जानेंगे कि मुझ से परमेश्वर ने अपने ज्वलन में
कहा है॥

१४ और मैं तुझे चारों ओर के जातिगणों में और सारे पथिकों
१५ की दृष्टि में उजाड़ और निन्दा बनाऊंगा। जब मैं रिस और
कोप और जलजलाहट और दपट में तुझे दंड देऊंगा तो तू

चारों ओर के जातिगणों के लिये एक निन्दा ओर ठट्ठा ओर
चितावनी ओर आश्चर्य्य होगा मैं ही परमेश्वर ने कहा है।
१६ जब कि मैं उन पर अकाल के बुरे बाण भेजूंगा जो नाश के
लिये होंगे जिन्हें मैं तुम्हें नाश करने को भेजूंगा ओर मैं
अकाल को तुम पर बढ़ाऊंगा ओर तुम्हारी रोटी की टेक
१७ तोड़ूंगा। इसी रीति से मैं तुम पर अकाल ओर क्रूर पशुन को
भेजूंगा ओर वे तुझे निर्वंश करेंगे ओर मरी ओर लोहू तुझ में
से प्रवेश करेंगे ओर मैं तलवार तुझ पर लाऊंगा मैं ही परमेश्वर
ने कहा है॥

छठवां पर्व्व।

१ ओर परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा।
२ कि हे मनुष्य के पुत्र इसराएल के पर्व्वतों की ओर अपना मुंह
फेर ओर उन के विरुद्ध भविष्य कह॥
३ ओर बोल कि हे इसराएल के पर्व्वतो प्रभु परमेश्वर का
बचन सुनो प्रभु परमेश्वर पर्व्वतों को ओर टीलों को ओर नदियों
को ओर तराइयों को कहता है कि देखो मैं ही तुम पर तलवार
४ लाके तुम्हारे ऊंचे स्थानों को नाश करूंगा। ओर तुम्हारी
बेदियां उजड़ जायेंगी ओर तुम्हारी मूर्त्तें तोड़ी जायेंगी ओर
तुम्हारी प्रतिमा के आगे मैं तुम्हारे जूझे हुओं को डाल देऊंगा।
५ ओर मैं इसराएल के संतानों की लोथ उन की प्रतिमाओं
के आगे रक्खूंगा ओर मैं तुम्हारे हाड़ों को तुम्हारी बेदियों
६ की चारों ओर छितराऊंगा। तुम्हारे सारे निवासों में नगर
खंड़र किये जायेंगे ओर ऊंचे स्थान उजाड़े जायेंगे जिसतें
तुम्हारी बेदियां खंड़र किई जायें ओर उजाड़ी जायें ओर
तुम्हारी प्रतिमा तोड़ी जायें ओर न रहें ओर तुम्हारी मूर्त्तें
७ काटी जायें ओर तुम्हारे कार्य्य मिटाये जायें। ओर जूझे हुए

लोग तुम्हारे मध्य में गिरेंगे और तुम लोग जानोगे कि मैं
परमेश्वर हूं ॥
८ तथापि मैं बचे हुओं को छोड़ूंगा जिसतें जब कि तुम लोग
देशों में छिन्न भिन्न होगे तब जातिगणों में तलवार से बचे
९ हुए तुम्में होवें। और जो तुम्में से बच निकलेंगे सो जातिगणों
में जहां जहां वे बंधुआई में पहुंचाये जायेंगे मुझे स्मरण
करेंगे क्योंकि मैं उन के बेश्याई मन से जो मुझ से फिर गया
है और उन की मूर्त्तिन के पश्चातगामी आंखों से टूटा हुआ
हूं और वे अपनी सारी बुराइयों के लिये जो उन्हों ने अपने
१० सारे घिनितों में किई हैं वे आप से घिनावेंगे। और वे जानेंगे
कि मैं परमेश्वर हूं और मैं ने यह बुराई उन पर लाने को
बृथा न कहा ॥
११ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपना हाथ पीट और अपना
पांव दे दे मार और कह कि इसराएल के घराने की बुरी
घिनितों के लिये हाय क्योंकि वे तलवार से और अकाल से
१२ और मरी से गिरेंगे। जो दूर है सो मरी से मरेगा और जो
पास है सो तलवार से गिरेगा और जो रह गया है और घेरा
हुआ है सो अकाल से मरेगा इस रीति से मैं अपना कोप उन
पर पूरा करूंगा ॥
१३ और जब उन के जूझे हुए उन की मूर्त्तिन में उन की बेदी
की चारों ओर हर एक ऊंचे पर्व्वत पर और पर्व्वतों के सारे
टीलों पर और हर एक हरे पेड़ तले और हर एक मोटे बुत्म
वृक्ष तले जिस स्थान में उन्हों ने अपनी सारी प्रतिमा के लिये
सुगंध जलाया था होंगे तब तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर
१४ हूं। इस रीति से मैं उन पर अपना हाथ बढ़ाऊंगा और उन
के देश को उन के सारे निवासों में दिबलः बन से अधिक
उजाड़ करूंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ और परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा ।
२ और तू हे मनुष्य के पुत्र प्रभु परमेश्वर इसराएल के देश
से भी यों कहता है कि एक अंत देश के चारों कोनों पर
३ अंत आया है । अब तुझ पर अंत आ पहुंचा है और मैं
अपनी रिस तुझ पर भेजूंगा और तेरी चालों के समान तेरा
बिचार करूंगा और तेरे सारे घिनितों का पलटा तुझे देऊंगा ।
४ और मेरी आंख तुझे न छोड़ेगी और मैं मया न करूंगा क्योंकि
तेरी चालों का पलटा तुझे देऊंगा और तेरे घिन तेरे मध्य में
होंगे और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥
५ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि बुराई एक बुराई देखो वुह
६ आई है । अंत पहुंचा है अंत पहुंचा है जो तेरे बिरुद्ध
७ जागता है देख वुह आ पहुंचा है । हे देश के निवासी पारी
तुझ पर पहुंची है समय पहुंचा है घबराहट का दिन पास
८ आया है और पर्ब्बतों का प्रतिशब्द नहीं । अब मैं तुझ पर
अपना कोप उंडेलूंगा और अपनी रिस तुझ पर पूरी करूंगा
और तेरी चालों के समान तेरा बिचार करूंगा और तेरे सारे
९ घिनितों का पलटा तुझे देऊंगा । और मेरी आंख न छोड़ेगी
और मया न करूंगा तेरी चालों और तेरे घिनितों के समान
जो तेरे मध्य में हैं मैं तुझे पलटा देऊंगा और तुम लोग
जानोगे कि मैं दंडदायक परमेश्वर हूं ॥
१० वुह दिन देखो देखो वुह पहुंचा है पारी निकल चली है
११ छड़ी फूली है अहंकार में कली निकली है । अंधेर दुष्टता की
छड़ी बन गया है न उन में से और न उन के दंगल से और
न उन के जथा से कोई बचेगा और न उन के लिये शोक
१२ किया जायगा । समय आया है दिन आ पहुंचा किनवैया

आनन्द न करे और न बेचवैया शोक करे क्योंकि उस की
१३ सारी मंडली पर कोप है । क्योंकि बेचवैया बेचे हुए की ओर
न फिरेगा यद्यपि अब लों जीवतों के मध्य में उस का जीवन
होता क्योंकि दर्शन जो उन की सारी मंडलियों के विषय में
है न लौटेगा और न कोई अपनी बुराई के जीवन में आप
१४ को दृढ़ करेगा । उन्हों ने तुरही फूंकी और सब लैस हैं परन्तु
कोई संग्राम को नहीं जाता क्योंकि उस की सारी मंडली पर
१५ मेरा कोप है । तलवार बाहर और अकाल और मरी भीतर
खेत में का तलवार से मारा जायेगा और नगर में का अकाल
और मरी से भक्षा जायेगा ॥
१६ परन्तु जो उन में से बच निकलेंगे सो बच निकलें और
हर एक अपनी अपनी बुराई के लिये तराइयों के पंडुकों की
१७ नाईं सब के सब पर्व्वतों पर कूकू करेंगे । सारे हाथ दुर्बल
१८ होंगे और सारे घुटने पानी हो जायेंगे । और वे अपने पर
टाट लपेटेंगे और भय उन्हें ढांपेगा और सभों के मुंह पर
१९ लाज होगी और सभों के सिरों पर मुंडापन । वे अपनी अपनी
चांदी सड़कों में फेंक देंगे और उन का सोना मैल हो जायगा
और परमेश्वर के क्रोध के दिन में उन का चांदी सोना उन्हें
न बचा सकेगा वे अपने प्राण को तृप्त न करेंगे न अपने पेट
२० भरेंगे क्योंकि वुह उन के ठोकर खाने की बुराई है । और वे
उस की सुंदरता के आभूषण को घमंड के लिये रखते हैं और
अपने घिनितों की और अपनी तुच्छ बस्तुन की मूरतें उस में
२१ बनाते हैं इस लिये मैं उसे उन के लिये मैल करूंगा । और
मैं उसे अहेर के लिये परदेशियों के हाथ और लूट के लिये
२२ पृथिवी के दुष्टों को सौंपूंगा और वे उसे अशुद्ध करेंगे । मैं
अपना मुंह भी उन से फेरूंगा और वे मेरा गुप्तस्थान अशुद्ध
करेंगे क्योंकि बटमार उस में पैठके उसे अशुद्ध करेंगे ॥

२३ एक सीकर बना क्योंकि देश लोहू के अपराधों से और
२४ नगर अंधेर से भरा हुआ है। इस लिये मैं अति बुरे
अन्यदेशियों को लाऊंगा और वे उन के घर को बश में करेंगे
और मैं बलवंतों का बिभव मिटाऊंगा और उन के पवित्रस्थान
२५ अशुद्ध किये जायेंगे। नाश आता है और वे मिलाप चाहेंगे
२६ और न होगा। दुर्दशा पर दुर्दशा आवेगी और चर्चा पर चर्चा
होगी तब वे भविष्यद्वक्ता से दर्शन चाहेंगे और याजक से
२७ व्यवस्था और प्राचीनों से मंत्र जाता रहेगा। राजा शोक करेगा
और राजपुत्र घबराहट से पहिराया जायेगा और देश के लोगों
के हाथ कांपेंगे उन की चाल के समान मैं उन से करूंगा और
उन के बिचार के समान उन से बिचार करूंगा और वे जानेंगे
कि मैं परमेश्वर हूं॥

आठवां पर्व्व।

१ और छठवें बरस के छठवें मास की पांचवी तिथि में ऐसा
हुआ कि मैं अपने घर में बैठा था और यहूदाह के प्राचीन
मेरे आगे बैठे थे कि प्रभु परमेश्वर का हाथ वहां मुझ पर पड़ा।
२ तब मैं ने दृष्टि किई और क्या देखता हूं कि आग का सा
सरूप उस की कटि से नीचे लों आग की सी और उस की
कटि से ऊपर लों चमक की सी चमकते हुए पीतल के रंग
३ की नाईं। और उस ने हाथ का सा डौल बाहर निकाला और
मेरे सिर की चोटी पकड़ लिई और आत्मा ने मुझे अधड़ में
उठा लिया और ईश्वरीय दर्शनों से मुझे यरूसलम में उत्तर
की ओर के भीतर के फाटक के द्वार पर पहुंचाया जहां झल्ल
४ की मूर्त्ति का आसन था जो झल्ल करावती है। और क्या
देखता हूं कि जो दर्शन मैं ने चौगान में देखा था वैसा ही
इसराएल के ईश्वर का बिभव वहां था॥

५ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र उत्तर के
मार्ग की ओर अपनी आंखें उठा सो मैं ने उत्तर के मार्ग की
ओर अपनी आंखें उठाईं और क्या देखता हूं कि झल की यही
मूर्त्ति उत्तर की ओर यज्ञबेदी के फाटक की पैठ में थी॥
६ फिर उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू उन की
क्रिया देखता है अर्थात् बड़े बड़े घिनित जो इसराएल के
घराने यहां करते हैं जिसतें मैं अपने पवित्रस्थान से दूर जाऊं
परन्तु तू फिर इन से अधिक घिनित कार्य्य देखेगा॥
७ तब वुह मुझे आंगन के द्वार पर लाया और देखते हुए मैं
८ ने देखा और देखो भीत में एक छेद। तब उस ने मुझ से
कहा कि हे मनुष्य के पुत्र अब भीत खोद तब मैं ने भीत खोदी
९ और एक द्वार देखा। फिर उस ने मुझ से कहा कि भीतर जा
१० और जो जो घिनित वे यहां करते हैं उन्हें देख। तब मैं ने
भीतर जाके देखा और क्या देखता हूं कि चारों ओर भीत पर हर
एक रेंगवैये वस्तु के रूप और घिनित पशु और इसराएल के
११ घराने की सारी मूर्त्तिन के चित्र हैं। और इसराएल के घराने
के प्राचीनों के सत्तर जन उन के आगे खड़े हैं और उन के
मध्य में साफ़न का बेटा याज़नियाह खड़ा है हर एक जन
धूपावरी हाथ में लिये हुए और धूप का एक घना मेघ उठ
रहा है॥
१२ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र क्या तू ने
देखा है जो इसराएल के घराने के प्राचीन अंधियारे में हर
एक जन अपनी अपनी मूर्त्तिन की कोठरियों में करता है क्योंकि
वे कहते हैं कि परमेश्वर हमें नहीं देखता परमेश्वर ने तो
१३ पृथिवी को त्यागा है। उस ने मुझ से यह भी कहा कि तू
फिर इन से अधिक घिनित कर्म्म देखेगा॥
१४ तब वुह परमेश्वर के मन्दिर की उत्तर ओर के फाटक पर

मुझे ले आया और क्या देखता हूं कि स्त्रियां तम्मुज़ के लिये
वहां बैठके बिलाप कर रही हैं॥
१५ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू ने यह
देखा है तू फिर इन से भी अधिक घिनित देखेगा॥
१६ फिर वुह मुझे परमेश्वर के मन्दिर के भीतर के आंगन में
लाया और क्या देखता हूं कि परमेश्वर के मन्दिर के ओसारे
और बेदी के मध्य के द्वार पर एक पचीस जन पीठ परमेश्वर
के मन्दिर की ओर किये हुए और उन के मुंह पूरब की ओर
और पूरब की ओर वे सूर्य्य पूजते थे॥
१७ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र क्या तू ने
यह देखा है क्या यहूदाह के घराने के लिये यह सहज बात
है कि वे घिनित कार्य्य करें जो यहां करते हैं क्योंकि उन्हों
ने देश को अंधेर से भर दिया है और मुझे फिर रिस दिलाते
१८ रहते हैं और देखो वे अपनी नाक पर डाली लगाते हैं। इस
लिये मैं भी कोप से व्यवहार करूंगा मेरी आंख न छोड़ेगी
और मया न करूंगा और यद्यपि वे मेरे कानों में चिल्ला चिल्ला
रोवें तथापि मैं उन की न सुनूंगा॥

नवां पर्ब्ब।

१ उस ने यह कहते हुए बड़े शब्द से भी मेरे कानों में पुकारा
कि जिन के बश में नगर है उन्हें निकट लाओ हर एक जन
२ अपना नाशक हथियार अपने हाथ में लिये हुए। और क्या
देखता हूं कि छः जन ऊपर के फाटक के मार्ग में से जो
उत्तर के अलंग है चले आये और हर एक जन के हाथ में
घात का हथियार और उन में से एक पर सूती बस्त्र था और
उस की कटि पर लेखक का मसिपात्र और वे भीतर गये और
३ पीतल की बेदी के लग खड़े हुए। और इसराएल के ईश्वर का

विभव करूब के ऊपर से जिस पर वुह था उठके मन्दिर की
डेहरी पर गया और उस ने उस जन को जो सूती वस्त्र
पहिने था जिस की कटि में लेखक का मसिपाच था पुकारा।
४ और परमेश्वर ने उस्से कहा कि नगर के मध्य में से यरूसलम
के मध्य में से जा और हर एक जन के कपाल पर जो उस के
मध्य के सारे घिनित कार्य्यों के लिये ठंडी सांस भरते और
५ रोते हैं चिन्ह कर। और उस ने मेरे सुन्ने में औरों से कहा कि
तुम लोग उस के पीछे पीछे नगर के आरंपार जाओ और मारो
६ तुम्हारी आंख न छोड़े और मया मत करो। पुरनियों को युवों को
और कुंवारियों को और नन्हे बालकों और स्त्रियों को नाश लों
घात करो परन्तु जिन पर चिन्ह है उन में से किसी जन के
पास मत जाओ और मेरे पविचस्थान से आरंभ करो तब उन्हों
७ ने प्राचीन जनों से जो घर के आगे थे आरंभ किया। और
उस ने उन से कहा कि घर को अशुद्ध करो और जूझे हुओं
से आंगन को भर देओ और उन्हों ने निकलके नगर में घात
किया॥

८ और जब वे उन्हें घात कर रहे थे और मैं छोड़ा गया
तब यों हुआ कि मैं मुंह के बल गिरा और चिल्लाके कहा कि
हाय प्रभु परमेश्वर अपने कोप को यरूसलम पर उंडेलते हुए
क्या इसराएल के सारे बचे हुओं को तू नाश करेगा॥

९ तब उस ने मुझ से कहा कि यहूदाह और इसराएल के
घराने की बुराई अत्यन्त बड़ी है और देश लोहू से भरा हुआ
है और नगर अन्याय से भरा है क्योंकि वे कहते हैं कि परमेश्वर
१० ने पृथिवी को त्यागा है और परमेश्वर नहीं देखता। और मैं
भी जो हूं मेरी आंख न छोड़ेगी मया न करूंगा मैं ने उन के
सिर पर उन की चाल का पलटा दिया है॥

११ और क्या देखता हूं कि जो जन सूती वस्त्र पहिने था

जिस की कटि पर मसिपात्र था उस ने यह कहके उत्तर दिया
कि तेरी आज्ञा के समान में ने किया है ॥

दसवां पर्व्व ।

१ जब मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखता हूं कि करोबियों के
सिर के ऊपर के आकाश में उन के ऊपर नीलकांत मणि का
२ सा दिखाई दिया जो देखने में सिंहासन का सा था । और
वुह सूती वस्त्र पहिने हुए जन से कहके बोला कि करूब के
नीचे चक्रों के मध्य में जा और अपने चुल्लू को करोबियों के
मध्य से आग के अङ्गारे से भर और नगर के ऊपर छिड़क
और वुह मेरे देखने में चला गया ॥
३ जब वुह जन भीतर गया तब करोबी घर के दहिने
अलंग खड़े हुए और भीतर का आंगन मेघ से भर गया ।
४ तब परमेश्वर का विभव करूब पर से उठाया गया और घर
की डेहरी पर हुआ और घर मेघ से भर गया और परमेश्वर
५ के विभव की चमक से आंगन पूर्ण हुआ । और करोबियों के
परों का शब्द बाहर के आंगन लों सुना गया सर्वशक्तिमान
ईश्वर के शब्द की नाईं जब वुह बोलता है ॥
६ और यों हुआ कि जब उस ने सूती वस्त्र पहिने हुए जन
को यह कहके आज्ञा किई कि करोबियों के मध्य के चक्रों के
बीच में से आग ले तब वुह भीतर जाके चक्रों के लग खड़ा
७ हुआ । तब करोबियों के मध्य में से एक करूब ने अपना
हाथ उस आग की ओर बढ़ाया जो करोबियों के मध्य में थी
और लेके सूती वस्त्र पहिने हुए जन के हाथ में रक्खा जो
८ लेके बाहर गया । और करोबियों में उन के पंख के तले
मनुष्य के हाथ का डौल दिखाई दिया ॥
९ और जब मैं ने दृष्टि किई तो क्या देखता हूं कि करोबियों

के लग चार चक्र एक करूब के लग एक चक्र और दूसरे करोब
के लग दूसरा चक्र और चक्र देखने में मरकत मणि का सा
१० दिखता था। और चारों एक सा दिखाई देते थे जैसा कि चक्र
११ के मध्य में चक्र। जब वे चलते थे तब वे अपने चारों अलंग
पर जाते थे और चलने में वे फिरते न थे परन्तु जिधर सिर
का रुख था उधर ही वे उस के पीछे पीछे जाते थे चलने में
१२ वे फिरते न थे। और उन की सारी देह और उन की पीठ
और उन के हाथ और उन के डैने और चक्र चारों और आंखों
१३ से भरे थे अर्थात् उन चारों के चक्र। और चक्र जो थे वे मेरे
१४ सुन्ने में पुकारे गये कि हे चक्र। और हर एक के चार चार
मुंह थे पहिला मुंह एक करूब का मुंह और दूसरा मुंह मनुष्य
का मुंह और तीसरा सिंह का मुंह और चौथा गिद्ध का मुंह।
१५ और करूब उठाये गये इसी जीवधारी को मैं ने ख़बूर नदी
के लग देखा था॥

१६ और जब करोबी चलते थे तब चक्र उन के लग जाते थे
और जब करोबी पृथिवी पर से उठने को पंख उठाते थे तब
१७ वे चक्र भी उन के पास से न फिरते थे। उन के ठहरने में
ठहरते थे और जब वे उठाये जाते थे तब आप को उठाते
थे क्योंकि जीवधारी का आत्मा उन में था॥

१८ तब परमेश्वर का विभव घर के डेहरी पर से जाता रहा
१९ और करोबियों के ऊपर ठहर गया। और करोबियों ने अपने
डैने उठाये और मेरे देखने में पृथिवी पर से उठ गये वे जब
निकल गये तब चक्र भी उन के लग थे और हर एक परमेश्वर
के मन्दिर के पूरब फाटक के द्वार पर खड़ा हुआ और इसराएल
२० के ईश्वर का विभव उन के ऊपर था। मैं ने इसी जीवधारी
को ख़बूर नदी के लग इसराएल के ईश्वर के नीचे देखा था
२१ और मैं ने जाना कि वे करोबी थे। हर एक के चार चार

मुंह थे और हर एक के चार चार डैने और उन के डैने के
२२ नीचे मनुष्य के हाथ सा। और वे ही और उन के स्वरूप
और उन के मुंह वे ही मुंह थे जो मैं ने ख़बूर नदी के लग
इसराएल के ईश्वर के नीचे देखा था और मैं ने जाना कि वे
२३ करोबी थे। हर एक के चार चार मुंह थे और हर एक के
चार चार डैने और उन के डैने के नीचे मनुष्य के हाथ सा।
२४ वे ही और उन के स्वरूप और उन के मुंह वे ही मुंह थे जो
मैं ने ख़बूर नदी के लग देखा था उन में से हर एक बराबर
आगे बढ़ता था॥

ग्यारहवां पर्ब्ब।

१ और आत्मा ने मुझे उठाके परमेश्वर के मन्दिर के पूरब
ओर के पूरब फाटक पर पहुंचाया और क्या देखता हूं कि
पचीस पुरुष फाटक के द्वार पर हैं जिन में मैं ने लोगों के
अध्यक्ष अज़ूर के बेटे याज़नियाह और बिनायाह के बेटे
२ फ़लतियाह को देखा। तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य
के पुत्र ये ही लोग बुरी जुगत बांधते हैं और इस नगर में
३ कुमंत्र देते हैं। जो कहते हैं कि पास नहीं है हम घर बनावें
४ वुह कड़ाहा और हम मांस। इस लिये उन के बिरुद्ध भविष्य
५ कह हे मनुष्य के पुत्र भविष्य कह। तब परमेश्वर का आत्मा
मुझ पर पड़ा और मुझ से कहा कि बोल परमेश्वर यों कहता
है कि हे इसराएल के घराने तुम लोगों ने यों कहा है और
मैं हर एक बात को जो तुम्हारे मन में आती है जानता हूं।
६ तुम ने अपने जूझे हुओं को इस नगर में बढ़ाय है और उस
७ की सड़कों को जूझे हुओं से भर दिया है। इस लिये प्रभु
परमेश्वर यों कहता है कि तुम्हारे जूझे हुए जिन्हें तुम ने इस
के मध्य में धरा है सो मांस हैं और वुह कड़ाहा परन्तु मैं

८ तुम्हें उस के मध्य में से निकालूंगा। तुम लोग तलवार से
डरे हो और प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं तुम पर तलवार
९ लाऊंगा। और मैं तुम्हें उस के मध्य में से निकाल लाऊंगा
और तुम्हें परदेशियों के हाथ में सौंपूंगा और तुम्हें दंड देऊंगा।
१० तुम लोग तलवार से गिरोगे मैं इसराएल के सिवाने में तुम्हारा
११ न्याय करूंगा और तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं। वुह
तुम्हारा कड़ाहा न होगा और न तुम लोग उस में के मांस
१२ मैं इसराएल के सिवाने में तुम्हारा न्याय करूंगा। और तुम
लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं कि तुम लोग मेरी विधिन पर
नहीं चले और न मेरे विचारों को माना है परन्तु चारों ओर
के अन्यदेशियों की रीति पर चले हो॥

१३ और मेरे भविष्य कहने से यों हुआ कि विनायाह का बेटा
फ़लतियाह मर गया तब मैं मुंह के बल गिरा और बड़े शब्द
से चिल्लाके कहा कि हाय प्रभु परमेश्वर क्या तू इसराएल के
बचे हुओं को सर्वथा मिटा डालेगा॥

१४ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा।
१५ कि हे मनुष्य के पुत्र तेरे भाई तेरे ही भाईबन्द तेरे कुनबे
के जन और इसराएल के सारे घराने सब के सब जो हैं उन
से यरूसलम के निवासियों ने कहा है कि परमेश्वर से परे हो
जाओ देश हमारे वश में किया गया है॥

१६ इस लिये कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब मैं
ने उन्हें अन्यदेशियों में दूर फेंका है और जब मैं ने उन्हें
देशों में छिन्न भिन्न किया है तब जिस जिस देश में वे जायेंगे
१७ मैं उन के लिये थोड़े समय लों पवित्रस्थान हूंगा। इस लिये
कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं तुम्हें लोगों में से एकट्ठा
करूंगा और तुम लोग जिस जिस देश में बिथराये गये हो मैं
उन में से तुम्हें बटोरूंगा और इसराएल का देश तुम्हें देऊंगा॥

१८ और वे वहां आवेंगे और वे वहां से सारी तुच्छता और सारी
१९ घिनितों को दूर करेंगे। और मैं उन्हें एक ही मन देऊंगा।
और तुम्में एक नया आत्मा डालूंगा और उन के मांस में से
पत्थरैला मन निकालूंगा और उन में एक मांसिक मन डालूंगा।
२० जिसतें वे मेरी बिधिन पर चलें और मेरी व्यवस्थों को पालन करें
और उन्हें मानें और वे मेरे लोग होंगे और मैं उन का ईश्वर हूंगा॥
२१ परन्तु जिन का मन अपनी तुच्छ और घिनित वस्तुन पर
चलता है प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं उन की चाल को
पलटा उन्हीं के सिर पर देऊंगा॥
२२ तब करोबियों ने अपने अपने पंख उठाये और चक्र उन
के लग और इसराएल के ईश्वर का बिभव उन के ऊपर था।
२३ और परमेश्वर का बिभव नगर के मध्य में से उठ गया और
नगर के पूरब अलंग पहाड़ पर खड़ा हुआ॥
२४ तब आत्मा ने मुझे उठाया और ईश्वर का आत्मा दर्शन
से मुझे कसदीम में बंधुओं के पास लाया और जो दर्शन में
२५ ने देखा सो ऊपर जाता रहा। फिर जो परमेश्वर ने मुझे
दिखाया था सो मैं ने भी बंधुओं को कह सुनाया॥

बारहवां पर्व्व।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।
२ कि हे मनुष्य के पुत्र तू एक दंगइत लोगों में बास करता है
जो देखने की आंख रखते हैं पर नहीं देखते और सुन्ने के
कान रखते हैं पर नहीं सुनते क्योंकि वे दंगइत घराने हैं।
३ इस लिये हे मनुष्य के पुत्र सिधारने के लिये सामग्री सिद्ध कर
और उन के देखते ही दिन को सिधार और तू अपने स्थान
से दूसरे स्थान को उन के देखते ही सिधार यद्यपि वे दंगइत
४ घराने हैं क्या जानें कि वे सोचें। और तू दिन में उन के

आगे अपनी सामग्री को सिधारने की सामग्री के समान निकाल
ला और सांझ को उन के देखते देखते उन के समान निकल
५ जा जो सिधारने को निकल जाते हैं । उन के देखते ही भीत
६ को खोदके उस में से निकाल ले जा । उन के देखते ही तू
उसे अपने कंधे पर उठा और गोधूली में ले जा तू अपना मुंह
ढांप ले जिसतें भूमि न देखे क्योंकि इसराएल के घराने के लिये
मैं ने तुझे एक चिन्ह बना रक्खा है ॥

७ और आज्ञा के समान मैं ने किया और सिधारने के लिये
सामग्री के समान मैं ने दिन को अपनी सामग्री बाहर निकाली
और सांझ को मैं ने अपने हाथ से अपने लिये भीत खोदी
और मैं ने गोधूली में उसे निकाला और उन के देखते ही
कांधे पर उठा लिया ॥

८ और बिहान को यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे
९ पास पहुंचा । कि हे मनुष्य के पुत्र क्या इसराएल के घराने
ने वुह दंगइत घराने ने तुझ से नहीं कहा कि तू क्या करता
१० है । उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यरूसलम
के अध्यक्ष का और उन में के इसराएल के सारे घराने का यह
बोझ है ॥

११ कह कि मैं तुम्हारे लिये चिन्ह हूं जैसा मैं ने किया है
तैसा उन से किया जायेगा वे सिधारके बंधुआई में जायेंगे ।
१२ और जो अध्यक्ष उन में है सो अपने कंधे पर उठाये हुए
गोधूली में निकल जायेगा वे बाहर ले जाने को भीत खोदेंगे
और जिसतें आंखों से भूमि न देखे वुह अपना मुंह ढांपेगा ।
१३ मैं अपना जाल भी उस पर बिछाऊंगा और वुह मेरे फंदे में
बझ जायेगा और मैं उसे कसदियों के देश में बाबुल को
१४ लाऊंगा परन्तु वुह उसे न देखेगा और वहां मरेगा । और मैं
उस के आस पास के सारे सहायकों को और उस की सारी

जथाओं को हर एक दिशा में छिन्न भिन्न करूंगा और मैं उन
१५ के पीछे तलवार खींचूंगा। और जब मैं उन्हें जातिगणों में
छिन्न भिन्न करूंगा और देशों में उन्हें बिथराऊंगा तब वे जानेंगे
कि मैं परमेश्वर हूं॥
१६ परन्तु मैं तलवार से और अकाल से और मरी से उन में
से गिनती के थोड़े जनों को छोड़ूंगा जिसतें वे अपनी घिनितों
को अन्यदेशियों में जहां जहां वे पहुंचें प्रगट करें और वे
जानें कि मैं परमेश्वर हूं॥
१७ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा।
१८ हे मनुष्य के पुत्र तू थर्थराते हुए अपनी रोटी खा और कांपते
१९ हुए चिन्ता के साथ अपना जल पी। और देश के लोगों से
कह कि यरूसलम के वासियों के और इसराएल देशियों के
विषय में प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि वे अपनी रोटी चिन्ता
के साथ खायेंगे और अपना जल आश्चर्य्य के साथ पीयेंगे
जिसतें उस के सारे वासियों के उपद्रव के कारण उन के देश
२० अपनी भरपूरी से उजड़ जायें। और बसे हुए नगर उजाड़े
जायेंगे और देश उजाड़ा जायेगा और तुम जानोगे कि मैं
परमेश्वर हूं॥
२१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा।
२२ हे मनुष्य के पुत्र तुम लोग इसराएल के देश में क्या कहावत
रखते हो कि तुम कहते हो कि दिन बढ़ गये और हर एक
२३ दर्शन घट गया। इस लिये उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों
कहता है कि मैं इस कहावत को मिटा डालूंगा और वे इसराएल
में उसे कहावत के समान फिर न कहा करेंगे परन्तु उन से
कहो कि दिन और हर एक दर्शन का वचन समीप है।
२४ क्योंकि फिर बृथा दर्शन अथवा भुलाने का मंत्र इसराएल के
२५ घराने में न होगा। क्योंकि मैं परमेश्वर कहूंगा और जो वचन

में कहूंगा सो पहुंचेगा वुह विलंब न करेगा क्योंकि हे दंगइत
घराने प्रभु परमेश्वर कहता है कि तुम्हारे दिनों में मैं बचन
कहूंगा और पूरा करूंगा ॥
२६ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा ।
२७ कि हे मनुष्य के पुत्र देख इसराएल के घराने यह कहते हैं
कि जो दर्शन वुह देखता है सो बहुत दिनों के लिये है और
वुह दूर समयों का भविष्य कहता है ॥
२८ इस लिये उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि
मेरा कोई बचन फिर बिलंब न करेगा परन्तु प्रभु परमेश्वर कहता
है कि जो मैं ने कहा सो होगा ॥

तेरहवां पर्व्व ।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा ।
२ हे मनुष्य के पुत्र इसराएल के भविष्यद्वक्तों के विरुद्ध जो भविष्य
कहते हैं भविष्य कहके उन से बाेल और जो अपने अपने
मन से भविष्य कहते हैं उन से कह कि परमेश्वर का वचन
३ सुनो। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मूर्ख भविष्यद्वक्तों पर संताप
जो अपने मन के समान चलते हैं और कुछ नहीं देखा है ।
४ हे इसराएल तेरे भविष्यद्वक्ते खंडरों में गीदड़ों की नाईं हैं ।
५ तुम लोग दरारों पर चढ़ नहीं गये और परमेश्वर के दिन में
संग्राम में खड़ा होने को इसराएल के घराने के लिये वाड़े को
६ वाड़ित न किया । वे झूठ और मिथ्या दैवज्ञता देखके कहते
हैं कि परमेश्वर कहता है और परमेश्वर ने उन्हें नहीं भेजा है
और उन्हों ने औरों को आशा दिई है जिसतें बचन को स्थिर
७ करें। क्या तुम ने झूठा दर्शन नहीं देखा क्या तुम ने मिथ्या
दैवज्ञता न कही यद्यपि तुम लोग कहते हो कि परमेश्वर ने
कहा है यद्यपि मैं ने नहीं कहा ॥

८ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोगों ने जो
व्यर्थ कहा और मिथ्या देखा इस लिये देखो प्रभु परमेश्वर कहता
९ है कि मैं तुम्हारे बिरुद्ध हूं। और मेरा हाथ भविष्यद्वक्तों पर
जो व्यर्थ दर्शन देखते और मिथ्या मंत्र कहते हैं फैलेगा वे
मेरे लोगों के सभा में न रहने पावेंगे न वे इसराएल के घराने
के लिखे हुए में लिखे जायेंगे और न वे इसराएल के देश में
१० पहुंचेंगे और तुम जानोगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूं। इस कारण
हां इस कारण कि उन्हों ने मेरे लोगों को भरमाया है और
कहा है कि कुशल और कुशल न था और किसी ने भीत उठाई
११ और देखो दूसरों ने उसे कच्चा पोता है। जो कच्चा पोत्ते हैं
उन से कह कि गिरेगी उबली हुई झड़ी होगी और तुम हे
१२ बड़े बड़े ओले पड़ोगे और आंधी उसे तोड़ेगी। और देखो जब
वुह भीत गिरेगी तब तुम से कहा न जायेगा कि अब वुह
१३ पोतना कहां है जिस्से तुम ने पोता है। इस लिये प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि मैं अपने कोप में आंधी से उसे फाड़ूंगा और
मेरी रिस में उबली हुई झड़ी होगी और नाश करने को मेरे
१४ कोप में बड़े बड़े ओले पड़ेंगे। यों मैं भीत को जिसे तुम ने
कच्ची पोतनी से पोता है तोड़ूंगा और उसे भूमि लों गिराऊंगा
यहां लों कि उस की नेव उघारी जायेगी और वुह गिरेगी और
तुम उस के बीच नष्ट होओगे और जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं॥
१५ यों मैं उस भीत पर और उन पर जिन्हों ने कच्चा पोता
है अपना क्रोध पूरा करूंगा और तुम से कहूंगा कि न भीत
१६ न उस के पोतवैये हैं। इसराएल के भविष्यद्वक्ते जो यरूसलम
के बिषय में भविष्य कहते हैं और उस के लिये कुशल का
दर्शन देखते हैं और प्रभु परमेश्वर कहता है कि कुशल नहीं॥
१७ और तू हे मनुष्य के पुत्र अपने लोगों की पुत्रियों के बिरुद्ध
जो अपने ही मन से भविष्य कहती हैं अपना मुंह फेर और

१८ उन के बिरुद्ध भविष्य कह। और बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता
है कि संताप तुम पर जो सारी केहुनियों के लिये उसीसा सीती
हो और प्राण को अहेर करने के लिये हर एक डील के सिर
के लिये बिछौना बनाती हो क्या तुम मेरे लोगों के प्राण को
अहेर करोगी और क्या तुम अपनी ओर के प्राणियों को बचाओगी।
१९ और तुम लोग मुट्ठी भर भर जव के लिये और रोटी के टुकड़ों
के लिये मुझे मेरे लोगों में अशुद्ध करोगी कि तुम उन प्राणों
को घात करती हो जिन का मरना न था और उन प्राणों को
जीने देती हो जिन को जीना न था कि तुम मेरे लोगों से जो
झूठ सुनते हैं झूठ बोलती हो॥
२० इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देखो मैं तुम्हारे
उसीसों के बिरुद्ध हूं जिन से तुम प्राणों को उड़ाने के लिये
अहेरती हो और जिन प्राणों को उड़ाने के लिये तुम अहेरती
हो मैं उन्हें तुम्हारे बाहों से फाड़ूंगा और प्राणों को छुड़ाऊंगा।
२१ और मैं तुम्हारे बिछौनों को भी फाड़ डालूंगा और अपने लोगों
को तुम्हारे हाथ से छुड़ाऊंगा और अहेर के लिये वे फिर
तुम्हारे हाथ में न होंगे और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं।
२२ इस कारण कि तुम लोगों ने धर्म्मी के मन को झूठ से उदास
किया जिन्हें मैं ने उदास न किया और दुष्ट के हाथ में बल
दिया जिसतें वुह अपने दुष्ट मार्ग से न फिरे और जीवन पावे।
२३ इस लिये तुम बृथा न देखोगे और न देववाणी कहोगे और
मैं अपने लोगों को तुम्हारे हाथों से छुड़ाऊंगा और तुम जानोगे
कि मैं परमेश्वर हूं॥

चौदहवां पर्व्व।

१ तब इसराएल के प्राचीनों में से कई जन मेरे आगे आ
२ बैठे। और यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।

३ हे मनुष्य के पुत्र इन मनुष्यों ने अपनी अपनी मूर्त्तिन को अपने मन
में स्थापन किया है और अपनी बुराई के ठोकर को अपने आगे
४ धर रक्खा है क्या मैं ऐसों से बूझा जाऊं। इस लिये उन से
कह और उन से बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि
इसराएल के घराने में से हर एक जो अपने अन्तःकरण में
अपनी मूर्त्तिन को स्थापन करके अपनी बुराई का ठोकर अपने
आगे धरता है और भविष्यद्वक्ता के पास आता है मैं परमेश्वर
उस को मूर्त्तों की बहुताई के समान उसे उत्तर देऊंगा।
५ जिसतें मैं इसराएल के घराने को उन्हीं के मन ही में पकड़ूं
क्योंकि वे सब के सब अपनी मूर्त्तिन के लिये मुझ से फिर गये
हैं॥

६ इस लिये इसराएल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों
कहता है कि पश्चात्ताप करके अपनी मूर्त्तिन से फिरो और अपने
७ सारे घिनितों से अपने अपने मुंह फेरो। क्योंकि इसराएल के
घराने के हर एक अथवा इसराएल का परदेशी निवासी जो
मुझ से अलग होता है और अपने मन में अपनी मूर्त्तिन को
रोपता है और अपनी बुराई के ठोकर को अपने आगे धरता
है और मेरे विषय में बूझने को भविष्यद्वक्ता के पास आता है
८ उसे मैं ही परमेश्वर आप ही उत्तर देऊंगा। और मैं अपना
मुंह उसी जन के विरुद्ध फेरूंगा और उसे चिन्ह और कहावत
के लिये उजाड़ बनाऊंगा और अपने लोगों के मध्य में से उसे
उखाड़ूंगा और तुम लोग जानोगे कि मैं ही परमेश्वर हूं॥

९ और यदि भविष्यद्वक्ता कोई बात कहके भरमाया जाये तो
मुझ परमेश्वर ने उस भविष्यद्वक्ता को भरमया है और मैं अपना
हाथ उस पर बढ़ाऊंगा और अपने इसराएल लोगों के मध्य में
१० से उसे नष्ट करूंगा। और वे अपनी बुराई का दण्ड भोगेंगे
पुछवैये का दण्ड भविष्यद्वक्ता के दण्ड के समान होगा।

११ जिसतें इसराएल का घराना फिर मुझ से भटक न जाये और
अपने सारे अपराधों से अशुद्ध न हो जाये परन्तु प्रभु परमेश्वर
कहता है जिसतें वे मेरे लोग होवें और मैं उन का ईश्वर ॥
१२ तब यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।
१३ हे मनुष्य के पुत्र जब अति अपराध करने के कारण से देश
मेरे विरुद्ध पाप करे तब मैं अपना हाथ उस पर बढ़ाऊंगा
और उस के भोजन की टेक तोड़ डालूंगा और उस पर अकाल
१४ भेजूंगा और मनुष्य को और पशु को उस्से मिटा डालूंगा। प्रभु
परमेश्वर कहता है कि यद्यपि ये तीन जन अर्थात् नूह और
दानिएल और ऐयूब उस में होते तो वे अपने धर्म्म से केवल
अपने ही प्राण बचाते ॥
१५ यदि मैं फड़वैये पशुन को देश में से प्रवेश कराऊं और वे
उन्हें ऐसा नष्ट करें कि वुह ऐसा उजाड़ हो जाये कि बन पशुन
१६ के मारे कोई मनुष्य उस में से न जाये। प्रभु परमेश्वर कहता
है कि अपने जीवन सोंह जो ये तीन जन उस के मध्य में
होते तो बेटे बेटियों को न बचाते केवल वे ही बच जाते
परन्तु देश उजाड़ होता ॥
१७ अथवा जो मैं उस देश पर तलवार लाऊं और कहूं कि हे
तलवार देश में प्रवेश कर जिसतें मैं उस्से मनुष्यों को और
१८ पशुन को नष्ट करूं। प्रभु परमेश्वर कहता है अपने जीवन
सोंह जो ये तीन जन उस में होते तो न बेटे न बेटियों को
छुड़ा सक्ते परन्तु वे अकेले ही बचते ॥
१९ यदि मैं मरी उस देश में भेजूं और मनुष्यों को और पशुन
को उस्से नाश करने को लोहू से अपना क्रोध उस पर उंडेलूं।
२० प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सोंह जो नूह
और दानिएल और ऐयूब उस में होते तो वे बेटा बेटी को
न छुड़ाते वे अपने ही धर्म्म से अपने ही प्राण को छुड़ाते ॥

२१ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता तो कितना अधिक जब
में यरूसलम पर मनुष्यों और पशुन को नष्ट करने के लिये
अपने चार बड़े दंड अर्थात् तलवार और अकाल और फड़वैये
२२ पशु और मरी को भेजूं। तथापि देख बेटे बेटियों का बचा
हुआ उस में छोड़ा जायेगा जो बाहर किये जायेंगे और देखो
वे तुम्हारे पास बाहर आवेंगे और तुम उन की चाल और उन
के व्यवहार देखोगे और सारी बुराई के विषय में जो मैं
यरूसलम पर लाया हूं तुम लोग शांति पाओगे अर्थात् सभों
२३ के विषय में जो मैं उस पर लाया। और जब तुम उन की चाल
और व्यवहारों को देखोगे तो वे तुम्हें शांति देंगे और प्रभु
परमेश्वर कहता है कि यह सब तुम जानोगे जो मैं ने उस में
किया सो बिना कारण नहीं॥

पंदरहवां पर्ब्ब।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।
२ हे मनुष्य के पुत्र दाख पेड़ दूसरे पेड़ से अधिक क्या है अथवा
३ बन के पेड़ों में की डाली से। क्या किसी काम के लिये उस्से
लकड़ी लिई जायेगी अथवा किसी वस्तु के टांगने के लिये कोई
४ उस्से खूंटी लेगा। देख वुह आग में ईंधन के लिये डाला जाता
है और आग उस के दोनों सिरों को भस्म करती है और उस
५ के मध्य को जला देती है क्या वुह किसी काम का है। देख
जब वुह समूची थी वुह किसी काम की न थी कितना अधिक
अब वुह किसी काम की नहीं जब आग उसे भस्म कर गई
और वुह जल गई॥

६ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जैसा बन के पेड़ों
में दाख की लता को जो मैं ने आग के ईंधन के लिये दिया
७ है तैसा मैं यरूसलम के निवासियों को देऊंगा। और मैं

अपना मुंह उन के विरुद्ध फेरूंगा वे एक आग में से निकलेंगे
और दूसरी आग उन्हें भस्म करेगी और जब मैं अपना मुंह
उन के विरुद्ध फेरूं तब तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं।
८ और प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं उन के अपराध करने के
कारण देश को उजाड़ डालूंगा॥

सोलहवां पर्ब्ब।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।
२ हे मनुष्य के पुत्र यरूसलम को उस की घिनित क्रिया जना॥
३ और कह कि प्रभु परमेश्वर यरूसलम से यों कहता है कि
तेरा निवास और तेरा जन्म कनआन देश का है तेरा पिता
४ अमूरी और तेरी माता हित्ती। और तेरा जन्म जो है जब तू
उत्पन्न हुई तेरी नाभी काटी न गई और जब मैं ने तुझे देखा
तब तू जल से नहवाई न गई थी और तुझ पर लोन लगाया न
५ गया था और कपड़ों से लपेटी न गई थी। किसी की आंख
तुझ पर न लगी कि मया से तुझ पर कुछ ऐसा करे परन्तु
अपने जन्मदिन में अपने घिन के लिये तू बाहर खेत में फेंकी
गई थी॥
६ और जब मैं तेरे पास से होके गया और तुझे तेरे ही
लोहू में लोटते देखा तब मैं ने तुझ से तेरे लोहू में होते
हुए कहा कि जी हां मैं ने तुझ से तेरे लोहू में कहा कि जी।
७ मैं ने खेत की कली की नाईं तुझे बढ़ाया है और तू बढ़ते
बढ़ते महान हुई और तू उत्तम शोभा को पहुंची और तेरे
स्तन फूल उठे और तेरा बाल बढ़ गया है पर आगे तू नग्न
और उघारी थी॥
८ जब मैं तेरे पास से जाता था और तुझ पर दृष्टि किई और
क्या देखता हूं कि तेरा समय प्रेम का समय है और मैं ने

अपना आंचल तुझ पर फैलाया और तेरी नग्नता ढांपी हां मैं
ने तुझ से किरिया खाई और तेरे साथ वाचा बांधी प्रभु परमेश्वर
९ कहता है और तू मेरी हुई। और मैं ने तुझे जल से धोया
हां मैं ने तेरा लोहू तुझ से धो डाला और तुझ पर तेल मला।
१० और मैं ने बूटा काढ़्र्य से तुझे पहिराया और तुझे तुखसचाम
की जूती पहिनाई और मैं ने तेरी कटि पर झीना वस्त्र लपेटा
११ और मैं ने तुझे चेवली ओढ़ाई। और मैं ने तुझे गहनों से
आभूषित किया और तेरे हाथों में कंकण और तेरे गले में हार
१२ पहिनाया। और मैं ने तेरी नाक में नथ पहिनाई और तेरे
१३ कानों में कर्णफूल और तेरे सिर पर सुन्दर मुकुट धरा। और
इस रीति से तू सोना चांदी से शोभित हुई और तेरे वस्त्र
झीने और चेवली और बूटे काढ़े हुए थे तू ने चोखा पिसान
और मधु और तेल खाया और तू परम सुन्दरी हुई और तू
१४ एक राज्य लों भाग्यवती हुई। और तेरी कीर्त्ति सुन्दरता के
कारण अन्यदेशियों में फैली क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है
कि मेरी सुन्दरता के कारण जो मैं ने तुझ पर रक्खी अत्यन्त
सम्पूर्ण हुई॥
१५ परन्तु तू ने अपनी सुन्दरता पर भरोसा रक्खा और अपनी
कीर्त्ति के कारण बेश्याई किई और हर एक जवैये पर अपने
१६ व्यभिचार को उंडेला वुह उस का हुआ। और तू ने अपने वस्त्रों से
लेके अपने ऊंचे स्थानों को नाना प्रकार के रंग से शोभित किया
और उन पर बेश्याई किई ऐसा न आवेगा और न होगा।
१७ और तू ने मेरे दिये हुए सोने चांदी के गहने ले ले अपने
लिये पुरुष की मूर्त्ति बनाईं और उन से व्यभिचार किया।
१८ और अपने बूटे काढ़े हुए वस्त्र को लेके उन्हें ओढ़ाया और
१९ मेरा तेल और धूप उन के आगे धरा। और मेरा दिया हुआ
भोजन भी और जिस चोखे पिसान और तेल और मधु से मैं ने तुझे

खिलाया तू ने उन्हें सुगन्ध के लिये उन के आगे धरा है प्रभु
परमेश्वर यों कहता है कि यों ही हुआ ॥
२० और तू ने अपने बेटे बेटियों को जिन्हें तू मेरे लिये जनी
थी लिया और उन के भक्ष के लिये बलि चढ़ाया है तेरी यह
२१ बेश्याई क्या थोड़ी है । कि तू ने मेरे बालकों को घात किया
२२ है और सोंपके उन के लिये आग में से चलाया है। और अपने
सारे घिनितों में और बेश्याई में तू ने अपने युवा के दिनों को
स्मरण न किया जब कि तू नग्न और उघारी थी और अपने लोहू
में लोटती थी ॥
२३ और तेरी सारी दुष्टता के पीछे यों हुआ प्रभु परमेश्वर कहता
२४ है कि संताप संताप तुझ पर। और तू ने अपने लिये बेश्यास्थान
भी बना रक्खा है और हर एक सड़क में ऊंचा स्थान बना
२५ रक्खा है । मार्ग के हर एक निकास में तू ने अपना ऊंचा
स्थान बना रक्खा है और अपनी सुन्दरता को घिनौना किया
है और हर एक के लिये जो तेरे पास से जाता है अपने पांव
२६ पसारा है और अपना छिनालपन बढ़ाया है । अपने परोसी
और मिस्रियों के साथ जो बड़े मांस के हैं तू ने ब्यभिचार भी
किया है और मुझे रिसियाने को अपना छिनालपन बढ़ाया है॥
२७ इस लिये देख मैं ने अपना हाथ तुझ पर बढ़ाया है और
तेरे प्रति दिन का भोजन घटाया है और तुझे फिलिस्तियों की
बेटियों को जो तेरी बेश्याई चाल से लज्जित हैं और तुझ से
बैर रखती हैं उन की इच्छा पर तुझे सोंपा है ॥
२८ अपने असन्तोष के कारण तू ने असूरियों से भी छिनाल
कर्म्म किया है हां तू ने उन से छिनाल कर्म्म किया है तथापि
२९ सन्तुष्ट न हुई । कनआन देश में कसदिया लों तू ने अपने
ब्यभिचार को भी अधिक बढ़ाया है और उस्से भी तू सन्तुष्ट
न हुई ॥

३० प्रभु परमेश्वर कहता है कि तेरा मन कैसा निर्बल है जो
तू ये सारे कर्म्म करती है जो निर्लज्ज छिनाल के कर्म्म हैं।
३१ तू जो हर एक मार्ग के सिरे पर अपना बेश्यास्थान बनाती है
और हर एक सड़क में ऊंचा स्थान बनाती है और इस बात
में बेश्या की नाईं न हुई कि तू ख़रची को तुच्छ जानती है।
३२ परन्तु व्यभिचारिणी पत्नी की नाईं जो अपने पति की सन्ती
३३ उपरी को लेती है। लोग सारी बेश्या को ख़रची देते हैं पर
तू अपने जारों को दान देती है और जिसतें वे चारों ओर से
३४ तेरे छिनालपने से तेरे पास आवें तू उन्हें घूस देती है। और
अपने छिनालपन में तू और स्त्रियों से बिरुद्ध है क्योंकि व्यभिचार
कर्म्म के लिये तेरे पीछे कोई नहीं जाता और इस में कि तू
ख़रची देती है और तुझे ख़रची नहीं दिई जाती इस लिये तू
बिपरीत है॥
३५। ३६ इस लिये अरे बेश्या परमेश्वर का बचन सुन। प्रभु
परमेश्वर यों कहता है कि तेरे जारों के और तेरी सारी घिनित
मूर्त्तिन के साथ तेरे छिनाल कर्म्म के कारण तेरी अशुद्धता
उंडेली गई और तेरी नग्नता उघारी गई और अपने बालकों के
३७ लोहू के कारण जो तू ने उन्हें दिया है। इस लिये देख मैं
तेरे सारे जारों को जिन से तू आनन्दित हुई है और सब को
जिन से तू ने प्रीति किई है और सभों को जिन से तू ने घिन
किया है बटोरूंगा हां मैं उन्हें तेरे बिरुद्ध तेरी चारों ओर
एकट्ठे करूंगा और उन पर तेरी नग्नता उघारूंगा जिसतें वे
३८ तेरी सारी नग्नता देखें। और मैं तेरा न्याय ऐसा करूंगा जैसा
बिवाह भंजक और हिंसक स्त्रियों के न्याय किये जाते हैं और
३९ मैं कोप से और झल से तुझ से लोहू का पलटा लेऊंगा। और
मैं तुझे उन के हाथ में भी सौंपूंगा और वे तेरे बेश्यास्थान को
ढा देंगे और तेरे ऊंचे स्थानों को तोड़ देंगे वे तेरे कपड़े भी

उतार लेंगे और तेरे सुन्दर गहने छीन लेंगे और तुझे नंगी
४० और उघारी छोड़ेंगे । और वे तेरे बिरुद्ध एक जथा लावेंगे
और तुझे पत्थर से पथरावेंगे और अपनी तलवारों से तुझे
४१ बेधेंगे । और वे तेरे घर आग से जलावेंगे और बहुत सी स्त्रियों
के देखने में तुझे दंड देंगे और मैं तुझे छिनाल कर्म्म से
छुड़ाऊंगा और तू फिर ख़रची न देगी ॥
४२ इस रीति से मैं अपने कोप को तेरी ओर शान्ति करूंगा
और मेरा झल तुझ से जाता रहेगा और मैं शान्ति होऊंगा
और फिर न रिसियाऊंगा ॥
४३ इस कारण कि तू ने अपनी यूवावस्था के दिनों को स्मरण न
किया परन्तु इन सब बातों में मुझे रिसाया है इस लिये प्रभु
परमेश्वर कहता है कि देख मैं तेरे सिर पर तेरी चाल का पलटा
देऊंगा और अपने सारे घिनितों से अधिक तू यही लंपटता न करेगी॥
४४ देख हर एक जो कहावत कहता है यही कहावत तेरे
४५ बिरुद्ध कहेगा कि जैसी माता तैसी पुत्री । तू अपनी माता की
पुत्री जो अपने पति और बालकों से घिन करती है और तू
अपनी बहिनों की बहिन है जिन्हों ने अपने अपने पति और
बालकों से घिन किया है तुम्हारी माता हित्ती और तुम्हारा
४६ पिता अमूरी था । और तेरी जेठी बहिन समरून है वुह और
उस की पुत्रियां जो तेरी बाईं ओर रहती हैं और तेरी लहुरी
बहिन जो तेरी दहिनी ओर रहती है सो सदूम और उस की
४७ पुत्रियां । यद्यपि तू उन की चाल पर न चली और उन के
घिनित के समान न किया तथापि थोड़ी वस्तु के समान तू
अपनी सारी चालों में उन से अधिक सड़ गई ॥
४८ प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोंह तेरी बहिन
सदूम ने न किया न उस ने न उस की बेटियों ने जैसा तू ने
४९ और तेरी पुत्रियों ने किया है । देख तेरी बहिन सदूम की

बुराई यह थी उस में और उस की पुत्रियों में अहंकार और
भोजन की भर पूरी और आलस की बहुताई थी और उस ने
५० कंगाल और दरिद्र के हाथ को बल न दिया। और उन्हों ने
अभिमानी होके मेरे आगे घिनित कर्म्म किया इस लिये जैसा
मैं ने देखा तैसा उन्हें दूर किया॥
५१ समरून ने भी तेरे पाप का आधा न किया परन्तु तू ने
अपने घिनितों को उन से अधिक बढ़ाया है और अपने सारे
किये हुए घिनितों से अपनी बहिनों को निर्दोष ठहराया है।
५२ सो तू अपनी ही लाज भोग तू ने अपनी बहिनों का बिचार
किया तू भी अपने पाप के कारण जो तू ने उन से अधिक
घिनित कर्म्म किया है अपनी ही लाज भोग वे तुझ से भी
धर्म्मी हैं हां तू भी घबरा जा और तू ने जो अपनी बहिनों
५३ को निर्दोषी ठहराया है। जब मैं उन की बंधुआई को फेर लाऊंगा
अर्थात् सदूम और उस की बेटियों की और समरून की और उस
की बेटियों की बंधुआई तब मैं तेरी बंधुआई के बंधुओं को उन
५४ के मध्य में लाऊंगा। जिसतें तू अपनी ही लाज भोगे और अपने सारे
किये हुए कार्य्य में घबरा जाये तू उन के लिये शान्ति है॥
५५ जब तेरी बहिनें सदूम और उस की बेटियां अपनी अगिली
दशा में फिर आवेंगी और समरून और उस की बेटियां अपनी
अगिली दशा में फिर आवेंगी तब तू और तेरी बेटियां अपनी
अगिली दशा में फिरोगी॥
५६ तेरे अहंकारों के दिन में तेरी बहिन सदूम तेरे मुंह से
५७ सुनाई न गई। तेरी दुष्टता के प्रगट होने से आगे उस समय
के समान जब कि तू ने अराम की बेटियों की और उस के
सारे चारों ओर के फिलिस्तियों की बेटियों से निन्दा पाई जो
५८ तेरी चारों ओर तुझे तुच्छ जानती थीं। परमेश्वर कहता है
कि तू अपने घिनितों और लंपटता को भोगती है॥

५६ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तेरी करनी के समान
में तुझ से भी व्यवहार करूंगा कि तू ने नियम को भंग करके
६० किरिया की निन्दा किई है। तिस पर भी मैं तेरे साथ तेरी
युवावस्था के नियम को स्मरण करूंगा और तेरे साथ एक सनातन
६१ का नियम स्थिर करूंगा। जब तू अपनी जेठी और लहुरी बहिनों
को ग्रहण करेगी तब तू अपनी चालों को स्मरण करके लज्जित
होगी और मैं उन्हें पुत्रियों के लिये तुझे देऊंगा परन्तु तेरे
६२ नियम से नहीं। और मैं अपने नियम को तुझ से स्थिर
६३ करूंगा और तू जानेगी कि मैं ही परमेश्वर हूं। जिसतें तू
स्मरण करे और लज्जित होवे और लाज के मारे अपना मुंह
न खोले जब कि मैं तेरी सारी करनी को क्षमा करूं प्रभु
परमेश्वर कहता है॥

सत्रहवां पर्व्व ।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा।
२ कि हे मनुष्य के पुत्र एक पहेली निकाल और इसराएल के
३ घराने से एक दृष्टांत कह। और बोल कि प्रभु परमेश्वर यों
कहता है कि बड़े डैने का एक बड़ा गिद्ध लंबे पंख का पर से
भरा हुआ बूटेदार रंग का लुबनान में आके देवदारु पेड़ की
४ फुनगी ले गया। उस ने उस की कोमल कनखियों की फुनगी
चोंथ डाली और बेपार के देश में ले गया और उसे बेपारियों
५ के नगर में लगाया। और वुह उस देश का बीज भी ले गया
और उसे फलवान खेत में लगाया और उसे बड़े पानियों के
६ लग लगाया और बेंत पेड़ की नाईं उसे बोया। और वुह बढ़के
फैलती छोटी जाति की लता हुई जिस की डालियां उस की
ओर मुड़ीं और उस की सोर भी उस के नीचे हुईं वुह यों दाख
की लता हो गई और डालियां निकालीं और कनखियां फुटवाईं॥

७ और बड़े बड़े डैने और बहुत पर का एक दूसरा बड़ा गिद्ध
था और देखो इस लता ने अपनी सारें उस की ओर झुकाईं
और उस की ओर अपनी डालियां बढ़ाईं जिसतें अपनी कियारी
८ की नाली से उसे सींचे। और वुह बड़े बड़े पानियों के लग
अच्छी मिट्टी में लगाई गई जिसतें डालियां फूटें और फल
फले और अच्छी लता होवे॥
९ तू कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है क्या वुह लहलहावेगी
उसे सुखाने के लिये क्या वुह उस की जड़ न उखाड़ेगा और उस
का फल न काटेगा जिसतें वुह सूख जाये उस के दाख के
सारे पत्ते सूख जायेंगे हां जड़ से बिना पराक्रम अथवा बहुत लोग
१० से उखाड़ी जायेगी। हां देख लगाई जाके क्या वुह लहलहावेगी
क्या जब पुरबा पवन उस पर लगेगा वुह सर्बथा सूख न
जायेगी वुह नाली में जहां उगी तहां सूख जायेगी॥
११ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।
१२ अब दंगइत घराने से कह क्या तुम लोग इन बातों का अर्थ
नहीं जानते कह कि देखो बाबुल का राजा यरूसलम पर
आया है और उस के राजा को और उस के अध्यक्षों को पकड़ा
१३ है और उन्हें अपने साथ साथ बाबुल को ले गया है। और
राजा के बंश में से एक लिया है और उस्से नियम बांधा और
उस्से किरिया लिई और देश के बलवंतों को भी ले गया।
१४ जिसतें राज्य तुच्छ होवे और आप को न उभाड़े कि उस के
१५ नियम को पाले और उस पर स्थिर होवे। परन्तु वुह दूतों
को मिस्र में भेजके उन से घोड़े और बहुत से लोग मंगवाके
उस के बिरुद्ध फिर गया क्या वुह भाग्यमान होगा क्या ऐसा
कार्य्यकारी बचेगा अथवा नियम को तोड़के वुह छूट
जायेगा॥
१६ प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सों निश्चय जिस

स्थान में राजा ने उसे राजा किया जिस की किरिया की उस
ने निन्दा किई और जिस का नियम उस ने तोड़ा उस के साथ
१७ वुह बाबुल में मरेगा। अपनी पराक्रमी सेना और बड़ी जथा
से बहुत से लोगों को जुझाने के लिये मोर्चा और गढ़ बना
बनाके फिरऊन से संग्राम में उस के लिये कुछ न बन पड़ेगा।
१८ क्योंकि नियम भंग करके उस ने किरिया की निन्दा किई और
देख कि उस ने अपना हाथ दिया था और इन सब बातों को
करके वुह न बचेगा॥
१६ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सोंह
निश्चय मेरी किरिया जिस को उस ने निन्दा किई और मेरा
नियम जो उस ने भंग किया है उसी का पलटा मैं उसी के
२० सिर पर देऊंगा। और मैं अपना जाल उस पर फैलाऊंगा और
वुह मेरे फंदे में पकड़ा जायेगा और मैं उसे बाबुल को लाऊंगा
और उस के अपराध के लिये जो उस ने मेरे बिरुद्ध अपराध
२१ किया है मैं वहां उस्से बिबाद करूंगा। और उस के सारे
भगेडू और सारी जथा तलवार से मारी जायेंगी और बचे हुए
चौदिशा में छिन्न भिन्न होंगे और तुम लोग जानोगे कि मुझ
परमेश्वर ने कहा है॥
२२ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं ऊंचे देवदारु पेड़ की
ऊंची से ऊंची फुनगी लेके लगाऊंगा और ऊपर की कोमल
टहनियों में से एक को छांटूंगा और उसे एक ऊंचे और महान
२३ पर्ब्बत पर लगाऊंगा। इसराएल के ऊंचे पहाड़ पर मैं उसे
लगाऊंगा और उस्से डालियां निकलेंगी और फलेंगी और सुन्दर
देवदारु पेड़ होगा और हर डैने के सारे पंछी उस के तले
२४ बसेंगे उस की डालियों की छाया तले वे बसेंगे। और बन
के सारे पेड़ जानेंगे कि मुझ परमेश्वर ने ऊंचे पेड़ को उतारा
और नीचे पेड़ को बढ़ाया मैं ने हरे पेड़ को सुखा दिया और

सूखे पेड़ को लहलहाया मुझ परमेश्वर ने यह कहा है और
किया है ॥

अठारहवां पर्ब्ब ।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा ।
२ तुम लोगों का यह अभिप्राय क्या जो इसराएल के देश के विषय
में यह कहावत कहते हो कि पितरों ने खट्टा दाख खाया है
और बालकों के दांत खट्टे हुए ॥
३ प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोंह तुम लोग
४ फिर इसराएल में इस कहावत का कारण न पाओगे । देख
सारे प्राण मेरे हैं पिता के प्राण के समान पुत्र का प्राण भी
५ मेरा है जो प्राणी पाप करता है सोई मरेगा । परन्तु यदि
६ मनुष्य धार्मिक होवे और न्याय और धर्म्म करे । उस ने
पहाड़ों पर भोजन न किया और इसराएल के घराने की मूर्त्तिन
की ओर आंखें न उठाईं और अपने परोसी की पत्नी को अशुद्ध
७ न किया और रजस्वला स्त्री के पास न जायेगा । और वुह
किसी को न सतावेगा ऋण का बन्धक फेर देगा अंधेर से
किसी को न लूटेगा भूखे को अपनी रोटी खिलावेगा और उघारे
८ हुए को कपड़ा ओढ़ावेगा । बियाज पर न देगा और कुछ
बढ़ती नहीं लेगा बुराई से अपना हाथ खींच लेगा मनुष्य और
९ मनुष्य के मध्य में ठीक बिचार करेगा । वुह मेरी बिधिन पर
चलेगा और उस ने सच्चाई से व्यवहार करने को मेरे बिचार
को पालन किया है सो धर्म्मी है प्रभु परमेश्वर कहता है कि
वुह निश्चय जीयेगा ॥
१० और यदि उस्से बेटा उत्पन्न होवे जो बटमार और घातक
११ और इन में से कोई बात के समान पाप करे । और उन में
की कोई बातों को उस ने न किया हो परन्तु उस ने पहाड़ों

पर खाया और अपने परोसी की पत्नी को अशुद्ध किया है।
१२ कंगाल और दरिद्र को उस ने सताया अंधेर से लूटा बन्धक
को फेर नहीं देगा और मूर्त्तिन की ओर उस ने अपनी आंखें
१३ उठाईं और घिनित कार्य्य किया। उस ने बियाज पर दिया
और बढ़ती लिई तो क्या वुह जीयेगा वुह न जीयेगा उस ने
ये सारे घिनित कार्य्य किये हैं वुह निश्चय मरेगा उस का
लोहू उस पर पड़ेगा॥
१४ और यदि उस्से बेटा उत्पन्न होवे जो अपने पिता के किये
१५ हुए सारे पापों को देखे और सोचके ऐसा न करे। पहाड़ों पर
उस ने नहीं खाया और इसराएल के घराने की मूर्त्तिन पर
अपनी आंखें नहीं उठाईं और अपने परोसी की पत्नी को अशुद्ध
१६ न किया। और किसी को न सताया और बन्धक को बन्धक
न रक्खा और न अंधेर से लूटा परन्तु अपनी रोटी भूखे को
१७ दिया और उघारे हुए को वस्त्र ओढ़ाया। अपना हाथ कंगालों
पर से उतारा और बियाज और बढ़ती नहीं लिया मेरे न्यायों
को पालन किया मेरी बिधिन पर चला वुह अपने पिता की बुराई
के लिये न मरेगा निश्चय वुह जीयेगा॥
१८ उस के पिता ने क्रूरता से सताके अंधेर से अपने भाई को
लूटा और अपने लोगों में जो भलाई न थी सो उस ने किई
देख वुह अपनी बुराई में मरेगा॥
१९ तथापि तुम लोग कहते हो कि किस लिये क्या बेटा बाप
की बुराई नहीं भोगता जब बेटे ने उचित और ठीक किया है
और मेरी सारी बिधिन को पाला है और उन्हें माना है वुह
२० अवश्य जीयेगा। जो प्राणी पाप करता है सोई मरेगा बेटा
बाप की बुराई न भोगेगा और न बाप बेटे की बुराई भोगेगा
धर्म्मी का धर्म्म उसी पर होगा और दुष्ट की दुष्टता उसी पर
पड़ेगी॥

२१ परन्तु यदि दुष्ट अपने किये हुए सारे पापों से फिरे और
मेरी सारी बिधिन को पाले और उचित और ठीक करे तो वुह
२२ निश्चय जीयेगा वुह न मरेगा। उस के सारे अपराध कर्म्म
उसे सुनाये न जायेंगे वुह अपने धर्म्म कर्म्म में जीयेगा।
२३ प्रभु परमेश्वर कहता है कि क्या दुष्ट की मृत्यु से मैं किसी बात
में प्रसन्न हूं और इस्से नहीं कि वुह अपनी चाल से फिरे और
जीये॥

२४ परन्तु जब धर्म्मी अपने धर्म्म से फिरके बुराई करे और
दुष्ट के समान सारे घिनित कार्य्य करे क्या वुह जीयेगा उस के
सारे धर्म्म कार्य्य न कहे जायेंगे वुह अपने किये हुए अपराध
में और अपने किये हुए पाप में मरेगा॥

२५ तब भी तुम लोग कहते हो कि परमेश्वर का मार्ग स्थिर नहीं
सो हे इसराएल के घराने अब सुनो क्या मेरा मार्ग स्थिर नहीं
२६ क्या तुम्हारे मार्ग स्थिर नहीं। जब धर्म्मी अपने धर्म्म से फिरे
और अधर्म्म करे और उस में मरे वुह अपनी किई हुई बुराई
२७ में मरेगा। फिर जब दुष्ट अपनी दुष्टता से फिरे और उचित
२८ और ठीक करे तो अपना प्राण जीता रक्खेगा। क्योंकि उस ने
सोचा और अपने किये हुए सारे अपराध से फिरा वुह निश्चय
जीयेगा वुह न मरेगा॥

२९ तथापि इसराएल के घराने कहते हैं कि प्रभु का मार्ग
स्थिर नहीं हे इसराएल के घराने क्या मेरे मार्ग स्थिर नहीं
क्या तुम्हारे मार्ग स्थिर नहीं॥

३० इसी लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि हे इसराएल के
घराने मैं हर एक की चाल के समान तुम्हारा बिचार करूंगा
पछताओ और अपने अपने सारे अपराधों से फिरो और बुराई
३१ तुम्हारे नाश के लिये न होगी। जिस जिस अपराध से तुम सभों
ने अपराध किया है उन्हें त्याग करो और अपने लिये नया मन

और नया आत्मा बनाओ क्योंकि हे इसराएल के घराने तुम
३२ क्यों मरोगे । क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मरणीय की
मृत्यु से मैं प्रसन्न नहीं सो फिरो और जीओ ॥

उन्नीसवां पर्व्व ।

१ और तू इसराएल के अध्यक्षों के लिये एक बिलाप उठा ।
२ और कह कि तेरी माता क्या एक सिंहिनी वुह सिंहों में लेट
३ गई उस ने युवा सिंहों में अपने बच्चों को पाला । और उस ने
अपने एक बच्चे का प्रतिपाल किया और वुह युवा सिंह हुआ
और अहेर पकड़ना सीखा वुह मनुष्यों को भक्षने लगा ।
४ जातिगणों ने भी उस का समाचार पाया वुह उन के गाड़ में
पकड़ा गया और वे उसे सीकरों से मिस्र देश में लाये ॥
५ और जब उस ने देखा कि मैं ने बाट जोही और आशा
जाती रही तब उस ने अपने बच्चों में से दूसरे को लिया और
६ उसे युवा सिंह किया । और वुह सिंहों में फिरते फिरते तरुण
सिंह हुआ और अहेर पकड़ना सीखा और मनुष्यों को भक्षने
७ लगा । और उस ने उन के उजाड़ भवनों को जाना और उन
के नगरों को उजाड़ किया और देश और उस की भरपूरी उस
के गर्जने के शब्द से उजड़ गई ॥
८ तब चारों ओर के प्रदेशों से जातिगण उस के बिरुद्ध हुए
और उस पर अपना जाल फैलाया वुह उन के गाड़ में पकड़ा
९ गया । और उन्हों ने उसे सीकर से बांधके बंधनों में किया
और उसे बाबुल के राजा के पास ले गये उन्हों ने उसे गढ़ों
में डाला जिसतें उस का शब्द इसराएल के पर्व्वतों पर फिर
सुना न जाये ॥
१० तेरी माता दाख की लता के समान तेरी नाईं जल के लग
लगाई गई है वुह मुक्ता जल के मारे फलमय होके डालों से भर

११ गई। और आज्ञाकारियों के राजदण्डों के लिये उस की छड़ें
पोढ़ थीं और वुह घनी डालियों में बढ़ गई वुह अपनी डालियों
की बहुताई से अपनी ऊंचाई से देखी जाती थी॥
१२ परन्तु वुह कोप से उखाड़ी जाके भूमि पर फेंकी गई और
पुरुआ पवन ने उस के फल को झुरा दिया उस की पोढ़ छड़ें
१३ टूटके सूख गईं आग ने उन्हें भस्म किया। और अब वुह
१४ सूखी और तृषित भूमि में बन में लगाई गई है। और उस
की डालियों में की एक छड़ से आग निकली है जिस ने
उस के फलों को भक्षण किया यहां लों कि प्रभुता करने को
राजदण्ड के लिये उस की कोई पोढ़ छड़ न रही यह बिलाप
है और बिलाप का कारण होगा॥

बीसवां पर्ब्ब।

१ और सातवें बरस के पांचवें मास की दसवीं तिथि में यों
हुआ कि परमेश्वर से बूझने को इसराएल के कई प्राचीन मेरे
२ आगे आ बैठे। तब यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे
३ पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र इसराएल के प्राचीनों से यह
कहके बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तुम लोग मुझ
से बूझने को आये हो प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन
४ सोंह मैं तुम से बूझा न जाऊंगा। हे मनुष्य के पुत्र क्या तू
उन से बिवाद करेगा क्या तू बिवाद करेगा उन के पितरों के
घिनित कार्य्य उन्हें जना॥
५ और उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस
दिन मैं ने इसराएल को चुना और यअकूब के बंश के लिये
अपना हाथ उठाके किरिया खाई और मिस्र देश में आप को
उन पर प्रगट किया जब मैं ने उन के लिये हाथ उठाया और
६ कहा कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं। उसी दिन मैं ने उन

के लिये अपना हाथ उठाया कि उन्हें मिस्र देश मे उस देश
में निकाल लाऊं जो मैं ने उन के लिये देख रक्खा था जिस
में मधु और दूध बहता है और सब देशों मे अधिक
७ शोभायमान है। और मैं ने उन से कहा कि तुम्में से हर एक जन
अपनी अपनी आंखों की घिनित वस्तुन को त्यागे और मिस्र
की मूर्त्तिन से अपने को अशुद्ध न करे मैं ही परमेश्वर तुम्हारा
ईश्वर हूं॥
८ परन्तु वे मेरे बिरुद्ध फिर गये और मेरी न मानी उन
में से हर एक ने अपनी अपनी आंखों की घिनित वस्तुन
को न फेंका और मिस्र की मूर्त्तिन को न त्यागा तब मैं
ने कहा कि मिस्र देश के मध्य में अपनी रिस पूरी करने को उन
के बिरुद्ध अपना कोप उन पर उंडेलूंगा॥
९ परन्तु मैं ने अपने नाम के लिये कार्य्य किया कि अन्यदेशियों
के आगे जिन में वे थे जिन की दृष्टि में मिस्र देश से बाहर
लाने में मैं ने आप को उन पर जनाया वे मेरा नाम अशुद्ध न
करें॥
१० इसी कारण मैं उन्हें मिस्र देश से निकालके बन में लाया।
११ और अपनी बिधि उन्हें दिई और अपने न्याय को उन्हें जनाया
१२ जिन्हें यदि मनुष्य पालन करे तो उन में जीयेगा। और मैं ने
उन्हें अपने बिश्रामों को भी दिया कि वे मेरे और उन के मध्य में
चिन्ह होवें जिसतें वे जानें कि मैं परमेश्वर उन्हें पवित्र करता हूं॥
१३ परन्तु इसराएल के घराने बन में मेरे बिरुद्ध फिर गये
और वे मेरी बिधिन पर न चले और मेरे न्यायों की निन्दा
किई जिन्हें यदि मनुष्य पालन करे तो वुह उन में जीयेगा
और उन्हों ने मेरे बिश्रामों को अति अशुद्ध किया तब मैं ने
कहा कि मैं उन्हें नष्ट करने के निमित्त अपना कोप उन पर
बन में उंडेलूंगा॥

१४ परन्तु मैं ने अपने नाम के लिये कार्य्य किया जिसतें
अन्यदेशियों के आगे जिन की दृष्टि में मैं उन्हें निकाल लाया
मेरा नाम अशुद्ध न होवे॥
१५ तब भी मैं ने अपना हाथ वन में उन के लिये उठाया
कि जिस देश को मैं ने उन को दिया था जिस में दूध और
मधु बहता है जो सारे देशों से शोभायमान है मैं उस में उन्हें
१६ न लाऊं। इस कारण कि उन्हों ने मेरे न्यायों की निन्दा
किई और मेरी विधिन पर न चले और मेरे विश्रामों को अशुद्ध
किया क्योंकि उन का मन उन की मूर्त्तिन के पीछे पीछे गया॥
१७ परन्तु नाश करने से मेरी आंखों ने उन्हें छोड़ दिया और
मैं ने वन में उन्हें मिटा न डाला॥
१८ परन्तु वन में उन के संतानों को कहा कि तुम लोग अपने
पितरों की विधिन पर मत चलो और उन के न्यायों को मत
१९ मानो और उन की मूर्त्तिन से आप को अशुद्ध न करो। मैं ही
परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं मेरी विधिन पर चलो और मेरे न्यायों
२० को पालो और मानो। और मेरे विश्रामों को पवित्र मानो और
वे मेरे और तुम्हारे मध्य में चिन्ह होवें जिसतें तुम जानो
कि मैं ही परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं॥
२१ तिस पर भी उन के संतान मेरे विरुद्ध फिर गये वे मेरी
विधिन पर न चले और मेरे न्यायों पर चलने को न माना
जिन्हें यदि मनुष्य माने तो उन में जीयेगा और मेरे विश्रामों
को अशुद्ध किया तब मैं ने कहा कि अपनी रिस वन में उन
२२ पर पूरी करने को अपना कोप उन पर उंडेलूंगा। तथापि मैं
ने अपना हाथ फेर लिया और अपने नाम के लिये कार्य्य किया
जिसतें अन्यदेशियों की दृष्टि में जिन के आगे मैं उन्हें बाहर
लाया अशुद्ध न होने पावे॥
२३ मैं ने वन में भी अपना हाथ उन पर उठाया कि मैं उन्हें

२४ अन्यदेशियों में बिथराऊं और देशों में छिन्न भिन्न करूं। इस
कारण कि उन्हों ने मेरे न्यायों को न माना परन्तु मेरी बिधिन
की निन्दा किई थी और मेरे विश्रामों को अशुद्ध किया और
उन की आंखें अपने पितरों की मूर्त्तिन के पीछे पीछे गई थीं॥
२५ इस लिये मैं ने भी उन्हें बिधि दिई जो अच्छी न थी और
२६ न्याय जिस्से वे न जीयें। और मैं ने उन्हें उन्हीं के बलिदानों
से अशुद्ध किया कि कोख से सारे उत्पन्न हुओं को उन्हों ने
आग में चलाया है जिसतें मैं उन्हें उजाडूं कि वे जानें कि
मैं परमेश्वर हूं॥
२७ इस लिये हे मनुष्य के पुत्र तू इसराएल के घराने को यह
कहके बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि इस बात में
भी तुम्हारे पितरों ने मेरे विरुद्ध अपराध करके मेरी अपनिन्दा
२८ किई। क्योंकि जब मैं उन्हें उस देश में लाया जिसे उन्हें
देने को मैं ने अपना हाथ उठाया था तब उन्हों ने हर एक
ऊंचे पहाड़ को और सारे घने पेड़ों को देखा और उन्हों ने वहां
अपने बलि चढ़ाये और वहां उन्हों ने अपनी रिस की भेंट
चढ़ाई और वहां उन्हों ने अपना सुगंध भी चढ़ाया और उसी
२९ स्थान में अपने पीने की भेंट उंडेली। तब मैं ने उन से कहा
कि किस ऊंचे स्थान में तुम जाते हो तौ भी उस का नाम
आज लों ऊंचा स्थान है॥
३० इस लिये इसराएल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों
कहता है क्या तुम अपने पितरों के समान अशुद्ध हुए हो
और तुम भी उन के घिनितों के समान व्यभिचार करते हो।
३१ इस लिये आज लों जब तुम लोग भेंट चढ़ाते हो और अपने
बेटों को आग में से चलाते हो तब तुम अपनी सारी मूर्त्तिन
से आप को अशुद्ध करते हो सो हे इसराएल के घराने क्या
मैं तुम से बूझा जाऊं प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन

३२ सो ह मैं तुम से बूझा न जाऊंगा। जो तुम्हारे मन में आता
है सो कधी न होगा क्योंकि तुम कहते हो कि काठ और
पत्थर की सेवा में हम अन्यदेशियों के और देश के घरानों
के समान होंगे॥

३३ प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सों ह पराक्रमी
हाथ से और बढ़ाई हुई भुजा से और उंडेले हुए कोप से मैं
३४ तुम पर राज्य करूंगा। और मैं तुम्हें लोगों में से बाहर निकाल
लाऊंगा और जिस जिस देश में तुम छिन्न भिन्न हो मैं तुम्हें
पराक्रमी हाथ से और बढ़ाई हुई भुजा से और उंडेले हुए कोप
३५ से एकट्ठा करूंगा। और मैं तुम्हें लोगों के बन में लाऊंगा
३६ और मुंह मुंह तुम से बिवाद करूंगा। जैसा मैं ने तुम्हारे
पितरों के साथ मिस्र देश के बन में बिवाद किया था प्रभु
३७ परमेश्वर कहता है तैसा मैं तुम से भी बिवाद करूंगा। और
मैं तुम्हें दण्ड के नीचे से चलाऊंगा और तुम्हें नियम के
३८ बंधन में लाऊंगा। और तुममें से दंगइतों को और उन्हें जो मेरे
बिरुद्ध अपराध करते हैं दूर करूंगा और उन के टिकने के
देश में उन्हें निकाल लाऊंगा और वे इसराएल के देश में प्रवेश
न करेंगे और तुम लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

३९ हे इसराएल के घराने प्रभु परमेश्वर तुम्हारे बिषय में यों
कहता है कि तुम लोग जाओ और हर एक जन अपनी अपनी
मूर्त्ति की सेवा करे और इस के पीछे जो मेरी न सुनो और
अपनी भेंटों और अपनी मूरतों से मेरे पवित्र नाम को फिर
४० अशुद्ध न करो। क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मेरे
पवित्र पर्व्वत पर इसराएल के ऊंचे पहाड़ पर सारे इसराएल
के घराने सब के सब देश में मेरी सेवा करेंगे वहां मैं उन्हें
ग्रहण करूंगा और वहां मैं तुम्हारी भेंट और तुम्हारे नैवेद्य
का पहिला फल तुम्हारी सारी पवित्र वस्तुन के साथ चाहूंगा॥

४१ जब मैं तुम्हें लोगों में से निकाल लाऊंगा और देशों में से
जिन में तुम छिन्न भिन्न हुए हो बटोरूंगा तब मैं तुम्हें
तुम्हारे सुगन्ध द्रब्य सहित ग्रहण करूंगा और अन्यदेशी लोगों
४२ के आगे तुम लोगों में पवित्र किया जाऊंगा। और जब मैं
तुम्हें इसराएल की भूमि में उस देश में जिसे तुम्हारे पितरों
को देने को मैं ने अपना हाथ उठाया था लाऊंगा तब तुम
४३ जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं। और वहां तुम अपनी अपनी
चालों को और अपनी सारी क्रिया को जिन में अशुद्ध हुए हो
स्मरण करोगे और अपनी किई हुई सारी बुराइयों के लिये
४४ आप को अपनी ही दृष्टि में घिनाओगे। और हे इसराएल के
घराने प्रभु परमेश्वर कहता है कि जब मैं तुम्हारी दुष्ट चालों
के समान और तुम्हारे कुकर्म्म के समान तुम से व्यवहार न
करूंगा परन्तु अपने नाम के लिये तब तुम जानोगे कि मैं
परमेश्वर हूं॥

४५ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।
४६ हे मनुष्य के पुत्र अपना मुंह दक्खिन ओर कर और दक्खिन
ओर उच्चार और दक्खिन के चौगान के बन के बिरुद्ध भविष्य
४७ कह। और दक्खिन के बन से कह कि परमेश्वर का बचन
सुन प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं तुझ में एक आग
बारूंगा और वुह हर एक हरे पेड़ और हर एक सूखे पेड़ को
भक्षेगी बरती लवर न बुझेगी और उस में दक्खिन से उत्तर लों
४८ सभों का मुंह जल जायगा। और सारे शरीर देखेंगे कि मुझ
४९ परमेश्वर ने उसे बारा है वुह न बुझेगी। तब मैं ने कहा कि
हाय प्रभु परमेश्वर वे मेरे बिषय में कहते हैं कि क्या वुह
दृष्टांत नहीं कहता॥

एक्कीसवां पर्व्व ।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा ।
२ हे मनुष्य के पुत्र अपना मुंह यरूसलम की ओर फेर और
पवित्र स्थानों की ओर उच्चार और इसराएल के देश के बिरुद्ध
३ भविष्य कह । और इसराएल के देश से कह कि परमेश्वर यों
कहता है कि देख मैं तेरे बिरुद्ध हूं और अपनी तलवार को
काठी से निकालूंगा और धर्म्मी और दुष्ट को तुझ में से
४ नष्ट करूंगा । सो जैसा कि मैं तेरे मध्य से धर्म्मी और दुष्ट
को नष्ट करूंगा इस लिये मेरी तलवार अपनी काठी से उत्तर
५ से दक्खिन लों सारे शरीरों पर निकलेगी । जिसतें सारे शरीर
जानें कि मुझ परमेश्वर ने अपनी तलवार काठी से निकाली
है वुह फिर न लौटेगी ॥
६ इस लिये हे मनुष्य के पुत्र अपनी कटि के टूटने से हाय
हाय कर और उन की आंखों के आगे बिलख बिलखके हाय
७ हाय कर । और ऐसा होगा कि जब वे तुझ से पूछें कि तू
क्यों हाय हाय करता है तब उत्तर देना कि सन्देशों के लिये
क्योंकि वुह आता है और हर एक का मन पिघल जायेगा
और सारे हाथ दुर्बल होंगे और हर एक अन्तःकरण मूर्छित
होगा और सारे घुटने पानी हो जायेंगे प्रभु परमेश्वर कहता
है कि देख वुह आता है और पहुंचाया जायेगा ॥
८ और यह कहते हुए फिर परमेश्वर का वचन मेरे पास
९ पहुंचा । हे मनुष्य के पुत्र भविष्य कह और बोल कि परमेश्वर
यों कहता है कि एक तलवार धार किई गई और चमकाई
१० भी गई । वुह बड़ी जूझ के लिये चोखी किई गई है वुह
चमकाई गई है जिसतें जगमगावे तो क्या हम आनन्द करें
वुह तेरे बेटे की लाठी है वुह हर एक पेड़ की निन्दा करती

११ है । और उस ने तलवार दिई कि चमकाई जाये और हाथ
से चलाई जाये और वुह चोखी किई गई और जगमगाई गई
है कि घातक के हाथ में दिई जाये ॥
१२ हे मनुष्य के पुत्र रो रोके चिल्ला क्योंकि यह मेरे लोगों पर
होगी वुह इसराएल के सारे अध्यक्षों पर होगी वे मेरे लोगों के
१३ संग तलवार को सेंपे गये हैं इस लिये जांघ पीट । क्योंकि
परीक्षा हुई और क्या वुह निन्दित दंड भी न होगा प्रभु
१४ परमेश्वर कहता है । और तू हे मनुष्य के पुत्र भविष्य कह
और हाथ पीट और तीसरी बार तलवार जूझे हुए की तलवार
दुहराई जाये वुह तलवार महत जूझे हुओं की है जो उन
१५ की कोठरियों में पैठती है । मैं ने डरावनी तलवार उन के
सारे फाटकों पर धरी है जिसतें मन पिघल जावें और जूझे
हुए बढ़ाये जायें हाय वुह चमकने के लिये बनाई गई है वुह
१६ जुझाने के लिये चोखी किई गई है । तू एक ओर अथवा
दूसरी ओर दहिने अथवा बायें जा जिधर तेरा मुंह होवे ।
१७ मैं अपना हाथ भी पीटूंगा और अपना कोप धीमा करूंगा मुझ
परमेश्वर ने कहा है ॥
१८ और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा ।
१९ हे मनुष्य के पुत्र तू भी अपने लिये दो मार्ग ठहरा जिसतें
बाबुल के राजा की तलवार आवे एक ही देश से दोनों
निकलेंगे तू एक चिन्ह बना नगर के पथ के सिरे पर उसे
२० बना । एक मार्ग ठहरा जिसतें तलवार अम्मूनियों के रब्बाथ
पर और बाड़ित यरूसलम में यहूदाह पर तलवार आवे ॥
२१ क्योंकि बाबुल का राजा मार्ग के भाग पर दोनों मार्ग के
सिरे पर गणना करवाने को खड़ा हुआ उस ने अपने बाणों को
चमकाया उस ने मूर्त्तिन से मंत्र लिया है और उस ने कलेजे
२२ में देखा । उस की दहिनी ओर यरूसलम के लिये गणना हुई

कि जूझ में मुंह खोलने के। और शब्द से ललकारने के।
सेनापतिन के। ठहरावे टीला और गढ़ उठाने के। कि फाटकों
२३ के साम्ने ढाहक ठहरावे। और उन की दृष्टि में उन के लिये
वुह झूठी गणना की नाई होगी अर्थात् जिन्हों ने किरियः
खाई है परन्तु वुह उस बुराई को स्मरण करेगा कि पकड़े
जावें॥
२४ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है क्योंकि तुम अपने
अपराधों के। स्मरण करवाते हो ऐसा कि तुम्हारे पाप प्रगट
हैं यहां लों कि तुम्हारे पाप देख पड़ते हैं क्योंकि तुम अपने
के। स्मरण करवाते हो तुम उसी हाथ से पकड़े जाओगे।
२५ अरे इसराएल के अधर्म्म दुष्ट अध्यक्ष जिस का दिन बुराई
२६ के अन्त के समय में आता है। प्रभु परमेश्वर यों कहता है
कि मुकुट दूर कर और किरीट को उतार यह आगे के। न
२७ रहेगा नीचे के। उभाड़ और ऊंचे को घटा। मैं उसे बिगाड़ूंगा
बिगाड़ूंगा बिगाड़ूंगा और वुह न रहेगा जब लों वुह न आवे
जिस का पद है और मैं उसे देऊंगा॥
२८ और हे मनुष्य के पुत्र तू भविष्य प्रचारके कह कि प्रभु
परमेश्वर अम्मूनियों के विषय में और उन की निन्दा के विषय
में यों कहता है कि तू कह कि तलवार तलवार खींची गई
जूझने के लिये जगमगाई गई और नाश करने को चमकाई
२९ गई। तुझे दुष्टों के जूझे हुओं के गले पर पहुंचाने के। वे तेरे
लिये बृथा देखते हैं और मिथ्या आगम कहते हैं जिस का
दिन बुराई के अन्त के समय में आता है॥
३० क्या मैं उसे उस की काठी में फिरवाऊं मैं उस स्यान में
जहां तू उत्पन्न हुआ तेरे जन्म देश में तेरा न्याय करूंगा।
३१ और मैं अपनी जलजलाहट तुझ पर उंडेलूंगा मैं अपने कोप
की आग तेरे बिरुद्ध बारूंगा और तुझे पशुवत जन के और

३२ निपुण नाशक के हाथ में सौंपूंगा। तू आग के लिये ईंधन
होगा तेरा लोहू देश के मध्य में होगा और तू फिर स्मरण
किया न जायेगा क्योंकि मुझ परमेश्वर ने कहा है॥

बाईसवां पर्ब्ब।

१ यह कहते हुए फिर परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।
२ कि हे मनुष्य के पुत्र क्या तू इन के लिये विवाद करेगा क्या तू
इस घातक नगर के लिये बिवाद करेगा और तू उसे उस के
३ सारे घिनित कार्य्य जना। और तू कह कि प्रभु परमेश्वर यों
कहता है कि जिसतें इस नगर का समय आवे वुह अपने
मध्य में लोहू बहाता है और आप को अशुद्ध करने के लिये
४ अपने बिरुद्ध मूर्त्तें बनाता है। तू लोहू बहाके दोषी हुआ है
और अपनी बनाई हुई मूर्त्तिन से आप को अशुद्ध किया है
और अपने दिन समीप करवाये हैं और अपने बरस लों पहुंचा
है इस लिये मैं ने तुझे अन्यदेशियों के लिये निन्दित और
५ सारे देशों के लिये एक ठट्ठा बनाया है। जो लोग कि तेरे
निकट अथवा तुझ से दूर हों तुझे चिढ़ावेंगे कि तेरा नाम
अशुद्ध और तू बिपत्ति में॥

६ देख इसराएल के अध्यक्ष अपनी सामर्थ्य भर लोहू बहाने
७ के लिये हर एक तेरे मध्य में थे। तुझी में उन्हों ने माता
पिता को तुच्छ जाना है तेरे मध्य में उन्हों ने परदेशियों से
छल व्यवहार किया है तुझ में उन्हों ने अनाथ और रांडों को
८ सताया है। तू ने मेरी पवित्र वस्तुन की निन्दा किई है और
९ मेरे विश्रामों को अशुद्ध किया है। तुझ में लोहू बहाने को
मिथ्यापवादी हैं और तुझ में पर्बतों पर भोजन करते हैं वे
१० तेरे मध्य में लंपटता करते हैं। तुझ में उन्हों ने अपने पिता
की नग्नता उघारी है तुझ में वे हैं जिन्हों ने अशुद्धता के

११ लिये अलग किई गईयों को ग्रहण किया है। हर एक ने अपने
परोसी की पत्नी से विनित कर्म्म किया है और किसी ने लंपटता
से अपनी पतोह को ग्रहण किया है और किसी ने तुझ में
अपने पिता की कन्या अर्थात् अपनी बहिन को नम्र किया है।
१२ तुझ में उन्हों ने लोहू बहाने को घूस लिया है तू ने ब्याज
और बढ़ती लिई है तू ने अपने परोसी को अंधेर से लूटा है
प्रभु परमेश्वर कहता है कि तू ने मुझे त्यागा है॥
१३ देख तेरे हाथ की अधर्म्म कमाई पर और तेरे मध्य में के
१४ लोहू पर में ने अपना हाथ मारा है। क्या तेरा मन सह
सकेगा अथवा जिन दिनों में मैं तुझ से व्यवहार करूंगा क्या
तेरे हाथ प्रबल होंगे मुझ परमेश्वर ने कहा और करूंगा।
१५ और मैं तुझे अन्यदेशियों में बिथराऊंगा और देशों में तुझे
छिन्न भिन्न करूंगा और तेरी अपवित्रता तुझ में से मिटा
१६ डालूंगा। और अन्यदेशियों के मध्य में तू आप में अशुद्ध
होगी और तू जानेगी कि मैं परमेश्वर हूं॥
१७ और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा।
१८ हे मनुष्य के पुत्र इसराएल का घराना मेरे लिये मैल हो रहा
है वे सब घरिये के मध्य में पीतल और जस्ता और लोहा
और सीसा हुए हैं और चांदी के मैल हैं॥
१९ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है क्योंकि तुम सब मैल
हुए हो सो अब देखो मैं तुम्हें यरूसलम के मध्य में एकट्ठा
२० करूंगा। जैसा चांदी और पीतल और लोहा और सीसा और
जस्ता को घरिया के मध्य में पिघलाने को एकट्ठा करते हैं
तैसा मैं अपने कोप और रिस में तुम्हें बटोरूंगा और उस में
२१ धरके पिघलाऊंगा। और मैं तुम्हें बटोरूंगा और अपने
क्रोध की आग से तुम्हें फूकूंगा और तुम उस के मध्य में
२२ पिघलाये जाओगे। जैसा चांदी घरिया में गलाई जाती है

तैसा तुम लोग उस के मध्य में गलाये जाओगे और तुम जानोगे
कि मुझ परमेश्वर ने अपना कोप तुम पर उंडेला है॥
२३ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।
२४ हे मनुष्य के पुत्र उस्से कह कि तू वही देश जो पवित्र नहीं
किया गया और जलजलाहट के दिन में तुझ पर बरसाया
२५ नहीं गया। उस के मध्य में उस के भविष्यद्वक्ता का एका
करना अहेर के फड़वैये गर्जनहारे सिंह की नाईं उन्हों ने प्राणों
को भक्षण किया है उन्हों ने धन और बहुमूल्य वस्तु लिया
है उन्हों ने उस के मध्य में बहुतों को बिधवा किया है।
२६ उस के याजकों ने मेरी व्यवस्था पर अंधेर किया है और मेरी
पवित्र वस्तुन को अशुद्ध किया है और उन्हों ने अपवित्र में
और पवित्र में कुछ भेद नहीं किया है न शुद्ध अशुद्ध में कुछ
भेद किया है और मेरे बिश्रामों से अपनी आंखें छिपाई हैं
२७ और मैं उन में अशुद्ध हुआ हूं। उस के मध्य में उस के अध्यक्ष
के घात करने में और प्राणों को नाश करने में और अधर्म्म
२८ कमाई में अहेर के फड़वैये हुंडार की नाईं हैं। और उस के
भविष्यद्वक्तों ने व्यर्थ देख देख और मिथ्या गणित कर कर
उन पर कच्चा गारा पोता है और कहते हैं कि प्रभु परमेश्वर
२९ यों कहता है और परमेश्वर ने नहीं कहा है। देश के लोगों
ने छल करके बटमारी किई है और दरिद्रों को और दीनों
को खिजाया है और उन्हों ने बृथा परदेशियों को सताया है॥
३० और बाड़ा बनाने को और देश के लिये मेरे आगे दरार में खड़ा
होने को मैं ने उन में एक जन को ढूंढ़ा जिसतें उन्हें नाश न
३१ करूं परन्तु किसी को न पाया। इस लिये मैं ने उन पर अपनी
जलजलाहट उंडेली है मैं ने अपने कोप की आग से उन्हें
भस्म किया है प्रभु परमेश्वर कहता है कि उन की चाल का
पलटा मैं ने उन के सिर पर डाला है॥

तेईसवां पर्व्व ।

१ फिर परमेश्वर का बचन यों कहते हुए मेरे पास पहुंचा ।
२ हे मनुष्य के पुच दो स्त्रियां एक माता की पुचियां थीं ।
३ और उन्हों ने मिस्र में व्यभिचार किया और उन्हों ने अपनी
तरुणाई में व्यभिचार किया वहां उन के स्तन मले गये और वहां
४ उन्हों ने अपने कुंवारपन के स्तन मर्दन करवाये । और उन
में की जेठी का नाम अहलः और उस की बहिन अहलिबः
वे मेरी थीं और वे बेटे बेटियां जनीं और उन के ये नाम
अहलः समरून है और अहलिबः यरूसलम ॥
५ और मेरे होते हुए अहलः ने बेश्याई किई और वुह अपने
६ जार परोसी असूरों पर मर रही थी। जो सेनापति और आज्ञाकारी
नीला पहिने हुए घोड़ों पर चढ़े हुए घोड़चढ़े सब के सब
७ मनोहर युवा पुरुष थे । यों उस ने अपने व्यभिचारों को उन्हें
सौंपा असूर के संतान के चुने हुए के संग और सभों पर वुह
मर रही थी उन की सारी मूर्त्तिन से उस ने आप को अशुद्ध
८ किया । उस ने मिस्र से भी अपने व्यभिचार को न त्यागा
क्योंकि उस की तरुणाई में उन्हों ने उस्से कुकर्म्म किया और
उन्हों ने उस के कुंवारपन के स्तनों को मीसा और अपना
व्यभिचार उस पर उंडेला ॥
९ इस लिये मैं ने उसे उस के जारों के हाथ में सौंपा अर्थात्
१० असूरियों के हाथ जिन पर वुह मर रही थी । इन्हों ने उस
का नंगापन उघारा उन्हों ने उस के बेटे बेटियों को लिया
और उसे तलवार से घात किया और वुह स्त्रियों में नामी
हुई क्योंकि उन्हों ने उस पर दंड की आज्ञा किई थी ॥
११ और जब उस की बहिन अहलिबः ने देखा तो उस ने
अपने अति मोह से उस्से अधिक अशुद्ध किया और अपने

व्यभिचार में अपनी बहिन के व्यभिचार से अधिक बढ़ गई।
१२ वुह अपने परोसी असूरियों पर जो भड़कीले से विभूषित और
घोड़ों पर चढ़े हुए घोड़चढ़े सब के सब मनोहर युवा पुरुष
१३ सेना और आज्ञाकारियों पर मर रही थी। तब मैं ने देखा
१४ कि वुह अशुद्ध हुई दोनों एक ही मार्ग में गई। और उस ने
अपने व्यभिचार कर्म्म बढ़ाये क्योंकि जब उस ने मनुष्यों को
चित्रित अर्थात् कसदियों की सूरत सिन्दूर से चित्रित भीत
१५ पर देखा। कटि में पटुका बंधा हुआ अति रंगीली पगड़ी
उन के सिरों पर सब के सब अपनी जन्म भूमि कसदी के
१६ बाबुलियों की नाईं देखने में अध्यक्ष। देखते ही वुह उन पर
मरने लगी और उन के पास कसदियों में उन्हों ने दूत भेजे।
१७ और बाबुल के सन्तान उस के पास प्रीति के बिछौने पर आये
और उन्हों ने अपने व्यभिचार से उसे अशुद्ध किया और वुह
उन के संग अशुद्ध हुई और उस का मन उन से फिर गया।
१८ यों उस ने अपने व्यभिचार उघारे और अपनी नग्नता उघारी
सो जैसा मेरा मन उस की बहिन से हट गया तैसा उस्से
१९ भी हटा। तथापि अपनी तरुणाई के दिनों को स्मरण करके
जिन में मिस्र देश में बेश्याई किई थी उस ने अपने
२० व्यभिचार बढ़ाये। क्योंकि वुह अपने जारों पर मरने लगी
उन का मांस गदहों का सा मांस और उन का बीर्य्य घोड़ों
२१ का सा। अपनी तरुणाई के स्तनों को मिस्रियों से अपनी
छाती मिसाने में तू ने अपनी लंपटता को स्मरण किया॥
२२ इस लिये हे अहलिबः प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख
मैं तेरे जारों को तेरे बिरुद्ध उभाडूंगा जिन से तेरा मन हटा
२३ है और मैं उन्हें चारों ओर से तेरे बिरुद्ध लाऊंगा। बाबुली
और सारे कसदी पीकूद और सूअ और कूअ और उन के संग
सारे असूरी सब के सब मनोहर युवा पुरुष सेनापति और

आज्ञाकारी और बड़े बड़े नामी अध्यक्ष सब के सब घोड़े पर
२४ चढ़े हुए। और वे रथों को और छकड़ों को और चक्रों को
बहुत से लोगों को साथ लेके तेरे बिरुद्ध आवेंगे और ढाल और
फरी और टोप चारों ओर तेरे बिरुद्ध होंगे और मैं उन के
आगे न्याय रक्खूंगा और वे अपने बिचार के समान तेरा
२५ बिचार करेंगे। और मैं अपना झल तेरे बिरुद्ध रक्खूंगा और
वे अति कोप से तुझ से ब्यवहार करेंगे वे तेरी नाक कान
काटेंगे और तेरे बचे हुए लोग तलवार से मारे जायेंगे वे तेरे
बेटे बेटियों को लेंगे और तेरे बचे हुए आग से भस्म होंगे।
२६ वे तेरे बस्त्र भी तुझ से उतारेंगे और तेरा अच्छा आभूषण
२७ ले लेंगे। और मैं तेरी लंपटता और मिस्र देश के ब्यभिचार
को मिटा डालूंगा यहां लों कि तू अपनी आंखें उन की ओर
न उठावेगी और फिर मिस्र को स्मरण न करेगी॥
२८ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख जिन से तू
घिन करती है और जिन से तेरा मन हटा हुआ है मैं तुझे उन
२९ के हाथ में सौंपूंगा। और वे घिन से तेरे संग ब्यवहार करेंगे
और तेरा सारा परिश्रम ले जायेंगे और तुझे नंगी और उघारी
छोड़ेंगे और तेरे ब्यभिचार का नंगापन तेरी लंपटता और तेरे
ब्यभिचार देखे जायेंगे॥
३० मैं इस कारण यह कार्य्य तुझ से करूंगा कि तू अन्यदेशियों
की ओर ब्यभिचार के लिये चली गई है और इस कारण कि
३१ तू उन की मूर्त्तिन से अशुद्ध हुई है। तू अपनी बहिन की
चाल पर चली है इस लिये मैं उस का कटोरा तेरे हाथ में
३२ देऊंगा। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तू अपनी बहिन के
बड़े और गहिरे कटोरे से पीयेगी तेरी हंसी और निन्दा किई
३३ जायेगी क्योंकि उस में बहुत समाता है। तू मतवालपन से
और शोक से और आश्चर्य्य और उजाड़ के कटोरे से अपनी

३४ बहिन समरून के कटोरे से भर जायेगी। और तू उसे पीयेगी
और चूस लेगी और उस का टुकड़ा टुकड़ा करेगी और अपने
ही स्तन उखाड़ डालेगी क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं
३५ ही ने कहा है। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है क्योंकि
तू मुझे भूल गई है और मुझे अपने पीछे डाल दिया है इस
लिये तू भी अपनी लंपटता और व्यभिचारों को भोग॥
३६ और परमेश्वर ने मुझ से यह भी कहा कि हे मनुष्य
के पुत्र क्या तू अहलः और अहलिबः के लिये बिवाद करेगा
३७ हां उन के घिनित कर्म्म उन पर प्रगट कर। क्योंकि उन्हों
ने परगमन किया है और लोहू उन के हाथों में है और उन्हों
ने अपनी मूर्त्तिन से परगमन किया है और जो बेटे वे मेरे
लिये जनीं उन्हों ने नाश के लिये उन्हें आग में से चलाया
३८ है। उन्हों ने मुझ से यह भी किया है उन्हों ने उसी दिन मेरे
पवित्र स्थान को अशुद्ध किया है और मेरे बिश्रामों को अशुद्ध
३९ किया है। और जब उन्हों ने अपने बालकों को अपनी मूर्त्तिन
के लिये घात किया तब वे उसी दिन मेरे पवित्र स्थान को
अशुद्ध करने को आईं और देख उन्हों ने मेरे घर के मध्य में
४० ऐसा किया है। और उससे अधिक जब तुम ने मनुष्यों को पास
भेजा जो दूर से आये जिन के पास दूत भेजे गये और देखो
वे आये जिन के लिये तू ने नहाया है और अपनी आंखों को
४१ रंगाया है और आभूषण से आप को संवारा है। और प्रतिष्ठित
पलंग पर बैठी और उस के आगे एक मंच सिद्ध था जिस पर
४२ तू ने मेरा धूप और मेरा तेल धरा था। और चैन से होते हुए
एक मंडली का शब्द उस के संग था और मनुष्यों के संग
लोगों की मंडली और बन में के साबियानी पहुंचाये गये
जिन के हाथों पर खड़वे और सिरों पर सुन्दर सुन्दर मुकुट
थे॥

४३ तब मैं ने व्यभिचार कर्म्म की पुरनिया से कहा कि वे अब
४४ उस्से और वुह उन से व्यभिचार करेगी। तथापि वे उस के
पास ऐसे गये जैसा वेश्या के पास जाते हैं सो वे लंपट स्त्री
४५ अहलः और अहलिबः के पास गये। और धर्म्मी लोग
व्यभिचारियों की रीति के समान और उन स्त्रियों की नाईं जो
लोहू बहाती हैं उन का बिचार करेंगे क्योंकि वे व्यभिचारिणी
और लोहू उन के हाथ में है॥

४६ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं उन पर एक जथा
लाऊंगा और निकाले जाने और लूट के लिये मैं उन्हें देऊंगा।
४७ और जथा उन्हें पत्थर से पथरावेगी और अपनी तलवार से
उन्हें बीन लेगी वे उन के बेटे बेटियों का घात करेंगे और
४८ उन के घर आग से भस्म करेंगे। इस रीति से मैं लंपटता
को देश में से मिटवा डालूंगा जिसतें सारी स्त्रियां चेताई जाके
४९ तुम्हारी लंपटता के समान न करें। और वे तुम्हारी लंपटता
का पलटा तुम्हें देंगे और तुम अपनी मूर्त्तिन के पाप भोगोगे
और जानोगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूं॥

चौबीसवां पर्ब्ब।

१ फिर नवें बरस के दसवें मास की दसवीं तिथि में यह
२ कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के
पुत्र दिन का नाम लिख अर्थात् इसी दिन का बाबुल के राजा
ने इसी दिन यरूसलम के बिरुद्ध आप को लैस कर रक्खा
है॥

३ और दंगइत घराने के लिये एक दृष्टान्त उच्चार और उन
से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि एक हंडा चढ़ा और
४ उस में जल भी डाल। उस के टुकड़े उस में बटोर हां जांघ
और कंधे का हर एक अच्छा टुकड़ा और चुनी हुई हड्डियों

५ से भर । और झुंड का चुना हुआ ले और उस के तले हड्डियां
जला और उसे अच्छी रीति से उबाल और उन में की हड्डियां
उसिन ॥

६ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि लोहू बहाऊ नगर
पर संताप उस हंडे को जिस का फेन उस में है और जिस का
फेन उस में से नहीं गया टुकड़ा टुकड़ा करके उसे निकाल
७ और उस पर चिट्ठी पड़ने न पावे । क्योंकि उस का लोहू उस
के मध्य में उस ने उसे एक पहाड़ की चोटी पर रक्खा उस
८ ने उसे धूल से ढांपने को भूमि पर न उंडेला । जिसतें पलटा
लेने को कोप पहुंचावे मैं ने उस के लोहू को पर्वत की चोटी
पर रक्खा है जिसतें ढांपा न जाये ॥

९ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि बधिक नगर पर
१० संताप हां मैं आग के लिये बड़ा ढेर बनाऊंगा । ईंधन बटोर आग
बार मांस को गला अच्छी रीति से सुगंधद्रव्य दे और हड्डियां
११ को जलने दे । तब छूछे उसे कोएलों पर धरो जिसतें उस का
पीतल गरमावे और जले और उस का मैल उसी में गल जाये
१२ और उस का फेन भस्म होवे । उस ने झूठ से मुझे थकाया
है और उस का बड़ा फेन उस में से निकल नहीं गया उस
१३ का फेन आग में पड़ेगा । तेरी अशुद्धता में लंपटता है इस
कारण कि मैं ने तुझे पवित्र किया है और तू पवित्र न हुआ
तू फिर अपनी अशुद्धता से पवित्र न किया जायेगा जब लों
मैं अपना कोप तुझ पर न उतरवाऊं ॥

१४ मुझ परमेश्वर ने यह कहा है और वही होगा मैं वही
करूंगा और मैं न हटूंगा न छोड़ूंगा न पछताऊंगा प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि तेरी चालों और तेरी करनियों के समान वे
तेरा विचार करेंगे ॥

१५ और यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा ।

१६ हे मनुष्य के पुत्र देख मैं एक चाेट से तेरी आंखों की बांछा
को ले लेता हूं तथापि तू शोक और बिलाप न करेगा और तेरे
१७ आंसू न बहेंगे। मत रो और मृतक के लिये बिलाप मत कर
सिर पर अपनी पगड़ी बांध और पांव में जूता पहिन और
ऊपर के होंठ मत ढांप और मनुष्यों की रोटी मत खा॥
१८ सो बिहान को मैं लोगों से बोला और सांझ को मेरी पत्नी
मर गई और जैसी मैं ने आज्ञा पाई थी तैसा मैं ने बिहान को
१६ किया। तब लोगों ने मुझ से कहा कि तू हमें न बतावेगा
२० जो तू करता है सो हमारे लिये क्या। तब मैं ने उन से
उत्तर दिया कि परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास
पहुंचा॥
२१ इसराएल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है
कि देखो मैं अपने पवित्रस्थान को और तुम्हारे बल की उत्तमता
को तुम्हारी आंखों की बांछा को और तुम्हारे प्राण की मया
को अशुद्ध करूंगा और तुम्हारे बेटे बेटियां जो बचे हैं सो
२२ तलवार से मारे पड़ेंगे। और मेरे कार्य्य के समान तुम लोग
करोगे तुम होंठ न ढांपोगे न मनुष्य की रोटी खाओगे।
२३ और तुम्हारी पगड़ियां तुम्हारे सिरों पर और तुम्हारी जूतियां
तुम्हारे पांव में होंगी और तुम शोक बिलाप न करोगे परन्तु
अपनी बुराइयों में गले जाओगे और एक दूसरे की ओर
२४ बिलाप करोगे। इसी रीति से हिज़क़िएल तुम्हारे लिये एक
चिन्ह है उस के सारे कार्य्य के समान तुम लोग करोगे और
जब यह आवे तब जानोगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूं॥
२५ और भी हे मनुष्य के पुत्र जब मैं उन के बल उन के
बिभव की आनन्दता और उन की आंखों की बांछा और उन
के मन के उभाड़ू अर्थात् उन के बेटे बेटियों को उन से ले
२६ लेऊंगा। उसी दिन जो बच निकलेगा सो तुझे सुनाने को

२७ आवेगा। उस दिन तेरा मुंह उस के लिये जो बच निकला
है खुल जायेगा और तू बोलेगा और फिर गूंगा न रहेगा और
तू उन के लिये एक चिन्ह होगा और वे जानेंगे कि मैं
परमेश्वर हूं॥

पचीसवां पर्व्व।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास
२ पहुंचा। हे मनुष्य के पुच अम्मूनियों के बिरुद्ध अपना मुंह
३ कर और उन के बिरुद्ध भविष्य कह। और अम्मूनियों से कह
कि प्रभु परमेश्वर का बचन सुनो प्रभु परमेश्वर यों कहता है
इस कारण कि तू ने मेरे पविचस्थान के बिरुद्ध जब वुह
अशुद्ध हुआ और इसराएल के देश के बिरुद्ध जब वुह उजाड़
हुआ और यहूदाह के घराने के बिरुद्ध जब वे बंधुआई में
४ पहुंचाये गये अहा कहा। इस लिये देखो मैं तुझे पूर्वी पुचों
के अधिकार के लिये सोंपूंगा और वे तुझ में अपने भवन
बनावेंगे और अपना निवास तेरे मध्य में करेंगे वे तेरा फल
५ खायेंगे और वे तेरा दूध पीयेंगे। और मैं रब्ब: को एक
ऊंटशाला और अम्मूनियों को भेड़शाला बनाऊंगा और तुम
लोग जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

६ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस लिये कि तू ने थपोड़ी
पीटी है और पांव पीटा है और इसराएल के देश के बिरुद्ध अपने
७ सारे मन के साथ आनन्द किया है। इस लिये देख मैं तेरे बिरुद्ध
अपना हाथ बढ़ाऊंगा और लूट के लिये तुझे अन्यदेशियों के
हाथ सोंपूंगा और लोगों में से तुझे काट डालूंगा और देशों में
से तुझे नाश करूंगा और तू जानेगा कि मैं परमेश्वर हूं॥

८ प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि मोआब और
सईर कहते हैं कि देख यहूदाह का घराना सारे अन्यदेशियों

९ की नाईं है। इस लिये देख मैं नगरों से देश के विभव के
आगे आगे के नगरों से अर्थात् बैतुलयसीमात और बअलमअ़ून
१० और क़रयतैन से मोआब की ओर को खोलूंगा। अम्मूनियों
के साथ में उसे अधिकार के लिये पूर्बी लोगों को दूंगा जिसतें
११ जातिगणों में अम्मूनियों का स्मरण न किया जाये। और मैं
मोआब को दंड देऊंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

१२ प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि अदूम ने यहूदाह
के घराने से बैर लेने के लिये बैर से व्यवहार किया और बड़ा
१३ अपराध किया है और अपना बैर उन से लिया। इस लिये
प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं अपना हाथ अदूम पर
बढ़ाऊंगा और उस में से मनुष्य को और पशु को नष्ट करूंगा
और तैमन से उसे शून्य करूंगा और ददान तलवार से मारे
१४ पड़ेंगे। और अपने इसराएल लोगों के द्वारा मैं अपना बैर
अदूम से लेऊंगा और प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि वे मेरे
कोप और मेरी रिस के समान अदूम से करेंगे और वे मेरा बैर
जानेंगे॥

१५ प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस लिये कि फ़िलिस्तियों ने बैर
से व्यवहार किया है और पुराने बैर के लिये नाश करने को
१६ घातक मन से बैर लिया है। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों
कहता है कि देख मैं फ़िलिस्तियों पर अपना हाथ बढ़ाऊंगा
और करीतीयों को काट डालूंगा और समुद्र के घाट के रहे
१७ हुओं को नाश करूंगा। और मैं अपने कोप के दपट से उन
से बड़ा पलटा लेऊंगा और जब मैं उन से पलटा लेऊंगा तो
वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

छब्बीसवां पर्व्व।

१ और ग्यारहवें बरस में मास के पहिले दिन परमेश्वर का

२ वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र
इस कारण कि सूर ने यरूसलम के विरुद्ध कहा है कि अहा
लोगों के फाटक वुह टूट गई सो मेरी ओर फिरी है अब उस
३ के उजाड़े जाने से मैं भर जाऊंगा। इस लिये प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि देख हे सूर मैं तेरे विरुद्ध हूं और जैसा
समुद्र अपनी लहरों को उठाता है तैसा मैं तेरे विरुद्ध बहुत
४ से जातिगणों को उठवाऊंगा। और वे सूर की भीत को नाश
करेंगे और उस के गुम्मटों को ढा देंगे और मैं उस पर की
धूल भी खुरच डालूंगा और उसे चटान की चोटी की नाईं
५ करूंगा। वुह समुद्र के मध्य जाल बिछाने के लिये होगा
क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं ने कहा है वुह
६ जातिगणों में एक लूट होगा। और उस की बेटियां जो खेत
में हैं तलवार से मारी जायेंगी और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर
हूं॥

७ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं सूर पर
उत्तर से राजाओं के राजा अर्थात् बाबुल के राजा नबुखुदनज़र
को घोड़ों और रथों और घोड़चढ़ों और जथा बहुत से लोगों
८ के साथ लाऊंगा। वुह खेत में तेरी लड़कियों को तलवार से
घात करेगा और तेरे विरुद्ध गढ़ बनावेगा और टीला उठावेगा
९ और तेरे विरुद्ध फरी उठावेगा। और संग्राम की सामग्री तेरी
भीतों के विरुद्ध लगावेगा और वुह अपनी कुदारियों से तेरे
१० गुम्मटों को ढा देगा। उस के घोड़ों की बहुताई के मारे उन
की धूल तुझे ढांपेगी जब वुह टूटे नगरों के प्रवेशों के समान
तेरे फाटकों में पैठेगा तब घोड़चढ़ों के और पहियों के और
११ रथों के शब्द के मारे तेरी भीतें हिल जायेंगी। वुह अपने
घोड़ों की टापों से तेरी सारी सड़कों को लताड़ेगा वुह तलवार
से तेरे लोगों को घात करेगा और तेरे दृढ़ सैन्यस्थान भूमि

१२ पर गिर जायेंगे। और वे तेरा धन लूटेंगे और तेरे व्यापार
को नाश करेंगे और वे तेरी भीतें तोड़ डालेंगे और तेरे बांछित
घरों को नष्ट करेंगे और तेरे पत्थर और लट्ठे और धूल जल
१३ के मध्य में डाल देंगे। और मैं तेरे गान का शब्द बन्द
करूंगा और तेरी बीणा का शब्द फिर सुना न जायेगा।
१४ और मैं तुझे एक पहाड़ की चोटी की नाईं करूंगा तू जाल
फैलाने के लिये होगा और तू फिर उठाया न जायेगा क्योंकि
प्रभु परमेश्वर कहता है कि मुझ परमेश्वर ने कहा है॥

१५ प्रभु परमेश्वर सूर से यों कहता है कि जब घायल लोग
रोवेंगे और तेरे मध्य में जूझ होगी तब क्या टापू तेरे गिरने के
१६ शब्द से न थर्थरावेंगे। तब समुद्र के समस्त अध्यक्ष अपने अपने
सिंहासन से उतरेंगे और अपने अपने बागे को त्यागेंगे और
अपने बूटे काढ़े हुए बस्त्रों को उतारेंगे वे थर्थराहट को
पहिनेंगे भूमि पर बैठ बैठ पल पल थर्थरावेंगे और तुझ से
१७ बिस्मित होंगे। और वे तेरे लिये एक बिलाप करेंगे और तुझ
से कहेंगे कि हे समुद्रों के निवासी तू क्योंकर नष्ट हुआ वुह
बिदित नगर जो समुद्र में दृढ़ था वुह और उस के निवासी
१८ अपना भय अपने सारे व्यवहारियों पर दिखाते हैं। अब तेरे
गिरने के दिन टापू थर्थरावेंगे और समुद्र में के टापू तेरे जाने
से व्याकुल होंगे॥

१९ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब मैं तुझे अबसाव
नगरों की नाईं एक उजाड़ नगर बनाऊंगा और जब मैं
गहिराव को तुझ पर लाऊंगा और बड़े बड़े पानी तुझे ढांपेंगे।
२० जब मैं तुझे पुरातन समय के लोगों की नाईं गड़हे के उतरवैयों
के समान उतारूंगा और तुझे पृथिवी के नीच स्थानों में
बैठाऊंगा प्राचीन उजाड़ स्थानों में उन के संग जो गड़हे में
उतरते हैं जिसतें तू बसाया न जाये और मैं जीवतों के देश

२१ में बिभव रक्खूंगा। तब मैं तुझे भय बनाऊंगा और तू न
होगा प्रभु परमेश्वर कहता है कि यद्यपि तू ढूंढ़ा जाये तथापि
तू कधी पाया न जायेगा॥

सत्ताईसवां पर्ब्ब।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।
२ और तू हे मनुष्य के पुत्र अब सूर के लिये विलाप कर।
३ और सूर से कह कि अरे तू जिस का ठिकाना समुद्र की पैठ
में है और बहुत से टापुओं के लोगों के लिये ब्यापारी है प्रभु
परमेश्वर यों कहता है कि अरे सूर तू ने कहा है कि मैं सुन्दरता
४ में सिद्ध हूं। तेरे सिवाने समुद्रों के मध्य में हैं और तेरे
५ बनवैये ने तेरी सुन्दरता को पूरा किया है। उन्हों ने तेरी
सारी पटियां सनीर के चीर पेड़ से बनाई हैं तेरे गुनरखे
६ बनाने को उन्हों ने लुबनान से देवदारु पेड़ लिया है। उन्हों
ने तेरे डांड़ों को बसन के बलूत पेड़ों से बनाया है और क्रित्ती
के टापुओं से असूर की जथाओं ने हाथी दांत लाके तेरे
७ बैठकों को बनाया है। तू ने अपने पाल के लिये मिस्र से
बूटा काढ़ा हुआ झीना बस्त्र फैलाया है और इलीसः के टापुओं
के बैंजनी और लाल बस्त्र ने तुझे ढांपा है॥
८ सैदा और अरवाद के निवासी तेरे डांड़ी थे और हे सूर
९ तेरे बुद्धिमान जो तुझ में थे तेरे मांझी थे। जबल के प्राचीन
और वहां के बुद्धिमान तेरे गहनकार थे तेरे ब्यापार के लिये
समुद्र की सारी जहाजें डांड़ी सहित थीं॥
१० फारसी और लूदी और फूदी तेरी सेना में तेरे योद्धा थे
उन्हों ने ढाल और टोप तुझ में लटकाया उन्हों ने तेरी
११ सुन्दरता प्रगट किई। अरवाद के लोग तेरी भीतों पर तेरी
सेना के संग चारों ओर थे और बीर तेरे गुम्मटों पर थे वे

चारों ओर तेरी भीतों पर अपनी ढाल लटकाते थे और उन्हों
ने तेरी सुन्दरता को पूरा किया॥
१२ समस्त रीति के धन की बहुताई के कारण तरसीस चांदी
और लोहे और जस्ते से और शीशे से तेरे व्यापारी थे और वे
१३ तेरी हाटों में व्यापार करते थे। यावन और तूबल और मसक
तेरे व्यापारी थे वे मनुष्यों का और पीतल के पात्र का तेरी
१४ हाट में व्यापार करते थे। तजरम: के घराने तेरी हाटों में
घोड़ों का और घोड़चढ़ों का और खच्चरों का व्यापार करते थे।
१५ ददान के लोग तेरे व्यापारी थे बहुत से टापू तेरे हाथ के
व्यापार थे वे तेरी भेंट के लिये हाथीदांत के सींग और आबनूस
१६ लाते थे। तेरे बनाये हुए कार्य्य की अधिकाई के मारे अराम
तेरा व्यापारी था वुह तेरी हाट में पन्ना और बैंजनी और बूटा
काढ़ा हुआ झीना वस्त्र और मूंगा और नीलम बेंचते कीनते
१७ थे। यहूदाह और इसराएल के देश तेरे व्यापारी थे वे मिनियत
का गोहूं और पक्वान और मधु और तेल और घूना को तेरी
१८ हाट में व्यापार करते थे। सारे धन की बहुताई के लिये तेरी
बनाई हुई सामग्री की अधिकाई में हलबून के दाखरस और
१९ श्वेत ऊन में दमिशक तेरे बेपारी थे। बदान और यावन
तेरी हाटों में सूत का व्यापार करते थे और तेरी हाटों में
२० उजला लोहा और तेजपात और दारचीनी बेचते थे। रथों
२१ के लिये बहुमूल्य वस्त्र से ददान तेरा व्यापारी था। अरब
और क़ीदार के सारे अध्यक्ष मेम्ने से और मेढ़े और बकरी से
तेरे हाथों के व्यापार थे इन वस्तुन के वे तेरे लिये व्यापारी
२२ थे। सिबा और रगमः के व्यापारी तेरे व्यापारी थे वे सारे श्रेष्ठ द्रव्य
और बहुमूल्य मणि और सोने से तेरी हाट में व्यापार करते
२३ थे। हररान और कन्नः और अदन और सिबा और असूर और
२४ किलमद के व्यापारी तेरे व्यापारी थे। ये लोग नील नीले परत

में ओर बूटा काढ़े हुए में ओर देवदारु काष्ठ की मंजूषा में
वहुमूल्य वस्त्र में डोरों से बंधे हुए तेरे व्यापार में वे व्यापारी
२५ थे। तेरी हाटों में तरसीस की जहाज़ें तेरा गान करती थीं तू
भरा गया था ओर समुद्र के मध्य में बड़ा तेजवान हुआ
है ॥
२६ तेरे डांड़ी तुझे गंभीर जलों में लाये हैं समुद्रों के मध्य में
२७ पूर्वी पवन ने तुझे तोड़ा है। तेरे धन ओर तेरी हाट ओर
तेरे व्यापार ओर तेरे नाविक ओर तेरे मांझी ओर तेरे गहनकार
ओर तेरे व्यापारों के अधिकारी ओर तेरे योद्धा जो तुझ में हैं
ओर तेरी सारी जथायें जो तेरे मध्य में हैं तेरे नाश के दिन
२८ में समुद्रों के बीच तुझ में गिरेंगे। तेरे मांझियों के चिल्लाने
२९ के शब्द से लहरें हलोरा मारेंगी। ओर सारे डांड़ी ओर नाविक
ओर समुद्र के सारे मांझी अपनी अपनी जहाज़ों से उतरके
३० भूमि पर खड़े होंगे। ओर तेरे विरुद्ध अपना शब्द सुनावेंगे
ओर बिलख बिलख रोवेंगे ओर अपने सिरों पर धूल उड़ावेंगे
३१ ओर आप राख पर लोटेंगे। ओर वे तेरे लिये आप को सर्वथा
मुंडा करेंगे ओर आप टाटवस्त्र ओढ़ेंगे ओर वे तेरे लिये मन
३२ की कड़वाहट से बिलख बिलख रोवेंगे। ओर वे अपने विलाप
में तेरे लिये एक विलाप उठा उठा तुझ पर विलाप करेंगे कि
३३ सूर के समान कोन समुद्र के मध्य में नष्ट हुआ है। जब
तेरी सामग्री समुद्र में से निकली तब तू ने बहुत लोगों को
भर दिया तू ने अपने धन की ओर व्यापार की बहुताई से
३४ पृथिवी के राजाओं को धनी किया है। तू जिस समय में
समुद्र से जलों की गंभीरता में तोड़ी जायेगी उस समय तेरा
व्यापार ओर तेरे मध्य में की सारी जथा तुझ में गिरेंगी।
३५ टापुओं के सारे निवासी तुझ से आश्चर्य्यित होंगे ओर उन के
३६ राजा बहुत डर जायेंगे ओर उन का रूप व्याकुल होगा। लोगों

में के व्यापारी तुझ पर फुफकारेंगे और तू भयानक होगा और
फिर कभी न होगा ॥

अट्ठाईसवां पर्व्व ।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा ।
२ हे मनुष्य के पुत्र सूर के प्रधान से यों कह कि प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि अपने मन के उभाड़े जाने से तू ने कहा
है कि मैं सर्वशक्तिमान हूं मैं हीं समुद्रों के मध्य में देव के
आसन पर बैठा हूं यद्यपि तू अपने मन को ईश्वर के मन के
३ समान करे तथापि तू मनुष्य है और सर्वशक्तिमान नहीं। देख
तू दानिएल से अधिक बुद्धिमान है और वे तुझ से कोई भेद
४ छिपा नहीं सक्ते । तू ने अपनी बुद्धि और समझ से धन प्राप्त
किया है और सोना चांदी अपने भंडारों में प्राप्त किया है ।
५ तू ने अपनी बड़ी बुद्धि से और अपने व्यापार से अपना धन
बढ़ाया है और तेरे धन के कारण तेरा मन उभाड़ा गया
है॥

६ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तू ने अपने
७ मन को ईश्वर के मन के समान किया है । इस लिये देख मैं
उपरियों को अर्थात् जातिगणों के भयंकरों को तुझ पर लाऊंगा
और वे तेरी बुद्धि की सुन्दरता के विरुद्ध अपनी तलवार
८ खींचेंगे और तेरी चमक अशुद्ध करेंगे । वे तुझे गड़हे में
उतारेंगे और तू उन की मृत्यु से मरेगा जो समुद्र के मध्य में
९ जूझे जाते हैं । क्या तू अपने घातक के आगे कहेगा कि मैं
परमेश्वर हूं परन्तु तू अपने घातक के हाथ में मनुष्य होगा
१० और सर्वशक्तिमान नहीं । तू उपरियों के हाथ से अख़तनों की
मृत्यु मरेगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं ने कहा
है ॥

११　फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।
१२ कि हे मनुष्य के पुत्र तू सूर के राजा के विषय में एक विलाप
उठाके उस्से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तू सब
वस्तु की सिद्धता है बुद्धि की भरपूरी और सुन्दरता का अंत।
१३ ईश्वर के अदन की बारी में तू गया है हर एक मणि अर्थात्
पद्मराग और फीरोज और हीरा और बैदूर्य्य और चंद्रकांत और
नीलमणि और मरकत और पन्ना और गोमेद और सोना तेरा
ओढ़ना था और तू जिस दिन सृजा गया था उसी दिन तेरे
१४ तबले और बांसुरी के कार्य्यकारी तुझ में बनाये गये। तू
अभिषिक्त ढंपवैया करूब है और मैं ने तुझे यों किया है तू
ईश्वर के पवित्र पर्वत के ऊपर था तू आग के पत्थरों के मध्य
१५ भ्रमता फिरता था। अपनी उत्पत्ति के दिन से जब लों तुझ
में बुराई न पाई गई तू अपनी चालों में सिद्ध था॥
१६　तेरे ब्यापार की बहुताई से उन्हों ने तेरे मध्य को अंधेर
से भरा है और तू ने पाप किया है इस लिये मैं तुझे ईश्वर के
पर्वत में से अशुद्ध की नाईं त्यागूंगा और अरे ढंपवैये करूब
१७ मैं तुझे आग के पत्थरों के मध्य में से नष्ट करूंगा। तेरी
सुन्दरता के कारण तेरा मन उभाड़ा गया है तू ने अपने तेज
के लिये अपनी बुद्धि को बिगाड़ा है मैं तुझे भूमि पर फेंकूंगा।
१८ मैं राजाओं के आगे तुझे धरूंगा जिसतें वे तुझे देखें। तू ने
अपनी बुराई की अधिकाई से और अपने ब्यापार की बुराई से
अपने पवित्रस्थानों को अशुद्ध किया है इस लिये मैं तेरे मध्य
में से एक आग निकालूंगा जो तुझे भस्म करेगी और तेरे सारे
१९ देखवैयों की दृष्टि में मैं तुझे भूमि पर राख करूंगा। लोगों में
तेरे सारे जानकार तुझ से आश्चर्य्यित होंगे तू भय होगा और
फिर कधी न होगा॥
२०　यह कहते हुए फिर परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।

२१ कि हे मनुष्य के पुत्र अपना रुख सैदा के विरुद्ध कर और उस
२२ के विरुद्ध भविष्य कह। और बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता
है कि अरे सैदा देख मैं तेरे विरुद्ध हूं और मैं तेरे मध्य में
महिमा पाऊंगा और जब मैं उस पर दंड देके उस में पवित्र
२३ माना जाऊंगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं। और मैं उस
में मरी और उस की सड़कों में लोहू भेजूंगा और उस के मध्य
में घायल लोग चारों ओर तलवार से बिचारे जायेंगे और वे
२४ जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं। और इसराएल के घराने के लिये
चुभवैया कांटा न रहेगा और उस के निन्दकों में उस की
चारों ओर उन के मध्य में कोई दुखदाई कांटा न रहेगा और
वे जानेंगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूं॥

२५ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जब मैं इसराएल के घराने
को लोगों में से जहां वे बिथरे हैं बटोरूंगा और अन्यदेशियों
की दृष्टि में पवित्र जाना जाऊंगा तब वे अपने देश में रहेंगे
२६ जो मैं ने अपने दास यअकूब को दिया है। और वे उस में
चैन से रहेंगे और घर उठावेंगे और दाख की बारी लगावेंगे
जब मैं उन की चारों ओर के निन्दकों पर न्याय दंड देऊंगा
तब वे भरोसे से रहेंगे और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर उन का
ईश्वर हूं॥

उंतीसवां पर्व्व।

१ दसवें बरस के दसवें मास की बारहवीं तिथि में यह कहते
२ हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र
मिस्र के राजा फ़िरऊन के विरुद्ध अपना मुंह कर और उस के
विरुद्ध और सारे मिस्र के विरुद्ध भविष्य कह॥

३ बोल और कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मिस्र के
राजा फ़िरऊन मैं तेरे विरुद्ध हूं तू महा अजगर जो अपनी

नदियों के मध्य में रहता है जिस ने कहा है कि मेरी नदी मेरी
४ है और मैं ने उसे अपने ही लिये बनाया है। परन्तु मैं तेरे
गलफरे में कंटिया लगाऊंगा और तेरी नदियों की मछलियों
को तेरे चोयों में चिपकाऊंगा और तेरी नदी के मध्य में से
तुझे निकालूंगा और तेरी नदी की सारी मछलियां तेरे चोयों
५ में चिपकेंगी। और अरण्य में मैं तुझे और तेरी नदी की सारी
मछलियों को छोड़ूंगा और तू खेतों पर गिरेगा और एकट्ठा
न किया जायेगा न बटोरा जायेगा मैं ने तुझे बनपशु को और
६ आकाश के पंछियों के आहार के लिये दिया है। और मिस्र के
सारे निवासी जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं क्योंकि वे इसराएल के
७ घराने के लिये नरकट के एक दंड हुए हैं। जब उन्हों ने
तुझे हाथ में पकड़ा तब तू ने तोड़के उन के कांधों को फाड़ा
और जब वे तुझ पर ओठंगे तब भी तू ने तोड़के सारी कटि
८ को रोका। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं
तुझ पर तलवार लाऊंगा और तुझ में से मनुष्यों को और
९ पशुन को नष्ट करूंगा। और मिस्र देश उजाड़ और शून्य हो
जायेगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं क्योंकि उस ने कहा
कि नदी मेरी है और मैं ने उसे बनाया है॥

१० इस लिये देख मैं तेरे बिरुद्ध और तेरी नदियों के बिरुद्ध
और मैं मिस्र देश को सयेनी के गुम्मट से कूश के सिवाने
११ लों उजाड़ों का उजाड़ करूंगा। किसी मनुष्य और किसी पशु
का पांव उस में से न जायेगा और चालीस बरस लों उस में
१२ कोई न बसेगा। और मैं मिस्र देश को उजाड़ देशों के मध्य
में उजाड़ करूंगा और उस के नगर उजाड़ नगरों में और
चालीस बरस लों उजाड़ रहेंगे और मैं मिस्रियों को जातिगणों
में बियराऊंगा और उन्हें सारे देशों में छिन्न भिन्न करूंगा॥

१३ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि चालीस बरस के

अन्त में मैं मिस्रियों को लोगों में से जहां जहां वे छिन्न भिन्न
१४ हुए एकट्ठे करूंगा। और मैं मिस्र की बंधुआई को फेर लाऊंगा
और उन्हें फ़तरूस देश में उन की जन्मभूमि में फेर लाऊंगा
१५ और वे वहां एक तुच्छ राज्य होंगे। वुह राज्यों में सब से
तुच्छ होगा और वुह आप को फेर देशगणों पर न उभाड़ेगा
और मैं उन्हें घटाऊंगा जिसतें जातिगणों पर प्रभुता न
१६ करेंगे। जब वे उन के पीछे ताकेंगे तब वुह फेर इसराएल
के घराने का भरोसा न होगा जो उन की बुराइयों को चेत
दिलाता है परन्तु वे जानेंगे कि मैं प्रभु परमेश्वर हूं॥
१७ और सत्ताईसवें बरस के पहिले मास की पहिली तिथि में
ऐसा हुआ कि यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास
पहुंचा॥
१८ हे मनुष्य के पुत्र बाबुल के राजा नबूख़ुदनज़र ने सूर के
बिरुद्ध अपनी बड़ी सेना से बड़ी सेवा कराई हर एक सिर
मुड़ा हुआ और हर एक कंधा छिल गया तथापि उस ने
और उस की सेना ने सूर के लिये अपने बिरुद्ध की सेवा
१९ के लिये कुछ प्रतिफल न पाया। इस लिये प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि देख मैं बाबुल के राजा नबूख़ुदनज़र को
मिस्र देश देऊंगा और वुह उस की सारी मंडली को लेगा
और उस की लूट को लूटेगा और उस के अहेर को अहेरेगा
२० और वही उस की सेना का प्रतिफल होगा। प्रभु परमेश्वर यों
कहता है कि मैं उस के बिरुद्ध उस की सेना के लिये उस
के प्रतिफल में उसे मिस्र देश देऊंगा क्योंकि उन्हों ने मेरे लिये
२१ कार्य्य किया है। उस दिन मैं इसराएल के घराने के सींग
को उभाड़ूंगा और उन के मध्य में तेरा मुंह खोल देऊंगा और
वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

तीसवां पर्ब्ब ।

१   यह कहते हुए फिर परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा ।
२ हे मनुष्य के पुत्र भविष्य कहके प्रचार कि प्रभु परमेश्वर यों
कहता है कि तुम चिल्ला चिल्ला कहो कि उस दिन पर संताप ।
३ क्योंकि वुह दिन अर्थात् परमेश्वर का दिन एक घटा का दिन
४ पास है वुह अन्यदेशियों का समय होगा । और तलवार
मिस्र पर आवेगी और जब मिस्र में जूझे हुए गिरेंगे और वे
उस की मंडली को ले जायेंगे और उस की नेवें तोड़ी जायेंगी
५ तब कूश पर बड़ी पीड़ा होगी । और कूश और फूत और
लूद और सारे मिले जुले लोग और कूब और मिले हुए देश
के सन्तान उस के साथ तलवार से गिरेंगे ॥
६   परमेश्वर यों कहता है कि जो मिस्र को संभालते हैं सो
भी गिरेंगे और उस के पराक्रम का अहंकार उतर आवेगा प्रभु
परमेश्वर कहता है कि वे मिजदाल से सयेनी लों तलवार से
७ गिरेंगे । और वे उजाड़ देशों के मध्य में उजाड़ होंगे और
८ उस के नगर उजाड़ नगरों के मध्य में होंगे । और जब मैं
मिस्र में आग लगाऊंगा और उस के सारे उपकारी चूर होंगे
तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥
९   उस दिन दूत मुझ में से जहाज़ों में निश्चिन्त कूशियों के
डराने को निकलेंगे और उन पर मिस्र के दिन के समान बड़ी
पीड़ा पड़ेगी क्योंकि देख वुह आता है ॥
१०   प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं बाबुल के राजा नबूखुदनज़र
के हाथ से मिस्र की सारी मंडली को भी मिटा डालूंगा ।
११ वुह और जातिगणों के भयानक लोग उस के साथ देश नष्ट
करने को भेजे जायेंगे और वे मिस्र के विरुद्ध अपनी तलवार
१२ खींचेंगे और देश को जूझे हुओं से भर देंगे । और मैं नदियों

को सुखाऊंगा और दुष्टों के हाथ में देश बेचूंगा और मैं परदेशियों
के हाथ से देश को और उस की भरपूरी को उजाड़ूंगा मैं ही
परमेश्वर ने कहा है ॥
१३ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं मूर्त्तिन को भी नष्ट
करूंगा और नफ़ में से मूर्त्तिन को मिटा डालूंगा और फिर
मिस्र देश का अध्यक्ष न होगा और मैं मिस्र देश को डराऊंगा।
१४ और मैं फतरूस को उजाड़ूंगा और ज़ुअन में आग लगाऊंगा
१५ और नो को दंड देऊंगा। और मिस्र के गढ़ सीन पर अपना
१६ कोप उंडेलूंगा और नो की मंडली को काट डालूंगा। और मैं
मिस्र में आग लगाऊंगा और सीन को बड़ी पीड़ा होगी और
नो टुकड़ा टुकड़ा किया जायेगा और नफ़ को प्रति दिन दुख
१७ होगा। अवन के और फ़िबसत के तरुण तलवार से गिरेंगे
१८ और वे बंधुआई में जायेंगे। जब मैं वहां मिस्र के जूओं को
तोड़ूंगा और उस में उस के बल का अन्त करूंगा तब
तिहफ़निहीस में भी दिन अंधियारा होगा वुह जो है एक मेघ
उस पर छा जायेगा और उस की बेटियां बंधुआई में जायेंगी।
१९ इस रीति से मैं मिस्र को दंड देऊंगा और वे जानेंगे कि मैं
परमेश्वर हूं ॥
२० और ग्यारहवें बरस के पहिले मास की सातवीं तिथि में
ऐसा हुआ कि परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास
पहुंचा ॥
२१ हे मनुष्य के पुत्र मैं ने मिस्र के राजा फ़िरऊन की भुजा
तोड़ी है और देख तलवार धरने के लिये उसे चंगी करके
२२ दृढ़ करने को उस पर पट्टी लपेटके बांधी न जायेगी। इस
लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं मिस्र के राजा
फ़िरऊन के विरुद्ध हूं और उस की बलवती और टूटी हुई भुजा
२३ को तोड़ूंगा और उस के हाथ से तलवार गिरा देऊंगा। और

देशगणों में मैं मिस्रियों को बिथराऊंगा और देशों में उन्हें
छिन्न भिन्न करूंगा॥
२४ और मैं बाबुल के राजा की भुजा को बलवती करूंगा और
अपनी तलवार उस के हाथ में देऊंगा परन्तु फ़िरऊन की
भुजा तोडूंगा और वुह उस के आगे मारू घाव के कहरने से
२५ कहरेगा। परन्तु मैं बाबुल के राजा की भुजा को बलवती
करूंगा और फ़िरऊन की भुजा गिर पड़ेगी और जब मैं अपनी
तलवार बाबुल के राजा के हाथ में देऊंगा और वुह मिस्र
देश पर उसे बढ़ावेगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं।
२६ और मैं जातिगणों में मिस्रियों को बिथराऊंगा और उन्हें देशों
में छिन्न भिन्न करूंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

एकतीसवां पर्व्व।

१ और ग्यारहवें बरस के तीसरे मास की पहिली तिथि में
ऐसा हुआ कि परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास
२ पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र मिस्र के राजा फ़िरऊन को और
उस की मंडली को यह कह कि तू अपने महत्त्व में किस के
३ समान है। देख असूरी सुन्दर डालें रखते हुए छायावान और
लुबनान का एक बड़ा देवदारु पेड़ था और उस की फुनगी
४ घनी डालों पर थी। पानियों ने उसे पाला और गहिराव ने
अपनी नदियों से उस के झाड़ों की चारों ओर फिरते हुए उसे
५ पोसा और उस की नालियां खेत के सारे पेड़ों लों पहुंच गईं। इस
लिये उस की ऊंचाई खेत के सारे पेड़ों से बढ़ गई और उस
की डालियां फूट फूटके पानियों की बहुताई से लंबी लंबी
६ हुईं। उस की डालों पर आकाश के सारे पंछियों ने बसेरा
किया और उस की डालियों के तले चौगान के सारे बनपशु
बच्चे जने और उस की छाया तले बड़े बड़े जातिगण बसे।

७ यहां लों कि उस की डालियों की लम्बाई में उस का महत्त्व
सुन्दर था क्योंकि उस की जड़ बड़े बड़े पानियों के लग थी।
८ ईश्वर की बारी के देवदारु पेड़ उसे ढांप न सक्ते थे और सरो
वृत्त उस की डालों की नाईं न थे और अरमून का पेड़ उस की
डालियों की नाईं न था उस की सुन्दरता में ईश्वर की बारी
९ का कोई पेड़ उस के तुल्य न था। मैं ने उस की डालों की
बहुताई से उसे सुन्दर किया यहां लों कि ईश्वर की बारी अदन
के सारे पेड़ों ने उस्से डाह किया॥
१० इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तू ने ऊंचाई
में आप को उभाड़ा है और उस ने अपनी फुनगी घनी डालों में
ऊपर किई और उस की ऊंचाई में उस का मन उभड़ा है।
११ इस लिये मैं ने उसे अन्यदेशी के एक पराक्रमी के हाथ में
सोंपा है वुह निश्चय उस्से व्यवहार करेगा मैं ने उस की
१२ दुष्टता के लिये उसे दूर किया है। और जातिगणों के भयंकर
परदेशियों ने उसे काटके छोड़ दिया है पर्वतों पर और सारी
तराई में उस की डालियां गिरी हैं और उस की डालें देश की
सारी नदियों के लग टूटी हैं और पृथिवी के सारे लोग उस
की छाया तले से निकल गये और उसे छोड़ दिया॥
१३ उस के उजाड़ पर आकाश के सारे पंछी बसेंगे और सारे
१४ बनपशु उस की डालियों पर रहेंगे। जिसतें जल के लग के
सारे पेड़ों में कोई अपनी ऊंचाई के लिये अहंकार न करे और
अपनी फुनगी मोटी डालों में न उगावे और उन के सारे पेड़
अपनी ऊंचाई पर न ठहरें जो पानी सोखते हैं क्योंकि वे सब
के सब पृथिवी के नीचे के स्थानों के लिये उन के संग जो
गड़हे में उतरते हैं मनुष्यों के संतान के मध्य में मृत्यु के
लिये सोंपे गये॥
१५ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस दिन वुह पाताल में

उतरा मैं ने बिलाप करवाया मैं ने उस के लिये गहिराव को
ढांपा और उस के बाढ़ों को रोका और बड़े बड़े पानी थम
गये और मैं ने उस के लिये लुबनान को अंधियारा करवाया
१६ और उस के लिये चौगान के सारे पेड़ मूर्छित हुए। जब मैं
ने उसे उन के संग जो गड़हे में उतर पड़ते हैं पाताल में
उतार दिया तब उस के गिरने के शब्द से मैं ने जातिगणों
को कंपवाया और अदन के सारे पेड़ लुबनान के अच्छे और
चुने हुए सब जो पानी सोखते हैं पृथिवी के नीचे स्थानों में
१७ शान्ति पावेंगे। वे भी उस के संग तलवार से जूझे हुए कने
पाताल में उतर गये और उस की बांह अन्यदेशियों के मध्य
में उस की छाया तले रहती थी॥
१८ महात्म में और प्रतिष्ठा में अदन के पेड़ों में से तू किस के
तुल्य है तथापि अदन के पेड़ों के संग तू पृथिवी के नीचे
स्थानों में उतारा जायेगा तू अखतनों के मध्य में तलवार
से जूझे हुओं के संग पड़ा रहेगा प्रभु परमेश्वर कहता है कि
फ़िरऊन और उस की सारी मंडली यह है॥

बत्तीसवां पर्व्व।

१ और बारहवें बरस के बारहवें मास की पहिली तिथि में
२ परमेश्वर का वचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य
के पुत्र मिस्र के राजा फ़िरऊन के लिये एक बिलाप निकाल
और उस्से कह कि तू जातिगणों के एक तरुण सिंह की नाईं
और समुद्र में के एक कुंभीर की नाईं तू अपनी नदियों से
निकला है और अपने पांव से पानी हंडोला है और उन की
नदियों को गदला किया है॥
३ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि इसी लिये मैं बहुत से
लोगों की जथा के संग अपना जाल तुझ पर फैलाऊंगा और

४ वे मेरे जाल में तुझे उठा लेंगे। तब मैं तुझे भूमि पर छोड़ूंगा
मैं तुझे चागान में फेंक देऊंगा और तुझ पर सारे आकाश के
पंछियों को बैठालूंगा और मैं पृथिवी के सारे पशुन को तुझ से
५ तृप्त करूंगा। और मैं तेरे मांस को पर्वतों पर डालूंगा और
६ तेरी ऊंचाई से तराइयों को भर देऊंगा। और जिस देश में तू
पैरता है उसे पहाड़ लों तेरे लोहू से सींचूंगा और नदियां तुझ
से भर जायेंगी॥
७ और जब मैं तुझे बुझाऊंगा तब मैं स्वर्ग को ढांपूंगा और
उस के तारों को अंधियारा करूंगा मैं मेघ से सूर्य्य को ढांपूंगा
८ और चन्द्रमा अपनी ज्योति न देगा। ईश्वर परमेश्वर कहता
है कि मैं स्वर्ग की ज्योतिन की ज्योति को तुझ पर अंधियारी
९ करूंगा और तेरे देश को अंधियारा करूंगा। और जब मैं
तेरे विनाश को जातिगणों में उन देशों में लाऊंगा जिन्हें तू
ने नहीं जाना है तब मैं बहुत से लोगों को खिजाऊंगा।
१० हां मैं तुझ से बहुत से लोगों को अचंभित करूंगा और
जब मैं अपनी तलवार उन के आगे भांजूंगा तब उन के राजा
तेरे लिये बहुत डर जायेंगे और वे तेरे गिराने के दिन हर
एक जन अपने अपने प्राण के लिये पल पल थरथरायेगा॥
११ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि बाबुल के राजा
१२ की तलवार तुझ पर आवेगी। वीरों की तलवारों से मैं तेरी
मंडली अर्थात् देशगणों के सारे भयंकरों को गिरवाऊंगा और
वे मिस्र का ऐश्वर्य्य लूटेंगे और उस की सारी मंडली नाश किई
१३ जायेगी। और मैं बड़े बड़े पानियों के लग से उन के सारे
पशुन को नष्ट करूंगा और मनुष्य का पांव और पशुन का खुर
१४ उन्हें फिर न सतावेगा। प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तब
मैं उन के पानियों को गहिरा करूंगा और उन की नदियों
१५ को तेल की नाईं बहाऊंगा। जब मैं मिस्र देश को उजाड़ूंगा

तब देश अपनी भरपूरी से उजड़ जायेगा और जब मैं उस के
सारे निवासियों को मारूंगा तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर
हूं॥

१६ इस विलाप से वे उस पर विलाप करेंगे अन्यदेशियों की
लड़कियां उस के विषय में विलाप करेंगी प्रभु परमेश्वर कहता
है कि वे उस के लिये विलाप करेंगी अर्थात् मिस्र और उस
की मंडली के लिये॥

१७ और बारहवें बरस में मास की पन्द्रहवीं तिथि में
भी यों हुआ कि परमेश्वर का बचन यह कहते हुये मेरे पास
पहुंचा॥

१८ हे मनुष्य के पुत्र मिस्र की मंडली के लिये विलाप कर
और उसे अर्थात् उसे और बिदित जातिगणों की लड़कियों
को पृथिवी के नीचे के स्थानों में जो गड़हे में उतरते हैं
१९ उतार दे। तू किस्से अधिक सुन्दर है उतर जा और अख़तनों
२० के साथ पड़ा रह। वे तलवार से जूझे हुओं के मध्य गिरेंगे
वुह तलवार को सौंपा गया है उसे और उस की सारी
२१ मंडलियों को खींच ले। उस के सहायकों के साथ वीरों में
का बलवंत पाताल के मध्य में से उसे कहेगा वे उतर गये
वे तलवार से जूझे हुए अख़तने पड़े हैं॥

२२ असूर और उस की सारी जथा वहां है उस की समाधि
२३ उस के आस पास सब के सब तलवार से जूझे पड़े हैं। जिन
की समाधियां गड़हे के अलंगों में हैं और उस की जथा उस
की समाधि के चारों ओर है वे सब के सब तलवार से मारे हुए
जूझे हैं जिन्हों ने जीवतों के देश को डराया॥

२४ वहां ऐलाम और उस की सारी मंडली जो उस की समाधि न
की चारों ओर सब के सब तलवार से मारे हुए जूझ गये जो
पृथिवी के नीचे के स्थानों में अख़तने उतर गये हैं जिन्हों ने

जीवतों के देश को डराया तद भी उन्हों ने गड़हे में के
२५ उतरवैयों के संग अपनी लाज भोगी है। उन्हों ने जूझे हुओं
के मध्य में उस की सारी मंडली के साथ उस के लिये एक
बिछौना धरा है उस की समाधियां उस की चारों ओर हैं
वे सब अख़तनः तलवार से जूझे हुए हैं यद्यपि उन का भय
जीवतों के देश में पड़ा तथापि उन्हों ने उन के साथ जो
गड़हे में पड़ते हैं अपनी लाज भोगी वुह जूझे हुए के मध्य
में रक्खा गया है॥

२६ वहां मसक और तूबल और उस की सारी मंडली उस की
समाधियां उस की चारों ओर वे सब के सब अख़तनः तलवार
से जूझे हुए यद्यपि उन्हों ने जीवतों के देश को डराया है।
२७ और वे मारे हुए अख़तनः वीरों के साथ जो अपने संग्राम के
हथियारों से जो पाताल में उतर पड़े हैं पड़े न रहेंगे और
उन्हों ने अपनी अपनी तलवार अपने अपने सिर तले रक्खी
है परन्तु उन की बुराई उन की हड्डियों पर होगी यद्यपि वे
२८ जीवतों के देश में वीरों के भय थे। और तू अख़तनों के
मध्य में तोड़ा जायेगा और तलवार से जूझे हुओं के साथ
पड़ा रहेगा॥

२९ वहां अदूम और उस के राजा और उस के सारे अध्यक्ष
जो अपने पराक्रम समेत तलवार से जूझे हुओं के लग रक्खे
गये हैं वे अख़तनों के और गढ़हों के उतरवैयों के साथ पड़े
रहेंगे॥

३० वहां उत्तर के सारे अध्यक्ष और सारे सैदानी हैं जो जूझे हुओं
के साथ उतर गये हैं अपने भय के साथ वे अपने पराक्रम से
लज्जित हैं वे तलवार से जूझे हुए अख़तनों के साथ पड़े हैं
और वे गड़हे में के उतरवैयों के साथ अपनी लाज सहते
हैं॥

३१ प्रभु परमेश्वर कहता है कि फ़िरऊ़न उन्हें देखेगा और अपनी
सारी मंडली पर शान्ति पावेगा अर्थात् फ़िरऊ़न और तलवार
३२ से जूझी हुई उस की सारी सेना। क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता
है कि जीवतों के देश को मैं ने डराया है और वुह अर्थात्
फ़िरऊ़न और उस की सारी मंडली तलवार से जूझे हुओं के
साथ अख़तनों के मध्य में डाले जायेंगे॥

तेंतीसवां पर्ब्ब ।

१ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा।
२ हे मनुष्य के पुत्र अपने लोगों के संतानों से कह और उन से
बोल कि जब मैं किसी देश पर तलवार लाऊं तो यदि उस
देश के लोग अपने सिवानों के किसी मनुष्य को लेके अपना
३ रखवाल ठहरावें। तलवार को देश पर आते देखके यदि वुह
४ तुरही फूंकके लोगों को चितावे। तब जो सुनते हुए तुरही का
शब्द सुने और न चेते जो तलवार आवे और उसे ले जाये
५ तब उस का लोहू उसी के सिर पर होगा। उस ने तुरही का
शब्द सुनके चेत न किया उसी का लोहू उसी पर होगा परन्तु
जो चेतेगा सो अपना प्राण बचावेगा॥

६ परन्तु यदि रखवाल उस तलवार को आते देखे और तुरही
न फूंके और लोग चिताये न जायें तब यदि तलवार आवे
और उन में से किसी को ले जाये तो वुह अपनी बुराई में
उठाया गया परन्तु उस के लोहू का लेखा मैं रखवाल के हाथ
से लेऊंगा॥

७ और हे मनुष्य के पुत्र मैं ने तुझी को इसराएल के घराने
के कारण रखवाल ठहराया है इस लिये वचन मेरे मुंह से
८ सुन और मेरी ओर से उन्हें चिता। जब मैं दुष्ट से कहूं कि
अरे दुष्ट तू अवश्य मरेगा यदि तू दुष्ट को उस की दुष्ट चाल

मे उसे न चितावे तो वुह अपने अधर्म्म में मरेगा परन्तु मैं
९ तेरे हाथ से उस के लोहू का लेखा लेऊंगा। तिस पर भी
यदि तू दुष्ट को उस की चाल से फिरने को चितावे जो वुह
अपनी चाल से न फिरे तो वुह अपने अधर्म्म में मरेगा परन्तु
तू ने अपने प्राण को बचाया है॥

१० इस लिये हे मनुष्य के पुत्र इसराएल के घराने से कह कि
तुम लोग यह कहके बोलते हो कि यदि हमारे अपराध और
हमारे पाप हम पर होवें और हम उन में गले जायें फिर हम
क्योंकर जीयें॥

११ उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन
सोंह दुष्टों की मृत्यु से मैं प्रसन्न नहीं परन्तु जिसतें दुष्ट अपनी
चाल से फिरे और जीये हे इसराएल के घराने फिरो अपने
कुमार्गों से फिरो तुम लोग किस लिये मरोगे॥

१२ इस लिये हे मनुष्य के पुत्र अपने लोगों के संतान से कह कि
धर्म्मी का धर्म्म उस के अपराध के दिन में उसे न बचावेगा
और दुष्ट की दुष्टता जो है जब वुह अपनी दुष्टता में फिरे वुह
उस्से न गिरेगा और पाप करने के दिन में धर्म्मी अपने धर्म्म
से न जीयेगा॥

१३ जब मैं धर्म्मी से कहूं कि तू निश्चय जीयेगा यदि वुह
अपने ही धर्म्म पर भरोसा रक्खे और अधर्म्म करे तब उस
का सारा धर्म्म स्मरण न किया जायेगा परन्तु वुह अपने किये
हुए अधर्म्म के लिये मरेगा॥

१४ फिर जब मैं दुष्ट से कहूं कि तू निश्चय मरेगा यदि वुह
१५ अपने पाप से फिरे और न्याय और धर्म्म करे। यदि दुष्ट बंधक
फेर देवे और बटमारी की वस्तु फेर देवे और अधर्म्म न करके
जीवन की बिधिन को पालन करे तब वुह निश्चय जीयेगा
१६ और न मरेगा। उस के किये हुए पाप उस के आगे दुहराये

न जायेंगे उस ने धर्म्म और ठीक किया है वुह निश्चय
जीयेगा ॥
१७ तथापि तेरे लोगों के संतान कहते हैं कि परमेश्वर का मार्ग
१८ सम नहीं परन्तु वे जो हैं उन की चाल सम नहीं। जब
धर्म्मी अपने धर्म्म से फिरके अधर्म्म करे तब वुह उसी से
१९ मरेगा। परन्तु यदि दुष्ट अपनी दुष्टता से फिरे और धर्म्म और
ठीक करे तो वुह उस्से जीयेगा॥
२० तथापि तुम लोग कहते हो कि परमेश्वर का मार्ग सम नहीं
है इसराएल के घराने में तुम्में से हर एक को उस की चालों
के समान बिचार करूंगा॥
२१ और हमारी बंधुआई के बारहवें बरस के दसवें मास की
पांचवीं तिथि में यों हुआ कि यरूसलम से बचके एक जन ने
मेरे पास आके कहा कि नगर मारा गया है॥
२२ और जो बच निकला था उस के आने से पहिले सांझ को
परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और जब ताईं वुह बिहान को
मेरे पास आया मेरे मुंह को खोला और मेरा मुंह खोला गया
२३ और मैं फिर गूंगा न रहा। तब परमेश्वर का बचन यह कहते
२४ हुए मेरे पास पहुंचा। हे मनुष्य के पुत्र इसराएल देश के
उजाड़ों के निवासी कहते हैं कि अबिरहाम एक ही था और
उस ने देश का अधिकार पाया परन्तु हम बहुत हैं और
अधिकार के लिये देश हमें दिया गया है॥
२५ इस लिये उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि
तुम लोग लोहू समेत खाते हो और अपनी मूर्त्तिन की ओर
आंखें उठाके लोहू बहाते हो और क्या तुम लोग देश के अधिकारी
२६ होओगे। तुम अपनी अपनी तलवार से लैस होके घिनित कार्य्य
करते हो और तुम्में से हर एक जन अपने अपने परोसी की पत्नी को
अशुद्ध करता है और क्या तुम लोग देश के अधिकारी होओगे॥

२७ तू उन से यों कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने
जीवन सोंह जो उजाड़ों में हैं सो तलवार से मारे पड़ेंगे और
जो चैागान में हैं उन्हें भक्षने के लिये पशुन को देऊंगा और
२८ जो लोग गढ़ और खोह में होवें सो मरी से मरेंगे। क्योंकि
में देश को उजाड़ों का उजाड़ करूंगा और उस के बल का
विभव मिटाया जायेगा और इसराएल के पहाड़ उजाड़ होंगे
२९ कि कोई उस में से न जायेगा। जब मैं उन के किये हुए
सारे घिनितों के कारण उन के देश को अति उजाड़ करूंगा
तब वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं॥

३० और हे मनुष्य के पुत्र तेरे लोगों के संतान भीतों के लग
और घरों के द्वारों पर अब भी तेरे बिरुद्ध कह रहे हैं और
हर एक आपस में अपने अपने भाई को कहता है कि मैं बिनती
करता हूं कि चलो परमेश्वर से निकले हुए बचन को सुनें।
३१ और लोगों के आने के समान वे तेरे पास आते हैं और मेरे लोगों
की नाईं तेरे आगे बैठते हैं और तेरी बातें सुनते हैं परन्तु
वे उन्हें न मानेंगे क्योंकि वे अपने मुंह से प्रेम दिखाते हैं परन्तु
३२ उन के मन उन के लोभ के पीछे चलते हैं। और देख तू
उन के लिये अति प्रिय गान के समान है जिस का प्रेमों का
गान है और अच्छी रीति से बजा सक्ता है क्योंकि वे तेरे
३३ बचन सुनते हैं परन्तु उन्हें नहीं मानते। और जब यह
आवेगा देखो आवेगा तब वे जानेंगे कि एक भविष्यद्वक्ता उन
में हुआ है॥

चैांतीसवां पर्व्व।

१ तब परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा।
२ हे मनुष्य के पुत्र तू इसराएल के गड़रियों के बिरुद्ध भविष्य
कह और उन के आगे भविष्य प्रचार प्रभु परमेश्वर गड़रियों

को यों कहता है कि इसराएल के गड़रियों पर संताप जो आप
खाते हैं क्या गड़रियों को झुंड चराना न चाहिये ॥
३ तुम लोग चिकनाई खाते हो और रोम ओढ़ते हो और पले
४ हुए को घात करते हो परन्तु झुंड को नहीं चराते। तुम
लोगों ने दुर्बलों को बल नहीं दिया है और न रोगी को चंगा
किया न टूटे पर पट्टी बांधी न खेदे हुए को फेर लाये न खोये
हुए को ढूंढ़ा परन्तु बरबस्ती से और क्रूरता से उन पर प्रभुता
५ किई। और बिन गड़रिये वे छिन्न भिन्न हुए और छिन्न भिन्न
६ होके वे सारे बनपशुन के आहार हुए। मेरी भेड़ें सारे पर्बतों
पर और हर एक ऊंची पहाड़ी पर भटक गईं हां मेरे झुंड
सारी पृथिवी पर छिन्न भिन्न हुए और किसी ने उन्हें न खोजा
और न ढूंढ़ा ॥
७ इस लिये हे गड़रियो परमेश्वर का बचन सुनो।
८ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन सोंह गड़रिया न
होने के कारण मेरे झुंड अहेर हुए और झुंड हर एक बनपशु
के लिये आहार हुआ और मेरे गड़रियों ने मेरे झुंड की खोज
न किई परन्तु गड़रियों ने आप खाया पर मेरे झुंड को न
९ चराया। इस लिये हे गड़रियो परमेश्वर का बचन सुनो।
१० प्रभु परमेश्वर यों कहता है देख मैं गड़रियों के बिरुद्ध हूं और
उन के हाथों से अपने झुंड का लेखा लेऊंगा और अपने झुंड
उन से न चरवाऊंगा और फिर गड़रिये आप न खायेंगे क्योंकि
मैं अपने झुंड को उन के मुंह से छुड़ाऊंगा जिसतें उन का
भोजन न होवें ॥
११ क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं ही अपनी
१२ भेड़ों को ढूंढ़के उन्हें खोज लेऊंगा। छिन्न भिन्न भेड़ों में होने
के दिन झुंड के गड़रिये के खोजने के समान मैं अपनी भेड़ों
को खोजूंगा और उन्हें सारे स्थानों से जहां जहां अंधियारे और

मेघ के दिन में छिन्न भिन्न हुई हैं तिथों में खोज खोजके
१२ छुड़ाऊंगा। और मैं लोगों में से उन्हें निकाल लाऊंगा और
देशों में से उन्हें बटोरूंगा और उन्हें उन्हीं के देश में लाऊंगा
और उन्हें नदी के तीर इसराएल के पर्ब्बतों पर और देश के
१४ सारे निवासस्थानों में चराऊंगा। मैं उन्हें अच्छी चराई में
चराऊंगा और इसराएल के ऊंचे पर्ब्बतों पर उन का वाड़ा होगा
वे वहां अच्छे वाड़े में लेटेंगे और इसराएल के पहाड़ों पर पुष्ट
१५ चराई में चरेंगे। प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं अपने झुंड
१६ को चराऊंगा और उन्हें चैन दिलाऊंगा। मैं खोये हुए को
ढूंढूंगा और खदेड़े हुए को फेर लाऊंगा और टूटे हुए पर पट्टी
बांधूंगा और रोगी को बलवान करूंगा परन्तु पुष्ट और बलवान
को नाश करूंगा मैं उन्हें न्याय से चराऊंगा॥
१७ और तू हे मेरे झुंड प्रभु परमेश्वर यों कहता है देख मैं
१८ पशु पशु में और मेढ़ों और बकरों में न्याय करता हूं। अच्छी
चराई को चर लेना और अपनी रही हुई चराई को पांव से
रौंद डालना और गहिरे पानियों को पीना और रहे हुए को
१९ गदला करना क्या तुम्हारे लिये सहज है। परन्तु जो तुम
ने अपने पांओं से रौंदा है सो मेरे झुंड खाते हैं और जो तुम
ने अपने पांओं से गदला किया है सो पीते हैं॥
२० इस लिये प्रभु परमेश्वर उन से यों कहता है कि देख मैं
२१ ही मोटे और डांगर पशुन में न्याय करूंगा। क्योंकि तुम ने
कटि से और कन्धे से ठेला है और अपने सींगों से सारे
२२ रोगियों को मार मार उन्हें छिन्न भिन्न किया है। इस कारण
मैं अपने झुंड को बचाऊंगा और वे फिर अहेर न होंगे और
मैं पशु और पशु के मध्य में न्याय करूंगा॥
२३ और मैं उन पर एक गड़रिया ठहराऊंगा और वुह उन्हें
चरावेगा अर्थात् मेरा सेवक दाऊद वही उन्हें चरावेगा और

२४ वुह उन का गड़रिया हो जायेगा। और मैं परमेश्वर उन का
ईश्वर होऊंगा और मेरा दास दाऊद उन में अध्यक्ष होगा मुझ
२५ परमेश्वर ने कहा है। और मैं उन से एक कुशल का नियम
बांधूंगा और क्रूर पशुन को देश से दूर कराऊंगा और वे बन
२६ में चैन से रहेंगे और जंगल में सोयेंगे। और मैं उन्हें अपने
पहाड़ की चारों ओर के स्थानों को आशीषित करूंगा और
२७ ऋतु में मैं बरसाऊंगा वहां आशीषों की वृष्टि होगी। और
खेतों के पेड़ अपने फल फलेंगे और पृथिवी अपनी बढ़ती
देगी और वे अपने देश में चैन से बसेंगे और जब मैं उन के
जूए के बंधनों को तोड़ूंगा और उन के हाथ से जिन्हों ने
अपनी सेवा उन से करवाई है उन्हें छुड़ाऊंगा तब वे जानेंगे
२८ कि मैं परमेश्वर हूं। और वे फिर अन्यदेशियों के अहेर न
होंगे और बनपशु भी उन्हें फेर न भक्षेंगे परन्तु वे चैन से
२९ रहेंगे और कोई उन्हें न डरावेगा। और मैं उन के लिये एक
कीर्त्तिमान पेड़ उगाऊंगा और वे देश में भूख से फिर क्षीण न
३० होंगे और फिर अन्यदेशियों से लाज न उठावेंगे। प्रभु परमेश्वर
यों कहता है यों वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर उन
के संग हूं और वे अर्थात् इसराएल के घराने मेरे लोग हैं॥
३१ और प्रभु परमेश्वर कहता है कि तुम मेरे झुंड मेरी चराई
के झुंड मनुष्य हो और मैं तुम्हारा ईश्वर॥

पैंतीसवां पर्ब्ब।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।
२ हे मनुष्य के पुत्र शईर पहाड़ के बिरुद्ध अपना मुंह कर
और उस के बिरुद्ध भविष्य कह॥
३ और उस्से बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख
हे शईर पहाड़ मैं तेरे बिरुद्ध हूं और मैं अपना हाथ तेरे

४ विरोध में बढ़ाऊंगा और तुझे उजाड़ का उजाड़ करूंगा। मैं
तेरे नगरों को उजाड़ूंगा और तू खंडर हो जायेगा और तू
५ जानेगा कि मैं ही परमेश्वर हूं। इस कारण कि तू ने नित
बैर रक्खा है और इसराएल की बिपत्ति के समय में जब कि
उन की बुराई हो चुकी तू ने उन के बालकों के लोहू को
तलवार की धार से बहाया है॥
६ इस लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि अपने जीवन सोंह
मैं तुझे लोहू के लिये सिद्ध करूंगा और लोहू तेरे पीछे पड़ेगा तू
लोहू बहाने से नहीं घिनाया है इसी कारण लोहू तेरे पीछे पड़ेगा।
७ इस रीति से मैं शईर पर्बत को उजाड़ों का उजाड़ करूंगा
और उस में से जो बाहर भीतर आता जाता है उसे मिटा
८ डालूंगा। और उस के पर्बतों को मैं उस के जूझे हुओं से
भर देऊंगा तलवार से जूझे हुए तेरे सारे पहाड़ों में और तेरी
९ तराइयों में और तेरी सारी नदियों में पड़ेंगे। मैं तुझे नित
का उजाड़ करूंगा और तेरे नगर न फिरेंगे और तुम लोग
जानोगे कि मैं ही परमेश्वर हूं॥
१० यद्यपि परमेश्वर वहां था और तू ने कहा है कि ये दोनों
जातिगण और ये दोनों देश मेरे होंगे और हम उसे वश में
११ करेंगे। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अपने जीवन
सोंह तेरी रिस के समान और तेरी डाह के समान जो तू ने
उन के विरुद्ध किया है मैं करूंगा और तेरा बिचार करने के
१२ पीछे मैं उन में आप को जनाऊंगा। और तू जानेगा कि मैं
परमेश्वर हूं मैं ने तेरी सारी अपनिन्दा जो तू ने इसराएल के
पर्वतों के विरुद्ध यह कहके कहा कि वे उजाड़ पड़े हैं वे
१३ हमारे भक्षण के लिये हमें दिये गये हैं। इस रीति से तुम ने
अपने मुंह से मेरे बिरुद्ध आप को बढ़ाया है और मेरे बिपरीत
अपनी बात बढ़ाई है मैं ने सुना है॥

१४ प्रभु परमेश्वर यों कहता है जब सारी पृथिवी आनन्द
१५ करेगी तब मैं तुझे उजाड़ करूंगा। जैसा तू ने इसराएल के
घराने के अधिकार के उजाड़ होने के कारण आनन्द किया है
तैसा मैं तुझ से करूंगा हे शईर पर्वत तू और सारा अदूम
उजाड़ होगा अर्थात् उस का सब कुछ और वे जानेंगे कि मैं
परमेश्वर हूं ॥

छत्तीसवां पर्व्व ।

१ और हे मनुष्य के पुत्र तू इसराएल के पर्वतों से भी भविष्य
कहके बोल और कह कि हे इसराएल के पर्वतो परमेश्वर का
२ वचन सुनो। प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि बैरी
ने तुम्हारे विरुद्ध कहा है अहा अर्थात् पुराने ऊंचे स्थान हमारे
३ वश में हुए हैं। इस लिये भविष्य कहके बोल कि प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि जिसतें तुम लोग बचे हुए अन्यदेशियों
के अधिकार होजाओ और बड़बड़ियों की कथनी हो और लोगों
के अपयश इस कारण कि उन्हों ने तुझे उजाड़ा है और तुम्हें
४ चारों ओर निगल गये हैं। इस कारण हे इसराएल के पर्वतो
प्रभु परमेश्वर का वचन सुनो प्रभु परमेश्वर पहाड़ों को और
टीलों को और नदियों को और तराइयों को और उजाड़ खंड़रों
को और त्यक्त नगरों को जो चारों ओर के बचे हुए अन्यदेशियों
५ के लिये एक अहेर और ठट्ठा हुए हैं यों कहता है। इस
लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि निश्चय मैं ने अपनी झल
की आग से बचे हुए अन्यदेशियों के विरुद्ध और सारे अदूमियों
के विरुद्ध जिन्हों ने अपने सारे अन्तःकरण के आनन्द से
अहेर के लिये मन के बैर से मेरे देश को अपने वश के लिये
ठहराया है ॥

६ इस लिये इसराएल के देश के विषय में भविष्य कह और

पर्बतों को और टीलों को और नदियों को और तराइयों को
कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि तुम ने
अन्यदेशियों की लाज सही है देख मैं ने अपनी झल में और
७ अपने कोप में कहा है। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है
कि मैं ने अपना हाथ उठाया है निश्चय चारों ओर के अन्यदेशी
अपनी लाज सहेंगे॥

८ परन्तु हे इसराएल के पर्बतो तुम अपनी डालियां निकालोगे
और मेरे इसराएल लोगों के निमित्त अपना फल फलोगे
९ क्योंकि आने में वे पास हैं। क्योंकि देखो मैं तुम्हारे लिये हूं
और तुम्हारी ओर फिरूंगा और तुम लोग जोते बोये जाओगे।
१० और मैं तुम पर मनुष्यों को अर्थात् इसराएल के सारे घराने
को बढ़ाऊंगा अर्थात् सभों को और नगर बसाये जायेंगे और
११ खंडर बनाये जायेंगे। और मैं तुम्में मनुष्य को और पशुन को
बढ़ाऊंगा वे बढ़के फल लावेंगे और मैं तुम्हें अगिले समय की
नाईं स्थिर करूंगा और आरंभ से अधिक तुम्हारी भलाई
१२ करूंगा और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर हूं। और मैं तुम पर
मनुष्यों को अर्थात् अपने इसराएल लोगों को चलाऊंगा और वे
तुझे अपना अधिकार करेंगे और तू उन का अधिकार होगा और
फिर उन्हें मनुष्य रहित न करेगा॥

१३ प्रभु परमेश्वर यों कहता है इस कारण कि वे तुम से कहते
हैं कि तू ने मनुष्यों को भक्षा है और तू ने अपनी जाति को क्षीण
१४ किया है। इस लिये प्रभु परमेश्वर कहता है कि तू मनुष्यों
को फिर न भक्षेगा और अपने जातिगणों को फिर क्षीण न करेगा।
१५ प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं तुझ में अन्यदेशियों की लाज
को फिर न सुनाऊंगा और तू फिर लोगों की निन्दा न सहेगा
और फिर अपने जातिगणों को पतित न करावेगा॥

१६ फिर परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा।

१७ हे मनुष्य के पुत्र जब इसराएल के घराने अपने ही देश में
रहते थे तब उन्हों ने अपनी ही चाला से और अपनी क्रिया
से उसे अशुद्ध किया उन की चाल मेरे आगे अलग किई गई
१८ स्त्री की अशुद्धता की नाई थी। और देश में उन के लोहू बहाने
और अपनी मूर्त्तिन से उसे अशुद्ध करने के लिये मैं ने अपना
१९ कोप उन पर उंडेला। और मैं ने उन्हें अन्यदेशियों में छिन्न
भिन्न किया और वे देशों में सर्व्वत्र बिथराये गये मैं ने उन की
चाल के समान और उन की क्रिया के तुल्य उन का बिचार
२० किया। और जब उन्हों ने अन्यदेशियों में प्रवेश किया जहां
जहां वे गये वहां वहां उन्हों ने मेरे पवित्र नाम को अशुद्ध
किया जब उन्हों ने उन से कहा कि ये परमेश्वर के लोग और
२१ उस के देश से निकल गये। परन्तु मैं ने अपने पवित्र नाम
के लिये उन पर मया किई जिसे इसराएल के घराने ने
अन्यदेशियों में जा जा अशुद्ध किया था॥

२२ इस लिये इसराएल के घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों
कहता है कि हे इसराएल के घराने मैं तुम्हारे कारण यह
नहीं करता परन्तु अपने पवित्र नाम के लिये जो तुम ने
२३ अन्यदेशियों में जा जा अशुद्ध किया। और मैं अपने महत
नाम को पवित्र करूंगा जो अन्यदेशियों में अशुद्ध किया गया
जो तुम ने उन के मध्य में अशुद्ध किया प्रभु परमेश्वर
कहता है कि जब मैं तुम्में उन की आंखों के आगे पवित्र
किया जाऊंगा तब अन्यदेशी जानेंगे कि मैं ही परमेश्वर
हूं॥

२४ क्योंकि मैं तुम्हें अन्यदेशियों के मध्य में से लाऊंगा और
सारे देशों में से तुम्हें एकट्ठा करूंगा और तुम्हें तुम्हारे ही
२५ देश में लाऊंगा। तब मैं निर्मल जल तुम पर छिड़कूंगा और
तुम लोग पवित्र हो जाओगे और मैं तुम्हारी सारी मलीनता

२६ से और तुम्हारी सारी मूर्त्तिन से तुम्हें पवित्र करूंगा। और मैं
तुम्हें एक नया मन भी देऊंगा और एक नया आत्मा तुम्में
रक्खूंगा और तुम्हारे मांस में से मैं पथरैला मन निकाल लेऊंगा
२७ और तुम्हें मांस का मन देऊंगा। और मैं अपना आत्मा तुम्में
देऊंगा और तुम्हें अपनी विधिन पर चलाऊंगा और तुम मेरे
२८ न्यायों को पालन करोगे और उन्हें मानोगे। और जो देश मैं
ने तुम्हारे पितरों को दिया तुम उस में रहोगे और मेरे लोग
२९ होओगे और मैं तुम्हारा ईश्वर हूंगा। और मैं तुम्हें तुम्हारी
समस्त अशुद्धता से बचाऊंगा और अन्न को बुलाऊंगा और उसे
३० बढ़ाऊंगा और तुम पर अकाल न धरूंगा। और पेड़ का फल
और खेत की बढ़ती को बढ़ाऊंगा जिसतें तुम लोग अन्यदेशियों
में फिर अकाल की निन्दा न पाओगे॥

३१ तब तुम लोग अपनी अपनी बुरी चालों को और अपनी
कुक्रिया को स्मरण करोगे और अपनी ही दृष्टि में अपनी बुराइयों
३२ और अपनी घिनितों के लिये आप को घिनाओगे। प्रभु परमेश्वर
कहता है कि तुम्हें जान पड़े कि मैं तुम्हारे कारण यह नहीं
करता हूं हे इसराएल के घराने तुम अपनी अपनी चालों के
लिये लज्जित होके घबरा जाओ॥

३३ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि जिस दिन मैं तुम्हारी सारी
बुराइयों से तुम्हें पवित्र किये हूंगा मैं तुम्हें नगरों में भी
३४ बसाऊंगा और खंडर बनाये जायेंगे। और उजाड़ देश
जोते जायेंगे यद्यपि सारे जवैयों की दृष्टि में उजाड़ पड़ा
था॥

३५ और वे कहेंगे कि यह देश जो उजाड़ था अदन की बारी
की नाईं हुआ है और खंडर और उजाड़ और नष्ट नगर घेरे
हुए और बसे हुए हैं॥

३६ तब अन्यदेशी जो तुम्हारी चारों और छोड़े गये हैं जानेंगे

कि मैं परमेश्वर खंडरों को बनाता हूं और उजाड़ों को बोता
हूं मुझ परमेश्वर ने कहा है और करूंगा ॥
३७ प्रभु परमेश्वर यों कहता है तथापि उन के लिये यह करने
को मैं इसराएल के घराने से खोजा जाऊंगा झुंड की नाईं मैं
३८ उन्हें मनुष्यों से बढ़ाऊंगा। जैसा पवित्र वस्तु के झुंड अर्थात्
उस के बड़े पर्व्वों में यरूसलम के झुंड की नाईं तैसा उजाड़
नगर मनुष्यों के झुंड से भर जायेंगे और वे जानेंगे कि मैं
परमेश्वर हूं ॥

सैंतीसवां पर्ब्ब।

१ परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और मुझे परमेश्वर के आत्मा
में बाहर ले गया और मुझे एक तराई के मध्य में उतार
२ दिया जो हड्डियों से भरी थी। और मुझे उन के पास पास
चारों ओर फिराया और क्या देखता हूं कि खुले चौगान में वे
अति बहुत हैं और लो वे बहुत सूखी थीं ॥
३ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र क्या ये
हड्डियां जी सक्ती हैं तब मैं ने उत्तर दिया कि हे प्रभु परमेश्वर
तू जानता है ॥
४ फिर उस ने मुझ से कहा कि इन हड्डियों पर भविष्य कह
और उन से बोल कि हे सूखी हड्डियो परमेश्वर का वचन सुनो।
५ प्रभु परमेश्वर इन हड्डियों से कहता है कि देखो मैं तुम्में
६ स्वास प्रवेश कराऊंगा और तुम जीओगी। और मैं तुम पर
नस लाऊंगा और तुम पर मांस उभाडूंगा और तुम्हें चाम से
ढांपूंगा और तुम्में स्वास डालूंगा और तुम जीओगी और तुम
जानोगी कि मैं परमेश्वर हूं ॥
७ सो आज्ञा के समान मैं ने भविष्य कहा और मेरे भविष्य
कहते ही शब्द हुआ और देख कि हड़हड़ाहट और हड्डियां

८ एकट्ठी आईं हड्डी अपनी हड्डी के पास। और देखते ही क्या
देखता हूं नस और मांस उन पर आये और चाम ने उन्हें
ऊपर से ढांपा परन्तु उन में स्वास न था॥
९ तब उस ने मुझ से कहा कि पवन से भविष्य कह हे
मनुष्य के पुत्र भविष्य प्रचार और पवन से कह कि प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि हे स्वास चारों पवनों से आ और इन जूझे
हुओं पर बह जिसतें वे जीयें॥
१० सो आज्ञा के समान मैं ने भविष्य कहा और स्वास उन में
आया और वे जीये और एक अति बड़ी सेना अपने पांव के
बल उठ खड़ी हुई॥
११ तब उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र ये हड्डियां
इसराएल के सारे घराने हैं देखो वे कहते हैं कि हमारी
हड्डियां झुरा गईं और हमारी आशा जाती रही हम अपने
अपने ठिकाने से कट गये॥
१२ इस लिये भविष्य प्रचार और उन से कह कि प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि हे मेरे लोगो देखो मैं तुम्हारी समाधिन
को खोलूंगा और तुम्हारी समाधि से तुम्हें बाहर निकलवाऊंगा
१३ और तुम्हें इसराएल के देश में लाऊंगा। और हे मेरे लोगो
जब मैं ने तुम्हारी समाधि खोली है और तुम्हें तुम्हारी
समाधिन से निकाल लाया हूं तब तुम लोग जानोगे कि मैं
१४ परमेश्वर हूं। और मैं अपना आत्मा तुम्में डालूंगा और तुम
जीओगे और मैं तुम्हें तुम्हारे ही देश में बसाऊंगा परमेश्वर
कहता है तब तुम जानोगे कि मुझ परमेश्वर ने कहा और
पूरा किया है॥
१५ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।
१६ हे मनुष्य के पुत्र एक लकड़ी ले और यहूदाह के लिये और
उस के संगी इसराएल के सन्तानों के लिये उस पर लिख तब

दूसरी लकड़ी ले और यूसुफ़ के निमित्त इफ़रायम की लकड़ी
और उस के संगी सारे इसराएल के घराने के लिये लिख ।
१७ और आपस में उन्हें जोड़के एक लकड़ी कर और वे तेरे हाथ
में एक हो जायेंगी ॥
१८ और जब तेरे लोगों के सन्तान तुझ से यह कहके बोलें
१९ कि तू इस का अर्थ हमें न बतावेगा । तब उन से कह कि
प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि मैं यूसुफ़ की लकड़ी को जो
इफ़रायम के हाथ में है लेऊंगा और उस के संगी इसराएल
की गोष्ठियों को भी लेऊंगा और उन्हें उस के साथ अर्थात्
यहूदाह की लकड़ी के साथ रक्खूंगा और उन्हें एक लकड़ी
२० बनाऊंगा और वे मेरे हाथ में एक होंगी । और तू जिन
लकड़ियों पर लिखेगा सो उन की आंखों के आगे तेरे हाथ में
होंगी ॥
२१ और उन से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि देख
मैं इसराएल के सन्तानों को अन्यदेशियों में से जिधर वे गये
हैं लेऊंगा और उन्हें हर एक ओर से बटोरूंगा और उन्हें
२२ उन्हीं के देश में लाऊंगा । और मैं उन्हें इसराएल के देश के
पर्वतों पर एक जाति बनाऊंगा और एक राजा उन सभों पर
राजा होगा और वे फेर दो जातिगण न होंगे और वे फिर कधी
२३ दो राज्य में होके विभाग न होंगे । फिर वे अपनी मूर्त्तिन से
और अपनी घिनित वस्तुन से और अपने समस्त अपराधों से आप को
अशुद्ध न करेंगे परन्तु मैं उन्हें उन के सारे निवासों में से जिन
में उन्हों ने पाप किया है उन्हें छुड़ाऊंगा और उन्हें पवित्र
करूंगा सो वे मेरे लोग होंगे और मैं उन का ईश्वर हूंगा ॥
२४ और मेरा दास दाऊद उन पर राजा होगा और उन सभों
का एक गड़रिया होगा और वे मेरे न्यायों पर चलेंगे और मेरी
२५ विधिन को मानेंगे और उन्हें पालेंगे । और वे उस देश में

वसेंगे जो मैं ने अपने दास यअक़ूब को दिया है जिस में
तुम्हारे पितरों ने वास किया और वे और उन के संतान और
उन के संतानों के संतान सर्वदा उस में बास करेंगे और मेरा
दास दाऊद सदा के लिये उन का राजा होगा॥
२६ और मैं उन से एक कुशल का नियम बांधूंगा और वुह उन
से एक सनातन का नियम होगा और मैं उन्हें बसाऊंगा और
बढ़ाऊंगा और सर्वदा अपना पवित्र स्थान उन के मध्य में
२७ रक्खूंगा। मेरा तंबू भी उन के मध्य में होगा हां मैं उन का
२८ ईश्वर हूंगा और वे मेरे लोग होंगे। और जब मेरा पवित्र स्थान
सर्वदा उन के मध्य में होगा तब अन्यदेशी जानेंगे कि मैं ही
परमेश्वर इसराएल को पवित्र करता हूं॥

अठतीसवां पर्व्व।

१ और यह कहते हुए परमेश्वर का वचन मेरे पास पहुंचा।
२ हे मनुष्य के पुत्र माजूज के देश के जूज अर्थात् रूस और
मसक और तूबाल के अध्यक्ष के विरुद्ध अपना मुंह कर और
उस के विरुद्ध भविष्य कह॥
३ और बोल कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे जूज रूस
और मसक और तूबाल के अध्यक्ष देख मैं तेरे विरुद्ध हूं।
४ और मैं तुझे हटाऊंगा और तेरे गलफड़ों में कांटिया लगाऊंगा
और मैं तुझे और तेरी सारी सेना को घोड़ों और घोड़चढ़ों को
सब के सब सारे प्रकार से विभूषित अर्थात् एक बड़ी जथा ढाल
और फरी के साथ सब के सब खड्गधारी निकाल लाऊंगा।
५ फ़ारस और कूश और फूट उन के साथ सब के सब ढाल और
६ टोप लिये हुए। जुम्र और उस की सारी जथाओं को और
उत्तर दिशा से तजरमः के घराने और उस की सारी जथाओं को
और तेरे साथ बहुत से लोगों को॥

७ तू लैस रह और अपने लिये और अपनी सारी जथा जो
तेरे पास बटुरी हैं लैस हो और तू उन के लिये पहरा हो ।
८ बहुत दिन के पीछे तू दंड पा चुकेगा और तलवार से फेर
लिये गये और बहुत से लोगों में से बटोरे गये देश में इसराएल
के पर्वतों के बिरुद्ध जो सदा उजड़े हुए हैं तू पिछले बरसों
में आवेगा परन्तु वुह जातिगणों में से निकाला हुआ है और वे
९ सब के सब चैन से रहेंगे । और तू ऊर्द्धगमन करके आंधी
की नाईं आवेगा देश को छा लेने के लिये तू और तेरी सारी
जथाएं और तेरे संग बहुत से लोग मेघ की नाईं होंगे ॥
१० प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि ऐसा भी होगा कि उसी
समय में बहुत सी चिन्ता तेरे मन में आवेंगी और तू कुचिन्ता
११ करेगा । और तू कहेगा कि मैं भीत रहित देश के गांओं में
चढ़ जाऊंगा मैं उन के पास जाऊंगा जो चैन से हैं और भरोसे
से रहते हैं सब के सब भीत रहित बसते हैं और न अड़ंगे
१२ न फाटक रखते हैं । लूट लूटने को और अहेर अहेरने को
उजाड़ स्थानों पर और जातिगणों में से बटुरे हुए लोगों पर
जिन्हों ने ढोर और संपति प्राप्त किया है जो पृथिवी के मध्य में
१३ रहते हैं अपना हाथ फेरो । सिबः और ददान और तरसीस
के बेपारी उस के सारे तरुण सिंह सहित तुझ से कहेंगे कि
क्या तू लूट लेने आया है क्या तू अहेर लेने को सोना
चांदी लेने को और ढोर और संपत्ति और बड़ी लूट लेने को
क्या तू ने अपनी जथा बटोरी है ॥
१४ इस लिये हे मनुष्य के पुत्र जूज से भविष्य कह कि प्रभु
परमेश्वर यों कहता है जब कि मेरे इसराएल लोग चैन से
१५ रहेंगे क्या तू न जानेगा । और तू उत्तर दिशा में से अपने
स्थान से और तेरे संग बहुत से लोग सब के सब घोड़ों पर
१६ चढ़े हुए एक बड़ी जथा और एक सामर्थी सेना आवेगी । और देश

को छा लेने को तू मेघ की नाईं मेरे इसराएल लोगों के विरुद्ध
उठ आवेगा यह पिछले दिनों में होगा और मैं तुझे अपने
देश में लाऊंगा जिसतें हे जूज जब मैं तेरी आंखों के आगे
तुझ में पवित्र हूंगा तो अन्यदेशी मुझे पहिचानेंगे ॥
१७ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि क्या तू वही है जिस के
विषय में मैं ने पुरातन समय से अपने सेवक इसराएल के
भविष्यद्वक्तों के द्वारा से कहा है जिन्हों ने उन दिनों और बरसों में
१८ भविष्य कहा कि मैं तुझे उन के विरुद्ध लाऊंगा। और प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि जब जूज इसराएल के देश के विरुद्ध आवेगा
१९ उसी समय यों होगा कि मेरा मुंह कोपित होगा। क्योंकि
अपनी झल में और अपने कोप की आग में मैं ने कहा है
निश्चय उस दिन इसराएल के देश में एक बड़ी थरथराहट होगी।
२० यहां लों कि समुद्र की मछलियां और आकाश के पंछी और
बनपशु और पृथिवी पर के सारे रेंगवैये और पृथिवी के सारे
मनुष्य मेरे आगे से थरथरायेंगे और पर्वत गिराये जायेंगे और
ऊंचे स्थान गिर पड़ेंगे और हर एक भीत भूमि पर गिरेगी।
२१ प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं उस के विरुद्ध अपने सारे पर्वतों
में एक तलवार मंगवाऊंगा और हर एक जन की तलवार उस
२२ के भाई के विरुद्ध होगी। और मैं उस के विरुद्ध मरी और
लोहू से विवाद करूंगा और मैं उस पर और उस की जथाओं
पर और उस के संग के बहुत से लोगों पर उमड़ी हुई वृष्टि
और बड़े बड़े ओले और आग और गंधक बरसाऊंगा ॥
२३ इसी रीति से मैं अपनी महिमा करूंगा और अपने को
पवित्र करूंगा और मैं बहुत से जातिगणों की दृष्टि में पहिचाना
जाऊंगा और वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं ॥

उंतालीसवां पर्ब्ब ।

१ ओर तू हे मनुष्य के पुत्र जूज के बिरुद्ध भविष्य प्रचारके
कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे जूज रूस ओर
२ मसक ओर तूबाल के अध्यक्ष देख मैं तेरे बिरुद्ध हूं। ओर मैं
तुझे हटा देऊंगा ओर केवल तेरा छठवां भाग छोड़ूंगा ओर
तुझे उत्तर के अलंगों से लाऊंगा ओर तुझे इसराएल के पर्बतों
३ पर लाऊंगा। ओर तेरे धनुष को तेरे बायें हाथ से मार
निकालूंगा ओर तेरे बाण को तेरे दहिने हाथ से गिराऊंगा।
४ तू ओर तेरी सारी जथा ओर तेरे संग के लोग इसराएल के
पर्बतों पर गिरेंगे मैं भक्षण के लिये हर प्रकार के फड़वैये
५ पंछियों को ओर बनैले पशुन को देऊंगा। तू खुले चौगान
पर गिरेगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं ने कहा है॥
६ ओर मैं माजूज पर ओर उन पर जो टापुओं में निश्चिन्त
रहते हैं एक आग भेजूंगा ओर वे जानेंगे कि मैं परमेश्वर हूं।
७ यों मैं अपने पवित्र नाम को अपने इसराएल लोगों के मध्य
में जनाऊंगा ओर फिर अपना नाम अशुद्ध करने न देऊंगा
ओर अन्यदेशी जानेंगे कि मैं ही परमेश्वर इसराएल में धर्म्ममय
८ हूं। प्रभु परमेश्वर कहता है कि देख वुह आया है ओर हुआ
है इसी दिन के विषय में मैं ने कहा है॥
९ ओर जो इसराएल के नगरों में रहते हैं सो निकल जायेंगे
ओर क्या ढाल क्या फरी क्या हथियार क्या धनुष क्या बाण
१० क्या बरछी क्या भाले वे उन्हें सात बरस लों जलावेंगे। यहां
लों कि वे खेत में से ईंधन न लावेंगे ओर बन में से लकड़ी न
काटेंगे क्योंकि वे हथियारों को आग से जलावेंगे ओर प्रभु परमेश्वर
कहता है कि वे अपने लुटवैयों को लूटेंगे ओर अपने चोरवैयों
को चुरावेंगे॥

११ और उस दिन ऐसा होगा कि मैं इसराएल में समुद्र की
पूर्व और पथिकों की तराई में जूज को समाधिन का स्थान
देऊंगा वुह पथिकों की नाक बंद करेगा और वहां वे जूज
को और उस की सारी मंडली को गाड़ेंगे और वे उस का नाम
१२ जूज की मंडली की तराई रक्खेंगे। और देश पवित्र करने के
लिये इसराएल के घराने सात मास लों उन्हें गाड़ा करेंगे।
१३ हां देश के सारे लोग उन्हें गाड़ेंगे और प्रभु परमेश्वर कहता
है कि जिस दिन मैं महिमा पाऊंगा सो उन के लिये कीर्त्तिमान
१४ होगा। और वे निरंतर कार्य्यकारी मनुष्यों को चुन लेंगे जो
भूमि पर के बचे हुए पथिकों के संग शुद्ध करने को गाड़ने
के लिये आरंपार जायेंगे और सात मास के पीछे वे ढूंढ़ेंगे।
१५ और जब देश में के जवैये पथिक किसी मनुष्य के हाड़
देखेंगे तब वुह उस के लग एक चिन्ह खड़ा करेगा जब लों
१६ गड़वैये उसे जूज की मंडली की तराई में न गाड़ें। और उस
नगर का नाम मंडली भी होगा और इस रीति से वे देश को
पवित्र करेंगे॥

१७ और हे मनुष्य के पुत्र प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि तू
सारे पंछियों से और वन के हर एक पशुन से कह कि एकट्ठे
हो और आओ चारों ओर से जो बलि मैं तुम्हारे लिये करता
हूं उस बलि के लिये एकट्ठे होओ अर्थात् इसराएल के पर्वतों
पर एक बड़ा बलि जिसतें तुम लोग मांस खाओ और लोहू
१८ पीओ। तुम लोग वीरों का और पृथिवी के अध्यक्षों का और
बसन के पले हुए मेढ़ों का और मेम्नों का और बड़ी बकरियों
१९ का और बैलों का मांस खाओ और लोहू पीओ। और तुम
लोग चिकनाई से तृप्त होने लों खाओगे और मेरे बलि का
लोहू जो मैं ने तुम्हारे लिये बलि किया है मतवाले होने लों
२० पीयोगे। और प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि इस रीति से तुम

मेरे मंच पर घोड़ों से और रथों से और बलवंत मनुष्यों से और
सारे लड़ाकों से तृप्त होओगे ॥
२१ और मैं अपना विभव अन्यदेशियों में स्थापन करूंगा और
मेरे न्यायदंड को और मेरा हाथ जो मैं ने उन पर धरा है
२२ सारे अन्यदेशी देखेंगे। सो इसराएल के घराने उस दिन से
२३ आगे जानेंगे कि मैं परमेश्वर उन्हीं का ईश्वर हूं। और
अन्यदेशी जानेंगे कि इसराएल के घराने अपने अधर्म के लिये
बंधुआई में चले गये क्योंकि उन्हों ने मेरे विरुद्ध अपराध
किया है इस लिये मैं ने अपना मुंह उन से छिपा लिया और
उन्हें उन के बैरियों के हाथ सौंप दिया सो वे सब तलवार
२४ से मारे गये। उन की अपवित्रता के और उन के अपराधों के
समान मैं ने उन से किया है और अपना मुंह उन की दृष्टि से
छिपाया है ॥
२५ इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि अब मैं यअकूब
की बंधुआई को फेर लाऊंगा और इसराएल के सारे घराने पर
दया करूंगा और अपने पवित्र नाम के लिये झल खाऊंगा।
२६ और वे अपनी लाज का बोझ उठायेंगे और अपने समस्त
अपराध का जो उन्हों ने मेरे विरुद्ध किया जब वे चैन से
अपने देश में रहेंगे और कोई डरवैया न होगा ॥
२७ जब मैं उन्हें लोगों में से फेर लाऊंगा और उन के बैरियों के
देशों में से उन्हें बटोरूंगा और बहुत देशगणों की दृष्टि में मैं उन
२८ में पवित्र किया जाऊंगा। तब वे जानेंगे कि मैं ही परमेश्वर उन
का ईश्वर हूं जिस ने उन्हें अन्यदेशियों में बंधुआई में पहुंचाया
परन्तु मैं ने उन्हें उन्हीं के देश में एकट्ठा किया और वहां
२९ फिर उन में से किसी को न छोड़ा। और मैं अपने मुंह को
उन से फिर न छिपाऊंगा क्योंकि प्रभु परमेश्वर कहता है कि
मैं ने इसराएल के घराने पर अपना आत्मा उंडेला है ॥

चालीसवां पर्ब्ब ।

१ हमारी बंधुआई के पचीसवें बरस में बरस के आरंभ के
मास की दसवीं तिथि में नगर के लिये जाने के चौदहवें
बरस के उसी दिन परमेश्वर का हाथ मुझ पर पड़ा और मुझे
२ वहां पहुंचाया । ईश्वरीय दर्शनों में उस ने मुझे इसराएल के
देश में पहुंचाया और मुझे एक अति ऊंचे पर्वत पर बैठाया
जिस के दक्खिन और एक नगर का ढांचा था ॥

३ और उस ने मुझे वहां पहुंचाया और क्या देखता हूं कि
सन की डोरी और नापने का नल हाथ में लिये हुए एक पुरुष
फाटक पर खड़ा है जो पीतल की नाईं दिखाई देता था ॥

४ और उस मनुष्य ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र
अपनी आंखों से देख और अपने कानों से सुन और सब जो
मैं तुझे दिखाऊं उन पर मन लगा क्योंकि तुझे दिखाने को मैं
तुझे यहां लाया हूं सब जो तू देखता है इसराएल के घराने
को बता ॥

५ और क्या देखता हूं कि घर के बाहर बाहर चारों ओर एक
भीत एक हाथ चार अंगुल के हाथ से छः हाथ का नापने का
एक नल वुह मनुष्य लिये हुए था सो उस ने उस बनावट
की चौड़ाई को नापा एक नल और ऊंचाई एक नल ॥

६ तब वुह पूरब अलंग के फाटक पर आया और उस की
सीढ़ी पर चढ़ा और उस फाटक की देहली एक नल चौड़ी
७ नापी और दूसरी देहली एक नल चौड़ी । और हर एक छोटी
कोठरी एक एक नल लम्बी और एक एक नल चौड़ी और
छोटी कोठरियों के मध्य पांच पांच हाथ और उसारे के फाटक
८ की देहली भीतर भीतर एक नल । और उस ने उसारे का
९ फाटक भी एक नल नापा । तब उस ने फाटक के उसारे को

आठ हाथ नापा और उस के खंभे दो हाथ और फाटक का
१० उसारा भीतर था। और पूरब और के फाटक की छोटी
कोठरियां तीन इधर तीन उधर थीं उन तीनों का एक ही
११ नाप था और इधर उधर खंभों का एक ही नाप था। और
उस ने फाटक के प्रवेश स्थान की चौड़ाई दस हाथ और
१२ लम्बाई तेरह हाथ नापी। और छोटी कोठरियों के आगे का
अन्त हाथ भर इधर हाथ भर उधर और छोटी छोटी कोठरियां
१३ छः हाथ इधर और छः हाथ उधर थीं। तब उस ने फाटक
की छोटी कोठरी की छत से दूसरी कोठरी लों नापा उस की
१४ चौड़ाई पचीस हाथ थी द्वार के साम्ने द्वार। और उस ने
फाटक की चारों ओर आंगन के खंभे लों साठ हाथ खंभे भी
१५ बनाये। और प्रवेश के फाटक के आगे से भीतर के फाटक
१६ के आंगन लों पचास हाथ। और छोटी छोटी कोठरियों की
ओर फाटक के भीतर के खंभों की चारों ओर खिड़कियां थीं
और उसारे की भी और भीतर भीतर चारों ओर खिड़कियां
थीं और हर एक खंभे पर ताड़पेड़ थे॥

१७ फिर उस ने मुझे बाहर के आंगन में पहुंचाया और क्या
देखता हूं कि कोठरियां और चारों ओर आंगन के लिये गच
१८ थी और उस गच पर तीस कोठरियां। और फाटकों की लम्बाई
१९ के साम्ने फाटकों के लग की गच नीचे की गच थी। तब उस
ने नीचे के फाटक के साम्ने से भीतर के आंगन के साम्ने लों
पूरब ओर और उत्तर और बाहर बाहर चौड़ाई सौ हाथ
नापी॥

२० फिर उस ने उत्तर के बाहरी आंगन के फाटक की लम्बाई
२१ और चौड़ाई नापी। और उस की छोटी कोठरियां तीन इस
अलंग तीन उस अलंग थीं और उस के खंभे और उस के
उसारे पहिले फाटक के नाप के समान थे उस की लम्बाई

२२ पचास हाथ और चौड़ाई पचीस हाथ। और उन की खिड़कियां
और उन के उसारे और उन के ताड़पेड़ पूरब ओर के फाटक के
नाप के समान थे और सात सीढ़ियां पर से उस पर चढ़ते थे
२३ और उस के उसारे उन के आगे थे। और भीतर के आंगन
का फाटक पूरब ओर के और उत्तर ओर के फाटक के साम्ने
था और फाटक से फाटक सौ हाथ के नाप का॥

२४ तब उस ने मुझे दक्खिन की ओर पहुंचाया और
क्या देखता हूं कि दक्खिन की ओर एक फाटक और उस ने
उस के खंभे और उस के उसारे इन नापों के समान नापे।
२५ और उस में और उस के उसारे में चारों ओर उन खिड़कियों की नाईं
खिड़कियां थीं लम्बाई पचास हाथ और चौड़ाई पचीस हाथ।
२६ और उस पर चढ़ने को सात सीढ़ियां थीं और उस के उसारे उन
के आगे थे और उस के खंभों पर ताड़पेड़ थे एक इस अलंग
२७ और एक उस अलंग। और भीतर के आंगन की दक्खिन ओर
एक फाटक था और उस ने फाटक से फाटक लों दक्खिन
ओर सौ हाथ नापा॥

२८ और वुह दक्खिन फाटक से मुझे भीतर के आंगन में लाया
और इन के नाप के समान उस ने दक्खिन के फाटक को
२९ नापा। और उस की छोटी कोठरियां और उस के खंभे और
उस के उसारे इन नापों के समान थे और उस में और उस
के उसारे में चारों ओर खिड़कियां थीं वुह पचास हाथ लम्बा
३० और पचीस हाथ चौड़ा। और उसारा चारों ओर पचीस हाथ लम्बा
३१ और पांच हाथ चौड़ा। और उस के उसारे बाहर के आंगन की
ओर थे और उस के खंभों पर ताड़पेड़ और उस की चढ़ाई
की आठ सीढ़ियां थीं॥

३२ और वुह मुझे पूरब ओर भीतर के आंगन में लाया और
३३ इन नापों के समान फाटक नापा। और उस की छोटी

कोठरियां और खंभे और उसारे इन नापों के समान थे और
उस में और उस के उसारे में चारों ओर खिड़कियां थीं वुह
३४ पचास हाथ लम्बा और पचीस हाथ चौड़ा। और उस के उसारे
बाहर के आंगन की ओर थे और उस के खंभे के ऊपर इधर
उधर ताड़पेड़ और उस की चढ़ाई आठ सीढ़ी की थी ॥
३५ और उस ने मुझे उत्तर के फाटक की ओर पहुंचाया और
३६ इन नापों के समान उसे नापा। उस की छोटी छोटी कोठरियां
और उस के खंभे और उस के उसारे और उस की चारों ओर
की खिड़कियां लम्बाई में पचास हाथ और चौड़ाई में पचीस
३७ हाथ। और उस के खंभे बाहर के आंगन की ओर थे और
इधर उधर उस के खंभों पर ताड़पेड़ थे और उस की चढ़ाई
आठ सीढ़ी की थी ॥
३८ और कोठरियां और उन की पैठ उन के फाटकों के खंभे
३९ के लग थीं जहां वे बलिदान की भेंट धोते थे। और फाटक
के उसारे में बलिदान की भेंट और पाप की भेंट और अपराध
की भेंट बलि करने को दो मंच इस अलंग दो मंच उस अलंग
४० थे। और बाहर के अलंग उत्तर फाटक की पैठ को जाते जाते
दो मंच थे और फाटक के उसारे के दूसरे अलंग दो मंच थे।
४१ फाटक के लग इस अलंग चार मंच और उस अलंग चार मंच
४२ थे आठ मंच जिन पर वे बलि करते थे। और बलिदान की
भेंट के लिये खोदे हुए पत्थर के डेढ़ हाथ लम्बे और डेढ़
हाथ चौड़े और हाथ भर ऊंचे चार मंच थे जिन पर वे बलिदान
४३ की भेंट और बलि के हथियार धरते थे। और उन के भीतर
भीतर चार अंगुल चौड़ी अंकरियां चारों ओर लगी थीं और
मंचों पर भेंट का मांस था ॥
४४ और भीतर के फाटक के बाहर भीतर के आंगन में जो
उत्तर फाटक के अलंग में थीं गायकों की कोठरियां थीं और

उन का मुंह दक्खिन की ओर ओर पूरब फाटक के अलंग एक
४५ जिस का मुंह उत्तर की ओर। तब उस ने मुझ से कहा कि
यही दक्खिन ओर के मुंह की कोठरी घर के रखवाल याजकों
४६ के लिये है। और उत्तर ओर के मुंह की कोठरी यज्ञबेदी के
रखवाल याजकों के लिये है ये सादूक के बेटे लावियों के बेटों
में हैं जो सेवा के लिये परमेश्वर के पास आते हैं॥
४७ सो उस ने आंगन को सौ हाथ लम्बा नापा और सौ हाथ
चौड़ा चौकोर और घर के आगे की बेदी॥
४८ फिर वुह मुझे घर के उसारे में लाया और उसारे के खंभे
को नापा पांच हाथ इधर और पांच हाथ उधर और फाटक
४९ की चौड़ाई इधर उधर तीन तीन हाथ। उसारे की लम्बाई
बीस हाथ और चौड़ाई ग्यारह हाथ और उस की चढ़ाई की सीढ़ी
पर से मुझे लाया और खंभों के इधर उधर खंभे थे॥

एकतालीसवां पब्बे।

१ उस के पीछे वुह मुझे मन्दिर में लाया और खंभों को नापा
तंबू की चौड़ाई एक ओर छः हाथ और दूसरी ओर छः हाथ।
२ और पैठ की चौड़ाई दस हाथ और द्वार के अलंग एक ओर
पांच हाथ और दूसरी ओर पांच हाथ और उस ने उस की
लम्बाई को चालीस हाथ नापा और उस की चौड़ाई बीस हाथ॥
३ तब उस ने भीतर जाके द्वार के खंभे को दो हाथ नापा
४ और द्वार छः हाथ और द्वार की चौड़ाई सात हाथ। वैसा
उस ने उस की लम्बाई को बीस हाथ और मन्दिर के साम्ने
की चौड़ाई को बीस हाथ नापा तब उस ने मुझ से कहा कि
यही अति पवित्रस्थान है॥
५ तब उस ने घर की भीत छः हाथ नापी और अलंग की
कोठरी की चौड़ाई घर की चारों ओर हर एक अलंग चार

६ हाथ । और अलंग की कोठरियां तीन थीं कोठरी पर कोठरी
पांती में तीस और वे भीत के भीतर भीतर थीं जो घर के
आस पास के अलंग की कोठरियों के लिये थीं जिसतें वे दृढ़
७ होवें परन्तु घर की भीत से वे मिली हुई न थीं। और वुह
अधिक चौड़ा किया गया था और घेरा ऊपर की आस पास
की कोठरी लों था क्योंकि घर का घेरा ऊपर ऊपर घर की
चारों ओर इस लिये घर की चौड़ाई ऊपर अधिक थी और
८ नीचे से लेके मध्य से ऊपर लों बढ़ गई। और मैं ने घर की चारों
ओर की उंचाई भी देखी अलंगों की कोठरियों की नेव छः
बड़े बड़े हाथ के पूरे नल की थी॥

९ बाहर की कोठरी के अलंग के निमित्त भीत की चौड़ाई
पांच हाथ और छूटा हुआ स्थान भीतर के अलंग की कोठरियों
१० के लिये था। और कोठरियों के बीच में घर के हर एक
११ अलंग चारों ओर बीस हाथ की चौड़ाई । और अलंग की
कोठरियों के द्वार छूटे हुए स्थान की ओर थे एक द्वार उत्तर
ओर और एक द्वार दक्खिन ओर और छूटे हुए स्थान की चौड़ाई
चारों ओर पांच हाथ की थी॥

१२ अब पच्छिम ओर अंत में अलग स्थान के आगे की जोड़ाई सत्तर
हाथ चौड़ी थी और जोड़ाई की भीत चारों ओर पांच हाथ
१३ मोटी और उस की लम्बाई नब्बे हाथ थी। सो उस ने घर
को सौ हाथ लम्बा नापा और अलग स्थान और जोड़ाई उस
१४ की भीतें सहित सौ हाथ लम्बी। और घर के मुंह की भी
चौड़ाई पूरब ओर के अलग स्थान की सौ हाथ॥

१५ और पीछे के अलग स्थान के साम्ने जोड़ाई की लम्बाई
को और ऊपर के इस अलंग और उस अलंग के उसारों को
भीतर के मन्दिर और आंगन के उसारे समेत उस ने सौ हाथ
१६ नापे। द्वार के उतरंगे और सकेत खिड़कियां और द्वार के

साम्ने की तीनों अटारियों पर चारों ओर के उसारे लकड़ी से
चारों ओर मढ़े हुए थे और भूमि से खिड़कियों तांई और
१७ खिड़कियां ढांपी हुई थीं। द्वार के ऊपर लों अर्थात् घर के भीतर
और बाहर लों चारों ओर की सारी भीतों के लग बाहर भीतर
नाप नापके ढंपी हुई थीं॥
१८ और करोबियों से और ताड़पेड़ों से बना था ऐसा कि एक
ताड़पेड़ एक एक करूब के बीच में था और हर एक करूब
१९ के दो दो मुंह थे। ऐसा कि एक अलंग ताड़पेड़ की ओर
मनुष्य का मुंह था और दूसरे अलंग ताड़पेड़ की ओर युवा
२० सिंह का मुंह घर की चारों ओर ऐसा बना था। भूमि से द्वार
के ऊपर लों और मन्दिर की भीत पर करोबीम और ताड़पेड़
२१ बने थे। मन्दिर का खंभा और पवित्रस्थान के रूख चौरस
लिये गये थे एक दूसरे के समान दिखाई देता था॥
२२ काठ की बेदी तीन हाथ ऊंची और उस की लम्बाई दो
हाथ और उस के कोने और उस की लम्बाई और उस की
भीतें काठ की थीं और उस ने मुझ से कहा कि यह परमेश्वर
के आगे का मंच है॥
२३। २४ और मन्दिर और पवित्रस्थान के दो द्वार थे। और एक
एक द्वार के दो दो घूमने के पाट थे एक द्वार के लिये दो
२५ पाट और दूसरे के लिये दो। और जैसे भीतों पर बने थे
तैसे मन्दिर के द्वारों पर करोबीम और ताड़पेड़ बने थे और
२६ बाहर के उसारे के रूख पर मोटी मोटी सिल्लियां थीं। और
उसारे के अलंगों पर और घर के अलंगों की कोठरियों पर
और मोटी मोटी सिल्लियों पर इस अलंग और उस अलंग
सकेत सकेत खिड़कियां और ताड़पेड़ थे॥

बयालीसवां पर्व्व ।

१ फिर वुह मुझे बाहरी आंगन में उत्तर के मार्ग पर लाया
और वुह मुझे अलग स्थान के सन्मुख की कोठरी में जो उत्तर
२ ओर की जोड़ाई के आगे थी पहुंचाया । सौ हाथ लम्बाई के
आगे उत्तर का द्वार था और उस की चौड़ाई पचास हाथ ।
३ भीतर के आंगन के लिये बीस हाथ और बाहर के आंगन के
४ लिये गच के आगे तेहरे ऊपरी उसारे थे । और कोठरियों के
साम्ने भीतर भीतर दस हाथ का चौड़ा एक मार्ग एक हाथ
५ का एक पथ और उन के द्वार उत्तर ओर थे । और ऊपरी
कोठरियां उन से छोटी छोटी थीं क्योंकि ऊपरी उसारे इन्हों
६ से और नीचे से और जोड़ाई के बीच में से ऊंचे थे । क्योंकि वे
तेहरे थे परन्तु आंगनों के खंभों की नाईं उन के खंभे न थे इस
लिये जोड़ाई नीचे भूमि से और मध्य से सकेत थी ॥
७ और कोठरियों के आगे के बाहरी आंगन की ओर ऊपर
की कोठरी के आगे बाहर की भीत पचास हाथ लम्बी थी ।
८ क्योंकि बाहरी आंगन की कोठरियों की लम्बाई पचास हाथ
थी और देखो कि मन्दिर के साम्ने सौ हाथ ॥
९ और बाहरी आंगन से जाने में उन कोठरियों में प्रवेश
१० करने को पूरब ओर उन के नीचे पैठ थी । अलग स्थान के
साम्ने और जोड़ाई के साम्ने कोठरियां पूरब ओर के आंगन की
११ भीत की मोटाई थीं । और उन के आगे का मार्ग उत्तर ओर
की कोठरियों का सा दिखाई देता था जो उन के समान
लम्बा चौड़ा और उन के सारे निकास उन के डौल और उन
१२ के द्वारों के समान थे । और दक्खिन की कोठरी के द्वारों के
समान मार्ग के सिरे पर एक द्वार अर्थात् पूरब ओर की भीत
के साम्ने उन में जाने के मार्गों में एक द्वार था ॥

१३ तब उस ने मुझ से कहा कि उत्तर की कोठरियां और
दक्खिन की कोठरियां जो अलग स्थान के आगे हैं पवित्र
कोठरियां हैं जहां याजक जो परमेश्वर के पास जाते हैं अति
पवित्र वस्तु खायेंगे वे वहां अति पवित्र वस्तु और भोजन की
भेंट और पाप की भेंट और अपराध की भेंट धरेंगे क्योंकि वुह
१४ स्थान पवित्र है। जब याजक उस में प्रवेश करें तब वे बाहरी
आंगन में पवित्रस्थान से न जायें परन्तु वे अपने सेवा के
वस्त्र वहीं रक्खें इस लिये कि वे पवित्र हैं और वे दूसरा
बस्त्र पहिनें और लोगों के लिये पास जावें ॥
१५ सो जब वुह भीतर के घर को नाप चुका तो मुझे उस
फाटक की ओर लाया जिस का रुख पूरब ओर है और उसे
१६ चारों ओर नापा। उस ने नापने के नल से पूरब अलंग पांच
१७ सौ नल चारों ओर नापे। उस ने नापने के नल से उत्तर
१८ अलंग चारों ओर पांच सौ नल नापे। उस ने नापने के नल
१९ से दक्खिन अलंग पांच सौ नल नापे। उस ने पच्छिम ओर
२० लौटके नापने के नल से पांच सौ नल नापे। उस ने उस के
चारों अलंग नापे उस की चारों ओर एक भीत पांच सौ नल
लम्बी और पांच सौ चौड़ी थी जिसतें पवित्रस्थान को सामान्य
स्थान से अलग करें ॥

तेंतालीसवां पर्व्व।

१ और उस ने मुझे फाटक पर पहुंचाया अर्थात् पूरब मुंह
२ के फाटक पर। और क्या देखता हूं कि इसराएल के ईश्वर का
तेज पूरब ओर से आया और उस का शब्द बहुत पानियों के
शब्द की नाईं और उस के तेज से पृथिवी चमक उठी।
३ और वुह मेरे देखे हुए दर्शन की नाईं था अर्थात् मेरे देखे
हुए उस दर्शन की नाईं जब मैं नगर को नाश करने को

आया और दर्शन उस दर्शन की नाईं थे जो मैं ने किबार
४ नदी के लग देखे थे और मैं औंधे मुंह गिरा। और पूरब मुंह
५ के फाटक की ओर से परमेश्वर का तेज घर में आया। और
आत्मा ने मुझे उठाके भीतरी आंगन में पहुंचाया और क्या
६ देखता हूं कि परमेश्वर के तेज से घर भर गया। और घर के
भीतर से मैं ने उस को अपने से कहते सुना और वुह मनुष्य
मेरे पास खड़ा था ॥
७ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र इसराएल
का घराना उन के राजा अपने छिनालपन से अपने ऊंचे स्थानों
में अपने राजा की लोथों में मेरे सिंहासन के स्थान और पांव
के तलवे के स्थान को जहां मैं इसराएल के सन्तानों के मध्य
में सदा वास करूंगा और मेरे पवित्र नाम को फिर अशुद्ध न
८ करेंगे। उन्हों ने अपनी डेहरी को मेरी डेहरियों के लग और
अपने खंभे मेरे खंभों के लग खड़े करने से और मेरे और उन
के बीच में भीत खड़ी करने से अपनी घिनित क्रिया से मेरे
पवित्र नाम को अशुद्ध किया है इस लिये मैं ने अपनी रिस में
९ उन्हें नष्ट किया। अब वे अपने छिनालपने को और अपने
राजाओं की लोथों को मुझ से दूर करें और मैं सर्वदा उन के
मध्य में वास करूंगा ॥
१० हे मनुष्य के पुत्र इसराएल के घराने को वुह घर दिखा
जिसतें वे अपनी बुराइयों से लजायें और उस के अंत को
११ नापें। और यदि वे अपने सारे किये हुए कार्य्य से लजायें तो
उन्हें घर का डौल और उस का रूप और उस के बाहर भीतर
आना जाना और उस की सारी बिधि और उस का सारा डौल
और उस की सारी व्यवस्था दिखा और उसे उन की दृष्टि में
लिख जिसतें वे उस के सारे डौल को और उस की सारी बिधिन
को पालन करें और उन्हें मानें ॥

१२ घर की व्यवस्था यही है पर्व्वत की चोटी पर उस के चारों
ओर सारे सिवाने अति पवित्र होंगे देख घर की व्यवस्था
यही है ॥

१३ और वेदी का नाप हाथ के समान यह है हाथ एक हाथ
चार अंगुल का अर्थात् उस के बीचों बीच एक हाथ और उस
की चौड़ाई एक हाथ और उस के कोर चारों ओर बित्ता भर के
१४ और वेदी के ऊपर का स्थान यह होगा। और भूमि पर से
नीचे के ठहर लों दो हाथ और उस की चौड़ाई हाथ भर
और छोटी ठहर से बड़ी ठहर लों चार हाथ और चौड़ाई हाथ
१५ भर। इसी रीति से वेदी चार हाथ होगी और वेदी के ऊपर
१६ चार सींग होंगे। और वेदी बारह हाथ लम्बी और बारह
१७ चौड़ी चौकोर होगी। और ठहर चौदह हाथ लम्बा और चौदह
चौड़ा चौकोर और उस का कोर आधा हाथ और उस की पेंदी
हाथ भर और उस की सीढ़ी पूरब ओर होगी ॥

१८ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र प्रभु परमेश्वर
यों कहता है कि जब कि उस पर बलिदान की भेंट चढ़ाने को
और लोहू छिड़कने को उसे बनावेंगे तो वेदी की यह विधि होगी।
१९ और प्रभु परमेश्वर कहता है कि तू याजक लावियों को जो सादूक
के बंश के हों जो मेरी सेवा के लिये पास आते हैं पाप की
२० भेंट के लिये एक बछड़ा देना। और उस में का लोहू लेना
और वेदी के चारों सींगों पर और ठहरके चारों कोनों पर और
चारों ओर के कोर पर लगाना इस रीति से उसे पावन और
२१ शुद्ध करना। तू पाप की भेंट के बैल को भी लेना और वुह
उसे पवित्रस्थान के बाहर घर के ठहराये हुए स्थान में जलावे।
२२ और दूसरे दिन पाप की भेंट के लिये निष्पय बकरियों का एक
मेम्ना चढ़ाना और जैसा उन्हों ने बेदी को बैल से शुद्ध किया
२३ तैसा उसे शुद्ध करें। जब तू उसे पवित्र कर चुके तब निष्पय

२४ बछड़ा और निष्मय झुंड में का एक मेढ़ा चढ़ाना। और तू
उन्हें परमेश्वर के आगे चढ़ा और याजक उन पर लोन
छिड़कें और वे उन्हें बलिदान की भेंट के लिये परमेश्वर के
२५ निमित्त चढ़ावें। तू सात दिन लों प्रति दिन पाप की भेंट के
लिये एक एक बकरी सिद्ध करना और वे एक निर्दोष बछड़ा
२६ और झुंड में से एक निष्मय बकरा भी सिद्ध करें। वे सात
दिन लों बेदी को पावन और शुद्ध करें और आप को पवित्र
२७ करें। और जब ये दिन बीतें तब ऐसा होगा कि आठवें दिन और
आगे याजक तुम्हारे बलिदान की भेंटें और कुशल की भेंटें बेदी
पर चढ़ावें और प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं तुम्हें ग्रहण
करूंगा॥

चवालीसवां पर्ब्ब।

१ तब वुह मुझे पूरब ओर के बाहर के पवित्रस्थान के फाटक पर
२ लाया और वुह बंद था। तब परमेश्वर ने मुझ से कहा कि
यह फाटक बंद रहे यह न खोला जाये और न कोई इस में
से प्रवेश करे क्योंकि परमेश्वर इसराएल का ईश्वर इस में से
३ भीतर गया है इस लिये यह बंद रहेगा। यह राजा के लिये
है परमेश्वर के आगे भोजन करने के निमित्त राजा उस में
बैठेगा और वुह उस फाटक के ओसारे के ओर से भीतर
जायेगा और उस में से बाहर जायेगा॥

४ तब वुह घर के आगे के उत्तर फाटक की ओर से मुझे लाया
और मैं ने देखा तो क्या देखता हूं कि परमेश्वर के तेज से परमेश्वर
५ का मन्दिर भर गया और मैं औंधे मुंह गिरा। और परमेश्वर ने
मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र जो कुछ मैं तुझे परमेश्वर के
मन्दिर की सारी बिधिन के और सारी व्यवस्था के विषय में कहूं तू
उन पर अपना मन लगा और अपनी आंखों से देख और

अपने कानों से सुन रख और मन्दिर की पैठ को और पवित्र
६ स्थान के हर एक निकास को चीन्ह रख। और इसराएल के
इस दंगइत घराने से कह कि प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि
हे इसराएल के घराने तुम्हारी सारी घिनित क्रिया तुम्हारे
७ लिये बस हो। इस बात में कि तुम मेरे पवित्रस्थान में मेरे
घर को अशुद्ध करने को मन के अख़तन: और मांस के
अख़तन: उपरियों को लाये हो जब कि तुम लोग मेरी रोटी
और चिकनाई और लोहू चढ़ाते हो और उन्हों ने मेरे
८ नियम को अपने सारे घिनित कार्य्यों से भंग किया है। और
तुम ने मेरी पवित्र वस्तुन की रक्षा न किई परन्तु अपने लिये
मेरे पवित्रस्थान में रखवालों को ठहराया है॥

९ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि कोई परदेशी मन का
अख़तन: और मांस का अख़तन: कोई किसी परदेशी में से
जो इसराएल के सन्तानों में का है मेरे पवित्रस्थान में प्रवेश
१० न करेंगे। और जब कि इसराएल भटक गये जो मुझ से
अपनी मूर्त्तिन के पीछे भटक गये जो लावी मुझ से दूर गये
११ हैं वे अपने अधर्म को भोगेंगे। तथापि वे घर के फाटक पर
रखवाली और घर की सेवा करने में मेरे पवित्रस्थान के सेवक
होंगे वे लोगों के लिये बलिदान की भेंट और बलि को बधन
करेंगे और उन की सेवा करने के लिये उन के आगे खड़े
१२ होंगे। प्रभु परमेश्वर कहता है इस कारण कि उन्हों ने उन
की मूर्त्तिन के आगे उन की सेवा किई और इसराएल के घराने
के अधर्म के लिये एक ठोकर थे इस लिये मैं ने अपना हाथ
१३ उन के विरुद्ध उठाया है और वे अपने अधर्म भोगेंगे। और
मेरे लिये याजक के पद की सेवा करने को वे पास न आवें
और अति पवित्रस्थान में मेरी किसी पवित्र वस्तु के पास न
आवें परन्तु वे अपना लाज और अपनी घिनित क्रिया भोगेंगे।

१४ परन्तु घर की सारी सेवा के लिये और उस में के सारे कार्य्य
के लिये मैं उन्हें उस का रखवाल बनाऊंगा॥
१५ परन्तु जब कि इसराएल के सन्तान मुझ से भटक गये तब
सदूक के बेटे याजक लावी जो पवित्रस्थान की रक्षा करते थे
वे सेवा के लिये मेरे पास आवेंगे प्रभु परमेश्वर कहता है कि
१६ चिकनाई और लोहू चढ़ाने को वे मेरे आगे खड़े होंगे। वे
मेरे पवित्रस्थान में प्रवेश करेंगे और वे मेरी सेवा करने को मेरे
१७ मंच पर आवेंगे और मेरी आज्ञा की रक्षा करेंगे। और जब वे
भीतर के आंगन के फाटकों मे प्रवेश करें तब ऐसा होगा कि
वे सूती बस्त्र पहिरेंगे और जब लों भीतर के आंगन के फाटकों
में वे भीतर सेवा करें तब लों उन पर कुछ ऊन न होवे।
१८ वे सिर पर सूती वस्त्र की टोपी देवें और कटि पर सूती
जांघिया पहिनें और जिस्से कि पसीना निकले उसे न पहिनें।
१९ और जब वे बाहर आंगन में जायें अर्थात् लोगों के पास
बाहरी आंगन के भीतर जायें तो जिस वस्त्र में उन्हों ने सेवा
किई उन्हें उतारके पवित्र कोठरियों में रक्खें और और बस्त्र
पहिनें परन्तु अपने बस्त्रों को पहिनके लोगों को पवित्र न
२० करें। और वे अपने सिर न मुड़ावें और चोटी बढ़ने न देवें
२१ पर वे अपने सिर के बाल कतरावें। और जब वे भीतरी
२२ आंगन में जायें तो कोई याजक दाखरस न पीये। और वे
बिधवा को अथवा त्यक्त को अपनी पत्नी न करें परन्तु इसराएल
के घराने के संतान की कन्या को अथवा उस बिधवा को जो
२३ आगे याजक से बियाही गई थी लेवें। और वे पवित्र और
अपवित्र वस्तु का भेद मेरे लोगों को सिखावें और अशुद्ध और
२४ शुद्ध का ब्यवरा उन्हें बतावें। और बिवाद में वे न्यायी होवें
और वे मेरे बिचार की नाईं बिचारें और मेरी सारी सभाओं
में वे मेरी ब्यवस्था और बिधिन को पालन करें और मेरे

२५ बिश्रामों को पवित्र मानें। और वे अपने को अपवित्र करने को
मृतक के पास न जायें परन्तु पिता अथवा माता अथवा पुत्र
अथवा पुत्री अथवा भाई अथवा अविवाहिता बहिन के लिये
२६ वे अपने को अशुद्ध करें। और उस के पवित्र होने के पीछे वे
उस के लिये सात दिन गिनें॥
२७ और प्रभु परमेश्वर कहता है कि जिस दिन वुह पवित्र
स्थान में सेवा करने के लिये पवित्रस्थान के भीतरी आंगन में
२८ जाये तो वुह अपने पाप की भेंट चढ़ावे। और वुह उन के
लिये अधिकार के लिये होगा मैं ही उन का अधिकार हूं
और इसराएल के मध्य तुम लोग उन्हें अधिकार न देना
२९ क्योंकि मैं उन का अधिकार हूं। वे मांस की भेंट और पाप
की भेंट और अपराध की भेंट खायें और इसराएल में हर एक
३० समर्प्पण किई हुई वस्तु उन की होगी। और सब वस्तु के
पहिले फल का श्रेष्ठ और तुम्हारे सारे रीति के अर्प्पण और
सभों का हर एक अर्प्पण याजकों का होगा और तुम गूंधा
हुआ पिसान का पहिला याजक को देओ जिसतें वुह तुम्हारे
३१ घरों पर आशीष पहुंचावे। जो कुछ आप से आप मर जाये
अथवा फाड़ा जाये चाहे पंछी हो चाहे पशु याजक उसे न
खाये॥

पैंतालीसवां पर्ब्ब।

१ और जब तुम लोग अधिकार के लिये चिट्ठी डालके देश
को बांटो तब परमेश्वर के लिये एक नैवेद्य चढ़ाओ अर्थात्
देश का पवित्र भाग उस की लम्बाई पचीस सहस्र नल की
लम्बाई और चौड़ाई दस सहस्र यही उस के सारे सिवानों की
२ चारों ओर पवित्र होगा। इस में से पवित्रस्थान के लिये
लम्बाई में पांच सौ नल और चौड़ाई में पांच सौ चारों ओर

चौकोर और उस के आस पास के लिये चारों ओर पचास हाथ
३ होवें। और इस नाप से तू पचीस सहस्र लम्बाई और दस
सहस्र चौड़ाई नाप और वुह पवित्रस्थान अति पवित्र होगा।
४ देश का पवित्र भाग पवित्रस्थान के सेवक याजकों के लिये जो
परमेश्वर की सेवा के लिये आवें वुह उन के घरों के लिये एक
स्थान और पवित्रस्थान के लिये पवित्रस्थान होगा॥
५ और घर के सेवक लावी भी अपने लिये पचीस सहस्र लम्बाई
और दस सहस्र चौड़ाई बीस कोठरियों के अधिकार के लिये
पावें॥
६ और तुम लोग पांच सहस्र चौड़ा और पचीस सहस्र लम्बा
पवित्र नैवेद्य के साम्ने नगर का अधिकार ठहराओ वुह इसराएल
के सारे घराने के लिये होगा॥
७ और पवित्र नैवेद्य के इधर उधर पूरब ओर से पूरब और
पश्चिम ओर से पश्चिम और नगर के अधिकार के आगे और
उस के आगे कि पवित्र नैवेद्य के इस अलंग और उस अलंग
अध्यक्ष के लिये भाग होगा उस की लम्बाई पश्चिम सिवाने
से पूरब सिवाने लों उस के भागों में से एक भाग के साम्ने
८ होगा। इसराएल के मध्य उस का अधिकार देश में होगा
और मेरे अध्यक्ष मेरे लोगों को फेर न सतावेंगे और वे देश
को इसराएल की गोष्ठियों के समान उन्हें देंगे॥
९ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि हे इसराएल के अध्यक्षो
तुम्हारे लिये बस होवे प्रभु परमेश्वर कहता है कि अंधेर और
लूट दूर करो और न्याय और धर्म्म करो मेरे लोगों में से
१० अपना अपना दूर करना त्यागो। तुम खरी तोल और खरा
११ इफ़ाह और खरा बत्त रक्खो। इफ़ाह और बत्त एक ही नाप
का होवे जिसतें एक बत्त में होमर का दसवां भाग समावे
और इफ़ाह होमर का दसवां भाग उस की तोल होमर के

१२ समान होवे। और शेकल बीस गिरह का होगा और बीस शेकल
और पचीस शेकल और पंद्रह शेकल तुम्हारा माने: होवे॥
१३ यह नैवेद्य चढ़ाओ अर्थात् एक होमर का इफ़ाह का
छठवां भाग गोहूं और एक होमर जव के इफ़ाह का छठवां
१४ भाग देना। और तेल की बिधि का विषय एक बत्त तेल एक
कोर के बत्त का दसवां भाग जो दस बत्त का होमर है क्योंकि
१५ दस बत्त का होमर होता है। और प्रभु परमेश्वर यों कहता
है कि उन के लिये मिलाप करने को इसराएल के मोटे चराई
के झुंड के दो सौ मेम्ने होम की भेंट के लिये और बलिदान
की भेंट के लिये और कुशल की भेंटों के लिये एक मेम्ना
१६ देओगे। देश के सारे लोग इसराएल में अध्यक्ष के लिये यही
नैवेद्य देवें॥
१७ और पर्ब्बों में अमावास्या और विश्राम और इसराएल के
घराने के सारे पर्ब्बों में बलिदान की भेंटें और होम की भेंट
और पीने की भेंट अध्यक्ष के देने का काम होगा और इसराएल
के घराने के लिये मेल करने को वुह पाप की भेंट और होम
की भेंट और बलिदान की भेंट और कुशल की भेंटें सिद्ध
करे॥
१८ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि पहिले मास की पहिली
तिथि में तू निष्पय एक बछड़ा लेना और पवित्रस्थान को शुद्ध
१९ करना। और याजक पाप की भेंट के लोहू में से कुछ लेवे
और घर के खंभों पर और बेदी के ठहरके चारों कोनों पर
२० और भीतरी आंगन के फाटक के खंभों पर लगावे। और वैसा
ही तू मास की सातवीं तिथि में हर एक चूक करवैये और
भोले के लिये करना और इसी रीति से घर से मिलाप
कराओ॥
२१ पहिले मास की चौदहवीं तिथि में सात दिन पार जाने

२२ का पर्व्व रखना और अख़मीरी रोटी खाई जाये। और उस
दिन अध्यक्ष अपने लिये और देश के सारे लोगों के लिये पाप
२३ की भेंट के लिये एक बैल सिद्ध करे। और पर्व्व के सात दिन
वुह परमेश्वर के लिये एक बलिदान की भेंट निष्खोट सात बैल
और सात मेढ़े सात दिन प्रतिदिन और पाप की भेंट के लिये
२४ बकरी का मेम्ना सिद्ध करे। और एक एक बैल के लिये होम
की भेंट के लिये एक इफ़ाह और एक मेढ़े के लिये एक इफ़ाह
२५ और एक इफ़ाह के लिये एक हिन्न तेल सिद्ध करे। सातवें मास
की पंदरहवीं तिथि में सात दिन के पर्व्व में पाप की भेंट के
समान और बलिदान की भेंट के समान और होम की भेंट के
समान और तेल के समान वुह ऐसा ही करे॥

छियालीसवां पर्व्व।

१ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि भीतरी आंगन के पूरब का
फाटक काम काज के छः दिन बंद रहे परन्तु बिश्राम में खोला
२ जाये और अमावास्या को खोला जाये। और उसी फाटक के
बाहर के ओसारे में मार्ग में से अध्यक्ष प्रवेश करेगा और
फाटक के खंभे के पास खड़ा होगा और याजक उस के बलिदान
की भेंट और कुशल की भेंटें सिद्ध करें और वुह उस फाटक
की डेहरी के पास सेवा करे उस के पीछे वुह बाहर जाये परन्तु
३ जब लों सांझ न होवे तब लों फाटक बंद न होवे। वैसा ही
बिश्रामों में और अमावास्यों में देश के लोग फाटक के केवाड़े
के पास परमेश्वर के आगे सेवा करें॥

४ और जो बलिदान की भेंट अध्यक्ष बिश्राम के दिन में परमेश्वर
के निमित्त चढ़ावे सो निष्खोट छः मेम्ने और निष्खोट एक मेढ़ा
५ होवें। और होम की भेंट एक मेढ़े के लिये एक इफ़ाह और
उस के हाथ लगने के समान मेम्नों के लिये होम की भेंट

६ और एक एक इफ़ाह के लिये एक हिन्न तेल। और अमावास्या
के दिन निष्पय एक बछवा और छः मेम्ने और एक मेढ़ा सब
७ निष्पय चढ़ाये जायें। और वुह होम की एक भेंट सिद्ध करे
एक बैल के लिये एक इफ़ाह और मेढ़ा के लिये एक इफ़ाह
और मेम्नों के लिये जैसा उस के हाथ लगे और एक एक इफ़ाह
के लिये एक हिन्न तेल॥

८ और जब अध्यक्ष प्रवेश करे तब वुह फाटक के ओसारे में
९ होके प्रवेश करे और उसी मार्ग से बाहर जाये। परन्तु जब
देश के लोग बड़े पर्व्वों में परमेश्वर के आगे आवें तब जो जन
सेवा करने के लिये उत्तर फाटक से प्रवेश करे सो दक्खिन
फाटक से बाहर जाये और जो दक्खिन फाटक से प्रवेश करे
सो उत्तर फाटक से बाहर जाये जो जिस फाटक से भीतर
आवे सो उस में से बाहर न जाये परन्तु उस के साम्ने से
१० बाहर जाये। और अध्यक्ष उन के मध्य में जब वे भीतर
जायें तो वुह भीतर जाये और जब वे बाहर आवें तब बाहर
आवे॥

११ और पर्व्वों में और उत्सवों में भोजन की भेंट बैल पीछे
एक इफ़ाह और मेढ़ा पीछे एक इफ़ाह और मेम्नों के लिये
जैसा उस के हाथ लगे और एक एक इफ़ाह के साथ एक
१२ हिन्न तेल। सो जब अध्यक्ष परमेश्वर के निमित्त मनमन्ता
बलिदान की भेंट और कुशल की भेंट सिद्ध करे तब पूरब
ओर का फाटक उस के लिये खोला जाये और उस ने जैसा
बिश्राम में किया था तैसा अपने बलिदान की भेंट और कुशल
की भेंटें सिद्ध करे तब वुह बाहर जाये और उस के जाने के
पीछे एक जन कोई फाटक बंद करे॥

१३ और तू परमेश्वर के निमित्त प्रतिदिन पहिले बरस का निष्पय
एक मेम्ना बलिदान की भेंट के लिये सिद्ध करना हर

१४ बिहान को वैसा करना। और हर बिहान को उस के
निमित्त होम की भेंट सिद्ध करना इफ़ाह का छठवां भाग
और चोखे पिसान में मिलाने को एक हिन्न तेल का तीसरा
भाग यह सब परमेश्वर की नित्य की बिधि के लिये सदा के
१५ लिये होम की भेंट। यों वे मेम्ना को और होम की भेंट
को और तेल को हर बिहान नित्य की भेंट के लिये सिद्ध
करें॥

१६ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यदि अध्यक्ष अपने किसी
बेटे को कुछ दे तो उस का अधिकार उसी के बेटों का होगा
१७ उस अधिकार के वे अधिकारी होंगे। परन्तु यदि वुह अपने
दासों में से एक को अपने अधिकार में से कुछ दे डाले तो
छुटकारे के बरस लों वुह उस का होगा और उस के पीछे
वुह अध्यक्ष कने फिर जायेगा परन्तु उस का अधिकार उस के
१८ बेटों के लिये होगा। इस्से अधिक अध्यक्ष उन्हें उन के
अधिकार से बाहर करने को अंधेर करके लोगों का अधिकार
न लेवे परन्तु वुह अपने बेटों को अपने ही अधिकार में से
देवे जिसतें मेरे लोगों में से हर एक जन अपने अपने अधिकार
से छिन्न भिन्न न होवे॥

१९ उस के पीछे वुह मुझे फाटक के अलंग की पैठ में से
याजकों की पवित्र कोठरियों में से लाया जो उत्तर की ओर
थीं और क्या देखता हूं कि पश्चिम के दोनों अलंग स्थान हैं।
२० तब उस ने मुझ से कहा कि यही स्थान है जहां याजक
चूक की भेंट और पाप की भेंट उसिनें जहां वे होम की भेंट
को भूनें जिसतें वे लोगों को पवित्र करने को बाहर के आंगन
में न ले जायें॥

२१ फिर वुह मुझे बाहर के आंगन में लाया और आंगन के
चारों कोनों के लग मुझे चलाया और क्या देखता हूं कि एक

२२ एक आंगन के कोनों में एक एक आंगन। आंगन के चारों
कोनों में चालीस हाथ लम्बा और तीस हाथ चौड़ा आंगन से
२३ आंगन मिला हुआ उन के चारों कोने एक ही नाप के। और
उन में चारों ओर एक पांती स्थान उन की चारों ओर चार
२४ ओर पांतियों के नीचे चारों ओर उसिन्ने के स्थान थे। तब
उस ने मुझ से कहा कि यह उसिनवैयों के स्थान हैं जहां
मन्दिर के सेवक लोगों के बलि को उसिनावेंगे॥

सैंतालीसवां पर्ब्ब।

१ और वुह मुझे फेर घर के द्वार पर लाया और क्या देखता
हूं कि पूरब ओर से घर की डेहरी के नीचे से पानी बहते हैं
क्योंकि घर का साम्ना पूरब ओर था और पानी घर की दहिनी
२ ओर के नीचे से बेदी के दक्खिन ओर से उतरे। फिर वुह
मुझे उत्तर के फाटक की ओर से बाहर लाया और मुझे बाहर
के फाटक लों जो पूरब की ओर है ले गया और क्या देखता
हूं कि दहिनी ओर से जल बहते हैं॥

३ और जब वुह जन जिस के हाथ में डोरी थी पूरब ओर बाहर
गया तो सहस्र हाथ नापा और मुझे पानी में से लाया और पानी
४ घुट्ठी भर थे। फिर उस ने एक सहस्र नापा और मुझे पानी में
से लाया और पानी घुठने भर थे फिर उस ने एक सहस्र नापा
५ और मुझे उस में से लाया और पानी कटि लों थे। फिर उस ने
एक सहस्र नापा और नदी थी जिस्से मैं पार न हो सका
क्योंकि पानी उभड़े और पैरने के जल हुए एक नदी जिस्से
पार न हो सक्ता था॥

६ और उस ने मुझ से कहा कि हे मनुष्य के पुत्र तू ने देखा
७ है तब वुह मुझे नदी के तीर फिरवा लाया। सो जब मैं
फिरा तो क्या देखता हूं कि नदी के तीर इधर उधर बहुत

८ मे पेड़ थे। तब उस ने मुझ से कहा कि ये जल पूरब देश
की ओर बहते हैं ओर बन में उतरके समुद्र में जाते हैं ओर
९ जल को अच्छा करेंगे। फिर ऐसा होगा कि जहां कहीं ये दो
नदियां बहेंगी हर एक जीवधारी जो उधर से चलते हैं
जीयेंगे ओर इन पानियों के उधर आने से बहुत ही मछलियां
होंगी क्योंकि वे अच्छी होंगी ओर जहां कहीं नदी पहुंचती
१० है तहां की हर एक वस्तु जीयेगी। ओर ऐसा होगा कि
मछुये उस पर ऐनजदी से ऐनइजलैम लों खड़े होंगे जाल
फैलाने के लिये स्थान होंगे उन की मछलियां उन की रीति
के समान महा सागर की मछलियों की नाईं अति बहुत
११ होंगी। उस के चहले के स्थान ओर उस के दलदल चंगे न
१२ होंगे वे खारी के लिये होंगे। ओर नदी के दोनों पार तीर
पर भोजन के सारे पेड़ उगेंगे उन के पत्ते न मुरझायेंगे ओर
उन के फल न मिटेंगे अपने अपने मास के समान नये फल
लावेंगे क्योंकि उन के जल पवित्रस्थान में से निकले हैं ओर उस
के फल भोजन के लिये ओर उस के पत्ते ओषध के लिये होंगे॥
१३ प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि यही सिवाना होगा जिस्से
तुम लोग इसराएल की बारह गोष्ठी के समान देश के अधिकारी
१४ होगे यूसुफ़ के दो भाग होंगे। ओर तुम लोग क्या एक क्या
दूसरा उस के अधिकारी होगे जिस के विषय में मैं ने हाथ
उठाके तुम्हारे पितरों को दिया है ओर यह देश अधिकार के
लिये तुम्हारा होगा॥
१५ ओर उत्तर ओर के देश का सिवाना यही होगा ख़तलून
के मार्ग महासमुद्र से जिस्से मनुष्य सिदाद को जाते हैं।
१६ हमात ओर बिरोसाह ओर सिबरैम जो दमिशक के ओर हमात
के सिवानों के मध्य में हे ओर हसीर हत्तिकून जो होरान के
१७ सिवाने के लग है। ओर समुद्र से सिवाने हसरऐनान दमिशक

के सिवाने और उत्तर की ओर उत्तर को ओर हमात का
१८ सिवाना यही उत्तर अलंग है। और पूरब और तुम हौरान
से और दमिश्क से और जिलिअद से और इसराएल के देश
अर्दन के लग से सिवाने से पूरब समुद्र लों यही पूरब अलंग
१९ है। और दक्खिन अलंग दक्खिन की ओर से तमर से विवाद
के पानी क़ादिस में और नदी से महासागर लों यही उत्तर
२० के अलंग उत्तर की ओर। और पच्छिम अलंग भी सिवाने से
महासागर मनुष्य के हमात के सन्मुख आने लों यही पच्छिम
अलंग होगा॥

२१ इसी रीति से इसराएल की गोष्ठियों के समान तुम अपने
२२ लिये देश बांटना। और ऐसा होगा कि तुम लोग अपने लिये
और परदेशियों के लिये जो तुम्में निवास करते हैं जिन के
बालक तुम्में उत्पन्न होंगे उस पर चिट्ठी डालके अधिकार के
लिये बांट लेओ और वे इसराएल के सन्तानों में देश में
उत्पन्न हुओं की नाईं होंगे वे इसराएल की गोष्ठियों में तुम्हारे
२३ साथ अधिकार पावेंगे। और प्रभु परमेश्वर कहता है कि ऐसा
होगा कि जिस गोष्ठी में परदेशी रहते हैं उस में तुम उन का
अधिकार उन्हें देना॥

अठतालीसवां पर्ब्ब।

१ अब गोष्ठियों के नाम ये हैं उत्तर के अंत से ख़तलून के
मार्ग के सिवाने लों जैसा कि कोई हमात हसरऐनान को
जाता है उस सिवाने लों और उत्तर की ओर दमिशक का
सिवाना हमात के सिवाने लों दान का भाग होगा क्योंकि
२ यही उस के पूरब और पच्छिम अलंग हैं। और दान के
सिवाने के लग पूरब अलंग से पच्छिम अलंग यसर का भाग
३ होगा। और यसर के सिवाने के लग पूरब अलंग से पच्छिम

४ अलंग लों नफ़ताली का। और नफ़ताली के सिवाने के लग
५ पूरब ओर से पच्छिम अलंग लों मुनस्सी का। और मुनस्सी के
सिवाने के लग पूरब अलंग से पच्छिम अलंग लों इफ़रायम
६ का। और इफ़रायम के सिवाने के लग पूरब अलंग से पच्छिम
७ अलंग लों रूबिन का। और रूबिन के सिवाने के लग पूरब
अलंग से पच्छिम अलंग लों यहूदाह का॥

८ और यहूदाह के सिवाने के लग पूरब अलंग से पच्छिम
अलंग लों उन की भेंट होगी जो वे पचीस सहस्र नल चौड़ाई
में और लम्बाई में अंश और भाग के समान पूरब अलंग से
पच्छिम अलंग लों चढ़ावेंगे और पवित्रस्थान उस के मध्य में
९ होगा। परमेश्वर के लिये जो नैवेद्य तुम लोग चढ़ाओगे सो
पचीस सहस्र नल लम्बाई में और दस सहस्र चौड़ाई में होगा।
१० और उन के लिये अर्थात् याजकों के लिये यही पवित्र नैवेद्य
होगा उत्तर ओर पचीस सहस्र लम्बाई और पच्छिम ओर दस
सहस्र चौड़ाई और पूरब ओर दस सहस्र चौड़ाई और दक्खिन
ओर पचीस सहस्र लम्बाई और उस के मध्य में परमेश्वर के
११ लिये पवित्रस्थान होगा। पवित्र किये गये सदूक़ के बेटे
याजक के लिये होगा जिन्हों ने मेरी विधिन को पाला है
और लावियों के समान भटके न गये जब कि इसराएल के
१२ संतान भटक गये थे। और देश का नैवेद्य जो चढ़ाया जायेगा
सो लावियों के सिवाने के लग उन के लिये एक अति बड़ी
पवित्र वस्तु होगी॥

१३ और याजकों के सिवाने के साम्ने लावियों का पचीस सहस्र
लम्बाई में और दस सहस्र चौड़ाई में और सारी लम्बाई पचीस
१४ सहस्र और चौड़ाई दस सहस्र होगी। और वे उस में से कुछ
न बेचें और न पलटें और देश का पहिला फल अलग न करें
क्योंकि परमेश्वर के लिये पवित्र है॥

१५ और जो पांच सहस्र पचीस सहस्र के आगे चौड़ाई में बचा
है सो नगर के रहने के और आस पास के गांवों के स्थानों
के लिये आस पास का सामान्य स्थान होगा और नगर उसी
१६ के मध्य में होगा। और यही उस के नाप होंगे उत्तर अलंग
साढ़े चार सहस्र और दक्खिन अलंग साढ़े चार सहस्र और
पूरब अलंग साढ़े चार सहस्र और पच्छिम अलंग साढ़े चार
१७ सहस्र। और नगर के आस पास उत्तर की ओर अढ़ाई सौ
और दक्खिन ओर अढ़ाई सौ और पच्छिम ओर अढ़ाई सौ
होगा॥

१८ और पवित्र भाग के सन्मुख उबरे हुए की लम्बाई में पूरब
ओर दस सहस्र और पच्छिम ओर दस सहस्र होगा और वुह
पवित्र नैवेद्य के सन्मुख होगा और उस की बढ़ती नगर के
१९ सेवकों के भोजन के लिये होगी। और जो नगर की सेवा
करते हैं सो इसराएल की सारी गोष्ठियों में से उस की सेवा
करेंगे॥

२० वुह सारा नैवेद्य पचीस सहस्र इधर और पचीस सहस्र
उधर होगा और तुम उस पवित्र नैवेद्य को चौकोर नगर के
२१ अधिकार के साथ चढ़ाना। और पवित्र नैवेद्य की इस अलंग
और उस अलंग और पूरब सिवाने की ओर नैवेद्य का पचीस
सहस्र के सन्मुख नगर के अधिकार और पच्छिम ओर पचीस
सहस्र के सन्मुख पच्छिम सिवाने की ओर अध्यक्ष के मार्गों के
सन्मुख बचे हुए अध्यक्ष का होगा और घर का पवित्रस्थान
२२ उस के मध्य में होगा। और लावियों के अधिकार से और
नगर के अधिकार से और जो अध्यक्ष का है उस के मध्य में
से यहूदाह के सिवाने के मध्य और बिनयमीन के सिवाने के
मध्य अध्यक्ष के लिये होगा॥

२३ और उबरी हुई गोष्ठियां पूरब अलंग से पच्छिम अलंग

२४ बिनयमीन का भाग होगा। और बिनयमीन के सिवाने के लग
२५ पूरब अलंग से पच्छिम अलंग लों शमऊन का होगा। और
शमऊन के सिवाने के लग पूरब अलंग से पच्छिम अलंग लों
२६ इशकार का। और इशकार के सिवाने के लग पूरब अलंग
२७ से पच्छिम अलंग लों ज़बुलून का। और ज़बुलून के सिवाने के
२८ लग पूरब अलंग से पच्छिम अलंग लों जद का। और जद के
सिवाने के लग दक्खिन अलंग की दक्खिन ओर और सिवाने
तमर से झगड़े के जल क़ादिस में और नदी के महासागर
लों होगा॥

२६ तुम इसी देश को इसराएल की गोष्ठियों के अधिकार के
लिये चिट्ठी डालके बांटना और प्रभु परमेश्वर कहता है कि
यही उन के भाग हैं॥

३० और उत्तर अलंग नगर के ये निकास साढ़े चार सहस्र नाप।
३१ और नगर के फाटक इसराएल की गोष्ठियों के नाम के समान
होंगे उत्तर अलंग तीन फाटक रूबिन का एक फाटक और
३२ यहूदाह का एक फाटक और लावी का एक फाटक। और पूरब
अलंग साढ़े चार सहस्र और तीन फाटक यूसुफ़ का एक फाटक
३३ बिनयमीन का एक फाटक दान का एक फाटक। दक्खिन
अलंग साढ़े चार सहस्र नाप और तीन फाटक अर्थात् शमऊन
का एक फाटक इशकार का एक फाटक ज़बुलून का एक फाटक।
३४ पच्छिम अलंग साढ़े चार सहस्र और उन के तीन फाटक जद
का एक फाटक यसर का एक फाटक नफ़ताली का एक फाटक।
३५ चारों ओर अठारह सहस्र नाप था और उस दिन से उस नगर
का नाम होगा कि परमेश्वर वहां है॥

दानिएल भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब

१ यहूदाह के राजा यहूयकीम के राज्य के तीसरे बरस बाबुल
के राजा नबूखुदनज़र ने यरूसलम पर आके उसे घेर लिया।
२ और प्रभु ने यहूदाह के राजा यहूयकीम को अपने मन्दिर के
कितने पात्र समेत उस के हाथ में कर दिया जो वुह सिनआर
देश में अपने देव के मन्दिर में ले गया और उस ने उन
पात्रों को अपने देव के मन्दिर के भंडार में पहुंचाया॥
३ और राजा ने अपने नपुंसकों के प्रधान असपिनाम से कहा
कि इसराएल के संतानों में से और राजा के बंशों में से ला।
४ अर्थात् तरुणों को जो निष्पय और सुन्दर और सारी बुद्धि में
चतुर और ज्ञान में निपुण और बिद्या में प्रवीण हों जो राजभवन
में खड़े होने के और कसदियों की बिद्या और भाषा सिखलाने
५ के योग्य हों। और राजा ने अपने भोजन में से और दाखरस
में से जो वुह पीता था उन के लिये प्रतिदिन का भोजन
ठहराया और तीन बरस लों उन का प्रतिपाल किया जिसतें
उस के पीछे वे राजा के आगे खड़े होवें॥
६ सो उन में यहूदाह के संतान में से दानिएल और हननियाह
७ और मीसाएल और अज़रियाह थे। और नपुंसकों के प्रधान ने
उन के और नाम रक्खे अर्थात् दानिएल को बेलचासर और

हननियाह का सदरक और मीसाएल का मीसक और अज़रियाह
का अबदनजू नाम रक्खा ॥
८ परन्तु दानिएल ने अपने मन में ठाना कि मैं अपने को
राजा की रसोई के भाग से और उस के पान के दाखरस से
अशुद्ध न करूंगा इस लिये उस ने नपुंसकों के प्रधान से चाहा
९ कि मैं अपने को अशुद्ध न करूं । अब ईश्वर ने दानिएल
को नपुंसकों के प्रधान की दृष्टि में अनुग्रह और कोमल प्रेम
१० दिया । तब नपुंसकों के प्रधान ने दानिएल से कहा कि मैं
अपने प्रभु राजा से डरता हूं जिस ने तुम्हारे लिये खान पान
ठहराया है वुह किस लिये तुम्हारे मुंह को तुम्हारे संगियों के
मुंह से मलीन देखे तब तुम राजा के आगे मेरे सिर को
जोखिम में लाओगे ॥
११ तब दानिएल ने मलज़ार से कहा जिसे नपुंसकों के प्रधान
ने दानिएल और हननियाह और मीसाएल और अज़रियाह को
१२ करोड़ा किया था । कि मैं तेरी बिनती करता हूं दस दिन
लों अपने दासों को परख ले कि हमें खाने को तरकारी और
१३ पीने को जल दिला । तब हमारे रूप और उन तरुणों के
रूप जो राजा की रसोई से भाग खाते हैं तेरे आगे देखे जायें
१४ और जैसा तू देखे तैसा अपने सेवकों से कर । सो इस बात
में उस ने उन की मान लिई और दस दिन लों उन्हें परखा ।
१५ और दस दिन पीछे उन के रूप उन सब तरुणों के रूपों से
जो राजा की रसोई से भाग खाते थे सुन्दर और पुष्ट देख
१६ पड़े । तब मलज़ार ने उन के भोजन के भाग को और उन
के पीने के दाखरस को ले लिया और उन्हें तरकारी दिई ॥
१७ सो ईश्वर ने इन चार तरुणों को ज्ञान और सारी विद्या
और बुद्धि में पहुंच दिई और दानिएल को सारे दर्शनों और
स्वप्नों में समझ दिई ॥

१८ तब कि वे दिन बीत गये जिन के विषय में राजा ने कहा
था कि उन्हें भीतर लावें तब नपुंसकों का प्रधान उन्हें
१९ नबूखुदनज़र के आगे ले गया। और राजा ने उन से बात
चीत किई और उन सभों में से कोई दानिएल और हननियाह
और मीसाएल और अज़रियाह के समान न पाया गया सो ये
२० लोग राजा के आगे खड़े रहने लगे। और समझ की और
बुद्धि की सारी बातों में जो राजा ने उन से पूछा तो उस ने
उन्हें सारे टोनहों और गणितकारियों से जो उस के समस्त
राज्य में थे दस गुण भला पाया॥
२१ और दानिएल ख़ोरस राजा के पहिले बरस लों जीता
रहा॥

दूसरा पर्व्व।

१ और नबूखुदनज़र के राज्य के दूसरे बरस में नबूखुदनज़र
ने ऐसे स्वप्न देखे जिन से उस का मन व्याकुल हुआ और उस
२ की नींद उस्से जाती रही। तब राजा ने सारे गणितकारियों
और गुणियों और टोनहों और कसदियों को बुलाने की आज्ञा किई
जिसतें वे राजा के स्वप्नों को बतावें सो वे आये और राजा
३ के आगे खड़े हुए। तब राजा ने उन से कहा कि मैं ने एक
स्वप्न देखा और उस स्वप्न के जान्ने को मेरा मन व्याकुल हुआ
है॥
४ तब कसदियों ने अरामी बोली में राजा से कहा कि
महाराज सदा जीवे अपने दासों से स्वप्न कहिये और हम उस
का अर्थ बतावेंगे॥
५ राजा ने उत्तर में कसदियों से कहा कि वस्तु मुझ से जाती
रही सो यदि तुम लोग वुह स्वप्न अर्थ सहित मुझ से न
जनाओगे तो टुकड़े टुकड़े किये जाओगे और तुम्हारे घर घूरे

६ किये जायेंगे। परन्तु यदि तुम लोग स्वप्न और उस का अर्थ
बताओगे तो मुझ से दान और प्रतिफल और बड़ी प्रतिष्ठा
पाओगे इस लिये स्वप्न और उस का अर्थ मुझ से बताओ॥
७ उन्हों ने फिर उत्तर देके कहा कि राजा अपने दासों से अपना
स्वप्न कहें और हम उस का अर्थ बतावेंगे॥
८ राजा ने उत्तर देके कहा कि मैं निश्चय जानता हूं कि तुम
लोग समय लिया चाहते हो क्योंकि तुम देखते हो कि वुह
९ बस्तु मुझ से जाती रही। परन्तु जो मेरे स्वप्न को मुझ से न
बताओगे तो तुम्हारे लिये एक ही आज्ञा है क्योंकि तुम ने
झूठी और सड़ी हुई बातें बना रक्खी हैं कि मेरे आगे कहो
जब ताईं समय टल जाये सो मुझ से स्वप्न बताओ और मैं
जानूंगा कि तुम उस का अर्थ बता सक्ते हो॥
१० कसदियों ने राजा के आगे उत्तर देके कहा कि पृथिवी में
ऐसा तो एक मनुष्य भी नहीं जो राजा की बात बता सके
क्योंकि न कोई राजा न प्रभु न आज्ञाकारी हुआ जिस ने ऐसी
बातें किसी टोनहे अथवा गणितकारी अथवा किसी कसदी से
११ पूछी हों। और वुह बात जो राजा पूछता है अति कठिन है
और ईश्वरों को छोड़ जिन का बास शरीरों में नहीं कोई नहीं
जो उसे राजा के आगे बता सके॥
१२ इस कारण राजा रिसियाके अत्यन्त कोपित हुआ और बाबुल
१३ के सारे बुद्धिमानों को नाश करने की आज्ञा किई। सो बुद्धिमानों
को घात करने की आज्ञा निकली तब उन्हों ने दानिएल को
और उस के संगियों को घात करने को ढूंढ़ा॥
१४ तब दानिएल ने मंत्र और बुद्धि से राजा की सेना के प्रधान
अरयूक को जो बाबुल के बुद्धिमानों को घात करने के लिये
१५ निकला था उत्तर दिया। उस ने राजा की सेना के प्रधान अरयूक
को उत्तर दिया और कहा कि राजा की ओर से आज्ञा ऐसी

बेग क्यों निकली है तब अरयूक ने वुह बात दानिएल को
१६ बताई। और दानिएल ने भीतर जाके राजा से बिनती किई
कि मुझे अवकाश मिले और मैं राजा को उस का अर्थ
बताऊंगा॥
१७ उस के पीछे दानिएल ने अपने घर जाके अपने संगी
१८ हननियाह और मीसाएल और अज़रियाह से कहा। जिसतें वे
इस भेद के विषय में स्वर्ग के ईश्वर के आगे दया मांगें कि
बाबुल के बुद्धिमानों के साथ दानिएल और उस के संगी नाश
न होवें॥
१६ तब वुह भेद रात के दर्शन में दानिएल पर खुला तब
दानिएल ने स्वर्ग के ईश्वर का धन्य माना॥
२० दानिएल ने उत्तर दिया और कहा कि ईश्वर का नाम
२१ सर्बदा धन्य रहे क्योंकि बुद्धि और सामर्थ्य उसी की है। और
वुह समयों और ऋतुन को पलटता है वुह राजाओं को उठा
देता है और राजाओं को बैठाता है वुह बुद्धिमानों को बुद्धि
२२ और समझवैयों को समझ देता है। वुह गहिरी और गुप्त
बस्तुन को प्रगट करता है वुह जानता है कि अंधियारे में क्या
२३ है और उंजियाला उस के पास रहता है। हे मेरे पितरों के
ईश्वर मैं तेरा धन्य मानता हूं और तेरी स्तुति करता हूं कि
तू ने मुझे बुद्धि और पराक्रम दिया है और जो बस्तु हम ने
तुझ से चाही तू ने मुझे जनाई क्योंकि तू ने राजा की बात
हम पर प्रगट किई॥
२४ इस लिये दानिएल अरयूक के पास गया जिसे राजा ने
बाबुल के बुद्धिमानों को नाश करने को ठहराया था और उस्से
यों कहा कि बाबुल के बुद्धिमानों को मत मारिये मुझे राजा
के आगे ले चलिये और मैं राजा को उस का अर्थ बताऊंगा।
२५ तब अरयूक ने दानिएल को राजा के आगे शीघ्र लाके यों

बिनती किई कि मैं ने यहूदाह के बंधुओं के लड़कों में से एक
को पाया जो राजा को उस का अर्थ बतावेगा॥
२६ राजा ने दानिएल से जिस का नाम बेल्तशासर था उत्तर
दिया और कहा क्या तू मुझ से उस स्वप्न को जो मैं ने देखा
है और उस के अर्थ को बता सक्ता है॥
२७ दानिएल ने राजा के सन्मुख उत्तर दिया और कहा वुह
भेद जो राजा ने पूछा बुद्धिमान और गणितकारी और टोनहे
२८ और भविष्यकथक राजा को बता नहीं सक्ते। परन्तु स्वर्ग में
एक ईश्वर है जो भेद प्रगट करता है और उस ने नबूखुदनज़र
राजा को वुह बात जनाई है जो पिछले दिनों में होगी आप
का स्वप्न और आप के बिछौने पर के सिर के दर्शन ये हैं।
२९ हे राजा तेरे बिछौने पर चिन्ताएं तुझे आ गईं कि आगे को क्या
होगा सो वुह जो भेद प्रगट करता है तुझे जनावता है कि
३० क्या कुछ होगा। परन्तु यह भेद मुझ पर खुला इस लिये नहीं
प्रगट हुआ कि और जीवधारियों से अधिक बुद्धि रखता हूं पर
यह इस लिये है कि उस का अर्थ राजा को जनाया जाये
और जिसतें तू अपने मन की चिंतों को जाने॥
३१ हे राजा तु देखता था और एक बड़ी मूर्त्ति देखी यही
उत्तम चमक की महा मूर्त्ति तेरे आगे खड़ी हुई और उस की
३२ सूरत भयावनी थी। उस मूर्त्ति का सिर चोखे सोने का उस
की छाती और भुजा चांदी की उस का पेट और उस की
३३ जांघें पीतल की। उस की टांगें लोहे की उस के पांव कुछ
३४ तो लोहे के और कुछ माटी के। तू देखता ही था कि एक
पत्थर बिना हाथ से खोदा हुआ जो उस मूर्त्ति के लोहे और
माटी के पाओं पर लगा और उन्हें टुकड़ा टुकड़ा किया।
३५ तब लोहा और माटी और पीतल और रूपा और सोना सब
टुकड़े टुकड़े हो गये और खलिहान के चेती भूसे के समान

हुए और पवन उन्हें यहां लों उड़ा ले गया कि उन के लिये
स्थान न रहा और वुह पत्थर जिस ने उस मूर्त्ति को मारा था एक
३६ महा पर्वत बन गया और सारी पृथिवी को भर दिया। स्वप्न
तो यह है और हम राजा के आगे उस का अर्थ बतावेंगे॥
३७ हे राजा तू राजाओं का राजा है क्योंकि स्वर्ग के ईश्वर ने
तुझे एक राज्य और पराक्रम और बल और ऐश्वर्य्य दिया है।
३८ और जहां जहां मनुष्य के बंश बसते हैं जंगली पशुन को
और आकाश के पक्षियों को उस ने तेरे हाथ में किया है और
तुझे उन सभों पर आज्ञाकारी कर दिया है यह सोने का सिर
३९ तू है। और तेरे पीछे एक और राज्य तुझ से घाट उठेगा
और एक तीसरा राज्य पीतल का जो सारी पृथिवी पर
४० प्रभुता करेगा। और चौथा राज्य लोहे के समान दृढ़
होगा और जिस रीति से कि लोहा तोड़ डालता है और
सब को बश में करता है और जैसा कि लोहा सब बस्तुन
को टुकड़े टुकड़े करता है वुह टुकड़े टुकड़े करेगा और
४१ चूर करेगा। और जैसा कि तू ने देखा है कि पांव और
अंगूठे कुछ तो कुम्हार की माटी के और कुछ लोहे के
सो राज्य का बिभाग किया जायेगा परन्तु उस में लोहे का
बल होगा और जैसा कि तू ने देखा कि लोहा माटी से मिला
४२ हुआ था। और पांव के अंगूठे कुछ लोहे के और कुछ माटी
४३ के सो वुह राज्य कुछ तो दृढ़ और कुछ निर्बल होगा। और
जैसा कि तू ने देखा कि लोहा माटी से मिला हुआ था वे
अपने को मनुष्य के बंश से मिलावेंगे परन्तु वे आपस में मिले
४४ न रहेंगे जिस रीति से लोहा माटी से नहीं मिलता। और
इन राजाओं के दिनों में स्वर्ग का ईश्वर एक राज्य स्थापित
करेगा जो कभी नष्ट न होगा और उस का राज्य और लोगों पर
न छोड़ा जायेगा परन्तु वुह टुकड़ा टुकड़ा करेगा और इन

४५ राज्यों को भस्म करेगा और आप सर्वदा रहेगा। जैसा कि
तू ने देखा कि पत्थर पहाड़ से बिना हाथ से खोदा हुआ
और कि उस ने उस लोहे और पीतल और माटी और रूपे
और सोने को टुकड़े टुकड़े किया सो महान ईश्वर ने राजा को
वुह बात जनाई जो इस के पीछे होगी और स्वप्न निश्चय है
और उस का अर्थ सत्य॥

४६ तब राजा नबूखुदनज़र मुंह के बल गिरा और दानिएल
को दंडवत किई और आज्ञा किई कि उस को भेंट और सुगंध
४७ चढ़ावें। राजा ने दानिएल को उत्तर दिया और कहा इस में कुछ
सन्देह नहीं कि तुम्हारा ईश्वर ईश्वरों का ईश्वर और राजाओं
का प्रभु है और भेदों का प्रगट करनेहारा है कि तू इस भेद
को प्रगट कर सका॥

४८ तब राजा ने दानिएल को महान पुरुष किया और उसे
बड़े बड़े दान दिये और उसे बाबुल के सारे प्रदेशों का आज्ञाकारी
किया और बाबुल के समस्त बुद्धिमानों पर और अध्यक्षों पर
४९ प्रधान किया। तब दानिएल के बिनय करने से राजा ने
सदरक और मीसक और अबदनजू को बाबुल के प्रदेश के
कार्य्यों पर करोड़ा किया परन्तु दानिएल राजा की देवढ़ी पर
रहा॥

तीसरा पर्व्व।

१ नबूखुदनज़र राजा ने एक सोने की मूर्त्ति बनाई जिस की
ऊंचाई साठ हाथ थी और उस की चौड़ाई छः हाथ उस ने
उसे बाबुल के प्रदेश में दूरा के चौगान में स्थापित किया॥
२ तब नबूखुदनज़र राजा ने अध्यक्षों और प्रधानों और
सेनापतिन और न्याइयों और भंडारियों और मंत्रियों और
चकलेदारों और प्रदेशों के सारे आज्ञाकारियों को एकट्ठा करने

को भेजा कि उस मूर्त्ति की प्रतिष्ठा के लिये जिसे राजा
३ नबूखुदनज़र ने स्थापित किया था आवें। तब प्रधान और
अध्यक्ष और सेनापति और न्यायी और भंडारी और मंत्री और
चकलेदार और प्रदेशों के सारे आज्ञाकारी उस मूर्त्ति की प्रतिष्ठा
के लिये जिसे नबूखुदनज़र राजा ने स्थापित किया था एकट्ठे
हुए और उस मूर्त्ति के आगे जिसे नबूखुदनज़र राजा ने स्थापित
किया था खड़े हुए॥

४ तब एक ढंढोरिये ने बड़े शब्द से पुकारा कि हे लोगो और
५ जातियो और भाषाओ तुम्हें आज्ञा होती है। कि जिस समय
तुम लोग सींगा और बांसुरी और बीणा और भेरी और ढोल
और चितार और हर एक प्रकार के बाजों का शब्द सुनो तुम
ओंधे गिरो और उस सोने की मूर्त्ति को जिसे नबूखुदनज़र
६ राजा ने स्थापित किया है पूजा करो। और जो कोई ओंधा
गिरके पूजा न करेगा उसी घड़ी वुह आग के जलते भट्ठे में
७ डाला जायेगा। सो उसी घड़ी जब सब लोगों ने सींगा और
बांसुरी और बीणा और भेरी और ढोल और हर एक प्रकार के
बाजों का शब्द सुना सारे लोग और जाति और भाषा ओंधे
गिरे और उस सोने की मूर्त्ति को जिसे नबूखुदनज़र राजा ने
स्थापित किया था पूजा किई॥

८ सो उस समय में कितने कसदी पास आये और यहूदियों पर
९ दोष लगाया। और नबूखुदनज़र राजा के आगे बिनती किई
१० कि हे राजा सदा जीयो। हे राजा तू ने आज्ञा किई कि हर
एक मनुष्य जो सींगा और बांसुरी और बीणा और भेरी और
ढोल और चितार और हर एक प्रकार के बाजों का शब्द सुने
११ सो ओंधे गिरके उस सोने की मूर्त्ति को पूजा करे। और जो
कोई ओंधे गिरके पूजा न करेगा सो आग के जलते भट्ठे में
१२ डाला जायेगा। कितने यहूदी हैं जिन्हें तू ने बाबुल के प्रदेश

के कार्य्यों पर करोड़ा किया है उन में सदरक और मीसक और
अबदनजू हैं हे राजा ये मनुष्य तेरा आदर नहीं करते वे तेरे
देव की सेवा नहीं करते और उस सोने की मूर्त्ति की पूजा जो
तू ने स्थापित किया नहीं करते हैं ॥
१३ तब नबूखुदनज़र ने कोप और क्रोध से आज्ञा किई कि
सदरक और मीसक और अबदनजू को लावें तब वे इन मनुष्यों
१४ को राजा के आगे लाये। नबूखुदनज़र ने उत्तर दिया और उन
से कहा कि अरे सदरक और मीसक और अबदनजू क्या यह सच
है कि तुम मेरे देवों की सेवा नहीं करते और उस सोने की
१५ मूर्त्ति की जिसे मैं ने स्थापित किया पूजा नहीं करते। सो
यदि तुम सिद्ध रहो कि जिस घड़ी सींगा और बांसुरी और
बीणा और भेरी और ढोल और सितार और हर एक प्रकार के
बाजों का शब्द सुनके औंधे गिरो और उस मूर्त्ति की जो मैं ने
बनाई है पूजा करो तो भला है परन्तु यदि तुम पूजा न करोगे
तो तुम उसी घड़ी आग के एक जलते भट्ठे में डाले जाओगे
और वुह कौन सा ईश्वर है जो तुम्हें मेरे हाथ से बचावेगा ॥
१६ सदरक और मीसक और अबदनजू ने उत्तर देके राजा से
कहा कि हे नबूखुदनज़र हम इस विषय में तुझ से उत्तर देने
१७ में चिन्ता नहीं करते। यदि हो तो हमारा ईश्वर जिस की
हम सेवा करते हैं हमें उस आग के जलते भट्ठे से बचा सक्ता
१८ है और हे राजा वही हमें तेरे हाथ से छुड़ावेगा। परन्तु यदि
नहीं तो हे राजा तुझे जान पड़े कि हम तेरे देवों की सेवा
न करेंगे और न उस सोने की मूर्त्ति की जिसे तू ने स्थापित किया
है पूजा करेंगे ॥
१९ तब नबूखुदनज़र कोपमय हुआ और उस के मुंह का रूप
सदरक और मीसक और अबदनजू पर पलट गया और उस ने
कहा और आज्ञा किई कि वे भट्ठे को उस परिमाण से जो उस

२० का था सात गुण अधिक धधका देवें। फिर उस ने अपनी
सेना के शक्तिमान बलवानों को आज्ञा किई कि सदरक और
मीसक और अबदनजू को बांधके जलते भट्ठे में डाल देवें।
२१ तब ये मनुष्य अपने अंगरखों और पायजामों और पगड़ियों
और वस्त्रों के संग बांधे गये और जलते भट्ठे के मध्य में डाले
२२ गये। इस कारण कि राजा की आज्ञा आवश्यक थी और भट्ठा
अत्यन्त तप्त था उस आग की लवर ने उन मनुष्यों को जिन्हों
ने सदरक और मीसक और अबदनजू को उठाया था नाश
२३ किया। और ये तीन मनुष्य सदरक और मीसक और अबदनजू
बंधे हुए उस आग के जलते भट्ठे के मध्य में गिर पड़े॥
२४ तब नबूखुदनज़र राजा आश्चर्य्यित हुआ और शीघ्रता से
उठके बोला और अपने मंत्रियों से कहा क्या हम ने तीन जन
को बांधके जलती आग के मध्य में नहीं डाला उन्हों ने राजा
२५ को उत्तर देके कहा कि सत्य है हे राजा। उस ने उत्तर दिया
और कहा कि देखो मैं चार जन को छूटा हुआ आग के मध्य में
फिरते देखता हूं और उन को कुछ हानि नहीं है और चौथे
का डौल ईश्वर के पुत्र के ऐसा है॥
२६ तब नबूखुदनज़र जलते भट्ठे के द्वार पर आया और यों
बोला और पुकारा कि हे सदरक और मीसक और अबदनजू
अत्यन्त महान ईश्वर के सेवको बाहर निकलो और निकल
आओ तब सदरक मीसक और अबदनजू आग के मध्य से
२७ निकल आये। और अध्यक्षों और प्रधानों और सेनापतिन और
राजा के मंत्रियों ने एकट्ठे होते इन मनुष्यों को देखा जिन के
शरीरों पर आग का कुछ पराक्रम न था और उन के सिर का
एक बाल भी न झौंसा था और उन के वस्त्र न बदले थे और
उन पर आग की बास न लगी थी॥
२८ नबूखुदनज़र ने उत्तर दिया और कहा कि सदरक और

मीसक और अबदनजू का ईश्वर धन्य है जिस ने अपने दूत
को भेजा और अपने सेवकों को जो उस पर भरोसा रखते थे
बचाया और राजा की बात को पलट दिया और उन के
शरीरों को जतन से रक्खा कि वे अपने ही ईश्वर को छोड़
२९ किसी देव की सेवा और पूजा न करें। सो मेरी आज्ञा यह
है कि हर एक लोग और जाति और भाषा जो सदरक और
मीसक और अबदनजू के ईश्वर के विषय में कोई अनुचित बात
कहेंगे उन के टुकड़े टुकड़े किये जायेंगे और उन के घर घूरे
किये जायेंगे क्योंकि ऐसा कोई ईश्वर नहीं जो इस रीति से
३० बचा सके। तब राजा ने सदरक और मीसक और अबदनजू
को बाबुल के प्रदेश में बढ़ाया॥

चौथा पर्व्व।

१ नबूखुदनज़र राजा सारे लोगों और जातों और भाषाओं
को जो सारी पृथिवी में बसते हैं यह कहता है कि तुम पर
२ अधिक कुशल होये। मुझे अच्छा लगा कि उन चिन्हों और
आश्चर्य्यों को जो महान ईश्वर ने मुझ पर किया तुम्हें दिखाऊं।
३ उस के लक्षण क्या ही बड़े और उस के आश्चर्य्य कैसे शक्तिमान
उस का राज्य सनातन का राज्य और उस की प्रभुता पीढ़ी से
पीढ़ी लों॥

४ मैं नबूखुदनज़र अपने घर में चैन करता था और अपने
५ राजभवन में लहलहाता था। मैं ने एक स्वप्न देखा जिस ने
मुझे डराया और बिछौने पर के सोच और सिर के दर्शनों से
६ व्याकुल हुआ। तब मैं ने आज्ञा किई कि बाबुल के सारे
बुद्धिमानों को मेरे आगे लावें कि वे स्वप्न का अर्थ मुझे बतावें।
७ सो टोनहे और गणितकारी और कसदी और भविष्यकथक आये
और मैं ने उन के आगे स्वप्न कहा परन्तु उन्हों ने मुझ से

८ उस का अर्थ न बताया। परन्तु अन्त में दानिएल मेरे आगे
आया जिस का नाम मेरे देव के नाम के समान बेलचासर
था उस में पवित्र ईश्वरों का आत्मा है और उस के आगे में ने
अपना स्वप्न कहा।
९ हे बेलचासर टोनहे के प्रधान मैं जानता हूं कि पवित्र
ईश्वरों का आत्मा तुझ में है और कोई भेद तुझे व्याकुल नहीं
करता उस स्वप्न का दर्शन जो मैं ने देखा है और उस का
१० अर्थ मुझे बता। सो मेरे बिछौने पर के सिर का दर्शन यह
था मैं देखता था और क्या देखता हूं कि पृथिवी के मध्य में
११ एक पेड़ है जिस की ऊंचाई बड़ी थी। और वुह पेड़ बढ़के
पोढ़ हुआ और उस की ऊंचाई स्वर्ग लों पहुंची और उस की
१२ दृष्टि सारी पृथिवी के अंत लों। उस के पत्ते सुन्दर थे और उस
का फल बहुत और उस में सब के लिये भोजन था जंगली
पशु उस के नीचे छाया पावते थे और आकाश के पंछी उस
की डालों पर बसते थे और सारे जीवधारी उस्से भोजन पाते
१३ थे। मैं अपने बिछौने के सिर के दर्शन में क्या देखता हूं
१४ कि एक पहरू और एक धर्मी जन स्वर्ग से उतरा। वुह
पराक्रम से पुकारके यों बोला कि उस पेड़ को काट डालो
और उस की डालियां छांटो उस के पत्ते झाड़ो और उस का
फल बिथरा दो पशु उस के तले से जाते रहें और पक्षी उस
१५ की डालों पर से। तथापि उस की जड़ के खूंय को पृथिवी में
हां लोहे और पीतल के बंधन से खेत की कोमल घास में
रहने दो और आकाश की ओस से भीगे और उस का भाग
१६ पशुन के संग पृथिवी की घास होवे। उस का मन मनुष्य के
से पलट जाये और पशु का मन उसे दिया जाये और उस पर
१७ सात समय बीत जायें। सो पहरूओं की आज्ञा से यह बात
है और पवित्र जनों की बात से यह वस्तु है जिसतें जीवते

जानें कि अत्यन्त महान मनुष्यन के राज्य में प्रभुता करता
है और जिसे वुह चाहता है उसे देता है और उस पर अत्यन्त
१८ निन्दित मनुष्यों को बैठाता है। मैं नबूखुदनज़र राजा ने
यह स्वप्न देखा है सो हे बेलचासर तू उस का अर्थ बर्णन
कर क्योंकि मेरे राज्य के सारे बुद्धिमानों में सामर्थ्य नहीं कि
मेरे आगे उस का अर्थ करें परन्तु तू सक्ता है क्योंकि पवित्र
ईश्वरों का आत्मा तुझ में है॥
१९ तब दानिएल जिस का नाम बेलचासर था एक घड़ी भर
आश्चर्य्यित हुआ और उस की चिंतों ने उसे व्याकुल किया
तब राजा बेलचासर से यह कहके बोला कि स्वप्न अथवा उस
का अर्थ तुझे व्याकुल न करे बेलचासर ने उत्तर देके कहा
मेरे प्रभु यह स्वप्न उन के लिये होवे जो तुझ से बैर रखते
२० हैं और उस का अर्थ तेरे शत्रुन पर। जो पेड़ तू ने देखा
कि उगा और पोढ़ हुआ जिस की ऊंचाई स्वर्ग लों पहुंची और
२१ उस की दृष्टि सारी पृथिवी लों। जिस के पत्ते सुन्दर थे और
जिस का फल बहुत जिस में सब के लिये भोजन था जिस
के तले बनैले पशु रहते थे और जिस की डालों पर आकाश
२२ के पक्षी बसेरा लेते थे। सो हे राजा तू है जो बढ़के पोढ़
हुआ है क्योंकि तेरी महिमा बढ़ गई और आकाश लों पहुंची
२३ और तेरा राज्य पृथिवी के अन्त लों है। और जैसा कि राजा
ने एक पहरू और एक धर्म्मी को स्वर्ग से यह कहते हुए
उतरते देखा कि उस पेड़ को काट डालो और उसे नाश करो
तथापि जड़ों के खूंथ को पृथिवी में हां लोहे और पीतल के
बंधन से खेत के कोमल घास में पड़ा रहने दो और आकाश
की ओस से भीगे और उस का भाग बनैले पशुन के संग होवे
२४ यहां लों कि सात समय उस पर बीत जायें। सो हे राजा
उस का अर्थ यह है और अत्यन्त महान की आज्ञा यह है

२५ जो मेरे प्रभु राजा पर आई है। सो वे तुझे मनुष्यों में से
हांक देंगे और तेरा बसाव बनैले पशुन के संग होगा और वे
तुझे बैलों की नाईं घास खिलावेंगे और आकाश की ओस से
भिगावेंगे और सात समय तुझ पर बीतेंगे जब लों तू जाने
कि अत्यन्त महान मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और
२६ उसे जिसे चाहता है देता है। और जैसा कि उन्हों ने उस
पेड़ की जड़ों के खूंथ छोड़ने की आज्ञा किई जब तू जान
जायेगा कि स्वर्गों का राज्य है तेरा राज्य तेरे लिये निश्चय
२७ बना रहेगा। सो हे राजा मेरा मंत्र मान लीजिये और अपने
पापों को धर्म्म से और अपने कुकर्म्मों को कंगालों पर दया
करने से दूर कीजिये क्या जाने तेरी कुशलता की बढ़ती
होय॥

२८। २९ सब कुछ नबूख़ुदनज़र राजा पर पड़ीं। बारह मास
के अंत में वुह बाबुल के राज्य के भवन पर फिरता था।
३० राजा बोला और कहा क्या यह वुह महा बाबुल नहीं है जिसे
मैं ने अपने पराक्रम के बल से और अपनी महिमा की प्रतिष्ठा
३१ के लिये राज्य के घर के लिये बनाया। राजा के मुंहीं में यह
बात होते ही आकाशबाणी हुई कि हे राजा नबूख़ुदनज़र
३२ तुझे कहा जाता है कि राज्य तुझ से जाता रहा। और वे
तुझे मनुष्यों में से हांक देंगे और तेरा बसाव बनैले पशुन में
होगा वे तुझे बैलों की नाईं घास खिलावेंगे और तुझ पर सात
समय बीत जायेंगे यहां लों कि तू जाने कि अत्यन्त महान
मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है और जिसे चाहता है वुह
उसे देता है॥

३३ उसी घड़ी नबूख़ुदनज़र पर यह बात सम्पूर्ण हुई और वुह
मनुष्यों में से निकाला गया और बैलों की नाईं घास खाने
लगा और उस की देह आकाश की ओस से भीगने लगी यहां

लों कि उस के बाल गिद्ध की नाईं बढ़े और उस के नह
पंछियों के समान ॥
३४ और उन दिनों के पीछे मुझ नबूखुदनज़र ने स्वर्ग की ओर
आंख उठाई और मेरी बुद्धि फिर मुझे मिली और मैं ने
अत्यन्त महान को धन्य माना और स्तुति और उस की प्रतिष्ठा
किई जो सर्वदा लों जीता है जिस की प्रभुता सनातन की
३५ प्रभुता है और जिस का राज्य पीढ़ी से पीढ़ी लों। और पृथिवी
के सारे बासी तुच्छ की नाईं गिने जाते और वुह अपनी इच्छा
के समान स्वर्ग की सेना में और पृथिवी के बासियों में करता
है और कोई उस का हाथ रोक नहीं सक्ता अथवा उस्से कहे
३६ कि तू क्या करता है। उसी समय मेरा बिचार मुझ में फिर
आया और मेरे राज्य के बिभव के लिये मेरी प्रतिष्ठा और
बिभव मुझ में फिर आया और मेरे मंत्री और मेरे प्रधानों ने
मुझे ढूंढ़ा और मैं अपने राज्य पर स्थिर हुआ और अत्युत्तम
३७ महिमा मेरे लिये अधिक हुई। अब मैं नबूखुदनज़र धन्य
मानता और स्तुति करता हूं और स्वर्ग के राजा की प्रतिष्ठा
करता हूं उस के सारे कार्य्य सत्य और उस की चाल न्याय
सहित हैं और जो अभिमान में चलते हैं उन्हें निन्दित कर
सक्ता है ॥

पांचवां पर्व्व।

१ बेलशाज़र राजा ने अपने सहस्र प्रधानों के लिये एक बड़ी
जेवनार किई और उन सहस्रों के आगे दाखरस पीया।
२ बेलशाज़र ने जब दाखरस चीखा तो सोने चांदी के पात्रों को
लाने की आज्ञा किई जिन्हें उस का पिता नबूखुदनज़र
यरूसलम के मन्दिर में से ले आया था जिसतें राजा और उस
के अध्यक्ष उस की स्त्रियां और उस की सुरैतिन उन में पीयें।

३ तब वे सोने के पात्रों को लाये जो ईश्वर के घर के मन्दिर से
जो यरूशलम में है लाये गये थे और राजा ने और उस के
अध्यक्षों ने और उस की स्त्रियों और सुरैतिनों ने उन में पीया।
४ उन्हों ने दाखरस पीया और सोने चांदी और पीतल और लोहे
और काष्ठ और पत्थर के देवों की स्तुति किई॥
५ उसी घड़ी मनुष्य के हाथ की अंगुलियों ने निकलके राज
भवन की भीत के गच पर जो दीपक के सन्मुख थी लिखा
६ और राजा ने उस हाथ के भाग को लिखते देखा। तब राजा
की झलक बदल गई और उस की चिंतों ने उसे व्याकुल किया
यहां लों कि उस की कटि की गांठ गांठ ढीली हो गई और
७ उस के घुठने एक दूसरे से टक्कर खाने लगे। राजा ने पराक्रम
से पुकारा कि गणितकारी और कसदी और भविष्यकथक लाये
जायें राजा बाबुल के बुद्धिमानों से बोला और कहा कि जो
कोई इस लिखे को पढ़ेगा और उस के अर्थ को मुझ से बतावेगा
सो बैंजनी बस्त्र से पहिनाया जायेगा और उस के गले में सोने
का हार डाला जायेगा और राज्य में तीसरा आज्ञाकारी होगा।
८ तब राजा के सारे बुद्धिमान आये परन्तु वे उस लिखे को न
९ पढ़ सके न उस के अर्थ राजा को बता सके। तब बेलशाज़र
राजा अत्यन्त व्याकुल हुआ और उस की झलक बदल गई और
उस के प्रधान घबराये॥
१० परन्तु राजा की बातों और प्रधानों की बातों के कारण से
रानी भोजनभवन में आई और यह कहके बोली कि हे राजा
सर्बदा जीयो तेरी चिन्ताएं तुझे व्याकुल न करें और तेरा
११ स्वरूप न बदले। तेरे राज्य में एक मनुष्य है जिस में पवित्र
देवों का आत्मा है और तेरे पिता के दिनों में ईश्वरीय बुद्धि
के समान प्रकाश और बुद्धि और ज्ञान उस में पाये जाते थे
जिसे नबूखुदनज़र राजा तेरे पिता ने हां हे राजा तेरे पिता

ने टोनहें और गणितकारियों और कसदियों और भविष्यकथकों
१२ का प्रधान किया था। जैसा कि एक अत्युत्तम आत्मा और
ज्ञान और बुद्धि और स्वप्नों के अर्थ कहने और कठिन बातों
को बताने की और संदेहों के मिटाने की सामर्थ्य उसी दानिएल
में पाई गई जिस का नाम राजा ने बेलचासर रक्खा अब
दानिएल बुलाया जाये और वुह अर्थ बताविगा॥
१३ तब दानिएल राजा के आगे लाया गया और राजा दानिएल
से यह कहके बोला क्या तू वही दानिएल है जो यहूदाह के
बंधुओं के संतानों में से है जिसे मेरा पिता राजा यहूदाह से ले
१४ आया। और मैं ने तेरा समाचार सुना है कि देवों का आत्मा
तुझ में है और प्रकाश और बुद्धि और अत्युत्तम ज्ञान तुझ में पाया
१५ जाता है। सो बुद्धिमान और गणक मेरे आगे लाये गये कि
उस लिखे हुए को पढ़ें और उस के अर्थ मुझ से बतावें परन्तु
१६ उस के अर्थ न बता सके। और मैं ने तेरा समाचार सुना है
कि तू अर्थों को कह सक्ता है और संदेह मिटा सक्ता है अब
यदि तू उस लिखे को पढ़ सके और उस के अर्थ मुझ से बता
सके तो तू लाल बस्त्र से पहिनाया जायेगा और तेरे गले में
सोने का हार डाला जायेगा और राज्य में तीसरा आज्ञाकारी
होगा॥
१७ तब दानिएल ने उत्तर देके राजा के आगे कहा कि तेरे दान
तेरे पास रहें और अपना प्रतिफल दूसरे को दीजिये तथापि
राजा के आगे इस लिखे हुए को पढूंगा और उस के अर्थ उसे
१८ बताऊंगा। हे राजा अत्यन्त महान ईश्वर ने तेरे पिता
नबूखुदनज़र को राज्य और महिमा और बिभव और प्रतिष्ठा
१९ दिई थी। और उस महिमा के कारण से जो उस ने उसे दिई
थी सारे लोग और जाति और भाषा उस के आगे डरते और
थर्थराते थे जिसे वुह चाहता था उसे बधन करता था और

जिसे चाहता था उसे जीता छोड़ता था और जिसे चाहता था
उसे बैठाता था और जिसे चाहता था उसे उतार देता था।
२० परन्तु जब अहंकार से उस का मन उभारा गया और उस का
अन्तःकरण कठोर हुआ तब वुह अपने राज्य के सिंहासन से
२१ उतारा गया और उस का बिभव ले लिया गया। और वुह
मनुष्य के पुत्रों में से निकाला गया और उस का मन पशु के
मन की नाईं हो गया और उस का बसाव बनैले गदहों में
हुआ और वे उसे बैलों की नाईं घास खिलाने लगे और उस
की देह आकाश की ओस से भींग गई जब लों उस ने जाना
कि अत्यन्त महान ईश्वर मनुष्यों के राज्य में प्रभुता करता है
२२ और जिसे चाहता है उसे उस पर ठहराता है। और हे
बेलशाज़र यद्यपि तू यह सब जानता था उस का पुत्र होके
२३ तू ने अपने मन को नम्र न किया। परन्तु तू ने स्वर्ग के प्रभु
के सन्मुख अपने को उभाड़ा और वे उस के मन्दिर के पात्रों
को तेरे आगे लाये और तू ने और तेरे प्रधानों ने तेरी पत्नियों
और तेरी सुरैतिनों ने उन में दाखरस पीया है और तू ने
चांदी और सोने और पीतल और लोहे और काष्ठ और पत्थर
के देवों की स्तुति किई जो न देखते हैं न सुनते हैं और न
जानते हैं और तू ने उस ईश्वर की महिमा न किई जिस के
२४ हाथ में तेरा स्वास है और तेरी सारी चाल हैं। तब उस की
ओर से हाथ का भाग भेजा गया और यह लिखा हुआ लिखा
गया॥

२५ और यह वुह लिखा हुआ है जो लिखा गया मीनी मीनी
२६ टेकल यूफ़ारसिन। मीनी का यह अर्थ है कि ईश्वर ने तेरे
२७ राज्य की गिनती किई और उसे समाप्त किया। टेकल कि तू
२८ तुला में तोला गया और घाट ठहरा। यूफ़ारसिन कि तेरा
राज्य बांटा गया और मादी और फ़ारसी को दिया गया।

२९ तब बेलशाज़र ने आज्ञा किई और उन्हों ने दानिएल को लाल
वस्त्र पहिनाया और सोने का हार उस के गले में डाला और
उस के विषय में प्रचार करवाया कि वुह राज्य का तीसरा
३० आज्ञाकारी होगा। उसी रात को कसदियों का राजा बेलशाज़र
३१ मारा गया। अब बासठ बरस की बय में दारा ने जो मदयानी
था इस राज्य को ले लिया॥

छठवां पर्ब्ब ।

१ दारा की इच्छा हुई कि राज्य पर सारे राज्यों की प्रभुता
२ के लिये एक सौ बीस अध्यक्षों को ठहरावे। और उन पर
तीन प्रधान जिन में दानिएल श्रेष्ठ था कि अध्यक्ष उन्हें लेखा
३ देवें जिसतें राजा घटी न उठावे। तब यह दानिएल सारे
प्रधानों और अध्यक्षों पर बढ़ाया गया इस कारण कि एक
अत्युत्तम आत्मा उस में था और राजा ने चाहा कि उसे सारे
राज्य पर ठहरावे॥

४ तब प्रधान और अध्यक्ष दानिएल के बिरुद्ध राज्य के विषय
में कोई कारण ढूंढ़ते थे परन्तु वे कोई दोष और कोई कारण
न पा सके क्योंकि वुह बिश्वस्त था और उस में कुछ चूक और
५ दोष न पाया गया। तब इन मनुष्यों ने कहा कि हम दानिएल
पर उस के ईश्वर की व्यवस्था के विषय को छोड़ कुछ दोष
का कारण न पावेंगे॥

६ तब ये प्रधान और अध्यक्ष राजा के आगे हुल्लड़ के संग
आये और यों उस की बिनती किई कि दारा राजा सदा लों
७ जीवे। राज्य के सारे प्रधान और अध्यक्ष और कुंअर और
मंत्री और सेनापतिन ने एकट्ठे होके एक मता किया है कि
राजकीय विधि ठहरावें और एक दृढ़ आज्ञा करें कि तुझे
छोड़ जो कोई किसी ईश्वर से अथवा मनुष्य से तीस दिन लों

८ कुछ मांगे हे राजा वुह सिंह की मांद में डाला जाये। अब
हे राजा इस आज्ञा को दृढ़ कीजिये और लिखित पर नाम
लिखिये जिसतें मादी और फ़ारसियों की व्यवस्था के समान
९ जो फिरती नहीं न पलटे। सो दारा राजा ने उस लिखित
और आज्ञा पर नाम लिखा॥
१० और जब दानिएल ने जाना कि उस लिखित पर चिन्ह
हो गये तब वुह अपने घर गया और उस के शयनस्थान के
झरोखे यरूसलम की ओर खुले हुए थे और वुह आगे की नाईं
दिन भर में तीन बार घुठनों पर झुकता और प्रार्थना करता था
और ईश्वर के आगे धन्य मानता था॥
११ तब ये लोग एकट्ठे हुए और उन्हों ने दानिएल को प्रार्थना
१२ करते और अपने ईश्वर के आगे बिनती करते पाया। तब वे
पास आये और राजा के आगे राजा की आज्ञा के विषय में
कहा कि तू ने उस आज्ञा पर नहीं लिखा कि हर एक मनुष्य
तुझे छोड़ जो किसी ईश्वर से अथवा मनुष्य से तीस दिन के
भीतर हे राजा कुछ मांगे सो सिंहों की मांद में डाला जाये
राजा ने उत्तर दिया और कहा कि यह बात सत्य है और
मादी और फ़ारसियों की व्यवस्था के समान नहीं पलटती॥
१३ तब उन्हों ने उत्तर दिया और राजा के आगे बिनती किई
कि दानिएल जो यहूदाह के संतान के बंधुओं में से है हे
राजा तुझे नहीं मानता और न तेरी आज्ञा को जिस पर तू ने
१४ लिखा परन्तु प्रतिदिन तीन बार प्रार्थना करता है। तब राजा
ये बातें सुनके अपने से अत्यन्त उदास हुआ और दानिएल
को छुड़ाने का मन किया और सूर्य्य के अस्त लों उसे छुड़ाने
का यत्न करता रहा॥
१५ तब ये मनुष्य राजा के पास एकट्ठे हुए और राजा से कहा
कि जान ले हे राजा कि मादी और फ़ारसियों का शास्त्र यह

है कि जो आज्ञा और रीति राजा ठहरावे पलटी न जाये ।
१६ तब वे राजा की आज्ञा से दानिएल को लाये और उसे सिंहों
की मांद में डाल दिया और राजा दानिएल को यह कहके
बोला कि तेरा ईश्वर जिस की तू सदा सेवा करता है वही तुझे
१७ बचावेगा । और एक पत्थर पहुंचाया जाके मांद के मुंह पर
धरा गया और राजा ने अपनी छाप से और अपने प्रधानों की
छाप से छाप किई जिसतें ठहराई हुई बात दानिएल के
१८ बिषय में पलटी न जाये । तब राजा अपने भवन में गया
और रात उपवास में काटी और खाना कोई उस के आगे न
लाया और उस की नींद उस्से जाती रही ॥

१९ तब बिहान को बड़े तड़के राजा उठा और शीघ्रता से सिंहों
२० की मांद पर गया । और जब वुह मांद पर पहुंचा तब उस
ने बिलाप के शब्द से दानिएल को पुकारा और राजा यह कहके
दानिएल से बोला कि हे दानिएल जीवते ईश्वर के सेवक क्या
तेरा ईश्वर जिस की तू सदा सेवा करता है सिंहों से तुझे बचा
२१ सक्ता है । तब दानिएल ने राजा को उत्तर दिया कि हे राजा
२२ सदा जीयो । मेरे ईश्वर ने अपना दूत भेजा और सिंहों के
मुंह को बंद किया यहां लों कि उन्हों ने मुझे दुख न दिया
क्योंकि उस के आगे निर्दोषता मुझ में पाई गई और हे राजा
२३ मैं ने तेरा भी कुछ अपराध न किया । तब राजा उस के लिये
अत्यन्त आनन्दित हुआ और दानिएल को मांद में से निकालने
की आज्ञा किई सो दानिएल मांद से निकाला गया और उस
पर कुछ दुख न पाया गया क्योंकि उस का बिश्वास ईश्वर पर
था ॥

२४ तब राजा ने आज्ञा किई और वे दानिएल के दोषदायकों
को लाये और उन्हें उन के बालकों और उन की स्त्रियों समेत
सिंहों की मांद में डाला और सिंह उन पर प्रबल हुए यहां

लों कि मांद के तले न पहुंचते ही सिंहों ने उन की हड्डियों
को चकनाचूर किया ॥
२५ तब दारा राजा ने सारे लोगों और जातों और भाषाओं को
जो सारी पृथिवी पर बसते थे यों लिखा कि तुम पर कुशल
२६ बढ़ता जाये। मैं यह ठहराता हूं कि मेरे राज्य की हर एक
प्रभुता में दानिएल के ईश्वर के आगे मनुष्य डरें और थर्थरावें
क्योंकि वुह जीवता ईश्वर है और सर्बदा स्थिर है और उस
के राज्य का नाश न होगा और उस की प्रभुता अंत लों होगी।
२७ वुह बचाता है और छुड़ाता है वुह स्वर्ग और पृथिवी पर
आश्चर्य्य और लक्षण दिखाता है उस ने दानिएल को सिंहों के
बश से बचाया है ॥
२८ सो यह दानिएल दारा और फ़ारसी ख़ोरस के राज्य में
भाग्यमान रहा ॥

सातवां पर्ब्ब ।

१ बाबुल के राजा बेलशाज़र के पहिले बरस दानिएल ने
अपने बिछौने पर के सिर के दर्शनों में एक स्वप्न देखा और
उस ने उस स्वप्न को लिखा और उन बातों के मूल को
बताया ॥
२ दानिएल बोला और कहा कि मैं ने रात को अपने दर्शन
में देखा और क्या देखता हूं कि स्वर्ग के चार पवन चारों ओर
३ से महा समुद्र पर चढ़ाई करने लगे। और समुद्र से चार महा
४ पशु उठे जो एक दूसरे से भिन्न था। पहिला सिंह की नाईं
और गिद्ध के से डैने रखता था मैं देखता ही था और उस के
डैने उखड़ गये और वुह पृथिवी से उठाया गया और मनुष्य
के समान पाओं पर खड़ा किया गया और मनुष्य का मन उसे
५ दिया गया। और क्या देखता हूं कि एक दूसरा पशु भालू की

नाईं एक ओर सीधा खड़ा हुआ और उस के मुंह में उस के
दांतों के बीच तीन पसुली थीं और उन्हों ने उससे कहा कि
६ उठ बहुत सा मांस भक्षण कर । उस के पीछे मैं ने देखा और
देखो कि एक और चीते के समान उठा जिस की पीठ पर पक्षी
के चार डैने थे इस पशु के भी चार सिर थे और उसे प्रभुता
७ दिई गई । इस के पीछे मैं ने रात के दर्शनों में देखा और
क्या देखता हूं कि चौथा पशु भयानक और भयंकर और
अत्यन्त बलवान और उस के दांत लोहे के बड़े बड़े थे उस
ने भक्षण किया और टुकड़े टुकड़े किये और रहे हुए को अपने
पांव तले लताड़ा और यह उन सब पशुन से जो उस के आगे
८ थे भिन्न था और उस के दस सींग थे । मैं ने उन सींगों को
सोचा और क्या देखता हूं कि उन के मध्य में और एक छोटा
सा सींग निकला जिस के आगे अगिले तीन सींग जड़ से उखड़
गये और क्या देखता हूं कि उस सींग में मनुष्य की सी आंखें
थीं और एक मुंह जो बड़ी बड़ी बातें बोल रहा है ॥
९ मैं यहां लों देखता रहा कि सिंहासन रक्खे गये और दिनों
का प्राचीन बैठा उस का पहिरावा पाला सा श्वेत था और उस
के सिर का बाल चोखे ऊन की नाईं था और उस का सिंहासन
आग की लवर और उस के चक्र जलती आग की नाईं थे ।
१० एक अग्नीय धारा निकली और उस के आगे से निकल आई सहस्र
सहस्रों ने उस की सेवा किई दस सहस्र गुणे दस सहस्र उस के आगे
११ खड़े थे न्याय हो रहा था और पुस्तकें खुली थीं । तब मैं ने
देखा कि बड़ी बातों के शब्द के कारण जिन्हें उस सींग ने
कहीं मैं ने यहां लों देखा कि वुह पशु मारा गया और उस
१२ की देह नाश हुई और जलती लवर को दिई गई । और रहे
हुए पशुन का बिषय यह है कि उन की प्रभुता लिई गई परन्तु
कुछ काल और घड़ी लों उन्हें जीवन दिया गया ॥

१३ मैं ने रात्री के दर्शनों में देखा और क्या देखता हूं कि
मनुष्य के पुत्र के समान आकाश के मेघों पर आया और
दिनों के प्राचीन के पास पहुंचा वे उसे उस के आगे ले आये।
१४ और उसे प्रभुता और विभव और राज्य दिये गये कि सारे
लोग और जाति और भाषा उस की सेवा करें उस की प्रभुता
सर्व्वदा की प्रभुता है जो जाती न रहेगी और उस का राज्य
नाश न होगा॥
१५ मैं दानिएल देह के मध्य में अपने मन में उदास हुआ
१६ और मेरे सिर के दर्शनों ने मुझे व्याकुल किया। मैं ने उन
में से जो निकट खड़े थे एक के पास जाके सारा समाचार
१७ पूछा और उस ने मुझ से कहा और बातों का अर्थ जनाया। ये
१८ चार बड़े पशु चार राजा हैं जो पृथिवी से उठेंगे। परन्तु
अत्यन्त महान के सिद्ध लोग राज्य ले लेंगे और राज्य को
सर्व्वदा वश में रक्खेंगे अर्थात् सर्व्वदा और सर्व्वदा के लिये॥
१९ तब मैं ने चाहा कि चौथे पशु का समाचार जानूं जो
औरों से भिन्न था और अत्यन्त भयानक था जिस के दांत
लोहे के और नह पीतल के जिस ने भक्षण किया और टुकड़े
२० टुकड़े किया और रहे हुए को पाओं तले लताड़ा। और उन
दस सींगों का जो उस के सिर पर थे और उस एक का जो
निकला और जिस के आगे तीन गिर गये हां उस सींग का
जिस की आंखें थीं और एक मुंह था जो बड़ी बातें बोलता
२१ था और देखने में अपने संगियों से अधिक बड़ा था। मैं ने
देखा और उसी सींग ने सिद्धों के संग युद्ध किया और उन
२२ पर प्रबल हुआ। यहां लों कि दिनों के प्राचीन को और
अत्यन्त महान के सिद्धों को न्याय दिया गया और समय
आ पहुंचा कि सिद्ध लोग राज्य के अधिकारी होवें॥
२३ वुह यों बोला कि चौथा पशु पृथिवी पर चौथा राज्य होगा

जो सारे राज्यों से भिन्न होगा और सारी पृथिवी को भक्षण
करेगा और उसे लताड़ेगा और उसे टुकड़ा टुकड़ा करेगा।
२४ और इस राज्य के दस सींग दस राजा हैं जो निकलेंगे और
उन के पीछे एक और निकलेगा वुह पहिले से भिन्न होगा और
२५ वुह तीन राजाओं को बश में करेगा। और अत्यन्त महान
के बिरोध में बातें करेगा और अत्यन्त महान के सिद्धों को
थकावेगा और समयों और व्यवस्थों को बदलने चाहेगा और
वे उस के हाथ में एक समय और दो समय और आधे समय
२६ लों दिये जायेंगे। परन्तु न्याय की बैठक होगी और वे भस्म
करने और अंत लों नाश करने को उस की प्रभुता को ले लेंगे।
२७ और राज्य और प्रभुता और राज्य का महत्त्व सारे स्वर्ग के नीचे
अत्यन्त महान के सिद्धों को दिया जायेगा जिस का राज्य
सर्बदा का राज्य है और सारी प्रभुता उस की सेवा करेंगी और
आज्ञा मानेंगी॥
२८ यहां बात का अंत है मैं दानिएल अपने ध्यानों से बहुत
व्याकुल हुआ और मेरा स्वरूप फिर गया पर मैं ने बात को
मन में रख छोड़ा॥

आठवां पर्ब्ब।

१ बेलशाज़र राजा के तीसरे बरस में मुझ दानिएल को पहिले
दर्शन के पीछे एक दर्शन दिखाई दिया॥
२ और मैं ने दर्शन में देखा और ऐसा हुआ कि मैं ने देखा कि
मैं शुशान भवन में था जो ऐलाम के प्रदेश में है और मैं ने
३ दर्शन में देखा कि मैं ऊलाई की नदी के तीर था। तब मैं
ने अपनी आंखें उठाके देखा और क्या देखता हूं कि नदी के
आगे एक मेढ़ा खड़ा है जिस के दो सींग थे और दोनों सींग
बड़े थे परन्तु एक उन में से दूसरे से बड़ा था और बड़ा पीछे

४ निकला। मैं ने मेढ़े को पश्चिम ओर उत्तर ओर दक्षिण दिशा
को ठेलते देखा ऐसा कि कोई पशु उस के आगे खड़ा न हो
सका ओर कोई उस के हाथ से छुड़ा न सक्ता था परन्तु वुह
अपनी इच्छा के समान करता था ओर महान हुआ॥
५ ओर सोचते सोचते क्या देखता हूं कि एक बकरा पच्छिम
से सारी पृथिवी पर आया ओर पृथिवी को न छूता था ओर
उस बकरे की दोनों आंखों के बीचों बीच एक दृष्टिमान सींग
६ था। ओर वुह उस दो सींगे मेढ़े के पास आया जिसे मैं ने
नदी के आगे खड़ा देखा था ओर अपने पराक्रम के कोप से
७ उस पर लपका। ओर मैं ने उसे मेढ़ा के पास आते देखा ओर
वुह उस के बिरुद्ध क्रुद्ध हुआ ओर उस ने उस मेढ़े को मारा
ओर उस के दोनों सींग तोड़े ओर उस मेढ़े में उस के आगे
खड़ा रहने की कुछ सामर्थ्य न थी परन्तु उस ने उसे भूमि
पर गिरा दिया ओर लताड़ा ओर कोई ऐसा न था कि उस मेढ़े
८ को उस के हाथ से छुड़ा सके। सो वुह बकरा बहुत बढ़ गया
ओर जब वुह बलवान हुआ तो उस का बड़ा सींग तोड़ा गया
ओर उस की संती स्वर्ग की पवन की चारों ओर से चार प्रसिद्ध
९ सींग निकले। ओर उन में से एक छोटा सींग निकला जो
दक्षिण ओर पूरब ओर सुन्दर भूमि की ओर बहुत ही बढ़ गया।
१० ओर वुह स्वर्ग की सेना के बिरुद्ध में बढ़ गया ओर उस ने
सेना में से कितनों को ओर तारों को भूमि पर गिरा दिया ओर
११ उन्हें लताड़ा। हां उस ने सेना के अध्यक्ष के बिरुद्ध में अपने
को बढ़ाया ओर उस्से प्रतिदिन का बलिदान छुड़ाया गया ओर
१२ उस का पवित्र स्थान गिराया गया। ओर प्रतिदिन के बलिदान
के बिरुद्ध में उन के पाप के कारण सेना सौंपी गई ओर उस
ने सच्चाई को भूमि पर डाल दिया ओर यही किया ओर
भाग्यमान हुआ॥

१३ तब मैं ने एक साधु को कहते सुना और दूसरे साधु ने उस
बोलनेवाले साधु से कहा कि पवित्रस्थान और सेना लताड़े
जाने के लिये प्रतिदिन के बलिदान और उजाड़ करने की
१४ आज्ञा भंग के विषय का दर्शन कब लों दिया जायेगा। फिर
उस ने मुझ से कहा कि दो सहस्र तीन सौ सांझ बिहान लों
तब पवित्रस्थान निर्दोष ठहराया जायेगा॥

१५ और ऐसा हुआ कि मुझ दानिएल ने यह दर्शन देखा और
उस का अर्थ ढूंढ़ा तब देखो मेरे साम्ने एक मनुष्य की नाईं
१६ दिखाई दिया। और मैं ने ऊलाई के मध्य में से एक मनुष्य
का शब्द सुना जिस ने पुकारके कहा कि हे जब्रएल दर्शन का
१७ अर्थ उसे समझा। सो जहां मैं खड़ा था वुह पास आया और जब
वुह आया तब मैं डरा और मुंह के बल गिरा परन्तु उस ने मुझ
से कहा हे मनुष्य के पुत्र समझ क्योंकि अंत्य के समय में
१८ यह दर्शन होगा। सो जब वुह मुझ से यह कह रहा था तब
मैं औंधे मुंह भारी नींद में भूमि पर पड़ा था तब उस ने मुझे
१९ छूआ और सीधा खड़ा किया। और मुझ से कहा कि देख जो
कुछ जलजलाहट के अंत्य में होगा मैं तुझे जनावता हूं
क्योंकि ठहराये हुए समय में अंत्य होगा॥

२० यह दो सींगा मेढ़ा जो तू ने देखा मादी और फ़ारस के
२१ राजा हैं। और वुह झबूआ बकरा यूनान का राजा है और
वुह बड़ा सींग जो उस की आंखों के बीच में है सो पहिला
२२ राजा है। अब वुह टूटा हुआ होके जैसा कि उस की संती
चार निकले चार राज्य उस जाति से खड़े होंगे परन्तु उस के
२३ पराक्रम में नहीं। और उन के राज्य के अंत्य समय में जब
अपराधी समाप्त होंगे तब एक राजा भयानक स्वरूपवान गुप्त बातों
२४ का समझवैया खड़ा होगा। और उस का बड़ा पराक्रम होगा
परन्तु अपने ही बल से नहीं और वुह आश्चर्य्य से नाश

करेगा और भाग्यमान होगा और कार्य्य करेगा और बलवानों
२५ को और पवित्र जनों के लोगों को नष्ट करेगा। और अपनी
चतुराई से भी वुह छल को अपने हाथ में बढ़ावेगा और वुह
अपने मन में अपने को बढ़ावेगा और भाग्य से बहुतों को
नाश करेगा यह राजाओं के राजा के बिरोध में खड़ा होगा
२६ परन्तु वुह बिन हाथ से तोड़ा जायेगा। और बिहान और
सांझ का दर्शन जो कहा गया सत्य है सो तू उस दर्शन के।
बन्द कर क्योंकि बहुत दिन के लिये होगा॥
२७ और मैं दानिएल मूर्छित हुआ और कितने दिन लों रोगी
रहा उस के पीछे उठा और राजा का कार्य्य किया और मैं
उस दर्शन से अचंभित हुआ परन्तु किसी ने उसे न समझा॥

नवां पर्व्व।

१ शेरशाह के बेटे दारा के पहिले बरस में जो मादी के बंश
२ से था और कसदियों के राज्य का राजा हुआ। उस के
राज्य के पहिले बरस में मुझ दानिएल ने पुस्तकों में उन
बरसों की गिनती को समझा जिन के विषय में परमेश्वर का
बचन यरमियाह भविष्यद्वक्ता के पास पहुंचा था कि वुह
यरूसलम के बिनाशों में सत्तर बरस पूरा करेगा॥
३ और मैं ने प्रभु परमेश्वर की ओर अपना मुंह फेरा कि ब्रत
४ करके और टाट और राख में प्रार्थना और बिनती से ढूंढूं। और मैं
ने परमेश्वर अपने ईश्वर की प्रार्थना किई और पाप को स्वीकार करके
कहा कि हे प्रभु महान और भयंकर ईश्वर जो अपने प्रेमियों और
५ आज्ञापालकों के लिये बाचा और दया को रखता है। हम
ने पाप किया है और हम ने अपराध किया है और हम ने
दुष्टता किई है और हम तेरी आज्ञाओं और तेरे न्यायों से अलग
६ होके फिर गये हैं। और हम ने तेरे भविष्यद्वक्ता सेवकों की

बात जिन्हों ने तेरा नाम लेके हमारे राजाओं और हमारे
अध्यक्षों और हमारे पितरों और देश के सारे लोगों को संदेश
७ दिया न मानी। हे प्रभु धर्म्म तेरा है परन्तु हमारे लिये और
यहूदाह के मनुष्यों के और यरूसलम के बासियों और सारे
इसराएल के लिये जो पास और दूर हैं समस्त देशों में जहां
जहां तू ने उन्हें अपने बिरुद्ध पाप करने के कारण से खदेड़ा
८ है मुंह की घबराहट है। हे प्रभु हमारे लिये और हमारे राजाओं
और हमारे अध्यक्षों और हमारे पितरों के लिये मुंह की घबराहट
९ है इस कारण कि हम ने तेरे बिरुद्ध पाप किया है। प्रभु हमारे
ईश्वर की दया और क्षमा हैं यद्यपि हम उस्से फिर गये हैं।
१० और हम ने परमेश्वर अपने ईश्वर की व्यवस्था पर चलने को
जो उस ने अपने दास भविष्यद्वक्तों के द्वारा हमारे आगे रक्खी
११ उस का शब्द न माना। हां तेरा शब्द न मान्ने को सारे
इसराएल ने फिर जाने से तेरी व्यवस्था को उल्लंघन किया है
इस कारण यह स्राप हम पर और वुह किरिया जो ईश्वर के
दास मूसा की व्यवस्था में लिखी है आ पड़ी है क्योंकि हम ने
१२ उस के बिरुद्ध पाप किया है। और उस ने अपनी बातों को
जो उस ने हमारे और हमारे न्याय करवैये न्याइयों के बिरुद्ध
कही थीं हम पर यह बड़ी बुराई लाके दृढ़ किया क्योंकि सारे
स्वर्ग के तले ऐसा नहीं हुआ है जैसा कि यरूसलम पर बीता
१३ है। जैसा कि मूसा की व्यवस्था में लिखा है यह सब बुराई
हम पर आ पड़ी है तिस पर भी अपने कुकर्म्मों से फिरने को
और तेरी सच्चाई को समझने को हम ने परमेश्वर अपने ईश्वर
१४ के आगे प्रार्थना न किई। इस लिये परमेश्वर ने हमारी बुराई
पर चौकसी किई और उसे हम पर लाया क्योंकि परमेश्वर हमारा
ईश्वर अपने सारे कार्य्यों में जो वुह करता है धर्म्मी है क्योंकि
१५ हम ने उस का शब्द न माना। और अब हे प्रभु हमारे ईश्वर

जो अपने लोगों को अपने हाथ के पराक्रम से मिस्र देश से
बाहर निकाल लाया और अपना नाम किया जैसा कि आज के
१६ दिन है हम ने पाप किया है हम ने दुष्टता किई है। हे
प्रभु मैं तेरी बिनती करता हूं तेरे सारे धर्म्म के समान तेरा
क्रोध और तेरा कोप तेरे नगर यरूसलम से तेरे पवित्र पर्वत
से फिर जाये क्योंकि हमारे पापों के कारण और हमारे पितरों
के कुकर्म्मों के कारण से यरूसलम और तेरे लोग आस पास के
१७ सभों के लिये निन्दा हैं। सो अब हे हमारे ईश्वर अपने दास
की प्रार्थना और उस की बिनतियां सुन और अपने रूप को
१८ अपने उजाड़ पवित्रस्थान पर प्रभु के लिये प्रकाश कर। हे मेरे
ईश्वर अपना कान झुका और सुन अपनी आंखें खोल और हमारे
उजाड़ों को और उस नगर को देख जिस पर तेरा नाम पुकारा
जाता है क्योंकि हम अपने धर्म्मों के लिये नहीं परन्तु तेरी
१९ बड़ी दया के लिये अपनी बिनती तेरे आगे करते हैं। हे
प्रभु सुन हे प्रभु क्षमा कर हे प्रभु कान धर और मान ले हे
मेरे ईश्वर अपने ही कारण बिलंब मत कर क्योंकि तेरे नगर
और तेरे लोग तेरे नाम से पुकारे जाते हैं॥
२० और मैं कहता और प्रार्थना करता और अपने पाप और
अपने लोग इसराएल के पाप को मान लेता ही था और परमेश्वर
अपने ईश्वर के आगे अपने ईश्वर के पवित्र पहाड़ के लिये
२१ बिनती पहुंचाता था। हां मैं प्रार्थना में बोल रहा था इतने
में वही जन अर्थात् जब्राएल जिसे मैं ने आरंभ के दर्शन में
देखा था शीघ्रता से उड़ते हुए आया और उस ने सांझ की
२२ भेंट के समय में मुझे छूआ। और उस ने संदेश दिया और
मुझ से बातें किईं और कहा कि हे दानिएल अब मैं तुझे ज्ञान
२३ में निपुण करने को निकल आया हूं। तेरी बिनती करने के
आरंभ में बचन निकला और मैं आया कि तुझे दिखाऊं क्योंकि

तू अति प्रिय है सो तू इस बात को समझ ले और दर्शन को
सोच ॥
२४ तेरे लोगों पर और तेरे पवित्र नगर पर अपराध रोकने को
और पापों पर छाप करने को और कुकर्म्म के लिये प्रायश्चित्त
करने को और सर्बदा का धर्म्म लाने को और दर्शन और
भविष्यद्वक्ता पर छाप करने को और अत्यन्त धर्ममय को
२५ अभिषेक करने को सत्तर सप्ताह ठहराये गये हैं । इस लिये
जान ले और समझ कि आज्ञा के निकलने के आरंभ से यरूसलम
के फिर बनाने को मसीह राजा लों सात सप्ताह बासठ सप्ताह
हैं और सड़क और दरार सकेती के दिनों में फिरके बनाये
२६ जायेंगे । और बासठ सप्ताह के पीछे मसीह मारा जायेगा और
उस का कुछ नहीं और उस राजा के लोग जो आवेंगे उस नगर
को और पवित्रस्थान को नाश करेंगे और उस का अन्त बाढ़ से
२७ होगा और संग्राम के पीछे उजाड़ ठहराया गया है । और वुह
नियम को बहुतों के संग एक सप्ताह में स्थिर करेगा और सप्ताह
के मध्य में वुह बलिदान और भेंट को उठा डालेगा और
घिनित बस्तुन के सिरे पर समाप्त लों उसे उजाड़ेगा और
ठहराया हुआ उजाड़ों पर बहाया जायेगा ॥

दसवां पर्ब्ब ।

१ फ़ारस के राजा ख़ोरस के तीसरे बरस दानिएल पर जिस
का नाम बेलचासर था एक बात प्रगट हुई और वुह बात सत्य
परन्तु सकेती का समय बड़ा था और उस ने उस बात को
२ समझा और उस दर्शन का ज्ञान रखता था । मैं दानिएल उन
३ दिनों में पूरे तीन सप्ताह लों बिलाप करता रहा । मैं ने तीन
सप्ताह बीतने लों बांछा की रोटी न खाई न मेरे मुंह में बोटी
और मदिरा पड़ी और मैं ने अपने पर तेल न मला ॥

४ और पहिले मास की चौबीसवीं तिथि में जिस समय में
५ मैं महा नदी दिजलः के तीर पर था। तब मैं ने आंख
उठाके दृष्टि किई और क्या देखता हूं कि एक मनुष्य सूती
बस्त्र पहिने हुए जिस की कटि पर ऊफ़ाज़ के चोखे सोने का
६ पटुका बंधा था। उस की देह भी लहसनिया के समान और
उस का मुंह बिजुली का सा और उस की आंखें आग के दीपकों
की नाईं और उस की भुजा और उस के पांव चमकते पीतल के से
थे और उस की बातों का शब्द एक मंडली के शब्द की नाईं।
७ और मुझ दानिएल ने अकेला यह दर्शन देखा क्योंकि जो मनुष्य
मेरे संग थे उन्हों ने दर्शन न देखा परन्तु उन पर ऐसी
८ कपकपी पड़ी कि वे आप आप को छिपाने को भागे। सो मैं
अकेला रह गया और यह बड़ा दर्शन देखा और मुझ में शक्ति
न रही क्योंकि मेरा स्वरूप बिगड़ने लों पलट गया और मुझ
९ में बल न रहा। तथापि मैं ने उस की बातों का शब्द सुना
और जब मैं ने उस की बातों का शब्द सुना तब मैं मुंह के
बल भारी नींद में था और मेरा मुंह भूमि की ओर॥
१० और देखो एक हाथ ने मुझे छूआ जिस ने मुझे मेरे घुठनों
११ और हथेलियों पर उठाया। और उस ने मुझ से कहा हे
दानिएल अति प्रिय जन उन बातों को जो मैं तुझ से कहता
हूं समझ ले और सीधा खड़ा हो जा क्योंकि मैं अब तेरे पास
भेजा गया हूं और ज्यों उस ने मुझ से यह बात कही त्यों मैं
१२ कांपता हुआ खड़ा हो गया। तब उस ने मुझ से कहा कि
हे दानिएल मत डर क्योंकि पहिले ही दिन से जब तू ने
अपना मन समझने पर और अपने ईश्वर के आगे अपने को
ताड़ना करने पर लगाया तेरी बातें सुनी गईं और तेरी बातों
१३ के लिये मैं आया हूं। परन्तु फ़ारस के राज्य के राजा ने
एकीस दिन लों मेरा साम्ना किया परन्तु देख मीकाएल जो

स्रेष्ठ राजपुत्रों में से स्रेष्ठ है मेरी सहायता के लिये पहुंचा और
१४ वहां मैं फ़ारस के राजाओं के संग रह गया। अब जो कुछ
तेरे लोगों पर पिछले दिनों में बीतेगा मैं तुझे समझाने को
आया हूं क्योंकि यह दर्शन दिनों के लिये है॥
१५ और जब उस ने ऐसी बातें मुझ से कहीं तब मैं ने अपना
१६ मुंह भूमि की ओर किया और गूंगा हो गया। और क्या देखता
हूं कि मनुष्यों के पुत्रों की नाईं किसी ने मेरे होंठों को छूआ
तब मैं ने अपना मुंह खोला और बोला और जो मेरे आगे
खड़ा था उसे कहा कि हे मेरे प्रभु इस दर्शन के कारण से
मेरे शोक मुझ पर लौटे और मुझ में कुछ बल न रहा।
१७ क्योंकि यह क्योंकर हो सक्ता है कि मेरे प्रभु का सेवक इस
प्रभु से बात्तो करे क्योंकि मैं जो हूं मुझ में कुछ बल न रहा
और न मुझ में स्वास रहा॥
१८ तब मनुष्य के स्वरूप की नाईं एक ने फिर आके मुझे
१९ छूके बल दिया। और कहा कि हे अति प्रिय मनुष्य मत डर
तुझ पर कुशल होय बलवान हो हां बलवान हो और जब
उस ने मुझ से यह कहा तब मैं ने बल पाया और कहा कि
अब मेरा प्रभु कहे क्योंकि तू ही ने मुझे बल दिया है॥
२० तब वुह बोला क्या तू जानता है कि मैं तेरे पास किस
लिये आया हूं और अब मैं फ़ारस के राजा से लड़ने को फिर
जाऊंगा और जब मैं चला जाऊंगा तो देख यूनान का अध्यक्ष
२१ आवेगा। परन्तु मैं तुझे बता देता हूं कि सत्य लिखित में
क्या लिखा है और ऐसा कोई नहीं कि इन बातों में
अपने को मेरे संग बलवन्त करे परन्तु केवल तुम्हारा अध्यक्ष
मीकाएल॥

ग्यारहवां पर्व्व ।

१ दारा मादी के पहिले बरस में भी मैं उसे दृढ़ करने और
बल देने को खड़ा हुआ॥
२ और अब मैं तुझ से सत्य बताता हूं देख फ़ारस में तीन
राजा और भी उठेंगे और चौथा सभों से अधिक धनी होगा
और वुह अपने बल से और अपने धन से सब को यूनान के
राज्य के बिरुद्ध उभाड़ेगा॥
३ फिर एक बलवान राजा खड़ा होगा और बड़ी प्रभुता से
४ राज्य करेगा और अपनी इच्छा के समान करेगा। और जब
वुह खड़ा होगा तब उस का राज्य तोड़ा जायेगा और स्वर्ग
की चारों पवनों की ओर बिभाग किया जायेगा और उस के बंश
को न पहुंचेगा और न उस राज्य की नाईं जिस का वुह प्रभु
था क्योंकि उस का राज्य औरों के लिये उखाड़ा जायेगा॥
५ और दक्खिन का राजा बलवान होगा और उस के राजपुत्रों
में से बल में उस्से अधिक होगा और राज्य पावेगा और उस
६ का राज्य बड़ा राज्य होगा। और बरसों के अन्त में वे आपस
में मिलेंगे क्योंकि दक्षिण के राजा की पुत्री उत्तर के राजा के
पास कुछ ठहराने को आवेगी परन्तु वुह भुजा का पराक्रम न
रख सकेगी और न वुह न उस की भुजा ठहरेगी परन्तु वुह
और वे जो उसे लाये थे और जिसे वुह जनी और वुह जिस
७ ने उसे समय में बल दिया था सौंपी जायेगी। परन्तु उस की
जड़ की एक डाली में से उस के स्थान में खड़ा होगा जो सेना
लेके आवेगा और उत्तर के राजा की कोट में प्रवेश करेगा और
८ उन से बिरोध करेगा और जीतेगा। और उन के देवों और
उन की मूर्त्ति को भी और उन के बहुमूल्य सोने चांदी के पात्र
सहित बंधुआई में मिस्र में ले जायेगा और वुह उत्तर के राजा

९ से बरसों तक बना रहेगा । सो दक्खिन का राजा उस के
१० राज्य में आवेगा और अपने ही देश में लौटेगा । परन्तु उस
के बेटे लड़ेंगे और बड़ी बड़ी सेना बटोरेंगे और निश्चय एक
आवेगा और उमड़ेगा और बीत जायेगा तब वुह फिर जायेगा
११ और वे उस के गढ़ लों लड़ेंगे । और दक्खिन का राजा क्रोध
से उठेगा और निकलके उस्से लड़ेगा अर्थात् उत्तर के राजा से
और वुह एक बड़ी मंडली सिद्ध करेगा परन्तु मंडली उस के
१२ हाथ में टिई जायेगी । और जब वुह उस मंडली को दूर
करेगा तब उस के मन में घमंड समावेगा और वुह दस सहस्रों
१३ को गिरावेगा परन्तु उस का बल अधिक न होगा । क्योंकि
उत्तर का राजा फिर जायेगा और एक मंडली जो पहिले से
अधिक होगी लावेगा और समयों अर्थात् बरसों के पीछे एक
बड़ी सेना और बहुत धन ले आवेगा ॥
१४ और उन दिनों में बहुतेरे दक्खिन के राजा पर चढ़ाई करेंगे
और बटमारों के बालक दर्शन को स्थिर करने के लिये आप को
१५ बढ़ावेंगे पर वे गिर जायेंगे । सो उत्तर का राजा आवेगा और
मोरचा बांधेगा और गढ़ के नगरों को ले लेगा और दक्खिन
की भुजा और चुने हुए लोग उस के आगे न ठहरेंगे और न
१६ साम्ना करने का बल रहेगा । परन्तु जो उस का साम्ना करेगा
सो अपनी इच्छा के समान करेगा और कोई उस के आगे ठहर
न सकेगा और वुह शुभ देश में खड़ा होगा जो उस के हाथ
१७ से अंत पावेगा । और वुह अपने सारे राज्य के बल से और
अपनी खराई से प्रवेश करने के लिये मुंह फेरेगा वुह यों करेगा
और वुह स्त्रियों की पुत्री को उजाड़ करने के लिये उसे देगा
१८ परन्तु वुह न ठहरेगी न उस के लिये होगा । तब वुह
टापुओं की ओर मुंह फेरेगा और बहुतों को ले लेगा परन्तु
अध्यक्ष अपने लिये उस के निन्दित कार्य्य को उठा डालेगा

१९ अपनी ही निन्दा को छोड़ वुह उसी पर फिरेगा। तब वुह
अपने ही देश के गढ़ को अपना मुंह फेरेगा परन्तु वुह ठोकर
खायेगा और गिर पड़ेगा और पाया न जायेगा॥
२० और उस के स्थान पर एक और उठेगा जो राज्य के विभव
में कर लेवैये को भेजेगा परन्तु थोड़े दिनों में वुह न तो क्रोधों
२१ से न संग्राम में नष्ट होगा। फिर उस के स्थान में एक तुच्छ
जन खड़ा होगा जिसे वे राज्य की प्रतिष्ठा न देंगे परन्तु वुह
२२ मिलाप से आवेगा और लल्लोपत्तो कहके राज्य को लेगा। और
वे उस के आगे बाढ़ की भुजा से उमड़ जायेंगे और टूट जायेंगे
२३ हां नियम का अध्यक्ष। और उस बाचा के पीछे जो उस्से किई
जायेगी वुह छल से कार्य्य करेगा क्योंकि वुह चढ़ आवेगा और
२४ थोड़े से लोगों के संग बल प्राप्त करेगा। वुह कुशल से प्रदेश
के अच्छे से अच्छे स्थानों में प्रवेश करेगा और वुह ऐसा कुछ
करेगा जो न उस के पितरों ने न उस के पितामहों ने किया वुह
उन के मध्य में अहेर और लूट और धन बिथरावेगा हां वुह एक
समय के लिये दृढ़ गढ़ों को लेने पर अपनी चिन्ताओं को दौड़ावेगा।
२५ और वुह अपने पराक्रम और हियाव को दक्खिन के राजा पर
बड़ी सेना के संग बढ़ावेगा और दक्खिन का राजा एक अत्यन्त
और पराक्रमी बड़ी सेना लेके संग्राम करने को निकलेगा परन्तु
वुह न ठहरेगा क्योंकि वे उस के विरुद्ध चिन्ताएं दौड़ावेंगे।
२६ हां वे जो उस के भोजन में से भाग खाते हैं उसे मार लेंगे
और उस की सेना उमड़ जायेगी और बहुतेरे जूझ जायेंगे।
२७ और इन दोनों राजाओं के मन नटखटी करने में होंगे और
एक मंच में झूठ बोलेंगे परन्तु कार्य्य सिद्ध न होगा तथापि
२८ ठहराये हुए समय पर अन्त होगा। तब वुह बड़े धन से
अपने देश को फिरेगा और उस का मन पवित्र नियम से विरुद्ध
होगा और वुह कार्य्य करेगा और अपने ही देश को फिर जायेगा॥

२९ ठहराये हुए समय में वुह लौटेगा और दक्षिण की ओर आवेगा
३० परन्तु अगले अथवा पिछले की नाईं न होगा। और कित्ती के
जहाज़ उस का साम्ना करेंगे से वुह उदास होगा और फिरेगा और
पवित्र नियम से क्रुद्ध होगा से ऐसा ही करेगा हां वुह फिर आवेगा
और उन के संग जो पवित्र नियम को त्याग करते हैं मेल
३१ करेगा। और सेना की भुजा उस की ओर खड़ी होगी और वे
पवित्रस्थान की दृढ़ता को अशुद्ध करेंगे और प्रतिदिन के बलिदान
३२ को उठा देंगे और उस उजाड़क घिन को खड़ी करेंगे। और
वुह उन से जो नियम से दुष्टता करते हैं लल्लोपत्तो करके उन्हें
भरमावेगा परन्तु वे लोग जो अपने ईश्वर को पहिचानते हैं दृढ़
३३ होंगे और कार्य्य करेंगे। और जो लोगों में बुद्धिमान हैं से
बहुतों को उपदेश करेंगे तथापि वे बहुत दिन लों खड्ग से और
३४ लवर से और बंधुआई से और लूट से गिर जायेंगे। और जब
वे गिर जायेंगे तब वे थोड़ी सी सहायता से सहायता पावेंगे परन्तु
३५ बहुतेरे लल्लोपत्तो से उन से पच्चो होंगे। और बुद्धिमानों में से
कई एक गिरेंगे उन्हें परखने और शुद्ध करने और अन्त लों श्वेत
करने को क्योंकि अब भी ठहराये हुए समय के लिये हैं॥
३६ और राजा अपनी इच्छा के समान करेगा और अपने को
बढ़ावेगा और हर एक देव से आप को महिमा देगा और ईश्वरों
के ईश्वर का साम्ना करके आश्चर्य्यित बातें कहेगा और जलजलाहट
के पूरे होने लों वुह भाग्यवान होगा क्योंकि जो ठहराया गया
३७ है से किया जायेगा। और वुह अपने पितरों के ईश्वर को
और स्त्रियों की वांछा को और किसी ईश्वर को न समझेगा
३८ क्योंकि वुह आप को सभों पर बढ़ावेगा। परन्तु गढ़ों के ईश्वर
को उसी के आसन पर प्रतिष्ठा देगा हां वुह एक देव को जिसे
उस के पितरों ने न जाना सोना चांदी और बहुमूल्य मणि
३९ और सुन्दर बस्तुन से प्रतिष्ठा देगा। और वुह गढ़ों के गढ़ों

में उपरी देव के संग ऐसा कुछ करेगा जिसे वुह मान लेगा
उसे वुह महिमा से बढ़ावेगा और वुह उन मे बहुतों पर
प्रभुता करावेगा और मोल के लिये देश को बांटेगा॥
४० और अंत समय में दक्षिण का राजा उसे ठेलेगा और उत्तर
का राजा ववंडर की नाई रथों और घोड़चढ़ों और बहुत से
जहाज़ों को लेके उस के बिरुद्ध आवेगा और वुह देशों में
४१ प्रवेश करेगा और उमड़ेगा और पार जायेगा। और वुह शुभ
भूमि में प्रवेश करेगा और बहुत गिराये जायेंगे परन्तु ये
अर्थात् अदूम और मोआब और अमून के बंश के प्रधान उस को
४२ हाथ से बच जायेंगे। और वुह अपने हाथ को देशों पर भी
४३ बढ़ावेगा और मिस्र की भूमि न बचेगी। परन्तु सोना चांदी
और मिस्र की बहुमूल्य वस्तु के भंडार पर वुह पराक्रम पावेगा
४४ और लबीयून और कूशी उस के डगों पर होंगे। परन्तु पूरब
और उत्तर से संदेश उसे व्याकुल करेंगे इस लिये वुह बड़े
कोप से नाश करने को और बहुतों को सर्वथा उठा देने को
४५ निकलेगा। और वुह अपने भवनों के तंबू को समुद्रों के बीच
आनन्द के पहाड़ की पवित्रता में गाड़ेगा तथापि वुह अपने
अन्त को पहुंचेगा और उस का कोई सहायक न होगा॥

बारहवां पर्व्व।

१ और उसी समय मीकाएल खड़ा होगा वुह महा प्रधान
जो तेरे लोग के बंश के लिये खड़ा होता है और ऐसा व्याकुल
का समय होगा जैसा कधी न हुआ जब से लोग हुए उसी
समय लों और उसी समय में तेरे लोग हर एक जन जो
२ पुस्तक में लिखा हुआ पाया जायेगा छोड़ाया जायेगा। और
उन में से बहुत जो पृथिवी की धूल में शयन करते हैं जाग
उठेंगे कितने तो अनन्त जीवन के लिये और कितने लज्जा

३ और अनन्त निन्दा के लिये। और वे जो उपदेशक होंगे आकाश
के ज्योतिमान की नाईं और वे जो बहुतों को धर्म्म की ओर
फेरते हैं तारों की नाईं सनातन के लिये चमकेंगे ॥
४ परन्तु तू हे दानिएल इन बातों को बन्द कर और पुस्तक
पर अन्त के समय लों छाप कर बहुत से लोग इधर उधर
दौड़ेंगे और ज्ञान बढ़ जायेगा ॥
५ तब मैं दानिएल ने देखा और क्या देखता हूं कि दो और
खड़े थे एक नदी के इस तीर और दूसरा नदी के उस तीर
६ पर। और एक ने सूती बस्त्र पहिने हुए पुरुष से जो नदी के
पानियों पर था कहा कि इन आश्चर्य्यों का अन्त कब लों।
७ तब सूती बस्त्र पहिने हुए पुरुष को जो नदी के पानियों पर
था जब उस ने अपना दहिना हाथ और अपना बायां हाथ
स्वर्ग की ओर उठाये तब मैं ने सुना और जीवते ईश्वर की
किरिया खाके कहा कि समय और समयों और आधे समय के
लिये होगा और जब वुह पवित्र लोगों के पराक्रम को बिथराने
से संपूर्ण कर चुकेगा ये बातें समाप्त होंगी ॥
८ और मैं ने सुना परन्तु न समझा तब मैं ने कहा कि हे
९ मेरे प्रभु इन बातों का अन्त क्या। और उस ने कहा कि
दानिएल तू चला जा क्योंकि बातें बन्द और अन्त के समय
१० लों छापी रहेंगी। बहुत से लोग पवित्र और श्वेत किये जायेंगे
और परखे जायेंगे परन्तु दुष्ट दुष्टता करेंगे और सब दुष्ट न
११ समझेंगे परन्तु बुद्धिमान समझेंगे। और जिस समय से प्रतिदिन
का बलिदान उठा दिया जायेगा और वुह उजाड़क घिन
१२ स्थापित किई जायेगी सहस्र दो सौ और नव्वे दिन होंगे। धन्य
वुह जो बाट जोहता है और एक सहस्र तीन सौ पैंतीस दिन
१३ लों पहुंचता है। परन्तु अन्त लों तू चला जा क्योंकि तू विश्राम
करेगा और अपने भाग में अन्त के दिनों में उठ खड़ा होगा ॥

हूसीअ़
भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब

१ परमेश्वर का वचन जो यहूदाह के राजा उज्जियाह और
यूताम और आख़ज़ और हिज़क़ियाह के दिनों में और इसराएल
के राजा यूआस के बेटे यरुबिआम के दिनों में बिअरी के
बेटे हूसीअ़ के पास पहुंचा॥
२ हूसीअ़ के द्वारा से परमेश्वर के वचन का आरम्भ और
परमेश्वर ने हूसीअ़ से कहा कि जा और अपने लिये एक व्यभिचार
की स्त्री और व्यभिचार के बालकों को ले क्योंकि देश ने परमेश्वर
से फिरके बड़ा व्यभिचार किया है॥
३ सो उस ने जाके दिबलाईम की बेटी जुमर को लिया वुह
४ गर्भिणी हुई और उस के लिये एक बेटा जनी। तब परमेश्वर
ने उस्से कहा कि उस का नाम यज़रअ़एल रख क्योंकि थोड़े
समय में मैं यज़रअ़एल के लोहू का पलटा याहू के घराने से
लूंगा और इसराएल के घराने के राज्य को समाप्त करूंगा।
५ और उसी दिन ऐसा होगा कि मैं यज़रअ़एल की तराई में
इसराएल के धनुष को तोड़ूंगा॥
६ और वुह फिर गर्भिणी हुई और कन्या जनी और उस ने
उस्से कहा कि उस का नाम लारहुमः रख क्योंकि मैं इसराएल

के घराने पर अब और दया न करूंगा परन्तु निश्चय उन्हें
७ उठाऊंगा । पर मैं यहूदाह के घराने पर दया करूंगा और
परमेश्वर उन के ईश्वर से उन्हें बचाऊंगा और धनुष अथवा
तलवार अथवा युद्ध अथवा घोड़ों अथवा घोड़चढ़ों से उन्हें न
बचाऊंगा ॥
८ और उस ने लारहुमः का दूध छोड़ाया तब वुह फिर
९ गर्भिणी हुई और बेटा जनी । और उस ने कहा कि उस का
नाम लाअम्मी रख क्योंकि तुम मेरे लोग नहीं हो और मैं
१० तुम्हारा न हूंगा । तथापि इसराएल के संतान गिनती में
समुद्र की बालू की नाईं होंगे जो नापी और गिनी नहीं जाती
और ऐसा होगा कि जहां उन से कहा गया कि तुम मेरे लोग
नहीं वहां उन से कहा जायेगा जीवते ईश्वर के संतान हो ।
११ और यहूदाह के संतान और इसराएल के संतान बटोरे जायेंगे
और अपने लिये एक प्रधान ठहरावेंगे और वे देश से निकल
आवेंगे क्योंकि यज़रअएल का दिन बड़ा होगा ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ अपने भाइयों को अम्मी कहो और अपनी बहिनों को रहुमः ।
२ विवाद कर अपनी माता से विवाद कर क्योंकि वुह मेरी पत्नी
नहीं और न मैं उस का पति और वुह अपनी बेश्याई अपनी दृष्टि
से और अपना ब्यभिचार अपने दोनों कुचों के मध्य से दूर करे ।
३ न हो कि मैं उसे नग्न करूं और उसे ऐसा धरूं जैसा कि उस
के जन्म दिन में और उसे अरण्य की नाईं बनाऊं और सूखी
४ भूमि की नाईं करूं और तिरखा से मार डालूं । और मैं उन के
५ पुत्रों पर दया न करूंगा क्योंकि वे ब्यभिचार के हैं । क्योंकि
उन की माता ने ब्यभिचार किया और उन की जननी ने लाज
कर्म्म किया क्योंकि उस ने कहा कि मैं अपने यारों के

पीछे जाऊंगी जो मुझे अन्न और जल ऊन और सन तेल और
मदिरा देते हैं ॥
६ इस लिये देख मैं तेरे मार्ग को कांटों से रौंदूंगा और भीत
७ उठाऊंगा जिसतें वुह अपने पंथों को न पावे। और वुह अपने
यारों के पीछे पीछे पड़ेगी पर उन से न भेंटेगी और वुह उन्हें
खोजेगी पर न पावेगी तब वुह कहेगी कि मैं अपने पहिले पति
के पास लौट जाऊंगी क्योंकि अब से तब मेरा भला था ॥
८ और उस ने न जाना कि मैं ने उसे अन्न और नया दाखरस
और तेल दिया और उस का सोना चांदी बढ़ाया जिस्से उन्हों
९ ने बअल बनाया। इस लिये मैं लौटूंगा और उस के समय में
अपने अन्न को और उस की ऋतु में अपने नये दाखरस को
ले लूंगा और अपने ऊन और सन को जो उस की नग्नता ढांपने
१० के लिये हुआ। और अब मैं उस के यारों की दृष्टि में उस की
लज्जा प्रगट करूंगा और कोई उसे मेरे हाथ से न छोड़ावेगा।
११ और मैं उस का सारा हर्ष उस का पर्ब्ब उस की अमावाश्या और
१२ उस का बिश्राम और उस के सारे उत्सव समाप्त करूंगा। और
मैं उस के दाख को और उस के गूलर पेड़ों को उजाड़ूंगा जिन
के बिषय में उस ने कहा कि यह मेरा भोगद्रव्य है जिसे मेरे
यारों ने मुझे दिया है और मैं उन्हें जंगल बनाऊंगा और
१३ बनपशु उन्हें खा जायेंगे। और मैं उस्से बअलों के दिनों का
पलटा लूंगा जिन में उस ने उन के लिये सुगंध जलाया और
आप को अपने नथ से और अपने आभूषण से संवारा और
अपने यारों के पीछे गई और मुझे भूल गई परमेश्वर कहता
है ॥
१४ तिस पर भी देख मैं उसे फुसलाऊंगा और उसे अरण्य में
१५ लाऊंगा और उस्से शान्ति बचन कहूंगा। और वहां से उस को
दाख की बारी उसे दूंगा और अकूर की तराई आशा के द्वार

के लिये तब वुह युवा अवस्था के दिनों के समान गाया करेगी
और उस दिन के समान जिस में वुह मिस्र देश से निकल
आई ॥
१६ और उसी दिन ऐसा होगा परमेश्वर कहता है कि तू मुझे
१७ इशी कहेगी और कभू फिर मुझे बाअली न कहेगी। क्योंकि
मैं उस के मुंह से बअलों के नामों को दूर करूंगा और उन
१८ के नाम से वे फिर कभी पुकारे न जायेंगे। और उसी दिन मैं
उन के लिये चैागान के पशु के साथ और आकाश के पक्षियों
के साथ और भूमि के रेंगनेवालों के साथ वाचा बांधूंगा और
मैं पृथिवी पर से धनुष और तलवार और संग्राम को तोड़ूंगा
१९ और कुशल से उन्हें लेटाऊंगा। और मैं तुझे सदा के लिये
अपने साथ मंगनी करूंगा हां मैं धर्म्म और न्याय और प्रेम
२० और दया से तुझे अपने साथ मंगनी करूंगा। हां मैं विश्वासता
से तुझे अपने साथ मंगनी करूंगा और तू परमेश्वर को जानेगी॥
२१ और उसी दिन ऐसा होगा परमेश्वर कहता है कि मैं उत्तर
दूंगा मैं स्वर्गों को उत्तर दूंगा और वे पृथिवी को उत्तर देंगे।
२२ और पृथिवी अन्न और नये दाखरस और तेल को उत्तर देगी
२३ और वे यज़रअएल को उत्तर देंगे। और मैं उसे अपने लिये
पृथिवी में बोऊंगा और लारहुमः पर दया करूंगा और लाअम्मी
से कहूंगा कि तू मेरी जाति और वुह कहेगी हे मेरे ईश्वर॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि फिर जा और एक स्त्री
से प्रेम कर पर जो एक मित्र से प्रियतम है और व्यभिचारिणी
है जैसा कि परमेश्वर इसराएल के संतानों से प्रेम करता है जो
उपरी देवताओं की ओर फिरते और दाख की टिकियां चाहते
२ हैं। सो मैं ने उसे पन्द्रह रुपये और डेढ़ होमर जव से अपने

३ लिये मोल लिया। और मैं ने उस्से कहा कि तू बहुत दिनों
तक मेरे लिये रहेगी तू ब्यभिचार न करेगी न दूसरे पुरुष की
हो जायेगी और मैं भी तेरे लिये यों हीं रहूंगा॥
४ क्योंकि इसराएल के संतान बिना राजा और बिना अध्यक्ष
और बिना बलि और बिना मूरत और बिना अफ़ूद और बिना
५ तराफीम बहुत दिन लों रहेंगे। उस के पीछे इसराएल के
संतान लौटेंगे और परमेश्वर अपने ईश्वर को और दाऊद अपने
राजा को खोजेंगे और अन्त समय में वे परमेश्वर और उस की
भलाई से डरेंगे॥

चौथा पर्ब्ब।

१ हे इसराएल के संतानो परमेश्वर का बचन सुनो क्योंकि देश
के बासियों से परमेश्वर का बिवाद है क्योंकि देश में न सत्य है
२ और न दया और न ईश्वर की पहिचान है। किरिया और झूठ
और घात और चोरी और ब्यभिचार से वे फूट निकले और
३ लोहू लोहू से पहुंच गया। इस लिये देश बिलाप करेगा और
उस में के सब निवासी चौगान के पशु और आकाश के पक्षी
सहित कुम्हला जायेंगे और समुद्र की मछलियां भी लिई
४ जायेंगी। तथापि कोई बिवाद न करे और कोई डपट न देवे
क्योंकि तेरे लोग उन के तुल्य हैं जो याजक से बिवाद करते हैं।
५ इस लिये तू दिन को गिरेगा और भविष्यद्वक्ता भी तेरे साथ
रात को गिरेगा और मैं तेरी माता को नष्ट करूंगा॥
६ मेरे लोग अज्ञानता से नष्ट किये जाते हैं इस लिये कि तू
ने ज्ञान को त्यागा है मैं भी तुझे याजक होने से त्यागूंगा और
इस कारण कि तू ने अपने ईश्वर की ब्यवस्था को बिसराया है
७ मैं भी तेरे संतानों को बिसराऊंगा। जिस रीति से वे बढ़े उस
रीति से उन्हों ने मेरा अपराध किया इस लिये मैं उन के

८ ऐश्वर्य्य को लाज से पलटूंगा। वे मेरे लोगों के पाप के बलिदान
को खाते हैं और उन की बुराई पर अपना मन लगाते हैं।
९ और जैसा लोग पर तैसा याजक पर होगा और मैं उन की चालों
का पलटा उन्हें दूंगा और उन की किरियाओं के फल उन्हें दूंगा।
१० और वे खावेंगे पर संतुष्ट न होंगे वे व्यभिचार करेंगे पर न
बढ़ेंगे क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर की सुरत को छोड़ दिया॥
११ व्यभिचार और दाखरस और नया दाखरस मन को हर
१२ लेता है। मेरे लोग अपने काष्ठ की मूरत से मंच लेते और
उन की लाठी उन को बता देती है क्योंकि व्यभिचार के मन
ने उन्हें भटकाया है और व्यभिचार करके वे अपने ईश्वर के
१३ पीछे होने से फिर आये। वे पर्बतों की चोटियों पर बलि
चढ़ाते हैं और टीलों पर धूप जलाते हैं और बलूत और चनार
और हरे बलूत के तले भी क्योंकि उन की छाया अच्छी है
इस लिये तुम्हारी पत्रियां छिनाला करतीं और तुम्हारी पत्रियां
१४ व्यभिचार करती हैं। जब तुम्हारी पत्रियां छिनाला करेंगी और
तुम्हारी पत्रियां व्यभिचार करेंगी तब मैं उन को दण्ड न दूंगा
क्योंकि वे छिनाला के संग एकान्त में जातीं और बेश्यों के संग
बलि चढ़ातीं इसी लिये असमझ लोग गिराये जायेंगे॥
१५ हे इसराएल यद्यपि तू व्यभिचार करे तथापि यहूदाह
अपराध न करे और तुम जिलजाल में न आना और न बैतअवन
को ऊपर जाना और किरिया न खाना कि जीवते परमेश्वर सोंह।
१६ क्योंकि अड़नेवाली कलोर की नाईं इसराएल अड़ता है अब
१७ परमेश्वर उन्हें मेम्ने की नाईं फैलावस्थान में चरावेगा। इफ़रायम
१८ मूरतों से मिल गया है उसे रहने दे। जब वे दाखरस पी
चुके तब व्यभिचार करते रहे उस के अध्यक्षों ने लाज से प्रीति
१९ रक्खी है। पवन ने उन्हें अपने पंखों में बन्द कर रक्खा है
और वे अपने बलिदानों से लज्जित होंगे॥

पांचवां पर्व्व ।

१ हे याजको यह सुनो और हे इसराएल के घराने कान धरो
और हे राजा के घराने कान लगाओ क्योंकि तुम्हारे विरुद्ध विचार
हुआ है इस लिये कि तुम मिसफ़: में फंदा हुए और तबूर पर
२ बिछाया हुआ जाल। और फिरे हुओं ने ढेर सा घात किया पर
३ मैं उन सभों को ताड़ना दूंगा। मैं इफ़रायम को जानता हूं
और इसराएल मुझ से छिपा नहीं है क्योंकि अब हे इफ़रायम
४ तू व्यभिचार करता है और इसराएल अशुद्ध है। वे अपने
कार्य्य नहीं सुधारते जो अपने ईश्वर की ओर फिरें क्योंकि उन
के मध्य में व्यभिचार का आत्मा है और वे परमेश्वर को नहीं
जानते ॥

५ और इसराएल का अहंकार उस के मुंह के आगे साक्षी
देता है और इसराएल और इफ़रायम अपनी अपनी बुराई से
६ ठोकर खायेंगे यहूदाह भी उन के साथ ठोकर खायेगा। वे
अपने झुंड और ढोर लेके परमेश्वर को ढूंढ़ने जायेंगे पर उसे
७ न पावेंगे वुह उन से अलग गया। उन्हों ने परमेश्वर से
विश्वास घात किया है क्योंकि उन्हों ने उपरी बालकों को
जन्माया है अब एक मास उन्हें उन के भागों समेत खा
जायेगा ॥

८ जिबअ: में सींगा बजाओ और रामः में तुरही बेतअवन
९ में पुकारो कि हे बिनयमीन वुह तेरे पीछे है। ताड़ने के
दिन में इफ़रायम उजाड़ होगा इसराएल की गोष्ठियों में मैं
१० ने उस बात को जनाया जो निश्चय होगी। यहूदाह के
अध्यक्ष उन की नाईं हैं जो सिवाने को सरकाते हैं मैं पानी
के समान अपना कोप उन पर उंडेलूंगा ॥

११ इफ़रायम दबा है न्याय से चकनाचूर है क्योंकि वुह एक

१२ संग हुआ आज्ञा के समान चला । इस लिये मैं इफ़रायम के
लिये कीड़े की नाईं हूंगा और यहूदाह के घराने के लिये
१३ सड़ाहट की नाईं । और इफ़रायम ने अपना रोग देखा और
यहूदाह ने अपना घाव तब इफ़रायम असूर को गया और
दुष्ट राजा कने भेजा परन्तु वुह तुम्हें चंगा न कर सकेगा और
१४ न तुम्हारा घाव भर देगा । क्योंकि मैं इफ़रायम के लिये
सिंह की नाईं हूंगा और यहूदाह के घराने के लिये युवा सिंह
की नाईं मैं मैं ही फाड़ डालूंगा और जाऊंगा मैं ले जाऊंगा
१५ और कोई न छोड़ावेगा । मैं जाके अपने स्थान को लौटूंगा जब
लों वे दंड न पावें और मेरे मुंह को न निहारें वे अपने कष्ट
में सवेरे मुझे ढूंढ़ेंगे ॥

छठवां पर्ब्ब ।

१ आओ हम परमेश्वर की ओर फिरें क्योंकि उस ने फाड़ा है
और वही हमें चंगा करेगा उसी ने मारा है और वही हम पर
२ पट्टी बांधेगा । वुह दो दिन में हमें जिलावेगा तीसरे दिन
३ हमें उठावेगा और हम उस की दृष्टि में जीयेंगे । तब हम
जानेंगे हम परमेश्वर के जान्ने को यत्न करेंगे उस का निकलना
बिहान की नाईं सिद्ध है और वुह वरखा की नाईं हमारे लिये
आवेगा पिछली बरखा की नाईं जो भूमि को सींचती है ॥
४ हे इफ़रायम मैं तुझ से क्या करूं हे यहूदाह मैं तुझ से
क्या करूं क्योंकि तुम्हारी भलाई बिहान के मेघ की नाईं है
५ और ओस की नाईं जो तड़के जाती रहती । इस लिये मैं ने
भविष्यद्वक्तों से उन्हें चीरा अपने मुंह के वचनों से उन्हें घात
किया तेरे बिचार बिजली की नाईं निकले ॥
६ क्योंकि मैं ने भलाई चाही न बलि और ईश्वर का ज्ञान
७ बलिदान की भेंटों से अधिक । परन्तु उन्हों ने आदम की

नाईं बाचा का तोड़ा है वहां उन्हों ने मुझ से विश्वास घात
८ किया। जिलिअद कुकर्मों का नगर है डगों में लोहू के चिन्ह
९ हैं। जैसा डकैतों की जथा मनुष्यों की घात में लगती है
वैसा याजकों का साझा है वे सिकम के मार्ग में घात करते हैं
१० हां उन्हों ने ढीठ दुष्टता किई है। इसराएल के घर में मैं
ने एक भयंकर बस्तु देखी है वहां इफ़रायम का छिनाला है
इसराएल अशुद्ध है॥
११ हे यहूदाह तेरे लिये भी कटनी ठहरी है जब मैं ने अपने
लोगों की बंधुआई को पलट दिया॥

सातवां पर्व्व।

१ जब मैं ने इसराएल को चंगा किया तब इफ़रायम की
बुराई और समरून के कुकर्म्म खुल गये क्योंकि उन्हों ने छल
किया है और चोर भीतर आता है और डकैतों की जथा बाहर
२ लूटती है। और उन्हों ने अपने मन में न कहा कि मैं ने
उन की सारी दुष्टता को स्मरण किया अब उन के कर्म्म उन्हें
३ घेर रखते और वे मेरे सन्मुख हैं। वे अपनी दुष्टता से राजा
को आनन्दित करते हैं और अपने मिथ्या बचन से अध्यक्षों
४ को। वे सब के सब व्यभिचार करते हैं वे उस भट्ठी की नाईं
हैं जो रोटीवाले से सुलगाई गई वुह सूजी के सान्ने से उस के
५ ख़मीर होने तक आग बारने से रह जाता है। हमारे राजा
के दिन में अध्यक्ष दाखरस के ताप से रोगित हुए उस ने
६ निन्दकों के साथ अपना हाथ बढ़ाया। क्योंकि वे समीप आते
हैं जैसा कि उन का मन भट्ठी की भांति तप्त था पर वे घात
में लगते हैं उन का रोटीवाला रात भर नींद में रहता है
७ वुह बिहान को आग की लवर की नाईं बरता है। वे सब
भट्ठी की नाईं तप्त हैं और अपने न्याइयों को खा जाते हैं उन

के मारे राजा गिर पड़े उन में से कोई मेरी दोहाई नहीं
करता ॥
८ इफ़रायम आप को जातिगणों में मिलाता है इफ़रायम बिन
९ उलटी हुई चपाती है । परदेशियों ने उस का बल भक्षण
किया है और वुह नहीं जानता हां जहां तहां उस पर पक्के
१० बाल हैं और नहीं जानते । और इसराएल का अहंकार उस
के मुंह के आगे साक्षी देता है तिस पर वे परमेश्वर अपने
ईश्वर की ओर नहीं फिरते और इस सब के लिये उसे नहीं
११ ढूंढ़ते । इफ़रायम एक भोले पंडुक की नाईं है जिस को चेत
१२ नहीं वे मिस्र की दोहाई देते हैं वे असूर को जाते हैं । जब
वे जायेंगे तब मैं अपना जाल उन पर फैलाऊंगा आकाश के
पंछी की नाईं मैं उन्हें उतारूंगा मैं उन की ताड़ना करूंगा
जैसा कि उन की सभा में सुना गया ॥
१३ हाय उन पर क्योंकि वे मुझ से भाग गये हैं विनाश उन
पर क्योंकि उन्हों ने मेरा अपराध किया है और मैं ने उन्हें
१४ छोड़ाया है तथापि वे मेरे बिरुद्ध झूठ बोले । जब वे अपने
अपने बिछौने पर चिल्लाते हैं तब वे अपने मन से मुझे नहीं
पुकारते वे अन्न और दाखरस के लिये एकट्ठे आये और मुझ से
१५ फिर गये। और मैं ने उन को ताड़ना दिई और उन की भुजों
को बल दिया तथापि उन्हों ने मेरे बिरुद्ध बुरी युक्ति बांधी
१६ है । वे फिरते हैं पर अत्यन्त महान की ओर नहीं वे छली
धनुष के समान हैं उन के अध्यक्ष अपनी जीभ की तलवार से
गिरेंगे मिस्र देश में यही उन की ठठोली होगी ॥

आठवां पर्ब्ब ।

१ तुरही तेरे तालू पर वुह गिद्ध की नाईं परमेश्वर के घराने
पर ढूंढ़ता है क्योंकि वे मेरी बाचा से बाहर गये और मेरी

२ व्यवस्था को उल्लंघन किया। वे मुझे पुकारेंगे कि हे मेरे ईश्वर
३ हम इसराएल तुझे पहिचानते हैं। जो भला है इसराएल ने
४ त्याग किया बैरी उसे खेदेगा। उन्हों ने राजाओं को ठहराया
पर मेरी ओर से नहीं उन्हों ने अध्यक्षों को ठहराया पर मैं
नहीं जानता अपने रूपे सोने से उन्हों ने मूर्त्तों को बनाया
कि नष्ट किये जायें॥
५ हे समरून तेरा बछड़ा घिनौना है मेरा क्रोप उन पर
६ बरता है वे कब तक शुद्ध न होंगे। क्योंकि वुह इसराएल
की ओर से है कारीगर ने उसे बनाया इस लिये वुह ईश्वर
नहीं है अवश्य समरून का बछड़ा टूक टूक किया जायेगा।
७ क्योंकि उन्हों ने पवन बोया है इसी लिये वे बवंडर लवेंगे उस
को टहनी नहीं उस के उगने से अन्न उत्पन्न न होगा यदि उस
८ में कुछ उत्पन्न भी होवे परदेशी उसे लील जायेंगे। इसराएल
निगला गया अब वे जातिगणों में उस पात्र के समान हैं जिससे
९ प्रसन्नता नहीं है। क्योंकि वे असूर को चढ़ गये अकेले बनैले
१० गदहे की नाईं इफ़रायम ने यारों को भोग द्रव्य दिया है। यद्यपि
उन्हों ने जातिगणों में भोग द्रव्य दिया तथापि मैं अब उन्हें
बटोरूंगा और थोड़ी बेर में अध्यक्षों के राजा के बोझ से वे
कष्टित होंगे॥
११ क्योंकि इफ़रायम ने पाप करने को बेदियां बढ़ाईं वे बेदियां
१२ उस के लिये पाप करने को हैं। मैं अपनी व्यवस्था की बड़ी
बातें उस के लिये लिखता हूं पर वे उपरी बस्तु की नाईं गिनी
१३ गईं। वे मेरी भेंट के बलिदानों के लिये मांस चढ़ाते और उसे
खाते हैं परमेश्वर उन्हें ग्रहण नहीं करता अब वुह उन की
बुराई स्मरण करेगा और उन के पापों का पलटा देगा वे मिस्र
१४ को फिर जायेंगे। क्योंकि इसराएल ने अपने कर्त्ता को बिसराया
और मन्दिरों को बनाया और यहूदाह ने बाड़ित नगरों को

बढ़ाया इस लिये मैं उस के नगरों पर आग भेजूंगा और वुह
उस के भवनों को भक्ष लेगी ॥

नवां पर्व्व ।

१ हे इसराएल जातिगणों की भांति मग्नता के मारे आनन्दित
मत हो क्योंकि तू छिनाला करके अपने ईश्वर से फिर गया तू
२ ने हर एक खलियान पर ख़रची से प्रीति रक्खी है। खलियान
और कोल्हू उन्हें नहीं पालेंगे और नया दाखरस उन को धोखा
३ देगा। वे परमेश्वर के देश में नहीं बसेंगे पर इफ़रायम मिस्र
४ को फिर जायेंगे और असूर में अशुद्ध वस्तु खायेंगे। वे
परमेश्वर को दाखरस नहीं तपावेंगे और उन के बलि उसे
प्रसन्न न आवेंगे वे उन के लिये बिलाप की रोटी की नाईं
होंगे जितने उसे खाते हैं अशुद्ध होंगे क्योंकि उन की रोटी
अपने लिये है वुह परमेश्वर के घर में न आवेगी ॥
५ उत्सव के दिन और परमेश्वर के पर्ब्ब के दिन में तुम क्या
६ करोगे। क्योंकि देख वे बिनाश से चले जाते हैं मिस्र उन्हें
बटोरेगा मन्फ उन को गाड़ेगा उन का भावता धन ऊंटकटारों
का अधिकार होगा उन के तंबुओं में कांटे होंगे ॥
७ दंड के दिन आये पलटे के दिन आये तेरी बड़ी बुराई
और तेरे बड़े बैर के लिये इसराएल जानेगा भविष्यद्वक्ता मूर्ख
८ हैं और आत्मिक जन बावला। इफ़रायम मेरे ईश्वर की बाट
जोहता है भविष्यद्वक्ता अपने सारे मार्गों में ब्याधा का जाल
९ है वुह अपने ईश्वर के घर में चिढ़ौनी का कारण है। जिबआः
के दिनों की भांति वे अति बिगड़ गये वुह उन की बुराई
स्मरण करेगा वुह उन के पापों का पलटा लेगा ॥
१० मैं ने इसराएल को अंगूरों की नाईं बन में पाया जैसा कि
गूलर का पहिला पक्का हुआ फल अपनी पहिली ऋतु में वैसा

तुम्हारे पितरों को देखा पर वे बअलफ़गूर के पास गये और
उस लज्जित बस्तु के लिये आप को न्यारा किया और अपने
११ प्रेम के समान घिनित हुए। इफ़रायम के विषय उन का
ऐश्वर्य्य चिड़िया की भांति उड़ जायेगा जन्म और कोख और
१२ गर्भ न होगा। क्योंकि यदि वे अपने बालकों को पालें तथापि
में मनुष्यों में उन्हें निर्बंश करूंगा क्योंकि हाय हाय उन पर
१३ जब में उन से जाता रहूंगा। मैं ने इफ़रायम को सूर की
भांति बांछित स्थान में लगाया हुआ देखा इफ़रायम अपने
बालकों को बधिक के लिये निकालेगा॥

१४ हे परमेश्वर उन को तू क्या देगा उन्हें गिरानेवाले पेट
१५ और सूखा स्तन दे। उन की सारी बुराई जिलजाल में है
अवश्य में ने वहां उन का बैर किया उन के कामों की बुराई
के लिये मैं उन्हें अपने घर से खेदूंगा मैं उन से फिर प्रीति न
१६ करूंगा उन के सारे अध्यक्ष उड़नेवाले हैं। इफ़रायम मारा
हुआ है उन की जड़ सूख गई वे फल न लावेंगे हां यदि
वे जनें तथापि मैं उन के गर्भ के प्रियतम को बध करूंगा।
१७ मेरा ईश्वर उन्हें त्यागेगा क्योंकि उन्हों ने उस की न सुनी
और वे जातिगणों में भ्रमिक होंगे॥

दसवां पर्ब्ब।

१ इसराएल घनी लता है जिस में फल लगा उस ने अपने
फल की बढ़ती के समान बेदियों को बढ़ाया अपने देश की
२ सुथराई के समान उन्हों ने सुथरी मूरतें बनाईं। उन का
मन बट गया अब वे दोषी ठहराये जायेंगे वुह उन की
३ बेदियां ढायेगा वुह उन की मूरतें तोड़ेगा। क्योंकि अब वे
कहेंगे कि हमारा कोई राजा नहीं है इसी लिये कि हम
परमेश्वर से न डरें तो राजा हमारा क्या करेगा।

४ वे बातें बोलते किरिया खाते बाचा बांधते हैं और खेत की
५ लकीरों में इन्द्रायण की नाईं दंड उगता है। बैतअवन की
बछियों के कारण समरून के निवासी डरेंगे क्योंकि उस के
लोग उस पर शोक करेंगे और उस के पंडे उस के लिये उछलेंगे
६ उस के विभव के कारण क्योंकि वुह उस्से जाता रहा। वुह
भी असूर में दुष्ट राजा के भेंट के लिये पहुंचाया जायेगा
इफ़रायम लाज खायेगा और इसराएल अपने मंच से लज्जित
७ होगा। समरून का राजा कट गया है वुह जलके ऊपर
८ चेली की नाईं है। और अवन के ऊंचे स्थान इसराएल का
पाप नष्ट हो जायेंगे और उन की बेदियों पर कांटे और
ऊंटकटारे उगेंगे और वे पर्बतों से कहेंगे कि हमें ढांपो और
टीलों को कि हम पर गिरो॥

९ हे इसराएल तू ने जिबअः के दिनों से पाप किया है वहां
वे रहते हैं क्या जिबअः में वुह संग्राम जो बुराई के सन्तान
१० पर है उन्हें न लेगा। मैं बहुत चाहता कि उन को दंड दूं
और जातिगण उन के विरुद्ध बटोरे जायेंगे जब वे अपनी दो
११ बुराइयों के लिये दंड पावेंगे। सो इफ़रायम सुधराई हुई
कलोर है जो अन्न काटने चाहती पर मैं उस के अच्छे गले
के समीप चलूंगा मैं इफ़रायम को बाहन बनाऊंगा यहूदाह
हल जोतेगा और यअकूब उस का हेंगा फेरेगा॥

१२ अपने लिये धर्म्म में बोओ भलाई में लवो बनजर जोतो
और परमेश्वर के ढूंढ़ने का समय है जब कि वुह आवे और
१३ धर्म्म तुम को सिखावे। तुम ने दुष्टता को जोता तुम ने
बुराई को लवा तुम ने झूठ का फल खाया क्योंकि तू ने अपने
१४ मार्ग पर आसरा रक्खा अपने बलवानों की भीड़ पर। इस
लिये तेरे लोगों में हुल्लड़ मचेगा और तेरे सारे गढ़ ढाये
जायेंगे जैसा कि सलमन ने युद्ध के दिन बैतअरबिएल को

१५ ढा दिया माता अपने बालकों पर टूक टूक पटकी गई। तुम्हारी
अति दुष्टता के कारण वुह तुम से बैतएल में ऐसा करेगा
बिहान को इसराएल का राजा निश्चय मारा जायेगा ॥

ग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ जब इसराएल नन्हा था तब मैं ने उसे प्यार किया और
२ अपने पुत्र को मिस्र से बुलाया। जितना उन्हों ने उन को
बुलाया वे उन से उतना दूर गये उन्हों ने बअलों के लिये
बलि चढ़ाया और गढ़ी हुई मूरतों के आगे धूप जलाया।
३ मैं ने इफ़रायम के हाथ पकड़के उन्हें चलने सिखाया पर उन्हों
४ ने नहीं जाना कि मैं ने उन्हें चंगा किया। मैं ने मनुष्य की
डोरियों से प्रेम के बंधनों से उन्हें खींचा मैं उन का ऐसा हुआ
कि मैं ने उन के गले पर से जूआ उतारा और उन्हें नेह से
खिलाया ॥

५ वुह मिस्र देश को फिर न लौटेगा पर असूरी उस का राजा
६ होगा क्योंकि उन्हों ने फिर आने को नाह किया। और तलवार
उस के नगरों पर पड़ी रहेगी और उस की लाठियों को काटेगी
७ और उन मंत्रों के कारण उन्हें भक्ष लेगी। और मेरे लोग
मुझ से जाने पर अपना मन लगाते हैं वे उन्हें अति महान
की ओर बुलाते हैं पर कोई उस की बड़ाई नहीं करेगा ॥

८ हे इफ़रायम मैं तुझे क्योंकर त्यागूं हे इसराएल मैं तुझे
क्योंकर सौंप दूं क्या मैं तुझे अदमः की नाईं बनाऊं और तुझे
ज़िबोआन की नाईं ठहराऊं मेरा मन मुझ में पलट गया मेरा
९ स्नेह अति बढ़ गया। मैं अपने क्रोध के तपन के समान न
करूंगा मैं इफ़रायम के नाश करने को न फिरूंगा क्योंकि मैं
सर्बशक्तिमान हूं और मनुष्य नहीं तेरे मध्य में धर्ममय और
१० मैं कोप में न आऊंगा। वे परमेश्वर के पीछे चलेंगे जब वुह

सिंह की नाईं गर्जैगा जब वुह गर्जैगा तब बंश पच्छिम से
११ फुरती करेंगे। वे मिस्र से पंछी की नाईं फुरती करेंगे और असूर
देश से पंडुक की नाईं और मैं उन्हें उन के घरों में बसाऊंगा
परमेश्वर कहता है ॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ इफ़रायम ने झूठ से और इसराएल के घराने ने छल से
मुझे घेरा है और यहूदाह सर्वशक्तिमान के विषय में चंचल
है हां उन पवित्र जनों के विषय में जो विश्वस्त हैं इफ़रायम
पवन खाता है और पुर्वा पवन के पीछे जाता है प्रतिदिन वुह
झूठ और बटमारी को बढ़ाता है वे असूर से वाचा बांधते हैं
२ और मिस्र में तेल पहुंचाया जाता है। यहूदाह से भी परमेश्वर
का बिवाद है और यअ़कूब को उस के चलनों के समान दण्ड
देगा उस की क्रिया का प्रतिफल उसे देगा ॥
३ उस ने कोख में अपने भाई की एड़ी को धरा और अपने
४ बल से ईश्वर से मल्लयुद्ध किया। हां उस ने दूत से मल्लयुद्ध
किया और प्रबल हुआ वुह रोया और उस्से बिनती किई उस
ने उसे बैतएल में पाया और वहां हमारे साथ बार्त्ता किई।
५ अर्थात् परमेश्वर जो सेनाओं का ईश्वर है यहोवाह उस का
६ स्मरण है। इस लिये तू अपने ईश्वर की ओर फिर कृपा
और न्याय पालन कर और नित अपने ईश्वर की बाट जोह ॥
७ कनआ़न के हाथ में छल की तुला है वुह ठगने को
८ चाहता है। और इफ़रायम बोलता है कि निश्चय मैं धनवान
हूं मैं ने अपने लिये संपत्ति प्राप्त किई है मेरी सारी कमाई में
९ वे मुझ में अन्याय न पावेंगे जो पाप होवे। तिस पर भी मैं
मिस्र के देश से परमेश्वर तेरा ईश्वर हूं तेवहारों के दिनों की
१० नाईं मैं फिर तुझे तंबुओं में बसाऊंगा। और मैं ने

भविष्यद्वक्तों से बोल दिया और दर्शन बढ़ाया और भविष्यद्वक्तों
११ के द्वारा से दृष्टांतों को कहा। निश्चय जिलिअद में बुराई है
निश्चय वे झूठे हैं हां वे जिलजाल में बैलों को बलि करते
हैं हां उन की बेदियां उन ढेरों की नाईं हैं जो खेत की
रेघारियों पर हैं॥
१२ और यअकूब अराम के देश को भागा और इसराएल ने
पत्नी के लिये सेवा किई और पत्नी के लिये भेड़ की रखवाली
१३ किई। और भविष्यद्वक्ता से परमेश्वर इसराएल को मिस्र से चढ़ा
१४ लाया और भविष्यद्वक्ता से उस की रक्षा किई गई। इफ़रायम
ने अति तीत रिस करवाई इस लिये उस का प्रभु उस का लोहू
उसी पर धरेगा और उस की अपनिन्दा उसी पर फिरावेगा॥

तेरहवां पर्व्व।

१ जब इफ़रायम कंपित हो हो बोला तब वुह इसराएल में
बढ़ाया गया परन्तु जब उस ने बअल के विषय में अपराध
२ किया तब वुह मर गया। और अब वे पाप पर पाप करते जाते
हैं वे अपने लिये अपने गुन के समान ढाली हुई मूरत अर्थात्
प्रतिमा अपनी चांदी से बनाते हैं जो सब के सब कारीगरों के
कार्य्य हैं वे उन के विषय में कहते हैं कि जो बलि चढ़ाते
३ हैं सो बछियों को चूमें। इस लिये वे बिहान के मेघ की नाईं
होंगे और ओस की नाईं जो तड़के जाती रहती है और
खलियान के भूसे की नाईं जो बवंडर से उड़ाया हुआ है और
४ धूंए की नाईं जो चूल्हे से निकलता है। पर मैं मिस्र के देश
में से परमेश्वर तेरा ईश्वर हूं मुझे छोड़ तू किसी ईश्वर को न
५ जानेगा क्योंकि मुझे छोड़ कोई मुक्तिदायक नहीं है। मैं ने तुझे
६ अरण्य में बड़ी झुराहट के देश में जाना। जैसी उन की चराई थी
वैसा वे तृप्त हुए तृप्त होके उन के मन फूल गये इसी लिये उन्हों

७ ने मुझे बिसराया। इसी कारण मैं उन के लिये सिंह की नाईं
८ हूंगा चीते की नाईं मार्ग में मैं घात में लगा रहूंगा। बच्चा
हेराये हुए भालू की नाईं मैं उन से भेंट करूंगा और उन के
हृदय का अन्तर फाडूंगा और मैं वहां उन्हें सिंह की भांति
भक्षूंगा बनपशु उन्हें फाड़ेगा॥
९ हे इसराएल तू ने अपने को नाश किया पर मुझ से तेरी
१० सहायता है। अब तेरा राजा कहां है जिस ने तुझे तेरे सारे
नगरों में बचाया और तेरे न्याय कहां जिन के विषय में तू ने
११ कहा कि मुझे राजा और अध्यक्ष दे। मैं अपने क्रोध में
एक राजा तुझे दूंगा और अपने कोप में उसे लूंगा॥
१२ इफ़रायम की बुराई बन्द है उस का पाप धरा हुआ है।
१३ पीड़ित स्त्री की पीड़ें उस पर आवेंगी वुह निर्बुद्धि पुत्र है नहीं
तो वुह बालकों के फूट निकलने के स्थान में देर तक न
१४ ठहरता। मैं पाताल के बश से उन्हें छोड़ाऊंगा मैं मृत्यु से
उन्हें निस्तार करूंगा हे मृत्यु तेरी मरी कहां है पाताल तेरा
नाश कहां पछताना मेरी आंखों से छिपेगा॥
१५ यद्यपि वुह अपने भाइयों से फलवंत है तथापि पुर्वा पवन
आवेगी परमेश्वर की पवन बन से चढ़ेगी और उस का सोता
सूख जायेगा और उस की बापी बिलाय जायेगी वुह उस के
१६ सारे बांछित पात्रों का भण्डार लूटेगा। समरून दण्ड पावेगा
क्योंकि वुह अपने ईश्वर से फिर गया है वे तलवार से गिरेंगे
उन के बालक पटके जायेंगे और उन की पेटवाली स्त्रियां
चीरी जायेंगी॥

चौदहवां पर्व्व।

१ हे इसराएल परमेश्वर अपने ईश्वर की ओर फिर क्योंकि तू
२ अपनी बुराई से गिर पड़ा है। तुम बातों को अपने साथ लेके

परमेश्वर की ओर फिरो उस्से कहो कि सारी बुराई उठा डाल और
नेह से हम को ग्रहण कर और हम अपने होंठ के बछड़ों को
३ भेंट देंगे। असूर हमें न बचावेगा हम घोड़ों पर न चढ़ेंगे और
अपने हाथों की क्रिया को फिर न कहेंगे कि तुम हमारे देव
हो क्योंकि अनाथ तुझ से दया पाते हैं॥
४ मैं उन के फिर जाने को चंगा करूंगा मैं उन्हें जी जान
५ से प्यार करूंगा क्योंकि मेरा क्रोध उन से फिर गया। मैं
इसराएल के लिये ओस की नाईं हूंगा वुह सोसन की नाईं
६ बिकसेगा और लुबनान की भांति जड़ पकड़ेगा। उस की
टहनियां फैलेंगी और उस का विभव जलपाई की नाईं
७ होगा और उस का गन्ध लुबनान की नाईं। जो उस की
छाया तले रहते हैं वे फिरेंगे वे अन्न की नाईं हरे होंगे और
दाख की नाईं बढ़ेंगे और लुबनान के दाखरस की नाईं उस
८ की चर्चा होगी। इफ़रायम कहेगा कि मुझे फिर मूरतों से
क्या काम है मैं ने उसे उत्तर दिया और उसे निहारूंगा मैं
हरे सरो की नाईं हूं मुझ से तेरा फल पाया जाता है॥
९ बुद्धिमान कौन है जो ये बातें समझे विवेकी कौन है जो
इन को जाने क्योंकि परमेश्वर के मार्ग सीधे हैं और धर्मी उन
में चलेंगे पर अपराधी उन में गिरेंगे॥

यूएल
भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्व्व

१ परमेश्वर का वचन जो फतूएल के बेटे यूएल के पास
पहुंचा॥
२ हे बूढ़ो यह सुनो और देश के सारे निवासियो कान लगाओ।
क्या तुम्हारे दिनों में अथवा तुम्हारे पितरों के दिनों में ऐसा
३ कभी हुआ। उसे अपने बालकों से वर्णन करो और तुम्हारे
बालक अपने बालकों से और उन के बालक अगिली पीढ़ी से।
४ कि जो कुछ काटनेवाली टिड्डी ने छोड़ा उसे बटोरी हुई टिड्डी
ने खाया है और जो कुछ बटोरी हुई टिड्डी ने छोड़ा उसे
चाटनेवाली टिड्डी ने खाया और जो कुछ चाटनेवाली टिड्डी ने
छोड़ा उसे नाशक टिड्डी ने खाया॥
५ अरे मतवालो जागो और बिलाप करो अरे दाखरस के सारे
पीनेहारो चिल्लाओ नये दाखरस के कारण क्योंकि वुह तुम्हारे
६ मुंह से जाता रहा। क्योंकि एक जाति मेरे देश पर चढ़
आई वे बलवंत और अगणित हैं उन के दांत सिंह के दांत
७ हैं और उन की दाढ़ के दांत सिंहनी के हैं। उन्हों
ने मेरे दाख के वृक्ष को उखाड़ा और मेरे गूलर के पेड़ को

तोड़ा उन्हों ने उसे सम्पूर्ण उज्जल किया और गिरा दिया
उन्हों ने उस की डालियों को खेत किया ॥
८ जिस भांति तरुणी अपने युवा पति के लिये टाट पहिने
९ बिलाप करती है उसी भांति बिलाप करो। परमेश्वर के घर
से पिसान की भेंट और पीने की भेंट जाती रही याजक
१० परमेश्वर के सेवक रोदन करते हैं। खेत उखाड़ा जाता है
भूमि बिलाप करती है क्योंकि अन्न उखाड़ा गया नया दाखरस
सूख गया तेल कुम्हला गया ॥
११ हे किसानो लज्जित होओ हे दाख के मालियो गेहूं और
१२ जव के लिये चिल्लाओ क्योंकि खेत की लवनी नष्ट हुई। दाख
का वृक्ष सूख गया और गूलर पेड़ मुरझा गया अनार और
ताड़ भी और सेव के पेड़ हां खेत के सारे पेड़ सूख गये
निश्चय मनुष्य के पुत्रों से आनन्द जाता रहा ॥
१३ हे याजको कटि बांधो और छाती पीटो हे बेदी के सेवको
चिल्लाओ चलो मेरे ईश्वर के सेवको रात भर टाट ओढ़के पड़े
रहो क्योंकि पिसान की भेंट और पीने की भेंट तुम्हारे ईश्वर के
१४ घर से रुक गई। पवित्र ब्रत ठहराओ मनादी प्रचारो प्राचीनों
को और देश के सारे निवासियों को परमेश्वर अपने ईश्वर के
घर में बटोरो और परमेश्वर की दोहाई दो ॥
१५ हाय उस दिन के लिये क्योंकि परमेश्वर का दिन समीप है
और वुह सर्वशक्तिमान की ओर से नाश की नाईं आवेगा।
१६ क्या हमारी आंखों के साम्ने से भोजन कट नहीं गया
१७ आनन्द और मगनता हमारे परमेश्वर के घर मे। अपने ढेलों
के नीचे बीज सड़ गया खलियान उजाड़ पड़े हैं खत्ते तोड़े
१८ हुए हैं क्योंकि अन्न झुरा गया। पशु क्या ही कराहते हैं ढोर
के लेंहड़े क्या ही घबराये जाते हैं क्योंकि उन के लिये चराई
१९ नहीं है हां भेड़ों के झुंड नष्ट हुए हैं। हे परमेश्वर मैं तेरी

टोहाई देता हूं क्योंकि बन की चराई को आग ने भस्म किया
२० और लवर ने चौगान के सारे पेड़ों को जला दिया। चौगान
के पशु भी तेरी बाट जोहते हैं क्योंकि नदियों के जल सूख
गये और आग ने बन की चराइयों को भस्म किया ॥

दूसरा पर्व्व ।

१ सेहून में तुरही फूंको और मेरे पवित्र पहाड़ पर घोर घोर
शब्द करो देश के सारे निवासी थरथरावें क्योंकि परमेश्वर का
२ दिन आता है हां समीप है। अंधियारा और धुमलाई का
दिन मेघ और गाढ़े अंधकार का दिन जैसा भोर पर्व्वतों पर
बिछी हुई एक बड़ी और बलवंत जाति सनातन से ऐसा कधी
३ न हुआ और पीढ़ी पर पीढ़ी बरसों तक ऐसा न होगा। उन
के आगे आग भस्म करती है और उन के पीछे लवर जलाती
है उन के आगे देश अदन की बारी की नाईं है और उन के पीछे
उजाड़ अरण्य है हां उन से कुछ नहीं बचता ॥
४ वे घोड़ों की नाईं दिखाई देते हैं और घोड़चढ़ों की नाईं
५ दौड़ेंगे। पर्व्वतों की चोटियों पर रथों के हड़हड़ाने की नाईं
वे फांदेंगे आग की लवर के शब्द की नाईं जो खूंटी को भस्म
करती है एक बलवन्त जाति की नाईं जो संग्राम के लिये पांती
६ बांधते हैं। उन के आगे लोग पीड़ित होंगे सब के मुखों के
७ रंग बदल जायेंगे। वे वीरों की नाईं दौड़ेंगे योद्धाओं की नाईं
वे भीत पर चढ़ जायेंगे हर एक अपने अपने मार्ग पर चलेगा
८ और वे अपने पथों से न मुड़ेंगे। एक दूसरे को न ठेलेगा हर
एक अपने अपने पथ पर चलेगा और यदि खड्ग पर गिरेंगे
९ तौभी घाव न खायेंगे। वे नगर में इधर उधर दौड़ेंगे वे भीत
पर दौड़ेंगे वे घरों पर चढ़ जायेंगे वे चोर की नाईं खिड़कियों
१० में घुसेंगे। उन के आगे पृथिवी थर्थरा गई स्वर्ग कांप गये

सूर्य्य और चन्द्रमा अंधियारे हो गये और तारों ने अपनी चमक
११ खैंच लिई है। और परमेश्वर अपनी सेना के आगे अपना शब्द
उच्चारेगा क्योंकि उस की छावनी अति बड़ी है क्योंकि वुह
वलवन्त है जो अपने वचन को पूरा करता है क्योंकि परमेश्वर
का दिन महान और अति भयंकर है और कौन उसे सह
सकेगा॥

१२ तथापि अब भी परमेश्वर कहता है अपने सारे मन से मेरी
१३ ओर फिरो और व्रत और विलाप और शोक से। और अपने
मनों को फाड़ो न कि अपने वस्त्रों को और परमेश्वर अपने
ईश्वर की ओर फिरो क्योंकि वुह कृपाल है और दयाल क्रोध में
१४ धीमा और नेह में बड़ा है और बुराई से पछताता है। क्या
जानें वुह फिरे और पछतावे और अपने पीछे आशीष को छोड़े
पिसान की भेंट और पीने की भेंट परमेश्वर तुम्हारे ईश्वर के
लिये॥

१५ सैहून में तुरही फूंको पवित्र व्रत को ठहराओ छुट्टी का
१६ दिन प्रचारो। लोगों को बटोरो मंडली को पवित्र करो प्राचीनों
को एकट्ठे करो बालकों और दूध पीवकों को बटोरो दुल्हा
अपनी कोठरी से और दुल्हिन अपने एकान्त स्थान से निकल
१७ जाये। याजक परमेश्वर के सेवक ओसारे और वेदी के मध्य
में रोया करें और कहें कि हे परमेश्वर अपने लोगों को बचा ले
और अपने अधिकार की निन्दा होने मत दे जिसतें जातिगण
उन पर राज्य न करें वे क्यों अन्यदेशियों में कहें कि उन का
ईश्वर कहां है॥

१८ तब परमेश्वर अपने देश के लिये झल खायेगा और अपने
१९ लोगों पर मया करेगा। हां परमेश्वर उत्तर देके अपने लोगों से
कहेगा कि देखो मैं अन्न और नया दाखरस और तेल तुम्हारे
पास भेजूंगा और तुम उन से तृप्त होओगे और मैं फिर जातिगणों

२० में तुम्हारी निन्दा होने न दूंगा। पर मैं उस उतरहे को तुम
से दूर करूंगा और सूखे और उजाड़ देश में खेदूंगा उस की
अगाड़ी पूरब के समुद्र की ओर और उस की पिछाड़ी पच्छिम
के समुद्र की ओर और उस की बास उठेगी और उस की दुर्गंध
चढ़ेगी क्योंकि वुह कार्य्य करने में बड़ा है ॥
२१ हे देश मत डर आनन्द और मगन हो क्योंकि परमेश्वर कार्य्य
२२ करने में बड़ा होगा। हे चौगान के पशुओ मत डरो क्योंकि अरण्य
की चराइयां उगती हैं क्योंकि पेड़ अपना फल लाता है गूलर
२३ पेड़ और दाख अपना बल देते हैं। और हे सैहून के संतानो
मगन होओ और परमेश्वर अपने ईश्वर से आनन्द करो क्योंकि
वुह तुम्हें अगिला मेंह परिमाण से देता है और झड़ी तुम पर
२४ उतारता अर्थात् आगे की नाईं अगिला और पिछला मेंह। और
खलियान अन्न से भरपूर होंगे और कोल्हू नये दाखरस और
२५ तेल से छलक जायेंगे। और मैं उन बरसों को तुम्हें फेर दूंगा
जिन्हें बटोरी हुई टिड्डी चाटनेवाली टिड्डी नाशक टिड्डी और
काटनेवाली टिड्डी ने खाया अर्थात् मेरी वुह बड़ी सेना जिसे मैं
२६ ने तुम पर भेजा। और तुम बहुताई से खाओगे और तृप्त होगे
और परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम की स्तुति करोगे जिस ने
तुम से आश्चर्य्यित व्यवहार किया और मेरे लोग कभी लज्जित
२७ न होंगे। और तुम जानोगे कि मैं इसराएल के मध्य में हूं
और कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं और दूसरा कोई नहीं
और मेरे लोग कभी लज्जित न होंगे ॥
२८ और इस के पीछे ऐसा होगा कि मैं सारे मनुष्यों पर अपना
आत्मा डालूंगा और तुम्हारे बेटे बेटियां भविष्य कहेंगी तुम्हारे
२९ पुरनिये स्वप्न निहारेंगे और तुम्हारे युवा दर्शन देखेंगे। और
उन्हीं दिनों में मैं अपने आत्मा को दासों और दासियों पर भी
३० बरसाऊंगा। और मैं स्वर्ग और पृथिवी पर आश्चर्य्य दिखाऊंगा

३१ लोहू और आग और धूएं के खम्भे। सूर्य्य अंधियारा और
चन्द्रमा लोहू हो जायेगा उस्से आगे कि परमेश्वर का बड़ा भयङ्कर
दिन आवे॥
३२ पर ऐसा होगा कि जो कोई परमेश्वर के नाम की दोहाई
देगा सो बच जायेगा क्योंकि सेहून पर्वत पर और यरूसलम
में बचाव होगा जैसा कि परमेश्वर ने कहा है और बचे हुओं
में जिन्हें परमेश्वर बुलावेगा॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ क्योंकि देख उन दिनों में और उसी समय को जब मैं
२ यहूदाह और यरूसलम की बंधुआई को फेर लाऊंगा। तब
मैं सारे जातिगणों को एकट्ठा करूंगा और उन्हें यहूसफ़त की
तराई में उतार लाऊंगा और वहां उन पर न्याय करूंगा अपने
लोगों के निमित्त और अपने अधिकार इसराएल के निमित्त
जिन्हें उन्हों ने जातिगणों में छिन्न भिन्न किया और मेरे देश
३ को बांट लिया। हां उन्हों ने मेरे लोगों के लिये चिट्ठी डाली
और बेश्या के लिये छोकरा दिया और मद्य पीने के लिये
छोकड़ी बेची॥
४ फिर तुम को मुझ से क्या काम है हे सूर और सैदा और
फिलिस्ती के सारे सिवाने क्या तुम मुझ को पलटा दोगे और
जो दोगे तो मैं शीघ्र और झट पट तुम्हारा पलटा तुम्हारे
५ सिर पर फिराऊंगा। क्योंकि तुम ने मेरा सोना चांदी ले लिया
है और मेरी अच्छी मनभावनी वस्तों को अपने मन्दिरों में ले
६ गये हो। और तुम ने यहूदाह और यरूसलम के सन्तानों को
यूनानियों के सन्तानों के हाथ बेचा है जिसतें उन्हें उन के
७ सिवानों से दूर करो। देखो जहां तुम ने उन्हें बेचा है वहां
से मैं उन्हें उठा लूंगा और तुम्हारा पलटा तुम्हारे सिर पर

८ फिराऊंगा। और मैं तुम्हारे बेटे बेटियों को यहूदाह के संतानों
के हाथ बेचूंगा और वे उन्हें सबाईयों के हाथ बेचेंगे जो दूर
के जातिगण हैं क्योंकि परमेश्वर ने कहा है॥
९ जातिगणों में यह प्रचारो कि संग्राम सिद्ध करो बलवन्तों
१० को उभाड़ो सारे योद्धा पास चले आवें वे चढ़ धावें। अपने
हलों को तलवारों के लिये और अपने अपने हंसुओं को भालों
११ के लिये तोड़ो दुर्बल कहे कि मैं बलवन्त हूं। हे चारों ओर
के जातिगणो शीघ्र करके चले आओ और अपने को एकट्ठे करो
१२ हे परमेश्वर तू अपने बलवंतों को वहां उतार। जातिगण
उभाड़े जायें और यहूसफ़त की तराई में आवें क्योंकि मैं
चारों ओर के सारे जातिगणों का न्याय करने को वहां
बैठूंगा॥
१३ दरांती लगाओ क्योंकि लवनी पक गई है उतरो कि कोल्हू
भरा है चहबच्चे छलकते हैं क्योंकि उन की दुष्टता बड़ी है।
१४ भीड़ पर भीड़ न्याय की तराई में क्योंकि परमेश्वर का दिन
१५ समीप है न्याय की तराई में। सूर्य्य और चन्द्रमा अंधियारे
हो गये और तारों ने अपनी चमक खींच लिई है॥
१६ और परमेश्वर सैहून से गर्जेगा और यरूसलम से अपना
शब्द उच्चारेगा और स्वर्ग और पृथिवी कांपेगी परन्तु परमेश्वर
अपने लोगों का आश्रा और इसराएल के संतानों का गढ़ होगा।
१७ और तुम जानोगे कि मैं परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर हूं जो अपने
पवित्र पर्वत सैहून में वास करता हूं तब यरूसलम पवित्र
होगा और परदेशी उस में से फेर बीत न जायेंगे॥
१८ और उस दिन ऐसा होगा कि पर्वत नया दाखरस टपकावेंगे
और टीले दूध बहावेंगे और यहूदाह के सारे नाले जलमय
होंगे और परमेश्वर के घर से एक सोता निकल आवेगा जो
सत्तीन की तराई को सींचेगा॥

१९ मिस्र उजाड़ होगा और अदूम उजाड़ बन हो जायेगा उस
अंधेर के कारण जो यहूदाह के संतानों ने किया कि उन के
२० देश में निर्दोष लोहू बहाया। परन्तु यहूदाह सनातन लों
२१ और यरूसलम पीढ़ी से पीढ़ी लों बसा रहेगा। और मैं उन का
लोहू निर्दोष जानूंगा जिसे मैं ने निर्दोष न जाना और परमेश्वर
सेहून में बास करेगा॥

अमूस
भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ तकूअ के अहीरों में से अमूस के वचन जो उस ने यहूदाह
के राजा उज्जियाह के दिनों में और इसराएल के राजा यूआस
के बेटे यरुबिआम के दिनों में इसराएल के विषय में भुईंडोल
के दो बरस आगे देखा ॥
२ और उस ने कहा कि परमेश्वर सैहून से गर्जेगा और यरूसलम
से अपना शब्द उच्चारेगा और गड़रियों के निवास बिलाप करेंगे
और करमिल की चोटी सूख जायेगी ॥
३ परमेश्वर यों कहता है कि दमिशक़ के तीन हां चार
अपराधों के लिये मैं उस का दंड न टालूंगा क्योंकि उन्हों ने
४ जिलिअद को लोहे के मूसलों से कूटा है। पर मैं हज़ाएल
के घर पर एक आग भेजूंगा और वुह बिनहदद के भवनों को
५ भस्म करेगी। मैं दमिशक़ का अड़ङ्ग भी तोडूंगा और अवन की
तराई से निवासी को और अदन के घराने से राजदण्डधारी
को काट डालूंगा और अराम के लोग क़ीर लों बन्धुवाई में
जायेंगे परमेश्वर कहता है ॥
६ परमेश्वर यों कहता है कि अज्ज़ः के तीन हां चार अपराधों
के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि वे सारे बन्धुओं
७ को बन्धुवाई में ले गये कि उन्हें अदूम को सौंपें। पर मैं

अज्ज़: की भीत पर एक आग भेजूंगा और वुह उस के भवनों
८ को भस्म करेगी। और मैं अशदूद से निवासी को और असकलून
से राजदण्डधारी को काट डालूंगा और मैं अपना हाथ अक्रून
पर फेरूंगा और फिलिस्तियों के बचे हुए नष्ट होंगे प्रभु परमेश्वर
कहता है॥

९ परमेश्वर यों कहता है कि सूर के तीन हां चार अपराधों
के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उन्हों ने सारे
बंधुओं को अदूम को सोंपा और भयवाद के नियम को स्मरण
१० न किया। पर मैं सूर की भीत पर एक आग भेजूंगा और वुह
उस के भवनों को भस्म करेगी॥

११ परमेश्वर यों कहता है कि अदूम के तीन हां चार अपराधों
के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उस ने तलवार से
अपने भाई को खेदा और अपनी मया को छोड़ दिया और उस
का क्रोध सदा फाड़ता रहा और उस ने अपना कोप नित
१२ रक्खा। पर मैं तैमन पर एक आग भेजूंगा और वुह बूसर: के
भवनों को भस्म करेगी॥

१३ परमेश्वर यों कहता है कि अम्मून के तीन हां चार
अपराधों के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उन्हों ने
जिलिअद की गर्भिणी स्त्रियों को चीरा कि अपना सिवाना बढ़ावें।
१४ पर मैं रब्बह की भीत पर एक आग बारूंगा और ललकारने
के संग लड़ाई के दिन में और आंधी के संग बवंडर के दिन
१५ में वुह उस के भवनों को भस्म करेगी। और उन का राजा
वुह और उस के अध्यक्ष एकट्ठे बंधुवाई में जायेंगे परमेश्वर
कहता है॥

दूसरा पर्व्व।

१ परमेश्वर यों कहता है कि मोआब के तीन अपराधों हां चार

के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उस ने अदूम के
२ राजा की हड्डियों को जलाके चूना बनाया। पर मैं मोआब पर
एक आग भेजूंगा और वुह करयत के भवनों को भस्म करेगी
और मोआब हुल्लड़ में ललकारने से और तुरही के शब्द से
३ मरेगा। और उस के मध्य में से मैं न्यायी को काट डालूंगा
और उस के साथ उस के सारे अध्यक्षों को बध करूंगा परमेश्वर
कहता है॥
४ परमेश्वर यों कहता है कि यहूदाह के तीन अपराधों हां
चार के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उन्हों ने
परमेश्वर की व्यवस्था को तुच्छ जाना और उस की रीतों को न
पाला और उन के झूठे देवों ने उन से भूल करवाई जिन के
५ पीछे उन के पितर चलनेहारे हुए। पर मैं यहूदाह पर एक आग
भेजूंगा और वुह यरूसलम के भवनों को भस्म करेगी॥
६ परमेश्वर यों कहता है कि इसराएल के तीन अपराधों हां
चार के लिये मैं उस का दण्ड न टालूंगा क्योंकि उन्हों ने
चांदी के लिये धर्म्मी को और एक जोड़ा खरपिन के लिये
७ दरिद्र को बेचा है। जो हांपते हैं कि दरिद्रों के सिर पर
पृथिवी की धूल धरें और दुखियों के मार्ग को भटकाते हैं और
मनुष्य और उस का पिता एक ही कन्या के पास जाते हैं कि
८ मेरे पवित्र नाम को अशुद्ध करें। और हर बेदी के पास बन्धक
के बस्त्रों पर लेटते हैं और अपने देवों के घर में दण्ड भरतियों
का दाखरस पीते हैं॥
९ तथापि मैं ने अमूरी को उन के आगे नष्ट किया जिस की
ऊंचाई देवदारों की ऊंचाई के समान थी और जो बलूतों के
समान बलवन्त था पर मैं ने उस का फल ऊपर से और उस
१० की जड़ नीचे से नष्ट किई। मैं भी तुम्हें मिस्र के देश से
चढ़ा लाया और चालीस बरस लों बन में तुम्हें लिये फिरा

११ जिसतें अमूरी का देश अधिकार के लिये देऊं। और मैं ने
तुम्हारे पुत्रों में से भविष्यद्वक्तों को और तुम्हारे तरुणों में से
नसरानियों को उभाड़ा क्या यों नहीं है हे इसराएल के संतानो
१२ परमेश्वर कहता है। परन्तु तुम ने नसरानियों को दाखरस
पिलाया और भविष्यद्वक्तों को आज्ञा करके कहा कि भविष्य मत
कहो॥
१३ देख मैं तुम्हें नीचे दबाऊंगा जैसा पूलों से लदी हुई गाड़ी
१४ भूमि को दबाती है। तब बेगगामियों से भागना जाता रहेगा
और बलवान अपने बल को स्थिर न करेगा और न बीर अपना
१५ प्राण छोड़ावेगा। और धनुषधारी खड़ा न रहेगा और बेग परग
अपने को न बचावेगा और घोड़चढ़ा अपने प्राण को न छोड़ावेगा।
१६ और जो बीरों में से साहसी है उसी दिन नंगा निकल भागेगा
परमेश्वर कहता है॥

तीसरा पर्व्व।

१ हे इसराएल के संतानो इस बचन को सुनो जिसे परमेश्वर
ने यह कहते हुए तुम्हारे विरुद्ध बोल दिया हां उस सारे घराने
के बिरुद्ध जिसे मैं मिस्र के देश से चढ़ा लाया॥
२ पृथिवी के सारे घराने में से मैं ने केवल तुम्हीं को जाना है
इसी लिये मैं तुम्हारी सब बुराइयों के लिये तुम को दण्ड दूंगा॥
३।४ यदि मेल न होवे क्या दो एकट्ठे चलेंगे। बिना अहेर
सिंह क्या बन में गर्जेगा और बिना पकड़े हुए क्या तरुण सिंह
५ अपनी मांद में से शब्द करेगा। क्या पंछी पृथिवी पर जाल
में बझेगा जब उस के लिये फंदा नहीं है क्या जाल पृथिवी से
६ उचकेगा जब कुछ पकड़ा नहीं जाता। क्या नगर में तुरही
फूंकी जायेगी और लोग न कांपेंगे क्या नगर में बिपत पड़ेगी
७ बिना परमेश्वर के किये हुए। क्योंकि प्रभु परमेश्वर कुछ न

करेगा जो वुह अपना भेद अपने सेवक भविष्यद्वक्तों पर
८ प्रगट नहीं करता। सिंह गर्जा है कौन न डरेगा प्रभु परमेश्वर
बोला है कौन भविष्य न कहेगा॥
९ अशदूद के भवनों में और मिस्र देश के भवनों में प्रचारो
और कहो कि अपने तईं समरून के पर्वतों पर एकट्ठा करो
और उस के भीतर बड़े हुल्लड़ों को और उस के मध्य में
१० अंधकारों को देखो। क्योंकि परमेश्वर कहता है कि वे न्याय
करना नहीं जानते जो उत्पात और लूट अपने भवनों में
११ बटोरते हैं। इस लिये प्रभु परमेश्वर यों कहता है कि एक
बैरी देश के चौगिर्द होगा और वुह तुझ में से तेरे बल को
उतारेगा और तेरे भवन लुट जायेंगे॥
१२ परमेश्वर यों कहता है कि जैसा गड़रिया सिंह के मुंह से
दो टांग अथवा कान का एक टुकड़ा छुड़ा लेता है तैसा इसराएल
के पुत्र छोड़ाये जायेंगे जो समरून में बिछौने के कोने में और
दमिशक़ में पलंग के कोने में बैठते हैं॥
१३ तुम सुनो और यअ़क़ूब के घराने में साक्षी दो प्रभु परमेश्वर
१४ सेनाओं का ईश्वर कहता है। कि जिस दिन में इसराएल के
अपराधों का पलटा उस्से लूंगा उसी दिन में बैतएल की बेदियों
का पलटा भी लूंगा बेदी के सींग काटे जायेंगे और भूमि पर
१५ गिरेंगे। और मैं ग्रीष्मगृह सहित शीतगृह को ढाऊंगा और
हाथीदांत के घर बिनाश होंगे और बड़े बड़े घरों का अन्त
होगा परमेश्वर कहता है॥

चौथा पर्व्व।

१ यह बचन सुनो हे बसन की गायो जो समरून के पर्वत
पर हैं जो कंगालों को सताती हैं जो दरिद्रों को चकनाचूर
करती हैं जो अपने स्वामियों से कहती हैं कि लाओ हम पीयें॥

२ प्रभु परमेश्वर ने अपनी पवित्रता की किरिया खाई है कि
देखो वे दिन तुम पर आवेंगे जिन में वे तुम को अंकुसियों से और
३ तुम्हारे संतानों को बनसियों से खींच ले जायेंगे। और तुम
दरारों से निकलोगे हर एक अपने अपने सन्मुख और तुम भवन
में से फेंके जाओगे परमेश्वर कहता है॥
४ बैतएल में जाके अपराध करो जिलजाल में अपराध
बढ़ाओ और हर बिहान को अपने अपने बलि और हर तीसरे
५ बरस अपना दसवां भाग लाओ। और ख़मीर के धन्यबाद
की भेंट होम करो और मनमंता भेंटों को प्रचारो उन्हें विदित
करो क्योंकि यह तुम को प्रसन्न आता है हे इसराएल के संतानो
प्रभु परमेश्वर कहता है॥
६ और मैं ने भी तुम्हारे सब नगरों में दांतों की फरछाई और
तुम्हारे सब स्थानों में रोटी की कमी तुम को दिई तथापि तुम
मेरी ओर नहीं फिरे परमेश्वर कहता है॥
७ और मैं ने भी लवनी के तीन मास आगे तुम से बृष्टि रोक
रक्खी है और मैं ने एक नगर पर बरसाया और दूसरे नगर पर
नहीं एक भाग पर बरसा और जिस भाग पर न बरसा वुह सूख
८ गया। इस लिये दो तीन नगर एक नगर में गये कि जल पियें
पर तृप्त न हुए तथापि वे मेरी ओर नहीं फिरे परमेश्वर कहता है॥
९ मैं ने तुम्हें झोंस और बहुत लेंढे से मारा है तुम्हारी
बारियों और दाख की बारियों और गूलरपेड़ और जलपाई के
पेड़ों को टिड्डी ने खाया है तथापि तुम मेरी ओर नहीं फिरे
परमेश्वर कहता है॥
१० मैं ने मिस्र की भांति तुम पर मरी भेजी है मैं ने तुम्हारे
तरुणों को तलवार से घात किया है और तुम्हारे घोड़ों को ले
लिया और तुम्हारी छावनी की दुर्गंध तुम्हारे नथुनों में पहुंचाई
तथापि तुम मेरी ओर नहीं फिरे परमेश्वर कहता है॥

११ मैं ने तुम में से उलट दिया जैसा कि ईश्वर ने सदूम और
अमूर: को उलट दिया और तुम आग में की निकाली हुई
लुकठी की नाईं हुए तथापि मेरी ओर नहीं फिरे परमेश्वर
कहता है ॥
१२ इस लिये हे इसराएल मैं तुझ से यों ही करूंगा पर इस
लिये कि मैं तुझ से यों करूंगा हे इसराएल अपने ईश्वर से
१३ भेंट करने को सिद्ध हो। क्योंकि देख वही है जिस ने पर्वतों
को बनाया और पवन को सृजा और मनुष्य को उस की चिन्ता
बताता है जो बिहान को अंधियारा करता है और पृथिवी के
ऊंचे स्थानों पर चलता है परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर उस का
नाम है ॥

पांचवां पर्व्व ।

१ हे इसराएल के घराने यह बचन सुनो अर्थात् यह विलाप
२ जो मैं तेरे विरुद्ध उच्चारता हूं। इसराएल की कुंवारी गिरी है
वुह फिर कभी न उठेगी वुह अपनी भूमि पर पड़ी हुई है उस
३ का कोई उठानेवाला नहीं है। क्योंकि प्रभु परमेश्वर यों कहता
है कि जिस नगर से सहस्र निकल गये इसराएल के घराने के
लिये सौ छोड़ेगा और जिस्से सौ निकल गये वुह दस छोड़ेगा ॥
४ क्योंकि परमेश्वर इसराएल के घराने से यों कहता है कि
५ मुझे ढूंढो तो जीओगे। पर बैतएल को मत ढूंढो और जिलजाल
में प्रवेश न करो और बिअरसबः के पार न जाओ क्योंकि
जिलजाल अवश्य बंधुवाई में जायगा और बैतएल वृथा में
६ आवेगा। परमेश्वर को ढूंढो तो जीओगे न हो कि वुह यूसुफ़
के घराने पर आग की नाईं झपटे और भस्म करे और बैतएल
में कोई बुझवैया न होवे ॥
७ तुम जो बिचार को नागदौने से पलटते हो और धर्म्म को

८ पृथिवी पर छोड़ते हो। उसे ढूंढो जिस ने कृत्तिका को और
मृगशिर को बनाया है और मृत्यु की छाया को बिहान से
पलटा है और दिन को अंधेरी रात बनाता है जो समुद्र के
जलों को बुलाता है और उन्हें पृथिवी पर उंडेलता है परमेश्वर
९ उस का नाम है। वुह बलवंतों पर एका एकी उजाड़ लाता
है और गढ़ पर उजाड़ पड़ता है॥
१० वे उस्से लाग रखते हैं जो फाटक में डांटता है और उस्से
११ घिन खाते हैं जो खराई से बोलता है। इस लिये कि तुम ने
कंगाल को लताड़ा और उन से गेहूं का भाड़ा लेते हो तुम ने
गढ़े हुए पत्थरों से घरों को बनाया पर उन में न बसोगे तुम
ने दाख की मनभावती बारियों को लगाया है पर उन का
१२ दाखरस न पीओगे। क्योंकि मैं जानता हूं कि तुम्हारे अपराध
बहुत हैं और तुम्हारे पाप बड़े हैं जो धर्म्मियों को सताते
और घूस लेते और फाटक में कंगालों को लौटा देते हो॥
१३ इस लिये उस समय में बुद्धिमान चुप रहेगा क्योंकि वुह
१४ समय बुरा है। तुम भलाई को ढूंढो बुराई को नहीं जिसतें तुम
जीओ और तुम्हारे कहने के समान परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर
१५ तुम्हारे साथ होगा। बुराई से घिनाओ और भलाई को चाहो और
फाटक में न्याय का स्थान करो कदाचित परमेश्वर सेनाओं का
ईश्वर यूसुफ़ के बचे हुओं पर दयाल होवे॥
१६ इस लिये परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर जो प्रभु है यों कहता
है कि सारे चौड़े स्थानों में बिलाप होगा और सारी सड़कों में
वे हाय हाय कहेंगे और वे किसान को शोक के लिये और
१७ रोदन जान्नेहारों को बिलाप के लिये बुलावेंगे। और सारी दाख
की बारियों में बिलाप होगा क्योंकि मैं तुम्हारे मध्य में से
जाऊंगा परमेश्वर कहता है॥
१८ हाय तुम पर जो परमेश्वर के दिन को चाहते हो इस्से

तुम से क्या परमेश्वर का दिन अंधियारा है और उंजियाला
१९ नहीं। जैसा कि कोई सिंह से भागे और भालू उसे मिले
अथवा घर में जाके अपने हाथ को भीत पर रक्खे और
२० उसे सांप डसे। क्या परमेश्वर का दिन अंधियारा न होगा
और उंजियाला नहीं अति अंधियारा और उस में कुछ चमक
नहीं॥

२१ मैं तुम्हारे पर्बों से लाग करता और घिन खाता हूं और
२२ तुम्हारी मंडलियों में सुबास न सूंघूंगा। क्योंकि यदि तुम मेरे
लिये बलिदान की भेंटों को और अपने पिसान की भेंटों को
चढ़ाओ तथापि मैं उन्हें ग्रहण न करूंगा और मैं तुम्हारे मोटे
२३ पशुओं की कुशल की भेंटों पर सुरत न करूंगा। तुम अपने
रागों का शब्द मेरे आगे से दूर करो और तुम्हारी बीनों का
२४ सुर मैं न सुनूंगा। और न्याय पानियों की नाईं बहता रहे
और धर्म्म बड़ी नदी की नाईं॥

२५ हे इसराएल के घराने क्या तुम ने मेरे लिये चालीस बरस
२६ लों अरण्य में बलि और भेंट नहीं चढ़ाई। तथापि तुम अपने
राजा के तंबू को और अपनी मूरतों के कीओं को अपने देवता
२७ का तारा जिन्हें तुम ने अपने लिये बनाया उठाये फिरे। इस
लिये मैं तुम्हें दमिशक से परे बंधुवाई में ले जाऊंगा परमेश्वर
कहता है जिस का नाम सेनाओं का ईश्वर है॥

छठवां पर्ब्ब।

१ हाय उन पर जो सेहून में कुशल से रहते हैं और समरून
के पर्बत पर आसा रखते हैं जो जातिगणों के पहिली जाति
२ के श्रेष्ठ हैं जिन कने इसराएल के घराने आये हैं। तुम
कलनः को पार जाके देखो और वहां से बड़ी हमात को
जाओ तब फिलिस्तियों की गात में उतरो क्या वे इन राज्यों

से भले हैं और उन का सिवाना तुम्हारे सिवाने से बड़ा
है ॥
३ हाय उन पर जो विपत्ति के दिन को दूर करते हैं और
४ अंधेर के सिंहासन को समीप करते हैं। जो हाथीदांत के
पलंगों पर लेटते हैं और अपनी खाटों पर फैलते हैं जो झुंड
में से मेम्नों को और स्थान के मध्य में से बछड़ों को खा लेते
५ हैं। जो बीन के ताल से गाते हैं और दाऊद की नाईं अपने
६ लिये गान के साजों को उपजाते हैं। जो कटोरों में दाखरस
पीते हैं और अपने पर सब से उत्तम सुगंध मलते हैं पर
७ यूसुफ़ के क्लेश के लिये शोकित नहीं हैं। इस लिये वे बंधुओं
के अगुए होके बंधुवाई में जायेंगे और लेटनेहारों की आनन्द
करनेहारी मंडली दूर किई जायेगी ॥
८ प्रभु परमेश्वर ने अपने से किरिया खाई है परमेश्वर सेनाओं
का ईश्वर यों कहता है कि मैं यअ़कूब के ऐश्वर्य्य से घिनाता
हूं और उस के भवनों से लाग करता हूं इस लिये मैं नगर
को और जो कुछ कि उस में है सौंपूंगा ॥
६ और ऐसा होगा कि यदि एक घर में दस जन बच गये तो
१० वे मरेंगे। और मनुष्य का कुनबा वही जिस ने उसे जलाया
है घर से उस की हड्डिओं को निकालने के लिये उसे उठावेगा
और उस्से जो घर के बीच में है कहेगा कि अब तक
तेरे साथ कोई और है और वुह कहेगा कि नहीं तब वुह
बोलेगा कि चुप रह क्योंकि परमेश्वर के नाम का चर्चा न
करना ॥
११ क्योंकि देख परमेश्वर ने आज्ञा किई और वुह बड़े घर को
दरारों से और छोटे घर को छेदों से मारेगा ॥
१२ क्या चटान पर घोड़े दौड़ेंगे क्या वहां कोई बैलों से जोतेगा
क्योंकि तुम ने न्याय को बिष से और धर्म्म के फल को

१३ नागदौने से पलटा है। तुम जो वृथा से आनन्दित हो और
कहते हो कि क्या हम ने अपने लिये अपनी सामर्थ्य से सींग
१४ नहीं लिये। क्योंकि देख हे इसराएल के घराने परमेश्वर सेनाओं
का ईश्वर यों कहता है कि मैं तुम्हारे विरुद्ध एक जातिगण
को उठाऊंगा और हमात की पैठ से बन की नदी लों वे तुम्हें
सतावेंगे॥

सातवां पर्व्व।

१ प्रभु परमेश्वर ने मुझे यों दिखाया है और देख कि पिछली
घास के उगने के आरंभ में उस ने टिड्डिओं को बनाया और
२ देख कि राजा के लवने के पीछे वुह पिछली घास थी। और
यों हुआ कि जब वे देश के साग पात को संपूर्ण खा चुके तब
मैं ने कहा कि हे परमेश्वर प्रभु मैं बिनती करता हूं क्षमा कर
३ यअ़क़ूब किस प्रकार से उठेगा क्योंकि वुह छोटा है। परमेश्वर
इस्से पछताया ऐसा न होगा परमेश्वर ने कहा॥
४ प्रभु परमेश्वर ने मुझे यों दिखाया है और देख कि प्रभु
परमेश्वर ने आग से बिचार करने को बुलाया और वुह बड़ी
गहिराई को खा गई और अधिकार को खा गई॥
५ तब मैं ने कहा कि हे प्रभु परमेश्वर मैं तेरी बिनती करता
हूं कि थम जा यअ़क़ूब किस प्रकार से उठेगा क्योंकि वुह
६ छोटा है। परमेश्वर इस्से पछताया यह भी नहीं होगा प्रभु
परमेश्वर ने कहा॥
७ उस ने मुझे यों दिखाया और देख कि प्रभु साहूल से बनाई
हुई एक भीत पर खड़ा था और साहूल उस के हाथ में था।
८ और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि हे अमूस तू क्या देखता है
और मैं ने कहा कि एक साहूल को तब प्रभु ने कहा कि देख
मैं अपने लोग इसराएल के मध्य में एक साहूल को लगाऊंगा

९ और मैं उन से फिर कधी न बीतूंगा। और इज़हाक के ऊंचे
स्थान उजाड़े जायेंगे और इसराएल के पवित्र स्थान सुनसान
किये जायेंगे और खड्ग से मैं यरुबिआम के घराने के बिरुद्ध
उठूंगा॥
१० तब बैतएल के याजक अमसियाह ने इसराएल के राजा
यरुबिआम को कहला भेजा कि इसराएल के घराने के मध्य में अमूस
ने तेरे बिरुद्ध युक्ति बांधी है देश उस के सारे बचन को सह
११ नहीं सक्ता। क्योंकि अमूस ने यों कहा कि यरुबिआम खड्ग से
मारा जायेगा और इसराएल अपने ही देश से निश्चय बंधुवाई
में जायेगा॥
१२ और अमसियाह ने अमूस से कहा कि हे दर्शी तू यहूदाह
के देश को भाग जा और वहां रोटी खा और वहां भविष्य
१३ कह। पर बैतएल में फिर कधी भविष्य न कह क्योंकि वुह
राजा का पवित्र स्थान और राजा का भवन है॥
१४ तब अमूस ने उत्तर देके अमसियाह से कहा कि मैं न
भविष्यद्वक्ता न भविष्यद्वक्ता का पुत्र था पर मैं अहीर था और
१५ गूलर फल का बटोरवैया। और परमेश्वर ने मुझे झुंड के पीछे
से लिया और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि जा मेरे लोग
१६ इसराएल से भविष्य कह। और अब तू परमेश्वर का बचन सुन
तू कहता है कि इसराएल के बिरुद्ध भविष्य न कह और
इज़हाक के घराने पर बचन न टपका॥
१७ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि तेरी पत्नी नगर में
व्यभिचार करेगी और तेरे बेटे बेटियां तलवार से गिरेंगी और
तेरा देश डोरी से बांटा जायेगा और तू अशुद्ध देश में मरेगा
और इसराएल अपने ही देश से निश्चय बंधुवाई में
जायेगा॥

आठवां पर्ब्ब ।

१ प्रभु परमेश्वर ने मुझे यों दिखाया और देख कि एक टोकरी
२ पक्के फल से भरी हुई है । और उस ने कहा कि हे अमूस तू
क्या देखता है और में ने कहा कि एक टोकरी पक्के फल से
भरी हुई तब परमेश्वर ने मुझ से कहा कि मेरे लोग इसराएल
३ पर अन्त आया है मैं उन से फिर कधी न बीतूंगा। और उसी
दिन मन्दिर का गाना चिल्लाना होगा प्रभु परमेश्वर कहता है
हर एक स्थान में बहुत सी लोथें हैं उन्हें डाल दो चुप
रहो ॥
४ इस बात को सुनो अरे जो दरिद्रों के पीछे हांपते हो कि
५ देश के कंगालों को नाश करो। जो कहते हो कि अमावास्या कब
बीतेगी कि हम अन्न बेचें और विश्राम का दिन कि हम गेहूं
का गोला खोलें जो ईफ़ा को छोटा करते हो और मिसकाल को
६ भारी करते हो कि छल से झूठी तुलों को बनाओ । जिसतें
कंगालों को चांदी के लिये और दरिद्र को एक जोड़ा खरपों
के लिये मोल लेओ और गेहूं की छांटों को बेचो ॥
७ परमेश्वर ने यअकूब की उत्तमता की किरिया खाई है कि
८ निश्चय मैं उन के किसी कार्य्य को कभी न भूलूंगा। क्या इस
लिये देश नहीं कांपेगा और उस का हर एक वासी बिलाप न
करेगा और वुह नदी की नाईं सर्वत्र उभड़ेगा और मिस्र की
नदी की नाईं उभड़ेगा और घटेगा ॥
९ और उस दिन में ऐसा होगा प्रभु परमेश्वर कहता है कि
मैं मध्यान्ह में सूर्य्य को अस्त करूंगा और उंजियाले दिन में
१० देश को अंधियारा करूंगा । और मैं तुम्हारे पर्बों को बिलाप
से और तुम्हारे रागों को हाहाकार से पलट दूंगा और हर एक
कटि पर टाट वस्त्रों को और हर एक के सिर पर मुंडापन को

लाऊंगा और मैं उसे एकलौते के बिलाप के समान बनाऊंगा
और उस के अन्त को कड़ुवा दिन की नाईं॥
११ देख वे दिन आते हैं प्रभु परमेश्वर कहता है कि मैं देश
पर अकाल भेजूंगा अन्न का अकाल नहीं और जल की तृषा
१२ नहीं परन्तु परमेश्वर के बचन सुन्ने का अकाल। और वे समुद्र
से समुद्र लों भ्रमेंगे और उत्तर से पूरब लों परमेश्वर का बचन
१३ सुन्ने के लिये इधर उधर दौड़ेंगे पर उसे न पावेंगे। उस दिन
में रूपवती कुमारियां और युवा पुरुष प्यास के मारे मूर्छित
१४ होंगे। वे जो समरून के पाप की किरिया खाते हैं और कहते
हैं कि हे दान तेरे देव के जीवन से और बिअरसब: की रीति
के जीवन से सो वे गिरेंगे और फिर कधी न उठेंगे॥

नवां पर्ब्ब।

१ मैं ने प्रभु को बेदी पर खड़ा हुआ देखा और उस ने कहा
कि खंभे के सिरे को मार कि चौखट हिल जावें और सभों के
सिर को तोड़ डाल और मैं उन के बंश को तलवार से घात
करूंगा भगवैया उन में से न भागेगा और निकलनेवाला उन में
२ से बच न निकलेगा। जो वे पाताल में सेंधें तो मेरा हाथ
वहां से उन्हें पकड़ेगा और जो स्वर्ग लों चढ़ जावें तो वहां
३ से मैं उन्हें उतारूंगा। और यदि वें करमिल की चोटी पर
आप को छिपावें तथापि मैं खोजके उन्हें वहां. से निकालूंगा
और यदि वे समुद्र की थाह में मेरे आगे से छिपें वहां मैं सर्प
४ को आज्ञा दूंगा और वुह उन्हें डसेगा। और यदि वे अपने
बैरियों के आगे बंधुवाई में जायें वहां मैं तलवार को आज्ञा
दूंगा और वुह उन्हें नाश करेगी और मैं अपनी आंखें उन पर
बुराई के लिये रक्खूंगा और भलाई के लिये नहीं॥
५ क्योंकि प्रभु परमेश्वर सेनाओं का ईश्वर वही है जो देश को

छूता है और वुह पिघलता है और उस के सारे वासी विलाप
करेंगे और वुह नदी की नाईं सर्व्वच उभड़ेगा और मिस्र की
६ नदी की नाईं घटेगा। वुह जो अपने ऊपरी कोठों को स्वर्ग
में बनाता है और अपने गोल आकारों की नेव पृथिवी पर
डालता है वुह जो समुद्र के जलों को बुलाता है और उन्हें
पृथिवी पर उंडेलता है परमेश्वर उस का नाम है॥
७ हे इसराएल के संतानो क्या तुम मेरे लिये कूशियों के
संतानों के समान नहीं हो परमेश्वर कहता है क्या मैं इसराएल
को मिस्र देश से चढ़ा नहीं लाया और फिलिस्तियों को कफ़तूर
८ से और अमूरियों को क़ीर से। देख प्रभु परमेश्वर की आंखें
इस पाप राज्य पर हैं और मैं पृथिवी पर से उसे नाश करूंगा
तथापि मैं यअ़क़ूब के घराने को सर्व्वथा नाश न करूंगा परमेश्वर
९ कहता है। क्योंकि देख मैं आज्ञा करूंगा और मैं इसराएल के
घराने को सारे जातिगणों में चालूंगा जैसा कि कोई चलनी से
१० चालता है और भूमि पर एक किनका न गिरेगा। परन्तु मेरे
लोगों के सारे पापी तलवार से मारे जायेंगे जो कहते हैं कि
बुराई न तो पीछे से हम को पावेगी और न आगे से हम पर
आवेगी॥
११ उस दिन मैं दाऊद के गिरे हुए तंबू को खड़ा करूंगा
और उस के दरारों को सुधारूंगा और मैं उस के उजाड़ों को
१२ उठाऊंगा और प्राचीन दिनों की नाईं उसे बनाऊंगा। जिसतें
वे अदूम के रहे हुए लोगों को और उन सारे जातिगणों को
जिन पर मेरा नाम कहा जाता है अपने अधिकार में लेवें
परमेश्वर कहता है जो इस का कर्त्ता है॥
१३ देख वे दिन आते हैं परमेश्वर कहता है कि जोतवैया
लवैया के समान बढ़ेगा और दाख का लताड़ू बिहन के
बोवैये के समान और पर्व्वत मीठे दाखरस को टपकावेंगे और

१४ सारे पहाड़ पिघलेंगे। और मैं अपने लोग इसराएल की
बंधुवाई को फेर लाऊंगा और वे उजाड़ नगरों को बनावेंगे
और उन में बसेंगे और दाखों को लगावेंगे और उन का रस
पियेंगे और वे बारियों को लगावेंगे और उन के फल खायेंगे।
१५ और मैं उन्हें उन के देश पर लगाऊंगा और वे अपने देश पर
जिसे मैं ने उन्हें दिया फिर कधी उखाड़े न जायेंगे परमेश्वर
तेरा ईश्वर कहता है॥

अबदियाह

भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

१ अबदियाह का दर्शन। प्रभु परमेश्वर अदूम के विषय में यों
कहता है कि हम ने परमेश्वर से एक चर्चा सुनी है और
अन्यदेशियों में एक दूत भेजा गया है कि उठो और उस के विरुद्ध
संग्राम को चढ़ें॥
२ देख मैं ने तुझे अन्यदेशियों में छोटा किया है तू अति
३ निन्दित है। तेरे मन के घमंड ने तुझे बहकाया है हे तू
जो पर्बत के गुफाओं में बसता है जिस का निवास ऊंचा है जो
अपने मन में कहता है कि कौन मुझे भूमि पर उतारेगा।
४ यद्यपि तू आप को उक़ाब की नाईं उत्तुङ्ग करे और अपना बसेरा
तारों में बनावे तथापि मैं तुझे वहां से उतारूंगा परमेश्वर
५ कहता है। यदि चोर तेरे पास आवें अथवा बटमार रात को
तो तू कैसा नाश है क्या वे अघाये बिन न चोराते यदि दाख
के बटोरवैये तेरे पास आते तो क्या वे बिनिया दाख न छोड़
जाते॥
६ ऐसो की दशा कैसी चिताई गई उस के ढंके हुए स्थान
७ खोजे गये। तेरे सारे साथी लोगों ने तुझे सिवाने लों पहुंचाया

तेरे मिलापी लोगों ने तुझे छला है और तुझ पर प्रबल हुए
जिन्हों ने तेरी रोटी खाई उन्हों ने तेरे तले जाल बिछाया
है उस में कुछ समझ नहीं॥
८ उसी दिन परमेश्वर कहता है क्या मैं बुद्धिमानों को अदूम
९ से और ज्ञानियों को असौ के पर्वत से न मिटाऊंगा। और
हे तेमन तेरे बीर घबरा जायेंगे जिसतें असौ के पर्वत से हर
जीव बध से नष्ट किया जावे॥
१० उस अंधेर के लिये जो तू ने अपने भाई यअकूब से किया
लाज तुझे ढांपेगी और तू सदा लों नष्ट किया जायेगा।
११ जिस दिन तू साम्ने खड़ा हुआ जिस दिन में बिदेशी उस की
सेनाओं को बंधुवाई में ले गये और उपरी उस के फाटकों में
पैठ गये और यरूसलम पर चिट्ठी डाली तू भी उन में से एक
की नाई था॥
१२ अपने भाई के दिन में जिस दिन वुह परदेशी हो गया
तुझ को दृष्टि करना न चाहिये न उन के नाश होने के दिन
में यअकूब के संतानों पर आनन्द करना न कष्ट के दिन में
१३ तुझे अहंकार से बोलना। मेरे लोगों की बिपत्ति के दिन में
उन के फाटक से तुझे घुसना न चाहिये न उन की बिपत्ति के
दिन में उन के क्लेश पर दृष्टि करना न उन की बिपत्ति के
१४ दिन में उन की सम्पत्ति पर हाथ बढ़ाना। और चौराहे पर
खड़े होके उस के बचे हुओं को काट डालना न चाहिये न
कष्ट के दिन में उस के रहे हुओं को सौंप देना॥
१५ क्योंकि सारे जातिगणों पर परमेश्वर का दिन समीप है जैसा
तू ने किया है तैसा तुझ पर किया जायेगा तेरी करनी तेरे ही
१६ सीस पर पलटेगी। क्योंकि जिस भांति तुम ने मेरे पवित्र पर्वत
पर पीया है तिसी भांति सारे जातिगण सदा पीयेंगे हां पीयेंगे
और घूंट लेंगे और वे वैसे होंगे जैसे कि न थे॥

१७ पर सैहून पर्वत पर बचे हुए होंगे और वुह पवित्र होगा
१८ और यअकूब का घराना अपने अधिकारों को प्राप्त करेगा। और
यअकूब का घराना आग होगा और यूसुफ़ का घराना लवर और
ऐसौ का घराना खूंथा होगा और वे उन्हें बारेंगे और उन्हें भस्म
करेंगे और ऐसौ के घराने का कोई न बचेगा क्योंकि परमेश्वर
१९ ने कहा है। और दक्खिन के लोग ऐसौ के पर्वत को अधिकार
में लावेंगे और चौगान के लोग फ़िलिस्तियों को और वे इफ़रायम
के खेतों को और समरून के खेतों को अधिकार में लावेंगे और
२० बिनयमीन जिलिअद को। और इसराएल के संतानों के
बंधुओं की यह सेना जो कनआनियों में हैं सिफ़ारद लों
अधिकार में लावेंगे और यरूसलम के बंधुए जो सिफ़ारद में
२१ हैं दक्खिन के नगरों को। और सैहून पहाड़ पर ऐसौ पहाड़
के न्याय करने के लिये तारक चढ़ेंगे और राज्य परमेश्वर का
होगा॥

यूनः

भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ और परमेश्वर का बचन यह कहता हुआ अमित्ते के बेटे यूनः
२ के पास आया। कि उठ उस महा नगर नीनवः को जा और
३ उस पर पुकार क्योंकि उन की बुराई मेरे आगे पहुंची है। पर
यूनः उठा कि परमेश्वर के सन्मुख से तरसीस को भागे और
याफ़ा में उतरा और एक जहाज़ को जो तरसीस को जाने पर
था पाया और उस का भाड़ा देके उस पर चढ़ा जिसतें परमेश्वर
के सन्मुख से उन के संग तरसीस को जाये॥

४ परन्तु परमेश्वर ने समुद्र पर एक बड़ी बयार उतारी और
समुद्र पर बड़ी आंधी चली यहां लों कि जहाज़ टूटने पर
५ था। तब डांड़ी डर गये और हर एक ने अपने अपने देव
को पुकारा और जहाज़ हलुक करने को उन्हों ने उस में से
सामग्री को समुद्र में डाल दिया पर यूनः नाव के अलंगों में
उतर गया और लेटके भारी नींद में था॥

६ तब जहाज़ का मांझी उस के पास गया और उस्से कहा
कि यह क्या है कि तू भारी नींद में है उठ अपने ईश्वर को
पुकार क्या जानें परमेश्वर हमारी सुधि लेवे जिसतें हम नाश
न होवें॥

७ और वे आपस में कहने लगे कि आओ हम चिट्ठी डालें
और जानें कि किस के कारण से यह बुराई हम पर पड़ी है
और उन्हों ने चिट्ठी डाली और चिट्ठी यूनः के नाम पर निकली॥
८ तब उन्हों ने उस्से कहा कि अब तू हम को बता कि किस
कारण से यह बुराई हम पर पड़ी है तेरा उद्यम क्या है और
तू कहां से आया है तेरा देश कौन सा है और तू किस
९ जातिगण का है। और उस ने उन से कहा कि मैं इबरानी
हूं और परमेश्वर स्वर्ग के ईश्वर से डरता हूं जो जल थल का
सृजनहार है॥
१० और वे मनुष्य अति डर गये और उसे कहने लगे कि यह
तू ने क्या किया है क्योंकि उन्हों ने जाना कि वुह परमेश्वर के
सन्मुख से भागता था इस लिये कि उस ने उन से कहा था।
११ तब उन्हों ने उस्से कहा कि हम तुझ से क्या करें जिसतें
समुद्र हमारे लिये हलरे से थमे क्योंकि समुद्र आंधियाहा होता
१२ चला जाता था। तब उस ने उन से कहा कि मुझे उठाके
समुद्र में डाल दो और समुद्र तुम्हारे लिये हलरे से थम
जायेगा क्योंकि मैं जानता हूं कि मेरे कारण से यह बड़ी आंधी
तुम पर पड़ी है॥
१३ तथापि वे मनुष्य बड़े जत्न से खेवते गये कि तीर पर
पहुंचें पर न सके क्योंकि उन के बिरुद्ध समुद्र आंधियाहा होता
१४ गया। तब वे यह कहते हुए परमेश्वर को पुकारने लगे कि
हे परमेश्वर हम बिनती करते हैं कि इस मनुष्य के प्राण के
लिये हम नाश न होवें और निर्दोष रुधिर हम पर मत धर
१५ क्योंकि हे परमेश्वर जैसा तू ने चाहा वैसा तू ने किया। और
उन्हों ने यूनः को उठाके उसे समुद्र में डाल दिया और समुद्र
१६ अपने हलरने से थम गया। तब वे मनुष्य परमेश्वर से अति
डरे और परमेश्वर को बलि चढ़ाया और मानता मानी॥

१७ और परमेश्वर ने यूनः के लीलने को एक महा मच्छ ठहराया
और यूनः तीन रात दिन मच्छ के उदर में रहा ॥

दूसरा पर्व्व ।

१ और मच्छ के उदर में से यूनः ने परमेश्वर अपने ईश्वर से
प्रार्थना किई ॥
२ और कहा कि मैं ने अपने कष्ट के मारे परमेश्वर को पुकारा
और उस ने मेरा उत्तर दिया पाताल के भीतर से मैं चिल्लाया
३ और तू ने मेरा शब्द सुना है । और तू ने मुझे गहिराव में
समुद्र के मध्य में डाला है और बाढ़ ने मुझे घेरा है तेरी
४ सारी लहरें और तेरे ढेव मेरे ऊपर से बीत गये । तब मैं ने
कहा कि मैं तेरी दृष्टि से खेदा गया हूं तथापि मैं तेरे पवित्र
५ मन्दिर की ओर फिर ताकूंगा । प्राण लों जल मुझे लगता है
रसातल मुझे घेर लेता है सेवार मेरे सिर पर लिपट जाता
६ है । मैं पर्वतों के खोहों लों उतर जाता पृथिवी के अड़ंगे मुझ
पर सदा के लिये मुंदे हैं पर हे परमेश्वर मेरे ईश्वर तू मेरे
प्राण को गढ़हे से निकाल लावेगा ॥
७ जब मेरा प्राण मुझ में मूर्छित हुआ तब मैं ने परमेश्वर
को स्मरण किया और मेरी प्रार्थना तेरे पवित्र मन्दिर में तेरे
८ पास पहुंची । जो झूठे वृथों को मानते हैं वुह अपने दयाल
९ को त्यागते हैं । पर मैं धन्यबाद के शब्द से तुझ को बलि
चढ़ाऊंगा जो मनौती मैं ने मानी उसे पूरी करूंगा बचाव
परमेश्वर से है ॥
१० और परमेश्वर ने मच्छ को आज्ञा दिई और उस ने यूनः
को थल पर उगल दिया ॥

तीसरा पर्व्व ।

१ और परमेश्वर का वचन दूसरी बार यूनः के पास यह
२ कहते हुए आया । उठ उस महा नगर नीनवः को जा और
३ जो उपदेश मैं तुझ से कहूं उस को प्रचार । और यूनः उठा और
परमेश्वर के कहने के समान नीनवः को गया अब नीनवः
ईश्वर के आगे तीन दिन के मार्ग का एक महा नगर था ।
४ और यूनः एक दिन के मार्ग नगर में फिरने लगा और यह
कहके प्रचारा कि और चालीस दिन में नीनवः उलटाया जायेगा ॥
५ और नीनवः के लोगों ने ईश्वर की प्रतीति किई और ब्रत
६ प्रचारा और उन में बड़े से छोटे लों टाट पहिना । और यह
समाचार नीनवः के राजा के पास पहुंचा और वुह अपने
सिंहासन से उठा और अपना राजबस्त्र उतारके टाट ओढ़ा
७ और राख पर बैठ गया । और राजा और उस के महत जनों
की आज्ञा से नीनवः में यह कहके प्रचारा गया कि न मनुष्य
न ढोर न गाय न भेड़ कुछ चखें न खावें और न जल पीवें ।
८ पर मनुष्य और ढोर टाट से ओढ़ाये जावें और बल से परमेश्वर
की दोहाई देवें और हर एक अपने अपने कुमार्ग से और अपने
९ अपने अंधेर से जो उन के हाथों में है फिर जाये । क्या जानें
ईश्वर फिरे और पछतावे और अपने क्रोध के ताप से फिर जाये
कि हम नाश न होवें ॥
१० और ईश्वर ने उन के कार्य्यों को देखा कि वे अपने अपने
कुमार्ग से फिरे और ईश्वर उस बुराई से पछताया जो उन पर
लाने को उस ने कहा था और उस ने न किया ॥

चौथा पर्व्व ।

१ पर यूनः को यह अति बुरा समझ पड़ा और वुह बर

२ उठा। और यह कहते हुए उस ने परमेश्वर से प्रार्थना किई
कि हे परमेश्वर मैं बिनती करता हूं क्या यह मेरा बचन न
था जब मैं अपने देश में था इस लिये मैं आगे से तरसीस
को भागा क्योंकि मैं जानता था कि तू कृपाल और दयाल
ईश्वर है जो क्रोध में धीर और दया में बहुत और बुराई से
३ पछताता है। और अब हे परमेश्वर मैं बिनती करता हूं कि
मेरे प्राण को मुझ से ले ले क्योंकि मेरे लिये मरना जीने से
भला है॥

४ और परमेश्वर ने उस्से कहा कि क्या तू भला करता है जो
तू बर उठा है॥

५ और यूनः नगर से निकल गया और नगर के पूरब और
बैठ गया और वहां अपने लिये एक छप्पर बनाया और उस
के नीचे छाया में बैठ गया जब लों देखे कि नगर पर क्या
६ होगा। और परमेश्वर ईश्वर ने रेंड़ी का एक पेड़ ठहराया और
उसे यूनः पर उगाया जिसतें उस के सिर पर छाया करे और
उसे उस के दुख से बचावे और यूनः उस रेंड़ी के पेड़ के
कारण अति आनन्द से आनन्दित हुआ॥

७ पर दूसरे दिन जब भोर हुआ परमेश्वर ने एक कीड़ा
ठहराया और उस ने उस रेंड़ी के पेड़ को डसा ऐसा कि झुरा
८ गया। और जब सूर्य्य उदय हुआ तब ऐसा हुआ कि ईश्वर
ने एक बड़ी पुरबी पवन ठहराई और यूनः के सिर पर घाम
पड़ी और वुह मूर्छित हुआ और अपने लिये मृत्यु मांगी और
बोला कि मेरे लिये मरना जीने से भला है॥

९ और ईश्वर ने यूनः से कहा क्या तू भला करता है जो उस
रेंड़ी के पेड़ के लिये तू बर उठा है और उस ने कहा मैं
भला करता हूं जो मरने लों बर उठा॥

१० तब परमेश्वर ने कहा कि तू ने उस रेंड़ी के पेड़ के लिये

चिन्ता किई जिस के लिये तू ने परिश्रम न किया और न
११ उगाया जो रात ही में उगा और रात ही में नष्ट हुआ। और
क्या मैं नीनव: उस महा नगर की चिन्ता न करूंगा जिस में
एक लाख बीस सहस्र प्राणी से ऊपर हैं जो अपने दहिने हाथ
का बेवरा नहीं जानते और ढोर भी बहुत हैं ॥

मीकः
भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्व्व ।

१ परमेश्वर का वचन जो यहूदाह के राजा यूताम और आख़ज़
और हिज़क़ियाह के दिनों में मवरसती मीकः के पास आया
जो उस ने समरून और यरूसलम के बिषय में देखा ॥
२ सुनो हे सारे लोगो और कान धरो हे पृथिवी और उस की
भरपूरी और प्रभु परमेश्वर तुम्हारे बिरुद्ध साक्षी देवे हां प्रभु
३ अपने पवित्र मन्दिर से। क्योंकि देख परमेश्वर अपने स्थान से
निकलता है और वुह उतरेगा और पृथिवी के ऊंचे स्थानों पर
४ पांव धरेगा। और पर्वत उस के नीचे पिघल जायेंगे और तराई
फट जायेंगी जैसा कि मोम आग से और जैसा कि जल कंढला
से उंडेला जाता है ॥
५ यह सब यअ़क़ूब के अपराध के लिये और इसराएल के घराने के
पापों के लिये है यअ़क़ूब का अपराध क्या है क्या समरून नहीं और
६ यहूदाह के ऊंचे स्थान क्या हैं क्या यरूसलम नहीं। इस लिये
मैं समरून को खेत के एक ढेर की नाईं बनाऊंगा और लगाई
हुई दाख बारी की नाईं और मैं उस के पत्थरों को तराई में
७ ढुलकाऊंगा और उस की नेवों को उघारूंगा। और उस की सारी
मूर्त्तें टुकड़े टुकड़े किई जायेंगी और उस की सारी ख़रचियां
आग में जलाई जायेंगी और उस की सारी मूर्त्तों को मैं उजाड़

कहूंगा क्योंकि उस ने वेश्या की ख़रची से बटोरा है और वे
वेश्या की ख़रची के लिये फिर जायेंगे ॥
८ इस लिये मैं हाय हाय माहूंगा और बिलाप कहूंगा मैं
उघारा और नंगा फिहूंगा गीदड़ों की नाईं चिल्ला उठूंगा और
९ शुतुरमुरगों की नाईं कुढ़ूंगा । क्योंकि उस का घाव असाध्य है
कि वुह यहूदाह को आया है वुह मेरे लोगों के फाटक पर
यरूसलम लों पहुंचा है ॥
१० तुम जअ़त में मत प्रचारो रो रो बिलाप न करो बेतअ़फ़र:
११ में धूल में अपने को लोटाओ। हे सफ़ीर की निवासिनी नग्न और
घबराई हुई चली जा ज़ानान की निवासिनी निकल नहीं जाती
बेतुलअसल का कुढ़ना अपने टिकने का स्थान तुम से लेगा ।
१२ क्योंकि मुररात की निवासिनी अपनी सम्पत्ति के लिये लुटी जाती
है क्योंकि परमेश्वर की ओर से बुराई यरूसलम के फाटक लों
१३ उतरी है। हे लकीस की निवासिनी पवनगामी को रथ में जोतो
वही सेहून की कन्या के लिये पाप का आरंभ था क्योंकि
१४ इसराएल के अपराध तुझी में पाये गये। इस लिये तू
मोरिसतजात को त्यागपत्र देगा अकज़ीब के घराने इसराएल
१५ के राजों के लिये झूठे ठहरेंगे। मैं तुझ पर भी एक अधिकारी
लाऊंगा हे मरीसः की निवासिनी वुह अ़दूलाम को आवेगा जो
१६ इसराएल का प्रताप है । गंजी हो जा और अपने प्यारे लड़कों
के लिये अपना सिर मुंडा उक़ाब की नाईं अपने गंज को बढ़ा
क्योंकि वे तुझ से बंधुवाई में गये हैं ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ सन्ताप उन पर जो अधर्म्म की युक्ति करते हैं और अपने
बिछौने पर बुराई की जुगत बांधते हैं और बिहान होते ही
उसे क्रिया करते हैं क्योंकि वुह उन के हाथ के बस में है ।

२ और वे खेतों का लाभ करते हैं और अंधेर से उन्हें बस में
करते हैं और घरों का और उन्हें ले लेते हैं वे महाजन और
उस घराने को सताते हैं हां मनुष्य और उस के अधिकार
को ॥

३ इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं इस कुटुम्ब
पर बुराई की जुगत करता हूं कि जिस्से तुम अपने गले को
न खींचोगे और तुम उत्तुङ्ग न चलोगे क्योंकि वुह बुरा समय
४ होगा। उसी दिन कोई तुम्हारे विषय में कहावत उठावेगा
और यह कहते हुए हाय हाय से बिलाप करेगा कि हम सर्बथा
नष्ट हुए हैं उस ने मेरे लोगों के भाग को पलट डाला है उस
ने मुझ से कैसा ले लिया है एक धर्म्मत्यागी को उस ने हमारे
५ खेतों को बिभाग किया। इस लिये तेरे लिये कोई न होगा
जो परमेश्वर की मंडली में चिट्ठी की रस्सी डाले ॥

६ भविष्य न कहो वे भविष्य कहेंगे जो ऐसी बातों का भविष्य
७ न कहेंगे निन्दा टल नहीं जाती। हे इसराएल के घराने ये
कैसी बातें हैं क्या परमेश्वर का आत्मा सकेत है क्या यह उस
के कार्य्य हैं क्या उस के लिये जो खराई से चलता है मेरे
८ वचन भले नहीं। पर सनातन से मेरे लोग बैरी की नाईं उठे
हैं जो लोग कुशल से बीत जाते हैं जो लड़ाई से फिर आते
हैं तुम उन पर से कुर्ते को चादर समेत उतार लेते हो।
९ तुम मेरे लोगों की स्त्रियों को उन के मन भावत घर से
निकास देते हो और उन के बालकों से मेरे बिभव को सर्बदा
१० के लिये ले लेते हो। उठो और चलो क्योंकि यह तुम्हारा
बिश्राम स्थान नहीं है कि अशुद्धता के कारण वुह तुम्हें बिनाश
११ करेगा हां महा नाश से। यदि कोई बौड़हा और मिथ्या मनुष्य
झूठ कहे कि मैं दाखरस और तीक्ष्ण मदिरा का भविष्य कहूंगा
तो वही इस लोग का भविष्यद्वक्ता होगा ॥

१२ हे यअकूब मैं निश्चय तेरे सब के सब बटोरूंगा मैं
इसराएल के बचे हुओं को निश्चय एकट्ठा करूंगा मैं उन्हें
बूसरः की भेड़ की नाईं एकट्ठा रक्खूंगा उस झुंड की नाईं जो
अपनी चराई के मध्य में है मनुष्यों की बहुताई से वे हुल्लड़
१३ करेंगे । तोड़नेवाला उन के आगे आगे चढ़ जाता है वे
तोड़ते हुए फाटक से बीत जाते और निकल जाते हैं और
उन का राजा उन के आगे आगे चलता है अर्थात् परमेश्वर
उन की अगुवाई में ॥

तीसरा पर्व्व ।

१ और मैं ने कहा कि हे यअकूब के अध्यक्षो और इसराएल
के घराने के अगुओ मैं बिनती करता हूं कि सुनो क्या तुम
२ को बिचार जान्ना नहीं । जो भलाई से बैर रखते हो और
बुराई से प्रीति जो उन की खाल उन पर से उतारते हो और
३ उन का मांस उन के हाड़ों पर से । और जो मेरे लोगों का मांस
खाते हैं और उन की खाल उन पर से खींच लेते हैं और
उन के हाड़ों को टूक टूक करते हैं और उन्हें अलग कर देते
हैं जैसा कि हांड़ी में और जैसा कि मांस जो हंडा में है ।
४ तब वे परमेश्वर की दोहाई देंगे पर वुह उन की न सुनेगा
और वुह उसी समय अपना मुंह उन से छिपावेगा क्योंकि
उन्हों ने अपने कामों को बुरा किया ॥

५ परमेश्वर उन भविष्यद्वक्तों के विषय में यों कहता है जो
मेरे लोगों को भटकाते हैं जो अपने दांतों से काटते हैं और
कुशल पुकारते हैं और जो कोई उन के मुंह में कुछ नहीं देते
६ हैं और वे उस्से धर्म्म संग्राम करेंगे । इसी लिये रात बिना दर्शन
तुम पर होगी और अंधियारा बिना बने तुम पर होगा और
भविष्यद्वक्तों पर सूर्य्य अस्त होगा और उन पर दिन अंधियारा

७ हो जायेगा। तब दर्शनिक लज्जित होंगे और टोन्हे गड़बड़ा
जायेंगे हां वे सब के सब अपना होंठ ढांपेंगे क्योंकि ईश्वर से
८ कुछ उत्तर नहीं है। पर निश्चय मैं पराक्रम से परमेश्वर के
आत्मा से परिपूर्ण हूं हां न्याय और सामर्थ्य से कि यअक़ूब
पर उस का अपराध और इसराएल पर उस का पाप प्राचरूं॥
९ मैं बिनती करता हूं कि सुनो हे यअक़ूब के घराने के
अध्यक्षो और इसराएल के घराने के अगुओ जो न्याय से घिनाते
१० हो और सारे सुविचार को उलट देते हो। जो सेहून को
११ लोहू से और यरूसलम को अनीत से बनाते हो। उस के
अध्यक्ष घूस के लिये बिचारते हैं और उस के याजक बनी के
लिये सिखाते हैं उस के भविष्यद्वक्ते भी चांदी के लिये टोना
करते हैं तथापि यह कहते हुए वे परमेश्वर पर टिकते हैं कि
क्या परमेश्वर हमारे मध्य नहीं है बिपत्ति हम पर न आवेगी।
१२ निश्चय तुम्हारे कारण सेहून खेत की नाईं जोता जायेगा और
यरूसलम ढेर ढेर बन जायेगा और मन्दिर का पहाड़ बन के
ऊंचे स्थानों की नाईं॥

चौथा पर्व्व।

१ पर अन्त के दिनों में ऐसा होगा कि परमेश्वर के घर का पहाड़
पहाड़ों की चोटी पर स्थिर होगा और वुह सब टीलों से ऊंचा
२ किया जायेगा और लोग उस की ओर बहे जायेंगे। और बहुत
जातिगण आवेंगे और कहेंगे कि चलो हम परमेश्वर के पहाड़
को चढ़ जायेंगे और यअक़ूब के ईश्वर के घर को जिसतें वुह
हमें अपने मार्ग सिखावे और हम उस के पंथों पर चलें क्योंकि
सेहून से व्यवस्था निकलेगी और यरूसलम से परमेश्वर का
३ बचन। और वुह बहुत से लोगों के मध्य में बिचार करेगा
और दूर के बलवंत जातिगणों को डांटेगा और वे अपनी

तलवारों को तोड़के फार बनावेंगे और अपने भालों को हंसुवे
जातिगण जातिगण पर तलवार नहीं उठावेंगे और वे फिर कभी
४ संग्राम न सीखेंगे। और वे बैठेंगे हर एक अपने दाखलता के
नीचे और अपने अपने गूलर पेड़ तले और उन्हें कोई न डरावेगा
५ क्योंकि सेनाओं के परमेश्वर का मुख बचन है। क्योंकि सारे
लोग हर एक अपने अपने देव के नाम से चलेंगे और हम
परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम से सदा सर्वदा लों चलेंगे॥
६ उसी दिन में परमेश्वर कहता है मैं लंगड़ों को एकट्ठा
करूंगा और निकाले हुओं को बटोरूंगा और उन्हें जिन को मैं
७ ने कष्ट दिया। और मैं लंगड़ों को उबरे हुए बनाऊंगा और
दूर किये हुओं को बलवन्त जातिगण और अभी से सर्वदा लों
परमेश्वर सैहून पहाड़ में उन पर राज्य करेगा॥
८ और हे झुंड के गढ़ हे सैहून की कन्या के टीले तुझ को होगा
हां अगिली प्रभुता आवेगी यरूसलम की कन्या का राज्य॥
९ अब तू क्यों चिल्लाती है क्या तुझ में कोई राजा नहीं है
क्या तेरा मंत्री नष्ट हुआ क्योंकि जन्नेवाली स्त्री की पीड़ें तुझे
१० लगी हैं। हे सैहून की पुत्री जन्नेवाली स्त्री की नाईं पीड़ें उठा
और जन डाल क्योंकि अब तू नगर से बाहर जायेगी और
चौगान में रहेगी हां तू बाबुल को जायेगी वहां तू बचाव
पावेगी वहां परमेश्वर तुझे तेरे बैरियों के हाथ से छोड़ावेगा॥
११ और अब बहुत से जातिगण तेरे विरुद्ध एकट्ठे हैं जो कहते
हैं कि वुह अशुद्ध होवे और हमारी आंखें सैहून पर लगें।
१२ पर वे लोग परमेश्वर की चिंतों को नहीं जानते और उस का
अभिप्राय नहीं समझते क्योंकि वुह उन्हें गट्ठों की नाईं
१३ खलिहान में बटोरेगा। हे सैहून की पुत्री उठके लताड़ क्योंकि
मैं तेरे सींग को लोहा और तेरे खुरों को पीतल बनाऊंगा और
तू बहुत जातिगणों को टुकड़ा टुकड़ा करेगी और उन की

प्राप्ति परमेश्वर को और उन की सम्पत्ति समस्त पृथिवी के प्रभु
को तू समर्पण करेगी ॥

पांचवां पर्ब्ब ।

१ हे जथान की पुत्री बहुताई से अब आप को एकट्ठी कर
उन्हों ने हमें घेर रक्खा है उन्हों ने इसराएल के न्यायी को
गाल पर छड़ी मारी है ॥
२ और तू हे बेतलहम इफ़रातह यद्यपि तू यहूदाह के सहस्रों
में छोटा है तथापि तुझ में से मेरे लिये वुह निकलेगा जो
इसराएल में महीप होगा जिस का निकलना पुरातन से सनातन
दिनों से होगा ॥
३ इस लिये वुह उन्हें उस समय लों सौंपेगा जब कि जो
जनती है जन डालेगी तब उस के भाइयों के उबरे हुए इसराएल
४ के संतानों के पास फिरेंगे । और वुह खड़ा होगा और परमेश्वर
के बल से चरावेगा हां परमेश्वर अपने ईश्वर के नाम की महिमा
से और वे ठहरेंगे क्योंकि अब वुह पृथिवी के अंतों लों महान
५ होगा । और यह हमारा कुशल होगा और जब असूरी हमारे
देश में आवेगा और हमारे भवनों में पांव रक्खेगा तब हम
६ उस के विरुद्ध सात गड़रिये और आठ अध्यक्ष उठावेंगे । और
वे असूरी के देश को तलवार से उजाड़ करेंगे और निमरूद
के देश को उस के पैठों लों और असूरी से बचाव होगा जब
वुह हमारे देश में आवेगा और हमारे सिवाने में अपना पांव
रक्खेगा ॥
७ और यअ़कूब के उबरे हुए बहुत से जातिगणों के मध्य में
ऐसे होंगे जैसी ओस परमेश्वर से और जैसी झड़ी घास पर जो
मनुष्य के लिये नहीं ठहरती और मनुष्यों के संतानों के लिये
८ नहीं रहती । और यअ़कूब के उबरे हुए जातिगणों में बहुत

से लोगों के मध्य में ऐसे होंगे जैसा सिंह बन के पशुओं में
और जैसा युवा सिंह भेड़ के भुंडों में कि जब उन में से जाता
है तब लताड़ता और फाड़ डालता है और कोई छोड़ानेवाला
९ नहीं है। तेरा हाथ तेरे बैरियों पर उत्तुङ्ग होगा और तेरे
सारे शत्रु काटे जायेंगे॥

१० और उसी दिन में ऐसा होगा परमेश्वर कहता है कि मैं
तेरे मध्य में से तेरे घोड़ों को काट डालूंगा और तेरे रथों को
११ बिनाश करूंगा। और मैं तेरे देश के नगरों को काट डालूंगा
१२ और तेरे सारे गढ़ों को ढाह दूंगा। और मैं तेरे हाथ में से
१३ उच्चाटनों को काट डालूंगा और तुझ में टोन्हे न होंगे। और
तेरी गढ़ी हुई मूरतों को और तेरी प्रतिमों को तेरे मध्य में से
काट डालूंगा और तू अपने हाथों के कार्य्य को फिर कभी न
१४ पूजेगा। और मैं तेरी असीरतों को तेरे मध्य में से उखाड़
१५ डालूंगा और तेरे नगरों को उजाड़ करूंगा। और मैं कोप और
जलजलाहट से उन जातिगणों से पलटा लूंगा जिन्हों ने नहीं
माना॥

छठवां पर्ब्ब।

१ जो परमेश्वर कहता है सो सुनो अब उठ पर्बतों के आगे
बिवाद कर और टीले तेरा शब्द सुनें॥

२ हे पर्बतो और पृथिवी की दृढ़ नेवो परमेश्वर का बिवाद
सुनो क्योंकि परमेश्वर का बिवाद अपने लोगों से है और वुह
इसराएल से वादानुवाद करेगा॥

३ हे मेरी जाति मैं ने तुझ से क्या किया है और किस बात
४ में मैं ने तुझे थकाया है मुझ पर साची दे। क्योंकि मैं तुझे
मिस्र देश से चढ़ा लाया और बंधुओं के घर से तुझे छोड़ाया
और मैं ने तेरे आगे मूसा और हारून और मिरयम को भेजा॥

५ हे मेरी जाति स्मरण कर कि मोआब के राजा बलक़ ने
क्या परामर्श किया और बऊर के बेटे बलआम ने उसे क्या
उत्तर दिया स्मरण कर कि क्या हुआ सत्तीम से जिलजाल लों
जिसतें परमेश्वर के धर्म्म को जाने ॥
६ मैं क्या लेके परमेश्वर के समीप आऊं और महेश्वर के आगे
दंडवत करूं क्या मैं बलिदान की भेंटों और एक बरस के बछड़ों
७ को लेके उस के आगे आऊं। क्या परमेश्वर सहस्र मेढ़ों से अथवा
दस सहस्र नदी तेल से प्रसन्न होगा क्या मैं अपने पहिलौठे को
अपने अपराध के लिये देऊं अपने कोख के फल को अपने प्राण
के पाप के लिये ॥
८ हे मनुष्य जो भला है परमेश्वर ने तुझे बताया है और
परमेश्वर तुझ से और क्या चाहता है कि तू न्याय करे और
दया से प्रीति रक्खे और अपने ईश्वर के साथ दीनताई से चले ॥
९ परमेश्वर का शब्द नगर को पुकारता है और जो बुद्धिमान
१० है उसे ठहराया है। क्या अब लों दुष्ट के घर में दुष्टता के भंडार हैं
११ और हलुक स्रापित बटखरा हैं। क्या दुष्टता की तुला और छल के
१२ बटखरे रखते हुए मैं पवित्र हूं। क्योंकि उस के धनवान लोग
लूटपाट से भरे हैं और उस के निवासी झूठ बोलते हैं और
उन के मुंह में उन की जीभ छली है ॥
१३ और मैं भी तुझे असाध्य से मारूंगा और तेरे पापों के
१४ कारण तुझे उजाड़ करूंगा। तू खायेगा पर तृप्त न होगा और
तेरे मध्य में उदासी होवेगी तू ले जायेगा पर न छोड़ावेगा और
१५ जो कुछ तू छोड़ावेगा मैं तलवार को सौंपूंगा। तू बोवेगा पर
न लवेगा तू जलपाई को रौंदेगा पर तेल से आप को न मलेगा
१६ और नये दाख को पर न पीयेगा। क्योंकि उमरी की रीति
चलाव हैं और अख़िअब के घराने की सारी क्रिया और तुम
उन के परामर्शों में चलते हो जिसतें मैं तुझे उजाड़ के लिये

बनाऊं और उस के निवासियों को फुफकार के लिये इस लिये
तुम मेरे लोगों की निन्दा उठाओगे॥

सातवां पर्ब्ब।

१ हाय मुझ पर क्योंकि मैं ऐसा हूं जैसा कि जब लोग ग्रीष्म
के फल बटोरते हैं जैसा कि जब दाख बीना गया खाने को
कच्चा नहीं है अधपक्का गूलर नहीं है जिसे मेरा प्राण चाहता
२ है। भला जीव देश में से नष्ट हुआ और मनुष्यों में कोई
खरा नहीं है वे सब के सब लोहू के लिये घात में रहते हैं हर
एक जन जाल से अपने अपने भाई को अहेर करता है।
३ उन के हाथ बुराई करने को ठीक सिद्ध हैं राजपुत्र भेंट
मांगता है न्यायी भी और महत जन अपने मन की तृष्णा
४ उच्चारता है वे बुरा बंधन बांधते हैं। उन में से जो सब से
भला है झड़बेरी की नाईं है और जो सब से खरा है कंटीले
बाड़े से चोखा है तेरे रखवालों का दिन हां तेरे पलटों का
५ दिन आता है अब उन की व्याकुलता होगी। मित्र पर बिश्वास
न करो प्रीतम पर भरोसा मत रक्खो उस्से जो तेरे गोद में
६ लेटती है अपने मुंह के केवाड़े बंद रख। क्योंकि पुत्र पिता
की निन्दा करता है और पुत्री अपनी माता के बिरुद्ध उठती
है और पतोह अपनी सास के बिरुद्ध मनुष्य के शत्रु उस के
घराने के लोग हैं॥
७ पर मैं परमेश्वर की ओर ताकूंगा मैं अपने मोक्ष के ईश्वर
का मार्ग ताकूंगा मेरा ईश्वर मेरी सुनेगा॥
८ हे मेरे बैरी मुझ पर आनन्द मत कर यद्यपि मैं गिरा हूं
तथापि मैं उठूंगा यद्यपि मैं अंधियारे में बैठा हूं तथापि परमेश्वर
९ मेरे लिये उंजियाला होगा। मैं परमेश्वर की जलजलाहट
सहूंगा क्योंकि मैं ने उस के बिरुद्ध पाप किया है जब लों वुह

मेरे पद के लिये बिवाद न करे और मेरे लिये न्याय न करे
वुह मुझे उंजियाले में लावेगा और मैं उस का धर्म्म देखूंगा।
१० तब मेरी शत्रुणी देखेगी और लाज उसे ढांपेगी जिस ने मुझ
से कहा कि परमेश्वर तेरा ईश्वर कहां है मेरी आंखें उसे देखेंगी
अब वुह सड़क की कीच की नाईं लताड़ी जायेगी॥
११ जिस दिन तेरी भीतें बनाई जायेंगी उसी दिन तेरी आज्ञा
१२ दूर लों पहुंचेगी। उसी दिन लोग तेरे पास आवेंगे असूर से
मिस्र लों और मिस्र से नदी लों और समुद्र से समुद्र लों और
१३ पर्वत से पर्वत लों। तथापि देश उजाड़ होगा अपने निवासियों
के कारण उन की करनी के फल के लिये॥
१४ अपनी गोदी से अपने लोगों को चरा अपने अधिकार के
झुंड को जो बन में एकान्त में रहते हैं करमिल के मध्य में
उन्हें बसने और जिलिअद में पुरातन दिनों की नाईं चरने दे॥
१५ मिस्र देश से निकालने के दिनों की नाईं मैं उस को
१६ आश्चर्य्यित बस्तें दिखाऊंगा। जातिगण देखेंगे और अपने सारे
बल के लिये घबरा जायेंगे वे मुंह पर हाथ रक्खेंगे और उन
१७ के कान बहिरे होंगे। वे सर्प की नाईं धूल चाटेंगे वे पृथिवी
के रेंगवेये जन्तु की नाईं अपने छिपे हुए स्थानों से थर्थरावेंगे
वे परमेश्वर हमारे ईश्वर की ओर धावेंगे और वे तुझ से डरेंगे॥
१८ तुझ सा ईश्वर कौन है जो बुराई को क्षमा करता है और
अपने अधिकार के उबरे हुओं के अपराध से बीत जाता है
वुह अपना क्रोध सदा लों नहीं रखता क्योंकि वुह दया से
१९ आनन्दित है। वुह लौटेगा वुह हम पर कृपा करेगा वुह
हमारी बुराइयों को दबावेगा और तू उन के सारे पापों को
२० समुद्र के गहिराव में डालेगा। तू यअकूब से सच्चाई और
अबिरहाम पर दया करेगा जो तू ने पुरातन दिनों से हमारे
पितरों से किरिया खाई थी॥

नहूम
भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ नीनव: के विषय में भविष्यवाणी इलकूशी नहूम के दर्शन
की पुस्तक॥
२ परमेश्वर ज्वलित और पलटा लेनेहारा ईश्वर है परमेश्वर
पलटा लेता है और कोपमय है परमेश्वर अपने शत्रुओं से पलटा
३ लेता है और अपने बैरियों के लिये क्रोध रखता है। परमेश्वर
क्रोध में धीमा है पर बल में महान वुह पापिन को निष्पापी
नहीं ठहरावेगा परमेश्वर का मार्ग बवंडर और आंधी में है
४ और मेघ उस के चरणों की धूल हैं। वुह समुद्र को डांटता
और उसे सुखाता है और वुह सारी नदियों को सुखाता है
बसन कुम्हलाता है और करमिल और लुबनान का फूल
५ कुम्हलाता है। उस्से पर्व्वत थर्थराते हैं और टीले पिघल जाते
हैं और देश उस के सन्मुख उछलता है हां जगत और उस
६ के सारे निवासी। उस की जलजलाहट के आगे कौन खड़ा
हो सक्ता है और उस के क्रोध की तपन में कौन ठहरता है
उस का कोप आग की नाईं उंडेला जाता है और उस्से चटान
ढाये जाते हैं॥
७ परमेश्वर भला है विपत्ति के समय वुह गढ़ के लिये है और
८ वुह उन्हें जानता है जो उस पर आसरा रखते हैं। पर बाढ़

के रेले से वुह उस के स्थान का अन्त करेगा और अंधियारा
उस के बेरियों को खदेगा ॥
९ तुम परमेश्वर के विरुद्ध क्या युक्ति बांधते हो वुह अन्त
१० करेगा विपत्ति दूसरी बेर न उठेगी। यद्यपि वे लिपटे हुए कांटों
की नाईं हैं अपने मद से मतवाले हैं तथापि अति सूखी खूंटी
११ की नाईं भस्म किये जायेंगे। तुझ से कुमंत्री निकला जिस ने
१२ परमेश्वर के बिरुद्ध बुरी युक्ति बांधी है। परमेश्वर यों कहता
है यद्यपि वे कुशल से हैं और गिनती में ढेर तथापि वे इस
रीति से काटे जायेंगे और वुह लील जायेगा यद्यपि मैं ने तुझे
१३ दुख दिया तथापि मैं फिर तुझ को दुख न दूंगा। क्योंकि
अब मैं तुझ पर से उस का जूआ तोड़ूंगा और तेरे बंधनों को
झटक डालूंगा ॥
१४ और परमेश्वर ने तेरे बिषय में आज्ञा किई कि तेरे नाम से
और कोई बोया न जायेगा मैं तेरे देवों के घर से खोदी हुई
मूर्त्ति को और ढाली हुई मूर्त्ति को काट डालूंगा मैं उसे तेरी
समाधि ठहराऊंगा क्योंकि तू नीच है ॥
१५ उस के पांव पर्बतों पर देख जो मंगल समाचार लाता और
कुशल प्रचारता है हे यहूदाह अपने पर्ब्ब रख अपनी मनौतियां
पूरी कर क्योंकि वुह दुष्ट तुझ से फिर बीत न जायेगा वुह
सर्बथा काट डाला जायेगा ॥

दूसरा पर्व्व।

१ जो तितर बितर करता है सो तेरे सन्मुख चढ़ आया है
गढ़ की रखवाली कर मार्ग अगोर कटि दृढ़ कर पराक्रम को
२ अति स्थिर कर। क्योंकि इसराएल की उत्तमता की नाईं परमेश्वर
यअकूब की उत्तमता को फेर लावेगा क्योंकि उजाड़ियों ने उन्हें
उजाड़ा है और उन की डालियों को नष्ट किया है ॥

३ उस के बलवंतों की ढाल लाल है वीर रक्त बस्त्र ओढ़े हैं
उस के लैस होने के दिन में रथ कटार की आग की नाईं
४ चमकते हैं और भाले हिलाये जाते हैं। सड़कों में रथ हौरा
मचाते हैं चौड़े स्यानों में वे धावा मारते हैं वे दीयों की नाईं
दिखाई देते हैं वे बिजली की नाईं दौड़ते हैं॥
५ वुह अपने श्रेष्ठों को स्मरण करता है वे अपने चलने में
ठोकर खाते हैं वे भीत की ओर फुरती करते हैं और आड़
६ सिद्ध किया जाता है। नदियों के फाटक खुले हैं और भवन
७ गल जाता है जो निपट दृढ़ था। वुह नंगी किई जाती है
वुह बंधुवाई में पहुंचाई जाती है और उस की सखियां कपोत
८ के शब्द से कुढ़ती हैं और वे अपनी छाती पीटें। और प्राचीन
दिनों से नीनवः जल के सरोवर की नाईं हुआ पर वे भागते
हैं वे चिल्लाते हैं कि ठहरो ठहरो पर कोई अपना मुंह नहीं
फेरता॥
९ चांदी को लूटो सोने को लूटो उस के भंडार का अन्त नहीं
१० है। सारे वांछित पात्रों की बहुताई है वुह छूछी और शून्य
और उजाड़ है और मन पिघलता है और घुटने कांपते हैं
और सारी कटि में अति पीड़ा है और उन सभों के मुखों का
रंग बदल जाता है॥
११ सिंहनियों का निवास कहां है और युवा सिंहों का भोजन
स्थान कहां है जहां सिंह और सिंहनी फिरते थे और उस का
१२ बच्चा भी और कोई उन्हें न डराता था। सिंह ने अपने बच्चों
के लिये विशेष फाड़ा और अपनी सिंहनियों के लिये गला घोंटा
और अपने मांदों को अहेर से और अपने निवासों को आखेट
से भर दिया॥
१३ देख मैं तेरे बिरुद्ध हूं सेनाओं का परमेश्वर कहता है और मैं
उस के रथों को धूंआ में जलाऊंगा और तलवार तेरे युवा सिंहों

को खायेगी और मैं देश से तेरा अहेर काट डालूंगा और तेरे
दूतों का शब्द फिर सुना न जायेगा ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ हाय रुधिर के नगर पर वुह छल और अंधेर से सर्वत्र
२ भरा है अहेर नहीं सिधारता है। कोड़े का शब्द और पहियों के
खड़खड़ाने का शब्द घोड़ों का टापना और रथों का उछलना।
३ घोड़चढ़ों का चढ़ना तलवार की चमक और भाले की झलक
जूझे हुओं की मंडली और लोथों का ढेर उन के लोथों का
अन्त नहीं है वे उन के लोथों पर ठोकर खाते हैं ॥
४ सुरूप छिनाल के छिनाले की बहुताई के कारण जो मोहने
में निपुण है जिस ने जातिगणों को अपने छिनालपनों से और
५ गोतियों को अपने मोहने से बेचा है। देख मैं तेरे बिरुद्ध हूं
सेनाओं का परमेश्वर कहता है और मैं तेरे मुंह से तेरा अंचरा
उघारूंगा और मैं जातिगणों को नंगापन और राज्यों को तेरी
६ लाज दिखाऊंगा। और मैं तुझ पर बिष्ठा डालूंगा और तुझे
७ तुच्छ करूंगा और तुझे अंगूठा सा न ठहराऊंगा। और ऐसा
होगा कि हर एक जो तुझे देखेगा सो तुझ से भागेगा और
कहेगा कि नीनव: उजाड़ हुआ है कौन उस के लिये कुढ़ेगा
मैं तेरे लिये कहां से शान्तिदायक ढूंढ लाऊं ॥
८ क्या तू नोअमून से भला है जो नदियों के मध्य में बसा था जल
उस की चारों ओर था जिस की आड़ समुद्र था और उस की
९ भीत समुद्र पर थी। कूश और मिस्र उस का बल था और वे
१० अगिनित थे फूत और लूबीम तेरे सहायक थे। तिस पर वुह
बंधुवाई के लिये थी वुह बंधुवाई में गई उस के बच्चे भी सारी
गलियों के सिरे पर पटके गये और उस के आदरमानों के लिये उन्हों
ने चिट्ठियां डालीं और उस के सारे बली लोग सीकरों से जकड़े गये॥

११ तू भी मदमाती होगी तू आप को छिपावेगी तू बैरियों से
१२ भी सरन ढूंढेगी। तेरे सारे गढ़ गूलर पेड़ की नाईं हैं जिस
के अधपक्के फल हैं यदि हिलाये जायें तो खवैये के मुंह में
१३ गिरेंगे। देख तेरे लोग तेरे मध्य में स्त्रियां हैं तेरे देश के
फाटक तेरे बैरियों के लिये सर्व्वच खोले जायेंगे आग तेरे
अड़ंगों को भस्म करेगी॥

१४ घेरे के लिये जल भरो अपने गढ़ों को पोढ़ करो कीचड़ में
१५ पैठो और गारे को लताड़ो पैजावे को पोख करो। वहां आग
तुझे भस्म करेगी तलवार तुझे काट डालेगी वुह तुझे चाटनेवाली
टिड्डी की नाईं खा लेगी जो तू अपने को टिड्डी की नाईं बढ़ावे
१६ जो तू अपने को बटोरी हुई टिड्डी की नाईं बढ़ावे। तू ने
अपने बेपारियों को आकाश के तारों से अधिक बढ़ाया चाटनेवाली
१७ टिड्डी चढ़ आई और उड़ गई। तेरे मुकुटधारी बटोरी हुई
टिड्डी की नाईं थे और तेरे अध्यक्ष सब से बड़ी टिड्डियों की
नाईं थे जो ठंढे दिन में बाड़े में रहते हैं सूर्य्य उदय होते
ही वे उड़ जाती हैं और उन का स्थान नहीं जाना जाता
१८ जहां टिकती हैं। हे असूर के राजा तेरे गड़ेरिये सोते हैं
तेरे कुलीन चैन से रहते हैं तेरे लोग पर्व्वतों पर बिथरे हैं
१९ और उन्हें बटोरने को कोई नहीं है। तेरे नाश का बन्ना नहीं
है तेरा घाव कड़ा है सब जो तेरा संदेश सुनेंगे तुझ पर ताली
बजावेंगे क्योंकि किस पर तेरी दुष्टता सदा नहीं बीत गई॥

हबक्कूक
भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ वुह भविष्यबाणी जो हबक्कूक भविष्यद्वक्ता ने देखी।
२ हे परमेश्वर मैं कब तक पुकारूं और तू न सुने तेरे आगे अंधेर से
३ दोहाई दूं और तू न बचावे। तू क्योंकर मुझे बुराई देखने
देता है तू क्यों अनीति पर दृष्टि करता है क्योंकि लूट और
अंधेर मेरे आगे हैं और वे लोग हैं जो टंटा और बखेड़ा उठाते
४ हैं। इस लिये व्यवस्था ढीली हुई है और सत न्याय नहीं निकलता
क्योंकि धर्म्मी को दुष्ट घेरते हैं इस लिये अनीति निकलती है॥
५ जातिगणों के मध्य देखो और दृष्टि करो बहुत आश्चर्य्य
मानो क्योंकि मैं तुम्हारे दिनों में एक ऐसा कार्य्य करूंगा कि
६ यद्यपि तुम्हें कहा जाये तथापि तुम प्रतीत न करोगे। क्योंकि
देखो मैं कसदियों को उठाऊंगा वे तीत मुख और फुरतीले
जातिगण हैं जो पृथिवी की चौड़ाई पर से जायेंगे कि उन
७ निवासस्थानों को अधिकार करें जो उन के नहीं हैं। वे
भयंकर और भयानक हैं उन का न्याय और उन की उत्तमता
८ आप ही से निकलती है। उन के घोड़े चीते से भी चालाक
हैं और वे सांझ के हुंडारों से अधिक क्रूर हैं उन के घोड़चढ़े
भी फैलते हैं हां उन के घोड़चढ़े दूर से आते हैं गिद्ध की नाईं
९ उड़ते हैं जो भोजन को बेग करते हैं। सब के सब अंधेर के
लिये आते हैं उन के मुंह का दर्शन पुरवा पवन की नाईं है और

१० वे बंधुओं को बालू की नाईं बटोरते हैं । और वे राजाओं को
चिढ़ाते हैं और महान उन के लिये स्वांग हैं वे हर एक गढ़े
११ से हंसते हैं और वे धूल ढेर करके उसे ले लेते हैं । तब उन
का मन नवीन हो जाता है और वे बीत जाते हैं और यह
कहते हुए अपराध करते हैं कि क्या उस का बल उस के
देवता से है ॥
१२ हे परमेश्वर मेरे ईश्वर हे मेरे पवित्र क्या तू सनातन से
नहीं है हम नहीं मरेंगे हे परमेश्वर तू ने उन्हें न्याय के लिये
ठहराया है और हे चटान तू ने उन्हें ताड़ने के लिये दृढ़
१३ किया है । तेरी आंखें पवित्र हैं कि तू बुराई को देख नहीं
सक्ता और अनीति पर दृष्टि कर नहीं सक्ता फिर काहे को तू
छलिओं पर दृष्टि करता है और जब दुष्ट उसे निगलने पर है
१४ जो उस्से धर्म्मी है तू काहेको चुपका रहता है । और तू
मनुष्यों को समुद्र की मछलियों की नाईं क्यों बनाता है रेंगवैयों
१५ की नाईं जिन का अगुवा नहीं है । वे उन सभों को बनसी
से उठाते हैं वे उन्हें अपने जाल से पकड़ते और उन्हें अपने
महाजाल में एकट्ठे करते हैं इस लिये वे आल्हादित और
१६ आनन्दित हैं । इस लिये वे अपने जाल को बलि चढ़ाते हैं
और अपने महाजाल के लिये सुगंध जलाते हैं क्योंकि उन के
द्वारा उन का भाग मोटा है और उन का भोजन बहुत है ।
१७ क्या वे इस लिये अपने जाल को छूछा करेंगे और नित्य
जातिगणों को बध करने से अलग न रहेंगे ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ मैं अपने निहारस्थान पर खड़ा हूंगा और गढ़ पर ठहरूंगा
और बाट जोहूंगा कि देखूं वुह मुझे क्या कहेगा और अपने
बिबाद में क्या उत्तर दूं ॥

२ तब परमेश्वर ने उत्तर देके मुझ से कहा कि दर्शन को लिख
और उसे पटियों पर उज्जल कर कि जो उसे पढ़े सो दौड़े।
३ क्योंकि ठहराये हुए समय के लिये दर्शन है परन्तु अन्त में
शीघ्र करेगा और न छलेगा यद्यपि वुह बिलम्भ करे तथापि उस
की बाट जोह क्योंकि वुह निश्चय आवेगा और बहुत बिलम्भ
न करेगा॥

४ अभिमान को देख उस का प्राण उस में खड़ा नहीं है पर
५ धर्म्मी उस के विश्वास से जीयेगा। तिस पर दाखरस छली है
घमंडी मनुष्य अपने घर में नहीं रहता क्योंकि वुह पाताल
की नाईं अपनी बांछा को बढ़ाता है वुह मृत्यु की नाईं है
और तृप्त नहीं हो जाता पर सारे जातिगणों को अपनी ओर
बटोरता है और सारे लोगों को अपने पास एकट्ठा करता है।
६ क्या ये सब के सब यह कहते हुए उस के बिरुद्ध एक दृष्टान्त
और उस के बिरुद्ध एक ठठोली न उठावेंगे कि हाय उस पर
जो उसे बटोरता है जो उस का नहीं है कब लों और अपने
ऊपर गाढ़ी मिट्टी लादता है॥

७ क्या वे अचानक न उठेंगे जो तुझे डसेंगे और न जागेंगे
८ जो तुझे सतावेंगे और तू उन के लिये लूट होगा। क्योंकि तू
ने बहुत से जातिगणों को लूट लिया लोगों के सारे बचे हुए
तुझे लूट लेंगे मनुष्यों के लोहू के और देश और नगर और
उस के सारे निवासियों पर अंधेर करने के कारण॥

९ हाय उस पर जो अपने घराने के लिये बुरी प्राप्ति को प्राप्त
करता है कि अपने खोंते को उत्तुङ्ग बनावे जिसतें वुह बुराई
१० के हाथ से बच जाये। बहुत जातिगण के काट डालने से
तू ने अपने घराने के लिये लाज की जुगुत किई और अपने
११ बिरुद्ध पाप किया। क्योंकि भीत में से पत्थर पुकारेगा और
लट्ठे में की जोड़ाई उसे उत्तर देगी॥

१२ हाय उस पर जो लोहू से वस्तु बनाता है और अनीति से
१३ नगर स्थिर करता है। क्या यह सेनाओं के परमेश्वर की ओर
से नहीं है कि लोग निराली आग के लिये परिश्रम करें और
१४ लोग निराले बेअर्थ के लिये आप को थकावें। क्योंकि पृथिवी
परमेश्वर के बिभव के ज्ञान से भर जायेगी जैसा जल समुद्र
को ढांपते हैं॥

१५ हाय उस पर जो अपने परोसी को मद्य पिलाता है जो
अपनी कुप्पी से उन्हें लाता है और उसे मतवाला कर देता
१६ है जिसतें उस की नग्नता देखे। तू बिभव की सन्ती लाज से
भरा है तू भी पी और तेरी खलरी उघर जाये परमेश्वर के
दहिने हाथ का कटोरा तुझ को फिरावेगा और तेरे बिभव पर
१७ अशुद्धता होगी। क्योंकि जो अंधेर लुबनान से किया गया वुह
तुझे ढांपेगा और जैसा पशुओं का नाश उन्हें डराता है वैसा
मनुष्यों के लोहू के और देश और नगर और उस के सारे
निवासियों पर अंधेर करने के कारण॥

१८ खोदी हुई मूर्त्ति से क्या लाभ जो उस के बनवैये ने उसे
खोदा ढाली हुई मूर्त्ति और झूठ के उपदेशक से क्या लाभ जो
उस के कार्य्य का कर्त्ता उस पर आसरा रखता है कि अपने
लिये गूंगी मूरतें बनावे॥

१९ हाय उस पर जो काठ को कहता है कि जाग और मौन
पत्थर को कि उठ वुह सिखावे देख वुह सोने चांदी से मढ़ा
२० है और उस के मध्य में स्वास नहीं है। परन्तु परमेश्वर अपने
पवित्र मन्दिर में है सारी पृथिवी उस के आगे चुपकी हो रही॥

तीसरा पर्ब्ब।

१ हबक्कूक भविष्यद्वक्ता की प्रार्थना सराहने के सुर से।
२ हे परमेश्वर तेरी सुनाई हुई मैं ने सुनी और मैं डर गया हे

परमेश्वर बरसों के मध्य अपने कार्य्य को फेर ला बरसों के
३ मध्य उसे जना कोप में तू स्मरण कर। तेमन से ईश्वर आया
पवित्रमय फ़ारान के पर्व्वत से सिलाह उस के बिभव से स्वर्ग
४ ढंप गया और पृथिवी उस की स्तुति से परिपूर्ण थी। उस की
चमक भी ज्योति की नाईं थी किरणें उस के हाथ से निकलीं पर
५ वहां उस की ऐश्वर्यता का ढंकना था। मरी उस के आगे आगे
६ गई और अग्नि व्याधि उस के पीछे आई। वुह खड़ा हुआ
और पृथिवी को डराया उस ने देखा और जातिगणों को थरथराया
और पुरातन पर्वत बिथर गये सनातन के टीले झुक गये उस
के पथ सनातन हैं॥

७ मैं ने कूशान के डेरों को कष्ट में देखा और मिदयान के
८ देश के ओझल कांप गये। हे परमेश्वर क्या तेरी रिस नदियों
पर थी क्या तेरा कोप नदियों पर था क्या तेरी जलाहट समुद्र
९ पर थी कि तू अपने घोड़ों पर बचाव के रथों में चढ़ा। तेरा
धनुष सर्वथा उघर गया जैसा तू ने कहा हां गोष्ठियों से किरिया
१० खाई सिलाह तू ने पृथिवी को नदियों से चीरा है। पर्व्वतों
ने तुझे देखा वे थरथराये जल की बाढ़ बीत गई गहिराव ने
११ अपना शब्द उच्चारा और अपने हाथों को उठाया। सूर्य्य और
चन्द्रमा अपने निवास में ठहर गये तेरे बाणों की ज्योति से
१२ जो चल निकले झलकते भाले की चमक से। जलजलाहट
से तू देश से सिधारा कोप से तू ने जातिगणों को लताड़ा।
१३ तू अपने लोगों के बचाव के लिये निकला हां अपने अभिषिक्त
के बचाव के लिये दुष्टों के घर में से तू ने सिर को कुचला
चटान लों तू ने नेव को उघारा सिलाह॥

१४ तू ने उस के अगुओं के सिर को उसी की बरछियों से
छेदा वे मुझे बिथराने को बवंडर की नाईं घड़घड़ाये
१५ चुपके कंगालों को भक्षण यह उन का आनन्द था। तू

अपने घोड़ों के संग समुद्र से हां बड़े पानियों के हलरने से
चला ॥
१६ सुनते ही मेरी अंतड़ियां धड़क उठीं शब्द से मेरे हांठ
कांपने लगे सड़ाहट मेरी हड्डियों में पैठ गई और मेरे घुठने
थरथराने लगे पर मैं कष्ट के दिन में बिश्राम पाऊंगा जब वे
ऊपर आवेंगे जो हम पर चढ़ाई करेंगे ॥
१७ यद्यपि गूलर पेड़ न फूले और दाख में फल न लगे जलपाई
की खेती बेप्राप्त हो और खेत अनाज न दें गुंडरे में से झुंड
१८ कट जाय और थान में ढोर न होवे। तथापि मैं परमेश्वर से
आल्हादित हूंगा मैं अपनी मुक्ति के ईश्वर से आनन्द करूंगा।
१९ प्रभु परमेश्वर मेरा बल है और वुह मेरे पगों को हरनियों का
सा बनावेगा और मुझे मेरे ऊंचे स्थानों पर चलावेगा प्रधान
बजनिये के लिये मेरी बीनों के संग ॥

सफ़नियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ परमेश्वर का वचन जो यहूदाह के राजा अमून के बेटे
यूसियाह के दिनों में सफ़नियाह पर आया जो हिज़क़ियाह
का बेटा अमरियाह का बेटा जिदलयाह का बेटा कूशी का
बेटा था॥
२ मैं देश पर से सब कुछ सर्वथा नाश करूंगा परमेश्वर कहता
३ है। मैं मनुष्य और पशु को नाश करूंगा मैं आकाश के पंछियों
को और समुद्र की मछलियों को और दुष्टों के संग ठोकरों को
नाश करूंगा और मैं देश पर से मनुष्य को काट डालूंगा
४ परमेश्वर कहता है। और मैं यहूदाह पर और यरूसलम के
सारे निवासियों पर अपना हाथ बढ़ाऊंगा और इस स्थान में से
बअ़ल के बचे हुओं को और याजकों के संग पंडों के नाम को
५ काट डालूंगा। और उन को भी जो कोठियों पर स्वर्ग की
सेना को पूजते हैं और उन को जो परमेश्वर को पूजते और
उस्से किरिया खाते हैं और मिलकूम के नाम से किरिया खाते
६ हैं। और उन को भी जो परमेश्वर से फिर गये हैं और उन्हें
जो परमेश्वर को नहीं ढूंढ़ते और उसे नहीं खोजते॥
७ प्रभु परमेश्वर के आगे चुपका रह क्योंकि परमेश्वर का दिन
आ पहुंचा इस लिये कि परमेश्वर ने बलि सिद्ध किया है उस

८ ने अपने पाहुनों को पवित्र किया है। और ऐसा होगा कि
परमेश्वर के बलि के दिन में मैं अध्यक्षों को और राजपुत्रों को
पलटा दूंगा और उन सभों को जो उपरी वस्तु पहिने हैं।
९ और मैं उसी दिन में उन सभों को पलटा दूंगा जो देहली के
ऊपर से कूदते हैं और अपने प्रभु के घर को अंधेर और छल
से भरते हैं॥

१० और उसी दिन में ऐसा होगा परमेश्वर कहता है कि मच्छ
फाटक से चिल्लाने का और दूसरे नगर से बिलाप का और टीलों
११ से बड़े नाश का शब्द होगा। हे मकतीस के निवासियो बिलाप
करो क्योंकि सारे बेपारी नष्ट हुए वे सब जो चांदी से लदे हैं
कट गये॥

१२ और उसी समय यों होगा कि मैं यरूसलम को दीपकों से
खोजूंगा और उन लोगों को पलटा दूंगा जो अपने तलछट पर
जम गये हैं जो अपने मन में कहते हैं कि परमेश्वर न भला
१३ न बुरा करेगा। और उन की संपत्ति लूट के लिये और उन के
घर उजाड़ के लिये होंगे और वे घर बनावेंगे पर उन में न
बसेंगे और वे दाख की बारी लगावेंगे पर उन का रस न
पीयेंगे॥

१४ परमेश्वर का बड़ा दिन समीप है और निकट दौड़ा आता
है परमेश्वर के दिन का शब्द वहां बलवन्त जन धाह मारके
१५ चिल्लावेगा। वुह दिन जलजलाहट का दिन है बिपत्ति और
पीड़ा का दिन अंधियारे और धुंधलाई का दिन मेघों और गाढ़े
१६ अंधियारे का दिन। बाड़ित नगरों पर और ऊंचे गुम्मटों पर
१७ तुरहो और ललकारने का दिन। और मैं मनुष्यों को कष्टित
करूंगा और वे अंधों की नाईं चलेंगे इस लिये कि वे परमेश्वर
के अपराधी हैं और उन का लोहू धूल की नाईं उंडेला जायेगा
१८ और उन का मांस मल की नाईं। हां परमेश्वर की जलजलाहट

के दिन में न उन की चांदी न उन का सोना उन्हें छुड़ा
सकेगा पर उस के झल की आग से सारा देश भस्म किया
जायेगा क्योंकि वुह अति शीघ्र देश के सारे बासियों का अन्त
करेगा ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ तुम अपने को एकट्ठा करो और एकट्ठे होओ हे अबांछित
२ जातिगण । उस्से आगे कि आज्ञा जने दिन भूसे की नाईं बीत
जाता परमेश्वर की रिस की तपन तुम पर आने से आगे परमेश्वर
३ की रिस का दिन तुम पर आने से आगे । परमेश्वर को खोजो
हे देश के सारे नम्र लोगो जो उस की बिधिन को पालते हो
और धर्म्म को ढूंढो नम्रता को खोजो क्या जानें कि परमेश्वर
के कोप के दिन में तुम छिपाये जाओ ॥
४ क्योंकि अज्ज़ः त्यागा जायेगा और असक़लून उजाड़ के लिये
होगा वे मध्यान्ह में अशदूद को हांकेंगे और अक़रून उखाड़ा
५ जायेगा । हाय समुद्र के तीर के बासियों पर करीतियों के
जातिगण पर परमेश्वर का बचन तुम्हारे बिरुद्ध है हे कनआन
फिलिस्तियों के देश और में तुझे नष्ट करूंगा कि कोई निवासी
६ न होगा । और समुद्र तीर चराई होगी जहां गड़ेरियों के लिये
७ चहबच्चे और भेड़ों के लिये गोंड़े होंगे । और तू यहूदाह के
घराने के बचे हुओं के लिये होगा वे उस में चराई करेंगे वे
सांझ को असक़लून के घरों में लेट रहेंगे क्योंकि परमेश्वर उन
का ईश्वर उन से भेंट करेगा और उन की बंधुवाई को फिरावेगा॥
८ मैं ने मोआब की निन्दा को और अमून के पुत्रों की
गालियों को सुना जिन्हों ने मेरे लोगों की निन्दा किई और
९ उन के सिवाने के बिरुद्ध आप को बढ़ाया । इस लिये सेनाओं
का परमेश्वर इसराएल का ईश्वर अपने जीवन सोंह कहता है

कि निश्चय मोआब सदूम की नाईं और अम्मून के पुत्र अमूरः
की नाईं होंगे हां कांटों का स्थान और लोन गढ़े और सदा
उजाड़ मेरे लोगों के बचे हुए उन्हें लूटेंगे और मेरे लोगों के
१० उबरे हुए उन्हें अधिकार में लावेंगे। यह उन के अहंकार के
लिये होगा क्योंकि उन्हों ने परमेश्वर सेनाओं के ईश्वर के लोगों
११ की निन्दा किई और उन के बिरुद्ध आप को बढ़ाया। परमेश्वर
उन पर भयानक होगा क्योंकि वुह पृथिवी के सारे देवों को
दुर्बल करेगा और जातिगणों के सारे टापू हर एक अपने अपने
स्थान से उस को दंडवत करेगा॥

१२ तुम भी हे कूशियो मेरी तलवार से मारे जाओगे॥

१३ और उत्तर के बिरुद्ध अपना हाथ बढ़ावेगा और असूर को
नष्ट करेगा और वुह नीनवः को उजाड़ के लिये बनावेगा
१४ अरण्य की नाईं सूखा। और उस के मध्य में झुंड और जातिगणों
के सारे पशु लेट रहेंगे हां गरुड़ और साही उस के खंभों के
सिरों पर बसेंगे खिड़कियों में शब्द गावेगा ओसारों में उजाड़
१५ होगा क्योंकि देवदारु का कार्य्य उघारा जायेगा। यही आल्हादित
नगर है जो निश्चिन्त बैठा था जिस ने अपने मन में कहा
कि मैं हूं और मेरे सिवा कोई और नहीं वुह कैसा उजाड़ हो
गया पशुओं के लेटने का स्थान जो कोई उस्से बीत जाता है
फुफकारेगा और अपना हाथ फैलावेगा॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ हाय उस हरमुष्ट और अशुद्ध उस उत्पाती नगर पर।
२ उस ने शब्द को न माना उपदेश को ग्रहण न किया उस ने
परमेश्वर पर भरोसा न रक्खा वुह अपने ईश्वर के समीप न
३ आई। उस के मध्य उस के अध्यक्ष गरजवैये सिंह हैं उस के
न्यायी सांझ के हुंडार हैं वे बिहान लों हड्डियों को नहीं

४ छोड़ते। उस के भविष्यद्वक्ते अभिमानी और विश्वासघातक
जन हैं उस के याजकों ने पवित्रस्थान को अशुद्ध किया है
उन्हों ने व्यवस्था को तोड़ डाला है ॥

५ परमेश्वर वही धर्म्मी उस के मध्य में है वुह दुष्टता नहीं
करता हर बिहान को अपना न्याय प्रकाश करता है वुह चूकता
६ नहीं पर दुष्ट लोग लाज नहीं जानते। मैं ने जातिगणों को
काट डाला उन के गुम्मट उजाड़ हुए मैं ने उन की सड़कों
को नष्ट किया कि उन से कोई नहीं बीत्ता उन के नगर नाश
७ किये गये कि कोई जन कोई निवासी नहीं। मैं ने कहा कि
केवल मुझ से डर शिक्षा ग्रहण कर कि उस का निवास काट
डाला न जाये जैसा कि मैं ने उस पर ठहराया पर उन्हों ने
तड़के उठके अपने कार्य्यों को बिगाड़ा ॥

८ तथापि मेरी बाट जोहो परमेश्वर कहता है जब लों कि मैं
अहेर के लिये न उठूं क्योंकि मैं ने ठाना कि जातिगणों को
बटोरूं और राजाओं को एकट्ठा करूं जिसतें अपनी जलजलाहट
उन पर उंडेलूं अपने क्रोध की सारी तपन क्योंकि मेरे झल की
आग से सारी पृथिवी भस्म किई जायेगी ॥

९ क्योंकि मैं उसी समय जातिगणों को पवित्र बोली फिर दूंगा
जिसतें वे सब के सब परमेश्वर के नाम को दोहाई देवें और
१० एक साथ उस की सेवा करें। मेरे भक्त मेरे बिथरे हुओं की
पुत्री कूश की नदियों के पार से मेरे लिये भेंट लावेंगे ॥

११ उसी दिन में तू अपने सारे कार्य्यों से लज्जित न होगा
कि जिन से तू ने मेरा अपराध किया है क्योंकि तब मैं तेरे मध्य
में से तेरे अहंकारी आनन्दितों को दूर करूंगा और तू फिर मेरे
१२ पवित्र पर्बत पर आप को न फुलावेगा। और मैं तेरे मध्य में
दीन और कंगाल लोग छोड़ूंगा और वे परमेश्वर के नाम पर
१३ भरोसा रक्खेंगे। इसराएल के बचे हुए दुष्टता न करेंगे न झूठ

बोलेंगे न उन के मुंह में छल की जीभ पाई जायेगी पर वे
चराई करेंगे और लेटेंगे और कोई उन्हें न डरावेगा ॥
१४ हे सैहून की पुत्री धूम मचा हे इसराएल ललकार हे
यरूसलम की पुत्री मगन हो और अपने सारे मन से आनन्दित
१५ हो। परमेश्वर ने तेरे बिचारों को ले लिया है उस ने तेरे
बैरियों को निकाल दिया इसराएल का राजा परमेश्वर तेरे मध्य
में है तू फिर बुराई नहीं देखेगा ॥
१६ उसी दिन में यरूसलम से कहा जायेगा कि मत डर और
१७ सैहून से कि तेरे हाथ ढीले न हों। परमेश्वर तेरा ईश्वर जो
तेरे मध्य में है वुह सर्वशक्तिमान है वुह बचावेगा वुह
आनन्दता से तुझ पर मगन होगा वुह अपने प्रेम में चुपका
१८ रहेगा वुह धूम मचाते तुझ पर आल्हादित होगा। मैं उन्हें
बटोरूंगा जो पवित्र मंडली के लिये शोकित हैं वे तुम्में से थे
१९ जिन्हों ने उस की निन्दा उठाई। देख मैं उसी समय उन
सभों को मारूंगा जो जो तुझे सताते हैं और मैं लंगड़ाती
हुई को बचाऊंगा और खेदी हुई को बटोरूंगा और मैं उन्हें
हर देश में जहां वे लज्जित हुए हैं स्तुति और नाम के लिये
२० ठहराऊंगा। जिस समय में उन्हें ठहराऊंगा मैं उसी समय
तुम को फेर लाऊंगा हां पृथिवी के सारे जातिगणों के मध्य में
तुम्हें नाम और स्तुति के लिये बनाऊंगा जब मैं तुम्हारी
आंखों के आगे तुम्हारी बंधुवाई फेर लाऊंगा परमेश्वर कहता
है ॥

हज्जी
भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ दारा राजा के दूसरे बरस में छठवें मास की पहिली तिथि
में परमेश्वर का बचन हज्जी भविष्यद्वक्ता के द्वारा यहूदाह के
अध्यक्ष सियालतिएल के बेटे ज़रुबाबुल के पास और प्रधान
याजक यहूसदक़ के बेटे यहूसूअ के पास यह कहता हुआ
२ पहुंचा। कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि ये लोग
कहते हैं समय नहीं पहुंचा परमेश्वर के घर बनाने का समय।
३ तब परमेश्वर का बचन हज्जी भविष्यद्वक्ता के द्वारा से यह
कहता हुआ पहुंचा॥
४ कि क्या तुम्हारे लिये समय है जो आप मंगल के घरों में
बसो और यह घर उजाड़ रहे॥
५ और अब सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि अपने
६ मार्गों को बिचारो। तुम ने बहुत बोया है पर थोड़ा सा प्राप्त
किया तुम खाते हो पर तृप्त नहीं होते तुम पीते हो पर जी
भरके नहीं तुम बस्त्र पहिनते हो पर उस्से कोई गरमाता
नहीं और जो मज़दूरी कमाता है सो फटी थैली के लिये
कमाता है॥

७ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि अपने मार्गों को
८ बिचारो। पहाड़ पर चढ़कर लकड़ी लाओ और घर बनाओ
और मैं उस्से प्रसन्न हूंगा और महिमा पाऊंगा परमेश्वर कहता है।
९ तुम ढेर का मार्ग ताकते थे पर देखो थोड़ा हुआ और जब घर
में लाये तो मैं ने उस पर फूंक मारी सेनाओं का परमेश्वर
कहता है कि किस कारण मेरे घर के कारण जो उजाड़ है
और तुम में से हर कोई अपने अपने घर को दौड़ता है।
१० इस लिये तुम्हारे ऊपर आकाश ओस से रह गया और भूमि
११ अपनी बढ़ती से रह गई। और मैं ने भूमि और पर्व्वतों पर
और अन्न और नये दाखरस पर और तेल और उस पर जो
भूमि से उत्पन्न होता है और मनुष्य और पशु पर और हाथों
के सारे परिश्रम पर झुराहट बुलाई॥

१२ तब सियालतिएल के बेटे ज़रुबाबुल ने और प्रधान याजक
यहूसदक़ के बेटे ने और सारे बचे हुए लोगों ने परमेश्वर
अपने ईश्वर के शब्द को और हज्जी भविष्यद्वक्ता की बातों को
माना जैसा कि परमेश्वर उन के ईश्वर ने उसे भेजा था और
लोग परमेश्वर के आगे डर गये॥

१३ तब परमेश्वर का सन्देशी हज्जी परमेश्वर के सन्देश से
लोगों को यह कहके बोला कि मैं तुम्हारे संग हूं परमेश्वर
कहता है॥

१४ और परमेश्वर ने यहूदाह के अध्यक्ष सियालतिएल के बेटे
ज़रुबाबुल के मन को और प्रधान याजक यहूसदक़ के बेटे
यहूसूअ के मन को और सारे बचे हुए लोगों के मन को
उभाड़ा और उन्हों ने आके सेनाओं के परमेश्वर अपने ईश्वर
१५ के घर का कार्य्य किया। दारा राजा के दूसरे बरस में छठवें
मास की चौबीसवीं तिथि में॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ सातवें मास की एक्कीसवीं तिथि में परमेश्वर का बचन यह
२ कहते हुए हज्जी भविष्यद्वक्ता के द्वारा से पहुंचा। कि यहूदाह
के अध्यक्ष सियालतिएल के बेटे ज़रुब्बाबुल से और प्रधान याजक
यहूसदक़ के बेटे यहूसूअ से और बचे हुए लोगों से कह ॥
३ कि तुम में कौन बचा है जिस ने इस घर को उस के
अगिले विभव में देखा था और अब उसे क्या देखते हो क्या
उस की उपमा में तुम्हारी दृष्टि में तुच्छ नहीं ॥
४ पर हे ज़रुब्बाबुल बलवन्त हो परमेश्वर कहता है और हे
प्रधान याजक यहूसदक़ के बेटे यहूसूअ बलवन्त हो और देश
के सारे लोगो बलवन्त हो परमेश्वर कहता है और कार्य्य करो
क्योंकि मैं तुम्हारे संग हूं सेनाओं का परमेश्वर कहता है।
५ उस बाचा के समान जो मैं ने तुम्हारे संग बांधी जिस समय
तुम मिस्र देश से निकल आये और मेरा आत्मा तुम्हों में
रहता है मत डरो ॥
६ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि और एक
बार तनिक में मैं स्वर्ग और पृथिवी को और समुद्र और सूखी
७ भूमि को हिलाऊंगा। और मैं सारे जातिगणों को हिलाऊंगा
और सारे जातिगणों का बांछित आवेगा और मैं इस घर को
८ विभव से भर दूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है। चांदी मेरी
९ है और सोना मेरा सेनाओं का परमेश्वर कहता है। इस पहिले
घर का विभव अगिले से अधिक होगा सेनाओं का परमेश्वर
कहता है और इस स्थान में मैं कुशल दूंगा सेनाओं का परमेश्वर
कहता है ॥
१० दारा के दूसरे बरस में नवें मास की चौबीसवीं तिथि में
परमेश्वर का बचन यह कहते हुए हज्जी भविष्यद्वक्ता के द्वारा

११ से पहुंचा। कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि यह
१२ कहके व्यवस्था के विषय में याजकों से पूछो। यदि मनुष्य
अपने वस्त्र के अंचल में पवित्र मांस ले जाये और अपने अंचल
से रोटी अथवा लपसी अथवा दाखरस अथवा तेल अथवा किसी
भांति के भोजन को छूवे क्या वुह पवित्र होगा और याजकों
१३ ने उत्तर देके कहा कि नहीं। फिर हज्जी ने कहा कि यदि
लोथ के छूने से कोई जन अशुद्ध होवे और इन में से किसी
वस्तु को छूवे क्या वुह अशुद्ध होगी और याजकों ने उत्तर
देके कहा कि अशुद्ध होगी॥

१४ तब हज्जी ने उत्तर देके कहा कि ऐसे ये लोग और ऐसे यह
जातिगण मेरी दृष्टि में हैं परमेश्वर कहता है और वैसे उन के
हाथों के सारे कार्य्य और जो उन्हों ने चढ़ाया सो अशुद्ध है।
१५ और अब मैं बिन्ती करता हूं कि बिचारो आज से और उस
के आगे उस दिन से कि परमेश्वर के मन्दिर में पत्थर पर
१६ पत्थर रक्खा न गया था। उन दिनों से कि जब कोई बीस
की ढेर पर आया तो दस पाया और जब कोई कोल्हू से पचास
१७ निकालने को आया तो बीस पाया। मैं ने तुम्हें झुलस और
लेंढे और ओले से मारा तुम्हारे हाथों के सारे कार्य्यों में तथापि
तुम मेरी ओर नहीं फिरे परमेश्वर कहता है॥

१८ मैं बिन्ती करता हूं कि बिचारो आज से और उस के आगे
से नवें मास की चौबीसवीं तिथि से अर्थात् जिस दिन से कि
१९ परमेश्वर के मन्दिर की नेव डाली गई बिचारो। क्या खलिहान
में अब लों बीज है हां अब लों दाख और गूलर और
अनार और जलपाई फल न लाये आज से मैं आशीष
दूंगा॥

२० और उसी महीने की चौबीसवीं तिथि में परमेश्वर का बचन
२१ दूसरी बार यह कहते हुए हज्जी के पास पहुंचा। कि यह

कहके यहूदाह के अध्यक्ष ज़रुब्बाबुल से बाेल कि मैं स्वर्गों का
ओर पृथिवी का हिलाऊंगा ॥
२२ ओर मैं राजाओं के सिंहासन का उलट डालूंगा ओर
जातिगणों के राज्यों के बल का नाश करूंगा ओर मैं रथों का
उन के सारथियों समेत उलट डालूंगा ओर घोड़े चढ़वैयों
२३ समेत गिर पड़ेंगे हर एक अपने भाई की तलवार से। सेनाओं
का परमेश्वर कहता है कि हे ज़रुब्बाबुल सियालतिएल के बेटे
मेरे सेवक मैं उसी दिन तुझे लूंगा परमेश्वर कहता है ओर
तुझे मुद्रा की भांति ठहराऊंगा क्योंकि मैं तुझ से प्रसन्न हूं
सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥

ज़कारियाह भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्व्व।

१ दारा के दूसरे बरस के आठवें मास में परमेश्वर का बचन
इद्दू के बेटे बरकियाह के बेटे ज़करियाह भविष्यद्वक्ता के पास
यह कहते हुए आया॥
२।३ परमेश्वर तुम्हारे पित्रों पर रिस से रिसिआया। इस लिये
उन से बोल कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मेरी
ओर फिरो सेनाओं का परमेश्वर कहता है और मैं तुम्हारी ओर
४ फिरूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है। अपने पित्रों के समान
मत हो जिन्हें यह कहके अगिले भविष्यद्वक्तों ने पुकारा था
कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि अपने बुरे मार्गों से
और अपने बुरे व्यवहारों से फिरो परन्तु उन्हों ने मेरी न सुनी
और न मानी परमेश्वर कहता है॥
५ तुम्हारे पितर कहां हैं और क्या भविष्यद्वक्ता सदा जीते
६ हैं। परन्तु जो बचन और जो विधि मैं ने अपने सेवक
भविष्यद्वक्तों को आज्ञा किई क्या उन्हों ने तुम्हारे पित्रों को
जा न लिया हां वे फिरकर बोले कि जैसा सेनाओं के परमेश्वर
ने हमारे मार्गों के और हमारे व्यवहारों के समान हम से करने
को ठाना था तैसा उस ने हम से किया है॥

७ ग्यारहवें मास की चौबीसवीं तिथि में जो सिबात मास है
दारा के दूसरे बरस में इद्दू के बेटे बरकियाह के बेटे ज़करियाह
भविष्यद्वक्ता के पास परमेश्वर का वचन यह कहते हुए आया॥
८ कि रात को मैं ने देखा और क्या देखता हूं कि एक जन
लाल घोड़े पर चढ़ा है और वुह मेंहदियों के मध्य में खड़ा
था जो ढाल में थी और उस के पीछे लाल और घूमर और
९ स्वेत घोड़े थे। तब मैं ने कहा हे मेरे प्रभु ये क्या हैं फिर
मेरे संवादी दूत ने मुझ से कहा कि मैं तुझे देखाऊंगा कि ये
१० क्या हैं। और जो जन मेंहदियों के मध्य में खड़ा था उस ने
उत्तर देके कहा कि ये वे हैं जिन्हें परमेश्वर ने पृथिवी का फेरा
११ करने को भेजा है। और उन्हों ने परमेश्वर के दूत को जो
मेंहदियों के मध्य में खड़ा था उत्तर देके कहा कि हम ने
पृथिवी का फेरा किया और क्या देखता हूं कि सारी पृथिवी
स्थिर और चैन से है॥
१२ तब परमेश्वर के दूत ने उत्तर देके कहा कि हे सेनाओं
के परमेश्वर तू यरूसलम पर और यहूदाह के नगरों पर जिन
से इन सत्तर बरसों को तू रिसिआया कब लों दया न करेगा।
१३ और परमेश्वर ने मेरे संवादी दूत को अच्छी बातों से और
१४ शान्ति की बातों से उत्तर दिया। और मेरे संवादी दूत ने
मुझ से कहा कि यह कहके पुकार कि सेनाओं का परमेश्वर यों
कहता है मैं यरूसलम के लिये और सेहून के लिये बड़े झल
१५ से झलित हूं। और मैं उन जातिगणों से अति रिसिआया हूं
जो चैन से हैं क्योंकि मैं तनिक रिसिआया था और उन्हों ने
१६ विपत्ति को बढ़ाया। इस लिये परमेश्वर यों कहता है कि मैं
दया से यरूसलम को फिर आया हूं उस में मेरा घर बनेगा
सेनाओं का परमेश्वर कहता है और एक रस्सी यरूसलम पर
१७ फैलाई जायेगी। फिर पुकारके कह कि सेनाओं का परमेश्वर

योां कहता है कि मेरे नगर बढ़ती के मारे फिर फैल जायेंगे
क्योंकि परमेश्वर फिर सेहून को शान्ति देगा और फिर यरूसलम
को प्रसन्न करेगा॥
१८　तब मैं ने अपनी आंखें उठाईं और देखा और क्या देखता
१९ हूं कि चार सींग। और मैं ने अपने संवादी दूत से कहा कि
ये क्या हैं और उस ने मुझ से कहा कि ये वे सींग हैं जिन्हों
ने यहूदाह को और इसराएल को और यरूसलम को छिन्न
२० भिन्न किया है। तब परमेश्वर ने मुझ को चार कार्य्यकारियों को
२१ दिखलाया। तब मैं ने कहा कि ये क्या करने को आते हैं
और वुह यह कहके बोला कि ये वे सींग हैं जिन्हों ने यहूदाह
को छिन्न भिन्न किया यहां लों कि किसी ने अपना सिर न
उठाया पर ये आये हैं कि उन्हें डरावें और उन जातिगणों के
सींगों को गिरा देवें जिन्हों ने यहूदाह के देश पर अपने सींग
को उठाया कि उसे छिन्न भिन्न करें॥

दूसरा पर्व्व।

१　फिर मैं ने अपनी आंखें उठाके देखा और क्या देखता हूं कि एक
२ जन नापने की रस्सी हाथ में लिये हुए है। तब मैं ने कहा
कि तू कहां जाता है और उस ने मुझ से कहा कि यरूसलम
के नापने को देखने के लिये कि उस की चौड़ाई और उस की
३ लम्बाई कितनी है। और क्या देखता हूं कि मेरा संवादी
दूत निकल चला और दूसरा दूत उस्से भेंट करने को गया।
४ और उस्से कहा कि दौड़ और यह कहके इस तरुण से बोल
कि मनुष्यों और ढोर की बहुताई के कारण जो उस में हैं
५ यरूसलम दिहात में बढ़के बसाया जायेगा। और मैं उस के
लिये चारों ओर आग की भीत हूंगा परमेश्वर कहता है और
मैं उस के मध्य में विभव हूंगा॥

६ अहो अहो उत्तर देश से भागो परमेश्वर कहता है क्योंकि
चारों पवनों की नाईं मैं ने तुम्हें बिथराया है परमेश्वर कहता
७ है। हे सेहून तू जो बाबुल की बेटी के संग रहती है अपने
८ को छुड़ा। क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि
विभव के पीछे उस ने मुझे उन जातिगणों के पास भेजा
जिन्हों ने तुम्हें लूटा है क्योंकि जो तुम्हें छूता है सो उस
९ की आंख की पुतली को छूता है। क्योंकि देख मैं अपना
हाथ उन पर हिलाऊंगा और वे अपने दासों के लिये लूट
होंगे और तुम जानोगे कि सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे भेजा
है॥

१० हे सेहून की पुत्री गा और आनन्द कर क्योंकि देख मैं
११ आता हूं और तेरे मध्य में बसूंगा परमेश्वर कहता है। और
उसी दिन बहुत से जातिगण परमेश्वर से मिल जायेंगे और वे
मेरे लोग होंगे और मैं तेरे मध्य में बसूंगा और तू जानेगी
१२ कि सेनाओं के परमेश्वर ने मुझे तेरे पास भेजा है। और
परमेश्वर पवित्र देश में यहूदाह अपना भाग अधिकार के लिये
रक्खेगा और फिर यरूसलम को प्रसन्न करेगा॥

१३ हे सारे शरीर परमेश्वर के आगे चुपका रह क्योंकि वुह
अपने पवित्र निवास से उठा है॥

तीसरा पर्व्व।

१ और उस ने प्रधान याजक यहूसूअ को परमेश्वर के दूत के
आगे खड़े होते और शैतान को उस के साम्हना करने को उस
के दहिने हाथ की ओर खड़े होते मुझे दिखलाया॥

२ और परमेश्वर ने शैतान से कहा कि अरे शैतान परमेश्वर
तुझे दपटे हां वुह परमेश्वर जिस ने यरूसलम को प्रसन्न किया
तुझे दपटे क्या यह आग से निकाली हुई लुकठी नहीं है॥

३ और यहूसूअ अशुद्ध वस्त्र पहिने हुए दूत के आगे खड़ा
४ था। और उस ने यह कहके अपने आगे के खड़े हुए लोगों
से उत्तर देके कहा कि उस पर से अशुद्ध वस्त्र उतारो तब
उस ने उस्से कहा कि देख मैं ने तेरे पाप को तुझ से छुड़ाया
५ और तुझे सुन्दर वस्त्र पहिनाऊंगा। और उस ने कहा कि वे
उस के सिर पर सुन्दर मुकुट रक्खें सो उन्हों ने उस के सिर
पर सुन्दर मुकुट रक्खा और उसे वस्त्र पहिनाया और परमेश्वर
६ का दूत उस के पास खड़ा रहा। और परमेश्वर के दूत ने यह
कहके यहूसूअ के आगे साची दिई॥
७ कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि यदि तू मेरे मार्गों
में चलेगा और मेरी विधि को पालन करेगा तब तू मेरे घर
का न्याय करेगा और मेरे आंगनों की रचा करेगा और उन में
८ से जो पास खड़े हैं मैं तुझे अगुए दूंगा। अब हे यहूसूअ
प्रधान याजक सुन तू और तेरे संगी जो तेरे आगे बैठे हैं
क्योंकि ये मनुष्य दृष्टान्त के लिये हैं क्योंकि देख मैं अपने सेवक
९ डाली को प्रगट करूंगा। क्योंकि उस पत्थर को जो मैं ने
यहूसूअ के आगे रक्खा देखो उस एक ही पत्थर पर सात आंखें
होंगी देख मैं उस के खोदाव को खोदूंगा सेनाओं का परमेश्वर
कहता है और मैं इस देश की बुराई को एक ही दिन में दूर
करूंगा॥
१० उसी दिन सेनाओं का परमेश्वर कहता है कि तुम एक दूसरे
को दाख तले और गूलर पेड़ तले बुलाओगे॥

चैाथा पर्ब्ब।

१ और मेरा संवादी दूत लौट आया और जैसा मनुष्य नींद
२ से जगाया जाता है वैसा उस ने मुझे जगाया। और मुझ से
कहा कि तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि मैं ने दृष्टि

किई और क्या देखता हूं कि एक सानहली दीअट और उस के
सिर पर एक कटोरा और उस पर उस के सात दीपक और
३ सातों दीपकों में जा उस के सिर पर थे सात नलियां। और
उस के समीप दो जलपाई पेड़ थे एक पेड़ कटोरे की दहिनी
ओर और दूसरा उस की बाईं ओर॥
४ तब मैं ने अपने संवादी दूत को उत्तर देके कहा कि हे मेरे
५ प्रभु ये क्या हैं। तब मेरे संवादी दूत ने उत्तर देके मुझ से कहा
क्या तू नहीं जानता कि ये क्या हैं और मैं ने कहा नहीं मेरे प्रभु।
६ तब उस ने मुझ से उत्तर देके कहा कि ज़रुबाबुल के लिये परमेश्वर
का यह बचन है कि न बल से और न पराक्रम से परन्तु मेरे
७ आत्मा से सेनाओं का परमेश्वर कहता है। हे महा पर्बत तू
क्या है ज़रुबाबुल के आगे तू चौगान होगा और वही उस के
सिरहाने के पत्थर को अनुग्रह अनुग्रह उस के लिये पुकारते हुए
निकालेगा॥
८ फिर परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास आया।
९ कि ज़रुबाबुल के हाथों ने इस घर की नेव डाली है उसी के
हाथ भी उसे पूरा करेंगे तब तू जानेगा कि सेनाओं के परमेश्वर
१० ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है। क्योंकि छोटी बातों के दिन
को कौन तुच्छ जानता है कि परमेश्वर की वे सात आंखें जो
सारी पृथिवी पर इधर उधर दौड़ती हैं आनन्द से ज़रुबाबुल
के हाथ में साहुल को देखती हैं॥
११ तब मैं ने उत्तर देके उस्से कहा कि ये दोनों जलपाई पेड़
१२ जो दीअट की दहिनी बाईं ओर हैं क्या हैं। और मैं ने दूसरी
बार उत्तर देके उस्से कहा कि जलपाई पेड़ की दोनों डालियां
जो दो सानहली नलियों में से सोना सा तेल अपने से उंडेलती
१३ हैं सो क्या हैं। और उस ने उत्तर देके मुझ से कहा क्या तू
नहीं जानता कि ये क्या हैं और मैं ने कहा नहीं हे मेरे

१४ प्रभु । तब उस ने कहा कि ये दो अभिषिक्त जन हैं जो सारी
पृथिवी के प्रभु के आगे खड़े हैं ॥

पांचवां पर्व्व ।

१ फिर मैं ने अपनी आंखें उठाई और देखा तो क्या देखता
२ हूं कि एक उड़ता हुआ बीड़ा । और उस ने मुझ से कहा कि
तू क्या देखता है और मैं ने कहा कि मैं एक उड़ता हुआ बीड़ा
देखता हूं जिस की लम्बाई बीस हाथ और चौड़ाई दस हाथ ॥
३ और उस ने मुझ से कहा कि यही स्राप है जो सारे देश
पर निकलता है क्योंकि उस के समान हर एक जो चोरी
करता है उस की एक ओर से मिट जायेगा और उस के समान
हर एक जो किरिया खाता है उस की दूसरी ओर से मिट
४ जायेगा । मैं उसे निकालूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है और
वुह चोर के घर में प्रवेश करेगा और उस के घर में जो मेरे
नाम से झूठी किरिया खाता है और वुह उस के घर के मध्य
में ठहरेगा और उसे उस के लट्ठे और पत्थर समेत नाश
करेगा ॥
५ तब मेरा संवादी दूत निकला और मुझ से कहा कि तू
अपनी आंखें उठा और देख कि यह क्या है जो निकल जाता
६ है । और मैं ने कहा कि यह क्या है और वुह बोला कि यह
जो निकलता है सो ऐफ़ा है फिर उस ने कहा कि सारे देश
७ में यह उन का रूप है । और क्या देखता हूं कि सीसे का एक
८ गोल टुकड़ा और एक स्त्री ऐफ़ा के मध्य में बैठी है । और
उस ने कहा कि यही दुष्टता है और उसे ऐफ़ा के मध्य में
डा दिया और सीसे के भार को ऐफ़ा के मुंह पर धर दिया ॥
९ तब मैं ने अपनी आंखें उठाके देखा और क्या देखता हूं
कि दो स्त्रियां निकल आईं और उन के डैनों में पवन था

क्योंकि उन के डैने हाड़गिल के डैनों की नाईं थे और उन्हों ने
१० ऐफ़ा को आकाश और पृथिवी के अधर में उठाया। तब मैं
ने अपने संवादी दूत से कहा कि ऐफ़ा को ये किधर ले जाती
११ हैं। और उस ने मुझ से कहा कि उस के लिये सिनआर देश
में घर बनाने को और वुह स्थिर होगा और वहां अपने आसन
पर बैठाई जायेगी॥

छठवां पर्ब्ब।

१ फिर मैं ने मुंह मोड़ा और देखा तो क्या देखता हूं कि
दो पर्ब्बतों के मध्य से चार रथ निकल आये और ये पर्व्वत
२ पीतल के पर्व्वत थे। पहिले रथ में लाल घोड़े थे और दूसरे
३ रथ में काले घोड़े। और तीसरे रथ में स्वेत घोड़े और चौथे
४ रथ में बहुरङ्ग कबरे घोड़े थे। तब मैं ने अपने संवादी दूत
५ को उत्तर देके कहा कि हे मेरे प्रभु ये क्या हैं। तब उस दूत
ने उत्तर देके मुझ से कहा कि ये स्वर्ग के चार आत्मा हैं जो
६ सारी पृथिवी के प्रभु के आगे खड़े होने से निकलते हैं। और
काले घोड़े जो उस में हैं उत्तर देश में जाते हैं और स्वेत
उन के पीछे पीछे जाते हैं और बहुरङ्ग घोड़े दक्खिन देश को
७ जाते हैं। और कबरे निकलकर चाहते थे कि पृथिवी में
इधर उधर फिरें और उस ने कहा कि जाओ पृथिवी के इधर
८ उधर फिरो सो वे पृथिवी के इधर उधर फिरे। फिर वुह मुझ
पर चिल्लाया और यह कहके बोला कि देख वे जो उत्तर देश
को जाते हैं वे मेरे जी को उत्तर देश में ठण्डा करते हैं।
९ फिर यह कहते हुए परमेश्वर का बचन मेरे पास पहुंचा।
१० कि तू बंधन से ले अर्थात् खुलदी और तूबियाह और यदैअयाह
से जो बाबुल से आये हैं और उसी दिन जा और सफ़नियाह
११ के बेटे यूसियाह के घर में प्रवेश कर। और चांदी और सोना

ले और मुकुट बना और प्रधान याजक यहूसदक के बेटे
यहूसूअ के सिर पर रख ॥
१२ और यह कहके उस्से बोल कि सेनाओं का परमेश्वर यों
कहता है कि देख वुह जन जिस का नाम डाली है वुह अपने
१३ स्थान से पनपेगा और वही परमेश्वर का मन्दिर बनावेगा। हां
वही परमेश्वर का मन्दिर बनावेगा और वही महिमा पावेगा
और अपने सिंहासन पर याजक होगा और कुशल का मंत्र इन
दोनों के मध्य में होगा॥
१४ और वुह मुकुट हिल्म और तूबियाह और वदैअयाह और
सफ़नियाह के बेटे हन्न को परमेश्वर के मन्दिर में स्मरण के
१५ लिये होगा। और वे जो दूर हैं सो आवेंगे और परमेश्वर के
मन्दिर के बनाने में हाथ लगावेंगे और तुम जानोगे कि सेनाओं
के परमेश्वर ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है और यों होगा यदि
तुम परमेश्वर अपने ईश्वर का शब्द ध्यान से मानोगे॥

सातवां पर्ब्ब।

१ और दारा राजा के चौथे बरस में यों हुआ कि परमेश्वर
का बचन नवें मास अर्थात् किसलू की चौथी तिथि में ज़करियाह
२ के पास पहुंचा। जब कि सराजुर और रजिम्मलिक और उन
के जन ईश्वर के मन्दिर को भेजे गये कि परमेश्वर के आगे
३ बिन्ती करें। और कि सेनाओं के परमेश्वर के मन्दिर में के
याजकों और भविष्यद्वक्तों से यह कहके बोले क्या मैं आप को
इन बहुत बरसों के समान अलग करके पांचवें मास में बिलाप
करूं॥
४ तब सेनाओं के परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास
५ आया। कि देश के सारे लोगों से और याजकों से कह कि
जब तुम लोगों ने इन सत्तर बरस लों पांचवें और सातवें मास

में ब्रत और बिलाप किया तो क्या मेरे लिये हां मेरे लिये ब्रत
६ किया । और जब तुम ने खाया और पीया तो क्या तुम ने
७ अपने लिये न खाया और पीया । क्या ये वे बातें नहीं हैं जो
परमेश्वर ने अगिले भविष्यद्वक्तों के द्वारा से सुनाईं जिस समय
कि यरूसलम और उस के आस पास के नगर बसे थे और
बिश्राम थे जिस समय कि लोग दक्खिन के देश में और चौगान
में बसते थे ॥
८ फिर परमेश्वर का बचन यह कहते हुए ज़करियाह के पास
९ पहुंचा । कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है सत्य बिचार
करो और हर कोई अपने भाई पर दया और मया देखावे ।
१० और बिधवा और अनाथ और परदेशी और कंगाल को न सताओ
और कोई अपने मन में अपने भाई के बिरुद्ध बुरा न समझे ॥
११ पर उन्हों ने मान्ने को नाह किया और अपना कंधा खींच
लिया और अपने कानों को भारी किया जिसतें वे न सुनें ।
१२ हां उन्हों ने अपने मन को हीरे की नाईं कर दिया कि व्यवस्था
को और उन बातों को न सुनें जिन्हें सेनाओं के परमेश्वर ने
अगिले भविष्यद्वक्तों के द्वारा से अपने आत्मा से भेजा था इस
१३ लिये सेनाओं के परमेश्वर की ओर से बड़ा कोप हुआ । इस
लिये यों हुआ कि जैसा उस ने पुकारा और उन्हों ने न माना
तैसा वे पुकारेंगे और मैं न सुनूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता
१४ है । परन्तु मैं ने बवंडर से उन्हें सारे जातिगणों में छिन्न भिन्न
किया जिन्हें वे न जानते थे और उन के पीछे देश उजाड़
हुआ कोई उस में से न जाता था न लौटता था क्योंकि उन्हों
ने बांछित देश को उजाड़ बना रक्खा ॥

आठवां पर्ब्ब ।

१ फिर परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास पहुंचा ।

२ कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि मैं सैहून के लिये
बड़े झल से झलित हुआ हूं हां मैं बड़े कोप से उस के लिये
झलित हुआ हूं ॥
३ परमेश्वर यों कहता है कि मैं सैहून को फिर लौटा हूं और
यरूसलम के मध्य में बास करूंगा और यरूसलम सचाई
का नगर और सेनाओं के परमेश्वर का पर्बत पवित्र पर्बत
कहावेगा ॥
४ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि फिर बूढ़े और बुढ़ियां
यरूसलम की सड़कों में बसेंगी और सब कोई बुढ़ापे के कारण
५ अपने हाथ में लाठी पकड़ेंगे। और नगर की सड़क लड़के
लड़कियों से भर जायेंगी जो उस की सड़कों में खेलेंगे ॥
६ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि यद्यपि इन बचे हुए
लोगों की आंखों में उन दिनों में अचंभा होवे तो क्या मेरी
आंखों में अचंभा होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है ॥
७ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि देख मैं उदय के
८ देश से और अस्त के देश से अपने लोगों को बचाऊंगा। और
मैं उन्हें लाऊंगा और वे यरूसलम के मध्य में बास करेंगे और
वे मेरे लोग होंगे और सचाई में और धर्म्म में मैं उन का
ईश्वर हूंगा ॥
९ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि हे लोगो तुम जो
इन दिनों में ये बातें उन भविष्यद्वक्तों के मुंह से सुनते थे
जो उस दिन थे जब कि सेनाओं के परमेश्वर का घर अर्थात्
मन्दिर की नेव डाली गई जिसतें वुह बन जाये अपने हाथों
१० को दृढ़ करो। क्योंकि उन दिनों से आगे मनुष्यों को प्रतिफल
न था न पशु के लिये प्रतिफल था और जो बाहर भीतर आता
जाता था बिपत्ति के मारे उन्हें कुशल न था क्योंकि मैं ने हर
११ एक जन को अपने अपने परोसी के बिरुद्ध किया था। परन्तु

में इन बचे हुए लोगों के लिये अगिले दिनों के समान न हूंगा
१२ सेनाओं का परमेश्वर कहता है। क्योंकि बीज कुशल से होगा
और दाख फलेगा और भूमि अपनी बढ़ती देगी और आकाश
ओस गिरावेगा और में इस जातिगण के बचे हुए लोगों को इन
१३ सारी बातों का अधिकारी बनाऊंगा। और यों होगा कि जैसा
तुम लोग जातिगणों में साप हुए हो हे यहूदाह के घराने
और हे इसराएल के घराने तैसा में तुम्हें बचाऊंगा और तुम
आशीष होगे मत डरो अपने हाथों को दृढ़ करो॥
१४ क्योंकि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि जैसा में ने तुम्हें
दंड देने का मन किया जब तुम्हारे पुत्रों ने मुझे रिस दिलाया
१५ सेनाओं का परमेश्वर कहता है और में न पछताया। वैसा में
ने इन दिनों में फिर मन किया कि यरूसलम पर और यहूदाह
१६ के घराने पर भलाई करूं तुम मत डरो। पर इन बातों को
तुम्हें करना है कि हर एक अपने अपने पड़ोसी से सच कहे
१७ और अपने फाटकों में सत और कुशल का बिचार करे। और हर
एक अपने अपने पड़ोसी के बिरुद्ध अपने अपने मन में बुराई
न समझे और झूठ किरिया से प्रीति न रक्खे क्योंकि में इन
सारी बातों से घिन करता हूं परमेश्वर कहता है॥
१८ फिर सेनाओं के परमेश्वर का बचन यह कहते हुए मेरे पास
पहुंचा॥
१९ कि सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि चौथे और पांचवें
और सातवें और दसवें मास के ब्रत यहूदाह के घराने के
लिये आनन्द और मगन के लिये अर्थात् आल्हाद के तेवहार
होंगे इस लिये तुम सत और कुशल से प्रीति रक्खो॥
२० सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि ऐसा होगा कि बहुत
२१ से लोग और बहुत से नगरों के निवासी आवेंगे। और एक
नगर के निवासी दूसरे नगर को यह कहके जायेंगे कि चलो

हम परमेश्वर के आगे प्रार्थना करने को और सेनाओं के परमेश्वर
२२ को ढूंढने को शीघ्र जायें मैं भी जाऊंगा। और बहुत से लोग
और बलवन्त जातिगण सेनाओं के परमेश्वर को ढूंढने को और
परमेश्वर के आगे प्रार्थना करने को यरूसलम में आवेंगे॥
२३ सेनाओं का परमेश्वर यों कहता है कि उन दिनों में ऐसा
होगा कि जातिगणों की सारी भाषों में से दस जन पकड़ेंगे हां एक
यहूदी जन के अंचल को यह कहके पकड़ेंगे कि हम तुम्हारे
साथ जायेंगे क्योंकि हम ने सुना है कि ईश्वर तुम्हारे साथ है॥

नवां पर्व्व।

१ परमेश्वर के वचन की भविष्यद्वाणी जो हद्रक्क के देश पर है
और दमिशक उस का टिकाव है क्योंकि मनुष्य की आंख और
इसराएल की सारी गोष्ठियों की आंख परमेश्वर की ओर लगेगी।
२ और हमात की आंख भी जो उस के समीप है और सूर और
३ सैदा की यद्यपि वुह बहुत बुद्धिमान है। और सूर ने अपने लिये
गढ़ बनाया और चांदी को धूल की नाईं बटोरा है और चोखे
सोने को सड़कों की कीच की नाईं॥
४ देखो प्रभु उसे निकालेगा और समुद्र में उस के बल को
५ मारेगा और वुह आग से जलाई जायेगी। असक़लून देखकर
डरेगा और अज्ज़ः अति पीड़ित होगा अक़रून भी कि उस की
आस टूटी अज्ज़ः से राजा नष्ट होगा असक़लून बसाया न
६ जायेगा। और ऊपरी जन अशदूद में रहेगा और फिलिस्तियों
७ के अहङ्कार को काट डालूंगा। और मैं उस के लोहू को उस
के मुंह से और उस की घिनितों को उस के दांतों के मध्य में
से दूर करूंगा और वुह हां वही हमारे ईश्वर के लिये बच
जायेगा और वुह यहूदाह में अध्यक्ष के समान होगा और
८ अक़रून यबूसी के समान। और मैं सेना के कारण जो बीत

जायेगी और लौट जायेगी अपने मन्दिर का घेरा करूंगा और
उन में से सताऊ फेर कभू न जायेगा क्योंकि मैं ने अब अपनी
आंखों से देखा है ॥
९ हे सेहून की पुत्री अति मगन हो हे यरूसलम की पुत्री
ललकार देख तेरा राजा तेरे पास आता है वुह धर्म्मी और
मुक्तिदायक है दीन और गदहे पर चढ़ा है हां गदही के बच्चे
१० पर। और मैं इफ़रायम से रथों को और यरूसलम से घोड़े
को काट डालूंगा और संग्राम का धनुष काट डाला जायेगा और
वुह जातिगणों से कुशल की बात कहेगा और उस का राज
समुद्र से समुद्र लों और नदी से पृथिवी के अन्त लों होगा ॥
११ और तू जो है तेरी बाचा के लोहू से मैं तेरे बंधुओं को
१२ उस गड़हे से निकाल लाऊंगा जहां पानी न था। हे आशा के
बंधुओ गढ़ को लौटो मैं आज के दिन भी कहता हूं कि मैं
१३ दूना तुझे दूंगा। क्योंकि मैं ने यहूदाह को अपने लिये झुकाया
है और मैं ने धनुष को इफ़रायम से भर दिया है और तेरे
बेटों को हे सेहून तेरे बेटों के बिरुद्ध हे यूनान उभारा और
१४ तुझे महावीर की तलवार की नाईं बनाया। और परमेश्वर उन
पर दिखलाई देगा और उस का बाण बिजली की नाईं निकल
चलेगा और प्रभु परमेश्वर तुरही फूंकेगा और वुह दक्खिन के
१५ बवंडरों में बीत जायेगा। सेनाओं का परमेश्वर उन की
रक्षा करेगा और वे अपने बैरियों को भक्षेंगे और ढेलवांस के
पत्थरों की नाईं उन्हें दबावेंगे और वे पीयेंगे और मद्यप के
समान ललकारेंगे और कटोरे की नाईं भर जायेंगे और बेदी
१६ के कोनों की नाईं। और उसी दिन परमेश्वर उन का ईश्वर
उन्हें अपने लोगों के झुंड की नाईं बचावेगा क्योंकि वे
मुकुट के पत्थरों की नाईं होंगे जो उस के देश पर
१७ उठेंगे। क्योंकि उस की कृपा क्या ही बड़ी है और उस की

सुन्दरता क्या ही बड़ी है अन्न युवा पुरुषों को और नया दाखरस
कुंवारों को बृद्धि देगा ॥

दसवां पर्ब्ब ।

१ पिछले मेंह के समय में परमेश्वर से मेंह मांगो परमेश्वर
बिजलियों को बनावेगा और उन्हें मेंह की झड़ियां देगा हर
२ एक जन को खेत का साग पात । क्योंकि कुलपूज्यों ने मिथ्या
कहा है और देवज्ञों ने झूठ देखा है और झूठा स्वप्न कहा है
उन्हों ने बृथा शान्ति दिई है इस लिये वे झुंड की नाईं भटके
३ वे कष्टित हैं क्योंकि उन का कोई गड़ेरिया नहीं है। गड़ेरियों पर
मेरा क्रोध भड़का और मैं ने बकरों को दण्ड दिया परन्तु सेनाओं
के परमेश्वर ने अपने झुंड यहूदाह के घराने को प्रतिफल दिया
४ और उन्हें संग्राम में अपने बिभव के घोड़े की नाईं किया। उसी से
कोने का पत्थर उसी से कील उसी से संग्राम का धनुष उसी से हर
५ एक अध्यक्ष निकल जायेगा । और वे महावीरों की नाईं होंगे
जो संग्राम में अपने बैरियों को सड़कों की कीचड़ की नाईं
लताड़ते हैं और वे लड़ेंगे क्योंकि परमेश्वर उन के संग होगा
और घोड़चढ़े घबरा जायेंगे ॥

६ और मैं यहूदाह के घराने को बलवन्त करूंगा और यूसुफ़
के घराने को बचाऊंगा और मैं उन्हें बसाऊंगा क्योंकि मैं उन
पर दया करता हूं और वे ऐसे होंगे जैसा कि मैं ने उन्हें नहीं
निकाला क्योंकि मैं परमेश्वर उन का ईश्वर हूं और मैं उन की
७ सुनूंगा। और इफ़रायम महावीर की नाईं होगा और उन का
मन जैसा मद्य से मगन होगा और उन के पुत्र देखके मगन
८ होंगे उन का मन परमेश्वर में आल्हादित होगा । मैं उन के
लिये सीटी बजाऊंगा और उन्हें बटोरूंगा क्योंकि मैं ने उन्हें
९ छुड़ाया है और वे बढ़ जायेंगे जैसा वे बढ़ गये थे । और मैं

उन्हें जातिगणों में बिथराऊंगा और वे दूर देशों में मुझे स्मरण
करेंगे और वे अपने लड़के बालों के संग जीयेंगे और फिर
१० लौटेंगे। और मैं उन्हें मिस्र देश से फेर लाऊंगा और असूर
से उन्हें बटोरूंगा और मैं उन्हें जिलिअद और लुबनान के देश
११ में लाऊंगा और उन के लिये स्थान न होगा। और वुह समुद्र
अर्थात् सकेती में से बीत जायेगा और समुद्र की लहरों को मारेगा
और नदी के सारे गहिराव सूख जायेंगे और असूर का अहंकार
१२ उतारा जायेगा और मिस्र का राजदंड जाता रहेगा। और मैं
उन को परमेश्वर में बलि दूंगा और वे उस के नाम में आया
जाया करेंगे परमेश्वर कहता है॥

ग्यारहवां पर्व्व।

१ हे लुबनान अपने द्वारों को खोल जिसतें आग तेरे देवदारों
२ को भस्म करे। हे सनोवर बिलाप करो क्योंकि देवदारु गिर
पड़े हैं क्योंकि शोभित नष्ट हुए हैं हे बसन के बलूत बिलाप
३ करो क्योंकि बाड़ित बन गिराया गया। गड़रियों के बिलाप
करने का शब्द है क्योंकि उन की सोभा नष्ट हुई युवा सिंहों
के गरजने का शब्द है क्योंकि यरदन का अहंकार नष्ट हुआ॥
४ परमेश्वर मेरा ईश्वर यों कहता है कि जूझ के झुंड को
५ चरा। जिन के स्वामी उन्हें जूझ करते हैं और दोषी नहीं
ठहरते और उन के बेचनेहारे कहते हैं कि धन्य परमेश्वर को
क्योंकि मैं धनी हूं और उन के गड़रिये उन पर दया नहीं
६ करते। क्योंकि मैं देश के बासियों पर फिर दया न करूंगा
परमेश्वर कहता है और देखो मैं हर एक जन को उस के संगी
के और उस के राजा के हाथ में सौंपूंगा और वे देश को कुचल
डालेंगे और मैं उन के हाथ से न छुड़ाऊंगा॥
७ सो मैं ने जूझ के झुंड को चराया झुंड के कंगालों के कारण

और मैं ने दो लाठियों को लिया एक को मैं ने सुन्दर कहा
८ और दूसरी को बंधन और मैं ने झुंड को चराया। और मास
भर में मैं ने उन तीन गड़ेरियों को नष्ट किया और मेरा प्राण
उन से घिनाया और उन के प्राण ने भी मुझे त्यागा॥
९ तब मैं ने कहा कि मैं तुम्हें नहीं चराऊंगा जो मरता है
सो मरे और जो नष्ट होता है सो नष्ट होवे और जो बच रहे
सो हर जन अपने संगी का मांस खाये॥
१० और मैं ने अपनी लाठी सुन्दर को लिया और उसे तोड़
डाला कि मैं उस बाचा को तोड़ूं जो मैं ने सारे जातिगणों से
११ बांधी। और वुह उसी दिन तोड़ी गई और झुंड के कंगालों
ने जो मुझे देख रहे थे यों जाना कि यह परमेश्वर का बचन है॥
१२ तब मैं ने उन से कहा कि जो तुम्हारी दृष्टि में भला लगे
तो मेरा प्रतिफल दो नहीं तो मत दो सो उन्हों ने तीस रुपये
१३ मेरा प्रतिफल तौल दिया। और परमेश्वर ने मुझ से कहा कि
उन्हें कुम्हार के पास डाल दो उस भारी प्रतिफल को जो मैं
उन से आंका गया और मैं ने उन तीस रुपैयों को लिया और
उन्हें परमेश्वर के मन्दिर में कुम्हार कने डाल दिया॥
१४ फिर मैं ने दूसरी लाठी बंधन को तोड़ डाला जिसतें
बिरादरी को यहूदाह और इसराएल के मध्य से मिटाऊं॥
१५ फिर परमेश्वर ने मुझ से कहा कि निर्बुद्धि गड़ेरिये के
हथियारों को अपने लिये ले॥
१६ क्योंकि देख मैं देश में एक गड़ेरिया को उठाऊंगा जो नष्ट
किये गये का लेखा न लेगा और भटके हुए को न खोजेगा
और घाव किये गये को चंगा न करेगा और खड़े हुए को न
संभालेगा परन्तु वुह मोटे का मांस खायेगा और उन के खुरों
को तोड़ेगा॥
१७ हाय उस पाजी गड़ेरिया पर जो झुंड को त्यागता है उस

को भुजा पर और उस की दहिनी आंख पर तलवार होगी
उस की भुजा झुराते झुरा जायेगी और उस की दहिनी आंख
अंधियारी होते अंधी हो जायेगी ॥

बारहवां पर्ब्ब ।

१ इसराएल पर परमेश्वर के बचन की भविष्यबाणी परमेश्वर
कहता है जो आकाश को फैलाता है और पृथिवी को नेव
डालता है और मनुष्य में उस के आत्मा को उत्पन्न करता है ॥
२ देख मैं यरूसलम को आस पास के सारे जातिगणों के लिये
थर्थराहट का कटोरा बनाऊंगा और यहूदाह पर भी यरूसलम
३ के घेरे जाने में ऐसा होगा । और उसी दिन में ऐसा होगा कि
मैं यरूसलम को सारे जातिगणों के लिये एक भारी पत्थर
बनाऊंगा सब जो उसे उठावेंगे सो कटते कट जायेंगे और
पृथिवी के सारे जातिगण उस के बिरुद्ध एकट्ठे होंगे ॥
४ उसी दिन परमेश्वर कहता है मैं हर एक घोड़े को घबराहट
से और उस के चढ़वैये को पागलपन से मारूंगा पर यहूदाह
के घराने पर अपनी आंखें खोलूंगा और जातिगणों के हर एक
५ घोड़े को अंधापन से मारूंगा । और यहूदाह के अध्यक्ष अपने
मन में कहेंगे कि यरूसलम के निवासी सेनाओं के परमेश्वर
उन के ईश्वर में मेरे लिये बल है ॥
६ उस दिन मैं यहूदाह के अध्यक्षों को लकड़ी में अंगेठी की
नाईं बनाऊंगा और पूले में आग के दीपक की नाईं और वे
दहिने बायें पर आस पास के सारे जातिगणों को भस्म करेंगे
और यरूसलम अपने ही स्थान में अर्थात् यरूसलम में फिर
७ बसाया जायेगा । और परमेश्वर यहूदाह के तंबुओं को पहिले
बचावेगा जिसतें दाऊद के घराने का बिभव और यरूसलम के
निवासियों का बिभव यहूदाह पर बढ़ न जावे ॥

८ उसी दिन परमेश्वर यरूसलम के निवासियों की रक्षा करेगा
और उसी दिन जो उन में दुर्बल है सो दाऊद के समान होगा
और दाऊद का घराना ईश्वर के समान हां उन के आगे परमेश्वर
९ के दूत के समान होगा। और उसी दिन यों होगा कि मैं
सारे जातिगणों को जो यरूसलम के विरुद्ध आते हैं नाश
१० करने को ढूंढूंगा। और मैं दाऊद के घराने पर और यरूसलम
के निवासियों पर कृपा और बिनती का आत्मा उंडेलूंगा और
वे मुझ पर दृष्टि करेंगे जिसे उन्हों ने छेदा है और वे उस के
लिये बिलाप करेंगे जैसा कोई एकलौते बेटे के लिये बिलाप
करता है और उस के कारण ऐसी कड़ुवाहट में होंगे जैसा
पहिलौठे के लिये कोई कड़ुवाहट में है॥

११ उसी दिन यरूसलम में बड़ा बिलाप होगा हददरूमान के
१२ बिलाप के समान मजिद्दोन की तराई में। और देश बिलाप
करेगा हर घराना अलग दाऊद के घर का परिवार अलग और
उन की पत्नियां अलग नातन के घर का परिवार अलग और
१३ उन की पत्नियां अलग। लावी के घर का परिवार अलग और
उन की पत्नियां अलग समऊन का परिवार अलग और उन की
१४ पत्नियां अलग। सारे बचे हुए परिवार हर एक परिवार अलग
और उन की पत्नियां अलग॥

तेरहवां पर्ब्ब।

१ उसी दिन दाऊद के घराने के लिये और यरूसलम के
निवासियों के लिये पाप और अशुद्धता के लिये एक सोता
२ खोला जायेगा। और उसी दिन यों होगा सेनाओं का परमेश्वर
कहता है कि मैं देश में से मूर्तों का नाम मिटा डालूंगा और
वे फिर स्मरण न किये जायेंगे और मैं भविष्यद्वक्तों को और
३ अशुद्ध आत्मा को देश में से निकाल दूंगा। और यों होगा

कि यदि कोई फिर भविष्य कहे तो उस के माता पिता उस
के जननी जनक उसे कहेंगे कि तू न जीयेगा क्योंकि तू ने
परमेश्वर के नाम से झूठ कहा है और उस के माता पिता
उस के जननी जनक उस के भविष्य कहते ही उसे बध डालेंगे॥
४ और उसी दिन ऐसा होगा कि भविष्यद्वक्ता के भविष्य कहते
ही हर एक जन अपने अपने दर्शन से लज्जित होगा और
५ ऊन के बस्त्र पहिनके फिर छल न देंगे। पर वुह कहेगा कि
मैं भविष्यद्वक्ता नहीं हूं मैं किसान हूं क्योंकि तरुणाई से मैं
६ दूसरे का दास हुआ हूं। और कोई उस्से पूछेगा कि तेरे हाथों
में ये क्या घाव हैं तब वुह कहेगा कि वे ही जिन से मैं अपने
मित्रों के घर में मारा गया॥
७ हे खड्ग तू मेरे चरवाहे पर और उस पुरुष पर जो मेरे
समान का है जाग उठ सेनाओं का परमेश्वर कहता है चरवाहे
को मार और भेड़ें छिन्न भिन्न होंगी और मैं अपना हाथ मेम्नों
८ पर फेरूंगा। और यों होगा परमेश्वर कहता है कि सारे देश
में से दो भाग काटे जायेंगे और मरेंगे पर तीसरा भाग उस में
९ छोड़ा जायेगा। और मैं तीसरे भाग को आग में से लाऊंगा
और उन्हें निर्मल करूंगा जैसी चांदी निर्मल होती है और मैं
उन्हें परखूंगा जैसा सोना परखा जाता है वे मेरा नाम पुकारेंगे
और मैं उन को सुनूंगा मैं कहूंगा कि वे मेरे लोग हैं और वे
कहेंगे कि परमेश्वर मेरा ईश्वर है॥

चौदहवां पर्ब्ब।

१ देख परमेश्वर का दिन आता है और तेरी लूट तेरे मध्य
२ में बांटी जायेगी। और मैं संग्राम के लिये यरूसलम के
बिरुद्ध सारे जातिगणों को बटोरूंगा और नगर लिया जायेगा
और घर लूटे जायेंगे और स्त्रीयां धर पछाड़ी जायेंगी और

आधा नगर बंधुवाई को जायेगा पर बचे हुए लोग नगर से
काटे न जायेंगे ॥
३ तब परमेश्वर निकलेगा और उन जातिगणों से लड़ेगा जैसा
४ वुह संग्राम के दिन में लड़ा। और उसी दिन उस के पांव
जलपाई पहाड़ पर खड़े होंगे जो यरूसलम के सान्ने पूर्ब ओर
है और जलपाई पहाड़ बीचों बीच से पूर्ब और पच्छिम को
फट जायेगा और एक बड़ी तराई होगी और आधा पहाड़
५ उत्तर ओर और उस का आधा दक्खिन ओर जायेगा। और
पहाड़ों की तराई को तुम भागोगे क्योंकि पहाड़ों की तराई
अजल को पहुंचेगी और तुम ऐसा भागोगे जैसा भूईडोल के
आगे यहूदाह के राजा उज्ज़ियाह के दिनों में भागे थे और
परमेश्वर मेरा ईश्वर आता है और तेरे संग सारे सिद्ध ॥
६ और उसी दिन ऐसा होगा कि ज्योति अंधियारी न होगी।
७ परन्तु वुह एक दिन होगा जो परमेश्वर का जाना हुआ है
न दिन न रात होगी पर यों होगा कि सांझ को उंजियाला
८ होगा। और उसी दिन ऐसा होगा कि यरूसलम में से अमृत
जल निकलेगा उस का आधा अगिले समुद्र की ओर और उस का
९ आधा पिछले समुद्र की ओर ग्रीष्म और शीतकाल में होगा। और
परमेश्वर सारी पृथिवी का राजा होगा उसी दिन परमेश्वर एक
१० और उस का नाम एक होगा। सारा देश जिबअ से लेके रुम्मान
लों यरूसलम की दक्खिन ओर चौगान से बदला जायेगा और
वुह ऊंचा किया जायेगा और अपने ठिकाने में बसाया जायेगा
बिनयमीन के फाटक से पहिले फाटक के स्थान लों और कोने
के फाटक लों और हननियल के गुम्मट से राजा के कोल्हुओं
११ लों। और मनुष्य उस में बसेंगे और स्राप न होगा और यरूसलम
कुशल से बसाया जायेगा ॥
१२ और वुह मरी जिस्से परमेश्वर सारे जातिगणों को मारेगा जो

यरूसलम से लड़े हैं सो यही है कि उन का मांस सड़ जायेगा
जब वे अपने पांव पर खड़े हैं और उन की आंखें उन के
नेत्रस्थानों में सड़ जायेंगी और उन की जीभ उन के मुंह में
१३ सड़ जायेगी। और उसी दिन यों होगा कि परमेश्वर की ओर
से उन के मध्य में बड़ी घबराहट आ पड़ेगी और वे एक
दूसरे का हाथ पकड़ेंगे और एक का हाथ दूसरे के हाथ पर
१४ उठेगा। और यहूदाह भी यरूसलम में लड़ेगा और सारे
जातिगणों का धन जो चारों ओर है सोना और रूपा और बस्त्र
१५ बहुताई से बटोरा जायेगा। और जैसी यह मरी है वैसी ही
वुह मरी होगी जो घोड़ों पर और खच्चरों पर और ऊंटों पर और
गदहों पर और सारे पशुओं पर पड़ेगी जो इन छावनियों में होंगे॥
१६ और ऐसा होगा कि सारे जातिगणों में जो यरूसलम के बिरुद्ध
आये हैं हर एक जो बचा है राजा को सेनाओं के परमेश्वर को
पूजने के लिये और तंबुओं का पर्ब मान्ने के लिये साल साल
१७ चढ़ जायेगा। और यों होगा कि पृथिवी के घराने में से जो
यरूसलम को न चढ़ेंगे कि राजा को सेनाओं के परमेश्वर को
१८ पूजें उन पर वर्षा न होगी। और यदि मिस्र का घराना न
चढ़ जाये और न आवे तो उन पर न बरसेगा पर उन पर वुह
मरी होगी जिस्से परमेश्वर उन जातिगणों को मारेगा जो चढ़
१९ नहीं जाते कि तंबुओं का पर्ब मानें। यही मिस्र का दंड होगा
और सारे जातिगणों का दंड जो नहीं जाते कि तंबुओं का पर्ब मानें॥
२० उसी दिन घोड़ों की घंटियों पर परमेश्वर के लिये पवित्रता
होगी और परमेश्वर के घर के पात्र ऐसे होंगे जैसे वे पात्र जो
२१ वेदी के आगे हैं। हां यरूसलम और यहूदाह का हर एक
पात्र सेनाओं के परमेश्वर के लिये पवित्र होगा और सारे बलिदायक
आवेंगे और उन में से लेंगे और उन में पकावेंगे और उसी दिन
सेनाओं के परमेश्वर के घर में कोई कनआनी फिर न होगा॥

मलाकी
भविष्यद्वक्ता की पुस्तक।

पहिला पर्ब्ब।

१ मलाकी के द्वारा से इसराएल के लिये परमेश्वर के बचन की
भविष्यबाणी॥
२ परमेश्वर कहता है कि मैं ने तुम्हें प्यार किया है तथापि
तुम कहते हो कि किस बात में तू ने हमें प्यार किया है क्या
ऐसौ यअकूब का भाई न था परमेश्वर कहता है पर मैं ने
३ यअकूब को प्यार किया। और ऐसौ से बैर रक्खा और उस के
पर्बतों को और उस के अधिकार को बन के गीदड़ों के लिये
उजाड़ किया है॥
४ इस कारण कि अदूम कहता है हम उजाड़े गये पर हम
फिरके उजाड़ स्थानों को बनावेंगे सेनाओं का परमेश्वर यों
कहता है कि वे बनावेंगे पर मैं ढाऊंगा और वे दुष्टता के
सिवाने और जिन लोगों से परमेश्वर सदा क्रोधित है कहावेंगे।
५ और तुम्हारी आंखें देखेंगी और तुम कहोगे कि परमेश्वर इसराएल
के सिवाने पर महिमा पावे॥
६ पुत्र अपने पिता की और सेवक अपने स्वामी की प्रतिष्ठा
करता है सो जो मैं पिता हूं तो मेरी प्रतिष्ठा कहां और जो मैं

स्वामी हूं तो मेरा डर कहां सेनाओं का परमेश्वर तुम्हें कहता
है हे याजको जो मेरे नाम की निन्दा करते हो पर तुम कहते
हो कि किस बात में हम ने तेरे नाम की निन्दा किई।
७ अशुद्ध भोजन मेरी बेदी पर चढ़ाते हो और कहते हो कि किस
बात में हम ने तुझे अशुद्ध किया है इस में कि कहते हो
८ परमेश्वर का मंच तुच्छ है। सो जो तुम बलि के लिये अंधा
चढ़ाओ क्या बुरा नहीं और जो तुम लंगड़ा और रोगी चढ़ाओ
तो क्या बुरा नहीं उसे अपने अध्यक्ष को भेंट देओ क्या वुह
तुम से प्रसन्न होगा अथवा वुह तुम्हें ग्रहण करेगा सेनाओं का
परमेश्वर कहता है॥
९ और अब सर्बशक्तिमान से प्रार्थना करो जिसतें वुह हम पर
दयाल होवे यह तुम्हारे हाथ से होता है क्या वुह तुम्हें
१० ग्रहण करेगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है। तुम में से कौन
है जो द्वारों को बन्द करेगा तुम मेरी बेदी पर आग अमोल्य
नहीं बारते मैं तुम से प्रसन्न नहीं हूं सेनाओं का परमेश्वर
११ कहता है और तुम्हारे हाथ से भेंट ग्रहण न करूंगा। क्योंकि
सूर्य्य के उदय से उस के अस्त लों मेरा नाम अन्यदेशियों में
महान होगा और हर कहीं सुगंध और पवित्र भेंट मेरे नाम
के लिये चढ़ाई जायेगी क्योंकि मेरा नाम अन्यदेशियों में महान
होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है॥
१२ पर तुम ने यह कहके उसे अशुद्ध किया है कि परमेश्वर
का मंच अशुद्ध है और उस की प्राप्ति उस का भोजन तुच्छ है।
१३ तुम ने यह भी कहा कि देख क्या ही थकाव है और तुम ने
उस की निन्दा किई सेनाओं का परमेश्वर कहता है और फाड़ा
हुआ और लंगड़ा और रोगी लाये हो हां तुम ऐसी भेंट लाये
हो क्या मैं तुम्हारे हाथ से उसे ग्रहण करूंगा परमेश्वर कहता
१४ है। परन्तु उस छली पर स्राप हो जो अपने झुंड में नर

रखता है और परमेश्वर के लिये मनौती मानता है और नकाग
बलि चढ़ाता है क्योंकि मैं महाराज हूं सेनाओं का परमेश्वर
कहता है और मेरा नाम जातिगणों में भयानक होगा ॥

दूसरा पर्ब्ब ।

१ और अब हे याजको यह आज्ञा तुम्हारे लिये है ।
२ यदि तुम न सुनो न मन लगाओ कि मेरे नाम को महिमा
करो सेनाओं का परमेश्वर कहता है तो मैं स्राप तुम पर भेजूंगा
मैं तुम्हारे आशीषों को स्रापूंगा हां मैं उसे स्राप चुका हूं इस
३ लिये कि तुम मन नहीं लगाते । देख मैं तुम्हारे बीज को
बिगाडूंगा और तुम्हारे मुंह पर मल बिछाऊंगा हां तुम्हारे पर्बों
४ का मल और कोई तुम्हें उस के संग ले जायेगा । और तुम
जानोगे कि मैं ने इस आज्ञा को तुम्हारे पास भेजा है क्योंकि
लावी से मेरी बाचा ठहरी सेनाओं का परमेश्वर कहता है ।
५ मेरी बाचा जीवन और कुशल की उस के संग थी और मैं ने
उन्हें उसे दिया उस डर के लिये जिस्से वुह मुझ से डरता था
६ और मेरे मुंह के आगे बिस्मित था । सत्यता की व्यवस्था उस
के मुंह में थी और उस के होंठों में अधर्म्म न पाया गया वुह
कुशल और खराई से मेरे साथ चला और बहुतों को बुराई से
७ फिराया । क्योंकि अवश्य है कि याजक के होंठ में ज्ञान धरा
रहे और लोग उस के मुंह से व्यवस्था को ढूंढें इस लिये कि
वुह सेनाओं के परमेश्वर का प्रेरित है ॥
८ पर तुम मार्ग से मुड़े हो तुम ने बहुतों को व्यवस्था में
ठोकर खिलाया तुम ने लावी की बाचा को बिगाड़ा है सेनाओं
९ का परमेश्वर कहता है । जैसा कि तुम मेरे मार्गों पर नहीं चले
हो और व्यवस्था में लोगों का पक्ष किया है इस लिये मैं ने
भी तुम्हें सारे लोगों के आगे तुच्छ और निन्दित किया है ॥

१० क्या हम सभों का एक ही पिता नहीं है क्या एक ही सर्वशक्तिमान
ने हम सभों को उत्पन्न नहीं किया फिर किस लिये हम अपने
पितरों की वाचा को तोड़कर हर एक अपने भाई से छल करें॥
११ यहूदाह ने छल किया है और इसराएल और यरूसलम में
घिनित कार्य्य होता है क्योंकि जो परमेश्वर के लिये पवित्र था
जिसे उस ने प्यार किया है यहूदाह ने उसे अशुद्ध किया है
१२ और अपने देश की लड़की को ब्याहा है। परमेश्वर उस जन
को जो ऐसा करता है क्या गुरू क्या चेला और उसे जो सेनाओं
के परमेश्वर के आगे भेंट चढ़ाता है यअकूब के तंबुओं में से काट
१३ डालेगा। फिर यह भी तुम ने दो बेर किया कि परमेश्वर की बेदी
को आंसुओं और रोदन और चिल्लाने से ढांपा है यहां लों कि
वुह भेंट पर सुरत नहीं लगाता और सुइच्छा से तुम्हारे हाथों
से ग्रहण नहीं करता॥
१४ तद भी तुम कहते हो किस लिये इसी लिये कि परमेश्वर
तेरे और तेरी पत्नी के मध्य में साक्षी था जिस्से तू ने छल
किया है तथापि वुह तेरी संगिनी और तेरी वाचा की पत्नी थी।
१५ क्या उस ने एक ही नहीं बनाया तथापि उस के पास आत्मा
की बचती थी और काहे को कि एक ईश्वरीय बंश को पावे
इस लिये तुम अपने आत्मा से चौकस रहो कि अपनी तरुणाई
१६ की पत्नी से कोई बिश्वास घात न करे। क्योंकि परमेश्वर इसराएल
का ईश्वर कहता है कि मैं परित्याग से घिन खाता हूं और उस्से
भी जो अंधेर से अपने वस्त्र को ढांपता है सेनाओं का परमेश्वर
कहता है इस लिये अपने आत्मा से चौकस रहो कि बिश्वास
घात न करो॥
१७ तुम ने अपनी बातों से परमेश्वर को थकाया है पर तुम
कहते हो कि किस बात में हम ने उसे थकाया है इस में जो
तुम कहते हो कि हर एक जो बुराई करता है परमेश्वर की दृष्टि

में भला है और वुह ऐसों से प्रसन्न है अथवा यह कि न्याय
का ईश्वर कहां है ॥

तीसरा पर्ब्ब ।

१ देख मैं अपने दूत को भेजूंगा और वुह मेरे आगे मार्ग को
सिद्ध करेगा और प्रभु जिसे तुम खोजते हो अचानक अपने
मन्दिर में आवेगा अर्थात् बाचा का दूत जिस्से तुम प्रसन्न हो
२ देख वुह आवेगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है। परन्तु उस
के आने के दिन में कौन ठहरेगा और जब वुह दिखाई देगा तब
कौन खड़ा रहेगा क्योंकि वुह निर्मल करवैये की आग की नाईं
३ और धोबी के साबुन की नाईं है। और वुह चांदी के निर्मल
और चोखा करवैये की नाईं बैठेगा और वुह लावी के बेटों को
पवित्र करेगा और वुह उन्हें सोने चांदी की नाईं निर्मल करेगा
और वे धर्म्म से परमेश्वर को भेंट चढ़ावेंगे ॥
४ तब यहूदाह और यरूसलम की भेंट पुराने दिनों की नाईं
५ और अगिले बरसों की नाईं परमेश्वर को प्रसन्न आवेंगी। पर मैं
न्याय के लिये तुम्हारे पास आऊंगा और मैं टोन्हों पर और
व्यभिचारियों पर और झूठे किरियकों पर और उन पर जो
बनिहार और विधवा और अनाथ की बनी रोक रखते हैं और
जात्री को पद से फिराते हैं और मुझ से नहीं डरते चटक
६ साक्षी हूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है। क्योंकि मैं परमेश्वर
हूं मैं नहीं पलटता इस लिये हे यअकूब के पुत्रो तुम भस्म नहीं हो॥
७ अपने पितरों के दिनों से तुम मेरी बिधिओं से फिर
गये हो और उन्हें पालन नहीं किया है मेरी ओर फिरो और
मैं तुम्हारी ओर फिरूंगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है परन्तु
८ तुम कहते हो कि किस बात में हम फिरें। क्या कोई ईश्वर से
चुरावेगा तथापि तुम ने मुझ से चुराया परन्तु कहते हो कि

किस बात में हम ने तुझ से चुराया है दहेकी और भेंटों में।
९ तुम श्राप से श्रापित हो क्योंकि तुम ने हां इस सारे जातिगण
ने मुझ से चुराया है॥

१० तुम सारी दहेकी को भंडार में लाओ जिसतें मेरे घर में
भोजन होवे और अब इस्से मुझे परखो सेनाओं का परमेश्वर
कहता है कि मैं तुम्हारे लिये स्वर्ग की खिड़कियों को न खोलूं
और तुम पर यहां लों आशीस बहाऊं कि रखने के लिये स्थान
११ न होगा। और मैं तुम्हारे लिये भक्षक को डांटूंगा और वुह
तुम्हारी भूमि के फलों को नष्ट न करेगा और खेत में तुम्हारा
१२ दाख बांझ न होगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है। और सारे
जातिगण तुम्हें धन्य कहेंगे क्योंकि तुम बांछित देश होगे
सेनाओं का परमेश्वर कहता है॥

१३ तुम्हारी बातें मेरे बिरुद्ध कड़ी हुईं परमेश्वर कहता है
तथापि तुम कहते हो कि हम ने तेरे बिरुद्ध क्या कहा है॥

१४ तुम ने कहा हैं कि परमेश्वर की सेवा वृथा है और क्या
लाभ है कि हम उस की बिधिन को पालन करें और सेनाओं
१५ के परमेश्वर के आगे उदासी से चलें। और अब हम अहङ्कारियों
को धन्य कहते हैं हां दुष्टकारी बन गये हां जिन्हों ने ईश्वर
को छेड़ा है वे बच निकले॥

१६ तब जो परमेश्वर को डरते थे उन्हों ने आपस में बातें
किईं और परमेश्वर ने कान धरके सुना और उन के लिये जो
परमेश्वर से डरते थे और उस के नाम का ध्यान करते थे स्मरण
१७ की पुस्तक उस के आगे लिखी गई। और जिस दिन मैं ने
ठहराया सेनाओं का परमेश्वर कहता है वे मेरे लिये विशेष
भंडार होंगे और मैं उन पर कृपाल हूंगा जैसा मनुष्य अपने
१८ पुत्र पर कृपाल है जो उस की सेवा करता है। तब तुम
फिरोगे और धर्म्मी और दुष्ट के मध्य उस के मध्य जो ईश्वर

की सेवा करता है और जो उस की सेवा नहीं करता तुम बेवरा
जानेगे ॥

चौथा पर्ब्ब ।

१ क्योंकि देख वुह दिन आता है जो भट्ठे की नाईं जलेगा
और सारे अहङ्कारी और सारे दुष्टकारी नरई होंगे और जो दिन
आता है सो उन्हें जला देगा सेनाओं का परमेश्वर कहता है और
उन की न जड़ न डाली छोड़ेगा ॥
२ परन्तु तुम्हारे लिये जो मेरे नाम से डरते हो धर्म्म का
सूर्य्य उदय होगा और उस के डैनें के तले चङ्गाई होगी और
३ तुम निकलोगे और थान के बछड़ों की नाईं बढ़ोगे। और तुम
दुष्टों को लताड़ोगे क्योंकि जिस दिन कि मैं यह करूंगा वे
तुम्हारे पांव के तलवें के नीचे राख होंगे सेनाओं का परमेश्वर
कहता है ॥
४ मेरे सेवक मूसा की व्यवस्था को जो मैं ने सारे इसराएल
के लिये हरिब में आज्ञा किई अर्थात् बिधिन और न्यायें को
स्मरण करो ॥
५ देखो परमेश्वर के बड़े और भयङ्कर दिन के आने से आगे
६ मैं इलियाह भविष्यद्वक्ता को तुम्हारे पास भेजूंगा। और वुह
पित्रों के मन को पुत्रों की ओर और पुत्रों के मन को उन के
पित्रों की ओर फेरेगा न हो कि मैं आऊं और देश को स्राप से
नाश करूं ॥

पवित्र शास्त्रका अन्तभाग ।

अर्थात्

मत्ती और मार्कु और लूका और यूहन्ना रचित

प्रभु यीशु खीष्टका सुसमाचार ।

और

प्रेरितांकी क्रियाओंका वृत्तान्त ।

और

धर्म्मोपदेश और भविष्यद्वाक्यकी पत्रियां ।

जो

यूनानी भाषासे हिन्दीमें किये गये हैं ।

THE

NEW TESTAMENT

IN HINDI.

1874

सूची पत्र ।

मत्ती रचित सुसमाचार।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

१ यीशु खीष्टकी बंशावलि। १८ उसके जन्मकी कथा।

१ इब्राहीमके सन्तान दाऊदके सन्तान यीशु खीष्टकी
२ बंशावलि। इब्राहीमका पुत्र इसहाक इसहाकका पुत्र
याकूब याकूबके पुत्र यिहूदा और उसके भाई हुए।
३ तामरसे यिहूदाके पुत्र पेरस और जेरह हुए पेरसका
४ पुत्र हिस्रोन हिस्रोनका पुत्र अराम। अरामका पुत्र
अम्मीनादब अम्मीनादबका पुत्र नहशोन नहशोनका पुत्र
५ सलमोन। राहबसे सलमोनका पुत्र बोअस हुआ रूतसे
६ बोअसका पुत्र ओबेद हुआ ओबेदका पुत्र यिशी। यि-
शीका पुत्र दाऊद राजा ऊरियाहकी बिधवासे दाऊद
७ राजाका पुत्र सुलेमान हुआ। सुलेमानका पुत्र रिहबु-
आम रिहबुआमका पुत्र अबियाह अबियाहका पुत्र
८ आसा। आसाका पुत्र यिहोशाफट यिहोशाफटका पुत्र
९ यिहोराम यिहोरामका सन्तान उज्जियाह। उज्जियाहका
पुत्र योथम योथमका पुत्र आहस आहसका पुत्र हिज-
१० कियाह। हिजकियाहका पुत्र मनस्सी मनस्सीका पुत्र
११ आमोन आमोनका पुत्र योशियाह। बाबुल नगरको
जानेके समयमें योशियाहके सन्तान यिखनियाह और
१२ उसके भाई हुए। बाबुलको जानेके पीछे यिखनियाहका
१३ पुत्र शलतियेल शलतियेलका पुत्र जिरुबाबुल। जिरु-

बाबुलको पुत्र अबीहूद अबीहूदका पुत्र इलियाकीम
इलियाकीमका पुत्र असोर। असोरका पुत्र सादोक १४
सादोकका पुत्र आखीम आखीमका पुत्र इलीहूद।
इलीहूदका पुत्र इलियाजर इलियाजरका पुत्र मत्तान १५
मत्तानका पुत्र याकूब। याकूबका पुत्र यूसफ जो मरियम १६
का स्वामी था जिससे यीशु जो खीष्ट कहावता है उत्पन्न
हुआ। सो सब पीढ़ियां इब्राहीमसे दाऊदलों चौदह १७
पीढ़ी और दाऊदसे बाबुलको जानेलों चौदह पीढ़ी और
बाबुलको जानेके समयसे खीष्टलों चौदह पीढ़ी थीं।

यीशु खीष्टका जन्म इस रीतिसे हुआ. उसकी माता १८
मरियमकी यूसफसे मंगनी हुई थी पर उनके एकट्ठे
होनेके पहिले वह देख पड़ी कि पवित्र आत्मासे गर्भवती
है। तब उसके स्वामी यूसफने जो धर्म्मी मनुष्य था १९
और उसपर प्रगटमें कलंक लगाने नहीं चाहता था
उसे चुपकेसे त्यागनेकी इच्छा किई। जब वह इन २०
बातोंकी चिन्ता करता था देखो परमेश्वरके एक दूतने
स्वप्नमें उसे दर्शन दे कहा हे दाऊदके सन्तान यूसफ तू
अपनी स्त्री मरियमको अपने यहां लानेसे मत डर
क्योंकि उसको जो गर्भ रहा है सो पवित्र आत्मासे है।
वह पुत्र जनेगी और तू उसका नाम यीशु रखना २१
क्योंकि वह अपने लोगोंको उनके पापोंसे बचावेगा।
यह सब इसलिये हुआ कि जो बचन परमेश्वरने २२
भविष्यद्वक्ताके द्वारासे कहा था सो पूरा होवे. कि देखो २३
कुंवारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और वे उसका
नाम इम्मानुएल रखेंगे जिसका अर्थ यह है ईश्वर

२४ हमारे संग । तब यूसफने नींदसे उठके जैसा परमेश्वर
के दूतने उसे आज्ञा दिई थी वैसा किया और अपनी
२५ स्त्रीको अपने यहां लाया । परन्तु जबलों वह अपना
पहिलौठा पुत्र न जनी तबलों उसको न जाना और
उसने उसका नाम यीशु रखा ।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ ज्योतिषियोंका यीशुको खोजना । १३ यूसफका यीशु और मरियमको मिसरमें ले जाना । १६ हेरोदका बैतलहमके बालकोंको घात करना। १९ यूसफका परिवार सहित मिसरसे लौटना और नासरतमें बसना ।

१ हेरोद राजाके दिनोंमें जब यिहूदिया देशके बैतलहम
नगरमें यीशुका जन्म हुआ तब देखो पूर्ब्बसे कितने
२ ज्योतिषी यिरूशलीम नगरमें आये . और बोले यिहूदि-
योंका राजा जिसका जन्म हुआ है कहां है क्योंकि
हमने पूर्ब्बमें उसका तारा देखा है और उसको प्रणाम
३ करने आये हैं । यह सुनके हेरोद राजा और उसके
४ साथ सारे यिरूशलीमके निवासी घबरा गये । और
उसने लोगोंके सब प्रधान याजकों और अध्यापकोंको
५ एकट्ठे कर उनसे पूछा खीष्ट कहां जन्मेगा । उन्होंने उससे
कहा यिहूदियाके बैतलहम नगरमें क्योंकि भविष्यद्वक्ताके
६ द्वारा यूं लिखा गया है . कि हे यिहूदा देशके बैतलहम
तू किसी रीतिसे यिहूदाकी राजधानियोंमें सबसे छोटी
नहीं है क्योंकि तुझमेंसे एक अधिपति निकलेगा जो
७ मेरे इस्रायेली लोगका चरवाहा होगा । तब हेरोदने
ज्योतिषियोंको चुपकेसे बुलाके उन्हें यत्नसे पूछा कि तारा
८ किस समय दिखाई दिया । और उसने यह कहके उन्हें

बैतलहम भेजा कि जाके उस बालकके विषयमें यत्नसे
बूझो और जब उसे पावो तब मुझे सन्देश देओ कि मैं
भी जाके उसको प्रणाम करूं । वे राजाकी सुनके चले ९
गये और देखो जो तारा उन्होंने पूर्ब्बमें देखा था सो
उनके आगे आगे चला यहांलों कि जहां बालक था
उस स्थानके ऊपर पहुंचके ठहर गया । वे उस तारेको १०
देखके अत्यन्त आनन्दित हुए । और घरमें पहुंचके ११
उन्होंने बालकको उसकी माता मरियमके संग देखा
और दण्डवत कर उसे प्रणाम किया और अपनी सम्पत्ति
खोलके उसको सोना और लोबान और गन्धरस भेंट
चढ़ाई । और स्वप्नमें ईश्वरसे यह आज्ञा पाके कि हेरोदके १२
पास मत फिर जाओ वे दूसरे मार्गसे अपने देशको चले
गये ।

उनके जानेके पीछे देखो परमेश्वरके एक दूतने १३
स्वप्नमें यूसफको दर्शन दे कहा उठ बालक और उसकी
माताको लेके मिसर देशको भाग जा और जबलों मैं
तुझे न कहूं तबलों वहीं रह क्योंकि हेरोद नाश करनेके
लिये बालकको ढूंढेगा । वह उठ रातहीको बालक और १४
उसकी माताको लेके मिसरको चला गया । और १५
हेरोदके मरनेलों वहीं रहा कि जो बचन परमेश्वरने
भविष्यद्वक्ताके द्वारासे कहा था कि मैंने अपने पुत्रको
मिसरमेंसे बुलाया सो पूरा होवे ।

जब हेरोदने देखा कि ज्योतिषियोंने मुझसे ठट्ठा किया १६
है तब अति क्रोधित हुआ और लोगोंको भेजके जिस
समयको उसने ज्योतिषियोंसे यत्नसे पूछा था उस समयके

अनुसार बैतलहममें और उसके सारे सिवानोंमेंके सब
बालकोंको जो दो बरसके और दो बरससे छोटे थे
१७ मरवा डाला । तब जो बचन यिरमियाह भविष्यद्वक्ताने
१८ कहा था सो पूरा हुआ . कि रामा नगरमें एक शब्द
अर्थात हाहाकार और रोना और बड़ा बिलाप सुना
गया राहेल अपने बालकोंके लिये रोती थी और शान्त
होने न चाहती थी क्योंकि वे नहीं हैं ।
१९ हेरोदके मरनेके पीछे देखो परमेश्वरके एक दूतने
२० मिसरमें यूसफको स्वप्नमें दर्शन दे कहा . उठ बालक
और उसकी माताको लेके इस्रायेल देशको जा क्योंकि
जो लोग बालकका प्राण लेने चाहते थे सो मर गये हैं।
२१ तब वह उठ बालक और उसकी माताको लेके इस्रायेल
२२ देशमें आया । परन्तु जब उसने सुना कि अर्खिलाव
अपने पिता हेरोदके स्थानमें यिहूदियाका राजा हुआ
है तब वहां जानेसे डरा और स्वप्नमें ईश्वरसे आज्ञा
२३ पाके गालीलके सिवानोंमें गया . और नासरत नाम एक
नगरमें आके बास किया कि जो बचन भविष्यद्वक्ताओंसे
कहा गया था कि वह नासरी कहावेगा सो पूरा होवे।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ योहन बपतिसमा देनेहारेका वृत्तान्त । ७ उसका उपदेश और भविष्यद्वाक्य ।
१३ यीशुका बपतिसमा लेना ।

१ उन दिनोंमें योहन बपतिसमा देनेहारा आके
२ यिहूदियाके जंगलमें उपदेश करने लगा . और कहने
लगा कि पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्गका राज्य निकट
३ आया है। यह वही है जिसके विषयमें यिशैयाह

भविष्यद्वक्ताने कहा किसीका शब्द हुआ जो जंगलमें
पुकारता है कि परमेश्वरका पन्थ बनाओ उसके
राजमार्ग सीधे करो । इस योहनका वस्त्र ऊंटके रोमका ४
था और उसकी कटिमें चमड़ेका पटुका बंधा था और
उसका भोजन टिड्डियां और बन मधु था । तब यिरू- ५
शलीमके और सारे यिहूदियाके और यर्दन नदीके
आसपास सारे देशके रहनेहारे उस पास निकल आये.
और अपने अपने पापोंको मानके यर्दनमें उससे ६
बपतिसमा लिया ।

जब उसने बहुतेरे फरीशियों और सदूकियोंको उससे ७
बपतिसमा लेनेको आते देखा तब उनसे कहा हे सांपोंके
बंश किसने तुम्हें आनेवाले क्रोधसे भागनेको चिताया है।
पश्चात्तापके योग्य फल लाओ । और अपने अपने ८
मनमें यह चिन्ता मत करो कि हमारा पिता
इब्राहीम है क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि ईश्वर
इन पत्थरोंसे इब्राहीमके लिये सन्तान उत्पन्न कर
सकता है । और अब भी कुल्हाड़ी पेड़ोंकी जड़पर १०
लगी है इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं फलता
है सो काटा जाता और आगमें डाला जाता है ।
मैं तो तुम्हें पश्चात्तापके लिये जलमें बपतिसमा देता ११
हूं परन्तु जो मेरे पीछे आता है सो मुझसे अधिक
शक्तिमान है मैं उसकी जूतियां उठानेके योग्य नहीं वह
तुम्हें पवित्र आत्मामें और आगमें बपतिसमा देगा।
उसका सूप उसके हाथमें है और वह अपना सारा १२
खलिहान शुद्ध करेगा और अपने गेहूंको खत्तेमें एकट्ठा

करेगा परन्तु भूसीको उस आगसे जो नहीं बुझती है
जलावेगा ।
१३ तब यीशु योहनसे बपतिसमा लेनेको उस पास
१४ गालीलसे यर्दनके तीरपर आया । परन्तु योहन यह
कहके उसे बर्जने लगा कि मुझे आपके हाथसे बपतिसमा
लेना अवश्य है और क्या आप मेरे पास आते हैं ।
१५ यीशुने उसको उत्तर दिया कि अब ऐसा होने दे क्योंकि
इसी रीतिसे सब धर्म्मको पूरा करना हमें चाहिये .
१६ तब उसने होने दिया । यीशु बपतिसमा लेके तुरन्त
जलसे ऊपर आया और देखो उसके लिये स्वर्ग खुल
गया और उसने ईश्वरके आत्माको कपोतकी नाईं
१७ उतरते और अपने ऊपर आते देखा । और देखो यह
आकाशबाणी हुई कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं
अति प्रसन्न हूं ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ यीशुकी परीक्षा । १२ उसका कफर्नाहुममें रहना । १७ उपदेश करना और कई एक शिष्योंको बुलाना । २३ बहुत रोगियोंको चंगा करना ।

१ तब आत्मा यीशुको जंगलमें ले गया कि शैतानसे
२ उसकी परीक्षा किई जाय । वह चालीस दिन और
३ चालीस रात उपवास करके पीछे भूखा हुआ । तब
परीक्षा करनेहारेने उस पास आ कहा जो तू ईश्वरका
पुत्र है तो कह दे कि ये पत्थर रोटियां बन जावें ।
४ उसने उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटीसे
नहीं परन्तु हर एक बातसे जो ईश्वरके मुखसे निकलती
५ है जीयेगा । तब शैतानने उसको पवित्र नगरमें ले

जाके मन्दिरके कलशपर खड़ा किया . और उससे ६
कहा जो तू ईश्वरका पुत्र है तो अपनेको नीचे गिरा
क्योंकि लिखा है कि वह तेरे विषयमें अपने दूतोंको
आज्ञा देगा और वे तुझे हाथों हाथ उठा लेंगे न हो
कि तेरे पांवमें पत्थरपर चोट लगे। यीशुने उससे कहा ७
फिर भी लिखा है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वरकी
परीक्षा मत कर। फिर शैतानने उसे एक अति ऊंचे ८
पर्ब्बतपर ले जाके उसको जगतके सब राज्य और उनका
विभव दिखाये . और उससे कहा जो तू दंडवत कर ९
मुझे प्रणाम करे तो मैं यह सब तुझे देऊंगा। तब १०
यीशुने उससे कहा हे शैतान दूर हो क्योंकि लिखा
है कि तू परमेश्वर अपने ईश्वरको प्रणाम कर और
केवल उसीकी सेवा कर। तब शैतानने उसको छोड़ा ११
और देखो स्वर्ग दूतोंने आ उसकी सेवा किई।

जब यीशुने सुना कि योहन बन्दीगृहमें डाला १२
गया तब गालीलको चला गया। और नासरत नगरको १३
छोड़के उसने कफर्नाहुम नगरमें जो समुद्रके तीरपर
जिबुलून और नप्तालीके बंशोंके सिवानोंमें है आके बास
किया . कि जो बचन यिशैयाह भविष्यद्वक्तासे कहा गया १४
था सो पूरा होवे . कि जिबुलूनका देश और नप्तालीका १५
देश समुद्रकी ओर यर्दनके उस पार अन्यदेशियोंका
गालील . जो लोग अंधकारमें बैठे थे उन्होंने बड़ी १६
ज्योति देखी और जो मृत्युके देश और छायामें बैठे थे
उनपर ज्योति उदय हुई।

उस समयसे यीशु उपदेश करने और यह कहने लगा १७

कि पश्चात्ताप करो क्योंकि स्वर्गका राज्य निकट आया
१८ है । यीशुने गालीलके समुद्रके तीरपर फिरते हुए दो
भाइयोंको अर्थात शिमोनको जो पितर कहावता है
और उसके भाई अन्द्रियको समुद्रमें जाल डालते देखा
१९ क्योंकि वे मछुवे थे । उसने उनसे कहा मेरे पीछे
२० आओ मैं तुमको मनुष्योंके मछुवे बनाऊंगा । वे तुरन्त
२१ जालोंको छोड़के उसके पीछे हो लिये । वहांसे आगे
बढ़के उसने और दो भाइयोंको अर्थात जबदीके पुत्र
याकूब और उसके भाई योहनको अपने पिता जबदीके
संग नावपर अपने जाल सुधारते देखा और उन्हें
२२ बुलाया । और वे तुरन्त नावको और अपने पिताको
छोड़के उसके पीछे हो लिये ।

२३ तब यीशु सारे गालील देशमें उनकी सभाओंमें
उपदेश करता हुआ और राज्यका सुसमाचार प्रचार
करता हुआ और लोगोंमें हर एक रोग और हर एक
२४ व्याधिको चंगा करता हुआ फिरा किया । उसकी कीर्त्ति
सब सुरिया देशमें भी फैल गई और लोग सब रोगियोंको
जो नाना प्रकारके रोगों औ पीड़ाओंसे दुःखी थे और
भूतग्रस्तों और मिर्गीहों और अर्द्धांगियोंको उस पास
२५ लाये और उसने उन्हें चंगा किया । और गालील
और दिकापलि और यिरूशलीम और यिहूदियासे
और यर्दनके उस पारसे बड़ी बड़ी भीड़ उसके पीछे
हो लिई ।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ पर्ब्बतपर यीशुके उपदेशका आरंभ। ३ धन्य कौन हैं इसका निर्णय। १३ लोण और ज्योतिके दृष्टान्तसे शिष्योंका बखान। १७ यीशुके प्रगट होनेका कारण। २१ क्रोध करनेका निषेध। २७ कुदृष्टि करनेका निषेध। ३१ पत्नीको त्यागनेका निषेध। ३३ किरिया खानेका निषेध। ३८ लड़ाई करनेका निषेध। ४३ शत्रुओंको प्रेम करनेका उपदेश।

यीशु भीड़को देखके पर्ब्बतपर चढ़ गया और जब १
वह बैठा तब उसके शिष्य उस पास आये। और वह २
अपना मुंह खोलके उन्हें उपदेश देने लगा।
धन्य वे जो मनमें दीन हैं क्योंकि स्वर्गका राज्य ३
उन्हींका है। धन्य वे जो शोक करते हैं क्योंकि वे ४
शांति पावेंगे। धन्य वे जो नम्र हैं क्योंकि वे पृथिवीके ५
अधिकारी होंगे। धन्य वे जो धर्म्मके भूखे और प्यासे ६
हैं क्योंकि वे तृप्त किये जायेंगे। धन्य वे जो दयावन्त ७
हैं क्योंकि उनपर दया किई जायगी। धन्य वे जिनके ८
मन शुद्ध हैं क्योंकि वे ईश्वरको देखेंगे। धन्य वे जो ९
मेल करवैये हैं क्योंकि वे ईश्वरके सन्तान कहावेंगे।
धन्य वे जो धर्म्मके कारण सताये जाते हैं क्योंकि स्वर्गका १०
राज्य उन्हींका है। धन्य तुम हो जब मनुष्य मेरे लिये ११
तुम्हारी निन्दा करें और तुम्हें सतावें और झूठ बोलते
हुए तुम्हारे बिरुद्ध सब प्रकारकी बुरी बात कहें।
आनन्दित और आह्लादित होओ क्योंकि तुम स्वर्गमें १२
बहुत फल पाओगे. उन्होंने उन भविष्यद्वक्ताओंको
जो तुमसे आगे थे इसी रीतिसे सताया।
तुम पृथिवीके लोण हो परन्तु यदि लोणका स्वाद १३
बिगड़ जाय तो वह किससे लोणा किया जायगा. वह

तबसे किसी कामका नहीं केवल बाहर फेंके जाने और
१४ मनुष्यांके पांवांसे रौंदे जानेके याग्य है। तुम जगतके
प्रकाश हो. जो नगर पहाड़पर बसा है सो छिप नहीं
१५ सकता। और लोग दीपकको बारके बर्त्तनके नीचे
नहीं परन्तु दीवटपर रखते हैं और वह सभोंको जो
१६ घरमें हैं ज्योति देता है। वैसेही तुम्हारा प्रकाश
मनुष्योंके आगे चमके इसलिये कि वे तुम्हारे भले कामों
को देखके तुम्हारे स्वर्गबासी पिताका गुणानुबाद करें।
१७ मत समझो कि मैं व्यवस्था अथवा भविष्यद्वक्ताओं
का पुस्तक लोप करनेको आया हूं मैं लोप करनेको
१८ नहीं परन्तु पूरा करनेको आया हूं। क्योंकि मैं तुमसे
सच कहता हूं कि जबलों आकाश औ पृथिवी टल न
जायें तबलों व्यवस्थासे एक मात्रा अथवा एक बिन्दु
१९ बिना पूरा हुए नहीं टलेगा। इसलिये जो कोई इन
अति छोटी आज्ञाओंमेंसे एकको लोप करे और लोगों
को वैसेही सिखावे वह स्वर्गके राज्यमें सबसे छोटा
कहावेगा परन्तु जो कोई उन्हें पालन करे और सिखावे
२० वह स्वर्गके राज्यमें बड़ा कहावेगा। मैं तुमसे कहता
हूं यदि तुम्हारा धर्म्म अध्यापकों और फरीशियोंके
धर्म्मसे अधिक न होवे तो तुम स्वर्गके राज्यमें प्रवेश
करने न पाओगे।

२१ तुमने सुना है कि आगेके लोगोंसे कहा गया था
कि नरहिंसा मत कर और जो कोई नरहिंसा करे सो
२२ बिचार स्थानमें दंडके योग्य होगा। परन्तु मैं तुमसे
कहता हूं कि जो कोई अपने भाईसे अकारण क्रोध करे

सो बिचार स्थानमें दंडके योग्य होगा और जो कोई
अपने भाईसे कहे कि रे तुच्छ सो न्याइयोंकी सभामें
दंडके योग्य होगा और जो कोई कहे कि रे मूर्ख सो
नरककी आगके दंडके योग्य होगा। सो यदि तू अपना २३
चढ़ावा बेदीपर लावे और वहां स्मरण करे कि तेरे
भाईके मनमें तेरी ओर कुछ है तो अपना चढ़ावा
वहां बेदीके साम्ने छोड़के चला जा. पहिले अपने २४
भाईसे मिलाप कर तब आके अपना चढ़ावा चढ़ा।
जबलों तू अपने मुद्दईके संग मार्गमें है उससे बेग २५
मिलाप कर ऐसा न हो कि मुद्दई तुझे न्यायीको सोंपे
और न्यायी तुझे प्यादेको सोंपे और तू बन्दीगृहमें
डाला जाय। मैं तुझसे सच कहता हूं कि जबलों तू २६
कौड़ी कौड़ी भर न देवे तबलों वहांसे छूटने न पावेगा।

तुमने सुना है कि आगेके लोगोंसे कहा गया था कि २७
परस्त्रीगमन मत कर। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि २८
जो कोई किसी स्त्रीपर कुइच्छासे दृष्टि करे वह अपने
मनमें उससे व्यभिचार कर चुका है। जो तेरी दहिनी २९
आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकालके फेंक दे
क्योंकि तेरे लिये भला है कि तेरे अंगोंमेंसे एक अंग
नाश होवे और तेरा सकल शरीर नरकमें न डाला
जाय। और जो तेरा दहिना हाथ तुझे ठोकर खिलावे ३०
तो उसे काटके फेंक दे क्योंकि तेरे लिये भला है कि
तेरे अंगोंमेंसे एक अंग नाश होवे और तेरा सकल
शरीर नरकमें न डाला जाय।

यह भी कहा गया कि जो कोई अपनी स्त्रीको ३१

३२ त्यागे सो उसको त्यागपत्र देवे। परन्तु मैं तुमसे
कहता हूं कि जो कोई व्यभिचारको छोड़ और किसी
हेतुसे अपनी स्त्रीको त्यागे सो उससे व्यभिचार कर-
वाता है और जो कोई उस त्यागी हुईसे बिवाह करे
सो परस्त्रीगमन करता है।
३३ फिर तुमने सुना है कि आगेके लोगोंसे कहा गया
था कि झूठी किरिया मत खा परन्तु परमेश्वरके लिये
३४ अपनी किरियाओंको पूरी कर। परन्तु मैं तुमसे कहता
हूं कोई किरिया मत खाओ न स्वर्गकी क्योंकि वह
३५ ईश्वरका सिंहासन है . न धरतीकी क्योंकि वह
उसके चरणोंकी पीढ़ी है न यिरूशलीमकी क्योंकि वह
३६ महा राजाका नगर है। अपने सिरकी भी किरिया
मत खा क्योंकि तू एक बालको उजला अथवा काला
३७ नहीं कर सकता है। परन्तु तुम्हारी बातचीत हां हां
नहीं नहीं होवे . जो कुछ इनसे अधिक है सो उस
दुष्ट से होता है।
३८ तुमने सुना है कि कहा गया था कि आंखके बदले
३९ आंख और दांतके बदले दांत। पर मैं तुमसे कहता
हूं बुरेका साम्ना मत करो परन्तु जो कोई तेरे दहिने
गालपर थपेड़ा मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे।
४० जो तुझपर नालिश करके तेरा अंगा लेने चाहे उसको
४१ दोहर भी लेने दे। जो कोई तुझे आध कोश बेगारी
४२ ले जाय उसके संग कोश भर चला जा। जो तुझसे
मांगे उसको दे और जो तुझसे ऋण लेने चाहे उससे
मुंह मत मोड़।

तुमने सुना है कि कहा गया था कि अपने पड़ोसीको ४३
प्यार कर और अपने बैरीसे बैर कर। परन्तु मैं तुमसे ४४
कहता हूं कि अपने बैरियोंको प्यार करो . जो तुम्हें
स्राप देवें उनको आशीस देओ जो तुमसे बैर करें उनसे
भलाई करो और जो तुम्हारा अपमान करें और तुम्हें
सतावें उनके लिये प्रार्थना करो . जिस्तें तुम अपने ४५
स्वर्गबासी पिताके सन्तान होओ क्योंकि वह बुरे औ
भले लोगोंपर अपना सूर्य्य उदय करता है और धर्म्मियों
और अधर्म्मियोंपर मेंह बरसाता है। जो तुम उनसे प्रेम ४६
करो जो तुमसे प्रेम करते हैं तो क्या फल पाओगे .
क्या कर उगाहनेहारे भी ऐसा नहीं करते हैं। और ४७
जो तुम केवल अपने भाइयोंको नमस्कार करो तो
कौनसा बड़ा काम करते हो . क्या कर उगाहनेहारे
भी ऐसा नहीं करते हैं। सो जैसा तुम्हारा स्वर्गबासी ४८
पिता सिद्ध है तैसे तुम भी सिद्ध होओ।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ धर्म्म कर्म्मके विषयमें यीशुका उपदेश। २ दान करनेकी विधि। ५ प्रार्थना करनेकी विधि। १४ क्षमा करनेका उपदेश। १६ उपवास करनेकी विधि। १९ संसारमें मन लगानेका निषेध।

सचेत रहो कि तुम मनुष्योंको दिखानेके लिये उनके १
आगे अपने धर्म्मके कार्य्य न करो नहीं तो अपने
स्वर्गबासी पितासे कुछ फल न पाओगे।
इसलिये जब तू दान करे तब अपने आगे तुरही २
मत बजवा जैसा कपटी लोग सभाके घरों और मार्गोंमें
करते हैं कि मनुष्य उनकी बड़ाई करें . मैं तुमसे सच

३ कहता हूं वे अपना फल पा चुके हैं। परन्तु जब तू
दान करे तब तेरा दहिना हाथ जो कुछ करे सो तेरा
४ बायां हाथ न जाने . कि तेरा दान गुप्तमें होय और
तेरा पिता जो गुप्तमें देखता है आपही तुझे प्रगटमें
फल देगा ।
५ जब तू प्रार्थना करे तब कपटियोंके समान मत हो
क्योंकि मनुष्योंको दिखानेके लिये सभाके घरोंमें और
सड़कोंके कोनोंमें खड़े होके प्रार्थना करना उनको प्रिय
लगता है . मैं तुमसे सच कहता हूं वे अपना फल पा
६ चुके हैं। परन्तु जब तू प्रार्थना करे तब अपनी कोठरी
में जा और द्वार मून्दके अपने पितासे जो गुप्तमें है
प्रार्थना कर और तेरा पिता जो गुप्तमें देखता है तुझे
७ प्रगटमें फल देगा। प्रार्थना करनेमें देवपूजकोंकी
नाईं बहुत व्यर्थ बातें मत बोला करो क्योंकि वे समझते
हैं कि हमारे बहुत बोलनेसे हमारी सुनी जायगी।
८ सो तुम उनके समान मत होओ क्योंकि तुम्हारे मांगने
के पहिले तुम्हारा पिता जानता है तुम्हें क्या क्या
९ आवश्यक है। तुम इस रीतिसे प्रार्थना करो . हे
हमारे स्वर्गबासी पिता तेरा नाम पवित्र किया जाय .
१० तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा जैसे स्वर्गमें वैसे पृथिवी
११ पर पूरी होय . हमारी दिनभरकी रोटी आज हमें दे .
१२ और जैसे हम अपने ऋणियोंको क्षमा करते हैं तैसे
१३ हमारे ऋणोंको क्षमा कर . और हमें परीक्षामें मत
डाल परन्तु दुष्टसे बचा [क्योंकि राज्य और पराक्रम
और महिमा सदा तेरे हैं . आमीन]।

जो तुम मनुष्योंके अपराध क्षमा करो तो तुम्हारा १४
स्वर्गीय पिता तुम्हें भी क्षमा करेगा । परन्तु जो तुम १५
मनुष्योंके अपराध क्षमा न करो तो तुम्हारा पिता भी
तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा ।

जब तुम उपवास करो तब कपटियोंके समान उदास १६
रूप मत होओ क्योंकि वे अपने मुंह मलीन करते हैं
कि मनुष्योंको उपवासी दिखाई देवें . मैं तुमसे सच
कहता हूं वे अपना फल पा चुके हैं । परन्तु जब तू १७
उपवास करे तब अपने सिरपर तेल मल और अपना
मुंह धो . कि तू मनुष्योंको नहीं परन्तु अपने पिताको १८
जो गुप्तमें है उपवासी दिखाई देवे और तेरा पिता जो
गुप्तमें देखता है तुझे प्रगटमें फल देगा ।

अपने लिये पृथिवीपर धनका संचय मत करो जहां १९
कीड़ा और काई बिगाड़ते हैं और जहां चोर सेंध देते
और चुराते हैं । परन्तु अपने लिये स्वर्गमें धनका २०
संचय करो जहां न कीड़ा न काई बिगाड़ता है और
जहां चोर न सेंध देते न चुराते हैं । क्योंकि जहां तुम्हारा २१
धन है तहां तुम्हारा मन भी लगा रहेगा । शरीरका २२
दीपक आंख है इसलिये यदि तेरी आंख निर्मल हो
तो तेरा सकल शरीर उजियाला होगा । परन्तु यदि २३
तेरी आंख बुरी हो तो तेरा सकल शरीर अंधियारा
होगा . जो ज्योति तुझमें है सो यदि अंधकार है तो वह
अंधकार कैसा बड़ा है । कोई मनुष्य दो स्वामियोंकी २४
सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह एकसे बैर करेगा
और दूसरेको प्यार करेगा अथवा एकसे लगा रहेगा

और दूसरेको तुच्छ जानेगा . तुम ईश्वर और धन दोनों-
२५ की सेवा नहीं कर सकते हो। इसलिये मैं तुमसे कहता
हूं अपने प्राणके लिये चिन्ता मत करो कि हम क्या
खायेंगे और क्या पीयेंगे और न अपने शरीरके लिये
कि क्या पहिरेंगे . क्या भोजनसे प्राण और बस्त्रसे
२६ शरीर बड़ा नहीं है। आकाशके पंछियोंको देखो . वे
न बोते हैं न लवते हैं न खत्तोंमें बटोरते हैं तौभी
तुम्हारा स्वर्गीय पिता उनको पालता है . क्या तुम
२७ उनसे बड़े नहीं हो। तुममेंसे कौन मनुष्य चिन्ता करनेसे
अपनी आयुकी दौड़को एक हाथ भी बढ़ा सकता है।
२८ और तुम बस्त्रके लिये क्यों चिन्ता करते हो . खेतके
सोसन फूलोंको देख लो वे कैसे बढ़ते हैं . वे न परिश्रम
२९ करते हैं न कातते हैं। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि
सुलेमान भी अपने सारे बिभवमें उनमेंसे एकके तुल्य
३० बिभूषित न था। यदि ईश्वर खेतकी घासको जो आज
है और कल चूल्हेमें झोंकी जायगी ऐसी बिभूषित
करता है तो हे अल्प बिश्वासियो क्या वह बहुत
३१ अधिक करके तुम्हें नहीं पहिरावेगा। सो तुम यह
चिन्ता मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या
३२ पीयेंगे अथवा क्या पहिरेंगे। देवपूजक लोग इन सब
बस्तुओंका खोज करते हैं और तुम्हारा स्वर्गीय पिता
जानता है कि तुम्हें इन सब बस्तुओंका प्रयोजन है।
३३ पहिले ईश्वरके राज्य और उसके धर्म्मका खोज करो
३४ तब यह सब बस्तु भी तुम्हें दिई जायेंगीं। सो कलके
लिये चिन्ता मत करो क्योंकि कल अपनी बस्तुओंके

लिये आपही चिन्ता करेगा . हर एक दिनके लिये उसी दिनका दुःख बहुत है ।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ दूसरोंपर दोष लगानेका निषेध । ७ प्रार्थना करनेका उपदेश । १३ सकेत फाटकसे पैठनेका उपदेश । १५ झूठे उपदेशकोंका निर्णय । २१ ईश्वरकी आज्ञा पालन करनेकी आवश्यकता । २४ घरकी नेव डालनेका दृष्टान्त । २८ पर्ब्बतपरके उपदेशकी समाप्ति ।

दूसरोंका बिचार मत करो कि तुम्हारा बिचार न १
किया जाय । क्योंकि जिस बिचारसे तुम बिचार करते २
हो उसीसे तुम्हारा बिचार किया जायगा और जिस
नापसे तुम नापते हो उसीसे तुम्हारे लिये नापा जाय-
गा । जो तिनका तेरे भाईके नेत्रमें है उसे तू क्यों ३
देखता है और तेरेही नेत्रमेंका लट्ठा तुझे नहीं सूझता।
अथवा तू अपने भाईसे क्योंकर कहेगा रहिये मैं तेरे ४
नेत्रसे यह तिनका निकालूं और देख तेरेही नेत्रमें
लट्ठा है । हे कपटी पहिले अपने नेत्रसे लट्ठा निकाल ५
दे तब तू अपने भाईके नेत्रसे तिनका निकालनेको
अच्छी रीतिसे देखेगा । पवित्र बस्तु कुत्तोंको मत देओ ६
और अपने मोतियोंको सूअरोंके आगे मत फेंको ऐसा
न हो कि वे उन्हें अपने पांवोंसे रौंदें और फिरके
तुमको फाड़ डालें ।

मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे ७
खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा । क्योंकि ८
जो कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है
सो पाता है और जो खटखटाता है उसके लिये खोला
जायगा । तुममेंसे कौन मनुष्य है कि यदि उसका पुत्र ९

१० उससे रोटी मांगे तो उसको पत्थर देगा। और जो
११ वह मछली मांगे तो क्या वह उसको सांप देगा। सो
यदि तुम बुरे होके अपने लड़कोंको अच्छे दान देने
जानते हो तो कितना अधिक करके तुम्हारा स्वर्गबासी
पिता उन्होंको जो उससे मांगते हैं उत्तम बस्तु देगा।
१२ जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुमसे करें तुम
भी उनसे वैसाही करो क्योंकि यही व्यवस्था औ
भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकका सार है।
१३ सकेत फाटकसे प्रवेश करो क्योंकि चौड़ा है वह
फाटक और चाकर है वह मार्ग जो बिनाशको पहुंचा-
१४ ता है और बहुत हैं जो उससे पैठते हैं। वह फाटक
कैसा सकेत और वह मार्ग कैसा सकरा है जो जीवन
को पहुंचाता है और थोड़े हैं जो उसे पाते हैं।
१५ झूठे भविष्यद्वक्ताओंसे चौकस रहो जो भेड़ोंके भेषमें
तुम्हारे पास आते हैं परन्तु अन्तरमें लुटेरू हुंड़ार हैं।
१६ तुम उनके फलोंसे उन्हें पहचानोगे. क्या मनुष्य कां-
टोंके पेड़से दाख अथवा ऊंटकटारेसे गूलर तोड़ते हैं।
१७ इसी रीतिसे हर एक अच्छा पेड़ अच्छा फल फलता
१८ है और निकम्मा पेड़ बुरा फल फलता है। अच्छा पेड़
बुरा फल नहीं फल सकता है और न निकम्मा पेड़
१९ अच्छा फल फल सकता है। जो जो पेड़ अच्छा फल
नहीं फलता है सो काटा जाता और आगमें डाला
२० जाता है। सो तुम उनके फलोंसे उन्हें पहचानोगे।
२१ हर एक जो मुझसे हे प्रभु हे प्रभु कहता है स्वर्गके
राज्यमें प्रवेश नहीं करेगा परन्तु वही जो मेरे स्वर्गबा-

सी पिताकी इच्छापर चलता है । उस दिनमें बहुतेरे २२
मुझसे कहेंगे हे प्रभु हे प्रभु क्या हमने आपके नामसे
भविष्यद्वाक्य नहीं कहा और आपके नामसे भूत नहीं
निकाले और आपके नामसे बहुत आश्चर्य्य कर्म्म
नहीं किये । तब मैं उनसे खोलके कहूंगा मैंने तुमको २३
कभी नहीं जाना हे कुकर्म्म करनेहारो मुझसे दूर
होओ ।

इसलिये जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हें पालन २४
करे मैं उसकी उपमा एक बुद्धिमान मनुष्यसे देऊंगा
जिसने अपना घर पत्थरपर बनाया । और मेंह बरसा २५
औ बाढ़ आई औ आंधी चली और उस घरपर लगी
पर वह नहीं गिरा क्योंकि उसकी नेव पत्थरपर डाली
गई थी । परन्तु जो कोई मेरी यह बातें सुनके उन्हें २६
पालन न करे उसकी उपमा एक निर्बुद्धि मनुष्यसे
दिई जायगी जिसने अपना घर बालूपर बनाया ।
और मेंह बरसा औ बाढ़ आई औ आंधी चली और २७
उस घरपर लगी और वह गिरा और उसका बड़ा
पतन हुआ ।

जब यीशु यह बातें कह चुका तब लोग उसके उप- २८
देशसे अचंभित हुए । क्योंकि उसने अध्यापकोंकी रीति- २९
से नहीं परन्तु अधिकारीकी रीतिसे उन्हें उपदेश दिया ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका एक कोढ़ीको चंगा करना । ५ एक शतपतिके दासको चंगा करना । १४ पितरकी सासको चंगा करना । १६ बहुत रोगियोंको चंगा करना । १८ शिष्य होनेके विषयमें यीशुकी कथा । २३ उसका आंधीको थांभना । २८ दो मनुष्योंमेंसे भूत निकालना ।

१ जब यीशु उस पर्व्वतसे उतरा तब बड़ी भीड़ उसके
२ पीछे हो लिई । और देखो एक कोढ़ीने आ उसको
प्रणाम कर कहा हे प्रभु जो आप चाहें तो मुझे शुद्ध
३ कर सकते हैं । यीशुने हाथ बढ़ा उसे छूके कहा मैं तो
चाहता हूं शुद्ध हो जा . और उसका कोढ़ तुरन्त शुद्ध
४ हो गया । तब यीशुने उससे कहा देख किसीसे मत कह
परन्तु जा अपने तईं याजकको दिखा और जो चढ़ावा
मूसाने ठहराया उसे लोगोंपर साक्षी होनेके लिये
चढ़ा ।

५ जब यीशुने कफर्नाहुममें प्रवेश किया तब एक
६ शतपतिने उस पास आ उससे बिन्ती किई . कि हे
प्रभु मेरा सेवक घरमें अर्द्धांग रोगसे अति पीड़ित पड़ा
७ है । यीशुने उससे कहा मैं आके उसे चंगा करूंगा ।
८ शतपतिने उत्तर दिया कि हे प्रभु मैं इस योग्य नहीं
कि आप मेरे घरमें आवें पर बचन मात्र भी कहिये
९ तो मेरा सेवक चंगा हो जायगा । क्योंकि मैं पराधीन
मनुष्य हूं और योद्धा मेरे बशमें हैं और मैं एकको
कहता हूं जा तो वह जाता है और दूसरेको आ तो
वह आता है और अपने दासको यह कर तो वह
१० करता है । यह सुनके यीशुने अचंभा किया और जो
लोग उसके पीछेसे आते थे उनसे कहा मैं तुमसे सच
कहता हूं कि मैंने इस्रायेली लोगोंमें भी ऐसा बड़ा
११ बिश्वास नहीं पाया है । और मैं तुमसे कहता हूं कि
बहुतेरे लोग पूर्ब्ब और पश्चिमसे आके इब्राहीम और
१२ इसहाक और याकूबके साथ स्वर्गके राज्यमें बैठेंगे । परन्तु

राज्यके सन्तान बाहरके अंधकारमें डाले जायेंगे जहां
रोना और दांत पीसना होगा। तब यीशुने शतपतिसे १३
कहा जाइये जैसा तूने बिश्वास किया है वैसाही तुझे
होवे और उसका सेवक उसी घड़ी चंगा हो गया।

यीशुने पितरके घरमें आके उसकी सासको पड़ी १४
हुई और ज्वरसे पीड़ित देखा। उसने उसका हाथ छूआ १५
और ज्वरने उसको छोड़ा और वह उठके उनकी सेवा
करने लगी।

सांझको लोग बहुतसे भूतग्रस्तोंको उस पास लाये १६
और उसने बचनहीसे भूतोंको निकाला और सब रोगि-
योंको चंगा किया. कि जो बचन यिशैयाह भविष्यद्वक्तासे १७
कहा गया था कि उसने हमारी दुर्बलताओंको ग्रहण
किया और रोगोंको उठा लिया सो पूरा होवे।

यीशुने अपने आसपास बड़ी भीड़ देखके उस पार १८
जानेकी आज्ञा किई। और एक अध्यापकने आ उससे १९
कहा हे गुरु जहां जहां आप जायें तहां मैं आपके पीछे
चलूंगा। यीशुने उससे कहा लोमड़ियोंको मांदें और २०
आकाशके पंछियोंको बसेरे हैं परन्तु मनुष्यके पुत्रको
सिर रखनेका स्थान नहीं है। उसके शिष्योंमेंसे दूसरेने २१
उससे कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिताको
गाड़ने दीजिये। यीशुने उससे कहा तू मेरे पीछे हो ले २२
और मृतकोंको अपने मृतकोंको गाड़ने दे।

जब वह नावपर चढ़ा तब उसके शिष्य उसके २३
पीछे हो लिये। और देखो समुद्रमें ऐसे बड़े हिलकोरे २४
उठे कि नाव लहरोंसे ढंप जाती थी परन्तु वह सोता

२५ था । तब उसके शिष्योंने उस पास आके उसे जगाके
२६ कहा हे प्रभु हमें बचाइये हम नष्ट होते हैं । उसने
उनसे कहा हे अल्प बिश्वासियो क्यों डरते हो . तब
उसने उठके बयार और समुद्रको डांटा और बड़ा
२७ चैन हो गया । और वे लोग अचंभा करके बोले
यह कैसा मनुष्य है कि बयार और समुद्र भी उसकी
आज्ञा मानते हैं ।
२८ जब यीशु उस पार गिर्गाशियोंके देशमें पहुंचा तब
दो भूतग्रस्त मनुष्य कबरस्थानमेंसे निकलते हुए उससे
आ मिले जो यहांलों अति प्रचंड थे कि उस मार्गसे
२९ कोई नहीं जा सकता था । और देखो उन्होंने चिल्लाके
कहा हे यीशु ईश्वरके पुत्र आपको हमसे क्या काम .
क्या आप समयके आगे हमें पीड़ा देनेको यहां आये
३० हैं । बहुतसे सूअरोंका एक झुंड उनसे कुछ दूर चरता
३१ था । सो भूतोंने उससे बिन्ती कर कहा जो आप हमें
३२ निकालते हैं तो सूअरोंके झुंडमें पैठने दीजिये । उसने
उनसे कहा जाओ और वे निकलके सूअरोंके झुंडमें
पैठे और देखो सूअरोंका सारा झुंड कड़ाड़ेपरसे समुद्रमें
३३ दौड़ गया और पानीमें डूब मरा । पर चरवाहे भागे
और नगरमें जाके सब बातें और भूतग्रस्तोंकी कथा
३४ भी सुनाईं । और देखो सारे नगरके लोग यीशुसे
भेंट करनेको निकले और उसको देखके बिन्ती किई
कि हमारे सिवानोंसे निकल जाइये ।

९ नवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका एक अर्द्धांगीको चंगा करना और उसका पाप क्षमा करना । ९ मत्तीको बुलाना और पापियोंके संग भोजन करना । १४ उपवास करनेका ब्योरा बताना । १८ एक कन्याको जिलाना और एक स्त्रीको चंगा करना । २७ दो अंधोंके नेत्र खोलना । ३२ भूतग्रस्त गूंगेको चंगा करना । ३५ दीनहीनोंपर यीशुकी दया ।

यीशु नावपर चढ़के उस पार जाके अपने नगरमें १
पहुंचा ।
देखो लोग एक अर्द्धांगीको खाटपर पड़े हुए उस पास २
लाये और यीशुने उन्होंका विश्वास देखके उस
अर्द्धांगीसे कहा हे पुत्र ढाढ़स कर तेरे पाप क्षमा
किये गये हैं । तब देखो कितने अध्यापकोंने अपने ३
अपने मनमें कहा यह तो ईश्वरकी निन्दा करता
है । यीशुने उनके मनकी बातें जानके कहा तुम लोग ४
अपने अपने मनमें क्यों बुरी चिन्ता करते हो । कौन ५
बात सहज है यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये
हैं अथवा यह कहना कि उठ और चल । परन्तु ६
जिस्तें तुम जानो कि मनुष्यके पुत्रको पृथिवीपर पाप
क्षमा करनेका अधिकार है (तब उसने उस अर्द्धांगीसे
कहा) उठ अपनी खाट उठाके अपने घरको जा ।
वह उठके अपने घरको चला गया । लोगोंने यह ७ ८
देखके अचंभा किया और ईश्वरकी स्तुति किई जिसने
मनुष्योंको ऐसा अधिकार दिया ।
वहांसे आगे बढ़के यीशुने एक मनुष्यको कर ९
उगाहनेके स्थानमें बैठे देखा जिसका नाम मत्ती था
और उससे कहा मेरे पीछे आ . तब वह उठके
उसके पीछे हो लिया । जब यीशु घरमें भोजनपर बैठा १०

तब देखो बहुत कर उगाहनेहारे और पापी लोग आ
११ उसके और उसके शिष्योंके संग बैठ गये। यह देखके
फरीशियोंने उसके शिष्योंसे कहा तुम्हारा गुरु कर
उगाहनेहारों और पापियोंके संग क्यों खाता है।
१२ यीशुने यह सुनके उनसे कहा निरोगियोंको वैद्यका
१३ प्रयोजन नहीं है परन्तु रोगियोंको। तुम जाके इसका
अर्थ सीखो कि मैं दयाको चाहता हूं बलिदानको
नहीं. क्योंकि मैं धर्म्मियोंको नहीं परन्तु पापियोंको
पश्चात्तापके लिये बुलाने आया हूं।
१४ तब योहनके शिष्योंने उस पास आ कहा हम
लोग और फरीशी लोग क्यों बार बार उपवास करते
१५ हैं परन्तु आपके शिष्य उपवास नहीं करते। यीशुने
उनसे कहा जबलों दूल्हा सखाओंके संग रहे तबलों
क्या वे शोक कर सकते हैं. परन्तु वे दिन आवेंगे
जिनमें दूल्हा उनसे अलग किया जायगा तब वे उप-
१६ वास करेंगे। कोई मनुष्य कोरे कपड़ेका टुकड़ा पुराने
बस्त्रमें नहीं लगाता है क्योंकि वह टुकड़ा बस्त्रसे कुछ
और भी फाड़ लेता है और उसका फटा बढ़ जाता
१७ है। और लोग नया दाख रस पुराने कुप्पोंमें नहीं
भरते नहीं तो कुप्पे फट जाते हैं और दाख रस बह
जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं. परन्तु नया दाख
रस नये कुप्पोंमें भरते हैं और दोनोंकी रक्षा होती
है।
१८ यीशु उनसे यह बातें कहताही था कि देखो एक
अध्यक्षने आके उसको प्रणाम कर कहा मेरी बेटी

अभी मर गई परन्तु आप आके अपना हाथ उसपर
रखिये तो वह जीयेगी । तब यीशु उठके अपने शिष्यों १९
समेत उसके पीछे हो लिया ।

और देखो एक स्त्रीने जिसका बारह बरससे लोहू २०
बहता था पीछेसे आ उसके बस्त्रके आंचलको छूआ।
क्योंकि उसने अपने मनमें कहा यदि मैं केवल उसके २१
बस्त्रको छूओं तो चंगी हो जाऊंगी । यीशुने पीछे २२
फिरके उसे देखके कहा हे पुत्री ढाढ़स कर तेरे
बिश्वासने तुझे चंगा किया है . सो वह स्त्री उसी
घड़ीसे चंगी हुई ।

यीशुने उस अध्यक्षके घरपर पहुंचके बजनियोंको २३
और बहुत लोगोंको धूम मचाते देखा . और उनसे २४
कहा अलग जाओ कन्या मरी नहीं पर सोती है .
और वे उसका उपहास करने लगे । परन्तु जब लोग २५
बाहर किये गये तब उसने भीतर जा कन्याका हाथ
पकड़ा और वह उठी । यह कीर्त्ति उस सारे देशमें फैल २६
गई ।

जब यीशु वहांसे आगे बढ़ा तब दो अंधे पुकारते २७
और यह कहते हुए उसके पीछे हो लिये कि हे दाऊदके
सन्तान हमपर दया कीजिये । जब वह घरमें पहुंचा २८
तब वे अंधे उस पास आये और यीशुने उनसे कहा
क्या तुम बिश्वास करते हो कि मैं यह काम कर
सकता हूं . वे उससे बोले हां प्रभु । तब उसने उनकी २९
आंखें छूके कहा तुम्हारे बिश्वासके समान तुमको
होवे । इसपर उनकी आंखें खुल गईं और यीशुने ३०

३१ उन्हें चिताके कहा देखो कोई इसको न जाने। तौभी
उन्होंने बाहर जाके उस सारे देशमें उसकी कीर्त्ति
फैलाई ।
३२ जब वे बाहर जाते थे देखो लोग एक भूतग्रस्त
३३ गूंगे मनुष्यको यीशु पास लाये। जब भूत निकाला गया
तब गूंगा बोलने लगा और लोगोंने अचंभा कर कहा
३४ इस्रायेलमें ऐसा कभी न देखा गया । परन्तु फरी-
शियोंने कहा वह भूतोंके प्रधानकी सहायतासे भूतोंको
निकालता है ।
३५ तब यीशु सब नगरों और गांवोंमें उनकी सभाओं-
में उपदेश करता हुआ और राज्यका सुसमाचार प्रचार
करता हुआ और लोगोंमें हर एक रोग और हर एक
३६ व्याधिको चंगा करता हुआ फिरा किया । जब उसने
बहुत लोगोंको देखा तब उसको उनपर दया आई
क्योंकि वे बिन रखवालेकी भेड़ोंकी नाईं व्याकुल और
३७ छिन्नभिन्न किये हुए थे । तब उसने अपने शिष्योंसे
३८ कहा कटनी बहुत है परन्तु बनिहार थोड़े हैं । इसलिये
कटनीके स्वामीसे विन्ती करो कि वह अपनी कटनीमें
बनिहारोंको भेजे ।

१० दसवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका बारह प्रेरितोंको ठहराके भेजना । १६ उन्हें अनेक बातोंके विषयमें चिताना और सिखाना ।

१ यीशुने अपने बारह शिष्योंको अपने पास बुलाके
उन्हें अशुद्ध भूतोंपर अधिकार दिया कि उन्हें निकालें
और हर एक रोग और हर एक व्याधिको चंगा करें ।

बारह प्रेरितोंके नाम ये हैं पहिला शिमोन जो पितर २
कहावता है और उसका भाई अन्द्रिय . जबदीका पुत्र
याकूब और उसका भाई योहन . फिलिप और बर्थलमई . ३
थोमा और मत्ती कर उगाहनेहारा . अलफईका पुत्र
याकूब और लिब्बई जो थद्दई कहावता है . शिमोन ४
कानानी और यिहूदा इस्करियोती जिसने उसे पकड़-
वाया । इन बारहोंको यीशुने यह आज्ञा देके भेजा ५
कि अन्यदेशियोंकी ओर मत जाओ और शोमिरोनि-
योंके किसी नगरमें मत पैठो । परन्तु इस्रायेलके ६
घरानेकी खोई हुई भेड़ोंके पास जाओ । और जाते ७
हुए प्रचार कर कहो कि स्वर्गका राज्य निकट आया
है । रोगियोंको चंगा करो कोढ़ियोंको शुद्ध करो ८
मृतकोंको जिलाओ भूतोंको निकालो . तुमने सेंतमेत
पाया है सेंतमेत देओ । अपने पटुकोंमें न सोना न ९
रूपा न ताम्बा रखो । मार्गके लिये न झोली न दो १०
अंगे न जूते न लाठी लेओ क्योंकि बनिहार अपने
भोजनके योग्य है । जिस किसी नगर अथवा गांवमें ११
तुम प्रवेश करो बूझो उसमें कौन योग्य है और जबलों
वहांसे न निकलो तबलों उसके यहां रहो । घरमें १२
प्रवेश करते हुए उसको आशीस देओ । जो वह घर १३
योग्य होय तो तुम्हारा कल्याण उसपर पहुंचे परन्तु
जो वह योग्य न होय तो तुम्हारा कल्याण तुम्हारे
पास फिर आवे । और जो कोई तुम्हें ग्रहण न करे १४
और तुम्हारी बातें न सुने उसके घरसे अथवा उस
नगरसे निकलते हुए अपने पांवोंकी धूल झाड़ डालो ।

१५ मैं तुमसे सच कहता हूं कि बिचारके दिनमें उस नगर
की दशासे सदोम और अमोराके देशकी दशा सहने
योग्य होगी ।
१६ देखो मैं तुम्हें भेड़ोंके समान हुंड़ारोंके बीचमें भेजता
हूं सो सांपोंकी नाईं बुद्धिमान और कपोतोंकी नाईं
१७ सूधे होओ । परन्तु मनुष्योंसे चौकस रहो क्योंकि वे
तुम्हें पंचायतोंमें सोंपेंगे और अपनी सभाओंमें तुम्हें
१८ कोड़े मारेंगे । तुम मेरे लिये अध्यक्षों और राजाओंके
आगे उनपर और अन्यदेशियोंपर साक्षी होनेके लिये
१९ पहुंचाये जाओगे । परन्तु जब वे तुम्हें सोंपें तब किस
रीतिसे अथवा क्या कहोगे इसकी चिन्ता मत करो
क्योंकि जो कुछ तुमको कहना होगा सो उसी घड़ी
२० तुम्हें दिया जायगा । बोलनेहारे तो तुम नहीं हो परन्तु
२१ तुम्हारे पिताका आत्मा तुममें बोलता है । भाई भाईको
और पिता पुत्रको बध किये जानेको सोंपेंगे और लड़के
२२ माता पिताके बिरुद्ध उठके उन्हें घात करवावेंगे । मेरे
नामके कारण सब लोग तुमसे बैर करेंगे पर जो अन्तलों
२३ स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा । जब वे तुम्हें एक नगरमें
सतावें तब दूसरेमें भाग जाओ . मैं तुमसे सत्य कहता
हूं तुम इस्रायेलके सब नगरोंमें नहीं फिर चुकोगे कि
२४ उतनेमें मनुष्यका पुत्र आवेगा । शिष्य गुरुसे बड़ा नहीं
२५ है और न दास अपने स्वामीसे । यही बहुत है कि
शिष्य अपने गुरुके तुल्य और दास अपने स्वामीके तुल्य
होवे . जो उन्होंने घरके स्वामीका नाम बालजिबूल
रखा है तो वे कितना अधिक करके उसके घरवालोंका

वैसा नाम रखेंगे। सो तुम उनसे मत डरो क्योंकि कुछ २६
छिपा नहीं है जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ
गुप्त है जो जाना न जायगा। जो मैं तुमसे अंधियारेमें २७
कहता हूं उसे उजियालेमें कहो और जो तुम कानोंमें
सुनते हो उसे कोठोंपरसे प्रचार करो। उनसे मत २८
डरो जो शरीरको मार डालते हैं पर आत्माको मार
डालने नहीं सकते हैं परन्तु उसीसे डरो जो आत्मा
और शरीर दोनोंको नरकमें नाश कर सकता है। क्या २९
एक पैसेमें दो गौरैया नहीं बिकतीं तौभी तुम्हारे पिता
बिना उनमेंसे एक भी भूमिपर नहीं गिरेगी। तुम्हारे ३०
सिरके बाल भी सब गिने हुए हैं। इसलिये मत डरो ३१
तुम बहुत गौरैयाओंसे अधिक मोलके हो। जो कोई ३२
मनुष्योंके आगे मुझे मान लेगा उसे मैं भी अपने
स्वर्गबासी पिताके आगे मान लेऊंगा। परन्तु जो कोई ३३
मनुष्योंके आगे मुझसे मुकरे उससे मैं भी अपने
स्वर्गबासी पिताके आगे मुकरूंगा। मत समझो कि ३४
मैं पृथिवीपर मिलाप करवानेको आया हूं मैं मिलाप
करवानेको नहीं परन्तु खड्ग चलवानेको आया हूं। मैं ३५
मनुष्यको उसके पितासे और बेटीको उसकी मांसे
और पतोहको उसकी साससे अलग करने आया
हूं। मनुष्यके घरहीके लोग उसके बैरी होंगे। ३६
जो माता अथवा पिताको मुझसे अधिक प्रेम करता ३७
है सो मेरे योग्य नहीं और जो पुत्र अथवा पुत्रीको
मुझसे अधिक प्रेम करता है सो मेरे योग्य नहीं।
और जो अपना क्रूश लेके मेरे पीछे नहीं आता है सो ३८

३९ मेरे योग्य नहीं। जो अपना प्राण पावे सो उसे
खोवेगा और जो मेरे लिये अपना प्राण खोवे सो
४० उसे पावेगा । जो तुम्हें ग्रहण करता है सो मुझे ग्रहण
करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे
४१ भेजनेहारेको ग्रहण करता है । जो भविष्यद्वक्ताके
नामसे भविष्यद्वक्ताको ग्रहण करे सो भविष्यद्वक्ताका
फल पावेगा और जो धर्म्मीके नामसे धर्म्मीको ग्रहण
४२ करे सो धर्म्मीका फल पावेगा । जो कोई इन छोटोंमेंसे
एकको शिष्यके नामसे केवल एक कटोरा ठंढा पानी
पिलावे मैं तुमसे सच कहता हूं वह किसी रीतिसे अपना
फल न खोवेगा ।

११ एग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका योहनके शिष्योंको उत्तर देना । ७ योहनके विषयमें उसकी साक्षी । १६ उस समयके लोगोंकी उपमा । २० कई एक नगरोंके अविश्वासपर उलहना । २५ यीशुका अपने पिताका धन्य मानना । २८ दुःखी लोगोंका नेवता करना ।

१ जब यीशु अपने बारह शिष्योंको आज्ञा दे चुका
तब उनके नगरोंमें शिक्षा और उपदेश करनेको वहांसे
चला ।

२ योहनने बन्दीगृहमें ख्रीष्टके कार्य्योंका समाचार
सुनके अपने शिष्योंमेंसे दो जनोंको उससे यह कहनेको
३ भेजा . कि जो आनेवाला था सो क्या आपही हैं
४ अथवा हम दूसरेकी बाट जोहें । यीशुने उन्हें उत्तर
दिया कि जो कुछ तुम सुनते और देखते हो सो जाके
५ योहनसे कहो . कि अंधे देखते हैं और लंगड़े चलते
हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं और बहिरे सुनते हैं मृतक

जिलाये जाते हैं और कंगालोंको सुसमाचार सुनाया
जाता है . और जो कोई मेरे विषयमें ठोकर न खावे ६
सो धन्य है ।
जब वे चले जाते थे तब यीशु योहनके विषयमें ७
लोगोंसे कहने लगा तुम जंगलमें क्या देखनेको निकले
क्या पवनसे हिलते हुए नरकटको । फिर तुम क्या ८
देखनेको निकले क्या सूक्ष्म बस्त्र पहिने हुए मनुष्यको .
देखो जो सूक्ष्म बस्त्र पहिनते हैं सो राजाओंके घरोंमें
हैं । फिर तुम क्या देखनेको निकले क्या भविष्यद्वक्ता- ९
को . हां मैं तुमसे कहता हूं एक मनुष्यको जो
भविष्यद्वक्तासे भी अधिक है । क्योंकि यह वही है १०
जिसके विषयमें लिखा है कि देख मैं अपने दूतको
तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पन्थ बनावेगा ।
मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो स्त्रियोंसे जन्मे हैं ११
उनमेंसे योहन बपतिसमा देनेहारेसे बड़ा कोई प्रगट नहीं
हुआ है परन्तु जो स्वर्गके राज्यमें अति छोटा है सो
उससे बड़ा है । योहन बपतिसमा देनेहारेके दिनोंसे १२
अबलों स्वर्गके राज्यके लिये बरियाई किई जाती है और
बरियार लोग उसे ले लेते हैं । क्योंकि योहनलों १३
सारे भविष्यद्वक्ताओंने और व्यवस्थाने भविष्यद्वाणी
कही । और जो तुम इस बातको ग्रहण करोगे तो १४
जानो कि एलियाह जो आनेवाला था सो यही है ।
जिसको सुननेके कान हों सो सुने । १५
मैं इस समयके लोगोंकी उपमा किससे देऊंगा . १६
वे बालकोंके समान हैं जो बाजारोंमें बैठके अपने संगियों-

१७ को पुकारते . और कहते हैं हमने तुम्हारे लिये बांसली
बजाई और तुम न नाचे हमने तुम्हारे लिये बिलाप
१८ किया और तुमने छाती न पीटी। क्योंकि योहन न खाता
न पीता आया और वे कहते हैं उसे भूत लगा है।
१९ मनुष्यका पुत्र खाता और पीता आया है और वे कहते
हैं देखो पेटू और मद्यप मनुष्य कर उगाहनेहारों और
पापियोंका मित्र . परन्तु ज्ञान अपने सन्तानोंसे निर्दोष
ठहराया गया है।
२० तब वह उन नगरोंको जिन्होंमें उसके अधिक आश्चर्य्य
कर्म्म किये गये उलहना देने लगा क्योंकि उन्होंने पश्चा-
२१ त्ताप नहीं किया। हाय तू कोराजीन . हाय तू बैतसैदा .
जो आश्चर्य्य कर्म्म तुम्होंमें किये गये हैं सो यदि सोर और
सीदोनमें किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि वे टाट
२२ पहिनके और राखमें बैठके पश्चात्ताप करते। परन्तु मैं
तुमसे कहता हूं कि बिचारके दिनमें तुम्हारी दशासे सोर
२३ और सीदोनकी दशा सहने योग्य होगी। और हे कफ-
र्नाहुम जो स्वर्गलों ऊंचा किया गया है तू नरकलों नीचा
किया जायगा . जो आश्चर्य्य कर्म्म तुझमें किये गये हैं सो
यदि सदोममें किये जाते तो वह आजलों बना रहता।
२४ परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि बिचारके दिनमें तेरी
दशासे सदोमके देशकी दशा सहने योग्य होगी।
२५ इसपर उस समयमें यीशुने कहा हे पिता स्वर्ग और
पृथिवीके प्रभु मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तूने इन
बातोंको ज्ञानवानों और बुद्धिमानोंसे गुप्त रखा है और
२६ उन्हें बालकोंपर प्रगट किया है। हां हे पिता क्योंकि

तेरी दृष्टिमें यही अच्छा लगा। मेरे पिताने मुझे सब २७
कुछ सौंपा है और पुत्रको कोई नहीं जानता है केवल
पिता और पिताको कोई नहीं जानता है केवल पुत्र और
वही जिसपर पुत्र उसे प्रगट किया चाहे।
हे सब लोगो जो परिश्रम करते और बोझसे दबे हो २८
मेरे पास आओ मैं तुम्हें बिश्राम देऊंगा। मेरा जूआ २९
अपने ऊपर लेओ और मुझसे सीखो क्योंकि मैं नम्र और
मनमें दीन हूं और तुम अपने मनोंमें बिश्राम पाओगे।
क्योंकि मेरा जूआ सहज और मेरा बोझ हलका है। ३०

१२ बारहवां पर्व्व।

१ यीशुका बिश्रामवारके विषयमें निर्णय करना। १४ उसकी नम्रतासे भविष्यद्वाक्यका पूरा होना। २२ लोगोंके अपवादका खंडन। ३३ मनके स्वभावका दृष्टान्त। ३८ यिहूदियोंके दोषका प्रमाण। ४३ उनकी बुरी दशा। ४६ यीशुके कुटुम्बका बर्णन।

उस समयमें यीशु बिश्रामके दिन खेतोंमें होके गया १
और उसके शिष्य भूखे हो बालें तोड़ने और खाने लगे।
फरीशियोंने यह देखके उससे कहा देखिये जो काम बि- २
श्रामके दिनमें करना उचित नहीं है सो आपके शिष्य
करते हैं। उसने उनसे कहा क्या तुमने नहीं पढ़ा है कि ३
दाऊदने जब वह और उसके संगी लोग भूखे हुए तब
क्या किया. उसने क्योंकर ईश्वरके घरमें जाके भेंटकी ४
रोटियां खाईं जिन्हें खाना न उसको न उसके संगियोंको
परन्तु केवल याजकोंको उचित था। अथवा क्या तुमने ५
व्यवस्थामें नहीं पढ़ा है कि मन्दिरमें याजक लोग बि-
श्रामके दिनोंमें बिश्रामवारकी विधिको लंघन करते हैं
और निर्दोष हैं। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि यहां ६

७ एक है जो मन्दिरसे भी बड़ा है । जो तुम इसका अर्थ
जानते कि मैं दयाको चाहता हूं बलिदानको नहीं तो
८ तुम निर्दोषोंको दोषी न ठहराते । मनुष्यका पुत्र बि-
श्रामवारका भी प्रभु है ।

९ वहांसे जाके वह उनकी सभाके घरमें आया ।
१० और देखो एक मनुष्य था जिसका हाथ सूख गया था और
उन्होंने उसपर दोष लगानेके लिये उससे पूछा क्या बि-
११ श्रामके दिनोंमें चंगा करना उचित है। उसने उनसे कहा
तुममेंसे कौन मनुष्य होगा कि उसका एक भेड़ हो और
जो वह बिश्रामके दिन गढ़ेमें गिरे तो उसे पकड़के न
१२ निकालेगा । फिर मनुष्य भेड़से कितना बड़ा है . इस-
१३ लिये बिश्रामके दिनोंमें भलाई करना उचित है । तब
उसने उस मनुष्यसे कहा अपना हाथ बढ़ा . उसने
उसको बढ़ाया और वह फिर दूसरे हाथकी नाईं भला
चंगा हो गया ।

१४ तब फरीशियोंने बाहर जाके यीशुके बिरुद्ध आपसमें
१५ बिचार किया इसलिये कि उसे नाश करें । यह जानके
यीशु वहांसे चला गया और बड़ी भीड़ उसके पीछे हो
१६ लिई और उसने उन सभोंको चंगा किया . और उन्हें
१७ दृढ़ आज्ञा दिई कि मुझे प्रगट मत करो . कि जो बचन
यिशैयाह भविष्यद्वक्तासे कहा गया था सो पूरा होवे .
१८ कि देखो मेरा सेवक जिसे मैंने चुना है और मेरा प्रिय
जिससे मेरा मन अति प्रसन्न है . मैं अपना आत्मा उसपर
रखूंगा और वह अन्यदेशियोंको सत्य व्यवस्था बतावेगा ।
१९ वह न झगड़ेगा न धूम मचावेगा न सड़कोंमें कोई उसका

शब्द सुनेगा। वह जबलों सत्य व्यवस्थाको प्रबल न करे २०
तबलों कुचले हुए नरकटको न तोड़ेगा और धूआं देने-
हारी बत्तीको न बुझावेगा। और अन्यदेशी लोग उसके २१
नामपर आशा रखेंगे।

तब लोग एक भूतग्रस्त अंधे और गूंगे मनुष्यको उस २२
पास लाये और उसने उसे चंगा किया यहांलों कि वह
जो अंधा औ गूंगा था देखने औ बोलने लगा। इस- २३
पर सब लोग बिस्मित होके बोले यह क्या दाऊदका
सन्तान है। परन्तु फरीशियोंने यह सुनके कहा यह तो २४
बालजिबूल नाम भूतोंके प्रधानकी सहायता बिना भूतों-
को नहीं निकालता है। यीशुने उनके मनकी बातें जानके २५
उनसे कहा जिस जिस राज्यमें फूट पड़ी है वह राज्य
उजड़ जाता है और कोई नगर अथवा घराना जिसमें
फूट पड़ी है नहीं ठहरेगा। और यदि शैतान शैतानको २६
निकालता है तो उसमें फूट पड़ी है फिर उसका राज्य
क्योंकर ठहरेगा। और जो मैं बालजिबूलकी सहाय- २७
तासे भूतोंको निकालता हूं तो तुम्हारे सन्तान किसकी
सहायतासे निकालते हैं. इसलिये वे तुम्हारे न्याय
करनेहारे होंगे। परन्तु जो मैं ईश्वरके आत्माकी सहा- २८
यतासे भूतोंको निकालता हूं तो निस्सन्देह ईश्वरका
राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है। यदि बलवन्तको २९
कोई पहिले न बांधे तो क्योंकर उस बलवन्तके घरमें
पैठके उसकी सामग्री लूट सके. परन्तु उसे बांधके उसके
घरको लूटेगा। जो मेरे संग नहीं है सो मेरे विरुद्ध है ३०
और जो मेरे संग नहीं बटोरता सो बिथराता है। इस- ३१

लिये मैं तुमसे कहता हूं कि सब प्रकारका पाप और
निन्दा मनुष्योंके लिये क्षमा किया जायगा परन्तु पवित्र
आत्माकी निन्दा मनुष्योंके लिये नहीं क्षमा किई जायगी।
३२ जो कोई मनुष्यके पुत्रके बिरोधमें बात कहे वह उसके
लिये क्षमा किई जायगी परन्तु जो कोई पवित्र आत्माके
बिरोधमें कुछ कहे वह उसके लिये न इस लोकमें न
परलोकमें क्षमा किया जायगा ।
३३ यदि पेड़को अच्छा कहो तो उसके फलको भी अच्छा
कहो अथवा पेड़को निकम्मा कहो तो उसके फलको भी
निकम्मा कहो क्योंकि फलहीसे पेड़ पहचाना जाता है।
३४ हे सांपोंके बंश तुम बुरे होके अच्छी बातें क्योंकर कह
सकते हो क्योंकि जो मनमें भरा है उसीको मुंह बोलता
३५ है। भला मनुष्य मनके भले भंडारसे भली बातें निकाल-
ता है और बुरा मनुष्य बुरे भंडारसे बुरी बातें निकालता
३६ है । मैं तुमसे कहता हूं कि मनुष्य जो जो अनर्थ बातें
३७ कहें बिचारके दिनमें हर एक बातका लेखा देंगे। क्योंकि
तू अपनी बातोंसे निर्दोष अथवा अपनी बातोंसे दोषी
ठहराया जायगा ।
३८ इसपर कितने अध्यापकों और फरीशियोंने कहा हे
३९ गुरु हम आपसे एक चिन्ह देखने चाहते हैं । उसने उन्हें
उत्तर दिया कि इस समयके दुष्ट और ब्यभिचारी लोग
चिन्ह ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उनको नहीं दिया
४० जायगा केवल यूनस भविष्यद्वक्ताका चिन्ह। जिस रीतिसे
यूनस तीन दिन और तीन रात मछलीके पेटमें था उसी
रीतिसे मनुष्यका पुत्र तीन दिन और तीन रात पृथिवीके

भीतर रहेगा। निनिवीय लोग बिचारके दिनमें इस ४१
समयके लोगोंके संग खड़े हो उन्हें दोषी ठहरावेंगे क्योंकि
उन्होंने यूनसका उपदेश सुनके पश्चात्ताप किया और
देखो यहां एक है जो यूनससे भी बड़ा है। दक्षिणकी ४२
राणी बिचारके दिनमें इस समयके लोगोंके संग उठके
उन्हें दोषी ठहरावेगी क्योंकि वह सुलेमानका ज्ञान
सुननेको पृथिवीके अन्तसे आई और देखो यहां एक है
जो सुलेमानसे भी बड़ा है।

जब अशुद्ध भूत मनुष्यसे निकल जाता है तब सूखे ४३
स्थानोंमें बिश्राम ढूंढ़ता फिरता पर नहीं पाता है। तब ४४
वह कहता है कि मैं अपने घरमें जहांसे निकला फिर
जाऊंगा और आके उसे सूना झाड़ा बुहारा सुथरा पाता
है। तब वह जाके अपनेसे अधिक दुष्ट सात और भूतों ४५
को अपने संग ले आता है और वे भीतर पैठके वहां
बास करते हैं और उस मनुष्यकी पिछली दशा पहिलीसे
बुरी होती है. इस समयके दुष्ट लोगोंकी दशा ऐसी होगी।

यीशु लोगोंसे बात करताही था कि देखो उसकी माता ४६
और उसके भाई बाहर खड़े हुए उससे बोलने चाहते
थे। तब किसीने उससे कहा देखिये आपकी माता और ४७
आपके भाई बाहर खड़े हुए आपसे बोलने चाहते हैं।
उसने कहनेहारेको उत्तर दिया कि मेरी माता कौन है ४८
और मेरे भाई कौन हैं। और अपने शिष्योंकी ओर ४९
अपना हाथ बढ़ाके उसने कहा देखो मेरी माता और मेरे
भाई। क्योंकि जो कोई मेरे स्वर्गवासी पिताकी इच्छापर ५०
चले वही मेरा भाई और बहिन और माता है।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

१ बीज बोनेहारेका दृष्टान्त । १० दृष्टान्तोंसे उपदेश करनेका कारण। १८ बोनेहारेके दृष्टान्तका अर्थ । २४ जंगली दानेका दृष्टान्त । ३१ राईके दाने और खमीरके दृष्टान्त । ३४ यीशुके विषयमें एक भविष्यद्वाक्यका पूरा होना । ३६ जंगली दानेके दृष्टान्तका अर्थ । ४४ गुप्त धन और मोतीके दृष्टान्त । ४७ महाजालका दृष्टान्त । ५१ ज्ञानवान शिष्योंकी उपमा । ५३ यीशुका अपने देशके लोगोंमें अपमान होना।

१ उस दिन यीशु घरसे निकलके समुद्रके तीरपर बैठा ।
२ और ऐसी बड़ी भीड़ उस पास एकट्ठी हुई कि वह नाव-
३ पर चढ़के बैठा और सब लोग तीरपर खड़े रहे । तब
उसने उनसे दृष्टान्तोंमें बहुतसी बातें कहीं कि देखो एक
४ बोनेहारा बीज बोनेको निकला । बोनेमें कितने बीज
मार्गकी ओर गिरे और पंछियोंने आके उन्हें चुग लिया ।
५ कितने पत्थरैली भूमिपर गिरे जहां उनको बहुत मिट्टी
६ न मिली और बहुत मिट्टी न मिलनेसे वे बेग उगे। परन्तु
सूर्य्य उदय होनेपर वे झुलस गये और जड़ न पकड़नेसे
७ सूख गये । कितने कांटोंके बीचमें गिरे और कांटोंने
८ बढ़के उनको दबा डाला । परन्तु कितने अच्छी भूमिपर
गिरे और फल फले कोई सौ गुणे कोई साठ गुणे कोई
९ तीस गुणे । जिसको सुननेके कान हों सो सुने ।
१० तब शिष्योंने उस पास आ उससे कहा आप उनसे
११ दृष्टान्तोंमें क्यों बोलते हैं। उसने उनको उत्तर दिया कि
तुमको स्वर्गके राज्यके भेद जाननेका अधिकार दिया गया
१२ है परन्तु उनको नहीं दिया गया है। क्योंकि जो कोई
रखता है उसको और दिया जायगा और उसको बहुत
होगा परन्तु जो कोई नहीं रखता है उससे जो कुछ
१३ उसके पास है सो भी ले लिया जायगा । इसलिये मैं

उनसे दृष्टान्तोंमें बोलता हूं क्योंकि वे देखते हुए नहीं
देखते हैं और सुनते हुए नहीं सुनते और न बूझते हैं।
और यिशैयाहको यह भविष्यद्वाणी उनमें पूरी होती है १४
कि तुम सुनते हुए सुनोगे परन्तु नहीं बूझोगे और देखते
हुए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा। क्योंकि इन लोगोंका १५
मन मोटा हो गया है और वे कानोंसे ऊंचा सुनते हैं
और अपने नेत्र मूंद लिये हैं ऐसा न हो कि वे कभी
नेत्रोंसे देखें और कानोंसे सुनें और मनसे समझें और
फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं। परन्तु धन्य तुम्हारे १६
नेत्र कि वे देखते हैं और तुम्हारे कान कि वे सुनते हैं।
क्योंकि मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो तुम देखते हो १७
उसको बहुतेरे भविष्यद्वक्ताओं और धर्म्मियोंने देखने
चाहा पर न देखा और जो तुम सुनते हो उसको सुनने
चाहा पर न सुना।

सो तुम बोनेहारेके दृष्टान्तका अर्थ सुनो। जो कोई १८ १९
राज्यका बचन सुनके नहीं बूझता है उसके मनमें जो
कुछ बोया गया था सो वह दुष्ट आके छीन लेता है. यह
वही है जिसमें बीज मार्गकी ओर बोया गया। जिसमें २०
बीज पत्थरैली भूमिपर बोया गया सो वही है जो बचन
को सुनके तुरन्त आनन्दसे ग्रहण करता है। परन्तु २१
उसमें जड़ न बंधनेसे वह थोड़ी बेर ठहरता है और
बचनके कारण क्लेश अथवा उपद्रव होनेपर तुरन्त ठोकर
खाता है। जिसमें बीज कांटोंके बीचमें बोया गया सो २२
वही है जो बचन सुनता है पर इस संसारकी चिन्ता
और धनकी माया बचनको दबाती है और वह निष्फल

२३ होता है । पर जिसमें बीज अच्छी भूमिपर बोया गया
सो वही है जो बचन सुनके बूझता है और वह तो फल
देता है और कोई सौ गुणे कोई साठ गुणे कोई तीस
गुणे फलता है ।
२४ उसने उन्हें दूसरा दृष्टान्त दिया कि स्वर्गके राज्यकी
उपमा एक मनुष्यसे दिई जाती है जिसने अपने खेतमें
२५ अच्छा बीज बोया । परन्तु जब लोग सोये थे तब उसका
बैरी आके गेहूंके बीचमें जंगली बीज बोके चला गया।
२६ जब अंकुर निकले और बालें लगीं तब जंगली दाने भी
२७ दिखाई दिये । इसपर गृहस्थके दासोंने आ उससे कहा
हे स्वामी क्या आपने अपने खेतमें अच्छा बीज न बोया.
२८ फिर जंगली दाने उसमें कहांसे आये । उसने उनसे
कहा किसी बैरीने यह किया है . दासोंने उससे कहा
आपकी इच्छा होय तो हम जाके उनको बटोर लेवें।
२९ उसने कहा सो नहीं न हो कि जंगली दाने बटोरनेमें
३० उनके संग गेहूं भी उखाड़ लेओ । कटनीलों दोनोंको एक
संग बढ़ने देओ और कटनीके समयमें मैं काटनेहारोंसे
कहूंगा पहिले जंगली दाने बटोरके जलानेके लिये उनके
गट्ठे बांधो परन्तु गेहूंको मेरे खत्तेमें एकट्ठा करो ।
३१ उसने उन्हें एक और दृष्टान्त दिया कि स्वर्गका राज्य
राईके एक दानेकी नाईं है जिसे किसी मनुष्यने लेके अपने
३२ खेतमें बोया। वह तो सब बीजोंसे छोटा है परन्तु जब बढ़
जाता तब साग पातसे बड़ा होता है और ऐसा पेड़ हो
जाता है कि आकाशके पंछी आके उसकी डालियोंपर
३३ बसेरा करते हैं। उसने एक और दृष्टान्त उनसे कहा कि

स्वर्गका राज्य खमीरकी नाईं है जिसको किसी स्त्रीने
लेके तीन पसेरी आटेमें छिपा रखा यहांलों कि सब
खमीर हो गया।

यह सब बातें यीशुने दृष्टान्तोंमें लोगोंसे कहीं और ३४
बिना दृष्टान्तसे उनको कुछ न कहा . कि जो बचन ३५
भविष्यद्वक्तासे कहा गया था कि मैं दृष्टान्तोंमें अपना
मुंह खोलूंगा जो बातें जगतकी उत्पत्तिसे गुप्त रहीं उन्हें
बर्णन करूंगा सो पूरा होवे।

तब यीशु लोगोंको बिदा कर घरमें आया और उसके ३६
शिष्योंने उस पास आ कहा खेतके जंगली दानेके दृष्टान्त-
का अर्थ हमें समझाइये। उसने उनको उत्तर दिया कि ३७
जो अच्छा बीज बोता है सो मनुष्यका पुत्र है। खेत तो ३८
संसार है अच्छा बीज राज्यके सन्तान हैं और जंगली बीज
दुष्टके सन्तान हैं। जिस बैरीने उनको बोया सो शैतान है ३९
कटनी जगतका अन्त है और काटनेहारे स्वर्गदूत हैं। सो ४०
जैसे जंगली दाने बटोरे जाते और आगसे जलाये जाते हैं
वैसाही इस जगतके अन्तमें होगा। मनुष्यका पुत्र अपने ४१
दूतोंको भेजेगा और वे उसके राज्यमेंसे सब ठोकरके
कारणोंको और कुकर्म्म करनेहारोंको बटोर लेंगे. और ४२
उन्हें आगके कुंडमें डालेंगे जहां रोना औ दांत पीसना
होगा। तब धर्म्मी लोग अपने पिताके राज्यमें सूर्य्यकी ४३
नाईं चमकेंगे. जिसको सुननेके कान हों सो सुने।

फिर स्वर्गका राज्य खेतमें छिपाये हुए धनके समान ४४
है जिसे किसी मनुष्यने पाके गुप्त रखा और वह उसके
आनन्दके कारण जाके अपना सब कुछ बेचके उस खेत-

४५ को मोल लेता है । फिर स्वर्गका राज्य एक ब्योपारीके
४६ समान है जो अच्छे मोतियोंको ढूंढ़ता था। उसने जब एक
बड़े मोलका मोती पाया तब जाके अपना सब कुछ
बेचके उसे मोल लिया ।
४७ फिर स्वर्गका राज्य महाजालके समान है जो समुद्रमें
डाला गया और हर प्रकारकी मछलियोंको घेर लिया ।
४८ जब वह भर गया तब लोग उसको तीरपर खींच लाये
और बैठके अच्छी अच्छीको पात्रोंमें बटोरा और नि-
४९ कम्मी निकम्मीको फेंक दिया । जगतके अन्तमें वैसाही
होगा . स्वर्गदूत आके दुष्टोंको धर्म्मियोंके बीचमेंसे अलग
५० करेंगे . और उन्हें आगके कुंडमें डालेंगे जहां रोना औ
दांत पीसना होगा ।
५१ यीशुने उनसे कहा क्या तुमने यह सब बातें समझीं .
५२ वे उससे बोले हां प्रभु । उसने उनसे कहा इसलिये हर
एक अध्यापक जिसने स्वर्गके राज्यकी शिक्षा पाई है
गृहस्थके समान है जो अपने भंडारसे नई और पुरानी
बस्तु निकालता है ।
५३ जब यीशु ये सब दृष्टान्त कह चुका तब वहांसे चला
५४ गया । और उसने अपने देशमें आ उनकी सभाके
घरमें उन्हें ऐसा उपदेश दिया कि वे अचंभित हो
बोले इसको यह ज्ञान और ये आश्चर्य्य कर्म्म कहांसे
५५ हुए । यह क्या बढ़ईका पुत्र नहीं है . क्या उसकी
माताका नाम मरियम और उसके भाइयोंके नाम
याकूब और योशी और शिमोन और यिहूदा नहीं हैं ।
५६ और क्या उसकी सब बहिनें हमारे यहां नहीं हैं . फिर

उसको यह सब कहांसे हुआ। सो उन्होंने उसके विषय- ५७
में ठोकर खाई परन्तु यीशुने उनसे कहा भविष्यद्वक्ता
अपना देश और अपना घर छोड़के और कहीं निरादर
नहीं होता है। और उसने वहां उनके अविश्वासके ५८
कारण बहुत आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किये।

१४ चौदहवां पर्व्व।

१ योहन बपतिसमा देनेहारेकी मृत्यु। १३ यीशुका बहुत रोगियोंको चंगा करना। १५ पांच सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना। २२ समुद्रपर चलना। ३४ गिनेसरतके रोगियोंको चंगा करना।

उस समयमें चौथाईके राजा हेरोदने यीशुकी कीर्त्ति १
सुनी. और अपने सेवकोंसे कहा यह तो योहन बपतिस- २
मा देनेहारा है वह मृतकोंमेंसे जी उठा है इसलिये
आश्चर्य्य कर्म्म उससे प्रगट होते हैं। क्योंकि हेरोदने ३
अपने भाई फिलिपकी स्त्री हेरोदियाके कारण योहनको
पकड़के उसे बांधा था और बन्दीगृहमें डाला था। क्योंकि ४
योहनने उससे कहा था कि इस स्त्रीको रखना तुझको
उचित नहीं है। और वह उसे मार डालने चाहता ५
था पर लोगोंसे डरा क्योंकि वे उसे भविष्यद्वक्ता जानते
थे। परन्तु हेरोदके जन्म दिनकी सभामें हेरोदियाकी ६
पुत्रीने सभामें नाच कर हेरोदको प्रसन्न किया। इसलिये ७
उसने किरिया खाके अंगीकार किया कि जो कुछ तू मांगे
मैं तुझे देऊंगा। वह अपनी माताकी उस्काई हुई बोली ८
योहन बपतिसमा देनेहारेका सिर यहां थालमें मुझे
दीजिये। तब राजा उदास हुआ परन्तु उस किरियाके और ९
अपने संग बैठनेहारोंके कारण उसने देनेकी आज्ञा किई।

१० और उसने भेजकर बन्दीगृहमें योहनका सिर कटवाया।
११ और उसका सिर थालमें कन्याको पहुंचा दिया गया
१२ और वह उसको अपनी मांके पास ले गई। तब उसके
शिष्योंने आके उसकी लोथको उठाके गाड़ा और आके
यीशुसे इसका समाचार कहा।
१३ जब यीशुने यह सुना तब नावपर चढ़के वहांसे
किसी जंगली स्थानमें एकांतमें गया और लोग यह
१४ सुनके नगरोंमेंसे पैदल उसके पीछे हो लिये। यीशुने
निकलके बहुत लोगोंको देखा और उनपर दया कर
उनके रोगियोंको चंगा किया।
१५ जब सांझ हुई तब उसके शिष्योंने उस पास आ कहा
यह तो जंगली स्थान है और बेला अब बीत गई है लोगों
को बिदा कीजिये कि वे बस्तियोंमें जाके अपने लिये भोजन
१६ मोल लेवें। यीशुने उनसे कहा उन्हें जानेका प्रयोजन
१७ नहीं तुम उन्हें खानेको देओ। उन्होंने उससे कहा यहां
१८ हमारे पास केवल पांच रोटी और दो मछली हैं। उसने
१९ कहा उनको यहां मेरे पास लाओ। तब उसने लोगोंको
घासपर बैठनेकी आज्ञा दिई और उन पांच रोटियों
और दो मछलियोंको ले स्वर्गकी ओर देखके धन्यबाद
किया और रोटियां तोड़के शिष्योंको दिईं और शिष्योंने
२० लोगोंको दिईं। सो सब खाके तृप्त हुए और जो टुकड़े
२१ बच रहे उन्होंने उनकी बारह टोकरी भरी उठाईं। जि-
न्होंने खाया सो स्त्रियों और बालकोंको छोड़ पांच
सहस्र पुरुषोंके अटकल थे।
२२ तब यीशुने तुरन्त अपने शिष्योंको दृढ़ आज्ञा दिई कि

जबलों मैं लोगोंको बिदा करूं तुम नावपर चढ़के मेरे
आगे उस पार जाओ। वह लोगोंको बिदा कर प्रार्थना २३
करनेको एकान्तमें पर्ब्बतपर चढ़ गया और सांझको वहां
अकेला था। उस समय नाव समुद्रके बीचमें लहरोंसे २४
उछल रही थी क्योंकि बयार सन्मुखकी थी। रातके चौथे २५
पहरमें यीशु समुद्रपर चलते हुए उनके पास गया। शिष्य २६
लोग उसको समुद्रपर चलते देखके घबरा गये और बोले
यह प्रेत है और डरके मारे चिल्लाये। यीशु तुरन्त उनसे २७
बात करने लगा और कहा ढाढ़स बांधो मैं हूं डरो मत।
तब पितरने उसको उत्तर दिया कि हे प्रभु यदि आपही हैं २८
तो मुझे अपने पास जलपर आनेकी आज्ञा दीजिये।
उसने कहा आ. तब पितर नावपरसे उतरके यीशु पास २९
जानेको जलपर चलने लगा। परन्तु बयारको प्रचंड ३०
देखके वह डर गया और जब डूबने लगा तब चिल्लाके
बोला हे प्रभु मुझे बचाइये। यीशुने तुरन्त हाथ बढ़ाके ३१
उसको थांभ लिया और उससे कहा हे अल्पबिश्वासी
क्यों सन्देह किया। जब वे नावपर चढ़े तब बयार थम ३२
गई। इसपर जो लोग नावपर थे सो आके यीशुको ३३
प्रणाम करके बोले सचमुच आप ईश्वरके पुत्र हैं।

वे पार उतरके गिनेसरत देशमें पहुंचे। और वहांके ३४ ३५
लोगोंने यीशुको चीन्हके आसपासके सारे देशमें कहला
भेजा और सब रोगियोंको उस पास लाये. और उससे ३६
बिन्ती किई कि वे केवल उसके बस्त्रके आंचलको छूवें
और जितनोंने छूआ सब चंगे किये गये।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका फरीशियोंको उनके व्यवहारोंके विषयमें दपटना । १० अपवित्रताके हेतुका वर्णन करना । २१ एक अन्यदेशी स्त्रीकी बेटीको चंगा करना । २९ बहुत रोगियोंको चंगा करना । ३२ चार सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना ।

१ तब यिरूशलीमके कितने अध्यापकों और फरीशियों-
२ ने यीशु पास आ कहा . आपके शिष्य लोग क्यों प्राचीनों-
के व्यवहार लंघन करते हैं क्योंकि जब वे रोटी खाते तब
३ अपने हाथ नहीं धोते हैं। उसने उनको उत्तर दिया कि
तुम भी क्यों अपने व्यवहारोंके कारण ईश्वरकी आज्ञा-
४ को लंघन करते हो। क्योंकि ईश्वरने आज्ञा किई कि
अपने माता पिताका आदर कर और जो कोई माता
५ अथवा पिताकी निन्दा करे सो मार डाला जाय। परन्तु
तुम कहते हो यदि कोई अपने माता अथवा पितासे कहे
कि जो कुछ तुझको मुझसे लाभ होता सो संकल्प किया
गया है तो उसको अपनी माता अथवा अपने पिताका
६ आदर करनेका और कुछ प्रयोजन नहीं। सो तुमने अपने
७ व्यवहारोंके कारण ईश्वरकी आज्ञाको उठा दिया है। हे
कपटियो यिशैयाहने तुम्हारे विषयमें यह भविष्यद्वाणी
८ अच्छी कही . कि ये लोग अपने मुंहसे मेरे निकट आते हैं
और होंठोंसे मेरा आदर करते हैं परन्तु उनका मन मुझसे
९ दूर रहता है। पर वे वृथा मेरी उपासना करते हैं क्योंकि
मनुष्योंकी आज्ञाओंको धर्म्मोपदेश ठहराके सिखाते हैं॥
१० और उसने लोगोंको अपने पास बुलाके उनसे कहा
११ सुनो और बूझो। जो मुंहमें समाता है सो मनुष्यको अप-
वित्र नहीं करता है परन्तु जो मुंहसे निकलता है सोई
१२ मनुष्यको अपवित्र करता है । तब उसके शिष्योंने आ

उससे कहा क्या आप जानते हैं कि फरीशियोंने यह बचन
सुनके ठोकर खाई। उसने उत्तर दिया कि हर एक गाछ जो १३
मेरे स्वर्गीय पिताने नहीं लगाया है उखाड़ा जायगा।
उनको रहने दो. वे अंधोंके अंधे अगुवे हैं और अंधा यदि १४
अंधेको मार्ग बतावे तो दोनों गढ़ेमें गिर पड़ेंगे। तब १५
पितरने उसको उत्तर दिया कि इस दृष्टान्तका अर्थ हमें
समझाइये। यीशुने कहा तुम भी क्या अबलों निर्बुद्धि हो। १६
क्या तुम अबलों नहीं बूझते हो कि जो कुछ मुंहमें समाता १७
सो पेटमें जाता है और संडासमें फेंका जाता है। परन्तु १८
जो कुछ मुंहसे निकलता है सो मनसे बाहर आता है और
वही मनुष्यको अपवित्र करता है। क्योंकि मनसे नाना १९
भांतिकी कुचिन्ता नरहिंसा परस्त्रीगमन व्यभिचार चोरी
झूठी साक्षी और ईश्वरकी निन्दा निकलती हैं। येही हैं २०
जो मनुष्यको अपवित्र करती हैं परन्तु बिन धोये हाथोंसे
भोजन करना मनुष्यको अपवित्र नहीं करता है।

यीशु वहांसे निकलके सोर और सीदोनके सिवानोंमें २१
गया। और देखो उन सिवानोंमेंकी एक कनानी स्त्रीने २२
निकलकर पुकारके उससे कहा हे प्रभु दाऊदके सन्तान
मुझपर दया कीजिये मेरी बेटी भूतसे अति पीड़ित है।
परन्तु उसने उसको कुछ उत्तर न दिया और उसके २३
शिष्योंने आ उससे बिन्ती कर कहा इसको बिदा कीजिये
क्योंकि वह हमारे पीछे पीछे पुकारती है। उसने उत्तर २४
दिया कि इस्रायेलके घरानेकी खोई हुई भेड़ोंको छोड़ मैं
किसीके पास नहीं भेजा गया हूं। तब स्त्रीने आ उसको २५
प्रणाम कर कहा हे प्रभु मेरा उपकार कीजिये। उसने २६

उत्तर दिया कि लड़कोंकी रोटी लेके कुत्तोंके आगे
२७ फेंकना अच्छा नहीं है । स्त्रीने कहा सच हे प्रभु तौभी
कुत्ते जो चूरचार उनके स्वामियोंकी मेजसे गिरते हैं सो
२८ खाते हैं । तब यीशुने उसको उत्तर दिया कि हे नारी
तेरा बिश्वास बड़ा है जैसा तू चाहती है वैसाही तुझे
होय . और उसकी बेटी उसी घड़ीसे चंगी हुई ।
२९ यीशु वहांसे जाके गालीलके समुद्रके निकट आया
३० और पर्ब्बतपर चढ़के वहां बैठा । और बड़ी बड़ी भीड़
अपने संग लंगड़ों अंधों गूंगों टुंडों और बहुतसे औरों-
को लेके यीशु पास आई और उन्हें उसके चरणोंपर
३१ डाला और उसने उन्हें चंगा किया . यहांलों कि जब
लोगोंने देखा कि गूंगे बोलते हैं टुंडे चंगे होते हैं
लंगड़े चलते हैं और अंधे देखते हैं तब अचंभा करके
इस्रायेलके ईश्वरकी स्तुति किई ।
३२ तब यीशुने अपने शिष्योंको अपने पास बुलाके
कहा मुझे इन लोगोंपर दया आती है क्योंकि वे तीन
दिनसे मेरे संग रहे हैं और उनके पास कुछ खानेको
नहीं है और मैं उनको भोजन बिना बिदा करने नहीं
३३ चाहता हूं न हो कि मार्गमें उनका बल घट जाय। उस-
के शिष्योंने उससे कहा हमें इस जंगलमें कहांसे इतनी
३४ रोटी मिलेगी कि हम इतनी बड़ी भीड़को तृप्त करें। यीशु-
ने उनसे कहा तुम्हारे पास कितनी रोटियां हैं . उन्होंने
३५ कहा सात और थोड़ीसी छोटी मछलियां । तब उसने
३६ लोगोंको भूमिपर बैठनेकी आज्ञा दिई । और उसने
उन सात रोटियोंको और मछलियोंको लेके धन्य

मानके तोड़ा और अपने शिष्योंको दिया और शिष्यों-
ने लोगोंको दिया । सो सब खाके तृप्त हुए और जो ३७
टुकड़े बच रहे उन्होंने उनके सात टोकरे भरे उठाये।
जिन्होंने खाया सो स्त्रियों और बालकोंको छोड़ चार ३८
सहस्र पुरुष थे। तब यीशु लोगोंको बिदा कर नावपर ३९
चढ़के मगदला नगरके सिवानोंमें आया ।

१६ सोलहवां पर्व्व ।

१ यीशुका चिन्ह मांगनेहारोंको डांटना । ५ अपने शिष्योंको फरीशियोंकी शिक्षाके विषयमें चिताना । १३ यीशुके विषयमें लोगोंका और शिष्योंका बिचार और उसका पितरको प्रश्न देना । २१ अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना और पितरको डांटना । २४ शिष्य होनेकी विधि ।

तब फरीशियों और सदूकियोंने यीशु पास आ उसकी १
परीक्षा करनेको उससे चाहा कि हमें आकाशका एक
चिन्ह दिखाइये । उसने उनको उत्तर दिया सांझको तुम २
कहते हो कि फरछा होगा क्योंकि आकाश लाल है और
भोरको कहते हो कि आज आंधी आवेगी क्योंकि आ-
काश लाल और धूमला है । हे कपटियो तुम आकाशका ३
रूप बूझ सकते हो क्या तुम समयोंके चिन्ह नहीं बूझ
सकते हो। इस समयके दुष्ट और ब्यभिचारी लोग चिन्ह ४
ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उनको नहीं दिया जायगा
केवल यूनस भविष्यद्वक्ताका चिन्ह. तब वह उन्हें छोड़के
चला गया ।

उसके शिष्य लोग उस पार पहुंचके रोटी लेना भूल ५
गये। और यीशुने उनसे कहा देखो फरीशियों और सदू- ६
कियोंके खमीरसे चौकस रहो। वे आपसमें बिचार करने ७
लगे यह इसलिये है कि हमने रोटी न लिई। यह जानके ८

यीशुने उनसे कहा हे अल्पबिश्वासियो तुम रोटी न
९ लेनेके कारण क्यों आपसमें बिचार करते हो। क्या तुम
अबलों नहीं बूझते हो और उन पांच सहस्रकी पांच रोटी
नहीं स्मरण करते हो और कितनी टोकरियां तुमने
१० उठाईं। और न उन चार सहस्रकी सात रोटी और कितने
११ टोकरे तुमने उठाये। तुम क्यों नहीं बूझते हो कि मैंने
तुमको फरीशियों और सदूकियोंके खमीरसे चौकस रह-
१२ नेको जो कहा सो रोटीके विषयमें नहीं कहा। तब
उन्होंने बूझा कि उसने रोटीके खमीरसे नहीं परन्तु फरी-
शियों और सदूकियोंकी शिक्षासे चौकस रहनेको कहा।
१३ यीशुने कैसरिया फिलिपीके सिवानोंमें आके अपने
शिष्योंसे पूछा कि लोग क्या कहते हैं मैं मनुष्यका पुत्र
१४ कौन हूं। उन्होंने कहा कितने तो आपको योहन
बपतिसमा देनेहारा कहते हैं कितने एलियाह कहते हैं
और कितने यिरमियाह अथवा भविष्यद्वक्ताओंमेंसे एक
१५ कहते हैं। उसने उनसे कहा तुम क्या कहते हो मैं कौन
१६ हूं। शिमोन पितरने उत्तर दिया कि आप जीवते ईश्वरके
१७ पुत्र खीष्ट हैं। यीशुने उसको उत्तर दिया कि हे यूनसके
पुत्र शिमोन तू धन्य है क्योंकि मांस औ लोहूने नहीं
परन्तु मेरे स्वर्गबासी पिताने यह बात तुझपर प्रगट
१८ किई। और मैं भी तुझसे कहता हूं कि तू पितर है और
मैं इसी पत्थरपर अपनी मंडली बनाऊंगा और परलोकके
१९ फाटक उसपर प्रबल न होंगे। मैं तुझे स्वर्गके राज्यकी
कुंजियां देऊंगा और जो कुछ तू पृथिवीपर बांधेगा सो
स्वर्गमें बंधा हुआ होगा और जो कुछ तू पृथिवीपर

खोलेगा सो स्वर्गमें खुला हुआ होगा। तब उसने २०
अपने शिष्योंको चिताया कि किसीसे मत कहो कि मैं
यीशु जो हूं सो खीष्ट हूं।
उस समयसे यीशु अपने शिष्योंको बताने लगा कि २१
मुझे अवश्य है कि यिरूशलीममें जाऊं और प्राचीनों और
प्रधान याजकों और अध्यापकोंसे बहुत दुःख उठाऊं
और मार डाला जाऊं और तीसरे दिन जी उठूं। तब २२
पितर उसे लेके उसको डांटके कहने लगा कि हे प्रभु
आपपर दया रहे यह तो आपको कभी न होगा। उसने २३
मुंह फेरके पितरसे कहा हे शैतान मेरे साम्हनेसे दूर
हो तू मेरे लिये ठोकर है क्योंकि तुझे ईश्वरकी बातोंका
नहीं परन्तु मनुष्योंकी बातोंका सोच रहता है।
तब यीशुने अपने शिष्योंसे कहा यदि कोई मेरे पीछे २४
आने चाहे तो अपनी इच्छाको मारे और अपना क्रूश
उठाके मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपना प्राण २५
बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये
अपना प्राण खोवे सो उसे पावेगा। यदि मनुष्य सारे २६
जगतको प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे तो उसको
क्या लाभ होगा. अथवा मनुष्य अपने प्राणकी
सन्ती क्या देगा। मनुष्यका पुत्र अपने दूतोंके संग २७
अपने पिताके ऐश्वर्य्यमें आवेगा और तब वह हर
एक मनुष्यको उसके कार्य्यके अनुसार फल देगा। मैं २८
तुमसे सच कहता हूं कि जो यहां खड़े हैं उनमेंसे कोई
कोई हैं कि जबलों मनुष्यके पुत्रको उसके राज्यमें आते
न देखें तबलों मृत्युका स्वाद न चीखेंगे।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका शिष्योंके आगे तेजस्वी दिखाई देना । १० एलियाहके आनेका अर्थ उन्हें बताना । १४ एक भूतग्रस्त लड़केको चंगा करना और बिश्वासके गुणका बखान करना । २२ अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना । २४ मन्दिरका कर देनेके लिये आश्चर्य्य कर्म्म करना ।

१ छः दिनके पीछे यीशु पितर और याकूब और उसके
भाई योहनको लेके उन्हें किसी ऊंचे पर्ब्बतपर एकान्तमें
२ ले गया। और उनके आगे उसका रूप बदल गया और
उसका मुंह सूर्य्यके तुल्य चमका और उसका बस्त्र ज्योति
३ की नाईं उजला हुआ । और देखो मूसा और एलियाह
४ उसके संग बात करते हुए उनको दिखाई दिये। इसपर
पितरने यीशुसे कहा हे प्रभु हमारा यहां रहना अच्छा
है . यदि आपकी इच्छा होय तो हम तीन डेरे यहां
बनावें एक आपके लिये एक मूसाके लिये और एक
५ एलियाहके लिये । वह बोलताही था कि देखो एक
ज्योतिमय मेघने उन्हें छा लिया और देखो उस मेघसे
यह शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे मैं अति
६ प्रसन्न हूं उसकी सुनो । शिष्य लोग यह सुनके औंधे
७ मुंह गिरे और निपट डर गये। यीशुने उन पास आके
८ उन्हें छूके कहा उठो डरो मत । तब उन्होंने अपनी
९ आंखें उठाके यीशुको छोड़के और किसीको न देखा। जब
वे उस पर्ब्बतसे उतरते थे तब यीशुने उनको आज्ञा
दिई कि जबलों मनुष्यका पुत्र मृतकोंमेंसे नहीं जी उठे
तबलों इस दर्शनका समाचार किसीसे मत कहो ।
१० और उसके शिष्योंने उससे पूछा फिर अध्यापक लोग
११ क्यों कहते हैं कि एलियाहको पहिले आना होगा। यीशुने

उनको उत्तर दिया कि सच है एलियाह पहिले आके
सब कुछ सुधारेगा। परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि एलि- १२
याह आ चुका है और उन्होंने उसको नहीं चीन्हा परन्तु
उससे जो कुछ चाहा सो किया . इस रीतिसे मनुष्यका
पुत्र भी उनसे दुःख पावेगा। तब शिष्योंने बूझा कि वह १३
योहन बपतिसमा देनेहारेके विषयमें हमसे कहता है।
जब वे लोगोंके निकट पहुंचे तब किसी मनुष्यने यीशु १४
पास आ घुटने टेकके उससे कहा . हे प्रभु मेरे पुत्रपर १५
दया कीजिये वह मिर्गीके रोगसे अति पीड़ित है कि
बारबार आगमें और बारबार पानीमें गिर पड़ता
है। और मैं उसको आपके शिष्योंके पास लाया परन्तु १६
वे उसे चंगा नहीं कर सके। यीशुने उत्तर दिया कि १७
हे अविश्वासी और हठीले लोगो मैं कबलों तुम्हारे
संग रहूंगा और कबलों तुम्हारी सहूंगा . उसको यहां
मेरे पास लाओ। तब यीशुने भूतको डांटा और वह १८
उसमेंसे निकला और लड़का उसी घड़ीसे चंगा हुआ।
तब शिष्योंने निरालेमें यीशु पास आ कहा हम उस १९
भूतको क्यों नहीं निकाल सके। यीशुने उनसे कहा २०
तुम्हारे अविश्वासके कारण क्योंकि मैं तुमसे सत्य कहता
हूं यदि तुमको राईके एक दानेके तुल्य बिश्वास होय
तो तुम इस पहाड़से जो कहोगे कि यहांसे वहां चला
जा वह जायगा और कोई काम तुमसे असाध्य नहीं
होगा। तौभी जो इस प्रकारके हैं सो प्रार्थना और उप- २१
वास बिना और किसी उपायसे निकाले नहीं जाते हैं।
जब वे गालीलमें फिरते थे तब यीशुने उनसे कहा २२

२३ मनुष्यका पुत्र मनुष्योंके हाथमें पकड़वाया जायगा। वे
उसको मार डालेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा.
इसपर वे बहुत उदास हुए।
२४ जब वे कफर्नाहुममें पहुंचे तब मन्दिरका कर लेनेहारे
पितरके पास आके बोले क्या तुम्हारा गुरु मन्दिरका
२५ कर नहीं देता है. उसने कहा हां देता है। जब पितर
घरमें आया तब यीशुने उसके बोलनेके पहिले उससे
कहा हे शिमोन तू क्या समझता है. पृथिवीके राजा
लोग कर अथवा खिराज किनसे लेते हैं अपने सन्ता-
२६ नोंसे अथवा परायोंसे। पितरने उससे कहा परायोंसे.
२७ यीशुने उससे कहा तब तो सन्तान बचे हुए हैं। तौभी
जिस्तें हम उनको ठोकर न खिलावें इसलिये तू समुद्रके
तीरपर जाके बंसी डाल और जो मछली पहिले निकले
उसको ले. तू उसका मुंह खोलनेसे एक रुपैया पावेगा
उसीको लेके मेरे और अपने लिये उन्हें दे।

१८ अठारहवां पर्व्व।

१ नम्र होनेका उपदेश। ७ ठोकर खानेका निषेध। ११ खोई हुई भेड़का दृष्टान्त।
१५ दोषी भाईसे कैसा व्यवहार चाहिये इसका वर्णन और मंडलीका अधिकार।
२१ क्षमा करनेका उपदेश और निर्दय दासका दृष्टान्त।

१ उसी घड़ी शिष्योंने यीशु पास आ कहा स्वर्गके राज्यमें
२ बड़ा कौन है। यीशुने एक बालकको अपने पास बुलाके
३ उनके बीचमें खड़ा किया. और कहा मैं तुम्हें सच
कहता हूं जो तुम मन न फिरावो और बालकोंके समान
न हो जावो तो स्वर्गके राज्यमें प्रवेश करने न पाओगे।
४ जो कोई अपनेको इस बालकके समान दीन करे सोई

स्वर्गके राज्यमें बड़ा है । और जो कोई मेरे नामसे ५
एक ऐसे बालकको ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता
है । परन्तु जो कोई इन छोटोंमेंसे जो मुझपर बिश्वास ६
करते हैं एकको ठोकर खिलावे उसके लिये भला होता
कि चक्कीका पाट उसके गलेमें लटकाया जाता और
वह समुद्रके गहिरावमें डुबाया जाता ।

ठोकरोंके कारण हाय संसार . ठोकरें अवश्य ७
लगेंगीं परन्तु हाय वह मनुष्य जिसके द्वारासे ठोकर
लगती है । जो तेरा हाथ अथवा तेरा पांव तुझे ठोकर ८
खिलावे तो उसे काटके फेंक दे . लंगड़ा अथवा टुंडा
होके जीवनमें प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है
कि दो हाथ अथवा दो पांव रहते हुए तू अनन्त
आगमें डाला जाय । और जो तेरी आंख तुझे ठोकर ९
खिलावे तो उसे निकालके फेंक दे . काना होके
जीवनमें प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो
आंखें रहते हुए तू नरककी आगमें डाला जाय ।
देखो कि तुम इन छोटोंमेंसे एकको तुच्छ न जानो १०
क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि स्वर्गमें उनके दूत मेरे
स्वर्गबासी पिताका मुंह नित्य देखते हैं ।

मनुष्यका पुत्र खोये हुएको बचाने आया है । ११
तुम क्या समझते हो . जो किसी मनुष्यकी सौ भेड़ होवें १२
और उनमेंसे एक भटक जाय तो क्या वह निन्नानवेको
पहाड़ोंपर छोड़के उस भटकी हुईको नहीं जाके ढूंढ़ता
है । और मैं तुमसे सत्य कहता हूं यदि ऐसा हो कि वह १३
उसको पावे तो जो निन्नानवे नहीं भटक गई थीं उनसे

१४ अधिक वह उस भेड़के लिये आनन्द करता है। ऐसाही
तुम्हारे स्वर्गबासी पिताकी इच्छा नहीं है कि इन
छोटोंमेंसे एक भी नाश होवे ।
१५ यदि तेरा भाई तेरा अपराध करे तो जाके उसके
संग एकान्तमें उसको समझा दे. जो वह तेरी सुने तो
१६ तूने अपने भाईको पाया है । परन्तु जो वह न सुने तो
एक अथवा दो जनको अपने संग ले जा कि दो अथवा
१७ तीन साक्षियोंके मुंहसे हर एक बात ठहराई जाय । जो
वह उनकी न माने तो मंडलीसे कह दे परन्तु जो वह
मंडलीकी भी न माने तो तेरे लेखे देवपूजक और कर
१८ उगाहनेहारासा होय । मैं तुमसे सच कहता हूं जो कुछ
तुम पृथिवीपर बांधोगे सो स्वर्गमें बंधा हुआ होगा और
जो कुछ तुम पृथिवीपर खोलोगे सो स्वर्गमें खुला हुआ
१९ होगा । फिर मैं तुमसे कहता हूं यदि पृथिवीपर तुममेंसे
दो मनुष्य जो कुछ मांगें उस बातके विषयमें एक मन
होवें तो वह उनके लिये मेरे स्वर्गबासी पिताकी ओरसे
२० हो जायगी । क्योंकि जहां दो अथवा तीन मेरे नामपर
एकट्ठे होवें तहां मैं उनके बीचमें हूं ।
२१ तब पितरने उस पास आ कहा हे प्रभु मेरा भाई के
बेर मेरा अपराध करे और मैं उसको क्षमा करूं. क्या
२२ सात बेरलों । यीशुने उससे कहा मैं तुझसे नहीं कहता
२३ हूं कि सात बेरलों परन्तु सत्तर गुणे सात बेरलों । इस-
लिये स्वर्गके राज्यकी उपमा एक राजासे दिई जाती है
२४ जिसने अपने दासोंसे लेखा लेने चाहा । जब वह लेखा
लेने लगा तब एक जन जो दस सहस्र तोड़े धारता था

उसके पास पहुंचाया गया। जब कि भर देनेको उस पास २५
कुछ न था उसके स्वामीने आज्ञा किई कि वह और
उसकी स्त्री और लड़के बाले और जो कुछ उसका था
सब बेचा जाय और वह ऋण भर दिया जाय। इसपर २६
उस दासने दंडवत कर उसे प्रणाम किया और कहा हे
प्रभु मेरे विषयमें धीरज धरिये मैं आपको सब भर देऊं-
गा। तब उस दासके स्वामीने दया कर उसे छोड़ दिया २७
और उसका ऋण क्षमा किया। परन्तु उसी दासने २८
बाहर निकलके अपने संगी दासोंमेंसे एकको पाया जो
उसकी एक सौ सूकी धारता था और उसको पकड़के
उसका गला दाबके कहा जो कुछ तू धारता है मुझे दे।
इसपर उसके संगी दासने उसके पांवों पड़के उससे बिन्ती २९
कर कहा मेरे विषयमें धीरज धरिये मैं आपको सब
भर देऊंगा। उसने न माना परन्तु जाके उसे बन्दीगृह ३०
में डाला कि जबलों ऋणको भर न देवे तबलों वहीं
रहे। उसके संगी दास लोग जो हुआ था सो देखके ३१
बहुत उदास हुए और जाके सब कुछ जो हुआ था
अपने स्वामीको बताया। तब उस दासके स्वामीने ३२
उसको अपने पास बुलाके उससे कहा हे दुष्ट दास तूने
जो मुझसे बिन्ती किई तो मैंने तुझे वह सब ऋण क्षमा
किया। सो जैसा मैंने तुझपर दया किई वैसा क्या तुझे ३३
भी अपने संगी दासपर दया करना उचित न था। और ३४
उसके स्वामीने क्रोध कर उसे दंडकारकोंके हाथ सौंप
दिया कि जबलों वह उसका सब ऋण भर न देवे तबलों
उनके हाथमें रहे। यूंही यदि तुममेंसे हर एक अपने ३५

अपने मनसे अपने भाईके अपराध क्षमा न करे तो मेरा
स्वर्गवासी पिता भी तुमसे वैसा करेगा ।

१९ उनीसवां पर्व्व ।

१ पत्नीको त्यागनेका निषेध । १३ यीशुका बालकोंको आशीस देना । १६ एक धनवान जवानसे उसकी बातचीत । २३ धनी लोगोंकी दशाका वर्णन । २७ शिष्योंके फलकी प्रतिज्ञा ।

१ जब यीशु यह बातें कह चुका तब गालीलसे जाके
२ यर्दनके उस पार यिहूदियाके सिवानोंमें आया । और
बड़ी बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिईं और उसने उन्हें
३ वहां चंगा किया । तब फरीशियोंने उस पास आ उसकी
परीक्षा करनेको उससे कहा क्या किसी कारणसे अपनी
४ स्त्रीको त्यागना मनुष्यको उचित है । उसने उनको उत्तर
दिया क्या तुमने नहीं पढ़ा है कि सृजनहारने आरंभसे
५ नर और नारी करके मनुष्योंको उत्पन्न किया . और
कहा इस हेतुसे मनुष्य अपने माता पिताको छोड़के
अपनी स्त्रीसे मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे ।
६ सो वे आगे दो नहीं पर एक तन हैं इसलिये जो कुछ ईश्व-
७ रने जोड़ा है उसको मनुष्य अलग न करे । उन्होंने उससे
कहा फिर मूसाने क्यों त्यागपत्र देने और स्त्रीको त्याग-
८ नेकी आज्ञा किई । उसने उनसे कहा मूसाने तुम्हारे
मनकी कठोरताके कारण तुमको अपनी अपनी स्त्रियां
९ त्यागने दिया परन्तु आरंभसे ऐसा नहीं था । और मैं
तुमसे कहता हूं कि जो कोई व्यभिचारको छोड़ और
किसी हेतुसे अपनी स्त्रीको त्यागके दूसरीसे बिवाह करे
सो परस्त्रीगमन करता है और जो उस त्यागी हुईसे

बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है। उसके शिष्योंने १०
उससे कहा यदि पुरुषको स्त्रीके संग इस प्रकारका सम्बन्ध
है तो बिवाह करना अच्छा नहीं है। उसने उनसे कहा ११
सब लोग यह बचन ग्रहण नहीं कर सकते हैं केवल वे
जिनको दिया गया है। क्योंकि कोई कोई नपुंसक हैं जो १२
माताके गर्भसे ऐसेही जन्मे और कोई कोई नपुंसक हैं जो
मनुष्योंसे नपुंसक किये गये हैं और कोई कोई नपुंसक
हैं जिन्होंने स्वर्गके राज्यके लिये अपनेको नपुंसक किये
हैं. जो इसको ग्रहण कर सके सो ग्रहण करे।

तब लोग कितने बालकोंको यीशु पास लाये कि वह १३
उनपर हाथ रखके प्रार्थना करे परन्तु शिष्योंने उन्हें
डांटा। यीशुने कहा बालकोंको मेरे पास आने दो और १४
उन्हें मत बर्जो क्योंकि स्वर्गका राज्य ऐसोंका है। और १५
वह उनपर हाथ रखके वहांसे चला गया।

और देखो एक मनुष्यने उस पास आ उससे कहा हे १६
उत्तम गुरु अनन्त जीवन पानेको मैं कौनसा उत्तम काम
करूं। उसने उससे कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है. १७
कोई उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात ईश्वर. परन्तु जो
तू जीवनमें प्रवेश किया चाहता है तो आज्ञाओंको पालन
कर। उसने उससे कहा कौन कौन आज्ञा. यीशुने १८
कहा यह कि नरहिंसा मत कर परस्त्रीगमन मत कर
चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे. अपने माता पिताका १९
आदर कर और अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम
कर। उस जवानने उससे कहा इन सभोंको मैंने अपने २०
लड़कपनसे पालन किया है मुझे अब क्या घटी है।

२१ यीशुने उससे कहा जो तू सिद्ध हुआ चाहता है तो जा
अपनी सम्पत्ति बेचके कंगालोंको दे और तू स्वर्गमें धन
२२ पावेगा और आ मेरे पीछे हो ले। वह जवान यह बात
सुनके उदास चला गया क्योंकि उसको बहुत धन था।
२३ तब यीशुने अपने शिष्योंसे कहा मैं तुमसे सच कहता
हूं कि धनवानको स्वर्गके राज्यमें प्रवेश करना कठिन
२४ होगा। फिर भी मैं तुमसे कहता हूं कि ईश्वरके राज्यमें
धनवानके प्रवेश करनेसे ऊंटका सूईके नाकेमेंसे जाना
२५ सहज है। यह सुनके उसके शिष्योंने निपट अचंभित
२६ हो कहा तब तो किसका त्राण हो सकता है। यीशुने
उनपर दृष्टि कर उनसे कहा मनुष्योंसे यह अन्होना है
परन्तु ईश्वरसे सब कुछ हो सकता है।
२७ तब पितरने उसको उत्तर दिया कि देखिये हम लोग
सब कुछ छोड़के आपके पीछे हो लिये हैं सो हमें क्या
२८ मिलेगा। यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं
कि नई सृष्टिमें जब मनुष्यका पुत्र अपने ऐश्वर्य्यके सिंहा-
सनपर बैठेगा तब तुम भी जो मेरे पीछे हो लिये हो
बारह सिंहासनोंपर बैठके इस्रायेलके बारह कुलोंका
२९ न्याय करोगे। और जिस किसीने मेरे नामके लिये घरों
वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता वा स्त्री वा
लड़कों वा भूमिको त्यागा है सो सौ गुणा पावेगा और
३० अनन्त जीवनका अधिकारी होगा। परन्तु बहुतेरे
जो अगले हैं पिछले होंगे और जो पिछले हैं अगले
होंगे।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

१ गृहस्थके बनिहारोंका दृष्टान्त । १७ यीशुका अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना । २० दो शिष्योंकी बिन्तीका उत्तर देना । २४ दीन होनेका उपदेश । २९ यीशुका दो अंधोंके नेत्र खोलना ।

स्वर्गका राज्य किसी गृहस्थके समान है जो भोरको १
निकला कि अपने दाखकी बारीमें बनिहारोंको लगावे ।
और उसने बनिहारोंके साथ दिनभरकी एक एक सूकी २
मजूरी ठहराके उन्हें अपने दाखकी बारीमें भेजा । जब ३
पहर एक दिन चढ़ा तब उसने बाहर जाके औरोंको
चोकमें बेकार खड़े देखा . और उनसे कहा तुम भी ४
दाखकी बारीमें जाओ और जो कुछ उचित होय मैं
तुम्हें देऊंगा . सो वे भी गये । फिर उसने दूसरे और ५
तीसरे पहरके निकट बाहर जाके वैसाही किया । घड़ी ६
एक दिन रहते उसने बाहर जाके औरोंको बेकार खड़े
पाया और उनसे कहा तुम क्यों यहां दिन भर बेकार खड़े
हो । उन्होंने उससे कहा किसीने हमको काममें नहीं ७
लगाया है . उसने उन्हें कहा तुम भी दाखकी बारीमें
जाओ और जो कुछ उचित होय सो पाओगे । जब ८
सांझ हुई तब दाखकी बारीके स्वामीने अपने भंडारीसे
कहा बनिहारोंको बुलाके पिछलोंसे आरंभ कर अगलों-
तक उन्हें मजूरी दे । सो जो लोग घड़ी एक दिन रहते ९
कामपर आये थे उन्होंने आके एक एक सूकी पाई । तब १०
अगले आये और समझा कि हम अधिक पावेंगे परन्तु
उन्होंने भी एक एक सूकी पाई । इसको लेके वे उस गृह- ११
स्थपर कुड़कुड़ाके बोले . इन पिछलोंने एकही घड़ी काम १२
किया और आपने उनको हमारे तुल्य किया है जिन्हों-

१३ ने दिनभरका भार और घाम सहा । उसने उनमेंसे
एकको उत्तर दिया कि हे मित्र मैं तुझसे कुछ अनीति
नहीं करता हूं . क्या तूने मुझसे एक सूकी लेनेको
१४ न ठहराया । अपना ले और चला जा . मेरी इच्छा
है कि जितना तुझको उतना इस पिछलेको भी देऊं ।
१५ क्या मुझे उचित नहीं कि अपने धनसे जो चाहूं सो
करूं . क्या तू मेरे भले होनेके कारण बुरी दृष्टिसे
१६ देखता है । इस रीतिसे जो पिछले हैं सो अगले होंगे
और जो अगले हैं सो पिछले होंगे क्योंकि बुलाये
हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए थोड़े हैं ।
१७ यीशुने यिरूशलीमको जाते हुए मार्गमें बारह शिष्यों-
१८ को एकांतमें ले जाके उनसे कहा . देखो हम यिरूशलीम-
को जाते हैं और मनुष्यका पुत्र प्रधान याजकों और
अध्यापकोंके हाथ पकड़वाया जायगा और वे उसको
१९ बधके योग्य ठहरावेंगे . और उसको अन्यदेशियोंके हाथ
सौंपेंगे कि वे उससे ठट्ठा करें और कोड़े मारें और
क्रूशपर घात करें . परन्तु वह तीसरे दिन जी उठेगा ।
२० तब जबदीके पुत्रोंकी माताने अपने पुत्रोंके संग यीशु
२१ पास आ प्रणाम कर उससे कुछ मांगा । उसने उससे
कहा तू क्या चाहती है . वह उससे बोली आप यह
कहिये कि आपके राज्यमें मेरे इन दो पुत्रोंमेंसे एक
२२ आपकी दहिनी ओर और दूसरा बाईं ओर बैठे । यीशुने
उत्तर दिया तुम नहीं बूझते कि क्या मांगते हो . जिस
कटोरेसे मैं पीनेपर हूं क्या तुम उससे पी सकते हो और
जो बपतिसमा मैं लेता हूं क्या तुम उसे ले सकते हो.

उन्होंने उससे कहा हम सकते हैं। उसने उनसे कहा तुम २३
मेरे कटोरेसे ता पीओगे और जो बपतिसमा मैं लेता हूं
उसे लेओगे परन्तु जिन्होंके लिये मेरे पितासे तैयार
किया गया है उन्हें छोड़ और किसीको अपनी दहिनी
और अपनी बाईं ओर बैठने देना मेरा अधिकार नहीं है।
यह सुनके दसों शिष्य उन दोनों भाइयोंपर रिसिआये। २४
यीशुने उनको अपने पास बुलाके कहा तुम जानते हा कि २५
अन्यदेशियोंके अध्यक्ष लोग उन्होंपर प्रभुता करते हैं और
जो बड़े हैं सो उन्होंपर अधिकार रखते हैं। परन्तु तुम्होंमें २६
ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम्होंमें बड़ा हुआ चाहे सो
तुम्हारा सेवक होवे। और जो कोई तुम्होंमें प्रधान हुआ २७
चाहे सो तुम्हारा दास होवे। इसी रीतिसे मनुष्यका पुत्र २८
सेवा करवानेको नहीं परन्तु सेवा करनेको और बहुतोंके
उद्धारके दाममें अपना प्राण देनेको आया है।
जब वे यिरीहो नगरसे निकलते थे तब बहुत २९
लोग यीशुके पीछे हो लिये। और देखो दो अंधे जो ३०
मार्गकी ओर बैठे थे यह सुनके कि यीशु जाता है पुकारके
बोले हे प्रभु दाऊदके सन्तान हमपर दया कीजिये।
लोगोंने उन्हें डांटा कि वे चुप रहें परन्तु उन्होंने अधिक ३१
पुकारा हे प्रभु दाऊदके सन्तान हमपर दया कीजिये।
तब यीशु खड़ा रहा और उनको बुलाके कहा तुम ३२
क्या चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं। उन्होंने उससे ३३
कहा हे प्रभु हमारी आंखें खुल जायें। यीशुने दया ३४
कर उनकी आंखें छूईं और वे तुरन्त आंखोंसे देखने
लगे और उसके पीछे हो लिये।

२१ इकईसवां पर्ब्ब।

१ यीशुका यिरूशलीममें जाना। १२ ब्योपारियोंको मन्दिरसे निकालना और आश्चर्य्य कर्म्म वहां करना। १८ गूलरके वृक्षको स्राप देना और विश्वासके गुणका बखान करना। २३ प्रधान याजकोंको निरुत्तर करना। २८ दो पुत्रोंका दृष्टान्त। ३३ दुष्ट मालियोंका दृष्टान्त।

१ जब वे यिरूशलीमके निकट आये और जैतून पर्ब्बतके
समीप बैतफगी गांव पास पहुंचे तब यीशुने दो शिष्योंको
२ यह कहके भेजा . कि जो गांव तुम्हारे सन्मुख है उसमें
जाओ और तुम तुरन्त एक गधीको बंधी हुई और उसके
३ साथ बच्चेको पाओगे उन्हें खोलके मेरे पास लाओ। जो
तुमसे कोई कुछ कहे तो कहो कि प्रभुको इनका प्रयोजन
४ है तब वह तुरन्त उनको भेजेगा। यह सब इसलिये हुआ
कि जो बचन भविष्यद्वक्तासे कहा गया था सो पूरा
५ होवे . कि सियोनकी पुत्रीसे कहो देख तेरा राजा नम्र
और गदहेपर हां लादूके बच्चेपर बैठा हुआ तेरे पास
६ आता है। सो शिष्योंने जाके जैसा यीशुने उन्हें आज्ञा
७ दिई वैसा किया। और वे उस गदहीको और बच्चेको
लाये और उनपर अपने कपड़े रखके यीशुको उनपर
८ बैठाया। और बहुतेरे लोगोंने अपने अपने कपड़े मार्गमें
बिछाये और औरोंने वृक्षोंसे डालियां काटके मार्गमें बि-
९ छाईं। और जो लोग आगे पीछे चलते थे उन्होंने पुकारके
कहा दाऊदके सन्तानकी जय . धन्य वह जो परमेश्वरके
नामसे आता है . सबसे ऊंचे स्थानमें जयजयकार होवे।
१० जब उसने यिरूशलीममें प्रवेश किया तब सारे नगरके
११ निवासी घबराके बोले यह कौन है। लोगोंने कहा यह
गालीलके नासरत नगरका भविष्यद्वक्ता यीशु है।

यीशुने ईश्वरके मन्दिरमें जाके जो लोग मन्दिरमें १२
बेचते औ मोल लेते थे उन सभोंको निकाल दिया और
सर्राफोंके पीढ़ोंको और कपोतोंके बेचनेहारोंकी चौकि-
योंको उलट दिया. और उनसे कहा लिखा है कि मेरा १३
घर प्रार्थनाका घर कहावेगा. परन्तु तुमने उसे डाकूओं-
का खोह बनाया है। तब अन्धे और लंगड़े उस पास १४
मन्दिरमें आये और उसने उन्हें चंगा किया। जब प्रधान १५
याजकों और अध्यापकोंने इन आश्चर्य्य कर्म्मोंको जो
उसने किये और लड़कोंको जो मन्दिरमें दाऊदके सन्तान-
की जय पुकारते थे देखा तब उन्होंने रिसियाके उससे कहा
क्या तू सुनता कि ये क्या कहते हैं। यीशुने उनसे १६
कहा हां. क्या तुमने कभी यह बचन नहीं पढ़ा कि
बालकों और दूध पीनेहारे लड़कोंके मुंहसे तूने स्तुति
करवाई है। तब वह उन्हें छोड़के नगरके बाहर १७
बैथनियाको गया और वहां टिका।

भोरको जब वह नगरको फिर जाता था तब उसको १८
भूख लगी। और मार्गमें एक गूलरका वृक्ष देखके वह १९
उस पास आया परन्तु उसमें और कुछ न पाया केवल
पत्ते और उसको कहा तुझमें फिर कभी फल न लगे.
इसपर गूलरका वृक्ष तुरन्त सूख गया। यह देखके शि- २०
ष्योंने अचंभा कर कहा गूलरका वृक्ष क्याही शीघ्र सूख
गया। यीशुने उनको उत्तर दिया कि मैं तुमसे सच कहता २१
हूं जो तुम बिश्वास करो और सन्देह न रखो तो जो इस
गूलरके वृक्षसे किया गया है केवल इतना न करोगे परन्तु
यदि इस पहाड़से कहो कि उठ समुद्रमें गिर पड़ तो

२२ वैसाही होगा। और जो कुछ तुम बिश्वास करके प्रार्थना
में मांगोगे सो पाओगे।
२३ जब वह मन्दिरमें गया और उपदेश करता था तब
लोगोंके प्रधान याजकों और प्राचीनोंने उस पास आ
कहा तुझे ये काम करनेका कैसा अधिकार है और यह
२४ अधिकार किसने तुझको दिया। यीशुने उनको उत्तर दिया
कि मैं भी तुमसे एक बात पूछूंगा जो तुम मुझे उसका उत्तर
देओ तो मैं भी तुम्हें बताऊंगा कि मुझे ये काम करनेका
२५ कैसा अधिकार है। योहनका बपतिसमा देना कहांसे
हुआ स्वर्गकी अथवा मनुष्योंकी ओरसे. तब वे आपसमें
बिचार करने लगे कि जो हम कहें स्वर्गकी ओरसे तो वह
हमसे कहेगा फिर तुमने उसका बिश्वास क्यों नहीं किया।
२६ और जो हम कहें मनुष्योंकी ओरसे तो हमें लोगोंका डर
२७ है क्योंकि सब लोग योहनको भविष्यद्वक्ता जानते हैं। सो
उन्होंने यीशुको उत्तर दिया कि हम नहीं जानते. तब
उसने उनसे कहा तो मैं भी तुमको नहीं बताता हूं
कि मुझे ये काम करनेका कैसा अधिकार है।
२८ तुम क्या समझते हो. किसी मनुष्यके दो पुत्र थे और
उसने पहिलेके पास आ कहा हे पुत्र आज मेरी दाखकी
२९ बारीमें जाके काम कर। उसने उत्तर दिया मैं नहीं जाऊंगा
३० परन्तु पीछे पछताके गया। फिर उसने दूसरेके पास आ-
के वैसाही कहा. उसने उत्तर दिया हे प्रभु मैं जाता हूं
३१ परन्तु गया नहीं। इन दोनोंमेंसे किसने पिताकी इच्छा
पूरी किई. वे उससे बोले पहिलेने. यीशुने उनसे कहा मैं
तुमसे सच कहता हूं कि कर उगाहनेहारे और बेश्या तुम-

से आगे ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करते हैं। क्योंकि योहन ३२
धर्म्मके मार्गसे तुम्हारे पास आया और तुमने उसका
बिश्वास न किया परन्तु कर उगाहनेहारों और बेश्या-
ओंने उसका बिश्वास किया और तुम लोग यह देखके
पीछेसे भी नहीं पछताये कि उसका बिश्वास करते।

एक और दृष्टान्त सुनो. एक गृहस्थ था जिसने दाखकी ३३
बारी लगाई और उसको चहुं ओर बेड़ दिया और
उसमें रसका कुंड खोदा और गढ़ बनाया और मालि-
योंको उसका ठीका दे परदेशको चला गया। जब ३४
फलका समय निकट आया तब उसने अपने दासोंको
उसका फल लेनेको मालियोंके पास भेजा। परन्तु ३५
मालियोंने उसके दासोंको लेके एकको मारा दूसरेको
घात किया और तीसरेको पत्थरवाह किया। फिर ३६
उसने पहिले दासोंसे अधिक दूसरे दासोंको भेजा और
उन्होंने उनसे भी वैसाही किया। सबके पीछे उसने यह ३७
कहके अपने पुत्रको उनके पास भेजा कि वे मेरे पुत्रका
आदर करेंगे। परन्तु मालियोंने उसके पुत्रको देखके ३८
आपसमें कहा यह तो अधिकारी है आओ हम उसे मार
डालें और उसका अधिकार ले लेवें। और उन्होंने उसे ३९
लेके दाखकी बारीसे बाहर निकालके मार डाला। इस- ४०
लिये जब दाखकी बारीका स्वामी आवेगा तब उन
मालियोंसे क्या करेगा। उन्होंने उससे कहा वह उन बुरे ४१
लोगोंको बुरी रीतिसे नाश करेगा और दाखकी बारीका
ठीका दूसरे मालियोंको देगा जो फलोंको उनके समयोंमें
उसे दिया करेंगे। यीशुने उनसे कहा क्या तुमने कभी ४२

धर्म्मपुस्तकमें यह बचन नहीं पढ़ा कि जिस पत्थरको
थवइयोंने निकम्मा जाना वही कोनेका सिरा हुआ है.
यह परमेश्वरका कार्य्य है और हमारी दृष्टिमें अद्भुत है।
४३ इसलिये मैं तुमसे कहता हूं कि ईश्वरका राज्य तुमसे ले
लिया जायगा और और लोगोंको दिया जायगा जो उसके
४४ फल दिया करेंगे। जो इस पत्थरपर गिरेगा सो चूर हो
जायगा और जिस किसीपर वह गिरेगा उसको पीस डाले-
४५ गा। प्रधान याजकों और फरीशियोंने उसके दृष्टान्तोंको
४६ सुनके जाना कि वह हमारे विषयमें बोलता है। और
उन्होंने उसे पकड़ने चाहा परन्तु लोगोंसे डरे क्योंकि
वे उसको भविष्यद्वक्ता जानते थे।

२२ बाईसवां पर्व्व ।

१ बिवाहके भोजका दृष्टान्त। १५ यीशुका कर देनेके विषयमें फरीशियोंको निरुत्तर करना। २३ जी उठनेके विषयमें सदूकियोंको निरुत्तर करना। ३४ श्रेष्ठ आज्ञाके विषयमें व्यवस्थापकको उत्तर देना। ४१ अपनी पदवीके विषयमें फरीशियोंको निरुत्तर करना।

१
२ इसपर यीशुने फिर उनसे दृष्टान्तोंमें कहा. स्वर्गके
राज्यकी उपमा एक राजासे दिई जाती है जो अपने
३ पुत्रका बिवाह करता था। और उसने अपने दासोंको
भेजा कि नेवतहरियोंको बिवाहके भोजमें बुलावें परन्तु
४ उन्होंने आने न चाहा। फिर उसने दूसरे दासोंको यह
कहके भेजा कि नेवतहरियोंसे कहो देखो मैंने अपना
भोज तैयार किया है और मेरे बैल और मोटे पशु मारे
गये हैं और सब कुछ तैयार है बिवाहके भोजमें आओ।
५ परन्तु नेवतहरियोंने इसको कुछ सोच न किया पर कोई
अपने खेतको और कोई अपने ब्योपारको चले गये।

ओरोंने उसके दासोंको पकड़के दुर्दशा करके मार डाला। ६
यह सुनके राजाने क्रोध किया और अपनी सेना भेजके ७
उन हत्यारोंको नाश किया और उनके नगरको फूंक
दिया । तब उसने अपने दासोंसे कहा बिवाहका भोज ८
तो तैयार है परन्तु नेवतहरी योग्य नहीं ठहरे। इस- ९
लिये चौराहोंमें जाके जितने लोग तुम्हें मिलें सभोंको
बिवाहके भोजमें बुलाओ। सो उन दासोंने मार्गोंमें जाके १०
क्या बुरे क्या भले जितने उन्हें मिले सभोंको एकट्ठे किया
और बिवाहका स्थान जेवनहरियोंसे भर गया । जब ११
राजा जेवनहरियोंको देखनेको भीतर आया तब
उसने वहां एक मनुष्यको देखा जो बिवाहीय बस्त्र
नहीं पहिने हुए था। उसने उससे कहा हे मित्र तू १२
यहां बिना बिवाहीय बस्त्र पहिने क्योंकर भीतर
आया . वह निरुत्तर हुआ। तब राजाने सेवकोंसे कहा १३
इसके हाथ पांव बांधो और उसको ले जाके बाहरके
अंधकारमें डाल देओ जहां रोना ओ दांत पीसना
होगा। क्योंकि बुलाये हुए बहुत हैं परन्तु चुने हुए १४
थोड़े हैं।

तब फरीशियोंने जाके आपसमें बिचार किया इस- १५
लिये कि यीशुको बातमें फंसावें। सो उन्होंने अपने १६
शिष्योंको हेरोदियोंके संग उस पास यह कहनेको भेजा
कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और ईश्वर-
का मार्ग सत्यतासे बताते हैं और किसीका खटका नहीं
रखते हैं क्योंकि आप मनुष्योंका मुंह देखके बात नहीं
करते हैं। सो हमसे कहिये आप क्या समझते हैं . १७

१८ कैसरको कर देना उचित है अथवा नहीं। यीशुने उनकी
दुष्टता जानके कहा हे कपटियो मेरी परीक्षा क्यों करते
१९ हो। करका मुद्रा मुझे दिखाओ. तब वे उस पास
२० एक सूकी लाये। उसने उनसे कहा यह मूर्त्ति और
२१ छाप किसकी है। वे उससे बोले कैसरकी. तब उसने
उनसे कहा तो जो कैसरका है सो कैसरको देओ और
२२ जो ईश्वरका है सो ईश्वरको देओ। यह सुनके वे
अचंभित हुए और उसको छोड़के चले गये।
२३ उसी दिन सदूकी लोग जो कहते हैं कि मृतकोंका जी
उठना नहीं होगा उस पास आये और उससे पूछा.
२४ कि हे गुरु मूसाने कहा यदि कोई मनुष्य निःसन्तान मर
जाय तो उसका भाई उसकी स्त्रीसे बिवाह करे और
२५ अपने भाईके लिये वंश खड़ा करे। सो हमारे यहां सात
भाई थे. पहिले भाईने बिवाह किया और निःसन्तान
मर जानेसे अपनी स्त्रीको अपने भाईके लिये छोड़ा।
२६ दूसरे और तीसरे भाईने भी सातवें भाईतक वैसाही
२७ २८ किया। सबके पीछे स्त्री भी मर गई। सो मृतकोंके जी
उठनेपर वह इन सातोंमेंसे किसकी स्त्री होगी क्योंकि
२९ सभोंने उससे बिवाह किया। यीशुने उनको उत्तर दिया
कि तुम धर्म्मपुस्तक और ईश्वरकी शक्ति न बूझके भूलमें
३० पड़े हो। क्योंकि मृतकोंके जी उठनेपर वे न बिवाह
करते न बिवाह दिये जाते हैं परन्तु स्वर्गमें ईश्वरके दूतोंके
३१ समान हैं। मृतकोंके जी उठनेके विषयमें क्या तुमने यह
३२ बचन जो ईश्वरने तुमसे कहा नहीं पढ़ा है. कि मैं
इब्राहीमका ईश्वर और इसहाकका ईश्वर और याकूबका

ईश्वर हूं . ईश्वर मृतकोंका नहीं परन्तु जीवतोंका
ईश्वर है। यह सुनकर लोग उसके उपदेशसे अचंभित ३३
हुए।

जब फरीशियोंने सुना कि यीशुने सदूकियोंको निरु- ३४
त्तर किया तब वे एकट्ठे हुए। और उनमेंसे एकने जो ३५
व्यवस्थापक था उसकी परीक्षा करनेको उससे पूछा . हे ३६
गुरु व्यवस्थामें बड़ी आज्ञा कौन है। यीशुने उससे कहा तू ३७
परमेश्वर अपने ईश्वरको अपने सारे मनसे और अपने
सारे प्राणसे और अपनी सारी बुद्धिसे प्रेम कर । यही ३८
पहिली औ बड़ी आज्ञा है । और दूसरी उसके समान ३९
है अर्थात तू अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर।
इन दो आज्ञाओंसे सारी व्यवस्था औ भविष्यद्वक्ताओंका ४०
पुस्तक सम्बन्ध रखते हैं ।

फरीशियोंके एकट्ठे होते हुए यीशुने उनसे पूछा . ४१
खीष्टके विषयमें तुम क्या समझते हो वह किसका पुत्र ४२
है . वे उससे बोले दाऊदका। उसने उनसे कहा तो दाऊद ४३
क्योंकर आत्माकी शिक्षासे उसको प्रभु कहता है . कि ४४
परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा जबलों मैं तेरे शत्रुओंको
तेरे चरणोंकी पीढ़ी न बनाऊं तबलों तू मेरी दहिनी
ओर बैठ । यदि दाऊद उसे प्रभु कहता है तो वह उसका ४५
पुत्र क्योंकर है । इसके उत्तरमें कोई उससे एक बात ४६
नहीं बोल सका और उस दिनसे किसीको फिर उससे
कुछ पूछनेका साहस न हुआ ।

२३ तेईसवां पर्ब्ब ।

१ अध्यापकोंकी शिक्षा और बोलचालके विषयमें यीशुका उपदेश । १३ उनका अध्यापकों और फरीशियोंको उलहना देना । ३४ यिरूशलीमके नाश होनेकी भविष्यद्वाणी ।

१ तब यीशुने लोगोंसे और अपने शिष्योंसे कहा .
२ अध्यापक और फरीशी लोग मूसाके आसनपर बैठे हैं ।
३ इसलिये जो कुछ वे तुम्हें माननेको कहें सो मानो और
पालन करो परन्तु उनके कर्म्मोंके अनुसार मत करो
४ क्योंकि वे कहते हैं और करते नहीं । वे भारी बोझे बां-
धते हैं जिनको उठाना कठिन है और उन्हें मनुष्योंके
कांधोंपर धर देते हैं परन्तु उन्हें अपनी उंगलीसे भी सर-
५ काने नहीं चाहते हैं । वे मनुष्योंको दिखानेके लिये अपने
६ सब कर्म्म करते हैं । वे अपने यन्त्रोंको चौड़े करते हैं और
७ अपने वस्त्रोंके आंचल बढ़ाते हैं । जेवनारोंमें ऊंचे स्थान
और सभाके घरोंमें ऊंचे आसन और बाजारोंमें नम-
स्कार और मनुष्योंसे गुरु गुरु कहलाना उनको प्रिय
८ लगते हैं । परन्तु तुम गुरु मत कहलाओ क्योंकि तुम्हारा
९ एक गुरु है अर्थात खीष्ट और तुम सब भाई हो । और
पृथिवीपर किसीको अपना पिता मत कहो क्योंकि
१० तुम्हारा एक पिता है अर्थात वही जो स्वर्गमें है । और
गुरु भी मत कहलाओ क्योंकि तुम्हारा एक गुरु है अर्थात
११ खीष्ट । जो तुम्होंमें बड़ा हो सो तुम्हारा सेवक होगा ।
१२ जो कोई अपनेको ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और
जो कोई अपनेको नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा ।
१३ हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम
मनुष्योंपर स्वर्गके राज्यका द्वार मून्दते हो . न आपही

उसमें प्रवेश करते हो और न प्रवेश करनेहारोंको प्रवेश
करने देते हो। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरी- १४
शियो तुम बिधवाओंके घर खा जाते हो और बहानाके
लिये बड़ी बेरलों प्रार्थना करते हो इसलिये तुम अधिक
दंड पाओगे। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो १५
तुम एक जनको अपने मतमें लानेको सारे जल औ थल-
में फिरा करते हो और जब वह मतमें आया है तब
उसको अपनेसे दूना नरकके योग्य बनाते हो। हाय १६
तुम अन्धे अगुवो जो कहते हो यदि कोई मन्दिरकी
किरिया खाय तो कुछ नहीं है परन्तु यदि कोई मन्दिर-
के सोनेकी किरिया खाय तो ऋणी है। हे मूर्खो और १७
अन्धो कौन बड़ा है वह सोना अथवा वह मन्दिर जो
सोनेको पवित्र करता है। फिर कहते हो यदि कोई १८
बेदीकी किरिया खाय तो कुछ नहीं है परन्तु जो चढ़ावा
बेदीपर है यदि कोई उसकी किरिया खाय तो ऋणी
है। हे मूर्खो और अन्धो कौन बड़ा है वह चढ़ावा १९
अथवा वह बेदी जो चढ़ावेको पवित्र करती है। इसलिये २०
जो बेदीकी किरिया खाता है सो उसकी किरिया और
जो कुछ उसपर है उसकी भी किरिया खाता है। और २१
जो मन्दिरकी किरिया खाता है सो उसकी किरिया और
जो उसमें बास करता है उसकी भी किरिया खाता है।
और जो स्वर्गकी किरिया खाता है सो ईश्वरके सिंहासन- २२
की किरिया और जो उसपर बैठा है उसकी भी किरिया
खाता है। हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो २३
तुम पोदीने और सोए और जीरेका दसवां अंश देते हो

परन्तु तुमने ब्यवस्थाकी भारी बातोंको अर्थात न्याय और
दया और बिश्वासको छोड़ दिया है. इन्हें करना और
२४ उन्हें न छोड़ना उचित था। हे अन्धे अगुवो जो मच्छरको
२५ छान डालते हो और ऊंटको निगलते हो। हाय तुम
कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम कटोरे और थाल-
को बाहर बाहर शुद्ध करते हो परन्तु वे भीतर अन्धेर
२६ और अन्यायसे भरे हैं। हे अन्धे फरीशी पहिले कटोरे
और थालके भीतर शुद्ध कर कि वे बाहर भी शुद्ध होवें।
२७ हाय तुम कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम चूना
फेरी हुई कबरोंके समान हो जो बाहरसे सुन्दर दिखाई
देती हैं परन्तु भीतर मृतकोंकी हड्डियोंसे और सब प्रकार-
२८ की मलिनतासे भरी हैं। इसी रीतिसे तुम भी बाहरसे
मनुष्योंको धर्म्मी दिखाई देते हो परन्तु भीतर कपट और
२९ अधर्म्मसे भरे हो। हाय तुम कपटी अध्यापको और
फरीशियो तुम भविष्यद्वक्ताओंकी कबरें बनाते हो और
३० धर्म्मियोंकी कबरें संवारते हो. और कहते हो यदि हम
अपने पितरोंके दिनोंमें होते तो भविष्यद्वक्ताओंका लोहू
३१ बहानेमें उनके संगी न होते। इससे तुम अपनेपर साक्षी
देते हो कि तुम भविष्यद्वक्ताओंके घातकोंके सन्तान
३२ ३३ हो। सो तुम अपने पितरोंका नपुआ भरो। हे सांपो
हे सर्प्पोंके बंश तुम नरकके दंडसे क्योंकर बचोगे।
३४ इसलिये देखो मैं तुम्हारे पास भविष्यद्वक्ताओं और
बुद्धिमानों और अध्यापकोंको भेजता हूं और तुम उन-
मेंसे कितनोंको मार डालोगे और क्रूशपर चढ़ाओगे और
कितनोंको अपनी सभाओंमें कोड़े मारोगे और नगर

नगर सताओगे. कि धर्म्मी हाबिलके लोहूसे लेके बर- ३५
खियाहके पुत्र जिखरियाहके लोहू तक जिसे तुमने मन्दिर
और बेदीके बीचमें मार डाला जितने धर्म्मियोंका लोहू
पृथिवीपर बहाया जाता है सब तुमपर पड़े। मैं तुमसे ३६
सच कहता हूं यह सब बातें इसी समयके लोगोंपर
पड़ेंगीं। हे यिरूशलीम यिरूशलीम जो भविष्यद्वक्ता- ३७
ओंको मार डालती है और जो तेरे पास भेजे गये हैं
उन्हें पत्थरवाह करती है जैसे मुर्गी अपने बच्चोंको पंखोंके
नीचे एकट्ठे करती है वैसेही मैंने कितनी बेर तेरे बाल-
कोंको एकट्ठे करनेकी इच्छा किई परन्तु तुमने न चाहा।
देखो तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है। ३८
क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं जबलों तुम न कहोगे धन्य ३९
वह जो परमेश्वरके नामसे आता है तबलों तुम मुझे
अबसे फिर न देखोगे।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब।

१ मन्दिरके नाश होनेकी भविष्यद्वाणी। ३ उस समयके चिन्ह। ९ शिष्योंपर उपद्रव होगा। १५ यिहूदी लोग बड़ा कष्ट पावेंगे। २३ झूठे खीष्ट प्रगट होंगे। २९ मनुष्यके पुत्रके आनेका बर्णन। ३२ गूलरके वृक्षका दृष्टान्त। ३६ जलप्रलयसे उस समयकी उपमा। ४२ सचेत रहनेका उपदेश और दासोंका दृष्टान्त।

जब यीशु मन्दिरसे निकलके जाता था तब उसके १
शिष्य लोग उसको मन्दिरकी रचना दिखानेको उस
पास आये। यीशुने उनसे कहा क्या तुम यह सब नहीं २
देखते हो. मैं तुमसे सच कहता हूं यहां पत्थरपर पत्थर
भी न छोड़ा जायगा जो गिराया न जायगा।
जब वह जैतून पर्ब्बतपर बैठा था तब शिष्योंने निराले ३
में उस पास आ कहा हमोंसे कहिये यह कब होगा और

आपके आनेका और जगतके अन्तका क्या चिन्ह होगा ।
४ यीशुने उनको उत्तर दिया चौकस रहो कि कोई तुम्हें न
५ भरमावे । क्योंकि बहुत लोग मेरे नामसे आके कहेंगे मैं
६ खीष्ट हूं और बहुतोंको भरमावेंगे । तुम लड़ाइयां और
लड़ाइयोंकी चर्चा सुनोगे . देखो मत घबराओ क्योंकि
इन सभोंका होना अवश्य है परन्तु अन्त उस समयमें
७ नहीं होगा । क्योंकि देश देशके और राज्य राज्यके
बिरुद्ध उठेंगे और अनेक स्थानोंमें अकाल और मरियां
८ और भुईंडोल होंगे । यह सब दुःखोंका आरंभ होगा ।
९ तब वे तुम्हें पकड़वायेंगे कि क्लेश पावो और तुम्हें
मार डालेंगे और मेरे नामके कारण सब देशोंके लोग
१० तुमसे बैर करेंगे । तब बहुतेरे ठोकर खायेंगे और एक
११ दूसरेको पकड़वायगा और एक दूसरेसे बैर करेगा । और
बहुतसे झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके बहुतोंको भरमावेंगे ।
१२ और अधर्म्मके बढ़नेसे बहुतोंका प्रेम ठंडा हो जायगा ।
१३ १४ पर जो अन्तलों स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा । और रा-
ज्यका यह सुसमाचार सब देशोंके लोगोंपर साक्षी होनेके
लिये समस्त संसारमें सुनाया जायगा . तब अन्त होगा ।
१५ सो जब तुम उस उजाड़नेहारी घिनित बस्तुको जिस-
की बात दानियेल भविष्यद्वक्तासे कही गई पवित्र स्थानमें
१६ खड़े होते देखो (जो पढ़े सो बूझे) . तब जो यिहूदियामें
१७ हों सो पहाड़ोंपर भागें । जो कोठेपर हो सो अपने घर-
१८ मेंसे कुछ लेनेको न उतरे । और जो खेतमें हो सो अपना
१९ बस्त्र लेनेको पीछे न फिरे । उन दिनोंमें हाय हाय गर्भ-
२० वतियां और दूध पिलानेवालियां । परन्तु प्रार्थना करो

कि तुमको जाड़ेमें अथवा बिश्रामवारमें भागना न होवे।
क्योंकि उस समयमें ऐसा महा क्लेश होगा जैसा जगतके २१
आरंभसे अबतक न हुआ और कभी न होगा। जो वे २२
दिन घटाये न जाते तो कोई प्राणी न बचता परन्तु
चुने हुए लोगोंके कारण वे दिन घटाये जायेंगे।

तब यदि कोई तुमसे कहे देखो खीष्ट यहां है अथवा २३
वहां है तो प्रतीति मत करो। क्योंकि झूठे खीष्ट और २४
झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके ऐसे बड़े चिन्ह और
अद्भुत काम दिखावेंगे कि जो हो सकता तो चुने हुए लो-
गोंको भी भरमाते। देखो मैंने आगेसे तुम्हें कह दिया २५
है। इसलिये जो वे तुमसे कहें देखो जंगलमें है तो बाहर २६
मत जाओ अथवा देखो कोठरियोंमें है तो प्रतीति मत
करो। क्योंकि जैसे बिजली पूर्व्वसे निकलती और २७
पश्चिमलों चमकती है वैसाही मनुष्यके पुत्रका आना भी
होगा। जहां कहीं लोथ होय तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे। २८

उन दिनोंके क्लेशके पीछे तुरन्त सूर्य्य अंधियारा हो २९
जायगा और चांद अपनी ज्योति न देगा तारे आकाशसे
गिर पड़ेंगे और आकाशकी सेना डिग जायगी। तब ३०
मनुष्यके पुत्रका चिन्ह आकाशमें दिखाई देगा और तब
पृथिवीके सब कुलोंके लोग छाती पीटेंगे और मनुष्यके
पुत्रको पराक्रम और बड़े ऐश्वर्य्यसे आकाशके मेघोंपर
आते देखेंगे। और वह अपने दूतोंको तुरहीके महा शब्द ३१
सहित भेजेगा और वे आकाशके इस सिवानेसे उस
सिवानेतक चहुं दिशासे उसके चुने हुए लोगोंको एकट्ठे
करेंगे।

३२ गूलरके वृक्षसे दृष्टान्त सीखो . जब उसकी डाली
कोमल हो जाती और पत्ते निकल आते तब तुम
३३ जानते हो कि धूपकाला निकट है । इस रीतिसे जब
तुम इन सब बातोंको देखो तब जानो कि वह निकट
३४ है हां द्वारपर है । मैं तुमसे सच कहता हूं कि जबलों
यह सब बातें पूरी न हो जायें तबलों इस समयके
३५ लोग नहीं जाते रहेंगे । आकाश औ पृथिवी टल
जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगीं ।
३६ उस दिन और उस घड़ीके विषयमें न कोई मनुष्य
३७ जानता है न स्वर्गके दूत परन्तु केवल मेरा पिता । जैसे
नूहके दिन हुए वैसाही मनुष्यके पुत्रका आना भी
३८ होगा । जैसे जलप्रलयके आगेके दिनोंमें लोग जिस
दिनलों नूह जहाजपर न चढ़ा उसी दिनलों खाते औ
३९ पीते बिवाह करते औ बिवाह देते थे . और जबलों
जलप्रलय आके उन सभोंको ले न गया तबलों उन्हें
चेत न हुआ वैसाही मनुष्यके पुत्रका आना भी होगा ।
४० तब दो जन खेतमें होंगे एक लिया जायगा और दूसरा
४१ छोड़ा जायगा । दो स्त्रियां चक्की पीसती रहेंगीं एक
लिई जायगी और दूसरी छोड़ी जायगी ।
४२ इसलिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो
४३ तुम्हारा प्रभु किस घड़ी आवेगा । पर यही जानते हो
कि यदि घरका स्वामी जानता चोर किस पहरमें आवेगा
तो वह जागता रहता और अपने घरमें सेंध पड़ने न
४४ देता । इसलिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ीका
अनुमान तुम नहीं करते हो उसी घड़ी मनुष्यका पुत्र

आवेगा । वह बिश्वासयोग्य और बुद्धिमान दास कौन है ४५
जिसे उसके स्वामीने अपने परिवारपर प्रधान किया हो
कि समयमें उन्हें भोजन देवे । वह दास धन्य है जिसे ४६
उसका स्वामी आके ऐसा करते पावे । मैं तुमसे सत्य ४७
कहता हूं वह उसे अपनी सब सम्पत्तिपर प्रधान करेगा ।
परन्तु जो वह दुष्ट दास अपने मनमें कहे मेरा स्वामी ४८
आनेमें बिलम्ब करता है . और अपने संगी दासोंको ४९
मारने और मतवाले लोगोंके संग खाने पीने लगे . तो ५०
जिस दिन वह बाट जोहता न रहे और जिस घड़ीको
वह अनुमान न करे उसीमें उस दासका स्वामी आवे-
गा . और उसको बड़ी ताड़ना देके कपटियोंके संग उसका ५१
अंश देगा जहां रोना और दांत पीसना होगा ।

२५ पचीसवां पर्व्व ।

१ दस कुंवारियोंका दृष्टान्त । १४ तोड़ोंका दृष्टान्त । ३१ न्यायके दिनका वर्णन ।

तब स्वर्गके राज्यकी उपमा दस कुंवारियोंसे दिई १
जायगी जो अपनी मशालें लेके दूल्हेसे मिलनेको निक-
लीं । उन्होंमेंसे पांच सुबुद्धि और पांच निर्बुद्धि थीं । जो २ ३
निर्बुद्धि थीं उन्होंने अपनी मशालोंको ले अपने संग तेल
न लिया । परन्तु सुबुद्धियोंने अपनी मशालोंके संग अपने ४
पात्रोंमें तेल लिया । दूल्हेके विलम्ब करनेसे वे सब ऊंघीं ५
और सो गईं । आधी रातको धूम मची कि देखो दूल्हा ६
आता है उससे मिलनेको निकलो । तब वे सब कुंवा- ७
रियां उठके अपनी मशालोंको सजने लगीं । और निर्बुद्धि- ८
योंने सुबुद्धियोंसे कहा अपने तेलमेंसे कुछ हमको दीजिये
क्योंकि हमारी मशालें बुझी जाती हैं । परन्तु सुबुद्धियोंने ९

उत्तर दिया क्या जानें हमारे और तुम्हारे लिये बस न
होय सो अच्छा है कि तुम बेचनेहारोंके पास जाके
१० अपने लिये मोल लेओ । ज्यों वे मोल लेनेको जाती
थीं त्योंही दूल्हा आ पहुंचा और जो तैयार थीं सो
उसके संग बिवाहके घरमें गईं और द्वार मून्दा गया।
११ पीछे दूसरी कुंवारियां भी आके बोलीं हे प्रभु हे प्रभु
१२ हमारे लिये खोलिये । उसने उत्तर दिया कि मैं तुमसे
१३ सच कहता हूं मैं तुमको नहीं जानता हूं । इसलिये
जागते रहो क्योंकि तुम न वह दिन न घड़ी जानते
हो जिसमें मनुष्यका पुत्र आवेगा ।
१४ क्योंकि वह एक मनुष्यके समान है जिसने परदेशको
जाते हुए अपनेही दासोंको बुलाके उनको अपना धन
१५ सोंपा । उसने एकको पांच तोड़े दूसरेको दो तीसरेको
एक हर एकको उसके सामर्थ्यके अनुसार दिया और
१६ तुरन्त परदेशको चला । तब जिसने पांच तोड़े पाये
उसने जाके उनसे ब्योपार कर पांच तोड़े और कमाये।
१७ इसी रीतिसे जिसने दो पाये उसने भी दो तोड़े और
१८ कमाये। परन्तु जिसने एक तोड़ा पाया उसने जाके मिट्टी-
१९ में खोदके अपने स्वामीके रुपैये छिपा रखे। बहुत दिनोंके
पीछे उन दासोंका स्वामी आया और उनसे लेखा लेने
२० लगा । तब जिसने पांच तोड़े पाये थे उसने पांच तोड़े
और लाके कहा हे प्रभु आपने मुझे पांच तोड़े सोंपे
२१ देखिये मैंने उनसे पांच तोड़े और कमाये हैं । उसके
स्वामीने उससे कहा धन्य हे उत्तम और बिश्वासयोग्य
दास तू थोड़ेमें बिश्वासयोग्य हुआ मैं तुझे बहुतपर

प्रधान करूंगा . अपने प्रभुके आनन्दमें प्रवेश कर। जिस- २२
ने दो तोड़े पाये थे उसने भी आके कहा हे प्रभु आपने मुझे
दो तोड़े सौंपे देखिये मैंने उनसे दो तोड़े और कमाये हैं।
उसके स्वामीने उससे कहा धन्य हे उत्तम और विश्वास- २३
योग्य दास तू थोड़ेमें विश्वासयोग्य हुआ मैं तुझे बहुतपर
प्रधान करूंगा . अपने प्रभुके आनन्दमें प्रवेश कर। तब २४
जिसने एक तोड़ा पाया था उसने आके कहा हे प्रभु मैं
आपको जानता था कि आप कठोर मनुष्य हैं जहां
आपने नहीं बोया वहां लवते हैं और जहां आपने नहीं
छींटा वहांसे एकट्ठा करते हैं। सो मैं डरा और जाके आप- २५
का तोड़ा मिट्टीमें छिपाया . देखिये अपना ले लीजिये।
उसके स्वामीने उसे उत्तर दिया कि हे दुष्ट और आलसी २६
दास तू जानता था कि जहां मैंने नहीं बोया वहां लवता
हूं और जहां मैंने नहीं छींटा वहांसे एकट्ठा करता हूं। तो २७
तुझे उचित था कि मेरे रुपैये महाजनोंके हाथ सौंपता
तब मैं आके अपना धन ब्याज समेत पाता। इसलिये २८
वह तोड़ा उससे लेओ और जिस पास दस तोड़े हैं उसे
देओ। क्योंकि जो कोई रखता है उसको और दिया २९
जायगा और उसको बहुत होगा परन्तु जो नहीं
रखता है उससे जो कुछ उस पास है सो भी ले लिया
जायगा। और उस निकम्मे दासको बाहरके अन्धकारमें ३०
डाल देओ जहां रोना औ दांत पीसना होगा।

जब मनुष्यका पुत्र अपने ऐश्वर्य्य सहित आवेगा और ३१
सब पवित्र दूत उसके साथ तब वह अपने ऐश्वर्य्यके
सिंहासनपर बैठेगा। और सब देशोंके लोग उसके आगे ३२

एकट्ठे किये जायेंगे और जैसा गड़ेरिया भेड़ोंको बकरियों-
से अलग करता है तैसा वह उन्हें एक दूसरेसे अलग
३३ करेगा । और वह भेड़ोंको अपनी दहिनी ओर और
३४ बकरियोंको बाईं ओर खड़ा करेगा । तब राजा उनसे
जो उसकी दहिनी ओर हैं कहेगा हे मेरे पिताके धन्य
लोगो आओ जो राज्य जगतकी उत्पत्तिसे तुम्हारे लिये
३५ तैयार किया गया है उसके अधिकारी होओ. क्योंकि मैं
भूखा था और तुमने मुझे खानेको दिया मैं प्यासा था
और तुमने मुझे पिलाया मैं परदेशी था और तुम मुझे
३६ अपने घरमें लाये. मैं नंगा था और तुमने मुझे पहिरा-
या मैं रोगी था और तुमने मेरी सुध लिई मैं बन्दीगृहमें
३७ था और तुम मेरे पास आये। तब धर्म्मी लोग उसको
उत्तर देंगे कि हे प्रभु हमने कब आपको भूखा देखा
३८ और खिलाया अथवा प्यासा और पिलाया । हमने
कब आपको परदेशी देखा और अपने घरमें लाये
३९ अथवा नंगा और पहिराया । और हमने कब आपको
रोगी अथवा बन्दीगृहमें देखा और आपके पास गये।
४० तब राजा उन्हें उत्तर देगा मैं तुमसे सच कहता हूं कि
तुमने मेरे इन अति छोटे भाइयोंमेंसे एकसे जोई भर
४१ किया सो मुझसे किया। तब वह उनसे जो बाईं ओर हैं
कहेगा हे स्रापित लोगो मेरे पाससे उस अनन्त आगमें
जाओ जो शैतान और उसके दूतोंके लिये तैयार किई गई
४२ है. क्योंकि मैं भूखा था और तुमने मुझे खानेको नहीं
४३ दिया मैं प्यासा था और तुमने मुझे नहीं पिलाया. मैं
परदेशी था और तुम मुझे अपने घरमें नहीं लाये मैं

नंगा था और तुमने मुझे नहीं पहिराया मैं रोगी और
बन्दीगृहमें था और तुमने मेरी सुध न लिई। तब वे ४४
भी उत्तर देंगे कि हे प्रभु हमने कब आपको भूखा
वा प्यासा वा परदेशी वा नंगा वा रोगी वा बन्दीगृहमें
देखा और आपकी सेवा न किई। तब वह उन्हें ४५
उत्तर देगा मैं तुमसे सच कहता हूं कि तुमने इन
अति छोटोंमेंसे एकसे जोई भर नहीं किया सो मुझसे
नहीं किया। सो ये लोग अनन्त दंडमें परन्तु धर्म्मी ४६
लोग अनन्त जीवनमें जा रहेंगे।

२६ छब्बीसवां पर्ब्ब।

१ यीशुको बध करनेका परामर्श। ६ एक स्त्रीका उसके सिरपर सुगन्ध तेल ढालना। १४ यिहूदाका बिश्वासघात करना। १७ शिष्योंका निस्तार पर्ब्बका भोजन बनाना। २० उनके संग यीशुका भोजन करना और यिहूदाके विषयमें भविष्यद्वाक्य कहना। २६ प्रभु भोजका निरूपण। ३१ पितरके यीशुसे मुकर जानेकी भविष्यद्वाणी। ३६ बारीमें यीशुका महा शोक। ४७ उसका पकड़ा जाना। ५७ उसका महायाजकके पास ले जाना और बधके योग्य ठहराके अपमान करना। ६९ पितरका उससे मुकर जाना।

जब यीशु यह सब बातें कह चुका तब अपने शिष्योंसे १
कहा. तुम जानते हो कि दो दिनके पीछे निस्तार २
पर्ब्ब होगा और मनुष्यका पुत्र क्रूशपर चढ़ाये जानेको
पकड़वाया जायगा। तब लोगोंके प्रधान याजक और ३
अध्यापक और प्राचीन लोग कियाफा नाम महायाजक-
के घरमें एकट्ठे हुए. और आपसमें बिचार किया कि ४
यीशुको छलसे पकड़के मार डालें। परन्तु उन्होंने कहा ५
पर्ब्बमें नहीं न हो कि लोगोंमें हुल्लड़ होवे।
जब यीशु बैथनियामें शिमोन कोढ़ीके घरमें था. ६

७ तब एक स्त्री उजले पत्थरके पात्रमें बहुत मोलका
सुगन्ध तेल लेके उस पास आई और जब वह भोजनपर
८ बैठा था तब उसके सिरपर ढाला । यह देखके उसके
९ शिष्य रिसियाके बोले यह क्षय क्यों हुआ । क्योंकि यह
सुगन्ध तेल बहुत दाममें बिक सकता और कंगालोंको
१० दिया जा सकता । यीशुने यह जानके उनसे कहा क्यों
स्त्रीको दुःख देते हो. उसने अच्छा काम मुझसे किया है।
११ कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं परन्तु मैं तुम्हारे
१२ संग सदा नहीं रहूंगा। उसने मेरे देहपर यह सुगन्ध तेल
१३ जो ढाला है सो मेरे गाड़े जानेके लिये किया है । मैं
तुमसे सत्य कहता हूं सारे जगतमें जहां कहीं यह
सुसमाचार सुनाया जाय तहां यह भी जो इसने किया
है उसके स्मरणके लिये कहा जायगा ।

१४ तब बारह शिष्योंमेंसे यिहूदा इस्करियोती नाम एक
१५ शिष्य प्रधान याजकोंके पास गया. और कहा जो मैं
यीशुको आप लोगोंके हाथ पकड़वाऊं तो आप लोग
मुझे क्या देंगे . उन्होंने उसको तीस रुपैये देनेको
१६ ठहराया । सो वह उसी समयसे उसको पकड़वानेका
अवसर ढूंढ़ने लगा ।

१७ अखमीरी रोटीके पर्व्वके पहिले दिन शिष्य लोग
यीशु पास आ उससे बोले आप कहां चाहते हैं कि
हम आपके लिये निस्तार पर्व्वका भोजन खानेकी
१८ तैयारी करें । उसने कहा नगरमें अमुक मनुष्यके पास
जाके उससे कहो गुरु कहता है कि मेरा समय निकट है
मैं अपने शिष्योंके संग तेरे यहां निस्तार पर्व्वका भोजन

करूंगा। सो शिष्योंने जैसा यीशुने उन्हें आज्ञा दिई वैसा १९
किया और निस्तार पर्ब्बका भोजन बनाया।

सांझको यीशु बारह शिष्योंके संग भोजनपर बैठा। २०
जब वे खाते थे तब उसने कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि २१
तुममेंसे एक मुझे पकड़वायगा। इसपर वे बहुत उदास २२
हुए और हर एक उससे कहने लगा हे प्रभु वह क्या मैं
हूं। उसने उत्तर दिया कि जो मेरे संग थालीमें हाथ २३
डालता है सोई मुझे पकड़वायगा। मनुष्यका पुत्र जैसा २४
उसके विषयमें लिखा है वैसाही जाता है परन्तु हाय वह
मनुष्य जिससे मनुष्यका पुत्र पकड़वाया जाता है. जो
उस मनुष्यका जन्म न होता तो उसके लिये भला होता।
तब उसके पकड़वानेहारे यिहूदाने उत्तर दिया कि हे गुरु २५
वह क्या मैं हूं. यीशु उससे बोला तू तो कह चुका।

जब वे खाते थे तब यीशुने रोटी लेके धन्यबाद किया २६
और उसे तोड़के शिष्योंको दिया और कहा लेओ खाओ
यह मेरा देह है। और उसने कटोरा लेके धन्य माना २७
और उनको देके कहा तुम सब इससे पीओ। क्योंकि २८
यह मेरा लोहू अर्थात नये नियमका लोहू है जो
बहुतोंके लिये पापमोचनके निमित्त बहाया जाता है।
मैं तुमसे कहता हूं कि जिस दिनलों मैं तुम्हारे संग २९
अपने पिताके राज्यमें उसे नया न पीऊं उस दिनलों
मैं अबसे यह दाख रस कभी न पीऊंगा। और वे ३०
भजन गाके जैतून पर्ब्बतपर गये।

तब यीशुने उनसे कहा तुम सब इसी रात मेरे विषय- ३१
में ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरियेको

मारूंगा और झुंडकी भेड़ें तितर बितर हो जायेंगीं ।
३२ परन्तु मैं अपने जी उठनेके पीछे तुम्हारे आगे गालीलको
३३ जाऊंगा । पितरने उसको उत्तर दिया यदि सब आपके
विषयमें ठोकर खावें तौभी मैं कभी ठोकर न खाऊंगा।
३४ यीशुने उससे कहा मैं तुझे सत्य कहता हूं कि इसी
रात मुर्गके बोलनेसे आगे तू तीन बार मुझसे मुकरेगा।
३५ पितरने उससे कहा जो आपके संग मुझे मरना हो
तौभी मैं आपसे कभी न मुकरूंगा . सब शिष्योंने भी
वैसाही कहा ।
३६ तब यीशुने शिष्योंके संग गेतशिमनी नाम स्थानमें
आके उनसे कहा जबलों मैं वहां जाके प्रार्थना करूं तब-
३७ लों तुम यहां बैठो । और वह पितरको और जबदीके
दोनों पुत्रोंको अपने संग ले गया और शोक करने और
३८ बहुत उदास होने लगा। तब उसने उनसे कहा मेरा मन
यहांलों अति उदास है कि मैं मरनेपर हूं . तुम यहां
३९ ठहरके मेरे संग जागते रहो । और थोड़ा आगे बढ़के
वह मुंहके बल गिरा और प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता
जो हो सके तो यह कटोरा मेरे पाससे टल जाय तौभी
जैसा मैं चाहता हूं वैसा न होय पर जैसा तू चाहता
४० है । तब उसने शिष्योंके पास आ उन्हें सोते पाया और
पितरसे कहा सो तुम मेरे संग एक घड़ी नहीं जाग
४१ सके । जागते रहो और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षामें
४२ न पड़ो. मन तो तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है। फिर
उसने दूसरी बेर जाके प्रार्थना किई कि हे मेरे पिता
जो बिना पीनेसे यह कटोरा मेरे पाससे नहीं टल सकता

है तो तेरी इच्छा पूरी होय। तब उसने आके उन्हें ४३
फिर सोते पाया क्योंकि उनकी आंखें नींदसे भरी थीं।
उनको छोड़के उसने फिर जाके तीसरी बेर वही बात ४४
कहके प्रार्थना किई। तब उसने अपने शिष्योंके पास ४५
आ उनसे कहा सो तुम सोते रहते और विश्राम करते
हो. देखो घड़ी आ पहुंची है और मनुष्यका पुत्र
पापियोंके हाथमें पकड़वाया जाता है। उठो चलें देखो ४६
जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है।
वह बोलताही था कि देखो यिहूदा जो बारह शिष्यों- ४७
मेंसे एक था आ पहुंचा और लोगोंके प्रधान याजकों
और प्राचीनोंकी ओरसे बहुत लोग खड्ग और लाठियां
लिये हुए उसके संग। यीशुके पकड़वानेहारेने उन्हें यह ४८
पता दिया था कि जिसको मैं चूमूं वही है उसको पकड़ो।
और वह तुरन्त यीशु पास आके बोला हे गुरु प्रणाम ४९
और उसको चूमा। यीशुने उससे कहा हे मित्र तू किस ५०
लिये आया है. तब उन्होंने आके यीशुपर हाथ डालके
उसे पकड़ा। इसपर देखो यीशुके संगियोंमेंसे एकने हाथ ५१
बढ़ाके अपना खड्ग खींचके महायाजकके दासको मारा
और उसका कान उड़ा दिया। तब यीशुने उससे कहा ५२
अपना खड्ग फिर काठीमें रख क्योंकि जो लोग खड्ग
खींचते हैं सो सब खड्गसे नाश किये जायेंगे। क्या तू ५३
समझता है कि मैं अभी अपने पितासे बिन्ती नहीं कर
सकता हूं और वह मेरे पास स्वर्गदूतोंकी बारह सेना-
ओंसे अधिक पहुंचा न देगा। परन्तु तब धर्म्मपुस्तकमें ५४
जो लिखा है कि ऐसा होना अवश्य है सो क्योंकर पूरा

५५ होय । उसी घड़ी यीशुने लोगोंसे कहा क्या तुम मुझे
पकड़नेको जैसे डाकूपर खड्ग और लाठियां लेके निकले
हो . मैं मन्दिरमें उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे
५६ संग बैठता था और तुमने मुझे नहीं पकड़ा । परन्तु
यह सब इसलिये हुआ कि भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तककी
बातें पूरी होवें . तब सब शिष्य उसे छोड़के भागे ।
५७ जिन्होंने यीशुको पकड़ा सो उसको कियाफा महाया-
जकके पास ले गये जहां अध्यापक और प्राचीन लोग
५८ एकट्ठे हुए । पितर दूर दूर उसके पीछे महायाजकके
अंगनेलों चला गया और भीतर जाके इसका अन्त देख-
५९ नेको प्यादोंके संग बैठा । प्रधान याजकों और प्राचीनोंने
और न्याइयोंकी सारी सभाने यीशुको घात करवानेके
६० लिये उसपर झूठी साक्षी ढूंढ़ी परन्तु न पाई । बहुतेरे
६१ झूठे साक्षी तो आये तौभी उन्होंने नहीं पाई । अन्तमें
दो झूठे साक्षी आके बोले इसने कहा कि मैं ईश्वरका
मन्दिर ढा सकता और उसे तीन दिनमें फिर बना
६२ सकता हूं । तब महायाजकने खड़ा हो यीशुसे कहा क्या
तू कुछ उत्तर नहीं देता है . ये लोग तेरे विरुद्ध क्या
६३ साक्षी देते हैं । परन्तु यीशु चुप रहा इसपर महायाजकने
उससे कहा मैं तुझे जीवते ईश्वरकी किरिया देता हूं
६४ हमोंसे कह तू ईश्वरका पुत्र ख्रीष्ट है कि नहीं । यीशु
उससे बोला तू तो कह चुका और मैं यह भी तुम्होंसे
कहता हूं कि इसके पीछे तुम मनुष्यके पुत्रको सर्व्वशक्ति-
मानकी दहिनी ओर बैठे और आकाशके मेघोंपर आते
६५ देखोगे । तब महायाजकने अपने वस्त्र फाड़के कहा यह

ईश्वरकी निन्दा कर चुका है अब हमें साक्षियोंका और
क्या प्रयोजन. देखो तुमने अभी उसके मुखसे ईश्वरकी
निन्दा सुनी है। तुम क्या बिचार करते हो. उन्होंने ६६
उत्तर दिया वह बधके योग्य है। तब उन्होंने उसके मुंह- ६७
पर थूका और उसे घूसे मारे। औरोंने थपेड़े मारके कहा ६८
हे खीष्ट हमसे भविष्यद्वाणी बोल किसने तुझे मारा।
पितर बाहर अंगनेमें बैठा था और एक दासी उस ६९
पास आके बोली तू भी यीशु गालीलीके संग था। उसने ७०
सभोंके साम्हने मुकरके कहा मैं नहीं जानता तू क्या
कहती है। जब वह बाहर डेवढ़ीमें गया तब दूसरी ७१
दासीने उसे देखके जो लोग वहां थे उनसे कहा यह भी
यीशु नासरीके संग था। उसने किरिया खाके फिर ७२
मुकरा कि मैं उस मनुष्यको नहीं जानता हूं। थोड़ी ७३
बेर पीछे जो लोग वहां खड़े थे उन्होंने पितरके पास आके
उससे कहा तू भी सचमुच उनमेंसे एक है क्योंकि तेरी
बोली भी तुझे प्रगट करती है। तब वह धिक्कार देने ७४
और किरिया खाने लगा कि मैं उस मनुष्यको नहीं
जानता हूं. और तुरन्त मुर्ग बोला। तब पितरने यीशुका ७५
बचन जिसने उससे कहा था कि मुर्गके बोलनेसे आगे
तू तीन बार मुझसे मुकरेगा स्मरण किया और बाहर
निकलके बिलक बिलक रोया।

२७ सताईसवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका पिलातके हाथ सोंपा जाना। ३ यिहूदाका रुपैयोंको फेर देना और अपनेको फांसी देना। ११ पिलातका यीशुको बिचार करना और छोड़नेकी इच्छा करना। २४ उसका यीशुको निर्दोष ठहराना। २६ यीशुका घातकोंके हाथ सोंपा जाना और योद्धाओंसे निन्दित होना। ३३ उसका क्रूशपर चढ़ाया जाना।

३९ उसपर लोगोंका हंसना। ४५ उसका पुकारना और सिरका पीना। ५० उसका प्राण त्यागना और अद्भुत चिन्होंका प्रगट होना। ५५ स्त्रियोंका क्रूशके समीप रहना। ५७ यूसफका यीशुको कबरमें रखना। ६२ कबरपर पहरुओंका बैठाया जाना।

१ जब भोर हुआ तब लोगोंके सब प्रधान याजकों
और प्राचीनोंने आपसमें यीशुके बिरुद्ध विचार किया
२ कि उसे घात करवावें। और उन्होंने उसे बांधा और
ले जाके पन्तिय पिलात अध्यक्षको सोंप दिया।
३ जब उसके पकड़वानेहारे यिहूदाने देखा कि वह दंडके
योग्य ठहराया गया तब वह पछताके उन तीस रुपैयोंको
४ प्रधान याजकों और प्राचीनोंके पास फेर लाया . और
कहा मैंने निर्दोषी लोहू पकड़वानेमें पाप किया है. वे बोले
५ हमें क्या तूही जान। तब वह उन रुपैयोंको मन्दिरमें
६ फेंकके चला गया और जाके अपनेको फांसी दिई। प्रधान
याजकोंने रुपैये लेके कहा इन्हें मन्दिरके भंडारमें डालना
७ उचित नहीं है क्योंकि यह लोहूका दाम है। सो उन्होंने
आपसमें विचार कर उन रुपैयोंसे परदेशियोंको गाड़नेके
८ लिये कुम्हारका खेत मोल लिया। इससे वह खेत आज-
९ तक लोहूका खेत कहावता है। तब जो बचन यिरमियाह
भविष्यद्वक्तासे कहा गया था सो पूरा हुआ कि उन्होंने वे
तीस रुपैये हां इस्रायेलके सन्तानोंसे उस मुलाये हुएका
१० दाम जिसे उन्होंने मुलाया ले लिया . और जैसे परमेश्वरने
मुझको आज्ञा दिई तैसे उन्हें कुम्हारके खेतके दाममें दिया।
११ यीशु अध्यक्षके आगे खड़ा हुआ और अध्यक्षने उससे
पूछा क्या तू यिहूदियोंका राजा है . यीशुने उससे कहा
१२ आपही तो कहते हैं। जब प्रधान याजक और प्राचीन
लोग उसपर दोष लगाते थे तब उसने कुछ उत्तर नहीं

दिया। तब पिलातने उससे कहा क्या तू नहीं सुनता कि १३
ये लोग तेरे विरुद्ध कितनी साक्षी देते हैं। परन्तु उसने १४
एक बात भी उसको उत्तर न दिया यहांलों कि अध्यक्षने
बहुत अचंभा किया। उस पर्ब्बमें अध्यक्षकी यह रीति १५
थी कि एक बन्धुवेको जिसे लोग चाहते थे उन्होंके लिये
छोड़ देता था। उस समयमें उन्होंका एक प्रसिद्ध बन्धुवा १६
था जिसका नाम बरब्बा था। सो जब वे एकट्ठे हुए तब १७
पिलातने उनसे कहा तुम किसको चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिये छोड़ देऊं बरब्बाको अथवा यीशुको जो
खीष्ट कहावता है। क्योंकि वह जानता था कि उन्होंने १८
उसको डाहसे पकड़वाया था। जब वह बिचार आसन- १९
पर बैठा था तब उसकी स्त्रीने उसे कहला भेजा कि आप
उस धर्म्मी मनुष्यसे कुछ काम न रखिये क्योंकि मैंने आज
स्वप्नमें उसके कारण बहुत दुःख पाया है। प्रधान याजकों २०
और प्राचीनोंने लोगोंको समझाया कि वे बरब्बाको मांग
लेवें और यीशुको नाश करवावें। अध्यक्षने उनको उत्तर २१
दिया कि इन दोनोंमेंसे तुम किसको चाहते हो कि मैं
तुम्हारे लिये छोड़ देऊं. वे बोले बरब्बाको। पिलातने २२
उनसे कहा तो मैं यीशुसे जो खीष्ट कहावता है क्या करूं.
सभोंने उससे कहा वह क्रूशपर चढ़ाया जाय। अध्यक्षने २३
कहा क्यों उसने कौनसी बुराई किई है. परन्तु उन्होंने
अधिक पुकारके कहा वह क्रूशपर चढ़ाया जाय।

जब पिलातने देखा कि कुछ बन नहीं पड़ता पर और २४
भी हुल्लड़ होता है तब उसने जल लेके लोगोंके साम्हने
हाथ धोके कहा मैं इस धर्म्मी मनुष्यके लोहूसे निर्दोष हूं

२५ तुमही जानो । सब लोगोंने उत्तर दिया कि उसका
लोहू हमपर और हमारे सन्तानोंपर होवे ।
२६ तब उसने बरब्बाको उन्होंके लिये छोड़ दिया और
यीशुको कोड़े मारके क्रूशपर चढ़ाये जानेको सोंप दिया ।
२७ तब अध्यक्षके योद्धाओंने यीशुको अध्यक्षभवनमें ले जाके
२८ सारी पलटन उस पास एकट्ठी किई । और उन्होंने उसका
२९ बस्त्र उतारके उसे लाल बागा पहिराया . और कांटों-
का मुकुट गून्थके उसके सिरपर रखा और उसके दहिने
हाथमें नरकट दिया और उसके आगे घुटने टेकके यह
कहके उससे ठट्ठा किया कि हे यिहूदियोंके राजा प्रणाम ।
३० और उन्होंने उसपर थूका और उस नरकटको ले उसके
३१ सिरपर मारा । जब वे उससे ठट्ठा कर चुके तब उससे वह
बागा उतारके और उसीका बस्त्र उसको पहिराके उसे
३२ क्रूशपर चढ़ानेको ले गये । बाहर आते हुए उन्होंने
शिमोन नाम कुरीनी देशके एक मनुष्यको पाया और उसे
बेगार पकड़ा कि उसका क्रूश ले चले ।
३३ जब वे एक स्थानपर जो गलगथा अर्थात खोपड़ीका
३४ स्थान कहावता है पहुंचे . तब उन्होंने सिरकेमें पित्त
मिलाके उसे पीनेको दिया परन्तु उसने चीखके पीने न
३५ चाहा । तब उन्होंने उसको क्रूशपर चढ़ाया और चिट्ठियां
डालके उसके बस्त्र बांट लिये कि जो बचन भविष्यद्वक्ताने
कहा था सो पूरा होवे कि उन्होंने मेरे कपड़े आपसमें
३६ बांट लिये और मेरे बस्त्रपर चिट्ठियां डालीं । तब उन्होंने
३७ वहां बैठके उसका पहरा दिया । और उन्होंने उसका
दोषपत्र उसके सिरसे ऊपर लगाया कि यह यिहूदियोंका

राजा यीशु है। तब दो डाकू एक दहिनी ओर और ३८
दूसरा बाईं ओर उसके संग क्रूशोंपर चढ़ाये गये।
जो लोग उधरसे आते जाते थे उन्होंने अपने सिर ३९
हिलाके और यह कहके उसकी निन्दा किई . कि हे ४०
मन्दिरके ढानेहारे और तीन दिनमें बनानेहारे अपनेको
बचा . जो तू ईश्वरका पुत्र है तो क्रूशपरसे उतर आ। इसी ४१
रीतिसे प्रधान याजकोंने भी अध्यापकों और प्राचीनोंके
संग ठट्ठा कर कहा. उसने औरोंको बचाया अपनेको बचा ४२
नहीं सकता है . जो वह इस्रायेलका राजा है तो क्रूशपरसे
अब उतर आवे और हम उसका बिश्वास करेंगे। वह ४३
ईश्वरपर भरोसा रखता है . यदि ईश्वर उसे चाहता
है तो उसको अब बचावे क्योंकि उसने कहा मैं ईश्वरका
पुत्र हूं। जो डाकू उसके संग क्रूशोंपर चढ़ाये गये उन्होंने ४४
भी इसी रीतिसे उसकी निन्दा किई।
दो पहरसे तीसरे पहरलों सारे देशमें अंधकार हो ४५
गया। तीसरे पहरके निकट यीशुने बड़े शब्दसे पुकारके ४६
कहा एली एली लामा शबक्तनी अर्थात हे मेरे ईश्वर
हे मेरे ईश्वर तूने क्यों मुझे त्यागा है। जो लोग वहां ४७
खड़े थे उनमेंसे कितनोंने यह सुनके कहा वह एलियाहको
बुलाता है। उनमेंसे एकने तुरन्त दौड़के इस्पंज लेके ४८
सिरकेमें भिंगाया और नलपर रखके उसे पीनेको दिया।
औरोंने कहा रहने दे हम देखें कि एलियाह उसे ४९
बचानेको आता है कि नहीं।
तब यीशुने फिर बड़े शब्दसे पुकारके प्राण त्यागा। ५०
और देखो मन्दिरका परदा ऊपरसे नीचेलों फटके दो भाग ५१

५२ हो गया और धरती डोली और पर्ब्बत तड़क गये। और
कबरें खुलीं और सोये हुए पवित्र लोगोंकी बहुत लोथें
५३ उठीं। और यीशुके जी उठनेके पीछे वे कबरोंमेंसे निक-
लके पवित्र नगरमें गये और बहुतेरोंको दिखाई दिये।
५४ तब शतपति और वे लोग जो उसके संग यीशुका पहरा
देते थे भुईंडोल और जो कुछ हुआ था सो देखके
निपट डर गये और बोले सचमुच यह ईश्वरका पुत्र था।
५५ 　वहां बहुतसी स्त्रियां जो यीशुकी सेवा करती हुईं
गालीलसे उसके पीछे आई थीं दूरसे देखती रहीं।
५६ उन्होंमें मरियम मगदलीनी और याकूबकी औ योशीकी
माता मरियम और जबदीके पुत्रोंकी माता थीं।
५७ 　जब सांझ हुई तब यूसफ नाम अरिमथिया नगरका
एक धनवान मनुष्य जो आप भी यीशुका शिष्य था
५८ आया। उसने पिलातके पास जाके यीशुकी लोथ मांगी.
तब पिलातने आज्ञा किई कि लोथ दिई जाय।
५९ यूसफने लोथको ले उसे उजली चद्दरमें लपेटा.
६० और उसे अपनी नई कबरमें रखा जो उसने पत्थरमें
खुदवाई थी और कबरके द्वारपर बड़ा पत्थर लुढ़काके
६१ चला गया। और मरियम मगदलीनी और दूसरी
मरियम वहां कबरके साम्हने बैठी थीं।
६२ 　तैयारीके दिनके पीछे प्रधान याजक और फरीशी
६३ लोग अगले दिन पिलातके पास एकट्ठे हुए. और
बोले हे प्रभु हमें चेत है कि उस भरमानेहारेने अपने
६४ जीतेजी कहा कि तीन दिनके पीछे मैं जी उठूंगा। सो
आज्ञा कीजिये कि तीसरे दिनलों कबरकी रखवाली

किई जाय न हो कि उसके शिष्य रातको आके उसे
चुरा ले जावें और लोगोंसे कहें कि वह मृतकोंमेंसे जी
उठा है. तब पिछली भूल पहिलीसे बुरी होगी। पिलातने ६५
उनसे कहा तुम्हारे पास पहरुए हैं जाओ अपने जानतेभर
रखवाली करो। सो उन्होंने जाके पत्थरपर छाप देके ६६
पहरुए बैठाके कबरकी रखवाली किई।

२८ अठाईसवां पर्ब्ब।

१ स्त्रियोंका दूतसे यीशुके जी उठनेका समाचार सुनना। ९ यीशुका उन्हें दर्शन देना। ११ प्रधान याजकोंका पहरुओंसे झूठ बुलवाना। १६ यीशुका एग्यारह शिष्योंको प्रेरण करना।

बिश्रामवारके पीछे अठवारेके पहिले दिन पह फटते १
मरियम मगदलीनी और दूसरी मरियम कबरको
देखने आईं। और देखो बड़ा भुईंडोल हुआ कि परमेश्वर- २
का एक दूत स्वर्गसे उतरा और आके कबरके द्वारपरसे
पत्थर लुढ़काके उसपर बैठा। उसका रूप बिजलीसा ३
और उसका बस्त्र पालेकी नाईं उजला था। उसके ४
डरके मारे पहरुए कांप गये और मृतकोंके समान हुए।
दूतने स्त्रियोंको उत्तर दिया कि तुम मत डरो मैं जानता ५
हूं कि तुम यीशुको जो क्रूशपर घात किया गया ढूंढ़ती
हो। वह यहां नहीं है जैसे उसने कहा वैसे जी ६
उठा है. आओ यह स्थान देखो जहां प्रभु पड़ा था।
और शीघ्र जाके उसके शिष्योंसे कहो कि वह मृतकोंमेंसे ७
जी उठा है और देखो वह तुम्हारे आगे गालीलको
जाता है वहां उसे देखोगे. देखो मैंने तुमसे कहा है।
वे शीघ्र निकलके भय और बड़े आनन्दसे उसके ८
शिष्योंको सन्देश देनेको कबरसे दौड़ीं।

९ जब वे उसके शिष्योंको सन्देश देनेको जाती थीं
देखो यीशु उनसे आ मिला और कहा कल्याण हो और
उन्होंने निकट आ उसके पांव पकड़के उसको प्रणाम
१० किया । तब यीशुने उनसे कहा मत डरो जाके मेरे
भाइयोंसे कह दो कि वे गालीलको जावें और वहां
वे मुझे देखेंगे ।
११ ज्यों स्त्रियां जाती थीं त्योंही देखो पहरुओंमेंसे कोई
कोई नगरमें आये और सब कुछ जो हुआ था प्रधान
१२ याजकोंसे कह दिया । तब उन्होंने प्राचीनोंके संग एकट्ठे
हो आपसमें बिचार कर योद्धाओंको बहुत रुपैये देके
१३ कहा. तुम यह कहो कि रातको जब हम सोये थे तब
१४ उसके शिष्य आके उसे चुरा ले गये । जो यह बात अध्य-
क्षके सुननेमें आवे तो हम उसको समझाके तुमको बचा
१५ लेंगे । सो उन्होंने रुपैये लेके जैसे सिखाये गये थे वैसाही
किया और यह बात यिहूदियोंमें आजलों चलित है ।
१६ एग्यारह शिष्य गालीलमें उस पर्ब्बतपर गये जो
१७ यीशुने उनको बताया था । और उन्होंने उसे देखके
उसको प्रणाम किया पर कितनोंको सन्देह हुआ ।
१८ यीशुने उन पास आ उनसे कहा स्वर्गमें और पृथिवीपर
१९ समस्त अधिकार मुझको दिया गया है । इसलिये तुम
जाके सब देशोंके लोगोंको शिष्य करो और उन्हें पिता
औ पुत्र औ पवित्र आत्माके नामसे बपतिसमा देओ.
२० और उन्हें सब बातें जो मैंने तुम्हें आज्ञा किई हैं पालन
करनेको सिखाओ और देखो मैं जगतके अन्तलों सब
दिन तुम्हारे संग हूं । आमीन ॥

मार्क रचित सुसमाचार ।

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ योहन बपतिसमा देनेहारेका वृत्तान्त और भविष्यद्वाक्य । ९ यीशुका बपतिसमा लेना । १२ उसकी परीक्षा । १४ उसका उपदेश करना और कई एक शिष्योंको बुलाना । २१ एक भूतग्रस्त मनुष्यको चंगा करना । २९ पितरकी सासको चंगा करना । ३२ बहुत रोगियोंको चंगा करना । ३५ नगर नगरमें उपदेश करना । ४० एक कोढ़ीको चंगा करना ।

ईश्वरके पुत्र यीशु खीष्टके सुसमाचारका आरंभ । १
जैसे भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकमें लिखा है कि देख मैं २
अपने दूतको तेरे आगे भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा
पन्थ बनावेगा । किसीका शब्द हुआ जो जंगलमें पुकार- ३
ता है कि परमेश्वरका पन्थ बनाओ उसके राजमार्ग
सीधे करो । योहनने जंगलमें बपतिसमा दिया और ४
पापमोचनके लिये पश्चात्तापके बपतिसमाका उपदेश
किया । और सारे यिहूदिया देशके और यिरूशलीम ५
नगरके रहनेहारे उस पास निकल आये और सभोंने
अपने अपने पापोंको मानके यर्दन नदीमें उससे बपतिस-
मा लिया । योहन् ऊंटके रोमका बस्त्र और अपनी ६
कटिमें चमड़ेका पटुका पहिनता था और टिड्डियां औ
बन मधु खाया करता था । उसने प्रचार कर कहा ७
मेरे पीछे वह आता है जो मुझसे अधिक शक्तिमान
है मैं उसके जूतोंका बन्ध झुकके खोलनेके योग्य नहीं
हूं । मैंने तुम्हें जलमें बपतिसमा दिया है परन्तु वह ८
तुम्हें पवित्र आत्मामें बपतिसमा देगा ।

९ उन दिनोंमें यीशुने गालील देशके नासरत नगरसे
१० आके योहनसे यर्दनमें बपतिसमा लिया । और तुरन्त
जलसे ऊपर आते हुए उसने स्वर्गको खुले और आत्मा-
११ को कपोतकी नाईं अपने ऊपर उतरते देखा । और
यह आकाशबाणी हुई कि तू मेरा प्रिय पुत्र है जिससे
मैं अति प्रसन्न हूं ।
१२ तब आत्मा तुरन्त उसको जंगलमें ले गया ।
१३ वहां जंगलमें चालीस दिन शैतानसे उसकी परीक्षा
किई गई और वह बन पशुओंके संग था और स्वर्ग-
दूतोंने उसकी सेवा किई ।
१४ योहनके बन्दीगृहमें डाले जानेके पीछे यीशुने गालील
१५ में आके ईश्वरके राज्यका सुसमाचार प्रचार किया. और
कहा समय पूरा हुआ है और ईश्वरका राज्य निकट
आया है पश्चात्ताप करो और सुसमाचारपर बिश्वास
१६ करो । गालीलके समुद्रके तीरपर फिरते हुए उसने
शिमोनको और उसके भाई अन्द्रियको समुद्रमें जाल
१७ डालते देखा क्योंकि वे मछुवे थे। यीशुने उनसे कहा मेरे
१८ पीछे आओ मैं तुमको मनुष्योंके मछुवे बनाऊंगा। वे
१९ तुरन्त अपने जाल छोड़के उसके पीछे हो लिये । वहांसे
थोड़ा आगे बढ़के उसने जबदीके पुत्र याकूब और उसके
भाई योहनको देखा कि वे नावपर जालोंको सुधारते थे।
२० उसने तुरन्त उन्हें बुलाया और वे अपने पिता जबदीको
मजूरोंके संग नावपर छोड़के उसके पीछे हो लिये ।
२१ वे कफर्नाहुम नगरमें आये और यीशुने तुरन्त
२२ बिश्रामके दिन सभाके घरमें जाके उपदेश किया । लोग

उसके उपदेशसे अचंभित हुए क्योंकि उसने अध्यापकों-
की रीतिसे नहीं परन्तु अधिकारीकी रीतिसे उन्हें उप-
देश दिया । उनकी सभाके घरमें एक मनुष्य था जिसे २३
अशुद्ध भूत लगा था । उसने चिल्लाके कहा हे यीशु २४
नासरी रहने दीजिये आपको हमसे क्या काम . क्या
आप हमें नाश करने आये हैं. मैं आपको जानता हूं
आप कौन हैं ईश्वरका पवित्र जन । यीशुने उसको २५
डांटके कहा चुप रह और उसमेंसे निकल आ । तब २६
अशुद्ध भूत उस मनुष्यको मरोड़के और बड़े शब्दसे
चिल्लाके उसमेंसे निकल आया । इसपर सब लोग ऐसे २७
अचंभित हुए कि आपसमें बिचार करके बोले यह क्या
है . यह कौनसा नया उपदेश है कि वह अधिकारीकी
रीतिसे अशुद्ध भूतोंको भी आज्ञा देता है और वे उसकी
आज्ञा मानते हैं । सो उसकी कीर्त्ति तुरन्त गालीलके २८
आसपासके सारे देशमें फैल गई ।

सभाके घरसे निकलके वे तुरन्त याकूब और योहनके २९
संग शिमोन और अन्द्रियके घरमें आये। और शिमोनकी ३०
सास ज्वरसे पीड़ित पड़ी थी और उन्होंने तुरन्त उसके
विषयमें उससे कहा । तब उसने उस पास आ उसका ३१
हाथ पकड़के उसे उठाया और ज्वरने तुरन्त उसको
छोड़ा और वह उनकी सेवा करने लगी ।

सांझको जब सूर्य्य डूबा तब लोग सब रोगियोंको ३२
और भूतग्रस्तोंको उस पास लाये । सारे नगरके लोग ३३
भी द्वारपर एकट्ठे हुए । और उसने बहुतोंको जो नाना ३४
प्रकारके रोगोंसे दुःखी थे चंगा किया और बहुत भूतोंको

निकाला परन्तु भूतोंको बोलने न दिया क्योंकि वे उसे
जानते थे ।
३५ भोरको कुछ रात रहते वह उठके निकला और जंगली
३६ स्थानमें जाके वहां प्रार्थना किई । तब शिमोन और
३७ जो उसके संग थे सो उसके पीछे हो लिये . और उसे
३८ पाके उससे बोले सब लोग आपको ढूंढ़ते हैं । उसने
उनसे कहा आओ हम आसपासके नगरोंमें जायें कि
मैं वहां भी उपदेश करूं क्योंकि मैं इसीलिये बाहर
३९ आया हूं । सो उसने सारे गालीलमें उनकी सभाओंमें
उपदेश किया और भूतोंको निकाला ।
४० एक कोढ़ीने उस पास आ उससे बिन्ती किई और
उसके आगे घुटने टेकके उससे कहा जो आप चाहें
४१ तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं । यीशुको दया आई और
उसने हाथ बढ़ा उसे छूके उससे कहा मैं तो चाहता
४२ हूं शुद्ध हो जा । उसके कहनेपर उसका कोढ़ तुरन्त
४३ जाता रहा और वह शुद्ध हुआ । तब उसने उसे चिताके
४४ तुरन्त बिदा किया . और उससे कहा देख किसीसे
कुछ मत कह परन्तु जा अपने तईं याजकको दिखा
और अपने शुद्ध होनेके विषयमें जो कुछ मूसाने ठहराया
४५ उसे लोगोंपर साक्षी होनेके लिये चढ़ा । परन्तु वह
बाहर जाके इस बातको बहुत सुनाने और प्रचार
करने लगा यहांलों कि यीशु फिर प्रगट होके नगरमें
नहीं जा सका परन्तु बाहर जंगली स्थानोंमें रहा
और लोग चहुं ओरसे उस पास आये ।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ यीशुका एक अर्द्धांगीको चंगा करना और उसका पाप क्षमा करना। १३ लेवी अर्थात मत्तीको बुलाना और पापियोंके संग भोजन करना। १८ उपवास करनेका ब्योरा बताना। २३ बिश्रामवारके विषयमें निर्णय करना।

कई एक दिनके पीछे यीशुने फिर कफर्नाहुममें प्रवेश १
किया और सुना गया कि वह घरमें है। तुरन्त इतने २
बहुत लोग एकट्ठे हुए कि वे न घरमें न द्वारके आसपास
समा सके और उसने उन्हें बचन सुनाया। और लोग ३
एक अर्द्धांगीको चार मनुष्योंसे उठवाके उस पास ले
आये। परन्तु जब वे भीड़के कारण उसके निकट पहुंच ४
न सके तब जहां वह था वहां उन्होंने छत उधेड़के और
कुछ खोलके उस खाटको जिसपर अर्द्धांगी पड़ा था
लटका दिया। यीशुने उन्होंका बिश्वास देखके उस अर्द्धां- ५
गीसे कहा हे पुत्र तेरे पाप क्षमा किये गये हैं। और ६
कितने अध्यापक वहां बैठे थे और अपने अपने मनमें
बिचार करते थे. कि यह मनुष्य क्यों इस रीतिसे ईश्वर- ७
की निन्दा करता है. ईश्वरको छोड़ कौन पापोंको
क्षमा कर सकता है। यीशुने तुरन्त अपने आत्मासे ८
जाना कि वे अपने अपने मनमें ऐसा बिचार करते हैं
और उनसे कहा तुम लोग अपने अपने मनमें यह
बिचार क्यों करते हो। कौन बात सहज है अर्द्धांगीसे ९
यह कहना कि तेरे पाप क्षमा किये गये हैं अथवा यह
कहना कि उठ अपनी खाट उठाके चल। परन्तु जिस्तें तुम १०
जानो कि मनुष्यके पुत्रको पृथिवीपर पाप क्षमा करनेका
अधिकार है. (उसने उस अर्द्धांगीसे कहा) मैं तुझसे ११

१२ कहता हूं उठ अपनी खाट उठाके अपने घरको जा। वह
तुरन्त उठके खाट उठाके सभोंके साम्ने चला गया यहांलों
कि वे सब बिस्मित हुए और ईश्वरकी स्तुति करके
बोले हमने ऐसा कभी नहीं देखा ।
१३ यीशु फिर बाहर समुद्रके तीरपर गया और सब
लोग उस पास आये और उसने उन्हें उपदेश दिया ।
१४ जाते हुए उसने अलफईके पुत्र लेवीको कर उगाह-
नेके स्थानमें बैठे देखा और उससे कहा मेरे पीछे आ.
१५ तब वह उठके उसके पीछे हो लिया । जब यीशु
उसके घरमें भोजनपर बैठा तब बहुत कर उगाहनेहारे
और पापी लोग उसके और उसके शिष्योंके संग बैठ
गये क्योंकि बहुत थे और वे उसके पीछे हो लिये ।
१६ अध्यापकों और फरीशियोंने उसको कर उगाहनेहारों
और पापियोंके संग खाते देखके उसके शिष्योंसे कहा
यह क्या है कि वह कर उगाहनेहारों और पापियोंके
१७ संग खाता और पीता है । यीशुने यह सुनके उनसे
कहा निरोगियोंको वैद्यका प्रयोजन नहीं है परन्तु
रोगियोंको . मैं धर्म्मियोंको नहीं परन्तु पापियोंको
पश्चात्तापके लिये बुलाने आया हूं ।
१८ योहनके और फरीशियोंके शिष्य उपवास करते थे
और उन्होंने आ उससे कहा योहनके और फरीशियों-
के शिष्य क्यों उपवास करते हैं परन्तु आपके शिष्य उप-
१९ वास नहीं करते । यीशुने उनसे कहा जब दूल्हा सखाओं-
के संग है तब क्या वे उपवास कर सकते हैं . जबलों दूल्हा
उनके संग रहे तबलों वे उपवास नहीं कर सकते हैं ।

परन्तु वे दिन आवेंगे जिनमें दूल्हा उनसे अलग किया २०
जायगा तब वे उन दिनोंमें उपवास करेंगे। कोई मनुष्य २१
कोरे कपड़ेका टुकड़ा पुराने बस्त्रमें नहीं टांकता है
नहीं तो वह नया टुकड़ा पुराने कपड़ेसे कुछ और भी
फाड़ लेता है और उसका फटा बढ़ जाता है। और २२
कोई मनुष्य नया दाख रस पुराने कुप्पोंमें नहीं भरता
है नहीं तो नया दाख रस कुप्पोंको फाड़ता है और दाख
रस बह जाता है और कुप्पे नष्ट होते हैं परन्तु नया दाख
रस नये कुप्पोंमें भरा चाहिये।

बिश्रामके दिन यीशु खेतोंमें होके जाता था और २३
उसके शिष्य जाते हुए बालें तोड़ने लगे। तब फरीशियोंने २४
उससे कहा देखिये बिश्रामके दिनमें जो काम उचित
नहीं है सो ये लोग क्यों करते हैं। उसने उनसे कहा २५
क्या तुमने कभी नहीं पढ़ा कि जब दाऊदको प्रयोजन
था और वह और उसके संगी लोग भूखे हुए तब
उसने क्या किया। उसने क्योंकर अबियाथर महाया- २६
जकके समयमें ईश्वरके घरमें जाके भेंटकी रोटियां
खाईं जिन्हें खाना और किसीको नहीं केवल याजकोंको
उचित है और अपने संगियोंको भी दिईं। और उसने २७
उनसे कहा बिश्रामवार मनुष्यके लिये हुआ पर मनुष्य
बिश्रामवारके लिये नहीं। इसलिये मनुष्यका पुत्र २८
बिश्रामवारका भी प्रभु है।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ यीशुका बिश्रामवारके विषयमें निर्णय करना। ६ बहुत रोगियोंको चंगा करना। १३ बारह प्रेरितोंको ठहराना। २० लोगोंके अपवादका खंडन। ३१ यीशुके कुटुंबका बर्णन।

१ यीशु फिर सभाके घरमें गया और वहां एक मनुष्य
२ था जिसका हाथ सूख गया था। और लोग उसपर
दोष लगानेके लिये उसे ताकते थे कि वह बिश्रामके
३ दिनमें इसको चंगा करेगा कि नहीं। उसने सूखे
४ हाथवाले मनुष्यसे कहा बीचमें खड़ा हो। तब उसने
उन्होंसे कहा क्या बिश्रामके दिनोंमें भला करना अथवा
बुरा करना प्राणको बचाना अथवा घात करना उचित
५ है . परन्तु वे चुप रहे। और उसने उनके मनकी
कठोरतासे उदास हो उन्होंपर क्रोधसे चारों ओर दृष्टि
किई और उस मनुष्यसे कहा अपना हाथ बढ़ा .
उसने उसको बढ़ाया और उसका हाथ फिर दूसरेकी
नाईं भला चंगा हो गया।

६ तब फरीशियोंने बाहर जाके तुरन्त हेरोदियोंके संग
यीशुके बिरुद्ध आपसमें बिचार किया इसलिये कि उसे
७ नाश करें। यीशु अपने शिष्योंके संग समुद्रके निकट गया
और गालील और यिहूदिया और यिरूशलीम और
इदोमसे और यर्दनके उस पारसे बड़ी भीड़ उसके पीछे
८ हो लिई। सोर और सीदोनके आसपासके लोगोंने भी
जब सुना वह कैसे बड़े काम करता है तब उनमेंकी एक
९ बड़ी भीड़ उस पास आई। उसने अपने शिष्योंसे कहा
भीड़के कारण एक नाव मेरे लिये लगी रहे न हो कि
१० वे मुझे दबावें। क्योंकि उसने बहुतोंको चंगा किया यहां-
लों कि जितने रोगी थे उसे छूनेको उसपर गिरे पड़ते थे।
११ अशुद्ध भूतोंने भी जब उसे देखा तब उसको दंडवत किई
१२ और पुकारके बोले आप ईश्वरके पुत्र हैं। और

उसने उनको बहुत दृढ़ आज्ञा दिई कि मुझे प्रगट मत
करो ।
फिर उसने पर्ब्बतपर चढ़के जिन्हें चाहा उन्हें अपने १३
पास बुलाया और वे उस पास गये। तब उसने बारह १४
जनोंको ठहराया कि वे उसके संग रहें . और कि वह १५
उन्हें उपदेश करनेको और रोगोंको चंगा करने और
भूतोंको निकालनेका अधिकार रखनेको भेजे . अर्थात १६
शिमोनको जिसका नाम उसने पितर रखा . और जब- १७
दीके पुत्र याकूब और याकूबके भाई योहनको जिनका
नाम उसने बनेरगश अर्थात गर्जनके पुत्र रखा . और १८
अन्द्रिय और फिलिप और बर्थलमई और मत्ती और
थोमाको और अलफईके पुत्र याकूबको और थद्दईको
और शिमोन कानानीको . और यिहूदा इस्करियोतीको १९
जिसने उसे पकड़वाया . और वे घरमें आये ।
तब बहुत लोग फिर एकट्ठे हुए यहांलों कि वे रोटी २०
खाने भी न सके । और उसके कुटुम्ब यह सुनके उसे २१
पकड़नेको निकल आये क्योंकि उन्होंने कहा उसका चित्त
ठिकाने नहीं है। तब अध्यापक लोग जो यिरूशलीमसे २२
आये थे बोले कि उसे बालजिबूल लगा है और कि वह
भूतोंके प्रधानकी सहायतासे भूतोंको निकालता है। उस- २३
ने उन्हें अपने पास बुलाके दृष्टान्तोंमें उनसे कहा शैतान
क्योंकर शैतानको निकाल सकता है। यदि किसी राज्य- २४
में फूट पड़ी होय तो वह राज्य नहीं ठहर सकता है।
और यदि किसी घरानेमें फूट पड़ी होय तो वह घराना २५
नहीं ठहर सकता है। और यदि शैतान अपने बिरोधमें २६

उठके अलग बिलग हुआ है तो वह नहीं ठहर सकता
२७ है पर उसका अन्त होता है । यदि बलवन्तको कोई
पहिले न बांधे तो उस बलवन्तके घरमें पैठके उसकी
सामग्री लूट नहीं सकता है . परन्तु उसे बांधके उसके
२८ घरको लूटेगा । मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि मनुष्योंके
सन्तानोंके सब पाप और सब निन्दा जिससे वे निन्दा
२९ करें क्षमा किई जायगी । परन्तु जो कोई पवित्र आत्माकी
निन्दा करे सो कभी नहीं क्षमा किया जायगा पर अनन्त
३० दंडके योग्य है । वे जो बोले कि उसे अशुद्ध भूत लगा
है इसीलिये यीशुने यह बात कही ।
३१ सो उसके भाई और उसकी माता आये और बाहर
३२ खड़े हो उसको बुलवा भेजा । बहुत लोग उसके आस-
पास बैठे थे और उन्होंने उससे कहा देखिये आपकी
३३ माता और आपके भाई बाहर आपको ढूंढ़ते हैं । उसने
उनको उत्तर दिया कि मेरी माता अथवा मेरे भाई
३४ कौन हैं । और जो लोग उसके आसपास बैठे थे उनपर
चारों ओर दृष्टि कर उसने कहा देखो मेरी माता
३५ और मेरे भाई । क्योंकि जो कोई ईश्वरकी इच्छापर
चले वही मेरा भाई और मेरी बहिन और माता है ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ बीज बोनेहारेका दृष्टान्त । १० दृष्टान्तोंसे उपदेश करनेका कारण । १३ बोनेहारेके दृष्टान्तका अर्थ । २१ दीपकका दृष्टान्त और बचन सुननेका उपदेश । २६ बीज बढ़नेका दृष्टान्त । ३० राईके दानेका दृष्टान्त । ३३ यीशुका और और दृष्टान्त कहना । ३५ आन्धीको थांभना ।

१ यीशु फिर समुद्रके तीरपर उपदेश करने लगा और
ऐसी बड़ी भीड़ उस पास एकट्ठी हुई कि वह नावपर

चढ़के समुद्रपर बैठा और सब लोग समुद्रके निकट भूमि-
पर रहे। तब उसने उन्हें दृष्टान्तोंमें बहुतसी बातें सिखाईं २
और अपने उपदेशमें उनसे कहा. सुनो देखो एक बोने- ३
हारा बीज बोनेको निकला। बीज बोनेमें कुछ मार्गकी ४
ओर गिरा और आकाशके पंछियोंने आके उसे चुग
लिया। कुछ पत्थरैली भूमिपर गिरा जहां उसको बहुत ५
मिट्टी न मिली और बहुत मिट्टी न मिलनेसे वह बेग
उगा। परन्तु सूर्य्य उदय होनेपर वह झुलस गया और ६
जड़ न पकड़नेसे सूख गया। कुछ कांटोंके बीचमें गिरा ७
और कांटोंने बढ़के उसको दबा डाला और उसने फल
न दिया। परन्तु कुछ अच्छी भूमिपर गिरा और फल ८
दिया जो उत्पन्न होके बढ़ता गया और कोई तीस गुणे
कोई साठ गुणे कोई सौ गुणे फल फला। और उसने ९
उनसे कहा जिसको सुननेके कान हों सो सुने।

जब वह एकान्तमें था तब जो लोग उसके समीप १०
थे उन्होंने बारह शिष्योंके साथ इस दृष्टान्तका अर्थ
उससे पूछा। उसने उनसे कहा तुमको ईश्वरके राज्यका ११
भेद जाननेका अधिकार दिया गया है परन्तु जो
बाहर हैं उन्होंसे सब बातें दृष्टान्तोंमें होती हैं. इसलिये १२
कि वे देखते हुए देखें और उन्हें न सूझे और सुनते
हुए सुनें और न बूझें ऐसा न हो कि वे कभी फिर
जावें और उनके पाप क्षमा किये जायें।

फिर उसने उनसे कहा क्या तुम यह दृष्टान्त नहीं १३
समझते हो तो सब दृष्टान्त क्योंकर समझोगे। बोनेहारा १४
वह है जो बचनको बोता है। मार्गकी ओरके जहां १५

बचन बोया जाता है वे हैं कि जब वे सुनते हैं तब
शैतान तुरन्त आके जो बचन उनके मनमें बोया गया
१६ था उसे छीन लेता है । वैसेही जिनमें बीज पत्थरैली
भूमिपर बोया जाता है सो वे हैं कि जब बचन सुनते
१७ हैं तब तुरन्त आनन्दसे उसको ग्रहण करते हैं । परन्तु
उनमें जड़ न बंधनेसे वे थोड़ी बेर ठहरते हैं तब बचनके
कारण क्लेश अथवा उपद्रव होनेपर तुरन्त ठोकर खाते
१८ हैं । जिनमें बीज कांटोंके बीचमें बोया जाता है सो
१९ वे हैं जो बचन सुनते हैं । पर इस संसारकी चिन्ता
और धनकी माया और और बस्तुओंका लोभ उनमें
समाके बचनको दबाते हैं और वह निष्फल होता है।
२० पर जिनमें बीज अच्छी भूमिपर बोया गया सो वे हैं
जो बचन सुनके ग्रहण करते हैं और फल फलते हैं
कोई तीस गुणे कोई साठ गुणे कोई सौ गुणे ।
२१ और उसने उनसे कहा क्या दीपकको लाते हैं कि
बर्त्तनके नीचे अथवा खाटके नीचे रखा जाय . क्या इस-
२२ लिये नहीं कि दीवटपर रखा जाय । कुछ गुप्त नहीं है
जो प्रगट न किया जायगा और न कुछ छिपा था परन्तु
२३ इसलिये कि प्रसिद्ध हो जावे । यदि किसीको सुननेके
२४ कान हों तो सुने । फिर उसने उनसे कहा सचेत रहो
तुम क्या सुनते हो . जिस नापसे तुम नापते हो उसीसे
तुम्हारे लिये नापा जायगा और तुमको जो सुनते हो
२५ अधिक दिया जायगा । क्योंकि जो कोई रखता है उसको
और दिया जायगा परन्तु जो नहीं रखता है उससे जो
कुछ उसके पास है सो भी ले लिया जायगा ।

फिर उसने कहा ईश्वरका राज्य ऐसा है जैसा कि २६
मनुष्य भूमिमें बीज बोय . और रात दिन सोय और २७
उठे और वह बीज जन्मे और बढ़े पर किस रीतिसे
वह नहीं जानता है । क्योंकि पृथिवी आपसे आप २८
फल फलती है पहिले अंकुर तब बाल तब बालमें पक्का
दाना । परन्तु जब दाना पक चुका है तब वह तुरन्त २९
हंसुआ लगाता है क्योंकि कटनी आ पहुंची है ।

फिर उसने कहा हम ईश्वरके राज्यकी उपमा ३०
किससे दें और किस दृष्टान्तसे उसे बर्णन करें । वह ३१
राईके एक दानेकी नाईं है कि जब भूमिमें बोया जाता
तब भूमिमेंके सब बीजोंसे छोटा है । परन्तु जब बोया ३२
जाता तब बढ़ता और सब साग पातसे बड़ा हो जाता
है और उसकी ऐसी बड़ी डालियां निकलती हैं कि
आकाशके पंछी उसकी छायामें बसेरा कर सकते हैं।

ऐसे ऐसे बहुत दृष्टान्तोंमें यीशुने लोगोंको जैसा वे ३३
सुन सकते थे वैसा बचन सुनाया । परन्तु बिना ३४
दृष्टान्तसे उसने उनको कुछ न कहा और एकान्तमें
उसने अपने शिष्योंको सब बातोंका अर्थ बताया ।

उसी दिन सांझको उसने उनसे कहा कि आओ ३५
हम उस पार चलें । सो उन्होंने लोगोंको बिदा कर ३६
उसे नावपर जैसा था वैसा चढ़ा लिया और कितनी
और नावें भी उसके संग थीं । और बड़ी आंधी उठी ३७
और लहरें नावपर ऐसी लगीं कि वह अब भर जाने
लगी । परन्तु यीशु नावकी पिछली ओर तकिया दिये ३८
हुए सोता था और उन्होंने उसे जगाके उससे कहा हे

३९ गुरु क्या आपको सोच नहीं कि हम नष्ट होते हैं । तब
उसने उठके बयारको डांटा और समुद्रसे कहा चुप रह
और थम जा और बयार थम गई और बड़ा नीवा हो
४० गया । और उसने उनसे कहा तुम क्यों ऐसे डरते हो
४१ तुम्हें बिश्वास क्यों नहीं है । परन्तु वे बहुतही डर
गये और आपसमें बोले यह कौन है कि बयार और
समुद्र भी उसकी आज्ञा मानते हैं ।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका एक मनुष्यमेंसे बहुत भूतोंको निकालना । २१ एक कन्याको जिलाना और एक स्त्रीको चंगा करना ।

१
२ वे समुद्रके उस पार गदेरियोंके देशमें पहुंचे । जब यीशु
नावपरसे उतरा तब एक मनुष्य जिसे अशुद्ध भूत लगा था
३ कबरस्थानमेंसे तुरन्त उससे आ मिला । उस मनुष्यका
बासा कबरस्थानमें था और कोई उसे जंजीरोंसे भी बांध
४ नहीं सकता था । क्योंकि वह बहुत बार बेड़ियों और
जंजीरोंसे बांधा गया था और उसने जंजीरें तोड़ डालीं
और बेड़ियां टुकड़े टुकड़े किईं और कोई उसे बशमें नहीं
५ कर सकता था । वह सदा रात दिन पहाड़ों और कब-
रोंमें रहता था और चिल्लाता और अपनेको पत्थरोंसे
६ काटता था । वह यीशुको दूरसे देखके दौड़ा और उसको
७ प्रणाम किया . और बड़े शब्दसे चिल्लाके कहा हे यीशु
सर्ब्बप्रधान ईश्वरके पुत्र आपको मुझसे क्या काम . मैं
आपको ईश्वरकी किरिया देता हूं कि मुझे पीड़ा न दी-
८ जिये । क्योंकि यीशुने उससे कहा हे अशुद्ध भूत इस
९ मनुष्यसे निकल आ । और उसने उससे पूछा तेरा नाम

क्या है . उसने उत्तर दिया कि मेरा नाम सेना है क्योंकि
हम बहुत हैं। और उसने यीशुसे बहुत बिन्ती किई कि हमें १०
इस देशसे बाहर न भेजिये। वहां पहाड़ोंके निकट सूत्र- ११
रोंका बड़ा झुंड चरता था। सो सब भूतोंने उससे बिन्ती १२
कर कहा हमें सूअरोंमें भेजिये कि हम उनमें पैठें। यीशुने १३
तुरन्त उन्हें जाने दिया और अशुद्ध भूत निकलके सूअ-
रोंमें पैठे और झुंड जो दो सहस्रके अटकल थे कड़ाड़ेपरसे
समुद्रमें दौड़ गये और समुद्रमें डूब मरे। पर सूअरोंके १४
चरवाहे भागे और नगरमें और गांवोंमें इसका समा-
चार कहा और लोग बाहर निकले कि देखें क्या हुआ है।
और यीशु पास आके वे उस भूतग्रस्तको जिसे भूतोंकी १५
सेना लगी थी बैठे और वस्त्र पहिने और सुबुद्धि देखके
डर गये। जिन लोगोंने देखा था उन्होंने उनसे कह दिया १६
कि भूतग्रस्त मनुष्यको और सूअरोंके विषयमें कैसा
हुआ था। तब वे यीशुसे बिन्ती करने लगे कि हमारे १७
सिवानोंसे निकल जाइये। जब वह नावपर चढ़ा तब १८
जो मनुष्य आगे भूतग्रस्त था उसने उससे बिन्ती किई
कि मैं आपके संग रहूं। पर यीशुने उसे नहीं रहने १९
दिया परन्तु उससे कहा अपने घरको अपने कुटुम्बोंके
पास जाके उन्होंसे कह दे कि परमेश्वरने तुझपर दया
करके तेरे लिये कैसे बड़े काम किये हैं। वह जाके २०
दिकापलि देशमें प्रचार करने लगा कि यीशुने उसके
लिये कैसे बड़े काम किये थे और सभोंने अचंभा किया।

जब यीशु नावपर फिर पार उतरा तब बहुत लोग २१
उस पास एकट्ठे हुए और वह समुद्रके तीरपर था। और २२

देखो सभाके अध्यक्षोंमेंसे याईर नाम एक अध्यक्ष
२३ आया और उसे देखके उसके पांवों पड़ा. और उससे
बहुत बिन्ती कर कहा मेरी बेटी मरनेपर है आप
आके उसपर हाथ रखिये कि वह चंगी हो जाय तो
२४ वह जीयेगी । तब यीशु उसके संग गया और बड़ी भीड़
उसके पीछे हो लिई और उसे दबाती थी ।
२५ और एक स्त्री जिसे बारह बरससे लोहू बहनेका रोग
२६ था. जो बहुत वैद्योंसे बड़ा दुःख पाके अपना सब धन
उठा चुकी थी और कुछ लाभ नहीं पाया परन्तु अधिक
२७ रोगी हुई. तिसने यीशुका चर्चा सुनके उस भीड़में
२८ पीछेसे आ उसके बस्त्रको छूआ। क्योंकि उसने कहा यदि
मैं केवल उसके बस्त्रको छूओं तो चंगी हो जाऊंगी ।
२९ और उसके लोहूका सोता तुरन्त सूख गया और उसने
अपने देहमें जान लिया कि मैं उस रोगसे चंगी हुई हूं।
३० यीशुने तुरन्त अपनेमें जाना कि मुझमेंसे शक्ति निकली
है और भीड़में पीछे फिरके कहा किसने मेरे बस्त्रको
३१ छूआ । उसके शिष्योंने उससे कहा आप देखते हैं कि
भीड़ आपको दबा रही है और आप कहते हैं किसने
३२ मुझे छूआ। तब जिसने यह काम किया था उसे देखने-
३३ को यीशुने चारों ओर दृष्टि किई। तब वह स्त्री जो उस-
पर हुआ था सो जानके डरती और कांपती हुई आई
और उसे दंडवत कर उससे सच सच सब कुछ कह दिया ।
३४ उसने उससे कहा हे पुत्री तेरे बिश्वासने तुझे चंगा
किया है कुशलसे जा और अपने रोगसे चंगी रह ।
३५ वह बोलताही था कि लोगोंने सभाके अध्यक्षके घरसे

आ कहा आपकी बेटी मर गई है आप गुरुको और दुःख
क्यों देते हैं। जो बचन कहा जाता था उसको सुनके ३६
यीशुने तुरन्त सभाके अध्यक्षसे कहा मत डर केवल बि-
श्वास कर। और उसने पितर और याकूब और याकूबके ३७
भाई योहनको छोड़ और किसीको अपने संग जाने नहीं
दिया। सभाके अध्यक्षके घरपर पहुंचके उसने धूम धाम ३८
अर्थात लोगोंको बहुत रोते और चिल्लाते देखा। उसने ३९
भीतर जाके उनसे कहा क्यों धूम मचाते और रोते हो.
कन्या मरी नहीं पर सोती है। वे उसका उपहास करने ४०
लगे परन्तु उसने सभोंको बाहर किया और कन्याके
माता पिताको और अपने संगियोंको लेके जहां कन्या
पड़ी थी वहां पैठा। और उसने कन्याका हाथ पकड़के ४१
उससे कहा तालिथा कूमी अर्थात हे कन्या मैं तुझसे कहता
हूं उठ। और कन्या तुरन्त उठी और फिरने लगी क्योंकि ४२
वह बारह बरसकी थी. और वे अत्यन्त बिस्मित हुए।
पर उसने उनको दृढ़ आज्ञा दिई कि यह बात कोई न ४३
जाने और कहा कि कन्याको कुछ खानेको दिया जाय।

६ छठवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका अपने देशके लोगोंमें अपमान होना । ७ बारह प्रेरितोंको भेजना । १४ योहन बपतिसमा देनेहारेकी मृत्यु । ३० यीशुका प्रेरितोंका समाचार सुनना और लोगोंको उपदेश देना । ३५ पांच सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना । ४५ समुद्रपर चलना । ५३ गिनेसरतके रोगियोंको चंगा करना ।

यीशु वहांसे जाके अपने देशमें आया और उसके शिष्य १
उसके पीछे हो लिये। बिश्रामके दिन वह सभाके घरमें २
उपदेश करने लगा और बहुत लोग सुनके अचंभित हो

बोले इसको यह बातें कहांसे हुईं और यह कौनसा
ज्ञान है जो उसको दिया गया है कि ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म
३ भी उसके हाथोंसे किये जाते हैं। यह क्या बढ़ई नहीं है
मरियमका पुत्र और याकूब और योशी और यिहूदा
और शिमोनका भाई और क्या उसकी बहिनें यहां
हमारे पास नहीं हैं . सो उन्होंने उसके विषयमें ठोकर
४ खाई। यीशुने उनसे कहा भविष्यद्वक्ता अपना देश और
अपने कुटुम्ब और अपना घर छोड़के और कहीं निरादर
५ नहीं होता है। और वह वहां कोई आश्चर्य्य कर्म्म
नहीं कर सका केवल थोड़े रोगियोंपर हाथ रखके उन्हें
६ चंगा किया। और उसने उनके अविश्वाससे अचंभा
किया और चहुं ओरके गांवोंमें उपदेश करता फिरा।
७ और वह बारह शिष्योंको अपने पास बुलाके उन्हें
दो दो करके भेजने लगा और उनको अशुद्ध भूतोंपर
८ अधिकार दिया। और उसने उन्हें आज्ञा दिई कि
मार्गके लिये लाठी छोड़के और कुछ मत लेओ न झोली
९ न रोटी न पटुकेमें पैसे। परन्तु जूते पहिनो और दो
१० अंगे मत पहिनो। और उसने उनसे कहा जहां कहीं
तुम किसी घरमें प्रवेश करो जबलों वहांसे न निकलो
११ तबलों उसी घरमें रहो। जो कोई तुम्हें ग्रहण न करें
और तुम्हारी न सुनें वहांसे निकलते हुए उनपर साक्षी
होनेके लिये अपने पांवोंके नीचेकी धूल झाड़ डालो.
मैं तुमसे सच कहता हूं कि बिचारके दिनमें उस नगरकी
दशासे सदोम अथवा अमोराकी दशा सहने योग्य होगी।
१२ सो उन्होंने निकलके पश्चात्ताप करनेका उपदेश किया.

और बहुतेरे भूतोंको निकाला और बहुत रोगियोंपर १३
तेल मलके उन्हें चंगा किया ।
हेरोद राजाने यीशुकी कीर्त्ति सुनी क्योंकि उसका १४
नाम प्रसिद्ध हुआ और उसने कहा योहन बपतिसमा
देनेहारा मृतकोंमेंसे जी उठा है इसलिये आश्चर्य्य कर्म्म
उससे प्रगट होते हैं । औरोंने कहा यह एलियाह है १५
औरोंने कहा भविष्यद्वक्ता है अथवा भविष्यद्वक्ताओंमेंसे
एकके समान है। परन्तु हेरोदने सुनके कहा जिस योहन- १६
का मैंने सिर कटवाया सोई है वह मृतकोंमेंसे जी उठा है।
क्योंकि हेरोदने आप अपने भाई फिलिपकी स्त्री हेरोदि- १७
याके कारण जिससे उसने बिवाह किया था लोगोंको
भेजके योहनको पकड़ा था और उसे बन्दीगृहमें बांधा था।
क्योंकि योहनने हेरोदसे कहा था कि अपने भाईकी १८
स्त्रीको रखना तुझको उचित नहीं है । हेरोदिया भी १९
उससे बैर रखती थी और उसे मार डालने चाहती थी
पर नहीं सकती थी । क्योंकि हेरोद योहनको धर्म्मी २०
और पवित्र पुरुष जानके उससे डरता था और उसकी
रक्षा करता था और उसकी सुनके बहुत बातोंपर चलता
था और प्रसन्नतासे उसकी सुनता था । परन्तु जब २१
अवकाशका दिन हुआ कि हेरोदने अपने जन्म दिनमें
अपने प्रधानों और सहस्रपतिओं और गालीलके बड़े
लोगोंके लिये बियारी बनाई . और जब हेरोदियाकी २२
पुत्रीने भीतर आ नाच कर हेरोदको और उसके संग
बैठनेहारोंको प्रसन्न किया तब राजाने कन्यासे कहा
जो कुछ तेरी इच्छा होय सो मुझसे मांग और मैं तुझे

२३ देऊंगा । और उसने उससे किरिया खाई कि मेरे आधे
२४ राज्यलों जो कुछ तू मुझसे मांगे मैं तुझे देऊंगा। उसने
बाहर जा अपनी मातासे कहा मैं क्या मांगूंगी . वह
२५ बोली योहन बपतिसमा देनेहारेका सिर । उसने तुरन्त
उतावलीसे राजाके पास भीतर आ बिन्ती कर कहा
मैं चाहती हूं कि आप योहन बपतिसमा देनेहारेका
२६ सिर थालमें अभी मुझे दीजिये । तब राजा अति
उदास हुआ परन्तु उस किरियाके और अपने संग
२७ बैठनेहारोंके कारण उसे टालने नहीं चाहा । और
राजाने तुरन्त पहरुएको भेजकर योहनका सिर लाने-
२८ की आज्ञा किई । उसने जाके बन्दीगृहमें उसका सिर
काटा और उसका सिर थालमें लाके कन्याको दिया
२९ और कन्याने उसे अपनी मांको दिया । उसके शिष्य
यह सुनके आये और उसकी लोथको उठाके कबरमें
रखा ।
३० प्रेरितोंने यीशु पास एकट्ठे हो उससे सब कुछ कह दिया
उन्होंने क्या क्या किया और क्या क्या सिखाया था ।
३१ उसने उनसे कहा तुम आप एकान्तमें किसी जंगली
स्थानमें आके थोड़ा बिश्राम करो . क्योंकि बहुत लोग
आते जाते थे और उन्हें खानेका भी अवकाश न मिला।
३२ सो वे नावपर चढ़के जंगली स्थानमें एकान्तमें गये ।
३३ और लोगोंने उनको जाते देखा और बहुतोंने उसे
चीन्हा और पैदल सब नगरोंमेंसे उधर दौड़े और उनके
३४ आगे बढ़के उस पास एकट्ठे हुए । यीशुने निकलके
बड़ी भीड़को देखा और उसको उनपर दया आई क्योंकि

वे बिन रखवालेकी भेड़ोंकी नाईं थे और वह उन्हें
बहुतसा उपदेश देने लगा ।

जब अबेर हो गई तब उसके शिष्योंने उस पास आ ३५
कहा यह तो जंगली स्थान है और अबेर हुई है । लोगों- ३६
को बिदा कीजिये कि वे चारों ओरके गांवों और बस्ति-
योंमें जाके अपने लिये रोटी मोल लेवें क्योंकि उनके
पास कुछ खानेको नहीं है । उसने उनको उत्तर दिया ३७
कि तुम उन्हें खानेको देओ . उन्होंने उससे कहा क्या
हम जाके दो सौ सूकियोंकी रोटी मोल लेवें और उन्हें
खानेको देवें। उसने उनसे कहा तुम्हारे पास कितनी ३८
रोटियां हैं जाके देखो . उन्होंने बूझके कहा पांच और
दो मछली । तब उसने सब लोगोंको हरी घासपर ३९
पांति पांति बैठानेकी आज्ञा उन्हें दिई । वे सौ सौ ४०
और पचास पचास करके पांति पांति बैठ गये । और ४१
उसने उन पांच रोटियों और दो मछलियोंको ले
स्वर्गकी ओर देखके धन्यबाद किया और रोटियां तोड़के
अपने शिष्योंको दिईं कि लोगोंके आगे रखें और उन
दो मछलियोंको भी सभोंमें बांट दिया । सो सब खाके ४२
तृप्त हुए । और उन्होंने रोटियोंके टुकड़ोंकी और मछ- ४३
लियोंकी बारह टोकरी भरी उठाईं । जिन्होंने रोटी ४४
खाई सो पांच सहस्र पुरुषोंके अटकल थे ।

तब यीशुने तुरन्त अपने शिष्योंको दृढ़ आज्ञा दिई ४५
कि जबलों मैं लोगोंको बिदा करूं तुम नावपर चढ़के मेरे
आगे उस पार बैतसैदा नगरको जाओ। वह उन्हें बिदा ४६
कर प्रार्थना करनेको पर्ब्बतपर गया । सांझको नाव समु- ४७

४८ द्रके बीचमें थी और यीशु भूमिपर अकेला था । और
उसने शिष्योंको खेवनेमें व्याकुल देखा क्योंकि बयार
उनके सन्मुखकी थी और रातके चैाथे पहरके निकट
वह समुद्रपर चलते हुए उनके पास आया और उनके
४९ पाससे होके निकला चाहता था । पर उन्होंने उसे
समुद्रपर चलते देखके समझा कि प्रेत है और चिल्लाये
५० क्योंकि वे सब उसे देखके घबरा गये। वह तुरन्त उनसे
बात करने लगा और उनसे कहा ढाढ़स बांधो मैं हूं
५१ डरो मत । तब वह उन पास नावपर चढ़ा और बयार
थम गई और वे अपने अपने मनमें अत्यन्त विस्मित
५२ और अचंभित हुए । क्योंकि उन्होंका मन कठोर था
इसलिये उन रोटियोंके आश्चर्य्य कर्म्मसे उन्हें ज्ञान न
हुआ ।

५३ वे पार उतरके गिनेसरत देशमें पहुंचे और लगान
५४ किया । जब वे नावपरसे उतरे तब लोगोंने तुरन्त
५५ यीशुको चीन्हा . और आसपासके सारे देशमें दौड़के
जहां सुना कि वह वहां है तहां रोगियोंको खाटोंपर
५६ ले जाने लगे । और जहां जहां उसने बस्तियों अथवा
नगरों अथवा गांवोंमें प्रवेश किया तहां उन्होंने रोगियों-
को बाजारोंमें रखके उससे बिन्ती किई कि वे उसके वस्त्रके
आंचलको भी छूवें और जितनोंने उसे छूआ सब चंगे हुए।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका फरीशियोंको उनके व्यवहारोंके विषयमें दपटना । १४ अपवित्रताके हेतुका वर्णन करना । २४ एक अन्यदेशी स्त्रीकी बेटीको चंगा करना । ३१ एक बहिरे और तोतलेको चंगा करना ।

तब फरीशी लोग और कितने अध्यापक जो यिरू- १
शलीमसे आये थे यीशु पास एकट्ठे हुए। उन्होंने उसके २
कितने शिष्योंको अशुद्ध अर्थात बिन धोये हाथोंसे रोटी
खाते देखके दोष दिया। क्योंकि फरीशी और सब यिहूदी ३
लोग प्राचीनोंके व्यवहार धारण कर जबलों यत्नसे हाथ
न धोवें तबलों नहीं खाते हैं। और बाजारसे आके ४
जबलों स्नान न करें तबलों नहीं खाते हैं और बहुत और
बातें हैं जो उन्होंने माननेको ग्रहण किई हैं जैसे कटोरों
और बर्त्तनों और थालियों और खाटोंको धोना।
सो उन फरीशियों और अध्यापकोंने उससे पूछा कि ५
आपके शिष्य लोग क्यों प्राचीनोंके व्यवहारोंपर नहीं
चलते परन्तु बिन धोये हाथोंसे रोटी खाते हैं। उसने ६
उनको उत्तर दिया कि यिशैयाहने तुम कपटियोंके
विषयमें भविष्यद्वाणी अच्छी कही जैसा लिखा है कि ये
लोग होंठोंसे मेरा आदर करते हैं परन्तु उनका मन
मुझसे दूर रहता है। पर वे वृथा मेरी उपासना करते ७
हैं क्योंकि मनुष्योंकी आज्ञाओंको धर्म्मोपदेश ठहराके
सिखाते हैं। क्योंकि तुम ईश्वरकी आज्ञाको छोड़के ८
मनुष्योंके व्यवहार धारण करते हो जैसे बर्त्तनों और
कटोरोंको धोना. और ऐसे ऐसे बहुत और काम भी
करते हो। और उसने उनसे कहा तुम अपने व्यवहार ९
पालन करनेको ईश्वरकी आज्ञा भली रीतिसे टाल देते
हो। क्योंकि मूसाने कहा अपनी माता और अपने पिता १०
का आदर कर और जो कोई माता अथवा पिताकी निन्दा
करे सो मार डाला जाय। परन्तु तुम कहते हो यदि ११

मनुष्य अपने माता अथवा पितासे कहे कि जो कुछ तुझ-
को मुझसे लाभ होता सो कुर्बान अर्थात संकल्प किया
१२ गया है तो बस । और तुम उसको उसकी माता
अथवा उसके पिताके लिये और कुछ करने नहीं देते
१३ हो । सो तुम अपने व्यवहारोंसे जिन्हें तुमने ठहराया
है ईश्वरके बचनको उठा देते हो और ऐसे ऐसे बहुत
काम करते हो ।
१४ और उसने सब लोगोंको अपने पास बुलाके उनसे
१५ कहा तुम सब मेरी सुनो और बूझो । मनुष्यके बाहरसे
जो उसमें समावे ऐसा कुछ नहीं है जो उसको अपवित्र
कर सकता है परन्तु जो कुछ उसमेंसे निकलता है
१६ सोई है जो मनुष्यको अपवित्र करता है । यदि किसीको
१७ सुननेके कान हों तो सुने । जब वह लोगोंके पाससे
घरमें आया तब उसके शिष्योंने इस दृष्टान्तके विषयमें
१८ उससे पूछा । उसने उनसे कहा तुम भी क्या ऐसे
निर्बुद्धि हो . क्या तुम नहीं बूझते हो कि जो कुछ
बाहरसे मनुष्यमें समाता है सो उसको अपवित्र नहीं
१९ कर सकता है । क्योंकि वह उसके मनमें नहीं परन्तु
पेटमें समाता है और संडासमें गिरता है जिससे सब
२० भोजन शुद्ध होता है । फिर उसने कहा जो मनुष्यमेंसे
२१ निकलता है सोई मनुष्यको अपवित्र करता है । क्योंकि
भीतरसे मनुष्योंके मनसे नाना भांतिकी बुरी चिन्ता
२२ परस्त्रीगमन व्यभिचार नरहिंसा . चोरी लोभ औ
दुष्टता और छल लुचपन कुदृष्टि ईश्वरकी निन्दा
२३ अभिमान और अज्ञानता निकलती हैं । यह सब बुरी

बातें भीतरसे निकलती हैं और मनुष्यको अपवित्र
करती हैं।
यीशु वहांसे उठके सोर और सीदोनके सिवानोंमें २४
गया और किसी घरमें प्रवेश करके चाहा कि कोई न
जाने परन्तु वह छिप न सका। क्योंकि सुरोफैनीकिया २५
देशकी एक यूनानीय मत माननेवाली स्त्री जिसकी
बेटीको अशुद्ध भूत लगा था उसका चर्चा सुनके आई
और उसके पांवों पड़ी . और उससे बिन्ती किई कि २६
आप मेरी बेटीसे भूत निकालिये। यीशुने उससे कहा २७
लड़कोंको पहिले तृप्त होने दे क्योंकि लड़कोंकी रोटी
लेके कुत्तोंके आगे फेंकना अच्छा नहीं है। स्त्रीने उसको २८
उत्तर दिया कि सच हे प्रभु तौभी कुत्ते मेजके नीचे बालकों-
के चूरचार खाते हैं। उसने उससे कहा इस बातके २९
कारण चली जा भूत तेरी बेटीसे निकल गया है। सो ३०
उसने अपने घर जाके भूतको निकले हुए और अपनी
बेटीको खाटपर लेटी हुई पाई।
फिर वह सोर और सीदोनके सिवानोंसे निकलके ३१
दिकापलिके सिवानोंके बीचमें होके गालीलके समुद्रके
निकट आया। और लोगोंने एक बहिरे तोतले मनुष्यको ३२
उस पास लाके उससे बिन्ती किई कि आप इसपर हाथ
रखिये। उसने उसको भीड़मेंसे एकान्त ले जाके अपनी ३३
उंगलियां उसके कानोंमें डालीं और थूकके उसकी
जीभ छूई . और स्वर्गकी ओर देखके लंबी सांस भरके ३४
उससे कहा इप्फातह अर्थात खुल जा। और तुरन्त ३५
उसके कान खुल गये और उसकी जीभका बंधन भी

३६ खुल गया और वह शुद्ध रीतिसे बोलने लगा । तब
यीशुने उन्हें चिताया कि किसीसे मत कहो परन्तु
जितना उसने उन्हें चिताया उतना उन्होंने बहुत
३७ अधिक प्रचार किया । और वे अत्यन्त अचंभित हो
बोले उसने सब कुछ अच्छा किया है वह बहिरोंको
सुनने और गूंगोंको बोलनेकी शक्ति देता है ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका चार सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना । १० चिन्ह मांगनेहारोंको डांटना । १४ अपने शिष्योंको फरीशियोंकी शिक्षाके विषयमें चिताना । २२ एक अन्धेके नेत्र खोलना । २७ यीशुके विषयमें लोगोंका और शिष्योंका विचार । ३१ उसका अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना और पितरको डांटना । ३४ शिष्य होनेकी विधि ।

१ उन दिनोंमें जब बड़ी भीड़ हुई और उनके पास
कुछ खानेको नहीं था तब यीशुने अपने शिष्योंको
२ अपने पास बुलाके उनसे कहा . मुझे इन लोगोंपर
दया आती है क्योंकि वे तीन दिनसे मेरे संग रहे हैं
३ और उनके पास कुछ खानेको नहीं है । जो मैं उन्हें
भोजन बिना अपने अपने घर जानेको बिदा करूं तो
मार्गमें उनका बल घट जायगा क्योंकि उनमेंसे कोई
४ कोई दूरसे आये हैं । उसके शिष्योंने उसको उत्तर
दिया कि यहां जंगलमें कहांसे कोई इन लोगोंको
५ रोटीसे तृप्त कर सके । उसने उनसे पूछा तुम्हारे पास
६ कितनी रोटियां हैं . उन्होंने कहा सात । तब उसने
लोगोंको भूमिपर बैठनेकी आज्ञा दिई और उन सात
रोटियोंको लेके धन्य मानके तोड़ा और अपने शिष्योंको
दिया कि उनके आगे रखें और शिष्योंने लोगोंके

आगे रखा। उनके पास थोड़ीसी छोटी मछलियां भी ७
थीं और उसने धन्यबाद कर उन्हें भी लोगोंके आगे
रखनेकी आज्ञा किई। सो वे खाके तृप्त हुए और जो ८
टुकड़े बच रहे उन्होंने उनके सात टोकरे उठाये। जिन्होंने ९
खाया सो चार सहस्र पुरुषोंके अटकल थे और उसने
उनको बिदा किया।

तब वह तुरन्त अपने शिष्योंके संग नावपर चढ़के १०
दलमनूथा नगरके सिवानेोंमें आया। और फरीशी ११
लोग निकल आये और उससे बिबाद करने लगे और
उसकी परीक्षा करनेको उससे आकाशका एक चिन्ह
मांगा। उसने अपने आत्मामें हाय मारके कहा इस १२
समयके लोग क्यों चिन्ह ढूंढ़ते हैं. मैं तुमसे सच कहता
हूं कि इस समयके लोगोंको कोई चिन्ह नहीं दिया
जायगा। और वह उन्हें छोड़के नावपर फिर चढ़के १३
उस पार चला गया।

शिष्य लोग रोटी लेना भूल गये और नावपर उनके १४
साथ एक रोटीसे अधिक न थी। और उसने उन्हें १५
चिताया कि देखो फरीशियोंके खमीरसे और हेरोदके
खमीरसे चौकस रहो। वे आपसमें बिचार करने लगे १६
यह इसलिये है कि हमारे पास रोटी नहीं है। यह १७
जानके यीशुने उनसे कहा तुम्हारे पास रोटी न होनेके
कारण तुम क्यों आपसमें बिचार करते हो. क्या तुम
अबलों नहीं बूझते और नहीं समझते हो. क्या तुम्हारा
मन अबलों कठोर है। आंखें रहते हुए क्या नहीं १८
देखते हो और कान रहते हुए क्या नहीं सुनते हो।

१९ और क्या स्मरण नहीं करते हो । जब मैंने पांच सहस्रके
लिये पांच रोटी तोड़ीं तब तुमने टुकड़ोंकी कितनी
टोकरियां भरी उठाईं. उन्होंने उससे कहा बारह ।
२० और जब चार सहस्रके लिये सात रोटी तब तुमने
टुकड़ोंके कितने टोकरे भरे उठाये. वे बोले सात ।
२१ उसने उनसे कहा तुम क्यों नहीं समझते हो ।
२२ तब वह बैतसैदामें आया और लोगोंने एक अन्धेको
२३ उस पास ला उससे बिन्ती किई कि उसको छूवे । वह
उस अन्धेका हाथ पकड़के उसे नगरके बाहर ले गया
और उसके नेत्रोंपर थूकके उसपर हाथ रखके उससे
२४ पूछा क्या तू कुछ देखता है । उसने नेत्र उठाके कहा
२५ मैं वृक्षोंकी नाईं मनुष्योंको फिरते देखता हूं । तब उसने
फिर उसके नेत्रोंपर हाथ रखके उससे नेत्र उठवाये
और वह चंगा हो गया और सभोंको फरछाईसे देखने
२६ लगा । और उसने उसे यह कहके घर भेजा कि नगरमें
मत जा और नगरमें किसीसे मत कह ।
२७ यीशु और उसके शिष्य कैसरिया फिलिपीके गांवों-
में निकल गये और मार्गमें उसने अपने शिष्योंसे पूछा
२८ कि लोग क्या कहते हैं मैं कौन हूं । उन्होंने उत्तर
दिया कि वे आपको योहन बपतिसमा देनेहारा कहते
हैं परन्तु कितने एलियाह कहते हैं और कितने
२९ भविष्यद्वक्ताओंमेंसे एक कहते हैं । उसने उनसे कहा
तुम क्या कहते हो मैं कौन हूं . पितरने उसको उत्तर
३० दिया कि आप ख्रीष्ट हैं । तब उसने उन्हें दृढ़ आज्ञा
दिई कि मेरे विषयमें किसीसे मत कहो ।

और वह उन्हें बताने लगा कि मनुष्यके पुत्रको ३१
अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और प्राचीनों और
प्रधान याजकों और अध्यापकोंसे तुच्छ किया जाय और
मार डाला जाय और तीन दिनके पीछे जी उठे।
उसने यह बात खोलके कही और पितर उसे लेके ३२
उसको डांटने लगा। उसने मुंह फेरके और अपने ३३
शिष्योंपर दृष्टि करके पितरको डांटा कि हे शैतान
मेरे साम्हनेसे दूर हो क्योंकि तुझे ईश्वरकी बातोंका
नहीं परन्तु मनुष्योंकी बातोंका सोच रहता है।

उसने अपने शिष्योंके संग लोगोंको अपने पास ३४
बुलाके उनसे कहा जो कोई मेरे पीछे आने चाहे सो
अपनी इच्छाको मारे और अपना क्रूश उठाके मेरे
पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे ३५
सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे और सुसमाचारके
लिये अपना प्राण खोवे सो उसे बचावेगा। यदि मनुष्य ३६
सारे जगतको प्राप्त करे और अपना प्राण गंवावे तो
उसको क्या लाभ होगा। अथवा मनुष्य अपने प्राणकी ३७
सन्ती क्या देगा। जो कोई इस समयके व्यभिचारी और ३८
पापी लोगोंके बीचमें मुझसे और मेरी बातोंसे लजावे
मनुष्यका पुत्र भी जब वह पवित्र दूतोंके संग अपने
पिताके ऐश्वर्य्यमें आवेगा तब उससे लजावेगा।

९ नवां पर्ब्ब ।

१ ईश्वरके राज्यके आनेकी भविष्यद्वाणी। २ यीशुका शिष्योंके आगे तेजस्वी दिखाई देना। ११ एलियाहके आनेका अर्थ उन्हें बताना। १४ एक भूतग्रस्त लड़केको चंगा करना। ३० अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना। ३३ नम्र होनेका उपदेश। ३८ दूसरे उपदेशकको वर्जनेका और ठोकर खानेका निषेध।

१ यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो
यहां खड़े हैं उनमेंसे कोई कोई हैं कि जबलों ईश्वरका
राज्य पराक्रमसे आया हुआ न देखें तबलों मृत्युका
स्वाद न चीखेंगे।
२ छः दिनके पीछे यीशु पितर और याकूब और
योहनको लेके उन्हें किसी ऊंचे पर्ब्बतपर एकान्तमें ले
३ गया और उनके आगे उसका रूप बदल गया। और
उसका बस्त्र चमकने लगा और पालेकी नाईं अति
उजला हुआ जैसा कोई धोबी धरतीपर उजला नहीं
४ कर सकता है। और मूसाके संग एलियाह उनको
दिखाई दिया और वे यीशुके संग बात करते थे।
५ इसपर पितरने यीशुसे कहा हे गुरु हमारा यहां रहना
अच्छा है. हम तीन डेरे बनावें एक आपके लिये एक
६ मूसाके लिये और एक एलियाहके लिये। वह नहीं
जानता था कि क्या कहे क्योंकि वे बहुत डरते थे।
७ तब एक मेघने उन्हें छा लिया और उस मेघसे यह
शब्द हुआ कि यह मेरा प्रिय पुत्र है उसकी सुनो।
८ और उन्होंने अचानक चारों ओर दृष्टि कर यीशुको
९ छोड़के अपने संग और किसीको न देखा। जब वे
उस पर्ब्बतसे उतरते थे तब उसने उनको आज्ञा दिई
कि जबलों मनुष्यका पुत्र मृतकोंमेंसे नहीं जी उठे
१० तबलों जो तुमने देखा है सो किसीसे मत कहो। उन्होंने
यह बात अपनेहीमें रखके आपसमें बिचार किया कि
मृतकोंमेंसे जी उठनेका अर्थ क्या है।
११ और उन्होंने उससे पूछा अध्यापक लोग क्यों कहते

हैं कि एलियाहको पहिले आना होगा । उसने उनको १२
उत्तर दिया कि सच है एलियाह पहिले आके सब कुछ
सुधारेगा . और मनुष्यके पुत्रके विषयमें क्योंकर लिखा
है कि वह बहुत दुःख उठावेगा और तुच्छ किया जाय-
गा । परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि एलियाह भी आ १३
चुका है और जैसा उसके विषयमें लिखा है तैसा उन्हों-
ने उससे जो कुछ चाहा सो किया है ।

उसने शिष्योंके पास आ बहुत लोगोंको उनकी चारों १४
ओर और अध्यापकोंको उनसे बिबाद करते हुए देखा ।
सब लोग उसे देखतेही विस्मित हुए और उसकी ओर १५
दौड़के उसे प्रणाम किया । उसने अध्यापकोंसे पूछा तुम १६
इनसे किस बातका बिबाद करते हो । भीड़मेंसे एकने १७
उत्तर दिया कि हे गुरु मैं अपने पुत्रको जिसे गूंगा भूत
लगा है आपके पास लाया हूं । भूत उसे जहां पकड़ता १८
है तहां पटकता है और वह मुंहसे फेन बहाता और
अपने दांत पीसता है और सूख जाता है और मैंने
आपके शिष्योंसे कहा कि उसे निकालें परन्तु वे नहीं सके ।
यीशुने उत्तर दिया कि हे अबिश्वासी लोगो मैं कबलों १९
तुम्हारे संग रहूंगा और कबलों तुम्हारी सहूंगा . उसको
मेरे पास लाओ । वे उसको उस पास लाये और जब २०
उसने उसे देखा तब भूतने तुरन्त उसको मरोड़ा और
वह भूमिपर गिरा और मुंहसे फेन बहाते हुए लोटने
लगा । यीशुने उसके पितासे पूछा यह उसको कितने २१
दिनोंसे हुआ . उसने कहा बालकपनसे । भूतने उसे २२
नाश करनेको बारबार आगमें और पानीमें भी गिराया

है परन्तु जो आप कुछ कर सकें तो हमपर दया करके
२३ हमारा उपकार कीजिये। यीशुने उससे कहा जो तू
विश्वास कर सके तो विश्वास करनेहारेके लिये सब
२४ कुछ हो सकता है। तब बालकके पिताने तुरन्त
पुकारके रो रोके कहा हे प्रभु मैं विश्वास करता हूं
२५ मेरे अविश्वासका उपकार कीजिये। जब यीशुने देखा
कि बहुत लोग एकट्ठे दौड़े आते हैं तब उसने अशुद्ध
भूतको डांटके उससे कहा हे गूंगे बहिरे भूत मैं तुझे
आज्ञा देता हूं कि उसमेंसे निकल आ और उसमें
२६ फिर कभी मत पैठ। तब भूत चिल्लाके और बालकको
बहुत मरोड़के निकल आया और बालक मृतकके
समान हो गया यहांलों कि बहुतोंने कहा वह तो मर
२७ गया है। परन्तु यीशुने उसका हाथ पकड़के उसे उठाया
२८ और वह खड़ा हुआ। जब यीशु घरमें आया तब
उसके शिष्योंने निरालेमें उससे पूछा हम उस भूतको
२९ क्यों नहीं निकाल सके। उसने उनसे कहा कि जो
इस प्रकारके हैं सो प्रार्थना और उपवास बिना और
किसी उपायसे निकाले नहीं जा सकते हैं।
३० वे वहांसे निकलके गालीलमें होके गये और वह
३१ नहीं चाहता था कि कोई जाने। क्योंकि उसने अपने
शिष्योंको उपदेश दे उनसे कहा मनुष्यका पुत्र मनुष्योंके
हाथमें पकड़वाया जायगा और वे उसको मार डालेंगे
३२ और वह मरके तीसरे दिन जी उठेगा। परन्तु
उन्होंने यह बात नहीं समझी और उससे पूछनेको
डरते थे।

वह कफर्नाहुममें आया और घरमें पहुंचके शिष्योंसे ३३
पूछा मार्गमें तुम आपसमें किस बातका बिचार करते
थे। वे चुप रहे क्योंकि मार्गमें उन्होंने आपसमें ३४
इसीका बिचार किया था कि हममेंसे बड़ा कौन है।
तब उसने बैठके बारह शिष्योंको बुलाके उनसे कहा ३५
यदि कोई प्रधान हुआ चाहे तो सभोंसे छोटा और
सभोंका सेवक होगा। और उसने एक बालकको लेके ३६
उनके बीचमें खड़ा किया और उसे गोदीमें ले उनसे
कहा. जो कोई मेरे नामसे ऐसे बालकोंमेंसे एकको ३७
ग्रहण करे वह मुझे ग्रहण करता है और जो कोई
मुझे ग्रहण करे वह मुझे नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारेको
ग्रहण करता है।

तब योहनने उसको उत्तर दिया कि हे गुरु हमने ३८
किसी मनुष्यको जो हमारे पीछे नहीं आता है आपके
नामसे भूतोंको निकालते देखा और हमने उसे बर्जा
क्योंकि वह हमारे पीछे नहीं आता है। यीशुने कहा ३९
उसको मत बर्जो क्योंकि कोई नहीं है जो मेरे नामसे
आश्चर्य्य कर्म्म करेगा और शीघ्र मेरी निन्दा कर
सकेगा। जो हमारे बिरुद्ध नहीं है सो हमारी ओर ४०
है। जो कोई मेरे नामसे एक कटोरा पानी तुमको ४१
इसलिये पिलावे कि खीष्टके हो मैं तुमसे सच कहता
हूं वह किसी रीतिसे अपना फल न खोवेगा। परन्तु ४२
जो कोई उन छोटोंमेंसे जो मुझपर बिश्वास करते हैं
एकको ठोकर खिलावे उसके लिये भला होता कि
चक्कीका पाट उसके गलेमें बांधा जाता और वह

४३ समुद्रमें डाला जाता। जो तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलावे
तो उसे काट डाल. टुंडा होके जीवनमें प्रवेश करना
तेरे लिये इससे भला है कि दो हाथ रहते हुए तू
४४ नरकमें अर्थात न बुझनेहारी आगमें जाय. जहां उन-
४५ का कीड़ा नहीं मरता और आग नहीं बुझती। और
जो तेरा पांव तुझे ठोकर खिलावे तो उसे काट डाल.
लंगड़ा होके जीवनमें प्रवेश करना तेरे लिये इससे
भला है कि दो पांव रहते हुए तू नरकमें अर्थात न
४६ बुझनेहारी आगमें डाला जाय. जहां उनका कीड़ा
४७ नहीं मरता और आग नहीं बुझती। और जो तेरी
आंख तुझे ठोकर खिलावे तो उसे निकाल डाल.
काना होके ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना तेरे लिये
इससे भला है कि दो आंखें रहते हुए तू नरककी आगमें
४८ डाला जाय. जहां उनका कीड़ा नहीं मरता और आग
४९ नहीं बुझती। क्योंकि हर एक जन आगसे लोणा किया
जायगा और हर एक बलि लोणसे लोणा किया जा-
५० यगा। लोण अच्छा है परन्तु यदि लोण अलोणा हो जाय
तो किससे उसको स्वादित करोगे. अपनेमें लोण
रखो और आपसमें मिले रहो।

१० दसवां पर्ब्ब।

१ पत्नीको त्यागनेका निषेध। १३ यीशुका बालकोंको आशीस देना। १७ एक धनवान जवानसे उसकी बातचीत। २३ धनी लोगोंकी दशाका वर्णन। २८ शिष्योंके फलकी प्रतिज्ञा। ३२ यीशुका अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना। ३५ दो शिष्योंकी बिन्तीका उत्तर देना। ४१ दीन होनेका उपदेश। ४६ यीशुका एक अंधेके नेत्र खोलना।

१ यीशु वहांसे उठके यर्दनके उस पारसे देके यिहूदिया-

के सिवानोंमें आया और बहुत लोग फिर उस पास
एकट्ठे आये और उसने अपनी रीतिपर उन्होंको फिर
उपदेश दिया। तब फरीशियोंने उस पास आ उसकी २
परीक्षा करनेको उससे पूछा क्या अपनी स्त्रीको त्यागना
मनुष्यको उचित है कि नहीं। उसने उनको उत्तर दिया ३
कि मूसाने तुमको क्या आज्ञा दिई। उन्होंने कहा मूसाने ४
त्यागपत्र लिखने और स्त्रीको त्यागने दिया। यीशुने ५
उन्हें उत्तर दिया कि तुम्हारे मनकी कठोरताके कारण
उसने यह आज्ञा तुमको लिख दिई। परन्तु सृष्टिके ६
आरंभसे ईश्वरने नर और नारी करके मनुष्योंको
उत्पन्न किया। इस हेतुसे मनुष्य अपने माता पिताको ७
छोड़के अपनी स्त्रीसे मिला रहेगा और वे दोनों एक
तन होंगे। सो वे आगे दो नहीं पर एक तन हैं। इस- ८ ९
लिये जो कुछ ईश्वरने जोड़ा है उसको मनुष्य अलग
न करे। घरमें उसके शिष्योंने फिर इस बातके विषयमें १०
उससे पूछा। उसने उनसे कहा जो कोई अपनी स्त्रीको ११
त्यागके दूसरीसे बिवाह करे सो उसके बिरुद्ध परस्त्रीग-
मन करता है। और यदि स्त्री अपने स्वामीको १२
त्यागके दूसरेसे बिवाह करे तो वह ब्यभिचार करती है।

तब लोग कितने बालकोंको यीशु पास लाये कि वह १३
उन्हें छूवे परन्तु शिष्योंने लानेहारोंको डांटा। यीशुने १४
यह देखके अप्रसन्न हो उनसे कहा बालकोंको मेरे
पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि ईश्वरका
राज्य ऐसोंका है। मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो १५
कोई ईश्वरके राज्यको बालककी नाईं ग्रहण न करे

१६ वह उसमें प्रवेश करने न पावेगा। तब उसने उन्हें
गोदीमें लेके उनपर हाथ रखके उन्हें आशीस दिई।
१७ जब वह मार्गमें जाता था तब एक मनुष्य उसकी ओर
दौड़ा और उसके आगे घुटने टेकके उससे पूछा हे उत्तम
गुरु अनन्त जीवनका अधिकारी होनेको मैं क्या करूं।
१८ यीशुने उससे कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है. कोई
१९ उत्तम नहीं है केवल एक अर्थात ईश्वर। तू आज्ञाओंको
जानता है कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर
चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे ठगाई मत कर अपने
२० माता पिताका आदर कर। उसने उसको उत्तर दिया
कि हे गुरु इन सभोंको मैंने अपने लड़कपनसे पालन
२१ किया है। यीशुने उसपर दृष्टि कर उसे प्यार किया और
उससे कहा तुझे एक बातकी घटी है. जा जो कुछ तेरा
है सो बेचके कंगालोंको दे और तू स्वर्गमें धन पावेगा
२२ और आ क्रूश उठाके मेरे पीछे हो ले। वह इस बातसे
अप्रसन्न हो उदास चला गया क्योंकि उसको बहुत धन
था।
२३ यीशुने चारों ओर दृष्टि कर अपने शिष्योंसे कहा धन-
वानोंको ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना कैसा कठिन होगा।
२४ शिष्य लोग उसकी बातोंसे अचंभित हुए परन्तु यीशुने
फिर उनको उत्तर दिया कि हे बालको जो धनपर भरो-
सा रखते हैं उन्होंको ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना कैसा
२५ कठिन है। ईश्वरके राज्यमें धनवानके प्रवेश करनेसे
२६ ऊंटका सूईके नाकेमेंसे जाना सहज है। वे अत्यन्त
अचंभित हो आपसमें बोले तब तो किसका त्राण हो

सकता है । यीशुने उनपर दृष्टि कर कहा मनुष्यांसे यह २७
अन्होना है परन्तु ईश्वरसे नहीं क्योंकि ईश्वरसे सब
कुछ हो सकता है ।

पितर उससे कहने लगा कि देखिये हम लोग सब कुछ २८
छोड़के आपके पीछे हो लिये हैं । यीशुने उत्तर दिया २९
मैं तुमसे सच कहता हूं कि जिसने मेरे और सुसमाचार-
के लिये घर वा भाइयों वा बहिनों वा पिता वा माता
वा स्त्री वा लड़कों वा भूमिको त्यागा हो . ऐसा कोई ३०
नहीं है जो अब इस समयमें उपद्रव सहित सौ गुणे
घरों और भाइयों और बहिनों और माताओं और
लड़कों और भूमिको और परलोकमें अनन्त जीवन
न पावेगा । परन्तु बहुतेरे जो अगले हैं पिछले होंगे ३१
और जो पिछले हैं अगले होंगे ।

वे यिरूशलीमको जाते हुए मार्गमें थे और यीशु ३२
उनके आगे आगे चलता था और वे अचंभित हुए और
उसके पीछे चलते हुए डरते थे और वह फिर बारह
शिष्योंको लेके जो कुछ उसपर होन्हार था सो उनसे
कहने लगा . कि देखो हम यिरूशलीमको जाते हैं और ३३
मनुष्यका पुत्र प्रधान याजकों और अध्यापकोंके हाथ
पकड़वाया जायगा और वे उसको बधके योग्य ठहराके
अन्यदेशियोंके हाथ सोंपेंगे । और वे उससे ठट्ठा करेंगे ३४
और कोड़े मारेंगे और उसपर थूकेंगे और उसे घात
करेंगे और वह तीसरे दिन जी उठेगा ।

तब जबदीके पुत्र याकूब और योहनने यीशु पास आ ३५
कहा हे गुरु हम चाहते हैं कि जो कुछ हम मांगें सो

३६ आप हमारे लिये करें । उसने उनसे कहा तुम क्या
३७ चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये करूं । वे उससे बोले
हमें यह दीजिये कि आपके ऐश्वर्य्यमें हममेंसे एक
आपकी दहिनी ओर और दूसरा आपकी बाईं ओर
३८ बैठे । यीशुने उनसे कहा तुम नहीं बूझते कि क्या
मांगते हो . जिस कटोरेसे मैं पीता हूं क्या तुम उससे
पी सकते हो और जो बपतिसमा मैं लेता हूं क्या तुम
३९ उसे ले सकते हो । उन्होंने उससे कहा हम सकते हैं.
यीशुने उनसे कहा जिस कटोरेसे मैं पीता हूं उससे
तुम तो पीओगे और जो बपतिसमा मैं लेता हूं उसे
४० लेओगे । परन्तु जिन्होंके लिये तैयार किया गया है
उन्हें छोड़ और किसीको अपनी दहिनी और अपनी
बाईं ओर बैठने देना मेरा अधिकार नहीं है ।
४१ यह सुनके दसों शिष्य याकूब और योहनपर रिसि-
४२ याने लगे । यीशुने उनको अपने पास बुलाके उनसे
कहा तुम जानते हो कि जो अन्यदेशियोंके अध्यक्ष
समझे जाते सो उन्होंपर प्रभुता करते हैं और उनमेंके
४३ बड़े लोग उन्होंपर अधिकार रखते हैं। परन्तु तुम्होंमें
ऐसा नहीं होगा पर जो कोई तुम्होंमें बड़ा हुआ चाहे
४४ सो तुम्हारा सेवक होगा । और जो कोई तुम्हारा प्रधान
४५ हुआ चाहे सो सभोंका दास होगा । क्योंकि मनुष्यका
पुत्र भी सेवा करवानेको नहीं परन्तु सेवा करनेको और
बहुतोंके उद्धारके दाममें अपना प्राण देनेको आया है।
४६ वे यिरीहो नगरमें आये और जब वह और उसके
शिष्य और बहुत लोग यिरीहोसे निकलते थे तब तीमई-

का पुत्र बर्तीमई एक अंधा मनुष्य मार्गकी ओर बैठा
भीख मांगता था । वह यह सुनके कि यीशु नासरी है ४७
पुकारने और कहने लगा कि हे दाऊदके सन्तान यीशु
मुझपर दया कीजिये । बहुत लोगोंने उसे डांटा कि वह ४८
चुप रहे परन्तु उसने बहुत अधिक पुकारा हे दाऊदके
सन्तान मुझपर दया कीजिये । तब यीशु खड़ा रहा और ४९
उसे बुलानेको कहा और लोगोंने उस अंधेको बुलाके
उससे कहा ढाढ़स कर उठ वह तुझे बुलाता है । वह ५०
अपना कपड़ा फेंकके उठा और यीशु पास आया । इस- ५१
पर यीशुने उससे कहा तू क्या चाहता है कि मैं तेरे
लिये करूं . अंधा उससे बोला हे गुरु मैं अपनी दृष्टि
पाऊं । यीशुने उससे कहा चला जा तेरे बिश्वासने ५२
तुझे चंगा किया है . और वह तुरन्त देखने लगा और
मार्गमें यीशुके पीछे हो लिया ।

११ एग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका यिरूशलीममें जाना । १२ गूलरके वृक्षको स्राप देना । १५ ब्योपारियोंको मन्दिरसे निकालना । २० बिश्वासके गुणका बखान और क्षमा करनेका उपदेश। २७ यीशुका प्रधान याजकोंको निरुत्तर करना ।

जब वे यिरूशलीमके निकट अर्थात जैतून पर्ब्बतके १
समीप बैतफगी और बैथनिया गांवों पास पहुंचे तब
उसने अपने शिष्योंमेंसे दोको यह कहके भेजा . कि जो २
गांव तुम्हारे सन्मुख है उसमें जाओ और उसमें प्रवेश
करतेही तुम एक गधीके बच्चेको जिसपर कभी कोई मनुष्य
नहीं चढ़ा बंधे हुए पाओगे उसे खोलके लाओ । जो तुम- ३
से कोई कहे तुम यह क्यों करते हो तो कहो कि प्रभुको

इसका प्रयोजन है तब वह उसे तुरन्त यहां भेजेगा ।
४ उन्होंने जाके उस बच्चेको दो बाटोंके सिरेपर द्वारके पास
५ बाहर बंधे हुए पाया और उसको खोलने लगे । तब जो
लोग वहां खड़े थे उनमेंसे कितनोंने उनसे कहा तुम क्या
६ करते हो कि बच्चेको खोलते हो । उन्होंने जैसा यीशुने
आज्ञा किई वैसा उनसे कहा तब उन्होंने उन्हें जाने
७ दिया । और उन्होंने बच्चेको यीशु पास लाके उसपर
८ अपने कपड़े डाले और वह उसपर बैठा । और बहुत
लोगोंने अपने अपने कपड़े मार्गमें बिछाये और औरोंने
९ वृक्षोंसे डालियां काटके मार्गमें बिछाईं । और जो लोग
आगे पीछे चलते थे उन्होंने पुकारके कहा जय जय धन्य
१० वह जो परमेश्वरके नामसे आता है । धन्य हमारे पिता
दाऊदका राज्य जो परमेश्वरके नामसे आता है. सबसे
११ ऊंचे स्थानमें जयजयकार होवे। यीशुने यिरूशलीममें आ
मन्दिरमें प्रवेश किया और जब उसने चारों ओर सब
बस्तुओंपर दृष्टि किई और संध्याकाल आ चुका तब
वह बारह शिष्योंके संग बैथनियाको निकल गया ।
१२ दूसरे दिन जब वे बैथनियासे निकलते थे तब उसको
१३ भूख लगी । और वह पत्ते लगे हुए एक गूलरका वृक्ष
दूरसे देखके आया कि क्या जाने उसमें कुछ पावे परन्तु
उस पास आके और कुछ न पाया केवल पत्ते. गूलरके
१४ पकनेका समय नहीं था । इसपर यीशुने उस वृक्षको
कहा कोई मनुष्य फिर कभी तुझसे फल न खावे.
और उसके शिष्योंने यह बात सुनी ।
१५ वे यिरूशलीममें आये और यीशु मन्दिरमें जाके जो

लोग मन्दिरमें बेचते श्रो मोल लेते थे उन्हें निकालने
लगा श्रोर सर्राफोंके पीढ़ोंको श्रोर कपोतोंके बेचनेहा-
रोंकी चौकियोंको उलट दिया . श्रोर किसीको मन्दिरके १६
बीचसे कोई पात्र ले जाने न दिया । श्रोर उसने उपदेश १७
कर उनसे कहा क्या नहीं लिखा है कि मेरा घर सब
देशोंके लोगोंके लिये प्रार्थनाका घर कहावेगा . परन्तु
तुमने उसे डाकूओंका खोह बनाया है । यह सुनके १८
श्रध्यापकों श्रोर प्रधान याजकोंने खोज किया कि उसे
किस रीतिसे नाश करें क्योंकि वे उससे डरते थे इसलिये
कि सब लोग उसके उपदेशसे अचंभित होते थे । जब १९
सांझ हुई तब वह नगरसे बाहर निकला ।

भोरको जब वे उधरसे जाते थे तब उन्होंने वह २०
गूलरका वृक्ष जड़से सूखा हुश्रा देखा । पितरने स्मरण २१
कर यीशुसे कहा हे गुरु देखिये यह गूलरका वृक्ष जिसे
श्रापने स्राप दिया सूख गया है । यीशुने उनको उत्तर २२
दिया कि ईश्वरपर बिश्वास रखो । क्योंकि मैं तुमसे २३
सच कहता हूं जो कोई इस पहाड़से कहे कि उठ समुद्रमें
गिर पड़ श्रोर अपने मनमें सन्देह न रखे परन्तु बिश्वास
करे कि जो मैं कहता हूं सो हो जायगा उसके लिये
जो कुछ वह कहेगा सो हो जायगा । इसलिये मैं तुमसे २४
कहता हूं जो कुछ तुम प्रार्थना करके मांगो बिश्वास
करो कि हम पावेंगे तो तुम्हें मिलेगा । श्रोर जब तुम २५
प्रार्थना करनेको खड़े हो तब यदि तुम्हारे मनमें किसीकी
श्रोर कुछ होय तो क्षमा करो इसलिये कि तुम्हारा
स्वर्गबासी पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा करे । परन्तु २६

जो तुम क्षमा न करो तो तुम्हारा स्वर्गबासी पिता
भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा ।
२७ वे फिर यिरूशलीममें आये और जब यीशु मन्दिरमें
फिरता था तब प्रधान याजक और अध्यापक और प्रा-
२८ चीन लोग उस पास आये . और उससे बोले तुझे ये काम
करनेका कैसा अधिकार है और ये काम करनेको किसने
२९ तुझको यह अधिकार दिया । यीशुने उनको उत्तर दिया
कि मैं भी तुमसे एक बात पूछूंगा . तुम मुझे उत्तर देओ
तो मैं तुम्हें बताऊंगा कि मुझे ये काम करनेका कैसा
३० अधिकार है । योहनका बपतिसमा देना क्या स्वर्गकी
३१ अथवा मनुष्योंकी ओरसे हुआ मुझे उत्तर देओ । तब
वे आपसमें विचार करने लगे कि जो हम कहें स्वर्गकी
ओरसे तो वह कहेगा फिर तुमने उसका बिश्वास क्यों
३२ नहीं किया । परन्तु जो हम कहें मनुष्योंकी ओरसे .
तब उन्हें लोगोंका डर लगा क्योंकि सब लोग योहनको
३३ जानते थे कि निश्चय वह भविष्यद्वक्ता था । सो उन्होंने
यीशुको उत्तर दिया कि हम नहीं जानते . यीशुने उन्हें
उत्तर दिया तो मैं भी तुमको नहीं बताता हूं कि मुझे
ये काम करनेका कैसा अधिकार है ।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

१ दुष्ट मालियोंका दृष्टान्त । १३ यीशुका कर देनेके विषयमें फरीशियोंको निरुत्तर करना । १८ जी उठनेके विषयमें सदूकियोंको निरुत्तर करना । २८ श्रेष्ठ आज्ञाके विषयमें अध्यापकको उत्तर देना । ३५ अपनी पदवीके विषयमें अध्यापकोंको निरुत्तर करना । ३८ अध्यापकोंके दोष प्रगट करना । ४१ एक बिधवाके दानकी प्रशंसा ।

१ यीशु दृष्टान्तोंमें उनसे कहने लगा कि किसी मनुष्यने

दाखकी बारी लगाई और चहुं ओर बेड़ दिया और रस-
का कुंड खोदा और गढ़ बनाया और मालियोंको उसका
ठीका दे परदेशको चला गया। समयमें उसने मालियोंके २
पास एक दासको भेजा कि मालियोंसे दाखकी बारीका
कुछ फल लेवे। परन्तु उन्होंने उसे लेके मारा और छूछे ३
हाथ फेर दिया। फिर उसने दूसरे दासको उनके पास ४
भेजा और उन्होंने उसे पत्थरवाह कर उसका सिर फोड़ा
और उसे अपमान करके फेर दिया। फिर उसने तीसरेको ५
भेजा और उन्होंने उसे मार डाला और बहुत औरोंसे
उन्होंने वैसाही किया कितनोंको मारा और कितनोंको
घात किया। फिर उसको एकही पुत्र था जो उसका प्रिय ६
था सो सबके पीछे उसने यह कहके उसे भी उनके
पास भेजा कि वे मेरे पुत्रका आदर करेंगे। परन्तु ७
उन मालियोंने आपसमें कहा यह तो अधिकारी है
आओ हम उसे मार डालें तब अधिकार हमारा होगा।
और उन्होंने उसे लेके मार डाला और दाखकी बारीके ८
बाहर फेंक दिया। इसलिये दाखकी बारीका स्वामी ९
क्या करेगा. वह आके उन मालियोंको नाश करेगा
और दाखकी बारी दूसरोंके हाथ देगा। क्या तुमने १०
धर्म्मपुस्तकका यह बचन नहीं पढ़ा है कि जिस पत्थरको
थवइयोंने निकम्मा जाना वही कोनेका सिरा हुआ है.
यह परमेश्वरका कार्य्य है और हमारी दृष्टिमें अद्भुत ११
है। तब उन्होंने उसे पकड़ने चाहा क्योंकि जानते थे १२
कि उसने हमारे बिरुद्ध यह दृष्टान्त कहा परन्तु वे
लोगोंसे डरे और उसे छोड़के चले गये।

१३ तब उन्होंने उसे बातमें फंसानेको कई एक फरीशियों
१४ और हेरोदियोंको उस पास भेजा । वे आके उससे बोले
हे गुरु हम जानते हैं कि आप सत्य हैं और किसीका
खटका नहीं रखते हैं क्योंकि आप मनुष्योंका मुंह देखके
बात नहीं करते हैं परन्तु ईश्वरका मार्ग सत्यतासे
बताते हैं . क्या कैसरको कर देना उचित है अथवा नहीं .
१५ हम देवें अथवा न देवें । उसने उनका कपट जानके
उनसे कहा मेरी परीक्षा क्यों करते हो . एक सूकी
१६ मेरे पास लाओ कि मैं देखूं । वे लाये और उसने
उनसे कहा यह मूर्त्ति और छाप किसकी है . वे उससे
१७ बोले कैसरकी । यीशुने उनको उत्तर दिया कि जो कैसर-
का है सो कैसरको देओ और जो ईश्वरका है सो
ईश्वरको देओ . तब वे उससे अचंभित हुए ।

१८ सदूकी लोग भी जो कहते हैं कि मृतकोंका जी उठना
१९ नहीं होगा उस पास आये और उससे पूछा . कि हे गुरु
मूसाने हमारे लिये लिखा कि यदि किसीका भाई मर
जाय और स्त्रीको छोड़े और उसको सन्तान न हों तो
उसका भाई उसकी स्त्रीसे बिवाह करे और अपने भाईके
२० लिये बंश खड़ा करे । सो सात भाई थे . पहिला भाई
२१ बिवाह कर निःसन्तान मर गया । तब दूसरे भाईने उस
स्त्रीसे बिवाह किया और मर गया और उसको भी
२२ सन्तान न हुआ . और वैसेही तीसरेने भी । सातोंने
उससे बिवाह किया पर किसीको सन्तान न हुआ .
२३ सबके पीछे स्त्री भी मर गई । सो मृतकोंके जी उठनेपर
जब वे सब उठेंगे तब वह उनमेंसे किसकी स्त्री होगी

क्योंकि सातोंने उससे बिवाह किया। यीशुने उनको २४
उत्तर दिया क्या तुम इसी कारण भूलमें न पड़े हो कि
धर्म्मपुस्तक और ईश्वरकी शक्ति नहीं बूझते हो। क्योंकि २५
जब वे मृतकोंमेंसे जी उठें तब न बिवाह करते न बिवाह
दिये जाते हैं परन्तु स्वर्गमें दूतोंके समान हैं। मृतकोंके २६
जी उठनेके विषयमें क्या तुमने मूसाके पुस्तकमें झाड़ीकी
कथामें नहीं पढ़ा है कि ईश्वरने उससे कहा मैं इब्राहीम-
का ईश्वर और इसहाकका ईश्वर और याकूबका
ईश्वर हूं। ईश्वर मृतकोंका नहीं परन्तु जीवतोंका २७
ईश्वर है सो तुम बड़ी भूलमें पड़े हो।

अध्यापकोंमेंसे एकने आ उन्हें बिबाद करते सुना २८
और यह जानके कि यीशुने उन्हें अच्छी रीतिसे उत्तर
दिया उससे पूछा सबसे बड़ी आज्ञा कौन है। यीशुने २९
उसे उत्तर दिया सब आज्ञाओंमेंसे यही बड़ी है कि हे
इस्रायेल सुनो परमेश्वर हमारा ईश्वर एकही परमेश्वर
है। और तू परमेश्वर अपने ईश्वरको अपने सारे मनसे ३०
और अपने सारे प्राणसे और अपनी सारी बुद्धिसे और
अपनी सारी शक्तिसे प्रेम कर . यही सबसे बड़ी आज्ञा
है। और दूसरी उसके समान है सो यह है कि तू अपने ३१
पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर . इनसे और कोई
आज्ञा बड़ी नहीं। उस अध्यापकने उससे कहा अच्छा ३२
हे गुरु आपने सत्य कहा है कि एकही ईश्वर है और
उसे छोड़ कोई दूसरा नहीं है। और उसको सारे मनसे ३३
और सारी बुद्धिसे और सारे प्राणसे और सारी शक्तिसे
प्रेम करना और पड़ोसीको अपने समान प्रेम करना

३४ सारे होमोंसे और बलिदानोंसे अधिक है। जब यीशुने
देखा कि उसने बुद्धिसे उत्तर दिया था तब उससे कहा
तू ईश्वरके राज्यसे दूर नहीं है . और किसीको फिर
उससे कुछ पूछनेका साहस न हुआ।

३५ इसपर यीशुने मन्दिरमें उपदेश करते हुए कहा
अध्यापक लोग क्योंकर कहते हैं कि खीष्ट दाऊदका पुत्र
३६ है। दाऊद आपही पवित्र आत्माकी शिक्षासे बोला कि
परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा जबलों मैं तेरे शत्रुओंको तेरे
चरणोंकी पीढ़ी न बनाऊं तबलों तू मेरी दहिनी ओर
३७ बैठ। दाऊद तो आपही उसे प्रभु कहता है फिर वह
उसका पुत्र कहांसे है . भीड़के अधिक लोग प्रसन्नतासे
उसकी सुनते थे।

३८ उसने अपने उपदेशमें उनसे कहा अध्यापकोंसे चौ-
३९ कस रहो जो लंबे बस्त्र पहिने हुए फिरने चाहते हैं . और
बाजारोंमें नमस्कार और सभाके घरोंमें ऊंचे आसन
४० और जेवनारोंमें ऊंचे स्थान भी चाहते हैं। वे बिधवा-
ओंके घर खा जाते हैं और बहानाके लिये बड़ी बेरलों
प्रार्थना करते हैं . वे अधिक दंड पावेंगे।

४१ यीशु भंडारके साम्हने बैठके देखता था कि लोग क्यों-
कर भंडारमें रोकड़ डालते हैं और बहुत धनवानोंने
४२ बहुत कुछ डाला। और एक कंगाल बिधवाने आके दो
४३ छदाम अर्थात आध पैसा डाला। तब उसने अपने
शिष्योंको अपने पास बुलाके उनसे कहा मैं तुमसे सच
कहता हूं कि जिन्होंने भंडारमें डाला है उन सभोंसे
४४ इस कंगाल बिधवाने अधिक डाला है। क्योंकि सभोंने

अपनी बढ़तीमेंसे कुछ कुछ डाला है परन्तु इसने अपनी घटतीमेंसे जो कुछ उसका था अर्थात अपनी सारी जीविका डाली है ।

१३ तेरहवां पर्व्व ।

१ मन्दिरके नाश होनेकी भविष्यद्वाणी । ३ उस समयके चिन्ह । ९ शिष्योंपर उपद्रव होगा । १४ यिहूदी लोग बड़ा कष्ट पावेंगे । २१ झूठे खीष्ट प्रगट होंगे । २४ मनुष्यके पुत्रके आनेका वर्णन । २८ गूलरके वृक्षका दृष्टान्त । ३२ सचेत रहनेका उपदेश और दासोंका दृष्टान्त ।

जब यीशु मन्दिरमेंसे निकलता था तब उसके शिष्यों- १
मेंसे एकने उससे कहा हे गुरु देखिये कैसे पत्थर और
कैसी रचना है । यीशुने उसे उत्तर दिया क्या तू यह २
बड़ी बड़ी रचना देखता है . पत्थरपर पत्थर भी न
छोड़ा जायगा जो गिराया न जाय ।

जब वह जैतून पर्व्वतपर मन्दिरके साम्ने बैठा था ३
तब पितर और याकूब और योहन और अन्द्रियने
निरालेमें उससे पूछा . कि हमोंसे कहिये यह कब होगा ४
और यह सब बातें जिस समयमें पूरी होंगीं उस समयका
क्या चिन्ह होगा । यीशु उन्हें उत्तर दे कहने लगा ५
चौकस रहो कि कोई तुम्हें न भरमावे । क्योंकि बहुत ६
लोग मेरे नामसे आके कहेंगे मैं वही हूं और बहुतोंको
भरमावेंगे । जब तुम लड़ाइयां और लड़ाइयोंकी चर्चा ७
सुनो तब मत घबराओ क्योंकि इनका होना अवश्य
है परन्तु अन्त उस समयमें नहीं होगा । क्योंकि देश ८
देशके और राज्य राज्यके बिरुद्ध उठेंगे और अनेक
स्थानोंमें भुईंडोल होंगे और अकाल और हुल्लड़ होंगे .
यह तो दुःखोंका आरंभ होगा ।

९　　तुम अपने विषयमें चौकस रहो क्योंकि लोग तुम्हें
पंचायतोंमें सौंपेंगे और तुम सभाओंमें मारे जाओगे
और मेरे लिये अध्यक्षों और राजाओंके आगे उनपर
१० साक्षी होनेके लिये खड़े किये जाओगे । परन्तु अवश्य
है कि पहिले सुसमाचार सब देशोंके लोगोंमें सुनाया
११ जाय । जब वे तुम्हें ले जाके सौंप देवें तब क्या कहोगे
इसकी चिन्ता आगेसे मत करो और न सोच करो परन्तु
जो कुछ तुम्हें उसी घड़ी दिया जाय सोई कहो क्योंकि
तुम नहीं परन्तु पवित्र आत्मा बोलनेहारा होगा ।
१२ भाई भाईको और पिता पुत्रको बध किये जानेको सौंपेंगे
और लड़के माता पिताके बिरुद्ध उठके उन्हें घात
१३ करवावेंगे । और मेरे नामके कारण सब लोग तुमसे
बैर करेंगे पर जो अन्तलों स्थिर रहे सोई त्राण पावेगा ।
१४　　जब तुम उस उजाड़नेहारी घिनित बस्तुको जिसकी
बात दानियेल भविष्यद्वक्ताने कही जहां उचित नहीं तहां
खड़े होते देखो (जो पढ़े सो बूझे) तब जो यिहूदियामें हों
१५ सो पहाड़ोंपर भागें । जो कोठेपर हो सो न घरमें उतरे
१६ और न अपने घरमेंसे कुछ लेनेको उसमें पैठे । और जो
१७ खेतमें हो सो अपना बस्त्र लेनेको पीछे न फिरे । उन
दिनोंमें हाय हाय गर्भवतियां और दूध पिलानेवालियां ।
१८ परन्तु प्रार्थना करो कि तुमको जाड़ेमें भागना न होवे ।
१९ क्योंकि उन दिनोंमें ऐसा क्लेश होगा जैसा उस सृष्टिके
आरंभसे जो ईश्वरने सृजी अबतक न हुआ और कभी
२० न होगा । यदि परमेश्वर उन दिनोंको न घटाता तो
कोई प्राणी न बचता परन्तु उन चुने हुए लोगोंके कारण

जिनको उसने चुना है उसने उन दिनोंको घटाया है।
तब यदि कोई तुमसे कहे देखो खीष्ट यहां है अथवा २१
देखो वहां है तो प्रतीति मत करो। क्योंकि झूठे खीष्ट २२
और झूठे भविष्यद्वक्ता प्रगट होके चिन्ह और अद्भुत
काम दिखावेंगे इसलिये कि जो हो सके तो चुने हुए
लोगोंको भी भरमावें। पर तुम चौकस रहो देखो मैंने २३
आगेसे तुम्हें सब बातें कह दिई हैं।
उन दिनोंमें उस क्लेशके पीछे सूर्य्य अंधियारा हो जा- २४
यगा और चांद अपनी ज्योति न देगा। आकाशके तारे २५
गिर पड़ेंगे और आकाशमेंकी सेना डिग जायगी। तब २६
लोग मनुष्यके पुत्रको बड़े पराक्रम और ऐश्वर्य्यसे मेघों-
पर आते देखेंगे। और तब वह अपने दूतोंको भेजेगा २७
और पृथिवीके इस सिवानेसे आकाशके उस सिवानेतक
चहुं दिशासे अपने चुने हुए लोगोंको एकट्ठे करेगा।
गूलरके वृक्षसे दृष्टान्त सीखो. जब उसकी डाली २८
कोमल हो जाती और पत्ते निकल आते तब तुम
जानते हो कि धूपकाला निकट है। इस रीतिसे जब २९
तुम यह बातें होते देखो तब जानो कि वह निकट है
हां द्वारपर है। मैं तुमसे सच कहता हूं कि जबलों ३०
यह सब बातें पूरी न हो जायें तबलों इस समयके
लोग नहीं जाते रहेंगे। आकाश औ पृथिवी टल ३१
जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगीं।
उस दिन और उस घड़ीके विषयमें न कोई मनुष्य ३२
जानता है न स्वर्गबासी दूतगण और न पुत्र परन्तु केवल
पिता। देखो जागते रहो और प्रार्थना करो क्योंकि तुम ३३

३४ नहीं जानते हो वह समय कब होगा। वह ऐसा है जैसे
परदेश जानेवाले एक मनुष्यने अपना घर छोड़ा और
अपने दासोंको अधिकार और हर एकको उसका काम
दिया और द्वारपालको जागते रहनेकी आज्ञा दिई।
३५ इसलिये जागते रहो क्योंकि तुम नहीं जानते हो
घरका स्वामी कब आवेगा सांझको अथवा आधी
रातको अथवा मुर्ग बोलनेके समयमें अथवा भोरको।
३६ ऐसा न हो कि वह अचांचक आके तुम्हें सोते पावे।
३७ और जो मैं तुमसे कहता हूं सो सभोंसे कहता हूं
जागते रहो।

१४ चौदहवां पर्व्व।

१ यीशुको वध करनेका परामर्श। ३ एक स्त्रीका उसके सिरपर सुगन्ध तेल ढालना। १० यिहूदाका विश्वासघात करना। १२ शिष्योंका निस्तार पर्व्वका भोजन बनाना। १७ उनके संग यीशुका भोजन करना और यिहूदाके विषयमें भविष्यद्वाक्य कहना। २२ प्रभु भोजका निरूपण। २७ पितरके यीशुसे मुकर जानेकी भविष्यद्वाणी। ३२ बारीमें यीशुका महा शोक। ४३ उसका पकड़ा जाना। ५३ उसको महायाजकके पास ले जाना और बधके योग्य ठहराके अपमान करना। ६६ पितरका उससे मुकर जाना।

१ निस्तार पर्व्व और अखमीरी रोटीका पर्व्व दो दिनके
पीछे होनेवाला था और प्रधान याजक और अध्यापक
लोग खोज करते थे कि यीशुको क्योंकर छलसे पकड़के
२ मार डालें। परन्तु उन्होंने कहा पर्व्वमें नहीं न हो
कि लोगोंका हुल्लड़ होवे।
३ जब वह बैथनियामें शिमोन कोढ़ीके घरमें था और
भोजनपर बैठा तब एक स्त्री उजले पत्थरके पात्रमें जटा-
मांसीका बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके आई और पात्र

तोड़के उसके सिरपर ढाला। कोई कोई अपने मनमें ४
रिसियाते थे और बोले सुगन्ध तेलका यह क्षय क्यों
हुआ। क्योंकि वह तीन सौ सूकियोंसे अधिक दाममें ५
बिक सकता और कंगालोंको दिया जा सकता . और
वे उस स्त्रीपर कुड़कुड़ाये। यीशुने कहा उसको रहने दो ६
क्यों उसको दुःख देते हो . उसने अच्छा काम मुझसे किया
है। कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं और तुम ७
जब चाहो तब उनसे भलाई कर सकते हो परन्तु मैं
तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा। जो कुछ वह कर सकी ८
सो किया है . उसने मेरे गाड़े जानेके लिये आगेसे
मेरे देहपर सुगन्ध तेल लगाया है। मैं तुमसे सत्य ९
कहता हूं सारे जगतमें जहां कहीं यह सुसमाचार सुना-
या जाय तहां यह भी जो इसने किया है उसके स्मरण-
के लिये कहा जायगा।

तब यिहूदा इस्करियोती जो बारह शिष्योंमेंसे एक था १०
प्रधान याजकोंके पास गया इसलिये कि यीशुको उन्होंके
हाथ पकड़वाय। वे यह सुनके आनन्दित हुए और ११
उसको रुपैये देनेकी प्रतिज्ञा किई और वह खोज करने
लगा कि उसे क्योंकर अवसर पाके पकड़वाय।

अखमीरी रोटीके पर्ब्बके पहिले दिन जिसमें वे १२
निस्तार पर्ब्बका मेम्ना मारते थे यीशुके शिष्य लोग उससे
बोले आप कहां चाहते हैं कि हम जाके तैयार करें कि
आप निस्तार पर्ब्बका भोजन खावें। उसने अपने शिष्यों- १३
मेंसे दोको यह कहके भेजा कि नगरमें जाओ और एक
मनुष्य जलका घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा उसके पीछे

१४ हो लेओ । जिस घरमें वह पैठे उस घरके स्वामीसे कहो
गुरु कहता है कि पाहुनशाला कहां है जिसमें मैं अपने
१५ शिष्योंके संग निस्तार पर्ब्बका भोजन खाऊं । वह तुम्हें
एक सजी हुई और तैयार किई हुई बड़ी उपरौठी कोठरी
१६ दिखावेगा वहां हमारे लिये तैयार करो । तब उसके
शिष्य लोग चले और नगरमें आके जैसा उसने उन्होंसे
कहा तैसा पाया और निस्तार पर्ब्बका भोजन बनाया ।
१७ १८ सांझको यीशु बारह शिष्योंके संग आया । जब वे
भोजनपर बैठके खाते थे तब यीशुने कहा मैं तुमसे सच
कहता हूं कि तुममेंसे एक जो मेरे संग खाता है मुझे
१९ पकड़वायगा । इसपर वे उदास होने और एक एक करके
उससे कहने लगे वह क्या मैं हूं और दूसरेने कहा क्या
२० मैं हूं । उसने उनको उत्तर दिया कि बारहोंमेंसे एक
२१ जो मेरे संग थालीमें हाथ डालता है सोई है । मनुष्यका
पुत्र जैसा उसके विषयमें लिखा है वैसाही जाता है
परन्तु हाय वह मनुष्य जिससे मनुष्यका पुत्र पकड़वाया
जाता है . जो उस मनुष्यका जन्म न होता तो उसके
लिये भला होता ।

२२ जब वे खाते थे तब यीशुने रोटी लेके धन्यबाद किया
और उसे तोड़के उनको दिया और कहा लेओ खाओ
२३ यह मेरा देह है । और उसने कटोरा ले धन्य मानके
२४ उन्हें दिया और सभोंने उससे पिया । और उसने उनसे
कहा यह मेरा लोहू अर्थात नये नियमका लोहू है जो
२५ बहुतोंके लिये बहाया जाता है । मैं तुमसे सच कहता
हूं कि जिस दिनलों मैं ईश्वरके राज्यमें उसे नया न पीऊं

उस दिनलों मैं दाख रस फिर कभी न पीऊंगा। और २६
वे भजन गाके जैतून पर्ब्बतपर गये।
तब यीशुने उनसे कहा तुम सब इसी रात मेरे विष- २७
यमें ठोकर खाओगे क्योंकि लिखा है कि मैं गड़ेरियेको
मारूंगा और भेड़ें तितर बितर हो जायेंगीं। परन्तु मैं २८
अपने जी उठनेके पीछे तुम्हारे आगे गालीलको जाऊंगा।
पितरने उससे कहा यदि सब ठोकर खावें तौभी मैं २९
नहीं ठोकर खाऊंगा। यीशुने उससे कहा मैं तुझे सत्य ३०
कहता हूं कि आज इसी रात मुर्गेके दो बार बोलनेसे
आगे तू तीन बार मुझसे मुकरेगा। उसने और भी ३१
दृढ़तासे कहा जो आपके संग मुझे मरना हो तौभी मैं
आपसे कभी न मुकरूंगा. सभोंने भी वैसाही कहा।
वे गेतशिमनी नाम स्थानमें आये और यीशुने अपने ३२
शिष्योंसे कहा जबलों मैं प्रार्थना करूं तबलों तुम यहां
बैठो। और वह पितर और याकूब और योहनको अपने ३३
संग ले गया और ब्याकुल और बहुत उदास होने लगा।
और उसने उनसे कहा मेरा मन यहांलों अति उदास ३४
है कि मैं मरनेपर हूं. तुम यहां ठहरो और जागते
रहो। और थोड़ा आगे बढ़के वह भूमिपर गिरा और ३५
प्रार्थना किई कि जो हो सके तो वह घड़ी उससे टल
जाय। उसने कहा हे अब्बा हे पिता तुझसे सब कुछ हो ३६
सकता है यह कटोरा मेरे पाससे टाल दे तौभी जो मैं
चाहता हूं सो न होय पर जो तू चाहता है। तब उसने ३७
आ उन्हें सोते पाया और पितरसे कहा हे शिमोन सो
तू सोता है क्या तू एक घड़ी नहीं जाग सका। जागते रहो ३८

और प्रार्थना करो कि तुम परीक्षामें न पड़ो . मन तो
३९ तैयार है परन्तु शरीर दुर्बल है। उसने फिर जाके वही
४० बात कहके प्रार्थना किई । तब उसने लौटके उन्हें फिर
सोते पाया क्योंकि उनकी आंखें नींदसे भरी थीं . और
४१ वे नहीं जानते थे कि उसको क्या उत्तर देवें । और उसने
तीसरी बेर आ उनसे कहा सो तुम सोते रहते और
बिश्राम करते हो . बहुत है घड़ी आ पहुंची है देखो
मनुष्यका पुत्र पापियोंके हाथमें पकड़वाया जाता है ।
४२ उठो चलें देखो जो मुझे पकड़वाता है सो निकट आया है।
४३ वह बोलताही था कि यिहूदा जो बारह शिष्योंमेंसे
एक था तुरन्त आ पहुंचा और प्रधान याजकों और
अध्यापकों और प्राचीनोंकी ओरसे बहुत लोग खड्ग और
४४ लाठियां लिये हुए उसके संग। यीशुके पकड़वानेहारेने
उन्हें यह पता दिया था कि जिसको मैं चूमूं वही है उस-
४५ को पकड़के यत्नसे ले जाओ। और वह आया और तुरन्त
यीशु पास जाके कहा हे गुरु हे गुरु और उसको चूमा ।
४६ तब उन्होंने उसपर अपने हाथ डालके उसे पकड़ा ।
४७ जो लोग निकट खड़े थे उनमेंसे एकने खड्ग खींचके महा-
याजकके दासको मारा और उसका कान उड़ा दिया ।
४८ इसपर यीशुने लोगोंसे कहा क्या तुम मुझे पकड़नेको जैसे
४९ डाकूपर खड्ग और लाठियां लेके निकले हो। मैं मन्दिर-
में उपदेश करता हुआ प्रतिदिन तुम्हारे संग था और
तुमने मुझे नहीं पकड़ा . परन्तु यह इसलिये है कि धर्म्म-
५० पुस्तककी बातें पूरी होवें । तब सब शिष्य उसे छोड़के
भागे ।

और एक जवान जो देहपर चद्दर ओढ़े हुए था ५१
उसके पीछे हो लिया और प्यादोंने उसे पकड़ा। वह ५२
चद्दर छोड़के उनसे नंगा भागा।

वे यीशुको महायाजकके पास ले गये और सब प्रधान ५३
याजक और प्राचीन और अध्यापक लोग उस पास एकट्ठे
हुए। पितर दूर दूर उसके पीछे महायाजकके अंगनेके ५४
भीतरलों चला गया और प्यादोंके संग बैठके आग तापने
लगा। प्रधान याजकोंने और न्याइयोंकी सारी सभाने ५५
यीशुको घात करवानेके लिये उसपर साक्षी ढूंढ़ी परन्तु
न पाई। क्योंकि बहुतोंने उसपर झूठी साक्षी दिई परन्तु ५६
उनकी साक्षी एकसमान न थी। तब कितनोंने खड़े हो ५७
उसपर यह झूठी साक्षी दिई . कि हमोंने इसको कहते ५८
सुना कि मैं यह हाथका बनाया हुआ मन्दिर गिराऊंगा
और तीन दिनमें दूसरा बिन हाथका बनाया हुआ
मन्दिर उठाऊंगा। पर यूं भी उनकी साक्षी एकसमान न ५९
थी। तब महायाजकने बीचमें खड़ा हो यीशुसे पूछा क्या ६०
तू कुछ उत्तर नहीं देता है . ये लोग तेरे विरुद्ध क्या साक्षी
देते हैं। परन्तु वह चुप रहा और कुछ उत्तर न दिया . ६१
महायाजकने उससे फिर पूछा और उससे कहा क्या तू
उस परमधन्यका पुत्र ख्रीष्ट है। यीशुने कहा मैं हूं और ६२
तुम मनुष्यके पुत्रको सर्व्वशक्तिमानकी दहिनी ओर बैठे
और आकाशके मेघोंपर आते देखोगे। तब महायाजकने ६३
अपने वस्त्र फाड़के कहा अब हमें साक्षियोंका और क्या
प्रयोजन। ईश्वरकी यह निन्दा तुमने सुनी है तुम्हें क्या ६४
समझ पड़ता है . सभोंने उसको बधके योग्य ठहराया।

६५ तब कोई कोई उसपर थूकने लगे और उसका मुंह
ढांपके उसे घूसे मारके उससे कहने लगे कि भविष्यद्वा-
णी बोल . प्यादोंने भी उसे थपेड़े मारे ।
६६ जब पितर नीचे अंगनेमें था तब महायाजककी दा-
६७ सियोंमेंसे एक आई . और पितरको आग तापते देखके
उसपर दृष्टि करके बोली तू भी यीशु नासरीके संग था ।
६८ उसने मुकरके कहा मैं नहीं जानता और नहीं बूझ-
ता तू क्या कहती है . तब वह बाहर डेवढ़ीमें गया
६९ और मुर्ग बोला । दासी उसे फिर देखके जो लोग
निकट खड़े थे उनसे कहने लगी कि यह उनमेंसे एक
७० है . वह फिर मुकर गया । फिर थोड़ी बेर पीछे जो लोग
निकट खड़े थे उन्होंने पितरसे कहा तू सचमुच उनमेंसे
एक है क्योंकि तू गालीली भी है और तेरी बोली
७१ वैसीही है । तब वह धिक्कार देने और किरिया खाने लगा
कि मैं उस मनुष्यको जिसके विषयमें बोलते हो नहीं
७२ जानता हूं । तब मुर्ग दूसरी बार बोला और जो बात
यीशुने उससे कही थी कि मुर्गके दो बार बोलनेसे आगे
तू तीन बार मुझसे मुकरेगा उस बातको पितरने स्मरण
किया और सोच करते हुए रोने लगा ।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका पिलातके हाथ सोंपा जाना और पिलातका उसे बिचार करना और छोड़नेकी इच्छा करना । १५ यीशुका घातकोंके हाथ सोंपा जाना और योद्धाओंसे निन्दित होना । २२ उसका क्रूशपर चढ़ाया जाना । २९ उसपर लोगोंका हंसना । ३३ उसका पुकारना और सिरका पीना । ३७ उसका प्राण त्यागना और अद्भुत चिन्होंका प्रगट होना । ४० स्त्रियोंका क्रूशके समीप रहना । ४२ यूसफका यीशुको कबरमें रखना ।

भोरको प्रधान याजकोंने प्राचीनों और अध्यापकोंके १
संग बरन न्याइयोंकी सारी सभाने तुरन्त आपसमें बि-
चार कर यीशुको बांधा और उसे ले जाके पिलातको
सोंप दिया। पिलातने उससे पूछा क्या तू यिहूदियोंका २
राजा है . उसने उसको उत्तर दिया कि आपही तो कह-
ते हैं। और प्रधान याजकोंने उसपर बहुतसे दोष लगा- ३
ये। तब पिलातने उससे फिर पूछा क्या तू कुछ उत्तर ४
नहीं देता . देख वे तेरे बिरुद्ध कितनी साक्षी देते हैं।
परन्तु यीशुने और कुछ उत्तर नहीं दिया यहांलों कि ५
पिलातने अचंभा किया। उस पर्व्वमें वह एक बन्धुवेको ६
जिसे लोग मांगते थे उन्होंके लिये छोड़ देता था। बरब्बा ७
नाम एक मनुष्य अपने संगी राजद्रोहियोंके साथ जिन्हों-
ने बलवेमें नरहिंसा किई थी बंधा हुआ था। और ८
लोग पुकारके पिलातसे मांगने लगे कि जैसा उन्होंके
लिये सदा करता था तैसा करे। पिलातने उनको उत्तर ९
दिया क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यिहूदि-
योंके राजाको छोड़ देऊं। क्योंकि वह जानता था कि १०
प्रधान याजकोंने उसको डाहसे पकड़वाया था। परन्तु ११
प्रधान याजकोंने लोगोंको उस्काया इसलिये कि वह
बरब्बाहीको उनके लिये छोड़ देवे। पिलातने उत्तर देके १२
उनसे फिर कहा तुम क्या चाहते हो जिसे तुम यिहूदि-
योंका राजा कहते हो उससे मैं क्या करूं। उन्होंने फिर १३
पुकारा कि उसे क्रूशपर चढ़ाइये। पिलातने उनसे कहा १४
क्यों उसने कौनसी बुराई किई है . परन्तु उन्होंने बहुत
अधिक पुकारा कि उसे क्रूशपर चढ़ाइये।

१५ तब पिलातने लोगोंको सन्तुष्ट करनेकी इच्छा कर
बरब्बाको उन्हेंाके लिये छोड़ दिया और यीशुको कोड़े
१६ मारके क्रूशपर चढ़ाये जानेको सोंप दिया। तब योद्धाओं-
ने उसे घरके अर्थात अध्यक्षभवनके भीतर ले जाके
१७ सारी पलटनको एकट्ठे बुलाया। और उन्होंने उसे बैजनी
बस्त्र पहिराया और कांटोंका मुकुट गून्थके उसके सिर-
१८ पर रखा. और उसे नमस्कार करने लगे कि हे यिहू-
१९ दियोंके राजा प्रणाम। और उन्होंने नरकटसे उसके
सिरपर मारा और उसपर थूका और घुटने टेकके
२० उसको प्रणाम किया। जब वे उससे ठट्ठा कर चुके तब
उससे वह बैजनी बस्त्र उतारके और उसका निज
बस्त्र उसको पहिराके उसे क्रूशपर चढ़ानेको बाहर ले
२१ गये। और उन्होंने कुरीनी देशके एक मनुष्यको अर्थात
सिकन्दर और रूफके पिता शिमोनको जो गांवसे आते
हुए उधरसे जाता था बेगार पकड़ा कि उसका क्रूश ले
चले।

२२ तब वे उसे गलगथा स्थानपर लाये जिसका अर्थ यह
२३ है खोपड़ीका स्थान। और उन्होंने दाख रसमें मुर मि-
२४ लाके उसे पीनेको दिया परन्तु उसने न लिया। तब
उन्होंने उसको क्रूशपर चढ़ाया और उसके कपड़ोंपर
चिट्ठियां डालके कि कौन किसको लेगा उन्हें बांट लिया।
२५ एक पहर दिन चढ़ा था कि उन्होंने उसको क्रूशपर चढ़ा-
२६ या। और उसका यह दोषपत्र ऊपर लिखा गया कि यिहू-
२७ दियोंका राजा। उन्होंने उसके संग दो डाकूओंको एकको
उसकी दहिनी ओर और दूसरेको बाईं ओर क्रूशोंपर

चढ़ाया। तब धर्म्मपुस्तकका यह बचन पूरा हुआ कि २८
वह कुकर्म्मियोंके संग गिना गया।

जो लोग उधरसे आते जाते थे उन्होंने अपने सिर २९
हिलाके और यह कहके उसकी निन्दा किई . कि हा ३०
मन्दिरके ढानेहारे और तीन दिनमें बनानेहारे अपनेको
बचा और क्रूशपरसे उतर आ। इसी रीतिसे प्रधान ३१
याजकोंने भी अध्यापकोंके संग आपसमें ठट्ठा कर कहा
उसने औरोंको बचाया अपनेको बचा नहीं सकता है।
इस्रायेलका राजा खीष्ट क्रूशपरसे अब उतर आवे कि हम ३२
देखके बिश्वास करें . जो उसके संग क्रूशोंपर चढ़ाये गये
उन्होंने भी उसकी निन्दा किई।

जब दो पहर हुआ तब सारे देशमें तीसरे पहरलों ३३
अंधकार हो गया। तीसरे पहर यीशुने बड़े शब्दसे पुका- ३४
रके कहा एली एली लामा शबक्तनी अर्थात हे मेरे
ईश्वर हे मेरे ईश्वर तूने क्यों मुझे त्यागा है। जो ३५
लोग निकट खड़े थे उनमेंसे कितनोंने यह सुनके
कहा देखो वह एलियाहको बुलाता है। और एकने ३६
दौड़के इस्पंजको सिरकेमें भिंगाया और नलपर रखके
उसे पीनेको दिया और कहा रहने दो हम देखें कि
एलियाह उसे उतारनेको आता है कि नहीं।

तब यीशुने बड़े शब्दसे पुकारके प्राण त्यागा। ३७
और मन्दिरका परदा ऊपरसे नीचेलों फटके दो भाग ३८
हो गया। जो शतपति उसके सन्मुख खड़ा था उसने ३९
जब उसे यूं पुकारके प्राण त्यागते देखा तब कहा सच-
मुच यह मनुष्य ईश्वरका पुत्र था।

४० कितनी स्त्रियां भी दूरसे देखती रहीं जिन्होंमें मरि-
यम मगदलीनी और छोटे याकूबकी औ योशीकी
४१ माता मरियम और शालोमी थीं । जब यीशु गालीलमें
था तब ये उसके पीछे हो लेती थीं और उसकी सेवा
करती थीं . बहुतसी और स्त्रियां भी जो उसके संग
यिरूशलीममें आईं वहां थीं ।
४२ यह दिन तैयारीका दिन था जो बिश्रामवारके एक
४३ दिन आगे है . इसलिये जब सांझ हुई तब अरिमथिया
नगरका यूसफ एक आदरवन्त मन्त्री जो आप भी
ईश्वरके राज्यकी बाट जोहता था आया और साहससे
४४ पिलातके पास जाके यीशुकी लोथ मांगी । पिलातने
अचंभा किया कि वह क्या मर गया है और शतपतिको
अपने पास बुलाके उससे पूछा क्या उसको मरे कुछ बेर
४५ हुई । शतपतिसे जानके उसने यूसफको लोथ दिई ।
४६ यूसफने एक चद्दर मोल लेके यीशुको उतारके उस
चद्दरमें लपेटा और उसे एक कबरमें जो पत्थरमें खोदी
हुई थी रखा और कबरके द्वारपर पत्थर लुढ़का दिया।
४७ मरियम मगदलीनी और योशीकी माता मरियमने वह
स्थान देखा जहां वह रखा गया ।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

१ स्त्रियोंका दूतसे यीशुके जी उठनेका समाचार सुनना । ९ यीशुका मरियम मगदलीनीको दर्शन देना । १२ दो शिष्योंको दर्शन देना । १४ ग्यारह शिष्योंको दर्शन देना और उन्हें प्रेरण करना । १९ स्वर्गमें जाना ।

१ जब बिश्रामवार बीत गया तब मरियम मगदलीनी
और याकूबकी माता मरियम और शालोमीने सुगन्ध

मोल लिया कि आके यीशुको मलें । और अठवारेके २
पहिले दिन बड़ी भोर सूर्य्य उदय होते हुए वे कबरपर
आईं । और वे आपसमें बोलीं कौन हमारे लिये कब- ३
रके द्वारपरसे पत्थर लुढ़कावेगा । परन्तु उन्होंने दृष्टि कर ४
देखा कि पत्थर लुढ़काया गया है . और वह बहुत बड़ा
था । कबरके भीतर जाके उन्होंने उजले लंबे बस्त्र पहिने ५
हुए एक जवानको दहिनी ओर बैठे देखा और चकित
हुईं । उसने उनसे कहा चकित मत होओ तुम यीशु ६
नासरीको जो क्रूशपर घात किया गया ढूंढ़ती हो . वह
जी उठा है वह यहां नहीं है . देखो यही स्थान है जहां
उन्होंने उसे रखा । परन्तु जाके उसके शिष्योंसे और ७
पितरसे कहो कि वह तुम्हारे आगे गालीलको जाता है .
जैसे उसने तुमसे कहा वैसे तुम उसे वहां देखोगे। वे ८
शीघ्र निकलके कबरसे भाग गईं और कम्पित और बि-
स्मित हुईं और किसीसे कुछ न बोलीं क्योंकि वे डरती थीं।

यीशुने अठवारेके पहिले दिन भोरको जी उठके ९
पहिले मरियम मगदलीनीको जिसमेंसे उसने सात
भूत निकाले थे दर्शन दिया । उसने जाके उसके संगियों- १०
को जो शोक करते और रोते थे कह दिया । उन्होंने ११
जब सुना कि वह जीता है और मरियमसे देखा गया
है तब प्रतीति न किई ।

इसके पीछे उसने उनमेंसे दोको जो मार्गमें चलते १२
और किसी गांवको जाते थे दूसरे रूपमें दर्शन दिया।
उन्होंने भी जाके औरोंसे कह दिया परन्तु उन्होंने उन- १३
की भी प्रतीति न किई ।

१४ 　पीछे उसने एग्यारह शिष्योंको जब वे भोजनपर
बैठे थे दर्शन दिया और उनके अबिश्वास और मनकी
कठोरतापर उलहना दिया इसलिये कि जिन्होंने उसे
जी उठे हुए देखा था उन लोगोंकी उन्होंने प्रतीति
१५ न किई । और उसने उनसे कहा तुम सारे जगतमें जाके
१६ हर एक मनुष्यको सुसमाचार सुनाओ । जो बिश्वास
करे और बपतिसमा लेवे सो त्राण पावेगा परन्तु जो
१७ बिश्वास न करे सो दंडके योग्य ठहराया जायगा । और
ये चिन्ह बिश्वास करनेहारोंके संग प्रगट होंगे . वे मेरे
नामसे भूतोंको निकालेंगे वे नई नई भाषा बोलेंगे ।
१८ वे सांपोंको उठा लेंगे और जो वे कुछ बिष पीवें तो
उससे उनकी कुछ हानि न होगी . वे रोगियोंपर
हाथ रखेंगे और वे चंगे हो जायेंगे ।
१९ 　सो प्रभु उन्होंसे बोलनेके पीछे स्वर्गपर उठा लिया
२० गया और ईश्वरकी दहिनी ओर बैठा । और उन्होंने
निकलके सर्ब्बत्र उपदेश किया और प्रभुने उनके संग
कार्य्य किया और जो चिन्ह साथमें प्रगट होते थे उन्होंसे
बचनको दृढ़ किया । आमीन ॥

लूक रचित सुसमाचार ।

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ सुसमाचार लिखनेका प्रयोजन । ५ इलीशिबाको गर्भ रहनेका बर्णन । २६ मरियमको गर्भ रहनेका वर्णन । ३९ मरियम और इलीशिबाकी भेंट । ४६ मरियमकी गीत । ५७ योहनके जन्मका वर्णन । ६७ जिखरियाहकी भविष्यद्वाणी । ८० योहनका जंगलमें रहना ।

हे महामहिमन थियोफिल जो बातें हम लोगोंमें १
अति प्रमाण हैं उन बातोंका बृत्तान्त जिस रीतिसे उन्होंने
जो आरंभसे साक्षी और बचनके सेवक थे हम लोगोंको
सोंपा . उसी रीतिसे लिखनेको बहुतोंने हाथ लगाया २
है . इसलिये मुझे भी जिसने सब बातोंको आदिसे ठीक ३
करके जांचा है अच्छा लगा कि एक ओरसे आपके पास
लिखूं . इसलिये कि जिन बातोंका उपदेश आपको दिया ४
गया है आप उन बातोंकी दृढ़ता जानें ।

यिहूदिया देशके हेरोद राजाके दिनोंमें अबियाहकी ५
पारीमें जिखरियाह नाम एक याजक था और उसकी
स्त्री जिसका नाम इलीशिबा था हारोनके बंशकी थी ।
वे दोनों ईश्वरके सन्मुख धर्म्मी थे और परमेश्वरकी ६
समस्त आज्ञाओं और बिधियोंपर निर्दोष चलते थे ।
उनको कोई लड़का न था क्योंकि इलीशिबा बांझ थी और ७
वे दोनों बूढ़े थे । जब जिखरियाह अपनी पारीकी रीति- ८
पर ईश्वरके आगे याजकका काम करता था . तब चिट्ठि- ९
यां डालनेसे उसको याजकीय ब्यवहारके अनुसार परमे-

१० ईश्वरके मन्दिरमें जाके धूप जलाना पड़ा । धूप जलानेके
समय लोगोंकी सारी मंडली बाहर प्रार्थना करती थी ।
११ तब परमेश्वरका एक दूत धूपकी बेदीकी दहिनी ओर
१२ खड़ा हुआ उसको दिखाई दिया । जिखरियाह उसे देखके
१३ घबरा गया और उसे डर लगा । दूतने उससे कहा हे
जिखरियाह मत डर क्योंकि तेरी प्रार्थना सुनी गई है
और तेरी स्त्री इलीशिबा पुत्र जनेगी और तू उसका नाम
१४ योहन रखना । तुझे आनन्द और आह्लाद होगा और
१५ बहुत लोग उसके जन्मनेसे आनन्दित होंगे । क्योंकि वह
परमेश्वरके सन्मुख बड़ा होगा और न दाख रस न मद्य
पीयेगा और अपनी माताके गर्भहीसे पवित्र आत्मासे
१६ परिपूर्ण होगा । और वह इस्रायेलके सन्तानोंमेंसे बहुतों-
१७ को परमेश्वर उनके ईश्वरकी ओर फिरावेगा । वह उस-
के आगे एलियाहके आत्मा और सामर्थ्यसे जायगा इस-
लिये कि पितरोंका मन लड़कोंकी ओर फेर दे और
आज्ञा लंघन करनेहारोंको धर्म्मियोंके मतपर लावे और
१८ प्रभुके लिये एक सजे हुए लोगको तैयार करे । तब
जिखरियाहने दूतसे कहा यह मैं किस रीतिसे जानूं क्यों-
१९ कि मैं बूढ़ा हूं और मेरी स्त्री भी बूढ़ी है । दूतने उसको
उत्तर दिया कि मैं जब्रायेल हूं जो ईश्वरके साम्ने खड़ा
रहता हूं और मैं तुझसे बात करने और तुझे यह सु-
२० समाचार सुनानेको भेजा गया हूं । और देख जिस दिनलों
यह सब पूरा न हो जाय उस दिनलों तू गूंगा हो रहेगा
और बोल न सकेगा क्योंकि तूने मेरी बातोंपर जो अपने
२१ समयमें पूरी किई जायेंगीं बिश्वास नहीं किया । लोग

जिखरियाहकी बाट देखते थे और अचंभा करते थे कि
उसने मन्दिरमें बिलंब किया । जब वह बाहर आया २२
तब उन्होंसे बोल न सका और उन्होंने जाना कि उसने
मन्दिरमें कोई दर्शन पाया था और वह उन्होंसे सैन
करने लगा और गूंगा रह गया । जब उसकी सेवाके २३
दिन पूरे हुए तब वह अपने घर गया । इन दिनोंके २४
पीछे उसकी स्त्री इलीशिबा गर्भवती हुई और अपने-
को पांच मास यह कहके छिपाया . कि मनुष्योंमें मेरा २५
अपमान मिटानेको परमेश्वरने इन दिनोंमें कृपादृष्टि
कर मुझसे ऐसा व्यवहार किया है ।

छठवें मासमें ईश्वरने जब्रायेल दूतको गालील देशके २६
एक नगरमें जो नासरत कहावता है किसी कुंवारीके
पास भेजा . जिसकी मंगनी यूसफ नाम दाऊदके घरा- २७
नेके एक पुरुषसे हुई थी . उस कुंवारीका नाम मरियम
था । दूतने घरमें प्रवेश कर उससे कहा हे अनुग्रहीत २८
कल्याण परमेश्वर तेरे संग है स्त्रियोंमें तू धन्य है। मरि- २९
यम उसे देखके उसके बचनसे घबरा गई और सोचने
लगी कि यह कैसा नमस्कार है । तब दूतने उससे कहा ३०
हे मरियम मत डर क्योंकि ईश्वरका अनुग्रह तुझपर
हुआ है । देख तू गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी और ३१
उसका नाम तू यीशु रखना । वह महान होगा और ३२
सर्ब्बप्रधानका पुत्र कहावेगा और परमेश्वर ईश्वर उसके
पिता दाऊदका सिंहासन उसको देगा । और वह या- ३३
कूबके घरानेपर सदा राज्य करेगा और उसके राज्यका
अन्त न होगा । तब मरियमने दूतसे कहा यह किस ३४

३५ रीतिसे होगा क्योंकि मैं पुरुषको नहीं जानती हूं। दूतने
उसको उत्तर दिया कि पवित्र आत्मा तुझपर आवेगा
और सर्व्वप्रधानकी शक्ति तुझपर छाया करेगी इसलिये
३६ वह पवित्र बालक ईश्वरका पुत्र कहावेगा। और देख
तेरी कुटुंबिनी इलीशिबाको भी बुढ़ापेमें पुत्रका गर्भ रहा
है और जो बांझ कहावती थी उसका यह छठवां मास है।
३७ क्योंकि कोई बात ईश्वरसे असाध्य नहीं है। मरियमने
३८ कहा देखिये मैं परमेश्वरकी दासी मुझे आपके बचनके
अनुसार होय. तब दूत उसके पाससे चला गया।
३९ उन दिनोंमें मरियम उठके शीघ्रसे पर्व्वतीय देशमें
४० यिहूदाके एक नगरको गई. और जिखरियाहके घरमें
४१ प्रवेश कर इलीशिबाको नमस्कार किया। ज्योंही इली-
शिबाने मरियमका नमस्कार सुना त्योंही बालक उसके
गर्भमें उछला और इलीशिबा पवित्र आत्मासे परिपूर्ण
४२ हुई। और उसने बड़े शब्दसे बोलते हुए कहा तू स्त्रि-
४३ योंमें धन्य है और तेरे गर्भका फल धन्य है। और यह
मुझे कहांसे हुआ कि मेरे प्रभुकी माता मेरे पास आवे।
४४ देख ज्योंही तेरे नमस्कारका शब्द मेरे कानोंमें पड़ा त्यों-
४५ ही बालक मेरे गर्भमें आनन्दसे उछला। और धन्य
बिश्वास करनेहारी कि परमेश्वरकी ओरसे जो बातें
तुझसे कही गई हैं सो पूरी किई जायेंगीं।
४६ तब मरियमने कहा मेरा प्राण परमेश्वरकी महिमा
४७ करता है. और मेरा आत्मा मेरे त्राणकर्त्ता ईश्वरसे
४८ आनन्दित हुआ है। क्योंकि उसने अपनी दासीकी
दीनताईपर दृष्टि किई है देखो अबसे सब समयोंके लोग

मुझे धन्य कहेंगे। क्योंकि सर्व्वशक्तिमानने मेरे लिये ४९
महाकार्य्योंको किया है और उसका नाम पवित्र है।
उसकी दया उन्होंपर जो उससे डरते हैं पीढ़ीसे पीढ़ीलों ५०
नित्य रहती है। उसने अपनी भुजाका बल दिखाया ५१
है उसने अभिमानियोंको उनके मनके परामर्शमें छिन्न
भिन्न किया है। उसने बलवानोंको सिंहासनोंसे उतारा ५२
और दीनोंको ऊंचा किया है। उसने भूखोंको उत्तम ५३
बस्तुओंसे तृप्त किया और धनवानोंको छूछे हाथ फेर
दिया है। उसने जैसे हमारे पितरोंसे कहा. तैसे सर्व्वदा ५४ ५५
इब्राहीम और उसके बंशपर अपनी दया स्मरण करनेके
कारण अपने सेवक इस्रायेलका उपकार किया है। मरि- ५६
यम तीन मासके अटकल इलीशिबाके संग रही तब
अपने घरको लौटी।

तब इलीशिबाके जननेका समय पूरा हुआ और वह ५७
पुत्र जनी। उसके पड़ोसियों और कुटुंबोंने सुना कि ५८
परमेश्वरने उसपर बड़ी दया किई है और उन्होंने उसके
संग आनन्द किया। आठवें दिन वे बालकका खतना ५९
करनेको आये और उसके पिताके नामपर उसका नाम
जिखरियाह रखने लगे। इसपर उसकी माताने कहा सो ६०
नहीं परन्तु उसका नाम योहन रखा जायगा। उन्होंने ६१
उससे कहा आपके कुटुंबोंमेंसे कोई नहीं है जो इस
नामसे कहावता है। तब उन्होंने उसके पितासे सैन ६२
किया कि आप क्या चाहते हैं कि इसका नाम रखा
जाय। उसने पटिया मंगाके यह लिखा कि उसका नाम ६३
योहन है. इससे वे सब अचंभित हुए। तब उसका ६४

मुंह और उसकी जीभ तुरन्त खुल गये और वह
६५ बोलने और ईश्वरका धन्यबाद करने लगा। और
उन्होंके आसपासके सब रहनेहारोंको भय हुआ और
इन सब बातोंकी चर्चा यिहूदियाके सारे पर्ब्बतीय
६६ देशमें होने लगी। और सब सुननेहारोंने अपने अपने
मनमें सोच कर कहा यह कैसा बालक होगा. और
परमेश्वरका हाथ उसके संग था।
६७ तब उसका पिता जिखरियाह पवित्र आत्मासे
६८ परिपूर्ण हुआ और यह भविष्यद्वाणी बोला. कि परमेश्वर
इस्रायेलका ईश्वर धन्य होवे कि उसने अपने लोगोंपर
६९ दृष्टि कर उन्होंका उद्धार किया है. और जैसे उसने अपने
पवित्र भविष्यद्वक्ताओंके मुखसे जो आदिसे होते आये
७० हैं कहा. तैसे हमारे लिये अपने सेवक दाऊदके घरानेमें
७१ एक त्राणके सींगको. अर्थात हमारे शत्रुओंसे और हमारे
सब बैरियोंके हाथसे एक बचानेहारेको प्रगट किया है.
७२ इसलिये कि वह हमारे पितरोंके संग दयाका व्यवहार
७३ करे और अपना पवित्र नियम स्मरण करे. अर्थात वह
७४ किरिया जो उसने हमारे पिता इब्राहीमसे खाई. कि
७५ हमें यह देवे कि हम अपने शत्रुओंके हाथसे बचके. निर्भय
जीवन भर प्रतिदिन उसके सन्मुख पवित्रताई और धर्म्मसे
७६ उसकी सेवा करें। और तू हे बालक सर्ब्बप्रधानका
भविष्यद्वक्ता कहावेगा क्योंकि तू परमेश्वरके आगे जाय-
७७ गा कि उसके पंथ बनावे. अर्थात हमारे ईश्वरकी महा
करुणासे उसके लोगोंको उन्होंके पापमोचनके द्वारासे
७८ निस्तारका ज्ञान देवे। उसी करुणासे सूर्य्यका उदय

ऊपरसे हमोंपर प्रकाशित हुआ है . कि अंधकारमें ७९
और मृत्युकी छायामें बैठनेहारोंको ज्योति देवे और
हमारे पांव कुशलके मार्गपर सीधे चलावे ।
और वह बालक बढ़ा और आत्मामें बलवन्त ८०
होता गया और इस्रायेली लोगोंपर प्रगट होनेके
दिनलों जंगली स्थानोंमें रहा ।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ यूसफका बैतलहममें जाना और यीशुका जन्म । ८ स्वर्गदूतोंका गड़ेरियोंको यीशुके जन्मका सन्देश देना । २१ यीशुको खतना करना और ईश्वरके आगे धरना । २५ शिमियोन और हन्नाका उसे चीन्हना और उसका नासरतको लौटना । ४१ बारह बरसके वयसमें उपदेशकोंके संग उसकी बातचीत ।

उन दिनोंमें अगस्त कैसर महाराजाकी ओरसे आज्ञा १
हुई कि उसके राज्यके सब लोगोंके नाम लिखे जावें ।
कुरीनियके सुरिया देशके अध्यक्ष होनेके पहिले यह नाम २
लिखाई हुई । और सब लोग नाम लिखानेको अपने ३
अपने नगरको गये । यूसफ भी इसलिये कि वह दाऊदके ४
घराने औ बंशका था . मरियम स्त्रीके संग जिससे ५
उसकी मंगनी हुई थी नाम लिखानेको गालील देशके
नासरत नगरसे यिहूदियामें बैतलहम नाम दाऊदके
नगरको गया . उस समय मरियम गर्भवती थी । उनके ६
वहां रहते उसके जननेके दिन पूरे हुए । और वह ७
अपना पहिलौठा पुत्र जनी और उसको कपड़ेमें लपेटके
चरनीमें रखा क्योंकि उनके लिये सरायमें जगह न थी ।
उस देशमें कितने गड़ेरिये थे जो खेतमें रहते थे और ८

९ रातको अपने झुंडका पहरा देते थे। और देखो परमेश्वर
का एक दूत उनके पास आ खड़ा हुआ और परमे-
श्वरका तेज उनकी चारों ओर चमका और वे बहुत
१० डर गये। दूतने उनसे कहा मत डरो क्योंकि देखो मैं
तुम्हें बड़े आनन्दका सुसमाचार सुनाता हूं जिससे सब
११ लोगोंको आनन्द होगा . कि आज दाऊदके नगरमें
तुम्हारे लिये एक चाणकर्त्ता अर्थात खीष्ट प्रभु जन्मा है।
१२ और तुम्हारे लिये यह पता होगा कि तुम एक बालक-
को कपड़ेमें लपेटे हुए और चरनीमें पड़े हुए पाओगे।
१३ तब अचांचक स्वर्गीय सेनामेंसे बहुतेरे उस दूतके संग
१४ प्रगट हुए और ईश्वरकी स्तुति करते हुए बोले. सबसे
ऊंचे स्थानमें ईश्वरका गुणानुबाद और पृथिवीपर
१५ शांति होय . मनुष्योंपर प्रसन्नता है। ज्योंही दूतगण
उन्होंके पाससे स्वर्गको गये त्योंही गड़ेरियोंने आपसमें
कहा आओ हम बैतलहमलों जाके यह बात जो हुई
१६ है जिसे परमेश्वरने हमोंको बताया है देखें। और
उन्होंने शीघ्र जाके मरियम और यूसफको और बालक-
१७ को चरनीमें पड़े हुए पाया। इन्हें देखके उन्होंने वह
बात जो इस बालकके विषयमें उन्होंसे कही गई थी
१८ प्रचार किई। और सब सुननेहारे उन बातोंसे जो
१९ गड़ेरियोंने उनसे कहीं अचंभित हुए। परन्तु मरियमने
इन सब बातोंको अपने मनमें रखा और उन्हें सोच-
२० ती रही। तब गड़ेरिये जैसा उन्होंसे कहा गया था
तैसाही सब बातें सुनके और देखके उन बातोंके लिये
ईश्वरका गुणानुबाद और स्तुति करते हुए लौट गये।

जब आठ दिन पूरे होनेसे बालकका खतना कर- २१
ना हुआ तब उसका नाम यीशु रखा गया कि वही
नाम उसके गर्भमें पड़नेके आगे दूतसे रखा गया था।
और जब मूसाकी व्यवस्थाके अनुसार उनके शुद्ध होने- २२
के दिन पूरे हुए तब वे बालकको यिरूशलीममें ले
गये . कि जैसा परमेश्वरकी व्यवस्थामें लिखा है कि २३
हर एक पहिलौठा नर परमेश्वरके लिये पवित्र कहा-
वेगा तैसा उसे परमेश्वरके आगे धरें . और परमे- २४
श्वरकी व्यवस्थाकी बातके अनुसार पंडुकोंकी जोड़ी
अथवा कपोतके दो बच्चे बलिदान करें।

तब देखो यिरूशलीममें शिमियोन नाम एक मनुष्य २५
था . वह मनुष्य धर्म्मी और भक्त था और इस्रायेलकी
शांतिकी बाट जोहता था और पवित्र आत्मा उसपर
था। पवित्र आत्मासे उसको प्रतिज्ञा दिई गई थी कि २६
जबलों तू परमेश्वरके अभिषिक्त जनको न देखे तबलों
मृत्युको न देखेगा। और वह आत्माकी शिक्षासे मन्दिर- २७
में आया और जब उस बालक अर्थात यीशुके माता
पिता उसके विषयमें व्यवस्थाके व्यवहारके अनुसार
करनेको उसे भीतर लाये . तब शिमियोनने उसको २८
अपनी गोदीमें लेके ईश्वरका धन्यवाद कर कहा . हे २९
प्रभु अभी तू अपने वचनके अनुसार अपने दासको
कुशलसे बिदा करता है . क्योंकि मेरी आंखोंने तेरे ३०
त्राणकर्त्ताको देखा है . जिसे तूने सब देशोंके लोगोंके ३१
सन्मुख तैयार किया है . कि वह अन्यदेशियोंको प्रकाश ३२
करनेकी ज्योति और तेरे इस्रायेली लोगका तेज होवे।

३३ यूसफ और यीशुकी माता इन बातोंसे जो उसके विषयमें
३४ कही गईं अचंभा करते थे । तब शिमियोनने उनको
आशीस देके उसकी माता मरियमसे कहा देख यह तो
इस्रायेलमें बहुतोंके गिरने और फिर उठनेका कारण
होगा और एक चिन्ह जिसके बिरुद्धमें बातें किई जायेंगीं.
३५ हां तेरा निज प्राण भी खड्गसे वारपार छिदेगा. इससे
बहुत हृदयोंके बिचार प्रगट किये जायेंगे ।
३६ और हन्ना नाम एक भविष्यद्वक्ती थी जो आशेरके
कुलके पनूएलकी पुत्री थी. वह बहुत बूढ़ी थी और अप-
३७ ने कुंवारपनसे सात बरस स्वामीके संग रही थी । और
वह बरस चौरासी एककी बिधवा थी जो मन्दिरसे बाहर
न जाती थी परन्तु उपवास औ प्रार्थनासे रात दिन सेवा
३८ करती थी । उसने भी उसी घड़ी निकट आके परमेश्वर-
का धन्य माना और यिरूशलीममें जो लोग उद्धारकी
बाट देखते थे उन सभोंसे यीशुके विषयमें बात किई ।
३९ जब वे परमेश्वरकी व्यवस्थाके अनुसार सब कुछ कर
४० चुके तब गालीलको अपने नगर नासरतको लौटे । और
बालक बढ़ा और आत्मामें बलवन्त और बुद्धिसे परि-
पूर्ण होता गया और ईश्वरका अनुग्रह उसपर था ।
४१ उसके माता पिता बरस बरस निस्तार पर्ब्बमें यिरू-
४२ शलीमको जाते थे । जब वह बारह बरसका हुआ तब
४३ वे पर्ब्बकी रीतिपर यिरूशलीमको गये । और जब वे
पर्ब्बके दिनोंको पूरा करके लौटने लगे तब वह लड़का
यीशु यिरूशलीममें रह गया परन्तु यूसफ और उसकी
४४ माता नहीं जानते थे । वे यह समझके कि वह संग-

वाले पथिकोंके बीचमें है एक दिनकी बाट गये और
अपने कुटुंबों और चिन्हारोंके बीचमें उसको ढूंढ़ने
लगे। परन्तु जब उन्होंने उसको न पाया तब उसे ढूंढ़ते ४५
हुए यिरूशलीमको फिर गये। तीन दिनके पीछे उन्होंने ४६
उसे मन्दिरमें पाया कि उपदेशकोंके बीचमें बैठा हुआ
उनकी सुनता और उनसे प्रश्न करता था। और जो ४७
लोग उसकी सुनते थे सो सब उसकी बुद्धि और उसके
उत्तरोंसे बिस्मित हुए। और वे उसे देखके अचंभित ४८
हुए और उसकी माताने उससे कहा हे पुत्र हमसे क्यों
ऐसा किया . देख तेरा पिता और मैं कुढ़ते हुए तुझे
ढूंढ़ते थे। उसने उनसे कहा तुम क्यों मुझे ढूंढ़ते थे . क्या ४९
नहीं जानते थे कि मुझे अपने पिताके विषयोंमें लगा
रहना अवश्य है। परन्तु उन्होंने यह बात जो उसने ५०
उनसे कही न समझी। तब वह उनके संग चला और ५१
नासरतमें आया और उनके बशमें रहा और उसकी
माताने इन सब बातोंको अपने मनमें रखा। और ५२
यीशुकी बुद्धि और डील और उसपर ईश्वरका और
मनुष्योंका अनुग्रह बढ़ता गया।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ योहन बपतिसमा देनेहारेका वृत्तान्त। ७ उसका उपदेश और भविष्यद्वाक्य। १९ उसका बन्दीगृहमें डाला जाना। २१ यीशुका बपतिसमा लेना। २३ उसकी बंशावलि।

तिबरिय कैसरके राज्यके पन्द्रहवें बरसमें जब पन्तिय १
पिलात यिहूदियाका अध्यक्ष था और हेरोद एक चौ-
थाई अर्थात गालीलका राजा और उसका भाई

फिलिप एक चौथाई अर्थात इतूरिया और त्राखोनीतिया
देशोंका राजा और लुसानिय एक चौथाई अर्थात अबि-
२ लीनी देशका राजा था. और जब हन्नस और कियाफा
महायाजक थे तब ईश्वरका बचन जंगलमें जिखरियाहके
३ पुत्र योहन पास आया। और वह यर्दन नदीके आस-
पासके सारे देशमें आके पापमोचनके लिये पश्चात्तापके
४ बपतिसमाका उपदेश करने लगा। जैसे यिशैयाह भवि-
ष्यद्वक्ताके कहे हुए पुस्तकमें लिखा है कि किसीका शब्द
हुआ जो जंगलमें पुकारता है कि परमेश्वरका पन्थ
५ बनाओ उसके राजमार्ग सीधे करो। हर एक नाला भरा
जायगा और हर एक पर्ब्बत और टीला नीचा किया
जायगा और टेढ़े पन्थ सीधे और ऊंचनीच मार्ग चौरस
६ बन जायेंगे। और सब प्राणी ईश्वरके त्राणको देखेंगे।
७ तब बहुत लोग जो उससे बपतिसमा लेनेको निकल
आये उन्होंसे योहनने कहा हे सांपोंके बंश किसने तुम्हें
८ आनेवाले क्रोधसे भागनेको चिताया है। पश्चात्तापके
योग्य फल लाओ और अपने अपने मनमें मत कहने
लगो कि हमारा पिता इब्राहीम है क्योंकि मैं तुमसे
कहता हूं कि ईश्वर इन पत्थरोंसे इब्राहीमकेलिये सन्तान
९ उत्पन्न कर सकता है। और अब भी कुल्हाड़ी पेड़ोंकी
जड़पर लगी है इसलिये जो जो पेड़ अच्छा फल नहीं
फलता है सो काटा जाता और आगमें डाला जाता
१० ११ है। तब लोगोंने उससे पूछा तो हम क्या करें। उसने
उन्हें उत्तर दिया कि जिस पास दो अंगे हों सो जिस पास
न हो उसके साथ बांट लेवे और जिस पास भोजन होय

सो भी वैसाही करे । कर उगाहनेहारे भी बपतिसमा १२
लेनेको आये और उससे बोले हे गुरु हम क्या करें । उसने १३
उनसे कहा जो तुम्हें ठहराया गया है उससे अधिक मत
ले लो । योद्धाओंने भी उससे पूछा हम क्या करें . उसने १४
उनसे कहा किसीपर उपद्रव मत करो और न झूठे
दोष लगाओ और अपने वेतनसे सन्तुष्ट रहो ।

जब लोग आस देखते थे और सब अपने अपने १५
मनमें योहनके विषयमें बिचार करते थे कि होय न होय
यही खीष्ट है . तब योहनने सभोंको उत्तर दिया कि मैं १६
तो तुम्हें जलमें बपतिसमा देता हूं परन्तु वह आता है
जो मुझसे अधिक शक्तिमान है मैं उसके जूतोंका बंध
खोलनेके योग्य नहीं हूं वह तुम्हें पवित्र आत्मामें और
आगमें बपतिसमा देगा । उसका सूप उसके हाथमें है १७
और वह अपना सारा खलिहान शुद्ध करेगा और गेहूंको
अपने खत्तेमें एकट्ठा करेगा परन्तु भूसीको उस आगसे
जो नहीं बुझती है जलावेगा । उसने बहुत और बातोंका १८
भी उपदेश करके लोगोंको सुसमाचार सुनाया ।

पर उसने चौथाईके राजा हेरोदको उसके भाई १९
फिलिपकी स्त्री हेरोदियाके विषयमें और सब कुकर्म्मोंके
विषयमें जो उसने किये थे उलहना दिया । इसलिये २०
हेरोदने उन सभोंके उपरांत यह कुकर्म्म भी किया कि
योहनको बन्दीगृहमें मूंद रखा ।

सब लोगोंके बपतिसमा लेनेके पीछे जब यीशुने भी २१
बपतिसमा लिया था और प्रार्थना करता था तब स्वर्ग
खुल गया । और पवित्र आत्मा देही रूपमें कपोतकी २२

नाईं उसपर उतरा और यह आकाशवाणी हुई कि तू
मेरा प्रिय पुत्र है मैं तुझसे अति प्रसन्न हूं ।
२३ और यीशु आप तीस बरसके अटकल होने लगा
२४ और लोगोंकी समझमें यूसफका पुत्र था । यूसफ
एलीका पुत्र था वह मत्तातका पुत्र वह लेवीका वह
२५ मलकिका वह यान्नाका वह यूसफका . वह मत्तथियाहका
वह आमोसका वह नहूमका वह इसलिका वह नग्गई-
२६ का . वह माटका वह मत्तथियाहका वह शिमिईका
२७ वह यूसफका वह यिहूदाका . वह योहानाका वह री-
साका वह जिरुबाबुलका वह शलतियेलका वह नेरिका .
२८ वह मलकिका वह अद्दीका वह कोसमका वह इलमोदद-
२९ का वह एरका . वह योशीका वह इलियेजरका वह
३० योरीमका वह मत्तातका वह लेवीका . वह शिमि-
योनका वह यिहूदाका वह यूसफका वह योननका वह
३१ इलियाकीमका . वह मिलेयाका वह मैननका वह
३२ मत्तथका वह नाथनका वह दाऊदका . वह यिशीका
वह ओबेदका वह बोअसका वह सलमोनका वह नह-
३३ शोनका . वह अम्मीनादबका वह अरामका वह हिस्रोन-
३४ का वह पेरसका वह यिहूदाका . वह याकूबका वह
इसहाकका वह इब्राहीमका वह तेराहका वह नाहोरका .
३५ वह सिरूगका वह रियूका वह पेलगका वह एबरका वह
३६ शेलहका . वह कैननका वह अर्फकसदका वह शेमका
३७ वह नूहका वह लमकका . वह मिथूशलहका वह हनोक-
३८ का वह येरदका वह महललेलका वह कैननका . वह
इनोशका वह शेतका वह आदमका वह ईश्वरका ।

४ चौथा पर्व्व।

१ यीशुकी परीक्षा। १४ उसका उपदेश करना। १६ नासरतके लोगोंको कथा सुनाना। ३१ एक भूतग्रस्त मनुष्यको चंगा करना। ३८ पितरकी सासको चंगा करना। ४० बहुत रोगियोंको चंगा करना। ४२ नगर नगरमें उपदेश करना।

यीशु पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हो यर्दनसे फिरा और १
आत्माकी शिक्षासे जंगलमें गया। और चालीस दिन २
शैतानसे उसकी परीक्षा किई गई और उन दिनोंमें उ-
सने कुछ नहीं खाया पर पीछे उनके पूरे होनेपर भूखा
हुआ। तब शैतानने उससे कहा जो तू ईश्वरका पुत्र है ३
तो इस पत्थरसे कह दे कि रोटी बन जाय। यीशुने उस- ४
को उत्तर दिया कि लिखा है मनुष्य केवल रोटीसे नहीं
परन्तु ईश्वरकी हर एक बातसे जीयेगा। तब शैतानने ५
उसे एक ऊंचे पर्व्वतपर ले जाके उसको पल भरमें जगतके
सब राज्य दिखाये। और शैतानने उससे कहा मैं यह सब ६
अधिकार और इन्होंका बिभव तुझे देऊंगा क्योंकि वह
मुझे सौंपा गया है और मैं उसे जिसको चाहता हूं
उसको देता हूं। इसलिये जो तू मुझे प्रणाम करे तो सब ७
तेरा होगा। यीशुने उसको उत्तर दिया कि हे शैतान ८
मेरे साम्हनेसे दूर हो क्योंकि लिखा है कि तू परमेश्वर
अपने ईश्वरको प्रणाम कर और केवल उसीकी सेवा
कर। तब उसने उसको यिरूशलीममें ले जाके मन्दिरके ९
कलशपर खड़ा किया और उससे कहा जो तू ईश्वरका
पुत्र है तो अपनेको यहांसे नीचे गिरा. क्योंकि लिखा है १०
कि वह तेरे विषयमें अपने दूतोंको आज्ञा देगा कि

११ वे तेरी रक्षा करें . और वे तुझे हाथों हाथ उठा
१२ लेंगे न हो कि तेरे पांवमें पत्थरपर चोट लगे। यीशुने
उसको उत्तर दिया यह भी कहा गया है कि तू परमेश्वर
१३ अपने ईश्वरकी परीक्षा मत कर। जब शैतान सब
परीक्षा कर चुका तब कुछ समयके लिये उसके पाससे
चला गया।
१४ यीशु आत्माकी शक्तिसे गालीलको फिर गया
और उसकी कीर्त्ति आसपासके सारे देशमें फैल गई।
१५ और उसने उनकी सभाओंमें उपदेश किया और सभोंने
उसकी बड़ाई किई।
१६ तब वह नासरतको आया जहां पाला गया था और
अपनी रीतिपर बिश्रामके दिन सभाके घरमें जाके पढ़ने-
१७ को खड़ा हुआ। यिशैयाह भविष्यद्वक्ताका पुस्तक उसको
दिया गया और उसने पुस्तक खोलके वह स्थान पाया
१८ जिसमें लिखा था. कि परमेश्वरका आत्मा मुझपर है
इसलिये कि उसने मुझे अभिषेक किया है कि कंगालोंको
१९ सुसमाचार सुनाऊं. उसने मुझे भेजा है कि जिनके मन
चूर हैं उन्हें चंगा करूं और बंधुओंको छूटनेकी और
अंधोंको दृष्टि पानेकी बार्त्ता सुनाऊं और पेरे हुओंका
निस्तार करूं और परमेश्वरके ग्राह्य बरसका प्रचार
२० करूं। तब वह पुस्तक लपेटके सेवकके हाथमें देके बैठ
गया और सभामें सब लोगोंकी आंखें उसे तक रहीं।
२१ तब वह उन्होंसे कहने लगा कि आजही धर्म्मपुस्तकका
२२ यह बचन तुम्हारे सुननेमें पूरा हुआ है। और सभोंने
उसको सराहा और जो अनुग्रहकी बातें उसके मुखसे

निकलीं उनसे अचंभा किया और कहा क्या यह यूसफ-
का पुत्र नहीं है। उसने उन्होंसे कहा तुम अवश्य मुझसे २३
यह दृष्टान्त कहोगे कि हे वैद्य अपनेको चंगा कर . जो
कुछ हमोंने सुना है कि कफर्नाहुममें किया गया सो
यहां अपने देशमें भी कर । और उसने कहा मैं तुमसे २४
सच कहता हूं कोई भविष्यद्वक्ता अपने देशमें ग्राह्य नहीं
होता है । और मैं तुमसे सत्य कहता हूं कि एलियाहके २५
दिनोंमें जब आकाश साढ़े तीन बरस बन्द रहा यहांलों
कि सारे देशमें बड़ा अकाल पड़ा तब इस्रायेलमें बहुत
बिधवा थीं । परन्तु एलियाह उन्होंमेंसे किसीके पास २६
नहीं भेजा गया केवल सीदोन देशके सारिफत नगरमें
एक बिधवाके पास । और इलीशा भविष्यद्वक्ताके २७
समयमें इस्रायेलमें बहुत कोढ़ी थे परन्तु उन्होंमेंसे
कोई शुद्ध नहीं किया गया केवल सुरिया देशका
नामान । यह बातें सुनके सब लोग सभामें क्रोधसे भर २८
गये . और उठके उसको नगरसे बाहर निकालके २९
जिस पर्ब्बतपर उनका नगर बना हुआ था उसकी
चोटीपर ले चले कि उसको नीचे गिरा देवें । परन्तु ३०
वह उन्होंके बीचमेंसे होके निकला और चला गया।

और उसने गालीलके कफर्नाहुम नगरमें जाके बि- ३१
श्रामके दिन लोगोंको उपदेश दिया । वे उसके उपदेशसे ३२
अचंभित हुए क्योंकि उसका बचन अधिकार सहित था।
सभाके घरमें एक मनुष्य था जिसे अशुद्ध भूतका आत्मा ३३
लगा था । उसने बड़े शब्दसे चिल्लाके कहा हे यीशु ३४
नासरी रहने दीजिये आपको हमसे क्या काम. क्या आप

हमें नाश करने आये हैं. मैं आपको जानता हूं आप
३५ कौन हैं ईश्वरके पवित्र जन। यीशुने उसको डांटके
कहा चुप रह और उसमेंसे निकल आ. तब भूत
उस मनुष्यको बीचमें गिराके उसमेंसे निकल आया
३६ और उसकी कुछ हानि न किई। इसपर सभोंको
अचंभा हुआ और वे आपसमें बात करके बोले यह
कौनसी बात है कि वह प्रभाव और पराक्रमसे अशुद्ध
३७ भूतोंको आज्ञा देता है और वे निकल आते हैं। सो
उसकी कीर्त्ति आसपासके देशमें सर्व्वत्र फैल गई।
३८ सभाके घरमेंसे उठके उसने शिमोनके घरमें प्रवेश
किया और शिमोनकी सास बड़े ज्वरसे पीड़ित थी और
३९ उन्होंने उसके लिये उससे बिन्ती किई। उसने उसके
निकट खड़ा हो ज्वरको डांटा और वह उसे छोड़ गया
और वह तुरन्त उठके उनकी सेवा करने लगी।
४० सूर्य्य डूबते हुए जिन्होंके पास दुःखी लोग नाना
प्रकारके रोगोंमें पड़े थे वे सब उन्हें उस पास लाये
और उसने एक एकपर हाथ रखके उन्हें चंगा किया।
४१ भूत भी चिल्लाते और यह कहते हुए कि आप ईश्वरके
पुत्र खीष्ट हैं बहुतोंमेंसे निकले परन्तु उसने उन्हें डांटा
और बोलने न दिया क्योंकि वे जानते थे कि वह
खीष्ट है।
४२ बिहान हुए वह निकलके जंगली स्थानमें गया और
लोगोंने उसको ढूंढ़ा और उस पास आके उसे रोकने
४३ लगे कि वह उनके पाससे न जाय। परन्तु उसने
उन्होंसे कहा मुझे और और नगरोंमें भी ईश्वरके राज्य-

का सुसमाचार सुनाना होगा क्योंकि मैं इसी लिये भेजा
गया हूं। सो उसने गालीलकी सभाओंमें उपदेश किया। ४४

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ यीशुका अद्भुत रीतिसे बहुत मछलियोंको पकड़वाना और शिमोनको बुलाना। १२ एक कोढ़ीको चंगा करना। १७ एक अर्द्धांगीको चंगा करना और उसका पाप क्षमा करना। २७ लेवी अर्थात मत्तीको बुलाना और पापियोंके संग भोजन करना। ३३ उपवास करनेका ब्योरा बताना।

एक दिन बहुत लोग ईश्वरका बचन सुननेको यीशुपर १
गिरे पड़ते थे और वह गिनेसरतकी झीलके पास खड़ा
था। और उसने दो नाव झीलके तीरपर लगी देखीं २
और मछुवे उनपरसे उतरके जालोंको धोते थे। उन ३
नावोंमेंसे एकपर जो शिमोनकी थी चढ़के उसने उससे
बिन्ती किई कि तीरसे थोड़ी दूर ले जाय और उसने
बैठके नावपरसे लोगोंको उपदेश दिया। जब वह बात ४
कर चुका तब शिमोनसे कहा गहिरेमें ले जा और
मछलियां पकड़नेको अपने जालोंको डालो। शिमोनने ५
उसको उत्तर दिया कि हे गुरु हमने सारी रात परिश्रम
किया और कुछ नहीं पकड़ा तौभी आपकी बातपर मैं
जाल डालूंगा। जब उन्होंने ऐसा किया तब बहुत ६
मछलियां बझाईं और उनका जाल फटने लगा। इसपर ७
उन्होंने अपने साझियोंको जो दूसरी नावपर थे सैन
किया कि वे आके उनकी सहायता करें और उन्होंने
आके दोनों नाव ऐसी भरीं कि वे डूबने लगीं। यह ८
देखके शिमोन पितर यीशुके गोड़ोंपर गिरा और कहा
हे प्रभु मेरे पाससे जाइये मैं पापी मनुष्य हूं। क्योंकि वह ९
और उसके सब संगी लोग इन मछलियोंके बझ जानेसे

१० जो उन्होंने पकड़ी थीं बिस्मित हुए। और वैसेही
जबदीके पुत्र याकूब और योहन भी जो शिमोनके
साझी थे बिस्मित हुए. तब यीशुने शिमोनसे कहा मत
११ डर अबसे तू मनुष्योंको पकड़ेगा। और वे नावोंको
तीरपर लाके सब कुछ छोड़के उसके पीछे हो लिये।
१२ जब वह एक नगरमें था तब देखो एक मनुष्य कोढ़से
भरा हुआ वहां था और वह यीशुको देखके मुंहके बल
गिरा और उससे बिन्ती किई कि हे प्रभु जो आप चाहें
१३ तो मुझे शुद्ध कर सकते हैं। उसने हाथ बढ़ा उसे
छूके कहा मैं तो चाहता हूं शुद्ध हो जा. और उसका
१४ कोढ़ तुरन्त जाता रहा। तब उसने उसे आज्ञा दिई
कि किसीसे मत कह परन्तु जाके अपने तईं याजकको
दिखा और अपने शुद्ध होनेके विषयमेंका चढ़ावा
जैसा मूसाने आज्ञा दिई तैसा लोगोंपर साक्षी होनेके
१५ लिये चढ़ा। परन्तु यीशुकी कीर्त्ति अधिक फैल गई
और बहुतेरे लोग सुननेको और उससे अपने रोगोंसे
१६ चंगे किये जानेको एकट्ठे हुए। और उसने जंगली
स्थानोंमें अलग जाके प्रार्थना किई।
१७ एक दिन वह उपदेश करता था और फरीशी और
व्यवस्थापक लोग जो गालील और यिहूदियाके हर एक
गांवसे और यिरूशलीमसे आये थे वहां बैठे थे और
१८ उन्हें चंगा करनेको प्रभुका सामर्थ्य प्रगट हुआ। और
देखो लोग एक मनुष्यको जो अर्द्धांगी था खाटपर लाये
और वे उसको भीतर ले जाने और यीशुके आगे रखने
१९ चाहते थे। परन्तु जब भीड़के कारण उसे भीतर ले

जानेका कोई उपाय उन्हें न मिला तब उन्होंने कोठेपर
चढ़के उसको खाट समेत छतमेंसे बीचमें यीशुके आगे
उतार दिया । उसने उन्होंका बिश्वास देखके उससे २०
कहा हे मनुष्य तेरे पाप क्षमा किये गये हैं । तब २१
अध्यापक और फरीशी लोग बिचार करने लगे कि
यह कौन है जो ईश्वरकी निन्दा करता है. ईश्वर-
को छोड़ कौन पापोंको क्षमा कर सकता है । यीशुने २२
उनके मनकी बातें जानके उनको उत्तर दिया कि
तुम लोग अपने अपने मनमें क्या क्या बिचार करते
हो । कौन बात सहज है यह कहना कि तेरे पाप २३
क्षमा किये गये हैं अथवा यह कहना कि उठ और
चल । परन्तु जिस्तें तुम जानो कि मनुष्यके पुत्रको २४
पृथिवीपर पाप क्षमा करनेका अधिकार है (उसने उस
अर्द्धांगीसे कहा) मैं तुझसे कहता हूं उठ अपनी खाट
उठाके अपने घरको जा । वह तुरन्त उन्होंके साम्ने २५
उठके जिसपर वह पड़ा था उसको उठाके ईश्वरकी
स्तुति करता हुआ अपने घरको चला गया । तब सब २६
लोग बिस्मित हुए और ईश्वरकी स्तुति करने लगे
और अति भयमान होके बोले हमने आज अनोखी
बातें देखी हैं ।

इसके पीछे यीशुने बाहर जाके लेवी नाम एक कर २७
उगाहनेहारेको कर उगाहनेके स्थानमें बैठे देखा और
उससे कहा मेरे पीछे आ । वह सब कुछ छोड़के उठा २८
और उसके पीछे हो लिया । और लेवीने अपने घरमें २९
उसके लिये बड़ा भोज बनाया और बहुत कर उगाहने-

हारे और बहुतसे और लोग थे जो उनके संग भोजनपर
३० बैठे। तब उन्होंके अध्यापक और फरीशी उसके शिष्यों-
पर कुड़कुड़ाके बोले तुम कर* उगाहनेहारों और
३१ पापियोंके संग क्यों खाते और पीते हो । यीशुने उनको
उत्तर दिया कि निरोगियोंको वैद्यका प्रयोजन नहीं है
३२ परन्तु रोगियोंको। मैं धर्म्मियोंको नहीं परन्तु पापियोंको
पश्चात्तापके लिये बुलाने आया हूं ।
३३ और उन्होंने उससे कहा योहनके शिष्य क्यों बार
बार उपवास और प्रार्थना करते हैं और वैसेही फरी-
शियोंके शिष्य भी परन्तु आपके शिष्य खाते और पीते हैं।
३४ उसने उनसे कहा जब दूल्हा सखाओंके संग है तब
३५ क्या तुम उनसे उपवास करवा सकते हो । परन्तु वे
दिन आवेंगे जिनमें दूल्हा उनसे अलग किया जायगा तब
३६ वे उन दिनोंमें उपवास करेंगे । उसने एक दृष्टान्त भी
उनसे कहा कि कोई मनुष्य नये कपड़ेका टुकड़ा पुराने
वस्त्रमें नहीं लगाता है नहीं तो नया कपड़ा उसे
फाड़ता है और नये कपड़ेका टुकड़ा पुरानेमें मिलता
३७ भी नहीं । और कोई मनुष्य नया दाख रस पुराने
कुप्पोंमें नहीं भरता है नहीं तो नया दाख रस कुप्पोंको
फाड़ेगा और वह आप बह जायगा और कुप्पे नष्ट
३८ होंगे । परन्तु नया दाख रस नये कुप्पोंमें भरा चाहिये
३९ तब दोनोंकी रक्षा होती है । कोई मनुष्य पुराना दाख
रस पीके तुरन्त नया नहीं चाहता है क्योंकि वह
कहता है पुराना ही अच्छा है ।

६ छठवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका बिश्रामवारके विषयमें निर्णय करना । १२ बारह प्रेरितोंको ठहराना । १७ बहुत रोगियोंको चंगा करना । २० धन्य कौन हैं इसके विषयमें यीशुका उपदेश । २७ शत्रुओंको प्रेम करनेका उपदेश और लड़ाई करनेका निषेध । ३७ दूसरोंपर दोष लगानेका निषेध और झूठे उपदेशकोंका निर्णय । ४३ मनके स्वभावका दृष्टान्त । ४६ घरकी नेव डालनेका दृष्टान्त ।

पर्ब्बके दूसरे दिनके पीछे बिश्रामके दिन यीशु खेतोंमें १
होके जाता था और उसके शिष्य बालें तोड़के हाथोंमें
मल मलके खाने लगे । तब कई एक फरीशियोंने उनसे २
कहा-जो काम बिश्रामके दिनमें करना उचित नहीं है
सो क्यों करते हो । यीशुने उनको उत्तर दिया क्या ३
तुमने यह नहीं पढ़ा है कि दाऊदने जब वह और उसके
संगी लोग भूखे हुए तब क्या किया . उसने क्योंकर ४
ईश्वरके घरमें जाके भेंटकी रोटियां लेके खाईं जिन्हें खा-
ना और किसीको नहीं केवल याजकोंको उचित है
और अपने संगियोंको भी दिईं । और उसने उनसे ५
कहा मनुष्यका पुत्र बिश्रामवारका भी प्रभु है ।

दूसरे बिश्रामवारको भी वह सभाके घरमें जाके उप- ६
देश करने लगा और वहां एक मनुष्य था जिसका दहिना
हाथ सूख गया था । अध्यापक और फरीशी लोग उसमें ७
दोष ठहरानेके लिये उसे ताकते थे कि वह बिश्रामके
दिनमें चंगा करेगा कि नहीं । पर वह उनके मनकी ८
बातें जानता था और सूखे हाथवाले मनुष्यसे कहा उठ
बीचमें खड़ा हो . वह उठके खड़ा हुआ । तब यीशुने ९

उन्होंसे कहा मैं तुमसे एक बात पूछूंगा क्या विश्रामके
दिनोंमें भला करना अथवा बुरा करना प्राणको बचाना
१० अथवा नाश करना उचित है। और उसने उन सभोंपर
चारों ओर दृष्टि कर उस मनुष्यसे कहा अपना हाथ
बढ़ा. उसने ऐसा किया और उसका हाथ फिर दूसरेकी
११ नाईं भला चंगा हो गया। पर वे बड़े क्रोधसे भर गये
और आपसमें बोले हम यीशुको क्या करें।
१२ उन दिनोंमें वह प्रार्थना करनेको पर्व्वतपर गया और
१३ ईश्वरसे प्रार्थना करनेमें सारी रात बिताई। जब बिहान
हुआ तब उसने अपने शिष्योंको अपने पास बुलाके उन-
मेंसे बारह जनोंको चुना जिनका नाम उसने प्रेरित भी
१४ रखा. अर्थात शिमोनको जिसका नाम उसने पितर भी
रखा औ उसके भाई अन्द्रियको और याकूब औ योह-
१५ नको और फिलिप औ बर्थलमईको. और मत्ती औ
थोमाको और अलफईके पुत्र याकूबको औ शिमोनको
१६ जो उद्योगी कहावता है. और याकूबके भाई यिहूदाको
औ यिहूदा इस्करियोतीको जो बिश्वासघातक हुआ।
१७ तब वह उनके संग उतरके चौरस स्थानमें खड़ा
हुआ और उसके बहुत शिष्य भी थे और लोगोंकी
बड़ी भीड़ सारे यिहूदियासे और यिरूशलीमसे और
सोर औ सीदोनके समुद्रके तीरसे जो उसकी सुननेको
१८ और अपने रोगोंसे चंगे किये जानेको आये थे. और
अशुद्ध भूतोंके सताये हुए लोग भी. और वे चंगे किये
१९ जाते थे। और सब लोग उसे छूने चाहते थे क्योंकि
शक्ति उससे निकलती थी और सभोंको चंगा करती थी।

तब उसने अपने शिष्योंकी ओर दृष्टि कर कहा धन्य २०
तुम जो दीन हो क्योंकि ईश्वरका राज्य तुम्हारा है। धन्य २१
तुम जो अब भूखे हो क्योंकि तुम तृप्त किये जाओगे.
धन्य तुम जो अब रोते हो क्योंकि तुम हंसोगे। धन्य २२
तुम हो जब मनुष्य तुमसे बैर करें और जब वे मनुष्यके
पुत्रके लिये तुम्हें अलग करें और तुम्हारी निन्दा करें
और तुम्हारा नाम दुष्टसा दूर करें। उस दिन आन- २३
न्दित हो और उछलो क्योंकि देखो तुम स्वर्गमें बहुत
फल पाओगे. उनके पितरोंने भविष्यद्वक्ताओंसे वैसाही
किया। परन्तु हाय तुम जो धनवान हो क्योंकि तुम २४
अपनी शांति पा चुके हो। हाय तुम जो भरपूर हो २५
क्योंकि तुम भूखे होगे. हाय तुम जो अब हंसते हो
क्योंकि तुम शोक करोगे और रोओगे। हाय तुम लोग २६
जब सब मनुष्य तुम्हारे विषयमें भला कहें. उनके
पितरोंने झूठे भविष्यद्वक्ताओंसे वैसाही किया।

और भी मैं तुम्होंसे जो सुनते हो कहता हूं कि अपने २७
शत्रुओंको प्यार करो. जो तुमसे बैर करें उनसे भलाई
करो। जो तुम्हें स्राप देवें उनको आशीस देओ और २८
जो तुम्हारा अपमान करें उनके लिये प्रार्थना करो। जो २९
तुझे एक गालपर मारे उसकी ओर दूसरा भी फेर दे
और जो तेरा दोहर छीन लेवे उसको अंगा भी लेनेसे
मत बर्जे। जो कोई तुझसे मांगे उसको दे और जो तेरी ३०
बस्तु छीन लेवे उससे फिर मत मांग। और जैसा तुम ३१
चाहते हो कि मनुष्य तुमसे करें तुम भी उनसे वैसाही
करो। जो तुम उनसे प्रेम करो जो तुमसे प्रेम करते हैं ३२

तो तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी अपने प्रेम
३३ करनेहारोंसे प्रेम करते हैं । और जो तुम उनसे भलाई
करो जो तुमसे भलाई करते हैं तो तुम्हारी क्या बड़ाई
३४ क्योंकि पापी लोग भी ऐसा करते हैं। और जो तुम उन्हें
ऋण देओ जिनसे फिर पानेकी आशा रखते हो तो
तुम्हारी क्या बड़ाई क्योंकि पापी लोग भी पापियोंको
३५ ऋण देते हैं कि उतना फिर पावें। परन्तु अपने शत्रुओंको
प्यार करो ओ भलाई करो और फिर पानेकी आशा
न रखके ऋण देओ और तुम बहुत फल पाओगे और
सर्ब्बप्रधानके सन्तान होगे क्योंकि वह उन्होंपर जो
३६ धन्य नहीं मानते हैं और दुष्टोंपर कृपाल है। सो जैसा
तुम्हारा पिता दयावन्त है तैसे तुम भी दयावन्त होओ।
३७ दूसरोंका बिचार मत करो तो तुम्हारा बिचार न
किया जायगा. दोषी मत ठहराओ तो तुम दोषी न
ठहराये जाओगे. क्षमा करो तो तुम्हारी क्षमा किई
३८ जायगी। देओ तो तुमको दिया जायगा. लोग पूरा नाप
दबाया और हिलाया हुआ और उभरता हुआ तुम्हारी
गोदमें देंगे क्योंकि जिस नापसे तुम नापते हो उसीसे
३९ तुम्हारे लिये भी नापा जायगा । फिर उसने उनसे एक
दृष्टान्त कहा क्या अन्धा अन्धेको मार्ग बता सकता है.
४० क्या दोनों गढ़ेमें नहीं गिरेंगे । शिष्य अपने गुरुसे बड़ा
नहीं है परन्तु जो कोई सिद्ध होवे सो अपने गुरुके
४१ समान होगा । जो तिनका तेरे भाईके नेत्रमें है उसे तू
क्यों देखता है और जो लट्ठा तेरेही नेत्रमें है सो तुझे नहीं
४२ सूझता । अथवा तू जो आप अपने नेत्रमेंका लट्ठा नहीं

देखता है क्योंकर अपने भाईसे कह सकता है कि हे
भाई रहिये मैं यह तिनका जो तेरे नेत्रमें है निकालूं.
हे कपटी पहिले अपने नेत्रसे लट्ठा निकाल दे तब जो
तिनका तेरे भाईके नेत्रमें है उसे निकालनेको तू
अच्छी रीतिसे देखेगा ।

कोई अच्छा पेड़ नहीं है जो निकम्मा फल फले ४३
और कोई निकम्मा पेड़ नहीं है जो अच्छा फल फले।
हर एक पेड़ अपनेही फलसे पहचाना जाता है क्योंकि ४४
लोग कांटोंके पेड़से गूलर नहीं तोड़ते और न कटैले
झूड़से दाख तोड़ते हैं । भला मनुष्य अपने मनके भले ४५
भंडारसे भली बात निकालता है और बुरा मनुष्य
अपने मनके बुरे भंडारसे बुरी बात निकालता है क्योंकि
जो मनमें भरा है सोई उसका मुंह बोलता है ।

तुम मुझे हे प्रभु हे प्रभु क्यों पुकारते हो और जो ४६
मैं कहता हूं सो नहीं करते । जो कोई मेरे पास आके ४७
मेरी बातें सुनके उन्हें पालन करे मैं तुम्हें बताऊंगा
वह किसके समान है । वह एक मनुष्यके समान है ४८
जो घर बनाता था और उसने गहरे खोदके पत्थरपर
नेव डाली और जब बाढ़ आई तब धारा उस घरपर
लगी पर उसे हिला न सकी क्योंकि उसकी नेव
पत्थरपर डाली गई थी । परन्तु जो सुनके पालन न ४९
करे सो एक मनुष्यके समान है जिसने मिट्टीपर बिना
नेवका घर बनाया जिसपर धारा लगी और वह
तुरन्त गिर पड़ा और उस घरका बड़ा बिनाश हुआ।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका एक शतपतिके दासको चंगा करना । ११ नाइन नगरकी बिधवाके पुत्रको जिलाना । १८ योहनके शिष्योंको उत्तर देना । २४ योहनके विषयमें उसकी साक्षी । ३१ उस समयके लोगोंकी उपमा । ३६ एक पापिनीके विषयमें शिमोन फरीशीसे उसकी बातचीत ।

१ जब यीशु लोगोंको अपनी सब बातें सुना चुका तब
२ कफर्नाहुममें प्रवेश किया । और किसी शतपतिका एक
३ दास जो उसका प्रिय था रोगी हो मरनेपर था । शत-
पतिने यीशुका चर्चा सुनके यिहूदियोंके कई एक
प्राचीनोंको उससे यह बिन्ती करनेको उस पास भेजा
४ कि आके मेरे दासको चंगा कीजिये । उन्होंने यीशु पास
आके उससे बड़े यत्नसे बिन्ती किई और कहा आप
५ जिसके लिये यह काम करेंगे सो इसके योग्य है . क्योंकि
वह हमारे लोगसे प्रेम करता है और उसीने सभाको
६ घर हमारे लिये बनाया । तब यीशु उनके संग गया और
वह घरसे दूर न था कि शतपतिने उस पास मित्रोंको
भेजके उससे कहा हे प्रभु दुःख न उठाइये क्योंकि मैं इस
७ योग्य नहीं कि आप मेरे घरमें आवें । इसलिये मैंने
अपनेको आपके पास जानेके भी योग्य नहीं समझा
परन्तु बचन कहिये तो मेरा सेवक चंगा हो जायगा ।
८ क्योंकि मैं पराधीन मनुष्य हूं और योद्धा मेरे वशमें हैं
और मैं एकको कहता हूं जा तो वह जाता है और
दूसरेको आ तो वह आता है और अपने दासको यह
९ कर तो वह करता है । यह सुनके यीशुने उस मनुष्यपर

अचंभा किया और मुंह फेरके जो बहुत लोग उसके
पीछेसे आते थे उन्होंसे कहा मैं तुमसे कहता हूं कि मैंने
इस्रायेली लोगोंमें भी ऐसा बड़ा बिश्वास नहीं पाया
है। और जो लोग भेजे गये उन्होंने जब घरको लौटे तब १०
उस रोगी दासको चंगा पाया।

दूसरे दिन यीशु नाइन नाम एक नगरको जाता था ११
और उसके अनेक शिष्य और बहुतेरे लोग उसके संग
जाते थे। ज्योंही वह नगरके फाटकके पास पहुंचा त्योंही १२
देखो लोग एक मृतकको बाहर ले जाते थे जो अपनी
मांका एकलौता पुत्र था और वह बिधवा थी और नगरके
बहुत लोग उसके संग थे। प्रभुने उसको देखके उसपर १३
दया किई और उससे कहा मत रो। तब उसने निकट १४
आके अर्थीको छूआ और उठानेहारे खड़े हुए और
उसने कहा हे जवान मैं तुझसे कहता हूं उठ। तब मृतक १५
उठ बैठा और बोलने लगा और यीशुने उसे उसकी
मांको सोंप दिया। इससे सभोंको भय हुआ और वे १६
ईश्वरकी स्तुति करके बोले कि हमारे बीचमें बड़ा भवि-
ष्यद्वक्ता प्रगट हुआ है और कि ईश्वरने अपने लोगोंपर
दृष्टि किई है। और उसके विषयमें यह बात सारे १७
यिहूदियामें और आसपासके सारे देशमें फैल गई।

योहनके शिष्योंने इन सब बातोंके विषयमें योहनसे १८
कहा। तब उसने अपने शिष्योंमेंसे दो जनोंको बुलाके १९
यीशु पास यह कहनेको भेजा कि जो आनेवाला था सो
क्या आपही हैं अथवा हम दूसरेकी बाट जोहें। उन २०
मनुष्योंने उस पास आ कहा योहन बपतिसमा देनेहारेने

हमें आपके पास यह कहनेको भेजा है कि जो आनेवाला
था सो क्या आपही हैं अथवा हम दूसरेकी बाट जोहें ।
२१ उसी घड़ी यीशुने बहुतोंको जो रोगों और पीड़ाओं और
दुष्ट भूतोंसे दुःखी थे चंगा किया और बहुतसे अन्धोंको
२२ नेत्र दिये । और उसने उन्होंको उत्तर दिया कि जो कुछ
तुमने देखा और सुना है सो जाके योहनसे कहो कि
अन्धे देखते हैं लंगड़े चलते हैं कोढ़ी शुद्ध किये जाते हैं
बहिरे सुनते हैं मृतक जिलाये जाते हैं और कंगालोंको
२३ सुसमाचार सुनाया जाता है । और जो कोई मेरे विष-
यमें ठोकर न खावे सो धन्य है ।
२४ जब योहनके दूत लोग चले गये तब यीशु योहनके
विषयमें लोगोंसे कहने लगा तुम जंगलमें क्या देखनेको
२५ निकले क्या पवनसे हिलते हुए नरकटको । फिर तुम
क्या देखनेको निकले क्या सूक्ष्म बस्त्र पहिने हुए मनुष्य-
को . देखो जो भड़कीला बस्त्र पहिनते और सुखसे रहते
२६ हैं सो राजभवनोंमें हैं । फिर तुम क्या देखनेको निकले
क्या भविष्यद्वक्ताको . हां मैं तुमसे कहता हूं एक मनुष्यको
२७ जो भविष्यद्वक्तासे भी अधिक है । यह वही है जिसके
विषयमें लिखा है कि देख मैं अपने दूतको तेरे आगे
२८ भेजता हूं जो तेरे आगे तेरा पन्थ बनावेगा । मैं तुमसे
कहता हूं कि जो स्त्रियोंसे जन्मे हैं उनमेंसे योहन बपतिस-
मा देनेहारेसे बड़ा भविष्यद्वक्ता कोई नहीं है परन्तु जो
२९ ईश्वरके राज्यमें अति छोटा है सो उससे बड़ा है । और
सब लोगोंने जिन्होंने सुना और कर उगाहनेहारोंने यो-
३० हनसे बपतिसमा लेके ईश्वरको निर्दोष ठहराया । परन्तु

फरीशियों और व्यवस्थापकोंने उससे बपतिसमा न
लेके ईश्वरके अभिप्रायको अपने विषयमें टाल दिया।
तब प्रभुने कहा मैं इस समयके लोगोंकी उपमा ३१
किससे देऊंगा वे किसके समान हैं। वे बालकोंके समान ३२
हैं जो बाजारमें बैठके एक दूसरेको पुकारके कहते हैं
हमने तुम्हारे लिये बांसली बजाई और तुम न नाचे
हमने तुम्हारे लिये बिलाप किया और तुम न रोये।
क्योंकि योहन बपतिसमा देनेहारा न रोटी खाता न ३३
दाख रस पीता आया है और तुम कहते हो उसे भूत
लगा है। मनुष्यका पुत्र खाता और पीता आया है ३४
और तुम कहते हो देखो पेटू और मद्यप मनुष्य कर
उगाहनेहारों और पापियोंका मित्र। परन्तु ज्ञान ३५
अपने सब सन्तानोंसे निर्दोष ठहराया गया है।
फरीशियोंमेंसे एकने यीशुसे बिन्ती किई कि मेरे संग ३६
भोजन कीजिये और वह फरीशीके घरमें जाके भोजनपर
बैठा। और देखो उस नगरकी एक स्त्री जो पापिनी थी ३७
जब उसने जाना कि वह फरीशीके घरमें भोजनपर बैठा
है तब उजले पत्थरके पात्रमें सुगन्ध तेल लाई. और ३८
पीछेसे उसके पांवों पास खड़ी हो रोते रोते उसके चर-
णोंको आंसूओंसे भिंगाने लगी और अपने सिरके बालोंसे
पोंछा और उसके पांव चूमके उनपर सुगन्ध तेल मला।
यह देखके फरीशी जिसने यीशुको बुलाया था अपने ३९
मनमें कहने लगा यह यदि भविष्यद्वक्ता होता तो जानता
कि यह स्त्री जो उसको छूती है कौन और कैसी है क्योंकि
वह पापिनी है। यीशुने उसको उत्तर दिया कि हे ४०

शिमोन मैं तुझसे कुछ कहा चाहता हूं . वह बोला हे
४१ गुरु कहिये । किसी महाजनके दो ऋणी थे एक पांच सौ
४२ सूकी धारता था और दूसरा पचास। जब कि भर देनेको
उन्होंके पास कुछ न था उसने दोनोंको क्षमा किया सो
४३ कहिये उनमेंसे कौन उसको अधिक प्यार करेगा। शिमो-
नने उत्तर दिया मैं समझता हूं कि वह जिसका उसने
अधिक क्षमा किया . यीशुने उससे कहा तूने ठीक बिचार
४४ किया है । और स्त्रीकी ओर फिरके उसने शिमोनसे
कहा तू इस स्त्रीको देखता है . मैं तेरे घरमें आया तूने
मेरे पांवोंपर जल नहीं दिया परन्तु इसने मेरे चरणोंको
आंसूओंसे भिंगाया और अपने सिरके बालोंसे पोंछा
४५ है । तूने मेरा चूमा नहीं लिया परन्तु यह जबसे मैं
४६ आया तबसे मेरे पांवोंको चूम रही है। तूने मेरे सिरपर
तेल नहीं लगाया परन्तु इसने मेरे पांवोंपर सुगन्ध तेल
४७ मला है । इसलिये मैं तुझसे कहता हूं कि उसके पाप जो
बहुत हैं क्षमा किये गये हैं . कि उसने तो बहुत प्रेम
किया है परन्तु जिसका थोड़ा क्षमा किया जाता है वह
४८ थोड़ा प्रेम करता है । और उसने स्त्रीसे कहा तेरे पाप
४९ क्षमा किये गये हैं । तब जो लोग उसके संग भोजनपर
बैठे थे सो अपने अपने मनमें कहने लगे यह कौन है जो
५० पापोंको भी क्षमा करता है । परन्तु उसने स्त्रीसे कहा
तेरे बिश्वासने तुझे बचाया है कुशलसे चली जा ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका नगर नगरमें फिरना । ४ बीज बोनेहारेका दृष्टान्त । ९ दृष्टान्तोंसे उपदेश करनेका कारण और इस दृष्टान्तका अर्थ । १६ दीपकका दृष्टान्त और

वचन सुननेके विषयमें उपदेश । १९ यीशुके कुटुंबका वर्णन । २२ उसका आंधीको थांभना । २६ एक मनुष्यमेंसे बहुत भूतोंको निकालना । ४० एक कन्याको जिलाना और एक स्त्रीको चंगा करना ।

इस पीछे यीशु नगर नगर और गांव गांव उपदेश १
करता हुआ और ईश्वरके राज्यका सुसमाचार सुनाता
हुआ फिरा किया । और बारहों शिष्य उसके संग थे और २
कितनी स्त्रियां भी जो दुष्ट भूतोंसे और रोगोंसे चंगी
किई गई थीं अर्थात मरियम जो मगदलीनी कहावती है
जिसमेंसे सात भूत निकल गये थे . और हेरोदके भंडारी ३
कूजाकी स्त्री योहाना और सोसन्ना और बहुतसी और
स्त्रियां . ये तो अपनी सम्पत्तिसे उसकी सेवा करती थीं ।
जब बड़ी भीड़ एकट्ठी होती थी और नगर नगरके ४
लोग उस पास आते थे तब उसने दृष्टान्तमें कहा . एक ५
बोनेहारा अपना बीज बोनेको निकला . बीज बोनेमें कुछ
मार्गकी ओर गिरा और पांवोंसे रौंदा गया और आ-
काशके पंछियोंने उसे चुग लिया । कुछ पत्थरपर गिरा ६
और उपजा परन्तु तरावट न पानेसे सूख गया । कुछ ७
कांटोंके बीचमें गिरा और कांटोंने एक संग बढ़के उसको
दबा डाला । परन्तु कुछ अच्छी भूमिपर गिरा, और ८
उपजा और सौ गुणे फल फला . यह बातें कहके उसने
ऊंचे शब्दसे कहा जिसको सुननेके कान हों सो सुने ।
तब उसके शिष्योंने उससे पूछा इस दृष्टान्तका अर्थ ९
क्या है । उसने कहा तुमको ईश्वरके राज्यके भेद जानने- १०
का अधिकार दिया गया है परन्तु और लोगोंसे दृष्टा-
न्तोंमें बात होती है इसलिये कि वे देखते हुए न देखें

११ और सुनते हुए न बूझें । इस दृष्टान्तका अर्थ यह है.
१२ बीज तो ईश्वरका बचन है। मार्गकी ओरके वे हैं जो
सुनते हैं तब शैतान आके उनके मनमेंसे बचन छीन
लेता है ऐसा न हो कि वे बिश्वास करके त्राण पावें।
१३ पत्थरपरके वे हैं कि जब सुनते हैं तब आनन्दसे बचनको
ग्रहण करते हैं परन्तु उनमें जड़ न बंधनेसे वे थोड़ी बेरलों
बिश्वास करते हैं और परीक्षाके समयमें बहक जाते हैं।
१४ जो कांटोंके बीचमें गिरा सो वे हैं जो सुनते हैं पर अनेक
चिन्ता और धन और जीवनके सुख बिलाससे दबते दबते
१५ दबाये जाते और पक्के फल नहीं फलते हैं। परन्तु अच्छी
भूमिमेंका बीज वे हैं जो बचन सुनके भले और उत्तम
मनमें रखते हैं और धीरजसे फल फलते हैं ।

१६ कोई मनुष्य दीपकको बारके बर्त्तनसे नहीं ढांपता
और न खाटके नीचे रखता है परन्तु दीवटपर रखता
१७ है कि जो भीतर आवें सो उजियाला देखें । कुछ गुप्त
नहीं है जो प्रगट न होगा और न कुछ छिपा है जो
१८ जाना न जायगा और प्रसिद्ध न होगा । इसलिये
सचेत रहो तुम किस रीतिसे सुनते हो क्योंकि जो
कोई रखता है उसको और दिया जायगा परन्तु जो
कोई नहीं रखता है उससे जो कुछ वह समझता कि
मेरे पास है सो भी ले लिया जायगा ।

१९ यीशुकी माता और उसके भाई उस पास आये परन्तु
२० भीड़के कारण उससे भेंट नहीं कर सके। और कितनोंने
उससे कह दिया कि आपकी माता और आपके भाई
२१ बाहर खड़े हुए आपको देखने चाहते हैं । उसने उनको

उत्तर दिया कि मेरी माता और मेरे भाई येही लोग
हैं जो ईश्वरका बचन सुनके पालन करते हैं ।
एक दिन वह और उसके शिष्य नावपर चढ़े और २२
उसने उनसे कहा कि आओ हम झीलके उस पार चलें.
सो उन्होंने खोल दिई । ज्यों वे जाते थे त्यों वह सो गया २३
और झीलपर आंधी उठी और उनकी नाव भर जाने
लगी और वे जोखिममें थे । तब उन्होंने उस पास आके २४
उसे जगाके कहा हे गुरु हे गुरु हम नष्ट होते हैं . तब
उसने उठके बयारको और जलके हिलकोरेको डांटा और
वे थम गये और नीवा हो गया । और उसने उनसे कहा २५
तुम्हारा बिश्वास कहां है . परन्तु वे भयमान और अचं-
भित हो आपसमें बोले यह कौन है जो बयार और जल-
को भी आज्ञा देता है और वे उसकी आज्ञा मानते हैं ।
वे गदेरियोंके देशमें जो गालीलके साम्ने उस पार है २६
पहुंचे । जब यीशु तीरपर उतरा तब नगरका एक मनुष्य २७
उससे आ मिला जिसको बहुत दिनोंसे भूत लगे थे और
जो बस्त्र नहीं पहिनता न घरमें रहता था परन्तु कबर-
स्थानमें रहता था । वह यीशुको देखके चिल्लाया और २८
उसको दंडवत कर बड़े शब्दसे कहा हे यीशु सर्ब्बप्रधान
ईश्वरके पुत्र आपको मुझसे क्या काम . मैं आपसे बिन्ती
करता हूं कि मुझे पीड़ा न दीजिये । क्योंकि यीशुने २९
अशुद्ध भूतको उस मनुष्यसे निकलनेकी आज्ञा दिई थी .
उस भूतने बहुत बार उसे पकड़ा था और वह जंजीरों
और बेड़ियोंसे बंधा हुआ रखा जाता था परन्तु बंधनोंको
तोड़ देता था और भूत उसे जंगलमें खदेड़ता था । यीशुने ३०

उससे पूछा तेरा नाम क्या है . उसने कहा सेना . क्योंकि
३१ बहुत भूत उसमें पैठ गये थे। और उन्होंने उससे बिन्ती
किई कि हमें अथाह कुंडमें जानेकी आज्ञा न दीजिये।
३२ वहां बहुत सूअरोंका जो पहाड़पर चरते थे एक झुंड था
सो उन्होंने उससे बिन्ती किई कि हमें उन्होंमें पैठने
३३ दीजिये और उसने उन्हें जाने दिया। तब भूत उस
मनुष्यसे निकलके सूअरोंमें पैठे और वह झुंड कड़ाड़े-
३४ परसे झीलमें दौड़ गया और डूब मरा। यह जो हुआ
था सो देखके चरवाहे भागे और जाके नगरमें और
३५ गांवोंमें उसका समाचार कहा। और लोग यह जो हुआ
था देखनेको बाहर निकले और यीशु पास आके जिस
मनुष्यसे भूत निकले थे उसको यीशुके चरणोंके पास
३६ बस्त्र पहिने और सुबुद्धि बैठे हुए पाके डर गये। जिन
लोगोंने देखा था उन्होंने उनसे कह दिया कि वह भूत-
३७ ग्रस्त मनुष्य क्योंकर चंगा हो गया था। तब गदेराके
आसपासके सारे लोगोंने यीशुसे बिन्ती किई कि हमारे
यहांसे चले जाइये क्योंकि उन्हें बड़ा डर लगा . सो वह
३८ नावपर चढ़के लौट गया। जिस मनुष्यसे भूत निकले थे
उसने उससे बिन्ती किई कि मैं आपके संग रहूं पर
३९ यीशुने उसे बिदा किया . और कहा अपने घरको फिर
जा और कह दे कि ईश्वरने तेरे लिये कैसे बड़े काम किये
हैं . उसने जाके सारे नगरमें प्रचार किया कि यीशुने
उसके लिये कैसे बड़े काम किये थे।
४० जब यीशु लौट गया तब लोगोंने उसे ग्रहण किया
४१ क्योंकि वे सब उसकी बाट जोहते थे। और देखो याईर

नाम एक मनुष्य जो सभाका अध्यक्ष भी था आया
और यीशुके पांवों पड़के उससे बिन्ती किई कि वह
उसके घर जाय। क्योंकि उसको बारह बरसकी एकलौ- ४२
ती बेटी थी और वह मरनेपर थी . जब यीशु जाता
था तब भीड़ उसे दबाती थी ।

और एक स्त्री जिसे बारह बरससे लोहू बहनेका ४३
रोग था जो अपनी सारी जीविका वैद्योंके पीछे उठाके
किसीसे चंगी न हो सकी . तिसने पीछेसे आ उसके ४४
बस्त्रके आंचलको छूआ और उसके लोहूका बहना
तुरन्त थम गया । यीशुने कहा किसने मुझे छूआ . जब ४५
सब मुकर गये तब पितरने और उसके संगियोंने कहा
हे गुरु लोग आपपर भीड़ लगाते और आपको दबाते
हैं और आप कहते हैं किसने मुझे छूआ । यीशुने ४६
कहा किसीने मुझे छूआ क्योंकि मैं जानता हूं कि
मुझमेंसे शक्ति निकली है । जब स्त्रीने देखा कि मैं छिपी ४७
नहीं हूं तब कांपती हुई आई और उसे दंडवत कर सब
लोगोंके साम्ने उसको बताया कि उसने किस कारणसे उस-
को छूआ था और क्योंकर तुरन्त चंगी हुई थी। उसने ४८
उससे कहा हे पुत्री ढाढ़स कर तेरे बिश्वासने तुझे
चंगा किया है कुशलसे चली जा ।

वह बोलताही था कि किसीने सभाके अध्यक्षके घरसे ४९
आ उससे कहा आपकी बेटी मर गई है गुरुको दुःख न
दीजिये। यीशुने यह सुनके उसको उत्तर दिया कि मत ५०
डर केवल बिश्वास कर तो वह चंगी हो जायगी। घरमें ५१
आके उसने पितर और याकूब और योहन और कन्याके

माता पिताको छोड़ और किसीको भीतर जाने न
५२ दिया । सब लोग कन्याके लिये रोते और छाती
पीटते थे परन्तु उसने कहा मत रोओ वह मरी नहीं
५३ पर सोती है । वे यह जानके कि मर गई है उसका
५४ उपहास करने लगे । परन्तु उसने सभोंको बाहर
निकाला और कन्याका हाथ पकड़के ऊंचे शब्दसे
५५ कहा हे कन्या उठ । तब उसका प्राण फिर आया
और वह तुरन्त उठी और उसने आज्ञा किई कि उसे
५६ कुछ खानेको दिया जाय । उसके माता पिता बिस्मित
हुए पर उसने उनको आज्ञा दिई कि यह जो हुआ है
किसीसे मत कहो ।

९ नवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका बारह प्रेरितोंको भेजना । ७ उसके विषयमें हेरोदकी चिन्ता । १० यीशुका प्रेरितोंका समाचार सुनना और लोगोंको उपदेश देना । १२ पांच सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना । १८ यीशुके विषयमें लोगोंका और शिष्योंका बिचार और उसका अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना । २३ शिष्य होनेकी विधि । २८ यीशुका शिष्योंके आगे तेजस्वी दिखाई देना । ३७ एक भूतग्रस्त लड़केको चंगा करना । ४४ अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना । ४६ नम्र होनेका उपदेश । ४९ दूसरे उपदेशकको बर्जनेका निषेध । ५१ शोमिरोनियोंकी और जिन्होंने उसका ग्रहण न किया यीशुकी नम्रता । ५७ शिष्य होनेके विषयमें यीशुकी कथा ।

१ यीशुने अपने बारह शिष्योंको एकट्ठे बुलाके उन्हें
सब भूतोंको निकालनेका और रोगोंको चंगा करनेका
२ सामर्थ्य और अधिकार दिया. और उन्हें ईश्वरके
राज्यकी कथा सुनाने और रोगियोंको चंगा करनेको
३ भेजा । और उसने उनसे कहा मार्गके लिये कुछ मत
लेओ न लाठी न झोली न रोटी न रुपैये और दो दो

ओंगे तुम्हारे पास न होवें। जिस किसी घरमें तुम प्रवेश ४
करो उसीमें रहो और वहींसे निकल जाओ। जो कोई ५
तुम्हें ग्रहण न करें उस नगरसे निकलते हुए उनपर
साक्षी होनेके लिये अपने पांवोंकी धूल भी झाड़ डालो।
सो वे निकलके सर्ब्बत्र सुसमाचार सुनाते और लोगोंको ६
चंगा करते हुए गांव गांव फिरे।

चौथाईका राजा हेरोद सब कुछ जो यीशु करता था ७
सुनके दुबधामें पड़ा क्योंकि कितनोंने कहा योहन मृत-
कोंमेंसे जी उठा है. और कितनोंने कि एलियाह दिखाई ८
दिया है और औरोंने कि अगले भविष्यद्वक्ताओंमेंसे एक
जी उठा है। और हेरोदने कहा योहनको तो मैंने सिर ९
कटवाया परन्तु यह कौन है जिसके विषयमें मैं ऐसी
बातें सुनता हूं. और उसने उसे देखने चाहा।

प्रेरितोंने फिर आके जो कुछ उन्होंने किया था सो १०
यीशुको सुनाया और वह उन्हें संग लेके बैतसैदा नाम
एक नगरके किसी जंगली स्थानमें एकांतमें गया। लोग ११
यह जानके उसके पीछे हो लिये और उसने उन्हें ग्रहण
कर ईश्वरके राज्यके विषयमें उनसे बातें किईं और जि-
न्होंको चंगा किये जानेका प्रयोजन था उन्हें चंगा किया।

जब दिन ढलने लगा तब बारह शिष्योंने आ उससे १२
कहा लोगोंको बिदा कीजिये कि वे चारों ओरकी बस्तियों
और गांवोंमें जाके टिकें और भोजन पावें क्योंकि हम
यहां जंगली स्थानमें हैं। उसने उनसे कहा तुम उन्हें १३
खानेको देओ. वे बोले हमारे पास पांच रोटियां और
दो मछलियोंसे अधिक कुछ नहीं है पर हां हम जाके

१४ इन सब लोगोंके लिये भोजन मोल लेवें तो होय। वे
लोग पांच सहस्र पुरुषोंके अटकल थे. उसने अपने शिष्यों-
से कहा उन्हें पचास पचास करके पांति पांति बैठाओ।
१५ १६ उन्होंने ऐसा किया और सभोंको बैठाया। तब उसने
उन पांच रोटियों और दो मछलियोंको ले स्वर्गकी
ओर देखके उनपर आशीस दिई और उन्हें तोड़के
१७ शिष्योंको दिया कि लोगोंके आगे रखें। सो सब खाके
तृप्त हुए और जो टुकड़े उन्होंसे बच रहे उनकी बारह
टोकरी उठाई गईं।

१८ जब वह एकांतमें प्रार्थना करता था और शिष्य
लोग उसके संग थे तब उसने उनसे पूछा कि लोग क्या
१९ कहते हैं मैं कौन हूं। उन्होंने उत्तर दिया कि वे आपको
योहन बपतिसमा देनेहारा कहते हैं परन्तु कितने एलि-
याह कहते हैं और कितने कहते हैं कि अगले भविष्यद्वक्ता-
२० ओंमेंसे कोई जी उठा है। उसने उनसे कहा तुम क्या
कहते हो मैं कौन हूं. पितरने उत्तर दिया कि ईश्वरका
२१ अभिषिक्त जन। तब उसने उन्हें दृढ़तासे आज्ञा दिई
२२ कि यह बात किसीसे मत कहो। और उसने कहा
मनुष्यके पुत्रको अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और
प्राचीनों और प्रधान याजकों और अध्यापकोंसे तुच्छ
किया जाय और मार डाला जाय और तीसरे दिन जी
उठे।

२३ उसने सभोंसे कहा यदि कोई मेरे पीछे आने चाहे
तो अपनी इच्छाको मारे और प्रतिदिन अपना क्रूश
२४ उठाके मेरे पीछे आवे। क्योंकि जो कोई अपना प्राण

बचाने चाहे सो उसे खोवेगा परन्तु जो कोई मेरे लिये
अपना प्राण खोवे सो उसे बचावेगा। जो मनुष्य सारे २५
जगतको प्राप्त करे और अपनेको नाश करे अथवा
गंवावे उसको क्या लाभ होगा। जो कोई मुझसे और २६
मेरी बातोंसे लजावे मनुष्यका पुत्र जब अपने और
पिताके और पवित्र दूतोंके ऐश्वर्य्यमें आवेगा तब
उससे लजावेगा। मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो यहां २७
खड़े हैं उनमेंसे कोई कोई हैं कि जबलों ईश्वरका
राज्य न देखें तबलों मृत्युका स्वाद न चीखेंगे।

इन बातोंसे दिन आठ एकके पीछे यीशु पितर और २८
योहन और याकूबको संग ले प्रार्थना करनेको पर्ब्बतपर
चढ़ गया। जब वह प्रार्थना करता था तब उसके मुंहका २९
रूप औरही हो गया और उसका बस्त्र उजला हुआ
और चमकने लगा। और देखो दो मनुष्य अर्थात मूसा ३०
और एलियाह उसके संग बात करते थे। वे तेजोमय ३१
दिखाई दिये और उसकी मृत्युकी जिसे वह यिरूशली-
ममें पूरी करनेपर था बात करते थे। पितर और उसके ३२
संगियोंकी आंखें नींदसे भरी थीं परन्तु वे जागते रहे
और उसका ऐश्वर्य्य और उन दो मनुष्योंको जो उसके संग
खड़े थे देखा। जब वे उसके पाससे जाने लगे तब पितरने ३३
यीशुसे कहा हे गुरु हमारा यहां रहना अच्छा है. हम
तीन डेरे बनावें एक आपके लिये एक मूसाके लिये और
एक एलियाहके लिये . वह नहीं जानता था कि क्या
कहता था। उसके यह कहते हुए एक मेघने आ उन्हें ३४
छा लिया और जब उन दोनोंने उस मेघमें प्रवेश किया

३५ तब वे डर गये। और उस मेघसे यह शब्द हुआ कि यह
३६ मेरा प्रिय पुत्र है उसकी सुनो। यह शब्द होनेके पीछे यीशु
अकेला पाया गया और उन्होंने इसको गुप्त रखा और
जो देखा था उसकी कोई बात उन दिनोंमें किसीसे न
कही।

३७ दूसरे दिन जब वे उस पर्व्वतसे उतरे तब बहुत लोग
३८ उससे आ मिले। और देखो भीड़मेंसे एक मनुष्यने
पुकारके कहा हे गुरु मैं आपसे बिन्ती करता हूं कि
मेरे पुत्रपर दृष्टि कीजिये क्योंकि वह मेरा एकलौता है।
३९ और देखिये एक भूत उसे पकड़ता है और वह अचांचक
चिल्लाता है और भूत उसे ऐसा मरोड़ता कि वह मुंहसे
फेन बहाता है और उसे चूर कर कठिनसे छोड़ता है।
४० और मैंने आपके शिष्योंसे बिन्ती किई कि उसे निकालें
४१ परन्तु वे नहीं सके। यीशुने उत्तर दिया कि हे अबिश्वासी
और हठीले लोगो मैं कबलों तुम्हारे संग रहूंगा और
४२ तुम्हारी सहूंगा. अपने पुत्रको यहां ले आ। वह आताही
था कि भूतने उसे पटकके मरोड़ा परन्तु यीशुने अशुद्ध
भूतको डांटके लड़केको चंगा किया और उसे उसके
४३ पिताको सोंप दिया। तब सब लोग ईश्वरकी महाशक्ति-
से अचंभित हुए।

४४ जब समस्त लोग सब कामोंसे जो यीशुने किये अचंभा
करते थे तब उसने अपने शिष्योंसे कहा तुम इन बातोंको
अपने कानोंमें रखो क्योंकि मनुष्यका पुत्र मनुष्योंके
४५ हाथमें पकड़वाया जायगा। परन्तु उन्होंने यह बात न
समझी और वह उनसे छिपी थी कि उन्हें बूझ न पड़े

ओर वे इस बातके विषयमें उससे पूछनेको डरते थे।
उन्होंमें यह बिचार होने लगा कि हममेंसे बड़ा कौन ४६
है। यीशुने उनके मनका बिचार जानके एक बालकको ४७
लेके अपने पास खड़ा किया . और उनसे कहा जो ४८
कोई मेरे नामसे इस बालकको ग्रहण करे वह मुझे
ग्रहण करता है और जो कोई मुझे ग्रहण करे वह
मेरे भेजनेहारेको ग्रहण करता है . जो तुम सभोंमें
अति छोटा है वही बड़ा होगा ।
तब योहनने उत्तर दिया कि हे गुरु हमने किसी ४९
मनुष्यको आपके नामसे भूतोंको निकालते देखा और
हमने उसे बर्जा क्योंकि वह हमारे संग नहीं चलता है ।
यीशुने उससे कहा मत बर्जा क्योंकि जो हमारे बिरुद्ध ५०
नहीं है सो हमारी ओर है ।
जब उसके उठाये जानेके दिन पहुंचे तब उसने ५१
यिरूशलीम जानेको अपना मन दृढ़ किया । और ५२
उसने दूतोंको अपने आगे भेजा और उन्होंने जाके उस-
के लिये तैयारी करनेको शोमिरोनियोंके एक गांवमें
प्रवेश किया । परन्तु उन लोगोंने उसे ग्रहण न किया ५३
क्योंकि वह यिरूशलीमकी ओर जानेका मुंह किये था ।
यह देखके उसके शिष्य याकूब और योहन बोले हे ५४
प्रभु आपकी इच्छा होय तो हम आगके आकाशसे गिरने
और उन्हें नाश करनेकी आज्ञा देवें जैसा एलियाहने
भी किया । परन्तु उसने पीछे फिरके उन्हें डांटके कहा ५५
क्या तुम नहीं जानते हो तुम कैसे आत्माके हो ।
मनुष्यका पुत्र मनुष्योंके प्राण नाश करनेको नहीं परन्तु ५६

बचानेको आया है . तब वे दूसरे गांवको चले गये।
५७ जब वे मार्गमें जाते थे तब किसी मनुष्यने यीशुसे कहा
हे प्रभु जहां जहां आप जायें तहीं मैं आपके पीछे चलूंगा।
५८ यीशुने उससे कहा लोमड़ियोंको मांदें और आकाशके
पंछियोंको बसेरे हैं परन्तु मनुष्यके पुत्रको सिर रखनेका
५९ स्थान नहीं है। उसने दूसरेसे कहा मेरे पीछे आ . उसने
कहा हे प्रभु मुझे पहिले जाके अपने पिताको गाड़ने
६० दीजिये। यीशुने उससे कहा मृतकोंको अपने मृतकोंको
गाड़ने दे परन्तु तू जाके ईश्वरके राज्यकी कथा सुना।
६१ दूसरेने भी कहा हे प्रभु मैं आपके पीछे चलूंगा परन्तु
पहिले मुझे अपने घरके लोगोंसे बिदा होने दीजिये।
६२ यीशुने उससे कहा अपना हाथ हलपर रखके जो कोई
पीछे देखे सो ईश्वरके राज्यके योग्य नहीं है।

१० दसवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका सत्तर शिष्योंको ठहराके भेजना। १३ कई एक नगरोंके अबिश्वासपर उलहना। १७ सत्तर शिष्योंके संग यीशुकी बातचीत और उसका अपने पिताका धन्य मानना। २५ व्यवस्थापकका उत्तर देना और दयावन्त शोमिरोनीका दृष्टान्त। ३८ मर्था और मरियमसे यीशुकी बातचीत।

१ इसके पीछे प्रभुने सत्तर और शिष्योंको भी ठहराके
उन्हें दो दो करके हर एक नगर और स्थानको जहां वह
२ आप जानेपर था अपने आगे भेजा। और उसने उनसे
कहा कटनी बहुत है परन्तु बनिहार थोड़े हैं इसलिये
कटनीके स्वामीसे बिन्ती करो कि वह अपनी कटनीमें
३ बनिहारोंको भेजे। जाओ देखो मैं तुम्हें मेम्नोंकी नाईं
४ हुंड़ारोंके बीचमें भेजता हूं। न थैली न झोली न जूते

ले जाओ और मार्गमें किसीको नमस्कार मत करो।
जिस किसी घरमें तुम प्रवेश करो पहिले कहो इस घरका ५
कल्याण होय। यदि वहां कोई कल्याणके योग्य हो तो ६
तुम्हारा कल्याण उसपर ठहरेगा नहीं तो तुम्हारे पास
फिर आवेगा। जो कुछ उन्होंके यहां मिले सोई खाते ७
और पीते हुए उसी घरमें रहो क्योंकि बनिहार अपनी
बनिके योग्य है. घर घर मत फिरो। जिस किसी नगरमें ८
तुम प्रवेश करो और लोग तुम्हें ग्रहण करें वहां जो कुछ
तुम्हारे आगे रखा जाय सो खाओ। और उसमेंके ९
रोगियोंको चंगा करो और लोगोंसे कहो कि ईश्वरका
राज्य तुम्हारे निकट पहुंचा है। परन्तु जिस किसी नगर- १०
में प्रवेश करो और लोग तुम्हें ग्रहण न करें उसकी
सड़कोंपर जाके कहो. तुम्हारे नगरकी धूल भी जो ११
हमोंपर लगी है हम तुम्हारे आगे पोंछ डालते हैं तौभी
यह जानो कि ईश्वरका राज्य तुम्हारे निकट पहुंचा है।
मैं तुमसे कहता हूं कि उस दिनमें उस नगरकी दशासे १२
सदोमकी दशा सहने योग्य होगी।

हाय तू कोराजीन. हाय तू बैतसैदा. जो आश्चर्य्य १३
कर्म्म तुम्होंमें किये गये हैं सो यदि सोर और सीदोनमें
किये जाते तो बहुत दिन बीते होते कि वे टाट पहिने
राखमें बैठके पश्चात्ताप करते। परन्तु विचारके दिनमें १४
तुम्हारी दशासे सोर और सीदोनकी दशा सहने योग्य
होगी। और हे कफर्नाहुम जो स्वर्गलों ऊंचा किया १५
गया है तू नरकलों नीचा किया जायगा। जो तुम्हारी १६
सुनता है सो मेरी सुनता है और जो तुम्हें तुच्छ जानता

है सो मुझे तुच्छ जानता है और जो मुझे तुच्छ जानता
है सो मेरे भेजनेहारेको तुच्छ जानता है ।
१७ तब वे सत्तर शिष्य आनन्दसे फिर आके बोले हे
१८ प्रभु आपके नामसे भूत भी हमारे बशमें हैं । उसने
उनसे कहा मैंने शैतानको बिजलीकी नाईं स्वर्गसे गिरते
१९ देखा । देखा मैं तुम्हें सांपों और बिच्छूओंको रौंदनेका
और शत्रुके सारे पराक्रमपर सामर्थ्य देता हूं और
२० किसी बस्तुसे तुम्हें कुछ हानि न होगी । तौभी इसमें
आनन्द मत करो कि भूत तुम्हारे बशमें हैं परन्तु इसीमें
आनन्द करो कि तुम्हारे नाम स्वर्गमें लिखे हुए हैं ।
२१ उसी घड़ी यीशु आत्मामें आनन्दित हुआ और कहा हे
पिता स्वर्ग और पृथिवीके प्रभु मैं तेरा धन्य मानता हूं
कि तूने इन बातोंको ज्ञानवानों और बुद्धिमानोंसे गुप्त
रखा है और उन्हें बालकोंपर प्रगट किया है . हां हे
२२ पिता क्योंकि तेरी दृष्टिमें यही अच्छा लगा । मेरे पिताने
मुझे सब कुछ सोंपा है और पुत्र कौन है सो कोई
नहीं जानता केवल पिता और पिता कौन है सो कोई
नहीं जानता केवल पुत्र और वही जिसपर पुत्र उसे प्रगट
२३ किया चाहे । तब उसने अपने शिष्योंकी ओर फिरके
निरालेमें कहा जो तुम देखते हो उसे जो नेत्र देखें सो
२४ धन्य हैं । क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि जो तुम देखते
हो उसको बहुतेरे भविष्यद्वक्ताओं और राजाओंने
देखने चाहा पर न देखा और जो तुम सुनते हो
उसको सुनने चाहा पर न सुना ।
२५ देखो किसी व्यवस्थापकने उठके उसकी परीक्षा करने-

को कहा हे गुरु कौन काम करनेसे मैं अनन्त जीवनका
अधिकारी होंगा। उसने उससे कहा व्यवस्थामें क्या लिखा २६
है . तू कैसे पढ़ता है। उसने उत्तर दिया कि तू परमे- २७
श्वर अपने ईश्वरको अपने सारे मनसे और अपने सारे
प्राणसे और अपनी सारी शक्तिसे और अपनी सारी
बुद्धिसे प्रेम कर और अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम
कर। यीशुने उससे कहा तूने ठीक उत्तर दिया है . यह २८
कर तो तू जीयेगा। परन्तु उसने अपने तईं धर्म्मी २९
ठहरानेकी इच्छा कर यीशुसे कहा मेरा पड़ोसी कौन है।
यीशुने उत्तर दिया कि एक मनुष्य यिरूशलीमसे यिरी- ३०
होको जाते हुए डाकूओंके हाथमें पड़ा जिन्होंने उसके
वस्त्र उतार लिये और उसे घायल कर अधमूआ छोड़के
चले गये। संयोगसे कोई याजक उस मार्गसे जाता था ३१
परन्तु उसे देखके साम्हनेसे होके चला गया। इसी ३२
रीतिसे एक लेवीय भी जब उस स्थानपर पहुंचा तब
आके उसे देखा और साम्हनेसे होके चला गया। परन्तु ३३
एक शोमिरोनी पथिक उस स्थानपर आया और उसे
देखके दया किई . और उस पास जाके उसके घावोंपर ३४
तेल और दाख रस ढालके पट्टियां बांधीं और उसे
अपनेही पशुपर बैठाके सरायमें लाके उसकी सेवा किई।
बिहान हुए उसने बाहर आ दो सूकी निकालके भठि- ३५
यारेको दिईं और उससे कहा उस मनुष्यकी सेवा कर
और जो कुछ तेरा और लगेगा सो मैं जब फिर आऊंगा
तब तुझे भर देऊंगा। सो तू क्या समझता है जो डाकू- ३६
ओंके हाथमें पड़ा उसका पड़ोसी इन तीनोंमेंसे कौन

३७ था । व्यवस्थापकने कहा वह जिसने उसपर दया किई .
तब यीशुने उससे कहा जा तू भी वैसाही कर ।
३८ उन्होंके जाते हुए उसने किसी गांवमें प्रवेश किया
और मर्था नाम एक स्त्रीने अपने घरमें उसकी पहुनई
३९ किई । उसको मरियम नाम एक बहिन थी जो यीशुके
४० चरणोंके पास बैठके उसका बचन सुनती थी । परन्तु
मर्था बहुत सेवकाईमें बझी हुई थी और वह निकट
आके बोली हे प्रभु क्या आपको सोच नहीं है कि मेरी
बहिनने मुझे अकेली सेवा करनेको छोड़ी है . इसलिये
४१ उसको आज्ञा दीजिये कि मेरी सहायता करे। यीशुने
उसको उत्तर दिया हे मर्था हे मर्था तू बहुत बातोंके
४२ लिये चिन्ता करती और घबराती है । परन्तु एक
बात आवश्यक है. और मरियमने उस उत्तम भागको
चुना है जो उससे नहीं लिया जायगा ।

११ एग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ प्रार्थनाके विषयमें यीशुका उपदेश । १४ लोगोंके अपबादका खंडन । २४ यिहूदियोंकी बुरी दशा । २७ धन्य कौन हैं उसका बर्णन । २९ यिहूदियोंके दोषका प्रमाण। ३३ दीपकका दृष्टान्त । ३७ यीशुका फरीशियोंको उलहना देना । ४५ व्यवस्थापकोंको उलहना देना ।

१ जब यीशु एक स्थानमें प्रार्थना करता था ज्यों उसने
समाप्ति किई त्यों उसके शिष्योंमेंसे एकने उससे कहा
हे प्रभु जैसे योहनने अपने शिष्योंको सिखाया तैसे आप
२ हमें प्रार्थना करनेको सिखाइये । उसने उनसे कहा जब
तुम प्रार्थना करो तब कहो हे हमारे स्वर्गबासी पिता
तेरा नाम पवित्र किया जाय तेरा राज्य आवे तेरी इच्छा
३ जैसे स्वर्गमें वैसे पृथिवीपर पूरी होय . हमारी दिनभरकी

रोटी प्रतिदिन हमें दे. और हमारे पापोंको क्षमा कर ४
क्योंकि हम भी अपने हर एक ऋणीको क्षमा करते हैं
और हमें परीक्षामें मत डाल परन्तु दुष्टसे बचा ।
और उसने उनसे कहा तुममेंसे कौन है कि उसका ५
एक मित्र होय और वह आधी रातको उस पास जाके
उससे कहे कि हे मित्र मुझे तीन रोटी उधार दीजिये.
क्योंकि एक पथिक मेरा मित्र मुझ पास आया है और ६
उसके आगे रखनेको मेरे पास कुछ नहीं है. और वह ७
भीतरसे उत्तर देवे कि मुझे दुःख न देना अब तो द्वार मूंदा
गया है और मेरे बालक मेरे संग सोये हुए हैं मैं उठके
तुझे नहीं दे सकता हूं । मैं तुमसे कहता हूं जो वह ८
इसलिये नहीं उसे उठके देगा कि उसका मित्र है तौभी
उसके लाज छोड़के मांगनेके कारण उठके उसको जितना
कुछ आवश्यक हो उतना देगा । और मैं तुम्होंसे कहता ९
हूं कि मांगो तो तुम्हें दिया जायगा ढूंढ़ो तो तुम पाओगे
खटखटाओ तो तुम्हारे लिये खोला जायगा । क्योंकि जो १०
कोई मांगता है उसे मिलता है और जो ढूंढ़ता है सो पाता
है और जो खटखटाता है उसके लिये खोला जायगा ।
तुममेंसे कौन पिता होगा जिससे पुत्र रोटी मांगे क्या ११
वह उसको पत्थर देगा . और जो वह मछली मांगे तो
क्या वह मछलीकी सन्ती उसको सांप देगा । अथवा जो १२
वह अंडा मांगे तो क्या वह उसको बिच्छू देगा । सो यदि १३
तुम बुरे होके अपने लड़कोंको अच्छे दान देने जानते
हो तो कितना अधिक करके स्वर्गीय पिता उन्होंको
जो उससे मांगते हैं पवित्र आत्मा देगा ।

१४ यीशु एक भूतको जो गूंगा था निकालता था. जब
भूत निकल गया तब वह गूंगा बोलने लगा और लोगोंने
१५ अचंभा किया। परन्तु उनमेंसे कोई कोई बोले यह तो
बालजिबूल नाम भूतोंके प्रधानकी सहायतासे भूतोंको
१६ निकालता है। औरोंने उसकी परीक्षा करनेको उससे
१७ आकाशका एक चिन्ह मांगा। पर उसने उनके मनकी
बातें जानके उनसे कहा जिस जिस राज्यमें फूट पड़ी
है वह राज्य उजड़ जाता है और घरसे घर जो बिगड़ता
१८ है सो नाश होता है। और यदि शैतानमें भी फूट पड़ी
है तो उसका राज्य क्योंकर ठहरेगा. तुम लोग तो कहते
हो कि मैं बालजिबूलकी सहायतासे भूतोंको निकालता
१९ हूं। पर यदि मैं बालजिबूलकी सहायतासे भूतोंको निका-
लता हूं तो तुम्हारे सन्तान किसकी सहायतासे निका-
२० लते हैं. इसलिये वे तुम्हारे न्याय करनेहारे होंगे। परन्तु
जो मैं ईश्वरकी उंगलीसे भूतोंको निकालता हूं तो अवश्य
२१ ईश्वरका राज्य तुम्हारे पास पहुंच चुका है। जब हथियार
बांधे हुए बलवन्त अपने घरकी रखवाली करता है तब
२२ उसकी सम्पत्ति कुशलसे रहती है। परन्तु जब वह जो
उससे अधिक बलवन्त है उसपर आ पहुंचकर उसे
जीतता है तब उसके सम्पूर्ण हथियार जिनपर वह
भरोसा रखता था छीन लेता और उसका लूटा हुआ
२३ धन बांटता है। जो मेरे संग नहीं है सो मेरे बिरुद्ध है
और जो मेरे संग नहीं बटोरता सो बिथराता है।
२४ जब अशुद्ध भूत मनुष्यसे निकल जाता है तब सूखे
स्थानोंमें बिश्राम ढूंढ़ता फिरता है परन्तु जब नहीं पाता

तब कहता है कि मैं अपने घरमें जहांसे निकला फिर
जाऊंगा। और वह आके उसे झाड़ा बुहारा सुथरा पाता २५
है। तब वह जाके अपनेसे अधिक दुष्ट सात और भूतोंको २६
ले आता है और वे भीतर पैठके वहां बास करते हैं और
उस मनुष्यकी पिछली दशा पहिलीसे बुरी होती है।

वह यह बातें कहताही था कि भीड़मेंसे किसी स्त्रीने २७
ऊंचे शब्दसे उससे कहा धन्य वह गर्भ जिसने तुझे धारण
किया और वे स्तन जो तूने पिये। उसने कहा हां पर २८
वेही धन्य हैं जो ईश्वरका बचन सुनके पालन करते हैं।

जब बहुत लोगोंकी भीड़ एकट्ठी होने लगी तब वह २९
कहने लगा कि इस समयके लोग दुष्ट हैं. वे चिन्ह
ढूंढ़ते हैं परन्तु कोई चिन्ह उनको नहीं दिया जायगा
केवल यूनस भविष्यद्वक्ताका चिन्ह। जैसा यूनस निनिवीय ३०
लोगोंके लिये चिन्ह था वैसाही मनुष्यका पुत्र इस समय-
के लोगोंके लिये होगा। दक्षिणकी राणी बिचारके ३१
दिनमें इस समयके मनुष्योंके संग उठके उन्हें दोषी
ठहरावेगी क्योंकि वह सुलेमानका ज्ञान सुननेको पृथि-
वीके अन्तसे आई और देखो यहां एक है जो सुलेमानसे
भी बड़ा है। निनिवीके लोग बिचारके दिनमें इस ३२
समयके लोगोंके संग खड़े हो उन्हें दोषी ठहरावेंगे
क्योंकि उन्होंने यूनसका उपदेश सुनके पश्चात्ताप किया
और देखो यहां एक है जो यूनससे भी बड़ा है।

कोई मनुष्य दीपकको बारके गुप्तमें अथवा बर्त्तनके ३३
नीचे नहीं रखता है परन्तु दीवटपर कि जो भीतर आवें
सो उजियाला देखें। शरीरका दीपक आंख है इसलिये ३४

जब तेरी आंख निर्म्मल है तब तेरा सकल शरीर भी
उजियाला है परन्तु जब वह बुरी है तब तेरा शरीर
३५ भी अंधियारा है । सो देख लो कि जो ज्योति तुझमें
३६ है सो अंधकार न होवे । यदि तेरा सकल शरीर
उजियाला हो और उसका कोई अंश अंधियारा न हो
तो जैसा कि जब दीपक अपनी चमकसे तुझे ज्योति
देवे तैसाही वह सब प्रकाशमान होगा ।
३७ जब यीशु बात करता था तब किसी फरीशीने उससे
बिन्ती किई कि मेरे यहां भोजन कीजिये और वह भीतर
३८ जाके भोजनपर बैठा । फरीशीने जब देखा कि उसने
३९ भोजनके पहिले नहीं धोया तब अचंभा किया । प्रभुने
उससे कहा अब तुम फरीशी लोग कटोरे और थालको
बाहर बाहर शुद्ध करते हो परन्तु तुम्हारा अन्तर अन्धेर
४० और दुष्टतासे भरा है । हे निर्बुद्धि लोगो जिसने बाहर-
४१ को बनाया क्या उसने भीतरको भी नहीं बनाया । परन्तु
भीतरवाली बस्तुओंको दान करो तो देखो तुम्हारे लिये
४२ सब कुछ शुद्ध है । परन्तु हाय तुम फरीशियो तुम पोदीने
और आरूदेका और सब भांतिके साग पातका दसवां
अंश देते हो परन्तु न्यायको और ईश्वरके प्रेमको उल्लंघन
करते हो . इन्हें करना और उन्हें न छोड़ना उचित
४३ था । हाय तुम फरीशियो तुम्हें सभाके घरोंमें ऊंचे आसन
४४ और बाजारोंमें नमस्कार प्रिय लगते हैं । हाय तुम
कपटी अध्यापको और फरीशियो तुम उन कबरोंके
समान हो जो दिखाई नहीं देतीं और मनुष्य जो
उनके ऊपरसे चलते हैं नहीं जानते हैं ।

तब व्यवस्थापकोंमेंसे किसीने उसको उत्तर दिया कि ४५
हे गुरु यह बातें कहनेसे आप हमोंकी भी निन्दा करते
हैं। उसने कहा हाय तुम व्यवस्थापको भी तुम बोझे ४६
जिनको उठाना कठिन है मनुष्योंपर लादते हो परन्तु
तुम आप उन बोझोंको अपनी एक उंगलीसे नहीं छूते
हो। हाय तुम लोग तुम भविष्यद्वक्ताओंकी कबरें बनाते ४७
हो जिन्हें तुम्हारे पितरोंने मार डाला। सो तुम अपने ४८
पितरोंके कामोंपर साक्षी देते हो और उनमें सम्मति
देते हो क्योंकि उन्होंने तो उन्हें मार डाला और तुम
उनकी कबरें बनाते हो। इसलिये ईश्वरके ज्ञानने कहा ४९
है कि मैं उन्होंके पास भविष्यद्वक्ताओं और प्रेरितोंको
भेजूंगा और वे उनमेंसे कितनोंको मार डालेंगे और
सतावेंगे. कि हाबिलके लोहूसे लेके जिखरियाहके ५०
लोहूतक जो वेदी और मन्दिरके बीचमें घात किया
गया जितने भविष्यद्वक्ताओंका लोहू जगतकी उत्पत्तिसे
बहाया जाता है सबका लेखा इस समयके लोगोंसे लिया
जाय। हां मैं तुमसे कहता हूं उसका लेखा इसी समय- ५१
के लोगोंसे लिया जायगा। हाय तुम व्यवस्थापको ५२
तुमने ज्ञानकी कुंजी ले लिई है. तुमने आपही प्रवेश
नहीं किया है और प्रवेश करनेहारोंको बर्जा है।

जब वह उन्होंसे यह बातें कहता था तब अध्यापक ५३
और फरीशी लोग निपट बैर करने और बहुत बातोंके
विषयमें उसे कहवाने लगे. और दांव ताकते हुए उसके ५४
मुंहसे कुछ पकड़ने चाहते थे कि उसपर दोष लगावें।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका अपने शिष्योंको अनेक बातोंके विषयमें चिताना। १३ निर्बुद्धि धनवानका दृष्टान्त। २२ संसारमें मन लगानेका निषेध। ३५ सचेत रहनेका उपदेश और दासोंका दृष्टान्त। ४९ अवैये दुःखोंका भविष्यद्वाक्य। ५४ कपटियोंपर उलहना।

१ उस समयमें सहस्रों लोग एकट्ठे हुए यहांलों कि एक
दूसरेपर गिरे पड़ते थे इसपर यीशु अपने शिष्योंसे पहिले
कहने लगा कि फरीशियोंके खमीरसे अर्थात कपटसे
२ चौकस रहो। कुछ छिपा नहीं है जो प्रगट न किया
जायगा और न कुछ गुप्त है जो जाना न जायगा।
३ इसलिये जो कुछ तुमने अंधियारेमें कहा है सो उजियाले-
में सुना जायगा और जो तुमने कोठरियोंमें कानोंमें
४ कहा है सो कोठोंपरसे प्रचार किया जायगा। मैं तुम्होंसे
जो मेरे मित्र हो कहता हूं कि जो शरीरको मार डालते
हैं परन्तु उसके पीछे और कुछ नहीं कर सकते हैं
५ उनसे मत डरो। मैं तुम्हें बताऊंगा तुम किससे डरो.
घात करनेके पीछे नरकमें डालनेका जिसको अधिकार
है उसीसे डरो. हां मैं तुमसे कहता हूं उसीसे डरो।
६ क्या दो पैसेमें पांच गौरैया नहीं बिकतीं तौभी ईश्वर
७ उनमेंसे एकको भी नहीं भूलता है। परन्तु तुम्हारे सिरके
बाल भी सब गिने हुए हैं इसलिये मत डरो तुम बहुत
८ गौरैयाओंसे अधिक मोलके हो। मैं तुमसे कहता हूं जो
कोई मनुष्योंके आगे मुझे मान लेवे उसे मनुष्यका पुत्र
९ भी ईश्वरके दूतोंके आगे मान लेगा। परन्तु जो मनुष्यों-
के आगे मुझे नकारे सो ईश्वरके दूतोंके आगे नकारा
१० जायगा। जो कोई मनुष्यके पुत्रके बिरोधमें बात कहे वह

उसके लिये क्षमा किई जायगी परन्तु जो पवित्र आत्मा-
की निन्दा करे वह उसके लिये नहीं क्षमा किई जायगी।
जब लोग तुम्हें सभाओं और अध्यक्षों और अधिकारियों- ११
के आगे ले जावें तब किस रीतिसे अथवा क्या उत्तर
देओगे अथवा क्या कहोगे इसकी चिन्ता मत करो।
क्योंकि जो कुछ कहना उचित होगा सो पवित्र आत्मा १२
उसी घड़ी तुम्हें सिखावेगा।

भीड़मेंसे किसीने उससे कहा हे गुरु मेरे भाईसे कहिये १३
कि पिताका धन मेरे संग बांट लेवे। उसने उससे कहा १४
हे मनुष्य किसने मुझे तुम्होंपर न्यायी अथवा बांटनेहारा
ठहराया। और उसने लोगोंसे कहा देखो लोभसे बचे १५
रहो क्योंकि किसीको धन बहुत होय तौभी उसका जीवन
उसके धनसे नहीं है। उसने उन्होंसे एक दृष्टान्त भी कहा १६
कि किसी धनवान मनुष्यकी भूमिमें बहुत कुछ उपजा।
तब वह अपने मनमें बिचार करने लगा कि मैं क्या करूं १७
क्योंकि मुझको अपना अन्न रखनेका स्थान नहीं है।
और उसने कहा मैं यही करूंगा मैं अपनी बखारियां १८
तोड़के बड़ी बड़ी बनाऊंगा और वहां अपना सब अन्न
और अपनी सम्पत्ति रखूंगा। और मैं अपने मनसे १९
कहूंगा हे मन तेरे पास बहुत बरसोंके लिये बहुत सम्पत्ति
रखी हुई है बिश्राम कर खा पी सुखसे रह। परन्तु २०
ईश्वरने उससे कहा हे मूर्ख इसी रात तेरा प्राण तुझसे
ले लिया जायगा तब जो कुछ तूने एकट्ठा किया है सो
किसका होगा। जो अपने लिये धन बटोरता है और २१
ईश्वरकी ओर धनी नहीं है सो ऐसाही है।

२२ फिर उसने अपने शिष्योंसे कहा इसलिये मैं तुमसे
कहता हूं अपने प्राणके लिये चिन्ता मत करो कि हम
२३ क्या खायेंगे न शरीरके लिये कि क्या पहिरेंगे। भोजनसे
२४ प्राण और वस्त्रसे शरीर बड़ा है । कौवोंको देख लो.
वे न बोते हैं न लवते हैं उनको न भंडार न खत्ता है
तौभी ईश्वर उनको पालता है. तुम पंछियोंसे कितने
२५ बड़े हो। तुममेंसे कौन मनुष्य चिन्ता करनेसे अपनी
२६ आयुकी डोड़को एक हाथ भी बढ़ा सकता है । सो यदि
तुम अति छोटा काम भी नहीं कर सकते हो तो और
२७ बातोंके लिये क्यों चिन्ता करते हो । सोसन फूलोंको
देख लो वे कैसे बढ़ते हैं . वे न परिश्रम करते हैं न
कातते हैं परन्तु मैं तुमसे कहता हूं कि सुलेमान भी
अपने सारे विभवमें उनमेंसे एकके तुल्य बिभूषित न था।
२८ यदि ईश्वर घासको जो आज खेतमें है और कल चूल्हेमें
झोंकी जायगी ऐसी विभूषित करता है तो हे अल्पबिश्वा-
२९ सियो कितना अधिक करके वह तुम्हें पहिरावेगा । तुम
यह खोज मत करो कि हम क्या खायेंगे अथवा क्या पीयेंगे
३० और न सन्देह करो । जगतके देवपूजक लोग इन सब
बस्तुओंकी खोज करते हैं और तुम्हारा पिता जानता है
३१ कि तुम्हें इन बस्तुओंका प्रयोजन है । परन्तु ईश्वरके
राज्यकी खोज करो तब यह सब बस्तु भी तुम्हें दिई
३२ जायेंगीं । हे छोटे झुंड मत डरो क्योंकि तुम्हारे पिताको
३३ तुम्हें राज्य देनेमें प्रसन्नता है । अपनी सम्पत्ति बेचके
दान करो. अजर थैलियां और अक्षय धन अपने लिये
स्वर्गमें एकट्ठा करो जहां चोर नहीं पहुंचता है और न

कीड़ा बिगाड़ता है। क्योंकि जहां तुम्हारा धन है तहां ३४
तुम्हारा मन भी लगा रहेगा।
तुम्हारी कमरें बंधी और दीपक जलते रहें। और ३५
तुम उन मनुष्योंके समान होओ जो अपने स्वामीकी ३६
बाट देखते हैं कि वह बिवाहसे कब लौटेगा इसलिये
कि जब वह आके द्वार खटखटावे तब वे उसके लिये
तुरन्त खोलें। वे दास धन्य हैं जिन्हें स्वामी आके जागते ३७
पावे. मैं तुमसे सच कहता हूं वह कमर बांधके उन्हें
भोजनपर बैठावेगा और आके उनकी सेवा करेगा। जो ३८
वह दूसरे पहर आवे अथवा तीसरे पहर आवे और
ऐसाही पावे तो वे दास धन्य हैं। तुम यह जानते हो ३९
कि यदि घरका स्वामी जानता चोर किस घड़ी आवेगा
तो वह जागता रहता और अपने घरमें सेंध पड़ने न
देता। इसलिये तुम भी तैयार रहो क्योंकि जिस घड़ीका ४०
अनुमान तुम नहीं करते हो उसी घड़ी मनुष्यका पुत्र
आवेगा। तब पितरने उससे कहा हे प्रभु क्या आप हमोंसे ४१
अथवा सब लोगोंसे भी यह दृष्टान्त कहते हैं। प्रभुने ४२
कहा वह बिश्वासयोग्य और बुद्धिमान भंडारी कौन है
जिसे स्वामी अपने परिवारपर प्रधान करेगा कि समयमें
उन्हें सीधा देवे। वह दास धन्य है जिसे उसका स्वामी ४३
आके ऐसा करते पावे। मैं तुमसे सच कहता हूं वह उसे ४४
अपनी सब सम्पत्तिपर प्रधान करेगा। परन्तु जो वह दास ४५
अपने मनमें कहे कि मेरा स्वामी आनेमें बिलंब करता
है और दासों और दासियोंको मारने लगे और खाने
पीने और मतवाला होने लगे. तो जिस दिन वह बाट ४६

जोहता न रहे और जिस घड़ीका वह अनुमान न
करे उसीमें उस दासका स्वामी आवेगा और उसको
बड़ी ताड़ना देके अविश्वासियोंके संग उसका अंश देगा।
४७ वह दास जो अपने स्वामीकी इच्छा जानता था परन्तु
तैयार न रहा और उसकी इच्छाके समान न किया
बहुतसी मार खायगा परन्तु जो नहीं जानता था और
मार खानेके योग्य काम किया सो थोड़ीसी मार खाय-
४८ गा। और जिस किसीको बहुत दिया गया है उससे
बहुत मांगा जायगा और जिसको लोगोंने बहुत सोंपा
है उससे वे अधिक मांगेंगे।
४९ मैं पृथिवीपर आग लगाने आया हूं और मैं क्या
५० चाहता हूं केवल यह कि अभी सुलग जाती। मुझे एक
बपतिसमा लेना है और जबलों वह सम्पूर्ण न होय तबलों
५१ मैं कैसे सकेतमें हूं। क्या तुम समझते हो कि मैं पृथिवीपर
मिलाप करवाने आया हूं. मैं तुमसे कहता हूं सो नहीं
५२ परन्तु फूट। क्योंकि अबसे एक घरमें पांच जन अलग
अलग होंगे तीन दोके बिरुद्ध और दो तीनके बिरुद्ध।
५३ पिता पुत्रके बिरुद्ध और पुत्र पिताके बिरुद्ध मां बेटीके
बिरुद्ध और बेटी मांके बिरुद्ध सास अपनी पतोहके बिरुद्ध
और पतोह अपनी सासके बिरुद्ध अलग अलग होंगे।
५४ और भी उसने लोगोंसे कहा जब तुम मेघको पश्चिम-
से उठते देखते हो तब तुरन्त कहते हो कि झड़ी आती
५५ है और ऐसा होता है। और जब दक्षिणकी बयार चलते
देखते हो तब कहते हो कि घाम होगा और वह भी
५६ होता है। हे कपटियो तुम धरती और आकाशका रूप

चीन्ह सकते हो परन्तु इस समयको क्योंकर नहीं चीन्हते
हो । और जो उचित है उसको तुम आपहीसे क्यों नहीं ५७
बिचार करते हो । जब तू अपने मुद्दईके संग अध्यक्षके ५८
पास जाता है मार्गहीमें उससे छूटनेका यत्न कर ऐसा
न हो कि वह तुझे न्यायीके पास खींच ले जाय और
न्यायी तुझे प्यादेको सौंपे और प्यादा तुझे बन्दीगृहमें
डाले । मैं तुझसे कहता हूं कि जबलों तू कौड़ी कौड़ी ५९
भर न देवे तबलों वहांसे छूटने न पावेगा ।

१३ तेरहवां पर्व्व ।

१ पश्चात्ताप करनेको आवश्यकता । ६ निष्फल गूलर वृक्षका दृष्टान्त । १० यीशुका एक कुबड़ी स्त्रीको चंगा करना और बिश्रामवारके विषयमें निर्णय करना । १८ राईके दाने और खमीरके दृष्टान्त । २२ सकेत फाटकसे पैठनेका उपदेश । ३१ हेरोदपर उलहना और यिरूशलीमके नाश होनेकी भविष्यद्वाणी ।

उस समयमें कितने लोग आ पहुंचे और उन गाली- १
लियोंके विषयमें जिनका लोहू पिलातने उनके बलिदा-
नोंके संग मिलाया था यीशुसे बात करने लगे । उसने २
उन्हें उत्तर दिया क्या तुम समझते हो कि ये गालीली
लोग सब गालीलियोंसे अधिक पापी थे कि उन्होंपर
ऐसी बिपत्ति पड़ी । मैं तुमसे कहता हूं सो नहीं परन्तु जो ३
तुम पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीतिसे नष्ट
होगे । अथवा क्या तुम समझते हो कि वे अठारह जन ४
जिन्होंपर शीलोहमें गुम्मट गिर पड़ा और उन्हें नाश
किया सब मनुष्योंसे जो यिरूशलीममें रहते थे अधिक
अपराधी थे । मैं तुमसे कहता हूं सो नहीं परन्तु जो तुम ५
पश्चात्ताप न करो तो तुम सब उसी रीतिसे नष्ट होगे ।

६ उसने यह दृष्टान्त भी कहा कि किसी मनुष्यकी दाखकी
बारीमें एक गूलरका वृक्ष लगाया गया था और उसने
७ आके उसमें फल ढूंढ़ा पर न पाया। तब उसने मालीसे
कहा देख मैं तीन बरससे आके इस गूलरके वृक्षमें फल
ढूंढ़ता हूं पर नहीं पाता हूं . उसे काट डाल वह भूमिको
८ क्यों निकम्मी करता है। मालीने उसको उत्तर दिया
कि हे स्वामी उसको इस बरस भी रहने दीजिये जबलों
९ मैं उसका थाला खोदके खाद भरूं। तब जो उसमें फल
लगे तो भला . नहीं तो पीछे उसे कटवा डालिये।
१० बिश्रामके दिन यीशु एक सभाके घरमें उपदेश करता
११ था। और देखो एक स्त्री थी जिसे अठारह बरससे एक
दुर्बल करनेवाला भूत लगा था और वह कुबड़ी थी
और किसी रीतिसे अपनेको सीधी न कर सकती थी।
१२ यीशुने उसे देखके अपने पास बुलाया और उससे कहा
१३ हे नारी तू अपनी दुर्बलतासे छुड़ाई गई है। तब उसने
उसपर हाथ रखा और वह तुरन्त सीधी हुई और
१४ ईश्वरकी स्तुति करने लगी। परन्तु यीशुने बिश्रामके
दिनमें चंगा किया इससे सभाका अध्यक्ष रिसियाने
लगा और उत्तर दे लोगोंसे कहा छः दिन हैं जिनमें
काम करना उचित है सो उन दिनोंमें आके चंगे किये
१५ जाओ और बिश्रामके दिनमें नहीं। प्रभुने उसको उत्तर
दिया कि हे कपटी क्या बिश्रामके दिन तुम्हांमेंसे हर एक
अपने बैल अथवा गधेको थानसे खोलके जल पिलानेको
१६ नहीं ले जाता। और क्या उचित न था कि यह स्त्री
जो इब्राहीमकी पुत्री है जिसे शैतानने देखो अठारह

बरससे बांध रखा था बिश्रामके दिनमें इस बंधनसे
खोली जाय । जब उसने यह बातें कहीं तब उसके सब १७
बिरोधी लज्जित हुए और समस्त लोग सब प्रतापके
कर्म्मोंके लिये जो वह करता था आनन्दित हुए ।
फिर उसने कहा ईश्वरका राज्य किसके समान है १८
और मैं उसकी उपमा किससे देऊंगा । वह राईके एक १९
दानेकी नाईं है जिसे किसी मनुष्यने लेके अपनी बारीमें
बोया और वह बढ़ा और बड़ा पेड़ हो गया और
आकाशके पंछियोंने उसकी डालियोंपर बसेरा किया ।
उसने फिर कहा मैं ईश्वरके राज्यकी उपमा किससे देऊं- २०
गा । वह खमीरकी नाईं है जिसको किसी स्त्रीने लेके तीन २१
पसेरी आटेमें छिपा रखा यहांलों कि सब खमीर हो गया ।
वह उपदेश करता हुआ नगर नगर और गांव गांव २२
होके यिरूशलीमकी ओर जाता था । तब किसीने उससे २३
कहा हे प्रभु क्या त्राण पानेहारे थोड़े हैं । उसने उन्होंसे २४
कहा सकेत फाटकसे प्रवेश करनेको साहस करो क्योंकि
मैं तुमसे कहता हूं कि बहुत लोग प्रवेश करने चाहेंगे
और नहीं सकेंगे । जब घरका स्वामी उठके द्वार मूंद चुके- २५
गा और तुम बाहर खड़े हुए द्वार खटखटाने लगोगे
और कहोगे हे प्रभु हे प्रभु हमारे लिये खोलिये और
वह तुम्हें उत्तर देगा मैं तुम्हें नहीं जानता हूं तुम कहांके
हो . तब तुम कहने लगोगे कि हम लोग आपके साम्ने २६
खाते औ पीते थे और आपने हमारी सड़कोंमें उपदेश
किया । परन्तु वह कहेगा मैं तुमसे कहता हूं मैं तुम्हें २७
नहीं जानता हूं तुम कहांके हो . हे कुकर्म्म करनेहारो

२८ तुम सब मुझसे दूर होओ। वहां रोना ओ दांत पीसना
होगा कि उस समय तुम इब्राहीम ओर इसहाक ओर
याकूब ओर सब भविष्यद्वक्ताओंको ईश्वरके राज्यमें बैठे
२९ हुए ओर अपनेको बाहर निकाले हुए देखोगे। ओर
लोग पूर्ब्ब ओर पश्चिम ओर उत्तर ओर दक्षिणसे आके
३० ईश्वरके राज्यमें बैठेंगे। ओर देखो कितने पिछले हैं जो
अगले होंगे ओर कितने अगले हैं जो पिछले होंगे।
३१ उसी दिन कितने फरीशियोंने आके उससे कहा
यहांसे निकलके चला जा क्योंकि हेरोद तुझे मार
३२ डालने चाहता है। उसने उनसे कहा जाके उस लोम-
ड़ीसे कहो कि देखो मैं आज ओर कल भूतोंको नि-
कालता ओर रोगियोंको चंगा करता हूं ओर तीसरे
३३ दिन सिद्ध होंगा। तौभी आज ओर कल ओर परसों
फिरना मुझे अवश्य है क्योंकि हो नहीं सकता कि कोई
३४ भविष्यद्वक्ता यिरूशलीमके बाहर नाश किया जाय। हे
यिरूशलीम यिरूशलीम जो भविष्यद्वक्ताओंको मार
डालती है ओर जो तेरे पास भेजे गये हैं उन्हें पत्थरवाह
करती है जैसे मुर्गी अपने बच्चोंको पंखोंके नीचे एकट्ठे
करती है वैसेही मैंने कितनी बेर तेरे बालकोंको एकट्ठे
३५ करनेकी इच्छा किई परन्तु तुमने न चाहा। देखो
तुम्हारा घर तुम्हारे लिये उजाड़ छोड़ा जाता है ओर
मैं तुमसे सच कहता हूं जिस समयमें तुम कहोगे धन्य
वह जो परमेश्वरके नामसे आता है वह समय जबलों
न आवे तबलों तुम मुझे फिर न देखोगे।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

१ यीशुका बिश्रामके दिनमें एक जलंधरीको चंगा करना। ७ नेवतहरियोंके दृष्टान्तसे नम्र होनेका उपदेश। १२ नेवता करनेके दृष्टान्तसे परोपकारका उपदेश। १५ बियारीका दृष्टान्त। २५ यीशुके शिष्य होनेमें जो दुःख सहना होगा उसे आगेसे सोचनेका उपदेश।

जब यीशु बिश्रामके दिन प्रधान फरीशियोंमेंसे १
किसीके घरमें रोटी खानेको गया तब वे उसको ताकते
थे। और देखो एक मनुष्य उसके साम्हने था जिसे २
जलंधर रोग था। इसपर यीशुने व्यवस्थापकों और ३
फरीशियोंसे कहा क्या बिश्रामके दिनमें चंगा करना
उचित है. परन्तु वे चुप रहे। तब उसने उस मनुष्यको ४
लेके चंगा करके बिदा किया. और उन्हें उत्तर दिया ५
कि तुममेंसे किसका गधा अथवा बैल कूएमें गिरेगा
और वह तुरन्त बिश्रामके दिनमें उसे न निकालेगा।
वे उसको इन बातोंका उत्तर नहीं दे सके। ६

जब उसने देखा कि नेवतहरी लोग क्योंकर ऊंचे ऊंचे ७
स्थान चुन लेते हैं तब एक दृष्टान्त दे उन्होंसे कहा. जब ८
कोई तुझे बिवाहके भोजमें बुलावे तब ऊंचे स्थानमें मत
बैठ ऐसा न हो कि उसने तुझसे अधिक आदरके योग्य
किसीको बुलाया हो. और जिसने तुझे और उसे नेवता ९
दिया सो आके तुझसे कहे कि इस मनुष्यको स्थान दीजिये
और तब तू लज्जित हो सबसे नीचा स्थान लेने लगे।
परन्तु जब तू बुलाया जाय तब सबसे नीचे स्थानमें जाके १०
बैठ इसलिये कि जब वह जिसने तुझे नेवता दिया है
आवे तब तुझसे कहे हे मित्र और ऊपर आइये. तब
तेरे संग बैठनेहारोंके साम्ने तेरा आदर होगा। क्योंकि ११

जो कोई अपनेको ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा
और जो अपनेको नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा ।
१२ तब जिसने उसे नेवता दिया था उसने उससे भी
कहा जब तू दिनका अथवा रातका भोजन बनावे तब
अपने मित्रों वा अपने भाइयों वा अपने कुटुंबों वा
धनवान पड़ोसियोंको मत बुला ऐसा न हो कि वे भी
इसके बदले तुझे नेवता देवें और यही तेरा प्रतिफल
१३ होय । परन्तु जब तू भोज करे तब कंगालों टुंडों लंगड़ों
१४ और अन्धोंको बुला । और तू धन्य होगा क्योंकि वे
तुझे प्रतिफल नहीं दे सकते हैं परन्तु धर्म्मियोंके जी
उठनेपर प्रतिफल तुझको दिया जायगा ।
१५ उसके संग बैठनेहारोंमेंसे एकने यह बातें सुनके उससे
कहा धन्य वह जो ईश्वरके राज्यमें रोटी खायगा ।
१६ उसने उससे कहा किसी मनुष्यने बड़ी बियारी बनाई
१७ और बहुतोंको बुलाया । बियारीके समयमें उसने अपने
दासके हाथ नेवतहरियोंको कहला भेजा कि आओ
१८ सब कुछ अब तैयार है । परन्तु वे सब एक मत होके
क्षमा मांगने लगे. पहिलेने उस दाससे कहा मैंने कुछ
भूमि मोल लिई है और उसे जाके देखना मुझे अवश्य
१९ है मैं तुझसे बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा करवा । दूसरेने
कहा मैंने पांच जोड़े बैल मोल लिये हैं और उन्हें
परखनेको जाता हूं मैं तुझसे बिन्ती करता हूं मुझे क्षमा
२० करवा । तीसरेने कहा मैंने विवाह किया है इसलिये मैं
२१ नहीं आ सकता हूं । उस दासने आके अपने स्वामीको
यह बातें सुनाईं तब घरके स्वामीने क्रोध कर अपने

दाससे कहा नगरकी सड़कों और गलियोंमें शीघ्र जाके
कंगालों औ टुंडों औ लंगड़ों और अन्धोंको यहां ले
आ। दासने फिर कहा हे स्वामी जैसे आपने आज्ञा २२
दिई तैसे किया गया है और अब भी जगह है। स्वामीने २३
दाससे कहा राजपथोंमें और गाछोंके नीचे जाके
लोगोंको बिन लानेसे मत छोड़ कि मेरा घर भर जावे।
क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि उन नेवते हुए मनुष्योंमेंसे २४
कोई मेरी बियारी न चीखेगा।

बड़ी भीड़ यीशुके संग जाती थी और उसने पीछे २५
फिरके उन्होंसे कहा. यदि कोई मेरे पास आवे और २६
अपनी माता और पिता और स्त्री और लड़कों और
भाइयों और बहिनोंको हां और अपने प्राणको भी अप्रिय
न जाने तो वह मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। और २७
जो कोई अपना क्रूश उठाये हुए मेरे पीछे न आवे वह
मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। तुममेंसे कौन है कि गढ़ २८
बनाने चाहता हो और पहिले बैठके खर्च न जोड़े कि
समाप्ति करनेकी बिसात मुझे है कि नहीं। ऐसा न हो २९
कि जब वह नेव डालके समाप्ति न कर सके तब सब
देखनेहारे उसे ठट्ठेमें उड़ाने लगें. और कहें यह मनुष्य ३०
बनाने लगा परन्तु समाप्ति नहीं कर सका। अथवा कौन ३१
राजा है कि दूसरे राजासे लड़ाई करनेको जाता हो और
पहिले बैठके बिचार न करे कि जो बीस सहस्र लेके मेरे
बिरुद्ध आता है मैं दस सहस्र लेके उसका साम्हना कर
सकता हूं कि नहीं। और जो नहीं तो उसके दूर रहतेही ३२
वह दूतोंको भेजके मिलाप चाहता है। इसी रीतिसे ३३

तुम्होंमेंसे जो कोई अपना सर्बस्व त्यागन न करे वह
३४ मेरा शिष्य नहीं हो सकता है। लोण अच्छा है परन्तु
यदि लोणका स्वाद बिगड़ जाय तो वह किससे स्वादित
३५ किया जायगा। वह न भूमिके न खादके लिये काम
आता है. लोग उसे बाहर फेंकते हैं. जिसको सुन-
नेके कान हों सो सुने।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ खोई हुई भेड़ और खोई हुई सूकीके दृष्टान्त। ११ उड़ाऊ पुत्रका दृष्टान्त।

१ कर उगाहनेहारे और पापी लोग सब यीशु पास
२ आते थे कि उसकी सुनें। और फरीशी और अध्यापक
कुड़कुड़ाके कहने लगे यह तो पापियोंको ग्रहण करता
३ और उनके संग खाता है। तब उसने उन्होंसे यह
४ दृष्टान्त कहा. तुममेंसे कौन मनुष्य है कि उसकी सौ
भेड़ हों और उसने उनमेंसे एकको खोया हो और वह
निन्नानवेको जंगलमें न छोड़े और जबलों उस खोई
५ हुईको न पावे तबलों उसके खोजमें न जाय। और
वह उसे पाके आनन्दसे अपने कांधोंपर रखता है.
६ और घरमें आके मित्रों औ पड़ोसियोंको एकट्ठे बुलाके
उन्होंसे कहता है मेरे संग आनन्द करो कि मैंने अप-
७ नी खोई हुई भेड़ पाई है। मैं तुमसे कहता हूं कि इसी
रीतिसे जिन्हें पश्चात्ताप करनेका प्रयोजन न होय
ऐसे निन्नानवे धर्म्मियोंसे अधिक एक पापीके लिये
जो पश्चात्ताप करे स्वर्गमें आनन्द होगा।

८ अथवा कौन स्त्री है कि उसकी दस सूकी हों और वह
जो एक सूकी खोवे तो दीपक बारके औ घर बुहारके

उसे जबलों न पावे तबलों यत्नसे न ढूंढ़े। और वह उसे ९
पाके सखियों औ पड़ोसिनियोंको एकट्ठी बुलाके कहती है
मेरे संग आनन्द करो कि मैंने जो सूकी खोई थी सो
पाई है । मैं तुमसे कहता हूं कि इसी रीतिसे एक पापीके १०
लिये जो पश्चात्ताप करता है ईश्वरके दूतोंमें आनन्द
होता है ।

फिर उसने कहा किसी मनुष्यके दो पुत्र थे। उनमेंसे ११ १२
छुटकेने पितासे कहा हे पिता सम्पत्तिमेंसे जो मेरा अंश
होय सो मुझे दीजिये . तब उसने उनको अपनी सम्पत्ति
बांट दिई । बहुत दिन नहीं बीते कि छुटका पुत्र सब १३
कुछ एकट्ठा करके दूर देश चला गया और वहां लुचपन-
में दिन बिताते हुए अपनी सम्पत्ति उड़ा दिई । जब १४
वह सब कुछ उठा चुका तब उस देशमें बड़ा अकाल पड़ा
और वह कंगाल हो गया । और वह जाके उस देशके १५
निवासियोंमेंसे एकके यहां रहने लगा जिसने उसे अपने
खेतोंमें सूअर चरानेको भेजा । और वह उन छीमियोंसे १६
जिन्हें सूअर खाते थे अपना पेट भरने चाहता था और
कोई नहीं उसको कुछ देता था । तब उसे चेत हुआ १७
और उसने कहा मेरे पिताके कितने मजूरोंको भोजनसे
अधिक रोटी होती है और मैं भूखसे मरता हूं । मैं १८
उठके अपने पिता पास जाऊंगा और उससे कहूंगा हे
पिता मैंने स्वर्गके बिरुद्ध और आपके साम्ने पाप किया
है । मैं फिर आपका पुत्र कहावनेके योग्य नहीं हूं १९
मुझे अपने मजूरोंमेंसे एकके समान कीजिये । तब वह २०
उठके अपने पिता पास चला पर वह दूरही था कि

उसके पिताने उसे देखके दया किई और दौड़के उसके
२१ गलेमें लिपटके उसे चूमा । पुत्रने उससे कहा हे पिता
मैंने स्वर्गके बिरुद्ध और आपके साम्ने पाप किया है और
२२ फिर आपका पुत्र कहावनेके योग्य नहीं हूं । परन्तु
पिताने अपने दासोंसे कहा सबसे उत्तम बस्त्र निकालके
उसे पहिनाओ और उसके हाथमें अंगूठी और पांवोंमें
२३ जूते पहिनाओ । और मोटा बछड़ू लाके मारो और हम
२४ खावें और आनन्द करें । क्योंकि यह मेरा पुत्र मूआ था
फिर जीआ है खो गया था फिर मिला है . तब वे
२५ आनन्द करने लगे । उसका जेठा पुत्र खेतमें था और
जब वह आते हुए घरके निकट पहुंचा तब बाजा और
२६ नाचका शब्द सुना । और उसने अपने सेवकोंमेंसे एकको
२७ अपने पास बुलाके पूछा यह क्या है । उसने उससे कहा
आपका भाई आया है और आपके पिताने मोटा बछड़ू
२८ मारा है इसलिये कि उसे भला चंगा पाया है । परन्तु
उसने क्रोध किया और भीतर जाने न चाहा इसलिये
२९ उसका पिता बाहर आ उसे मनाने लगा । उसने पिताको
उत्तर दिया कि देखिये मैं इतने बरसोंसे आपकी सेवा
करता हूं और कभी आपकी आज्ञाको उल्लंघन न किया
और आपने मुझे कभी एक मेम्ना भी न दिया कि मैं अपने
३० मित्रोंके संग आनन्द करता । परन्तु आपका यह पुत्र जो
बेश्याओंके संग आपकी सम्पत्ति खा गया है ज्योंही
आया त्योंही आपने उसके लिये मोटा बछड़ मारा है ।
३१ पिताने उससे कहा हे पुत्र तू सदा मेरे संग है और
३२ जो कुछ मेरा है सो सब तेरा है । परन्तु आनन्द

करना और हर्षित होना उचित था क्योंकि यह तेरा
भाई मूआ था फिर जीआ है खो गया था फिर मिला है।

१६ सोलहवां पर्व्व।

१ चतुर भंडारीका दृष्टान्त। १० अनेक बातोंका उपदेश। १९ धनवान और
भिखारीका दृष्टान्त।

यीशुने अपने शिष्योंसे भी कहा कोई धनवान मनुष्य १
था जिसका एक भंडारी था और यह दोष उसके आगे
भंडारीपर लगाया गया कि वह आपकी सम्पत्ति उड़ा
देता है। उसने उसे बुलाके उससे कहा यह क्या है जो २
मैं तेरे विषयमें सुनता हूं. अपने भंडारपनका लेखा दे
क्योंकि तू आगेको भंडारी नहीं रह सकेगा। तब भंडारीने ३
अपने मनमें कहा मैं क्या करूं कि मेरा स्वामी भंडारीका
काम मुझसे छीन लेता है. मैं कोड़ नहीं सकता हूं
और भीख मांगनेसे मुझे लाज आती है। मैं जानता हूं ४
मैं क्या करूंगा इसलिये कि जब मैं भंडारपनसे छुड़ाया
जाऊं तब लोग मुझे अपने घरोंमें ग्रहण करें। और उसने ५
अपने स्वामीके ऋणियोंमेंसे एक एकको अपने पास बुला-
के पहिलेसे कहा तू मेरे स्वामीका कितना धारता है। उस- ६
ने कहा सौ मन तेल. वह उससे बोला अपना पत्र ले
और बैठके शीघ्र पचास मन लिख। फिर दूसरेसे कहा ७
तू कितना धारता है. उसने कहा सौ मन गेहूं. वह
उससे बोला अपना पत्र ले और अस्सी मन लिख। स्वा- ८
मीने उस अधर्म्मी भंडारीको सराहा कि इसने बुद्धिका काम
किया है. क्योंकि इस संसारके सन्तान अपने समयके
लोगोंके विषयमें ज्योतिके सन्तानोंसे अधिक बुद्धिमान हैं।

९ और मैं तुम्होंसे कहता हूं कि अधर्म्मके धनके द्वारा अपने
लिये मित्र कर लो कि जब तुम छूट जावो तब वे
तुम्हें अनन्त निवासोंमें ग्रहण करें।
१० जो अति थोड़ेमें बिश्वासयोग्य है सो बहुतमें भी
बिश्वासयोग्य है और जो अति थोड़ेमें अधर्म्मी है सो
११ बहुतमें भी अधर्म्मी है। इसलिये जो तुम अधर्म्मके
धनमें बिश्वासयोग्य न हुए हो तो सच्चा धन तुम्हें कौन
१२ सोंपेगा। और जो तुम पराये धनमें बिश्वासयोग्य न
१३ हुए हो तो तुम्हारा धन तुम्हें कौन देगा। कोई सेवक
दो स्वामियोंकी सेवा नहीं कर सकता है क्योंकि वह
एकसे बैर करेगा और दूसरेको प्यार करेगा अथवा
एकसे लगा रहेगा और दूसरेको तुच्छ जानेगा. तुम
ईश्वर और धन दोनोंकी सेवा नहीं कर सकते हो।
१४ फरीशियोंने भी जो लोभी थे यह सब बातें सुनीं
१५ और उसका ठट्ठा किया। उसने उन्होंसे कहा तुम तो
मनुष्योंके आगे अपनेको धर्म्मी ठहराते हो परन्तु ईश्वर
तुम्हारे मनको जानता है. जो मनुष्योंके लेखे महान
१६ है सो ईश्वरके आगे घिनित है। व्यवस्था और भविष्य-
द्वक्ता लोग योहनलों थे तबसे ईश्वरके राज्यका सुसमा-
चार सुनाया जाता है और सब कोई उसमें बरियाईसे
१७ प्रवेश करते हैं। व्यवस्थाके एक बिन्दुके लोप होनेसे आ-
१८ काश औ पृथिवीका टल जाना सहज है। जो कोई अपनी
स्त्रीको त्यागके दूसरीसे बिवाह करे सो परस्त्रीगमन
करता है और जो स्त्री अपने स्वामीसे त्यागी गई है
उससे जो कोई बिवाह करे सो परस्त्रीगमन करता है।

एक धनवान मनुष्य था जो बैजनी बस्त्र और मलमल १९
पहिनता और प्रतिदिन बिभव और सुखसे रहता था।
और इलियाजर नाम एक कंगाल उसकी डेवढ़ीपर २०
डाला गया था जो घावोंसे भरा हुआ था. और उन २१
चूरचारोंसे जो धनवानकी मेजसे गिरते थे पेट भरने
चाहता था और कुत्ते भी आके उसके घावोंको चाटते
थे। वह कंगाल मर गया और दूतोंने उसको इब्राहीमकी २२
गोदमें पहुंचाया और वह धनवान भी मरा और गाड़ा
गया। और परलोकमें उसने पीड़ामें पड़े हुए अपनी २३
आंखें उठाईं और दूरसे इब्राहीमको और उसकी गोदमें
इलियाजरको देखा। तब वह पुकारके बोला हे पिता २४
इब्राहीम मुझपर दया करके इलियाजरको भेजिये कि
अपनी उंगलीका छोर पानीमें डुबोके मेरी जीभको ठंढी
करे क्योंकि मैं इस ज्वालामें कलपता हूं। परन्तु इब्राही- २५
मने कहा हे पुत्र स्मरण कर कि तू अपने जीतेजी अपनी
सम्पत्ति पा चुका है और वैसाही इलियाजर बिपत्ति
परन्तु अब वह शांति पाता है और तू कलपता है।
और भी हमारे और तुम्हारे बीचमें बड़ा अन्तर ठहराया २६
गया है कि जो लोग इधरसे उस पार तुम्हारे पास जाया
चाहें सो नहीं जा सकें और न उधरके लोग इस पार
हमारे पास आवें। उसने कहा तब हे पिता मैं आपसे २७
बिन्ती करता हूं उसे मेरे पिताके घर भेजिये. क्योंकि मेरे २८
पांच भाई हैं वह उन्हें साक्षी देवे ऐसा न हो कि वे भी
इस पीड़ाके स्थानमें आवें। इब्राहीमने उससे कहा मूसा २९
और भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तक उनके पास हैं वे उनकी

३० सुनें। वह बोला हे पिता इब्राहीम सो नहीं परन्तु
यदि मृतकोंमेंसे कोई उनके पास जाय तो वे पश्चात्ताप
३१ करेंगे । उसने उससे कहा जो वे मूसा और भविष्यद्वक्ता-
ओंकी नहीं सुनते हैं तो यदि मृतकोंमेंसे कोई जी उठे
तौभी नहीं मानेंगे ।

१७ सत्रहवां पर्व्व ।

१ ठोकर खिलानेका निषेध । ३ क्षमा करनेका उपदेश और बिश्वासके गुणका बखान । ७ दासके दृष्टान्तसे अभिमानका निषेध । ११ यीशुका दस कोढ़ियोंको चंगा करना । २० ईश्वरके राज्यके आनेका वर्णन । २२ मनुष्यके पुत्रके आनेका वर्णन और जलप्रलयसे और सदोमके बिनाशसे उस समयकी उपमा ।

१ यीशुने शिष्योंसे कहा ठोकरोंका न लगना अन्होना
है परन्तु हाय वह मनुष्य जिसके द्वारासे वे लगती
२ हैं । इन छोटोंमेंसे एकको ठोकर खिलानेसे उसके लिये
भला होता कि चक्कीका पाट उसके गलेमें बांधा जाता
और वह समुद्रमें डाला जाता ।
३ अपने विषयमें सचेत रहो . यदि तेरा भाई तेरा
अपराध करे तो उसको समझा दे और यदि पछतावे
४ तो उसे क्षमा कर । जो वह दिनभरमें सात बेर तेरा
अपराध करे और सात बेर दिनभरमें तेरी ओर फिरके
५ कहे मैं पछताता हूं तो उसे क्षमा कर । तब प्रेरितोंने
६ प्रभुसे कहा हमारा बिश्वास बढ़ाइये । प्रभुने कहा
यदि तुमको राईके एक दानेके तुल्य बिश्वास होता
तो तुम इस गूलरके वृक्षसे जो कहते कि उखड़ जा
और समुद्रमें लग जा वह तुम्हारी आज्ञा मानता ।
७ तुममेंसे कौन है कि उसका दास हल जोतता अथवा

चरवाही करता हो और ज्योंही वह खेतसे आवे त्योंही
उससे कहेगा तुरन्त आ भोजनपर बैठ। क्या वह उस- ८
से न कहेगा मेरी बियारी बनाके जबलों मैं खाऊं और
पीऊं तबलों कमर बांधके मेरी सेवा कर और इसके
पीछे तू खायगा और पीयेगा। क्या उस दासका उसपर ९
कुछ निहोरा हुआ कि उसने वह काम किया जिसकी
आज्ञा उसको दिई गई . मैं ऐसा नहीं समझता हूं। इस १०
रीतिसे तुम भी जब सब काम कर चुको जिसकी आज्ञा
तुम्हें दिई गई है तब कहो हम निकम्मे दास हैं कि जो
हमें करना उचित था सोई भर किया है।

यीशु यिरूशलीमको जाते हुए शोमिरोन और गा- ११
लीलके बीचमेंसे होके जाता था। जब वह किसी गांवमें १२
प्रवेश करता था तब दस कोढ़ी उसके सन्मुख आ दूर
खड़े हुए। और वे ऊंचे शब्दसे बोले हे यीशु गुरु हमपर १३
दया कीजिये। यह देखके उसने उन्होंसे कहा जाके अपने १४
तईं याजकोंको दिखाओ . जाते हुए वे शुद्ध किये गये।
तब उनमेंसे एकने जब देखा कि मैं चंगा हुआ हूं बड़े १५
शब्दसे ईश्वरकी स्तुति करता हुआ फिर आया . और १६
यीशुका धन्य मानते हुए उसके चरणोंपर मुंहके बल
गिरा . और वह शोमिरोनी था। इसपर यीशुने कहा १७
क्या दसों शुद्ध न किये गये तो नौ कहां हैं। क्या इस १८
अन्यदेशीको छोड़ कोई नहीं ठहरे जो ईश्वरकी स्तुति
करनेको फिर आवें। तब उसने उससे कहा उठ चला १९
जा तेरे बिश्वासने तुझे बचाया है।

जब फरीशियोंने उससे पूछा कि ईश्वरका राज्य कब २०

आवेगा तब उसने उन्होंको उत्तर दिया कि ईश्वरका
२१ राज्य प्रत्यक्ष रूपसे नहीं आता है. और न लोग कहेंगे
देखो यहां है अथवा देखो वहां है क्योंकि देखो ईश्वर-
का राज्य तुम्हीमें है।
२२ उसने शिष्योंसे कहा वे दिन आवेंगे जिनमें तुम मनु-
ष्यके पुत्रके दिनोंमेंसे एक दिन देखने चाहोगे पर न
२३ देखोगे। लोग तुम्हींसे कहेंगे देखो यहां है अथवा देखो
वहां है पर तुम मत जाओ और न उनके पीछे हो
२४ लेओ। क्योंकि जैसे बिजली जो आकाशकी एक ओरसे
चमकती है आकाशकी दूसरी ओरतक ज्योति देती है
२५ वैसाही मनुष्यका पुत्र भी अपने दिनमें होगा। परन्तु
पहिले उसको अवश्य है कि बहुत दुःख उठावे और इस
२६ समयके लोगोंसे तुच्छ किया जाय। जैसा नूहके दिनोंमें
२७ हुआ वैसाही मनुष्यके पुत्रके दिनोंमें भी होगा। जिस
दिनलों नूह जहाजपर न चढ़ा उस दिनलों लोग खाते
पीते बिवाह करते औ बिवाह दिये जाते थे. तब उस
२८ दिन जलप्रलयने आके उन सभोंको नाश किया। और
जिस रीतिसे लूतके दिनोंमें हुआ कि लोग खाते पीते
२९ मोल लेते बेचते बोते औ घर बनाते थे. परन्तु जिस दिन
लूत सदोमसे निकला उस दिन आग और गन्धक
३० आकाशसे बरसी और उन सभोंको नाश किया. उसी
३१ रीतिसे मनुष्यके पुत्रके प्रगट होनेके दिनमें होगा। उस
दिनमें जो कोठेपर हो और उसकी सामग्री घरमें
होय सो उसे लेनेको न उतरे और वैसेही जो खेतमें
३२ हो सो पीछे न फिरे। लूतकी स्त्रीको स्मरण करो।

जो कोई अपना प्राण बचाने चाहे सो उसे खोवेगा ३३
और जो कोई उसे खोवे सो उसकी रक्षा करेगा । मैं ३४
तुमसे कहता हूं उस रातमें दो मनुष्य एक खाटपर होंगे
एक लिया जायगा और दूसरा छोड़ा जायगा । दो ३५
स्त्रियां एक संग चक्की पीसती रहेंगीं एक लिई जायगी
और दूसरी छोड़ी जायगी । दो जन खेतमें होंगे ३६
एक लिया जायगा और दूसरा छोड़ा जायगा । उन्होंने ३७
उसको उत्तर दिया हे प्रभु कहां . उसने उनसे कहा
जहां लोथ होय तहां गिद्ध एकट्ठे होंगे ।

१८ अठारहवां पर्ब्ब ।

१ अधर्म्मी विचारकर्त्ताके पास बिधवाकी प्रार्थनाका दृष्टान्त । ९ फरीशी और कर उगाहनेहारेका दृष्टान्त । १५ यीशुका बालकोंको आशीस देना । १८ एक धनवान जवानसे उसकी बातचीत । २४ धनी लोगोंको दशाका बर्णन । २८ शिष्योंके फलकी प्रतिज्ञा । ३१ यीशुका अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना । ३५ एक अंधेके नेत्र खोलना ।

नित्य प्रार्थना करने और साहस न छोड़नेकी आव- १
श्यकताके विषयमें यीशुने उन्होंसे एक दृष्टान्त कहा . कि २
किसी नगरमें एक विचारकर्त्ता था जो न ईश्वरसे डरता
न मनुष्यको मानता था । और उसी नगरमें एक बिधवा ३
थी जिसने उस पास आ कहा मेरे मुद्दईसे मेरा पलटा
लीजिये । उसने कितनी बेरलों न माना परन्तु पीछे अपने ४
मनमें कहा यद्यपि मैं न ईश्वरसे डरता न मनुष्यको
मानता हूं . तौभी यह बिधवा मुझे दुःख देती है इस ५
कारण मैं उसका पलटा लेऊंगा ऐसा न हो कि नित्य
नित्य आनेसे वह मेरे मुंहमें कालिख लगावे । तब प्रभुने ६
कहा सुनो यह अधर्म्मी बिचारकर्त्ता क्या कहता है । और ७

ईश्वर यद्यपि अपने चुने हुए लोगोंके विषयमें जो
रात दिन उस पास पुकारते हैं धीरज धरे तौभी क्या
८ उनका पलटा न लेगा । मैं तुमसे कहता हूं वह शीघ्र
उनका पलटा लेगा तौभी मनुष्यका पुत्र जब आवेगा
तब क्या पृथिवीपर बिश्वास पावेगा ।
९ और उसने कितनोंसे जो अपनेपर भरोसा रखते थे
कि हम धर्म्मी हैं और औरोंको तुच्छ जानते थे यह दृष्टान्त
१० कहा । दो मनुष्य मन्दिरमें प्रार्थना करनेको गये एक
११ फरीशी और दूसरा कर उगाहनेहारा । फरीशीने अलग
खड़ा हो यह प्रार्थना किई कि हे ईश्वर मैं तेरा धन्य
मानता हूं कि मैं और मनुष्योंके समान नहीं हूं जो
उपद्रवी अन्यायी और परस्त्रीगामी हैं और न इस कर
१२ उगाहनेहारेके समान । मैं अठवारेमें दो बार उपवास
करता हूं मैं अपनी सब कमाईका दसवां अंश देता हूं ।
१३ कर उगाहनेहारेने दूर खड़ा हो स्वर्गकी ओर आंखें
उठाने भी न चाहा परन्तु अपनी छाती पीटके कहा हे
१४ ईश्वर मुझ पापीपर दया कर । मैं तुमसे कहता हूं
कि वह दूसरा नहीं पर यही मनुष्य धर्म्मी ठहराया
हुआ अपने घरको गया क्योंकि जो कोई अपनेको
ऊंचा करे सो नीचा किया जायगा और जो अपनेको
नीचा करे सो ऊंचा किया जायगा ।
१५ लोग कितने बालकोंको भी यीशु पास लाये कि
वह उन्हें छूवे परन्तु शिष्योंने यह देखके उन्हें डांटा ।
१६ यीशुने बालकोंको अपने पास बुलाके कहा बालकोंको
मेरे पास आने दो और उन्हें मत बर्जो क्योंकि ईश्वर-

का राज्य ऐसोंका है। मैं तुमसे सच कहता हूं कि जो १७
कोई ईश्वरके राज्यको बालककी नाईं ग्रहण न करे
वह उसमें प्रवेश करने न पावेगा।

किसी प्रधानने उससे पूछा हे उत्तम गुरु कौन काम १८
करनेसे मैं अनन्त जीवनका अधिकारी होंगा। यीशुने १९
उससे कहा तू मुझे उत्तम क्यों कहता है. कोई उत्तम
नहीं है केवल एक अर्थात ईश्वर। तू आज्ञाओंको २०
जानता है कि परस्त्रीगमन मत कर नरहिंसा मत कर
चोरी मत कर झूठी साक्षी मत दे अपनी माता और
अपने पिताका आदर कर। उसने कहा इन सभोंको मैंने २१
अपने लड़कपनसे पालन किया है। यीशुने यह सुनके २२
उससे कहा तुझे अब भी एक बातकी घटी है. जो कुछ
तेरा है सो बेचके कंगालोंको बांट दे और तू स्वर्गमें
धन पावेगा और आ मेरे पीछे हो ले। वह यह सुनके २३
अति उदास हुआ क्योंकि वह बड़ा धनी था।

यीशुने उसे अति उदास देखके कहा धनवानोंको २४
ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना कैसा कठिन होगा। ईश्वर- २५
के राज्यमें धनवानके प्रवेश करनेसे ऊंटका सूईके ना-
केमेंसे जाना सहज है। सुननेहारोंने कहा तब तो २६
किसका त्राण हो सकता है। उसने कहा जो बातें २७
मनुष्योंसे अन्होनी हैं सो ईश्वरसे हो सकती हैं।

पितरने कहा देखिये हम लोग सब कुछ छोड़के आप- २८
के पीछे हो लिये हैं। उसने उनसे कहा मैं तुमसे सच २९
कहता हूं कि जिसने ईश्वरके राज्यके लिये घर वा
माता पिता वा भाइयों वा स्त्री वा लड़कोंको त्यागा

३० हो . ऐसा कोई नहीं है जो इस समयमें बहुत गुण
अधिक और परलोकमें अनन्त जीवन न पावेगा ।
३१ यीशुने बारह शिष्योंको लेके उनसे कहा देखो हम
यिरूशलीमको जाते हैं और जो कुछ मनुष्यके पुत्रके
विषयमें भविष्यद्वक्ताओंसे लिखा गया है सो सब पूरा
३२ किया जायगा । वह अन्यदेशियोंके हाथ सोंपा जायगा
और उससे ठट्ठा और अपमान किया जायगा और वे
३३ उसपर थूकेंगे . और उसे कोड़े मारके घात करेंगे और
३४ वह तीसरे दिन जी उठेगा । उन्होंने इन बातोंमेंसे कोई
बात न समझी और यह बात उनसे गुप्त रही और
जो कहा जाता था सो वे नहीं बूझते थे ।
३५ जब वह यिरीहो नगरके निकट आता था तब एक
अन्धा मनुष्य मार्गकी ओर बैठा भीख मांगता था ।
३६ जब उसने सुना कि बहुत लोग साम्नेसे जाते हैं तब
३७ पूछा यह क्या है । लोगोंने उसको बताया कि यीशु
३८ नासरी जाता है । तब उसने पुकारके कहा हे यीशु
३९ दाऊदके सन्तान मुझपर दया कीजिये । जो लोग आगे
जाते थे उन्होंने उसे डांटा कि वह चुप रहे परन्तु उसने
बहुत अधिक पुकारा हे दाऊदके सन्तान मुझपर दया
४० कीजिये । तब यीशु खड़ा रहा और उसे अपने पास
लानेकी आज्ञा किई और जब वह निकट आया तब
४१ उससे पूछा . तू क्या चाहता है कि मैं तेरे लिये करूं .
४२ वह बोला हे प्रभु मैं अपनी दृष्टि पाऊं । यीशुने उससे
कहा अपनी दृष्टि पा तेरे बिश्वासने तुझे चंगा किया
४३ है । और वह तुरन्त देखने लगा और ईश्वरकी स्तुति

करता हुआ यीशुके पीछे हो लिया और सब लोगोंने
देखके ईश्वरका धन्यबाद किया ।

१९ उनीसवां पर्व्ब ।

१ जक्कई नाम कर उगाहनेहारेका वृत्तान्त । ११ दस मोहरका दृष्टान्त । २८ यीशुका यिरूशलीममें जाना । ४१ उसपर आनेवाली बिपत्तिका भविष्यद्वाक्य कहना । ४५ ब्योपारियोंको मन्दिरसे निकालना और उपदेश वहां करना ।

यीशु यिरीहोमें प्रवेश करके उसके बीचसे होके जाता १
था । और देखो जक्कई नाम एक मनुष्य था जो कर २
उगाहनेहारोंका प्रधान था और वह धनवान था ।
वह यीशुको देखने चाहता था कि वह कैसा मनुष्य है ३
परन्तु भीड़के कारण नहीं सका क्योंकि नाटा था । तब ४
जिस मार्गसे यीशु जानेपर था उसमें वह आगे दौड़के
उसे देखनेको एक गूलरके वृक्षपर चढ़ा । जब यीशु उस ५
स्थानपर पहुंचा तब ऊपर दृष्टि कर उसे देखा और
उससे कहा हे जक्कई शीघ्र उतर आ क्योंकि आज मुझे
तेरे घरमें रहना होगा । उसने शीघ्र उतरके आनन्दसे ६
उसकी पहुनई किई । यह देखके सब लोग कुड़कुड़ाके ७
बोले वह तो पापी मनुष्यके यहां पाहुन होने गया है ।
जक्कईने खड़ा हो प्रभुसे कहा हे प्रभु देखिये मैं अपना ८
आधा धन कंगालोंको देता हूं और यदि झूठे दोष लगाके
किसीसे कुछ ले लिया है तो चौगुणा फेर देता हूं । तब ९
यीशुने उसको कहा आज इस घरानेका त्राण हुआ है
इसलिये कि यह भी इब्राहीमका सन्तान है । क्योंकि १०
मनुष्यका पुत्र खोये हुएको ढूंढ़ने और बचाने आया है ।
जब लोग यह सुनते थे तब वह एक दृष्टान्त भी कहने ११

लगा इसलिये कि वह यिरूशलीमके निकट था और
वे समझते थे कि ईश्वरका राज्य तुरन्त प्रगट होगा।
१२ उसने कहा एक कुलीन मनुष्य दूर देशको जाता था
१३ कि राजपद पाके फिर आवे। और उसने अपने दासोंमें-
से दसको बुलाके उन्हें दस मोहर देके उनसे कहा जबलों
१४ मैं न आऊं तबलों ब्योपार करो। परन्तु उसके नगरके
निवासी उससे बैर रखते थे और उसके पीछे यह
सन्देश भेजा कि हम नहीं चाहते हैं कि यह हमोंपर
१५ राज्य करे। जब वह राजपद पाके फिर आया तब उसने
उन दासोंको जिन्हें रोकड़ दिई थी अपने पास बुलानेकी
आज्ञा किई जिस्तें वह जाने कि किसने कौनसा ब्योपार
१६ किया है। तब पहिलेने आके कहा हे प्रभु आपकी मोहर-
१७ से दस मोहर लाभ हुईं। उसने उससे कहा धन्य हे
उत्तम दास तू अति थोड़ेमें बिश्वासयोग्य हुआ तू दस
१८ नगरोंपर अधिकारी हो। दूसरेने आके कहा हे प्रभु
१९ आपकी मोहरसे पांच मोहर लाभ हुईं। उसने उससे
२० भी कहा तू भी पांच नगरोंका प्रधान हो। तीसरेने आके
कहा हे प्रभु देखिये आपकी मोहर जिसे मैंने अंगोछेमें
२१ धर रखा। क्योंकि मैं आपसे डरता था इसलिये कि आप
कठोर मनुष्य हैं जो आपने नहीं धरा सो उठा लेते हैं
२२ और जो आपने नहीं बोया सो लवते हैं। उसने उससे
कहा हे दुष्ट दास मैं तेरेही मुंहसे तुझे दोषी ठहराऊंगा.
तू जानता था कि मैं कठोर मनुष्य हूं जो मैंने नहीं धरा
सो उठा लेता हूं और जो मैंने नहीं बोया सो लवता
२३ हूं। तो तूने मेरी रोकड़ कोठीमें क्यों नहीं दिई और

मैं आके उसे ब्याज समेत ले लेता। तब जो लोग निकट २४
खड़े थे उसने उन्होंसे कहा वह मोहर उससे लेओ और
जिस पास दस मोहर हैं उसको देओ । उन्होंने उससे २५
कहा हे प्रभु उस पास दस मोहर हैं । मैं तुमसे कहता २६
हूं जो कोई रखता है उसको और दिया जायगा परन्तु
जो नहीं रखता है उससे जो कुछ उस पास है सो भी
ले लिया जायगा । परन्तु मेरे उन बैरियोंको जो नहीं २७
चाहते थे कि मैं उन्होंपर राज्य करूं यहां लाके मेरे
साम्हने बध करो ।

जब यीशु यह बातें कह चुका तब यिरूशलीमको जाते २८
हुए आगे बढ़ा । और जब वह जैतून नाम पर्ब्बतके २९
निकट बैतफगी और बैथनिया गांवों पास पहुंचा तब
उसने अपने शिष्योंमेंसे दोको यह कहके भेजा. कि जो ३०
गांव सन्मुख है उसमें जाओ और उसमें प्रवेश करते हुए
तुम एक गधीके बच्चेको जिसपर कभी कोई मनुष्य नहीं
चढ़ा बंधे हुए पाओगे उसे खोलके लाओ । जो तुमसे ३१
कोई पूछे तुम उसे क्यों खोलते हो तो उससे यूं कहो
प्रभुको इसका प्रयोजन है । जो भेजे गये थे उन्होंने जाके ३२
जैसा उसने उनसे कहा वैसा पाया । जब वे बच्चेको ३३
खोलते थे तब उसके स्वामियोंने उनसे कहा तुम बच्चेको
क्यों खोलते हो । उन्होंने कहा प्रभुको इसका प्रयोजन ३४
है । सो वे बच्चेको यीशु पास लाये और अपने कपड़े ३५
उसपर डालके यीशुको बैठाया। ज्यों ज्यों वह आगे बढ़ा ३६
त्यों त्यों लोगोंने अपने अपने कपड़े मार्गमें बिछाये। जब ३७
वह निकट आया अर्थात जैतून पर्ब्बतके उतारलों पहुंचा

तब शिष्योंकी सारी मंडली आनन्दित हो सब आश्चर्य्य
कर्म्मोंके लिये जो उन्होंने देखे थे बड़े शब्दसे ईश्वरकी
३८ स्तुति करने लगी . कि धन्य वह राजा जो परमेश्वरके
नामसे आता है . स्वर्गमें शांति और सबसे ऊंचे स्थानमें
३९ गुणानुबाद होय । तब भीड़मेंसे कितने फरीशी लोग
४० उससे बोले हे गुरु अपने शिष्योंको डांटिये । उसने
उन्हें उत्तर दिया कि मैं तुमसे कहता हूं जो ये लोग
चुप रहें तो पत्थर पुकार उठेंगे ।

४१ जब वह निकट आया तब नगरको देखके उसपर
४२ रोया . और कहा तू भी अपने कुशलकी बातें हां अपने
इस दिनमें भी जो जानता . परन्तु अब वे तेरे नेत्रोंसे
४३ छिपी हैं । वे दिन तुझपर आवेंगे कि तेरे शत्रु तुझपर
मोर्चा बांधेंगे और तुझे घेरेंगे और चारों ओर रोक
४४ रखेंगे . और तुझको औ तुझमें तेरे बालकोंको मिट्टी-
में मिलावेंगे और तुझमें पत्थरपर पत्थर न छोड़ेंगे
क्योंकि तूने वह समय जिसमें तुझपर दृष्टि किई गई
न जाना ।

४५ तब वह मन्दिरमें जाके जो लोग उसमें बेचते औ
४६ मोल लेते थे उन्हें निकालने लगा . और उनसे बोला
लिखा है कि मेरा घर प्रार्थनाका घर है . परन्तु तुमने
४७ उसे डाकूओंका खोह बनाया है । वह मन्दिरमें प्रतिदिन
उपदेश करता था और प्रधान याजक और अध्यापक
४८ और लोगोंके प्रधान उसे नाश करने चाहते थे . परन्तु
नहीं जानते थे कि क्या करें क्योंकि सब लोग उसकी
सुननेको लौलीन थे ।

२० बीसवां पर्ब्ब।

१ यीशुका प्रधान याजकोंको निरुत्तर करना। ९ दुष्ट मालियोंका दृष्टान्त। २० यीशुका कर देनेके विषयमें फरीशियोंको निरुत्तर करना। २७ जी उठनेके विषयमें सदूकियोंको निरुत्तर करना। ४१ अपनी पदवीके विषयमें लोगोंको निरुत्तर करना। ४५ अध्यापकोंके दोष प्रगट करना।

उन दिनोंमेंसे एक दिन जब यीशु मन्दिरमें लोगोंको १
उपदेश देता और सुसमाचार सुनाता था तब प्रधान
याजक और अध्यापक लोग प्राचीनोंके संग निकट
आये . और उससे बोले हमसे कह तुझे ये काम करने- २
का कैसा अधिकार है अथवा कौन है जिसने तुझको यह
अधिकार दिया। उसने उनको उत्तर दिया कि मैं भी ३
तुमसे एक बात पूछूंगा मुझे उत्तर देओ। योहनका बप- ४
तिसमा देना क्या स्वर्गकी अथवा मनुष्योंकी ओरसे हुआ।
तब उन्होंने आपसमें बिचार किया कि जो हम कहें ५
स्वर्गकी ओरसे तो वह कहेगा फिर तुमने उसका बिश्वास
क्यों नहीं किया। और जो हम कहें मनुष्योंकी ओरसे ६
तो सब लोग हमें पत्थरवाह करेंगे क्योंकि वे निश्चय
जानते हैं कि योहन भविष्यद्वक्ता था। सो उन्होंने उत्तर ७
दिया कि हम नहीं जानते वह कहांसे हुआ। यीशुने ८
उनसे कहा तो मैं भी तुमको नहीं बताता हूं कि मुझे
ये काम करनेका कैसा अधिकार है।

तब वह लोगोंसे यह दृष्टान्त कहने लगा कि किसी ९
मनुष्यने दाखकी बारी लगाई और मालियोंको उसका
ठीका दे बहुत दिनलों परदेशको चला गया। समयमें १०
उसने मालियोंके पास एक दासको भेजा कि वे दाखकी

बारीका कुछ फल उसको देवें परन्तु मालियोंने उसे मार-
११ के छूछे हाथ फेर दिया । फिर उसने दूसरे दासको भेजा
और उन्होंने उसे भी मारके और अपमान करके छूछे
१२ हाथ फेर दिया । फिर उसने तीसरेको भेजा और उन्होंने
१३ उसे भी घायल करके निकाल दिया । तब दाखकी
बारीके स्वामीने कहा मैं क्या करूं . मैं अपने प्रिय पुत्रको
भेजूंगा क्या जाने वे उसे देखके उसका आदर करेंगे ।
१४ परन्तु माली लोग उसे देखके आपसमें विचार करने
लगे कि यह तो अधिकारी है आओ हम उसे मार डालें
१५ कि अधिकार हमारा हो जाय । और उन्होंने उसे
दाखकी बारीसे बाहर निकालके मार डाला . इसलिये
१६ दाखकी बारीका स्वामी उन्होंसे क्या करेगा । वह आके
इन मालियोंको नाश करेगा और दाखकी बारी दूसरोंके
हाथ देगा . यह सुनके उन्होंने कहा ऐसा न होवे ।
१७ उसने उन्होंपर दृष्टि कर कहा तो धर्म्मपुस्तकके इस
बचनका अर्थ क्या है कि जिस पत्थरको थवइयोंने
१८ निकम्मा जाना वही कोनेका सिरा हुआ है । जो कोई
उस पत्थरपर गिरेगा सो चूर हो जायगा और जिस
१९ किसीपर वह गिरेगा उसको पीस डालेगा । प्रधान
याजकों और अध्यापकोंने उसी घड़ी उसपर हाथ बढ़ाने
चाहा क्योंकि जानते थे कि उसने हमारे बिरुद्ध यह
दृष्टान्त कहा परन्तु वे लोगोंसे डरे ।
२० तब उन्होंने दांव ताकके भेदियोंको भेजा जो छलसे
अपनेको धर्म्मी दिखावें इसलिये कि उसका बचन पकड़ें
और उसे देशाध्यक्षके न्याय और अधिकारमें सौंप देवें ।

उन्होंने उससे पूछा कि हे गुरु हम जानते हैं कि आप २१
यथार्थ कहते और सिखाते हैं और पक्षपात नहीं करते
हैं परन्तु ईश्वरका मार्ग सत्यतासे बताते हैं। क्या कैसर- २२
को कर देना हमें उचित है अथवा नहीं। उसने उनकी २३
चतुराई बूझके उनसे कहा मेरी परीक्षा क्यों करते हो।
एक सूकी मुझे दिखाओ . इसपर किसकी मूर्त्ति और २४
छाप है . उन्होंने उत्तर दिया कैसरकी। उसने उनसे २५
कहा तो जो कैसरका है सो कैसरको देओ और
जो ईश्वरका है सो ईश्वरको देओ। वे लोगोंके साम्ने २६
उसकी बात पकड़ न सके और उसके उत्तरसे अचंभित
हो चुप रहे।

सदूकी लोग भी जो कहते हैं कि मृतकोंका जी उठना २७
नहीं होगा उन्होंमेंसे कितने उस पास आये और उससे
पूछा . कि हे गुरु मूसाने हमारे लिये लिखा कि यदि २८
किसीका भाई अपनी स्त्रीके रहते हुए निःसन्तान मर
जाय तो उसका भाई उस स्त्रीसे बिवाह करे और अपने
भाईके लिये वंश खड़ा करे। सो सात भाई थे . पहिला २९
भाई बिवाह कर निःसन्तान मर गया। तब दूसरे भाईने ३०
उस स्त्रीसे बिवाह किया और वह भी निःसन्तान मर
गया। तब तीसरेने उससे बिवाह किया और वैसाही ३१
सातों भाइयोंने . पर वे सब निःसन्तान मर गये। सबके ३२
पीछे स्त्री भी मर गई। सो मृतकोंके जी उठनेपर वह ३३
उनमेंसे किसकी स्त्री होगी क्योंकि सातोंने उससे बिवाह
किया। यीशुने उनको उत्तर दिया कि इस लोकके सन्तान ३४
बिवाह करते और बिवाह दिये जाते हैं। परन्तु जो ३५

लोग उस लोकमें पहुंचने और मृतकोंमेंसे जी उठनेके
योग्य गिने जाते वे न बिवाह करते न बिवाह दिये जाते
३६ हैं। और न वे फिर मर सकते हैं क्योंकि वे स्वर्गदूतोंके
समान हैं और जी उठनेके सन्तान होनेसे ईश्वरके
३७ सन्तान हैं। और मृतक लोग जो जी उठते हैं यह
बात मूसाने भी झाड़ीकी कथामें प्रगट किई है कि वह
परमेश्वरको इब्राहीमका ईश्वर और इसहाकका ईश्वर
३८ और याकूबका ईश्वर कहता है। ईश्वर मृतकोंका
नहीं परन्तु जीवतोंका ईश्वर है क्योंकि उसके लिये
३९ सब जीते हैं। अध्यापकोंमेंसे कितनोंने उत्तर दिया कि
४० हे गुरु आपने अच्छा कहा है। और उन्हें फिर उससे
कुछ पूछनेका साहस न हुआ।

४१ तब उसने उनसे कहा लोग क्योंकर कहते हैं कि
४२ खीष्ट दाऊदका पुत्र है। दाऊद आपही गीतोंके पुस्तकमें
४३ कहता है कि परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा . जबलों
मैं तेरे शत्रुओंको तेरे चरणोंकी पीढ़ी न बनाऊं तबलों
४४ तू मेरी दहिनी ओर बैठ। दाऊद तो उसे प्रभु कहता
है फिर वह उसका पुत्र क्योंकर है।

४५ जब सब लोग सुनते थे तब उसने अपने शिष्योंसे
४६ कहा . अध्यापकोंसे चौकस रहो जो लंबे बस्त्र पहिने
हुए फिरने चाहते हैं और जिनको बाजारोंमें नमस्कार
और सभाके घरोंमें ऊंचे आसन और जेवनारोंमें ऊंचे
४७ स्थान प्रिय लगते हैं। वे बिधवाओंके घर खा जाते
हैं और बहानाके लिये बड़ी बेरलों प्रार्थना करते हैं.
वे अधिक दंड पावेंगे।

२१ एकईसवां पर्ब्ब ।

१ एक विधवाके दानकी प्रशंसा । ५ मन्दिरके नाश होनेकी भविष्यद्वाणी । ७ उस समयके चिन्ह । १२ शिष्योंपर उपद्रव होगा । २० यिहूदी लोग बड़ा कष्ट पावेंगे । २५ मनुष्यके पुत्रके आनेका वर्णन । २९ गूलरके वृक्षका दृष्टान्त । ३४ सचेत रहनेका उपदेश ।

यीशुने आंख उठाके धनवानोंको अपने अपने दान १
भंडारमें डालते देखा । और उसने एक कंगाल बिध- २
वाको भी उसमें दो छदाम डालते देखा । तब उसने ३
कहा मैं तुमसे सच कहता हूं कि इस कंगाल बिधवाने
सभोंसे अधिक डाला है । क्योंकि इन सभोंने अपनी ४
बढ़तीमेंसे ईश्वरको चढ़ाई हुई बस्तुओंमें कुछ कुछ डाला
है परन्तु इसने अपनी घटतीमेंसे अपनी सारी जीविका
डाली है ।

जब कितने लोग मन्दिरके विषयमें बोलते थे कि ५
वह सुन्दर पत्थरोंसे और चढ़ाई हुई बस्तुओंसे संवारा
गया है तब उसने कहा . यह सब जो तुम देखते हो ६
वे दिन आवेंगे जिन्होंमें पत्थरपर पत्थर भी न छोड़ा
जायगा जो गिराया न जायगा ।

उन्होंने उससे पूछा हे गुरु यह कब होगा और यह ७
बातें जिस समयमें हो जायेंगीं उस समयका क्या चिन्ह
होगा । उसने कहा चौकस रहो कि भरमाये न जावो ८
क्योंकि बहुत लोग मेरे नामसे आके कहेंगे मैं वही हूं
और समय निकट आया है . सो तुम उनके पीछे मत
जाओ । जब तुम लड़ाइयों और हुल्लड़ोंकी चर्चा सुनो ९
तब मत घबराओ क्योंकि इनका पहिले होना अवश्य
है पर अन्त तुरन्त नहीं होगा । तब उसने उन्होंसे १०

कहा देश देशके और राज्य राज्यके बिरुद्ध उठेंगे ।
११ और अनेक स्थानोंमें बड़े भुईंडोल और अकाल और
मरियां होंगीं और भयंकर लक्षण और आकाशसे बड़े
बड़े चिन्ह प्रगट होंगे ।
१२ परन्तु इन सभोंके पहिले लोग तुमपर अपने हाथ
बढ़ावेंगे और तुम्हें सतावेंगे और मेरे नामके कारण
सभाके घरों और बन्दीगृहोंमें रखवावेंगे और राजाओं
१३ और अध्यक्षोंके आगे ले जावेंगे। पर इससे तुम्हारे लिये
१४ साक्षी हो जायगी । सो अपने अपने मनमें ठहरा रखो
कि हम उत्तर देनेके लिये आगेसे चिन्ता न करेंगे ।
१५ क्योंकि मैं तुम्हें ऐसा बचन और ज्ञान देऊंगा कि तुम्हारे
सब बिरोधी उसका खंडन अथवा साम्हना नहीं कर
१६ सकेंगे । तुम्हारे माता पिता और भाई और कुटुंब और
मित्र लोग तुम्हें पकड़वायेंगे और तुममेंसे कितनोंको
१७ घात करवायेंगे। और मेरे नामके कारण सब लोग तुम-
१८ से बैर करेंगे । परन्तु तुम्हारे सिरका एक बाल भी नष्ट
१९ न होगा । अपनी धीरतासे अपने प्राणोंकी रक्षा करो।
२० जब तुम यिरूशलीमको सेनाओंसे घेरे हुए देखो
तब जानो कि उसका उजड़ जाना निकट आया है ।
२१ तब जो यिहूदियामें हों सो पहाड़ोंपर भागें . जो यिरू-
शलीमके बीचमें हों सो निकल जावें और जो गांवोंमें
२२ हों सो उसमें प्रवेश न करें । क्योंकि येही दंड देनेके
दिन होंगे कि धर्म्मपुस्तककी सब बातें पूरी होवें ।
२३ उन दिनोंमें हाय हाय गर्भवतियां और दूध पिलाने-
वालियां क्योंकि देशमें बड़ा क्लेश और इन लोगोंपर क्रोध

होगा । वे खड्गकी धारसे मारे पड़ेंगे और सब देशोंके २४
लोगोंमें बंधुवे किये जायेंगे और जबलों अन्यदेशियोंका
समय पूरा न होवे तबलों यिरूशलीम अन्यदेशियोंसे
रौंदा जायगा ।

सूर्य्य और चांद और तारोंमें चिन्ह दिखाई देंगे २५
और पृथिवीपर देश देशके लोगोंको संकट औ घबराहट
होगी और समुद्र औ लहरोंका गर्जना होगा । और २६
संसारपर आनेहारी बातोंके भयसे और बाट देखनेसे
मनुष्य मृतकके ऐसे हो जायेंगे क्योंकि आकाशकी सेना
डिग जायगी । तब वे मनुष्यके पुत्रको पराक्रम और २७
बड़े ऐश्वर्य्यसे मेघपर आते देखेंगे । जब इन बातोंका २८
आरंभ होगा तब तुम सीधे होके अपने सिर उठाओ
क्योंकि तुम्हारा उद्धार निकट आता है ।

उसने उन्होंसे एक दृष्टान्त भी कहा कि गूलरका वृक्ष २९
और सब वृक्षोंको देखो । जब उनकी कोंपलें निकलती ३०
हैं तब तुम देखकर आपही जानते हो कि धूपकाला अब
निकट है । इस रीतिसे जब तुम यह बातें होते देखो ३१
तब जानो कि ईश्वरका राज्य निकट है । मैं तुमसे सच ३२
कहता हूं कि जबलों सब बातें पूरी न हो जायें तबलों
इस समयके लोग नहीं जाते रहेंगे । आकाश और ३३
पृथिवी टल जायेंगे परन्तु मेरी बातें कभी न टलेंगीं ।

अपने विषयमें सचेत रहो ऐसा न हो कि तुम्हारे ३४
मन अफराई और मतवालपन और सांसारिक चिन्ता-
ओंसे भारी हो जावें और वह दिन तुमपर अचांचक
आ पहुंचे । क्योंकि वह फंदेकी नाईं सारी पृथिवीके ३५

३६ सब रहनेहारोंपर आवेगा । इसलिये जागते रहो और
नित्य प्रार्थना करो कि तुम इन सब आनेहारी बातों-
से बचनेके और मनुष्यके पुत्रके सन्मुख खड़े होनेके
योग्य गिने जावो ।
३७ यीशु दिनको मन्दिरमें उपदेश करता था और
रातको बाहर जाके जैतून नाम पर्व्बतपर टिकता था।
३८ और तड़के सब लोग उसकी सुननेको मन्दिरमें उस
पास आते थे।

२२ बाईसवां पर्व्ब ।

१ यीशुको बध करनेका परामर्श । ३ यिहूदाका विश्वासघात करना । ७ शिष्योंका निस्तार पर्व्बका भोजन बनाना । १४ उनके संग यीशुका भोजन करना । १९ प्रभु भोजका निरूपण । २१ यिहूदाके विषयमें यीशुका भविष्यद्वाक्य । २४ दीन होनेका उपदेश । ३१ पितरके यीशुसे मुकर जानेकी भविष्यद्वाणी । ३५ शिष्योंके साहस करनेका उपदेश । ३९ बारीमें यीशुका महा शोक । ४७ उसका पकड़ा जाना । ५४ उसको महायाजकके पास ले जाना और पितरका उससे मुकर जाना । ६३ उसको अपमान करना और बधके योग्य ठहराना ।

१ अखमीरी रोटीका पर्व्ब जो निस्तार पर्व्ब कहावता
२ है निकट आया । और प्रधान याजक और अध्यापक
लोग खोज करते थे कि यीशुको क्योंकर मार डालें
क्योंकि वे लोगोंसे डरते थे ।
३ तब शैतानने यिहूदामें जो इस्करियोती कहावता
है और बारह शिष्योंमें गिना जाता था प्रवेश किया।
४ उसने जाके प्रधान याजकों और पहरुओंके अध्यक्षोंके
संग बातचीत किई कि यीशुको क्योंकर उन्होंके हाथ
५ पकड़वावे । वे आनन्दित हुए और रुपैये देनेको उससे
६ नियम बांधा । वह अंगीकार करके उसे बिना हुल्लड़के
उन्होंके हाथ पकड़वानेका अवसर ढूंढ़ने लगा ।

तब अखमीरी रोटीके पर्ब्बका दिन जिसमें निस्तार ७
पर्ब्बका मेम्ना मारना उचित था आ पहुंचा। और यीशुने ८
पितर और योहनको यह कहके भेजा कि जाके हमारे
लिये निस्तार पर्ब्बका भोजन बनाओ कि हम खायें। वे ९
उससे बोले आप कहां चाहते हैं कि हम बनावें। उसने १०
उनसे कहा देखो जब तुम नगरमें प्रवेश करो तब एक
मनुष्य जलका घड़ा उठाये हुए तुम्हें मिलेगा. जिस घरमें
वह पैठे तुम उसके पीछे उस घरमें जाओ। और उस घर- ११
के स्वामीसे कहो गुरु तुझसे कहता है कि पाहुनशाला
कहां है जिसमें मैं अपने शिष्योंके संग निस्तार पर्ब्बका
भोजन खाऊं। वह तुम्हें एक सजी हुई बड़ी उपरौठी १२
कोठरी दिखावेगा वहां तैयार करो। उन्होंने जाके १३
जैसा उसने उन्होंसे कहा तैसा पाया और निस्तार
पर्ब्बका भोजन बनाया।

जब वह घड़ी पहुंची तब यीशु और बारहों प्रेरित १४
उसके संग भोजनपर बैठे। और उसने उनसे कहा मैंने १५
यह निस्तार पर्ब्बका भोजन दुःख भोगनेके पहिले
तुम्हारे संग खानेकी बड़ी लालसा किई। क्योंकि मैं तुमसे १६
कहता हूं कि जबलों वह ईश्वरके राज्यमें पूरा न होवे
तबलों मैं उसे फिर कभी न खाऊंगा। तब उसने कटोरा १७
ले धन्य मानके कहा इसको लेओ और आपसमें
बांटो। क्योंकि मैं तुमसे कहता हूं कि जबलों ईश्वरका १८
राज्य न आवे तबलों मैं दाख रस कभी न पीऊंगा।

फिर उसने रोटी लेके धन्य माना और उसे तोड़के १९
उनको दिया और कहा यह मेरा देह है जो तुम्हारे

लिये दिया जाता है . मेरे स्मरणके लिये यह किया
२० करो। इसी रीतिसे उसने बियारीके पीछे कटोरा भी
देके कहा यह कटोरा मेरे लोहूपर जो तुम्हारे लिये
बहाया जाता है नया नियम है।

२१ परन्तु देखो मेरे पकड़वानेहारेका हाथ मेरे संग
२२ मेजपर है। मनुष्यका पुत्र जैसा ठहराया गया है वैसा-
ही जाता है परन्तु हाय वह मनुष्य जिससे वह पकड़-
२३ वाया जाता है। तब वे आपसमें विचार करने लगे
कि हममेंसे कौन है जो यह काम करेगा।

२४ उन्होंमें यह बिवाद भी हुआ कि उनमेंसे कौन बड़ा
२५ समझा जाय। यीशुने उनसे कहा अन्यदेशियोंके राजा
उन्होंपर प्रभुता करते हैं और उन्होंके अधिकारी लोग
२६ परोपकारी कहावते हैं। परन्तु तुम ऐसे न होओ पर
जो तुम्होंमें बड़ा है सो छोटेकी नाईं होवे और जो
२७ प्रधान है सो सेवककी नाईं होवे। कौन बड़ा है भोजनपर
बैठनेहारा अथवा सेवक. क्या भोजनपर बैठनेहारा बड़ा
नहीं है. परन्तु मैं तुम्हारे बीचमें सेवककी नाईं हूं।
२८ तुमही हो जो मेरी परीक्षाओंमें मेरे संग रहे हो।
२९ और जैसे मेरे पिताने मेरे लिये राज्य ठहराया है तैसा
३० मैं तुम्हारे लिये ठहराता हूं. कि तुम मेरे राज्यमें मेरी
मेजपर खाओ और पीओ और सिंहासनोंपर बैठके
इस्रायेलके बारह कुलोंका न्याय करो।

३१ और प्रभुने कहा हे शिमोन हे शिमोन देख शैतानने
तुम्हें मांग लिया है इसलिये कि गेहूंकी नाईं तुम्हें फटके।
३२ परन्तु मैंने तेरे लिये प्रार्थना किई है कि तेरा बिश्वास

घर न जाय और जब तू फिरे तब अपने भाइयोंको
स्थिर कर । उसने उससे कहा हे प्रभु मैं आपके संग ३३
बंदीगृहमें जानेको और मरनेको तैयार हूं । उसने ३४
कहा हे पितर मैं तुझसे कहता हूं कि आजही जबलों
तू तीन बार मुझे नकारके न कहे कि मैं उसे नहीं
जानता हूं तबलों मुर्ग न बोलेगा ।

और उसने उनसे कहा जब मैंने तुम्हें बिन थैली ३५
औ बिन झोली औ बिन जूते भेजा तब क्या तुमको
किसी बस्तुकी घटी हुई . वे बोले किसूकी नहीं । उसने ३६
उनसे कहा परन्तु अब जिस पास थैली हो सो उसे
ले ले और वैसेही झोली भी और जिस पास खड्ग न
होय सो अपना बस्त्र बेचके एकको मोल लेवे । क्योंकि ३७
मैं तुमसे कहता हूं अवश्य है कि धर्म्मपुस्तकका यह
बचन भी कि वह कुकर्म्मियोंके संग गिना गया मुझपर
पूरा किया जाय क्योंकि मेरे विषयमेंकी बातें सम्पूर्ण
होनेपर हैं । तब वे बोले हे प्रभु देखिये यहां दो खड्ग ३८
हैं . उसने उनसे कहा बहुत है ।

तब यीशु बाहर निकलके अपनी रीतिके अनुसार ३९
जैतून पर्ब्बतपर गया और उसके शिष्य भी उसके पीछे
हो लिये । उस स्थानमें पहुंचके उसने उनसे कहा ४०
प्रार्थना करो कि तुम परीक्षामें न पड़ो । और वह आप ४१
ढेला फेंकनेके टप्पेभर उनसे अलग गया और घुटने
टेकके प्रार्थना किई . कि हे पिता जो तेरी इच्छा होय ४२
तो इस कटोरेको मेरे पाससे टाल दे तौभी मेरी नहीं
पर तेरी इच्छा पूरी हो जाय । तब एक दूत उसे सामर्थ्य ४३

४४ देनेको स्वर्गसे उसको दिखाई दिया। और उसने बड़े
संकटमें होके अधिक दृढ़तासे प्रार्थना किई और उसका
पसीना ऐसा हुआ जैसे लोहूके थक्के जो भूमिपर गिरें।
४५ तब वह प्रार्थनासे उठा और अपने शिष्योंके पास आ
४६ उन्हें शोकके मारे सोते पाया. और उनसे कहा क्यों
सोते हो उठो प्रार्थना करो कि तुम परीक्षामें न पड़ो।
४७ वह बोलताही था कि देखो बहुत लोग आये और
बारह शिष्योंमेंसे एक शिष्य जिसका नाम यिहूदा था
उनके आगे आगे चलता था और यीशुका चूमा लेनेको
४८ उस पास आया। यीशुने उससे कहा हे यिहूदा क्या तू
४९ मनुष्यके पुत्रको चूमा लेके पकड़वाता है। यीशुके संगि-
योंने जब देखा कि क्या होनेवाला है तब उससे कहा हे प्रभु
५० क्या हम खड्गसे मारें। और उनमेंसे एकने महायाजकके
दासको मारा और उसका दहिना कान उड़ा दिया।
५१ इसपर यीशुने कहा यहांतक रहने दो. और उस दास-
५२ का कान छूके उसे चंगा किया। तब यीशुने प्रधान याज-
कों और मन्दिरके पहरुओंके अध्यक्षों और प्राचीनोंसे
जो उस पास आये थे कहा क्या तुम जैसे डाकूपर खड्ग
५३ और लाठियां लेके निकले हो। जब मैं मन्दिरमें प्रति-
दिन तुम्हारे संग था तब तुम्होंने मुझपर हाथ न बढ़ाये
परन्तु यही तुम्हारी घड़ी और अंधकारका पराक्रम है।
५४ वे उसे पकड़के ले चले और महायाजकके घरमें लाये
५५ और पितर दूर दूर उसके पीछे हो लिया। जब वे
अंगनेमें आग सुलगाके एकट्ठे बैठे तब पितर उन्होंके
५६ बीचमें बैठ गया। और एक दासी उसे आगके पास बैठे

देखके उसकी ओर ताकके बोली यह भी उसके संग था।
उसने उसे नकारके कहा हे नारी मैं उसे नहीं जानता ५७
हूं। थोड़ी बेर पीछे दूसरेने उसे देखके कहा तू भी ५८
उनमेंसे एक है. पितरने कहा हे मनुष्य मैं नहीं हूं।
घड़ी एक बीते दूसरेने दृढ़तासे कहा यह भी सचमुच ५९
उसके संग था क्योंकि वह गालीली भी है। पितरने ६०
कहा हे मनुष्य मैं नहीं जानता तू क्या कहता है. और
तुरन्त ज्यों वह कह रहा त्यों मुर्ग बोला। तब प्रभुने मुंह ६१
फेरके पितरपर दृष्टि किई और पितरने प्रभुका बचन
स्मरण किया कि उसने उससे कहा था मुर्गके बोलनेसे
आगे तू तीन बार मुझसे मुकरेगा। तब पितर बाहर ६२
निकलके बिलक बिलक रोया।

जो मनुष्य यीशुको धरे हुए थे वे उसे मारके ठट्ठा ६३
करने लगे. और उसकी आंखें ढांपके उसके मुंहपर ६४
थपेड़े मारके उससे पूछा कि भविष्यद्वाणी बोल किसने
तुझे मारा। और उन्होंने बहुतसी और निन्दाकी बातें ६५
उसके बिरुद्धमें कहीं। ज्योंही बिहान हुआ त्योंही लो- ६६
गोंके प्राचीन और प्रधान याजक और अध्यापक लोग
एकट्ठे हुए और उसे अपनी न्यायसभामें लाये और
बोले जो तू ख्रीष्ट है तो हमसे कह। उसने उनसे कहा ६७
जो मैं तुमसे कहूं तो तुम प्रतीति नहीं करोगे। और ६८
जो मैं कुछ पूछूं तो तुम न उत्तर देओगे न मुझे छोड़ोगे।
अबसे मनुष्यका पुत्र सर्ब्बशक्तिमान ईश्वरकी दाहिनी ६९
ओर बैठेगा। सभोंने कहा तो क्या तू ईश्वरका पुत्र है. ७०
उसने उन्होंसे कहा तुम तो कहते हो कि मैं हूं। तब ७१

उन्होंने कहा अब हमें साक्षीका और क्या प्रयोजन क्योंकि हमने आपही उसके मुखसे सुना है।

२३ तेईसवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका पिलातके हाथ सोंपा जाना और पिलातका उसे विचार करना। ६ पिलातका उसे हेरोदके पास भेजना। १३ उसको छोड़नेकी युक्ति करनेके पीछे घातकोंके हाथ सोंपना। २७ बिलाप करनेहारी स्त्रियोंसे यीशुकी कथा। ३३ उसका क्रूशपर चढ़ाया जाना। ३५ उसपर लोगोंका हंसना। ३९ क्रूशपर चढ़ाये हुए डाकूओंका वृतान्त। ४४ यीशुका पुकारना और प्राण त्यागना और लोगोंका अचंभा करना। ५० यूसफका उसको कबरमें रखना।

१ तब सारा समाज उठके यीशुको पिलातके पास ले
२ गया. और उसपर यह कहके दोष लगाने लगा कि
हमने यही पाया है कि यह मनुष्य लोगोंको बहकाता
है और अपनेको खीष्ट राजा कहके कैसरको कर देना
३ बर्जता है। पिलातने उससे पूछा क्या तू यिहूदियोंका
राजा है. उसने उसको उत्तर दिया कि आपही तो कहते
४ हैं। तब पिलातने प्रधान याजकों और लोगोंसे कहा
५ मैं इस मनुष्यमें कुछ दोष नहीं पाता हूं। परन्तु उन्होंने
अधिक दृढ़ताईसे कहा वह गालीलसे लेके यहांलों सारे
यिहूदियामें उपदेश करके लोगोंको उसकाता है।
६ पिलातने गालीलका नाम सुनके पूछा क्या यह मनुष्य
७ गालीली है। जब उसने जाना कि वह हेरोदके राज्य-
मेंका है तब उसे हेरोदके पास भेजा कि वह भी उन
८ दिनोंमें यिरूशलीममें था। हेरोद यीशुको देखके अति
आनन्दित हुआ क्योंकि वह बहुत दिनसे उसको देखने
चाहता था इसलिये कि उसके विषयमें बहुत बातें सुनी
थीं और उसका कुछ आश्चर्य्य कर्म्म देखनेकी उसको

आशा हुई । उसने उससे बहुत बातें पूछीं परन्तु उसने ९
उसको कुछ उत्तर न दिया । और प्रधान याजकों और १०
अध्यापकोंने खड़े हुए बड़ी धुनसे उसपर दोष लगाये ।
तब हेरोदने अपनी सेनाके संग उसे तुच्छ जानके ठट्ठा ११
किया और भड़कीला बस्त्र पहिराके उसे पिलातके पास
फेर भेजा । उसी दिन पिलात और हेरोद जिन्होंके १२
बीचमें आगेसे शत्रुता थी आपसमें मित्र हो गये ।
पिलातने प्रधान याजकों और अध्यक्षों और लो- १३
गोंको एकट्ठे बुलाके उन्होंसे कहा . तुम इस मनुष्यको १४
लोगोंका बहकानेहारा कहके मेरे पास लाये हो और
देखो मैंने तुम्हारे साम्हने विचार किया है परन्तु जिन
बातोंमें तुम इस मनुष्यपर दोष लगाते हो उन बातोंके
विषयमें मैंने उसमें कुछ दोष नहीं पाया है । न हेरोद- १५
ने पाया है क्योंकि मैंने तुम्हें उस पास भेजा और देखो
बधके योग्य कोई काम उससे नहीं किया गया है । सो १६
मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा । पिलातको अवश्य भी १७
था कि उस पर्ब्बमें एक मनुष्यको लोगोंके लिये छोड़
देवे । तब लोग सब मिलके चिल्लाये कि इसको ले जाइये १८
और हमारे लिये बरब्बाको छोड़ दीजिये । यही बरब्बा १९
किसी बलवेके कारण जो नगरमें हुआ था और नर-
हिंसाके कारण बन्दीगृहमें डाला गया था । पिलात यीशु- २०
को छोड़नेकी इच्छा कर लोगोंसे फिर बोला । परन्तु २१
उन्होंने पुकारा कि उसे क्रूशपर चढ़ाइये क्रूशपर चढ़ा-
इये । उसने तीसरी बेर उनसे कहा क्यों उसने कौनसी २२
बुराई किई है . मैंने उसमें बधके योग्य कोई दोष नहीं

पाया है इसलिये मैं उसे कोड़े मारके छोड़ देऊंगा ।
२३ परन्तु वे ऊंचे ऊंचे शब्दसे यत्न करके मांगने लगे कि
वह क्रूशपर चढ़ाया जाय और उन्होंके और प्रधान
२४ याजकोंके शब्द प्रबल ठहरे । सो पिलातने आज्ञा दिई
२५ कि उनकी बिन्तीके अनुसार किया जाय । और उसने
उस मनुष्यको जो बलवे और नरहिंसाके कारण बन्दी-
गृहमें डाला गया था जिसे वे मांगते थे उनके लिये छोड़
२६ दिया और यीशुको उनकी इच्छापर सोंप दिया । जब वे
उसे ले जाते थे तब उन्होंने शिमोन नाम कुरीनी देशके
एक मनुष्यको जो गांवसे आता था पकड़के उसपर क्रूश
धर दिया कि उसे यीशुके पीछे ले चले ।
२७ लोगोंकी बड़ी भीड़ उसके पीछे हो लिई और बहुतेरी
स्त्रियां भी जो उसके लिये छाती पीटती और बिलाप
२८ करती थीं । यीशुने उन्होंकी ओर फिरके कहा हे
यिरूशलीमकी पुत्रियो मेरे लिये मत रोओ परन्तु अपने
२९ लिये और अपने बालकोंके लिये रोओ । क्योंकि देखो
वे दिन आते हैं जिन्होंमें लोग कहेंगे धन्य वे स्त्रियां
जो बांझ हैं और वे गर्भ जिन्होंने लड़के न जन्माये
३० और वे स्तन जिन्होंने दूध न पिलाया है । तब वे
पर्ब्बतोंसे कहने लगेंगे कि हमोंपर गिरो और टीलोंसे कि
३१ हमें ढांपो । क्योंकि जो वे हरे पेड़से यह करते हैं तो
३२ सूखेसे क्या किया जायगा । वे और दो मनुष्योंको भी
जो कुकर्म्मी थे यीशुके संग घात करनेको ले चले ।
३३ जब वे उस स्थानपर जो खोपड़ी कहावता है पहुंचे
तब उन्होंने वहां उसको और उन कुकर्म्मियोंको एकको

दहिनी ओर और दूसरेको बाईं ओर क्रूशोंपर चढ़ाया।
तब यीशुने कहा हे पिता उन्हें क्षमा कर क्योंकि वे नहीं ३४
जानते क्या करते हैं . और उन्होंने चिट्ठियां डालके
उसके कपड़े बांट लिये ।

लोग खड़े हुए देखते रहे और अध्यक्षोंने भी उनके ३५
संग ठट्ठा कर कहा उसने औरोंको बचाया जो वह
ईश्वरका चुना हुआ जन खीष्ट है तो अपनेको बचावे।
योद्धाओंने भी उससे ठट्ठा करनेको निकट आके उसे ३६
सिरका दिया . और कहा जो तू यिहूदियोंका राजा है ३७
तो अपनेको बचा । और उसके ऊपरमें एक पत्र भी ३८
था जो यूनानीय औ रोमीय औ इब्रीय अक्षरोंमें लिखा
हुआ था कि यह यिहूदियोंका राजा है।

जो कुकर्म्मी लटकाये गये थे उनमेंसे एकने उसकी ३९
निन्दा कर कहा जो तू खीष्ट है तो अपनेको और हमोंको
बचा । इसपर दूसरेने उसे डांटके कहा क्या तू ईश्वरसे ४०
कुछ डरता भी नहीं . तुझपर तो वैसाही दंड दिया जाता
है । और हमोंपर न्यायकी रीतिसे दिया जाता क्योंकि ४१
हम अपने कर्म्मोंके योग्य फल भोगते हैं परन्तु इसने
कोई अनुचित काम नहीं किया है । तब उसने यीशुसे ४२
कहा हे प्रभु जब आप अपने राज्यमें आवें तब मेरी
सुध लीजिये । यीशुने उससे कहा मैं तुझसे सच कहता ४३
हूं कि आजही तू मेरे संग स्वर्गलोकमें होगा ।

जब दो पहरके निकट हुआ तब सारे देशमें तीसरे ४४
पहरलों अंधकार हो गया । सूर्य्य अंधियारा हो गया ४५
और मन्दिरका परदा बीचसे फट गया। और यीशुने बड़े ४६

शब्दसे पुकारके कहा हे पिता मैं अपना आत्मा तेरे
४७ हाथमें सौंपता हूं और यह कहके प्राण त्यागा । जो
हुआ था सो देखके शतपतिने ईश्वरका गुणानुबाद कर
४८ कहा निश्चय यह मनुष्य धर्म्मी था। और सब लोग जो
यह देखनेको एकट्ठे हुए थे जो कुछ हुआ था सो
४९ देखके अपनी अपनी छाती पीटते हुए फिर गये। और
यीशुके सब चिन्हार और वे स्त्रियां जो गालीलसे उसके
संग आई थीं दूर खड़े हो यह सब देखते रहे ।
५० और देखो यूसफ नाम यिहूदियोंके अरिमथिया
नगरका एक मनुष्य था जो मन्त्री था और उत्तम और
धर्म्मी पुरुष होके दूसरे मन्त्रियोंके विचार और काममें
५१ नहीं मिला था। और वह आप भी ईश्वरके राज्यकी
५२ बाट जोहता था । उसने पिलातके पास जाके यीशुकी
५३ लोथ मांग लिई। तब उसने उसे उतारके चद्दरमें लपेटा
और एक कबरमें रखा जो पत्थरमें खोदी हुई थी जिसमें
५४ कोई कभी नहीं रखा गया था। वह दिन तैयारीका दिन
५५ था और बिश्रामवार समीप था। वे स्त्रियां भी जो गालील
से उसके संग आई थीं पीछे हो लिईं और कबरको और
५६ उसकी लोथ क्योंकर रखी गई उसको देख लिया। और
उन्होंने लौटके सुगन्ध द्रब्य और सुगन्ध तेल तैयार किया
और आज्ञाके अनुसार विश्रामके दिनमें बिश्राम किया।

२४ चौबीसवां पर्ब्ब ।

१ स्त्रियोंका दूतसे यीशुके जी उठनेका समाचार सुनना और शिष्योंको कह देना। १३ यीशुका इम्माऊको जाते हुए दो शिष्योंको दर्शन देना और उनसे बातचीत करना । ३६ यिरूशलीममें शिष्योंको दर्शन देना और उन्हें प्रेरण करना । ५० स्वर्गमें जाना ।

तब अठवारेके पहिले दिन बड़ी भोर ये स्त्रियां और १
उनके संग कई एक और स्त्रियां वह सुगन्ध जो उन्होंने
तैयार किया था लेके कबरपर आईं। परन्तु उन्होंने २
पत्थरको कबरके साम्हनेसे लुढ़काया हुआ पाया. और ३
भीतर जाके प्रभु यीशुकी लोथ न पाई। जब वे इस बातके ४
विषयमें दुबधा कर रहीं तब देखो दो पुरुष चमकते बस्त्र
पहिने हुए उनके निकट खड़े हो गये। जब वे डर गईं ५
और धरतीकी ओर मुंह झुकाये रहीं तब वे उनसे बोले
तुम जीवतेको मृतकोंके बीचमें क्यों ढूंढ़ती हो। वह यहां ६
नहीं है परन्तु जी उठा है. स्मरण करो कि उसने गाली-
लमें रहते हुए तुमसे कहा. अवश्य है कि मनुष्यका पुत्र ७
पापी लोगोंके हाथमें पकड़वाया जाय और क्रूशपर घात
किया जाय और तीसरे दिन जी उठे। तब उन्होंने उसकी ८
बातोंको स्मरण किया। और कबरसे लौटके उन्होंने ९
ग्यारह शिष्योंको और और सभोंको यह सब बातें सुनाईं।
मरियम मगदलीनी और योहाना और याकूबकी माता १०
मरियम और उनके संगकी और स्त्रियां थीं जिन्होंने
प्रेरितोंसे यह बातें कहीं। परन्तु उनकी बातें उन्होंके ११
आगे कहानीसी समझ पड़ीं और उन्होंने उनकी प्रतीति
न किई। तब पितर उठके कबरपर दौड़ गया और १२
झुकके केवल चद्दर पड़ी हुई देखी और जो हुआ था
उससे अपने मनमें अचंभा करता हुआ चला गया।

देखो उसी दिन उनमेंसे दो जन इम्माऊ नाम एक १३
गांवको जो यिरूशलीमसे कोश चार एक पर था जाते
थे। और वे इन सब बातोंपर जो हुई थीं आपसमें बात- १४

१५ चीत करते थे । ज्यों वे बातचीत और बिचार कर रहे
त्यों यीशु आपही निकट आके उनके संग हो लिया ।
१६ परन्तु उनकी दृष्टि ऐसी रोकी गई कि उन्होंने उसको
१७ नहीं चीन्हा। उसने उनसे कहा यह क्या बातें हैं जिन-
पर तुम चलते हुए आपसमें बातचीत करते और उदास
१८ होते हो । तब एक जनने जिसका नाम क्लियोपा था
उत्तर देके उससे कहा क्या केवल तूही यिरूशलीममें
डेरा करके वे बातें जो उसमें इन दिनोंमें हुई हैं नहीं
१९ जानता है । उसने उनसे कहा कौनसी बातें . उन्होंने
उससे कहा यीशु नासरीके विषयमें जो भविष्यद्वक्ता और
ईश्वरके और सब लोगोंके आगे काममें और बचन-
२० में शक्तिमान पुरुष था । क्योंकर हमारे प्रधान याजकों
और अध्यक्षोंने उसे सोंप दिया कि उसपर बध किये
जानेकी आज्ञा दिई जाय और उसे क्रूशपर घात किया
२१ है । परन्तु हमें आशा थी कि वही है जो इस्रायेलका
उद्धार करेगा . और भी जबसे यह हुआ तबसे आज
२२ उसको तीसरा दिन है । और हमोंमेंसे कितनी स्त्रियोंने
२३ भी हमें बिस्मित किया है कि वे भोरको कबरपर गईं . पर
उसकी लोथ न पाके फिर आके बोलीं कि हमने स्वर्ग-
दूतोंका दर्शन भी पाया है जो कहते हैं कि वह जीता है ।
२४ तब हमारे संगियोंमेंसे कितने जन कबरपर गये और जैसा
२५ स्त्रियोंने कहा तैसाही पाया परन्तु उसको न देखा । तब
यीशुने उनसे कहा हे निर्बुद्धि और भविष्यद्वक्ताओंकी सब
२६ बातोंपर बिश्वास करनेमें मन्दमति लोगो . क्या अवश्य
न था कि खीष्ट यह दुःख उठाके अपने ऐश्वर्य्यमें प्रवेश

करे। तब उसने मूसासे और सब भविष्यद्वक्ताओंसे २७
आरंभ कर सारे धर्म्मपुस्तकमें अपने विषयमेंकी बातोंका
अर्थ उन्होंको बताया। इतनेमें वे उस गांवके पास पहुंचे २८
जहां वे जाते थे और उसने ऐसा किया जैसा कि आगे
जाता है। परन्तु उन्होंने यह कहके उसको रोका कि २९
हमारे संग रहिये क्योंकि सांझ हो चली और दिन ढल
गया है. तब वह उनके संग रहनेको भीतर गया। जब ३०
वह उनके संग भोजनपर बैठा तब उसने रोटी लेके
धन्यबाद किया और उसे तोड़के उनको दिया। तब ३१
उनकी दृष्टि खुल गई और उन्होंने उसको चीन्हा और
वह उनसे अन्तर्द्धान हो गया। और उन्होंने आपसमें ३२
कहा जब वह मार्गमें हमसे बात करता था और धर्म्म-
पुस्तकका अर्थ हमें बताता था तब क्या हमारा मन
हममें न तपता था। वे उसी घड़ी उठके यिरूशलीमको ३३
लौट गये और ग्यारह शिष्योंको और उनके संगियोंको
एकट्ठे हुए और यह कहते हुए पाया. कि निश्चय प्रभु ३४
जी उठा है और शिमोनको दिखाई दिया है। तब उन ३५
दोनोंने कह सुनाया कि मार्गमें क्या हुआ था और
यीशु क्योंकर रोटी तोड़नेमें उनसे पहचाना गया।

वे यह कहतेही थे कि यीशु आपही उनके बीचमें ३६
खड़ा हो उनसे बोला तुम्हारा कल्याण होय। परन्तु वे ३७
व्याकुल और भयमान हुए और समझा कि हम प्रेतको
देखते हैं। उसने उनसे कहा क्यों व्याकुल हो और ३८
तुम्हारे मनमें सन्देह क्यों उत्पन्न होता है। मेरे हाथ ३९
और मेरे पांव देखो कि मैं आपही हूं. मुझे टोओ और

देख लो क्योंकि जैसे तुम मुझमें देखते हो तैसे प्रेतको
४० हाड़ मांस नहीं होते हैं । यह कहके उसने अपने हाथ
४१ पांव उन्हें दिखाये । ज्यों वे मारे आनन्दके प्रतीति न
करते थे और अचंभित हो रहे त्यों उसने उनसे कहा
४२ क्या तुम्हारे पास यहां कुछ भोजन है। उन्होंने उसको
४३ कुछ भूनी मछली और मधुका छत्ता दिया। उसने लेके
४४ उनके साम्हने खाया । और उसने उनसे कहा यही वे
बातें हैं जो मैंने तुम्हारे संग रहते हुए तुमसे कहीं कि
जो कुछ मेरे विषयमें मूसाकी व्यवस्थामें और भविष्यद्व-
क्ताओं और गीतोंके पुस्तकोंमें लिखा है सबका पूरा
४५ होना अवश्य है। तब उसने धर्म्मपुस्तक समझनेको उन-
४६ का ज्ञान खोला. और उनसे कहा यूं लिखा है और इसी
रीतिसे अवश्य था कि खीष्ट दुःख उठावे और तीसरे
४७ दिन मृतकोंमेंसे जी उठे . और यिरूशलीमसे आरंभ
कर सब देशोंके लोगोंमें उसके नामसे पश्चात्तापकी और
४८ पाप मोचनकी कथा सुनाई जावे । तुम इन बातोंके
४९ साक्षी हो। देखो मेरे पिताने जिसकी प्रतिज्ञा किई उसको
मैं तुम्होंपर भेजता हूं और तुम जबलों ऊपरसे शक्ति न
पावो तबलों यिरूशलीम नगरमें रहो ।
५० तब वह उन्हें बैथनियालों बाहर ले गया और
५१ अपने हाथ उठाके उन्हें आशीस दिई । उन्हें आशीस
देते हुए वह उनसे अलग हो गया और स्वर्गपर उठा
५२ लिया गया । और वे उसको प्रणाम कर बड़े आनन्दसे
५३ यिरूशलीमको लौट गये. और नित्य मन्दिरमें ईश्वर-
की स्तुति और धन्यबाद किया करते थे । आमीन ॥

योहन रचित सुसमाचार।

---

१ पहिला पर्ब्ब।

१ यीशु खीष्टके ईश्वरत्वका बर्णन। ६ योहनका ईश्वरकी ओरसे भेजा जाना और यीशुका अवतार लेना। १९ उसके विषयमें योहनकी साक्षी। ३५ अन्द्रिय और शिमोन और एक और शिष्यका बुलाया जाना। ४३ फिलिप और नथनेलका बुलाया जाना।

आदिमें बचन था और बचन ईश्वरके संग था १
और बचन ईश्वर था। वह आदिमें ईश्वरके संग था। २
सब कुछ उसके द्वारा सृजा गया और जो सृजा गया ३
है कुछ भी उस बिना नहीं सृजा गया। उसमें जीवन ४
था और वह जीवन मनुष्योंका उजियाला था। और ५
वह उजियाला अंधकारमें चमकता है और अंधकारने
उसको ग्रहण न किया।

एक मनुष्य ईश्वरकी ओरसे भेजा गया जिसका नाम ६
योहन था। वह साक्षीके लिये आया कि उस उजिया- ७
लेके विषयमें साक्षी देवे इसलिये कि सब लोग उसके
द्वारासे बिश्वास करें। वह आप तो वह उजियाला न था ८
परन्तु उस उजियालेके विषयमें साक्षी देनेको आया।
सच्चा उजियाला जो हर एक मनुष्यको उजियाला देता ९
है जगतमें आनेवाला था। वह जगतमें था और जगत १०
उसके द्वारा सृजा गया परन्तु जगतने उसको नहीं
जाना। वह अपने निज देशमें आया और उसके निज ११
लोगोंने उसे ग्रहण न किया। परन्तु जितनोंने उसे ग्रहण १२

किया उन्होंको अर्थात उसके नामपर बिश्वास करने-
हारोंको उसने ईश्वरके सन्तान होनेका अधिकार दिया।
१३ उन्होंका जन्म न लोहूसे न शरीरकी इच्छासे न मनुष्य-
१४ की इच्छासे परन्तु ईश्वरसे हुआ। और बचन देहधारी
हुआ और हमारे बीचमें डेरा किया और हमने उसकी
महिमा पिताके एकलौतेकीसी महिमा देखी . वह
१५ अनुग्रह और सच्चाईसे परिपूर्ण था। योहनने उसके
विषयमें साक्षी दिई और पुकारके कहा यही था जिसके
विषयमें मैंने कहा कि जो मेरे पीछे आता है सो मेरे आगे
१६ हुआ है क्योंकि वह मुझसे पहिले था। उसकी भरपूरीसे
हम सभोंने पाया है हां अनुग्रहपर अनुग्रह पाया है।
१७ क्योंकि ब्यवस्था मूसाके द्वारासे दिई गई अनुग्रह और
१८ सच्चाई यीशु खीष्टके द्वारासे हुए। किसीने ईश्वरको
कभी नहीं देखा है . एकलौता पुत्र जो पिताकी गोदमें
है उसीने उसे बर्णन किया।

१९ योहनकी साक्षी यह है कि जब यिहूदियोंने यिरूश-
लीमसे याजकों और लेवीयोंको उससे यह पूछनेको भेजा
२० कि तू कौन है . तब उसने मान लिया और नहीं मुकर
२१ गया पर मान लिया कि मैं खीष्ट नहीं हूं। तब उन्होंने
उससे पूछा तो कौन . क्या तू एलियाह है . उसने कहा
मैं नहीं हूं . क्या तू वह भविष्यद्वक्ता है . उसने उत्तर
२२ दिया कि नहीं। फिर उन्होंने उससे कहा तू कौन है
कि हम अपने भेजनेहारोंको उत्तर देवें . तू अपने विषय-
२३ में क्या कहता है। उसने कहा मैं किसीका शब्द हूं जो
जंगलमें पुकारता है कि परमेश्वरका पन्थ सीधा करो।

जैसा यिशैयाह भविष्यद्वक्ताने कहा। जो भेजे गये थे सो २४
फरीशियोंमेंसे थे। उन्होंने उससे पूछके उससे कहा २५
जो तू न ख्रीष्ट और न एलियाह और न वह भविष्य-
द्वक्ता है तो क्यों बपतिसमा देता है। योहनने उनको २६
उत्तर दिया कि मैं तो जलमें बपतिसमा देता हूं परन्तु
तुम्हारे बीचमें एक खड़ा है जिसे तुम नहीं जानते हो।
वही है मेरे पीछे आनेवाला जो मेरे आगे हुआ है मैं २७
उसकी जूतीका बन्ध खोलनेके योग्य नहीं हूं। यह बातें २८
यर्दन नदीके उस पार बैथाबरा गांवमें हुई जहां योहन
बपतिसमा देता था।

दूसरे दिन योहनने यीशुको अपने पास आते देखा २९
और कहा देखो ईश्वरका मेम्ना जो जगतके पापको
उठा लेता है। यही है जिसके विषयमें मैंने कहा कि ३०
एक पुरुष मेरे पीछे आता है जो मेरे आगे हुआ है
क्योंकि वह मुझसे पहिले था। मैं उसे नहीं चीन्हता ३१
था परन्तु जिस्तें वह इस्रायेली लोगोंपर प्रगट किया
जाय इसीलिये मैं जलमें बपतिसमा देता हुआ आया हूं।
और भी योहनने साक्षी दिई कि मैंने आत्माको कपोत- ३२
की नाईं स्वर्गसे उतरते देखा है और वह उसपर ठहर
गया। और मैं उसे नहीं चीन्हता था परन्तु जिसने ३३
मुझे जलमें बपतिसमा देनेको भेजा उसीने मुझसे कहा
जिसपर तू आत्माको उतरते और उसपर ठहरते देखे
वही तो पवित्र आत्मामें बपतिसमा देनेहारा है। और ३४
मैंने देखके साक्षी दिई है कि यही ईश्वरका पुत्र है।

दूसरे दिन फिर योहन और उसके शिष्योंमेंसे दो ३५

३६ जन खड़े थे । और ज्यों यीशु फिरता था त्यों वह उस-
३७ पर दृष्टि करके बोला देखो ईश्वरका मेम्ना । उन दो
शिष्योंने उसको बोलते सुना और यीशुके पीछे हो लिये।
३८ यीशुने मुंह फेरके उनको पीछे आते देखके उनसे कहा
तुम क्या खोजते हो . उन्होंने उससे कहा हे रब्बी
३९ अर्थात हे गुरु आप कहां रहते हैं । उसने उनसे कहा
आके देखो . उन्होंने जाके देखा वह कहां रहता था
और उस दिन उसके संग रहे कि दो घड़ीके अटकल
४० दिन रहा था । जो दो जन योहनकी सुनके यीशुके
पीछे हो लिये उनमेंसे एक तो शिमोन पितरका भाई
४१ अन्द्रिय था । उसने पहिले अपने निज भाई शिमोन-
को पाया और उससे कहा हमने मसीहको अर्थात
४२ ख्रीष्टको पाया है । तब वह उसे यीशु पास लाया और
यीशुने उसपर दृष्टि कर कहा तू यूनसका पुत्र शिमोन
है तू कैफा अर्थात पितर कहावेगा ।
४३ दूसरे दिन यीशुने गालील देशको जानेकी इच्छा
किई और फिलिपको पाके उससे कहा मेरे पीछे आ।
४४ फिलिप तो अन्द्रिय और पितरके नगर बैतसैदाका था।
४५ फिलिपने नथनेलको पाके उससे कहा जिसके विषयमें
मूसाने व्यवस्थामें और भविष्यद्वक्ताओंने लिखा है उसको
हमने पाया है अर्थात यूसफके पुत्र नासरत नगरके
४६ यीशुको । नथनेलने उससे कहा क्या कोई उत्तम वस्तु
नासरतसे उत्पन्न हो सकती है? फिलिपने उससे कहा
४७ आके देखिये । यीशुने नथनेलको अपने पास आते
देखा और उसके विषयमें कहा देखो यह सचमुच

इस्रायेली है जिसमें कपट नहीं है। नथनेलने उससे ४८
कहा आप मुझे कहांसे पहचानते हैं. यीशुने उसको
उत्तर दिया कि फिलिपके तुझे बुलानेके पहिले जब तू
गूलरके वृक्षतले था तब मैंने तुझे देखा। नथनेलने ४९
उसको उत्तर दिया कि हे गुरु आप ईश्वरके पुत्र हैं
आप इस्रायेलके राजा हैं। यीशुने उसको उत्तर दिया ५०
मैंने जो तुझसे कहा कि मैंने तुझे गूलरके वृक्षतले देखा
क्या तू इसलिये बिश्वास करता है. तू इनसे बड़े काम
देखेगा। फिर उससे कहा मैं तुमसे सच सच कहता हूं ५१
इसके पीछे तुम स्वर्गको खुला और ईश्वरके दूतोंको
मनुष्यके पुत्रके ऊपरसे चढ़ते उतरते देखोगे।

२ दूसरा पर्व्व।

१ यीशुका जलको दाख रस बनाना। १२ यिरूशलीममें मन्दिरको शुद्ध करना। १८ अपने मरने और जी उठनेके विषयमें भविष्यद्वाक्य कहना। २३ बिश्वास करनेहारोंके हृदयको जांचना।

तीसरे दिन गालीलके काना नगरमें एक बिवाहका १
भोज था और यीशुकी माता वहां थी। यीशु भी और २
उसके शिष्य लोग उस बिवाहके भोजमें बुलाये गये। जब ३
दाख रस घट गया तब यीशुकी माताने उससे कहा उनके
पास दाख रस नहीं है। यीशुने उससे कहा हे नारी ४
आपको मुझसे क्या काम. मेरा समय अबलों नहीं
पहुंचा है। उसकी माताने सेवकोंसे कहा जो कुछ वह ५
तुमसे कहे सो करो। वहां पत्थरके छः मटके यिहूदियोंके ६
शुद्ध करनेकी रीतिके अनुसार धरे थे जिनमें डेढ़ डेढ़
अथवा दो दो मन समाते थे। यीशुने उनसे कहा ७

मटकोंको जलसे भर देओ . सो उन्होंने उन्हें मुंहामुंह
८ भर दिया । तब उसने उनसे कहा अब उंडेलो और
९ भोजके प्रधानके पास ले जाओ . वे ले गये । जब भोजके
प्रधानने वह जल जो दाख रस बन गया था चीखा और
वह नहीं जानता था कि वह कहांसे आया परन्तु जिन
सेवकोंने जल उंडेला था वे जानते थे तब भोजके प्रधानने
१० दूल्हेको बुलाया . और उससे कहा हर एक मनुष्य पहिले
अच्छा दाख रस देता और जब लोग पीके छक जाते तब
मध्यम देता है . तूने अच्छा दाख रस अबलों रखा है ।
११ यीशुने गालीलके काना नगरमें आश्चर्य्य कर्म्मोंका यह
आरंभ किया और अपनी महिमा प्रगट किई और
उसके शिष्योंने उसपर बिश्वास किया ।
१२ इसके पीछे वह और उसकी माता और उसके भाई
और उसके शिष्य लोग कफर्नाहुम नगरको गये परन्तु
१३ वहां बहुत दिन न रहे । यिहूदियोंका निस्तार पर्ब्ब
१४ निकट था और यीशु यिरूशलीमको गया । और उसने
मन्दिरमें गोरूओं ओ भेड़ों ओ कपोतोंके बेचनेहारोंको
१५ और सर्राफोंको बैठे हुए पाया । तब उसने रस्सियोंका
कोड़ा बनाके उन सभोंको भेड़ों ओ गोरूओं समेत
मन्दिरसे निकाल दिया और सर्राफोंके पैसे बिथराके
१६ पीढ़ोंको उलट दिया . और कपोतोंके बेचनेहारोंसे कहा
इनको यहांसे ले जाओ मेरे पिताका घर ब्योपारका घर
१७ मत बनाओ । तब उसके शिष्योंने स्मरण किया कि
लिखा है तेरे घरके विषयमेंकी धुन मुझे खा जाती है ।
१८ इसपर यिहूदियोंने उससे कहा तू जो यह करता है

तो हमें कौनसा चिन्ह दिखाता है। यीशुने उनको उत्तर १९
दिया कि इस मन्दिरको ढा दो और मैं उसे तीन दिनमें
उठाऊंगा। यिहूदियोंने कहा यह मन्दिर छयालीस २०
बरसमें बनाया गया और तू क्या तीन दिनमें इसे
उठावेगा। परन्तु वह अपने देहके मन्दिरके विषयमें २१
बोला। सो जब वह मृतकोंमेंसे जी उठा तब उसके २२
शिष्योंने स्मरण किया कि उसने उन्होंसे यह बात कही
थी और उन्होंने धर्म्मपुस्तकपर और उस बचनपर जो
यीशुने कहा था बिश्वास किया।

जब वह निस्तार पर्ब्बमें यिरूशलीममें था तब बहुत २३
लोगोंने उसके आश्चर्य्य कर्म्मोंको जो वह करता था देख-
के उसके नामपर बिश्वास किया। परन्तु यीशुने अपनेको २४
उन्होंके हाथ नहीं सौंपा क्योंकि वह सभोंको जानता था.
और उसे प्रयोजन न था कि मनुष्यके विषयमें साक्षी कोई २५
देवे क्योंकि वह आप जानता था कि मनुष्यमें क्या है।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ यीशुका निकोदीमको नये जन्मके विषयमें उपदेश देना। ९ अपनी मृत्युके और बिश्वास करनेके विषयमें उसका उपदेश। २२ यीशु और योहनका बपतिसमा देना। २५ यीशुके विषयमें योहनकी साक्षी।

फरीशियोंमेंसे निकोदीम नाम एक मनुष्य था जो यि- १
हूदियोंका एक प्रधान था। वह रातको यीशु पास आया २
और उससे कहा हे गुरु हम जानते हैं कि आप ईश्वरकी
ओरसे उपदेशक आये हैं क्योंकि कोई इन आश्चर्य्य कर्म्मों-
को जो आप करते हैं जो ईश्वर उसके संग न हो तो
नहीं कर सकता है। यीशुने उसको उत्तर दिया कि मैं ३

तुझसे सच सच कहता हूं कोई यदि फिरके न जन्मे तो
४ ईश्वरका राज्य नहीं देख सकता है। निकोदीमने उससे
कहा मनुष्य बूढ़ा होके क्योंकर जन्म ले सकता है. क्या
वह अपनी माताके गर्भमें दूसरी बेर प्रवेश करके जन्म ले
५ सकता है । यीशुने उत्तर दिया कि मैं तुझसे सच सच
कहता हूं कोई यदि जल और आत्मासे न जन्मे तो
६ ईश्वरके राज्यमें प्रवेश नहीं कर सकता है। जो शरीरसे
जन्मा है सो शरीर है और जो आत्मासे जन्मा है सो
७ आत्मा है । अचंभा मत कर कि मैंने तुझसे कहा तुमको
८ फिरके जन्म लेना अवश्य है। पवन जहां चाहता है तहां
बहता है और तू उसका शब्द सुनता है परन्तु नहीं
जानता है वह कहांसे आता और किधरको जाता है.
जो कोई आत्मासे जन्मा है सो इसी रीतिसे है ।
९ निकोदीमने उसको उत्तर दिया कि यह बातें क्योंकर
१० हो सकती हैं । यीशुने उसको उत्तर दिया क्या तू इस्रा-
येली लोगोंका उपदेशक है और यह बातें नहीं जानता।
११ मैं तुझसे सच सच कहता हूं हम जो जानते हैं सो
कहते हैं और जो देखा है उसपर साक्षी देते हैं और तुम
१२ हमारी साक्षी ग्रहण नहीं करते हो। जो मैंने तुमसे पृ-
थिवीपरकी बातें कहीं और तुम प्रतीति नहीं करते हो
तो यदि मैं तुमसे स्वर्गमेंकी बातें कहूं तुम क्योंकर प्र-
१३ तीति करोगे । और कोई स्वर्गपर नहीं चढ़ गया है
केवल वह जो स्वर्गसे उतरा अर्थात मनुष्यका पुत्र जो
१४ स्वर्गमें है । जिस रीतिसे मूसाने जंगलमें सांपको ऊंचा
किया उसी रीतिसे अवश्य है कि मनुष्यका पुत्र ऊंचा

किया जाय . इसलिये कि जो कोई उसपर बिश्वास करे १५
सो नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे । क्योंकि १६
ईश्वरने जगतको ऐसा प्यार किया कि उसने अपना एक-
लौता पुत्र दिया कि जो कोई उसपर बिश्वास करे सो
नाश न होय परन्तु अनन्त जीवन पावे। ईश्वरने अपने १७
पुत्रको जगतमें इसलिये नहीं भेजा कि जगतको दंडके
योग्य ठहरावे परन्तु इसलिये कि जगत उसके द्वारा त्राण
पावे। जो उसपर बिश्वास करता है सो दंडके योग्य नहीं १८
ठहराया जाता है परन्तु जो विश्वास नहीं करता सो दंड-
के योग्य ठहर चुका है क्योंकि उसने ईश्वरके एकलौते
पुत्रके नामपर बिश्वास नहीं किया है । और दंडके १९
योग्य ठहरानेका कारण यह है कि उजियाला जगतमें
आया है और मनुष्योंने अंधियारेको उजियालेसे अधिक
प्यार किया क्योंकि उनके काम बुरे थे । क्योंकि जो २०
कोई बुराई करता है सो उजियालेसे घिन्न करता है
और उजियालेके पास नहीं आता है न हो कि उसके
कामोंपर उलहना दिया जाय। परन्तु जो सच्चाईपर चल- २१
ता है सो उजियालेके पास आता है इसलिये कि उसके
काम प्रगट होवें कि ईश्वरकी ओरसे किये गये हैं ।

इसके पीछे यीशु और उसके शिष्य यिहूदिया देशमें २२
आये और उसने वहां उनके संग रहके बपतिसमा
दिलाया । योहन भी शालीमके निकट ऐनन नाम २३
स्थानमें बपतिसमा देता था क्योंकि वहां बहुत जल था
और लोग आके बपतिसमा लेते थे । क्योंकि योहन २४
अबलों बन्दीगृहमें नहीं डाला गया था ।

२५ योहनके शिष्यों और यिहूदियोंमें शुद्ध करनेके विषयमें
२६ बिबाद हुआ। और उन्होंने योहनके पास आके उस-
से कहा हे गुरु जो यर्दनके उस पार आपके संग था
जिसपर आपने साक्षी दिई है देखिये वह बपतिसमा
दिलाता है और सब लोग उसके पास जाते हैं।
२७ योहनने उत्तर दिया यदि स्वर्गसे उसको न दिया जाय
२८ तो मनुष्य कुछ नहीं पा सकता है। तुम आपही मेरे
साक्षी हो कि मैंने कहा मैं ख्रीष्ट नहीं हूं पर उसके
२९ आगे भेजा गया हूं। दूल्हिन जिसकी है सोई दूल्हा है
परन्तु दूल्हेका मित्र जो खड़ा होके उसकी सुनता है
दूल्हेके शब्दसे अति आनन्दित होता है. मेरा यह
३० आनन्द पूरा हुआ है। अवश्य है कि वह बढ़े और
३१ मैं घटूं। जो ऊपरसे आता है सो सभोंके ऊपर है.
जो पृथिवीसे है सो पृथिवीका है और पृथिवीकी बातें
कहता है. जो स्वर्गसे आता है सो सभोंके ऊपर है।
३२ जो उसने देखा और सुना है वह उसपर साक्षी देता
३३ है और कोई उसकी साक्षी ग्रहण नहीं करता। जिसने
उसकी साक्षी ग्रहण किई है सो इस बातपर छाप
३४ दे चुका कि ईश्वर सत्य है। इसलिये कि जिसे ईश्वरने
भेजा है सो ईश्वरकी बातें कहता है क्योंकि ईश्वर
३५ उसको आत्मा नापसे नहीं देता है। पिता पुत्रको
प्यार करता है और उसने सब कुछ उसके हाथमें
३६ दिया है। जो पुत्रपर बिश्वास करता है उसको अनन्त
जीवन है पर जो पुत्रको न माने सो जीवनको नहीं
देखेगा परन्तु ईश्वरका क्रोध उसपर रहता है।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ शोमिरोनी स्त्रीसे यीशुकी बातचीत और अमृतका दृष्टान्त और सच्ची उपासनाका वर्णन। २७ नगरमें उस स्त्रीका यीशुके विषयमें समाचार कहना। ३१ शिष्योंसे यीशुकी बातचीत। ३९ नगरके लोगोंका उसपर विश्वास करना। ४३ उसका गालीलमें जाना और राजाके यहांके एक पुरुषके पुत्रको चंगा करना।

जब प्रभुने जाना कि फरीशियोंने सुना है कि यीशु १
योहनसे अधिक शिष्य करके उन्हें बपतिसमा देता है.
तौभी यीशु आप नहीं परन्तु उसके शिष्य बपतिसमा देते २
थे . तब वह यिहूदियाको छोड़के फिर गालीलको गया। ३
और उसको शोमिरोन देशमेंसे जाना अवश्य हुआ। ४
सो वह शिकार नाम शोमिरोनके एक नगरपर उस भूमिके ५
निकट पहुंचा जिसे याकूबने अपने पुत्र यूसफको दिया।
और याकूबका कूआं वहां था सो यीशु मार्गमें चलनेसे ६
थकित हो उस कूएपर यूंही बैठ गया और दो पहरके
निकट था। एक शोमिरोनी स्त्री जल भरनेको आई . ७
यीशुने उससे कहा मुझे पीनेको दीजिये। उसके शिष्य ८
लोग भोजन मोल लेनेको नगरमें गये थे। शोमिरोनी ९
स्त्रीने उससे कहा आप यिहूदी होके मुझसे जो शोमि-
रोनी स्त्री हूं क्योंकर पीनेको मांगते हैं क्योंकि यिहूदी
लोग शोमिरोनियोंके संग व्यवहार नहीं करते। यीशुने १०
उसको उत्तर दिया जो तू ईश्वरके दानको जानती और
वह कौन है जो तुझसे कहता है मुझे पीनेको दीजिये
तो तू उससे मांगती और वह तुझे अमृत जल देता।
स्त्रीने उससे कहा हे प्रभु जल भरनेको आपके पास कुछ ११
नहीं है और कूआं गहिरा है तो वह अमृत जल आपको
कहांसे मिला है। क्या आप हमारे पिता याकूबसे बड़े १२

हैं जिसने यह कूआं हमें दिया और आपही अपने
१३ सन्तान और अपने ढोर समेत उसमेंसे पिया। यीशुने
उसको उत्तर दिया कि जो कोई यह जल पीवे सो फिर
१४ पियासा होगा . पर जो कोई वह जल पीवे जो मैं उसको
देऊंगा सो फिर कभी पियासा न होगा परन्तु जो जल
मैं उसे देऊंगा सो उसमें अनन्त जीवनलों उमंगनेहारे
१५ जलका सोता हो जायगा। स्त्रीने उससे कहा हे प्रभु
यह जल मुझे दीजिये कि मैं पियासी न होऊं और न
१६ जल भरनेको यहां आऊं। यीशुने उससे कहा जा
१७ अपने स्वामीको बुलाके यहां आ। स्त्रीने उत्तर दिया
कि मेरे तईं स्वामी नहीं है . यीशु उससे बोला तूने
१८ अच्छा कहा कि मेरे तईं स्वामी नहीं है . क्योंकि तेरे पांच
स्वामी हो चुके और अब जो तेरे संग रहता है सो तेरा
१९ स्वामी नहीं है . यह तूने सच कहा है। स्त्रीने उससे
कहा हे प्रभु मुझे सूझ पड़ता है कि आप भविष्यद्वक्ता
२० हैं। हमारे पितरोंने इसी पहाड़पर भजन किया और
आप लोग कहते हैं कि वह स्थान जहां भजन करना
२१ उचित है यिरूशलीममें है। यीशुने उससे कहा हे नारी
मेरी प्रतीति कर कि वह समय आता है जिसमें तुम न
इस पहाड़पर और न यिरूशलीममें पिताका भजन
२२ करोगे। तुम लोग जिसे नहीं जानते हो उसका भजन
करते हो हम लोग जिसे जानते हैं उसका भजन करते
२३ हैं क्योंकि त्राण यिहूदियोंमेंसे है। परन्तु वह समय आता
है और अब है जिसमें सच्चे भक्त आत्मा और सच्चाईसे
पिताका भजन करेंगे क्योंकि पिता ऐसे भजन करनेहारों-

को चाहता है। ईश्वर आत्मा है और अवश्य है कि २४
उसका भजन करनेहारे आत्मा और सच्चाईसे भजन करें।
स्त्रीने उससे कहा मैं जानती हूं कि मसीह अर्थात ख्रीष्ट २५
आता है . वह जब आवेगा तब हमें सब कुछ बतावेगा।
यीशुने उससे कहा मैं जो तुझसे बोलता हूं वही हूं। २६
इतनेमें उसके शिष्य आये और अचंभा किया कि २७
वह स्त्रीसे बात करता है तौभी किसीने नहीं कहा
कि आप क्या चाहते हैं अथवा किसलिये उससे बात
करते हैं। तब स्त्रीने अपना घड़ा छोड़ा और नगरमें २८
जाके लोगोंसे कहा . आओ एक मनुष्यको देखो जिसने २९
सब कुछ जो मैंने किया है मुझसे कहा है . यह क्या
ख्रीष्ट है। सो वे नगरसे निकलके उस पास आये। ३०
इस बीचमें शिष्योंने यीशुसे बिन्ती किई कि हे गुरु ३१
खाइये। उसने उनसे कहा खानेको मेरे पास भोजन है ३२
जो तुम नहीं जानते हो। शिष्योंने आपसमें कहा क्या ३३
कोई उस पास कुछ खानेको लाया है। यीशुने उनसे ३४
कहा मेरा भोजन यह है कि अपने भेजनेहारेकी इच्छा-
पर चलूं और उसका काम पूरा करूं। क्या तुम नहीं ३५
कहते हो कि अब भी चार मास हैं तब कटनी आवेगी .
देखो मैं तुमसे कहता हूं अपनी आंखें उठाके खेतोंको
देखो कि वे कटनीके लिये पक चुके हैं। और काटनेहारा ३६
बनि पाता और अनन्त जीवनके लिये फल बटोरता है
जिस्तें बोनेहारा और काटनेहारा दोनों एकसंग आनन्द
करें। इसमें वह बात सच्ची है कि एक बोता है और ३७
दूसरा काटता है। जिसमें तुमने परिश्रम नहीं किया है ३८

उसको मैंने तुम्हें काटनेको भेजा . दूसरोंने परिश्रम
किया है और तुमने उनके परिश्रममें प्रवेश किया है।
३९ उस नगरके शोमिरोनियोंमेंसे बहुतोंने उस स्त्रीके
बचनके कारण जिसने साक्षी दिई कि उसने सब कुछ
जो मैंने किया है मुझसे कहा है यीशुपर बिश्वास किया।
४० इसलिये जब शोमिरोनी लोग उस पास आये तब
उससे बिन्ती किई कि हमारे यहां रहिये . और वह
४१ वहां दो दिन रहा । और उसके बचनके कारण बहुत
४२ अधिक लोगोंने बिश्वास किया . और उस स्त्रीसे कहा
हम अब तेरे बचनके कारण बिश्वास नहीं करते हैं
क्योंकि हमने आपही सुना है और जानते हैं कि यह
सचमुच जगतका त्राणकर्त्ता ख्रीष्ट है ।
४३ दो दिनके पीछे यीशु वहांसे निकलके गालीलको
४४ गया। उसने तो आपही साक्षी दिई कि भविष्यद्वक्ता अप-
४५ ने निज देशमें आदर नहीं पाता है। जब वह गालीलमें
आया तब गालीलियोंने उसे ग्रहण किया क्योंकि जो कुछ
उसने यिरूशलीममें पर्ब्बमें किया था उन्होंने सब देखा
४६ था कि वे भी पर्ब्बमें गये थे । सो यीशु फिर गालीलके
काना नगरमें आया जहां उसने जलको दाख रस बनाया
था . और राजाके यहांका एक पुरुष था जिसका पुत्र
४७ कफर्नाहुममें रोगी था । उसने जब सुना कि यीशु यिहू-
दियासे गालीलमें आया है तब उस पास जाके उससे
बिन्ती किई कि आके मेरे पुत्रको चंगा कीजिये . क्योंकि
४८ वह लड़का मरनेपर था । यीशुने उससे कहा जो तुम
चिन्ह और अद्भुत काम न देखो तो बिश्वास नहीं करो-

गे। राजाके यहांके पुरुषने उससे कहा हे प्रभु मेरे ४९
बालकके मरनेके आगे आइये। यीशुने उससे कहा ५०
चला जा तेरा पुत्र जीता है. उस मनुष्यने उस बातपर
जो यीशुने उससे कही बिश्वास किया और चला गया।
और वह जाताही था कि उसके दास उससे आ मिले ५१
और सन्देश दिया कि आपका लड़का जीता है। उसने ५२
उनसे पूछा किस घड़ी उसका जी हलका हुआ. उन्होंने
उससे कहा कल एक घड़ी दिन झुकते ज्वरने उसको छो-
ड़ा। सो पिताने जाना कि उसी घड़ीमें हुआ जिस घड़ी ५३
यीशुने उससे कहा तेरा पुत्र जीता है और उसने औ
उसके सारे घरानेने विश्वास किया। यह दूसरा आश्चर्य्य ५४
कर्म्म यीशुने यिहूदियासे गालीलमें आके किया।

५ पांचवां पर्व्व।

१ यीशुका बिश्रामके दिनमें अड़तीस बरसके रोगी मनुष्यको चंगा करना। १४ यिहूदियोंका उसे मार डालनेकी इच्छा करना। १९ उसका अपनी महिमाको बर्णन करना। ३० अपने विषयमें योहनको और ईश्वर पिताकी और धर्म्मपुस्तक-की साक्षीको बर्णन करना।

इसके पीछे यिहूदियोंका पर्व्व हुआ और यीशु यि- १
रूशलीमको गया। यिरूशलीममें भेड़ी फाटकके पास २
एक कुंड है जो इब्रीय भाषामें बैथेसदा कहावता है जिस-
के पांच ओसारे हैं। इन्होंमें रोगियों अंधों लंगड़ों और ३
सूखे अंगवालोंकी बड़ी भीड़ पड़ी रहती थी जो जलके
हिलनेकी बाट देखते थे। क्योंकि समयके अनुसार एक ४
स्वर्गदूत उस कुंडमें उतरके जलको हिलाता था इससे
जो कोई जलके हिलनेके पीछे उसमें पहिले उतरता था
कोई भी रोग उसको लगा हो चंगा हो जाता था। एक ५

६ मनुष्य वहां था जो अड़तीस बरससे रोगी था। यीशुने
उसे पड़े हुए देखके और यह जानके कि उसे अब बहुत
दिन हो चुके उससे कहा क्या तू चंगा होने चाहता
७ है। रोगीने उसको उत्तर दिया कि हे प्रभु मेरा कोई
मनुष्य नहीं है कि जब जल हिलाया जाय तब मुझे
कुंडमें उतारे और जबलों मैं जाता हूं दूसरा मुझसे आगे
८ उतरता है। यीशुने उससे कहा उठ अपनी खाट उठाके
९ चल। वह मनुष्य तुरन्त चंगा हो गया और अपनी
खाट उठाके चलने लगा पर उसी दिन बिश्रामवार था।
१० इसलिये यिहूदियोंने उस चंगा किये हुए मनुष्यसे कहा
यह बिश्रामका दिन है खाट उठाना तुझे उचित नहीं
११ है। उसने उन्हें उत्तर दिया कि जिसने मुझे चंगा किया
१२ उसीने मुझसे कहा अपनी खाट उठाके चल। उन्होंने
उससे पूछा वह मनुष्य कौन है जिसने तुझसे कहा
१३ अपनी खाट उठाके चल। परन्तु वह चंगा किया
हुआ मनुष्य नहीं जानता था वह कौन है क्योंकि
उस स्थानमें भीड़ होनेसे यीशु वहांसे हट गया।
१४ इसके पीछे यीशुने उसको मन्दिरमें पाके उससे
कहा देख तू चंगा हुआ है फिर पाप मत कर न हो
१५ कि इससे बुरी कोई बिपत्ति तुझपर आवे। उस
मनुष्यने जाके यिहूदियोंसे कह दिया कि जिसने मुझे
१६ चंगा किया सो यीशु है। इस कारण यिहूदियोंने यीशुको
सताया और उसे मार डालने चाहा कि उसने बिश्राम-
१७ के दिनमें यह काम किया था। यीशुने उनको उत्तर
दिया कि मेरा पिता अबलों काम करता है मैं भी

काम करता हूं। इस कारण यिहूदियोंने और भी उसे १८
मार डालने चाहा कि उसने न केवल बिश्रामवारकी
विधिको लंघन किया परन्तु ईश्वरको अपना निज
पिता कहके अपनेको ईश्वरके तुल्य भी किया।
इसपर यीशुने उन्होंसे कहा मैं तुमसे सच सच कहता १९
हूं पुत्र आपसे कुछ नहीं कर सकता है केवल जो कुछ
वह पिताको करते देखे क्योंकि जो कुछ वह करता है
उसे पुत्र भी वैसेही करता है। क्योंकि पिता पुत्रको प्यार २०
करता है और जो वह आप करता सो सब उसको
बताता है और वह इनसे बड़े काम उसको बतावेगा
जिस्तें तुम अचंभा करो। क्योंकि जैसा पिता मृतकोंको २१
उठाता और जिलाता है वैसाही पुत्र भी जिन्हें चाहता
है उन्हें जिलाता है। और पिता किसीका बिचार भी २२
नहीं करता है परन्तु बिचार करनेका सब अधिकार
पुत्रको दिया है इसलिये कि सब लोग जैसे पिताका
आदर करते हैं वैसे पुत्रका आदर करें। जो पुत्रका २३
आदर नहीं करता है सो पिताका जिसने उसे भेजा
आदर नहीं करता है। मैं तुमसे सच सच कहता हूं २४
जो मेरा बचन सुनके मेरे भेजनेहारेपर बिश्वास करता
है उसको अनन्त जीवन है और दंडकी आज्ञा उसपर
नहीं होती परन्तु वह मृत्युसे पार होके जीवनमें पहुं-
चा है। मैं तुमसे सच सच कहता हूं वह समय आता २५
है और अब है जिसमें मृतक लोग ईश्वरके पुत्रका
शब्द सुनेंगे और जो सुनेंगे सो जीयेंगे। क्योंकि जैसा पिता २६
आपहीसे जीता है तैसा उसने पुत्रको भी अधिकार

२७ दिया है कि आपहीसे जीवे . और उसको बिचार
करनेका भी अधिकार दिया है क्योंकि वह मनुष्यका
२८ पुत्र है । इससे अचंभा मत करो क्योंकि वह समय आता
है जिसमें जो कबरोंमें हैं सो सब उसका शब्द सुनके
२९ निकलेंगे . जिससे भलाई करनेहारे जीवनके लिये जी
उठेंगे और बुराई करनेहारे दंडके लिये जी उठेंगे ।
३० मैं आपसे कुछ नहीं कर सकता हूं जैसा मैं सुनता
हूं वैसा बिचार करता हूं और मेरा बिचार यथार्थ है
क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं चाहता हूं परन्तु पिताकी
३१ इच्छा जिसने मुझे भेजा । जो मैं अपने विषयमें साक्षी
३२ देता हूं तो मेरी साक्षी ठीक नहीं है । दूसरा है जो
मेरे विषयमें साक्षी देता है और मैं जानता हूं कि जो
साक्षी वह मेरे विषयमें देता है सो साक्षी ठीक है ।
३३ तुमने योहनके पास भेजा और उसने सत्यपर साक्षी
३४ दिई । मैं मनुष्यसे साक्षी नहीं लेता हूं परन्तु मैं यह
३५ बातें कहता हूं इसलिये कि तुम त्राण पावो । वह तो
जलता और चमकता हुआ दीपक था और तुम कितनी
बेरलों उसके उजियालेमें आनन्द करनेको प्रसन्न थे।
३६ परन्तु योहनकी साक्षीसे बड़ी साक्षी मेरे पास है क्योंकि
जो काम पिताने मुझे पूरे करनेको दिये हैं अर्थात
येही काम जो मैं करता हूं मेरे विषयमें साक्षी देते
३७ हैं कि पिताने मुझे भेजा है । और पिताने जिसने
मुझे भेजा आपही मेरे विषयमें साक्षी दिई है . तुमने
कभी उसका शब्द न सुना है और उसका रूप न देखा
३८ है । और तुम उसका बचन अपनेमें नहीं रखते हो

कि जिसे उसने भेजा उसका बिश्वास नहीं करते हो।
धर्म्मपुस्तकमें ढूंढ़ो क्योंकि तुम समझते हो कि उसमें ३९
अनन्त जीवन हमें मिलता है और वही है जो मेरे वि-
षयमें साक्षी देता है। परन्तु तुम जीवन पानेको मेरे पास ४०
आने नहीं चाहते हो। मैं मनुष्योंसे आदर नहीं लेता ४१
हूं। परन्तु मैं तुम्हें जानता हूं कि ईश्वरका प्रेम तुममें ४२
नहीं है। मैं अपने पिताके नामसे आया हूं और तुम ४३
मुझे ग्रहण नहीं करते हो. यदि दूसरा अपनेही नामसे
आवे तो उसे ग्रहण करोगे। तुम जो एक दूसरेसे आदर ४४
लेते हो और वह आदर जो अद्वैत ईश्वरसे है नहीं
चाहते हो क्योंकर बिश्वास कर सकते हो। मत समझो ४५
कि मैं पिताके आगे तुमपर दोष लगाऊंगा. तुमपर दोष
लगानेहारा तो है अर्थात मूसा जिसपर तुम भरोसा
रखते हो। क्योंकि जो तुम मूसाका बिश्वास करते तो ४६
मेरा बिश्वास करते इसलिये कि उसने मेरे विषयमें
लिखा। परन्तु जो तुम उसके लिखेपर बिश्वास नहीं ४७
करते हो तो मेरे कहेपर क्योंकर बिश्वास करोगे।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ यीशुका पांच सहस्र मनुष्योंको थोड़े भोजनसे तृप्त करना। १६ समुद्रपर चलना। २२ बहुत लोगोंका उसे ढूंढ़ना और उसका अपनेको जीवनकी रोटीके दृष्टान्तसे प्रगट करना। ४१ बिवादी यिहूदियोंको उत्तर देना। ६० बहुत शिष्योंका उसे छोड़ना और प्रेरितोंका उसके संग बने रहना।

इसके पीछे यीशु गालीलके समुद्र अर्थात तिबरियाके १
समुद्रके उस पार गया। और बहुत लोग उसके पीछे २
हो लिये इस कारण कि उन्होंने उसके आश्चर्य्य कर्म्मोंको
देखा जो वह रोगियोंपर करता था। तब यीशु पर्ब्बतपर ३

४ चढ़के अपने शिष्योंके संग वहां बैठा। और यिहूदियोंका
५ पर्ब्ब अर्थात निस्तार पर्ब्ब निकट था। यीशुने अपनी
आंखें उठाके बहुत लोगोंको अपने पास आते देखा और
फिलिपसे कहा हम कहांसे रोटी मोल लेवें कि ये लोग
६ खावें। उसने उसे परखनेको यह बात कही क्योंकि जो
७ वह करनेपर था सो आप जानता था। फिलिपने उसको
उत्तर दिया कि दो सौ सूकियोंकी रोटी उनके लिये
इतनी भी न होगी कि उनमेंसे हर एकको थोड़ी थोड़ी
८ मिले। उसके शिष्योंमेंसे एकने अर्थात शिमोन पितरके
९ भाई अन्द्रियने उससे कहा. यहां एक छोकरा है जिस
पास जवकी पांच रोटी और दो मछली हैं परन्तु इतने
१० लोगोंके लिये ये क्या हैं। यीशुने कहा उन मनुष्योंको
बैठाओ. उस स्थानमें बहुत घास थी सो पुरुष जो गि-
११ न्तीमें पांच सहस्रके अटकल थे बैठ गये। तब यीशुने
रोटियां ले धन्य मानके शिष्योंको बांट दिईं और शिष्यों-
ने बैठनेहारोंको और वैसेही मछलियोंमेंसे जितनी वे
१२ चाहते थे उतनी दिईं। जब वे तृप्त हुए तब उसने अपने
शिष्योंसे कहा बचे हुए टुकड़े बटोर लो कि कुछ खोया न
१३ जाय। सो उन्होंने बटोरा और जवकी पांच रोटियोंके
जो टुकड़े खानेहारोंसे बच रहे उनसे बारह टोकरी भरीं।
१४ उन मनुष्योंने यह आश्चर्य्य कर्म्म जो यीशुने किया था
देखके कहा यह सचमुच वह भविष्यद्वक्ता है जो जगतमें
१५ आनेवाला था। जब यीशुने जाना कि वे मुझे राजा
बनानेके लिये आके मुझे पकड़ेंगे तब वह फिर अकेला
पर्ब्बतपर गया।

जब सांझ हुई तब उसके शिष्य लोग समुद्रके तीरपर १६
गये . और नावपर चढ़के समुद्रके उस पार कफर्नाहुमको १७
जाने लगे . और अंधियारा हुआ था और यीशु उनके
पास नहीं आया था। बड़ी बयारके बहनेसे समुद्रमें १८
लहरें भी उठती थीं। जब वे डेढ़ अथवा दो कोस खे गये १९
थे तब उन्होंने यीशुको समुद्रपर चलते और नावके नि-
कट आते देखा और डर गये। परन्तु उसने उनसे कहा मैं २०
हूं डरो मत। तब वे उसे नावपर चढ़ा लेनेको प्रसन्न थे २१
और तुरन्त नाव उस तीरपर जहां वे जाते थे लग गई।
दूसरे दिन जो लोग समुद्रके उस पार खड़े थे उन्होंने २२
जाना कि जिस नावपर यीशुके शिष्य चढ़े उसे छोड़के
और कोई नाव यहां नहीं थी और यीशु अपने शिष्योंके
संग उस नावपर नहीं चढ़ा पर केवल उसके शिष्य चले
गये। तौभी पीछे और नावें तिबरिया नगरसे उस स्थान- २३
के निकट आई थीं जहां उन्होंने जब प्रभुने धन्य माना था
रोटी खाई। सो जब लोगोंने देखा कि यीशु यहां नहीं २४
है और न उसके शिष्य तब वे भी नावोंपर चढ़के यीशुको
ढूंढ़ते हुए कफर्नाहुमको आये। और वे समुद्रके पार उसे २५
पाके उससे बोले हे गुरु आप यहां कब आये। यीशुने २६
उन्हें उत्तर दिया कि मैं तुमसे सच सच कहता हूं तुम
मुझे इसलिये नहीं ढूंढ़ते हो कि तुमने आश्चर्य्य कर्म्मोंको
देखा परन्तु इसलिये कि उन रोटियोंमेंसे खाके तृप्त हुए।
नाशमान भोजनके लिये परिश्रम मत करो परन्तु २७
उस भोजनके लिये जो अनन्त जीवनलों रहता है जिसे
मनुष्यका पुत्र तुमको देगा क्योंकि पिताने अर्थात ईश्वर-

२८ ने उसीपर छाप दिई है । उन्होंने उससे कहा ईश्वरके
२९ कार्य्य करनेको हम क्या करें । यीशुने उन्हें उत्तर दिया
ईश्वरका कार्य्य यह है कि जिसे उसने भेजा है उसपर
३० तुम बिश्वास करो । उन्होंने उससे कहा आप कौनसा
आश्चर्य्य कर्म्म करते हैं कि हम देखके आपका बिश्वास
३१ करें . आप क्या करते हैं । हमारे पितरोंने जंगलमें
मन्ना खाया जैसा लिखा है कि उसने उन्हें स्वर्गकी रोटी
३२ खानेको दिई । यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे सच सच
कहता हूं मूसाने तुम्हें स्वर्गकी रोटी न दिई परन्तु
३३ मेरा पिता तुम्हें सच्ची स्वर्गकी रोटी देता है । क्योंकि
ईश्वरकी रोटी वह है जो स्वर्गसे उतरती और जगतको
३४ जीवन देती है । उन्होंने उससे कहा हे प्रभु यही
३५ रोटी हमें नित्य दीजिये। यीशुने उनसे कहा जीवनकी
रोटी मैं हूं . जो मेरे पास आवे सो कभी भूखा न
होगा और जो मुझपर बिश्वास करे सो कभी पियासा
३६ न होगा । परन्तु मैंने तुमसे कहा कि तुम मुझे देख भी
३७ चुके और बिश्वास नहीं करते हो । सब जो पिता
मुझको देता है मेरे पास आवेगा और जो कोई मेरे
पास आवे मैं उसे किसी रीतिसे दूर न करूंगा ।
३८ क्योंकि मैं अपनी इच्छा नहीं परन्तु अपने भेजनेहारेकी
३९ इच्छा पूरी करनेको स्वर्गसे उतरा हूं । और पिताकी
इच्छा जिसने मुझे भेजा यह है कि जिन्हें उसने मुझको
दिया है उनमेंसे मैं किसीको न खोऊं परन्तु उन्हें
४० पिछले दिनमें उठाऊं । मेरे भेजनेहारेकी इच्छा यह
है कि जो कोई पुत्रको देखे और उसपर बिश्वास

करे सो अनन्त जीवन पावे और मैं उसे पिछले दिनमें
उठाऊंगा।
तब यिहूदी लोग उसके विषयमें कुड़कुड़ाने लगे इस- ४१
लिये कि उसने कहा जो रोटी स्वर्गसे उतरी सो मैं
हूं। वे बोले क्या यह यूसफका पुत्र यीशु नहीं है जिसके ४२
माता और पिताको हम जानते हैं. तो वह क्योंकर
कहता है कि मैं स्वर्गसे उतरा हूं। यीशुने उनको उत्तर ४३
दिया कि आपसमें मत कुड़कुड़ाओ। यदि पिता जिसने ४४
मुझे भेजा उसे न खींचे तो कोई मेरे पास नहीं आ
सकता है और उसको मैं पिछले दिनमें उठाऊंगा।
भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकमें लिखा है कि वे सब ईश्वरके ४५
सिखाये हुए होंगे सो हर एक जिसने पितासे सुना और
सीखा है मेरे पास आता है। यह नहीं कि किसीने पिता- ४६
को देखा है. केवल जो ईश्वरकी ओरसे है उसीने
पिताको देखा है। मैं तुमसे सच सच कहता हूं जो कोई ४७
मुझपर बिश्वास करता है उसको अनन्त जीवन है। मैं ४८
जीवनकी रोटी हूं। तुम्हारे पितरोंने जंगलमें मन्ना ४९
खाया और मर गये। यह वह रोटी है जो स्वर्गसे उतरती ५०
है कि जो उससे खावे सो न मरे। मैं जीवती रोटी हूं ५१
जो स्वर्गसे उतरी. यदि कोई यह रोटी खाय तो सदालों
जीयेगा और जो रोटी मैं देऊंगा सो मेरा मांस है जिसे
मैं जगतके जीवनके लिये देऊंगा। इसपर यिहूदी लोग ५२
आपसमें बिबाद करने लगे कि यह हमें क्योंकर अपना
मांस खानेको दे सकता है। यीशुने उनसे कहा मैं तुमसे ५३
सच सच कहता हूं जो तुम मनुष्यके पुत्रका मांस न खावो

ओर उसका लोहू न पीवो तो तुममें जीवन नहीं है।
५४ जो मेरा मांस खाता ओर मेरा लोहू पीता है उसको
अनन्त जीवन है ओर मैं उसे पिछले दिनमें उठाऊंगा।
५५ क्योंकि मेरा मांस सच्चा भोजन है ओर मेरा लोहू सच्ची
५६ पीनेकी बस्तु है। जो मेरा मांस खाता ओर मेरा लोहू
पीता है सो मुझमें रहता है ओर मैं उसमें रहता हूं।
५७ जैसा जीवते पिताने मुझे भेजा ओर मैं पितासे जीता
५८ हूं तैसा वह भी जो मुझे खावे मुझसे जीयेगा। यह
वह रोटी है जो स्वर्गसे उतरी . जैसा तुम्हारे पितरोंने
मन्ना खाया ओर मर गये ऐसा नहीं . जो यह रोटी
५९ खाय सो सदालों जीयेगा। उसने कफर्नाहुममें उपदेश
करते हुए सभाके घरमें यह बातें कहीं।
६० उसके शिष्योंमेंसे बहुतोंने यह सुनके कहा यह बात
६१ कठिन है इसे कौन सुन सकता है। यीशुने अपने मनमें
जाना कि उसके शिष्य इस बातके विषयमें कुड़कुड़ाते
हैं इसलिये उनसे कहा क्या इस बातसे तुमको ठोकर
६२ लगती है। यदि मनुष्यके पुत्रको जहां वह आगे था
६३ उस स्थानपर चढ़ते देखो तो क्या कहोगे। आत्मा तो
जीवनदायक है शरीरसे कुछ लाभ नहीं. जो बातें मैं
६४ तुमसे बोलता हूं सो आत्मा हैं ओर जीवन हैं। परन्तु
तुम्होंमेंसे कितने हैं जो बिश्वास नहीं करते हैं. यीशु
तो आरंभसे जानता था कि वे कौन हैं जो बिश्वास
करनेहारे नहीं हैं ओर वह कौन है जो मुझे पकड़-
६५ वायगा। ओर उसने कहा इसीलिये मैंने तुमसे कहा
है कि यदि मेरे पिताकी ओरसे उसको न दिया जाय

तो कोई मेरे पास नहीं आ सकता है। इस समयसे ६६
उसके शिष्योंमेंसे बहुतेरे पीछे हटे और उसके संग और
न चले। इसलिये यीशुने उन बारह शिष्योंसे कहा क्या ६७
तुम भी जाने चाहते हो। शिमोन पितरने उसको उत्तर ६८
दिया कि हे प्रभु हम किसके पास जायें. आपके पास
अनन्त जीवनकी बातें हैं। और हमने बिश्वास किया ६९
और जान लिया है कि आप जीवते ईश्वरके पुत्र खीष्ट
हैं। यीशुने उनको उत्तर दिया क्या मैंने तुम बारहोंको ७०
नहीं चुना और तुममेंसे एक तो शैतान है। वह शिमोन- ७१
के पुत्र यिहूदा इस्करियोतीके विषयमें बोला क्योंकि वही
उसे पकड़वानेपर था और वह बारह शिष्योंमेंसे एक था।

७ सातवां पर्व्व।

१ यीशुका अपने भाइयोंसे बातचीत करना और तंबूवास पर्व्वमें यिरूशलीमको जाना। १४ मन्दिरमें यिहूदियोंको उपदेश देना। २५ यीशुके विषयमें लोगोंके अनेक बिचार और उसका उत्तर देना। ४५ प्यादों और फरीशियों और निकोदीमका आपसमें बिबाद।

इसके पीछे यीशु गालीलमें फिरने लगा क्योंकि १
यिहूदी लोग उसे मार डालने चाहते थे इसलिये वह
यिहूदियामें फिरने नहीं चाहता था। और यिहूदियोंका २
पर्व्व अर्थात तंबूबास पर्व्व निकट था। इसलिये उसके ३
भाइयोंने उससे कहा यहांसे निकलके यिहूदियामें जा कि
तेरे शिष्य लोग भी तेरे काम जो तू करता है देखें।
क्योंकि कोई नहीं गुप्तमें कुछ करता और आपही प्रगट ४
होने चाहता है. जो तू यह करता है तो अपने तईं
जगतको दिखा। क्योंकि उसके भाई भी उसपर बिश्वास ५
नहीं करते थे। यीशुने उनसे कहा मेरा समय अबलों ६

नहीं पहुंचा है परन्तु तुम्हारा समय नित्य बना है ।
७ जगत तुमसे बैर नहीं कर सकता है परन्तु वह मुझसे
बैर करता है क्योंकि मैं उसके विषयमें साक्षी देता हूं
८ कि उसके काम बुरे हैं । तुम इस पर्ब्बमें जाओ . मैं
अभी इस पर्ब्बमें नहीं जाता हूं क्योंकि मेरा समय अब-
९ लों पूरा नहीं हुआ है । वह उनसे यह बातें कहके
१० गालीलमें रह गया । परन्तु जब उसके भाई लोग चले
गये तब वह आप भी प्रगट होके नहीं पर जैसा गुप्त होके
११ पर्ब्बमें गया । यिहूदी लोग पर्ब्बमें उसे ढूंढ़ते थे और
१२ बोले वह कहां है । और लोग उसके विषयमें बहुत बातें
आपसमें फुसफुसाके कहते थे . कितनोंने कहा वह
उत्तम मनुष्य है परन्तु औरोंने कहा सो नहीं पर वह
१३ लोगोंको भरमाता है । तौभी यिहूदियोंके डरके मारे
कोई उसके विषयमें खोलके नहीं बोला ।

१४ पर्ब्बके बीचोबीच यीशु मन्दिरमें जाके उपदेश करने
१५ लगा । यिहूदियोंने अचंभा कर कहा यह बिन सीखे
१६ क्योंकर विद्या जानता है । यीशुने उनको उत्तर दिया कि
१७ मेरा उपदेश मेरा नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारेका है । यदि
कोई उसकी इच्छापर चला चाहे तो इस उपदेशके
विषयमें जानेगा कि वह ईश्वरकी ओरसे है अथवा मैं
१८ अपनी ओरसे कहता हूं । जो अपनी ओरसे कहता है
सो अपनीही बड़ाई चाहता है परन्तु जो अपने भेजने-
हारेकी बड़ाई चाहता है सोई सत्य है और उसमें
१९ अधर्म्म नहीं है । क्या मूसाने तुम्हें व्यवस्था न दिई . तौभी
तुममेंसे कोई व्यवस्थापर नहीं चलता है . तुम क्यों मुझे

मार डालने चाहते हो। लोगोंने उत्तर दिया कि तुझे २०
भूत लगा है. कौन तुझे मार डालने चाहता है। यीशुने २१
उनको उत्तर दिया कि मैंने एक काम किया और तुम
सब अचंभा करते हो। मूसाने तुम्हें खतनेकी आज्ञा २२
दिई . इस कारण नहीं कि वह मूसाकी ओरसे है परन्तु
पितरोंकी ओरसे है. और तुम बिश्रामके दिनमें मनुष्य-
का खतना करते हो। जो बिश्रामके दिनमें मनुष्यका २३
खतना किया जाता है जिस्तें मूसाकी व्यवस्था लंघन न
होय तो तुम मुझसे क्यों इसलिये क्रोध करते हो कि
मैंने बिश्रामके दिनमें सम्पूर्ण एक मनुष्यको चंगा किया।
मुंह देखके बिचार मत करो परन्तु यथार्थ बिचार करो। २४
तब यिरूशलीमके निवासियोंमेंसे कितने बोले क्या २५
यह वह नहीं है जिसे वे मार डालने चाहते हैं। और २६
देखो वह खोलके बात करता है और वे उससे कुछ नहीं
कहते . क्या प्रधानोंने निश्चय जान लिया है कि यह
सचमुच ख्रीष्ट है। परन्तु इस मनुष्यको हम जानते हैं कि २७
वह कहांसे है पर ख्रीष्ट जब आवेगा तब कोई नहीं जा-
नेगा कि वह कहांसे है। यीशुने मन्दिरमें उपदेश करते २८
हुए पुकारके कहा तुम मुझे जानते और यह भी जानते
हो कि मैं कहांसे हूं. मैं तो आपसे नहीं आया हूं परन्तु
मेरा भेजनेहारा सत्य है जिसे तुम नहीं जानते हो। मैं २९
उसे जानता हूं क्योंकि मैं उसकी ओरसे हूं और उसने
मुझे भेजा है। इसपर उन्होंने उसको पकड़ने चाहा तौभी ३०
किसीने उसपर हाथ न बढ़ाया क्योंकि उसका समय
अबलों नहीं पहुंचा था। और लोगोंमेंसे बहुतोंने उस- ३१

पर विश्वास किया और कहा ख्रीष्ट जब आवेगा तब क्या
इन आश्चर्य्य कर्म्मोंसे जो इसने किये हैं अधिक करेगा।
३२ फरीशियोंने लोगोंको उसके विषयमें यह बातें फुस-
फुसाके कहते सुना और फरीशियों और प्रधान याज-
३३ कोंने प्यादोंको उसे पकड़नेको भेजा। इसपर यीशुने
कहा मैं अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ रहता हूं तब
३४ अपने भेजनेहारेके पास जाता हूं। तुम मुझे ढूंढ़ोगे और
न पाओगे और जहां मैं रहूंगा तहां तुम नहीं आ
३५ सकोगे। यिहूदियोंने आपसमें कहा यह कहां जायगा
कि हम उसे नहीं पावेंगे. क्या वह यूनानियोंमेंके
तितर बितर लोगोंके पास जायगा और यूनानियोंको
३६ उपदेश देगा। यह क्या बात है जो उसने कही कि
तुम मुझे ढूंढ़ोगे और न पाओगे और जहां मैं रहूंगा
तहां तुम नहीं आ सकोगे।
३७ पिछले दिन पर्ब्बके बड़े दिनमें यीशुने खड़ा हो पुका-
रके कहा यदि कोई पियासा होवे तो मेरे पास आके
३८ पीवे। जो मुझपर बिश्वास करे जैसा धर्म्मपुस्तकने
कहा तैसा उसके अन्तरसे अमृत जलकी नदियां बहेंगीं।
३९ उसने यह बचन आत्माके विषयमें कहा जिसे उसपर
बिश्वास करनेहारे पानेपर थे क्योंकि पवित्र आत्मा
अबलों नहीं दिया गया था इसलिये कि यीशुकी महिमा
४० अबलों प्रगट न हुई थी। लोगोंमेंसे बहुतोंने यह
बचन सुनके कहा यह सचमुच वह भविष्यद्वक्ता है।
४१ औरोंने कहा यह ख्रीष्ट है परन्तु औरोंने कहा क्या ख्रीष्ट
४२ गालीलमेंसे आवेगा। क्या धर्म्मपुस्तकने नहीं कहा

कि खीष्ट दाऊदके बंशसे और बैतलहम नगरसे जहां
दाऊद रहता था आवेगा । सो उसके कारण लोगोंमें ४३
बिभेद हुआ । उनमेंसे कितने उसको पकड़ने चाहते ४४
थे परन्तु किसीने उसपर हाथ न बढ़ाये ।
तब प्यादे लोग प्रधान याजकों और फरीशियोंके ४५
पास आये और उन्होंने उनसे कहा तुम उसे क्यों नहीं
लाये हो । प्यादोंने उत्तर दिया कि किसी मनुष्यने ४६
कभी इस मनुष्यकी नाईं बात न किई । फरीशियोंने ४७
उनको उत्तर दिया क्या तुम भी भरमाये गये हो । क्या ४८
प्रधानों अथवा फरीशियोंमेंसे किसीने उसपर बिश्वास
किया है । परन्तु ये लोग जो व्यवस्थाको नहीं जानते ४९
हैं स्रापित हैं । निकोदीम जो रातको यीशु पास आया ५०
और आप उनमेंसे एक था उनसे बोला . हमारी ५१
व्यवस्था जबलों मनुष्यकी न सुने और न जाने कि वह
क्या करता है तबलों क्या उसको दोषी ठहराती है।
उन्होंने उसे उत्तर दिया क्या आप भी गालीलके हैं . ५२
ढूंढ़के देखिये कि गालीलमेंसे भविष्यद्वक्ता प्रगट नहीं
होता । तब सब कोई अपने अपने घरको गये । ५३

८ आठवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका एक व्यभिचारिणीको छुड़ाना । १२ उसके उपदेशकी सच्चाईका प्रमाण। २१ उसका यिहूदियोंको चिताना । ३३ इब्राहीमके सुभावके दृष्टान्तसे उन्होंकी कुचालपर उलहना देना । ४८ अपनी महिमाका बखान करना ।

परन्तु यीशु जैतून पर्ब्बतपर गया . और भोरको फिर १ २
मन्दिरमें आया और सब लोग उस पास आये और वह
बैठके उन्हें उपदेश देने लगा । तब अध्यापकों और ३

फरीशियोंने एक स्त्रीको जो व्यभिचारमें पकड़ी गई थी
४ उस पास लाके बीचमें खड़ी किई . और उससे कहा हे
५ गुरु यह स्त्री व्यभिचार कर्म्म करतेही पकड़ी गई । व्यव-
स्थामें मूसाने हमें आज्ञा दिई कि ऐसी स्त्रियां पत्थरवाह
६ किई जावें सो आप क्या कहते हैं। उन्होंने उसकी परीक्षा
करनेको यह बात कही कि उसपर दोष लगानेका गौं
मिले परन्तु यीशु नीचे झुकके उंगलीसे भूमिपर लिखने
७ लगा। जब वे उससे पूछते रहे तब उसने उठके उनसे कहा
तुम्हांमेंसे जो निष्पापी होय सो पहिले उसपर पत्थर
८ फेंके। और वह फिर नीचे झुकके भूमिपर लिखने लगा।
९ पर वे यह सुनके और अपने अपने मनसे दोषी ठहरके
बड़ोंसे लेके छोटोंतक एक एक करके निकल गये और
केवल यीशु रह गया और वह स्त्री बीचमें खड़ी रही ।
१० यीशुने उठके स्त्रीको छोड़ और किसीको न देखके उससे
कहा हे नारी वे तेरे दोषदायक कहां हैं . क्या किसीने
११ तुझपर दंडकी आज्ञा न दिई । उसने कहा हे प्रभु कि-
सीने नहीं . यीशुने उससे कहा मैं भी तुझपर दंडकी
आज्ञा नहीं देता हूं जा और फिर पाप मत कर ।
१२ तब यीशुने फिर लोगोंसे कहा मैं जगतका प्रकाश हूं .
जो मेरे पीछे आवे सो अंधकारमें नहीं चलेगा परन्तु
१३ जीवनका उजियाला पावेगा। फरीशियोंने उससे कहा तू
अपनेही विषयमें साक्षी देता है तेरी साक्षी ठीक नहीं
१४ है। यीशुने उनको उत्तर दिया कि जो मैं अपने विषयमें
साक्षी देता हूं तौभी मेरी साक्षी ठीक है क्योंकि मैं जानता
हूं कि मैं कहांसे आया हूं और कहां जाता हूं परन्तु तुम

नहीं जानते हो कि मैं कहांसे आता हूं और कहां
जाता हूं। तुम शरीरको देखके बिचार करते हो मैं १५
किसीका बिचार नहीं करता हूं। और जो मैं बिचार १६
करता हूं भी तो मेरा बिचार ठीक है क्योंकि मैं अकेला
नहीं हूं परन्तु मैं हूं और पिता है जिसने मुझे भेजा।
तुम्हारी व्यवस्थामें लिखा है कि दो जनोंकी साक्षी १७
ठीक होती है। एक मैं हूं जो अपने विषयमें साक्षी देता हूं १८
और पिता जिसने मुझे भेजा मेरे विषयमें साक्षी देता
है। तब उन्होंने उससे कहा तेरा पिता कहां है. १९
यीशुने उत्तर दिया कि तुम न मुझे न मेरे पिताको
जानते हो. जो मुझे जानते तो मेरे पिताको भी
जानते। यह बातें यीशुने मन्दिरमें उपदेश करते हुए २०
भंडार घरमें कहीं और किसीने उसको न पकड़ा
क्योंकि उसका समय अबलों नहीं पहुंचा था।

तब यीशुने उनसे फिर कहा मैं जाता हूं और तुम २१
मुझे ढूंढ़ोगे और अपने पापमें मरोगे. जहां मैं जाता हूं
तहां तुम नहीं आ सकते हो। इसपर यिहूदियोंने कहा २२
क्या वह अपनेको मार डालेगा कि वह कहता है जहां मैं
जाता हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो। उसने उनसे २३
कहा तुम नीचेके हो मैं ऊपरका हूं. तुम इस जगतके
हो मैं इस जगतका नहीं हूं। इसलिये मैंने तुमसे कहा २४
कि तुम अपने पापोंमें मरोगे क्योंकि जो तुम बिश्वास
न करो कि मैं वही हूं तो अपने पापोंमें मरोगे।
उन्होंने उससे कहा तू कौन है. यीशुने उनसे कहा २५
पहिले जो मैं तुमसे कहता हूं वह भी सुनो। तुम्हारे २६

विषयमें मुझे बहुत कुछ कहना और बिचार करना है
परन्तु मेरा भेजनेहारा सत्य है और जो मैंने उससे सुना
२७ है सोई जगतसे कहता हूं। वे नहीं जानते थे कि वह
२८ उनसे पिताके विषयमें बोलता था। तब यीशुने उनसे
कहा जब तुम मनुष्यके पुत्रको ऊंचा करोगे तब जानोगे
कि मैं वही हूं और कि मैं आपसे कुछ नहीं करता हूं
परन्तु जैसे मेरे पिताने मुझे सिखाया तैसे मैं यह बातें
२९ बोलता हूं। और मेरा भेजनेहारा मेरे संग है. पिताने
मुझे अकेला नहीं छोड़ा है क्योंकि मैं सदा वही करता
३० हूं जिससे वह प्रसन्न होता है। उसके यह बातें बोलते-
३१ ही बहुत लोगोंने उसपर बिश्वास किया। तब यीशुने
उन यिहूदियोंसे जिन्होंने उसपर बिश्वास किया कहा
जो तुम मेरे बचनमें बने रहो तो सचमुच मेरे शिष्य
३२ हो। और तुम सत्यको जानोगे और सत्यके द्वारासे
तुम्हारा उद्धार होगा।

३३ उन्होंने उसको उत्तर दिया कि हम तो इब्राहीमके
बंश हैं और कभी किसीके दास नहीं हुए हैं. तू क्योंकर
३४ कहता है कि तुम्हारा उद्धार होगा। यीशुने उनको उत्तर
दिया मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो कोई पाप करता
३५ है सो पापका दास है। दास सदा घरमें नहीं रहता है.
३६ पुत्र सदा रहता है। सो यदि पुत्र तुम्हारा उद्धार करे तो
३७ निश्चय तुम्हारा उद्धार होगा। मैं जानता हूं कि तुम
इब्राहीमके बंश हो परन्तु मेरा बचन तुममें नहीं समाता
३८ है इसलिये तुम मुझे मार डालने चाहते हो। मैंने
अपने पिताके पास जो देखा है सो कहता हूं और तुमने

अपने पिताके पास जो देखा है सो करते हो। उन्होंने ३९
उसको उत्तर दिया कि हमारा पिता इब्राहीम है.
यीशुने उनसे कहा जो तुम इब्राहीमके सन्तान होते
तो इब्राहीमके कर्म्म करते। परन्तु अब तुम मुझे अर्थात ४०
एक मनुष्यको जिसने वह सत्य बचन जो मैंने ईश्वर-
से सुना तुमसे कहा है मार डालने चाहते हो. यह
तो इब्राहीमने नहीं किया। तुम अपने पिताके कर्म्म ४१
करते हो. उन्होंने उससे कहा हम ब्यभिचारसे नहीं
जन्मे हैं हमारा एक पिता है अर्थात ईश्वर। यीशुने ४२
उनसे कहा यदि ईश्वर तुम्हारा पिता होता तो तुम
मुझे प्यार करते क्योंकि मैं ईश्वरकी ओरसे निकलके
आया हूं. मैं आपसे नहीं आया हूं परन्तु उसने मुझे
भेजा। तुम मेरी बात क्यों नहीं बूझते हो. इसीलिये ४३
कि मेरा बचन नहीं सुन सकते हो। तुम अपने पिता ४४
शैतानसे हो और अपने पिताके अभिलाषोंपर चला
चाहते हो. वह आरंभसे मनुष्यघाती था और सच्चाईमें
स्थिर नहीं रहता क्योंकि सच्चाई उसमें नहीं है. जब
वह झूठ बोलता तब अपने स्वभावहीसे बोलता है क्यों-
कि वह झूठा और झूठका पिता है। परन्तु मैं सत्य ४५
कहता हूं इसीलिये तुम मेरी प्रतीति नहीं करते हो।
तुममेंसे कौन मुझे पापी ठहराता है. और जो मैं ४६
सत्य कहता हूं तो तुम क्यों मेरी प्रतीति नहीं करते
हो। जो ईश्वरसे है सो ईश्वरकी बातें सुनता है. ४७
तुम ईश्वरसे नहीं हो इस कारण नहीं सुनते हो।

तब यिहूदियोंने उसको उत्तर दिया क्या हम अच्छा ४८

नहीं कहते हैं कि तू शोमिरोनी है और भूत तुझे लगा
४९ है । यीशुने उत्तर दिया कि मुझे भूत नहीं लगा है
परन्तु मैं अपने पिताका सन्मान करता हूं और तुम
५० मेरा अपमान करते हो । पर मैं अपनी बड़ाई नहीं
चाहता हूं . एक है जो चाहता और बिचार करता है ।
५१ मैं तुमसे सच सच कहता हूं यदि कोई मेरी बातको
५२ पालन करे तो वह कभी मृत्युको न देखेगा । तब
यिहूदियोंने उससे कहा अब हम जानते हैं कि भूत तुझे
लगा है . इब्राहीम और भविष्यद्वक्ता लोग मर गये
हैं और तू कहता है कि यदि कोई मेरी बातको पालन
५३ करे तो वह कभी मृत्युका स्वाद न चीखेगा । क्या तू
हमारे पिता इब्राहीमसे जो मर गया है बड़ा है .
भविष्यद्वक्ता लोग भी मर गये हैं . तू अपने तईं क्या
५४ बनाता है । यीशुने उत्तर दिया कि जो मैं अपनी बड़ाई
करूं तो मेरी बड़ाई कुछ नहीं है . मेरी बड़ाई करने-
हारा मेरा पिता है जिसे तुम कहते हो कि वह हमारा
५५ ईश्वर है । तौभी तुम उसे नहीं जानते हो परन्तु मैं
उसे जानता हूं और जो मैं कहूं कि मैं उसे नहीं
जानता हूं तो मैं तुम्हारे समान झूठा होंगा परन्तु मैं
उसे जानता और उसके वचनको पालन करता हूं ।
५६ तुम्हारा पिता इब्राहीम मेरा दिन देखनेको हर्षित होता
५७ था और उसने देखा और आनन्द किया । यिहूदियोंने
उससे कहा तू अबलों पचास बरसका नहीं है और
५८ क्या तूने इब्राहीमको देखा है । यीशुने उनसे कहा मैं
तुमसे सच सच कहता हूं कि इब्राहीमके होनेके पहिलेसे

मैं हूं। तब उन्होंने पत्थर उठाये कि उसपर फेंकें परन्तु ५९
यीशु छिप गया और उन्होंके बीचमेंसे होके मन्दिरसे
निकला और यूंहीं चला गया।

९ नवां पर्ब्ब।

१ यीशुका एक अन्धेको चंगा करना। ८ पड़ोसियों और फरीशियोंका उस चंगा किये हुए मनुष्यसे प्रश्न करना। १८ यिहूदियोंका उसके माता पितासे प्रश्न करना। २४ फरीशियोंके आगे उसका यीशुको मान लेना। ३५ यीशुका अपनेको उसपर प्रगट करना।

जाते हुए यीशुने एक मनुष्यको देखा जो जन्मका १
अंधा था। और उसके शिष्योंने उससे पूछा हे गुरु किसने २
पाप किया इस मनुष्यने अथवा उसके माता पिताने जो
वह अंधा जन्मा। यीशुने उत्तर दिया कि न तो इसने ३
न इसके माता पिताने पाप किया परन्तु यह इसलिये
हुआ कि ईश्वरके काम उसमें प्रगट किये जायें। मुझे दिन ४
रहते अपने भेजनेहारेके कामोंको करना अवश्य है. रात
आती है जिसमें कोई नहीं काम कर सकता है। जबलों ५
मैं जगतमें हूं तबलों जगतका प्रकाश हूं। यह कहके ६
उसने भूमिपर थूका और उस थूकसे मिट्टी गीली करके
वह गीली मिट्टी अंधेकी आंखोंपर लगाई. और उससे ७
कहा जाके शीलोहके कुंडमें धो जिसका अर्थ यह है भेजा
हुआ. सो उसने जाके धोया और देखते हुए आया।

तब पड़ोसियोंने और जिन्होंने आगे उसे अंधा देखा ८
था उन्होंने कहा क्या यह वह नहीं है जो बैठा भीख
मांगता था। कितनोंने कहा यह वही है औरोंने कहा ९
यह उसकी नाईं है वह आप बोला मैं वही हूं। तब १०
उन्होंने उससे कहा तेरी आंखें क्योंकर खुलीं। उसने ११

उत्तर दिया कि यीशु नाम एक मनुष्यने मिट्टी गीली
करके मेरी आंखोंपर लगाई और मुझसे कहा शीलोह-
के कुंडको जा और धो सो मैंने जाके धोया औ दृष्टि
१२ पाई । उन्होंने उससे कहा वह मनुष्य कहां है . उसने
कहा मैं नहीं जानता हूं ।
१३ वे उसको जो आगे अंधा था फरीशियोंके पास
१४ लाये । जब यीशुने मिट्टी गीली करके उसकी आंखें
१५ खोलीं थीं तब विश्रामका दिन था । सो फरीशियोंने
भी फिर उससे पूछा तूने किस रीतिसे दृष्टि पाई . वह
उनसे बोला उसने गीली मिट्टी मेरी आंखोंपर लगाई
१६ और मैंने धोया और देखता हूं । फरीशियोंमेंसे कितनोंने
कहा यह मनुष्य ईश्वरकी ओरसे नहीं है क्योंकि वह
विश्रामका दिन नहीं मानता है . औरोंने कहा पापी
मनुष्य क्योंकर ऐसे आश्चर्य्य कर्म्म कर सकता है .
१७ और उन्होंमें विभेद हुआ । वे उस अंधेसे फिर बोले
उसने जो तेरी आंखें खोलीं तो तू उसके विषयमें क्या
कहता है . उसने कहा वह भविष्यद्वक्ता है ।
१८ परन्तु यिहूदियोंने जबलों उस दृष्टि पाये हुए मनु-
ष्यके माता पिताको नहीं बुलाया तबलों उसके विषयमें
१९ प्रतीति न किई कि वह अंधा था औ दृष्टि पाई । और
उन्होंने उनसे पूछा क्या यह तुम्हारा पुत्र है जिसे तुम
कहते हो कि वह अंधा जन्मा . तो वह अब क्योंकर
२० देखता है । उसके माता पिताने उनको उत्तर दिया हम
जानते हैं कि यह हमारा पुत्र है और कि वह अंधा
२१ जन्मा । परन्तु वह अब क्योंकर देखता है सो हम नहीं

जानते अथवा किसने उसकी आंखें खोलीं हम नहीं
जानते हैं . वह सयाना है उसीसे पूछिये वह अपने वि-
षयमें आप कहेगा । यह बातें उसके माता पिताने इस- २२
लिये कहीं कि वे यिहूदियोंसे डरते थे क्योंकि यिहूदी
लोग आपसमें ठहरा चुके थे कि यदि कोई यीशुको ख्रीष्ट
करके मान लेवे तो सभामेंसे निकाला जायगा। इस का- २३
रण उसके माता पिताने कहा वह सयाना है उसीसे पूछिये।
तब उन्होंने उस मनुष्यको जो अंधा था दूसरी बेर २४
बुलाके उससे कहा ईश्वरका गुणानुवाद कर. हम जानते
हैं कि यह मनुष्य पापी है। उसने उत्तर दिया वह पापी २५
है कि नहीं सो मैं नहीं जानता हूं एक बात मैं जानता
हूं कि मैं जो अंधा था अब देखता हूं । उन्होंने उससे २६
फिर कहा उसने तुझसे क्या किया . तेरी आंखें किस
रीतिसे खोलीं । उसने उनको उत्तर दिया कि मैं आप २७
लोगोंसे कह चुका हूं और आप लोगोंने नहीं सुना .
किसलिये फिर सुना चाहते हैं . क्या आप लोग भी उसके
शिष्य हुआ चाहते हैं । तब उन्होंने उसकी निन्दा कर २८
कहा तू उसका शिष्य है पर हम मूसाके शिष्य हैं। हम २९
जानते हैं कि ईश्वरने मूसासे बातें किईं परन्तु इसको
हम नहीं जानते कि कहांसे है । उस मनुष्यने उनको ३०
उत्तर दिया इसमें अचंभा है कि आप लोग नहीं जानते
वह कहांसे है और उसने मेरी आंखें खोली हैं । हम ३१
जानते हैं कि ईश्वर पापियोंकी नहीं सुनता है परन्तु
यदि कोई ईश्वरका उपासक होय और उसकी इच्छापर
चले तो वह उसकी सुनता है। यह कभी सुननेमें नहीं ३२

आया कि किसीने जन्मके अंधेकी आंखें खोली हों ।
३३ जो यह ईश्वरकी ओरसे न होता तो कुछ नहीं कर
३४ सकता । उन्होंने उसको उत्तर दिया कि तू तो सम्पूर्ण
पापोंमें जन्मा और क्या तू हमें सिखाता है . और
उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया ।
३५ यीशुने सुना कि उन्होंने उसे बाहर निकाल दिया
था और उसको पाकरके उससे कहा क्या तू ईश्वरके
३६ पुत्रपर बिश्वास करता है। उसने उत्तर दिया कि हे प्रभु
३७ वह कौन है कि मैं उसपर बिश्वास करूं। यीशुने उससे
कहा तूने उसे देखा भी है और जो तेरे संग बात करता
३८ है वही है । उसने कहा हे प्रभु मैं बिश्वास करता हूं
३९ और उसको प्रणाम किया । तब यीशुने कहा मैं इस
जगतमें बिचारके लिये आया हूं कि जो नहीं देखते हैं
४० सो देखें और जो देखते हैं सो अंधे हो जावें। फरीशि-
योंमेंसे जो जन उसके संग थे सो यह सुनके उससे बोले
४१ क्या हम भी अंधे हैं । यीशुने उनसे कहा जो तुम अंधे
होते तो तुम्हें पाप न होता परन्तु अब तुम कहते हो
कि हम देखते हैं इसलिये तुम्हारा पाप बना रहा ।

१० दसवां पर्व्व ।

१ यीशुका अपनेको गड़ेरिये और द्वारके दृष्टान्तोंसे प्रगट करना । १९ उसके विषयमें यिहूदियोंका बिबाद । २२ उसका अपनी भेड़ोंको प्रतिज्ञा और अपनी सच्चाईका प्रमाण देना । ३९ यर्दनके उस पार जाना ।

१ मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जो द्वारसे भेड़शालामें
नहीं पैठता परन्तु दूसरी ओरसे चढ़ जाता है सो चोर
२ ओ डाकू है । जो द्वारसे पैठता है सो भेड़ोंका रखवाला

है। उसके लिये द्वारपाल खोल देता है और भेड़ें उसका ३
शब्द सुनती हैं और वह अपनी भेड़ोंको नाम ले ले
बुलाता है और उन्हें बाहर ले जाता है। और जब वह ४
अपनी भेड़ें बाहर ले जाता है तब उनके आगे चलता है
और भेड़ें उसके पीछे हो लेती हैं क्योंकि वे उसका शब्द
जानती हैं। परन्तु वे परायेके पीछे नहीं जायेंगीं पर ५
उससे भागेंगीं क्योंकि वे परायोंका शब्द नहीं जानती हैं।
यीशुने उनसे यह दृष्टान्त कहा परन्तु उन्होंने न बूझा ६
कि यह क्या बातें हैं जो वह हमसे बोलता है। तब ७
यीशुने फिर उनसे कहा मैं तुमसे सच सच कहता हूं
कि मैं भेड़ोंका द्वार हूं। जितने मेरे आगे आये सो सब ८
चोर औ डाकू हैं परन्तु भेड़ोंने उनकी न सुनी। द्वार मैं ९
हूं . यदि मुझमेंसे कोई प्रवेश करे तो त्राण पावेगा और
भीतर बाहर आया जाया करेगा और चराई पावेगा।
चोर किसी और कामको नहीं केवल चोरी औ घात औ १०
नाश करनेको आता है . मैं आया हूं कि भेड़ें जीवन पावें
और अधिकाईसे पावें। मैं अच्छा गड़ेरिया हूं . अच्छा ११
गड़ेरिया भेड़ोंके लिये अपना प्राण देता है। परन्तु मजूर १२
जो गड़ेरिया नहीं है और भेड़ें उसके निजकी नहीं हैं
हुंड़ारको आते देखके भेड़ोंको छोड़ देता और भाग जाता
है और हुंड़ार भेड़ें पकड़के उन्हें तितर बितर करता है।
मजूर भागता है क्योंकि वह मजूर है और भेड़ोंकी कुछ १३
चिन्ता नहीं करता है। मैं अच्छा गड़ेरिया हूं और १४
जैसा पिता मुझे जानता है और मैं पिताको जानता हूं
वैसा मैं अपनी भेड़ोंको जानता हूं और अपनी भेड़ोंसे

१५ जाना जाता हूं । और मैं भेड़ोंके लिये अपना प्राण
१६ देता हूं । मेरी और भेड़ें हैं जो इस भेड़शालाकी नहीं
हैं . मुझे उनको भी लाना होगा और वे मेरा शब्द
१७ सुनेंगीं और एक झुंड और एक रखवाला होगा । पिता
इस कारणसे मुझे प्यार करता है कि मैं अपना प्राण
१८ देता हूं जिस्तें उसे फिर लेऊं । कोई उसको मुझसे
नहीं लेता है परन्तु मैं आपसे उसे देता हूं . उसे
देनेका मुझे अधिकार है और उसे फिर लेनेका मुझे
अधिकार है . यह आज्ञा मैंने अपने पितासे पाई ।
१९ तब यिहूदियोंमें इन बातोंके कारण फिर बिभेद
२० हुआ । उनमेंसे बहुतोंने कहा उसको भूत लगा है वह
२१ बौरहा है तुम उसकी क्यों सुनते हो । औरोंने कहा
यह बातें भूतग्रस्तकी नहीं हैं . भूत क्या अंधोंकी आंखें
खोल सकता है ।
२२ यिरूशलीममें स्थापन पर्ब्ब हुआ और जाड़ेका समय
२३ था । और यीशु मन्दिरमें सुलेमानके ओसारेमें फिरता
२४ था । तब यिहूदियोंने उसे घेरके उससे कहा तू हमारे
मनको कबलों दुबधामें रखेगा . जो तू ख्रीष्ट है तो हमसे
२५ खोलके कह । यीशुने उन्हें उत्तर दिया कि मैंने तुमसे
कहा और तुम बिश्वास नहीं करते हो . जो काम मैं
अपने पिताके नामसे करता हूं वेही मेरे विषयमें साक्षी
२६ देते हैं । परन्तु तुम बिश्वास नहीं करते हो क्योंकि तुम
२७ मेरी भेड़ोंमेंसे नहीं हो जैसा मैंने तुमसे कहा । मेरी
भेड़ें मेरा शब्द सुनती हैं और मैं उन्हें जानता हूं और
२८ वे मेरे पीछे हो लेती हैं । और मैं उन्हें अनन्त जी-

वन देता हूं और वे कभी नाश न होंगीं और कोई उन्हें
मेरे हाथसे छीन न लेगा। मेरा पिता जिसने उन्हें मुझ- २९
को दिया है सभोंसे बड़ा है और कोई मेरे पिताके हाथ-
से छीन नहीं सकता है। मैं और पिता एक हैं। तब ३० ३१
यिहूदियोंने फिर उसे पत्थरवाह करनेको पत्थर उठाये।
यीशुने उनको उत्तर दिया कि मैंने अपने पिताकी ओरसे ३२
बहुतसे भले काम तुम्हें दिखाये हैं उनमेंसे किस कामके
लिये मुझे पत्थरवाह करते हो। यिहूदियोंने उसको उत्तर ३३
दिया कि भले कामके लिये हम तुझे पत्थरवाह नहीं
करते हैं परन्तु ईश्वरकी निन्दाके लिये और इसलिये कि
तू मनुष्य होके अपनेको ईश्वर बनाता है। यीशुने उन्हें ३४
उत्तर दिया क्या तुम्हारी व्यवस्थामें नहीं लिखा है कि
मैंने कहा तुम ईश्वरगण हो। यदि उसने उनको ईश्वर- ३५
गण कहा जिनके पास ईश्वरका वचन पहुंचा और
धर्म्मपुस्तककी बात लोप नहीं हो सकती है. तो जिसे ३६
पिताने पवित्र करके जगतमें भेजा है उससे क्या तुम
कहते हो कि तू ईश्वरकी निन्दा करता है इसलिये कि
मैंने कहा मैं ईश्वरका पुत्र हूं। जो मैं अपने पिताके ३७
कार्य्य नहीं करता हूं तो मेरी प्रतीति मत करो। परन्तु ३८
जो मैं करता हूं तो यदि मेरी प्रतीति न करो तौभी उन
कार्य्योंकी प्रतीति करो इसलिये कि तुम जानो और
बिश्वास करो कि पिता मुझमें है और मैं उसमें हूं।

तब उन्होंने फिर उसे पकड़ने चाहा परन्तु वह उनके ३९
हाथसे निकल गया. और फिर यर्दनके उस पार उस ४०
स्थानपर गया जहां योहन पहिले बपतिसमा देता था

४१ और वहां रहा। और बहुत लोग उस पास आये और
बोले योहनने तो कोई आश्चर्य्य कर्म्म नहीं किया
परन्तु जो कुछ योहनने इसके विषयमें कहा सो सब
४२ सच था। और वहां बहुतोंने उसपर बिश्वास किया।

११ एग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ इलियाजरका रोगी होना। ६ योशुका अपने शिष्योंके संग बात करना और इलियाजरके पास जाना। १८ इलियाजरकी बहिनोंके संग यीशुकी बातचीत। ४१ प्रार्थना करनेके पीछे इलियाजरको जिलाना। ४५ इस आश्चर्य्य कर्म्मके विषयमें यिहूदियोंका विचार और कियाफाकी भविष्यद्वाणी।

१ इलियाजर नाम बैथनियाका अर्थात मरियम और
उसकी बहिन मर्थाके गांवका एक मनुष्य रोगी था।
२ मरियम वही थी जिसने प्रभुपर सुगन्ध तेल लगाया
और उसके चरणोंको अपने बालोंसे पोंछा और उसका
३ भाई इलियाजर था जो रोगी था। सो दोनों बहिनोंने
यीशुको कहला भेजा कि हे प्रभु देखिये जिसे आप प्यार
४ करते हैं सो रोगी है। यह सुनके यीशुने कहा यह रोग
मृत्युके लिये नहीं परन्तु ईश्वरकी महिमाके लिये है कि
ईश्वरके पुत्रकी महिमा उसके द्वारासे प्रगट किई जाय।
५ यीशु मर्थाको और उसकी बहिनको और इलियाजरको
प्यार करता था।
६ जब उसने सुना कि इलियाजर रोगी है तब जिस स्था-
७ नमें वह था उस स्थानमें दो दिन और रहा। तब इसके
पीछे उसने शिष्योंसे कहा कि आओ हम फिर यिहूदि-
८ याको चलें। शिष्योंने उससे कहा हे गुरु यिहूदी लोग
अभी आपको पत्थरवाह किया चाहते थे और आप क्या

फिर वहां जाते हैं। यीशुने उत्तर दिया क्या दिनकी ९
बारह घड़ी नहीं हैं. यदि कोई दिनको चले तो ठोकर
नहीं खाता है क्योंकि वह इस जगतका उजियाला
देखता है। परन्तु यदि कोई रातको चले तो ठोकर १०
खाता है क्योंकि उजियाला उसमें नहीं है। उसने ११
यह बातें कहीं और इसके पीछे उनसे बोला हमारा
मित्र इलियाजर सो गया है परन्तु मैं उसे जगानेको
जाता हूं। उसके शिष्योंने कहा हे प्रभु जो वह सो १२
गया है तो चंगा हो जायगा। यीशुने उसकी मृत्युके १३
विषयमें कहा परन्तु उन्होंने समझा कि उसने नींदमें
सो जानेके विषयमें कहा। तब यीशुने उनसे खोलके १४
कहा इलियाजर मर गया है। और तुम्हारे लिये मैं १५
आनन्द करता हूं कि मैं वहां नहीं था जिस्तें तुम
विश्वास करो. परन्तु आओ हम उस पास चलें।
तब थोमाने जो दिदुम कहावता है अपने संगी १६
शिष्योंसे कहा कि आओ हम भी उसके संग मरनेको
जायें। सो जब यीशु आया तब उसने यही पाया कि १७
इलियाजरको कबरमें चार दिन हो चुके।

बैथनिया यिरूशलीमके निकट अर्थात कोश एक दूर १८
था। और बहुतसे यिहूदी लोग मर्था और मरियमके १९
पास आये थे कि उनके भाईके विषयमें उनको शांति
देवें। सो मर्थाने जब सुना कि यीशु आता है तब जाके २०
उससे भेंट किई परन्तु मरियम घरमें बैठी रही। मर्थाने २१
यीशुसे कहा हे प्रभु जो आप यहां होते तो मेरा भाई
नहीं मरता। परन्तु मैं जानती हूं कि अब भी जो कुछ २२

२३ आप ईश्वरसे मांगें ईश्वर आपको देगा। यीशुने उससे
२४ कहा तेरा भाई जी उठेगा। मर्थाने उससे कहा मैं
जानती हूं कि पिछले दिन पुनरुत्थानमें वह जी उठेगा।
२५ यीशुने उससे कहा मैंही पुनरुत्थान और जीवन हूं . जो
मुझपर विश्वास करे सो यदि मर जाय तौभी जीयेगा।
२६ और जो कोई जीवता हो और मुझपर विश्वास करे सो
कभी नहीं मरेगा . क्या तू इस बातका विश्वास करती
२७ है। वह उससे बोली हां प्रभु मैंने विश्वास किया है
कि ईश्वरका पुत्र खीष्ट जो जगतमें आनेवाला था सो
२८ आपही हैं। यह कहके वह चली गई और अपनी बहिन
मरियमको चुपकेसे बुलाके कहा गुरु आये हैं और तुझे
२९ बुलाते हैं। मरियम जब उसने सुना तब शीघ्र उठके
३० यीशु पास आई। यीशु अबलों गांवमें नहीं आया था
परन्तु उसी स्थानमें था जहां मर्थाने उससे भेंट किई।
३१ जो यिहूदी लोग मरियमके संग घरमें थे और उसको
शांति देते थे सो जब उसे देखा कि वह शीघ्र उठके बाहर
गई तब यह कहके उसके पीछे हो लिये कि वह कबर-
३२ पर जाती है कि वहां रोवे। जब मरियम वहां पहुंची
जहां यीशु था तब उसे देखके उसके पांवों पड़ी और
उससे बोली हे प्रभु जो आप यहां होते तो मेरा भाई
३३ नहीं मरता। जब यीशुने उसे रोते हुए और जो यिहूदी
लोग उसके संग आये उन्हें भी रोते हुए देखा तब
३४ आत्मामें बिकल हुआ और घबराया . और कहा तुमने
उसे कहां रखा है . वे उससे बोले हे प्रभु आके देखिये।
३५ ३६ यीशु रोया। तब यिहूदियोंने कहा देखो वह उसे कैसा

प्यार करता था। परन्तु उनमेंसे कितनोंने कहा क्या ३७
यह जिसने अंधेकी आंखें खोलीं यह भी न कर सकता
कि यह मनुष्य नहीं मरता। यीशु अपनेमें फिर बिकल ३८
होके कबरपर आया . वह गुफा थी और एक पत्थर
उसपर धरा था। यीशुने कहा पत्थरको सरकाओ . ३९
उस मरे हुएकी बहिन मर्था उससे बोली हे प्रभु वह
तो अब बसाता है क्योंकि उसको चार दिन हुए हैं।
यीशुने उससे कहा क्या मैंने तुझसे न कहा कि जो ४०
तू बिश्वास करे तो ईश्वरकी महिमाको देखेगी।

तब जहां वह मृतक पड़ा था वहांसे उन्होंने पत्थर- ४१
को सरकाया और यीशुने ऊपर दृष्टि कर कहा हे पिता
मैं तेरा धन्य मानता हूं कि तूने मेरी सुनी है। और ४२
मैं जानता था कि तू सदा मेरी सुनता है परन्तु जो
बहुत लोग आसपास खड़े हैं उनके कारण मैंने यह
कहा कि वे बिश्वास करें कि तूने मुझे भेजा। यह बातें ४३
कहके उसने बड़े शब्दसे पुकारा कि हे इलियाजर बाहर
आ। तब वह मृतक चद्दरसे हाथ पांव बांधे हुए बाहर ४४
आया और उसका मुंह अंगोछेमें लपेटा हुआ था .
यीशुने उनसे कहा उसे खोलो और जाने दो।

तब बहुतसे यिहूदी लोगोंने जो मरियमके पास ४५
आये थे यह जो यीशुने किया था देखके उसपर बिश्वास
किया। परन्तु उनमेंसे कितनोंने फरीशियोंके पास जाके ४६
जो यीशुने किया था सो उन्होंसे कह दिया। इसपर ४७
प्रधान याजकों और फरीशियोंने सभा एकट्ठी करके
कहा हम क्या करते हैं . यह मनुष्य तो बहुत आश्चर्य्य

४८ कर्म्म करता है। जो हम उसे यूं छोड़ देवें तो सब लोग
उसपर बिश्वास करेंगे और रोमी लोग आके हमारे
४९ स्थान और लोगको भी उठा देंगे। तब उनमेंसे कियाफा
नाम एक जन जो उस बरसका महायाजक था उनसे
५० बोला तुम लोग कुछ नहीं जानते हो . और यह
बिचार भी नहीं करते हो कि हमारे लिये अच्छा है
कि लोगोंके लिये एक मनुष्य मरे और यह सम्पूर्ण
५१ लोग नाश न होवें। यह बात वह आपसे नहीं बोला
परन्तु उस बरसका महायाजक होके भविष्यद्वाक्यसे
५२ कहा कि यीशु उन लोगोंके लिये मरनेपर था . और
केवल उन लोगोंके लिये नहीं परन्तु इसलिये भी कि
ईश्वरके सन्तानोंको जो तितर बितर हुए हैं एकमें
५३ एकट्ठे करे। सो उसी दिनसे उन्होंने उसे घात करने-
५४ को आपसमें बिचार किया। इसलिये यीशु प्रगट होके
यिहूदियोंके बीचमें और नहीं फिरा परन्तु वहांसे
जंगलके निकटके देशमें इफ्राईम नाम एक नगरको गया
५५ और अपने शिष्योंके संग वहां रहा। यिहूदियोंका
निस्तार पर्ब्ब निकट था और बहुत लोग अपने तईं
शुद्ध करनेको निस्तार पर्ब्बके आगे देशमेंसे यिरूशलीमको
५६ गये। उन्होंने यीशुको ढूंढ़ा और मन्दिरमें खड़े हुए
आपसमें कहा तुम क्या समझते हो क्या वह पर्ब्बमें
५७ नहीं आवेगा। और प्रधान याजकों और फरीशियोंने
भी आज्ञा दिई थी कि यदि कोई जाने कि यीशु कहां
है तो बतावे इसलिये कि वे उसे पकड़ें।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

१ मरियमका यीशुके चरणोंपर सुगन्ध तेल लगाना । ९ बहुत लोगोंका इलियाजरको देखनेके लिये आना । १२ यीशुका यिरूशलीममें जाना । २० अन्यदेशियोंका उस पास आना और उसका अपनी मृत्युका भविष्यद्वाक्य कहना । ३७ थोड़े लोगोंका विश्वास करना । ४४ यीशुका उपदेश ।

निस्तार पर्ब्बके छः दिन आगे यीशु बैथनियामें आया १
जहां इलियाजर था जो मर गया था जिसे उसने मृत-
कोंमेंसे उठाया था । वहां उन्होंने उसके लिये बियारी २
बनाई और मर्थाने सेवा किई और इलियाजर यीशुके
संग बैठनेहारोंमेंसे एक था । तब मरियमने आध सेर ३
जटामांसीका बहुमूल्य सुगन्ध तेल लेके यीशुके चरणोंपर
लगाया और उसके चरणोंको अपने बालोंसे पोंछा
और तेलके सुगन्धसे घर भर गया । इसपर उसके ४
शिष्योंमेंसे शिमोनका पुत्र यिहूदा इस्करियोती नाम एक
शिष्य जो उसे पकड़वानेपर था बोला . यह सुगन्ध ५
तेल क्यों नहीं तीन सौ सूकियोंपर बेचा गया और
कंगालोंको दिया गया । वह यह बात इसलिये नहीं ६
बोला कि वह कंगालोंकी चिन्ता करता था परन्तु
इसलिये कि वह चोर था और थैली रखता था और
जो उसमें डाला जाता सो उठा लेता था। यीशुने कहा ७
स्त्रीको रहने दे . उसने मेरे गाड़े जानेके दिनके लिये
यह रखा है । कंगाल लोग तुम्हारे संग सदा रहते हैं ८
परन्तु मैं तुम्हारे संग सदा नहीं रहूंगा ।

यिहूदियोंमेंसे बहुत लोगोंने जाना कि यीशु वहां है ९
और वे केवल यीशुके कारण नहीं परन्तु इलियाजरको

देखनेके लिये भी आये जिसे उसने मृतकोंमेंसे उठाया
१० था। तब प्रधान याजकोंने इलियाजरको भी मार
११ डालनेका विचार किया। क्योंकि बहुत यिहूदियोंने
उसके कारण जाके यीशुपर बिश्वास किया।
१२ दूसरे दिन बहुत लोग जो पर्व्बमें आये थे जब उन्होंने
१३ सुना कि यीशु यिरूशलीममें आता है. तब खजूरोंके
पत्ते लेके उससे मिलनेको निकले और पुकारने लगे कि
जय जय धन्य इस्रायेलका राजा जो परमेश्वरके नामसे
१४ आता है। यीशु एक गधीके बच्चेको पाके उसपर बैठा.
१५ जैसा लिखा है कि हे सियोनकी पुत्री मत डर देख तेरा
१६ राजा गधीके बच्चेपर बैठा हुआ आता है। यह बातें
उसके शिष्योंने पहिले नहीं समझीं परन्तु जब यीशुकी
महिमा प्रगट हुई तब उन्होंने स्मरण किया कि यह बातें
उसके विषयमें लिखी हुई थीं और कि उन्होंने उससे
१७ यह किया था। जो लोग उसके संग थे उन्होंने साक्षी
दिई कि उसने इलियाजरको कबरमेंसे बुलाया और
१८ उसको मृतकोंमेंसे उठाया। लोग इसी कारण उससे आ
मिले भी कि उन्होंने सुना कि उसने यह आश्चर्य्य
१९ कर्म्म किया था। तब फरीशियोंने आपसमें कहा क्या
तुम देखते हो कि तुमसे कुछ बन नहीं पड़ता. देखो
संसार उसके पीछे गया है।
२० जो लोग पर्व्बमें भजन करनेको आये उन्होंमेंसे कितने
२१ यूनानी लोग थे। उन्होंने गालीलके बैतसैदा नगरके
रहनेहारे फिलिपके पास आके उससे बिन्ती किई कि
२२ हे प्रभु हम यीशुको देखने चाहते हैं। फिलिपने आके

अन्द्रियसे कहा और फिर अन्द्रिय और फिलिपने यीशुसे
कहा । यीशुने उनको उत्तर दिया कि मनुष्यके पुत्रकी २३
महिमाके प्रगट होनेकी घड़ी आ पहुंची है । मैं तुमसे २४
सच सच कहता हूं यदि गेहूंका दाना भूमिमें पड़के मर
न जाय तो वह अकेला रहता है परन्तु जो मर जाय तो
बहुत फल फलता है । जो अपने प्राणको प्यार करे सो २५
उसे खोवेगा और जो इस जगतमें अपने प्राणको अप्रिय
जाने सो अनन्त जीवनलों उसकी रक्षा करेगा । यदि २६
कोई मेरी सेवा करे तो मेरे पीछे हो लेवे और जहां मैं
रहूंगा तहां मेरा सेवक भी रहेगा . यदि कोई मेरी सेवा
करे तो पिता उसका आदर करेगा । अब मेरा मन २७
व्याकुल हुआ है और मैं क्या कहूं . हे पिता मुझे इस
घड़ीसे बचा . परन्तु मैं इसी लिये इस घड़ीलों आया
हूं। हे पिता अपने नामकी महिमा प्रगट कर . तब यह २८
आकाशबाणी हुई कि मैंने उसकी महिमा प्रगट किई है
और फिर प्रगट करूंगा। तब जो लोग खड़े हुए सुनते २९
थे उन्होंने कहा कि मेघ गर्जा . औरोंने कहा कोई स्वर्ग
दूत उससे बोला । इसपर यीशुने कहा यह शब्द मेरे ३०
लिये नहीं परन्तु तुम्हारे लिये हुआ। अब इस जगतका ३१
बिचार होता है . अब इस जगतका अध्यक्ष बाहर
निकाला जायगा। और मैं यदि पृथिवीपरसे ऊंचा किया ३२
जाऊं तो सभोंको अपनी ओर खींचूंगा । यह कहनेमें ३३
उसने पता दिया कि वह कैसी मृत्युसे मरनेपर था ।
लोगोंने उसको उत्तर दिया कि हमने व्यवस्थामेंसे सुना ३४
है कि खीष्ट सदालों रहेगा . तू क्योंकर कहता है कि

मनुष्यके पुत्रको ऊंचा किया जाना होगा . यह मनुष्य-
३५ का पुत्र कौन है। यीशुने उनसे कहा उजियाला अब
थोड़ी बेर तुम्हारे साथ है . जबलों उजियाला मिलता
है तबलों चलो न हो कि अंधकार तुम्हें घेरे . जो
अंधकारमें चलता है सो नहीं जानता मैं कहां जाता
३६ हूं। जबलों उजियाला मिलता है उजियालेपर बिश्वास
करो कि तुम ज्योतिके सन्तान होओ . यह बातें कहके
यीशु चला गया और उनसे छिपा रहा ।

३७ परन्तु यद्यपि उसने उनके साम्ने इतने आश्चर्य्य
कर्म्म किये थे तौभी उन्होंने उसपर बिश्वास न किया .
३८ कि यिशैयाह भविष्यद्वक्ताका बचन पूरा होवे जो उसने
कहा कि हे परमेश्वर किसने हमारे समाचारका
बिश्वास किया है और परमेश्वरकी भुजा किसपर
३९ प्रगट किई गई है। इस कारण वे बिश्वास न कर
४० सके क्योंकि यिशैयाहने फिर कहा . उसने उनके नेत्र
अंधे और उनका मन कठोर किया है ऐसा न हो कि
वे नेत्रोंसे देखें और मनसे बूझें और फिर जावें और
४१ मैं उन्हें चंगा करूं। जब यिशैयाहने उसका ऐश्वर्य्य
देखा और उसके विषयमें बोला तब उसने यह बातें
४२ कहीं। पर तौभी प्रधानोंमेंसे भी बहुतोंने उसपर बिश्वास
किया परन्तु फरीशियोंके कारण नहीं मान लिया न
४३ हो कि वे सभामेंसे निकाले जायें। क्योंकि मनुष्योंकी
प्रशंसा उनको ईश्वरकी प्रशंसासे अधिक प्रिय लगती
थी ।

४४ यीशुने पुकारके कहा जो मुझपर बिश्वास करता है

सो मुझपर नहीं परन्तु मेरे भेजनेहारेपर बिश्वास
करता है। और जो मुझे देखता है सो मेरे भेजनेहारेको ४५
देखता है। मैं जगतमें ज्योतिसा आया हूं कि जो कोई ४६
मुझपर बिश्वास करे सो अंधकारमें न रहे। और ४७
यदि कोई मेरी बातें सुनके बिश्वास न करे तो मैं उसे
दंडके योग्य नहीं ठहराता हूं क्योंकि मैं जगतको दंडके
योग्य ठहरानेको नहीं परन्तु जगतका त्राण करनेको
आया हूं। जो मुझे तुच्छ जाने और मेरी बातें ग्रहण न ४८
करे एक उसको दंडके योग्य ठहरानेहारा है. जो बचन
मैंने कहा है वही पिछले दिनमें उसे दंडके योग्य ठहरावे-
गा। क्योंकि मैंने अपनी ओरसे बात नहीं किई है परन्तु ४९
पिताने जिसने मुझे भेजा आपही मुझे आज्ञा दिई है कि
मैं क्या कहूं और क्या बोलूं। और मैं जानता हूं कि ५०
उसकी आज्ञा अनन्त जीवन है इसलिये मैं जो बोलता
हूं सो जैसा पिताने मुझसे कहा है वैसाही बोलता हूं।

१३ तेरहवां पर्व्व।

१ यीशुका अपने शिष्योंके पांवोंको धोना। १२ पांव धोनेका तात्पर्य्य। २१ यिहूदाके विषयमें यीशुका भविष्यद्वाक्य कहना। ३१ शिष्योंको उपदेश देना। ३६ पितरके उससे मुकर जानेकी भविष्यद्वाणी।

निस्तार पर्व्वके आगे यीशुने जाना कि मेरी घड़ी आ १
पहुंची है कि मैं इस जगतमेंसे पिताके पास जाऊं और
उसने अपने निज लोगोंको जो जगतमें थे प्यार करके
उन्हें अन्तलों प्यार किया। और बियारीके समयमें जब २
शैतान शिमोनके पुत्र यिहूदा इस्करियोतीके मनमें उसे
पकड़वानेका मत डाल चुका था. तब यीशु यह जानके ३
कि पिताने सब कुछ मेरे हाथोंमें दिया है और कि मैं

ईश्वरकी ओरसे निकल आया और ईश्वरके पास जाता
४ हूं . बियारीसे उठा और अपने कपड़े रख दिये और
५ अंगोछा लेके अपनी कमर बांधी । तब पात्रमें जल डालके
वह शिष्योंके पांव धोने लगा और जिस अंगोछेसे उसकी
६ कमर बंधी थी उससे पोंछने लगा । तब वह शिमोन
पितरके पास आया . उसने उससे कहा हे प्रभु क्या आप
७ मेरे पांव धोते हैं । यीशुने उसको उत्तर दिया कि जो मैं
करता हूं सो तू अब नहीं जानता है परन्तु इसके पीछे
८ जानेगा । पितरने उससे कहा आप मेरे पांव कभी न
धोइयेगा . यीशुने उसको उत्तर दिया कि जो मैं तुझे न
९ धोऊं तो मेरे संग तेरा कुछ अंश नहीं है । शिमोन पित-
रने उससे कहा हे प्रभु केवल मेरे पांव नहीं परन्तु मेरे
१० हाथ और सिर भी धोइये । यीशुने उससे कहा जो न-
हाया है उसको पांव धोने बिना और कुछ आवश्यक
नहीं है परन्तु वह सम्पूर्ण शुद्ध है और तुम लोग शुद्ध हो
११ परन्तु सब नहीं । वह तो अपने पकड़वानेहारेको जानता
था इसलिये उसने कहा तुम सब शुद्ध नहीं हो ।
१२ जब उसने उनके पांव धोके अपने कपड़े ले लिये थे
तब फिर बैठके उन्होंसे कहा क्या तुम जानते हो कि मैंने
१३ तुमसे क्या किया है । तुम मुझे हे गुरु और हे प्रभु पुका-
रते हो और तुम अच्छा कहते हो क्योंकि मैं वही हूं ।
१४ सो यदि मैंने प्रभु और गुरु होके तुम्हारे पांव धोये हैं
१५ तो तुम्हें भी एक दूसरेके पांव धोना उचित है । क्योंकि
मैंने तुमको नमूना दिया है कि जैसा मैंने तुमसे किया
१६ है तुम भी वैसा करो । मैं तुमसे सच सच कहता हूं

दास अपने स्वामीसे बड़ा नहीं और न प्रेरित अपने
भेजनेहारेसे बड़ा है। जो तुम यह बातें जानते हो यदि १७
उनपर चलो तो धन्य हो। मैं तुम सभोंके विषयमें १८
नहीं कहता हूं . जिन्हें मैंने चुना है उन्हें मैं जानता हूं.
परन्तु यह इसलिये है कि धर्म्मपुस्तकका बचन पूरा होवे
कि जो मेरे संग रोटी खाता है उसने मेरे बिरुद्ध अपनी
लात उठाई है। मैं अबसे इसके होनेके आगे तुमसे १९
कहता हूं कि जब वह हो जाय तब तुम विश्वास करो
कि मैं वही हूं। मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि जिस २०
किसीको मैं भेजूं उसको जो ग्रहण करता है सो मुझे
ग्रहण करता है और जो मुझे ग्रहण करता है सो मेरे
भेजनेहारेको ग्रहण करता है।

यह बातें कहके यीशु आत्मामें व्याकुल हुआ और २१
साक्षी देके बोला मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि तुम-
मेंसे एक मुझे पकड़वायगा। इसपर शिष्य लोग यह २२
सन्देह करते हुए कि वह किसके विषयमें बोलता है
एक दूसरेकी ओर ताकने लगे। परन्तु यीशुके शिष्यों- २३
मेंसे एक जिसे यीशु प्यार करता था उसकी गोदमें
बैठा हुआ था। सो शिमोन पितरने उसको सैन किया २४
कि पूछिये कौन है जिसके विषयमें आप बोलते हैं।
तब उसने यीशुकी छातीपर उठंगके उससे कहा हे प्रभु २५
कौन है। यीशुने उत्तर दिया वही है जिसको मैं यह २६
रोटीका टुकड़ा डुबोके देऊंगा. और उसने टुकड़ा डुबोके
शिमोनके पुत्र यिहूदा इस्करियोतीको दिया। उसी समयमें २७
टुकड़ा लेनेके पीछे शैतान उसमें पैठ गया. तब यीशुने

२८ उससे कहा जो तू करता है सो बहुत शीघ्र कर । परन्तु
बैठनेहारोंमेंसे किसीने न जाना कि उसने किस कारण
२९ यह बात उससे कही । क्योंकि यिहूदा थैली जो रखता
था इसलिये कितनोंने समझा कि यीशुने उससे कहा
पर्ब्बके लिये जो हमें आवश्यक है सो मोल ले अथवा
३० कंगालोंको कुछ दे । सो टुकड़ा लेनेके पीछे वह तुरन्त
बाहर गया . उस समय रात थी ।
३१ जब वह बाहर गया था तब यीशुने कहा अब मनुष्यके
पुत्रकी महिमा प्रगट होती है और ईश्वरकी महिमा
३२ उसके द्वारा प्रगट होती है । जो ईश्वरकी महिमा उसके
द्वारा प्रगट होती है तो ईश्वर भी अपनी ओरसे उसकी
३३ महिमा प्रगट करेगा और तुरन्त उसे प्रगट करेगा । हे
बालको मैं अब थोड़ी बेर तुम्हारे साथ हूं . तुम मुझे
ढूंढ़ोगे और जैसा मैंने यिहूदियोंसे कहा कि जहां मैं जाता
हूं तहां तुम नहीं आ सकते हो तैसा मैं अब तुमसे भी
३४ कहता हूं । मैं तुम्हें एक नई आज्ञा देता हूं कि एक दूस-
रेको प्यार करो . जैसा मैंने तुम्हें प्यार किया है तैसा तुम
३५ भी एक दूसरेको प्यार करो । जो तुम आपसमें प्यार करो
तो इसीसे सब लोग जानेंगे कि तुम मेरे शिष्य हो ।
३६ शिमोन पितरने उससे कहा हे प्रभु आप कहां
जाते हैं . यीशुने उसको उत्तर दिया कि जहां मैं जाता
हूं तहां तू अब मेरे पीछे नहीं आ सकता है परन्तु
३७ इसके उपरान्त तू मेरे पीछे आवेगा । पितरने उससे
कहा हे प्रभु मैं क्यों नहीं अब आपके पीछे आ सकता
३८ हूं . मैं आपके लिये अपना प्राण देऊंगा । यीशुने उसको

उत्तर दिया क्या तू मेरे लिये अपना प्राण देगा . मैं
तुझसे सच सच कहता हूं कि जबलों तू तीन बार
मुझसे न मुकरे तबलों मुर्ग न बोलेगा ।

१४ चौदहवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका अपने शिष्योंको शांति देना । ५ थोमाको सत्य मार्गके विषयमें उत्तर देना । ८ फिलिपको ईश्वर पिताको देखनेके विषयमें उत्तर देना । १५ शांति-दाताको भेजने और शिष्योंको स्थान और शांति देनेकी प्रतिज्ञा ।

तुम्हारा मन व्याकुल न होवे . ईश्वरपर विश्वास १
करो और मुझपर विश्वास करो। मेरे पिताके घरमें २
बहुतसे रहनेके स्थान हैं नहीं तो मैं तुमसे कहता .
मैं तुम्हारे लिये स्थान तैयार करने जाता हूं । और ३
जो मैं जाके तुम्हारे लिये स्थान तैयार करूं तो फिर
आके तुम्हें अपने यहां ले जाऊंगा कि जहां मैं रहूं
तहां तुम भी रहो । और मैं कहां जाता हूं सो तुम ४
जानते हो और मार्गको जानते हो ।

थोमाने उससे कहा हे प्रभु आप कहां जाते हैं सो ५
हम नहीं जानते हैं और मार्गको हम क्योंकर जान
सकें । यीशुने उससे कहा मैंही मार्ग औ सत्य औ जीवन ६
हूं . बिना मेरे द्वारासे कोई पिता पास नहीं पहुंचता है।
जो तुम मुझे जानते तो मेरे पिताको भी जानते और ७
अबसे तुम उसको जानते हो और उसको देखा है ।

फिलिपने उससे कहा हे प्रभु पिताको हमें दिखाइये ८
तो हमारे लिये यही बहुत है । यीशुने उससे कहा हे ९
फिलिप मैं इतने दिनसे तुम्हारे संग हूं और क्या तूने
मुझे नहीं जाना है . जिसने मुझे देखा है उसने पिताको
देखा है और तू क्योंकर कहता है कि पिताको हमें दि-

१० खाइये । क्या तू प्रतीति नहीं करता है कि मैं पितामें हूं
और पिता मुझमें है . जो बातें मैं तुमसे कहता हूं सो
अपनी ओरसे नहीं कहता हूं परन्तु पिता जो मुझमें
११ रहता है वही इन कामोंको करता है। मेरीही प्रतीति
करो कि मैं पितामें हूं और पिता मुझमें है नहीं तो
१२ कामोंहीके कारण मेरी प्रतीति करो। मैं तुमसे सच सच
कहता हूं कि जो मुझपर विश्वास करे जो काम मैं करता
हूं उन्हें वह भी करेगा और इनसे बड़े काम करेगा
१३ क्योंकि मैं अपने पिताके पास जाता हूं । और जो
कुछ तुम मेरे नामसे मांगोगे सोई मैं करूंगा इसलिये
१४ कि पुत्रके द्वारा पिताकी महिमा प्रगट होय । जो तुम
मेरे नामसे कुछ मांगो तो मैं उसे करूंगा ।
१५ जो तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरी आज्ञाओंको
१६ पालन करो । और मैं पितासे मांगूंगा और वह तुम्हें
दूसरा शांतिदाता देगा कि वह सदा तुम्हारे संग रहे .
१७ अर्थात सत्यताका आत्मा जिसे संसार ग्रहण नहीं कर
सकता है क्योंकि वह उसे नहीं देखता है और न उसे
जानता है . परन्तु तुम उसे जानते हो क्योंकि वह तुम्हारे
१८ संग रहता है और तुम्होंमें होगा। मैं तुम्हें अनाथ नहीं
१९ छोड़ूंगा मैं तुम्हारे पास आऊंगा । अब थोड़ी बेरमें
संसार मुझे फिर नहीं देखेगा परन्तु तुम मुझे देखोगे
२० क्योंकि मैं जीता हूं तुम भी जीओगे । उस दिन तुम
जानोगे कि मैं अपने पितामें हूं और तुम मुझमें हो
२१ और मैं तुममें हूं। जो मेरी आज्ञाओंको पाके उन्हें पालन
करता है वही है जो मुझे प्यार करता है और जो मुझे

प्यार करता है सो मेरे पिताका प्यारा होगा और मैं
उसे प्यार करूंगा और अपने तईं उसपर प्रगट करूंगा।
तब इस्करियोती नहीं परन्तु दूसरे यिहूदाने उससे २२
कहा हे प्रभु आप किसलिये अपने तईं हमोंपर प्रगट
करेंगे और संसारपर नहीं। यीशुने उसको उत्तर दिया २३
यदि कोई मुझे प्यार करे तो मेरी बातको पालन करेगा
और मेरा पिता उसे प्यार करेगा और हम उस पास
आवेंगे और उसके संग बास करेंगे। जो मुझे प्यार नहीं २४
करता है सो मेरी बातें पालन नहीं करता है और जो
बात तुम सुनते हो सो मेरी नहीं परन्तु पिताकी है
जिसने मुझे भेजा। यह बातें मैंने तुम्हारे संग रहते हुए २५
तुमसे कही हैं। परन्तु शांतिदाता अर्थात पवित्र आत्मा २६
जिसे पिता मेरे नामसे भेजेगा वह तुम्हें सब कुछ सिखा-
वेगा और सब कुछ जो मैंने तुमसे कहा है तुम्हें स्मरण
करावेगा। मैं तुम्हें शांति दे जाता हूं मैं अपनी शांति तुम्हें २७
देता हूं. जैसा जगत देता है तैसा मैं तुम्हें नहीं देता हूं.
तुम्हारा मन व्याकुल न होय और डर न जाय। तुमने २८
सुना कि मैंने तुमसे कहा मैं जाता हूं और तुम्हारे पास
फिर आऊंगा. जो तुम मुझे प्यार करते तो मैंने जो कहा
कि मैं पिता पास जाता हूं इससे तुम आनन्द करते
क्योंकि मेरा पिता मुझसे बड़ा है। और मैंने अब इसके २९
होनेके आगे तुमसे कहा है कि जब वह हो जाय तब तुम
बिश्वास करो। मैं तुम्हारे संग और बहुत बातें न करूंगा ३०
क्योंकि इस जगतका अध्यक्ष आता है और मुझमें उसका
कुछ नहीं है। परन्तु यह इसलिये है कि जगत जाने कि ३१

मैं पिताको प्यार करता हूं और जैसा पिताने मुझे
आज्ञा दिई तैसाही करता हूं. उठो हम यहांसे चलें ।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ दाख लता और उसकी डालियोंका दृष्टान्त । ९ शिष्योंसे यीशुका बड़ा प्रेम । १७
शिष्योंके सताये जानेकी भविष्यद्वाणी । २२ जगतके लोगोंके दोषका प्रमाण ।

१ मैं सच्ची दाख लता हूं और मेरा पिता किसान है।
२ मुझमें जो जो डाल नहीं फलती है वह उसे दूर करता
है और जो जो डाल फलती है वह उसे शुद्ध करता है
३ कि वह अधिक फल फले । तुम तो उस बचनके गुणसे
४ जो मैंने तुमसे कहा है शुद्ध हो चुके। तुम मुझमें रहो
और मैं तुममें . जैसे डाल जो वह दाख लतामें न रहे
तो आपसे फल नहीं फल सकती है तैसे तुम भी जो
५ मुझमें न रहो तो नहीं फल सकते हो । मैं दाख लता
हूं तुम लोग डालें हो . जो मुझमें रहता है और मैं
उसमें सो बहुत फल फलता है क्योंकि मुझसे अलग
६ तुम कुछ नहीं कर सकते हो । यदि कोई मुझमें न रहे
तो वह ऐसा फेंका जाता जैसे डाल फेंकी जाती और
सूख जाती और लोग ऐसी डालें बटोरके आगमें डालते
७ हैं और वे जल जाती हैं । जो तुम मुझमें रहो और
मेरी बातें तुममें रहें तो जो कुछ तुम्हारी इच्छा होय
८ सो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जायगा। तुम्हारे
बहुत फल फलनेमें मेरे पिताकी महिमा प्रगट होती
है और तुम मेरे शिष्य होओगे ।
९ जैसा पिताने मुझसे प्रेम किया है तैसा मैंने तुमसे प्रेम

किया है . मेरे प्रेममें रहो । जैसे मैंने अपने पिताकी १०
आज्ञाओंको पालन किया है और उसके प्रेममें रहता
हूं तैसे तुम जो मेरी आज्ञाओंको पालन करो तो मेरे
प्रेममें रहोगे । मैंने यह बातें तुमसे इसलिये कही हैं कि ११
मेरा आनन्द तुम्हेंामें रहे और तुम्हारा आनन्द सम्पूर्ण
हो जाय । यह मेरी आज्ञा है कि जैसा मैंने तुम्हें प्यार १२
किया है तैसा तुम एक दूसरेको प्यार करो । इससे बड़ा १३
प्रेम किसीका नहीं है कि कोई अपने मित्रोंके लिये अप-
ना प्राण देवे । तुम यदि सब काम करो जो मैं तुम्हें आज्ञा १४
देता हूं तो मेरे मित्र हो । मैं आगेको तुम्हें दास नहीं १५
कहता हूं क्योंकि दास नहीं जानता कि उसका स्वामी
क्या करता है परन्तु मैंने तुम्हें मित्र कहा है क्योंकि मैंने
जो अपने पितासे सुना है सो सब तुम्हें जनाया है । तुमने १६
मुझे नहीं चुना परन्तु मैंने तुम्हें चुना और तुम्हें ठहराया
कि तुम जाके फल फलो और तुम्हारा फल रहे और कि
तुम मेरे नामसे जो कुछ पितासे मांगो वह तुमको देवे ।
मैं तुम्हें इन बातोंकी आज्ञा देता हूं इसलिये कि तुम १७
एक दूसरेको प्यार करो । यदि संसार तुमसे बैर करता १८
है तुम जानते हो कि उन्होंने तुमसे पहिले मुझसे बैर
किया । जो तुम संसारके होते तो संसार अपनोंको प्यार १९
करता परन्तु तुम संसारके नहीं हो पर मैंने तुम्हें संसार-
मेंसे चुना है इसीलिये संसार तुमसे बैर करता है । जो २०
बचन मैंने तुमसे कहा कि दास अपने स्वामीसे बड़ा नहीं
है सो स्मरण करो . जो उन्होंने मुझे सताया है तो तुम्हें
भी सतावेंगे जो मेरी बातको पालन किया है तो तुम्हारी

२१ भी पालन करेंगे। परन्तु वे मेरे नामके कारण तुमसे यह
सब करेंगे क्योंकि वे मेरे भेजनेहारेको नहीं जानते हैं।
२२ जो मैं न आता और उनसे बात न करता तो
उन्हें पाप न होता परन्तु अब उन्हें उनके पापके लिये
२३ कोई बहाना नहीं है। जो मुझसे बैर करता है सो मेरे
२४ पितासे भी बैर करता है। जो मैं उन कामोंको जो
और किसीने नहीं किये हैं उन्होंमें न किये होता तो
उन्हें पाप न होता परन्तु अब उन्होंने देखके भी मुझसे
२५ और मेरे पितासे भी बैर किया है। पर यह इसलिये
है कि जो बचन उन्होंकी व्यवस्थामें लिखा है कि उन्होंने
२६ मुझसे अकारण बैर किया सो पूरा होवे। परन्तु
शांतिदाता जिसे मैं पिताकी ओरसे तुम्हारे पास भेजूंगा
अर्थात सत्यताका आत्मा जो पिताकी ओरसे निकलता
है जब आवेगा तब वह मेरे विषयमें साक्षी देगा।
२७ और तुम भी साक्षी देओगे क्योंकि तुम आरंभसे मेरे
संग रहे हो।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

१ शिष्योंके सताये जानेका भविष्यद्वाक्य। ५ यीशुके जानेसे शांतिदाताका आना। ८ शांतिदाताके आनेका प्रयोजन। १६ यीशुका अपने जानेके विषयमें शिष्योंको समझाना और शांति देना।

१ मैंने तुमसे यह बातें कही हैं कि तुम ठोकर न
२ खावो। वे तुम्हें सभामेंसे निकालेंगे हां वह समय आ-
ता है जिसमें जो कोई तुम्हें मार डालेगा सो समझेगा
३ कि मैं ईश्वरकी सेवा करता हूं। और वे तुमसे इसलिये
यह करेंगे कि उन्होंने न पिताको न मुझको जाना है।

परन्तु मैंने तुमसे यह बातें कही हैं कि जब वह समय ४
आवे तब तुम उन्हें स्मरण करो कि मैंने तुमसे कह
दिया . और मैं तुमसे यह बातें आरंभसे न बोला
क्योंकि मैं तुम्हारे संग था।

पर अब मैं अपने भेजनेहारेके पास जाता हूं और ५
तुममेंसे कोई नहीं मुझसे पूछता है कि आप कहां जाते
हैं। परन्तु मैंने जो यह बातें तुमसे कही हैं इसलिये ६
तुम्हारे मन शोकसे भर गये हैं। तौभी मैं तुमसे सच ७
बात कहता हूं तुम्हारे लिये अच्छा है कि मैं जाऊं क्यों-
कि जो मैं न जाऊं तो शांतिदाता तुम्हारे पास नहीं
आवेगा परन्तु जो मैं जाऊं तो उसे तुम्हारे पास
भेजूंगा।

और वह आके जगतको पापके विषयमें और धर्म्मके ८
विषयमें और बिचारके विषयमें समझावेगा। पापके ९
विषयमें यह कि वे मुझपर बिश्वास नहीं करते हैं।
धर्म्मके विषयमें यह कि मैं अपने पिता पास जाता हूं १०
और तुम मुझे फिर नहीं देखोगे। बिचारके विषयमें ११
यह कि इस जगतके अध्यक्षका बिचार किया गया है।
मुझे और भी बहुत कुछ तुमसे कहना है परन्तु तुम १२
अब नहीं सह सकते हो। पर वह जब आवेगा अर्थात १३
सत्यताका आत्मा तब तुम्हें सारी सच्चाईलों मार्ग बता-
वेगा क्योंकि वह अपनी ओरसे नहीं कहेगा परन्तु जो
कुछ सुनेगा सो कहेगा और वह आनेवाली बातें तुमसे
कह देगा। वह मेरी महिमा प्रगट करेगा क्योंकि वह १४
मेरी बातमेंसे लेके तुमसे कह देगा। जो कुछ पिताका १५

है सो सब मेरा है इसलिये मैंने कहा कि वह मेरी
बातमेंसे लेके तुमसे कह देगा ।
१६ थोड़ी बेरमें तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़ी
१७ बेरमें मुझे देखोगे क्योंकि मैं पिताके पास जाता हूं । तब
उसके शिष्योंमेंसे कोई कोई आपसमें बोले यह क्या है
जो वह हमसे कहता है कि थोड़ी बेरमें तुम मुझे नहीं
देखोगे और फिर थोड़ी बेरमें मुझे देखोगे. और यह
१८ कि मैं पिताके पास जाता हूं । सो उन्होंने कहा
यह थोड़ी बेरकी बात जो वह कहता है क्या है . हम
१९ नहीं जानते वह क्या कहता है । यीशुने जाना कि वे
मुझसे पूछा चाहते हैं और उनसे कहा मैं जो बोला
कि थोड़ी बेरमें तुम मुझे नहीं देखोगे और फिर थोड़ी
बेरमें मुझे देखोगे क्या तुम इसके विषयमें आपसमें
२० बिचार करते हो । मैं तुमसे सच सच कहता हूं कि
तुम रोओगे और बिलाप करोगे परन्तु संसार आ-
नन्दित होगा . तुम्हें शोक होगा परन्तु तुम्हारा शोक
२१ आनन्द हो जायगा । स्त्रीको जननेमें शोक होता है
क्योंकि उसका समय आ पहुंचा है परन्तु जब वह
बालक जन चुकी तब जगतमें एक मनुष्यके उत्पन्न
होनेके आनन्दके कारण अपने क्लेशको फिर स्मरण
२२ नहीं करती है । और तुम्हें तो अभी शोक होता है
परन्तु मैं तुम्हें फिर देखूंगा और तुम्हारा मन आन-
न्दित होगा और तुम्हारा आनन्द कोई तुमसे छीन
२३ न लेगा । और उस दिन तुम मुझसे कुछ नहीं
पूछोगे . मैं तुमसे सच सच कहता हूं जो कुछ तुम

मेरे नामसे पितासे मांगोगे वह तुमको देगा। अबलों २४
तुमने मेरे नामसे कुछ नहीं मांगा है. मांगो तो
पाओगे कि तुम्हारा आनन्द सम्पूर्ण होय। मैंने यह २५
बातें तुमसे दृष्टान्तोंमें कही हैं परन्तु समय आता है
जिसमें मैं तुमसे दृष्टान्तोंमें और नहीं कहूंगा परन्तु
खोलके तुम्हें पिताके विषयमें बताऊंगा। उस दिन २६
तुम मेरे नामसे मांगोगे और मैं तुमसे नहीं कहता हूं
कि मैं तुम्हारे लिये पितासे प्रार्थना करूंगा। क्योंकि २७
पिता आपही तुम्हें प्यार करता है इसलिये कि तुमने
मुझे प्यार किया है और यह बिश्वास किया है कि
मैं ईश्वरकी ओरसे निकल आया। मैं पिताकी २८
ओरसे निकलके जगतमें आया हूं. फिर जगतको
छोड़के पिता पास जाता हूं। उसके शिष्योंने उससे २९
कहा देखिये अब तो आप खोलके कहते हैं और कुछ
दृष्टान्त नहीं कहते हैं। अब हमें ज्ञान हुआ कि आप ३०
सब कुछ जानते हैं और आपको प्रयोजन नहीं कि
कोई आपसे पूछे. इससे हम बिश्वास करते हैं कि
आप ईश्वरकी ओरसे निकल आये। यीशुने उनको ३१
उत्तर दिया क्या तुम अब बिश्वास करते हो। देखो ३२
समय आता है और अभी आया है जिसमें तुम सब
तितर बितर होके अपने अपने स्थानको जाओगे
और मुझे अकेला छोड़ोगे. तौभी मैं अकेला नहीं हूं
क्योंकि पिता मेरे संग है। मैंने यह बातें तुमसे कही ३३
हैं इसलिये कि मुझमें तुमको शांति होय. जगतमें तुम्हें
क्लेश होगा परन्तु ढाढ़स बांधो मैंने जगतको जीता है।

१७ सत्रहवां पर्व्व ।

१ यीशुका अपने लिये और प्रेरितों और सब शिष्योंके लिये पितासे प्रार्थना करना ।

१ यह बातें कहके यीशुने अपनी आंखें स्वर्गकी ओर
उठाईं और कहा हे पिता घड़ी आ पहुंची है. अपने
पुत्रकी महिमा प्रगट कर कि तेरा पुत्र भी तेरी महिमा
२ प्रगट करे। क्योंकि तूने उसको सब प्राणियोंपर अधि-
कार दिया कि जिन्हें तूने उसको दिया है उन सभोंको
३ वह अनन्त जीवन देवे। और अनन्त जीवन यह है
कि वे तुझको जो अद्वैत सत्य ईश्वर है और यीशु
४ ख्रीष्टको जिसे तूने भेजा है पहचानें। मैंने पृथिवीपर
तेरी महिमा प्रगट किई है. जो काम तूने मुझे करनेको
५ दिया सो मैंने पूरा किया है। और अभी हे पिता तेरे
संग जगतके होनेके आगे जो मेरी महिमा थी उस
महिमासे तू अपने संग मेरी महिमा प्रगट कर।
६ जिन मनुष्योंको तूने जगतमेंसे मुझको दिया है
उन्होंपर मैंने तेरा नाम प्रगट किया है. वे तेरे थे
और तूने उन्हें मुझको दिया और उन्होंने तेरे बचनको
७ पालन किया है। अब उन्होंने जान लिया है कि सब
८ कुछ जो तूने मुझको दिया है तेरी ओरसे है। क्योंकि
वह बातें जो तूने मुझको दिई हैं मैंने उन्होंको दिई हैं
और उन्होंने उनको ग्रहण किया है और निश्चय जान
लिया है कि मैं तेरी ओरसे निकल आया और बिश्वास
९ किया है कि तूने मुझे भेजा। मैं उन्होंके लिये प्रार्थना
करता हूं. मैं संसारके लिये नहीं परन्तु जिन्हें तूने

मुझको दिया है उन्हींके लिये प्रार्थना करता हूं क्योंकि
वे तेरे हैं। और जो कुछ मेरा है सो सब तेरा है और 10
जो तेरा है सो मेरा है और मेरी महिमा उसमें प्रगट
हुई है। मैं अब जगतमें नहीं रहूंगा परन्तु ये जगतमें 11
रहेंगे और मैं तेरे पास आता हूं. हे पवित्र पिता
जिन्हें तूने मुझको दिया है उनको अपने नाममें रक्षा
कर कि जैसे हम एक हैं तैसे वे एक होवें। जब मैं उनके 12
संग जगतमें था तब मैंने तेरे नाममें उनकी रक्षा किई.
जिन्हें तूने मुझको दिया है उनकी मैंने रक्षा किई और
उनमेंसे कोई नाश नहीं हुआ केवल बिनाशका पुत्र
जिस्तें धर्म्मपुस्तकका बचन पूरा होवे। अब मैं तेरे 13
पास आता हूं और मैं जगतमें यह बातें कहता हूं कि
वे मेरा आनन्द अपनेमें सम्पूर्ण पावें। मैंने तेरा बचन 14
उन्हेंको दिया है और संसारने उनसे बैर किया है
क्योंकि जैसा मैं संसारका नहीं हूं तैसे वे संसारके नहीं
हैं। मैं यह प्रार्थना नहीं करता हूं कि तू उन्हें जगतमेंसे 15
ले जा परन्तु यह कि तू उन्हें उस दुष्टसे बचा रख।
जैसा मैं संसारका नहीं हूं तैसे वे संसारके नहीं हैं। 16
अपनी सच्चाईसे उन्हें पवित्र कर. तेरा बचन सच्चाई है। 17
जैसे तूने मुझे जगतमें भेजा तैसे मैंने उन्हें भी जगतमें 18
भेजा है। और उनके लिये मैं अपनेको पवित्र करता 19
हूं कि वे भी सच्चाईसे पवित्र किये जावें।

और मैं केवल इनके लिये नहीं परन्तु उनके लिये 20
भी जो इनके बचनके द्वारासे मुझपर बिश्वास करेंगे
प्रार्थना करता हूं कि वे सब एक होवें. जैसा तू हे पिता 21

मुझमें है और मैं तुझमें हूं तैसे वे भी हममें एक होवें
इसलिये कि जगत बिश्वास करे कि तूने मुझे भेजा।
२२ और वह महिमा जो तूने मुझको दिई है मैंने उनको
२३ दिई है कि जैसे हम एक हैं तैसे वे एक होवें. मैं उनमें
और तू मुझमें कि वे एकमें सिद्ध होवें और कि जगत
जाने कि तूने मुझे भेजा और जैसा मुझे प्यार किया
२४ तैसा उन्हें प्यार किया है। हे पिता मैं चाहता हूं कि
जहां मैं रहूं तहां वे भी जिन्हें तूने मुझको दिया है
मेरे संग रहें कि वे मेरी महिमाको देखें जो तूने मुझ-
को दिई क्योंकि तूने जगतकी उत्पत्तिके आगे मुझे प्यार
२५ किया। हे धर्म्मी पिता संसार तुझे नहीं जानता है
परन्तु मैं तुझे जानता हूं और ये लोग जानते हैं कि
२६ तूने मुझे भेजा। और मैंने तेरा नाम उनको जनाया
है और जनाऊंगा कि वह प्यार जिससे तूने मुझे प्यार
किया उनमें रहे और मैं उनमें रहूं।

१८ अठारहवां पर्ब्ब ।

१ यिहूदाका यीशुको पकड़वाना। १२ प्यादोंका उसे ले जाना। १५ पितर और योहनका उसके पीछे हो लेना। १९ महायाजकके आगे उसका बिचार होना। २५ पितरका उससे मुकर जाना। २८ उसका पिलातके हाथ सौंपा जाना। ३३ पिलातका उसे बिचार करना और छोड़नेकी इच्छा करना।

१ यीशु यह बातें कहके अपने शिष्योंके संग किद्रोन
नालेके उस पार निकल गया जहां एक बारी थी जिसमें
२ वह और उसके शिष्य गये। उसका पकड़वानेहारा
यिहूदा भी वह स्थान जानता था क्योंकि यीशु बारंबार
३ वहां अपने शिष्योंके संग एकट्ठा हुआ था। तब यिहूदा
पलटनको और प्रधान याजकों औ फरीशियोंकी ओरसे

प्यादोंको लेके दीपकों और मशालों और हथियारोंको
लिये हुए वहां आया । सो यीशु सब बातें जो उसपर ४
आनेवाली थीं जानके निकला और उनसे कहा तुम
किसको ढूंढ़ते हो । उन्होंने उसको उत्तर दिया कि ५
यीशु नासरीको . यीशुने उनसे कहा मैं हूं . और
उसका पकड़वानेहारा यिहूदा भी उनके संग खड़ा था ।
ज्योंही उसने उनसे कहा मैं हूं त्योंही वे पीछे हटके ६
भूमिपर गिर पड़े । तब उसने फिर उनसे पूछा तुम ७
किसको ढूंढ़ते हो . वे बोले यीशु नासरीको । यीशुने ८
उत्तर दिया मैंने तुमसे कहा कि मैं हूं सो जो तुम मुझे
ढूंढ़ते हो तो इन्होंको जाने देओ । यह इसलिये हुआ ९
कि जो बचन उसने कहा था कि जिन्हें तूने मुझको
दिया है उनमेंसे मैंने किसीको न खोया सो पूरा होवे ।
शिमोन पितरके पास खड्ग था सो उसने उसे खींचके १०
महायाजकके दासको मारा और उसका दहिना कान
काट डाला . उस दासका नाम मलक था । तब यीशुने ११
पितरसे कहा अपना खड्ग काठीमें रख . जो कटोरा
पिताने मुझको दिया है क्या मैं उसे न पीऊं ।

तब उस पलटनने और सहस्रपतिने और यिहूदि- १२
योंके प्यादोंने यीशुको पकड़के बांधा . और पहिले उसे १३
हन्नसके पास ले गये क्योंकि कियाफा जो उस बरसका
महायाजक था उसका वह ससुर था । कियाफा वह १४
था जिसने यिहूदियोंको परामर्श दिया कि एक मनुष्य-
का हमारे लोगके लिये मरना अच्छा है ।

शिमोन पितर और दूसरा शिष्य यीशुके पीछे हो १५

लिये . वह शिष्य महायाजकका जान पहचान था और
१६ यीशुके संग महायाजकके अंगनेके भीतर गया। परन्तु
पितर बाहर द्वारपर खड़ा रहा सो दूसरा शिष्य जो
महायाजकका जान पहचान था बाहर गया और द्वार-
१७ पालिनसे कहके पितरको भीतर ले आया। वह दासी
अर्थात द्वारपालिन पितरसे बोली क्या तू भी इस मनुष्य-
१८ के शिष्योंमेंसे एक है . उसने कहा मैं नहीं हूं। दास
और प्यादे लोग जाड़ेके कारण कोयलेकी आग सुल-
गाके खड़े हुए तापते थे और पितर उनके संग खड़ा
हो तापने लगा ।

१९ तब महायाजकने यीशुसे उसके शिष्योंके विषयमें
२० और उसके उपदेशके विषयमें पूछा । यीशुने उसको
उत्तर दिया कि मैंने जगतसे खोलके बातें किईं मैंने
सभाके घरमें और मन्दिरमें जहां यिहूदी लोग नित्य
एकट्ठे होते हैं सदा उपदेश किया और गुप्तमें कुछ नहीं
२१ कहा । तू मुझसे क्यों पूछता है . जिन्होंने सुना उन्होंसे
पूछ ले कि मैंने उनसे क्या कहा . देख वे जानते हैं कि
२२ मैंने क्या कहा । जब यीशुने यह कहा तब प्यादोंमेंसे
एक जो निकट खड़ा था उसको थपेड़ा मारके बोला क्या
२३ तू महायाजकको इस रीतिसे उत्तर देता है। यीशुने उसे
उत्तर दिया यदि मैंने बुरा कहा तो उस बुराईकी साक्षी
२४ दे परन्तु यदि भला कहा तो मुझे क्यों मारता है। हन्नस-
ने यीशुको बंधे हुए कियाफा महायाजकके पास भेजा ।

२५ शिमोन पितर खड़ा हुआ आग तापता था . तब
उन्होंने उससे कहा क्या तू भी उसके शिष्योंमेंसे एक है .

उसने मुकरके कहा मैं नहीं हूं। महायाजकके दासोंमेंसे २६
एक दास जो उस मनुष्यका कुटुंब था जिसका कान पित-
रने काट डाला बोला क्या मैंने तुझे बारीमें उसके संग न
देखा। पितर फिर मुकर गया और तुरन्त मुर्ग बोला। २७
तब भोर हुआ और वे यीशुको कियाफाके पाससे २८
अध्यक्षभवनपर ले गये परन्तु वे आप अध्यक्षभवनके
भीतर नहीं गये इसलिये कि अशुद्ध न होवें परन्तु
निस्तार पर्व्बका भोजन खावें। सो पिलात उन पास २९
निकल आया और कहा तुम इस मनुष्यपर क्या दोष
लगाते हो। उन्होंने उसको उत्तर दिया कि जो यह ३०
कुकर्म्मी न होता तो हम उसे आपके हाथ न सोंपते।
पिलातने उनसे कहा तुम उसको लेओ और अपनी ३१
व्यवस्थाके अनुसार उसका बिचार करो. यिहूदियोंने
उससे कहा किसीको बध करनेका हमें अधिकार नहीं
है। यह इसलिये हुआ कि यीशुका बचन जिसे ३२
कहनेमें उसने पता दिया कि वह कैसी मृत्युसे मर-
नेपर था पूरा होवे।

तब पिलात फिर अध्यक्षभवनके भीतर गया और ३३
यीशुको बुलाके उससे कहा क्या तू यिहूदियोंका राजा
है। यीशुने उसको उत्तर दिया क्या आप अपनी ओर- ३४
से यह बात कहते हैं अथवा औरोंने मेरे विषयमें
आपसे कही। पिलातने उत्तर दिया क्या मैं यिहूदी हूं. ३५
तेरेही लोगोंने और प्रधान याजकोंने तुझे मेरे हाथमें
सोंपा. तूने क्या किया है। यीशुने उत्तर दिया कि मेरा ३६
राज्य इस जगतका नहीं है. जो मेरा राज्य इस जगत-

का होता तो मेरे सेवक लड़ते जिस्तें मैं यिहूदियोंके
हाथमें न सोंपा जाता . परन्तु अब मेरा राज्य यहांका
३७ नहीं है । पिलातने उससे कहा फिर भी तू राजा है.
यीशुने उत्तर दिया कि आप ठीक कहते हैं क्योंकि मैं
राजा हूं . मैंने इसलिये जन्म लिया है और इसलिये
जगतमें आया हूं कि सत्यपर साक्षी देऊं . जो कोई
३८ सत्यकी ओर है सो मेरा शब्द सुनता है । पिलातने
उससे कहा सत्य क्या है और यह कहके फिर यिहूदियोंके
पास निकल गया और उनसे कहा मैं उसमें कुछ दोष
३९ नहीं पाता हूं । परन्तु तुम्हारी यह रीति है कि मैं
निस्तार पर्ब्बमें तुम्हारे लिये एक जनको छोड़ देऊं सो
क्या तुम चाहते हो कि मैं तुम्हारे लिये यिहूदियोंके
४० राजाको छोड़ देऊं । तब सभोंने फिर पुकारा कि
इसको नहीं परन्तु बरब्बाको . और बरब्बा डाकू था ।

१९ उनीसवां पर्ब्ब ।

१ योद्धाओंका यीशुको अपमान करना । ४ पिलातका उसे छोड़नेकी युक्ति करनेके पीछे घातकोंके हाथ सोंपना । १७ उसका क्रूशपर चढ़ाया जाना । २३ उसके वस्त्रका बांटा जाना । २५ उसका अपनी माताके लिये चिन्ता करना । २८ उसका सिरका पीना और प्राण त्यागना । ३१ योद्धाका उसके पंजरमें बर्छा मारना । ३८ यूसफका उसे कबरमें रखना ।

१
२ तब पिलातने यीशुको लेके उसे कोड़े मारे । और
योद्धाओंने कांटोंका मुकुट गून्थके उसके सिरपर रखा
३ और उसे बैजनी वस्त्र पहिराया . और कहा हे यिहू-
दियोंके राजा प्रणाम और उसे थपेड़े मारे ।

४ तब पिलातने फिर बाहर निकलके लोगोंसे कहा
देखो मैं उसे तुम्हारे पास बाहर लाता हूं कि तुम जानो

कि मैं उसमें कुछ दोष नहीं पाता हूं । सो यीशु कांटों- ५
का मुकुट और बैंजनी बस्त्र पहिने हुए बाहर निकला
और उसने उन्होंसे कहा देखो यही मनुष्य है । जब ६
प्रधान याजकों और प्यादोंने उसे देखा तब उन्होंने
पुकारा कि उसे क्रूशपर चढ़ाइये क्रूशपर चढ़ाइये .
पिलातने उनसे कहा तुम उसे लेके क्रूशपर चढ़ाओ
क्योंकि मैं उसमें दोष नहीं पाता हूं । यिहूदियोंने उस- ७
को उत्तर दिया कि हमारी भी व्यवस्था है और हमारी
व्यवस्थाके अनुसार वह बध होनेके योग्य है क्योंकि
उसने अपनेको ईश्वरका पुत्र कहा । जब पिलातने यह ८
बात सुनी तब और भी डर गया . और फिर अध्यक्ष- ९
भवनके भीतर गया और यीशुसे बोला तू कहांसे है .
परन्तु यीशुने उसको उत्तर न दिया । पिलातने उससे १०
कहा क्या तू मुझसे नहीं बोलता क्या तू नहीं
जानता है कि तुझे क्रूशपर चढ़ानेका मुझको अधिकार
है और तुझे छोड़ देनेका मुझको अधिकार है । यीशुने ११
उत्तर दिया जो आपको ऊपरसे न दिया जाता तो
आपको मुझपर कुछ अधिकार न होता इसलिये जो
मुझे आपके हाथमें पकड़वाता है उसको अधिक पाप है ।
इससे पिलातने उसको छोड़ देने चाहा परन्तु यिहूदि- १२
योंने पुकारके कहा जो आप इसको छोड़ देवें तो आप
कैसरके मित्र नहीं हैं . जो कोई अपनेको राजा कहता
है सो कैसरके बिरुद्ध बोलता है । यह बात सुनके पिलात १३
यीशुको बाहर लाया और जो स्थान चबूतरा परन्तु
इब्रीय भाषामें गबथा कहावता है उस स्थानमें बिचार

१४ आसनपर बैठा। निस्तार पर्व्वकी तैयारीका दिन और
दो पहरके निकट था . तब उसने यिहूदियोंसे कहा देखो
१५ तुम्हारा राजा । परन्तु उन्होंने पुकारा कि ले जाओ
ले जाओ उसे क्रूशपर चढ़ाओ . पिलातने उनसे कहा
क्या मैं तुम्हारे राजाको क्रूशपर चढ़ाऊंगा . प्रधान याज-
कोंने उत्तर दिया कि कैसरको छोड़ हमारा कोई राजा
१६ नहीं है । तब उसने यीशुको क्रूशपर चढ़ाये जानेको
उन्होंके हाथ सौंपा . तब वे उसे पकड़के ले गये ।
१७ और यीशु अपना क्रूश उठाये हुए उस स्थानको जो
खोपड़ीका स्थान कहावता और इब्रीय भाषामें गलगथा
१८ कहावता है निकल गया । वहां उन्होंने उसको और
उसके संग दो और मनुष्योंको क्रूशोंपर चढ़ाया एकको
१९ इधर और एकको उधर और बीचमें यीशुको । और
पिलातने दोषपत्र लिखके क्रूशपर लगाया और लिखी
२० हुई बात यह थी यीशु नासरी यिहूदियोंका राजा। यह
दोषपत्र बहुत यिहूदियोंने पढ़ा क्योंकि वह स्थान जहां
यीशु क्रूशपर चढ़ाया गया नगरके निकट था और पत्र
इब्रीय औ यूनानीय औ रोमीय भाषामें लिखा हुआ
२१ था । तब यिहूदियोंके प्रधान याजकोंने पिलातसे कहा
यिहूदियोंका राजा मत लिखिये परन्तु यह कि उसने
२२ कहा मैं यिहूदियोंका राजा हूं । पिलातने उत्तर दिया
कि मैंने जो लिखा है सो लिखा है ।
२३ जब योद्धाओंने यीशुको क्रूशपर चढ़ाया था तब
उसके कपड़े लेके चार भाग किये हर एक योद्धाके
लिये एक भाग . और अंगा भी लिया परन्तु अंगा

बिन सीअन ऊपरसे नीचेलों बिना हुआ था। इसलिये २४
उन्होंने आपसमें कहा हम इसको न फाड़ें परन्तु उस-
पर चिट्ठियां डालें कि वह किसका होगा . जिस्तें
धर्म्मपुस्तकका बचन पूरा होवे कि उन्होंने मेरे कपड़े
आपसमें बांट लिये और मेरे बस्त्रपर चिट्ठियां डालीं . सो
योद्धाओंने यह किया।

परन्तु यीशुकी माता और उसकी माताकी बहिन २५
मरियम जो क्लियोपाकी स्त्री थी और मरियम मगद-
लीनी उसके क्रूशके निकट खड़ी थीं। सो यीशुने अपनी २६
माताको और उस शिष्यको जिसे वह प्यार करता था
उसके निकट खड़े हुए देखके अपनी मातासे कहा हे
नारी देखिये आपका पुत्र। तब उसने उस शिष्यसे २७
कहा देख तेरी माता . और उस समयसे उस शिष्यने
उसको अपने घरमें ले लिया।

इसके पीछे यीशुने यह जानके कि अब सब कुछ २८
हो चुका जिस्तें धर्म्मपुस्तकका बचन पूरा हो जाय
इसलिये कहा मैं पियासा हूं। सिरकेसे भरा हुआ एक २९
बर्त्तन धरा था सो उन्होंने इस्पंजको सिरकेमें भिंगाके
एसोबके नलपर रखके उसके मुंहमें लगाया। जब ३०
यीशुने सिरका लिया था तब कहा पूरा हुआ है और
सिर झुकाके प्राण त्यागा।

वह दिन तैयारीका दिन था और वह बिश्रामवार ३१
बड़ा दिन था इस कारण जिस्तें लोथें बिश्रामके दिन
क्रूशपर न रहें यिहूदियोंने पिलातसे बिन्ती किई कि
उनकी टांगें तोड़ी जायें और वे उतारे जायें। सो यो- ३२

द्धाओंने आके पहिलेकी टांगें तोड़ीं तब दूसरेकी भी
३३ जो यीशुके संग क्रूशपर चढ़ाये गये थे । परन्तु यीशु
पास आके जब उन्होंने देखा कि वह मर चुका है तब
३४ उसकी टांगें न तोड़ीं । परन्तु योद्धाओंमेंसे एकने बर्छेसे
उसका पंजर बेधा और तुरन्त लोहू और पानी निकला ।
३५ इसके देखनेहारेने साक्षी दिई है और उसकी साक्षी
सत्य है और वह जानता है कि सत्य कहता है इस-
३६ लिये कि तुम विश्वास करो । क्योंकि यह बातें इस-
लिये हुईं कि धर्म्मपुस्तकका बचन पूरा होवे कि
३७ उसकी कोई हड्डी नहीं तोड़ी जायगी । और फिर
धर्म्मपुस्तकका दूसरा एक बचन है कि जिसे उन्होंने
बेधा उसपर वे दृष्टि करेंगे ।

३८ इसके पीछे अरिमथिया नगरके यूसफने जो यीशु-
का शिष्य था परन्तु यिहूदियोंके डरसे इसको छिपाये
रहता था पिलातसे बिन्ती किई कि मैं यीशुकी लोथको
ले जाऊं और पिलातने आज्ञा दिई सो वह आके
३९ यीशुकी लोथ ले गया । निकोदीम भी जो पहिले रातको
यीशु पास आया था पचास सेरके अटकल मिलाये
४० हुए गन्धरस और एलवा लेके आया । तब उन्होंने
यीशुकी लोथको लिया और यिहूदियोंके गाड़नेकी रीति-
४१ के अनुसार उसे सुगन्धके संग चद्दरमें लपेटा । उस
स्थानपर जहां यीशु क्रूशपर चढ़ाया गया एक बारी थी
और उस बारीमें एक नई कबर जिसमें कोई कभी नहीं
४२ रखा गया था । सो यिहूदियोंकी तैयारीके दिनके कारण
उन्होंने यीशुको वहां रखा क्योंकि वह कबर निकट थी ।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

१ यीशुके जी उठनेका शिष्योंपर प्रगट होना । १० उसका मरियम मगदलीनीको दर्शन देना । १९ शिष्योंको दर्शन देना और उन्हें प्रेरण करना । २४ थोमाको अपने जी उठनेका प्रमाण देना । ३० सुसमाचार लिखनेका अभिप्राय ।

अठवारेके पहिले दिन मरियम मगदलीनी भोरको १
अंधियारा रहतेही कबरपर आई और पत्थरको कबरसे
सरकाया हुआ देखा । तब वह दौड़ी और शिमोन २
पितर और उस दूसरे शिष्यके पास जिसे यीशु प्यार
करता था आके उनसे बोली वे प्रभुको कबरमेंसे ले
गये हैं और हम नहीं जानतीं कि उसे कहां रखा है।
तब पितर और वह दूसरा शिष्य निकलके कबरपर ३
आये । वे दोनों एक संग दौड़े और दूसरा शिष्य ४
पितरसे शीघ्र दौड़के आगे बढ़ा और कबरपर पहिले
पहुंचा । और उसने झुकके चद्दर पड़ी हुई देखी तौभी ५
वह भीतर नहीं गया । तब शिमोन पितर उसके ६
पीछेसे आ पहुंचा और कबरके भीतर गया और चद्दर
पड़ी हुई देखी . और वह अंगोछा जो उसके सिरपर ७
था चद्दरके संग पड़ा हुआ नहीं परन्तु अलग एक
स्थानमें लपेटा हुआ देखा । तब दूसरा शिष्य भी जो ८
कबरपर पहिले पहुंचा भीतर गया और देखके बिश्वास
किया । वे तो अबलों धर्म्मपुस्तकका बचन नहीं ९
समझते थे कि उसको मृतकोंमेंसे जी उठना होगा ।
तब दोनों शिष्य फिर अपने घर चले गये । १०
परन्तु मरियम रोती हुई कबरके पास बाहर खड़ी ११
रही और रोते रोते कबरकी ओर झुकी . और दो १२

दूतोंको उजला बस्त्र पहिने हुए देखा कि जहां यीशुकी
लोथ पड़ी थी तहां एक सिरहाने और दूसरा पैताने
१३ बैठा था । उन्होंने उससे कहा हे नारी तू क्यों रोती
है . वह उनसे बोली वे मेरे प्रभुको ले गये हैं और मैं
१४ नहीं जानती कि उसे कहां रखा है । यह कहके उसने
पीछे फिरके यीशुको खड़े देखा और नहीं जानती थी
१५ कि यीशु है । यीशुने उससे कहा हे नारी तू क्यों रोती
है किसको ढूंढ़ती है . उसने यह समझके कि माली
है उससे कहा हे प्रभु जो आपने उसको उठा लिया है
तो मुझसे कहिये कि उसे कहां रखा है और मैं उसे ले
१६ जाऊंगी । यीशुने उससे कहा हे मरियम . वह पीछे
१७ फिरके उससे बोली हे रब्बूनी अर्थात हे गुरु । यीशुने
उससे कहा मुझे मत छू क्योंकि मैं अबलों अपने पिता-
के पास नहीं चढ़ गया हूं परन्तु मेरे भाइयोंके पास
जाके उनसे कह दे कि मैं अपने पिता औ तुम्हारे पिता
और अपने ईश्वर औ तुम्हारे ईश्वर पास चढ़ जाता
१८ हूं । मरियम मगदलीनीने जाके शिष्योंको सन्देश दिया
कि मैंने प्रभुको देखा है और उसने मुझसे यह बातें कहीं ।
१९ अठवारेके उस पहिले दिनको सांझ होते हुए और
जहां शिष्य लोग एकट्ठे हुए थे तहां द्वार यिहूदियोंके
डरके मारे बन्द होते हुए यीशु आया और बीचमें
२० खड़ा होके उनसे कहा तुम्हारा कल्याण होय । और
यह कहके उसने अपने हाथ और अपना पंजर उनको
दिखाये . तब शिष्य लोग प्रभुको देखके आनन्दित हुए ।
२१ यीशुने फिर उनसे कहा तुम्हारा कल्याण होय . जैसे

पिताने मुझे भेजा है तैसे मैं भी तुम्हें भेजता हूं। यह २२
कहके उसने फूंक दिया और उनसे कहा पवित्र आत्मा
लेओ। जिन्होंके पाप तुम क्षमा करो वे उनके लिये २३
क्षमा किये जाते हैं. जिन्होंके तुम रखो वे रखे हुए हैं।
परन्तु बारहोंमेंसे एक जन अर्थात थोमा जो दिदुम २४
कहावता है जब यीशु आया तब उनके संग नहीं था।
सो दूसरे शिष्योंने उससे कहा हमने प्रभुको देखा है. २५
उसने उनसे कहा जो मैं उसके हाथोंमें कीलोंका चिन्ह
न देखूं और कीलोंके चिन्हमें अपनी उंगली न डालूं
और उसके पंजरमें अपना हाथ न डालूं तो मैं बिश्वास
न करूंगा। आठ दिनके पीछे उसके शिष्य लोग फिर २६
घरके भीतर थे और थोमा उनके संग था. तब द्वार
बन्द होते हुए यीशु आया और बीचमें खड़ा होके
कहा तुम्हारा कल्याण होय। तब उसने थोमासे कहा २७
अपनी उंगली यहां लाके मेरे हाथोंको देख और
अपना हाथ लाके मेरे पंजरमें डाल और अबिश्वासी
नहीं परन्तु बिश्वासी हो। थोमाने उसको उत्तर दिया २८
कि हे मेरे प्रभु और मेरे ईश्वर। यीशुने उससे कहा २९
हे थोमा तूने मुझे देखा है इसलिये बिश्वास किया है.
धन्य वे हैं जो बिन देखे बिश्वास करें।
यीशुने अपने शिष्योंके आगे बहुत और आश्चर्य्य ३०
कर्म्म भी किये जो इस पुस्तकमें नहीं लिखे हैं। परन्तु ३१
ये लिखे गये हैं इसलिये कि तुम बिश्वास करो कि
यीशु जो है सो ईश्वरका पुत्र ख्रीष्ट है और कि बिश्वास
करनेसे तुमको उसके नामसे जीवन होय।

२१ इक्कईसवां पर्ब्ब ।

१ यीशुका तिबरियाके समुद्रके तीरपर शिष्योंको दर्शन देना । १५ पितरके संग उसकी बातचीत । २० योहनके विषयमेंकी कथा । २४ सुसमाचारकी समाप्ति ।

१ इसके पीछे यीशुने फिर अपने तईं तिबरियाके
समुद्रके तीरपर शिष्योंको दिखाया और इस रीतिसे
२ दिखाया । शिमोन पितर और थोमा जो दिदुम कहा-
वता है और गालीलके काना नगरका नथनेल और
जबदीके दोनों पुत्र और उसके शिष्योंमेंसे दो और जन
३ एक संग थे । शिमोन पितरने उनसे कहा मैं मछली
पकड़नेको जाता हूं . वे उससे बोले हम भी तेरे संग
जायेंगे . सो वे निकलके तुरन्त नावपर चढ़े और उस
४ रात कुछ नहीं पकड़ा । जब भोर हुआ तब यीशु तीर-
पर खड़ा हुआ तौभी शिष्य लोग नहीं जानते थे कि
५ यीशु है । तब यीशुने उनसे कहा हे लड़को क्या तुम्हारे
पास कुछ खानेको है . उन्होंने उसको उत्तर दिया कि
६ नहीं । उसने उनसे कहा नावकी दाहिनी ओर जाल
डालो तो पाओगे . सो उन्होंने डाला और अब मछ-
७ लियोंके झुंडके कारण वे उसे खींच न सके । इसलिये
वह शिष्य जिसे यीशु प्यार करता था पितरसे बोला
यह तो प्रभु है . शिमोन पितरने जब सुना कि प्रभु है
तब कमरमें अंगरखा कस लिया क्योंकि वह नंगा था
८ और समुद्रमें कूद पड़ा । परन्तु दूसरे शिष्य लोग नाव-
पर मछलियोंका जाल घसीटते हुए चले आये क्योंकि
९ वे तीरसे दूर नहीं प्राय दो सौ हाथपर थे। जब वे तीरपर
उतरे तब उन्होंने कोयलेकी आग धरी हुई और मछली

उसपर रखी हुई और रोटी देखी। यीशुने उनसे कहा जो १०
मछलियां तुमने अभी पकड़ी हैं उनमेंसे ले आओ।
शिमोन पितरने जाके जालको जो एक सौ तिर्पन ११
बड़ी मछलियोंसे भरा था तीरपर खींच लिया और
इतनी होनेसे भी जाल नहीं फटा। यीशुने उनसे कहा १२
कि आओ भोजन करो . परन्तु शिष्योंमेंसे किसीको
साहस न हुआ कि उससे पूछे आप कौन हैं क्योंकि
वे जानते थे कि प्रभु है। तब यीशुने आके रोटी लेके १३
उनको दिई और वैसेही मछली भी। यह अब तीसरी १४
बेर हुआ कि यीशुने मृतकोंमेंसे उठके अपने शिष्योंको
दर्शन दिया।

तब भोजन करनेके पीछे यीशुने शिमोन पितरसे १५
कहा हे यूनसके पुत्र शिमोन क्या तू मुझे इन्होंसे अधिक
प्यार करता है . वह उससे बोला हां प्रभु आप जानते
हैं कि मैं आपको प्यार करता हूं . उसने उससे कहा
मेरे मेम्नोंको चरा। उसने फिर दूसरी बेर उससे कहा १६
हे यूनसके पुत्र शिमोन क्या तू मुझे प्यार करता है .
वह उससे बोला हां प्रभु आप जानते हैं कि मैं आप-
को प्यार करता हूं . उसने उससे कहा मेरी भेड़ोंकी
रखवाली कर। उसने तीसरी बेर उससे कहा हे १७
यूनसके पुत्र शिमोन क्या तू मुझे प्यार करता है .
पितर उदास हुआ कि यीशुने उससे तीसरी बेर कहा
क्या तू मुझे प्यार करता है और उससे बोला हे प्रभु
आप सब कुछ जानते हैं आप जानते हैं कि मैं आप-
को प्यार करता हूं . यीशुने उससे कहा मेरी भेड़ोंको

१८ चरा । मैं तुझसे सच सच कहता हूं जब तू जवान था
तब अपनी कमर बांधके जहां चाहता था वहां चलता
था परन्तु जब तू बूढ़ा होगा तब अपने हाथ फैलावे-
गा और दूसरा तेरी कमर बांधके जहां तू न चाहे
१९ वहां तुझे ले जायगा । यह कहनेमें उसने पता दिया
कि पितर कैसी मृत्युसे ईश्वरकी महिमा प्रगट करेगा
और यह कहके उससे बोला मेरे पीछे हो ले ।
२० पितरने मुंह फेरके उस शिष्यको जिसे यीशु प्यार
करता था और जिसने बियारीमें उसकी छातीपर
उठंगके कहा हे प्रभु आपका पकड़वानेहारा कौन है
२१ पीछेसे आते देखा । उसको देखके पितरने यीशुसे कहा
२२ हे प्रभु इसका क्या होगा । यीशुने उससे कहा जो मैं
चाहूं कि वह मेरे आनेलों रहे तो तुझे क्या . तू मेरे
२३ पीछे हो ले । इसलिये भाइयोंमें यह बात फैल गई
कि वह शिष्य नहीं मरेगा . तौभी यीशुने यह नहीं
कहा कि वह नहीं मरेगा परन्तु यह कि जो मैं चाहूं
कि वह मेरे आनेलों रहे तो तुझे क्या ।
२४ यह तो वह शिष्य है जो इन बातोंके विषयमें
साक्षी देता है और जिसने यह बातें लिखीं और हम
२५ जानते हैं कि उसकी साक्षी सत्य है । और बहुत और
काम भी हैं जो यीशुने किये . जो वे एक एक करके
लिखे जाते तो मुझे बूझ पड़ता है कि पुस्तक जो लिखे
जाते जगतमें भी न समाते । आमीन ॥

प्रेरितोंकी क्रियाओंका वृत्तान्त ।

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ यीशुका शिष्योंको आज्ञा देना और स्वर्गमें जाना । १२ शिष्योंका एकट्ठे रहके प्रार्थना करना । १५ यिहूदाकी सन्ती मत्तथियाहका प्रेरितके कामपर ठहराना ।

हे थियोफिल वह पहिला वृत्तान्त मैंने सब बातोंके १
विषयमें रचा जो यीशु उस दिनलों करने और सिखाने-
का आरंभ किये था . जिस दिन वह पवित्र आत्माके २
द्वारासे जिन प्रेरितोंको उसने चुना था उन्हें आज्ञा दे
करके उठा लिया गया। और उसने उन्हें बहुतेरे अचल ३
प्रमाणोंसे अपने तईं दुःख भोगनेके पीछे जीवता दिखाया
कि चालीस दिनलों वे उसे देखा करते थे और वह ईश्व-
रके राज्यके विषयमें उनसे बातें करता था। और जब ४
वह उनके संग एकट्ठा हुआ तब उन्हें आज्ञा दिई कि यिरू-
शलीमको मत छोड़ जाओ परन्तु पिताकी जो प्रतिज्ञा
तुमने मुझसे सुनी है उसकी बाट जोहते रहो। क्योंकि ५
योहनने तो जलमें बपतिसमा दिया परन्तु थोड़े दिनोंके
पीछे तुम्हें पवित्र आत्मामें बपतिसमा दिया जायगा। सो ६
उन्होंने एकट्ठे होके उससे पूछा कि हे प्रभु क्या आप इसी
समयमें इस्रायेली लोगोंको राज्य फेर देते हैं। उसने उनसे ७
कहा जिन कालों अथवा समयोंको पिताने अपनेही बशमें
रखा है उन्हें जाननेका अधिकार तुम्हें नहीं है। परन्तु तुम- ८
पर पवित्र आत्माके आनेसे तुम सामर्थ्य पाओगे और
यिरूशलीममें और सारे यिहूदिया और शोमिरोन देशोंमें

९ और पृथिवीके अन्तलों मेरे साक्षी होओगे । यह कहके
वह उनके देखते हुए ऊपर उठाया गया और मेघने
१० उसे उनकी दृष्टिसे छिपा लिया । ज्योंही वे उसके जाते
हुए स्वर्गकी ओर तकते रहे त्योंही देखो दो पुरुष उजला
११ बस्त्र पहिने हुए उनके निकट खड़े हो गये . और कहा
हे गालीली लोगो तुम क्यों स्वर्गकी ओर देखते हुए
खड़े हो . यही यीशु जो तुम्हारे पाससे स्वर्गपर उठा
लिया गया है जिस रीतिसे तुमने उसे स्वर्गको जाते
देखा है उसी रीतिसे आवेगा ।
१२ तब वे जैतून नाम पर्ब्बतसे जो यिरूशलीमके निकट
अर्थात एक बिश्रामवारकी बाट भर दूर है यिरूशलीमको
१३ लौटे । और जब वे पहुंचे तब उपरौठी कोठरीमें गये
जहां वे अर्थात पितर औ याकूब औ योहन औ अन्द्रिय
और फिलिप औ थोमा और बर्थलमई औ मत्ती और
अलफईका पुत्र याकूब औ शिमोन उद्योगी और याकूब-
१४ का भाई यिहूदा रहते थे । ये सब एक चित्त होके स्त्रि-
योंके और यीशुकी माता मरियमके संग और उसके
भाइयोंके संग प्रार्थना और बिन्तीमें लगे रहते थे ।
१५ उन दिनोंमें पितर शिष्योंके बीचमें खड़ा हुआ . एक
१६ सौ बीस जनके अटकल एकट्ठे थे . और कहा हे भाइयो
अवश्य था कि धर्म्मपुस्तकका यह बचन पूरा होय जो
पवित्र आत्माने दाऊदके मुखसे यिहूदाके विषयमें जो
यीशुके पकड़नेहारोंका अगुवा था आगेसे कह दिया।
१७ क्योंकि वह हमारे संग गिना गया था और इस सेवकाई-
१८ का अधिकार पाया था । उसने तो अधर्म्मकी मजूरीसे

एक खेत मोल लिया और औंधे मुंह गिरके बीचसे फट
गया और उसकी सब अन्तड़ियां निकल पड़ीं। यह बात १९
यिरूशलीमके सब निवासियोंको जान पड़ी इसलिये
वह खेत उनकी भाषामें हकलदामा अर्थात लोहूका
खेत कहलाया। गीतोंके पुस्तकमें लिखा है कि उसका २०
घर उजाड़ होय और उसमें कोई न बसे और कि
उसका रखवालीका काम दूसरा लेवे। इसलिये प्रभु २१
यीशु योहनके बपतिसमाके समयसे लेके उस दिनलों कि
वह हमारे पाससे उठा लिया गया जितने दिन हमारे
बीचमें आया जाया किया. जो मनुष्य सब दिन हमारे २२
संग रहे हैं उन्होंमेंसे उचित है कि एक जन हमारे संग
यीशुके जी उठनेका साक्षी होय। तब उन्होंने दोको २३
अर्थात यूसफको जो बर्शबा कहावता है जिसका उपनाम
युस्त था और मत्तथियाहको खड़ा किया. और प्रार्थना २४
करके कहा हे प्रभु सभोंके अन्तर्यामी इन दोनोंमेंसे
एकको जिसे तूने चुना है ठहरा दे. कि वह इस सेव- २५
काई और प्रेरिताईका अधिकार पावे जिससे यिहूदा
पतित हुआ कि अपने निज स्थानको जाय। तब उन्होंने २६
चिट्ठियां डालीं और चिट्ठी मत्तथियाहके नामपर निकली
और वह एग्यारह प्रेरितोंके संग गिना गया।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ पवित्र आत्माका दिया जाना और शिष्योंका अनेक बोलियां बोलना। ५ लोगोंका अचंभा करना। १४ पितरका उपदेश। ३७ बहुत लोगोंका इस उपदेशको ग्रहण करना। ४१ उनके बपतिसमा लेने और सुचाल चलनेका बर्णन।

जब पेंतिकोष्ट पर्ब्बका दिन आ पहुंचा तब वे सब १
एक चित्त होकर एकट्ठे हुए थे। और अचांचक प्रबल २

बयारके चलनेकासा स्वर्गसे एक शब्द हुआ जिससे
३ सारा घर जहां वे बैठे थे भर गया । और आगकीसी
जीभें अलग अलग होती हुईं उन्हें दिखाई दिईं और
४ वह हर एक जनपर ठहर गई । तब वे सब पवित्र
आत्मासे परिपूर्ण हुए और जैसे आत्माने उन्हें बुल-
वाया तैसे आन आन बोलियां बोलने लगे ।
५ यिरूशलीममें कितने भक्त यिहूदी लोग बास करते
६ थे जो स्वर्गके नीचेके हर एक देशसे आये थे । इस
शब्दके होनेपर बहुत लोग एकट्ठे हुए और घबरा गये
क्योंकि उन्होंने उनको हर एक अपनीही भाषामें
७ बोलते हुए सुना । और वे सब बिस्मित और अचंभित
हो आपसमें कहने लगे देखो ये सब जो बोलते हैं क्या
८ गालीली लोग नहीं हैं । फिर हम लोग क्योंकर हर
९ एक अपने अपने जन्म देशकी भाषामें सुनते हैं । हम
जो पर्थी और मादी और एलमी लोग और मिसपता-
मिया और यिहूदिया और कपदोकिया और पन्त और
१० आशिया . और फ्रूगिया और पंफुलिया और मिसर
और कुरीनीके आसपासका लूबिया देश इन सब देशोंके
निवासी और रोम नगरसे आये हुए लोग क्या यिहूदी
११ क्या यिहूदीय मतावलंबी . क्रीतीय भी और अरब लोग
हैं उन्हें अपनी अपनी बोलियोंमें ईश्वरके महाकार्य्यों-
१२ की बात बोलते हुए सुनते हैं । सो वे सब बिस्मित
हो दुबधामें पड़े और एक दूसरेसे कहने लगा इसका
१३ अर्थ क्या है । परन्तु और लोग ठट्ठेमें कहने लगे वे
नई मदिरासे छकाछक हुए हैं ।

तब पितरने एग्यारह शिष्योंके संग खड़ा होके ऊंचे १४
शब्दसे उन्हें कहा हे यिहूदियो और यिरूशलीमके सब
निवासियो इस बातको बूझ लो और मेरी बातोंपर
कान लगाओ। ये तो मतवाले नहीं हैं जैसा तुम १५
समझते हो क्योंकि पहरही दिन चढ़ा है। परन्तु यह १६
वह बात है जो योएल भविष्यद्वक्तासे कही गई. कि १७
ईश्वर कहता है पिछले दिनोंमें ऐसा होगा कि मैं सब
मनुष्योंपर अपना आत्मा उंडेलूंगा और तुम्हारे पुत्र
और तुम्हारी पुत्रियां भविष्यद्वाक्य कहेंगे और तुम्हारे
जवान लोग दर्शन देखेंगे और तुम्हारे वृद्ध लोग स्वप्न
देखेंगे। और भी मैं अपने दासों और अपनी दासियों- १८
पर उन दिनोंमें अपना आत्मा उंडेलूंगा और वे
भविष्यद्वाक्य कहेंगे। और मैं ऊपर आकाशमें अद्भुत १९
काम और नीचे पृथिवीपर चिन्ह अर्थात लोहू और
आग और धूंएकी भाफ दिखाऊंगा। परमेश्वरके बड़े २०
और प्रसिद्ध दिनके आनेके पहिले सूर्य्य अंधियारा
और चांद लोहूसा हो जायगा। और जो कोई पर- २१
मेश्वरके नामकी प्रार्थना करेगा सो त्राण पावेगा।

हे इस्रायेली लोगो यह बातें सुनो. यीशु नासरी एक २२
मनुष्य जिसका प्रमाण ईश्वरसे आश्चर्य्य कर्म्मों और
अद्भुत कामों और चिन्होंसे तुम्हें दिया गया है जो ईश्वर-
ने तुम्हारे बीचमें जैसा तुम आप भी जानते हो उसके
द्वारासे किये. उसीको जब वह ईश्वरके स्थिर मत और २३
भविष्यत ज्ञानके अनुसार सौंपा गया तुमने लिया और
अधर्म्मियोंके हाथोंके द्वारा क्रूशपर ठोंकके मार डाला।

२४ उसीको ईश्वरने मृत्युके बंधन खोलके जिला उठाया
२५ क्योंकि अन्होना था कि वह मृत्युके बशमें रहे। क्योंकि
दाऊदने उसके विषयमें कहा मैंने परमेश्वरको सदा
अपने साम्हने देखा कि वह मेरी दहिनी ओर है जिस्तें
२६ मैं डिग न जाऊं। इस कारण मेरा मन आनन्दित हुआ
और मेरी जीभ हर्षित हुई हां मेरा शरीर भी आशामें
२७ बिश्राम करेगा। क्योंकि तू मेरे प्राणको परलोकमें न
२८ छोड़ेगा और न अपने पवित्र जनको सड़ने देगा। तूने
मुझे जीवनका मार्ग बताया है तू मुझे अपने सन्मुख
आनन्दसे परिपूर्ण करेगा।

२९ हे भाइयो उस कुलपति दाऊदके विषयमें मैं तुमसे
खोलके कहूं. वह तो मरा और गाड़ा भी गया और
३० उसकी कबर आजलों हमारे बीचमें है। सो भविष्यद्वक्ता
होके और यह जानके कि ईश्वरने मुझसे किरिया खाई
है कि मैं शरीरके भावसे खीष्टको तेरे बंशमेंसे उत्पन्न
३१ करूंगा कि वह तेरे सिंहासनपर बैठे. उसने होन्हारको
आगेसे देखके खीष्टके जी उठनेके विषयमें कहा कि उसका
प्राण परलोकमें नहीं छोड़ा गया और न उसका देह सड़
३२ गया। इसी यीशुको ईश्वरने जिला उठाया और इस
३३ बातके हम सब साक्षी हैं। सो ईश्वरके दहिने हाथ ऊंच
पद प्राप्त करके और पवित्र आत्माके विषयमें जो कुछ
प्रतिज्ञा किया गया सोई पितासे पाके उसने यह जो तुम
३४ अब देखते और सुनते हो उंडेल दिया है। क्योंकि
दाऊद स्वर्गपर नहीं चढ़ गया परन्तु उसने कहा कि
३५ परमेश्वरने मेरे प्रभुसे कहा . जबलों मैं तेरे शत्रुओं-

को तेरे चरणोंकी पीढ़ी न बनाऊं तबलों तू मेरी
दहिनी ओर बैठ। सो इस्रायेलका सारा घराना निश्चय ३६
जाने कि यह यीशु जिसे तुमने क्रूशपर घात किया
इसीको ईश्वरने प्रभु और खीष्ट ठहराया है।
तब सुननेहारोंके मन छिद गये और वे पितरसे ३७
और दूसरे प्रेरितोंसे बोले हे भाइयो हम क्या करें।
पितरने उनसे कहा पश्चात्ताप करो और हर एक ३८
जन यीशु खीष्टके नामसे बपतिसमा लेओ कि तुम्हारा
पापमोचन होय और तुम पवित्र आत्मा दान पाओगे।
क्योंकि वह प्रतिज्ञा तुम्होंके लिये और तुम्हारे सन्ता- ३९
नोंके लिये और दूर दूरके सब लोगोंके लिये है
जितनोंको परमेश्वर हमारा ईश्वर अपने पास बुलावे।
बहुत और बातोंसे भी उसने साक्षी और उपदेश ४०
दिया कि इस समयके टेढ़े लोगोंसे बच जाओ।
तब जिन्होंने उसका बचन आनन्दसे ग्रहण किया ४१
उन्होंने बपतिसमा लिया और उस दिन तीन सहस्र
जनके अटकल शिष्योंमें मिल गये। और वे प्रेरितोंके ४२
उपदेशमें और संगतिमें और रोटी तोड़नेमें और प्रार्थना-
में लगे रहते थे। और सब मनुष्योंको भय हुआ और ४३
बहुतेरे अद्भुत काम और चिन्ह प्रेरितोंके द्वारा प्रगट होते
थे। और सब बिश्वास करनेहारे एकट्ठे थे और उन्होंकी ४४
सब सम्पत्ति साझेकी थी। और वे धन सम्पत्तिको बेचके ४५
जैसा जिसको प्रयोजन होता था तैसा सभोंमें बांट लेते
थे। और वे प्रतिदिन मन्दिरमें एक चित्त होके लगे रहते ४६
थे और घर घर रोटी तोड़ते हुए आनन्द और मनकी

४७ सूधाईसे भोजन करते थे . और ईश्वरकी स्तुति करते
थे और सब लोगोंका उनपर अनुग्रह था . और प्रभु
त्राण पानेहारोंको प्रतिदिन मंडलीमें मिलाता था।

३ तीसरा पर्व्व ।

१ पितरसे एक लंगड़ेका चंगा होना । ९ लोगोंका एकट्ठे होना । १२ पितरका उनसे बातें करना ।

१ तीसरे पहर प्रार्थनाके समयमें पितर और योहन
२ एक संग मन्दिरको जाते थे। और लोग किसी मनुष्यको
जो अपनी माताके गर्भहीसे लंगड़ा था लिये जाते थे
जिसको वे प्रतिदिन मन्दिरके उस द्वारपर जो सुन्दर
कहावता है रख देते थे कि वह मन्दिरमें जानेहारोंसे
३ भीख मांगे । उसने पितर और योहनको देखके कि
४ मन्दिरमें जानेपर हैं उनसे भीख मांगी। पितरने योहनके
संग उसकी ओर दृष्टि कर कहा हमारी ओर देख ।
५ सो वह उनसे कुछ पानेकी आशा करते हुए उनकी
६ ओर ताकने लगा । परन्तु पितरने कहा चांदी और
सोना मेरे पास नहीं है परन्तु यह जो मेरे पास है मैं
तुझे देता हूं यीशु खीष्ट नासरीके नामसे उठ और चल।
७ तब उसने उसका दहिना हाथ पकड़के उसे उठाया और
८ तुरन्त उसके पांवों और घुट्ठियोंमें बल हुआ । और
वह उछलके खड़ा हुआ और फिरने लगा और फिरता
और कूदता और ईश्वरकी स्तुति करता हुआ उनके
संग मन्दिरमें प्रवेश किया ।

९ सब लोगोंने उसे फिरते और ईश्वरकी स्तुति करते
१० हुए देखा . और उसको चीन्हा कि वही है जो मन्दिरके

सुन्दर फाटकपर भीखके लिये बैठा रहता था और
जो उसको हुआ था उससे वे अति अचंभित और
विस्मित हुए। जिस समय वह लंगड़ा जो चंगा हुआ ११
था पितर और योहनको पकड़े रहा सब लोग बहुत
अचंभा करते हुए उस ओसारेमें जो सुलेमानका कहाव-
ता है उनके पास दौड़े आये।

यह देखके पितरने लोगोंसे कहा हे इस्रायेली लोगो १२
तुम इस मनुष्यसे क्यों अचंभा करते हो अथवा हमारी
ओर क्यों ऐसा ताकते हो कि जैसा हमने अपनीही
शक्ति अथवा भक्तिसे इसको चलनेका सामर्थ्य दिया
होता। इब्राहीम और इसहाक और याकूबके ईश्वरने १३
हमारे पितरोंके ईश्वरने अपने सेवक यीशुकी महिमा
प्रगट किई जिसे तुमने पकड़वाया और उसको पिलातके
सन्मुख नकारा जब कि उसने उसे छोड़ देनेको ठहराया
था। परन्तु तुमने उस पवित्र और धर्म्मीको नकारा १४
और मांगा कि एक हत्यारा तुम्हें दिया जाय। और १५
तुमने जीवनके कर्त्ताको घात किया परन्तु ईश्वरने
उसे मृतकोंमेंसे उठाया और इस बातके हम साक्षी हैं।
और उसके नामके बिश्वाससे उसके नामहीने इस १६
मनुष्यको जिसे तुम देखते औ जानते हो सामर्थ्य दिया
है हां जो बिश्वास उसके द्वारासे है उसीसे यह संपूर्ण
आरोग्य तुम सभोंके साम्ने इसको मिला है।

और अब हे भाइयो मैं जानता हूं कि तुम्होंने वह १७
काम अज्ञानतासे किया और वैसे तुम्हारे प्रधानोंने भी
किया। परन्तु ईश्वरने जो बात उसने अपने सब भविष्य- १८

दूक्ताओंके मुखसे आगे बताई थी कि ख्रीष्ट दुःख भोगेगा
१९ वह बात इस रीतिसे पूरी किई। इसलिये पश्चात्ताप
करके फिर जाओ कि तुम्हारे पाप मिटाये जायें जिस्तें
जीवका ठंढा होनेका समय परमेश्वरकी ओरसे आवे.
२० और वह यीशु ख्रीष्टको भेजे जिसका समाचार तुम्हें
२१ आगेसे कहा गया है. जिसे अवश्य है कि स्वर्ग सब
बातोंके सुधारे जानेके उस समयलों ग्रहण करे जिस-
की कथा ईश्वरने आदिसे अपने पवित्र भविष्यद्वक्ता-
ओंके मुखसे कही है।
२२ मूसाने पितरोंसे कहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर
तुम्हारे भाइयोंमेंसे मेरे समान एक भविष्यद्वक्ताको तुम्हारे
लिये उठावेगा जो जो बातें वह तुमसे कहे उन सब
२३ बातोंमें तुम उसकी सुनो। परन्तु हर एक मनुष्य जो
उस भविष्यद्वक्ताकी न सुने लोगोंमेंसे नाश किया जाय-
२४ गा। और सब भविष्यद्वक्ताओंने भी शमुएलसे और
उसके पीछेके भविष्यद्वक्ताओंसे लेके जितनोंने बातें
२५ किईं इन दिनोंका भी आगेसे सन्देश दिया है। तुम
भविष्यद्वक्ताओंके और उस नियमके सन्तान हो जो
ईश्वरने हमारे पितरोंके संग बांधा कि उसने इब्राहीमसे
कहा पृथिवीके सारे घराने तेरे बंशके द्वारासे आशीस
२६ पावेंगे। तुम्हारे पास ईश्वरने अपने सेवक यीशुको
उठाके पहिले भेजा जो तुममेंसे हर एकको तुम्हारे
कुकर्म्मोंसे फिरानेमें तुम्हें आशीस देता था।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ पितर और योहनका बन्दीगृहमें डाला जाना। ५ पितरका महायाजकके आगे उत्तर देना। १३ न्याइयोंका आपसमें बिचार करना और पितर औ योहनको धमकाना और छोड़ देना। २३ उन दोनोंका शिष्योंके संग मिलके प्रार्थना करना। ३२ शिष्योंका अपने धनको आपसमें बांट लेना और बर्णबाकी कथा।

जिस समय वे लोगोंसे कह रहे याजक लोग और १
मन्दिरके पहरुओंका अध्यक्ष और सदूकी लोग उनपर
चढ़ आये . कि वे अप्रसन्न होते थे इसलिये कि वे लो- २
गोंको सिखाते थे और मृतकोंमेंसे जी उठनेकी बात
यीशुके प्रमाणसे प्रचार करते थे। और उन्होंने उन्हें ३
पकड़के बिहानलों बन्दीगृहमें रखा क्योंकि सांझ हुई थी।
परन्तु बचनके सुननेहारोंमेंसे बहुतोंने विश्वास किया ४
और उन मनुष्योंकी गिन्ती पांच सहस्रके अटकल हुई।
बिहान हुए लोगोंके प्रधान और प्राचीन और अध्या- ५
पक लोग . और हन्नस महायाजक और कियाफा और ६
योहन और सिकन्दर और महायाजकके घरानेके जितने
लोग थे ये सब यिरूशलीममें एकट्ठे हुए। और उन्होंने ७
पितर और योहनको बीचमें खड़ा करके पूछा तुमने यह
काम किस सामर्थ्यसे अथवा किस नामसे किया। तब ८
पितरने पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हो उनसे कहा हे लो-
गोंके प्रधानो और इस्रायेलके प्राचीनो . इस दुर्ब्बल ९
मनुष्यपर जो भलाई किई गई है यदि उसके विषयमें आज
हमसे पूछा जाता है कि वह किस नामसे चंगा किया
गया है . तो आप लोग सब जानिये और समस्त इस्रा- १०
येली लोग जानें कि यीशु ख्रीष्ट नासरीके नामसे जिसे
आप लोगोंने क्रूशपर घात किया जिसे ईश्वरने मृतकों-

में से उठाया उसीसे यह मनुष्य आप लोगोंके आगे चंगा
११ खड़ा है । यही वह पत्थर है जिसे आप थवइयोंने तुच्छ
१२ जाना जो कोनेका सिरा हुआ है । और किसी दूसरेसे
त्राण नहीं है क्योंकि स्वर्गके नीचे दूसरा नाम नहीं है जो
मनुष्योंके बीचमें दिया गया है जिससे हमें त्राण पाना
होगा ।
१३ तब उन्होंने पितर और योहनका साहस देखके और
यह जानके कि वे विद्याहीन और अज्ञान मनुष्य हैं
अचंभा किया और उनको चीन्हा कि वे यीशुके संग थे ।
१४ और उस चंगा किये हुए मनुष्यको उनके संग खड़े देखके
१५ वे कोई बात विरोधमें न कह सके । परन्तु उनको सभाके
बाहर जानेकी आज्ञा देके उन्होंने आपसमें विचार
१६ किया . कि हम इन मनुष्योंसे क्या करें क्योंकि एक प्रसिद्ध
आश्चर्य्य कर्म्म उन्होंसे हुआ है यह बात यिरूशलीमके
सब निवासियोंपर प्रगट है और हम नहीं मुकर सकते
१७ हैं । परन्तु जिस्तें लोगोंमें अधिक फैल न जावे आओ
हम उन्हें बहुत धमकावें कि वे इस नामसे फिर किसी
१८ मनुष्यसे बात न करें । और उन्होंने उन्हें बुलाके आज्ञा
दिई कि यीशुके नामसे कुछ भी मत बोलो और मत सि-
१९ खाओ । परन्तु पितर और योहनने उनको उत्तर दिया
कि ईश्वरसे अधिक आप लोगोंको मानना क्या ईश्वरके
२० आगे उचित है सो आप लोग विचार कीजिये । क्योंकि
जो हमने देखा और सुना है उसको न कहना हमसे
२१ नहीं हो सकता है । तब उन्होंने और धमकी देके उन्हें
छोड़ दिया कि उन्हें दंड देनेका लोगोंके कारण कोई

उपाय नहीं मिलता था क्योंकि जो हुआ था उसके लिये
सब लोग ईश्वरका गुणानुवाद करते थे। क्योंकि वह २२
मनुष्य जिसपर यह चंगा करनेका आश्चर्य्य कर्म्म किया
गया था चालीस बरसके ऊपरका था।

वे छूटके अपने संगियोंके पास आये और जो कुछ २३
प्रधान याजकों औ प्राचीनोंने उनसे कहा था सो सुना
दिया। वे सुनके एक चित्त होकर ऊंचा शब्द करके २४
ईश्वरसे बोले हे प्रभु तू ईश्वर है जिसने स्वर्ग औ पृथिवी
औ समुद्र और सब कुछ जो उनमें है बनाया. जिसने २५
अपने सेवक दाऊदके मुखसे कहा अन्यदेशियोंने क्यों
कोप किया और लोगोंने क्यों व्यर्थ चिन्ता किई। परमे- २६
श्वरके और उसके अभिषिक्त जनके विरुद्ध पृथिवीके
राजा लोग खड़े हुए और अध्यक्ष लोग एक संग एकट्ठे
हुए। क्योंकि सचमुच तेरे पवित्र सेवक यीशुके विरुद्ध जिसे २७
तूने अभिषेक किया हेरोद और पन्तिय पिलात भी
अन्यदेशियों और इस्रायेली लोगोंके संग एकट्ठे हुए. कि २८
जो कुछ तेरे हाथ और तेरे मतने आगेसे ठहराया था
कि हो जाय सोई करें। और अब हे प्रभु उनकी धमकि- २९
योंको देख. और चंगा करनेके लिये और चिन्हों और ३०
अद्भुत कामोंके तेरे पवित्र सेवक यीशुके नामसे किये
जानेके लिये अपना हाथ बढ़ानेसे अपने दासोंको यह
दीजिये कि तेरा बचन बड़े साहससे बोलें। जब उन्होंने ३१
प्रार्थना किई थी तब वह स्थान जिसमें वे एकट्ठे हुए थे
हिल गया और वे सब पवित्र आत्मासे परिपूर्ण हुए
और ईश्वरका बचन साहससे बोलने लगे।

३२ विश्वासियोंकी मंडलीका एक मन और एक जीव था
और न कोई अपनी सम्पत्तिमेंसे कोई वस्तु अपनी कहता
३३ था परन्तु उन्होंकी सब सम्पत्ति साझेकी थी। और प्रेरित
लोग बड़े सामर्थ्यसे प्रभु यीशुके जी उठनेकी साक्षी देते
३४ थे और उन सभोंपर बड़ा अनुग्रह था। और न उनमेंसे
कोई दरिद्र था क्योंकि जो जो लोग भूमि अथवा घरोंके
३५ अधिकारी थे सो उन्हें बेचते थे. और बेची हुई वस्तुओं-
का दाम लाके प्रेरितोंके पांवोंपर रखते थे और जैसा
जिसको प्रयोजन होता था तैसा हर एकको बांटा
३६ जाता था। और योशी नाम कुप्रस टापूका एक लेवीय
जिसे प्रेरितोंने बर्णबा अर्थात शांतिका पुत्र कहा उसकी
३७ कुछ भूमि थी। सो वह उसे बेचके रुपैयोंको लाया
और प्रेरितोंके पांवोंपर रखा।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

१ अननियाह और सफीराका कपट करना और मर जाना। १२ प्रेरितोंके अनेक आश्चर्य्य कर्म्म। १७ प्रेरितोंका बन्दीगृहमें रखा जाना और स्वर्गदूतका उन्हें छुड़ाना। २७ पितरका महायाजकको उत्तर देना। ३३ गमलियेलका परामर्श। ४० प्रेरितोंका मार खाके छूट जाना और सताये जानेसे आनन्द करना।

१ परन्तु अननियाह नाम एक मनुष्यने अपनी स्त्री
२ सफीराके संगमें कुछ भूमि बेची. और दाममेंसे कुछ रख
छोड़ा जो उसकी स्त्री भी जानती थी और कुछ लाके
३ प्रेरितोंके पांवोंपर रखा। परन्तु पितरने कहा हे अननि-
याह शैतानने क्यों तेरे मनमें यह मत दिया है कि तू
पवित्र आत्मासे झूठ बोले और भूमिके दाममेंसे कुछ
४ रख छोड़े। जबलों वह रही क्या तेरी न रही और जब

बिक गई क्या तेरे बशमें न थी . यह क्या है कि तूने यह
बात अपने मनमें रखी है . तू मनुष्योंसे नहीं परन्तु
ईश्वरसे झूठ बोला है। अननियाह यह बातें सुनतेही ५
गिर पड़ा औ प्राण छोड़ दिया और इन बातोंके सब
सुननेहारोंको बड़ा भय हुआ। और जवानोंने उठके ६
उसे लपेटा और बाहर ले जाके गाड़ा। पहर एकके ७
पीछे उसकी स्त्री यह जो हुआ था न जानके भीतर
आई। इसपर पितरने उससे कहा मुझसे कह दे क्या ८
तुमने वह भूमि इतनेहीमें बेची . वह बोली हां इतने-
में। तब पितरने उससे कहा यह क्या है कि तुम दोनोंने ९
परमेश्वरके आत्माकी परीक्षा करनेको एक संग युक्ति
बांधी है . देख तेरे स्वामीके गाड़नेहारोंके पांव द्वारपर
हैं और वे तुझे बाहर ले जायेंगे। तब वह तुरन्त उसके १०
पांवोंके पास गिर पड़ी औ प्राण छोड़ दिया और
जवानोंने भीतर आके उसे मरी हुई पाया और बाहर ले
जाके उसके स्वामीके पास गाड़ा। और सारी मंडलीको ११
और इन बातोंके सब सुननेहारोंको बड़ा भय हुआ।
प्रेरितोंके हाथोंसे बहुत चिन्ह और अद्भुत काम १२
लोगोंके बीचमें किये जाते थे और वे सब एक चित्त
होके सुलेमानके ओसारेमें थे। औरोंमेंसे किसीको उनके १३
संग मिलनेका साहस नहीं था परन्तु लोग उनकी
बड़ाई करते थे। और और भी बहुत लोग पुरुष और १४
स्त्रियां भी बिश्वास करके प्रभुसे मिल जाते थे। इससे १५
लोग रोगियोंको बाहर सड़कोंमें लाके खाटों और
खटोलोंपर रखते थे कि जब पितर आवे तब उसकी

१६ परछाईं भी उनमेंसे किसीपर पड़े। आसपासके नगरोंके
लोग भी रोगियोंको और अशुद्ध भूतोंसे सताये हुए
लोगोंको लिये हुए यिरूशलीममें एकट्ठे होते थे और
वे सब चंगे किये जाते थे।
१७ तब महायाजक उठा और उसके सब संगी जो सदू-
१८ कियोंका पंथ है और डाहसे भर गये . और प्रेरितोंको
१९ पकड़के उन्हें सामान्य बन्दीगृहमें रखा। परन्तु परमेश्वर-
के एक दूतने रातको बन्दीगृहके द्वार खोलके उन्हें बाहर
२० लाके कहा . जाओ और मन्दिरमें खड़े होके इस जीव-
२१ नकी सारी बातें लोगोंसे कहो। यह सुनके उन्होंने
भोरको मन्दिरमें प्रवेश किया और उपदेश करने लगे.
तब महायाजक और उसके संगी लोग आये और न्याइ-
योंकी सभाको और इस्रायेलके सन्तानोंके सारे प्राची-
नोंको एकट्ठे बुलाया और प्यादोंको बन्दीगृहमें भेजा कि
२२ उन्हें लावें। प्यादोंने जब पहुंचे तब उन्हें बन्दीगृहमें
२३ न पाया परन्तु लौटके सन्देश दिया . कि हमने बन्दीगृह-
को बड़ी दृढ़तासे बन्द किये हुए और पहरुओंको बाहर
द्वारोंके साम्ने खड़े हुए पाया परन्तु जब खोला तब भीतर
२४ किसीको न पाया। जब महायाजक और मन्दिरके पहरु-
ओंके अध्यक्ष और प्रधान याजकोंने यह बातें सुनीं तब
वे उन्होंके विषयमें दुवधामें पड़े कि यह क्या हुआ
२५ चाहता है। तब किसीने आके उन्हें सन्देश दिया कि
देखिये वे मनुष्य जिनको आप लोगोंने बन्दीगृहमें रखा
२६ मन्दिरमें खड़े हुए लोगोंको उपदेश देते हैं। तब पहरु-
ओंका अध्यक्ष प्यादोंके संग जाके उन्हें ले आया परन्तु

बरियाईसे नहीं क्योंकि वे लोगोंसे डरते थे ऐसा न हो
कि पत्थरवाह किये जायें।

उन्होंने उन्हें लाके न्याइयोंकी सभामें खड़ा किया २७
और महायाजकने उनसे पूछा . क्या हमने तुम्हें दृढ़ २८
आज्ञा न दिई कि इस नामसे उपदेश मत करो . तौभी
देखो तुमने यिरूशलीमको अपने उपदेशसे भर दिया
है और इस मनुष्यका लोहू हमोंपर लाने चाहते हो।
तब पितरने और प्रेरितोंने उत्तर दिया कि मनुष्योंकी २९
आज्ञासे अधिक ईश्वरकी आज्ञाको मानना उचित है।
हमारे पितरोंके ईश्वरने यीशुको जिसे आप लोगोंने ३०
काठपर लटकाके घात किया जिला उठाया। उसको ३१
ईश्वरने कर्त्ता औ त्राताका ऊंच पद अपने दहिने हाथ
दिया है कि वह इस्रायेली लोगोंसे पश्चात्ताप करवाके
उन्हें पापमोचन देवे। और इन बातोंमें हम उसके ३२
साक्षी हैं और पवित्र आत्मा भी जिसे ईश्वरने अपने
आज्ञाकारियोंको दिया है साक्षी है।

यह सुननेसे उनको तीरसा लग गया और वे उन्हें ३३
मार डालनेका बिचार करने लगे। परन्तु न्याइयोंकी ३४
सभामें गमलियेल नाम एक फरीशी जो व्यवस्थापक
और सब लोगोंमें मर्य्यादिक था खड़ा हुआ और प्रेरि-
तोंको थोड़ी बेर बाहर करनेकी आज्ञा किई . और ३५
उनसे कहा हे इस्रायेली मनुष्यो अपने विषयमें सचेत
रहो कि तुम इन मनुष्योंसे क्या किया चाहते हो। क्योंकि ३६
इन दिनोंके आगे थूदा यह कहता हुआ उठा कि मैं भी
कोई हूं और लोग गिन्तीमें चार सौके अटकल उसके

साथ लग गये परन्तु वह मारा गया और जितने लोग
उसको मानते थे सब तितर बितर हुए और बिला
३७ गये। उसके पीछे नाम लिखानेके दिनोंमें यिहूदा गाली-
ली उठा और बहुत लोगोंको अपने पीछे बहका लिया.
वह भी नष्ट हुआ और जितने लोग उसको मानते थे
३८ सब तितर बितर हुए। और अब मैं तुम्होंसे कहता
हूं इन मनुष्योंसे हाथ उठाओ और उन्हें जाने दो
क्योंकि यह बिचार अथवा यह काम यदि मनुष्योंकी
३९ ओरसे होय तो लोप हो जायगा। परन्तु यदि ईश्वरसे
है तो तुम उसे लोप नहीं कर सकते हो. ऐसा न
हो कि तुम ईश्वरसे भी लड़नेहारे ठहरो।
४० तब उन्होंने उसकी मान लिई और प्रेरितोंको बुला-
के उन्हें कोड़े मारके आज्ञा दिई कि यीशुके नामसे बात
४१ मत करो. तब उन्हें छोड़ दिया। सो वे इस बातसे
कि हम उसके नामके लिये निन्दित होनेके योग्य गिने
गये आनन्द करते हुए न्याइयोंकी सभाके साम्हनेसे चले
४२ गये. और प्रतिदिन मन्दिरमें और घर घर उपदेश
करने और यीशु ख्रीष्टका सुसमाचार सुनानेसे नहीं थंभे।

६ छठवां पर्ब्ब ।

१ कंगालोंकी सेवाके लिये सात सेवकोंका ठहराया जाना। ८ स्तिफानका उपदेश करना। ११ बिबादियोंका उसपर झूठा दोष लगाना।

१ उन दिनोंमें जब शिष्य बहुत होने लगे तब यूनानीय
भाषा बोलनेहारे इब्रियोंपर कुड़कुड़ाने लगे कि प्रति-
दिनकी सेवकाईमें हमारी बिधवाओंकी सुध नहीं लिई
२ जाती। तब बारह प्रेरितोंने शिष्योंकी मंडलीको अपने

पास बुलाके कहा यह अच्छा नहीं लगता है कि हम
लोग ईश्वरका बचन छोड़के खिलाने पिलानेकी सेवका-
ईमें रहें। इसलिये हे भाइयो अपनेमेंसे सात सुख्यात मनु- ३
ष्योंको जो पवित्र आत्मासे और बुद्धिसे परिपूर्ण हों चुन
लो कि हम उनको इस कामपर नियुक्त करें। परन्तु हम ४
तो प्रार्थनामें और बचनकी सेवकाईमें लगे रहेंगे। यह ५
बात सारी मंडलीको अच्छी लगी और उन्होंने स्तिफान
एक मनुष्यको जो बिश्वाससे और पवित्र आत्मासे परि-
पूर्ण था और फिलिप और प्रखर और निकानर और
तीमोन और पर्मिना और अन्तैखिया नगरके यिहूदीय
मतावलंबी निकोलावको चुन लिया. और उन्हें ६
प्रेरितोंके आगे खड़ा किया और उन्होंने प्रार्थना करके
उनपर हाथ रखे। और ईश्वरका बचन फैलता गया और ७
यिरूशलीममें शिष्य लोग गिन्तीमें बहुत बढ़ते गये
और बहुतेरे याजक लोग बिश्वासके अधीन हुए।

स्तिफान बिश्वास और सामर्थ्यसे पूर्ण होके बड़े बड़े ८
अद्भुत और आश्चर्य्य कर्म्म लोगोंके बीचमें करता था।
तब उस सभामेंसे जो लिबर्त्तिनियोंकी कहावती है और ९
कुरीनीय और सिकन्दरीय लोगोंमेंसे और किलिकिया और
आशिया देशोंके लोगोंमेंसे कितने उठके स्तिफानसे
बिबाद करने लगे. परन्तु उस ज्ञानका और उस १०
आत्माका जिन करके वह बात करता था साम्हना
नहीं कर सकते थे।

तब उन्होंने लोगोंको उभाड़ा जो बोले हमने उसको ११
मूसाके और ईश्वरके बिरोधमें निन्दाकी बातें बोलते

१२ सुना है। और लोगों औ प्राचीनों औ अध्यापकोंको
उसकाके वे चढ़ आये और उसे पकड़के न्याइयोंकी
१३ सभामें लाये. और झूठे साक्षियोंको खड़ा किया जो बोले
यह मनुष्य इस पवित्र स्थानके और व्यवस्थाके बिरोधमें
१४ निन्दाकी बातें बोलनेसे नहीं थंभता है। क्योंकि हमने
उसे कहते सुना है कि यह यीशु नासरी इस स्थानको
ढायगा और जो व्यवहार मूसाने हमें सोंप दिये उन्हें
१५ बदल डालेगा। तब सब लोगोंने जो सभामें बैठे थे उसकी
ओर ताकके उसका मुंह स्वर्ग दूतके मुंहके ऐसा देखा।

७ सातवां पर्ब्ब।

१ स्तिफानका महायाजकको उत्तर देना. इब्राहीम इत्यादिका बर्णन। १७ मूसाकी कथा। ४१ यिहूदियोंकी मूर्त्तिपूजाका वृत्तान्त। ४४ ईश्वरकी सेवाके तम्बूओंका ब्योरा। ५१ यिहूदियोंपर उलहना। ५४ यिहूदियोंका स्तिफानको पत्थरोंसे मारना।

१
२ तब महायाजकने कहा क्या यह बातें यूंहीं हैं। स्ति-
फानने कहा हे भाइयो और पितरो सुनो. हमारा पिता
इब्राहीम हारान नगरमें बसनेके पहिले जब मिसपता-
मिया देशमें था तब तेजोमय ईश्वरने उसको दर्शन दिया.
३ और उससे कहा तू अपने देश और अपने कुटुंबोंमेंसे
४ निकलके जो देश मैं तुझे दिखाऊं उसीमें आ। तब उसने
कलदियोंके देशसे निकलके हारानमें बास किया और
वहांसे उसके पिताके मरनेके पीछे ईश्वरने उसको इस
देशमें लाके बसाया जिसमें आप लोग अब बसते हैं।
५ और उसने इस देशमें उसको कुछ अधिकार न दिया
पैर रखने भर भूमि भी नहीं परन्तु उसको पुत्र न रहतेही
उसको प्रतिज्ञा दिई कि मैं यह देश तुझको और तेरे

पीछे तेरे बंशको अधिकारके लिये देऊंगा। और ६
ईश्वरने यूं कहा कि तेरे सन्तान पराये देशमें बिदेशी
होंगे और वे लोग उन्हें दास बनावेंगे और चार सौ
बरस उन्हें दुःख देंगे। और जिन लोगोंके वे दास होंगे ७
उन लोगोंका (ईश्वरने कहा) मैं बिचार करूंगा और
इसके पीछे वे निकल आवेंगे और इसी स्थानमें मेरी
सेवा करेंगे। और उसने उसको खतनेका नियम दिया ८
और इस रीतिसे इसहाक उससे उत्पन्न हुआ और
उसने आठवें दिन उसका खतना किया और इसहाकने
याकूबका और याकूबने बारह कुलपतियोंका। और ९
कुलपतियोंने यूसफसे डाह करके उसे मिसर देश जाने-
हारोंके हाथ बेचा परन्तु ईश्वर उसके संग था. और १०
उसे उसके सब क्लेशोंसे छुड़ाके मिसरके राजा फिरऊनके
आगे अनुग्रहके योग्य और बुद्धिमान किया और उसने
उसे मिसर देशपर और अपने सारे घरपर प्रधान
ठहराया। तब मिसर और कनानके सारे देशमें अकाल ११
और बड़ा क्लेश पड़ा और हमारे पितरोंको अन्न नहीं
मिलता था। परन्तु याकूबने यह सुनके कि मिसरमें १२
अनाज है हमारे पितरोंको पहिली बेर भेजा। और १३
दूसरी बेरमें यूसफ अपने भाइयोंसे पहचाना गया और
यूसफका घराना फिरऊनपर प्रगट हुआ। तब यूसफने १४
अपने पिता याकूबको और अपने सब कुटुंबोंको जो
पछत्तर जन थे बुलवा भेजा। सो याकूब मिसरको १५
गया और वह आप मरा और हमारे पितर लोग.
और वे शिखिम नगरमें पहुंचाये गये और उस कबरमें १६

रखे गये जिसे इब्राहीमने चांदी देके शिखिमके पिता
हमोरके सन्तानोंसे मोल लिया ।
१७ परन्तु जो प्रतिज्ञा ईश्वरने किरिया खाके इब्राहीमसे
किई थी उसका समय ज्योंही निकट आया त्योंही वे
१८ लोग मिसरमें बढ़े और बहुत हो गये। इतनेमें दूसरा
१९ राजा उठा जो यूसफको नहीं जानता था । उसने हमारे
लोगोंसे चतुराई करके हमारे पितरोंके साथ ऐसी बुराई
किई कि उनके बालकोंको बाहर फिंकवाया कि वे जीते
२० न रहें। उस समयमें मूसा उत्पन्न हुआ जो परमसुन्दर था
२१ और वह अपने पिताके घरमें तीन मास पाला गया। जब
वह बाहर फेंका गया तब फिरऊनकी बेटीने उसे उठा
२२ लिया और अपना पुत्र करके उसे पाला। और मूसाको
मिसरियोंकी सारी बिद्या सिखाई गई और वह बातों
२३ और कामोंमें सामर्थी था। जब वह चालीस बरसका हुआ
तब उसके मनमें आया कि अपने भाइयोंको अर्थात इस्रा-
२४ येलके सन्तानोंको देख लेवे। और उसने एकपर अन्याय
होते देखके रक्षा किई और मिसरीको मारके सताये
२५ हुएका पलटा लिया। वह बिचार करता था कि मेरे भाई
समझेंगे कि ईश्वर मेरे हाथसे उन्होंका निस्तार करता है
२६ परन्तु उन्होंने नहीं समझा। अगले दिन वह उन्हें जब
वे आपसमें लड़ते थे दिखाई दिया और यह कहके उन्हें
मिलाप करनेको मनाया कि हे मनुष्यो तुम तो भाई हो
२७ एक दूसरेसे क्यों अन्याय करते हो । परन्तु जो अपने
पड़ोसीसे अन्याय करता था उसने उसको हटाके कहा
२८ किसने तुझे हमोंपर अध्यक्ष और न्यायी ठहराया। क्या

जिस रीतिसे तूने कल मिसरीको मार डाला तू मुझे मार
डालने चाहता है । इस बातपर मूसा भागा और मिदि- २९
यान देशमें परदेशी हुआ और वहां दो पुत्र उसको उत्पन्न
हुए । जब चालीस बरस बीत गये तब परमेश्वरके दूतने ३०
सीनई पर्ब्बतके जंगलमें उसको एक झाड़ीकी आगकी
ज्वालामें दर्शन दिया । मूसाने देखके उस दर्शनसे अचंभा ३१
किया और जब वह दृष्टि करनेको निकट आता था तब
परमेश्वरका शब्द उस पास पहुंचा . कि मैं तेरे पितरोंका ३२
ईश्वर अर्थात इब्राहीमका ईश्वर और इसहाकका ईश्वर
और याकूबका ईश्वर हूं . तब मूसा कांपने लगा और
दृष्टि करनेका उसे साहस न रहा । तब परमेश्वरने ३३
उससे कहा अपने पांवोंकी जूतियां खोल क्योंकि वह
स्थान जिसपर तू खड़ा है पवित्र भूमि है । मैंने दृष्टि ३४
करके अपने लोगोंकी जो मिसरमें हैं दुर्दशा देखी है
और उनका कहरना सुना है और उन्हें छुड़ानेको उतर
आया हूं और अब आ मैं तुझे मिसरको भेजूंगा । यही ३५
मूसा जिसे उन्होंने नकारके कहा किसने तुझे अध्यक्ष
और न्यायी ठहराया उसीको ईश्वरने उस दूतके हाथसे
जिसने उसको झाड़ीमें दर्शन दिया अध्यक्ष और निस्ता-
रक करके भेजा । यही मिसर देशमें और लाल समुद्रमें ३६
और जंगलमें चालीस बरस अद्भुत काम और चिन्ह दि-
खाके उन्हें निकाल लाया । यही वह मूसा है जिसने ३७
इस्रायेलके सन्तानोंसे कहा परमेश्वर तुम्हारा ईश्वर
तुम्हारे भाइयोंमेंसे मेरे समान एक भविष्यद्वक्ताको तुम्हा-
रे लिये उठावेगा तुम उसकी सुनो । यही है जो जंगलमें ३८

मंडलीके बीचमें उस दूतके संग जो सीनई पर्व्वतपर
उससे बोला और हमारे पितरोंके संग था और उसने
३९ हमें देनेके लिये जीवती बाणियां पाईं । पर हमारे
पितरोंने उसके आज्ञाकारी होनेकी इच्छा न किई परन्तु
४० उसे हटाके अपने मनमें मिसरकी ओर फिरे . और
हारोनसे बोले हमारे लिये देवोंको बनाइये जो हमारे
आगे जायें क्योंकि यह मूसा जो हमें मिसर देशमेंसे
निकाल लाया उसे हम नहीं जानते क्या हुआ है ।
४१ उन दिनोंमें उन्होंने बछड़ू बनाके उस मूर्त्तिके आगे
बलि चढ़ाया और अपने हाथोंके कामोंसे मगन होते थे ।
४२ तब ईश्वरने मुंह फेरके उन्हें आकाशकी सेना पूजनेको
त्याग दिया जैसा भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकमें लिखा है कि
हे इस्रायेलके घराने क्या तुमने चालीस बरस जंगलमें
४३ मेरे आगे पशुमेध और बलि चढ़ाये । तौभी तुमने
मोलकका तंबू और अपनी देवता रिंफनका तारा उठा
लिया अर्थात उन आकारोंको जो तुमने पूजनेको बनाये.
और मैं तुम्हें बाबुलसे और उधर ले जाके बसाऊंगा ।
४४ साक्षीका तंबू जंगलमें हमारे पितरोंके बीचमें था
जैसा उसीने ठहराया जिसने मूसासे कहा कि जो आकार
४५ तूने देखा है उसके अनुसार उसको बना । और उसको
हमारे पितर लोग यिहोशूआके संग अगलोंसे पाके तब
यहां लाये जब उन्होंने उन अन्यदेशियोंका अधिकार
पाया जिन्हें ईश्वरने हमारे पितरोंके साम्नेसे निकाल
४६ दिया . सोई दाऊदके दिनोंतक हुआ जिसपर ईश्वरका
अनुग्रह था और जिसने मांगा कि मैं याकूबके ईश्वरके

लिये डेरा ठहराऊं। पर सुलेमानने उसके लिये घर ४७
बनाया। परन्तु सर्ब्बप्रधान जो है सो हाथके बनाये हुए ४८
मन्दिरोंमें बास नहीं करता है जैसा भविष्यद्वक्ताने कहा
है. कि परमेश्वर कहता है स्वर्ग मेरा सिंहासन और ४९
पृथिवी मेरे चरणोंकी पीढ़ी है तुम मेरे लिये कैसा
घर बनाओगे अथवा मेरे बिश्रामका कौनसा स्थान
है। क्या मेरे हाथने यह सब बस्तु नहीं बनाईं। ५०

हे हठीले और मन और कानोंके खतनाहीन लोगो ५१
तुम सदा पवित्र आत्माका साम्हना करते हो. जैसा
तुम्हारे पितरोंने तैसा तुम भी। भविष्यद्वक्ताओंमेंसे ५२
तुम्हारे पितरोंने किसको नहीं सताया. और उन्होंने
उन्हें मार डाला जिन्होंने इस धर्म्मी जनके आनेका
आगेसे सन्देश दिया जिसके तुम अब पकड़वानेहारे
और हत्यारे हुए हो. जिन्होंने स्वर्ग दूतोंके द्वारा ५३
ठहराई हुई व्यवस्था पाई है तौभी पालन न किई।

यह बातें सुननेसे उनके मनको तीरसा लग गया और ५४
वे स्तिफानपर दांत पीसने लगे। परन्तु उसने पवित्र आ- ५५
त्मासे परिपूर्ण हो स्वर्गकी ओर ताकके ईश्वरकी महि-
माको और यीशुको ईश्वरकी दहिनी ओर खड़े देखा.
और कहा देखो मैं स्वर्गको खुले और मनुष्यके पुत्रको ५६
ईश्वरकी दहिनी ओर खड़े देखता हूं। तब उन्होंने बड़े ५७
शब्दसे चिल्लाके अपने कान बन्द किये और एक चित्त
होके उसपर लपके. और उसे नगरके बाहर निकालके ५८
पत्थरवाह करने लगे और साक्षियोंने अपने कपड़े शा-
वल नाम एक जवानके पांवों पास उतार रखे। और ५९

उन्होंने स्तिफानको पत्थरवाह किया जो यह कहके प्रार्थ-
ना करता था कि हे प्रभु यीशु मेरे आत्माको ग्रहण कर।
६० और घुटने टेकके उसने बड़े शब्दसे पुकारा हे प्रभु यह
पाप उनपर मत लगा और यह कहके सो गया ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

१ उपद्रवके कारण मंडलीके लोगोंका तितर बितर होना। ४ फिलिपका शोमिरोनि-
योंको सुसमाचार सुनाना । ९ शिमोन टोन्हाका वृत्तान्त । २५ फिलिप और
नपुंसकका बर्णन ।

१ शावल स्तिफानके मारे जानेमें सम्मति देता था. उस
समय यिरूशलीममेंकी मंडलीपर बड़ा उपद्रव हुआ और
प्रेरितोंको छोड़ वे सब यिहूदिया और शोमिरोन देशोंमें
२ तितर बितर हुए। भक्त लोगोंने स्तिफानको कबरमें
३ रखा और उसके लिये बड़ा बिलाप किया । शावल
मंडलीको नाश करता रहा कि घर घर घुसके पुरुषों
और स्त्रियोंको पकड़के बन्दीगृहमें डालता था ।
४ जो तितर बितर हुए सो सुसमाचार प्रचार करते
५ हुए फिरा किये । और फिलिपने शोमिरोनके एक
६ नगरमें जाके खीष्टकी कथा लोगोंको सुनाई । और जो
बातें फिलिपने कहीं उन्होंपर लोगोंने उन आश्चर्य्य
कर्म्मोंको जो वह करता था सुनने और देखनेसे एक
७ चित्त होके मन लगाया । क्योंकि बहुतोंमेंसे जिन्हें
अशुद्ध भूत लगे थे वे भूत बड़े शब्दसे पुकारते हुए
निकले और बहुत अर्द्धांगी और लंगड़े लोग चंगे किये
८ गये । और उस नगरमें बड़ा आनन्द हुआ ।
९ परन्तु उस नगरमें आगेसे शिमोन नाम एक मनुष्य
था जो टोना करके शोमिरोनके लोगोंको बिस्मित करता

था और अपनेको कोई बड़ा पुरुष कहता था। और १०
छोटेसे बड़ेतक सब उसको मानके कहते थे कि यह
मनुष्य ईश्वरकी महा शक्ति ही है। उसने बहुत दिनोंसे ११
उन्हें टोनोंसे बिस्मित किया था इसलिये वे उसको मानते
थे। परन्तु जब उन्होंने फिलिपका जो ईश्वरके राज्यके १२
और यीशु खीष्टके नामके विषयमेंका सुसमाचार सुनाता
था बिश्वास किया तब पुरुष और स्त्रियां भी बपतिसमा
लेने लगे। तब शिमोनने आप भी बिश्वास किया और १३
बपतिसमा लेके फिलिपके संग लगा रहा और आश्चर्य्य
कर्म्म और बड़े चिन्ह जो होते थे देखके बिस्मित होता था।

जो प्रेरित यिरूशलीममें थे उन्होंने जब सुना कि शो- १४
मिरोनियोंने ईश्वरका बचन ग्रहण किया है तब पितर
और योहनको उनके पास भेजा। और उन्होंने जाके १५
उनके लिये प्रार्थना किई कि वे पवित्र आत्मा पावें।
क्योंकि वह अबलों उनमेंसे किसीपर नहीं पड़ा था केवल १६
उन्होंने प्रभु यीशुके नामसे बपतिसमा लिया था। तब १७
उन्होंने उनपर हाथ रखे और उन्होंने पवित्र आत्मा
पाया।

शिमोन यह देखके कि प्रेरितोंके हाथोंके रखनेसे १८
पवित्र आत्मा दिया जाता है उनके पास रुपैये लाया.
और कहा मुझको भी यह अधिकार दीजिये कि जिस कि- १९
सीपर मैं हाथ रखूं वह पवित्र आत्मा पावे। परन्तु २०
पितरने उससे कहा तेरे रुपैये तेरे संग नष्ट होवें क्योंकि
तूने ईश्वरका दान रुपैयोंसे मोल लेनेका बिचार किया
है। तुझे इस बातमें न भाग न अधिकार है क्योंकि तेरा २१

२२ मन ईश्वरके आगे सीधा नहीं है। इसलिये अपनी इस
बुराईसे पश्चात्ताप करके ईश्वरसे प्रार्थना कर क्या
२३ जाने तेरे मनका बिचार क्षमा किया जाय। क्योंकि मैं
देखता हूं कि तू अति कड़वे पित्तमें और अधर्म्मके बंधन-
२४ में पड़ा है। शिमोनने उत्तर दिया कि आप लोग मेरे
लिये प्रभुसे प्रार्थना कीजिये कि जो बातें आप लोगोंने
कही हैं उनमेंसे कोई बात मुझपर न पड़े।
२५ सो वे साक्षी देके और प्रभुका वचन सुनाके यिरूश-
लीमको लौटे और उन्होंने शोमिरोनियोंके बहुत गांवोंमें
२६ सुसमाचार प्रचार किया। परन्तु परमेश्वरके एक दूतने
फिलिपसे कहा उठके दक्षिणको उस मार्गपर जा जो
यिरूशलीमसे अज्जा नगरको जाता है वह जंगल है।
२७ वह उठके गया और देखो कूश देशका एक मनुष्य था
जो नपुंसक और कूशियोंकी राणी कन्दाकीका एक
प्रधान और उसके सारे धनपर अध्यक्ष था और यिरू-
२८ शलीमको भजन करनेको आया था। और वह लौटता था
और अपने रथपर बैठा हुआ यिशैयाह भविष्यद्वक्ताका
२९ पुस्तक पढ़ता था। तब आत्माने फिलिपसे कहा निकट
३० जाके इस रथसे मिल जा। फिलिपने उस ओर दौड़के
उस मनुष्यको यिशैयाह भविष्यद्वक्ताका पुस्तक पढ़ते हुए
सुना और कहा क्या आप जो पढ़ते हैं उसे बूझते हैं।
३१ उसने कहा यदि कोई मुझे न बतावे तो मैं क्योंकर बूझ
सकूं. और उसने फिलिपसे बिन्ती किई कि चढ़के मेरे
३२ संग बैठिये। धर्म्मपुस्तकका अध्याय जो वह पढ़ता था
यही था कि वह भेड़की नाईं बध होनेको पहुंचाया गया

और जैसा मेम्ना अपने रोम कतरनेहारेके साम्ने अबोल
है तैसा उसने अपना मुंह न खोला। उसकी दीनताई- ३३
में उसका न्याय नहीं होने पाया और उसके समयके लो-
गोंका बर्णन कौन करेगा क्योंकि उसका प्राण पृथिवीसे
उठाया गया। इसपर नपुंसकने फिलिपसे कहा मैं ३४
आपसे बिन्ती करता हूं भविष्यद्वक्ता यह बात किसके
विषयमें कहता है अपने विषयमें अथवा किसी दूसरे-
के विषयमें। तब फिलिपने अपना मुंह खोलके और ३५
धर्म्मपुस्तकके इस बचनसे आरंभ करके यीशुका सुसमा-
चार उसको सुनाया। मार्गमें जाते जाते वे किसी पानी- ३६
के पास पहुंचे और नपुंसकने कहा देखिये जल है बप-
तिसमा लेनेमें मुझे क्या रोक है। [फिलिपने कहा जो ३७
आप सारे मनसे बिश्वास करते हैं तो हो सकता है.
उसने उत्तर दिया मैं बिश्वास करता हूं कि यीशु खीष्ट
ईश्वरका पुत्र है।] तब उसने रथ खड़ा करनेकी आज्ञा ३८
दिई और वे दोनों फिलिप और नपुंसक भी जलमें
उतरे और फिलिपने उसको बपतिसमा दिया। जब ३९
वे जलमेंसे ऊपर आये तब परमेश्वरका आत्मा फिलिप-
को ले गया और नपुंसकने उसे फिर नहीं देखा क्योंकि
वह अपने मार्गपर आनन्द करता हुआ चला गया।
परन्तु फिलिप असदोद नगरमें पाया गया और आगे ४०
बढ़के जबलों कैसरिया नगरमें न पहुंचा सब नगरोंमें
सुसमाचार सुनाता गया।

९ नवां पर्ब्ब।

१ दमेसकको जाते हुए शावलका यीशुका दर्शन पाना और मन फिराना। १०

अननियाहपर पावल (अर्थात शावल) की बातका प्रगट होना । १७ अननियाहके हाथसे पावलका दृष्टि पाना और वपतिसमा लेना । १९ पावलका सभाके घरोंमें यीशुका सुसमाचार प्रचार करना और यिहूदियोंका उससे बैर करना । २६ उसका यिरूशलीमके भाइयोंसे मिलना । ३१ पितरका ऐनियको चंगा करना । ३६ दर्काको जिलाना ।

१ शावल जिसको अबलों प्रभुके शिष्योंको धमकाने और
घात करनेको सांस फूल रही थी महायाजकके पास गया.
२ और उससे दमेसक नगरकी सभाओंके नामपर चिट्ठियां
मांगीं इसलिये कि यदि कोई मिलें क्या पुरुष क्या स्त्रियां
जो उस पन्थके हों तो उन्हें बांधे हुए यिरूशलीमको
३ ले आवे । परन्तु जाते हुए जब वह दमेसकके निकट
पहुंचा तब अचांचक स्वर्गसे एक ज्योति उसकी चारों
४ और चमकी । और वह भूमिपर गिरा और एक शब्द
सुना जो उससे बोला हे शावल हे शावल तू मुझे क्यों
५ सताता है । उसने कहा हे प्रभु तू कौन है . प्रभुने कहा
मैं यीशु हूं जिसे तू सताता है पैनोंपर लात मारना तेरे
६ लिये कठिन है । उसने कंपित और अचंभित हो कहा
हे प्रभु तू क्या चाहता है कि मैं करूं . प्रभुने उससे कहा
उठके नगरमें जा और तुझसे कहा जायगा तुझे क्या
७ करना उचित है । और जो मनुष्य उसके संग जाते थे
सो चुप खड़े थे कि वे शब्द तो सुनते थे पर किसीको
८ नहीं देखते थे । तब शावल भूमिसे उठा परन्तु जब
अपनी आंखें खोलीं तब किसीको न देख सका पर वे
९ उसका हाथ पकड़के उसे दमेसकमें लाये । और वह तीन
दिनलों नहीं देख सकता था और न खाता न पीता था ।
१० दमेसकमें अननियाह नाम एक शिष्य था और प्रभुने

दर्शनमें उससे कहा हे अननियाह . उसने कहा हे प्रभु
देखिये मैं हूं। तब प्रभुने उससे कहा उठके उस गलीमें ११
जो सीधी कहावती है जा और यिहूदाके घरमें शावल
नाम तारस नगरके एक मनुष्यको ढूंढ़ क्योंकि देख वह
प्रार्थना करता है . और उसने दर्शनमें यह देखा है १२
कि अननियाह नाम एक मनुष्यने भीतर आके उसपर
हाथ रखा कि वह दृष्टि पावे। अननियाहने उत्तर दिया १३
कि हे प्रभु मैंने बहुतोंसे इस मनुष्यके विषयमें सुना है
कि उसने यिरूशलीममें तेरे पवित्र लोगोंसे कितनी
बुराई किई है। और यहां उसको तेरे नामकी सब १४
प्रार्थना करनेहारोंको बांधनेका प्रधान याजकोंकी ओरसे
अधिकार है। प्रभुने उससे कहा चला जा क्योंकि वह १५
अन्यदेशियों और राजाओं और इस्रायेलके सन्तानोंके
आगे मेरा नाम पहुंचानेको मेरा एक चुना हुआ पात्र
है। क्योंकि मैं उसे बताऊंगा कि मेरे नामके लिये १६
उसको कैसा बड़ा दुःख उठाना होगा।

तब अननियाहने जाके उस घरमें प्रवेश किया और १७
उसपर हाथ रखके कहा हे भाई शावल प्रभुने अर्थात
यीशुने जिसने उस मार्गमें जिससे तू आता था तुझको
दर्शन दिया मुझे भेजा है इसलिये कि तू दृष्टि पावे और
पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होवे। और तुरन्त उसकी आं- १८
खोंसे छिलकेसे गिर पड़े और वह तुरन्त देखने लगा और
उठके बपतिसमा लिया और भोजन करके बल पाया।

तब शावल कितने दिन दमेसकमेंके शिष्योंके संग था। १९
और वह तुरन्त सभाओंमें यीशुकी कथा सुनाने लगा २०

२१ कि वह ईश्वरका पुत्र है । और सब सुननेहारे बिस्मित
हो कहने लगे क्या यह वह नहीं है जिसने यिरूशलीममें
इस नामकी प्रार्थना करनेहारोंको नाश किया और यहां
इसीलिये आया था कि उन्हें बांधे हुए प्रधान याजकोंके
२२ आगे पहुंचावे । परन्तु शावल और भी दृढ़ होता गया
और यही ख्रीष्ट है इस बातका प्रमाण देके दमेसकमें
२३ रहनेहारे यिहूदियोंको ब्याकुल किया । जब बहुत दिन
बीत गये तब यिहूदियोंने उसे मार डालनेका आपसमें
२४ बिचार किया । परन्तु उनकी कुमंत्रणा शावलको जान
पड़ी . वे उसे मार डालनेको रात और दिन फाटकोंपर
२५ पहरा भी देते थे । परन्तु शिष्योंने रातको उसे लेके
टोकरेमें लटकाके भीतपरसे उतार दिया ।

२६ जब शावल यिरूशलीममें पहुंचा तब वह शिष्योंसे
मिल जाने चाहता था और वे सब उससे डरते थे क्योंकि
२७ वे उसके शिष्य होनेकी प्रतीति नहीं करते थे । परन्तु
बर्णबा उसे ले करके प्रेरितोंके पास लाया और उनसे
कह दिया कि उसने क्योंकर मार्गमें प्रभुको देखा था और
प्रभु उससे बोला था और क्योंकर उसने दमेसकमें यीशु-
२८ के नामसे खोलके बात किई थी । तब वह यिरूशलीम-
में उनके संग आया जाया करने लगा और प्रभु यीशु-
२९ के नामसे खोलके बात करने लगा । उसने यूनानीय
भाषा बोलनेहारोंसे भी कथा और बिबाद किया पर वे
३० उसे मार डालनेका यत्न करने लगे । यह जानके भाई
लोग उसे कैसरियामें लाये और तारसको ओर भेजा ।

३१ सो सारे यिहूदिया और गालील और शोमिरोनमें

मंडलियोंको चैन होता था और वे सुधर जाती थीं और
प्रभुके भयमें और पवित्र आत्माकी शांतिमें चलती थीं
और बढ़ जाती थीं । तब पितर सब पवित्र लोगोंमें ३२
फिरते हुए उन्होंके पास भी आया जो लुद्दा नगरमें बास
करते थे । वहां उसने ऐनिय नाम एक मनुष्यको पाया ३३
जो अर्द्धांगी था और आठ बरससे खाटपर पड़ा हुआ
था । पितरने उससे कहा हे ऐनिय यीशु खीष्ट तुझे ३४
चंगा करता है उठ और अपना बिछौना सुधार . तब
वह तुरन्त उठा । और लुद्दा और शारोनके सब ३५
निवासियोंने उसे देखा और वे प्रभुकी ओर फिरे ।
याफो नगरमें तबीथा अर्थात दर्का नाम एक शिष्या ३६
थी . वह सुकर्म्मों और दानोंसे जो वह करती थी पूर्ण
थी । उन दिनोंमें वह रोगी हुई और मर गई और ३७
उन्होंने उसे नहलाके उपरौठी कोठरीमें रखा । और ३८
इसलिये कि लुद्दा याफोके निकट था शिष्योंने यह सुनके
कि पितर वहां है दो मनुष्योंको उस पास भेजके बिन्ती
किई कि हमारे पास आनेमें बिलंब न कीजिये । तब ३९
पितर उठके उनके संग गया और जब वह पहुंचा तब
वे उसे उस उपरौठी कोठरीमें ले गये और सब बिधवाएं
रोती हुईं और जो कुरते और बस्त्र दर्का उनके संग होते
हुए बनाती थी उन्हें दिखाती हुईं उस पास खड़ी हुईं ।
परन्तु पितरने सभोंको बाहर निकाला और घुटने टेकके ४०
प्रार्थना किई और लोथकी ओर फिरके कहा हे तबीथा
उठ . तब उसने अपनी आंखें खोलीं और पितरको देखके
उठ बैठी । उसने हाथ देके उसको उठाया और पवित्र ४१

लोगों और बिधवाओंको बुलाके उसे जीवती दिखाई ।
४२ यह बात सारे याफोमें जान पड़ी और बहुत लोगोंने
४३ प्रभुपर बिश्वास किया । और पितर याफोमें शिमोन
नाम किसी चमारके यहां बहुत दिन रहा ।

१० दसवां पर्ब्ब ।

१ स्वर्गदूतकी आज्ञासे कर्णीलियका पितरको बुलवा भेजना । ९ पितरका एक दर्शन पाना । १७ कर्णीलियके दूतोंके संग पितरकी बातचीत और पितरका उनके साथ जाना । २४ कर्णीलियसे पितरकी बातचीत । ३४ पितरका सुसमाचार प्रचार करना । ४४ कर्णीलिय और उसके मित्रोंपर पवित्र आत्माका उतरना और उनका बपतिसमा लेना ।

१ कैसरियामें कर्णीलिय नाम एक मनुष्य था जो इत-
२ लीय नाम पलटनका एक शतपति था । वह भक्त जन था
और अपने सारे घराने समेत ईश्वरसे डरता था और
लोगोंको बहुत दान देता था और नित्य ईश्वरसे प्रार्थना
३ करता था । उसने दिनको तीसरे पहरके निकट दर्शन-
में प्रत्यक्ष देखा कि ईश्वरका एक दूत उस पास भीतर
४ आया और उससे बोला हे कर्णीलिय । उसने उसकी
ओर ताकके और भयमान होके कहा हे प्रभु क्या है .
उसने उससे कहा तेरी प्रार्थनाएं और तेरे दान स्मरण-
५ के लिये ईश्वरके आगे पहुंचे हैं । और अब मनुष्योंको
याफो नगर भेजके शिमोनको जो पितर कहावता है
६ बुला । वह शिमोन नाम किसी चमारके यहां जिसका
घर समुद्रके तीरपर है पाहुन है . जो कुछ तुझे करना
७ उचित है सो वही तुझसे कहेगा । जब वह दूत जो
कर्णीलियसे बात करता था चला गया तब उसने
अपने सेवकोंमेंसे दोको और जो उसके यहां लगे रहते

थे उनमेंसे एक भक्त योद्धाको बुलाया . और उन्होंको ८
सब बातें सुनाके उन्हें याफोको भेजा।
दूसरे दिन ज्योंही वे मार्गमें चलते थे और नगरके ९
निकट पहुंचे त्योंही पितर दो पहरके निकट प्रार्थना
करनेको कोठेपर चढ़ा। तब वह बहुत भूखा हुआ और १०
कुछ खाने चाहता था पर जिस समय वे तैयार करते थे
वह बेसुध हो गया। और उसने स्वर्गको खुले और ११
बड़ी चद्दरकी नाईं किसी पात्रको चार कोनोंसे बांधे
हुए और पृथिवीकी ओर लटकाये हुए अपनी ओर
उतरते देखा। उसमें पृथिवीके सब चौपाये और बन पशु १२
और रेंगनेहारे जन्तु और आकाशके पंछी थे। और एक १३
शब्द उस पास पहुंचा कि हे पितर उठ मार और खा।
पितरने कहा हे प्रभु ऐसा न होवे क्योंकि मैंने कभी कोई १४
अपवित्र अथवा अशुद्ध बस्तु नहीं खाई। और शब्द १५
फिर दूसरी बेर उस पास पहुंचा कि जो कुछ ईश्वरने
शुद्ध किया है उसको तू अशुद्ध मत कह। यह तीन १६
बार हुआ तब वह पात्र फिर स्वर्गपर उठा लिया गया।
जिस समय पितर अपने मनमें दुबधा करता था कि १७
यह दर्शन जो मैंने देखा है क्या है देखो वे मनुष्य जो
कर्णीलियकी ओरसे भेजे गये थे शिमोनके घरका ठिकाना
पा करके डेवढ़ीपर खड़े हुए . और पुकारके पूछते थे क्या १८
शिमोन जो पितर कहावता है यहां पाहुन है। पितर १९
उस दर्शनके विषयमें सोचताही था कि आत्माने उससे
कहा देख तीन मनुष्य तुझे ढूंढ़ते हैं। पर तू उठके उतर २०
जा और उनके संग बेखटके चला जा क्योंकि मैंने उन्हें

२१ भेजा है । तब पितरने उन मनुष्योंके पास जो कर्णीलिय-
की ओरसे उस पास भेजे गये थे उतरके कहा देखो
जिसे तुम ढूंढ़ते हो सो मैं हूं तुम किस कारणसे आये
२२ हो । वे बोले कर्णीलिय शतपति जो धर्म्मी मनुष्य और
ईश्वरसे डरनेहारा और सारे यिहूदी लोगोंमें सुख्यात
है उसको एक पवित्र दूतसे आज्ञा दिई गई कि आप-
२३ को अपने घरमें बुलाके आपसे बातें सुने । तब पितर-
ने उन्हें भीतर बुलाके उनकी पहुनई किई और दूसरे
दिन वह उनके संग गया और याफोके भाइयोंमेंसे
कितने उसके साथ हो लिये ।
२४ दूसरे दिन उन्होंने कैसरियामें प्रवेश किया और
कर्णीलिय अपने कुटुंबों और प्रिय मित्रोंको एकट्ठे बुलाके
२५ उनकी बाट जोहता था । जब पितर भीतर आता था
तब कर्णीलिय उससे आ मिला और पांवों पड़के प्रणाम
२६ किया । परन्तु पितरने उसको उठाके कहा खड़ा हो मैं
२७ आप भी मनुष्य हूं । और वह उसके संग बातचीत करता
२८ हुआ भीतर गया और बहुत लोगोंको एकट्ठे पाया . और
उनसे कहा तुम जानते हो कि अन्यदेशीकी संगति करना
अथवा उसके यहां जाना यिहूदी मनुष्यको बर्ज्जित है
परन्तु ईश्वरने मुझे बताया है कि तू किसी मनुष्यको
२९ अपवित्र अथवा अशुद्ध मत कह । इसलिये मैं जो
बुलाया गया तो इसके बिरुद्ध कुछ न कहके चला
आया सो मैं पूछता हूं कि तुम्होंने किस बातके लिये
३० मुझे बुलाया है । कर्णीलियने कहा चार दिन हुए कि
मैं इस घड़ीलों उपवास करता था और तीसरे पहर

अपने घरमें प्रार्थना करता था कि देखो एक पुरुष चमक-
ता बस्त्र पहिने हुए मेरे आगे खड़ा हुआ. और बोला ३१
हे कर्णीलिय तेरी प्रार्थना सुनी गई है और तेरे दान
ईश्वरके आगे स्मरण किये गये हैं। इसलिये याफो ३२
नगर भेजके शिमोनको जो पितर कहावता है बुला.
वह समुद्रके तीरपर शिमोन चमारके घरमें पाहुन है.
वह आके तुझसे बात करेगा। तब मैंने तुरन्त आप- ३३
के पास भेजा और आपने अच्छा किया जो आये हैं
सो अब ईश्वरने जो कुछ आपको आज्ञा दिई है सोई
सुननेको हम सब यहां ईश्वरके साम्हने हैं।

तब पितरने मुंह खोलके कहा मुझे सचमुच बूझ पड़- ३४
ता है कि ईश्वर मुंह देखा बिचार करनेहारा नहीं है।
परन्तु हर एक देशके लोगोंमें जो उससे डरता है और ३५
धर्म्मके कार्य्य करता है सो उससे ग्रहण किया जाता है।
उसने वह बचन तुम्होंके पास भेजा है जो उसने इस्रा- ३६
येलके सन्तानोंके पास भेजा अर्थात यीशु ख्रीष्टके द्वारासे
जो सभोंका प्रभु है शांतिका सुसमाचार सुनाया। तुम वह ३७
बात जानते हो जो उस बपतिसमाके पीछे जिसका
योहनने उपदेश किया गालीलसे आरंभ कर सारे यिहू-
दियामें फैल गई. अर्थात नासरत नगरके यीशुके विषय- ३८
में क्योंकर ईश्वरने उसको पवित्र आत्मा और सामर्थ्य-
से अभिषेक किया और वह भलाई करता और सभोंको
जो शैतानसे पेरे जाते थे चंगा करता फिरा क्योंकि ईश्वर
उसके संग था। और हम उन सब कामोंके साक्षी हैं जो ३९
उसने यिहूदियोंके देशमें और यिरूशलीममें भी किये

४० जिसे लोगोंने काठपर लटकाके मार डाला । उसको
ईश्वरने तीसरे दिन जिला उठाया श्रीर उसको प्रगट
४१ होने दिया . सब लोगोंके आगे नहीं परन्तु साक्षियोंके
आगे जिन्हें ईश्वरने पहिलेसे ठहराया था अर्थात हमोंके
आगे जिन्होंने उसके मृतकोंमेंसे जी उठनेके पीछे उसके
४२ संग खाया और पीया । और उसने हमोंको आज्ञा दिई
कि लोगोंको उपदेश और साक्षी देओ कि वही है जिस-
को ईश्वरने जीवतों और मृतकोंका न्यायी ठहराया है ।
४३ उसपर सारे भविष्यद्वक्ता साक्षी देते हैं कि जो कोई उसपर
बिश्वास करे सो उसके नामके द्वारा पापमोचन पावेगा ।
४४ पितर यह बातें कहताही था कि पवित्र आत्मा
४५ बचनके सब सुननेहारोंपर पड़ा । और खतना किये
हुए बिश्वासी जितने पितरके संग आये थे बिस्मित हुए
कि अन्यदेशियोंपर भी पवित्र आत्माका दान उंडेला
४६ गया है । क्योंकि उन्होंने उन्हें अनेक बोलियां बोलते
४७ और ईश्वरकी महिमा करते सुना । इसपर पितर-
ने कहा क्या कोई जलको रोक सकता है कि इन
लोगोंको जिन्होंने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया
४८ है बपतिसमा न दिया जावे । और उसने आज्ञा दिई
कि उन्हें प्रभुके नामसे बपतिसमा दिया जाय . तब
उन्होंने उससे कई एक दिन ठहर जानेकी बिन्ती किई ।

११ एग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ अन्यदेशियोंको सुसमाचार सुनानेके विषयमें पितरका उत्तर । १९ अन्तैखियामें सुस-
माचारके प्रचार किये जानेका बर्णन । २७ क्लौदिय कैसरके समयके अकालकी कथा ।

१ जो प्रेरित और भाई लोग यिहूदियामें थे उन्होंने
सुना कि अन्यदेशियोंने भी ईश्वरका बचन ग्रहण किया

है। और जब पितर यिरूशलीमको गया तब खतना किये २
हुए लोग उससे बिबाद करने लगे . और बोले तूने खत- ३
नाहीन लोगोंके यहां जाके उनके संग खाया। तब पितर- ४
ने आरंभ कर एक ओरसे उन्हें कह सुनाया . कि मैं ५
याफो नगरमें प्रार्थना करता था और बेसुध होके एक
दर्शन अर्थात स्वर्गपरसे चार कोनोंसे लटकाई हुई बड़ी
चद्दरकी नाईं किसी पात्रको उतरते देखा और वह मेरे
पासलों आया। मैंने उसकी ओर ताकके देख लिया और ६
पृथिवीके चौपायों और बन पशुओं और रेंगनेहारे
जन्तुओंको और आकाशके पंछियोंको देखा . और एक ७
शब्द सुना जो मुझसे बोला हे पितर उठ मार और खा।
मैंने कहा हे प्रभु ऐसा न होवे क्योंकि कोई अपवित्र ८
अथवा अशुद्ध बस्तु मेरे मुंहमें कभी नहीं गई। परन्तु ९
शब्दने दूसरी बेर स्वर्गसे मुझे उत्तर दिया कि जो कुछ
ईश्वरने शुद्ध किया है उसको तू अशुद्ध मत कह। यह तीन १०
बार हुआ तब सब कुछ फिर स्वर्गपर खींचा गया।
और देखो तुरन्त तीन मनुष्य जो कैसरियासे मेरे पास ११
भेजे गये थे जिस घरमें मैं था उस घरपर आ पहुंचे।
तब आत्माने मुझसे उनके संग बेखटके चले जानेको १२
कहा और ये छः भाई भी मेरे संग गये और हमने उस
मनुष्यके घरमें प्रवेश किया। और उसने हमें बताया कि १३
उसने क्योंकर अपने घरमें एक दूतको खड़े हुए देखा था
जो उससे बोला कि मनुष्योंको याफो नगर भेजके
शिमोनको जो पितर कहावता है बुला। वह तुझसे १४
बातें कहेगा जिनके द्वारा तू और तेरा सारा घराना त्राण

१५ पावे । जब मैं बात करने लगा तब पवित्र आत्मा
जिस रीतिसे आरंभमें हमोंपर पड़ा उसी रीतिसे उन्होंपर
१६ भी पड़ा । तब मैंने प्रभुका बचन स्मरण किया कि उसने
कहा योहनने जलमें बपतिसमा दिया परन्तु तुम्हें पवित्र
१७ आत्मामें बपतिसमा दिया जायगा । सो जब कि ईश्वरने
प्रभु यीशु खीष्टपर बिश्वास करनेहारोंको जैसे हमोंको
तैसे उन्होंको भी एकसां दान दिया तो मैं कौन था कि
१८ मैं ईश्वरको रोक सकता । वे यह सुनके चुप हुए और
यह कहके ईश्वरकी स्तुति करने लगे कि तब तो ईश्वरने
अन्यदेशियोंको भी पश्चात्ताप दान किया है कि वे जीवें।
१९ स्तिफानके कारण जो क्लेश हुआ तिसके हेतुसे जो
लोग तितर बितर हुए थे उन्होंने फैनीकिया देश और
कुप्रस टापू और अन्तैखिया नगरलों फिरते हुए किसी
२० औरको नहीं केवल यिहूदियोंको बचन सुनाया। परन्तु
उनमेंसे कितने कुप्री और कुरीनीय मनुष्य थे जो अन्तै-
खियामें आके यूनानियोंसे बात करने और प्रभु यीशुका
२१ सुसमाचार सुनाने लगे । और प्रभुका हाथ उनके संग
था और बहुत लोग बिश्वास करके प्रभुकी ओर फिरे ।
२२ तब उनके विषयमें वह बात यिरूशलीममेंकी मंडलीके
कानोंमें पहुंची और उन्होंने बर्णबाको भेजा कि वह
२३ अन्तैखियालों जाय । वह जब पहुंचा और ईश्वरके
अनुग्रहको देखा तब आनन्दित हुआ और सभोंको
उपदेश दिया कि मनकी अभिलाषा सहित प्रभुसे मिले
२४ रहो । क्योंकि वह भला मनुष्य और पवित्र आत्मा
और बिश्वाससे परिपूर्ण था . और बहुत लोग प्रभुसे

मिल गये। तब बर्णबा शावलको ढूंढ़नेके लिये तारस- २५
को गया। और वह उसको पाके अन्तैखियामें लाया २६
और वे दोनों जन बरस भर मंडलीमें एकट्ठे होते थे
और बहुत लोगोंको उपदेश देते थे और शिष्य लोग
पहिले अन्तैखियामें खीष्टियान कहलाये।

उन दिनोंमें कई एक भविष्यद्वक्ता यिरूशलीमसे अन्तै- २७
खियामें आये। उनमेंसे आगाब नाम एक जनने उठके २८
आत्माकी शिक्षासे बताया कि सारे संसारमें बड़ा अकाल
पड़ेगा और वह अकाल क्लौदिय कैसरके समयमें पड़ा।
तब शिष्योंने हर एक अपनी अपनी सम्पत्तिके अनुसार २९
यिहूदियामें रहनेहारे भाइयोंकी सेवकाईके लिये कुछ
भेजनेको ठहराया। और उन्होंने यही किया अर्थात ३०
बर्णबा और शावलके हाथ प्राचीनोंके पास कुछ भेजा।

१२ बारहवां पर्व्व।

१ हेरोदका याकूबको बध करना और पितरको बन्दीगृहमें डालना। ५ दूतका पितरको छुड़ाना। १२ पितरका मरियमके घरमें जाना। १८ हेरोदका पहरुओंको बध करवाना। २० हेरोदका मरण।

उस समय हेरोद राजाने मंडलीके कई एक जनों- १
को दुःख देनेको उनपर हाथ बढ़ाये। उसने योहनके २
भाई याकूबको खड्गसे मार डाला। और जब उसने ३
देखा कि यिहूदी लोग इससे प्रसन्न होते हैं तब उसने
पितरको भी पकड़ा और अखमीरी रोटीके पर्व्वके दिन
थे। और उसने उसे पकड़के बन्दीगृहमें डाला और ४
चार चार योद्धाओंके चार पहरोंमें सौंप दिया कि वे
उसको रखें और उसको निस्तार पर्व्वके पीछे लोगों-
के आगे निकाल लानेकी इच्छा करता था।

५ सो पितर बन्दीगृहमें पहरेमें रहता था परन्तु मंडली
लौ लगाके उसके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करती थी।
६ और जब हेरोद उसे निकाल लानेपर था उसी रात
पितर दो योद्धाओंके बीचमें दो जंजीरोंसे बंधा हुआ
सोता था और पहरुए द्वारके आगे बन्दीगृहकी रक्षा
७ करते थे। और देखो परमेश्वरका एक दूत आ खड़ा
हुआ और कोठरीमें ज्योति चमकी और उसने पितर-
के पंजरपर हाथ मारके उसे जगाके कहा शीघ्र उठ.
८ तब उसकी जंजीरें उसके हाथोंसे गिर पड़ीं। दूतने
उससे कहा कमर बांध और अपने जूते पहिन ले और
उसने वैसा किया. तब उससे कहा अपना बस्त्र ओढ़-
९ के मेरे पीछे हो ले। और वह निकलके उसके पीछे
चलने लगा और नहीं जानता था कि जो दूतसे किया
जाता है सो सत्य है परन्तु समझता था कि मैं दर्शन
१० देखता हूं। परन्तु वे पहिले और दूसरे पहरेमेंसे निकले
और नगरमें जानेके लोहेके फाटकपर पहुंचे जो आपसे
आप उनके लिये खुल गया और वे निकलके एक गलीके
अन्तलों बढ़े और तुरन्त दूत पितरके पाससे चला
११ गया। तब पितरको चेत हुआ और उसने कहा अब
मैं निश्चय जानता हूं कि प्रभुने अपना दूत भेजा है
और मुझे हेरोदके हाथसे और सब बातोंसे जिनकी
आस यिहूदी लोग देखते थे छुड़ाया है।
१२ और यह जानके वह योहन जो मार्क कहावता है
तिसकी माता मरियमके घरपर आया जहां बहुत लोग
१३ एकट्ठे हुए प्रार्थना करते थे। जब पितर डेवढ़ीके द्वारपर

खटखटाया तब रोदा नाम एक दासी चुप चाप सुननेको
आई। और पितरका शब्द पहचानके उसने आनन्दके १४
मारे द्वार न खोला परन्तु भीतर दौड़के बताया कि
पितर द्वारपर खड़ा है। उन्होंने उससे कहा तू बौराही १५
है परन्तु वह दृढ़तासे बोली कि ऐसाही है. तब उन्हों-
ने कहा उसका दूत है। परन्तु पितर खटखटाता रहा १६
और वे द्वार खोलके उसे देखके विस्मित हुए। तब १७
उसने हाथसे उन्हें चुप रहनेका सैन किया और उनसे
कहा कि प्रभु क्योंकर उसको बन्दीगृहमेंसे बाहर लाया
था और बोला यह बातें याकूबसे और भाइयोंसे कह
दीजियो तब निकलके दूसरे स्थानको गया।

बिहान हुए योद्धाओंमें बड़ी घबराहट होने लगी १८
कि पितर क्या हुआ। जब हेरोदने उसे ढूंढ़ा और १९
नहीं पाया तब पहरुओंको जांचके आज्ञा किई कि वे
बध किये जायें. तब यिहूदियासे कैसरियाको गया
और वहां रहा।

हेरोदको सोर औ सीदोनके लोगोंसे लड़नेका २०
मन था परन्तु वे एक चित्त होके उस पास आये और
बलास्तको जो राजाके शयनस्थानका अध्यक्ष था मनाके
मिलाप चाहा क्योंकि राजाके देशसे उनके देशका पालन
होता था। और ठहराये हुए दिनमें हेरोदने राजबस्त्र २१
पहिनके सिंहासनपर बैठके उन्होंको कथा सुनाई। और २२
लोग पुकार उठे कि ईश्वरका शब्द है मनुष्यका नहीं।
तब परमेश्वरके एक दूतने तुरन्त उसको मारा क्योंकि २३
उसने ईश्वरकी स्तुति न किई और कीड़े उसको खा

२४ गये और उसने प्राण छोड़ दिया । परन्तु ईश्वरका
बचन अधिक अधिक फैलता गया ।
२५ जब बर्णबा और शावलने वह सेवकाई पूरी किई
थी तब वे योहनको भी जो मार्क कहावता था संग
लेके यिरूशलीमसे लौटे ।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

१ बर्णबा और पावलका आन आन देशोंमें भेजा जाना । ४ उनका सुसमाचार प्रचार करना और इलुमा टोन्हेका साम्ना करना । १३ उनका पिसिदिया देशके अन्तैखिया नगरमें पहुंचना और पावलका उपदेश । ४२ बहुत लोगोंका इस उपदेशको ग्रहण करना । ४४ यिहूदियोंका विरोध करना ।

१ अन्तैखियामेंकी मंडलीमें कितने भविष्यद्वक्ता और
उपदेशक थे अर्थात बर्णबा और शिमियोन जो निगर
कहावता है और कुरीनीय लूकिय और चौथाईके राजा
२ हेरोद्का दूधभाई मनहेम और शावल । जिस समय
वे उपवास सहित प्रभुकी सेवा करते थे पवित्र आत्माने
कहा मैंने बर्णबा और शावलको जिस कामके लिये
बुलाया है उस कामके निमित्त उन्हें मेरे लिये अलग
३ करो । तब उन्होंने उपवास औ प्रार्थना करके और
उनपर हाथ रखके उन्हें बिदा किया ।
४ सो वे पवित्र आत्माके भेजे हुए सिलूकिया नगरको
५ गये और वहांसे जहाजपर कुप्रस टापूको चले । और
सालामी नगरमें पहुंचके उन्होंने ईश्वरका बचन यिहू-
दियोंकी सभाओंमें प्रचार किया और योहन भी सेवक
६ होके उनके संग था । और उन्होंने उस टापूके बीचसे पाफो
नगरलों पहुंचके एक टोन्हेको पाया जो झूठा भविष्यद्वक्ता
७ और यिहूदी था जिसका नाम बरयीशु था । वह सर्ज्जिय

पावल प्रधानके संग था जो बुद्धिमान पुरुष था . उसने
बर्णबा और शावलको अपने पास बुलाके ईश्वरका बचन
सुनने चाहा। परन्तु इलुमा टोन्हा कि उसके नामका ८
यही अर्थ है उनका साम्ना करके प्रधानको बिश्वासकी
ओरसे बहकाने चाहता था। तब शावल अर्थात पावल- ९
ने पवित्र आत्मासे परिपूर्ण होके और उसकी ओर
ताकके कहा . हे सारे कपट और सब कुचालसे भरे हुए १०
शैतानके पुत्र सकल धर्म्मके वैरी क्या तू प्रभुके सीधे
मार्गोंको टेढ़ा करना न छोड़ेगा। अब देख प्रभुका हाथ ११
तुझपर है और तू कितने समयलों अंधा होगा और
सूर्य्यको न देखेगा . तुरन्त धुंधलाई और अंधकार उसपर
पड़ा और वह इधर उधर टटोलने लगा कि लोग उसका
हाथ पकड़ें। तब प्रधानने जो हुआ था सो देखके प्रभुके १२
उपदेशसे अचंभित हो बिश्वास किया।

पावल और उसके संगी पाफोसे जहाज खोलके पंफु- १३
लिया देशके पर्गा नगरमें आये परन्तु योहन उन्हें छोड़के
यिरूशलीमको लौट गया। और पर्गासे आगे बढ़के वे १४
पिसिदिया देशके अन्तैखिया नगरमें पहुंचे और बिस्राम-
के दिन सभाके घरमें प्रवेश करके बैठ गये। और १५
व्यवस्था और भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकके पढ़े जानेके पीछे
सभाके अध्यक्षोंने उनके पास कहला भेजा कि हे भाइयो
यदि लोगोंके लिये उपदेशकी कोई बात आप लोगोंके
पास होय तो कहिये। तब पावलने खड़ा होके और १६
हाथसे सैन करके कहा हे इस्रायेली लोगो और ईश्वरसे
डरनेहारो सुनो। इन इस्रायेली लोगोंके ईश्वरने हमारे १७

पितरोंको चुन लिया और इन लोगोंके मिसर देशमें
परदेशी होते हुए उन्हें ऊंच पद दिया और बलवन्त
१८ भुजासे उस देशमेंसे निकाल लिया। और उसने चालीस
१९ एक बरस जंगलमें उनका निर्ब्बाह किया. और कनान
देशमें सात राज्यके लोगोंको नाश करके उनका देश
२० चिट्ठियां डलवाके उनको बांट दिया। इसके पीछे उसने
साढ़े चार सौ बरसके अटकल शमुएल भविष्यद्वक्तालों
२१ उन्हें न्याय करनेहारे दिये। उस समयसे उन्होंने राजा
चाहा और ईश्वरने चालीस बरसलों बिन्यामीनके कुल-
के एक मनुष्य अर्थात कीशके पुत्र शावलको उन्हें दिया।
२२ और उसको अलग करके उसने उन्होंके लिये दाऊदको
राजा होनेको उठाया जिसके विषयमें उसने साक्षी देके
कहा मैंने यिशीका पुत्र दाऊद अपने मनके अनुसार
एक मनुष्य पाया है जो मेरी सारी इच्छाको पूरी करेगा।
२३ इसीके बंशमेंसे ईश्वरने प्रतिज्ञाके अनुसार इस्रायेलके
२४ लिये एक त्राणकर्त्ता अर्थात यीशुको उठाया। पर उसके
आनेके आगे योहनने सब इस्रायेली लोगोंको पश्चात्ताप-
२५ के बपतिसमाका उपदेश दिया। और योहन जब अपनी
दौड़ पूरी करता था तब बोला तुम क्या समझते हो
मैं कौन हूं. मैं वह नहीं हूं परन्तु देखो मेरे पीछे एक
आता है जिसके पांवोंकी जूती मैं खोलनेके योग्य नहीं हूं।
२६ हे भाइयो तुम जो इब्राहीमके बंशके सन्तान हो और
तुम्होंमें जो ईश्वरसे डरनेहारे हो तुम्हारे पास इस त्राण-
२७ की कथा भेजी गई है। क्योंकि यिरूशलीमके निवासि-
योंने और उनके प्रधानोंने यीशुको न पहचानके उसका

बिचार करनेमें भविष्यद्वक्ताओंकी बातें भी जो हर एक
बिश्रामवार पढ़ी जाती हैं पूरी किईं। और उन्होंने बधके २८
योग्य कोई दोष उसमें न पाया तौभी पिलातसे बिन्ती
किई कि वह घात किया जाय। और जब उन्होंने उसके २९
विषयमें लिखी हुई सब बातें पूरी किईं थीं तब उसे
काठपरसे उतारके कबरमें रखा। परन्तु ईश्वरने उसे ३०
मृतकोंमेंसे उठाया। और उसने बहुत दिन उन्होंको जो ३१
उसके संग गालीलसे यिरूशलीममें आये थे दर्शन दिया
और वे लोगोंके पास उसके साक्षी हैं। हम उस प्रतिज्ञा- ३२
का जो पितरोंसे किई गई तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं.
कि ईश्वरने यीशुको उठानेमें यह प्रतिज्ञा उनके सन्तानों- ३३
के अर्थात हमोंके लिये पूरी किई है जैसा दूसरे गीतमें
भी लिखा है कि तू मेरा पुत्र है मैंने आजही तुझे जन्म
दिया है। और उसने जो उसको मृतकोंमेंसे उठाया ३४
और वह कभी सड़ न जायगा इसलिये यूं कहा है
कि मैंने दाऊदपर जो अचल कृपा किई सो तुमपर
करूंगा। इसलिये उसने दूसरे एक गीतमें भी कहा है ३५
कि तू अपने पवित्र जनको सड़ने न देगा। दाऊद तो ३६
ईश्वरकी इच्छासे अपने समयके लोगोंकी सेवा करके
सो गया और अपने पितरोंमें मिला और सड़ गया।
परन्तु जिसको ईश्वरने जिला उठाया वह नहीं सड़ ३७
गया। इसलिये हे भाइयो जानो कि इसीके द्वारा पाप- ३८
मोचनकी कथा तुमको सुनाई जाती है। और इसीके ३९
हेतुसे हर एक बिश्वासी जन सब बातोंसे निर्दोष ठहराया
जाता है जिनसे तुम मूसाकी व्यवस्थाके हेतुसे निर्दोष

४० नहीं ठहर सकते थे । इसलिये चौकस रहो कि जो
भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकमें कहा गया है सो तुमपर न
४१ पड़े . कि हे निन्दको देखो और अचंभित हो और
लोप हो जाओ क्योंकि मैं तुम्हारे दिनोंमें एक काम
करता हूं ऐसा काम कि यदि कोई तुमसे उसका बर्णन
करे तो तुम कभी प्रतीति न करोगे ।
४२ जब यिहूदी लोग सभाके घरमेंसे निकलते थे तब
अन्यदेशियोंने बिन्ती किई कि यह बातें अगले बिश्राम-
४३ वार हमसे कही जायें । और जब सभा उठ गई तब
यिहूदियोंमेंसे और भक्तिमान यिहूदीय मतावलंबियोंमेंसे
बहुत लोग पावल और बर्णबाके पीछे हो लिये और
उन्होंने उनसे बातें करके उन्हें समझाया कि ईश्वर-
के अनुग्रहमें बने रहो ।
४४ अगले बिश्रामबार नगरके प्राय सब लोग ईश्वरका
४५ बचन सुननेको एकट्ठे आये । परन्तु यिहूदी लोग भीड़-
को देखके डाहसे भर गये और बिबाद औ निन्दा करते
४६ हुए पावलकी बातोंके बिरुद्ध बोलने लगे । तब पावल
और बर्णबाने साहस करके कहा अवश्य था कि ईश्वर-
का बचन पहिले तुम्हींसे कहा जाय परन्तु जब कि तुम
उसे दूर करते हो और अपने तईं अनन्त जीवनके अयोग्य
ठहराते हो देखो हम अन्यदेशियोंकी ओर फिरते हैं ।
४७ क्योंकि परमेश्वरने हमें यूंहीं आज्ञा दिई है कि मैंने तुझे
अन्यदेशियोंकी ज्योति ठहराई है कि तू पृथिवीके अन्ततों
४८ त्राणकर्त्ता होवे । तब अन्यदेशी लोग जो सुनते थे आन-
न्दित हुए और प्रभुके बचनकी बड़ाई करने लगे और

जितने लोग अनन्त जीवनके लिये ठहराये गये थे
उन्होंने बिश्वास किया। तब प्रभुका बचन उस सारे देश- ४९
में फैलने लगा। परन्तु यिहूदियोंने भक्तिमती और कुल- ५०
वन्ती स्त्रियोंको और नगरके बड़े लोगोंको उसकाया
और पावल और बर्णबापर उपद्रव करवाके उन्हें अपने
सिवानोंमेंसे निकाल दिया। तब वे उनके बिरुद्ध अपने ५१
पांवोंकी धूल झाड़के इकोनिया नगरमें आये। और शिष्य ५२
लोग आनन्दसे और पवित्र आत्मासे पूर्ण हुए।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

१ इकोनिया नगरमें बर्णबा और पावलका सताया जाना। ८ पावलका लुस्त्रा नगरमें एक लंगड़ेको चंगा करना। ११ नगरके लोगोंका उन्हें पूजनेकी इच्छा करना। १९ उन्होंका पावलको पत्थरवाह करना। २१ प्रेरितोंका अनेक नगरोंमें उपदेश करना और अन्तैखियाको लौट जाना।

इकोनियामें उन्होंने यिहूदियोंके सभाके घरमें एक १
संग प्रवेश किया और ऐसी बातें किईं कि यिहूदियों
और यूनानियोंमेंसे भी बहुत लोगोंने बिश्वास किया।
परन्तु न माननेहारे यिहूदियोंने अन्यदेशियोंके मन २
भाइयोंके बिरुद्ध उसकाये और बुरे कर दिये। सो उन्होंने ३
प्रभुके भरोसे जो अपने अनुग्रहके बचनपर साक्षी देता
था और उनके हाथोंसे चिन्ह और अद्भुत काम कर-
वाता था साहससे बात करते हुए बहुत दिन बिताये।
और नगरके लोग बिभिन्न हुए और कितने तो यिहूदि- ४
योंके साथ और कितने प्रेरितोंके साथ थे। परन्तु जब ५
अन्यदेशियों और यिहूदियोंने भी अपने प्रधानोंके संग
उनकी दुर्दशा करने और उन्हें पत्थरवाह करनेको हल्ला
किया. तब वे जान गये और लुकाओनिया देशके लुस्त्रा ६

और दर्बी नगरोंमें और आसपासके देशमें भाग गये.
७ और वहां सुसमाचार प्रचार करने लगे ।
८ लुस्त्रामें एक मनुष्य पांवोंका निर्बल बैठा था जो
अपनी माताके गर्भहीसे लंगड़ा था और कभी नहीं
९ चला था । वह पावलको बात करते सुनता था और
उसने उसकी ओर ताकके देखा कि इसको चंगा किये
१० जानेका बिश्वास है . और बड़े शब्दसे कहा अपने पां-
वोंपर सीधा खड़ा हो . तब वह कूदने और फिरने लगा ।
११ पावलने जो किया था उसे देखके लोगोंने लुका-
ओनीय भाषामें ऊंचे शब्दसे कहा देवगण मनुष्योंके
१२ समान होके हमारे पास उतर आये हैं । और उन्होंने
बर्णबाको जूपितर और पावलको हर्मि कहा क्योंकि
१३ वह बात करनेमें मुख्य था । और जूपितर जो उनके
नगरके साम्हने था उसका याजक बैलोंको और फूलोंके
हारोंको फाटकोंपर लाके लोगोंके संग बलिदान किया
१४ चाहता था । परन्तु प्रेरितोंने अर्थात बर्णबा और पा-
वलने यह सुनके अपने कपड़े फाड़े और लोगोंकी
१५ ओर लपक गये और पुकारके बोले . हे मनुष्यो यह
क्यों करते हो . हम भी तुम्हारे समान दुःख सुख
भोगी मनुष्य हैं और तुम्हें सुसमाचार सुनाते हैं कि
तुम इन ब्यर्थ विषयोंसे जीवते ईश्वरकी ओर फिरो
जिसने स्वर्ग औ पृथिवी औ समुद्र और सब कुछ जो
१६ उनमें है बनाया । उसने बीती हुई पीढ़ियोंमें सब
देशोंके लोगोंको अपने अपने मार्गोंमें चलने दिया ।
१७ तौभी उसने अपनेको बिना साक्षी नहीं रख छोड़ा है

कि वह भलाई किया करता और आकाशसे बर्षा और
फलवन्त ऋतु देके हमोंके मनको भोजन और आनन्दसे
तृप्त किया करता है। यह कहनेसे उन्होंने लोगोंको १८
कठिनतासे रोका कि वे उनके आगे बलिदान न करें।

परन्तु कितने यिहूदियोंने अन्तैखिया और इको- १९
नियासे आके लोगोंको मनाया और पावलको पत्थर-
वाह किया और यह समझके कि वह मर गया है उसे
नगरके बाहर घसीट ले गये। परन्तु जब शिष्य लोग २०
उस पास घिर आये तब उसने उठके नगरमें प्रवेश
किया और दूसरे दिन बर्णबाके संग दर्बीको गया।

ज़ब उन्होंने उस नगरके लोगोंको सुसमाचार सुनाया २१
और बहुतोंको शिष्य किया था तब वे लुस्त्रा और
इकोनिया और अन्तैखियाको लौटे. और यह उपदेश २२
करते हुए कि बिश्वासमें बने रहो और कि हमें बड़े
क्लेशसे ईश्वरके राज्यमें प्रवेश करना होगा शिष्योंके
मनको स्थिर करते गये। और हर एक मंडलीमें प्राची- २३
नोंको उनपर ठहराके उन्होंने उपवास सहित प्रार्थना
करके उन्हें प्रभुके हाथ सोंपा जिसपर उन्होंने बिश्वास
किया था। और पिसिदियासे होके वे पंफुलियामें आये. २४
और पर्गामें बचन सुनाके आतालिया नगरको गये। २५
और वहांसे वे जहाजपर अन्तैखियाको चले जहांसे वे २६
उस कामके लिये जो उन्होंने पूरा किया था ईश्वरके
अनुग्रहपर सोंपे गये थे। वहां पहुंचके और मंडलीको २७
एकट्ठी करके उन्होंने बताया कि ईश्वरने उन्होंके साथ
कैसे बड़े काम किये थे और कि उसने अन्यदेशियोंके

२८ लिये बिश्वासका द्वार खोला था । और उन्होंने वहां
शिष्योंके संग बहुत दिन बिताये ।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ खतनेके विषयमें बिबाद होना और उसके निर्णयके लिये कितने भाइयोंका यिरूशलीमको जाना । ६ प्रेरितोंका इस बातका बिचार करना । २२ इस बातका निर्णय पत्रमें लिखना । ३० इस पत्रका अन्तैखियामें पहुंचाया जाना । ३६ पावल और बर्णबाका अलग अलग यात्रा करना ।

१ कितने लोग यिहूदियासे आके भाइयोंको उपदेश
देने लगे कि जो मूसाकी रीतिके अनुसार तुम्हारा
खतना न किया जाय तो तुम त्राण नहीं पा सकते हो।
२ जब पावल और बर्णबासे और उन्होंसे बहुत बिबाद
और बिचार हुआ था तब भाइयोंने यह ठहराया कि
पावल और बर्णबा और हममेंसे कितने और जन इस
प्रश्नके विषयमें यिरूशलीमको प्रेरितों और प्राचीनोंके
३ पास जायेंगे। सो मंडलीसे कुछ दूर पहुंचाये जाके वे
फैनीकिया और शोमिरोनसे होते हुए अन्यदेशियोंके मन
फेरनेका समाचार कहते गये और सब भाइयोंको बहुत
४ आनन्दित किया । जब वे यिरूशलीममें पहुंचे तब मंड-
लीने और प्रेरितों और प्राचीनोंने उन्हें ग्रहण किया
और उन्होंने बताया कि ईश्वरने उन्होंके साथ कैसे बड़े
५ काम किये थे । परन्तु फरीशियोंके पंथके लोगोंमेंसे
कितने जिन्होंने बिश्वास किया था उठके बोले उन्हें
खतना करना और मूसाकी व्यवस्थाको पालन करनेकी
आज्ञा देना उचित है ।

६ तब प्रेरित और प्राचीन लोग इस बातका बिचार
७ करनेको एकट्ठे हुए। जब बहुत बिबाद हुआ तब पितरने

उठके उनसे कहा हे भाइयो तुम जानते हो कि बहुत
दिन हुए ईश्वरने हममेंसे चुन लिया कि मेरे मुंहसे
अन्यदेशी लोग सुसमाचारका वचन सुनके बिश्वास
करें। और अन्तर्यामी ईश्वरने जैसा हमको तैसा उनको ८
भी पवित्र आत्मा देके उनके लिये साक्षी दिई. और ९
बिश्वाससे उन्होंके मनको शुद्ध करके हमोंके और उन्होंके
बीचमें कुछ भेद न रखा। सो अब तुम क्यों ईश्वरकी १०
परीक्षा करते हो कि शिष्योंके गलेपर जूआ रखो जिसे
न हमारे पितर लोग न हम लोग उठा सके। परन्तु ११
जिस रीतिसे वे उसी रीतिसे हम भी प्रभु यीशु ख्रीष्टके
अनुग्रहसे त्राण पानेको बिश्वास करते हैं।

तब सारी सभा चुप हुई और बर्णबा और पावलकी १२
जो यह बताते थे कि ईश्वरने उनके द्वारा कैसे बड़े चिन्ह
और अद्भुत काम अन्यदेशियोंके बीचमें किये थे सुनती
रही। जब वे चुप हुए तब याकूबने उत्तर दिया कि हे १३
भाइयो मेरी सुन लीजिये। शिमोनने बताया है कि १४
ईश्वरने क्योंकर अन्यदेशियोंपर पहिले दृष्टि किई कि
उनमेंसे अपने नामके लिये एक लोगको ले लेवे। और १५
इससे भविष्यद्वक्ताओंकी बातें मिलती हैं जैसा लिखा
है. कि परमेश्वर जो यह सब करता है सो कहता है १६
इसके पीछे मैं फिरके दाऊदका गिरा हुआ डेरा उठा-
ऊंगा और उसके खंड़हर बनाऊंगा और उसे खड़ा
करूंगा. इसलिये कि वे मनुष्य जो रह गये हैं और सब १७
अन्यदेशी लोग जो मेरे नामसे पुकारे जाते हैं परमेश्वर-
को ढूंढ़ें। ईश्वर अपने सब कामोंको आदिसे जानता है। १८

१९ इसलिये मेरा बिचार यह है कि अन्यदेशियोंमेंसे जो
लोग ईश्वरकी ओर फिरते हैं हम उनको दुःख न देवें.
२० परन्तु उनके पास लिखें कि वे मूरतोंकी अशुद्ध
बस्तुओंसे और व्यभिचारसे और गला घोंटे हुओंके
२१ मांससे और लोहूसे परे रहें । क्योंकि पूर्षोंके समयसे
मूसाके पुस्तकके नगर नगरमें प्रचार करनेहारे हैं और
हर एक विश्रामवार वह सभाके घरोंमें पढ़ा जाता है।
२२ तब सारी मंडली सहित प्रेरितों और प्राचीनोंको
अच्छा लगा कि अपनेमेंसे मनुष्योंको चुनें अर्थात यिहूदा-
को जो बर्शबा कहावता है और सीलाको जो भाइयोंमें
बड़े मनुष्य थे और उन्हें पावल और बर्णबाके संग अन्तै-
२३ खियाको भेजें . और उनके हाथ यही लिख भेजें कि
प्रेरित ओ प्राचीन ओ भाई लोग अन्तैखिया और सुरिया
और किलिकियामेंके उन भाइयोंको जो अन्यदेशियोंमेंसे
२४ हैं नमस्कार । हमने सुना है कि कितने लोगोंने हममेंसे
निकलके तुम्हें बातोंसे व्याकुल किया है कि वे खतना
करवानेको और व्यवस्थाको पालन करनेको कहते हुए
तुम्हारे मनको चंचल करते हैं पर हमने उनको आज्ञा न
२५ दिई । इसलिये हमने एक चित्त होके अच्छा जाना
२६ है . कि मनुष्योंको चुनके अपने प्यारे बर्णबा और पाव-
लके संग जो ऐसे मनुष्य हैं कि अपने प्राणोंको हमारे
प्रभु यीशु ख्रीष्टके नामके लिये सौंप दिया है तुम्हारे पास
२७ भेजें । सो हमने यिहूदा और सीलाको भेजा है जो आप
२८ भी यही बातें मुखबचनसे कह देवें । पवित्र आत्माको
और हमको अच्छा लगा है कि तुम्होंपर इन आवश्यक

बातोंसे अधिक कोई भार न रखें. अर्थात कि मूरतोंके २९
आगे बलि किये हुओंसे और लोहूसे और गला घोंटे
हुओंके मांससे और व्यभिचारसे परे रहो . इन्होंसे
अपनेको बचा रखनेसे तुम भला करोगे. आगे शुभ।

सो वे बिदा होके अन्तैखियामें पहुंचे और लोगोंको ३०
एकट्ठे करके वह पत्र दिया । वे पढ़के उस शांतिकी ३१
बातसे आनन्दित हुए । और यिहूदा और सीलाने ३२
जो आप भी भविष्यद्वक्ता थे बहुत बातोंसे भाइयोंको
समझाके स्थिर किया। और कुछ दिन रहके वे प्रेरितोंके ३३
पास जानेको कुशलसे भाइयोंसे बिदा हुए । परन्तु ३४
सीलाने वहां रहना अच्छा जाना । और पावल और ३५
बर्णबा बहुत औरोंके संग प्रभुके बचनका उपदेश कर-
ते और सुसमाचार सुनाते हुए अन्तैखियामें रहे ।

कितने दिनोंके पीछे पावलने बर्णबासे कहा जिन ३६
नगरोंमें हमने प्रभुका बचन प्रचार किया आओ हम
हर एक नगरमें फिरके अपने भाइयोंको देख लेवें कि
वे कैसे हैं । तब बर्णबाने योहनको जो मार्क कहावता ३७
है संग लेनेका बिचार किया । परन्तु पावलने उसको ३८
जो पंफुलियासे उनके पाससे चला गया और कामपर
उनके साथ न गया संग ले जाना अच्छा नहीं समझा ।
सो ऐसा टंटा हुआ कि वे एक दूसरेको छोड़ गये और ३९
बर्णबा मार्कको लेके जहाज़पर कुप्रसको गया। परन्तु ४०
पावलने सीलाको चुन लिया और भाइयोंसे ईश्वरके
अनुग्रहपर सोंपा जाके निकला . और मंडलियोंको स्थिर ४१
करता हुआ सारे सुरिया और किलिकियामें फिरा ।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

१ पावलका तिमोथियको खतना करना और अनेक ठौर फिरना । ९ उसका एक दर्शन पाना और उन्होंका फिलिपो नगरको जाना । १३ लुदियाका वृत्तान्त । १६ एक भूतग्रस्त कन्यासे भूतका निकाला जाना । १९ पावल और सीलाका बन्दीगृहमें डाला जाना । २५ बन्दीगृहके रक्षकका प्रभुकी ओर फिरना । ३५ पावल और सीलाका बन्दीगृहसे छुड़ाया जाना ।

१ तब पावल दर्बी और लुस्त्रामें पहुंचा और देखो
वहां तिमोथिय नाम एक शिष्य था जो किसी बिश्वासी
यिहूदिनीका पुत्र था परन्तु उसका पिता यूनानी था।
२ और लुस्त्रा और इकोनियामेंके भाई लोग उसकी सुख्या-
३ ति करते थे । पावलने चाहा कि यह मेरे संग जाय
और जो यिहूदी लोग उन स्थानोंमें थे उनके कारण
उसे लेके उसका खतना किया क्योंकि वे सब उसके
४ पिताको जानते थे कि वह यूनानी था । परन्तु नगर
नगर जाते हुए उन्होंने उन बिधियोंको जो यिरूशलीम-
मेंके प्रेरितों और प्राचीनोंसे ठहराई गई थीं भाइयोंको
५ सौंप दिया कि उनको पालन करें । सो मंडलियां
बिश्वासमें स्थिर होती थीं और प्रतिदिन गिन्तीमें बढ़ती
६ थीं । और जब वे फ्रूगिया और गलातिया देशोंमें फिर
चुके और पवित्र आत्माने उन्हें आशिया देशमें बात
७ सुनानेको बर्जा . तब उन्होंने मुसिया देशपर आके बिथु-
निया देशको जानेकी चेष्टा किई परन्तु आत्माने उन्हें जा-
८ ने न दिया । और मुसियासे होके वे त्रोआ नगरमें आये ।
९ रातको एक दर्शन पावलको दिखाई दिया कि कोई
माकिदोनी पुरुष खड़ा हुआ उससे बिन्ती करके कहता
था कि उस पार माकिदोनिया देश जाके हमारी उप-

कार कीजिये। जब उसने यह दर्शन देखा तब हमने १०
निश्चय जाना कि प्रभुने हमें उन लोगोंके तईं सुसमाचार
सुनानेको बुलाया है इसलिये हमने तुरन्त माकिदो-
नियाको जाने चाहा। सो त्रोआसे खोलके हम सामोत्रा- ११
की टापूको सीधे आये और दूसरे दिन नियापलि नगर-
में पहुंचे। वहांसे हम फिलिपी नगरमें आये जो माकि- १२
दोनियाके उस अंशका पहिला नगर है और रोमियोंकी
बस्ती है और हम उस नगरमें कुछ दिन रहे।

विश्रामके दिन हम नगरके बाहर नदीके तीरपर गये १३
जहां प्रार्थना किई जाती थी और बैठके स्त्रियोंसे जो
एकट्ठी हुई थीं बात करने लगे। और लुदिया नाम १४
थुआतीरा नगरकी एक स्त्री बैजनी बस्त्र बेचनेहारी जो
ईश्वरकी उपासना किया करती थी सुनती थी और
प्रभुने उसका मन खोला कि वह पावलकी बातोंपर
चित्त लगावे। और जब उसने और उसके घरानेने १५
बपतिसमा लिया था तब उसने बिन्ती किई कि यदि
आप लोगोंने मुझे प्रभुकी बिश्वासिनी जान लिई है
तो मेरे घरमें आके रहिये और वह हमें मनाके ले गई।

जब हम प्रार्थनाको जाते थे तब एक दासी जिसे १६
आगमवक्ता भूत लगा था हमको मिली जो आगमके
कहनेसे अपने स्वामियोंके लिये बहुत कमा लाती थी।
वह पावलके और हमारे पीछे आके पुकारने लगी कि १७
ये मनुष्य सर्ब्बप्रधान ईश्वरके दास हैं जो हमें त्राणके
मार्गकी कथा सुनाते हैं। उसने बहुत दिन यह किया १८
परन्तु पावल अप्रसन्न हुआ और मुंह फेरके उस भूतसे

कहा मैं तुझे यीशु ख्रीष्टके नामसे आज्ञा देता हूं कि
उसमेंसे निकल आ और वह उसी घड़ी निकल आया।
१९ जब उसके स्वामियोंने देखा कि हमारी कमाईकी
आशा गई है तब उन्होंने पावल और सीलाको पकड़-
२० के चौकमें प्रधानोंके पास खींच लिया . और उन्हें
अध्यक्षोंके पास लाके कहा ये मनुष्य जो यिहूदी हैं
२१ हमारे नगरके लोगोंको व्याकुल करते हैं . और व्यव-
हारोंको प्रचार करते हैं जिन्हें ग्रहण करना अथवा
२२ मानना हमोंको जो रोमी हैं उचित नहीं है । तब
लोग उनके बिरुद्ध एकट्ठे चढ़ आये और अध्यक्षोंने
उनके कपड़े फाड़ डाले और उन्हें बेत मारनेकी आज्ञा
२३ दिई . और उन्हें बहुत घायल करके बन्दीगृहमें डाला
और बन्दीगृहके रक्षकको उन्हें यत्नसे रखनेकी आज्ञा
२४ दिई । उसने ऐसी आज्ञा पाके उन्हें भीतरकी कोठरी-
में डाला और उनके पांव काठमें ठोंके ।
२५ आधी रातको पावल और सीला प्रार्थना करते
हुए ईश्वरका भजन गाते थे और बंधुए उनकी सुनते
२६ थे । तब अचांचक ऐसा बड़ा भुईंडोल हुआ कि बन्दी-
गृहकी नेवें हिलीं और तुरन्त सब द्वार खुल गये और
२७ सभोंके बंधन खुल पड़े । तब बन्दीगृहका रक्षक जागा
और बन्दीगृहके द्वार खुले देखके खड्ग खींचा और
अपने तईं मार डालनेपर था कि वह समझता था
२८ कि बंधुए लोग भाग गये हैं । परन्तु पावलने बड़े
शब्दसे पुकारके कहा अपनेको कुछ दुःख न देना
२९ क्योंकि हम सब यहां हैं । तब वह दीपक मंगाके भीतर

लपक गया और कंपित होके पावल और सीलाको
दंडवत किई. और उनको बाहर लाके कहा हे प्रभुओ ३०
त्राण पानेको मुझे क्या करना होगा । उन्होंने कहा ३१
प्रभु यीशु ख्रीष्टपर बिश्वास कर तो तू और तेरा
घराना त्राण पावेगा । और उन्होंने उसको और ३२
सभोंको जो उसके घरमें थे प्रभुका बचन सुनाया ।
और रातको उसी घड़ी उसने उनको लेके उनके ३३
घावोंको धोया और उसने और उसके सब लोगोंने
तुरन्त बपतिसमा लिया । तब उसने उन्हें अपने घरमें ३४
लाके उनके आगे भोजन रखा और सारे घराने समेत
ईश्वरपर बिश्वास कियेसे आनन्दित हुआ ।

बिहान हुए अध्यक्षोंने प्यादोंके हाथ कहला भेजा ३५
कि उन मनुष्योंको छोड़ देओ । तब बन्दीगृहके रक्षकने ३६
यह बातें पावलसे कह सुनाईं कि अध्यक्षोंने कहला
भेजा है कि आप लोग छोड़ दिये जायें सो अब निकलके
कुशलसे जाइये । परन्तु पावलने उनसे कहा उन्होंने ३७
हमें जो रोमी मनुष्य हैं दंडके योग्य ठहराये बिना
लोगोंके आगे मारा और बन्दीगृहमें डाला और अब
क्या चुपकेसे हमें निकाल देते हैं. सो नहीं परन्तु
आपही आके हमें बाहर ले जावें । प्यादोंने यह बातें ३८
अध्यक्षोंसे कह दिईं और वे यह सुनके कि रोमी हैं
डर गये. और आके उन्हें मनाया और बाहर लाके ३९
बिन्ती किई कि नगरसे निकल जाइये । वे बन्दीगृहमेंसे ४०
निकलके लुदियाके यहां गये और भाइयोंको देखके
उन्हें उपदेश देके चले गये ।

१७ सत्रहवां पर्ब्ब ।

१ थिसलोनिका नगरमें लोगोंका भिन्न भिन्न विचार और प्रेरितोंका निकाला जाना। १० बिरेया नगरके लोगोंका पहिले सुविचार पीछे बिरोध करना । १६ आथीनी नगरके लोगोंसे पावलका बिवाद करना । २२ अरेयोपाग स्थानमें पावलका उपदेश । ३१ उस उपदेशका फल ।

१ अंफिपलि और अपल्लोनिया नगरोंसे होके वे थिस-
लोनिका नगरमें आये जहां यिहूदियोंकी सभाका घर
२ था । और पावल अपनी रीतिपर उनके यहां गया
और तीन बिश्रामवार उनसे धर्म्मपुस्तकमेंसे बातें किईं .
३ और यही खोल देता और समझाता रहा कि ख्रीष्टको
दुःख भोगना और मृतकोंमेंसे जी उठना आवश्यक था
और कि यह यीशु जिसकी कथा मैं तुम्हें सुनाता हूं
४ वही ख्रीष्ट है । तब उनमेंसे कितने जनोंने और भक्त
यूनानियोंमेंसे बहुत लोगोंने और बहुतसी बड़ी बड़ी
स्त्रियोंने मान लिया और पावल और सीलासे मिल
५ गये । परन्तु न माननेहारे यिहूदियोंने डाह करके
बाजारू लोगोंमेंसे कितने दुष्ट मनुष्योंको लिया और भीड़
लगाके नगरमें धूम मचाई और यासोनके घरपर चढ़ाई
करके पावल और सीलाको लोगोंके पास लाने चाहा ।
६ और उन्हें न पाके वे यह पुकारते हुए यासोनको और
कितने भाइयोंको नगरके प्रधानोंके आगे खींच लाये
कि ये लोग जिन्होंने जगतको उलटा पुलटा किया है
७ यहां भी आये हैं । और यासोनने उनकी पहुनई किई
है और ये सब यह कहते हुए कि यीशु नाम दूसरा
८ राजा है कैसरकी आज्ञाओंके बिरुद्ध करते हैं । सो
उन्होंने लोगोंको और नगरके प्रधानोंको जो यह बातें

सुनते थे ब्याकुल किया। और उन्होंने यासोनसे और ९
दूसरोंसे मुचलका लेके उन्हें छोड़ दिया।

तब भाइयोंने तुरन्त रातको पावल और सीलाको १०
बिरेया नगरको भेजा और वे पहुंचके यिहूदियोंकी
सभाके घरमें गये। ये तो थिसलोनिकामेंके यिहूदियोंसे ११
सुशील थे और उन्होंने सब भांतिसे तत्पर होके बचनको
ग्रहण किया और प्रतिदिन धर्म्मपुस्तकमें ढूंढ़ते रहे कि
यह बातें यूंहीं हैं कि नहीं। सो उनमेंसे बहुतोंने और १२
यूनानीय कुलवन्ती स्त्रियोंमेंसे और पुरुषोंमेंसे बहुतेरोंने
बिश्वास किया। परन्तु जब थिसलोनिकाके यिहूदियोंने १३
जाना कि पावल बिरेयामें भी ईश्वरका बचन
प्रचार करता है तब वे वहां भी आके लोगोंको उसकाने
लगे। तब भाइयोंने तुरन्त पावलको बिदा किया कि १४
वह समुद्रकी ओर जावे परन्तु सीला और तिमोथिय
वहां रह गये। पावलके पहुंचानेहारे उसे आथीनी १५
नगरतक लाये और सीला और तिमोथियके लिये
उस पास बहुत शीघ्र जानेकी आज्ञा लेके बिदा हुए।

जब पावल आथीनीमें उनकी बाट जोहता था तब १६
नगरको मूरतोंसे भरे हुए देखनेसे उसका मन भीतरसे
उभड़ आया। सो वह सभाके घरमें यिहूदियों और १७
भक्त लोगोंसे और प्रतिदिन चौकमें जो लोग मिलते थे
उन्होंसे बातें करने लगा। तब इपिकूरीय और स्तोइकीय १८
ज्ञानियोंमेंसे कितने उससे बिवाद करने लगे और कितने
बोले यह बकवादी क्या कहने चाहता है पर औरोंने
कहा वह ऊपरी देवताओंका प्रचारक देख पड़ता है.

क्योंकि वह उन्हें यीशुका और जी उठनेका सुसमाचार
१९ सुनाता था । तब उन्होंने उसे लेके अरेयोपाग नाम
स्थानपर लाके कहा क्या हम जान सकते कि यह नया
२० उपदेश जो तुझसे सुनाया जाता है क्या है। क्योंकि तू
अनूठी बातें हमें सुनाता है सो हम जानने चाहते हैं
२१ कि इनका अर्थ क्या है । सब आथीनीय लोग और
परदेशी जो वहां रहते थे किसी और काममें नहीं केवल
नई नई बातके कहने अथवा सुननेमें समय काटते थे।
२२ तब पावलने अरेयोपागके बीचमें खड़ा होके कहा
हे आथीनीय लोगो मैं आप लोगोंको सर्ब्बथा बड़े देव-
२३ पूजक देखता हूं । क्योंकि जब मैं फिरते हुए आप लोगों-
की पूज्य वस्तुओंको देखता था तब एक ऐसी बेदी भी
पाई जिसपर लिखा हुआ था कि अनजाने ईश्वरकी .
सो जिसे आप लोग बिन जाने पूजते हैं उसीकी कथा
२४ मैं आप लोगोंको सुनाता हूं। ईश्वर जिसने जगत और
सब कुछ जो उसमें है बनाया सो स्वर्ग और पृथिवीका
प्रभु होके हाथके बनाये हुए मन्दिरोंमें बास नहीं करता
२५ है . और न किसी वस्तुका प्रयोजन रखनेसे मनुष्योंके
हाथोंकी सेवा लेता है क्योंकि वह आपही सभोंको जीवन
२६ और श्वास और सब कुछ देता है । उसने एकही लो-
हूसे मनुष्योंके सब जातिगण सारी पृथिवीपर बसनेको
बनाये हैं और ठहराये हुए समयोंको और उनके
२७ निवासके सिवानोंको इसलिये बांधा है . कि वे पर-
मेश्वरको ढूंढ़ें क्या जानें उसे टटोलके पावें और तौभी
२८ वह हममेंसे किसीसे दूर नहीं है . क्योंकि हम उसीसे

जीते और फिरते और होते हैं जैसे आप लोगोंके
यहांके कितने कबियोंने भी कहा है कि हम तो उसके
वंश हैं। सो जो हम ईश्वरके वंश हैं तो यह समझना २९
कि ईश्वरत्व सोने अथवा रूपे अथवा पत्थरके अर्थात
मनुष्यकी कारीगरी और कल्पनाकी गढ़ी हुई बस्तुके
समान है हमें उचित नहीं है। इसलिये ईश्वर अज्ञान- ३०
ताके समयोंसे आनाकानी करके अभी सर्व्वत्र सब
मनुष्योंको पश्चात्ताप करनेकी आज्ञा देता है। क्यों- ३१
कि उसने एक दिन ठहराया है जिसमें वह उस मनुष्यके
द्वारा जिसे उसने नियुक्त किया है धर्म्मसे जगतका
न्याय करेगा और उसने उस मनुष्यको मृतकोंमेंसे
उठाके सभोंको निश्चय कराया है।

मृतकोंके जी उठनेकी बात सुनके कितने ठट्ठा करने ३२
लगे और कितने बोले हम इसके विषयमें तुझसे फिर
सुनेंगे। इसपर पावल उनके बीचमेंसे चला गया। ३३
परन्तु कई एक मनुष्य उससे मिल गये और बिश्वास ३४
किया जिनमें दियोनुसिय अरेयोपागी था और दामरी
नाम एक स्त्री और उनके संग कितने और लोग।

१८ अठारहवां पर्व्ब।

१ पावलका करिन्थ नगरमें सुसमाचार प्रचार करना। १२ यिहूदियोंका गालियो-के पास पावलपर नालिश करना। १८ पावलका अनेक नगरों और देशोंमें फिरना। २४ अपल्लोका बखान।

इसके पीछे पावल आथीनीसे निकलके करिन्थ १
नगरमें आया। और अकूला नाम पन्त देशका एक २
यिहूदी था जो उन दिनोंमें इतलिया देशसे आया था इस-
लिये कि क्लौदियने सब यिहूदियोंको रोम नगरसे निकल

जानेकी आज्ञा दिई थी . पावल उसको और उसकी
३ स्त्री प्रिस्कीलाको पाके उनके यहां गया। और उसका
और उनका एकही उद्यम था इसलिये वह उनके यहां
रहके कमाता था क्योंकि तम्बू बनाना उनका उद्यम था।
४ परन्तु हर एक बिश्रामवार वह सभाके घरमें बातें करके
५ यिहूदियों और यूनानियोंको भी समझाता था। जब
सीला और तिमोथिय माकिदोनियासे आये तब पा-
वल आत्माके बशमें होके यिहूदियोंको साक्षी देता था
६ कि यीशु तो खीष्ट है। परन्तु जब वे बिरोध और
निन्दा करने लगे तब उसने कपड़े झाड़के उनसे कहा
तुम्हारा लोहू तुम्हारेही सिरपर होय . मैं निर्दोष हूं.
७ अबसे मैं अन्यदेशियोंके पास जाऊंगा। और वहांसे
जाके वह युस्त नाम ईश्वरके एक उपासकके घरमें
८ आया जिसका घर सभाके घरसे लगा हुआ था। तब
सभाके अध्यक्ष क्रीस्पने अपने सारे घराने समेत
प्रभुपर बिश्वास किया और करिन्थियोंमेंसे बहुत लोग
९ सुनके बिश्वास करते और बपतिसमा लेते थे। और
प्रभुने रातको दर्शनके द्वारा पावलसे कहा मत डर परन्तु
१० बात कर और चुप मत रह। क्योंकि मैं तेरे संग हूं
और कोई तुझपर चढ़ाई न करेगा कि तुझे दुःख देवे
११ क्योंकि इस नगरमें मेरे बहुत लोग हैं। सो वह उन्हों-
में ईश्वरका बचन सिखाते हुए डेढ़ बरस रहा।
१२ जब गालियो आखाया देशका प्रधान था तब यिहूदी
लोग एक चित्त होकर पावलपर चढ़ाई करके उसे
१३ बिचार आसनके आगे लाये. और बोले यह तो मनुष्यों-

को व्यवस्थाके बिपरीत रीतिसे ईश्वरकी उपासना करने-
को समझाता है । ज्योंही पावल मुंह खोलनेपर था १४
त्योंही गालियोने यिहूदियोंसे कहा हे यिहूदियो जो
यह कोई कुकर्म्म अथवा बुरी कुचाल होती तो उचित
जानके मैं तुम्हारी सहता । परन्तु जो यह बिवाद १५
उपदेशके और नामोंके और तुम्हारे यहांकी व्यवस्थाके
विषयमें है तो तुमही जानो क्योंकि मैं इन बातोंका
न्यायी होने नहीं चाहता हूं । और उसने उन्हें बिचार १६
आसनके आगेसे खदेड़ दिया । तब सारे यूनानियोंने १७
सभाके अध्यक्ष सोस्थिनीको पकड़के बिचार आसनके साम्ने
मारा और गालियोने इन बातोंकी कुछ चिन्ता न किई ।
पावल और भी बहुत दिन रहा तब भाइयोंसे बिदा १८
होके जहाजपर सुरिया देशको गया और उसके संग
प्रिस्कीला और अकूला . उसने किंक्रिया नगरमें
अपना सिर मुंड़वाया क्योंकि उसने मन्नत मानी थी ।
और उसने इफिस नगरमें पहुंचके उनको वहां छोड़ा १९
और आपही सभाके घरमें प्रवेश करके यिहूदियोंसे
बातें किईं । जब उन्होंने उससे बिन्ती किई कि हमारे २०
संग कुछ दिन और रहिये तब उसने न माना . परन्तु २१
यह कहके उनसे बिदा हुआ कि आनेवाला पर्ब्ब
यिरूशलीममें करना मुझे बहुत अवश्य है परन्तु
ईश्वर चाहे तो मैं तुम्हारे पास फिर लौट आऊंगा ।
तब उसने इफिससे खोल दिया और कैसरियामें आया २२
तब (यिरूशलीमको) जाके मंडलीको नमस्कार किया
और अन्तैखियाको गया । फिर कुछ दिन रहके वह २३

निकला और एक ओरसे गलातिया और फ्रूगिया
देशोंमें सब शिष्योंको स्थिर करता हुआ फिरा ।
२४ अपल्लो नाम सिकन्दरिया नगरका एक यिहूदी जो
सुवक्ता पुरुष और धर्म्मपुस्तकमें सामर्थी था इफिसमें
२५ आया । उसने प्रभुके मार्गकी शिक्षा पाई थी और
आत्मामें अनुरागी होके प्रभुके विषयमेंकी बातें बड़े
यत्नसे सुनाता और सिखाता था परन्तु केवल योहनके
२६ बपतिसमाकी बात जानता था । वह सभाके घरमें
साहससे बात करने लगा पर अकूला और प्रिस्कीलाने
उसकी सुनके उसे लिया और ईश्वरका मार्ग उसको
२७ और ठीक करके बताया । और वह आखायाको जाने
चाहता था सो भाइयोंने उसे ढाढ़स देके शिष्योंके
पास लिखा कि वे उसे ग्रहण करें और उसने पहुंचके
अनुग्रहसे जिन्होंने बिश्वास किया था उन्होंकी बड़ी
२८ सहायता किई । क्योंकि यीशु जो ख्रीष्ट है यह बात
धर्म्मपुस्तकके प्रमाणोंसे बतलाके उसने बड़े यत्नसे लो-
गोंके आगे यिहूदियोंको निरुत्तर किया ।

१९ उनीसवां पर्व्व ।

१ इफिस नगरमें बारह शिष्योंको पवित्र आत्माका दिया जाना । ८ पावलका उपदेश और बिवाद करना और अनेक आश्चर्य्य कर्म्मोंका उससे प्रगट होना । १३ स्केवाके पुत्रोंका वर्णन और टोनेके पुस्तकोंका जलाया जाना । २१ दीमीत्रिय सुनारका पावलपर उपद्रव मचाना ।

१ अपल्लोके करिन्थमें होते हुए पावल ऊपरके सारे
२ देशमें फिरके इफिसमें आया . और कितने शिष्योंको
पाके उनसे कहा क्या तुमने बिश्वास करके पवित्र आत्मा
पाया . उन्होंने उससे कहा हमने तो सुना भी नहीं

कि पवित्र आत्मा दिया जाता है । तब उसने उनसे ३
कहा तो तुमने किस बातपर बपतिसमा लिया . उन्होंने
कहा योहनके बपतिसमापर । पावलने कहा योहनने ४
पश्चात्तापका बपतिसमा देके अपने पीछे आनेवालेही-
पर विश्वास करनेको लोगोंसे कहा अर्थात ख्रीष्ट यीशु-
पर । यह सुनके उन्होंने प्रभु यीशुके नामसे बपतिसमा ५
लिया । और जब पावलने उनपर हाथ रखे तब पवित्र ६
आत्मा उनपर आया और वे अनेक बोलियां बोलने
और भविष्यद्वाक्य कहने लगे। ये सब मनुष्य बारह एक ७
थे ।

तब पावल सभाके घरमें प्रवेश करके साहससे बात ८
करने लगा और तीन मास ईश्वरके राज्यके विषयमेंकी
बातें सुनाता और समझाता रहा । परन्तु जब कितने ९
लोग कठोर हो गये और नहीं मानते थे और लोगोंके
आगे इस मार्गकी निन्दा करने लगे तब वह उनके
पाससे चला गया और शिष्योंको अलग करके तुरान
नाम किसी मनुष्यके विद्यालयमें प्रतिदिन बातें किईं।
यह दो बरस होता रहा यहांलों कि आशियाके निवासी १०
यिहूदी और यूनानी भी सभोंने प्रभु यीशुका बचन सुना।
और ईश्वरने पावलके हाथोंसे अनोखे आश्चर्य्य कर्म्म ११
किये . यहांलों कि उसके देहपरसे अंगोछे और रूमाल १२
रोगियोंके पास पहुंचाये जाते थे और रोग उनसे
जाते रहते थे और दुष्ट भूत उनमेंसे निकल जाते थे।

तब यिहूदी लोगोंमेंसे जो इधर उधर फिरा करते १३
और भूत निकालनेको किरिया देते थे कितने जन उन्हों-

पर जिनको दुष्ट भूत लगे थे प्रभु यीशुका नाम यह
कहके लेने लगे कि यीशु जिसे पावल प्रचार करता है
१४ हम उसीकी तुम्हें किरिया देते हैं । स्केवा नाम एक
यिहूदीय प्रधान याजकके सात पुत्र थे जो यह करते थे ।
१५ परन्तु दुष्ट भूतने उत्तर दिया कि यीशुको मैं जानता हूं
१६ और पावलको पहचानता हूं पर तुम कौन हो । और
वह मनुष्य जिसे दुष्ट भूत लगा था उनपर लपकके और
उन्हें बशमें लाके उनपर ऐसा प्रबल हुआ कि वे नंगे
१७ और घायल उस घरमेंसे भागे । और यह बात इफिसके
निवासी यिहूदी और यूनानी भी सब जान गये और
उन सभोंको डर लगा और प्रभु यीशुके नामकी महिमा
१८ किई जाती थी । और जिन्होंने बिश्वास किया था उन्हों-
मेंसे बहुतोंने आके अपने काम मान लिये और बत-
१९ लाये । टोना करनेहारोंमेंसे भी अनेकोंने अपनी पोथियां
एकट्ठी करके सभोंके साम्ने जला दिईं और उन्होंका
२० दाम जोड़ा गया तो पचास सहस्र रुपैये ठहरा । यूं
पराक्रमसे प्रभुका बचन फैला और प्रबल हुआ ।
२१ जब यह बातें हो चुकीं तब पावलने आत्मामें
माकिदोनिया और आखायाके बीचसे यिरूशलीम
जानेको ठहराया और कहा कि वहां जानेके पीछे मुझे
२२ रोमको भी देखना होगा । सो जो उसकी सेवा करते थे
उनमेंसे दोको अर्थात तिमोथिय और इरास्तको माकि-
दोनियामें भेजके वह आपही आशियामें कुछ दिन रह
२३ गया । उस समय इस मार्गके विषयमें बड़ा हुल्लड़ हुआ ।
२४ क्योंकि दीमीत्रिय नाम एक सुनार अर्त्तिमीके मन्दिरकी

चांदीकी मूरतें बनानेसे कारीगरोंको बहुत काम दिलाता
था। उसने उन्होंको और ऐसी ऐसी वस्तुओंके कारीगरों- २५
को एकट्ठे करके कहा हे मनुष्यो तुम जानते हो कि इस
कामसे हमोंको सम्पत्ति प्राप्त होती है। और तुम देखते २६
और सुनते हो कि इस पावलने यह कहके कि जो हाथों-
से बनाये जाते सो ईश्वर नहीं हैं केवल इफिसके नहीं
परन्तु प्राय समस्त आशियाके बहुत लोगोंको समझाके
भरमाया है। और हमोंको केवल यह डर नहीं है कि २७
यह उद्यम निन्दित हो जाय परन्तु यह भी कि बड़ी
देवी अर्त्तिमीका मन्दिर तुच्छ समझा जाय और उसकी
महिमा जिसे समस्त आशिया और जगत पूजता है नष्ट
हो जाय। वे यह सुनके और क्रोधसे पूर्ण होके पुकारने २८
लगे इफिसियोंकी अर्त्तिमीकी जय। और सारे नगरमें २९
बड़ी गड़बड़ाहट हुई और लोग गायस और अरिस्तार्ख
दो माकिदोनियोंको जो पावलके संगी पथिक थे पकड़के
एक चित्त होके रंगशालामें दौड़ गये। जब पावलने ३०
लोगोंके पास भीतर जाने चाहा तब शिष्योंने उसको
जाने न दिया। आशियाके प्रधानोंमेंसे भी कितनोंने जो ३१
उसके मित्र थे उस पास भेजके उससे बिन्ती किई कि
रंगशालामें जानेकी जोखिम मत अपनेपर उठाइये। सो ३२
कोई कुछ और कोई कुछ पुकारते थे क्योंकि सभा घब-
राई हुई थी और अधिक लोग नहीं जानते थे हम किस
कारण एकट्ठे हुए हैं। तब भीड़मेंसे कितनोंने सिकन्दर- ३३
को जिसे यिहूदियोंने खड़ा किया था आगे बढ़ाया और
सिकन्दर हाथसे सैन करके लोगोंके आगे उत्तर दिया

३४ चाहता था। परन्तु जब उन्होंने जाना कि वह यिहूदी है
सबके सब एक शब्दसे दो घड़ीके अटकल इफिसियोंकी
३५ अर्त्तिमीकी जय पुकारते रहे। तब नगरके लेखकने लो-
गोंको शांत करके कहा हे इफिसी लोगो कौन मनुष्य है
जो नहीं जानता कि इफिसियोंका नगर बड़ी देवी अर्त्ति-
मीका और जूपितरकी ओरसे गिरी हुई मूर्त्तिका टहलुआ
३६ है। सो जब कि इन बातोंका खंडन नहीं हो सकता है
उचित है कि तुम शांत होओ और कोई काम उतावली-
३७ से न करो। क्योंकि तुम इन मनुष्योंको लाये हो जो न
३८ पवित्र वस्तुओंके चोर न तुम्हारी देवीके निन्दक हैं। सो
जो दीमीत्रियको और उसके संगके कारीगरोंको किसी-
से बिबाद है तो विचारके दिन होते हैं और प्रधान
३९ लोग हैं वे एक दूसरेपर नालिश करें। परन्तु जो तुम
दूसरी बातोंके विषयमें कुछ पूछते हो तो व्यवहारिक
४० सभामें निर्णय किया जायगा। क्योंकि जो आज हुई है
उसके हेतुसे हमपर बलवेका दोष लगाये जानेका डर
है इसलिये कि कोई कारण नहीं है जिस करके हम
४१ इस भीड़का उत्तर दे सकेंगे। और यह कहके उसने
सभाको बिदा किया।

२० बीसवां पर्ब्ब ।

१ पावलका कई एक देशोंसे होके त्रोआ नगरको जाना। ७ उतुखका मरना और फिरके जिलाया जाना। १३ पावलका मिलीत नगरमें पहुंचना। १७ इफिसकी मंडलीके प्राचीनोंको उपदेश देना। ३६ वहांसे बिदा होना।

१ जब हुल्लड़ थम गया तब पावल शिष्योंको अपने
पास बुलाके और गले लगाके माकिदोनिया जानेको
२ चल निकला। उस सारे देशमें फिरके और बहुत बातोंसे

उन्हें उपदेश देके वह यूनान देशमें आया। और तीन ३
मास रहके जब वह जहाजपर सुरियाको जानेपर था
यिहूदी लोग उसकी घातमें लगे इसलिये उसने माकि-
दोनिया होके लौट जानेको ठहराया। बिरिया नगरका ४
सोपातर और थिसलोनियोंमेंसे अरिस्तार्ख और सिकुन्द
और दर्बी नगरका गायस और तिमोथिय और आशिया
देशके तुखिक और त्रोफिम आशियालों उसके संग हो
लिये। इन्होंने आगे जाके त्रोआमें हमोंकी बाट देखी। ५
और हम लोग अखमीरी रोटीके पर्ब्बके दिनोंके पीछे ६
जहाजपर फिलिपीसे चले और पांच दिनमें त्रोआमें
उनके पास पहुंचे जहां हम सात दिन रहे।

अठवारेके पहिले दिन जब शिष्य लोग रोटी तोड़ने- ७
को एकट्ठे हुए तब पावलने जो अगले दिन चले जानेपर
था उनसे बातें किईं और आधी रातलों बात करता
रहा। जिस उपरौठी कोठरीमें वे एकट्ठे हुए थे उसमें ८
बहुत दीपक बरते थे। और उतुख नाम एक जवान ९
खिड़कीपर बैठा हुआ भारी नींदसे झुक रहा था और
पावलके बड़ी बेरलों बातें करते करते वह नींदसे झुकके
तीसरी अटारीपरसे नीचे गिर पड़ा और मूआ उठाया
गया। परन्तु पावल उतरके उसपर औंधे पड़ गया १०
और उसे गोदीमें लेके बोला मत धूम मचाओ क्यों-
कि उसका प्राण उसमें है। तब ऊपर जाके और रोटी ११
तोड़के और खाके और बड़ी बेरलों भोरतक बातचीत
करके वह चला गया। और वे उस जवानको जीते ले १२
आये और बहुत शांति पाई।

१३ तब हम लोग आगेसे जहाजपर चढ़के आसस
नगरको गये जहांसे हमें पावलको चढ़ा लेना था क्यों-
कि उसने यूं ठहराया था इसलिये कि आपही पैदल
१४ जानेवाला था । जब वह आससमें हमसे आ मिला
१५ तब हम उसे चढ़ाके मितुलीनी नगरमें आये । और
वहांसे खोलके हम दूसरे दिन खीयो टापूके साम्हने
पहुंचे और अगले दिन सामो टापूमें लगान किया फिर
त्रोगुलिया नगरमें रहके दूसरे दिन मिलीत नगरमें
१६ आये । क्योंकि पावलने इफिसको एक ओर छोड़के
जाना ठहराया इसलिये कि उसको आशियामें अबेर
न लगे क्योंकि वह शीघ्र जाता था कि जो उससे बन
पड़े तो पेंतिकोष्टृ पर्ब्बके दिनलों यिरूशलीममें पहुंचे।
१७ मिलीतसे उसने लोगोंको इफिस नगर भेजके मंडली-
१८ के प्राचीनोंको बुलाया। जब वे उस पास आये तब उसने
उनसे कहा तुम जानते हो कि पहिले दिनसे जो मैं
आशियामें पहुंचा मैं हर समय क्योंकर तुम्हारे बीचमें
१९ रहा . कि बड़ी दीनताईसे और बहुत रो रोके और
उन परीक्षाओंमें जो मुझपर यिहूदियोंकी कुमंत्रणासे
२० पड़ीं मैं प्रभुकी सेवा करता रहा . और क्योंकर मैंने ला-
भकी बातोंमेंसे कोई बात न रख छोड़ी जो तुम्हें न बताई
२१ और लोगोंके आगे और घर घर तुम्हें न सिखाई . कि
यिहूदियों और यूनानियोंको भी मैं साक्षी देके ईश्वरके
आगे पश्चात्ताप करनेकी और हमारे प्रभु यीशु खीष्टपर
२२ बिश्वास करनेकी बात कहता रहा । और अब देखो मैं
आत्मासे बंधा हुआ यिरूशलीमको जाता हूं और नहीं

जानता हूं कि वहां मुझपर क्या पड़ेगा . केवल यही २३
जानता हूं कि पवित्र आत्मा नगर नगर साक्षी देता है
कि बंधन और क्लेश मेरे लिये धरे हैं। परन्तु मैं किसी २४
बातकी चिन्ता नहीं करता हूं और न अपना प्राण इतना
बहुमूल्य जानता हूं जितना आनन्दसे अपनी दौड़को
और ईश्वरके अनुग्रहके सुसमाचारपर साक्षी देनेकी
सेवकाईको जो मैंने प्रभु यीशुसे पाई है पूरी करना बहु-
मूल्य है। और अब देखो मैं जानता हूं कि तुम सब २५
जिन्होंमें मैं ईश्वरके राज्यकी कथा सुनाता फिरा हूं मेरा
मुंह फिर नहीं देखोगे। इसलिये मैं आजके दिन ईश्वर- २६
को साक्षी रखके तुमसे कहता हूं कि मैं सभोंके लोहूसे
निर्दोष हूं। क्योंकि मैंने ईश्वरके सारे मतमेंसे कोई बात २७
न रख छोड़ी जो तुम्हें न बताई। सो अपने विषयमें २८
और सारे झुंडके विषयमें जिसके बीचमें पवित्र आत्माने
तुम्हें रखवाले ठहराये हैं सचेत रहो कि तुम ईश्वरकी
मंडलीकी चरवाही करो जिसे उसने अपने लोहूसे मोल
लिया है। क्योंकि मैं यह जानता हूं कि मेरे जानेके पीछे २९
क्रूर हुंड़ार तुम्होंमें प्रवेश करेंगे जो झुंडको न छोड़ेंगे।
तुम्हारेही बीचमेंसे भी मनुष्य उठेंगे जो शिष्योंको अपने ३०
पीछे खींच लेनेको टेढ़ी बातें कहेंगे। इसलिये मैंने जो ३१
तीन बरस रात और दिन रो रोके हर एकको चिताना
न छोड़ा यह स्मरण करते हुए जागते रहो। और अब ३२
हे भाइयो मैं तुम्हें ईश्वरको और उसके अनुग्रहके बचन-
को सोंप देता हूं जो तुम्हें सुधारने और सब पवित्र किये
हुए लोगोंके बीचमें अधिकार देने सकता है। मैंने किसी- ३३

के रूपे अथवा सोने अथवा वस्त्रका लालच नहीं किया ।
३४ तुम आपही जानते हो कि इन हाथोंने मेरे प्रयोजनकी
३५ और मेरे संगियोंकी टहल किई । मैंने सब बातें तुम्हें
बताईं कि इस रीतिसे परिश्रम करते हुए दुर्बलोंका
उपकार करना और प्रभु यीशुकी बातें स्मरण करना
चाहिये कि उसने कहा लेनेसे देना अधिक धन्य है ।
३६ यह बातें कहके उसने अपने घुटने टेकके उन सभों-
३७ के संग प्रार्थना किई । तब वे सब बहुत रोये और
३८ पावलके गलेमें लिपटके उसे चूमने लगे । वे सबसे
अधिक उस बातसे शोक करते थे जो उसने कही थी
कि तुम मेरा मुंह फिर नहीं देखोगे . तब उन्होंने उसे
जहाजलों पहुंचाया ।

२१ इकईसवां पर्ब्ब ।

१ पावलका सोर नगरमें भाइयोंसे भेंट करना । ७ कैसरिया नगरमें फिलिपसे भेंट करना । १० आगाबका भविष्यद्वाक्य और पावलकी दृढ़ताई । १५ पावल और उसके संगियोंका यिरूशलीममें पहुंचना । १८ भाइयोंका पावलको परामर्श देना । २७ यिहूदियोंका उसको पकड़ना । ३१ रोमी सहस्रपतिका उसे यिहूदियोंके हाथसे छीन लेना । ३७ सहस्रपतिसे पावलकी बातचीत ।

१ जब हमने उनसे अलग होके जहाज खोला तब सीधे
सीधे कोस टापूको चले और दूसरे दिन रोद टापूको
२ और वहांसे पातारा नगरपर पहुंचे । और एक जहाज-
को जो फैनीकियाको जाता था पाके हमने उसपर
३ चढ़के खोल दिया । जब कुप्रस टापू देखनेमें आया तब
हमने उसे बायें हाथ छोड़ा और सुरियाको जाके सोर
नगरमें लगान किया क्योंकि जहाजकी बोझाई वहां
४ उतरनेपर थी । और वहांके शिष्योंको पाके हम वहां

सात दिन रहे . उन्होंने आत्माकी शिक्षासे पावलसे
कहा यिरूशलीमको न जाइये। जब हम उन दिनों- ५
को पूरे कर चुके तब निकलके चलने लगे और सभोंने
स्त्रियों और बालकों समेत हमें नगरके बाहरलों
पहुंचाया और हमोंने तीरपर घुटने टेकके प्रार्थना
किई। तब एक दूसरेको गले लगाके हम तो जहाजपर ६
चढ़े और वे अपने अपने घर लौटे।

तब हम सोरसे जलयात्रा पूरी करके तलिमाई नगरमें ७
पहुंचे और भाइयोंको नमस्कार करके उनके संग एक
दिन रहे। दूसरे दिन हम जो पावलके संगके थे वहांसे ८
चलके कैसरियामें आये और फिलिप सुसमाचार
प्रचारकके घरमें जो सातोंमेंसे एक था प्रवेश करके
उसके यहां रहे। इस मनुष्यको चार कुंवारी पुत्रियां ९
थीं जो भविष्यद्वाणी कहा करती थीं।

जब हम बहुत दिन रह चुके तब आगाब नाम एक १०
भविष्यद्वक्ता यिहूदियासे आया। वह हमारे पास आके ११
और पावलका पटुका लेके और अपने हाथ और पांव
बांधके बोला पवित्र आत्मा यह कहता है कि जिस
मनुष्यका यह पटुका है उसको यिरूशलीममें यिहूदी
लोग यूंहीं बांधेंगे और अन्यदेशियोंके हाथ सौंपेंगे। जब १२
हमने यह बातें सुनीं तब हम लोग और उस स्थानके
रहनेहारे भी पावलसे बिन्ती करने लगे कि यिरू-
शलीमको न जाइये। परन्तु उसने उत्तर दिया कि १३
तुम क्या करते हो कि रोते और मेरा मन चूर करते
हो . मैं तो प्रभु यीशुके नामके लिये यिरूशलीममें

केवल बांधे जानेको नहीं परन्तु मरनेको भी तैयार
१४ हूं । जब वह नहीं मानता था तब हम यह कहके
चुप हुए कि प्रभुकी इच्छा पूरी होवे ।
१५ इन दिनोंके पीछे हम लोग बांध छांदके यिरूशलीम-
१६ को जाने लगे । कैसरियाके शिष्योंमेंसे भी कितने
हमारे संग हो लिये और मनासोन नाम कुप्रसके एक
प्राचीन शिष्यके पास जिसके यहां हम पाहुन होवें
१७ हमें पहुंचाया । जब हम यिरूशलीममें पहुंचे तब
भाइयोंने हमें आनन्दसे ग्रहण किया ।
१८ दूसरे दिन पावल हमारे संग याकूबके यहां गया
१९ और सब प्राचीन लोग आये । तब उसने उनको नम-
स्कार कर जो जो कर्म्म ईश्वरने उसकी सेवकाईके द्वारासे
अन्यदेशियोंमें किये थे उन्हें एक एक करके बर्णन किया ।
२० उन्होंने सुनके प्रभुकी स्तुति किई और उससे कहा हे
भाई आप देखते हैं कितने सहस्रों यिहूदियोंने बिश्वास
२१ किया है और सब व्यवस्थाके लिये धुन लगाये हैं । और
उन्होंने आपके विषयमें सुना है कि आप अन्यदेशियोंके
बीचमेंके सब यिहूदियोंके तईं मूसाको त्याग करनेको
सिखाते हैं और कहते हैं कि अपने बालकोंका खतना
२२ मत करो और न व्यवहारोंपर चलो । सो क्या है कि
बहुत लोग निश्चय एकट्ठे होंगे क्योंकि वे सुनेंगे कि आप
२३ आये हैं । इसलिये यह जो हम आपसे कहते हैं कीजिये.
२४ हमारे यहां चार मनुष्य हैं जिन्होंने मन्नत मानी है । उन्हें
लेके उनके संग अपनेको शुद्ध कीजिये और उनके लिये
खर्चा दीजिये कि वे सिर मुंड़ावें तब सब लोग जानेंगे कि

जो बातें हमने इसके विषयमें सुनी थीं सो कुछ नहीं है
परन्तु वह आप भी व्यवस्थाको पालन करते हुए उसके
अनुसार चलता है। परन्तु जिन अन्यदेशियोंने बिश्वास २५
किया है हमने उनके विषयमें यही ठहराके लिख भेजा
कि वे ऐसी कोई बात न मानें केवल मूरतोंके आगे बलि
किये हुएसे और लोहूसे और गला घोंटे हुओंके मांससे
और व्यभिचारसे बचे रहें। तब पावलने उन मनुष्योंको २६
लेके दूसरे दिन उनके संग शुद्ध होके मन्दिरमें प्रवेश
किया और सन्देश दिया कि शुद्ध होनेके दिन अर्थात
उनमेंसे हर एकके लिये चढ़ावा चढ़ाये जानेतकके दिन
कब पूरे होंगे।

जब वे सात दिन पूरे होनेपर थे तब आशियाके २७
यिहूदियोंने पावलको मन्दिरमें देखके सब लोगोंको
उस्काया और उसपर हाथ डालके पुकारा, हे इस्रा- २८
येली लोगो सहायता करो यही वह मनुष्य है जो इन
लोगोंके और व्यवस्थाके और इस स्थानके बिरुद्ध सर्ब्बत्र
सब लोगोंको उपदेश देता है. हां और उसने यूना-
नियोंको मन्दिरमें लाके इस पवित्र स्थानको अपवित्र
भी किया है। उन्होंने तो इसके पहिले त्रोफिम इफिसीको २९
पावलके संग नगरमें देखा था और समझते थे कि
वह उसको मन्दिरमें लाया था। तब सारे नगरमें घबरा- ३०
हट हुई और लोग एकट्ठे दौड़े और पावलको पकड़के उसे
मन्दिरके बाहर खींच लाये और तुरन्त द्वार मून्दे गये।

जब वे उसे मार डालने चाहते थे तब पलटनके सह- ३१
स्रपतिको सन्देश पहुंचा कि सारे यिरूशलीममें घबराहट

३२ हुई है । तब वह तुरन्त योद्धाओं और शतपतियोंको
लेके उन पास दौड़ा और उन्होंने सहस्रपतिको और
३३ योद्धाओंको देखके पावलको मारना छोड़ दिया । तब
सहस्रपतिने निकट आके उसे लेके आज्ञा किई कि दो
जंजीरोंसे बांधा जाय और पूछने लगा यह कौन है और
३४ क्या किया है । परन्तु भीड़में कोई कुछ और कोई कुछ
पुकारते थे और जब सहस्रपति हुल्लड़के मारे निश्चय
नहीं जान सकता था तब पावलको गढ़में ले जानेकी
३५ आज्ञा किई । जब वह सीढ़ीपर पहुंचा ऐसा हुआ कि
भीड़की बरियाईके कारण योद्धाओंने उसे उठा लिया ।
३६ क्योंकि लोगोंकी भीड़ उसे दूर कर पुकारती हुई पीछे
आती थी ।

३७ जब पावल गढ़के भीतर पहुंचाये जानेपर था तब
उसने सहस्रपतिसे कहा जो आपसे कुछ कहनेकी मुझे
आज्ञा होय तो कहूं . उसने कहा क्या तू यूनानीय
३८ भाषा जानता है । तो क्या तू वह मिसरी नहीं है जो
इन दिनोंके आगे बलवा करके कटारबन्ध लोगोंमेंसे
३९ चार सहस्र मनुष्योंको जंगलमें ले गया । पावलने कहा
मैं तो तारसका एक यिहूदी मनुष्य हूं . किलिकियाके
एक प्रसिद्ध नगरका निवासी हूं . और मैं आपसे
बिन्ती करता हूं कि मुझे लोगोंसे बात करने दीजिये ।
४० जब उसने आज्ञा दिई तब पावलने सीढ़ीपर खड़ा
होके लोगोंको हाथसे सैन किया . जब वे बहुत चुप
हुए तब उसने इब्रीय भाषामें उनसे बात किई ।

२२ बाईसवां पर्ब्ब ।

१ यिहूदी लोगोंसे पावलकी कथा । २२ सहस्रपतिका उसे कोड़े मारनेकी आज्ञा देना और फिर छोड़ देना । ३० उसका यिहूदियोंकी न्यायसभाके आगे खड़ा किया जाना ।

उसने कहा हे भाइयो और पितरो मेरा उत्तर जो मैं १
आप लोगोंके आगे अब देता हूं सुनिये। वे यह सुनके २
कि वह हमसे इब्रीय भाषामें बात करता है और भी
चुप हुए । तब उसने कहा मैं तो यिहूदी मनुष्य हूं जो ३
किलिकियाके तारस नगरमें जन्मा पर इस नगरमें पाला
गया और गमलियेलके चरणोंके पास पितरोंकी व्यव-
स्थाकी ठीक रीतिपर सिखाया गया और जैसे आज तुम
सब हो ऐसाही ईश्वरके लिये धुन लगाये था । और मैंने ४
इस पन्थके लोगोंको मृत्युलों सताया कि पुरुषों और
स्त्रियोंको भी बांध बांधके बन्दीगृहोंमें डालता था। इसमें ५
महायाजक और सब प्राचीन लोग मेरे साक्षी हैं जिनसे
मैं भाइयोंके नामपर चिट्ठियां पाके दमेसकको जाता था
कि जो वहां थे उन्हें भी ताड़ना पानेको बांधे हुए यिरूश-
लीममें लाऊं । परन्तु जब मैं जाता था और दमेसकके ६
समीप पहुंचा तब दो पहरके निकट अचांचक बड़ी ज्योति
स्वर्गसे मेरी चारों ओर चमकी । और मैं भूमिपर ७
गिरा और एक शब्द सुना जो मुझसे बोला हे शावल हे
शावल तू मुझे क्यों सताता है । मैंने उत्तर दिया कि हे ८
प्रभु तू कौन है . उसने मुझसे कहा मैं यीशु नासरी हूं
जिसे तू सताता है । जो लोग मेरे संग थे उन्होंने वह ९
ज्योति देखी और डर गये परन्तु जो मुझसे बोलता था

१० उसकी बात न सुनी। तब मैंने कहा हे प्रभु मैं क्या
करूं. प्रभुने मुझसे कहा उठके दमेसकको जा और जो
जो काम करनेको तुझे ठहराया गया है सबके विषयमें
११ वहां तुझसे कहा जायगा। जब उस ज्योतिके तेजके मारे
मुझे नहीं सूझता था तब मैं अपने संगियोंके हाथ पकड़े
१२ हुए दमेसकमें आया। और अननियाह नाम व्यवस्थाके
अनुसार एक भक्त मनुष्य जो वहांके रहनेहारे सब
१३ यिहूदियोंके यहां सुख्यात था मेरे पास आया. और
निकट खड़ा होके मुझसे कहा हे भाई शावल अपनी
१४ दृष्टि पा और उसी घड़ी मैंने उसपर दृष्टि किई। तब
उसने कहा हमारे पितरोंके ईश्वरने तुझे ठहराया है कि
तू उसकी इच्छाको जाने और उस धर्म्मीको देखे और
१५ उसके मुंहसे बात सुने। क्योंकि जो बातें तूने देखी और
सुनी हैं उनके विषयमें तू सब मनुष्योंके आगे उसका
१६ साक्षी होगा। और अब तू क्यों बिलंब करता है. उठके
बपतिसमा ले और प्रभुके नामकी प्रार्थना करके अपने
१७ पापोंको धो डाल। जब मैं यिरूशलीमको फिर आया
ज्योंही मन्दिरमें प्रार्थना करता था त्योंही बेसुध हुआ.
१८ और उसको देखा कि मुझसे बोलता था शीघ्रता करके
यिरूशलीमसे झट निकल जा क्योंकि वे मेरे विषयमें
१९ तेरी साक्षी ग्रहण न करेंगे। मैंने कहा हे प्रभु वे
जानते हैं कि तुझपर बिश्वास करनेहारोंको मैं बन्दी-
२० गृहमें डालता और हर एक सभामें मारता था। और
जब तेरे साक्षी स्तिफानका लोहू बहाया जाता था तब
मैं भी आप निकट खड़ा था और उसके मारे जानेमें

सम्मति देता था और उसके घातकोंके कपड़ोंकी रख-
वाली करता था। तब उसने मुझसे कहा चला जा २१
क्योंकि मैं तुझे अन्यदेशियोंके पास दूर भेजूंगा।
लोगोंने इस बातलों उसकी सुनी तब ऊंचे शब्दसे २२
पुकारा कि ऐसे मनुष्यको पृथिवीपरसे दूर कर कि
उसका जीता रहना उचित न था। जब वे चिल्लाते २३
और कपड़े फेंकते और आकाशमें धूल उड़ाते थे. तब २४
सहस्रपतिने उसको गढ़में ले जानेकी आज्ञा किई और
कहा उसे कोड़े मारके जांचो कि मैं जानूं लोग किस
कारणसे उसके बिरुद्ध ऐसा पुकारते हैं। जब वे पावलको २५
चमड़ेके बंधोंसे बांधते थे तब उसने शतपतिसे जो खड़ा
था कहा क्या मनुष्यको जो रोमी है और दंडके योग्य
नहीं ठहराया गया है कोड़े मारना तुम्हें उचित है।
शतपतिने यह सुनके सहस्रपतिके पास जाके कह दिया २६
कि देखिये आप क्या किया चाहते हैं यह मनुष्य तो
रोमी है। तब सहस्रपतिने उस पास आके उससे कहा २७
मुझसे कह क्या तू रोमी है. उसने कहा हां। सहस्र- २८
पतिने उत्तर दिया कि मैंने यह रोमनिवासीकी पदवी
बहुत रुपैयोंपर मोल लिई. पावलने कहा परन्तु मैं
ऐसाही जन्मा। तब जो लोग उसे जांचनेपर थे सो २९
तुरन्त उसके पाससे हट गये और सहस्रपति भी यह
जानके कि रोमी है और मैंने उसे बांधा है डर गया।
और दूसरे दिन वह निश्चय जानने चाहता था कि ३०
उसपर यिहूदियोंसे क्यों दोष लगाया जाता है इसलिये
उसको बंधनोंसे खोल दिया और प्रधान याजकोंको

और न्याइयोंकी सारी सभाको आनेकी आज्ञा दिई
और पावलको लाके उनके आगे खड़ा किया ।

२३ तेईसवां पर्ब्ब ।

१ पावलकी कथा और सभाका बिभिन्न होना । १२ चालीस जनोंका उसे मार डालनेका नियम बांधना । १६ पावलके भांजेका सहस्रपतिको उस बातका संदेश देना । २२ पावलका फीलिक्स अध्यक्षके पास भेजा जाना । २५ सहस्रपतिका पत्र । ३१ पावलका फीलिक्सके पास पहुंचना ।

१ पावलने न्याइयोंकी सभाकी ओर ताकके कहा हे
भाइयो मैं इस दिनलों सर्ब्बथा ईश्वरके आगे शुद्ध मनसे
२ चला हूं । परन्तु अननियाह महायाजकने उन लोगोंको
जो उसके निकट खड़े थे उसके मुंहमें मारनेकी आज्ञा
३ दिई । तब पावलने उससे कहा हे चूना फेरी हुई भीत्ति
ईश्वर तुझे मारेगा . क्या तू मुझे ब्यवस्थाके अनुसार बि-
चार करनेको बैठा है और ब्यवस्थाको लंघन करता हुआ
४ मुझे मारनेकी आज्ञा देता । जो लोग निकट खड़े थे सो
बोले क्या तू ईश्वरके महायाजककी निन्दा करता है ।
५ पावलने कहा हे भाइयो मैं नहीं जानता था कि यह महा-
याजक है . क्योंकि लिखा है अपने लोगोंके प्रधानको बुरा
६ मत कह । तब पावलने यह जानके कि एक भाग सदूकी
और एक भाग फरीशी हैं सभामें पुकारा हे भाइयो
मैं फरीशी और फरीशीका पुत्र हूं मृतकोंकी आशा
और जी उठनेके विषयमें मेरा बिचार किया जाता है ।
७ जब उसने यह बात कही तब फरीशियों और सदूकियों-
८ में बिबाद हुआ और सभा बिभिन्न हुई । क्योंकि सदूकी
कहते हैं कि न मृतकोंका जी उठना न दूत न आत्मा
९ है परन्तु फरीशी दोनोंको मानते हैं । तब बड़ी धूम मची

और जो अध्यापक फरीशियोंके भागके थे सो उठके
लड़ते हुए कहने लगे कि हम लोग इस मनुष्यमें कुछ
बुराई नहीं पाते हैं परन्तु यदि कोई आत्मा अथवा
दूत उससे बोला है तो हम ईश्वरसे न लड़ें। जब बहुत १०
विबाद हुआ तब सहस्रपतिको शंका हुई कि पावल उनसे
फाड़ न डाला जाय इसलिये पलटनको आज्ञा दिई कि
जाके उसको उनके बीचमेंसे छीनके गढ़में लाओ।

उस रात प्रभुने उसके निकट खड़े हो कहा हे पावल ११
ढाढ़स कर क्योंकि जैसा तूने यिरूशलीममें मेरे विषयमें-
की साक्षी दिई है तैसाही तुझे रोममें भी साक्षी देना होगा।

बिहान हुए कितने यिहूदियोंने एका करके प्रण बांधा १२
कि जबलों हम पावलको मार न डालें तबलों जो खायें
अथवा पीयें तो हमें धिक्कार है। जिन्होंने आपसमें यह १३
किरिया खाई थी सो चालीस जनोंसे अधिक थे। वे १४
प्रधान याजकों और प्राचीनोंके पास आके बोले हमने
यह प्रण बांधा है कि जबलों हम पावलको मार न
डालें तबलों यदि कुछ चीखें भी तो हमें धिक्कार है।
इसलिये अब आप लोग न्याइयोंकी सभा समेत सहस्र- १५
पतिको समझाइये कि हम पावलके विषयमेंकी बातें
और ठीक करके निर्णय करेंगे सो आप उसे कल हमारे
पास लाइये. परन्तु उसके पहुंचनेके पहिलेही हम
लोग उसे मार डालनेको तैयार हैं।

परन्तु पावलके भांजेने उनका घातमें लगना सुना १६
और आके गढ़में प्रवेश कर पावलको सन्देश दिया।
पावलने शतपतियोंमेंसे एकको अपने पास बुलाके कहा १७

इस जवानको सहस्रपतिके पास ले जाइये क्योंकि उसको
१८ उससे कुछ कहना है । सो उसने उसे ले सहस्रपतिके
पास लाके कहा पावल बन्धुवेने मुझे अपने पास बुलाके
बिन्ती किई कि इस जवानको सहस्रपतिसे कुछ कहना
१९ है उसे उस पास ले जाइये । सहस्रपतिने उसका हाथ
पकड़के और एकांतमें जाके पूछा तुझको जो मुझसे
२० कहना है सो क्या है । उसने कहा यिहूदियोंने आपसे
यही बिन्ती करनेको आपसमें ठहराया है कि हम
पावलके विषयमें कुछ बात और ठीक करके पूछेंगे सो
२१ आप उसे कल न्याइयोंकी सभामें लाइये । परन्तु आप
उनकी न मानिये क्योंकि उनमेंसे चालीससे अधिक
मनुष्य उसकी घातमें लगे हैं जिन्होंने यह प्रण बांधा
है कि जबलों हम पावलको मार न डालें तबलों जो
खायें अथवा पीयें तो हमें धिक्कार है और अब वे
तैयार हैं और आपकी प्रतिज्ञाकी आस देख रहे हैं ।
२२ सो सहस्रपतिने यह आज्ञा देके कि किसीसे मत कह
कि मैंने यह बातें सहस्रपतिको बताई हैं जवानको बिदा
२३ किया । और शतपतियोंमेंसे दोको अपने पास बुलाके
उसने कहा दो सौ योद्धाओं और सत्तर घुड़चढ़ों और
दो सौ भालैतोंको पहर रात बीते कैसरियाको जानेके
२४ लिये तैयार करो । और बाहन तैयार करो कि वे पावल-
को बैठाके फीलिक्स अध्यक्षके पास बचाके ले जावें ।
२५ २६ उसने इस प्रकारकी चिट्ठी भी लिखी । क्लौदिय लुसिय
२७ महामहिमन अध्यक्ष फीलिक्सको नमस्कार । इस मनु-
ष्यको जो यिहूदियोंसे पकड़ा गया था और उनसे मार

डाले जानेपर था मैंने यह सुनके कि वह रोमी है
पलटनके संग जा पहुंचके छुड़ाया । और मैं जानने २८
चाहता था कि वे उसपर किस कारणसे दोष लगाते
हैं इसलिये उसे उनकी न्याइयोंकी सभामें लाया । तब २९
मैंने यह पाया कि उनकी व्यवस्थाके बिबादोंके विषयमें
उसपर दोष लगाया जाता है परन्तु बध किये जाने
अथवा बांधे जानेके योग्य कोई दोष उसमें नहीं है ।
जब मुझे बताया गया कि यिहूदी लोग इस मनुष्यकी ३०
घातमें लगेंगे तब मैंने तुरन्त उसको आपके पास भेजा
और दोषदायकोंको भी आज्ञा दिई कि उसके बिरुद्ध
जो बात होय उसे आपके आगे कहें . आगे शुभ ।

योद्धा लोग जैसे उन्हें आज्ञा दिई गई थी तैसे पा- ३१
वलको लेके रातहीको अन्तिपात्री नगरमें लाये ।
दूसरे दिन वे गढ़को लौटे और घुड़चढ़ोंको उसके संग ३२
जाने दिया । उन्होंने कैसरियामें पहुंचके और अध्यक्ष- ३३
को चिट्ठी देके पावलको भी उसके आगे खड़ा किया ।
अध्यक्षने पढ़के पूछा यह कौन प्रदेशका है और जब ३४
जाना कि किलिकियाका है . तब कहा जब तेरे दोष- ३५
दायक भी आवें तब मैं तेरी सुनूंगा . और उसने उसे
हेरोदके राजभवनमें पहरेमें रखनेकी आज्ञा किई ।

२४ चौबीसवां पर्व्व ।

१ फीलिक्सके आगे यिहूदियोंका पावलपर नालिश करना । १० पावलका उत्तर । २२ उसके विषयमें फीलिक्सकी आज्ञा । २४ उसका फीलिक्स और उसकी पत्नी- से धर्म्मकी बात कहना ।

पांच दिनके पीछे अननियाह महायाजक प्राचीनोंके १
और तर्तूल नाम किसी सुबक्ताके संग आया और उन्होंने

२ अध्यक्षके आगे पावलपर नालिश किई । जब पावल
बुलाया गया तब तर्त्तूल यह कहके उसपर दोष लगाने
लगा कि हे महामहिमन फीलिक्स आपके द्वारा हमारा
बहुत कल्याण जो होता है और आपकी प्रवीणतासे इस
देशके लोगोंके लिये कितने काम जो सुफल होते
३ हैं . इसको हम लोग सर्ब्बथा और सर्ब्बत्र बहुत धन्य
४ मानके ग्रहण करते हैं । परन्तु जिस्तें मेरी ओरसे
आपको अधिक बिलंब न होय मैं बिन्ती करता हूं
कि आप अपनी सुशीलतासे हमारी संक्षेप कथा सुन
५ लीजिये । क्योंकि हमने यही पाया है कि यह मनुष्य
एक मरीके ऐसा है और जगतके सारे यिहूदियोंमें
बलवा करानेहारा और नासरियोंके कुपन्थका प्रधान।
६ उसने मन्दिरको भी अपवित्र करनेकी चेष्टा किई और
हमने उसे पकड़के अपनी व्यवस्थाके अनुसार बिचार
७ करने चाहा । परन्तु लुसिय सहस्रपतिने आके बड़ी
बरियाईसे उसको हमारे हाथोंसे छीन लिया और उस-
के दोषदायकोंको आपके पास आनेकी आज्ञा दिई ।
८ उसीसे आप पूछके इन सब बातोंके विषयमें जिनसे हम
९ उसपर दोष लगाते हैं आपही जान सकेंगे । यिहूदि-
योंने भी उसके संग लगके कहा यह बातें यूंहीं हैं ।
१० तब पावलने जब अध्यक्षने बोलनेका सैन उससे
किया तब उत्तर दिया कि मैं यह जानके कि आप
बहुत बरसोंसे इस देशके लोगोंके न्यायी हैं औरही
साहससे अपने विषयमेंकी बातोंका उत्तर देता हूं ।
११ क्योंकि आप जान सकते हैं कि जबसे मैं यिरूशलीममें

भजन करनेको आया मुझे बारह दिनसे अधिक नहीं
हुए। और उन्होंने मुझे न मन्दिरमें न सभाके घरोंमें १२
न नगरमें किसीसे बिबाद करते हुए अथवा लोगोंकी
भीड़ लगाते हुए पाया। और न वे उन बातोंको १३
जिनके विषयमें वे अब मुझपर दोष लगाते हैं ठहरा
सकते हैं। परन्तु यह मैं आपके आगे मान लेता हूं १४
कि जिस मार्गको वे कुपन्थ कहते हैं उसीकी रीतिपर
मैं अपने पितरोंके ईश्वरकी सेवा करता हूं और जो
बातें व्यवस्थामें श्री भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकमें लिखी हैं
उन सभोंका विश्वास करता हूं. और ईश्वरसे आशा १५
रखता हूं जिसे ये भी आप रखते हैं कि धर्म्मी और
अधर्म्मी भी सब मृतकोंका जी उठना होगा। इससे मैं १६
आप भी साधना करता हूं कि ईश्वरकी और मनुष्यों-
की ओर मेरा मन सदा निर्दोष रहे। बहुत बरसोंके १७
पीछे मैं अपने लोगोंको दान देनेको और चढ़ावा
चढ़ानेको आया। इसमें इन्होंने नहीं पर आशियाके १८
कितने यिहूदियोंने मुझे मन्दिरमें शुद्ध किये हुए न
भीड़के संग और न धूमधामके संग पाया। उनको उचित १९
था कि जो मेरे बिरुद्ध उनकी कोई बात होय तो यहां
आपके आगे होते और मुझपर दोष लगाते। अथवा २०
येही लोग आपही कहें कि जब मैं न्याइयोंकी सभाके
आगे खड़ा था तब उन्होंने मुझमें कौनसा कुकर्म्म पाया.
केवल इसी एक बातके विषयमें जो मैंने उनके बीचमें २१
खड़ा होके पुकारा कि मृतकोंके जी उठनेके बिषयमें मेरा
बिचार आज तुमसे किया जाता है।

२२ यह बातें सुनके फीलिक्सने जो इस मार्गकी बातें
बहुत ठीक करके बूझता था उन्हें यह कहके टाल दिया
कि जब लुसिय सहस्रपति आवे तब मैं तुम्हारे विषयमें-
२३ की बातें निर्णय करूंगा । और उसने शतपतिको आज्ञा
दिई कि पावलकी रक्षा कर पर उसको अवकाश दे
और उसके मित्रोंमेंसे किसीको उसकी सेवा करनेमें
अथवा उस पास आनेमें मत रोक ।
२४ कितने दिनोंके पीछे फीलिक्स अपनी स्त्री द्रुसिल्लाके
संग जो यिहूदिनी थी आया और पावलको बुलवाके
२५ ख्रीष्टपर बिश्वास करनेके विषयमें उसकी सुनी । और
जब वह धर्म्म और संयमके और आनेवाले बिचारके
विषयमें बातें करता था तब फीलिक्सने भयमान होके
उत्तर दिया कि अब तो जा और अवसर पाके मैं तुझे
२६ बुलाऊंगा । वह यह आशा भी रखता था कि पावल मुझे
रुपैये देगा कि मैं उसे छोड़ देऊं इसलिये और भी बहुत
२७ बार उसको बुलवाके उससे बातचीत करता था । परन्तु
जब दो बरस पूरे हुए तब पर्किय फीष्टने फीलिक्सका
काम पाया और फीलिक्स यिहूदियोंका मन रखनेकी
इच्छा कर पावलको बंधा हुआ छोड़ गया ।

२५ पचीसवां पर्ब्ब ।

१ फीष्टका पावलके दोषदायकोंको कैसरियामें बुलाना । ६ पावलका फीष्टके आगे विचार होना और कैसरकी दोहाई देना । १३ फीष्टका पावलकी बात अग्रिपासे कहना । २३ विचार स्थानमें फीष्टकी कथा ।

१ फीष्ट उस प्रदेशमें पहुंचके तीन दिनके पीछे कैसरिया-
२ से यिरूशलीमको गया । तब महायाजकने और यिहू-
दियोंके बड़े लोगोंने उसके आगे पावलपर नालिश किई.

और उससे बिन्ती कर उसके बिरुद्ध यह अनुग्रह चाहा ३
कि वह उसे यिरूशलीममें मंगवाय क्योंकि वे उसे मार्गमें
मार डालनेको घात लगाये हुए थे। फीष्टने उत्तर दिया ४
कि पावल कैसरियामें पहरेमें रहता है और मैं आप
वहां शीघ्र जाऊंगा। फिर बोला तुममेंसे जो सामर्थी ५
लोग हैं सो मेरे संग चलें और जो इस मनुष्यमें कुछ
दोष होय तो उसपर दोष लगावें।

और उनके बीचमें दस एक दिन रहके वह कैसरिया- ६
को गया और दूसरे दिन बिचार आसनपर बैठके
पावलको लानेकी आज्ञा किई। जब पावल आया ७
तब जो यिहूदी लोग यिरूशलीमसे आये थे उन्होंने
आसपास खड़े होके उसपर बहुत बहुत और भारी भारी
दोष लगाये जिनका प्रमाण वे नहीं दे सकते थे। परन्तु ८
उसने उत्तर दिया कि मैंने न यिहूदियोंकी व्यवस्थाके न
मन्दिरके न कैसरके बिरुद्ध कुछ अपराध किया है।
तब फीष्टने यिहूदियोंका मन रखनेकी इच्छा कर पा- ९
वलको उत्तर दिया क्या तू यिरूशलीमको जाके वहां
मेरे आगे इन बातोंके विषयमें बिचार किया जायगा।
पावलने कहा मैं कैसरके बिचार आसनके आगे खड़ा १०
हूं जहां उचित है कि मेरा बिचार किया जाय. यिहू-
दियोंका जैसा आप भी अच्छी रीतिसे जानते हैं मैंने
कुछ अपराध नहीं किया है। क्योंकि जो मैं अपराधी ११
हूं और बधके योग्य कुछ किया है तो मैं मृत्युसे छुड़ाया
जाना नहीं मांगता हूं परन्तु जिन बातोंसे ये मुझपर
दोष लगाते हैं यदि उनमेंसे कोई बात नहीं ठहरती है

तो कोई मुझे उन्होंके हाथ नहीं सोंप सकता है . मैं
१२ कैसरकी दोहाई देता हूं । तब फीष्टने मंत्रियोंकी सभाके
संग बात करके उत्तर दिया क्या तूने कैसरकी दोहाई
दिई है . तू कैसरके पास जायगा ।
१३ जब कितने दिन बीत गये तब अग्रिपा राजा और
बर्णीकी फीष्टको नमस्कार करनेको कैसरियामें आये ।
१४ और उनके बहुत दिन वहां रहते रहते फीष्टने पावलकी
कथा राजाको सुनाई कि एक मनुष्य है जिसे फीलिक्स
१५ बंधमें छोड़ गया है । उसपर जब मैं यिरूशलीममें था
तब प्रधान याजकोंने और यिहूदियोंके प्राचीनोंने ना-
लिश किई और चाहा कि दंडकी आज्ञा उसपर दिई जाय ।
१६ परन्तु मैंने उनको उत्तर दिया रोमियोंकी यह रीति नहीं
है कि जबलों वह जिसपर दोष लगाया जाता है अपने
दोषदायकोंके आम्ने साम्ने न हो और दोषके विषयमें
उत्तर देनेका अवकाश न पाय तबलों किसी मनुष्यको
१७ नाश किये जानेके लिये सोंप देवें । सो जब वे यहां एकट्ठे
हुए तब मैंने कुछ बिलंब न करके अगले दिन बिचार आ-
१८ सनपर बैठके उस मनुष्यको लानेकी आज्ञा किई । दोष-
दायकोंने उसके आसपास खड़े होके जैसे दोष मैं समझता
१९ था वैसा कोई दोष नहीं लगाया । परन्तु अपनी पूजाके
विषयमें और किसी मरे हुए यीशुके विषयमें जिसे पावल
कहता था कि जीता है वे उससे कितने विवाद करते थे ।
२० मुझे इस विषयके विवादमें सन्देह था इसलिये मैंने कहा
क्या तू यिरूशलीमको जाके वहां इन बातोंके विषयमें
२१ बिचार किया जायगा । परन्तु जब पावलने दोहाई दे

कहा मुझे अगस्त महाराजासे बिचार किये जानेको
रखिये तब मैंने आज्ञा दिई कि जबलों मैं उसे कैसरके
पास न भेजूं तबलों उसकी रक्षा किई जाय। तब अग्रिपा- २२
ने फीष्टसे कहा मैं आप भी उस मनुष्यकी सुननेसे प्रसन्न
होता. उसने कहा आप कल उसकी सुनेंगे।

सो दूसरे दिन जब अग्रिपा और बर्णीकीने बड़ी २३
धूमधामसे आके सहस्रपतियों और नगरके श्रेष्ठ मनुष्योंके
संग समाज स्थानमें प्रवेश किया और फीष्टने आज्ञा
किई तब वे पावलको ले आये। और फीष्टने कहा हे २४
राजा अग्रिपा और हे सब मनुष्यो जो यहां हमारे संग
हो आप लोग इसको देखते हैं जिसके विषयमें सारे
यिहूदियोंने यिरूशलीममें और यहां भी मुझसे बिन्ती
करके पुकारा है कि इसका और जीता रहना उचित
नहीं है। परन्तु यह जानके कि उसने बधके योग्य कुछ २५
नहीं किया है जब कि उसने आप अगस्त महाराजाकी
दोहाई दिई मैंने उसे भेजनेको ठहराया। परन्तु मैंने २६
उसके विषयमें कोई निश्चयकी बात नहीं पाई है जो मैं
महाराजाके पास लिखूं इसलिये मैं उसे आप लोगोंके
साम्ने और निज करके हे राजा अग्रिपा आपके साम्ने
लाया हूं कि बिचार किये जानेके पीछे मुझे कुछ लिखने-
को मिले। क्योंकि बन्धुवेको भेजनेमें दोष जो उसपर २७
लगाये गये हैं नहीं बताना मुझे असंगत देख पड़ता है।

२६ छबीसवां पर्ब्ब।

१ अग्रिपाके आगे पावलका उत्तर देना। २४ फीष्ट और अग्रिपासे पावलकी बात-चीत। ३० उसका निर्दोष ठहराया जाना।

१ अग्रिपाने पावलसे कहा तुझे अपने विषयमें बोलने-
की आज्ञा दिई जाती है . तब पावल हाथ बढ़ाके उत्तर
२ देने लगा . कि हे राजा अग्रिपा जिन बातोंसे यिहूदी
लोग मुझपर दोष लगाते हैं उन सब बातोंके विषयमें मैं
अपनेको धन्य समझता हूं कि आज आपके आगे उत्तर
३ देऊंगा . निज करके इसी लिये कि आप यिहूदियोंके
बीचके सब व्यवहारों और बिबादोंको बूझते हैं . सो मैं
आपसे बिन्ती करता हूं धीरज करके मेरी सुन लीजिये।
४ लड़कपनसे मेरी जैसी चाल चलन आरंभसे यिरूशलीम-
में मेरे लोगोंके बीचमें थी सो सब यिहूदी लोग जानते
५ हैं। वे जो साक्षी देने चाहते तो आदिसे मुझे पहचानते
हैं कि हमारे धर्म्मके सबसे खरे पन्थके अनुसार मैं फरीशी-
६ की चाल चला। और अब जो प्रतिज्ञा ईश्वरने पितरोंसे
किई मैं उसीकी आशाके विषयमें बिचार किये जानेको
७ खड़ा हूं . जिसे हमारे बारहों कुल रात दिन यत्नसे सेवा
करते हुए पानेकी आशा रखते हैं . इसी आशाके विषयमें
हे राजा अग्रिपा यिहूदी लोग मुझपर दोष लगाते हैं।
८ आप लोगोंके यहां यह क्यों विश्वासके अयोग्य
९ जाना जाता है कि ईश्वर मृतकोंको जिलाता। मैंने
तो अपनेमें समझा कि यीशु नासरीके नामके बिरुद्ध
१० बहुत कुछ करना उचित है। और मैंने यिरूशलीममें
वही किया भी और प्रधान याजकोंसे अधिकार पाके
पवित्र लोगोंमेंसे बहुतोंको बन्दीगृहोंमें मूंद रखा और
जब वे घात किये जाते थे तब मैंने अपनी सम्मति
११ दिई। और समस्त सभाके घरोंमें मैं बार बार उन्हें

ताड़ना देके यीशुकी निन्दा करवाता था और उनपर
अत्यन्त क्रोधसे उन्मत्त होके बाहरके नगरोंतक भी
सताता था। इस बीचमें जब मैं प्रधान याजकोंसे १२
अधिकार और आज्ञा लेके दमेसकको जाता था . तब १३
हे राजा मार्गमें दो पहर दिनको मैंने स्वर्गसे सूर्य्यके
तेजसे अधिक एक ज्योति अपनी और अपने संग
जानेहारोंकी चारों ओर चमकती हुई देखी। और १४
जब हम सब भूमिपर गिर पड़े तब मैंने एक शब्द
सुना जो मुझसे बोला और इब्रीय भाषामें कहा हे
शावल हे शावल तू मुझे क्यों सताता है . पैनोंपर
लात मारना तेरे लिये कठिन है। तब मैंने कहा हे १५
प्रभु तू कौन है . उसने कहा मैं यीशु हूं जिसे तू सताता
है। परन्तु उठके अपने पांवोंपर खड़ा हो क्योंकि १६
मैंने तुझे इसीलिये दर्शन दिया है कि उन बातोंका
जो तूने देखी हैं और जिनमें मैं तुझे दर्शन देऊंगा
तुझे सेवक और साक्षी ठहराऊं। और मैं तुझे तेरे १७
लोगोंसे और अन्यदेशियोंसे बचाऊंगा जिनके पास
मैं अब तुझे भेजता हूं . कि तू उनकी आंखें खोले १८
इसलिये कि वे अंधियारेसे उजियालेकी ओर और
शैतानके अधिकारसे ईश्वरकी ओर फिरें जिस्तें पाप-
मोचन और उन लोगोंमें जो मुझपर बिश्वास करनेसे
पवित्र किये गये हैं अधिकार पावें।

सो हे राजा अग्रिपा मैंने उस स्वर्गीय दर्शनकी १९
बात न टाली . परन्तु पहिले दमेसक और यिरूशलीम- २०
के निवासियोंको तब यिहूदियाके सारे देशमें और

अन्यदेशियोंको पश्चात्ताप करनेका और ईश्वरकी
ओर फिरनेका और पश्चात्तापके योग्य काम करनेका
२१ उपदेश दिया। इन बातोंके कारण यिहूदी लोग मुझे
२२ मन्दिरमें पकड़के मार डालनेकी चेष्टा करते थे। सो
ईश्वरसे सहायता पाके मैं छोटे और बड़ेको साक्षी
देता हुआ आजलों ठहरा हूं और उन बातोंको छोड़
कुछ नहीं कहता हूं जो भविष्यद्वक्ताओंने और मूसाने
२३ भी कहा कि होनेवाली हैं. अर्थात ख्रीष्टको दुःख
भोगना होगा और वही मृतकोंमेंसे पहिले उठके
हमारे लोगोंको और अन्यदेशियोंको ज्योतिकी कथा
सुनावेगा।
२४ जब वह यह उत्तर देता था तब फीष्टने बड़े शब्दसे
कहा हे पावल तू बौड़हा है बहुत विद्या तुझे बौड़हा
२५ करती है। पर उसने कहा हे महामहिमन फीष्ट मैं
बौड़हा नहीं हूं परन्तु सच्चाई और बुद्धिकी बातें कहता
२६ हूं। इन बातोंको राजा बूझता है जिसके आगे मैं खोल-
के बोलता हूं क्योंकि मैं निश्चय जानता हूं कि इन बातों-
मेंसे कोई बात उससे छिपी नहीं है कि यह तो कोनेमें
२७ नहीं किया गया है। हे राजा अग्रिपा क्या आप भवि-
ष्यद्वक्ताओंका बिश्वास करते हैं. मैं जानता हूं कि आप
२८ बिश्वास करते हैं। तब अग्रिपाने पावलसे कहा तू थोड़ेमें
२९ मुझे ख्रीष्टियान होनेको मनाता है। पावलने कहा
ईश्वरसे मेरी प्रार्थना यह है कि क्या थोड़ेमें क्या बहुतमें
केवल आप नहीं परन्तु सब लोग भी जो आज मेरी
सुनते हैं इन बन्धनोंको छोड़के ऐसे हो जायें जैसा मैं हूं।

जब उसने यह कहा तब राजा और अध्यक्ष और 30
वर्णीकी और उनके संग बैठनेहारे उठे . और अलग ३१
जाके आपसमें बोले यह मनुष्य बध किये जाने अथवा
बांधे जानेके योग्य कुछ नहीं करता है। तब अग्रिपाने ३२
फीष्टसे कहा जो यह मनुष्य कैसरकी दोहाई न दिये
होता तो छोड़ा जा सकता ।

२७ सताईसवां पर्व्व ।

१ पावलका जहाजपर चढ़ाया जाना और रोम नगरकी ओर जाना। ९ पावलका परामर्श और लोगोंका उसे न मानना । १३ बड़ी आंधीका उठना। २१ पावलका लोगोंको समझाना और मल्लाहोंका समाचार। ३९ जहाजका टूटना और लोगोंका बच निकलना ।

जब यह ठहराया गया कि हम जहाजपर इतलियाको १
जायें तब उन्होंने पावलको और कितने और बन्धुवोंको
भी यूलिय नाम अगस्तकी पलटनके एक शतपतिके हाथ
सोंप दिया । और आद्रामुतिया नगरके एक जहाजपर २
जो आशियाके तीरपरके स्थानोंको जाता था चढ़के
हमने खोल दिया और अरिस्तार्ख नाम थिसलोनिकाका
एक माकिदोनी हमारे संग था । दूसरे दिन हमने ३
सीदोनमें लगान किया और यूलियने पावलके साथ
प्रेमसे व्यवहार करके उसे मित्रोंके पास जाने और पाहुन
होने दिया । वहांसे खोलके बयारके सन्मुख होनेके ४
कारण हम कुप्रसके नीचेसे होके चले . और किलिकिया ५
और पंफुलियाके निकटके समुद्रमें होके लुकिया देशके
मुरा नगर पहुंचे । वहां शतपतिने सिकन्दरियाके एक ६
जहाजको जो इतलियाको जाता था पाके हमें उसपर
चढ़ाया । बहुत दिनोंमें हम धीरे धीरे चलके और बयार ७

जो हमें चलने न देती थी इसलिये कठिनतासे कनीदके
सान्ने पहुंचके सलमोनीके आम्ने सान्ने क्रीतीके नीचे चले.
८ और कठिनतासे उसके पाससे होते हुए शुभलंगरबारी
नाम एक स्थानमें पहुंचे जहांसे लासेया नगर निकट था ।
९ जब बहुत दिन बीत गये थे और जलयात्रामें जोखिम
होती थी क्योंकि उपवास पर्ब्ब भी अब बीत चुका था
१० तब पावलने उन्हें समझाके कहा . हे मनुष्यो मुझे सूझ
पड़ता है कि इस जलयात्रामें हानि और बहुत टूटी
केवल बोझाई और जहाजकी नहीं परन्तु हमारे प्राणोंकी
११ भी हुआ चाहती है। परन्तु शतपतिने पावलकी बातोंसे
अधिक मांझीकी और जहाजके स्वामीकी मान लिई।
१२ और वह लंगरबारी जाड़ेका समय काटनेको अच्छी न
थी इसलिये बहुतेरोंने परामर्श दिया कि वहांसे भी
खोलके जो किसी रीतिसे हो सके तो फैनीकी नाम क्रीती-
की एक लंगरबारीमें जो दक्षिण पश्चिम और उत्तर
पश्चिमकी ओर खुलती है जा रहें और वहां जाड़ेका
समय काटें ।
१३ जब दक्षिणकी बयार मन्द मन्द बहने लगी तब
उन्होंने यह समझके कि हमारा अभिप्राय सुफल हुआ
है लंगर उठाया और तीर धरे धरे क्रीतीके पाससे जाने
१४ लगे । परन्तु थोड़ी बेरमें क्रीतीपरसे अति प्रचण्ड एक
१५ बयार उठी जो उरकलूदन कहावती है। यह जब जहाज-
पर लगी और वह बयारके सान्ने ठहर न सका तब
१६ हमने उसे जाने दिया और उड़ाये हुए चले गये । तब
क्लौदा नाम एक छोटे टापूके नीचेसे जाके हम कठिन-

तासे डिंगीको धर सके। उसे उठाके उन्होंने अनेक १७
उपाय करके जहाजको नीचेसे बांधा और सुर्त्ती नाम
चड़पर टिक जानेके भयसे मस्तूल गिराके यूंहीं उड़ाये
जाते थे। तब निपट बड़ी आंधी हमपर चलती थी १८
इसलिये उन्होंने दूसरे दिन कुछ बोझाई फेंक दिई।
और तीसरे दिन हमने अपने हाथोंसे जहाजकी सामग्री १९
फेंक दिई। और जब बहुत दिनोंतक न सूर्य्य न तारे २०
दिखाई दिये और बड़ी आंधी चलती रही अन्तमें
हमारे बचनेकी सारी आशा जाती रही।

जब वे बहुत उपवास कर चुके तब पावलने उनके २१
बीचमें खड़ा होके कहा हे मनुष्यो उचित था कि तुम
मेरी बात मानते और क्रीतीसे न खोलते न यह हानि
और टूटी उठाते। पर अब मैं तुमसे बिन्ती करता हूं २२
कि ढाढ़स बांधो क्योंकि तुम्होंमेंसे किसीके प्राणका नाश
न होगा केवल जहाजका। क्योंकि ईश्वर जिसका मैं २३
हूं और जिसकी सेवा करता हूं उसका एक दूत इसी
रात मेरे निकट खड़ा हुआ. और कहा हे पावल मत २४
डर तुझे कैसरके आगे खड़ा होना अवश्य है और
देख ईश्वरने सभोंको जो तेरे संग जलयात्रा करते
हैं तुझे दिया है। इसलिये हे मनुष्यो ढाढ़स बांधो २५
क्योंकि मैं ईश्वरका विश्वास करता हूं कि जिस रीति-
से मुझे कहा गया है उसी रीतिसे होगा। परन्तु हमें २६
किसी टापूपर पड़ना होगा।

जब चौदहवीं रात पहुंची ज्योंही हम आद्रिया समुद्र- २७
में इधर उधर उड़ाये जाते थे त्योंही आधी रातके निकट

मल्लाहोंने जाना कि हम किसी देशके समीप पहुंचते
२८ हैं। और थाह लेके उन्होंने बीस पुरसे पाये और
थोड़ा आगे बढ़के फिर थाह लेके पन्द्रह पुरसे पाये।
२९ तब पत्थरैले स्थानोंपर टिक जानेके डरसे उन्होंने जहाज-
की पिछाड़ीसे चार लंगर डाले और भोरका होना
३० मनाते रहे। परन्तु जब मल्लाह लोग जहाजपरसे
भागने चाहते थे और गलहीसे लंगर डालनेके बहा-
३१ नासे डिंगी समुद्रमें उतार दिई. तब पावलने शत-
पतिसे और योद्धाओंसे कहा जो ये लोग जहाजपर
३२ न रहें तो तुम नहीं बच सकते हो। तब योद्धाओंने
डिंगीके रस्से काटके उसे गिरा दिया।
३३ जब भोर होनेपर थी तब पावलने यह कहके सभोंसे
भोजन करनेकी बिन्ती किई कि आज चौदह दिन हुए
कि तुम लोग आस देखते हुए उपवासी रहते हो और
३४ कुछ भोजन न किया है। इसलिये मैं तुमसे बिन्ती
करता हूं कि भोजन करो जिससे तुम्हारा बचाव होगा
गा क्योंकि तुममेंसे किसीके सिरसे एक बाल न गि-
३५ रेगा। और यह बातें कहके औ रोटी लेके उसने
सभोंके साम्ने ईश्वरका धन्य माना और तोड़के खाने
३६ लगा। तब उन सभोंने भी ढाढ़स बांधके भोजन
३७ किया। हम सब जो जहाजपर थे दो सौ छिहत्तर जन
३८ थे। भोजनसे तृप्त होके उन्होंने गेहूंको समुद्रमें फेंकके
जहाजको हलका किया।
३९ जब बिहान हुआ तब वे उस देशको नहीं चीन्हते
थे परन्तु किसी खालको देखा जिसका चौरस तीर था

और विचार किया कि जो हो सके तो इसीपर जहाज-
को टिकावें। तब उन्होंने लंगरोंको काटके समुद्रमें ४०
छोड़ दिया और उसी समय पतवारोंके बंधन खोल
दिये और बयारके सन्मुख पाल चढ़ाके तीरकी ओर
चले। परन्तु दो समुद्रोंके संगमके स्थानमें पड़के उन्होंने ४१
जहाजको टिकाया और गलही तो गड़ गई और हिल
न सकी परन्तु पिछाड़ी लहरोंकी बरियाईसे टूट गई।
तब योद्धाओंका यह परामर्श था कि बन्धुवोंको मार ४२
डालें ऐसा न हो कि कोई पैरके निकल भागे। परन्तु ४३
शतपतिने पावलको बचानेकी इच्छासे उन्हें उस मतसे
रोका और जो पैर सकते थे उन्हें आज्ञा दिई कि पहि-
ले कूदके तीरपर निकल चलें, और दूसरोंको कि ४४
कोई पटरोंपर और कोई जहाजमेंकी बस्तुओंपर नि-
कल जायें, इस रीतिसे सब कोई तीरपर बच निकले।

२८ अठाईसवां पर्ब्ब।

१ मलिता टापूके लोगोंका शिष्टाचार। ३ पावलका सांपके काटनेसे कुछ दुःख न पाना। ७ पब्लियके पिताको और दूसरोंको चंगा करना। ११ रोम नगरकी ओर जाना और मार्गमें भाइयोंसे भेंट करना। १६ रोममें यिहूदियोंसे बात करना और सुसमाचार सुनाना।

जब वे बच गये तब जाना कि यह टापू मलिता १
कहावता है। और उन जंगली लोगोंने हमोंसे अनोखा २
प्रेम किया क्योंकि मेंहके कारण जो पड़ता था और
जाड़ेके कारण उन्होंने आग सुलगाके हम सभोंको
ग्रहण किया।

जब पावलने बहुतसी लकड़ी बटोरके आगपर रखी ३
तब एक सांपने आंचसे निकलके उसका हाथ धर

४ लिया । और जब उन जंगलियोंने सांपको उसके
हाथमें लटकते हुए देखा तब आपसमें कहा निश्चय
यह मनुष्य हत्यारा है जिसे यद्यपि समुद्रसे बच गया
५ तौभी दंडदायकने जीते रहने नहीं दिया है। तब उसने
सांपको आगमें झटक दिया और कुछ दुःख न पाया।
६ पर वे बाट देखते थे कि वह सूज जायगा अथवा
अचांचक मरके गिर पड़ेगा परन्तु जब वे बड़ी बेरलों
बाट देखते रहे और देखा कि उसका कुछ नहीं बिगड़-
ता है तब औरही बिचार कर कहा यह तो देवता है।
७ उस स्थानके आसपास पबलिय नाम उस टापूके
प्रधानकी भूमि थी . उसने हमें ग्रहण करके तीन दिन
८ प्रीतिभावसे पहुनई किई। पबलियका पिता ज्वरसे और
आंवलोहूसे रोगी पड़ा था सो पावलने उस पास घरमें
प्रवेश करके प्रार्थना किई और उसपर हाथ रखके उसे
९ चंगा किया । जब यह हुआ था तब दूसरे लोग भी
१० जो उस टापूमें रोगी थे आके चंगे किये गये । और
उन्होंने हम लोगोंका बहुत आदर किया और जब हम
खोलनेपर थे तब जो कुछ आवश्यक था सो दे दिया।
११ तीन मासके पीछे हम लोग सिकन्दरियाके एक
जहाजपर जिसने उस टापूमें जाड़ेका समय काटा था
१२ जिसका चिन्ह दियस्कूरे था चल निकले । सुराकूस
१३ नगरमें लगान करके हम तीन दिन रहे । वहांसे हम
घूमके रीगिया नगर पहुंचे और एक दिनके पीछे
दक्षिणकी बयार जो उठी तो दूसरे दिन पुतियली नगर-
१४ में आये । वहां भाइयोंको पाके हम उनके यहां सात

दिन रहनेको बुलाये गये और इस रीतिसे रोमको
चले। वहांसे भाई लोग हमारा समाचार सुनके अप्पि- १५
यचौक और तीन सरायलों हमसे मिलनेको निकल
आये जिन्हें देखके पावलने ईश्वरका धन्य मानके
ढाढ़स बांधा।

जब हम रोममें पहुंचे तब शतपतिने बन्धुवोंको १६
सेनापतिके हाथ सौंप दिया परन्तु पावलको एक योद्धा-
के संग जो उसकी रक्षा करता था अकेला रहनेकी
आज्ञा हुई। तीन दिनके पीछे पावलने यिहूदियोंके बड़े १७
बड़े लोगोंको एकट्ठे बुलाया और जब वे एकट्ठे हुए तब
उनसे कहा हे भाइयो मैंने हमारे लोगोंके अथवा पि-
तरोंके व्यवहारोंके बिरुद्ध कुछ नहीं किया था तौभी
बन्धुआ होके यिरूशलीमसे रोमियोंके हाथमें सौंपा
गया। उन्होंने मुझे जांचके छोड़ देने चाहा क्योंकि १८
मुझमें बधके योग्य कोई दोष न था। परन्तु जब १९
यिहूदी लोग इसके बिरुद्ध बोलने लगे तब मुझे कैसर-
की दोहाई देना अवश्य हुआ पर यह नहीं कि मुझे
अपने लोगोंपर कोई दोष लगाना है। इस कारणसे २०
मैंने आप लोगोंको बुलाया कि आप लोगोंको देखके
बात करूं क्योंकि इस्रायेलकी आशाके लिये मैं इस
जंजीरसे बन्धा हुआ हूं। तब वे उससे बोले न हमोंने २१
आपके विषयमें यिहूदियासे चिट्ठियां पाईं न भाइयोंमेंसे
किसीने आके आपके विषयमें बुरा कुछ बताया अथवा
कहा। परन्तु आपका मत क्या है सो हम आपसे सुना २२
चाहते हैं क्योंकि इस पन्यके विषयमें हम जानते हैं कि

२३ सर्ब्बत्र उसके बिरुद्धमें बातें किई जाती हैं। सो उन्हों-
ने उसको एक दिन ठहराया और बहुत लोग बासेपर
उस पास आये जिनसे वह ईश्वरके राज्यकी साक्षी
देता हुआ और यीशुके विषयमेंकी बातें उन्हें मूसाकी
ब्यवस्थासे और भविष्यद्वक्ताओंके पुस्तकसे भी समझाता
२४ हुआ भोरसे सांझलों चर्चा करता रहा। तब कित-
नोंने उन बातोंको मान लिया और कितनोंने प्रतीति
२५ न किई। सो वे आपसमें एक मत न होके जब
पावलने उनसे एक बात कही थी तब बिदा हुए कि
पवित्र आत्माने हमारे पितरोंसे यिशैयाह भविष्यद्वक्ता-
२६ के द्वारासे अच्छा कहा. कि इन लोगोंके पास जाके
कह तुम सुनते हुए सुनोगे परन्तु नहीं बूझोगे और
२७ देखते हुए देखोगे पर तुम्हें न सूझेगा। क्योंकि इन
लोगोंका मन मोटा हो गया है और वे कानोंसे ऊंचा
सुनते हैं और अपने नेत्र मून्द लिये हैं ऐसा न हो कि
वे कभी नेत्रोंसे देखें और कानोंसे सुनें और मनसे
२८ समझें और फिर जावें और मैं उन्हें चंगा करूं। सो तुम
जानो कि ईश्वरके त्राणकी कथा अन्यदेशियोंके पास
२९ भेजी गई है और वे सुनेंगे। जब वह यह बातें कह
चुका तब यिहूदी लोग आपसमें बहुत बिबाद करते
हुए चले गये।

३० और पावलने दो बरस भर अपने भाड़ेके घरमें रहके
३१ सभोंको जो उस पास आते थे ग्रहण किया. और बिना
रोक टोक बड़े साहससे ईश्वरके राज्यकी कथा सुनाता
और प्रभु यीशु खीष्टके विषयमेंकी बातें सिखाता रहा॥

रोमियोंको पावल प्रेरितकी पत्री।

१ पहिला पर्ब्ब।

१ पत्रीका आभाष। ८ पावलकी रोमियोंको सुसमाचार सुनानेकी इच्छा। १४ सुसमाचारके गुण। १८ मूर्त्ति पूजनेमें मनुष्योंके दोषी होनेका प्रमाण। २४ मूर्त्तिपूजकोंके बड़े बड़े पापोंका बर्णन।

पावल जो यीशु ख्रीष्टका दास और बुलाया हुआ १
प्रेरित और ईश्वरके सुसमाचारके लिये अलग किया
गया है. वह सुसमाचार जिसकी प्रतिज्ञा उसने अपने २
भविष्यद्वक्ताओंके द्वारा धर्म्मपुस्तकमें आगेसे किई थी.
अर्थात उसके पुत्र हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके विषयमेंका ३
सुसमाचार जो शरीरके भावसे दाऊदके बंशमेंसे उत्पन्न
हुआ. और पवित्रताके आत्माके भावसे मृतकोंके जी ४
उठनेसे पराक्रम सहित ईश्वरका पुत्र ठहराया गया.
जिससे हमने अनुग्रह औ प्रेरिताई पाई है कि उसके ५
नामके कारण सब देशोंके लोग बिश्वाससे आज्ञाकारी
हो जायें. जिन्होंमें तुम भी यीशु ख्रीष्टके बुलाये हुए हो. ६
रोमके उन सब निवासियोंको जो ईश्वरके प्यारे और ७
बुलाये हुए पवित्र लोग हैं. तुम्हें हमारे पिता ईश्वर
और प्रभु यीशु ख्रीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले।

पहिले मैं यीशु ख्रीष्टके द्वारासे तुम सभोंके लिये ८
अपने ईश्वरका धन्य मानता हूं कि तुम्हारे बिश्वासका
चर्चा सारे जगतमें किया जाता है। क्योंकि ईश्वर ९
जिसकी सेवा मैं अपने मनसे उसके पुत्रके सुसमाचारमें

करता हूं मेरा साक्षी है कि मैं तुम्हें कैसे निरन्तर स्मरण
१० करता हूं . और नित्य अपनी प्रार्थनाओंमें बिन्ती करता
हूं कि किसी रीतिसे अब भी तुम्हारे पास जानेको मेरी
११ याचा ईश्वरकी इच्छासे सुफल होय । क्योंकि मैं तुम्हें
देखनेकी लालसा करता हूं कि मैं कोई आत्मिक बरदान
तुम्हारे संग बांट लेऊं जिस्तें तुम स्थिर किये जावो .
१२ अर्थात कि मैं तुम्होंमें अपने अपने परस्पर बिश्वासके
१३ द्वारासे तुम्हारे संग शांति पाऊं । परन्तु हे भाइयो मैं
नहीं चाहता हूं कि तुम इससे अनजान रहो कि मैंने
बहुत बार तुम्हारे पास जानेका बिचार किया जिस्तें
जैसा दूसरे अन्यदेशियोंमें तैसा तुम्होंमें भी मेरा कुछ
फल होवे परन्तु अबलों मैं रोका रहा ।
१४ मैं यूनानियों औ अन्यभाषियोंका और बुद्धिमानों
१५ औ निर्बुद्धियोंका ऋणी हूं । यूं मैं तुम्हें भी जो रोममें
१६ रहते हो सुसमाचार सुनानेको तैयार हूं । क्योंकि मैं
खीष्टके सुसमाचारसे नहीं लजाता हूं इसलिये कि हर
एक बिश्वास करनेहारेके लिये पहिले यिहूदी फिर
यूनानीके लिये वह चाणके निमित्त ईश्वरका सामर्थ्य
१७ है । क्योंकि उसमें ईश्वरका धर्म्म बिश्वाससे बिश्वास-
के लिये प्रगट किया जाता है जैसा लिखा है कि
बिश्वाससे धर्म्मी जन जीयेगा ।
१८ जो मनुष्य सच्चाईको अधर्म्मसे रोकते हैं उनकी सारी
अभक्ति और अधर्म्मपर ईश्वरका क्रोध स्वर्गसे प्रगट कि-
१९ या जाता है । इस कारण कि ईश्वरके विषयका ज्ञान
उनमें प्रगट है क्योंकि ईश्वरने उनपर प्रगट किया ।

क्योंकि जगतकी सृष्टिसे उसके अदृश्य गुण अर्थात उसके २०
सनातन सामर्थ्य और ईश्वरत्व देखे जाते हैं क्योंकि वे
उसके कार्य्योंसे पहचाने जाते हैं यहांलों कि वे मनुष्य
निरुत्तर हैं । इस कारण कि उन्होंने ईश्वरको जानके न २१
ईश्वरके योग्य गुणानुबाद किया न धन्य माना परन्तु
अनर्थक बाद बिचार करने लगे और उनका निर्बुद्धि
मन अंधियारा हो गया । वे अपनेको ज्ञानी कहके मूर्ख २२
बन गये . और अबिनाशी ईश्वरकी महिमाको नाश- २३
मान मनुष्य और पंछियों और चौपायों और रेंगने-
हारे जन्तुओंकी मूर्त्तिकी समानतासे बदल डाला ।

इस कारण ईश्वरने उन्हें उनके मनके अभिलाषोंके २४
अनुसार अशुद्धताके लिये त्याग दिया कि वे आपसमें
अपने शरीरोंका अनादर करें . जिन्होंने ईश्वरकी २५
सच्चाईको झूठसे बदल डाला और सृष्टिकी पूजा और
सेवा सृजनहारकी पूजा और सेवासे अधिक किई जो
सर्ब्बदा धन्य है . आमीन । इस हेतुसे ईश्वरने उन्हें २६
नीच कामनाओंके बशमें त्याग दिया कि उनकी स्त्रियोंने
भी स्वाभाविक ब्यवहारको उससे जो स्वभावके बिरुद्ध
है बदल डाला । वैसेही पुरुष भी स्त्रीके संग स्वाभाविक २७
ब्यवहार छोड़के अपनी कामुकतासे एक दूसरेकी ओर
जलने लगे और पुरुषोंके साथ पुरुष निर्लज्ज कर्म्म करते
थे और अपने भ्रमका फल जो उचित था अपनेमें
भोगते थे । और ईश्वरको चित्तमें रखना जब कि उन्हें २८
अच्छा न लगा इसलिये ईश्वरने उन्हें निकृष्ट मनके
बशमें त्याग दिया कि वे अनुचित कर्म्म करें . और सारे २९

अधर्म्म औ व्यभिचार औ दुष्टता औ लोभ औ बुराईसे
भरे हुए और डाह औ नरहिंसा औ बैर औ छल औ
३० दुर्भावसे भरपूर हों . और फुसफुसिये अपबादी ईश्वर-
द्रोही निन्दक अभिमानी दंभी बुरी बातोंके बनानेहारे
३१ माता पिताकी आज्ञा लंघन करनेहारे . निर्बुद्धि झूठे
३२ मयारहित क्षमारहित औ निर्दय होवें . जो ईश्वरकी
बिधि जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहारे मृत्युके
योग्य हैं तौभी न केवल उन कामोंको करते हैं परन्तु
करनेहारोंसे प्रसन्न भी होते हैं।

२ दूसरा पर्व्व।

१ जो औरोंको दोषी ठहरावें उन्हें समझानेके लिये उपदेश। १२ अन्यदेशियोंके विषयमें ईश्वरका यथार्थ बिचार। १७ यिहूदियोंके दोषका प्रमाण। २५ खतनेसे उनका बचाव न होना।

१ सो हे मनुष्य तू कोई हो जो दूसरोंका बिचार करता
हो तू निरुत्तर है . जिस बातमें तू दूसरेका बिचार
करता है उसी बातमें अपनेको दोषी ठहराता है क्योंकि
२ तू जो बिचार करता है आपही वेही काम करता है। पर
हम जानते हैं कि ऐसे ऐसे काम करनेहारोंपर ईश्वर-
३ की दंडकी आज्ञा यथार्थ है। और हे मनुष्य जो ऐसे ऐसे
काम करनेहारोंका बिचार करता और आपही वेही
काम करता है क्या तू यही समझता कि मैं तो ईश्वर-
४ की दंडकी आज्ञासे बचूंगा। अथवा क्या तू उसकी कृपा
औ सहनशीलता औ धीरजके धनको तुच्छ जानता है
और यह नहीं बूझता है कि ईश्वरकी कृपा तुझे पश्चा-
५ ताप करनेको सिखाती है . परन्तु अपनी कठोरता और

निःपश्चात्तापी मनके हेतुसे अपने लिये क्रोधके दिनलों
हां ईश्वरके यथार्थ बिचारके प्रगट होनेके दिनलों क्रोध-
का संचय करता है। वह हर एक मनुष्यको उसके ६
कर्म्मोंके अनुसार फल देगा। जो सुकर्म्ममें स्थिर रहनेसे ७
महिमा और आदर और अमरता ढूंढ़ते हैं उन्हें वह
अनन्त जीवन देगा। परन्तु जो बिबादी हैं और सत्यको ८
नहीं मानते पर अधर्म्मको मानते हैं उनपर कोप औ
क्रोध पड़ेगा। हर एक मनुष्यके प्राणपर जो बुरा करता है ९
क्लेश और संकट पड़ेगा पहिले यिहूदी फिर यूनानीके।
पर हर एकको जो भला करता है महिमा और आदर १०
और कल्याण होगा पहिले यिहूदी फिर यूनानीको।
क्योंकि ईश्वरके यहां पक्षपात नहीं है। ११

क्योंकि जितने लोगोंने विना व्यवस्था पाप किया है १२
सो बिना व्यवस्था नाश भी होंगे और जितने लोगोंने
व्यवस्था पाके पाप किया है सो व्यवस्थाके द्वारासे दंड-
के योग्य ठहराये जायेंगे। क्योंकि व्यवस्थाके सुननेहारे १३
ईश्वरके यहां धर्म्मी नहीं हैं परन्तु व्यवस्थापर चलने-
हारे धर्म्मी ठहराये जायेंगे। फिर जब अन्यदेशी लोग १४
जिनके पास व्यवस्था नहीं है स्वभावसे व्यवस्थाकी
बातोंपर चलते हैं तब यद्यपि व्यवस्था उनके पास
नहीं है तौभी वे अपने लिये आपही व्यवस्था हैं।
वे व्यवस्थाका कार्य्य अपने अपने हृदयमें लिखा हुआ १५
दिखाते हैं और उनका मन भी साक्षी देता है और
उनकी चिन्ताएं परस्पर दोष लगातीं अथवा दोषका
उत्तर देती हैं। यह उस दिन होगा जिस दिन ईश्वर १६

मेरे सुसमाचारके अनुसार यीशु ख्रीष्टके द्वारासे मनुष्यों-
की गुप्त बातोंका विचार करेगा ।
१७ देख तू यिहूदी कहावता है और व्यवस्थापर भरोसा
१८ रखता है और ईश्वरके विषयमें घमंड करता है . और
उसकी इच्छाको जानता है और व्यवस्थाकी शिक्षा पाके
१९ विशेष्य बातोंको परखता है . और अपनेपर भरोसा
रखता है कि मैं अन्धोंका अगुवा और अन्धकारमें रहने-
२० हारोंका प्रकाश . और निर्बुद्धियोंका शिक्षक और बाल-
कोंका उपदेशक हूं और ज्ञान औ सच्चाईका रूप मुझे
२१ व्यवस्थामें मिला है । सो क्या तू जो दूसरेको सिखाता
है अपनेको नहीं सिखाता है . क्या तू जो चोरी न
२२ करनेका उपदेश देता है आपही चोरी करता है । क्या
तू जो परस्त्रीगमन न करनेको कहता है आपही पर-
स्त्रीगमन करता है . क्या तू जो मूरतोंसे घिन करता है
२३ पवित्र बस्तु चुराता है । क्या तू जो व्यवस्थाके विषयमें
घमंड करता है व्यवस्थाको लंघन करनेसे ईश्वरका अना-
२४ दर करता है । क्योंकि जैसा लिखा है तैसा ईश्वरका
नाम तुम्हारे कारण अन्यदेशियोंमें निन्दित होता है ।
२५ जो तू व्यवस्थापर चले तो खतनेसे लाभ है परन्तु
जो तू व्यवस्थाको लंघन किया करे तो तेरा खतना अख-
२६ तना हो गया है । सो यदि खतनाहीन मनुष्य व्यवस्था-
की बिधियोंका पालन करे तो क्या उसका अखतना
२७ खतना न गिना जायगा । और जो मनुष्य प्रकृतिसे
खतनाहीन होके व्यवस्थाको पूरी करे सो क्या तुझे
जो लेख और खतना पाके व्यवस्थाको लंघन किया

करता है दोषी न ठहरावेगा। क्योंकि जो प्रगटमें २८
यिहूदी है सो यिहूदी नहीं और खतना जो प्रगटमें
अर्थात देहमें है सो खतना नहीं। परन्तु यिहूदी वह २९
है जो गुप्तमें यिहूदी है और मनका खतना जो लेखसे
नहीं पर आत्मामें है सोई खतना है. ऐसे यिहूदीकी
प्रशंसा मनुष्योंकी नहीं पर ईश्वरकी ओरसे है।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ यिहूदी होनेका फल। ५ ईश्वरका बिचार यथार्थ होनेका प्रमाण। ९ सारे मनुष्योंके पापोंका बर्णन। १९ व्यवस्थाके अनुसार सभोंका दोषी होना। २१ यीशुके द्वारासे विश्वासियोंके धर्म्मी ठहराये जानेका उपाय। २७ इस मतसे अभिमानका नाश और यिहूदी औ अन्यदेशोंका मेल और व्यवस्थाका स्थापन।

तो यिहूदीकी क्या श्रेष्ठता हुई अथवा खतनेका क्या १
लाभ हुआ। सब प्रकारसे बहुत कुछ. पहिले यह कि २
ईश्वरकी बाणियां उनके हाथ सौंपी गईं। जो कितनोंने ३
विश्वास न किया तो क्या हुआ. क्या उनका अबिश्वास
ईश्वरके बिश्वासको व्यर्थ ठहरावेगा। ऐसा न हो. ४
ईश्वर सच्चा पर हर एक मनुष्य झूठा होय जैसा लिखा है
कि जिस्तें तू अपनी बातोंमें निर्दोष ठहराया जाय और
तेरा बिचार किये जानेमें तू जय पावे।

परन्तु यदि हमारा अधर्म्म ईश्वरके धर्म्मपर प्रमाण ५
देता है तो हम क्या कहें. क्या ईश्वर जो क्रोध करता
है अन्यायी है. इसको मैं मनुष्यकी रीतिपर कहता हूं।
ऐसा न हो. नहीं तो ईश्वर क्योंकर जगतका बिचार ६
करेगा। परन्तु यदि ईश्वरकी सच्चाई उसकी महिमाके ७
लिये मेरी झुठाईके हेतुसे अधिक करके प्रगट हुई तो मैं
क्यों अब भी पापीकी नाईं दंडके योग्य ठहराया जाता

८ हूं । तो क्या यह भी न कहा जाय जैसा हमारी निन्दा
किई जाती है और जैसा कितने लोग बोलते कि हम
कहते हैं कि आओ हम बुराई करें जिस्तें भलाई निकले.
ऐसोंपर दंडकी आज्ञा यथार्थ है ।
९ तो क्या. क्या हम उनसे अच्छे हैं. कभी नहीं क्योंकि
हम प्रमाण दे चुके हैं कि यिहूदी और यूनानी भी सब
१० पापके बशमें हैं . जैसा लिखा है कि कोई धर्म्मी जन
११ नहीं है एक भी नहीं . कोई बूझनेहारा नहीं कोई
१२ ईश्वरका ढूंढ़नेहारा नहीं। सब लोग भटक गये हैं वे
सब एक संग निकम्मे हुए हैं कोई भलाई करनेहारा नहीं
१३ एक भी नहीं है। उनका गला खुली हुई कबर है
उन्होंने अपनी जीभोंसे छल किया है सांपोंका बिष उन-
१४ के होंठोंके नीचे है . और उनका मुंह स्राप औ कड़-
१५ वाहटसे भरा है । उनके पांव लोहू बहानेको फुर्त्तीले
१६ १७ हैं । उनके मार्गोंमें नाश और क्लेश है. और उन्होंने
१८ कुशलका मार्ग नहीं जाना है । उनके नेत्रोंके आगे
ईश्वरका कुछ भय नहीं है ।
१९ हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है सो
उनके लिये कहती है जो व्यवस्थाके अधीन हैं इसलिये
कि हर एक मुंह बन्द किया जाय और सारा संसार
२० ईश्वरके आगे दंडके योग्य ठहरे । इस कारण कि व्यव-
स्थाके कर्म्मोंसे कोई प्राणी उसके आगे धर्म्मी नहीं
ठहराया जायगा क्योंकि व्यवस्थाके द्वारा पापकी पह-
चान होती है ।
२१ पर अब व्यवस्थासे न्यारे ईश्वरका धर्म्म प्रगट

हुआ है जिसपर व्यवस्था और भविष्यद्वक्ता लोग साक्षी
देते हैं। और यह ईश्वरका धर्म्म यीशु खीष्टपर बिश्वास २२
करनेसे सभोंके लिये और सभोंपर है जो बिश्वास करते
हैं क्योंकि कुछ भेद नहीं है। क्योंकि सभोंने पाप किया २३
है और ईश्वरकी प्रशंसा योग्य नहीं होते हैं. पर उसके २४
अनुग्रहसे उस उद्धारके द्वारा जो खीष्ट यीशुसे है सेंतमेत
धर्म्मी ठहराये जाते हैं। उसको ईश्वरने प्रायश्चित्त २५
स्थापन किया कि बिश्वासके द्वारा उसके लोहूसे प्राय-
श्चित्त होवे जिस्तें आगे किये हुए पापोंसे ईश्वरकी
सहनशीलतासे आनाकानी जो किई गई तिसके कारण
वह अपना धर्म्म प्रगट करे. हां इस बर्त्तमान समयमें २६
अपना धर्म्म प्रगट करे यहांलों कि यीशुके बिश्वासके
अवलंबीको धर्म्मी ठहरानेमें भी धर्म्मी ठहरे।

तो वह घमंड करना कहां रहा. वह बर्ज्जित हुआ. २७
कौन व्यवस्थाके द्वारासे. क्या कर्म्मोंकी. नहीं परन्तु
बिश्वासकी व्यवस्थाके द्वारासे। इसलिये हम यह सिद्धान्त २८
करते हैं कि बिना व्यवस्थाके कर्म्मोंसे मनुष्य बिश्वाससे
धर्म्मी ठहराया जाता है। क्या ईश्वर केवल यिहूदियोंका २९
ईश्वर है. क्या अन्यदेशियोंका नहीं. हां अन्यदेशियोंका
भी है। क्योंकि एकही ईश्वर है जो खतना किये हुओंको ३०
बिश्वाससे और खतनाहीनोंको बिश्वासके द्वारासे
धर्म्मी ठहरावेगा। तो क्या हम बिश्वासके द्वारा ३१
व्यवस्थाको व्यर्थ ठहराते हैं. ऐसा न हो परन्तु व्यवस्थाको
स्थापन करते हैं।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ इब्राहीमके धर्म्मी ठहराये जानेकी कथासे पूर्वोक्त बातोंके प्रमाण । ९ खतना किये हुए और खतनाहीन सभोंका इस अनुग्रहके सम्भागी होना । १३ उसका व्यवस्थाके कर्म्मोंके द्वारा नहीं पर बिश्वासके द्वारा मिलना । १८ इब्राहीमके बिश्वासकी दृढ़ताईका बखान । २३ सब बिश्वासियोंका उसके संग भागी होना ।

१ तो हम क्या कहें कि हमारे पिता इब्राहीमने
२ शरीरके अनुसार पाया है । यदि इब्राहीम कर्म्मोंके
हेतुसे धर्म्मी ठहराया गया तो उसे बड़ाई करनेकी जगह
३ है । परन्तु ईश्वरके आगे नहीं है क्योंकि धर्म्मपुस्तक
क्या कहता है . इब्राहीमने ईश्वरका बिश्वास किया
४ और यह उसके लिये धर्म्म गिना गया । अब कार्य्य
करनेहारेको मजूरी देना अनुग्रहकी बात नहीं परन्तु
५ ऋणकी बात गिना जाता है । परन्तु जो कार्य्य नहीं
करता पर भक्तिहीनको धर्म्मी ठहरानेहारेपर बिश्वास
करता है उसके लिये उसका बिश्वास धर्म्म गिना जाता
६ है । जैसा दाऊद भी उस मनुष्यकी धन्यता जिसको
७ ईश्वर बिना कर्म्मोंसे धर्म्मी ठहरावे बताता है . कि
धन्य वे जिनके कुकर्म्म क्षमा किये गये और जिनके
८ पाप ढांपे गये . धन्य वह मनुष्य जिसे परमेश्वर पापी
न गिने ।

९ तो यह धन्यता क्या खतना किये हुए लोगोंहीके
लिये है अथवा खतनाहीन लोगोंके लिये भी है . क्योंकि
हम कहते हैं कि इब्राहीमके लिये बिश्वास धर्म्म गिना
१० गया । तो वह क्योंकर उसके लिये गिना गया . जब वह
खतना किया हुआ था अथवा जब खतनाहीन था .
जब खतना किया हुआ था सो नहीं परन्तु जब खत-

नाहीन था। और उसने खतनेका चिन्ह पाया कि जो ११
बिश्वास उसने खतनाहीन दशामें किया था उस
बिश्वासके धर्म्मकी छाप होवे जिस्तें जो लोग खतना-
हीन दशामें बिश्वास करते हैं वह उन सभोंका पिता
होय कि वे भी धर्म्मी ठहराये जायें . और जो लोग १२
न केवल खतना किये हुए हैं परन्तु हमारे पिता इब्रा-
हीमके उस बिश्वासकी लीकपर चलनेहारे भी हैं जो
उसने खतनाहीन दशामें किया था उन लोगोंके लिये
खतना किये हुओंका पिता ठहरे।

क्योंकि यह प्रतिज्ञा कि इब्राहीम जगतका अधि- १३
कारी होगा न उसको न उसके बंशको व्यवस्थाके द्वारा-
से मिली परन्तु बिश्वासके धर्म्मके द्वारासे। क्योंकि १४
यदि व्यवस्थाके अवलंबी अधिकारी हैं तो बिश्वास ब्यर्थ
और प्रतिज्ञा निष्फल ठहराई गई है। व्यवस्था तो क्रोध १५
जन्माती है क्योंकि जहां व्यवस्था नहीं है तहां उल्लंघन
भी नहीं। इस कारण प्रतिज्ञा बिश्वाससे हुई कि अनु- १६
ग्रहकी रीतिपर होय इसलिये कि सारे बंशके लिये दृढ़
होय केवल उनके लिये नहीं जो व्यवस्थाके अवलंबी हैं
परन्तु उनके लिये भी जो इब्राहीमकेसे बिश्वासके
अवलंबी हैं। वह तो उसके आगे जिसका उसने बिश्वा- १७
स किया अर्थात ईश्वरके आगे जो मृतकोंको जिलाता
है और जो बातें नहीं हैं उनका नाम ऐसा लेता कि
जैसा वे हैं हम सभोंका पिता है जैसा लिखा है कि
मैंने तुझे बहुत देशोंके लोगोंका पिता ठहराया है।

उसने जहां आशा न देख पड़ती थी तहां आशा १८

रखके बिश्वास किया इसलिये कि जो कहा गया था
कि तेरा बंश इस रीतिसे होगा उसके अनुसार वह
१९ बहुत देशोंके लोगोंका पिता होय । और बिश्वासमें
दुर्ब्बल न होके उसने यद्यपि सौ एक बरसका था तौभी
न अपने शरीरको जो अब मृतकसा हुआ था और न
२० सारःके गर्भकी मृतककीसी दशाको सोचा । उसने ईश्वर-
की प्रतिज्ञापर अबिश्वाससे सन्देह किया सो नहीं
परन्तु बिश्वासमें दृढ़ होके ईश्वरकी महिमा प्रगट किई.
२१ और निश्चय जाना कि जिस बातकी उसने प्रतिज्ञा
२२ किई है उसे करनेको भी सामर्थी है । इस हेतुसे यह
उसके लिये धर्म्म गिना गया ।
२३ पर न केवल उसके कारण लिखा गया कि उसके
२४ लिये गिना गया. परन्तु हमारे कारण भी जिनके
लिये गिना जायगा अर्थात हमारे कारण जो उसपर
बिश्वास करते हैं जिसने हमारे प्रभु यीशुको मृतकोंमेंसे
२५ उठाया. जो हमारे अपराधोंके लिये पकड़वाया गया
और हमारे धर्म्मी ठहराये जानेके लिये उठाया गया।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

१ बिश्वासके अनेक फलोंका बर्णन और यीशुके बड़े प्रेमका बखान । १२ आदमके पापके द्वारासे मृत्यु और ईश्वरके अनुग्रहसे यीशु खीष्टके द्वारा क्षमा औ धर्म्म औ अनन्त जीवनका प्राप्त होना ।

१ सो जब कि हम बिश्वाससे धर्म्मी ठहराये गये हैं
तो हमारे प्रभु यीशु खीष्टके द्वारा हमें ईश्वरसे मिलाप
२ है । और भी उसके द्वारा हमने इस अनुग्रहमें जिसमें
स्थिर हैं बिश्वाससे पहुंचनेका अधिकार पाया है और

ईश्वरकी महिमाकी आशाके विषयमें बड़ाई करते हैं।
और केवल यह नहीं परन्तु हम क्लेशोंके विषयमें भी ३
बड़ाई करते हैं क्योंकि जानते हैं कि क्लेशसे धीरज .
और धीरजसे खरा निकलना और खरे निकलनेसे ४
आशा उत्पन्न होती है। और आशा लज्जित नहीं ५
करती है क्योंकि पवित्र आत्माके द्वारासे जो हमें दिया
गया ईश्वरका प्रेम हमारे मनमें उंडेला गया है। क्योंकि ६
जब हम निर्ब्बल हो रहे थे तबही ख्रीष्ट समयपर भक्ति-
हीनोंके लिये मरा। धर्म्मी जनके लिये कोई मरे यह ७
दुर्लभ है पर हां भले मनुष्यके लिये क्या जाने किसीको
मरनेका भी साहस होय। परन्तु ईश्वर हमारी ओर ८
अपने प्रेमका माहात्म्य यूं दिखाता है कि जब हम पापी
हो रहे थे तबही ख्रीष्ट हमारे लिये मरा। सो जब कि ९
हम अब उसके लोहूके गुणसे धर्म्मी ठहराये गये हैं तो
बहुत अधिक करके हम उसके द्वारा क्रोधसे बचेंगे।
क्योंकि यदि हम जब शत्रु थे तब ईश्वरसे उसके पुत्रकी १०
मृत्युके द्वारासे मिलाये गये हैं तो बहुत अधिक करके
हम मिलाये जाके उसके जीवनके द्वारा त्राण पावेंगे।
और केवल यह नहीं परन्तु हम अपने प्रभु यीशु ११
ख्रीष्टके द्वारासे जिसके द्वारा हमने अब मिलाप पाया
है ईश्वरके विषयमें भी बड़ाई करते हैं।

इसलिये यह ऐसा है जैसा एक मनुष्यके द्वारासे १२
पाप जगतमें आया और पापके द्वारा मृत्यु आई और
इस रीतिसे मृत्यु सब मनुष्योंपर बीती क्योंकि सभोंने
पाप किया। क्योंकि ब्यवस्थालों पाप जगतमें था पर १३

जहां व्यवस्था नहीं है तहां पाप नहीं गिना जाता ।
१४ तौभी आदमसे मूसालों मृत्युने उन लोगोंपर भी राज्य
किया जिन्होंने आदमके अपराधके समान पाप नहीं
किया था . यह आदम उस आनेवालेका चिन्ह है ।
१५ परन्तु जैसा यह अपराध है तैसा वह बरदान भी है सो
नहीं क्योंकि यदि एक मनुष्यके अपराधसे बहुत लोग
मूए तो बहुत अधिक करके ईश्वरका अनुग्रह और वह
दान एक मनुष्यके अर्थात यीशु ख्रीष्टके अनुग्रहसे बहुत
१६ लोगोंपर अधिकाईसे हुआ । और जैसा वह दंड जो
एकके द्वारासे हुआ जिसने पाप किया तैसा यह दान
नहीं है क्योंकि निर्णयसे एक अपराधके कारण दंडकी
आज्ञा हुई परन्तु बरदानसे बहुत अपराधोंसे निर्दोष
१७ ठहराये जानेका फल हुआ । क्योंकि यदि एक मनुष्यके
अपराधसे मृत्युने उस एकके द्वारासे राज्य किया तो
बहुत अधिक करके जो लोग अनुग्रहकी और धर्म्मके
दानकी अधिकाई पाते हैं सो एक मनुष्यके अर्थात यीशु
१८ ख्रीष्टके द्वारासे जीवनमें राज्य करेंगे । इसलिये जैसा
एक अपराध सब मनुष्योंके लिये दंडकी आज्ञाका
कारण हुआ तैसा एक धर्म्म भी सब मनुष्योंके लिये
धर्म्मी ठहराये जानेका कारण हुआ जिससे जीवन होय।
१९ क्योंकि जैसा एक मनुष्यके आज्ञा लंघन करनेसे बहुत
लोग पापी बनाये गये तैसा एक मनुष्यके आज्ञा माननेसे
२० बहुत लोग धर्म्मी बनाये जायेंगे । पर व्यवस्थाका भी
प्रवेश हुआ कि अपराध बहुत होय परन्तु जहां पाप
२१ बहुत हुआ तहां अनुग्रह बहुत अधिक हुआ . कि जैसा

पापने मृत्युमें राज्य किया तैसा हमारे प्रभु यीशु खीष्टके द्वारा अनुग्रह भी अनन्त जीवनके लिये धर्म्मके द्वारासे राज्य करे।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ बिश्वासियोंको पापसे अलग रहना अवश्य है। ३ उनका बपतिसमा लेना जो मृतकोंमेंसे उठाये जानेका दृष्टान्त है इससे इसका प्रमाण। १२ पापके बशमें रहना उनको उचित नहीं। १५ वे जो पापके बंधनसे छूटके ईश्वरके दास बने हैं इससे इसका प्रमाण।

तो हम क्या कहें. क्या हम पापमें रहें जिस्तें १
अनुग्रह बहुत होय। ऐसा न हो. हम जो पापके २
लिये मूए हैं क्योंकर अब उसमें जीयेंगे।
क्या तुम नहीं जानते हो कि हममेंसे जितनोंने ३
खीष्ट यीशुमें बपतिसमा लिया उसकी मृत्युमें बपतिसमा
लिया। सो उसकी मृत्युमें बपतिसमा लेनेसे हम उसके ४
संग गाड़े गये कि जैसे खीष्ट पिताके ऐश्वर्य्यसे मृतकोंमेंसे
उठाया गया तैसे हम भी जीवनकीसी नई चाल चलें।
क्योंकि यदि हम उसकी मृत्युकी समानतामें उसके ५
संयुक्त हुए हैं तो निश्चय उसके जी उठनेकी समानतामें
भी संयुक्त होंगे। क्योंकि यही जानते हैं कि हमारा पुराना ६
मनुष्यत्व उसके संग क्रूशपर चढ़ाया गया इसलिये कि
पापका शरीर क्षय किया जाय जिस्तें हम फिर पापके
दास न होवें। क्योंकि जो मूआ है सो पापसे छुड़ाया ७
गया है। और यदि हम खीष्टके संग मूए हैं तो बिश्वास ८
करते हैं कि उसके संग जीयेंगे भी। क्योंकि जानते हैं कि ९
खीष्ट मृतकोंमेंसे उठके फिर नहीं मरता है. उसपर
फिर मृत्युकी प्रभुता नहीं है। क्योंकि वह जो मरा तो १०

पापके लिये एकही बेर मरा पर वह जीता है तो
११ ईश्वरके लिये जीता है । इस रीतिसे तुम भी अपनेको
समझो कि हम पापके लिये तो मृतक हैं परन्तु हमारे
प्रभु खीष्ट यीशुमें ईश्वरके लिये जीवते हैं ।
१२ सो पाप तुम्हारे मरनहार शरीरमें राज्य न करे
कि तुम उसके अभिलाषोंसे पापके आज्ञाकारी होओ।
१३ और न अपने अंगोंको अधर्म्मके हथियार करके पाप-
को सोंप देओ परन्तु जैसे मृतकोंमेंसे जी गये हो तैसे
अपनेको ईश्वरको सोंप देओ और अपने अंगोंको
१४ ईश्वरके तईं धर्म्मके हथियार करके सोंपो । क्योंकि
तुमपर पापकी प्रभुता न होगी इसलिये कि तुम व्यव-
स्थाके अधीन नहीं परन्तु अनुग्रहके अधीन हो ।
१५ तो क्या . क्या हम पाप किया करें इसलिये कि हम
व्यवस्थाके अधीन नहीं परन्तु अनुग्रहके अधीन हैं . ऐसा
१६ न हो । क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम आज्ञा मान-
नेके लिये जिसके यहां अपनेको दास करके सोंप देते
हो उसीके दास हो जिसकी आज्ञा मानते हो चाहे
मृत्युके लिये पापके दास चाहे धर्म्मके लिये आज्ञापा-
१७ लनके दास । पर ईश्वरका धन्यबाद होय कि तुम
पापके दास तो थे परन्तु तुम जिस उपदेशके सांचेमें
१८ ढाले गये मनसे उसके आज्ञाकारी हुए। और मैं तुम्हारे
शरीरकी दुर्ब्बलताके कारण मनुष्यकी रीतिपर कहता हूं
१९ कि तुम पापसे उद्धार पाके धर्म्मके दास बने हो। जैसे
तुमने अपने अंगोंको अधर्म्मके लिये अशुद्धता और
अधर्म्मके दास करके अर्पण किया तैसे अब अपने अंगों-

को पवित्रताके लिये धर्म्मके दास करके अर्पण करो।
जब तुम पापके दास थे तब धर्म्मसे निर्बन्ध थे। २०
सो उस समयमें तुम क्या फल फलते थे . वे कर्म्म जिनसे २१
तुम अब लजाते हो क्योंकि उनका अन्त मृत्यु है।
पर अब पापसे उद्धार पाके और ईश्वरके दास बनके २२
तुम पवित्रताके लिये फल फलते हो और उसका
अन्त अनन्त जीवन है। क्योंकि पापकी मजूरी मृत्यु २३
है परन्तु ईश्वरका बरदान हमारे प्रभु खीष्ट यीशुमें
अनन्त जीवन है।

७ सातवां पर्ब्ब।

१ बिश्वासी लोग व्यवस्थाके अधीन नहीं हैं इसलिये ईश्वरकी सेवा करना उन्हें अवश्य है इसका प्रमाण। ७ व्यवस्था उत्तम है तौभी पाप उसके हेतुसे प्रबल होता है इसका बर्णन। १३ व्यवस्था नहीं परन्तु पापका स्वभाव मृत्युका कारण है इसका ब्योरा।

हे भाइयो क्या तुम नहीं जानते हो क्योंकि मैं ब्यव- १
स्थाके जाननेहारोंसे बोलता हूं कि जबलों मनुष्य
जीता रहे तबलों ब्यवस्थाकी उसपर प्रभुता है। क्योंकि २
बिवाहिता स्त्री अपने जीवते स्वामीके संग ब्यवस्थासे
बन्धी है परन्तु यदि स्वामी मर जाय तो वह स्वामीकी
ब्यवस्थासे छूट गई। इसलिये यदि स्वामीके जीतेजी ३
वह दूसरे स्वामीकी हो जाय तो ब्यभिचारिणी कहा-
वेगी परन्तु यदि स्वामी मर जाय तो वह उस ब्यव-
स्थासे निर्बन्ध हुई यहांलों कि दूसरे स्वामीकी हो जानेसे
भी वह ब्यभिचारिणी नहीं। इसलिये हे मेरे भाइयो ४
तुम भी खीष्टके देहके द्वारासे ब्यवस्थाके लिये मर गये
कि तुम दूसरेके हो जावो अर्थात उसीके जो मृतकोंमेंसे

जी उठा इसलिये कि हम ईश्वरके लिये फल फलें ।
५ क्योंकि जब हम शारीरिक दशामें थे तब पापोंके अभि-
लाष जो व्यवस्थाके द्वारासे थे हमारे अंगोंमें कार्य्य
६ करवाते थे जिस्तें मृत्युके लिये फल फलें। परन्तु अभी
हम जिसमें बन्धे थे उसके लिये मृतक होके व्यवस्था-
से छूट गये हैं यहांलों कि लेखकी पुरानी रीतिपर
नहीं परन्तु आत्माकी नई रीतिपर सेवा करते हैं ।
७ तो हम क्या कहें . क्या व्यवस्था पाप है . ऐसा न
हो परन्तु बिना व्यवस्थाके द्वारासे मैं पापको न पह-
चानता हां व्यवस्था जो न कहती कि लालच मत कर
८ तो मैं लालचको न जानता । परन्तु पापने अवसर
पाके आज्ञाके द्वारा सब प्रकारका लालच मुझमें जन्मा-
९ या क्योंकि बिना व्यवस्था पाप मृतक है। मैं तो व्यव-
स्था बिना आगे जीवता था परन्तु जब आज्ञा आई
१० तब पाप जी गया और मैं मूआ । और वही आज्ञा
जो जीवनके लिये थी मेरे लिये मृत्युका कारण ठहरी ।
११ क्योंकि पापने अवसर पाके आज्ञाके द्वारा मुझे ठगा
१२ और उसके द्वारा मुझे मार डाला। सो व्यवस्था पवित्र
है और आज्ञा पवित्र और यथार्थ और उत्तम है ।
१३ तो क्या वह उत्तम बस्तु मेरे लिये मृत्यु हुई . ऐसा
न हो परन्तु पाप जिस्तें वह पापसा दिखाई देवे उस
उत्तम बस्तुके द्वारासे मेरे लिये मृत्युका जन्मानेहारा
हुआ इसलिये कि पाप आज्ञाके द्वारासे अत्यन्त पापमय
१४ हो जाय । क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था आत्मिक
है परन्तु मैं शारीरिक और पापके हाथ बिका हूं ।

क्योंकि जो मैं करता हूं उसको नहीं समझता हूं क्योंकि १५
जो मैं चाहता हूं सोई नहीं करता हूं परन्तु जिससे
घिनाता हूं सोई करता हूं। पर यदि मैं जो नहीं चाहता १६
हूं सोई करता हूं तो मैं व्यवस्थाको मान लेता हूं कि
अच्छी है। सो अब तो मैं नहीं उसे करता हूं परन्तु १७
पाप जो मुझमें बसता है। क्योंकि मैं जानता हूं कि १८
कोई उत्तम बस्तु मुझमें अर्थात मेरे शरीरमें नहीं
बसती है क्योंकि चाहना तो मेरे संग है परन्तु अच्छी
करनी मुझे नहीं मिलती है। क्योंकि वह अच्छा काम १९
जो मैं चाहता हूं मैं नहीं करता हूं परन्तु जो बुरा
काम नहीं चाहता हूं सोई करता हूं। पर यदि मैं जो २०
नहीं चाहता हूं सोई करता हूं तो अब मैं नहीं उसे
करता हूं परन्तु पाप जो मुझमें बसता है। सो मैं २१
यह व्यवस्था पाता हूं कि जब मैं अच्छा काम किया
चाहता हूं तब बुरा काम मेरे संग है। क्योंकि मैं २२
भीतरी मनुष्यत्वके भावसे ईश्वरकी व्यवस्थासे प्रसन्न
हूं। परन्तु मैं अपने अंगोंमें दूसरी व्यवस्था देखता हूं २३
जो मेरी बुद्धिकी व्यवस्थासे लड़ती है और मुझे पापकी
व्यवस्थाके जो मेरे अंगोंमें है बन्धनमें डालती है। अ- २४
भागा मनुष्य जो मैं हूं मुझे इस मृत्युके देहसे कौन
बचावेगा। मैं ईश्वरका धन्य मानता हूं कि हमारे २५
प्रभु यीशु खीष्टके द्वारासे वही बचानेहारा है. सो मैं
आप बुद्धिसे तो ईश्वरकी व्यवस्थाकी सेवा परन्तु
शरीरसे पापकी व्यवस्थाकी सेवा करता हूं।

---

८ आठवां पर्ब्ब ।

१ पापकी व्यवस्थासे छूट जानेका उपाय। ५ शारीरिक दशा और आत्मिक दशाका ब्योरा। १२ आत्मिक दशामें जीवन और लेपालक पदका प्राप्त होना। १८ होन्हार महिमाकी आशा जो सारी सृष्टि और निज करके बिश्वासी लोग रखते हैं उसका बर्णन। २६ पवित्र आत्माका प्रार्थनामें सहायता करना। २८ ईश्वरका अपने प्रिय लोगोंको सब प्रकारकी आशीस देना। ३१ उनका उससे कभी किसी रीतिसे अलग न होना।

१ सो अब जो लोग खीष्ट यीशुमें हैं अर्थात शरीरके
अनुसार नहीं परन्तु आत्माके अनुसार चलते हैं उन-
२ पर कोई दंडकी आज्ञा नहीं है। क्योंकि जीवनके
आत्माकी व्यवस्थाने खीष्ट यीशुमें मुझे पापकी औ
३ मृत्युकी व्यवस्थासे निर्बन्ध किया है। क्योंकि जो व्यव-
स्थासे अन्होना था इसलिये कि शरीरके द्वारासे वह
दुर्ब्बल थी उसको ईश्वरने किया अर्थात अपनेही पुत्रको
पापके शरीरकी समानतामें और पापके कारण भेजके
४ शरीरमें पापपर दंडकी आज्ञा दिई. इसलिये कि
व्यवस्थाकी बिधि हमोंमें जो शरीरके अनुसार नहीं
परन्तु आत्माके अनुसार चलते हैं पूरी किई जाय।
५ जो शरीरके अनुसारी हैं सो शरीरकी बातोंपर मन
लगाते हैं पर जो आत्माके अनुसारी हैं सो आत्माकी
६ बातोंपर मन लगाते हैं। शरीरपर मन लगाना तो
मृत्यु है परन्तु आत्मापर मन लगाना जीवन और
७ कल्याण है। इस कारण कि शरीरपर मन लगाना
ईश्वरसे शत्रुता करना है क्योंकि वह मन ईश्वरकी व्यव-
स्थाके बशमें नहीं होता है क्योंकि हो नहीं सकता है।
८ और जो शारीरिक दशामें हैं सो ईश्वरको प्रसन्न नहीं
९ कर सकते हैं। पर जब कि ईश्वरका आत्मा तुममें बसता

है तो तुम शारीरिक दशामें नहीं परन्तु आत्मिक दशामें
हो . यदि किसीमें खीष्टका आत्मा नहीं है तो वह उसका
जन नहीं है । परन्तु यदि खीष्ट तुममें है तो देह पापके १०
कारण मृतक है पर आत्मा धर्म्मके कारण जीवन है।
और जिसने यीशुको मृतकोंमेंसे उठाया उसका आत्मा ११
यदि तुममें बसता है तो जिसने खीष्टको मृतकोंमेंसे
उठाया सो तुम्हारे मरनहार देहोंको भी अपने आत्माके
कारण जो तुममें बसता है जिलावेगा ।

इसलिये हे भाइयो हम शरीरके ऋणी नहीं हैं कि १२
शरीरके अनुसार दिन काटें। क्योंकि यदि तुम शरीरके १३
अनुसार दिन काटो तो मरोगे परन्तु यदि आत्मासे
देहकी क्रियाओंको मारो तो जीओगे । क्योंकि जितने १४
लोग ईश्वरके आत्माके चलाये चलते हैं वेही ईश्वरके
पुत्र हैं । क्योंकि तुमने दासत्वका आत्मा नहीं पाया है १५
कि फिर भयमान होओ परन्तु लेपालकपनका आत्मा
पाया है जिससे हम हे अब्बा अर्थात हे पिता पुकारते
हैं । आत्मा आपही हमारे आत्माके संग साक्षी देता है १६
कि हम ईश्वरके सन्तान हैं । और यदि सन्तान हैं तो १७
अधिकारी भी हैं हां ईश्वरके अधिकारी और खीष्टके
संगी अधिकारी हैं कि हम तो उसके संग दुःख उठाते
हैं जिस्तें उसके संग महिमा भी पावें ।

क्योंकि मैं समझता हूं कि इस वर्त्तमान समयके दुःख १८
उस महिमाके आगे जो हमोंमें प्रगट किई जायगी कुछ
गिननेके योग्य नहीं हैं। क्योंकि सृष्टिकी प्रत्याशा ईश्वरके १९
सन्तानोंके प्रगट होनेकी बाट जोहती है। क्योंकि सृष्टि २०

अपनी इच्छासे नहीं परन्तु अधीन करनेहारेकी ओरसे
२१ व्यर्थताके अधीन इस आशासे किई गई . कि सृष्टि भी
आपही बिनाशके दासत्वसे उद्धार पाके ईश्वरके सन्ता-
२२ नोंकी महिमाकी निर्बन्धता प्राप्त करेगी । क्योंकि हम
जानते हैं कि सारी सृष्टि अबलों एक संग कहरती और
२३ पीड़ा पाती है । और केवल वह नहीं पर हम लोग भी
इसलिये कि हमारे पास आत्माका पहिला फल है
आपही अपनेमें कहरते हैं और लेपालकपनकी अर्थात
२४ अपने देहके उद्धारकी बाट जोहते हैं । क्योंकि आशासे
हमारा त्राण हुआ परन्तु जो आशा देखनेमें आती है
सो आशा नहीं है क्योंकि जो कुछ कोई देखता है वह
२५ उसकी आशा भी क्यों रखता है । परन्तु यदि हम जो
नहीं देखते हैं उसकी आशा रखते हैं तो धीरजसे उस-
की बाट जोहते हैं ।

२६ इस रीतिसे पवित्र आत्मा भी हमारी दुर्ब्बलताओंमें
सहायता करता है क्योंकि हम नहीं जानते हैं कौनसी
प्रार्थना किस रीतिसे किया चाहिये परन्तु आत्मा आप-
ही अकथ्य हाय मार मारके हमारे लिये बिन्ती करता
२७ है । और हृदयोंका जांचनेहारा जानता है कि आत्मा-
की मनसा क्या है कि वह पवित्र लोगोंके लिये ईश्वर-
की इच्छाके समान बिन्ती करता है ।

२८ और हम जानते हैं कि जो लोग ईश्वरको प्यार
करते हैं उनके लिये सब बातें मिलके भलाईहीका कार्य्य
करती हैं अर्थात उनके लिये जो उसकी इच्छाके समान
२९ बुलाये हुए हैं । क्योंकि जिन्हें उसने आगेसे जाना उन्हें

उसने अपने पुत्रके रूपके सदृश होनेको आगेसे ठहराया
जिस्तें वह बहुत भाइयोंमें पहिलौठा होवे। फिर जिन्हें ३०
उसने आगेसे ठहराया उन्हें बुलाया भी और जिन्हें
बुलाया उन्हें धर्म्मी ठहराया भी और जिन्हें धर्म्मी
ठहराया उन्हें महिमा भी दिई।

तो हम इन बातोंपर क्या कहें. यदि ईश्वर हमारी ३१
ओर है तो हमारे बिरुद्ध कौन होगा। जिसने अपने ३२
निज पुत्रको न रख छोड़ा परन्तु उसे हम सभोंके लिये
सोंप दिया सो उसके संग हमें और सब कुछ क्योंकर न
देगा। ईश्वरके चुने हुए लोगोंपर दोष कौन लगावेगा. ३३
क्या ईश्वर जो धर्म्मी ठहरानेहारा है। दंडकी आज्ञा देने- ३४
हारा कौन होगा. क्या ख्रीष्ट जो मरा हां जो जी भी
उठा जो ईश्वरकी दहिनी ओर भी है जो हमारे लिये
बिन्ती भी करता है। कौन हमें ख्रीष्टके प्रेमसे अलग ३५
करेगा. क्या क्लेश वा संकट वा उपद्रव वा अकाल
वा नंगाई वा जोखिम वा खड्ग। जैसा लिखा है कि ३६
तेरे लिये हम दिन भर घात किये जाते हैं हम बध
होनेवाली भेड़ोंकी नाईं गिने गये हैं। नहीं पर इन ३७
सब बातोंमें हम उसके द्वारासे जिसने हमें प्यार किया
है जयवन्तसे भी अधिक हैं। क्योंकि मैं निश्चय जान- ३८
ता हूं कि न मृत्यु न जीवन न दूतगण न प्रधानता
न पराक्रम न बर्त्तमान न भविष्य. न ऊंचाई न गहि- ३९
राई न और कोई सृष्टि हमें ईश्वरके प्रेमसे जो हमारे
प्रभु ख्रीष्ट यीशुमें है अलग कर सकेगी।

९ नवां पर्ब्ब ।

१ यिहूदियोंके विषयमें पावलका बहुत चिन्ता करना । ६ उन्होंमेंसे वेही जिन्हें ईश्वरने चुन लिया प्रतिज्ञाके अधिकारी हुए इसका वर्णन । १४ जो नष्ट होते हैं उनमें ईश्वरका न्याय और जो त्राण पाते हैं उनपर उसकी बड़ी दया प्रगट होती है इसके कई एक प्रमाण । ३० यिहूदी लोग धर्म्मसे हीन हुए परन्तु अन्यदेशियोंने विश्वाससे धर्म्मको प्राप्त किया इसका हेतु ।

१ मैं ख्रीष्टमें सत्य कहता हूं मैं झूठ नहीं बोलता हूं
और मेरा मन भी पवित्र आत्मामें मेरा साक्षी है .
२ कि मुझे बड़ा शोक और मेरे मनको निरन्तर खेद
३ रहता है । क्योंकि मैं आप प्रार्थना कर सकता कि
अपने भाइयोंके लिये जो शरीरके भावसे मेरे कुटुंब हैं
४ मैं ख्रीष्टसे स्रापित होता । वे इस्रायेली लोग हैं और
लेपालकपन औ तेज औ नियम औ व्यवस्थाका निरू-
५ पण औ सेवकाई औ प्रतिज्ञाएं उनकी हैं । पितर
लोग भी उन्हींके हैं और उनमेंसे शरीरके भावसे ख्रीष्ट
हुआ जो सर्ब्बप्रधान ईश्वर सर्ब्बदा धन्य है . आमीन ।
६ पर ऐसा नहीं है कि ईश्वरका बचन टल गया है
क्योंकि सब लोग इस्रायेली नहीं जो इस्रायेलसे जन्मे हैं .
७ और न इसलिये कि इब्राहीमके बंश हैं वे सब उसके
सन्तान हैं परन्तु (लिखा है) इसहाकसे जो हो सो तेरा
८ बंश कहावेगा । अर्थात शरीरके जो सन्तान सो ईश्वर-
के सन्तान नहीं हैं परन्तु प्रतिज्ञाके सन्तान बंश गिने
९ जाते हैं । क्योंकि यह वचन प्रतिज्ञाका था कि इस
समयके अनुसार मैं आऊंगा और सारःको पुत्र होगा ।
१० और केवल यह नहीं परन्तु जब रिबका भी एकसे
११ अर्थात हमारे पिता इसहाकसे गर्भवती हुई . और

बालक नहीं जन्मे थे और न कुछ भला अथवा बुरा
किया था तबही उससे कहा गया कि बड़का छुटकेका
दास होगा . इसलिये कि ईश्वरकी मनसा जो उसके १२
चुन लेनेके अनुसार है कर्म्मोंके हेतुसे नहीं परन्तु बुला-
नेहारेकी ओरसे बनी रहे। जैसा लिखा है कि मैंने १३
याकूबको प्यार किया परन्तु एसौको अप्रिय जाना।
तो हम क्या कहें . क्या ईश्वरके यहां अन्याय है . १४
ऐसा न हो। क्योंकि वह मूसासे कहता है मैं जिस १५
किसीपर दया करूं उसपर दया करूंगा और जिस
किसीपर कृपा करूं उसपर कृपा करूंगा। सो यह न १६
तो चाहनेहारेका न तो दौड़नेहारेका परन्तु दया
करनेहारे ईश्वरका काम है। क्योंकि धर्म्मपुस्तक फिर- १७
ऊनसे कहता है कि मैंने तुझे इसी बातके लिये बढ़ाया
कि तुझमें अपना पराक्रम दिखाऊं और कि मेरा नाम
सारी पृथिवीमें प्रचार किया जाय। सो वह जिसपर दया १८
किया चाहता है उसपर दया करता है परन्तु जिसे
कठोर किया चाहता है उसे कठोर करता है। तो तू १९
मुझसे कहेगा वह फिर दोष क्यों देता है क्योंकि कौन
उसकी इच्छाका साम्ना करता है। हां पर हे मनुष्य तू २०
कौन है जो ईश्वरसे बिबाद करता है. क्या गढ़ी हुई
बस्तु गढ़नेहारेसे कहेगी तूने मुझे इस रीतिसे क्यों
बनाया। अथवा क्या कुम्हारको मिट्टीपर अधिकार २१
नहीं है कि एकही पिंडमेंसे एक पात्रको आदरके लिये
और दूसरेको अनादरके लिये बनावे। और यदि २२
ईश्वरने अपना क्रोध दिखानेकी और अपना सामर्थ्य

प्रगट करनेकी इच्छासे क्रोधके पात्रोंकी जो बिनाशके
२३ योग्य किये गये थे बड़े धीरजसे सही . और दयाके
पात्रोंपर जिन्हें उसने महिमाके लिये आगेसे तैयार
किया अपनी महिमाके धनको प्रगट करनेकी इच्छा
२४ किई तो तू कौन है जो बिबाद करे । इन्होंको उसने
बुलाया भी अर्थात हमोंको जो केवल यिहूदियोंमेंसे नहीं
२५ परन्तु अन्यदेशियोंमेंसे भी हैं । जैसा वह होशेयाके
पुस्तकमें भी कहता है कि जो मेरे लोग न थे उन्हें मैं
अपने लोग कहूंगा और जो प्यारी न थी उसे प्यारी
२६ कहूंगा । और जिस स्थानमें लोगोंसे कहा गया कि तुम
मेरे लोग नहीं हो वहां वे जीवते ईश्वरके सन्तान
२७ कहावेंगे । परन्तु यिशैयाह इस्रायेलके विषयमें पुकारता
है यद्यपि इस्रायेलके सन्तानोंकी गिन्ती समुद्रके बालू-
की नाईं हो तौभी जो बच रहेंगे उन्हींकी रक्षा होगी।
२८ क्योंकि परमेश्वर बातको पूरी करनेवाला और धर्म्मसे
शीघ्र निबाहनेवाला है कि वह देशमें बातको शीघ्र समाप्त
२९ करेगा । जैसा यिशैयाहने आगे भी कहा था कि यदि
सेनाओंका प्रभु हमारे लिये बंश न छोड़ देता तो हम स-
दोमकी नाईं हो जाते और अमोराके समान किये जाते।
३० तो हम क्या कहें . यह कि अन्यदेशियोंने जो
धर्म्मका पीछा नहीं करते थे धर्म्मको अर्थात उस धर्म्मको
३१ जो बिश्वाससे है प्राप्त किया . परन्तु इस्रायेली लोग
धर्म्मकी व्यवस्थाका पीछा करते हुए धर्म्मकी व्यवस्था-
३२ को नहीं पहुंचे । किसलिये . इसलिये कि वे बिश्वास-
से नहीं परन्तु जैसे व्यवस्थाके कर्म्मोंसे उसका पीछा

करते थे कि उन्होंने उस ठेसके पत्थरपर ठोकर खाई .
जैसा लिखा है देखो मैं सियोनमें एक ठेसका पत्थर ३३
और ठोकरकी चटान रखता हूं और जो कोई उसपर
बिश्वास करे सो लज्जित न होगा ।

१० दसवां पर्ब्ब ।

१ यिहूदियोंका यत्न करना परन्तु सच्चे धर्म्मसे अज्ञान रहना । ४ व्यवस्थाका धर्म्म और वह धर्म्म जो बिश्वासके द्वारासे है इन दोनोंका ब्योरा । १४ सुसमाचारका प्रचार किया जाना और यिहूदियोंका उसे न मानना ।

हे भाइयो इस्रायेलके लिये मेरे मनकी इच्छा और १
मेरी प्रार्थना जो मैं ईश्वरसे करता हूं उनके त्राणके लिये
है । क्योंकि मैं उनपर साक्षी देता हूं कि उनको ईश्वरके २
लिये धुन रहती है परन्तु ज्ञानकी रीतिसे नहीं । क्योंकि ३
वे ईश्वरके धर्म्मको न चीन्हके पर अपनाही धर्म्म स्था-
पन करनेका यत्न करके ईश्वरके धर्म्मके अधीन नहीं हुए।

क्योंकि धर्म्मके निमित्त हर एक बिश्वास करनेहारेके ४
लिये खीष्ट व्यवस्थाका अन्त है । क्योंकि मूसा उस धर्म्मके ५
विषयमें जो व्यवस्थासे है लिखता है कि जो मनुष्य
यह बातें पालन करे सो उनसे जीयेगा । परन्तु जो ६
धर्म्म बिश्वाससे है सो यूं कहता है कि अपने मनमें
मत कह कौन स्वर्गपर चढ़ेगा . यह तो खीष्टको
उतार लानेके लिये होता . अथवा कौन पातालमें ७
उतरेगा . यह तो खीष्टको मृतकोंमेंसे ऊपर लानेके लिये
होता । फिर क्या कहता है . परन्तु बचन तेरे निकट ८
तेरे मुंहमें और तेरे मनमें है . यह तो बिश्वासका
बचन है जो हम प्रचार करते हैं . कि यदि तू अपने ९
मुंहसे प्रभु यीशुको मान लेवे और अपने मनसे बिश्वास

करे कि ईश्वरने उसको मृतकोंमेंसे उठाया तो तू त्राण
१० पावेगा । क्योंकि मनसे धर्म्मके लिये बिश्वास किया
जाता है और मुंहसे त्राणके लिये मान लिया जाता
११ है । क्योंकि धर्म्मपुस्तक कहता है कि जो कोई उसपर
१२ बिश्वास करे सो लज्जित न होगा । यिहूदी और
यूनानीमें कुछ भेद भी नहीं है क्योंकि सभोंका एकही
प्रभु है जो सभोंके लिये जो उससे प्रार्थना करते हैं धनी
१३ है । क्योंकि जो कोई परमेश्वरके नामकी प्रार्थना
करेगा सो त्राण पावेगा ।
१४ फिर जिसपर लोगोंने विश्वास नहीं किया उससे वे
क्योंकर प्रार्थना करें और जिसकी उन्होंने सुनी नहीं
उसपर वे क्योंकर विश्वास करें और उपदेशक विना वे
१५ क्योंकर सुनें । और वे जो भेजे न जायें तो क्योंकर
उपदेश करें जैसा लिखा है कि जो कुशलका सुसमाचार
सुनाते हैं अर्थात भली बातोंका सुसमाचार प्रचार करते
१६ हैं उनके पांव कैसे सुन्दर हैं । परन्तु सब लोगोंने उस
सुसमाचारको नहीं माना क्योंकि यिशैयाह कहता है
हे परमेश्वर किसने हमारे समाचारका विश्वास किया
१७ है । सो बिश्वास समाचारसे और समाचार ईश्वरके
१८ वचनके द्वारासे आता है। पर मैं कहता हूं क्या उन्होंने
नहीं सुना . हां बरन (लिखा है) उनका शब्द सारी पृथि-
वीपर और उनकी बातें जगतके सिवानोंतक निकल
१९ गईं। पर मैं कहता हूं क्या इस्रायेली लोग नहीं जानते
थे. पहिले मूसा कहता है मैं उन्होंपर जो एक लोग
नहीं हैं तुमसे डाह करवाऊंगा मैं एक निर्बुद्धि लोगपर

तुमसे क्रोध करवाऊंगा । परन्तु यिशैयाह साहस करके २०
कहता है कि जो मुझे नहीं ढूंढ़ते थे उनसे मैं पाया
गया जो मुझे नहीं पूछते थे उनपर मैं प्रगट हुआ ।
परन्तु इस्रायेली लोगोंको वह कहता है मैंने सारे दिन २१
अपने हाथ एक आज्ञालंघन औ बिबाद करनेहारे
लोगकी ओर पसारे ।

११ एग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ ईश्वरने जो इस्रायेली लोगोंमेंसे कितनोंको अपने अनुग्रहसे चुना है और दूसरे इस्रायेली लोग पतित हुए इन बातोंके प्रमाण । ११ इस्रायेलियोंके पतनके द्वारासे अन्यदेशियोंपर कृपा हुई और तौभी इस्रायेलका मूल अधिकार बना रहा इसको अन्यदेशियोंपर प्रगट करना । २५ इस्रायेलपर पीछे फिर कृपा होगी इसका भविष्यद्वाक्य और बिबरण । ३३ ईश्वरके ज्ञान और न्यायका बखान ।

तो मैं कहता हूं क्या ईश्वरने अपने लोगोंको त्याग १
दिया है . ऐसा न हो क्योंकि मैं भी इस्रायेली जन इब्रा-
हीमके बंशसे और बिन्यामीनके कुलका हूं । ईश्वरने २
अपने लोगोंको जिन्हें उसने आगेसे जाना त्याग नहीं
दिया है . क्या तुम नहीं जानते हो कि धर्म्मपुस्तक
एलियाहकी कथामें क्या कहता है कि वह इस्रायेलके
बिरुद्ध ईश्वरसे बिन्ती करता है . कि हे परमेश्वर उन्होंने ३
तेरे भविष्यद्वक्ताओंको घात किया है और तेरी बेदियोंको
खोद डाला है और मैंही अकेला छूट गया हूं और वे
मेरा प्राण लेने चाहते हैं । परन्तु ईश्वरकी बाणी उससे ४
क्या कहती है . मैंने अपने लिये सात सहस्र मनुष्योंको
रख छोड़ा है जिन्होंने बाअलके आगे घुटना नहीं टेका है ।
सो इस रीतिसे इस बर्त्तमान समयमें भी अनुग्रहसे चुने ५
हुए कितने लोग बच रहे हैं । जो यह अनुग्रहसे हुआ ६

है तो फिर कर्म्मोंसे नहीं है नहीं तो अनुग्रह अब
अनुग्रह नहीं है. पर यदि कर्म्मोंसे हुआ है तो फिर अनु-
७ ग्रह नहीं है नहीं तो कर्म्म अब कर्म्म नहीं है। तो क्या
है . इस्रायेली लोग जिसको ढूंढ़ते हैं उसको उन्होंने
प्राप्त नहीं किया है परन्तु चुने हुओंने प्राप्त किया है
८ और दूसरे लोग कठोर किये गये हैं। जैसा लिखा है
कि ईश्वरने उन्हें आजके दिनलों जड़ताका आत्मा
हां आंखें जो न देखें और कान जो न सुनें दिये हैं।
९ और दाऊद कहता है उनकी मेज उनके लिये फंदा
और जाल और ठोकरका कारण और प्रतिफल हो
१० जाय। उनकी आंखोंपर अन्धेरा छा जाय कि वे न
देखें और तू उनकी पीठको नित्य झुका दे।
११ तो मैं कहता हूं क्या उन्होंने इसलिये ठोकर खाई कि
गिर पड़ें . ऐसा न हो परन्तु उनके गिरनेके हेतुसे अन्य-
१२ देशियोंको त्राण हुआ है कि उनसे डाह करवावे। परन्तु
यदि उनके गिरनेसे जगतका धन और उनकी हानिसे
अन्यदेशियोंका धन हुआ तो उनकी भरपूरीसे वह धन
१३ कितना अधिक करके होगा। मैं तुम अन्यदेशियोंसे
कहता हूं . जब कि मैं अन्यदेशियोंके लिये प्रेरित हूं मैं
१४ अपनी सेवकाईकी बड़ाई करता हूं . कि किसी रीतिसे
मैं उनसे जो मेरे शरीरके ऐसे हैं डाह करवाके उनमेंसे
१५ कई एकको भी बचाऊं। क्योंकि यदि उनके त्याग दिये
जानेसे जगतका मिलाप हुआ तो उनके ग्रहण किये
१६ जानेसे क्या होगा . क्या मृतकोंमेंसे जीवन नहीं। यदि
पहिला फल पवित्र है तो पिंड भी पवित्र है और यदि

जड़ पवित्र है तो डालियां भी पवित्र हैं। परन्तु यदि १७
डालियोंमेंसे कितनी तोड़ डाली गईं और तू जंगली
जलपाई होके उन्होंमें साटा गया है और जलपाईके
वृक्षकी जड़ और तेलका भागी हुआ है तो डालियोंके
बिरुद्ध घमंड मत कर। परन्तु जो तू घमंड करे तौभी १८
तू जड़का आधार नहीं परन्तु जड़ तेरा आधार है।
फिर तू कहेगा डालियां तोड़ डाली गईं कि मैं साटा १९
जाऊं। अच्छा वे अविश्वासके हेतुसे तोड़ डाली गईं २०
पर तू बिश्वाससे खड़ा है. अभिमानी मत हो परन्तु
भय कर। क्योंकि यदि ईश्वरने स्वाभाविक डालियां न २१
छोड़ीं तो ऐसा न हो कि तुझे भी न छोड़े। सो ईश्वरकी २२
कृपा और कड़ाईको देख. जो गिर पड़े उनपर कड़ाई
परन्तु तुझपर जो तू उसकी कृपामें बना रहे तो कृपा.
नहीं तो तू भी काट डाला जायगा। और वे भी जो २३
अबिश्वासमें न रहें तो साटे जायेंगे क्योंकि ईश्वर उन्हें
फिर साट सकता है। क्योंकि यदि तू उस जलपाईके २४
वृक्षसे जो स्वभावसे जंगली है काटा गया और स्वभावके
बिरुद्ध अच्छी जलपाईके वृक्षमें साटा गया तो कितना
अधिक करके ये जो स्वाभाविक डालियां हैं अपनेही
जलपाईके वृक्षमें साटे जायेंगे।

और हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इस २५
भेदसे अनजान रहो ऐसा न हो कि अपने लेखे बुद्धिमान
होओ अर्थात कि जबलों अन्यदेशियोंकी सम्पूर्ण संख्या
प्रवेश न करे तबलों कुछ कुछ इस्रायेलियोंको कठोरता
रहेगी। और तब सारा इस्रायेल त्राण पावेगा जैसा २६

लिखा है कि बचानेहारा सियोनसे आवेगा और
२७ अधर्म्मीपनको याकूबसे अलग करेगा । जब मैं उनके
पापोंको दूर करूंगा तब उनसे यही मेरी ओरसे नियम
२८ होगा । वे सुसमाचारके भावसे तुम्हारे कारण बैरी हैं
परन्तु चुन लिये जानेके भावसे पितरोंके कारण प्यारे
२९ हैं । क्योंकि ईश्वर अपने बरदानोंसे और बुलाहटसे
३० कभी पछतानेवाला नहीं । क्योंकि जैसे तुमने आगे
ईश्वरकी आज्ञा लंघन किई परन्तु अभी उनके आज्ञा
३१ उल्लंघनके हेतुसे तुमपर दया किई गई है. तैसे इन्होंने
भी अब आज्ञा लंघन किई है कि तुमपर जो दया किई
जाती है उसके हेतुसे उनपर भी दया किई जाय ।
३२ क्योंकि ईश्वरने सभोंको आज्ञा उल्लंघनमें बन्द कर
रखा इसलिये कि सभोंपर दया करे ।
३३ आहा ईश्वरके धन और बुद्धि और ज्ञानकी गंभीर-
ता. उसके बिचार कैसे अथाह और उसके मार्ग कैसे
३४ अगम्य हैं । क्योंकि परमेश्वरका मन किसने जाना
३५ अथवा उसका मंत्री कौन हुआ । अथवा किसने
उसको पहिले दिया और उसका प्रतिफल उसको
३६ दिया जायगा । क्योंकि उससे और उसके द्वारा और
उसके लिये सब कुछ है. उसका गुणानुबाद सर्ब्बदा
होय. आमीन।

१२ बारहवां पर्ब्ब ।

१ अपने अपने पद और सामर्थ्यके अनुसार प्रभुकी सेवा करना बिश्वासियोंको आवश्यक है इसका बर्णन । ९ प्रेम और नम्रता और क्षमा इत्यादि करनेका उपदेश।

१ सो हे भाइयो मैं तुमसे ईश्वरकी दयाके कारण

बिन्ती करता हूं कि अपने शरीरोंको जीवता और
पवित्र और ईश्वरकी प्रसन्नता योग्य बलिदान करके
चढ़ाओ कि यह तुम्हारी मानसिक सेवा है। और इस २
संसारकी रीतिपर मत चला करो परन्तु तुम्हारे मनके
नये होनेसे तुम्हारी चाल चलन बदली जाय जिस्तें
तुम परखो कि ईश्वरकी इच्छा अर्थात उत्तम और
प्रसन्नता योग्य और पूरा कार्य्य क्या है। क्योंकि जो ३
अनुग्रह मुझे दिया गया है उससे मैं तुममेंके हर एक
जनसे कहता हूं कि जो मन रखना उचित है उससे
ऊंचा मन न रखे परन्तु ऐसा मन रखे कि ईश्वरने
हर एकको बिश्वासका जो परिमाण बांट दिया है उसके
अनुसार उसको सुबुद्धि मन होय। क्योंकि जैसा हमें ४
एक देहमें बहुत अंग हैं परन्तु सब अंगोंको एकही काम
नहीं है. तैसा हम जो बहुत हैं ख्रीष्टमें एक देह हैं ५
और पृथक करके एक दूसरेके अंग हैं। और जो अनुग्रह ६
हमें दिया गया है जब कि उसके अनुसार भिन्न भिन्न
बरदान हमें मिले हैं तो यदि भविष्यद्वाणीका दान हो
तो हम बिश्वासके परिमाणके अनुसार बोलें. अथवा ७
सेवकाईका दान हो तो सेवकाईमें लगे रहें. अथवा
जो सिखानेहारा हो सो शिक्षामें लगा रहे. अथवा जो ८
उपदेशक हो सो उपदेशमें लगा रहे. जो बांट देवे सो
सीधाईसे बांटे. जो अध्यक्षता करे सो यत्नसे करे.
जो दया करे सो हर्षसे करे।

प्रेम निष्कपट होय. बुराईसे घिन्न करो भलाईमें ९
लगे रहो। भ्राचीय प्रेमसे एक दूसरेपर मया रखो. पर- १०

११ स्थिर आदर करनेमें एक दूसरेसे बढ़ चलो। यत्न करनेमें
आलसी मत हो . आत्मामें अनुरागी हो . प्रभुकी सेवा
१२ किया करो। आशासे आनन्दित हो . क्लेशमें स्थिर
१३ रहो. प्रार्थनामें लगे रहो। पवित्र लोगोंको जो आवश्यक
हो उसमें उनकी सहायता करो . अतिथिसेवाकी चेष्टा
१४ करो। अपने सतानेहारोंको आशीस देओ . आशीस
१५ देओ . स्राप मत देओ। आनन्द करनेहारोंके संग आ-
१६ नन्द करो और रोनेहारोंके संग रोओ। एक दूसरेकी
ओर एकसां मन रखो . ऊंचा मन मत रखो परन्तु
दीनोंसे संगति रखो . अपने लेखे बुद्धिमान मत होओ।
१७ किसीसे बुराईके बदले बुराई मत करो . जो बातें
सब मनुष्योंके आगे भली हैं उनकी चिन्ता किया करो।
१८ यदि हो सके तुम तो अपनी ओरसे सब मनुष्योंके संग
१९ मिले रहो। हे प्यारो अपना पलटा मत लेओ परन्तु
क्रोधको ठांव देओ क्योंकि लिखा है पलटा लेना मेरा
काम है . परमेश्वर कहता है मैं प्रतिफल देऊंगा।
२० इसलिये यदि तेरा शत्रु भूखा हो तो उसे खिला यदि
प्यासा हो तो उसे पिला क्योंकि यह करनेसे तू उसके
२१ सिरपर आगके अंगारोंकी ढेरी लगावेगा। बुराईसे
मत हार जा परन्तु भलाईसे बुराईको जीत ले।

१३ तेरहवां पर्व्व ।

१ देशाधिकारियोंके वशमें रहनेकी आवश्यकता। ८ प्रेम जो व्यवस्थाका सार है इसका वर्णन। ११ समय देखके अंधकारके कार्य्योंके त्यागनेका उपदेश।

१ हर एक मनुष्य प्रधान अधिकारियोंके अधीन होवे
क्योंकि कोई अधिकार नहीं है जो ईश्वरकी ओरसे न

हो पर जो अधिकार हैं सो ईश्वरसे ठहराये हुए हैं।
इससे जो अधिकारका बिरोध करता है सो ईश्वरकी २
विधिका साम्ना करता है और साम्ना करनेहारे अपने
लिये दंड पावेंगे। क्योंकि अध्यक्ष लोग भले कामोंसे ३
नहीं परन्तु बुरे कामोंसे डरानेहारे हैं . क्या तू अधि-
कारीसे निडर रहा चाहता है . भला काम कर तो
उससे तेरी सराहना होगी क्योंकि वह तेरी भलाईके
लिये ईश्वरका सेवक है। परन्तु जो तू बुरा काम ४
करे तो भय कर क्योंकि वह खड्गको वृथा नहीं बांधता
है इसलिये कि वह ईश्वरका सेवक अर्थात कुकर्म्मीपर
क्रोध पहुंचानेको दंडकारक है। इसलिये अधीन होना ५
केवल उस क्रोधके कारण नहीं परन्तु बिवेकके कारण
भी अवश्य है। इस हेतुसे कर भी देओ क्योंकि वे ६
ईश्वरके सेवक हैं जो इसी बातमें लगे रहते हैं। सो ७
सभोंको जो जो कुछ देना उचित है सो सो देओ जिसे
कर देना हो उसे कर देओ जिसे महसूल देना हो उसे
महसूल देओ जिससे भय करना हो उससे भय करो
जिसका आदर करना हो उसका आदर करो।

किसीका कुछ ऋण मत धारो केवल एक दूसरेको ८
प्यार करनेका ऋण क्योंकि जो दूसरेको प्यार करता है
उसने व्यवस्था पूरी किई है। क्योंकि यह कि परस्त्रीगमन ९
मत कर नरहिंसा मत कर चोरी मत कर झूठी साक्षी
मत दे लालच मत कर और कोई दूसरी आज्ञा यदि
होय तो इस बातमें अर्थात तू अपने पड़ोसीको अपने
समान प्रेम कर सबका संग्रह है। प्रेम पड़ोसीकी कुछ १०

बुराई नहीं करता है इसलिये प्रेम करना व्यवस्थाको
पूरा करना है ।
११ यह इसलिये भी किया चाहिये कि तुम समयको
जानते हो कि नींदसे हमारे जागनेका समय अब हुआ
है क्योंकि जिस समयमें हमने बिश्वास किया उस
१२ समयसे अब हमारा त्राण अधिक निकट है । रात बढ़
गई है और दिन निकट आया है इसलिये हम अन्ध-
कारके कामोंको उतारके ज्योतिकी झिलम पहिन लें ।
१३ जैसा दिनको चाहिये वैसा हम शुभ रीतिसे चलें .
लीला क्रीड़ा औ मतवालपनमें अथवा व्यभिचार औ
१४ लुचपनमें अथवा बैर औ डाहमें न चलें । परन्तु प्रभु
यीशु खीष्टको पहिन लो और शरीरके लिये उसके
अभिलाषोंको पूरा करनेकी चिन्ता मत करो ।

१४ चौदहवां पर्ब्ब ।

१ दुर्ब्बल भाईसे सूक्ष्म बातोंका बिबाद करनेका निषेध । ६ इसका पहिला प्रमाण अर्थात सब विश्वासी लोग प्रभुहीके अधीन हैं । १३ दूसरा प्रमाण अर्थात भाईको ठोकर खिलाना उचित नहीं है । १६ तीसरा प्रमाण अर्थात ईश्वरका राज्य आत्मिक राज्य है जिसमें भोजनका ब्योरा नहीं परन्तु प्रेमकी चाल अति आवश्यक है । २२ दृढ़ बिश्वाससे चलनेका उपदेश ।

१ जो बिश्वासमें दुर्ब्बल है उसे अपनी संगतिमें ले
२ लेओ पर उसके मतका बिचार करनेको नहीं । एक
जन बिश्वास करता है कि सब कुछ खाना उचित है
३ परन्तु जो दुर्ब्बल है सो साग पात खाता है । जो खाता
है सो न खानेहारेको तुच्छ न जाने और जो नहीं
खाता है सो खानेहारेको दोषी न ठहरावे क्योंकि
४ ईश्वरने उसको ग्रहण किया है । तू कौन है जो पराये

सेवकको दोषी ठहराता है . वह अपनेही स्वामीके
आगे खड़ा होता है अथवा गिरता है . परन्तु वह
खड़ा रहेगा क्योंकि ईश्वर उसे खड़ा रख सकता है।
एक जन एक दिनको दूसरे दिनसे बड़ा जानता है दूसरा ५
जन हर एक दिनको एकसा जानता है . हर एक जन
अपनेही मनमें निश्चय कर लेवे।

जो दिनको मानता है सो प्रभुके लिये मानता है ६
और जो दिनको नहीं मानता है सो प्रभुके लिये नहीं
मानता है . जो खाता है सो प्रभुके लिये खाता है
क्योंकि वह ईश्वरका धन्य मानता है और जो नहीं
खाता है सो प्रभुके लिये नहीं खाता है और ईश्वरका
धन्य मानता है। क्योंकि हममेंसे कोई अपने लिये ७
नहीं जीता है और कोई अपने लिये नहीं मरता है।
क्योंकि यदि हम जीवें तो प्रभुके लिये जीते हैं और ८
यदि मरें तो प्रभुके लिये मरते हैं सो यदि हम जीवें
अथवा यदि मरें तो प्रभुके हैं। क्योंकि इसी बातके ९
लिये खीष्ट मरा और उठा और फिरके जीया भी कि
वह मृतकों औ जीवतोंका भी प्रभु होवे। तू अपने १०
भाईको क्यों दोषी ठहराता है अथवा तू भी अपने
भाईको क्यों तुच्छ जानता है क्योंकि हम सब खीष्टके
विचार आसनके आगे खड़े होंगे। क्योंकि लिखा है कि ११
परमेश्वर कहता है जो मैं जीता हूं तो मेरे आगे हर
एक घुटना झुकेगा और हर एक जीभ ईश्वरके आगे
मान लेगी। सो हममेंसे हर एक ईश्वरको अपना १२
अपना लेखा देगा।

१३ सो हम अब फिर एक दूसरेको दोषी न ठहरावें
परन्तु तुम यही ठहराओ कि भाईके आगे हम ठेस
१४ अथवा ठोकरका कारण न रखेंगे । मैं जानता हूं और
प्रभु यीशुसे मुझे निश्चय हुआ है कि कोई बस्तु आपसे
अशुद्ध नहीं है केवल जो जिस वस्तुको अशुद्ध जानता
१५ है उसके लिये वह अशुद्ध है। यदि तेरे भोजनके कारण
तेरा भाई उदास होता है तो तू अब प्रेमकी रीतिसे
नहीं चलता है . जिसके लिये खीष्ट मूआ उसको तू
अपने भोजनके द्वारासे नाश मत कर ।
१६ सो तुम्हारी भलाईकी निन्दा न किई जाय ।
१७ क्योंकि ईश्वरका राज्य खाना पीना नहीं है परन्तु धर्म्म
और मिलाप और आनन्द जो पवित्र आत्मासे है ।
१८ क्योंकि जो इन बातोंमें खीष्टकी सेवा करता है सो
ईश्वरको भावता और मनुष्योंके यहां भला ठहराया
१९ जाता है । इसलिये हम मिलापकी बातों और एक
२० दूसरेके सुधारनेकी बातोंकी चेष्टा करें । भोजनके हेतु
ईश्वरका काम नाश मत कर . सब कुछ शुद्ध तो है
परन्तु जो मनुष्य खानेसे ठोकर खिलाता है उसके लिये
२१ बुरा है । अच्छा यह है कि तू न मांस खाय न दाख
रस पीय न कोई काम करे जिससे तेरा भाई ठेस अथवा
ठोकर खाता है अथवा दुर्ब्बल होता है ।
२२ क्या तुझे विश्वास है. उसे ईश्वरके आगे अपने
मनमें रख. धन्य वह है कि जो बात उसे अच्छी देख
२३ पड़ती है उसमें अपनेको दोषी नहीं ठहराता है। परन्तु
जो सन्देह करता है सो यदि खाय तो दंडके योग्य ठहरा

है क्योंकि वह बिश्वासका काम नहीं करता है. परन्तु
जो जो काम बिश्वासका नहीं है सो पाप है ।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

१ दुर्ब्बल भाईके विषयके उपदेशका चौथा प्रमाण अर्थात् खीष्टने ऐसाही नमूना दिखाया । ८ खीष्टका यिहूदी और अन्यदेशी दोनोंका त्राणकर्त्ता होना । १४ रोमीय मंडलीके पास लिखनेमें पावलका अभिप्राय । १७ उसकी सेवकाईका बर्णन । २२ रोम नगर जानेकी इच्छा । ३० मंडलीसे यह विन्ती करना कि वे उसके लिये प्रार्थना करें ।

हमें जो बलवन्त हैं उचित है कि निर्ब्बलोंकी दुर्ब्बल- १
ताओंको सहें और अपनेहीको प्रसन्न न करें । हममेंसे २
हर एक जन पड़ोसीकी भलाईके लिये उसे सुधारनेके
निमित्त प्रसन्न करे । क्योंकि खीष्टने भी अपनेहीको ३
प्रसन्न न किया परन्तु जैसा लिखा है तेरे निन्दकोंकी
निन्दाकी बातें मुझपर आ पड़ीं । क्योंकि जो कुछ आगे ४
लिखा गया सो हमारी शिक्षाके लिये लिखा गया कि
धीरताके और शांतिके द्वारा जो धर्म्मपुस्तकसे होती है
हमें आशा होय । और धीरता और शांतिका ईश्वर ५
तुम्हें खीष्ट यीशुके अनुसार आपसमें एकसां मन रखनेका
दान देवे . जिस्तें तुम एक चित्त होके एक मुंहसे हमारे ६
प्रभु यीशु खीष्टके पिता ईश्वरका गुणानुबाद करो । इस ७
कारण ईश्वरकी महिमाके लिये जैसा खीष्टने तुम्हें
ग्रहण किया तैसे तुम भी एक दूसरेको ग्रहण करो ।
मैं कहता हूं कि जो प्रतिज्ञाएं पितरोंसे किई गई ८
उन्हें दृढ़ करनेको यीशु खीष्ट ईश्वरकी सच्चाईके लिये
खतना किये हुए लोगोंका सेवक हुआ । पर अन्यदेशी ९
लोग भी दयाके कारण ईश्वरका गुणानुबाद करें जैसा

लिखा है इस कारण मैं अन्यदेशियोंमें तेरा धन्य मानूंगा
१० और तेरे नामकी गीतें गाऊंगा। और फिर कहा है हे
११ अन्यदेशियो उसके लोगोंके संग आनन्द करो। और
फिर हे सब अन्यदेशियो परमेश्वरकी स्तुति करो और
१२ हे सब लोगो उसे सराहो। और फिर यिशैयाह कहता
है यिशीका एक मूल होगा और अन्यदेशियोंका प्रधान
होनेको एक उठेगा उसपर अन्यदेशी लोग आशा रखेंगे।
१३ आशाका ईश्वर तुम्हें बिश्वास करनेमें सर्ब्ब आनन्द
और शांतिसे परिपूर्ण करे कि पवित्र आत्माके सामर्थ्यसे
तुम्हें अधिक करके आशा होय।
१४ हे मेरे भाइयो मैं आप भी तुम्हारे विषयमें निश्चय
जानता हूं कि तुम भी आपही भलाईसे भरपूर औ
सारे ज्ञानसे परिपूर्ण हो और एक दूसरेको चिता सकते
१५ हो। परन्तु हे भाइयो मैंने तुम्हें चेत दिलाते हुए तुम्हारे
पास कहीं कहीं बहुत साहससे जो लिखा है यह उस
अनुग्रहके कारण हुआ जो ईश्वरने मुझे दिया है.
१६ इसलिये कि मैं अन्यदेशियोंके लिये यीशु खीष्टका सेवक
होऊं और ईश्वरके सुसमाचारका याजकीय कर्म्म करूं
जिस्तें अन्यदेशियोंका चढ़ाया जाना पवित्र आत्मासे
पवित्र किया जाके ग्राह्य होय।
१७ सो उन बातोंमें जो ईश्वरसे संबन्ध रखती हैं मुझे
१८ खीष्ट यीशुमें बड़ाई करनेका हेतु मिलता है। क्योंकि
जो काम खीष्टने मेरे द्वारासे नहीं किये उनमेंसे मैं किसी
कामके विषयमें बात करनेका साहस न करूंगा परन्तु
उन कामोंके विषयमें कहूंगा जो उसने मेरे द्वारासे

अन्यदेशियोंकी अधीनताके लिये बचन औ कर्म्मसे और
चिन्हों औ अद्भुत कामोंके सामर्थ्यसे और ईश्वरके
आत्माकी शक्तिसे किये हैं. यहांलों कि यिरूशलीम और १९
चारों ओरके देशसे लेके इल्लुरिया देशलों मैंने खीष्टके
सुसमाचारको सम्पूर्ण प्रचार किया है। परन्तु मैं सुसमा- २०
चारको इस रीतिसे सुनानेकी चेष्टा करता था अर्थात कि
जहां खीष्टका नाम लिया गया तहां न सुनाऊं ऐसा न हो
कि पराई नेवपर घर बनाऊं. परन्तु ऐसा सुनाऊं २१
जैसा लिखा है कि जिन्हें उसका समाचार नहीं कहा
गया वे देखेंगे और जिन्होंने नहीं सुना है वे समझेंगे।
इसी हेतुसे मैं तुम्हारे पास जानेमें बहुत बार रुक २२
गया। परन्तु अब मुझे इस ओरके देशोंमें और स्थान २३
नहीं रहा है और बहुत बरसोंसे मुझे तुम्हारे पास
आनेकी लालसा है. इसलिये मैं जब कभी इस्पानिया २४
देशको जाऊं तब तुम्हारे पास आऊंगा क्योंकि मैं आशा
रखता हूं कि तुम्हारे पाससे जाते हुए तुम्हें देखूं और
जब मैं पहिले तुमसे कुछ कुछ तृप्त हुआ हूं तब तुमसे
कुछ दूर उधर पहुंचाया जाऊं। परन्तु अभी मैं पवित्र २५
लोगोंकी सेवा करनेके लिये यिरूशलीमको जाता हूं।
क्योंकि माकिदोनिया और आखायाके लोगोंकी इच्छा २६
हुई कि यिरूशलीमके पवित्र लोगोंमें जो कंगाल हैं
उनकी कुछ सहायता करें। उनकी इच्छा हुई और २७
वे उनके ऋणी भी हैं क्योंकि यदि अन्यदेशी लोग उनकी
आत्मिक बस्तुओंमें भागी हुए तो उन्हें उचित है कि
शारीरिक बस्तुओंमें उनकी भी सेवा करें। सो जब मैं यह २८

कार्य्य पूरा कर चुकूं और उनके लिये इस फलपर छाप
दे चुकूं तब तुम्हारे पाससे होके इस्पानियाको जाऊंगा ।
२९ और मैं जानता हूं कि तुम्हारे पास जब मैं आऊं तब
खीष्टके सुसमाचारकी आशीसकी भरपूरीसे आऊंगा ।
३० और हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु खीष्टके कारण और
पवित्र आत्माके प्रेमके कारण मैं तुमसे बिन्ती करता
हूं कि ईश्वरसे मेरे लिये प्रार्थना करनेमें मेरे संग परिश्रम
३१ करो . कि मैं यिहूदियामेंके अबिश्वासियोंसे बचूं और
कि यिरूशलीमके लिये जो मेरी सेवकाई है सो पवित्र
३२ लोगोंको भावे . जिस्तें मैं ईश्वरकी इच्छासे तुम्हारे पास
३३ आनन्दसे आऊं और तुम्हारे संग बिश्राम करूं । शांतिका
ईश्वर तुम सभोंके संग होवे . आमीन ।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

१ पावलका रोमियोंसे बिन्ती करना कि फैबी बहिनको ग्रहण करें । ३ अनेक बिश्वासियों और बिश्वासिनियोंके पास नमस्कार लिखना । १७ ठोकर खिलानेहारोंके विषयमें उन्हें चिताना । २१ अपनी और कितने भाइयोंकी ओरसे नमस्कार लिखना । २५ ईश्वरका धन्यवाद करके पत्रीको समाप्त करना ।

१ मैं तुम्हारे पास हम लोगोंकी बहिन फैबीको जो
२ किंक्रियामेंकी मंडलीकी सेवकी है सराहता हूं . जिस्तें
तुम उसे प्रभुमें जैसा पवित्र लोगोंके योग्य है वैसा ग्रहण
करो और जिस किसी बातमें उसको तुमसे प्रयोजन
होय उसके सहायक होओ क्योंकि वह भी बहुत लोगोंकी
और मेरी भी उपकारिणी हुई है ।
३ प्रिस्कीला और अकूलाको जो खीष्ट यीशुमें मेरे सह-
४ कर्म्मी हैं नमस्कार । उन्होंने मेरे प्राणके लिये अपनाही
गला धर दिया जिनका केवल मैं नहीं परन्तु अन्यदेशियों-

की सारी मंडलियां भी धन्य मानती हैं। उनके घरमेंकी ५
मंडलीको भी नमस्कार . इपेनित मेरे प्यारेको जो खीष्टके
लिये आशियाका पहिला फल है नमस्कार । मरियम- ६
को जिसने हमारे लिये बहुत परिश्रम किया नमस्कार।
अन्द्रोनिक और यूनिय मेरे कुटुंबों और मेरे संगी बन्धु- ७
ओंको जो प्रेरितोंमें प्रसिद्ध हैं और मुझसे पहिले खीष्ट-
में हुए थे नमस्कार । अम्पलिय प्रभुमें मेरे प्यारेको ८
नमस्कार । उर्ब्बान खीष्टमें हमारे सहकर्म्मीको और ९
स्ताखु मेरे प्यारेको नमस्कार । अपिल्लिको जो खीष्टमें १०
जांचा हुआ है नमस्कार . अरिस्तवूलके घरानेके लो-
गोंको नमस्कार । हेरोदियोन मेरे कुटुंबको नमस्कार . ११
नर्किसके घरानेके जो लोग प्रभुमें हैं उन्होंको नमस्कार।
त्रुफेना और त्रुफोसाको जिन्होंने प्रभुमें परिश्रम किया १२
नमस्कार .प्यारी परसीको जिसने प्रभुमें बहुत परिश्रम
किया नमस्कार। रूफको जो प्रभुमें चुना हुआ है और १३
उसकी औ मेरी माताको नमस्कार। असुंक्रित औ १४
फिलेगोन औ हर्मा औ पात्रोबा औ हर्मीको और
उनके संगके भाइयोंको नमस्कार । फिललोग औ यू- १५
लियाको और नीरिय और उसकी बहिनको और
उलुम्पाको और उनके संगके सब पवित्र लोगोंको
नमस्कार । एक दूसरेको पवित्र चूमा लेके नमस्कार १६
करो . तुमको खीष्टकी मंडलियोंकी ओरसे नमस्कार ।

हे भाइयो मैं तुमसे बिन्ती करता हूं कि जो लोग उस १७
शिक्षाके बिपरीत जो तुमने पाई है नाना भांतिके बिरोध
और ठोकर डालते हैं उन्हें देख रखो और उनसे फिर

१८ जाओ। क्योंकि ऐसे लोग हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टकी नहीं
परन्तु अपने पेटकी सेवा करते हैं और चिकनी और
१९ मीठी बातोंसे सूधे लोगोंके मनको धोखा देते हैं। तुम्हारे
आज्ञापालनका चर्चा सब लोगोंमें फैल गया है इससे मैं
तुम्हारे विषयमें आनन्द करता हूं परन्तु मैं चाहता हूं कि
तुम भलाईके लिये बुद्धिमान पर बुराईके लिये सूधे होओ।
२० शांतिका ईश्वर शैतानको शीघ्र तुम्हारे पाओं तले कुचले-
गा. हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टका अनुग्रह तुम्हारे संग होय।
२१ तिमोथिय मेरे सहकर्म्मीका और लूकिय औ यासोन
२२ औ सोसिपातर मेरे कुटुंबोंका तुमसे नमस्कार। मुझ
तर्त्तिय पत्रीके लिखनेहारेका प्रभुमें तुमसे नमस्कार।
२३ गायस मेरे और सारी मंडलीके आतिथ्यकारीका तुमसे
नमस्कार. इरास्तका जो नगरका भंडारी है और भाई
२४ क्वार्तका तुमसे नमस्कार। हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टका
अनुग्रह तुम सभोंके संग होय. आमीन।
२५ जो मेरे सुसमाचारके अनुसार और यीशु ख्रीष्टके
विषयके उपदेशके अनुसार अर्थात उस भेदके प्रकाशके
२६ अनुसार तुम्हें स्थिर कर सकता है. जो भेद सनातनसे
गुप्त रखा गया था परन्तु अब प्रगट किया गया है और
सनातन ईश्वरकी आज्ञासे भविष्यद्वाणीके पुस्तकके
द्वारा सब देशोंके लोगोंको बताया गया है कि वे बिश्वा-
२७ ससे आज्ञाकारी हो जायें. उसको अर्थात अद्वैत
बुद्धिमान ईश्वरको यीशु ख्रीष्टके द्वारासे धन्य हो जिसका
गुणानुबाद सर्व्वदा होवे। आमीन॥

करिन्थियोंको पावल प्रेरितकी पहिली पत्री।

१ पहिला पर्ब्ब।

१ पत्रीका आभाष। ४ करिन्थियोंके विषयमें पावलका धन्यबाद। १० उन्होंमेंके बिभेदोंका बर्णन और उनके विषयमें उन्हें समझाना। १८ यीशुकी मृत्युका सुसमाचार प्रचार करनेके गुण। २६ ईश्वरका अधम लोगोंको अपनी मंडलीमें बुलाना।

पावल जो ईश्वरकी इच्छासे यीशु ख्रीष्टका बुलाया १
हुआ प्रेरित है और भाई सोस्थिनी. ईश्वरकी मंडलीको २
जो करिन्थमें है जो ख्रीष्ट यीशुमें पवित्र किये हुए और
बुलाये हुए पवित्र लोग हैं उन सभोंके संग जो हर
स्थानमें हमारे हां उनके और हमारे भी प्रभु यीशु
ख्रीष्टके नामकी प्रार्थना करते हैं. तुम्हें हमारे पिता ३
ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले।
मैं सदा तुम्हारे विषयमें अपने ईश्वरका धन्य मानता ४
हूं इसलिये कि ईश्वरका यह अनुग्रह तुम्हें ख्रीष्ट यीशुमें
दिया गया. कि उसमें तुम हर बातमें अर्थात सारे बचन ५
और सारे ज्ञानमें धनवान किये गये. जैसा ख्रीष्टके ६
विषयकी साक्षी तुम्होंमें दृढ़ हुई. यहांलों कि किसी बर- ७
दानमें तुम्हें घटी नहीं है और तुम हमारे प्रभु यीशु
ख्रीष्टके प्रकाशकी बाट जोहते हो। वह तुम्हें अन्तलों भी ८
दृढ़ करेगा ऐसा कि तुम हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके दिनमें
निर्दोष होगे। ईश्वर बिश्वासयोग्य है जिससे तुम उसके ९
पुत्र हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टकी संगतिमें बुलाये गये।

१० हे भाइयो मैं तुमसे हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके नामके
कारण बिन्ती करता हूं कि तुम सब एकही प्रकारकी बात
बोलो और तुम्होंमें बिभेद न होवें परन्तु एकही मन और
११ एकही बिचारमें सिद्ध होओ। क्योंकि हे मेरे भाइयो
क्लोईके घरानेके लोगोंसे मुझपर तुम्हारे विषयमें प्रगट
१२ किया गया है कि तुम्होंमें बैर बिरोध हैं। और मैं यह
कहता हूं कि तुम सब यूं बोलते हो कोई कि मैं पावलका
हूं कोई कि मैं अपल्लोका कोई कि मैं कैफाका कोई कि
१३ मैं ख्रीष्टका हूं। क्या ख्रीष्ट बिभाग किया गया है. क्या
पावल तुम्हारे लिये क्रूशपर घात किया गया अथवा
१४ क्या तुम्हें पावलके नामसे बपतिसमा दिया गया। मैं
ईश्वरका धन्य मानता हूं कि क्रीस्प और गायसको
छोड़के मैंने तुममेंसे किसीको बपतिसमा नहीं दिया.
१५ ऐसा न हो कि कोई कहे कि मैंने अपने नामसे बपतिसमा
१६ दिया। और मैंने स्तिफानके घरानेको भी बपतिसमा
दिया. आगे मैं नहीं जानता हूं कि मैंने और किसीको
१७ बपतिसमा दिया। क्योंकि ख्रीष्टने मुझे बपतिसमा
देनेको नहीं परन्तु सुसमाचार सुनानेको भेजा पर
कथाके ज्ञानके अनुसार नहीं जिस्तें ऐसा न हो कि
ख्रीष्टका क्रूश ब्यर्थ ठहरे।

१८ क्योंकि क्रूशकी कथा उन्हें जो नाश होते हैं मूर्खता
है परन्तु हमें जो त्राण पाते हैं ईश्वरका सामर्थ्य है।
१९ क्योंकि लिखा है कि मैं ज्ञानवानोंके ज्ञानको नाश करूंगा
२० और बुद्धिमानोंकी बुद्धिको तुच्छ कर देऊंगा। ज्ञानवान
कहां है. अध्यापक कहां. इस संसारका बिबादी कहां.

क्या ईश्वरने इस जगतके ज्ञानको मूर्खता न बनाई है।
क्योंकि जब कि ईश्वरके ज्ञानसे यूं हुआ कि जगतने २१
ज्ञानके द्वारासे ईश्वरको न जाना तो ईश्वरकी इच्छा
हुई कि उपदेशकी मूर्खताके द्वारासे बिश्वास करनेहारों-
को बचावे। यिहूदी लोग तो चिन्ह मांगते हैं और यूनानी २२
लोग भी ज्ञान ढूंढ़ते हैं. परन्तु हम लोग क्रूशपर मारे २३
गये खीष्टका उपदेश करते हैं जो यिहूदियोंको ठोकरका
कारण और यूनानियोंको मूर्खता है. परन्तु उन्होंको हां २४
यिहूदियोंको और यूनानियोंको भी जो बुलाये हुए हैं
ईश्वरका सामर्थ्य और ईश्वरका ज्ञान रूपी खीष्ट है।
क्योंकि ईश्वरकी मूर्खता मनुष्योंसे अधिक ज्ञानवान है २५
और ईश्वरकी दुर्ब्बलता मनुष्योंसे अधिक शक्तिमान है।
क्योंकि हे भाइयो तुम अपनी बुलाहटको देखते हो २६
कि न तुममें शरीरके अनुसार बहुत ज्ञानवान न बहुत
सामर्थी न बहुत कुलीन हैं। परन्तु ईश्वरने जगतके २७
मूर्खोंको चुना है कि ज्ञानवानोंको लज्जित करे और
जगतके दुर्ब्बलोंको ईश्वरने चुना है कि शक्तिमानोंको
लज्जित करे। और जगतके अधमों और तुच्छोंको हां २८
उन्हें जो नहीं हैं ईश्वरने चुना है कि उन्हें जो हैं लोप
करे. जिस्तें कोई प्राणी ईश्वरके आगे घमंड न करे। २९
उसीसे तुम खीष्ट यीशुमें हुए हो जो ईश्वरकी ओरसे ३०
हमोंको ज्ञान औ धर्म्म औ पवित्रता औ उद्धार हुआ
है. जिस्तें जैसा लिखा है जो बड़ाई करे सो परमेश्वरके ३१
विषयमें बड़ाई करे।

२ दूसरा पर्व्व ।

१ पावलका अपने उपदेशका बर्णन करना कि सांसारिक ज्ञानसे रहित परन्तु ईश्वरके सामर्थ्यके साथ था । ६ और उसमें दैव्य ज्ञानका प्रकाश था जो केवल पवित्र आत्माकी सहायतासे समझा जाता है ।

१ हे भाइयो मैं जब तुम्हारे पास आया तब बचन
अथवा ज्ञानकी उत्तमतासे तुम्हें ईश्वरकी साक्षी सुनाता
२ हुआ नहीं आया । क्योंकि मैंने यही ठहराया कि तुम्हों-
में और किसी बातको न जानूं केवल यीशु ख्रीष्टको हां
३ क्रूशपर मारे गये ख्रीष्टको । और मैं दुर्ब्बलता और भयके
४ साथ और बहुत कांपता हुआ तुम्हारे यहां रहा । और
मेरा बचन और मेरा उपदेश मनुष्योंके ज्ञानकी मनाने-
वाली बातोंसे नहीं परन्तु आत्मा और सामर्थ्यके
५ प्रमाणसे था . जिस्तें तुम्हारा बिश्वास मनुष्योंके
ज्ञानपर नहीं परन्तु ईश्वरके सामर्थ्यपर होवे ।

६ तौभी हम सिद्ध लोगोंमें ज्ञान सुनाते हैं पर इस
संसारका अथवा इस संसारके लोप होनेहारे प्रधानोंका
७ ज्ञान नहीं । परन्तु हम एक भेदमें ईश्वरका गुप्त ज्ञान
जिसे ईश्वरने सनातनसे हमारी महिमाके लिये ठहराया
८ सुनाते हैं . जिसे इस संसारके प्रधानोंमेंसे किसीने न
जाना क्योंकि जो वे उसे जानते तो तेजोमय प्रभुको
९ क्रूशपर घात न करते । परन्तु जैसा लिखा है जो आंखने
नहीं देखा और कानने नहीं सुना है और जो मनुष्यके
हृदयमें नहीं समाया है वही है जो ईश्वरने उनके लिये
१० जो उसे प्यार करते हैं तैयार किया है । परन्तु ईश्वरने
उसे अपने आत्मासे हमोंपर प्रगट किया है क्योंकि
आत्मा सब बातें हां ईश्वरकी गंभीर बातें भी जांचता

है। क्योंकि मनुष्योंमेंसे कौन है जो मनुष्यकी बातें ११
जानता है केवल मनुष्यका आत्मा जो उसमें है. वैसे-
ही ईश्वरकी बातें भी कोई नहीं जानता है केवल
ईश्वरका आत्मा। परन्तु हमने संसारका आत्मा नहीं १२
पाया है परन्तु वह आत्मा जो ईश्वरकी ओरसे है
इसलिये कि हम वह बातें जानें जो ईश्वरने हमें दिई
हैं. जो हम मनुष्योंके ज्ञानकी सिखाई हुई बातोंमें १३
नहीं परन्तु पवित्र आत्माकी सिखाई हुई बातोंमें आ-
त्मिक बातें आत्मिक बातोंसे मिला मिलाके सुनाते हैं।
परन्तु प्राणिक मनुष्य ईश्वरके आत्माकी बातें ग्रहण १४
नहीं करता है क्योंकि वे उसके लेखे मूर्खता हैं और
वह उन्हें नहीं जान सकता है क्योंकि उनका बिचार
आत्मिक रीतिसे किया जाता है। आत्मिक जन सब कुछ १५
बिचार करता है परन्तु वह आप किसीसे बिचार नहीं
किया जाता है। क्योंकि परमेश्वरका मन किसने जाना १६
है जो उसे सिखावे. परन्तु हमको खीष्टका मन है।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ करिन्थियोंको शारीरिक चालका उलहना। ५ प्रेरितोंके यथार्थ पदका निर्णय। १० खीष्ट जो मंडलीकी नेव है उसपर बनानेकी विधि। १६ ईश्वरके मन्दिरकी पवित्रता। १८ सांसारिक ज्ञानकी निष्फलता।

हे भाइयो मैं तुमसे जैसा आत्मिक लोगोंसे तैसा नहीं १
बात कर सका परन्तु जैसा शारीरिक लोगोंसे हां जैसा
उन्होंसे जो खीष्टमें बालक हैं। मैंने तुम्हें दूध पिलाया २
अन्न न खिलाया क्योंकि तुम तबलों नहीं खा सकते थे
बरन अबलों भी नहीं खा सकते हो क्योंकि अबलों
शारीरिक हो। क्योंकि जब कि तुम्होंमें डाह और बैर ३

और बिरोध हैं तो क्या तुम शारीरिक नहीं हो और
४ मनुष्यकी रीतिपर नहीं चलते हो । क्योंकि जब एक
कहता है मैं पावलका हूं और दूसरा मैं अपल्लोका हूं
तो क्या तुम शारीरिक नहीं हो ।
५ तो पावल कौन है और अपल्लो कौन है . केवल
सेवक लोग जिनके द्वारा जैसा प्रभुने हर एकको दिया
६ तैसा तुमने बिश्वास किया । मैंने लगाया अपल्लोने
७ सींचा परन्तु ईश्वरने बढ़ाया । सो न तो लगानेहारा
कुछ है और न सींचनेहारा परन्तु ईश्वर जो बढ़ाने-
८ हारा है । लगानेहारा और सींचनेहारा दोनों एक
हैं परन्तु हर एक जन अपनेही परिश्रमके अनुसार
९ अपनीही बनि पावेगा । क्योंकि हम ईश्वरके सह-
कर्म्मी हैं . तुम ईश्वरकी खेती ईश्वरकी रचना हो ।
१० ईश्वरके अनुग्रहके अनुसार जो मुझे दिया गया मैंने
ज्ञानवान थवईकी नाईं नेव डाली है और दूसरा मनुष्य
उसपर घर बनाता है . परन्तु हर एक मनुष्य सचेत
११ रहे कि वह किस रीतिसे उसपर बनाता है। क्योंकि जो
नेव पड़ी है अर्थात यीशु ख्रीष्ट उसे छोड़के दूसरी नेव
१२ कोई नहीं डाल सकता है । परन्तु यदि कोई इस नेवपर
सोना वा रूपा वा बहुमूल्य पत्थर वा काठ वा घास वा
१३ फूस बनावे . तो हर एकका काम प्रगट हो जायगा क्यों-
कि वही दिन उसे प्रगट करेगा इसलिये कि आग सहित
प्रकाश होता है और हर एकका काम कैसा है सो वह
१४ आग परखेगी । यदि किसीका काम जो उसने बनाया
१५ है ठहरे तो वह मजूरी पावेगा । यदि किसीका काम

जल जाय तो उसे टूटी लगेगी परन्तु वह आप बचेगा
पर ऐसा जैसा आगके बीचसे होके कोई बचे ।
क्या तुम नहीं जानते हो कि तुम ईश्वरके मन्दिर हो १६
और ईश्वरका आत्मा तुममें बसता है । यदि कोई मनुष्य १७
ईश्वरके मन्दिरको नाश करे तो ईश्वर उसको नाश करेगा
क्योंकि ईश्वरका मन्दिर पवित्र है और वह मन्दिर तुम हो।
कोई अपनेको छल न देवे . यदि कोई इस संसारमें १८
अपनेको तुम्होंमें ज्ञानी समझे तो मूर्ख बने जिस्तें ज्ञानी
हो जाय । क्योंकि इस जगतका ज्ञान ईश्वरके यहां १९
मूर्खता है क्योंकि लिखा है वह ज्ञानियोंको उनकी
चतुराईमें पकड़नेहारा है । और फिर परमेश्वर ज्ञानियों- २०
की चिन्ताएं जानता है कि वे व्यर्थ हैं । सो मनुष्योंके २१
विषयमें कोई घमंड न करे क्योंकि सब कुछ तुम्हारा
है । क्या पावल क्या अपल्लो क्या कैफा क्या जगत क्या २२
जीवन क्या मरण क्या बर्त्तमान क्या भविष्य सब कुछ तु-
म्हारा है । और तुम ख्रीष्टके हो और ख्रीष्ट ईश्वरका है । २३

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ प्रेरित लोग ईश्वरके सेवक हैं और उनका बिचार ईश्वरही करेगा इसका वर्णन । ६ अभिमान और बिभेदका उलहना और प्रेरितोंके दुःख और दीनताईका बखान । १४ पावलका करिन्थियोंको बालकोंकी नाईं उपदेश देना और अभिमानियोंको चिताना ।

यूंही मनुष्य हमें ख्रीष्टके सेवक और ईश्वरके भेदोंके १
भंडारी करके जाने । फिर भंडारियोंमें लोग यह चाहते २
हैं कि मनुष्य बिश्वासयोग्य पाया जाय । परन्तु मेरे ३
लेखे अति छोटी बात है कि मेरा बिचार तुम्होंसे अथवा
मनुष्यके न्यायसे किया जाय हां मैं अपना बिचार भी

४ नहीं करता हूं। क्योंकि मेरे जानतेमें कुछ मुझसे नहीं
हुआ परन्तु इससे मैं निर्दोष नहीं ठहरा हूं पर मेरा
५ बिचार करनेहारा प्रभु है। सो जबलों प्रभु न आवे
समयके आगे किसी बातका बिचार मत करो . वही
तो अन्धकारकी गुप्त बातें ज्योतिमें दिखावेगा और
हृदयोंके परामर्शोंको प्रगट करेगा और तब ईश्वरकी
ओरसे हर एककी सराहना होगी।
६ इन बातोंको हे भाइयो तुम्हारे कारण मैंने अपनेपर
और अपल्लोपर दृष्टान्तसा लगाया है इसलिये कि हमों-
में तुम यह सीखो कि जो लिखा हुआ है उससे अधिक
ऊंचा मन न रखो जिस्तें तुम एक दूसरेके पक्षमें और
७ मनुष्यके बिरुद्ध फूल न जावो। क्योंकि कौन तुझे भिन्न
करता है . और तेरे पास क्या है जो तूने दूसरेसे नहीं
पाया है . और यदि तूने दूसरेसे पाया है तो क्यों ऐसा
८ घमंड करता है कि मानो दूसरेसे नहीं पाया। तुम तो
तृप्त हो चुके तुम धनी हो चुके तुमने हमारे बिना राज्य
किया है हां मैं चाहता हूं कि तुम राज्य करते जिस्तें
९ हम भी तुम्हारे संग राज्य करें। क्योंकि मैं समझता हूं
कि ईश्वरने सबके पीछे हम प्रेरितोंको जैसे मृत्युके
लिये ठहराये हुओंको प्रत्यक्ष दिखाया है क्योंकि हम
जगतके हां दूतों और मनुष्योंके आगे लीलाके ऐसे बने
१० हैं। हम खीष्टके कारण मूर्ख हैं पर तुम खीष्टमें बुद्धिमान
हो . हम दुर्ब्बल हैं पर तुम बलवन्त हो . तुम मर्य्या-
११ दिक हो पर हम निरादर हैं। इस घड़ीलों हम भूखे
और प्यासे और नंगे भी रहते हैं और घूसे मारे जाते

और डांवाडोल रहते हैं और अपनेही हाथोंसे कमानेमें
परिश्रम करते हैं। हम अपमान किये जानेपर आशीस १२
देते हैं सताये जानेपर सह लेते हैं निन्दित होनेपर बिन्ती
करते हैं। हम अबलों जगतका कूड़ा हां सब वस्तु- १३
ओंकी खुरचनके ऐसे बने हैं।
मैं यह बातें तुम्हें लज्जित करनेको नहीं लिखता हूं १४
परन्तु अपने प्यारे बालकोंकी नाईं तुम्हें चिताता हूं।
क्योंकि तुम्हें खीष्टमें यदि दस सहस्र शिक्षक हों तौभी १५
बहुत पिता नहीं हैं क्योंकि खीष्ट यीशुमें सुसमाचारके
द्वारा तुम मेरेही पुत्र हो। सो मैं तुमसे बिन्ती करता हूं १६
तुम मेरीसी चाल चलो। इस हेतुसे मैंने तिमोथिय- १७
को जो प्रभुमें मेरा प्यारा और बिश्वासयोग्य पुत्र है
तुम्हारे पास भेजा है और खीष्टमें जो मेरे मार्ग हैं उन्हें
वह जैसा मैं सर्ब्बत्र हर एक मंडलीमें उपदेश करता हूं
तैसा तुम्हें चेत दिलावेगा। कितने लोग फूल गये हैं १८
मानो कि मैं तुम्हारे पास नहीं आनेवाला हूं। परन्तु १९
जो प्रभुकी इच्छा होय तो मैं शीघ्र तुम्हारे पास आऊंगा
और उन फूले हुए लोगोंका बचन नहीं परन्तु सामर्थ्य
बूझ लेऊंगा। क्योंकि ईश्वरका राज्य बचनमें नहीं परन्तु २०
सामर्थ्यमें है। तुम क्या चाहते हो. मैं छड़ी लेके अथवा २१
प्रेमसे और नम्रताके आत्मासे तुम्हारे पास आऊं।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ एक व्यभिचारीको मंडलीसे निकालनेका उपदेश। ६ मंडलीके शुद्ध होनेकी आवश्यकता। ९ जो लोग बिश्वासी कहावें परन्तु कुकर्म्म करें उनसे अलग रहनेकी आज्ञा।

१ यह सर्व्वत्र सुननेमें आता है कि तुम्होंमें ब्यभिचार
है और ऐसा ब्यभिचार कि उसका चर्चा देवपूजकोंमें
भी नहीं होता है कि कोई मनुष्य अपने पिताकी स्त्रीसे
२ बिवाह करे। और तुम फूल गये हो यह नहीं कि शोक
किया जिस्तें यह काम करनेहारा तुम्हारे बीचमेंसे
३ निकाला जाता। मैं तो शरीरमें दूर परन्तु आत्मामें
साक्षात होके जिसने यह काम इस रीतिसे किया है
४ उसका बिचार जैसा साक्षातमें कर चुका हूं. कि हमारे
प्रभु यीशु खीष्टके नामसे जब तुम और मेरा आत्मा
हमारे प्रभु यीशु खीष्टके सामर्थ्य सहित एकट्ठे हुए हैं.
५ तब ऐसा जन शरीरके बिनाशके लिये शैतानको सोंपा
जाय जिस्तें आत्मा प्रभु यीशुके दिनमें त्राण पावे।
६ तुम्हारा घमंड करना अच्छा नहीं है. क्या तुम
नहीं जानते हो कि थोड़ासा खमीर सारे पिंड्को खमीर
७ कर डालता है। सो पुराना खमीर सबका सब निकालो
कि जैसे तुम अखमीरी हो तैसे नया पिंड होओ क्योंकि
हमारा निस्तार पर्व्वका मेम्ना अर्थात खीष्ट हमारे लिये
८ बलि दिया गया है। सो हम पर्व्वको न तो पुराने
खमीरसे और न बुराई औ दुष्टताके खमीरसे परन्तु
सीधाई औ सच्चाईके अखमीरी भावसे रखें।
९ मैंने तुम्हारे पास पत्रीमें लिखा कि ब्यभिचारियोंकी
१० संगति मत करो। यह नहीं कि तुम इस जगतके
ब्यभिचारियों वा लोभियों वा उपद्रवियों वा मूर्त्तिपूजकों-
की सब्बथा संगति न करो नहीं तो तुम्हें जगतमेंसे निकल
११ जाना अवश्य होता। सो मैंने तुम्हारे पास यही लिखा

कि यदि कोई जो भाई कहलाता है व्यभिचारी वा
लोभी वा मूर्त्तिपूजक वा निन्दक वा मद्यप वा उपद्रवी
होय तो उसकी संगति मत करो बरन ऐसे मनुष्यके संग
खाओ भी नहीं । क्योंकि मुझे बाहरवालोंका बिचार १२
करनेसे क्या काम . क्या तुम भीतरवालोंका बिचार नहीं
करते हो । पर बाहरवालोंका बिचार ईश्वर करता है. १३
फिर उस कुकर्म्मीको अपनेमेंसे निकाल देओ ।

६ छठवां पर्ब्ब ।

१ अबिश्वासियोंके आगे नालिश करनेका निषेध । १० ईश्वरके राज्यकी पवित्रता ।
१२ बिश्वासियोंके देह जो खीष्टके अंग और पवित्र आत्माके मन्दिर हैं इस
कारण व्यभिचारका निषेध ।

तुममेंसे जो किसी जनको दूसरेसे बिबाद होय तो १
क्या उसे अधर्म्मियोंके आगे नालिश करनेका साहस
होता है और पवित्र लोगोंके आगे नहीं । क्या तुम नहीं २
जानते हो कि पवित्र लोग जगतका बिचार करेंगे और
यदि जगतका बिचार तुमसे किया जाता है तो क्या
तुम सबसे छोटी बातोंका निर्णय करनेके अयोग्य हो ।
क्या तुम नहीं जानते हो कि सांसारिक बातें पीछे रहे ३
हम तो स्वर्गदूतोंहीका बिचार करेंगे । सो यदि तुम्हें ४
सांसारिक बातोंका निर्णय करना होय तो जो मंडलीमें
कुछ नहीं गिने जाते हैं उन्हींको बैठाओ । मैं तुम्हारी ५
लज्जा निमित्त कहता हूं . क्या ऐसा है कि तुम्होंमें एक
भी ज्ञानी नहीं है जो अपने भाइयोंके बीचमें बिचार
कर सकेगा । परन्तु भाई भाईपर नालिश करता है और ६
सोई अबिश्वासियोंके आगे भी । सो तुम्होंमें निश्चय ७
दोष हुआ है कि तुम्होंमें आपसमें बिबाद होते हैं. क्यों

नहीं बरन अन्याय सहते हो . क्यों नहीं बरन ठगाई
८ सहते हो । परन्तु तुम अन्याय करते और ठगते हो
९ हां भाइयोंसे भी यह करते हो । क्या तुम नहीं जानते हो
कि अन्याई लोग ईश्वरके राज्यके अधिकारी न होंगे ।
१० धोखा मत खाओ . न व्यभिचारी न मूर्त्तिपूजक न
परस्त्रीगामी न शुहदे न पुरुषगामी न चोर न लोभी
न मद्यप न निन्दक न उपद्रवी लोग ईश्वरके राज्यके
११ अधिकारी होंगे । और तुममेंसे कितने लोग ऐसे थे
परन्तु तुमने अपनेको धोया परन्तु तुम पवित्र किये
गये परन्तु तुम प्रभु यीशुके नामसे और हमारे ईश्वरके
आत्मासे धर्म्मी ठहराये गये ।
१२ सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ
लाभका नहीं है . सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु
१३ मैं किसी बातके अधीन नहीं होंगा । भोजन पेटके
लिये और पेट भोजनके लिये है परन्तु ईश्वर इसको
और उसको दोनोंको क्षय करेगा . पर देह व्यभिचारके
लिये नहीं है परन्तु प्रभुके लिये और प्रभु देहके लिये
१४ है । और ईश्वरने अपने सामर्थ्यसे प्रभुको जिला उठाया
१५ और हमें भी जिला उठावेगा । क्या तुम नहीं जानते
हो कि तुम्हारे देह ख्रीष्टके अंग हैं . सो क्या मैं ख्रीष्टके
अंग ले करके उन्हें बेश्याके अंग बनाऊं . ऐसा न हो ।
१६ क्या तुम नहीं जानते हो कि जो बेश्यासे मिल जाता
है सो एक देह होता है क्योंकि कहा है वे दोनों एक
१७ तन होंगे । परन्तु जो प्रभुसे मिल जाता है सो एक
१८ आत्मा होता है । व्यभिचारसे बचे रहो . हर एक

पाप जो मनुष्य करता है देहके बाहर है परन्तु व्य-
भिचार करनेहारा अपनेही देहके बिरुद्ध पाप करता
है । क्या तुम नहीं जानते हो कि पवित्र आत्मा जो १९
तुममें है जो तुम्हें ईश्वरकी ओरसे मिला है तुम्हारा
देह उसी पवित्र आत्माका मन्दिर है और तुम अपने
नहीं हो । क्योंकि तुम दाम देके मोल लिये गये हो २०
सो अपने देहमें और अपने आत्मामें जो ईश्वरके हैं
ईश्वरकी महिमा प्रगट करो ।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ स्त्री पुरुषके व्यवहारके विषयमें पावलका करिन्थियोंके प्रश्नका उत्तर देना । १२ बिश्वासी और अविश्वासी स्त्री पुरुषके संबन्धका ब्योरा । १७ जिस दशामें जो बुलाया जाय उसके उस दशामें रहनेका उपदेश । २५ कुंवारियोंके विषयमें पावलका परामर्श । २९ जगतके अनित्य होनेका चेत दिलाना । ३२ विवाह किया कि न किया चाहिये इसका निर्णय ।

जो बातें तुमने मेरे पास लिखीं उनके विषयमें मैं १
कहता हूं मनुष्यके लिये अच्छा है कि स्त्रीको न छूवे।
परन्तु व्यभिचार कर्म्मोंके कारण हर एक मनुष्यको अप- २
नीही स्त्री होय और हर एक स्त्रीको अपनाही स्वामी
होय । पुरुष अपनी स्त्रीसे जो स्नेह उचित है सो किया ३
करे और वैसेही स्त्री भी अपने स्वामीसे । स्त्रीको ४
अपने देहपर अधिकार नहीं पर उसके स्वामीको अ-
धिकार है और वैसेही पुरुषको भी अपने देहपर
अधिकार नहीं पर उसकी स्त्रीको अधिकार है । तुम ५
एक दूसरेसे मत अलग रहो केवल तुम्हें उपवास औ
प्रार्थनाके लिये अवकाश मिलनेके कारण जो दोनोंकी
सम्मतिसे तुम कुछ दिन अलग रहो तो रहो और फिर

एकट्ठे होओ जिस्तें शैतान तुम्हारे असंयमके कारण तुम्हा-
६ री परीक्षा न करे। परन्तु मैं जो यह कहता हूं सो
७ अनुमति देता हूं आज्ञा नहीं करता हूं। मैं तो चाहता
हूं कि सब मनुष्य ऐसे होवें जैसा मैं आपही हूं परन्तु
हर एकने ईश्वरकी ओरसे अपना अपना बरदान पाया
८ है किसीने इस प्रकारका किसीने उस प्रकारका। पर
मैं अबिवाहितोंसे और बिधवाओंसे कहता हूं कि यदि
९ वे जैसा मैं हूं तैसे रहें तो उनके लिये अच्छा है। परन्तु
जो वे असंयमी होवें तो बिवाह करें क्योंकि बिवाह
१० करना जलते रहनेसे अच्छा है। बिवाहितोंको मैं नहीं
परन्तु प्रभु आज्ञा देता है कि स्त्री अपने स्वामीसे अलग
११ न होय। पर जो वह अलग भी होय तो अबिवाहिता
रहे अथवा अपने स्वामीसे मिल जाय. और पुरुष
अपनी स्त्रीको न त्यागे।

१२ दूसरोंसे प्रभु नहीं परन्तु मैं कहता हूं यदि किसी
भाईको अबिश्वासिनी स्त्री होय और वह स्त्री उसके संग
१३ रहनेको प्रसन्न होय तो वह उसे न त्यागे। और जिस
स्त्रीको अबिश्वासी स्वामी होय और वह स्वामी उसके
१४ संग रहनेको प्रसन्न होय वह उसे न त्यागे। क्योंकि वह
अबिश्वासी पुरुष अपनी स्त्रीके कारण पवित्र किया
गया है और वह अबिश्वासिनी स्त्री अपने स्वामीके
कारण पवित्र किई गई है नहीं तो तुम्हारे लड़के
१५ अशुद्ध होते पर अब तो वे पवित्र हैं। परन्तु जो
वह अबिश्वासी जन अलग होता है तो अलग होय.
ऐसी दशामें भाई अथवा बहिन बंधा हुआ नहीं है.

परन्तु ईश्वरने हमें मिलापके लिये बुलाया है। क्योंकि १६
हे स्त्री तू क्या जानती है कि तू अपने स्वामीको
बचावेगी कि नहीं अथवा हे पुरुष तू क्या जानता है
कि तू अपनी स्त्रीको बचावेगा कि नहीं ।

परन्तु जैसा ईश्वरने हर एकको बांट दिया है जैसा १७
प्रभुने हर एकको बुलाया है तैसाही वह चले . और
मैं सब मंडलियोंमें यूंही आज्ञा देता हूं । कोई खतना १८
किया हुआ बुलाया गया हो तो खतनाहीनसा न बने .
कोई खतनाहीन बुलाया गया हो तो खतना न किया
जाय । खतना कुछ नहीं है और खतनाहीन होना कुछ १९
नहीं है परन्तु ईश्वरकी आज्ञाओंका पालन करना
सार है । हर एक जन जिस दशामें बुलाया गया उसीमें २०
रहे । क्या तू दास हो करके बुलाया गया . चिन्ता २१
मत कर पर यदि तेरा उद्धार हो भी सकता है तो
बरन उसको भोग कर। क्योंकि जो दास प्रभुमें बुलाया २२
गया है सो प्रभुका निर्बन्ध किया हुआ है और वैसेही
निर्बन्ध जो बुलाया गया है सो ख्रीष्टका दास है। तुम २३
दाम देके मोल लिये गये हो . मनुष्योंके दास मत
बनो । हे भाइयो हर एक जन जिस दशामें बुलाया २४
गया ईश्वरके आगे उसीमें बना रहे।

कुंवारियोंके बिषयमें प्रभुकी कोई आज्ञा मुझे नहीं २५
मिली है परन्तु जैसा प्रभुने मुझपर दया किई है कि
मैं बिश्वासयोग्य होऊं तैसा मैं परामर्श देता हूं । सो मैं २६
बिचार करता हूं कि वर्त्तमान क्लेशके कारण यही अच्छा
है अर्थात मनुष्यको वैसेही रहना अच्छा है । क्या तू २७

स्त्रीके संग बंधा है . छूटनेका यत्न मत कर . क्या तू
२८ स्त्रीसे छूटा है . स्त्रीकी इच्छा मत कर। तौभी जो तू
बिवाह करे तो तुझे पाप नहीं हुआ और यदि कुंवारी
बिवाह करे तो उसे पाप नहीं हुआ पर ऐसोंको शरीर-
में क्लेश होगा . परन्तु मैं तुमपर भार नहीं देता हूं।
२९ हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि अब तो समय संक्षेप
किया गया है इसलिये कि जिन्हें स्त्रियां हैं सो ऐसे होवें
३० जैसे उन्हें स्त्रियां नहीं . और रोनेहारे भी ऐसे हों जैसे
नहीं रोते और आनन्द करनेहारे ऐसे हों जैसे आनन्द
नहीं करते और मोल लेनेहारे ऐसे हों जैसे नहीं रखते .
३१ और इस संसारके भोग करनेहारे ऐसे हों जैसे अतिभोग
नहीं करते क्योंकि इस संसारका रूप बीतता जाता है।
३२ मैं चाहता हूं कि तुम्हें चिन्ता न हो . अबिवाहित
पुरुष प्रभुकी बातोंकी चिन्ता करता है कि प्रभुको
३३ क्योंकर प्रसन्न करे। परन्तु बिवाहित पुरुष संसारकी
बातोंकी चिन्ता करता है कि अपनी स्त्रीको क्योंकर
३४ प्रसन्न करे। जोरू और कुंवारीमें भी भेद है . अबि-
वाहिता नारी प्रभुकी बातोंकी चिन्ता करती है कि
वह देह और आत्मामें भी पवित्र होवे परन्तु बिवा-
हिता नारी संसारकी बातोंकी चिन्ता करती है कि
३५ अपने स्वामीको क्योंकर प्रसन्न करे। पर मैं यह बात
तुम्हारेही लाभके लिये कहता हूं अर्थात मैं जो तुमपर
फंदा डालूं इसलिये नहीं परन्तु तुम्हारे शुभ चाल
चलने और दुचित्त न होके प्रभुमें लौलीन रहनेके
३६ लिये कहता हूं। परन्तु यदि कोई समझे कि मैं अपनी

कन्यासे अशुभ काम करता हूं जो वह स्यानी हो और
ऐसा होना अवश्य है तो वह जो चाहता है सो करे
उसे पाप नहीं है . वे बिवाह करें। पर जो मनमें ३७
दृढ़ रहता है और उसको आवश्यक नहीं पर अपनी
इच्छाके विषयमें अधिकार है और यह बात अपने
मनमें ठहराई है कि अपनी कन्याको रखे वह अच्छा
करता है। इसलिये जो बिवाह देता है सो अच्छा ३८
करता है और जो बिवाह नहीं देता है सो भी और
अच्छा करता है।

स्त्री जबलों उसका स्वामी जीता रहे तबलों व्यव- ३९
स्थासे बंधी है परन्तु यदि उसका स्वामी मर जाय तो
वह निर्बन्ध है कि जिससे चाहे उससे ब्याही जाय .
पर केवल प्रभुमें। परन्तु जो वह वैसीही रहे तो मेरे ४०
बिचारमें और भी धन्य है और मैं समझता हूं कि
ईश्वरका आत्मा मुझमें भी है।

८ आठवां पर्ब्ब।

१ प्रेमका ज्ञानसे उत्तम होना । ४ मूर्त्ति कुछ नहीं है परन्तु ईश्वर सब कुछ है इसका बर्णन । ७ मूर्त्तिके सन्मुख भोजन करनेसे निर्ब्बल भाईको ठोकर खिलाना उचित न होना ।

मूरतोंके आगे बलि किई हुई बस्तुओंके विषयमें मैं १
कहता हूं . हम जानते हैं कि हम सभोंको ज्ञान है .
ज्ञान फुलाता है परन्तु प्रेम सुधारता है। यदि कोई २
समझे कि मैं कुछ जानता हूं तो जैसा जानना उचित
है तैसा अबलों कुछ नहीं जानता है। परन्तु यदि ३
कोई जन ईश्वरको प्यार करता है तो वही ईश्वरसे
जाना जाता है।

४ सो मूरतोंके आगे बलि किई हुई वस्तुओंके खानेके
विषयमें मैं कहता हूं . हम जानते हैं कि मूर्त्ति जगतमें
कुछ नहीं है और कि एक ईश्वरको छोड़के कोई दूसरा
५ ईश्वर नहीं है । क्योंकि यद्यपि क्या आकाशमें क्या
पृथिवीपर कितने हैं जो ईश्वर कहलाते हैं जैसा बहुतसे
६ देव और बहुतसे प्रभु हैं . तौभी हमारे लिये एक
ईश्वर पिता है जिससे सब कुछ है और हम उसके
लिये हैं और एक प्रभु यीशु खीष्ट है जिसके द्वारासे सब
कुछ है और हम उसके द्वारासे हैं ।
७ परन्तु सभोंमें यह ज्ञान नहीं है पर कितने लोग
अबलों मूर्त्ति जानके मूर्त्तिके आगे बलि किई हुई वस्तु
मानके उस वस्तुको खाते हैं और उनका मन दुर्ब्बल
८ होके अशुद्ध किया जाता है । भोजन तो हमें ईश्वरके
निकट नहीं पहुंचाता है क्योंकि यदि हम खावें तो हमें
कुछ बढ़ती नहीं और यदि नहीं खावें तो कुछ घटती
९ भी नहीं । परन्तु सचेत रहो ऐसा न हो कि तुम्हारा
यह अधिकार कहीं दुर्ब्बलोंके लिये ठोकरका कारण हो
१० जाय । क्योंकि यदि कोई तुझे जिसको ज्ञान है मूर्त्तिके
मन्दिरमें भोजनपर बैठे देखे तो क्या इसलिये कि वह
दुर्ब्बल है उसका मन मूर्त्तिके आगे बलि किई हुई वस्तु
११ खानेको दृढ़ न किया जायगा । और क्या वह दुर्ब्बल
भाई जिसके लिये खीष्ट मूआ तेरे ज्ञानके हेतु नाश न
१२ होगा । परन्तु इस रीतिसे भाइयोंका अपराध करनेसे
और उनके दुर्ब्बल मनको चोट देनेसे तुम खीष्टका
१३ अपराध करते हो । इस कारण यदि भोजन मेरे भाईको

ठोकर खिलाता हो तो मैं कभी किसी रीतिसे मांस न
खाऊंगा न हो कि मैं अपने भाईको ठोकर खिलाऊं।

९ नवां पर्ब्ब ।

१ सुसमाचारके प्रचारकोंका प्रतिपालन किस रीतिसे हुआ चाहिये इसका निर्णय। १५ पावलका इस बातके विषयमें अपने चरित्रका बर्णन करना। २४ अखाड़ेमें दौड़नेका दृष्टान्त।

क्या मैं प्रेरित नहीं हूं . क्या मैं निर्बन्ध नहीं हूं. १
क्या मैंने हमारे प्रभु यीशु खीष्टको नहीं देखा है . क्या
तुम प्रभुमें मेरे कृत नहीं हो। जो मैं औरोंके लिये २
प्रेरित नहीं हूं तौभी तुम्हारे लिये तो हूं क्योंकि तुम
प्रभुमें मेरी प्रेरिताईकी छाप हो। जो मुझे जांचते हैं ३
उनके लिये यही मेरा उत्तर है। क्या हमें खाने और ४
पीनेका अधिकार नहीं है। क्या जैसा दूसरे प्रेरितों ५
और प्रभुके भाइयोंको और कैफाको तैसा हमको भी
अधिकार नहीं है कि एक धर्म्मबहिनसे विवाह करके
उसे लिये फिरें। अथवा क्या केवल मुझको और बर्ण- ६
बाको अधिकार नहीं है कि कमाई करना छोड़ें। कौन ७
कभी अपनेही खर्चसे योद्धापन किया करता है. कौन
दाखकी बारी लगाता है और उसका कुछ फल नहीं खा-
ता है . अथवा कौन भेड़ोंके झुंडकी रखवाली करता है
और झुंडका कुछ दूध नहीं खाता है। क्या मैं यह ८
बातें मनुष्यकी रीतिपर बोलता हूं . क्या ब्यवस्था भी
यह बातें नहीं कहती है। क्योंकि मूसाकी ब्यवस्थामें ९
लिखा है कि दावनेहारे बैलका मुंह मत बांध . क्या
ईश्वर बैलोंकी चिन्ता करता है। अथवा क्या वह १०
निज करके हमारे कारण कहता है. हमारेही कारण

लिखा गया कि उचित है कि हल जोतनेहारा आशासे
हल जोते और दावनेहारा भागी होनेकी आशासे
११ दावनी करे। यदि हमने तुम्हारे लिये आत्मिक बस्तु
बोई हैं तो हम जो तुम्हारी शारीरिक बस्तु लवें क्या
१२ यह बड़ी बात है। यदि दूसरे जन तुमपर इस अधि-
कारके भागी हैं तो क्या हम अधिक करके नहीं हैं.
परन्तु हम यह अधिकार काममें न लाये पर सब कुछ
सहते हैं जिस्तें खीष्टके सुसमाचारको कुछ रोक न करें।
१३ क्या तुम नहीं जानते हो कि जो लोग याजकीय कर्म्म
करते हैं सो मन्दिरमेंसे खाते हैं और जो लोग बेदीकी
१४ सेवा करते हैं सो बेदीके अंशधारी होते हैं। यूंही
प्रभुने भी जो लोग सुसमाचार सुनाते हैं उनके लिये
ठहराया है कि सुसमाचारसे उनकी जीविका होय।
१५ परन्तु मैं इन बातोंमेंसे कोई बात काममें नहीं
लाया और मैंने तो यह बातें इसलिये नहीं लिखीं कि
मेरे विषयमें यूंही किया जाय क्योंकि मरना मेरे लिये
इससे भला है कि कोई मेरा बड़ाई करना व्यर्थ ठहरावे।
१६ क्योंकि जो मैं सुसमाचार प्रचार करूं तो इससे कुछ
मेरी बड़ाई नहीं है क्योंकि मुझे अवश्य पड़ता है और
जो मैं सुसमाचार प्रचार न करूं तो मुझे सन्ताप है।
१७ क्योंकि जो मैं अपनी इच्छासे यह करता हूं तो मजूरी
मुझे मिलती है पर जो अनिच्छासे तो भंडारीपन मुझे
१८ सौंपा गया है। सो मेरी कौनसी मजूरी है. यह कि
सुसमाचार प्रचार करनेमें मैं खीष्टका सुसमाचार संतका
ठहराऊं यहांलों कि सुसमाचारमें जो मेरा अधिकार है

उसका मैं अतिभाग न करूं। क्योंकि सभोंसे निर्बन्ध १९
होके मैंने अपनेको सभोंका दास बनाया कि मैं अधिक
लोगोंको प्राप्त करूं। और यिहूदियोंके लिये मैं यिहूदीसा २०
बना कि यिहूदियोंको प्राप्त करूं . जो लोग व्यवस्थाके
अधीन हैं उनके लिये मैं व्यवस्थाके अधीनके ऐसा बना
कि उन्हें जो व्यवस्थाके अधीन हैं प्राप्त करूं। व्यवस्था- २१
हीनोंके लिये मैं जो ईश्वरकी व्यवस्थासे हीन नहीं
परन्तु ख्रीष्टकी व्यवस्थाके अधीन हूं व्यवस्थाहीनसा
बना कि व्यवस्थाहीनोंको प्राप्त करूं। मैं दुर्ब्बलोंके लिये २२
दुर्ब्बलसा बना कि दुर्ब्बलोंको प्राप्त करूं . मैं सभोंके
लिये सब कुछ बना हूं कि मैं अवश्य कई एकको
बचाऊं। और यही मैं सुसमाचारके कारण करता हूं २३
कि मैं उसका भागी हो जाऊं।

क्या तुम नहीं जानते हो कि अखाड़ेमें दौड़नेहारे २४
सबही दौड़ते हैं परन्तु जीतनेका फल एकही पाता है.
तुम वैसेही दौड़ो कि तुम प्राप्त करो। और हर एक २५
लड़नेहारा सब बातोंमें संयमी रहता है . सो वे तो
नाशमान मुकुट परन्तु हम लोग अविनाशी मुकुट
लेनेको ऐसे रहते हैं। मैं भी तो ऐसा दौड़ता हूं जैसा २६
बिन दुबधासे दौड़ता मैं ऐसा नहीं मुष्टि लड़ता हूं जैसा
बयारको पीटता हुआ लड़ता। परन्तु मैं अपने देहको २७
ताड़ना करके बशमें लाता हूं ऐसा न हो कि मैं औरोंको
उपदेश देके आपही किसी रीतिसे निकृष्ट बनूं।

१० दसवां पर्ब्ब।

१ इस्रायेलियोंके दृष्टान्तसे करिन्थियोंको चिताना। १५ मूरतोंके चढ़ावोंमें भागी होनेका निषेध। २३ भाइयोंको सुधारनेका काम करनेका उपदेश।

१ हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम इससे अन-
जान रहो कि हमारे पितर लोग सब मेघके नीचे थे
२ और सब समुद्रके बीचमेंसे गये । और सभोंको मेघमें
और समुद्रमें मूसाके संबन्धका बपतिसमा दिया गया।
३ ४ और सभोंने एकही आत्मिक भोजन खाया। और सभोंने
एकही आत्मिक पानी पिया क्योंकि वे उस आत्मिक
पर्ब्बतसे जो उनके पीछे पीछे चलता था पीते थे और
५ वह पर्ब्बत खीष्ट था । परन्तु ईश्वर उनमेंके अधिक
लोगोंसे प्रसन्न नहीं था क्योंकि वे जंगलमें मारे पड़े।
६ यह बातें हमारे लिये दृष्टान्त हुईं इसलिये कि जैसे
उन्होंने लालच किया तैसे हम लोग बुरी बस्तुओंके
७ लालची न होवें । और न तुम मूर्त्तिपूजक होओ जैसे
उन्होंमेंसे कितने थे जैसा लिखा है लोग खाने और
८ पीनेको बैठे और खेलनेको उठे। और न हम ब्यभिचार
करें जैसा उन्होंमेंसे कितनोंने ब्यभिचार किया और एक
९ दिनमें तेईस सहस्र गिरे । और न हम खीष्टकी परीक्षा
करें जैसा उन्होंमेंसे कितनोंने परीक्षा किई और सांपोंसे
१० नाश किये गये। और न कुड़कुड़ाओ जैसा उन्होंमेंसे
११ कितने कुड़कुड़ाये और नाशकसे नाश किये गये। पर यह
सब बातें जो उनपर पड़ीं दृष्टान्त थीं और वे हमारी
चितावनीके कारण लिखी गईं जिनके आगे जगतके
१२ अन्त समय पहुंचे हैं । इसलिये जो समझता है कि मैं
१३ खड़ा हूं सो सचेत रहे कि गिर न पड़े । तुमपर कोई
परीक्षा नहीं पड़ी है केवल ऐसी जैसी मनुष्यको हुआ
करती है और ईश्वर बिश्वासयोग्य है जो तुम्हें तुम्हारे

सामर्थ्यके बाहर परीक्षित होने न देगा परन्तु परीक्षाके
साथ निकास भी करेगा कि तुम सह सको । इस १४
कारण हे मेरे प्यारो मूर्त्तिपूजासे बचे रहो ।

मैं जैसा बुद्धिमानोंसे बोलता हूं . जो मैं कहता हूं १५
उसे तुम बिचार करो । वह धन्यबादका कटोरा जिसके १६
ऊपर हम धन्यबाद करते हैं क्या खीष्टके लोहूकी संगति
नहीं है . वह रोटी जिसे हम तोड़ते हैं क्या खीष्टके
देहकी संगति नहीं है । एक रोटी है इसलिये हम जो १७
बहुत हैं एक देह हैं क्योंकि हम सब उस एक रोटीके
भागी होते हैं। शारीरिक इस्रायेलको देखो . क्या बलि- १८
दानोंके खानेहारे बेदीके साझी नहीं हैं । तो मैं क्या १९
कहता हूं . क्या यह कि मूर्त्ति कुछ है अथवा कि मूर्त्तिके
आगेका बलिदान कुछ है । नहीं पर यह कि देवपूजक २०
लोग जो कुछ बलिदान करते हैं सो ईश्वरके आगे नहीं
पर भूतोंके आगे बलिदान करते हैं और मैं नहीं चाहता
हूं कि तुम भूतोंके साझी हो जाओ । तुम प्रभुके कटोरे २१
और भूतोंके कटोरे दोनोंसे नहीं पी सकते हो . तुम
प्रभुकी मेज और भूतोंकी मेज दोनोंके भागी नहीं हो
सकते हो । अथवा क्या हम प्रभुको छेड़ते हैं . क्या २२
हम उससे अधिक शक्तिमान हैं ।

सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ लाभका २३
नहीं है . सब कुछ मेरे लिये उचित है परन्तु सब कुछ
नहीं सुधारता है । कोई अपना लाभ न ढूंढ़े परन्तु हर २४
एक जन दूसरेका लाभ ढूंढ़े । जो कुछ मांसकी हाटमें २५
बिकता है सो खाओ और बिवेकके कारण कुछ मत

२६ पूछो . क्योंकि पृथिवी और उसकी सारी सम्पत्ति
२७ परमेश्वरकी है । और यदि अबिश्वासियोंमेंसे कोई
तुम्हें नेवता देवे और तुम्हें जानेकी इच्छा होय तो जो
कुछ तुम्हारे आगे रखा जाय सो खाओ और विवेकके
२८ कारण कुछ मत पूछो । परन्तु यदि कोई तुमसे कहे
यह तो मूर्त्तिके आगे बलि किया हुआ है तो उसी
बतानेहारेके कारण और बिवेकके कारण मत खाओ
(क्योंकि पृथिवी और उसकी सारी सम्पत्ति परमेश्वर-
२९ की है)। बिवेक जो मैं कहता हूं सो अपना नहीं परन्तु
उस दूसरेका क्योंकि मेरी निर्बन्धता क्यों दूसरेके बिवेक-
३० से विचार किई जाती है । जो मैं धन्यवाद करके भागी
होता हूं तो जिसके ऊपर मैं धन्य मानता हूं उसके
३१ लिये मेरी निन्दा क्यों होती है । सो तुम जो खावो
अथवा पीवो अथवा कोई काम करो तो सब कुछ ईश्वर-
३२ की महिमाके लिये करो । न यिहूदियों न यूनानि-
३३ योंको न ईश्वरकी मंडलीको ठोकर खिलाओ . जैसा
मैं भी सब बातोंमें सभोंको प्रसन्न करता हूं और अपना
लाभ नहीं परन्तु बहुतोंका लाभ ढूंढ़ता हूं कि वे
त्राण पावें ।

११ एग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ ऊपरके उपदेशकी समाप्ति । २ पुरुष और स्त्रीका कैसा पहिरावा भजनकी सभामें चाहिये इसका निर्णय । १७ प्रभु भोजमें जो करिन्थीय मंडलीकी अनरीति होती थी उसका उलहना । २३ प्रभु भोजके निरूपणका वृत्तान्त । २६ प्रभु भोजके आगे अपना मन जांचनेकी आवश्यकता ।

१ तुम मेरीसी चाल चलो जैसा मैं खीष्टकीसी चाल
चलता हूं ।

कहा यह कटोरा मेरे लोहूपर नया नियम है. जब जब
तुम इसे पीवो तब मेरे स्मरणके लिये यह किया करो।
क्योंकि जब जब तुम यह रोटी खावो और यह कटो- २६
रा पीवो तब प्रभुकी मृत्युको जबलों वह न आवे प्रचार
करते हो। इसलिये जो कोई अनुचित रीतिसे यह रोटी २७
खावे अथवा प्रभुका कटोरा पीवे सो प्रभुके देह और
लोहूके दंडके योग्य होगा। परन्तु मनुष्य अपनेको परखे २८
और इस रीतिसे यह रोटी खावे और इस कटोरेसे
पीवे। क्योंकि जो अनुचित रीतिसे खाता और पीता २९
है सो जब कि प्रभुके देहका विशेष नहीं मानता है तो
खाने औ पीनेसे अपनेपर दंड लाता है। इस हेतुसे ३०
तुम्होंमें बहुत जन दुर्ब्बल औ रोगी हैं और बहुतसे सोते
हैं। क्योंकि जो हम अपना अपना बिचार करते तो ३१
हमारा बिचार नहीं किया जाता। परन्तु हमारा बि- ३२
चार जो किया जाता है तो प्रभुसे हम ताड़ना किये
जाते हैं इसलिये कि संसारके संग दंडके योग्य न ठहराये
जावें। इसलिये हे मेरे भाइयो जब तुम खानेको एकट्ठे ३३
होओ तब एक दूसरेके लिये ठहरो। परन्तु यदि कोई ३४
भूखा हो तो घरमें खाय जिस्तें एकट्ठे होनेसे तुम्हारा
दंड न होवे. और जो कुछ रह गया है जब कभी मैं
तुम्हारे पास आऊं तब उसके विषयमें आज्ञा देऊंगा।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१ आत्मिक दानोंकी पहिचान। ४ अनेक प्रकारके दानोंका पवित्र आत्मासे दिया जाना। ७ एक एक विश्वासीको पृथक पृथक दानका मिलना। १२ सब विश्वासी लोग पृथक करके अंग हैं परन्तु मिलके एक देह हैं और एक दूसरेके उपकारी हैं इसकी कथा। २८ मंडलीमें अनेक पदोंका वर्णन।

१ हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम आत्मिक
२ विषयोंमें अनजान रहो । तुम जानते हो कि तुम
देवपूजक थे और जैसे जैसे सिखाये जाते थे तैसे तैसे
३ गूंगी मूरतोंकी ओर भटक जाते थे । इस कारण मैं
तुम्हें बताता हूं कि कोई जो ईश्वरके आत्मासे बोलता
है यीशुको स्रापित नहीं कहता है और कोई यीशुको
प्रभु नहीं कह सकता है केवल पवित्र आत्मासे ।
४ बरदान तो बंटे हुए हैं परन्तु आत्मा एकही है ।
५ और सेवकाइयां बंटी हुई हैं परन्तु प्रभु एकही है ।
६ और कार्य्य बंटे हुए हैं परन्तु ईश्वर एकही है जो सभोंसे
ये सब कार्य्य करवाता है ।
७ परन्तु एक एक मनुष्यको आत्माका प्रकाश दिया जा-
८ ता है जिस्तें लाभ होय । क्योंकि एकको आत्माके द्वारासे
बुद्धिकी बात दिई जाती है और दूसरेको उसी आत्माके
९ अनुसार ज्ञानकी बात . और दूसरेको उसी आत्मासे
विश्वास और दूसरेको उसी आत्मासे चंगा करनेके बर-
१० दान . फिर दूसरेको आश्चर्य्य कर्म्म करनेकी शक्ति और
दूसरेको भविष्यद्वाक्य बोलनेकी और दूसरेको आत्मा-
ओंको पहचाननेकी और दूसरेको अनेक प्रकारकी
भाषा बोलनेकी और दूसरेको भाषाओंका अर्थ लगा-
११ नेकी शक्ति दिई जाती है । परन्तु ये सब कार्य्य वही
एक आत्मा करवाता है और अपनी इच्छाके अनुसार
हर एक मनुष्यको पृथक पृथक करके बांट देता है ।
१२ क्योंकि जैसे देह तो एक है और उसके अंग बहुतसे हैं
परन्तु उस एक देहके सब अंग यद्यपि बहुतसे हैं तौभी

एकही देह हैं तैसेही ख्रीष्ट भी है । क्योंकि हम लोग १३
क्या यिहूदी क्या यूनानी क्या दास क्या निर्बन्ध सभोंने
एक देह होनेको एक आत्मामें बपतिसमा लिया और
सब एक आत्मा पिलाये गये । क्योंकि देह एकही अंग १४
नहीं है परन्तु बहुतसे अंग । यदि पांव कहे मैं हाथ १५
नहीं हूं इसलिये मैं देहका अंश नहीं हूं तो क्या वह
इस कारणसे देहका अंश नहीं है । और यदि कान १६
कहे मैं आंख नहीं हूं इसलिये मैं देहका अंश नहीं हूं
तो क्या वह इस कारणसे देहका अंश नहीं है । जो १७
सारा देह आंखही होता तो सुनना कहां . जो सारा
देह कानही होता तो सूंघना कहां । परन्तु अब तो १८
ईश्वरने अंगोंको और उनमेंसे एक एकको देहमें अपनी
इच्छाके अनुसार रखा है । परन्तु यदि सब अंग एकही १९
अंग होते तो देह कहां होता । पर अब बहुतसे अंग २०
हैं परन्तु एकही देह । आंख हाथसे नहीं कह सकती है २१
कि मुझे तेरा कुछ प्रयोजन नहीं और फिर सिर पां-
वोंसे नहीं कह सकता है कि मुझे तुम्हारा कुछ प्रयोजन
नहीं । परन्तु देहके जो अंग अति दुर्ब्बल देख पड़ते हैं २२
सो बहुत अधिक करके आवश्यक हैं। और देहके जिन २३
अंगोंको हम अति निरादर समझते हैं उनपर हम बहुत
अधिक आदर रखते हैं और हमारे शोभाहीन अंग बहुत
अधिक शोभायमान किये जाते हैं। पर हमारे शोभाय- २४
मान अंगोंको इसका कुछ प्रयोजन नहीं है परन्तु ईश्वर-
ने देहको मिला लिया है और जिस अंगको घटी थी
उसको बहुत अधिक आदर दिया है . कि देहमें बिभेद २५

न होय परन्तु अंग एक दूसरेके लिये एक समान
२६ चिन्ता करें । और यदि एक अंग दुःख पाता है तो
सब अंग उसके साथ दुःख पाते हैं अथवा यदि एक
अंगकी बड़ाई किई जाती है तो सब अंग उसके साथ
२७ आनन्द करते हैं । सो तुम लोग खीष्टके देह हो और
पृथक पृथक करके उसके अंग हो ।
२८ और ईश्वरने कितनोंको मंडलीमें रखा है पहिले
प्रेरितोंको दूसरे भविष्यद्वक्ताओंको तीसरे उपदेशकोंको
तब आश्चर्य्य कर्म्मोंको तब चंगा करनेके बरदानोंको और
उपकारोंको और प्रधानताओंको और अनेक प्रकारकी
२९ भाषाओंको । क्या सब प्रेरित हैं . क्या सब भविष्यद्वक्ता
हैं . क्या सब उपदेशक हैं . क्या सब आश्चर्य्य कर्म्म
३० करनेहारे हैं । क्या सभोंको चंगा करनेके बरदान मिले
हैं . क्या सब अनेक भाषा बोलते हैं . क्या सब अर्थ
३१ लगाते हैं । परन्तु अच्छे अच्छे बरदानोंकी अभिलाषा
करो और मैं तुम्हें और भी एक श्रेष्ठ मार्ग बताता हूं ।

१३ तेरहवां पर्व्व ।

१ प्रेमकी आवश्यकता । ४ उसके गुण । ८ उसकी नित्यता । १३ उसकी श्रेष्ठता ।

१ जो मैं मनुष्यों और स्वर्गदूतोंकी बोलियां बोलूं पर
मुझमें प्रेम न हो तो मैं ठनठनाता पीतल अथवा झंझ-
२ नाती झांझ हूं । और जो मैं भविष्यद्वाणी बोल सकूं और
सब भेदोंको और सब ज्ञानको समझूं और जो मुझे
सम्पूर्ण बिश्वास होय यहांलों कि मैं पहाड़ोंको टाल देऊं
३ पर मुझमें प्रेम न हो तो मैं कुछ नहीं हूं । और जो मैं
अपनी सारी सम्पत्ति कंगालोंको खिलाऊं और जो मैं

जलाये जानेको अपना देह सोंप देऊं पर मुझमें प्रेम न
हो तो मुझे कुछ लाभ नहीं है ।
प्रेम धीरजवन्त औ कृपाल है . प्रेम डाह नहीं करता ४
है . प्रेम अपनी बड़ाई नहीं करता है और फूल नहीं
जाता है । वह अनरीति नहीं चलता है वह आपस्वार्थी ५
नहीं है वह खिजलाया नहीं जाता है वह बुराईकी
चिन्ता नहीं करता है । वह अधर्म्मसे आनन्दित नहीं ६
होता है परन्तु सच्चाईपर आनन्द करता है । वह सब ७
बातें सहता है सब बातोंका विश्वास करता है सब
बातोंकी आशा रखता है सब बातोंमें स्थिर रहता है ।
प्रेम कभी नहीं टल जाता है परन्तु जो भविष्यद्वाणियां ८
हों तो वे लोप होंगीं अथवा बोलियां हों तो उनका
अन्त लगेगा अथवा ज्ञान हो तो वह लोप होगा । क्योंकि ९
हम अंश मात्र जानते हैं और अंश मात्र भविष्यद्वाणी
कहते हैं । परन्तु जब वह जो सम्पूर्ण है आवेगा तब यह १०
जो अंश मात्र है लोप हो जायगा । जब मैं बालक था ११
तब मैं बालककी नाईं बोलता था मैं बालककासा मन
रखता था मैं बालककासा बिचार करता था परन्तु मैं
जो अब मनुष्य हुआ हूं तो बालककी बातें छोड़ दिईं
हैं । हम तो अभी दर्पणमें गूढ़ अर्थसा देखते हैं परन्तु १२
तब साक्षात देखेंगे . मैं अब अंश मात्र जानता हूं परन्तु
तब जैसा पहचाना गया हूं तैसाही पहचानूंगा ।
सो अब बिश्वास आशा प्रेम ये तीनों रहते हैं १३
परन्तु इनमेंसे प्रेम श्रेष्ठ है ।

१४ चौदहवां पर्ब्ब ।

१ अन्य भाषा बोलनेके बरदानसे भविष्यद्वाणीके बरदानकी श्रेष्ठता । ६ भविष्यद्वाणी और उपदेशसे मंडलीके सुधर जानेका वर्णन । १४ प्रार्थना और भजन अन्य भाषामें करनेका अनुचित होना । २१ भविष्यद्वाणीसे अबिश्वासी लोगोंका समझाया जाना । २६ मंडलीमें सब बातें शुभ रीतिसे करनेका उपदेश । ३४ स्त्रियोंको मंडलीमें बोलना उचित न होना । ३६ इस बातपर बिबाद करनेका निषेध ।

१ प्रेमकी चेष्टा करो तौभी आत्मिक बरदानोंकी अभि-
लाषा करो परन्तु अधिक करके कि तुम भविष्यद्वाक्य
२ कहो । क्योंकि जो अन्य भाषा बोलता है सो मनुष्योंसे
नहीं परन्तु ईश्वरसे बोलता है क्योंकि कोई नहीं बूझता
३ है पर आत्मामें वह गूढ़ बातें बोलता है । परन्तु जो
भविष्यद्वाक्य कहता है सो मनुष्योंसे सुधारनेकी और
४ उपदेश और शांतिकी बातें करता है । जो अन्य भाषा
बोलता है सो अपनेहीको सुधारता है परन्तु जो भवि-
५ ष्यद्वाक्य कहता है सो मंडलीको सुधारता है । मैं चाहता
हूं कि तुम सब अनेक अनेक भाषा बोलते परन्तु अधिक
करके कि तुम भविष्यद्वाक्य कहते क्योंकि अनेक भाषा
बोलनेहारा यदि अर्थ न लगावे कि मंडली सुधारी
जाय तो भविष्यद्वाक्य कहनेहारा उससे बड़ा है ।
६ अब हे भाइयो जो मैं तुम्हारे पास अनेक भाषा
बोलता हुआ आऊं तौभी जो मैं प्रकाश वा ज्ञान अथवा
भविष्यद्वाणी वा उपदेश करके तुमसे न बोलूं तो मुझसे
७ तुम्हारा क्या लाभ होगा । निर्जीव बस्तु भी जो शब्द
देती हैं चाहे बंशी चाहे बीण यदि स्वरोंमें भेद न कर
दें तो जो बंशी अथवा बीणपर बजाया जाता है सो
८ क्योंकर पहचाना जायगा । क्योंकि तुरही भी यदि

अनिश्चय शब्द देवे तो कौन अपनेको लड़ाईके लिये
तैयार करेगा। वैसेही तुम भी यदि जीभसे स्पष्ट बात ९
न करो तो जो बोला जाता है सो क्योंकर बूझा जायगा
क्योंकि तुम बयारसे बात करनेहारे ठहरोगे। जगतमें १०
क्या जाने कितने प्रकारकी बोलियां होंगीं और उनमेंसे
किसी प्रकारकी बोली निरर्थक नहीं है। इसलिये जो ११
मैं बोलीका अर्थ न जानूं तो मैं बोलनेहारेके लेखे
परदेशी होऊंगा और बोलनेहारा मेरे लेखे परदेशी
होगा। सो तुम भी जब कि आत्मिक विषयोंके अभिला- १२
षी हो तो मंडलीके सुधारनेके निमित्त बढ़ जानेका यत्न
करो। इस कारण जो अन्य भाषा बोले सो प्रार्थना १३
करे कि अर्थ भी लगा सके।

क्योंकि जो मैं अन्य भाषामें प्रार्थना करूं तो मेरा १४
आत्मा प्रार्थना करता है परन्तु मेरी बुद्धि निष्फल है।
तो क्या है. मैं आत्मासे प्रार्थना करूंगा और बुद्धिसे १५
भी प्रार्थना करूंगा मैं आत्मासे गान करूंगा और बुद्धिसे
भी गान करूंगा। नहीं तो यदि तू आत्मासे धन्यबाद १६
करे तो जो अनसिखकीसी दशामें है सो तेरे धन्य मान-
नेपर क्योंकर आमीन कहेगा वह तो नहीं जानता तू
क्या कहता है। क्योंकि तू तो भली रीतिसे धन्य मानता १७
है परन्तु वह दूसरा सुधारा नहीं जाता है। मैं अपने १८
ईश्वरका धन्य मानता हूं कि मैं तुम सभोंसे अधिक कर-
के अन्य अन्य भाषा बोलता हूं। परन्तु मंडलीमें दस १९
सहस्र बातें अन्य भाषामें कहनेसे मैं पांच बातें अपनी
बुद्धिसे कहना अधिक चाहता हूं जिस्तें औरोंको भी

२० सिखाऊं। हे भाइयो ज्ञानमें बालक मत होओ तौभी
बुराईमें बालक होओ परन्तु ज्ञानमें सयाने होओ।
२१ व्यवस्थामें लिखा है कि परमेश्वर कहता है मैं अन्य
भाषा बोलनेहारोंके द्वारा और पराये मुखके द्वारा इन
लोगोंसे बात करूंगा और वे इस रीतिसे भी मेरी न
२२ सुनेंगे। सो अन्य अन्य बोलियां बिश्वासियोंके लिये
नहीं पर अबिश्वासियोंके लिये चिन्ह हैं परन्तु भविष्य-
द्वाणी अबिश्वासियोंके लिये नहीं पर बिश्वासियोंके
२३ लिये चिन्ह है। सो यदि सारी मंडली एक संग एकट्ठी
होय और सब अन्य अन्य भाषा बोलें और अनसिख
अथवा अबिश्वासी लोग भीतर आवें तो क्या वे न
२४ कहेंगे कि ये लोग बौरहे हैं। परन्तु यदि सब भविष्यद्वाक्य
कहें और कोई अबिश्वासी अथवा अनसिख मनुष्य
भीतर आवे तो वह सभोंकी ओरसे दोषी ठहरता है
२५ और सभोंसे जांचा जाता है। और इस रीतिसे उसके
मनकी गुप्त बातें प्रगट हो जाती हैं और यूं वह मुंहके बल
गिरके ईश्वरको प्रणाम करेगा और बतावेगा कि
ईश्वर निश्चय इन लोगोंके बीचमें है।
२६ तो हे भाइयो क्या है. जब तुम एकट्ठे होते हो तब
तुममेंसे हर एकके पास गीत है उपदेश है अन्य भाषा
है प्रकाश है भाषाका अर्थ है. सब कुछ सुधारनेके लिये
२७ किया जाय। यदि कोई अन्य भाषा बोले तो दो दो
अथवा बहुत होय तो तीन तीन और पारी पारी बोलें
२८ और एक मनुष्य अर्थ लगावे। परन्तु यदि अर्थ
लगानेहारा न हो तो मंडलीमें चुप रहे और अपनेसे

ओर ईश्वरसे बोले। भविष्यद्वक्ता दो अथवा तीन २९
बोलें और दूसरे बिचार करें। और यदि दूसरेपर ३०
जो बैठा है कुछ प्रगट किया जाय तो पहिला चुप
रहे। क्योंकि तुम सब एक एक करके भविष्यद्वाक्य ३१
कह सकते हो इसलिये कि सब सीखें और सब शांति
पावें। और भविष्यद्वक्ताओंके आत्मा भविष्यद्वक्ताओंके ३२
बशमें हैं। क्योंकि ईश्वर हुल्लड़का नहीं परन्तु शांतिका ३३
कर्त्ता है जैसे पवित्र लोगोंकी सब मंडलियोंमें है।

तुम्हारी स्त्रियां मंडलियोंमें चुप रहें क्योंकि उन्हें ३४
बात करनेकी नहीं परन्तु बशमें रहनेकी आज्ञा दिई गई
है जैसे व्यवस्था भी कहती है। और यदि वे कुछ सीखने ३५
चाहती हैं तो घरमें अपनेही स्वामियोंसे पूछें क्योंकि
मंडलीमें बात करना स्त्रियोंको लज्जा है।

क्या ईश्वरका बचन तुमहींमेंसे निकला अथवा केवल ३६
तुम्हारेही पास पहुंचा। यदि कोई मनुष्य भविष्यद्वक्ता ३७
अथवा आत्मिक जन देख पड़े तो मैं तुम्हारे पास जो
बातें लिखता हूं वह उन्हें माने कि वे प्रभुकी आज्ञाएं
हैं। परन्तु यदि कोई नहीं समझता है तो न समझे। ३८
सो हे भाइयो भविष्यद्वाक्य कहनेकी अभिलाषा करो ३९
और अनेक भाषा बोलनेको मत बर्जो। सब कुछ ४०
शुभ रीतिसे और ठिकाने सिर किया जाय।

१५ पन्द्रहवां पर्व्व।

१ यीशुके जी उठनेकी कथा और उसपर बहुत लोगोंकी साक्षी। १२ पुनरुत्थानके नकारनेसे जो बातें निकलती हैं उनका वर्णन। २० यीशुके पुनरुत्थानसे सब मनुष्योंके जी उठनेका प्रमाण। ३५ पुनरुत्थानकी रीति। ५५ उसका फल।

हे भाइयो मैं वह सुसमाचार तुम्हें बताता हूं जो मैंने १

तुम्हें सुनाया जिसे तुमने ग्रहण भी किया जिसमें तुम
२ खड़े भी रहते हो . जिसके द्वारा जो तुम उस बचनको
जिस करके मैंने तुम्हें सुसमाचार सुनाया धारण करते
हो तो तुम्हारा त्राण भी होता है . नहीं तो तुमने वृथा
३ बिश्वास किया है। क्योंकि सबसे बड़ी बातोंमें मैंने यही
तुम्हें सोंप दिई जो मैंने ग्रहण भी किई थी कि ख्रीष्ट
४ धर्म्मपुस्तकके अनुसार हमारे पापोंके लिये मरा . और
कि वह गाड़ा गया और कि धर्म्मपुस्तकके अनुसार वह
५ तीसरे दिन जी उठा . और कि वह कैफाको तब बारहों
६ शिष्योंको दिखाई दिया। तब वह एकही बेरमें पांच सौसे
अधिक भाइयोंको दिखाई दिया जिनमेंसे अधिक भाई
७ अबलों बने रहे परन्तु कितने सो भी गये हैं। तब वह
८ याकूबको फिर सब प्रेरितोंको दिखाई दिया। और
सबके पीछे वह मुझको भी जैसे असमयके जन्मे हुएको
९ दिखाई दिया। क्योंकि मैं प्रेरितोंमें सबसे छोटा हूं और
प्रेरित कहलानेके योग्य नहीं हूं इस कारण कि मैंने
१० ईश्वरकी मंडलीको सताया। परन्तु मैं जो कुछ हूं सो
ईश्वरके अनुग्रहसे हूं और उसका अनुग्रह जो मुझपर
हुआ सो व्यर्थ नहीं हुआ परन्तु मैंने उन सभोंसे अधिक
करके परिश्रम किया तौभी मैंने नहीं परन्तु ईश्वरके
११ अनुग्रहने जो मेरे संग था परिश्रम किया। सो क्या मैं
क्या वे हम यूंही उपदेश करते हैं और तुमने यूंही
बिश्वास किया।

१२ परन्तु जो ख्रीष्टकी यह कथा सुनाई जाती है कि वह
मृतकोंमेंसे जी उठा है तो तुममेंसे कई एक जन क्योंकर

कहते हैं कि मृतकोंका पुनरुत्थान नहीं है। यदि मृतकों- १३
का पुनरुत्थान नहीं है तो ख्रीष्ट भी नहीं जी उठा है।
और जो ख्रीष्ट नहीं जी उठा है तो हमारा उपदेश ब्यर्थ १४
है और तुम्हारा बिश्वास भी ब्यर्थ है। और हम ईश्वरके १५
विषयमें झूठे साक्षी भी ठहरते हैं क्योंकि हमने ईश्वरपर
साक्षी दिई कि उसने ख्रीष्टको जिला उठाया पर यदि
मृतक नहीं जी उठते हैं तो उसने उसको नहीं उठाया।
क्योंकि यदि मृतक नहीं जी उठते हैं तो ख्रीष्ट भी नहीं १६
जी उठा है । और जो ख्रीष्ट नहीं जी उठा है तो तुम्हारा १७
बिश्वास ब्यर्थ है. तुम अबलों अपने पापोंमें पड़े हो। तब १८
वे भी जो ख्रीष्टमें सो गये हैं नष्ट हुए हैं । जो ख्रीष्टपर १९
केवल इसी जीवनलों हमारी आशा है तो सब मनुष्योंसे
हम लोग अधिक अभागे हैं ।

पर अब तो ख्रीष्ट मृतकोंमेंसे जी उठा है और उन्हों- २०
का जो सो गये हैं पहिला फल हुआ है । क्योंकि जब २१
कि मनुष्यके द्वारासे मृत्यु हुई मनुष्यके द्वारासे मृत-
कोंका पुनरुत्थान भी होगा । क्योंकि जैसा आदममें २२
सब लोग मरते हैं तैसाही ख्रीष्टमें सब लोग जिलाये
जायेंगे । परन्तु हर एक अपने अपने पदके अनुसार २३
जिलाया जायगा ख्रीष्ट पहिला फल तब ख्रीष्टके लोग
उसके आनेपर । पीछे जब वह राज्यको ईश्वर अर्थात २४
पिताके हाथ सौंपेगा जब वह सारी प्रधानता और
सारा अधिकार औ पराक्रम लोप करेगा तब अन्त हो-
गा । क्योंकि जबलों वह सब शत्रुओंको अपने चरणोंतले २५
न कर ले तबलों राज्य करना उसको अवश्य है। पिछला २६

२७ शत्रु जो लोप किया जायगा मृत्यु है। क्योंकि (लिखा
है) उसने सब कुछ उसके चरणोंतले करके उसके अधीन
किया . परन्तु जब वह कहेगा कि सब कुछ अधीन किया
गया है तब प्रगट है कि जिसने सब कुछ उसके अधीन
२८ किया वह आप नहीं अधीन हुआ। और जब सब कुछ
उसके अधीन किया जायगा तब पुत्र आप भी उसके
अधीन होगा जिसने सब कुछ उसके अधीन किया जिस्तें
२९ ईश्वर सभोंमें सब कुछ होय। नहीं तो जो मृतकोंके
लिये बपतिसमा लेते हैं सो क्या करेंगे . यदि मृतक
निश्चय नहीं जी उठते हैं तो वे क्यों मृतकोंके लिये
३० बपतिसमा लेते हैं। हम भी क्यों हर घड़ी जोखिममें
३१ रहते हैं। तुम्हारे विषयमें ख्रीष्ट यीशु हमारे प्रभुमें जो
बड़ाई मैं करता हूं उस बड़ाईकी सोंह मैं प्रतिदिन मरता
३२ हूं। जो मनुष्यकी रीतिपर मैं इफिसमें बन पशुओंसे
लड़ा तो मुझे क्या लाभ हुआ . यदि मृतक नहीं जी
उठते हैं तो आओ हम खावें औ पीवें कि बिहान
३३ मर जायेंगे। धोखा मत खाओ . बुरी संगति अच्छी
३४ चालको बिगाड़ती है। धर्म्मके लिये जाग उठो और
पाप मत करो क्योंकि कितने हैं जो ईश्वरको नहीं
जानते हैं . मैं तुम्हारी लज्जा निमित्त कहता हूं।
३५ परन्तु कोई कहेगा मृतक लोग किस रीतिसे जी
३६ उठते हैं और कैसा देह धरके आते हैं। हे मूर्ख
जो कुछ तू बोता है सो यदि मर न जाय तो जिला-
३७ या नहीं जाता है। और तू जो कुछ बोता है वह
मूर्त्ति जो हो जायगी नहीं बोता है परन्तु निरा एक

दाना चाहे गेहूंका चाहे और किसी अनाजका। परन्तु ३८
ईश्वर अपनी इच्छाके अनुसार उसकी मूर्त्ति कर देता
है और हर एक बीजकी अपनी अपनी मूर्त्ति। हर ३९
एक शरीर एकही प्रकारका शरीर नहीं है परन्तु
मनुष्योंका शरीर और है पशुओंका शरीर और है
मछलियोंका और है पंछियोंका और है। स्वर्गमेंके ४०
देह भी हैं और पृथिवीपरके देह हैं परन्तु स्वर्गमेंके
देहोंका तेज और है और पृथिवीपरके देहोंका और
है। सूर्य्यका तेज और है चन्द्रमाका तेज और है और ४१
तारोंका तेज और है क्योंकि तेजमें एक तारा दूसरे
तारेसे भिन्न है। वैसेही मृतकोंका पुनरुत्थान भी होगा. ४२
वह नाशमान बोया जाता है अबिनाशी उठाया जाता
है। वह अनादर सहित बोया जाता है तेज सहित ४३
उठाया जाता है. दुर्ब्बलता सहित बोया जाता है
सामर्थ्य सहित उठाया जाता है। वह प्राणिक देह ४४
बोया जाता है आत्मिक देह उठाया जाता है. एक
प्राणिक देह है और एक आत्मिक देह है। यूं लिखा ४५
भी है कि पहिला मनुष्य आदम जीवता प्राणी हुआ.
पिछला आदम जीवनदायक आत्मा है। पर जो आ- ४६
त्मिक है सोई पहिला नहीं है परन्तु वह जो प्राणिक
है तब वह जो आत्मिक है। पहिला मनुष्य पृथिवीसे ४७
मिट्टीका था. दूसरा मनुष्य स्वर्गसे प्रभु है। वह ४८
मिट्टीका जैसा था वैसे वे भी हैं जो मिट्टीके हैं और
वह स्वर्गबासी जैसा है वैसे वे भी हैं जो स्वर्गबासी
हैं। और जैसे हमने उसका रूप जो मिट्टीका था ४९

धारण किया है तैसे उस स्वर्गबासीका रूप भी धारण
५० करेंगे । पर हे भाइयो मैं यह कहता हूं कि मांस औा
लोहू ईश्वरके राज्यके अधिकारी नहीं हो सकते हैं
५१ और न बिनाश अबिनाशका अधिकारी होता है। देखो
मैं तुम्हें एक भेद बताता हूं कि हम सब नहीं सो जायेंगे
परन्तु हम सब पिछली तुरहीके समय क्षण भरमें पलक
५२ मारतेही बदले जायेंगे । क्योंकि तुरही फूंकी जायगी
और मृतक अबिनाशी उठाये जायेंगे और हम लोग
५३ बदले जायेंगे । क्योंकि अवश्य है कि यह नाशमान
अबिनाशको पहिन लेवे और यह मरनहार अमरता-
५४ को पहिन लेवे । और जब यह नाशमान अबिनाशको
पहिन लेगा और यह मरनहार अमरताको पहिन
लेगा तब वह बचन जो लिखा हुआ है कि जयमें
मृत्यु निगली गई पूरा हो जायगा ।
५५ हे मृत्यु तेरा डंक कहां . हे परलोक तेरी जय कहां ।
५६ मृत्युका डंक पाप है और पापका बल व्यवस्था है ।
५७ परन्तु ईश्वरका धन्यबाद होय जो हमारे प्रभु यीशु
५८ खीष्टके द्वारासे हमें जयवन्त करता है । सो हे मेरे
प्यारे भाइयो दृढ़ और अचल रहो और यह जानके
कि प्रभुमें तुम्हारा परिश्रम ब्यर्थ नहीं है प्रभुके काममें
सदा बढ़ते जाओ ।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

१ चन्देके विषयमें पावलकी आज्ञा । ५ उसकी यात्राकी कथा । १० तिमोथियको ग्रहण करनेकी बिन्ती और अपल्लोका समाचार । १३ अनेक उपदेश । १९ नमस्कार सहित पत्रीकी समाप्ति ।

१ उस चन्देके विषयमें जो पवित्र लोगोंके लिये ठह-

राया गया है जैसा मैंने गलातियाकी मंडलियोंको आज्ञा
दिई तैसा तुम भी करो। हर अठवारेके पहिले दिन २
तुममेंसे हर एक मनुष्य जो कुछ उसकी सम्पत्तिमें बढ़ती
दिई जाय सोई अपने पास एकट्ठा कर रखे ऐसा न
हो कि जब मैं आऊं तब चन्दे उगाहे जायें। और ३
जब मैं पहुंचूंगा तब जो कोई तुम्हें अच्छे देख पड़ें उन्हें
मैं चिट्ठियां देके भेजूंगा कि तुम्हारा दान यिरूशलीम-
को ले जावें। पर जो मेरा भी जाना उचित होय तो ४
वे मेरे संग जायेंगे।

जब मैं माकिदोनियासे होके निकल चुकूं तब तुम्हारे ५
पास आऊंगा। क्योंकि मैं माकिदोनियासे होके निकलता ६
हूं पर क्या जाने तुम्हारे यहां ठहरूंगा बरन जाड़ेका
समय भी काटूंगा कि तुम जिधर कहीं मेरा जाना होय
उधर मुझे कुछ दूरलों पहुंचावो। क्योंकि मैं तुम्हें अब ७
मार्गमें चलते चलते देखने नहीं चाहता हूं पर आशा
रखता हूं कि यदि प्रभु ऐसा होने देवे तो कुछ दिन
तुम्हारे यहां ठहर जाऊं। परन्तु पेंतिकोष्टलों मैं इफिसमें ८
रहूंगा। क्योंकि एक बड़ा और कार्य्य योग्य द्वार मेरे ९
लिये खुला है और बहुतसे बिरोधी हैं।

यदि तिमोथिय आवे तो देखो कि वह तुम्हारे यहां १०
निर्भय रहे क्योंकि जैसा मैं प्रभुका कार्य्य करता हूं तैसा
वह भी करता है। सो कोई उसे तुच्छ न जाने परन्तु ११
उसको कुशलसे आगे पहुंचाओ कि वह मेरे पास आवे
क्योंकि मैं भाइयोंके संग उसकी बाट देखता हूं। भाई १२
अपल्लोके विषयमें यह है कि मैंने उससे बहुत बिन्ती

किई कि भाइयोंके संग तुम्हारे पास जाय पर उसको
इस समयमें जानेकी कुछ भी इच्छा न थी परन्तु जब
अवसर पावेगा तब जायगा ।
१३ जागते रहो . विश्वासमें दृढ़ रहो . पुरुषार्थ करो .
१४ बलवन्त होओ । तुम्हारे सब कर्म्म प्रेमसे किये जायें।
१५ और हे भाइयो मैं तुमसे यह बिन्ती करता हूं . तुम
स्तिफानके घरानेको जानते हो कि आखायाका पहि-
ला फल है और उन्होंने अपने तई पवित्र लोगोंकी
१६ सेवकाईके लिये ठहराया है। तुम ऐसोंके और हर एक
मनुष्यके अधीन हो जो सहकर्म्मी ओ परिश्रम करने-
१७ हारा है। स्तिफान और फर्तुनात और आखायिकके
आनेसे मैं आनन्दित हूं कि इन्होंने तुम्हारी घटीको
१८ पूरी किई है। क्योंकि उन्होंने मेरे और तुम्हारे मनको
सुख दिया है इसलिये ऐसोंको मानो ।
१९ आशियाकी मंडलियोंकी ओरसे तुमको नमस्कार .
अकूला और प्रिस्कीलाका और उनके घरमेंकी मंडलीका
२० तुमसे प्रभुमें बहुत बहुत नमस्कार। सब भाई लोगोंका
तुमसे नमस्कार . एक दूसरेको पवित्र चूमा लेके नमस्कार
२१ करो। मुझ पावलका अपने हाथका लिखा हुआ नम-
२२ स्कार। यदि कोई प्रभु यीशु खीष्टको प्यार न करे तो
२३ स्रापित होय . मारानाथा (अर्थात प्रभु आता है)। प्रभु
२४ यीशु खीष्टका अनुग्रह तुम्हारे संग होय। खीष्ट यीशुमें
मेरा प्रेम तुम सभोंके संग होवे। आमीन ॥

करिन्थियोंको पावल प्रेरितकी दूसरी पत्री।

१ पहिला पर्ब्ब।

१ पत्रीका आभाष। ३ दुःखोंमें शांति दिये जानेके लिये ईश्वरका धन्यबाद करना। ८ आशियामें जो बड़ा क्लेश पावलको हुआ था तिसका वृत्तांत। १२ पावलका अपनी और सुसमाचारकी सत्यताका प्रमाण देना और करिन्थमें न जानेका हेतु बर्णन करना।

पावल जो ईश्वरकी इच्छासे यीशु खीष्टका प्रेरित १
है और भाई तिमोथिय ईश्वरकी मंडलीको जो करिन्थमें
है उन सब पवित्र लोगोंके संग जो सारे आखाया
देशमें हैं. तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु २
खीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले।

हमारे प्रभु यीशु खीष्टके पिता ईश्वरका जो दयाका ३
पिता और समस्त शांतिका ईश्वर है धन्यबाद होय.
जो हमें हमारे सारे क्लेशमें शांति देता है इसलिये कि ४
हम उन्हें जो किसी प्रकारके क्लेशमें हैं उस शांतिसे
शांति दे सकें जिस करके हम आप ईश्वरसे शांति
पाते हैं। क्योंकि जैसा खीष्टके दुःख हमोंमें बहुत होते ५
हैं तैसा हमारी शांति भी खीष्टके द्वारासे बहुत होती
है। परन्तु हम यदि क्लेश पाते हैं तो यह तुम्हारी ६
शांति औ निस्तारके लिये है जो इन्हीं दुःखोंमें जिन्हें
हम भी उठाते हैं स्थिर रहनेमें गुण करता है. अथवा
यदि शांति पाते हैं तो यह तुम्हारी शांति औ निस्तारके
लिये है। और तुम्हारे विषयमें हमारी आशा दृढ़ है ७

क्योंकि जानते हैं कि तुम जैसे दुःखोंके तैसे शांतिके
भी भागी हो।
८ हे भाइयो हम नहीं चाहते हैं कि तुम हमारे उस
क्लेशके विषयमें अनजान रहो जो आशियामें हमको
हुआ कि सामर्थ्यसे अधिक हमपर अत्यन्त भार पड़ा
९ यहांलों कि प्राण बचानेका भी हमें उपाय न रहा। बरन
हम आप मृत्युकी आज्ञा अपनेमें पा चुके थे कि हमारा
भरोसा अपनेपर न होय परन्तु ईश्वरपर जो मृतकोंको
१० जिलाता है। उसने हमें ऐसी बड़ी मृत्युसे बचाया और
बचाता है. उसपर हमने आशा रखी है कि वह फिर भी
११ बचावेगा. कि तुम भी हमारे लिये प्रार्थना करके सहाय-
ता करोगे जिस्तें जो बरदान बहुतोंके द्वारासे हमें मिलेगा
उसके कारण बहुत लोग हमारे लिये धन्यबाद करें।
१२ क्योंकि हमारी बड़ाई यह है अर्थात हमारे मनकी
साक्षी कि जगतमें पर और भी तुम्हारे यहां हमारा ब्यव-
हार ईश्वरके योग्यकी सीधाई औ सच्चाई सहित शारी-
रिक ज्ञानके अनुसार नहीं परन्तु ईश्वरके अनुग्रहके
१३ अनुसार था। क्योंकि हम तुम्हारे पास और कुछ नहीं
लिखते हैं केवल वह जो तुम पढ़ते अथवा मानते भी
१४ हो और मुझे भरोसा है कि अन्तलों भी मानोगे . जैसा
तुमने कुछ कुछ हमोंको भी माना है कि जिस रीतिसे
प्रभु यीशुके दिनमें तुम हमारे लिये बड़ाई करनेके हेतु
१५ हो उसी रीतिसे तुम्हारे लिये हम भी हैं। और इस
भरोसेसे मैं चाहता था कि पहिले तुम्हारे पास आऊं
१६ जिस्तें तुम्हें दूसरी बेर दान मिले. और तुम्हारे पाससे

होके माकिदोनियाको जाऊं और फिर माकिदोनियासे
तुम्हारे पास आऊं और तुम्हेंसे यिहूदियाकी ओर कुछ
दूरलों पहुंचाया जाऊं। सो इसको बिचार करनेमें क्या १७
मैंने हलकाई किई अथवा मैं जो बिचार करता हूं क्या
शरीरके अनुसार बिचार करता हूं कि मेरी बातमें हां
हां और नहीं नहीं होवे। ईश्वर बिश्वासयोग्य साक्षी १८
है कि हमारा बचन जो तुमसे कहा गया हां औ नहीं
न था। क्योंकि ईश्वरका पुत्र यीशु खीष्ट जिसका हमारे १९
द्वारा अर्थात मेरे औ सीलाके औ तिमोथियके द्वारा
तुम्हारे बीचमें प्रचार हुआ हां औ नहीं न था पर
उसमें हां ही था। क्योंकि ईश्वरकी प्रतिज्ञाएं जितनी हों २०
उसीमें हां और उसीमें आमीन हैं जिस्तें हमारे द्वारा
ईश्वरकी महिमा प्रगट होय। और जो हमें तुम्हारे संग २१
खीष्टमें दृढ़ करता है और जिसने हमें अभिषेक किया
है सो ईश्वर है. जिसने हमपर छाप भी दिई है और २२
हम लोगोंके मनमें पवित्र आत्माका बयाना दिया है।
परन्तु मैं ईश्वरको अपने प्राणपर साक्षी बदता हूं कि २३
मैंने तुमपर दया किई जो अबलों करिन्थ नहीं गया।
यह नहीं कि हम तुमपर बिश्वासके विषयमें प्रभुताई २४
करनेहारे हैं परन्तु तुम्हारे आनन्दके सहायक हैं क्योंकि
तुम बिश्वाससे खड़े हो।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ पावलके करिन्थ न जानेका कारण। ५ अपराधी भाईको क्षमा करनेका उपदेश। १२ तीतसको त्रोआमें न पानेके कारण पावलका माकिदोनियामें जाना। १४ सुसमाचारसे कितनोंको जीवनका कितनोंको मरणका गन्ध मिलना।

१ परन्तु मैंने अपने लिये तुम्हारे विषयमें यही ठहराया
२ कि मैं फिर उनके पास उदास होके न जाऊंगा। क्योंकि
जो मैं तुम्हें उदास करूं तो फिर मुझे आनन्दित करने-
हारा कौन है केवल वह जो मुझसे उदास किया जाता
३ है। और मैंने यही बात तुम्हारे पास इसलिये लिखी
कि आनेपर मुझे उनकी ओरसे शोक न होय जिनकी
ओरसे उचित था कि मैं आनन्दित होता क्योंकि मैं तुम
सभोंका भरोसा रखता हूं कि मेरा आनन्द तुम सभोंका
४ आनन्द है। बड़े क्लेश और मनके कष्टसे मैंने बहुत रो
रोके तुम्हारे पास लिखा इसलिये नहीं कि तुम्हें शोक
होय पर इसलिये कि तुम उस प्रेमको जान लेओ जो
मैं तुम्हारी ओर बहुत अधिक करके रखता हूं।
५ परन्तु किसीने यदि शोक दिलाया है तो मुझे नहीं
पर मैं बहुत भार न देऊं इसलिये कहता हूं कुछ कुछ
६ तुम सभोंको शोक दिलाया है। ऐसे जनके लिये यह
७ दंड जो भाइयोंमेंसे अधिक लोगोंने दिया बहुत है। इस-
लिये इसके बिरुद्ध तुम्हें और भी चाहिये कि उसे क्षमा
करो और शांति देओ न हो कि ऐसा मनुष्य अत्यन्त
८ शोकमें डूब जाय। इस कारण मैं तुमसे बिन्ती करता
९ हूं कि उसको अपने प्रेमका प्रमाण देओ। क्योंकि मैंने
इस हेतुसे लिखा भी कि तुम्हारी परीक्षा लेके जानूं कि
१० तुम सब बातोंमें आज्ञाकारी होते हो कि नहीं। जिसको
तुम कुछ क्षमा करते हो मैं भी क्षमा करता हूं क्योंकि
मैंने भी यदि कुछ क्षमा किया है तो जिसको क्षमा किया
है उसको तुम्हारे कारण ख्रीष्टके साक्षात क्षमा किया

है . कि शैतानका हमपर दांव न चले क्योंकि हम ११
उसकी जुगतोंसे अज्ञान नहीं हैं।

जब मैं ख्रीष्टका सुसमाचार प्रचार करनेको त्रोआमें १२
आया और प्रभुके कामका एक द्वार मेरे लिये खुला
था . तब मैंने अपने भाई तीतसको जो नहीं पाया १३
तो मेरे मनको चैन न मिला परन्तु उनसे बिदा होके
मैं माकिदोनियाको गया।

परन्तु ईश्वरका धन्यबाद होय जो सदा ख्रीष्टमें १४
हमारी जय करवाता है और उसके ज्ञानका सुगन्ध
हमारे द्वारासे हर स्थानमें फैलाता है। क्योंकि हम १५
ईश्वरको उनमें जो त्राण पाते हैं और उनमें भी जो
नाश होते हैं ख्रीष्टके सुगन्ध हैं . इनको हम मृत्युके लिये १६
मृत्युके गन्ध हैं पर उनको जीवनके लिये जीवनके गन्ध
हैं . और इस कामके योग्य कौन है। क्योंकि हम उन १७
बहुतोंके समान नहीं हैं जो ईश्वरके बचनमें मिलावट
करनेहारे हैं परन्तु जैसे सच्चाईसे बोलनेहारे परन्तु
जैसे ईश्वरकी ओरसे बोलनेहारे तैसे ईश्वरके सन्मुख
ख्रीष्टकी बातें बोलते हैं।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ करिन्थीय मंडलीका प्रेरितोंकी पदवीका प्रमाण होना। ४ प्रेरितोंकी शक्तिका ईश्वरकी ओरसे होना। ७ मूसाकी ब्यवस्थासे सुसमाचारका श्रेष्ठ होना। १२ सुसमाचारका इसी कारण स्पष्ट रीतिसे प्रचार किया जाना।

क्या हम फिर अपनी प्रशंसा करने लगे हैं अथवा १
जैसा कितनोंको तैसा क्या हमोंको भी प्रशंसाकी पत्रियां
तुम्हारे पास लानेका अथवा तुम्हारे पाससे ले जानेका
प्रयोजन है। तुम हमारी पत्री हो जो हमारे हृदयमें २

लिखी गई है और सब मनुष्योंसे पहचानी औ पढ़ी
३ जाती है। क्योंकि तुम प्रत्यक्ष देख पड़ते हो कि खीष्टकी
पत्री हो जिसके विषयमें हमने सेवकाई किई और जो
सियाहीसे नहीं परन्तु जीवते ईश्वरके आत्मासे पत्थर-
की पटियाओंपर नहीं परन्तु हृदयकी मांसरूपी पट-
रियोंपर लिखी गई है।
४ हमें ईश्वरकी ओर खीष्टके द्वारासे ऐसाही भरोसा है.
५ यह नहीं कि हम जैसे अपनी ओरसे किसी बातका
बिचार आपसे करनेके योग्य हैं परन्तु हमारी योग्यता
६ ईश्वरसे होती है. जिसने हमें नये नियमके सेवक होनेके
योग्य भी किया लेखके सेवक नहीं परन्तु आत्माके
क्योंकि लेख मारता है परन्तु आत्मा जिलाता है।
७ और यदि मृत्युकी सेवकाई जो लेखोंमें थी और
पत्थरोंमें खोदी हुई थी तेजोमय हुई यहांलों कि मूसाके
मुंहके तेजके कारण जो लोप होनेहारा भी था इस्राये-
८ लके सन्तान उसके मुंहपर दृष्टि नहीं कर सकते थे. तो
आत्माकी सेवकाई और भी तेजोमय क्यों न होगी।
९ क्योंकि यदि दंडकी आज्ञाकी सेवकाई एक तेज थी तो
बहुत अधिक करके धर्म्मकी सेवकाई तेजमें उससे श्रेष्ठ
१० है। और जो तेजोमय कहा गया था सो भी इस करके
अर्थात इस अधिक तेजके कारण कुछ तेजोमय न ठहरा।
११ क्योंकि यदि वह जो लोप होनेहारा था तेजवन्त था
तो बहुत अधिक करके यह जो बना रहेगा तेजोमय है।
१२ सो ऐसी आशा रखनेसे हम बहुत खोलके बात करते
१३ हैं. और ऐसे नहीं जैसा मूसा अपने मुंहपर परदा

डालता था कि इस्रायेलके सन्तान उस लोप होनेहारे
विषयके अन्तपर दृष्टि न करें। बरन उनकी बुद्धि मन्द हुई १४
क्योंकि आजलों पुराने नियमके पढ़नेमें वही परदा पड़ा
रहता है और नहीं खुलता है कि वह खीष्टमें लोप किया
जाता है। पर आजलों जब मूसाका पुस्तक पढ़ा जाता १५
है उनके हृदयपर परदा पड़ा है। परन्तु जब वह प्रभुकी १६
ओर फिरेगा तब वह परदा उठाया जायगा। प्रभु तो १७
आत्मा है और जहां प्रभुका आत्मा है तहां निर्बन्धता
है। और हम सब उघाड़े मुंह प्रभुका तेज जैसे दर्पणमें १८
देखते हुए मानो प्रभु अर्थात आत्माके गुणसे तेजपर
तेज प्राप्त कर उसी रूपमें बदलते जाते हैं।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ प्रेरितोंकी सच्चाईका बर्णन और सुसमाचारके कितनोंसे गुप्त रहनेका कारण। ७ प्रेरितोंका नाना प्रकारका क्लेश उठाना। १३ पीछे महा सुख पानेकी आशा रखना।

इस कारण जब कि उस दयाके अनुसार जो हमपर १
किई गई यह सेवकाई हमें मिली है हम कातर नहीं
होते हैं. पर लज्जाके गुप्त कामोंको त्यागके न चतुराईसे २
चलते हैं न ईश्वरके बचनमें मिलावट करते हैं परन्तु
सत्यको प्रगट करनेसे हर एक मनुष्यके बिवेकको ईश्वर-
के आगे अपने विषयमें प्रमाण देते हैं। पर हमारा सुस- ३
माचार यदि गुप्त भी है तो उन्हींपर गुप्त है जो नाश
होते हैं. जिन्होंमें देख पड़ता है कि इस संसारके ईश्वरने ४
अबिश्वासियोंकी बुद्धि अन्धी किई है कि खीष्ट जो ईश्वर-
की प्रतिमा है तिसके तेजके सुसमाचारकी ज्योति उनपर
प्रकाश न होय। क्योंकि हम अपनेको नहीं परन्तु खीष्ट ५

यीशुको प्रभु करके प्रचार करते हैं और अपनेको
६ यीशुके कारण तुम्हारे दास कहते हैं। क्योंकि ईश्वर
जिसने आज्ञा किई कि अन्धकारमेंसे ज्योति चमके
वही है जो हम लोगोंके हृदयमें चमका कि ईश्वरका
जो तेज यीशु ख्रीष्टके मुंहपर है उस तेजके ज्ञानकी
ज्योति प्रकाश होय।
७ परन्तु यह सम्पत्ति हमें मिट्टीके बर्त्तनोंमें मिली है
कि सामर्थ्यकी अधिकाई ईश्वरकी ठहरे और हमारी
८ ओरसे नहीं। हम सर्ब्बथा क्लेश पाते हैं पर सकेतमें
९ नहीं हैं. दुबधामें हैं पर निरुपाय नहीं. सताये जाते
हैं पर त्यागे नहीं जाते. गिराये जाते हैं पर नाश
१० नहीं होते। हम नित्य प्रभु यीशुका मरण देहमें लिये
फिरते हैं कि यीशुका जीवन भी हमारे देहमें प्रगट
११ किया जाय। क्योंकि हम जो जीते हैं सदा यीशुके कारण
मृत्यु भोगनेको सौंपे जाते हैं कि यीशुका जीवन भी
१२ हमारे मरनहार शरीरमें प्रगट किया जाय। सो मृत्यु
हमोंमें परन्तु जीवन तुम्होंमें कार्य्य करता है।
१३ परन्तु बिश्वासका वही आत्मा जैसा लिखा है मैंने
बिश्वास किया इसलिये बोला जब कि हमें मिला है
हम भी बिश्वास करते हैं इसलिये बोलते भी हैं.
१४ क्योंकि जानते हैं कि जिसने प्रभु यीशुको जिला उठाया
सो हमें भी यीशुके द्वारा जिलाके तुम्हारे संग अपने
१५ आगे खड़ा करेगा। क्योंकि सब कुछ तुम्हारे लिये है
जिस्तें अनुग्रह बहुत होके ईश्वरकी महिमाके लिये
१६ बहुत लोगोंके धन्यबादके हेतुसे बढ़ता जाय। इसलिये

हम कातर नहीं होते हैं परन्तु जो हमारा बाहरी
मनुष्यत्व नाश भी होता है तौभी भीतरी मनुष्यत्व
दिनपर दिन नया होता जाता है। क्योंकि हमारे १७
क्लेशका क्षण भरका हलका बोझ हमारे लिये महिमाका
अनन्त भार अधिकसे अधिक करके उत्पन्न करता है.
कि हम तो दृश्य विषयोंको नहीं परन्तु अदृश्य बिषयोंको १८
देखा करते हैं क्योंकि दृश्य विषय अनित्य हैं परन्तु
अदृश्य विषय नित्य हैं।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

१ अनन्त सुखकी आशा रखनेसे प्रेरितोंका साहस । ९ बिचारके दिनकी अपेक्षा करनेसे उनकी चौकसाई । १४ ख्रीष्टके प्रेमके कारण उनका अपने तईं उसकी सेवाके लिये सौंप देना । १८ मिलापके सुसमाचारका बखान ।

हम जानते हैं कि जो हमारा पृथिवीपरका डेरासा १
घर गिराया जाय तो ईश्वरसे एक भवन हमें मिला है
जो बिन हाथका बनाया हुआ नित्यस्थायी घर स्वर्गमें
है। क्योंकि इस डेरेमें हम कहरते भी हैं और अपना २
वह बासा जो स्वर्गीय है ऊपरसे पहिननेकी लालसा
करते हैं। जो ऐसाही ठहरे कि पहिने हुए हम नंगे नहीं ३
पाये जायेंगे। हां हम जो इस डेरेमें हैं बोझसे दबे हुए ४
कहरते हैं क्योंकि हम उतारनेकी नहीं परन्तु ऊपरसे
पहिननेकी इच्छा करते हैं कि जीवनसे यह मरनहार
निगला जाय। और जिसने हमें इसी बातके लिये तैयार ५
किया है सो ईश्वर है जिसने हमें पवित्र आत्माका
बयाना भी दिया है। सो हम सदा ढाढ़स बांधते हैं और ६
यह जानते हैं कि जबलों देहमें रहते हैं तबलों प्रभुसे

७ अलग होते हैं। क्योंकि हम रूप देखनेसे नहीं परन्तु
८ बिश्वाससे चलते हैं। इसलिये हम साहस करते हैं
और यही अधिक चाहते हैं कि देहसे अलग होके
प्रभुके संग रहें।
९ इस कारण हम चाहें संग रहते हुए चाहें अलग होते
१० हुए उसकी प्रसन्नता योग्य होनेकी चेष्टा करते हैं। क्योंकि
हम सभोंका खीष्टके बिचार आसनके आगे प्रगट किया
जाना अवश्य है जिस्तें हर एक जन क्या भला काम क्या
बुरा जो कुछ किया हो उसके अनुसार देहके द्वारा किये
११ हुएका फल पावे। सो प्रभुका भय मानके हम मनुष्योंको
समझाते हैं पर ईश्वरके आगे हम प्रगट होते हैं और
१२ मुझे भरोसा है कि तुम्होंके मनमें भी प्रगट हुए हैं। क्योंकि
हम तुम्हारे पास फिर अपनी प्रशंसा करते हैं सो नहीं
परन्तु तुम्हें हमारे विषयमें बड़ाई करनेका कारण देते
हैं कि जो लोग हृदयपर नहीं परन्तु रूपपर घमंड
करते हैं उनके बिरुद्ध बड़ाई करनेकी जगह तुम्हें मिले।
१३ क्योंकि हम चाहें बेसुध हों तो ईश्वरके लिये बेसुध
हैं चाहें सुबुद्धि हों तो तुम्हारे लिये सुबुद्धि हैं।
१४ खीष्टका प्रेम हमें बश कर लेता है क्योंकि हमने यह
बिचार किया कि यदि सभोंके लिये एक मरा तो वे सब
१५ मूए. और वह सभोंके लिये इस कारण मरा कि जो
जीवते हैं सो अब अपने लिये न जीवें परन्तु उसके लिये
१६ जो उनके निमित्त मरा और जी उठा। सो हम अबसे
किसीको शरीरके अनुसार करके नहीं समझते हैं और
यदि हम खीष्टको शरीरके अनुसार करके समझते भी थे

तौभी अब उसको नहीं ऐसा समझते हैं । सो यदि १७
कोई खीष्टमें होय तो नई सृष्टि है . पिछली बातें बीत
गई हैं देखो सब बातें नई हुई हैं ।
और सब बातें ईश्वरकी ओरसे हैं जिसने यीशु खीष्टके १८
द्वारा हमें अपने साथ मिला लिया और मिलापकी
सेवकाई हमें दिई . अर्थात कि ईश्वर जगतके लोगोंके १९
अपराध उनपर न लगाके खीष्टमें जगतको अपने साथ
मिला लेता था और मिलापका बचन हमोंको सोंप
दिया । सो हम खीष्टकी सन्ती दूत हैं मानो ईश्वर २०
हमारे द्वारा उपदेश करता है . हम खीष्टकी सन्ती
बिन्ती करते हैं ईश्वरसे मिलाये जाओ । क्योंकि जो २१
पापसे अनजान था उसको उसने हमारे लिये पाप
बनाया कि उसमें हम ईश्वरके धर्म्म बनें ।

६ छठवां पर्ब्ब ।

१ प्रेरितोंका दुःख भोगना और उनका स्वभाव और अधिकार । ११ पापी और अविश्वासी लोगोंकी संगतिसे अलग रहनेका उपदेश ।

सो हम जो सहकर्म्मी हैं उपदेश करते हैं कि ईश्वरके १
अनुग्रहको वृथा ग्रहण न करो । क्योंकि वह कहता है २
मैंने शुभ कालमें तेरी सुनी और निस्तारके दिनमें तेरा
उपकार किया . देखो अभी वह शुभ काल है देखो अभी
वह निस्तारका दिन है । हम किसी बातसे कुछ ठोकर ३
नहीं खिलाते हैं कि इस सेवकाईपर दोष न लगाया
जाय . परन्तु जैसे ईश्वरके सेवक तैसे हर बातसे अपने ४
लिये प्रमाण देते हैं अर्थात बहुत धीरतासे क्लेशोंमें दरि-
द्रतामें संकटोंमें . मार खानेमें बन्दीगृहोंमें हुल्लड़ोंमें परि- ५

६ श्रममें जागते रहनेमें उपवास करनेमें . शुद्धतासे ज्ञानसे
धीरजसे कृपालुतासे पवित्र आत्मासे निष्कपट प्रेमसे .
७ सत्यके बचनसे ईश्वरके सामर्थ्यसे दहिने औ बायें धर्म्मके
८ हथियारोंसे . आदर औ निरादरसे अपयश औ सुयशसे
९ कि भरमानेहारोंके ऐसे हैं तौभी सच्चे हैं . अनजाने
हुओंके ऐसे हैं तौभी जाने जाते हैं मरते हुओंके ऐसे हैं
और देखो जीवते हैं ताड़ना किये हुओंके ऐसे हैं और
१० घात नहीं किये जाते हैं . उदासोंके ऐसे हैं परन्तु सदा
आनन्द करते हैं कंगालोंके ऐसे हैं परन्तु बहुतोंको धन-
वान करते हैं ऐसे हैं जैसा हमारे पास कुछ नहीं है
तौभी सब कुछ रखते हैं ।
११ हे करिन्थियो हमारा मुंह तुम्हारी ओर खुला है
१२ हमारा हृदय बिस्तारित हुआ है । तुम्हें हमोंमें सकेता
नहीं है परन्तु तुम्हारेही अन्तःकरणमें तुम्हें सकेता है।
१३ पर मैं तुमको जैसा अपने लड़कोंको इसका वैसाही बद-
१४ ला बताता हूं कि तुम भी बिस्तारित होओ । मत
अबिश्वासियोंके संग असमान जूएमें जुत जाओ क्योंकि
धर्म्म और अधर्म्मका कौनसा साझा है और अन्धकार-
१५ के साथ ज्योतिकी कौन संगति । और बिलियालके संग
ख्रीष्टकी कौन सम्मति है अथवा अबिश्वासीके साथ
१६ बिश्वासीका कौनसा भाग । और मूरतोंके संग ईश्वरके
मन्दिरका कौनसा सम्बन्ध है क्योंकि तुम तो जीवते
ईश्वरके मन्दिर हो जैसा ईश्वरने कहा मैं उनमें बसूं-
गा और उनमें फिरूंगा और मैं उनका ईश्वर होंगा
१७ और वे मेरे लोग होंगे । इसलिये परमेश्वर कहता

है उनके बीचमेंसे निकलो और अलग होओ और
अशुद्ध बस्तुको मत छूओ तो मैं तुम्हें ग्रहण करूंगा .
और मैं तुम्हारा पिता होंगा और तुम मेरे पुत्र और १८
पुत्रियां होगे सर्व्वशक्तिमान परमेश्वर कहता है।

७ सातवां पर्व्व।

१ ऊपरके उपदेशकी समाप्ति। २ करिन्थियोंसे पावलके प्रेमका सम्बन्ध। ५ उसका तीतसके द्वारासे शांति प्राप्त करना। ८ उसकी पहिली पत्रीका फल। १३ उसका उनके विषयमें आनन्द करना।

सो हे प्यारो जब कि यह प्रतिज्ञाएं हमें मिली हैं १
आओ हम अपनेको शरीर और आत्माकी सब मलीन-
तासे शुद्ध करें और ईश्वरका भय रखते हुए सम्पूर्ण
पवित्रताको प्राप्त करें।

हमें ग्रहण करो हमने न किसीसे अन्याय किया न २
किसीको बिगाड़ा न किसीको ठगा। मैं दोषी ठहरानेको ३
नहीं कहता हूं क्योंकि मैंने आगेसे कहा है कि तुम
हमारे मनमें हो ऐसा कि हम तुम्हारे संग मरने और
तुम्हारे संग जीनेको तैयार हैं। तुम्हारी ओर मेरा साहस ४
बहुत है तुम्हारे विषयमें मुझे बड़ाई करनेकी जगह बहुत
है हमारे सब क्लेशके विषयमें मैं शांतिसे भर गया हूं
और अधिकसे अधिक आनन्द करता हूं।

क्योंकि जब हम माकिदोनियामें आये तब भी हमारे ५
शरीरको कुछ चैन नहीं मिला पर हम समस्त प्रकारसे
क्लेश पाते थे . बाहरसे युद्ध भीतरसे भय था। परन्तु ६
दीनोंको शांति देनेहारेने अर्थात ईश्वरने तीतसके आने-
से हमोंको शांति दिई . और केवल उसके आनेसे नहीं पर ७

उस शांतिसे भी जिस करके उसने तुम्हारी लालसा औ
तुम्हारे बिलाप औ मेरे लिये तुम्हारे अनुरागका समा-
चार हमसे कहते हुए तुम्हारे विषयमें शांति पाई
यहांलों कि मैं अधिक आनन्दित हुआ ।
८ क्योंकि जो मैंने उस पत्रीसे तुम्हें शोक दिलाया तौ-
भी मैं यद्यपि पछताता था अब नहीं पछताता हूं . मैं
देखता हूं कि उस पत्रीने यदि केवल थोड़ी बेरलों तौभी
९ तुम्हें शोक तो दिलाया । अभी मैं आनन्द करता हूं
इसलिये नहीं कि तुमने शोक किया परन्तु इसलिये कि
शोक करनेसे पश्चात्ताप किया क्योंकि तुम्हारा शोक
ईश्वरकी इच्छाके अनुसार था जिस्तें तुम्हें हमारी ओर-
१० से किसी बातमें हानि न होय । क्योंकि जो शोक
ईश्वरकी इच्छाके अनुसार है उससे वह पश्चात्ताप उत्पन्न
होता है जिस करके त्राण है और जिससे किसीको नहीं
पछताना है . परन्तु संसारके शोकसे मृत्यु उत्पन्न होती
११ है । क्योंकि अपना यही ईश्वरकी इच्छाके अनुसार
शोक दिलाया जाना देखो कि उससे कितना यत्न हां
उत्तर देनेकी कितनी चिन्ता हां कितनी रिस हां कितना
भय हां कितनी लालसा हां कितना अनुराग हां दंड
देनेका कितना बिचार तुममें उत्पन्न हुआ . तुमने
समस्त प्रकारसे अपने लिये इस बातमें निर्दोष होनेका
१२ प्रमाण दिया है । सो मैंने जो तुम्हारे पास लिखा
तौभी न तो उसके कारण लिखा जिसने अपराध
किया न उसके कारण जिसका अपराध किया गया
परन्तु इस कारण कि हमारे लिये जो तुम्हारा

यत्न है सो तुम्होंमें ईश्वरके सन्मुख प्रगट किया जाय।
इस कारणसे हमने तुम्हारी शांतिसे शांति पाई और १३
बहुत अधिक करके तीतसके आनन्दसे और भी आन-
न्दित हुए क्योंकि उसके मनको तुम सभोंकी ओरसे सुख
दिया गया है। क्योंकि यदि मैंने उसके आगे तुम्हारे १४
विषयमें कुछ बड़ाई किई है ताे लज्जित नहीं किया गया
हूं परन्तु जैसा हमने तुमसे सब बातें सच्चाईसे कहीं
तैसा हमारा तीतसके आगे बड़ाई करना भी सत्य हुआ
है। और वह जो तुम सभोंके आज्ञापालनको स्मरण १५
करता है कि तुमने क्योंकर डरते और कांपते हुए
उसको ग्रहण किया तो बहुत अधिक करके तुमपर
स्नेह करता है। मैं आनन्द करता हूं कि तुम्हारी १६
ओरसे मुझे समस्त प्रकारसे ढाढ़स बन्धता है।

८ आठवां पर्ब्ब।

१ कंगाल भाइयोंकी सहायता करनेके विषयमें माकिदोनियाकी मंडलियोंका बखान। ७ इसके विषयमें करिन्थियोंको उपदेश औा ढाढ़स देना। १६ जो भाई लोग चन्देके रुपैये लेने जाते थे उनकी प्रशंसा।

हे भाइयो हम तुम्हें ईश्वरका वह अनुग्रह जानते हैं १
जो माकिदोनियाकी मंडलियोंमें दिया गया है. कि २
क्लेशकी बड़ी परीक्षामें उनके आनन्दकी अधिकाई और
उनकी महा दरिद्रता इन दोनोंके बढ़ जानेसे उनकी
उदारताका धन प्रगट हुआ। क्योंकि मैं साक्षी देता हूं ३
कि वे अपने सामर्थ्य भर और सामर्थ्यसे अधिक आप-
हीसे तैयार थे. और हमें बहुत मनाके बिन्ती करते थे ४
कि हम उस दानको और पवित्र लोगोंके लिये जो सेव-

५ कोई तिसकी संगतिको ग्रहण करें . और जैसा हमने
आशा रखी थी तैसा नहीं परन्तु उन्होंने अपने तईं
पहिले प्रभुको तब ईश्वरकी इच्छासे हमोंको दिया .
६ यहांलों कि हमने तीतससे बिन्ती किई कि जैसा उस-
ने आगे आरंभ किया था तैसा तुम्होंमें इस अनुग्रहके
कर्म्मको समाप्त भी कर ले ।
७ परन्तु जैसे हर एक बातमें अर्थात बिश्वासमें औ
बचनमें औ ज्ञानमें औ सारे यत्नमें औ हमारी ओर
तुम्हारे प्रेममें तुम्हारी बढ़ती होती है तैसे इस अनुग्रह-
८ के कर्म्ममें भी तुम्हारी बढ़ती होय। मैं आज्ञाकी रीतिपर
नहीं परन्तु औरोंके यत्न करनेके कारण और तुम्हारे
९ प्रेमकी सच्चाईको परखनेके लिये कहता हूं। क्योंकि तुम
हमारे प्रभु यीशु खीष्टका अनुग्रह जानते हो कि वह जो
धनी था तुम्हारे कारण दरिद्र हुआ कि उसकी दरिद्र-
१० ताके द्वारा तुम धनी होओ। और इस बातमें मैं परामर्श
देता हूं क्योंकि यह तुम्हारे लिये अच्छा है जो बरस
दिनसे केवल करनेका नहीं परन्तु चाहनेका भी आरंभ
११ आगेसे कर चुके। सो अब करनेकी भी समाप्ति करो कि
जैसा चाहनेको तुम्हारे मनकी तैयारी थी वैसा तुम्हारी
सम्पत्तिके समान तुम्हारा समाप्ति करना भी होवे।
१२ क्योंकि यदि आगेसे मनकी तैयारी होती है तो जो
जिसके पास नहीं है उसके अनुसार नहीं परन्तु जो
१३ जिसके पास है उसके अनुसार वह ग्राह्य है। यह इस-
लिये नहीं है कि औरोंको चैन और तुमको क्लेश मिले.
१४ परन्तु समतासे इस वर्त्तमान समयमें तुम्हारी बढ़ती

उन्होंकी घटतीमें काम आवे इसलिये कि उनकी
बढ़ती भी तुम्हारी घटतीमें काम आवे जिस्तें समता
होय . जैसा लिखा है जिसने बहुत संचय किया उस- १५
का कुछ उभरा नहीं और जिसने थोड़ा संचय किया
उसका कुछ घटा नहीं।

और ईश्वरका धन्यबाद होय जो तुम्हारे लिये वही १६
यत्न तीतसके हृदयमें देता है . कि उसने वह बिन्ती १७
ग्रहण किई बरन अति यत्नवान होके वह अपनी इच्छासे
तुम्हारे पास गया है। और हमने उसके संग उस १८
भाईको भेजा है जिसकी प्रशंसा सुसमाचारके विषयमें
सब मंडलियोंमें होती है। और केवल इतना नहीं १९
परन्तु वह मंडलियोंसे ठहराया भी गया कि इस अनुग्रह-
के कर्म्मके लिये जिसकी सेवकाई हमसे किई जाती है
हमारे संग चले जिस्तें प्रभुकी महिमा और तुम्हारे
मनकी तैयारी प्रगट किई जाय। हम इस बातमें चौ- २०
कस रहते हैं कि इस अधिकाईके विषयमें जिसकी
सेवकाई हमसे किई जाती है कोई हमपर दोष न
लगावे। क्योंकि जो बातें केवल प्रभुके आगे नहीं परन्तु २१
मनुष्योंके आगे भी भली हैं हम उनकी चिन्ता करते हैं।
और हमने उनके संग अपने भाईको भेजा है जिसको २२
हमने बारंबार बहुत बातोंमें परखके यत्नवान पाया है
पर अब तुमपर जो बड़ा भरोसा है उसके कारण
बहुत अधिक यत्नवान पाया है। यदि तीतसकी पूछी २३
जाय तो वह मेरा साथी और तुम्हारे लिये सहकर्म्मी
है अथवा हमारे भाई लोग हों तो वे मंडलियोंके दूत

२४ और ख्रीष्टकी महिमा हैं । सो उन्हें मंडलियोंके सन्मुख
अपने प्रेमका और तुम्हारे विषयमें हमारे बड़ाई
करनेका प्रमाण दिखाओ ।

९ नवां पर्ब्ब ।

१ चन्देके विषयमें भाइयोंको भेजनेका अभिप्राय । ६ ईश्वरकी प्रतिज्ञा औ बड़ी
कृपाके हेतुसे और उस चन्देके फलके हेतुसे करिन्थियोंको देनेको चिताना ।

१ पवित्र लोगोंके लिये जो सेवकाई तिसके विषयमें
२ तुम्हारे पास लिखना मुझे अवश्य नहीं है । क्योंकि मैं
तुम्हारे मनकी तैयारीको जानता हूं जिसके लिये मैं
तुम्हारे विषयमें माकिदोनियोंके आगे बड़ाई करता हूं
कि आखायाके लोग बरस दिनसे तैयार हुए हैं और
३ तुम्हारे अनुरागने बहुतोंको हिसका दिलाया है । परन्तु
मैंने भाइयोंको इसलिये भेजा है कि तुम्हारे विषयमें
जो हमने बड़ाई किई है सो इस बातमें व्यर्थ न ठहरे
अर्थात कि जैसा मैंने कहा तैसे तुम तैयार हो रहो.
४ ऐसा न हो कि यदि कोई माकिदोनी लोग मेरे संग
आके तुम्हें तैयार न पावें तो क्या जानें इस निर्भय
बड़ाई करनेमें हम न कहें तुम लज्जित होओ पर हमही
५ लज्जित होवें । इसलिये मैंने भाइयोंसे बिन्ती करना
अवश्य समझा कि वे आगेसे तुम्हारे पास जावें और
तुम्हारी उदारताका फल जिसका सन्देश आगे दिया
गया था आगेसे सिद्ध करें कि यह लोभके नहीं परन्तु
उदारताके फलके ऐसा तैयार होवे ।
६ परन्तु यह है कि जो क्षुद्रतासे बोता है सो क्षुद्रतासे
लवेगा भी और जो उदारतासे बोता है सो उदारतासे

लवेगा भी । हर एक जन जैसा मनमें ठाने तैसा दान करे ७
कुढ़ कुढ़के अथवा दबावसे न देवे क्योंकि ईश्वर हर्षसे
देनेहारेको प्यार करता है । और ईश्वर सब प्रकारका ८
अनुग्रह तुम्हें अधिकाईसे दे सकता है जिस्तें हर बातमें
और हर समयमें सब कुछ जो अवश्य होय तुम्हारे पास
रहे और तुम्हें हर एक अच्छे कामके लिये बहुत सामर्थ्य
होय । जैसा लिखा है उसने बिथराया उसने कंगालोंको ९
दिया उसका धर्म्म सदालों रहता है । जो बोनेहारेको १०
बीज और भोजनके लिये रोटी देनेहारा है सो तुम्हें देवे
और तुम्हारा बीज फलवन्त करे और तुम्हारे धर्म्मके
फलोंको अधिक करे . कि तुम हर बातमें सब प्रकार- ११
की उदारताके लिये जो हमारे द्वारा ईश्वरका धन्य-
बाद करवाती है धनवान किये जावो । क्योंकि इस १२
उपकारकी सेवकाई न केवल पवित्र लोगोंकी घटियोंको
पूरी करती है परन्तु ईश्वरके बहुत धन्यवादोंके द्वारासे
उभरती भी है । क्योंकि वे इस सेवकाईसे प्रमाण लेके १३
तुम जो खीष्टके सुसमाचारके अधीन होनेका अंगी-
कार करते हो उस अधीनताके लिये और उनकी
और सभोंकी सहायता करनेमें तुम्हारी उदारताके
लिये ईश्वरका गुणानुबाद करते हैं । और ईश्वरका १४
अत्यन्त अनुग्रह जो तुमपर है उसके कारण तुम्हारी
लालसा करते हुए तुम्हारे लिये प्रार्थना करनेसे भी
ईश्वरकी महिमा प्रगट करते हैं । ईश्वरका उसके १५
अकथ्य दानके लिये धन्यबाद होवे ।

१० दसवां पर्व्व ।

१ पावलका अपने पदका और आत्मिक युद्धका वर्णन करना । ७ विरोधियोंको समझाना । १२ अपने परिश्रमको बखानना ।

१ मैं वही पावल जो तुम्हारे साम्ने तुम्हों में दीन हूं परन्तु
तुम्हारे पीछे तुम्हारी ओर साहस करता हूं तुमसे
ख्रीष्टकी नम्रता और कोमलताके कारण बिन्ती करता
२ हूं । मैं यह बिन्ती करता हूं कि तुम्हारे साम्ने मुझे उस
दृढ़तासे साहस करना न पड़े जिससे मैं कितनोंपर जो
हमोंको शरीरके अनुसार चलनेहारे समझते हैं साहस
३ करनेका बिचार करता हूं । क्योंकि यद्यपि हम शरीरमें
चलते फिरते हैं तौभी शरीरके अनुसार नहीं लड़ते
४ हैं । क्योंकि हमारे युद्धके हथियार शारीरिक नहीं परन्तु
५ गढ़ोंको तोड़नेके लिये ईश्वरके कारण सामर्थी हैं । हम
तर्कोंको और हर एक ऊंची बातको जो ईश्वरके ज्ञानके
बिरुद्ध उठती है खंडन करते हैं और हर एक भावनाको
६ ख्रीष्टकी आज्ञाकारी करनेके लिये बन्दी कर लेते हैं. और
तैयार रहते हैं कि जब तुम्हारा आज्ञापालन पूरा हो
जाय तब हर एक आज्ञालंघनका दंड देवें ।

७ क्या तुम जो कुछ सन्मुख है उसीको देखते हो .
यदि कोई अपनेमें भरोसा रखता है कि वह ख्रीष्टका
है तो आपही फिर यह समझे कि जैसा वह ख्रीष्टका
८ है तैसे हम लोग भी ख्रीष्टके हैं । क्योंकि जो मैं हमारे
उस अधिकारके विषयमें जिसे प्रभुने तुम्हें नाश करनेके
लिये नहीं परन्तु सुधारनेके लिये हमें दिया है कुछ
अधिक करके भी बड़ाई करूं तो लज्जित न होंगा ।

पर यह न होवे कि मैं ऐसा देख पड़ूं कि तुम्हें पत्रियोंसे ९
डराता हूं। क्योंकि वह कहता है उसकी पत्रियां तो १०
भारी औ प्रबल हैं परन्तु साक्षातमें उसका देह दुर्ब्बल
और उसका बचन तुच्छ है। ऐसा मनुष्य यह समझे ११
कि हम लोग तुम्हारे पीछे पत्रियोंके द्वारा बचनमें
जैसे हैं तुम्हारे साम्ने भी कर्म्ममें वैसेही होंगे।

क्योंकि हमें साहस नहीं है कि जो लोग अपनी १२
प्रशंसा करते हैं उनमेंसे कितनोंके संग अपनेको गिनें
अथवा अपनेको उनसे मिलाके देखें परन्तु वे अपनेको
अपनेसे आप नापते हुए और अपनेको अपनेसे मिलाके
देखते हुए ज्ञान प्राप्त नहीं करते हैं। हम तो परिमाण- १३
के बाहर बड़ाई नहीं करेंगे परन्तु जो परिमाणदण्ड
ईश्वरने हमें बांट दिया है कि तुम्होंतक भी पहुंचे उसके
नापके अनुसार बड़ाई करेंगे। क्योंकि हम तुम्होंतक १४
नहीं पहुंचते परन्तु अपनेको सिवानेके बाहर पसारते
हैं ऐसा नहीं है क्योंकि खीष्टका सुसमाचार प्रचार
करनेमें हम तुम्होंतक भी पहुंच चुके हैं। और हम १५
परिमाणके बाहर दूसरोंके परिश्रमके विषयमें बड़ाई
नहीं करते हैं परन्तु हमें भरोसा है कि ज्यों ज्यों तुम्हारा
विश्वास बढ़ जाय त्यों त्यों हम अपने परिमाणके
अनुसार तुम्हारे द्वारा अधिक अधिक बढ़ाये जायेंगे.
कि हम तुम्हारे देशसे आगे बढ़के सुसमाचार प्रचार १६
करें और यह नहीं कि हम दूसरोंके परिमाणके भीतर
तैयार किई हुई बस्तुओंके विषयमें बड़ाई करें। पर १७
जो बड़ाई करे सो प्रभुके विषयमें बड़ाई करे। क्योंकि १८

जो अपनी प्रशंसा करता है सो नहीं परन्तु जिसकी
प्रशंसा प्रभु करता है वही ग्रहण योग्य ठहरता है ।

११ एग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ पावलके अपना बखान करनेका हेतु । ७ करिन्थियोंसे कुछ रुपैये न लेनेका कारण । १३ झूठे प्रेरितोंका वर्णन । १६ पावलके बड़ाई करनेकी आवश्यकताका वर्णन । २२ यिहूदी होनेके विषयमें और अपने दु:खों औ दुर्ब्बलताके विषयमें उसका बड़ाई करना ।

१ मैं चाहता हूं कि तुम मेरी अज्ञानतामें थोड़ासा
२ मेरी सह लेते . हां मेरी सह भी लेओ । क्योंकि मैं
ईश्वरके लिये तुम्हारे विषयमें धुन लगाये रहता हूं
इसलिये कि मैंने एकही पुरुषसे तुम्हारी बात लगाई है
जिस्तें तुम्हें पवित्र कुंवारीकी नाईं ख्रीष्टको सोंप देऊं ।
३ परन्तु मैं डरता हूं कि जैसे सांपने अपनी चतुराईसे
हव्वाको ठगा तैसे तुम्हारे मन उस सीधाईसे जो ख्रीष्ट-
४ की ओर है कहीं भ्रष्ट न किये जायें । यदि वह जो तुम्हारे
पास आता है दूसरे यीशुको प्रचार करता है जिसे हमने
प्रचार नहीं किया अथवा और आत्मा तुम्हें मिलता
है जो तुम्हें नहीं मिला था अथवा और सुसमाचार
जिसे तुमने ग्रहण नहीं किया था तो तुम भली रीतिसे
५ सह लेते । मैं तो समझता हूं कि मैं किसी बातमें
६ उन अत्यन्त बड़े प्रेरितोंसे घट नहीं हूं । यदि मैं वचन-
में अनाड़ी हूं तौभी ज्ञानमें नहीं परन्तु हम हर बातमें
सभोंके आगे तुमपर प्रगट किये गये ।
७ मैं जो अपनेको नीचा करता था कि तुम ऊंचे किये
जावो क्या इसमें मैंने पाप किया . क्योंकि मैंने सेंतमेंत
८ ईश्वरका सुसमाचार तुम्हें सुनाया । मैंने और मंडलियों-

को लूट लिया कि तुम्हारी सेवाके लिये मैंने उनसे मजूरी
लिई। और जब मैं तुम्हारे संग था और मुझे घटी ९
हुई तब मैंने किसीपर भार नहीं दिया क्योंकि भाइयों-
ने माकिदोनियासे आके मेरी घटीको पूरी किई और
मैंने सर्व्वथा अपनेको तुमपर भार होनेसे बचा रखा
और बचा रखूंगा। जो खीष्टकी सच्चाई मुझमें है तो १०
मेरे विषयमें यह बड़ाई आखाया देशमें नहीं बन्द
किई जायगी। किस कारण . क्या इसलिये कि मैं ११
तुम्हें प्यार नहीं करता हूं . ईश्वर जानता है। पर १२
मैं जो करता हूं सोई करूंगा कि जो लोग दांव ढूंढ़ते
हैं उन्हें मैं दांव पाने न देऊं कि जिस बातमें वे घमंड
करते हैं उसमें वे हमारेही समान ठहरें।

क्योंकि ऐसे लोग झूठे प्रेरित हैं छलका कार्य्य करने- १३
हारे खीष्टके प्रेरितोंका रूप धरनेहारे। और यह कुछ १४
अचंभेकी बात नहीं क्योंकि शैतान आप भी ज्योतिके
दूतका रूप धरता है। सो यदि उसके सेवक भी धर्म्म- १५
के सेवकोंकासा रूप धरें तो कुछ बड़ी बात नहीं है .
पर उनका अन्त उनके कर्म्मोंके अनुसार होगा।

मैं फिर कहता हूं कोई मुझे मूर्ख न समझे और नहीं १६
तो यदि मूर्ख जानके तौभी मुझे ग्रहण करो कि थोड़ासा
मैं भी बड़ाई करूं। मैं जो बोलता हूं उसको प्रभुकी १७
आज्ञाके अनुसार नहीं परन्तु इस निर्भय बड़ाई करनेमें
जैसे मूर्खतासे बोलता हूं। जब कि बहुत लोग शरीरके १८
अनुसार बड़ाई करते हैं मैं भी बड़ाई करूंगा। तुम तो १९
बुद्धिमान होके आनन्दसे मूर्खोंकी सह लेते हो। क्योंकि २०

यदि कोई तुम्हें दास बनाता है यदि कोई खा जाता है
यदि कोई ले लेता है यदि कोई अपना बड़ापन करता
है यदि कोई तुम्हारे मुंहपर थपेड़ा मारता है तो तुम
२१ सह लेते हो। इस अनादरकी रीतिपर मैं कहता हूं
मानो कि हम दुर्ब्बल थे. परन्तु जिस बातमें कोई साहस
करता है मैं मूर्खतासे कहता हूं मैं भी साहस करता हूं।
२२ क्या वे इब्री लोग हैं. मैं भी हूं. क्या वे इस्रायेली
हैं. मैं भी हूं. क्या वे इब्राहीमके बंश हैं. मैं भी हूं।
२३ क्या वे खीष्टके सेवक हैं. मैं बुद्धिहीनसा बोलता हूं
उनसे बढ़कर मैं बहुत अधिक परिश्रम करनेसे औ
अत्यन्त मार खानेसे औ बन्दीगृहमें बहुत अधिक पड़ने-
से औ मृत्युलों बारंबार पहुंचनेसे खीष्टका सेवक ठहरा।
२४ पांच बार मैंने यिहूदियोंके हाथसे उन्तालीस उन्तालीस
२५ कोड़े खाये। तीन बार मैंने बेत खाई एक बार पत्थर-
वाह किया गया तीन बार जहाज जिनपर मैं चढ़ा था
२६ टूट गये एक रात दिन मैंने समुद्रमें काटा। नदियोंकी
अनेक जोखिम डाकूओंकी अनेक जोखिम अपने लोगोंसे
अनेक जोखिम अन्यदेशियोंसे अनेक जोखिम नगरमें
अनेक जोखिम जंगलमें अनेक जोखिम समुद्रमें अनेक
जोखिम झूठे भाइयोंमें अनेक जोखिम इन सब जोखिमों
२७ सहित बार बार यात्रा करनेसे. और परिश्रम औ
क्लेशसे बार बार जागते रहनेसे भूख औ प्याससे बार
बार उपवास करनेसे जाड़े औ नंगाईसे मैं खीष्टका सेवक
२८ ठहरा। और और बातोंको छोड़के यह भीड़ जो प्रति-
दिन मुझपर पड़ती है अर्थात सब मंडलियोंकी चिन्ता।

कौन दुर्ब्बल है और मैं दुर्ब्बल नहीं हूं . कौन ठोकर २९
खाता है और मैं नहीं जलता हूं। यदि बड़ाई करना ३०
अवश्य है तो मैं अपनी दुर्ब्बलताकी बातोंपर बड़ाई
करूंगा। हमारे प्रभु यीशु खीष्टका पिता ईश्वर जो सर्ब्बदा ३१
धन्य है जानता है कि मैं झूठ नहीं बोलता हूं। दमेसकमें ३२
अरिता राजाकी ओरसे जो अध्यक्ष था सो मुझे पकड़ने-
की इच्छासे दमेसकियोंके नगरपर पहरा दिलाता था।
और मैं खिड़की देके टोकरेमें भीतपरसे लटकाया गया ३३
और उसके हाथसे बच निकला।

१२ बारहवां पर्ब्ब।

१ पावलका स्वर्गलोकमें चढ़ा लिया जाना और पीछे संकट पाना। ११ करिन्थियों-को फिर समझाना। १६ उसके और तीतसके चरित्रका एक समान होना। १९ उसका केवल उनके सुधारनेके लिये यह बातें लिखना।

बड़ाई करना मेरे लिये अच्छा तो नहीं है. मैं प्रभुके १
दर्शनों और प्रकाशोंका बर्णन करूंगा। मैं खीष्टमें एक २
मनुष्यको जानता हूं कि चौदह बरस हुए क्या देह
सहित मैं नहीं जानता हूं क्या देह रहित मैं नहीं
जानता हूं ईश्वर जानता है ऐसा मनुष्य तीसरे स्वर्ग-
लों उठा लिया गया। मैं ऐसे मनुष्यको जानता हूं ३
क्या देह सहित क्या देह रहित मैं नहीं जानता हूं
ईश्वर जानता है. कि स्वर्गलोकपर उठा लिया गया ४
और अकथ्य बातें सुनीं जिनके बोलनेका सामर्थ्य
मनुष्यको नहीं है। ऐसे मनुष्यके विषयमें मैं बड़ाई ५
करूंगा परन्तु अपने विषयमें बड़ाई न करूंगा केवल
अपनी दुर्ब्बलताओंपर। क्योंकि यदि मैं बड़ाई करने- ६
की इच्छा करूंगा तो मूर्ख न होंगा क्योंकि सत्य बो-

लूंगा परन्तु मैं रुक जाता हूं ऐसा न हो कि कोई
जो कुछ वह देखता है कि मैं हूं अथवा मुझसे सुनता
७ है उससे मुझको कुछ बड़ा समझे । और जिस्तें मैं
प्रकाशोंकी अधिकाईसे अभिमानी न हो जाऊं इस-
लिये शरीरमें एक कांटा मानो मुझे घूंसे मारनेको
शैतानका एक दूत मुझे दिया गया कि मैं अभिमानी
८ न हो जाऊं । इस बातपर मैंने प्रभुसे तीन बार बिन्ती
९ किई कि मुझसे यह दूर किया जाय । और उसने
मुझसे कहा मेरा अनुग्रह तेरे लिये बस है क्योंकि
मेरा सामर्थ्य दुर्ब्बलतामें सिद्ध होता है . सो मैं अति
आनन्दसे अपनी दुर्ब्बलताओंहीके विषयमें बड़ाई करूं-
१० गा कि ख्रीष्टका सामर्थ्य मुझपर आ बसे। इस कारण
मैं ख्रीष्टके लिये दुर्ब्बलताओंसे औ निन्दाओंसे औ
दरिद्रतासे औ उपद्रवोंसे औ संकटोंसे प्रसन्न हूं क्यों-
कि जब मैं दुर्ब्बल हूं तब बलवन्त हूं ।
११ मैं बड़ाई करनेमें मूर्ख बना हूं तुमने मुझसे ऐसा
करवाया है . उचित था कि मेरी प्रशंसा तुम्होंसे किई
जाती क्योंकि यद्यपि मैं कुछ नहीं हूं तौभी उन अत्यन्त
१२ बड़े प्रेरितोंसे किसी बातमें घट नहीं था। प्रेरितके लक्षण
तुम्हारे बीचमें सब प्रकारके धीरज सहित चिन्हों औ
१३ अद्भुत कामों औ आश्चर्य्य कर्म्मोंसे दिखाये गये। कौनसी
बात थी जिसमें तुम और और मंडलियोंसे घट थे केवल
यह कि मैंने आपही तुमपर भार नहीं दिया . मेरी यह
१४ अनीति क्षमा कीजियो । देखो मैं तीसरी बार तुम्हारे
पास आनेको तैयार हूं और मैं तुमपर भार न दूंगा

क्योंकि मैं तुम्हारी सम्पत्तिको नहीं पर तुमहीको चाहता
हूं क्योंकि उचित नहीं है कि लड़के माता पिताके लिये
पर माता पिता लड़कोंके लिये संचय करें। परन्तु १५
यद्यपि मैं जितना तुम्हें अधिक प्यार करता हूं उतना
थोड़ा प्यारा हूं तौभी मैं अति आनन्दसे तुम्हारे प्राणोंके
लिये खर्च करूंगा और खर्च किया जाऊंगा।

सो ऐसा होय मैंने तुमपर बोझ नहीं डाला. तौभी १६
[कहते हैं कि] मैंने चतुर होके तुम्हें छलसे पकड़ा।
क्या जिन्हें मैंने तुम्हारे पास भेजा उनमेंसे किसीको १७
कह सकते कि इसके द्वारासे मैंने लोभ कर कुछ तुमसे
लिया। मैंने तीतससे बिन्ती किई और भाईको उसके १८
संग भेजा. क्या तीतसने लोभ कर कुछ तुमसे लिया.
क्या हम एकही आत्मासे न चले. क्या एकही लीकपर
न चले।

फिर क्या तुम समझते हो कि हम तुम्हारे साम्ने १९
अपना उत्तर देते हैं. हम तो ईश्वरके साम्ने ख्रीष्टमें
बोलते हैं पर हे प्यारो सब बातें तुम्हारे सुधारनेके
लिये बोलते हैं। क्योंकि मैं डरता हूं ऐसा न हो कि २०
क्या जानें मैं आके तुम्हें न ऐसे पाऊं जैसे मैं चाहता
हूं और मैं तुमसे ऐसा पाया जाऊं जैसा तुम नहीं
चाहते हो. कि क्या जानें नाना भांतिके बैर डाह
क्रोध बिबाद दुर्बचन फुसफुसाहट अभिमान और बखेड़े
होवें। और मेरा ईश्वर कहीं मुझे फिर आनेपर २१
तुम्हारे यहां हेठा करे और मैं उन्होंमेंसे बहुतोंके लिये
शोक करूं जिन्होंने आगे पाप किया था और उस

अशुद्ध कर्म्म और व्यभिचार और लुचपनसे जो उन्होंने
किये थे पश्चात्ताप नहीं किया है ।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

१ पावलका करिन्थियोंको समझाना ऐसा न हो कि अन्तमें दंड देना अवश्य होय । ११ उपदेश औ नमस्कार सहित पत्रीकी समाप्ति ।

१ यह तीसरी बार मैं तुम्हारे पास आता हूं . दो
और तीन साक्षियोंके मुंहसे हर एक बात ठहराई
२ जायगी । मैं पहिले कह चुका और जैसा तुम्हारे साम्ने
दूसरी बेर आगेसे कहता हूं और तुम्हारी पीठके पीछे
उन लोगोंके पास जिन्होंने आगे पाप किया था और
और सब लोगोंके पास अब लिखता हूं कि जो मैं फिर
३ तुम्हारे पास आऊं तो नहीं छोड़ूंगा । तुम तो ख्रीष्टके
मुझमें बोलनेका प्रमाण ढूंढ़ते हो जो तुम्हारी ओर
४ दुर्ब्बल नहीं है परन्तु तुम्होंमें सामर्थी है । क्योंकि
यद्यपि वह दुर्ब्बलतासे क्रूशपर घात किया गया तौभी
ईश्वरके सामर्थ्यसे जीता है . हम भी उसमें दुर्ब्बल हैं
परन्तु तुम्हारी ओर ईश्वरके सामर्थ्यसे उसके संग
५ जीयेंगे । अपनेको परखो कि बिश्वासमें हो कि नहीं
अपनेको जांचो . अथवा क्या तुम अपनेको नहीं
पहचानते हो कि यीशु ख्रीष्ट तुम्होंमें है नहीं तो तुम
६ निकृष्ट हो । पर मेरा भरोसा है कि तुम जानोगे कि
७ हम निकृष्ट नहीं हैं । परन्तु मैं ईश्वरसे यह प्रार्थना
करता हूं कि तुम कोई कुकर्म्म न करो इसलिये नहीं
कि हम खरे देख पड़ें परन्तु इसलिये कि तुम सुकर्म्म
८ करो . हम बरन निकृष्टके ऐसे होवें तो होवें। क्योंकि

हम सत्यके बिरुद्ध कुछ नहीं कर सकते हैं परन्तु सत्यके
निमित्त । जब हम दुर्ब्बल हैं पर तुम बलवन्त हो तब ९
हम आनन्द करते हैं और हम इस बातकी प्रार्थना
भी करते हैं अर्थात तुम्हारे सिद्ध होनेकी । इस कारण १०
मैं तुम्हारे पीछे यह बातें लिखता हूं कि तुम्हारे साम्ने
मुझे उस अधिकारके अनुसार जिसे प्रभुने नाश करनेके
लिये नहीं परन्तु सुधारनेके लिये मुझे दिया है कड़ाईसे
कुछ करना न पड़े ।

अन्तमें हे भाइयो यह कहता हूं कि आनन्दित ११
रहो सुधर जाओ शांत होओ एकही मन रखो मिले
रहो और प्रेम औ शांतिका ईश्वर तुम्हारे संग होगा ।
एक दूसरेको पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो । सब १२ १३
पवित्र लोगोंका तुमसे नमस्कार । प्रभु यीशु खीष्टका १४
अनुग्रह और ईश्वरका प्रेम और पवित्र आत्माकी
संगति तुम सभोंके साथ रहे । आमीन ॥

गलातियोंको पावल प्रेरितकी पत्री ।

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ पत्रीका आभाष । ६ गलातियोंके सत्य मतसे फिर जानेका उलहना । ११ पावलका यह बताना कि मैंने सुसमाचार मनुष्यसे नहीं परन्तु ईश्वरसे पाया । १३ उसकी अगली चालसे और बिश्वास करनेके पीछेके चरित्रसे इस बातका प्रमाण ।

१ पावल जो न मनुष्योंकी ओरसे और न मनुष्यके
द्वारासे परन्तु यीशु खीष्टके द्वारासे और ईश्वर पिताके
२ द्वारासे जिसने उसको मृतकोंमेंसे उठाया प्रेरित है . और
सब भाई लोग जो मेरे संग हैं गलातियाकी मंडलियोंको .
३ तुम्हें अनुग्रह और शांति ईश्वर पिता और हमारे प्रभु
४ यीशु खीष्टसे मिले . जिसने अपनेको हमारे पापोंके
लिये दिया कि हमें इस बर्त्तमान बुरे संसारसे बचावे
५ हमारे पिता ईश्वरकी इच्छाके अनुसार . जिसका
गुणानुबाद सदा सर्ब्बदा होवे . आमीन ।
६ मैं अचंभा करता हूं कि जिसने तुम्हें खीष्टके अनुग्रहके
द्वारा बुलाया उससे तुम ऐसे शीघ्र औरही सुसमाचारकी
७ ओर फिरे जाते हो । और वह तो दूसरा सुसमाचार
नहीं है पर केवल कितने लोग हैं जो तुम्हें ब्याकुल करते
हैं और खीष्टके सुसमाचारको बदल डालने चाहते हैं।
८ परन्तु यदि हम भी अथवा स्वर्गसे एक दूत भी उस
सुसमाचारसे भिन्न जो हमने तुमको सुनाया दूसरा
९ सुसमाचार तुम्हें सुनावे तो स्रापित होवे। जैसा हमने

पहिले कहा है तैसा मैं अब भी फिर कहता हूं कि
जिसको तुमने ग्रहण किया उससे भिन्न यदि कोई तुम्हें
दूसरा सुसमाचार सुनाता है तो स्रापित होवे। क्योंकि १०
मैं अब क्या मनुष्योंको अथवा ईश्वरको मनाता हूं. अथ-
वा क्या मैं मनुष्योंको प्रसन्न करने चाहता हूं. जो मैं अब
भी मनुष्योंको प्रसन्न करता तो ख्रीष्टका दास न होता।
हे भाइयो मैं उस सुसमाचारके विषयमें जो मैंने ११
प्रचार किया तुम्हें जनाता हूं कि वह मनुष्यके मतके
अनुसार नहीं है। क्योंकि मैंने भी उसको मनुष्यकी १२
ओरसे नहीं पाया और न मैं सिखाया गया परन्तु
यीशु ख्रीष्टके प्रकाश करनेके द्वारासे पाया।
क्योंकि यिहूदीय मतमें मेरी जैसी चाल चलन आगे १३
थी सो तुमने सुनी है कि मैं ईश्वरकी मंडलीको अत्यन्त
सताता था और उसे नाश करता था. और अपने १४
देशके बहुत लोगोंसे जो मेरी वयसके थे यिहूदीय मतमें
अधिक बढ़ गया कि मैं अपने पुर्खोंके व्यवहारोंके विषयमें
बहुत अधिक धुन लगाये था। परन्तु ईश्वरकी जिसने १५
मुझे मेरी माताके गर्भहीसे अलग किया और अपने
अनुग्रहसे बुलाया जब इच्छा हुई. कि मुझमें अपने पुत्र- १६
को प्रगट करे जिस्तें मैं अन्यदेशियोंमें उसका सुसमा-
चार प्रचार करूं तब तुरन्त मैंने मांस ओ लोहूके संग
परामर्श न किया. और न यिरूशलीमको उनके १७
पास गया जो मेरे आगे प्रेरित थे परन्तु अरब देशको
चला गया और फिर दमेसकको लौटा। तब तीन बरस- १८
के पीछे मैं पितरसे भेंट करनेको यिरूशलीम गया और

१९ उसके यहां पन्द्रह दिन रहा । परन्तु प्रेरितोंमेंसे मैंने
और किसीको नहीं देखा केवल प्रभुके भाई याकूबको ।
२० मैं तुम्हारे पास जो बातें लिखता हूं देखो ईश्वरके साम्ने
२१ मैं कहता हूं कि मैं झूठ नहीं बोलता हूं । तिसके पीछे मैं
२२ सुरिया और किलिकिया देशोंमें गया । पर यिहूदियाकी
मंडलियोंको जो ख्रीष्टमें थीं मेरे रूपका परिचय नहीं
२३ हुआ था । वे केवल सुनते थे कि जो हमें आगे
सताता था सो जिस बिश्वासको आगे नाश करता था
२४ उसीका अब सुसमाचार प्रचार करता है । और मेरे
विषयमें उन्होंने ईश्वरका गुणानुवाद किया ।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ पावलने प्रेरितोंसे शिक्षा नहीं पाई परन्तु प्रेरितोंने उसके उपदेशपर सम्मति किई इसका वर्णन । ११ पावलका पितरको समझाना और बिश्वासके द्वारा धर्म्मी ठहरनेके उपदेशका प्रमाण देना ।

१ तब चौदह बरसके पीछे मैं बर्णबाके साथ फिर
यिरूशलीमको गया और तीतसको भी अपने संग ले
२ गया । मैं प्रकाशके अनुसार गया और जो सुसमाचार
मैं अन्यदेशियोंमें प्रचार करता हूं उसको मैंने उन्हें
सुनाया पर जो बड़े समझे जाते थे उन्हें एकान्तमें
सुनाया जिस्तें न हो कि मैं किसी रीतिसे वृथा दौड़ता
३ हूं अथवा दौड़ा था । परन्तु तीतस भी जो मेरे संग था
यद्यपि यूनानी था तौभी उसके खतना किये जानेकी
४ आज्ञा न दिई गई । और यह उन झूठे भाइयोंके कारण
हुआ जो चोरीसे भीतर ले लिये गये थे और हमें बंधमें
डालनेके लिये हमारी निर्बंधताको जो ख्रीष्ट यीशुमें हमें
५ मिली है देख लेनेको छिपके घुस आये थे । उनके

बशमें हम एक घड़ी भी अधीन नहीं रहे इसलिये कि
सुसमाचारकी सच्चाई तुम्हारे पास बनी रहे। फिर जो ६
लोग कुछ बड़े समझे जाते थे वे जैसे थे तैसे थे मुझे
कुछ काम नहीं ईश्वर किसी मनुष्यका पक्षपात नहीं
करता है उनसे मैंने कुछ नहीं पाया क्योंकि जो लोग
बड़े समझे जाते थे उन्होंने मुझे कुछ नहीं बताया।
परन्तु इसके विरुद्ध जब याकूब और कैफा और योहनने ७
जो खंभे समझे जाते थे देखा कि जैसा खतना किये
हुओंके लिये सुसमाचार पितरको सोंपा गया तैसा
खतनाहीनोंके लिये मुझे सोंपा गया. क्योंकि जिसने ८
पितरसे खतना किये हुओंमेंकी प्रेरिताईका कार्य्य
करवाया तिसने मुझसे भी अन्यदेशियोंमें कार्य्य करवा-
या. और जब उन्होंने उस अनुग्रहको जो मुझे दिया ९
गया था जान लिया तब उन्होंने मुझको और बर्णबाको
संगतिके दहिने हाथ दिये इस कारण कि हम अन्य-
देशियोंके पास और वे आप खतना किये हुओंके पास
जावें। केवल यह चाहा कि हम कंगालोंकी सुध लेवें १०
और यही काम करनेमें मैंने तो यत्न भी किया।

परन्तु जब पितर अन्तैखियामें आया तब मैंने ११
साक्षात उसका साम्ना किया इसलिये कि दोषी ठहराया
गया था। क्योंकि कितने लोगोंके याकूबके पाससे १२
आनेके पहिले वह अन्यदेशियोंके साथ खाता था परन्तु
जब वे आये तब खतना किये हुए लोगोंके डरके मारे
हटके अपनेको अलग रखता था। और उसके संग १३
दूसरे यिहूदियोंने भी कपट किया यहांलों कि बर्णबा भी

१४ उनके कपटसे बहकाया गया। परन्तु जब मैंने देखा
कि वे सुसमाचारकी सच्चाईपर सीधे नहीं चलते हैं तब
मैंने सभोंके साम्ने पितरसे कहा कि जो तू यिहूदी होके
अन्यदेशियोंकी रीतिपर चलता है और यिहूदीय मतपर
नहीं तो तू अन्यदेशियोंको यिहूदीय मतपर क्यों चलाता
१५ है। हम जो जन्मके यिहूदी हैं और अन्यदेशियोंमेंके
१६ पापी लोग नहीं. यह जानके कि मनुष्य व्यवस्थाके
कर्म्मोंसे नहीं पर केवल यीशु ख्रीष्टके बिश्वासके द्वारासे
धर्म्मी ठहराया जाता है हमने भी ख्रीष्ट यीशुपर बिश्वास
किया कि हम व्यवस्थाके कर्म्मोंसे नहीं पर ख्रीष्टके
बिश्वाससे धर्म्मी ठहरें इस कारण कि व्यवस्थाके कर्म्मोंसे
१७ कोई प्राणी धर्म्मी नहीं ठहराया जायगा। परन्तु यदि
ख्रीष्टमें धर्म्मी ठहराये जानेका यत्न करनेसे हम आप
भी पापी ठहरे तो क्या ख्रीष्ट पापका सेवक है. ऐसा
१८ न हो। क्योंकि जो बस्तु मैंने गिराई थी यदि उसीको
फिर बनाता हूं तो अपनेपर प्रमाण देता हूं कि अप-
१९ राधी हूं। मैं तो व्यवस्थाके द्वारासे व्यवस्थाके लिये
२० मरा कि ईश्वरके लिये जीऊं। मैं ख्रीष्टके संग क्रूशपर
चढ़ाया गया हूं तौभी जीता हूं. अब तो मैं आप
नहीं पर ख्रीष्ट मुझमें जीता है और मैं शरीरमें अब
जो जीता हूं सो ईश्वरके पुत्रके बिश्वासमें जीता हूं
जिसने मुझे प्यार किया और मेरे लिये अपनेको
२१ सौंप दिया। मैं ईश्वरके अनुग्रहको व्यर्थ नहीं करता
हूं क्योंकि यदि व्यवस्थाके द्वारासे धर्म्म होता है तो
ख्रीष्ट अकारण मूआ।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ पावलका गलातियोंको समझाना। ५ इब्राहीमके विश्वासका प्रमाण। १० व्यवस्थासे मनुष्योंका स्नापित ठहरना। १५ ईश्वरके नियमकी दृढ़ताई। १९ खीष्टलों पहुंचाना व्यवस्थाका अभिप्राय है इसका वर्णन। २५ खीष्टसे विश्वासियोंका लेपालक पद प्राप्त करना।

हे निर्बुद्धि गलातियो किसने तुम्हें मोह लिया है कि १
तुम लोग सत्यको न मानो जिनके आगे यीशु खीष्ट
क्रूशपर चढ़ाया हुआ साक्षात तुम्हारे बीचमें प्रगट किया
गया। मैं तुमसे केवल यही सुनने चाहता हूं कि तुमने २
आत्माको क्या व्यवस्थाके कर्म्मोंके हेतुसे अथवा बि-
श्वासके समाचारके हेतुसे पाया। क्या तुम ऐसे निर्बुद्धि ३
हो. क्या आत्मासे आरंभ करके तुम अब शरीरसे
सिद्ध किये जाते हो। क्या तुमने इतना दुःख वृथा ४
उठाया. जो ऐसा ठहरे कि वृथाही उठाया।
जो तुम्हें आत्मा दान करता और तुम्होंमें आश्चर्य्य ५
कर्म्म करवाता है सो क्या व्यवस्थाके कर्म्मोंके हेतुसे
अथवा विश्वासके समाचारके हेतुसे ऐसा करता है।
जैसे इब्राहीमने ईश्वरका बिश्वास किया और यह ६
उसके लिये धर्म्म गिना गया। सो यह जानो कि जो ७
विश्वासके अवलम्बी हैं सोई इब्राहीमके सन्तान हैं।
फिर ईश्वर जो बिश्वाससे अन्यदेशियोंको धर्म्मी ठह- ८
राता है यह बात आगेसे देखके धर्म्मपुस्तकने इब्राहीमको
आगेसे सुसमाचार सुनाया कि तुझमें सब देशोंके लोग
आशीस पावेंगे। सो वे जो बिश्वासके अवलम्बी ९
हैं बिश्वासी इब्राहीमके संग आशीस पाते हैं।
क्योंकि जितने लोग व्यवस्थाके कर्म्मोंके अवलम्बी हैं वे १०

सब स्रापबश हैं क्योंकि लिखा है हर एक जन जो व्यव-
स्थाके पुस्तकमें लिखी हुई सब बातें पालन करनेको
११ उनमें बना नहीं रहता है स्रापित है। परन्तु व्यवस्थाके
द्वारासे ईश्वरके यहां कोई नहीं धर्म्मी ठहरता है यह
बात प्रगट है क्योंकि बिश्वाससे धर्म्मी जन जीयेगा।
१२ पर व्यवस्था बिश्वास संबन्धी नहीं है परन्तु जो मनुष्य
१३ यह बातें पालन करे सो उनसे जीयेगा। खीष्टने
दाम देके हमें व्यवस्थाके स्रापसे छुड़ाया कि वह हमारे
लिये स्रापित बना क्योंकि लिखा है हर एक जन जो
१४ काठपर लटकाया जाता है स्रापित है। यह इसलिये
हुआ कि इब्राहीमकी आशीस खीष्ट यीशुमें अन्यदेशि-
योंपर पहुंचे और कि जो कुछ आत्माके विषयमें
प्रतिज्ञा किया गया सो बिश्वासके द्वारासे हमें मिले।
१५ हे भाइयो मैं मनुष्यकी रीतिपर कहता हूं कि मनुष्यके
नियमको भी जो दृढ़ किया गया है कोई टाल नहीं
१६ देता है और न उसमें मिला देता है। फिर प्रति-
ज्ञाएं इब्राहीमको और उसके बंशको दिई गईं. वह
नहीं कहता है बंशोंको जैसे बहुतोंके विषयमें परन्तु
जैसे एकके विषयमें और तेरे बंशको. सोई खीष्ट है।
१७ पर मैं यह कहता हूं कि जो नियम ईश्वरने खीष्टके
लिये आगेसे दृढ़ किया था उसको व्यवस्था जो चार
सौ तीस बरस पीछे हुई नहीं उठा देती है ऐसा कि
१८ प्रतिज्ञाको व्यर्थ कर दे। क्योंकि यदि अधिकार व्यव-
स्थासे होता है तो फिर प्रतिज्ञासे नहीं है. परन्तु
ईश्वरने उसे इब्राहीमको प्रतिज्ञाके द्वारासे दिया है।

तो व्यवस्था क्या करती है . जबलों वह बंश जिसको १९
प्रतिज्ञा दिई गई थी न आया तबलों अपराधोंके कारण
वह भी दिई गई और वह दूतोंके द्वारा मध्यस्थके हाथमें
निरूपण किई गई । मध्यस्थ एकका नहीं होता है २०
परन्तु ईश्वर एक है । तो क्या व्यवस्था ईश्वरकी २१
प्रतिज्ञाओंके बिरुद्ध है . ऐसा न हो क्योंकि यदि ऐसी
व्यवस्था दिई जाती कि जिलाने सकती तो निश्चय
करके धर्म्म व्यवस्थासे होता । परन्तु धर्म्मपुस्तकने सभों- २२
को पाप तले बन्द कर रखा इसलिये कि यीशु ख्रीष्टके
बिश्वासका फल जिसकी प्रतिज्ञा किई गई बिश्वास
करनेहारोंको दिया जावे । परन्तु बिश्वासके आनेके २३
पहिले हम बिश्वासके लिये जो प्रगट होनेपर था
व्यवस्थाके पहरेमें बन्द किये हुए रहते थे । सो व्यव- २४
स्था हमारी शिक्षक हुई है कि ख्रीष्टलों पहुंचावे जिस्तें
हम बिश्वाससे धर्म्मी ठहराये जावें ।

परन्तु बिश्वास जो आ चुका है तो अब हम शिक्षक- २५
के बशमें नहीं हैं। क्योंकि ख्रीष्ट यीशुपर बिश्वास करनेके २६
द्वारासे तुम सब ईश्वरके सन्तान हो । क्योंकि जितनोंने २७
ख्रीष्टमें बपतिसमा लिया उन्होंने ख्रीष्टको पहिन लिया ।
उसमें न यिहूदी न यूनानी है उसमें न दास न निर्बन्ध २८
है उसमें नर औ नारी नहीं है क्योंकि तुम सब ख्रीष्ट
यीशुमें एक हो । पर जो तुम ख्रीष्टके हो तो इब्रा- २९
हीमके बंश और प्रतिज्ञाके अनुसार अधिकारी हो ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ बिश्वासियोंके लेपालक पुत्र होनेका वर्णन । ८ व्यवस्थाकी ओर फिरनेके विषयमें गलातियोंको समझाना । २१ इब्राहीमके दो पुत्रोंके वृत्तान्तसे व्यवस्थाका और सुसमाचारका दृष्टान्त ।

१ पर मैं कहता हूं कि अधिकारी जबलों बालक है
तबलों यद्यपि सब बस्तुओंका स्वामी है तौभी दाससे
२ कुछ भिन्न नहीं है . परन्तु पिताके ठहराये हुए समय-
३ लों रक्षकों और भंडारियोंके बशमें है । वैसेही हम
भी जब बालक थे तब संसारकी आदिशिक्षाके बशमें
४ दास बने हुए थे । परन्तु जब समयकी पूर्णता पहुंची
तब ईश्वरने अपने पुत्रको भेजा जो स्त्रीसे जन्मा और
५ व्यवस्थाके बशमें उत्पन्न हुआ . इसलिये कि दाम देके
उन्हें जो व्यवस्थाके बशमें हैं छुड़ावे जिस्तें लेपालकोंका
६ पद हमें मिले । और तुम जो पुत्र हो इस कारण
ईश्वरने अपने पुत्रके आत्माको जो हे अब्बा अर्थात
७ हे पिता पुकारता है तुम्हारे हृदयमें भेजा है । सो तू
अब दास नहीं परन्तु पुत्र है और यदि पुत्र है तो
खीष्टके द्वारासे ईश्वरका अधिकारी भी है ।
८ भला तब तो तुम ईश्वरको न जानके उन्होंके
९ दास थे जो स्वभावसे ईश्वर नहीं हैं . परन्तु अब तुम
ईश्वरको जानके पर और भी ईश्वरसे जाने जाके
क्योंकर फिर उस दुर्ब्बल और फलहीन आदिशिक्षाकी
ओर मुंह फेरते हो जिसके तुम फिर नये सिरसे दास
१० हुआ चाहते हो । तुम दिनों औ मासों औ समयों औ
११ बरसोंको मानते हो । मैं तुम्हारे विषयमें डरता हूं

कि क्या जानें मैंने वृथा तुम्हारे लिये परिश्रम किया
है । हे भाइयो मैं तुमसे बिन्ती करता हूं तुम मेरे समान १२
हो जाओ क्योंकि मैं भी तुम्हारे समान हुआ हूं . तुमसे
मेरी कुछ हानि नहीं हुई । पर तुम जानते हो कि १३
पहिले मैंने शरीरकी दुर्ब्बलताके कारण तुम्हें सुसमाचार
सुनाया । और मेरी परीक्षाको जो मेरे शरीरमें थी १४
तुमने तुच्छ नहीं जाना न घिन्न किया परन्तु जैसे ईश्वरके
दूतको जैसे खीष्ट यीशुको तैसेही मुझको ग्रहण किया ।
तो वह तुम्हारी धन्यता कैसी थी . क्योंकि मैं तुम्हारा १५
साक्षी हूं कि जो हो सकता तो तुम अपनी अपनी
आंखें निकालके मुझको देते । सो क्या तुमसे सत्य १६
बोलनेसे मैं तुम्हारा बैरी हुआ हूं । वे भली रीतिसे १७
तुम्हारे अभिलाषी नहीं होते हैं परन्तु तुम्हें निकलवाया
चाहते हैं जिस्तें तुम उनके अभिलाषी होओ । पर १८
अच्छा है कि भली बातमें तुम्हारी अभिलाषा जिस
समय मैं तुम्हारे संग रहूं केवल उसी समय किई जाय
सो नहीं परन्तु सदा किई जाय । हे मेरे बालको १९
जिनके लिये जबलों तुम्होंमें खीष्टका रूप न बन जाय
तबलों मैं फिर प्रसवकीसी पीड़ उठाता हूं . मैं चाहता २०
कि अब तुम्हारे संग होता और अपनी बोली बदलता
क्योंकि तुम्हारे विषयमें मुझे सन्देह होता है ।

तुम जो व्यवस्थाके वशमें हुआ चाहते हो मुझसे कहो २१
क्या तुम व्यवस्थाको नहीं सुनते हो । क्योंकि लिखा है कि २२
इब्राहीमके दो पुत्र हुए एक तो दासीसे और एक तो
निर्बन्ध स्त्रीसे । परन्तु जो दासीसे हुआ सो शरीरके २३

अनुसार जन्मा पर जो निर्बन्ध स्त्रीसे हुआ सो प्रतिज्ञाके
२४ द्वारासे जन्मा । यह बातें दृष्टान्तके लिये कही जाती हैं
क्योंकि यह स्त्रियां दो नियम हैं एक तो सीनई पर्ब्बतसे
जो दास होनेके लिये लड़के जनता है सोई हाजिरा है।
२५ क्योंकि हाजिराका अर्थ अरबमें सीनई पर्ब्बत है और
वह यिरूशलीमके तुल्य जो अब है गिनी जाती है
२६ और अपने बालकों समेत दासी होती है। परन्तु
ऊपरकी यिरूशलीम निर्बन्ध है और वह हम सभोंकी
२७ माता है। क्योंकि लिखा है हे बांझ जो नहीं जनती
है आनन्दित हो तू जो प्रसवकी पीड़ नहीं उठाती है
ऊंचे शब्दसे पुकार क्योंकि जिस स्त्रीको स्वामी है उस-
२८ के लड़कोंसे अनाथके लड़के और भी बहुत हैं। पर हे
भाइयो हम लोग इसहाककी रीतिपर प्रतिज्ञाके सन्तान
२९ हैं। परन्तु जैसा उस समयमें जो शरीरके अनुसार जन्मा
सो उसको जो आत्माके अनुसार जन्मा सताता था
३० वैसाही अब भी होता है। परन्तु धर्म्मपुस्तक क्या
कहता है . दासीको और उसके पुत्रको निकाल दे
क्योंकि दासीका पुत्र निर्बन्ध स्त्रीके पुत्रके संग अधि-
३१ कारी न होगा। सो हे भाइयो हम दासीके नहीं
परन्तु निर्बन्ध स्त्रीके सन्तान हैं।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

१ अन्यदेशियोंका खतना किया जाना उचित नहीं है इसका वर्णन। ७ झूठे उपदेशकोंके विपक्षमें गलातियोंको चिताना। १३ शरीरकी रीतिपर नहीं पर आत्माकी रीतिपर चलनेका उपदेश।

१ सो उस निर्बन्धतामें जिस करके ख्रीष्टने हमें निर्बन्ध
किया है दृढ़ रहो और दासत्वके जूएमें फिर मत जोते

जाओ। देखो मैं पावल तुमसे कहता हूं कि जो तुम्हारा २
खतना किया जाय तो खीष्टसे तुम्हें कुछ लाभ न होगा।
फिर भी मैं साक्षी दे हर एक मनुष्यसे जिसका खतना ३
किया जाता है कहता हूं कि सारी व्यवस्थाको पूरी
करना उसको अवश्य है। तुममेंसे जो जो व्यवस्थाके ४
अनुसार धर्म्मी ठहराये जाते हो सो खीष्टसे भ्रष्ट हुए
हो. तुम अनुग्रहसे पतित हुए हो। क्योंकि पवित्र ५
आत्मासे हम लोग बिश्वाससे धर्म्मकी आशाकी बाट
जोहते हैं। क्योंकि खीष्ट यीशुमें न खतना न खतना- ६
हीन होना कुछ काम आता है परन्तु विश्वास जो
प्रेमके द्वारासे कार्य्यकारी होता है।

तुम भली रीतिसे दौड़ते थे. किसने तुम्हें रोका कि ७
सत्यको न मानो। यह मनावना तुम्हारे बुलानेहारेकी ८
ओरसे नहीं है। थोड़ासा खमीर सारे पिंडको खमीर ९
कर डालता है। मैं प्रभुपर तुम्हारे विषयमें भरोसा १०
रखता हूं कि तुम्हारी कोई दूसरी मति न होगी पर
जो तुम्हें ब्याकुल करता है कोई हो वह इसका दंड
भोगेगा। पर हे भाइयो जो मैं अब भी खतनेका उप- ११
देश करता हूं तो क्यों फिर सताया जाता हूं. तब
क्रूशकी ठोकर तो जाती रही। मैं चाहता हूं कि जो १२
तुम्हें गड़बड़ाते हैं सो अपनेहीको काट डालते।

क्योंकि हे भाइयो तुम लोग निर्बन्ध होनेको बुलाये १३
गये केवल इस निर्बन्धतासे शरीरके लिये गों मत
पकड़ो परन्तु प्रेमसे एक दूसरेके दास बनो। क्योंकि १४
सारी व्यवस्था एकही बातमें पूरी होती है अर्थात इसमें

१५ कि तू अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर। परन्तु
जो तुम एक दूसरेको दांतसे काटो औ खा जावो तो
चौकस रहो कि एक दूसरेसे नाश न किये जावो।
१६ पर मैं कहता हूं आत्माके अनुसार चलो तो तुम
१७ शरीरकी लालसा किसी रीतिसे पूरी न करोगे। क्यों-
कि शरीरकी लालसा आत्माके बिरुद्ध और आत्माकी
शरीरके बिरुद्ध होती है और ये दोनों परस्पर बिरोध
करते हैं इसलिये कि तुम जो करने चाहो उसे करने
१८ न पावो। परन्तु जो तुम आत्माके चलाये चलते हो
१९ तो ब्यवस्थाके बशमें नहीं हो। शरीरके कर्म्म प्रगट
हैं सो ये हैं परस्त्रीगमन ब्यभिचार अशुद्धता लुचपन.
२० मूर्त्तिपूजा टोना औ नाना भांतिके शत्रुता बैर ईर्षा
२१ क्रोध बिबाद बिरोध कुपन्थ. डाह नरहिंसा मतवाल-
पन औ लीला क्रीड़ा और इनके ऐसे और और कर्म्म.
इनके विषयमें मैं तुमको आगेसे कहता हूं जैसा मैंने
आगे भी कहा था कि ऐसे ऐसे काम करनेहारे ईश्वरके
२२ राज्यके अधिकारी न होंगे। परन्तु आत्माका फल
यह है प्रेम आनन्द मिलाप धीरज कृपा भलाई
२३ बिश्वास नम्रता औ संयम. कोई ब्यवस्था ऐसे ऐसे
२४ कामोंके बिरुद्ध नहीं है। जो ख्रीष्टके लोग हैं उन्होंने
शरीरको उसके रागों और अभिलाषों समेत क्रूशपर
२५ चढ़ाया है। जो हम आत्माके अनुसार जीते हैं तो
२६ आत्माके अनुसार चलें भी। हम घमंडी न हो जावें
जो एक दूसरेको छेड़ें और एक दूसरेसे डाह करें।

६ छठवां पर्व्व।

१ आत्मिक चाल चलनेका उपदेश। ११ चितावनी और आशीर्व्वाद सहित पत्रीकी समाप्ति।

हे भाइयो यदि मनुष्य किसी अपराधमें पकड़ा भी १
जावे तौभी तुम जो आत्मिक हो नम्रता संयुक्त आत्मासे
ऐसे मनुष्यको सुधारो और तू अपनेको देख रख कि
तू भी परीक्षामें न पड़े। एक दूसरेके भार उठाओ और २
इस रीतिसे ख्रीष्टकी व्यवस्थाको पूरी करो। क्योंकि यदि ३
कोई जो कुछ नहीं है समझता है कि मैं कुछ हूं तो
अपनेको धोखा देता है। परन्तु हर एक जन अपने ४
कामको जांचे और तब दूसरेके विषयमें नहीं पर
केवल अपने विषयमें उसको बड़ाई करनेकी जगह
होगी। क्योंकि हर एक जन अपनाही बोझ उठावेगा। ५
जो बचनकी शिक्षा पाता है सो समस्त अच्छी बस्तु- ६
ओंमें सिखानेहारेकी सहायता करे। धोखा मत खाओ ७
ईश्वरसे ठट्ठा नहीं किया जाता है क्योंकि मनुष्य जो
कुछ बोता है उसको लवेगा भी। क्योंकि जो अपने ८
शरीरके लिये बोता है सो शरीरसे बिनाश लवेगा परन्तु
जो आत्माके लिये बोता है सो आत्मासे अनन्त
जीवन लवेगा। पर सुकर्म्म करनेमें हम कातर न होवें ९
क्योंकि जो हमारा बल न घटे तो ठीक समयमें लवेंगे।
इसलिये जैसा हमें अवसर मिलता है हम सब लोगोंसे १०
पर निज करके बिश्वासके घरानेसे भलाई करें।

देखो मैंने कैसी बड़ी पत्री तुम्हारे पास अपने हाथसे ११
लिखी है। जितने लोग शरीरमें अच्छा रूप दिखाने १२

चाहते हैं वेही तुम्हारे खतना किये जानेकी दृढ़ आज्ञा
देते हैं केवल इसी लिये कि वे खीष्टके क्रूशके कारण
१३ सताये न जावें। क्योंकि वे भी जिनका खतना किया
जाता है आप व्यवस्थाको पालन नहीं करते हैं परन्तु
तुम्हारे खतना किये जानेकी इच्छा इसलिये करते हैं
१४ कि तुम्हारे शरीरके विषयमें बड़ाई करें। पर मुझसे
ऐसा न होवे कि किसी और बातके विषयमें बड़ाई
करूं केवल हमारे प्रभु यीशु खीष्टके क्रूशके विषयमें
जिसके द्वारासे जगत मेरे लेखे क्रूशपर चढ़ाया गया
१५ है और मैं जगतके लेखे। क्योंकि खीष्ट यीशुमें न
खतना न खतनाहीन होना कुछ है परन्तु नई सृष्टि।
१६ और जितने लोग इस विधिसे चलेंगे उन्होंपर और
ईश्वरके इस्रायेली लोगपर कल्याण और दया होवे।
१७ अब तो कोई मुझे दुःख न देवे क्योंकि मैं प्रभु यीशुके
१८ चिन्ह अपने देहमें लिये फिरता हूं। हे भाइयो हमारे
प्रभु यीशु खीष्टका अनुग्रह तुम्हारे आत्माके संग
होवे। आमीन॥

इफिसियोंको पावल प्रेरितकी पत्री।

१ पहिला पर्ब्ब।

१ पत्रीका आभाष। ३ ईश्वरके अनुग्रहका और यीशुके बिश्वासियोंके अधिकारका बर्णन। १५ इफिसियोंके लिये पावलकी प्रार्थना।

पावल जो ईश्वरकी इच्छासे यीशु ख्रीष्टका प्रेरित १
है उन पवित्र और ख्रीष्ट यीशुमें बिश्वासी लोगोंको
जो इफिसमें हैं. तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु २
यीशु ख्रीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले।

हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके पिता ईश्वरका धन्यबाद ३
होय जिसने ख्रीष्टमें हमोंको स्वर्गीय स्थानोंमें सब प्रकार-
की आत्मिक आशीससे आशीस दिई है. जैसा उसने ४
उसमें जगतकी उत्पत्तिके आगे हमें चुन लिया कि
हम प्रेमसे उसके सन्मुख पवित्र औ निर्दोष होवें.
और अपनी इच्छाकी सुमतिके अनुसार हमें आगेसे ५
ठहराया कि यीशु ख्रीष्टके द्वारासे हम उसके लेपालक
होवें. इसलिये कि उसके अनुग्रहकी महिमाकी स्तुति ६
किई जाय जिस करके उसने हमें उस प्यारेमें अनुग्रह
पात्र किया. जिसमें उसके लोहूके द्वारासे हमें उद्धार ७
अर्थात अपराधोंका मोचन ईश्वरके अनुग्रहके धनके
अनुसार मिलता है। और उसने समस्त ज्ञान औ ८
बुद्धि सहित हमपर यह अनुग्रह अधिकाईसे किया.
कि उसने अपनी इच्छाका भेद अपनी उस सुमतिके ९
अनुसार हमें बताया जो उसने समयोंकी पूर्णताका

१० कार्य्य निबाहने निमित्त अपनेमें ठानी थी . अर्थात
कि जो कुछ स्वर्गमें है और जो कुछ पृथिवीपर है सब
११ कुछ वह खीष्टमें संग्रह करेगा . हां उसीमें जिसमें हम
उसीकी मनसासे जो अपनी इच्छाके मतके अनुसार
सब कार्य्य करता है आगेसे ठहराये जाके अधिकारके
१२ लिये चुने गये भी . इसलिये कि उसकी महिमाकी
स्तुति हमारे द्वारासे किई जाय जिन्होंने आगे खीष्टपर
१३ भरोसा रखा था . जिसपर तुमने भी सत्यताका बचन
अर्थात अपने त्राणका सुसमाचार सुनके भरोसा रखा
और जिसमें तुमने बिश्वास करके प्रतिज्ञाके आत्मा
१४ अर्थात पवित्र आत्माकी छाप भी पाई . जो मोल लिये
हुओंके उद्धारलों हमारे अधिकारका बयाना है इस
कारण कि ईश्वरकी महिमाकी स्तुति किई जाय ।
१५ इस कारणसे मैं भी प्रभु यीशुपर जो बिश्वास और
सब पवित्र लोगोंसे जो प्रेम तुम्होंमें हैं इनका समाचार
१६ सुनके . तुम्हारे लिये धन्य मानना नहीं छोड़ता हूं और
१७ अपनी प्रार्थनाओंमें तुम्हें स्मरण करता हूं . कि हमारे
प्रभु यीशु खीष्टका ईश्वर जो तेजस्वी पिता है तुम्हें अपनी
१८ पहचानमें ज्ञान औ प्रकाशका आत्मा देवे . और तुम्हारे
मनके नेत्र प्रकाशित होवें जिस्तें तुम जानो कि उसकी
बुलाहटकी आशा क्या है और पवित्र लोगोंमें उसके
१९ अधिकारकी महिमाका धन क्या है . और हमारी ओर
जो बिश्वास करते हैं उसके सामर्थ्यकी अत्यन्त अधिकाई
२० क्या है . सोई उसकी शक्तिके प्रभावके उस कार्य्यके अनु-
सार है जो उसने खीष्टके विषयमें किया कि उसको

मृतकोंमेंसे उठाया . और स्वर्गीय स्थानोंमें समस्त २१
प्रधानता और अधिकार और पराक्रम और प्रभुताके
ऊपर और हर एक नामके ऊपर जो न केवल इस
लोकमें परन्तु परलोकमें भी लिया जाता है अपने
दहिने हाथ बैठाया . और सब कुछ उसके चरणोंके २२
नीचे अधीन किया और उसे मंडलीको सब बस्तुओंपर
सिर बना करके दिया . जो मंडली उसका देह है २३
अर्थात उसकी जो सभोंमें सब कुछ भरता है भरपूरी है।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ इफिसी लोग जो पापमें मूए थे परन्तु यीशुके द्वारासे जिलाये गये उनपर ईश्वरकी कृपाका बखान । ११ क्या खतना किये हुए क्या खतनाहीन सब बिश्वासी लोगोंका यीशुमें एक होना ।

तुम्हें भी ईश्वरने जिलाया जो अपराधों और पापोंके १
कारण मृतक थे . जिन पापोंमें तुम आगे इस संसारकी २
रीतिके अनुसार हां आकाशके अधिकारके अर्थात उस
आत्माके अध्यक्षके अनुसार चले जो आत्मा अब भी
आज्ञा लंघन करनेहारोंसे कार्य्य करवाता है . जिनके ३
बीचमें हम सब भी आगे शरीर और भावनाओंकी
इच्छाएं पूरी करते हुए अपने शरीरके अभिलाषोंकी
चाल चले और और लोगोंके समान स्वभावहीसे क्रोधके
सन्तान थे । परन्तु ईश्वरने जो दयाके धनका धनी है ४
अपने उस बड़े प्रेमके कारण जिस करके उसने हमसे
प्रेम किया . जब हम अपराधोंके कारण मृतक थे तबही ५
हमें ख्रीष्टके संग जिलाया कि अनुग्रहसे तुम्हारा त्राण
हुआ है . और संगही उठाया और ख्रीष्ट यीशुमें संगही ६
स्वर्गीय स्थानोंमें बैठाया . इसलिये कि ख्रीष्ट यीशुमें ७

हमपर कृपा करनेमें वह आनेहारे समयोंमें अपने अनु-
८ ग्रहका अत्यन्त धन दिखावे। क्योंकि अनुग्रहसे बिश्वास-
के द्वारा तुम्हारा त्राण हुआ है और यह तुम्हारी ओरसे
९ नहीं हुआ ईश्वरका दान है। यह कर्म्मोंसे नहीं हुआ
१० न हो कि कोई घमंड करे। क्योंकि हम उसके बनाये
हुए हैं जो ख्रीष्ट यीशुमें अच्छे कर्म्मोंके लिये सृजे गये
जिन्हें ईश्वरने आगेसे ठहराया कि हम उनमें चलें।
११ इसलिये स्मरण करो कि पूर्ब्ब समयमें तुम जो
शरीरमें अन्यदेशी हो और जो लोग शरीरमें हाथके
किये हुए खतनेसे खतनावाले कहावते हैं उनसे खत-
१२ नाहीन कहे जाते हो. तुम लोग उस समयमें ख्रीष्टसे
अलग थे और इस्रायेलकी प्रजाके पदसे नियारे किये
हुए थे और प्रतिज्ञाके नियमोंके भागी न थे और
१३ जगतमें आशाहीन और ईश्वर रहित थे। पर अब तो
ख्रीष्ट यीशुमें तुम जो आगे दूर थे ख्रीष्टके लोहूके द्वारा
१४ निकट किये गये हो। क्योंकि वही हमारा मिलाप है
जिसने दोनोंको एक किया और रुकावकी बिचली
१५ भीत्ति गिराई. और विधि संबन्धी आज्ञाओंकी ब्यव-
स्थाको लोप करके अपने शरीरमें शत्रुता मिटा दिई
जिस्तें वह अपनेमें दोसे एक नया पुरुष उत्पन्न करके
१६ मिलाप करे. और शत्रुताको क्रूशपर नाश करके उस
१७ क्रूशके द्वारा दोनोंको एक देहमें ईश्वरसे मिलावे। और
उसने आके तुम्हें जो दूर थे और उन्हें जो निकट थे
१८ मिलापका सुसमाचार सुनाया। क्योंकि उसके द्वारा हम
दोनोंको एक आत्मामें पिताके पास पहुंचनेका अधि-

कार मिलता है। इसलिये तुम अब ऊपरी और बिदेशी १९
नहीं हो परन्तु पवित्र लोगोंके संगी पुरबासी और
ईश्वरके घरानेके हो. और प्रेरितों औ भविष्यद्वक्ताओं- २०
की नेवपर निर्माण किये गये हो जिसके कोनेका
पत्थर यीशु खीष्ट आपही है. जिसमें सारी रचना २१
एक संग जुटके प्रभुमें पवित्र मन्दिर बनती जाती है.
जिसमें तुम भी आत्माके द्वारा ईश्वरका बासा होनेको २२
एक संग निर्माण किये जाते हो ।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ खीष्ट मतके बड़े भेदका पावलपर प्रकाश किया जाना कि वह उसे सर्ब्बत्र प्रचार करे । १४ इफिसियोंके लिये पावलकी प्रार्थना । २० परमेश्वरका धन्यबाद करना ।

इसीके कारण मैं पावल जो तुम अन्यदेशियोंके लिये १
खीष्ट यीशुके कारण बंधुआ हूं. जो कि ईश्वरका जो २
अनुग्रह तुम्हारे लिये मुझे दिया गया उसके भंडारीपनका
समाचार तुमने सुना. अर्थात कि प्रकाशसे उसने मुझे ३
भेद बताया जैसा मैं आगे संक्षेप करके लिख चुका हूं.
जिससे तुम जब पढ़ो तब खीष्टके भेदमें मेरा ज्ञान बूझ ४
सकते हो. जो भेद और और समयोंमें मनुष्योंके ५
सन्तानोंको ऐसा नहीं बताया गया था जैसा अब वह
आत्मासे ईश्वरके पवित्र प्रेरितों औ भविष्यद्वक्ताओंपर
प्रगट किया गया है. अर्थात कि खीष्टमें सुसमाचारके ६
द्वारासे अन्यदेशी लोग संगी अधिकारी और एकही
देहके और ईश्वरकी प्रतिज्ञाके सम्भागी हैं । और मैं ७
ईश्वरके अनुग्रहके दानके अनुसार जो मुझे उसके सामर्थ्य-
के कार्य्यके अनुसार दिया गया उस सुसमाचारका सेवक

८ हुआ । मुझे जो सब पवित्र लोगोंमेंसे अति छोटेसे भी
छोटा हूं यह अनुग्रह दिया गया कि मैं अन्यदेशियोंमें
९ ख्रीष्टके अगम्य धनका सुसमाचार प्रचार करूं . और
सभोंपर प्रकाशित करूं कि उस भेदका निबाहना क्या
है जो ईश्वरमें आदिसे गुप्त था जिसने यीशु ख्रीष्टके
१० द्वारा सब कुछ सृजा . इसलिये कि अब स्वर्गीय स्थानोंमेंके
प्रधानों और अधिकारियोंपर मंडलीके द्वारासे ईश्वरकी
११ नाना प्रकारकी बुद्धि प्रगट किई जाय . उस सनातन
इच्छाके अनुसार जो उसने ख्रीष्ट यीशु हमारे प्रभुमें
१२ पूरी किई . जिसमें हमोंको साहस और निश्चयसे निकट
आनेका अधिकार उसके बिश्वासके द्वारासे मिलते हैं ।
१३ इसलिये मैं बिन्ती करता हूं कि जो अनेक क्लेश तुम्हारे
लिये मुझे होते हैं इनमें कातर न होओ कि यह
तुम्हारा आदर है ।
१४ मैं इसीके कारण हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके पिताके
१५ आगे अपने घुटने टेकता हूं . जिससे क्या स्वर्गमें क्या
१६ पृथिवीपर सारे घरानेका नाम रखा जाता है . कि वह
तुम्हें अपनी महिमाके धनके अनुसार यह देवे कि तुम
उसके आत्माके द्वारासे अपने भीतरी मनुष्यत्वमें सा-
१७ मर्थ्य पाके बलवन्त होओ . कि ख्रीष्ट बिश्वासके द्वारासे
तुम्हारे हृदयमें बसे और प्रेममें तुम्हारी जड़ बन्धी हुई
१८ और नेव डाली हुई होय . जिस्तें यह चौड़ाई औ
लंबाई औ गहिराई और ऊंचाई क्या है इसको तुम
१९ सब पवित्र लोगोंके साथ बूझनेकी शक्ति पावो . और
ख्रीष्टके प्रेमको जानो जो ज्ञानसे ऊर्द्ध है इसलिये कि

तुम ईश्वरकी सारी पूर्णतालों परे किये जावो।
उसका जो उस सामर्थ्यके अनुसार जो हमोंमें कार्य्य २०
करता है सब बातोंसे अधिक हां हम जो कुछ मांगते
अथवा बूझते हैं उससे अत्यन्त अधिक कर सकता है.
उसीका गुणानुवाद ख्रीष्ट यीशुके द्वारा मंडलीमें पीढ़ी २१
पीढ़ी नित्य सर्ब्बदा होवे . आमीन ।

४ चौथा पर्व्व ।

१ दीनताई और मेलका उपदेश । ४ मंडलीका एक होना । ७ उसमें अनेक पद होनेसे उसके एक देह स्वरूप बढ़ जानेका अभिप्राय । १७ अन्यदेशियोंकी अशुद्ध चालको त्यागनेका उपदेश । २५ झूठ औ क्रोध औ चोरी औ दुर्वचनका निषेध।

सो मैं जो प्रभुके लिये बंधुआ हूं तुमसे बिन्ती करता १
हूं कि जिस बुलाहटसे तुम बुलाये गये उसके योग्य चाल
चलो . अर्थात सारी दीनता औ नम्रता सहित और धी- २
रज सहित प्रेमसे एक दूसरेकी सह लेओ. और मिलापके ३
बंधमें आत्माकी एकताकी रक्षा करनेका यत्न करो।
जैसे तुम अपनी बुलाहटकी एकही आशामें बुलाये ४
गये तैसेही एक देह है और एक आत्मा . एक प्रभु एक ५
बिश्वास एक बपतिसमा. एक ईश्वर और सभोंका पिता ६
जो सभोंपर और सभोंके मध्यमें और तुम सभोंमें है।
परन्तु अनुग्रह हममेंसे हर एकको ख्रीष्टके दानके ७
परिमाणसे दिया गया । इसलिये वह कहता है कि वह ८
ऊंचेपर चढ़ा और बंधुओंको बांध ले गया और मनुष्योंको
दान दिये। इस बातका कि चढ़ा क्या अभिप्राय है . यही ९
कि वह पहिले पृथिवीके निचले स्थानोंमें उतरा भी था।
जो उतर गया सोई है जो सब स्वर्गोंसे ऊपर चढ़ भी गया १०
कि सब कुछ पूर्ण करे । और उसने ये दान दिये अर्थात ११

जबलों हम सब लोग बिश्वासकी और ईश्वरके पुत्रके
ज्ञानकी एकतालों न पहुंचें और एक पूरा मनुष्य न हो
जावें और खीष्टकी पूर्णताकी डीलके परिमाणलों न
१२ बढ़ें . तबलों उसने पवित्र लोगोंकी पूर्णताके कारण
सेवकाईके कर्म्मके लिये औ खीष्टके देहके सुधारनेके लिये.
१३ कितनोंको प्रेरित करके औ कितनोंको भविष्यद्वक्ता कर-
के औ कितनोंको सुसमाचार प्रचारक करके औ कित-
१४ नोंको रखवाले और उपदेशक करके दिया . इसलिये कि
हम अब बालक न रहें जो मनुष्योंकी ठगविद्याके और
भ्रमकी जुगतें बांधनेकी चतुराईके द्वारा उपदेशकी हर
एक बयारसे लहराते और इधर उधर फिराये जाते हों .
१५ परन्तु प्रेममें सत्यतासे चलते हुए सब बातोंमें उसके ऐसे
१६ बनते जावें जो सिर है अर्थात खीष्ट . जिससे सारा देह
एक संग जुटके और एक संग गठके हर एक परस्पर
उपकारी गांठके द्वारासे उस कार्य्यके अनुसार जो हर
एक अंशके परिमाणसे उसमें किया जाता है देहको
बढ़ाता है कि वह प्रेममें अपनेको सुधारे ।

१७ सो मैं यह कहता हूं और प्रभुके साक्षात उपदेश
करता हूं कि तुम लोग अब फिर ऐसे न चलो जैसे और
और अन्यदेशी लोग अपने मनकी अनर्थ रीतिपर चलते
१८ हैं . कि उस अज्ञानताके कारण जो उनमें है और उनके
मनकी कठोरताके कारण उनकी बुद्धि अंधियारी हुई है
१९ और वे ईश्वरके जीवनसे नियारे किये हुए हैं . और
उन्होंने खेद रहित होके अपने तईं लुचपनको सोंप दिया
है कि सब प्रकारका अशुद्ध कर्म्म लालसासे किया करें।

परन्तु तुमने खीष्टको इस रीतिसे नहीं सीख लिया है. २०
जो ऐसा है कि तुमने उसीकी सुनी और उसीमें सिखाये २१
गये जैसा यीशुमें सच्चाई है . कि अगली चाल चलनके २२
विषयमें पुराने मनुष्यत्वको जो भरमानेहारी कामना-
ओंके अनुसार भ्रष्ट होता जाता है उतार रखो . और २३
अपने मनके आत्मिक स्वभावसे नये होते जावो . और २४
नये मनुष्यत्वको पहिन लेओ जो ईश्वरके समान
सत्यानुसारी धर्म्म और पवित्रतामें सृजा गया ।

इस कारण झूठको दूर करके हर एक अपने पड़ोसी- २५
के साथ सत्य बोला करो क्योंकि हम लोग एक दूसरेके
अंग हैं । क्रोध करो पर पाप मत करो . सूर्य्य तुम्हारे २६
कोपपर अस्त न होवे . और न शैतानको ठांव देओ। २७
चोरी करनेहारा अब चोरी न करे बरन हाथोंसे २८
भला कार्य्य करनेमें परिश्रम करे इसलिये कि जिसे
प्रयोजन हो उसे बांट देनेको कुछ उस पास होवे ।
कोई अशुद्ध बचन तुम्हारे मुंहसे न निकले परन्तु २९
जहां जैसा आवश्यक है तहां जो बचन सुधारनेके
लिये अच्छा हो सोई मुंहसे निकले कि उससे सुनने-
हारोंको अनुग्रह मिले । और ईश्वरके पवित्र आत्मा- ३०
को जिससे तुमपर उद्धारके दिनके लिये छाप दिई
गई उदास मत करो । सब प्रकारकी कड़वाहट औ ३१
कोप औ क्रोध औ कलह औ निन्दा समस्त बैरभाव
समेत तुमसे दूर किई जाय । और आपसमें कृपाल ३२
औ करुणामय होओ और जैसे ईश्वरने खीष्टमें तुम्हें
क्षमा किया तैसे तुम भी एक दूसरेको क्षमा करो ।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

१ ईश्वरके अनुगामी होनेका उपदेश । ३ अशुद्ध कर्म्म और अनर्थ वचनका निषेध । ८ विश्वासी लोग जो ज्योतिके सन्तान हैं इसलिये अंधकारके कार्य्योंको त्यागनेकी आवश्यकता । १५ विचारसे चलने और धन्यबाद करनेका उपदेश । २२ स्त्रियों और पुरुषोंके लिये उपदेश और प्रभु यीशु और उसकी मंडलीके दृष्टान्तसे उनके सम्बन्धका वर्णन ।

१ सो प्यारे बालकोंकी नाईं ईश्वरके अनुगामी होओ .
२ और प्रेममें चलो जैसे खीष्टने भी हमसे प्रेम किया और
हमारे लिये अपनेको ईश्वरके आगे चढ़ावा और
बलिदान करके सुगन्धकी बासके लिये सौंप दिया ।
३ और जैसा कि पवित्र लोगोंके योग्य है तैसा ब्यभि-
चारका और सब प्रकारके अशुद्ध कर्म्मका अथवा लोभ-
४ का नाम भी तुम्होंमें न लिया जाय . और न निर्ल-
ज्जताका न मूढ़ताकी बातचीतका अथवा ठट्ठेका नाम
कि यह बातें सोहती नहीं परन्तु धन्यबादही सुना
५ जाय । क्योंकि तुम यह जानते हो कि किसी ब्यभि-
चारीको अथवा अशुद्ध जनको अथवा लोभी मनुष्यको
जो मूर्त्तिपूजक है खीष्ट और ईश्वरके राज्यमें अधिकार
६ नहीं है । कोई तुम्हें अनर्थक बातोंसे धोखा न देवे क्योंकि
इन कर्म्मोंके कारण ईश्वरका क्रोध आज्ञा लंघन करने-
७ हारोंपर पड़ता है । सो तुम उनके संग भागी मत होओ ।
८ क्योंकि तुम आगे अन्धकार थे पर अब प्रभुमें
९ उजियाले हो . ज्योतिके सन्तानोंकी नाईं चलो । क्योंकि
सब प्रकारकी भलाई औ धर्म्म औ सत्यतामें आत्माका
१० फल होता है । और परखो कि प्रभुको क्या भावता है ।
११ और अंधकारके निष्फल कार्य्योंमें भागी मत होओ

परन्तु और भी उनपर दोष देओ। क्योंकि जो कर्म्म १२
गुप्तमें उनसे किये जाते हैं उन्हें कहना भी लाजकी
बात है। परन्तु सब कर्म्म जब उनपर दोष दिया जाता १३
है तब ज्योतिसे प्रगट किये जाते हैं क्योंकि जो कुछ
प्रगट किया जाता है सो उजियाला होता है। इस १४
कारण वह कहता है हे सोनेहारे जाग और मृतकोंमेंसे
उठ और ख्रीष्ट तुझे ज्योति देगा।

सो चौकस रहो कि तुम क्योंकर यत्नसे चलते हो. १५
निर्बुद्धियोंकी नाईं नहीं परन्तु बुद्धिमानोंकी नाईं चलो।
और अपने लिये समयका लाभ करो क्योंकि ये दिन १६
बुरे हैं। इस कारणसे अज्ञान मत होओ परन्तु समझते १७
रहो कि प्रभुकी इच्छा क्या है। और दाख रससे मतवाले १८
मत होओ जिसमें लुचपन होता है परन्तु आत्मासे
परिपूर्ण होओ। और गीतों और भजनों और आत्मिक १९
गानोंमें एक दूसरेसे बातें करो और अपने अपने मनमें
प्रभुके आगे गान और कीर्त्तन करो। और सदा सब २०
बातोंके लिये हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके नामसे ईश्वर
पिताका धन्य मानो। और ईश्वरके भयसे एक दूसरेके २१
अधीन होओ।

हे स्त्रियो जैसे प्रभुके तैसे अपने अपने स्वामीके २२
अधीन रहो। क्योंकि जैसा ख्रीष्ट मंडलीका सिर है २३
तैसा पुरुष भी स्त्रीका सिर है। वह तो देहका त्राण- २४
कर्त्ता है तौभी जैसे मंडली ख्रीष्टके अधीन रहती है वैसे
स्त्रियां भी हर बातमें अपने अपने स्वामीके अधीन
रहें। हे पुरुषो अपनी अपनी स्त्रीको ऐसा प्यार २५

करो जैसा खीष्टने भी मंडलीको प्यार किया और अपने-
२६ को उसके लिये सेंाप दिया . कि उसको बचनके द्वारा
२७ जलके स्नानसे शुद्ध कर पवित्र करे . जिस्तें वह उसे
अपने आगे मर्य्यादिक मंडली खड़ा करे जिसमें
कलंक अथवा झुरी अथवा ऐसी कोई बस्तु भी न
२८ होवे परन्तु जिस्तें पवित्र औ निर्दोष होवे। यूंही
उचित है कि पुरुष अपनी अपनी स्त्रीको अपने अपने
देहके समान प्यार करें . जो अपनी स्त्रीको प्यार
२९ करता है सो अपनेको प्यार करता है। क्योंकि किसीने
कभी अपने शरीरसे बैर नहीं किया परन्तु उसको
ऐसा पालता और पोसता है जैसा प्रभु भी मंडलीको
३० पालता पोसता है । क्योंकि हम उसके देहके अंग हैं
अर्थात उसके मांसमेंके और उसकी हड्डियोंमेंके हैं ।
३१ इस हेतुसे मनुष्य अपने माता पिताको छोड़के अपनी
स्त्रीसे मिला रहेगा और वे दोनों एक तन होंगे ।
३२ यह भेद बड़ा है परन्तु मैं तो खीष्टके और मंडलीके
३३ विषयमें कहता हूं । पर तुम भी एक एक करके हर
एक अपनी अपनी स्त्रीको अपने समान प्यार करो
और स्त्रीको उचित है कि स्वामीका भय माने ।

६ छठवां पर्ब्ब ।

१ पुत्र और पिताके लिये उपदेश । ५ दासों और स्वामियोंके लिये उपदेश । १० धर्म्मकी लड़ाई धर्म्मके हथियारोंसे लड़नेका और प्रार्थना करनेका उपदेश । २१ भाई तुखिकको भेजनेका कारण । २३ पत्रीकी समाप्ति ।

१ हे लड़को प्रभुमें अपने अपने माता पिताकी आज्ञा
२ मानो क्योंकि यह उचित है । अपनी माता और
पिताका आदर कर कि यह प्रतिज्ञा सहित पहिली

आज्ञा है . जिस्तें तेरा भला हो और तू भूमिपर बहुत 3
दिन जीवे। और हे पिताओ अपने अपने लड़कोंसे 4
क्रोध मत करवाओ परन्तु प्रभुकी शिक्षा और चि-
तावनी सहित उनका प्रतिपालन करो।

हे दासो जो लोग शरीरके अनुसार तुम्हारे स्वामी हैं 5
डरते और कांपते हुए अपने मनकी सीधाईसे जैसे
ख्रीष्टकी तैसे उनकी आज्ञा मानो। और मनुष्योंको प्रसन्न 6
करनेहारोंकी नाईं मुंह देखी सेवा मत करो परन्तु ख्रीष्ट-
के दासोंकी नाईं अन्तःकरणसे ईश्वरकी इच्छापर चलो.
और सुमतिसे सेवा करो मानो तुम मनुष्योंकी नहीं 7
परन्तु प्रभुकी सेवा करते हो . क्योंकि जानते हो कि 8
जो कुछ हर एक मनुष्य भला करेगा इसीका फल वह
चाहे दास हो चाहे निर्बन्ध हो प्रभुसे पावेगा। और 9
हे स्वामियो तुम उन्होंसे वैसाही करो और धमकी
मत दिया करो क्योंकि जानते हो कि स्वर्गमें तुम्हारा
भी स्वामी है और उसके यहां पक्षपात नहीं है।

अन्तमें हे मेरे भाइयो यह कहता हूं कि प्रभुमें और 10
उसकी शक्तिके प्रभावमें बलवन्त हो रहो। ईश्वरके 11
सम्पूर्ण हथियार बांध लेओ जिस्तें तुम शैतानकी जुगतों-
के साम्हने खड़े रह सको। क्योंकि हमारा यह युद्ध 12
लोहू औ मांससे नहीं है परन्तु प्रधानोंसे और अधिका-
रियोंसे और इस संसारके अंधकारके महाराजाओंसे
और आकाशमेंकी दुष्टताकी आत्मिक सेनासे। इस 13
कारणसे ईश्वरके सम्पूर्ण हथियार ले लेओ कि तुम बुरे
दिनमें साम्हना कर सको और सब कुछ पूरा करके खड़े

१४ रह सको। सो अपनी कमर सच्चाईसे कसके और धर्म्मकी
१५ झिलम पहिनके. और पांवोंमें मिलापके सुसमाचारकी
१६ तैयारीके जूते पहिनके खड़े रहो। और सभोंके ऊपर
बिश्वासकी ढाल लेओ जिससे तुम उस दुष्टके सब
१७ अग्निबानोंको बुझा सकोगे। और त्राणका टोप लेओ
१८ और आत्माका खड्ग जो ईश्वरका बचन है। और सब
प्रकारकी प्रार्थना और बिन्तीसे हर समय आत्मामें
प्रार्थना किया करो और इसीके निमित्त समस्त स्थिरता
सहित और सब पवित्र लोगोंके लिये बिन्ती करते हुए
१९ जागते रहो। और मेरे लिये भी बिन्ती करो कि मुझे
अपना मुंह खोलनेके समय बोलनेका सामर्थ्य दिया जाय
कि मैं साहससे सुसमाचारका भेद बताऊं जिसके लिये
२० मैं जंजीरसे बंधा हुआ दूत हूं. और कि मैं उसके विषयमें
साहससे बात करूं जैसा मुझे बोलना उचित है।
२१ परन्तु इसलिये कि तुम भी मेरी दशा जानो कि
मैं कैसा रहता हूं तुखिक जो प्यारा भाई और प्रभुमें
बिश्वासयोग्य सेवक है तुम्हें सब बातें बतावेगा.
२२ कि मैंने उसे इसीके निमित्त तुम्हारे पास भेजा है कि
तुम हमारे विषयमेंकी बातें जानो और वह तुम्हारे
मनको शांति देवे।
२३ भाइयोंको ईश्वर पितासे और प्रभु यीशु खीष्टसे
२४ शांति और प्रेम विश्वास सहित मिले। जो हमारे
प्रभु यीशु खीष्टसे अक्षय प्रेम रखते हैं उन सभोंपर
अनुग्रह होवे। आमीन॥

फिलिपीयोंको पावल प्रेरितकी पत्री।

१ पहिला पर्व्व।

१ पत्रीका आभाष। ३ फिलिपीयोंके विषयमें पावलका धन्यबाद औ प्रार्थना। १२ पावलके क्लेशके कारण सुसमाचारका अधिक करके प्रचार किया जाना। १९ अपने विषयमें क्या जीते क्या मरते पावलकी दृढ़ आशा। २७ सुचाल औ दृढ़ताका उपदेश।

पावल और तिमोथिय जो यीशु ख्रीष्टके दास हैं १
फिलिपीमें जितने लोग ख्रीष्ट यीशुमें पवित्र लोग हैं
उन सभोंको मंडलीके रखवालों और सेवकों समेत.
तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्टसे अनु- २
ग्रह और शांति मिले।
मैं जब जब तुम्हें स्मरण करता हूं तब अपने ३
ईश्वरका धन्य मानता हूं. और तुमने पहिले दिन- ४
से लेके अबलों सुसमाचारके लिये जो सहायता किई
है. उससे आनन्द करता हुआ नित्य अपनी हर ५
एक प्रार्थनामें तुम सभोंके लिये बिन्ती करता हूं।
और इसी बातका मुझे भरोसा है कि जिसने तुम्होंमें ६
अच्छा काम आरंभ किया है सो यीशु ख्रीष्टके दिनलों
उसे पूरा करेगा। जैसे तुम सभोंके लिये यह सोचना ७
मुझे उचित है इस कारण कि मेरे बंधनोंमें और सु-
समाचारके लिये उत्तर औ प्रमाण देनेमें मैं तुम्हें मनमें
रखता हूं कि तुम सब मेरे संग अनुग्रहके भागी हो।
क्योंकि ईश्वर मेरा साक्षी है कि यीशु ख्रीष्टकीसी ८
करुणासे मैं क्योंकर तुम सभोंकी लालसा करता हूं।
और मैं यही प्रार्थना करता हूं कि तुम्हारा प्रेम ज्ञान ९

और सब प्रकारके बिवेक सहित अब भी अधिक अधिक
१० बढ़ता जाय . यहांलों कि तुम विशेष्य बातोंको परखो
जिस्तें तुम ख्रीष्टके दिनलों निष्कपट रहो और ठोकर न
११ खावो . और धर्म्मके फलोंसे परिपूर्ण होओ जिनसे यीशु
ख्रीष्टके द्वारा ईश्वरकी महिमा और स्तुति होती है।
१२ पर हे भाइयो मैं चाहता हूं कि तुम यह जानो
कि मेरी जो दशा हुई है उससे सुसमाचारकी बढ़तीही
१३ निकली है . यहांलों कि सारे राजभवनमें और और
सब लोगोंपर मेरे बंधन प्रगट हुए हैं कि ख्रीष्टके लिये
१४ हैं . और जो प्रभुमें भाई लोग हैं उनमेंसे बहुतेरे मेरे
बंधनोंसे भरोसा पाके बहुत अधिक करके बचनको
१५ निर्भय बोलनेका साहस करते हैं। कितने लोग डाह
और बैरके कारण भी और कितने सुमतिके कारण
१६ भी ख्रीष्टका प्रचार करते हैं। वे तो सरलतासे नहीं
पर बिरोधसे ख्रीष्टकी कथा सुनाते हैं और समझते हैं
१७ कि हम पावलके बंधनोंमें उसे क्लेश भी देंगे। परन्तु
ये तो यह जानके कि पावल सुसमाचारके लिये उत्तर
१८ देनेको ठहराया गया है प्रेमसे सुनाते हैं। तो क्या
हुआ . तौभी हर एक रीतिसे चाहे बहानासे चाहे
सच्चाईसे ख्रीष्टकी कथा सुनाई जाती है और मैं इससे
आनन्द करता हूं और आनन्द करूंगा भी।
१९ क्योंकि मैं जानता हूं कि इसीसे तुम्हारी प्रार्थनाके
द्वारा और यीशु ख्रीष्टके आत्माके दानके द्वारा मेरी
प्रत्याशा और भरोसेके अनुसार मेरा निस्तार हो
२० जायगा . अर्थात यह भरोसा कि मैं किसी बातमें

लज्जित न होंगा परन्तु खीष्टकी महिमा सब प्रकारके
साहसके साथ जैसा हर समयमें तैसा अब भी मेरे
देहमें चाहे जीवनके द्वारा चाहे मृत्युके द्वारा प्रगट
किई जायगी । क्योंकि मेरे लिये जीना खीष्ट है और २१
मरना लाभ है । परन्तु यदि शरीरमें जीना है यह मेरे २२
लिये कार्य्यका फल है और मैं नहीं जानता हूं मैं क्या
चुन लेऊंगा । क्योंकि मैं इन दो बातोंके सकेतमें हूं २३
कि मुझे उठ जाने और खीष्टके संग रहनेका अभिलाष
है क्योंकि यह औरही बहुत अच्छा है। परन्तु शरीरमें २४
रहना तुम्हारे कारण अधिक आवश्यक है । और मुझे २५
इस बातका निश्चय होनेसे मैं जानता हूं कि मैं रहूंगा
और विश्वासमें तुम्हारी बढ़ती और आनन्दके लिये
तुम सभोंके संग ठहर जाऊंगा . इसलिये कि मेरे फिर २६
तुम्हारे पास आनेके द्वारासे मेरे विषयमें खीष्ट यीशुमें
बड़ाई करनेका हेतु तुम्हें अधिक होवे ।

केवल तुम्हारा आचरण खीष्टके सुसमाचारके योग्य २७
होवे कि मैं चाहे आके तुम्हें देखूं चाहे तुमसे दूर रहूं
तुम्हारे विषयमें यह बात सुनूं कि तुम एकही आत्मामें
दृढ़ रहते हो और एक मनसे सुसमाचारके विश्वासके
लिये मिलके साहस करते हो . और विरोधियोंसे तुम्हें २८
किसी बातमें डर नहीं लगता है जो उनके लिये तो बि-
नाशका प्रमाण परन्तु तुम्हारे लिये निस्तारका प्रमाण है
और यह ईश्वरकी ओरसे है। क्योंकि खीष्टके लिये यह २९
बरदान तुम्हें दिया गया कि न केवल उसपर विश्वास
करो पर उसके लिये दुःख भी उठाओ . कि तुम्हारी ३०

वैसीही लड़ाई है जैसी तुमने मुझमें देखी और अब
सुनते हो कि मुझमें है।

२ दूसरा पर्ब्ब।

१ प्रेम और नम्रताका उपदेश। ५ प्रभु यीशुकी नम्रता और महिमाका बखान। १२ पावलका भाइयोंको त्राण प्राप्त करने और जगतमें ज्योति रूपी होनेके विषयमें समझाना। १९ तिमोथियके भेजनेका विचार। २५ इपाफ्रदीतके भेजनेका बर्णन।

१ सो यदि खीष्टमें कुछ शांति यदि प्रेमसे कुछ समाधान
यदि कुछ आत्माकी संगति यदि कुछ करुणा औ दया
२ होय . तो मेरे आनन्दको पूरा करो कि तुम एकसा मन
रखो और तुम्हारा एकही प्रेम एकही चित्त एकही मत
३ होय। तुम्हारा कुछ बिरोधका अथवा घमंडका मत न
होय परन्तु दीनतासे एक दूसरेको अपनेसे बड़ा सम-
४ झो। हर एक अपने अपने विषयोंको न देखा करे
परन्तु हर एक दूसरोंके भी देख लेवे।
५ तुम्होंमें यही मन होय जो खीष्ट यीशुमें भी था .
६ जिसने ईश्वरके रूपमें होके ईश्वरके तुल्य होना डकैती
७ न समझा . परन्तु अपने तईं हीन करके दासका रूप
८ धारण किया और मनुष्योंके समान बना . और मनुष्य-
केसे डौलपर पाया जाके अपनेको दीन किया और मृत्यु-
९ लों हां क्रूशकी मृत्युलों आज्ञाकारी रहा। इस कारण
ईश्वरने उसको बहुत ऊंचा भी किया और उसको वह
१० नाम दिया जो सब नामोंसे ऊर्द्ध है . इसलिये कि जो
स्वर्गमें और जो पृथिवीपर और जो पृथिवीके नीचे हैं
उन सभोंका हर एक घुटना यीशुके नामसे झुकाया जाय.
११ और हर एक जीभसे मान लिया जाय कि यीशु खीष्टही
प्रभु है जिस्तें ईश्वर पिताका गुणानुवाद होय।

सो हे मेरे प्यारो जैसे तुम सदा आज्ञाकारी हुए १२
तैसे जब मैं तुम्हारे संग रहूं केवल उस समयमें नहीं
परन्तु मैं जो अभी तुमसे दूर हूं बहुत अधिक करके इस
समयमें डरते और कांपते हुए अपने त्राणका कार्य्य
निबाहो. क्योंकि ईश्वरही है जो अपनी सुइच्छा निमित्त १३
तुम्होंसे इच्छा और कार्य्य भी करवाता है। सब काम १४
बिना कुड़कुड़ाने और विना विवादसे किया करो. जिस्तें १५
तुम निर्दोष और सूधे बनो और टेढ़े और हठीले लोगके
बीचमें ईश्वरके निष्कलंक पुत्र होओ. जिन्होंके बीचमें १६
तुम जीवनका बचन लिये हुए जगतमें ज्योतिधारियोंकी
नाईं चमकते हो कि मुझे खीष्टके दिनमें बड़ाई करनेका
हेतु होय कि मैं न वृथा दौड़ा न वृथा परिश्रम किया।
बरन जो मैं तुम्हारे विश्वासके बलिदान और सेवकाई- १७
पर ढाला जाता हूं तौभी मैं आनन्दित हूं और तुम
सभोंके संग आनन्द करता हूं। वैसेही तुम भी १८
आनन्दित होओ और मेरे संग आनन्द करो।

परन्तु मुझे प्रभु यीशुमें भरोसा है कि मैं तिमोथियको १९
शीघ्र तुम्हारे पास भेजूंगा जिस्तें मैं भी तुम्हारी दशा
जानके ढाढ़स पाऊं। क्योंकि मेरे पास कोई नहीं है २०
जिसका मेरे ऐसा मन है जो सच्चाईसे तुम्हारे विषयमें
चिन्ता करेगा। क्योंकि सब अपनेही अपनेही लिये २१
यत्न करते हैं खीष्ट यीशुके लिये नहीं। परन्तु उसको २२
तुम परखके जान चुके हो कि जैसा पुत्र पिताके संग तैसे
उसने मेरे संग सुसमाचारके लिये सेवा किई। सो मुझे २३
भरोसा है कि ज्योंहीं मुझे देख पड़ेगा कि मेरी क्या दशा

२४ होगी त्योंहीं मैं उसीको तुरन्त भेजूंगा । पर मैं प्रभुमें
भरोसा रखता हूं कि मैं भी आपही शीघ्र आऊंगा ।
२५ परन्तु मैंने इपाफ्रदीतको जो मेरा भाई और सह-
कर्म्मी और संगी योद्धा पर तुम्हारा दूत और आवश्यक
बातोंमें मेरी सेवा करनेहारा है तुम्हारे पास भेजना
२६ अवश्य समझा । क्योंकि वह तुम सभोंकी लालसा
करता था और बहुत उदास हुआ इसलिये कि तुमने
२७ सुना था कि वह रोगी हुआ था । और वह रोगी तो
हुआ यहांलों कि मरनेके निकट था परन्तु ईश्वरने उस-
पर दया किई और केवल उसपर नहीं परन्तु मुझपर
२८ भी कि मुझे शोकपर शोक न होवे । सो मैंने उसको
और भी यत्नसे भेजा कि तुम उसे फिर देखके आनन्दित
२९ होओ और मेरा शोक घटे । सो उसे प्रभुमें सब प्रकारके
आनन्दसे ग्रहण करो और ऐसे जनोंको आदर योग्य
३० समझो । क्योंकि खीष्टके कार्य्य निमित्त वह अपने प्राण-
पर जोखिम उठाके मरनेके निकट पहुंचा इसलिये कि
मेरी सेवा करनेमें तुम्हारी घटीको पूरी करे ।

३ तीसरा पर्व्व ।

१ शारीरिक कर्म्मोंपर आशा रखनेका निषेध और पावलका ऐसी आशाको त्यागना और यीशुके धर्म्मका बड़ा अभिलाषी होना । १३ धर्म्ममें बढ़ जानेकी चेष्टाका उपदेश । १७ पारमार्थिक और लौकिक दोनों प्रकारके मनुष्योंको भिन्न भिन्न दशा ।

१ अन्तमें हे मेरे भाइयो यह कहता हूं कि प्रभुमें आ-
नन्दित रहो . वही बातें तुम्हारे पास फिर लिखनेसे मुझे
२ कुछ दुःख नहीं है और तुम्हें बचाव है। कुत्तोंसे चौकस
रहो दुष्ट कर्म्मकारियोंसे चौकस रहो काटे हुओंसे चौकस
३ रहो । क्योंकि खतना किये हुए हम हैं जो आत्मासे

ईश्वरकी सेवा करते हैं और खीष्ट यीशुके विषयमें बड़ाई
करते हैं और भरोसा शरीरपर नहीं रखते हैं। पर मुझे ४
तो शरीरपर भी भरोसा है. यदि और कोई शरीरपर
भरोसा रखना उचित जानता है मैं और भी. कि आठवें ५
दिनका खतना किया हुआ इस्रायेलके बंशका बिन्यामीन-
के कुलका इब्रियोंमेंसे इब्री हूं व्यवस्थाकी कहो तो
फरीशी. उद्योगकी कहो तो मंडलीका सतानेहारा ६
व्यवस्थामेंके धर्म्मकी कहो तो निर्दोष हुआ। परन्तु ७
जो जो बातें मेरे लेखे लाभ थीं उन्हें मैंने खीष्टके कारण
हानि समझी है। हां सचमुच अपने प्रभु खीष्ट यीशुके ८
ज्ञानकी श्रेष्ठताके कारण मैं सब बातें हानि समझता
भी हूं और उसके कारण मैंने सब वस्तुओंकी हानि
उठाई और उन्हें कूड़ासा जानता हूं कि मैं खीष्टको
प्राप्त करूं. और उसमें पाया जाऊं ऐसा कि मेरा ९
अपना धर्म्म जो व्यवस्थासे है सो नहीं परन्तु वह धर्म्म
जो खीष्टके विश्वासके द्वारासे है वही धर्म्म जो
विश्वासके कारण ईश्वरसे है मुझे होय. जिस्तें मैं खीष्टको १०
और उसके जी उठनेकी शक्तिको और उसके दुःखोंकी
संगतिको जानूं और उसकी मृत्युके सदृश किया जाऊं.
जो मैं किसी रीतिसे मृतकोंके जी उठनेका भागी होऊं। ११
यह नहीं कि मैं पा चुका हूं अथवा सिद्ध हो चुका हूं १२
परन्तु मैं पीछा करता हूं कि कहीं उसको पकड़ लेऊं
जिसके निमित्त मैं भी खीष्ट यीशुसे पकड़ा गया।

हे भाइयो मैं नहीं समझता हूं कि मैंने पकड़ लिया १३
है परन्तु एक काम मैं करता हूं कि पीछेकी बातें तो भू-

लता जाता पर आगेकी बातोंकी ओर झपटता जाता
१४ हूं . और ऊपरकी बुलाहट जो ख्रीष्ट यीशुमें ईश्वरकी
ओरसे है झंडा देखता हुआ उस बुलाहटके जयफलका
१५ पीछा करता हूं । सो हममेंसे जितने सिद्ध हैं यही
मन रखें और यदि किसी बातमें तुम्हें औरही मन
१६ होय तो ईश्वर यह भी तुमपर प्रगट करेगा । तौभी
जहांलों हम पहुंचे हैं एकही विधिसे चलना और
एकही मन रखना चाहिये ।
१७ हे भाइयो तुम मिलके मेरीसी चाल चलो और उन्हें
देखते रहो जो ऐसे चलते हैं जैसे हम तुम्हारे लिये
१८ दृष्टान्त हैं । क्योंकि बहुत लोग चलते हैं जिनके विषयमें
मैंने बार बार तुमसे कहा है और अब रोता हुआ भी
१९ कहता हूं कि वे ख्रीष्टके क्रूशके बैरी हैं . जिनका अन्त
बिनाश है जिनका ईश्वर पेट है जो अपनी लज्जापर
बड़ाई करते हैं और पृथिवीपरकी बस्तुओंपर मन लगाते
२० हैं। क्योंकि हम तो स्वर्गकी प्रजा हैं जहांसे हम त्राणकर्त्ता-
२१ की अर्थात प्रभु यीशु ख्रीष्टकी बाट भी जोहते हैं . जो उस
कार्य्यके अनुसार जिस करके वह सब बस्तुओंको अपने
बशमें कर सकता है हमारी दीनताईके देहका रूप बदल
डालेगा कि वह उसके ऐश्वर्य्यके देहके सदृश हो जावे।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ ऊपरके उपदेशकी समाप्ति । २ कितनी विशेष बहिनोंका चर्चा । ४ सारी
मंडलीके लिये उपदेश । १० पावलकी सहायता करनेके विषयमें उनका बखान।
२१ पत्रीकी समाप्ति ।

१ सो हे मेरे प्यारे और अभिलाषित भाइयो मेरे आनन्द
और मुकुट यूंही हे प्यारो प्रभुमें दृढ़ रहो ।

मैं इवोदियासे बिन्ती करता हूं और सुन्तुखीसे बिन्ती २
करता हूं कि वे प्रभुमें एकसां मन रखें । और हे सच्चे ३
संघाती मैं तुझसे भी बिन्ती करता हूं इन स्त्रियोंकी
सहायता कर जिन्होंने क्लीमीके साथ भी और मेरे और
और सहकर्म्मियोंके साथ जिनके नाम जीवनके पुस्तकमें
हैं मेरे संग सुसमाचारके विषयमें मिलके साहस किया ।

प्रभुमें सदा आनन्द करो . मैं फिर कहूंगा आनन्द ४
करो । तुम्हारी मृदुता सब मनुष्योंपर प्रगट होवे . ५
प्रभु निकट है । किसी बातमें चिन्ता मत करो परन्तु ६
हर एक बातमें धन्यबादके साथ प्रार्थनासे और बिन्तीसे
तुम्हारे निवेदन ईश्वरको जनाये जावें । और ईश्वरकी ७
शांति जो समस्त ज्ञानसे ऊर्द्ध है ख्रीष्ट यीशुमें तुम लो-
गोंके हृदय और तुम लोगोंके मनकी रक्षा करेगी ।
अन्तमें हे भाइयो यह कहता हूं कि जो जो बातें सत्य ८
हैं जो जो आदरयोग्य हैं जो जो यथार्थ हैं जो जो शुद्ध
हैं जो जो सुहावनी हैं जो जो सुख्यात हैं कोई गुण
जो होय और कोई यश जो होय उन्हीं बातोंकी
चिन्ता करो । जो तुमने सीखीं भी और ग्रहण किईं ९
और सुनीं और मुझमें देखीं वही बातें किया करो
और शांतिका ईश्वर तुम्हारे संग होगा ।

मैंने प्रभुमें बड़ा आनन्द किया कि मेरे लिये सोच क- १०
रनेमें तुम अब भी फिर पनपे और इस बातका तुम सोच
करते भी थे पर तुम्हें अवसर न था । यह नहीं कि मैं ११
दरिद्रताके विषयमें कहता हूं क्योंकि मैं सीख चुका हूं कि
जिस दशामें हूं उसमें सन्तोष करूं । मैं दीन होने जानता १२

हूं मैं उभरने भी जानता हूं मैं सर्ब्बत्र और सब बातोंमें
तृप्त होनेको और भूखा रहनेको भी उभरनेको और
१३ दरिद्र होनेको भी सिखाया गया हूं । मैं खीष्टमें जो मुझे
१४ सामर्थ्य देता है सब कुछ कर सकता हूं । तौभी तुमने
१५ भला किया जो मेरे क्लेशमें मेरी सहायता किई । और हे
फिलिपीयो तुम यह भी जानो कि सुसमाचारके आरंभमें
जब मैं माकिदोनियासे निकला तब देने लेनेके विषयमें
किसी मंडलीने मेरी सहायता न किई पर केवल तुमहीने।
१६ क्योंकि थिसलोनिकामें भी तुमने एक बेर और दो बेर
१७ भी जो मुझे आवश्यक था सो भेजा। यह नहीं कि मैं दान
चाहता हूं पर मैं वह फल चाहता हूं जिससे तुम्हारे नि-
१८ मित्त अधिक लाभ होवे । पर मैं सब कुछ पा चुका हूं
और मुझे बहुत है . जो तुम्हारी ओरसे आया मानो
सुगन्ध मानो ग्राह्य बलिदान जो ईश्वरको भावता है
१९ सोई इपाफ्रदीतके हाथ पाके मैं भरपूर हूं। और मेरा ईश्वर
अपने धनके अनुसार महिमा सहित खीष्ट यीशुमें सब कुछ
२० जो तुम्हें आवश्यक हो भरपूर करके देगा । हमारे पिता
ईश्वरका गुणानुबाद सदा सर्ब्बदा होय . आमीन ।
२१ खीष्ट यीशुमें हर एक पवित्र जनको नमस्कार . मेरे
२२ संगके भाई लोगोंका तुमसे नमस्कार। सब पवित्र
लोगोंका निज करके उन्होंका जो कैसरके घरानेके हैं
२३ तुमसे नमस्कार । हमारे प्रभु यीशु खीष्टका अनुग्रह
तुम सभोंके संग होवे । आमीन॥

कलस्सीयोंको पावल प्रेरितकी पत्री ।

---

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ पत्रीका आभाष । ३ कलस्सीयोंके विषयमें पावलका धन्यवाद । ९ उनके लिये उसकी प्रार्थना । १५ यीशुका माहात्म्य । २१ कलस्सीयोंपर ईश्वरकी कृपाका बखान । २४ खीष्ट्र मतके बड़े भेदका पावलपर प्रकाश किया जाना कि सभोंमें प्रचार किया जाय ।

पावल जो ईश्वरकी इच्छासे यीशु खीष्टका प्रेरित १
है और भाई तिमोथिय कलस्सीमेंके पवित्र लोगों और
खीष्टमें बिश्वासी भाइयोंको. तुम्हें हमारे पिता ईश्वर २
और प्रभु यीशु खीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले ।
हम नित्य तुम्हारे लिये प्रार्थना करते हुए अपने ३
प्रभु यीशु खीष्टके पिता ईश्वरका धन्य मानते हैं. कि ४
हमने खीष्ट यीशुपर तुम्हारे बिश्वासका और उस प्रेमका
समाचार पाया है जो सब पवित्र लोगोंसे उस आशाके
कारण रखते हो. जो आशा तुम्हारे लिये स्वर्गमें धरी ५
है जिसकी कथा तुमने आगे सुसमाचारकी सत्यताके
बचनमें सुनी . वह सुसमाचार जो तुम्हारे पास भी ६
जैसा सारे जगतमें पहुंचा है और फल लाता और
बढ़ता है जैसा तुममें भी उस दिनसे फलता है जिस
दिनसे तुमने सुना और सत्यतासे ईश्वरका अनुग्रह
जाना. जैसे तुमने हमारे प्यारे संगी दास इपाफ्रासे ७
सीखा जो तुम्हारे लिये खीष्टका बिश्वासयोग्य सेवक है.
और जिसने तुम्हारा प्रेम जो आत्मासे है हमें बताया। ८
इस कारणसे हम भी जिस दिनसे हमने सुना उस ९

दिनसे तुम्हारे लिये प्रार्थना करना और यह मांगना
नहीं छोडते हैं कि तुम सारे ज्ञान और आत्मिक
बुद्धि सहित ईश्वरकी इच्छाकी पहचानसे परिपूर्ण
१० होओ . जिस्तें तुम प्रभुके योग्य चाल चलो ऐसा कि
सब प्रकारसे प्रसन्नता होय और हर एक अच्छे
काममें फलवान होओ और ईश्वरकी पहचानमें
११ बढ़ते जावो . और समस्त बलसे उसकी महिमाके
प्रभावके अनुसार बलवन्त किये जावो यहांलों कि
१२ आनन्दसे सकल स्थिरता और धीरज दिखावो . और
कि तुम पिताका धन्य मानो जिसने हमें पवित्र लो-
गोंका अधिकार जो ज्योतिमें है उस अधिकारके
१३ अंशके योग्य किया . और हमें अंधकारके बशसे छु-
१४ ड़ाके अपने प्रियतम पुत्रके राज्यमें लाया . जिसमें उसके
लोहूके द्वारा हमें उद्धार अर्थात पापमोचन मिलता है।
१५ वह तो अदृश्य ईश्वरकी प्रतिमा और सारी सृष्टि-
१६ पर पहिलौठा है . क्योंकि उससे सब कुछ सृजा गया
वह जो स्वर्गमें है और वह जो पृथिवीपर है दृश्य
और अदृश्य क्या सिंहासन क्या प्रभुताएं क्या प्रधान-
ताएं क्या अधिकार सब कुछ उसके द्वारासे और उसके
१७ लिये सृजा गया है। और वही सबके आगे है और
१८ सब कुछ उसीसे बना रहता है। और वही देहका
अर्थात मंडलीका सिर है कि वह आदि है और मृ-
तकोंमेंसे पहिलौठा जिस्तें सब बातोंमें वही प्रधान
१९ होय। क्योंकि ईश्वरकी इच्छा थी कि उसमें समस्त
२० पूर्णता बास करे . और कि उसके क्रूशके लोहूके द्वारासे

मिलाप करके उसीके द्वारा सब कुछ चाहे वह जो
पृथिवीपर है चाहे वह जो स्वर्गमें है अपनेसे मिलावे।
और तुम्हें जो आगे नियारे किये हुए थे और अपनी २१
बुद्धिसे बुरे कर्म्मोंमें रहके बैरी थे उसने अभी उसके
मांसके देहमें मृत्युके द्वारासे मिला लिया है . कि तुम्हें २२
अपने सन्मुख पवित्र औ निष्कलंक औ निर्दोष खड़ा
करे . जो ऐसाही है कि तुम बिश्वासमें नेव दिये २३
हुए दृढ़ रहते हो और सुसमाचार जो तुमने सुना
उसकी आशासे हटाये नहीं जाते . वह सुसमाचार
जो आकाशके नीचेकी सारी सृष्टिमें प्रचार किया गया
जिसका मैं पावल सेवक बना ।
और मैं अब उन दुःखोंमें जो मैं तुम्हारे लिये उठाता २४
हूं आनन्द करता हूं और ख्रीष्टके क्लेशोंकी जो घटी है
सो उसके देहके लिये अर्थात मंडलीके लिये अपने
शरीरमें पूरी करता हूं। उस मंडलीका मैं ईश्वरके २५
भंडारीपनके अनुसार जो तुम्हारे लिये मुझे दिया
गया सेवक बना कि ईश्वरके बचनको सम्पूर्ण प्रचार
करूं. अर्थात उस भेदको जो आदिसे और पीढ़ी पीढ़ी २६
गुप्त रहा परन्तु अब उसके पवित्र लोगोंपर प्रगट
किया गया है . जिन्हें ईश्वरने बताने चाहा कि अन्य- २७
देशियोंमें इस भेदकी महिमाका धन क्या है अर्थात
तुम्होंमें ख्रीष्ट जो महिमाकी आशा है . जिसे हम २८
प्रचार करते हैं और हर एक मनुष्यको चिताते हैं
और समस्त ज्ञानसे हर एक मनुष्यको सिखाते हैं
जिस्तें हर एक मनुष्यको ख्रीष्ट यीशुमें सिद्ध करके

२९ आगे खड़ा करें । और इसके लिये मैं उसके उस
कार्य्यके अनुसार जो मुझमें सामर्थ्य सहित गुण करता
है उद्योग करके परिश्रम भी करता हूं ।

२ दूसरा पर्व्व ।

१ कलस्सीयोंके विषयमें पावलकी अभिलाषा । ४ खीष्टमें बने रहनेका उपदेश । ८ उसमें उनका बड़ा अधिकार । १६ मिथ्या भक्ति और सांसारिक ज्ञानसे परे रहनेका उपदेश ।

१ क्योंकि मैं चाहता हूं कि तुम जानो कि तुम्हारे
और उनके जो लाओदिकियामें हैं और जितनोंने
शरीरमें मेरा मुंह नहीं देखा है सभोंके विषयमें मेरा
२ कितना बड़ा उद्योग होता है . इसलिये कि उनके मन
शांत होवें और वे प्रेममें गठ जावें जिस्तें वे ज्ञानके
निश्चयका सारा धन प्राप्त करें और ईश्वर पिताका
३ और खीष्टका भेद पहचानें . जिसमें बुद्धि औ ज्ञानकी
गुप्त सम्पत्ति सबकी सब धरी है ।
४ मैं यह कहता हूं न हो कि कोई तुम्हें फुसलाऊ
५ बातोंसे धोखा देवे । क्योंकि जो मैं शरीरमें तुमसे दूर
रहता हूं तौभी आत्मामें तुम्हारे संग हूं और आनन्दसे
तुम्हारी रीति विधि और खीष्टपर तुम्हारे बिश्वासकी
६ स्थिरता देखता हूं । सो तुमने खीष्ट यीशुको प्रभु करके
७ जैसे ग्रहण किया वैसे उसीमें चलो । और उसमें
तुम्हारी जड़ बंधी हुई होय और तुम बनते जाओ
और बिश्वासमें जैसे तुम सिखाये गये वैसे दृढ़ होते
जाओ और धन्यबाद करते हुए उसमें बढ़ते जाओ ।
८ चौकस रहो कि कोई ऐसा न हो जो तुम्हें उस

तत्त्वज्ञान और व्यर्थ धोखेके द्वारासे धर ले जाय जो
मनुष्योंके परम्पराई मतके अनुसार और संसारकी
आदिशिक्षाके अनुसार है पर ख्रीष्टके अनुसार नहीं
है। क्योंकि उसमें ईश्वरत्वकी सारी पूर्णता सदेह ९
बास करती है। और उसमें तुम परिपूर्ण हुए हो जो १०
समस्त प्रधानता और अधिकारका सिर है. जिसमें ११
तुमने बिन हाथका किया हुआ खतना भी अर्थात
शारीरिक पापोंके देहके उतारनेमें ख्रीष्टका खतना
पाया. और बपतिसमा लेनेमें उसके संग गाड़े गये १२
और उसीमें ईश्वरके कार्य्यके बिश्वासके द्वारा जिसने
उसको मृतकोंमेंसे उठाया संगही उठाये भी गये। और १३
तुम्हें जो अपराधोंमें और अपने शरीरकी खतनाहीन-
तामें मृतक थे उसने उसके संग जिलाया कि उसने तुम्हा-
रे सब अपराधोंको क्षमा किया. और विधियोंका लेख १४
जो हमारे बिरुद्ध और हमसे बिपरीत था मिटा डाला
और उसको कीलोंसे क्रूशपर ठोंकके मध्यमेंसे उठा
दिया है. और प्रधानताओं और अधिकारोंकी सज्जा १५
उतारके क्रूशपर उनपर जयजयकार करके उन्हें प्रगटमें
दिखाया।

इसलिये खानेमें अथवा पीनेमें अथवा पर्ब्ब वा नये १६
चान्दके दिन वा बिश्रामके दिनोंके विषयमें कोई
तुम्हारा बिचार न करे. कि यह बातें आनेहारी १७
बातोंकी छाया हैं परन्तु देह ख्रीष्टका है। कोई जो १८
अपनी इच्छासे दीनताई और दूतोंकी पूजा करनेहारा
होय तुम्हारा प्रतिफल हरण न करे जो उन बातोंमें

जिन्हें नहीं देखा है घुस जाता है और अपने शारीरिक
१९ ज्ञानसे वृथा फुलाया जाता है . और सिरको धारण
नहीं करता है जिससे सारा देह गांठों और बंधोंसे
उपकार पाके और एक संग गठके ईश्वरके बढ़ावसे
२० बढ़ जाता है । जो तुम ख्रीष्टके संग संसारकी आदि-
शिक्षाकी ओर मर गये तो क्यों जैसे संसारमें जीते
हुए उन विधियोंके बशमें हो जो मनुष्योंकी आज्ञाओं
२१ और शिक्षाओंके अनुसार हैं . कि मत छू और न
२२ चीख और न हाथ लगा . बस्तुओं जो काममें लानेसे
२३ सब नाश होनेहारी हैं । ऐसी विधियां निज इच्छाके
अनुसारकी भक्तिसे और दीनतासे और देहको कष्ट
देनेसे ज्ञानका नाम तो पाती हैं पर वे कुछ भी आदरके
योग्य नहीं केवल शारीरिक स्वभावको तृप्त करनेके
लिये हैं।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ ख्रीष्टके संग जिलाये हुओंके योग्य चाल चलनेका उपदेश । ५ अशुद्धता औ क्रोध औ झूठका निषेध । १२ दया क्षमा प्रेम औ धन्यबादके विषयमें उपदेश । १८ स्त्रियों और पुरुषोंके लिये उपदेश । २० पुत्र और पिताके लिये उपदेश । २२ दासोंके लिये उपदेश ।

१ सो जो तुम ख्रीष्टके संग जी उठे तो ऊपरकी बस्तु-
ओंका खोज करो जहां ख्रीष्ट ईश्वरके दहिने हाथ बैठा
२ हुआ है। पृथिवीपरकी बस्तुओंपर नहीं परन्तु ऊपरकी
३ बस्तुओंपर मन लगाओ । क्योंकि तुम तो मूए और
तुम्हारा जीवन ख्रीष्टके संग ईश्वरमें छिपाया गया है।
४ जब ख्रीष्ट जो हमारा जीवन है प्रगट होगा तब तुम भी
उसके संग महिमा सहित प्रगट किये जाओगे ।

इसलिये अपने अंगोंको जो पृथिवीपर हैं व्यभिचार ५
श्रौ अशुद्धता श्रौ कामना श्रौ कुइच्छाको श्रौर लोभको
जो मूर्त्तिपूजा है मार डालो . कि इनके कारण ईश्वरका ६
क्रोध आज्ञा लंघन करनेहारोंपर पड़ता है . जिन्होंके ७
बीचमें आगे जब तुम इनमें जीते थे तब तुम भी चलते
थे । पर अब तुम भी इन सब बातोंको क्रोध श्रौ कोप ८
श्रौ बैरभावको श्रौ निन्दा श्रौ गालीको अपने मुंहसे
दूर करो । एक दूसरेसे झूठ मत बोलो कि तुमने ९
पुराने मनुष्यत्वको उसकी क्रियाओं समेत उतार डाला
है . श्रौर नयेको पहिन लिया है जो अपने सृजनहारके १०
रूपके अनुसार ज्ञान प्राप्त करनेको नया होता जाता
है । उसमें यूनानी श्रौर यिहूदी खतना किया हुआ ११
श्रौर खतनाहीन अन्यभाषिया स्कुथी दास श्रौ निर्बन्ध
नहीं है परन्तु खीष्ट सब कुछ श्रौर सभोंमें है ।

सो ईश्वरके चुने हुए पवित्र श्रौर प्यारे लोगोंकी १२
नाईं बड़ी करुणा श्रौ कृपालुता श्रौ दीनता श्रौ नम्रता
श्रौ धीरज पहिन लेश्रो . श्रौर एक दूसरेकी सह लेश्रो १३
श्रौर यदि किसीको किसीपर दोष देनेका हेतु होय
तो एक दूसरेको क्षमा करो . जैसे खीष्टने तुम्हें क्षमा
किया तैसे तुम भी करो। पर इन सभोंके ऊपर प्रेमको १४
पहिन लेश्रो जो सिद्धताका बंध है । श्रौर ईश्वरकी १५
शांति जिसके लिये तुम एक देहमें बुलाये भी गये
तुम्हारे हृदयमें प्रबल होय श्रौर धन्य माना करो ।
खीष्टका बचन तुम्होंमें अधिकाईसे बसे श्रौर गीतों १६
श्रौर भजनों श्रौर आत्मिक गानोंमें समस्त ज्ञान सहित

एक दूसरेको सिखाओ और चिताओ और अनुग्रह
सहित अपने अपने मनमें प्रभुके आगे गान करो।
१७ और बचनसे अथवा कर्म्मसे जो कुछ तुम करो सब
काम प्रभु यीशुके नामसे करो और उसके द्वारासे ईश्वर
पिताका धन्य मानो।
१८ हे स्त्रियो जैसा प्रभुमें सोहता है तैसा अपने अपने
१९ स्वामीके अधीन रहो। हे पुरुषो अपनी अपनी स्त्रीको
प्यार करो और उनकी ओर कड़वे मत होओ।
२० हे लड़को सब बातोंमें अपने अपने माता पिताकी
२१ आज्ञा मानो क्योंकि यह प्रभुको भावता है। हे
पिताओ अपने अपने लड़कोंको मत खिजाओ न हो
कि वे उदास होवें।
२२ हे दासो जो लोग शरीरके अनुसार तुम्हारे स्वामी
हैं मनुष्योंको प्रसन्न करनेहारोंकी नाईं मुंह देखी
सेवासे नहीं परन्तु मनकी सीधाईसे ईश्वरसे डरते हुए
२३ सब बातोंमें उनकी आज्ञा मानो। और जो कुछ तुम
करो सब कुछ जैसे मनुष्योंके लिये सो नहीं परन्तु
२४ जैसे प्रभुके लिये अन्तःकरणसे करो. क्योंकि जानते
हो कि प्रभुसे तुम अधिकारका प्रतिफल पाओगे
२५ क्योंकि तुम प्रभु ख्रीष्टके दास हो। परन्तु अनीति
करनेहारा जो अनीति उसने किई है तिसका फल
पावेगा और पक्षपात नहीं है।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ स्वामियोंके लिये उपदेश। २ प्रार्थना और शुभ चलनका उपदेश। ७ तुखिक और उनीसिम भाइयोंके भेजनेका कारण। १० नमस्कार सहित पत्रीकी समाप्ति।

हे स्वामियो अपने अपने दासोंसे न्याययुक्त और १
यथार्थ व्यवहार करो क्योंकि जानते हो कि तुम्हारा
भी स्वर्गमें स्वामी है।

प्रार्थनामें लगे रहो और धन्यबादके साथ उसमें २
जागते रहो। और इसके संग हमारे लिये भी प्रार्थना ३
करो कि ईश्वर हमारे लिये बात करनेका ऐसा द्वार
खोल दे कि हम ख्रीष्टका भेद जिसके कारण मैं बांधा
भी गया हूं बोल देवें. जिस्तें मैं जैसा मुझे बोलना ४
उचित है वैसाही उसे प्रगट करूं। बाहरवालोंकी और ५
बुद्धिसे चलो और अपने लिये समयका लाभ करो।
तुम्हारा बचन सदा अनुग्रह सहित और लोणसे ६
स्वादित होय जिस्तें तुम जानो कि हर एकको किस
रीतिसे उत्तर देना तुम्हें उचित है।

तुखिक जो प्यारा भाई और बिश्वासयोग्य सेवक ७
और प्रभुमें मेरा संगी दास है मेरा सब समाचार तुम्हें
सुनावेगा. कि मैंने उसे इसीके निमित्त तुम्हारे पास ८
भेजा है कि वह तुम्हारे विषयमेंकी बातें जाने और
तुम्हारे मनको शांति देवे। उसे मैंने उनीसिमके संग ९
जो बिश्वासयोग्य और प्यारा भाई और तुम्हेंमेंका
है भेजा है. वे यहांका सब समाचार तुम्हें सुनावेंगे।

अरिस्तार्ख जो मेरा संगी बंधुआ है और मार्क जो १०
बर्णबाका भाई लगता है जिसके विषयमें तुमने आज्ञा
पाई. जो वह तुम्हारे पास आवे तो उसे ग्रहण करो.
और यीशु जो युस्त कहावता है इन तीनोंका तुमसे ११
नमस्कार. खतना किये हुए लोगोंमेंसे केवल येही

ईश्वरके राज्यके लिये मेरे सहकर्म्मी हैं जिनसे मुझे
१२ शांति हुई है । इपाफ्रा जो तुम्हांमेंसे एक खीष्टका दास
है तुमसे नमस्कार कहता है और सदा तुम्हारे लिये
प्रार्थनाओंमें उद्योग करता है कि तुम ईश्वरकी सारी
१३ इच्छामें सिद्ध और परिपूर्ण बने रहो। क्योंकि मैं
उसका साक्षी हूं कि तुम्हारे लिये और उनके लिये
जो लाओदिकेयामें हैं और उनके लिये जो हियरा-
१४ पलिमें हैं उसका बड़ा अनुराग है । लूकका जो प्यारा
१५ वैद्य है और दीमाका तुमसे नमस्कार । लाओदिके-
यामेंके भाइयोंको और नुम्फाको और उसके घरमेंकी
१६ मंडलीको नमस्कार । और जब यह पत्री तुम्हारे यहां
पढ़ लिई जाय तब ऐसा करो कि लाओदिकियोंकी
मंडलीमें भी पढ़ी जाय और कि तुम भी लाओदिकेयाकी
१७ पत्री पढ़ो। और अर्खिपसे कहो जो सेवकाई तूने
प्रभुमें पाई है उसे देखता रह कि तू उसे पूरी करे।
१८ मुझ पावलका अपने हाथका लिखा हुआ नमस्कार.
मेरे बंधनोंकी सुध लेओ. अनुग्रह तुम्हारे संग होवे।
आमीन ॥

थिसलोनिकियोंको पावल प्रेरितकी पहिली पत्री।

१ पहिला पर्व्व।

१ पत्रीका आभाष। २ थिसलोनिकियोंके विषयमें पावलका धन्यबाद और उनके सुसमाचार ग्रहण करनेका बखान।

पावल और सीला और तिमोथिय थिसलोनिकि- १
योंकी मंडलीको जो ईश्वर पिता और प्रभु यीशु
खीष्टमें है . तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु
खीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले।

हम अपनी प्रार्थनाओंमें तुम्हें स्मरण करते हुए २
नित्य तुम सभोंके विषयमें ईश्वरका धन्य मानते हैं.
क्योंकि हम अपने पिता ईश्वरके आगे तुम्हारे बिश्वास- ३
के कार्य्य और प्रेमके परिश्रमको और हमारे प्रभु
यीशु खीष्टमें आशाकी धीरताको निरन्तर स्मरण करते
हैं। और हे भाइयो ईश्वरके प्यारो हम तुम्हारा चुन ४
लिया जाना जानते हैं। क्योंकि हमारा सुसमाचार ५
केवल बचनसे नहीं परन्तु सामर्थ्यसे भी और पवित्र
आत्मासे और बड़े निश्चयसे तुम्हारे पास पहुंचा जैसा
तुम जानते हो कि तुम्हारे कारण हम तुम्होंमें कैसे
बने। और तुम लोग बड़े क्लेशके बीचमें पवित्र आत्मा- ६
के आनन्दसे बचनको ग्रहण करके हमोंके और प्रभुके
अनुगामी बने . यहांलों कि माकिदोनिया और आ- ७
खायामेंके सब बिश्वासियोंके लिये तुम दृष्टान्त हुए।
क्योंकि न केवल माकिदोनिया और आखायामें तुम्हारी ८

ओरसे प्रभुके बचनका ध्वनि फैल गया परन्तु हर एक
स्थानमें भी तुम्हारे बिश्वासका जो ईश्वरपर है चर्चा
हो गया है यहांलों कि हमें कुछ बोलनेका प्रयोजन
९ नहीं है। क्योंकि वे आपही हमारे विषयमें बताते हैं
कि तुम्हारे पास हमारा आना किस प्रकारका था और
तुम क्योंकर मूरतोंसे ईश्वरकी ओर फिरे जिस्तें जीवते
१० और सच्चे ईश्वरकी सेवा करो. और स्वर्गसे उसके पुत्र-
की जिसे उसने मृतकोंमेंसे उठाया बाट देखो अर्थात
यीशुकी जो हमें आनेवाले क्रोधसे बचानेहारा है।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ थिसलोनिकियोंके बीचमें पावलके उपदेशकी रीति। १३ थिसलोनिकियोंका उस उपदेशको यथायोग्य ग्रहण करना। १७ उनसे पावलकी बड़ी प्रीति।

१ हे भाइयो तुम्हारे पास हमारे आनेके विषयमें तुम
२ आपही जानते हो कि वह व्यर्थ नहीं था। परन्तु आगे
फिलिपीमें जैसा तुम जानते हो दुःख पाके और दुर्दशा
भोगके हमने ईश्वरका सुसमाचार बहुत रगड़े झगड़ेमें
३ तुम्हें सुनानेको अपने ईश्वरसे साहस पाया। क्योंकि
हमारा उपदेश न भ्रमसे और न अशुद्धतासे और न
४ छलके साथ है. परन्तु जैसा ईश्वरको अच्छा देख पड़ा है
कि सुसमाचार हमें सौंपा जाय तैसा हम बोलते हैं
अर्थात जैसे मनुष्योंको प्रसन्न करते हुए सो नहीं परन्तु
५ ईश्वरको जो हमोंके मनको जांचता है। क्योंकि हम न
तो कभी लल्लोपत्तोकी बात किया करते थे जैसा तुम
जानते हो और न लोभके लिये बहाना करते थे ईश्वर
६ साक्षी है। और यद्यपि हम खीष्टके प्रेरित होके मर्य्यादा

ले सकते तौभी हम मनुष्योंसे चाहे तुम्हींसे चाहे दूसरों-
से आदर नहीं चाहते थे। परन्तु तुम्हारे बीचमें हम ऐसे ७
कोमल बने जैसी माता अपने बालकोंको दूध पिला
पोसती है। वैसेही हम तुम्होंसे स्नेह करते हुए तुम्हें केवल ८
ईश्वरका सुसमाचार नहीं परन्तु अपना अपना प्राण भी
बांट देनेको प्रसन्न थे इसलिये कि हमारे तुम प्यारे बन
गये। क्योंकि हे भाइयो तुम हमारे परिश्रम और क्लेश- ९
को स्मरण करते हो कि तुममेंसे किसीपर भार न देनेके
लिये हमने रात औ दिन कमाते हुए तुम्होंमें ईश्वरका
सुसमाचार प्रचार किया। तुम लोग साक्षी हो और १०
ईश्वर भी कि तुम्होंके आगे जो बिश्वासी हो हम कैसी
पवित्रता औ धर्म्म औ निर्दोषतासे चले। जैसे तुम ११
जानते हो कि जैसा पिता अपने लड़कोंको तैसे हम
तुम्होंमेंसे एक एकको क्योंकर उपदेश औ शांति औ
साक्षी देते थे. जिस्तें तुम ईश्वरके योग्य चलो जो १२
तुम्हें अपने राज्य और ऐश्वर्य्यमें बुलाता है।

इस कारणसे हम निरन्तर ईश्वरका धन्य भी मानते १३
हैं कि तुमने जब ईश्वरके समाचारका बचन हमसे
पाया तब मनुष्योंका बचन नहीं पर जैसा सचमुच है
ईश्वरका बचन ग्रहण किया जो तुम्होंमें जो बिश्वास
करते हो गुण भी करता है। क्योंकि हे भाइयो खीष्ट १४
यीशुमें ईश्वरकी मंडलियां जो यिहूदियामें हैं उनके तुम
अनुगामी बने कि तुमने अपने स्वदेशियोंसे वैसाही
दुःख पाया जैसा उन्होंने भी यिहूदियोंसे. जिन्होंने १५
प्रभु यीशुको और भविष्यद्वक्ताओंको मार डाला और

हमोंको सताया और ईश्वरको प्रसन्न नहीं करते हैं
१६ और सब मनुष्योंके बिरुद्ध हैं . कि वे अन्यदेशियोंसे
उनके त्राणके लिये बात करनेसे हमें बर्जते हैं जिस्तें
नित्य अपने पापोंको पूरा करें . परन्तु उनपर क्रोध
अत्यन्तलों पहुंचा है ।
१७ पर हे भाइयो हमोंने हृदयमें नहीं पर देहमें थोड़ी
बेरलों तुमसे अलग किये जाके बहुत अधिक करके
तुम्हारा मुंह देखनेको बड़ी अभिलाषासे यत्न किया ।
१८ इसलिये हमने अर्थात मुझ पावलने एक बेर और दो
बेर भी तुम्हारे पास आनेकी इच्छा किई और शैतानने
१९ हमें रोका । क्योंकि हमारी आशा अथवा आनन्द
अथवा बड़ाईका मुकुट क्या है . क्या तुम भी हमारे
प्रभु यीशु ख्रीष्टके आगे उसके आनेपर नहीं हो ।
२० तुम तो हमारी बड़ाई और आनन्द हो ।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ तिमोथियके भेजनेका बर्णन । ६ उससे थिसलोनिकियोंका समाचार सुनके पावलका आनन्दित होना । ११ थिसलोनिकियोंके लिये पावलकी प्रार्थना ।

१ इस कारण जब हम और सह न सके तब हमने
२ आथीनीमें अकेले छोड़े जानेको अच्छा जाना . और
तिमोथियको जो हमारा भाई और ईश्वरका सेवक
और ख्रीष्टके सुसमाचारमें हमारा सहकर्म्मी है तुम्हें
स्थिर करनेको और तुम्हारे बिश्वासके विषयमें तुम्हें
३ समझानेको भेजा . जिस्तें कोई इन क्लेशोंमें डगमगा
न जाय क्योंकि तुम आप जानते हो कि हम इसके
४ लिये ठहराये हुए हैं । क्योंकि जब हम तुम्हारे यहां थे

तब भी तुमको आगेसे कहते थे कि हम तो क्लेश पावेंगे
जैसा हुआ भी है और तुम जानते हो। इस कारणसे ५
जब मैं और सह न सका तब तुम्हारा बिश्वास बूझने-
को भेजा ऐसा न हो कि किसी रीतिसे परीक्षा करने-
हारेने तुम्हारी परीक्षा किई और हमारा परिश्रम ब्यर्थ
हो गया हो।

पर अभी तिमोथिय जो तुम्हारे पाससे हमारे यहां ६
आया है और तुम्हारे बिश्वास और प्रेमका सुसमाचार
हमारे पास लाया है और यह कि तुम नित्य भली
रीतिसे हमें स्मरण करते हो और हमें देखनेकी लालसा
करते हो जैसे हम भी तुम्हें देखनेकी लालसा करते
हैं. तो इस हेतुसे हे भाइयो तुम्हारे बिश्वासके द्वारासे ७
हमने अपने सारे क्लेश औ दरिद्रतामें तुम्हारे विषयमें
शांति पाई है। क्योंकि अब जो तुम प्रभुमें दृढ़ रहो ८
तो हम जीवते हैं। क्योंकि हम धन्यबादका कौनसा ९
फल तुम्हारे विषयमें ईश्वरको इस सारे आनन्दके
लिये दे सकते हैं जिस करके हम तुम्हारे कारण अपने
ईश्वरके आगे आनन्द करते हैं. कि रात औ दिन १०
हम अत्यन्त बिन्ती करते हैं कि तुम्हारा मुंह देखें और
तुम्हारे बिश्वासकी जो घटी है उसे पूरी करें।

हमारा पिता ईश्वर आपही और हमारा प्रभु यीशु ११
खीष्ट तुम्हारी ओर हमारा मार्ग सीधा करे। पर तुम्हें १२
प्रभु एक दूसरेकी ओर और सभोंकी ओर प्रेममें अधि-
काई देवे और उभारे जैसे हम भी तुम्हारी ओर उभरते
हैं. जिस्तें वह तुम्हारे मनको स्थिर करे और हमारे १३

पिता ईश्वरके आगे हमारे प्रभु यीशु खीष्टके अपने सब
पवित्रोंके संग आनेपर पवित्रताईमें निर्दोष भी करे ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ पवित्रता और भ्रात्रीय प्रेम और अच्छा धन्धा करनेका उपदेश । १३ मृतकोंके जी उठनेका बर्णन ।

१ सो हे भाइयो अन्तमें हम प्रभु यीशुमें तुम्हें बिन्ती
और उपदेश करते हैं कि जैसा तुमने हमसे पाया कि
किस रीतिसे चलना और ईश्वरको प्रसन्न करना तुम्हें
२ उचित है तुम अधिक बढ़ते जाओ । क्योंकि तुम जानते
हो कि हमने प्रभु यीशुकी ओरसे कौन कौन आज्ञा तुम्हें
३ दिईं । क्योंकि ईश्वरकी इच्छा यह है अर्थात तुम्हारी
४ पवित्रता कि तुम व्यभिचारसे परे रहो . कि तुममेंसे हर
एक अपने अपने पात्रको उन अन्यदेशियोंकी नाईं जो
ईश्वरको नहीं जानते हैं कामाभिलाषासे रखे सो नहीं .
५ ६ परन्तु पवित्रता और आदरसे रखने जाने . कि इस
बातमें कोई अपने भाईको न ठगे और न उसपर दांव
चलावे क्योंकि जैसा हमने आगे तुमसे कहा और साक्षी
भी दिई तैसा प्रभु इन सब बातोंके विषयमें पलटा
७ लेनेहारा है । क्योंकि ईश्वरने हमोंको अशुद्धताके लिये
८ नहीं परन्तु पवित्रतामें बुलाया । इस कारण जो तुच्छ
जानता है सो मनुष्यको नहीं परन्तु ईश्वरको जिसने
अपना पवित्र आत्मा भी हमें दिया तुच्छ जानता है ।
९ भ्रात्रीय प्रेमके विषयमें तुम्हें प्रयोजन नहीं है कि मैं
तुम्हारे पास लिखूं क्योंकि एक दूसरेको प्यार करनेको
१० तुम आपही ईश्वरके सिखाये हुए हो । क्योंकि तुम सारे

माकिदोनियाके सब भाइयोंकी ओर सोई करते भी हो
परन्तु हे भाइयो हम तुमसे बिन्ती करते हैं कि अधिक
बढ़ते जाओ। और जैसे हमने तुम्हें आज्ञा दिई तैसे ११
चैनसे रहनेका और अपना अपना काम करनेका और
अपने अपने हाथोंसे कमानेका यत्न करो . जिस्तें तुम १२
बाहरवालोंकी ओर शुभ रीतिसे चलो और तुम्हें
किसी बस्तुकी घटती न होय।

हे भाइयो मैं नहीं चाहता हूं कि तुम उनके विषयमें १३
जो सोये हुए हैं अनजान रहो न हो कि तुम औरोंके
समान जिन्हें आशा नहीं है शोक करो। क्योंकि जो हम १४
बिश्वास करते हैं कि यीशु मरा और जी उठा तो वैसेही
ईश्वर उन्हें भी जो यीशुमें सोये हैं उसके संग लावेगा।
क्योंकि हम प्रभुके बचनके अनुसार तुमसे यह कहते हैं १५
कि हम जो जीवते और प्रभुके आनेलों बच जाते हैं
उनके आगे जो सोये हैं नहीं बढ़ चलेंगे। क्योंकि प्रभु १६
आपही ऊंचे शब्द सहित प्रधान दूतके शब्द सहित और
ईश्वरकी तुरही सहित स्वर्गसे उतरेगा और जो ख्रीष्टमें
मूए हैं सोई पहिले उठेंगे। तब हम जो जीवते और बच १७
जाते हैं एक संग उनके साथ प्रभुसे मिलनेको मेघोंमें
आकाशपर उठा लिये जायेंगे और इस रीतिसे हम सदा
प्रभुके संग रहेंगे। सो इन बातोंसे एक दूसरेको शांति देओ। १८

५ पांचवां पर्ब्ब ।

१ समयोंके विषयमें शिक्षा और उपदेश । १२ उपदेशकोंका आदर करनेका उपदेश । १४ परस्पर उपकार और नाना धर्म्मक्रियाओंका उपदेश । २५ पत्रीको समाप्ति ।

पर हे भाइयो कालों और समयोंके विषयमें तुम्हें १

प्रयोजन नहीं है कि तुम्हारे पास कुछ लिखा जाय ।
२ क्योंकि तुम आप ठीक करके जानते हो कि जैसा रातको
३ चोर तैसाही प्रभुका दिन आता है । क्योंकि जब लोग
कहेंगे कुशल है और कुछ भय नहीं तब जैसी गर्भवती-
पर प्रसवकी पीड़ तैसा उनपर बिनाश अचांचक आ
४ पड़ेगा और वे किसी रीतिसे नहीं बचेंगे । पर हे भाइयो
तुम तो अंधकारमें नहीं हो कि तुमपर वह दिन चोरकी
५ नाईं आ पड़े । तुम सब ज्योतिके सन्तान और दिनके
६ सन्तान हो . हम न रातके न अंधकारके हैं । इसलिये
हम औरोंके समान सोवें सो नहीं परन्तु जागें और
७ सचेत रहें । क्योंकि सोनेहारे रातको सोते हैं और मत-
८ वाले लोग रातको मतवाले होते हैं । पर हम जो दिनके
हैं तो बिश्वास और प्रेमकी झिलम और टोप अर्थात
९ त्राणकी आशा पहिनके सचेत रहें । क्योंकि ईश्वरने हमें
क्रोधके लिये नहीं पर इसलिये ठहराया कि हम अपने
१० प्रभु यीशु खीष्टके द्वारासे त्राण प्राप्त करें . जो हमारे
लिये मरा कि हम चाहे जागें चाहे सोवें एक संग उसके
११ साथ जीवें । इस कारण एक दूसरेको शांति देओ और
एक दूसरेको सुधारो जैसे तुम करते भी हो ।

१२ हे भाइयो हम तुमसे बिन्ती करते हैं कि जो
तुम्होंमें परिश्रम करते हैं और प्रभुमें तुमपर अध्यक्ष-
ता करते हैं और तुम्हें चिताते हैं उन्हें पहचान रखो .
१३ और उनके कामके कारण उन्हें अत्यन्त प्रेमके योग्य
समझो . आपसमें मिले रहो ।

१४ और हे भाइयो हम तुमसे बिन्ती करते हैं अनरीतिसे

चलनेहारोंको चिताओ कायरोंको शांति देओ दुर्ब्ब-
लोंको संभालो सभोंकी ओर धीरजवन्त होओ। देखो १५
कि कोई किसीसे बुराईके बदले बुराई न करे परन्तु
सदा एक दूसरेकी ओर और सभोंकी ओर भी भलाई-
की चेष्टा करो। सदा आनन्दित रहो। निरन्तर प्रार्थना १६ १७
करो। हर बातमें धन्य मानो क्योंकि तुम्हारे विषयमें १८
यही खीष्ट यीशुमें ईश्वरकी इच्छा है। आत्माको १९
निवृत्त मत करो। भविष्यद्वाणियां तुच्छ मत जानो। २०
सब बातें जांचो अच्छीको धर लेओ। सब प्रकारकी २१ २२
बुराईसे परे रहो। शांतिका ईश्वर आपही तुम्हें २३
सम्पूर्ण पवित्र करे और तुम्हारा सम्पूर्ण आत्मा और
प्राण और देह हमारे प्रभु यीशु खीष्टके आनेपर
निर्दोष रखा जाय। तुम्हारा बुलानेहारा बिश्वास- २४
योग्य है और वही यह करेगा।

हे भाइयो हमारे लिये प्रार्थना करो। सब भाइयोंको २५ २६
पवित्र चूमा लेके नमस्कार करो। मैं तुम्हें प्रभुकी २७
किरिया देता हूं कि यह पत्री सब पवित्र भाइयोंको
पढ़के सुनाई जाय। हमारे प्रभु यीशु खीष्टका अनुग्रह २८
तुम्हारे संग होवे। आमीन ॥

थिसलोनिकियोंको पावल प्रेरितकी दूसरी पत्री ।

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ पत्रीका आभाष । ३ थिसलोनिकियोंके बिश्वास औ प्रेम औ दृढ़ताईके विषयमें पावलादिका धन्यबाद । ५ धर्म्म अधर्म्मके फल और प्रभु यीशुके प्रकाश होनेका बर्णन । ११ थिसलोनिकियोंके लिये पावलादिको प्रार्थना ।

१ पावल और सीला और तिमोथिय थिसलोनिकि-
योंकी मंडलीको जो हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु
२ खीष्टमें है . तुम्हें हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु
खीष्टसे अनुग्रह और शांति मिले ।
३ हे भाइयो तुम्हारे विषयमें नित्य ईश्वरका धन्य
मानना हमें उचित है जैसा योग्य है क्योंकि तुम्हारा
बिश्वास बहुत बढ़ता है और एक दूसरेकी ओर तुम
४ सभोंमेंसे हर एकका प्रेम अधिक होता जाता है . यहां-
लों कि सब उपद्रवोंमें जो तुमपर पड़ते हैं और क्लेशोंमें
जो तुम सहते हो तुम्हारा जो धीरज और बिश्वास
है उसके लिये हम आपही ईश्वरकी मंडलियोंमें तुम्हारे
विषयमें बड़ाई करते हैं ।
५ यह तो ईश्वरके यथार्थ बिचारका प्रमाण है जिस्तें
तुम ईश्वरके राज्यके योग्य गिने जावो जिसके लिये
६ तुम दुःख भी उठाते हो । क्योंकि यह तो ईश्वरके
न्यायके अनुसार है कि जो तुम्हें क्लेश देते हैं उन्हें
७ प्रतिफलमें क्लेश देवे. और तुम्हें जो क्लेश पाते हो
हमारे संग उस समयमें चैन देवे जिस समय प्रभु यीशु

स्वर्गसे अपने सामर्थ्यके दूतोंके संग धधकती आगमें
प्रगट होगा . और जो लोग ईश्वरको नहीं जानते हैं ८
और जो लोग हमारे प्रभु यीशु खीष्टके सुसमाचारको
नहीं मानते हैं उन्हें दंड देगा . कि वे तो प्रभुके सन्मुखसे ९
और उसकी शक्तिके तेजकी ओरसे उस दिन अनन्त
बिनाशका दंड पावेंगे . जिस दिन वह अपने पवित्र १०
लोगोंमें तेजोमय और सब बिश्वास करनेहारोंमें
आश्चर्य्य दिखाई देनेको आवेगा . कि हमने तुमको
जो साक्षी दिई उसपर बिश्वास तो किया गया ।

इस निमित्त हम नित्य तुम्हारे विषयमें प्रार्थना भी ११
करते हैं कि हमारा ईश्वर तुम्हें इस बुलाहटके योग्य
समझे और भलाईकी सारी सुइच्छाको और बिश्वास-
के कार्य्यको सामर्थ्य सहित पूरा करे . जिस्तें तुम्होंमें १२
हमारे प्रभु यीशु खीष्टके नामकी महिमा और उसमें
तुम्हारी महिमा हमारे ईश्वरके और प्रभु यीशु खीष्टके
अनुग्रहके समान प्रगट किई जाय ।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ खीष्टके दिनके आनेका ब्योरा और पापपुरुषके प्रगट होनेकी भविष्यद्वाणी और जो लोग उस पुरुषसे धोखा खायें उनकी दुर्गति । १३ थिसलोनिकियोंके विषयमें धन्यबाद और उपदेश और प्रार्थना ।

पर हे भाइयो हमारे प्रभु यीशु खीष्टके आनेके और १
हमोंके उस पास एकट्ठे होनेके विषयमें हम तुमसे बिन्ती
करते हैं . कि अपना अपना मन शीघ्र डिगने न देओ और २
आत्माके द्वारा अथवा बचनके द्वारा अथवा पत्रीके द्वारा
जैसे हमारी ओरसे होते घबरा न जाओ कि मानो
खीष्टका दिन आ पहुंचा है । कोई तुम्हें किसी रीतिसे न ३

छले क्योंकि जबलों धर्म्मत्याग न हो लेवे और वह
४ पापपुरुष अर्थात बिनाशका पुत्र . जो बिरोध करनेहारा
और सबपर जो ईश्वर अथवा पूज्य कहावता है अपनेको
ऊंचा करनेहारा है यहांलों कि वह ईश्वरके मन्दिरमें
ईश्वरकी नाईं बैठके अपनेको ईश्वर करके दिखावे प्रगट
५ न होय तबलों वह दिन नहीं पहुंचेगा । क्या तुम्हें सुरत
नहीं कि जब मैं तुम्हारे यहां था तब भी मैंने यह बातें तुम-
६ से कहीं । और अब तुम उस बस्तुको जानते हो जो इस-
लिये रोकती है कि वह अपनेही समयमें प्रगट होवे ।
७ क्योंकि अधर्म्मका भेद अब भी कार्य्य करता है पर केवल
८ जबलों वह जो अभी रोकता है टल न जावे । और तब
वह अधर्म्मी प्रगट होगा जिसे प्रभु अपने मुंहके पवनसे
नाश करेगा और अपने आनेके प्रकाशसे लोप करेगा .
९ अर्थात वह अधर्म्मी जिसका आना शैतानके कार्य्यके
अनुसार झूठके सब प्रकारके सामर्थ्य और चिन्हों और
१० अद्भुत कामोंके साथ . और उन्होंमें जो नष्ट होते हैं
अधर्म्मके सब प्रकारके छलके साथ है इस कारण कि
उन्होंने सच्चाईके प्रेमको नहीं ग्रहण किया कि उनका
११ त्राण होता । और इस कारणसे ईश्वर उनपर भ्रांतिकी
१२ प्रबलता भेजेगा कि वे झूठका बिश्वास करें . जिस्तें
सब लोग जिन्होंने सच्चाईका बिश्वास न किया परन्तु
अधर्म्मसे प्रसन्न हुए दंडके योग्य ठहरें ।

१३ पर हे भाइयो प्रभुके प्यारो तुम्हारे विषयमें नित्य
ईश्वरका धन्य मानना हमें उचित है कि ईश्वरने आदि-
से तुम्हें आत्माकी पवित्रता और सच्चाईके बिश्वासके

द्वारा त्राण पानेको चुन लिया . और इसके लिये तुम्हें १४
हमारे सुसमाचारके द्वारासे बुलाया जिस्तें तुम हमारे प्रभु
यीशु ख्रीष्टकी महिमाको प्राप्त करो। इसलिये हे भाइयो १५
दृढ़ रहो और जो बातें तुमने हमारे चाहे बचनके द्वारा
चाहे पत्रीके द्वारा सीखीं उन्हें धारण करो। हमारा १६
प्रभु यीशु ख्रीष्ट आपही और हमारा पिता ईश्वर जिसने
हमें प्यार किया और अनुग्रहसे अनन्त शांति और
अच्छी आशा दिई है . तुम्हारे मनको शांति देवे और १७
तुम्हें हर एक अच्छे बचन और कर्म्ममें स्थिर करे।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ कई एक उपदेश और शांतिकी बातें। ६ अनरीतिसे चलनेहारोंके विषयमें उपदेश। १६ पत्रीकी समाप्ति।

अन्तमें हे भाइयो यह कहता हूं कि हमारे लिये १
प्रार्थना करो कि प्रभुका बचन जैसा तुम्हारे यहां फैलता
है तैसाही शीघ्र फैले और तेजोमय ठहरे . और कि हम २
अविचारी और दुष्ट मनुष्योंसे बच जायें क्योंकि बिश्वास
सभोंको नहीं है। परन्तु प्रभु बिश्वासयोग्य है जो तुम्हें ३
स्थिर करेगा और दुष्टसे बचाये रहेगा। और हम प्रभुमें ४
तुम्हारे विषयमें भरोसा रखते हैं कि जो कुछ हम तुम्हें
आज्ञा देते हैं उसे तुम करते हो और करोगे भी।
प्रभु तो ईश्वरके प्रेमकी ओर और ख्रीष्टके धीरजकी ५
ओर तुम्हारे मनकी अगवाई करे।

हे भाइयो हम तुम्हें अपने प्रभु यीशु ख्रीष्टके नामसे ६
आज्ञा देते हैं कि हर एक भाईसे जो अनरीतिसे चलता
है और जो शिक्षा उसने हमसे पाई उसके अनुसार नहीं

७ चलता है अलग हो जाओ । क्योंकि तुम आप जानते
हो कि किस रीतिसे हमारे अनुगामी होना उचित है
८ क्योंकि हम तुम्होंमें अनरीतिसे नहीं चले . और संतकी
रोटी किसीके यहांसे न खाई परन्तु परिश्रम और क्लेशसे
रात औ दिन कमाते थे कि तुममेंसे किसीपर भार न
९ देवें । यह नहीं कि हमें अधिकार नहीं है परन्तु इस-
लिये कि अपनेको तुम्हारे कारण दृष्टान्त कर देवें जिस्तें
१० तुम हमारे अनुगामी होओ । क्योंकि जब हम तुम्हारे
यहां थे तब भी यह आज्ञा तुम्हें देते थे कि यदि कोई
११ कमाने नहीं चाहता है तो खाना भी न खाय। क्यों-
कि हम सुनते हैं कि कितने लोग तुम्होंमें अनरीतिसे
चलते हैं और कुछ कमाते नहीं परन्तु औरोंके काममें
१२ हाथ डालते हैं । ऐसोंको हम आज्ञा देते हैं और अपने
प्रभु यीशु खीष्टकी ओरसे उपदेश करते हैं कि वे चैनसे
१३ कमाके अपनीही रोटी खाया करें । और तुम हे भा-
१४ इयो सुकर्म्म करनेमें कातर मत होओ । यदि कोई
इस पत्रीमेंका हमारा बचन नहीं मानता है उसे
चीन्ह रखो और उसकी संगति मत करो जिस्तें वह
१५ लज्जित होय । तौभी उसे बैरीसा मत समझो परन्तु
भाई जानके चिताओ ।

१६ शांतिका प्रभु आपही नित्य तुम्हें सर्ब्बथा शांति देवे .
१७ प्रभु तुम सभोंके संग होवे । मुझ पावलका अपने
हाथका लिखा हुआ नमस्कार जो हर एक पत्रीमें
१८ चिन्ह है . मैं यूंही लिखता हूं । हमारे प्रभु यीशु
खीष्टका अनुग्रह तुम सभोंके संग होवे । आमीन ॥

तिमोथियको पावल प्रेरितकी पहिली पत्री ।

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ पत्रीका आभाष । ३ बिबादियोंका बर्णन और व्यवस्थाका अभिप्राय । १२ परमेश्वरका बड़ा अनुग्रह जो पावलपर हुआ तिसका बर्णन । १८ तिमोथियको दृढ़ताईका उपदेश देना ।

पावल जो हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वरकी और हमारी १
आशा प्रभु यीशु ख्रीष्टकी आज्ञाके अनुसार यीशु ख्रीष्टका
प्रेरित है बिश्वासमें अपने सच्चे पुत्र तिमोथियको .
तुझे हमारे पिता ईश्वर और हमारे प्रभु ख्रीष्ट यीशु- २
से अनुग्रह और दया और शांति मिले ।
जैसे मैंने माकिदोनियाको जाते हुए तुझसे बिन्ती ३
किई [तैसे फिर कहता हूं] कि इफिसमें रहियो जिस्तें
तू कितनोंको आज्ञा देवे कि आन आन उपदेश मत
किया करो . और कहानियोंपर और अनन्त बंशाव- ४
लियोंपर मन मत लगाओ जिनसे ईश्वरके भंडारी-
पनका जो बिश्वासके विषयमें है निबाह नहीं होता
है परन्तु और भी बिबाद उत्पन्न होते हैं । धर्म्मा- ५
ज्ञाका अन्त वह प्रेम है जो शुद्ध मनसे और अच्छे
बिबेकसे और निष्कपट बिश्वाससे होता है . जिनसे ६
कितने लोग भटकके बकवादकी ओर फिर गये हैं .
जो व्यवस्थापक हुआ चाहते हैं परन्तु न वह बातें ७
बूझते जो वे कहते हैं और न यह जानते हैं कि
कौनसी बातोंके विषयमें दृढ़तासे बोलते हैं । पर हम ८

जानते हैं कि व्यवस्था यदि कोई उसको विधिके अनुसार
९ यह जानके काममें लावे तो अच्छी है . कि व्यवस्था
धर्म्मी जनके लिये नहीं ठहराई गई है परन्तु अधर्म्मी
औ निरंकुश लोगोंके लिये भक्तिहीनों औ पापियोंके
लिये अपवित्र और अशुद्ध लोगोंके लिये पितृघातकों
१० औ मातृघातकोंके लिये. मनुष्यघातकों व्यभिचारियों
पुरुषगामियों मनुष्यबिक्रइयों झूठों और झूठी किरिया
खानेहारोंके लिये है और यदि दूसरा कोई कर्म्म हो
जो खरे उपदेशके बिरुद्ध है तो उसके लिये भी है .
११ परमधन्य ईश्वरकी महिमाके सुसमाचारके अनुसार
जो मुझे सौंपा गया ।
१२ और मैं खीष्ट यीशु हमारे प्रभुका जिसने मुझे
सामर्थ्य दिया धन्य मानता हूं कि उसने मुझे बिश्वास-
१३ योग्य समझा और सेवकाईके लिये ठहराया . जो आगे
निन्दक और सतानेहारा और उपद्रवी था परन्तु
मुझपर दया किई गई क्योंकि मैंने अबिश्वासतामें
१४ अज्ञानतासे ऐसा किया । और हमारे प्रभुका अनुग्रह
बिश्वासके साथ और प्रेमके साथ जो खीष्ट यीशुमें है
१५ बहुत अधिकाईसे हुआ । यह बचन बिश्वासयोग्य और
सर्ब्बथा ग्रहणयोग्य है कि खीष्ट यीशु पापियोंको बचानेके
१६ लिये जगतमें आया जिन्होंमें मैं सबसे बड़ा हूं । परन्तु
मुझपर इसी कारणसे दया किई गई कि मुझमें सबसे
अधिक करके यीशु खीष्ट समस्त धीरज दिखावे कि
यह उन लोगोंके लिये जो उसपर अनन्त जीवनके
१७ लिये बिश्वास करनेवाले थे एक नमूना होवे। सनातन

कालके अबिनाशी और अदृश्य राजाको अर्थात अद्वैत
बुद्धिमान ईश्वरको सदा सर्ब्बदा प्रतिष्ठा और गुणानुबाद
होवे . आमीन ।
यह आज्ञा हे पुत्र तिमोथिय मैं उन भविष्यद्वाणि- १८
योंके अनुसार जो तेरे विषयमें आगेसे किई गईं तुझे
सोंप देता हूं कि तू उन्होंकी सहायतासे अच्छी लड़ाईका
योद्धा होय . और बिश्वासको और अच्छे बिबेकको १९
रखे जिसे त्यागनेसे कितनोंके बिश्वासका जहाज मारा
गया । इन्होंमेंसे हुमिनई और सिकन्दर हैं जिन्हें मैंने २०
शैतानको सोंप दिया कि वे ताड़ना पाके सीखें कि
निन्दा न करें ।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ प्रार्थना करनेका उपदेश और यीशुके मध्यस्थ होनेका वर्णन । ८ पुरुषों और स्त्रियोंके आचरणकी विधि ।

सो मैं सबसे पहिले यह उपदेश करता हूं कि बिन्ती १
औ प्रार्थना औ निवेदन औ धन्यबाद सब मनुष्योंके
लिये किये जावें . राजाओंके लिये भी और सभोंके २
लिये जिनका ऊंच पद है इसलिये कि हम बिश्राम
और चैनसे सारी भक्ति और गंभीरतामें अपना अपना
जन्म बितावें । क्योंकि यह हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वरको ३
अच्छा लगता और भावता है . जिसकी इच्छा यह ४
है कि सब मनुष्य त्राण पावें और सत्यके ज्ञानलों
पहुंचें । क्योंकि एकही ईश्वर है और ईश्वर और ५
मनुष्योंका एकही मध्यस्थ है अर्थात ख्रीष्ट यीशु जो
मनुष्य है . जिसने सभोंके उद्धारके दाममें अपनेको ६

७ दिया । यही उपयुक्त समयमेंकी साक्षी है जिसके लिये
मैं प्रचारक ओ प्रेरित और बिश्वास ओ सच्चाईमें
अन्यदेशियोंका उपदेशक ठहराया गया . मैं ख्रीष्टमें
सत्य कहता हूं मैं झूठ नहीं बोलता हूं ।
८ सो मैं चाहता हूं कि हर स्थानमें पुरुष लोग बिना
क्रोध ओ बिना बिबाद पवित्र हाथोंको उठाके प्रार्थना
९ करें । इसी रीतिसे मैं चाहता हूं कि स्त्रियां भी संकोच
और संयमके साथ अपने तईं उस पहिरावनसे जो
उनके योग्य है संवारें गून्थे हुए बाल वा सोने वा मो-
तियोंसे वा बहुमूल्य बस्त्रसे नहीं परन्तु अच्छे कर्म्मोंसे.
१० कि यही उन स्त्रियोंको जो ईश्वरकी उपासनाकी
११ प्रतिज्ञा करती हैं सोहता है । स्त्री चुप चाप सकल
१२ अधीनतासे सीख लेवे । परन्तु मैं स्त्रीको उपदेश करने
अथवा पुरुषपर अधिकार रखनेकी नहीं परन्तु चुप
१३ चाप रहनेकी आज्ञा देता हूं । क्योंकि आदम पहिले
१४ बनाया गया तब हव्वा । और आदम नहीं छला गया
१५ परन्तु स्त्री छली गई और अपराधिनी हुई । तौभी
जो वे संयम सहित बिश्वास और प्रेम और पवित्र-
तामें रहें तो लड़के जननेमें त्राण पावेंगीं ।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ मंडलीके रखवालेका कैसा स्वभाव और चरित्र चाहिये इसका बर्णन । ८ मंडलीके सेवकको कैसा चाहिये इसका बर्णन । १४ तिमोथियके पास लिखनेका अभिप्राय और यीशुके अवतारका बर्णन ।

१ यह बचन बिश्वासयोग्य है कि यदि कोई मंडलीके
रखवालेका काम लेने चाहता है तो अच्छे कामकी लाल-
२ सा करता है । सो उचित है कि रखवाला निर्दोष और

एकही स्त्रीका स्वामी सचेत औ संयमी औ सुशील और
अतिथिसेवक औ सिखानेमें निपुण होय. मद्यपानमें ३
आसक्त नहीं और न मरकहा न नीच कमाई करने-
हारा परन्तु मृदुभाव मिलनसार औ निर्लोभी . जो ४
अपनेही घरकी अच्छी रीतिसे अध्यक्षता करता हो
और लड़कोंको सारी गंभीरतासे अधीन रखता हो।
पर यदि कोई अपनेही घरकी अध्यक्षता करने न ५
जानता हो तो क्योंकर ईश्वरकी मंडलीकी रखवाली
करेगा। फिर नवशिष्य न होय ऐसा न हो कि अभि- ६
मानसे फूलके शैतानके दंडमें पड़े। और भी उसको ७
उचित है कि बाहरवालोंके यहां सुख्यात होवे ऐसा
न हो कि निन्दित हो जाय और शैतानके फंदेमें पड़े।
वैसेही मंडलीके सेवकोंको उचित है कि गंभीर होवें ८
दोरंगी नहीं न बहुत मद्यकी रुचि करनेहारे न नीच
कमाई करनेहारे . परन्तु बिश्वासका भेद शुद्ध बिवेकसे ९
रखनेहारे हों। पर ये लोग पहिले परखे भी जावें १०
तब जो निर्दोष निकलें तो सेवकका काम करें। इसी ११
रीतिसे स्त्रियोंको उचित है कि गंभीर होवें और दोष
लगानेवालियां नहीं परन्तु सचेत और सब बातोंमें
बिश्वासयोग्य। सेवक लोग एक एक स्त्रीके स्वामी १२
और लड़कोंकी और अपने अपने घरकी अच्छी रीतिसे
अध्यक्षता करनेहारे हों। क्योंकि जिन्होंने सेवकका १३
काम अच्छी रीतिसे किया है वे अपने लिये अच्छा
पद प्राप्त करते हैं और उस बिश्वासमें जो ख्रीष्ट यीशुपर
है बड़ा साहस पाते हैं।

१४ मैं तेरे पास बहुत शीघ्र आनेकी आशा रखके भी
१५ यह बातें तेरे पास लिखता हूं । पर इसलिये लिखता
हूं कि जो मैं बिलम्ब करूं तौभी तू जाने कि ईश्वरके
घरमें जो जीवते ईश्वरकी मंडली और सत्यका खंभा
१६ औ नेव है कैसी चाल चलना उचित है । और यह
बात सब मानते हैं कि भक्तिका भेद बड़ा है कि ईश्वर
शरीरमें प्रगट हुआ आत्मामें निर्दोष ठहराया गया
स्वर्गदूतोंको दिखाई दिया आन आन देशियोंमें प्रचार
किया गया जगतमें उसपर बिश्वास किया गया वह
महिमामें उठा लिया गया ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ कुपन्थियोंके प्रगट होनेकी भविष्यद्वाणी । ६ पावलका तिमोथियको उनके विषयमें उपदेश देना । १२ सुचाल और यत्न और चौकसाईके विषयमें चिताना ।

१ पवित्र आत्मा स्पष्टतासे कहता है कि इसके पीछे
कितने लोग बिश्वाससे बहक जायेंगे और भरमाने-
हारे आत्माओंपर और भूतोंकी शिक्षाओंपर मन
२ लगावेंगे . उन झूठ बोलनेहारोंके कपटके अनुसार
३ जिनका निज मन दागा हुआ होगा . जो बिवाह
करनेसे बर्जेंगे और खानेकी बस्तुओंसे परे रहनेकी
आज्ञा देंगे जिन्हें ईश्वरने इसलिये सृजा कि बिश्वासी
लोग और सत्यके माननेहारे उन्हें धन्यबादके संग भोग
४ करें । क्योंकि ईश्वरकी सृजी हुई हर एक बस्तु अच्छी
है और कोई बस्तु जो धन्यबादके संग ग्रहण किई
५ जाय फेंकनेके योग्य नहीं है । क्योंकि वह ईश्वरके
बचनके और प्रार्थनाके द्वारा पवित्र किई जाती है ।

भाइयोंको इन बातोंका स्मरण करवानेसे तू यीशु ६
ख्रीष्टका अच्छा सेवक ठहरेगा जिसका बिश्वासकी ओर
उस अच्छी शिक्षाकी बातोंमें जो तूने प्राप्त किई हैं
अभ्यास होता है। परन्तु अशुद्ध और बुढ़ियाकीसी ७
कहानियोंसे अलग रह पर भक्तिके लिये अपनी साधना
कर। क्योंकि देहकी साधना कुछ थोड़ेके लिये फलदाई है ८
परन्तु भक्ति सब बातोंके लिये फलदाई है कि उसको
अबके जीवनकी और आनेवालेकी भी प्रतिज्ञा है। यह ९
बचन बिश्वासयोग्य और सर्ब्बथा ग्रहणयोग्य है। क्योंकि १०
हम इसके निमित्त परिश्रम करते हैं और निन्दित भी
होते हैं कि हमने जीवते ईश्वरपर भरोसा रखा है जो
सब मनुष्योंका निज करके बिश्वासियोंका बचानेहारा
है। इन बातोंकी आज्ञा और शिक्षा किया कर। ११

कोई तेरी जवानीको तुच्छ न जाने परन्तु बचनमें १२
चलनमें प्रेममें आत्मामें बिश्वासमें और पवित्रतामें
तू बिश्वासियोंके लिये दृष्टान्त बन जा। जबलों मैं न १३
आऊं तबलों पढ़नेमें उपदेशमें और शिक्षामें मन लगा।
उस बरदानसे जो तुझमें है जो भविष्यद्वाणीके द्वारा १४
प्राचीन लोगोंके हाथ रखनेके साथ तुझे दिया गया
निश्चिन्त न रहना। इन बातोंकी चिन्ता कर इनमें १५
लगा रह कि तेरी बढ़ती सभोंमें प्रगट होवे। अपने १६
विषयमें और शिक्षाके विषयमें सचेत रह कि तू
उनमें बना रहे क्योंकि यह करनेमें तू अपनेको और
अपने सुननेहारोंको भी बचावेगा।

५ पांचवां पर्व्व ।

१ मंडलीमेंकी स्त्रियों और बिधवाओंसे कैसा व्यवहार किया चाहिये इसका निर्णय । १७ प्राचीनोंसे कैसा व्यवहार किया चाहिये इसका वर्णन और कितनी और बातोंका उपदेश ।

१ बूढ़ेको मत दपट परन्तु उसको जैसे पिता जानके
२ उपदेश दे और जवानोंको जैसे भाइयोंको . बुढ़िया-
ओंको जैसे माताओंको और युवतियोंको जैसे बहिनों-
३ को सारी पवित्रतासे उपदेश दे । बिधवाओंका जो
४ सचमुच बिधवा हैं आदर कर । परन्तु जो किसी
बिधवाके लड़के अथवा नाती पोते हों तो वे लोग
पहिले अपनेही घरका सन्मान करने और अपने
पितरोंको प्रतिफल देनेको सीखें क्योंकि यह ईश्वरको
५ अच्छा लगता और भावता है । जो सचमुच बिधवा
और अकेली छोड़ी हुई है सो ईश्वरपर भरोसा रखती
है और रात दिन बिन्ती औ प्रार्थनामें लगी रहती है।
६ परन्तु जो भोग बिलासमें रहती है सो जीतेजी मर
७ गई है । और इन बातोंकी आज्ञा दिया कर इसलिये
८ कि वे निर्दोष होवें। परन्तु यदि कोई जन अपने कुटुंबके
और निज करके अपने घरानेके लिये चिन्ता न करे
तो वह बिश्वाससे मुकर गया है और अबिश्वासीसे
९ भी बुरा है । बिधवा वही गिनी जाय जिसकी वयस
साठ बरसके नीचे न हो जो एकही स्वामीकी स्त्री
१० हुई हो . जो सुकर्म्मोंके विषयमें सुख्यात हो यदि उसने
लड़कोंको पाला हो यदि अतिथिसेवा किई हो यदि
पवित्र लोगोंके पाओंको धोया हो यदि दुःखियोंका
उपकार किया हो यदि हर एक अच्छे कामकी चेष्टा

किई हो तो गिन्तीमें आवे। परन्तु जवान बिधवाओंको ११
अलग कर क्योंकि जब वे खीष्टके बिरुद्ध सुख बिलास-
की इच्छा करती हैं तब बिवाह करने चाहती हैं. और १२
दंडके योग्य होती हैं क्योंकि उन्होंने अपने पहिले
बिश्वासको तुच्छ जाना है। और इसके संग वे बेकार १३
रहने और घर घर फिरनेको सीखती हैं और केवल
बेकार रहने नहीं परन्तु बकवाही होने और पराये
काममें हाथ डालने और अनुचित बातें बोलनेको
सीखती हैं। इसलिये मैं चाहता हूं कि जवान बिधवाएं १४
बिवाह करें औ लड़के जनें औ घरबारी करें औ
किसी बिरोधीको निन्दाके कारण कुछ अवसर न देवें।
क्योंकि अब भी कितनी तो बहकके शैतानके पीछे हो १५
लिई हैं। जो किसी बिश्वासी अथवा बिश्वासिनीके १६
यहां बिधवाएं हों तो वही उनका उपकार करे और
मंडलीपर भार न दिया जाय जिस्तें वह उन्होंका जो
सचमुच बिधवा हैं उपकार करे।

जिन प्राचीनोंने अच्छी रीतिसे अध्यक्षता किई है १७
सो दूने आदरके योग्य समझे जावें निज करके वे जो
उपदेश और शिक्षामें परिश्रम करते हैं। क्योंकि धर्म्म- १८
पुस्तक कहता है कि दावनेहारे बैलका मुंह मत बांध
और कि बनिहार अपनी बनिके योग्य है। प्राचीनके १९
बिरुद्ध दो अथवा तीन साक्षियोंकी साक्षी बिना अप-
बादको ग्रहण न करना। पाप करनेहारोंको सभोंके २०
आगे समझा दे इसलिये कि और लोग भी डर जावें।
मैं ईश्वरके और प्रभु यीशु खीष्टके और चुने हुए २१

दूतोंके आगे दृढ़ आज्ञा देता हूं कि तू मनकी गांठ न
बांधके इन बातोंको पालन करे और कोई काम पक्ष-
२२ पातकी रीतिसे न करे । किसीपर हाथ शीघ्र न रखना
और न दूसरोंके पापोंमें भागी होना . अपनेको पवित्र
२३ रख । अब जल मत पिया कर परन्तु अपने उदरके
और अपने बारम्बारके रोगोंके कारण थोड़ासा दाख
२४ रस लिया कर । कितने मनुष्योंके पाप प्रत्यक्ष हैं और
बिचारित होनेको आगेही चलते हैं परन्तु कितनोंके
२५ वे पीछे भी हो लेते हैं । वैसेही कितनोंके सुकर्म्म भी
प्रत्यक्ष हैं और जो और प्रकारके हैं सो छिप नहीं
सकते हैं ।

६ छठवां पर्ब्ब ।

१ दासोंके लिये उपदेश । ३ बिबादियोंसे परे रहनेकी आज्ञा । ६ लोभका निषेध । ११ तिमोथियको निज धर्म्मकर्म्ममें दृढ़ रहनेका उपदेश । १७ धनवानोंके लिये उपदेश । २० उपदेश सहित पत्रीकी समाप्ति ।

१ जितने दास जूएके नीचे हैं वे अपने अपने स्वामीको
सारे आदरके योग्य समझें जिस्तें ईश्वरके नामकी और
२ धर्म्मोपदेशकी निन्दा न किई जाय । और जिन्होंके स्वामी
बिश्वासी जन हों सो उन्हें इसलिये कि भाई हैं तुच्छ न
जानें परन्तु और भी उनकी सेवा करें क्योंकि वे जो इस
भलाईके भागी होते हैं बिश्वासी और प्यारे हैं .
इन बातोंकी शिक्षा और उपदेश किया कर ।
३ यदि कोई जन आन उपदेश करता है और खरी
बातोंको अर्थात हमारे प्रभु यीशु खीष्टकी बातोंको और
उस शिक्षाको जो भक्तिके अनुसार है नहीं मानता है .
४ तो वह अभिमानसे फूल गया है और कुछ नहीं जानता

है परन्तु उसे बिबादोंका और शब्दोंके झगड़ोंका रोग है.
जिनसे डाह बैर निन्दाकी बातें और दूसरोंकी ओर
बुरे सन्देह . और उन मनुष्योंके ब्यर्थ रगड़े झगड़े ५
उत्पन्न होते हैं जिनके मन बिगड़े हैं और जिनसे
सच्चाई हरी गई है जो समझते हैं कि कमाईही भक्ति
है . ऐसे लोगोंसे अलग रहना।

पर सन्तोषयुक्त भक्ति बड़ी कमाई है। क्योंकि हम ६
जगतमें कुछ नहीं लाये और प्रगट है कि हम कुछ ले
जा भी नहीं सकते हैं। और भोजन औ बस्त्र जो ८
हमें मिला करें तो इन्हींसे सन्तुष्ट रहना चाहिये।
परन्तु जो लोग धनी होने चाहते हैं सो परीक्षा और ९
फंदेमें और बहुतेरे बुद्धिहीन और हानिकारी अभि-
लाषोंमें फंसते हैं जो मनुष्योंको बिनाश और बिध्वंसमें
डुबा देते हैं। क्योंकि धनका लोभ सब बुराइयोंका १०
मूल है उसे प्राप्त करनेकी चेष्टा करते हुए कितने
लोग बिश्वाससे भरमाये गये हैं और अपनेको बहुत
खेदोंसे वारपार छेदा है।

परन्तु हे ईश्वरके जन तू इन बातोंसे बचा रह ११
और धर्म्म औ भक्ति औ बिश्वास औ प्रेम औ धीरज
औ नम्रताकी चेष्टा कर। बिश्वासकी अच्छी लड़ाई १२
लड़ और अनन्त जीवनको धर ले जिसके लिये तू
बुलाया भी गया और बहुत साक्षियोंके आगे अच्छा
अंगीकार किया। मैं तुझे ईश्वरके आगे जो सभोंको १३
जिलाता है और खीष्ट यीशुके आगे जिसने पन्तिय
पिलातके साम्हने अच्छे अंगीकारकी साक्षी दिई आज्ञा

१४ देता हूं . कि तू इस आज्ञाको निष्खोट औ निर्दोष
१५ हमारे प्रभु यीशु खीष्टके प्रकाशलों पालन कर . जिसे
वह अपनेही समयोंमें दिखावेगा जो परमधन्य और
अद्वैत पराक्रमी और राज्य करनेहारोंका राजा औ
१६ प्रभुता करनेहारोंका प्रभु है . और अमरता केवल
उसीकी है और वह अगम्य ज्योतिमें बास करता है
और उसको मनुष्योंमेंसे किसीने नहीं देखा है और
न कोई देख सकता है . उसको प्रतिष्ठा और अनन्त
पराक्रम होय . आमीन ।

१७ जो लोग इस संसारमें धनी हैं उन्हें आज्ञा दे कि
वे अभिमानी न होवें और धनकी चंचलतापर भरोसा
न रखें परन्तु जीवते ईश्वरपर जो सुखप्राप्तिके लिये
१८ हमें सब कुछ धनीकी रीतिसे देता है . और कि वे
भलाई करें और अच्छे कामोंके धनवान होवें और
१९ उदार औ परोपकारी हों . और भविष्यत्कालके
लिये अच्छी नेव अपने लिये जुगा रखें जिस्तें अनन्त
जीवनको धर लेवें ।

२० हे तिमोथिय इस थाथीकी रक्षा कर और अशुद्ध
बकवादोंसे और जो झुठाईसे ज्ञान कहावता है उस-
२१ की बिरुद्ध बातोंसे परे रह . कि इस ज्ञानकी प्रतिज्ञा
करते हुए कितने लोग बिश्वासके विषयमें भटक गये
हैं . तेरे संग अनुग्रह होय । आमीन ॥

तिमोथियको पावल प्रेरितकी दूसरी पत्री ।

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ पत्रीका आभाष । ३ पावलका तिमोथियके विषयमें धन्यबाद करना । ६ तिमोथियको उपदेश देना और अपनी दृढ़ आशाका बखान करना । १५ कितने चंचल शिष्योंका और एक दृढ़चित्त बिश्वासीका बर्णन ।

पावल जो उस जीवनकी प्रतिज्ञाके अनुसार जो खीष्ट १
यीशुमें है ईश्वरकी इच्छासे यीशु खीष्टका प्रेरित है . मेरे २
प्यारे पुत्र तिमोथियको ईश्वर पितासे और हमारे प्रभु
खीष्ट यीशुसे अनुग्रह और दया और शांति मिले ।

मैं ईश्वरका धन्य मानता हूं जिसकी सेवा मैं अपने ३
पितरोंकी रीतिपर शुद्ध मनसे करता हूं कि रात दिन
मुझे मेरी प्रार्थनाओंमें तेरे विषयमें ऐसे निरन्तर चेत
रहता है । और तेरे आंसूओंको स्मरण करके मैं तुझे ४
देखनेकी लालसा करता हूं जिस्तें आनन्दसे परिपूर्ण
होऊं । क्योंकि उस निष्कपट बिश्वासकी मुझे सुरत ५
पड़ती है जो तुझमें है जो पहिले तेरी नानी लोईसमें
और तेरी माता उनीकीमें बसता था और मुझे
निश्चय हुआ है कि तुझमें भी बसता है ।

इस कारणसे मैं तुझे चेत दिलाता हूं कि ईश्वरके ६
बरदानको जो मेरे हाथोंके रखनेके द्वारासे तुझमें है जगा
दे । क्योंकि ईश्वरने हमें कादराईका नहीं परन्तु सामर्थ्य ७
औ प्रेम औ प्रबोधका आत्मा दिया है । इसलिये तू न ८
हमारे प्रभुकी साक्षीसे और न मुझसे जो उसका बंधुआ
हूं लज्जित हो परन्तु सुसमाचारके लिये मेरे संग ईश्वर-

९ की शक्तिकी सहायतासे दुःख उठा . जिसने हमें बचाया
और उस पवित्र बुलाहटसे बुलाया जो हमारे कर्म्मोंके
अनुसार नहीं परन्तु उसीकी इच्छा और उस अनुग्रहके
अनुसार थी जो ख्रीष्ट यीशुमें सनातनसे हमें दिया गया .
१० परन्तु अभी हमारे त्राणकर्त्ता यीशु ख्रीष्टके प्रकाशके द्वारा
प्रगट किया गया है जिसने मृत्युका क्षय किया परन्तु
जीवन और अमरताको उस सुसमाचारके द्वारासे प्रका-
११ शित किया . जिसके लिये मैं प्रचारक औ प्रेरित और
१२ अन्यदेशियोंका उपदेशक ठहराया गया । इस कारणसे
मैं इन दुःखोंको भी भोगता हूं परन्तु मैं नहीं लजाता
हूं क्योंकि मैं उसे जानता हूं जिसका मैंने बिश्वास
किया है और मुझे निश्चय हुआ है कि वह उस दिनके
लिये मेरी थाथीकी रक्षा करनेका सामर्थ्य रखता है।
१३ जो बातें तूने मुझसे सुनीं सोई बिश्वास और प्रेमसे
जो ख्रीष्ट यीशुसे होते हैं तेरे लिये खरी बातोंका नमूना
१४ होवें । पवित्र आत्माके द्वारा जो हममें बसता है इस
अच्छी थाथीकी रक्षा कर ।
१५ तू यही जानता है कि वे सब जो आशियामें हैं
जिनमें फुगील और हर्मोगिनिस हैं मुझसे फिर गये ।
१६ उनीसिफरके घरानेपर प्रभु दया करे क्योंकि उसने
बहुत बार मेरे जीवको ठंढा किया और मेरी जंजीरसे
१७ नहीं लजाया . परन्तु जब रोममें था तब बड़े यत्नसे मुझे
१८ ढूंढ़ा और पाया । प्रभु उसको यह देवे कि उस दिनमें
उसपर प्रभुसे दया किई जाय . इफिसमें भी उसने कित-
नी सेवकाई किई सो तू बहुत अच्छी रीतिसे जानता है ।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ तिमोथियको दुःख और धर्म्मयुद्धमें धीरता करनेका उपदेश । ८ यीशुके जी उठनेका और सच्चाईका और विश्वासियोंके अधिकारका बर्णन । १४ व्यर्थ विवाद और बकवादका निषेध और प्रभुके दासके योग्यकी चाल और स्वभावका बखान ।

सो हे मेरे पुत्र तू उस अनुग्रहसे जो ख्रीष्ट यीशुमें है १
बलवन्त हो । और जो बातें तूने बहुत साक्षियोंके आगे २
मुझसे सुनीं उन्हें बिश्वासयोग्य मनुष्योंको सौंप दे जो
दूसरोंको भी सिखानेके योग्य होवें। सो तू यीशु ख्रीष्टके ३
अच्छे योद्धाकी नाईं दुःख सह ले। जो कोई युद्ध करता ४
है सो अपनेको जीविकाके ब्योपारोंमें नहीं उलझाता
है इसलिये कि अपने भरती करनेहारेको प्रसन्न करे।
और यदि कोई मल्लयुद्ध भी करे जो वह विधिके अनुसार ५
मल्लयुद्ध न करे तो उसे मुकुट नहीं दिया जाता है।
उचित है कि पहिले वह गृहस्थ जो परिश्रम करता है ६
फलोंका अंश पावे। जो मैं कहता हूं उसे बूझ ले क्योंकि ७
प्रभु तुझे सब बातोंमें ज्ञान देगा ।

स्मरण कर कि यीशु ख्रीष्ट जो दाऊदके बंशसे था मेरे ८
सुसमाचारके अनुसार मृतकोंमेंसे जी उठा है। उस ९
सुसमाचारके लिये मैं कुकर्म्मीकी नाईं यहांलों दुःख
उठाता हूं कि बांधा भी गया हूं परन्तु ईश्वरका बचन
बंधा नहीं है । मैं इसलिये चुने हुए लोगोंके कारण १०
सब बातोंमें धीरज धरे रहता हूं कि अनन्त महिमा
सहित वह त्राण जो ख्रीष्ट यीशुमें है उन्हें भी मिले ।
यह बचन बिश्वासयोग्य है कि जो हम उसके संग ११
मूए तो उसके संग जीयेंगे भी । जो हम धीरज धरे रहें १२
तो उसके संग राज्य भी करेंगे . जो हम उससे मुकर

१३ जायें ते वह भी हमसे मुकर जायगा । जो हम अ-
बिश्वासी होवें वह बिश्वासयोग्य रहता है वह अपने-
को आप नहीं नकार सकता है ।
१४ इन बातोंको उन्हें स्मरण करवा और प्रभुके आगे दृढ़
आज्ञा दे कि वे शब्दोंके झगड़े न किया करें जिनसे कुछ
१५ लाभ नहीं होता पर सुननेहारे बहकाये जाते हैं । अपने
तईं ईश्वरके आगे ग्रहणयोग्य और ऐसा कार्य्यकारी जो
लज्जित न होय और सत्यके बचनको यथार्थ बिभाग
१६ करवैया ठहरानेको यत्न कर । परन्तु अशुद्ध बकवादोंसे
बचा रह क्योंकि ऐसे बकवादी अधिक अभक्तिमें बढ़ते
१७ जायेंगे । और उनका बचन सड़े घावकी नाईं फैलता
१८ जायगा । उन्होंमें हुमिनई और फिलीत हैं जो सत्यके
विषयमें भटक गये हैं और कहते हैं कि पुनरुत्थान हो
१९ चुका है और कितनोंके बिश्वासको उलट देते हैं । तौभी
ईश्वरकी दृढ़ नेव बनी रहती है जिसपर यह छाप है
कि प्रभु उन्हें जो उसके हैं जानता है और यह कि हर
एक जन जो ख्रीष्टका नाम लेता है कुकर्म्मसे अलग
२० रहे । बड़े घरमें केवल सोने और चांदीके बर्त्तन नहीं
परन्तु काठ और मिट्टीके बर्त्तन भी हैं और कोई कोई
२१ आदरके कोई कोई अनादरके हैं । सो यदि कोई अपनेको
इनसे शुद्ध करे तो वह आदरका बर्त्तन होगा जो पवित्र
किया गया है और स्वामीके बड़े काम आता है और
हर एक अच्छे कर्म्मके लिये तैयार किया गया है ।
२२ पर जवानीकी अभिलाषाओंसे बचा रह परन्तु धर्म्म औ
बिश्वास औ प्रेम और जो लोग शुद्ध मनसे प्रभुकी

प्रार्थना करते हैं उन्होंके संग मिलापकी चेष्टा कर ।
पर मूढ़ता और अबिद्याके बिबादोंको अलग कर २३
क्योंकि तू जानता है कि उनसे झगड़े उत्पन्न होते हैं।
और प्रभुके दासको उचित नहीं है कि झगड़ा करे परन्तु २४
सभोंकी ओर कोमल और सिखानेमें निपुण और
सहनशील होय . और बिरोधियोंको नम्रतासे समझावे २५
क्या जाने ईश्वर उन्हें पश्चात्ताप दान करे कि वे सत्यको
पहचानें . और जिन्हें शैतानने अपनी इच्छा निमित्त २६
बझाया था उसके फंदेमेंसे सचेत होके निकलें ।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ कुपन्थियोंके प्रगट होनेकी भविष्यद्वाणी । १० पावलका अपने नमूनेसे तिमोथियको साहस देना । १४ धर्म्मपुस्तककी शिक्षापर दृढ़ रहनेका उपदेश ।

पर यह जान ले कि पिछले दिनोंमें कठिन समय आ १
पड़ेंगे । क्योंकि मनुष्य आपस्वार्थी लोभी दंभी अभिमानी २
निन्दक माता पिताकी आज्ञा लंघन करनेहारे कृतघ्नी
अपवित्र . मयारहित क्षमारहित दोष लगानेहारे असं- ३
यमी कठोर भलेके बैरी . बिश्वासघातक उतावले घमंड- ४
से फूले हुए और ईश्वरसे अधिक सुख बिलासहीको
प्रिय जाननेहारे होंगे . जो भक्तिका रूप धारण करेंगे ५
परन्तु उसकी शक्तिसे मुकरेंगे . इन्हांसे परे रह । क्योंकि ६
इन्होंमेंसे वे हैं जो घर घर घुसके उन ओछी स्त्रियोंको
बश कर लेते हैं जो पापोंसे लदी हैं और नाना प्रकारकी
अभिलाषाओंके चलाये चलती हैं . जो सदा सीखती हैं ७
परन्तु कभी सत्यके ज्ञानलों नहीं पहुंच सकती हैं। जिस ८
रीतिसे यान्नी और यांब्रीने मूसाका साम्ना किया उसी री-

तिसे ये मनुष्य भी जिनके मन बिगड़े हैं और जो बिश्वास-
९ के विषयमें निकृष्ट हैं सत्यका साम्ना करते हैं। परन्तु वे
अधिक नहीं बढ़ेंगे क्योंकि जैसे उन दोनोंकी अज्ञानता
सभोंपर प्रगट हो गई वैसे इन लोगोंकी भी हो जायगी।
१० परन्तु तूने मेरा उपदेश औ आचरण औ मनसा औ
११ बिश्वास औ धीरज औ प्रेम औ स्थिरता . और मेरा
अनेक बार सताया जाना औ दुःख उठाना अच्छी रीति-
से जाना है कि मुझपर अन्तैखियामें और इकोनियामें
और लुस्त्रामें कैसी बातें बीतीं मैंने कैसे बड़े उपद्रव सहे
१२ पर प्रभुने मुझे सभोंसे उबारा। और सब लोग जो खीष्ट
यीशुमें भक्ताईसे जन्म बिताने चाहते हैं सताये जायेंगे।
१३ परन्तु दुष्ट मनुष्य और बहकानेहारे धोखा देते हुए और
धोखा खाते हुए अधिक बुरी दशालों बढ़ते जायेंगे।
१४ पर तूने जिन बातोंको सीखा और निश्चय जाना है
उनमें बना रह क्योंकि तू जानता है कि किससे सीखा .
१५ और कि बालकपनसे धर्म्मपुस्तक तेरा जाना हुआ है
जो बिश्वासके द्वारा जो खीष्ट यीशुमें है तुझे त्राण निमित्त
१६ बुद्धिमान कर सकता है। सारा धर्म्मपुस्तक ईश्वरकी प्रेर-
णासे रचा गया और उपदेशके लिये औ समझानेके
लिये औ सुधारनेके लिये औ धर्म्मकी शिक्षाके लिये
१७ फलदाई है . जिस्तें ईश्वरका जन सिद्ध अर्थात हर एक
उत्तम कर्म्मके लिये सिद्ध किया हुआ होवे।

४ चौथा पर्व्व ।

१ पावलका तिमोथियको चिताना और अपनी आशाका वर्णन करना। ९ उसको उसे अपने पास बुलाना और कई एक भाइयोंका और एक विरोधीका और अपने उत्तर देनेका चर्चा करना। १९ नमस्कारादि सहित पत्रीकी समाप्ति।

सो मैं ईश्वरके आगे और प्रभु यीशु खीष्टके आगे १
जो अपने प्रगट होने और अपने राज्य करनेपर
जीवतों और मृतकोंका बिचार करेगा दृढ़ आज्ञा देता
हूं . बचनको प्रचार कर समय और असमय तत्पर २
रह सब प्रकारके धीरज और शिक्षा सहित समझा और
डांट और उपदेश कर। क्योंकि समय आवेगा जिसमें ३
लोग खरे उपदेशको न सहेंगे परन्तु अपनीही अभि-
लाषाओंके अनुसार अपने लिये उपदेशकोंका ढेर
लगावेंगे क्योंकि उनके कान सुरसुरावेंगे . और वे ४
सच्चाईसे कान फेरेंगे पर कहानियोंकी ओर फिर जा-
वेंगे। परन्तु तू सब बातोंमें सचेत रह दुःख सह ले ५
सुसमाचार प्रचारकका कार्य्य कर अपनी सेवकाईको
सम्पूर्ण कर। क्योंकि मैं अब भी ढाला जाता हूं और ६
मेरे बिदा होनेका समय आ पहुंचा है। मैं अच्छी लड़ाई ७
लड़ चुका हूं मैंने अपनी दौड़ पूरी किई है मैंने बिश्वासको
पालन किया है। अब तो मेरे लिये वह धर्म्मका मुकुट ८
धरा है जिसे प्रभु जो धर्म्मी बिचारकर्त्ता है उस दिन
मुझे देगा और केवल मुझे नहीं पर उन सभोंको भी
जिन्होंने उसका प्रगट होना प्रिय जाना है।

मेरे पास शीघ्र आनेका यत्न कर। क्योंकि दीमाने ९ १०
इस संसारको प्रिय जानके मुझे छोड़ा है और थिसलो-
निकाको गया है क्रीस्की गलातियाको और तीतस दल-
मातियाको गया है। केवल लूक मेरे साथ है . मार्कको ११
लेके अपने संग ला क्योंकि वह सेवकाईके लिये मेरे बहुत
काम आता है। परन्तु तुखिकको मैंने इफिसको भेजा। १२

१३ उस लबादेको जो मैं त्रोत्रासमें कार्पके यहां छोड़ आया
और पुस्तकोंको निज करके चर्म्मपत्रोंको जब तू आवे
१४ तब ले आ । सिकन्दर ठठेरेने मुझसे बहुत बुराइयां
किईं . प्रभु उसके कर्म्मोंके अनुसार उसको फल देवे।
१५ और तू भी उससे बचा रह क्योंकि उसने हमारी
१६ बातोंका बहुतही बिरोध किया है । मेरे पहिली बेर
उत्तर देनेमें कोई मेरे संग नहीं रहा परन्तु सभोंने
मुझे छोड़ा . इसका उनपर दोष न लगाया जाय ।
१७ परन्तु प्रभु मेरे निकट खड़ा हुआ और मुझे सामर्थ्य
दिया जिस्तें मेरे द्वारासे उपदेश सम्पूर्ण सुनाया जाय
और सब अन्यदेशी लोग सुनें और मैं सिंहके मुखसे
१८ बचाया गया । और प्रभु मुझे हर एक बुरे कर्म्मसे
बचावेगा और अपने स्वर्गीय राज्यके लिये मेरी रक्षा
करेगा . उसका गुणानुबाद सदा सर्ब्बदा होय . आमीन।
१९ प्रिस्कीला और अकूलाको और उनीसिफरके
२० घरानेको नमस्कार । इरास्त करिन्थमें रह गया और
२१ त्रोफिम रोगी था उसे मैंने मिलीतमें छोड़ा । जाड़के
पहिले आनेका यत्न कर . उबूल और पूदी और
लीनस और क्लौदिया और सब भाई लोगोंका तुझे
२२ नमस्कार । प्रभु यीशु खीष्ट तेरे आत्माके संग होय .
अनुग्रह तुम्होंके संग होवे । आमीन ॥

तीतसको पावल प्रेरितकी पत्री ।

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ पत्रीका आभाष । ५ मंडलीके रखवालेका कैसा स्वभाव और चरित्र चाहिये उसका बर्णन । १० बिबादियोंकी कुचाल और उन्हें रोकनेका उपदेश ।

पावल जो ईश्वरका दास और ईश्वरके चुने हुए १
लोगोंके बिश्वासके विषयमें और जो सत्य बचन भक्तिके
समान है उस सत्य बचनके ज्ञानके विषयमें अनन्त
जीवनकी आशासे यीशु ख्रीष्टका प्रेरित है . कि उस २
जीवनकी प्रतिज्ञा ईश्वरने जो झूठ बोल नहीं सकता
है सनातनसे किई . परन्तु उपयुक्त समयमें अपने बचन- ३
का उपदेशके द्वारा जो हमारे त्राणकर्त्ता ईश्वरकी
आज्ञाके अनुसार मुझे सौंपा गया प्रगट किया . तीतस- ४
को जो साधारण बिश्वासके अनुसार मेरा सच्चा पुत्र
है ईश्वर पिता और हमारे त्राणकर्त्ता प्रभु यीशु ख्रीष्टसे
अनुग्रह और दया और शांति मिले ।

मैंने इसी कारण तुझे क्रीतीमें छोड़ा कि जो बातें रह ५
गईं तू उन्हें सुधारता जाय और नगर नगर प्राचीनोंको
नियुक्त करे जैसे मैंने तुझे आज्ञा दिई . कि यदि कोई ६
निर्दोष और एकही स्त्रीका स्वामी होय और उसको
बिश्वासी लड़के हों जिन्हें लुचपनका दोष नहीं है और
जो निरंकुश नहीं हैं तो वही नियुक्त किया जाय । क्योंकि ७
उचित है कि मंडलीका रखवाला जो ईश्वरका भंडारीसा
है निर्दोष होय और न हठी न क्रोधी न मद्यपानमें
आसक्त न मरकहा न नीच कमाई करनेहारा हो . परन्तु ८

अतिथिसेवक औ भलेका प्रेमी औ सुबुद्धि औ धर्म्मी
९ औ पवित्र औ संयमी होय . और बिश्वासयोग्य
बचनको जो धर्म्मोपदेशके अनुसार है धरे रहे जिस्तें
वह खरी शिक्षासे उपदेश करनेको और बिबादियोंको
समझानेको भी सामर्थ्य रखे ।
१० क्योंकि बहुतेरे निरंकुश बकवादी और धोखा देने-
११ हारे हैं निज करके खतना किये हुए लोग . जिनका
मुंह बन्द करना अवश्य है जो नीच कमाईके कारण
अनुचित बातोंका उपदेश करते हुए घरानेका घराना
१२ बिगाड़ते हैं । उनमेंसे एक जन उनके निजका एक
भविष्यद्वक्ता बोला क्रीतीय लोग सदा झूठे औ दुष्ट पशु
१३ औ निकम्मे पेटपोसू हैं । यह साक्षी सत्य है इस हेतुसे
उन्हें कड़ाईसे समझा दे जिस्तें वे बिश्वासमें निष्खोट
१४ रहें . और यिहूदीय कहानियोंमें और उन मनुष्योंकी
१५ आज्ञाओंमें जो सत्यसे फिर जाते हैं मन न लगावें । शुद्ध
लोगोंके लिये सब कुछ शुद्ध है परन्तु अशुद्ध और अबि-
श्वासी लोगोंके लिये कुछ नहीं शुद्ध है परन्तु उन्होंका
१६ मन और बिबेक भी अशुद्ध हुआ है । वे ईश्वरको
जाननेका अंगीकार करते हैं परन्तु अपने कर्म्मोंसे उससे
मुकर जाते हैं कि वे घिनौने और आज्ञा लंघन करनेहारे
और हर एक अच्छे कर्म्मके लिये निकृष्ट हैं ।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ बूढ़े और जवान पुरुषों औ स्त्रियोंके लिये उपदेश । ९ दासोंके लिये उपदेश और ईश्वरके अनुग्रहका अभिप्राय ।

१ परन्तु तू वह बातें कहा कर जो खरे उपदेशके योग्य

हैं। बूढ़ोंसे कह कि सचेत औ गंभीर औ संयमी होवें २
और बिश्वास औ प्रेम औ धीरजमें निष्खोट रहें। वैसेही ३
बुढ़ियाओंसे कह कि उनका आचरण पवित्र लोगोंके
ऐसा होय और न दोष लगानेवालियां न बहुत मद्य-
पानके वशमें होवें पर अच्छी बातोंकी शिक्षा देनेवा-
लियां. इसलिये कि वे जवान स्त्रियोंको सचेत करें ४
कि वे अपने अपने स्वामी औ लड़कोंसे प्रेम करनेवा-
लियां. औ संयमी औ पतिब्रता औ घरमें रहनेवाली ५
औ भली होवें और अपने अपने स्वामीके अधीन रहें
जिस्तें ईश्वरके बचनकी निन्दा न किई जावे। वैसेही ६
जवानोंको संयमी रहनेका उपदेश दे। और सब बातोंमें ७
अपने तईं अच्छे कर्म्मोंका दृष्टान्त दिखा और उपदेशमें
निर्बिकारता औ गंभीरता औ शुद्धता सहित. खरा ८
औ निर्दोष बचन प्रचार कर कि बिरोधी हमोंपर
कोई बुराई लगानेका गों न पाके लज्जित होय।

दासोंको उपदेश दे कि अपने अपने स्वामीके अधीन ९
रहें और सब बातोंमें प्रसन्नता योग्य होवें और फिरके
उत्तर न देवें. और न चोरी करें परन्तु सब प्रकारकी १०
अच्छी सचौटी दिखावें जिस्तें वे सब बातोंमें हमारे त्राण-
कर्त्ता ईश्वरके उपदेशको शोभा देवें। क्योंकि ईश्वरका ११
त्राणकारी अनुग्रह सब मनुष्योंपर प्रगट हुआ है. और १२
हमें शिक्षा देता है इसलिये कि हम अभक्तिसे और
सांसारिक अभिलाषाओंसे मन फेरके इस जगतमें संयम
औ न्याय औ भक्तिसे जन्म बितावें. और अपनी सुख- १३
दाई आशाकी और महा ईश्वर और अपने त्राणकर्त्ता

यीशु ख्रीष्टके ऐश्वर्य्यके प्रकाशकी बाट जोहते रहें .
१४ जिसने अपने तईं हमारे लिये दिया कि सब अधर्म्मसे
हमारा उद्धार करे और अपने लिये एक निज लोगको
१५ शुद्ध करे जो अच्छे कर्म्मोंके उद्योगी होवें । यह बातें
कहा कर और उपदेश कर और दृढ़ आज्ञा करके
समझा दे . कोई तुझे तुच्छ न जाने ।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ देशाधिकारियोंके बशमें रहने और शुभ चाल चलनेका उपदेश और ईश्वरके अनुग्रहका फल। ९ अनेक बातोंका उपदेश और नमस्कार सहित पत्रीकी समाप्ति।

१ लोगोंको स्मरण करवा कि वे अध्यक्षों और अधि-
कारियोंके अधीन और आज्ञाकारी होवें और हर एक
२ अच्छे कर्म्मके लिये तैयार रहें . और किसीकी निन्दा
न करें परन्तु मिलनसार औ मृदुभाव हों और सब
मनुष्योंकी ओर समस्त प्रकारकी नम्रता दिखावें ।
३ क्योंकि हम लोग भी आगे निर्बुद्धि और आज्ञा लंघन
करनेहारे थे और भरमाये जाते थे और नाना प्रकार-
के अभिलाष और सुख बिलासके दास बने रहते थे
और बैरभाव और डाहमें समय बिताते थे और घिनौने
४ और आपसके बैरी थे । परन्तु जब हमारे त्राणकर्त्ता
ईश्वरकी कृपा और मनुष्योंपर उसकी प्रीति प्रगट
५ हुई . तब धर्म्मके कार्य्योंसे जो हमने किये सो नहीं
परन्तु अपनी दयाके अनुसार नये जन्मके स्नानके द्वारा
और पवित्र आत्मासे नये किये जानेके द्वारा उसने
६ हमें बचाया . जिस आत्माको उसने हमारे त्राणकर्त्ता
७ यीशु ख्रीष्टके द्वारा हमोंपर अधिकाईसे उंडेला . इस-

लिये कि हम उसके अनुग्रहसे धर्म्मी ठहराये जाके
अनन्त जीवनकी आशाके अनुसार अधिकारी बन
जावें। यह बचन बिश्वासयोग्य है और मैं चाहता ८
हूं कि इन बातोंके विषयमें तू दृढ़तासे बोले इसलिये
कि जिन लोगोंने ईश्वरका बिश्वास किया है सो अच्छे
अच्छे कर्म्म किया करनेके सोचमें रहें. यही बातें
उत्तम और मनुष्योंके लिये फलदाई हैं।

परन्तु मूढ़ताके बिबादोंसे और बंशावलियोंसे और ९
बैर बिरोधसे और व्यवस्थाके विषयमेंके झगड़ोंसे बचा
रह क्योंकि वे निष्फल और व्यर्थ हैं। पाषंडी मनुष्य- १०
को एक बेर बरन दो बेर चितानेके पीछे अलग कर।
क्योंकि तू जानता है कि ऐसा मनुष्य भटकाया गया ११
है और पाप करता है और अपनेको आप दोषी ठह-
राता है। जब मैं अर्त्तिमा अथवा तुखिकको तेरे पास १२
भेजूं तब निकोपलिमें मेरे पास आनेका यत्न कर क्योंकि
मैंने जाड़ेका समय वहीं काटनेको ठहराया है। जीनस १३
व्यवस्थापकको और अपल्लोको बड़े यत्नसे आगे पहुंचा
कि उन्हें किसी बस्तुकी घटी न होय। और हमारे १४
लोग भी जिन जिन बस्तुओंका अवश्य प्रयोजन हो
उनके लिये अच्छे अच्छे कार्य्य किया करनेको सीखें
कि वे निष्फल न होवें। सब लोगोंका जो मेरे संग १५
हैं तुझसे नमस्कार. जो लोग बिश्वासके कारण हमें
प्यार करते हैं उनको नमस्कार. अनुग्रह तुम सभोंके
संग होवे। आमीन॥

फिलीमोनको पावल प्रेरितकी पत्री ।

---

१ पत्रीका आभाष । ४ फिलीमोनके विषयमें पावलका धन्यबाद औ प्रार्थना । ८ उनीसिमके विषयमें फिलीमोनसे पावलकी बिन्ती । २३ नमस्कार सहित पत्रीकी समाप्ति ।

१ पावल जो ख्रीष्ट यीशुके कारण बंधुआ है और भाई
तिमोथिय प्यारे फिलीमोनको जो हमारा सहकर्म्मी भी
२ है . और प्यारी अप्फियाको और हमारे संगी योद्धा
३ अर्खिपको और आपके घरमेंकी मंडलीको . आप
लोगोंको हमारे पिता ईश्वर और प्रभु यीशु ख्रीष्टसे
अनुग्रह और शांति मिले ।
४ मैं आपके प्रेम और बिश्वासका जो आप प्रभु यीशु-
पर और सब पवित्र लोगोंसे रखते हैं समाचार सुनके .
५ अपने ईश्वरका धन्य मानता हूं और नित्य अपनी प्रार्थ-
६ नाओंमें आपको स्मरण करता हूं . कि हम लोगोंमेंकी
समस्त भलाई ख्रीष्ट यीशुके लिये होती है इस बातके
ज्ञानसे वह सहायता जो आप बिश्वाससे किया करते हैं
७ सुफल हो जाय । क्योंकि आपके प्रेमसे हमें बहुत आ-
नन्द और शांति मिलती है इसलिये कि हे भाई आपके
द्वारा पवित्र लोगोंके अन्तःकरणको सुख दिया गया है।
८ इस कारण जो बात सोहती है उसकी यद्यपि आप-
९ को आज्ञा देनेको मुझे ख्रीष्टसे बहुत साहस है . तौभी
मैं प्रेमके कारण बरन बिन्तीही करता हूं क्योंकि मैं

ऐसा हूं मानो बूढ़ा पावल और अब यीशु खीष्टके
कारण बंधुआ भी हूं । मैं अपने पुत्रके लिये जिसे मैंने 10
बंधनमें रहते हुए जन्माया है आपसे बिन्ती करता हूं
सोई उनीसिम है . जो पहिले आपके कुछ कामका न 11
था परन्तु अब आपके और मेरे बड़े कामका है। उसको 12
मैंने लौटा दिया है और आप उसको मेरा अन्तःकरणसा
जानके ग्रहण कीजिये । उसे मैं अपने पास रखा चाहता 13
था इसलिये कि सुसमाचारके बंधनोंमें वह आपके
बदले मेरी सेवा करे । परन्तु मैंने आपकी सम्मति 14
बिना कुछ करनेकी इच्छा न किई जिस्तें आपकी कृपा
जैसे दबावसे न हो पर आपकी इच्छाके अनुसार
होय । क्योंकि क्या जानें वह इसीके कारण कुछ दिन 15
अलग हुआ कि सदा आपका हो जावे . पर अब तो 16
दासकी नाईं नहीं परन्तु दाससे बढ़के अर्थात प्यारा
भाई होय निज कर मेरा पर कितना अधिक करके
क्या शरीरमें क्या प्रभुमें आपहीका प्यारा । इसलिये 17
जो आप मुझे सम्भागी समझते हैं तो जैसे मुझको
तैसे उसको ग्रहण कीजिये । और जो उससे आपकी 18
कुछ हानि हुई अथवा वह आपका कुछ धारता हो तो
इसको मेरे नामपर लिखिये । मुझ पावलने अपने 19
हाथसे लिखा है मैं भर देऊंगा जिस्तें मुझे आपसे यह
कहना न पड़े कि अपने तईं भी मुझे देना आपको
उचित है । हां हे भाई आपसे प्रभुमें मुझे आनन्द 20
पहुंचे प्रभुमें मेरे अन्तःकरणको सुख दीजिये। आपके 21
आज्ञाकारी होनेका भरोसा रखके मैंने आपके पास

लिखा है क्योंकि जानता हूं कि जो मैं कहता हूं उससे
२२ भी आप अधिक करेंगे । और भी मेरे लिये बासा
तैयार कीजिये क्योंकि मुझे आशा है कि आप लोगोंकी
प्रार्थनाओंके द्वारा मैं आप लोगोंको दे दिया जाऊंगा ।
२३ इपाफ्रा जो खीष्ट यीशुके कारण मेरा संगी बंधुआ
२४ है . औ मार्क औ अरिस्तार्ख औ दीमा औ लूक जो
२५ मेरे सहकर्म्मी हैं इन्होंका आपको नमस्कार । हमारे
प्रभु यीशु खीष्टका अनुग्रह आप लोगोंके आत्माके संग
होवे । आमीन ॥

इब्रियोंको (पावल प्रेरितकी) पत्री।

१ पहिला पर्ब्ब।

१ ईश्वरके पुत्र यीशु खीष्टका माहात्म्य। ५ उसका स्वर्गदूतोंसे श्रेष्ठ होना।

ईश्वरने पूर्ब्बकालमें समय समय औ नाना प्रकारसे १
भविष्यद्वक्ताओंके द्वारा पितरोंसे बातें कर. इन पिछले २
दिनोंमें हमोंसे पुत्रके द्वारा बातें किईं जिसे उसने सब
बस्तुओंका अधिकारी ठहराया जिसके द्वारा उसने सारे
जगतको सृजा भी. जो उसकी महिमाका तेज और ३
उसके तत्त्वकी मुद्रा और अपनी शक्तिके बचनसे सब
बस्तुओंका संभालनेहारा होके अपनेही द्वारासे हमारे
पापोंका परिशोधन कर ऊंचे स्थानोंमेंकी महिमाके
दहिने हाथ जा बैठा. और जितने भर उसने स्वर्ग- ४
दूतोंसे श्रेष्ठ नाम पाया है उतने भर उनसे बड़ा हुआ।
क्योंकि दूतोंमेंसे ईश्वरने किससे कभी कहा तू मेरा ५
पुत्र है मैंने आजही तुझे जन्माया है और फिर कि मैं
उसका पिता होंगा और वह मेरा पुत्र होगा। और ६
जब वह फिर पहिलौठेको संसारमें लावे वह कहता
है ईश्वरके सब दूतगण उसको प्रणाम करें। दूतोंके ७
विषयमें वह कहता है जो अपने दूतोंको पवन और
अपने सेवकोंको आगकी ज्वाला बनाता है। परन्तु ८
पुत्रसे कि हे ईश्वर तेरा सिंहासन सर्ब्बदालों है तेरे
राज्यका राजदंड सीधाईका राजदंड है। तूने धर्म्मको ९
प्रिय जाना और कुकर्म्मसे घिन्न किई इस कारण ईश्वर

तेरे ईश्वरने तुझे तेरे संगियोंसे अधिक करके आनन्दके
१० तेलसे अभिषेक किया । और यह कि हे प्रभु आदिमें
तूने पृथिवीकी नेव डाली और स्वर्ग तेरे हाथोंके कार्य्य
११ हैं । वे नाश होंगे परन्तु तू बना रहता है और बस्तकी
१२ नाईं वे सब पुराने हो जायेंगे । और तू उन्हें चद्दरकी
नाईं लपेटेगा और वे बदल जायेंगे परन्तु तू एकसां
१३ रहता है और तेरे बरस नहीं घटेंगे । और दूतोंमेंसे
उसने किससे कभी कहा है जबलों मैं तेरे शत्रुओंको
तेरे चरणोंकी पीढ़ी न बनाऊं तबलों तू मेरी दहिनी
१४ और बैठ । क्या वे सब सेवा करनेहारे आत्मा नहीं
हैं जो त्राण पानेवाले लोगोंके निमित्त सेवकाईके लिये
भेजे जाते हैं ।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ यीशुके स्वर्गदूतोंसे श्रेष्ठ होनेके कारण सुसमाचारके माननेका उपदेश । ५ यीशुका दीन बननेके उपरान्त महिमा प्राप्त करना । १० उसकी दीनताका और अवतार लेनेका प्रयोजन ।

१ इस कारण अवश्य है कि हम लोग उन बातोंपर जो
हमने सुनी हैं बहुत अधिक करके मन लगावें ऐसा न
२ हो कि भूल जावें । क्योंकि यदि वह बचन जो दूतोंके
द्वारासे कहा गया दृढ़ हुआ और हर एक अपराध
३ और आज्ञालंघनका यथार्थ प्रतिफल मिला . तो हम
लोग ऐसे बड़े त्राणसे निश्चिन्त रहके क्योंकर बचेंगे
अर्थात इस त्राणसे जो प्रभुके द्वारा प्रचारित होने
लगा और हमोंके पास सुननेहारोंसे दृढ़ किया गया.
४ जिनके संग ईश्वर भी चिन्हों और अद्भुत कामोंसे भी
और नाना प्रकारके आश्चर्य्य कर्म्मोंसे और अपनी

इच्छाके अनुसार पवित्र आत्माके दानोंके बांटनेसे
साक्षी देता था।
क्योंकि उसने इस होनेहार जगतको जिसके विषयमें ५
हम बोलते हैं दूतोंके अधीन नहीं किया। परन्तु किसीने ६
कहीं साक्षी दिई कि मनुष्य क्या है कि तू उसकी सुध
लेता है अथवा मनुष्यका पुत्र क्या है कि तू उसपर दृष्टि
करता है। तूने उसको कुछ थोड़ासा दूतोंसे छोटा किया ७
तूने उसे महिमा और आदरका मुकुट पहिनाया और
उसको अपने हाथोंके कार्य्योंपर प्रधान किया तूने सब
कुछ उसके चरणोंके नीचे अधीन किया। सब कुछ उसके ८
अधीन करनेसे उसने कुछ भी रख न छोड़ा जो उसके
अधीन नहीं हुआ. तौभी हम अबलों नहीं देखते हैं
कि सब कुछ उसके अधीन किया गया है। परन्तु हम ९
यह देखते हैं कि उसको जो कुछ थोड़ासा दूतोंसे छोटा
किया गया था अर्थात यीशुको मृत्यु भोगनेके कारण
महिमा और आदरका मुकुट पहिनाया गया है इस-
लिये कि वह ईश्वरके अनुग्रहसे सबके लिये मृत्युका
स्वाद चीखे।
क्योंकि जिसके कारण सब कुछ है और जिसके द्वारा १०
सब कुछ है उसके यह योग्य था कि बहुत पुत्रोंको महि-
मालों पहुंचानेमें उनके त्राणके कर्त्ताको दुःख भोगनेके
द्वारा सिद्ध करे। क्योंकि पवित्र करनेहारा और वे भी ११
जो पवित्र किये जाते हैं सब एकहीसे हैं और इस कारण-
से वह उन्हें भाई कहनेमें नहीं लजाता है। वह कहता १२
है मैं तेरा नाम अपने भाइयोंको सुनाऊंगा सभाके

१३ बीचमें मैं तेरा भजन गाऊंगा। और फिर कि मैं उसपर
भरोसा रखूंगा और फिर कि देख मैं और लड़के जो
१४ ईश्वरने मुझे दिये । इसलिये जब कि लड़के मांस औ
लोहूके भागी हुए हैं वह आप भी वैसेही इनका भागी
हुआ इसलिये कि मृत्युके द्वारा उसको जिसे मृत्युका
१५ सामर्थ्य था अर्थात शैतानको क्षय करे . और जितने
लोग मृत्युके भयसे जीवन भर दासत्वमें फंसे हुए थे
१६ उन्हें छुड़ावे । क्योंकि वह तो दूतोंको नहीं थांभता है
१७ परन्तु इब्राहीमके बंशको थांभता है। इस कारण उसको
अवश्य था कि सब बातोंमें भाइयोंके समान हो जावे
जिस्तें वह उन बातोंमें जो ईश्वरसे सम्बन्ध रखती हैं
दयाल और बिश्वासयोग्य महायाजक बने कि लोगोंके
१८ पापोंके लिये प्रायश्चित्त करे । क्योंकि जिस जिस बातमें
उसने परीक्षामें पड़के दुःख पाया है उस उस बातमें
वह उनकी जिनकी परीक्षा किई जाती है सहायता
कर सकता है ।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ यीशुका मूसासे श्रेष्ठ होना । ७ इस बातके कारण पितरोंका दृष्टान्त देके कठोरता और अबिश्वाससे निषेध करना ।

१ इस कारण हे पवित्र भाइयो जो स्वर्गीय बुलाहटमें
सम्भागी हो हमारे अंगीकार किये हुए मतके प्रेरित
२ औ महायाजक ख्रीष्ट यीशुको देख लेओ . जो अपने ठह-
रानेहारेके बिश्वासयोग्य है जैसा मूसा भी उसके सारे
३ घरमें बिश्वासयोग्य था। क्योंकि यह तो उतने भर मूसासे
अधिक बड़ाईके योग्य समझा गया है जितने भर घरके

आदरसे घरके बनानेहारेका आदर अधिक होता है।
क्योंकि हर एक घर किसीका तो बनाया हुआ है परन्तु ४
जिसने सब कुछ बनाया सो ईश्वर है। और मूसा तो ५
जो बातें कही जानेपर थीं उनकी साक्षीके लिये सेवककी
नाईं उसके सारे घरमें विश्वासयोग्य था। परन्तु ख्रीष्ट ६
पुत्रकी नाईं उसके घरका अध्यक्ष होकर विश्वासयोग्य
है और हम लोग यदि साहसको और आशाकी
बड़ाईको अन्तलों दृढ़ थांभे रहें तो उसके घर हैं।

इसलिये जैसे पवित्र आत्मा कहता है कि आज जो ७
तुम उसका शब्द सुनो . तो अपने मन कठोर मत ८
करो जैसे चिढ़ावमें और परीक्षाके दिन जंगलमें हुआ .
जहां तुम्हारे पितरोंने मेरी परीक्षा लिई और मुझे जांचा ९
और चालीस बरस मेरे कामोंको देखा . इस कारण मैं १०
उस समयके लोगोंसे उदास हुआ और बोला उनके मन
सदा भटकते हैं और उन्होंने मेरे मार्गोंको नहीं जाना
है . सो मैंने क्रोध कर किरिया खाई कि वे मेरे बिश्राममें ११
प्रवेश न करेंगे . तैसे हे भाइयो चौकस रहो कि जीवते १२
ईश्वरको त्यागनेमें अविश्वासका बुरा मन तुम्हेंमेंसे
किसीमें न ठहरे। परन्तु जबलों आज कहावता है १३
प्रतिदिन एक दूसरेको समझाओ ऐसा न हो कि तुममेंसे
कोई जन पापके छलसे कठोर हो जाय। क्योंकि हम जो १४
भरोसेके आरंभको अन्तलों दृढ़ थांभे रहें तब तो ख्रीष्टमें
सम्भागी हुए हैं . जैसे उस बाक्यमें है कि आज जो तुम १५
उसका शब्द सुनो तो अपने मन कठोर मत करो जैसे
चिढ़ावमें हुआ। क्योंकि किन लोगोंने सुनके चिढ़ाया . १६

क्या उन सब लोगोंने नहीं जो मूसाके द्वारा मिसरसे
१७ निकले । और वह किन लोगोंसे चालीस बरस
उदास हुआ . क्या उन लोगोंसे नहीं जिन्होंने पाप किया
१८ जिनकी लोथें जंगलमें गिरीं । और किन लोगोंसे उसने
किरिया खाई कि तुम मेरे बिश्राममें प्रवेश न करोगे
१९ केवल आज्ञा लंघन करनेहारोंसे । सो हम देखते हैं
कि वे अबिश्वासके कारण प्रवेश नहीं कर सके ।

४ चैाथा पर्ब्ब ।

१ ईश्वरके विश्रामका बर्णन और उसमें प्रवेश करनेका उपदेश और ईश्वरके बचन-का गुण । १४ यीशुका महायाजक होना और इसके लिये दृढ़ता औ प्रार्थनाकी आवश्यकता ।

१ इसलिये हमोंको डरना चाहिये न हो कि यद्यपि
ईश्वरके बिश्राममें प्रवेश करनेकी प्रतिज्ञा रह गई है
तौभी तुम्होंमेंसे कोई जन ऐसा देख पड़े कि उसमें नहीं
२ पहुंचा है । क्योंकि जैसे उन्होंको तैसे हमोंको वह सुस-
माचार सुनाया गया है परन्तु उन्हें समाचारके बचनसे
जो सुननेहारोंसे बिश्वाससे नहीं मिलाया गया कुछ लाभ
३ न हुआ । क्योंकि हम लोग जिन्होंने बिश्वास किया है
बिश्राममें प्रवेश करते हैं . इसके विषयमें यद्यपि उसके
कार्य्य जगतकी उत्पत्तिसे बन चुके थे तौभी उसने कहा
है सो मैंने क्रोध कर किरिया खाई कि वे मेरे बिश्राममें
४ प्रवेश न करेंगे । क्योंकि सातवें दिनके विषयमें उसने कहीं
यूं कहा है और ईश्वरने सातवें दिन अपने सब कार्य्योंसे
५ बिश्राम किया । तौभी इस ठौर फिर कहा है वे मेरे
६ बिश्राममें प्रवेश न करेंगे । सो जब कि कितनोंका उसमें
प्रवेश करना रह गया है और जिन्होंको उसका सुसमा-

चार पहिले सुनाया गया उन्होंने आज्ञालंघनके कारण
प्रवेश न किया . और फिर वह आज कह करके किसी ७
दिनका ठिकाना दे इतने दिनोंके पीछे दाऊदके द्वारा
बोलता है जैसे कहा गया है आज जो तुम उसका शब्द
सुनो तो अपने मन कठोर मत करो . परन्तु जो यिहो- ८
शुआने उन्हें बिश्राम दिया होता तो ईश्वर पीछे दूसरे
दिनकी बात न करता . तो जानो कि ईश्वरके लोगोंके ९
लिये बिश्रामवारसा एक बिश्राम रह गया है। क्योंकि १०
जिसने उसके बिश्राममें प्रवेश किया है जैसे ईश्वरने
अपनेही कार्य्योंसे तैसे उसने भी अपने कार्य्योंसे बिश्राम
किया है। सो हम लोग उस बिश्राममें प्रवेश करनेका ११
यत्न करें ऐसा न हो कि कोई जन आज्ञालंघनके उसी
दृष्टान्तके समान पतित होय। क्योंकि ईश्वरका बचन १२
जीवता औ प्रबल और हर एक दोधारे खड्गसे भी चोखा
है और वारपार छेदनेहारा है यहांलों कि जीव और
आत्माको और गांठ गांठ औ गूदे गूदेको अलग अलग
करे और हृदयकी चिन्ताओं और भावनाओंका बिचार
करनेहारा है। और कोई सृजी हुई बस्तु उसके आगे १३
गुप्त नहीं है परन्तु जिससे हमें काम है उसके नेत्रोंके
आगे सब कुछ नंगा और खुला हुआ है।

सो जब कि हमारा एक बड़ा महायाजक है जो स्वर्ग १४
होके गया है अर्थात ईश्वरका पुत्र यीशु आओ हम
अपने अंगीकार किये हुए मतको धरे रहें। क्योंकि १५
हमारा ऐसा महायाजक नहीं है जो हमारी दुर्ब्बल-
ताओंके दुःखको बूझ न सके परन्तु बिना पाप वह

१६ हमारे समान सब बातोंमें परीक्षित हुआ है । इसलिये
हम लोग अनुग्रहके सिंहासनके पास साहससे आवें
कि दया हमपर किई जाय और हम समय योग्य
सहायताके लिये अनुग्रह पावें ।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

१ महायाजकको इन दो बातोंका अवश्य होना कि अज्ञानोंका दुःख बूझ सके और कि ईश्वरसे नियुक्त किया जाय और दोनों बातोंका यीशुमें पूरा होना । ११ इब्रियोंकी मन्द बुद्धिका उलहना ।

१ क्योंकि हर एक महायाजक मनुष्योंमेंसे लिया जाके
मनुष्योंके लिये उन बातोंके विषयमें जो ईश्वरसे सम्बन्ध
रखती हैं ठहराया जाता है कि चढ़ावोंको और पापोंके
२ निमित्त बलिदानोंको चढ़ावे । और वह अज्ञानों और
भूलनेहारोंकी ओर दयाशील हो सकता है क्योंकि वह
३ आप भी दुर्ब्बलतासे घेरा हुआ है । और इसके कारण
उसे अवश्य है कि जैसे लोगोंके लिये वैसे अपने लिये
४ भी पापोंके निमित्त चढ़ाया करे । और यह आदर
कोई अपने लिये नहीं लेता है परन्तु जो हारोनकी
५ नाईं ईश्वरसे बुलाया जाता है सो लेता है । वैसेही
ख्रीष्टने भी महायाजक बननेको अपनी बड़ाई न किई
परन्तु जो उससे बोला तू मेरा पुत्र है मैंने आजही
६ तुझे जन्माया है उसीने उसकी बड़ाई किई । जैसे वह
दूसरे ठौरमें भी कहता है तू मलकीसिदककी पदवी-
७ पर सदालों याजक है । उसने अपने शरीरके दिनोंमें
ऊंचे शब्दसे पुकार पुकारके औ रो रोके उससे जो
उसे मृत्युसे बचा सकता था बिन्ती और निवेदन
८ किये और उस भयके निमित्त सुना गया . और यद्यपि

पुत्र था तौभी जिन दुःखोंको भोगा उनसे आज्ञा
मानना सीखा . और सिद्ध बनके उन सभोंके लिये ९
जो उसके आज्ञाकारी होते हैं अनन्त त्राणका कर्त्ता
हुआ . और ईश्वरसे मलकीसिदककी पदवीपरका १०
महायाजक कहा गया।

इस पुरुषके विषयमें हमें बहुत बचन कहना है ११
जिसका अर्थ बताना भी कठिन है क्योंकि तुम सुननेमें
आलसी हुए हो। क्योंकि यद्यपि इतने समयके बीतनेसे १२
तुम्हें उचित था कि शिक्षक होते तौभी तुम्हींको फिर
आवश्यक है कि कोई तुम्हें सिखावे कि ईश्वरकी बाणि-
योंकी आदिशिक्षा क्या है और ऐसे हुए हो कि तुम्हें
अन्नका नहीं परन्तु दूधका प्रयोजन है। क्योंकि जो कोई १३
दूधही पीता है उसको धर्म्मके बचनका परिचय नहीं
है क्योंकि बालक है। परन्तु अन्न उनके लिये है जो १४
सयाने हुए हैं जिनके ज्ञानेन्द्रिय अभ्यासके कारण भले
औ बुरेके बिचारके लिये साधे हुए हैं।

६ छठवां पर्ब्ब।

१ धर्म्ममें बढ़ जानेका उपदेश। १३ ईश्वरकी प्रतिज्ञाओंकी दृढ़ता।

इस कारण खीष्टके आदि बचनको छोड़के हम सिद्ध- १
ताकी ओर बढ़ते जावें . और यह नहीं कि मृतवत २
कर्म्मोंसे पश्चात्ताप करनेकी और ईश्वरपर बिश्वास कर-
नेकी और बपतिसमोंके उपदेशकी और हाथ रखनेकी
और मृतकोंके जी उठनेकी और अनन्त दंडकी नेव
फिरके डालें। हां जो ईश्वर यूं करने देवे तो हम यही ३
करेंगे। क्योंकि जिन्होंने एक बेर ज्योति पाई और ४

स्वर्गीय दानका स्वाद चीखा और पवित्र आत्माके
५ भागी हुए . और ईश्वरके भले बचनका और होनेहार
६ जगतकी शक्तिका स्वाद चीखा . और पतित हुए हैं
उन लोगोंको पश्चात्तापके निमित्त फिरके नये करना
अन्होना है क्योंकि वे ईश्वरके पुत्रको अपने लिये फिर
क्रूशपर चढ़ाते और प्रगटमें उसपर कलंक लगाते हैं।
७ क्योंकि जिस भूमिने वह बर्षा जो उसपर बारंबार
पड़ती है पिई है और जिन लोगोंके कारण वह जोती
बोई जाती है उन लोगोंके योग्य साग पात उपजाती
८ है सो ईश्वरसे आशीस पाती है। परन्तु जो वह कांटे
और ऊंटकटारे जन्माती है तो निकृष्ट है और स्रापित
होनेके निकट है जिसका अन्त यह है कि जलाई जाय।
९ परन्तु हे प्यारो यद्यपि हम यूं बोलते हैं तौभी तुम्हारे
विषयमें हमें अच्छीही बातों और त्राण संयुक्त बातोंका
१० भरोसा है। क्योंकि ईश्वर अन्याई नहीं है कि तुम्हारे
कार्य्यको और उसके नामपर जो प्रेम तुमने दिखाया
उस प्रेमके परिश्रमको भूल जावे कि तुमने पवित्र
११ लोगोंकी सेवा किई और करते हो। परन्तु हम चाहते
हैं कि तुम्हेंमेंसे हर एक जन अन्तलों आशाके
१२ निश्चयके लिये वही यत्न दिखाया करे. कि तुम आलसी
नहीं परन्तु जो लोग बिश्वास और धीरजके द्वारा
प्रतिज्ञाओंके अधिकारी होते हैं उन्होंके अनुगामी बनो।
१३ क्योंकि ईश्वरने इब्राहीमको प्रतिज्ञा देके जब कि
अपनेसे किसी बड़ेकी किरिया नहीं खा सकता था
१४ अपनीही किरिया खाके कहा . निश्चय मैं तुझे बहुत

आशीस देऊंगा और तुझे बहुत बढ़ाऊंगा । और इस १५
रीतिसे इब्राहीमने धीरज धरके प्रतिज्ञा प्राप्त किई ।
क्योंकि मनुष्य तो अपनेसे बड़ेकी किरिया खाते हैं १६
और किरिया दृढ़ताके लिये उनके समस्त बिबादका
अन्त है । इसलिये ईश्वर प्रतिज्ञाके अधिकारियोंपर १७
अपने मतकी अचलताको बहुतही प्रगट करनेकी इच्छा
कर किरियाके द्वारा मध्यस्थ हुआ . कि दो अचल १८
विषयोंके द्वारा जिनमें ईश्वरका झूठ बोलना अन्होना
है दृढ़ शांति हम लोगोंको मिले जो साम्हने रखी
हुई आशा धर लेनेको भाग आये हैं । वह आशा १९
हमारे लिये प्राणका लंगरसा होती है जो अटल औ
दृढ़ है और परदेके भीतरलों प्रवेश करता है . जहां २०
हमारे लिये अगुवा होके यीशुने प्रवेश किया है जो
मलकीसिदककी पदवीपर सदालों महायाजक बना है।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ मलकीसिदककी कथा । ४ उसका महत्त्व । ११ प्रभु यीशुके उसीकी पदवीपर नियुक्त होनेसे याजकता औ व्यवस्थाके बदल जानेका प्रमाण । २० यीशुकी इस पदवीकी श्रेष्ठताके कई एक प्रमाण ।

यह मलकीसिदक शलीमका राजा और सर्ब्बप्रधान १
ईश्वरका याजक जो इब्राहीमसे जब वह राजाओंको
मारनेसे लौटता था आ मिला और उसको आशीस
दिई . जिसको इब्राहीमने सब बस्तुओंमेंसे दसवां अंश २
भी दिया जो पहिले अपने नामके अर्थसे धर्म्मका राजा
है और फिर शलीमका राजा भी अर्थात शांतिका राजा
है . जिसका न पिता न माता न बंशावलि है जिसके ३

न दिनोंका आदि न जीवनका अन्त है परन्तु ईश्वरके
पुत्रके समान किया गया है नित्य याजक बना रहता है ।
४ पर देखो यह कैसा बड़ा पुरुष था जिसको इब्राहीम
५ कुलपतिने लूटमेंसे दसवां अंश भी दिया । लेवीके सन्ता-
नोंमेंसे जो लोग याजकीय पद पाते हैं उन्हें तो व्यव-
स्थाके अनुसार लोगोंसे अर्थात अपने भाइयोंसे यद्यपि
वे इब्राहीमके देहसे जन्मे हैं दसवां अंश लेनेकी आज्ञा
६ होती है । परन्तु इसने जो उनकी बंशावलिमेंका नहीं
है इब्राहीमसे दसवां अंश लिया है और उसको जिसे
७ प्रतिज्ञाएं मिलीं आशीस दिई है । पर अखंडनीय बात
८ है कि छोटेको बड़ेसे आशीस दिई जाती है । और यहां
मनुष्य जो मरते हैं दसवां अंश लेते हैं परन्तु वहां वह
लेता है जिसके विषयमें साक्षी दिई जाती है कि वह
९ जीता है । और यह भी कह सकते कि इब्राहीमके द्वारा
लेवीसे भी जो दसवां अंश लेनेहारा है दसवां अंश लिया
१० गया है । क्योंकि जिस समय मलकीसिदक उसके पितासे
आ मिला उस समय वह अपने पिताके देहमें था ।
११ सो यदि लेवीय याजकताके द्वारा जिसके संयोगमें
लोगोंको व्यवस्था दिई गई थी सिद्धता हुई होती तो
और क्या प्रयोजन था कि दूसरा याजक मलकीसिदककी
पदवीपर खड़ा होय और हारोनकी पदवीका न कहावे ।
१२ क्योंकि याजकता जो बदली जाती है तो अवश्य करके
१३ व्यवस्थाकी भी बदली होती है । जिसके विषयमें यह
बातें कही जातीं सो दूसरे कुलमेंका है जिसमेंसे किसी
१४ मनुष्यने बेदीकी सेवा नहीं किई है । क्योंकि प्रत्यक्ष है

कि हमारा प्रभु यिहूदाके कुलसे उदय हुआ है जिससे
मूसाने याजकताके विषयमें कुछ नहीं कहा। और वह १५
बात और भी बहुत प्रगट इससे होती है कि मलकी-
सिदकके समान दूसरा याजक खड़ा है . जो शारीरिक १६
आज्ञाकी व्यवस्थाके अनुसार नहीं परन्तु अबिनाशी
जीवनकी शक्तिके अनुसार बन गया है। क्योंकि ईश्वर १७
साक्षी देता है कि तू मलकीसिदककी पदवीपर सदालों
याजक है। सो अगली आज्ञाकी दुर्ब्बलता औ १८
निष्फलताके कारण उसका तो लोप होता है इसलिये
कि व्यवस्थाने किसी बातको सिद्ध नहीं किया। परन्तु १९
एक उत्तम आशाका स्थापन होता है जिसके द्वारा
हम ईश्वरके निकट पहुंचते हैं।

और वे लोग बिना किरिया याजक बन गये हैं परन्तु २०
यह तो किरियाके अनुसार उससे बना है जो उससे
कहता है परमेश्वरने किरिया खाई है और नहीं पछ-
तावेगा तू मलकीसिदककी पदवीपर सदालों याजक है।
सो जब कि यीशु किरिया बिना याजक नहीं हुआ है . २१
वह उतने भर उत्तम नियमका जामिन हुआ है। २२
और वे तो बहुतसे याजक बन गये हैं इस कारण कि २३
मृत्यु उन्हें रहने नहीं देती है . परन्तु यह सदालों २४
रहता है इस कारण उसकी याजकता अटल है। इस- २५
लिये जो लोग उसके द्वारा ईश्वरके पास आते हैं वह
उनका त्राण अत्यन्तलों कर सकता है क्योंकि वह उनके
लिये बिन्ती करनेको सदा जीता है। क्योंकि ऐसा २६
महायाजक हमारे योग्य था जो पवित्र औ सूधा औ

निर्म्मल औ पापियोंसे अलग और स्वर्गसे भी ऊंचा किया
२७ हुआ है . जिसे प्रतिदिन प्रयोजन नहीं है कि प्रधान
याजकोंकी नाईं पहिले अपनेही पापोंके लिये तब लो-
गोंके पापोंके लिये बलि चढ़ावे क्योंकि इसको वह एकही
२८ बेर कर चुका कि अपने तईं चढ़ाया । क्योंकि व्यवस्था
मनुष्योंको जिन्हें दुर्ब्बलता है प्रधान याजक ठहराती है
परन्तु जो किरिया व्यवस्थाके पीछे खाई गई उसकी बात
पुत्रको जो सर्ब्बदा सिद्ध किया गया है ठहराती है ।

८ आठवां पर्ब्ब ।

१ यीशुकी याजकताका स्वर्गसे सम्बन्ध रखना । ७ नये औ श्रेष्ठ नियमका वर्णन और भविष्यद्वाणीसे उसका प्रमाण ।

१ जो बातें कही जाती हैं उनमें सार बात यह है कि
हमारा ऐसा महायाजक है कि स्वर्गमें महिमाके सिंहा-
२ सनके दहिने हाथ जा बैठा . और पवित्र स्थानका और
उस सच्चे तंबूका सेवक हुआ जिसे किसी मनुष्यने नहीं
३ परन्तु परमेश्वरने खड़ा किया । क्योंकि हर एक प्रधान
याजक चढ़ावे और बलिदान चढ़ानेके लिये ठहराया
जाता है इस कारण अवश्य है कि इसीके पास भी
४ चढ़ानेके लिये कुछ होय । फिर याजक तो हैं जो
व्यवस्थाके अनुसार चढ़ावे चढ़ाते हैं और स्वर्गमेंकी
वस्तुओंके प्रतिरूप औ परछाईंकी सेवा करते हैं जैसे
मूसाको जब वह तंबू बनानेपर था आज्ञा दिई गई
अर्थात ईश्वरने कहा देख जो आकार तुझे पहाड़पर
५ दिखाया गया उसके अनुसार सब कुछ बना । इसलिये
६ जो यह पृथिवीपर होता तो याजक नहीं होता । परन्तु

अब जैसे वह और उत्तम नियमका मध्यस्थ है जो
और उत्तम प्रतिज्ञाओंपर स्थापन किया गया है तैसी
श्रेष्ठ सेवकाई भी उसे मिली है।
क्योंकि जो वह पहिला नियम निर्दोष होता तो ७
दूसरेके लिये जगह न ढूंढ़ी जाती। परन्तु वह उनपर ८
दोष देके बोलता है कि परमेश्वर कहता है देखो वे
दिन आते हैं कि मैं इस्रायेलके घरानेके संग और
यिहूदाके घरानेके संग नया नियम स्थापन करूंगा।
जो नियम मैंने उनके पितरोंके संग उस दिन बांधा ९
जिस दिन उन्हें मिसर देशमेंसे निकाल लानेको उनका
हाथ थांभा उस नियमके अनुसार नहीं क्योंकि वे मेरे
नियमपर नहीं ठहरे और मैंने उनकी सुध न लिई
परमेश्वर कहता है। परन्तु यही नियम है जो मैं उन १०
दिनोंके पीछे इस्रायेलके घरानेके संग बांधूंगा परमेश्वर
कहता है मैं अपनी व्यवस्थाको उनके मनमें डालूंगा
और उसे उनके हृदयमें लिखूंगा और मैं उनका ईश्वर
होंगा और वे मेरे लोग होंगे। और वे हर एक अपने ११
पड़ोसीको और हर एक अपने भाईको यह कहके न
सिखावेंगे कि परमेश्वरको पहचान क्योंकि उनमेंके
छोटेसे बड़ेलों सब मुझे जानेंगे। क्योंकि मैं उनके १२
अधर्म्मके विषयमें दया करूंगा और उनके पापोंको
और उनके कुकर्म्मोंको फिर कभी स्मरण न करूंगा।
नया नियम कहनेसे उसने पहिला नियम पुराना १३
ठहराया है पर जो पुराना और जीर्ण होता जाता है
सो लोप होनेके निकट है।

९ नवां पर्ब्ब।

१ मूसाके बनाये हुए तंबूका वर्णन। ६ उसमेंकी सेवकाईसे खीष्टके प्रायश्चित्तका दृष्टान्त। १५ खीष्ट जो नये नियमका मध्यस्थ है इस कारण उसके मरनेको आवश्यकता। २३ स्वर्गमें खीष्टकी सेवकाई और उसके फिर आनेकी कथा।

१ सो उस पहिले नियमके संयोगमें भी सेवकाईकी
२ विधियां और लौकिक पवित्र स्थान था। क्योंकि तंबू
बनाया गया अगला तंबू जिसमें दीवट और मेज और
३ रोटीकी भेंट थी जो पवित्र स्थान कहावता है। और
दूसरे परदेके पीछे वह तंबू जो पवित्रोंमेंसे पवित्र स्थान
४ कहावता है. जिसमें सोनेकी धूपदानी थी और नियमका
सन्दूक जो चारों ओर सोनेसे मढ़ा हुआ था और उसमें
सोनेकी कलसी जिसमें मन्ना था और हारोनकी छड़ी
जिसकी कोंपलें निकलीं और नियमकी दोनों पटियाएं।
५ और उसके ऊपर दोनों तेजस्वी किरूब थे जो दयाके
आसनको छाये थे. इन्होंके विषयमें पृथक पृथक बात
करनेका अभी समय नहीं है।

६ यह सब बस्तु जो इस रीतिसे बनाई गई हैं तो अगले
तंबूमें याजक लोग नित्य प्रवेश कर सेवा किया करते
७ हैं। परन्तु दूसरेमें केवल महायाजक बरस भरमें एक
बेर जाता है और लोहू बिना नहीं जाता है जिसे अपने
लिये और लोगोंकी अज्ञानताओंके लिये चढ़ाता है।
८ इससे पवित्र आत्मा यही बताता है कि जबलों अगला
तंबू स्थापित रहता तबलों पवित्र स्थानका मार्ग प्रगट
९ नहीं हुआ। और यह तो बर्त्तमान समयके लिये दृष्टान्त
है जिसमें चढ़ावे और बलिदान चढ़ाये जाते हैं जो

सेवा करनेहारेके मनको सिद्ध नहीं कर सकते हैं।
केवल खाने और पीनेकी बस्तुओं और नाना बपतिस- १०
मों और शरीरकी विधियोंके सम्बन्धमें यह बातें
सुधर जानेके समयलों ठहराई हुई हैं। परन्तु खीष्ट ११
जब होनेहार उत्तम विषयोंका महायाजक होके आया
तब उसने और भी बड़े और सिद्ध तंबूमेंसे जो हाथका
बनाया हुआ नहीं अर्थात इस सृष्टिका नहीं है. और १२
बकरों और बछड़ूओंके लोहूके द्वारा नहीं परन्तु
अपनेही लोहूके द्वारासे एकही बेर पवित्र स्थानमें
प्रवेश किया और अनन्त उद्धार प्राप्त किया। क्योंकि १३
यदि बैलों और बकरोंका लोहू और बछियाकी राख
जो अपवित्र लोगोंपर छिड़की जाती शरीरकी शुद्धताके
लिये पवित्र करती है. तो कितना अधिक करके १४
खीष्टका लोहू जिसने सनातन आत्माके द्वारा अपने
तईं ईश्वरके आगे निष्कलंक चढ़ाया तुम्हारे मनको
मृतवत कर्म्मोंसे शुद्ध करेगा कि तुम जीवते ईश्वरकी
सेवा करो।

और इसीके कारण वह नये नियमका मध्यस्थ है १५
जिस्तें पहिले नियमके सम्बन्धी अपराधोंके उद्धारके
लिये मृत्यु भोग किये जानेसे बुलाये हुए लोग अनन्त
अधिकारकी प्रतिज्ञाको प्राप्त करें। क्योंकि जहां मर- १६
णोपरान्त दानका नियम है तहां नियमके बांधनेहारे-
की मृत्युका अनुमान अवश्य है। क्योंकि ऐसा नियम १७
लोगोंके मरनेपर दृढ़ होता है नहीं तो जबलों उसका
बांधनेहारा जीता है तबलों नियम कभी काम नहीं

१८ आता है । इसलिये वह पहिला नियम भी लोहू
१९ बिना नहीं स्थापन किया गया है । क्योंकि जब मूसा
व्यवस्थाके अनुसार हर एक आज्ञा सब लोगोंसे कह
चुका तब उसने जल और लाल ऊन और एसोबके
संग बछड़ों और बकरोंका लोहू लेके पुस्तकहीपर
२० और सब लोगोंपर भी छिड़का . और कहा यह उस
नियमका लोहू है जिसे ईश्वरने तुम्हारे विषयमें आज्ञा
२१ करके ठहराया है। और उसने तंबूपर भी और
सेवाकी सब सामग्रीपर उसी रीतिसे लोहू छिड़का ।
२२ और व्यवस्थाके अनुसार प्राय सब बस्तु लोहूके द्वारा
शुद्ध किई जाती हैं और बिना लोहू बहाये पापमोचन
नहीं होता है ।

२३ सो अवश्य था कि स्वर्गमेंकी वस्तुओंके प्रतिरूप
इन्हींसे शुद्ध किये जायें परन्तु स्वर्गमेंकी बस्तु आपही
२४ इन्हींसे उत्तम बलिदानोंसे शुद्ध किई जायें। क्योंकि ख्रीष्टने
हाथके बनाये हुए पवित्र स्थानमें जो सच्चेका दृष्टान्त है
प्रवेश नहीं किया परन्तु स्वर्गहीमें प्रवेश किया कि हमारे
२५ लिये अब ईश्वरके सन्मुख दिखाई देवे . पर इसलिये
नहीं कि जैसा महायाजक बरस बरस दूसरेका लोहू
लिये हुए पवित्र स्थानमें प्रवेश करता है तैसा वह
२६ अपनेको बारबार चढ़ावे . नहीं तो जगतकी उत्पत्तिसे
लेके उसको बहुत बेर दुःख भोगना पड़ता . परन्तु अब
जगतके अन्तमें वह एक बेर अपनेही बलिदानके द्वारा
२७ पापको दूर करनेके लिये प्रगट हुआ है । और जैसे
मनुष्योंके लिये एक बेर मरना और उसके पीछे बिचार

ठहराया हुआ है . वैसेही खीष्ट बहुतोंके पापोंको उठा २८
लेनेके लिये एक बेर चढ़ाया गया और जो लोग
उसकी बाट जोहते हैं उनको त्राणके लिये दूसरी बेर
बिना पापसे दिखाई देगा ।

१० दसवां पर्ब्ब ।

१ योशुहीका प्रायश्चित्त सुफल है धर्म्मपुस्तकसे इस बातके अनेक प्रमाण । १९ इन बातोंके कारण स्थिरताका उपदेश । २६ पतित होनेका भयंकर फल । ३२ इब्रियोंको ढाढ़स देना ।

ब्यवस्थामें तो होनेहार उत्तम विषयोंकी परछाईं १
मात्र है पर उन विषयोंका स्वरूप नहीं इसलिये वह
बरस बरस एकही प्रकारके बलिदानोंके सदा चढ़ाये
जानेसे कभी उन्हें जो निकट आते हैं सिद्ध नहीं कर
सकती है । नहीं तो क्या उन्होंका चढ़ाया जाना बन्द २
न हो जाता इस कारण कि सेवा करनेहारोंको जो एक
बेर शुद्ध किये गये थे फिर पापी होनेका कुछ बोध न
रहता । पर इन्होंमें बरस बरस पापोंका स्मरण हुआ ३
करता है । क्योंकि अन्होना है कि बैलों और बकरोंका ४
लोहू पापोंको दूर करे । इस कारण खीष्ट जगतमें आते ५
हुए कहता है तूने बलिदान और चढ़ावेको न चाहा
परन्तु मेरे लिये देह सिद्ध किया । तू होमोंसे और पाप ६
निमित्तके बलियोंसे प्रसन्न न हुआ । तब मैंने कहा देख ७
मैं आता हूं धर्म्मपुस्तकमें मेरे विषयमें लिखा भी है
जिस्तें हे ईश्वर तेरी इच्छा पूरी करूं । ऊपर उसने ८
कहा है बलिदान और चढ़ावेको और होमों और पाप
निमित्तके बलियोंको तूने न चाहा और न उनसे प्रसन्न
हुआ अर्थात उनसे जो ब्यवस्थाके अनुसार चढ़ाये जाते

९ हैं। तब कहा है देख मैं आता हूं जिस्तें हे ईश्वर तेरी
इच्छा पूरी करूं . वह पहिलेको उठा देता है इसलिये
१० कि दूसरेको स्थापन करे। उसी इच्छाके अनुसार हम
लोग यीशु ख्रीष्टके देहके एकही बेर चढ़ाये जानेके
द्वारा पवित्र किये गये हैं।
११ और हर एक याजक खड़ा होके प्रतिदिन सेवकाई
करता है और एकही प्रकारके बलिदानोंको जो पापोंको
१२ कभी मिटा नहीं सकते हैं बारंबार चढ़ाता है। परन्तु
वह तो पापोंके लिये एकही बलिदान चढ़ाके ईश्वरके
१३ दहिने हाथ सदा बैठ गया . और अबसे जबलों उसके
शत्रु उसके चरणोंकी पीढ़ी न बनाये जायें तबलों
१४ बाट जोहता रहता है। क्योंकि एकही चढ़ावेसे
उसने उन्हें जो पवित्र किये जाते हैं सदा सिद्ध किया
है।
१५ और पवित्र आत्मा भी हमें साक्षी देता है क्योंकि
१६ उसने पहिले कहा था . यही नियम है जो मैं उन
दिनोंके पीछे उनके संग बांधूंगा परमेश्वर कहता है मैं
अपनी व्यवस्थाको उनके हृदयमें डालूंगा और उसे
१७ उनके मनमें लिखूंगा . [तब पीछे कहा] मैं उनके
पापोंको और उनके कुकर्म्मोंको फिर कभी स्मरण न
१८ करूंगा। पर जहां इनका मोचन हुआ तहां फिर
पापोंके लिये चढ़ावा न रहा।
१९ सो हे भाइयो जब कि यीशुके लोहूके द्वारासे हमें
२० पवित्र स्थानमें प्रवेश करनेको साहस मिलता है . और
हमारे लिये परदेमेंसे अर्थात उसके शरीरमेंसे नया और

जीवता मार्ग है जो उसने हमारे लिये स्थापन किया.
और हमारा महायाजक है जो ईश्वरके घरका अध्यक्ष २१
है . तो आओ बुरे मनसे शुद्ध होनेको हृदयपर छिड़- २२
काव किये हुए और देह शुद्ध जलसे नहलाये हुए हम
लोग बिश्वासके निश्चयके साथ सच्चे मनसे निकट
आवें . और आशाके अंगीकारको दृढ़ कर थांभ रखें २३
क्योंकि जिसने प्रतिज्ञा किई है वह बिश्वासयोग्य है.
और प्रेम औ सुकर्म्मोंमें उस्कानेके लिये एक दूसरेकी २४
चिन्ता किया करें . और जैसे कितनोंकी रीति है तैसे २५
आपसमें एकट्ठे होना न छोड़ें परन्तु एक दूसरेको
समझावें . और जितने भर उस दिनको निकट आते
देखो उतने अधिक करके यह किया करो ।

क्योंकि जो हम सत्यका ज्ञान प्राप्त करनेके पीछे २६
जान बूझके पाप किया करें तो पापोंके लिये फिर कोई
बलिदान नहीं . परन्तु दंडका भयंकर बाट जोहना २७
और बिरोधियोंको भक्षण करनेवाली आगका ज्वलन
रह गया । जिसने मूसाकी व्यवस्थाको तुच्छ जाना है २८
कोई हो वह दो अथवा तीन साक्षियोंकी साक्षीपर
दयासे बर्ज्जित होके मर जाता है । तो क्या समझते २९
हो कितने और भी भारी दंडके योग्य वह गिना जायगा
जिसने ईश्वरके पुत्रको पांवों तले रौंदा है और नियम-
के लोहूको जिससे वह पवित्र किया गया था अपवित्र
जाना है और अनुग्रहके आत्माका अपमान किया
है । क्योंकि हम उसे जानते हैं जिसने कहा कि पलटा ३०
लेना मेरा काम है परमेश्वर कहता है मैं प्रतिफल देऊंगा

और फिर कि परमेश्वर अपने लोगोंका बिचार
३१ करेगा । जीवते ईश्वरके हाथोंमें पड़ना भयंकर बात है।
३२ परन्तु अगले दिनोंको स्मरण करो जिनमें तुम
३३ ज्योति पाके दुःखोंके बड़े युद्धमें स्थिर रहे . कुछ यह
कि निन्दाओं और क्लेशोंसे तुम लीलाके ऐसे बनाये
जाते थे कुछ यह कि जिनके इस रीतिसे दिन कटते थे
३४ उनके संग तुम भागी हुए । क्योंकि तुम मेरे बंधनोंके
दुःखमें भी दुःखी हुए और यह जानके कि स्वर्गमें
हमारे लिये श्रेष्ठ और अक्षय सम्पत्ति है तुमने अपनी
३५ सम्पत्तिका लूटा जाना आनन्दसे ग्रहण किया । सो
अपने साहसको जिसका बड़ा प्रतिफल होता है मत
३६ त्याग देओ । क्योंकि तुम्हें स्थिरताका प्रयोजन है इस-
लिये कि ईश्वरकी इच्छा पूरी करके तुम प्रतिज्ञाका
३७ फल पावो । क्योंकि थोड़ी ऐसी बेरमें वह जो आने-
३८ वाला है आवेगा और बिलम्ब न करेगा। बिश्वाससे
धर्म्मी जन जीयेगा परन्तु जो वह हट जाय तो मेरा
३९ मन उससे प्रसन्न नहीं । पर हम लोग हट जानेवाले
नहीं हैं जिससे बिनाश होता परन्तु बिश्वास करने-
हारे हैं जिससे आत्माकी रक्षा होगी ।

११ एग्यारहवां पर्व्व ।

१ विश्वासका लक्षण और हाबिल हनोक नूह इब्राहीम आदि बिश्वासियोंके
वृत्तान्तसे उसके अनेक उदाहरण ।

१ बिश्वास जिन बातोंकी आशा रखी जाती उन
बातोंका निश्चय और अनदेखी बातोंका प्रमाण है।
२ इसीके विषयमें प्राचीन लोग सुख्यात हुए। बिश्वास-
३

से हम बूझते हैं कि सारा जगत ईश्वरके बचनसे रचा
गया यहांलों कि जो देखा जाता है सो उससे जो दिखाई
देता है नहीं बनाया गया है। बिश्वाससे हाबिलने ४
ईश्वरके आगे काइनसे बड़ा बलिदान चढ़ाया और
उसके द्वारा उसपर साक्षी दिई गई कि धर्म्मी जन है
क्योंकि ईश्वरने आपही उसके चढ़ावोंपर साक्षी दिई
और उसीके द्वारा वह मूएपर भी अबलों बोलता है।
बिश्वाससे हनोक उठा लिया गया कि मृत्युको न देखे ५
और नहीं मिला क्योंकि ईश्वरने उसको उठा लिया
था क्योंकि उसपर साक्षी दिई गई है कि उठा लिये
जानेके पहिले उसने ईश्वरको प्रसन्न किया था। परन्तु ६
बिश्वास बिना उसे प्रसन्न करना असाध्य है क्योंकि
अवश्य है कि जो ईश्वरके पास आवे सो बिश्वास करे
कि वह है और कि वह उन्हें जो उसे ढूंढ़ लेते हैं
प्रतिफल देनेहारा है। बिश्वाससे नूह जो बातें उस ७
समयमें देख नहीं पड़ती थीं उनके विषयमें ईश्वरसे
चिताया जाके डर गया और अपने घरानेकी रक्षाके
लिये जहाज बनाया और उसके द्वारासे उसने संसार-
को दोषी ठहराया और उस धर्म्मका अधिकारी हुआ
जो बिश्वाससे होता है।

बिश्वाससे इब्राहीम जब बुलाया गया तब आज्ञा- ८
कारी होके निकला कि उस स्थानको जाय जिसे वह
अधिकारके लिये पानेपर था और मैं किधर जाता हूं
यह न जानके निकल चला। बिश्वाससे वह प्रतिज्ञाके ९
देशमें जैसे पराये देशमें बिदेशी रहा और इसहाक

श्रीर याकूबके साथ जो उसी प्रतिज्ञाके संगी अधिकारी
१० थे तम्बूओंमें बास किया। क्योंकि वह उस नगरकी
बाट जोहता था जिसकी नेवें हैं जिसका रचनेहारा
११ श्रीर बनानेहारा ईश्वर है। बिश्वाससे सारःने भी
गर्भ धारण करनेकी शक्ति पाई श्रीर बयसके व्यतीत
होनेपर भी बालक जनी क्योंकि उसने उसको जिसने
१२ प्रतिज्ञा किई थी बिश्वासयोग्य समझा। इस कारण
एकही जनसे जो मृतकसा भी हो गया था लोग इतने
जन्मे जितने आकाशके तारे हैं श्रीर जैसे समुद्रके तीर-
१३ परका बालू जो अगणित है। ये सब बिश्वासहीमें मरे
कि उन्होंने प्रतिज्ञाओंका फल नहीं पाया परन्तु उसे
दूरसे देखा श्रीर निश्चय कर लिया श्रीर प्रणाम किया
श्रीर मान लिया कि हम पृथिवीपर ऊपरी श्रीर पर-
१४ देशी हैं। क्योंकि जो लोग ऐसी बातें कहते हैं सो प्रगट
१५ करते हैं कि देश ढूंढ़ते हैं। श्रीर जो वे उस देशको
जिससे निकल आये थे स्मरण करते तो उन्हें लौट
१६ जानेका अवसर मिलता। पर अब वे श्रीर उत्तम
अर्थात स्वर्गीय देश पहुंचनेकी चेष्टा करते हैं इसलिये
ईश्वर उनका ईश्वर कहलानेमें उनसे लजाता नहीं
क्योंकि उसने उनके लिये नगर तैयार किया है।
१७ बिश्वाससे इब्राहीमने जब उसकी परीक्षा लिई गई तब
१८ इसहाकको चढ़ाया। जिसने प्रतिज्ञाओंको पाया था
श्रीर जिसको कहा गया था कि इसहाकसे जो हो सो
तेरा बंश कहावेगा सोई अपने एकलौतेको चढ़ाता था।
१९ क्योंकि उसने बिचार किया कि ईश्वर मृतकोंमेंसे भी

उठा सकता है जिनमेंसे उसने दृष्टान्तमें उसे पाया भी।
बिश्वाससे इसहाकने याकूब और एसौको आनेवाली 20
बातोंके विषयमें आशीस दिई। बिश्वाससे याकूबने २१
जब वह मरनेपर था यूसफके दोनों पुत्रोंमेंसे एक एकको
आशीस दिई और अपनी लाठीके सिरेपर उठंगके
प्रणाम किया। बिश्वाससे यूसफने जब वह मरनेपर २२
था इस्रायेलके सन्तानोंकी यात्राका चर्चा किया और
अपनी हड्डियोंके विषयमें आज्ञा किई।

बिश्वाससे मूसा जब उत्पन्न हुआ तब उसके माता २३
पिताने उसे तीन मास छिपा रखा क्योंकि उन्होंने
देखा कि बालक सुन्दर है और वे राजाकी आज्ञासे
न डरे। बिश्वाससे मूसा जब सयाना हुआ तब फिर- २४
ऊनकी बेटीका पुत्र कहलानेसे मुकर गया। क्योंकि उसने २५
पापका अनित्य सुखभोग भोगना नहीं परन्तु ईश्वरके
लोगोंके संग दुःखित होना चुन लिया। और उसने २६
खीष्टके कारण निन्दित होना मिसरमेंकी सम्पत्तिसे
बड़ा धन समझा क्योंकि उसकी दृष्टि प्रतिफलकी ओर
लगी रही। बिश्वाससे वह मिसरको छोड़ गया और २७
राजाके क्रोधसे नहीं डरा क्योंकि वह जैसा अदृश्यपर
दृष्टि करता हुआ दृढ़ रहा। बिश्वाससे उसने निस्तार २८
पर्ब्बको और लोहू छिड़कनेकी विधिको माना ऐसा
न हो कि पहिलौठोंका नाश करनेहारा इस्रायेली
लोगोंको छूवे। बिश्वाससे वे लाल समुद्रके पार जैसे २९
सूखी भूमिपर होके उतरे जिसके पार उतरनेका यत्न
करनेमें मिसरी लोग डूब गये। बिश्वाससे यिरीहोकी ३०

भीतें जब सात दिन घेरी गईं थीं तब गिर पड़ीं ।
३१ बिश्वाससे राहब बेश्या अबिश्वासियोंके संग नष्ट न
हुई इसलिये कि भेदियोंको कुशलसे ग्रहण किया ।
३२ और मैं आगे क्या कहूं . क्योंकि गिदियोनका और
बाराक औ शमशोनका और यिप्ताहका और दाऊद
औ शमुएलका और भविष्यद्वक्ताओंका बर्णन करनेको
३३ मुझे समय न मिलेगा । इन्होंने बिश्वासके द्वारा
राज्योंको जीत लिया धर्म्मका कार्य्य किया प्रतिज्ञाओंको
३४ प्राप्त किया सिंहोंके मुंह बन्द किये . अग्निकी शक्ति
निवृत्त किई खड्गकी धारसे बच निकले दुर्ब्बलतासे
बलवन्त किये गये युद्धमें प्रबल हो गये और परायोंकी
३५ सेनाओंको हटाया । स्त्रियोंने पुनरुत्थानके द्वारासे
अपने मृतकोंको फिर पाया पर और लोग मार खाते
खाते मर गये और उद्धार ग्रहण न किया इसलिये
३६ कि और उत्तम पुनरुत्थानको पहुंचें । दूसरोंको ठट्ठों
और कोड़ोंकी हां और भी बन्धनोंकी और बन्दीगृहकी
३७ परीक्षा हुई । वे पत्थरवाह किये गये वे आरेसे चीरे
गये उनकी परीक्षा किई गई वे खड्गसे मारे गये वे कंगाल
औ क्लेशित औ दुःखी हो भेड़ोंकी और बकरियोंकी खालें
३८ ओढ़े हुए इधर उधर फिरते रहे . और जंगलों औ
पर्ब्बतों औ गुफाओंमें औ पृथिवीके दरारोंमें भरमते फिरे.
३९ संसार उनके योग्य न था । और इन सभोंने बिश्वासके
४० द्वारा सुख्यात होके प्रतिज्ञाका फल नहीं पाया । क्योंकि
ईश्वरने हमारे लिये किसी उत्तम बातकी तैयारी किई
इसलिये कि वे हमारे बिना सिद्ध न होवें ।

१२ बारहवां पर्व्व।

१ उक्त विश्वासियोंके कारण और विश्वासके कर्त्ता यीशुके कारण धर्म्मकी दौड़ दौड़नेका उपदेश। ४ ताड़नाके विषयमें उपदेश और शांति। १२ दृढ़ता और पवित्रताका उपदेश। १८ सीनई और सियोन पर्व्वतोंके दृष्टान्तसे नये नियमकी श्रेष्ठताका बर्णन। २५ ईश्वरके बचनसे अचेत होनेके विषयमें चितावनी।

इस कारण हम लोग भी जब कि साक्षियोंके ऐसे १
बड़े मेघसे घेरे हुए हैं हर एक बोझको और पापको
जो हमें सहजही उलझाता है दूर करके वह दौड़ जो
हमारे आगे धरी है धीरजसे दौड़ें . और विश्वासके २
कर्त्ता और सिद्ध करनेहारेकी अर्थात यीशुकी ओर ताकें
जिसने उस आनन्दके लिये जो उसके आगे धरा था
क्रूशको सह लिया और लज्जाको तुच्छ जाना और
ईश्वरके सिंहासनके दाहिने हाथ जा बैठा है। उसको ३
सोचो जिसने अपने बिरुद्ध पापियोंका इतना बिबाद
सह लिया जिस्तें तुम थक न जावो और अपने अपने
मनका साहस न छोड़ो।

अबलों तुम्होंने पापसे लड़ते हुए लोहू बहानेतक ४
साम्हना नहीं किया है। और तुम उस उपदेशको भूल ५
गये हो जो तुमसे जैसे पुत्रोंसे बातें करता है कि हे
मेरे पुत्र परमेश्वरकी ताड़नाको हलकी बात मत जान
और जब वह तुझे डांटे तब साहस मत छोड़। क्योंकि ६
परमेश्वर जिसे प्यार करता है उसकी ताड़ना करता
है और हर एक पुत्रको जिसे ग्रहण करता है कोड़े
मारता है। जो तुम ताड़ना सह लेओ तो ईश्वर ७
तुमसे जैसे पुत्रोंसे व्यवहार करता है क्योंकि कौनसा
पुत्र है जिसकी ताड़ना पिता नहीं करता है। परन्तु ८

यदि ताड़ना जिसके भागी सब कोई हुए हैं तुमपर
नहीं होती तो तुम पुत्र नहीं परन्तु व्यभिचारके सन्तान
९ हो। फिर हमारे देहके पिता भी हमारी ताड़ना किया
करते थे और हम उनका आदर करते थे क्या हम
बहुत अधिक करके आत्माओंके पिताके अधीन न
१० होंगे और जीयेंगे। क्योंकि वे तो थोड़े दिनके लिये
जैसे अच्छा जानते थे तैसे ताड़ना करते थे परन्तु यह
तो हमारे लाभके निमित्त करता है इसलिये कि हम
११ उसकी पवित्रताके भागी होवें। कोई ताड़ना वर्त्तमान
समयमें आनन्दकी बात नहीं देख पड़ती है परन्तु
शोककी बात तौभी पीछे वह उन्हें जो उसके द्वारा
साधे गये हैं धर्म्मका शांतिदाई फल देती है।
१२ इसलिये अबल हाथोंको और निर्ब्बल घुटनोंको
१३ दृढ़ करो। और अपने पांवोंके लिये सीधे मार्ग बना-
ओ कि जो लंगड़ा है सो बहकाया न जाय परन्तु और
१४ भी चंगा किया जाय। सभोंके संग मिलापकी चेष्टा
करो और पवित्रताकी जिस बिना कोई प्रभुको न
१५ देखेगा। और देख लेओ ऐसा न हो कि कोई ईश्वरके
अनुग्रहसे रहित होय अथवा कोई कड़वाहटकी जड़
उगे और क्लेश देवे और उसके द्वारासे बहुत लोग
१६ अशुद्ध होवें। ऐसा न हो कि कोई जन व्यभिचारी वा
एसौकी नाईं अपवित्र होय जिसने एक बेरके भोजनपर
१७ अपने पहिलौठेपनको बेच डाला। क्योंकि तुम जानते
हो कि जब वह पीछे आशीस पानेकी इच्छा करता
भी था तब अयोग्य गिना गया क्योंकि यद्यपि उसने

रो रोके उसे ढूंढ़ा तौभी पश्चात्तापकी जगह न पाई।

तुम तो उस पर्ब्बतके पास नहीं आये हो जो छूआ १८
जाता और आगसे जल उठा और न घोर मेघ और
अंधकार और आंधीके पास . और न तुरहीके ध्वनि १९
और बातोंके शब्दके पास जिसके सुननेहारोंने बिन्ती
किई कि और कुछ भी बात हमसे न किई जाय।
क्योंकि वे उस आज्ञाको नहीं सह सकते थे कि यदि २०
पशु भी पर्ब्बतको छूवे तो पत्थरवाह किया जायगा
अथवा बर्छीसे बेधा जायगा। और वह दर्शन ऐसा २१
भयंकर था कि मूसा बोला मैं बहुत भयमान औ कम्पित
हूं। परन्तु तुम सियोन पर्ब्बतके पास और जीवते ईश्वरके २२
नगर स्वर्गीय यिरूशलीमके पास आये हो . और २३
स्वर्गदूतोंकी सभाके पास जो सहस्रों हैं और पहिलौठों-
की मंडलीके पास जिनके नाम स्वर्गमें लिखे हुए हैं
और ईश्वरके पास जो सभोंका विचारकर्त्ता है और
सिद्ध किये हुए धर्म्मियोंके आत्माओंके पास . और २४
नये नियमके मध्यस्थ यीशुके पास और छिड़कावके
लोहूके पास जो हाबिलसे अच्छी बातें बोलता है।

देखो बोलनेहारेसे मुंह मत फेरो क्योंकि यदि वे २५
लोग जब पृथिवीपर आज्ञा देनेहारेसे मुंह फेरा तब नहीं
बचे तो बहुत अधिक करके हम लोग जो स्वर्गसे बोलने-
हारेसे फिर जावें तो नहीं बचेंगे। उसके शब्दने तब २६
पृथिवीको डुलाया परन्तु अब उसने प्रतिज्ञा किई है कि
फिर एक बेर मैं केवल पृथिवीको नहीं परन्तु आकाश-
को भी डुलाऊंगा। यह बात कि फिर एक बेर यही २७

प्रगट करती है कि जो वस्तु डुलाई जाती हैं सो
सृजी हुई वस्तुओंकी नाईं बदली जायेंगीं इसलिये कि
२८ जो वस्तु डुलाई नहीं जातीं सो बनी रहें। इस कारण
हम लोग जो न डोलनेवाला राज्य पाते हैं अनुग्रह
धारण करें जिसके द्वारा हम सन्मान और भक्ति सहित
२९ ईश्वरकी सेवा उसकी प्रसन्नताके योग्य करें। क्योंकि
हमारा ईश्वर भस्म करनेहारी अग्नि है।

१३ तेरहवां पर्ब्ब ।

१ अनेक बातोंका उपदेश और प्रभु यीशुके दृष्टान्तसे उसको दृढ़ करना। २० प्रार्थना औ नमस्कार सहित पत्रीकी समाप्ति।

१, २ भ्रातृीय प्रेम बना रहे। अतिथिसेवाको मत भूल
जाओ क्योंकि इसके द्वारा कितनोंने बिन जाने स्वर्ग-
३ दूतोंकी पहुनई किई है। बन्धुओंको जैसे कि उनके
संग बंधे हुए होते और दुःखित लोगोंको जैसे कि
४ आप भी शरीरमें रहते हो स्मरण करो। विवाह
सभोंमें आदरयोग्य और बिछौना शुचि रहे परन्तु
ईश्वर व्यभिचारियों और परस्त्रीगामियोंका बिचार
५ करेगा। तुम्हारी रीति व्यवहार लोभ रहित होवे और
जो तुम्हारे पास है उससे सन्तुष्ट रहो क्योंकि उसीने
कहा है मैं तुझे कभी नहीं छोड़ूंगा और न कभी तुझे
६ त्यागूंगा. यहांलों कि हम ढाढ़स बांधके कहते हैं कि
परमेश्वर मेरा सहायक है और मैं नहीं डरूंगा. मनुष्य
७ मेरा क्या करेगा। अपने प्रधानोंको जिन्होंने ईश्वरका
बचन तुमसे कहा है स्मरण करो और ध्यानसे उनकी
चाल चलनका अन्त देखके उनके बिश्वासके अनुगा-

मो होओ । यीशु खीष्ट कल और आज और सर्ब्बदा ८
एकसा है । नाना प्रकारकी और ऊपरी शिक्षाओंसे ९
मत भरमाये जाओ क्योंकि अच्छा है कि मन अनुग्रहसे
दृढ़ किया जाय खानेकी बस्तुओंसे नहीं जिनसे उन
लोगोंको जो उनकी विधिपर चले कुछ लाभ नहीं
हुआ । हमारी एक बेदी है जिससे खानेका अधिकार १०
उन लोगोंको नहीं है जो तम्बूमेंकी सेवा करते हैं ।
क्योंकि जिन पशुओंका लोहू महायाजक पापके निमित्त ११
पवित्र स्थानमें ले जाता है उनके देह छावनीके बाहर
जलाये जाते हैं । इस कारण यीशुने भी इसलिये कि १२
लोगोंको अपनेही लोहूके द्वारा पवित्र करे फाटकके
बाहर दुःख भोगा । सो हम लोग उसकी निन्दा सहते १३
हुए छावनीके बाहर उस पास निकल जावें । क्योंकि १४
यहां हमारा कोई ठहरनेहारा नगर नहीं है परन्तु
हम उस होनेहार नगरको ढूंढ़ते हैं । इसलिये यीशुके १५
द्वारा हम सदा ईश्वरके आगे स्तुतिका बलिदान
अर्थात उसके नामको धन्य माननेहारे होंठोंका फल
चढ़ाया करें । परन्तु भलाई और सहायता करनेको १६
मत भूल जाओ क्योंकि ईश्वर ऐसे बलिदानोंसे प्रसन्न
होता है । अपने प्रधानोंको मानो और उनके अधीन १७
होओ क्योंकि वे जैसे कि लेखा देंगे तैसे तुम्हारे प्रा-
णोंके लिये चौकी देते हैं इसलिये कि वे इसको आ-
नन्दसे करें और कहर कहरके नहीं क्योंकि यह तुम्हारे
लिये निष्फल है । हमारे लिये प्रार्थना करो क्योंकि हम १८
भरोसा रखते हैं कि हमारा अच्छा बिबेक है और हम

१९ लोग सभोंमें अच्छी चाल चला चाहते हैं। और मैं
बहुत अधिक बिन्ती करता हूं कि यही करो इसलिये
कि मैं और भी शीघ्र तुम्हें फेर दिया जाऊं।
२० शांतिका ईश्वर जिसने हमारे प्रभु यीशुको जो
सनातन नियमका लोहू लिये हुए भेड़ोंका बड़ा गड़ेरिया
२१ है मृतकोंमेंसे उठाया . तुम्हें हर एक अच्छे कर्म्ममें सिद्ध
करे कि उसकी इच्छापर चलो और जो उसको भावता
है उसे तुम्होंमें यीशु खीष्टके द्वारा उत्पन्न करे जिसका
२२ गुणानुबाद सदा सर्व्वदा होवे . आमीन। और हे
भाइयो मैं तुमसे बिन्ती करता हूं उपदेशका बचन सह
लेओ क्योंकि मैंने संक्षेपसे तुम्हारे पास लिखा है।
२३ यह जानो कि भाई तिमोथिय छूट गया है. जो वह
२४ शीघ्र आवे तो उसके संग मैं तुम्हें देखूंगा। अपने सब
प्रधानोंको और सब पवित्र लोगोंको नमस्कार करो.
इतालियाके जो लोग हैं उनका तुमसे नमस्कार।
२५ अनुग्रह तुम सभोंके संग होवे। आमीन॥

याकूब प्रेरितकी पत्री।

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ पत्रीका आभाष । २ परीक्षाके मूल औ फलका निर्णय और प्रार्थनाकी विधि और चंचल धनका बर्णन । १६ ईश्वरका दातृत्व और उसके बचनपर स्थिरतासे चलनेका उपदेश ।

याकूब जो ईश्वरका और प्रभु यीशु ख्रीष्टका दास १
है बारहों कुलोंको जो तितर बितर रहते हैं . आनन्द
रहो ।
हे मेरे भाइयो जब तुम नाना प्रकारकी परीक्षा- २
ओंमें पड़ो उसे सर्ब्ब आनन्द समझो . क्योंकि जानते ३
हो कि तुम्हारे बिश्वासके परखे जानेसे धीरज उत्पन्न
होता है । परन्तु धीरजका काम सिद्ध होवे जिस्तें तुम ४
सिद्ध और पूरे होओ और किसी बातमें तुम्हारी घटी
न होय । परन्तु यदि तुममेंसे किसीको बुद्धिकी घटी ५
होय तो ईश्वरसे मांगे जो सभोंको उदारतासे देता
है और उलहना नहीं देता और उसको दिई जायगी।
परन्तु बिश्वाससे मांगे और कुछ सन्देह न रखे क्योंकि ६
जो सन्देह रखता है सो समुद्रकी लहरके समान है
जो बयारसे चलाई जाती और डुलाई जाती है । वह ७
मनुष्य न समझे कि मैं प्रभुसे कुछ पाऊंगा । दुचित्ता ८
मनुष्य अपने सब मार्गोंमें चंचल है । दीन भाई ९
अपने ऊंचे पदपर बड़ाई करे । परन्तु धनवान अपने १०
नीचे पदपर बड़ाई करता है क्योंकि वह घासके फूलकी
नाईं जाता रहेगा । क्योंकि सूर्य्य ज्योंही घाम सहित ११

उदय होता त्यों घासको सुखाता है और उसका फूल
झड़ जाता है और उसके रूपकी शोभा नष्ट होती है.
१२ वैसेही धनवान भी अपने पथहीमें मुरझायगा । जो
मनुष्य परीक्षामें स्थिर रहता है सो धन्य है क्योंकि
वह खरा निकलके जीवनका मुकुट पावेगा जिसकी
प्रतिज्ञा प्रभुने उन्हें जो उसको प्यार करते हैं दिई है।
१३ कोई जन परीक्षित होनेपर यह न कहे कि ईश्वरसे
मेरी परीक्षा किई जाती है क्योंकि ईश्वर बुरी बातोंसे
परीक्षित होता नहीं और वह किसीकी वैसी परीक्षा
१४ नहीं करता है। परन्तु हर कोई जब अपनीही
अभिलाषासे खींचा और फुसलाया जाता है तब
१५ परीक्षामें पड़ता है। फिर अभिलाषाको जब गर्भ रहता
है तब वह कुक्रिया जनती है और कुक्रिया जब समाप्त
होती तब मृत्युको उत्पन्न करती है।
१६
१७ हे मेरे प्यारे भाइयो धोखा मत खाओ। हर एक
अच्छा दानकर्म्म और हर एक सिद्ध दान ऊपरसे उतर-
ता है अर्थात ज्योतियोंके पितासे जिसमें न अदल
१८ बदल न फेर फारकी छाया है। अपनीही इच्छासे उसने
हमें सत्यताके बचनके द्वारा उत्पन्न किया इसलिये कि
हम उसकी सृजी हुई वस्तुओंके पहिले फलके ऐसे होवें।
१९ सो हे मेरे प्यारे भाइयो हर एक मनुष्य सुननेके लिये
शीघ्रता करे पर बोलनेमें बिलम्ब करे औ क्रोधमें
२० बिलम्ब करे। क्योंकि मनुष्यका क्रोध ईश्वरके धर्म्मको
२१ नहीं निबाहता है। इस कारण सब अशुद्धताको और
बैरभावकी अधिकाईको दूर करके नम्रतासे उस रोपे हुए

बचनको ग्रहण करो जो तुम्हारे प्राणोंको बचा सकता
है । परन्तु बचनपर चलनेहारे होओ और केवल २२
सुननेहारे नहीं जो अपनेको धोखा देओ । क्योंकि यदि २३
कोई बचनका सुननेहारा है और उसपर चलनेहारा
नहीं तो वह एक मनुष्यके समान है जो अपना स्वा-
भाविक मुंह दर्पणमें देखता है । क्योंकि वह अपनेको २४
ज्योंही देखता त्यों चला जाता और तुरन्त भूल जाता
है कि मैं कैसा था । परन्तु जो जन सिद्ध व्यवस्थाको २५
जो निर्बन्धताकी है झुक झुकके देखता है और ठहर
जाता है वह जो ऐसा सुननेहारा नहीं कि भूल जाय
परन्तु कार्य्य करनेहारा है तो वही अपनी करणीमें
धन्य होगा । यदि तुम्होंमें कोई जो अपनी जीभपर २६
बाग नहीं लगाता है परन्तु अपने मनको धोखा देता
है अपनेको धर्म्माचारी समझता है तो इसका धर्म्मा-
चार व्यर्थ है । ईश्वर पिताके यहां शुद्ध और निर्मल २७
धर्म्माचार यह है अर्थात माता पिताहीन लड़कोंके
और बिधवाओंके क्लेशमें उनकी सुध लेना और अपने
तईं संसारसे निष्कलंक रखना ।

२ दूसरा पर्व्व ।

१ पक्षपातका निषेध और व्यवस्थाके पालन और लंघनका भेद । १४ सुकर्म्मोंसे विश्वासकी सच्चाईका प्रमाण होना और इब्राहीम और राहबके बिश्वासका दृष्टान्त ।

हे मेरे भाइयो हमारे तेजोमय प्रभु यीशु ख्रीष्टके बि- १
श्वासमें पक्षपात मत किया करो । क्योंकि यदि एक पुरुष २
सोनेके छल्ले और भड़कीला बस्त्र पहिने हुए तुम्हारी
सभामें आवे और एक कंगाल मनुष्य भी मैला बस्त्र

३ पहिने हुए आवे . और तुम उस भड़कीला बस्त्र पहिने
हुएपर दृष्टि करके उससे कहो आप यहां अच्छी रीतिसे
बैठिये और उस कंगालसे कहो तू वहां खड़ा रह अथवा
४ यहां मेरे पांवोंकी पीढ़ीके नीचे बैठ . तो क्या तुमने
अपने मनमें भेद न माना और कुबिचारसे न्याय करने-
५ हारे न हुए । हे मेरे प्यारे भाइयो सुनो क्या ईश्वरने
इस जगतके कंगालोंको नहीं चुना है कि बिश्वासमें
धनी और उस राज्यके अधिकारी होवें जिसकी प्रतिज्ञा
६ उसने उन्हें जो उसको प्यार करते हैं दिई है । परन्तु
तुमने उस कंगालका अपमान किया . क्या धनी लोग
तुम्हें नहीं पेरते हैं और क्या वेही तुम्हें बिचार आ-
७ सनोंके आगे नहीं खींचते हैं । जिस नामसे तुम पुकारे
जाते हो क्या वे उस उत्तम नामकी निन्दा नहीं करते
८ हैं । जो तुम धर्म्मपुस्तकके इस वचनके अनुसार कि
तू अपने पड़ोसीको अपने समान प्रेम कर सचमुच
९ राजब्यवस्था पूरी करते हो तो अच्छा करते हो। परन्तु
जो तुम पक्षपात करते हो तो पापकर्म्म करते हो और
१० ब्यवस्थासे अपराधी ठहराये जाते हो । क्योंकि जो
कोई सारी ब्यवस्थाको पालन करे पर एक बातमें चूके
११ वह सब बातोंके दंडके योग्य हो चुका । क्योंकि जिसने
कहा परस्त्रीगमन मत कर उसने यह भी कहा कि
नरहिंसा मत कर . सो जो तू परस्त्रीगमन न करे
परन्तु नरहिंसा करे तो ब्यवस्थाका अपराधी हो चुका।
१२ तुम ऐसे बोलो और ऐसा काम करो जैसा तुमको
चाहिये जिनका बिचार निर्बन्धताकी ब्यवस्थाके द्वारा

किया जायगा । क्योंकि जिसने दया न किई उसका १३
विचार विना दयाके किया जायगा और दया न्यायपर
जयजयकार करती है ।
हे मेरे भाइयो यदि कोई कहे मुझे बिश्वास है पर १४
कर्म्म उससे नहीं होवें तो क्या लाभ है . क्या उस
बिश्वाससे उसका त्राण हो सकता है । यदि कोई भाई १५
बहिन नंगे हों और उन्हें प्रतिदिनके भोजनकी घटी
होय . और तुममेंसे कोई उनसे कहे कुशलसे जाओ १६
तुम्हें जाड़ा न लगे तुम तृप्त रहो परन्तु तुम जो बस्तु
देहके लिये अवश्य हैं सो उनको न देओ तो क्या
लाभ है । वैसेही बिश्वास भी जो कर्म्म सहित न होवे १७
तो आपही मृतक है । बरन कोई कहेगा तुझे बिश्वास १८
है और मुझसे कर्म्म होते हैं तू अपने कर्म्म बिना
अपना बिश्वास मुझे दिखा और मैं अपना बिश्वास
अपने कर्म्मोंसे तुझे दिखाऊंगा । तू बिश्वास करता है १९
कि एक ईश्वर है . तू अच्छा करता है . भूत भी
बिश्वास करते और थरथराते हैं । पर हे निर्बुद्धि २०
मनुष्य क्या तू जानने चाहता है कि कर्म्म बिना बिश्वास
मृतक है । क्या हमारा पिता इब्राहीम जब उसने २१
अपने पुत्र इसहाकको बेदीपर चढ़ाया कर्म्मोंसे धर्म्मी
न ठहरा । तू देखता है कि बिश्वास उसके कर्म्मोंके २२
साथ कार्य्य करता था और कर्म्मोंसे बिश्वास सिद्ध
किया गया । और धर्म्मपुस्तकका यह बचन कि इब्रा- २३
हीमने ईश्वरका बिश्वास किया और यह उसके लिये
धर्म्म गिना गया पूरा हुआ और वह ईश्वरका मित्र

२४ कहलाया। सो तुम देखते हो कि मनुष्य केवल बिश्वास-
से नहीं परन्तु कर्म्मोंसे भी धर्म्मी ठहराया जाता है ।
२५ वैसेही राहब बेश्या भी जब उसने दूतोंकी पहुनई
किई ओर उन्हें दूसरे मार्गसे बिदा किया क्या कर्म्मोंसे
२६ धर्म्मी न ठहरी । क्योंकि जैसा देह आत्मा बिना
मृतक है वैसा बिश्वास भी कर्म्म बिना मृतक है ।

३ तीसरा पर्ब्ब ।

१ जीभके दोप ओर स्वतन्त्रताका वर्णन। १३ सच्चे ज्ञानका बखान।

१ हे मेरे भाइयो बहुतेरे उपदेशक मत बनो क्योंकि
२ जानते हो कि हम अधिक दंड पावेंगे। क्योंकि हम सब
बहुत बार चूकते हैं . यदि कोई बचनमें नहीं चूकता है
तो वही सिद्ध मनुष्य है जो सारे देहपर भी बाग लगा-
३ नेका सामर्थ्य रखता है। देखो घोड़ोंके मुंहमें हम लगाम
देते हैं इसलिये कि वे हमें मानें ओर हम उनका सारा
४ देह फेरते हैं । देखो जहाज भी जो इतने बड़े हैं ओर
प्रचंड बयारोंसे उड़ाये जाते हैं बहुत छोटी पतवारसे
जिधर कहीं मांझीका मन चाहता हो उधर फेरे जाते
५ हैं । वैसेही जीभ भी छोटा अंग है ओर बड़ी गलफटाकी
करती है . देखो थोड़ी आग कितने बड़े बनको फूंकती
६ है । ओर यह अधर्म्मका लोक अर्थात जीभ एक आग है .
हमारे अंगोंमें जीभ है जो सारे देहको कलंकी करने-
हारी ओर भवचक्रमें आग लगानेहारी ठहरती है ओर
७ उसमें आग लगानेहारा नरक है। क्योंकि बन पशुओं
ओ पंछियों ओर रेंगनेहारे जन्तुओं ओ जलचरोंकी
भी हर एक जाति मनुष्य जातिके बशमें किई जाती है

और किई गई है। परन्तु जीभको मनुष्योंमेंसे कोई बशमें ८
नहीं कर सकता है . वह निरंकुश दुष्ट है वह मारू
बिषसे भरी है । उससे हम ईश्वर पिताका धन्यबाद ९
करते हैं और उसीसे मनुष्योंको जो ईश्वरके समान बने
हैं स्राप देते हैं । एकही मुखसे धन्यवाद औ स्राप दोनों १०
निकलते हैं . हे मेरे भाइयो इन बातोंका ऐसा होना
उचित नहीं है । क्या सोतेके एकही मुंहसे मीठा और ११
तीता दोनों बहते हैं । क्या गूलरके वृक्षमें मेरे भाइयो १२
जलपाईके फल अथवा दाखकी लतामें गूलरके फल लग
सकते हैं . वैसेही किसी सोतेसे खारा और मीठा दोनों
प्रकारका जल नहीं निकल सकता है ।

तुम्होंमें ज्ञानवान और बूझनेहार कौन है . सो १३
अपनी अच्छी चाल चलनसे ज्ञानकी नम्रता सहित
अपने कार्य्य दिखावे। परन्तु जो तुम अपने अपने मनमें १४
कड़वी डाह और बैर रखते हो तो सच्चाईके बिरुद्ध घमंड
मत करो और झूठ मत बोलो। यह ज्ञान ऊपरसे उतरता १५
नहीं परन्तु सांसारिक और शारीरिक और शैतानी है।
क्योंकि जहां डाह और बैर है तहां बखेड़ा और हर एक १६
बुरा कर्म्म होता है । परन्तु जो ज्ञान ऊपरसे है सो १७
पहिले तो पवित्र है फिर मिलनसार मृदुभाव और
कोमल और दयासे और अच्छे फलोंसे परिपूर्ण पक्ष-
पात रहित और निष्कपट है । और धर्म्मका फल १८
मेल करवैयोंसे मिलापमें बोया जाता है ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ बैर बिरोध और लोभ और घमंडपर उलहना । ११ भाइयोंको बुरे कहनेका निषेध । १३ अनित्य जीवनके भरोसेका निषेध ।

१ तुम्होंमें लड़ाई झगड़े कहांसे होते . क्या यहांसे नहीं
अर्थात तुम्हारे सुखाभिलाषोंसे जो तुम्हारे अंगोंमें लड़ते
२ हैं । तुम लालसा रखते हो और तुम्हें मिलता नहीं
तुम नरहिंसा और डाह करते हो और प्राप्त नहीं
कर सकते तुम झगड़ा और लड़ाई करते हो परन्तु
तुम्हें मिलता नहीं इसलिये कि तुम नहीं मांगते हो।
३ तुम मांगते हो और पाते नहीं इसलिये कि बुरी रीतिसे
४ मांगते हो जिस्तें अपने सुख बिलासमें उड़ा देओ । हे
व्यभिचारियो और व्यभिचारिणियो क्या तुम नहीं
जानते हो कि संसारकी मित्रता ईश्वरकी शत्रुता है .
सो जो कोई संसारका मित्र हुआ चाहता है वह ईश्वरका
५ शत्रु ठहरता है । अथवा क्या तुम समझते हो कि
धर्म्मपुस्तक वृथा कहता है . क्या वह आत्मा जो
हमोंमें बसा है यहांलों स्नेह करता है कि डाह भी करे।
६ बरन वह अधिक अनुग्रह देता है इस कारण कहता
है ईश्वर अभिमानियोंसे विरोध करता है परन्तु दीनों-
७ पर अनुग्रह करता है । इसलिये ईश्वरके अधीन
होओ . शैतानका साम्हना करो तो वह तुमसे भागेगा।
८ ईश्वरके निकट आओ तो वह तुम्हारे निकट आवेगा .
हे पापियो अपने हाथ शुद्ध करो और हे दुचित्ते
९ लोगो अपने मन पवित्र करो । दुःखी होओ और
शोक करो और रोओ . तुम्हारी हंसी शोक हो जाय

और तुम्हारा आनन्द उदासी बने। प्रभुके सन्मुख १०
दीन बनो तो वह तुम्हें ऊंचे करेगा।
हे भाइयो एक दूसरेपर अपबाद मत लगाओ . ११
जो भाईपर अपबाद लगाता और अपने भाईका विचार
करता है सो व्यवस्थापर अपबाद लगाता और व्यवस्था-
का बिचार करता है . परन्तु जो तू व्यवस्थाका बिचार
करता है तो तू व्यवस्थापर चलनेहारा नहीं परन्तु
बिचारकर्त्ता है। एक व्यवस्थाकारक और बिचारकर्त्ता १२
है अर्थात वही जिसे बचाने और नाश करनेका सामर्थ्य
है . तू कौन है जो दूसरेका बिचार करता है।
अब आओ तुम जो कहते हो कि आज वा कल १३
हम उस नगरमें जायेंगे और वहां एक बरस बितावेंगे
और लेन देन कर कमावेंगे। पर तुम तो कलकी १४
बात नहीं जानते हो क्योंकि तुम्हारा जीवन कैसा है.
वह भाफ है जो थोड़ी बेर दिखाई देती है फिर लोप
हो जाती है। इसके बदले तुम्हें यह कहना था कि १५
प्रभु चाहे तो हम जीयेंगे और यह अथवा वह करेंगे।
पर अब तुम अपनी गलफटाकियोंपर बड़ाई करते १६
हो . ऐसी ऐसी बड़ाई सब बुरी है। सो जो भला करने १७
जानता है और करता नहीं उसको पाप होता है।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ धनवानोंके उपद्रवपर उलहना। ७ धीरज धरनेका उपदेश और किरिया खानेका निषेध। १३ प्रार्थना करनेका उपदेश और उसका फल। १९ भाईको भ्रमसे फिरानेका फल।

अब आओ हे धनवान लोगो अपनेपर आनेवाले क्ले- १
शोंके लिये चिल्ला चिल्ला रोओ। तुम्हारा धन सड़ गया २

३ है और तुम्हारे बस्त्रोंको कीड़े खा गये हैं। तुम्हारे
सोने और रूपेमें काई लग गई है और उनकी काई
तुम्होंपर साक्षी होगी और आगकी नाईं तुम्हारा
मांस खायगी . तुमने पिछले दिनोंमें धन बटोरा है।
४ देखो जिन बनिहारोंने तुम्हारे खेतोंकी लवनी किई
उनकी बनि जो तुमने ठग लिई है पुकारती है और
लवनेहारोंकी दोहाई सेनाओंके परमेश्वरके कानोंमें
५ पहुंची है। तुम पृथिवीपर सुखमें और बिलासमें रहे
तुमने जैसे बधके दिनहीमें अपने मनको सन्तुष्ट किया
६ है। तुमने धर्म्मीको दोषी ठहराके मार डाला है . वह
तुम्हारा साम्हना नहीं करता है।
७ सो हे भाइयो प्रभुके आनेलों धीरज धरो . देखो
गृहस्थ पृथिवीके बहुमूल्य फलकी बाट जोहता है और
जबलों वह पहिली और पिछली बर्षा न पावे तबलों
८ उसके लिये धीरज धरता है। तुम भी धीरज धरो
अपने मनको स्थिर करो क्योंकि प्रभुका आना निकट
९ है। हे भाइयो एक दूसरेके बिरुद्ध मत कुड़कुड़ाओ
इसलिये कि दोषी न ठहरो . देखो बिचारकर्त्ता द्वारके
१० आगे खड़ा है। हे मेरे भाइयो भविष्यद्वक्ताओंको
जिन्होंने प्रभुके नामसे बातें किईं दुःखभोग और धीरज-
११ का नमूना समझ लेओ। देखो जो स्थिर रहते हैं
उन्हें हम धन्य कहते हैं . तुमने ऐयूबकी स्थिरताकी
सुनी है और प्रभुका अन्त देखा है कि प्रभु बहुत
१२ करुणामय और दयावन्त है। परन्तु सबसे पहिले हे
मेरे भाइयो किरिया मत खाओ न स्वर्गकी न धरती-

की न और कोई किरिया परन्तु तुम्हारा हां हां होवे
और नहीं नहीं होवे जिस्तें तुम दंडके योग्य न ठहरो।
क्या तुम्होंमें कोई दुःख पाता है. तो प्रार्थना करे. १३
क्या कोई हर्षित है. तो भजन गावे। क्या तुम्होंमें १४
कोई रोगी है. तो मंडलीके प्राचीनोंको अपने पास
बुलावे और वे प्रभुके नामसे उसपर तेल मलके उसके
लिये प्रार्थना करें। और बिश्वासकी प्रार्थना रोगीको १५
बचावेगी और प्रभु उसको उठावेगा और जो उसने
पाप भी किये हों तो उसकी क्षमा किई जायगी।
एक दूसरेके आगे अपने अपने अपराधोंको मान लेओ १६
और एक दूसरेके लिये प्रार्थना करो जिस्तें चंगे हो
जावो. धर्म्मी जनकी प्रार्थना कार्य्यकारी होके बहुत
सफल होती है। एलियाह हमारे समान दुःख सुख १७
भोगी मनुष्य था और प्रार्थनामें उसने प्रार्थना किई
कि मेंह न बरसे और भूमिपर साढ़े तीन बरस मेंह
न बरसा। और उसने फिर प्रार्थना किई तो आकाशने १८
बर्षा दिई और भूमिने अपना फल उपजाया।
हे भाइयो जो तुम्होंमें कोई सच्चाईसे भरमाया जाय १९
और कोई उसको फेर लेवे. तो जान जाय कि जो २०
जन पापीको उसके मार्गके भ्रमणसे फेर लेवे सो एक
प्राणको मृत्युसे बचावेगा और बहुत पापोंको ढांपेगा॥

पितर प्रेरितकी पहिली पत्री ।

---

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ पत्रीका आभाष । ३ नये जन्म और परित्राणके लिये ईश्वरका धन्यबाद । ६ बिश्वासियोंका उससे क्लेशमें भी आनन्दित होना । १० उस त्राणपर भविष्यद्वक्ताओंकी साक्षी । १३ पवित्र आचरणका और प्रेमका उपदेश और ईश्वरके अविनाशी बचनका बखान ।

१ पितर जो यीशु ख्रीष्टका प्रेरित है पन्त और गला-
तिया और कपदोकिया और आशिया और बिथुनिया
२ देशोंमें छितरे हुए परदेशियोंको . जो ईश्वर पिताके
भविष्यत ज्ञानके अनुसार आत्माकी पवित्रताके द्वारा
आज्ञापालन और यीशु ख्रीष्टके लोहूके छिड़कावके लिये
चुने हुए हैं . तुम्हें बहुत बहुत अनुग्रह और शांति मिले।
३ हमारे प्रभु यीशु ख्रीष्टके पिता ईश्वरका धन्यबाद होय
जिसने अपनी बड़ी दयाके अनुसार हमोंको नया जन्म
दिया कि हमें यीशु ख्रीष्टके मृतकोंमेंसे जी उठनेके द्वारा
४ जीवती आशा मिले . और वह अधिकार मिले जो अबि-
नाशी और निर्मल और अजर है और स्वर्गमें तुम्हारे
५ लिये रखा हुआ है . जिनकी रक्षा ईश्वरकी शक्तिसे
बिश्वासके द्वारा किई जाती है जिस्तें तुम वह त्राण जो
पिछले समयमें प्रगट किये जानेको तैयार है प्राप्त करो।
६ इससे तुम आह्लादित होते हो पर अब थोड़ी बेर-
लों यदि आवश्यक है तो नाना प्रकारकी परीक्षाओंसे
७ उदास हुए हो . इसलिये कि तुम्हारे बिश्वासकी परीक्षा
सोनेसे जो नाशमान है पर आगसे परखा जाता है

अति बहुमूल्य होके यीशु ख्रीष्टके प्रगट होनेपर प्रशंसा
और आदर और महिमाका हेतु पाई जाय। उस ८
यीशुको तुम बिन देखे प्यार करते हो और उसपर यद्यपि
उसे अब नहीं देखते हो तौभी बिश्वास करके अकथ्य
और महिमा संयुक्त आनन्दसे आह्लादित होते हो.
और अपने बिश्वासका अन्त अर्थात अपने अपने ९
आत्माका त्राण पाते हो।

उस त्राणके विषयमें भविष्यद्वक्ताओंने जिन्होंने इस १०
अनुग्रहके विषयमें जो तुमपर किया जाता है भविष्य-
द्वाणी कही बहुत ढूंढ़ा और खोज बिचार किया। वे ११
ढूंढ़ते थे कि ख्रीष्टका आत्मा जो हममें रहता है जब वह
ख्रीष्टके दुःखोंपर और उनके पीछेकी महिमापर आगेसे
साक्षी देता है तब कौन और कैसा समय बताता है।
और उनपर प्रगट किया गया कि वे अपने लिये नहीं १२
परन्तु हमारे लिये उन बातोंकी सेवकाई करते थे जिन्हें
जिन लोगोंने स्वर्गसे भेजे हुए पवित्र आत्माके द्वारा
तुम्हें सुसमाचार सुनाया उन्होंने अभी तुमसे कह दिया
है और इन बातोंको स्वर्गदूत झुक झुकके देखनेकी
इच्छा रखते हैं।

इस कारण अपने अपने मनकी मानो कमर बांधके १३
सचेत रहो और जो अनुग्रह यीशु ख्रीष्टके प्रगट होनेपर
तुम्हें मिलनेवाला है उसकी पूरी आशा रखो। आज्ञा- १४
कारी लोगोंकी नाईं अपनी अज्ञानतामेंकी अगली अभि-
लाषाओंकी रीतिपर मत चला करो. परन्तु उस परम- १५
पवित्रके समान जिसने तुमको बुलाया तुम भी आप

१६ सारी चाल चलनमें पवित्र बनो। क्योंकि लिखा है
१७ पवित्र होओ क्योंकि मैं पवित्र हूं। और जो तुम उसे जो
बिना पक्षपात हर एकके कर्म्मके अनुसार बिचार
करनेहारा है पिता करके पुकारते हो तो अपने
१८ परदेशी होनेका समय भयसे बिताओ। क्योंकि जानते
हो कि तुमने पितरोंकी ठहराई हुई अपनी व्यर्थ चाल
चलनसे जो उद्धार पाया सो नाशमान बस्तुओंके
१९ अर्थात रूपे अथवा सोनेके द्वारा नहीं . परन्तु निष्क-
लंक और निष्खोट मेम्ने सरीखे ख्रीष्टके बहुमूल्य लोहू-
२० के द्वारासे पाया . जो जगतकी उत्पत्तिके आगेसे
ठहराया गया था परन्तु पिछले समयपर तुम्हारे कारण
२१ प्रगट किया गया . जो उसके द्वारासे ईश्वरपर
बिश्वास करते हो जिसने उसे मृतकोंमेंसे उठाया
और उसको महिमा दिई यहांलों कि तुम्हारा बिश्वास
और भरोसा ईश्वरपर है।

२२ तुमने निष्कपट भ्रातीय प्रेमके निमित्त जो अपने
अपने हृदयको सत्यके आज्ञाकारी होनेमें आत्माके द्वारा
पवित्र किया है तो शुद्ध मनसे एक दूसरेसे अतिशय प्रेम
२३ करो। क्योंकि तुमने नाशमान नहीं परन्तु अबिनाशी
बीजसे ईश्वरके जीवते और सदालों ठहरनेहारे बचनके
२४ द्वारा नया जन्म पाया है। क्योंकि हर एक प्राणी घासकी
नाईं और मनुष्यका सारा बिभव घासके फूलकी नाईं
२५ है। घास सूख जाती है और उसका फूल झड़ जाता
है परन्तु प्रभुका बचन सदालों ठहरता है और यही
बचन है जो सुसमाचारमें तुम्हें सुनाया गया।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ पाप त्यागनेका और आत्मिक वृद्धिका उपदेश । ४ कोनेका पत्थर औ मन्दिर औ याजकपद आदि दृष्टान्तोंसे यीशुका और उसके शिष्योंका बर्णन। ११ सुकर्म्म करने और अध्यक्षोंके अधीन होनेका उपदेश । १८ सेवकोंके लिये उपदेश और खीष्टकी दीनताका नमूना ।

इसलिये सब बैरभाव और सब छल और समस्त १
प्रकारका कपट और डाह और दुर्बचन दूर करके .
नये जन्मे बालकोंकी नाईं बचनके निराले दूधकी २
लालसा करो कि उसके द्वारा तुम बढ़ जावो . कि ३
तुमने तो चीख लिया है कि प्रभु कृपाल है ।
उसके पास अर्थात उस जीवते पत्थरके पास जो मनु- ४
ष्योंसे तो निकम्मा जाना गया है परन्तु ईश्वरके आगे
चुना हुआ और बहुमूल्य है आके . तुम भी आप जीवते ५
पत्थरोंकी नाईं आत्मिक घर और याजकोंका पवित्र
समाज बनते जाते हो जिस्तें आत्मिक बलिदानोंको
जो यीशु खीष्टके द्वारा ईश्वरको भावते हैं चढ़ावो ।
इस कारण धर्म्मपुस्तकमें भी मिलता है कि देखो मैं ६
सियोनमें कोनेके सिरेका चुना हुआ और बहुमूल्य
पत्थर रखता हूं और जो उसपर बिश्वास करे सो किसी
रीतिसे लज्जित न होगा । सो यह बहुमूल्यता तुम्हारे- ७
ही लेखे है जो बिश्वास करते हो परन्तु जो नहीं
मानते हैं उन्हें वही पत्थर जिसे थवइयोंने निकम्मा
जाना कोनेका सिरा और ठेसका पत्थर और ठोकरकी
चटान हुआ है . कि वे तो बचनको न मानके ठोकर ८
खाते हैं और इसके लिये वे ठहराये भी गये । परन्तु तुम ९
लोग चुना हुआ बंश और राजपदधारी याजकोंका

समाज और पवित्र लोग और निज प्रजा हो इसलिये
कि जिसने तुम्हें अन्धकारमेंसे अपनी अद्भुत ज्योतिमें
१० बुलाया उसके गुण तुम प्रचार करो . जो आगे प्रजा
न थे परन्तु अभी ईश्वरकी प्रजा हो जिनपर दया
नहीं किई गई थी परन्तु अभी दया किई गई है ।
११ हे प्यारो मैं बिन्ती करता हूं बिदेशियों और ऊपरि-
योंकी नाईं शारीरिक अभिलाषोंसे जो आत्माके बिरुद्ध
१२ लड़ते हैं परे रहो । अन्यदेशियोंमें तुम्हारी चाल चलन
भली होवे इसलिये कि जिस बातमें वे तुमपर जैसे
कुकर्म्मियोंपर अपबाद लगाते हैं उसीमें वे तुम्हारे भले
कर्म्मोंको देखके जिस दिन ईश्वर दृष्टि करे उस दिन उन
१३ कर्म्मोंके कारण उसका गुणानुबाद करें । प्रभुके कारण
मनुष्योंके ठहराये हुए हर एक पदके अधीन होओ ।
१४ चाहे राजा हो तो उसे प्रधान जानके चाहे अध्यक्ष लोग
हों तो यह जानके कि वे उसके द्वारा कुकर्म्मियोंके दंडके
लिये परन्तु सुकर्म्मियोंकी प्रशंसाके लिये भेजे जाते हैं
१५ दोनोंके अधीन होओ । क्योंकि ईश्वरकी इच्छा यूंही है
कि तुम सुकर्म्म करनेसे निर्बुद्धि मनुष्योंकी अज्ञानताको
१६ निरुत्तर करो । निर्बन्धोंकी नाईं चलो पर जैसे अपनी
निर्बन्धतासे बुराईकी आड़ करते हुए वैसे नहीं परन्तु
१७ ईश्वरके दासोंकी नाईं चलो। सभोंका आदर करो भाइ-
योंको प्यार करो ईश्वरसे डरो राजाका आदर करो ।
१८ हे सेवको समस्त भय सहित स्वामियोंके अधीन
रहो केवल भलों और मृदुभावोंके नहीं परन्तु कुटि-
१९ लोंके भी । क्योंकि यदि कोई अन्यायसे दुःख उठाता

हुआ ईश्वरकी इच्छाके बिबेकके कारण शोक सह लेता
है तो यह प्रशंसाके योग्य है। क्योंकि यदि अपराध २०
करनेसे तुम घूसे खावो और धीरज धरो तो कौनसा यश
है परन्तु यदि सुकर्म्म करनेसे तुम दुःख उठावो और
धीरज धरो तो यह ईश्वरके आगे प्रशंसाके योग्य है।
तुम इसीके लिये बुलाये भी गये क्योंकि ख्रीष्टने भी २१
हमारे लिये दुःख भोगा और हमारे लिये नमूना छोड़
गया कि तुम उसकी लीकपर हो लेओ। उसने पाप नहीं २२
किया और न उसके मुंहमें छल पाया गया। वह निन्दित २३
होके उसके बदले निन्दा न करता था और दुःख उठाके
धमकी न देता था परन्तु जो धर्म्मसे बिचार करनेहारा
है उसीके हाथ अपनेको सौंपता था। उसने आप हमारे २४
पापोंको अपने देहमें काठपर उठा लिया जिस्तें हम लोग
पापोंके लिये मर करके धर्म्मके लिये जीवें और उसीके
मार खानेसे तुम चंगे किये गये। क्योंकि तुम भटकी हुई २५
भेड़ोंकी नाईं थे पर अब अपने प्राणोंके गड़ेरिये औा
रखवालेके पास फिर आये हो।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ स्त्रियों और पुरुषोंके लिये उपदेश। ८ आपसमें प्रेम और नम्रता करनेका उपदेश। १३ उपद्रवमें साहसी होनेका उपदेश। १८ ख्रीष्टके दुःखभोग और जयजयकारका नमूना और जलप्रलय और बपतिसमाकी चर्चा।

वैसेही हे स्त्रियो अपने अपने स्वामीके अधीन रहो १
इसलिये कि यदि कोई कोई बचनको न मानें तौभी
बचन बिना अपनी अपनी स्त्रीकी चाल चलनके द्वारा
तुम्हारी भय सहित पवित्र चाल चलन देखके प्राप्त २
किये जावें। तुम्हारा सिंगार बाल गून्यनेका और सोना ३

पहरनेका अथवा वस्त्र पहिननेका बाहरी सिंगार न
४ होवे। परन्तु हृदयका गुप्त मनुष्यत्व उस नम्र और
शान्त आत्माके अबिनाशी आभूषण सहित जो ईश्वरके
५ आगे बहुमूल्य है तुम्हारा सिंगार होवे। क्योंकि ऐसेही
पवित्र स्त्रियां भी जो ईश्वरपर भरोसा रखती थीं
आगे अपना सिंगार करती थीं कि वे अपने अपने
६ स्वामीके अधीन रहती थीं। जैसे सारःने इब्राहीमकी
आज्ञा मानी और उसे प्रभु कहती थी जिसकी तुम
लोग जो सुकर्म्म करो और किसी प्रकारकी घबराहटसे
७ न डरो तो बेटियां हुई हो। वैसेही हे पुरुषो ज्ञानकी
रीतिसे स्त्रीके संग जैसे अपनेसे निर्बल पात्रके संग
बास करो और जब कि वे भी जीवनके अनुग्रहकी
संगी अधिकारिणियां हैं तो उनका आदर करो जिस्तें
तुम्हारी प्रार्थनाओंकी रोक न होय।
८ अन्तमें यह कि तुम सब एक मन और परदुःखके
बूझनेहारे और भाइयोंके प्रेमी और करुणामय और
९ हितकारी होओ। और बुराईके बदले बुराई अथवा
निन्दाके बदले निन्दा मत करो परन्तु इसके बिपरीत
आशीस देओ क्योंकि जानते हो कि तुम इसीके लिये
१० बुलाये गये जिस्तें आशीसके अधिकारी होओ। क्योंकि
जो ज़ीवनकी प्रीति रखने और अच्छे दिन देखने चाहे
सो अपनी जीभको बुराईसे और अपने होंठोंको छलकी
११ बातें करनेसे रोके। वह बुराईसे फिर जावे और भलाई
करे वह मिलापको चाहे और उसकी चेष्टा करे।
१२ क्योंकि परमेश्वरके नेत्र धर्म्मियोंकी ओर और उसके

कान उनकी प्रार्थनाकी ओर लगे हैं परन्तु परमेश्वर
कुकर्म्म करनेहारोंसे बिमुख है।
ओर जो तुम भलेके अनुगामी होओ तो तुम्हारी १३
बुराई करनेहारा कौन होगा। परन्तु जो तुम धर्म्मके १४
कारण दुःख उठाओ भी तो धन्य हो पर उनके भयसे
भयमान मत होओ ओर न घबराओ। परन्तु परमेश्वर १५
ईश्वरको अपने अपने मनमें पवित्र मानो. ओर जो
कोई तुमसे उस आशाके विषयमें जो तुममें है कुछ
बात पूछे उसको नम्रता ओर भय सहित उत्तर देनेको
सदा तैयार रहो। ओर शुद्ध मन रखो इसलिये कि १६
जो लोग तुम्हारी ख्रीष्टानुसारी अच्छी चाल चलनकी
निन्दा करें सो जिस बातमें तुमपर जैसे कुकर्म्मियोंपर
अपबाद लगावें उसीमें लज्जित होवें। क्योंकि यदि १७
ईश्वरकी इच्छा यूं होय तो सुकर्म्म करते हुए दुःख
उठाना कुकर्म्म करते हुए दुःख उठानेसे अच्छा है।
क्योंकि ख्रीष्टने भी अर्थात अधर्म्मियोंके लिये धर्म्मीने १८
एक बेर पापोंके कारण दुःख उठाया जिस्तें हमें ईश्वरके
पास पहुंचावे कि वह शरीरमें तो घात किया गया
परन्तु आत्मामें जिलाया गया। उसीमें उसने बन्दी- १९
गृहमेंके आत्माओंको भी जाके उपदेश दिया. जिन्होंने २०
अगले समयमें न माना जिस समय ईश्वरका धीरज
नूहके दिनोंमें जबलों जहाज बनता था जिसमें थोड़े
अर्थात आठ प्राणी जलके द्वारा बच गये तबलों बाट
जोहता रहा। इस दृष्टान्तका आशय बपतिसमा जो २१
शरीरके मैलका दूर करना नहीं परन्तु ईश्वरके पास

शुद्ध मनका अंगीकार है अभी हमोंको भी यीशु खीष्टके
२२ जी उठनेके द्वारा बचाता है . जो स्वर्गपर जाके ईश्वरके
दहिने हाथ रहता है और दूतगण और अधिकारी
और पराक्रमी उसके अधीन किये गये हैं ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

१ पापसे अलग रहनेका उपदेश । ७ प्रार्थना और प्रेम और दातृत्वका उपदेश । १२ धर्म्मके हेतु दुःख उठानेमें ढाढ़स बांधनेका उपदेश ।

१ सो जब कि खीष्टने हमारे लिये शरीरमें दुःख
उठाया और जब कि जिसने शरीरमें दुःख उठाया है
वह पापसे रोका गया है तुम भी उसी मनसाका
२ हथियार बांधो . जिस्तें शरीरमेंका जो समय रह गया
है उसे तुम अब मनुष्योंके अभिलाषोंके नहीं परन्तु
३ ईश्वरकी इच्छाके अनुसार बितावो । क्योंकि हमारे
जीवनका जो समय बीत गया है सो नाना भांतिके
लुचपन औ कामाभिलाष औ मतवालपन औ लीला
क्रीड़ा औ मद्यपान औ धर्म्मबिरुद्ध मूर्त्तिपूजामें चलते
चलते देवपूजकोंकी इच्छा पूरी करनेको बहुत हुआ है।
४ इससे वे लोग जब तुम उनके संग लुचपनके उसी
अत्याचारमें नहीं दौड़ते हो तब अचंभा मानते और
५ निन्दा करते हैं। पर वे उसको जो जीवतों औ मृतकों-
६ का बिचार करनेको तैयार है लेखा देंगे। क्योंकि
इसीके लिये मृतकोंको भी सुसमाचार सुनाया गया
कि शरीरमें तो मनुष्योंके अनुसार उनका बिचार
किया जाय परन्तु आत्मामें वे ईश्वरके अनुसार जीवें।
७ परन्तु सब बातोंका अन्त निकट आया है इसलिये

सुबुद्धि होके प्रार्थनाके लिये सचेत रहो । और सबसे ८
अधिक करके एक दूसरेसे अतिशय प्रेम रखो क्योंकि
प्रेम बहुत पापोंको ढांपेगा । बिना कुड़कुड़ाये एक ९
दूसरेकी अतिथिसेवा किया करो । जैसे जैसे हर एकने १०
बरदान पाया है वैसे ईश्वरके नाना प्रकारके अनुग्रहके
भले भंडारियोंकी नाईं एक दूसरेके लिये उसी बरदानकी
सेवकाई करो । यदि कोई बात करे तो ईश्वरकी ११
बाणियोंकी नाईं बात करे यदि कोई सेवकाई करे तो
जैसे उस शक्तिसे जो ईश्वर देता है करे जिस्तें सब
बातोंमें ईश्वरकी महिमा यीशु खीष्टके द्वारा प्रगट
किई जावे जिसकी महिमा औ पराक्रम सदा सर्ब्बदा
रहता है . आमीन ।

हे प्यारो जो ज्वलन तुम्हारे बीचमें तुम्हारी परीक्षाके १२
लिये होता है उससे अचंभा मत करो जैसे कि कोई
अचंभेकी बात तुमपर बीतती हो । परन्तु जितने तुम १३
खीष्टके दुःखोंके सम्भागी होते हो उतने आनन्द करो
जिस्तें उसकी महिमाके प्रगट होनेपर भी तुम आनन्दित
और आह्लादित होओ । जो तुम खीष्टके नामके लिये १४
निन्दित होते हो तो धन्य हो क्योंकि महिमाका और
ईश्वरका आत्मा तुमपर ठहरता है . उनकी ओरसे तो
उसकी निन्दा होती है परन्तु तुम्हारी ओरसे उसकी
महिमा प्रगट होती है । तुममेंसे कोई जन हत्यारा १५
अथवा चोर अथवा कुकर्म्मी होनेसे अथवा पराये काममें
हाथ डालनेसे दुःख न पावे । परन्तु यदि खीष्टियान १६
होनेसे कोई दुःख पावे तो लज्जित न होवे परन्तु इस

१७ बातमें ईश्वरका गुणानुवाद करे। क्योंकि यही समय है
कि दंड ईश्वरके घरसे आरंभ होवे पर यदि पहिले हमोंसे
आरंभ होता है तो जो लोग ईश्वरके सुसमाचारको
१८ नहीं मानते हैं उनका अन्त क्या होगा। और यदि
धर्म्मी कठिनतासे त्राण पाता है तो भक्तिहीन और
१९ पापी कहां दिखाई देगा। इस कारण जो लोग
ईश्वरकी इच्छाके अनुसार दुःख उठाते हैं सो सुकर्म्म
करते हुए अपने अपने प्राणको उसके हाथ जैसे
बिश्वासयोग्य सृजनहारके हाथ सौंप देवें।

५ पांचवां पर्ब्ब।

१ प्राचीनों और जवानोंके लिये उपदेश। ६ दीनता औा दृढ़ताका उपदेश। १० प्रार्थना और नमस्कार सहित पत्रीकी समाप्ति।

१ मैं जो संगी प्राचीन और ख्रीष्टके दुःखोंका साक्षी
और जो महिमा प्रगट होनेपर है उसका सम्भागी भी
हूं प्राचीनोंसे जो तुम्हारे बीचमें हैं बिन्ती करता हूं.
२ ईश्वरके झुंडकी जो तुममें है चरवाही करो और
दबावसे नहीं पर अपनी सम्मतिसे और न नीच
३ कमाईके लिये पर मनकी इच्छासे. और न जैसे अपने
अपने अधिकारपर प्रभुता करते हुए परन्तु झुंडके
४ लिये दृष्टान्त होते हुए रखवाली करो। और प्रधान
रखवालेके प्रगट होनेपर तुम महिमाका अक्षय मुकुट
५ पाओगे। वैसेही हे जवानो प्राचीनोंके अधीन होओ.
हां तुम सब एक दूसरेके अधीन होके दीनताको
पहिन लेओ क्योंकि ईश्वर अभिमानियोंसे बिरोध
करता है परन्तु दीनोंपर अनुग्रह करता है।

इसलिये ईश्वरके पराक्रमी हाथके नीचे दीन ६
होओ जिस्तें वह समयपर तुम्हें ऊंचा करे। अपनी ७
सारी चिन्ता उसपर डालो क्योंकि वह तुम्हारे लिये
सोच करता है। सचेत रहो जागते रहो क्योंकि तुम्हारा ८
बैरी शैतान गर्जते हुए सिंहकी नाईं ढूंढ़ता फिरता है
कि किसको निगल जाय। बिश्वासमें दृढ़ होके उसका ९
साम्हना करो क्योंकि जानते हो कि तुम्हारे भाई लोगों-
पर जो संसारमें हैं दुःखोंकी वैसीही दशा पूरी होती
जाती है।

सारे अनुग्रहका ईश्वर जिसने हमें खीष्ट यीशुमें १०
बुलाया कि हम थोड़ासा दुःख उठाके उसकी अनन्त
महिमामें प्रवेश करें आपही तुम्हें सुधारे औ स्थिर
करे औ बल देवे औ नेवपर दृढ़ करे। उसीकी ११
महिमा औ पराक्रम सदा सर्ब्बदा रहे. आमीन।

सीलाके हाथ जिसे मैं समझता हूं कि तुम्हारा १२
बिश्वासयोग्य भाई है मैंने थोड़ी बातोंमें लिखा है
और उपदेश और साक्षी देता हूं कि ईश्वरका सच्चा
अनुग्रह जिसमें तुम स्थिर हो यही है। तुम्हारे संगकी १३
चुनी हुई जो बाबुलमें है और मेरा पुत्र मार्क इन
दोनोंका तुमसे नमस्कार। प्रेमका चूमा लेके एक १४
दूसरेको नमस्कार करो. तुम सभोंको जो खीष्ट यीशुमें
हो शांति होवे। आमीन॥

पितर प्रेरितकी दूसरी पत्री।

१ पहिला पर्ब्ब।

१ पत्रीका आभाष। ३ धर्म्ममें बढ़ते जानेका उपदेश। १२ बिश्वासियोंको चितानेमें पितरका यत्न। १६ सत्य उपदेशपर प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओंकी साक्षी।

१ शिमोन पितर जो यीशु ख्रीष्टका दास और प्रेरित
है उन लोगोंको जिन्होंने हमारे ईश्वर औा त्राणकर्त्ता
यीशु ख्रीष्टके धर्म्ममें हमारे तुल्य बहुमूल्य बिश्वास
२ प्राप्त किया है. तुम्हें ईश्वरके और हमारे प्रभु यीशुके
ज्ञानके द्वारा बहुत बहुत अनुग्रह और शांति मिले।
३ जैसे कि उसके ईश्वरीय सामर्थ्यने सब कुछ जो जीवन
और भक्तिसे सम्बन्ध रखता है हमें उसीके ज्ञानके द्वारा
दिया है जिसने हमें अपने ऐश्वर्य्य और शुभगुणके
४ अनुसार बुलाया. जिनके अनुसार उसने हमें अत्यन्त
बड़ी और बहुमूल्य प्रतिज्ञाएं दिई हैं इसलिये कि इनके
द्वारा तुम लोग जो नष्टता कामाभिलाषके द्वारा जगतमें
है उससे बचके ईश्वरीय स्वभावके भागी हो जावो।
५ और इसी कारण भी तुम सब प्रकारका यत्न करके
६ अपने बिश्वासमें शुभगुण और शुभगुणमें ज्ञान. और
ज्ञानमें संयम और संयममें धीरज और धीरजमें भक्ति.
७ और भक्तिमें भ्रात्नीय प्रेम और भ्रात्नीय प्रेममें प्यार
८ संयुक्त करो। क्योंकि यह बातें जब तुममें होतीं और
बढ़ती जातीं तब तुम्हें ऐसे बनाती हैं कि हमारे प्रभु
यीशु ख्रीष्टके ज्ञानके लिये तुम न निकम्मे न निष्फल
९ हो। क्योंकि जिस पास यह बातें नहीं हैं वह अंधा है

और धुंधला देखता है और अपने अगले पापोंसे अपना
शुद्ध किया जाना भूल गया है। इस कारण हे भाइयो १०
और भी अपने बुलाये जाने और चुन लिये जानेको दृढ़
करनेका यत्न करो क्योंकि जो तुम ये कर्म्म करो तो कभी
किसी रीतिसे ठोकर न खाओगे। क्योंकि इस प्रकारसे ११
तुम्हें हमारे प्रभु औ त्राणकर्त्ता यीशु खीष्टके अनन्त राज्य-
में प्रवेश करनेका अधिकार अधिकाईसे दिया जायगा।
इसलिये यद्यपि तुम यह बातें जानते हो और जो १२
सत्य बचन तुम्हारे पास है उसमें स्थिर किये गये हो तौभी
मैं इन बातोंके विषयमें तुम्हें नित्य चेत दिलानेमें नि-
श्चिन्त न रहूंगा। पर मैं समझता हूं कि जबलों मैं इस १३
डेरेमें हूं तबलों स्मरण करवानेसे तुम्हें सचेत करना मुझे
उचित है। क्योंकि जानता हूं कि जैसा हमारे प्रभु यीशु १४
खीष्टने मुझे बताया तैसा मेरे डेरेके गिराये जानेका समय
निकट है। पर मैं यत्न करूंगा कि मेरी मृत्युके पीछे भी १५
तुम्हें इन बातोंका स्मरण करनेका उपाय नित्य रहे।
क्योंकि हमने तुम्हें हमारे प्रभु यीशु खीष्टके सामर्थ्य- १६
का और आनेका समाचार बिद्यासे रची हुई कहानियों-
के अनुसार जो सुनाया सो नहीं परन्तु हम उसकी महि-
माके प्रत्यक्ष साक्षी हुए थे। क्योंकि उसने ईश्वर पितासे १७
आदर और महिमा पाई कि प्रतापमय तेजसे उसको
ऐसा शब्द सुनाया गया कि यह मेरा प्रिय पुत्र है जिससे
मैं अति प्रसन्न हूं। और यह शब्द स्वर्गसे सुनाया हुआ १८
हमने पवित्र पर्ब्बतमें उसके संग होते हुए सुन लिया।
और भविष्यद्वाणीका बचन हमारे निकट और भी दृढ़ १९

है. तुम जो उसपर जैसे दीपकपर जो अंधियारे स्थानमें
चमकता है जबलों पह न फटे और भोरका तारा तुम्हारे
हृदयमें न उगे तबलों मन लगाते हो तो अच्छा करते
२० हो। पर यही पहिले जानो कि धर्म्मपुस्तककी कोई
भविष्यद्वाणी किसीके अपनेही व्याख्यानसे नहीं होती
२१ है। क्योंकि भविष्यद्वाणी मनुष्यकी इच्छासे कभी नहीं
आई परन्तु ईश्वरके पवित्र जन पवित्र आत्माके बुल-
वाये हुए बोले।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ झूठे उपदेशकोंके प्रगट होनेका और उनके दंडका भविष्यद्वाक्य। ४ उनके दंडके तीन दृष्टान्त और उनको अशुद्ध चालका उलहना। १७ उनसे लोगोंका धोखा खाना। २० उनके अन्तका बहुत बुरा होना।

१ परन्तु झूठे भविष्यद्वक्ता भी लोगोंमें हुए जैसे कि
तुममें भी झूठे उपदेशक होंगे जो बिनाशके कुपन्थोंको
छिपके चलावेंगे और प्रभुसे जिसने उन्हें मोल लिया
२ मुकरेंगे और अपने ऊपर शीघ्र बिनाश लावेंगे। और
बहुतेरे उनके लुचपनका पीछा करेंगे जिनके कारण
३ सत्यके मार्गकी निन्दा किई जायगी। और लोभसे
वे तुम्हें बनाई हुई बातोंसे बेच खायेंगे पर पूर्ब्बकालसे
उनका दंड आलस नहीं करता और उनका बिनाश
ऊंघता नहीं।

४ क्योंकि यदि ईश्वरने दूतोंको जिन्होंने पाप किया
न छोड़ा परन्तु पातालमें डालके अंधकारकी जंजीरोंमें
५ सौंप दिया जहां वे बिचारके लिये रखे जाते हैं. और
प्राचीन जगतको न छोड़ा बरन भक्तिहीनोंके जगतपर
जलप्रलय लाया परन्तु धर्म्मके प्रचारक नूहको लगाके

आठ जनोंको रक्षा किई. और सदोम और अमोराके ६
नगरोंको भस्म करके बिध्वंसका दंड दिया और उन्हें
पीछे आनेवाले भक्तिहीनोंके लिये दृष्टान्त ठहराया है.
और धर्म्मी लूतको जो अधर्म्मियोंके लुचपनके चलनसे ७
अति दुःखी होता था बचाया. क्योंकि वह धर्म्मी जन उनके ८
बीचमें बास करता हुआ देखने और सुननेसे प्रतिदिन
अपने धर्म्मी प्राणको उनके दुष्ट कर्म्मोंसे पीड़ित करता
था. तो परमेश्वर भक्तोंको परीक्षामेंसे बचाने और ९
अधर्म्मियोंको दंडकी दशामें बिचारके दिनलों रखने
जानता है. निज करके उन लोगोंको जो शरीरके १०
अनुसार अशुद्धताके अभिलापसे चलते हैं और प्रभुताको
तुच्छ जानते हैं. वे ढीठ औ हठी हैं और महत पदोंकी नि-
न्दा करनेसे नहीं डरते हैं। तौभी दूतगण जो शक्ति औ ११
पराक्रममें बड़े हैं उनके बिरुद्ध परमेश्वरके आगे निन्दा-
संयुक्त बिचार नहीं सुनाते हैं। परन्तु ये लोग स्वभावबश १२
अचैतन्य पशुओंकी नाईं जो पकड़े जाने और नाश होने-
को उत्पन्न हुए हैं जिन बातोंमें अज्ञान हैं उन्हींमें निन्दा
करते हैं और अपनी भ्रष्टतामें सत्यानाश होंगे और अ-
धर्म्मका फल पावेंगे। वे दिन भरके विषयभोगको सुख १३
समझते हैं वे कलंक और खोट रूपी हैं वे तुम्हारे संग
भोजमें जेवते हुए अपने छलोंसे सुख भोग करते हैं। उनके १४
नेत्र व्यभिचारिणीसे भरे रहते हैं और पापसे रोके नहीं
जा सकते हैं वे अस्थिर प्राणोंको फुसलाते हैं उनका मन
लोभ लालचमें साधा हुआ है वे स्रापके सन्तान हैं। वे १५
सीधे मार्गको छोड़के भटक गये हैं और बियोरके पुत्र

बलामके मार्गपर हो लिये हैं जिसने अधर्म्मकी मजूरीको
१६ प्रिय जाना। परन्तु उसके अपराधके लिये उसे उलहना
दिया गया. अबोल गधेने मनुष्यकी बोलीसे बोलके
भविष्यद्वक्ताकी मूर्खताको रोका।
१७ ये लोग निर्जल कूए और आंधीके उड़ाये हुए मेघ
हैं. उनके लिये सदाका घोर अन्धकार रखा गया है।
१८ क्योंकि वे व्यर्थ गलफटाकीकी बातें करते हुए शरीरके
अभिलाषोंसे लुचपनोंके द्वारा उन लोगोंको फुसलाते
हैं जो भ्रांतिकी चाल चलनेहारोंसे सचमुच बच निकले
१९ थे। वे उन्हें निर्बन्ध होनेकी प्रतिज्ञा देते हैं पर आपही
नष्टताके दास हैं क्योंकि जिससे कोई हार गया है
उसका वह दास भी बन गया है।
२० यदि वे प्रभु औ त्राणकर्त्ता यीशु खीष्टके ज्ञानके
द्वारा संसारकी नाना प्रकारकी अशुद्धतासे बच निकले
परन्तु फिर उसमें फंसके हार गये हैं तो उनकी पिछ-
२१ ली दशा पहिलीसे बुरी हुई है। क्योंकि धर्म्मके मार्गको
जानके भी उस पवित्र आज्ञासे जो उन्हें सौंपी गई
फिर जानेसे उस मार्गको न जानना ही उनके लिये
२२ भला होता। पर उस सच्चे दृष्टान्तकी बात उनमें पूरी
हुई है कि कुत्ता अपनीही छांटको और धोई हुई
सूअरी कीचड़में लोटनेको फिर गई।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ पत्रीका प्रयोजन और कितने निन्दक लोगोंका वर्णन। ८ प्रभुके दिनके आनेकी भविष्यद्वाणी। १४ उपदेश सहित पत्रीकी समाप्ति।

१ यह दूसरी पत्री हे प्यारो मैं अब तुम्हारे पास लिख-

ता हूं और दोनोंमें मैं स्मरण करवानेसे तुम्हारे नि-
ष्कपट मनको सचेत करता हूं . जिस्तें तुम उन बातोंको २
जो पवित्र भविष्यद्वक्ताओंने आगेसे कही थीं और हम
प्रेरितोंकी आज्ञाको जो प्रभु औ त्राणकर्त्ताकी आज्ञा है
स्मरण करो । पर यही पहिले जानो कि पिछले दिनोंमें ३
निन्दक लोग आवेंगे जो अपनेही अभिलाषोंके अनुसार
चलेंगे . और कहेंगे उसके आनेकी प्रतिज्ञा कहां है ४
क्योंकि जबसे पितर लोग सो गये सब कुछ सृष्टिके
आरंभसे यूंही बना रहता है । क्योंकि यह बात उनसे ५
उनकी इच्छाहीसे छिपी रहती है कि ईश्वरके बचनसे
आकाश पूर्ब्बकालसे था और पृथिवी भी जो जलमेंसे
और जलके द्वारासे बनी . जिनके द्वारा जगत जो तब था ६
जलमें डूबके नष्ट हुआ । परन्तु आकाश औ पृथिवी जो ७
अब हैं उसी वचनसे धरे हुए हैं और भक्तिहीन मनुष्योंके
विचार और बिनाशके दिनलों आगके लिये रखे जाते हैं।

परन्तु हे प्यारो यह एक बात तुमसे छिपी न रहे कि ८
प्रभुके यहां एक दिन सहस्र बरसके तुल्य और सहस्र
बरस एक दिनके तुल्य हैं । प्रभु प्रतिज्ञाके विषयमें बिलम्ब ९
नहीं करता है जैसा कितने लोग बिलम्ब समझते हैं
परन्तु हमारे कारण धीरज धरता है और नहीं चाहता
है कि कोई नष्ट होवें परन्तु सब लोग पश्चात्तापको
पहुंचें । पर जैसा रातको चोर आता है तैसा प्रभुका दिन १०
आवेगा जिसमें आकाश हड़हड़ाहटसे जाता रहेगा और
तत्त्व अति तप्त हो गल जायेंगे और पृथिवी और उस-
मेंके कार्य्य जल जायेंगे । सो जब कि यह सब बस्तु गल ११

जानेवाली हैं तुम्हें पवित्र चाल चलन और भक्तिमें कैसे
मनुष्य होना और किस रीतिसे ईश्वरके दिनकी बाट
जोहना और उसके शीघ्र आनेकी चेष्टा करना उचित
१२ है . जिस दिनके कारण आकाश ज्वलित हो गल जायगा
१३ और तत्त्व अति तप्त हो पिघल जायेंगे। परन्तु उसकी
प्रतिज्ञाके अनुसार हम नये आकाश और नई पृथिवीकी
आस देखते हैं जिनमें धर्म्म बास करेगा।
१४ इसलिये हे प्यारो तुम जो इन बातोंकी आस
देखते हो तो यत्न करो कि तुम कुशलसे उसके आगे
१५ निष्कलंक औ निर्दोष ठहरो। और हमारे प्रभुके
धीरजको त्राण समझो जैसे हमारे प्रिय भाई पावलने
भी उस ज्ञानके अनुसार जो उसे दिया गया तुम्हारे
१६ पास लिखा। वैसेही उसने सब पत्रियोंमें भी लिखा है
और उनमें इन बातोंके विषयमें कहा है जिनमेंसे
कितनी बातें गूढ़ हैं जिनको अनसिख और अस्थिर
लोग जैसे धर्म्मपुस्तककी और और बातोंको भी बिप-
रीत अर्थ लगाके उन्हें अपनेही बिनाशका कारण
१७ बनाते हैं। सो हे प्यारो तुम लोग इसको आगेसे
जानके अपने तईं बचाये रहो ऐसा न हो कि
अधर्म्मियोंके भ्रमसे बहकाये जाके अपनी स्थिरतासे
१८ पतित होओ। परन्तु हमारे प्रभु औ त्राणकर्त्ता यीशु
ख्रीष्टके अनुग्रह और ज्ञानमें बढ़ते जाओ . उसका गुणा-
नुबाद अभी और सदाकाललों भी होवे। आमीन॥

योहन प्रेरितकी पहिली पत्री।

१ पहिला पर्ब्ब।

१ पत्रीका आभाष। ५ ईश्वर ज्योति है उससे मेल रखनेके लिये ज्योतिमें
चलने और अपने अपने पाप मान लेनेकी आवश्यकता।

जो आदिसे था जो हमने जीवनके बचनके विषयमें १
सुना है जो अपने नेत्रोंसे देखा है जिसपर हमने दृष्टि
किई और हमारे हाथोंने छूआ . कि वह जीवन प्रगट २
हुआ और हमने देखा है और साक्षी देते हैं और तुम्हें
उस सनातन जीवनका समाचार सुनाते हैं जो पिताके
संग था और हमोंपर प्रगट हुआ . जो हमने देखा और ३
सुना है उसका समाचार तुम्हें सुनाते हैं इसलिये कि
हमारे साथ तुम्हारी संगति होय और हमारी यह
संगति पिताके साथ और उसके पुत्र यीशु खीष्टके साथ
है। और यह बातें हम तुम्हारे पास इसलिये लिखते ४
हैं कि तुम्हारा आनन्द पूरा होय।

जो समाचार हमने उससे सुना है और तुम्हें सुनाते ५
हैं सो यह है कि ईश्वर ज्योति है और उसमें कुछ भी
अन्धकार नहीं है। जो हम कहें कि उसके साथ हमारी ६
संगति है और हम अंधियारेमें चलें तो झूठ बोलते हैं
और सच्चाईपर नहीं चलते हैं। परन्तु जैसा वह ज्यो- ७
तिमें है वैसेही जो हम ज्योतिमें चलें तो एक दूसरेसे
संगति रखते हैं और उसके पुत्र यीशु खीष्टका लोहू हमें
सब पापसे शुद्ध करता है। जो हम कहें कि हममें कुछ ८
पाप नहीं है तो अपनेको धोखा देते हैं और सच्चाई

९ हममें नहीं है । जो हम अपने पापोंको मान लेवें तो
वह हमारे पापोंको क्षमा करनेको और हमें सब अधर्म्म-
१० से शुद्ध करनेको बिश्वासयोग्य और धर्म्मी है । जो हम
कहें कि हमने पाप नहीं किया है तो उसको झूठा
बनाते हैं और उसका बचन हममें नहीं है ।

२ दूसरा पर्व्व ।

१ पापकी क्षमाका यीशुसे होना । ३ आज्ञाओंपर चलना ईश्वरका ज्ञान रखनेका
प्रमाण है इसका बर्णन । ७ भाइयोंसे प्रेम रखनेकी आवश्यकता । १५ जगतसे प्रीति
रखनेका निषेध । १८ ख्रीष्टबिरोधियोंका बर्णन । २४ ख्रीष्टमें बने रहनेका उपदेश ।

१ हे मेरे बालको मैं यह बातें तुम्हारे पास लिखता हूं
जिस्तें तुम पाप न करो और यदि कोई पाप करे तो
पिताके पास हमारा एक सहायक है अर्थात धार्म्मिक यीशु
२ ख्रीष्ट । और वही हमारे पापोंके लिये प्रायश्चित्त है और
केवल हमारे नहीं परन्तु सारे जगतके पापोंके लिये भी ।
३ और हम लोग जो उसकी आज्ञाओंको पालन
४ करें तो इसीसे जानते कि उसको पहचानते हैं । जो
कहता है मैं उसे पहचानता हूं और उसकी आज्ञा-
ओंको नहीं पालन करता है सो झूठा है और उसमें
५ सच्चाई नहीं है । परन्तु जो कोई उसके बचनको
पालन करे उसमें सचमुच ईश्वरका प्रेम सिद्ध किया
६ गया है . इससे हम जानते हैं कि हम उसमें हैं । जो
कहता है मैं उसमें रहता हूं उसे उचित है कि आप
भी वैसाही चले जैसा वह चला ।
७ हे भाइयो मैं तुम्हारे पास नई आज्ञा नहीं लिखता
हूं परन्तु पुरानी आज्ञा जो आरंभसे तुम्हारे पास थी .
पुरानी आज्ञा वह बचन है जिसे तुमने आरंभसे सुना ।

फिर मैं तुम्हारे पास नई आज्ञा लिखता हूं और यह ८
तो उसमें और तुममें सत्य है क्योंकि अंधकार बीता
जाता है और सच्चा उजियाला अभी चमकता है। जो ९
कहता है मैं उजियालेमें हूं और अपने भाईसे बैर
रखता है सो अबलों अंधकारमें है। जो अपने भाईको १०
प्यार करता है सो उजियालेमें रहता है और ठोकर
खानेका कारण उसमें नहीं है। पर जो अपने भाईसे ११
बैर रखता है सो अंधकारमें है और अंधकारमें चलता
है और नहीं जानता मैं कहां जाता हूं क्योंकि अंधकारने
उसकी आंखें अंधी किई हैं।

हे बालको मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इसलिये कि १२
तुम्हारे पाप उसके नामके कारण क्षमा किये गये हैं।
हे पितरो मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इसलिये कि तुम १३
उसे जो आदिसे है जानते हो. हे जवानो मैं तुम्हारे
पास लिखता हूं इसलिये कि तुमने उस दुष्टपर जय किया
है. हे लड़को मैं तुम्हारे पास लिखता हूं इसलिये कि
तुम पिताको जानते हो। हे पितरो मैंने तुम्हारे पास १४
लिखा है इसलिये कि तुम उसे जो आदिसे है जानते
हो. हे जवानो मैंने तुम्हारे पास लिखा है इसलिये कि
तुम बलवन्त हो और ईश्वरका बचन तुममें रहता है
और तुमने उस दुष्टपर जय किया है।

न तो संसारसे न संसारमेंकी बस्तुओंसे प्रीति रखो. १५
यदि कोई संसारसे प्रीति रखता है तो पिताका प्रेम
उसमें नहीं है। क्योंकि जो कुछ संसारमें है अर्थात १६
शरीरका अभिलाष और नेत्रोंका अभिलाष और

जीविकाका घमंड सो पिताकी ओरसे नहीं है परन्तु
१७ संसारकी ओरसे है । और संसार और उसका अभि-
लाष बीता जाता है परन्तु जो ईश्वरकी इच्छापर
चलता है सो सदालों ठहरता है ।
१८ हे लड़को यह पिछला समय है और जैसा तुमने
सुना कि खीष्टबिरोधी आता है तैसे अब भी बहुतसे
खीष्टबिरोधी हुए हैं जिससे हम जानते हैं कि पिछला
१९ समय है । वे हममेंसे निकल गये परन्तु हममेंके नहीं
थे क्योंकि जो वे हममेंके होते तो हमारे संग रहते
परन्तु वे निकल गये जिस्तें प्रगट होवें कि सब हममेंके
२० नहीं हैं । पर तुम्हारा तो उस परमपवित्रसे अभिषेक
२१ हुआ है और तुम सब कुछ जानते हो । मैंने तुम्हारे पास
इसलिये नहीं लिखा है कि तुम सत्यको नहीं जानते हो
परन्तु इसलिये कि उसे जानते हो और कि कोई झूठ
२२ सत्यमेंसे नहीं है । झूठा कौन है केवल वह जो मुकरके
कहता है कि यीशु जो है सो खीष्ट नहीं है . यही
२३ खीष्टबिरोधी है जो पितासे और पुत्रसे मुकरता है । जो
कोई पुत्रसे मुकरता है पिता भी उसका नहीं है . जो
पुत्रको मान लेता है पिता भी उसका है ।
२४ सो जो कुछ तुमने आरंभसे सुना वह तुममें रहे .
जो तुमने आरंभसे सुना सो यदि तुममें रहे तो तुम
२५ भी पुत्रमें और पितामें रहोगे । और प्रतिज्ञा जो उसने
२६ हमसे किई है यह है अर्थात अनन्त जीवन । यह बातें
मैंने तुम्हारे पास तुम्हारे भरमानेहारोंके विषयमें लिखी
२७ हैं । और तुमने जो अभिषेक उससे पाया है सो तुममें

रहता है और तुम्हें प्रयोजन नहीं कि कोई तुम्हें सिखावे
परन्तु जैसा वही अभिषेक तुम्हें सब बातोंके विषयमें
शिक्षा देता है और सत्य है और झूठ नहीं है और
जैसा उसने तुम्हें सिखाया है तैसे तुम उसमें रहो।
और अब हे बालको उसमें रहो कि जब वह प्रगट २८
होय तब हमें साहस हो और हम उसके आनेपर उसके
आगेसे लज्जित होके न जावें। जो तुम जानो कि वह २९
धर्म्मी है तो जानते हो कि जो कोई धर्म्मका कार्य्य
करता है सो उससे उत्पन्न हुआ है।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ बिश्वासियोंका अपनी पदवी और आशाके कारण पापसे बचे रहना। ७ ईश्वरके सन्तानों और शैतानके सन्तानोंके लक्षण। १४ भाइयोंको प्यार करनेसे बिश्वासियोंका भरोसा दृढ़ होता इसका बिबरण।

देखो पिताने हमोंपर कैसा प्रेम किया है कि हम १
ईश्वरके सन्तान कहावें. इस कारण संसार हमें नहीं
पहचानता है क्योंकि उसको नहीं पहचाना। हे प्यारो २
अभी हम ईश्वरके सन्तान हैं और अबलों यह नहीं प्रगट
हुआ कि हम क्या होंगे परन्तु जानते हैं कि जो प्रगट
होय तो हम उसके समान होंगे क्योंकि उसको जैसा
वह है तैसा देखेंगे। और जो कोई उसपर यह आशा ३
रखता है सो जैसा वह पवित्र है तैसाही अपनेको पवित्र
करता है। जो कोई पाप करता है सो ब्यवस्थालंघन भी ४
करता है और पाप तो ब्यवस्थालंघन है। और तुम ५
जानते हो कि वह तो इसलिये प्रगट हुआ कि हमारे
पापोंको उठा लेवे और उसमें पाप नहीं है। जो कोई ६

उसमें रहता है सो पाप नहीं करता है. जो कोई पाप
करता है उसने न उसको देखा है न उसको जाना है।
७ हे बालको कोई तुम्हें न भरमावे. जैसा वह धर्म्मी
८ है तैसा वह जो धर्म्मका कार्य्य करता है धर्म्मी है। जो
पाप करता है सो शैतानसे है क्योंकि शैतान आरंभसे
पाप करता है. ईश्वरका पुत्र इसी लिये प्रगट हुआ कि
९ शैतानके कामोंको लोप करे। जो कोई ईश्वरसे उत्पन्न
हुआ है सो पाप नहीं करता है क्योंकि उसका बीज
उसमें रहता है और वह पाप नहीं कर सकता है क्योंकि
१० ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है। इसीमें ईश्वरके सन्तान और
शैतानके सन्तान प्रगट होते हैं. जो कोई धर्म्मका कार्य्य
नहीं करता है सो ईश्वरसे नहीं है और न वह जो अपने
११ भाईको प्यार नहीं करता है। क्योंकि यही समाचार है
जो तुमने आरंभसे सुना कि हम एक दूसरेको प्यार करें।
१२ ऐसा नहीं जैसा काइन उस दुष्टसे था और अपने भाईको
बध किया. और उसको किस कारण बध किया. इस
कारण कि उसके अपने कार्य्य बुरे थे परन्तु उसके
१३ भाईके कार्य्य धर्म्मके थे। हे मेरे भाइयो यदि संसार
तुमसे बैर करता है तो अचंभा मत करो।
१४ हम लोग जानते हैं कि हम मृत्युसे पार होके जीवन-
में पहुंचे हैं क्योंकि भाइयोंको प्यार करते हैं. जो भाई-
१५ को प्यार नहीं करता है सो मृत्युमें रहता है। जो
कोई अपने भाईसे बैर रखता है सो मनुष्यघाती है
और तुम जानते हो कि किसी मनुष्यघातीमें अनन्त
१६ जीवन नहीं रहता है। हम इसीमें प्रेमको समझते हैं

कि उसने हमारे लिये अपना प्राण दिया और हमें
उचित है कि भाइयोंके लिये प्राण देवें। परन्तु जिस १७
किसीके पास संसारकी जीविका हो जो वह अपने
भाईको देखे कि उसे प्रयोजन है और उससे अपना
अन्तःकरण कठोर करे तो उसमें क्योंकर ईश्वरका
प्रेम रहता है। हे मेरे बालको हम बातसे अथवा १८
जीभसे नहीं परन्तु करणीसे और सच्चाईसे प्रेम करें।
और इसीमें हम जानते हैं कि हम सच्चाईके हैं और १९
उसके आगे अपने अपने मनको समझावेंगे। क्योंकि २०
जो हमारा मन हमें दोष देवे तो जानते हैं कि ईश्वर
हमारे मनसे बड़ा है और सब कुछ जानता है। हे २१
प्यारो जो हमारा मन हमें दोष न देवे तो हमें
ईश्वरके सन्मुख साहस है। और हम जो कुछ मांगते २२
हैं उससे पाते हैं क्योंकि उसकी आज्ञाओंको पालन
करते हैं और वेही काम करते हैं जिनसे वह प्रसन्न
होता है। और उसकी आज्ञा यह है कि हम उसके २३
पुत्र यीशु ख्रीष्टके नामपर बिश्वास करें और जैसा
उसने हमें आज्ञा दिई वैसा एक दूसरेको प्यार करें।
और जो उसकी आज्ञाओंको पालन करता है सो २४
उसमें रहता है और वह उसमें और इसीसे हम
जानते हैं कि वह हमोंमें रहता है अर्थात उस आत्मासे
जो उसने हमें दिया है।

४ चौथा पर्ब्ब।

१ आत्माओंके पहचाननेकी विधि। ७ आपसमें प्रेम करनेका उपदेश। १२ प्रेमसे ईश्वरमें रहनेका प्रमाण मिलता है इसका वर्णन।

१ हे प्यारो हर एक आत्माका बिश्वास मत करो
परन्तु आत्माओंको परखो कि वे ईश्वरकी ओरसे हैं
कि नहीं क्योंकि बहुत झूठे भविष्यद्वक्ता जगतमें निकल
२ आये हैं। इसीसे तुम ईश्वरका आत्मा पहचानते
हो . हर एक आत्मा जो मान लेता है कि यीशु ख्रीष्ट
३ शरीरमें आया है ईश्वरकी ओरसे है। और जो
आत्मा नहीं मान लेता है कि यीशु ख्रीष्ट शरीरमें
आया है ईश्वरकी ओरसे नहीं है और यही तो
ख्रीष्टबिरोधीका आत्मा है जिसे तुमने सुना है कि
४ आता है और अब भी वह जगतमें है। हे बालको
तुम तो ईश्वरके हो और तुमने उनपर जय किया है
क्योंकि जो तुममें है सो उससे जो संसारमें है बड़ा है।
५ वे तो संसारके हैं इस कारण वे संसारकी बातें बोलते हैं
६ और संसार उनकी सुनता है। हम तो ईश्वरके हैं . जो
ईश्वरको जानता है सो हमारी सुनता है . जो ईश्वर-
का नहीं है सो हमारी नहीं सुनता . इससे हम
सच्चाईका आत्मा और भ्रांतिका आत्मा पहचानते हैं।
७ हे प्यारो हम एक दूसरेको प्यार करें क्योंकि प्रेम
ईश्वरसे है और जो कोई प्रेम करता है सो ईश्वरसे
८ उत्पन्न हुआ है और ईश्वरको जानता है। जो प्रेम नहीं
करता है उसने ईश्वरको नहीं जाना क्योंकि ईश्वर प्रेम
९ है। इसीमें ईश्वरका प्रेम हमारी ओर प्रगट हुआ कि
ईश्वरने अपने एकलौते पुत्रको जगतमें भेजा है जिस्तें
१० हम लोग उसके द्वारासे जीवें। इसीमें प्रेम है यह
नहीं कि हमने ईश्वरको प्यार किया परन्तु यह कि

उसने हमें प्यार किया और अपने पुत्रको हमारे पा-
पोंके लिये प्रायश्चित्त होनेको भेज दिया। हे प्यारो ११
यदि ईश्वरने इस रीतिसे हमें प्यार किया तो उचित
है कि हम भी एक दूसरेको प्यार करें।
किसीने ईश्वरको कभी नहीं देखा है. जो हम १२
एक दूसरेको प्यार करें तो ईश्वर हममें रहता है और
उसका प्रेम हममें सिद्ध किया हुआ है। इसीसे हम १३
जानते हैं कि हम उसमें रहते हैं और वह हममें कि
उसने अपने आत्मामेंसे हमें दिया है। और हमने देखा १४
है और साक्षी देते हैं कि पिताने पुत्रको भेजा है कि
जगतका त्राणकर्त्ता होवे। जो कोई मान लेता है कि १५
यीशु ईश्वरका पुत्र है ईश्वर उसमें रहता है और
वह ईश्वरमें। और हमारी ओर जो ईश्वरका प्रेम १६
है उसको हमने जान लिया है और उसकी प्रतीति
किई है. ईश्वर प्रेम है और जो प्रेममें रहता है सो
ईश्वरमें रहता है और ईश्वर उसमें। इसीमें प्रेम १७
हमोंमें सिद्ध किया गया है जिस्तें हमें बिचारके दिनमें
साहस होवे कि जैसा वह है हम भी इस संसारमें
वैसेही हैं। प्रेममें भय नहीं है परन्तु पूरा प्रेम भयको १८
बाहर निकालता है क्योंकि जहां भय तहां दंड है.
जो भय करता है सो प्रेममें सिद्ध नहीं हुआ है। हम १९
उसको प्यार करते हैं क्योंकि पहिले उसने हमें प्यार
किया। यदि कोई कहे मैं ईश्वरको प्यार करता हूं २०
और अपने भाईसे बैर रखे तो झूठा है क्योंकि जो
अपने भाईको जिसे देखा है प्यार नहीं करता है सो

ईश्वरको जिसे नहीं देखा है क्योंकर प्यार कर सकता है।
२१ और उससे यह आज्ञा हमें मिली है कि जो ईश्वरको
प्यार करता है सो अपने भाईको भी प्यार करे ।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

१ ईश्वरकी आज्ञा माननेसे प्रेमका प्रगट होना । ६ विश्वासीके हृदयमें पवित्र आत्माकी साक्षी । १४ प्रार्थनाके विषयमें । १८ ईश्वरके और संसारके लोगोंकी पहचान ।

१ जो कोई बिश्वास करता है कि यीशु जो है सो ख्रीष्ट
है वह ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है और जो कोई उत्पन्न
करनेहारेको प्यार करता है सो उसे भी प्यार करता है
२ जो उससे उत्पन्न हुआ है । इससे हम जानते हैं कि
जब हम ईश्वरको प्यार करते हैं और उसकी आज्ञाओं-
को पालन करते हैं तब ईश्वरके सन्तानोंको प्यार करते
३ हैं। क्योंकि ईश्वरका प्रेम यह है कि हम उसकी आज्ञा-
ओंको पालन करें और उसकी आज्ञाएं भारी नहीं हैं।
४ क्योंकि जो कुछ ईश्वरसे उत्पन्न हुआ है सो संसारपर
जय करता है और वह जय जिसने संसारपर जय पाया
५ है यह है अर्थात हमारा बिश्वास । संसारपर जय
करनेहारा कौन है केवल वह जो बिश्वास करता है
कि यीशु ईश्वरका पुत्र है ।

६ जो जल और लोहूके द्वारासे आया सो यह है अ-
र्थात यीशु ख्रीष्ट . वह केवल जलसे नहीं परन्तु जलसे
और लोहूसे आया . और आत्मा है जो साक्षी देता है
७ क्योंकि आत्मा सत्य है । क्योंकि तीन हैं जो [स्वर्गमें
साक्षी देते हैं पिता और बचन और पवित्र आत्मा

और ये तीनों एक हैं । और तीन हैं जो पृथिवीपर] ८
साक्षी देते हैं आत्मा और जल और लोहू और तीनों
एकमें मिलते हैं । जो हम मनुष्योंकी साक्षीको ग्रहण ९
करते हैं तो ईश्वरकी साक्षी उससे बड़ी है क्योंकि
यह ईश्वरकी साक्षी है जो उसने अपने पुत्रके विषयमें
दिई है । जो ईश्वरके पुत्रपर बिश्वास करता है सो १०
अपनेहीमें साक्षी रखता है . जो ईश्वरका बिश्वास
नहीं करता है उसको झूठा बनाया है क्योंकि
उस साक्षीपर बिश्वास नहीं किया है जो ईश्वरने
अपने पुत्रके विषयमें दिई है । और साक्षी यह है कि ११
ईश्वरने हमें अनन्त जीवन दिया है और यह जीवन
उसके पुत्रमें है । पुत्र जिसका है उसको जीवन है . १२
ईश्वरका पुत्र जिसका नहीं है उसको जीवन नहीं है।
यह बातें मैंने तुम्हारे पास जो ईश्वरके पुत्रके नामपर १३
बिश्वास करते हो इसलिये लिखी हैं कि तुम जानो
कि तुमको अनन्त जीवन है और जिस्तें तुम ईश्वरके
पुत्रके नामपर बिश्वास रखो ।

और जो साहस हमको उसके यहां होता है सो यह १४
है कि जो हम लोग उसकी इच्छाके अनुसार कुछ मांगें
तो वह हमारी सुनता है । और जो हम जानते हैं कि १५
जो कुछ हम मांगें वह हमारी सुनता है तो जानते हैं
कि मांगी हुई बस्तु जो हमने उससे मांगी हैं हमें मिली
हैं। यदि कोइ अपने भाईको ऐसा पाप करते देखे जो मृत्यु- १६
जनक पाप नहीं है तो वह बिन्ती करेगा और जो पाप
मृत्युजनक नहीं है ऐसा पाप करनेहारोंके लिये वह उसे

जीवन देगा . मृत्युजनक पाप भी होता है उसके
१७ विषयमें मैं नहीं कहता हूं कि वह मांगे । सब अधर्म्म
पाप है और ऐसा पाप भी है जो मृत्युजनक नहीं है।
१८ हम जानते हैं कि जो कोई ईश्वरसे उत्पन्न हुआ
है सो पाप नहीं करता है परन्तु जो ईश्वरसे उत्पन्न
हुआ सो अपने तईं बचा रखता है और वह दुष्ट उसे
१९ नहीं छूता है । हम जानते हैं कि हम ईश्वरसे हैं और
२० सारा संसार उस दुष्टके बशमें पड़ा है । और हम
जानते हैं कि ईश्वरका पुत्र आया है और हमें बुद्धि
दिई है कि हम सच्चेको पहचानें और हम उस सच्चेमें
उसके पुत्र यीशु खीष्टमें रहते हैं . यह तो सच्चा ईश्वर
२१ और अनन्त जीवन है । हे बालको अपने तईं मूरतोंसे
बचाओ । आमीन ॥

योहन प्रेरितकी दूसरी पत्री ।

---

१ पत्रीका आभाष । ४ प्रेमकी आवश्यकता और भरमानेहारे उपदेशकोंकी सहायता करनेका निषेध । १२ पत्रीकी समाप्ति ।

प्राचीन पुरुष चुनी हुई कुरियाको और उसके १
लड़कोंको जिन्हें मैं सच्चाईमें प्यार करता हूं . और २
केवल मैं नहीं परन्तु सब लोग भी जो सच्चाईको
जानते हैं उस सच्चाईके कारण प्यार करते हैं जो
हमोंमें रहती है और हमारे साथ सदालों रहेगी ।
अनुग्रह औ दया औ शांति ईश्वर पिताकी ओरसे ३
और पिताके पुत्र प्रभु यीशु ख्रीष्टकी ओरसे सच्चाई
और प्रेमके द्वारा आप लोगोंके संग होय ।
मैंने बहुत आनन्द किया कि आपके लड़कोंमेंसे ४
मैंने कितनोंको जैसे हमने पितासे आज्ञा पाई तैसेही
सच्चाईपर चलते हुए पाया है । और अब हे कुरिया ५
मैं जैसा नई आज्ञा लिखता हुआ तैसा नहीं परन्तु
जो आज्ञा हमें आरंभसे मिली उसीको आपके पास
लिखता हुआ आपसे बिन्ती करता हूं कि हम एक
दूसरेको प्यार करें । और प्यार यही है कि हम उसकी ६
आज्ञाओंके अनुसार चलें . यही आज्ञा है जैसी तुमने
आरंभसे सुनी जिस्तें तुम उसपर चलो । क्योंकि बहुत ७
भरमानेहारे जगतमें आये हैं जो नहीं मान लेते हैं
कि यीशु ख्रीष्ट शरीरमें आया . यह भरमानेहारा
और ख्रीष्टबिरोधी है । अपने विषयमें चौकस रहिये ८

कि जो कर्म्म हमने किये उन्हें न खोवें परन्तु पूरा
९ फल पावें। जो कोई अपराधी होता है और खीष्टकी
शिक्षामें नहीं रहता है ईश्वर उसका नहीं है. जो
खीष्टकी शिक्षामें रहता है पिता और पुत्र दोनों उसीके
१० हैं। यदि कोई आप लोगोंके पास आके यह शिक्षा
नहीं लाता है तो उसे घरमें ग्रहण न कीजिये और
११ उससे कल्याण होय न कहिये। क्योंकि जो उससे
कल्याण होय कहता है सो उसके बुरे कर्म्मोंमें भागी
होता है।
१२ मुझे बहुत कुछ आप लोगोंके पास लिखना है पर
मुझे कागज औ सियाहीके द्वारा लिखनेकी इच्छा न
थी परन्तु आशा है कि मैं आप लोगोंके पास आऊं
और सन्मुख होके बात करूं जिस्तें हमारा आनन्द
१३ पूरा होय। आपकी चुनी हुई बहिनके लड़कोंका आपसे
नमस्कार। आमीन॥

योहन प्रेरितकी तीसरी पत्री ।

१ पत्रीका आभाष । २ गायसकी भक्ति और अतिथिसेवाकी प्रशंसा । ९ दियोत्रिफी और दीमीत्रियकी कुछ चर्चा । १३ पत्रीकी समाप्ति ।

प्राचीन पुरुष प्यारे गायसको जिसे मैं सच्चाईमें प्यार १
करता हूं ।

हे प्यारे मेरी प्रार्थना है कि जैसे आपका प्राण २
कुशल क्षेमसे रहता है तैसे सब बातोंमें आप कुशल
क्षेमसे रहें औ भले चंगे हों । क्योंकि भाई लोग जो ३
आये और आपकी सच्चाईकी जैसे आप सच्चाईपर
चलते हैं साक्षी दिई तो मैंने बहुत आनन्द किया ।
मुझे इससे बड़ा कोई आनन्द नहीं है कि मैं सुनूं कि ४
मेरे लड़के सच्चाईपर चलते हैं । हे प्यारे आप भाइ- ५
योंके लिये और अतिथियोंके लिये जो कुछ करते हैं
सो बिश्वासीकी रीतिसे करते हैं । इन्होंने मंडलीके ६
आगे आपके प्रेमकी साक्षी दिई . जो आप ईश्वरके
योग्य व्यवहार करके उन्हें आगे पहुंचावें तो भला
करेंगे । क्योंकि वे उसके नामपर निकले हैं और ७
देवपूजकोंसे कुछ नहीं लेते हैं । इसलिये हमें उचित ८
है कि ऐसोंको ग्रहण करें जिस्तें हम सच्चाईके लिये
सहकर्म्मी हो जावें ।

मैंने मंडलीके पास लिखा परन्तु दियोत्रिफी जो उन- ९
में प्रधान होनेकी इच्छा रखता है हमें ग्रहण नहीं
करता है । इस कारण मैं जो आऊं तो उसके कर्म्मोंको १०

जो वह करता है स्मरण कराऊंगा कि बुरी बातोंसे
हमारे बिरुद्ध बकता है और इनपर सन्तोष न करके
वह आपही भाइयोंको ग्रहण नहीं करता है और
उन्हें जो ग्रहण किया चाहते हैं बर्जता है और मंड-
११ लीमेंसे निकालता है। हे प्यारे बुराईके नहीं परन्तु
भलाईके अनुगामी हूजिये. जो भला करता है सो
ईश्वरसे है परन्तु जो बुरा करता है उसने ईश्वरको
१२ नहीं देखा है। दीमीत्रियके लिये सब लोगोंने और
सच्चाईने आपही साक्षी दिई है बरन हम भी साक्षी
देते हैं और आप लोग जानते हैं कि हमारी साक्षी
सत्य है।
१३ मुझे बहुत कुछ लिखना था पर मैं आपके पास
सियाही और कलमके द्वारा लिखने नहीं चाहता हूं।
१४ परन्तु मुझे आशा है कि शीघ्र आपको देखूं तब हम
१५ सन्मुख होके बात करेंगे। आपका कल्याण होय.
मित्र लोगोंका आपसे नमस्कार. नाम ले ले मित्रोंसे
नमस्कार कहिये।

यिहूदाकी पत्री।

१ पत्रीका आभाष। ३ पत्रीका प्रयोजन और झूठे उपदेशकोंके प्रगट होनेका भविष्यद्वाक्य। ५ उनके दंडके तीन दृष्टान्त। ८ उनकी अशुद्ध चालका उलहना और हनोककी भविष्यद्वाणी। १७ निन्दकोंके प्रगट होनेके भविष्यद्वाक्यका स्मरण करवाना। २० दृढ़ रहनेका उपदेश। २४ धन्यवाद सहित पत्रीकी समाप्ति।

यिहूदा जो यीशु खीष्टका दास और याकूबका भाई १
है बुलाये हुए लोगोंको जो ईश्वर पितामें पवित्र किये
हुए और यीशु खीष्टके लिये रक्षा किये हुए हैं. तुम्हें २
बहुत बहुत दया औ शांति औ प्रेम पहुंचे।

हे प्यारो मैं साधारण त्राणके विषयमें तुम्हारे पास ३
लिखनेका सब प्रकारका यत्न जो करने लगा तो मुझे
अवश्य हुआ कि तुम्हारे पास लिखके उस विश्वासके लिये
जो पवित्र लोगोंको एकही बेर सोंपा गया साहस करने-
का उपदेश करूं। क्योंकि कितने मनुष्य जो पूर्व्वकालसे ४
इस दंडके योग्य लिखे गये थे छिपके घुस आये हैं जो
भक्तिहीन हैं और हमारे ईश्वरके अनुग्रहको लुचपन-
की ओर फेर देते हैं और अद्वैत स्वामी ईश्वर और
हमारे प्रभु यीशु खीष्टसे मुकर जाते हैं।

पर यद्यपि तुमने इसको एक बेर जाना था तौभी मैं ५
तुम्हें स्मरण करवाने चाहता हूं कि प्रभुने लोगोंको मिसर
देशसे बचाके फिर जिन्होंने बिश्वास न किया उन्हें नाश
किया। उन दूतोंको भी जिन्होंने अपने प्रथम पदको न ६
रखा परन्तु अपने निज निवासको छोड़ दिया उसने उस
बड़े दिनके बिचारके लिये अंधकारमें सदाके बन्धनोंमें
रखा है। जैसे सदोम और अमोरा और उनके आस- ७
पासके नगर इन्होंकीसी रीतिपर व्यभिचार करके और

पराये शरीरके पीछे जाके दृष्टान्त ठहराये गये हैं कि
अनन्त आगका दंड भोगते हैं ।
८ तौभी उसी रीतिसे ये लोग भी स्वप्नदर्शी हो शरीरको
अशुद्ध करते हैं और प्रभुताको तुच्छ जानते हैं और
९ महत पदोंकी निन्दा करते हैं। परन्तु प्रधान दूत मीखा-
येल जब शैतानसे मूसाके देहके विषयमें बाद बिबाद
करता था तब उसपर निन्दासंयुक्त बिचार करनेका
१० साहस न किया परन्तु कहा परमेश्वर तुझे डांटे । पर
ये लोग जिन जिन बातोंको नहीं जानते हैं उनकी
निन्दा करते हैं परन्तु जिन जिन बातोंको अचैतन्य
पशुओंकी नाईं स्वभावहीसे बूझते हैं उनमें भ्रष्ट होते हैं।
११ उनपर सन्ताप कि वे काइनके मार्गपर चले हैं और
मजूरीके लिये बलामकी भूलमें ढल गये हैं और कोरहके
१२ बिबादमें नाश हुए हैं। तुम्हारे प्रेमके भोजोंमें ये लोग
समुद्रमें छिपे हुए पर्ब्बत सरीखे हैं कि वे तुम्हारे संग निर्भय
जेवते हुए अपने तईं पालते हैं वे निर्जल मेघ हैं जो बया-
रोंसे इधर उधर उड़ाये जाते हैं पतझड़के निष्फल पेड़ जो
१३ दो दो बेर मरे हैं और उखाड़े गये हैं . समुद्रकी प्रचंड
लहरें जो अपनी लज्जाका फेन निकालती हैं भरमते
हुए तारे जिनके लिये सदाका घोर अन्धकार रखा गया
१४ है। और हनोकने भी जो आदमसे सातवां था इन्होंका
भविष्यद्वाक्य कहा कि देखो परमेश्वर अपने सहस्रों
१५ पवित्रोंके बीचमें आया . कि सभोंका बिचार करे और
उनमेंके सब भक्तिहीन लोगोंको उनके सब अभक्तिके
कर्म्मोंके विषयमें जो उन्होंने भक्तिहीन होके किये हैं और

उन सब कठोर बातोंके विषयमें जो भक्तिहीन पापियोंने
उसके विरुद्ध कही हैं दोषी ठहरावे। ये तो कुड़कुड़ानेहारे १६
अपने भाग्यके दूसनेहारे और अपने अभिलाषोंके अनु-
सार चलनेहारे हैं और उनका मुंह गलफटाकीकी बातें
बोलता है और वे लाभके निमित्त मुंह देखी बड़ाई
किया करते हैं।

पर हे प्यारो तुम उन बातोंको स्मरण करो जो हमारे १७
प्रभु यीशु खीष्टके प्रेरितोंने आगेसे कही हैं. कि वे तुमसे १८
बोले कि पिछले समयमें निन्दक लोग होंगे जो अपने
अभक्तिके अभिलाषोंके अनुसार चलेंगे। ये तो वे हैं १९
जो अपने तईं अलग करते हैं शारीरिक लोग जिन्हें
आत्मा नहीं है।

परन्तु हे प्यारो तुम लोग अपने अति पवित्र २०
विश्वासके द्वारा अपने तईं सुधारते हुए पवित्र आत्मा-
की सहायतासे प्रार्थना करते हुए . अपनेको ईश्वरके २१
प्रेममें रखो और अनन्त जीवनके लिये हमारे प्रभु
यीशु खीष्टकी दयाकी आस देखो। और भेद करते २२
हुए कितनोंपर तो दया करो। पर कितनोंको आगमेंसे २३
छीनके उस वस्त्रसे भी जो शरीरसे कलंकी किया गया
है घिन्न करके डरते हुए बचाओ।

जो तुम्हें ठोकरसे बचाये हुए रख सकता है और अप- २४
नी महिमाके सन्मुख आह्लाद सहित निर्दोष खड़ा कर
सकता है. उसको अर्थात अद्वैत बुद्धिमान ईश्वर हमारे २५
त्राणकर्त्ताको ऐश्वर्य्य और महिमा औ पराक्रम और
अधिकार अभी और सर्व्वदालों भी होवे। आमीन ॥

योहनका प्रकाशित वाक्य ।

१ पहिला पर्ब्ब ।

१ पुस्तकका आभाष । ४ आशियाकी सात मंडलियोंके पास योहनकी सात पत्रियोंका आभाष । ९ प्रभु यीशुका योहनको पत्री लिखनेकी आज्ञा देना । १२ प्रभुने योहनको जो दर्शन दिया तिसका बर्णन ।

१ यीशु खीष्टका प्रकाशित वाक्य जो ईश्वरने उसे दिया
कि वह अपने दासोंको वह बातें जिनका शीघ्र पूरा होना
अवश्य है दिखावे और उसने अपने दूतके हाथ भेजके
२ उसे अपने दास योहनको बताया. जिसने ईश्वरके बचन
और यीशु खीष्टकी साक्षीपर अर्थात जो कुछ उसने देखा
३ उसपर साक्षी दिई । जो इस भविष्यद्वाक्यकी बातें पढ़ता
है और जो सुनते और इसमेंकी लिखी हुई बातोंको
पालन करते हैं सो धन्य क्योंकि समय निकट है ।
४ योहन आशियामेंकी सात मंडलियोंको . अनुग्रह
और शांति उससे जो है और जो था और जो आनेवाला
है और सात आत्माओंसे जो उसके सिंहासनके आगे हैं .
५ और यीशु खीष्टसे तुम्हें मिले . बिश्वासयोग्य साक्षी और
मृतकोंमेंसे पहिलौठा और पृथिवीके राजाओंका अध्यक्ष
६ वही है । जिसने हमें प्यार कर अपने लोहूमें हमारे
पापोंको धो डाला और हमें अपने पिता ईश्वरके यहां
राजा और याजक बनाया उसीकी महिमा औ पराक्रम
७ सदा सर्ब्बदा रहे . आमीन । देखो वह मेघोंपर आता
है और हर एक आंख उसे देखेगी हां जिन्होंने उसे बेधा
वे भी उसे देखेंगे और पृथिवीके सब कुल उसके लिये

छाती पीटेंगे. ऐसा होय आमीन। परमेश्वर ईश्वर ८
वह जो है और जो था और जो आनेवाला है जो
सर्व्वशक्तिमान है कहता है मैंही अलफा और ओमिगा
आदि और अन्त हूं।

मैं योहन जो तुम्हारा भाई और यीशु खीष्टके क्लेश ९
और राज्य और धीरजमें सम्भागी हूं ईश्वरके बचनके
कारण और यीशु खीष्टकी साक्षीके कारण पत्मो नाम
टापूमें था। मैं प्रभुके दिन आत्मामें था और अपने पीछे १०
तुरहीकासा बड़ा शब्द यह कहते सुना. कि मैंही अलफा ११
और ओमिगा पहिला और पिछला हूं और जो तू
देखता है उसे पत्रमें लिख और आशियामेंकी सात मंड-
लियोंके पास भेज अर्थात इफिसको और स्मुर्णाको और
पर्गामको और थुआतीराको और सार्दीको और फि-
लादिलफियाको और लाओदिकेयाको।

और जिस शब्दने मेरे संग बातें किईं उसे देखनेको १२
मैं पीछे फिरा और पीछे फिरके मैंने सात सोनेकी दीवट
देखीं। और उन सात दीवटोंके बीचमें मनुष्यके पुत्रके १३
समान एक पुरुषको देखा जो पांवोंतकका बस्त्र पहिने
और छातीपर सुनहला पटुका बांधे हुए था। उसके सिर १४
और बाल श्वेत ऊनके ऐसे और पालेके ऐसे उजले हैं
और उसके नेत्र अग्निकी ज्वालाकी नाईं हैं। और उसके १५
पांव उत्तम पीतलके समान भट्ठीमें दहकाये हुएसे हैं
और उसका शब्द बहुत जलके शब्दकी नाईं है। और १६
वह अपने दहिने हाथमें सात तारे लिये हुए है और
उसके मुखसे चोखा दोधारा खड्ग निकलता है और उस-

का मुंह ऐसा है जैसा सूर्य्य अपने पराक्रममें चमकता
१७ है । और जब मैंने उसे देखा तब मृतककी नाईं उसके
पांवों पास गिर पड़ा और उसने अपना दहिना हाथ
मुझपर रखके मुझसे कहा मत डर मैंही पहिला और
१८ पिछला और जीवता हूं । और मैं मूआ था और देख मैं
सदा सर्ब्बदा जीवता हूं . आमीन . और मृत्यु और
१९ परलोककी कुंजियां मेरे पास हैं । इसलिये जो कुछ तूने
देखा है और जो कुछ होता है और जो कुछ इसके
२० पीछे होनेवाला है सो लिख. अर्थात सात तारोंका
भेद जो तूने मेरे दहिने हाथमें देखे और वे सात सोनेकी
दीवटें . सात तारे सातों मंडलियोंके दूत हैं और सात
दीवट जो तूने देखीं सातों मंडली हैं ।

२ दूसरा पर्ब्ब ।

१ इफिसमेंकी मंडलीके पास पत्री । ८ स्मुर्णामेंकी मंडलीके पास पत्री । १२ पर्गाममेंकी मंडलीके पास पत्री । १८ थुआतीरामेंकी मंडलीके पास पत्री ।

१ इफिसमेंकी मंडलीके दूतके पास लिख . जो सातों
तारे अपने दहिने हाथमें धरे रहता है जो सातों सो-
नेकी दीवटोंके बीचमें फिरता है सो यही कहता है ।
२ मैं तेरे कार्य्योंको और तेरे परिश्रमको और तेरे धीरज-
को जानता हूं और यह कि तू बुरे लोगोंकी नहीं सह
सकता है और जो लोग अपने तईं प्रेरित कहते हैं पर
३ नहीं हैं उन्हें तूने परखा और उन्हें झूठे पाया । और
तूने सह लिया और धीरज रखता है और मेरे नामके
४ कारण परिश्रम किया है और नहीं थक गया है । पर-
न्तु मेरे मनमें तेरी ओर यह है कि तूने अपना पहिला

प्रेम छोड़ दिया है । सो चेत कर कि तू कहांसे गिरा है ५
और पश्चात्ताप कर और पहिले कार्य्योंको कर नहीं तो
मैं शीघ्र तेरे पास आता हूं और जो तू पश्चात्ताप न करे
तो मैं तेरी दीवटको उसके स्थानसे हटा देऊंगा। पर ६
तुझे इतना तो है कि तू निकोलावियोंके कर्म्मोंसे घिन्न
करता है जिनसे मैं भी घिन्न करता हूं। जिसका कान ७
हो सो सुने कि आत्मा मंडलियोंसे क्या कहता है .
जो जय करे उसको मैं जीवनके वृक्षमेंसे जो ईश्वरके
स्वर्गलोकमें है खानेको देऊंगा ।

और स्मुर्णामेंकी मंडलीके दूतके पास लिख . जो ८
पहिला और पिछला है जो मूआ था और जी गया
सो यही कहता है । मैं तेरे कार्य्योंको और क्लेशको ९
और दरिद्रताको जानता हूं तौभी तू धनी है और
जो लोग अपने तईं यिहूदी कहते हैं और नहीं हैं परन्तु
शैतानकी सभा हैं उनकी निन्दाको जानता हूं । जो १०
दुःख तू भोगेगा उससे कुछ मत डर देख शैतान तुम-
मेंसे कितनोंको बन्दीगृहमें डालेगा कि तुम्हारी परीक्षा
किई जाय और तुम्हें दस दिनका क्लेश होगा . तू
मृत्युलों बिश्वासयोग्य रह और मैं तुझे जीवनका
मुकुट देऊंगा । जिसका कान हो सो सुने कि आत्मा ११
मंडलियोंसे क्या कहता है . जो जय करे दूसरी मृत्युसे
उसकी कुछ हानि नहीं होगी ।

और पर्गाममेंकी मंडलीके दूतके पास लिख . जिस १२
पास खड्ग है जो दोधारा और चोखा है सो यही कहता है।
मैं तेरे कार्य्योंको जानता हूं और तू कहां बास करता १३

है अर्थात जहां शैतानका सिंहासन है और तू मेरे
नामको धरे रहता है और मेरे बिश्वाससे उन दिनोंमें
भी नहीं मुकर गया जिनमें अन्तिपा मेरा बिश्वासयोग्य
साक्षी था जो तुम्होंमें जहां शैतान बास करता है तहां
१४ घात किया गया । परन्तु मेरे मनमें तेरी ओर कुछ
थोड़ीसी बातें हैं कि वहां तेरे पास कितने हैं जो बला-
मकी शिक्षाको धारण करते हैं जिसने बालाकको शिक्षा
दिई कि इस्रायेलके सन्तानोंके आगे ठोकरका कारण
डाले जिस्तें वे मूर्त्तिके आगेके बलिदान खायें और व्यभि-
१५ चार करें । वैसेही तेरे पास भी कितने हैं जो निकोला-
यियोंकी शिक्षाको धारण करते हैं जिस बातसे मैं घिन्न
१६ करता हूं । पश्चात्ताप कर नहीं तो मैं शीघ्र तेरे पास
आता हूं और अपने मुखके खड्गसे उनके साथ लडूंगा ।
१७ जिसका कान हो सो सुने कि आत्मा मंडलियोंसे क्या
कहता है . जो जय करे उसको मैं गुप्त मन्नामेंसे खानेको
देऊंगा और उसको एक श्वेत पत्थर देऊंगा और उस
पत्थरपर एक नया नाम लिखा हुआ है जिसे कोई
नहीं जानता है केवल वह जो उसे पाता है ।
१८ और थुआतीरामेंकी मंडलीके दूतके पास लिख.
ईश्वरका पुत्र जिसके नेत्र अग्निकी ज्वालाकी नाई और
१९ उसके पांव उत्तम पीतलके समान हैं यही कहता है । मैं
तेरे कार्य्योंको और प्रेमको और सेवकाईको और बि-
श्वासको और तेरे धीरजको जानता हूं और यह कि तेरे
२० पिछले कार्य्य पहिलोंसे अधिक हैं । परन्तु मेरे मनमें
तेरी ओर यह है कि तू उस स्त्री ईजिबलको जो अपने

तईं भविष्यद्वक्ती कहती है मेरे दासोंको सिखाने और
भरमाने देता है जिस्तें वे व्यभिचार करें और मूर्त्तिके
आगेके बलिदान खायें। और मैंने उसको समय दिया २१
कि वह पश्चात्ताप करे पर वह अपने व्यभिचारसे पश्चा-
त्ताप करने नहीं चाहती है। देख मैं उसे खाटपर डाल- २२
ता हूं और जो उसके संग व्यभिचार करते हैं जो वे
अपने कर्म्मोंसे पश्चात्ताप न करें तो बड़े क्लेशमें डालूंगा।
और मैं उसके लड़कोंको मार डालूंगा और सब मंडलि- २३
यां जानेंगीं कि मैंहीं हूं जो लंकको और हृदयोंको
जांचता हूं और मैं तुममेंसे हर एकको तुम्हारे कर्म्मोंके
अनुसार देऊंगा। पर मैं तुम्होंसे अर्थात थुआतीरामेंके २४
और और लोगोंसे जितने इस शिक्षाको नहीं रखते हैं
और जिन्होंने शैतानकी गंभीर बातोंको जैसा वे कहते
हैं नहीं जाना है कहता हूं कि मैं तुमपर और कुछ भार
न डालूंगा। परन्तु जो तुम्हारे पास है उसे जबलों मैं न २५
आऊं तबलों धरे रहो। और जो जय करे और मेरे २६
कार्य्योंको अन्तलों पालन करे उसको मैं अन्यदेशियोंपर
अधिकार देऊंगा। और जैसा मैंने अपने पितासे पाया २७
है तैसा वह भी लोहेका दंड लेके उनकी चरवाही
करेगा जैसे मिट्टीके बर्त्तन चूर किये जाते हैं। और मैं २८
उसे भोरका तारा देऊंगा। जिसका कान हो सो सुने २९
कि आत्मा मंडलियोंसे क्या कहता है।

३ तीसरा पर्ब्ब।

१ सार्दीमेंकी मंडलीके पास पत्री। ७ फिलादिलफियामेंकी मंडलीके पास पत्री। १४ लाओदिकेयामेंकी मंडलीके पास पत्री।

१ और सार्दीमेंकी मंडलीके दूतके पास लिख . जिस
पास ईश्वरके सातों आत्मा हैं और सातों तारे सो यही
कहता है . मैं तेरे कार्य्योंको जानता हूं कि तू जीनेका
२ नाम रखता है और मृतक है । जाग उठ और जो
रह गया है और मरा चाहता है उसे स्थिर कर क्योंकि
३ मैंने तेरे कार्य्योंको ईश्वरके आगे पूर्ण नहीं पाया है। सो
चेत कर कि तूने कैसा ग्रहण किया और सुना है और
उसे पालन करके पश्चात्ताप कर . सो जो तू न जागे तो
मैं चोरकी नाईं तुझपर आ पडूंगा और तू कुछ नहीं
४ जानेगा कि मैं कौनसी घड़ी तुझपर आ पडूंगा । परन्तु
तेरे पास सार्दीमें भी थोड़ेसे नाम हैं जिन्होंने अपना
अपना बस्त्र अशुद्ध नहीं किया और वे उजला पहिने
५ हुए मेरे संग फिरेंगे क्योंकि वे योग्य हैं । जो जय करे
उसे उजला बस्त्र पहिनाया जायगा और मैं उसका नाम
जीवनके पुस्तकमेंसे किसी रीतिसे न मिटाऊंगा पर
उसका नाम अपने पिताके आगे और उसके दूतोंके
६ आगे मान लेऊंगा । जिसका कान हो सो सुने कि
आत्मा मंडलियोंसे क्या कहता है ।
७ और फिलादिलफियामेंकी मंडलीके दूतके पास लिख.
जो पवित्र है जो सत्य है जिस पास दाऊदकी कुंजी है
जो खोलता है और कोई बन्द नहीं करता और बन्द
करता है और कोई नहीं खोलता सो यही कहता है ।
८ मैं तेरे कार्य्योंको जानता हूं . देख मैंने तेरे आगे खुला
हुआ द्वार रख दिया है जिसे कोई नहीं बन्द कर सकता
है क्योंकि तेरा सामर्थ्य थोड़ासा है और तूने मेरे बचनको

पालन किया है और मेरे नामसे नहीं मुकर गया है।
देख मैं शैतानकी सभामेंसे अर्थात जो लोग अपने तईं ९
यिहूदी कहते हैं और नहीं हैं परन्तु झूठ बोलते हैं
उनमेंसे कितनोंको सोंप देता हूं देख मैं उनसे ऐसा
करूंगा कि वे आके तेरे पांवोंके आगे प्रणाम करेंगे और
जान लेंगे कि मैंने तुझे प्यार किया है। तूने मेरे धीरजके १०
बचनको पालन किया इसलिये मैं भी तुझे उस परीक्षाके
समयसे बचा रखूंगा जो सारे संसारपर आनेवाला है
कि पृथिवीके निवासियोंकी परीक्षा करे। देख मैं शीघ्र ११
आता हूं . जो तेरे पास है उसे धरे रह कि कोई तेरा
मुकुट न ले ले। जो जय करे उसे मैं अपने ईश्वरके १२
मन्दिरमें खंभा बनाऊंगा और वह फिर कभी बाहर न
निकलेगा और मैं अपने ईश्वरका नाम और अपने ईश्व-
रके नगरका नाम अर्थात नई यिरूशलीमका जो स्वर्ग-
मेंसे मेरे ईश्वरके पाससे उतरती है और अपना नया
नाम उसपर लिखूंगा। जिसका कान हो सो सुने कि १३
आत्मा मंडलियोंसे क्या कहता है।

और लाओदिकेयामेंकी मंडलीके दूतके पास लिख . १४
जो आमीन है जो बिश्वासयोग्य और सच्चा साक्षी है जो
ईश्वरकी सृष्टिका आदि है सो यही कहता है। मैं तेरे १५
कार्य्योंको जानता हूं कि तू न ठंढा है न तप्त है . मैं
चाहता हूं कि तू ठंढा अथवा तप्त होता। सो इसलिये १६
कि तू गुनगुना है और न ठंढा न तप्त है मैं तुझे अपने
मुंहमेंसे उगल डालूंगा। तू जो कहता है कि मैं धनी १७
हूं और धनवान हुआ हूं और मुझे किसी बस्तुका

प्रयोजन नहीं है और नहीं जानता है कि तूही दीनहीन
और अभागा है और कंगाल और अन्धा और नंगा है.
१८ इसीलिये मैं तुझे परामर्श देता हूं कि आगसे ताया हुआ
सोना मुझसे मोल ले जिस्तें तू धनवान होय और उजला
बस्त्र जिस्तें तू पहिन लेवे और तेरी नंगाईको लज्जा न
प्रगट किई जाय और अपनी आंखोंपर लगानेके लिये
१९ अंजन ले जिस्तें तू देखे। मैं जिन जिन लोगोंको प्यार
करता हूं उनको उलहना और ताड़ना करता हूं इस-
२० लिये उद्योगी हो और पश्चात्ताप कर । देख मैं द्वारपर
खड़ा हुआ खटखटाता हूं . यदि कोई मेरा शब्द सुनके
द्वार खोले तो मैं उस पास भीतर आऊंगा और उसके
२१ संग बियारी खाऊंगा और वह मेरे संग खायगा। जो
जय करे उसे मैं अपने संग अपने सिंहासनपर बैठने
देऊंगा जैसा मैंने भी जय किया और अपने पिताके
२२ संग उसके सिंहासनपर बैठा। जिसका कान हो सो
सुने कि आत्मा मंडलियोंसे क्या कहता है ।

४ चौथा पर्ब्ब ।

ईश्वरके सिंहासनका और स्तुति करनेहारे प्राचीनों और प्राणियोंका दर्शन ।

१ इसके पीछे मैंने दृष्टि किई और देखो स्वर्गमें एक
द्वार खुला हुआ है और वह पहिला शब्द जो मैंने सुना
अर्थात मेरे संग बात करनेहारी तुरहीकासा शब्द यह
कहता है कि इधर ऊपर आ और मैं वह बातें जिनका
२ इस पीछे पूरा होना अवश्य है तुझे दिखाऊंगा। और
तुरन्त मैं आत्मामें हुआ और देखो एक सिंहासन स्वर्गमें

धरा था और सिंहासनपर एक बैठा है। और जो बैठा ३
है सो देखनेमें सूर्य्यकान्त मणि और माणिक्यकी नाईं है
और सिंहासनकी चहुं ओर मेघधनुष है जो देखनेमें
मरकतकी नाईं है। और उस सिंहासनकी चहुं ओर ४
चौबीस सिंहासन हैं और इन सिंहासनोंपर मैंने चौबीस
प्राचीनोंको बैठे देखा जो उजला बस्त्र पहिने हुए और
अपने अपने सिरपर सोनेके मुकुट दिये हुए थे। और ५
सिंहासनमेंसे बिजलियां और गर्जन और शब्द निकलते
हैं और सात अग्निदीपक सिंहासनके आगे जलते हैं जो
ईश्वरके सातों आत्मा हैं। और सिंहासनके आगे ६
कांचका समुद्र है जो स्फटिककी नाईं है और सिंहासनके
बीचमें और सिंहासनके आसपास चार प्राणी हैं जो
आगे और पीछे नेत्रोंसे भरे हैं। और पहिला प्राणी ७
सिंहके समान और दूसरा प्राणी बछडूके समान है और
तीसरे प्राणीको मनुष्यकासा मुंह है और चौथा प्राणी
उड़ते हुए गिद्धके समान है। और चारों प्राणियोंमेंसे ८
एक एकको छः छः पंख हैं और चहुं ओर और भीतर वे
नेत्रोंसे भरे हैं और वे रात दिन बिश्राम न लेके कहते हैं
पवित्र पवित्र पवित्र परमेश्वर ईश्वर सर्ब्बशक्तिमान जो
था और जो है और जो आनेवाला है। और जब जब ९
वे प्राणी उसकी जो सिंहासनपर बैठा है जो सदा
सर्ब्बदा जीवता है महिमा औ आदर औ धन्यबाद
करते हैं. तब तब चौबीसों प्राचीन सिंहासनपर बैठने- १०
हारेके आगे गिर पड़ते हैं और उसको जो सदा सर्ब्बदा
जीवता है प्रणाम करते हैं और अपने अपने मुकुट

११ सिंहासनके आगे डालके कहते हैं . हे परमेश्वर
हमारे ईश्वर तू महिमा औ आदर औ सामर्थ्य लेनेके
योग्य है क्योंकि तूने सब बस्तु सृजीं और तेरी इच्छाके
कारण वे हुईं और सृजी गईं।

५ पांचवां पर्ब्ब ।

१ सात छाप दिये हुए एक पुस्तकका दर्शन और उसके खोलनेका बिचार । ६ मेम्नेका दर्शन और उसका वह पुस्तक लेना और सारी सृष्टिका उसकी स्तुति करना ।

१ और मैंने सिंहासनपर बैठनेहारेके दहिने हाथमें एक
पुस्तक देखा जो भीतर और पीठपर लिखा हुआ था
२ और सात छापोंसे उसपर छाप दिई हुई थी। और
मैंने एक पराक्रमी दूतको देखा कि बड़े शब्दसे प्रचार
करता है यह पुस्तक खोलने और उसकी छापें तोड़नेके
३ योग्य कौन है। और न स्वर्गमें न पृथिवीपर न पृथिवीके
नीचे कोई वह पुस्तक खोलने अथवा उसे देखने सकता
४ था। और मैं बहुत रोने लगा इसलिये कि पुस्तक
खोलने और पढ़ने अथवा उसे देखनेके योग्य कोई
५ नहीं मिला। और प्राचीनोंमेंसे एकने मुझसे कहा
मत रो देख वह सिंह जो यिहूदाके कुलमेंसे है जो
दाऊदका मूल है पुस्तक खोलने और उसकी सात
छापें तोड़नेके लिये जयवन्त हुआ है।
६ और मैंने दृष्टि किई और देखो सिंहासनके और
चारों प्राणियोंके बीचमें और प्राचीनोंके बीचमें एक
मेम्ना जैसा बध किया हुआ खड़ा है जिसके सात सींग
और सात नेत्र हैं जो सारी पृथिवीमें भेजे हुए ईश्वरके

सातों आत्मा हैं । और उसने आके वह पुस्तक सिं- ७
हासनपर बैठनेहारेके दहिने हाथसे ले लिया । और ८
जब उसने पुस्तक लिया तब चारों प्राणी और चौबीसों
प्राचीन मेम्नेके आगे गिर पड़े और हर एकके पास
बीण थी और धूपसे भरे हुए सोनेके पियाले जो
पवित्र लोगोंकी प्रार्थनाएं हैं । और वे नया गीत गाते ९
हैं कि तू पुस्तक लेने और उसकी छापें खोलनेके
योग्य है क्योंकि तू बध किया गया और तूने अपने
लोहूसे हमें हर एक कुल और भाषा और लोग और
देशमेंसे ईश्वरके लिये मोल लिया . और हमें हमारे १०
ईश्वरके यहां राजा और याजक बनाया और हम
पृथिवीपर राज्य करेंगे । और मैंने दृष्टि किई और ११
सिंहासनकी और प्राणियोंकी और प्राचीनोंकी चहुं
ओर बहुत दूतोंका शब्द सुना और वे गिन्तीमें लाखों
लाख और सहस्रों सहस्र थे । और वे बड़े शब्दसे कहते १२
थे मेम्ना जो बध किया गया सामर्थ्य औ धन औ बुद्धि औ
शक्ति औ आदर औ महिमा औ धन्यबाद लेनेके योग्य
है । और हर एक सृजी हुई बस्तुको जो स्वर्गमें और १३
पृथिवीपर और पृथिवीके नीचे और समुद्रपर है और
सब कुछ जो उनमें है मैंने कहते सुना कि उसका जो
सिंहासनपर बैठा है और मेम्नेका धन्यबाद औ आदर
औ महिमा औ पराक्रम सदा सर्ब्बदा रहे । और चारों १४
प्राणी आमीन बोले और चौबीसों प्राचीनोंने गिरके
उसको जो सदा सर्ब्बदा जीवता है प्रणाम किया ।

६ छठवां पर्ब्ब ।

क. छाप खोलनेका वृत्तान्त।

१ और जब मेम्नेने छापोंमेंसे एकको खोला तब मैंने
दृष्टि किई और चारों प्राणियोंमेंसे एकको जैसे मेघ
गर्जनेके शब्दको यह कहते सुना कि आ और देख ।
२ और मैंने दृष्टि किई और देखो एक श्वेत घोड़ा है
और जो उसपर बैठा है उस पास धनुष है और उसे
मुकुट दिया गया और वह जय करता हुआ और
जय करनेको निकला ।
३ और जब उसने दूसरी छाप खोली तब मैंने दूसरे
४ प्राणीको यह कहते सुना कि आ और देख । और
दूसरा घोड़ा जो लाल था निकला और जो उसपर
बैठा था उसको यह दिया गया कि पृथिवीपरसे मेल
उठा देवे और कि लोग एक दूसरेको वध करें और
एक बड़ा खड्ग उसको दिया गया ।
५ और जब उसने तीसरी छाप खोली तब मैंने तीसरे
प्राणीको यह कहते सुना कि आ और देख. और मैंने
दृष्टि किई और देखो एक काला घोड़ा है और जो उस-
६ पर बैठा है सो अपने हाथमें तुला लिये हुए है। और
मैंने चारों प्राणियोंके बीचमेंसे एक शब्द यह कहते
सुना कि सूकीका सेर भर गेहूं और सूकीका तीन सेर
जव और तेल औ दाख रसकी हानि न करना ।
७ और जब उसने चौथी छाप खोली तब मैंने चौथे
८ प्राणीका शब्द यह कहते सुना कि आ और देख। और
मैंने दृष्टि किई और देखो एक पीलासा घोड़ा है और

जो उसपर बैठा है उसका नाम मृत्यु है और परलोक
उसके संग हो लेता है और उन्हें पृथिवीकी एक चौथाई-
पर अधिकार दिया गया कि खड्गसे और अकालसे और
मरीसे और पृथिवीके बन पशुओंके द्वारासे मार डालें।
और जब उसने पांचवीं छाप खोली तब जो लोग ९
ईश्वरके बचनके कारण और उस साक्षीके कारण जो
उनके पास थी बध किये गये थे उनके प्राणोंको मैंने
बेदीके नीचे देखा। और वे बड़े शब्दसे पुकारते थे कि हे १०
स्वामी पवित्र और सत्य कबलों तू न्याय नहीं करता है
और पृथिवीके निवासियोंसे हमारे लोहूका पलटा नहीं
लेता है। और हर एकको उजला बस्त्र दिया गया और ११
उनसे कहा गया कि जबलों तुम्हारे संगी दास भी और
तुम्हारे भाई जो तुम्हारी नाईं बध किये जानेपर हैं
पूरे न हों तबलों और थोड़ी बेर बिश्राम करो।
और जब उसने छठवीं छाप खोली तब मैंने दृष्टि किई १२
और देखो बड़ा भुईंडोल हुआ और सूर्य्य कम्मलकी नाईं
काला हुआ और चांद लोहूकी नाईं हुआ। और १३
जैसे बड़ी बयारसे हिलाये जानेपर गूलरके वृक्षसे उसके
कच्चे गूलर झड़ते हैं तैसे आकाशके तारे पृथिवीपर गिर
पड़े। और आकाश पत्रकी नाईं जो लपेटा जाता है १४
अलग हो गया और सब पर्ब्बत और टापू अपने अपने
स्थानसे हट गये। और पृथिवीके राजाओं ओ प्रधानों १५
ओ धनवानों ओ सहस्रपतियों ओ सामर्थी लोगोंने और
हर एक दासने ओ हर एक निर्बन्धने अपने अपनेको
खोहोंमें और पर्ब्बतोंके पत्थरोंके बीचमें छिपाया. और १६

पर्ब्बतों और पत्थरोंसे बोले हमपर गिरो और हमें सिं-
हासनपर बैठनेहारेके सन्मुखसे और मेम्नेके क्रोधसे
१७ छिपाओ । क्योंकि उसके क्रोधका बड़ा दिन आ
पहुंचा है और कौन ठहर सकता है ।

७ सातवां पर्ब्ब ।

१ ईश्वरके दासोंके माथेपर छाप दिये जानेका दर्शन । ९ त्राण पाये हुओंकी मंडलीका दर्शन । १३ उनकी परमगतिका बखान ।

१ और इसके पीछे मैंने चार दूतोंको देखा कि पृथिवीके
चारों कोनोंपर खड़े हो पृथिवीकी चारों बयारोंको थांभे
हैं जिस्तें बयार पृथिवीपर अथवा समुद्रपर अथवा किसी
२ पेड़पर न बहे । और मैंने दूसरे दूतको सूर्य्योदयके
स्थानसे चढ़ते देखा जिस पास जीवते ईश्वरकी छाप थी
और उसने बड़े शब्दसे उन चार दूतोंसे जिन्हें पृथिवी
और समुद्रकी हानि करनेका अधिकार दिया गया पुका-
३ रके कहा . जबलों हम अपने ईश्वरके दासोंके माथेपर
छाप न देवें तबलों पृथिवीकी अथवा समुद्रकी अथवा
४ पेड़ोंकी हानि मत करो । और जिनपर छाप दिई गई
मैंने उनकी संख्या सुनी . इस्रायेलके सन्तानोंके समस्त
कुलमेंसे एक लाख चवालीस सहस्रपर छाप दिई गई ।
५ यिहूदाके कुलमेंसे बारह सहस्रपर छाप दिई गई .
रूबेनके कुलमेंसे बारह सहस्रपर . गादके कुलमेंसे बारह
६ सहस्रपर । आशेरके कुलमेंसे बारह सहस्रपर . नप्ताली़के
कुलमेंसे बारह सहस्रपर. मनस्सीके कुलमेंसे बारह सहस्र-
७ पर । शिमियोनके कुलमेंसे बारह सहस्रपर . लेवीके
कुलमेंसे बारह सहस्रपर . इस्साखरके कुलमेंसे बारह

सहस्रपर। जिबुलूनके कुलमेंसे बारह सहस्रपर. यूसफके ८
कुलमेंसे बारह सहस्रपर. बिन्यामीनके कुलमेंसे बारह
सहस्रपर छाप दिई गई।

इसके पीछे मैंने दृष्टि किई और देखो सब देशों और ९
कुलों और लोगों और भाषाओंमेंसे बहुत लोग जिन्हें
कोई नहीं गिन सकता था सिंहासनके आगे और मेम्नेके
आगे खड़े हैं जो उजले वस्त्र पहिने हुए और अपने
अपने हाथमें खजूरके पत्ते लिये हुए हैं। और वे बड़े १०
शब्दसे पुकारके कहते हैं त्राणके लिये हमारे ईश्वरकी
जो सिंहासनपर बैठा है और मेम्नेकी जय जय होय।
और सब दूतगण सिंहासनकी और प्राचीनोंकी और ११
चारों प्राणियोंकी चहुं ओर खड़े हुए और सिंहासनके
आगे अपने अपने मुंहके बल गिरे और ईश्वरको प्रणाम
किया. और बोले आमीन. हमारे ईश्वरका धन्यबाद १२
औ महिमा औ बुद्धि औ प्रशंसा औ आदर औ सामर्थ्य
औ पराक्रम सदा सर्ब्बदा रहे. आमीन।

इसपर प्राचीनोंमेंसे एकने मुझसे कहा ये जो उजले १३
वस्त्र पहिने हुए हैं कौन हैं और कहांसे आये। मैंने उस- १४
से कहा हे प्रभु आपही जानते हैं. वह मुझसे बोला ये
वे हैं जो बड़े क्लेशमेंसे आते हैं और अपने अपने वस्त्रको
मेम्नेके लोहूमें धोके उजला किया। इस कारण वे ईश्वरके १५
सिंहासनके आगे हैं और उसके मन्दिरमें रात और दिन
उसकी सेवा करते हैं और सिंहासनपर बैठनेहारा उनके
ऊपर डेरा देगा। वे फिर भूखे न होंगे और न फिर १६
प्यासे होंगे और न उनपर धूप न कोई तपन पड़ेगी।

१७ क्योंकि मेम्ना जो सिंहासनके बीचमें है उनकी चरवाही
करेगा और उन्हें जलके जीवते सोतोंपर लिवा ले जायगा
और ईश्वर उनकी आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा।

८ आठवां पर्व्व।

१ सातवीं छापका खोला जाना और सात दूतोंको सात तुरहीका दिया जाना
और एक दूतका ईश्वरके आगे धूप देना। ७ चार दूतोंकी तुरहीके शब्दका वर्णन।

१ और जब उसने सातवीं छाप खोली तब स्वर्गमें आध
२ घड़ीके अटकल निःशब्दता हो गई। और मैंने उन सात
दूतोंको जो ईश्वरके आगे खड़े रहते हैं देखा और उन्हें
३ सात तुरही दिई गईं। और दूसरा दूत आके बेदीके
निकट खड़ा हुआ जिस पास सोनेकी धूपदानी थी और
उसको बहुत धूप दिया गया जिस्तें वह उसको सोनेकी
बेदीपर जो सिंहासनके आगे है सब पवित्र लोगोंकी
४ प्रार्थनाओंके संग मिलावे। और धूपका धूआं पवित्र
लोगोंकी प्रार्थनाओंके संग दूतके हाथमेंसे ईश्वरके
५ आगे चढ़ गया। और दूतने वह धूपदानी लेके उसमें
बेदीकी आग भरके उसे पृथिवीपर डाला और शब्द
६ और गर्जन और बिजलियां और भुईंडोल हुए। और
उन सात दूतोंने जिन पास सातों तुरहियां थीं फूंक-
नेको अपने तईं तैयार किया।

७ पहिले दूतने तुरही फूंकी और लोहूसे मिले हुए
ओले और आग हुए और वे पृथिवीपर डाले गये और
पृथिवीकी एक तिहाई जल गई और पेड़ोंकी एक
तिहाई जल गई और सब हरी घास जल गई।

और दूसरे दूतने तुरही फूंकी और आगसे जलता ८
हुआ एक बड़ा पहाड़सा कुछ समुद्रमें डाला गया और
समुद्रकी एक तिहाई लोहू हो गई । और समुद्रमेंकी ९
सृजी हुई बस्तुओंकी एक तिहाई जिन्हें जीव था मर गई
और जहाजोंकी एक तिहाई नाश हुई ।

और तीसरे दूतने तुरही फूंकी और एक बड़ा तारा १०
जो मशालकी नाईं जलता था स्वर्गसे गिरा और नदि-
योंकी एक तिहाईपर और जलके सोतोंपर पड़ा । और ११
उस तारेका नाम नगदौना कहावता है और एक ति-
हाई जल नगदौनासा हो गया और बहुतेरे मनुष्य उस
जलके कारण मर गये क्योंकि वह कड़वा किया गया ।

और चौथे दूतने तुरही फूंकी और सूर्य्यकी एक १२
तिहाई और चांदकी एक तिहाई और तारोंकी एक
तिहाई मारी गई कि उनकी एक तिहाई अंधियारी
हो जाय और दिनकी एक तिहाईलों दिन प्रकाश न
होय और वैसेही रात ।

और मैंने दृष्टि किई और एक दूतको सुनी जो १३
आकाशके बीचमेंसे उड़ता हुआ बड़े शब्दसे कहता था
कि जो तीन दूत फूंकनेपर हैं उनकी तुरहीके शब्दोंके
कारण जो रह गये हैं पृथिवीके निवासियोंपर सन्ताप
सन्ताप सन्ताप होगा ।

९ नवां पर्ब्ब ।

१ पांचवें दूतकी तुरहीके शब्दका बर्णन । १३ छठवें दूतकी तुरहीके शब्दका बर्णन ।

और पांचवें दूतने तुरही फूंकी और मैंने एक तारे- १

को देखा जो स्वर्गमेंसे पृथिवीपर गिरा हुआ था और
२ अथाह कुंडके कूपकी कुंजी उसको दिई गई। और
उसने अथाह कुंडका कूप खोला और कूपमेंसे बड़ी
भट्ठीके धूंएकी नाईं धूंआ उठा और सूर्य्य और आकाश
३ कूपके धूंएसे अंधियारे हुए। और उस धूंएमेंसे टिड्डियां
पृथिवीपर निकल गईं और जैसा पृथिवीके बिच्छूओंको
अधिकार होता है तैसा उन्हें अधिकार दिया गया।
४ और उनसे कहा गया कि न पृथिवीकी घासकी न किसी
हरियालीकी न किसी पेड़की हानि करो परन्तु केवल
उन मनुष्योंकी जिनके माथेपर ईश्वरकी छाप नहीं है।
५ और उन्हें यह दिया गया कि वे उन्हें मार न डालें
परन्तु पांच मास उन्हें पीड़ा दिई जाय और बिच्छू
जब मनुष्यको मारता है तब उसकी पीड़ा जैसी होती
६ है तैसीही उनकी पीड़ा थी। और उन दिनोंमें वे
मनुष्य मृत्युको ढूंढ़ेंगे और उसे न पावेंगे और मरनेकी
७ अभिलाषा करेंगे और मृत्यु उनसे भागेगी। और उन
टिड्डियोंके आकार युद्धके लिये तैयार किये हुए घोड़ोंके
समान थे और उनके सिरोंपर जैसे मुकुट थे जो
सोनेकी नाईं थे और उनके मुंह मनुष्योंके मुंहके ऐसे
८ थे। और उन्हें स्त्रियोंके बालकी नाईं बाल था और
९ उनके दांत सिंहोंकेसे थे। और उन्हें लोहेकी झिलम-
की नाईं झिलम थी और उनके पंखोंका शब्द बहुत
घोड़ोंके रथोंके शब्दके ऐसा था जो युद्धको दौड़ते हों।
१० और उन्हें पूंछें थीं जो बिच्छूओंके समान थीं और
उनकी पूंछोंमें डंक थे और पांच मास मनुष्योंको दुःख

देनेका उन्हें अधिकार था । और उनपर एक राजा ११
है अर्थात अथाह कुंडका दूत जिसका नाम इब्रीय
भाषामें अबद्दोन है और यूनानीयमें उसका नाम
अपल्लुओन है । पहिला सन्ताप बीत गया है देखो १२
इस पीछे दो सन्ताप और आते हैं।

और छठवें दूतने तुरही फूंकी और जो सोनेकी बेदी १३
ईश्वरके आगे है उसके चारों सींगोंमेंसे मैंने एक शब्द
सुना . जो छठवें दूतसे जिस पास तुरही थी बोला उन १४
चार दूतोंको जो बड़ी नदी फुरातपर बन्धे हैं खोल दे।
और वे चार दूत खोल दिये गये जो उस घड़ी और १५
दिन और मास और बरसके लिये तैयार किये गये थे
कि वे मनुष्योंकी एक तिहाईको मार डालें। और घुड़च- १६
ढ़ोंकी सेनाओंकी संख्या बीस करोड़ थी और मैंने उनकी
संख्या सुनी । और मैंने दर्शनमें उन घोड़ोंको यूं देखा १७
और उन्हें जो उनपर चढ़े हुए थे कि उन्हें आगकीसी
और धूम्रकान्तकीसी और गन्धककीसी झिलम है और
घोड़ोंके सिर सिंहोंके सिरोंकी नाईं हैं और उनके मुंहमें-
से आग और धूंआ और गन्धक निकलते हैं। इन ती- १८
नोंसे अर्थात आगसे और धूंएसे और गन्धकसे जो उनके
मुंहसे निकलते हैं मनुष्योंकी एक तिहाई मार डाली
गई । क्योंकि घोड़ोंका सामर्थ्य उनके मुंहमें और उनकी १९
पूंछोंमें है क्योंकि उनकी पूंछें सांपोंके समान हैं कि उनके
सिर होते हैं और इनसे वे दुःख देते हैं। और जो मनुष्य २०
रह गये जो इन बिपतोंमें नहीं मार डाले गये उन्होंने
अपने हाथोंके कार्य्योंसे पश्चात्ताप भी नहीं किया जिस्तें

भूतोंकी ओर सोने ओ चान्दी ओ पीतल ओ पत्थर
ओ काठकी मूरतोंकी पूजा न करें जो न देखने न
२१ सुनने न फिरने सकती हैं । और न उन्होंने अपनी
नरहिंसाओंसे न अपने टोनोंसे न अपने व्यभिचारसे
न अपनी चोरियोंसे पश्चात्ताप किया ।

१० दसवां पर्ब्ब ।

१ एक पराक्रमी दूत और छोटी पोथी और सात मेघगर्जनका बर्णन । ८ योहन-
का उस पोथीको लेके खा जाना ।

१ और मैंने दूसरे पराक्रमी दूतको स्वर्गसे उतरते देखा
जो मेघको ओढ़े था और उसके सिरपर मेघधनुष था
और उसका मुंह सूर्य्यकी नाईं और उसके पांव आगके
२ खंभोंके ऐसे थे । और वह एक छोटी पोथी खुली हुई
अपने हाथमें लिये था और उसने अपना दहिना पांव
३ समुद्रपर और बायां पृथिवीपर रखा . और जैसा सिंह
गर्जता है तैसा बड़े शब्दसे पुकारा और जब उसने पुका-
रा तब सात मेघगर्जनोंने अपने अपने शब्द उच्चारण
४ किये । और जब उन सात गर्जनोंने अपने अपने शब्द
उच्चारण किये तब मैं लिखनेपर था और मैंने स्वर्गसे
एक शब्द सुना जो मुझसे बोला जो बातें उन सात गर्ज-
५ नोंने कहीं उनपर छाप दे और उन्हें मत लिख । और उस
दूतने जिसे मैंने समुद्रपर और पृथिवीपर खड़े देखा
६ अपना हाथ स्वर्गकी ओर उठाया . और जो सदा सर्ब्ब-
दा जीवता है जिसने स्वर्ग ओ जो कुछ उसमें है और
पृथिवी ओ जो कुछ उसमें है और समुद्र ओ जो कुछ
उसमें है सृजा उसीकी किरिया खाई कि अब तो बिलम्ब

न होगा . परन्तु सातवें दूतके शब्दके दिनोंमें जब वह ७
तुरही फूंकनेपर होय तब ईश्वरका भेद पूरा हो जायगा
जैसा उसने अपने दासोंको अर्थात भविष्यद्वक्ताओंको
इसका सुसमाचार सुनाया ।
और जो शब्द मैंने स्वर्गसे सुना था वह फिर मेरे संग ८
बात करने लगा और बोला जा जो दूत समुद्रपर और
पृथिवीपर खड़ा है उसके हाथमेंकी खुली हुई छोटी पोथी
ले ले । और मैंने दूतके पास जाके उससे कहा वह छोटी ९
पोथी मुझे दीजिये . और उसने मुझसे कहा उसे लेके
खा जा और वह तेरे पेटको कड़वा करेगी परन्तु तेरे
मुंहमें मधुसी मीठी लगेगी । और मैंने छोटी पोथी १०
दूतके हाथसे ले लिई और उसे खा गया और वह मेरे
मुंहमें मधुसी मीठी लगी और जब मैंने उसे खाया था
तब मेरा पेट कड़वा हुआ । और वह मुझसे बोला तुझे ११
फिर लोगों और देशों और भाषाओं और बहुत
राजाओंके विषयमें भविष्यद्वाक्य कहना होगा ।

११ एग्यारहवां पर्ब्ब ।

१ मन्दिरके नापनेका दर्शन और दो साक्षियोंके प्रगट होने और मारे जाने और जी उठनेकी भविष्यद्वाणी । १५ सातवें दूतकी तुरहीके शब्दका बर्णन ।

और लग्गीके समान एक नरकट मुझे दिया गया और १
कहा गया कि उठ ईश्वरके मन्दिरको और वेदीको और
उसमेंके भजन करनेहारोंको नाप । और मन्दिरके २
बाहरके आंगनको बाहर रख और उसे मत नाप
क्योंकि वह अन्यदेशियोंको दिया गया है और वे बया-
लीस मासलों पवित्र नगरको रौंदेंगे । और मैं अपने दो ३

साक्षियोंको यह देऊंगा कि टाट पहिने हुए एक सहस्र
४ दो सौ साठ दिन भविष्यद्वाक्य कहा करें। येही वे दो
जलपाईके वृक्ष और दो दीवट हैं जो पृथिवीके प्रभुके
५ सन्मुख खड़े रहते हैं । और यदि कोई उनको दुःख दिया
चाहे तो आग उनके मुंहसे निकलती है और उनके
शत्रुओंको भस्म करती है और यदि कोई उनको दुःख
दिया चाहे तो अवश्य है कि वह इस रीतिसे मार डाला
६ जाय । इन्हें अधिकार है कि आकाशको बन्द करें जिस्तें
उनकी भविष्यद्वाणीके दिनोंमें मेंह न बरसे और उन्हें
सब जलपर अधिकार है कि उसे लोहू बनावें और जब
जब चाहें तब तब पृथिवीको हर प्रकारकी विपत्तिसे
७ मारें । और जब वे अपनी साक्षी दे चुकेंगे तब वह पशु
जो अथाह कुंडमेंसे उठता है उनसे युद्ध करेगा और
८ उन्हें जीतेगा और उन्हें मार डालेगा । और उनकी लोथें
उस बड़े नगरकी सड़कपर पड़ी रहेंगीं जो आत्मिक
रीतिसे सदोम और मिसर कहावता है जहां उनका
९ प्रभु भी क्रूशपर चढ़ाया गया । और सब लोगों और
कुलों और भाषाओं और देशोंमेंसे लोग उनकी
लोथें साढ़े तीन दिनलों देखेंगे और उनकी लोथें
१० कबरोंमें रखी जाने न देंगे । और पृथिवीके निवासी
उनपर आनन्द करेंगे और मगन होंगे और एक
दूसरेके पास भेंट भेजेंगे क्योंकि इन दो भविष्यद्वक्ता-
११ ओंने पृथिवीके निवासियोंको पीड़ा दिई थी । और
साढ़े तीन दिनके पीछे ईश्वरकी ओरसे जीवनके
आत्माने उनमें प्रवेश किया और वे अपने पांवोंपर

खड़े हुए और उनके देखनेहारोंको बड़ा डर लगा।
और उन्होंने स्वर्गसे बड़ा शब्द सुना जो उनसे बोला १२
इधर ऊपर आओ और वे मेघमें स्वर्गपर चढ़ गये
और उनके शत्रुओंने उन्हें देखा। और उसी घड़ी १३
बड़ा भुईंडोल हुआ और नगरका दसवां अंश गिर
पड़ा और उस भुईंडोलमें सात सहस्र मनुष्य मारे गये
और जो रह गये सो भयमान हुए और स्वर्गके
ईश्वरका गुणानुबाद किया। दूसरा सन्ताप बीत गया १४
है देखो तीसरा सन्ताप शीघ्र आता है।

और सातवें दूतने तुरही फूंकी और स्वर्गमें बड़े बड़े १५
शब्द हुए कि जगतका राज्य हमारे प्रभुका और उसके
अभिषिक्त जनका हुआ है और वह सदा सर्ब्बदा राज्य
करेगा। और चौबीसों प्राचीन जो ईश्वरके सन्मुख अपने १६
अपने सिंहासनपर बैठते हैं अपने अपने मुंहके बल गिरे
और ईश्वरको प्रणाम करके बोले. हे परमेश्वर ईश्वर १७
सर्ब्बशक्तिमान जो है और जो था और जो आनेवाला है
हम तेरा धन्य मानते हैं कि तूने अपना बड़ा सामर्थ्य लेके
राज्य किया है। और अन्यदेशी लोग क्रुद्ध हुए और तेरा १८
क्रोध आ पड़ा और मृतकोंका समय पहुंचा कि उनका
बिचार किया जाय और कि तू अपने दासों अर्थात
भविष्यद्वक्ताओंको और पवित्र लोगोंको और छोटों
और बड़ोंको जो तेरे नामसे डरते हैं प्रतिफल देवे और
पृथिवीके नाश करनेहारोंको नाश करे। और स्वर्गमें १९
ईश्वरका मन्दिर खोला गया और उसके नियमका
सन्दूक उसके मन्दिरमें दिखाई दिया और बिजलियां

और शब्द और गर्जन और भुईंडोल हुए और बड़े
ओले पड़े ।

१२ बारहवां पर्व्व ।

१ एक स्त्री और उसके बेटे और एक बड़े अजगरका दर्शन । ७ अजगरका स्वर्गसे निकाला जाना । १३ अजगरका स्त्रीको सताना ।

१ और एक बड़ा आश्चर्य्य स्वर्गमें दिखाई दिया
अर्थात एक स्त्री जो सूर्य्य पहिने है और चांद उसके
पांवों तले है और उसके सिरपर बारह तारोंका मुकुट
२ है । और वह गर्भवती होके चिल्लाती है क्योंकि
प्रसवकी पीड़ उसे लगी है और वह जननेको पीड़ित
३ है । और दूसरा आश्चर्य्य स्वर्गमें दिखाई दिया और
देखो एक बड़ा लाल अजगर है जिसके सात सिर
और दस सींग हैं और उसके सिरोंपर सात राजमुकुट
४ हैं । और उसकी पूंछने आकाशके तारोंकी एक ति-
हाईको खींचके उन्हें पृथिवीपर डाला और वह अजगर
उस स्त्रीके साम्हने जो जना चाहती थी खड़ा हुआ
इसलिये कि जब वह जने तब उसके बालकको खा
५ जाय । और वह एक बेटा जनी जो लोहेका दंड लेके
सब देशोंके लोगोंकी चरवाही करनेपर है और उसका
बालक ईश्वरके पास और उसके सिंहासनके पास
६ उठा लिया गया । और वह स्त्री जंगलको भाग गई
जहां उसका एक स्थान है जो ईश्वरसे तैयार किया
गया है जिस्तें वे उसे वहां एक सहस्र दो सौ साठ
दिनलों पालें ।

७ और स्वर्गमें युद्ध हुआ मीखायेल और उसके दूत

अजगरसे लड़े और अजगर और उसके दूत लड़े. और ८
प्रबल न हुए और स्वर्गमें उन्हें जगह और न मिली।
और वह बड़ा अजगर गिराया गया हां वह प्राचीन ९
सांप जो दियावल और शैतान कहावता है जो सारे
संसारका भरमानेहारा है पृथिवीपर गिराया गया
और उसके दूत उसके संग गिराये गये। और मैंने १०
एक बड़ा शब्द सुना जो स्वर्गमें बोला अभी हमारे
ईश्वरका त्राण औ पराक्रम औ राज्य और उसके
अभिषिक्त जनका अधिकार हुआ है क्योंकि हमारे
भाइयोंका दोषदायक जो रात दिन हमारे ईश्वरके
आगे उनपर दोष लगाता था गिराया गया है। और ११
उन्होंने मेम्नेके लोहूके कारण और अपनी साक्षीके
वचनके कारण उसपर जय किया और उन्होंने मृत्युलों
अपने प्राणोंको प्रिय न जाना। इस कारणसे हे स्वर्ग १२
और उसमें बास करनेहारो आनन्द करो. हाय पृथिवी
और समुद्रके निवासियो क्योंकि शैतान तुम पास उतरा
है और यह जानके कि मेरा समय थोड़ा है बड़ा क्रोध
किये है।

और जब अजगरने देखा कि मैं पृथिवीपर गिराया १३
गया हूं तब उसने उस स्त्रीको जो वह पुरुष जनी थी
सताया। और बड़े गिद्धके दो पंख स्त्रीको दिये गये १४
इसलिये कि वह जंगलको अपने स्थानको उड़ जाय जहां
वह एक समय और दो समय और आधे समयलों
सांपकी दृष्टिसे छिपी हुई पाली जाती है। और सांपने १५
अपने मुंहमेंसे स्त्रीके पीछे नदीकी नाईं जल बहाया कि

१६ उसे नदीमें बहा देवे । और पृथिवीने स्त्रीका उपकार
किया और पृथिवीने अपना मुंह खोलके उस नदीको
१७ जो अजगरने अपने मुंहमेंसे बहाई थी पी लिया । और
अजगर स्त्रीसे क्रुद्ध हुआ और उसके वंशके जो लोग रह
गये जो ईश्वरकी आज्ञाओंको पालन करते और यीशु
ख्रीष्टकी साक्षी रखते हैं उनसे युद्ध करनेको चला गया ।

१३ तेरहवां पर्व्व ।

१ दस सींगवाले निन्दक पशुका दर्शन । ११ दो सींगवाले भरमानेहारे पशुका दर्शन ।

१ और मैं समुद्रके बालूपर खड़ा हुआ और एक
पशुको समुद्रमेंसे उठते देखा जिसके सात सिर और
दस सींग थे और उसके सींगोंपर दस राजमुकुट और
२ उसके सिरोंपर ईश्वरकी निन्दाका नाम । और जो
पशु मैंने देखा सो चीतेकी नाईं था और उसके पांव
भालूकेसे थे और उसका मुंह सिंहके मुंहके ऐसा था और
अजगरने अपना सामर्थ्य और अपना सिंहासन और
३ बड़ा अधिकार उसको दिया । और मैंने उसके सिरोंमेंसे
एकको देखा मानो ऐसा घायल किया गया है कि
मरनेपर है फिर उसका प्राणहारक घाव चंगा किया
गया और सारी पृथिवीके लोग उस पशुके पीछे अचंभा
४ करते गये । और उन्होंने अजगरकी पूजा किई जिसने
पशुको अधिकार दिया और पशुकी पूजा किई और
कहा इस पशुके समान कौन है . कौन उससे लड़ सकता
५ है । और उसको बड़ी बड़ी बातें और निन्दाकी बातें
बोलनेहारा मुंह दिया गया और बयालीस मासलों

युद्ध करनेका अधिकार उसे दिया गया । और उसने ६
ईश्वरके बिरुद्ध निन्दा करनेको अपना मुंह खोला कि
उसके नामकी और उसके तम्बूकी और स्वर्गमें बास
करनेहारोंकी निन्दा करे । और उसको यह दिया गया ७
कि पवित्र लोगोंसे युद्ध करे और उनपर जय करे और
हर एक कुल और भाषा और देशपर उसको अधिकार
दिया गया । और पृथिवीके सब निवासी लोग जिनके ८
नाम जगतकी उत्पत्तिसे बध किये हुए मेम्नेके जीवनके
पुस्तकमें नहीं लिखे गये हैं उसकी पूजा करेंगे । यदि ९
किसीका कान होय तो सुने । यदि कोई बन्धुओंको १०
घेर लेता है तो वही बन्धुआईमें जाता है यदि कोई
खड्गसे मार डाले तो अवश्य है कि वही खड्गसे मार डाला
जाय . यहीं पवित्र लोगोंका धीरज और बिश्वास है ।
और मैंने दूसरे पशुको पृथिवीमेंसे उठते देखा और ११
उसे मेम्नेकी नाईं दो सींग थे और वह अजगरकी नाईं
बोलता था । और वह उस पहिले पशुके सन्मुख उसका १२
सारा अधिकार रखता है और पृथिवीसे और उसके
निवासियोंसे उस पहिले पशुकी जिसका प्राणहारक घाव
चंगा किया गया पूजा करवाता है । और वह बड़े बड़े आ- १३
श्चर्य्य कर्म्म करता है यहांलों कि मनुष्योंके साम्हने स्वर्ग-
मेंसे पृथिवीपर आग भी उतारता है । और उन आश्चर्य्य १४
कर्म्मोंके कारण जिन्हें पशुके सन्मुख करनेका अधिकार
उसे दिया गया वह पृथिवीके निवासियोंको भरमाता है
और पृथिवीके निवासियोंसे कहता है कि जिस पशुको
खड्गका घाव लगा और वह जी गया उसके लिये मूर्त्ति

१५ बनाओ। और उसको यह दिया गया कि पशुकी मूर्त्तिको
प्राण देवे जिस्तें पशुकी मूर्त्ति बात भी करे और जितने
लोग पशुकी मूर्त्तिकी पूजा न करें उन्हें मार डल-
१६ वावे। और छोटे औ बड़े और धनी औ कंगाल
और निर्बन्ध औ दास सब लोगोंसे वह ऐसा करता
है कि उनके दहिने हाथपर अथवा उनके माथेपर
१७ एक छापा दिया जाय. और कि कोई मोल लेने
अथवा बेचने न सके केवल वह जो यह छापा अथवा
पशुका नाम अथवा उसके नामकी संख्या रखता हो।
१८ यहीं ज्ञान है. जिसे बुद्धि होय सो पशुकी संख्याकी
जोड़ती करे क्योंकि वह मनुष्यकीसी संख्या है और
उसकी संख्या छः सौ छियासठ है।

१४ चौदहवां पर्ब्ब।

१ सियोन पर्ब्बतपर मेम्नेका और पवित्र लोगोंका दर्शन। ६ तीन दूतोंके तीन शब्दोंका और स्वर्गसे एक शब्दका बर्णन। १४ पृथिवीके अनाजकी कटनी और पृथिवीकी दाख लताके फलका पेरा जाना।

१ और मैंने दृष्टि किई और देखो मेम्ना सियोन पर्ब्बत-
पर खड़ा है और उसके संग एक लाख चवालीस सहस्र
जन जिनके माथेपर उसका नाम और उसके पिताका
२ नाम लिखा है। और मैंने स्वर्गसे एक शब्द सुना जो
बहुत जलके शब्दके ऐसा और बड़े गर्जनके शब्दके ऐसा
था और वह शब्द जो मैंने सुना बीण बजानेहारोंकासा
३ था जो अपनी अपनी बीण बजाते हैं। और वे सिंहा-
सनके आगे और चारों प्राणियोंके औ प्राचीनोंके आगे
जैसा एक नया गीत गाते हैं और वह गीत कोई नहीं
सीख सकता था केवल वे एक लाख चवालीस सहस्र

जन जो पृथिवीसे मोल लिये गये थे। ये वे हैं जो स्त्रि- ४
योंके संग अशुद्ध न हुए क्योंकि वे कुमार हैं. ये वे हैं कि
जहां कहीं मेम्ना जाता है वे उसके पीछे हो लेते हैं.
ये तो ईश्वरके और मेम्नेके लिये एक पहिला फल मनु-
ष्योंमेंसे मोल लिये गये। और उनके मुंहमें झूठ नहीं ५
पाया गया क्योंकि वे ईश्वरके सिंहासनके आगे निर्दोष हैं।

और मैंने दूसरे दूतको आकाशके बीचमेंसे उड़ते ६
देखा जिस पास सनातन सुसमाचार था कि वह पृथिवी-
के निवासियोंको और हर एक देश और कुल और भाषा
और लोगको सुसमाचार सुनावे। और वह बड़े शब्दसे ७
बोलता था कि ईश्वरसे डरो और उसका गुणानुबाद
करो क्योंकि उसके बिचार करनेका समय पहुंचा है
और जिसने स्वर्ग और पृथिवी और समुद्र और जलके
सोते बनाये उसको प्रणाम करो।

और दूसरा दूत यह कहता हुआ पीछे हो लिया ८
कि गिर गई बाबुल वह बड़ी नगरी गिर गई है क्योंकि
उसने सब देशोंके लोगोंको अपने व्यभिचारके कारण
जो कोप होता है तिसकी मदिरा पिलाई है।

और तीसरा दूत बड़े शब्दसे यह कहता हुआ उनके ९
पीछे हो लिया कि यदि कोई उस पशुकी और उसकी
मूर्त्तिकी पूजा करे और अपने माथेपर अथवा अपने
हाथपर छापा लेवे. तो वह भी ईश्वरके कोपकी मदिरा १०
जो उसके क्रोधके कटोरेमें निराली ढाली गई है पीयेगा
और पवित्र दूतोंके साम्हने और मेम्नेके साम्हने आग
और गन्धकमें पीड़ित किया जायगा। और उनकी पी- ११

डाको धूआं सदा सर्ब्बदा उठता है और न दिन न रात
बिस्राम उनको है जो पशुकी और उसकी मूर्त्तिकी पूजा
करते हैं और जो कोई उसके नामका छापा लेता है।
१२ यहीं पवित्र लोगोंका धीरज है जो ईश्वरकी आज्ञा-
ओंको और यीशुके बिश्वासको पालन करते हैं।
१३ और मैंने स्वर्गसे एक शब्द सुना जो मुझसे बोला यह
लिख कि अबसे जो प्रभुमें मरते हैं सो मृतक धन्य हैं.
आत्मा कहता है हां कि वे अपने परिस्रमसे बिस्राम
करेंगे परन्तु उनके कार्य्य उनके संग हो लेते हैं।
१४ और मैंने दृष्टि किई और देखो एक उजला मेघ है
और उस मेघपर मनुष्यके पुत्रके समान एक बैठा है
जो अपने सिरपर सोनेका मुकुट और अपने हाथमें
१५ चोखा हंसुआ लिये हुए है। और दूसरा दूत मन्दिरमेंसे
निकला और बड़े शब्दसे पुकारके उससे जो मेघपर
बैठा था बोला अपना हंसुआ लगाके लवनी कर
क्योंकि तेरे लिये लवनेका समय पहुंचा है इसलिये
१६ कि पृथिवीकी खेती पक चुकी है। और जो मेघपर
बैठा था उसने पृथिवीपर अपना हंसुआ लगाया
और पृथिवीकी लवनी किई गई।
१७ और दूसरा दूत स्वर्गमेंके मन्दिरमेंसे निकला और
१८ उस पास भी चोखा हंसुआ था। और दूसरा दूत जिसे
आगपर अधिकार था बेदीमेंसे निकला और जिस पास
चोखा हंसुआ था उससे बहुत पुकारकर बोला अपना
चोखा हंसुआ लगा और पृथिवीकी दाख लताके गुच्छे
१९ काट ले क्योंकि उसके दाख पक गये हैं। और दूतने

पृथिवीपर अपना हंसुआ लगाया और पृथिवीकी दाख
लताका फल काट लिया और उसे ईश्वरके कोपके बड़े
रसके कुंडमें डाला । और रसके कुंडका रौंदन नगरके २०
बाहर किया गया और रसके कुंडमेंसे घोड़ोंकी लगाम-
तक लोहू एक सौ कोशतक बह निकला ।

१५ पन्द्रहवां पर्ब्ब ।

सातों पिछली बिपतें लिये हुए सात दूतोंका दर्शन और जयवन्त पवित्र लोगोंका गीत ।

और मैंने स्वर्गमें दूसरा एक चिन्ह बड़ा और अद्भुत १
देखा अर्थात सात दूत जिनके पास सात बिपत्ति थीं जो
पिछली थीं क्योंकि उनमें ईश्वरका कोप पूरा किया गया।
और मैंने जैसा एक आगसे मिले हुए कांचके समुद्रको २
और पशुपर और उसकी मूर्त्तिपर और उसके छापेपर
और उसके नामकी संख्यापर जय करनेहारोंको उस
कांचके समुद्रके निकट ईश्वरकी बीणें लिये हुए खड़े देखा।
और वे ईश्वरके दास मूसाका गीत और मेम्नेका गीत ३
गाते हैं कि हे सर्व्वशक्तिमान ईश्वर परमेश्वर तेरे कार्य्य
बड़े और अद्भुत हैं . हे पवित्र लोगोंके राजा तेरे मार्ग
यथार्थ और सच्चे हैं। हे परमेश्वर कौन तुझसे नहीं डरेगा ४
और तेरे नामकी स्तुति नहीं करेगा . क्योंकि केवल तूही
पवित्र है और सब देशोंके लोग आके तेरे आगे प्रणाम
करेंगे क्योंकि तेरे बिचार प्रगट किये गये हैं ।
और इसके पीछे मैंने दृष्टि किई और देखो स्वर्गमें ५
साक्षीके तम्बूका मन्दिर खोला गया। और सातों दूत ६
जिन पास सातों बिपतें थीं शुद्ध और चमकता हुआ

बस्त्र पहिने हुए और छातीपर सुनहले पटुके बांधे हुए
७ मन्दिरमेंसे निकले । और चारों प्राणियोंमेंसे एकने उन
सात दूतोंको ईश्वरके जो सदा सर्ब्बदा जीवता है कोपसे
८ भरे हुए सात सोनेके पियाले दिये । और ईश्वरकी
महिमासे और उसके सामर्थ्यसे मन्दिर धूंएसे भर गया
और जबलों उन सात दूतोंकी सातों बिपतें समाप्त न
हुईं तबलों कोई मन्दिरमें प्रवेश न कर सका ।

१६ सोलहवां पर्ब्ब ।

ईश्वरके कोपके सातों पियालोंका उंडेला जाना ।

१ और मैंने मन्दिरमेंसे एक बड़ा शब्द सुना जो उन सात दूतोंसे बोला जाओ और ईश्वरके कोपके सात पियाले पृथिवीपर उंडेलो ।

२ और पहिलेने जाके अपना पियाला पृथिवीपर उंडेला और उन मनुष्योंको जिनपर पशुका छापा था और जो उसकी मूर्त्तिकी पूजा करते थे बुरा और दुःखदाई घाव हुआ ।

३ और दूसरे दूतने अपना पियाला समुद्रपर उंडेला और वह मृतककासा लोहू हो गया और समुद्रमें हर एक जीवता प्राणी मर गया ।

४ और तीसरे दूतने अपना पियाला नदियोंपर और
५ जलके सोतोंपर उंडेला और वे लोहू हो गये । और
मैंने जलके दूतको यह कहते सुना कि हे परमेश्वर
जो है और जो था और जो पवित्र है तू धर्म्मी है कि
६ तूने यह न्याय किया है । क्योंकि उन्होंने पवित्र लोगों
और भविष्यद्वक्ताओंका लोहू बहाया और तूने उन्हें

लोहू पीनेको दिया है क्योंकि वे इस योग्य हैं। और ७
मैंने बेदीमेंसे यह शब्द सुना कि हां हे सर्ब्बशक्तिमान
ईश्वर परमेश्वर तेरे बिचार सच्चे और यथार्थ हैं।
और चौथे दूतने अपना पियाला सूर्य्यपर उंडेला ८
और मनुष्योंको आगसे झुलसानेका अधिकार उसे
दिया गया। और मनुष्य बड़ी तपनसे झुलसाये गये ९
और ईश्वरके नामकी निन्दा किई जिसे इन बिपतोंपर
अधिकार है और उसका गुणानुबाद करनेके लिये
पश्चात्ताप न किया।
और पांचवें दूतने अपना पियाला पशुके सिंहा- १०
सनपर उंडेला और उसका राज्य अंधियारा हो गया
और लोगोंने क्लेशके मारे अपनी अपनी जीभ चबाई।
और उन्होंने अपने क्लेशोंके कारण और अपने घावोंके ११
कारण स्वर्गके ईश्वरकी निन्दा किई और अपने अपने
कर्म्मोंसे पश्चात्ताप न किया।
और छठवें दूतने अपना पियाला बड़ी नदी फुरात- १२
पर उंडेला और उसका जल सूख गया जिस्तें सूर्य्योदय-
की दिशाके राजाओंका मार्ग तैयार किया जाय। और १३
मैंने अजगरके मुंहमेंसे और पशुके मुंहमेंसे और झूठे
भविष्यद्वक्ताके मुंहमेंसे निकले हुए तीन अशुद्ध आत्मा-
ओंको देखा जो मेंडकोंकी नाईं थे। क्योंकि वे भूतोंके १४
आत्मा हैं जो आश्चर्य्य कर्म्म करते हैं और जो सारे
संसारके राजाओंके पास जाते हैं कि उन्हें सर्ब्बशक्तिमान
ईश्वरके उस बड़े दिनके युद्धके लिये एकट्ठे करें। देखो १५
मैं चोरकी नाईं आता हूं. धन्य वह जो जागता रहे

और अपने वस्त्रकी रक्षा करे जिस्तें वह नंगा न फिरे
१६ और लोग उसकी लज्जा न देखें। और उन्होंने उन्हें
उस स्थानपर एकट्ठे किया जो इब्रीय भाषामें हर्मगिद्दो
कहावता है।
१७ और सातवें दूतने अपना पियाला आकाशमें उंडेला
और स्वर्गके मन्दिरमेंसे अर्थात सिंहासनसे एक बड़ा
१८ शब्द निकला कि हो चुका। और शब्द और गर्जन
और बिजलियां हुई और बड़ा भुईंडोल हुआ ऐसा कि
जबसे मनुष्य पृथिवीपर हुए तबसे वैसा और इतना
१९ बड़ा भुईंडोल न हुआ। और वह बड़ा नगर तीन खंड
हो गया और देश देशके नगर गिर पड़े और ईश्वरने
बड़ी बाबुलको स्मरण किया कि अपने क्रोधकी जल-
२० जलाहटकी मदिराका कटोरा उसे देवे। और हर एक
२१ टापू भाग गया और कोई पर्ब्बत न मिले। और बड़े
ओले जैसे मन मन भरके स्वर्गसे मनुष्योंपर पड़े और
ओलोंकी बिपत्तिके कारण मनुष्योंने ईश्वरकी निन्दा
किई क्योंकि उससे निपट बड़ी बिपत्ति हुई।

१७ सत्तरहवां पर्ब्ब।

१ बड़ी बेश्याका दर्शन और उस पशुका जो उसका वाहन था। ७ दूतका उस दर्शनका अर्थ बताना।

१ और जिन सात दूतोंके पास वे सात पियाले थे
उनमेंसे एकने आके मेरे संग बात कर मुझसे कहा आ
मैं तुझे उस बड़ी बेश्याका दंड दिखाऊंगा जो बहुत
२ जलपर बैठी है. जिसके संग पृथिवीके राजाओंने
व्यभिचार किया है और पृथिवीके निवासी लोग उसके

व्यभिचारकी मदिरासे मतवाले हुए हैं। और वह ३
आत्मामें मुझे जंगलमें ले गया और मैंने एक स्त्रीको
देखा कि लाल पशुपर बैठी थी जो ईश्वरकी निन्दाके
नामोंसे भरा था और जिसके सात सिर और दस सींग
थे। और वह स्त्री बैंजनी और लाल बस्त्र पहिने थी ४
और सोने और बहुमूल्य पत्थर और मोतियोंसे बि-
भूषित थी और उसके हाथमें एक सोनेका कटोरा
था जो घिनित बस्तुओंसे और उसके व्यभिचारकी
अशुद्ध बस्तुओंसे भरा था। और उसके माथेपर एक ५
नाम लिखा था अर्थात भेद. बड़ी बाबुल. पृथिवीकी
बेश्याओं और घिनित बस्तुओंकी माता। और मैंने ६
उस स्त्रीको पवित्र लोगोंके लोहूसे और यीशुके सा-
क्षियोंके लोहूसे मतवाली देखी और उसे देखके मैंने
बड़ा आश्चर्य्य करके अचंभा किया।

और दूतने मुझसे कहा तूने क्यों अचंभा किया. मैं ७
स्त्रीका और उस पशुका भेद जो उसका बाहन है जिसके
सात सिर और दस सींग हैं तुझसे कहूंगा। जो पशु ८
तूने देखा सो था और नहीं है और अथाह कुंडमेंसे
उठने और बिनाशको पहुंचनेपर है और पृथिवीके नि-
वासी लोग जिनके नाम जगतकी उत्पत्तिसे जीवनके
पुस्तकमें नहीं लिखे गये हैं पशुको देखके कि वह था
और नहीं है और आवेगा अचंभा करेंगे। यहीं वह ९
मन है जिसे बुद्धि है. वे सात सिर सात पर्ब्बत हैं जिन-
पर स्त्री बैठी है। और सात राजा हैं पांच गिर गये १०
हैं और एक है और दूसरा अबलों नहीं आया है

११ और जब आवेगा तब उसे थोड़ी बेर रहने होगा। और
वह पशु जो था और नहीं है आप भी आठवां है और
१२ सातोंमेंसे है और बिनाशको पहुंचता है। और जो
दस सींग तूने देखे सो दस राजा हैं जिन्होंने अबलों
राज्य नहीं पाया है परन्तु पशुके संग एक घड़ी राजाओं-
१३ की नाईं अधिकार पाते हैं। इन्होंका एकही परामर्श है
और वे अपना अपना सामर्थ्य और अधिकार पशुको
१४ देंगे। ये तो मेम्नेसे युद्ध करेंगे और मेम्ना उनपर जय
करेगा क्योंकि वह प्रभुओंका प्रभु और राजाओंका राजा
है और जो उसके संग हैं सो बुलाये हुए और चुने हुए
१५ और बिश्वासयोग्य हैं। फिर मुझसे बोला जो जल तूने
देखा जहां बेश्या बैठी है सो बहुत बहुत लोग और देश
१६ और भाषा हैं। और वे दस सींग जो तूने देखे और
पशु येही बेश्यासे बैर करेंगे और उसे उजाड़ेंगे और
नंगी करेंगे और उसका मांस खायेंगे और उसे आगमें
१७ जलायेंगे। क्योंकि ईश्वरने उनके मनमें यह दिया है कि
वे उसका परामर्श पूरा करें और एक परामर्श रखें और
जबलों ईश्वरके बचन पूरे न होवें तबलों अपना अपना
१८ राज्य पशुको देवें। और जो स्त्री तूने देखी सो वह बड़ी
नगरी है जो पृथिवीके राजाओंपर राज्य करती है।

१८ अठारहवां पर्व्व ।

बड़ी बाबुलके नाश होनेकी भविष्यद्वाणी ।

१ और इसके पीछे मैंने एक दूतको स्वर्गसे उतरते देखा
जिसका बड़ा अधिकार था और पृथिवी उसके तेजसे
२ प्रकाशमान हुई। और उसने पराक्रमसे बड़े शब्दसे पुका-

रा कि गिर गई बड़ी बाबुल गिर गई है और भूतोंका
निवास और हर एक अशुद्ध आत्माका बन्दीगृह और
हर एक अशुद्ध और घिनित पंछीका पिंजरा हुई है। क्यों- ३
कि सब देशोंके लोगोंने उसके ब्यभिचारके कारण जो
कोप होता है तिसकी मदिरा पिई है और पृथिवीके रा-
जाओंने उसके संग ब्यभिचार किया है और पृथिवीके
ब्योपारी लोग उसके सुख बिलासकी बहुताईसे धनवान
हुए हैं।

और मैंने स्वर्गसे दूसरा शब्द सुना कि हे मेरे लोगो ४
उसमेंसे निकल आओ कि तुम उसके पापोंमें भागी न
होओ और कि उसकी बिपतोंमेंसे कुछ तुमपर न पड़े।
क्योंकि उसके पाप स्वर्गलों पहुंचे हैं और ईश्वरने उसके ५
कुकर्म्मोंको स्मरण किया है। जैसा उसने तुम्हें दिया है ६
तैसा उसको भर देओ और उसके कर्म्मोंके अनुसार
दूना उसे दे देओ. जिस कटोरेमें उसने भर दिया
उसीमें उसके लिये दूना भर देओ। जितनी उसने अप- ७
नी बड़ाई किई और सुख बिलास किया उतनी उसको
पीड़ा और शोक देओ क्योंकि वह अपने मनमें कहती
है मैं राणी हो बैठी हूं और बिधवा नहीं हूं और
शोक किसी रीतिसे न देखूंगी। इस कारण एकही दि- ८
नमें उसकी बिपतें आ पड़ेंगीं अर्थात मृत्यु और शोक
और अकाल और वह आगमें जलाई जायगी क्योंकि
परमेश्वर ईश्वर जो उसका बिचारकर्त्ता है शक्तिमान है।
और पृथिवीके राजा लोग जिन्होंने उसके संग ब्यभिचार ९
और सुख बिलास किया जब उसके जलनेका धूआं देखेंगे

१० तब उसके लिये रोयेंगे और छाती पीटेंगे . और उसकी
पीड़ाके डरके मारे दूर खड़े हो कहेंगे हाय हाय हे
बड़ी नगरी बाबुल हे दृढ़ नगरी कि एकही घड़ीमें तेरा
११ बिचार आ पड़ा है। और पृथिवीके ब्योपारी लोग उस-
पर रोयेंगे औ कलपेंगे क्योंकि अब तो कोई उनके जहा-
१२ जोंकी बोझाई नहीं मोल लेगा . अर्थात सोने औ रूपे
औ बहुमूल्य पत्थर औ मोती औ मलमल औ बैंजनी
वस्त्र औ पाटम्बर औ लाल वस्त्रकी बोझाई और हर
प्रकारका सुगन्ध काठ और हर प्रकारका हाथीदांतका
पात्र और बहुमूल्य काठके औ पीतल औ लोहे औ मर-
१३ मरके सब भांतिके पात्र . और दारचीनी औ इलायची
औ धूप औ सुगन्ध तेल औ लोबान औ मदिरा औ तेल
औ चोखा पिसान औ गेहूं औ ढोर औ भेड़ें और घोड़ों
१४ औ रथों औ दासोंकी बोझाई और मनुष्योंके प्राण। और
तेरे प्राणके बांछित फल तेरे पाससे जाते रहे और सब
चिकनी और भड़कीली वस्तु तेरे पाससे नष्ट हुई हैं
१५ और तू उन्हें फिर कभी न पावेगा। इन वस्तुओंके ब्यो-
पारी लोग जो उससे धनवान हो गये उसकी पीड़ाके
डरके मारे दूर खड़े होंगे और रोते औ कलपते हुए
१६ कहेंगे . हाय हाय यह बड़ी नगरी जो मलमल और बैं-
जनी औ लाल वस्त्र पहिने थी और सोने और बहुमूल्य
पत्थर और मोतियोंसे बिभूषित थी कि एकही घड़ीमें
१७ इतना बड़ा धन विला गया है । और हर एक मांझी
और जहाजोंपरके सब लोग और मल्लाह लोग और जि-
१८ तने लोग समुद्रपर कमाते हैं सब दूर खड़े हुए . और

उसके जलनेका धूआं देखते हुए पुकारके बोले कौन नगर
इस बड़ी नगरीके समान है। और उन्होंने अपने अपने १९
सिरपर धूल डाली और रोते औ कलपते हुए पुकारके
बोले हाय हाय यह बड़ी नगरी जिसके द्वारा सब लोग
जिनके समुद्रमें जहाज थे उसके बहुमूल्य द्रव्यसे धनवान
हो गये कि एकही घड़ीमें वह उजड़ गई है। हे स्वर्ग और २०
हे पवित्र प्रेरितो और भविष्यद्वक्ता लोगो उसपर आनन्द
करो क्योंकि ईश्वरने तुम्हारे लिये उससे पलटा लिया है।
और एक पराक्रमी दूतने बड़े चक्कीके पाटकी नाईं २१
एक पत्थरको लेके समुद्रमें डाला और कहा यूं बरियाई-
से बड़ी नगरी बाबुल गिराई जायगी और फिर कभी न
मिलेगी। और बीण बजानेहारों और बजनियों और २२
बंशी बजानेहारों और तुरही फूंकनेहारोंका शब्द फिर
कभी तुझमें सुना न जायगा और किसी उद्यमका कोई
कारीगर फिर कभी तुझमें न मिलेगा और चक्कीके चलने-
का शब्द फिर कभी तुझमें सुना न जायगा। और दीपक- २३
की ज्योति फिर कभी तुझमें न चमकेगी और दूल्हे औ
दूल्हिनका शब्द फिर कभी तुझमें सुना न जायगा क्योंकि
तेरे ब्योपारी लोग पृथिवीके प्रधान थे इसलिये कि तेरे
टोनेसे सब देशोंके लोग भरमाये गये। और भविष्यद्वक्ता- २४
ओं और पवित्र लोगोंका लोहू और जो जो लोग पृथि-
वीपर बध किये गये थे सभोंका लोहू उसीमें पाया गया।

१९ उनीसवां पर्ब्ब ।

१ बड़ी बेश्याके दंडके लिये पवित्र लोगोंका स्वर्गमें धन्यबाद करना और मेम्नेके बिवाहका बर्णन। ११ ईश्वरके बचनका और उसकी सेनाका दर्शन। १७ पशु इत्यादिका उससे लड़ना और दंड पाना।

१ और इसके पीछे मैंने स्वर्गमें बहुत लोगोंका बड़ा
शब्द सुना कि हलिलूयाह परमेश्वर हमारे ईश्वरको
त्राणके लिये जय जय औ महिमा औ आदर औ सा-
२ मर्थ्य होय। इसलिये कि उसके बिचार सच्चे और यथार्थ
हैं क्योंकि उसने बड़ी बेश्याका जो अपने ब्यभिचारसे
पृथिवीको भ्रष्ट करती थी बिचार किया है और अपने
३ दासोंके लोहूका पलटा उससे लिया है। और वे दूसरी
बार हलिलूयाह बोले और उसका धूआं सदा सर्ब्बदालों
४ उठता है। और चौबीसों प्राचीन और चारों प्राणी
गिर पड़े और ईश्वरको जो सिंहासनपर बैठा है प्रणाम
५ करके बोले आमीन हलिलूयाह। और एक शब्द सिंहा-
सनसे निकला कि हे हमारे ईश्वरके सब दासो और
उससे डरनेहारो क्या छोटे क्या बड़े सब उसकी स्तुति
६ करो। और मैंने जैसे बहुत लोगोंका शब्द और जैसे
बहुत जलका शब्द और जैसे प्रचंड गर्जनोंका शब्द वैसा
शब्द सुना कि हलिलूयाह परमेश्वर ईश्वर सर्ब्बशक्ति-
७ मानने राज्य लिया है। आओ हम आनन्दित और
आह्लादित होवें और उसका गुणानुबाद करें क्योंकि
मेम्नेका बिवाह आ पहुंचा है और उसकी स्त्रीने अपनेको
८ तैयार किया है। और उसको यह दिया गया कि शुद्ध
और उजली मलमल पहिने क्योंकि वह मलमल पवित्र
९ लोगोंका धर्म्म है। और वह मुझसे बोला यह लिख
कि धन्य वे जो मेम्नेके बिवाहके भोजमें बुलाये गये हैं.
१० फिर मुझसे बोला ये बचन ईश्वरके सत्य बचन हैं। और
मैं उसको प्रणाम करनेके लिये उसके चरणोंके आगे

गिर पड़ा और उसने मुझसे कहा देख ऐसा मत कर
मैं तेरा और तेरे भाइयोंका जिन पास यीशुकी साक्षी
है संगी दास हूं. ईश्वरको प्रणाम कर क्योंकि यीशुकी
साक्षी भविष्यद्वाणीका आत्मा है ।
और मैंने स्वर्गको खुले देखा और देखो एक श्वेत ११
घोड़ा है और जो उसपर बैठा है सो बिश्वासयोग्य और
सच्चा कहावता है और वह धर्म्मसे बिचार और युद्ध
करता है। उसके नेत्र आगकी ज्वालाकी नाईं हैं और १२
उसके सिरपर बहुतसे राजमुकुट हैं और उसका एक
नाम लिखा है जिसे और कोई नहीं केवल वही आप
जानता है । और वह लोहूमें डुबोया हुआ बस्त्र पहिने १३
है और उसका नाम यूं कहावता है कि ईश्वरका बचन।
और स्वर्गमेंकी सेना श्वेत घोड़ोंपर चढ़े हुए उजली और १४
शुद्ध मलमल पहिने हुए उसके पीछे हो लेती थी। और १५
उसके मुंहसे चोखा खड्ग निकलता है कि उससे वह
देशोंके लोगोंको मारे और वही लोहेका दंड लेके उनकी
चरवाही करेगा और वही सर्व्वशक्तिमान ईश्वरके क्रोध-
की जलजलाहटकी मदिराके कुंडमें रौंदन करता है।
और उसके बस्त्रपर और जांघपर उसका यह नाम १६
लिखा है कि राजाओंका राजा और प्रभुओंका प्रभु।
और मैंने एक दूतको सूर्य्यमें खड़े हुए देखा और १७
उसने बड़े शब्दसे पुकारके सब पंछियोंसे जो आकाशके
बीचमेंसे उड़ते हैं कहा आओ ईश्वरकी बड़ी बियारीके
लिये एकट्ठे होओ . जिस्तें तुम राजाओंका मांस और १८
सहस्रपतियोंका मांस और पराक्रमी पुरुषोंका मांस और

घोड़ोंका और उनपर चढ़नेहारोंका मांस और क्या
निर्बन्ध क्या दास क्या छोटे क्या बड़े सब लोगोंका मांस
१९ खावो । और मैंने पशुको और पृथिवीके राजाओंको
और उनकी सेनाओंको घोड़ेपर चढ़नेहारेसे और उसकी
२० सेनासे युद्ध करनेको एकट्ठे किये हुए देखा । और पशु
पकड़ा गया और उसके संग वह झूठा भविष्यद्वक्ता
जिसने उसके सन्मुख आश्चर्य्य कर्म्म किये जिनके द्वारा
उसने उन लोगोंको भरमाया जिन्होंने पशुका छापा
लिया और जो उसकी मूर्त्तिकी पूजा करते थे. ये दोनों
जीतेजी उस आगकी झीलमें जो गन्धकसे जलती है डाले
२१ गये । और जो लोग रह गये सो घोड़ेपर चढ़नेहारेके
खड्गसे जो उसके मुंहसे निकलता है मार डाले गये
और सब पंछी उनके मांससे तृप्त हुए ।

२० बीसवां पर्व्व ।

१ शैतानका सहस्र बरसलों बंधा रहना । ४ पहिले पुनरुत्थानका वर्णन । ७ शैतानका फिर लोगोंको भरमाना और दंड पाना । ११ महाविचारका वर्णन।

१ और मैंने एक दूतको स्वर्गसे उतरते देखा जिस
पास अथाह कुंडकी कुंजी थी और उसके हाथमें बड़ी
२ जंजीर थी । और उसने अजगरको अर्थात प्राचीन
सांपको जो दियाबल और शैतान है पकड़के उसे सहस्र
३ बरसलों बांध रखा. और उसको अथाह कुंडमें डाला
और बन्द करके उसके ऊपर छाप दिई जिस्तें वह जबलों
सहस्र बरस पूरे न हों तबलों फिर देशोंके लोगोंको न
भरमावे और इस पीछे उसको थोड़ी बेरलों छूट जाने
होगा ।

और मैंने सिंहासनोंको देखा और उनपर लोग बैठे ४
थे और उन लोगोंको बिचार करनेका अधिकार दिया
गया और जिन लोगोंके सिर यीशुकी साक्षीके कारण
और ईश्वरके बचनके कारण काटे गये थे और जिन्होंने
न पशुकी न उसकी मूर्त्तिकी पूजा किई और अपने अपने
माथेपर और अपने अपने हाथपर छापा न लिया मैंने
उनके प्राणोंको देखा और वे जी गये और खीष्टके संग
सहस्र बरस राज्य किया। परन्तु और सब मृतक लोग ५
जबलों सहस्र बरस पूरे न हुए तबलों नहीं जी गये. यह
तो पहिला पुनरुत्थान है। जो पहिले पुनरुत्थानका भा- ६
गी है सो धन्य और पवित्र है. इन्होंपर दूसरी मृत्युका
कुछ अधिकार नहीं है परन्तु वे ईश्वरके और खीष्टके
याजक होंगे और सहस्र बरस उसके संग राज्य करेंगे।

और जब सहस्र बरस पूरे होंगे तब शैतान अपने ७
बन्दीगृहसे छुट जायगा. और चहुं खूंट पृथिवीके देशोंके ८
लोगोंको अर्थात जूज और माजूजको जिनकी संख्या
समुद्रके बालूकी नाईं होगी भरमानेको निकलेगा कि
उन्हें युद्धके लिये एकट्ठे करे। और वे पृथिवीकी चौ- ९
ड़ाईपर चढ़ आये और पवित्र लोगोंकी छावनी और
प्रिय नगरको घेर लिया और ईश्वरकी ओरसे आग
स्वर्गसे उतरी और उन्हें भस्म किया। और उनका १०
भरमानेहारा शैतान आग और गन्धककी झीलमें
जिसमें पशु और झूठा भविष्यद्वक्ता हैं डाला गया और
वे रात दिन सदा सर्व्वदा पीड़ित किये जायेंगे।

और मैंने एक बड़े श्वेत सिंहासनको और उसपर बैठ- ११

नेहारेको देखा जिसके सन्मुखसे पृथिवी और आकाश
१२ भाग गये और उनके लिये जगह न मिली। और मैंने
क्या छोटे क्या बड़े सब मृतकोंको ईश्वरके आगे खड़े देखा
और पुस्तक खोले गये और दूसरा पुस्तक अर्थात जी-
वनका पुस्तक खोला गया और पुस्तकोंमें लिखी हुई
बातोंसे मृतकोंका बिचार उनके कर्म्मोंके अनुसार किया
१३ गया । और समुद्रने उन मृतकोंको जो उसमें थे दे दिया
और मृत्यु और परलोकने उन मृतकोंको जो उनमें थे
दे दिया और उनमेंसे हर एकका बिचार उसके कर्म्मोंके
१४ अनुसार किया गया । और मृत्यु और परलोक आग-
१५ की झीलमें डाले गये . यह तो दूसरी मृत्यु है। और
जिस किसीका नाम जीवनके पुस्तकमें लिखा हुआ न
मिला वह आगकी झीलमें डाला गया ।

२१ इकईसवां पर्ब्ब ।

१ नये स्वर्ग और नई पृथिवी और नई यिरूशलीमका दर्शन और उनके विषयमें कई एक बचन । ९ नई यिरूशलीमका बर्णन ।

१ और मैंने नये आकाश और नई पृथिवीको देखा
क्योंकि पहिला आकाश और पहिली पृथिवी जाते रहे
२ और समुद्र और न था । और मुझ योहनने पवित्र
नगर नई यिरूशलीमको जैसी दूल्हिन जो अपने स्वामी-
के लिये सिंगार किई हुई है वैसी तैयार किई हुई स्वर्गसे
३ ईश्वरके पाससे उतरते देखा। और मैंने स्वर्गसे एक बड़ा
शब्द सुना कि देखो ईश्वरका डेरा मनुष्योंके साथ है और
वह उनके संग बास करेगा और वे उसके लोग होंगे
और ईश्वर आप उनके साथ उनका ईश्वर होगा।

और ईश्वर उनकी आंखोंसे सब आंसू पोंछ डालेगा ४
और मृत्यु और न होगी और न शोक न बिलाप न
क्लेश और होगा क्योंकि अगली बातें जाती रही हैं।
और सिंहासनपर बैठनेहारेने कहा देखो मैं सब कुछ ५
नया करता हूं . फिर मुझसे बोला लिख ले क्योंकि
ये बचन सत्य और बिश्वासयोग्य हैं। और उसने ६
मुझसे कहा हो चुका . मैं अलफा और ओमिगा
आदि और अन्त हूं . जो प्यासा है उसको मैं जीवनके
जलके सोतेमेंसे सेंतमेंत देऊंगा । जो जय करे सो सब ७
बस्तुओंका अधिकारी होगा और मैं उसका ईश्वर
होंगा और वह मेरा पुत्र होगा। परन्तु भयमानों ८
और अबिश्वासियों और घिनौनों और हत्यारों और
व्यभिचारियों और टोन्हों और मूर्त्तिपूजकों और सब
झूठे लोगोंका भाग उन्हें उस झीलमें मिलेगा जो आग
और गन्धकसे जलती है . यही दूसरी मृत्यु है।

और जिन सात दूतोंके पास सात पिछली बिपतोंसे ९
भरे हुए सातों पियाले थे उनमेंसे एक मेरे पास आया
और मेरे संग बात करके बोला कि आ मैं दूल्हिनको
अर्थात मेम्नेकी स्त्रीको तुझे दिखाऊंगा। और वह मुझे १०
आत्मामें एक बड़े और ऊंचे पर्ब्बतपर ले गया और बड़े
नगर पवित्र यिरूशलीमको मुझे दिखाया कि स्वर्गसे
ईश्वरके पाससे उतरता है। और ईश्वरका तेज उसमें है ११
और उसकी ज्योति अत्यन्त मोलके पत्थरकी नाईं
अर्थात स्फटिक सरीखे सूर्य्यकान्त मणिकी नाईं है।
और उसकी बड़ी और ऊंची भीत है और उसके १२

बारह फाटक हैं और उन फाटकोंपर बारह दूत हैं
और नाम उनपर लिखे हैं अर्थात इस्रायेलके सन्ता-
१३ नोंके बारह कुलोंके नाम । पूर्ब्बकी ओर तीन फाटक
उत्तरकी ओर तीन फाटक दक्षिणकी ओर तीन फाटक
१४ और पश्चिमकी ओर तीन फाटक हैं । और नगरकी
भीतकी बारह नेव हैं और उनपर मेम्नेके बारह प्रे-
१५ रितोंके नाम । और जो मेरे संग बात करता था
उस पास एक सोनेका नल था जिस्तें वह नगरको
और उसके फाटकोंको और उसकी भीतको नापे ।
१६ और नगर चौखुंटा बसा है और जितनी उसकी
चौड़ाई उतनी उसकी लंबाई भी है और उसने उस
नलसे नगरको नापा कि साढ़े सात सौ कोशका है.
उसकी लंबाई और चौड़ाई और ऊंचाई एक समान हैं।
१७ और उसने उसकी भीतको मनुष्यके अर्थात दूतके नापसे
१८ नापा कि एक सौ चवालीस हाथकी है । और उसकी
भीतकी जोड़ाई सूर्य्यकान्तकी थी और नगर निर्मल
१९ सोनेका था जो निर्मल कांचके समान था। और नगरकी
भीतकी नेवें हर एक बहुमूल्य पत्थरसे संवारी हुई थीं
पहिली नेव सूर्य्यकान्तकी थी दूसरी नीलमणिकी तीसरी
२० लालड़ीकी चौथी मरकतकी . पांचवीं गोमेदककी छठवीं
माणिक्यकी सातवीं पीतमणिकी आठवीं पेरोजकी नवीं
पुखराजकी दसवीं लहसनियेकी एग्यारहवीं धूम्रकान्तकी
२१ बारहवीं मर्टीषकी । और बारह फाटक बारह मोती
थे एक एक मोतीसे एक एक फाटक बना था और
नगरकी सड़क स्वच्छ कांचके ऐसे निर्मल सोनेकी थी।

ऋौर मैंने उसमें मन्दिर न देखा क्योंकि परमेश्वर २२
ईश्वर सर्ब्बशक्तिमान ऋौर मेम्ना उसका मन्दिर हैं ।
ऋौर नगरको सूर्य्य ऋथवा चन्द्रमाका प्रयोजन नहीं २३
कि वे उसमें चमकें क्योंकि ईश्वरके तेजने उसे ज्योति
दिई ऋौर मेम्ना उसका दीपक है । ऋौर देशोंके लोग २४
जो त्राण पानेहारे हैं उसकी ज्योतिमें फिरेंगे ऋौर
पृथिवीके राजा लोग ऋपना ऋपना बिभव ऋौर
मर्य्यादा उसमें लावेंगे । ऋौर उसके फाटक दिनको २५
कभी बन्द न किये जायेंगे क्योंकि वहां रात न होगी ।
ऋौर वे देशोंके लोगोंका बिभव ऋौर मर्य्यादा उसमें २६
लावेंगे । ऋौर कोई ऋपवित्र बस्तु ऋथवा घिनित २७
कर्म्म करनेहारा ऋथवा झूठपर चलनेहारा उसमें किसी
रीतिसे प्रवेश न करेगा परन्तु केवल वे लोग जिनके
नाम मेम्नेके जीवनके पुस्तकमें लिखे हुए हैं ।

२२ बाईसवां पर्ब्ब ।

१ जीवनके जलकी नदीका ऋौर नई यिरूशलीमके निवासियोंके सुखका वर्णन ।
६ उपदेश ऋौर भविष्यद्वाणी सहित पुस्तककी समाप्ति ।

ऋौर उसने मुझे जीवनके जलकी निर्मल नदी १
स्फटिककी नाईं स्वच्छ दिखाई कि ईश्वरके ऋौर मेम्नेके
सिंहासनसे निकलती है । नगरकी सड़क ऋौर उस २
नदीके बीचमें इस पार ऋौर उस पार जीवनका वृक्ष
है जो एक एक मासके ऋनुसार ऋपना फल देके बारह
फल फलता है ऋौर वृक्षके पत्ते देशोंके लोगोंको चंगा
करनेके लिये हैं । ऋौर ऋब कोई स्राप न होगा ऋौर ३
ईश्वरका ऋौर मेम्नेका सिंहासन उसमें होगा ऋौर उसके

४ दास उसकी सेवा करेंगे. और उसका मुंह देखेंगे और
५ उसका नाम उनके माथेपर होगा । और वहां रात
न होगी और उन्हें दीपकका अथवा सूर्य्यकी ज्योतिका
प्रयोजन नहीं क्योंकि परमेश्वर ईश्वर उन्हें ज्योति
देगा और वे सदा सर्ब्बदा राज्य करेंगे ।
६ और उसने मुझसे कहा ये बचन बिश्वासयोग्य
और सत्य हैं और पवित्र भविष्यद्वक्ताओंके ईश्वर
परमेश्वरने अपने दूतको भेजा है जिस्तें यह बातें
जिनका शीघ्र पूरा होना अवश्य है अपने दासोंको
७ दिखावे । देख मैं शीघ्र आता हूं. धन्य वह जो इस
पुस्तकके भविष्यद्वाक्यकी बातें पालन करता है ।
८ और मैं योहन जो हूं सोई यह बातें देखता और
सुनता था और जब मैंने सुना और देखा तब जो दूत
मुझे यह बातें दिखाता था मैं उसके चरणोंके आगे
९ प्रणाम करनेको गिर पड़ा । और उसने मुझसे कहा
देख ऐसा मत कर क्योंकि मैं तेरा और भविष्यद्वक्ता-
ओंका जो तेरे भाई हैं और इस पुस्तककी बातें पालन
करनेहारोंका संगी दास हूं . ईश्वरको प्रणाम कर ।
१० और उसने मुझसे कहा इस पुस्तकके भविष्यद्वाक्य-
११ की बातोंपर छाप मत दे क्योंकि समय निकट है। जो
अन्याय करता है सो अब भी अन्याय करता रहे और
जो अशुद्ध है सो अब भी अशुद्ध रहे और धर्म्मी जन
अब भी धर्म्मी रहे और पवित्र जन अब भी पवित्र रहे।
१२ देख मैं शीघ्र आता हूं और मेरा प्रतिफल मेरे साथ
है जिस्तें हर एकको जैसा उसका कार्य्य ठहरेगा वैसा

फल देऊं। मैं अलफा और ओमिगा आदि और अन्त १३
पहिला और पिछला हूं। धन्य वे जो उसकी आज्ञा- १४
ओंपर चलते हैं कि उन्हें जीवनके वृक्षका अधिकार
मिले और वे फाटकोंसे होके नगरमें प्रवेश करें। परन्तु १५
बाहर कुत्ते और टोन्हे और व्यभिचारी और हत्यारे
और मूर्त्तिपूजक हैं और हर एक जन जो झूठको प्रिय
जानता और उसपर चलता है। मुझ यीशुने अपने १६
दूतको भेजा है कि तुम्हें मंडलियोंमें इन बातोंकी साक्षी
देवे. मैं दाऊदका मूल और बंश और भोरका उज्जल
तारा हूं। और आत्मा और दूल्हिन कहते हैं आ और १७
जो सुने सो कहे आ और जो प्यासा हो सो आवे
और जो चाहे सो जीवनका जल सेंतमेंत लेवे।

मैं हर एकको जो इस पुस्तकके भविष्यद्वाक्यकी १८
बातें सुनता है साक्षी देता हूं कि यदि कोई इन बातोंपर
कुछ बढ़ावे तो ईश्वर उन बिपतोंको जो इस पुस्तकमें
लिखी हैं उसपर बढ़ावेगा। और यदि कोई इस १९
भविष्यद्वाक्यके पुस्तककी बातोंमेंसे कुछ उठा लेवे तो
ईश्वर जीवनके पुस्तकमेंसे और पवित्र नगरमेंसे और
उन बातोंमेंसे जो इस पुस्तकमें लिखी हैं उसका भाग
उठा लेगा।

जो इन बातोंकी साक्षी देता है सो कहता है हां मैं २०
शीघ्र आता हूं. आमीन हे प्रभु यीशु आ। हमारे प्रभु २१
यीशु ख्रीष्टका अनुग्रह तुम सभोंके संग होवे। आमीन॥

